शब्द-संख्या—२३६५३

मानक हिन्दी कोश

[हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ-प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश]

तीसरा खंड

[थ—प]

प्रधान सम्पादक

रामचन्द्र वर्म्मा

सहायक सम्पादक

बदरीनाथ कपूर, एम. ए., पी-एच. डी.

शकाब्द १८८६ : सन् १९६४

हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग

प्रकाशकीय

मानक हिन्दी कोश का यह तृतीय खण्ड हिन्दी-जगत् के समक्ष प्रस्तुत करते हुए हमे विशेष प्रसन्नता है। हिन्दी-प्रेमियों ने जिस स्नेह और प्रेम से इसके पूर्व प्रकाशित दो खण्डों का स्वागत किया है और जिस उत्सुकता से वे इसके शेष तीन खण्डो की प्रतीक्षा कर रहे है उससे हमे अपने प्रयास के महत्व का अनुभव हुआ है और हमारा उत्साह-वर्धन हुआ है। इसके लिए हम सहज ही हिन्दी-प्रेमी महानुभावो के अनुगृहीत है और उन्हे विश्वास दिलाना चाहते हैं कि मानक हिन्दी कोश के शेष चौथे और पाँचवे खण्डों के प्रकाशन मे हम यथासम्भव शीघ्रता करेंगे। सकलित सामग्री सपादित होकर तैयार है केवल मुद्रण-कार्य बाकी है।

कोश का काम निरतर गतिशील और वर्धमान बना रहता है। हिन्दी-जैसी विकासशील और प्रगतिशील भाषा मे बड़े वेग से नये शब्द आते जा रहे है। भारत के विभिन्न प्रदेशो मे तो इसका प्रचार एव प्रसार हो ही रहा है, विदेशो मे भी इसके पाठको की सख्या बढ़ती जा रही है। हिन्दी-क्षेत्र मे भी इसके लेखको और साहित्यकारो की सख्या बढ रही है। सरकारी और गैरसरकारी हलको मे भी जो अनुवाद और शब्द-चयन का काम हो रहा है उससे भी हिन्दी का शब्द-भण्डार भरता जा रहा है। इन सबको पाँच खण्डो के शब्दकोश मे सीमित समय के भीतर समाविष्ट करने का प्रयास हम कर रहे हैं। जिस वेग से हिन्दी मे नित्य नये शब्द आते जा रहे है उस वेग से उन्हें सकलित करना कितना श्रमसाध्य कार्य है इसका अनुभव कोश-प्रणयन-कार्य से सम्बद्ध लोगो को है। हिन्दी साहित्य सम्मेलन अपने इस गुरुतर कर्त्तव्य के प्रति जागरूक है। हम विनम्रतापूर्वक हिन्दी-सेवियो को यह आश्वासन देना चाहेंगे कि इस काम मे कोई बात न उठा रखी जायगी। हमारा यह काम मानक हिन्दी कोश के पाँचो खण्डो के प्रथम सस्करण के बाद भी जारी रहेगा क्योंकि उसके बाद ही प्रथम सस्करण के दोषादि का निराकरण किया जा सकेगा। हम अपने इस कार्य मे उन सभी विचारवान व्यक्तियो की सहायता चाहेंगे जो कोश की भूलचूक तथा उसमें नये शब्दो के प्रवेश के विषय मे सुझाव देना चाहेंगे।

हम इस कोश के प्रधान सपादक, उनके सहयोगी तथा अन्य सभी लोगो के प्रति कृतज्ञ हैं जिन्होने इसके मुद्रण और प्रकाशन मे विशेष योगदान किया है। सम्मेलन मुद्रणालय के प्रबन्धक और कर्मचारी अपने ही है फिर भी उन्हे साधुवाद देना आवश्यक है क्योंकि कठिन परिस्थिति मे विशेष सतर्कता के साथ उन्होंने इसके मुद्रण का कार्य सपन्न किया है।

गोपालचन्द्र सिंह
सचिव
प्रथम शासन निकाय

हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग

संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अ०—अंगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक में) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रंश
अर्द्ध० मा०—अर्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अव्य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की बोली
इब०—इबरानी भाषा
उग्र०—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कबीर०—कबीरदास
कश०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोंक०—कोंकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थशास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि० प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द्र०—चन्द्रबरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावाद्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
डिं०—डिंगल भाषा
ढो० मा०—ढोला मारू रा दूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिब्बती
तु०—तुरकी भाषा
तुलसी०—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलगू भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारीसिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखें
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीरप्रसाद द्विवेदी
नपुं०—नपुंसक लिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
पं०—पंजाबी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पुं०—पुंलिंग
पु० हिं०—पुरानी हिन्दी
पुर्त०—पुर्तगाली भाषा
पू० हिं०—पूर्वी हिंदी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशंकर प्रसाद
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रां०—फ्रांसीसी भाषा
बंग०—बंगाली भाषा
बर०—बरमी भाषा
बहु०—बहुवचन
बिहारी—कवि बिहारीलाल
बु० ख०—बुन्देलखण्डी बोली
भारतेन्दु—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक संज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावें
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवाँ-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानाँ
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लशकरी बोली अर्थात् हिन्दुस्तानी जहाजियों की बोली
लै०—लैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर

व्या०—व्याकरण
शृं०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत भाषा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सिं०—सिन्धी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
हिं०—हिन्दी भाषा

*यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

†यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य० स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु० स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० ब०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
प० त०—पञ्चमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० ब० स०—प्रादि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—प्रादि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष० त०—षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनो पाणिनीय व्याकरण के संकेत हैं। इनके अर्थ हैं, 'पृषोदर' आदि शब्दो की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दो की सिद्धि। जिन शब्दो की सिद्धि पाणिनीय सूत्रो से सम्भव नही होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियों का प्रयोग किया जाता है। इन विधियो से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णों के आगम व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।

मानक हिन्दी कोश

तीसरा खण्ड

थ

थ—देवनागरी वर्णमाला के तवर्ग का दूसरा वर्ण। उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से यह दन्त्य, अघोष, महाप्राण और स्पर्शी व्यंजन है।
पु० [स०] १ रक्षण। २ मगल। ३ भय। डर। ४ पहाड। पर्वत। ५ भय मे रक्षा करनेवाला। भय-रक्षक। ६ आहार। भोजन।

थंका—पु० [?] ऐसा पट्टा जिसके अनुसार निश्चित लगान घटाया-बढाया न जा सके। बिलमुकता।

थंडिल†—पु० [स० स्थंडिल] १ यज्ञ की वेदी के लिए तैयार की हुई भूमि। २ यज्ञ की वेदी। ३ ऐसी जमीन जिस पर आदमी सो सकता हो या सोता हो।

थंब—पु० [स० स्तम्भ] [स्त्री० अल्पा० थंबी] १ खभा। २ सहारा। टेक। ३ राजपूतो का एक भेद।

थंभ—पु० [स० स्तम्भ] [स्त्री० अल्पा० थंभी] १ खभा। २ चाँड। टेक। थूनी।

थंभन—पु० =स्तम्भन।

थंभना†—अ० =थमना।

थंभवाना—स०=थमवाना।

थंभाना†—स०=थमाना (पकडाना)।

थंभित*—वि० स्तभित।

थई—स्त्री० [हि० ठाँव, ठाँई] ठाँव। जगह।
स्त्री०—थही।

थइली—स्त्री०=थैली।

थक†—पु०=थाक।

थकन†—स्त्री०=थकान।

थकना—अ० [स० स्था+कृ, प्रा० थक्कन] १ अधिक समय तक कोई काम या परिश्रम करने तथा शारीरिक शक्ति के अत्यधिक व्यय हो जाने के कारण ऐसी स्थिति मे आना या होना जिसमे अग-अग शिथिल होने लगते हैं। शरीर की शक्तियो का मन्द पडना और शिथिल होना। श्रांत होना।
विशेष—इस क्रिया का प्रयोग स्वय व्यक्ति के लिए भी होता है और उसके शरीर के अंगो अथवा शरीर के सम्बन्ध मे भी। जैसे—(क) चलते-चलते हम थक गये। (ख) दिन भर की दौड़-धूप से टाँगें या सारा शरीर थक गया है।
२. कोई काम करते-करते ऐसी स्थिति मे आना कि मन मे वह काम और अधिक या फिर करने का उत्साह न रह जाय। हार जाना। जैसे—हम समझाते-समझाते थक गये, पर वह कुछ सुनता ही नहीं। ३ वृद्धावस्था के कारण शरीर का बहुत-कुछ शिथिल हो जाना और पूरा काम करने के योग्य न रह जाना। जैसे—वृद्धावस्था के कारण अब हम बहुत थक चले हैं।
अ० [स० स्थग्] चकित या मोहित होने के कारण स्तब्ध हो जाना।

थकर†—स्त्री०=थकान।

थकरी†—स्त्री० [हि० थाक] खस आदि कुछ विशिष्ट पौधो की सीको की कूँची जिससे स्त्रियाँ बाल झाडा करती थी।

थकाथक†—अव्य० [अनु०] १ थक-थक शब्द करते हुए। २. निरतर। लगातार। ३ अधिक मात्रा मे।
वि० ढेर-सा। यथेष्ट।

थकान—स्त्री० [हि० थकना] १ थके हुए होने की अवस्था या भाव। २ थकने के कारण होनेवाला शारीरिक शक्ति का ऐसा क्षय जिसकी पूर्ति विश्राम करने से आप से आप हो जाती है। जैसे—अभी वे यात्रा की थकान मिटा रहे है।

थकाना—स० [हि० थकना] ऐसा काम करना या कराना जिससे कोई थक जाय।

थका-माँदा—वि० [हि० थकना+फा० माँद] जो इतना अधिक थक गया हो कि अशक्त और अस्वस्थ-सा जान पडने लगे।

थकार—पु० [स०] 'थ' अक्षर या वर्ण।

थकाव†—पुं० [हि० थकना] थकावट।

थकावट—स्त्री० [हिं० थकना+आवट (प्रत्य०)] थकने के कारण होनेवाली वह अनुभूति या अवस्था जिसमे अग टूटने लगते है और कोई काम करने को जी नही चाहता।
क्रि० प्र०—आना।—मिटाना।

थकाहट—स्त्री०=थकावट।

थकित—वि० [हि० थकना] १. थका हुआ। २ चकित। ३ मुग्ध। मोहित।

थकिया—स्त्री० [हिं० थक्का] १ गाढ़ी चीज की जमी हुई मोटी तह। छोटा थक्का। २ वह पिड जो गली हुई धातु ठढी होने पर बनता है।

थकैनी†—स्त्री०=थकावट।

थकौहाँ—वि० [हिं० थकना+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० थकौंही] थका हुआ। शिथिल।

पद-थकौहैं द्वार*- इस रूप मे कि मानो बहुत थका हुआ हो।

थक्कर†—पु० [हिं० थाक] १ दे० 'थक्का'। २ झुड। समूह।

थक्का—पु० [स० स्था+कृ, बँग० थाकना-ठहरना] [स्त्री० थक्की, थकिया] १ गीले और गाढे द्रव पदार्थ की जमी हुई मोटी तह या पिड। जैसे—खून का थक्का, दही या मक्खन का थक्का। २ गलाई हुई धातु के जमने से बना हुआ पिड। जैसे—लोहे या सोने का थक्का।

क्रि०प्र०—जमना।—बँधना।

थगित—वि० [हिं० थकित] १ ठहरा या रुका हुआ। २ ढीला पडा हुआ। शिथिल। ३ धीमा। मद। ४ दे० 'थकित'।

थट्ट*—पु० १=ठाठ। २. ठट्ठ।

थड़ा—पु० [स० स्थल] १ बैठने की जगह। बैठक। २ वह स्थल जहाँ बैठकर दूकानदार सौदा बेचता है। ३ मकान के मुख्य द्वार के आगे की ऊँची तथा समतल रचना जिस पर प्राय लोग बैठते है। चौतरा। (पश्चिम)

थण†—पु० [स० स्तन] १ कुच। स्तन। उदा०—थापै थूल नितब थण।—प्रिथीराज। २ मादा पशुओ का थन।

थति*—स्त्री०=थाती।

थतिहार—पु० [हिं० थाती+हार (प्रत्य०)] वह जिसके पास थाती रखी गई या रखी हुई हो।

थत्ती—स्त्री० [हिं० थाती] ढेर। राशि।

थथोलना†—स० टटोलना।

थन—पु० [स० स्तन] १ गाय, भैस, बकरी इत्यादि चौपायो का वह अग जिसमे दूध जमा रहता है। २ उक्त अग का फली के समान का उपाग जिसे दबा तथा खीचकर दूध दूहा जाता है।

थनकुवी—स्त्री० [देश०] एक तरह की नीले रगवाली छोटी चिडिया।

थनगन—पु० [बर्म्मी] एक प्रकार का बडा पेड जो मध्यभारत मे बहुतायत से होता है।

स्त्री०—ठन-गन।

थन-टुट्टू—वि० [हिं० थन+टूटना] (मादा पशु) जिसके थन का दूध टूट गया हो, अर्थात् दूध आना या उतरना बन्द हो गया हो।

थनी—स्त्री० [स० गलस्तन] १ गलथना। (दे०) २ हाथी के कान के पास गलथने की तरह निकला हुआ मास-पिड। ३ घोडे की लिंगेंद्रिय मे थन के आकार का लटकता हुआ मास जो ऐब समझा जाता है।

थनु—पु०=थन।

थनुसुत*—पु० [स० स्थाणु+सुत] शिव के पुत्र गणेश और कार्तिकेय।

थनेला—पु० [हिं० थन+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० थनेली] १ स्तन पर विशेषत स्त्रियों के स्तन पर होनेवाला एक तरह का फोडा। २ एक तरह का कीडा जिसके गाय आदि के थन पर काटने से उनका दूध सूख जाता है।

थनैत—पु० [हिं० थान] १ किसी स्थान का अधिकारी देवता या शासक। २ गाँव का मुखिया। ३ वह अधिकारी जो जमीदारो की ओर से गाँवो से लगान वसूल करता था।

थपक—स्त्री० [हिं० थपकना] १ थपकने की क्रिया या भाव। २ थपकने के लिए किया जानेवाला आघात। थाप।

थपकना—स० [अनु० थप-थप] १ इस प्रकार हलका आघात करना कि थप-थप शब्द हो। थपकी देना। २ हथेली से इस प्रकार थप-थप करते हुए किसी पर हलका आघात करना कि उसे अच्छा लगे। थपथपाना। जैसे—बच्चे को थपककर सुलाना। ३ किसी चीज पर बिना जोर लगाये हलका आघात करते चलना। ४ किसी को उत्साहित करने अथवा किसी का आवेश या क्रोध शात करने के लिए उसकी पीठ पर हथेली से धीमा आघात करना।

मयो० क्रि०—देना।

थपका—पु० दे० 'थपकी'।

थपकी—स्त्री० [हिं० थपकना] १ थपकने की क्रिया या भाव। २ थपकने के लिए हथेली मे स्नेहपूर्वक किया जानेवाला हलका आघात। जैसे—घोडे या बच्चे को थपकी देना। ३ किसी को उत्साहित करने के लिए या आशीर्वाद देने के समय उसकी पीठ पर स्नेहपूर्वक किया जानेवाला हलका आघात।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

४ दे० 'थापी'।

थपड़ी—स्त्री० थपोडी।

थपथपी—स्त्री०=थपकी।

थपन*—पु०=स्थापन।

थपना—स० [स० स्थापन] १ स्थापित करना। बैठाना। २ धीरे-धीरे ठोकना या पीटना। ३ दे० 'थोपना'। ४ दे० 'छोपना'। (पश्चिम)

अ० १ स्थापित होना। बैठना। २. ठोका या पीटा जाना।

पु० थापी, जिससे राज-मजदूर गच या छत पीटते है। पिटना।

थपरा—पु० थप्पड।

थपाना*—स० [हिं० थपना] किसी को कुछ थपने मे प्रवृत्त करना।

थपुआ—पु० [?] मिट्टी को पाथकर पकाया हुआ वह चौरस चिपटा खपडा जो छत छाने के काम आता है। दो थपुआ के जोड पर नरिया रखकर उनकी सन्धि ऊपर से बन्द की जाती है।

थपेटा—पु०=थपेडा।

थपेड़ना—स० [हिं० थपेडा] १. थपेडा लगाना। २ थप्पड लगाना। ३ आघात करना।

थपेड़ा—पु० [अनु० थप-थप] १ किसी चीज के वेग से आकर टकराने या लगने का ऐसा आघात जिसमे थप-थप शब्द हो। जैसे—नदी या समुद्र की लहरो के थपेडो से नाव उलट गई।

क्रि० प्र०—लगना।

२ दे० 'थप्पड'।

थपोड़ी—स्त्री० [अनु० थप-थप] १ दोनो हथेलियो से बजाई जानेवाली ताली। २. बेसन की बनी हुई एक प्रकार की मसालेदार पूरी या पकवान।

थपोरी†—स्त्री०=थपोडी।

थप्पड़—पु० [अनु० थप-थप] १. गाल पर हाथ के पजे से किया जानेवाला आघात। झापड। तमाचा।

क्रि० प्र०—कसना।—देना।—मारना।—लगाना।

२. ऐसी बात जिससे किसी की प्रतिष्ठा को आघात पहुँचे।

३. दाद या फुसियों का चकत्ता। ४ दे० 'थपेड़ा'।

थप्पम—वि० [हिं० थपना] स्थापित करनेवाला।
पु०=स्थापन।

थप्पा—पु० [लश०] एक तरह का जहाज।

थम—पु० [सं० स्तम्भ, प्रा० थंभ] १ खंभा। स्तम्भ। २ चाँड़। थूनी। ३ धरहरा। मुनारा। ४ पूरियों, मिठाइयों आदि का वह ढेर या थाक जो मांगलिक अवसरों पर देवता या देवी के आगे रखा जाता है। (पश्चिम)

थमकारी*—वि० [सं० स्तंभन, हिं० थामन+कारी] १ थामनेवाला। २ स्तम्भन करने अर्थात् रोकनेवाला।

थमना—अ० [सं० स्तंभन] १ चलते-चलते किसी चीज का रुकना या गतिहीन होना। जैसे—कोल्हू या गाड़ी का थमना। २ आड़, सहारे आदि के कारण किसी आधार पर ठहरा रहना और नीचे की ओर न आना या न गिरना। जैसे—चाँड़ लगने से छत का थमना। ३ किसी प्रकार की क्रिया, गति या प्रवाह का बन्द होना। जैसे—(क) युद्ध थमना। (ख) बरसता या बहता हुआ पानी थमना। ४ सब्र करके या यों ही किसी काम में लगने से कुछ समय के लिए ठहरना। धीरज धरना। जैसे—हमारे कहने से वह थम गया है, नहीं तो अब तक दावा कर देता।
अ० [हिं० थामना का अ०] थाम लिया जाना। थामा जाना।

थमवाना—स० [हिं० थामना का प्रे०]=पकड़वाना।

थमाना—स० [हिं० थामना का प्रे०]=पकड़ाना।

थमाव—पु० [हिं० थमना+आव (प्रत्य०)] थमने या ठहरने की क्रिया, भाव या स्थिति। ठहराव।

थमुआ—पु० [हिं० थामना] चप्पू या डाँड़ का वह भाग जहाँ से उसे नाव खेने समय पकड़ा जाता है।

थर—पु० [सं० स्तर] १ जमी हुई परत। तह। २ दीवारों की चुनाई में लगाई जानेवाली ईंटों की प्रत्येक पंक्ति या परत। ३. ब्राह्मणों में, जाति या वर्ग का वाचक शब्द। जैसे—पहले उनसे उनका थर तो पूछ लो।
पु० [सं० स्थल] १ स्थल। २ सिंध देश का एक प्रदेश या विभाग। ३ जंगली जानवरों की माँद। चुर।

थरकना†—अ० १ =थर्राना। २ =थिरकना।

थरकाना—स० [हिं० थरकना] १ थरकने या थरथराने में प्रवृत्त करना। २ थिरकने में प्रवृत्त करना।

थरकौहाँ*—वि० [हिं० थरकना] १. भय आदि से जो थर-थर काँप रहा हो। २ हिलता-डुलता हुआ। चंचल।

थर-थर—स्त्री० [अनु०] डर से काँपने की मुद्रा। थरथराहट।
क्रि० वि० डरकर काँपते हुए।

थर-थराना—अ० [अनु० थर-थर] [भाव० थरथराहट, थरथरी] १ डर से काँपना। २ काँपना।
स० किसी को इतना अधिक भयभीत करना कि वह थर-थर काँपने लगे।

थरथराहट—स्त्री० [हिं० थरथराना] १ थरथराने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ निरन्तर कुछ समय तक काँपते या थरथराते रहने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—चढ़ना।

थरथरी—स्त्री०=थरथराहट।

थरना†—स० [हिं० थर] १ रह-रहकर हलका आघात या चोट करना। २ कोई चीज गढ़ने या बनाने के लिए उसे धीरे-धीरे हथौड़ी आदि से पीटना। ३ अच्छी तरह मारना या पीटना। थूरना। ४ दीवारों की चुनाई में एक थर के ऊपर दूसरा थर लगाना।
पु० कसेरों का एक औजार जिससे वे नक्काशी या फूल-पत्तियाँ बनाते हैं।

थरमामीटर—पु० [अं०] ताप-मापक यंत्र।

थरसना—अ० [सं० त्रसन] १ त्रस्त होना। २ दुःखी होना।
स० १ त्रस्त करना। २ दुःखी करना।

थरसल†—वि० [हिं० थरसल] त्रस्त। पीड़ित।

थरहर†—स्त्री०=थरथराहट।

थरहराना†—अ०, स० [भाव० थरहरी]=थरथराना।

थरहाई†—स्त्री० [?] एहसान।

थरिया†—स्त्री०=थाली।

थरी—स्त्री० [सं० स्थली] जंगली पशुओं की माँद। चुर।

थरु†—पु०=थल।

थरुलिया—स्त्री० [हिं० थारी] छोटी थाली।

थरुहट—पु० [हिं० थारू] थारू जाति के लोगों की बस्ती।

थर्मस—पु० [अं०] एक तरह का छोटा वर्तुल डिब्बा जो वायु अनुकूलित होता है तथा जिसमें रखी हुई चीज का ताप-मान कुछ समय तक प्रायः ज्यों का त्यों बना रहता है।

थर्मामीटर—पु० [अं०] ताप-मापक यंत्र।

थर्राना—अ० [अनु० थर-थर] १ डर के मारे थर-थर काँपना। जैसे—सिपाही को देखते ही चोर थर्रा गया। २ बहुत अधिक भयभीत होना। दहलना।
सयो० क्रि०—उठना।—जाना।
स० किसी को इतना अधिक डराना कि वह थर-थर काँपने लगे।

थल—पु० [सं० स्थल] १ जगह। स्थान।
मुहा०—**थल से बैठना** शांत या स्थिर होकर बैठना। चंचलता, विकलता आदि से रहित होकर सुख से बैठना।
२ किसी देवता का अथवा कोई पवित्र स्थान। ३ ऐसी सूखी जमीन जहाँ या जिसमें जल न हो। स्थल। 'जल' का विपर्याय। ४ वह ऊँची भूमि जहाँ वर्षा का पानी इकट्ठा न होता हो। ५ वह स्थान जहाँ बहुत-सी रेत पड़ गई हो। भूड़। रेगिस्तान। जैसे—थर पर खर। ६ जंगली जानवरों की माँद। चुर। ७ बादले का एक प्रकार का छोटा गोल साज जिसे बच्चों की टोपी आदि पर टाँका जाता है। ८ फोड़े के घाव के चारों ओर का लाली लिये हुए सूजा हुआ स्थान। थाला।
क्रि० प्र०—बँधना।

थलकना—अ० [सं० स्थूल, हिं० थूला, थुल थुल] १ शरीर के क्षीण होने पर त्वचा तथा मांस का ढीला पड़ना तथा लटकने लगना। २ भारी चीज का रह-रहकर कुछ ऊपर उठना और नीचे होना या हिलना।

थल-चर—पु० [सं० स्थलचर] १ पृथ्वी पर रहनेवाले जीव (जल या वायु मे रहने या विचरनेवाले जीवो से भिन्न)।

थल-चारी—वि० [सं० स्थलचारी] भूमि पर चलने या विचरण करनेवाला।

थल-थल—वि० [सं० स्थूल, हि० थूला] (व्यक्ति, उसका शरीर अथवा शरीर का कोई अंग) मोटाई के कारण झूलता या हिलता हुआ।

थलथलाना—स० [अनु०] ऐसी क्रिया करना जिसमे किसी चीज का तल थल-थल शब्द करता हुआ रह-रहकर कुछ ऊपर उठे और फिर नीचे गिरे। थल-थल शब्द करता हुआ।

अ०=थलकना।

थल-पति—पु० [सं० स्थलपति] राजा।

थल-बेड़ा—पु० [हि० थल+बेड़ा] नाव या जहाज के ठहरने की जगह।

मुहा०—**थल-बेड़ा लगाना**—शान्तिपूर्वक ठहरने या रुकने के लिए उपयुक्त स्थान मिलना। ठिकाना लगना।

थल-भारी—पु० [हि० थल+भारी] १ ऐसा स्थल जिस पर चलना कठिन हो। २ रेतीला मैदान।

थलरुह*—वि० [सं० स्थलरुह] धरती पर उत्पन्न होनेवाले जतु, वृक्ष आदि। स्थल अर्थात् भूमि पर जन्म लेनेवाला।

थलिया†—स्त्री०=थाली।

थली—स्त्री० [सं० स्थली] १ स्थान। जगह। २ वनस्थली। ३ जलाशय, नदी आदि के नीचे का तल। ४ सुख से ठहरने या बैठने की जगह। ५. परती जमीन। ६ बालू का मैदान। रेतीली जमीन। ७ ऐसी ऊँची जमीन जहाँ वर्षा का पानी न ठहरता हो।

थवई—पु० [सं० स्थपति, प्रा० थवइ] मकान बनाने विशेषत जोड़ाई करनेवाला कारीगर। राज।

थवन—पु० [देश०] दुलहिन का तीसरी बार अपने पति के घर जाने की क्रिया।

थवाना†—पु० [सं० स्थापन, हि० थपना] कच्ची मिट्टी का वह गोला जिसमे लगी हुई लकड़ी के छेद मे चरखी की लकड़ी पड़ी रहती है। चरखी के घूमने से नारी भरी जाती है। (जुलाहे)

थह*—पु० [सं० स्थल या हि० थर ?] माँद। उदा०—जागै नह थह मे जिते, सझ हाथल सादूल।—बाँकीदास।

स्त्री० थाह।

थहना*—स० [हि० थाह] १. थाह लेना। पता लगाना। २ थाह लेने के लिए गहराई मे उतरना या जाना।

थहरना— अ०=थर्राना।

थहराना—अ० [अनु० थर थर] १ दुर्बलता, भय आदि से अंगो का काँपना। २ काँपना। ३ दे० 'थर्राना'।

थहाना—स० [हि० थाह] १. पानी की गहराई का पता लगाना। थाह लगाना या लेना। २ किसी के ज्ञान, विचार आदि की थाह या पता लेना।

थहारना†—स० १ =ठहराना। २ थहना।

थही†—स्त्री० [सं० स्तर; हि० तह] १ तह। परत। २ चीजो का लगा हुआ थाक। ढेर। राशि।

थाँग—स्त्री० [हि० थान] १ चोरो या डाकुओ के रहने का गुप्त स्थान। २ चोरो या चोरी गई हुई चीजो का लगाया जानेवाला पता। ३ किसी प्रकार के रहस्य की प्राप्त की हुई जानकारी या लिया हुआ भेद। ४ खोज। तलाश।

क्रि० प्र०—लगाना।

थाँगी—पु० [हि० थाँग] १ चोरो का सरदार। २ वह जो चोरो से माल खरीदता और अपने पास रखता हो। ३ चोरो या चोरी के माल का पता लगानेवाला व्यक्ति। ४. रक्षा करने या आश्रय देनेवाला व्यक्ति। उदा०—निगुसाएँ बह गए, थाँगी नाँही कोइ।—कबीर।

थाँगीदारी—स्त्री० [हि० थाँगी+फा० दार] थाँगी का काम या पद।

थाँन†—पु०=थान।

थाँभ—पु० [सं० स्तम्भ] १. खंभा। २ चाँड। थूनी।

थाँभना —स०=थामना।

थाँवला—पु० दे० 'थाला'।

थाँवाँ—पु० [सं० स्तंभ] दादूदयाल का चलाया हुआ एक उप-संप्रदाय।

थाँह†—स्त्री० [सं० स्थान] १ जगह। २ दे० 'थाह'।

थाँहै+—अव्य० [हि० थाह] ठीक उसी स्थान पर। वही। (पश्चिम) जैसे—थाँहै मारना।

था—अ० [सं०√स्था] हि० 'होना' क्रिया अथवा वर्तमान कालिक 'है' का एक भूतकालिक रूप। एक शब्द जिससे भूत-काल मे होना सूचित होता है। रहा। जैसे—मैं उस समय वही था।

थाई—वि० [सं० स्थायी] बहुत दिनो तक चलने या बना रहनेवाला। स्थायी।

स्त्री० १. सुख से बैठने की जगह। २ बैठने का कमरा या कोठरी। अथाई। बैठक। ३ दे० 'अस्थायी' (संगीत की)।

थाक—पु० [सं०√स्था] १ एक के ऊपर एक करके रखी हुई चीजो का ढेर। राशि। जैसे—कपड़ो या किताबो का थाक।

†स्त्री०=थकन (थकावट)।

क्रि० प्र०—लगना।

थाकना—अ० [सं०स्थगन] १. ठहरना। रुकना। २ दे० 'थकना'।

थाका*—पु० [सं० स्तवक] गुच्छा। (पूरब) उदा०—अधर निमाल मधुरि फुल थाका।—विद्यापति।

थाकु†—पु०=थाक।

थाट†—पु० १ =ठाठ। २ =ठट्ठ (समूह)। उदा०—नमस्कार सूरां नरां भारथ गज थाटां मिडै अडै भुजां उरसाह।—बाँकीदास।

थाण—पु० [सं० स्थान, प्रा० थाण] थाला। आलबाल।

थात*—वि० [सं० स्थातृ, स्थाता] जो बैठा या ठहरा हुआ हो। स्थित।

थाति—स्त्री० [हि० थात] ठहराव। स्थिति।

स्त्री०=थाती।

थाती—स्त्री० [हि० थात] १ समय पर काम मे लाने के लिए बचाकर रखी हुई चीज या धन। जमा। पूँजी। २ किसी के विश्वास पर उसके पास रखी हुई वह चीज या धन जो माँगने पर तुरन्त वापस मिल सके। धरोहर। अमानत।

थान—पु० [सं० स्थान] १. जगह। स्थान। जैसे—(क) काली या

भैरव का थान। (ख) बड़ी भाभी माँ के थान होती है। २. ठहरने या रहने की जगह। ३ चौपायों, विशेषत घोड़ों को बाँधकर रखने का स्थान।

पद—**थान का टर्रा**=(क) वह घोड़ा जो खूँटे या खूँटों मे बँधा रहने पर भी नटखटी करता हो। घुड़साल मे भी उपद्रव करनेवाला घोड़ा। (ख) वह व्यक्ति जो अपने स्थान पर (या घर मे) ही मारी अकड़ या ऐंठ दिखाता और घर के लोगो से ही लड़ता-झगड़ता रहता हो। **थान का सच्चा**=वह घोड़ा जो कहीं से छूटने पर फिर सीधा अपने खूँटे पर आ जाय।

४. कुल। वश। जैसे—अच्छे थान का घोड़ा। उदा०—सभरि नरेस चहुवान थान, प्रिथिराज तहाँ राजंत भान।—चंदबरदाई।

५ वह घास जो घोड़े के नीचे बिछाई जाती है।

मुहा०—**थान में लोटना**=घोड़े का थकावट मिटाने के लिए घास या जमीन पर लोटना।

६ कपड़े, गोटे आदि का पूरा टुकड़ा जिसकी लबाई प्राय निश्चित होती है। जैसे—किनारी या गोटे का थान, नैनसुख या मलमल का थान। ७ कुछ विशिष्ट पदार्थों के सबध मे उनकी स्वतत्र सत्ता के आधार पर सख्या का वाचक शब्द। जैसे—चार थान गहने, दस थान धोती।

थानक—पु० [स० स्थानक] १ स्थान। २ नगर। ३ वृक्ष का थाला। आल-बाल। ४ झाग। फेन।

थाना—पु० [स० स्थान, हि० थान] १ टिकने, ठहरने या बैठने का स्थान। अड्डा। २ किसी का उद्गम या मूल निवास-स्थान। ३ बाँसो की कोठी। ४ आज-कल वह स्थान जहाँ पुलिस के कुछ सिपाही और उनके वरिष्ठ अधिकारी स्थायी रूप से कार्य करते है और जहाँ से आस-पास के स्थानों का प्रबध होता है। पुलिस-कार्यालय। नाका।

मुहा०—**(किसी स्थान पर) थाना बैठाना**=अव्यवस्था, उपद्रव आदि के स्थानो पर शाति बनाये रखने के लिए पुलिस के कुछ सिपाही और अधिकारी नियत करना। **थाने चढ़ना**=थाने मे पहुँचकर किसी के विरुद्ध कोई सूचना देना। पुलिस मे इत्तला या रपट लिखाना।

थानापति—पु० [स० स्थानपति] ग्राम देवता।

थानी—पु० [स० स्थानिन्] १ किसी स्थान का प्रधान अधिकारी या स्वामी। २ दे० 'थानैत'। ३ दे० 'दिग्पाल'।

वि० १ थान या ठिकाने पर पहुँचा हुआ। २ (काम) जो पूरा किया जा चुका हो। सपन्न या सपादित। ३ ठिकाने लगाया हुआ।

थानु*—पु० १ =स्थाणु। २ =थान।

थानेत—पु० थानैत।

थानेदार—पु० [हि० थाना+फा० दार] [भाव० थानेदारी] थाने का विशेषत पुलिस के थाने का प्रधान अधिकारी। दारोगा।

थानेदारी—स्त्री० [हि० थाना+फा० दारी] १ थानेदार का कार्य। २ थानेदार का पद।

थानैत—पु० [हि० थान+ऐत (प्रत्य०)] १ किसी स्थान का अधिपति। २ किसी चौकी या अड्डे का मालिक। ३ ग्राम-देवता।

थाप—स्त्री० [सं० स्थापन] १ थापने की क्रिया या भाव। २. ढोलक, तबले, मृदग आदि के बजाने के समय उन पर हथेली से किया जानेवाला विशिष्ट प्रकार का आघात।

क्रि० प्र०—पड़ना।—लगाना।

३ एक चीज पर दूसरी चीज के भर-पूर बैठने के कारण बननेवाला चिह्न। जैसे—बालू पर पड़ी हुई पैरो की थाप। ४ थप्पड़। तमाचा। ५ कसम। शपथ। सौगध। जैसे—तुम्हे देवी की थाप है, वहाँ मत जाना। ६ जमाव। स्थिति। ७ मान-मर्यादा आदि का दूसरो पर पड़नेवाला प्रभाव। धाक। ८ पचायत। (क्व०)

थापन—पु० [स० स्थापन] १ स्थापित करने की क्रिया या भाव। स्थापन।

थापना—स० [स० स्थापन] १ स्थापित करना। २ कोई चीज कहीं बैठाना, लगाना या स्थित करना। ३ हाथ के पजे की मुद्रा अकित करना या छापना। थापा लगाना।

स्त्री० १ स्थापित करने या होने की क्रिया या भाव। स्थापना। प्रतिष्ठा। २ नव-रात्र मे देवी के पूजन के लिए किया जानेवाला घट-स्थापन।

थापर†—पु० थप्पड़।

थापरा—पु० [देश०] छोटी नाव। डोंगी। (लश०)

थापा—पु० [हि० थाप] १ थापने की क्रिया या भाव। २ हाथ के पजे का वह चिह्न जो गीली पीसी हुई मेंहदी, हलदी आदि मांगलिक द्रव्यो मे शुभ अवसरो पर दीवारों आदि पर लगाया जाता है। हाथ के पजे का छापा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

३ खलिहान मे अनाज की राशि पर गोबर, मिट्टी आदि से लगाया जानेवाला हाथ के पजे का चिह्न या किसी प्रकार की लकीर। ४ वह ठप्पा जिससे चिह्न आदि अकित किये जाते हैं। छापा। ५ वह साँचा जिसमे कोई गीली सामग्री दबाकर या डालकर कोई वस्तु बनाई जाय। जैसे—ईंट का थापा, सुनारों का थापा। ६ ढेर। राशि। ७ देहातो मे देवी-देवता आदि की पूजा के लिए लिया जाने-वाला चदा। पुजौरा।

पु० [?] नेपाली क्षत्रियों की एक जाति या वर्ग।

थापिया—स्त्री० =थापी।

थापी—स्त्री० [हि० थापना] १ थापने की क्रिया या भाव। २ काठ का वह उपकरण जो चिपटे सिरेवाले लबे छोटे डडे के रूप मे होता है और जिससे कुम्हार मिट्टी के घड़े पीटकर बनाते हैं। ३ उक्त आकार का वह डडा जिससे राज या मजदूर छत पीटकर उसमे का मसाला जमाते हैं। ४ आशीर्वाद, शाबाशी आदि देने के लिए धीरे-धीरे किसी की पीठ ठोकने या थपथपाने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।

थाम—पु० [स० स्तभ, प्रा० थभ] १ खम्भा। स्तभ। २ मस्तूल। (लश०)

स्त्री० [हि० थामना] थामने की क्रिया या भाव।

†पु०=थभ (स्तम्भ)।

थामना—स० [स० स्तभन, प्रा० थभन=रोकना] १. हाथ मे लेना या हाथ से पकड़ना। जैसे—लड़के की उँगली या हाथ थामना।

२ वेगपूर्वक आती, गिरती या आगे बढती हुई चीज को हाथ से पकडकर या और किसी प्रकार से रोकना। पकड़ना। जैसे—मारनेवाले का हाथ थामना। ३ गिरती हुई चीज को पकडकर या उसके नीचे सहारा लगाकर उसे गिरने से रोकना। सँभालना। जैसे—चाँड ने ही यह छत थाम रखी है। ४ बीच मे आ या पड़कर किसी बिगड़ती हुई स्थिति को और अधिक बिगड़ने से रोकना। सँभालना। जैसे—समय पर वर्षा ने आकर थाम लिया, नही तो अभी अनाज और महँगा होता। ५ किसी काम या बात का उत्तरदायित्व या भार अपने ऊपर लेना। ६ किसी चीज का दूसरी चीज पर लग या सटकर उस पर चिपक या जम जाना। जैसे—लकडी या लोहे को रग जल्दी थामता है। ७ चलती हुई चीज को रोककर खडा करना। जैसे—गाडी थामना। ८ किसी को पकडकर पहरे या हिरासत मे लेना। (क्व०)

थामा†—पु० [स० स्तभ] खभा।

थाम्हना†—स०=थामना।

थायी†—वि०=स्थायी।

थार†—पु०=थाल।

थारा†—सर्व० [हि० तिहारा] तुम्हारा।

†पु०=थाला।

थारी—स्त्री०=थाली।

सर्व०=तुम्हारी।

थारू—पु० [देश०] नेपाल की तराई मे रहनेवाली एक अर्द्धसभ्य जाति।

थाल—पु० [हि० थाली] [स्त्री० अल्पा० थाली] भोजन आदि परोसने का धातु का बना हुआ चौडा, छिछला तथा गोल बरतन। बडी थाली।

थाला—पु० [स० स्थल, हि० थल] १ पेड, पौधे आदि के चारो ओर का वह गोल गड्ढा जिसमे पानी भरा जाता है। आल-बाल। २ किसी चीज के चारो ओर का उभरा हुआ गोलाकार दल या भाग। जैसे—इस फोडे ने बहुत थाला बाँधा है।

क्रि० प्र०—बाँधना।

पु० [?] दरवाजे की कुडी जिसमे ताला लगाया जाता है। (लश०)

थालिका—स्त्री० [हि० थाला] वृक्ष का थाला। आलबाल।

थाली—स्त्री० [स० स्थाली=बटलोई] १ धातु का बना हुआ गोलाकार छिछला, बडा बरतन जिसमे खाने के लिए भोजन परोसा जाता है।

पद—थाली का बैंगन=ऐसा व्यक्ति जिसका स्वय कोई सिद्धात न हो और जो उसी की प्रशसा तथा समर्थन करे जिससे उसे खाने को मिल जाता हो। **थाली जोड़**- थाली और उसके साथ कटोरा या कटोरी।

मुहा०—**थाली फिरना**- किसी स्थान पर इतनी अधिक भीड होना कि यदि ऊपर से उस भीड पर थाली फेकी जाय तो वह ऊपर ही ऊपर घूमती-फिरती रह जाय, जमीन पर गिरने न पाये। जैसे—उस मेले म तो थाली फिरती थी। **थाली बजना** थाली बजाते हुए साँप का विष उतारना। **थाली बजाना** (क) साँप का विष उतारने के लिए थाली बजाकर मत्र पढना। (ख) नवजात शिशु के समक्ष उसका भय दूर करने के लिए थाली बजाकर कुछ जोर का शब्द करना। **थाली भेजना** - किसी के यहा थाली मे रखकर भोजन, मिठाई आदि भेजना।

२. नाच की एक गत जिसमे बहुत थोडे से घेरे के अदर नाचना पडता है।

थाव—स्त्री०=थाह।

थावर—पु० [स० स्थावर] १ जो अपने स्थान से कभी न हटे। २ शात। ३ ठहरा हुआ। स्थिर। ४ दे० 'स्थावर'।

थाह—स्त्री० [स० स्था] १ किसी चीज की ऐसी अधिकता, गहराई, ज्ञान, महत्त्व आदि की सीमा जिसका पता लगाने के लिए प्रयत्न करना पडे। जैसे—उनके धन (या विद्या) की थाह पाना सहज नही है।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

मुहा०—**थाह लगाना या लेना** यह जानने का प्रयत्न करना कि अमुक चीज की गहराई कितनी है। जैसे—किसी के पाडित्य, मन या विचार की थाह लेना।

२ उक्त के आधार पर किसी चीज की अधिकता, महत्त्व, रहस्य आदि का होनेवाला ज्ञान या परिचय। जैसे—वे आपके मन की थाह लेने आये थे। ३ जलाशय (झील, नदी, समुद्र आदि) मे पानी के नीचे की जमीन या तल। जैसे—इस घाट पर पानी की थाह मिलना कठिन है।

क्रि० प्र०—मिलना।

मुहा०—**डूबते को थाह मिलना** सकट मे पडे हुए हताश व्यक्ति को कही से कुछ सहारा मिलना या मिलने की आशा होना।

४ पानी की गहराई की वह स्थिति जिसमे चलते हुए आदमी का पैर जमीन पर पडता हो। जैसे—जहाँ थाह न हो, वहाँ तैरना ही पडना है। उदा०—चरण छूते ही जमुना थाह हुई।—लल्लूलाल।

थाहना—स० [हि० थाह] १ किसी प्रकार की गहराई की थाह लेना या पता चलाना। २ किसी के मन के छिपे हुए भावो या विचारो का पता लगाना। थाह लेना।

थाहर—पु० थर (माँद)। उदा०—सूनी थाहर सिघरी, जाय सके नहि कोय।—बाँकीदास।

थाहरा† —वि० [हि० थाह] १ जिसकी थाह मिल चुकी हो अथवा सहज मे मिल सकती हो। २ (नदी-नाले के सबध म) कम गहरा। छिछला।

थाहे†—अव्य० [हि० थाह] (नदी, नाले की) गहराई म।

थिति†—स्त्री० तिथि।

थिएटर—पु० [अ०] [वि० थिएटरी] १ रगभूमि। नाट्यशाला। रगशाला। २ नाटक का अभिनय।

थिएटरी—वि० [अ० थिएटर] थिएटर अर्थात् रगशाला-सबधी।

थिगली—स्त्री० [हि० टिकली] कपडे, चमडे आदि का छेद बद करने के लिए उसके ऊपर टाँका जानेवाला कपडे, चमडे आदि का दूसरा टुकडा। चकती। पैबद।

क्रि० प्र०—लगाना।

मुहा०—**आसमान या बादल मे थिगली लगाना** (क) बहुत ही कठिन या दुष्कर काम पूरा करना या उसके लिए प्रयत्न करना। पहुँच के बाहर का कार्य करना। (ख) अनहोनी और असम्भव बाते कहना या काम करने का प्रयत्न करना।

थित*—वि० [सं० स्थित] [भाव० थिति] १ ठहरा हुआ। २ स्थापित। रखा हुआ।
†स्त्री० =तिथि। (पश्चिम)

थिति—स्त्री० [सं० स्थिति] १ ठहराव। स्थायित्व। २ ठहरने या विश्राम करने की जगह। ३. स्थिर रूप मे होनेवाला निवास। ४ बने रहने की अवस्था या भाव। ५ अवस्था। दशा। हालत।
†स्त्री० =तिथि।

थितिभाव—पु० [सं० स्थितिभाव] स्थायीभाव।

थिबाऊ†—पु० [देश०] मध्ययुग के ठगो की परिभाषा मे, शरीर के दाहिने अंग मे होनेवाली फड़कन जिसे वे लोग अशुभ समझते थे।

थियासोफिस्ट—पु० [अ०] वह जो थियासोफी के सिद्धान्तों को मानता तथा उनका अनुसरण करता हो।

थियासोफी—स्त्री० [अ०] १ ब्रह्म-विद्या। २ एक आधुनिक पाश्चात्य सम्प्रदाय जो यह मानता है कि आत्मा और परमात्मा अथवा जीव और ब्रह्म के पारस्परिक संबंध का सच्चा ज्ञान भौतिक साधनो मे नही, बल्कि आध्यात्मिक दृष्टिकोण अपनाने से ही होता है।

थिर—वि० [सं० स्थिर] १ जो चलता या हिलता-डुलता न हो। ठहरा हुआ। स्थिर। २ जिसमे चंचलता न हो। धीर और शात। ३ सदा बहुत-कुछ एक ही अवस्था में चलने या बना रहनेवाला। (विशेष दे० 'स्थिर')

थिरक—पु० [हि० थिरकना] थिरकने की क्रिया, अवस्था, ढंग या भाव।

थिरकना—अ० [सं० अस्थिर+करण] [भाव० थिरक] १ शरीर के किसी अंग का रह-रहकर और धीरे-धीरे किसी आधार या जमीन से कुछ ऊपर उठना और फिर जमीन पर आना। जैसे—नाचने मे पैर (या मृदंग बजाने मे हाथ) थिरकना। २ व्यक्ति का ऐसी स्थिति मे होना कि उसका सारा शरीर, मुख्यत पैर रह-रहकर जमीन से कुछ ऊपर उठे। जैसे—नाचनेवालो का थिरकना।

थिरकौहाँ†—वि० [हि० थिरकना+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० थिरकौही] १ रह-रहकर थिरकनेवाला। २ थिरकता हुआ।
वि० [हि० थिर=स्थिर] जो अपने स्थान पर स्थिर हो। ठहरा हुआ। स्थिर।

थिरजीह—पु० [सं० स्थिरजिह्व] मछली।

थिरता (ई)†—स्त्री० [सं० स्थिरता] १ ठहराव। स्थिरता। २ स्थायित्व। ३ धीरता। ४ शांति।

थिरथानी*—वि० [सं० स्थिर+स्थान] जो किसी स्थान पर स्थिर होकर रहे।
पु० लोकपाल। दिग्पाल।

थिरथिरा—पु० [देश०] बुलबुलों की एक जाति।

थिरना—अ० [सं० स्थिर, हि० थिर+ना (प्रत्य०)] १ पानी या किसी द्रव पदार्थ का हिलना-डोलना बंद होना। शात और स्थिर होना। २ जल या द्रव पदार्थ की उक्त अवस्था होने पर उसमे घुली या मिली चीजो का नीचे तह मे एकत्र होना या बैठना। ३. उक्त स्थिति में जल या द्रव पदार्थ का निर्मल या स्वच्छ होना। ४ दे० 'नियरना'।

थिरा—स्त्री० [सं० स्थिरा] पृथ्वी।

थिराना—स० [हि० थिरना] १ क्षुब्ध जल या द्रव पदार्थ को इस प्रकार स्थिर होने देना कि उसमे घुली हुई चीज नीचे बैठ जाय और जल या द्रव पदार्थ अपेक्षया साफ हो जाय।
विशेष—इस अर्थ मे इस शब्द का प्रयोग स्वयं जल के पक्ष मे भी होता है और उसमे घुली हुई चीज के पक्ष मे भी।
२. किसी प्रकार शात या स्थिर करना।

थी†—विभ० [सं० त, पु० हि० ते] से। (राज०) उदा०—जब थी हम तुम बीछुड़े ।—ढोलामारू।
सर्व० पु० हि० मे 'तू' या 'तुम' का एक रूप। उदा०—जो मै थी कौ साँचा व्यास।—कबीर।
अ० हि० भूतकालिक क्रिया 'था' का स्त्री०।
*वि०=स्थित।

थीकरा*—पु० [सं० स्थिति+कर] किसी स्थिति को सँभालने का भार अथवा कोई कार्य करने का (अपने ऊपर) लिया जानेवाला दायित्व या भार।
विशेष—मध्ययुग मे किसी गाँव या बस्ती मे किसी प्रकार की विपत्ति की सम्भावना होने पर वहाँ के रहनेवाले लोग बारी-बारी से रक्षा या सहायता का जो भार अपने ऊपर लेते थे, वह 'थीकरा' कहलाता था।

थीता—पु० [सं० स्थित, हि० थित] १ स्थिरता। २ शांति। ३ कल। चैन।
वि० १.=स्थित। २=स्थिर।

थीति—स्त्री०=स्थिति।

थीथी*—स्त्री० [सं० स्थिति] १ स्थिति। २ शांति। ३ धैर्य। धीरज। ४ चैन। सुख।

थीर (१)*—वि० थिर।

थुकवाना—स० [हि० थूकना का प्रे०] १ किसी को कही अथवा कुछ थूकने मे प्रवृत्त करना। २ किसी के द्वारा दूसरे को परम घृणित और निन्दनीय सिद्ध करना। ३ उगलवाना।

थुकहाया†—वि० [हि० थूक+हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० थुकहाई] जिस पर सब लोग थूकते हो, अर्थात् जिसकी सब लोग बहुत निंदा करते हो।

थुकाई—स्त्री० [हि० थूकना] थूकने की क्रिया या भाव।

थुकाना—स० थुकवाना।

थुकायल, थुकेल—वि० दे० 'थुकहाया'।

थुक्का-फजीहत—स्त्री० [हि० थूक+अ० फजीहत] ऐसी कहा-सुनी या झगड़ा जिसमे दोनों पक्षों की खूब दुर्दशा और बेइज्जती हो तथा दोनो एक दूसरे का घोर तिरस्कार करते हुए थू-थू कहते हो।

थुक्की†—स्त्री० दे० 'थुड़ी'।

थुड़ना—अ० [हि० थोड़ा] १. थोड़ा या कम होना। २ थोड़ा या कम पड़ना। (पश्चिम)

थुड़ी—स्त्री० [हि० थू थू से अनु०] १ एक परम घृणासूचक और धिक्कार का शब्द जो बहुत ही निन्दनीय काम करनेवाले के प्रति यह बतलाने के लिए प्रयुक्त होता है कि हम तुम पर थूकते है। जैसे—उनके इस आचरण पर सब लोग थुड़ी-थुड़ी कर रहे हैं। २ धिक्कार। लानत।

थुत—भू० कृ० [सं० स्तुत] जिसकी स्तुति हुई या की गई हो।

थुतकार—स्त्री०=थुथकार।

थुतकारना—स० =थुथकारना।

थुत्कार—पु० [स० √कृ (करना)+घञ्- कार, थुत्—कार ष० त०] १ थूकने की क्रिया या भाव। २ थूकने से होनेवाला शब्द।

थुथकार—स्त्री० [हि० थू थू से अनु०] १ किसी के परम घृणा और धिक्कार का सूचक थू-थू शब्द। २ परम घृणित स्त्री। ३ पैर की जूती। ४ पैरो मे डाली जानेवाली बेडी। ५ छिपकली। (मुसल० स्त्रियाँ)

थुथकारना—स० [हि० थुथकार] थू थू या थुडी थुडी करते हुए किसी को परम घृणित या निंद्य ठहराना या बतलाना।

थुथना[+]—पु० थूथन।

थुथाना—अ० [हि० थूथन] १ थूथन फुलाना अर्थात् नाराज होकर मुँह फुलाना। (व्यग्य) २ उदासीन भाव से मुँह फुलाकर चुपचाप बैठे रहना।

थुनी*—स्त्री०=थूनी।

थुनेर—पु० [स० स्थूण, हि० थून] गठिवन का एक भेद जो वद्यक मे त्रिदोष नाशक तथा वीर्यवर्धक माना जाता है।

थुन्नी[†]—स्त्री० थूनी।

थुपथुपी—स्त्री० थपकी।

थुपरना—स० [स० स्तूप, हि० थूप] महुए की बालो का ढेर इस उद्देश्य से लगाना कि उनमे गर्मी आवे और वे कुछ पक जायँ।

थुपरा—पु० [स० स्तूप] महुए की बालो का ढेर जो दबाकर औसने के लिए रखा जाय।

थुरना—अ० [स० थुर्वण=मारना, हि० 'थूरना' का अ० रूप] थूरा (अर्थात् कूटा या मारा-पीटा) जाना।

[†]अ० थुडना (कम पडना)।

थुर-हथा—वि० [हि० थोड+हाथ] [स्त्री० थुर-हथी] १ जो अपने छोटे-छोटे हाथो के कारण चगुल, मुट्ठी या हथेली मे अधिक चीज न ले सकता हो। उदा०—कन देबो सौप्यो ससुर बहू थुर-हथी जानि।—बिहारी। २ जो इतना कजूस हो कि दूसरा को उठाकर थोडी-सी चीज ही दे सकता हो, अधिक न दे सकता हो। ३ मितव्ययी। कजूस।

थुलथुल—वि० [अनु०] अधिक क्षीण होने के कारण जिसके शरीर का कोई मासल अग झूलने या हिलने लगे।

थुलमा—पु० [स० उल्वण ?] एक प्रकार का पहाडी मोटा कबल जिसमे एक ओर रोएँ ऊपर उठे हुए होते है।

थुली—स्त्री० [स० स्थूल, हि० थूला] मोटे कणो के रूप मे दले हुए अन्न के दाने। दलिया।

थूंक—पु० थूक।

थूंकना—स० =थूकना।

थू—अव्य० [अनु०] १ थूकने का शब्द। २ एक घृणासूचक शब्द।

थूआ[†]—पु० [स० स्तूप, प्रा० थूप, थूव] १ मिट्टी आदि का ऊँचा टीला। ढूह। २ गीली मिट्टी का लोदा। धाधा। ३. मिट्टी का वह ढूह या मेड जो सीमा आदि सूचित करने के लिए बनाई जाती है। ४. गीली मिट्टी का वह ढेर या लोदा जो ढेकली आदि की लकडी पर भार के रूप मे रखा जाता है। ५ किसी गीले पदार्थ का गोलाकार ढेर। जैसे—पीने के तमाकू का थूआ जो तमाकू की दुकानो पर रहता है। ६ वह बोझ जो कपडे मे बँधी हुई राब के ऊपर उसकी जूसी निकालने के लिए रखा जाता है।

थूक—पु० [अनु० थू थू] १ वह गाढ़ा, लसीला सफेद पदार्थ जो मुँह से प्रयत्नपूर्वक निकालकर बाहर गिराया या फेका जाता है।

पद—थूक है=(तुम्हे) धिक्कार या लानत है।

मुहा०—थूक उछालना व्यर्थ की बकवाद करना। **थूक बिलोना** व्यर्थ की कहा-सुनी या बकवाद करना। **(किसी को) थूक लगाना** बुरी तरह से नीचा दिखाना या परास्त करना। (अशिष्ट और बाजारू) **थूक लगाकर रखना**- बहुत बुरी तरह से जोड-जोडकर इकट्ठा करना या रखना। बहुत कजूसी से जमा करना। **थूको सत्तू सानना** कजूसी के कारण बहुत थोडे व्यय मे बहुत बडा काम करने का प्रयत्न करना।

थूकना—स० [हि० थूक+ना (प्रत्य०)] १ मुंह मे आई हुई थूक अथवा रखी हुई कोई चीज बाहर गिराना या फेकना।

मुहा०—किसी (व्यक्ति या वस्तु) पर न थूकना=इतना अधिक घृणित समझना कि उस पर थूकने तक को जी न चाहे। **थूक कर चाटना** —(क) कोई वचन देकर मुकर जाना। (ख) किसी को कोई वस्तु देकर बाद मे फिर ले लेना। (ग) फिर कभी वैसा घृणित काम न करने की प्रतिज्ञा करना।

२ किसी के प्रति अपनी परम घृणा प्रकट या प्रदर्शित करना।

थूथन—पु० [देश०] १ कुछ विशिष्ट प्रकार के पशुओ का लबोतरा और कुछ आगे की ओर निकला हुआ मुँह। जैसे—घोडे, बैल या सूअर का थूथन। २ रुष्ट व्यक्ति का फूला हुआ और रोषसूचक मुँह। (व्यग्य)

मुहा०—थूथन फुलाना किसी से बहुत रुष्ट होकर बिलकुल चुप हो जाना। मुँह फुलाना। (व्यग्य)

थूथनी—स्त्री० [हि० थूथन] १ छोटा थूथन। २ हाथी के मुँह का एक रोग जिसमे ऊपर के तालू मे घाव हो जाता है। ३ दे० 'थूथन'।

थूथरा—वि० [हि० थूथन] जो आकार-प्रकार या रूप-रग मे थूथन की तरह का हो।

थूथुन[†]—पु०=थूथन।

थून—स्त्री० [स० स्थूण] थूनी। खभा।

पु० दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का मोटा गन्ना।

थूना—पु० [देश०] मिट्टी का वह लोदा जिसमे रेशम, सूत आदि फेरने का परेता खोसा जाता है।

थूनि[†]—स्त्री०=थूनी।

थूनी—स्त्री० [स० स्थूण] १ लकडी आदि का खडा गडा हुआ बल्ला। खभा। २ भारी चीज को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे लगाई जानेवाली मोटी और लबी लकडी। चाँड। ३ वह गड़ी हुई लकडी जिसमे रस्सी के फदे से मथानी का डडा खडा रखा जाता है। ४. आश्रय या रक्षा का स्थान। उदा०—कबीर थूनी पाई थित भई सति गुरु बाँधी धीर।—कबीर।

थून्हीं[†]—स्त्री० =थूनी।

थूबी—स्त्री० [देश०] साँप के काटे हुए स्थान को गरम लोहे से दागकर विष दूर करने की क्रिया या प्रकार।

थूर—पु० [स० तूवर] अरहर।

स्त्री० [हि० थूरना] थूरने की क्रिया या भाव।

थूरना†—स० [सं० थुर्वण-मारना] १ अच्छी तरह कूटना। २ अच्छी तरह मारना-पीटना। ३ खूब कसकर भरना। ४ खूब कस कर और भर पेट भोजन करना। (व्यग्य) उदा०—कैसी गधी हो, बच्चों का खाना हो हँसती। गालिब तो तीन टट्टू का जाती हो थूर आप।—जान साहब।

थूल*—वि० [सं० स्थूल] १ मोटा। भारी। २ भद्दा।

थूला—वि० [सं० स्थूल] [स्त्री० थूली] १ मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २ भारी और मोटा।

थूली—स्त्री० [हि० थूला मोटा] १ किसी अनाज के दले हुए मोटे दाने। दलिया। २ पकाया हुआ दलिया। ३ सूजी।

थूवा—पु०=थुआ। (देखे)

थूहड़—पु०=थूहर।

थूहर—पु० [सं० स्थूल] एक प्रकार का झाड़ या पौधा जिसमे लचीली टहनियों की जगह प्राय बड़ी गुल्ली या छोटे डडे के आकार के मोटे और गाँठदार डठल निकलते है और जिसके पत्तो मे से एक प्रकार का कड़ुआ दूध निकलता है। सेहुड।

थूहा—पु० [सं० स्तूप, प्रा० थूब] [स्त्री० अल्पा० थूही] १ छोटा टीला। ढूह। २ ढेर। राशि। ३ कुओं आदि पर मिट्टी के बने हुए वे दोनो खभे जिन पर वह लकड़ी या लोहे का छड़ रखा जाता है जिसमे गराड़ी पहनाई हुई होती है।

थेई-थेई—स्त्री० [अनु०] १ नृत्य का ताल सूचक शब्द। २ थिरक थिरककर नाचने की मुद्रा।

क्रि० प्र०—करना।

थेगली—स्त्री०=थिगली।

थेथर†—वि० [सं० शिथिल] १ बहुत अधिक थका हुआ। २ जो कष्ट, दुर्दशा आदि भोगता-भोगता हद से ज्यादा तग या परेशान हो गया हो।

थेथरई†—स्त्री० [हि० थेथर] १ थेथर होने की अवस्था या भाव। २ निर्लज्जतापूर्वक किया जानेवाला दुराग्रह। ३. अपने दोषों, भूलो आदि पर ध्यान न देकर निर्लज्जतापूर्वक सब के सामने सिर उठाकर उद्दडतापूर्वक की जानेवाली बात।

थेवा—पु० [देश०] १ अँगूठी मे जड़ा हुआ नगीना। २ अँगूठी के ऊपर लगा हुआ वह घर जिसमे नगीना जड़ा या बैठाया जाता है।

थै—अव्य० [पु० हि० ते] से। उदा०—वेद बड कि जहाँ थै आया।—कबीर।

थैचा—पु० [देश०] खेत मे बनी हुई मचान का छप्पर।

थै-थै—अ० य० [सं० अव्यक्त शब्द] नृत्य, वाद्य आदि का अनुकरणात्मक शब्द।

थैला—पु० [सं० स्थल कपड़े का घर] [स्त्री० अल्पा० थैली] १ कपड़े या ऐसी ही और किसी चीज के लम्बे टुकड़े को दोहरा करके और दोनो ओर से सीकर छोटे बोरे की तरह बनाया हुआ वह आधान जिसमे चीजें भरकर रखते है। एक प्रकार का झोला।

मुहा०—(किसी को) थैला करना=मारते-मारते बेदम कर देना।

विशेष—पहले कहीं-कहीं टाट के बड़े थैलो मे या बोरो मे अपराधियो को भरकर और ऊपर से थैले का मुँह बद करके घूँसों, ठोकरों आदि से खूब मारते थे। इसी से यह मुहावरा बना है।

२ पायजामे का वह भाग जो जघे से घुटने तक और देखने मे बहुत कुछ उक्त आधान की तरह होता है।

थैली—स्त्री० [हि० थैला] १ छोटा थैला। २ एक विशेष प्रकार की छोटी थैली जिसमे रुपए आदि रखे जाते है।

मुहा०—थैली खोलना या थैली का मुँह खोलना यथेष्ट धन व्यय करने के लिए प्रस्तुत होना।

३ वह धन जो थैली मे भरकर किसी बड़े आदमी को समर्पित किया जाता है। जैसे—कांग्रेस अध्यक्ष को वहाँ दस हजार की थैली भेंट की गई है। ४ उक्त आकार-प्रकार की कोई ऐसी चीज जिसके अदर कोई दूसरी चीज सुरक्षापूर्वक बद हो अथवा रहती हो। जैसे—गर्भकाल मे बच्चा झिल्ली की थैली मे बद रहता है।

थैलीदार—पु० [हि० थैली+फा० दार] १ वह आदमी जो खजाने मे रुपयों की थैलियाँ उठाकर रखता या लाता है। २ तहवीलदार। रोकड़िया।

थैली-बरदारी—स्त्री० [हि० थैली+बरदारी] दूसरे की थैली (या धन) उठाकर इधर-उधर ले जाना।

थोक—पु० [सं० स्तोक या स्तोमक, प्र० थोवँक, हि० थोक] १ एक ही तरह की बहुत सी चीजों का ढेर या राशि। थाक। (देखे)

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

२ चीजे बेचने का वह प्रकार जिसमे एक ही तरह की बहुत-सी चीजे एक साथ या इकट्ठी और प्राय दूकानदारो या बड़े ग्राहकों के हाथ कम मुनाफे पर बेची जाती है। 'खुदरा' या 'फुटकर' का विपर्याय। ३ जत्था। झुड। दल। ४ वह स्थान जहाँ कई गाँवों की सीमाएँ मिलती हों। ५ जमीन का वह बड़ा टुकड़ा जो एक ही मालिक के हाथ मे हो।

थोकदार—पु० [हि० थोक+फा० दार] वह व्यापारी जो थोक का कार्य करता हो।

थोड़†—स्त्री० [हि० थोड़ा] १ थोड़े होने की अवस्था या भाव। कमी। जैसे—यहाँ खाने-पीने की कोई थोड़ नही है। २ ऐसा अभाव या कमी जिसकी पूर्ति की आवश्यकता जान पड़ती हो। जैसे—हमारे यहाँ भी बच्चों की थोड़ है। (पश्चिम)

थोड़न—पु० [सं० थुड् (ढाँकना)] ढाँकने या लपेटने की क्रिया या भाव।

थोड़ा—वि० [सं० स्तोक, पा० थोअ+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० थोड़ी] १ जो मात्रा, मान आदि मे आवश्यक या उचित से बहुत कम हो। अल्प। जैसे—यह कपड़ा कुर्ते के लिए थोड़ा होगा।

मुहा०—(व्यक्ति का) थोड़ा थोड़ा होना=लज्जित या सकुचित होना या होता हुआ जान पड़ना।

पद—थोड़ा बहुत अधिक या यथेष्ट नही। कुछ-कुछ। **थोड़े में**=सक्षेप मे। **थोड़े ही**=बिलकुल नही। जैसे—हम वहाँ थोड़े ही गये थे। २ केवल उतना, जितने से किसी तरह काम चल जाय। जैसे—कहीं से थोड़ा नमक ले आओ।

क्रि० वि० अल्प मात्रा या मान मे। कुछ। जरा। जैसे—थोड़ा ठहरकर चले जाना।

थोती†—स्त्री० थोथी।

थोथ—स्त्री० [हि० थोथा] १. थोथे होने की अवस्था या भाव। थोथापन। २ खोखलापन। ३. निस्सारता।

†स्त्री०- नांद।

थोथरा—वि० -थोथा।

थोथा—वि० [देश०] [स्त्री० थोथी] १ जिसके अदर का सार भाग नष्ट हो गया हो या निकल गया हो। २ जिसमे कुछ भी तत्त्व या सार न हो। निसार। जैसे—थोथी बाते, थोथा विवाद। ३ निकम्मा, बेढगा और भद्दा। ४ (पक्षी या पशु) जिसकी दुम कटी हो। बाँडा। ५ (शस्त्र) जिसकी धार कुठित हो गई हो या घिस गई हो। भोथरा।

थोथी—स्त्री० [हि० थूथन] थूथन का अगला छोटा नुकीला भाग।

†स्त्री० [?] एक प्रकार की घास।

थोपडी—स्त्री० [हि० थोपना] चाँद अर्थात् खोपडी के बीचवाले भाग पर लगाई जानेवाली हलकी चपत या धौल। थोपी।

थोपना—स०[स० स्थापन; हि०थापना] १ किसी चीज पर कोई गाढी गीली चीज इस प्रकार कुछ जोर से फेकना या रखना कि उसकी मोटी तह-सी जम जाय। मोटा लेप लगाना। जैसे—(क) कच्ची दीवार की मरम्मत करने के लिए उस पर गीली मिट्टी थोपना। (ख) शरीर के किसी पीडित अग पर कोई गीली पिसी हुई दवा थोपना।

सयो० क्रि०—देना।

२ अभियोग, उत्तरदायित्व, भार आदि बलपूर्वक किसी पर रखना या लगाना। आरोपित करना। मत्थे मढना। जैसे—किसी के सिर कोई कलक (या काम) थोपना। ३ दे० 'छोपना'।

थोपी—स्त्री० [हि० थोपना] वह हलकी चपत या धौल जो प्राय बच्चे खेलते समय आपस मे एक दूसरे के सिर पर लगाते है। थोपडी।

थोबड़ा—पु० [देश०] १ जानवरो का निकला हुआ लम्बा मुंह। थूथन। २ व्यक्ति के मुंह की वह आकृति जो मन ही मन बहुत रुष्ट होने पर होती है। फूला हुआ मुंह। ३ दे० 'तोबडा'।

थोभ—स्त्री० [स० स्तोम] बाधा। रुकावट।

पु० [देश०] केले की पेडी के बीच का गाभा।

थोर†—पु० थूहर।

†वि० थोडा।

†स्त्री० =थोड।

थोरा—वि० थोडा।

थोरिक—वि० [हि० थोरा + एक] थोडा-सा। तनिक-सा।

थोरी—स्त्री० [देश०] एक अनार्य जाति।

थोंद—स्त्री नांद।

थ्यावस—पु० [स० स्थैयस] १ ठहराव। स्थिरता। २ धीरता। धैर्य।

द

द—देवनागरी वर्णमाला के तवर्ग का तीसरा वर्ण, जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से घोष, अल्पप्राण, स्पर्शी, दन्त्य व्यजन है।

प्रत्य० [स०√दा (दान करना)+क] [स्त्री० दा] शब्दो के अत मे लगकर यह प्रत्यय के रूप मे 'देनेवाला' का अर्थ देता है। जैसे—करद, जलद, फलद और कामदा, धनदा आदि।

दग—वि० [फा०] अप्रत्याशित अथवा अनोखी बात देखकर जो बहुत अधिक चकित या स्तब्ध-सा हो गया हो।

क्रि० प्र०—रह जाना।—हो जाना।

पु० १ डर। भय। २ घबराहट।

†पु० दे० 'दगा'।

दगई—वि० [हि० दगा] १ दगा या लडाई-झगडा करनेवाला। उपद्रवी। झगडालू। २ उग्र। तीव्र। प्रचड। ३ बहुत बडा या भारी। दगल। (क्व०)

स्त्री० १ दगा-फसाद या लडाई-झगडा करने की प्रवृत्ति। २ दगा-फसाद। उपद्रव।

दगल—पु० [फा०] १ पहलवानो की वह प्रतियोगिता, जिसमे प्रतिद्वन्द्वी को कुश्ती मे जीतने पर प्राय पुरस्कार के रूप मे विशिष्ट धन-राशि मिलती है। २ उक्त के आधार पर कुश्ती लडने का अखाडा जिसमे उक्त प्रकार की बहुत-सी प्रतियोगिताएँ होती है। ३ कोई ऐसी प्रतियोगिता जिसमे बहुत-से प्रतियोगी सम्मिलित हुए या होते हो। जैसे—कवियो या गवैया का दगल। ४ मोटा गद्दा। तोशक।

वि० सामान्य आकार-प्रकार मे बहुत अधिक या बडे आकार-प्रकार-वाला। जैसे—दगल मकान।

दगली—वि० [फा०] १ दगल-सबधी। २ दगलो मे सम्मिलित होने-वाला। (पूरब) ३ जिसने दगलो मे विजय प्राप्त की हो। ४ बहुत बडा या भारी।

दंगवारा†—पु० [हि० दगल+वारा (प्रत्य०)] एक किसान द्वारा दूसरे किसान को हल-बैल आदि देकर की जानेवाली सहायता। जिता। हरसीत।

दगा—पु० [फा० दगल] १ ऐसा झगडा या लडाई, जिसमे मार-पीट भी हो। उपद्रव। उदा०—जियत पिता से दगम-दगा। मुए पिता पहुँचाये गगा। —कबीर। २ विधिक क्षेत्र मे, ऐसा उपद्रव, जिसमे बहुत-से लोग विशेषत विभिन्न दलो के लोग आपस मे मार-पीट, लूट-पाट आदि करके सार्वजनिक शाति भग करते हो। ३ गुल-गपाडा। हो-हल्ला। शोर।

दगाई—पु० [हि० दगा] दगा या उपद्रव करनेवाला व्यक्ति।

स्त्री०=दगई।

दगैत†—पु०=दगाई।

दड—पु० [स०√दड् (दड देना)+घञ्] १. बाँस, लकडी आदि का वह गोलाकार लबा डडा, जो प्राय चलने के समय सहारे के लिए हाथ मे रखा जाता अथवा किसी को मारने-पीटने के काम आता है। लाठी। सोटा। २. उक्त आकार की कोई लबी लकडी, जो कुछ चीजो मे

उन्हे चलाने, पकडने आदि के लिए लगी रहती है। डंडा। डाँडी। जैसे—तुला का दड, ध्वजा या पताका का दड, मथानी का दड, हल मे का दड आदि। ३ उक्त प्रकार की वह पतली, लबी लकडी जो सन्यासी सदा हाथ मे रखते है।

मुहा०—दंड ग्रहण करना-सन्यास-आश्रम ग्रहण करना या उसमे प्रवेश करना।

४ उक्त आकार-प्रकार की कोई पतली, लबी चीज। जैसे—भुज-दड, मेरु-दड। ५ जहाज या नाव का मस्तूल। ६ लबाई की एक पुरानी नाप जो प्राय चार हाथ की होती थी। ७ समय का एक मान जो ६० पलो का होता है। घडी। ८ वास्तुशास्त्र मे, ऐसा आँगन जिसके उत्तर और पूर्व मे कोठरियाँ हो। ९ ज्योतिष मे, एक प्रकार का योग। १० एक प्रकार की कसरत, जो जमीन पर हाथो और पैरो के पजो के बल उलटे लेटकर की जाती है और जिसमे भुज-दडो की शक्ति बढती है।

क्रि० प्र०—करना।—पेलना।—मारना।—लगाना।

११ अश्व। घोडा। १२ उत्पात, उपद्रव आदि का दमन या शमन। शासन। १३ कोई अनुचित काम या अपराध करनेवालो को उसके बदले मे दी जानेवाली सजा। (पनिशमेन्ट)। १४ सेना, जो प्राचीन काल मे अपराधियो को दड देने के उद्देश्य से रखी जाती थी। १५ अर्थ-दड। जुरमाना। १६ कोई अपराध, प्रतिज्ञा-भग अथवा किसी का कोई अपकार या हानि करने के बदले मे दिया या लिया जानेवाला धन। हरजाना। (पैनेल्टी)

क्रि० प्र०—पडना।—भोगना।—लगना।—सहना।

मुहा०—(किसी पर) दड डालना यह कहना या निश्चित करना कि अमुक व्यक्ति दड के रूप मे इतना धन दे। **दड भरना**=किसी के अपकार या हानि के बदले मे अथवा प्रतिकार-स्वरूप कुछ धन देना।

१७ यमराज जो मरने पर प्राणियो को दड या सजा देते है। १८ विष्णु। १९ शिव। २० कुबेर के एक पुत्र का नाम। २१ इक्ष्वाकु के सौ पुत्रो मे से एक। २२ दे० 'दडवत्'। २३ दे० 'दड-व्यूह'।

दड-कदक—पु० [स० ब० स०, कप्] सेमल का मुसला। धरणी-कद।

दडक—वि० [स०√दड्+णिच्+ण्वुल्—अक] दड देने या दडित करनेवाला।

पु० १ डडा। सोटा। २ दड देनेवाला व्यक्ति। ३ राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र जिनके नाम पर दडकारण्य का नामकरण हुआ था। ४ छदशास्त्र के अनुसार (क) ऐसा मात्रिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ से अधिक मात्राएँ हो अथवा (ख) ऐसा वर्णिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २६ से अधिक वर्ण हो। ५ एक प्रकार का वात-रोग जिसमे हाथ, पैर, पीठ, कमर आदि अग स्तब्ध होकर ऐठ-से जाते है। ६ सगीत मे शुद्ध राग का एक प्रकार या भेद। ७ दे० 'दडकारण्य'।

दडक-ज्वर—पु० [स०] मच्छरो के दश से फैलनेवाला एक प्रकार का ज्वर जिसमे सारे शरीर मे पीडा होती है और शरीर तथा आँखें लाल हो जाती है। (डेंग्यू)

दडकला—स्त्री० [स०] दुर्मिल छद का एक भेद, जिसके अत मे एक गुरु अथवा सगण होता है।

दंडका—स्त्री० [स० दण्डक+टाप्]=दडकारण्य। (दे०)

दंडकारण्य—पु० [स० दण्डक-अरण्य मध्य० स०] एक प्रसिद्ध बहुत बडा वन, जो विध्यपर्वत और गोदावरी नदी के बीच मे पडता है। सीता का हरण रावण ने इसी वन मे किया था। आज-कल इसका कुछ अश साफ करके मनुष्यो के बसने योग्य किया जाने लगा है।

दडकी—स्त्री० [स० दण्डक+ङीष्] १ छोटा डडा। २ छडी।

दंडगौरी—स्त्री० [स०] एक अप्सरा।

दंडघ्न—वि० [स० दण्ड√हन् (चोट पहुँचाना)+टक्] १ डडे से मारनेवाला। २ दड या सजा न माननें या उसकी परवाह न करनेवाला।

दडचारी (रिन्)—पु० [स० दण्ड√चर् (घूमना)+णिनि] सेना का अध्यक्ष। सेनापति। (कौ०)

दड-ढक्का—पु० [मध्य० स०] एक तरह का ढोल या नगाडा।

दड-ताम्र—स्त्री० [मध्य० स०] जलतरग बाजा, जिसमे पहले ताँबे की कटोरियाँ काम मे लाई जाती थी।

दड-दास—पु० [मध्य० स०] वह व्यक्ति जो अर्थ-दड न दे सकने पर उसके बदले मे किसी की दासता करता हो।

दड-धर—वि० [ष० त०] १ हाथ मे डडा या लाठी रखनेवाला। २ दड धारण करनेवाला।

पु० १ यमराज। २ शासक। हाकिम। ३ सन्यासी। ४ प्राचीन भारत मे एक प्रकार के राजपुरुष जो शासन आदि की व्यवस्था मे सहायता देते थे। ५ वह, जो लाठियो से मार-पीट या लडाई-झगडा करते हो। लठैत। लठबद।

दडधारी (रिन्)—वि० [स० दण्ड√धृ (धारण करना)+णिनि] डडा रखनेवाला।

पु०=दडधर।

दंडन—पु० [स०√दण्ड्+ल्युट्—अन] [वि० दडनीय, दडित, दड्य] १ दड देने अथवा किसी को दडित करने की क्रिया या भाव। दड देना। २ शासन।

दडना†—स० [स० दडन] किसी को दड देना या किसी पर दड लगाना। दडित करना।

दड-नायक—पु० [ष० त०] १ वह शासनिक अधिकारी जो प्राचीन भारत मे अपराधियो को दड देने तथा राज्य मे सुव्यवस्था तथा शान्ति बनाये रखने का काम करता था। २ शासक। हाकिम। ३ सेनापति। ४ सूर्य के एक अनुचर का नाम।

दड-नीति—स्त्री० [ष० त०] १ अपराधी को दडित करने की नीति। २ दड देकर किसी को वश मे लाने या रखने की नीति। ३ दे० 'दड-विधान'।

दंडनीय—वि० [स०√दण्ड्+अनीयर्] १ (व्यक्ति) जिसे दड दिया जाने को हो। २ जिसे दड दिया जा सकता हो। दडित किये जाने के योग्य। ३ (कार्य) जिसे करने पर दड मिल सकता हो। जैसे—दडनीय अपराध।

दड-पांशुल—पु० [तृ० त०] द्वारपाल।

दंड-पाणि—वि० [ब० स०] १ जिसके हाथ मे दड या डडा हो।

पु० १. यमराज। २ काशी मे भैरव की एक मूर्ति। ३ दडनायक। (दे०)

दंड-पात—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमें रोगी को नींद नहीं आती और वह पागलों की तरह इधर-उधर दौड़ता-फिरता है।

दंड-पारुष्य—पुं० [ष० त०] १ उचित से अधिक और बहुत ही कठोर दंड या सजा।

विशेष—प्राचीनों ने इसे भी राजाओं के सात मुख्य दुर्व्यसनों में माना था।

२ आक्रमण। चढ़ाई।

दंडपाल—पुं० [सं० दण्ड√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अण्, उप० स०] १ न्यायाधीश। २ वह पहरेदार, जो हाथ में डंडा लेकर घूमता हो। ३ ड्योढ़ीदार। द्वारपाल। ४ एक प्रकार की मछली।

दंडपालक—पुं० [दण्डपाल+कन्] दंडपाल।

दंडपाशक—पुं० [ब० स०, कप्] १ दंड देनेवाला अधिकारी या कर्मचारी। २ फाँसी देनेवाला कर्मचारी। जल्लाद।

दंड-प्रणाम—पुं० [मध्य० स०] भूमि में डंडे के समान पड़कर प्रणाम करने की मुद्रा। दंडवत्।

दंडबालधि—पुं० [ब० स०] हाथी।

दंडभृत—वि० [सं० दण्ड√भृ (धारण करना)+क्विप्] डंडा रखने, चलाने या घुमानेवाला।

पुं० कुम्हार। कुंभकार।

दंड-मत्स्य—पुं० [उपमि० स०] एक तरह की मछली। बाम मछली।

दंड-माथ—पुं० [मध्य० स०] मुख्य और सीधा रास्ता।

दंडमान*—वि० [सं० दंड+हिं० मान (प्रत्य०)] दे० दंडनीय।

दंड-मानव—पुं० [मध्य० स०] १ वह व्यक्ति जिसे अधिक या बराबर दंड दिया जाता हो। २ बालक।

दंड-मुख—पुं० [ब० स०] सेनापति।

दंड-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] १ तंत्र की एक मुद्रा, जिसमें हाथ के बीच की उँगली दंड के समान खड़ी रहती है और शेष उँगलियाँ बँधी या मुँदी रहती हैं। २ साधुओं के दो चिह्न—दंड और मुद्रा।

दंड-यात्रा—स्त्री० [च० त०] १ सेना की वह चढ़ाई, जो किसी देश या राजा को दंड देने के उद्देश्य से हो। २ दिग्विजय के लिए होनेवाली यात्रा। ३ किसी प्रकार का सैनिक आक्रमण या चढ़ाई। ४ वर-यात्रा। बरात।

दंडयाम—पुं० [सं० दण्ड√यम् (नियंत्रण करना)+अण, उप० स०] १ यम। २ अगस्त्य मुनि। ३ दिन। दिवस।

दंडरी—स्त्री० [सं० दण्ड√रा (देना)+क–ङीष ?] एक तरह का ककड़ी की जाति का फल। डँगरी फल।

दंडवत—पुं० [सं० दण्ड+वति] दंड के समान सीधे होकर तथा पृथ्वी पर औंधे लेटकर किया जानेवाला नमस्कार। साष्टांग प्रणाम।

वि० डंड के समान, खड़ा या सीधा।

दंड-वध—पुं० [तृ० त०] वध करने या किये जाने का दंड। प्राण-दंड। मृत्यु-दंड।

दंडवासी (सिन्)—पुं० [सं० दण्ड√वस् (बसना)+णिनि] १ द्वारपाल। दरबान। २ गाँव का हाकिम या मुखिया।

दंडवाही (हिन्)—पुं० [सं० दण्ड√वह् (वहन करना)+णिनि] वह प्राचीन कर्मचारी जो हाथ में डंडा रखकर शान्ति की व्यवस्था करता था (आज-कल के पुलिस-सिपाही की तरह का)।

दंड-विज्ञान—पुं० [ष० त०] समाज शास्त्र की वह शाखा, जिसमें इस बात का विचार होता है कि अपराधियों पर दंड का कैसा उल्टा परिणाम होता है और अपराधियों को दंड न देकर किस प्रकार सहानुभूति-पूर्वक अन्य उपायों से सुधारा जा सकता है। (पेनॉलोजी)

दंड-विधान—पुं० [ष० त०] १ दंड देने के लिए किया जानेवाला विधान या व्यवस्था। २ दे० 'दंडविधि'।

दंड-विधि—स्त्री० [ष० त०] वह विधि या विधान जिसमें विभिन्न अपराधों तथा उनके अनुरूप दंडों का अभिदेश होता है।

दंड-वृक्ष—पुं० [मध्य० स०] सेहुँड़ या थूहर का पेड़, जिसकी डालियाँ डंडे की तरह मोटी और सीधी होती हैं।

दंड-व्यूह—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार की प्राचीन व्यूह-रचना, जो प्रायः डंडे के आकार की होती थी और जिसमें आगे बलाध्यक्ष, बीच में राजा, पीछे सेनापति, दोनों ओर हाथी, हाथियों के बगल में घोड़े और घोड़ों के बगल में पैदल सिपाही रहते थे।

दंड-शास्त्र—पुं० [ष० त०] १ वह शास्त्र, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि किसे अथवा कौन-सा अपराध करने पर कितना अथवा क्या दंड दिया जाना चाहिए। २ दे० 'दंड-विधान'।

दंड-संधि—स्त्री० [मध्य० स०] लड़ाई में सेना का सामान लेकर की जानेवाली संधि।

दंड-संहिता—स्त्री० [ष० त०] वह ग्रंथ जिसमें किसी देश में अपराधों के के लिए दिये जानेवाले दंडों का विधान हो। दंड-विधि। (पेनल-कोड)

दंड-स्थान—पुं० [ष० त०] १ वह स्थान जहाँ लोगों को दंड दिया जाता हो। २ वह जनपद या राष्ट्र जिस पर मुख्यतः सेना के बल पर ही शासन होता हो। (कौ०)

दंड-हस्त—पुं० [ब० स०] तगर का फूल।

वि० जिसके हाथ में डंडा हो।

दंडा†—पुं० डंडा।

दंडाकरन*—पुं० दंडकारण्य।

दंडाक्ष—पुं० [सं०] चंपा नदी के किनारे का एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

दंडाजिन—पुं० [दण्ड-अजिन, द्व० स०] १ वह दण्ड और मृगचर्म जो साधु-संन्यासी अपने पास रखते हैं। २ व्यर्थ का आडंबर। ३ लोगों को धोखा देने के लिए धारण किया जानेवाला वेष। ४ एक प्रकार का बहुत सूक्ष्म उद्भिज जो तृणाणु से कुछ बड़ा होता है और जिसका प्रजनन-प्रकार भी उससे कुछ भिन्न होता है।

दंडात्मक—वि० [दण्ड-आत्मन्, ब० स०, कप्] दंड-संबंधी। २ दंड के रूप में होनेवाला।

दंडादंडि—स्त्री० [दण्ड-दण्ड, ब० स० (इच् समा० पूर्वपद दीर्घ)] डंडों की मार-पीट। लट्ठबाजी।

दंडादेश—पुं० [दण्ड-आदेश, ष० त०] किसी को उसके अपराध के फलस्वरूप मिलनेवाले दंड की दी जानेवाली सूचना।

दंडादेशित—भू० कृ० [सं० दण्डादेश+इतच्] जिसे दंडादेश दिया जा चुका या मिल चुका हो।

दंडाधिकारी (रिन्)—पुं० [दण्ड-अधिकारिन्, ष० त०] वह राजकीय

अधिकारी, जिसे आपराधिक अभियोगों का विचार करने और अपराधियों को दंड देने का अधिकार होता है। (मजिस्ट्रेट)

दंडाधिप—पुं०[दण्ड-अधिप, ष०त०] कोई स्थानीय प्रधान शासक।

दंडापूपन्याय—पुं०[दण्ड-अपूप, मध्य० स०, दण्डापूप-न्याय मध्य०स०?] एक प्रकार का न्याय जिसके अनुसार दो परस्पर संबंधित बातों में से एक के सिद्ध होने पर दूसरे की सिद्धि उसी प्रकार निश्चित मान ली जाती है, जिस प्रकार डंडे के चूहे द्वारा खा लेने पर उसमें बँधे हुए पुए का भी चूहे द्वारा खा लिया जाना निश्चित होता है।

दंडायमान— वि०[सं० दण्ड+क्यङ्+शानच्] जो डंडे की तरह सीधा खड़ा हो।

क्रि० प्र०—होना।

दंडार—पुं०[सं० दण्ड√ऋ (जाना)+अण्]१. रथ। २ नाव। ३ कुम्हार का चाक। ४ धनुष। ५ ऐसा हाथी, जिसके मस्तक में मद बह रहा हो।

दंडार्ह—वि०[सं० दण्ड√अर्ह+अण्] जिसे दण्ड दिया जाना उचित हो। दंड पाने योग्य।

दंडालय—पुं०[सं० दण्ड-आलय, ष०त०]१ न्यायालय, जहाँ अपराधियों के लिए दंड का विधान होता है। २ वह स्थान जहाँ अपराधियों को शारीरिक दंड दिया जाता है। ३ दंडकला छंद का दूसरा नाम।

दंडाश्रम—पुं०[सं० दण्ड-आश्रम, मध्य०स०] वह आश्रम या स्थिति, जिसमें तीर्थयात्री हाथ में डंडा लेकर पैदल चलते हुए तीर्थों की ओर जाते थे, अथवा अब भी कहीं-कहीं जाते हैं।

दंडाश्रमी (मिन्)—पुं०[सं० दण्डाश्रम+इनि] सन्यासी।

दंडाहत—वि०[दण्ड-आहत तृ०त०] डंडे से मारा हुआ।

पुं० छाछ। मट्ठा।

दंडिका—स्त्री०[सं० दण्डक+टाप्, इत्व] बीस अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में एक रगण के उपरान्त एक जगण, इस प्रकार के गणों के जोड़े तीन बार आते हैं और अंत में गुरु-लघु होता है। इसे वृत्र और गंडका भी कहते हैं।

दंडित—भू० कृ०[सं०√दण्ड् (दण्ड देना)+क्त] जिसे किसी प्रकार का दंड दिया गया हो। दंडप्राप्त।

दंडिनी—स्त्री०[सं० दण्डिन्+ङीप्] क्षाग। दंडोत्पला।

दंडी (डिन्)—पुं०[सं० दण्ड+इनि]१ दंड धारण करनेवाला व्यक्ति। २ यमराज। ३ राजा। ४ द्वारपाल। ५ दंड और कमंडलु धारण करनेवाला सन्यासी। ६ सूर्य के एक पार्श्वचर। ७ जिनदेव। ८ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ९ दौने का पौधा। १० मंजुश्री। ११. शिव। १२ दशकुमार चरित के रचयिता एक प्रसिद्ध संस्कृत कवि।

दंडोत्पल—पुं० [दण्ड-उत्पल मध्य०स०] एक प्रकार का पौधा जिसे गूमा, कुकरौंधा, महदेया भी कहते हैं।

दंडोत्पला—स्त्री०[सं० दण्डोत्पल+टाप्]=दंडोत्पल।

दंडोपनत—वि०[दण्ड-उपनत, तृ० त०] (राजा या शासक) जो पराजित या परास्त हो चुका हो।

दंड्य—वि०[सं०√दण्ड+ण्यत्] दंड पाने के योग्य। दंडनीय।

दंत—पुं०[सं०√दम् (दण्ड देना)+तन्] १ दाँत। २. ३२ की संख्या। ३ गाँव की हिस्सेदारी में बहुत ही छोटा हिस्सा, जो पाई से भी कम होता था। (कौड़ियों में दाँत के जो चिह्न होते हैं, उनके आधार पर स्थित मान) ४ कुंज। ५ पर्वत की चोटी।

पुं०[सं० दन्ती] हाथी। उदा०—त्याग त्याग करि दीपतो, के बी दंत कुदाल।—जटमल।

दंतक—पुं०[सं० दन्त+कन्]१ दाँत। २ पहाड़ की चोटी। ३ एक तरह का पत्थर।

दंत-कथा—स्त्री०[मध्य०स०] कोई ऐसी अप्रामाणिक अथवा कल्पित कथा, जिसे लोग परम्परा से सुनते चले आये हों।

दंतकर्षण—पुं०[सं० दन्त√कृष् (खींचना)+ल्यु—अन] जमीरी नीबू।

दंतकार—पुं०[सं० दन्त√कृ (करना)+अण्] टूटे या निकाले हुए दाँत नये सिरे से बनानेवाला चिकित्सक। दाँतों का डाक्टर। (डेन्टिस्ट)

दंत-काष्ठ—पुं०[मध्य०स०] दतुवन। दातुन।

दंत-काष्ठक—पुं०[ब०स०, कप्] आहुल्य वृक्ष। तरवट का पेड़।

दंतकूर—पुं०[ब०स०] युद्ध। संग्राम।

दंतक्षत—पुं०[सं०] दाँत काटने से अंग पर बननेवाला चिह्न या निशान।

दंतखोदनी—स्त्री०[हिं० दाँत+खोदना] धातु का वह छोटा पतला, लंबा टुकड़ा जिससे दाँतों की संधियों में फँसी हुई चीजें खोदकर बाहर निकाली जाती है।

दंत-घर्ष—पुं०[ष०त०]१ ऊपर और नीचे के दाँतों में होनेवाली रगड़। २ उक्त रगड़ से होनेवाला शब्द। ३ दे० 'दाँता-किटकिट'।

दंतच्छद—पुं० [सं० दन्त√छद् (ढकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] होंठ।

दंतच्छदोपमा—स्त्री०[सं० दन्तच्छद-उपमा, ब०स०] बिंबाफल। कुँदरू।

दंत-जात—वि०[ब०स० (पर निपात)]१ (बच्चा) जिसके दाँत निकल आए हों। २ बच्चों के नये दाँत निकलने के लिए उपयुक्त (काल या समय)।

दंत-ताल—पुं०[ब०स०] ताल देने का एक तरह का प्राचीन बाजा।

दंत-दर्शन—पुं०[ष०त०] (क्रोध या चिड़चिड़ाहट में) दाँत निकालने की क्रिया या भाव। दाँत दिखाना।

दंत-धावन—पुं०[ष०त०] १ दातुन, मंजन आदि से दाँत और मुँह का भीतरी भाग साफ करने की क्रिया। २ दातुन। ३ करंज का पेड़। ४ खैर का पेड़। ५ मौलसिरी।

दंत-पत्र—पुं० [ब० स०] कान में पहनने का एक गहना।

दंत-पत्रक—पुं०[ब०स०, कप्] कुंद का फूल।

दंत-पवन—पुं०[ष०त०]१ दाँत शुद्ध करने की क्रिया। दंतधावन। २ दतुवन। दातुन।

दंतपार—स्त्री०[हिं० दंत+उपारना] दाँत की पीड़ा। दाँत का दर्द।

दंत-पुप्पुट—पुं०[ष०त०?] एक रोग, जिसमें मसूड़ों में सूजन आ जाती है और पीड़ा होती है।

दंतपुर—पुं०[सं० मध्य०स०] एक प्राचीन नगर, जिसमें राजा ब्रह्मदत्त ने महात्मा बुद्ध का एक दाँत स्थापित करके उस पर एक मंदिर बनवाया था।

दंत-पुष्प—पुं०[ब०स०]१ निर्मली। २ [उपमि०स०] कुंद का फूल।

दंत-फल—पुं० [ब०स०]१. कनकफल। निर्मली। २ कपित्थ। कैथ।

दंतफला—स्त्री०[सं० दन्तफल+टाप्] पिप्पली।

दंत-मांस—पु०[मध्य०स०] मसूड़ा।

दंतमूल—पु०[ष०त०]१. दाँत की जड़। २ दाँत का एक रोग।

दंत-मूलिका—स्त्री०[ब०स०, कप्+टाप् (इत्व)] जमालगोटे का पेड़। दंती वृक्ष।

दंतमूलीय—वि०[स० दन्तमूल+छ–ईय] (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय जिह्वा का अग्रभाग दंत-मूल को स्पर्श करता हो। जैसे— त, थ, द और ध वर्ण।

दंत-लेखन—पु०[ष०त०] एक तरह का यंत्र जिससे प्राचीन काल मे मसूड़ों में से मवाद निकाली जाती थी।

दंतवक्र—पु०[ब०स०] शिशुपाल के भाई का नाम, जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था।

दंत-बीज—पु०[ब०स०] अनार।

दंत-वस्त्र—पु०[ष०त०] होंठ। ओंठ।

दंत-वीणा—स्त्री०[मध्य०स०] १ एक तरह का बाजा। २ दाँत किटकिटाने की क्रिया या उससे होनेवाला शब्द।

दंत-वेष्ट—पु०[ष०त०] १ एक प्रकार का दंत-रोग। २ मसूड़ा। ३ हाथी के दाँत पर चढ़ाया जानेवाला धातु का छल्ला।

दंत-वैदर्भ—पु०[ष०त०] दाँत का एक रोग।

दंतव्यसन—पु०[ष०त०] दाँतों का टूटना।

दंत-शंकु—पु० [मध्य०स०] चीर-फाड़ करने का एक उपकरण जो जौ के पत्तों के आकार का होता था। (सुश्रुत)

दंत-शठ—पु०[ष०त०] वे वृक्ष जिनके फल खाने से खटाई के कारण दाँत गुठले हो जायँ। जैसे—कैथ, कमरख, जभीरी नीबू आदि।

दंत-शठा—स्त्री०[ष०त०, टाप्]१ खट्टी लोनिया। अमलोनी। २ चूक। चूक।

दंत-शर्करा—स्त्री०[ष०त०] दाँतों का एक रोग।

दंत-शाण—पु०[ष०त०] दाँतों पर लगाने का रंगीन मंजन। मिस्सी।

दंत-शूल—पु०[ष०त०] दाँत की जड़ में होनेवाली पीड़ा।

दंत-शोफ—पु०[ष०त०] दाँत के मसूड़ों में होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा। दंतार्बुद।

दंत-हर्ष—पु० [ब० स०] दाँतों की वह टीस, जो अधिक ठंढी या खट्टी वस्तु खाने से होती है। दाँतों का खट्टा होना।

दंतहर्षक—पु० [स० ष० त०] जभीरी नीबू।

दंताघात—पु० [दन्त-आघात, तृ० त०] दाँत से किया जानेवाला आघात। पु० [दन्त आ√हन् (पीड़ा पहुँचाना) अण्] नीबू, जिससे दाँतों को आघात पहुँचता है।

दंताज—पु० [स० दन्त+आ√जन् (प्रादुर्भाव)+ड] १ दाँतों की जड़ों या संधियों में लगनेवाले कीड़े। २ उक्त कीड़ों के कारण होनेवाला दाँतों का रोग, जिसमें मसूड़ों से मवाद निकलता है। (पायरिया)

दंतादंति—स्त्री० [दन्त-दन्त, ब० स० (नि० सिद्धि)] ऐसी लड़ाई, जिसमें दोनों पक्ष, एक दूसरे को दाँत काटें। दाँत-कटौअल।

दंतायुध—पु० [दन्त-आयुध, ब० स०] जंगली सूअर।

दंतार—वि० [हि० दाँत+आर (प्रत्य०)] जिसके बड़े-बड़े दाँत हों।

दंतारा—वि० दँतार।

दंतार्बुद—पु० [दन्त-अर्बुद, ष० त०] मसूड़े में होनेवाला फोड़ा।

दंताल—पु० [हि० दँतार] हाथी।

दंतालय—पु० [दन्त-आलय, ष० त०] मुख।

दंतालिका—स्त्री० [स०√अल् (पर्याप्ति)+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व, दन्त-आलिका, ष० त०] लगाम।

दंताली—स्त्री० [स० दन्त√अल्+अण्+ङीप्] लगाम।

दंतावल—पु० [स० दन्त+वलच् (पूर्वपद दीर्घ)] हाथी।

दंताहल*—पु० [स० दंतावल] हाथी। (डि०)

दंतिका—स्त्री० [स० दन्ती+कन्—टाप्, ह्रस्व] जमाल-गोटा। दंती।

दंतिया—स्त्री० [हि० दाँत+इया (प्रत्य०)] बच्चों के छोटे-छोटे दाँत।

पु० [देश०] एक तरह का पहाड़ी तीतर। नीलमोर।

दंती—स्त्री० [स० दन्त+ङीप्] अंडी की जाति का एक पेड़। दंती दो प्रकार की होती है—लघुदंती और बृहद्दंती।

दंतीबीज—पु० [ब० स०] जमालगोटा।

दंतुर—वि० [स० दन्त+उरच्] जिसके दाँत आगे निकले हों। दंतुला। दाँतू।

पु० १ हाथी। २ सूअर।

दंतुरक—वि० [स० दन्तुर+कन्] जिसके दाँत निकले हों।

दंतुरच्छद—पु० [ब० स०] बिजौरा नींबू।

दंतुरिया*—स्त्री० [हि० दाँत] बच्चों के छोटे-छोटे दाँत। दँतिया।

दंतुल—वि० [स० दंतुर] दाँतोंवाला।

दंतुला—वि० [स० दंतुर] [स्त्री० दंतुली] बड़े-बड़े दाँतोंवाला।

दंतोद्भेद—पु० [दन्त-उद्भेद, ष० त०] बच्चों के मुँह में दाँतों का निकलना।

दंतोलूखलिक—पु०[स० दन्त-उलूखल, उपमि० स०, दन्तोलूखल+ठन्—इक] एक प्रकार के संन्यासी जो केवल फल और बीज खाते हैं काटी, कूटी या पीसी हुई चीजें नहीं खाते।

दंतोष्ठ्य—वि० [स० दन्त-ओष्ठ, द्व० स०, यत्] दाँतों और होंठों की सहायता से उच्चारित होनेवाला (वर्ण)। जैसे—'व्'।

दंत्य—वि० [स० दन्त+यत्] १ दाँत-संबंधी। दाँतों का। जैसे— दंत्य रोग। २ (वर्ण) जिसका उच्चारण दाँतों की सहायता से होता हो।

विशेष—त् थ् द् और ध् दंत्य वर्ण कहे गये हैं। न् वर्त्स्य है।

३ (औषध) जो दाँत के रोगों के लिए हितकारी हो।

दंद—स्त्री० [स० दहन, दंदह्यमान] गरम चीज या जगह में से निकलनेवाली गरमी। वैसी गरमी, जैसी तपी हुई भूमि पर पानी पड़ने से निकलती या खाना के अन्दर होती है।

[पु०=दाँत। (पंजाब)

पु० [स० द्वन्द्व] १ उत्पात या उपद्रव। २ लड़ाई-झगड़ा। ३ हो-हल्ला। शोर।

क्रि० प्र०—मचाना।

दंदन*—स्त्री० [हि० दद+दाँत] एक रोग जिसमें मनुष्य के ऊपर नीचे के दाँत आपस में कुछ समय के लिए सट जाते हैं और वह मूर्च्छित हो जाता है। (पश्चिम)

क्रि० प्र०—पड़ना।

वि० [सं० दमन] [स्त्री० ददनी] दमन करनेवाला।

दंदश—पु० [सं०√दश् (काटना)+यङ्, +अच्] दाँत।

दंदशूक—पु० [सं०√दश्+यङ्,+ऊक] १ सूर्य। २ एक राक्षस।

ददह्यमान—वि० [सं०√दह (जलना)+यङ्+शानच्,] दहकता हुआ।

ददा—पु० [देश०] ताल देने का पुरानी चाल का एक तरह का बाजा।

ददान—पु० बहु० [फा० ददाँ] दाँत

ददाना—पु० [हि० दन्दान] [वि० ददानेदार] दाँत के आकार की उभरी हुई नोकों की पंक्ति। जैसे—कंघी या आरे के ददाने।

†अ० [हि० दद द्वन्द्व] १ गरमी के प्रभाव में आना या पड़ना। गरम होना। जैसे—धूप में सारा घर ददान लगता है।

स० सरदी में बचने के लिए आग के पास बैठकर या कंबल, रजाई आदि ओढ़कर अपना शरीर गरम करना।

ददानेदार—वि० [फा०] जिसमें ददाने हों।

ददारु—पु० [हि० दद+आरु (प्रत्य०)] छाला। फफोला।

ददी—वि० [हि० दद] १ झगड़ालू। २ उपद्रवी।

दपति—पु० दपती।

दपती—पु० [सं० जाया-पति, द्व० स० (जाया शब्द को दम् आदेश)] पति-पत्नी का जोड़ा।

दपा*—स्त्री० [हि० दमकना] बिजली।

दभ—पु० [सं०√दम्भ् (पाखंड करना)+घञ्] अपनी योग्यता, शक्ति आदि का उचित मात्रा से अधिक होनेवाला असद् अभिमान।

दभक—वि० [सं०√दम्भ्+ण्वुल्—अक] दभी।

दभान*—पु०=दभ।

दभी (भिन्)—वि० [सं०√दम्भ्+णिनि] जिसमें दभ हो। असद् अभिमानी।

दभोलि—पु० [सं०√दम्भ्+असुन्, दम्भस् (प्रेरणा)√अल् (पर्याप्ति)+इन्] १ इद्र का अस्त्र। वज्र। २ हीरा।

दँवरिया—स्त्री० दवरी।

दँवरी—स्त्री० [सं० दमन, हि० दाँवना] कटी हुई फसल को इस उद्देश्य से बैलों से रौंदवाना कि उसमें के बीज डठलों से अलग हो जायँ।

दँवारि*—स्त्री० दे० 'दवाग्नि'।

दश—पु० [सं०√दश् (काटना)+घञ्, अथवा अच्] १ दाँत से काटने की क्रिया या भाव। २ वह क्षत या घाव, जो किसी के दाँतों से काटने पर होता है। दत-क्षत। ३ किसी कीड़े या जानवर के काटने से होनेवाला क्षत या घाव। जैसे—सर्प-दश। ४ दाँत। ५ जहरीले जानवरों का डक। ६ एक प्रकार की मक्खी, जिसके डक में जहर होता है। डाँस। ७ कोई ऐसी बहुत कठोर और चुभती हुई बात जिससे मन को बहुत अधिक कष्ट हो। कष्टप्रद कटूक्ति। ८. द्वेष। वैर।

क्रि० प्र०—रखना।

९. लड़ाई में पहना जानेवाला बकतर। वर्म। १०. महाभारत के अनुसार सत्ययुग का एक असुर, जो भृगु मुनि की पत्नी को उठा ले गया था और जो उक्त मुनि के शाप से मल-मूत्र का कीड़ा हो गया था।

दशक—वि० [सं०√दश् (काटना)+ण्वुल्—अक] दाँतों से काटनेवाला।

पु० डाँस या दश नाम की मक्खी।

दशन—पु० [सं०√दश्+ल्युट्—अन] [वि० दशित, दशी] १ दाँतों से काटने की क्रिया या भाव। २ वर्म। बकतर।

दशना—स० [सं० दशन] १ दाँत से काटना। २ डक मारना। डसना।

दशभीरु—पु० [प० त०] भैंस या भैंसा, जो मच्छरों से बहुत डरता है।

दश-मूल—पु० [ब० स०] सहिजन का पेड़।

दशित—भू० कृ० [सं०√दश्+णिच्+क्त] १ जिसे किसी ने दाँत से काटा हो। दाँत से काटा हुआ। २ जिसे किसी ने डक मारा या डसा हो।

दशी (शिन्)—वि० [सं०√दश्+णिनि] [स्त्री० दशिनी] १ दाँत से काटने या डसनेवाला। २ कड़ी और चुभती या लगती हुई बात कहनेवाला। ३ द्वेष या वैर का भाव रखकर हानि पहुँचानेवाला।

स्त्री० [सं० दश+ङीष्] एक प्रकार का छोटा मच्छर।

दशूक—वि० [सं०√दश् (डसना)+ऊक (बा०)] डँसनेवाला (जीव)।

दष्ट्र—पु [सं० दश्+ष्ट्रन्] दाँत, विशेषत. मोटा और बड़ा दाँत।

दंष्ट्रा—स्त्री० [सं० दष्ट्र+टाप्] १ दाढ़। चौभर। २ बिच्छू नाम का पौधा।

दष्ट्रा-नखविष—वि० [ब० स०] (जन्तु) जिसके दाँतों और नखों में विष हो।

दष्ट्रायुध—वि० [दष्ट्रा-आयुध, ब० स०] जो अपने दाँतों से ही आयुध या अस्त्र का काम लेता हो।

पु० सूअर।

दष्ट्राल—वि० [सं० दष्ट्रा+ल] जिसके बड़े-बड़े दाँत हों।

पु० एक राक्षस का नाम।

दष्ट्रास्त्र—वि०, पु० =दष्ट्रायुध।

दष्ट्रिक—वि० [सं० दष्ट्रा+ठन्—इक] दाढ़ावाला।

दष्ट्रिका—स्त्री० [सं० दष्ट्रा+क+टाप् (ह्रस्व, इत्व)] दष्ट्रा।

दष्ट्री (ष्ट्रिन्)—वि० [सं० दष्ट्रा+इनि] बड़े-बड़े दाँतोंवाला।

पु० १ सूअर। २ साँप।

दस*—पु०=दश।

दँहगल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी चितकबरी चिड़िया, जिसकी आँख की पुतली भूरी, चोंच काली, और पैर गाढ़े सिलेटी रग के होते है।

दइअ*—पु० दैव (ईश्वर)।

दइउ—पु० =दैव।

दइजा†—पु० =दायजा।

दइत*—पु० =दैत्य।

दइमारा—वि० =दईमारा।

दई—पु० [सं० दैव] १ ईश्वर।

पद—दई का खोया, घाला या मारा=जिस पर ईश्वर का कोप हो।

दईदई=हे दैव! हे दैव! (रक्षा के लिए ईश्वर से की जानेवाली पुकार)

२. दैव-सयोग। ३. अदृष्ट। प्रारब्ध।

वि० [सं० दया] दयालु।

दईमारा—वि० [हि० दई + मारना] [स्त्री० दईमारी] १ जिस पर दई (दैव) या ईश्वर का कोप हो। २ अभागा।

दउरना—अ० = दौड़ना।

दउरा†—पु० दौरा।

दक—पु० [सं० उदक, पृषो० सिद्धि] जल। पानी।

दकन—पु० [सं० दक्षिण से फा०] १ दक्खिन दिशा। २ दक्षिणी भारत।

दकनी—वि० दक्षिणी।

स्त्री० उर्दू भाषा का वह आरम्भिक रूप जो दक्षिण हैदराबाद में विकसित हुआ था। विशेष दे० 'दक्खिनी'

दकार—पु० [सं० द + कार] तवर्ग का तीसरा अक्षर 'द'।

दकार्गल—पु० [सं० दक-अर्गल ष० त०] दगार्गल।

दकियानूस—पु० [यू० से अ०] एक रोमन सम्राट् जो ३४० ई० में सिंहासनारूढ़ हुआ था तथा जो अपने अत्याचारों के लिए बहुत प्रसिद्ध है।

वि० दकियानूसी।

दकियानूसी—वि० [अ०] १ दकियानूस के समय का, अर्थात् बहुत पुराना। २ नवीनता का विरोधी और पुरानी तथा अनद्यतन विचारधाराओं का समर्थक।

दक़ीका—पु० [अ० दक़ीक़] १ कोई सूक्ष्म बात या विचार। २ उपाय। उक्ति।

मुहा०—कोई दक़ीका बाकी न रखना प्रयत्न करते समय अपनी ओर से कोई कमी या त्रुटि न करना।

३ बहुत थोड़ा समय। क्षण। पल।

दक्काक—वि० [अ० दक्काक] १ आटा पीसनेवाला। २ कूटनेवाला।

दक्खिन—पु० [सं० दक्षिण] [वि० दक्खिनी] १ दक्षिण दिशा। २ उक्त दिशा का कोई प्रदेश। ३ भारत का दक्षिणी भाग।

दक्खिनी—वि० [हि० दक्खिन] १ दक्षिण की ओर या दिशा का। दक्खिन का। २ दक्षिण देश का।

पु० दक्षिण दिशा में पड़नेवाले देश का निवासी।

स्त्री० १ दक्षिण देश की भाषा। २ मध्ययुग में दक्षिण भारत में प्रचलित हिंदी का वह रूप जिसमें मुसलमान कवि कविता करते थे और जिससे आधुनिक उर्दू के विकास का घनिष्ठ संबंध है।

दक्ष—वि० [सं०√दक्ष् (शीघ्रता से करना) + अच्] [भाव० दक्षता] १ जिसमें कोई या सब काम तुरन्त, सहज में और सुन्दरतापूर्वक करने की योग्यता हो। कुशल। निपुण। होशियार। २ दाहिनी ओर का। दाहिना।

पु० १ एक प्रजापति, जिनसे देवता उत्पन्न हुए हैं। २ विष्णु। ३ महादेव। शिव। ४ शिव की सवारी का बैल। नन्दी। ५ अत्रि ऋषि का एक नाम। ६ बल। शक्ति। ७ वीर्य। ८ कुक्कुट। मुरगा। ९ राजा उशीनर का एक पुत्र।

दक्ष-कन्या—स्त्री० [ष० त०] सती।

दक्षक्रतुध्वंसी (सिन्)—पु० [सं०दक्ष-क्रतु, ष०त०,√ध्वंस् (नष्ट करना) णिनि] १ दक्ष प्रजापति के यज्ञ का ध्वंस या नाश करनेवाले शिव। २ शिव के अंश से उत्पन्न वीरभद्र, जो शिव के उक्त कार्य में सहायक हुए थे।

दक्षता—स्त्री० [सं० दक्ष + तल्—टाप्] १ दक्ष होने की अवस्था, गुण या भाव। २ निपुणता।

दक्षता-अर्गल—पु० दे० 'प्रगुणता अर्गल'।

दक्ष-दिशा—स्त्री० [मध्य० स०] दक्षिण की दिशा।

दक्ष-विहिता—स्त्री० [तृ० त०] एक प्रकार का गीत।

दक्ष-सावर्णि—पु० [मध्य० स०] नवें मनु का नाम।

दक्षांड—पु० [सं० दक्षा-अंड, ष० त०] मुर्गी का अंडा।

दक्षा—वि० स्त्री० [सं० दक्ष + टाप्] कुशला। निपुणा।

स्त्री० पृथ्वी।

दक्षाय्य—पु० [सं०√दक्ष् + आय्य] १ गरुड़। २ गिद्ध पक्षी।

दक्षिण—वि० [सं०√दक्ष् (गति) + इनन्] १ दाहिना। 'बायाँ' का विपर्याय। २ उस ओर या दिशा का जिधर दाहिना हाथ पड़ता है, जब हम सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होते हैं। ३ आचरण, व्यवहार में अनुकूल, कृपालु और प्रसन्न रहनेवाला। किसी प्रकार का अपकार, द्वेष या विरोध न करनेवाला। ४ दक्ष। निपुण। होशियार।

पु० १ वह दिशा जो उस समय हमारे दाहिने हाथ की ओर पड़ती है जब हम सूर्य की ओर मुँह करके खड़े होते हैं। २ साहित्य में, वह नायक जिसका प्रेम अपनी सभी प्रेमिकाओं के साथ एक-सा होता है। ३ तंत्र में, एक प्रकार का आचार या मार्ग जो वाममार्ग से बिलकुल भिन्न और विपरीत होता है। ४ विष्णु का एक नाम। ५ परिक्रमा। प्रदक्षिणा।

दक्षिण-गोल—पु० [कर्म० स०] विषुवत् रेखा से दक्षिण पड़नेवाली ये छः राशियाँ—तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुंभ और मीन।

दक्षिण-नायक—पु० [कर्म० स०] साहित्य में, शृंगार रस का आलंबन वह नायक जो अनेक नायिकाओं से अनुराग का व्यवहार समान रूप से करता हो।

दक्षिण-प्रवण—पु० [स० त०] वह स्थान, जो उत्तर की अपेक्षा दक्षिण की ओर अधिक नीचा या ढालुआँ हो। मनु के अनुसार श्राद्ध आदि के लिए ऐसा ही स्थान उपयुक्त होता है।

दक्षिण-मार्ग—पु० [कर्म० स०] [वि० दक्षिणमार्गी] १ वैदिक धर्म या मार्ग, जिसके विपरीत होने के कारण तांत्रिक मत या धर्म 'वाममार्ग' कहलाता है। २ परवर्ती तांत्रिक मत के अनुसार एक प्रकार का आचार जो वैदिक वैष्णव और शैव मार्गों से निम्न कोटि का बनाया गया है। ३ आधुनिक राजनीति में, वह मार्ग या पक्ष जो साधारण और वैधानिक रीति तथा शान्त उपायों से उन्नति तथा विकास चाहता हो और उग्र उपायों से क्रांति करने का विरोधी हो। (राइट विंग)

दक्षिणा—स्त्री० [सं० दक्षिण + टाप्] १ दक्षिण दिशा। २ वह धन, जो ब्राह्मणों को कर्मकांड, यज्ञ आदि कराने के बदले में अथवा दान देने, भोजन कराने आदि के उपरान्त या साथ दिया जाता है। ३ वह धन जो किसी के प्रति आदर-सम्मान प्रकट करने के लिए उसे भेंट किया जाता है। ४ लाक्षणिक रूप में, किसी को नकद दिया जानेवाला धन। ५ साहित्य में वह नायिका, जो नायक के दूसरी स्त्रियों के साथ संबंध करने पर भी उससे पूर्ववत् प्रेम रखती है और किसी प्रकार का द्वेष या रोष नहीं करती।

दक्षिणाग्नि—पुं० [दक्षिण-अग्नि, कर्म० स०] गार्हपत्य अग्नि के दक्षिण मे रखी जानेवाली अग्नि।

दक्षिणाग्र—वि० [दक्षिण-अग्र, ब० स०] जिसका अग्रभाग दक्षिण की ओर हो।

दक्षिणाचल—पु० [दक्षिण-अचल, मध्य० स०] मलयगिरि पर्वत।

दक्षिणाचार—पु० [दक्षिण-आचार, कर्म० स०] १ अच्छा और शुद्ध आचरण। सदाचार। २ वाममार्ग का एक पथ या शाखा जिसमे उपासक अपने आपको शिव मानकर पच तत्त्वो से शिव की पूजा करता है।

दक्षिणाचारी (रिन्)—वि० [स० दक्षिणाचार+इनि] १ दक्षिण अर्थात् अच्छे और शुद्ध मार्ग पर चलनेवाला। २ धर्मशील और सदाचारी।

दक्षिणा-पथ—पु० [स० दक्षिणा, दक्षिण+आच्, दक्षिणापथ, स० त०] १ दक्षिण दिशा की ओर जानेवाला पथ। २ दक्षिण भारत या उसमे के प्रदेश।

दक्षिणापरा—स्त्री० [दक्षिणा-अपरा, ब० स०] नैर्ऋत कोण।

दक्षिणाभिमुख—वि० [दक्षिणा-अभिमुख ब० स०] १ जिसका मुंह दक्षिण की ओर हो। २ जो दक्षिण की ओर उन्मुख हो।

दक्षिणा-मूर्ति—पु० [ब० स०] तत्र के अनुसार शिव की एक मूर्ति।

दक्षिणायन—वि० [दक्षिण-अयन ब० स०] १ जो दक्षिण की ओर हो। २ भू-मध्य रेखा से दक्षिण की ओर का। जैसे—दक्षिणायन सूर्य।

पु० [स० त०] १ सूर्य की वह गति जो कर्क रेखा से दक्षिण और मकर रेखा की ओर होती है। २ वह छ महीनो का समय, जिसमे सूर्य की गति उक्त प्रकार की रहती है।

दक्षिणावर्त—वि० [स० दक्षिणा+आ√वृत् (बरतना)+अच्, उप० स०] जिसका घुमाव, प्रकृति या मुंह दाहिनी दिशा की ओर का हो। जैसे—दक्षिणावर्त शख।

पु० एक प्रकार का शख, जिसका घुमाव या मुंह (साधारण के विपरीत) दक्षिण या दाहिने हाथ की ओर होता है।

दक्षिणावर्तकी—स्त्री० [स० दक्षिणावर्त√कै (शब्द करना)+क—ङीष्] वृश्चिकाली नाम का पौधा।

दक्षिणावह—पु० [स० दक्षिणा√वह् (बहना)+अच्] दक्षिण दिशा से आनेवाली वायु। दक्खिनी हवा।

दक्षिणाशा—स्त्री० [स० दक्षिणा-आशा, कर्म० स०] दक्षिण दिशा।

दक्षिणाशा-पति—पु० [ष० त०] १ यम, जो दक्षिण-दिशा के स्वामी माने गये हैं। २ मगल ग्रह।

दक्षिणी—वि० [स० दक्षिणीय] १ दक्षिण दिशा-सबधी। २ दक्षिण प्रदेश मे होनेवाला।

पु० दक्षिण प्रदेश का निवासी।

स्त्री० भारत के दक्षिण प्रदेश की भाषा।

दक्षिणी-ध्रुव—पु० [हि० दक्षिणी+ध्रुव] पृथ्वी के गोले का दक्षिणी सिरा। कुमेरु। (साउथ पोल)

दक्षिणीय—वि० [स० दक्षिण+छ—ईय] १ दक्षिण का। दक्षिण-सबधी। २ दक्षिण देश का। ३ [दक्षिणा+छ-ईय] जिसे दक्षिणा दी जानी चाहिए अथवा दी जाने को हो।

दक्षिण्य—वि० [स० दक्षिणा+यत्]=दक्षिणीय।

दखिन—पुं०=दक्षिण।

दखिनी—वि०, पु०, स्त्री०=दक्षिणी।

दखन—पु०=दकन।

दखनी—वि०, स्त्री० १=दकनी। २=दक्खिनी।

दखमा—पु० [फा० दख्म] पारसियो का कब्रिस्तान, जो गोलाकार खोखली इमारत के रूप मे होता है और जिसमे कौओ, चीलो आदि के खाने के लिए शव फेंक दिये जाते हैं।

दखल—पु० [अ० दख्ल] १ प्रवेश। २ पैठ। पहुंच। ३ जानकारी। ४ अधिकार। जैसे—वह मकान आज-कल हमारे दखल मे है। ५ अनधिकार-पूर्वक या अनुचित रूप से किया जानेवाला हस्तक्षेप। जैसे—तुम उनकी बातो मे दखल मत दिया करो।

दखल-दिहानी—स्त्री० [अ० दख्ल+फा० दिहानी] विधिक क्षेत्र मे, अधिकारियो या शासन द्वारा ऐसी सपत्ति पर किसी को कब्जा दिलाना जिस पर किसी दूसरे का दखल चला आ रहा हो।

दखल-नामा—पु० [अ० दखल+फा० नाम] वह पत्र जिसमे दखलदिहानी की आज्ञा लिखी हुई हो।

दखिन†—पु० दक्षिण।

दखिनहरा—पु० [हि० दखिन+हारा (प्रत्य०)] दक्षिण दिशा से आनेवाली हवा।

दखिनहा—वि० [हि० दखिन+हा (प्रत्य०)] १ दक्षिण मे होनेवाला। दक्षिण का। २ दक्षिण से आनेवाला।

दखिना—पु० [हि० दखिन+आ (प्रत्य०)] दक्षिण से आनेवाली हवा।

†स्त्री०=दक्षिणा। (पश्चिम)

दखील—वि० [अ० दखील] १ जो दखल देता हो। हस्तक्षेप करनेवाला। २ जिसकी कही पहुँच हो। ३ जिसने कही या किसी चीज पर दखल या कब्जा कर रखा हो। काबिज।

दखीलकार—पु० [अ० दखील+फा० कार] वह असामी, जो पिछले बारह वर्षों अथवा उससे अधिक समय से जमीदार का खेत जोत-बो रहा हो और इस प्रकार जिसे सदा के लिए वह खेत जोतने-बोने का अधिकार मिल गया हो। (आकुपेन्सी टेनेन्ट)

दखीलकारी—स्त्री० [अ० दखील+फा० कारी] १ दखीलकार होने की अवस्था, पद या भाव। २ वह जमीन, जिस पर दखीलकार का अधिकार हो।

दगइल—वि० १=दगैल। २=दगाई।

दगड़—पु० [?] १ लडाई मे बजाया जानेवाला बडा ढोल। जगी ढोल। (राज०) २ पत्थर। (मराठी)

दगड़ना—अ० [हि० दगड] १ दगड बजाना। २ सच्ची बात पर विश्वास करना।

दगदगा—पु० [अ० दगदग] १ डर। भय। २ कोई अप्रिय घटना या बात होने की आशका। खटका। ३ पुरानी चाल की एक प्रकार की कडील।

दगदगाना—अ० [भाव० दगदगाहट]=चमकना।

स०=चमकाना।

दगदगी—स्त्री०=दगदगा।

दगध†—वि०=दग्ध।

†पु० = दाह।

दगधना—स०[स० दग्ध+हि० ना (प्रत्य०)] १ दग्ध करना। जलाना। २ बहुत अधिक दुखी या सन्तप्त करना। दाहना।
अ० १ जलना। २ दुखी या सतप्त होना।

दगना—अ०[स० दग्ध+ना (प्रत्य०)] १ दाग, चिह्न आदि से दागा जाना या अकित होना। २ गरम लोहे, तेजाब, दवा आदि से किसी अग का इस प्रकार जलाया जाना कि उस पर दाग पड जाय। ३ झुलस जाना। ४ (तोप, बदूक आदि के सबध मे) दागा, चलाया या छोडा जाना। ५ दाग या कलक से युक्त होना। कलकित होना। ६ किसी नये या विशिष्ट नाम से प्रसिद्ध होना। उदा०—लोक बेदहूँ लौ दगौ नाम भले को पोच।—तुलसी।
†स०=दागना।

दगर—पु० =दगरा।

दगरा—पु० [?] देर। विलब।
†पु० = डगर (रास्ता)।

दगरी—स्त्री० [?] ऐसा दही जिस पर मलाई न जमी या लगी हुई हो।

दगल—पु० [अ० दगल] फरेब। धोखा। छल। उदा०—पहिरहु राता दगल सोहावा।—जायसी।
पु० [?] रूईदार ढीला अँगरखा।

दगलना—अ० [अ० दगल] छल करना। धोखा देना।

दगल-फसल—पु० [अ० दगल+अनु० फसल या हि० फँसाना] कपट। छल। धोखा। फरेब।

दगला—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० दगली] रूईदार ढीला-ढाला अगरखा। दगल। उदा०—वाह वाह मियाँ बाँके, तेरे दगले मे सौ सौ टाँके।—कहा०।

दगवाना—स० [हि० दागना का प्रे०] दागने का काम किसी से कराना। (दागना के सभी अर्थो मे)

दगहा—वि० [हि० दगना+हा (प्रत्य०) अथवा स० दग्ध] १ जिसमे दाग हो। दागवाला। २ (पशु) जो किसी उद्देश्य से दग्ध किया या दागा गया हो। जैसे—दगहा घोडा, दगहा साँड। ३ (व्यक्ति) जिसके शरीर पर कोढ के सफेद दाग हो।
वि० [हि० दाह=प्रेतकर्म+हा (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जिसने अभी हाल मे किसी मृतक का दाह-सस्कार किया हो और जो अभी तक अशौच मे हो।

दगा—पु० [अ० दगा] १ छल। कपट। धोखा। २ विश्वासघात।
क्रि० प्र०—देना।
पद—दगाबाज, दगादार आदि।

दगाई—स्त्री० [हि० दागना] १ दागने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दागे जाने का चिह्न।
वि० [अ० दगा] दगा देनेवाला।
*स्त्री० =दगा।

दगादार—वि० [अ० दगा+फा० दार] दगा देनेवाला। धोखेबाज।

दगाबाज—वि० [फा० दगाबाज] [भाव० दगाबाजी] दगा देनेवाला। धोखेबाज।

दगाबाजी—स्त्री० [फा० दगाबाजी] १ दगाबाज होने की अवस्था या भाव। २ दगा देने की क्रिया या भाव। ३. कोई ऐसा कार्य जो किसी को धोखा देने के लिए किया गया हो।

दगार्गल—पु० [स० दकार्गल (पृषो० सिद्धि)] एक प्राचीन विद्या, जिसके अनुसार भूमि के ऊपरी लक्षण देखकर यह बतलाया जाता था कि इसके नीचे जल है या नही।

दगैल—वि० [अ० दाग+हि० एल (प्रत्य०)] १ जिसमे किसी प्रकार के दाग या धब्बे हो। २ जो किसी रूप मे दग्ध करके अकित या चिह्नित किया गया हो। ३ जिसमे कोई दाग लगा हो। दूषित। कलकित। ४ जो कारागार का दड भोग चुका हो।
†वि० = दगाबाज।

दग्ध—वि० [स० दह (जलाना)+क्त] १ जला या जलाया हुआ। २ जिसके शरीर पर दागे जाने का कोई चिह्न हो। ३ जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट या सताप हुआ हो। परम दुखी और सतप्त। ४ अशुभ।

दग्ध-काक—पु० [कर्म० स०] डोम कौवा।

दग्ध-मंत्र—पु० [कर्म० स०] तत्र के अनुसार वह मत्र जिसके मूर्द्धा प्रदेश मे वह्नि और वायु-युक्त वर्ण हो।

दग्ध-रथ—पु० [ब० स०] इद्र का सारथी चित्ररथ गधर्व।

दग्ध-रुह—पु० [स० दग्ध+√रुह् (उगना)+क] तिलक वृक्ष।

दग्ध-रुहा—स्त्री० [स० दग्धरुह+टाप्] कुरु नामक वृक्ष।

दग्धा—स्त्री० [स० दग्ध+टाप्] १ सूर्य के अस्त होने की दिशा। पश्चिम दिशा। २ कुरु नामक वृक्ष। ३ ज्योतिष मे कुछ विशिष्ट राशियो से युक्त होने पर कुछ विशिष्ट तिथियो की सज्ञा।
वि०, पु० [स०√दह् (जलाना)+तृच्] जलानेवाला।

दग्धाक्षर—पु० [स० दग्ध-अक्षर, कर्म० स०] पिंगल के अनुसार झ, ह, र, भ और ष ये पाँचो अक्षर, जिनका छद के आरभ मे रखना वर्जित है।

दग्धाह्व—पु० [स० दग्ध-आह्वा, ब० स०] एक तरह का वृक्ष।

दग्धिका—स्त्री० [स० दग्धा+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व] =दग्धा।

दग्धित*—वि० =दग्ध।

दग्धेष्टका—स्त्री० [स० दग्धा-इष्टका, कर्म० स०] झाँवाँ।

दचक—स्त्री० [हि० दचकना,] १ दचकने की क्रिया या भाव। २ झटके या दबाव मे लगी हुई चोट। ३ धक्का। ठोकर। ४ दबाव।

दचकना—अ० [अनु०] [भाव० दचक, दचकन] १. ठोकर या धक्का खाना। २ झटका खाना। ३ भार के नीचे पडकर इस प्रकार दबना कि ऊपरी अश कुछ कट या फट जाय।
स० १ ठोकर या धक्का लगाना। २ झटका देना। ३ इस प्रकार दबाना कि ऊपरी अश कुछ क्षत-विक्षत हो जाय।

दचका—पु० दे० 'दचक'।

दचना—अ० [देश०] एकाएक ऊपर से नीचे आ पडना। गिरना।
अ०, स०=दचकना।

दच्छ—वि०, पु० = दक्ष।

दच्छकुमारी—स्त्री० =दक्षकुमारी (सती)।

दच्छना—स्त्री० =दक्षिणा।

दच्छसुता—स्त्री० [स० दक्ष+सुता] दक्ष की कन्या, सती।

दखिछन—वि० =दक्षिण।

दज्जाल—वि० [अ०] बहुत बडा धोखेबाज या धूर्त।
पु० मुसलमानो के मतानुसार वह व्यक्ति जो कयामत से पहले जन्म लेगा और खुदा होने का झूठा दावा करेगा।

दझना†—अ० [स० दहन] १ दहन होना। जलना। २ बहुत अधिक दु खी या सतप्त होना।
स० १ दहन करना। जलाना। २ बहुत अधिक दु खी या सतप्त करना।

दडघल—पु० [स० दण्डोत्पल] सहदेई नामक पौधा।

दडबा†—पु० =दरबा।

दड़ोकना—अ० [अनु०] दहाडना। गरजना।

दड़ोबड़†—अव्य० = धडाधड।

दढ़ना*—अ० [स० दग्ध] जलना। उदा०—भई देह जो खेह करम बस ज्यो तट गगा अनल दढ़ी।—सूर।
स० =दढ़ाना।

दढ़ाना—स० [हि० दढना] जलाना।

दढ़ियल—वि० [हि० दाढी+इयल (प्रत्य०)] (व्यक्ति) जिसे दाढ़ी हो। दाढीवाला।

दढ़्ढ*—वि० [स० दग्ध] दग्ध। जला हुआ।

दणियर—पु० [स० दिनमणि] सूर्य। (डि०)

दतना†—अ० [स० दत्तचित्त] १ किसी काम मे दत्तचित्त होकर लगना। २ मग्न या लीन होना।
† अ० — डटना।

दतवन—स्त्री० =दातुन।

दतारा—वि० =दॅतार।

दतिसुत—पु० [स० दितिसुत] दैत्य। राक्षस। (डि०)

दतुअन—स्त्री० = दातुन।

दतुवन†—स्त्री० = दातुन।

दतून—स्त्री० =दातुन।

दतौन—स्त्री० = दातुन।

दत्त—वि० [स०√दा (देना)+क्त] [स्त्री० दत्ता] १ जो किसी को दिया जा चुका हो। २ जिसका कर, देन, परिव्यय आदि चुकता कर दिया गया हो। (पेड)
पु० १ दान। २ चदे, सहायता आदि के रूप मे किसी सस्था को दी जानेवाली रकम। (डोनेशन) ३ दत्तक सतान। ४. दत्तात्रेय. ५ जैनो के नौ वासुदेवो मे से एक।

दत्तक—पु० [स० दत्त+कन् (स्वार्थे)] सतान न होने पर दूसरे कुल और परिवार का वह लडका जो विधिवत् गोद लेकर अपना पुत्र बनाया गया हो। मुतबन्ना। (एडाप्टेड सन)
विशेष—ऐसा पुत्र धर्म और विधि (या कानून) दोनो के अनुसार हर तरह से औरस या स्वजात पुत्र के समान माना जाता है।

दत्तक-ग्रहण—पु०[स० ष० त०] किसी लडके को अपना दत्तक पुत्र या मुतबन्ना बनाने की क्रिया या विधान। (एडाप्शन)

दत्तक-ग्राही—वि० [स० दत्तक-ग्राहिन्] जो किसी दूसरे के लडके को अपना दत्तक पुत्र बनावे।

दत्त-चित्त—वि० [ब० स०] जो किसी कार्य के सपादन मे मनोयोग-पूर्वक लगा हुआ हो। जो किसी काम मे पूरा मन लगा रहा हो।

दत्ततीर्थकृत—पु० [स०] गत उत्सर्पिणी के आठवें अर्हत। (जैन)

दत्तस्यानपा कर्म—पु० [स० व्यस्त पद] दी हुई चीज फिर वापस ले लेना।

दत्ता—पु० =दत्तात्रेय।

दत्तात्मा (त्मन्)—पु० [स० दत्त-आत्मन् ब० स०] वह अनाथ अथवा माता-पिता द्वारा त्यक्त बालक जो स्वय किसी के पास जाकर उसका दत्तक बने। स्वय अपने आपको किसी का दत्तक पुत्र बनानेवाला बालक या व्यक्ति।

दत्तात्रेय—पु० [स० दत्त-आत्रेय, कर्म० स०] अत्रि मुनि और अनुसूया के पुत्र अवधूत-वेषधारी महात्मा जिनकी गिनती २४ अवतारो मे होती है।

दत्ताप्रदानिक—पु० [स० दत्त-अप्रदान, ष० त०+ठन्—इक] दान किये हुए किसी पदार्थ को अन्यायपूर्वक फिर से प्राप्त करने का प्रयत्न जो व्यवहार मे अठारह प्रकार के विवाद-पदो मे से पाँचवाँ विवाद पद माना गया है।

दत्तावधान—वि० [स० दत्त-अवधान, ब० स०] १ किसी ओर अवधान या ध्यान देनेवाला। २ सावधान।

दत्ति—स्त्री० [स० द०+क्तिन्] दान।

दत्ती—स्त्री० [?] विवाह-सबध या सगाई पक्की होना।

दत्तेय—पु० [स० दत्ता+ढक्-एय)] इद्र।

दत्तोपनिषद्—पु० [स० दत्त-उपनिषद्, मध्य० स०] एक उपनिषद् का नाम।

दत्तोलि—पु० [स०] पुलस्त्य मुनि का एक नाम।

दत्र—पु० [स०√दा+कत्रन्(बा०)] १ धन। २ सोना। ३ दान।

दत्रिम—पु० [स०√दा+क्त्रि (मप्)] दत्तक पुत्र।

ददन—पु० [स०√दद् (दान)+ल्युट्—अन] कुछ देने अथवा दान देने की क्रिया या भाव। देना।

ददमर—पु० [स०] एक प्रकार का वृक्ष।

ददरा†—पु० [देश०] [स्त्री० ददरी] वह महीन कपडा जिससे बारीक पीसा हुआ चूर्ण छाना जाता है।

ददा†—पु० = दादा।

ददिऔर (।)†—पु० =ददिहाल।

ददिता (तृ)—वि० [स०√दद्+तृच्] देनेवाला। दाता।

ददियाल—पु०=ददिहाल।

ददिया ससुर—पु० [हि० दादा+ससुर] जो सबध मे ससुर का बाप हो।

ददिया सास—स्त्री० [हि० दादी+सास] जो सबध मे सास की सास हो।

ददिहाल—पु० [हि० दादा+स० आलय] १ वह घर, नगर या प्रदेश जिसमें दादा अथवा उसके पूर्वज या वशज रहते चले आये हो अथवा रह रहे हो। २. दादा का कुल या वश।

ददोड़ा—पु० = ददोरा।

ददोरा—पु० [हि० दाद] १ त्वचा मे होनेवाला एक प्रकार का विकार जिसमें उसका कोई अश सूजकर लाल हो जाता है। चकत्ता

उदा०—हँसी करति औषधि सखिनु देह ददोरनु भूलि।—बिहारी। २. मच्छर, बर्रें आदि के काटने पर बननेवाला उक्त प्रकार का चकत्ता। क्रि० प्र०—पड़ना।

ददौरा† पु० =ददोरा।

दद्रु—पु० [स०√दद्+रु (ब०)] १ दाद नामक चर्म रोग। २ कछुआ।

दद्रुक—पु० [स० दद्रु+कन्] दद्रु। (दे०)

दद्रुघ्न—पु० [स० दद्रु√हन् (मारना)+टक्] चकवँड। चकमर्दा।

दद्रुण—वि० [स० दद्रु+न] जिसको दाद निकली हुई हो। दाद रोग से पीडित।

दद्रू—पु० [स० दरिद्रा+उ (नि० सिद्धि)] दाद नामक रोग।

दद्रूण—वि० दद्रुण।

दध*—पु० = दधि।

दधना*—अ० [स० दग्ध] जलना।
स० जलाना।

दधसार*—पु० दधिसार।

दधि—पु० [स०√धा (धारण करना)+कि (द्वित्व)] १ दही। २ वस्त्र। कपडा।
†पु० [स० उदधि] १ समुद्र। २ छोटा दह या तालाब। उदा०—और रबि होहु कँवल दधि माहाँ—जायसी।

दधि-काँदो—पु० [स० दधि+हि० काँदो=कीचड] जन्माष्टमी के अवसर पर होनेवाला एक उत्सव जिसमे हल्दी मिला हुआ दही एक दूसरे पर फेका जाता है। (कृष्ण-जन्म के अवसर पर आमोद-सूचक)

दधि-कूर्चिका—स्त्री० [मध्य० स०] फटे या फाडे हुए दूध का सार भाग। छेना।

दधिचार—पु० [स० दधि√चर् (चलना)+णिच्+अण्] मथानी जिससे मथने के समय दही चलाया जाता है।

दधिज—वि० [स० दधि√जन् (पैदा होना)+ड] दही से उत्पन्न।
पु० मक्खन।

दधि-जात—वि० पु० [प० त०] दधि या दही से उत्पन्न या बना हुआ।
*पु० [स० उदधि+जात] चद्रमा।

दधित्थ—पु० [स० दधि√स्था (ठहरना) + क, पृषो० सिद्धि] कैथ।

दधित्थाख्य—पु० [स० दधित्थ-आ√ख्या (कहना)+क] लोबान।

दधिधेनु—स्त्री० [मध्य० स०] पुराणानुसार दान के लिए कल्पित गौ जिसकी कल्पना दही के मटके मे की जाती है।

दधि-नामा (मन्)—पु० [स० ब० स०] कैथ का पेड।

दधि-पुष्पिका—स्त्री० [ब० स०, कप्+टाप्, इत्व)] सफेद अपराजिता का वृक्ष।

दधि-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] सेम।

दधि-पूप—पु० [मध्य० स०] साठी के चावल के चूर्ण को दही मे मिलाकर और घी मे तलकर बनाया जानेवाला एक तरह का पकवान।

दधि-फल—पु० [ब० स०] कैथ।

दधि-बरी†—स्त्री० [स०+हि०] दही मे डाली हुई बरी या पकौडी।

दधि-मड—पु० [ष० त०] दही का पानी।

दधि-मडोद—पु० [दधिमड-उदक, ब० स०, उद—आदेश] दही का समुद्र। (पुराण)

दधि-मुख—पु० [ब० स०] सुग्रीव का मामा जो मधुबन का रक्षक था।

दधियार—पु० [देश०] अकपुष्पी। अधाहुली।

दधिषाय्य—पु० [स० दधि√सो (नाश करना)+आय्य पत्व] घी।

दधि-सागर—पु० [ष० त०] दही का समुद्र। (पुराण)

दधिसार—पु० [ष० त०] मक्खन।

दधि-सुत—पु० [ष० त०] मक्खन। नवनीत।
* पु० [स० उदधि-सुत] १ कमल। २ मोती। ३ जहर। विष। ४ चन्द्रमा। ५ जालधर नामक दैत्य।

दधि-सुता—स्त्री० [स० उदधि-सुता] १ लक्ष्मी। २ सीपी।

दधि-स्नेह—पु० [ष० त०] दही की मलाई।

दधि-स्वेद—पु० [ष० त०] छाछ। मठा।

दधीच—पु० [स० दध्यञ्च्] =दधीचि।

दधीचि—पु० [स० दध्यञ्च्] एक प्रसिद्ध वैदिक ऋषि जो परोपकार और उदारता के लिए प्रसिद्ध है। इन्होने इन्द्र के माँगने पर अपनी हड्डियाँ इसलिए उन्हे दे दी थी जिनमे वे अस्त्र बनाकर वृत्रासुर को मार सके।

दधीच्यस्थि—पु० [स० दधीचि-अस्थि, ष० त०] १ वज्र। २ हीरा। हीरक।

दध्न—पु० [स०√दध् (दान)+न (बा०)] चौदह यमो मे से एक यम।

दध्यानी—पु० [स० दधि-आ√नी (ले जाना)+क्विप्] सुदर्शन वृक्ष।

दध्युत्तर—पु० [स० दधि-उत्तर, ष० त०] दही की मलाई।

दन—पु० [स० दिन] दिन। (डि०)
पु० [अनु०] बदूक, तोप आदि चलने से होनेवाला शब्द।
पद—दन से=चट-पट। तुरत। जैसे—दन से यह काम कर डाला।

दनकर—पु० [स० दिनकर] सूर्य। (डि०)

दनगा—पु० [देश०] खेत का छोटा टुकडा।

दनदनाना—अ० [अनु०] १ दन दन शब्द होना। २ खुशी मनाना। आनद करना।
स० दन-दन शब्द उत्पन्न करना।

दनमणि—पु० [स० दिनमणि] सूर्य। (डि०)

दनादन—अव्य० [अनु०] १ दन-दन शब्द करते हुए। २ निरतर। लगातार। ३ चटपट। तुरत।

दनियाँ†—वि०=दानी। उदा०—अग अग सुभग सकल सुख दनियाँ।—सूर।

दनु—स्त्री० [स०√दा (दान)+नु (नि० सिद्धि)] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप की पत्नी थी तथा जिसके गर्भ से चालीस पुत्र उत्पन्न हुए थे, जो सब के सब दनुज या दानव कहलाये।

दनुज—वि० [स० दनु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] दनु के गर्भ से उत्पन्न।
पु० दानव। राक्षस।

दनुज दलनी—स्त्री० [ष० त०] दुर्गा।

दनुजराय—पु० [स० दनुज+हि० राय] दनुजो अर्थात् राक्षसो का राजा हिरण्यकश्यप।

दनुजारि—पु० [दनुज-अरि, ष० त०] दानवों के शत्रु, देवता।

दनुजेंद्र—पु० [दनुज-इंद्र, ष० त०] दानवों का राजा रावण।

दनुसम्भव—पु० [ष० त०] दनु से उत्पन्न, दानव।

दनू—स्त्री० [सं० दनु+ऊङ्०] = दनु।

दन्न—पु० [अनु०] दन (शब्द)। (दे०)

दपट—स्त्री० डपट।

दपटना—अ० डपटना।

दपु*—पु० =दर्प।

दपेट—स्त्री० =डपट।

दपेटना—अ० = डपटना।

दप्प*—पु० = दर्प।

दफ—स्त्री० [फा० दफ] बड़ी डफली।

दफतर—पु० दफ्तर।

दफतरी—पु० दफ्तरी।

दफतरी खाना—पु० दफ्तरी खाना।

दफती—स्त्री० दफ्ती।

दफदर†—पु० दफ्तर।

दफन—पु० [अ० दफ्न] १ किसी चीज को जमीन में गाड़ने की क्रिया या भाव। २ मृत शरीर को बनाए हुए गड्ढे में रखकर उसे मिट्टी से तोपने की क्रिया।

वि० १ जमीन के नीचे गाड़ा हुआ। २ कब्र के अन्दर रखा या गाड़ा हुआ।

दफनाना—स० [अ० दफ्न+हिं० आना (प्रत्य०)] १ मृत शरीर को कब्र में रखकर उसे मिट्टी से ढकना। २ जान-बूझकर कोई बात इस प्रकार दबाना जिसमें वह दूसरों पर प्रकट न हो सके।

दफरा—पु० [देश०] काठ का वह टुकड़ा जो नाव के दोनों ओर इसलिए लगा दिया जाता है कि किसी दूसरी नाव को टक्कर से उसका कोई अंग टूट न जाय। हास। (लश०)

दफराना—स० [देश०] १ किसी नाव को किसी दूसरी नाव के साथ टक्कर लगने से बचाना। २ (पाल) खड़ा करना। (लश०) ३ रक्षा करना। बचाना।

दफा—स्त्री० [अ० दफ़ः] १ क्रम, संख्या आदि के विचार से किसी परम्परा में का वह अवसर या काल जिसमें कोई ऐसा काम या बात हुई हो जिसकी फिर भी आवृत्ति हो या होने को हो। बार। बेर। जैसे—(क) वे दिन में तीन दफा भोजन करते है। (ख) आज कलकत्ते में पुलिस ने चार दफा भीड़ पर गोली चलाई। २ बिना किसी क्रम, परम्परा या शृंखला के विचार से, वह अवसर या काल जिसमें कोई विशिष्ट तथा स्वतंत्र घटना घटित हुई हो या होने को हो। बार। बेर। जैसे—(क) एक दफा की बात है कि हम लोग मसूरी गये थे। (ख) एक दफा तो मैं भी उन्हें यहाँ बुलाकर समझाना चाहता हूँ। ३ विधिक क्षेत्र में, किसी कानून, विधान, विधि आदि का वह कोई ऐसा पूरा तथा स्वतंत्र अंश या खंड जिसमें किसी एक विषय की सब आवश्यक बातें कही या लिखी हों। धारा। जैसे—इस कानून की ७वीं दफा गवाहों की पात्रता या योग्यता (अथवा लगान चुकाने के प्रकार) से सबद्ध है। ४ साधारण लोक-व्यवहार में दंड-विधि का उक्त प्रकार का वह अंश या खंड जिसमें किसी विशिष्ट अपराध और उसके लिए नियत दंड का उल्लेख या विवेचन होता है। धारा। जैसे—(क) आज-कल शहर में १४४ वीं दफा लगी हुई है। (ख) पुलिस ने उन पर दफा १०९ का मुकदमा चलाया है।

मुहा०—**(किसी पर कोई) दफा लगाना**=अभियुक्त के संबंध में यह कहना कि इसने अमुक दफा में सम्बद्ध अपराध किया है। जैसे—उस पर चोरी की नहीं, बल्कि डकैती की दफा लगाई गई है।

वि० [अ० दफ़अ] तिरस्कारपूर्वक दूर किया या हटाया हुआ। जैसे—इस पाजी को तो किसी तरह यहाँ से दफा करना चाहिए।

पद—**दफा दफान करना**=(क) किसी व्यक्ति को तिरस्कृत करके दूर करना या हटाना। (ख) किसी बात या विषय का उपेक्षापूर्वक अंत या समाप्ति करना। **रफा दफा**। (देखें स्वतंत्र पद)।

दफादार—पु० [अ० दफ़अ+फा० दार] [भाव० दफादारी] पुलिस या सेना का एक छोटा अधिकारी।

दफादारी—स्त्री० [हिं० दफादार+ई (प्रत्य०)] दफादार का काम या पद।

दफाली—पु० डफाली।

स्त्री० =डफली।

दफीना—पु० [अ० दफ़ीन] जमीन में गड़ा हुआ धन का खजाना या निधि।

दफ्तर—पु० [फा० दफ्तर] १ वे सब कागज-पत्र जिनमें आय-व्यय के विवरण अथवा काम-काज के विवरण आदि लिखे हों। २ बहुत लम्बी-चौड़ी चिट्ठी या पत्र जिसमें कोई विस्तृत विवरण हो। ३ वह स्थान जहाँ बैठकर कुछ लोग लिखने-पढ़ने या हिसाब-किताब रखने का काम करते हों। कार्यालय। (आफिस)

दफ्तरी—पु० [फा० दफ्तरी] १ किसी दफ्तर या कार्यालय का वह कर्मचारी जो कागज आदि ठीक तरह से रखने, सँभालने आदि का काम करता हो। २ वह कारीगर जो पुस्तकों आदि की जिल्द बाँधता या प्रतियाँ बनाकर तैयार करता हो।

दफ्तरी खाना—पु० [फा० दफ्तरी+खान] वह स्थान जहाँ दफ्तरी लोग बैठकर पुस्तकों की जिल्दें बाँधते या प्रतियाँ तैयार करते हों।

दफ्ती—स्त्री० [अ० दफ्तीन] एक तरह का बहुत मोटा, कड़ा और प्रायः रूखा कागज जो जिल्द बाँधने आदि के काम आता है।

दबंग—वि० [हिं० दबाव या दबाना] १ जो बिना भयभीत हुए विशेषतः अधिमूलक अथवा विरोध-सूचक कोई काम करता हो। बिना किसी से दबे हुए और दृढ़तापूर्वक सब काम करनेवाला। २ प्रभावशाली।

दबक—स्त्री० [हिं० दबकना] १ दबकने या छिपने की क्रिया या भाव। २ सिकुड़न। शिकन। ३ लंबा तार या पत्तर बनाने के लिए धातुओं को पीटने की क्रिया।

दबकगर—पु० [फा० तबकगर] तबक अर्थात् धातु को पीटकर उसके पत्तर बनानेवाला कारीगर।

दबकना—अ० [हिं० दबना] १ भय के कारण किसी के सामने से हट और छिप जाना। दुबकना। २ लुकना। छिपना।

क्रि० प्र०—जाना।—रहना।

स० धातु का पत्तर पीटकर चौड़ा करना।

दबकनी—स्त्री० [हिं० दबना] भाथी का मुँह जिसके द्वारा हवा उसके अदर आती है।

दबका—पु० [हिं० दबकाना–तार आदि पीटना] कामदानी का सुनहला या रुपहला चिपटा तार।

पद—दबके का सलमा=एक प्रकार का सलमा जो बहुत चमकीला होता है।

† पु० = दबदबा।

दबकाना—स० [हिं० दबकना] १. छिपाना। लुकाना। २ आड मे करना।

दबकिया†—पु० = दबकगर।

दबकी—स्त्री० [देश०] सुराही की तरह का मिट्टी का एक बरतन जिसमे पानी रखकर खेतिहर आदि खेत पर ले जाते है।

†स्त्री० [हिं० दबकना] १ दबकने की क्रिया या भाव। २ धातु पीटकर तार, पत्तर आदि बनाने की क्रिया या मजदूरी।

दबकैया†—पु० = दबकगर।

वि० १ दबकने या छिपनेवाला। २ दबकाने या छिपानेवाला।

दबगर—पु० [देश०] १ ढाल बनानेवाला। २ चमडे के कुप्पे बनानेवाला।

दबड़-घुसड़—वि० [हिं० दबाना+घुसाना] हर बात मे दबकर कही घुस या छिप जानेवाला। बहुत बडा कायर या डरपोक।

दब-दबा—पु० [अ० दब्दब] किसी व्यक्ति के सबध की वह महत्त्वपूर्ण स्थिति जिसमे उसके अधिकार, प्रभाव तथा भय से सब लोग सहमते हो और उसके विरुद्ध कुछ कर या कह न सकते हो। रोब।

दबन—स्त्री० [हिं० दबना] दबने की क्रिया, अवस्था या भाव।

दबना—अ० [स० दमन] [भाव० दबाव, दाब] १ किसी प्रकार के भार के नीचे आ या पडकर ऐसी स्थिति मे होना कि या तो इधर-उधर न हो सके या कुछ क्षति-ग्रस्त हो। जैसे—(क) सदूक के नीचे किताब या कपडा दबना। (ख) पत्थर के नीचे उँगली या हाथ दबना। २ ऐसी अवस्था मे पडना या होना जिसमे किसी ओर से बहुत जोर या दबाव पडे। दाब मे आना। जैसे—भीड मे बहुत से लोग दब गये। ३ ऐसी सकटपूर्ण स्थिति मे आना या होना कि इच्छानुसार कोई या यथेष्ट गति-विधि न हो सके। जैसे—आज-कल महगी से सब लोग बे-तरह दबे हुए है। ४ किसी चीज का ऐसी स्थिति मे पड या पहुँच जाना कि जल्दी वहाँ से निकल न सके। जैसे—उनके यहाँ हमारे बहुत-से कपडे या किताबे दब गई। ५ किसी के उत्कृष्ट गुण, प्रभाव, शक्ति आदि की बराबरी या सामना करने मे असमर्थ होने के कारण उसकी तुलना मे ठहर न सकना अथवा अपनी इच्छा के अनुसार अपने अधिकार का प्रयोग या ऐसा ही और कोई कार्य न कर सकना। जैसे—(क) जब से ये नये अध्यापक आये है, तब से कई पुराने अध्यापक दब गये है। (ख) बडो के सामने छोटो को दबना ही पडता है। ६ किसी अच्छी चीज के सामने उस वर्ग की दूसरी साधारण चीज का अपनी शोभा या सौन्दर्य दिखाने अथवा देखनेवालो पर प्रभाव डालने मे असमर्थ होना। अच्छा या ठीक न जँचना। जैसे—इस नये मकान के आगे मुहल्ले के पुराने मकान दब गये हैं। ७ किसी चीज या बात का विशेष कारणवश अधिक फैल या बढ़ न सकना और धीमा या मद पड़ना। जैसे—रोग का प्रकोप दबना। ८. किसी मनोविकार या मनोवेग का मद, मद्धिम या शान्त होना। कम होना। घटना। जैसे—क्रोध या वैर-विरोध दबना। ९ अधिक समय बीत जाने के कारण किसी बात का पहलेवाला प्रबल रूप न रह जाना या लोगो के ध्यान से उतर जाना। जैसे—दबी हुई बात फिर से नही उठानी चाहिए। १० किसी बात का अपनी प्रकृत या साधारण अवस्था या मान से कुछ कम, रुका हुआ या हलका होना। जैसे—आमदनी कम होने (या नौकरी छूट जाने) के कारण किसी का हाथ दबना।

मुहा०—दबी आवाज (या जबान) से कोई बात कहना=ऐसे अस्पष्ट या मद रूप मे कहना जिसमे यथेष्ट दृढता, शक्ति, साहस आदि का अभाव दिखाई देता हो। **दबे-दबाये पड़े रहना**=भय, लज्जा, संकोच आदि के कारण क्रिया-शीलता से रहित होकर या शात भाव से अपने स्थान पर पडे या बने रहना। **दबे पाँव या पैर (चलना)**=इस प्रकार धीरे-धीरे पैर रखते हुए चलना कि दूसरो को आहट न मिले या किसी प्रकार का शब्द न होने पावे।

दबमो—पु० [देश०] एक प्रकार का बकरा जो हिमालय मे होता है।

दबवाना—स० [हिं० दबना का प्रे०] किसी को कुछ दबाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—टाँगे दबवाना।

दबस—पु० [?] जहाज पर की रसद तथा दूसरा सामान। जहाजी गोदाम मे का माल।

दबाई—स्त्री० [हिं० दबाना] १ दबाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ अनाज निकालने के लिए बालो या डठलो को बैलो के पैरो से रौदवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

दबाऊ—वि० [हिं० दबाना] १ दबानेवाला। २ (गाडी आदि) जिस का अगला हिस्सा पिछले हिस्से की अपेक्षा अधिक बोझिल हो।

दबाना—स० [हिं० दबना का स०] [भाव० दबाव, दाब] १ ऐसा काम करना जिसमे कुछ या कोई दबे। २ किसी के ऊपर कोई भार रखकर उसे ऐसी स्थिति मे लाना कि वह कुछ क्षतिग्रस्त हो जाय अथवा हिल-डुल न सके। जैसे—सब कपडे या कागज दबाकर रख दो जिससे हवा से उड या बिखर न जायँ। ३ किसी चीज पर कोई भार डाल या रखकर ऐसी स्थिति मे लाना कि उसका ऊपरी तल अथवा सब अग बहुत नीचे जायँ। जैसे—गड्ढे मे या जमीन के नीचे रखकर ऊपर से मिट्टी आदि इस प्रकार डालना कि ऊपर या बाहर से दिखाई न दे। गाडना। ४ इस प्रकार अपने अधिकार मे करके या छिपाकर रखना कि और लोग देख न सकें। जैसे—इस नौकरी मे उन्होंने बहुत से रुपए दबाकर अपने पास रख लिये थे। ५ अनुचित रूप से या बलपूर्वक अपने अधिकार मे कर के रख लेना। जैसे—बाजारवालो के बहुत से रुपए उन्होने दबा लिये थे। सयो० क्रि०—बैठाना।—रखना।—लेना।

६ किसी पर किसी ओर से ऐसा जोर या दाब पहुँचाना कि उसे अपने स्थान से बहुत-कुछ पीछे हटना पडे। जैसे—सिपाही भीड को दबाते हुए सडक के उस पार तक ले गये। ७ शरीर के किसी अग पर उसकी थकावट, पीडा आदि कम करने के लिए अथवा उसमे रक्त का सचार करने के लिए रह-रहकर हाथो से उस पर कुछ हलका भार डालना। जैसे—किसी के पैर या सिर

दबाना। ८. ऐसी स्थिति मे डालना या पहुँचाना कि मनुष्य बहुत कुछ दीन-हीन बनकर या विवश होकर रहे अथवा समय बिताये। जैसे—आपस के झगड़ों (या नित्य की बीमारियों) ने उन्हे आज-कल बहुत कुछ दबा रखा है। ९ अपने प्रभाव, शक्ति आदि से किसी को ऐसी स्थिति में लाना कि वह अपनी इच्छा के अनुसार कोई काम न कर सके अथवा अपनी इच्छा के विरुद्ध कोई काम करने के लिए विवश हो। जैसे—उन्ही के दबाने से हमे सौ रुपए छोडने पड़े (या उनकी तरफ से गवाही देनी पड़ी)। १० अपने गुण, महत्त्व, विशेषता आदि से किसी को कुछ घटकर या हलका सिद्ध करना। जैसे—हाट के इस नगीने ने और सब नगीनो को दबा दिया है। ११ कोई विशेष उपाय या प्रयत्न करके किसी चीज या बात को उभरने, फैलने या बढ़ने से रोकना। दमन करना। जैसे—(क) अराजकता या विद्रोह दबाना (ख) अपमान या कलक दबाना। १२ कुछ रुक या सोच-समझकर अथवा सकीर्णता या सकोचपूर्वक कोई काम करना। जैसे—हाथ दबाकर खर्च करना।

दबाबा—पु० [देश०] मध्य युग मे, वह संदूक जिसमे कुछ आदमी बैठाकर गुप्त रूप से शत्रु-पक्ष मे उपद्रव आदि कराने के लिए पहुँचाये या ले जाये जाते थे।

दबाव—पु० [हि० दबाना] १ दबाने की क्रिया या भाव। दाब। २ किसी बड़े या महत्त्वपूर्ण व्यक्ति का ऐसा प्रभाव जिससे दबकर लोग कोई काम करते हो।

क्रि० प्र०—डालना। पडना।—मानना।—मे आना।—

दबिला—पु० [देश०] हलवाई का एक उपकरण जिससे भूनते समय खोआ, बेसन आदि चलाते है।

दबीज—वि० [फा० दबीज] जिसका दल मोटा हो। सगीन। जैसे—दबीज कपडा या कागज।

दबीर—पु० [फा०] १ लिखनेवाला। मुशी। २ एक प्रकार के महाराष्ट्र ब्राह्मणों की उपाधि।

दबूसा†—पु० [देश०] १ जहाज का पिछला भाग। पिच्छल। २ नाव का वह अश जिसमे पतवार लगी होती है। ३ जहाज का कमरा। (लश०)

दबेला—वि० [हि० दबना+एला (प्रत्य०)] १ दबा हुआ। जिस पर दबाव पडा हो। २ (काम) जो जल्दी-जल्दी पूरा किया जाने को हो। (लश०) ३ दे० 'दबैल'।

दबैल—वि० [हि० दबना+ऐल (प्रत्य०)] १ जिस पर किसी का प्रभाव या दबाव हो। २ किसी से बहुत दबने या डरनेवाला। ३ किसी के आतक, उपकार आदि से दबा हुआ। ४ कमजोर। दुर्बल।

दबोचना—स० [हि० दबाना] १ किसी को सहसा झपटकर पकडते हुए दबा लेना। धर दबाना। २ छिपाना।

सयो० क्रि०—लेना।

दबोरना†—स० = दबाना।

दबोस—पु० [देश०] चकमक पत्थर।

दबोसना†—स० [देश०] अधिक मात्रा मे कोई चीज पीना। जैसे—शराब दबोसना।

दबौनी—स्त्री० [हि० दबाना+औनी (प्रत्य०)] १ कसेरो का लोहे का एक औजार जिससे वे बरतनो पर फूल-पत्ते आदि उभारते है। २ करघे मे की वह लकडी जो मँजनी के ऊपर लगी रहती है।

दब्ब—पु० = द्रव्य।

दब्बू—वि० [हि० दबाना] [भाव० दब्बूपन] जो स्वभावत दूसरो से डरता और दबकर रहता हो।

दभ्र—वि० [स० √दम्भ् (कपट करना)+रक्] अल्प। थोडा।

दमँगल—पु० [फा० दगल ?] युद्ध। उदा०—दमँगल बिण अपचो दियण वीर धणी रो धान।—कविराजा सूर्यमल।

दमंस†—स्त्री० [हि० दाम+अश] खरीदी या मोल ली हुई चीज, विशेषत जायदाद या सपत्ति।

दम—पु० [स०√दम् (दमन करना)+घञ्] १ दमन करने की क्रिया या भाव। २ वह काम जो किसी का दमन करने के लिए किया जाय। ३ शरीर की इद्रियो को वश मे रखने और उन्हे अनुचित कामो या बातो मे लगाने से रोकने की क्रिया। ४ दड। सजा। ५ घर। मकान। ६ एक प्राचीन महर्षि जिनका उल्लेख महाभारत मे है। ७ पुराणानुसार मरुत् राजा के पौत्र जो बभ्रु की कन्या इद्रसेना के गर्भ से उत्पन्न हुए थे और जो वेद-वेदांगो के बहुत अच्छे ज्ञाता तथा धनुर्विद्या मे बहुत प्रवीण थे। ८ बुद्ध का एक नाम। ९ विष्णु। १० दबाव। ११ कीचड।

पु० [फा०] साँस। श्वास।

क्रि० प्र०—आना।—चलना।—रुकना।—लेना।

मुहा०—**दम अटकना**=साँस रुकना। **दम उखड़ना**=बहुत देर-देर पर साँस आना या सहसा चलना जो मृत्यु के बहुत पास होने का लक्षण माना जाता है। **दम उलझना या उलटना**=इतनी अधिक घबराहट या विकलता होना कि ठीक तरह से साँस न लिया जा सके। **दम खींचना**=(क) साँस अदर की ओर खीचना, चढाना या लेना। (ख) बिलकुल चुप या शांत रह जाना। **दम खाना**=कुछ भी उत्तर न देना। बिलकुल चुप रह जाना। (क्व०) **दम घुटना**=साँस का इस प्रकार रुकना या रुककर आना कि जीवित रहना कठिन और कष्टप्रद जान पडे। **दम घोटकर मारना**=(क) गला घोट या दबाकर मारना। (ख) बहुत अधिक शारीरिक कष्ट देकर मारना। **दम चढ़ना**=दम फूलना। **दम चुराना**=जान-बूझकर इस प्रकार साँस रोकना कि दूसरे को आहट न मिले। **दम-टूटना**=(क) बहुत अधिक थक जाने के कारण और अधिक काम करने के योग्य न रह जाना। (ख) साँस का आना-जाना या चलना बद हो जाना। मृत या मृतप्राय हो जाना। **दम तोड़ना**=मरने के समय बहुत ठहर-ठहर या रुक-रुककर साँस लेना। **(किसी के सामने) दम न मारना**=किसी की उपस्थिति मे बहुत ही चुपचाप और विनीत तथा शात भाव से रहना। **दम पचाना**=निरतर कोई परिश्रम या काम करते रहने से ऐसा अभ्यास हो जाना कि अधिक या जल्दी साँस न फूलने लगे। **दम फूलना**=(क) अधिक परिश्रम करने या तेज चलने, दौड़ने आदि के कारण साँस जल्दी जल्दी चलना। हाँफना। (ख) दमे या श्वास का रोग होना। **दम फूँकना**=मुँह से किसी चीज के अंदर हवा भरना। **दम भरना**=परिश्रम करते-करते इतना थक जाना कि और अधिक काम न हो सके। **(किसी बात या व्यक्ति का) दम भरना**=अभिमानपूर्वक यह विश्वास प्रकट करना कि हम अमुक काम या बात

कर सकेंगे, अथवा अमुक व्यक्ति से हमें कभी धोखा न होगा या सहारा मिलता रहेगा। जैसे—अपनी बहादुरी या किसी की दोस्ती (अथवा प्रेम) का दम भरना। **दम मारना**—बहुत अधिक परिश्रम के उपरांत कुछ विश्राम करना। सुस्ताना। **दम साधना**—(क) साँस रोकने का अभ्यास करना। (ख) बिलकुल चुप या मौन रह जाना। कुछ भी उत्तर न देना। (ग) निश्चेष्ट होकर चुपचाप पड़ जाना या पड़े रहना। **(किसी की) नाक में दम करना**—बहुत अधिक कष्ट या दुःख देना। बहुत तंग या परेशान करना।

२ साँस खींचकर जोर से बाहर फेंकने की क्रिया। ३ जादू-टोना करने के लिए मंत्र आदि पढ़कर किसी पर फूंक मारने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—करना।—पढ़ना।—फूंकना।

३ गाँजे, चरस, तमाकू, आदि का धूआँ (नशे के लिए) साँस के साथ अंदर खींचने की क्रिया।

मुहा०—दम लगाना—चिलम पर गाँजा रखकर उसका धूआँ साँस के साथ अंदर खींचना।

४ संगीत में किसी स्वर का ऐसा लंबा उच्चारण जो एक ही साँस में पूरा किया जाय। जैसे—(क) गवैये के गले का दम। (ख) बाँसरी या शहनाई का दम।

मुहा०—दम भरना—गाने के समय साँस रोककर एक ही स्वर का देर तक लंबा उच्चारण करते रहना।

५ कुछ विशिष्ट प्रकार के खाद्य पदार्थ पकाने की वह क्रिया जिसमें उन्हें किसी बरतन में रखकर और उसका मुँह ढककर या बंद करके आग पर चढ़ा देते हैं या उसके ऊपर कुछ जलते हुए कोयले रख देते हैं।

पद—दम आलू।

मुहा०—दम खाना—खाद्य पदार्थ का उक्त प्रकार की क्रिया से पकना। जैसे—चावल अभी कुछ कच्चा है, जरा दम खा जाता तो ठीक हो जाता। **दम देना**—किसी चीज को बरतन में रखकर इसलिए उसका मुँह बंद करके आग पर चढ़ा देना कि वह अंदर की भाप से ही पक जाय। **(किसी चीज का) दम पर आना**—पूरी तरह से पकने में इतनी ही कसर रह जाना कि थोड़ा दम देने से ही अच्छी तरह पक जाय।

६ कलंदरों की वह क्रिया जिसमें वे भालू के मुँह पर लकड़ी या हाथ रखकर साँस खींचना सिखाते हैं। (कहते हैं कि इससे भालू की पाचन-क्रिया ठीक होती और वह शांत रहता है।) ७ उतना समय जितना एक बार साँस लेने में लगता है। क्षण। पल।

पद—दम के दम—बहुत थोड़ी देर। क्षण (या पल) भर। जैसे—दम के दम ठहर जाओ मैं भी तुम्हारे साथ चलूंगा। **दम पर दम**—बहुत थोड़ी-थोड़ी देर पर। जैसे—वहाँ दम पर दम शराब का दौर चलता था। **दम-ब-दम**—दम पर दम। **हर दम**—प्रतिक्षण। हर समय। सदा। हमेशा। जैसे—मैं तो आपकी सेवा के लिए हर दम तैयार रहता हूँ।

९ जान। प्राण। जैसे—अब इसका दम निकलने में अधिक देर नहीं है।

मुहा०—दम खुश्क होना—दे० नीचे 'दम सूखना'। **दम चुराना**—काम या परिश्रम करने से अपने आप को बचाना। जी चुराना। **दम निकलना**—जीवन का अंत होना। प्राण निकलना। मरना। **(किसी पर) दम निकलना**—किसी पर इतना अधिक प्रेम होना कि उसके वियोग में प्राण निकलने का-सा कष्ट हो। **(कोई काम करने में) दम निकलना**—किसी काम के प्रति परम अरुचि या विरक्ति होना। जैसे—लिखने-पढ़ने (या पैसा खरच करने) में तो इनका दम निकलता है। **दम पर आ बनना**—ऐसी नौबत या स्थिति आना कि मानो अब जीवित नहीं बचेंगे। बहुत ही परेशान या हैरान होना। **दम फड़क उठना या जाना**—किसी चीज का गुण, रूप आदि देखकर चित्त का बहुत प्रसन्न होना। **दम फना होना**—दे० नीचे 'दम सूखना'। **दम में दम आना**—घबराहट, भय आदि दूर होने पर चित्त कुछ शांत और स्थिर होना। **दम में दम रहना या होना**—जीवित रहना। जिंदगी बनी रहना। **दम सूखना**—बहुत अधिक भय के कारण ऐसी अवस्था होना कि खुलकर साँस भी न लिया जा सके।

१० किसी बड़े आदमी के संबंध में, उसके महत्त्वपूर्ण व्यक्तित्व का सूचक पद। जैसे—अतिथियों का यह सारा आदर-सत्कार बस आपके दम से ही है (अर्थात् आप ही ऐसा कर सकते हैं, आपके बाद और कोई ऐसा आदर-सत्कार करनेवाला दिखाई नहीं देता)।

मुहा०—किसी का दम गनीमत होना—किसी प्रकार के अभाव की दशा में किसी का अस्तित्व और व्यक्तित्व ही दूसरों के लिए बहुत-कुछ आशाप्रद, उत्साहवर्द्धक या संतोष की बात होना। जैसे—पुराने रईसों में अब आपका ही दम गनीमत है (अर्थात् और सब तो चले गये, आप ही बच रहे हैं)।

११ वह शक्ति जिससे कोई पदार्थ ठीक तरह से बना रहता और अपना पूरा काम देता है। जीवनी-शक्ति। जैसे—अब इस कुरते (या उनके शरीर) में कुछ भी दम नहीं रह गया। १२ तत्त्व। सार। जैसे—तुम्हारी उन बातों में कुछ भी दम नहीं है। १३ तलवार या छुरी आदि की बाढ़। धार।

पद—दम-खम। (देखें)

१४ किसी को छलने या धोखा देने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जिससे उसके भी मन में आशा, धैर्य, साहस आदि का संचार हो।

पद—दम-झाँसा, दम-दिलासा, दम-पट्टी। (देखें)

क्रि० प्र०—देना।—में आना।—में लाना।

मुहा०—दम खाना—किसी के धोखे में आना।

पु० [देश०] दरी बुननेवालों की एक प्रकार की तिकोनी कमाची जिसमें तीन लंबी लकड़ियाँ एक साथ बँधी रहती हैं।

दमक—स्त्री० [हि० 'चमक' का अनु०] चमक-दमक। जैसे—चमक दमक।

दमकना—अ० [हि० दमक (चमक का अनु०)] १ चमकना। २ प्रज्वलित होना। सुलगना। (क्व०)

दमकल—स्त्री० [हि० दम + कल] १ वह यंत्र जिसमें ऐसे नल लगे हों जिनके द्वारा कोई तरल पदार्थ किसी ओर जोर या झोंके से फेंका जा सके। (पप) २ उन यंत्रों का वर्ग या समूह जिनके द्वारा कारखानों, घरों आदि में लगी हुई आग बुझाई जाती है। ३. उक्त सिद्धांत पर बना हुआ वह यंत्र जिससे कूओं आदि का पानी निकाला जाता है। ४. दे० 'दमकला'।

दमकला—पु० [हि० दम+कल] १ वह बड़ा पात्र जिसमें लगी हुई पिचकारी से महफिलों आदि में लोगों पर गुलाब-जल छिड़का जाता है।

२ जहाज मे, वह यत्र जिससे पाल खडे करते है। ३ दे० 'दम-चूल्हा'। ४ दे० 'दमकल'।

दम-खम—पु० [फा० दम- जीवनी-शक्ति+खम -वक्रता या बाँकपन] १ कोई विशिष्ट कार्य करने की शक्ति जो अब भी किसी मे यथेष्ट रूप मे हो। २ दृढ़ता। मजबूती। ३ तलवार के सबध मे, उसकी धार तथा लचीलापन।

विशेष—तलवार की धार और लचीलेपन से ही यह पता चलता है कि वह कितना और कैसा वार या काट कर सकती है।

४ मूर्ति की सुदरता और सुडौल गठन। ५ चित्र मे, विशेष आकर्षण लाने के लिए खीची जानेवाली कोई गोलाई लिये लबी रेखा।

दमघोख—पु० =दमघोष।

दमघोष—पु० शिशुपाल के पिता।

दमचा†—पु० [?] मचान।

दम-चूल्हा—पु० [देश०] लोहे का बना हुआ एक प्रकार का बडा गोल चूल्हा जिसमे कोयला जलाया जाता है।

दमजोड़ा—पु० [?] तलवार। (डि०)

दम-झाँसा—पु० [फा० दम+हि० झाँसा] =दम-पट्टी।

दमड़ा—पु० [हि० दाम+डा (प्रत्य०)] १ दमडी। दाम। २ रुपया-पैसा। धन।

दमडी—स्त्री० [स० द्रविण और धन] १ एक प्रकार का पुराना सिक्का जिसका मूल्य एक आने के बत्तीसवे अश के बराबर होता था। पैसे का आठवाँ भाग।

मुहा०—दमडी के तीन होना—बहुत ही तुच्छ या हीन होना।

पद—दमडी का पूत बहुत ही अयोग्य तथा हीन व्यक्ति। उदा०—लपट धूत पूत दमरी का विषय जाप को जापी।—सूर।

२ चिल-चिल्ल नाम का पक्षी।

दमथ—वि० [स० √दम् (दमन)+अथच्] (मनोवेगो आदि का) दमन करने या दबानेवाला।

दमथु—वि० [स०√दम्+अथु] =दमथ।

दम-दमड़ी—स्त्री० [फा० दम+हि० दमडी] शक्ति और धन-सपत्ति। जैसे—हमारे पास दम-दमडी तो है ही नही, हम वहाँ जाकर क्या करेगे?

दमदमा—पु० [फा० दमदम] १ किले के चारो ओर की चहारदीवारी। २ वह कृत्रिम चहारदीवारी जो युद्ध के समय बोरो मे बालू, मिट्टी आदि भरकर तथा उन्हे एक दूसरे पर रखकर खडी की जाती है। क्रि० प्र०—बाँधना।

दमदार—वि० [फा०] १ जिसमे अधिक दम अर्थात् जीवनी शक्ति हो। २ दृढ। पक्का। मजबूत। ३ जो अच्छी तरह और पूरा काम करने या देने के योग्य हो।

दम-दिलासा—पु० [फा० दम+हि० दिलासा] समय पर किसी के सहायक होने के लिए उसे दिया जानेवाला आश्वासन और उसमे किया जानेवाला उत्साह या बल का सचार।

दमन—पु० [स०√दम् (दड देना)+ल्युट्—अन] १ इद्रियो, मनोवेगो आदि को किसी ओर प्रवृत्त होने अथवा कोई काम करने से रोकना। निग्रह। जैसे—इच्छा या वासना का दमन। २ उठते, उभरते या बढते हुए किसी प्रकार के विरोध-मूलक कार्य तथा उसके कर्ताओ को बल तथा कठोरतापूर्वक दबाना, कुचलना या नष्ट करना। ३ किसी को नियत्रण में रखने के लिए दिया जानेवाला दड। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ एक ऋषि जिनके आश्रम में दमयती का जन्म हुआ था। ७ एक राक्षस का नाम। ८ दमनक। दौना। ९ कुद (पौधा और फूल)। १० द्रोणपुष्पी।

स्त्री० दमयती का वह विकृत नाम जिसमे वह उर्दू-फारसी साहित्य मे प्रसिद्ध है।

दमनक—वि० [स० दमन+कन्] दमन करने या दबानेवाला।

पु० १ दौना नाम का पौधा। २ एक प्रकार छद जिसके प्रत्येक चरण मे तीन नगण, एक लघु और एक गुरु होता है।

दमनपापड—पु० दे० 'पित्त पापडा'।

दमन-शील—वि० [स० ब० स०] [भाव० दमनशीलता] जो दमन करता हो। जिसका स्वभाव दमन करने का हो।

दमना*—अ० [फा० दम] काम करते-करते थक जाना और फलत दम या साँस फूलने लगना।

स० [स० दमन] दमन करना।

†पु० दे० 'दौना'।

दमनी—स्त्री० [स० दमन+ङीप्] अग्निदमनी नाम का क्षुप।

वि० [स० दमन] दमन करनेवाला।

†स्त्री० लज्जा। सकोच।

दमनीय—वि० [स० √दम् (दमन)+अनीयर्] १ जिसका दमन किया जा सके। २ दमन किये जाने के योग्य।

दम-पट्टी—स्त्री० [फा० दम-धोखा+हि० पट्टी=तख्ती] किसी को धोखे मे रखकर अपना काम निकालने के लिए उससे कही जानेवाली आशापूर्ण मीठी-मीठी बाते।

क्रि० प्र०—देना।—पढाना।

दम-पुख्त—वि० [फा०] १ दम देकर पकाया हुआ (खाद्य पदार्थ)। पु० हाँडी अथवा देग का मुँह बद करके पकाया जानेवाला मास या पुलाव।

दम-बाज—वि० [फा० दम+बाज] [भाव० दमबाजी] १ चकमा या दम-बुत्ता देनेवाला। २ गाँजे आदि का दम लगानेवाला।

दमबाजी—स्त्री० [हि० दमबाज] दमबाज होने की अवस्था या भाव।

दम-बुत्ता—पु० [हि० दम] किसी को फुसलाने या कुछ समय के लिए शात रखने के लिए दिया जानेवाला झूठा आश्वासन।

दम-मार—पु० [हि०] वह जो गाँजे या चरस का दम लगाता हो। गाँजा या चरस (का धूआँ) पीनेवाला। उदा०—दम-मार यार किसके, दम लगाया और खिसके। (कहा०)

दमयंतिका—स्त्री० [स० दमयन्ती+कन्—टाप्, ह्रस्व] मदनबान (लता)।

दमयती—स्त्री० [स०√दम् (दमन करना)+णिच्+शतृ+ङीप्, नुम्] १ पुराणानुसार विदर्भ देश की एक राजकुमारी जो राजा भीमसेन की पुत्री थी और जिसका विवाह राजा नल से हुआ था। २ एक तरह की लता। मदनबान।

दमयिता (तृ)—वि० [स०√दम्+णिच्+तृच्] दमन करनेवाला।

दमरक (ख) †—स्त्री० दे० 'चमरख'।

दमरी†—स्त्री० =दमड़ी ।

दमशील—वि० दमन-शील ।

दमसना—स० [स० दमन] १ दमन करना। २ आघात करना ।

दमसाज—पु० [फा०] १ किसी के साथ रहकर उसमे सहानुभूति रखने और उसकी सहायता करनेवाला व्यक्ति । २ सगीत मे, वह व्यक्ति जो किसी गवैये के साँस लेने पर उसके बोल के स्वरों को दोहराता या पूरा करता हो।

दमा—पु०[फा०] फेफडो मे कुछ विशिष्ट प्रकार का विकार होने पर उत्पन्न होनेवाला एक प्रसिद्ध रोग जिसमे साँस बहुत अधिक तेजी से फूलने लगता है और जिसके फलस्वरूप रोगी को बहुत अधिक और बराबर खाँसते रहना पडता है ।

दमाग†—पु०=दिमाग ।

दमाज—पु० [फा० दमामा ?] धौसा । नगाडा ।

दमाणक† —स्त्री०=दमानक ।

दमाद—पु० [स० जामातृ] सबध के विचार से वह व्यक्ति जिसको कन्या ब्याही गई हो। जामाता । दामाद ।

दमादम—अव्य० [अनु०] १ दमदम शब्द करते हुए। २ निरतर। बराबर । लगातार ।

दमान—पु० [देश०] पाल का कपडा । (लश०)

दमानक—स्त्री० [देश०] युद्ध के समय तीरों, गोले-गोलियों आदि की कुछ समय तक बराबर होनेवाली बौछार या मार। उदा०—ज्यौ कमनैन दमानक मै फिर तीर सो मारि लै जात निमानो ।—रहीम ।

दमाम—पु० =दमामा ।

दमामा—पु० [फा० दमाम] बहुत बडा नगाडा । धौसा ।

दमार—स्त्री० =दमारि (दावानल) ।

दमारि*—पु० [स० दावानल] जगल की आग। दावानल ।

दमावति—स्त्री०=दमयनी ।

दमाह—पु० [हि० दमा] १ बैलो के हाँफने का एक रोग। २ वह बैल जिसे उक्त रोग हो ।

दमित—भू० कृ० [स० दम्+णिच्+क्त] १ (मनोवेग या वासना) जिसका दमन किया गया हो। २ (उपद्रव, विद्रोह या उसका कर्त्ता) जो बलपूर्वक प्रयोग करके दबाया गया हो।

दमी (मिन्)—वि० [स० दम इनि] दमनशील ।
वि० [फा० दम] दम लगाने या साधनेवाला ।
पु० १ गँजेडी। २ हुक्के का एक प्रकार का छोटा सफरी नैचा जो जेब मे भी रखा जा सकता है ।
पु० [हि० दमा] वह जिसे दमे या श्वास का रोग हो।

दमुना†—पु० [स० दावानल] अग्नि। आग।

दमैया†—वि० [हि० दमन+ऐया (प्रत्य०)] दमन करनेवाला ।

दमोड़ा—पु० [हि० दाम+ओडा (प्रत्य०)] दाम । मूल्य । (दलाल)

दमोदर—पु०=दामोदर ।

दमोय† —पु० [दमोह, मध्य प्रदेश का एक स्थान] एक प्रकार का बैल जो बोझ ढोने के लिए अच्छा समझा जाता है ।

दम्य—वि० [स०√दम् (दमन करना)+यत्] १ जिसका दमन किया जा सके या हो सके। दमन किये जाने के योग्य। २ (पशु) जो बधिया किया जा सकता हो या किये जाने के योग्य हो।

दयत—पु० =दैत्य ।

दयनीय—वि० [स०√दय्+अनीयर्] १ जिसे देखकर मन मे दया उत्पन्न होती हो। २ जैसे—दयनीय स्थिति। घोर विपत्ति या सकट मे पडा हुआ।

दया—स्त्री० [स०√दय्+अङ्—टाप्] १. मन मे स्वत उठनेवाली वह मनुष्योचित सात्त्विक भावना या वृत्ति जो दु खियो और पीडितो के कष्ट, दु ख आदि दूर करने मे प्रवृत्त करती है। २ अपने व्यक्ति या अपने से दुर्बल व्यक्ति के साथ किया जानेवाला उक्त प्रकार का कोमल व्यवहार। मेहरबानी। (मरसी) ३ दक्ष प्रजापति की कन्या जो धर्म की पत्नी थी।

दया-कूर्च—पु० [स० त०] बुद्धदेव ।

दया-दृष्टि—स्त्री० [मध्य० स०] किसी के प्रति होनेवाली अनुग्रहपूर्ण दृष्टि या भावना ।

दयानत—स्त्री० [अ०] १ देने की भावना। २ ईमानदारी। सत्य-निष्ठा।

दयानतदार—वि० [अ० दयानत+फा० दार] [भाव० दयानतदारी] ईमानदार। सच्चा ।

दयानतदारी—स्त्री० [अ० दयानत+फा० दारी] ईमानदारी। सचाई।

दयाना*—अ० [हि० दया+ना (प्रत्य०)] दयापूर्ण व्यवहार करने मे प्रवृत्त होना। दयालु होना।

दया-निधान—पु० [ष० त०] दया-निधि।

दया-निधि—पु० [ष० त०] १. बहुत बडा दयालु । २ ईश्वर का एक विशेषण जो सज्ञा, सबोधन आदि के रूप मे भी प्रयुक्त होता है। जैसे—दयानिधि, तेरी गति लखि न परै ।

दया-पात्र—वि० [ष० त०] जो दया प्राप्त करने का अधिकारी या पात्र हो। जिस पर दया करना उचित हो।

दयामय—वि० [स० दया+मयट्] १ दया से पूर्ण । परम दयालु । २ ईश्वर का एक विशेषण।

दयार—पु० [फा०] प्रदेश। अत। भू-खड ।
*वि०=दयालु ।
†पु०=देवदार (वृक्ष) ।

दयार्द्र—वि० [दया-आर्द्र, तृ० त०] [भाव० दयार्द्रता] जिसका मन दया से आर्द्र हो गया हो।

दयाल—पु० [?] एक प्रकार की चिडिया जो बहुत मधुर स्वर मे बोलती है।
† वि०=दयालु।

दयालु—वि० [स०√दय् (पालन करना)+आलुच्] [भाव० दयालुता] जो सब पर दया करता हो। दयावान् ।

दयालुता—स्त्री०[स० दयालु+तल्—टाप्] दयालु होने की अवस्था, गुण या भाव ।

दयावंत—वि० [स० दयावत्] [स्त्री० दयावती] दयावान्।

दयावती—वि० स्त्री० [स० दयावत्+ङीप्] दया करनेवाली।

दयावना—अ०=दयाना।

वि०=दयापात्र।

दयावान् (वत्)—वि० [स० दया+मतुप्] जिसके चित्त मे दया हो। दयालु।

दयावीर—पु० [तृ० त०] वह जो दया करने मे वीर हो। वह जो दूसरो पर दया करने मे सबसे बढ़-चढकर हो।

दया-शील—वि० [ब० स०] जो स्वभावत दूसरा पर दया करता हो।

दया-सागर—पु० [ष० त०] जिसके चित्त मे अगाध दया हो। अत्यत दयालु मनुष्य।

दयित—वि० [स०√दय् (दान, रक्षण)+क्त] [स्त्री० दयिता] प्रिय। प्यारा।

पु० विवाहिता स्त्री का पति। स्वामी।

दयिता—स्त्री० [स० दयित+टाप्] १ प्रियतमा। २ पत्नी।

दयित्नु—वि० [स०√दय्+इत्नु] दया-शील।

दरग—पु० [?] टीला। (राज०)

दर—पु० [स०√दृ (भय, विदारण)+अप्] १ डर। भय। २ शख। ३ कदरा। खोह। गुफा। ४ गड्ढा। ५ दरार। ६ चीरने या फाड़ने की क्रिया। विदारण। ७ जगह। स्थान। ८ ठौर-ठिकाना।

वि० चीरने या फाड़नेवाला। (यौ० के अत मे।) जैसे—पुरदर।

वि० किचित्। थोडा।

स्त्री० [हि०] १ किसी चीज का वह दाम जिस पर वह हर जगह मिलती हो अथवा खरीदी या बेची जाती हो। जैसे—गेहूँ (या सोने) की दर बराबर चढ रही है। निर्ख। भाव। २. महत्त्व आदि के विचार मे होनेवाला आदर या कदर। प्रतिष्ठा। जैसे—इस जगह अपनी दर घटाओ।

पु० दल।

*पु० [फा०] १ दरवाजा। द्वार।

मुहा०—दर दर मारा मारा (या मारे मारे) फिरना बहुत दुर्दशा मे पडकर इधर उधर घूमते और ठोकरे खाते रहना।

२ कमरे, खाने, दालान आदि के रूप मे किया हुआ विभाग। जैसे—अलमारी के दर। ३ वह स्थान जहाँ जुलाहे ताना फैलाने के लिए छडियाँ गाडते है।

स्त्री० [स० दारु लकडी] ईख। ऊख।

दर-कंटिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] सतावर नाम की ओषधि।

दरक—वि० [स०√दृ+वुन्—अक] डरपोक। भीरु।

स्त्री० [हि० दरकना] दरकने के कारण होनेवाला अवकाश या चिह्न। दरार।

दरकच—स्त्री० [हि० दरकचना] १ दरकचने की क्रिया या भाव। २ दरकचने के कारण किसी चीज पर पडनेवाला चिह्न या उसके कारण होनेवाला क्षत।

दरकचना—स० [अनु०] १ हलके आघात से थोडा दबाना या पीसना। कूटकर मोटे-मोटे टुकडे करना।

अ० उक्त क्रिया से दबना या क्षत होना।

दरकटी—स्त्री० [हि० दर (भाव)+काटना] १ किसी चीज की दर या भाव मे की जाने या होनेवाली कमी। २ दर या भाव के सबध मे किया जानेवाला निश्चय।

दरकना—अ० [स० दर=फाडना] आघात लगने या दबने के कारण किसी चीज का कुछ कट या फट जाना।

स० हलके आघात या दाब मे कोई चीज काटना, कुचलना या तोडना।

दरका—पु० [हि० दरकना] १ दरकने की क्रिया या भाव। २ दरकने के कारण पडा हुआ चिह्न या लकीर। दरार। ३ ऐसा आघात जिससे कोई चीज दरक या फट जाय।

दरकाना—स० [हि० दरकना] दरकने मे प्रवृत्त करना। थोडा काटना, कुचलना या पीटना।

दरकार—वि० [फा०] किसी काम मे लाने के लिए जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता हो। जैसे—इस समय हमे सौ रुपए दरकार हैं।

स्त्री० अपेक्षा। आवश्यकता। जैसे—जितनी दरकार हो ले जाओ।

दरकारी—वि० [फा० दरकार] जिसकी अपेक्षा या आवश्यकता हो। आवश्यक। जरूरी। जैसे—सब दरकारी चीजे अपने साथ रख लो।

दर किनार—वि० [फा०] किसी प्रकार के क्षेत्र से अलग या बाहर किया हुआ।

पद—दर किनार अलग या दूर रहे। चर्चा ही छोड दी जाय। जैसे—इनाम देना तो दर किनार, वे तनख्वाह तक नही देते।

दरकूच—क्रि० वि० [फा०] बराबर कूच या यात्रा करते हुए। यात्रा मे बराबर आगे बढ़ते हुए।

दरखत—पु० = दरख्त (वृक्ष)।

दरखास्त—स्त्री० [फा० दरख्वास्त] १ किसी काम या बात के लिए किसी से किया जानेवाला निवेदन या प्रार्थना। २ प्रार्थना-पत्र।

मुहा०—(किसी पर) दरखास्त पड़ना=किसी के विरुद्ध अधिकारी के सामने कोई अभियोग-पत्र उपस्थित किया जाना। नालिश या फरियाद होना।

दरखास्ती—वि० [फा० दरख्वास्त] दरखास्त या प्रार्थना-पत्र-सबधी। जैसे—दरखास्ती कागज=ऐसा चिकना, बढिया और मोटा कागज जिस पर दरखास्त लिखी जाती है।

दरख्त—पु० [फा० दरख्त] पेड़। वृक्ष।

दरगाह—स्त्री० [फा०] १ चौखट। दहलीज। २ कचहरी। ३ राज-सभा। दरबार। ४ किसी पीर या बहुत बडे फकीर का मकबरा। मजार।

दर-गुजर—वि० [फा० दर-गुजर] जो गुजर या बीत चुका हो। व्यतीत।

पु० १ किसी मे अवगुण या दोष देखकर भी उसे अनदेखा करना अर्थात् उस पर ध्यान न देना।

मुहा०—(कोई बात) दर-गुजर करना=बीती हुई घटना या बात को उपेक्षापूर्वक भूल जाना। ध्यान न देना। जाने देना।

२ क्षमा। माफी।

दर-गुजरना—अ० [फा० दर-गुजर] उपेक्षापूर्वक छोडकर अलग होना। रहित रहने मे ही अपना कल्याण समझना। बाज आना। जैसे—माफ कीजिए हम ऐसी दावत (या मेहमानदारी) से दर-गुजरे।

दरज—स्त्री० [फा० दर्ज] १ वह पतला लबा अवकाश जो दो चीजो को एक दूसरी से सटाने पर बीच मे बच रहे या दिखाई दे। दरार। २. दीवार आदि ठोस रचनाओं के बीच मे फटने के कारण उसमे टेढ़ी-सीधी रेखा के समान बननेवाला चिह्न जिसमे पानी समाता है।

वि० दर्ज (लिखा हुआ)।

दरज-बदी—स्त्री० [हि० दरज+फा० बदी] दीवार आदि की दरजे बद करने के लिए उसमे मसाला लगाना।

दरजन—पु० [अ० डजन] १ गिनती मे बारह वस्तुओ का समूह। २ उक्त को एक इकाई मानकर चीजो की की जानेवाली गिनती। जैसे—चार दरजन मतरे (अर्थात् १२×४ - ४८ मतरे)।
† स्त्री० दरजिन।

दरजा—पु० [अ० दर्ज] १ प्रतिष्ठा, महत्त्व या सम्मान का पद या स्थान। २ ऐसा स्थान जहाँ रहकर अधिकारपूर्वक किसी कर्तव्य का पालन या किसी प्रकार का प्रबध आदि करना पडे। ओहदा। पद। जैसे—अब तो उनका दरजा बढ गया है। ३ ऐसा वर्गीकरण या विभाजन जो गुण, योग्यता आदि की कमी-बेशी के विचार मे किया गया हो अथवा जिसमे ऊँचे-नीचे, छोटे-बडे आदि का भाव निहित या सम्मिलित हो। श्रेणी। जैसे—यह पुस्तक उससे हजार दरजे अच्छी (या बढकर) है। ४ पाठशालाओ, विद्यालयो आदि मे उक्त दृष्टि से स्थिर किये हुए ऐसे विभाग जिनमे से प्रत्येक मे समान योग्यता रखनेवाले या समान परीक्षा मे उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियो को एक साथ और एक ही तरह की शिक्षा दी जाती हो। श्रेणी। जैसे—उस विद्यालय मे १० वे दरजे तक पढाई होती है।

मुहा०—**दरजा चढ़ाना** विद्यार्थी को परीक्षा मे उत्तीर्ण होने अथवा योग्य समझे जाने के कारण आगे या बादवाले बडे दरजे मे पहुँचाना।
५ किसी रचना के अन्तर्गत सुभीते आदि के विचार से बनाये हुए खाने या किये हुए विभाग। जैसे—पाँच दरजोवाली अलमारी, तीन दरजोवाला सदूक। ६ धातु की बनी हुई चीजो की ढलाई मे, कोई चीज ढालने का वह साँचा (फरमे से भिन्न) जो मौलिक या स्वतत्र रूप से न बनाया गया हो, बल्कि फरमे मे ढाली हुई चीज के अनुकरण और आधार पर तैयार किया गया हो। जैसे—ये मूर्तियाँ तो दरजे की ढली हुई है, हमे तो फरमे की ढली हुई मूर्तियाँ चाहिए।

विशेष—जो चीजे मौलिक या स्वतत्र रूप से नये बनाये हुए साँचे मे (जिसे पारिभाषिक क्षेत्रो मे 'फरमा' कहते है) ढली होती है, वे रचना-कौशल, सफाई, सुदरता आदि के विचार से अच्छी होती है। परतु इस प्रकार ढली हुई चीज से अथवा उसके अनुकरण पर जो दूसरा साँचा बनाया जाता है, वह 'दरजा' कहलाता है। दरजे की ढली हुई चीजे अपेक्षया घटिया या निम्न वर्ग की समझी जाती है।

दरजावार—अव्य० [अ०+फा०] क्रमश एक दरजे या श्रेणी से दूसरे दरजे या श्रेणी मे होते हुए।
वि० जो दरजो या श्रेणियो के रूप म विभक्त हो। श्रेणीबद्ध।

दरजिन—स्त्री० [हि० दरजी का स्त्री०] १ कपडे सीने का काम करने-वाली स्त्री। २ दरजी की पत्नी। ३ दरजी जाति की स्त्री।

दरजी—पु० [फा० दर्जी] [स्त्री० दरजिन] १ वह व्यक्ति जो दूसरो के कपडे सीकर जीविका उपार्जित करता हो। सूचिक।
पद—**दरजी की सूई**—ऐसा आदमी जो कई प्रकार के काम कर सके या कई बातो मे योग दे सके।
२ कपडा सीने का काम करनेवाले लोगो की एक जाति। ३ एक प्रकार की चिडिया जो अपना घोसला पत्ते सीकर बनाती है।

दरण—पु० [स०√दृ (विदारण)+ल्युट्+अन] १ दलन करने अर्थात् चक्की मे डालकर कोई चीज पीसने की क्रिया या भाव। २ ध्वंस। विनाश।

दरणि—स्त्री० [स०√दृ+अनि] = दरणी।

दरणी—स्त्री० [स० दरणि+ङीष्] १ भँवर। २ लहर। ३ प्रवाह।

दरथ—पु० [स०√दृ+अथ] १ गुफा। २ पलायन। ३ चारे की तलाश मे किसी दूसरे स्थान पर जाना।

दरद—वि० [स० दर√दा (देना)+क] भयदायक। भयकर।
पु० १ काश्मीर और हिंदूकुश पर्वत के बीच के प्रदेश का प्राचीन नाम। २ उक्त देश मे रहनेवाली एक पुरानी म्लेच्छ जाति। ३ [दर (किचित्) दै (शुद्धि)+क] ईंगुर। शिगरफ।
पु० [फा० दर्द] १ शारीरिक कष्ट। पीडा। २ प्रसव के समय स्त्रियो को होनेवाली पीडा। ३ किसी प्रकार की अप्रिय या दुखद हार्दिक अनुभूति। जैसे—मेरो दरद न जाने कोय।—मीराँ।
४ कोई ऐसी विशेषता जो हृदय को अभिभूत कर ले। हृदय मे होने-वाली एक प्रकार की मीठी टीस। जैसे—उसके स्वर या गले मे दरद है।

दरदमद—वि० [फा० दर्दमद] [भाव० दरदमदी] १ जिसे दर्द हो। पीडित। २ जो दूसरो का दर्द या पीडा समझकर उनके साथ सहानुभूतिपूर्ण व्यवहार करता हो। सहानुभूति करनेवाला।

दर-दर—अव्य० [फा० दर दरवाजा] १ दरवाजे-दरवाजे। २ प्रत्येक स्थान पर। जगह-जगह।
मुहा०—**दर-दर की ठोकरें खाना** सब जगहो मे तिरस्कृत होते हुए इधर-उधर घूमना। मारे-मारे फिरना।
†वि० दरदरा।

दरदरा—वि० [स० दरण - दलना] [स्त्री० दरदरी] [भाव० दरदरापन] (दला हुआ पदार्थ) जिसके कण महीन चूर्ण के कणो की अपेक्षा कुछ मोटे तथा कठोर होते है। जैसे—दरदरा आटा।

दरदराना—स० [स० दरण] १ इस प्रकार कोई चीज पीसना जिसमे उसके कण दरदरे बनते हो। २ दाँत कटकटाना।

दरदरी—स्त्री० [स० धरित्री] पृथ्वी। भूमि। (डि०)
वि० हि० 'दरदरा' का स्त्री०।

दरदवत—वि० [हि० दरद+वत (प्रत्य०)] १ दूसरो का दरद समझने और उसे दूर करने की मनोवृत्ति या सहानुभूति रखनेवाला। २ जिसे कष्ट या व्यथा हो। पीडित।

दरदवद—वि० = दरदवत।

दर-दालान—पु० [फा०] एक दालान के अदर का दूसरा दालान। दोहरा दालान।

दर-दामन—पु० [फा०] ओढनी, चादर आदि का दामन अर्थात् आँचल का भाग।

दरदावन†—पु० = दर-दामन। उदा०—बादले की सारी दरदावन जगमगी जरतारी झीने झालरि के साज पर।—**देव**।

दरदीला—वि० [हि० दरद+ईला (प्रत्य०)] १ जिसमे या जिसे दरद हो। २ दूसरो का दर्द अर्थात् कष्ट या पीडा समझनेवाला। उदा०—नारायन दिल दरदीले।—**नारायण स्वामी**।

दरद—पु० = दर्द।

दरध—पु० = दर्द।

दरन*—पु० = दरण।

दरना†—स० [स० दरण] १ दलना। पीसना। २ ध्वस्त या नष्ट करना। ३ शरीर पर रगड़कर लगाना। मलना। उदा०—कहै रत्नाकर धरैगी मृगछाला अस धूरि हूँ दरैगी जऊ अग छिलि जाइगो। —रत्ना०।

दरप*†—पु० = दर्प।

दरपक—पु० [स० दर्पक] कामदेव। उदा०—ऐसे जैसे लीने सग दरपक रति है।—सेनापति।

पु० =दर्प।

दरपन—पु० [स्त्री० अल्पा० दरपनी] = दर्पण।

दरपना*—अ० [स० दर्पण] १ दर्प से युक्त होना। क्रोध करना। २ अहकार या अभिमान करना।

दरपनी—स्त्री० [हि० दरपन] चौखटे मे मढा हुआ छोटा शीशा।

दर-परदा—वि० [फा० दर-पर्द] जो परदे या आवरण के अदर या पीछे हो।

अव्य० १ परदे की आड या आड मे। २ दूसरो की दृष्टि बचाकर। छिपकर।

दर-पेश—अव्य० [फा०] किसी के समक्ष। सामने। जैसे—कोई मामला दर-पेश होना।

दर-बद—पु० [फा०] १ चहार-दीवारी। २ पुल। ३ दरवाजा।

दरबदी—स्त्री० [फा० दर+बदी] १ चीजो की दर या भाव निश्चित करने की क्रिया। २ जमीन की लगान की दर निश्चित करने की क्रिया। ३ अलग-अलग दर (खाने या विभागो के) निश्चित करने या बनाने की क्रिया।

†स्त्री० = दरबद।

दरब†—पु० [स० द्रव्य] १ द्रव्य। धन। २ धातु। ३ चीज। वस्तु। ४ एक प्रकार की मोटी चादर।

दरबर†—वि० [?] १ दरदरा। २ (जमीन या रास्ता) जिसमे ककर, ठीकरे आदि अधिक हो। (कहार)

दरबराना—स० [हि० दरबर] १ थोडा पीसना। दरदरा करना। २ दबाना। ३ किसी को इस प्रकार भयभीत करना कि वह खडन या विरोध न कर सके। ४ किसी प्रकार का दबाव डालना।

दरबहरा—पु० [देश०] एक तरह की शराब।

दरबा—पु० [फा० दर] १ काठ आदि की खानेदार अलमारी या सदूक जिसमे कबूतर, मुरगियाँ आदि रखी जाती है। २ दीवारो, पेडो आदि मे का वह कोटर जिसमे पक्षी रहते हैं।

दरबान—पु० [फा० मि० स० द्वारवान्] वह व्यक्ति जो दरवाजे पर चौकसी करता हो। द्वारपाल।

दरबानी—स्त्री० [फा०] दरबान (द्वारपाल) का काम या पद।

दरबार—पु० [फा०] [वि० दरबारी] [भाव० दरबारदारी] १ वह स्थान जहाँ राजा या सरदार अपने मुसाहबो के साथ बैठते और लोगो के निवेदन या प्रार्थना सुनते हैं। राज-सभा।

क्रि० प्र०—करना। —लगना।—लगाना।

मुहा०—**(किसी के लिए) दरबार खुलना**=दरबार मे आने-जाते रहने का अधिकार या सुभीता मिलना। **(किसी के लिए) दरबार बद होना**=प्राय राजा के अप्रसन्न होने के कारण दरबार मे आने-जाने का निषेध होना।

२ दरबार करनेवाला प्रधान व्यक्ति अर्थात् राजा। (राज०) ३ किसी ऋषि या मुनि का आश्रम। ४ दरवाजा। द्वार। (क्व०) ५ दे० 'दरबार साहब'।

दरबारदार—पु० = दरबारी।

दरबारदारी—स्त्री० [फा०] १ प्राय दरबार मे उपस्थित होकर राजा के पास बैठने और बात-चीत करने की अवस्था। २ किसी बडे आदमी के यहाँ बराबर आते-जाते रहने की वह अवस्था जिसमे बडे आदमी का चित्त प्रसन्न करके उसका अनुग्रह प्राप्त करने का प्रयत्न किया जाता है। खुशामद करने के लिए दी जानेवाली हाजिरी।

दरबार-बिलासी*—पु० [फा० दरबार+स० विलासी] द्वारपाल। दरबान।

दरबार साहब—पु० [फा० +अ०] अमृतसर मे सिक्खो का वह प्रधान गुरुद्वारा जिसमे 'गुरुग्रन्थ साहब' का पाठ होता है और जो सिक्खो का प्रधान तीर्थ है।

दरबारी—पु० [फा०] १ वह जो किसी के दरबार मे सम्मिलित होता हो। २ बडे आदमियो के पास बैठकर उनकी खुशामद करनेवाला व्यक्ति। दरबार-दार।

वि० १ दरबार-सम्बन्धी। दरबार का। २ दरबार के लिए उपयुक्त या शोभन।

दरबारी-कान्हड़ा—पु० [फा० दरबारी+हि० कान्हडा] सपूर्ण जाति का एक राग जो रात के दूसरे पहर मे गाया जाता है।

दरबी†—स्त्री० [स० दर्वी] कलछी। उदा०—दरबी लै कै मूढ जरावत हाथ को।—हित हरिवश।

दरभ—पु० [?] बदर।

†पु० १. = दर्भ। २ = द्रव्य।

दरम—पु० =दिरम।

दरमन—पु० [फा० दर्मां] १ उपचार। इलाज। २ औषध। दवा।

दरमाँदा—वि० [फा० दरमाँद] [भाव० दरमाँदगी] १ जो बहुत अधिक थककर किसी के दरवाजे पर पडा हो। २ दीन-हीन। बेचारा। ३ विवश। लाचार। उदा०—दरमाँदे ठाढ़े दरबार।—कबीर।

दरमा—स्त्री० [देश०] बाँस की वह चटाई जो बगाल मे झोपडियो की दीवार बनाने के काम आती है।

†पु० [स० दाडिम] अनार (वृक्ष और फल)।

दरमाहा—पु० [फा० दरमाह] हर महीने मिलनेवाला वेतन।

दरमियान—पु० [फा०] मध्य। बीच।

अव्य० बीच या मध्य मे।

दर-मियाना—वि० [फा० दरमियान] १ बीचवाला। २ जो आकार मे न बहुत बडा हो न बहुत छोटा। मँझला। मझोला।

दरमियानी—वि० [फा०] बीच या मध्य का।

पु० १ वह जो दो दलो या पक्षो के बीच मे पडकर उनका झगडा निपटाता या मामला तै कराता हो। मध्यस्थ। २ दलाल।

दरया—पु० = दरिया (नदी)।

दरयाई—वि०, स्त्री० =दरियाई।

दरयाफ्त—भू० कृ० =दरियाफ्त।

दररना—स० १ = दरना (दलना)। २ = दरेरना।

दरराना*—अ० [अनु०] १ वेगपूर्वक आना। २ इस प्रकार आगे बढ़ना कि आस-पास के लोगों को दबना पड़े या उन्हें धक्का लगे।

दरवाजा—पु० [फा० दर्वाजः] १ कुछ विशिष्ट प्रकार से बना हुआ वह मुख्य अवकाश जिसमे से होकर कमरे, कोठरी, मकान, मैदान आदि में प्रवेश करते है। द्वार।

मुहा०—**(किसी के) दरवाजे की मिट्टी खोद डालना** = इतनी अधिक बार किसी के यहाँ आना-जाना कि वह खिन्न हो जाय या उसे बुरा लगने लगे।

२ वह चौखट जो उक्त अवकाश में लगा रहता है और जिसमे प्राय किवाड़ या पल्ले जड़े रहते है। ३. किवाड़। पल्ला।

क्रि० प्र०—खड़खड़ाना।—खोलना।—बंद करना।—भेड़ना।

४ लाक्षणिक रूप में, कोई ऐसा उपाय या साधन जिसकी सहायता से अथवा जिसे पार करके कहीं प्रवेश किया जाता हो।

दरवी—स्त्री० [स० दर्वी] १ कलछी। २ सड़सी। ३ साँप का फन।

दरवीकर†—पु० = दर्वीकर।

दरवेश—पु० [फा०] [वि० दरवेशी] १ भिखारी। २ मुसलमान साधुओं का एक सप्रदाय।

दरश—पु० = दर्श या दर्शन।

दरशन—पु० = दर्शन।

दरशनी—वि० [स० दर्शन] दर्शन या देखने से सबध रखनेवाला। जैसे—दरशनी हुडी।

स्त्री० दर्पण।

दरशनी हुडी—स्त्री० [हि०] १ महाजनी लेन-देन मे ऐसी हुडी जिसे देखते ही महाजन को उसका धन चुकाना या भुगतान करना पड़े। २ ऐसी हुडी जिसका भुगतान तुरत करना पड़े। ३ कोई ऐसी चीज जिसे दिखाते ही कोई उद्देश्य सिद्ध हो जाय या उसके बदले मे कोई दूसरी चीज मिल जाय।

दरशाना—अ० = दरसाना।

दरस—पु० [स० दर्श] १ देखा-देखी। दर्शन। २ भेंट। मुलाकात। ३ खूबसूरती। सुदरता। ४ छवि। शोभा।

दरसन†—पु० दर्शन।

दरसना*—अ० [स० दर्शन] दिखाई पड़ना। देखने मे आना।

स० देखना।

दरसनिया†—पु० [स० दर्शन] १ मंदिरों मे लोगों को दर्शन करानेवाला पंडा। २ शीतला आदि की शांति के लिए पूजा-पाठ करनेवाला व्यक्ति।

दरसनी*—स्त्री० [स० दर्शन] दर्पण।

वि० = दरशनी।

दरसनीय†—वि० दर्शनीय।

दरसाना—स० [स० दर्शन] १ दर्शन कराना। दिखलाना। २ प्रकट या स्पष्ट रूप मे सामने रखना। ३ स्पष्ट रूप मे बिना कुछ कहे केवल आचरण, व्यवहार आदि के द्वारा जतलाना। झलकाना। जैसे—उन्होंने अपनी बात-चीत मे दरसा दिया कि वे सहमत नही है।

†अ० दिखाई देना।

दरसावना—स० = दरसाना।

दर-हकीकत—अव्य० [फा० + अ०] हकीकत मे। वास्तव मे। वस्तुत।

दरहम—वि० [फा०] अस्त-व्यस्त।

पद—**दरहम-बरहम** = अस्त-व्यस्त।

दराँती—स्त्री० [स० दात्री] घास, फसल आदि काटने का हँसिया नाम का औजार।

मुहा०—**(खेत मे) दराँती पड़ना या लगना** = फसल की कटाई का आरभ होना।

दराई—स्त्री० = दलाई।

दराज—वि० [फा० दराज] [भाव० दराजी] १ बहुत बड़ा या लबा। दीर्घ। जैसे—दराज कद, दराज दुम। २ दूर तक फैला हुआ। विस्तृत।

क्रि० वि० अधिक। बहुत।

स्त्री० [अ० ड्राअर] मेज मे लगा हुआ सदूकनुमा वह लबा खाना जिसमे वस्तुएँ आदि रखी जाती है और जो प्राय खींचकर आगे या बाहर निकाला जा सकता है।

†स्त्री० = दरार।

दरार—स्त्री० [स० दर] किसी तल के कुछ फटने पर उसमे दिखाई देनेवाला रेखाकार अवकाश। दरज।

दरारना—अ० [हि० दरार + ना (प्रत्य०)] विदीर्ण होना। फटना।

स० विदीर्ण करना। फाड़ना।

दरारा—पु० १ = दरेरा। २ = दरार।

दरिंदा—पु० [फा० दरिन्द] वह हिंसक जंतु या पशु जो दूसरे जीवों को चीर-फाड़कर खा जाता हो। जैसे—चीता, भालू, शेर आदि।

दरि—स्त्री० [स० √दृ (विदारण) + इन्] = दरी।

दरित—भू० कृ० [स० दर + इतच्] १ डरा हुआ। २ फटा हुआ।

दरिद—वि०, पु० = दरिद्र।

पु० = दरिद्रता।

दरिद्दर†—वि०, पु० = दरिद्र।

पु० = दरिद्रता।

दरिद्र—वि० [स० √दरिद्रा (दुर्गति) + अच्] [स्त्री० दरिद्रा] [भाव० दरिद्रता] १ जिसके पास निर्वाह के लिए कुछ भी धन न हो। निर्धन। कगाल। २ बहुत ही घटिया या निम्न कोटि का। ३ सार-हीन। पु० कगाल या निर्धन व्यक्ति।

दरिद्रता—स्त्री० [स० दरिद्र + तल् + टाप्] दरिद्र होने की अवस्था या भाव। कगाली। निर्धनता।

दरिद्रायक—वि० [स० √दरिद्रा + ण्वुल्—अक] = दरिद्र।

दरिद्रित—वि० [स० √दरिद्रा + क्त] १ दरिद्र। २ दुःखी।

दरिद्री†—वि० =दरिद्र।

दरिया—पु० [फा० दर्या] १ नदी। २ समुद्र। सागर।

†पु० = दलिया।

वि० [हि० दरना] १ दलनेवाला। २ नाश करनेवाला।

†पु० = दलिया।

दरियाई—वि० [फा० दर्याई] १ दरिया अर्थात् नदी-संबंधी। दरिया या नदी का। २. नदी में या उसके आस पास रहने या होनेवाला। जैसे—दरियाई घोडा। ३ समुद्र-संबंधी। समुद्र का।
स्त्री० पतंग उड़ाने मे वह क्रिया जिसमें एक आदमी उसे पकड़कर पहले कुछ दूर ले जाता है और तब वहाँ से ऊपर आकाश मे छोड़ता है। छुड़ैया।
स्त्री० [फा० दाराई] एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा। (पश्चिम) उदा०—केसरी चीर दरयाई को लेंगो।—मीराँ।

दरियाई घोड़ा—पु० [फा० दरियाई+हि० घोड़ा] अफ्रीका के जंगलों में मिलनेवाला घोड़े के आकार का एक तरह का जंगली जानवर जो नदियो के किनारे झाड़ियो मे रहता है।

दरियाई नारियल—पु० [फा० दरियाई+हि० नारियल] १ समुद्र के किनारे होनेवाला एक प्रकार का नारियल (वृक्ष) जिसके फल साधारण नारियल से बहुत बड़े होते है। २ उक्त वृक्ष का फल।

दरियादास—पु० [?] विक्रमी १७वी-१८वी शती में वर्तमान एक हिंदू (परंतु जन्म से मुसलमान) संत जिन्होने दरिया नामक संप्रदाय चलाया था।

दरियादासी—पु० [हि० दरियादास+ई० (प्रत्य०)] दरियादास का चलाया हुआ पंथ जिसमे निर्गुण की उपासना का विधान है।

दरियादिल—वि० [फा०] [भाव० दरियादिली] जिसका हृदय नदी की तरह विशाल और उदार हो। परम उदार।

दरियादिली—स्त्री० [फा०] उदारता।

दरियाफ्त—भू० कृ० [फा० दर्याफ्त] जिसके संबंध मे पूछ-ताछ करके जानकारी प्राप्त कर ली गई हो। पता लगाकर जाना हुआ।

दरिया-बुर्द—पु० [फा०] ऐसा खेत या जमीन जो किसी नदी के बहाव या बाढ़ के कारण कट या डूबकर खराब या निरर्थक हो गयी हो।

दरियाव†—पु० १ =दरिया (नदी)। २ =दरिया (समुद्र)।

दरी—वि० [सं० दृ+ङीप्] १ फाड़नेवाला। विदीर्ण करनेवाला। २. डरनेवाला। डरपोक।
स्त्री० [सं० दरि+ङीप्] १ खोह। गुफा। २ पहाड़ के नीचे का वह खड्ड जिसमे कोई नदी गिरती या बहती हो।
स्त्री० [सं० दर=चटाई] मोटे सूतों का बुना हुआ मोटे दल का एक प्रकार का बिछौना। शतरंजी।
स्त्री० [फा०] ईरान देश की एक प्राचीन भाषा।

दरीखाना—पु० [फा० दर+खाना] १ ऐसा कमरा या मकान जिसके चारो ओर बहुत से दरवाजे हों। २ बारह-दरी।

दरीचा—पु० [फा० दरीच] [स्त्री० दरीची] १ छोटा दरवाजा। २. खिड़की। ३ रोशनदान।

दरीबा—पु० [हि० दर या दरबा ?] १ वह स्थान जहाँ एक ही तरह की बहुत-सी चीजें इकट्ठी बिकती हों। जैसे—पान का दरीबा। २. बाजार।

दरी-भृत्—पु० [सं० दरी√भृ (धारण करना)+क्विप्] पर्वत। पहाड़।

दरी-मुख—पु० [ष० त०] १ गुफा का मुख। २ राम की सेना का एक बंदर।

दरेती—स्त्री० [सं० दर-यंत्र] छोटी चक्की।
† स्त्री० = दराँती।

दरेक—पु० [सं० द्रेक] बकायन (वृक्ष)।

दरेग—पु० [अ० दरेग] कसर। त्रुटि।

दरेज—स्त्री० [?] एक प्रकार की छपी मलमल या छीट।

दरेर—स्त्री० [हि० दरेरना] १ दरेरने की क्रिया या भाव। २ दरेरे जाने के कारण होनेवाला क्षत या क्षति। ३ नाश। बरबादी।

दरेरना—स० [सं० दरण] १ किसी पदार्थ के तल के साथ इस प्रकार अपना तल रगड़ते हुए उसे दबाना कि उसमे कुछ क्षत हो जाय अथवा उसकी कुछ क्षति हो। २. रगड़। ३ नाश करना।

दरेरा—पु० [सं० दरण] १ दरेरने के लिए दिया जानेवाला धक्का। २ दबाव। चाप। ३ बहाव का तोड़।

दरेस—स्त्री० [अं० ड्रेस] एक प्रकार की फूलदार छीट।
वि० [भाव० दरेसी] जो बना-बनाया तैयार हो और तुरत काम मे लाया जा सके।

दरेसी—स्त्री० [अं० ड्रेसिंग] १ कोई चीज हर तरह से उपयुक्त और काम मे आने योग्य बनाने की क्रिया या भाव। तैयारी। २ इमारत के काम मे, ईंटों के फरश मे, मसाले से दरज भरना।

दरैया†—पु० [सं० दरण] १ दलनेवाला। जो दले। २ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला।

दरोग—वि० [अ० दुरोग] असत्य। झूठा।
पु० असत्य कथन।

दरोग-हलफी—स्त्री० [अ०दुरोग हल्फी] १ सच बोलने की कसम खाकर या शपथ लेकर भी झूठ बोलना जो विधिक क्षेत्रों मे दंडनीय अपराध माना गया है।

दरोगा—पु० = दारोगा।

दरोदर—पु० [सं० दुरोदर (पृषो० सिद्धि)] १. जुआरी। २ पासा।

दर्कार—स्त्री० = दरकार।

दर्गाह—स्त्री० = दरगाह।

दर्ज—वि० [अ०] जो स्मृति, हिसाब-किताब आदि के लिए अपने उपयुक्त स्थान (कागज, किताब, बही आदि) पर लिखा गया हो।
† स्त्री० दे० 'दरज'।

दर्जन—पु० = दरजन।
स्त्री० =दरजिन।

दर्जा—पु० =दरजा।

दर्जावार—वि०, क्रि० वि० = दरजावार।

दर्जिन—स्त्री० =दरजिन।

दर्जी—पु० =दरजी।

दर्द—पु० =दरद (कष्ट या पीड़ा)।

दर्दमंद—वि० =दरदमंद।

दर्दर—वि० [सं०√दृ (विदारण)+यङ्+अच् (पृषो० सिद्धि)] फटा हुआ।
पुं० १ थोड़ा टूटा या चटका हुआ कलसा। २ पहाड़।

दर्दरीक—पु० [सं०√दृ+णिच्+ईकन्] १ मेढक। २ बादल। ३. एक तरह का बाजा।

दर्दी—वि० = दरदमंद।

दर्दुर—पु० [सं०√दृ+उरच् (नि० सिद्धि)] १ मेढक। २ बादल। मेघ। ३ अबरक। अभ्रक। ४ एक प्रकार का पुराना बाजा। ५ कवित्त का एक प्रकार या भेद। ६ बहुत से गाँवों का समूह। ७ नगाड़े का शब्द। ८ एक राक्षस का नाम। ९ पश्चिमी घाट पर्वत का एक भाग। मलय पर्वत से लगा हुआ एक पर्वत। १० उक्त पर्वत के आस-पास का प्रदेश।

दर्दुरक—पु० [सं० दर्दुर+कन्] १ मेढक। २ [दर्दुर√कै (शब्द)+क] २ एक तरह का बाजा।

दर्दुरच्छदा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] ब्राह्मी बूटी।

दर्द्रु—पु० [सं०√दरिद्रा (दुर्गति)+उ, नि० सिद्धि] दाद (रोग)।

दर्प—पु० [सं०√दृप् (गर्व करना)+घञ्] १ अभिमान। घमंड। २ वह तेजस्वितापूर्ण राग या क्रोध जो स्वाभिमान पर अनुचित आघात होने या उसे ठेस लगने पर उत्पन्न होता है और जिसके फल-स्वरूप वह अभिमान तथा दृढ़तापूर्वक प्रतिपक्षी का फटकार बताता है। जैसे—महिला ने बहुत दर्प से उस गुंडे की भर्त्सना की। ३ अहंकार करनेवाले के प्रति मन में होनेवाला क्षणिक विराग। मान। ४ अक्खड़पन। उद्दंडता। ५ वैभव, शक्ति आदि का आतंक। रोब। ६ कस्तूरी।

दर्पक—वि० [सं०√दृप्+ण्वुल्—अक] दर्प करनेवाला।
पु० [√दृप्+णिच्+ण्वुल्] कामदेव।

दर्पण—पु० [सं०√दृप् (चमकना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ मुँह देखने का शीशा। आईना। २ आँख। नेत्र। ३ ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक। ४ उत्तेजित या उद्दीप्त करने की क्रिया या भाव।

दर्पन—पु० =दर्पण।

दर्पित—भू० कृ० [सं० दृप् (गर्व)+णिच्+क्त] १ जो दर्प से युक्त हुआ हो। जिसने दर्प दिखलाया हो। २ अभिमानी। घमंडी।

दर्पी (र्पिन्)—वि० [सं० दर्प+इनि] १ जिसमें दर्प हो। जो दर्प दिखलाता हो। २ अभिमानी। घमंडी।

दर्ब*—पु० [सं० द्रव्य] १. द्रव्य। धन। २ चीज। पदार्थ। ३ धातु।

दर्बान—पु० =दरबान।

दर्बार—पु० =दरबार।

दर्बारी—पु० =दरबारी।

दर्बी—स्त्री० =दरबी।

दर्भ—पु० [सं०√दृभ्+घञ्] १ एक प्रकार का कुश। डाभ। २ कुश का बना हुआ बैठने का आसन।

दर्भ-केतु—पु० [ब० स०] राजा जनक के भाई, कुशध्वज।

दर्भट—पु० [सं०√दृभ् (निर्माण करना)+अटन् (बा०)] घर का वह कमरा जिसमें गुप्त रूप से विचार-विमर्श आदि किया जाता हो।

दर्भण—पु० [सं०√दृभ्+ल्युट्—अन] कुश की बनी हुई चटाई।

दर्भ-पत्र—पु० [ब० स०] काँस नामक घास।

दर्भांकुर—पु० [दर्भ-अंकुर, ष० त०] डाभ का नोकीला अग्र।

दर्भासन—पु० [दर्भ-आसन, मध्य० स०] दर्भ या कुश का बना हुआ आसन। कुशासन।

दर्भाह्वय—पु० [सं० दर्भ+आ√ह्वे (बुलाना)+श] मूँज।

दर्भेषिका—स्त्री० [दर्भ-ईषिका, ष० त०] कुश का डंठल।

दर्मियान—पु० =दरमियान।

दर्मियानी—वि० =दरमियानी।

दर्याव†—पु० =दरिया (नदी)।

दर्रा—पु० [फा० दर्र.] पहाड़ों के बीच का सँकरा तथा दुर्गम मार्ग।
पु० [हिं० दलना] १ किसी चीज का मोटा पीसा हुआ चूर्ण। जैसे—गेहूँ या दाल का दर्रा। २ ऐसी मिट्टी जिसमें बहुत-से छोटे-छोटे कंकड़-पत्थर हों। (ऐसी मिट्टी प्रायः सड़कों पर बिछाई जाती है।)
†पु० =दरार।

दर्राज—स्त्री० [फा० दराज=लंबा] बढ़इयों का एक उपकरण जिससे वे लकड़ी सीधी करते हैं।

दर्राना—अ० [अनु० दड़-दड़, धड़-धड़] तेजी से और बेधड़क चलते हुए आगे बढ़ना या कहीं प्रवेश करना। जैसे—दर्राते हुए किसी के घर में घुस या चले जाना।

दर्व—पु० [सं०√दृ (विदारण)+व] १ हिंसा करनेवाला मनुष्य। २ राक्षस। ३ उत्तरी पंजाब के एक प्रदेश का पुराना नाम। ४ उक्त देश में बसनेवाली एक प्राचीन जाति।
†पु० =द्रव्य।

दर्वरीक—पु० [सं०√दृ+ईकन्, नि० सिद्धि] १ इंद्र। २ वायु। ३ एक बाजा।

दर्वा—स्त्री० [सं०] उशीनर की पत्नी।

दर्विक—पु० [सं०√दृ+विन्+कन्] करछुल।

दर्विका—स्त्री० [सं० दर्विक+टाप्] १ घी की बत्ती जलाकर बनाया जानेवाला काजल। २ बनगोभी।

दर्विदा—स्त्री० [सं० दर्वि√दो (खण्डन)+ड+टाप्] कठफोड़वे की तरह की एक चिड़िया।

दर्वी—स्त्री० [सं० दर्वि+ङीप्] १ करछी। कलछी। २ साँप का फन।

दर्वी-कर—पु० [सं० ब० स०] फनवाला साँप।

दर्श—पु० [सं०√दृश् (देखना)+घञ्] १ दर्शन। २ अमावास्या तिथि जिसमें चंद्रमा और सूर्य का संगम होता है, अर्थात् वे एक ही दिशा में रहते हैं। ३ अमावास्या के दिन होनेवाला यज्ञ। ४ चांद्र मास की द्वितीया तिथि। दूज। ५ नया चाँद।

दर्शक—वि० [सं०√दृश्+ण्वुल्—अक] १ (वह) जो कोई चीज देख रहा हो अथवा देखने के लिए आया हो। जैसे—खेल आरंभ होने से पहले मैदान दर्शकों से भर चुका था। २ [दृश्+णिच्+ण्वुल्] दिखलाने या दर्शानेवाला। (यौ० के अंत में) जैसे—मार्ग-दर्शक।
पुं० १ वह व्यक्ति या व्यक्तियों का वह समूह जो कहीं बैठकर कोई घटना, तमाशा दृश्य आदि देखता हो। २ द्वारपाल। दरबान।

दर्शन—पु० [सं०√दृश्+ल्युट्—अन] १ देखने की क्रिया या भाव। २ नेत्रों द्वारा होनेवाला ज्ञान, बोध या साक्षात्कार। ३ प्रेम, भक्ति और श्रद्धापूर्वक किसी को देखने की क्रिया या भाव। जैसे—किसी देवता या महात्मा के दर्शन के लिए कहीं जाना।
क्रि० प्र०—करना।—देना।—पाना।—मिलना।—होना।
विशेष—इस अर्थ में इस शब्द का प्रयोग संस्कृत के आधार पर बहुधा बहुवचन में ही होता है। जैसे—अब आप के दर्शन कब होंगे?

४ आपस मे होनेवाला आमना-सामना या देखा-देखी। भेंट। मुलाकात। ५ आँख या दृष्टि के द्वारा होनेवाला ज्ञान या बोध। ६. आँख। नेत्र। ७ स्वप्न। ८ अक्ल। बुद्धि। ९ धर्म या उसके तत्त्व का ज्ञान। १० दर्पण। शीशा। ११ रग। वर्ण। १२ नैतिक गुण। १३ विचार या उसके आधार पर स्थिर की हुई सम्मति। १४ किसी को कोई बात अच्छी तरह समझाते हुए बतलाना। १५ कोई बात ध्यान या विचारपूर्वक देखना और अच्छी तरह समझना। १६ वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे प्राणियों को होनेवाले ज्ञान या बोध, सब तत्त्वो तथा पदार्थों के मूल और आत्मा, परमात्मा प्रकृति, विश्व, सृष्टि आदि से सबध रखनेवाले नियमो, विधानो, सिद्धातो, आदि का गभीर अध्ययन, निरूपण तथा विवेचन होता है। सब बातों के रहस्य, स्वरूप आदि का ऐसा विचार जो तत्त्व, नियम आदि स्थिर करता हो। दर्शन-शास्त्र।

विशेष—तर्क और युक्ति के आधार पर व्यापक दृष्टि से सब बातों के मौलिक नियम ढूंढनेवाले जो शास्त्र बनाते है, उन सब का अतर्भाव दर्शन मे होता है। हमारे यहाँ साख्य, योग, वैशेषिक, न्याय, मीमासा (पूर्व मीमासा) और वेदात (उत्तर मीमासा) ये छ दर्शन बने है, जिनमे अलग-अलग ढग से उक्त सब बातों का विचार और विश्लेषण हुआ है। इनके सिवा चार्वाक, बौद्ध, आर्हत, पाशुपत, शैव आदि और भी अनेक गौण तथा साप्रदायिक दर्शन है। अनेक पाश्चात्य देशो मे भी उक्त सब बातो की जो बिलकुल स्वतत्र रूप से और गहरी छान-बीन हुई है, वह भी दर्शन के अतर्गत ही है।

१७ किसी प्रकार की बडी और महत्त्वपूर्ण क्रिया या ज्ञान के क्षेत्र के सभी मौलिक तत्त्वों, नियमो, सिद्धान्तो आदि का होनेवाला विचार-पूर्ण अध्ययन और विवेचन। जैसे—जीवन, धर्म, नीति शास्त्र आदि का दर्शन, पाश्चात्य दर्शन, भारतीय दर्शन आदि। १८ उक्त विषय पर लिखा हुआ कोई प्रमाणिक और महत्त्वपूर्ण ग्रथ। १९ कोई विशिष्ट प्रकार की तात्त्विक या सैद्धांतिक विचार-प्रणाली। जैसे—गाधी-दर्शन।

दर्शन-प्रतिभू—पु० [स० त०] वह प्रतिभू या जमानतदार, जो किसी व्यक्ति की किसी विशिष्ट समय तथा स्थान पर उपस्थित होने की जिम्मेदारी अपने ऊपर लेता हो।

दर्शनीय—वि० [स०√दृश्+अनीयर्] १ जिसके दर्शन करना उचित या योग्य हो। २ देखने योग्य। मनोहर। सुदर।

दर्शनी हुडी—स्त्री० दरशनी हुडी।

दर्शाना—स० दरसाना।

दर्शित—भू० कृ० [स०√दृश्+णिच्+क्त] जो दिखलाया गया हो। दिखलाया हुआ।

दर्शी (र्शिन्)—वि० [स०√दृश्+णिनि] १ देखनेवाला। जैसे—आकाशदर्शी। २ मनन या विचार करनेवाला। जैसे—तत्त्वदर्शी।

दर्स—पु० [अ०] १ पठन। पढना। २ उपदेश। ३ शिक्षा।

दल—पु० [स०√दल् (भेद करना)+अच्] १. किसी वस्तु के उन दो सम खडो मे से हर एक जो एक दूसरे से स्वभावत जुडे हो पर जरा-सा दबाव पडने से अलग हो जायँ। जैसे—अरहर, उरद, चने आदि के दानो के दो दल। २ पौधो के कोमल छोटे पत्ते। जैसे—तुलसी-दल। ३ फूलो के वे अग जो छोटे कोमल पत्ते के रूप मे होते है। पखडी। जैसे—कमल या गुलाब के फूल के दल। ४ किसी बडी इकाई के अलग-अलग छोटे खड या टुकडे जो स्वतत्र रूप से काम करते हो। जैसे—सैनिकों के कई दल नगर मे घूम रहे हैं। ५ ऐसे व्यक्तियो का वर्ग या समूह जो किसी विशिष्ट (अच्छे चाहे बुरे) उद्देश्य की सिद्धि के लिए सघटित हुआ हो और साथ मिलकर काम करता हो। (पार्टी) जैसे—डाकुओ या स्वयसेवको का दल। ६ एक ही जाति या वर्ग के प्राणियो का गरोह या झुड। जैसे—कबूतरो, च्यूंटियो या बदरो का दल। ७ आधुनिक राजनीति मे, किसी विशिष्ट विचार-धारा के अनुयायियो का वह सघटित समूह जो देश, सस्था आदि का शासन सूत्र सभालने के लिए चुनाव आदि लडता है। ८ परत की तरह फैली हुई चीज की मोटाई। जैसे—दल का शीशा। ९ फुसी, फोड़े आदि के आस-पास कुछ दूर तक होनेवाली वह सूजन जिससे वहाँ का चमडा मोटा हो जाता है। जैसे—इस फोडे ने बहुत दल बाँध रखा है।

क्रि० प्र०—बाँधना।

१० अस्त्र के ऊपर का आच्छादन। कोष। म्यान। ११. धन। दौलत। १२ जलाशयों मे होनेवाला एक प्रकार का तृण। १३ तमालपत्र।

दलक—स्त्री० [हि० दलकना] १ दलकने की क्रिया या भाव। २. कुछ देर तक होता रहनेवाला बहुत हलका कप। थरथराहट। ३ रह-रह-कर होनेवाली हलकी पीडा। टीस।

पु० छुरी की तरह का एक उपकरण जिससे राजगीर नक्काशी के अदर का मसाला साफ करते हैं।

स्त्री० [फा०] गुदडी।

दलकन—स्त्री० [हि० दलकना] १ दलकने की क्रिया या भाव। दलक। २ थरथराहट। ३ आघात आदि के कारण लगनेवाला झटका।

दलकना—अ० [स० दल या दलन] १ किसी चीज के ऊपर के दल या मोटी तह का रह-रहकर कुछ ऊपर उठते और नीचे गिरते हुए कांपना या हिलना। जैसे—चलने मे तोद दलकना। २ डर से कांपना या थर्राना। ३ उद्विग्न या विकल होना। घबराहट से बेचैन होना। उदा०—दलकि उठेउ सुनि हृदै कठोरू। —तुलसी।

†अ० दरकना।

स० [स० दलन] डराकर या भयभीत करके कँपाना।

दल-कपाट—पु० [ब० स०] हरी पँखडियों का वह कोश जिसमे कली बद रहती है।

दल-कोश—पु० [ब० स०] कुद का पौधा।

दल-गंजन—वि० [स०√गञ्ज् (नाश करना)+ल्यु—अन, ष० त०] अनेक दलो या व्यक्तियो के समूहो को नष्ट करने या मारनेवाला, अर्थात् बहुत बडा वीर।

पु० एक प्रकार का धान।

दल-गध—पु० [ब० स०] सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन।

दल-घुसरा—पु० [हि० दाल+घुसडना] वह रोटी जिसमे दाल या पीठी भरी हो।

दल-थंभ†—पु० [स० दल+हि० थामना] सेनापति।

दलथंभन—पु० [हि० दल+थामना] १ कमखाब बुननेवाले का एक

औजार जो बाँस का होता है और जिसमे अँकुड़ा और नकशा बँधा रहता है। २ दलथंभ।

दल-दल—स्त्री० [स० दलाढ्य] १ बहुत गीला और मुलायम निम्नतल जिसमे मिट्टी के साथ इतना अधिक पानी मिला हो कि उस पर आदमी का बोझ टिक या ठहर न सके, बल्कि नीचे धँस जाय। (मार्श) २ लाक्षणिक रूप मे, वह विकट या सकटपूर्ण स्थिति जिसमे हर प्रकार से खराबी या बुराई होती हो तथा जिससे जल्दी छुटकारा या बचाव न हो सके। क्रि० प्र०—मे पड़ना (या फँसना)।

स्त्री० [अनु०] कहारो की परिभाषा मे, बुड्ढी स्त्री (जो डोली या पालकी पर सवार हो)।

दलदला—वि० [हि० दलदल] [स्त्री० दलदली] (प्रदेश) जिसमे दलदल बहुत अधिक हो।

दलदार—वि० [हि० दल+फा० दार] जिसकी तह, दल या परत मोटी हो। जैसे—दलदार आम।

दलन—पु० [स०√दल् (भेदन)+ल्युट्—अन] [वि० दलित] १ पीस-कर छोटे-छोटे टुकड़े करने की क्रिया। चूर-चूर करने का काम। २ ध्वस। विनाश। सहार।

वि० ध्वस या नाश करनेवाला। (यौ० के अत मे) जैसे—दुष्ट-दलन।

दलना—स० [स० दलन] १ चक्की, जाँते आदि मे डालकर बीज आदि पीसना। जैसे—गेहूँ या जौ दलना। २ दरदरा पीसना। ३ बुरी तरह से कुचल, मसल या रौदकर नष्ट करना। ४ बहुत अधिक कष्ट देना या दमन करना। ५ पत्तियाँ, फूल आदि तोड़ना। ६ झटके से कई खड या टुकड़े करना। (क्व०)

दलनि—स्त्री० = दलन।

दल-निर्मोक—पु० [स० ब० स०] भोजपत्र का पेड़।

दलप—पु० [स० दल√पा (रक्षण)+क] १ दल का नायक, प्रधान या मुखिया। दलपति। २ [√दल्+कपन्] अस्त्र। ३ सोना। स्वर्ण।

दल-पति—पु० [ष० त०] १ दल का नायक। यू-थप। २ सेनानायक।

दल-पुष्पा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] केतकी का पौधा।

दल-बदी—स्त्री० [हि० दल+फा० बदी] १ दलो का निर्माण तथा सघटन करना। (क्व०) २ किसी दल के अतर्गत अथवा किसी सस्था के कार्यकर्ताओ मे प्राय फूट, राग-द्वेष के कारण छोटे-छोटे समूह बनाने की क्रिया या भाव।

दल-बल—पु० [स० मध्य० स०] १ लाव-लश्कर। फौज। २ अनुयायी, सगी-साथी, नौकर-चाकर आदि। जैसे—मत्री महोदय दल-बल सहित पहुँचे थे।

दलबा—पु० [हि० दलना] वह अशक्त पक्षी (जैसे—तीतर, बटेर आदि) जिसे उसका स्वामी दूसरे पक्षियो से लड़ाकर और मार खिलाकर दूसरे पक्षियो का साहस बढ़ाते हैं।

दल-बादल—पु० [हि० दल+बादल] १ बादलो का समूह। २ किसी के साथ चलने या रहनेवाले बहुत से लोगो का समूह। ३ बहुत बड़ी सेना। ४ एक प्रकार का बहुत बड़ा खेमा या शामियाना।

दलमलना—स० [हि० दलना+मलना] १ किसी चीज को खूब दलना और मलना। २ अच्छी तरह कुचलना, मसलना या रौदना। ३ पूरी तरह से ध्वस्त या नष्ट करना।

दलमलाना—स० हि० 'दलमलना' का प्रे० रूप।

अ० = दलमलना।

दलवाना—स० [हि० दलना का प्रे० रूप] १ दलने का काम दूसरे से कराना। २ ध्वस्त कराना। ३ दमन कराना।

दलवाल—पु० [स० दलपाल] सेनापति। फौज का सरदार।

दलवैया—वि० [हि० दलना] दलनेवाला।

दलसारिणी—स्त्री० [स० सार+इनि+ङीप्, दल-सारिणी, स० त०] केमुआ। कडा। कच्चू।

दल-सूचि—पु० [स० ब० स०] १ ऐसा पौधा जिसके पत्तो मे काँटे हो। २ [ष० त०] उक्त प्रकार के पत्तो का काँटा। ३ किसी प्रकार का काँटा।

दलसुसा†—स्त्री० [स० दलस्नसा] पत्तो की नसे। दलो की शिराएँ।

दलहन—पु० [हि० दाल+अन्न] ऐसे बीज जिनकी दाल बनाई जाती है। जैसे—अरहर, उड़द, चना, मूंग आदि।

दलहरा—पु० [हि० दाल+हारा] १ वह जो दलहन पीसकर दाल बनाता हो। २ केवल दाले बेचनेवाला रोजगारी।

दलहा—पु० [स० थल, हि० थाल्हा] थाला। आलबाल।

दलाढक—पु० [स० दल-आढक, तृ० त०] १ जगली तिल। २ गेरू। ३ नागकेशर। ४ सिरिस का पेड़। ५ कुद का पौधा या फूल। ६ एक प्रकार का पलाश जिसे गजकर्णी भी कहते है। ७ फेन। ८ खाई। ९ बवडर। १० गाँव का मुखिया। ११ हाथी का कान।

दलाढ्य—पु० [स० दल-आढ्य, तृ० त०] नदी के किनारे का कीचड़।

दलावली—स्त्री० [स० दल+अनु०] आपस मे होनेवाली दल-बदियाँ और उनकी लाग-डाँट या होड़।

दलान†—पु० = दालान।

दलाना—स० [हि० दलना का प्रे० रूप] कोई चीज दलने मे किसी को प्रवृत्त करना।

†अ० दला जाना।

दलामल—पु० [स० दल-अमल, तृ० त०] १ दौना। २ मरुआ। मैनफल।

दलाम्ल—पु० [स० दल-अम्ल, ब० स०] लोनिया साग। अमलोनी।

दलारा—पु० [देश०] एक तरह का झूलनेवाला बिस्तरा। (लश०)

दलाल—पु० [अ० दल्लाल] १ वह व्यक्ति जो किसी चीज के लेन-देन के समय क्रेता और विक्रेता के बीच मे पड़कर उस वस्तु का दर या भाव निश्चित कराता या सौदा पक्का कराता हो और एक या दोनो पक्षो से अपनी सेवा के प्रतिफल मे कुछ धन लेता हो। २ वह व्यक्ति जो कामुक पुरुषो को पर-स्त्रियो से मिलाता और उनसे धन प्राप्त करता है। ३ जाटो, पारसियों आदि मे एक जाति या वर्ग।

दलाली—स्त्री० [फा०] १ दलाल का काम। क्रेता-विक्रेता के बीच मे पड़कर सौदा तै कराने का काम। २ दलाल को उसके परिश्रम या सेवा के बदले मे मिलनेवाला धन या पारिश्रमिक।

दलाह्वय—पु० [स० दल-आह्वय, ब० स०] तेजपत्ता।

दलि—स्त्री० [स०√दल् (भेदन)+इन्] दलनी।

दलिक—पु० [सं० दलि+कन्] काष्ठ।

दलित—भू० कृ० [सं०√दल्+क्त] १ जिसका दलन हुआ हो। २ जो कुचला, दला, मसला या रौंदा गया हो। ३ टुकडे-टुकडे किया हुआ। चूर्णित। ४ जो दबाया गया हो अथवा जिसे पनपने या बढ़ने न दिया गया हो। हीन-अवस्था मे पडा हुआ। ५ ध्वस्त या नष्ट किया हुआ।

दलित वर्ग—पु० [सं०] समाज का वह निम्न-तम वर्ग जो उच्च वर्ग के लोगों के उत्पीडन के कारण आर्थिक दृष्टि से बहुत ही हीन अवस्था मे हो। जैसे—दास प्रथावाले देशों मे दास, सामन्त-शाही व्यवस्था मे कृषक, या पूंजीवादी व्यवस्था मे मजदूर दलित वर्ग मे माने जाते है। (डिप्रेस्ड क्लासेज)

दलिद्दर—वि० [सं० दरिद्र] १ दरिद्र। २ बिलकुल गया-बीता और बहुत ही निम्न कोटि का। परम निकृष्ट।

पु० १ दरिद्रता। २ कूडा-करकट। झाड-झखाड। बिलकुल निकम्मी और रद्दी चीजे। जैसे— दीवाली पर घर का सारा दलिद्दर निकाल कर फेंका जाता है।

दलिद्र—पु० = दरिद्र।

दलिया—पु० [हि० दलना] १ किसी खाद्यान्न के बीजों का पीसा हुआ मोटा या दानेदार चूर्ण। २ उक्त का दूध आदि मे पकाया हुआ गाढा रूप।

दली (लिन्)—वि० [सं० दल+इनि] १ जिसमे दल या मोटाई हो। २ जिसमे दल या पत्ते हो। ३ जो किसी दल (वर्ग या समूह) मे मिला हुआ या उसके साथ हो।

दलीप—पु० = दिलीप।

दलील—स्त्री० [अ०] १ कोई ऐसी पुष्ट उक्ति या विचार जिसमे किसी बात या मत का यथेष्ट समर्थन या खडन होता हो। युक्ति। २ वाद-विवाद। बहस।

दले-गंधि—पु० [सं० ब० स०] सप्तपर्णी वृक्ष।

दलेपंज—पु० [हि० ढलना+पंजा] वह घोडा जिसकी उमर ढल गई हो या ढल चली हो।

वि० जिसकी उमर ढल गई हो या ढल चली हो।

दलेल—स्त्री० [अं० ड्रिल] १ सिपाहियों को दिया जानेवाला एक प्रकार का दंड या सजा जिसमे उन्हे पूरी वर्दी पहनाकर और कई प्रकार के हथियारों से युक्त करके टहलाते है। २ वह कवायद जो सजा की तरह पर कराई जाती हो।

मुहा०—**दलेल बोलना** = सजा की तरह पर कवायद करने या उक्त प्रकार से टहलते रहने की आज्ञा या दंड देना।

दलै†—अव्य० [अनु०] फीलवानों का एक शब्द जिसका उच्चारण वे हाथी से उसका मुँह खुलवाने के लिए करते है।

दलैया—पु० [हि० दलना] १ दलन या नाश करनेवाला। २ दलने या पीसनेवाला।

दल्भ—पु० [सं० दल् (भेदन)+भ] १. छल। धोखा। प्रतारणा। २. पाप। ३ चक्र।

दल्मि—पु० [सं०√दल्+मि] १ शिव। २ इन्द्र का वज्र।

दल्लाल—पु० = दलाल।

दल्लाला—स्त्री० [अ०] कुटनी।

दल्लाली—स्त्री० = दलाली।

दवँगरा—पु० [सं० दव+अगार?] पावस ऋतु की पहली वर्षा।

दवँरी—स्त्री० = दवनी।

दव—पु० [सं०√दु (जलाना)+अच्] १ वन। जंगल। २ जंगल मे प्राकृतिक रूप से लगनेवाली आग। दावाग्नि। ३ अग्नि। आग।

दवथु—पु० [सं०√दु+अथुच्] १ जलन। दाह। २ कष्ट। दुःख। पीडा।

दवन—पु० १ = दमन। २ = दमनक (दौना)।

दवन-पापड़ा—पु० [सं० दमनपर्पट] पित पापडा।

दवना*—स० [सं० दव] जलाना।

अ० = जलना।

†पु० = दौना।

दवनी—स्त्री० [सं० दमन] कटी हुई फसल को इस प्रकार बैलों से रौंदवाना जिसमे बीज डंठलों से अलग हो जायँ। मिसाई। मिंडाई।

दवरिया†—स्त्री० = दवारि।

दवा—स्त्री० [फा०] १ वह वस्तु जिसमे कोई रोग या व्यथा दूर हो। औषध। २ कोई ऐसा उपचार या चिकित्सा जिससे रोग शांत हो। ३ किसी प्रकार का अनिष्ट दोष या बुराई दूर करने या किसी बिगडी हुई बात को ठीक करने का उपाय, युक्ति या साधन। जैसे—इस बेवकूफी की कोई दवा नहीं है।

*स्त्री० [सं० दव] दावानल।

दवाई†—स्त्री० = दवा (ओषधि)।

दवाईखाना—पु० = दवाखाना।

दवाखाना—पु० [फा०] १ वह स्थान जहाँ ओषधियाँ बनती या बिकती हों। २ अस्पताल। चिकित्सालय।

दवागि*—स्त्री० [सं० दावाग्नि] वनाग्नि। दावानल। दावाग्नि।

दवागिन—स्त्री० = दावाग्नि।

दवाग्नि—स्त्री० [सं० दव-अग्नि, कर्म० स०] वन मे लगनेवाली आग। दावानल।

दवात—स्त्री० [अ०] १ मिट्टी, धातु, शीशे आदि का वह छोटा पात्र जिसमे लिखने की स्याही घोली जाती है। मसि-पात्र। २ स्याही से भरा हुआ उक्त पात्र।

दवान*—पु० [देश०] एक तरह का अस्त्र।

दवानल—पु० [सं० दव-अनल, कर्म० स०] दावाग्नि।

दवामी—वि० [अ०] बराबर बना रहनेवाला। स्थायी। चिरस्थायी।

दवामी काश्तकार—पु० [अ० दवामी+फा० काश्तकार] वह जिसे स्थायी रूप से काश्तकारी का अधिकार प्राप्त हो।

दवामी पट्टा—पु० [अ० दवामी+हि० पट्टा] वह पट्टा जिसके अनुसार स्थायी रूप से किसी चीज के भोग का अधिकार किसी को मिले।

दवामी बंदोबस्त—पु० [फा०] वह अवस्था जिसमे जमीन की सरकारी मालगुजारी चिरकाल के लिए निश्चित हो जाती है।

दवार—स्त्री० = दवारि।

दवारि—स्त्री० [सं० दावाग्नि, हि० दवागि] १ वनाग्नि। दावानल। २ संताप।

दश (न्)—वि० [स०√दश् (हिंसा करना)+कनिन् (बा०)] दस। (सख्या)

दश-कठ—वि० [ब० स०] दस कठोवाला।
पु० रावण।

दशकठारि—पु० [दशकठ-अरि, ष० त०] (रावण के शत्रु) श्रीरामचद्र।

दश-कध—पु० [स० दश-स्कध, हिं० कध] रावण।

दश-कधर—पु० [ब० स०] रावण।

दशक—पु० [स० दशन्+कन्] १ दस का समूह। २ दस वर्षों का समूह। ३ सन्, सवत् आदि मे हर एक इकाई से दहाई तक के दस-दस वर्षों का समूह। (डीकेड) जैसे—बीसवी शताब्दी का तीसरा दशक अर्थात् १९२१ से १९३० तक के वर्षों का समूह।

दश-कर्म (न्)—पु० [मध्य० स०] गर्भाधान से लेकर विवाह तक के हिंदू-धर्म के अनुसार बालक के दस सस्कार—गर्भाधान, पुसवन, सीमतोन्नयन, जातकर्म, निठक्रमण, नामकरण, अन्नप्राशन, चूडाकरण, उपनयन और विवाह।

दश-कुलवृक्ष—पु० [मध्य० स०] तत्र के अनुसार ये दस वृक्ष—लिसोडा, करज, बेल, पीपल, कदब, नीम, बरगद, गूलर, आँवला और इमली।

दश-कोषी—स्त्री० [ब० स०, डीष्] सगीत मे, रुद्रताल के ग्यारह भेदो मे से एक।

दश-क्षीर—पु० [मध्य० स०] १ सुश्रुत के अनुसार दूध देनेवाले ये दस जीव—गाय, बकरी, ऊँटनी, भेड, भैस, घोडी, स्त्री, हथनी, हिरनी और गदही। २ उक्त जीवो का दूध।

दश-गात्र—पु० [द्विगु० स०] १ शरीर के दस प्रधान अग। २ कर्मकाड मे, वे कृत्य जिनमे किसी के मरने पर दस दिनो तक दस पिंड इस उद्देश्य से बनाकर दिये जाते है कि मृतात्मा के दसो अग फिर से बन जायँ और उसका शरीर पूरा हो जाय।

दश-ग्राम-पति—पु० [दश-ग्राम, द्विगु स०, दशग्राम-पति, ष० त०] प्राचीन भारत मे दस गाँवो का अधिकारी या स्वामी।

दश-ग्रीव—पु० [ब० स०] रावण।

दशति—स्त्री० [स० दश-दश (नि० सिद्धि)] सौ। शत।

दशद्वार—पु० [मध्य० स०] शरीर के ये दस छिद्र—२ कान, २ आँखे, २ नाक, १ मुख, १ गुदा, १ लिंग और १ ब्रह्माड।

दशधा—वि० [स० दशन्+धा] दस प्रकार का। दस रूपोवाला।
अव्य० दस प्रकार से।

दशधा भक्ति—स्त्री० [स०] नवधा भक्ति और उसमे सम्मिलित की हुई दसवी प्रेम-लक्षणा भक्ति का समाहार।

दशन—पु० [स०√दश् (काटना)+ल्युट्—अन, नलोप] १ दाँत। २ कवच। ३ चोटी। शिखर।

दशनच्छद—पु० [स० दशन√छद् (ढकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] होठ।

दशन-बीज—पु० [स० ब० स०] अनार।

दशनांशु—पु० [दशन-अशु, ष० त०] दाँतो की चमक।

दशना—वि० [स० दशन से] दाँतोवाली (स्त्री)।

दशनाढ्या—स्त्री० [दशनाढ्य, ब० स०, टाप्] लानिया शाक।

दश-नाम—पु० [स० द्विगु स०] तीर्थ, आश्रम, वन, अरण्य, गिरि, पर्वत, सागर, सरस्वती, भारती और पुरी सन्यासियो के ये दस भेद।

दशनामी—पु० [हिं० दश+नाम] सन्यासियो का एक वर्ग जो अद्वैतवादी शकराचार्य के शिष्यो से चला है और जिसमे दशनाम (देखें) वर्ग के दश भेद है।
वि० १ दशनाम-सबधी। २ दशनाम वर्ग के अन्तर्गत किसी नामधारी शाखा या भेद से सबध रखनेवाला।

दशप—पु० [स० दशन्√पा (रक्षण)+क] दशग्रामपति।

दश-पारमिता-धर—पु० [दश-पारमिता द्विगु स०, दशपारमिता-धर ष० त०] बुद्धदेव।

दशपुर—पु० [स० दशन्√पृ (पूर्ण करना)+क] १ केवटी मोथा। २ मालव देश का एक प्राचीन विभाग जिसमे दस मुख्य नगर थे।

दश-पेय—पु० [ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

दश-बल—पु० [ब० स०] बुद्धदेव।

दश-बाहु—पु० [ब० स०] महादेव।

दश-भूमिग—पु० [दश-भूमि, द्विगु स०,√गम् (जाना)+ड] बुद्धदेव (जो दस भूमियो या बलो से युक्त समझे जाते है)।

दश-भूमीश—पु० [दशभूमि-ईश ष० त०] दश भूमिग।

दशम—वि० [स० दशन्+डट मट्—आगम] १ गिनती मे १० के स्थान पर पडनेवाला। २ जो किसी चीज का दसवाँ भाग हो।

दशम-दशा—स्त्री० [कर्म० स०] साहित्य मे वियोगी की वह दसवी और अतिम दशा जिसमे वह परम दु खी होकर प्राण त्याग देता है।

दशम-भाव—पु० [कर्म० स०] जन्म कुडली मे लग्न के स्थान से दसवाँ घर। (ज्या०)

दशमलव—पु० [स०] १ गणित मे वह बिंदु जो किसी इकाई, का दसवे, सौवें आदि के बीच का कोई अश सूचित करने के लिए उससे पहले लगाया जाता है। जैसे— ६ (६।१० भाग), ०६ (६।१०० भाग) २ उक्त चिह्न लगाकर सूचित की जानेवाली सख्या। (विशेष देखे 'दशमिक प्रणाली')

दशमलवकरण—पु० [स०] गणित मे इकाई से कम मान सूचित करनेवाले अशो को दशमलव का रूप देना। (डेसिमलाइजेशन)

दशमांश—पु० [दशम-अश, कर्म० स०] किसी चीज के दस समान भागो मे से हर एक। दसवाँ भाग या हिस्सा।

दशमाल—पु० दशमालिक।

दशमालिक—पु० [स०] एक प्राचीन देश।

दशमास्य—वि० [स० दश-मास, द्विगु स०,+यत्] दस मास की अवस्थावाला।
पु० बालक, जो दस महीने गर्भ मे रहता है।

दशमिक—वि० [स०] दशमलव भाग से सबध रखनेवाला।

दशमिक प्रणाली—स्त्री० [स०] नाप, तौल, मान आदि स्थिर करने की वह गणितीय पद्धति या प्रणाली जिसमे हर मान अपने से निकटस्थ बड़े मान का दसवाँ भाग और निकटस्थ छोटे मान का दस गुना होता है। (डेसिमल सिस्टम) जैसे—(क) यदि दस पैसो का एक आना और दस आनो का एक रुपया मान लिया जाय अथवा दस तोले की एक छटाँक, दस छटाँक का एक सेर और दस सेर का एक मन मान लिया जाय तो यह

अवस्था दशमिक प्रणाली के अनुसार होगी। इसमे आना नो पैसे का दस-गुना और और रुपये का दसवाँ भाग होगा। इस प्रकार सेर तो छटाँक का दस गुना होगा और मन का दसवाँ भाग। (ख) आज-कल भारत मे तौल, दूरी, सिक्के आदि के नये मान इसी प्रणाली के अनुसार स्थिर होने लगे है।

दशमिक-भग्नांश—पु० [स०] दशमलव। (दे०)

दशमी—स्त्री० [स० दशम+ङीप्] १ चान्द्र मास के प्रत्येक पक्ष की दसवीं तिथि। २ विजया दशमी। ३ मनुष्य की दसवी और अतिम दशा, अर्थात् मरण। मृत्यु। मौत। ३ सासारिक आवागमन और बधनो से मुक्त होने की अवस्था। मुक्ति।
वि० [सं० दशम+इनि] जो अपने अस्तित्व या जीवन के ९० वर्ष पार कर के सौ वर्षों के लगभग हो रहा हो, अर्थात् बहुत पुराना या बुड्ढा।

दश-मुख—पु० [स० ब० स०] रावण, जिसके दस मुख थे।

दश-मूत्रक—पु० [स० द्विगु स० +क] वैद्यक मे हाथी, भैस, ऊँट, गाय, बकरा, भेडा, घोडा, गदहा, मनुष्य और स्त्री इन दस जीवो का मूत्र।

दश-मूल—पु० [स० द्विगु स०] १ सरिवन, पिठवन, छोटी कटाई, बडी कटाई, गोखरू, बेल, सोनापाठा, गभारी, गनियारी और पाठा इन दस वृक्षो की जड। २ उक्त पेडो की छाल। ३ उक्त पेडो की जडो या छालो का बनाया हुआ काढा।

दश-मौलि—पु० [स० ब० स०] रावण।

दश-योग-भग—पु० [स० ष० त०] एक नक्षत्रवेध जिसमे विवाह आदि शुभ कर्म नही किये जाते। (फलित ज्योतिष)

दश-रथ—पु० [स० ब० स०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवशी राजा जिनके राम, भरत, लक्ष्मण और शत्रुघ्न ये चार पुत्र थे।

दश-रश्मि-शत—पु० [स० ब० स०] सूर्य।

दश-रात्र—पु० [स० द्विगु स०, +अच् समा०] एक प्रकार का यज्ञ जो दस रातो मे समाप्त होता था।

दश-वक्त्र—पु० [स० ब० स०] रावण।

दश-वदन—पु० [स० ब० स०] रावण

दश-वाजी—(जिन्) पु० [स० ब० स०] चद्रमा, जिसके रथ मे दस घोडे जुते हुए माने जाते है।

दश-वीर—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

दश-शिर (स्)—पु० [स० ब० स०] रावण।

दश-शीर्ष—पु० [स० ब० स०] १ रावण। २ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, जिससे दूसरो के चलाये हुए अस्त्र व्यर्थ किये जाते थे।

दशशीश*—पु० दश-शीर्ष।

दश-स्यंदन—पु० [स० ब० स०] राजा दशरथ जिनके यहाँ दस रथ थे।

दशहरा—पु० [स० दश हि०हरा] १ वह उत्सव जिसमे गगा नदी की पूजा तथा आराधना की जाती है। २ ज्येष्ठ शुक्ला दशमी, जिस दिन उक्त उत्सव मनाया जाता है। ३ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से दशमी तक के दस दिन। ४ विजया दशमी।

दश-हरा—स्त्री० [स०] १ गगा नदी जो दस प्रकार के पापो की विनाशिनी मानी गई है।

दशांग—पु० [स० दशन्-अग, ब० स०] दस प्रकार के सुगधित द्रव्यो के योग से बननेवाला एक तरह का धूप।

दशांग-क्वाथ—पु० [स० मध्य० स०] दस प्रकार की ओषधियो के योग से बननेवाला काढा।

दशांगुल—पु० [स० दशन्-अगुलि, ब० स०, +अच्] खरबूजा।

दशांत—पु० [स० दशा-अत ष० त०] अतिम दशा या वय, अर्थात् वृद्धावस्था। बुढापा।

दशांतर—पु० [स० दशा-अतर, ष० त०] जीवन की विभिन्न अवस्थाएँ।

दशा—स्त्री० [स०√दश् (काटना)+अङ्, नलोप, टाप्] १ कुछ समय तक बराबर चलने या बनी रहनेवाली कोई ऐसी विशिष्ट अवस्था जिसमे कोई घटना अथवा बात हुई हो, होती हो अथवा हो सकती हो। हालत। जैसे—देश की आर्थिक दशा का चित्रण। २ मनुष्य के जीवन मे घटित होनेवाली घटनाओ, परिवर्तनो आदि के विचार से भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ जो सख्या मे कही ४, कही ८ (जन्म, शैशव, बाल्य, कौमार, पौगड, यौवन, जरा और मरण) और कही १० (अभिलाषा चिता, स्मृति, गुणकथन, उद्वेग, सताप, उन्माद, व्याधि, जडता और मरण) कही गई है। ३ साहित्य मे, रस के अतर्गत विरही या विरहिणी की अवस्था या हालत। ४ फलित ज्योतिष मे, अलग-अलग ग्रहो का नियत या निश्चित भोग-काल जिसका प्रभाव मनुष्य के जीवन-यापन पर पडता है। जैसे—आज-कल उनके जीवन मे शनिश्चर (अथवा मगल, बुध आदि) की दशा चल रही है। ५ कपडे का छोर या सिरा। पल्ला। ६ दीए की बत्ती। उदा०—ज्योति बढावति दशा उतारि।—केशव। ७ चित्त या मन। ९ प्रज्ञा। ८ कर्मो का फल। १० भाग्य। ११ दे० 'दशिका'।

दशाकर्ष—पु० [स० दशा+आ√कृष् (खीचना)+अच्] १ कपडे का छोर या सिरा। २ दीआ। दीपक।

दशाकर्षी (र्षिन्)—पु० [स० दशा+आ√कृष्+णिनि] =दशाकर्ष।

दशाक्षर—पु० [स० दशन्-अक्षर, ब० स०] एक तरह का छद।

दशाधिपति—पु० [स० दशा-अधिपति, ष० त०] १ दशाओ के अधिपति ग्रह। (ज्योतिष) २ वह अधिकारी जिसके अधीन दस सैनिक रहते थे।

दशानन—पु० [स० दशन्-आनन, ब० स०] रावण।

दशानिक—पु० [स०√अन् (जीना)+घञ् आन+ठक्—इक, दशा-आनिक स० त०] जमाल-गोटा।

दशा-पवित्र—पु० [स० उपमि० स०] वस्त्र के वे टुकडे जो श्राद्ध आदि मे दान दिये जाते है।

दशाब्द—पु० [स० दशन्-अब्द, द्विगु स०] दस वर्षों का समूह। दशक।

दशामय—पु० [स० दशन्-आमय, ब० स०] रुद्र।

दशारुहा—स्त्री० [स० दशन्+आ√रुह (उगना)+क—टाप्] कैवर्तिका नाम की लता जिसके पत्तो से तैयार किये हुए रग से कपडे रगे जाते है।

दशार्ण—पु० [स० दशन्-ऋण, ब० स०, वृद्धि] १ विंध्य पर्वत के पूर्व-दक्षिण के उस प्रदेश का प्राचीन नाम जिससे होकर धसान नदी बहती है। विदिशा (आधुनिक भिलसा) इसी प्रदेश की राजधानी थी। २ जैन पुराणो के अनुसार उक्त प्रदेश का राजा। जिसका अभिमान तीर्थंकर ने चूर्ण किया था। ३ तत्र मे एक दशाक्षर मत्र।

दशार्णा—स्त्री० [स० दशार्ण+अच्—टाप्] विंध्य पर्वत से निकली हुई धसान नामक नदी।

दशार्द्ध—पु० [सं० दशन्√ऋध् (बढ़ना)+अण्] बुद्धदेव, जो दस बलों से युक्त माने जाते है।

दशार्ह—पु० [सं०] १ एक प्राचीन देश जिस पर किसी समय वृष्णियों का अधिकार था। २ उक्त देश का राजा वृष्णि। ३ राजा वृष्णि के वंश का व्यक्ति। ४ विष्णु। ५. बौद्ध।

दशावतार—पु० [सं० द्विगु स०] विष्णु के दस अवतार।

दशावरा—स्त्री० [सं०] दस सदस्यों की शासन-सभा।

दशाश्व—पु० [सं० दशन्-अश्व, ब० स०] चंद्रमा (जिसके रथ में दस घोड़े लगते है)।

दशाश्वमेध—पु० [सं० दशन्-अश्वमेध, ब० स०] १ काशी के अंतर्गत एक प्रसिद्ध घाट और तीर्थ। २ प्रयाग के अंतर्गत एक घाट और तीर्थ। **विशेष**—कहते है कि किसी समय वाकाटकों ने उक्त दोनों स्थानों पर दस-दस अश्वमेध यज्ञ किये थे।

दशास्य—पु० [सं० दशन्-आस्य ब० स०] दशमुख। रावण।

दशाह—पु० [सं० दशन्-अहन्, द्विगु स०, टच् समा०] १ दस दिन। २ मृतक की मृत्यु के दसवें दिन होनेवाले कृत्य।

दशिका—स्त्री० [सं० दशा+कन्-टाप्, ह्रस्व, इत्व] कपड़े के थान का छोर या सिरा। छीर। दसी।

दशी—स्त्री० दे० 'दशक'।

दशेंधन—पु० [सं० दशा-इंधन, ब० स०] दीपक।

दशेर(क)—पु० [सं० दशेर+कन्] १ मरु देश। २ उक्त देश का निवासी। ३ ऊँट का बच्चा।

दशेश—पु० [सं० दशन-ईश, ष० त०] १ दस ग्रामों का नायक। २ [दशा-ईश] सूर्य।

दष्ट—भू० कृ० [सं० √दश्+क्त, षत्व] जो किसी द्वारा डसा गया हो।

दष्णना*—स० =देखना।

दस—वि० [सं० दश] १ जो गिनती में नौ से एक अधिक हो। पाँच का दूना। २ अनेक। कई। जैसे—वहाँ दस तरह की बातें होती रहती है।

पु० १ नौ और एक के योग की सूचक संख्या। २ उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१०

दसखत†—पु० दस्तखत।

दसठौन—पु० [सं० दश+स्थान] बुंदेलखंड में प्रचलित एक रीति जिसमें बच्चा जनने के दसवें दिन प्रसूता स्त्री नहाकर सौरीवाली कोठरी से निकलकर दूसरी कोठरी या कमरे में जाती है।

दस-तपा—पु० [हि० दस+तपना] जेठ महीने में मृगशिरा नक्षत्र के अंतिम दस दिन जिनके खूब तपने पर आगे चलकर अच्छी वर्षा की आशा की जाती है।

दसन—पु० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाड़ी जो पंजाब, सिंध, राजपूताने आदि में होती है। दसरनी।

†पु० दशन।

दसना—अ० [हि० डासना] हि० 'दसाना' का अ० रूप। बिछाया जाना। बिछना।

स० दे० 'दसाना' (बिछाना)।

पु० बिछौना। बिस्तर।

स० दे० 'डसना'।

दसबदन—पु० =दशवदन (रावण)।

दस-मरिया—स्त्री० [हि० दस+मढ़ना] एक साथ दस तख्ते लंबाई के बल में जोड़कर बरसाती नदी में तैरने के लिए बनाई जानेवाली एक तरह की बड़ी रचना।

दसमाथ*—पु० [हि० दस+माथ] रावण।

दसमी—स्त्री० =दशमी।

दसरंग—पु० [हि० दस+रंग] मालखंभ की एक प्रकार की कसरत।

दसरनी—स्त्री० दे० 'दसन' (झाड़ी)।

दसरान—पु० [हि० दस+रान?] कुश्ती का एक पेंच।

दसवाँ—वि० [सं० दशम] गिनती में दस के स्थान पर आने, पड़ने या होनेवाला। जैसे—महीने का दसवाँ दिन।

मुहा०—**दसवाँ द्वार खुलना**=(क) मृत्यु के समय ब्रह्मांड (मस्तक का ऊपरी भाग) खुलना या फटना, जिसमें से होकर आत्मा का शरीर से निकलना माना जाता है। (ख) लाक्षणिक रूप में अक्ल या होश-हवास गुम हो जाना।

पु० हिंदुओं में वह कृत्य जो किसी के मरने के दसवें दिन होता है।

दसहरा—पु० दशहरा।

दसहरी—पु० [हि० दसहरा] एक तरह का बढ़िया आम।

दसांग†—पु० =दशांग (एक तरह की धूप)।

दसा—पु० [हि० दस] अग्रवाल वैश्यों के दो प्रधान भेदों में से एक। (दूसरा भेद 'बीसा' कहलाता है।)

†स्त्री० =दशा।

दसाना*—स० डसाना (बिछाना)।

दसारन—पु० =दशार्ण। (दे०)

दसारी—स्त्री० [देश०] एक तरह का छोटा जल-पक्षी।

दसी—स्त्री० [सं० दशा या दशिका=कपड़े का छोर] १ कपड़े के थान, दुपट्टे, धोती आदि में लंबाई के बल में दोनों सिरों पर भिन्न रंगों के डोरों से बने हुए चिह्न जो थान के पूरे होने के सूचक होते है। छीर। २ ओढ़ने या पहनने के कपड़े का आँचल या पल्ला। ३ चिह्न। निशान। ४ बैल-गाड़ी में दोनों ओर लगी हुई पटरियाँ। ५ चमड़ा छीलने की रॉपी।

दसेंई—पु० [देश०] तेंदू का पेड़।

दसें—स्त्री० [सं० दशमी, हि० दसई] दशमी तिथि। (पूरब)

दसोतरा—वि० [सं० दशोत्तर] गिनती में जो दस से अधिक हो।

पु० प्रति सौ में दस।

क्रि० वि० दस प्रतिशत।

दसौंधी—पु० [सं० दास=दानपत्र+बंदी=भाट] बंदियों या चारणों की एक जाति जो अपने को ब्राह्मण मानती है। ब्रह्मभट्ट। भाट।

दस्तंदाज—वि० [फा०] [भाव० दस्तंदाजी] बीच में हाथ डालने अर्थात् दखल देनेवाला। हस्तक्षेप करनेवाला।

दस्तंदाजी—स्त्री० [फा०] किसी काम में हाथ डालने की क्रिया या भाव। किसी होते हुए काम में की जानेवाली छेड़-छाड़ जो प्रायः अनुचित समझी जाती है। हस्तक्षेप।

दस्त—पु० [सं० हस्त से फा०] १. हस्त। हाथ।

पद—दस्तकार, दस्तखत, दस्तबरदार आदि।

२ पेट मे विकार होने के कारण निकलनेवाला असाधारण रूप से पतला मल। प्राय पानी की तरह पतला शौच होने की क्रिया।

मुहा०—दस्त लगना बार-बार बहुत पतला मल निकलना या शौच होना।

दस्तक—स्त्री० [फा०] १ हाथ से किया हुआ हलका आघात। २. ताली। ३ किसी को बुलाने के लिए उसके दरवाजे पर उक्त प्रकार से खटखटाने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।

४ अधिकारियो द्वारा किसी के नाम निकाला हुआ वह आज्ञा-पत्र जिसमे उससे अपना देन चुकाने के लिए कहा गया हो।

क्रि० प्र०—भेजना।

पद—दस्तक सिपाही—वह सिपाही जो किसी से मालगुजारी आदि वसूल करने या किसी को पकड़ने के लिए दस्तक (आज्ञा-पत्र) देकर भेजा जाय।

मुहा०—दस्तक माफ करना—(क) क्षमा करना। (ख) उत्तरदायित्व से मुक्त करना।

५ कही से कोई माल ले आने या ले जाने के लिए मिला हुआ वह अधिकारपत्र जो कुछ विशिष्ट स्थानो पर दिखाना पड़ता है। निकासी या राहदारी का परवाना। ६ कर। महसूल।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

७ ऐसा आकस्मिक अनावश्यक काम जिसमे कुछ व्यय करना पड़े।

मुहा०—दस्तक बाँधना या लगाना—व्यर्थ का व्यय ऊपर डालना। नाहक का खर्च जिम्मे लगाना या लेना। जैसे—तुमने यह चदे की अच्छी दस्तक बाँध ली है।

दस्तकार—पु० [फा०] [भाव० दस्तकारी] वह कारीगर जो हाथ से छोटे-मोटे उपकरणों की सहायता से (मशीनो से नही) चीजे तैयार करता हो। शिल्पी।

दस्तकारी—स्त्री० [फा०] १ हाथ से चीजे बनाकर तैयार करने का काम। २ इस प्रकार तैयार की हुई कोई वस्तु।

दस्तकी—स्त्री० [फा०] १ वह छोटी बही जो याददाश्त के लिए बात आदि टाँकने के काम आती और प्राय हर-दम पास रखी जाती है। २ बहेलियो का दस्ताना जो शिकारी पक्षियो के वार को रोकने के लिए हाथ मे पहना जाता है।

दस्तखत—पु० [फा०] १ किसी के हाथ के लिखे हुए अक्षर। २ (लेख के अत मे) हाथ से लिखा हुआ अपना नाम जो इस बात का सूचक होता है कि उक्त लेख मेरी इच्छा से लिखा गया है और मैं उससे अनुबद्ध होता हूँ। हस्ताक्षर।

दस्तखती—वि० [फा० दस्तखत] जिस पर दस्तखत हो। २ (लेख) जिस पर लिखने या लिखानेवाले का नाम उसी के हाथ का लिखा हो। हस्ताक्षरित। जैसे—दस्तखती चिट्ठी।

दस्तगीर—पु० [फा०] [भाव० दस्तगीरी] किसी का हाथ विशेषत संकट के समय किसी का हाथ पकड़ने अर्थात् उसका सहायक होनेवाला।

दस्तगीरी—स्त्री० [फा०] दस्तगीर अर्थात् सहायक होने की अवस्था या भाव।

दस्तपनाह—पु० [फा०] चिमटा।

दस्तबरदार—वि० [फा०] [भाव० दस्तबरदारी] १ जिसने किसी वस्तु पर से अपना अधिकार या स्वत्व छोड़ दिया या हटा लिया हो। २ किसी चीज या बात से बिलकुल अलग रहनेवाला।

दस्तबरदारी—स्त्री० [फा०] किसी चीज मे अपना अधिकार हटाकर सदा के लिए छोड़ या त्याग देने की क्रिया या भाव।

दस्त-बस्ता—अव्य० [फा० दस्त बस्त] १ किसी के आगे हाथ बाँधे अर्थात् जोड़े हुए (प्रार्थना करना)। २ विनम्रतापूर्वक।

दस्तयाब—वि० [फा०] [भाव० दस्तयाबी] हाथ मे आया या मिला हुआ। प्राप्त। हस्तगत।

दस्तर—स्त्री० दस्तार (पगड़ी)।

दस्तरखान—पु० [फा० दस्तरख्वान] वह कपड़ा जिसके ऊपर खाने के लिए भोजन के थाल आदि सजाये या रखे जाते है।

दस्ता—पु० [फा० दस्त] १ हाथ मे पकड़ने या रखने की चीज। जैसे—गुल-दस्ता। २ औजारो, हथियारो आदि का वह अग जो उन्हे काम मे लाने या चलाने के समय हाथ से पकड़ा जाता है। बेंट। मूठ। जैसे—आरी, चाकू, तलवार या हथौड़ी का दस्ता। ३ किसी चीज का उतना अश या भाग जो सहज मे हाथ मे रखा या लिया जा सकता हो। ४ कागज के २४ या २५ तावो की गड्डी। ५ हाथ मे रखने का डडा। सोटा। ६ कबा, चोगे आदि मे की वह घुडी जो प्राय बद मे लगी रहती है। ७ सिपाहियो या सैनिको का छोटा दल। टुकड़ी। ८ चपरास। ९ गोट। मगजी। मजाफ। १० एक प्रकार का बगला जिसे हर-गिला भी कहते है।

†पु० दे० 'जस्ता' (कपड़ो आदि का)।

दस्ताना—पु० [फा० दस्तान] १ पजे और हथेली मे पहनने का बुना हुआ कपड़ा। हाथ का मोजा। २ उक्त प्रकार का लोहे का वह आवरण जो युद्ध के समय हाथो पर (उनकी रक्षा के लिए) पहना जाता था। ३. वह लबी किर्च या सीधी तलवार जिसकी मूठ के ऊपर कलाई तक पहुँचनेवाला लोहे का आवरण लगा रहता है।

दस्तावर—वि० [फा० दस्त आवर] (औषध या खाद्य पदार्थ) जिसे खाने से दस्त आने लगे। रेचक। जैसे—हर्रे दस्तावर होती है।

दस्तावेज—स्त्री० [फा०] विधिक क्षेत्र मे, वह कागज जिस पर दो या अधिक व्यक्तियो के पारस्परिक लेन-देन, व्यवहार समझौते आदि की शर्ते लिखी हो और जिस पर सबद्ध लोगों के हस्ताक्षर प्रमाण स्वरूप अकित हो। लेख्य। (डीड) जैसे—तमस्सुक, दानपत्र, बैनामा, रेहननामा आदि।

दस्तावेजी—वि० [फा० दस्तावेज] दस्तावेज-सबधी। दस्तावेज का। जैसे—दस्तावेजी कागज।

दस्ती—वि० [फा० दस्त—हाथ] १ हाथ मे रहने या होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। जैसे—दस्ती रूमाल। २ जो किसी व्यक्ति के हाथ दिया या भेजा गया हो। जैसे—दस्ती, खत, दस्ती वारट।

स्त्री० १. छोटा दस्ता। छोटी बेंट या मूठ। २ वह बत्ती या मशाल जो हाथ मे लेकर चलते हो। ३ छोटा कलमदान। ४ वह इनाम या भेट जो राजा-महाराजा स्वय अपने हाथ से सरदारो आदि को दिया करते थे। ५ कुश्ती का एक पेच जिसमे पहलवान अपने विपक्षी का दाहिना

हाथ दाहिने हाथ से अथवा बायाँ हाथ बाए हाथ से पकड़कर अपनी ओर खींचता है और तब झटके से उसे गिरा या पटक देता है।

दस्तूर—पु० [फा०] १ बहुत दिनो से चली आई हुई प्रथा या रीति। चाल। परिपाटी। २. कायदा। नियम। विधि। ३ पारसियो के धर्म-पुरोहितो की उपाधि जो दस्तूर (नियम या प्रथा) के अनुसार सब कृत्य करते-कराते है। ४ जहाज के वे छोटे पाल जो सबसे ऊपरवाले पाल के नीचे की पक्ति मे दोनो ओर होते है। (लश०)

दस्तूरी—वि० [फा०] दस्तूर अर्थात् नियम-सबधी।

स्त्री० वह धन जो सौदा खरीद कर ले जानेवाले नौकर को दूकानदारो से (कोई सौदा लेनेपर) पुरस्कार रूप मे मिलता है।

दस्पना†—पु० [फा० दस्तपनाह] चिमटा।

दस्म—पु० [स०√दस् (ऊपर फेकना)+मक्] १ यजमान। २ चोर। ३ दुष्ट व्यक्ति। ४ अग्नि।

दस्यु—पु० [स०√दस् +युच्] [भाव० दस्युता] १ एक प्राचीन अनार्य जाति। २ अनार्य या म्लेच्छ जो पहले प्राय यज्ञो मे लूट-मार करके निर्वाह करते थे। ३ डाकू। लुटेरा। ४ खल। दुष्ट।

दस्युता—स्त्री० [स० दस्यु+तल्+टाप्] १ दस्यु होने की अवस्था या भाव। २ डकैती। लुटेरापन। ३ क्रूरता और खलता। दुष्टता।

दस्युवृत्ति—स्त्री० [ष० त०] १ डकैती। लुटेरापन। २ चोरी।

दस्युहन्—पु० [स० दस्यु√हन् (मारना)+क्विप्] (असुरो को मारनेवाले) इद्र।

दस्र—वि० [स०√दस्+रक्] १ दोहरा। २ क्रूर। ३ ध्वसक। ४ असम्य। जगली।

पु० १ दो की सख्या। २ दो का जोडा। युग्म। ३ अश्विनी कुमार। ४ शिशिर ऋतु। ५ गधा।

दस्सी—स्त्री० [स० दशा या दशिका] थान के सिरे पर का अश। छीर।

दह—पु० [स० ह्रद (आद्यत विपर्यय)] १ नदी मे वह स्थान जहाँ पानी गहरा हो। नदी के अदर का गहरा गड्ढा। पाल। जैसे—कालीदह। २ पानी का कुड। हौज।

स्त्री० दाह (जलन)।

वि० [स० दश से फा०] नौ और एक। दस।

दहक—स्त्री० [हि० दहकना] १ दहकने की क्रिया या भाव। २ आग की लपट। धधक। ३ जलन। दाह। ४ पश्चात्ताप या उसके कारण होनेवाली लज्जा।

दहकन—स्त्री० [हि० दहकना] दहकने की क्रिया या भाव। दहक।

दहकना—अ० [स० दहन] १ आग का इस प्रकार जलना कि लपट ऊपर उठने लगे। धधकना। २ तापमान के अत्यधिक बढ़ने के कारण शरीर का जलन लगना। तपना। ३ दुखी या सतप्त होना।

दहकान—पु० [फा०] १ दहात या गाँव का रहनेवाला व्यक्ति। २ किसान। ३ मूर्ख व्यक्ति।

दहकाना—स० [हि० दहकना] १ आग या और कोई चीज दहकने अर्थात् अच्छी तरह जलने मे प्रवृत्त करना। इस प्रकार जलाना कि लपटे निकलने लगे। जैसे—कोयला या लकडी दहकाना। २ उत्तेजित करना। भडकाना।

सयो० क्रि०—देना।

दहकानियत—स्त्री० [फा०] दहकान होने की अवस्था या भाव। गँवारपन।

दहकानी—पु० [फा०] दहकान।

वि० दहकानो या गँवारो की तरह का।

दहगी—स्त्री० [हि० दाह+आग] गरमी। ताप।

दहड़-दहड़—क्रि० वि० [स० दहन या अनु०] (आग की लपटो के सबध मे) दहड़-दहड शब्द करते हुए।

दहबल†—स्त्री० दलदल।

दहन—पु० [स०√दह् (जलना, जलाना)+ल्युट्—अन] [वि० दहनीय, दह्यमान] १ जलने की क्रिया या भाव। दाह। जैसे—लका-दहन। २ [√दह+ल्यु-अन्] अग्नि। आग। ३ एक रुद्र का नाम। ४ ज्योतिष मे एक योग जो पूर्वा भाद्रपद, उत्तरा भाद्रपद और रेवती नक्षत्रो मे शुक्र ग्रह के आने पर होती है। ५ उक्त के आधार पर तीन की सख्या। ६ कृत्तिका नक्षत्र। ७ क्रूर, क्रोधी और दुष्ट स्वभाववाला मनुष्य। ८ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ९ भिलावाँ। १० कबूतर।

†वि० १ जलानेवाला। २ नष्ट करनेवाला। (यौ० के अत मे) जैसे—त्रिपुरदहन।

पु० [फा०] मुँह। मुख।

†पु० [स० दैन्य] दीनता (पूरब)। उदा०—दहन मानै, दोष न जानै।—विद्यापति।

†पु० [?] कजा नाम की कटीली झाडी या पौधा।

दहन-केतन—पु० [ष० त०] धूम। धूआँ।

दहनर्क्ष—पु० [दहन-ऋक्ष, कर्म० स०] कृत्तिका नक्षत्र।

दहन-शील—वि० [ब० स०] जो जल्दी या सहज मे जलता या जल सकता हो।

दहना—स० [स० दहन] १ दहन करना। जलाना। २ बहुत अधिक दुखी या सतप्त करना। कुढाना या जलाना।

अ० १ दहन होना। जलना। २ बहुत अधिक दुखी या सतप्त होकर मन ही मन कुढना या जलना।

वि०=दाहिना।

अ० [हि० दह] नीचे बैठना। धँसना।

वि०=दाहिना।

दहनागुरु—पु० [दहन-अगुरु, च० त०] धूप।

दहनाराति—पु० [दहन-अराति, ष० त०] पानी।

दहनि†—स्त्री० [हि० दहना] दहन होने अर्थात् जलने की क्रिया या भाव। २ जलन। ताप। ३ मन ही मन होनेवाला सताप। कुढन।

दहनीय—वि० [स०√दह्+अनीयर्] जलने या जलाये जाने के योग्य। जो जलाया जा सके या जलाया जाने को हो।

दहनोपल—पु० [दहन-उपल, च० त०] सूर्यकातमणि। सूर्यमुखी। आतशी शीशा।

दहपट—वि० [हि० दह=दहन+पट समतल] १ गिराकर जमीन के बराबर किया हुआ। ढाया हुआ। ध्वस्त। २. चौपट, नष्ट या बरबाद किया हुआ। ३ कुचला, मसला या रौदा हुआ।

दहपटना—स० [हिं० दहपट] १. ध्वस्त करना। ढाना। २ चौपट, नष्ट या बरबाद करना। ३ कुचलना। रौंदना।
†स०=डपटना। (क्व०)

दहबाट†—वि० [हिं० दह=दस+बाट=रास्ता] छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।

दहबाशी—पु० [फा० दह=दस+बाशी (प्रत्य०)] दस सिपाहियों का नायक।

दहर—पुं० [स०√दह् +अर] १ छोटा चूहा। चुहिया। २ छछूदर। ३ भाई। ४ बालक। लडका। ५ नरक। ६ वरुण।
वि० १ छोटा या हलका। २ कम। थोडा। ३. बारीक। महीन। सूक्ष्म। ४ गहन। दुर्बोध।
पु० [सं० ह्रद (वर्ण-विपर्यय)] १ जलाशय के अदर का गहरा गड्ढा। दह। २ जल का कुड। हौज।

दहर-दहर—क्रि० वि०=दहड-दहड।

दहरना†—अ०=दहलना।
†स०=दहलाना।

दहराकाश—पु० [स० दहर-आकाश, कर्म० स०] १ चिदाकाश। ईश्वर। २ हठयोग के अनुसार, हृदय मे स्थिति वह छोटा सा अवकाश या स्थान जिसमे विशुद्ध आकाश व्याप्त है, और जिसमे निरतर अनाहत नाद होता रहता है।

दहरौरा—पु० [हिं० दही+बडा] [स्त्री० अल्पा० दहरौरी] १ दही मे पडा हुआ बडा। दही-बडा। २ एक तरह का गुलगुला।

दहल—स्त्री० [हिं० दहलना] १ दहलने की क्रिया या भाव। २ किसी बडे या विकट काम या चीज को देखकर मन मे उत्पन्न होनेवाला वह भय जो सहसा उस काम या चीज की ओर बढने न दे।

दहलना—अ० [स० दर=डर+हिं० हलना=हिलना] १ किसी बडे या विकट काम या चीज को देखकर इस प्रकार कुछ डर जाना कि वह काम करने अथवा उस चीज की ओर बढने का साहस न हो। इतना डरना कि आगे बढने की हिम्मत न हो। जैसे—शेर की दहाड या हाथी की चिंघाड सुनकर जी दहलना। २ भय मे स्तभित होकर रुक जाना। सयो० क्रि०—उठना।—जाना।
विशेष—इस क्रिया का प्रयोग स्वय व्यक्ति के लिए भी होता है और उसके कलेजे या जी के संबध मे भी। जैसे—सिपाही का दहलना, और सिपाही का कलेजा या जी दहलना।

दहला—पु० [फा० दह=दस+ला (प्रत्य०)] ताश या गजीफे का वह पत्ता जिस पर दस बूटियाँ हों। दस बूटियोंवाला ताश का पत्ता।
†पु०=थाँवला (वृक्ष का)।

दहलाना—स० [हिं० दहलना का स०] ऐसा काम करना जिससे कोई दहल जाय या डरकर आगे बढ़ने से रुक जाय।
सयो० क्रि०—देना।

दहली—स्त्री०=दहलीज।

दहलीज—स्त्री० [हिं० देहरी या देहली का उर्दू रूप] द्वार के चौखट के नीचेवाली लकडी जो जमीन पर रहती है। देहरी। डेहरी। देहली।

दहशत—स्त्री० [फा० दहशत] किसी भयंकर या विकट आकृति, कार्य या पदार्थ को देखने पर होनेवाला ऐसा डर या भय जो आदमी का साहस छुडा दे। जैसे—शेर या साँप की दहशत बहुत जबरदस्त होती है।

दह-सनी—स्त्री० [फा० दह=दस+सन्=सवत्] ऐसा खाता या बही जिसमे दस-दस सनो (अर्थात् सवतो) के लेखे या हिसाब अलग-अलग लिखे हो या लिखे जाते हो।

दहा—पु० [स० दश से फा० दह] १ मुहर्रम मास के प्रारम्भिक दस दिन जिनमे मुसलमान ताजिया रखते और मातम करते हैं। २ ताजिया। ३ मुहर्रम का महीना।

दहाई—स्त्री० [फा० दह+आई (प्रत्य०)] १. गिनती मे दस होने की अवस्था, भाव या मान। जैसे—पाँच दहाई पचास। २ गिनती के विचार से लिखे हुए अंको का दाहिनी ओर से (बाईं ओर से नही) दूसरा स्थान जिस पर लिखे हुए अक का मान उसकी अपेक्षा ठीक दस गुना अधिक माना जाता है। जैसे—१२६ मे का ६ इकाई के स्थान पर, २ दहाई के स्थान पर और १ सैकडे के स्थान पर है।

दहाड़—स्त्री० [अनु०] १ दहाडने की क्रिया या भाव। २ शेर के जोर से गरजने का शब्द। ३ जोरो की ऐसी चिल्लाहट जो दूसरो को डरा दे।

दहाड़ना—अ० [हिं० दहाड+ना (प्रत्य०)] १ शेर का जोर से शब्द करना। २ इस प्रकार जोर से चिल्लाना कि लोग डर जायँ।

दहाना—पु० [फा० दहान] १ किसी चीज का मुँह विशेषत चौडा और बडा मुँह। २ मशक का मुँह। ३ घोडे की लगाम जो उसके मुँह मे रहती है। ४ भिश्ती की मशक का मुँह। ५ पनाला। मोरी। ६ दे० 'मुहाना' (नदी का)।

दहार†—पु० [अ० दयार=प्रदेश] १ प्रात। प्रदेश। २. गाँव के आस-पास की भूमि।
स्त्री०=दहाड।

दहिऔरी†—स्त्री०=दहरौरी।

दहिंगल—पु० [देश०] कीडे-मकोडे खानेवाली एक छोटी चिडिया जिसके परों पर सफेद और काली लकीरें होती है। यह रह-रहकर अपनी पूँछ ऊपर उठाया करती है।

दहिजरा†—वि० १ =दारी-जार। २ =दाढी-जार।

दहिजार†—वि० १ =दारी-जार। २ =दाढी-जार।

दहिना—वि०=दाहिना।

दहिनावर्त्त—वि०=दक्षिणावर्त्त।

दहिने—अव्य० =दाहिने।

दहियक—पु० [फा० दह=दस] दशमाश। दसवाँ भाग या हिस्सा।

दहियल†—पु०=दहला।

दही—पु० [स० दधि] दूध मे जामन लगाकर जमाये जाने पर उसका तैयार होनेवाला रूप जो थक्के की तरह होता है।
पद—**दही का तोड़**=दही का वह पानी जो उसे कपडे मे बाँधकर रखने पर निकलता है।
मुहा०—**दही-दही करना**=कोई चीज देने या बेचने के लिए चारो ओर घूम-घूमकर लोगो से उसे लेने के लिए कहते फिरना।

दहीला†—वि० [सं० दाह] [स्त्री० दहीली] १ जला या जलाया हुआ। २. परम दु:खित। संतप्त। उदा०—तातें नहिन काम-दहीली।—सूर।

दहुँ*—अव्य० [सं० अथवा] १ अथवा। या। किंवा। २ कदाचित्। शायद।

वि० [सं० दश] पुं० हिं० दह (दस) का समष्टि-वाचक रूप। दसो। उदा०—बिनु चरनन कौ दहुँ दिसि धावै बिनु लोचन जग सूझै।—कबीर।

दहेंगर—पुं० [हिं० दही+घड़ा] दही रखने का घड़ा या मटका।

दहेंड़ी—स्त्री० [हिं० दही+हाँडी] दही रखने की हाँडी। उदा०—अहे दहेड़ी जनि धरैं, जनि तू लेहि उतार।—बिहारी।

दहेज—पुं० [अ० जहेज़] कन्या-पक्ष की ओर से विवाह के अवसर पर कन्या को दिया जानेवाला वह धन और वस्तुएँ जो वह अपने साथ ससुराल ले जाती है। दायजा।

दहेला—वि० [हिं० दहना+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दहेली] १ जला हुआ। दग्ध। २ दुःखी। संतप्त। दहीला।

वि० [?] १ भीगा हुआ। आर्द्र। २ ठिठुरा या सिकुड़ा हुआ। ३ जिसने किसी रस का अनुभव या भोग किया हो। उदा०—जिनकी मति की देह दहेली।—केशव।

दहोत्तरसो—पुं० [सं० दशोत्तरशत] एक सौ से दस ऊपर, अर्थात् एक सौ दस।

दह्य—वि० [सं० दाह्य] जो जल सकता या जलाया जा सकता हो। (कंबसचिबुल)

दह्यमान—वि० [सं०√दह्+शानच्] जो जल रहा हो। जलता हुआ।

दह्यो†—पुं०=दही।

दाँ†—पुं० [सं० दाच् (प्रत्य०) जैसे, एकदा] दफा। बार। बारी।

वि० [फा०] जाननेवाला। ज्ञाता। (यौ० के अंत में) जैसे—फारसी-दाँ फारसी भाषा जाननेवाला।

दाँई—वि०=दाईं।

दाँग—स्त्री० [फा०] १ छः रत्ती की तौल। २ किसी चीज का छठा भाग। ३ ओर। दिशा।

पुं० [हिं० डूंगर] १ टीला। २ पहाड़ की चोटी।

पुं० [हिं० डगा ?] नगाड़ा।

दाँगर—वि०, पुं० डाँगर।

दाँगी—स्त्री० [सं० दंडक ड़ा] जुलाहों की कंघी में लगी रहनेवाली लकड़ी।

दाँज†—स्त्री० [सं० उदाहार्य?] १ तुलना। बराबरी। २ स्पर्धा। होड़।

दांड—वि० [सं० दण्ड+अण्] दंड से संबंध रखनेवाला। दंड का।

दांडक्य—पुं० [सं० दण्डक+ष्यञ्] 'दंडक' होने की अवस्था या भाव। (दे० 'दंडक')

दाँडना—स० [सं० दंडन] १ दंड या सजा देना। २ अर्थ-दंड या जुरमाना लगाना।

दांडाजिनिक—पुं० [सं० दण्डाजिन+ठञ्—इक] वह जो दंड और अजिन धारण करके अपना अर्थ-साधन करता फिरे। साधु के वेष में लोगों को धोखा देने या ठगनेवाला व्यक्ति।

दाँड़ा-मेड़ा—पुं०=डाँड़ामेड़ा।

दांडिक—वि० [सं० दण्ड+ठञ्—इक] दंड देनेवाला।

पुं० जल्लाद।

दाँड़ी—स्त्री०=डाँड़ी।

दाँत—पुं० [सं० दंत, प्रा० दंद] १ अधिकतर रीढ़वाले प्राणियों के मुँह में नीचे और ऊपर की अर्ध-चंद्राकार पंक्तियों में के वे छोटे-छोटे अंग जो हड्डियों की तरह के और अंकुर के रूप में उठे हुए होते हैं और जिनसे वे काटने, खाने, चबाने, जमीन खोदने, आदि का काम लेते हैं।

विशेष—कुछ रीढ़वाले प्राणी ऐसे भी होते हैं जिनके गले, तालू या पेट में उक्त प्रकार के कुछ अंग या रचनाएँ होती हैं।

२ मानव जाति के बालकों और वयस्कों के जबड़ों में मसूड़ों के साथ जुड़े हुए वे उक्त अंकुर या अंग जिनकी संख्या प्रायः ३२ (१६ नीचे और १६ ऊपर) होती है, और जिनसे खाने-चबाने आदि के सिवा कुछ वर्णों के उच्चारण में भी सहायता मिलती है।

विशेष—अनेक मुहावरों के प्रसंगों में 'दाँत' कोई चीज पाने या लेने, क्रोध, दीनता, प्रसन्नता आदि प्रकट करने अथवा किसी को कष्ट या हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति के भी प्रतीक अथवा सूचक होते हैं।

मुहा०—**दाँत उखाड़ना**—(क) मसूड़े से दाँत निकालकर अलग करना। (ख) किसी पर ऐसा आघात या प्रहार करना अथवा उसे दंड देना कि वह फिर कोई उपद्रव या दुष्टता करने के योग्य न रह जाय। **(किसी से) दाँत काटी रोटी होना**—इतनी अधिक घनिष्ठ मित्रता या मेल-जोल होना कि एक दूसरे के साथ बैठकर एक थाली में भोजन करते हों। **दाँत काढ़ना**—दाँत निकालना। (देखें नीचे) **दाँत किरकिराना**—कुछ खाने के समय दाँतों के नीचे कंकड़ी, रेत आदि पड़ने के कारण भोजन चबाने में बाधा होना। **दाँत किरकिरे होना**—प्रतियोगिता, विरोध आदि में कष्ट भोगते हुए बुरी तरह से विफल होना। **(किसी के पास) दाँत कुरेदने को तिनका तक न होना**—सर्वस्व नष्ट हो जाने के कारण बिलकुल कंगाल हो जाना। **(किसी के) दाँत खट्टे करना**—किसी को प्रतियोगिता, लड़ाई, विरोध आदि में बुरी तरह से परास्त करना। बुरी तरह से पूरा हराना। **(किसी चीज पर) दाँत गड़ाना**—कोई चीज अपने अधिकार में करने या पाने के लिए निरंतर उस पर दृष्टि लगाये रहना। **दाँत चबाना**—दाँत पीसना। (देखें नीचे) **दाँत टूटना**—(क) दाँत का अपने स्थान पर से निकलकर अलग होना। (ख) बुढ़ापा या वृद्धावस्था आना। (ग) किसी को कष्ट देने या हानि पहुँचाने की शक्ति से रहित या हीन होना। **(किसी के) दाँत तोड़ना**—किसी को ऐसी स्थिति में पहुँचाना कि वह कष्ट देने या हानि पहुँचाने के योग्य न रह जाय। **(अपने) दाँत दिखाना**—तुच्छता और निर्लज्जतापूर्वक हँसना। दाँत निकालना। **(किसी को) दाँत दिखाना**—इस प्रकार क्रोध प्रकट करना मानो काट ही लेंगे या खा ही जायँगे। **(पशुओं के) दाँत देखना**—घोड़े, बैल आदि की अवस्था या उमर का अंदाज करने के लिए उनके दाँत गिनना। **दाँत निकालना**—ओछेपन से या निर्लज्जतापूर्वक हँसना। **(किसी के आगे या सामने) दाँत निकालना**—(क) बहुत ही दीन बनकर कोई प्रार्थना या याचना करना। गिड़गिड़ाना। (ख) तुच्छतापूर्वक अपनी अयोग्यता, असमर्थता या हीनता प्रकट करना। **दाँत निपोरना**=दाँत निकालना। (देखें ऊपर) **दाँत पीसना**—बहुत अधिक क्रोध में आकर दाँतों पर दाँत रखकर ऐसी मुद्रा दिखलाना कि मानो खा या चबा ही

जायँगे। **दाँत बनवाना**=गिरे या टूटे हुए दाँतों के स्थान पर नये नकली दाँत बनवाकर लगवाना। **दाँत बंठना या बैठ जाना**=पक्षाघात, मिरगी, मूर्छा आदि रोगों के आक्रमण की दशा मे पेशियों की स्तब्धता के कारण दाँतो की ऊपर और नीचेवाली पक्तियो का परस्पर इस प्रकार मिल या सट जाना कि मुंह जल्दी न खुल सके। नीचे ऊपर के जबडो का सट जाना। **दाँत मसमसाना या मिसना**=दाँत पीसना। (देखें ऊपर) **(किसी चीज पर) दाँत लगना**=(क) दात चुभने का घाव या निशान होना। (ख) (किसी चीज पर) दाँत गडना। (देखे ऊपर) **(किसी चीज पर) दाँत लगाना**=(क) दाँत गडाना या धँसाना। (ख) कोई चीज पाने के लिए उसकी घात या ताक मे लगे रहना। **दाँत से दाँत बजना**=बहुत अधिक सरदी लगने पर दाढों का इस प्रकार कांपना कि नीचे और ऊपर के दाँत आपस मे हलका कट-कट शब्द करते हुए टकराने या बजने लगे। **(किसी चीज पर) दाँत होना**=कोई चीज पाने या लेने की बहुत अधिक इच्छा होना। **(किसी व्यक्ति पर) दाँत होना**=(क) बदला चुकाने आदि के उद्देश्य से किसी पर क्रूर दृष्टि होना और उसे हानि पहुँचाने की घात या ताक मे रहना या होना। (ख) किसी से अनुचित लाभ उठाने की ताक मे होना। **दाँतों उँगली काटना या दबाना**=बहुत अधिक अचरज मे आना। चकित हो जाना। दग रह जाना। **(किसी के) दाँतो चढ़ना**=ऐसी स्थिति मे होना कि कोई हर दम कोसता, गालियाँ देता या बुरा मानता रहे। **दाँतो तले उँगली दबाना**=दाँतों उँगली काटना या दबाना। (देखे ऊपर) **दाँतो धरती पकड़कर**=(क) अत्यत दीनता और नम्रतापूर्वक। (ख) अत्यन्त कष्ट और विवशता या सकीर्णता से। **(बच्चे का) दाँतो पर आना या होना**=उस अवस्था को पहुँचना जिसमे दाँत निकलनेवाले हो या निकलने लगे हो। **दाँतों पर मैल तक न होना**=अत्यत निर्धन होना। कगाल या बहुत गरीब होना। **दाँतो पसीना आना**=इतना अधिक परिश्रम होना कि मानो दाँतो तक मे पसीना आ गया हो। **(किसी का) दाँतो मे जीभ की तरह होना**=उसी प्रकार सब ओर से विरोधियों या शत्रुओं मे घिरे रहना जिस प्रकार जीभ हर तरफ दाँतो मे घिरी रहती है। **दाँतो मे तिनका गहना, पकड़ना या लेना**=दया के लिए उसी प्रकार गौ बनकर अर्थात् दीन-भाव से प्रार्थना या याचना करना जिस प्रकार गौ मुंह मे तिनका लेकर सामने आती है। **(कोई चीज) दाँतों से उठाना या पकड़ना**=बहुत कजूसी से बचाकर इकट्ठा या सचित करना। **(किसी के) तालू में दाँत जमना**=दुर्भाग्य के कारण किसी का इस प्रकार आवश्यकता से अधिक उद्दड, क्रूर या स्वेच्छाचारी होना कि लोगो को उसके पतन या विनाश के दिन पास आते हुए जान पडे।

३ कुछ विशिष्ट पदार्थों मे उक्त आकार-प्रकार के वे अश जो एक पक्ति मे अकुरा के रूप मे उठे, उभरे या निकले हुए होते है। ददाना। दाँता। जैसे—आरी या कघी के दाँत, कुछ पौधो के पत्तो मे दोनों ओर निकले हुए दाँत, यत्रो मे के चक्करो या पहियो के दाँत। ४ उक्त प्रकार का कोई चिह्न या रूप।

मुहा०—(किसी वस्तु का) दाँत निकालना=जोड, तल, सीअन का इस प्रकार उखड, उधड या फट जाना कि जगह-जगह दाँत की तरह के चिह्न दिखाई देने लगे। जैसे—इस जूते ने तो दो ही महीनो मे दाँत निकाल दिये।

दांत—वि० [स० दान्त] १ जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। २ वश मे किया या लाया हुआ। ३ जिसने इद्रियो को वश मे कर लिया हो। जितेद्रिय।

वि० [स० दन्त से] १ दाँत का। दाँत-सबधी। २ दाँत का बना हुआ।

पु० १ मैनफल। २ पहाड के ऊपर का जलाशय या बावली। ३ विदर्भ के राजा भीमसेन के दूसरे पुत्र जो दमयती के भाई थे।

दाँत-घुंघनी—स्त्री० [हि० दाँत+घुंघनी] पोस्ते के दाने की घुंघनी जो बच्चे का पहला दाँत निकलने पर बाँटी जाती है।

दाँतना—अ० [हि० दाँत] १ दाँतो से युक्त होना। २ जवान होना। ३ किसी अस्त्र के ताँतो का कुठित होना।

दाँतली—स्त्री० [हि० डाट] डाट। काग।

दाँता—पु० [हि० दाँत] दाँत के आकार का बडा और नुकीला सिरा। ददाना।

मुहा०—दाँता पड़ना=किसी हथियार की धार मे गुठले होने के कारण कही कुछ उभार और कही कुछ गड्ढे हो जाना, जिससे वह ठीक काम करने के योग्य नही रह जाता।

दांता—स्त्री० [स० दान्त्,√दम् (दमन)+क्त+टाप्] एक अप्सरा का नाम। (महाभारत)

दाँता-किटकिट—स्त्री० [हि० दाँत+किटकिट (अनु०)] १ प्राय होती रहनेवाली कहा सुनी या जबानी लडाई। कलह।

दाँता-किलकिल—स्त्री०=दाँता-किटकिट।

दांति—स्त्री० [स०√दम् (वश मे करना)+क्तिन्], [वि० दात] १ इद्रियो को वश मे रखना। इद्रियनिग्रह। २ अधीनता। वश्यता। ३ नम्रता। विनय।

दांतिक—वि० [स० दत+ठक्—इक] १ दाँत का बना हुआ। २ हाथी-दाँत का बना हुआ।

दाँतिया—पु० [?] रेह का नमक जो पीने के तबाकू मे उसे तेज करने के लिए मिलाया जाता है।

दाँती—स्त्री० [स० दात्री] घास, फसल आदि काटने की हँसिया।

स्त्री० [?] १ किनारे पर का वह खूंटा जिसमे रस्से मे नाव बाँधी जाती है। २ काली भिड। ३ छोटा दरी।

†स्त्री० [हि० दाँत] दतावलि। बत्तीसी।

मुहा०—दाँती बैठना या लगना=दाँत बैठना या बैठ जाना। (दे० 'दाँत' के अतर्गत मुहा०)

दाँना—स० [स० दमन] १ कटी हुई फसल के डठलो मे दाने या बीज अलग करना। २ उक्त काम के लिए डठलो को बैलो से रौदवाना। दँवरी करना।

दांपत्य—वि० [स० दम्पती+यञ्] वि० दपती-सबधी। दपती या पति और पत्नी मे होनेवाला। जैसे—दापत्य प्रेम।

पु० १ दपती होने की अवस्था या भाव। २ एक प्रकार का अग्निहोत्र जो दपती अर्थात् पति और पत्नी दोनो मिलकर करते हैं।

दांभ—वि० [स० दम्भ+अण्] दाभिक। (दे०)

दांभिक—वि० [स० दम्भ+ठक्—इक] १ जिसे दभ हो। दभ करने-वाला। २ अभिमानी। घमडी। ३ ठग। वचक। ४ पाखडी। ५. धोखेबाज।

पु० बगला (पक्षी)।

दाँयँ†—स्त्री० [अनु०] बदूक, तोप आदि छूटने का शब्द।
†स्त्री =दँवरी।

दाँयाँ†—वि० =दाहिना।

दाँव—पु० [स० दा (दाव्), जैसे—एकदा] १ दफा। बार। मरतबा। २ क्रम, परम्परा, योग्यता आदि की दृष्टि से कोई काम करने के लिए आनेवाली पारी। बारी। जैसे—जब हमारा दाँव आवेगा, तब हम भी समझ लेंगे। ३ खेल मे प्रत्येक खेलाडी के खेलने का अवसर या समय जो एक दूसरे के पीछे क्रम से आता है। खेलने की बारी।

मुहा०—दाँव देना=लडको का खेल मे हारने पर नियत दड भोगना या परिश्रम करना। **दाँव पूरना**=(क) ठीक तरह से बाजी खेलकर अपना पक्ष निभाना। (ख) अपना कर्त्तव्य पूरा करना। उदा०—अब की बार जो होय पुकारा कहहि कबीर ताको पूर दाँव। —कबीर। **दाँव लेना**=खेल मे हारनेवाले से नियत दड भोगवाना या परिश्रम कराना।

४ जूए के खेलो मे, कौडी, पाँसे आदि के पडने का वह रूप या स्थिति जिसमे किसी खेलाडी या पक्ष की जीत होती है। हाथ।

मुहा०—(किसी का) दाँव कहना=किसी के कथन का यो ही समर्थन करना। हाँ मे हाँ मिलाना। उदा०—रहिमन जौ रहिबौ चहै, कहै वाहि कै दाँव।—रहीम। **(अपना) दाँव चलना**=खेल मे अपनी पारी या बारी आने पर कौडी, गोटी, पत्ता या पाँसा आगे बढाना, फेंकना या सामने रखना। जैसे—अब तुम्हारी बारी है, तुम अपना दाँव चलो। **दाँव पर (कुछ) रखना या लगाना**=(क) जीत-हार के लिए कुछ धन अथवा कोई वस्तु सामने रखना। किसी चीज की बाजी लगाना। जैसे—(क) उसने ताव मे आकर सौ रुपए का एक नोट (या सोने का छल्ला) दाँव पर रख (या लगा) दिया। (ख) कोई ऐसा जोखिम या साहस का काम करना जिसका परिणाम या फल बिलकुल अनिश्चित हो। जैसे—इस रोजगार (या सौदे) मे उन्होने अपनी सारी सपत्ति दाँव पर रख दी थी। **दाँव फेंकना** अपनी बारी आने पर कौडी या पाँसा फेकना।

५ किसी काम या बात के लिए अनुकूल या उपयुक्त अवसर, समय या स्थिति। ठीक जगह, मौका या हालत। जैसे—वहाँ से उसके बच निकलने का कोई दाँव नही रह गया था।

मुहा०—दाँव चूकना=ठीक अवसर या मौके पर आवश्यक या उचित काम करने से रह जाना या वचित होना। **दाँव ताकना**=अवसर या मौके की ताक मे रहना। **दाँव पडना**=अनुकूल या उपयुक्त अवसर प्राप्त होना। उदा०—पूरब पुन्यनि दाँव पर्‌यौ अब राज करौ ... —कबीर। **दाँव लगना**=उपयुक्त अवसर या मौका हाथ आना।

६ अपना काम निकालने का अच्छा ढग या युक्ति। सोच-समझकर निकाली हुई तरकीब।

मुहा०—(किसी के) दाँव पर चढना=किसी की युक्ति के जाल मे इस प्रकार पडना या फँसना कि उसका उद्देश्य सिद्ध हो जाय। **(किसी को) अपने दाँव पर चढाना या लाना**=किसी को अपनी युक्ति के जाल मे इस प्रकार फँसाना कि सहज मे उससे काम निकाला जा सके। जैसे—कुश्ती मे हर पहलवान अपने प्रतिद्वद्वी को दाँव पर लाने की तरकीब करता है। **(किसीके) दाँव में आना**=(किसी के) दाँव पर चढना। (देखें ऊपर)

७ अपना काम निकालने का ऐसा ढग या युक्ति जिसमे कुछ कुटिलता या चालबाजी हो। कपट या छल से भरी हुई तरकीब। चालाकी।

मुहा०—(किसी के साथ) दाँव करना या खेलना=चालाकी से भरी हुई तरकीब करना। चालबाजी या धूर्तता करना। **(किसी से) दाँव लेना**=जिसने बुरा व्यवहार किया हो, उपयुक्त अवसर आने पर उसके साथ भी वैसा ही व्यवहार करना। बदला चुकाना, निकालना या लेना।

विशेष—यद्यपि इस शब्द का उच्चारण सदा 'दाँवँ' ही होता है, फिर भी लिखने मे 'दाँव' रूप ही प्रशस्त और शिष्ट-सम्मत है।

दाँवना—स० =दाँना।

दाँवनी†—स्त्री० १ =दावनी (गहना)। २ =दँवरी। ३ =दाँवरी।

दाँवरी—स्त्री० [स० दाम] रस्सी। डोरी।
स्त्री० =दँवरी।

दा—अव्य० [हि०] दफा। बार (यौ० के अत मे) जैसे—एकदा।
प्रत्य० [स०] समस्त पदो के अत मे, देनेवाला। जैसे—धनदा, पुत्रदा।
पु० [अनु०] सितार का एक बोल। उदा०—दा दि ड़ाडा इत्यादि।
विभ० [प०] 'का' विभक्ति का पजाबी रूप। जैसे—मिट्टी दा पुतला।

दाइ*—पु० १ =दाय। २ दाँव।

दाइज—पु० =दायजा (दहेज)।

दाइजा—पु० =दायजा।

दाई—स्त्री० [स० दाक् या दाँ] दफा। बार।
वि० हि० 'दायाँ' (दाहिना) का स्त्री० रूप।
स्त्री० =दाँज (बराबरी)। जैसे—देखो तुम्हारी दाई का लडका कैसा काम करता है।

दाई—स्त्री० [स० धात्री, मि० फा० दाय] १ दूसरे के बच्चे को अपना दूध पिलानेवाली स्त्री। धाय। दाया। २ बच्चो की देख-रेख करने और उन्हे खेलानेवाली दासी या नौकरानी। ३ घर का चौका-बरतन तथा इसी तरह के दूसरे छोटे काम करनेवाली नौकरानी। मजदूरनी। ४ वह स्त्री जो प्रसव-काल मे बच्चा जनाने का काम जानती और करती है। प्रसूता की उपचारिका।

मुहा०—दाई से पेट छिपाना=अच्छी तरह जाननेवाले से कोई बात छिपाना। ऐसे व्यक्ति से कोई बात छिपाना जो सारा रहस्य जानता हो।
†स्त्री० [हि० दादी] १ पिता की माता। दादी। २. बड़ी-बूढी स्त्रियो के लिए सबोधन।
वि० देनेवाला। जैसे—सुखदाई।

दाउँ*—पु० =दाँव।

दाउ*—स्त्री० =दावानल।
पु० =दाँव।

दाउनी*—स्त्री० =दावनी (सिर पर का गहना)।

दाउर*—पु० [स० दारु] कपडा धोने का काठ का डडा। पिटना।

दाऊ—पु० [स० देव] १. बडा भाई। २ बलदेव या बलराम (कृष्ण के बडे भाई)।

दाऊद—पु० [अ०] एक पैगबर जिनका स्वर बहुत मधुर था।

दाउदखानी—पु० [फा०] १. एक प्रकार का चावल। २ एक प्रकार का बढ़िया गेहूँ। दाऊदी। गंगाजली।

दाऊदिया—पु० [अ० दाऊद] १ एक प्रकार का गेहूँ। दाऊदी। २. गुलदावदी का फूल। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी जिसमे उक्त फूल के सदृश चिनगारियाँ निकलती है। ४ एक प्रकार का कवच।

दाऊदी—पु० [अ० दाऊद] १ एक प्रकार का बढ़िया जाति का गेहूँ जिसका छिलका बहुत नरम तथा सफेद रंग का होता है। २ एक प्रकार का नरम छिलकेवाला बढ़िया आम।

दाक—पु० [स०√दा (देना)+क, कलोपाभाव] १ यजमान। २ दाता।

दाक्ष—वि० [स० दक्ष+अण्] दक्ष-सबधी।

पु० दक्षिण दिशा।

दाक्षायण—वि० [स० दाक्षि+फक्—आयन] १ दक्ष-सबधी। दक्ष का। २ दक्ष से उत्पन्न या उसके वश का। ३ दक्ष के गोत्र का।

पु० १ सोना। स्वर्ण। २ सोने की मोहर। अशरफी। ३ सोने का बना हुआ गहना। ४ एक यज्ञ जो वैदिक काल मे दक्ष प्रजापति ने किया था।

दाक्षायणी—स्त्री० [स० दक्ष+फिञ्—आयन, +ङीप्] १ दक्ष की कन्या। सती। २ दुर्गा। ३. कश्यप की पत्नी अदिति। ४ अश्विनी, भरणी, रोहिणी आदि नक्षत्र। ५ दती वृक्ष।

दाक्षायणी-पति—पु० [ष० त०] चद्रमा।

दाक्षायण्य—पु० [स० दाक्षायणी+यत्] सूर्य।

दाक्षि—पु० [स० दक्ष+इञ्] दक्ष का पुत्र।

दाक्षि-कथा—स्त्री० [ष० त०] वाह्लीक देश।

दाक्षिण—वि० [स०] दक्षिण दिशा मे होनेवाला। दक्षिण-सबधी।

पु० एक होम का नाम। (शतपथब्राह्मण)

दाक्षिणक—पु० [स० दक्षिणा+वुञ्—अक] वह बंध जो दक्षिणा की कामना मे इष्टापूर्ति आदि कर्म करने पर प्राप्त होता है।

दाक्षिणात्य—वि० [स० दक्षिणा+त्यक्, नि० आदि पद वृद्धि] दक्षिण दिशा मे होनेवाला। दक्षिणी।

पु० १ दक्षिण भारत। २ उक्त प्रदेश का निवासी। ३ उक्त प्रदेश मे होनेवाला नारियल।

दाक्षिणिक—वि० [स० दक्षिण+ठक्—इक] दक्षिण-सबधी। दक्षिणी।

दाक्षिण्य—वि० [स० दक्षिण+ष्यञ्] दक्षिण-सबधी।

पु० १ दक्षिण होने की अवस्था या भाव। २ अनुकूल या प्रसन्न आदि होने की अवस्था या भाव। ३ दूसरे को प्रसन्न करने का भाव अथवा योग्यता। (साहित्यशास्त्र)

दाक्षी—स्त्री० [स० दाक्षि+ङीष्] १ दक्ष की कन्या। २. पाणिनि की माता का नाम।

दाक्षेय—पु० [स० दाक्षी+ढक्—एय] पाणिनि मुनि।

दाक्ष्य—पु० [सं० दक्ष+ष्यञ्] दक्षता।

दाख—स्त्री० [स० द्राक्षा] १ अगूर नामक लता और उसका फल। २ मुनक्का। ३ किशमिश।

वि० =दक्ष। उदा०—ताकों विहित बखानही, जिनकी कविता दाख।—मतिराम।

दाखना—स० १ =दिखाना। २ =देखना।

दाख-निर्विषी—स्त्री० [हिं० दाख+स० निर्विषी] हर-जेवडी नामक झाडी जिसकी पत्तियो और जडो का औषध के रूप मे व्यवहार होता है। पुरही।

दाखिल—वि० [फा०] १ जो किसी विशिष्ट क्षेत्र या स्थान की सीमा लाँघ कर उसमे प्रविष्ट हो चुका हो। २ कही आया या पहुँचा हुआ। ३ जो कही दिया या पहुँचाया गया हो। (फाइल्ड)

दाखिल खारिज—पु० [अ०] किसी वस्तु पर से किसी का स्वामित्व बदलने पर पुराने स्वामी का नाम काटकर नये स्वामी का नाम सरकारी कागज-पत्रो पर चढाया जाना।

दाखिल दफ्तर—वि० [फा० दाखिल] (निवेदन, याचना आदि सबधी पत्र) जो बिना किसी प्रकार का निर्णय या विचार किये, परतु रक्षित रखने के लिए दफ्तर के कागज-पत्रा, नत्थियो आदि मे रख दिया गया हो।

दाखिला—पु० [फा० दाखिल] १ किसी व्यक्ति के कही दाखिल या प्रविष्ट होने की क्रिया या भाव। २ नियत शुल्को आदि के अतिरिक्त वह धन जो पहले-पहल किसी सस्था मे दाखिल या सम्मिलित होकर उसके सदस्यो मे नाम लिखाने के समय अथवा विद्यालयो आदि मे भरती होने के समय विद्यार्थियो को देना पडता है। प्रवेश-शुल्क। ३ वह पत्र जो कही कुछ चीजे दाखिल या जमा करने पर उसके प्रमाण के रूप मे लिखा जाता है और जिन पर उन चीजो का विवरण या सूची और दाखिल करनेवाले का नाम, पता आदि बाते लिखी रहती है।

दाखिली—वि० [अ०] १ आतरिक। भीतरी। अतरग। 'खारिजी' का विपर्याय। २ दिली। हार्दिक।

दाखी†—स्त्री० =दाक्षी।

दाग—पु० [स० दाह] १ जलाने की क्रिया या भाव। दाह। २ हिंदुओ मे मृतक का शव जलाने की क्रिया या भाव।

मुहा०—दाग देना=मृतक का दाह कर्म करना। मुरदे का शव जलाना।

३ जलने के कारण अग या वस्तु पर पडनेवाला चिह्न या दाग। ४. जलन। ताप। ५ ईर्ष्या। डाह।

पु० [फा० दाग] [वि० दागी] १ किसी वस्तु के तल पर बना या लगा हुआ वह चिह्न जो उसका सौन्दर्य कम करता या घटाता हो। धब्बा। जैसे—धोती या कमीज पर लगा हुआ स्याही या रग का दाग।

पद—सफेद दाग। (देखे)

२ किसी प्रकार के भीतरी विकार का सूचक ऐसा चिह्न जो किसी वस्तु के बाहरी तल पर दिखाई देता हो। जैसे—इस सेब पर सडने का दाग है। ३ मुगल शासन-काल की एक प्रथा जिसके अनुसार सैनिको के घोड़ों के पुट्ठो पर, पहचान के लिए गरम लोहे से जलाकर चिह्न या निशान बना दिया जाता था। ४ चरित्र, यश आदि पर (अपराध, दोष आदि के कारण) लगनेवाला कलक। धब्बा। लाछन। जैसे—इसने अपने खानदान पर दाग लगाया है।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

५ किसी प्रकार की दुर्घटना आदि के कारण मन को होनेवाला ऐसा कष्ट या दुःख जो जल्दी दूर न हो सके या भुलाया न जा सके। जैसे—जवान लडके के मरने का दाग।

पद—दागे जिगर—सतान का शोक।

दागदार—वि० [फा०] १ जिस पर किसी तरह का दाग या धब्बा लगा हो। २ जो किसी अपराध या दोष मे दडित या सम्मिलित हो चुका हो। ३ जिस पर कोई कलक लगा या लग चुका हो।

दागना—स० [फा० दाग] १ किसी चीज का तल गरम लोहे आदि से इस प्रकार जलाना या झुलसना कि उस पर दाग पड जाय। जैसे—शरीर पर शख, चक्र आदि की मुद्राएं दागना।
विशेष—प्राय किसी को दड या कष्ट देने, भूत-प्रेत की बाधा या यम-यातना आदि से बचाने के लिए यह क्रिया की जाती है।
२ तेजाब, दाहक औषध आदि से किसी घाव या फोडे पर इस उद्देश्य मे लगाना जिसमे उसका विषाक्त अश जल जाय और इधर-उधर फैलने न पावे। ३ तोप, बदूक आदि की प्याली मे के बारूद मे इसलिए आग लगाना कि उसके फल-स्वरूप गोली निकलकर अपने निशाने पर जा लगे। ४ आज-कल (यात्रिक और रासायनिक प्रक्रियाओ मे) चलनेवाली तोप, बदूक आदि चलाना। ६ पहचान आदि के लिए किसी चीज पर कोई अक, चिह्न या निशान बनाना। अकित या चिह्नित करना। जैसे—बजाजो का कपडे का थान दागना, अर्थात् उन पर मूल्य आदि अकित करना। सयो० क्रि०—देना।

दाग बेल—स्त्री० [फा० दाग + हि० बेल] वे रेखाएँ या चिह्न जो किसी जमीन पर इमारत आदि की नीव खोदने के समय अथवा किसी प्रकार के विभाग सूचित करने के लिए बनाये या लगाये जाते है।

दागर†—वि० [हि दागना] १ नष्ट करनेवाला। २ दागदार।

दागल†—वि० [फा० दाग] दागदार। उदा०—अकबरिये, इकबार, दागल की सारी दुनी।—दुरसा जी।

दागी—वि० [फा० दाग] १ जिसपर किसी तरह का दाग या धब्बा लगा हो। २ जिसके ऊपर कोई ऐसा चिह्न हो जो भीतरी विकार, सडन आदि का सूचक हो। जैसे—दागी फल। ३ जिस पर कोई कलक या लाछन लगा हो या लग चुका हो। ४ जिसे न्यायालय से कारावास का दड मिल चुका हो। जो किसी अपराध मे जेल की सजा भोग आया हो।

दाघ—पु० [स०√दह् (जलाना) + घञ्] १ गरमी। ताप। २ जलन। दाह।

दाज—पु० [?] १ अँधेरी रात। २ अधकार। अँधेरा।
†पु० दहेज। (पश्चिम)
†स्त्री० दाझ।

दाजन—स्त्री० दाझन।

दाजना—अ०, स० = दाझना।

दाझ—स्त्री० [स० दाह] जलन। ताप। उदा०—धूप दाझ तै छाँह तकाई मति तरबर सचपाऊँ।—कबीर।

दाझन†—स्त्री० [स० दग्ध] दाझने अर्थात् दग्ध करने की क्रिया या भाव।

दाझना—अ० [स० दग्ध वा दाहन] १ जलना। २ ईर्ष्या या डाह करना।
स० १ जलाना। २ बहुत अधिक दु खी, पीडित या सतप्त करना।

दाझनि—स्त्री० दाझन।

दाटक†—वि० [?] १ दृढ। पक्का। २ बलवान्। बलिष्ठ। उदा०—दाटक अनड दड नह दीधो, दोयण धड सिर दाब दियो।—दुरसा जी। ३ पराक्रमी।

दाटना—स०—डाँटना।
अ० [?] जान पडता। प्रतीत होना।

दाड़क—पु० [स०√दल् (दलन करना) + णिच् + ण्वुल्—अक] १ दाढ। डाढ। २ दाँत।

दाड़व—पु० [?] पुराणानुसार काशी से दो योजन पश्चिम एक गाँव जिसमे कल्कि भगवान अधर्मी म्लेच्छो का नाश करने के उपरान्त शाति-पूर्वक निवास करेगे।

दाड़स—पु० [हि० दाढ] एक प्रकार का साँप।
†पु० = ढारस।

दाड़िब—पु० [स० दाडिम] अनार का वृक्ष और उसका फल।

दाड़िम—पु० [स०√दल् (भेदन) + घञ्, दाल + इमप्, ल—ड] १ एक प्रसिद्ध पौधा और उसका फल। अनार। २ इलायची।

दाड़िम-पुष्पक—पु० [ब० स०, कप्] रोहितक नामक वृक्ष। रोहेडा।

दाड़िम-प्रिय—पु० [ब० स०] शुक। तोता।

दाड़िमाष्टक—स्त्री० [दाडिम-अष्टक, मध्य० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का चूर्ण जिसमे अनार का छिलका तथा कुछ और चीजे पडती है।

दाड़िमीसार—पु० = दाडिम।

दाडी†—स्त्री० [√दल् (भेदन) + घञ् + ङीप्] दे० 'दाडिम'।
†स्त्री० = दाढी।

दाढ़—स्त्री० [स० दष्ट्रा, प्रा० डड्ढा या स० दाडक] जबडे के भीतर के मोटे चौखूँटे दाँत जो दोनो ओर दो-दो ऊपर नीचे होते है। चौभर।
मुहा०—दाढ़ गरम गरम होना—अच्छी-अच्छी चीजे अधिक मात्रा मे खाने को मिलना।
†स्त्री० दहाड।

दाढ़ना—स० = दाहना (जलाना)।
†अ० = दहाडना।

दाढ़ा—पु० [स० दाह] १ बन की आग। दावानल। २ अग्नि। आग। ३ जलाने के लिए लकडियो, पत्तो आदि का बनाया या लगाया हुआ ढेर। ४ गरमी। ताप। ५ जलन। दाह।
मुहा०—दाढ़ा फूँकना—बहुत अधिक जलन या दाह उत्पन्न करना।
पु० [हि० दाढ़ी] ऐसी बडी दाढी जिसमे बहुत अधिक घने और लबे बाल हो। बडी दाढी।
†पु० = दाढ।
†पु० = डाढा।

दाढ़िका—स्त्री० [स० दाढा + क + टाप्, इत्व] दाढी।

दाढ़ी—स्त्री० [स० दाढिका] १ मनुष्यो मे पुरुष जाति के लोगो की ठोढी पर उगनेवाले बाल जो या तो मुंडवाकर साफ किये जाते है या बढाकर बडे बडे किये जाते है।
मुहा०—दाढ़ी घुटवाना या बनवाना—दाढ़ी पर के बाल उस्तरे से मुंडवाना।
२ ठोढी। चिबुक। ३ कुछ विशिष्ट प्रकार के पशुओ की ठोढ़ी पर के वे बाल जो प्राय बढ़कर झूलने या लटकने लगते है। जैसे—बकरे की दाढ़ी।

दाढ़ीजार—पु० [हि० दाढ़ी+जलना] स्त्रियों की एक गाली जो वे बहुत क्रुद्ध होने पर पुरुषों को देती हैं, और जिसका अर्थ होता है—जिसकी दाढ़ी जलाई गई हो अथवा मुँह झुलसा या फूँका गया हो।

विशेष—कुछ लोग इसको स० 'दारी-जार' (अर्थात् दुश्चरित्रा स्त्री का यार और सगी-साथी) से व्युत्पन्न मानते है।

दाण†—पु० = दान।

दात*—पु० [स० दातव्य] १ दान के रूप में शुभ अवसर पर किसी को दिया जानेवाला पदार्थ। २ दान।

†वि० = दाता।

दातन—स्त्री० = दातुन।

दातव्य—वि० [स०√दा (देना)+तव्यत्] १ जो दिया जाने को हो या दिया जा सकता हो। २ दान-सबधी। दान का। ३ जहाँ से दान रूप में कुछ दिया जाता हो। जैसे-दानव्य औषधालय।

पु० १ दान। २ दानशीलता। ३ वह धन जो चुकाना या देना आवश्यक हो। (ड्यू) जैसे—कर या महसूल।

दाता (तृ)—वि० [स०√दा+तृच्] [स्त्री० दात्री] १ समस्त पदों के अंत में, देनेवाला। जैसे—सुखदाता। २ बहुत अधिक दान करनेवाला। दानशील।

पु० १ ईश्वर या परमात्मा जो सब को सब-कुछ देता है। २ बहुत बडा दानी व्यक्ति।

दातापन—पु० [स० दाता+हि० पन] बहुत बडा दाता होने की अवस्था या भाव। दानशीलता।

दातार—वि० [स० दाता का बहु०] दाता। देनेवाला। बहुत दान देनेवाला। बहुत बडा दाता।

दाति—स्त्री० [स०√दा (दान)+क्तिच्] १ देने की क्रिया या भाव। २ वितरण। ३ किसी दूसरे स्थान से किसी के नाम आई हुई वस्तु उसे देना या पहुँचाना। (डिलिवरी)

दाती*—स्त्री० [हि० 'दाता' का स्त्री०] देनेवाली।

दातुन—स्त्री० [हि० दाँत+अवन (प्रत्य०)] १ किसी पेड की पतली नरम टहनी का वह टुकडा जिसका अगला सिरा कुचलकर दाँत साफ किये जाते है। २ दाँत और मुँह अच्छी तरह साफ करने की क्रिया।

दातुन—स्त्री० [स० दती] १ दती की जड। २ जमालगोटे की जड। † स्त्री० = दातून।

दातृता—स्त्री० [स० दातृ+तल्+टाप्] दाता होने की अवस्था या भाव। दानशीलता।

दातृत्व—पु० [स० दातृ+त्व] दानशीलता। दातृता।

दातौन—स्त्री० = दतुवन।

स्त्री० = दातुन।

दात्यूह—पु० [स० दाति√ऊह् (वितर्क)+अण्] १ पपीहा। चातक। २ बादल। मेघ।

दात्योनि*—स्त्री० = दातुन।

दात्यौह—पु० [स० दात्यूह (पृषो० सिद्धि)] १. पपीहा। २ बादल।

दात्र—पु० [स० √दो (काटना)+ष्ट्रन्] [स्त्री० अल्पा० दात्री] घास, फल आदि काटने की दराती। दाँती। हँसिया।

दात्री—स्त्री० [स० दातृ+ङीप्] देनेवाली।

स्त्री० दराँती या हँसिया नामक औजार।

दात्व—पु० [स०√दा (दान)+त्वन्] १ दाता। २ यज्ञ का अनुष्ठान। ३ यज्ञ।

दाद—स्त्री० [स० दद्रु] एक प्रसिद्ध चर्म रोग जिसमे शरीर के किसी अग मे ऐसे चकत्ते पड जाते है, जिनमे बहुत खुजली होती है।

वि० [फा०] समस्त पदो के अत मे दिया हुआ। जैसे—खुदादाद।

स्त्री० १ इसाफ। न्याय।

क्रि० प्र०—चाहना।—देना।—माँगना।

२ न्याय के लिए की जानेवाली प्रार्थना। ३ न्यायपूर्वक (अर्थात् बिना किसी प्रकार के पक्षपात के) किसी द्वारा किये हुए किसी काम और उसके कर्ता की भी की जानेवाली प्रशसा। सराहना।

मुहा०—दाद देना=न्यायपूर्वक और बिना पक्षपात किये किसी की उक्ति, कार्य आदि की प्रशसा करना। **दाद पाना**= उचित अनुग्रह, न्याय, सत्कार आदि का पात्र या भाजन बनना। उदा०—सदा सर्बदा राज राम कौ सूर दादि तहँ पाई।—सूर।

दाद-ख्वाह—वि० [फा०] न्याय चाहनेवाला। फरियाद करनेवाला।

दादगर—वि० [फा०] न्याय करनेवाला।

दादनी—स्त्री० [फा०] १ वह जो दिया जाने को हो। दातव्य। २ वह धन जो किसी काम के लिए अग्रिम या पेशगी दिया जाय, विशेषत वह धन जो खेतिहरों को अनाज पैदा होने के पहले बनिया या महाजन इसलिए पेशगी देता है कि अनाज दूसरों के हाथ न बिकने पावे।

दादमर्दन—पु० [स० दद्रुमर्दन] चकवँड नामक पौधा, जिसकी पत्तियाँ पीसकर दाद पर लगाई जाती है।

दाद-रस—वि० [फा०] न्याय करनेवाला।

दादरा—पु० [?] सगीत मे एक प्रकार का चलता गाना (पक्के या शास्त्रीय गानों से भिन्न)।

दादस—स्त्री० [हि० दादा+सास] सास की सास। ददिया सास।

दादा—पु० [स० तात] [स्त्री० दादी] १ पिता का पिता। पितामह। २ बडे-बूढ़ों के लिए आदरसूचक सबोधन।

पु० [स्त्री० दीदी] बडाभाई।

दादि†—स्त्री० =दाद (न्याय)।

दादी—पु० [फा० दाद] वह जो दाद (अर्थात् कष्ट का प्रतिकार) चाहता हो। दाद या न्याय का प्रार्थी।

स्त्री० हि० 'दादा' (पितामह) का स्त्री०।

दादु†—स्त्री० [स० दद्रु] दाद।

दादुर—पु० [स० दर्दुर] मेढक। मडूक।

दादुल*— पु० = दादुर (मेढक)।

दादू—पु० [अनु० दादा] १ दादा के लिए सबोधन या प्यार का शब्द। २ बडे भाई के लिए स्नेहसूचक सबोधन।

पु० दे० 'दादू दयाल'।

दादूदयाल—पु० एक प्रसिद्ध सत जिनके नाम पर दादू नाम का पथ चला है। कहते है कि ये अहमदाबाद के धुनिया थे। जो अकबर के शासन-काल मे हुए थे। कबीर-पथी इन्हें कबीर का अनुयायी कहते है।

दादूपथी—पु० [हि० दादू+पथी] दादू दयाल नामक मत के चलाये हुए पथ या सप्रदाय का अनुयायी।

दाघ*—स्त्री० [सं० दाह] जलन। दाह।

दाधना*—स० [सं० दग्ध] जलाना। भस्म करना।

दाधिक—वि० [सं० दधि+ठक्—इक] दही से बना हुआ। जिसमे दही डाला गया हो।

दाधिचि—पु० = दाधीच।

दाधीच—पु० [सं० दधीचि+अण्] दधीचि ऋषि का वंशज।

दान—पु० [सं०√दा (दान)+ल्युट्—अन] १ किसी को कुछ देने की क्रिया या भाव। देन। २ धर्म, परोपकार, सहायता आदि के विचार से अथवा उदारता, दया आदि से प्रेरित होकर किसी को कुछ देने की क्रिया या भाव। खैरात। ३. उक्त प्रकार से दिया हुआ धन या कोई वस्तु।

क्रि० प्र०—देना। —पाना। —मिलना।—लेना।

४ राजनीति के चार उपायों मे से एक, जिसमे किसी को कुछ देकर शत्रु का पक्ष निर्बल किया जाता है अथवा विरोधी को अपनी ओर मिलाया जाता है। ५ कर। महसूल। ६ हाथी के मस्तक से निकलनेवाला मद। ७ शुद्धि। ८ छेदने की क्रिया या भाव। छेदन। ९ एक प्रकार का मधु या शहद।

वि० [फा०] १ जाननेवाला। जैसे—कद्र-दान। २ (यौ० के अत मे संज्ञा रूप मे प्रयुक्त) आधार या पात्र बनकर अपने अतर्गत रखनेवाला। जैसे—कलमदान, पानदान।

दानक—पु० [सं० दान+कन्] कुत्सित या निकृष्ट दान। बुरा दान।

दान-कुल्या—स्त्री० [प० त०] हाथी का मद।

दान-धर्म—पु० [मध्य० स०] दान देने का धर्म।

दान-पति—पु० [ष० त०] १ बहुत बड़ा दानी। २ अक्रूर का एक नाम जो स्यमतक मणि के प्रभाव से सदा बहुत अधिक दान करता रहता था।

दान-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसमे अपनी संपत्ति सदा के लिए किसी को दान रूप मे देने का उल्लेख किया जाता है।

दान-पात्र—पु० [प० त०] वह व्यक्ति जिसे दान देना उचित हो। दान प्राप्त करने का अधिकारी।

दान-प्रतिभू—पु० [प० त०] किसी के द्वारा लिये जानेवाले धन की जमानत करनेवाला व्यक्ति।

दान-प्रतिष्ठा—स्त्री० [प० त०] किसी दान की हुई संपत्ति के साथ दक्षिणा रूप मे दिया जानेवाला धन। दक्षिणा। उदा०—पुनि कछु गुनि बोले अब दान-प्रतिष्ठा दीजै।—रत्ना०।

दान-लीला—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १ कृष्ण की वह लीला जिसमे वे ग्वालिनों से गोरस बेचने का कर वसूल करते थे। २ वह पुस्तक जिसमे उक्त लीला का विस्तृत वर्णन हो।

दानलेख—पु० = दान-पत्र।

दानव—पु० [सं० दनु+अण्] दनु (कश्यप की स्त्री) के वे पुत्र जो देवताओं के घोर शत्रु थे। असुर। राक्षस।

दानव-गुरु—पु० [प० त०] शुक्राचार्य।

दानवज्र—पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्रकार के घोड़े जो देवताओं और गंधर्वों की सवारी मे रहते है, कभी बुड्ढे नही होते और मन की तरह वेगवान् होते है।

दान-वारि—पु० [कर्म० स०] हाथी का मद।

दानवारि—पु० [सं० दानव-अरि, ष० त०] १ दानवों का नाश करनेवाले, विष्णु। २ देवता। ३ इंद्र।

दानवी—वि० [सं० दानवीय] दानवों का। दानव-संबधी। जैसे—दानवी माया।

स्त्री० [सं० दानव+ङीप्] दानव जाति की स्त्री। राक्षसी।

दान-वीर—पु० [सं० त०] वह जो सदा बहुत बड़े-बड़े दान करता रहता हो और दान करने मे कभी पीछे न हटता हो।

दानवेंद्र—पु० [सं० दानव-इंद्र, ष० त०] राजा बलि।

दान-शील—वि० [ब० स०] [भाव० दानशीलता] जो स्वभावत बहुत कुछ दान देता रहता हो। बहुत बड़ा दानी।

दान-शीलता—स्त्री० [सं० दानशील+तल्+टाप्] दानशील होने की अवस्था या भाव।

दान-सागर— पु० [ष० त०] एक प्रकार का बहुत बड़ा दान जिसमे भूमि, आसन आदि सोलह पदार्थों का दान किया जाता है। (बगाल)

दानांतराय—पु० [दान-अतराय, ष० त०] जैनशास्त्र के अनुसार अंतराय या पाप-कर्म जिनके उदय होने पर मनुष्य दान करने मे असमर्थ होता है।

दाना—पु० [फा० दान] १ अन्न का कण या बीज। २ अन्न जो पकाकर खाया जाता है। अनाज।

पद—दाना-पानी। (देखे)

मुहा०—दाने-दाने को तरसना या मोहताज होना—कुछ भी भोजन न मिलने के कारण बहुत ही दीन भाव से कष्ट भोगना। **दाना बदलना** - एक पक्षी का अपने मुँह का दाना दूसरे पक्षी के मुँह मे डालना। चारा बाँटना। **दाना भरना या भराना** पक्षियों का अपने छोटे बच्चों के मुँह मे अपनी चोंच से दाना डालना या रखना।

३ भाड मे भूँजा हुआ अन्न। ४ वनस्पतियों आदि के बीज। जैसे—राई या सरसों का दाना। ५ कुछ विशिष्ट प्रकार की छोटी गोलाकार चीजों का वाचक शब्द। जैसे—घुँघरू, मूँगे या मोती का दाना, गले मे पहनने के कठे या माला के दाने। ६ कुछ विशिष्ट प्रकार के पदार्थों का गोलाकार छोटा कण। जैसे—घी, चीनी, दही या मलाई के ऊपर दिखाई देनेवाले दाने। ७ उक्त प्रकार की गोलाकार छोटी चीजों के साथ प्रयुक्त होनेवाला सख्या-सूचक शब्द। जैसे—चार दाना आम, तीन दाना काली मिर्च, दो दाना मुनक्का। ८ रोग, विकार आदि के कारण शरीर के चमड़े पर होनेवाले गोलाकार छोटे उभार। जैसे—खुजली या शीतला के दाने। ९ किसी तल पर दिखाई देनेवाले छोटे गोलाकार उभार। जैसे—नारगी के छिलके पर के दाने, नकाशीदार बरतनो पर के दाने।

वि० [फा०] [भाव० दानाई] बुद्धिमान। अक्लमद। जैसे—नादान दोस्त से दाना दुश्मन अच्छा होता है।

दानाई—स्त्री० [फा०] अक्लमदी। बुद्धिमत्ता।

दाना-चारा—पु० [फा० दाना+हि० चारा] जीव-जतुओं को दिया जानेवाला भोजन।

दाना-चीनी—स्त्री० [हि०] वह चीनी जो महीन चूर्ण के रूप में नही, बल्कि कुछ मोटे कणों या दानों के रूप मे होती है।

दानादेश—पु० [सं० दान-आदेश, ष० त०] १ किसी को कुछ दान दिये जाने की आज्ञा। २ 'देयादेश'।

दानाध्यक्ष—पु० [सं० दान-अध्यक्ष, ष० त०] मध्ययुग मे किसी देशी राज्य का वह अधिकारी जो यह निश्चय करता था कि राजा या राज्य की ओर से किसे कितना दान दिया जाना चाहिए।

दाना-पानी—पु० [फा० दाना+हि० पानी] १. जीवन-निर्वाह के लिए आवश्यक खाने-पीने की चीजें। अन्न-जल। २ पेट भरने के लिए कुछ चीजे खाने या पीने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—छोड़ना।—मिलना।

३ भरण-पोषण का आयोजन। जीविका। ४ भाग्य की वह स्थिति जिसके कारण किसी को कही जाकर रहना और वहाँ कुछ खाना-पीना पडता हो, अथवा वहाँ रहकर जीविका का निर्वाह करना पडता हो। अन्न-जल।

मुहा०—(कहीं से किसी का) दाना-पानी उठना=भाग्य या विधि का ऐसा विधान होना जिससे किसी व्यक्ति को किसी स्थान से (कही और जाने के लिए) हटना पड़े।

दाना-बंदी—स्त्री० [फा० दान+बदी] खडी फसल से उपज का अदाज करने के लिए खेत को नापने का काम।

दानिनी—स्त्री० [सं०] दान करनेवाली स्त्री।

दानिया—पु० [सं० दान] १ वह जो दान अर्थात् कर उगाहता हो। २ दानी। दाता।

वि० १ दान-सबधी। २ दान लेनेवाला। जैसे—दानिया ब्राह्मण।

दानिश—स्त्री० [फा०] १ अक्ल। बुद्धि। विवेक। २ विद्या।

दानिस†—स्त्री० [फा० दानिस्त] १ समझ। बुद्धि। २ राय। सम्मति।

† स्त्री० = दानिश।

दानी (निन्)—वि० [सं० दान+इनि] [स्त्री० दानिनी] १ बहुत दान करनेवाला। दानशील। २ देनेवाला। (यौ० के अत मे)

पु० १ वह जो दान देने मे बहुत उदार हो। बहुत बडा दाता या दान-शील।

पु० [सं० दानीय] १ कर आदि उगाहनेवाला अधिकारी। २ नेपालियो की एक जाति या वर्ग।

स्त्री० [फा० दान से] कोई चीज रखने का छोटा आधान या पात्र। (यौ० के अत मे) जैसे—चूहेदानी, बालूदानी, सुरमेदानी।

दानीय—वि० [सं०√दा (देना)+अनीयर्] दान किये जाने योग्य। जो दान के रूप मे दिया जा सके।

दानु—वि० [सं०√दा+नु] १ दाता। २ विजयी। ३ वीर। बहादुर।

पु० १ दान। २ दानव। ३ वायु। हवा। ४ तृप्ति। तुष्टि। ५. अभ्युदय। ६. पानी आदि की बूँद।

दानेदार—वि० [फा०] जिसके अश दानो अर्थात् कणो के रूप मे हो। जैसे—दानेदार घी, दानेदार चीनी।

दानो†—पु० = दानव।

दाप—पु० [सं० दर्प प्रा० दप्प] १. अभिमान। घमड। २ बल। शक्ति। ३ दबदबा। रोब। ४ तेज। प्रताप। ५. बल। शक्ति। ६ क्रोध। गुस्सा। ७ जलन। ताप।

दापक—पु० [हि० दापना] १. दबानेवाला। २. रोकनेवाला।

दापना—स० [हि० दाप] १. दबाना। २ मना करना। रोकना।

दापित—भू० कृ० [सं०√दा (देना)+णिच्+क्त] १ जो देने के लिए बाध्य किया गया हो। २ जिस पर अर्थ-दड लगाया गया हो। ३ जिसका निर्णय या फैसला किया गया हो।

दाब—स्त्री० [हि० दबाना] १ दबाने की क्रिया या भाव। २. ऐसी स्थिति जिसमे किसी प्रकार का दबाव या भार पडता हो। दबने या दबे हुए होने की अवस्था।

क्रि० प्र०—पहुँचाना।—रखना।—लगाना।

३ वह भारी वस्तु जो किसी दूसरी चीज के ऊपर उसे दबाये रखने के लिए रखी जाती है। भार।

क्रि० प्र०— डालना।— रखना।

४ पत्थर, शीशे आदि का वह छोटा टुकडा जो कागजो को उडने से बचाने या उन्हे दबाये रखने के लिए उन पर रखा जाता है। (पेपर वेट) ५ नैतिक, वैयक्तिक या शारीरिक दृष्टि से प्रबल व्यक्ति का किसी दूसरे व्यक्ति पर पडनेवाला प्रभाव या दबाव।

मुहा०—किसी की दाब तले होना = किसी के वश मे या अधीन होना। **(किसी को) दाब मानना** = किसी बडे का अधिकार या प्रभाव मानना और उसकी आज्ञा, इच्छा आदि के वशवर्ती होकर रहना। **(किसी को) दाब में रखना** = नियत्रण, वश या शासन मे दबाकर रखना।

६ यत्रो आदि मे किसी चीज पर यत्र के किसी ऊपरी, बडे भाग का इस प्रकार आकर पडना कि उसके फल-स्वरूप उस चीज पर कुछ अकित हो या किसी प्रकार का अभीष्ट फल हो। जैसे—छापे के यत्र मे कागज पर पडनेवाली दाब।

†पु० = द्रव्य।

दाबकस—पु० [हि० दाब+कसना] लोहारो के छेदने के औजारो (किरकिरा, बरदुआ आदि) का एक हिस्सा।

दाबदार—वि० [हि० दाब+फा० दार] रोबदार। आतक रखनेवाला। प्रभावशाली। प्रतापी।

दाबना—स० १ = दबाना। २ = गाडना।

दाब-मापक—पु० [हि०+सं०] वह यत्र जिससे यह जाना जाता है कि किसी चीज पर दूसरी चीज का कितना दाब या भार पड़ रहा है। (मैनो मीटर, प्रेशर गेज)

दाबा—पु० [हि० दाब] कलम लगाने के लिए पौधो की टहनी को मिट्टी मे गाडने या दबाने की क्रिया या पद्धति।

पु० [?] नदियो मे रहनेवाली एक प्रकार की छोटी मछली।

दाबिल—पु० [हि० दाब] एक प्रकार की बडी सफेद चिड़ियाँ जिसकी चोच दस बारह अगुल लबी और सिरे पर गोल और चिपटी होती है। यह प्राय. जलाशयो के कीडे-मकोडे और छोटी मछलियाँ खाती है।

दाबी—स्त्री० [हि०] कटी हुई फसल के बँधे हुए एक-जैसे पूले जो मज-दूरी मे दिए जाते हैं।

दाभ—पु० [स० दर्भ] कुश की जाति का एक तरह का तृण जिसकी पत्तियाँ सूई की नोक के समान नोकदार होती है। डाभ।

दाम्य—पु० [स०] जो इस योग्य हो कि नियंत्रण या शासन मे रखा जा सके। जो दबाकर रखा जा सके।

दाम (न्)—पु० [स०√दो (खण्ड करना)+मनिन्] १ रस्सी। रज्जु। २ माला। हार। ३ ढेर। राशि। ४ भुवन। लोक। ५ राजनीति की चार प्रकार की युक्तियों मे से वह जिसमें शत्रु को धन देकर वश मे किया जाता है। जैसे—साम, दाम, दंड और भेद सभी तरह से वे अपना काम निकालते हैं।

विशेष—यद्यपि 'दाम' का एक अर्थ धन भी है, पर जान पडता है कि राजनीतिक क्षेत्रवाला 'दाम' का उक्त अर्थ उसके 'रस्सी' वाले अर्थ के आधार पर विकसित होकर लगा है, और इसका आशय रहा होगा—किसी को धन देकर अपने जाल मे फँसाना या बाँधकर अपनी ओर करना। यहाँ यह भी ध्यान रहे कि फारसी मे 'दाम' का एक अर्थ जाल या फंदा भी है।

पु० [यू० ड्रैम (चाँदी का एक सिक्का) से स० द्रम्म, फा० दाम] १ प्राचीन भारत का एक छोटा सिक्का जो एक दमडी के तीसरे भाग और एक पैसे के चौबीसवें भाग के बराबर होता था।

मुहा०—दाम-दाम भर देना=जितना देन या ऋण हो, वह सब पूरा पूरा चुका देना। कुछ भी बाकी न रखना।

२ सिक्कों आदि के रूप मे वह धन जो कोई चीज खरीदने पर बदले में उसके मालिक को दिया जाता है। कीमत। मूल्य।

विशेष—यह शब्द अपने पुराने अर्थ के आधार पर बहुवचन मे बोला जाता था। जैसे—इस कपडे के कितने दाम होंगे? अर्थात् दाम नाम के कितने सिक्के देने पडेंगे? परन्तु आज-कल इसका प्रयोग अधिकतर एकवचन रूप मे ही होता है। जैसे—इस पुस्तक का क्या दाम है?

मुहा०—दाम उठना=किसी चीज का जो उचित मूल्य हो या उसमे जो लागत लगी हो, वह बिकने पर मिल जाना। **दाम करना**=कोई चीज खरीदने के समय कुछ घटा-बढाकर उसका दाम या भाव निश्चित करना। दाम तै या निश्चित करना। **दाम खडा करना या खडे करना**=उचित मूल्य प्राप्त करना। कीमत ले लेना। **दाम चुकाना**=(क) कीमत या मूल्य दे देना। (ख) दाम करना। (देखे ऊपर) **दाम भरना**=कोई चीज खो जाने या टूट-फूट जाने पर उसके मालिक को उसका दाम चुकाना या देना। **दाम भर पाना**=पूरा-पूरा मूल्य प्राप्त कर लेना।

३ धन। रुपया-पैसा। जैसे—दाम खरचने पर सब काम हो जाते है। ४ सिक्का।

मुहा०—चाम के दाम चलाना=अपने अधिकार या प्रभुत्व के बल पर अनोखे और विलक्षण काम या मनमाना अंधेर करने लगना। (एक भिश्ती के राजा बन जाने पर चमडे के सिक्के चलाने के प्रवाद के आधार पर)

५ जाल। पाश फंदा।

*स्त्री० दामिनी। उदा०—मुकुट नव-घन दाम।—सूर।

दाम-कंठ—पु० [ब० स०] एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

दामक—पु० [स० दाम+क] १ गाडी के जुए मे बाँधी जानेवाली रस्सी। २ बाग-डोर। लगाम।

दाम-ग्रंथि—पु० [ब० स०] महाभारत में वर्णित राजा विराट के सेनापति का नाम।

दाम-चंद्र—पु० [स० ब० स० ?] राजा द्रुपद के एक पुत्र का नाम।

दामन—पुं० [फा०] १ गले मे या वक्ष स्थल पर पहने हुए अंगरखे, कुरते आदि का कमर से नीचे का वह भाग जो झूलता या लटकता रहता है।

मुहा०—दामन छुड़ाना—संबंध छोडकर अलग होना। **(किसी का) दामन पकड़ना**=संकट आदि के समय किसी ऐसे व्यक्ति का आश्रय लेना जो संकट के समय पूर्ण रूप से सहायक हो सके।

२ पहाड के नीचे का कुछ ढालुआँ भाग। ३ जहाज का पाल। ४ नाव या जहाज के जिस ओर हवा का झोंका लगता हो उसके सामने की दिशा। (लश०)

दामनगीर—वि० [फा०] १ न्याय, संरक्षण, सहायता आदि के लिए किसी का दामन या पल्ला पकडनेवाला। २. अपना कोई काम कराने या अपना प्राप्य लेने के लिए किसी का दामन या पल्ला पकडने या पीछे पडनेवाला।

दामन-पर्व (न्)—पु० [स० दमन+अण्, दामन-पर्वन् ब० स०] १ दमन-भंजन तिथि। चैत्र शुक्ल-चतुर्दशी। २ चैत्र शुक्ल की द्वादशी तिथि।

दामनी—स्त्री० [स० दामन+अण्+ङीप्] रस्सी। डोरी।

स्त्री० [फा० दामन] १ ओढने की चादर विशेषत वह चादर जो मुसलमान औरतों के जनाजे पर डाली जाती है। २ घोडों की पीठ पर डाला जानेवाला कपडा।

दामर—स्त्री० [देश०] १ राल जो दरार भरने के लिए नावों मे लगाई जाती है। २ वह भेड जिसके कान छोटे हों। (गडेरिये)

*स्त्री० [स० दामन] रस्सी।

पु०=डामर।

दामरि—स्त्री०=दामर।

दामरी—स्त्री० [स० दाम] १ रस्सी। रज्जु। २ छोटा जाल।

दामलिप्त—पु० [स० ताम्रलिप्त (पृषो० सिद्धि)] दे० 'ताम्रलिप्त'।

दामांचल—पु० [स० दामन्-अंचल ष० त०] वह रस्सी जिसे घोडे के पिछले पैरों मे फँसाकर खूँटे मे बाँधते है।

दामांजन—पु०=दामांचल।

दामा—पु० [?] एक प्रकार का पक्षी जो प्राय अपनी दुम नीचे-ऊपर उठाता-गिराता रहता है। नर दामा का रंग काला और मादा का बादामी होता है। इसे कलचिरी भी कहते हैं।

*स्त्री०=दावा (दावानल)।

दामाद—पु० [स० जामातृ से फा०] संबंध के विचार मे वह व्यक्ति जिसे कन्या ब्याही गई हो। जंवाई। जामाता। दमाद।

दामादी—वि० [हि० दामाद] १ दामाद-संबंधी। जैसे—दामादी धन। २ दामादों की चाल-ढाल जैसा। दामादों की तरह का। जैसे—दामादी ऐंठ।

स्त्री० दामाद या जामाता होने की अवस्था, पद या भाव।

मुहा०—(किसी को) दामादी मे लेना=किसी के साथ अपनी कन्या

का विवाह करके उसे अपना जँवाई या दामाद बनाना। (मुसल०)

दामासाह—पु० [हिं० दाम+साहु=बनिया] वह दिवालिया महाजन जिसकी संपत्ति लहनदारों में उनके लहने के अनुपात में बराबर बँट गई हो; अर्थात् जिससे लोगों को बहुत-कुछ पावना मिल गया हो।

दामासाही—स्त्री० [हिं० दामासाह] १ किसी दिवालिए महाजन की संपत्ति का लहनदारों के बीच में होनेवाला बँटवारा। २ पावने का वह अंश जो उक्त बँटवारे के अनुसार लहनदारों को मिले या मिलने को हो।

दामिनी—[सं० दामा+इनि+ङीप्] १ बिजली। विद्युत्। २ दावनी नामक आभूषण।

दामिल—स्त्री० [?] प्राचीन भारत की एक स्थानिक भाषा। (कदाचित् आधुनिक तमिल भाषा)

दामी—स्त्री० [हिं० दाम] कर। मालगुजारी।

वि० १. अधिक दाम या मूल्य का। २. मूल्यवान।

दामोद—पु० [सं०] अथर्ववेद की एक शाखा का नाम।

दामोदर—पु० [सं० दामन्-उदर, ब० स०] १ श्रीकृष्ण।

विशेष—यशोदा ने एक बार बालक कृष्ण की कमर और पेट में रस्सी बाँध दी थी, इसी से उनका यह नाम पड़ा।

२ विष्णु। ३. एक जैन तीर्थंकर। ४. बंगाल का एक प्रसिद्ध नद जो छोटा नागपुर के पहाड़ों से निकलकर भागीरथी में मिलता है।

वि० इन्द्रियों को वश में रखनेवाला।

दायँ—पु० १ =दाँव। २ =दाँज (बराबरी)।

स्त्री० १ =दाई। २ =दवँरी।

वि० दायाँ (दाहिना)।

दाय—वि० [सं०√दा (देना)+घञ्] १. (धन या पदार्थ) जो किसी को दिया जाने को हो अथवा दिया जा सकता हो। २ जिसका दिया जाना आवश्यक या कर्त्तव्य हो।

पु० १ देने की क्रिया या भाव। दान। २ वह अवस्था जिसमें किसी को कुछ देना या किसी के लिए कुछ करना आवश्यक, उचित अथवा कर्त्तव्य हो। दायित्व। उदा०—सिर धुनि धुनि पछतात मीजि कर, कोउ न मीत हित दुसह दाय। —तुलसी। ३. ऐसा धन या संपत्ति जिसका बँटवारा या विभाजन उत्तराधिकारियों में होने को हो या न्यायत होना उचित हो। ४. बँटवारा होने पर हिस्से में आने या मिलनेवाला धन या संपत्ति। ५ ऐसा धन या पदार्थ जो अनिवार्य रूप से किसी को मिलने को हो या मिल सकता हो। उदा०—और सिंगार म्हारे दाय न आवै।—मीरां। ६ कन्या को उसके विवाह के समय दिया जानेवाला धन और पदार्थ। दहेज। दायजा।

† स्त्री० दाई।

* पु० [सं० दायित्व] १ जिम्मेदारी। दायित्व। २ उत्तरदायित्व। जवाब-देही। जैसे—जमदाय=यमराज के सामने उपस्थित होनेवाला लेखा और उसका दिया जानेवाला उत्तर।

पु० १ =दाँव। २. =दाव।

दायक—वि० [सं०√दा (दान)+ण्वुल्—अक] १ समस्तपदों के अंत में लगने पर, देनेवाला। जैसे—सुखदायक, दुःखदायक, पिंडदायक। २ (कार्य) जिसमें आर्थिक दृष्टि से लाभ होता या हो रहा हो। (पेइंग)

दायज†—पु० =दायजा।

दायजा—पु० [सं० दाय से फा०] दहेज। वह धन जो विवाह के उपरान्त कन्या को विदा करते समय अपने साथ ले जाने के लिए दिया जाता है।

दाय-भाग—पु० [सं० ष० त०] १ धर्म-शास्त्र का वह अंश या विभाग जिसमें यह बतलाया गया है कि पिता अथवा पूर्वजों का धन उसके उत्तराधिकारियों अथवा संबंधियों में किस प्रकार और किन सिद्धान्तों के अनुसार बाँटा जाना चाहिए। २ पैतृक संपत्ति का वह अंश जो उक्त व्यवस्था के आधार पर किसी उत्तराधिकारी को मिले। उदा०—सोचो यह स्वार्थ क्या तुम्हारा दायभाग है ?—गुप्त।

दायम—अव्य० [अ० दाइम] सदा। हमेशा।

दायमी—वि० [अ० दाइमी] नित्य या सदा बना रहनेवाला।

दायमुलहब्स—पु० [अ० दाइमुल हब्स] १ जन्म भर के लिए दी जानेवाली कैद की सजा। आजीवन कारावास का दंड।

दायर—वि० [अ० दाइर] १ घूमता या चलता-फिरता हुआ। २ जारी। प्रचलित। ३ (अभियोग या मुकदमा) जो निर्णय या विचार के लिए न्यायालय में उपस्थित किया गया हो। जैसे—किसी पर कोई मुकदमा दायर करना।

दायरा—पु० [अ० दाइर] १ गोल घेरा। २ वृत्त। ३ कक्षा। ४ मंडली। ५ क्रिया या व्यवहार का क्षेत्र। हल्का। ६ खँजड़ी, डफली आदि बाजे जिनमें मेंडरा लगा होता है।

दायाँ—वि० =दाहिना।

दाया—स्त्री० [फा० दाय] १ वह स्त्री जो दूसरा के बच्चा को अपना दूध पिलाकर पालती हो। २ बच्चा जनाने की विद्या जाननेवाली स्त्री। बच्चाजनाने वाली स्त्री। ३.† नौकरानी।

† स्त्री० =दया।

दायागत—वि० [सं० दाय-आगत, तृ० त०] जो दाय अर्थात् पैतृक संपत्ति के बँटवारे में मिला हो।

पु० पन्द्रह प्रकार के दासों में से वह जो दाय अर्थात् पैतृक संपत्ति के बँटवारे में मिला हो।

दायागरी—स्त्री० [फा० दाय गरी] १ दाई का पेशा या काम। २ बच्चा जनाने की विद्या या वृत्ति। धात्रीकर्म।

दायाद—वि० [सं० दाय+आ√दा (देना)+क] [स्त्री० दायादा] जो दाय का अधिकारी हो। जिसे पैतृक संबंध के कारण किसी की जायदाद में हिस्सा मिले।

पु० १ कुटुंब का ऐसा व्यक्ति जो संपत्ति के उक्त प्रकार के बँटवारे में हिस्सा पाने का अधिकारी हो। सपिंड कुटुंबी। पुत्र। बेटा।

दायादा—स्त्री० [सं० दायाद+टाप्] १ उत्तराधिकारिणी। २ कन्या।

दायादी—स्त्री० [सं० दाय√अद् (भक्षण)+अण्+ङीप्] कन्या।

पु० ऐसा संबंधी जो पैतृक संपत्ति में हिस्सा बँटवा सकता हो। दायाधिकारी।

स्त्री० लोगों में परस्पर उक्त प्रकार का संबंध होने की अवस्था या भाव।

दायाद्य—पु० [सं० दायाद+ष्यञ्] वह संपत्ति जिस पर सपिंड कुटुंबियों का अधिकार माना जाय या माना जा सकता हो।

दायाधिकारी—पु० [सं० दाय-अधिकारिन्, ष० त०] वह जो किसी का उत्तराधिकारी होने के नाते उसकी संपत्ति का कुछ अंश पाने का न्यायत अधिकारी हो। उत्तराधिकारी। वारिस। (हेयर)

दायापवर्तन—पु० [सं० दाय-अपवर्तन, ष० त०] किसी जायदाद में मिलनेवाले हिस्से की जब्ती।

दायित—भू० कृ० [√दय् (देना)+णिच्+क्त] १ दिलाया हुआ। २ दान के रूप में सदा के लिए दिलाया हुआ।

दायित्व—पु० [सं० दायिन्+त्व] १ दायी (जवाबदेह) होने की अवस्था या भाव। जिम्मेदारी। (आब्लिगेशन) २ देनदार होने की अवस्था या भाव। (लायबिलिटी)

दायिनी—वि०, स्त्री० [सं० दायिन्+ङीप्] सं० दायी का स्त्री० रूप। देनेवाली। जैसे—जन्मदायिनी, सुखदायिनी।

दायी(यिन्)—वि० [सं०√दा+णिनि] [स्त्री० दायिनी] १ देनेवाला। २ (व्यक्ति) जिस पर किसी कार्य या बात का दायित्व या जवाबदेही हो। जैसे—इस गड़बड़ी के लिए आप ही दायी है।

दायें—क्रि० वि० [हिं० दायाँ] दाहिनी ओर। दाहिने। मुहा० के लिए दे० दाहिना के मुहा०।

दायोपगतदास—पु० [सं० दाय-उपगत, तृ० त०, दायोपगत-दास, कर्म० स०] वह दास जो बँटवारे में मिला हो।

दार—स्त्री० [सं०√दृ (विदारण करना)+णिच्+अच्] पत्नी। भार्या।
पु० [√दृ+घञ्] १ चीरना। विदारण। २ छेद। ३ दरार।
पु० दारु।
वि० [फा०] [भाव० दारी] एक विशेषण जो कुछ शब्दों के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर 'रखने वाला' या 'वाला' का अर्थ देता है। जैसे—(क) किरायेदार, दूकानदार। (ख) छज्जेदार, छायादार।

दारक—पु० [सं०√दृ+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० दारिका] १ पुत्र। बेटा। २ बालक। लड़का।
वि० विदीर्ण करने या फाड़नेवाला।

दार-कर्म (न्)—पु० [ष० त०] दार अर्थात् भार्या ग्रहण करने की क्रिया या भाव। पुरुष का विवाह।

दारचीनी—स्त्री० [सं० दारु+चीन] १ तज की जाति का एक प्रकार का वृक्ष जो दक्षिण भारत और सिंहल में होता है। सिंहल में ये पेड़ सुगंधित छाल के लिए बहुत लगाए जाते हैं। यह दो प्रकार की होती है—जीलानी और कपूरी। कपूरी की छाल में बहुत अधिक सुगंध होती है और उससे बहुत अच्छा कपूर निकलता है। भारतवर्ष, अरब आदि देशों में पहले इसकी सुगंधित छाल चीन देश से आती थी, इसी से इसे दारु चीनी कहने लगे। २ उक्त पेड़ की सुगंधित छाल जो दवा और मसाले के काम में आती है।

दारण—पु० [सं०√दृ (विदारण करना)+णिच्+ल्युट्-अन]
१ चीरने-फाड़ने या विदीर्ण करने की क्रिया या भाव। चीर-फाड़। विदारण। २ फोड़ा या व्रण चीरने की क्रिया या भाव। चीर-फाड़। शल्य-चिकित्सा। ३ चीरने-फाड़ने आदि का अस्त्र या औजार। ४ ऐसी चीज या दवा जिसके लगाने से फोड़ा फट या फूट जाय। ५ निर्मली का पेड़।

दारणी—स्त्री० [सं० दारण+ङीप्] दुर्गा।

दारद—पु० [सं० दरद+अण्] १ एक प्रकार का विष जो दरद देश में होता है। २ पारद। पारा। ३ ईंगुर।
वि० दरद देश का।

दारन—वि० = दारुण।
पु० = दारण।

दारना*—स०[सं० दारण] १ विदीर्ण करना। फाड़ना। २. नष्ट करना। न रहने देना। ३ मार डालना। उदा०—दारहि दारि मुरादहि मारिकै, संगर साह सुजै बिचलायौ।—भूषण।

दार-परिग्रह—पु०[ष० त०] विवाह करके किसी को अपनी पत्नी बनाना। पाणि-ग्रहण।

दार-मदार—पु०[फा० दारोमदार]१ आश्रय। सहारा। २ ऐसा अवलंब या आधार जिस पर दूसरी बहुत-सी बातें आश्रित हों। जैसे—अब तो सारा दार-मदार आपके न या हाँ करने पर ही है।

दारव—वि०[सं० दारु+अञ्]१ दारु अर्थात् लकड़ी से संबंध रखनेवाला। २ काठ या लकड़ी का बना हुआ।

दार-संग्रह—पु०[ष०त०] पुरुष का अपना विवाह करके किसी स्त्री को पत्नी या भार्या के रूप में ग्रहण करना। दार-परिग्रह। पाणि-ग्रहण।

दारा—स्त्री०[सं० दार+टाप्] पत्नी। भार्या।
स्त्री०[?] एक प्रकार की समुद्री मछली जो प्रायः तीन हाथ तक लम्बी होती है।
पु०[?] किनारा। तट। (लश०)

दाराई—स्त्री० [फा०] पुरानी चाल का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। दरियाई।

दारि†—स्त्री०=दारी।
स्त्री० = दाल।

दारिउँ†—पु० = दाड़िम।

दारिका—स्त्री० [सं० दारक+टाप्, इत्व] १ वह युवती स्त्री जिसका अभी तक विवाह न हुआ हो। कुँवारी लड़की। कुमारी। २ बालिका। लड़की। ३ पुत्री। बेटी। ४ कठ-पुतली।

दारिका सुन्दरी—स्त्री० [सं०] वेश्या की वह लड़की जिसका अभी तक किसी पुरुष से संबंध न हुआ हो। नथिया-बंद।

दारित—भू० कृ० [सं०√दृ (विदारण)+णिच्+क्त] १ चीरा-फाड़ा हुआ। विदीर्ण किया हुआ। २ विभक्त किया हुआ।

दारिद†—पु० दारिद्रय (दरिद्रता)।

दारिद्र*—पु० = दारिद्रय।

दारिद्रय—पु० [सं० दरिद्र+ष्यञ्] दरिद्र होने की अवस्था या भाव। दरिद्रता।

दारिम*—पु० =दाड़िम।

दारी—स्त्री० [सं०√दृ+णिच्+इन्—ङीप्] पैर के तलवे का चमड़ा फटने का एक रोग। बिवाई।
स्त्री० [सं० दारिका] १ दासी या लौंडी विशेषतः ऐसी दासी या लौंडी जो लड़ाई में जीतकर लाई गई हो। २ परम दुश्चरित्रा स्त्री। छिनाल। पुंश्चली। उदा०—चंचल सरस एक काहू पै न रहै दारी।
—भूषण।

पद—दारी-जार। (देखें)

स्त्री० [फा०] दार अर्थात् रखनेवाला होने की अवस्था या भाव। जैसे—किरायेदारी, दूकानदारी आदि।

दारीजार—पु० [हि० दारी+स० जार] १ लौंडी का उपपति या पति। (गाली) २ दासी-पुत्र। ३. परम दुश्चरित्र से अनुचित संबंध रखनेवाला पुरुष। परम व्यभिचारी।

विशेष—हि० का 'दाढ़ीजार' संभवत इसी 'दारीजार' का विकृत रूप है।

दारु—पु० [स०√दृ (चीरना)+उण्] १ काष्ठ। काठ। लकड़ी। २ देवदारु। ३ कारीगर। शिल्पी। ४ पीतल।

वि० १ दानशील। दानी। २ उदार। ३ जल्दी टूटने-फूटनेवाला।

दारुक—पु० [स० दारु+कन् (स्वार्थे)] १ देवदारु। २ काठ का पुतला। ३ श्रीकृष्ण के सारथी का नाम। ४ एक योगाचार्य जो शिव के अवतार कहे गए है।

दारु-कदली—स्त्री० [उपमि० स०] जंगली केला। कठ-केला।

दारुका—स्त्री० [स० दारु√कै (शब्द करना)+क+टाप्] कठपुतली।

दारुका-वन—पु० [मध्य० स०] एक वन जो पवित्र तीर्थ माना गया है।

दारु-गंधा—स्त्री० [ब० स० टाप्] बिरोजा जो चीड से निकलता है।

दारुचीनी—स्त्री० = दारचीनी।

दारुज—वि० [स० दारु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ दारु अर्थात् लकड़ी मे (या से) उत्पन्न होनेवाला। २ दारु अर्थात् लकड़ी का बना हुआ।

पु० मृदंग की तरह का एक प्रकार का बाजा। मर्दल।

दारुण—वि० [स०√दृ (भय)+णिच्+उनन्] [भाव० दारुणता] १ भयानक। भीषण। २ घोर। विकट। ३ उग्र। प्रचंड। ४ जिसे सहना बहुत कठिन हो। जैसे—दारुण कष्ट या विपत्ति। ५ (रोग) जो बहुत बढ़ गया हो और सहज मे अच्छा न हो सकता हो। (सीरियस) ६ फाड़ डालनेवाला। विदारक।

पु० १ चित्रक वृक्ष। चीते का पेड़। २ रौद्र नामक नक्षत्र। ३ साहित्य मे, भयानक रस। ४ विष्णु। ५ शिव। ६ राक्षस। ७ पुराणानुसार एक नरक का नाम।

दारुणक—पु० [स० दारुण√कै (मालूम होना)+क] सिर मे होनेवाला रूसी (देखें) नामक रोग।

दारुणता—स्त्री० [स० दारुण+तल्+टाप्] दारुण होने की अवस्था या भाव। दारुण्य।

दारुणा—स्त्री० [स० दारुण+टाप्] १ नर्मदा खंड की अधिष्ठात्री देवी का नाम। २ अक्षय तृतीया।

दारुणारि—पु० [स० दारुण+अरि, ष० त०] विष्णु।

दारुण्य—पु० [स० दारुण+ष्यञ्] दारुण होने की अवस्था या भाव। दारुणता।

दारुन*—वि० दारुण।

दारु-नटी—स्त्री० [स० मध्य० स०] कठपुतली।

दारु-नारी—स्त्री० [मध्य० स०] कठपुतली।

दारु-निशा—स्त्री० [मध्य०स०] दारु हलदी।

दारु-पत्री—स्त्री० [ब०स०, ङीप्] हिंगुपत्री।

दारु-पर्वतक—पु० [स०] वह नकली पर्वत जो राजप्रसाद के उद्यान में क्रीड़ा आदि के लिए बनाया जाता था।

दारु-पात्र—पु० [ष०त०] काठ का बना हुआ बरतन।

दारु-पीता—स्त्री० [तृ० त०] दारु हलदी।

दारु-पुत्रिका—स्त्री० [मध्य०स०] कठपुतली।

दारु-फल—पु० [मध्य०स०] पिस्ता।

दारुमय—वि० [स० दारु+मयट्] [स्त्री० दारुमयी, दारुमय+ङीप्] सिर से पैर तक काठ का बना हुआ।

दारुमुच्—पु० [स० दारु√मुच् (त्यागना)+क्विप्] एक प्रकार का स्थावर विष।

दारुमूषा—स्त्री० [स० मध्य०स०] एक प्रकार की जड़ी।

दारु-योषित्—स्त्री० [मध्य०स०] कठपुतली।

दारुल्-शफा—पु० [अ० दारुश्शिफा] १ चिकित्सालय। २ आरोग्य-शाला।

दारुल्-सलतनत—स्त्री० [अ० दारुस्सल्तनत] राजधानी।

दारु-सिता—स्त्री० [स० त०] दार-चीनी।

दारु-हरिद्रा—स्त्री० [स०त०] दारु हलदी।

दारु हलदी—स्त्री० [स० दारुहरिद्रा] गुल्म जाति का सात-आठ हाथ लंबा एक सदाबहार झाड़ जिसके पत्ते दंतयुक्त, फल पीपल के फलो जैसे, और फूल पीले रंग के छ छ दलोवाले होते है। यह हिमालय के पूर्वी भाग मे लेकर आसाम तक होता है। इसकी लकड़ी दवा के काम मे आती है।

दारू—स्त्री० [फा०] १ उपचार। चिकित्सा। २ दवा। औषध। ३ मद्य। शराब। ४ बारूद।

विशेष—यह शब्द मूलत स्त्री० ही है, फिर भी लोक मे प्राय पु० ही बोला जाता है।

दारूकार—पु० [फा० दारू+हि० कार] शराब बनानेवाला। कलवार।

दारूड़ा†—पु० [फा० दारू] मद्य। शराब। (राज०)

दारूड़ी—स्त्री० दारूड़ा।

दारूधरा—पु० [फा० दारू=बारूद+हि० धरना] तोप या बंदूक चलाने-वाला। उदा०—जुर्रा रु बाज कूही गुहा, धानुक्की दारूधरा।—चंदबर-दाई।

दारो*—पु० = दार्यो (दाड़िम)।

दारोगा—पु० [फा० दारोग] १ निगरानी रखनेवाला अफसर। देख-भाल रखनेवाला या प्रबंध करनेवाला अधिकारी। जैसे—चुंगी या जेल का दारोगा। २. पुलिस-विभाग का वह अधिकारी जिसके अधीन बहुत से सिपाहियों की टुकड़ी और प्राय एक थाना होता है।

दारोगाई—स्त्री० [हि० दारोगा] दारोगा का काम, पद या भाव।

दारोमदार—पु० [फा०] दार-मदार। (देखें)

दार्ढ्य—पु० [स० दृढ+ष्यञ्] दृढ होने की अवस्था या भाव। दृढ़ता।

दार्दुर—वि० [स० दर्दुर+अण्] दर्दुर-संबंधी। दर्दुर का।

पु० एक प्रकार का दक्षिणावर्त्त शंख।

दार्दुरिक—पु० [स० दर्दुर+ठञ्—इक] कुम्हार।

दार्भ—वि०[सं० दर्भ+अण्] १ दर्भ अर्थात् कुश-संबंधी। २ दर्भ या कुश का बना हुआ। जैसे—दार्भ आसन।

दार्यो*—पुं०=दाडिम (अनार)।

दार्वंड—पुं०[सं० दारु-अंड, ब०स०] [स्त्री० दार्वंडी] मयूर या मोर पक्षी (जिसका अंडा काठ की तरह कड़ा होता है)।

दार्व—पुं०[सं० दारु+अण्] एक प्राचीन प्रदेश जो कूर्म विभाग के ईशान कोण में और आधुनिक कश्मीर के अन्तर्गत था।

दार्वट—पुं० [सं० दारु√अट्(भ्रमण)+क] मंत्रणा करने का गुप्त स्थान। मंत्रणा गृह।

दार्वाघाट—पुं०[सं० दारु आ√हन् (चोट करना)+अण्, नि० टत्व] कठफोड़वा।

दार्वाट—पुं०[फा० 'दरबार' से] मंत्रणा-गृह।

दार्विका—स्त्री०[सं० दार्वी+क (स्वार्थे)-टाप्, ह्रस्वत्व]१ दारुहलदी से निकाला हुआ तूतिया। २ वन-गोभी।

दार्वि-पत्रिका—स्त्री०[सं० ब०स०, +कन्+टाप्, इत्व] गोजिह्वा। गाभी।

दार्वी—स्त्री०[सं० √दृ (विदारण करना)+णिच्+उण्+ङीप्] दारुहलदी।

दार्श—वि०[सं० दर्श+अण्] दर्श-अमावास्या के दिन होनेवाला।

दार्शनिक—वि०[सं० दर्शन+ठञ्-इक]१ दर्शन-शास्त्र संबंधी। दर्शन-शास्त्र की तरह का।

पुं० वह जो दर्शनशास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो।

दार्षद—वि०[सं० दृषद्+अण्]१ पत्थर पर पीसा हुआ। २ पत्थर का बना हुआ। ३ खान से निकला हुआ। खनिज।

दार्षद्वत—पुं०[सं० दृषद्वती+अण्] कात्यायन श्रौतसूत्र के अनुसार एक यज्ञ जो दृषद्वती नदी के किनारे किया जाता था।

दार्ष्टांतिक—वि०[सं० दृष्टान्त+ठञ्-इक] १ दृष्टान्त-संबंधी। २ जो दृष्टान्त के रूप में हो।

दाल—स्त्री०[सं० दालि]१ अरहर, उरद, चना, मसूर, मूँग आदि अन्न जिनके दाने अन्दर से दो दलों में विभक्त होते हैं, और जिन्हें उबाल कर खाते हैं, या जिनसे पकौड़ी, बरी आदि बनाते हैं।

क्रि० प्र०—दलना।

मुहा०—(किसी की) दाल गलना=किसी का प्रयोजन सिद्ध होना। मतलब निकलना। जैसे—ये बातें किसी और से करना यहाँ तुम्हारी दाल नहीं गलेगी।

२ हल्दी, मसाला आदि के साथ पानी में उबाला हुआ कोई उक्त दला हुआ अन्न जो भात, रोटी आदि के साथ सालन की तरह खाया जाता है।

पद—दाल-दलिया, दाल-रोटी। (देखें)

मुहा०—दाल चप्पू होना=एक का दूसरे से उसी प्रकार गुथ या लिपट जाना जिस प्रकार बरतन में से दाल निकालने के समय चप्पू (कलछी) के साथ लिपट जाती है। **दाल में कुछ काला होना**—ऐसी अवस्था होना जिसमें खटके या संदेह की कोई बात हो। **जूतियों दाल बाँटना**=आपस में खूब लड़ाई झगड़ा और धुक्का-फजीहत होना।

३ चेचक, फोड़े, फुन्सी आदि के ऊपर का चमड़ा जो सूखकर छूट जाता है। खुरंड। पपड़ी।

क्रि० प्र०—छूटना।—बँधना।

४ सूर्यमुखी शीशे में से होकर आयी हुई किरनों की वह गोलाकार छाया जो दाल के आकार की हो जाती है और जिससे आग पैदा होने लगती है।

मुहा०—दाल बँधना—धूप में रखे हुए सूर्यमुखी शीशे का ऐसी स्थिति में होना कि उसकी किरणों का समूह एक केन्द्र में स्थित होकर दाल का-सा रूप बना दे।

५ अंडे की जरदी (अपने पीले रंग और द्रव रूप के कारण)।

पुं०[सं० दल+अण्]१ पेड़ के खोंडर में मिलनेवाला शहद। २ कोदों नामक कदन्न।

पुं०[?]पंजाब और हिमालय में होनेवाला तुन की जाति का एक पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है।

दालचीनी—स्त्री०=दारचीनी।

दाल-दलिया—पुं०[हिं०] गरीबों के खाने का रूखा-सूखा भोजन। जैसे—जो कुछ दाल-दलिया मिल जाय, वही खाकर गुजर कर लेते हैं।

दालन—पुं०[सं० √दल् (नाश करना) णिच्+ल्युट्-अन] दाँत का एक रोग।

दालना*—स० =दलना।

दालभ्य—पुं० =दाल्भ्य।

दाल-मोठ—स्त्री० [हिं० दाल+मोठ=एक कदन्न] घी, तेल आदि में तली तथा नमक, मिर्च लगी हुई मोठ (अथवा चने मूंग या मसूर आदि) की दाल जिसकी गिनती नमकीन खाना में होती है।

दाल-रोटी—स्त्री० [हिं० पद] १ नित्य का साधारण भोजन। जैसे—किराए की आमदनी से ही उनकी दाल-रोटी चलती है।

पद—दाल-रोटी से खुश=जिसे साधारण भोजन मिलने में कोई कष्ट न होता हो।

२ जीविका या उसका साधन।

मुहा०—दाल-रोटी चलना=जीविका निर्वाह होना।

दालव—पुं०[सं० √दल् (दलन करना)+उन्, दलु+अण्] एक तरह का स्थावर विष।

दाला—स्त्री०[सं० √दल्+घञ् (कर्मणि)+टाप्] महाकाल नामक लता।

दालान—पुं०[फा०]किसी भवन या मकान के अन्तर्गत वह लम्बी वास्तु-रचना जिसके तीन ओर दीवारें, ऊपर छत और सामनेवाला भाग बिलकुल खुला होता है। बरामदा।

दालि—स्त्री०[सं०√दल्+इन्, नि० सिद्धि] १ दाल। २ देवदाली लता। ३ अनार। दाडिम।

दालिद*—पुं०=दारिद्र्य (दरिद्रता)।

दालिम—पुं०[सं० दाडिम, नि० लत्व] दाडिम। अनार।

दाली—स्त्री०[सं० दालि+ङीप्] देवदाली नामक पौधा।

दाल्भ्य—वि०[सं० दल्भ+यञ्] दल्भ ऋषि के गोत्र का।

पुं०बक मुनि का दूसरा नाम।

दाल्मि—पुं०[सं०√दल्(नाश करना)+णिच्+मि (बा०)] इंद्र।

दावँ—पुं०=दाँव।

दाव—पुं०[सं०√दु (पीड़ित करना)+ण]१ वन। जंगल। २ जंगल

मे लगी हुई आग। दावानल। ३ अग्नि। आग। ४. जलन। ताप। ५ धावरा नामक वृक्ष। ६ एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र।

†पु० =दाँव।

*पु० [स० दर्भ] कुश। घास। दाभ।

दावत—स्त्री०[अ० दअवत] १. किसी को कोई काम करने के लिए दिया जानेवाला निमत्रण। आवाहन। २ भोजन के लिए दिया जानेवाला निमत्रण। ३ ज्योनार। भोज। जैसे—विवाह पर दावत भी देनी चाहिए।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—मिलना।

पद—दावत नामा निमत्रण-पत्र।

दावदी—स्त्री० =गुलदावदी।

दावन—वि०[स० दमन] [स्त्री० दावनी] दमन करनेवाला। उदा०—त्रिविध दोष दुख दारिद दावन।—तुलसी।

पु० १ दमन। २ ध्वस। नाश। ३ खुखड़ी नाम का हथियार। ४ दराँती या हँसिया नाम का औजार।

स्त्री०[स० दाम] खाट या चारपाई मे पैताने की ओर बाँधी जानेवाली रस्सी। उनचन।

†पु० =दामन।

दावना—स० =दाँवना (दाना)।

स० [हिं० दावन, स० दमन] दमन करना।

स० [स० दाव]१ आग लगाना। २ प्रकाशमान करना। चमकाना। उदा०—दामिनि दमकि दसो दिसि दावनि छूटि छुवन छिति छोर। —भारतेन्दु।

दावनी—स्त्री०[स० दामनी रस्सी] माथे पर पहनने का एक तरह का झालरदार लबोतरा गहना।

दावरा—पु०[देश०] धावरा नामक पेड़।

दावरी*—स्त्री० दाँवरी।

दावा—स्त्री०[स० दाव] दावानल।

पु०[अ०]१ किसी वस्तु पर अपना अधिकार या स्वत्व करने की क्रिया या भाव। यह कहते हुए किसी चीज पर हक जाहिर करना कि यह हमारी है या होनी चाहिए। २ अधिकार। स्वत्व। हक। जैसे—उस मकान पर तुम्हारा कोई दावा नही है। ३ न्यायालय मे प्रार्थना-पत्र उपस्थित करते हुए यह कहना कि अमुक व्यक्ति से हमे इतना धन अथवा अमुक वस्तु मिलनी चाहिए जो हमारा प्राप्य है अथवा न्यायत जिसके अधिकारी हम है। ४ दीवानी अदालत का अभियोग। नालिश। जैसे—महाजन ने उन पर दो हजार रुपयो का दावा किया है। ५ फौजदारी अदालत मे कुछ विशिष्ट अवस्थाओ मे उपस्थित किया जानेवाला उक्त प्रकार का अभियोग। जैसे—किसी पर मानहानि (अथवा लड़का भगा ले जाने) का दावा करना। ६ नैतिक अथवा लौकिक दृष्टि से किसी वस्तु या व्यक्ति पर होनेवाला अधिकार, जोर या वश। जैसे—तुम पर हमारा कोई दावा तो है नही जो हम तुम्हे वहाँ जबरदस्ती भेज सकें। ७ अभिमान या गर्वपूर्ण कही जानेवाली बात। जैसे—वे इस बात का दावा करते हैं कि हमने कभी झूठ नही बोला।

दावागीर—पु०[अ० दावा+फा० गीर] दावा करनेवाला। अपना अधिकार या हक जतानेवाला।

दावाग्नि—स्त्री०[स० दाव-अग्नि, मध्य०स०] वन मे लगनेवाली आग। दावानल।

दावात—स्त्री० =दवात।

दावादार—पु० =दावेदार।

दावानल—पु०[स० दाव-अनल, मध्य०स०] वन की भीषण आग जो बाँसो, वृक्षो आदि की टहनियो की रगड़ से उत्पन्न होती है और दूर तक फैलती है। बनाग्नि।

दावित—भू० कृ०[स०√दु (पीड़ित करना)+णिच्+क्त] पीड़ित।

दाविनी*—स्त्री०[स० दामिनी] १ बिजली। तड़ित्। २ बेंदी नाम का गहना जिसे स्त्रियाँ माथे पर पहनती हैं।

दावी—पु०[स० धव] धव का पेड़।

दावेदार—पु०[अ० दावा+फा० दार]१ वह जिसने किसी पर दावा किया हो। २ किसी चीज पर अपना अधिकार या हक जतलानेवाला व्यक्ति।

दाश—पु०[स०√दश् (मारना)+ट, आत्व]१ मछलियाँ मारकर खानेवाला। मछुआ। २ केवट। मल्लाह। ३ नौकर। सेवक।

दाश-पुर—पु०[ष०त०] १ धीवरो या मछुओ की बस्ती। २ [दाश √पृ (पूर्ति)+क] केवटीमोथा। कैवर्त मुस्तक।

दाशमिक—वि०[स०] १ दशम सबधी। २ दशमिक। दशमलव सबधी)।

दाशरथ—वि०[स० दशरथ+अण्] १ दशरथ-सबधी। दशरथ का। २ दशरथ के कुल मे उत्पन्न।

पु० दशरथ के चारो पुत्रो मे से कोई एक, विशेषत श्रीरामचन्द्र।

दाशरथि—पु०[स० दशरथ+इञ्] =दाशरथ।

दाशरात्रिक—वि०[स० दशरात्र+ठञ्–इक] दशरात्र सबधी।

दाशार्ण—पु०[स० दशार्ण+अण्] १ दशार्ण देश। २ उक्त देश का निवासी।

वि० दशार्ण देश का।

दाशार्ह—पु० [स० दशार्ह+अण्] दशार्ह के वश का मनुष्य। यदुवशी।

दाशेय—वि०[स० दाशी+ढक्–एय] दाश से उत्पन्न।

पु० दाश का पुत्र।

दाशेयी—स्त्री०[स० दाशेय+ङीप्] सत्यवती।

दाशेर—पु०[स० दाशी+ढक्–एय, यलोप] धीवर की सतति।

दाशेरक—पु० [स० दाशेर+कन्] १ मरु-प्रदेश। मारवाड़ देश। २ उक्त प्रदेश का निवासी। मारवाड़ी। ३ दशपुर का निवासी।

दाशौदनिक—वि० [स० दशन्ओदन ब०स०, दशौदन+ठञ्–इक] दशौदन यज्ञ सबधी।

पु० दशौदन यज्ञ मे मिलनेवाली दक्षिणा।

दाश्त—स्त्री०[फा०] किसी को अपने पास रखने की क्रिया या भाव। जैसे—याद-दाश्त। २ अपने पास रखकर पालन-पोषण तथा देख-रेख करने की क्रिया या भाव।

वि०[स्त्री० दाश्ता] अपने पास रखा हुआ।

दाश्ता—स्त्री०[फा० दाश्त] उपपत्नी के रूप मे रखी हुई स्त्री। रखनी। रखेली।

दाश्व—वि०[स० √दाश् (दान करना) +वन्] १ देनेवाला। २ उदार।

दास—पु०[स० √दास् (दान)+अच्] [स्त्री० दासी] १ ऐसा व्यक्ति जिसे किसी ने धन-सपत्ति आदि की तरह अपने अधिकार या स्वामित्व मे रखा हो और जिससे वह अपनी छोटी-मोटी सेवाएँ कराता रहता हो। गुलाम।

विशेष—प्राचीन काल मे योद्धा लोग और धनवान् लोग गरीबो को खरीदकर अपना दास बना लेते थे और अपने ही घर मे तुच्छ सेवको की तरह रखते थे। ऐसे लोगो की सतान भी दास वर्ग मे ही रहती थी। कभी-कभी लोग अपने ऋण या देन न चुका सकने के कारण, जुए मे हार जाने के कारण या अकाल मे अपना या अपने परिवार का भरण-पोषण न कर सकने के कारण भी अपनी इच्छा से ही दूसरो के दास बन जाते थे। पाश्चात्य देशो मे प्रबल जातियाँ दुर्बल जाति के लोगो को पकडकर और विदेशो मे ले जाकर दास रूप मे बेचने का व्यवसाय भी करती थी। ऐसे लोगो को किसी प्रकार की वैधिक या सामाजिक स्वतत्रता नही होती थी। हमारे यहाँ मनु ने सात प्रकार के और परवर्ती स्मृतिकारो ने पन्द्रह प्रकार के दास बतलाये है। हमारे यहाँ भी विधान था कि ब्राह्मण न तो कभी दास बन सकता था और न तो बनाया जा सकता था। क्षत्रिय और वैश्य कुछ विशिष्ट अवस्थाओ मे दासत्व से मुक्त भी हो सकते थे, परन्तु शूद्र कभी दासत्व के बधन से मुक्त नही हो सकता था।

२ ऐसा व्यक्ति जो अपने आपको किसी की सेवा करने के लिए पूर्ण रूप से समर्पित कर दे। उदा०—(क) दास कबीरा कह गए सबके दाता राम।—कबीर। (ख) देश या जाति का दास। ३ वह जो हर तरह से किसी के अधिकार, प्रभाव या वश मे हो। जैसे—इद्रियो या दुर्व्यसनो का दास, परिस्थितियो का दास।

४ वह जो वेतन लेकर दूसरो की छोटी-मोटी सेवाएँ करता हो। चाकर। नौकर। सेवक। ५ शूद्र। केवट। ६ धीवर। ७ डाकू या लुटेरा। दस्यु। ८ वृत्रासुर का एक नाम। ९ वह जो किसी बात या विषय मुख्यत दान का उपयुक्त पात्र हो। १० वह जिसने आत्मा और ब्रह्म का पूरा ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। आत्म-ज्ञानी।

†पु० =डासन (बिछौना)। उदा०—सेज सवाँरि कीन्ह भक्त दासू।—जायसी।

दासक—पु०[स० दास +कन्] १ दास। सेवक। २ एक प्राचीन गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

दासता—स्त्री०[स० दास +तल्–टाप्] १ दास होने की अवस्था या भाव। गुलामी। २ दास का काम।

दासत्व—पु०[स० दास +त्व] =दासता।

दास-नदिनी—स्त्री० [स० प०त०] धीवर की कन्या सत्यवती जो व्यास की माता थी।

दासन—पु० =डासन (बिछौना)।

दासपन—पु०[स० दास +पन (प्रत्य०)] दासत्व। सेवाकार्य।

दासमीय—वि०[स० दसम +छण्–ईय] १ दसम देश मे उत्पन्न। २ दसम देश-सबधी।

पु० दसम देश का निवासी।

दासमेय—वि० =दासमीय।

पु०[स०] एक प्राचीन जनपद।

दासा—पु० [स० दासी वेदी] १ दीवार मे सटाकर उठाया हुआ वह ऊँचा बाँध या पुश्ता जिसपर घर की चीजें रखी जाती है। २ आँगन के चारो ओर दीवार से सटाकर उठाया हुआ वह चबूतरा जो आँगन के पानी को घर या दालान मे जाने से रोकने के लिए बनाया जाता है। ३ वह पत्थर या मोटी लकडी जो दरवाजे के चौखटे के ठीक ऊपर रहती है और जिससे दीवार का बोझ चौखट पर नही पडने पाता। ४ पत्थरो की वह पक्ति जो दीवार के नीचेवाले भाग मे लबाई के बल बैठाई जाती है।

†पु०[स० दशन] हँसिया।

दासानुदास—पु० [स० दास +अनुदास, ष० त०] १ दासो का भी दास। २ अत्यन्त या परम तुच्छ दास। (नम्रता सूचक)

दासायन—पु०[स० दास+फक्–आयन] दास पुत्र।

दासिका—स्त्री०[स० दासी +क +टाप्, ह्रस्व] दासी।

दासी—स्त्री० [स० दास +ङीप्] १ दास वर्ग की स्त्री। २ सेवा करनेवाली स्त्री। टहलनी। लौडी। ३ मजदूरनी। ४ शूद्र वर्ण की स्त्री। ५ काक-जघा। ६ कटसरैया। ७ काला कारोठा या नीलाम्लान नाम का पौधा। ८ वेदी।

दासेय—वि०[स० दासी +ढक्–एय] [स्त्री० दासेयी] दासी का वशज।

पु० १ दास। गुलाम। २ धीवर। मछुआ।

दासेयी—स्त्री०[स० दासेय +ङीप्] व्यास की माता सत्यवती, जो धीवर कन्या थी। दासनदिनी।

दासेर—पु०[स० दासी+ढ्रक्–एय, यलोप] १ दास। २ केवट। धीवर। मछुआ। ३ ऊँट।

दासेरक—पु०[स० दासेर +कन्] १ दासी पुत्र। २ ऊँट।

दास्तान—स्त्री०[फा०] १ ऐसा विस्तृत विवरण या वृत्तान्त जिसमे किसी के जीवन के उतार-चढावो की भी चर्चा हो। २ वृत्तान्त। हाल। कथा। कहानी। ३ बहुत लबा-चौडा वर्णन।

दास्य—पु० [स० दास +ष्यञ्] १ दासता। दासत्व। २ भक्ति के नौ भेदो मे से एक जिसमे उपासक अपने उपास्य देवता को स्वामी और अपने आपको उसका दास समझता है।

दास्यमान्—वि०[स०√दा (देना) +लृट्—शानच्] जो दिया जानेवाला हो। जिसे दूसरे को देना हो।

दास्र—पु०[स० दस्र +अण्] अश्विनी नक्षत्र।

दाह—पु०[स०√दह् (जलाना)+घञ्] १ जलाने की क्रिया या भाव। २ हिन्दुओ मे शव को जलाने की क्रिया या कृत्य।

क्रि० प्र०—देना।

३ जलन। ताप। ४. किसी प्रकार के रोग के कारण शरीर मे होने-वाली ऐसी जलन जिसमे खूब प्यास लगती और मुँह सूखता हो। ५ शोक। सताप। ६ ईर्ष्या या डाह के कारण मन मे होनेवाली जलन।

पु०[फा०] दाम।

दाहक—वि०[सं० √दह् (जलाना)+ण्वुल्—अक] [भाव० दाहकता] १ जलानेवाला। २ दाह-कर्म करनेवाला।
पुं०१ अग्नि। आग। २ चित्रक या चीता नाम का पेड़।

दाहकता—स्त्री०[सं० दाहक+तल्—टाप्] जलने या जलाने की क्रिया, गुण या भाव।

दाहकत्व—पु० [सं० दाहक+त्व] =दाहकता।

दाह-कर्म (न्)—पु०[ष० त०]१ मृत शरीर या शव जलाने का कृत्य। २ दाह-संस्कार। (दे०)

दाह-काष्ठ—पु०[च० त०] अगर, जिसे सुगंध के लिए जलाते हैं।

दाह-क्रिया—स्त्री०[ष० त०] दाह कर्म। (दे०)

दाह-गृह—पु०[ष० त०] शव जलाने के लिए श्मशान से भिन्न वह स्थान जहाँ मृत शरीर किसी यंत्र मे रखकर विद्युत् आदि की सहायता से जलाये जाते है। (क्रिमेटोरियम)।

दाह-ज्वर—पु०[मध्य०स०] वह ज्वर जिसमे शरीर मे बहुत अधिक जलन होती है।

दाहन—पु०[सं० √दह्+णिच्+ल्युट्-अन] १ जलाने की क्रिया या भाव।

दाहना—स० [सं० दाहन] १ जलाना। भस्म करना। २ बहुत अधिक कष्ट देना।
†वि० दाहिना।

दाह-संस्कार—पु०[प०त०] हिन्दुओं के दस संस्कारो मे से एक और अंतिम संस्कार जिसमे मृत शरीर चिता पर रखकर जलाया जाता है।

दाह-सर—पु०[सर,√सृ (गति)+अप्, दाह-सर, ष०त०] मरघट। श्मशान।

दाह-हरण—पु० [सं०] खस।

दाहा—पु०[सं० दश से फा० दह्=दस]१ मुहर्रम के दस दिन, जिनमे ताजिया रखा जाता और जिनकी समाप्ति पर दफन किया जाता है। दहा। २ ताजिया।

दाहागुरु—पु० [दाह-अगुरु, च०त०] वह अगरु जिसकी लकडी सुगंधि के लिए जलाई जाती है।

दाहिन†—वि० दाहिना।

दाहिना—वि०[सं० दक्षिण] [स्त्री० दाहिनी] १ मानव-वर्ग के प्राणियो मे उस हाथ की दिशा या पार्श्व का , जिस हाथ से वह साधारणत खाता-पीता और अपने अधिकतर काम करता है। मनुष्य के शरीर मे जिधर हृदय होता है, उसके विपरीत पक्ष या पार्श्व का । दायाँ। 'बायाँ' का विपर्याय। जैसे—दाहिनी आँख।
विशेष—(क) जब हम पूर्व अर्थात् सूर्योदयवाली दिशा की ओर मुँह करके खडे होते है, तब हमारा जो अग या पार्श्व दक्षिण दिशा की तरफ पडता है, वही हमारा 'दाहिना' कहलाता है। और इसके विपरीत जो अग या पार्श्व उत्तर की ओर पडता है, वह हमारा 'बाँया' कहलाता है। (ख) शरीर-शास्त्र की दृष्टि से अधिकतर प्राणियो मे दाहिनी ओर की पेशियाँ ही अपेक्षया अधिक सबल होती हैं, और फलत उसी ओर के अंगो मे सब तरह के काम करने की अधिक तत्परता और शक्ति होती है। इसी लिए सब लोग खाने, पकड़ने मारने, लिखने आदि के काम दाहिने हाथ से ही करते हैं। कुछ लोग बाएँ हाथ से भी उक्त सब काम करते हैं। पर उनकी गिनती अपवाद मे होती है। (ग) जीव-जंतुओं के शरीर मे दाहिने-बाएँ अगो या पार्श्वों का निरूपण भी उक्त सिद्धांत के आधार पर ही होता है।
मुहा०—**(किसी का) दाहिना हाथ होना**=किसी का बहुत बडा सहायक होना। जैसे—इस काम मे वही तो हमारे दाहिने हाथ रहे हैं।
पद—**दाहिने बाएँ**=(क) किसी की दाहिनी और बायी ओर। दोनो तरफ। जैसे—उनके दाहिने बाएँ राजे-महाराजे खडे थे। (ख) चारो ओर।
२. मनुष्य के दाहिने हाथ की दिशा मे स्थित। जैसे—आगे बढ़कर दाहिनी गली मे घूम जाना। ३ अचल, जड या स्थावर पदार्थों के संबंध मे, वह अग या पार्श्व जो उनके मुँह या सामनेवाले भाग का ध्यान रखते हुए अथवा उनकी गति, प्रवृत्ति आदि के विचार से उक्त सिद्धान्त के आधार पर निश्चित या स्थिर होता है। जैसे—(क)पंडित जी का मकान हमारे मकान की दाहिनी ओर पडता है। (ख) पटना और बाँकीपुर दोनो गंगा के दाहिने किनारे पर स्थित है। (ग) रंगमंच पर नायिका दाहिने कक्ष से आई थी और नायक बाएँ कक्ष से आया था। ४ जड परन्तु चल पदार्थों के संबंध मे (उस स्थिति मे जब वे हमारे सामने आते या पडते हो) उस दिशा या पार्श्व का जो हमारे दाहिने हाथ के ठीक सामने या पास पडता है। जैसे—(क) उर्दू लिपि दाहिनी ओर से लिखी जाती है। (ख) अलमारी के नीचेवाले खाने मे दाहिने सिरे पर जो किताब रखी है वह उठा लाओ।
विशेष—ऐसी स्थिति मे उस पदार्थ या वस्तु का जो अग या पार्श्व उक्त आधार पर वास्तव मे दाहिना होता है, वह हमारे लिए बायाँ हो जाता है। उदाहरणार्थ, यदि किसी चित्र मे दस आदमी एक पंक्ति मे खडे हो और हमे उन दसो आदमियो के नाम उस चित्र के नीचे लिखने पडें तो हम लिखेंगे—'चित्र मे खड़े हुए लोगो के नाम बाईं ओर से इस प्रकार हैं।' यहाँ उक्त सिद्धान्त के आधार पर चित्र का जो वास्तविक दाहिना पार्श्व होगा, वह हमारे लिए बायाँ हो जायगा और उसके बाएँ पार्श्व को हम अपनी दृष्टि से दाहिना कहेंगे। परन्तु पहनने की कुछ चीजें जब हमारे सामने आवेगी, तब भी हम उनके दाहिने-बाएँ का निरूपण अपने शरीर के अगो के विचार से ही करेंगे। जैसे—(क) दरजी ने इस कुरते की दाहिनी आस्तीन कुछ टेढी (या तिरछी) काटी है। (ख) हमारा दाहिना जूता एड़ी पर से घिस गया है। (ग) हमारा दाहिना दास्ताना (या मोजा) खो गया।
५ जो आचरण, व्यवहार आदि मे अनुकूल, उदार, प्रसन्न अथवा कार्यो मे विशिष्ट रूप से सहायक हो। उदा०—सदा भवानी दाहिने, गौरी पुत्र गणेश।
पु० गाडी, हल आदि मे जोडी के साथ जोता जानेवाला वह पशु जो सदा दाहिने ओर रखा जाता हो।

दाहिनावर्त्त—वि०, पु०=दक्षिणावर्त।
†पु०=परिक्रमा।

दाहिनी—स्त्री०[हिं० दाहिना] देवता आदि की वह परिक्रमा जो उन्हे अपने दाहिने हाथ की ओर रखकर की जाती है। दक्षिणावर्त परिक्रमा। प्रदक्षिणा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

मुहा०—दाहिने लाना दक्षिणावर्त परिक्रमा करना। प्रदक्षिणा करना।

दाहिने—क्रि० वि०[हि० दाहिना] १ दाहिने हाथ की ओर। उस तरफ जिस तरफ दाहिना हाथ हो। जैसे—उनका मकान हमारे मकान के दाहिने पडता है। २ आचरण, व्यवहार आदि में अनुकूल, उदार या प्रसन्न रहकर। जैसे—हम तो यही चाहते हैं कि आप सदा दाहिने रहे।

दाही (हिन्)—वि० [स०√दह् (जलाना)+णिनि] [स्त्री० दाहिनी दाहिन्+ङीप्] १ जलानेवाला। भस्म करनेवाला। २ दु:ख देनेवाला।

दाहुक—वि० [स०√दह+उकञ् (बा०)] दाही। (दे०)

दाह्य—वि० [स०√दह+ण्यत्] जलाने योग्य।

दिंक—पु० [स० दिङ्√कै (शब्द करना)+क] जूँ।

दिंड—पु० [?] एक तरह का नृत्य।

दिंडि—पु० [स० तिण्डि (पृषो० सिद्धि)] दिंडिर। (दे०)

दिंडिर—पु० [स० डिण्डिर (पृषो० सिद्धि)] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा।

दिंडी—पु० [स० दिण्डि+ङीष् ?] उन्नीस मात्राओ का एक छद, जिसमे नौ और दस मात्राओ पर विश्राम होता है और अत मे दो गुरु होते हैं।

दिंडीर—पु० [स० डिण्डीर, पृषो० सिद्धि] समुद्रफेन।

दिअना—पु० दीया (दीपक)। उदा०—सबके महल मे दिअना जरतु है, हमारी झोपडिया प्रभु कीन्ह अँधेरा।—गीत।

† स० दीया जलाना।

दिअरी†—स्त्री० = दिअली।

दिअला†—पु० = बडी दिअली। दे० 'दिअली'।

दिअली—स्त्री० [हि० दीया (छोटा कसोरा) का स्त्री० अल्पा०] १ मिट्टी का बना हुआ बहुत छोटा दीया या कसोरे के आकार का पात्र, जिसमे प्राय बत्ती जलाई जाती है। २ चमकी, बादले आदि की अथवा धातुओं आदि की बनी हुई वह छोटी कटोरी जो झालर आदि बनाने के लिए कपडो मे टाँकी जाती है। ३ चेचक, सूखे हुए घाव आदि के मुँह पर जमी हुई पपडी। खुरड। ४ मछली के ऊपर का गोलाकार छोटा चमकीला छिलका। सेहरा।

दिआ—पु० = दीया (दीपक)।

दिआना†—स० दिलाना।

दिआबत्ती—स्त्री० = दीया-बत्ती।

दिआर—पु० = दयार।

दिआरा—पु० [?] १ दे० 'दयार'। २ दे० 'दियारा'।

दिआसलाई—स्त्री० दिया-सलाई।

दिउला—पु० बडी दिउली।

दिउली—स्त्री० = दिअली।

दिक् (श्)—स्त्री० [स०√दिश्+क्विन्] दिशा। ओर। तरफ।

विशेष—दिक् शब्द का मूल रूप दिश् है, किन्तु समस्त शब्दो मे सन्धि के अनुसार कही इसके रूप दिक्, कही दिग् और कही दिङ् दिखाई पडेगे।

दिक—वि० [अ० दिक] १ जिसे बहुत कष्ट पहुँचाया गया हो। हैरान। तग। जैसे—तुम तो बहुत दिक करते हो। २ अस्वस्थ। बीमार। पु० क्षय नामक रोग। तपेदिक।

दिकचन—पु० [देश०] एक प्रकार का ऊख जिसका गुड बहुत अच्छा बनता है।

दिकदाह—पु० दे० 'दिग्दाह'।

दिकली†—स्त्री० [?] चने की दाल।

दिकाक—पु० [अ० दकीक = बारीक] किसी चीज का कटा हुआ छोटा टुकडा। कतरन। धज्जी।

वि० [अ० दकियानूस] बहुत बडा चालक। खुर्राट।

† स्त्री० [?] बर्रे। भिड।

दिक्क—पु० [स० दिश्√कै (शब्द करना)+क] हाथी का बच्चा। वि०, पु० = दिक।

दिक्कत—स्त्री० [अ०] १ दिक होने की अवस्था या भाव। २ कष्ट। तकलीफ। ३ परेशानी। हैरानी। ४ कठिनता। मुश्किल। जैसे—यह काम बहुत दिक्कत से होगा।

दिक्-कन्या—स्त्री० [स० कर्म० स०] दिशारूपी कन्या। प्रत्येक दिशा जो ब्रह्मा की कन्या के रूप म मानी गई है।

दिक्कर—पु० [स० दिक्√कृ (करना)+टच्] [स्त्री० दिक्करिका] १ महादेव। शिव। २ नवयुवक। जवान।

दिक्करवासिनी—स्त्री० [स० दिक्कर√वस् (बसना)+णिनि+ङीप्] पुराणानुसार दिक्कर अर्थात् महादेव मे निवास करनेवाली एक देवी।

दिक्किर—पु० दिक्करी।

दिक्करिका—स्त्री० [स० दिक्करिन्√कै(शोभित होना)+क+टाप्] पुराणानुसार एक नदी जो मानसरोवर के पश्चिम मे बहती है। यह नदी दिग्गजों के क्षेत्र से निकली हुई मानी गई है।

दिक्करी (रिन्)—पु० [स० दिश् (क्)-करि (री) न्, ष० त०] आठो दिशाओ के ऐरावत आदि आठ हाथी। दिग्गज।

दिक्कांता—स्त्री० [स० कर्म० स०] दिक् कन्या।

दिक्-कुमार—पु० [ष० त०] जैनियो के अनुसार भवनपति नामक देवताओ मे से एक।

दिक्-चक्र—पु० [ष० त०] आठो दिशाओ का समूह।

दिक्-पति—पु० [ष० त०] १ ज्योतिष के अनुसार दिशाओ के स्वामी ग्रह। २ दे० 'दिक्पाल'।

दिक्पाल—पु० [स० दिक्√पाल् (पालना)+णिच्+अण्] १ पुराणानुसार दसो दिशाओ का पालन करनेवाला देवता। यथा—पूर्व के इन्द्र, अग्निकोण के वह्नि, दक्षिण के यम, नैऋत्यकोण के नैऋत, पश्चिम के वरुण, वायु कोण के मरुत्, उत्तर के कुबेर, ईशान कोण के ईश, ऊर्ध्व दिशा के ब्रह्मा और अधो दिशा के अनत। २ चौबीस मात्राओं का एक छद जिसमे १२ मात्राओं पर विराम होता है। उर्दू का रेख्ता यही छद है।

दिक्-शूल—पु० [स० त०] = दिशा शूल।

दिक्-साधन—पु० [ष० त०] वह उपाय या क्रिया जिसमे दिशाओ का ठीक ज्ञान हो।

दिक्-सुन्दरी—स्त्री० [कर्म० स०] दे० 'दिक्कन्या'।

दिक्-स्वामी (मिन्)—पु० [ष० त०] = दिक्पति।

दिखा—स्त्री० = दीक्षा।
दिखागुरु—पु० = दीक्षा गुरु।
दिखित—भू० कृ० = दीक्षित।
दिखणी—वि० [सं० दक्षिणी]। दक्षिणी। उदा०—झूठा पाट पटबरा रे, झूठा दिखणी चीर।—मीराँ।
दिखना—अ० [हिं० देखना] दिखाई देना। देखने मे आना।
दिखराना†—स० = दिखलाना।
दिखरावना†—स० = दिखलाना।
दिखरावनी—स्त्री० दिखावनी।
दिखलवाई—स्त्री० [हिं० दिखलाना] १ दिखलवाने की क्रिया, या भाव या पारिश्रमिक। २ दे० 'दिखलाई'।
दिखलवाना—स० [हिं० दिखलाना का प्रे० रूप] किसी को कोई चीज दिखलाने मे प्रवृत्त करना।
† स० = दिखलाना।
दिखलाई—स्त्री० [हिं० दिखलाना] १ दिखलाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ वह चीज या धन जो कुछ देखने या दिखाने के बदले मे दिया जाय। दिखाई।
दिखलाना—स० [हिं० देखना का प्रे० रूप] = दिखलवाना।
दिखलावा—पु० [हिं० दिखलाना] १ दिखलाने या दिखलवाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ दे० 'दिखावा'।
दिखवैया—पु० [हिं० दिखाना + वैया (प्रत्य०)] १ वह जो किसी को कुछ दिखलाये। २ स्वय जिसने कुछ देखा हो। देखनेवाला।
दिखहार*—वि० [हिं० देखना + हार (प्रत्य०)] १ देखनेवाला। द्रष्टा। २ जिसे दिखाई देता हो।
दिखाई—स्त्री० [हिं० दिखाना + आई (प्रत्य०)] १ देखने की क्रिया या भाव। २ देखने के बदले मे दिया जानेवाला धन, पारिश्रमिक, या पुरस्कार। जैसे—नई आई हुई बहू को दी जानेवाली मुँह-दिखाई। ३ दिखाने की क्रिया या भाव। ४ दिखाने के बदले मे दिया जाने वाला धन, पारिश्रमिक या पुरस्कार। ५ देखे जाने की अवस्था या भाव।
दिखाऊ—वि० [हिं० दिखाना या देखना + आऊ (प्रत्य०)] १. (चीज) जो दिखाई जाय। २ देखे जाने के योग्य। दर्शनीय। ३ जो देखने या दिखाने भर मे अच्छा हो, परन्तु जिसमे वास्तविक सार या तत्त्व कुछ भी न हो। दिखौआ। दिखावटी। † ४. दिखानेवाला।
दिखादिखी†—स्त्री० देखा-देखी।
दिखाना—स० [हिं० देखना का प्रे० रूप] १ किसी को कुछ देखने मे प्रवृत्त करना। जैसे—मुँह दिखाना, हाथ दिखाना। २. स्पष्ट रूप मे सामने उपस्थित करना। जैसे—नफा या नुकसान दिखाना। ३ अभिव्यक्त या प्रगट करना। जैसे—गुस्सा या रोब दिखाना। ४. वास्तविक रूप छिपाकर केवल ऊपर से प्रगट करना। जैसे—उन्होंने ऐसा भाव दिखाया कि मानो सचमुच अप्रसन्न हो। ५ लोगो के सामने दृश्य रूप मे उपस्थित या प्रदर्शित करना। जैसे—खेल या नाटक दिखाना। ६ अच्छी तरह समझाकर बतलाना या सिद्ध करना। जैसे—हम अब यह दिखायेगे कि पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा कैसे करती है।
दिखाव—पु० [हिं० देखना + आव (प्रत्य०)] १. देखने का भाव या क्रिया। २. ऊपर का बाहर से दिखाई देनेवाला दृश्य या रूप। नजारा। (व्यू) ३ दे० 'दिखावा'।
दिखावट—स्त्री० [हिं० देखना + आवट (प्रत्य०)] १ कुछ दिखाने या दिखलाने की क्रिया, ढग या भाव। २ ऊपर या बाहर से दिखाई देनेवाला आकार-प्रकार या रूप-रग। ३. ऊपरी या बाहरी तड़क-भड़क। ४ ऐसा आचरण या व्यवहार जो दिखाने भर के लिए हो, और जिसके अन्दर तथ्य या वास्तविकता का बहुत कुछ अभाव हो। बनावट।
दिखावटी—वि० [हिं० दिखावट + ई (प्रत्य०)] १ जो देखने मे भडकीला हो, परन्तु जिसमे कुछ सार या तत्त्व न हो। २ केवल औपचारिक रूप से और दूसरो को दिखलाने भर के लिए होनेवाला। नाम मात्र का। दिखौआ। जैसे—दिखावटी शिष्टाचार। ३ झूठा। मिथ्या।
दिखावा—पु० [हिं० देखना + आवा (प्रत्य०)] १ दिखलाने की क्रिया या भाव। जैसे—दहेज का दिखावा। २ झूठा ठाठ-बाट। ऊपरी तडक-भडक। आडबर। ३ ऐसा काम जो केवल दूसरो को दिखाने के लिए किया गया हो, पर जिसमे तत्त्व या सार कुछ भी न हो।
दिखैया*—वि० [हिं० देखना + ऐया (प्रत्य०)] देखनेवाला।
वि० [हिं० दिखाना] दिखानेवाला।
दिखौआ—वि० [हिं० देखना + औआ (प्रत्य०)] १ जो केवल देखने योग्य हो, पर काम मे न आ सके। बनावटी। २ जो केवल दूसरो को दिखलाने भर को हो और जिसमे तथ्य, वास्तविकता, सत्यता आदि का अभाव हो। जैसे—दिखौआ व्यवहार।
दिखौवा†—वि० = दिखौआ।
दिग्—स्त्री० [स० दिक्] दिशा।
दिगगना—स्त्री० [स० दिक्-अगना, कर्म० स०] = दिगागना।
दिगंत—पु० [स० दिक्-अत, ष० त०] १ दिशा का अत, छोर या सिरा। २ आकाश की अतिम सीमा या छोर। क्षितिज। ३ ओर। दिशा। ४ चारो दिशाएँ। ५ दसो दिशाएँ।
पु० [स० दृक् + अत] आँख का कोना।
दिगंतर—पु० [स० दिक्-अतर, ष० त०] दो दिशाओ के बीच का कोना। कोण।
दिगबर—वि० [स० दिक्-अम्बर, ब० स०] जिसका अबर दिशाओ के सिवा और कुछ न हो, अर्थात् बिलकुल नगा। नग्न।
पु० १ अधकार जो दिशाओ का अम्बर कहा गया। २ महादेव। शिव। ३ एक प्रकार के जैन साधु जो सदा नगे रहते हैं।
दिगंबरता—स्त्री० [स० दिगम्बर + तल् + टाप्] दिगबर होने की अवस्था या भाव। नगापन। नग्नता।
दिगंबरी—स्त्री० [स० दिगम्बर + ङीष्] दुर्गा।
दिगंश—पु० [स० दिक्-अश, ष० त] खगोल विद्या मे, क्षितिज वृत्त का ३६० वाँ अश। (गणना मे इसका उपयोग आकाश में रहनेवाले ग्रहो, नक्षत्रो आदि की स्थिति जानने के लिए होता है।
दिगंश यंत्र—पु० [मध्य० स०] वह यत्र जिसके द्वारा किसी ग्रह या नक्षत्र का दिगश जाना जाय।
दिगंशीय—वि० [स० दिगश + छ-ईय] दिगश-सबधी।
दिगधिप—पु० [स० दिक् + अधिप, ष० त०] दिक्पाल।

दिगपाल†—पु०—दिक्‌पाल।
दिगभंग*—वि०—डगमग।
दिगर—वि० [फा० दीगर] दूसरा। अन्य।
दिगवस्थान—पु० [स० दिक्‌+अवस्थान, ब० स०] वायु।
दिगशूल—पु० =दिशा-शूल।
दिगागत—वि० [स० दिक्‌+आगत, प० त०] दूर से आया हुआ।
दिगिभ—पु० [स० दिक्‌+इभ, ष० त०] दिग्गज।
दिगीश—पु० [स० दिक्‌+ईश, ष० त०] दिक्‌पाल।
दिगीश्वर—पु० [स० दिक्‌+ईश्वर, ष० त०] १ आठो दिक्‌पाल। २ सूर्य, चन्द्रमा आदि ग्रह।
दिगेश—पु० [स० दिगीश] दिक्‌पाल।
दिग्गज—पु० [स० दिक्‌+गज, ष० त०] पुराणानुसार वे आठो हाथी जो चारो दिशाओ और चारो कोणो मे पृथ्वी को दबाए रखने और उन दिशाओं की रक्षा करने के लिए स्थापित हैं।
वि० हाथी की तरह बहुत बडा या भारी। जैसे—दिग्गज पडित, दिग्गज भवन।
दिग्गद—पु० =दिग्गज।
दिग्गी—स्त्री० =दीघी।
दिग्घ†—वि० =दीर्घ।
दिग्घी—स्त्री० [स० दीर्घिका] बडा तालाब। दीघी।
दिग्जय—पु० [स० ष० त०] दिग्विजय।
दिग्जया—स्त्री० [स० ष० त०] दिगश। (दे०)
दिग्दत—पु० =दिग्दती (दिग्गज)।
दिग्दती (तिन्)—पु० [स० ष० त०] दिग्गज।
दिग्दर्शक—वि० [स० ष० त०] १ दिशा बतलाने अथवा उसका ज्ञान करानेवाला। २ दिग्दर्शन कराने वाला।
दिग्दर्शक-यत्र—पु० [कर्म० स०] दिशाओ का ज्ञान करानेवाला घडी के आकार का एक छोटा यत्र। कुतुबनुमा। (कपास)
दिग्दर्शन—पु० [ष० त०] १ दिशा या ओर दिखलाना। २ किसी को यह बतलाना कि किस ओर, किस काम मे अथवा किस प्रकार आगे बढ चलना या बढना चाहिए। ३ यह बतलाना कि किस ओर अथवा दिशा मे क्या-क्या है अथवा हो रहा है। ४ वह तथ्य जो उदाहरण-स्वरूप उपस्थित किया जाय। ५ अभिज्ञता। जानकारी। ६ दे० 'दिग्दर्शक यत्र।'
दिग्दर्शनी—स्त्री० [दिग्दर्शन+ङीप्] दिग्दर्शक यत्र।
दिग्दाह—पु० [स० ष० त०] क्षितिज मे होनेवाली एक प्राकृतिक विलक्षण घटनाएँ जिनमे कोई दिशा ऐसी लाल दिखाई देती है कि मानो आग-सी लगी हो। यह अशुभ मानी जाती है।
दिग्देवता—पु० [स० ष० त०] =दिक्‌पाल।
दिग्ध—वि० [स०√दिह् (लेपन) +क्त] १ जहर मे बुझा या बुझाया हुआ। २ लिप्त। लीन। ३ दीर्घ। लबा।
पु० १ जहर मे बुझाया हुआ तीर या बाण। २ तेल। ३. अग्नि। आग। ४ निबन्ध।
दिग्पट—पु० [स० दिक्‌+पट, कर्म० स०] दिक्‌ रूपी वस्त्र। २ दे० 'दिगबर'।
दिग्पति—पु० [स० दिक्‌+पति, ष० त०] =दिक्‌पाल।
दिग्पाल—पु० दिक्‌पाल।
दिग्बल—पु० [स० ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार आदि पर स्थित ग्रहो का बल। फलित ज्योतिष मे वह बल जो ग्रहो के किसी विशिष्ट स्थिति मे रहने पर प्राप्त होता है।
दिग्बली (लिन्)—पु० [स० दिग्बल+इनि] १. फलित ज्योतिष में वह ग्रह जो किसी दिशा के लिए बली हो। २ वह राशि जिसे किसी ग्रह से बल प्राप्त हो रहा हो।
दिग्भू—स्त्री० [स० द्व० स०] दिशाएँ और पृथ्वी। उदा०—कपित दिग्भू अबर, ध्वस्त अहमद डबर। —पत।
दिग्भ्रम—पु० [स० ष० त०] दिशाओं के सबध मे होनेवाला भ्रम। जैसे—भूल से पश्चिम को दक्षिण या पूर्व समझना।
दिग्मडल—पु० [स० दिङ्‌+मडल, ष० त०] दिशाओ का समूह। समस्त दिशाएँ।
दिग्राज—पु० [स० ष० त०, +टच्] दिक्‌पाल।
दिग्वसन—पु० [स० ब० स०] दिग्वस्त्र। (दे०)
दिग्वस्त्र—पु० [स० ब० स०] १ महादेव। शिव। २ लग्न। ३ दिगबर जैन यति।
दिग्वान् (वत्)—पु० [स० दिग्+मतुप्, म—व] चौकीदार। पहरेदार।
दिग्वारण—पु० [स० ष० त०] दिग्गज।
दिग्वास (स्)—पु० [स० ब० स०] दिग्वस्त्र। (दे०)
दिग्बिन्दु—पु० [स० मध्य० स०] वह बिन्दु या निश्चित-स्थान जो सीध या ठीक उत्तर, दक्षिण, पूर्व या पश्चिम मे पडता है। (कार्डिनल प्वाइट)
दिग्विजय—स्त्री० [स० ष० त०] १ प्राचीन भारतीय महाराजाओ की एक प्रथा जिसमे वे अपना पौरुष और बल दिखाने के लिए सेना सहित निकलकर आस-पास विशेषत चारो ओर के देशो और राज्यो को अपने अधीन करते चलते थे। २ किसी बहुत बडे गुणी या पडित का दूसरे स्थानो पर आकर वहाँ के गुणियो और विद्वानो को अपनी कलाओ, गुणो आदि से परास्त करके उन पर अपनी विशिष्टता का सिक्का जमाना।
दिग्विजयी (यिन्)—वि० [स० दिग्विजय+इनि] [स्त्री० दिग्विजयनी दिग्विजयिन्+ङीप्] जिसने दिग्विजय प्राप्त की हो।
दिग्विभाग—पु० [स० ष० त०] दिशा। ओर। तरफ।
दिग्विभावित— वि० [स० स० त०] जिसकी प्रसिद्धि सभी दिशाओ मे अर्थात् सब जगह हो।
दिग्व्यापी (पिन्)—वि० [स० दिक्‌+वि√आप् (पहुँचना) +णिनि] [स्त्री० दिग्व्यापिनी दिग्व्यापिन्+ङीप्] सब दिशाओ मे व्याप्त रहने या होनेवाला।
दिग्व्याप्त—वि० [स० स० त०] सब दिशाओ मे व्याप्त।
दिग्व्रत—पु० [स० मध्य० स०] एक तरह का व्रत जिसमे कुछ निश्चित समय के लिए किसी निश्चित दिशा मे नही जाया जाता। (जैन)
दिग्शिखा—स्त्री० [स० ष० त०] पूर्व दिशा।
दिग्शूल—पु० = दिशा शूल।
दिग्सिधुर—पु० [स० ष० त०] दिग्गज।
दिघी—स्त्री० =दीघी।

दिशांच—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी जिसके डैने कुछ काले तथा सुनलहे रग के होते हैं।

दिष्घ—वि० = दीर्घ।

दिङ्-नक्षत्र—पु० [स० मध्य० स०] चारो दिशाओं से सबधित कुछ विशिष्ट नक्षत्रो का समूह।

विशेष—प्रत्येक दिशा मे ऐसे सात-सात नक्षत्र माने गये है।

दिङ्नाग—पु० [स० ष० त०] १ दिग्गज। २ एक प्रसिद्ध बौद्ध आचार्य जो ईसवी चौथी शती मे हुए थे।

दिङ्-नाथ—पु० [स० ष० त०] १ दिग्गज। २ एक प्राचीन बौद्ध आचार्य जो कालिदास के समकालीन और प्रतिद्वद्वी कहे जाते है।

दिङ्-नारी—स्त्री० [स० मध्य० स०, वा ष० त०] १ वेश्या। रडी। २. कुलटा या दुश्चरित्रा स्त्री। पुश्चली।

दिङ्-मडल—पु० [सं० ष० त०] दिशाओ का समूह।

दिङ्-मातग—पु० [स० ष० त०] दिग्गज।

दिङ्-मात्र—पु०[स० दिक् + मात्रच्]१ उदाहरण मात्र। २ सकेत मात्र।

दिङ्मूढ़—वि० [स० ष० त०] १ जिसे दिशाओ का ज्ञान न होता हो। २ बेवकूफ। मूर्ख।

दिङ्-मोह—पु० [स० ष० त०] दिग्भ्रम।

दिच्छा† —स्त्री० - दीक्षा।

दिच्छित—भू० कृ०- दीक्षित।

दिजराज*—पु० = द्विजराज।

दिजोत्त*—पु० - द्विजोत्तम।

दिट्ट*—वि० = दृष्ट।

दिट्ठि*—स्त्री० = दृष्टि।

दिठवन†— स्त्री० — देवोत्थान एकादशी।

दिठादिठी*—स्त्री० [हि० दीठ] देखादेखी। उदा०—लहि सूनै घर करु गहत दिठादिठी की ईठि।—बिहारी।

दिठाना† —स० [हि० दीठ + आना (प्रत्य०)] १ नजर लगाना। दृष्टि लगाना। २ दिखाना। (क्व०)

अ० १ नजर लगना। २ दिखाई देना। (क्व०)

दिठियार—वि० [हि० दीठ=दृष्टि + इयार (प्रत्य०)] १ देखने-वाला। २ जिसे दिखाई देता हो। ३ समझदार। बुद्धिमान।

दिठौना—पु० [हि० दीठ = दृष्टि + औना (प्रत्य०)] काजल का वह बेढगा चिह्न या बिंदी जो लोग छोटे बच्चो के माथे या गाल पर उन्हें दूसरो की बुरी नजर से बचाने के लिए लगाते है।

क्रि० प्र० —लगाना।

दिढ़ †—वि० = दृढ।

दिढ़ता† —स्त्री० = दृढ़ता।

दिढ़ाई† —स्त्री० = दृढ़ता।

दिढ़ाना—स० [स० दृढ़ + हि० आना (प्रत्य०)] १ दृढ अर्थात् ठीक और पक्का करना या बनाना। २ पूर्ण रूप से निश्चित या स्थिर करना।

अ० १ दृढ या पक्का होना। २ निश्चित या स्थिर होना।

दिढ़ाव—पु० [हिं० दिढाना] १. दृढ़ या निकुचत करने की क्रिया या भाव। २ दृढ़ता। उदा०—है दिढ़ाइबे जोग जो ताको करत दिढ़ाव।—भूषण।

दिणयर*—पु० = दिनकर (सूर्य)।

दित—भू० कृ० [स०√दो (खण्डन करना) + क्त इत्व] १ कटा हुआ। २ विभक्त। ३ खडित।

दितवार†—पु० — आदित्यवार (रविवार)।

दिति—स्त्री० [स०√दो + क्तिच्, इत्व] १ कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या और दैत्यो की माता थी। २ काटने, तोडने-फोडने आदि की क्रिया या भाव।

वि० देनेवाला। दाता।

दिति-कुल—पु० [ष० त०] दैत्यो का कुल या वश।

दितिज—वि० [स० दिति√जन् (उत्पन्न होना) + ड, उप० स०] [स्त्री० दितिजा] दिति से उत्पन्न।

पु० =दैत्य।

दिति-सुत—पु० [ष० त०] दैत्य। राक्षस।

दित्य—पु० [स० दिति + यत्] दैत्य।

वि० काटे या छेदे जाने के योग्य। जो काटा या छेदा जा सके।

दित्सा—स्त्री० [स०√दा (देना) + सन् + अ + टाप्] १ दान करने या देने की इच्छा। २ वह व्यवस्था जिसके अनुसार कोई अपनी सपत्ति का बँटवारा अमुक-अमुक लोगो मे अपने मरने के उपरात चाहता है। (विल)

दित्साक्रोड—पु० [ष० त०]१ दित्सापत्र के अत मे लिखा हुआ परिशिष्ट रूप मे कोई सक्षिप्त लेख या टिप्पणी जो किसी प्रकार की व्यवस्था या स्पष्टीकरण के रूप मे होती है। २ दित्सा-पत्र का वह अश जिसमे उक्त प्रकार का लेख हो। (कोडिसिल)

दित्सापत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र या लेख जिसमे यह निर्देश होता है कि मेरे मरने के उपरात मेरी सपत्ति अमुक-अमुक लोगो को अमुक-अमुक मात्रा मे दी जाय। वसीयतनामा। इच्छापत्र। (विल)

दित्सु—वि० [स०√दा (देना) + सन् + उ] १ जो दान करने या देने को इच्छुक हो। २ जिसने अपनी सपत्ति के सबध मे दित्सा-पत्र लिखा हो। वसीयत करनेवाला।

दित्स्य—वि० [स०√दा + सन् + ण्यत्] जो दान किया जा सके। किसी को दिये जाने के योग्य।

दिदार† —पु० — दीदार।

दिदृक्षा—स्त्री० [स०√दृश् (देखना) + सन् + अ + टाप्] देखने की अभि-लाषा या इच्छा।

दिदृक्षु—वि० [स०√दृश् + सन् + उ] देखने की अभिलाषा या इच्छा रखनेवाला।

दिदृक्षेण्य—वि० [स० √दृश् + सन् + केन्य] दिदृक्षेय। (दे०)

दिदृक्षेय—वि०[स० दिदृक्षा + ढक्—एय (बा०)] देखने योग्य। दर्शनीय।

दिद्यु—पु० [स० दिद्युत् से] १ वज्र। २ तीर। बाण।

दिद्युत्—पु० [स० √ द्युत् (चमकना) + क्विप् (नि० सिद्धि)] वज्र।

दिधि—पु० [स०√धा (धारण करना) + कि] १ धारण करने की क्रिया या भाव। २. धैर्य। ३ दृढ़ता।

दिधिषु—पु० [स० दिधि√सो (नष्ट करना) + कु] १ पहले एक बार ब्याही हुई स्त्री का दूसरा पति। दोबारा ब्याही हुई स्त्री का दूसरा

पति। २ गर्भाधान करनेवाला व्यक्ति। ३ स्त्री की दृष्टि से उसका दूसरा पति।

दिधिषू—स्त्री० [स० दिधि√सो+कू] १ वह स्त्री जिसके दो ब्याह हुए हो। २ वह स्त्री जिसका विवाह उसकी बड़ी बहन के विवाह से पहले हुआ हो।

दिधिषू-पति—पु० [ष० त०] विधवा भावज से अनुचित सबध रखने-वाला व्यक्ति।

दिन—पु० [स०√दो (खण्ड करना)+नक्] १ उतना पूरा समय जितने मे सूर्य हमारे ऊपर अर्थात् आकाश मे रहता है। सूर्य के उदय से लेकर अस्त तक का अर्थात् सबेरे से सन्ध्या तक का सारा समय। दिवस।

मुहा०—**दिन उतरना**=दिन ढलना। **दिन को तारे दिखाई देना**=इतना अधिक मानसिक कष्ट पहुँचना या विह्वल होना कि बुद्धि ठिकाने न रहे। उदा०—तारे ही दिखायी दिये दिन मे विपक्ष को।—मैथिली-शरण। **दिन को दिन और रात को रात जानना या न समझना**=कोई बड़ा काम करते समय अपने आराम, सुख, विश्राम आदि का कुछ भी ध्यान न रखना। **दिन चढ़ना**=सूर्य निकलने के उपरान्त कुछ और समय बीतना। **दिन छिपना या डूबना**=दिन का अत होने पर सूर्य का अस्त होना। **दिन ढलना**=दोपहर बीत जाने पर दिन का अत अर्थात् सूर्यास्त का समय पास आने लगना। **दिन दूना या रात चौगुना होना या बढ़ना**=बहुत जल्दी-जल्दी और बहुत अधिक बढना। खूब उन्नति पर होना। **दिन निकलना**=सूर्य का उदय होना। दिन चढ़ना। **दिन बूड़ना या मुँदना**=दिन डूबना। (देखें ऊपर)

पद—**दिन दहाड़े या दिन दोपहर**=ऐसे समय जब कि दिन पूरी तरह से निकला हो और सब लोग जागते और देखते हों। **दिन धौले**=दिन दहाड़े।

दिन रात (क) हर समय। सदा। (ख) उतना सब समय जितने मे पृथ्वी एक बार अपने अक्ष पर पूरा घूमती है। एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। दिन और रात दोनो का सारा समय जो २४ घंटों का होता है।

विशेष—(क) ज्योतिष मे दिन की गणना या विचार दो प्रकार से होता है—एक तो नक्षत्र के विचार से, जिसे नाक्षत्र दिन कहते है और दूसरा सूर्य के विचार से जिसे सौर या सावन कहते है। नाक्षत्र दिन उतने समय का होता जितने मे एक नक्षत्र याम्योत्तर रेखा पर से होता हुआ आगे बढता और फिर याम्योत्तर रेखा पर आता है। यही समय पृथ्वी को एक बार अपने अक्ष पर घूमने मे लगता है। नक्षत्र के याम्योत्तर रेखा पर दोबारा आने और पृथ्वी के अपने अक्ष पर घूमने मे सदा एक-सा समय लगता है। उसमे कभी क्षणमात्र का भी अतर नही पडता। सौर या सावन दिन उतने समय का होता है, जितना समय सूर्य को एक बार याम्योत्तर रेखा पर से होकर आगे बढ़ने और फिर दोबारा या याम्योत्तर रेखा पर आने मे लगता है। यह समय बराबर थोडा-बहुत घटता-बढता रहता है, इसी लिए चाद्र वर्ष और सौर वर्ष मे कुछ अतर पडता है जो किसी विशिष्ट युक्ति से दूर किया जाता है। हमारे यहाँ तथा अनेक प्राचीन जातियो मे एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का सारा समय एक पूरा दिन माना जाता था और आज-कल भी एशिया तथा यूरोप के अनेक देशो मे ऐसा ही माना जाता है। परन्तु आज-कल पाश्चात्य देशो के प्रभाव के कारण नागर कार्यों के लिए और विधिक क्षेत्रो मे एक मध्य रात्रि से दूसरी मध्य रात्रि तक का समय दिन माना जाता है। आधुनिक पाश्चात्य ज्योतिष एक मध्याह्न से दूसरे मध्याह्न तक के समय को पूरा दिन मानते हैं। (ख) दिनो की गिनती सप्ताह, महीनो और वर्ष के हिसाब से भी की जाती है।

पद—**दिन-दिन या दिन पर दिन**=नित्यप्रति। सदा। हर रोज। **दिन-ब-दिन**=दिन-दिन या दिन पर दिन।

३ वार। जैसे—आज कौन दिन है?

क्रि० प्र०—काटना।—गवाना।—बिताना।

४ प्रस्तुत परिस्थितियो या वर्तमान स्थितियो के विचार से बीतने-वाला काल या समय। समय। काल। वक्त। जैसे—उनके अच्छे दिन तो चले गये, अब बुरे दिन आ रहे है।

मुहा०—**(किसी पर) दिन पड़ना**=कष्ट या विपत्ति के दिन आना। **दिन पूरे करना**=जैसे तैसे कष्ट का समय बिताना। **दिन फिरना या बहुरना**=कष्ट या विपत्ति के दिन निकल या बीत जाने पर अच्छे और सौभाग्य के दिन आना। **दिन बिगड़ना**=कष्ट या विपत्ति के दिन आना। **दिन भरना या भुगतना**=दिन पूरे करना। (देखें ऊपर)

पद—**दिनों का फेर**=भाग्य बिगड हुए होने का समय। अच्छे दिनो के बाद बुरे दिन आना।

५. नियत या उपयुक्त काल। निश्चित या उचित समय।

मुहा०—**(किसी काम या बात का) दिन आना**=उचित या नियत समय आना। जैसे—मृत्यु का दिन आना, स्त्री के रजस्वला होने का दिन आना। **(किसी काम या बात के लिए) दिन धरना**=तिथि या दिन निश्चित करना।

६ ऐसा समय जिसमे कोई विशिष्ट घटना या बात हो अथवा होती हो। मुहा०—**(स्त्रियों के पक्ष में) दिन चढ़ना या लगना**=स्त्री का रजस्वला होने का समय निकल जाने पर भी कुछ और दिन बीतना जो उसके गर्भवती होने का सूचक होता है। जैसे—उसकी बहू को दिन चढ़े (या लगे) हैं। **दिनो से उतरना**=युवावस्था बीत जाना। जवानी ढलना।

*अव्य० १ नित्य-प्रति। हर रोज। २ निरतर। बराबर। सदा। उदा०—दिन दूलह मेरो कुवर कन्हैया।—गदाधर भट्ट।

दिनअर*—पु० = दिनकर (सूर्य)।

दिनकंत—पु० [स० दिन+हिं० कत (कांत)] सूर्य।

दिनकर—पु० [सं० दिन√कृ(करना)+ट्च्] १ सूर्य। २ आक या मदार का पौधा।

दिनकर-कन्या—स्त्री० [ष० त०] यमुना।

दिनकर-कांति—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

दिनकर-सुत—पु० [ष० त०] १ यम। २ शनि। ३ सुग्रीव। ४ कर्ण। ५ अश्विनीकुमार।

दिन-कर्त्ता (र्तृ)—पु० [ष० त०] दिनकर (सूर्य)।

दिन-कृत्—पु० [स० दिन√कृ (करना)+क्विप्] = दिनकर।

दिन-केसर—पु० [ष० त०] अधकार। अँधेरा।

दिन-क्षय—पुं० [ष० त०] तिथि-क्षय। (दे०)

दिनचर्या—स्त्री० [ष० त०] नित्य प्रति किये जानेवाले कार्यों का क्रमिक-रूप। नित्य किये जानेवाले सब काम। जैसे—नहाना-धोना, खाना-पीना, काम-धधे या नौकरी पर जाना आदि।

दिनचारी (रिन्)—पु० [स० दिन्√चर् (गति)+णिनि] सूर्य।

दिन-ज्योति (स्)—स्त्री० [ष० त०] १ दिन का उजाला या प्रकाश। २ धूप।

दिन-दानी (निन्)—पु० [ष० त०] प्रतिदिन दान करनेवाला। सदा या हमेशा देनेवाला।

दिन-दीप—पु० [ष० त०] सूर्य।

दिन-दुःखित—पु० [स० त०] चकवा (पक्षी)।

दिन-नाथ—पु० [ष० त०] सूर्य।

दिन-नायक—पु० [ष० त०] सूर्य।

दिननाह*—पु० =दिननाथ (सूर्य)।

दिन-पंजी—स्त्री० [ष० त०] दे० 'दैनदिनी'।

दिनप—पु० [स० दिन√पा (रक्षा करना)+क, उप० स०] =दिन-पति (सूर्य)।

दिन-पति—पु० [ष० त०] १ दिन या वार के पति या स्वामी। २ सूर्य। ३ आक। मदार।

दिन-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र या पत्र-समूह जिसमे अलग-अलग दिन या वार, तिथियाँ, तारीखें, आदि क्रम से दी रहती हैं। तिथि-पत्र। (कैलेंडर)

दिन-पाकी अजीर्ण—पु० [स० दिन पाकी, दिन√पच् (पचना)+णिनि, दिनपाकी और अजीर्ण व्यस्त पद] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे एक बार का किया हुआ भोजन आठ पहर मे पचता है, बीच मे भूख नही लगती।

दिन-पात—पु० [ष० त०] तिथि-क्षय। (दे०)

दिन-पाल—पु० [स० दिन√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] सूर्य।

दिन-बंधु—पु० [ष० त०] १. सूर्य। २ आक। मदार।

दिन-बल—पु० [ब० स०] दिन के समय सबल पडनेवाली राशि। (ज्यो०)

दिन-भृति—स्त्री० [ष० त०] वह मजदूरी जो काम करने के दिनो के अनुसार मिले। (मासिक वेतन से भिन्न)

दिन-मणि—पु० [ष० त०] १ सूर्य। २ आक। मदार।

दिन-मनि*—पु० दिन-मणि।

दिन-मयूख—पु० [ब०स०] १ सूर्य। २ आक। मदार।

दिन-मल—पु० [ष०त०] मास। महीना।

दिन-मान—पु० [ष० त०] ज्योतिष मे, काल-गणना के लिए, सूर्योदय से सूर्यास्त तक का समय अर्थात् पूरे दिन का मान, जो घडियो और पलो अथवा घंटो और मिनटो में निश्चित होता है। और बराबर कुछ न कुछ घटता-बढता रहता है।
*पु० =दिन-मणि (सूर्य)। उदा०—गिरि-शिखर पर थम गया है डूबता दिन-मान।—दिनकर।

दिनमाली (लिन्)—पु० [स० दिनमाला, ष० त०, +इनि] सूर्य।

दिन-मुख—पुं० [ष० त०] प्रभात। सवेरा।

दिन-रत्न—पु० [ष० त०] १. सूर्य। २. आक। मदार।

दिनराई*—पु० =दिन-राज (सूर्य)।

दिनराउ—पु० =दिन-राज (सूर्य)।

दिन-राज—पुं० [ष० त०, टच् समा०] सूर्य।

दिनरी—स्त्री० [?] बुदेलखड मे गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत जो स्त्रियाँ जैती फसल काटते समय गाती हैं।

दिन-शेष—पु० [ष० त०] सायकाल। सध्या।

दिनांक—पु० [दिन-अक, ष० त०] वह क्रमिक सख्या जो किसी विशिष्ट वर्ष के विशिष्ट मास के दिन का ठीक-ठीक बोध कराती हो। तारीख। तिथि। (डेट)

दिनांकित—भू० कृ० [स० दिनाक+इतच्] जिस पर दिनांक लिखा हुआ या लिखा गया हो।

दिनांत—पु० [स० दिनात] अधकार। अँधेरा।

दिनांत—पु० [दिन-अत, ष० त०] सायकाल। सध्या। शाम।

दिनांतक—पु० [दिन-अतक, ष० त०] अधकार। अँधेरा।

दिनांध—वि० [दिन-अध, स० त०] जिसे दिन मे कुछ दिखलाई न पडता हो।

दिनांश—पु० [दिन-अश, ष० त०] १. दिन के अश या विभाग। २ दिन के प्रात काल, मध्याह्न और सायकाल ये तीन अश या विभाग।

दिनाइ—पु० [देश०] दाद (रोग)।

दिनाई—स्त्री० [स० दिन, हि० आना] कोई ऐसी विषाक्त वस्तु जिसे खा लेने के कुछ समय उपरात मृत्यु हो जाय। अतिम दिन (मृत्यु-काल) लानेवाली चीज।
† स्त्री० =दाद (रोग)।

दिनागम—पु० [दिन-आगम, ष० त०] प्रभात। तडका।

दिनाती—स्त्री० [हि० दिन+आती (प्रत्य०)] १ मजदूरो विशेषत खेत मे काम करनेवालो का एक दिन का काम। २ उक्त प्रकार के एक दिन का पारिश्रमिक या मजदूरी। दिहाडी।

दिनातीत—वि० [दिन-अतीत, द्वि० त०] १ जिसका चलन या प्रचलन न रह गया हो। जिसके दिन बीत चुके हो। २ रुचि, शैली आदि के विचार से पिछडा हुआ। (आउट ऑफ डेट)

दिनात्यय—पु० [दिन-अत्यय, ष० त०] सूर्यास्त।

दिनादि—पु० [दिन-आदि, ष० त०] =दिनागम।

दिनाधीश—पु० [दिन-अधीश, ष० त०] १ सूर्य। २ आक। मदार।

दिनानुदिन—क्रि० वि० [दिन-अनुदिन, अव्य० स०] दिन पर दिन। नित्य प्रति। प्रति दिन।

दिनाप्त—वि० [दिन-आप्त, द्वि० त०] आज-कल या वर्तमान काल की आवश्यकता, रुचि, प्रचलन, शैली आदि के अनुसार ठीक। अद्यावधिक। (अपटुडेट)

दिनाय—स्त्री० =दाद (चर्मरोग)।

दिनार—पुं० =दीनार।

दिनारू—वि० [स० दिनालु] बहुत दिनो का। पुराना।

दिनार्द्ध—पु० [दिन-अर्द्ध, ष० त०] मध्याह्न। दोपहर।

दिनावा—स्त्री० [देश०] पहाडी नदियो मे होनेवाली एक तरह की मछली।

दिनास्त—पुं० [दिन-अस्त, ष० त०] सूर्यास्त। सध्या।

दिनिआ*—पु० [स० दिनकर] सूर्य।

दिनिका—स्त्री० [स० दिन+ठन्—इक,+टाप्] एक दिन का पारिश्रमिक या मजदूरी। दिनाती। दिहाडी।

दियर*—पु० = दिनकर (सूर्य)।

दिनी—वि० [हि० दिन+ई (प्रत्य०)] १ कई या बहुत दिनो का पुराना। २ बासी।

दिनेर*—पु० = दिनकर (सूर्य)।

दिनेश—पु० [दिन-ईश, ष० त०] १ सूर्य। २ किसी विशिष्ट दिन का अधिपति ग्रह। ३ आक। मदार।

दिनेशात्मज—पु० [स० दिनेशात्मन् (ष० त०)√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ शनि। २ कर्ण। ३ सुग्रीव। ४ यम।

दिनेशात्मजा—स्त्री० [स० दिनेशात्मज+टाप्] १ यमुना। २ तापती।

दिनेश्वर—पु० [दिन-ईश्वर, ष० त०] = दिनेश।

दिनेस—पु० = दिनेश।

दिनौंधी—स्त्री० [हि० दिन+अध+ई (प्रत्य०)] एक रोग जिसमे रोगी को दिन के समय बहुत कम दिखलाई पडता है। दिवाधता।

दिप†—स्त्री० = दीप्ति (चमक)।

दिपति*—स्त्री० = दीप्ति।

दिपना*—अ० [स० दीपन] चमकना। प्रकाशमान होना।

अ० [हि० दीपा—मन्द] १ मद पडना। २ बुझना। ३ धुंधला पडना या होना। उदा०—इस घने कुहासे के भीतर, दिप जाते तारे इन्दु पीत। —पन्त।

दिपाना—स० [हि० दिपना] दीप्त करना। चमकाना।

†स० [हि० दीपा—मन्द] १ बुझाना। २ धुधला करना। ३ मद करना।

†अ० = दिपना।

दिब—पु० १ = दिव्य (परीक्षा)। २ = दिवस।

वि० = दिव्य।

दिमकर सो†—वि० [स० द्वि—उत्तर—शत] सौ और दो। एक सौ दो।

दिमाक†—पु० = दिमाग।

दिमाकदार†—वि० = दिमागदार।

दिमाग—पु० [अ०] १ सिर का गूदा। भेजा। २ सोचने-समझने आदि की शक्ति, जिसका निवास सिर के भीतरी भाग मे माना गया है। मस्तिष्क।

मुहा०—**दिमाग आसमान पर होना**=ऐसा घमड होना जो साधारण बातो, व्यक्तियो आदि की ओर प्रवृत्त न होने दे अथवा उन्हें उपेक्ष्य समझे। **दिमाग ऊँचा होना**=ऐसी मानसिक स्थिति होना, जिसमे केवल बडी-बडी बातो की ओर ही ध्यान रहे। **(किसी का) दिमाग खाना या चाटना**=व्यर्थ की बाते कहना जिससे किसी के सिर मे दर्द होने लगे। बहुत बकवाद करना। **(किसी का) दिमाग खाली करना**=दिमाग चाटना। ऐसा काम करना, जिससे किसी की मानसिक शक्ति का बहुत अधिक व्यय हो। **(किसी काम में) दिमाग खाली करना**=सोच-विचार आदि मे पडकर अपनी मानसिक शक्ति का क्षय या व्यय करना। **दिमाग चढ़ना**=दिमाग आसमान पर होना। **(किसी का) दिमाग न पाया जाना या न मिलना**—किसी मे इतना अधिक अभिमान होना कि वह साधारण लोगो से बात करना तक पसद न करे। **दिमाग परेशान करना**=दे० ऊपर 'दिमाग खाली करना'। **दिमाग में खलल होना**=मस्तिष्क मे ऐसा विकार होना, जिससे वह ठीक तरह से काम करने के योग्य न रह जाय। पागल होना।

(किसी काम मे) दिमाग लड़ाना=कोई काम पूरा करने के लिए बहुत अधिक सोच-विचार से काम लेना।

३ मानसिक शक्ति। बुद्धि। समझ। जैसे—वह बहुत बडे दिमाग का आदमी है।

पद—**दिमागदार**। (देखे)

४ अभिमान। घमड। शेखी। जैसे—बस रहने दीजिए, बहुत दिमाग मत दिखलाइए।

मुहा०—**दिमाग झड़ना**=अभिमान या घमड दूर हो जाना।

दिमाग-चट—वि० [अ० दिमाग+हि० चट (चाटना)] बहुत अधिक बकवाद करके दूसरो का दिमाग चाटने अर्थात् उन्हे व्याकुल करने-वाला। बहुत बडा बकवादी।

दिमागदार—वि० [अ० दिमाग+फा० दार (प्रत्य०)] १ जिसका दिमाग या मानसिक शक्ति बहुत अच्छी हो। बहुत बडा समझदार। २ अभिमानी। घमडी।

दिमाग रौशन—पु० [अ० दिमाग+फा० रौशन] मगज-रौशन नास। सुँघनी। (परिहास और व्यग्य)

दिमागी—वि० [अ० दिमाग] १ दिमाग या मस्तिष्क-सबधी। दिमाग का। मानसिक। जैसे—दिमागी मेहनत। २ जिसे दिमाग हो। दिमागवाला। ३ घमडी।

दिमात*—वि० [स० द्विमातृ] दो माताओंवाला। जिसकी दो माताएँ हो।

वि० [स० द्विमात्र] दो मात्राओंवाला।

दिमान†—पु० = दीवान।

दिमाना†—वि० = दीवाना।

दिम्मस—स्त्री० [हि० दुरमट] घासदार ढेलो म से घास अलग करने के लिए उन्हे दुरमट मे पीटने की क्रिया।

दियट—स्त्री० = दीअट।

दियत—स्त्री० [हि० देना] वह धन जो किसी अन्य व्यक्ति को मार डालने या अग-भग करने के बदले मे दिया जाय।

दियना† —पु० दीया।

अ० दीप्त होना।

स० दीप्त करना।

दियरा—पु० [हि० दीया—दीपक] १ वह बडा-सा लुक जो शिकारी हिरनो को आकर्षित करने के लिए जलाया जाता है। उदा०—सुभग सकल अग अनुज बालक सग देखि नरनारि रहे ज्यों कुरग दियरे।—तुलसी। २ [स्त्री० अल्पा० दियरी] दे० 'दीया'।

पु० [?] एक तरह का पकवान।

दियरी—स्त्री० [हि० दियरा का स्त्री० अल्पा०] छोटा दीया। दिअली।

दियला† —पु० [स्त्री० अल्पा० दियली] = दीया।

दियवा † —पु० = दीया।

दियौर—स्त्री० = दीमक।

दिया † पु० = दीया।
स० हिं० देना क्रिया का भूत० का० एक वचन रूप।
दियानत—स्त्री० = दयानत।
दियानतदार—वि० = दयानतदार।
दिया-बत्ती—स्त्री० = दीया-बत्ती।
दियारा†—पुं० [फा० दयार = प्रदेश] १. नदी के किनारे की जमीन। कछार। खादर। दरियाबरार। २. दयार। प्रदेश।
पुं० [स० दिवाकर] १ मृगतृष्णा। २ रात के समय मैदान मे दिखाई पड़नेवाला अगिया बैताल। छलावा। लुक।
दियासलाई—स्त्री० = दीया-सलाई।
दिर—पुं० [अनु०] सितार का एक बोल। जैसे—दिर दा दिर दारा।
दिरद*—पुं० = द्विरद।
दिरम—पु० [अ० दरहम से फा०] १ मिस्र देश का चाँदी का एक पुराना सिक्का। दिरहम। २ साढे तीन माशे की एक तौल।
दिरमान—पु० [फा० दरमान] चिकित्सा। इलाज।
दिरमानी—पु० [फा० दरमान = चिकित्सा+ई (प्रत्य०)] इलाज करनेवाला व्यक्ति। चिकित्सक।
दिरहम—पु० [फा० दर्हम] दिरम नाम का सिक्का और तौल।
दिरानी†—स्त्री० = देवरानी (देवर की पत्नी)।
दिरिस*—पु० = दृश्य।
दिरेस—स्त्री०, पु० = दरेस।
दिर्हम—पुं० = दिरम।
दिल—पु० [फा०] १. शरीर के अंदर का हृदय नामक अग, जिसकी सहायता से शरीर मे रक्त का सचार होता है। कलेजा। (मुहा० के लिए दे० 'कलेजा' के मुहा०) २ लाक्षणिक रूप में चित्त। जी। मन। **पद—दिल की फाँस**=मन मे खटकता रहने वाला कष्ट, दु.ख या पीडा। **मुहा०—(किसी से) दिल अटकना**=शृंगारिक क्षेत्र मे, प्रेम या स्नेह होना। **(किसी पर) दिल आना**= किसी के प्रति अनुराग या प्रेम होना। **दिल उमड़ना** = चित्त का दया, स्नेह आदि कोमल मनोविकारो के कारण द्रवीभूत होना। **दिल उलटना**=(क) जी घबराना। (ख) जी मिचलाना। **दिल कड़ा या कड़ुवा करना** = कोई काम या बात करने के लिए मन मे साहस या हिम्मत करना। **दिल कबाब होना** = बहुत अधिक मानसिक कष्ट या सताप होना। जी जलना। **(किसी काम, चीज या बात के लिए) दिल करना** = मन मे प्रवृत्ति उत्पन्न होना। जी चाहना। **दिल का कँवल या कमल खिलना**=चित्त या मन बहुत प्रसन्न होना। **दिल का गुबार या बुखार निकालना**=मन मे दबा हुआ कष्ट कुछ कटु शब्दो मे किसी के सामने प्रकट करना। **दिल की गाँठ या घुंडी खोलना**=(क) मन में छिपाकर रखी हुई बात किसी से कहना। (ख) मन मे दबा हुआ द्वेष या वैर दूर करना। **दिल कुढ़ना** = चित्त या मन अन्दर ही अन्दर दु.खी होना। **दिल के फफोले फोड़ना** = दिल का गुबार या बुखार निकालना। (देखें ऊपर) **दिल को करार होना** = चित्त मे शाति होना। चैन मिलना। **(कोई बात) दिल को लगना** = किसी बात का चित्त या मन पर ऐसा प्रभाव पड़ना जो सहज मे भुलाया न जा सके। **दिल खोलकर** = (क) पूरी उदारता से। (ख) बिलकुल शुद्ध हृदय से। जैसे—दिल खोलकर किसी से बातें करना। **(किसी काम या बात में) दिल गवाही देना**= अंत.करण या विवेक से किसी काम या बात का अनुमोदन या समर्थन होना। जैसे—जिस काम मे दिल गवाही न दे, वह काम नहीं करना चाहिए। **दिल जमना** = (क) किसी काम में चित्त या मन लगना। जी लगना। (ख) किसी बात की ओर से मन सतुष्ट होना। **दिल ठिकाने होना**=चित्त शात या स्थिर होना। **दिल ठोंककर** = चित्त या मन मे दृढ़ता और साहस रखकर (कोई काम करना)। **(किसी का) दिल टटोलना** = किसी प्रकार यह पता लगाना कि इसके मनमे क्या बात या विचार है अथवा यह क्या करेगा। **(किसी को) दिल देना**=किसी से अत्यधिक प्रेम करना। पूरी तरह से अनुरक्त होना। **दिल दौड़ाना**=चित्त या मन को किसी ऐसे काम या बात की ओर प्रवृत्त करना, जिसकी प्राप्ति या सिद्धि दूर हो अथवा सहज न हो। **(हाथो मे या से) दिल पकड़े फिरना**=ममता, मोह आदि के कारण बहुत ही विकल होकर इधर-उधर घूमना। **(कोई बात) दिल पर नक्श होना**=मन मे अच्छी तरह अंकित होना या बैठ जाना। **दिल में मैल लाना**=मन मे दुर्भाव, द्वेष आदि को स्थान देना। मन ही मन बुरा मानना। **दिल पसीजना या पिघलना**=मन मे उदारता, दया, स्नेह आदि कोमल वृत्तियो का आविर्भाव होना। **दिल फटना**=(क) आघात, कष्ट आदि के कारण मन मे असह्य वेदना होना। (ख) पहले का सा-सद्भाव या स्नेह न रह जाना। **(किसी की ओर से) दिल फिरना या फिर जाना**=चित्त या मन हट जाना। विरक्ति होना। **दिल फीका होना**=जी खट्टा होना। पहले का-सा अनुराग या सद्भाव न रह जाना। **दिल भटकना**=चित्त का व्यग्र या चंचल होना। मन मे इधर-उधर के विचार उठना। **दिल मसोसना या मसोसकर रह जाना**= क्रोध, दु.ख आदि तीव्र मनोविकारो को मन मे दबाकर रह जाना। **(किसी के) दिल पर घर या जगह करना**=किसी के अनुराग, आदर आदि का पात्र बनना। **दिल में बल पड़ना**=दिल मे फरक आना। (देखे ऊपर) **दिल में फरक आना**=पहले का-सा अनुराग या सद्भाव न रह जाना। मन मे दुर्भाव की सृष्टि होना। **दिल मैला करना**=मन मे दुर्भाव, द्वेष आदि दूषित मनोविकार उत्पन्न करना। **(किसी का) दिल रखना**=किसी की इच्छा के अनुसार कोई काम करके उसे प्रसन्न या सतुष्ट करना। **(किसी का) दिल लेना**=(क) किसी के मन की बातो की थाह या पता लेना। (ख) किसी को पूरी तरह से अपनी ओर अनुरक्त करना। **दिल से**=अच्छी तरह, चित्त या मन लगाकर। **(कोई बात) दिल से उठना**=मन मे किसी बात की प्रवृत्ति या स्फूर्ति होना। जैसे—जब तुम्हारा दिल ही नही उठता, तब तुम्हारा उनसे मिलने जाना व्यर्थ है। **(कोई बात) दिल से दूर करना**=उपेक्ष्य समझकर कुछ भी ध्यान न देना या बिल्कुल भूल जाना। **(किसी का) दिल हाथ में करना या लेना**=किसी को पूरी तरह से अपनी ओर अनुरक्त करके उसके विश्वास, स्नेह आदि के भाजन बनना। **दिल हिलना**=(क) चित्त या मन का दयार्द्र होना। (ख) मन मे कुछ भय होना। जी दहलना। **दिल ही दिल में**=अन्दर ही अन्दर। मन ही मन। **दिलोजान से**=पूरी शक्ति और सामर्थ्य से, अथवा अच्छी तरह मन लगाकर।
३ ऐसा हृदय, जिसमें उत्साह, उदारता, उमग, स्नेह आदि कोमल भाव यथेष्ट मात्रा मे हो। जैसे—वह दिल और दिमाग का आदमी है।

पद—दिल का बादशाह=(क) बहुत बड़ा उदार या दानी। (ख) मनमौजी।

मुहा०—दिल टूटना=किसी दुःखद या विपरीत घटना के कारण मन का सारा उत्साह या उमंग का कम होना या दब जाना। **(किसी का) दिल तोड़ना**=ऐसा काम करना, जिससे किसी का सारा उत्साह या उमंग दब जाय या नष्ट हो जाय। **दिल बढ़ना**=अनुराग, उत्साह, उमंग आदि में ऐसी वृद्धि होना जो किसी काम या बात की ओर प्रवृत्त करे। **दिल बुझना**=मन में अनुराग, उत्साह, उमंग आदि बिलकुल न रह जाना। **(किसी से) दिल मिलना**=प्रकृति या स्वभाव की समानता के कारण परस्पर अनुराग और सद्भाव होना।

पद—दिल-चला, दिल-दार, दिलवर आदि।

विशेष—दिल के शेष मुहा० के लिए देखें 'चित्त', 'जी' और 'मन' के मुहा०।

दिलगीर—वि० [फा०] [भाव० दिलगीरी] १ उदास। २ खिन्न। दुःखी।

दिलगीरी—स्त्री०[फा० दिलगीर+ई(प्रत्य०)] १ उदासी। २ मानसिक खिन्नता या दुःख।

दिल-गुरदा—पु० [फा० दिल+गुरदा] १ हिम्मत। सहारा। २ बहादुरी। वीरता।

दिल-चला—वि०[फा० दिल+हि० चलना] १ हिम्मतवाला। दिलेर। साहसी। २ बहादुर। वीर। ३ मनमौजी। ४ रसिक।

दिलचस्प—वि०[फा०] [भाव० दिलचस्पी] (काम, चीज या बात) जिसमें दिल रमता या लगता हो। चित्ताकर्षक। मनोरंजक।

दिलचस्पी—स्त्री०[फा०] १ दिलचस्प होने की अवस्था या भाव। मनोरंजकता। २ किसी काम या बात के प्रति होनेवाला ऐसा अनुराग, जिसके फलस्वरूप कुछ सुख मिलता या स्वार्थ सिद्ध होता हो। रस। जैसे—इन बातों में हमारी कोई दिलचस्पी नहीं है।

दिल-चोर—वि०[फा० दिल+हि० चोर] १ जो काम करने से जी चुराता हो। कामचोर। २ चित्त या मन हरण करनेवाला।

दिल-जमई—स्त्री०[फा० दिल+अ० जमअ+ई (प्रत्य०)] किसी काम या बात की ओर से मन में होनेवाली तसल्ली या सन्तोष। अच्छी तरह जी भरने की अवस्था या भाव। इतमीनान। जैसे—अच्छी तरह अपनी दिल-जमई करके तब मकान खरीदें।

दिल-जला—वि०[फा० दिल+हि० जलना] जिसे बहुत अधिक मानसिक कष्ट पहुँचा हो। अत्यन्त दुःखी।

दिल-दरिया—वि०=दरिया-दिल।

दिल-दरियाव—वि०=दरिया-दिल।

दिलदार—वि०[फा०] [भाव० दिलदारी] १ अच्छे दिल और स्नेहपूर्ण स्वभाववाला। २ जिसके प्रति अनुराग किया जाय और जिसे दिल या मन दिया जाय। ३ रसिक। ४ उदार। दाता। दानी।

दिलदारी—स्त्री०[फा० दिलदार+ई (प्रत्य०)] १ दिलदार होने की अवस्था या भाव। २ प्रेमिक होने की अवस्था या भाव। प्रेमिकता। ३ रसिकता।

दिलदौर*—वि०=दिलदार।

दिलपसंद—वि०[फा०] जो दिल को पसंद हो। चित्ताकर्षक।

दिल-फेंक—वि०[फा० दिल+हि० फेंकना] (व्यक्ति) जो बिना समझे-बूझे जगह-जगह या कभी इस पर और कभी उस पर अनुरक्त या आसक्त होता फिरे। जो मिल जाय, उसी को अपना प्रेम-पात्र बनानेवाला।

दिलबर—वि०[फा०] प्यारा। प्रिय।

पु० प्रेमपात्र।

दिलबस्त—वि०[फा०] [भाव० दिलबस्तगी] जिसका दिल या मन किसी ओर या किसी से बँधा अर्थात् लगा हो।

दिलबस्तगी—स्त्री०[फा०] ऐसी स्थिति, जिसमें दिल या मन किसी काम या बात में सुखद रूप से बँधा अर्थात् लगा हो या लगा रहे। जैसे—चार मित्रों के आ जाने से हमारी भी दिलबस्तगी रहती (या होती) है।

दिल-बहार—पु०[फा० दिल+बहार] खशखाशी रंग का एक भेद।

दिलरुबा—वि०[फा०] मनोरंजक। रमणीय।

पु० १ प्रेमी। माशूक। २ एक प्रकार का बाजा, जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते हैं।

दिलवल—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड़।

दिलवाना—स०=दिलाना।

दिलवाला—वि०[फा० दिल+हि वाला (प्रत्य०)] १ जिसमें दिल हो अर्थात् बहुत उदार और सहृदय। २ रसिक। ३ साहसी।

दिलवैया—वि०[हि० दिलवाना+ऐया (प्रत्य०)] जो किसी को किसी दूसरे से कोई चीज दिलवाने में सहायक होता हो। दिलानेवाला।

दिलशाद—वि०[फा०] १ जिसका दिल सदा प्रसन्न रहे। प्रसन्नचित्त। २ चित्त या मन को प्रसन्न करने या रखनेवाला।

दिलहर*—वि०[फा० दिल+हि० हरना] मन हरनेवाला। मनोहर।

†वि०=दिलेहेद (दिल्लेदार)।

दिलहा†—पु०=दिल्ला।

दिलहेदार†—वि०=दिलहेदार।

दिलाना—स०[हि० देना का प्रे०] १ किसी को किसी दूसरे से कुछ प्राप्त कराना। दिलवाना। २ किसी को कुछ प्राप्त करने में सहायता देना। संयो० क्रि०—देना।

दिलारा—वि०[फा०] १ दिल की प्रसन्नता बढ़ानेवाला। २ मनोहर। लुभावना। ३ परमप्रिय। (शृंगारिक क्षेत्र में)

पु० प्रेम-पात्र। माशूक।

दिलावर—वि०[फा०] [भाव० दिलावरी] १ बहादुर। वीर। २ हिम्मत या हौसलेवाला। साहसी।

दिलावरी—स्त्री०[फा०] १ बहादुरी। वीरता। २ साहस। हिम्मत।

दिलावेज—वि०[फा० दिलावेज़] सुन्दर। प्रियदर्शन।

दिलासा—पु०[फा० दिल+हि० आसा] क्षुब्ध या दुःखित हृदय को दिया जानेवाला आश्वासन। ढारस। तसल्ली। धैर्य।

क्रि० प्र०—दिलाना।—देना।

दिली—वि०[फा०] १ दिल या हृदय से संबंध रखनेवाला। हार्दिक। जिससे बहुत अधिक अभिन्नता और घनिष्ठता हो। घनिष्ठ। जैसे—दिली दोस्त।

दिलीप—पु०[सं०] इक्ष्वाकु-वंशी एक प्रसिद्ध राजा जो अंशुमान् के पुत्र राजा सगर के परपोते तथा भगीरथ के पिता थे। (वाल्मीकि)

विशेष—कालिदास ने इन्हे रघु का पिता बतलाया है।
२ चन्द्रवंशी राजा कुरु के वंशज एक राजा।

दिलीर—पु०[सं०√दल् (नष्ट करना)+ईर, पृषो० सिद्धि] भुईंफोड़। ढिंगरी।

दिलेर—वि० [फा०] [भाव० दिलेरी] १ बहादुर। वीर। २ हिम्मत-वाला। साहसी। ३ उदारता-पूर्वक देनेवाला। दाता।

दिलेरी—स्त्री०[फा०]१ बहादुरी। वीरता। २ साहस। हिम्मत। ३ दानशीलता। उदारता।
क्रि० प्र०—दिखाना।

दिल्लगी—स्त्री०[फा० दिल+हि० लगना]१ दिल लगने या लगाने की क्रिया या भाव। २ परिहास। मनोविनोद।
मुहा०—(किसी की) दिल्लगी उड़ाना=हास-परिहास की बातें कहकर तुच्छ सिद्ध करने का प्रयत्न करना। उपहास करना।
पद—दिल्लगी में=केवल दिल्लगी के विचार से। यो ही। हँसी मे।
३ ऐसी घटना या बात, जिससे लोगो का मनोरंजन होने के सिवा उन्हें हँसी भी आवे। जैसे—कल सड़क पर एक दिल्लगी हो गई, एक आदमी के कन्धे पर कही से एक बन्दर आ कूदा। ४ ऐसा काम या बात, जो हास-परिहास की तरह सुगम हो या जो सब लोग कर सकें। जैसे—कविता करना क्या तुमने दिल्लगी समझ रखा है।

दिल्लगीबाज—पु०[हि० दिल्लगी+फा० बाज] [भाव० दिल्लगीबाजी] वह जो प्राय दूसरो को हँसानेवाली बाते कहता हो। हँसी या दिल्लगी करनेवाला। ठठोल। हँसोड़।

दिल्लगीबाजी—स्त्री०[हि० दिल्लगी+फा० बाजी]१ दिल्लगी करने की क्रिया या भाव। २ दे० 'दिल्लगी'।

दिल्ला—पु०[देश०] दरवाजे के पल्ले के ढाँचे मे कसा तथा जड़ा हुआ लकड़ी का चौकोर टुकड़ा, जो प्राय उसे सुन्दर रूप देने के लिए होता है। दिलहा।

दिल्ली—स्त्री०[इन्द्रप्रस्थ के मयूरवंशी राजा दिलू के नाम पर ?] पश्चिमोत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नगरी जहाँ मध्ययुग मे बहुत दिनो तक हिन्दू राजाओ तथा मुगल बादशाहो की राजधानी थी, और जिसे सन् १९१२ मे अंगरेजो ने फिर से राजधानी बनाया था। इस समय स्वतन्त्र भारत की राजधानी भी यही है।

दिल्लीवाल—वि०[हि० दिल्ली+वाल (प्रत्य०)]१ दिल्ली-संबंधी। दिल्ली का। २ दिल्ली का रहनेवाला। ३ दिल्ली मे बनने या होनेवाला।
पु० एक प्रकार का देशी जूता, जो पहले दिल्ली मे बनता था।

दिल्लेदार—वि० [देश० दिलहा+फा० दार] (दरवाजे का पल्ला) जिसमे दिल्ले लगे हो।

दिव्—पु०[सं०√दिव् (चमकना)+डिवि (बा०)]=दिव।

दिवंगत—वि० [सं० द्वि० त०] जिसकी आत्मा इस लोक को छोड़कर स्वर्ग चली गई हो, अर्थात् परलोकवासी। स्वर्गीय।

दिवंगम—वि०[सं० दिव√गम+खच्, मुम्] स्वर्गगामी।

दिव—पुं० [सं०√दिव्+क] १ स्वर्ग। २ आकाश। ३ दिन। ४. जंगल। वन।

दिवगृह—पुं०=देवगृह।

दिव-दाह—पु०[ष०त०]१ आकाश का जलता हुआ-सा जान पड़ना। दिक्दाह। २ बहुत बड़ा आन्दोलन, उत्पात या क्रांति।

दिवराज—पु०[ष०त० (टच् समा०)] स्वर्ग के राजा इंद्र।

दिवरानी—स्त्री०=देवरानी।

दिवला—पु०[स्त्री० अल्पा० दिवली] =दीया।

दिवस—पु०[सं०√दिव्+असच्] दिन। वासर। रोज।

दिवस-अंध —वि०, पु० [सं० दिवसान्ध, स० त०]=दिवांध।

दिवस-कर—पु०[ष०त०]१ सूर्य। दिनकर। २ आक। मदार।

दिवस-नाथ—पु०[ष०त०] सूर्य।

दिवस-मणि—पु०[ष०त०] सूर्य।

दिवस-मुख—पु०[ष०त०] प्रातःकाल। सबेरा।

दिवस-मुद्रा—स्त्री०[मध्य०स०] एक दिन की मजदूरी या वेतन।

दिवस-स्वप्न—पु०[स०त०] दिवास्वप्न। (दे०)

दिवसांतर—वि०[दिवस-अंतर ब०स०] जो सिर्फ एक दिन का हो।

दिवसेश—पु०[दिवस-ईश, ष०त०] सूर्य।

दिवस्पति—पु०[सं० दिवः-दिवस-पति ष०त० (अलुक् समास)]१. सूर्य। २ तेरहवें मन्वन्तर के इन्द्र का नाम।

दिवस्पृश—पु०[सं० दिव√स्पृश् (स्पर्श करना)+क्विन्] (वामनावतार मे) पैर से स्वर्ग को छूनेवाले, विष्णु।

दिवांध—वि०[सं० दिवा-अंध, स०त०] जिसे दिन मे दिखाई न देता हो। पु० १. एक प्रकार का रोग, जिसमे मनुष्य को दिन के समय दिखाई नही देता। दिनौंधी। २ उल्लू जिसे दिन मे दिखाई नही देता।

दिवांधकी—स्त्री०[सं० दिवान्ध+क (स्वार्थे)—ङीष्] छछूंदर।

दिवा—पुं०[सं०√दिव् (चमकना)+का]१ दिन। दिवस। २ एक वर्णवृत्त, जिसे मालिनी और मदिरा भी कहते हैं।
†पु०=दीया।

दिवाकर—पु०[सं० दिवा√कृ (करना)+टच्]१ सूर्य। २ आक। मदार। ३ कौआ। ४ एक प्रकार का पौधा और उसका फूल।

दिवा-कीर्ति—पु० [ब०स०]१ नापित। नाई। हज्जाम। २ उल्लू। ३ चांडाल।

दिवा-कीर्त्य—पु०[स०त०] गवानयन यज्ञ मे विषुव संक्रान्ति के दिन गाया जानेवाला एक सामगान।

दिवाचर—वि०[सं० दिवा√चर् (गति)+ट] दिन मे विचरण करनेवाला।
पु० १ चिड़िया। पक्षी। २ चांडाल।

दिवाटन —पु०[सं० दिवा√अट् (घूमना)+ल्यु—अन] काक। कौआ।

दिवातन —पु० [सं० दिवा+ट्यु—अन, तुट् आगम] एक दिन काम करने पर मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी।
वि० पूरे एक दिन का। दिन भर का।

दिवान†—पु०=दीवान।

दिवाना†—स०=दिलाना।
पुं०=दिवाना (पागल)।

दिवा-नाथ—पु०[ष०त०] दिन के स्वामी, सूर्य।

दिवानी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का पेड़, जो बरमा मे अधिकता से

होता है। इसकी लकड़ी से मेज, कुर्सियाँ आदि बनती हैं।
स्त्री० =दीवानी।

दिवा-पुष्ट—पु०[स०त०] सूर्य।

दिवाभिसारिका—स्त्री०[स० दिवा-अभिसारिका, स०त०] साहित्य में वह नायिका जो दिन के समय शृंगार करके प्रिय से मिलने संकेत-स्थान पर जाय।

दिवा-भीत—वि०[स०त०] दिन (अर्थात् दिन के प्रकाश) से डरनेवाला। पु० १. चोर। २. उल्लू।

दिवा-मणि—पु०[ष०त०] १ सूर्य। २. आक। मदार।

दिवा-मध्य—पु० [ष० त०] मध्याह्न। दोपहर।

दिवार—स्त्री०=दीवार।

दिवा-रात्र—क्रि० वि०[द्व०स०,अच्] दिन-रात। हर समय।

दिवारी†—स्त्री०[हिं० दीवाली]१. कुआर-कार्तिक मे विशेषत दीवाली के अवसर पर गायेजानेवाले एक तरह के लोक-गीत। (बुंदेल)२. दीपमालिका। दीवाली।

दिवाल—वि०[हिं० देना+वाल (प्रत्य०)] देनेवाला। जो देता हो। जैसे—यह एक पैसे के दिवाल नहीं हैं। (बाजारू)
†स्त्री०=दीवार।

दिवालय†—पु०=देवालय (मंदिर)।

दिवाला—पु०[हिं० दिया +बालना=जलाना]१ महाजन या व्यापारी की वह स्थिति जिसमे वह विधिवत् यह घोषित करता है कि मेरे पास अब यथेष्ट धन नहीं बचा है और इसलिए मैं लोगो का ऋण चुकाने मे असमर्थ हूँ।
क्रि० प्र०—बोलना।
विशेष—ऐसी स्थिति मे लेनदार न्याय की दृष्टि से या तो उससे कुछ भी वसूल नहीं कर सकते या उसके पास जो थोड़ा-बहुत धन बचा होता है, वही सब लेनदार अपने-अपने हिस्से के मुताबिक बाँट लेते हैं।
मुहा०—दिवाला निकालना या मारना=दिवालिया बन जाना। ऋण चुकाने मे असमर्थ हो जाना।
२ किसी पदार्थ का कुछ भी बचा न रह जाना। पूर्ण अभाव। जैसे—उनकी अक्ल का तो दिवाला निकल गया है।

दिवालिया—वि०[हिं०दिवाला+इया (प्रत्य०)]जिसने दिवाला निकाला हो। जिसके पास ऋण चुकाने के लिए कुछ भी न बच रहा हो।

दिवाली—स्त्री० [देश०] वह तस्मा या पट्टी, जिसे खींचकर खराद, सान आदि चलाई जाती है।
स्त्री० =दीवाली।

दिवा-स्वप्न—पु०[स०त०] अकर्मण्य, निराश या विफल व्यक्ति का बैठे-बैठे तरह-तरह के हवाई किले बनाना या मसूबे बाँधना और यह सोचना कि इस बार हम यह करेंगे, हम वह करेंगे अथवा आगे चलकर हमारा यो उत्थान होगा और हम यो सुखी होंगे आदि आदि। (डे ड्रीम)

दिवि—पु०[स०√दिव् (चमकना)+कि (बा०)] १. नीलकंठ पक्षी। २ दे० 'दिव'।

दिविज—पु०[स० दिवि√जन् (उत्पन्न होना)+ड, (अलुक् समास] देवता।

दिविता—स्त्री०[स० दीप+इतच् (बा०), पृषो० सिद्धि] दीप्ति। चमक।

दिविदिवि—पु०[देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़, जो दक्षिण अमेरिका से भारतवर्ष मे आया है। इसकी पत्तियाँ चमड़ा सिझाने और रंगने के काम मे आती हैं।

दिविरथ—पु०[स०] महाभारत के अनुसार पुरुवंशी राजा भूमन्यु के पुत्र का नाम।

दिविषत्—पु०[स० दिवि√सद् (बैठना)+क्विप्, षत्व,(अलुक् समास)] देवता।
वि० स्वर्गवासी।

दिविष्ट—पु०[स० इष्ट, √यज् (देवपूजन)+क्त, दिव्-इष्ट, च०त०] यज्ञ।

दिविष्ठ—पु० [स० दिवि√स्था (स्थित होना)+क, षत्व] १ स्वर्ग मे रहनेवाला, देवता। २ पुराणानुसार ईशान-कोण का एक देश।

दिविस्थ—पु० [स० दिविष्ठ] देवता।

दिवेश—पु० [स० दिव-ईश, ष० त०] दिक्पाल।

दिवैया—वि०[हिं० देना+वैया (प्रत्य०)] जो देता हो। देनेवाला। दाता।
वि०[हिं० दिवाना =दिलाना] दिलानेवाला। दिलवैया।

दिवोका (कस्)—पु० [स० दिव-ओकस, ब०स०] दिवौका (दे०)।

दिवोदास—पु० [स० दिवस् दास, ब० स०] १ चंद्र वंशी राजा भीमरथ के एक पुत्र, जो इंद्र के उपासक और काशी के राजा थे और धन्वन्तरि के अवतार माने जाते हैं। महादेव ने इन्ही से काशी ली थी। कहते हैं कि देवताओ ने इन्हे आकाश से पुष्प, रत्न आदि दिये थे, इसी से इनका यह नाम पड़ा। २. हरिवंश के अनुसार ब्रह्मर्षि इंद्रसेन के पौत्र का नाम, जो मेनका के गर्भ से अपनी बहन अहल्या के साथ ही उत्पन्न हुए थे।

दिवोद्भवा—स्त्री० [स० दिव-उद्√भू (पैदा होना)+अच्+टाप्] इलायची।

दिवोल्का—स्त्री० [स०दिव-उल्का, मध्य०स०] दिन के समय आकाश से गिरनेवाला चमकीला पिंड या उल्का।

दिवौका (कस्)—पु०[स० दिव-ओकस, ब०स०] १ वह जो स्वर्ग मे रहता हो। २. देवता। ३ चातक पक्षी।

दिव्य—वि०[स० दिव्+यत्] [भाव० दिव्यता] १ स्वर्ग से संबंध रखनेवाला। स्वर्गीय। २ आकाश से संबंध रखनेवाला। आकाशीय। ३. अलौकिक। लोकोत्तर। ४ प्रकाशमान। चमकीला। ५ मनोहर। सुन्दर। ६ तत्त्वज्ञ।
पु० [स०] १ यव। जौ। २ गुग्गुल। ३ आँवला। ४ सतावर। ५ ब्राह्मी। ६ सफेद दूब। ७ लौंग। ८ हर्रे। ९ हरिचंदन। १० महामेदा नाम की औषधि। ११ कपूर कचरी। १२ चमेली। १३ जीरा। १४ सूअर। १५. धूप के समय बरसते हुए पानी में किया जानेवाला स्नान। १६ आकाश मे होनेवाला एक प्रकार का दैवी उत्पात। १७ कसम। शपथ। सौगंध। १८. प्राचीन काल मे, एक प्रकार की परीक्षा, जिससे किसी का अपराधी या निरपराध होना सिद्ध होता था।
क्रि० प्र०—देना।
१९. तांत्रिक उपासना के तीन भेदो मे से एक, जिसमें पंच मकार,

श्मशान और चिता का साधन किया जाता है। २० तीन प्रकार के केतुओ मे से एक जिनकी स्थिति भूवायु से ऊपर मानी गई है। २१. साहित्य मे, तीन प्रकार के नायको मे से एक। वह नायक जो स्वर्गीय या अलौकिक हो। जैसे—इद्र, राम, कृष्ण आदि।

दिव्यक—पु०[स० दिव्य+कन्]१ एक प्रकार का साँप। २. एक प्रकार का जतु।

दिव्य-कर—पु०[स० ब०स०?] पश्चिम दिशा का एक प्राचीन देश। (महाभारत)

दिव्य-कवच—पु०[कर्म०स०] १ अलौकिक तनत्राण। देवताओ का दिया हुआ कवच। २ ऐसा स्तोत्र जिसका पाठ करने से सब अगो की रक्षा होती है।

दिव्य-क्रिया—स्त्री०[मध्य०स०] दे० 'दिव्य' १८।

दिव्य-गंध—पु०[ब०स०]१ लौग। २ गधक।

दिव्य-गंधा—स्त्री० [स०] १ बडी इलायची। २ बडी चेंच का साग।

दिव्य-गायन—पु०[ब०स०] स्वर्ग मे गानेवाले, गधर्व जाति के लोग।

दिव्य-चक्षु (स्)—पु०[ब०स०]१ वह जिसे दिव्यदृष्टि प्राप्त हो। २ दे० 'तेजोन्वेष'। ३ एक प्रकार का गध द्रव्य। ४ बदर। ५. अधा (परिहास और व्यग्य)

दिव्य-तरंगिणी—स्त्री०[स०]सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

दिव्यता—स्त्री० [स० दिव्य+तल्+टाप्] १. दिव्य होने की अवस्था या भाव। २ देवता होने की अवस्था या भाव। देवत्व। ३ उत्तमता। श्रेष्ठता। ४ मनोहरता। सुन्दरता।

दिव्य-तेज (स्)—स्त्री०[ब०स०] ब्राह्मी बूटी।

दिव्य-देवी—स्त्री०[कर्म०स०] पुराणानुसार एक देवी का नाम।

दिव्य-दोहद—पु०[कर्म०स०] मनोकामना की पूर्ति के हेतु किसी इष्टदेव को चढाई जानेवाली भेट या वस्तु।

दिव्य-दृष्टि—स्त्री०[कर्म०स०]१ ऐसी अलौकिक दृष्टि जिससे मनुष्य भूत, भविष्य और वर्तमान की अथवा परोक्ष की सब बातें प्रत्यक्ष की तरह देख सकता हो। जैसे—उन्होने दिव्य-दृष्टि से देख लिया कि स्वर्ग मे देवताओ की सभा हो रही है, अथवा कलियुग मे कैसे-कैसे अनर्थ और पाप होगे। २ ज्ञानदृष्टि।

दिव्य-धर्मा (र्मिन्)—वि० [स० दिव्य-धर्म, कर्म०स० + इनि] १. जिसका आचरण, कर्म और व्यवहार बहुत ही निष्कलक और पवित्र हो। परम शुभ धर्म का पालन करनेवाला। २ सदाचारी और सुशील।

दिव्य-नगर—पु०[कर्म०स०] ऐरावती नगरी।

दिव्य-नदी—स्त्री०[कर्म०स०]१ आकाश गगा। २ पुराणानुसार एक नदी का नाम।

दिव्य-नारी—स्त्री०[कर्म०स०] अप्सरा।

दिव्य-पंचामृत—पु० [स०दिव्यपचामृत, कर्म०स०] घी, दूध, दही, मक्खन और चीनी इन पाँच चीजो को मिलाकर बनाया हुआ पचामृत।

दिव्य-पुरुष—पु०[कर्म०स०] अलौकिक या पारलौकिक व्यक्ति। जैसे—देवी, देवता, गधर्व, यक्ष आदि।

दिव्य-पुष्प—पु०[ब०स०] करवीर। कनेर।

दिव्य-पुष्पा—स्त्री०[सं०] बड़ा गूमा नामक वृक्ष, जिसमे लाल फूल लगते हैं। बड़ी द्रोणपुष्पी।

दिव्यपुष्पिका—स्त्री०[स० दिव्यपुष्प+कन्+टाप्, इत्व] लाल रग के फूलोवाला मदार का पौधा।

दिव्य-यमुना—स्त्री०[कर्म०स०] कामरूप देश की एक नदी, जो बहुत पवित्र मानी गई है।

दिव्य-रत्न—पु०[कर्म०स०] चितामणि नामक कल्पित रत्न, जो सब कामनाओ की पूर्ति करने मे समर्थ माना जाता है।

दिव्य-रथ—पु०[कर्म०स०] देवताओ का विमान।

दिव्य-रस—पु०[कर्म०स०] पारद। पारा।

दिव्य-लता—स्त्री०[कर्म०स०] मूर्वा लता। मूरहरी। चुरनहार।

दिव्य-वस्त्र—पु०[कर्म०स०]१ सुन्दर वस्त्र। बढिया कपडा। २ सूर्य का प्रकाश।

दिव्य-वाक्य—पु०[कर्म०स०] देववाणी। आकाशवाणी।

दिव्य-श्रोत्र—वि० [कर्म०स०] जो अपने कानों से हर जगह की सब बातें सुन लेता हो।

पु० ऐसा कान जिससे दूर-दूर तक की सब बातें सुनाई दें।

दिव्य-सरिता—स्त्री०[स० दिव्य-सरित्] आकाश गगा।

दिव्य-सानु—पु०[ब०स०] एक विश्वदेव।

दिव्य-सार—पु०[ब०स०] साखू का पेड। साल वृक्ष।

दिव्य-सूरि—पु०[कर्म० स०] रामानुज सप्रदाय के बारह आचार्य जिनके नाम ये हैं—कासार, भूत, महत्, भक्तसार, शठारि कुलशेखर, विष्णु चित्त, भक्ताघ्रिरेणु, मुनिवाह, चतुष्कविन्द्र, रामानुज और गोदादेवा या मधुकर कवि।

दिव्य-स्त्री—स्त्री०[कर्म०स०] दिव्य नारी। अप्सरा।

दिव्यांगना—स्त्री०[दिव्य-अगना, कर्म०स०] १ अप्सरा। २ देवता की स्त्री। देव-पत्नी।

दिव्यांबरी—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाट की पद्धति की एक रागिनी।

दिव्यांशु—पु०[दिव्य-अशु, ब०स०] सूर्य।

दिव्या—स्त्री०[स० दिव्य+टाप्]१ साहित्य मे, तीन प्रकार की नायिकाओ मे से एक। स्वर्गीय या अलौकिक नायिका। जैसे—पार्वती, सीता, राधिका आदि। २ महामेदा। ३ शतावर। ४ आँवला। ५. ब्राह्मी। ६ सफेद दूब। ७ हर्रे। ८ कपूरकचरी। ९ बडा जीरा। १०. बाँझककोडा।

दिव्यादिव्य—पु०[दिव्य-अदिव्य, कर्म०स०] साहित्य मे, तीन प्रकार के नायको मे से एक। वह मनुष्य या इहलौकिक नायक जिसमे देवताओ के भी गुण हो। जैसे—नल, पुरुरवा, अभिमन्यु आदि।

दिव्यादिव्या—स्त्री० [दिव्या-अदिव्या, कर्म०स०] साहित्य मे, तीन प्रकार की नायिकाओ मे से एक। वह इहलौकिक नायिका जिसमे स्वर्गीय स्त्रियो के भी गुण हो। जैसे—दमयती, उर्वशी, उत्तरा आदि।

दिव्याश्रम—पु०[दिव्य-आश्रम, कर्म०स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ विष्णु ने तपस्या की थी। कुरुक्षेत्र का दर्शन करके बलदेव जी यहीं से होते हुए हिमालय गए थे।

दिव्यासन—पु० [दिव्य-आसन, कर्म०स०] तत्र के अनुसार एक प्रकार का आसन।

दिव्यास्त्र—पु०[दिव्य-अस्त्र, कर्म०स०]१ देवताओ का दिया हुआ अस्त्र या हथियार। २ मत्रो के प्रभाव से चलनेवाला अस्त्र या हथियार।

दिव्येलक—पु० [सं०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का साँप ।

दिव्योदक—पु०[दिव्य-उदक, कर्म०स०] वर्षा का जल जो सबसे अधिक पवित्र और शुद्ध होता है।

दिव्योपपादुक—पु०[दिव्य-उपपादुक(उप√पद् (गति) + उकञ्) कर्म० स०] देवता, जिनका जन्म बिना माता-पिता के माना जाता है।

दिव्योषधि—स्त्री० [दिव्या-ओषधि कर्म०स०] मैनसिल।

दिश्—स्त्री०[सं०√दिश्+क्विन्] दिशा। दिक्।
पु० [सं०√दिश् (बताना, देना) +क] एक देवता जो कान के अधिष्ठाता देवता माने जाते है।

दिशा—स्त्री०[सं० दिश+टाप्] १ क्षितिज वृत्त के चार मुख्य कल्पित विभागों मे से प्रत्येक विभाग।
विशेष—ये चार कल्पित विभाग उत्तर, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम कहलाते है। इनके निरूपण का मूल आधार वह है, जिधर से नित्य सूर्य निकलता है। इन चारो दिशाओ के बीच के चार कोणों और ऊपर तथा नीचे की कुल छ दिशाएँ और भी मानी जाती हैं।
२ किसी नियत स्थान से उक्त चारो विभागो मे से किसी ओर के विभाग का सारा विस्तार। जैसे—काशी के पूर्व की अथवा हिमालय के उत्तर की दिशा। ३ दिशाओ की उक्त सख्या के आधार पर १० की सख्या। ४ रुद्र की एक पत्नी का नाम। ५ पाखाने या शौच जाने की क्रिया जो पहले घर से निकलकर और किसी ओर अथवा दिशा मे जाकर की जाती थी। (दे० 'दिसा')

दिशा-गज—पु०[मध्य०स०] दिग्गज।

दिशा-चक्षु (स्)—पु० [ब०स०] गरुड के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

दिशाजय—पु०[ष०त०] दिग्विजय।

दिशापाल—पु०[सं० दिशा√ पाल् (पालना) +णिच्√अण् उप०स०] दिक्पाल।

दिशा-भ्रम—पु०[ष०त०] दिशाओं का ठीक-ठीक ज्ञान न होना। दिक्-भ्रम।

दिशावकाश—पु० [दिशा-अवकाश ष०त०] दो दिशाओं के बीच का अवकाश या विस्तार।

दिशावकाशक व्रत—पु०[सं० दिशावकाश+क (स्वार्थ), दिशावकाशक-व्रत मध्य०स० ?] एक प्रकार का व्रत जिसमे यह निश्चित किया जाता है कि आज अमुक दिशा मे इतनी दूर से अधिक नही जायँगे। (जैन)

दिशा-शूल—पु०[म०त०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह घडी, पहर या दिन जिसमे किसी विशिष्ट दिशा की ओर जाना बहुत अनिष्टकर माना जाता हो और इसी लिए उस दिशा मे जाना वर्जित हो।

दिशासूल—पु० दिशा-शूल।

दिशि—स्त्री० दिशा।

दिशि-नियम—पु० दिशावकाशकव्रत (दे०)।

दिशेभ—पु०[दिशा-इभ ष०त०] दिग्गज।

दिश्य—वि०[सं० दिश्+यत्] दिशा-सम्बन्धी। दिक् या दिशा का।
वि० दे० 'निर्दिष्ट'।

दिष्ट—वि०[सं०√दिश् बताना, दान) +क्त] १ निश्चित। निर्दिष्ट। २ दिखलाया या बतलाया हुआ।
पु० १ भाग्य। किस्मत। २ उपदेश। ३ काल। समय। ४ वैवस्वत मनु के एक पुत्र। ५ दारुहल्दी।

दिष्ट-बंधक†—पु०=दृष्ट-बधक।

दिष्टांत—पु०[सं० दिष्ट-अंत ब०स०] मृत्यु। मौत।
†पु०=दृष्टात।

दिष्टि—स्त्री० [सं०√दिश्+क्तिन] १ भाग्य। २ उत्सव। ३ प्रसन्नता। ४ दे० 'दिष्ट'।
†स्त्री०=दृष्टि।

दिसंतर—पु० [सं० देशांतर] १ देशातर। विदेश। परदेश। २ देश-देशातरो का पर्यटन। भ्रमण।
पु०=दिशातर।

दिसंबर—पु०[अ० डिसेबर] अँगरेजी वर्ष का बारहवाँ महीना।

दिस—स्त्री०=दिशा।

दिसना—अ०=दिखना (दिखाई देना)।

दिसा—स्त्री० [सं० दिशा =ओर] १ मल त्याग करने की क्रिया। पैखाने जाना। झाडा फिरना।
क्रि० प्र०—जाना।—फिरना।
२ दे० 'दिशा'।
†स्त्री०=दशा।

दिसाउर†—पु० दिसावर।

दिसादाह—पु० =दिक्दाह।

दिसावर—पु०[सं० देशान्तर] [वि० दिसावरी] १ दूसरा देश। परदेश। विदेश। २ व्यापारियो की बोलचाल मे वह स्थान या देश जहाँ कोई माल भेजा जाता हो या जहाँ से आता हो।
पद—दिसावरी माल—ऐसा माल जो दिसावर से आया हो या दिसावर जाने को हो।

दिसावरी—वि०[हि० दिसावर+ई(प्रत्य०)]१ दिसावर-सबधी। दिसावर का। २ दिसावर से आया हुआ।

दिसाशूल—पु०=दिशा-शूल।

दिसासूल†—पु०=दिशा-शूल।

दिसि†—स्त्री०=दिशा।

दिसिटि*—स्त्री० दृष्टि।

दिसिकुरव*—पु० दिग्गज।

दिसिनायक—पु०=दिक्पाल।

दिसिप*—पु०=दिक्पाल।

दिसिराज*—पु०=दिक्पाल।

दिसैया—वि०[हि० दिसना=दिखना+ऐया प्रत्य०)]१ देखनेवाला। २ दिखानेवाला।

दिस्टि*—स्त्री०=दृष्टि।

दिस्टि-बध*—पु०[सं० दृष्टिबध] इद्रजाल। जादू। उदा०—राघव दिष्टिबध कल्हि खेला। सभा माँझ चेटक अस मेला।—जायसी।

दिस्टिवंत—वि०[सं० दृष्टि-वत]१ जिसे दिखाई देता हो। २ ज्ञानी। उदा०—दिस्टिवत कहँ निअरे, अंध मूरुख कहँ दूरि।—जायसी।

दिस्ता†—पु०=दस्ता।

दिहंदा—वि०[फा० दिहन्द] देनेवाला।

दिहंरा—पु०[सं० देव+हि० घर=देवहर] १ देवालय। देवमंदिर। २ ग्राम-देवता, स्थान देवता आदि का स्मारक चिह्न।

दिहला—स्त्री०=दहलीज।

दिहाड़ा—पु०[हिं० दिन+हार (प्रत्य०)] दिन। दिवस।

दिहाड़ी—स्त्री०[हिं० दिहाडा+ई (प्रत्य०)] १ दिन। दिवस। २ उतना पूरा समय जिसमे कोई मजदूर दैनिक पारिश्रमिक लेकर काम करता हो। ३ मजदूरों आदि को दिया जानेवाला दैनिक पारिश्रमिक या मजदूरी।

दिहात—पु०=देहात।

दिहाती—वि०, पु० =देहाती।

दिहातीपन—पु० =देहातीपन।

दिहुड़ी†—स्त्री०=ड्योढी।

दिहुला†—पु०[देश०] एक प्रकार का धान जो बिहार मे होता है।

दिहेज†—पु०=दहेज।

दी†—स्त्री०=दीमक।

दीअट—स्त्री० दीयट।

दीआ—पु०=दीया। (दीपक)

दीक—पु०[देश०] एक प्रकार का तेल, जो काटू या हिजली के पेड की छाल से निकलता है और जाल मे माजा देने के काम आता है।

दीक्षक—पु०[स०√ दीक्ष् (शिष्य बनाना)+ण्वुल्-अक] १. दीक्षा देनेवाला। मत्र का उपदेश करनेवाला। २ शिक्षक। गुरु।

दीक्षण—पु०[स०√दीक्ष+ल्यु-अन] [वि० दीक्षित] दीक्षा देने की क्रिया या भाव।

दीक्षणीय—वि०[स०√दीक्ष+अनीयर्]१ दीक्षा दिये जाने या पाने के योग्य। २ (विशिष्ट तत्त्व या सिद्धान्त) जो उसी को बतलाया जा सके जो दीक्षा ग्रहण करके किसी समाज या सप्रदाय मे सम्मिलित हो। (एसोटेरिक)

दीक्षांत—पु०[स० दीक्षा-अत ष०त०] वह अवभृथ यज्ञ जो किसी यज्ञ के अन्त मे उसकी त्रुटि, दोष आदि की शाति के लिए किया जाता है। २ किसी सत्र की पढ़ाई का सफलतापूर्ण अत।

वि० दीक्षा के अत मे होनेवाला। जैसे—दीक्षात भाषण।

दीक्षांत-भाषण—पु०[स०त०] आज-कल विश्वविद्यालयो मे किसी विद्वान् का वह भाषण जो उच्च परीक्षाओं मे उत्तीर्ण होनेवाले विद्यार्थियो को उपाधि, प्रमाण-पत्र आदि देने के उपरान्त होता है। (कान्वोकेशन एड्रेस)

दीक्षा—स्त्री०[स०√दीक्ष् (यज्ञ करना)+अ-टाप्] १ सोमयागादि का सकल्प-पूर्वक अनुष्ठान करना। २ यज्ञ करना। यजन। ३. किसी पवित्र मत्र की वह शिक्षा जो आचार्य या गुरु से विधिपूर्वक शिष्य बनने अथवा किसी सप्रदाय मे सम्मिलित होने के समय ली जाती है।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

४ उपनयन सस्कार, जिसमे विधिपूर्वक गुरु से मत्रोपदेश लिया जाता है। ५. गुरुमत्र। ६ पूजन।

दीक्षा-गुरु—पु० [स० त०] वह गुरु जो धार्मिक दृष्टि से कान मे मत्र फूंकता हो। मत्रोपदेश करनेवाला गुरु।

दीक्षा-पति—पु० [ष० त०] दीक्षा या यज्ञ का रक्षक, सोम।

दीक्षित—वि० [स०√दीक्ष् (यज्ञ करना) +क्त वा दीक्षा+इतच्] जिसने सोमयागादि का सकल्पपूर्वक अनुष्ठान करने के लिए दीक्षा ली हो।

पु० कई प्रदेशो मे ब्राह्मणो का एक भेद या वर्ग।

दीखना—अ० [हि० देखना] दिखाई देना। देखने मे आना। दृष्टिगोचर होना।

क्रि० प्र०—पडना।

दीगर—वि० [फा०] अन्य। दूसरा।

दीघी—स्त्री० [स० दीर्घिका] १ बडा तालाब। जैसे—कलकत्ते की लाल दीघी। २ बावली।

दीच्छा* —स्त्री०=दीक्षा।

दीच्छित* वि० =दीक्षित।

दीठ—स्त्री० [स० दृष्टि, प्रा० दिट्ठि] १ देखने की वृत्ति या शक्ति। दृष्टि। निगाह।

क्रि० प्र०—डालना।—पडना।

पद—दीठबंद, दीठबंदी। (हि०)

मुहा०—दीठ करना या फेंकना=देखना। **दीठ फेरना** =दृष्टि या निगाह हटाकर दूसरी तरफ कर लेना। **दीठ बचाना**=(क) इस प्रकार किसी के सामने से हट जाना कि उसकी निगाह न पडने पावे। (ख) इस प्रकार कोई चीज छिपा या दबा लेना कि उसे कोई देखने न पावे। **(किसी की) दीठ बाँधना**=इद्रजाल, जादू-मतर, टोने-टोटके आदि मे ऐसा उपाय करना कि कोई विशिष्ट चीज किसी के देखने मे न आवे। **दीठ मे आना या पड़ना**=दिखाई पडना। **(किसी ओर या किसी की ओर) दीठ लगाना** =(क)दृष्टि या निगाह जमाकर देखना। अच्छी तरह या ध्यान से देखना (ख) किसी प्रकार की आशा से प्रवृत्त या युक्त होकर देखना। कुछ पाने या मिलने के विचार से देखना।

२ देखने की इद्रिया। आँख। नेत्र।

मुहा०—(किसी की ओर) दीठ उठाना =देखने के लिए किसी की ओर आँखे या निगाह करना। **दीठ गड़ाना या जमाना** =कोई चीज देखने के लिए उस पर टक लगाना। स्थिर दृष्टि से देखना। **दीठ चुराना** = जहाँ तक हो सके किसी का सामना करने से बचना। **(किसी से) दीठ जुड़ना या मिलना** =(क)देखा-देखी या सामना होना।(ख) शृगारिक क्षेत्र मे, प्रेम या स्नेह होना। **दीठ जोड़ना या मिलाना** =आँखे मिलाना या सामना करना। **दीठ भर देखना** =अच्छी तरह या जी भर कर देखना। **दीठ मारना**=आँखें या पलके हिलाकर इशारा या सकेत करना। **(किसी से) दीठ लगना** =शृंगारिक क्षेत्र मे प्रेम या स्नेह का सबध होना।

३ आँख या दृष्टि की वह वृत्ति या स्थिति, जिसमे कोई विशिष्ट उद्देश्य, क्रिया या फल अभीष्ट या निहित हो। ४ अनुग्रह, कृपा, स्नेह आदि से युक्त दृष्टि या मनोवृत्ति।

मुहा०—(किसी की)दीठ पर चढ़ना =किसी का ऐसी स्थिति मे होना कि लोगो का ध्यान प्राय या बराबर उसकी ओर बना या लगा रहे। निगाह पर चढ़ना (देखें 'निगाह' का मुहा०)। **(किसी की ओर से) दीठ फेरना**=पहले का-सा ध्यान, भाव या सबध न रखना। आँखें फेरना। **(किसी के आगे या रास्ते में) दीठ बिछाना** =(क) अत्यत आदरपूर्वक स्वागत करना। (ख) बहुत उत्सुकता से प्रतीक्षा करना। **(किसी को)दीठ में समाना** =बहुत अच्छा लगने के कारण बराबर किसी

के ध्यान पर चढ़ा रहना। नजरो मे समाना। **(किसी की) दीठ से उतरना या गिरना**=ऐसी स्थिति मे आना कि पहले का-सा अनुराग या आदर न रह जाय।

५ अच्छी या सुदर चीज पर किसी की पड़नेवाली ऐसी दृष्टि, जिसका परिणाम या फल बहुत ही अनिष्टकारक या घातक सिद्ध हो। बुरा प्रभाव उत्पन्न करनेवाली दृष्टि। नजर। जैसे—इस बच्चे को तो उस बुढ़िया की दीठ खा गई। (स्त्रियाँ)

मुहा०—दीठ उतारना या झाड़ना=टोने-टोटके, मत्र-यत्र आदि के बल से किसी की उक्त प्रकार की दृष्टि या नजर का बुरा प्रभाव दूर या नष्ट करना। **दीठ जलाना**=टोना-टोटका करके कपड़े का टुकड़ा, राई नोन आदि इस उद्देश्य से जलाना कि बुरी दीठ या नजर का कुपरिणाम दूर या नष्ट हो जाय।

६ देख-भाल। देख-रेख। निगरानी। ७ गुण-दोष आदि समझने की योग्यता या शक्ति। परख। पहचान।

क्रि० प्र०—रखना।

विशेष—शेष मुहा० के लिए देखें 'आँख', 'नजर' और 'निगाह' के मुहा०।

दीठना* —अ० [हि० दीठ] दिखाई देना।

स० देखना।

दीठबंद—पु० = दीठबदी।

दीठबंदी—स्त्री० [हि० दीठ+स० बध] इद्र-जाल, टोने-टोटके आदि की वह माया जिसमे लोगों की दृष्टि इस प्रकार बाँध दी जाती अर्थात् प्रभावित कर दी जाती है कि उन्हे और का और या कुछ का कुछ दिखाई पड़ने लगे। नजर-बद।

दीठवत—वि० [हि० दीठ+वत (प्रत्य०)] १ जिसे दिखाई पड़ता हो। २ जिसे दिव्य-दृष्टि प्राप्त हो।

दीठि* —स्त्री०=दीठ।

दीत* —पु० [स० आदित्य] सूर्य। (डि०)

दीद—वि० [फा०] देखा हुआ।

स्त्री० देखने की क्रिया या भाव। दर्शन।

दीदबान—पु० [फा०] १ बदूक की नली पर का वह छोटा गोल टुकड़ा जिसकी सहायता से निशाना साधा जाता है। बदूक की मक्खी। २ भेदिया। ३ निगरानी करनेवाला व्यक्ति।

दीदा—पु० [फा० दीद] १ आँख का डेला। २ आँख। नेत्र।

क्रि० प्र०—फूटना।—मटकाना।

मुहा०—दीदे का पानी ढल जाना=बुरा काम करने मे लज्जा का अनुभव न होना। निर्लज्ज हो जाना। **दीदे-गोड़ों के आगे आना**=किसी किये हुए बुरे काम का बुरा फल मिलना। (स्त्रियो का शाप) जैसे—तू मेरे साथ जो-जो कर रही है, वह सब तेरे दीदे-गोडो के आगे आवेगा अर्थात् इसका बुरा फल तुझे इस रूप मे मिलेगा कि तू अधी और लूली-लँगडी हो जायगी या बहुत कष्ट भोगेगी। **(किसी की तरफ) दीदे निकालना**=क्रोध की दृष्टि से देखना। आँखें नीली-पीली करना। **दीदे पट्टम होना**=आँखो का फूट जाना। अधा हो जाना। (स्त्रियाँ) **दीदे फाड़कर देखना**=अच्छी तरह आँखे खोलकर अर्थात् ध्यानपूर्वक देखना।

२. दृष्टि। नजर। ३. कोई काम करने के समय ध्यानपूर्वक उसकी ओर जमनेवाली दृष्टि या लगनेवाली नजर।

मुहा०—(किसी काम मे) दीदा फोड़ना=दृष्टि जमाकर ऐसा बारीक काम करना जिससे आँखो को बहुत कष्ट हो। **(किसी काम में) दीदा लगना**=काम मे जी या ध्यान जमना। जैसे—तुम्हारा दीदा तो किसी काम मे लगता ही नही।

४ ऐसा अनुचित साहस जिसमे भय, लज्जा, सकोच आदि का कुछ भी ध्यान न रहे। ढिठाई। धृष्टता। जैसे—इस लड़की का दीदा तो देखो, किस तरह बढ़-बढ़कर बातें करती है। (स्त्रियाँ)

दीदा-धोई—स्त्री० [हि०] ऐसी स्त्री जिसकी आँखो मे शर्म न हो। बेशर्म। निर्लज्ज।

दीदाफटी—स्त्री०=दीदा-धोई।

दीदार—पु० [फा०] १ दर्शन। देखा-देखी। साक्षात्कार। (प्रिय या बड़े के सबध मे प्रयुक्त) २ छवि। सौंदर्य।

दीदारबाजी—स्त्री० [फा०] किसी प्रिय व्यक्ति से आँखें लड़ाना।

दीदारू—वि० [फा० दीदार] दर्शनीय। देखने योग्य।

दीदा व दानिस्ता—अव्य० [फा० दीद व दानिस्त] अच्छी तरह देखते हुए और जान-बूझ या सोच-समझकर।

दीदी—स्त्री० [हि० दादा=(बड़ा भाई) का स्त्री०] बड़ी बहिन को पुकारने का शब्द। ज्येष्ठ भगिनी के लिए सबोधन का शब्द।

दीधिति—स्त्री० [स०√दीधी (चमकना)+क्तिच्] १ सूर्य, चद्रमा आदि की किरण। २ उँगली।

दीन—वि० [स० √दी (क्षय होना)+क्त नत्व)] [भाव० दीनता] १ जो बहुत ही दयनीय तथा हीन दशा मे हो। २ गरीब। दरिद्र। ३ जो बहुत दुःखी या सतप्त हो। ४ जिसमे उत्साह, प्रसन्नता आदि का अभाव हो। उदास। खिन्न। ५ जो दुःख, भय आदि के कारण बहुत नम्र हो रहा हो।

पु० तगर का फूल।

पु० [अ०] धार्मिक मत या सप्रदाय। धर्म। मजहब।

पद—दीन-दुनिया=धार्मिक विश्वास के कारण मिलनेवाला परम पद और यह लोक या संसार। जैसे—दीन-दुनिया दोनों से गये (रहित हुए)।

मुहा०—दीन-दुनिया दोनो से जाना=न इस लोक के काम का रह जाना और न पर-लोक सुधार सकना।

दीन-इलाही—पु० [अ०] मुगल सम्राट् अकबर का चलाया हुआ एक धार्मिक सप्रदाय जो अधिक समय तक न चल सका था।

दीनक—वि० [स० दीन+क (स्वार्थे)] दीन।

दीनता—स्त्री० [स० दीन+तल—टाप्] १. दीन होने की अवस्था या भाव। २ कातरता। ३ उदासीनता। खिन्नता। ४ नम्रता। विनय।

दीनताई—स्त्री०=दीनता।

दीनत्व—पु० [स० दीन+त्व] दीनता।

दीनदयाल—वि०=दीनदयालु।

दीन-दयालु—वि० [स० स० त०] दीनो पर दया करनेवाला।

पु० ईश्वर। परमात्मा।

दीनदार—वि० [अ० दीन+फा० दार] [भाव० दीनदारी] जिसे अपने धर्म पर पूर्ण विश्वास हो, और जो उसके नियमों, शिक्षाओं आदि का ठीक तरह से पालन करता हो। धार्मिक। जैसे—दीनदार मुसलमान।

दीनदारी—स्त्री० [फा०] दीनदार होने की अवस्था या भाव। धार्मिकता।

दीनदुनी—स्त्री०=दीन-दुनिया (दे० 'दीन' के अन्तर्गत)।

दीन-बंधु—वि० [स० ष० त०] दीनो और दुखियो का सहायक। पु० ईश्वर। परमात्मा।

दीन-वास—पु० [स०] बहुत ही गरीबी मे या गरीबो की तरह रहकर दिन बिताना।

दीना—स्त्री० [स० दीन+टाप्] मूषिका। चुहिया।

दीनानाथ—पु० [स० दीन-नाथ ष० त० दीर्घ] १ वह जो दीनो का स्वामी या रक्षक हो। दुखियो का पालक और सहायक। २ ईश्वर। परमात्मा।

दीनार—पु० [स०√दी (क्षय करना)+आरक् (नुट्)] १. सोने का गहना। २ सोने का एक पुराना सिक्का जो ईरान मे प्रचलित था। ३. एक निष्क की तौल।

दीनारी—पु० [म० दीनार] लोहारो का ठप्पा।

दीपंकार—पु० [स०] बुद्ध के अवतारो मे से एक।

दीप—पु० [स०√दीप् (चमकना)+क] १ दीया। चिराग। २ दस मात्राओ का एक छद जिसके अत मे तीन लघु फिर एक गुरु और फिर एक लघु होता है।
†पु० =द्वीप (टापू)।

दीपक—वि० [स० √दीप्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० दीपिका] १ उजाला या प्रकाश करनेवाला। २ कीर्ति, यश आदि बढ़ानेवाला। जैसे—कुल-दीपक। ३ दीप्त करने अर्थात् पाचन-शक्ति बढ़ानेवाला। जैसे— अग्निदीपक औषध। ४ शरीर मे उमग, ओज, तेज आदि बढ़ानेवाला।
पु० [दीप+कन्] १ चिराग। दीया। २. साहित्य मे,एक प्रकार का अलकार जिसमे प्रस्तुत और अप्रस्तुत का एक ही धर्म कहा जाता है। अथवा बहुत सी क्रियाओ का एक ही कारक होता है। ३ सगीत मे, छः मुख्य रागो मे से एक। ४ सगीत मे एक प्रकार का ताल। ५. अजवायन, जो अग्नि-दीपक होती है। ६ केसर। ७ बाज नामक पक्षी। ८ मोर की चोटी या शिखा। ९ एक प्रकार की आतिशबाजी।

दीपक-माला—स्त्री० [ष० त०] १ एक प्रकार के वर्ण-वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण मे भगण, मगण, जगण और एक गुरु होता है। २ दीपक अलकार का एक भेद।

दीप-कलिका—स्त्री० [ष० त०] दीये की टेम। चिराग की लौ।

दीप-कली—स्त्री० [स० दीपकलिका] चिराग की टेम। दीपशिखा। दीए की लौ।

दीपक-वृक्ष—पु० [ष० त०] वह बडा दीवट जिसमे दीए रखने के लिए कई शाखाएँ इधर-उधर निकलती हों। झाड।

दीपक-सुत—पुं० [ष० त०] कज्जल। काजल।

दीप-काल—पुं० [मध्य स०] दीया जलाने का समय। सध्या।

दीपकावृत्ति—स्त्री० [दीपक-आवृत्ति] १. दीपक अलंकार का एक भेद। २. पनवाला।

दीप-किट्ट—पु० [ष० त०] कज्जल। काजल।

दीप-कूपी—स्त्री० [स० ष० त०] दीये की बत्ती।

दीपग*—पु०=दीपक।

दीपगर†—पु० [स० दीपगृह] दीयट।

दीपत†—स्त्री० [स० दीप्ति] १ चमक। दीप्ति। २ शोभायुक्त सौंदर्य। ३ कीर्ति। यश।

दीपता—वि० [स० दीप्ति] १ प्रकाशित। चमकीला। २ शोमित। ३. प्रसिद्ध।

दीपति—स्त्री०=दीप्ति (प्रकाश)।

दीप-दान—पु० [ष० त०] १ देवता के सामने दीपक जलाने का काम जो पूजन का एक अग है। २ कातिक मे राधा-दामोदर के उद्देश्य से बहुत से दीपक जलाने का कृत्य। ३ हिंदुओ मे एक रसम जिसमे मरणासन्न व्यक्ति के हाथ से जलते हुए दीपक का दान कराया जाता है।

दीपदानी—स्त्री० [स० दीप-आधान] पूजा के लिए घी, बत्ती आदि (दीपक जलाने की सामग्री) रखने की डिबिया।

दीप-ध्वज—पु० [ष० त०] काजल।

दीपन—पुं० [स० दीप् (प्रकाशित करना)+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० दीपनीय, दीपित, दीप्त, दीप्य] १ प्रकाश करने के लिए दीपक या और कोई चीज जलाना। २ जठराग्नि तीव्र और प्रज्वलित करना। पाचन-शक्ति बढ़ाना। ३ किसी प्रकार का मनोवेग उत्तेजित और तीव्र करना। उत्तेजन। ४ [√दीप्+णिच्+ल्यु—अन] एक सस्कार जो मत्र को जाग्रत और सक्रिय करने के लिए किया जाता है। ५. पारा शोधने के समय किया जानेवाला एक सस्कार। ६ तगर की जड या लकडी। ७ मयूरशिखा नाम की बूटी। ८ केसर। ९ प्याज। १० कसौधा। कासमर्द।
वि० १ अग्नि को प्रज्वलित करनेवाला। आग भडकानेवाला। २ जठराग्नि तीव्र करके पाचन-शक्ति बढ़ानेवाला।

दीपन-गण—पु० [ष० त०] जठराग्नि को तीव्र करनेवाले पदार्थों का एक गण या वर्ग। भूख लगानेवाली ओषधियों का वर्ग।

दीपना*—अ० [स० दीपन] प्रकाशित होना। चमकना। जगमगाना। स० तीव्र या प्रज्वलित करना।

दीपनी—स्त्री० [स० दीपन+ङीष्] १ मेथी। २ पाठा। ३ अजवायन।

दीपनीय—वि० [स०√दीप् (दीप्ति)+अनीयर्] १ जो दीपन के लिए उपयुक्त हो। जो जलाया या प्रज्वलित किया जा सके। २ जो उत्तेजित, तीव्र या प्रबल किये जाने के योग्य हो।

दीपनीयक—वि० [स०]=दीपन।

दीपनीय-वर्ग—पुं० [ष० त०] चक्रदत्त के अनुसार एक ओषधि वर्ग जिसके अतर्गत जठराग्नि तीव्र करनेवाली ये ओषधियाँ है—पिप्पली, पिप्पलामूल, चव्य, चीता और नागर।

दीप-पादप—पुं० [ष० त०] दीयट।

दीप-पुष्प—पुं० [ब० स०] चपक-वृक्ष। चपा।

दीप-माला—स्त्री० [ष० त०] १ जलते हुए दीपो की पक्ति। जगमगाते हुए दीयो की श्रेणी। २ आरती या दीपदान के लिए जलाई जानेवाली बत्तियो की पक्ति या समूह।

दीप-मालिका—स्त्री० [ष० त०] १ दीयों की पंक्ति। जलते हुए दीपों की श्रेणी। २ दीवाली का त्योहार जो कार्तिक की अमावास्या को होता है।

दीप-माली—स्त्री० [स० दीपमालिका] दीवाली।

दीपवती—स्त्री० [स० दीप+मतुप्-ङीप्] कालिका पुराण के अनुसार एक नदी जो कामाख्या मे है और जिसके पूर्व मे शृंगार नाम का प्रसिद्ध पर्वत है।

दीप-वृक्ष—पु० [ष० त०] दीअट।

दीप-शत्रु—पु० [ष० त०] पतग या फतिगा (जो दीपक को बुझा देता है)।

दीप-शिखा—स्त्री० [ष० त०] १ दीपक की लौ। टेम। २ दीपक से निकलनेवाला धूआँ।

दीप-सुत—पु० [ष० त०] कज्जल। काजल।

दीप-स्तंभ—पु० [ष० त०] १ वह आधार या स्तभ जिसके ऊपर रख-कर दीया जलाया जाता है। दीयट। २ समुद्र में जहाजो को रात के समय रास्ता दिखाने और उन्हे चट्टानो आदि से बचाने के लिए बना हुआ उक्त प्रकार का स्तभ जिसके ऊपरी भाग मे रात को बहुत तेज रोशनी होती है। (लाइट हाउस)

दीपांकुर—पु० [दीप-अकुर ष० त०] दीए की लौ।

दीपा—वि० [?] १ मद। धीमा। २ फीका।

दीपाग्नि—पु० [दीप-अग्नि ष० त०] १ दीये की लौ। २ उक्त की आँच या ताप।

दीपाधार—पु० [दीप-आधार ष० त०] वह आधार या स्तभ जिस पर रखकर दीये जलाये जायँ। दीयट।

दीपान्विता—स्त्री० [दीप-अन्विता तृ०त०] कार्तिक मास की अमावास्या। दीवाली की रात।

दीपाराधन—पु० [दीप-आराधन तृ० त०] दीप जलाकर तथा उन्हे किसी के सम्मुख घुमाते हुए आराधन करना। आरती करना।

दीपालि, दीपाली—स्त्री० [स० ष० त०] १ दीपमाला। २ दीपावली। दीवाली।

दीपावती—स्त्री० [स० दीप+मतुप्—ङीष् (दीर्घ)] एक रागिनी जो दीपक और सरस्वती रागो के योग से बनी है।

दीपावली—स्त्री० [दीप-आवली ष० त०] १ दीप-श्रेणी। दीयो की पंक्ति। २ दीवाली।

दीपिका—स्त्री० [स० दीप+क—टाप्, इत्व] १. छोटा दीया। २ [√दीप्+णिच्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] चाँदनी। ३ सध्या के समय गाई जानेवाली एक रागिनी जो हिंडोल राग की पत्नी कही गई है। ४ किसी कठिन ग्रथ का सरल आशय बतानेवाली टीका या पुस्तक।

वि० स्त्री० [हिं० दीपक का स्त्री०] समस्त पदो के अत मे, दीपन अर्थात् उजाला या प्रकाश करनेवाली।

दीपिका-तैल—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का आयुर्वेदोक्त तेल जो कान की पीडा दूर करता है।

दीपित—भू० कृ० [स०√दीप्+णिच्+क्त] १ दीप्त किया अर्थात् जलाया हुआ। २ दीपो से युक्त। ३ उजाले या प्रकाश से युक्त किया हुआ। प्रकाशित। प्रज्वलित। ४. चमकता या जगमगाता हुआ। ५. जिसे उत्तेजना दी गई हो या मिली हो। उत्तेजित।

दीपी (पिन्)—वि० [स०उत्तरपद मे] १ जलता हुआ। २ चमकता हुआ। ३ दीपन करनेवाला।

दीपोत्सव—पुं० [दीप-उत्सव, ष० त०] १ दीप जलाकर मनाया जाने-वाला उत्सव। २ दीवाली।

दीप्त—वि० [स०√दीप्+क्त] [स्त्री० दीप्ता] १ जलता हुआ। प्रज्वलित। २ चमकता या जगमगाता हुआ। प्रकाशित।

पु० १. सोना। स्वर्ण। २ हीग। ३ नीबू। ४ सिंह। शेर। ५. एक रोग जिसमे नाक मे जलन होती है तथा उसमे से गरम हवा निकलती है।

दीप्तक—पु० [स० दीप्त+क (स्वार्थे)] १ सोना। सुवर्ण। २. दे० 'दीप्त' (नाक का रोग)।

दीप्त-किरण—पुं० [ब० स०] १. सूर्य। २ आक। मदार।

दीप्त-कीर्ति—पु० [ब० स०] कार्तिकेय।

दीप्त-केतु—पु० [ब० स०] दक्ष सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम। (भागवत)

दीप्त-जिह्वा—स्त्री० [ब० स०] १ मादा गीदड। सियारिन। २ लाक्षणिक अर्थ मे, झगडालू स्त्री।

दीप्त-पिंगल—पु० [उपमि०स०] सिंह।

दीप्त-रस—पु० [ब० स०] केंचुआ।

दीप्त-रोमा (मन्)—पु० [ब० स०] एक विश्वदेव का नाम। (महाभारत)

दीप्त-लोचन—पु० [ब० स०]। बिल्ला।

दीप्त-लोह—पु० [कर्म० स०] काँसा।

दीप्त-वर्ण—वि० [ब० स०] चमकने या दमकते हुए वर्णवाला।

पु० कार्तिकेय।

दीप्त-शक्ति—पु० [ब० स०] कार्तिकेय।

दीप्तांग—वि० [दीप्त-अग ब० स०] जिसका शरीर चमकता हो।

पु० मोर पक्षी। मयूर।

दीप्तांशु—पु० [दीप्त-अशु ब० स०] १ सूर्य। २ आक। मदार।

दीप्ता—वि० स्त्री० [स० दीप्त+टाप्] चमकती हुई। प्रकाशमान। जैसे—सूर्य के प्रकाश से दीप्ता दिशा।

स्त्री० १ ज्योतिष्मती। मालकगनी। २ कलियारी। ३ सातला (थूहर)।

दीप्ताक्ष—वि० [दीप्त-अक्षि ब० स० (षच् समा०)] चमकती हुई आँखोवाला।

पु० बिल्ला। बिडाल।

दीप्ताग्नि—वि० [दीप्त-अग्नि ब० स०] १ जिसकी जठराग्नि बहुत तीव्र हो। जिसकी पाचन-शक्ति अत्यत प्रबल हो। २. जिसे बहुत भूख लगी हो। भूखा।

पु० अगस्त्य मुनि जो वातापि राक्षस को खाकर पचा गये थे और समुद्र का सारा जल पी गये।

स्त्री० प्रज्वलित अग्नि।

दीप्ति—स्त्री०[सं०√दीप्+क्तिन्] १. दीप्त होने की अवस्था या भाव। प्रकाश। उजाला। रोशनी। २ आभा। चमक। ३ छवि। शोभा।

४. योग में ज्ञान का प्रकाश जिससे हृदय का अंधकार दूर होता है। ५ लाक्षा। लाख। ६ काँसा। ७ धृहर। ८ एक विश्व-देव का नाम।

दीप्तिक—पुं० [सं० दीप्ति√कै (मालूम पड़ना)+क] शिरखोला। दुग्धपाषाण वृक्ष।

दीप्तिमान्(मत्)—वि० [सं० दीप्ति+मतुप्] [स्त्री० दीप्तिमती] १ दीप्तयुक्त। प्रकाशित। चमकता हुआ। २. कांति या शोभा से युक्त।

पुं० श्रीकृष्ण के एक पुत्र, जो सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

दीप्तोद—पुं० [दीप्त-उदक ब० स०, उद आदेश] एक प्राचीन तीर्थ-क्षेत्र जिसमें बहनेवाली बधूसर नामक नदी मे स्नान करके परशुराम ने अपना खोया हुआ तेज फिर से प्राप्त किया था। इसी क्षेत्र मे महर्षि भृगु ने भी कठोर तपस्या की थी।

दीप्तोपल—पुं० [सं० दीप्त-उपल कर्म० स०] सूर्यकांत मणि।

दीप्य—वि० [सं०दीप्+यत्] १ जो जलाया जाने को हो। प्रज्वलित किया जानेवाला। २ जो जलाकर प्रकाश से युक्त किया जा सके। ३ जठराग्नि अर्थात् भूख बढ़ानेवाला।

पुं० १ अजवायन। २ जीरा। ३ मयूर-शिखा। ४ रुद्र-जटा।

दीप्यक—पुं० [सं० दीप्य+कन्] १ अजवायन। २ अजमोदा। ३ मयूरशिखा। ४ रुद्रजटा।

दीप्यमान—वि० [सं०+दीप् (चमकना) +शानच् (यक्)] चमकता हुआ। दीप्त।

दीप्या—स्त्री० [सं० दीप्य+टाप्] पिंड खजूर।

दीप्र—वि० [सं०√दीप्+र] दीप्तिमान।

दीबाचा—पुं० [फा० दीबाच] ग्रंथ की भूमिका। प्रस्तावना।

दीबो†—पुं० [हिं० देना] देने की क्रिया या भाव। उदा०—दीनदयाल दीबो ई भावै जाचक सदा सोहाही।—तुलसी।

दीमक—स्त्री० [फा०] च्यूँटी की जाति का सफेद रंग का एक प्रसिद्ध छोटा कीड़ा जो समूहो मे रहता है और लकड़ी, कागज, पौधो आदि को खा जाता है।

दीयट—स्त्री० [सं० दीवस्थ, प्रा दीवट्ठ] पुरानी चाल का धातु, लकडी आदि का बना हुआ वह छोटा स्तम्भ या आधार जिस पर दीया रखकर जलाया जाता है।

दीयमान—वि० [सं० दा (देना)+शानच् (यक्)] जो दिया जाने को हो या दिये जाने के लिए हो।

दीया—पुं० [सं० दीपक, प्रा० दीअ] १ बत्ती तथा तेल अथवा घी से युक्त छोटा पात्र।

क्रि० प्र०—जलना।—जलाना।—बलना।—बालना।—बुझना।—बुझाना।

मुहा०—**दीया जलाना**=दीवाला निकालना (पहले जो लोग दीवाला निकालते थे वे अपनी कोठी या दूकान का टाट उलटकर उस पर एक चौमुखा दीया जलाकर रख देते थे और काम-धंधा बंद कर देते थे)। **दीया ठंढा करना**=दीया बुझाना। **(किसी के घर का) दीया ठंढा होना**=किसी के मरने के फल-स्वरूप उसके परिवार में अँधेरा छा जाना। **दीया दिखाना**=मार्ग में प्रकाश करने के लिए दीया सामने करना। **दीया बढ़ाना**=दीया बुझाना। **दीया बत्ती करना**=सध्या होने पर दीया जलाना। **दीया सँजोना**=दीया जलाकर प्रकाश करना। **दीये का हँसना**=दीये की बत्ती से फूल या गुल झड़ना। **दीये से फूल झड़ना**=दीये की जलती हुई बत्ती से चमकते हुए गोल पुचड़े या रवे निकलना। गुल झड़ना।

पद—**दीये बत्ती का समय**=सध्या का समय जब दीया जलाया जाता है।

२ [स्त्री० अल्पा० दियली] बत्ती जलाने का छोटी कटोरी के आकार का बरतन। वह बरतन जिसमे तेल भरकर जलाने के लिए बत्ती डाली जाती है। ३ उक्त प्रकार की कटोरी के आकार का मिट्टी का छोटा पात्र।

मुहा०—**दीये मे बत्ती पड़ना**=सध्या का समय होने पर दीया जलाया जाना।

दीया-सलाई—स्त्री० [हिं० दीया+सलाई] लकड़ी की वह छोटी सलाई या सीक जिसके एक सिरे पर लगा हुआ मसाला रगड़ने से जल उठता है। आग जलाने की सीक या सलाई।

दीरघ†—वि०=दीर्घ।

दीर्घ—वि० [सं०+दृ (विदारण)+घञ्] १ काल-मान, दूरी आदि के विचार से अधिक विस्तारवाला। अधिक अवकाश या समय मे व्याप्त। जैसे—दीर्घ काय, दीर्घ क्षेत्र। २ लबी अवधि या भोगकालवाला। जैसे—दीर्घ आयु, दीर्घ निद्रा, दीर्घ श्वास। ३. (अक्षर या वर्ण) जो दो मात्राओ का अर्थात् गुरु हो। जिसका उच्चारण अपेक्षया अधिक खीचकर किया जाता हो। 'ह्रस्व' का विपर्याय। जैसे—'इ' का दीर्घ 'ई' और 'उ' का दीर्घ 'ऊ' है।

पुं० १ ऊँट। २ ताड़ का पेड़। ३ लता शाल नामक वृक्ष। ४. रामशर। नरकट। ५ ज्योतिष मे, पाँचवी, छठी, सातवी और आठवी अर्थात् सिंह, कन्या, तुला और वृश्चिक राशियो की सज्ञा।

दीर्घ-कंटक—पुं० [ब० म०] बबूल का पेड़।

दीर्घ-कंठ—वि० [ब० स०] [स्त्री०दीर्घ कंठी, दीर्घकण्ठ+ङीप्] जिसकी गरदन लबी हो।

पुं० १. बगला पक्षी। २ एक राक्षस का नाम।

दीर्घ-कंद—पुं० [ब० स०] मूली।

दीर्घ-कंदिका—स्त्री० [ब० स०,कप्—टाप् (इत्व)] मुसली। ताल-मूली।

दीर्घ-कंधर—वि० [ब० स०] [स्त्री० दीर्घकंधरी] लबी गरदनवाला।

पुं० बगला पक्षी।

दीर्घ-कणा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] सफेद जीरा।

दीर्घ-कर्ण—वि० [ब० स०] बड़े-बड़े कानोवाला।

पुं० एक प्राचीन जाति का नाम।

दीर्घ-कांड—पुं० [ब० स०] १ गुडतृण। गोदला। २ पाताल गारुड़ी लता। ३. तिक्तागा।

दीर्घ-कांडा—स्त्री० [सं० दीर्घकांड+टाप्] दीर्घकांड। (दे०)

दीर्घ-काय—वि० [ब० स०] जिसकी काया अर्थात् शरीर दीर्घ या बहुत बड़ा हो। शारीरिक दृष्टि से बड़े डील-डौलवाला।

दीर्घ-कील—पुं० [ब० स०] दीर्घकीलक। (दे०)

दीर्घ-कीलक—पु० [स० दीर्घकील+कन्] अकोल का पेड़।

दीर्घ-कुल्या—स्त्री० [ब० स०, टाप्] गजपिप्पली।

दीर्घ-कूरक—पु० [कर्म० स०] आंध्र प्रदेश मे होनेवाला एक तरह का धान। रजान्न।

दीर्घ-केश—वि० [ब० स०] [स्त्री० दीर्घकेशी, दीर्घकेश+ङीप्] जिसके केश दीर्घ अर्थात् बडे या लबे हो।
पु० १ भालू। रीछ। २ बृहत्सहिता के अनुसार एक देश जो कूर्म विभाग के पश्चिमोत्तर मे है।

दीर्घ-कोशिका—स्त्री० [ब० स०, कप्—टाप् (इत्व)] शुक्ति नामक जल-जतु। सुतुही।

दीर्घ-गति—पु० [ब० स०] ऊँट।
वि० तेज या बहुत चलनेवाला।

दीर्घ-ग्रथिका—स्त्री० [ब० स०, कप्—टाप्] गजपिप्पली।

दीर्घ-ग्रीव—वि० [ब० स०] [स्त्री० दीर्घग्रीवी] जिसकी गरदन लबी हो।
पु० १ सारस पक्षी। २ बृहत्सहिता के अनुसार एक देश जो कूर्म विभाग के दक्षिण-पश्चिम मे है।

दीर्घ-घाटिक—वि० [स० दीर्घा—घाटा कर्म० स०,+ठन्—इक] लबी गरदनवाला।
पु० ऊँट।

दीर्घच्छद—वि० [ब० स०] जिसके लबे-लबे पत्ते हो।
पु० ईख। ऊख। गन्ना।

दीर्घ-जंगल—पु० [कर्म० स०] एक तरह की मछली। बडा झींगा।

दीर्घ-जघ—वि० [ब० स०] जिसकी टाँगे लबी हो।
पु० १. बगला पक्षी। २. ऊँट।

दीर्घ-जिह्व—वि० [ब० स०] जिसकी जीभ लबी हो।
पु० १ साँप। २ एक राक्षस का नाम।

दीर्घजिह्वा—स्त्री० [स० दीर्घ जिह्व+टाप्] १. विरोचन की पुत्री एक राक्षसी जिसे इद्र ने मारा था। २ कार्तिकेय की एक अनुचरी या मातृका।

दीर्घजीवी (विन्)—वि० [स० दीर्घ√जीव् (जीना)+णिनि] बहुत दिनो तक जीनेवाला। दीर्घ जीवनवाला।

दीर्घतपा (पस्)—वि० [ब०स०] जिसने बहुत दिनों तक तपस्या की हो।
पु० उतथ्य ऋषि के एक पुत्र का नाम।

दीर्घतरु—पु० [कर्म०स०] ताड का पेड।

दीर्घता—स्त्री० [स० दीर्घ+तल्–टाप्] दीर्घ होने की अवस्था, गुण या भाव। लबाई और चौडाई।

दीर्घ-तिमिषा—स्त्री० [तिमिषा, √तिम् (गीला होना)+किषन् (बा०) टाप् दीर्घ तिमिषा कर्म०स०] ककडी। कर्कटी।

दीर्घ-तुडा—वि० स्त्री० [ब० स०, टाप्] जिसका मुँह लबा हो।
स्त्री० छछूँदर।

दीर्घ-तृण—पु० [कर्म०स०] एक प्रकार की घास जिसके खाने से पशु निर्बल हो जाते हैं। पल्लिवाह तृण। ताम्रपर्णी।

दीर्घ-दड—पु० [कर्म०स०] दीर्घदडक। (दे०)

दीर्घदडक—पु० [स० दीर्घदण्ड+क (स्वार्थे)] १. अडी का पेड। रेंड़। २ ताड़।

दीर्घ-दडी—स्त्री० [स० दीर्घदण्ड+ङीष्] गोरख इमली।

दीर्घदर्शी (शिन्)—वि० [स० दीर्घ√दृश (देखना)+णिनि] [भाव० दीर्घदर्शिता] बहुत दूर तक की बातें सोचने-समझनेवाला। दूरदर्शी।
पु० १ भालू। २. गीध।

दीर्घ-द्रु—पु० [कर्म०स०] ताड का पेड।

दीर्घ-द्रुम—पु० [कर्म०स०] सेमल का पेड। शाल्मली।

दीर्घ-दृष्टि—वि० [ब०स०] १ जिसकी दृष्टि दूर तक जाय। २ दूर-दर्शी।
स्त्री० दूरदर्शिता।
पु० गिद्ध पक्षी।

दीर्घ-द्वार—पु० [ब०स०] विशाल देश के अतर्गत एक प्राचीन जनपद जो गडकी नदी के किनारे कहा गया है।

दीर्घ-नाद—वि० [ब०स०] जिससे जोर का या भारी शब्द निकलता हो।
पु० शख।

दीर्घ-नाल—पु० [ब० स०] १ रोहिस घास। २ गुड तृण। गादला। ३ यवनाल। ज्वार।

दीर्घ-निद्रा—स्त्री० [कर्म०स०] मृत्यु। मौत। मरण।

दीर्घ निःश्वास—पु० [कर्म०स०] चिता, दुःख, भय आदि के कारण लिया जानेवाला गहरा या लबा साँस।

दीर्घ-पक्ष—वि० [ब० स०] बडे-बडे परोवाला।
पु० कलिंग (पक्षी)।

दीर्घ-पत्र—वि० ब० स०] जिसके पत्ते बहुत लबे होते हो।
पु० १ हरिदर्भ जो कुश का एक भेद है। २ विष्णुकद। ३ लाल प्याज। ४ कुचला। ५ एक प्रकार की ईख या ऊख।

दीर्घ-पत्रक—पु० [स० दीर्घपत्र+कन्] १ लाल लहसुन। २ एरड। रेड़। ३ बेत। ४ समुद्र-फल। हिजल। ५ करील। टेटी। ६ जलमहुआ।

दीर्घपत्रा—स्त्री० [स० दीर्घपत्र+टाप्] १ केतकी। २ चित्रपर्णी। ३ जगली जामुन। ४ शालपर्णी।

दीर्घपत्रिका—स्त्री० [स० दीर्घपत्र+कन्–टाप् (इत्व)] १ सफेद बच। २. घीकुआँर। ३ शालपर्णी। मरिवन। ४ सफेद गदहपूरना। श्वेत पुनर्नवा।

दीर्घपत्री—स्त्री० [स० दीर्घपत्र+ङीष्] १ पलाशी लता। बौरिया पलाश। वह पलाश जो लता के रूप मे फैलता है। २ बडा चेच या चेना। (साग)

दीर्घ-पर्ण—वि० [ब० स०] लबे-लबे पत्तोंवाला।

दीर्घपर्णी—स्त्री० [स० दीर्घपर्ण+ङीष्] पिठवन। पृश्निपर्णी।

दीर्घ-पल्लव—वि० [ब०स०] बडे-बडे फूलोवाला।
पु० सन का पौधा।

दीर्घ-पाद—वि० [ब० स०] लबी टागोवाला।
पु० १. कक पक्षी। सफेद चील। २ सारस।

दीर्घ-पादप—पु० [कर्म० स०] १ ताड का पेड। २ सुपारी का पेड।

दीर्घ-पृष्ठ—पु० [ब० स०] सर्प। साँप।

दीर्घ-प्रज्ञ—वि० [ब०स०] दूरदर्शी।
पु० पुराणानुसार द्वापर के एक राजा जो असुर के अवतार कहे गये हैं।

दीर्घ-फल—पुं०[ब० स०] अमलतास।
दीर्घ-फलक—पु०[स० दीर्घफल+कन्] अगस्त का पेड़।
दीर्घफला—स्त्री० [स० दीर्घफल+टाप्] १ जतुका लता। पहाड़ी नाम की लता। २ लबे दाने का अगूर।
दीर्घ-फलिका—स्त्री०[ब० स०, कप्-टाप् (ह्रस्व)] १ कपिल द्राक्षा। लंबा अगूर। २ जतुका लता।
दीर्घ-बाली—स्त्री०[ब० स०, ङीष्] चमरी। सुरागाय।
दीर्घ-बाहु—वि०[ब० स०] जिसकी भुजा लबी हो।
पु० १ शिव का एक अनुचर। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दीर्घ-मारुत्—पु०[ब० स०] हाथी।
दीर्घ-मुख—वि०[ब० स०] बड़े मुँहवाला।
पु०१ हाथी। २ शिव के एक अनुचर का नाम।
दीर्घ-मूल—पु०[ब० स०] १ मोरट नाम की एक लता। २ लामज्जक तृण। ३ बिल्वातर नामक वृक्ष।
दीर्घ मूलक—पु०[ब० स०, कप्] मूलक। मूली।
दीर्घ-मूला—स्त्री०[स० दीर्घमूल+टाप्]१ शालिपर्णी। सरिवन। २ श्यामा लता। कालीसर।
दीर्घ-मूली—स्त्री०[स० दीर्घमूल+ङीप्] धमासा।
दीर्घयज्ञ—वि०[ब० स०] जिसने बहुत दिनो तक यज्ञ किया हो।
पु० अयोध्या के एक राजा जो पुराणानुसार द्वापर युग मे हुए थे।
दीर्घ-रत—वि० [ब० स०] अधिक समय तक मैथुन मे रत रहनेवाला।
पु० कुत्ता।
दीर्घ-रद—वि०[ब० स०] जिसके दाँत लबे और बाहर निकले हुए हो।
पु० सूअर। शूकर।
दीर्घ-रसन—पु०[ब० स०] सर्प। साँप।
दीर्घ-रागा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] हरिद्रा। हल्दी।
दीर्घ-रोमा (मन्)—पु०[ब० स०] १ भालू। २ शिव का एक अनुचर।
दीर्घ-रोहिषक—पु०[कर्म० स०+कन्] एक तरह का सुगधित तृण।
दीर्घ-लोचन—वि० [ब० स०] बड़ी आँखोवाला।
पु०१ शिव का एक अनुचर। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दीर्घ-वंश—पु० [कर्म० स०] नरसल। नरकट।
दीर्घ-वक्त्र—वि० [ब० स०] [स्त्री० दीर्घवक्त्रा, दीर्घवक्त्र-टाप्] लबे मुँहवाला।
पु० हाथी।
दीर्घवच्छिका—स्त्री०[स० दीर्घवत्√शीक् (सीचना)+क-टाप्, पृषो० सिद्धि] कुभीर। घड़ियाल।
दीर्घ-वल्ली—स्त्री०[कर्म० स०]१ बड़ा इद्रायन। महेद्रवारुणी। २. पाताल-गारुडी लता। छिरेटा। ३ पलाशी लता। बौरिया पलास।
दीर्घ-वृंत—पु०[ब०स०] १ श्योनाक वृक्ष। सोनापाठा। २. लताशाल।
दीर्घवृंता—स्त्री०[स० दीर्घवृत+टाप्] इद्रचिर्भिटी लता।
दीर्घवृंतिका—स्त्री०[सं० दीर्घ-वृत+कन्-टाप् (ह्रस्व)] एलापर्णी।
दीर्घ-शर—पु०[कर्म० स०] ज्वार।
दीर्घ-शाख—पु०[ब० स०] १ सन। २ शाल (वृक्ष)। साखू।
दीर्घ-शिंबिक—पुं० [ब० स०, कप् (ह्रस्वत्व)] एक तरह की राई। क्षव।
दीर्घ-शूक—पु०[ब० स०] एक तरह का धान।
दीर्घश्रवा (वस्)—पु० [ब० स०] एक ऋषिपुत्र जिन्होने अनावृष्टि होने पर वाणिज्य वृत्ति स्वीकार की थी। (ऋग्वेद)
दीर्घ-सत्र—वि०[ब०स०] जिसने बहुत दिनो तक यज्ञ किया हो।
पु० [कर्म० स०] १ जीवन भर किया जानेवाला अग्निहोत्र। २ एक प्रकार का यज्ञ। ३ एक प्राचीन तीर्थ।
दीर्घ-सुरत—वि०[ब० स०] बहुत देर तक रति करनेवाला।
पु० कुत्ता।
दीर्घ-सूक्ष्म—पु०[कर्म० स०] प्राणायाम का एक भेद।
दीर्घ-सूत्र—वि०[ब० स०] दीर्घसूत्री। (दे०)
दीर्घ-सूत्रता—स्त्री० [स० दीर्घसूत्र+तल्-टाप्] दीर्घसूत्र या दीर्घसूत्री होने की अवस्था, भाव या स्थिति।
दीर्घ-सूत्री (त्रिन्)—वि०[स० दीर्घ-सूत्र कर्म०स०,+इनि] [भाव० दीर्घ-सूत्रिता] (व्यक्ति) जो हर काम मे आवश्यकता से बहुत अधिक देर लगाता हो। बहुत धीरे-धीरे और देर मे काम करनेवाला।
दीर्घ-स्कध—पु०[ब० स०] ताड का पेड।
दीर्घ-स्वर—पु०[कर्म०स०] ऐसा स्वर जो साधारण से कुछ अधिक खीच-कर उच्चारित होता हो। दो मात्राओंवाला स्वर।
दीर्घा—स्त्री० [स० दीर्घ+टाप्]१ पिठवन। पृश्निपर्णी। २ पुरानी चाल की वह नाव जो ८८ हाथ लबी, ४४ हाथ चौडी और ४४ हाथ ऊँची होती थी। ३ आने-जाने के लिए कोई लबा और ऊपर से छाया हुआ मार्ग। ४ आज-कल किसी भवन के अदर कुछ ऊँचाई पर दर्शको आदि के बैठने के लिए बना हुआ स्थान। (गैलरी)
दीर्घाकार—वि०[दीर्घ-आकार, ब० स०] दीर्घ आकारवाला। लबा-चौड़ा।
दीर्घाध्वग—पु०[दीर्घ-अध्वग कर्म०स०]१ दूत। २ हरकारा।
दीर्घायु (स्)—वि०[दीर्घ-आयुस् ब० स०] दीर्घजीवी। चिरजीवी।
पु० १ मार्कंडेय ऋषि। २ जीवकवृक्ष। ३ सेमल का पेड। ४ कौआ।
दीर्घायुध—पु०[दीर्घ-आयुध कर्म० स०] १ कुभास्त्र। २ [ब० स०] सूअर। शूकर।
दीर्घायुष्य—वि०, पु० [दीर्घ-आयुष्य ब० स०]=दीर्घायु।
दीर्घालर्क—पु०[दीर्घ-अलर्क कर्म० स०] सफेद मदार।
दीर्घास्य—वि०[दीर्घ-आस्य] बड़े मुँहवाला।
पु० १ शिव का एक अनुचर। २ पुराणानुसार पश्चिमोत्तर दिशा का एक देश। ३ हाथी।
दीर्घाह (न्)—वि०[दीर्घ-अहन्] बड़े दिनवाला।
पु० १ बड़ा दिन। २ ग्रीष्मकाल।
दीर्घिका—स्त्री०[स० दीर्घ+कन्-टाप्, इत्व] १ छोटा जलाशय या तालाब। बावली। २ हिंगुपत्री। ३ एक प्रकार की पुरानी नाव जो ३२ हाथ लबी, ४ हाथ चौडी और ३$\frac{1}{5}$ हाथ ऊँची होती थी।
दीर्घीकरण—पु०[स० दीर्घ+च्वि √कृ+ल्युट्-अन] किसी वस्तु को पहले से अधिक दीर्घ करना। विस्तार बढाना। (एलागेशन)
दीर्घेर्वारु—पु०[दीर्घा-इर्वारु कर्म० स०] लबी ककडी। डॅगरी।
दीर्ण—वि०[स०√दृ (विदारण)+क्त] फटा हुआ। विदारित। दरका हुआ।
दीली—स्त्री० १.=दिल्ली। २ =दिली।

दीबँक—स्त्री० =दीमक।

दीवट†—स्त्री० =दीयट।

दीवला—पु०[हिं० दिवाला (प्रत्य०)][स्त्री० दिवली, दिल्ली] दीया।

दीवा—पु० =दीया।

पु० =धव (वृक्ष)।

दीवान—पु० [अ०] १ राजसभा। न्यायालय। कचहरी। २ मंत्री। वजीर। ३ अर्थ-मंत्री। ४ उर्दू मे किसी कवि या शायर की रचनाओ का संग्रह। जैसे—गालिब का दीवान।

दीवान-आम—पु०[अ०] १ ऐसा दरबार जिसमे राजा या बादशाह से सब लोग मिल सकते थे। आम दरबार। २ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार का दरबार लगता हो।

दीवान-खाना—पु० [फा० दीवानखान] १ बैठक। कमरा। २. बड़े-बड़े लोगों के बैठने का स्थान।

दीवान-खास—पु० [फा० + अ०] १ ऐसी सभा जिसमे राजा या बादशाह, मंत्रियो तथा चुने हुए प्रधान लोगो के साथ बैठता है। खास दरबार। २ वह स्थान जिसमे उक्त दरबार लगता हो।

दीवाना—वि० [फा० दीवान] [स्त्री० दीवानी] [भाव० दीवानापन] १ पागल। विक्षिप्त। २ जो किसी के प्रेम मे पागल रहता हो। ३ किसी काम मे तन्मय।

दीवानापन—पु० [फा० दीवाना + पन (प्रत्य०)] दीवाने होने की अवस्था या भाव।

दीवानी—स्त्री० [फा०] १ दीवान का पद। दीवान का ओहदा। वि० [फा०] १ दीवान-संबंधी। दीवान का। २ आर्थिक।

स्त्री० १ दीवान का कार्य और पद। २ न्याय का वह विभाग जिसमे केवल आर्थिक विवादो पर विचार होता है। ३ वह अदालत या कचहरी जिसमे उक्त प्रकार के विवादो का विचार होता है। वि० हिं० दीवाना का स्त्री० रूप।

दीवार—स्त्री० [फा०] १ मिट्टी, ईंटों, पत्थरो आदि की प्राय लंबी, सीधी और ऊँची रचना जो कोई स्थान घेरने के लिए खड़ी की जाती है। भीत। क्रि० प्र०—उठाना।—खड़ी करना।

२ उक्त रचना का कोई पक्ष या पहलू। जैसे—दीवार पर चूना करना। ३ कोई ऐसी रचना, जो सुरक्षा के लिए बनी या बनाई गई हो। जैसे—लोहे की दीवार। ४ किसी वस्तु का घेरा जो ऊपर उठा हो। जैसे—जूते, टोपी या थाली की दीवार।

दीवारगीर—स्त्री०[फा०] १ दीया, मोमबत्ती, लम्प आदि रखने का आधार जो दीवार मे जड़ा जाता है। २ उक्त प्रकार से जलनेवाला दीया, लम्प आदि। ३ दीवार पर टाँगा जानेवाला रंगीन विशेषत. छपा हुआ परदा।

दीवार-दंड—पु० [फा० दीवर + हिं० दंड] एक प्रकार की दंड नाम की कसरत जो दीवार पर हाथ रखकर की जाती है।

दीवाल†—स्त्री० =दीवार।

दीवाला†—पु० दिवाला।

दीवाली—स्त्री० [सं० दीपावली] १ कार्तिक की अमावास्या को होने-वाला वैश्यो का एक प्रसिद्ध त्योहार जिसमे संध्या के समय घर मे सब जगह बहुत से दीपक जलाये जाते और लक्ष्मी की पूजा की जाती है।

विशेष—(क) भगवान राम १४ वर्षों के बनवास के उपरांत कार्तिकी अमावास्या को अयोध्या लौटे थे, उन्ही के आगमन के उपलक्ष्य मे यह उत्सव आरंभ हुआ था। (ख) पुराणानुसार दीवाली वस्तुत वैश्यो का त्योहार है, परन्तु अब इसे सभी वर्णों के लोग मनाते हैं।

२ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसा शुभ अवसर या घड़ी जिसमे लोग खुशियाँ मनायें।

दीवि—पु० [सं० दे० दिवि] नीलकंठ (पक्षी)।

दीवी—स्त्री० [हिं० दीवा] दीयट। चिरागदान।

दीसना†—अ० [सं० दृश = देखना] दिखाई देना या पड़ना।

दीह†—पु० [सं० दिवस] दिन। दिवस। उदा०—त्रिणि दीह लगन वेला थाड़ा तै। —प्रिथीराज।

वि० = दीर्घ।

दुंका—पु० [सं० स्तोक] (अनाज का) छोटा कण। कन। दाना।

दुंगरी—स्त्री० [देश०] पुरानी चाल का एक तरह का मोटा कपड़ा।

दुंडुक—वि० [सं० दुडुभ√कै (मालूम होना) +क, पृषो० भलोप] १ व्यक्ति जो ईमानदार न हो। बेईमान। २ दुष्ट। ३ जालसाज।

दुंडुभ—पु० [सं०√द्रुड् (डूबना) +उभ, नुम्, रलोप] एक तरह का विषहीन सर्प। डुडुभ।

दुंद—पु० [सं० द्वंद्व] १ दो मनुष्यों के बीच होनेवाला झगड़ा या युद्ध। द्वंद्व। २ उत्पात। उपद्रव। ऊधम। ३ हो-हल्ला। शोर-गुल। क्रि० प्र० —मचना।—मचाना।

४ जोड़ा। युग्म।

†पु० =दुंदुभि (नगाड़ा)।

दुंदका—पु० [देश०] वह कोल्हू, जिसमे ऊख पेरी जाती है।

दुंदभ*—पु० [सं० द्वंद्व] मरणादि का क्लेश।

दुंदम—पु० [सं० दुंद√मण् (शब्द करना) +ड] एक तरह का नगाड़ा।

दुंदु—पु० [सं०] १ एक तरह का नगाड़ा। २ भगवान् कृष्ण के पिता वसुदेव का एक नाम।

पु०* = दुंदभ।

दुंदुभ—पु० [सं० दुंदु √भण् (शब्द) + ड] बड़ा नगाड़ा। धौंसा।

दुंदुभि—स्त्री० [सं० दुंदु√भा (शोभित होना) +कि] १ एक तरह का नगाड़ा। २ विष्णु। ३ कृष्ण। ४ वरुण। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६ पुराणानुसार क्रौंच द्वीप का एक विभाग। ७ जूए मे पासे का एक दाँव। ८ एक राक्षस जिसे बलि ने मारा था। ९ जहर। विष।

दुंदुभिक—पु० [सं०] एक तरह का विषैला कीड़ा।

दुंदुभि-स्वन—पु० [सं० ब० स०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की विष-चिकित्सा।

दुंदुभी—स्त्री० = दुंदुभि।

दुंदुमा—स्त्री० [सं०] दुंदुभि पर आघात लगने से होनेवाली ध्वनि।

दुंदुमार—पु० दे० 'धुंधुमार'।

दुंदुह—पु० [सं० डुडुभ] पानी में रहनेवाला साँप। डेंड़हा।

दुंबक—पु० [सं०] १ एक तरह का मेढा। दुंबा।

दुंबा—पु० [फा० दुंबाल] मेढ़ो की एक जाति जिनकी दुम चक्की की पाट की तरह गोल और भारी होती है। २. उक्त जाति का मेढा।

दुंबाल—पु० [फा० दुंबाल] १ चौड़ी पूँछ। २ नाव की पतवार। ३ जहाज या नाव का पिछला भाग।

दुंबुर—पु० [सं० उदुंबर] गूलर की जाति का एक पेड़ जिसकी टहनियों पर कुछ विशिष्ट कीड़े लाख बनाते हैं।

दुःकुंत†—पुं० = दुष्यंत।

दुःख—पु० [सं० √दुःख (क्लेश) +अच्] [भू० कृ० दुःखित, वि० दुःखी] १. मन में होनेवाली वह अप्रिय और अवांछित अनुभूति जो किसी प्रकार के अपकार, आघात, आपत्ति, दुर्घटना, दुष्कर्म, निराशा, व्याधि, हानि आदि के फलस्वरूप होती है। अनिष्ट, बुरी या विरोधी मानी जानेवाली बातों के कारण उत्पन्न होनेवाली मन की वह स्थिति जिससे आदमी छूटना या बचना चाहता है। 'सुख' का विपर्याय। (ग्रीफ, सारो)

विशेष—(क) शास्त्रों में 'दुःख' का विवेचन और स्वरूप-निर्धारण अनेक प्रकार से किया गया है, उसके कई प्रकार के वर्गीकरण किये गये हैं। और उसके निवारण के अलग-अलग उपाय बताये गये हैं। सांख्य ने उसे चित्त का धर्म माना है, पर न्याय और वैशेषिक ने उसे आत्मा का धर्म कहा है। योग के अनुसार वे सभी बातें दुःख हैं जो समाधि में बाधक होती है। गौतम बुद्ध ने तो जन्म से मृत्यु तक की सभी बातों को दुःख माना है, और उसे चार आर्य सत्यों में पहला स्थान दिया है। (ख) लौकिक दृष्टि से 'सुख' का अभाव या विनाश ही दुःख है और वह मानसिक तथा शारीरिक दोनों प्रकार का होता है। कारण या मूल के विचार से यह शास्त्रों में तीन प्रकार का कहा गया है—आधिदैविक, आधिभौतिक और आध्यात्मिक। (ग) आर्थी दृष्टि से इसके कष्ट, क्लेश, खेद, पीड़ा, विषाद, वेदना, व्यथा, शोक, संताप आदि ऐसे भेद-विभेद हैं, जो मुख्यतः अलग-अलग प्रकार की मानसिक या शारीरिक परिस्थितियों के सूचक हैं और जिनमें यह अनुभूति या मनःस्थिति कभी कुछ हलकी, कभी कुछ तेज और कभी बहुत तेज होती है।

क्रि० प्र०—देना।—पहुँचना।—पाना।—भोगना।—मिलना।—सहना।

मुहा०—**दुःख उठाना** = दुःख भोगना या सहना। **(किसी का) दुःख बँटाना** = दुःख, विपत्ति आदि के समय किसी की सहायता करके उसका दुःख कम करना। **दुःख भरना**=कष्ट या दुःख भोगना या सहना।

२. आपत्ति। विपत्ति। संकट। जैसे—इधर बरसों से उन पर बराबर दुःख पर दुःख आते रहे हैं। ३ बीमारी। रोग। (क्व०)

दुःखकर—वि० [सं० दुःख√कृ (करना) +ट] दुःखद। दुःखदायक।

दुःख-ग्राम—वि० [ब० स०] दुःखों से भरा हुआ।
पु० संसार।

दुःखजीवी (विन्)—वि० [सं० दुःख√जीव् (जीना) + णिनि] दुःखों में पलने तथा रहनेवाला।

दुःख-त्रय—पु० [सं० ष० त०] आधिभौतिक, आधिदैविक और आध्यात्मिक ये तीन प्रकार के दुःख।

दुःखद—वि० [सं० दुःख√दा (देना)+क] १. दुःख या कष्ट देनेवाला। २ जिसके कारण या फलस्वरूप मन को दुःख पहुँचे। जैसे—मृत्यु का दुःखद समाचार।

दुःख-दग्ध—वि० [तृ० त०] बहुत अधिक दुःखी।

दुःखदाता (तृ)—वि० [सं० ष० त०] दुःख पहुँचानेवाला (मनुष्य)।

दुःखदायक—वि० [ष० त०] १ =दुःखदायिन्। २. = दुःखद।

दुःखदायी (यिन्)—वि० [सं० दुःख√दा +णिनि] [स्त्री० दुःखदायिनी] १ (व्यक्ति) जो दूसरों को दुःख देता हो। २ दुःखद।

दुःखदोह्या—वि०, स्त्री० [तृ० त०] गाय या भैंस जिसे कठिनता से दूहा जा सके।

दुःख-निवह—वि० [ब० स०] दुःसह।

दुःख-प्रद—वि० [ष० त०] = दुःखद।

दुःख-बहुल—वि० [ब० स०] जिसमें बहुत अधिक दुःख (कष्ट या क्लेश) हो। दुःखमय।

दुःखमय—वि० [सं० दुःख+मयट्] बहुत अधिक दुःख या दुःखों से भरा हुआ। दुःखों से परिपूर्ण। जैसे—दुःखमय जगत।

दुःख-लभ्य—वि० [तृ० त०] १ जो दुःख या कष्ट से प्राप्त होता हो। २ जो कठिनता से मिले।

दुःख-लोक—पु० [ष० त०] संसार।

दुःख-वाद—पु० [सं० ष० त०] यह मत या सिद्धांत कि यह सारा संसार और इसमें का जीवन दुःखमय है। 'सुखवाद' का विपर्याय।

दुःखवादी (दिन्)—वि० [सं० दुःखवाद+इनि] दुःखवाद-संबंधी। दुःखवाद का।
पु० वह जो दुःखवाद का पोषक या समर्थक हो।

दुःख-सागर—पु० [ष० त०] संसार, जो दुःखों का घर माना गया है।

दुःख-साध्य—वि० [तृ० त०] (कार्य) जिसके साधन में अनेक प्रकार के दुःख सहने पड़े हों।

दुःखांत—वि० [दुःख-अंत ब० स०] जिसका अंत या अंतिम अंश दुःखद, दुःखमय या दुःखों से परिपूर्ण हो। जैसे—दुःखांत नाटक या कहानी।
पु० १ दुःख की समाप्ति। २ दुःख की पराकाष्ठा।

दुःखातीत—वि० [दुःख-अतीत द्वि० त०] दुःखों में जिसे मुक्ति मिली हो।

दुःखान्वित—वि० [दुःख-अन्वित तृ० त०] १ दुःखमय। २ बहुत अधिक दुःखी।

दुःखायतन—पु० [दुःख-आयतन ष० त०] दुःखसागर। संसार।

दुःखार्त—वि० [दुःख-आर्त तृ० त०] बहुत अधिक दुःखी।

दुःखित—भू० कृ० [सं० दुःख +इतच्] जिसे बहुत अधिक दुःख (कष्ट या क्लेश) हुआ हो।

दुःखी (खिन्)—वि० [सं० दुःख+इनि] १ जिसे दुःख मिला या पहुँचा हो। २ जिसके मन में किसी प्रकार का दुःख हो। (विशेष दे० 'दुःखी')

दुःशकुन—पु० [सं० प्रा० स०] बुरा शकुन।

दुःशला—स्त्री० [सं०] सिंधु देश के राजा जयद्रथ की पत्नी का नाम जो धृतराष्ट्र की पत्नी गांधारी के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

दुःशासन—वि० [सं० दुर्√शास् (शासन करना) +युच्-अन्] जिस पर शासन करना बहुत अधिक कठिन हो।
पुं० १ बुरा शासन। २ धृतराष्ट्र का एक पुत्र जो अपने बड़े भाई राजा दुर्योधन का मंत्री था। इसी ने द्रौपदी का वस्त्र खींचकर उसे नग्न करने का प्रयत्न किया था।

दुःशील—वि० [स० ब० स०] [भाव० दुःशीलता] दुष्ट या बुरे स्वभाव-वाला।

दुःशीलता—स्त्री० [स० दुःशील+तल्—टाप्] दुःशील होने की अवस्था या भाव। दुःस्वभाव।

दुःशोध—वि० [स० दुर्√शुध् (शुद्धि)+खल्] १ जिसका सुधार कठिन हो। २ (धातु) जिसका शोधन बहुत कठिन हो।

दुःश्रव—पु० [स० दुर्√श्रु (सुनना)+खल्] काव्य मे वह दोष जो उसमे कर्णकटु वर्णों के आने से होता है। श्रुतिकटु दोष।

दुःषम (स)—पु० [स० अव्य० स०] निंदा।

दुःषेध—वि० [स० दुर्√सिध् (गति)+खल्] जिसका निवारण कठिन हो।

दुःसंकल्प—वि० [स० ब० स०] बुरा विचार या सकल्प करनेवाला। पु० बुरा सकल्प।

दुःसंग—पु० [स० ब० स०] बुरी सगत या सोहबत। बुरा साथ। कुसग।

दुःसंधान—पु० [स० ब० स०] १ दुःसाध्य कार्य का साधन। २ केशव के अनुसार काव्य मे एक रस जो उस स्थल पर होता है जहाँ एक व्यक्ति तो अनुकूल होता है और दूसरा प्रतिकूल।

दुःसह—वि० [स० दुर्√सह (सहना)+खल्] जिसे सहन करना बहुत कठिन हो।

दुःसहा—स्त्री० [स० दुःसह+टाप्] नागदमनी। नागदौन।

दुःसाध—वि० =दुःसाध्य।

दुःसाधी (धिन्)—पु० [स० दुर्√साध् (सिद्ध करना)+णिच्+णिनि] द्वारपाल।

दुःसाध्य—वि० [स० सुप्सुपा समास] १ (कार्य) जिसका साधन या पूरा करना कठिन हो। जैसे—दुःसाध्य परिश्रम। २ जिसका उपाय या प्रतिकार करना बहुत कठिन हो। ३ (रोग) जिसका उपचार या चिकित्सा बहुत कठिनता से हो।

दुःसाहस—पु० [स० प्रा० स०] ऐसा साहस जो साधारणतः अनुचित हो या न किया जाने के योग्य हो।

दुःसाहसिक—वि० [स० दुःसाहस+ठन्—इक] १ (कार्य) जिसे करने का साहस करना अनुचित या निष्फल हो। जैसे—दुःसाहसिक कार्य। २ दे० 'दुःसाहसी'।

दुःसाहसी (सिन्)—वि० [स० दुःसाहस+इनि] दुःसाहस अर्थात् अनुचित साहस करनेवाला।

दुःस्थ—वि० [स० दुर्√स्था (ठहरना)+क] १ जिसकी स्थिति बुरी हो। दुर्दशाग्रस्त। २ दरिद्र। निर्धन। ३ मूर्ख।

दुःस्थिति—स्त्री० [स० प्रा० स०] बुरी अवस्था। दुरावस्था। दुर्दशा।

दुःस्पर्श—वि० [स० दुर्√स्पृश् (छूना)+खल्] जिसे छूना कठिन हो। २ जिसे पाना कठिन हो।

पु० १ केवाँच। कौछ। २ लता करज। ३ कटकारी। ४ आकाश-गगा।

दुःस्पर्शा—स्त्री० [स० दुःस्पर्श+टाप्] काँटेदार मकोय।

दुःस्फोट—पु० [स० दुर्√स्फुट (फूटना)+णिच्+अच्] प्राचीन काल का एक प्रकार का शस्त्र।

दुःस्वप्न—पु० [स० प्रा० स०] १. ऐसा स्वप्न जिसमे दुःखद घटनाएँ दिखलाई पड़ें। २ ऐसा स्वप्न जिसका परिणाम या फल बुरा हो।

दुःस्वभाव—वि० [स० ब० स०] बुरे स्वभाववाला। बद-मिजाज। पु० बुरा स्वभाव।

दुःस्वरनाम—पु० [स०] वह पाप कर्म जिसके उदय से प्राणियो के कंठ-स्वर कठोर और कर्कश होते है। (जैन)

दु—वि० [हिं० दो] दो का सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के आरभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—दुभाषिया, दुसूती।

दुअ—अव्य० [स० द्रुत] शीघ्र।

वि०=दो

दुअन—वि०, पु०=दुवन।

दुअन्नी—स्त्री० [हिं० दो+आना] पुराने दो आने अर्थात् ८ पैसों के मूल्य का एक छोटा सिक्का जो पहिले चाँदी का होता था, पर बाद मे निकल का बनने लगा था।

दुअरवा†—पु० =दुआर (द्वार)।

दुअरा—पुं० =द्वार।

दुअरिया†—स्त्री० =दुआरी (छोटा दरवाजा)।

दुआ—स्त्री० [अ०] १ किसी बडे अथवा ईश्वर मे की जानेवाली प्रार्थना। निवेदन। विनती। २ किसी के कल्याण या मगल के लिए ईश्वर से की जानेवाली प्रार्थना।

क्रि० प्र०—करना।—माँगना।

३ आशीर्वाद। असीस।

क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—(किसी की) दुआ लगना=आशीर्वाद फलीभूत होना।

पु० [हिं० दो] १ गले मे पहनने का एक गहना। २ दे० 'दूआ'।

दुआदस*—पु० =द्वादश।

दुआदसी†—स्त्री० =द्वादशी।

दुआब—†पु० =दुआबा।

दुआबा—पु० [फा० दोआब] १ दो नदियो के बीच का प्रदेश। २ गगा और यमुना के बीच का प्रदेश।

दुआर†—पु० [स्त्री० दुआरी] =द्वार।

दुआरा†—पु० =द्वार।

दुआरामती—स्त्री० [स० द्वारावती] द्वारिका। उदा०—देव सु आ दुआरामती।—प्रिथीराज।

दुआरी—स्त्री० [हिं० दुआर] छोटा दरवाजा।

दुआल—स्त्री० [फा०] १ चमडे का तसमा। २ रिकाब का तस्मा।

दुआला—पु० [देश०] लकडी का एक बेलन जो सुनहरी छपी हुई छोटों के छापो को बैठने के लिए उन पर फेरा जाता है।

दुआली—स्त्री० [फा० द्वाल=तसमा] खराद का तसमा। सान की बद्धी।

दुआह—पु० [हिं० दु+स० विवाह] १ पहली पत्नी के मरने के उपरात पुरुष का होनेवाला दूसरा विवाह। २ पहले पति के मरने पर स्त्री का होनेवाला दूसरा विवाह।

दुइ†—वि० =दो।

दुइज—स्त्री० =दूज (द्वितीया तिथि)।

दुई†—वि० [हिं० दु (दो)+ई (प्रत्य०)] १ दो। २. दोनों।

स्त्री० १. दो होने की अवस्था या भाव। २. अपने को ईश्वर से भिन्न समझने की अवस्था या भाव। द्वैत-भाव। †३ किसी को दूसरा या पराया समझकर उसी के अनुसार उससे व्यवहार करना। दुआयगी। भेद-भाव।

दुअ†—वि० = दोनो।

दुऔ†—वि० =दोनो।

दुकड़हा—वि० [हि० दुकड़ा + हा (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकड़ही] १ जिसका मूल्य दुकडे के बराबर हो, फलत बहुत ही तुच्छ और हीन। २. बहुत ही तुच्छ और हीन प्रकृतिवाला। कमीना। नीच।

दुकड़ा—पु० [स० द्विक +डा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० दुकडी] १. एक मे या एक साथ लगी हुई दो चीजों का जोड़ा। युग्म। जैसे—धोतियो का दुकडा, मोतियो की दुकडी। २ एक पैसे का चौथाई भाग।

दुकड़ी—स्त्री० [हि० दुकडा] १ एक साथ जुडी या मिली हुई दो चीजें। २ चारपाई की वह बुनावट जिसमे दो-दो रस्सियाँ एक साथ बुनी जाती हैं। ३ ऐसी गाडी या बग्घी जिसमें दो घोडे एक साथ जुतते हो। ४ घोडो का दोहरा साज। ५. दो कडियोवाली लगाम। ६. एक साथ दिये या लिये जानेवाले दो रुपए। (दलाल) ७ दे० 'दुक्की'।

दुकना—अ० [देश०] लुकना। छिपना।

दुकम—वि० [स० दुष्क्रम्य] १ जिस पर आक्रमण करना कठिन हो। २ जिसे पार करना या लाँघना कठिन हो।

दुकान—स्त्री० [फा०] १ वह कमरा या भवन जहाँ से किसी एक अथवा कई प्रकार की चीजें ग्राहको के हाथ प्राय फुटकर बेची जाती हैं। जैसे—घी की दुकान, मिठाई की दुकान। २. ऐसा स्थान जहाँ कोई व्यक्ति कुछ पारिश्रमिक प्राप्त करने के लिए दूसरो की सेवाएँ करता हो। जैसे—दरजी या हज्जाम की दुकान।

मुहा०—**दुकान करना या खोलना** = दुकान लेकर किसी चीज की बिक्री आरभ करना। दुकान खोलना। **दुकान चलना** = दुकान मे होनेवाले व्यवसाय की वृद्धि होना। **दुकान बढ़ाना** = दुकान मे बाहर रखा हुआ माल उठाकर अदर रखना और किवाडे बद करना। दुकान बद करना। **दुकान लगाना**—(क) दुकान का सामान फैलाकर यथास्थान बिक्री के लिए रखना। (ख) बहुत-सी चीजें चारो ओर फैलाकर रखना।

दुकानदार—पु० [फा०] १ वह जो दुकान करता हो। २ वह जो उस कमरे का स्वामी हो जिसमे कोई दुकान लगाये हो। ३ बहुत अधिक मोल-भाव करनेवाला व्यक्ति। (व्यग्य) ४ वह जिसने अपनी आय का साधन बनाने के लिए कोई ढोंग रच रखा हो। ५ चालाक व्यक्ति।

दुकानदारी—स्त्री० [फा०] १. दुकान लगाकर सौदा आदि बेचने का काम। २ ऐसा ढोंग जो केवल अपनी आय का साधन बनाने के लिए रचा जाय। ३ बहुत अधिक मोल-भाव करना।

दुकाना—स० [हि० दुकना] छिपाना। (बुदेल०)

दुकाल—पु० [स० दुष्काल] अकाल। दुर्भिक्ष।

क्रि० प्र०—पडना।

दुकुल्ली—स्त्री० [देश०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता है।

दुकूल—पु० [सं०√दु+ऊलच्, कुक्] १. सन या तीसी के रेशे का बना हुआ कपड़ा। क्षौम-वस्त्र। २. बढ़िया और महीन कपड़ा। ३. कपड़ा। वस्त्र। ४. स्त्रियो के पहनने की साडी। ५ बौद्धों के अनुसार एक प्राचीन मुनि।

दुकेला—वि० [हि० दुक्का+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० दुकेली] जिसके साथ कोई दूसरा भी हो। जो अकेला न हो, बल्कि किसी के साथ हो।

पद—**अकेला-दुकेला**। (दे०)

दुकेले—अव्य० [हि० दुकेला] किसी एक के साथ। दूसरे को साथ लिये हुए।

दुक्कड़—पु० [हि० दो+कूँड] १ तबले की तरह का एक बाजा, जो शहनाई के साथ बजाया जाता है। २ एक प्रकार का छोटा नगाडा जो एक डुगी के साथ रखकर बजाया जाता है। ३ दो बडी नावो का एक साथ जोड़ या बाँधकर बनाया हुआ बेडा।

दुक्कना—अ० [स० दोष] किसी को दोष देना। दोषी ठहराना।

दुक्का—वि० [सं० द्विक] [स्त्री० दुक्की] १ जिसके साथ कोई और भी हो। दुकेला। २ जो एक साथ दो हो। जोडा। युग्म।

पद—**इक्का-दुक्का**।

पु० ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ होती हैं। दुक्की।

दुक्की—स्त्री० [हि० दुक्का] ताश का वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ होती हैं। दुक्का।

दुखंडा—वि० [हि० दो+खड] १ जिसमे दो खड या विभाग हो। २ (घर या मकान) जिसमे ऊपर एक और खड या तल्ला भी हो। दो मरातिबवाला।

दुखंत*—पु० = दुष्यत।

वि० =दु खांत

दुख—पु० [सं० दु ख] १ दु ख। (दे०)

क्रि० प्र०—देना।—पहुँचाना।—पाना।— भोगना।—मिलना।

मुहा०—**दुख उठाना** = कष्ट या तकलीफ भोगना या सहना। ऐसी स्थिति मे पडना जिसमे सुख या शाति न हो। **दुख बँटाना** = किसी के कष्ट या सकट के समय उसका साथ देना। **दुख भरना** = कष्ट या सकट के दिन जैसे-तैसे बिताना।

२ आपत्ति। विपत्ति। सकट।

मुहा०—**(किसी पर) दुख पड़ना** आपत्ति आना। सकट उपस्थित होना।

३ मानसिक कष्ट। खेद। रज। जैसे—उन्हे लड़के के मरने का बहुत दुख है।

मुहा०—**दुख मानना** = खिन्न या सतप्त होना। दु खी होना।

४ पीडा। व्यथा। दर्द। ५ बीमारी। रोग।

मुहा०—**दुख लगना** = ऐसा रोग होना जो बहुत दिनों तक कष्ट देता रहे।

दुखड़ा—पु० [हि० दुख+डा (प्रत्य०)] १ ऐसी विस्तृत बाते जिनमे अपने कष्टो, दु खो, विपत्तियो आदि का उल्लेख या चर्चा हो। तकलीफो का हाल।

मुहा०—**(अपना) दुखड़ा रोना** = अपने दु ख का वृत्तात दीन भाव से कहना। अपने कष्टो का हाल सुनाना।

२. कष्ट। तकलीफ। विपत्ति।

क्रि० प्र०—पड़ना।

मुहा०—दुखड़ा पीटना या भरना=बहुत कष्ट से जीवन बिताना।

दुखद—वि० = दुःखद।

दुखदाई†—वि० = दुःखदायी।

दुखदानि*—वि० स्त्री० [सं० दुःखदायिनी] दुःख देनेवाली। तकलीफ पहुँचानेवाली। उदा०—यह मुनि गुरु बानी धनु गुन तानी जानी द्विज दुखदानि।—केशव।

दुखदायक—वि० १ = दुःखद। २ = दुःखदाता।

दुख-दुंद—पु० [सं० दुःखद्वंद्व] अनेक प्रकार के दुःख, कष्ट और विपत्तियाँ।

दुखना—अ० [सं० दुःख] १ (किसी अंग का) पीड़ित होना। दर्द करना। पीड़ा युक्त होना। जैसे—आँखें या सिर दुखना। २ किसी पीड़ित अंग या व्रण पर आघात आदि लगने से उसकी पीड़ा बढ़ना। जैसे—घाव या फोड़ा दुखना।

दुखरा†—पु० = दुखड़ा।

दुखवना†—स० = दुखाना।

दुखहाया†—वि० [हिं० दुख + हाया (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखहाई] दुःख से भरा हुआ। परम दुःखी।

दुखांत—वि० = दुःखांत।

दुखाना—स० [सं० दुःख] १ कष्ट या पीड़ा पहुँचाना। दुःखित या व्यथित करना। जैसे—किसी का जी या मन दुखाना। २ किसी के पीड़ित अंग पर कोई ऐसी क्रिया करना जिससे उसकी पीड़ा फिर से बढ़े। जैसे—किसी का घाव या फोड़ा दुखाना।

† अ० = दुखना।

दुखारा—वि० [हिं० दुख+आर (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखारी] दुःखी। पीड़ित।

दुखारो†—वि० = दुखारा।

दुखित—वि० = दुःखित।

दुखिनी—वि० स्त्री० हिं० 'दुखिया' का स्त्री०।

दुखिया—वि० [हिं० दुख+इया (प्रत्य०)] [स्त्री० दुखिनी] १ जो दुःख या कष्ट में पड़ा हो। जिसे किसी प्रकार की व्यथा हो। २ जिसके मन में बराबर किसी तरह का दुःख बना रहता हो। ३ बीमार। रोगी।

दुखियारा—वि० = दुखिया।

दुखी—वि० [सं० दुःखिन] [स्त्री० दुखिनी] १ जिसे बहुत दुःख हुआ हो। २ जिसे बहुत अधिक मानसिक या शारीरिक कष्ट पहुँचा हो। ३ जो अधिकतर या सदा कष्टों में रहता हो। दीनहीन। ४ बीमार। रोगी।

दुखीला—वि० [हिं० दुख+ईला (प्रत्य०)] १ दुःख से युक्त। दुःखी। २ मन में दुःख का अनुभव करनेवाला।

दुखौहाँ†—वि० [हिं० दुख+औहाँ] [स्त्री० दुखौही] १ दुःख देनेवाला। दुःखदायी। २ मन में बराबर दुःखी बना रहनेवाला।

दुगछा†—स्त्री० [सं० दु + कांक्षा ?] ग्लानि।

दुग†—स्त्री० = धुक।

वि० = दो।

दुगई†—स्त्री० [देश०] घर के आगे का ओसारा। दालान या बरामदा। (बुदे०)

दुगदा†—वि० दुर्गम।

दुगदुगी—स्त्री० [अनु० धुक धुक] १ मनुष्य के शरीर में गरदन के नीचे और छाती के ऊपर बीचो-बीच में होनेवाला छोटा गड्ढा।

मुहा०—दुगदुगी में दम होना=प्राण का कंठगत होना। मरणासन्न होना।

२ गले में पहनने का धुकधुकी नाम का गहना। ३ दे० 'धुकधुकी'।

दुगध*—पु० = दुग्ध (दूध)।

दुगध-नदीस—पु० = क्षीर-सागर।

दुगधा†—स्त्री० = दुविधा।

दुगन—वि० = दूना।

दुगना—वि० [सं० द्विगुण] [स्त्री० दुगनी] = दूना।

† अ० [?] छिपाना।

दुगाड़ा—पु० [दो+गाड = गड्ढा] १ दुनाली बंदूक। दोनली बंदूक। २ दोहरी गोली।

दुगाना—वि० उभय०[फा० दोगान] जो दो एक में मिले हों। जुड़वाँ। युग्म। जैसे—दुगाना केला = ऐसा केला जिसमें दो फलियाँ एक साथ जुड़ी हों। दुगाना सिंघाड़ा = एक में जुड़े हुए दो सिंघाड़े।

स्त्री० १ मुसलमान स्त्रियों में एक विशिष्ट प्रकार का सहेलियों का-सा संबंध जो प्रायः बहुत आत्मीयता या घनिष्ठता का सूचक होता है। **विशेष**—यह संबंध इस प्रकार स्थापित होता था कि एक स्त्री भुलावा देकर अपनी सखी को कोई दुगाना चीज या फल देती थी। यदि वह चीज या फल लेने के समय। वह सखी कह देती — 'याद है' तब तो ठीक था। पर यदि वह 'याद है' कहना भूल जाती, तब चीज या फल देनेवाली स्त्री कहती —'फरामोश' अर्थात् तुम 'याद है' कहना भूल गई। उस दशा में फल या चीज देनेवाली स्त्री को वही चीज या फल गिनती में दो सौ गुनी या दो हजार गुनी देनी पड़ती थी जो संबंधियों और सहेलियों में बाँटी जाती थी और इस प्रकार दोनों में दुगाना का संबंध स्थापित होता था।

२ उक्त प्रकार का संबंध स्थापित हो जाने पर परस्पर किया जानेवाला संबोधन। ३ वे दो सखियाँ या सहेलियाँ जो आपस में अप्राकृतिक मैथुन करती अर्थात् भग-संघर्षण करती या चपटी लड़ाती हों।

† पु० = दोगाना।

दुगासरा—पु० [सं० दुर्ग+आश्रय] वह गाँव जो किसी दुर्ग के नीचे या पास हो और इसी लिए उसके आसरे या रक्षा में हो।

दुगुण†—वि० = द्विगुण।

दुगुन†—वि० = दुगना।

दुगून—वि० [सं० द्विगुण] दो-गुना। दूना।

स्त्री० गाने-बजाने में वह बढ़ी हुई लय जो आरंभिक लय से दूनी गतिवाली होती है और जिसमें आरंभिक लय में लगनेवाले समय से अपेक्षया लगभग आधा समय लगता है। गाने-बजाने की आरंभिक गति में कुछ और आगे बढ़ी हुई या तेज गति।

विशेष—यही गति और आगे बढ़ने या तीव्र होने पर क्रमात्, तिगून और चौगून कहलाती है।

दुगूल—पु० = दुकूल।

दुग्ग*—पु० = दुर्ग।

दुग्गम*—वि० = दुर्गम।

दुग्ध—वि० [सं० √ दुह् (दुहना)+क्त] १ दूहा हुआ। २ भरा हुआ। पु० १ दूध। २ कुछ विशिष्ट पौधों, वृक्षों आदि में से निकलनेवाला दूध जैसा सफेद तथा लसीला पदार्थ। (दे० 'दूध')

दुग्ध-कल्प—पु० [ष० त०] वैद्यक में, एक प्रकार की चिकित्सा जिसमें रोगी को केवल दूध पिलाकर नीरोग किया जाता है।

दुग्ध-कूपिका—स्त्री० [सं० दुग्ध-कूप ष० त०, + ठन्—इक, टाप्] एक प्रकार का पकवान जो पिसे हुए चावल और दूध के छेने से बनता था।

दुग्ध-तालीय—पु० [सं० दुग्ध-ताल ष० त०, छ-ईय] १ दूध का फेन। झाग। २ मलाई।

दुग्ध-पाषाण—पु० [ब० स०] एक प्रकार का वृक्ष जिसे बगाल की ओर शिरगोला कहते हैं।

दुग्ध-पुच्छी—स्त्री० [ब० स० ङीष्] एक प्रकार का वृक्ष।

दुग्ध-फेन—पु० [ष० त०] १ दूध का फेन। झाग। २ [ब० स०] क्षीर हिंडीर नाम का पौधा।

दुग्ध-फेनी—पु० [ब० स० ङीष्] एक प्रकार का छोटा पौधा। पयस्विनी। जाय।
स्त्री० दूध मे भिगोई हुई फेनी।

दुग्ध-बीजा—स्त्री० [ब० स० टाप्] ज्वार।

दुग्ध-मापक—पु० [ष० त०] शीशे की वह नली जिसमे भरे हुए पारे के उतार-चढ़ाव मे पता चलता है कि दूध मे पानी की कितनी मिलावट है। (लैक्टोमीटर)

दुग्ध-शर्करा—स्त्री० [ष० त०] दूध मे से चूर्ण के रूप मे निकाला हुआ उसका मीठा सार भाग। (मिल्क-शुगर)

दुग्धशाला—स्त्री० [सं०] वह स्थान जहाँ गौएँ आदि रखकर बेचने के लिए दूध आदि तैयार किया जाता है।

दुग्ध-समुद्र—पु० [ष० त०] पुराणानुसार सात समुद्रों मे से एक। क्षीर-सागर।

दुग्धाक—पु० [दुग्ध-अक ब० स०] एक तरह का पत्थर जिस पर दूध के रंग के सफेद छींटे चिह्न होते हैं।

दुग्धाक्ष—पु० [दुग्ध-अक्ष ब० स०] एक तरह का सफेद छींटोंवाला नग।

दुग्धाग्र—पु० [दुग्ध-अग्र ष० त०] मलाई।

दुग्धाब्धि—पु० [दुग्ध-अब्धि ष० त०] क्षीर समुद्र।

दुग्धाब्धि-तनया—स्त्री० [ष० त०] लक्ष्मी।

दुग्धाश्मा (श्मन्)—पु० [दुग्ध-अश्मन् ब० स०] शिरगोला (वृक्ष)।

दुग्धिका—स्त्री० [सं० दुग्ध+उन्—इक, टाप्] १ दुद्धी नाम की घास या जड़ी। २. गंधिका नाम की घास।

दुग्धिनिका—स्त्री० [सं०] लाल चिचड़ा। रक्तापामार्ग।

दुग्धी (ग्धिन्)—वि० [सं० दुग्ध+इनि] जिसमे दूध हो। दूध से युक्त। पु० क्षीर वृक्ष।
स्त्री० [दुग्ध+अच्+ङीष्] दुद्धी नाम की घास या जड़ी। दुधिया।

दुग्धोद्योग—पु० [दुग्ध-उद्योग, ष० त०] दूध या उससे विभिन्न पदार्थ (मक्खन, घी आदि) तैयार करने का उद्योग।

दुघ—वि० [सं०] १ दुहनेवाला। २. देनेवाला। (प्राय समासांत मे)

दुघड़िया—वि० [हिं० दो-घड़ी] दो घड़ियों का। दो घड़िया। जैसे—दुघड़िया मुहूर्त।

दुघड़िया मुहूर्त—पु० [हिं० दो घड़ी+सं० मुहूर्त] दो घड़ियों का ऐसा मुहूर्त जो विशेष आवश्यकता पड़ने पर तत्काल काम चलाने के लिए निकाला जाता है। द्विघटिका मुहूर्त।
क्रि० प्र०—देखना।—निकालना।

दुघरी—स्त्री० = दुघड़िया मुहूर्त।

दुचंद—वि० [फा०] दूना। दुगना।

दुचल्ला—पु० [हिं० दो +चाल] ऐसी छत जिसके दोनों ओर ढाल हो।

दुचित—वि० [हिं० दो+सं० चित्त] १ जिसका चित्त दो बातों मे लगा हुआ हो। जो असमजस या दुबिधा मे पड़ा हो। २ सदेह मे पड़ा हुआ।

दुचितई—स्त्री० = दुचिताई।

दुचिताई—स्त्री० [हिं० दुचित] १ दुचित्ते होने की अवस्था या भाव। २ चित्त की अस्थिरता। असमजस। दुबिधा। ३ सदेह।

दुचित्ता—वि० [हिं० दो+चित्त] [स्त्री० भाव० दुचित्ती] १ जिसका चित्त या मन किसी एक बात पर स्थिर न हो। जो असमजस या दुबिधा मे पड़ा हो। २ आशका या खटके के कारण जिसका मन शात या स्थिर न हो। ३ दो कठिनाइयाँ सामने होने पर जो कभी एक ओर और कभी दूसरी ओर ध्यान देता हो।

दुचित्ती—स्त्री० [हिं० दुचित्ता] दुचित्ते होने की अवस्था या भाव।

दुच्छक—पु० [सं० दु (ताप) +क्विप्, तुक्, दुत्√शक् (सकना)+अच्] कपूरकचरी।

दुछण—पु० [सं० द्वेषण= शत्रु] सिंह। (डिं०)

दुज†—पु० = द्विज। (दुज के यौगिक शब्दों लिए दे० 'द्विज' के यौ०)

दुजड़—स्त्री० [देश०] [स्त्री० अल्पा० दुजड़ी] तलवार। (डिं०)

दुजड़ी—स्त्री० [देश०] कटारी। (डिं०)

दुजन्मा†—पु० = द्विजन्मा।

दुजानू—क्रि० वि० [फा० दुजानू] दोनों घुटनों के बल।

दुजायगी—स्त्री० [हिं० दो+फा० जायगाह ?] १ जिनके साथ आपस-दारी का व्यवहार रहा हो, उनके साथ किया जानेवाला परायेपन का व्यवहार। २ जिनके प्रति समान व्यवहार करना आवश्यक या उचित हो उनमे से किसी एक के साथ किया जानेवाला भेद-भाव।

दुजिह्व—वि०, पु० = द्विजिह्व।

दुजीह†—पु० = द्विजिह्व।

दुजेश†—पु० = द्विजेश।

दुज्ज†—पु० = द्विज।

दुज्जन†—वि० = दुर्जन।

दुझारना*—स० [हिं० झाड़ना] झटकारना। झाड़ना।

दुटूक—वि० [हिं० दो+टूक] दो टुकड़ो मे किया या तोड़ा हुआ।
पद—दुटूक बात—थोड़े मे कही हुई ऐसी बात जिसमे साफ-साफ यह बतलाया गया हो कि हम या तो यह काम या बात करेंगे अथवा वह काम या बात करेंगे। (प्रश्न, विवाद आदि के प्रसग मे)

दुड़ि—स्त्री० [सं०] दुलि। कच्छपी।
†स्त्री० = दुक्की (ताश की)।

दुड़ियंद—पु० [?] सूर्य। (डिं०)

दुड़ी†—स्त्री० = दुक्की (ताश की)।

दुत—अव्य० [अनु०] एक शब्द जो उपेक्षा, तिरस्कार या निरादर-पूर्वक दूर करने या हटाने के समय कहा जाता है। दुतकारने का शब्द।
†स्त्री० = द्युति। उदा०—गुण भूषण भुरजालरो, जस मैं दुत जागत।—बाँकीदास।

दुतकार—स्त्री० [अनु० दुत+कार] १ दुतकारने की क्रिया या भाव। २ वह बात जो किसी को उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक 'दुत' कहते हुए दूर करने या हटाने के लिए कही जाय।
क्रि० प्र०—बताना।

दुतकारना—स० [हिं० दुतकार] १ उपेक्षा या तिरस्कारपूर्वक दुत् दुत् शब्द करके किसी को अपने पास से अलग या दूर करना। बुरी तरह से अपमानित करके दूर हटाना। २ तिरस्कृत करना।

दुतर†—वि० = दुस्तर।

दुतरणि—वि० [सं० दुस्तरण] १ कठिन। २ दुःखदायक। (राज०)

दुतरफा—वि० [फा० दुतर्फ] [स्त्री० दुतरफी] जो दोनो ओर हो। इधर भी और उधर भी होने या रहनेवाला। जैसे—कपडे की दुतरफा छपाई। २ (आचरण या व्यवहार) जो निश्चित रूप से किसी एक ओर न हो, बल्कि आवश्यकतानुसार दोनो तरफ माना या लगाया जा सकता हो। जैसे—दुतरफा काट या चाल।

दुताबी—स्त्री० [हिं० दो+फा० ताब] पुरानी चाल की एक तरह की दुधारी तलवार।

दुतारा—पु० [हिं० दो+तार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा जिसमे दो तार लगे होते हैं और जो तर्जनी उँगली से बजाया जाता है।

दुति†—स्त्री० = द्युति।

दुतिमान—वि० = द्युतिमान्।

दुतिय†—वि० = द्वितीय।

दुतिया—वि० = द्वितीय।
स्त्री० = द्वितीया।

दुतिवंत*—वि० [हिं० दुति+वत (प्रत्य०)] १ आभायुक्त। चमकीला। प्रकाशमान्। २ शोभायुक्त। सुदर।

दुती†—वि० = द्वितीय।
स्त्री० = द्युति (चमक)।

दुतीय†—वि० = द्वितीय।

दुतीया†—वि० = द्वितीय।
स्त्री० = द्वितीया।

दुत्तर†—वि० = दुस्तर।

दुथन—स्त्री० [?] पत्नी। जोरू। (कुमाऊँ)

दुथरी—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली।

दुदल—वि० [सं० द्विदल] फूटने या टूटने पर जिसके दो बराबर दल या खड हो जायँ। द्विदल।
पु० १ एक प्रकार का पहाडी पौधा जिसे कान-फूल और बरन भी कहते हैं। २. दे० 'दाल'।

दुदलाना†—स० [अनु०] दुतकारना।

दुदहँड़ी†—स्त्री० = दुधहँडी।

दुदामी—स्त्री० [हिं० दो+दाम] पुरानी चाल का एक तरह का सूती कपडा। (मालवा)

दुदिला—वि० [हिं० दो+फा० दिल] १ असमजस या दुविधा में पडा हुआ। २ जिसका मन कभी एक ओर कभी दूसरी ओर होता हो। दुचित्ता। ३ चिंतित और व्यग्र।

दुदुकारना†—स० = दुतकारना।

दुद्धी—स्त्री० [सं० दुग्धी] १ एक प्रकार की घास जिसके डठलो मे थोडी थोडी दूर पर गाँठे होती हैं और जिनके दोनो ओर एक-एक पत्ती होती है। २ थूहर की जाति का एक छोटा पौधा जो भारतवर्ष के सब गरम प्रदेशो मे होता है। इसका दूध दमे या श्वास के रोग मे दिया जाता है। ३. सारिवा नाम की लता। ४ जगली नील। ५ एक प्रकार का बडा पेड जो मध्य प्रदेश और राजस्थान मे होता है।
स्त्री० [हिं० दूध] १ दूधिया नाम की मिट्टी। खडिया। २. एक प्रकार का धान।

दुद्रुम—पु० [सं० दुर्-द्रुम प्रा० स, पृषो० रलोप] प्याज का हरा पौधा।

दुध—पु० [हिं० दूध] १ 'दूध' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—दुध-मुँहाँ, दुध-हँडी।
†२ दूध। (पश्चिम)

दुध-कट्टू—वि० [हिं० दूध+काटना] वह शिशु जिसकी माँ को दूसरी सतान हो गई हो और इस कारण या अन्य कारण से जो माँ का दूध उचित अवधि तक न पी सका हो।

दुध-पिठवा—पु० [सं० दुग्ध, हिं० दूध+सं० पिष्टक, हिं० पीठा] एक प्रकार का पकवान जो गुंधे हुए मैदे की लबी-लबी बत्तियो को दूध मे उबाल कर बनाया जाता है।

दुधमुख—वि० = दुध-मुहाँ।

दुध-मुँहाँ—वि० [हिं० दूध+मुँह] (शिशु) जो अभी तक अपनी माँ का दूध पीता हो। माँ का दूध पीनेवाला (छोटा बच्चा)।

दुधहँडी—स्त्री० [हिं० दूध+हाँडी] मिट्टी की वह हाँडी जिसमे दूध गरम किया जाता है।

दुधाँड़ी†—स्त्री० = दुधहँडी।

दुधा—अव्य० [सं० द्विधा] दो प्रकार मे। दो तरह से। उदा०—एकहि देव दुवेह दुदेहरे देव दुधायक देह दुहू मैं।—देव।
†स्त्री० = दुबिधा।

दुधार—वि० [हिं० दूध+आर (प्रत्य०)] १ दूध देनेवाली। जो दूध देती हो। जैसे—दुधार गौ। २ जिसमे दूध रहता या होता हो।
† वि० = दुधारा।

दुधारा—वि० [हिं० दो+धार] [स्त्री० दुधारी] जिसमे दोनों ओर धार हो (तलवार, छुरी आदि)। जैसे—दुधारा खाँडा।
पु० एक प्रकार का चौडा खाँडा जिसमे दोनो ओर धार होती है।

दुधारी—स्त्री० [हिं० दूध+आर (प्रत्य०)] एक प्रकार की कटार जिसमे दोनो ओर धार होती है।
वि० १. = दुधार। २ 'दुधारा' का स्त्री०।

दुधारू—वि०, स्त्री० = दुधार।

दुधित—वि० [सं०] १. पीड़ित। २ व्याकुल।

दुधिया—वि०, पु०, स्त्री० = दूधिया।

विशेष—'दुधिया' के यौ० के लिए देखें 'दूधिया' के यौ०।
दुधेली†—स्त्री० [सं० दुग्धी] थूहर की जाति का दुद्धी नाम का पौधा।
दुधैल—वि० = दुधार।
दुध्र—वि० [सं० दुर्√ धृ (धारण)+क, पृषो० सिद्धि] हिंसक।
दुनया—पु० [सं० द्वि०, हिं० दो+सं० नदी, प्रा० णई] दो नदियों का संगम-स्थान।
दुनरना—अ०, स० = दुनवना।
दुनवना—अ० [हिं० दो+नवना = झुकना] नरम या लचीली चीज का इस प्रकार झुकना कि उसके दोनों छोर एक दूसरे से मिल जायँ अथवा पास-पास हो जायँ। लचकर दोहरा हो जाना।
स० १ झुका या लचाकर दोहरा करना। २ कुचल या रौंदकर नष्ट-भ्रष्ट करना। उदा०—तरनि जवार नभवार नभतरनि जै तरनि देव तरनि कै दुखतम दुने है। —देव। ३ धुनना।
दुनहूँ—वि० = दोनों।
दुनाली—वि० स्त्री० [हिं० दो +नाल] जिसमें दो नल या नलियाँ हों।
स्त्री० एक प्रकार की बंदूक जिसके आगे दो नलियाँ होती हैं और जिसमें से दो गोलियाँ एक साथ छूटती या निकलती है।
दुनावा—वि० [हिं० दो+नाव = खाँचा] [स्त्री० दुनावी] (कटार, तलवार आदि का फल) जिस पर दो खाँचे बने हों।
दुनियवी—वि० = दुनियावी (सांसारिक)।
दुनिया—स्त्री० [अ० दुन्या] १ जगत। संसार।
मुहा०—**दुनिया की हवा लगना** = (क) सांसारिक बातों का अनुभव होना। (ख) संसार में होनेवाले अनुचित कार्यों की ओर प्रवृत्त होना। **दुनिया से उठ जाना या चल बसना** = मर जाना।
पद—**दुनिया के परदे पर** = सारे संसार में। **दुनिया भर का** = बहुत अधिक परंतु व्यर्थ का अथवा इधर-उधर का।
२ संसार के लोग। लोक। जनता। जैसे—जरा यह तो सोचो कि दुनिया क्या कहेगी। ३ संसार और घर-गृहस्थी के झगड़े-बखेड़े।
दुनियाई—वि० [अ० दुन्या+हिं० ई० (प्रत्य०)] सांसारिक। लौकिक। †स्त्री० = दुनिया।
दुनियादार—पु० [फा०] [भाव० दुनियादारी] १ सांसारिक प्रपंच में फँसा हुआ मनुष्य। संसारी। गृहस्थ। २ जो सांसारिक आचरण, व्यवहार आदि में कुशल या दक्ष हो।
दुनियादारी—स्त्री० [फा०] १ सांसारिक कार्यों और घर-गृहस्थी का निर्वाह। २. सांसारिक कार्यों और घर-गृहस्थी के झगड़े-बखेड़े या प्रपंच। ३ संसार में रहकर उचित ढंग से आचरण या व्यवहार करने का कौशल या योग्यता। ४ लोकाचार। ५ ऐसा आचरण या व्यवहार जो केवल लौकिक दृष्टि से या लोगों को दिखलाने भर के लिए किया जाय।
दुनियावी—वि० [अ० दुन्यवी] दुनिया का। संसार-संबंधी। सांसारिक।
दुनियासाज—पु० [अ० दुन्या+फा० साज] [भाव० दुनियासाजी] लोगों के रंग-ढंग देखकर उन्हीं के अनुसार आचरण या व्यवहार करते हुए अपना काम चलाने या निकालनेवाला व्यक्ति।
दुनियासाजी—स्त्री० [हिं० दुनियासाज] १. दुनियासाज होने की अवस्था या भाव। २ लोगों के रंग-ढंग देखकर उन्हीं के अनुसार आचरण या व्यवहार करके अपना काम निकालने का कौशल।
दुनी—स्त्री० [अ० दुन्या] संसार। जगत।
दुनौ (नौं)ना—अ०, स० = दुनवना।
दुपटा—पु० [स्त्री० अल्पा० दुपटी] = दुपट्टा।
दुपटी—स्त्री० [हिं० दुपटा] १ छोटा दुपट्टा। २ चादर।
दुपट्टा—पु० [हिं० दो +पाट] [स्त्री० अल्पा० दुपट्टी] १ स्त्रियों के सिर पर ओढ़ने का वह कपड़ा जो दो पाटों को जोड़कर बना हो। दो पाट की ओढ़ने की चद्दर।
मुहा०—(**मुँह पर**) **दुपट्टा तान कर सोना** = निश्चिंत होकर सोना। बेखटके सोना। (**किसी से**) **दुपट्टा बदलना** = किसी को अपनी सहेली बनाना।
२ कंधे या गले पर डालने का लंबा कपड़ा।
दुपद†—पु० = द्विपद।
दु-परता—वि० [हिं० दो + परत] [भाव० दुपरती] जिसमें दो परतें हों।
दुपर्दी—स्त्री० [हिं० दो +फा० पर्दा] एक तरह की बगलबंदी।
दु-पलिया†—वि० [हिं० दो +पल्ला] जिसमें दो पल्ले हों।
दु-पल्ला—वि० [हिं० दो +पल्ला] [स्त्री० दुपल्ली] जिसमें दो पल्ले एक साथ जुड़े या लगे हों। जैसे—दुपल्ला दरवाजा, दुपल्ली टोपी।
दुपहर†—स्त्री० = दोपहर।
दुपहरिया—स्त्री० [हिं० दो + पहर] १ मध्याह्न का समय। दोपहर। २ गुल-दुपहरिया नाम का पौधा और उसका फूल।
वि० जिसका गर्भाधान दोपहर को हुआ हो, अर्थात् बहुत दुष्ट या पाजी। (बाजारू)
दुपहरी—स्त्री० = दुपहरिया।
दु-पासिया—पु० [हिं० दो +पाँसा] चौपड़ का वह खेल जो चार आदमियों के साथ बैठकर खेलने पर इस प्रकार खेला जाता है कि आमने-सामने के दोनों खेलाड़ी अपने-अपने पाँसों में एक दूसरे के साथी होते हैं।
दुपी—पु० [सं० द्विप] हाथी। (डिं०)
दुफसला—वि० [हिं० दो +अ० फस्ल] [स्त्री० दुफसली] दोनों फसलों में उत्पन्न होनेवाला। जो रबी और खरीफ दोनों में हो।
दुफसली—वि० [हिं० दुफसला] १. जिसके दो रुख या पक्ष हों। दोनों तरह का। जैसे—तुम तो हमेशा दुफसली बातें करते हो। २. दे० 'दुफसला'।
दुबकना—अ० = दबकना।
दु-बगली—स्त्री० [हिं० दो + बगल] मालखंभ की एक कसरत।
दुब-ज्यौरा—पु० [हिं० दूब +जेंवरी] गले में पहनने का एक गहना।
दुबड़ा—पु० [हिं० दूब] एक तरह की घास।
दुबधा—स्त्री० = दुबिधा।
दुबया†—पु० दे० 'हुदहुद' (पक्षी)।
दुबर†—वि० [भाव० दुबराई] दुबला।
दुबराना†—अ०, स० = दुबलाना।
दुबराल गोला—पु० [हिं० दो +अ० बैरल + हिं० गोला] तोप का लंबोतरा गोला।

दुबराल पलंग—पु० [हि० दुबराल+अ० पुलिंग] पाल की वह डोरी जिसे खींचकर पाल के पेट की हवा निकालते हैं।

दुबला—वि० [स० दुर्बल] [स्त्री० दुबली, भाव० दुबलापन] १ क्षीण शरीरवाला। हलके और पतले बदनवाला। कृश। २ कम शक्ति वाला। निर्बल।

दुबलाना—अ० [हि० दुबला] दुबला होना। जैसे—चार दिन के बुखार मे लडका दुबला गया है।

स० किसी को दुबला करना। जैसे—चिन्ता ने उन्हे दुबला दिया है।

दुबलापन—पु० [हि० दुबला+पन] दुबले होने की अवस्था या भाव।

दुबाँहिया—वि० [स० द्विबाहु] जो दोनों हाथों से कोई काम समान रूप से कर सकता हो।

पु० वह योद्धा जो दोनों हाथों से तलवार चलाता या चला सकता हो।

दुबाइन—स्त्री० [हि० 'दूबे' का स्त्री०] १ दूबे जाति की स्त्री। २ 'दूबे' की पत्नी।

दुबागा—पु० [हि० दो+फा० बाग =लगाम] सन की बटी हुई मोटी रस्सी।

दुबारा—क्रि० वि० [फा० दुबार] दोबारा। (दे०)

दुबाला†—वि० =दोबाला।

दुबिद—पु० = द्विविद (वानर)।

दुबिध—स्त्री० = दुबिधा।

दुबिधा—स्त्री० = दुविधा।

दुबिसी—स्त्री० [हि० दो+बीच] ऐसी स्थिति जिसमे मनुष्य कुछ निर्णय न कर पा रहा हो। दुविधा की स्थिति।

दुबीचा—पु० [हि० दो+बीच] १ दो परस्पर विरोधी बातो आदि के बीच की ऐसी स्थिति जिसमे सहसा किसी पक्ष मे निर्णय न हो सके। असमजस। दुबिधा। २ अनिष्ट की आशका। खटका।

दुबे—पु० = दूबे (द्विवेदी)।

दुभाखी—पु० = दुभाषिया।

दुभालिया—पु० [हि० दो+भाला] एक तरह का दो फलोवाला अस्त्र।

दुभाषिया—वि० [स० द्विभाषी] दो भाषाएँ जानने और बोलनेवाला। पु० ऐसा व्यक्ति जो दो विभिन्न भाषा-भाषियों को एक दूसरे की बाते समझाता और उनके भावो के आदान-प्रदान का माध्यम बनता हो। मध्यस्थ।

दुभाषी—वि०, पु० [स० द्विभाषिन्] दुभाषिया।

दुभिख†—पु० = दुर्भिक्ष।

दुभुज—वि० = द्विभुज।

दुमजिला—वि० [फा०] [स्त्री० दुमजिली] (घर या मकान) जिसमे दो मजिल अर्थात् खड या तल्ले हो।

दुम—स्त्री० [फा०] १ पशुओ तथा रीढवाले अन्य जतुओ के पिछले भाग मे लटकता रहनेवाला लचीला मासल लबा अग जिस पर प्राय बाल भी होते है। पूँछ। जैसे—हाथी या शेर की दुम, चूहे या नेवले की दुम।

विशेष—(क) पक्षियो का उक्त भाग कडे तथा घने परो का बना होता है। (ख) सरी-सृपो आदि मे उनका पिछला अश दूसरे भाग की अपेक्षा पतला होता है। जैसे—साँप की दुम।

मुहा०—(किसी की) दुम के पीछे लगे फिरना = किसी के पीछे-पीछे लगे फिरना। **दुम दबाकर भागना** = डरपोक कुत्ते की तरह डरकर पीछे हटना या भागना। **दुम दबा जाना**—(क) डर के मारे पीछे हट जाना। डर से भाग जाना। (ख) डरकर चुपचाप जहाँ के तहाँ बैठे रहना। **(किसी के सामने) दुम हिलाना**=कुत्ते की तरह दीन बनकर किसी को प्रसन्न करने का प्रयत्न करना।

२ लाक्षणिक रूप मे, किसी वस्तु का अतिम या पिछला लबा तथा लचीला सिरा जो देखने मे दुम के समान जान पडे। जैसे—गुड्डी या पतग की दुम।

मुहा०—(किसी बात का) दुम मे घुसना = गायब हो जाना। दूर हो जाना। जैसे—सारी शेखी दुम मे घुस गई। **(किसी की) दुम में घुसा रहना** = खुशामद के मारे पीछे-पीछे घूमना या लगे रहना।

३ किसी बडे तारे के पीछे के छोटे-छोटे तारे जो एक पक्ति मे हो।

४ किसी के पीछे-पीछे लगा रहनेवाला हीन व्यक्ति। ५ किसी काम या बात का अतिम और तुच्छ अश या भाग।

*पु० = द्रुम (वृक्ष)।

दुमची—स्त्री० [फा०] १ घोडे के साज मे वह तसमा जो पूँछ के नीचे दबा रहता है। २ कमर के नीचे दोनो चूतडो के बीच की हड्डी। ३ पतली या हलकी डाल अथवा शाखा।

दुमदार—वि० [फा०] १ जिसे दुम हो। पूँछवाला। पुच्छल। २ जिसके पीछे या साथ दुम की तरह कोई पतली लबी चीज लगी हो। जैसे—दुमदार तारा।

दुमन—वि० दे० 'दुचित्ता'।

दुमात†—स्त्री० = दुमाता।

दुमाता—स्त्री० [स० दुर्मातृ] १ बुरी माता। २ सौतेली माँ। विमाता।

दुमाला—पु० [हि० दो+माला] पाश। फदा।

दुमाहा—वि० [हि० दो+माह] १ दो महीने की अवस्थावाला। २ हर दो महीने पर होनेवाला।

दुमुँहा—वि० [हि० दो+मुँह] १ जिसके दो मुँह हो। २ जिसके दाता और मुँह हो।

दुर्—उप० [स० √दु (पीडित करना)+रुक् या रुक्] १ एक सस्कृत उपसर्ग जिसका प्रयोग शब्दो के आरभ मे नीचे लिखे अर्थ या भाव सूचित करने के लिए होता है—(क) अनुचित, दूषित या बुरा। जैसे—दुरात्मा, दुर्जन, दुर्भाव। (ख) जो सहज मे न हो सके अर्थात् कठिन या कष्ट-साध्य। जैसे—दुर्गम, दुर्बोध, दुर्वह। (ग) अभावपूर्ण। जैसे—दुर्बल।

दुरंग—पु० [स० दुर्ग] किला। गढ। (राज०) उदा०—लड नह लीधो जाय ओ दीधो जाय दुरग।—बाँकीदास।

वि० = दुरगा।

दुरंगा—वि० [हि० दो+रग] [स्त्री० दुरगी, भाव० दुरगापन] १ दो रगोवाला। जिसमे दो रग हो। २ दो तरह या प्रकार का। ३ दो तरह का अर्थात् दोहरी चाल चलनेवाला।

दुरंगी—स्त्री० [हि० दोरगा] १ दो रगो या प्रकारो के होने का भाव। दोरगापन। २ दो तरह का अर्थात् कभी इस पक्ष के अनुकूल और कभी उस पक्ष के अनुकूल किया जानेवाला आचरण या व्यवहार।

दुरंत—वि० [सं० दुर्-अंत प्रा० ब० स०] १ जिसका अंत या पार पाना कठिन हो। अपार। उदा०—द्रौपदी का यह दुरंत दुकूल है।—पंत। २ बहुत कठिन। दुस्तर। ३ तीव्र। प्रचंड। ४ बहुत विकट। घोर। ५ खल। दुष्ट। ६ जिसका अंत या परिणाम बहुत बुरा हो या होने को हो।

दुरंतक—पुं० [सं० दुरंत+कन्] शिव।

दुरंतर—वि० [सं० दुरंत] १ कठिन। २ दुर्गम।

दुरंधा*—वि० [सं० द्विरंध्र] १ जिसमें दो छेद हों। २ जिसके दोनों ओर छेद हों। ३ आर-पार छिदा हुआ।

दुर—अव्य० [हिं० दूर] एक अव्यय जिसका प्रयोग किसी को तिरस्कारपूर्वक दूर हटाने के लिए होता है और जिसका अर्थ है-'दूर हो'।

पद—दूर दूर फिट फिट — बहुत बुरी तरह से या परम तुच्छ और हीन समझकर किया जानेवाला तिरस्कार।

मुहा०—(किसी को) दुर दुर करना — तिरस्कारपूर्वक कुत्ते की तरह हटाना या भगाना।

पुं० [फा०] १ मोती। मुक्ता। २ नाक में पहनने का मोती का लटकन। बुलाक। लोलक। ३ कान में पहनने की ऐसी छोटी बाली जिसमें मोती पिरोये हों।

दुरक्ष—वि० [सं० दुर्-अक्षि ब० स०] १ जिसे कम दिखाई पड़ता हो। २ बुरी या दूषित निगाहवाला।

पुं० [दुर्-अक्ष प्रा० स०] १ जूए में बेईमानी करने के लिए खास तौर से बनाया हुआ पासा। २ उक्त पासे पर खेला जानेवाला जूआ।

दुरखा—पुं० [देश०] [स्त्री० दुरखी] एक प्रकार का फतिंगा जो गेहूँ, तमाकू, नील, सरसों आदि की खेती को हानि पहुँचाता है।

दुरचुम—पुं० [देश०] दरी के ताने के दो-दो सूतों को इसलिए एक में बाँधना कि वे उलझ न जायँ।

दुरजन—पुं० = दुर्जन।

दुरजोधन—पुं० = दुर्योधन।

दुरति—स्त्री० [हिं० दु+सं० रति] १ दो परस्पर विरोधी या विभिन्न बातों के प्रति होनेवाली रति या अनुराग। २ द्वैध-भाव। उदा०—दुरति दूर करो नाथ, अशरण हूँ गहो हाथ।—निराला।

दुरतिक्रम—वि० [सं० दुर्-अति√क्रम (गति)+खल्] १ जिसका अतिक्रमण या उल्लंघन सहज में न हो सके अर्थात् प्रबल या विकट। २ जिसका या जिससे पार पाना बहुत कठिन हो।

दुरत्यय—वि० [सं० दुर्-अति√इ (गति)+खल्] १ जिसका या जिससे पार पाना कठिन हो। २ जिसका अतिक्रमण सहज न हो। दुस्तर।

दुरथल*—पुं० [सं० दुःस्थल] १ बुरा स्थान। २ कुठाँव। उदा०—दुरदिन परे रहीम कहि दुरथल जैयत भाग।—रहीम।

दुरद—पुं० = द्विरद।

दुरदाम*—वि० = दुर्दम।

दुरदाल†—पुं० [सं० द्विरद] हाथी।

दुरदुराना—स० [हिं० दुरदुर] दुरदुर कहते हुए तिरस्कारपूर्वक दूर करना। अपमान करते हुए भगाना या हटाना।

संयो० क्रि०—देना।

दुरदृष्ट—वि० [सं० दुर्-अदृष्ट प्रा० ब० स०] अभागा।

पुं० १ दुर्भाग्य। २ पाप।

दुरधिगम—वि० [सं० दुर्-अधि√गम् (जाना)+खल्] १ जिसके पास पहुँचना बहुत कठिन हो। २ जिसे प्राप्त करना बहुत कठिन हो। दुर्लभ। दुष्प्राप्य। ३ जो जल्दी समझ में न आवे। दुर्बोध।

दुरधिष्ठित—वि० [सं० दुर्-अधि√स्था (स्थिति)+क्त] १ बुरी तरह से किया हुआ। २ अव्यवस्थित।

दुरधीत—पुं० [सं० दुर्-अधीत प्रा० स०] वेदों का अशुद्ध उच्चारण तथा अशुद्ध स्वर से किया जानेवाला अध्ययन या पाठ।

वि० बुरी तरह से पढ़ा जानेवाला या पढ़ा हुआ।

दुरधुरा—स्त्री० [यू० दुरोथोरिया] बृहज्जातक के अनुसार जन्म कुंडली का एक योग जिसमें अनफा और सुनफा दोनों योगों का मेल होता है।

दुरध्व—वि० [सं० दुर्-अध्वन् प्रा० स०, अच्] जिस पर चलना कठिन हो।

पुं० १ कुमार्ग। १ विकट मार्ग। बीहड़ रास्ता। उदा०—चलना होगा कब तक दुरध्व पर हृदय बाल।—दिनकर।

दुरना—अ० [हिं० दूर] १ किसी की आँखों से दूर होना। आड़ या ओट में होना। २ प्रत्यक्ष या सामने न होना। छिपना।

संयो० क्रि०—जाना।

दुरन्वय—वि० [सं० दुर्-अनु√इ (गति)+खल्] दुष्प्राप्य।

पुं० अशुद्ध निष्कर्ष।

दुरपदी†—स्त्री० = द्रौपदी।

दुरपवाद—पुं० [सं० दुर्-अपवाद प्रा० स०] १ निंदा। २ बदनामी।

दुरबचा—पुं० [फा० दुर+हिं० बच्चा] ऐसी छोटी बाली जिसमें एक ही मोती हो।

दुरबल†—वि० = दुर्बल।

दुरबस*—पुं० = दुर्वासा।

दुरबार*—वि० [सं० दुर्वार] जिसका निवारण न किया जा सके।

दुरबास†—स्त्री० [सं० दुर्वास] बुरी गंध। दुर्गंध।

दुरबीन—स्त्री० = दूरबीन।

दुरबेस—पुं० = दरवेश।

दुरभिग्रह—वि० [सं० दुर्-अभि√ग्रह् (पकड़ना)+खल्] जो सरलता से पकड़ा न जा सके।

पुं० अपामार्ग। चिचड़ा।

दुरभिग्रहा—स्त्री० [सं० दुरभिग्रह+टाप्] १ केवाँच। कौंछ। २ धमासा।

दुरभिसंधि—स्त्री० [सं० दुर्-अभिसंधि प्रा० स०] दुष्ट उद्देश्य से की जानेवाली मंत्रणा या सलाह। कुमंत्रणा। षड्यंत्र।

दुरभेव—पुं० = दुर्भाव।

दुरमति†—वि० स्त्री० = दुर्मति।

दुरमुट—पुं० = दुरमुस।

दुरमुस—पुं० [सं० दुर (उप०)+मुस = कूटना] जमीन पीटकर समतल करने का पत्थर का गोल टुकड़ा जो लंबे डंडे में जड़ा रहता है।

दुरलभ—वि० = दुर्लभ।

दुरवग्रह—वि० [सं० दुर्-अव√ग्रह (पकड़ना) खल्] जिसे रोकना अथवा नियंत्रित करना कठिन हो।

दुरवधार्य—वि० [स० दुर्-अव √धृ (धारण) +ण्यत्] १. जिसका अवधारण सहज मे न हो सके। २ जो ठीक तरह से ठहरा या बना न रह सके। ३ (भार) जो सहज मे सँभाला न जा सके।

दुरवस्थ—वि० [स० दुर् अवस्था प्रा०ब०स०] हीन अवस्था मे पड़ा हुआ।

दुरवस्था—स्त्री० [स० दुर्-अवस्था प्रा० स०] १ बुरी दशा। २ कष्ट, दरिद्रता आदि के कारण होनेवाली हीन अवस्था। ३ दुर्दशा।

दुरवाप—वि० [स० दुर्-अव √आप् (प्राप्त)+खल्] दुष्प्राप्य।

दुरवार–वि० दुर्वार।

दुरसा†—पु० [हि० दो +औरस] सहोदर भाई।

दुराउ†—पु० =दुराव।

दुराक—पु० [स०] १ एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। २ एक प्राचीन देश जिसमे उक्त जाति रहती थी।

दुराक्रम–वि० [स०] दुर्जेय।

दुराक्रमण—पु० [स० दुर-आक्रमण प्रा० स०] १ कपटपूर्ण आक्रमण। २ ऐसा स्थान जहाँ जाना या पहुँचना कठिन हो।

दुरागम—पु० [स० दुर्-आ√गम् (जाना)+खल्] अनुचित या अवैध रूप से आना, मिलना या प्राप्त होना।

दुरागमन—पु० द्विरागमन।

दुरागौन—पु० [स० द्विरागमन] वधू का दूसरी बार अपनी ससुराल जाना। द्विरागमन। गौना।

क्रि० प्र० —करना।—कराना।—लाना।

मुहा०—दुरागौन देना = लडकी को दूसरी बार ससुराल भेजना।

दुराग्रह—पु० [स० दुर्-आ√ग्रह् (ग्रहण)+खल्] १ किसी काम या बात के लिए ऐसा आग्रह जो उचित या उपयुक्त न हो। अनुचित जिद या हठ। २ अपना कथन या मत ठीक न होने पर भी जिद करते हुए उसे ठीक कहते या मानते रहने की अवस्था या भाव।

दुराग्रही (हिन्)—वि० [स० दुराग्रह+इनि] दुराग्रह या अनुचित हठ करनेवाला।

दुराचरण—पु० [स० दुर्-आचरण प्रा० स०] =दुराचार।

दुराचार—पु० [स० दुर्-आचार प्रा० स०] अनुचित और निंदनीय आचरण। बुरा चाल-चलन।

दुराचारी (रिन्)—वि० [स० दुराचार+इनि] [स्त्री० दुराचारिणी] दुराचरण या दुराचार करनेवाला। बदचलन।

दुराज—पु० [स० द्विराज्य] १ ऐसा राज्य या शासन जिसमे दो राजा मिलकर एक साथ शासन करते हो। २ ऐसा प्रदेश या स्थान जहाँ उक्त प्रकार का राज्य या शासन हो।

पु० [स० दुर+राज्य] १ बुरा राज्य। २ बुरा शासन।

दुराजी—वि० [स० दुराज्य] १ जिस पर दो राजाओ का अधिकार हो। २ जिसमे दो राजे हो।

पु० दुराज।

दुरात्मा (त्मन्)—वि० [स० दुर-आत्मन् प्रा० ब० स०] नीच। दुष्ट प्रकृतिवाला।

दुरादुरी—स्त्री० [हि० दुरना छिपना] छिपाव। दुराव।

दुराधन—पु० [स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुराधर—पु० [स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुराधर्ष—वि० [स० दुर्-आ√धृष् (दबाना)+अच्] १ जिसका दमन करना कठिन हो। २ जो बहुत कठिनाई से जीता जा सके। ३ उग्र। प्रचड। प्रबल।

पु० १ विष्णु का एक नाम। २ पीली सरसो।

दुराधर्षता—स्त्री० [स० दुराधर्ष+तल्—टाप्] १ दुराधर्ष होने की अवस्था या भाव। २ प्रचडता। प्रबलता।

दुराधर्षा—स्त्री० [स० दुराधर्ष+टाप्] कुटुंबिनी का पौधा।

दुराधार—पु० [स० दुर्-आ√धृ (धारण)+णिच्+खल्] महादेव।

दुरानम—वि० [स० दुर्-आ√नम् (झुकना)+णिच्+खल्] जिसे कठिनाई से झुकाया या दबाया जा सके।

दुराना—अ० [हि० दूर] १ दूर होना। हटना। २ आड या ओट मे होना। छिपना।

स० १ दूर करना। हटाना। २ गुप्त रखना। छिपाना। ३ छोडना। त्यागना।

दुराप—वि० [स० दुर् √आप् (प्राप्ति)+खल्] जिसे प्राप्त करना कठिन हो। दुर्लभ। दुष्प्राप्य।

दुराबाध—पु० [स० दुर्-आ √बाध् (पीडा)+खल्] शिव।

दुराराध्य—वि० [स० दुर् आ √राध् (सिद्धि)+ण्यत्] जिसे आराधन से प्रसन्न या संतुष्ट करना बहुत कठिन हो।

पु० विष्णु।

दुरारुह—पु० [स० दुर्-आ √रुह् (चढना)+क] १ बेल। २ नारियल।

दुरारुहा—स्त्री० [स० दुरारुह+टाप्] खजूर का पेड।

दुरारोह—वि० [स० दुर्-आ+रुह+खल्] जिस पर कठिनता से चढा जा सके।

पु० ताड का पेड।

दुरारोहा—स्त्री० [स० दुरारोह+टाप्] १ सेमल का पेड। २ खजूर का पेड।

दुरालभ—वि० [स० दुर्-आ √लभ् (पाना)+खल्, नुम्] =दुरालभ।

दुरालभ—वि० [स० दुर्-आ √लभ्+खल्] दुर्लभ। दुष्प्राप्य।

दुरालभा—स्त्री० [स० दुरालभ+टाप्] १ जवासा। धमासा। हिंगुवा। २ कपास।

दुरालाप—पु० [स० दुर्-आलाप प्रा० स०] [वि० कर्ता दुरालापी] १ अनुचित या बुरी बातचीत। २ गाली। दुर्वचन।

दुरालापी (पिन्)—वि० [स० दुरालाप+इनि] बुरी बातें या दुर्वचन कहनेवाला।

दुरालोक—वि० [स० दुर्-आलोक प्रा० स०] जो सरलता से देखा न जा सके।

दुराव—पु० [हि० दुराना+आव (प्रत्य०)] १ कोई भेदपूर्ण बात अथवा मनोभाव गुप्त रखने की क्रिया या भाव। छिपाव। २ किसी के प्रति होनेवाली कपटपूर्ण भावना।

दुरावार—वि० [स० दुर्-आ √वृ (वर्जन)+घञ्] जिसका वारण करना बहुत कठिन हो।

दुराश—वि० [स० दुर्-आशा ब० स०] जिसे दुराशा हो।

दुराशय—पु० [स० दुर्-आशय प्रा० स०] [भाव० दुराशयता] दुष्ट या बुरा आशय। बुरी नीयत।

वि० दुष्ट या बुरे आशयवाला। बद-नीयत।

दुराशा—स्त्री० [सं० दुर्-आशा प्रा० स०] १ अनुचित या बुरी आशा। २ व्यर्थ की आशा।

दुरासद—वि० [सं० दुर्-आ√सद् (प्राप्ति)+खल्] १ दुष्प्राप्य। २. कठिन। दुस्साध्य।

दुरासा†—स्त्री० = दुराशा।

दुरित—पु० [सं० दुर्-इत प्रा० ब० स०] १ पाप। २ पापी। ३ पातक। ४. पातकी।

दुरित-दमनी—स्त्री० [ष० त०] शमी वृक्ष।

दुरियाना—स० [सं० दूर] १ दूर करना या हटाना। २ दे० 'दुरदुराना'।

अ० दूर हटना या होना।

दुरिष्ट—पु० [सं० दुर्-इष्ट प्रा० स०] १ पाप। पातक। २ उच्चाटन, मारण, मोहन आदि अभिचारो की सिद्धि के लिए किया जानेवाला यज्ञ।

दुरिष्टि—स्त्री० [सं० दुर्-इष्टि प्रा० स०] दुरिष्ट यज्ञ। अभिचारार्थ यज्ञ।

दुरी—स्त्री० [सं० ड.] बुरे दिन। दुर्दिन। उदा०—दिन नेडद् आइयाँ दुरी।—प्रिथीराज।

वि० खराब। बुरा। (राज०)

दुरीषणा—स्त्री० [सं० दुर्-ईषणा प्रा० स०] १ किसी के अहित की कामना। अनुचित या बुरी इच्छा। २ शाप।

दुरुक्त—वि० [सं० दुर्-उक्त प्रा० स०] बुरी तरह से कहा हुआ।

स्त्री० = दुरुक्ति।

दुरुक्ति—स्त्री० [सं० दुर्-उक्ति प्रा० स०] १ खराब या बुरी युक्ति अथवा कथन। २ गाली। दुर्वचन।

दुरुखा—वि० [फा० दुरुख] [स्त्री० दुरुखी] १ जिसके दो रुख या मुँह हो। २ जिसके दोनो ओर मुँह हो। ३ जिसके दोनो ओर किसी एक प्रकार का अकन या चिह्न हो। जैसे—दुरुखी छीट, दुरुखा शाल। ४ जिसके दोनो ओर दो प्रकार के अकन, चिह्न या रग हो। जैसे—दुरुखा कपडा, दुरुखा किनारा, दुरुखी छपाई।

दुरुच्छेद—वि० [सं० दुर्-उद्√छिद् (काटना)+खल्] जिसका उच्छेदन कठिनता से हो सके।

दुरुत्तर—वि० [सं० दुर्-उद्√तृ (पार होना)+खल्] जिसका पार पाना कठिन हो। दुस्तर।

पु० [दुर्-उत्तर प्रा० स०] दुष्ट या बुरा उत्तर।

दुरुत्साहक—पु० [सं० दुर्-उत्साह प्रा० ब० स०] वह जो किसी को किसी अनुचित या नियम के विरुद्ध कार्य मे या किसी दुष्ट उद्देश्य से प्रवृत्त करे या लगावे। (एबेटर)

दुरुत्साहन—पु० [सं० दुर्-उत्साहन प्रा० स०] किसी को कोई अनुचित या विधि-विरुद्ध कार्य के लिए उत्साहित या प्रवृत्त करना। (एबेटमेन्ट)

दुरुत्साहित—भू० कृ० [सं० दुर्-उद्√सह् (सहना)+णिच्+क्त] जिसे किसी ने किसी अनुचित कार्य के लिए उकसाया हो।

दुरुद्वह—वि० [सं० दुर्-उद्√वह (ढोना)+खल्] जिसे वहन या सहन करना बहुत कठिन हो। दुर्वह।

दुरुपयोग—पु० [सं० दुर्-उपयोग प्रा० स०] किसी चीज या बात का ठीक ढग या प्रकार से अथवा उपयुक्त अवस्था या समय मे उपयोग न करके अनुचित रूप से किया जानेवाला या बुरा उपयोग। जैसे—अधिकारो का दुरुपयोग।

दुरुपयोजन—पु० [सं० दुर्-उप√युज् (योग)+णिच्+ल्युट्-अन] दुरुपयोग करने की क्रिया या भाव।

दुरुफ—पु० [?] नीलकठ ताजिक के मतानुसार फलित ज्योतिष मे एक योग।

दुरुम—पु० [देश०] एक प्रकार का गेहूँ जिसका दाना पतला और लबा होता है।

पु० = द्रुम (वृक्ष)।

दुरुस्त—वि० [फा०] [भाव० दुरुस्ती] १ जिसमे भूल, दोष या विकार न हो अथवा निकाल या दूर कर दिया गया हो। २ जो अच्छी या ठीक दशा मे हो।

मुहा०—(किसी को) **दुरुस्त करना** = इस प्रकार किसी को दडित करना कि वह सीधे रास्ते पर आ जाय।

३ उचित। उपयुक्त। ४ यथार्थ।

दुरुस्ती—स्त्री० [फा०] १ दुरुस्त होने की अवस्था या भाव। २. दुरुस्त करने की क्रिया या भाव। शुद्धि। सशोधन। सुधार।

दुरूह—वि० [सं० दुर्√ऊह् (वितर्क)+खल्] जो जल्दी समझ मे न आ सके। दुर्बोध।

दुरेफ—पु० = द्विरेफ।

दुरोदर—पु० [सं०] १ जुआरी। २ जूआ। द्यूत। ३ पासा। ४ पासे से खेला जानेवाला खेल।

दुरौंधा—पु० [सं० द्वारोर्द्ध] दरवाजे के ऊपर की लकडी। भरेठा।

दुर्कुल—पु० = दुष्कुल।

दुर्गंध—स्त्री० [सं० दुर्-गध प्रा० स०] १ बुरी गध या महक। बदबू। २ लोक मे, किसी बुराई का होनेवाला प्रसार।

पु० [प्रा० ब० स०] १ आम का पेड। २ प्याज। ३ काला नमक।

दुर्गंधता—स्त्री० [सं० दुर्गध+तल्—टाप्] १ वह अवस्था जिसमे किसी वस्तु मे से बदबू निकल रही हो। २ वह तत्त्व जिसके कारण दुर्गंध फैलती हो।

दुर्ग—वि० [सं० दुर्√गम् (जाना)+ड] (स्थान) जहाँ तक पहुँचना बहुत कठिन हो। दुर्गम।

पु० १ दुर्गम पथ। २. बहुत बडा किला (विशेषत किसी पहाडी पर स्थित)। ३ एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका वध दुर्गा ने किया था।

दुर्ग-कर्म (न्)—पु० [ष० त०] दुर्ग बनाने का काम।

दुर्ग-कारक—पु० [ष० त०] १ दुर्ग बनानेवाला कारीगर। २ एक तरह का वृक्ष।

दुर्ग-कोपक—पु० [स० त०] किले मे बगावत फैलानेवाला विद्रोही।

दुर्गच्छा—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का मोहनीय कर्म जिसके उदय से मलिन पदार्थो से ग्लानि उत्पन्न होती है। (जैन)

दुर्गत—वि० [सं० दुर्√गम्+क्त] १. जिसकी दुर्गति हुई हो। २. गरीब। दरिद्र।

†स्त्री० = दुर्गति।

दुर्ग-सरणी—स्त्री० [ष० त०] १ एक देवी का नाम। २ सावित्री।

दुर्गति—स्त्री० [स० दुर्√गम्+क्तिन्] १ दुर्गम होने की अवस्था या भाव। २ दुर्दशाग्रस्त होने की अवस्था या भाव। ३. दुर्दशाग्रस्त करने की क्रिया या भाव।

दुर्ग-पाल—पुं० [स० दुर्ग√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] दुर्ग अर्थात् किले का प्रधान अधिकारी और रक्षक।। किलेदार।

दुर्ग-पुष्पी—पु० [ब० स०, ङीष्] एक तरह का वृक्ष।

दुर्गम—वि० [स० दुर्√गम्+खल्] [भाव० दुर्गमता] १ जिसमे गमन करना अर्थात् जाना, चलना या आगे बढ़ना बहुत कठिन हो। २. जिसे जानना या समझना कठिन हो। दुर्बोध। ३ कठिन। विकट। पु० १ दुर्ग। किला। गढ। २ जगल। वन। ३ सकटपूर्ण स्थान या स्थिति। ४ विष्णु का एक नाम। ५ एक असुर का नाम।

दुर्गमता—स्त्री० [स० दुर्गम+तल्—टाप्] दुर्गम होने की अवस्था, गुण या भाव।

दुर्गमनीय—वि० [स० दुर्√गम्+अनीयर्] दुर्गम।

दुर्ग-रक्षक—पु० [ष० त०] दुर्गपाल। किलेदार।

दुर्ग-लंघन—पु० [ष० त०] (रेतीले दुर्गम पथ को पार करनेवाला) ऊँट।

दुर्गल—पु० [सं०] एक प्राचीन देश।

दुर्ग-संचर—पु० [ष० त०] वह जिसके द्वारा या माध्यम से दुर्गम पथ पार किया जाय। जैसे—पुल, बेडा, सीढी इत्यादि।

दुर्गा—पु० [स० दुर्ग+टाप्] १ आदि शक्ति के रूप मे मानी जानेवाली एक प्रसिद्ध देवी जिसका यह नाम दुर्ग राक्षस का वध करने के कारण पडा था। २ नौ वर्षो की अवस्थावाली कन्या। ३ नील का पौधा। ४ अपराजिता। ५ श्यामा पक्षी। ६ गौरी, मालश्री, सारग और लीलावती के योग से बनी हुई एक सकर रागिनी।

दुर्गा-कल्याण—पु० [स०] ओडव सपूर्ण जाति का एक राग जो रात के पहले पहर मे गाया जाता है।

दुर्गाढ, दुर्गाध,—वि० [स० दुर्√गाह् (थाह लेना)+क्त दुर्-गाध प्रा० ब० स०] जिसकी थाह कठिनता से मिल सके।

दुर्गाधिकारी (रिन्)—पु० [स० दुर्ग-अधिकारिन् ष० त०] [स्त्री० दुर्गाधिकारिणी] दुर्ग का प्रधान अधिकारी। किलेदार।

दुर्गा-नवमी—स्त्री० [मध्य० स०] १ कार्तिक शुक्ल नवमी जिस दिन दुर्गा के पूजन का विधान है। २ चैत्र शुक्ल नवमी। ३ आश्विन शुक्ल नवमी।

दुर्गापाश्रया भूमि—स्त्री० [स० दुर्ग-अपाश्रया ष० त०, दुर्गापाश्रया भूमि व्यस्त पद] वह भूमि जिसमे अनेक किले हो।

दुर्गा-पूजा—स्त्री० [ष० त०] १ दुर्गा का पूजन। २ चैत्र और आश्विन के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन जिनमे लोग दुर्गा या देवी की प्रतिमा स्थापित करके उसका पूजन करते हैं।

दुर्गाष्टमी—स्त्री० [दुर्गा-अष्टमी मध्य० स०] १ आश्विन शुक्ल पक्ष की अष्टमी। २ चैत्र शुक्ल पक्ष की अष्टमी।

दुर्गाह्य—वि० [स० दुर्√गाह्+ण्यत्] जिसका अवगाहन करना बहुत कठिन हो।

दुर्गाह्व—पु० [स० दुर्गा-आह्वा ब० स०] भूमि गूगल।

दुर्गुण—पु० [स० दुर्-गुण प्रा० स०] १ व्यक्ति मे होनेवाली ऐसी दूषित स्वभावजन्य क्रियाशीलता जिसके कारण वह बुरे कामो में प्रवृत्त होता है। ऐब। २ किसी पदार्थ मे होनेवाला ऐसा दोष जिससे विकार उत्पन्न होता हो।

दुर्गुणी (णिन्)—वि० [स० दुर्गुण+इनि] जिसमे दुर्गुण या ऐब हो।

दुर्गेश—पु० [स० दुर्ग-ईश ष० त०] १ दुर्ग का स्वामी। २. दुर्ग का प्रधान अधिकारी।

दुर्गोत्सव—पु० [स० दुर्गा-उत्सव मध्य० स०] चैत्र तथा आश्विन के नवरात्रो मे मनाया जानेवाला उत्सव जिसमे दुर्गा का पूजन किया जाता है।

दुर्ग्रह—वि० [स० दुर्√ग्रह (पकडना)+खल्] १ जिसे कठिनता से पकडा अर्थात् अधिकार मे किया जा सके। २ कठिनता से समझ मे आनेवाला। दुर्बोध।

पु० १ अपामार्ग। चिचडा। २ [दुर्-ग्रह प्रा० स०] बुरा या अनिष्टकारक ग्रह।

दुर्ग्राह्य—वि० [स० दुर्√ग्रह्+ण्यत्] दुर्ग्रह।

दुर्घट—वि० [स० दुर्√घट् (घटित होना)+खल्] जिसका घटित होना प्राय असभव हो। बहुत कठिनता से घटित होनेवाला।

दुर्घटना—स्त्री० [स० दुर्-घटना प्रा० स०] १ ऐसी घटना जिसके फलस्वरूप किसी व्यक्ति अथवा वस्तु को क्षति या हानि पहुँचे। २ आफत। विपत्ति।

दुर्घोष—वि० [स० दुर्-घोष प्रा० ब० स०] जो बुरा स्वर निकाले। कटु, कर्कश या बुरा घोष अथवा शब्द करनेवाला।

पु० भालू। रीछ।

दुर्जन—पु० [स० दुर्-जन प्रा० स०] [भाव० दुर्जनता] वह व्यक्ति जो दूसरो का अपकार, अपकीर्ति या हानि करता रहता हो। खराब या बुरा आदमी।

दुर्जनता—स्त्री० [स० दुर्जन+तल्—टाप्] दुर्जन होने की अवस्था या भाव।

दुर्जय—वि० [स० दुर्-जय प्रा० ब० स०] जिस पर विजय पाना बहुत कठिन हो।

पु० १ विष्णु का एक नाम। २ एक राक्षस का नाम।

दुर्जय-व्यूह—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का व्यूह जिसमे सेना चार पक्तियो मे खडी की जाती थी। (कौ०)

दुर्जर—वि० [स० दुर्√जृ (जीर्ण होना)+अच्] १ जो सदा तरुण या युवा बना रहे। २ (अन्न) जिसे सरलता से न पचाया जा सके।

दुर्जरा—स्त्री० [स० दुर्जर+टाप्] ज्योतिष्मती लता। मालकँगनी।

दुर्जात—वि० [स० दुर्-जात प्रा० स०] १ जिसका जन्म बुरी रीत से हुआ हो। जैसे—दोगला या वर्णसकर। २ जिसका जन्म व्यर्थ हुआ हो। ३ नीच। कमीना। ४ अभागा। बद-किस्मत।

पु० १ व्यसन। २ विपत्ति। सकट। ३ असमजस। दुविधा। ४ अनौचित्य।

दुर्जाति—स्त्री० [स० दुर्-जाति प्रा० स०] बुरी जाति। नीच जाति।

वि० १ बुरी जाति या कुल का। २ जिसकी जातीयता बिगड गई या नष्ट हो चुकी हो।

दुर्जीव—वि० [स० दुर्-जीव प्रा० ब० स०] १ दूसरे के दिये हुए अन्न पर पलनेवाला। २ बुरी तरह से जीविका उपार्जित करनेवाला।
पु० [प्रा० स०] निंदनीय या बुरा जीवन।

दुर्जेय—वि० [स० दुर् √जी (जीतना) +अच्] दुर्जय।

दुर्ज्ञेय—वि० [स० दुर् √ज्ञा (जानना) +यत्] १. जिसे जानना बहुत कठिन हो। २ जो जल्दी समझ मे न आ सके। दुर्बोध।

दुर्दम—वि० [स० दुर् √दम् (दमन करना) +खल्] १. जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। २. प्रचड। प्रबल।
पु० वसुदेव के एक पुत्र का नाम जो रोहिणी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

दुर्दमन—पु० [स० दुर्-दमन प्रा० ब० स०] जनमेजय के वश मे उत्पन्न शतानीक राजा का पुत्र।
वि० = दुर्दम।

दुर्दमनीय—वि० [स० दुर् √दम् +अनीयर्] १ जिसका दमन करना बहुत कठिन हो। दुर्दम। २ प्रचड। प्रबल।

दुर्दम्य—वि० [स० दुर् √दम् +यत्] दुर्दम।
पु० [स०] गाय का बछडा।

दुर्दर *—वि० = दुर्धर।

दुर्दर्श—वि० [स० दुर् √दृश् (देखना) +खल्] १ जिसका दर्शन करना या होना अत्यत कठिन हो। २ जिसे देखने से डर लगे या घृणा हो। ३ देखने मे खराब या बुरा। कुरूप। भद्दा। ४ जिसे देखने से कोई बुरा परिणाम या फल होता हो।

दुर्दर्शन—वि० [स० दुर्-दर्शन प्रा० ब० स०] दुर्दर्श।
पु० [स०] कौरवो का एक सेनापति।

दुर्दशा—स्त्री० [स० दुर्-दशा प्रा० स०] बुरी और हीन दशा। खराब हालत।

दुर्दांत—वि० [स० दुर् √दम् +क्त] १. जिसका दमन या वश मे करना कठिन हो। दुर्दमनीय। २ प्रचड। प्रबल।
पु० १ शिव का एक नाम। २ गौ का बछडा। ३ लडाई-झगडा। कलह।

दुर्दान—पु० [?] चाँदी। (अनेकार्थ)

दुर्दिन—पु० [स० दुर्-दिन प्रा० स०] १ खराब या बुरा दिन। २ दुर्दशा के दिन या समय। ३ ऐसा दिन जिसमे प्रात काल से ही खूब बादल घिरे हो, पानी बरसता हो और कही आना-जाना कठिन हो।

दुदुंरूढ—पु० [स० √दुल् (फेंकना) +ऊढ पृषो० सिद्धि] नास्तिक।

दुर्दृष्ट—वि० [स० दुर्-दृष्ट प्रा० स०] (व्यवहार) १ जिस पर ठीक और पूरा ध्यान न दिया गया हो। २ जिसका ठीक तरह से फैसला या न्याय न हुआ हो।

दुर्दैव—पु० [स० दुर्-दैव प्रा० स०] १. दुर्भाग्य। अभाग्य। बुरी किस्मत। २. बुरे दिन। बुरा समय।

दुर्द्धर—वि० [स० दुर् √धृ (धारण) +खल्] १. जिसे कठिनता से पकड सकें। जो जल्दी पकड मे न आ सके। २ प्रचड। प्रबल। ३ जल्दी समझ मे न आनेवाला। दुर्बोध।
पु० १. पारा। २ भिलावाँ। ३ एक नरक का नाम। ४. महिषासुर का एक सेनापति। ५ शबरासुर का एक मत्री। ६ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ७ रावण की सेना का एक राक्षस जो हनुमान् को पकडने के लिए अशोक-वाटिका मे भेजा गया था और वहीं उनके हाथ से मारा गया था। ८ विष्णु का एक नाम।

दुर्द्धर्ष—वि० [स० दुर् √धृष् (दबाना) +खल्] १ जिसका दमन करना कठिन हो। जिसे जल्दी दबाया या वश मे न किया जा सके। २ जिसे परास्त करना या हराना कठिन हो। ३ प्रचड। प्रबल।
पु० १ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। २ रावण की सेना का एक राक्षस।

दुर्द्धर्षा—स्त्री० [स० दुर्द्धर्ष +टाप्] १ नागदौना। २ कथारी नाम का पेड।

दुर्धी—वि० [स० दुर्-धी प्रा० ब० स०] १ बुरी बुद्धिवाला। २ मद बुद्धिवाला।
स्त्री० बुरी बुद्धि।

दुर्धुरूढ—पु० [स० दुर्+धुर्व् (हिंसा) +डट्, पृषो० सिद्धि] वह शिष्य जो गुरु की आज्ञा का पालन सहज मे न करता हो।

दुर्द्रिता—स्त्री० [स०] एक प्रकार की लता।

दुर्द्रुम—पु० [स० दुर्-द्रुम प्रा० स०] हरित्पलाडु। हरा प्याज।

दुर्धर—वि० [स० दुर् √धृ (धारण) +खल्] १ जिसे धारण करना कठिन हो। २ प्रचड। विकट।

दुर्धर्ष—वि० = दुर्द्धर्ष।

दुर्नय—पु० [स० दुर् √नी (ले जाना) +अच्] १ निकृष्ट या बुरा आचरण। खराब चाल-चलन। २ अनीति। अनैतिकता। ३ अन्याय।

दुर्नाद—वि० [स० दुर्-नाद प्रा० ब० स०] १ बुरे नाद या स्वरवाला। २ कर्कश ध्वनिवाला।
पु० राक्षस।

दुर्नाम (न्)—वि० [स० दुर्-नामन् प्रा० ब० स०] १ बुरे नामवाला। २ बदनाम।
पु० [प्रा० स०] १ बुरा नाम। कुख्याति। बदनामी। २ गाली। दुर्वचन। ३ [प्रा० ब० स०] बवासीर नामक रोग। ४ शुक्ति। सीपी।

दुर्नामक—पु० [स० दुर्-नामन् प्रा० ब० स०, कप्] अर्श रोग। बवासीर।

दुर्नामारि—पु० [स० दुर्नामन्-अरि ष० त०] (बवासीर को दूर करनेवाला) सूरन। जिमीकद।

दुर्नाम्नी—स्त्री० [स० दुर्-नाम् प्रा० ब० स०, ङीप्] शुक्ति। सीप।

दुर्निग्रह—वि० [स० दुर्-नि √ग्रह् (पकडना) +खल्] जिसे वश मे करना बहुत कठिन हो।

दुर्निमित्त—पु० [स० दुर्-निमित्त प्रा० स] अपशकुन।

दुर्निरीक्ष—वि० [स० दुर्-निर् √ईक्ष (देखना)) +खल्] १ जिसे देखना या देखते रहना बहुत कठिन हो। २ भयकर। भीषण। ३ कुरूप। भद्दा।

दुर्निवार—वि० [स० दुर्-नि √वृ (वारण) +घञ्] =दुर्निवार्य।

दुर्निवार्य—वि० [स० दुर्-नि √वृ +ण्यत्] १ जिसका निवारण कठिनता से होता हो। जो जल्दी रोका न जा सके। २ जो जल्दी दूर किया या हटाया न जा सके। ३ जिसका घटित होना प्राय निश्चित हो। जो जल्दी टल न सके।

दुर्नीत—वि० [स० दुर्√नी+क्त] नीति विरुद्ध आचरण करनेवाला।
स्त्री० = दुर्नीति।

दुर्नीति—स्त्री० [स० दुर्-नीति प्रा० स०] १ निंदनीय और बुरी नीति। २ नीति विरुद्ध आचरण।

दुर्बल—वि० [स० दुर्-बल प्रा० ब० स०] [भाव० दुर्बलता] १ जिसमे शारीरिक शक्ति की कमी हो। कमजोर। २ दुबला-पतला। कृश। ३. जो मानसिक, नैतिक आदि शक्तियो से रहित हो। जैसे–दुर्बल चरित्र।

दुर्बलता—स्त्री० [स० दुर्बल+तल्–टाप्] १ दुर्बल होने की अवस्था या भाव। २ दुबलापन। ३ कमजोरी।

दुर्बला—स्त्री० [स० दुर्बल+टाप्] जलसिरीस का पेड।

दुर्बाल—पु० [स० दुर्-बाल प्रा० ब० स०] १ सिर का गजापन। २ गज नामक रोग।

दुर्बुद्धि—वि० [स० दुर्-बुद्धि प्रा० ब० स०] नीच या हीन बुद्धिवाला।
स्त्री० दुष्ट या नीच बुद्धि।

दुर्बोध—वि० [स० दुर्-बोध प्रा० ब० स०] (विषय) जिसका बोध कठिनता से हो सकता हो। जो जल्दी समझ मे न आवे।

दुर्भक्ष—वि० [स० दुर्√भक्ष् (खाना)+खल्] १ (पदार्थ) जिसे खाना कठिन हो। जो जल्दी न खाया जा सके। २ जो खाने मे खराब या बुरा लगे।
पु० दुर्भिक्ष। अकाल।

दुर्भग—वि० [स० दुर्-भग प्रा० ब० स०] [स्त्री० दुर्भगा] जिसका भाग्य बुरा हो। खराब किस्मत या प्रारब्धवाला। अभागा।

दुर्भगा—स्त्री० [स० दुर्भग+टाप्] ऐसी स्त्री जो अपने पति का प्रेम या स्नेह न प्राप्त कर सकी हो।
वि० स० 'दुर्भग' का स्त्री०।

दुर्भर—वि० [स० दुर्√भृ (भरण)+खल्] १ जिसे उठाना बहुत कठिन हो। जो सहज मे उठाया न जा सके। २ भारी। वजनी।

दुर्भाग—पु० दुर्भाग्य।

दुर्भागी—वि० =अभागा।

दुर्भाग्य—पु० [स० दुर्-भाग्य प्रा० स०] बुरा भाग्य। खराब किस्मत।

दुर्भाव—पु० [स० दुर्-भाव प्रा० स०] १ बुरा भाव। २ किसी के प्रति मन मे होनेवाला द्वेष या बुरा भाव। दुर्भावना।

दुर्भावना—स्त्री० [स० दुर्-भावना प्रा० स०] १ बुरी भावना या विचार। २ आशका। खटका।

दुर्भाव्य—वि० [स० दुर्√भू (होना)+ण्यत्] जो जल्दी ध्यान मे न आ सके।

दुर्भृत्य—पु० [स० दुर्-भृत्य प्रा० स०] बुरा या दुष्ट नौकर।

दुर्भिक्ष—पु० [स० दुर्-भिक्षा अव्य० स०] १ ऐसा समय जिसमे भिक्षा या भोजन बहुत कठिनता से मिले। २ अकाल।

दुर्भिच्छ*—पु० दुर्भिक्ष।

दुर्भिद—वि० [स० दुर्√भिद् (फाडना)+क] जिसका भेदन कठिनता से हो सके।

दुर्भेद—वि० [स० दुर्√भिद्+खल्]=दुर्भेद्य।

दुर्भेद्य—वि० [स० दुर्√भिद्+ण्यत्] १ जो जल्दी भेदा न जा सके। जो कठिनता से छिदे। २ जो जल्दी पार न किया जा सके। ३. जिसके अन्दर पहुँचना बहुत कठिन हो। जैसे—दुर्भेद्य किला।

दुर्मंत्रणा—स्त्री० [स० दुर्-मत्रणा प्रा० स०] बुरी मत्रणा।

दुर्मति—वि० [स० दुर्-मति प्रा० ब० स०] १ बुरी मति या बुद्धिवाला। २ खल। दुष्ट।
स्त्री० [प्रा० स०] बुरी या दुष्ट बुद्धि।
पु० साठ सवत्सरो मे से एक सवत्सर, जिसमे अकाल पडता है। (फलित ज्योतिष)

दुर्मद—वि० [स० दुर्-मद प्रा० ब० स०] १ जो नशे मे बुरी तरह से चूर हो। २ उन्मत्त। पागल। ३ जिसमे बहुत अधिक मद या घमड हो। उदा०—दुर्मद दुरन्त धर्म दस्युओ की त्रासिनी।—प्रसाद।

दुर्मना (नस्)—वि० [स० दुर्-मनस् प्रा० ब० स०] १ बुरे चित्त या मनवाला। २ दुष्ट। पाजी। ३ उदास। खिन्न।

दुर्मनुष्य—पु० [स० दुर्-मनुष्य प्रा० स०] दुष्ट मनुष्य। दुर्जन।

दुर्मर—वि० [स० दुर्-मर प्रा० ब० स०] जिसकी मृत्यु सहज मे न हो। बहुत कठिनता या कष्ट से मरनेवाला।

दुर्मरण—पु० [स० दुर्-मरण प्रा० ब० स०] बुरे प्रकार से होनेवाली मृत्यु।

दुर्मरा—स्त्री० [स० दुर्मर+टाप्] दूर्वा। दूब।

दुर्मर्ष—वि० [स० दुर्√मृष् (सहना)+खल्] जिसे सहन करना कठिन हो। दुःसह।

दुर्मल्लिका—स्त्री० [स०] चार अकोवाला एक तरह का हास्य-रस-प्रधान उपरूपक।

दुर्मल्ली—स्त्री० =दुर्मल्लिका।

दुर्मित्र—पु० [स० दुर्-मित्र प्रा० स०] बुरा मित्र।

दुर्मिल—वि० [स० दुर्√मिल् (मिलना)+क] जो सहज मे न मिल सके। दुष्प्राप्य।
पु० १. भरत के सातवें लडके का नाम। २ एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १०, ८ और १४ के विराम से ३, २ मात्राएँ होती है।

दुर्मुख—वि० [स० दुर्-मुख प्रा० ब० स०] १ खराब या बुरे मुँहवाला। २ कुरूप या भद्दे मुँहवाला। ३ कडवी और बुरी बातें कहने या बोलनेवाला।
पु० १ भगवान रामचन्द्र का वह गुप्तचर जो प्रजा के भीतरी समाचार उन्हे सुनाया करता था। २ रामचद्र की सेना का एक बदर। ३ महिषासुर के एक सेनापति का नाम। ४ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ५ एक नाग का नाम। ६ शिव का एक नाम। ७ साठ सवत्सरो मे से एक। ८, एक यक्ष का नाम। ९ गणेश के एक गण का नाम। १० घोडा। ११ गुप्तचर। जासूस। १२ ऐसा घर या मकान जिसका दरवाजा उत्तर की ओर हो।

दुर्मुखी—स्त्री० [स० दुर्मुख+ङीप्] एक राक्षसी जिसे रावण ने जानकी को बहकाने के लिए अशोक-वाटिका मे रखा था।
वि० हि० 'दुर्मुख' का स्त्री०।

दुर्मुट†—पु० =दुर्मुस।

दुर्मुस—पु० [स० दुर्+मुस=कूटना] गदा के आकार का मिट्टी,

पत्थर, सड़क आदि पीटने का एक उपकरण जिसके लंबे डंडे के निचले सिरे मे पत्थर का भारी गोल टुकड़ा लगा रहता है।

दुर्मुहूर्त—पु० [सं० दुर्-मुहूर्त प्रा० ब० स०] अशुभ या बुरा मुहूर्त।

दुर्मूल्य—वि० [स० दुर्-मूल्य प्रा० ब० स०] बहुत अधिक मूल्यवाला। बहुमूल्य।

दुर्मेध (धस्)—वि० [स० दुर्मेधस् प्रा० ब० स०] मंद बुद्धि। नासमझ।

दुर्मोह—पु० [स० दुर्√मुह् (मुग्ध होना)+घञ्] काकतुंडी। कौआ-ठोठी।

दुर्मोहा—स्त्री० [स० दुर्मोह+टाप्] १ कौआ-ठोठी। २ सफेद घुंघची।

दुर्यश (स्)—पु० [स० दुर्-यशस् प्रा० स०] बुरा यश। अपयश।

दुर्योध—वि० [स० दुर्√युध् (लड़ना)+खल्] जिससे युद्ध करना और विजय पाना बहुत कठिन हो।

दुर्योधन—पु० [स० दुर्√युध्+युच्-अन] एक प्रसिद्ध कुरुवंशीय राजा जो धृतराष्ट्र का ज्येष्ठ पुत्र था तथा जो महाभारत के युद्ध मे मारा गया था।

दुर्योनि—वि० [स० दुर्-योनि प्रा० ब० स०] जिसका जन्म निम्न या नीच कुल मे हुआ हो।

दुर्रा—पु० [फा०] कोड़ा। चाबुक। जैसे--मरे पर सौ दुर्रे। (कहा०)
पु० [अ० दुर्र] बड़ा मोती।

दुर्रानी—पु० [फा०] १ अफगानों की एक जाति। २ उक्त जाति का व्यक्ति।

दुर्लंघ्य—वि० [स० दुर्√लघ् (लाघना)+ण्यत्] जिसे लाँघना बहुत कठिन हो।

दुर्लक्ष्य—वि० [स० दुर्√लक्ष् (देखना)+ण्यत्] जो कठिनता से दिखाई पड़े या देखा जा सके।
पु० दुष्ट अथवा बुरा लक्ष्य या उद्देश्य।

दुर्लभ—वि० [स० दुर्√लभ् (पाना)+खल्] १ जो कठिनता से प्राप्त होता हो। दुष्प्राप्य। २ जो बहुत कम मात्रा मे, कभी-कभी अथवा कहीं-कहीं मिलता हो। (रेयर) ३ जिसके जोड़ या तरह का दूसरा जल्दी मिलता न हो। बहुत बढ़िया और अनोखा। ४ प्रिय।
पु० १ कचूर। २ विष्णु का एक नाम।

दुर्लभ-मुद्रा—स्त्री० [स० दुर्लभा-मुद्रा कर्म० स०] आधुनिक अर्थशास्त्र में वह विदेशी मुद्रा जो कठिनाई से प्राप्त होती हो।
विशेष—जब एक देश दूसरे देश को अधिक मूल्य का सामान निर्यात करता है और उस देश से कम मूल्य का सामान आयात करता है तो उसके लिए तो दूसरे देश की मुद्रा सुलभ रहती है (क्योंकि इसका उधर पावना होता है) परंतु दूसरे देश के लिए उस देश की मुद्रा दुर्लभ होती है (क्योंकि उसे पहले ही देना अधिक होता है)।

दुर्ललित—वि० [स० दुर्√लल् (चाहना)+क्त] १ जिसका बुरी तरह से लालन या लाड़-प्यार किया गया हो और इसीलिए वह बिगड़ गया हो। २ दुष्ट। नटखट। पाजी। ३ खराब। दूषित। बुरा। उदा०—उठती अतस्तल से सदैव दुर्ललित लालसा जो कि कात।—प्रसाद।
पुं० उद्धत या उद्दंड होने की अवस्था या भाव। उद्धतता।

दुर्लेख्य—वि० [स० दुर्-लेख्य प्रा० स०] १ (लेख) जो खराब लिखा हुआ हो। जिसकी लिखावट बुरी हो। २ जो ऐसा लिखा हो कि जल्दी पढ़ा न जा सके। (स्मृति)
पु० वह लेख्य जो विधिक व्यवहार मे अप्रामाणिक तथा विधि-विरुद्ध माना जाय। (इनवैलिड डीड)

दुर्वच—वि० [स० दुर्√वच् (बोलना)+खल्] १ (वचन) जो सहज मे न कहा जा सके। जिसे कह सकना कठिन हो। २ जिसे कहने मे कष्ट हो।
पु० गाली। दुर्वचन।

दुर्वचन—पु० [स० दुर्-वचन प्रा० स०] १ बुरा वचन। बुरी उक्ति या दूषित कथन। २ गाली।

दुर्वर्ण—वि० [स० दुर्-वर्ण प्रा० ब० स०] बुरे या हेय वर्णवाला।
पु० १ चाँदी। रजत। २ [प्रा० स०] बुरा वर्ण।

दुर्वर्णा—स्त्री० [स० दुर्वर्ण+टाप्] १ चाँदी। २ एलुआ नामक औषधि।

दुर्वह—वि० [स० दुर्√वह् (ढोना)+खल्] जिसे वहन करना बहुत कठिन हो।

दुर्वाक (च्)—पु० [स० दुर्-वाच् प्रा० स०] =दुर्वचन।

दुर्वाद—पु० [स० दुर्-वाद प्रा० स०] १ अपवाद। निंदा। बदनामी। २ अनुचित अथवा उपयुक्त विवाद। तकरार। हुज्जत। ३ ऐसी बात जो अच्छी होने पर भी बुरे ढंग से कही जाय।

दुर्वादी (दिन्)—वि० [स० दुर्वाद+इनि] १ दूसरों की बदनामी करनेवाला। २ तकरार या हुज्जत करनेवाला। ३ दुर्वाद कहनेवाला।

दुर्वार—वि० [स० दुर्√वृ (वारण)+णिच्+खल्] जिसका निवारण करना कठिन हो।

दुर्वारि—पु० [स० दुर्-वारि=वारण प्रा० ब० स०] कबोज देश का एक योद्धा जो महाभारत की लड़ाई में लड़ा था।

दुर्वार्य—वि० [स०दुर्√वृ+णिच्+यत्] =दुर्वार। (देखे)

दुर्वासना—स्त्री० [स० दुर्-वासना प्रा० स०] १ बुरी इच्छा, कामना या वासना। २ ऐसी कामना या वासना जो कभी अथवा जल्दी पूरी न हो सके।

दुर्वासा (सस्)—पु० [स० दुर्-वासस् प्रा० ब० स०] अत्रि और अनुसूया के पुत्र एक प्रसिद्ध ऋषि जो बहुत ही क्रोधी स्वभाव के थे और जराजरा-सी बात पर शाप दे बैठते थे।

दुर्वाहित—वि० [स० दुर्-वाहित प्रा० स०] जिसका वहन करना बहुत मुश्किल हो।
पु० भारी बोझ।

दुर्विगाह—वि० [स० दुर्-वि√गाह् (थाह लेना)+खल्] जिसका अवगाहन करना अर्थात् थाह पाना बहुत कठिन हो।

दुर्विज्ञेय—वि० [स० दुर्-वि√ज्ञा (जानना)+यत्] जिसका ज्ञान प्राप्त करना बहुत कठिन हो। जिसे जल्दी जान न सके।

दुर्विद—वि० [स० दुर्√विद् (जानना)+क] जिसे जानना तथा समझना बहुत कठिन हो।

दुर्विदग्ध—वि० [सं०दुर्-विदग्ध प्रा० स०] १ जो अच्छी तरह जला न

हो। अधपका। २. जो पूरी तरह से पका न हो ३ अभिमानी। घमंडी।

दुर्विदग्धता—स्त्री० [सं० दुर्विदग्ध तल्—टाप्] दुर्विदग्ध होने की अवस्था या भाव। पूरी निपुणता का अभाव। अधकचरापन।

दुर्विध—वि० [सं० दुर्-विधा प्रा० ब० स०] १. दरिद्र। धन-हीन। २. खल। दुष्ट। ३. बेवकूफ। मूर्ख।

दुर्विधि—स्त्री० [सं० दुर्-विधि प्रा० स०] खराब या बुरी विधि। दूषित या बुरा ढंग या रीति।

पु० दुर्भाग्य।

दुर्विनय—वि० [सं० दुर्-विनय प्रा० ब० स०] १ जिसमे विनय का अभाव हो। २ उद्दंड।

स्त्री० [प्रा० स०] १ अविनय। २. उद्दंडता।

दुर्विनीत—वि० [सं० दुर्-विनीत प्रा० स०] जो विनीत न हो। अविनीत।

दुर्विपाक—पु० [सं० दुर्-विपाक प्रा० स०] १ बुरा परिणाम। बुरा फल। २ बुरा सयोग। जैसे—दैव-दुर्विपाक से उन्हे पुत्र-शोक सहना पडा।

दुर्विभाव्य—वि० [सं० दुर्वि√भू (होना)+ण्यत्] जिसका अनुमान कठिनता से हो सके।

दुर्विलास—पु० [सं० दुर्-विलास प्रा० स०] भाग्य का विपरीत होना।

दुर्विवाह—पु० [सं० दुर्-विवाह प्रा० स०] बुरा या निदनीय विवाह।

दुर्विष—वि० [सं० दुर्-विष प्रा० ब० स०] दुराशय।

पु० महादेव।

दुर्विषह—वि० [सं० दुर्-वि√सह (सहना)√खल्] जिसे सहना बहुत कठिन हो। दुःसह।

पु० १ महादेव। शिव। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुर्वृत्त—वि० [सं० दुर्-वृत्त प्रा० ब० स०] [भाव० दुर्वृत्ति] १ जिसका आचरण बुरा हो। दुश्चरित्र। दुराचारी। २ जो दूषित या निदनीय उपायो से जीविका चलाता हो। बुरी वृत्तिवाला।

पु० [प्रा० स०] निन्दनीय और बुरा आचरण। बद-चलनी।

दुर्वृत्त-फलक—पु० [ष० त०] दे० 'इति-वृत्तक'।

दुर्वृत्ति—स्त्री० [सं० दुर्-वृत्ति प्रा० स०] १ बुरी वृत्ति। २ बुरा आचरण या स्वभाव।

दुर्वृष्टि—स्त्री० [सं० दुर्-वृष्टि प्रा० स०] १. आवश्यक या उचित से कम वृष्टि। २. अनावृष्टि। सूखा।

दुर्वेद—वि० [सं० दुर्√विद् (जानना)+खल्] १ जिसे समझना बहुत कठिन हो। २ जो वेदो का अध्ययन न करता हो। ३ वेदो की निंदा करनेवाला।

दुर्व्यवस्था—स्त्री० [सं० दुर्-व्यवस्था प्रा० स०] खराब या बुरी व्यवस्था। अव्यवस्था।

दुर्व्यवहार—पु० [सं० दुर्-व्यवहार प्रा० स०] १ अनुचित और बुरा व्यवहार। बुरा बरताव। २ अनुचित या बुरा आचरण। ३ ऐसा व्यवहार या मुकदमा जिसका फैसला (अनुचित प्रभाव, घूस आदि के कारण) ठीक न हुआ हो।

दुर्व्यसन—पु० [सं० दुर्-व्यसन प्रा० स०] कोई बुरा या दूषित काम करने का चसका जो बहुत कठिनता से छूट सके।

दुर्व्यसनी (निन्)—वि० [दुर्व्यसन+इनि] जिसे किसी प्रकार का दुर्व्यसन हो। जिसे बुरी तरह से कोई लत या कई लतें लगी हो।

दुर्व्रत—वि० [सं० दुर्-व्रत प्रा० ब० स०] जिसने कोई अनुचित या बुरा व्रत लिया हो। बुरे मनोरथो वाला। नीचाशय।

पु० [प्रा० स०] निन्दनीय, नीच अथवा बुरा आशय, मनोरथ या व्रत।

दुर्हृद्—वि० [सं० दुर्-हृदय प्रा० ब० स०] जो सुहृद् न हो। बुरे हृदयवाला।

पु० विरोधी या शत्रु।

दुर्हृदय—वि० [सं० दुर्-हृदय प्रा० ब० स०] खोटे हृदयवाला। कपटी।

दुर्हृषीक—वि० [सं० दुर्-हृषीक प्रा० ब० स०] जिसकी ज्ञानेंद्रियो मे कुछ खराबी या विकार हो।

दुलकन—स्त्री० [हिं० दुलकना] दुलकने की क्रिया या भाव।

†वि० दुलकनेवाला।

दुलकना—अ० [हिं० दलकना] (घोडो आदि का) अलग-अलग हर पैर उठाकर कुछ उछलते हुए चलना।

अ०, स० = दुलखना।

दुलकी—स्त्री० [हिं० दुलकना] टट्टू, घोडे आदि की एक प्रकार की चाल जिसमे वह हर पैर अलग-अलग उठाकर कुछ उछलता हुआ दौडता है।

क्रि० प्र० —चलना।—जाना।

दुलखना—स० [हिं० दो+लक्षण] १ बार-बार बतलाना। बार-बार कहना। बार-बार दोहराना। २ किसी की कही हुई ठीक बात पर भी आपत्ति करते हुए उसका तिरस्कार करना जो अविनय, उद्दंडता आदि का सूचक है।

अ० मुकर जाना।

दुलखी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का फतिगा जो गेहूँ, ज्वार, तमाखू नील, सरसो आदि की खेती को नुकसान पहुँचाता है।

दुलड़ा—वि० [हिं० दो+लड], [स्त्री० दुलडी] जिसमे दो लड या लड़ियाँ हो। दो-लडो का।

पुं० दो लडोवाली माला या हार।

दुलड़ी—स्त्री० [हिं० दो+लड] दो लडो की माला।

दुलत्ती—स्त्री० [हिं० दो+लात] १ गाय, घोडे आदि का किसी पर प्रहार करने के लिए पिछली दोनो टाँगे एक साथ उठाने तथा झटकारने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—चलाना।—झाडना।—फेंकना।—मारना।

२ उक्त प्रकार से किया जाने या लगनेवाला आघात।

मुहा०—दुलत्ती झाड़ना बहुत बिगड कर अलग या दूर होते हुए ऐसी बातें कहना मानो गधो या घोडो की तरह अथवा पशुओ का-सा आचरण या व्यवहार कर रहे हो। (परिहास और व्यंग्य)

३ मालखभ की एक कसरत जिसमे दोनो पैरो से मालखभ को लपेट-कर बाकी बदन मालखभ से अलग झुलाकर ताल ठोंकते हैं।

दुलदुल—पु० [अ०] १ वह खच्चरी (मादा खच्चर) जो इसकदरिया (मिस्र) के हाकिम ने मुहम्मद साहब को भेंट की थी। २ मुहर्रम की आठवी तारीख को जलूस के साथ निकाला जानेवाला वह कोतल घोडा जिसके साथ शीया मुसलमान मातम करते हुए चलते है।

विशेष—मुख्यतः यह उसी उक्त खच्चरी का प्रतीक होता है, जो मुहम्मद साहब को भेंट मे मिली थी। पर लोग इसे भूल से खच्चर या घोड़ा समझते हैं, और इसी लिए इस शब्द का प्रयोग पु० रूप मे करते हैं।

दुलन†—पु० = दोलन।

दुलना†—अ० = डुलना।

दुलभ*—वि० = दुर्लभ।

दुलरा†—वि० = दुलारा।

दुलराना—स० [हि० दुलारना] १ बच्चो से दुलार करना। २ बहुत अधिक दुलार कर बच्चो को बिगाडना।

संयो० क्रि०—डालना।

अ० दुलारे बच्चो की-सी चेष्टा या व्यवहार करना। (परिहास और व्यग्य)

दुलरी—स्त्री० = दुलडी।

दुलरुआ†—वि० = दुलारा।

दुलहन—स्त्री० [हि० दुलहा का स्त्री०] १ वह स्त्री जो अभी ब्याह कर लाई गई हो। वधू। २ पत्नी। (पूरब)

दुलहा—पु० [स० दुर्लभ] [स्त्री० दुलहन] १ वर जिसका विवाह तुरत होने को हो या हुआ हो। वर। २ पति। (पूरब) ३ रहस्य-सप्रदाय मे, परमात्मा।

दुलहाई†—स्त्री० [हि० दुलहा] विवाह के समय गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। (पूरब)

दुलहिन—स्त्री० = दुलहन।

दुलहिया†—स्त्री० = दुलहन।

दुलही†—स्त्री० = दुलहन।

दुलहेटा—पु० [स० दुर्लभ, प्रा० दुल्लह + हि० बेटा] १ दुलहा। २ दुलारा बेटा।

दुलाई—स्त्री० [स० तूल = रूई, हि० तुलाई, तुराई] कपडे की दो परतो-वाला सिला हुआ वह मोटा ओढ़ना जिसमे रूई भरी होती है। हलकी रजाई।

दुलाना†—स० = डुलाना।

दुलार—पु० [हि० दुलारना] १ छोटे बच्चो के प्रति किया जानेवाला ऐसा स्नेहपूर्ण व्यवहार जो उन्हे खूब प्रसन्न रखने के लिए किया जाता है। २ वह धृष्टतापूर्ण आचरण जो बच्चे उमग मे आकर बडो के प्रति करते है।

मुहा०—**किसी का दुलार रखना** = अपने से छोटे का आग्रह या हठ मानना। उदा०—राखा मोर दुलार गोसाईं।—तुलसी।

दुलारना—स० [स० दुर्लाल, प्रा० दुल्लाउन] १ बच्चो से दुलार करना। २ बहुत दुलार करके बच्चो को बिगाडना।

दुलारा—वि० [हि० दुलार] [स्त्री० दुलारी] जिसका बहुत दुलार किया गया हो या किया जाता हो। लाडला।

दुलारी—वि० हि० 'दुलारा' का स्त्री०।

† स्त्री० = दुलाई (ओढ़ने की)।

† स्त्री० = दुलारो (चेचक या माता)।

दुलारो—स्त्री० [हि० दुलार ?] एक प्रकार की माता या चेचक।

दुलाल—पु० [?] एक प्रकार का चपा (फूल)।

† पु० = दुलार।

दुलि—स्त्री० [स० = दुलि] कच्छपी।

दुलीचा—पु० [हि० गलीचा का अनु०] १ गलीचा। कालीन। २ छोटा ऊनी आसन।

दुलेहटा†—पु० = दुलहेटा।

दुलैचा—पु० = दुलीचा।

दुलोही†—स्त्री० [हि० दो + लोहा] एक प्रकार की तलवार जो लोहे के दो टुकड़ो को जोडकर बनाई जाती है।

दुल्लभ†—वि० = दुर्लभ।

दुल्ली—स्त्री० = दुल्लो।

दुल्लो—स्त्री० [हि० दो + ला (प्रत्य०)] लडको के खेल मे वह गोली जो मीर या पहली गोली के बाद ठहरी या पडी हो। दूर तक जानेवाली गोलियो मे पहली के बादवाली गोली।

दुल्हन, दुल्हैया†—स्त्री० = दुलहन।

दुव †—वि० [स० द्वि] दो।

दुवन्—पु० [स० दुर्मनस्] १ दुष्ट चित्त का मनुष्य। खल। दुर्जन। २ दुश्मन। वैरी। शत्रु। ३. राक्षस।

दुवन्नी—स्त्री० = दुअन्नी (सिक्का)।

दु-वरकी—स्त्री० [हि० दो + वरक = पन्ना या पृष्ठ] स्त्री की भग। योनि। (बाजारू और अश्लील व्यग्य)

मुहा०—**दु वरकी का सबक पढ़ाना** = (क) स्त्रियो का आपस मे भग-संघर्ष के द्वारा मैथुन करना। चपटी लडना। (मुसलमान स्त्रियाँ) (ख) मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)

दुवा—पु० = दूआ (दुक्की)।

स्त्री० = दुआ (प्रार्थना)।

दुवाज—पु० [?] एक प्रकार का घोडा।

दुवाद—वि० = द्वादश।

दुवाद बानी—वि० [स० द्वादश = सूर्य + वर्ण] स्वर्ण जो सूर्य के समान दमकता हुआ हो अर्थात् बिलकुल खरा। बारहबानी (सोना)।

दुवादसी †—स्त्री० = द्वादशी।

दुवार†—पु० = द्वार।

दुवारिका†—स्त्री० = द्वारका।

दुवाल—स्त्री० [फा०] १ चमडे का तसमा। २ रकाब का तसमा।

दुवालबन्द—पु० [फा०] १ चमडे का चौडा तसमा जो कमर आदि मे लपेटा जाय। चपरास या पेटी का तसमा। २ वह जो पेटी बाँधता हो अर्थात् सिपाही।

दुवाली—स्त्री० [देश०] रगे या छपे हुए कपडो पर चमक लाने के लिए घोंटने का बेलन। घोटा। २. वह परतला जिसमे तलवार या बन्दूक लटकाई जाती है।

दुवालीबंद—पु० [फा०] परतला आदि लगाये हुए तैयार सिपाही।

दुविद†—पु० = द्विविद।

दुविधा—स्त्री० [स० द्विविधा] ऐसी मन स्थिति जिसमे दो या कई बातो मे से किसी बात का निश्चय न हो रहा हो। दुबधा।

दुवो†—वि० [हि० दुव = दो + उ = ही] दोनो।

दुशमन—पु० दुश्मन।

दुशवार—वि० [फा० दुश्वार] [भाव० दुशवारी] १ कठिन। मुश्किल। २ दुःसह।

दुशवारी—स्त्री० [फा०] १ दुशवार होने की अवस्था या भाव। २ कठिन काम। ३ विपत्ति या संकट की अवस्था।

दुशाला—पु० [फा० दोशाल] पशमीने की बढ़िया चादरों का जोड़ा जिसके किनारों पर पशमीने की रंग-बिरंगी बेल बनी रहती है।

मुहा०—दुशाले में लपेटकर मारना या लगाना—इस प्रकार आड़े हाथ लेना कि ऊपर से देखने में अनुचित न जान पड़े अथवा अप्रिय न लगे। मीठी-मीठी बातें कहते हुए कठोर व्यंग्य करना।

दुशाला-पोश—वि० [फा०] जो दुशाला ओढ़े हो। जो अच्छे कपड़े पहने हो।
पु० अमीर। धनवान।

दुशासन—पु० दुःशासन।

दुश्चर—वि० [सं० दुर्√चर् (गति)+खल्] [भाव० दुश्चरण] दुष्कर।

दुश्चरित—वि० दुश्चरित्र।

दुश्चरित्र—वि० [सं० दुर्-चरित्र प्रा० ब० स०] [स्त्री० दुश्चरित्रा] १ बुरे या खराब आचरण या चाल-चलनवाला। बद-चलन। २ जिस पर या जिसमें चलना कठिन हो।
पु० [प्रा० स०] १ निंदनीय या बुरा आचरण। बद-चलनी। २ पाप। गुनाह।

दुश्चर्मा—(चर्मन्) पु० [सं० दुर्-चर्मन्, प्रा० ब० स०] वह पुरुष जिसकी लिंगेन्द्रिय के मुख पर ढाकनेवाला चमड़ा न हो।

दुश्चलन—पु० [सं० दुः+हिं० चलन] दुराचरण। खोटी चाल।

दुश्चिंत्य—वि० [सं० दुर्√चिन्त् (ध्यान)+यत्] जिसका चिंतन कठिनता से हो सके।

दुश्चिकित्स—वि० दुश्चिकित्स्य।

दुश्चिकित्सा—स्त्री० [सं० दुर्-चिकित्सा प्रा० स०] आयुर्वेद-संबंधी चिकित्सा के नियमों के विरुद्ध की जानेवाली चिकित्सा। दूषित चिकित्सा।

दुश्चिकित्स्य—वि० [सं० दुर्√कित्+सन्, द्वित्वादि, +यत्] १ जिसकी चिकित्सा करना बहुत कठिन हो। २ असाध्य। (रोग और रोगी दोनों के सम्बन्ध में)

दुश्चिक्य—पु० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार लग्न से तीसरा स्थान।

दुश्चित्—पु० [सं० दुर्-चित् प्रा० स०] १ आशंका। खटका। २ घबराहट। विकलता।

दुश्चेष्टा—स्त्री० [सं० दुर्-चेष्टा प्रा० स०] [वि० दुश्चेष्टित] कुचेष्टा। बुरी चेष्टा।

दुश्चेष्टित—पु० [सं० दुर्-चेष्टित प्रा० स०] १ निंदनीय या बुरा काम। दुष्कर्म। २ छोटा या नीच काम। ३ पाप। गुनाह।

दुश्च्यवन—वि० [सं० दुर्-च्यवन प्रा० ब० स०] १ जो जल्दी च्युत न हो सके। २ जो जल्दी विचलित न हो।
पु० इन्द्र।

दुश्च्याव—वि० [सं० दुर्-च्याव प्रा० ब० स०] जो जल्दी च्युत न किया जा सके।
पु० शिव। महादेव।

दुश्मन—पु० [फा०] [भाव० दुश्मनी] वैरी। शत्रु।

दुश्मनी—स्त्री० [फा०] वैर। शत्रुता।

दुष्कर—वि० [सं० दुर्√कृ (करना)+खल्] (काम) जिसे करना कठिन हो। जो मुश्किल से हो सके। दुःसाध्य।
पु० आकाश। आसमान।

दुष्कर्ण—पु० [सं० दुर्-कर्ण प्रा० ब० स०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्कर्म (न्)—पु० [सं० दुर्-कर्मन् प्रा०स०] [वि० दुष्कर्मा] १ ऐसा काम जिसे करना बहुत कठिन हो। २ अनुचित, निंदनीय, तथा बुरा काम।

दुष्कर्मा (र्मन्)—वि० [सं० दुर्-कर्मन् प्रा० ब०स०] दुष्कर्म करनेवाला।

दुष्कर्मी (र्मिन्)—वि० [सं० दुष्कर्म+इनि] १ दुष्कर्म या बुरे काम करनेवाला। २ दुराचारी।

दुष्काल—पु० [सं० दुर्-काल प्रा०स०] १ बुरा वक्त। कुसमय। २ अकाल। दुर्भिक्ष। ३ शिव का एक नाम।

दुष्काव्य—पु० [सं० दुर्-काव्य प्रा०स०] १ ऐसा काव्य जिसकी रचना बहुत कठिन हो अथवा जो सहज में समझा न जा सके। २ घटिया दरजे का या बुरा काव्य।

दुष्कीर्ति—स्त्री० [सं० दुर्-कीर्ति प्रा०स०] बुरी कीर्ति। बदनामी।

दुष्कुल—वि० [सं० दुर्-कुल प्रा० ब० स०] नीच कुल का। तुच्छ घराने का।
पु० [प्रा०स०] नीच कुल। खराब खानदान या घराना।

दुष्कुलीन—वि० [सं० दुष्कुल+ख—ईन] निम्न कुल या नीच घराने का।

दुष्कुलेय—वि० [सं० दुष्कुल+ढक्—एय] दुष्कुलीन।

दुष्कृत—पु० [सं० दुर्-कृत प्रा० स०] दुष्कर्म।

दुष्कृति—वि० [सं० दुर्-कृति प्रा० ब०स०] दुष्कृत्य करनेवाला। कुकर्मी।
पु० [प्रा०स०] बुरा काम। कुकर्म। दुष्कृत्य।

दुष्कृती (तिन्)—वि० [सं० दुष्कृत+इनि] दुष्कर्म करनेवाला।

दुष्क्रम—पु० [सं० दुर् क्रम प्रा०स०] १ अनुचित या कठिन क्रम। २. साहित्य में, किसी उक्ति या रचना के अन्तर्गत लोक विहित या शास्त्र विहित क्रम की उपेक्षा या उल्लंघन जो अर्थ-संबंधी एक दोष माना गया है।

दुष्क्रीत—वि० [सं० दुर्√क्री (खरीदना)+क्त] १ जो बहुत कठिनाई से खरीदा गया हो। २ महँगा।

दुष्खदिर—पु० [सं० दुर्-खदिर प्रा०स०] एक प्रकार का खैर का पेड़ जिसका कत्था घटिया दरजे का होता है। क्षुद्र खदिर।

दुष्ट—वि० [सं०√दुष् (विकृति)+क्त] [स्त्री० दुष्टा] १ जिसमें दोष हो। दूषित। २ जो जान-बूझकर दूसरों को कष्ट देता अथवा तंग या परेशान करता हो। दूषित मनोवृत्तिवाला। ३. पित्त आदि दोषों से युक्त (रोग या व्यक्ति)।
पु० कुष्ठ या कोढ़ नाम का रोग।

दुष्टचारी (रिन्)—वि० [सं० दुष्ट√चर् (गति)+णिनि] [स्त्री० दुष्टचारिणी] १ बुरा आचरण करनेवाला। दुराचारी। २. खल दुर्जन।

दुष्ट-चेता (तस्)—वि०[स० ब०स०]१ बुरी बात सोचनेवाला। २ दूसरों का अहित या बुरा चाहनेवाला। अशुभ-चिन्तक । ३ कपटी। छली। धोखेबाज।

दुष्टता—स्त्री०[स० दुष्ट+तल्—टाप्]१ दुष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २ दोष। ऐब। ३ खराबी। बुराई। ४ पाजीपन। शरारत। ५ बदमाशी।

दुष्टत्व—पु०[स० दुष्ट+त्व]=दुष्टता।

दुष्टपना—पु०[हिं० दुष्ट+पन (प्रत्य०)] दुष्टता।

दुष्टर†—वि०=दुस्तर।

दुष्टव्रण—पु०[कर्म०स०]१ वह व्रण या घाव जिसमे से दुर्गंध निकलती हो। २ असाध्य व्रण या घाव।

दुष्ट-साक्षी (क्षिन्)—पु० [स० कर्म० स०] वह गवाह जो गलत या झूठी गवाही दे। बुरा गवाह।

दुष्टा—वि०[स० दुष्ट+टाप्] 'दुष्ट' का स्त्री०।

दुष्टाचार—पु०[दुष्ट-आचार कर्म०स०]१ खराब या बुरा आचरण। २ अनुचित और निंदनीय काम। दुष्कर्म।

वि०=दुराचारी।

दुष्टाचारी (रिन्)—वि०[स० दुष्टाचार+इनि] [स्त्री० दुष्टाचारिणी] १ अनुचित या बुरे काम करनेवाला। २ जिसका आचरण अच्छा न हो।

दुष्टात्मा (त्मन्)—वि०[दुष्ट-आत्मन् ब०स०] बुरे अन्तःकरण या विचारोंवाला।

दुष्टान्न—पु०[दुष्ट-अन्न कर्म०स०]१ बिगडा हुआ या खराब अन्न। २ बासी या सडा हुआ अन्न अथवा भोजन। ३ कुत्सित उपायो से प्राप्त किया हुआ अन्न या भोजन। पाप की कमाई का अन्न या भोजन। ४ कुत्सित कमाई करनेवाले या नीच व्यक्ति का अन्न या भोजन।

दुष्टि—स्त्री०[स०√दुष् (विकृति)+क्तिन्]=दोष।

दुष्पच—वि०[स० दुर्√पच् (पाक)+खल्]१ (फल आदि) जो कठिनता से पके। २ (खाद्य पदार्थ) जो कठिनता से पचे।

दुष्पत्र—पु०[स० दुर्-पत्र प्रा० ब०स०] चोर या चोरक नामक गंध द्रव्य।

दुष्पद—वि०[स० दुर्√पद् (गति)+खल्]=दुष्प्राप्य।

दुष्पराजय—वि०[स० दुर-पराजय प्रा० ब० स०] जिसे पराजित करना कठिन हो।

पु० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्परिग्रह—वि०[स० दुर्-परि√ग्रह् (पकडना)+खल्] जिसे पकडना अर्थात् अधिकार या वश मे करना कठिन हो।

दुष्परिमेय—वि०[स० दुर्-परि√मा(नापना)+यत्] जिसे नापना सहज न हो।

दुष्पर्श—वि०[स० दुर्-स्पृश् (छूना)+खल्] १. जिसे स्पर्श करना कठिन हो। जिसे छूना सहज न हो। २ जो जल्दी मिल न सके। दुष्प्राप्य।

दुष्पर्शा—स्त्री०[स० दुष्पर्श+टाप्] जवासा।

दुष्पार—वि०[स० दुर्√पार् (पार होना)+खल्]१ जिसे कठिनता से पार किया जा सके। २ (कार्य) जो बहुत कठिन या दुस्साध्य हो।

दुष्पूर—वि० [स० दुर्√पूर (भरना)+खल्] १ जिसे भरना कठिन हो। २ जो जल्दी पूरा न हो सके। कठिनता से पूरा होनेवाला। ३ जिसका जल्दी या सहज मे निवारण न हो सके।

दुष्प्रकृति—वि०[स० दुर्-प्रकृति प्रा० ब० स०] बुरी प्रकृति या खराब स्वभाववाला (व्यक्ति)।

स्त्री० खराब या बुरी प्रकृति अथवा स्वभाव।

दुष्प्रधर्ष—वि०[स० दुर-प्र√धृष् (दबाना)+खल्] जिसे कठिनता से पकडा जा सके।

पु० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दुष्प्रधर्षा—स्त्री०[स० दुष्प्रधर्ष+टाप्]१ जवासा। हिंगुवा। २ खजूर।

दुष्प्रधर्षिणी—स्त्री० [स० दुष्प्रधर्ष+इनि—ङीष्] १ कटकारी। भटकटैया। २ बैंगन। भटा।

दुष्प्रयोग—पु०[स० दुर्-प्रयोग प्रा० ब० स०]=दुरुप्रयोग।

दुष्प्रवृत्ति—स्त्री०[स०दुर्-प्रवृत्ति प्रा०ब०स०] अनुचित या बुरी प्रवृत्ति। वि० दुष्ट या बुरी प्रवृत्तिवाला।

दुष्प्रवेशा—स्त्री० [स० दुर्-प्र√विश् (प्रवेश)+खल्–टाप्]) कथारी वृक्ष।

दुष्प्राप्य—वि०[स० दुर्-प्र√आप् (प्राप्त करना)+ण्यत्] जो कठिनता से प्राप्त किया जा सके। जो आसानी से या जल्दी प्राप्त न हो सकता हो।

दुष्प्रेक्ष—वि०[स० दुर्-प्र√ईक्ष् (देखना)+खल्]=दुष्प्रेक्ष्य।

दुष्प्रेक्ष्य—वि०[स० दुर्-प्र√ईक्ष्+ण्यत्] १ जिसे देखना कठिन हो। जो सहज मे न देखा जा सके। २ जो देखने मे बहुत बुरा लगे। कुरूप। भद्दा। ३ भीषण। विकराल।

दुष्मंत*—पु०=दुष्यत।

दुष्यत—पु०[स०] महाभारत मे वर्णित एक प्रसिद्ध पुरुवशी राजा जो ऐलि नामक राजा के पुत्र थे। महाकवि कालिदास ने 'अभिज्ञान शाकुन्तल' मे इसी दुष्यत तथा शकुन्तला की प्रेम-गाथा लिखी है।

*पु०[स० दुःख+अत] दुःख का अत।

दुष्योदर—पु०[स० दुष्य-उदर ब०स०] एक प्रकार का उदर रोग जो प्रायः असाध्य होता है।

दुसंत*—पु०=दुष्यत।

दुसट†—वि० [स० दुष्ट] १ बुरा। खराब। २ नीच। उदा०—दुसट सामना भली दइ।—प्रिथीराज।

दुसराना—स०=दोहराना।

दुसरिहा†—वि०[हिं० दूसरा+हा (प्रत्य०)] १ अन्य। दूसरा। २ सगी। साथी। ३ दूसरी बार होनेवाला। ४ अपर या विरोधी पक्ष का। प्रतिद्वंद्वी। प्रतियोगी। (पूरब)

दुसह—वि०[स० दुःसह]जो सहज मे सहा न जाय। दुस्सह।

दुसही—वि०[हिं० दुःसह+ई (प्रत्य०)] १ जिसे सहना बहुत कठिन हो। २ जो दूसरो की उन्नति, भलाई आदि देख या सह न सके, अर्थात् ईर्ष्या या डाह करनेवाला।

दुसाखा—पु०=दोशाखा।

दुसाध—पु०[स० दोषाद वा दुःसाध्य] हिंदुओ मे एक जाति जो सूअर पालती है।

†वि०[?] अधम। नीच।

दुसार—पु०[हिं० दो+सालाना] आर-पार किया या गया हुआ छेद।
क्रि० वि० इस पार या सिरे से उस पार या दूसरे सिरे तक।
वि०[सं० दु शल्य] बहुत कष्ट देनेवाला।

दुसाल—पु०, क्रि० वि०, वि०=दुसार।

दुसाला†—पु०=दुशाला।

दुसासन†—पु०=दु शासन।

दुसाहा—पु०[देश०] जिसमे दो फसलें होती हों। दो-फसला खेत।

दुसूती—स्त्री०[हिं० दो०+सूत] एक प्रकार का मोटा मजबूत कपडा जिसमे दो-दो तागों का ताना और बाना होता है।

दुसेजा—पु०[हिं० दो+सेज] ऐसी बडी खाट या पलग जिस पर दो आदमी एक साथ सो सकते हों।

दुसम*—वि०=दुस्तर।

दुस्तर—वि०[सं०]१ जिसे तैर कर पार करना कठिन हो। २ जिसे पूरा या सपन्न करना कठिन हो। कठिन। दुर्घट।

दुस्त्यज—वि०[सं० दुर्√त्यज् (छोडना)+खल्] जिसे छोडना या त्यागना कठिन हो।

दुस्थित—वि०[सं० दुर्√स्था (ठहरना)+क्त] [भाव० दुस्थिति] १ जो कठिन या बुरी स्थिति मे हो। २ दुर्दशाग्रस्त।

दुस्स्पर्श—वि०[सं०] दुष्पर्श। (दे०)

दुस्स्पर्शा—स्त्री०[सं०]१ जवासा। केवाँच। २ भटकटैया।

दुस्स्पृष्ट—पु०[सं० दुर्√स्पृश् (छूना)+क्त] १ हलका स्पर्श। २ जिह्वा का ईषत् स्पर्श जिससे य्, र्, ल् और व् ध्वनियो का उच्चारण होता है।

दुस्स्मर—वि०[सं० दुर्√स्मृ (स्मरण)+खल्] जिसे स्मरण करना या रखना कठिन हो।

दुःसह—वि०[सं० दुर्√सह् (सहना)+खल्] जिसे सह सकना बहुत कठिन हो। दु सह।

दुहकर*—वि०=दुष्कर।

दुहता—पु०[सं० दौहित्र] [स्त्री० दुहती] बेटी का बेटा। दोहता। नाती।

दुहत्थड—क्रि० वि०, पु०=दोहत्थड।

दुहत्था—वि०=दोहत्था।

दुहत्था शासन—पु० =द्विदल शासन।

दुहत्थी—स्त्री०=दोहत्थी।

दुहना†—स०=दूहना।

दुहनी—स्त्री०=दोहनी।
स्त्री०=दुहिता।

दुहरना—अ०[?] दोहराया जाना।
स० =दोहराना।

दुहरा—वि०[स्त्री० दुहरी] =दोहरा।

दुहराना—स०=दोहराना।

दुहा—वि०, स्त्री०[सं०] जो दुही जा सके।
स्त्री० गाय। गौ।
†वि० =दोनो। उदा०—ऐके ठाहर दूहा बसेरा।
†पुं०=दूहा या दोहा।

दुहाई—स्त्री०[सं० द्विधाकृतम् (दो टूकडे कर डाला अर्थात् बचाओ मुझे मारडाला) का प्रा० रूप अथवा सं० द्वि =दो+आह्वाय=पुकार] १ ऐसी सूचना जो उच्च स्वर से पुकारते हुए सब लोगों को दी जाय। मुनादी।
मुहा०—**(किसी की) दुहाई फिरना**=(क) राजा के सिंहासन पर बैठने पर उसके राज्याधिकार की घोषणा होना। (ख) किसी के प्रताप, यश आदि की चारो ओर खूब चर्चा होना।
२ भारी कष्ट या विपत्ति आने पर दूसरा से सहायता पाने के लिए की जानेवाली पुकार। अपने बचाव या रक्षा के लिए दीनतापूर्वक चिल्लाकर की जानेवाली याचना।
क्रि० प्र०—देना।
३ शपथ। सौगध।
स्त्री०[हिं० दुहना]दुहने की क्रिया, भाव और पारिश्रमिक।

दुहाग—पु०[सं० दुर्भाग्य, प्रा० दुब्भाग]१ दुर्भाग्य। बदकिस्मती। २ वैधव्य। 'सुहाग' का विपर्याय।

दुहागिन—स्त्री०[हिं० दुहागी] विधवा स्त्री। 'सुगाहिन' का विपर्याय।

दुहागिल†—वि०=दुहागी।

दुहागी—वि०[हिं० दुहाग+ई (प्रत्य०)] १ अभागा। २ अना। ३ खाली। ४ निर्जन। सूना।

दुहाजू—वि० [सं० द्विभार्य] १ (पुरुष) जो पहली स्त्री के मर जाने पर दूसरा विवाह करे। २ (स्त्री) जो पहले पति के मरने पर दूसरा विवाह करे।

दुहाना—स०[हिं० दूहना का प्रे०] गाय आदि दुहने मे किसी को प्रवृत्त करना। । दूहने का काम किसी से कराना ।

दुहाव—पु०[हिं० दुहाना]१ गौ, भैंस आदि दुहने की क्रिया या भाव। २ एक प्राचीन प्रथा जिसके अनुसार जमींदार प्रति वर्ष जन्माष्टमी आदि त्योहारो पर किसानो की गाय-भैंसों का दूध दुहाकर ले लेता था। ३ उक्त प्रथा के अनुसार दिया या लिया जानेवाला दूध।

दुहावनी—स्त्री०[हिं० दुहाना]वह धन जो ग्वाले को गौ, भैंस आदि दुहने के बदले दिया जाता है। दूध दुहने की मजदूरी।

दुहिता (तृ)—स्त्री०[सं०√दुह+तृच्] बेटी। लडकी।
विशेष—प्राचीन काल मे गौएँ आदि दुहने का काम प्राय लडकियाँ ही करती थी, इसी से उनका यह नाम पडा था।

दुहितृका—स्त्री०[सं०] गुडिया। पचाली।

दुहितृ-पति—पु०[सं० ष०त०] दुहिता अर्थात् बेटी का पति। जामाता। दामाद।

दुहिन—पु०[सं० द्रुहण] ब्रह्मा।

दुहुँघा*—क्रि० वि०[हिं० दु=दो+घा=ओर] १ दोनो ओर। उदा०—मोटी पीर परम पुरुषोत्तम दु ख मेट्यौ दुहुँघा कौ।—सूर। २. दोनो तरह से।

दुहूँ—वि० [हिं० दो+हूँ(प्रत्य०]१ दोनो। उदा०—दुहूँ भाँति असमजसै, बाण चले सुखपाय।—केशव। २ दोनो को।

दुहेनू—स्त्री०[हिं० दुहना] दूध देनेवाली गाय।

दुहेरा—वि० १ =दुहेला। २ =दोहरा।

दुहेल†—पु०[स० दुर्हेल] दुःख। विपत्ति। मुसीबत।
दुहेलरा†—वि०[स्त्री० दुहेलरी]=दुहेला।
†पु०=दुहेला।
दुहेला—वि०[स० दुर्हेल=कठिन खेल] [स्त्री० दुहेली] १ कष्ट-प्रद। दुःखदायी। २ दुःसाध्य। कठिन। उदा०—भगति दुहेली राम की।—कबीर। ३. कष्ट या विपत्ति मे पडा हुआ। दीन। दुखिया। उदा०—दरस बिनु खडी दुहेली।—मीराँ। ४. दुःखमय। दुःखपूर्ण।
पु० विकट या दुःखदायक कार्य।
दुहैया†—वि०[हिं० दुहना] गौ, भैस आदि दूहने का काम करनेवाला।
†स्त्री०=दुहाई।
दुहोतरा†—वि०[हिं० दो+स० उत्तर] गिनती मे दो से अधिक।
पु०=दोहतरा (नाती)।
दुह्य—वि०[स०] [स्त्री० दुह्या] १ जिसे दूहा जा सके। दूहे जाने के योग्य। २ जो दूहा जाने को हो।
दुह्यु—पु०[स०] शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न ययाति राजा के एक पुत्र का नाम।
दूँगड़ा—पु०=दौंगरा।
दूँगरा†—पु०=दौंगरा।
दूँद—पु०[स० द्वंद्व]१ ऊधम। उपद्रव।
क्रि० प्र०—मचाना।
२ दे० 'द्वंद्व'।
दूँदना—अ०[हिं० दूँद]१ उपद्रव करना। ऊधम मचाना। २. जोर का शब्द करना।
दूँदर†—वि०[स० द्वंद्व] बलवान्। शक्तिशाली।
दूँदि*—स्त्री०=दूँद।
दू†—वि०=दो।
दूआ—पु०[हिं० दो+आ (प्रत्य०) १ ताश या गजीफे मे वह पत्ता जिस पर दो बूटियाँ या बिंदियाँ हो। दुक्की। २ पासे, सोलही आदि का ऐसा दाँव जिसमे दो बिंदियाँ ऊपर रहती अथवा दो कौड़ियाँ चित्त पडती है। (जुआरी)
†वि०=दूसरा।
पु० [देश०] कलाई पर सब गहनो के पीछे की ओर पहना जानेवाला पिछेली नामक गहना।
†स्त्री०=दुआ।
दूइ†—वि०=दो।
दूइज—स्त्री०=दूज (द्वितीया तिथि)।
दूई—वि०=दो।
स्त्री०=दुई।
दूक—वि०[स० द्वैक]दो एक, अर्थात् कुछ या थोड़े से।
दूकान—स्त्री०=दुकान।
दूकानदार—पु०=दुकानदार।
दूकानदारी—स्त्री०=दुकानदारी।
दूख†—पु०=दुःख।
दूखन†—पुं०=दूषण।
दूखना†—स० [स० दूषण+ना (प्रत्य०)] किसी पर दोष लगाना। किसी को बुरा ठहराना या बताना।
अ०[?] नष्ट होना।
स० नष्ट करना।
अ०=दुखना।
दूखित†—वि०१ =दूषित। २ =दुःखित।
दूगला—पु०[देश०] एक तरह का बडा टोकरा।
†वि०, पु०=दोगला।
दूगुन—वि०=दूना (दुगुना)।
स्त्री०=दुगुन।
दूगू—पुं०[देश०] एक तरह का पहाडी बकरा।
दूज—स्त्री० [स० द्वितीया, प्रा० दुइय, दुइज], चांद्रमास के हर पक्ष की दूसरी तिथि। दुइज। द्वितीया।
पद—**दूज का चाँद**=ऐसा व्यक्ति जो बहुत दिनो पर दिखाई देता या मिलता हो। (परिहास और व्यग्य)
दूजा—वि० [स० द्वितीय, प्रा० दुइय] [स्त्री० दूजी] १ दूसरा। (पश्चिम) २ पराया।
दूझना†—स०[सं० दुःख] कष्ट या दुःख देना।
दूझा†—वि०=दूजा।
दूत—पु०[स०√दू(दुःखी होना)+क्त][स्त्री० दूती]१ वह व्यक्ति जो किसी का सदेश लेकर कही जाय। दूसरो के सदेश अभिप्रेत व्यक्ति तक पहुँचानेवाला। २ प्रेमी और प्रेमिका के सदेश एक दूसरे को पहुँचानेवाला व्यक्ति। ३ वह जो एक दूसरे की बातें इधर-उधर लगाकर दोनो पक्षो मे लडाई-झगड़ा कराता हो। (क्व०) ४. दे० 'राजदूत'।
दूतक—पु०[स० दूत+कन्]१ प्राचीन भारत मे, वह कर्मचारी जो राजा की दी हुई आज्ञा का सर्व-साधारण मे प्रचार करता था। २ दूत।
दूतकत्व—पु०[स०दूतक+त्व]१ दूतक का काम, पद या भाव। २. दूत का काम, पद या भाव।
दूत-कर्म (न्)—पु०[ष० त०] दूत का काम। दूतत्व।
दूत-काव्य—पु०[मध्य०स०] ऐसा काव्य जिसमे मुख्यत. किसी दूत के द्वारा प्रिय के पास विरह निवेदन भेजा गया हो। जैसे—मेघदूत, पवनदूत।
दूतघ्नी—स्त्री० [स० दूत√हन् (हिंसा)+टक्—ङीष्] गोरखमुडी। कदंबपुष्पी।
दूतता—स्त्री० [स० दूत+तल्—टाप्] दूत का काम, पद या भाव। दूतत्व।
दूतत्व—पुं०[स० दूत+त्व] दूत का काम, पद या भाव। दूतता।
दूतपन—पु०[स० दूत+हिं० पन (प्रत्य०)] दूतत्व।
दूत-मंडल—पुं०[ष०त०] आधुनिक राजनीति मे, एक देश से दूसरे देश को किसी काम के लिए भेजे हुए दूतो का दल या समूह।
दूतर†—वि०=दुस्तर।
दूतावस—पु० दे० 'दूतावास'।
दूतावास—पु० [दूत-आवास ष०त०] वह भवन या क्षेत्र जिसमे किसी

दूसरे राज्य के राजदूत तथा उसके साथ के कर्मचारी रहते तथा काम करते हो। राजदूत का कार्यालय। (लीगेशन)

दूति—स्त्री०[स०√दू+ति] =दूती।

दूतिका—स्त्री०[स० दूति+कन्—टाप्] दूती।

दूती—स्त्री० [स० दूति+ङीष्] १ सदेश पहुँचानेवाली स्त्री। २ साहित्य मे, वह स्त्री जो प्रेमिका का सदेश प्रेमी तक और प्रेमी का सदेश प्रेमिका तक पहुँचाती है। इसके उत्तमा, मध्यमा और अधमा तीन भेद है। ३ दे०'कुटनी'।

दूत्य—पु०[स० दूत+य] दूत का काम, पद या भाव।

दूद—पु०[फा०] धूआँ।

दूदकश—पु०[फा०]१ धूआँ बाहर निकालने की चिमनी। २ एक प्रकार का दमकला जिससे धूआँ देकर पौधो मे लगे हुए कीडे नष्ट किये जाते है।

दूदला—पु०[देश०] एक तरह का पेड। डुडला।

दूदुह—पु०[स० दुडुभ] पानी का साँप। डेडहा। (डि०)

दूध—पु०[स० दुग्ध] १ सफेद या हलके पीले रग का वह पौष्टिक तरल पदार्थ जो मादा स्तनपायी जीवो के स्तनो मे शिशु के जन्म लेने पर उत्पन्न होता है, तथा जिसे वे नवजात शिशुओ को पिलाकर उनका पालन-पोषण करती है।

मुहा०—**दूध उतरना**=सतान होने के समय मादा के स्तन मे दूध का आविर्भाव होना। **(किसी के मुँह से) दूध की बू आना** =अवस्था या वय के विचार से दूध पीनेवाले बच्चो से कुछ ही बडा होना। अल्पवयस्क होना। **दूध चढ़ना** =दुहते समय गाय, भैंस आदि का अपने दूध को स्तनो मे ऊपर की ओर खीच ले जाना जिससे दुहनेवाला उसको खीचकर बाहर न निकाल सके। **(बच्चे का दूध) छुड़ाना** =बच्चे की दूध पीने की प्रवृत्ति इस प्रकार धीरे-धीरे कम करना कि वह माता का दूध पीना छोड दे। **(बच्चे का) दूध टूटना** =स्तनो से निकलनेवाले दूध की मात्रा कम होना। **दूध डालना**=बच्चे का दूध पीते ही उसे उगलकर बाहर निकाल देना। जैसे—दो तीन दिन से यह बच्चा दूध डाल रहा है। **(माता का) दूध दुहना**=स्तनो को बार बार दबाते हुए उनमे से दूध बाहर निकालना। **दूध बढ़ाना** =दे० 'दूध छुड़ाना'। (देखें ऊपर)

पद—**दूध का बच्चा**=वह छोटा बच्चा जो केवल दूध पीकर रहता हो। **दूध के दाँत**=छोटे बच्चे के वे दाँत जो पहले-पहल दूध पीने की अवस्था मे निकलते है और छ सात वर्ष की अवस्था मे जिनके गिर जाने पर दूसरे नये दाँत निकलते है। **दूध-पीता बच्चा**=गोद मे रहनेवाला वह छोटा बच्चा जिसका आहार अभी तक केवल दूध हो। **दूधो नहाओ, पूतो फलो**=धन-सपत्ति और सतान आदि की ओर से खूब सुखी रहो। (आशीष)

२ गाय, बकरी, भैस आदि के थनो को दुहकर निकाला जानेवाला उक्त तरल पदार्थ।

मुहा०—**दूध उछालना**=खौलते हुए दूध को ठढा करने के लिए कडाही आदि मे से निकालकर बार-बार ऊपर से नीचे गिराना। **(किसी को) दूध की मक्खी की तरह निकालना या निकाल देना** =किसी मनुष्य को परम अनावश्यक और तुच्छ अथवा हानिकारक समझकर अपने साथ या किसी कार्य से बिलकुल अलग कर देना। **दूध तोड़ना**= गरम दूध खूब हिलाकर ठढा करना। **(किसी चीज का) दूध पीना** =बहुत ही सुरक्षित अवस्था मे बना रहना। जैसे —आपके रुपए दूध पीते है, जब चाहे तब ले ले। **दूध फटना** =दूध मे किसी प्रकार का रासायनिक विकार होने अथवा विकार उत्पन्न किये जाने पर जलीय अश का उसके सार भाग से अलग होना। **दूध फाड़ना** =खटाई आदि डालकर ऐसी क्रिया करना जिससे दूध का जलीय अश और सार भाग अलग हो जाय।

पद—**दूध का दूध और पानी का पानी** =ऐसा ठीक और पूरा न्याय जिसमे उचित और अनुचित बाते एक दूसरे से बिलकुल अलग होकर स्पष्ट रूप से सामने आ जायँ। ठीक उसी तरह का न्याय जिस तरह पानी मिले हुए दूध मे से दूध का अश अलग और पानी का अश अलग हो जाता हो। **दूध का-सा उबाल** =उसी प्रकार का कोई क्षणिक आवेग, आवेश या मनोविकार जो उबलते हुए दूध के उबाल की तरह बहुत थोडी देर मे धीमा पड जाता या शात हो जाता हो।

३ कई प्रकार के पत्तो, फलो, बीजो आदि मे से निकलनेवाला गाढ़ा सफेद रस। जैसे—गेहूँ, बरगद या मदार का दूध।

मुहा०—**(किसी चीज मे) दूध आना या पड़ना** =उक्त प्रकार के रस का आविर्भाव होना जो दानो, बीजो आदि के तैयार होने या पकने का सूचक होता है।

४ रासायनिक क्रिया से दूध का बना हुआ सूखा चूर्ण जो प्राय डिब्बो मे बद किया हुआ मिलता है।

दूध-चढ़ी—वि०[हि० दूध+चढ़ना] जो बहुत अधिक दूध देती हो।

दूध-पिलाई—स्त्री०[हि० दूध+पिलाना]१ दूध पिलानेवाली दाई। २ दूसरे के बच्चे को अपने स्तन का दूध पिलाने के बदले मे मिलनेवाला धन। ३ विवाह के समय की एक रस्म जिसमे वर की माँ उसे(वर को) दूध पिलाने की-सी मुद्रा करती है। ४ उक्त रसम के समय माता को मिलनेवाला नेग।

दूध-पूत—पु०[हि० दूध+पूत =पुत्र] धन और सतति।

दूध-फेनी—स्त्री०[स० दुग्धफेनी] एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम मे आता है।

स्त्री० [हि० दूध+फेनी] दूध मे भिगोई या पकाई हुई फेनी।

दूध-बहन—स्त्री० दूध-भाई का स्त्री० (दे० 'दूध-भाई')।

दूध भाई—पु०[हि० दूध+भाई] [स्त्री० दूध-बहन] ऐसे दो बालको मे से कोई एक जो किसी एक स्त्री के स्तन का दूध पीकर पले हो फिर भी जो अलग-अलग माता-पिता से उत्पन्न हुए हो।

दूध-मलाई—स्त्री०[हि०] पुरानी चाल की एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

दूध-मसहरी—स्त्री० [हि० दूध+मसहरी] एक तरह का रेशमी कपडा।

दूधमुँहाँ—वि० =दुध-मुँहाँ।

दूधमुख—वि० =दुध-मुँहाँ।

दूधराज—पु०[देश०]१ एक प्रकार की बुलबुल जो भारत, अफगानिस्तान और तुर्किस्तान मे पाई जाती है। इसे शाह बुलबुल भी कहते हैं। २ बहुत बडे फनवाला एक प्रकार का साँप।

दूध-सार—पु०[हिं० दूध+स०सार]१. एक प्रकार का बढ़िया केला। २ रासायनिक क्रियाओ से बनाया हुआ दूध का सत जो सूखे चूर्ण के रूप मे बाजारो मे बिकता है।

दूध हंडी—स्त्री०[हि० दूध+हंडी] वह हाँड़ी जिसमे दूध गरमाया अथवा रखा जाता हो।

दूधा—पु०[हि० दूध]१ एक प्रकार का धान जो अगहन मे तैयार होता है और जिसका चावल वर्षों तक रह सकता है। २ अन्न के कच्चे दानों मे से निकलनेवाला दूध की तरह का सफेद रस।

दूधाधारी—वि०=दूधाहारी।

दूधा-भाती—स्त्री०[हि० दूध+भात] विवाह के उपरात की एक रसम जिसमे वर और कन्या एक दूसरे को दूध और भात खिलाते हैं।

दूधाहारी—वि०[हि० दूध+आहारी] जो केवल दूध पीकर निर्वाह करता हो, अन्न, फल आदि न खाता हो।

दूधिया—वि०[हि० दूध+इया (प्रत्य०)] १ जिसमे दूध मिला हो अथवा जो दूध के योग से बना हो। जैसे—दूधिया भाँग, दूधिया हलुआ। २ जिसमे दूध होता हो। जैसे—दूधिया सिंघाडा। ३. जो दूध के रूप मे हो। जैसे—दूधिया निर्यास। ४ दूध के रग का। ५ ऐसा सफेद जिसमे कुछ नीली झलक हो। (मिल्की)

पु०१ एक तरह का सोहन हलुआ जो दूध के योग से बनता है। २ एक प्रकार का सफेद रत्न। ३ एक प्रकार का सफेद तथा मुलायम पत्थर। ४ ऐसा सफेद रग जिसमे नीली झलक हो। ५ एक तरह का बढिया आम।

स्त्री० [स० दुग्धिका]१ दुद्धी नाम की घास। २ एक प्रकार की चरी या ज्वार। ३ खडिया या खडी नामक सफेद खनिज मिट्टी। ४ एक प्रकार की चिडिया जिसे लटोरा भी कहते हैं।

दूधिया-कजई—पु०[हि०] एक प्रकार का रग जो नीलापन लिये हुए भूरा अर्थात् कजे के रग से कुछ खुलता होता है।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

दूधिया खाकी—वि०[हि० दूधिया+खाकी] सफेद राख के से रगवाला।

पु० उक्त प्रकार का रग।

दूधिया-पत्थर—पु०[हि० दूधिया+पत्थर] १ एक प्रकार का मुलायम सफेद पत्थर जिससे कटोरियाँ, प्याले आदि बनते है। २ एक प्रकार का बहुत चमकीला और चिकना बडा पत्थर जिसकी गिनती रत्नो मे होती है।

दूधिया-विष—पु०[हि० दूधिया+विष] कलियारी की जाति का एक विष जिसके सुन्दर पौधे काश्मीर तथा हिमालय के पश्चिमी भाग मे मिलते हैं। इसे 'तेलिया विष' और 'मीठा जहर' भी कहते है।

दूधी†—स्त्री०=दुद्धी।

दून—स्त्री०[हि० दूना] १ दूने होने की अवस्था या भाव।

मुहा०—दून की लेना या हाँकना=अपनी शक्ति, सामर्थ्य आदि के सबध मे बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। शेखी हाँकना। **दून की सूझना**=ऐसी बात सूझना जो सहज मे पूरी न हो सकती हो।

२. जितना समय लगाकर गाना या बजाना आरभ किया जाय आगे चलकर लय बढाते हुए उससे आधे समय मे उसे पूरा करना। ३ ताश के खेल मे, वह स्थिति जब कोई खिलाडी या पक्ष बदी हुई सख्या मे सरें आदि न बना सकने के कारण दुगनी हार का भागी समझा जाता है।

वि०= दूना।

पु०[देश०] दो पहाडो के बीच का मैदान। तराई। घाटी। जैसे—देहरादून।

दूनर—वि०[स० द्विनम्र] जो लचकर दोहरा हो गया हो।

दून-सिरिस—पु०[देश०] एक तरह का सफेद सुगधित फूलोवाला सिरिस का पेड।

दूना—वि०[सं० द्विगुण] जितनी कोई सख्या या चीज हो, उससे उतने ही और अधिक अनुपात मे होनेवाला। दुगना। दोगुना। जैसे—४ का दूना ८ होता है।

दूनौ†—वि०=दोनो।

दूब—स्त्री०[स० दूर्वा] एक तरह की प्रसिद्ध घास जिसका व्यवहार हिंदू लोग लक्ष्मी, गणेश आदि के पूजन मे करते है।

दू-बदू—क्रि० वि० [फा०] १ आमने-सामने। मुहाँ-मुंह। जैसे—उनसे मिलकर दू-बदू बातें कर लो। २ मुकाबले मे। जैसे—तुम तो अपने बडो से भी दू-बदू कहा-सुनी करते हो।

दूबर†—वि०=दूबरा (दुबला)।

दूबरा—वि० [स० दुर्बल] १ दुबला-पतला। क्षीण-काय। कृश। २ कमजोर। दुर्बल। ३ किसी की तुलना मे कम योग्यता या शक्ति-वाला अथवा हीन।

दूबला†—वि०=दुबला।

दूबा†—स्त्री० =दूब।

दूबिया—पु०[हि० दूब+इया (प्रत्य०)] एक तरह का हरा रग। हरी घास का-सा रग।

वि० उक्त प्रकार के रग का।

दूबे—पु०[स० द्विवेदी] द्विवेदी ब्राह्मण।

दूभर—वि० [स० दुर्भर]१ जो कठिनता से सहन किया जा सके। २ कठिन। मुश्किल। जैसे—आज का दिन कटना दूभर हो रहा है।

दूमना—अ०[स० द्रुम] हिलना-डोलना।

दूमा—पु०[स०] एक प्रकार का पुरानी चाल का चमडे का छोटा थैला जिसमे तिब्बत से चाय भर कर आती थी।

दूमुहाँ—वि०=दुमुँहाँ।

दूरग†—पु०=दुर्ग (किला)। उदा०—सखा लष्य उत्तर सयल, कमऊँ गढ दूरग।—चदबरदाई।

दूरंगम—वि०[स० दूर√गम् (जाना)+खच्, मुम्] =दूरगामी।

दूरंतरं—अव्य०[स० दूरातरे] दूर से। उदा०—दुरतरी आवतौ देखि।—प्रिथीराज।

दूरंदेश—वि०[फा० दूरअदेश] [भाव० दूरदेशी] अग्र-शोची। दूरदर्शी।

दूरदेशी—स्त्री०[फा०] दूरदर्शिता।

दूर—वि०[स० दूर्√इ (गति)+रक्, धातु का लोप, रलोप, दीर्घ][फा० दूर] [भाव० दूरत्व, दूरी] जो देश, काल, सबध, स्थिति आदि के विचार से किसी निश्चित वस्तु, बिंदु, व्यक्ति आदि से बहुत अतर या फासले पर हो। जो निकट, पास या समीप अथवा किसी से मिला हुआ न हो।

पद—दूर का- जो पास या समीप का न हो। जिससे घनिष्ठ लगाव या सबध न हो। जैसे—(क) वे भी हमारे दूर के रिश्तेदार है। (ख) ये सब तो बहुत दूर की बातें है। **दूर की बात**- (क) बहुत आगे

चलकर आनेवाली बात। (ख) बहुत कठिन और प्राय अनहोनी-सी बात। (ग) दूरदर्शिता और समझदारी की बात।

मुहा०—दूर की कहना=बहुत समझदारी की बात और दूरदर्शिता की बात कहना। **दूर की सूझना**=दूरदर्शिता की बात ध्यान मे आना। (ख) ऐसी बात का ध्यान मे आना जो प्राय अनहोनी या असभव हो। (व्यग्य)

क्रि० वि०१ देश, काल, सबध आदि के विचार से किसी निश्चित विंदु से बहुत अतर पर। बहुत फासले पर। 'पास' का विपर्याय। जैसे—उनका मकान यहाँ से बहुत दूर है। २ अलग। पृथक्। जैसे—वे झगडो से दूर रहते हैं।

मुहा०—दूर करना=(क) अलग या जुदा करना। अपने पास से हटाना। (ख) न रहने देना। नष्ट कर देना। जैसे—बीमारी दूर करना। **दूर खिचना, भागना या रहना**—उपेक्षा, घृणा, तिरस्कार आदि के कारण बिलकुल अलग रहना। पास न जाना। बचना। जैसे—इस तरह की बातो मे सदा दूर रहना चाहिए। **दूर तक पहुँचना**=दूर की या बहुत बारीक बात सोचना। **दूर दूर करना**=उपेक्षा, घृणा आदि के कारण तिरस्कारपूर्वक अपने पास से अलग करना या हटाना। **दूर होना**=(क) पास से अलग हो जाना। लगाव या सबध न रह जाना। जैसे—अब वे पुरानी आदतें दूर हो गई हैं। (ख) नष्ट हो जाना। मिट जाना। जैसे—बीमारी दूर हो गई है।

पद—दूर क्यों जायँ या जाइए=अपरिचित या दूर का दृष्टात न लेकर परिचित और निकटवाले का ही विचार करे। जैसे—दूर क्यो जायँ, अपने भाई-बदो को ही देख लीजिए।

दूरक—वि०[स० दूर+णिच्+ण्वुल्—अक]१ दूर करने या हटानेवाला। २ दूर या अलग रखनेवाला; और फलत विरोधी। उदा०—ये उभय परस्पर पूरक हैं अथवा दूरक यह कौन कहे।—मैथिलीशरण।

दूरगामी (मिन्)—वि०[स० दूर√गम् (जाना)+णिनि] दूर तक गमन करनेवाला।

दूर-चित्र—पु०[मध्य०स०] [वि० दूर-चित्री] वह चित्र या प्रतिकृति जो विद्युत् की सहायता से दूरी पर प्रस्तुत की जाती है। (टेलिफोटोग्राफ)

दूर-चित्रक—पु०[स० दूरचित्र+क्विप्+णिच्+ण्वुल्—अक] वह यत्र जिसकी सहायता से दूरचित्र प्रस्तुत किये जाते हैं। (टेलिफोटोग्राफ)

दूर-चित्रण—पु०[स० त०] दूर-चित्रक यत्र की सहायता से दूर-चित्र प्रस्तुत करने की क्रिया या प्रणाली। (टेलिफोटोग्राफी)

दूरता—स्त्री० [स० दूर+तल्—टाप्]=दूरी।

दूरता-मापक—पु०[ष०त०] एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से भू-मापन, युद्ध-क्षेत्र आदि मे वस्तुओ की दूरी जानी जाती है। (टेलिमीटर)

दूरत्व—पु०[स० दूर+त्व] दूर होने की अवस्था या भाव। दूरी।

दूर-दर्श—पु०[ष०त०] रेडियो की तरह का एक उपकरण जिसमे अभिनय प्रसारण, भाषण आदि करनेवाले व्यक्तियो के कथन सुनाई पडने के साथ-साथ उनके चित्र भी दिखाई पडते है। (टेलीविजन)

दूर-दर्शक—वि०[ष०त०]१ दूरदर्शी। २ बुद्धिमान।
पु०दूर-बीन। दूर-वीक्षक। (दे०)

दूरदर्शक-यत्र—पु०[कर्म०स०] दूर-बीन। दूर-वीक्षक।

दूर-दर्शन—पु० [ष०त०] १ दूर की चीज देखना या बात सोचना, समझना। २ [ब०स०] गिद्ध। ३ वैज्ञानिक प्रक्रिया जिसमें विद्युत् तरगो की सहायता से बहुत दूर के दृश्य प्रत्यक्ष रूप से सामने दिखाई देते हैं। ४ दे० 'दूर-दर्श'।

दूर-दर्शिता—स्त्री०[स० दूरदर्शिन्+तल्—टाप्] दूरदर्शी होने की अवस्था, गुण या भाव। दूरदेशी।

दूरदर्शी (शिन्)—वि०[स०] बहुत दूर तक की बात पहले ही सोच तथा समझ लेनेवाला।
पु०१ पडित। विद्वान्। २ बुद्धिमान्। ३ गिद्ध नामक पक्षी।

दूर-दृष्टि—स्त्री०[स०त०] भविष्य की बातो के सबध मे पहले से ही सोचने-समझने की शक्ति।

दूर-पात—वि०[ब०स०] दूर से आने के कारण थका हुआ।

दूर-पार—अव्य०[हिं०] इसे दूर करो, और इसका नाम तक न लो। (स्त्रियाँ) उदा०—गाल पर ऊँगली को रखकर यूँ कहा। मैं तेरे घर आऊँगी। ऐ दूर-पार।—रगी।

दूर-प्रसर—वि०[ब०स०] दूर तक फैलनेवाला। उदा०—वे है समृद्धि की दूर-प्रसर माया मे।—निराला।

दूर-प्रहारी (रिन्)—वि० [स० दूर-प्र√हृ (हरण)+णिनि] १ दूर तक प्रहार करनेवाला। २ (तोप या बदूक) जिसके गोले-गोलियो की उडान का पल्ला अधिक लबा होता है, अर्थात् जो बहुत दूर तक मार करे।

दूरबा†—स्त्री०=दूर्वा।

दूरबीन—वि०[फा०] दूर तक देखनेवाला।
स्त्री० दे० 'दूरवीक्षक' (यत्र)।

दूर-बोध—पु०[ष०त०] शारीरिक इद्रियों की सहायता लिये बिना केवल आध्यात्मिक या मानसिक बल से दूसरे के मन की बाते या विचार जानने की क्रिया या विद्या। (टेलिपैथी)

दूर-बोधी (धिन्)—पु०[स० दूरबोध+इनि] वह जो दूरबोध की कला या विद्या जानता हो। (टेलिपैथिस्ट)
वि० दूर-बोध की कला या विद्या से सबध रखनेवाला। (टेलिपैथिक)

दूर-भाषक—पु०[ष०त०] [वि०-दूर-भाषिक] एक प्रसिद्ध यत्र जिसकी सहायता से दूर बैठे हुए लोग आपस मे बात-चीत करते है। (टेलिफोन)

दूर-भाषिक—वि०[स०] दूर-भाषक यत्र सबधी या उसके द्वारा होनेवाला। (टेलीफोनिक) जैसे—दूर-भाषिक सवाद।

दूर-मुद्र—पु०[स०] दूर-मुद्रक यत्र की सहायता से अकित दूर-लेख। (टेलिप्रिंट)

दूर-मुद्रक—पु०[स०] एक आधुनिक यत्र जिसकी सहायता से दूर-लेख (तार से आये हुए सदेश, समाचार आदि) कागज पर छपते चलते हैं। (टेलिप्रिंटर)

विशेष—वस्तुत यह दूर-लेखक यत्र के साथ लगा हुआ एक प्रकार का टकन यत्र होता है, जिसमे आये हुए सदेश आदि हाथ से लिखने की आवश्यकता नही रह जाती, वे आप से आप कागज पर टकित होते रहते या छपते चलते है।

दूर-मुद्रण—पु०[स०] दूर-मुद्रक यत्र के द्वारा सदेश टंकित करने या छापने की प्रक्रिया या प्रणाली। (टेलीप्रिंटिंग)

दूर-मूल—पु० [ब०स०] मूंज।

दूर-लेख—पुं०[ष० त०] दूर-लेखक यंत्र की सहायता से (अर्थात् तार द्वारा) आया हुआ संदेश या समाचार। (टेलिग्राम)

दूर-लेखक—पुं० [ष० त०] १ एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा कुछ विशिष्ट संकेतों के द्वारा दूरी पर समाचार आदि भेजे जाते हैं। तार द्वारा समाचार भेजने का यंत्र। (टेलिग्राफ) २. वह जो उक्त यंत्र के द्वारा समाचार भेजने और प्राप्त करने की विद्या जानता हो। (टेलिग्राफिस्ट)

दूरलेखत (तस्)—क्रि० वि० [सं० दूरलेख+तस्] दूर-लेखक यंत्र की प्रक्रिया अथवा सहायता से। (टेलिग्रफिकली) जैसे—उत्तर दूर-लेखत भेजेंगे।

दूर-लेखी (खिन्)—वि०[सं० दूरलेख+इनि] दूर-लेख के द्वारा होने या उससे संबंध रखनेवाला। (टेलिग्राफिक) जैसे—दूर-लेखी धनादेश। (टेलिग्राफिक मनीआर्डर)

दूरवर्ती (र्तिन्)—वि०[सं० दूर√वृत (बरतना)+णिनि] जो अधिक दूरी पर स्थित हो। दूर का।

दूर-वाणी—स्त्री० दे० 'दूर-भाषक'।

दूर-विक्षेपक—पुं०दे० 'प्रेषित्र'।

दूर-वीक्षक—पुं०[ष०त०] नल के आकार का एक प्रसिद्ध उपकरण जिसे आँखों के सामने सटाकर रखने पर दूर की चीजें कुछ पास और फलत स्पष्ट दिखाई देती है। दूर-बीन। (टेलिस्कोप)

दूर-वीक्षण—पुं०[ष० त०] दूर की चीजें दूर-वीक्षक की सहायता से देखने की क्रिया या भाव।

दूरस्थ—वि०[सं० दूर-√स्था (ठहरना)+क]१ जो दूरी पर स्थित हो। २ (घटना) जिसके वर्तमान में घटित होने की संभावना न हो।

दूरांतरित—वि०[दूर-अंतरित]१ दूर किया हुआ। २ दूरस्थ।

दूरागत—भू० कृ० [दूर-आगत पं० त०] दूर से आया हुआ। उदा०—'माँ'। फिर एक किलक दूरागत गूँज उठी कुटिया सूनी।—प्रसाद।

दूरान्वय—पुं०[दूर-अन्वय तृ० त०] रचना का वह दोष जो कर्त्ता और क्रिया, विशेष्य और विशेषण आदि के पास-पास न रहने अर्थात् परस्पर अनावश्यक रूप से दूर रहने के कारण उत्पन्न होता है।

दूरापात—पुं०[दूर-आपात ब०स०] वह अस्त्र जो दूर से फेंककर चलाया जाय।

दूरारूढ़—वि०[दूर-आरूढ स० त०] १ बहुत आगे बढ़ा हुआ। २ तीव्र। ३ बद्धमूल। ४ प्रगाढ।

दूरि—वि०=दूर।
स्त्री०=दूरी।

दूरी—स्त्री०[सं० दूर+ई (प्रत्य०)]१ दूर होने की अवस्था या भाव। २ दो वस्तुओ, बिंदुओ आदि के बीच का पारस्परिक अंतर। ३ दो वस्तुओं, बिंदुओं आदि के बीच का अवकाश, विस्तार या स्थान।
स्त्री०[?] खाकी रंग की एक प्रकार की लवा (चिड़िया)।

दूरीकरण—पुं०[सं० दूर+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] दूर करने या हटाने की क्रिया या भाव।

दूरे-अमित्र—पुं०[ब०स० अलुक् समास] उनचास मरुतो में से एक मरुत् का नाम।

दूरोह—पुं०[सं०दुर्√रुह् (चढ़ना)+खल्, दीर्घ] आदित्य लोक जहाँ चढ़कर जाना बहुत कठिन है।

दूरोहण—पुं०[सं० दुर्-रोहण प्रा० ब० स०] सूर्य।

दूर्य—पुं०[सं० दूर+यत्]१ छोटा कचूर। २ गुह। मल। विष्ठा।

दूर्वा—स्त्री० [सं०√दूर्व् (हिंसा)+अच्—टाप्] एक प्रसिद्ध पवित्र घास जो देवताओ को चढ़ाई जाती है। दूब।

दूर्वाक्षी—स्त्री० [सं०] वसुदेव के भाई वृक की स्त्री का नाम। (भागवत)

दूर्वा-क्षेत्र—पुं० [ष०त०] १ वह क्षेत्र जिसमे दूब होती हो। २ खेल का वह मैदान जिसमे छोटी-छोटी घास लगी हुई हो। (लान)

दूर्वाद्य घृत—पुं०[दूर्वा-आद्य ब०स०, दूर्वाद्य-घृत कर्म०स०] वैद्यक मे, एक प्रकार की बकरी का घी जिसमे दूब, मजीठ, एलुआ, सफेद चंदन आदि मिलाया जाता है और जिसका व्यहार आँख, मुँह, नाक, कान आदि से रक्त जानेवाला रक्त रोकने के लिए होता है।

दूर्वाष्टमी—स्त्री०[दूर्वा-अष्टमी मध्य०स०] भादों सुदी अष्टमी जिस दिन हिंदू व्रत करते हैं।

दूर्वासोम—पुं० [सं०] एक तरह की सोमलता। (सुश्रुत)

दूर्वेष्टिका—स्त्री०[सं० दूर्वा-इष्टिका मध्य०स०] एक तरह की ईंट जिससे यज्ञ की वेदी बनाई जाती थी।

दूलन†—पुं० =दौलन।

दूलभ†—वि०=दुर्लभ।

दूलह—पुं०[सं० दुर्लभ, प्रा० दुल्लह] [स्त्री० दुलहिन]१ वह मनुष्य जिसका विवाह अभी हाल मे हुआ हो अथवा शीघ्र ही होने को हो। दुलहा। वर। नौशा। २ स्त्री की दृष्टि से उसका पति या स्वामी। ३ बहुत बना-ठना आदमी। ४ मालिक। स्वामी।
वि० जो दुलहे के समान बना-ठना हो। उदा०—दूलह मेरो कुँवर कन्हैया।—गदाधर भट्ट।

दूलिका—स्त्री०=दूली।

दूलित*—वि०- दोलित।

दूली—स्त्री०[सं०दूर+अच्—ङीप्, लत्व] नील का पेड़।

दूल्हा†—पुं० दूलह।

दूवा†—पुं०=दूआ।

दूवौ—स्त्री० [अ० दुआ] १. दुआ। प्रार्थना। २ आज्ञा। हुकुम। उदा०—राणी तदि दूवौ दीध रुषमणी।—प्रिथीराज।
वि०=दोनों।

दूष्य—पुं० [सं०√दु(ताप)+क्विप्, दू√ष्यै (दूर करना)+क] खेमा। तंबू।

दूषक—वि० [सं०√दूष् (विकार)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ [स्त्री० दूषिका]१ दोष निकालने या लगानेवाला। २ आक्षेप या दोषारोपण करनेवाला। ३ दोष या विकार उत्पन्न करनेवाला।

दूषण—पुं०[सं०√दूष्+णिच्+ल्युट्—अन]१ दोष लगाने की क्रिया या भाव। २ दोष। ३ अवगुण। बुराई। ४. जैनियो के सामयिक व्रत मे ३२ त्याज्य बातें या अवगुण जिनमे से १२ कायिक, १० वाचिक और १० मानसिक हैं। ५. रावण का एक भाई जिसका वध रामचन्द्र ने पंचवटी मे किया था।
वि०[√दूष्+णिच्+ल्यु—अन]नष्ट करने या मारनेवाला। विनाशक।

संहारक। उदा०—लक्ष्मण अरु शत्रुघ्न रीह दानव-दल दूषण।—केशव।

दूषणारि—पु०[स० दूषण-अरि ष०त०] दूषण नामक राक्षस को मारनेवाले रामचंद्र।

दूषणीय—वि०[स० √दूष +णिच् +अनीयर्] १ जिसमे दोष निकाला जा सके। २ जिस पर दोष लगाया जा सके।

दूषन†—पु० = दूषण।

दूषना—स०[स० दूषण] १ दोष लगाना। २ ऐब लगाकर निन्दा या बुराई करना।

अ० दोष या अवगुण से युक्त होना।

दूषि—स्त्री०[स०√दूष् +इन्] =दूषिका।

दूषिका—स्त्री० [स० दूषि +कन्—टाप्] १ चित्र बनाने की कूची। २ आँख मे से निकलनेवाली मैल।

वि० स० 'दूषक' का स्त्री०।

दूषित—वि०[स०√दूष् +क्त]१ जिसमें दोष हो। दोष से युक्त। २ जिस पर दोष लगाया गया हो। ३ बुरा। खराब।

दूषीविष—पु०[सं०√दूष् +ई, दूषी-विष कर्म०स०] शरीर मे होनेवाला एक तरह का विष जो धातु को दूषित करता है। इसे हीन विष भी कहते है। (सुश्रुत)

दूष्य—वि०[स०√दूष् +णिच् +यत्]१ जिस पर या जिसमे दोष लगाया जा सके। जो दूषित कहे जाने योग्य हो। २ निंदनीय। बुरा। ३ तुच्छ। हीन।

पु०१ कपड़ा। वस्त्र। २ प्राचीन काल की एक प्रकार का ऊनी ओढ़ना या चादर। धुस्सा। ३ खेमा। तबू। ४ हाथी बाँधने का रस्सा। ५ जहर। विष। ६ पूय। मवाद। ७ प्राचीन भारतीय राजनीति मे, ऐसा व्यक्ति जो राज्य या शासन को हानि पहुँचानेवाला हो।

दूष्य-महामात्र—पु०[कर्म०स०] ऐसा न्यायाधीश या महामात्र जो अदर ही अदर राज्य का शत्रु हो या शत्रु-पक्ष से मिला हो। (कौ०)

दूष्सना†—स०, अ० दूषना।

दूसर†—वि० = दूसरा।

दूसरा—वि०[हि० दो +सर (प्रत्य०)पु० हि० दोसर] [स्त्री० दूसरी] १ जो क्रम या सख्या के विचार मे दो के स्थान पर पडता हो। पहले के ठीक बादवाला। जैसे—(क) यह उनका दूसरा लडका है। (ख) उसके दूसरे दिन वे भी चले गये। २ दो या कई मे से कोई एक, विशेषत प्रस्तुत अथवा उस एक से भिन्न जिसका उल्लेख या चर्चा हुई हो। जैसे—एक पुस्तक तो हमने छाँट ली है, दूसरी कोई आप भी ले ले। ३ प्रस्तुत से भिन्न। जैसे—यह तो दूसरी बात हुई। ४ अतिरिक्त। अन्य। और। जैसे—वह दूसरे साधनो से कही अधिक धन कमाता है।

सर्व० १ जिसकी चर्चा न हुई हो। बचा हुआ। जैसे—कोई दूसरा इसका आनन्द क्या जाने। २ जिसका दोनो पक्षो मे से किसी के साथ कोई लगाव या सबध न हो। जैसे—आपस की बात-चीत (या लडाई) मे दूसरो को नही पडना चाहिए।

दूहना—स०[स० दोहन] १. कुछ स्तनपायी मादा जीवो के स्तनो मे से उन्हे निचोडते तथा दबाते हुए दूध निकालना। जैसे—गाय, भैस या बकरी दूहना। २ अदर का तरल पदार्थ खीचकर या दबाकर बाहर निकालना। जैसे—थूहर या पपीते का दूध दूहना। ३ किसी वस्तु मे से पूरी तरह से या अधिक मात्रा मे तत्त्व या सार निकालना। ४. किसी को धोखे मे रखकर उससे खूब रुपए या कोई चीज वसूल करना। जैसे—किसी से रुपए दूहना। उदा०—सूर स्याम तब तै नहि आए, मन जब त लीन्हा दोही।—सूर।

विशेष—इसका प्रयोग (क) उस आधार या व्यक्ति के सबध मे भी होता है जिसे दूहते है और (ख) उस पदार्थ के सबध मे भी होता है जो दूहा जाता है।

दूहनी†—स्त्री० = दोहनी।

दूहा†—पु० दोहा।

दूहिया—पु०[देश०] एक प्रकार का चूल्हा।

दृक—पु०[स०√दृ (विदारण) +कक्] छिद्र। छेद।

पु०[?] हीरा।

दृकाण—पु० =दृक्काण।

दृक्कर्ण—पु०[स० दृश्-कर्ण ब०स०] साँप।

दृक्कर्म(न्)—पु० [स० दृश्-कर्मन् मध्य० स०] वह सस्कार या क्रिया जो ग्रहो को अपने क्षितिज पर लाने के लिए की जाती है। यह सस्कार दो प्रकार का होता है, आक्षदृक् और आयनदृक्। (ज्यो०)

दृक्काण—पु० [यू० डेकानस] फलित ज्योतिष मे एक राशि का तीसरा भाग जो दस अशो का होता है।

दृक्क्षेप—पु० [स० दृश्-क्षेप ष० त०] १ दृष्टिपात। अवलोकन। २ दशम लग्न के नताश की भुज-ज्या जिसका विचार सूर्यग्रहण के स्पष्टीकरण मे किया जाता है।

दृक्पथ—पु० [स० दृश्-पथिन् ष० त०] दृष्टि का मार्ग। दृष्टि-पथ।

मुहा०—**दृक्पथ मे आना** दिखाई देना। सामने होना।

दृक्पात—पु० [स० दृश्-पात ष० त०] दृष्टिपात। अवलोकन।

दृक्प्रसादा—स्त्री० [स० दृश्-प्र √सद् +णिच् +अण्-टाप्] कुलत्था। कुलत्थांजन।

दृक्शक्ति—स्त्री० [दृश्-शक्ति ष० त०] १ देखने की शक्ति। २ प्रकाशरूप चैतन्य। ३ आत्मा।

दृक्श्रुति—पु० [स० दृश्-श्रुति ब० स०] साँप।

दृखत*—पु० [सं० दृषत्] पत्थर।

†पु० दरख्त (वृक्ष)।

दृगचल—पु० [स० दृश्-अचल ष० त०] १ पलक। २ चितवन। उदा०—चचल चारु दृगचल सो।—केशव।

दृगबु—पु० [स० दृश्-अबु ष० त०] १ आँखो मे निकलनेवाला पानी। २ अश्रु। आँसू।

दृग—पु० [स०] १ आँख। नेत्र। (मुहा० के लिए देखो 'आँख' के मुहा०) २ देखने की शक्ति। दृष्टि। ३ दो आँखो के आधार पर, दो की सख्या।

दृगध्यक्ष—पु० [स० दृश्-अध्यक्ष ष० त०] सूर्य।

दृग-मिचाव—पु० [हि० दृग +मीचना] आँख-मिचौली नाम का खेल।

दृग्गणित—पु० [स० दृश्-गणित मध्य० स०] ज्योतिष मे गणित की वह क्रिया जो ग्रहो का वेध करके उनकी यथार्थ या वास्तविक स्थिति के आधार पर की जाती है।

दृग्गणितैक्य—पुं० [सं० दृग्गणित्-ऐक्य ष० त०] ग्रहों को किसी समय पर गणित से स्पष्ट करके फिर उसे वेधकर मिलाना और न्यूनता या अधिकता जान पड़ने पर उसमें ऐसा संस्कार करना जिससे ग्रहों के वेध और स्पष्ट स्थिति में फिर अंतर न पड़े।

दृग्गति—स्त्री० [सं० दृश्-गति ष० त०] १ दृष्टि की गति या पहुँच। २ दशम लग्न के नतांश की कोटि-ज्या।

दृग्गोचर—वि० [सं० दृश्-गोचर ष० त०] जो आँखों से दिखाई देता हो।

दृग्गोल—पुं० [सं० दृश्-गोल मध्य० स०] गणित ज्योतिष में, वह कल्पित वृत्त जो ऊर्ध्व स्वस्तिक और अध स्वस्तिक में होता हुआ माना जाता है और जिसे ग्रहों के उदित होने की दिशा में रखकर उनकी यथार्थ स्थिति का पता लगाया जाता है।

दृग्ज्या—स्त्री० [सं० दृश्-ज्या मध्य० स०] दृक्-मंडल या दृग्गोल के खस्वस्तिक से किसी ग्रह के नतांश की ज्या। (देखें 'नतांश')

दृग्भू—पुं० [सं० दृश् √भू (होना) +क्विप्] १ वज्र। २ सूर्य। ३ साँप।

दृग्लंबन—पुं० [सं० दृश्-लंबन ब० स०] वह पूर्वापर संस्कार जो ग्रहण स्पष्ट करने में सूर्यचंद्र गर्भाभिप्राय से एक सूत्र में आ जाने पर उन्हें पृष्ठाभिप्राय से एक सूत्र में लाने के लिए किया जाता है।

दृग्विष—पुं० [सं० दृश्-विष ब० स०] ऐसा साँप जिसकी आँखों में विष होता हो, अर्थात् जिसके देखने मात्र से छोटे-मोटे जीव मर जाते या मूर्च्छित हो जाते हों।

दृग्वृत्त—पुं० [सं० दृश्-वृत्त ष० त०] क्षितिज।

दृङ्नति—स्त्री० [सं० दृश्-नति ष० त०] गणित ज्योतिष में याम्योत्तर संस्कार जो ग्रहण स्पष्ट करने के समय चंद्रमा और सूर्य का एक सूत्र में लाने के लिए किया जाता है।

दृङ्मंडल—पुं० [सं० दृश्-मंडल ष० त०] दृग्गोल।

दृढ़—वि० [सं० √दृह् (मजबूत होना) +क्त] १ जो शिथिल या ढीला न हो। प्रगाढ़। जैसे—दृढ़ आलिंगन, दृढ़ बंधन। २ जो जल्दी टूट-फूट न सकता हो। पक्का। मजबूत। ३ बलवान और हृष्ट-पुष्ट। ४ जो जल्दी अपने स्थान से इधर-उधर या विचलित न हो। जैसे—दृढ़ मनुष्य, दृढ़ विश्वास। ५ जिसमें किसी प्रकार का परिवर्तन या हेर-फेर न हो सकता हो। ध्रुव। जैसे—दृढ़ निश्चय।

पुं० १ लोहा। २ विष्णु। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४ तेरहवें मनु का एक पुत्र। ५ संगीत में, सात प्रकार के रूपकों में से एक। ६ गणित में, ऐसा अंक जिसे विभाजित करने पर पूरे या समूचे विभाग न हो सकें, केवल खंडित विभाग हों। ताक अदद। जैसे—३, १, ७, २५ आदि।

दृढ़-कंटक—पुं० [ब० स०] क्षुद्रफलक वृक्ष।

दृढ़-कर्मा (र्मन्)—वि० [ब० स०] जो अपना काम दृढ़ता-पूर्वक अर्थात् धैर्य और स्थिरता से करता हो।

दृढ़क-व्यूह—पुं० [सं० दृढ़ +कन्, दृढ़क-व्यूह कर्म० स०] ऐसी व्यूह-रचना जिसमें पक्ष तथा कक्ष कुछ-कुछ पीछे हटे हों। (कौ०)

दृढ़-कांड—पुं० [ब० स०] १ बाँस। २. रोहिस घास।

दृढ़-कांडा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] पातालगारुडी लता। छिरेटा।

दृढ़कारिता—स्त्री० [सं० दृढ़कारिन् +तल्—टाप्] किसी चीज या बात को दृढ़ या पक्का करने की क्रिया या भाव।

दृढ़कारी (रिन्)—वि० [सं० दृढ़ √कृ (करना) +णिनि] [भाव० दृढ़कारिता] १ दृढ़ता से काम करनेवाला। २ किसी चीज या बात को दृढ़ या मजबूत करनेवाला।

दृढ़क्षत्र—पुं० [सं०] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

दृढ़-क्षुरा—स्त्री० [ब० स० टाप्] वल्वजा तृण। सागे-बागे।

दृढ़-ग्रंथिका—स्त्री० [ब० स०, कप्-टाप्, इत्व] १ राब। २ कच्ची चीनी। खाँड।

दृढ़-ग्रंथि—वि० [ब० स०] जिसकी गाँठें मजबूत हों।

पुं० बाँस।

दृढ़-चेता (तस्)—वि० [ब० स०] दृढ़ या पक्के विचारों अथवा संकल्पोंवाला।

दृढ़च्छद—पुं० [ब० स०] दीर्घरोहिष तृण। बड़ी रोहिस।

दृढ़-च्युत—पुं० [सं०] परपुरंजय नामक राजा की कन्या के गर्भ से उत्पन्न अगस्त्य मुनि के एक पुत्र।

दृढ़-तरु—पुं० [कर्म० स०] धव का पेड़।

दृढ़ता—स्त्री० [सं० दृढ़ +तल्—टाप्] १ दृढ़ होने की अवस्था, गुण या भाव। २ पक्कापन। मजबूती। ३ अपने विचार, प्रतिज्ञा आदि पर जमे रहने का भाव।

दृढ़-तृण—पुं० [ब० स०] मूँज नाम की घास।

दृढ़-तृणा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] वल्वजा तृण।

दृढ़त्व—पुं० [सं० दृढ़ +त्व] = दृढ़ता।

दृढ़-त्वच्—वि० [ब० स०] जिसकी त्वचा या छाल कड़ी हो।

पुं० ज्वार का पौधा।

दृढ़-दंशक—पुं० [कर्म० स०] एक प्रकार का जल-जंतु।

दृढ़-दस्यु—पुं० [सं०] एक ऋषि जो दृढ़च्युत के पुत्र थे।

दृढ़-धन—पुं० [ब० स०] शाक्य मुनि। बुद्ध।

दृढ़-धन्वा (न्वन्)—पुं० [ब० स०, अनङ् आदेश] वह जो धनुष चलाने में दृढ़ हो या जिसका धनुष दृढ़ हो।

दृढ़धन्वी (न्विन्)—वि० [कर्म० स०] जिसका धनुष दृढ़ हो।

दृढ़-नाभ—पुं० [ब० स०] वाल्मीकि के अनुसार अस्त्रों का एक प्रकार का प्रतिकार जो विश्वामित्र जी ने रामचन्द्र को बताया था।

दृढ़-निश्चय—वि० [ब० स०] अपने निश्चय अर्थात् विचार या संकल्प पर दृढ़तापूर्वक अड़ा या जमा रहनेवाला। जो अपने निश्चय से जल्दी न टलता हो।

दृढ़-नीर—पुं० [ब० स०] नारियल, जिसके भीतर का जल धीरे-धीरे जम जाता है।

दृढ़-नेत्र—पुं० [ब० स०] विश्वामित्र जी के चार पुत्रों में से एक। (वाल्मीकि)

दृढ़-नेमि—वि० [ब०स०] जिसकी नेमि दृढ़ हो। जिसकी धुरी मजबूत हो।

पुं० अजमीढ़ वंशीय एक राजा जो सत्यधृति के पुत्र थे।

दृढ़-पत्र—वि० [ब० स०] जिसके पत्ते दृढ़ या मजबूत हों।

पुं० बाँस।

दृढ़-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] वल्वजा तृण। सागे-बागे।

दृढ़-पद—पुं० [ब० स०] तेइस मात्राओं का एक प्रकार का मात्रिक छंद। उपमान।

दृढ़-पाद—वि० [ब० स०] अपने विचारों का पक्का।
दृढ़-पादा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] यवतिक्ता।
दृढ़-पादी—स्त्री० [ब० स० ङीप्] भूम्यामलकी। भूआँवला।
दृढ़-प्रतिज्ञ—वि० [ब० स०] जो अपनी प्रतिज्ञा पर अटल रहे। अपनी प्रतिज्ञा पूरी करनेवाला।
दृढ़-प्ररोह—पु० [ब० स०] वट। बरगद।
दृढ़-फल—पु० [ब० स०] नारियल।
दृढ़-बंधिनी—स्त्री० [स० दृढ√बध् (बाँधना)+णिनि-ङीप्] अनंत-मूल नाम की लता।
दृढ़-भूमि—स्त्री० [ब० स०] योग-साधन मे ध्यान की वह भूमि या स्थिति जिसमे मन पूरी तरह से एकाग्र और स्थिर हो जाता है और जिसके उपरात सहज मे ससार से विरक्ति हो सकती है।
दृढ़-मुष्टि—वि० [ब० स०] १ जिसकी मुट्ठी की पकड मे खूब मजबूती हो। मुट्ठी म कसकर पकडनेवाला। २ कजूस। कृपण। ३ वे अस्त्र जो मुट्ठी मे पकड कर चलाये जाते हो। जैसे—तलवार, भाला आदि।
दृढ़-मूल—पु० [ब० स०] १ मूंज। २ मथानक या मथाना नाम की घास जो तालो मे होती है। ३ नारियल।
दृढ़-रंगा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] फिटकरी।
दृढ़-रोह—पु० [ब० स०] पाकर का पेड़।
दृढ़-लता—स्त्री० [कर्म० स०] पातालगारुडी लता। छिरेटा।
दृढ़-लोम् (न्)—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० दृढ़लोम्नी, दृढ़लोमा] जिसके शरीर के रोएँ दृढ, फलत कठोर तथा खडे हो।
पु० सूअर।
दृढ़-वर्म्मा (र्मन्)—पु० [ब० स०] धृतराष्ट्र के पुत्र का नाम।
दृढ़-वल्कल—वि० [ब० स०] जिसकी छाल कड़ी हो।
पु० १ सुपारी का पेड। २ लकुच का पेड।
दृढ़-वल्का—स्त्री० [ब० स० टाप्] अबष्ठा।
दृढ़-बीज—वि० [ब० स०] जिसके बीज कडे हों।
पु० १ चकवँड। २. बेर। ३ कीकर। बबूल।
दृढ़वृक्ष—पु० [कर्म० स०] नारियल।
दृढ़व्य—पु० [स०] एक प्राचीन ऋषि।
दृढ़-व्रत—वि० [ब० स०] अपने व्रत या सकल्प पर दृढ रहनेवाला।
दृढ़-संध—वि० [ब० स०] अपनी प्रतिज्ञा या सकल्प पर दृढ रहनेवाला।
पु० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दृढ़-सूत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्-टाप्, इत्व] मूर्वा नाम की लता। मुर्री।
दृढ़-स्कंध—पु० [ब० स०] १ पिंडखजूर। २ खिरनी का पेड़।
दृढ़स्यु—पु० [स०] लोपामुद्रा के गर्भ से उत्पन्न अगस्त्य मुनि का एक पुत्र।
दृढ़-हस्त—वि० [ब० स०] १ जो हथियार आदि पकडने मे पक्का हो। २ जो हर चीज मजबूती से पकड सकता हो।
पु० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दृढ़ांग—वि० [दृढ-अग ब० स०] दृढ अर्थात् मजबूत अगो या अवयवों-वाला। हृष्ट-पुष्ट।
पु० जीरा।
दृढ़ाई—स्त्री० दृढ़ता।
दृढ़ाना—स० [हि० दृढ+ना (प्रत्य०)] १ दृढ, मजबूत या कडा करना। २ निश्चित या स्थिर करना। उदा०—चले साथ अस मत्र दृढाई।—तुलसी।
अ० १ दृढ, मजबूत या कडा होना। २ निश्चित या स्थिर होना। पक्का होना।
दृढ़ायन—पु० [स०] १ दृढ या पक्का करना। पुष्टि। २ किसी की कही हुई बात, किये हुए काम अथवा किसी की नियुक्ति आदि को पक्का या ठीक ठहराना। (कनफर्मेशन)
दृढ़ायु—पु० [स०] १ तृतीय मनु सावर्णि के एक पुत्र का नाम। २ राजा ऐल का एक पुत्र जो उर्वशी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।
दृढ़ायुध—वि० [दृढ-आयुध ब० स०] १ अस्त्र ग्रहण करने मे पक्का। २ युद्ध मे तत्पर।
पु० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।
दृढ़ाश्व—पु० [स०] धुधुमार के एक पुत्र का नाम।
दृढ़ीकरण—पु० [स० दृढ+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्-अन] = दृढ़ायन।
दृत—वि० [स० √दृ (सम्मान, हिंसा)+क्त] [स्त्री० दृता] १. सम्मानित। २ आदृत।
दृता—स्त्री० [स० दृत+टाप्] जीरा।
दृताग्रवेग—वि० [स० दृत-अग्रवेग ब० स०] (सेना) जिसका अग्रभाग नष्ट हो गया हो। दे० 'प्रतिहृत'।
दृति—स्त्री० [स०√दृ (विदारण)+ति, ह्रस्वता] १ चमडा। खाल। २ खाल का बना हुआ थैला या पात्र। ३ पानी भरने की मशक। ४ गौओ, बैलो आदि के गले का झूलता हुआ चमडा। गल-कबल। ५ बादल। मेघ। ६ एक प्रकार की मछली।
दृति-धारक—पु० [ष० त०] एक प्रकार का पौधा जिसे आनदी और वामन भी कहते है।
दृतिहरि—पु० [स० दृति√हृ (हरण)+इन्] (खाल या चमडा चुराने-वाला) कुत्ता।
दृतिहार—पु० [स० दृति√हृ+अण्] मशक म पानी भरनेवाला, भिश्ती।
दृन्भू—पु० [स०√दृम्फ् (कष्ट देना)+कू नि० सिद्धि] १ वज्र। २ सूर्य। ३ राजा। ४ साँप।
दृप्त—वि० [स०√दृप् (गर्व)+क्त] १ इतराया हुआ। गर्वित। २ उग्र। प्रचड। ३ हर्ष से फूला हुआ। प्रफुल्लित। ४ चमकता हुआ।
दृप्र—वि० [स०√दृप्+रक्] १ प्रचड। प्रबल। २ जो इतरा रहा हो। अभिमानी। घमडी।
दृब्ध—वि० [स०√दृभ् (गूथना)+क्त] १ गुथा हुआ। ग्रथित। २. डरा हुआ। भयभीत।
दृश्—वि० [स० √दृश् (देखना)+क्विप्] १. देखनेवाला। दर्शक। २ दिखानेवाला। प्रदर्शक।
पु० देखने की क्रिया या भाव।
स्त्री० १. दृष्टि। २ आँख। ३ दो की सख्या। ४ ज्ञान।

दृशद्—स्त्री० = दृषद्।
दृशद्वती—स्त्री० = दृषद्वती।
दृशा—स्त्री० [स० दृश +टाप्] आँख।
दृशाकांक्ष्य—पु० [सं० दृश-आकाक्ष्य तृ० त०] कमल।
दृशान—पु० [स० √दृश् +आनच्] १ उजाला। प्रकाश। २. आभा। चमक। ३ गुरु। शिक्षक। ४. प्रजा का भली-भाँति पालन करनेवाला राजा। ५. ब्राह्मण। ६ विरोचन दैत्य का एक नाम।
दृशि—स्त्री० [स० √दृश् +इन्] = दृशी।
दृशी—स्त्री० [स० दृशि + ङीष्] १ दृष्टि। २ उजाला। प्रकाश। ३ शास्त्र। ४ शरीर के अदर का चेतन पुरुष।
दृशीक—वि० [स०] १ ध्यान देने योग्य। २ सुदर।
दृशोपम—पु० [स० दृशा-उपमा ब० स०] सफेद। कमल। पुंडरीक।
दृश्य—वि० [स० √दृश् +क्यप्] १ जो देखने मे आ सके या दिखाई दे सके। जिसे देख सकते हों। चाक्षुस। (विजुअल) जैसे—दृश्य जगत् या पदार्थ। २ जो दिखाई देता हो। ३ जो ठीक तरह से जाना जाता या समझ मे आता हो। ज्ञेय और स्पष्ट। ४ जो देखे जाने के योग्य हो। ५ दर्शनीय। मनारम। सुदर।
पु० १ वह घटना, पदार्थ या स्थल जो आँखो से दिखाई देता हो। दिखाई देनेवाली चीज या बात।
विशेष—भारतीय श्रौत दर्शनो मे दो तत्त्व माने गये है—द्रष्टा और दृश्य। ज्ञान स्वरूप चैतन्य को द्रष्टा और अचेतन अनात्मभूत जड को दृश्य कहा गया है। यह दृश्य तीन प्रकार का माना गया है— अव्याकृत, मूर्त और अमूर्त।
२ दिखाई देनेवाली घटना, वस्तु या स्थल। (व्यू) ३ ऐसी प्राकृतिक, कृत्रिम अथवा अकित घटना या स्थल जो विशेष रूप से देखे जाने के योग्य हो। दर्शनीय स्थान। (सीनरी) ४ साहित्य में, ऐसा काव्य या रचना जिसका अभिनय हो सकता या होता हो। नाटक। ५ नाटक के किसी अक का वह स्वतत्र विभाग जिसमे कोई एक घटना दिखाई जाती है। (सीन) ६ कोई ऐसा तमाशा या मनोरजक व्यापार जो आँखो के सामने हो रहा हो या होता हो। ७ गणित मे वह ज्ञात सख्या जो अको के रूप मे दी गई हो। ८ दे० 'दृश्य जगत्'।
दृश्य-जगत्—पु० [कर्म० स०] वह जगत् या ससार जो हमे अपने सामने प्रत्यक्ष दिखाई देता है। वास्तविक जगत्। (फिनामेनल वर्ल्ड)
दृश्यता—स्त्री० [स० दृश्य +तल्—टाप्] १ दृश्य होने या दिखाई देने की अवस्था या भाव। २ वह स्थिति जिसमे देखने की शक्ति अपना काम करती है। (विजिबिलिटी)
दृश्यमान—वि० [स० √दृश्+शानच्, यक, मुक्] १ जो दिखाई पड़ रहा हो। २. प्रत्यक्ष या स्पष्ट रूप मे दिखाई देनेवाला। ३ मनोहर। सुन्दर।
दृषत् (द्)—स्त्री० [स० √दृ (विदारण)+अदि, षुक, ह्रस्व] १ पर्वत की चट्टान। शिला। २ मसाले आदि पीसने की सिल या चक्की।
दृषद्—स्त्री०=दृषत्।
दृषद्वती—स्त्री० [सं० दृषत् +मतुप्—ङीष्] १ थानेश्वर के पास की एक प्राचीन नदी जिसका नाम ऋग्वेद मे आया है। इसे आज-कल घग्घर और राखी कहते हैं। २ विश्वामित्र की एक पत्नी का नाम। वि० 'दृषद्वान्' का स्त्री०।
दृषद्वान (वत्)—वि० [स० दृषद् +मतुप्] [स्त्री० दृषद्वती] पाषाण युक्त। शिलामय। पथरीला।
दृष्ट—वि० [सं० √दृश् (देखना) +क्त] १ देखा हुआ। २ दिखाई पडनेवाला। ३. प्रकट या व्यक्त होनेवाला।
पु० १. दर्शन। २. साक्षात्कार। ३ साख्य मे प्रत्यक्ष प्रमाण की सख्या।
दृष्ट-कूट—पु० [कर्म० स०] १ पहेली। २ साहित्य मे, ऐसी कविता जिसका अर्थ या आशय उसके शब्दो के वाच्यार्थ से नही, बल्कि रूढ अर्थों से निकलता हो और इसी लिए जिसे साधारणत सब लोग नही समझ सकते।
दृष्ट-नष्ट—वि० [स०] जो एक बार जरा-सा दिखाई देकर ही नष्ट या लुप्त हो जाय।
दृष्ट-फल—पु० [कर्म० स०] दार्शनिक मत से, किसी काम या बात का वह फल जो स्पष्ट रूप मे दिखाई देता या प्राप्त होता हो। जैसे—अध्ययन करने से हमे जो ज्ञान होता है, वह अध्ययन का दृष्ट-फल है।
विशेष—यदि कहा जाय कि अमुक ग्रथ का पाठ करने मे स्वर्ग मिलेगा, तो यह उसका अदृष्ट-फल माना जायगा।
दृष्टमान्—वि० [स० दृश्यमान्] १ जो दिखाई दे रहा हो। २ प्रकट। व्यक्त।
दृष्टवत्—वि० [स० दृष्ट +वति] १ जो प्रत्यक्ष के समान हो। २. लौकिक। सासारिक।
दृष्टवाद—पु० [ष० त०] एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमे केवल प्रत्यक्ष क्रियाओ, घटनाओ, चीजो आदि की सत्ता मानी जाती है, आत्मा, परमात्मा, स्वर्ग आदि अदृश्य चीजों की सत्ता नही मानी जाती।
दृष्टवान्—वि० [स० दृष्टवत्] प्रत्यक्ष के समान। प्रत्यक्षतुल्य।
दृष्टांत—पु० [स० दृष्ट-अन्त, ब० स०] १ किसी चीज या बात का अतिम, निश्चित और प्रामाणिक रूप देखना। २ कोई नई बात कहने अथवा मत प्रकट करने के समय उसकी प्रामाणिकता या सत्यता के पोषण या समर्थन के लिए उसी से मिलती-जुलती कही जानेवाली कोई ऐसी पुरानी और प्रामाणिक घटना या बात जिसे प्रायः लोग जानते हो। मिसाल। (इन्स्टैन्स) जैसे—भाइयों के पारस्परिक प्रेम का उल्लेख करते हुए उन्होंने राम और लक्ष्मण का दृष्टात दिया।
विशेष—उदाहरण और दृष्टांत मे मुख्य अतर यह है कि उदाहरण तो बौद्धिक और व्यावहारिक तथ्यों, पदार्थों, विचारो आदि के सबध मे नियम या परिपाटी के स्पष्टीकरण करने के लिए होता है, परन्तु दृष्टात प्राय आचरणो और कृतियो के सबध मे आदर्श और प्रमाण के रूप मे होता है। 'उदाहरण' का क्षेत्र अपेक्षाया अधिक विस्तृत और व्यापक हैं, इसी लिए 'दृष्टात' तो 'उदाहरण' के अन्तर्गत हो जाता है, पर 'उदाहरण' सर्वथा 'दृष्टांत' के अन्तर्गत नही होता। इसके सिवा उदाहरण का प्रयोग तो साधारण बातचीत के अवसर पर होता है, परन्तु दृष्टात का प्रयोग नियम, मर्यादा, विधि, विधान आदि के पालन के प्रसग मे होता है।
३. उक्त के आधार पर साहित्य मे, एक प्रकार का सादृश्य-मूलक अर्था-

लकार जिसमे उपमेय और उपमान दोनो से सबध रखनेवाले वाक्यो मे से धर्म की पारस्परिक समानता और बिम्ब-प्रतिबिम्ब भाव दिखाया जाता है।

विशेष—(क) 'उदाहरण' और 'दृष्टात' अलकारों मे यह अतर है कि उदाहरण मे तो साधारण का विशेष मे और विशेष का साधारण से समर्थन होता है, पर 'दृष्टान' से साधारण की समता साधारण से और विशेष की समता विशेष से होती है। इसके सिवा उदाहरण मे मुख्य लक्ष्य उपमेय वाक्य (वाक्य का पूर्वार्ध) होता है, पर दृष्टात मे मुख्य लक्ष्य उपमान वाक्य (वाक्य का उत्तरार्ध) होता है। (ख) दृष्टात और प्रतिवस्तूपमा मे यह अन्तर है कि दृष्टात मे तो कही हुई बातों के सभी धर्मों मे समानता होती है, परन्तु प्रतिवस्तूपमा मे किसी एक ही धर्म की समानता का उल्लेख होता है। इसी लिए कुछ लोगो का मत है कि इन्हे एक ही अलकार के दो भेद मानना चाहिए।

४ शास्त्र। ५ मरण। मृत्यु।

दृष्टार्थ—पु० [दृष्ट-अर्थ ब० स०] १ किसी शब्द का वह अर्थ जो बिलकुल स्पष्ट हो और सबकी समझ मे आता हो। २ ऐसा शब्द जिसका अर्थ बिलकुल स्पष्ट हो और सबकी समझ मे आता हो। ३ ऐसा शब्द जिसका बोध करानेवाला तत्व या पदार्थ ससार मे वर्तमान हो और प्रत्यक्ष दिखाई देता या देखा जा सकता हो। जैसे—गगा, मनुष्य, सूर्य।

दृष्टि—स्त्री० [स० √दृश्+क्तिन्] १ आँखो से देखकर ज्ञान प्राप्त करने या जानने-समझने का भाव, वृत्ति या शक्ति। अवलोकन। नजर। निगाह। २ देखने के लिए खुली हुई अथवा देखने मे प्रवृत्त आँखे। जैसे—जहा तक दृष्टि जाती थी, वहाँ तक जल ही जल दिखाई देता था।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।—फेंकना।—रखना।

मुहा०—**दृष्टि चलाना**=किसी ओर ताकना या देखना। **(किसी से) दृष्टि चुराना या बचाना**=लज्जा, सकोच आदि के कारण जान-बूझकर किसी के सामने न आना या न होना। जान-बूझकर अलग, दूर या पीछे रहना। **(किसी से) दृष्टि जुड़ना**=देखा-देखी होना। साक्षात्कार होना। **(किसी से) दृष्टि जोड़ना**=आँखें मिलाते हुए देखा-देखी या सामना करना। दिखाई देना। साक्षात्कार करना। **(किसी की) दृष्टि बाँधना**=ऐसा जादू करना कि लोगों को और का और दिखाई दे। **(किसी को) दृष्टि भर देखना**=जितनी देर इच्छा हो, उतनी देर खूब देखना। जी भरकर ताकना। **दृष्टि मारना**=आँख या पलकें हिलाकर इशारा या सकेत करना। **(किसी ओर) दृष्टि लगाना**=ध्यानपूर्वक या स्थिर दृष्टि से देखना।

३ मन मे कोई विशेष उद्देश्य या विचार रखकर किसी की ओर देखने की क्रिया या भाव। जैसे—अच्छी या बुरी दृष्टि, आशा, कृपा या प्रेम की दृष्टि, अनुसधान, निरीक्षण या रक्षा की दृष्टि।

क्रि० प्र०—रखना।

मुहा०—**(किसी की) दृष्टि पर चढ़ना**=(क) देखने मे बहुत अच्छा लगने के कारण ध्यान मे सदा बना रहना। भाना। जैसे—(क) यह किताब हमारी दृष्टि पर चढ़ी हुई है। (ख) दोष आदि के कारण आँखो मे खटकना। निगाह पर चढ़ना। जैसे—जब पुलिस की दृष्टि पर चढ़ा है, तब उसका बचना कठिन है। **(किसी पर) दृष्टि रखना**=किसी को इस प्रकार देखते रहना कि वह इधर-उधर न हो जाय। निगरानी रखना। **(किसी की) दृष्टि लगना**=ईर्ष्या, द्वेष आदि का दृष्टि का बुरा प्रभाव पड़ना। नजर लगना।

४ अनुग्रह या कृपा के भाव से युक्त होकर देखने की क्रिया, भाव या वृत्ति। मेहरबानी की नजर। उदा०—कब सो दृष्टि करि बरसह तन तरुवर होई जाम।—जायसी।

मुहा०—**(किसी से) दृष्टि फिरना**=पहले की-सी कृपा-दृष्टि न रहना। प्रीति या स्नेह न रहना। अप्रसन्न या खिन्न होना। **(किसी से) दृष्टि फेरना**=(किसी पर) पहले की-सी कृपा-दृष्टि न रखना। अप्रसन्न, खिन्न या विरक्त होना।

५ अनुराग या प्रेम के भाव से युक्त होकर देखने की क्रिया, भाव या वृत्ति।

मुहा०—**(किसी से) दृष्टि जुड़ना**=अनुराग या प्रेम का सबध स्थापित होना। **(किसी से) दृष्टि फिरना**=पहले का-सा अनुराग या प्रेम न रह जाना। **(किसी से) दृष्टि लगना**=(किसी से) दृष्टि जुड़ना। अनुराग या प्रेम का सबध स्थापित होना।

६ मन मे कोई बात सोचने समझने अथवा उस पर ध्यान देने या विचार करने की विशिष्ट वृत्ति या शक्ति। जैसे—अभी इस ग्रन्थ (या विषय) पर अनेक दृष्टियों से विचार होना चाहिए। ७ कोई चीज देखकर उसकी उपादेयता, गहराई, गुण दोष, योग्यता, हेतु आदि जानने या समझने की शक्ति। किसी विषय मे होनेवाली पैठ। जैसे—(क) साहित्य रचना का ठीक सौंदर्य समीक्षक की पैनी दृष्टि ही देखती है। (ख) कला-कृतियों के सबध मे उनकी दृष्टि बहुत पैनी है। ८ फलित ज्योतिष मे, ग्रहो की कुछ विशिष्ट प्रकार की वह स्थिति जिसके फल-स्वरूप एक राशि अथवा जन्म-कुडली के एक घर मे स्थित किसी ग्रह का दूसरी राशि अथवा जन्म-कुडली के दूसरे घर मे स्थित किसी ग्रह पर कुछ विशेष प्रकार का प्रभाव होना माना जाता है।

दृष्टि-कूट—पु० दृष्ट-कूट।

दृष्टिकृत्—पु० [स० दृष्टि√कृ (करना)+क्विप्] १ दर्शक। २ स्थल कमल।

दृष्टि-कोण—पु० [ष० त०] किसी बात या विषय को किसी विशिष्ट दिशा या पहलू से देखने अथवा सोचने-समझने का ढंग या वृत्ति। (व्यू-प्वाइन्ट) जैसे—(क) चाहे भाषा के दृष्टि-कोण से देखिए, चाहे भाव के दृष्टि-कोण से, रचना उत्तम है। (ख) इस विषय मे हमारा दृष्टि-कोण कुछ और ही है।

दृष्टि-क्रम—पु० [ष० त०] चित्राकन आदि मे ऐसी अभिव्यक्ति जिससे दर्शक को प्रत्येक वस्तु अपने उपयुक्त स्थान पर, ठीक तुलनात्मक मान मे और यथा-क्रम स्थित दिखाई दे। मुनासिबत। (पर्सपेक्टिव) उदाहरणार्थ यदि एक वृक्ष और उस पर बैठा हुआ तोता अकित किया जाय, तो तोते का आकार उतना ही होना चाहिए जितना साधारणत एक वृक्ष के अनुपात से उसका आकार होता है। यदि वृक्ष तो दो बित्ते भर का और तोता हो आधे या चौथाई बित्ते का तो चित्र का दृष्टि-क्रम ठीक नही माना जायगा।

दृष्टि-क्षेप—पु० [ष० त०] दृष्टिपात।

दृष्टि-गत—भू० कृ० [द्वि० त०] दृष्टि मे आया हुआ। देखा हुआ।

पु० १. वह जो देखने का विषय हो या जिसे देख सकें। २ आँखों का एक रोग। ३. सिद्धात।

दृष्टि-गोचर—वि०[ष० त०] १ जिसे आँखो से देखा जा सके। २ जो दिखाई देता हो।

दृष्टि-दोष—पु०[ष० त०] १ आँखो मे होनेवाला कोई दोष या विकार। २ पढने-लिखने, देखने-भालने या कोई काम करने मे होनेवाला ऐसा अनवधान, असावधानी या जल्दी जिसके कारण कोई चूक या भूल हो जाय। (ओवर साइट) जैसे—इस पुस्तक मे दृष्टि-दोष से छापे की बहुत-सी भूले रह गई है।

दृष्टिधृक्—पु०[स०] राजा इक्ष्वाकु का एक पुत्र।

दृष्टि-निपात—पु०=दृष्टिपात।

दृष्टि-पथ—पु०[ष० त०] वह सारा क्षेत्र जहाँ तक निगाह जाती या पहुँचती हो। दृष्टि का प्रसार। नजर की पहुँच।

दृष्टि-परपरा—स्त्री०=दृष्टि-क्रम।

दृष्टिपात—पु०[ष०त०]१ देखने की क्रिया या भाव। २ सरसरी निगाह से देखना।

दृष्टि-पूत—वि०[स० त०] १ जो देखने मे शुद्ध हो। २ जिसे देखने से आँखें पवित्र या सफल हो।

दृष्टि-फल—पु०[ष० त०] फलित ज्योतिष मे, वह फल जो एक राशि मे स्थित किसी ग्रह की दृष्टि (दे० 'दृष्टि') किसी दूसरी राशि मे स्थित किसी ग्रह पर पडने मे होता हुआ माना जाता है।

दृष्टि-बध—पु०[ष०त०] १ इद्रजाल, सम्मोहन आदि के द्वारा किया जानेवाला ऐसा अभिचार जिसके फल-स्वरूप लोगो को कुछ का कुछ दिखाई पडने लगता हो। २ हाथ की ऐसी चालाकी जो दूसरो को धोखा देने के लिए की जाय।

दृष्टि-बधु—पु०[ष० त०] खद्योत। जुगनूँ।

दृष्टि-भ्रम—पु०[ष०त०] देखने के समय होनेवाला ऐसा भ्रम जिससे चीज कुछ हो, पर दिखाई पडे और कुछ।

दृष्टिमान् (मत्)—वि० [स० दृष्टि+मतुप्] [स्त्री० दृष्टिमती] १ जिसे दृष्टि हो। आँखवाला। २ समझदार। दृष्टिवत। ३ ज्ञानी।

दृष्टि-रोध—पु०[ष०त०] १. दृष्टि या देखने के कार्य मे होनेवाली रुकावट। २ आड। ओट। व्यवधान।

दृष्टिवत—वि०[स० दृष्टिमत्]१ जिसमे देखने की शक्ति हो। जिसे दिखाई देता हो। २ जिसमे किसी चीज या बात को अच्छी तरह जाँचने, परखने या समझने की शक्ति हो। जानकार। ३ ज्ञानी।

दृष्टि-वाद—पु०[ष० त०]दृष्टवाद। (दे०)

दृष्टि-विष—पु०[ब०स०] ऐसा साँप जिसके देखने से ही कुछ छोटे-मोटे जीव-जन्तु या तो मर जाते या मूर्च्छित हो जाते हो।

दृष्टि-स्थान—पु०[स०]कुडली मे वह स्थान जिस पर किसी दूसरे स्थान मे स्थित ग्रह की दृष्टि पडती हो। (देखें 'दृष्टि')

दें बका†—स्त्री०=दीमक।

दे†—स्त्री० [स० देवी] स्त्रियो के लिए एक आदर-सूचक शब्द। देवी। पुं० बगाली कायस्थो के एक वर्ग की उपाधि।

देई—स्त्री०[स० देवी]१ देवी। २. 'देवी' का वह विकृत रूप जो प्राय स्त्रियो के नाम के अत मे लगता है। जैसे—हीरादेई।(पश्चिम)

देउ†—पु०=देव।

देउर†—पु०[स्त्री० देउरानी]=देवर।

देख—स्त्री०[हि० देखना] देखने की क्रिया या भाव। अवलोकन। (यौ० पदो के आरम्भ मे) जैसे—देख-भाल, देख-रेख।

मुहा०—देख मे (क) आँखो के सामने। (ख) निरीक्षण या देख-रेख मे।

देखन—स्त्री०[हि० देखना] देखने की क्रिया, ढग या भाव।

देखनहारा—वि०[हि० देखना+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० देखनहारी] देखनेवाला।

देखना—स०[स० दृश का रूप द्रक्ष्यति प्रा० देक्खइ] १ किसी पदार्थ के रूप-रग, आकार-प्रकार आदि का ज्ञान या परिचय कराने के लिए उसकी ओर आँखे करना। दृष्टि-शक्ति अथवा नेत्रो से किसी चीज की सब बातो का ज्ञान प्राप्त करना। अवलोकन करना। निहारना। जैसे—यह लडका बहुत दूर तक की चीजे देख सकता है।

सयो० क्रि०—पाना।—लेना।—सकना।

पद—देखते देखते—(क) आँखो के सामने से। देखते रहने की दशा मे। जैसे—देखते देखते किताब गायब हो गई। (ख) तत्काल। तुरत। जैसे—देखते देखते उसके प्राण निकल गये। (किसी के) **देखते या देखते हुए** किसी के उपस्थित या वर्तमान रहते हुए। विद्यमानता मे। समक्ष। सामने। **देखने में**—(क) बाह्य लक्षणो के आधार पर या बाहरी चेष्टाओ से। जैसे—देखने मे तो वह बहुत सीधा है। (ख) आकार-प्रकार, रूप-रग आदि के विचार से। जैसे—यह फल देखने मे तो बहुत अच्छा है।

मुहा०—देखते रह जाना—कोई अनोखी या विलक्षण बात होने पर चकित भाव से किंकर्तव्य-विमूढ होकर रह जाना। जैसे—सब लोग देखते रह गये, और चोर गठरी उठाकर चलता बना।

२ मानसिक शक्ति के द्वारा किसी बात या विषय के सब अगो का ठीक और पूरा ज्ञान अथवा परिचय प्राप्त करना। बुद्धि से समझना और सोचना। जैसे—(क) आपने देख लिया होगा कि तर्क मे कुछ भी दम (या सार) नही है। (ख) लाओ, जरा हम भी देखे कि यह पुस्तक कैसी है।

पद—देखना चाहिए, देखा चाहिए या देखिये न जाने क्या होगा। कौन जाने। कह नही सकते कि ऐसा होगा या नही। जैसे—देखिए, आज भी उनका उत्तर आता है या नही।

३ पुस्तक, लेख, समाचार आदि ध्यान से पढना। जैसे—आज का अखबार तो आप देख ही चुके होगे। ४ त्रुटियाँ, भूले आदि निकालने अथवा गुण, विशेषताएँ आदि जानने के लिए कोई चीज पढना। जैसे—(क) जब तक हम देख न लें, तब तक अपना लेख छपने के लिए मत भेजना। (ख) परीक्षक परीक्षार्थियो की कापियाँ देखते है। ५ दर्शक के रूप मे कही जाकर उपस्थित होना या पहुँचना अथवा किसी से मिलना या भेंट करना। जैसे—(क) आज घर के सभी लोग नाटक देखने गये है। (ख) डाक्टर रोगी देखने गये है। ६ किसी प्रकार की स्थिति मे रहकर उसका अनुभव या ज्ञान प्राप्त करना अथवा उस स्थिति का भोग करना। जैसे—(क) उन्होने अपने जीवन मे कई बार बहुत अच्छे दिन देखे थे। (ख) हम लोगो ने दो दो महायुद्ध

देखे हैं। (ग) आपस के वैर-विरोध का परिणाम तो तुम भी देख ही चुके हो। (घ) तुम्हारा जी चाहे तो तुम भी ऐसी एक दूकान कर देखो।
पद—देखा जायगा—अभी चिंता करने की आवश्यकता नहीं, जब जैसी स्थिति होगी तब वैसा किया जायगा।
७ जानकारी प्राप्त करना या पता लगाना। जैसे—जरा एक बार उनसे भी बातें करके देख लो कि वे क्या चाहते है। ८ जानकारी प्राप्त करने या पता लगाने के लिए कहीं या किसी के पास जाना या उससे मिलना। जैसे—इस बीमारी मे उनके प्राय सभी मित्र उन्हे देखने गये थे।
पद—देखना-सुनना=जानकारी प्राप्त करना। समझना-बूझना। पता लगाना। जैसे—बिना देखे-सुने मकान नही लेना चाहिए।
९ कार्य प्रणाली, गुण-दोष, स्थिति आदि का पता लगाने के लिए कही जाना या पहुँचना। जाँच या निरीक्षण करना। जैसे—निरीक्षक महोदय हर महीने यह विद्यालय देखने आते हैं। १० पता लगाने या प्राप्त करने के लिए खोज या तलाश करना। ढूँढना। जैसे—(क) व महीनों से अपने रहने के लिए किराये का एक अच्छा मकान (या कन्या के लिए वर) देख रहे हैं। (ख) सारा घर देख डाला पर किताब का कही पता न चला। ११ किसी प्रकार की प्रतियोगिता, मुकाबला या सामना होने पर प्रतिद्वंद्वी की सब बातें सहने और उनका पूरा जवाब देने मे समर्थ होना। जैसे—हम भी देख लेंगे कि वे कितने बहादुर है। १२ बरदाश्त करना। सहन करना। जैसे—हम यह अंधेर (अथवा अत्याचार) नही देख सकते। १३ किसी काम, बात या स्थिति का ठीक और पूरा ध्यान रखना। जैसे—(क) देखना, लडका कही भीड मे खो या दब न जाय। (ख) हमारे पीछे यह मकान देखते रहिएगा।
पद—देखो=(क) ध्यान दो। विचार करो। जैसे—देखो, लोग अपना काम किस तरह निकालते है। (ख) ध्यान रखो। सावधान रहो। जैसे—देखो, वह हाथ से निकलने न पावे। (ग) सुनो। जैसे—देखो, कोई सड़ी-गली तरकारी मत उठा लाना। (घ) प्रतीक्षा करो। जैसे—देखो, वह कब घर लौटता है।

देखनि†—स्त्री० देखन।

देख-भाल—स्त्री०[हि० देखना+भालना] १. अच्छी तरह देखने या भालने की क्रिया या भाव। जैसे—रुपए देख-भालकर लेना, कोई खोटा न ले लेना। २ देखा-देखी। साक्षात्कार। ३ देख-रेख। हिफाजत।

देखराना—स० दिखलाना।

देखरावना†—स० दिखलाना।

देख-रेख—स्त्री०[हि० देखना+स० प्रेक्षण] इस प्रकार किसी पर दृष्टि रखना कि (क) कोई किसी विशिष्ट अवस्था या स्थिति मे रहे। जैसे—चोरों या कैदियों की देख-रेख रखना। और (ख) किसी की स्थिति अच्छी बनी रहे और बिगडने न पावे। जैसे—रोगी की देख-रेख करना।

देखाऊ†—वि० दिखाऊ।

देखा-देखी—स्त्री०[हि० देखना]१ आँखो मे देखने की अवस्था या भाव। २ दर्शन। साक्षात्कार।
अव्य० दूसरों को कोई काम करते हुए देखने के फलस्वरूप। अनुकरणवश। जैसे—लडके देखा-देखी गाली बकते हैं।

देखाना—स० दिखाना।

देखा-भाली—स्त्री० देख-भाल।

देखाव†—पु०=दिखाव।

देखावट†—स्त्री०=दिखावट।

देखावना—स० =दिखाना।

देखौआ†—वि० =दिखौआ।

देग—पु०[फा०] [स्त्री० अल्पा० देगची]१ चौड़े मुँह और चौड़े पेट का वह बहुत बडा बरतन जिसमे चावल, दाल आदि खाद्य पदार्थ पकाये जाते है। २ दे० 'देगचा'।
पु०[?] एक प्रकार का बाज पक्षी।

देगचा—पु०[फा० देगच] [स्त्री० अल्पा० देगची] छोटा देग।

देगची—स्त्री०[हि० देगचा] छोटा देगचा।

देगला†—पु०[स० दृष्टि+लग्न]१ सामना। साक्षात्कार। उदा०—देगलौ द्रुवौ दलाँ दुँह।—प्रिथीराज। २ दिखावा।

देदीप्यमान—वि०[स०√दीप् (चमकना)+यङ्+शानच्] जिसका स्वरूप प्रकाशपूर्ण हो। चमकता हुआ। दमकता हुआ।

देन—स्त्री०[हि० देना]१ देने की क्रिया या भाव। २ वह जो दिया जाय। ३ कोई ऐसी महत्त्वपूर्ण चीज या बात जो किसी बडे व्यक्ति, ईश्वर आदि से मिली हो तथा जिससे विशेष उपकार या हित होता हो। जैसे—(क) उनकी इस देन से हिन्दी जगत सदा ऋणी रहेगा। (ख) पुत्र-पुत्रियाँ तो भगवान की देन है। ४ उक्त के आधार पर कोई ऐसी चीज या बात जो किसी दूसरे से प्राप्त हुई हो और जिसका कोई व्यापक परिणाम या फल हो। जैसे—राजकीय विभागों मे घूस और पक्षपात ब्रिटिश शासन की देन है। ५ किसी प्रकार का देना चुकाने का दायित्व या भार। (लायबिलिटी)

देनदार—पु०[हि० देना+फा० दार]१ ऋणी। कर्जदार। २ वह जिसके जिम्मे कुछ देना बाकी हो। वह जिससे किसी को आवश्यक रूप मे कुछ मिलने को हो।

देनदारी—स्त्री०[हि० देन+फा० दारी] देनदार होने की अवस्था या भाव।

देन-लेन—पु०[हि० देना+लेना] १ किसी को कुछ देने और उससे कुछ लेने की क्रिया या भाव। २ विनिमय। ३ इष्ट-मित्रों या संबंधियो मे प्राय कुछ न कुछ एक दूसरे के यहा भेजते रहने का व्यवहार। ४ ब्याज पर रुपया उधार देने का व्यापार। महाजनी का व्यवसाय।

देनहार—वि० =देनहारा।

देनहारा—वि०[हि० देना+हारा (प्रत्य०)] देनेवाला।

देना—स०[स० दान] १ (अपनी) कोई चीज पूर्णत और सदा के लिए किसी के अधिकार या नियंत्रण मे करना। सुपुर्द करना। हवाले करना। जैसे—लडकी को ब्याह मे मकान देना। २ बिना किसी प्रकार के प्रतिदान या प्रतिफल के किसी को कोई चीज अंतरित या हस्तांतरित करना। जैसे—प्रसाद देना। ३ श्रद्धापूर्वक अथवा किसी की सेवाओ आदि से प्रसन्न होकर उसे कुछ अर्पित या समर्पित करना। जैसे—(क) आशीर्वाद देना। (ख) भगवान का भक्त को दर्शन देना। ४ कोई चीज कुछ समय के लिए अपने पास से अलग करके दूसरे के हवाले करना। सौपना। जैसे—उसने अपना सारा असबाब

कुली को (ढोने के लिए) दे दिया। ५ कोई चीज किसी के हाथ पर रखना। थमाना। पकडाना। जैसे—भिखमगे को पैसा देना। ६. धन या और किसी पदार्थ के बदले मे, अपनी चीज किसी के अधिकार मे करना। जैसे—सौ रुपए देने पर भी ऐसी अँगूठी तुम्हे नहीं मिलेगी। ७ ऐसी क्रिया करना जिससे किसी को कुछ प्राप्त हो। पाने, मिलने या लेने मे सहायक या साधक होना। जैसे—(क) किसी को उपाधि या मान-पत्र देना। (ख) नौकर को छुट्टी या तनख्वाह देना। (ग) गौ या भैस का दूध देना। ८ किसी व्यक्ति, कार्य आदि के लिए उत्सृष्ट, निछावर या प्रदान करना। जैसे—(क) किसी सस्था को अपना जीवन, धन या समय देना। (ख) किसी को परामर्श, प्रमाण या सुझाव देना। (ग) किसी के लिए अपनी जान देना। ९ ऐसी क्रिया करना जिसमे किसी को कुछ कष्ट या दड मिले अथवा कोई दुष्परिणाम भोगना पडे। जैसे—दु ख देना, सजा देना। १० आघात या प्रहार करना। जडना। मारना। जैसे—थप्पड या मुक्का देना।

मुहा०—(किसी को) दे मारना=उठाकर जमीन पर गिरा या पटक देना।

११ पहनी जानेवाली कुछ चीजों के सबध मे, यथा-स्थान धारण करना। पहनना। जैसे—सिर पर टोपी या मुकुट देना। १२ कुछ विशिष्ट पदार्थों के सबध मे, बद करना। जैसे—किवाड देना, अगे का बद या कुरते का बटन देना। १३ अकन, लेखन आदि मे, अकित करना। चिह्न बनाना। जैसे—१ के आगे बिंदी देने से १० हो जाता है। उदा० —बक बिकारी देत ज्यों दाम रुपैया होत।—बिहारी।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

विशेष—सयोज्य क्रिया के रूप मे 'देना' का प्रयोग निम्नलिखित स्थितियो मे होता है—(क) सप्रदान कारक मे 'पडना' क्रिया की तरह, जैसे—उसे दिखाई नही देता। (ख) अकर्मक अवधारण-बोधक क्रियाओ के साथ सप्रत्यय कर्त्ता कारक मे, जैसे—वह मुस्करा दिया। (ग) अनुमति-बोधक रूप मे, जैसे—उसे भी यहाँ बैठने दो। (घ) 'चलना' क्रिया के साथ विकल्प से, कर्त्तरि या भावे प्रयोग मे; जैसे—वह रुपए उठाकर चल दिया। (च) 'देना' क्रिया के साथ कार्य की पूर्ति सूचित करने के लिए। जैसे—उसने पुस्तक मुझे दे दी।

पु० १ किसी से लिया हुआ वह धन जो अभी चुकाया जाने को हो। ऋण। कर्ज। जैसे—उन्हे बाजार के हजारो रुपए देने है। २ वह धन जो किसी को किसी रूप मे चुकाना आवश्यक या कर्तव्य हो। देय धन। देन। जैसे—अभी तो घर का भाडा, नौकर की तनख्वाह, बिजली का हिसाब और न जाने क्या-क्या देना बाकी पडा है।

देमान†—पु०=दीवान।

देय—वि०[स०√दा (देना)+यत्] १ जो दिया जा सके। २ जो दिये या लौटाये जाने को हो।

देयक—पु० [स० देय+कन्] वह पत्र जिसमे किसी के नाम विशेषत बैंक के नाम यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को हमारे खाते मे से इतने रुपए दे दो। (चेक)

देय-धर्म—पु०[ष० त०] दानधर्म।

देयादेय-फलक—पु० [देय-अदेय द्व०स०, देयादेय-फलक ष०त०] दे० 'आय-व्यय फलक'।

देयादेश—पु०[स० देय-आदेश ष० त०] वह पत्र जिसमे यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को इतना धन दिया जाय। (पे-आर्डर)

देयासी†—पु०[स० देवोपासिन्?] [स्त्री० देयासिन] झाड-फूक करनेवाला ओझा।

देर—स्त्री०[फा०]१ किसी काम या व्यापार मे आवश्यक, उचित या नियत समय से अधिक लगनेवाला समय। विलब। जैसे—लडका देर से घर लौटता है। २ समय। वक्त। जैसे—यह काम कितनी देर मे होगा।

देरा†—पु०=डेरा।

देरानी*—स्त्री०=देवरानी।

देरी—स्त्री०=देर।

देवँक—स्त्री०=दीमक।

देव—पु० [स०√दिव् (क्रीडा आदि)+अच्] [स्त्री० देवी] १ स्वर्ग मे रहनेवाला अमर प्राणी। देवता। सुर। २ तेजोमय और पूज्य व्यक्ति। ३ बडे और सम्मानित लोगो के लिए एक आदर-सूचक सबोधन। जैसे—देव, मैं तो आप ही आ रहा था। ४ ब्राह्मणो की एक उपाधि या सज्ञा। ५ प्रेमी। ६ विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसका देवर। पति का छोटा भाई। ७ बच्चा। बालक। ८ ऋत्विक्। ९ ज्ञानेंद्रिय। १० दैत्य। राक्षस। ११ बादल। मेघ। १२ पारा। १३ देवदार का पेड।

देव-अंशी (शिन्)—वि०[ष० त०] जो देवता के अश से उत्पन्न हो। जो किसी देवता का अवतार हो।

देव-ऋण—पु०[ष०त०] देवताओ के द्वारा किया हुआ ऐसा उपकार जिसका बदला तर्पण, दान-पुण्य, यज्ञ आदि धार्मिक कृत्य करके चुकाया जाता है।

देव-ऋषि—पु० [ष०त०] देवताओ के लोक मे रहनेवाला और उनका समकक्ष माना जानेवाला ऋषि। देवर्षि।

देवक—पु०[स०]१ देवता। २ एक यदुवशी राजा जो उग्रसेन के छोटे भाई, देवकी के पिता और श्रीकृष्ण के नाना थे। ३ युधिष्ठिर के एक पुत्र का नाम।

देव-कन्या—स्त्री०[ष० त०] १ देवता की पुत्री। २ देवी।

देव-कपास—स्त्री०[देश०]नरमा या मनवा नाम की कपास। राम कपास।

देव-कर्दम—पु०[मध्य० स०] एक प्रकार का गध द्रव्य जो चदन, अगर, कपूर और केसर को एक मे मिलाने से बनता है।

देव-कर्म (न्)—पु०[मध्य०स०] देवताओ को प्रसन्न करने के लिए किया जानेवाला कर्म। जैसे—यज्ञ, बलि, वैश्वदेव आदि।

देवकाँडर—पु०[स० देव-काड] जल-पीपल नामक क्षुप।

देव-कार्य—पु०[मध्य० स०] देवताओ को प्रसन्न करने के लिए किये जानेवाले कार्य। जैसे—होम, पूजा आदि।

देव-काष्ठ—पु०[मध्य० स०] एक प्रकार का देवदार।

देवकिरि—स्त्री० [स० देव√कृ (बिखेरना)+क—ङीप्] एक रागिनी जो मेघ राग की भार्या मानी जाती है।

देवकी—स्त्री० [स० देवक+ङीप्] वसुदेव की स्त्री और श्रीकृष्ण की माता।

देवकी-नंदन—पु०[ष०त०] श्रीकृष्ण।

देवकी-पुत्र—पु०[ष०त०] श्रीकृष्ण।

देवकी-मातृ—पु०[ब०स०] श्रीकृष्ण (जिनकी माता देवकी है)।

देवकीय—वि०[स० देव+छ—ईय, कुक्] देवता-संबंधी। देवता का।

देव-कुंड—पु०[मध्य०स०]१ आप से आप बना हुआ पानी का गड्ढा या ताल। प्राकृतिक जलाशय। २ किसी तीर्थ या देव-मंदिर के पास का पवित्र कुंड, जलाशय या तालाब।

देव-कुरुबा—स्त्री०[मध्य०स०] बड़ा गूमा। गोमा।

देवकुरु—पु०[स०] जैन पुराणों के अनुसार जम्बूद्वीप के छः खंडों में से एक जो सुमेरु और निषध के बीच में स्थित माना गया है।

देव-कुल—पु०[स०देव√कुल् (संघात)+क]१ वह देवमंदिर जिसका द्वार बहुत छोटा हो। २ देव-मंदिर। ३ देवताओं का वर्ग।

देव-कुल्या—स्त्री०[मध्य०स०]१ गंगा नदी। २ मरीचि की एक कन्या जो पूर्णिमा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

देव-कुसुम—पु०[ब० स०] लौंग (वृक्ष और फल)।

देव-कुसुमावलि—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देव-कूट—पु०[स०]१ कुबेर के आठ पुत्रों में से एक जो शिव पूजन के लिए सूँघकर कमल ले गया था और इसी लिए जो दूसरे जन्म में कंस का भाई हुआ और श्रीकृष्ण चंद्र के द्वारा मारा गया। २ एक प्राचीन पवित्र आश्रम जो वशिष्ठ मुनि के आश्रम के पास था।

देव-कृच्छ्र—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमें लपसी, शाक दूध, दही, घी में से क्रमशः एक-एक चीज तीन-तीन दिन खाने और उसके बाद तीन-तीन दिन निराहार रहने का विधान है।

देव-केसर—पु०[ब०स०] एक प्रकार का पुन्नाग। सुरपुन्नाग।

देवक्रिय—पु०[स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

देव खात—पु०[तृ० स०] प्राकृतिक गड्ढा या जलाशय।

देव-गंग—स्त्री०[स०] असम प्रदेश की एक नदी। दिवंग।

देव-गंधा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] महामेदा नामक ओषधि।

देवगढ़ी—स्त्री०[देवगढ़ (स्थान)] एक तरह की ईख।

देव-गण—पु०[ष०त०]१ किसी जाति या धर्म के सभी देवी-देवताओं का वर्ग या समूह। (पैंथियन)२ अश्विनी, रेवती, पुष्य, स्वाती, हस्त, पुनर्वसु, अनुराधा, मृगशिरा और श्रवण नक्षत्रों का समूह (फलित ज्यो०) ३ किसी देवता का अनुचर।

देव-गति—स्त्री०[ष०त०] मरने के उपरांत प्राप्त होनेवाली उत्तम गति। देव-योनि अथवा स्वर्ग की प्राप्ति।

देवगन—पु० देव-गण।

देव-गर्भ—पु०[ब० स०] वह जिसका जन्म देवता के वीर्य से हुआ हो। जैसे—कर्ण।

देव गांधार—पु०[मध्य० स०] एक प्रकार का राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है।

देव-गांधारी—स्त्री०[स०] एक रागिनी जो श्रीराग की भार्या कही गई है। यह शिशिर ऋतु में तीसरे पहर से आधी रात तक गाई जाती है।

देव-गायक—पु०[ष०त०]गंधर्व।

देव-गायन—पु०[ष०त०] गंधर्व।

देव-गिरा—स्त्री०[ष०त०] देवताओं की भाषा अर्थात् संस्कृत। देववाणी।

देवगिरि—पु०[स०] १ रैवतक पर्वत जो गुजरात में है। गिरनार। २ दक्षिण भारत के आधुनिक प्रमुख नगर का पुराना नाम।

देवगिरी—स्त्री०[?]हेमंत ऋतु में दिन के पहले पहर में गाई जानेवाली षाडव संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

देव-गीर्वाणी—स्त्री०[स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देव-गुरु—पु० [ष० त०] १ देवताओं के गुरु अर्थात् बृहस्पति। २ देवताओं के पिता, कश्यप।

देवगृही—स्त्री०[स०] सरस्वती।

देव-गृह—पु०[ष०त०]१ देवताओं का घर। २ देवालय। मंदिर।

देवघन—पु०[देश०] एक तरह का पेड़।

देव-घनाक्षरी—स्त्री०[स०] ३३ वर्णों का एक वृत्त जो मुक्तक दण्डक का एक भेद है।

देव-चक्र—पु०[ष०त०] गवामयन यज्ञ के एक अभिप्लव का नाम।

देवचाली—पु०[स०] इंद्रताल के छः भेदों में से एक।

देव-चिकित्सक—पु०[ष०त०]१ अश्विनीकुमार। २ उक्त के अनुसार दो की संख्या।

देवच्छद—पु०[स० देव√छद् (आकांक्षा)+घञ्] पुरानी चाल का एक तरह का बड़ा हार जिसमें ८१, १०० या १०८ लड़ियाँ होती थीं।

देवज—वि०[स० देव√जन् (उत्पत्ति)+ड] देवता से उत्पन्न। देवसंभूत। पु० एक प्रकार का साम गान।

देव-जग्ध—पु०[तृ०त०] रोहिष तृण। रोहिस घास।

देव-जन—पु०[मध्य०स०] गंधर्व।

देवजन-विद्या—स्त्री०[ष०त०] संगीत शास्त्र।

देव-जुष्ट—वि०[तृ०त०] देवता का जूठा किया हुआ अर्थात् उन्हें चढ़ाया हुआ।

देवट—पु०[स०√दिव(क्रीडा आदि)+अटन्]कारीगर। शिल्पी।

देवठान†—पु० दे० 'देवोत्थान'।

देवडोंगरी—स्त्री०[स० देव+देश० डोंगरी] देवदाली लता। बंदाल।

देवढ़ी†—स्त्री० =ड्योढ़ी।

देव-तरु—पु०[मध्य०स०] कल्पवृक्ष।

देव-तर्पण—पु०[ष०त०] देवताओं के उद्देश्य से किया जानेवाला तर्पण।

देवता—पु०[स० देव+तल्—टाप्] १ स्वर्ग में रहनेवाले प्राणी जो पूज्य तथा जरा और मृत्यु से रहित माने गये हैं। २ देव-प्रतिमा। ३ ज्ञानेंद्रिय।

विशेष—संस्कृत में 'देवता' स्त्री० होने पर भी हिन्दी में पुंलिंग माना जाता है।

देवतागार—पु०[स० देवता-आगार ष०त०] देवागार। (दे०)

देव-ताड—पु० [स० देव-ताल कर्म० स०, ल का ड] १ एक प्रकार का बड़ा तृण या पौधा जो देखने में घीकुँआर के पौधे की तरह होता है। इसे रामबाँस भी कहते हैं। २ दे० 'देव-ताड़ी'।

देवताड़ी—स्त्री० [स० देव+हिं० ताड़] १ देवदाली लता। बंदाल। २ तुरई। तोरी।

देवतात्मा (त्मन्)—वि०[स० देवता-आत्मन् ब०स०]१ पवित्र। पावन। २ देवताओं की तरह का। पु० १ अलौकिक शक्ति। २ पीपल।

देवताधिप—पु० [सं० देवता-अधिप ष० त०] देवताओं के राजा, इंद्र।

देवताध्याय—पु० [सं० देवता-अध्याय ब० स०] सामवेद का एक ब्राह्मण।

देवता-मंगल—पु० [सं०] रंग-मंच पर देवता को प्रसन्न करने के लिए होनेवाला मंगलात्मक नृत्य।

देव-तीर्थ—पु० [ष० त०] १ देवपूजन का उपयुक्त समय। २ देव-पूजा का स्थान। ३ दाहिने हाथ की एक साथ सटी हुई चारों उँगलियों का अग्रभाग जिसमें तर्पण का जल छोड़ा जाता है।

देवत्त—वि० [सं० देव-दत्त तृ० त०] देवता या देवताओं द्वारा दिया हुआ।

देव-त्रयी—पु० [सं० त०] ब्रह्मा, विष्णु और शिव इन तीन देवताओं का वर्ग।

देवत्व—पु० [सं० देव+त्व] देवता होने की अवस्था, गुण, पद और भाव।

देव-दंडा—स्त्री० [ब०स०] गँगेरन। नागबला।

देव-दत्त—वि० [सं० तृ० त०] १ देवता का दिया हुआ। देवता से प्राप्त। २ [च०त०] जो देवता के निमित्त अलग किया या निकाला गया हो।

पु० १ ऐसी संपत्ति, जो किसी देवता के निमित्त अलग की गई हो। २ शरीर की पाँच वायुओं में से एक जिससे जँभाई आती है। ३ अर्जुन के शंख का नाम। ४ नागों के आठ कुलों में से एक कुल। ५ शाक्य वंशीय एक राजकुमार जो गौतम बुद्ध का चचेरा भाई था और उनसे बहुत द्वेष रखता था। यशोधरा के साथ यही विवाह करना चाहता था।

देव-दर्शन—पु० [ष० त०] १ देवता का किया जाने या होनेवाला दर्शन। २ एक प्राचीन ऋषि।

देवदाली—स्त्री० [?] बड़ी तोरई।

देवदार—पु० [सं० देवदारु] एक प्रसिद्ध सीधे तने वाला ऊँचा पेड़ जिसके पत्ते लंबे और कुछ गोलाई लिये होते हैं तथा जिसकी लकड़ी मजबूत किंतु हलकी और सुगंधित होती है, और इमारतों में काम आती है। इसके स्निग्ध और काष्ठ दो भेद हैं। काष्ठ दारु लोक में अशोक वृक्ष के नाम से प्रसिद्ध है। स्निग्ध देवदारु की लकड़ी और तैल दवा के काम भी आता है।

देव-दारु—पु० [ष० त०] देवदार।

देवदार्वादि—पु० [सं० देवदारु-आदि ब० स०] जच्चा अर्थात् प्रसूता स्त्री को दिया जानेवाला एक तरह का क्वाथ। (भाव प्रकाश)

देवदालिका—स्त्री० [सं० देवदाली√कै (प्रतीत होना)+क-टाप्, ह्रस्व] महाकाल वृक्ष।

देव-दाली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] एक तरह की लता जो तोरी की बेल से मिलती-जुलती होती है। इसके फल ककोड़े (खेखसे) की तरह काँटेदार होते हैं। घघरबेल। बंदाल।

देवदासी—स्त्री० [सं० देव√दास् (हिंसा)+अण्-ङीप्] १ प्राचीन भारत में वह कन्या जो देवता को अर्पित कर दी जाती थी और उसके मंदिर में रहकर नाचती-गाती थी। २ नर्तकी। ३ रंडी। वेश्या। ४ बिजौरा नीबू।

देव-दीप—पु० [मध्य० स०] १ किसी देवता के सम्मुख अथवा किसी देवता के निमित्त जलाया जानेवाला दीपक। २. आँख। नेत्र।

देव-दुंदुभि—पु० [ष० त०] लाल तुलसी।

देव-दूत—पु० [ष० त०] [स्त्री० देवदूती] १ देवता या देवताओं का संदेश पहुँचानेवाला दूत। फरिश्ता। २ ऐसा व्यक्ति जो कु-समय में किसी का उद्धार या सहायता करे।

देव-दूती—स्त्री० [ष० त०] १ स्वर्ग की अप्सरा। २ बिजौरा नीबू।

देव-देव—पु० [स० त०] १ शिव। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ गणेश। ५. इंद्र।

देवद्युर—पु० [सं०] भरतवंशीय एक राजा जो देवाजित् के पुत्र थे। (भागवत)

देव-द्रुम—पु० [ष० त०] १ कल्पवृक्ष। २ देवदार।

देव-द्रोणी—प० [ष० त०] १ देवयात्री। २ शिवलिंग का अरघा।

देव-धन—पु० [मध्य स०] देवता के निमित्त उत्सर्ग किया या अलग निकाला हुआ धन।

देव-धान्य—पु० [मध्य० स०] ज्वार।

देव-धाम (न्)—पु० [ष०त०] तीर्थस्थान। देवस्थान।

देव-धुनी—स्त्री० [ष० त०] १ गंगा नदी। २ कोई पवित्र नदी।

देव-धूप—पुं० [मध्य० स०] गुग्गुल। गूगुल।

देव-धेनु—स्त्री० [ष० त०] कामधेनु।

देवनंदी (दिन्)—पु० [सं० देव√नन्द् (समृद्धि)+णिनि] इंद्र का द्वारपाल।

देवन—पु० [सं०√दिव्+ल्युट्-अन] १ किसी से आगे बढ़ जाने की कामना। जिगीषा। २. क्रीडा। खेल। ३ उपवन। बगीचा। ४ कमल। पद्म। ५ कांति। चमक। ६ प्रशंसा। स्तुति। ७. गति। चाल। ८ जूआ। द्यूत। ९ खेद। रज।

देव-नदी—स्त्री० [ष०त०] १ गंगा। २ दृषद्वती नदी। ३ सरस्वती नदी।

देव-नल—पु० [उपमि० स०] एक तरह का सरकंडा। नरसल।

देवना—स्त्री० [सं०√दिव्+युच्-अन, टाप्] १ क्रीडा। खेल। २ जूआ। ३ टहल। परिचर्या। सेवा।

देव-नागरी—स्त्री० [सं०] आधुनिक भारत की प्रसिद्ध राष्ट्रीय लिपि, जिसमें संस्कृत, हिंदी, मराठी आदि भाषाएँ लिखी जाती हैं। हिंदी में इसके ४५ ध्वनि चिह्न हैं जिनमें ३२ व्यंजनों के और १३ स्वरों के हैं। संयुक्त ध्वनियों के चिह्न इनके अतिरिक्त हैं।

देव-नाथ—पु० [ष० त०] शिव। महादेव।

देवनामा (मन्)—पु० [सं०] कुश द्वीप के एक वर्ष का नाम।

देव-नायक—पु० [ष० त०] देवताओं के नायक, इंद्र।

देवनाल—पु० [उपमि० स०] एक तरह का सरकंडा। नरसल।

देव-निकाय—पु० [ष० त०] १ देवताओं का समूह। २ देवताओं के रहने का स्थान, अर्थात् स्वर्ग।

देव-निर्मिता—स्त्री० [तृ० त०] गुडूची। गुरुच।

देव-पति—पु० [ष० त०] इंद्र।

देवपत्तन—पु० [सं०] काठियावाड़ का वह क्षेत्र जिसमें सोमनाथ का मंदिर है।

देव-पत्नी—स्त्री० [ष० त०] १ देवता की स्त्री। २. मधवालु नाम का कंद।

देव-पथ—पु० [ष० त०] १ देवताओं के चलने का मार्ग, आकाश।

२. देव-मन्दिर की ओर जाने का रास्ता। ३ प्राचीन भारत मे, वह ऊँचा मार्ग जो किले की दीवार के ऊपर चारो ओर आने-जाने के लिए होता था। ४ दे० 'देव-यान'।

देवपथिनी—स्त्री० [स०] आकाश मे बहनेवाली गगा का एक नाम।

देव-पर—पु० [ब० स०] ऐसा भाग्यवादी पुरुष जो सकट पडने पर भी उद्यम न करता हो, बल्कि किसी देवता के भरोसे बैठा रहता हो।

देव-पर्ण—पु० [ब० स०] माचीपत्र।

देव-पशु—पु० [च० त०] १ वह पशु जो देवता को बलि चढाया जाने को हो। २ देवता का उपासक।

देव-पात्र—पु० [ष० त०] अग्नि, जिसमे देवताओ को अर्पित की जानेवाली चीजें डाली जाती हैं।

देव-पान—पु० [ष० त०] सोमपान करने का एक प्रकार का पात्र।

देवपाल—पु० [स०] शाकद्वीप के एक पर्वत का नाम।

देव-पालित—वि० [तृ० त०] (क्षेत्र) जिसमे सिंचाई के अन्य साधन दुर्लभ होने पर भी केवल वर्षा के जल से अन्न उत्पन्न होता हो।

देव-पुत्र—पु० [ष० त०] [स्त्री० देव-पुत्री] देवता का पुत्र।

देव-पुत्रिका—स्त्री० =देव-पुत्री।

देव-पुत्री—स्त्री० [ष० त०] १ देवता की पुत्री। २. इलायची। ३ कपूरी साग।

देव-पुर—पु० [ष० त०] अमरावती।

देव-पुरी—स्त्री० [ष० त०] देवताओ की नगरी जो स्वर्ग मे इन्द्र की राजधानी मानी गई है। अमरावती।

देव-पूजा—स्त्री० [ष० त०] देवताओ का किया जानेवाला पूजन।

देव-प्रयाग—पु० [स०] हिमालय मे, गंगा और अलकनदा नदियो के सगम पर स्थित एक तीर्थ।

देव-प्रश्न—पु० [ष० त०] १ फलित ज्योतिष मे, वह प्रश्न जो ग्रह, नक्षत्र, ग्रहण आदि के सबध मे हो। २ भविष्य-सबधी प्रश्न।

देव-प्रस्थ—पु० [स०] एक प्राचीन नगरी जो कुरुक्षेत्र से पूर्व की ओर थी।

देव-प्रिय—पु० [ष० त०] १. अगस्त (पेड और फूल)। २ पीली भँगरैया।

देवबंद—पु० [स० देवबद] घोडो की एक भँवरी जो उनकी छाती पर होती है और शुभ मानी जाती है।

देव-बला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] महदेई (बूटी)।

देवबाँस—पु० [स०] एक तरह का बाँस जिसके नरम हरे कल्लो का अचार डाला जाता है।

देव-ब्रह्मन्—पु० [उपमि० स०] नारद।

देव-ब्राह्मण—पु० [मध्य० स०] देवताओ का पूजन करके जीविका निर्वाह करनेवाला ब्राह्मण।

देव-भवन—पु० [ष० त०] १ देवताओ का घर या स्थान। देव-मदिर। २ स्वर्ग। ३ अश्वत्थ या पीपल जिसमें देवताओ का निवास माना जाता है।

देव-भाग—पु० [ष० त०] किसी चीज विशेषत सपत्ति का वह भाग जो किसी देवता के निमित्त अलग किया गया हो।

देव-भाषा—स्त्री० [ष० त०] सस्कृत भाषा।

देव-भिषक् (ज्)—पु० [स० ष० त०] अश्विनी कुमार।

देव-भू—स्त्री० [ष० त०] स्वर्ग।

देव-भूति—स्त्री० [ष० त०] १ देवताओ का ऐश्वर्य। २ मदाकिनी।

देव-भूमि—स्त्री० [ष० त०] देवताओ की भूमि अर्थात् स्वर्ग।

देव-भृत्—पु० [स० देव√भृ (भरण)+क्विप्] देवताओ का भरण करनेवाले (क) इद्र, (ख) विष्णु।

देव-भोज्य—पु० [ष० त०] देवताओ का भोजन। अमृत।

देव-मजर—पु० [स०] कौस्तुभ मणि।

देव-मदिर—पु० [ष० त०] देवता का मदिर। देवालय।

देव-मणि—पु० [स० त०] १ सूर्य। २ [कर्म० स०] कौस्तुभ मणि। ३ महामेदा। ४ घोडो की गरदन पर की एक प्रकार की भौंरी।

देव-मनोहरी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देवमाता (तृ)—स्त्री० [ष० त०] देवताओ की माता (क) अदिति, (ख) दाक्षायणी।

देव-मातृक—वि० [ब० स०, कप्] दे० 'देवपालित'।

देव-मादन—वि० [ष० त०] देवताओ को मत्त करनेवाला। पु० सोम।

देव-मान—पु० [ष० त०] काल-गणना मे वह मान जो देवताओ के सबध मे काम मे लाया जाता है। जैसे—देव-मान के विचार से मनुष्यो का एक सौ वर्ष देवताओ का एक दिन होता है।

देव-मानक—पु० [ब० स०, कप्] कौस्तुभ मणि। देवमणि।

देव-माया—स्त्री० [ष० त०] १ देवताओ की माया। २ वह ईश्वरीय या प्राकृतिक माया जो अविद्या के रूप मे रहकर जीवो को सासारिक बधनो मे फँसाये रखती है।

देव-मार्ग—पु० [ष० त०] देवयान।

देव-मालवी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देव-मास—पु० [च० त०] १ गर्भ का आठवाँ महीना। २ तीन हजार वर्ष के बराबर का समय जो देवताओं की काल-गणना के अनुसार एक महीने के बराबर होता है।

देव-मित्र—पु० [ब० स०] शाकल्य ऋषि का एक नाम।

देव-मीढ—पु० [स०] मिथिला के एक राजा जो महाराजा जनक के पूर्वजो मे से थे।

देव-मीढुष—पु० [स०] वसुदेव के पितामह।

देव-मुखारी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देव-मुख्या—स्त्री० [स०] कस्तूरी।

देव-मुनि—पु० [कर्म० स०] १ नारद ऋषि। २ सूर नामक ऋषि।

देवमूक—पु० [स०] एक पर्वत का नाम। (गर्गसहिता)

देव-मूर्ति—पु० [ष० त०] किसी स्थान पर प्रतिष्ठित देवता की प्रतिमा या मूर्ति।

देव-यजन—पु० [ष० त०] यज्ञ की वेदी।

देव-यजनी—स्त्री० [ष० त०] पृथिवी।

देव-यज्ञ—पु० [ष० त०] होमादि कर्म जो पचयज्ञो मे से एक है तथा जिसे करना गृहस्थो का प्रतिदिन का कर्तव्य माना गया है।

देवयात्री-(त्रिन्)—पु० [स०] पुराणानुसार एक दानव।

देव-यान—पु० [ष० त०] १ देवताओ की ओर ले जानेवाला मार्ग।

२ शरीर के अलग होने के उपरात जीवात्मा के जाने के दो मार्गों में से एक जिसमे से होता हुआ वह ब्रह्म-लोक को जाता है। ३. उत्तरायण।

देवयानी—स्त्री० [स०] राजा ययाति की पत्नी जो शुक्राचार्य की कन्या थी।

देव-युग—पु० [मध्य० स०] सत्ययुग।

देव-योनि—स्त्री० [ब० स०] स्वर्ग, अन्तरिक्ष आदि मे रहनेवाले उन जीवो का वर्ग जो देवताओ के अतर्गत माने जाते हैं। जैसे—अप्सरा, किन्नर, गधर्व, यक्ष आदि।

देव-रजनी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देवर—पु० [स०, √दिव्+अर] [स्त्री० देवरानी] १. विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पति का छोटा भाई। २ पति का कोई भाई, चाहे उससे छोटा हो या बडा। (क्व०) ३ रहस्य सप्रदाय मे (क) भ्रम या सशय, (ख) कामदेव।

देव-रक्षित—वि० [तृ० त०] जो देवताओ द्वारा रक्षित हो।
पु० राजा देवक के एक पुत्र का नाम।

देवरक्षिता—स्त्री० [स०] देवक राजा की एक कन्या।

देव-रथ—पु० [ष० त०] १ देवताओ का रथ। विमान। २ सूर्य का रथ।

देवरा—पु० [स० देव] [स्त्री० अल्पा० देवरी] १ छोटा-मोटा देवता। २ उक्त प्रकार क देवता का मंदिर। ३ ऊँचे शिखरवाला देव-मदिर। ४ किसी महापुरुष की समाधि।
पु० [?] एक प्रकार का पटसन जिससे रस्सियाँ बनती हैं।

देवराज—पु० [ष० त०] देवताओ के राजा, इद्र।

देव-राज्य—पु० [ष० त०] देवताओ का राज्य, स्वर्ग।

देव-रात—पु० [तृ० त०] १ देवताओ द्वारा रक्षित राजा परीक्षित। २ शुन शेप का वह नाम जो विश्वामित्र के आश्रम मे पडा था। ३ याज्ञवल्क्य ऋषि के पिता का नाम। ४ निमि के वश के एक राजा। ५ एक प्रकार का सारस।

देवरानी—स्त्री० [हिं० देवर] देवर अर्थात् पति के छोटे भाई की स्त्री।
†स्त्री० देवराज इद्र की पत्नी शची। इद्राणी।

देवराय†—पु० =देवराज।

देवरी†—स्त्री० [हिं० देवरा] छोटी-मोटी देवी।

देवर्द्धि—पु० [स०] जैनो के एक प्रसिद्ध स्थविर जिन्होंने जैन सिद्धान्त लिपिबद्ध किये थे।

देवर्षि—पुं० [स० देव-ऋषि ष० त०] देवताओ मे ऋषि। जैसे—नारद।

देवल—पु० [स० देव√ला (लेना)+क] १ वह ब्राह्मण जो देवताओ पर चढाई हुई चीजो से अपनी जीविका निर्वाह करे। पडा। २ धार्मिक व्यक्ति। ३ नारद मुनि। ४ एक प्राचीन स्मृतिकार। ५ देवालय। मदिर। ६ पति का छोटा भाई। देवर।
पु० [देश०] एक प्रकार का चावल।
स्त्री० दीवार।

देवलक—पु० [स० देवल+कन्] =देवल। (दे०)

देव-लता—स्त्री० [मध्य० स०] नवमल्लिका। नेवारी।

देव-लांगुलिका—स्त्री० [स० देव=व्यथाकारक लाङ्गुलिक=शूक ब० स०, टाप्] वृश्चिकाली लता।

देवला†—पु० [हिं० दीवा] [स्त्री० अल्पा० देवली] मिट्टी का छोटा दीया।

देव-लोक—पु० [ष० त०] स्वर्ग।

देव-वक्त्र—पु० [ष० त०] अग्नि, जिसके द्वारा देवताओ का भाग उन तक पहुँचता है।

देववती—स्त्री० [स०] ग्रामणी नामक गधर्व की कन्या जो सुकेश राक्षस की पत्नी और माल्यवान, सुमाली तथा माली की माता थी।

देव-वधू—स्त्री० [ष० त०] १ देवता की स्त्री। २ देवी। ३. अप्सरा।

देव-वर्णिनी—स्त्री० [स०] भरद्वाज की कन्या और कुबेर की माता जो विश्रवा मुनि की पत्नी थी।

देव-वर्त्म (न्)—पु० [ष० त०] आकाश।

देववर्द्धकि—पु० [ष० त०] विश्वकर्मा।

देव-वर्द्धन—पु० [स०] पुराणानुसार राजा देवक का एक पुत्र जो देवकी का भाई और श्रीकृष्ण का मामा था।

देव-वर्ष—पु० [ष० त०] पुराणानुसार एक द्वीप का नाम।
पुं० =दैव वर्ष।

देव-वल्लभ—वि० [ष० त०] देवताओ को प्रिय लगनेवाला।
पु० १ केसर। २ सुरपुन्नाग नामक वृक्ष।

देव-वाणी—स्त्री० [ष० त०] १. सस्कृत भाषा जो देवताओ की भाषा कही गई है। २ देवता के मुँह से निकली हुई बात। ३ देवताओ की ओर से होनेवाली आकाशवाणी।

देववात—पु० [स०] एक वैदिक ऋषि।

देववायु—पु० [स०] बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

देव-वाहन—पु० [स० देव=हवि√वह्+णिच्+ल्यु—अन] अग्नि (जो देवताओ का हव्य उनके पास पहुँचाती है)।

देव-विद्या—स्त्री० [मध्य० स०] निरुक्त।

देव-विसर्ग—पु० [ष० त०] १ देवताओ के लिए विसर्ग या अर्पण करना। २ वह चीज जो देवताओ को समर्पित की गई हो।

देव-विहाग—पु० [स० देवविभाग] सगीत मे, एक राग जो कल्याण और विहाग अथवा कुछ लोगो के मत से सारग और पूरबी के योग से बना है।

देव-वृक्ष—पु० [मध्य० स०] १. मदार का पौधा। आक। २. गुगुल। ३ सतिवन।

देव-व्रत—पु० [मध्य० स०] १ कोई धार्मिक सकल्प। २ एक प्रकार का सामगान। ३ [ब० स०] भीष्म पितामह। ४ कार्तिकेय।

देव-शत्रु—पु० [ष० त०] देवताओ का शत्रु, राक्षस।

देव-शाक—पु० [सं०] एक सकर राग जो शकराभरण, कान्हडा और मल्लार के योग से बना है।

देव-शिल्पी (ल्पिन्)—पु० [ष० त०] विश्वकर्मा।

देव-शुनी—स्त्री० [उपमि० स०] देवलोक की कुतिया, सरमा।

देव-शेखर—पु० [ब० स०] दौने का पौधा। दमनक।

देव-श्रवा (वस्)—पुं० [स०] १. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २ वसुदेव के एक भाई का नाम।

देव-श्रुत—पु० [सं० त०] १. ईश्वर। २ नारद ऋषि। ३ शुक्राचार्य के एक पुत्र। ४ एक जिन देव। ५ शास्त्र।

देव-श्रेणी—स्त्री० [ष० त०] १ देवताओं का वर्ग। २ मरोड़-फली। मूर्वा।

देव-श्रेष्ठ—वि० [स० त०] देवताओं मे श्रेष्ठ।
पु० बारहवें मनु के एक पुत्र का नाम।

देव-सखा—पु० [स०] उत्तर दिशा का एक पर्वत। (वाल्मीकि रा०)

देव-सत्र—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

देव-सदन—पु० [ष० त०] १. देवताओं के रहने का स्थान। स्वर्ग। २ देव-मन्दिर।

देव-सद् (-सद्)—पु० [ष० त०] देवस्थान।

देव-सभा—स्त्री० [ष० त०] १ देवताओं की सभा या समाज। २ सुधर्मा नाम का वह सभास्थल जो मय दानव ने अर्जुन और युधिष्ठिर के लिए बनाया था। ३ राज-सभा। ४ जूआ खेलने का स्थान।

देव-समाज—पु० [ष० त०] १ देवताओं का समाज। २ सुधर्मा नाम का सभास्थल।

देवसरि(त्)—स्त्री० [ष० त०] गंगा।

देव-सर्षप—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार की सरसों।

देवसहा—स्त्री० [स० देव√सह् (सहना)+अच्–टाप्] सफेद फूलोंवाला दंडोत्पल।

देवसाक—पु० =देवशाक (राग)।

देवसार—पु० [स०] संगीत मे, इंद्रताल के छ भेदों मे से एक।

देवसावर्णि—पु० [स०] भागवत के अनुसार तेरहवें मनु।

देव-सृष्टा—स्त्री० [च० त०] मदिरा। शराब।

देव-सेना—स्त्री० [ष० त०] १ देवताओं की सेना। २ देवताओं के सेनापति स्कंद की पत्नी जो सावित्री के गर्भ से उत्पन्न प्रजापति की कन्या मानी तथा मातृकाओं मे श्रेष्ठ कही गई है।

देव-सेनापति—पु० [ष० त०] कार्तिकेय। स्कंद।

देव-स्थान—पु० [ष० त०] १ देवताओं के रहने की जगह या स्थान। २ देवमन्दिर। ३ एक ऋषि जिन्होंने पांडवों को वनवास के समय उपदेश दिया था।

देवस्व—पु० [ष० त०] १. वह संपत्ति जो किसी देवता को अर्पित की गई हो और उसकी संपत्ति मानी जाती हो। २ यज्ञ करनेवाले धर्मात्मा का धन।

देवहंस—पु० [देश०] हंसों की एक जाति।

देवहरा†—पु० [देव+स० घर] देवालय। मंदिर। उदा०—गिरिस देव हरै उतरा सोई।—नूर मुहम्मद।

देवहरिया†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की नाव।

देवहा—स्त्री० [स० देववहा] सरयू नदी।
पु० [?] एक प्रकार का बैल।

देवहूति—स्त्री० [स०] १ देवताओं का आवाहन। २ कर्दम मुनि की पत्नी जो स्वयंभुव मनु की कन्या थी।

देव-हेति—स्त्री० [ष० त०] दिव्य अस्त्र। देवास्त्र।

देवह्रद—पु० [स०] एक सरोवर जो श्रीपर्वत पर स्थित माना गया है।

देवांगना—स्त्री० [देव-अंगना ष०त०] १ देवता की स्त्री। २ स्वर्ग मे रहनेवाली स्त्री। ३ अप्सरा।

देवांतक—पु० [देव-अंतक ष० त०] रावण का एक पुत्र जिसे हनुमान् ने युद्ध मे मारा था।

देवांध (स्)—पु० [देव-अंधस् ष०त०] १ अमृत। २ देवता का नैवेद्य या भोग।

देवांश—पु० [देव-अंश ष०त०] १ किसी वस्तु का वह अंश जो देवताओं को समर्पित किया गया हो अथवा किया जाना चाहिए। २ ईश्वर का अंशावतार।

देवा—स्त्री० [स० देव+टाप्] १ पद्मचारिणी लता। २ पटसन।
*पु० =देव।
†वि० [हि० देना] देनेवाला। देवैया।

देवाक्रीड़—पु० [देव-आक्रीड ष०त०] देवताओं और इंद्र का बगीचा, नंदनवन।

देवागार—पु० [देव-आगार ष०त०] १ देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग। २ देवालय। मंदिर।

देवाजीव—पु० [स० देव,आ√जीव् (जीना)+अच्] =देवाजीवी।

देवाजीवी (विन्)—पु० [स० देव-आ√जीव्+णिनि] १ वह जिसकी जीविका देवताओं के द्वारा या उनके सहारे चलती हो। २ पंडा या पुरोहित।

देवाट—पु० [स० देव-आट ब० स०] हरिहर-क्षेत्र तीर्थ का पुराना नाम।

देवातिदेव—पु० [स० देव-अति√दिव+अच्] विष्णु।

देवात्मा (त्मन्)—पु० [देव-आत्मन् ब०स०] १ वह जिसकी आत्मा देवताओं की तरह पवित्र और शुद्ध हो। २ अश्वत्थ। पीपल।

देवाधिदेव—पु० [स० देव-अधिदेव ष०त०] १ विष्णु। २ शिव।

देवाधिप—पु० [स० देव-अधिप ष०त०] १ परमेश्वर। २ देवताओं के अधिपति, इन्द्र। ३ द्वापर के एक राजा।

देवान†—पु० =दीवान।

देवाना-प्रिय—वि० [स० अलुक् स०] १ देवताओं का प्रिय। २ बड़ों के लिए प्रयुक्त होनेवाला एक आदर-सूचक विशेषण पद जो उनके परम भाग्यशाली और श्रेष्ठ होने का सूचक होता है। ३ मूर्ख। बेवकूफ।
पु० बकरा, जो देवताओं को बलि चढ़ाया जाता था।

देवाना†—पु० [?] एक प्रकार की चिड़िया।
वि० =दीवाना।
स० =दिलाना।

देवानीक—पु० [देव-अनीक ष०त०] १ देवताओं की सेना। २ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम। ३ सगर के वंशज एक राजा।

देवानुग—पु० [देव-अनुग ष०त०] १ देवता का सेवक। २ विद्याधर, यक्ष आदि उपदेव जो देवताओं का अनुगमन करते है।

देवानुचर—पु० [देव-अनुचर ष०त०] =देवानुग।

देवानुयायी (यिन्)—पु० [देव-अनुयायिन् ष०त०] =देवानुग।

देवान्न—पु० [देव-अन्न ष०त०] हवि। चरु।

देवाब—स्त्री० [देश०] धीमर, गोंद, चूने, बीजन आदि के योग से बनाई जानेवाली एक तरह की लेई।

देवाभरण—पु० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

देवाभियोग—पु०[देव-अभियोग ष० त०] जैनो के अनुसार वह स्थिति जिसमें कोई देवता शरीर मे प्रविष्ट होकर अनुचित कामो की ओर प्रवृत्त करता है।

देवाभीष्टा—स्त्री०[देव-अभीष्टा ष०त०] पान की लता। तांबूली।

देवायतन—पु०[देव-आयतन ष०त०] १ देवता के रहने का स्थान, स्वर्ग। २ देवालय। मदिर।

देवायु (स्)—स्त्री०[देव-आयुस् ष०त०] देवताओं का जीवनकाल जो बहुत लबा होता है।

देवायुध—पु०[देव-आयुध ष०त०]१ देवताओ का अस्त्र। दिव्य-अस्त्र। २ इन्द्र-धनुष।

देवारण्य—पु०[देव-अरण्य ष०त०]१ देवताओं का वन या उपवन। २ एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

देवाराधन—पु० [देव-आराधन ष०त०] देवताओं का आराधन, पूजन आदि।

देवारि—पु०[देव-अरि ष०त०] देवताओं के शत्रु, असुर।
†स्त्री० दीवार।

देवारी—स्त्री०[स० दावाग्नि] कछारों मे दिखाई देनेवाला लुक। छलावा। उदा०—जानहुँ मिरिग देवारी मोहे।—जायसी।
†स्त्री० दीवाली।

देवार्पण—पु०[देव-अर्पण च०त०] देवताओं के निमित्त किया जानेवाला अर्पण या उत्सर्ग।

देवार्ह—पु०[स०देव√अर्ह् (योग्य होना)+अण्] सुरपर्ण। माचीपत्र।

देवाल—वि०[हि० देना] १ देनेवाला। देवैया। २ दूसरों को कुछ देने की प्रवृत्ति रखनेवाला।
†स्त्री० दीवार।

देवालय—पु०[देव-आलय ष०त०] १. देवताओं के रहने का स्थान; स्वर्ग। २ वह स्थान जहाँ किसी देवता की प्रतिमा प्रतिष्ठित हो। मदिर।

देवाला—पु० १ दिवाला। २ देवालय।

देवाली—स्त्री० दीवाली।

देवा-लेई—स्त्री०[हि० देना+लेना]१ किसी को कुछ देने और उससे कुछ लेने की क्रिया या भाव। २ बराबर परस्पर कुछ लेते-देते रहने का बरताव। लेन-देन का व्यवहार।

देवावसथ—पु०[देव-आवसथ ष०त०]१ देवता के रहने का स्थान। २. मंदिर।

देवावास—पु०[देव-आवास ष०त०]१ देवता का मदिर। २. पीपल का पेड।

देवावृध्—पु० [स० देव√वृध् (बढना)+क्विप्] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

देवाश्व—पु०[देव-अश्व ष०त०] इद्र का घोड़ा। उच्चैःश्रवा।

देवाहार—पु०[देव-आहार ष०त०]१ देवताओं का आहार या भोजन। २ अमृत।

देविक—वि०[स० दैविक] १ देवताओ मे होनेवाला। देवता-सबधी। २ देवताओ द्वारा होनेवाला। दैवी। ३ दिव्य। स्वर्गीय।
पु० धर्मात्मा।

देविका—स्त्री० [स०√दिव्+ण्वुल्—अक, टाप, इत्व] घाघरा नदी।

देवी—स्त्री० [स०देव+ङीप्] १ स्त्री देवता। २ देवता की पत्नी। ३ दुर्गा, सरस्वती, पार्वती आदि स्त्री-देवताओं का नाम। ४ श्रेष्ठ गुणोवाली और सुशीला स्त्री। ५ प्राचीन भारत मे राजा की वह पत्नी जिसका राजा के साथ अभिषेक होता था। पटरानी। ६ स्त्री के लिए एक आदरसूचक सज्ञा या सबोधन। ७ स्त्रियो के नाम के अत मे लगनेवाला शब्द। जैसे—शीला देवी, कृष्णा देवी। ८ सफेद इंद्रायन। ९ असबर्ग। पृक्का। १० अडहुल। आदित्यभक्ता। ११. लिगनी नाम की लता। पँचगुरिया। १२ बन-ककोडा। १३ शालपर्णी। मरिवन। १४ महाद्रोणी। बडा गूमा। १५ पाठा। १६ नागरमोथा। १७ हरीतकी। हर्रें। १८ अलसी। तीसी। १९ श्यामा नाम की चिड़िया। २० सूर्य की सक्रांति।
पु०[स० देविन्] जूआ खेलनेवाला व्यक्ति। जुआरी।
स्त्री०[अ० डेविट्स]१ लकडी का वह चौखटा जिसमे दो खडे खभा के ऊपर आडा बल्ला लगा रहता है। २ जहाज के किनारे पर बाहर की ओर निकले या झुके हुए वे खभे जिनमे घिरनियाँ लगी होती है।

देवीकोट—पु०[स०] बाणासुर की राजधानी। शोणितपुर।

देवी-गृह—पु०[ष०त०]१ देवी या भगवती का मदिर। २ राज-प्रासाद मे राज-महिषी के रहने का निजी कमरा।

देवीदह—पु०[स०]१ देवी का कुंड। २ देवी का स्थान।

देवी-पुराण—पु०[मध्य०स०] एक उपपुराण जिसमे दुर्गा का माहात्म्य वर्णित है।

देवीबीज—पु०[स० देवीवीर्य] गधक।

देवी-भागवत—पु०[मध्य०स०] एक पुराण जिसमे भगवती दुर्गा का माहात्म्य वर्णित है। कुछ लोग इसे उपपुराण मानते है।

देवी-भोया—पु० [हि० देवी+भोयना=भुलाना] वह ओझा जो देवी का ही उपासक हो और उसी के द्वारा सब काम करता-कराता हो।

देवी-वीर्य—पु०[ष०त०] गधक।

देवी-सूक्त—पु० [मध्य०स०] ऋग्वेद शाकल सहिता का एक देवी विषयक सूक्त।

देवेंद्र—पु०[देव-इद्र ष०त०] देवताओं के अधिपति, इद्र।

देवेज्य—पु०[देव-इज्य ष०त०] बृहस्पति।

देवेश—पु०[देव-ईश ष०त०] देवताओ के राजा इद्र। २ ईश्वर। ३. शिव। ४ विष्णु।

देवेशय—पु०[स० देवे√शी (सोना)+अच्, अलुक् स०]१ परमेश्वर। २ विष्णु।

देवेशी—स्त्री०[देव-ईश ष०त०, ङीष्]१ पार्वती। २ देवी।

देवेष्ट—वि०[देव-इष्ट ष०त०] जिसे देवता चाहते हो।
पु० गुग्गुल।

देवेष्टा—स्त्री०[स० देवेष्ट+टाप्] बडा बिजौरा नीबू।

देवैया—वि०[हि० देना]१ देनेवाला। २ दूसरो को कुछ देने की प्रवृत्ति रखनेवाला।

देवोत्तर—पु०[देव-उत्तर ष०त०?]देवता को अर्पित अथवा उसके निमित्त उत्सर्ग की हुई सपत्ति।

देवोत्थान—पु०[देव-उत्थान ष०त०] कार्तिक शुक्ला एकादशी (विष्णु का शेष की शय्या पर से सोकर उठना, जो पर्व का दिन माना जाता है)।

देवोद्यान—पु०[देव-उद्यान ष०त०] नंदन, चैत्ररथ, वैभ्राज और सर्वतोभद्र देवताओं के उद्यान।

देवोन्माद—पुं०[स०] एक प्रकार का उन्माद जिसमे रोगी, पवित्रता पूर्वक रहता है, सुगंधित फूलो की मालाएँ पहनता है और प्राय मन्दिरो मे दर्शन और परिक्रमा करता फिरता है।

देवौक (स्)—पु०[देव-ओकस् ष०त०] देवताओं का वासस्थान।

देव्युन्माद—पुं०[स०] एक प्रकार का उन्माद जिसमे शरीर सूख जाता है, मुँह और हाथ टेढे हो जाते हैं और स्मरण-शक्ति जाती रहती है।

देश—पु०[स०√दिश् (बताना)+अच्]१ सब ओर फैला हुआ वह विस्तृत अवकाश जिसके अतर्गत दिखाई देनेवाली सभी चीजें रहती है। २ उक्त का कोई परिमित या सीमित अश या भाग। जैसे—तारो का देश। ३ जगह। स्थान। ४ किसी अग या पदार्थ के आस-पास का स्थान। जैसे—उदर देश, कटि देश, ललाट देश। ५ कोई विशिष्ट भू-भाग या खड जिसका प्राकृतिक या कृत्रिम आधारो पर विभाजन हुआ हो तथा जहाँ कुछ विशिष्ट जातियाँ, कुछ विशिष्ट भाषा-भाषी तथा कुछ विशिष्ट परपराओ और सस्कृतियोंवाले लोग रहते हैं। ६ उक्त लोग। ७ किसी का अथवा उसके पूर्वजो का जन्म स्थान। जैसे—छुट्टियो मे वे देश चले जाते, हैं। ८ सगीत मे सपूर्ण जाति का एक राग। ९ जैन शास्त्रानुसार चौथा पचक जिसके द्वारा अर्थानुसधानपूर्वक तपस्या अर्थात् गुरु, जन, गुहा, श्मशान, और रुद्र की वृद्धि होती है।

देशक—पु०[स०√दिश्+ण्वुल्—अक] १ देश का शासक। २ मार्ग दर्शक। ३ उपदेश करनेवाला। उपदेशक।

देश-कली—स्त्री०[स०] एक रागिनी जिसमे गाधार, कोमल और बाकी सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

देशकारी—स्त्री०[स०] सगीत मे, सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो मेघराग की भार्या कही गई है। यह वर्षाऋतु मे दिन के पहले पहर मे गाई जाती है।

देशगांधार—पु०[स०] एक राग जो सबेरे एक दड से पाँच दड तक गाया जाता है।

देश-चरित्र—पु० [ष०त०] देश की प्रथा। रवाज। (कौ०)

देश-चारित्र—पु० [ष०त०] जैन शास्त्रानुसार गार्हस्थ्य धर्म जिसके बारह भेद है।

देशज—वि०[स० देश√जन् (उत्पत्ति)+ड] (शब्द) जो देश मे ही उपजा या बना हो। जो न तो विदेशी हो और न किसी दूसरी भाषा के शब्द से बना हो।

पु० ऐसा शब्द जो न सस्कृत हो, न सस्कृत का अपभ्रश हो और न किसी दूसरी भाषा के शब्द से बना हो, बल्कि किसी प्रदेश के लोगों ने बोल-चाल मे यो ही बना लिया हो।

विशेष—यह शब्दो के तीन प्रकारो या विभागो मे से एक है। शेष दो विभाग तत्सम और तद्भव है।

देशज्ञ—पु० [स० देश√ज्ञा (जानना)+क] किसी देश की दशा, रीति, नीति आदि सब बातें जाननेवाला।

देश-धर्म—पु० [ष०त०] किसी विशिष्ट देश की रीति, नीति, आचार, व्यवहार आदि।

देशना—स्त्री०[स०]१ उपदेश। (जैन) २. कोई ऐसी बात जिसके अनुसार कोई काम करने को कहा जाय। हिदायत।

देश-निकाला—पु० [हि० देश+निकालना]१ देश से निकालने की क्रिया या भाव। २ अपराधी विशेषत देशद्रोही को दिया जानेवाला वह दड जिसमे वह देश के बाहर निकाल दिया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

देश-पति—पु० [ष०त०]१ देश का स्वामी, राजा। २ देश का प्रधान शासक। राष्ट्रपति।

देश-पाली—स्त्री०[स०] देशकारी (रागिनी)।

देश-पीड़न—पु०[ष०त०] सारी प्रजा पर होनेवाला अत्याचार। राष्ट्र को कष्ट पहुँचाना। (कौ०)

देश-भक्त—पु०[ष०त०] वह व्यक्ति जिसे अपना देश परम प्रिय हो तथा जो उसकी स्वतन्त्रता और स्वार्थों को सर्वोपरि समझता हो। ऐसा व्यक्ति किसी अच्छे उद्देश्य या लक्ष्य की प्राप्ति के लिए सब-कुछ उत्सर्ग करने को प्रस्तुत रहता है।

देश-भक्ति—स्त्री०[ष०त०] देशभक्त होने की अवस्था, गुण या भाव।

देश-भाषा—स्त्री०[ष०त०] वह भाषा जो किसी विशिष्ट देश या प्रात मे ही बोली जाती हो। जैसे—पजाबी, बँगला, मराठी आदि।

देश-मल्लार—पु०[स०] सपूर्ण जाति का एक राग।

देशराज—पु०[स०] राजा परमाल (प्रमर्दि देव) के एक सामत जो आल्हा और ऊदल के पिता थे।

देशस्थ—वि०[स० देश√स्था (ठहरना)+क] १. देश मे स्थित। २ देश मे रहनेवाला।

पु० महाराष्ट्र ब्राह्मणों का एक भेद।

देशाकी—स्त्री०[?]एक प्रकार की रागिनी।

देशांतर—पु०[स० देश-अतर, मयू० स०] [वि० देशातरी, भू० कृ० देशातरित]१ अपने अथवा प्रस्तुत देश से भिन्न, अन्य या दूसरा देश। परदेश। विदेश। २ दे० 'देशातरण'। ३ भूगोल मे, याम्योत्तर रेखा के विचार से निश्चित की हुई किसी स्थान की पूर्वी या पश्चिमी दूरी जो अक्षाश की तरह सख्या-सूचक अशो मे बताई जाती है। (लागी-च्यूड)

देशांतरण—पु०[स० देशातर+णिच्+ल्युट्—अन]१ एक देश को छोडकर दूसरे देश मे जाना तथा उसमे जाकर रहना। २ राज्य की ओर से दिया जानेवाला निर्वासन का दड।

देशांतर सूचक यंत्र—पु०[म०] किसी स्थान का देशातर सूचित करनेवाला एक प्रकार का यत्र जिसका उपयोग मुख्यत समुद्री जहाजो पर देशातर जानने के लिए किया जाता है। (क्रोनोमीटर)

देशांतरित—भू० कृ०[स० देशातर+णिच्+क्त]१ जो किसी दूसरे देश मे जा बसा हो। २ जिसे देश-निकाले का दड मिला हो। ३ जो किसी दूसरे देश मे पहुँचा या भेज दिया गया हो।

देशांतरित-पण्य—पु०[कर्म०स०] दूर देश से आया हुआ माल। विदेशी माल। (कौ०)

देशांतरी (रिन्)—वि०, पु०[स० देशातर+इनि] विदेशी।

देशांश—पु०=देशातर।

देशाका—पु०[स०] एक प्रकार की रागिनी।

देशाखी—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देशाखी—स्त्री०[स०] षाडव जाति की एक रागिनी जो हनुमत् के मत से हिंडोल की दूसरी रागिनी है।

देशाचार—पुं०[स० देश-आचार ष०त०] किसी विशिष्ट देश के रीति-रवाज।

देशाटन—पु०[स० देश-अटन स०त०] भिन्न-भिन्न देशो मे घूम-घूमकर की जानेवाली यात्रा या पर्यटन।

देशावकाशिक (व्रत)—पु० [स०] जैन शास्त्रानुसार, एक प्रकार का शिक्षा-व्रत जिसमे स्वार्थ के लिए सब दिशाओ मे आने-जाने के जो प्रतिबध हैं उनको और भी कठोरता तथा दृढ़ता से पालन किया जाता है।

देशावली—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

देशिक—वि०[स० देश+ठन्—इक]किसी विशिष्ट देश या प्रदेश से सबध रखने या उसकी सीमा मे होनेवाला। (इन्टरनल)
पु० पथिक। बटोही।

देशित—भू० कृ०[स० √दिश्+णिच्+क्त]१ जिसे आदेश दिया गया हो। आदिष्ट। २ जिसे उपदेश दिया गया हो। उपदिष्ट। ३ जिसे कोई बात बतलाई या समझाई गई हो।

देशिनी—स्त्री० [स०√दिश्+णिनि—ङीप्] १ सूची। सूई। २ तर्जनी उँगली।

देशी—वि०[स० देशीय]१ देश-सबधी। देश का। जैसे—देशी भाषा। २ किसी व्यक्ति की दृष्टि से, स्वय उसके देश मे बनने, रहने या होनेवाला। स्वदेशी। जैसे—देशी माल।
पु०१ सगीत के दो भेदो मे से एक (दूसरा भेद 'मार्गी' कहलाता है)। २ एक प्रकार का ताण्डव नृत्य जिसमे अभिनय कम और अग-विक्षेप अधिक होता है।
स्त्री० एक रागिनी जो हनुमत् के मत से दीपक राग की भार्या है और जो ग्रीष्मकाल मे मध्याह्न के समय गाई जाती है।

देशी-राज्य—पु० दे० 'रियासत'।

देशीय—वि०[स० देश+छ—ईय] देश मे होने अथवा उसके भीतरी भागो से सबध रखनेवाला।

देश्य—वि०[स०]१ किसी देश, प्रान्त या स्थान से सबध रखने या उसमे होनेवाला। देशी। २ प्रान्तीय या स्थानीय। ३ [√दिश्+ण्यत्] (तथ्य) जो प्रमाणित किया जाने को हो।
पु०१ देश का निवासी। २ ऐसा गवाह जिसने कोई घटना अपनी आँखो से देखी हो। प्रत्यक्षदर्शी। ३ न्याय मे ऐसा कथन या तथ्य जो प्रमाणित किया जाने को हो। पूर्व-पक्ष।

देसंतर†—पु०[स० देशान्तर] दूसरा देश। विदेश।

देस†—पु० देश।

देसकार† —पु० =देशकार।

देसवाल—वि०[हिं० देस+वाला] स्वदेश का, दूसरे देश का नहीं (मनुष्य के लिए)। जैसे—देसवाल बनिया।
पु० एक प्रकार का पटसन।

देसावर—पु०[स० देश+अपर] [वि० सावरी] अपने देश से भिन्न कोई दूसरा देश।

देसावरी—वि०[हिं० देसावर] देसावर अर्थात् अन्य देश का।

देसी†—वि०=देशी।

देहंभर—वि०[स० देह√भृ (पोषण)+खच्, मुम्]१ अपने ही शरीर का पोषण करनेवाला। २. परम स्वार्थी।

देह—स्त्री०[स०√दिह(वृद्धि)+घञ्] [वि० देही]१ शरीर। तन। बदन।
मुहा०—देह छोड़ना या त्यागना =मृत्यु होना। **देह धरना या लेना**= जन्म लेकर शरीर धारण करना। **देह बिसरना**= तन-बदन की सुध न रहना।
२ शरीर का कोई अग। ३ जिंदगी। जीवन। ४ देवता आदि की मूर्ति। विग्रह।
पु०[फा०]गाँव। खेडा।
विशेष—'देहात' वस्तुत इसी 'देह' का बहु० है।

देहकान—पु०=दहकान।

देहकानी—वि०=दहकानी।

देह-त्याग—पु०[ष०त०] मरण। मृत्यु।

देहद—पु०[स० देह√दै (शोधन)+क] पारा।

देह-धारक—वि०[ष०त०] शरीर को धारण करनेवाला। देह-धारी।
पु० अस्थि। हड्डी।

देह-धारण—पु०[ष०त०]१ शरीर प्राप्त करना। जन्म लेना। २. शरीर प्राप्त होने पर उसका पालन और रक्षा करना। शरीर के धर्मों का निर्वाह करना।

देहधारी (रिन्)—वि०[स० देह√धृ (धारण)+णिनि] [स्त्री० देहधारिणी]१ जन्म लेकर शरीर धारण करनेवाला। २ जिसे शरीर हो। शरीरी।
पुं० जीव। प्राणी।

देहधि—पु०[सं० देह√धा+कि]चिड़ियो का पख। डैना।

देहधुज्—पु०[सं०देह√धृज् (सचरण)+क्विप्] वायु, जिससे शरीर बना रहता है।

देहली—पु०[स०]१ जीवित व्यक्ति। प्राणी। २ मनुष्य।
स्त्री० पत्नी। (राज०)

देह-पात—पु०[ष०त०]देह अर्थात् शरीर का नाश। मृत्यु।

देहभुज्—पु०[स० देह√भुज्(भोगना)+क्विप्] १ जीव। प्राणी। २ आत्मा। ३ सूर्य। ४ मरण। मृत्यु।

देहभृत्—पु०[स० देह√भृ (भरण) +क्विप्] जीव। प्राणी।

देह-यात्रा—स्त्री०[च० त०] १ भोजन। भरण-पोषण आदि ऐसे काम जिनसे शरीर चलता रहे। २. [ष०त०] मृत्यु। मौत।

देहर—स्त्री०[स० देवह्रद] नदी के किनारे की वह नीची भूमि जो बाढ़ के समय जलमग्न रहती है।

देहरा—पु०[हिं० देव+घर] [स्त्री० अल्पा० देहरी] देवालय। मदिर।
†पुं० =देह (शरीर)।

देहरि*—स्त्री० =देहली।

देहरी—स्त्री०=देहली।

देहला—स्त्री०[स०]मदिरा। शराब।

देहली—स्त्री०[सं० देह√ला (ग्रहण)+कि—ङीष्]१. दीवार मे लगे हुए दरवाजे मे चौखट के नीचे की लकडी। दहलीज। २ उक्त

लकड़ी के आस-पास का स्थान अथवा वह स्थान जहाँ पर उक्त लकड़ी रहती है।

देहली-दीपक—पुं०[मध्य० स०]१ देहरी पर रखा हुआ दीपक जो भीतर बाहर दोनों ओर प्रकाश फैलाता है। २ उक्त के आधार पर प्रचलित एक न्याय का सिद्धांत जिसका प्रयोग ऐसे अवसरों पर होता है, जहाँ एक ही चीज या बात दोनों पक्षों पर प्रकाश डालती हो। ३ साहित्य मे, एक अर्थालंकार जिसमे किसी एक बीचवाले शब्द का अर्थ पहले और बाद के अर्थात् दोनों पदों मे समान रूप से लगता है। जैसे—'हम न आप' मे का 'न' जिसके कारण पद का अर्थ होता है—न हम और न आप।

देहवत—वि०[स० देहवान् का बहु०] जिसका देह हो। शरीरधारी।

देहवान् (वत्)—वि०[स०देह+मतुप्] शरीरधारी।
पुं० जीव। प्राणी।

देह-शंकु—पुं०[स०] पत्थर का खंभा।

देह-संचारिणी—स्त्री० [स० देह-सम्√चर् (गति) +णिनि—ङीप्] कन्या। लड़की।

देह-सार—पुं०[ष०त०] शरीर मे की मज्जा नामक धातु।

देहांत—पुं०[देह-अंत ष०त०] देह का अंत। शरीरांत। मृत्यु।

देहांतर—पुं०[देह-अंतर मयू० स०]एक शरीर छोड़ने पर प्राप्त होनेवाला दूसरा शरीर। जन्मांतर।

देहांतरण—पुं०[स० देहांतर+णिच्+ल्युट्—अन][भू० कृ० देहांतरित] आत्मा का एक शरीर छोड़कर दूसरे शरीर मे जाना। नया देह या शरीर धारण करना।

देहात—पुं०[फा० देह (गाँव) का बहु०] [वि० देहाती] १ गाँव। ग्राम। २ देश के वे विभाग जिनमे अनेक गाँव हों।

देहाती—वि० [हि० देहात] [भाव० देहातीपन] १ देहात-संबंधी। २ देहात अर्थात् गाँव मे रहनेवाला। ३ उक्त लोगों की प्रकृति, रुचि, व्यवहार आदि के अनुरूप। जैसे—देहाती पहनावा या रहन-सहन।
पुं० गँवार।

देहातीत—वि०[स० देह-अतीत द्वि० त०] १ जो शरीर से परे या स्वतन्त्र हो। २ जिसे देह का अभिमान, ममता आदि न हो।

देहातीपन—पुं०[हि० देहाती+पन (प्रत्य०)] देहाती होने की अवस्था या भाव।

देहात्म-ज्ञान—पुं०[ष०त०] देह और आत्मा के अभेद का ज्ञान।

देहात्म-वाद—पुं०[ष०त०] एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसके अनुसार देह को ही आत्मा मानते है और देह से भिन्न आत्मा नाम का कोई पदार्थ नहीं मानते।

देहात्मवादी (दिन्)—पुं०[स० देहात्मवाद+इनि] देहात्मवाद का अनुयायी और समर्थक।

देहात्मा (त्मन्)—पुं०[स० देह-आत्मन् द्व०स०] देह और आत्मा।

देहाध्यास—पुं०[देह-अध्यास ष०त०] देह को ही आत्मा समझने का भ्रम।

देहावरण—पुं०[देह-आवरण ष०त०]१ शरीर पर पहनने के या उसे ढकने के कपड़े। २ जिरह। बक्तर।

देहावसान—पुं०[देह-अवसान ष०त०] देह का अवसान अर्थात् अंत या नाश। देहांत। मृत्यु।

देहिका—स्त्री०[स०√दिह्+ण्वुल्—अक, टाप् इत्व] एक प्रकार का कीड़ा।

देही (हिन्)—वि०[स० देह+इनि]देह को धारण करनेवाला। शरीरी।
पुं०जीवात्मा। आत्मा।

देहेश्वर—पुं०[देह-ईश्वर ष०त०] आत्मा।

देहोद्भव, देहोद्भूत—वि०[देह-उद्भव ब०स०, देह-उद्भूत पं० त०] १ देह से उद्भूत या प्राप्त होनेवाला। २ जन्मजात।

दैं†—अव्य०[अनु०]से। (किसी क्रिया के प्रकार का सूचक) जैसे—चपाक दैं।

दैंती—स्त्री०=दराँती।

दैअ*—पुं०=दैव।

दैआ*—स्त्री०=दैया।

दैउ*—पुं०=दैव।

दैजा—पुं०=दायजा (दहेज)।

दैतारि*—पुं०=दैत्यारि।

दैतेय—वि० [स० दिति+ढक्—एय]दिति से उत्पन्न।
पुं० १ दिति का पुत्र। दैत्य। राक्षस। २ राहु का एक नाम।

दैत्य—पुं० [स० दिति+ण्य] [स्त्री० दैत्या] १ कश्यप के वे पुत्र जो दिति नाम्नी स्त्री से पैदा हुए थे। असुर। राक्षस। २ लाक्षणिक रूप मे, बहुत बड़े डील-डौलवाला और कुरूप या भद्दा आदमी। ३ राक्षसों के आकार-प्रकार और रंग-ढंग का व्यक्ति। ४ दुराचारी और नीच। ५ लोहा।

दैत्य-गुरु—पुं० [ष० त०] दैत्यों के गुरु, शुक्राचार्य।

दैत्यज—वि० [स० दैत्य√जन् (उत्पत्ति)+ड [स्त्री० दैत्यजा] दैत्य से उत्पन्न।
पुं० दैत्य का वंशज।

दैत्य-देव—पुं० [ष० त०] १ दैत्यों के देवता। २ वरुण। ३ वायु।

दैत्यद्वीप—पुं० [स०] गरुड का एक पुत्र। (महाभारत)

दैत्य-धूमिनी—स्त्री० [स०] हथेलियों के पृष्ठ भागों को मिलाने तथा उँगलियों को एक दूसरे मे फँसाने पर बननेवाली एक मुद्रा। (तंत्र)

दैत्य-पुरोधा (धस्)—पुं० [स० ष० त०] दैत्यों के पुरोहित शुक्राचार्य।

दैत्य-माता (तृ)—स्त्री० [ष० त०] दैत्यों की माता, दिति।

दैत्य-मेदज—पुं० [दैत्य मेद ष० त०, दैत्यमेद√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ पृथ्वी। २ गुग्गुल। गूगुल।

दैत्य-युग—पुं० [ष० त०] दैत्यों का युग जिसकी अवधि देवताओं के बारह हजार बरसों और मनुष्यों के चार युगों के बराबर मानी गई है।

दैत्य-सेना—स्त्री० [स०] प्रजापति की कन्या जो देवसेना की बहन थी, जिसका विवाह केशव दानव से हुआ था।

दैत्या—स्त्री० [स० दैत्य+टाप्] १ दैत्य जाति की स्त्री। २ कपूर कचरी। मुरा। ३ चंद्रौषधि। ४ मदिरा। शराब।

दैत्यारि—पुं० [दैत्य-अरि ष० त०] १ दैत्यों के शत्रु, विष्णु। २. देवता। ३ इंद्र।

दैत्याहोरात्र—पुं० [दैत्य-अहोरात्र ष० त०] दैत्यों का एक दिन और एक रात जो मनुष्यों के एक वर्ष के बराबर कहा गया है।

दैत्येंद्र—पुं० [दैत्य-इंद्र ष० त०] १ दैत्यों का राजा। २. गंधक।

दैत्येज्य—पुं० [दैत्य-इज्य ष० त०] दैत्यो के गुरु; शुक्राचार्य।

दैनंदिन—वि० [स० दिनंदिन+अण् नि० सिद्धि] [स्त्री० दैनंदिनी] प्रतिदिन होनेवाला। नित्य का।

क्रि० वि० १ प्रतिदिन। नित्य। २ दिनो-दिन। लगातार।

पु० [स०] पुराणानुसार एक प्रकार का प्रलय जो ब्रह्मा के पचास वर्ष बीतने पर होता है। मोहरात्रि।

दैनंदिनी—वि० [सं० दैनंदिन] दैनिक।

स्त्री०=दैनिकी (देखें)।

दैन—वि० [स० दिन+अण्] दिन सबधी। दिन का।

पु० [स० दीन+अण्] दीन होने की अवस्था या भाव। दीनता।

†स्त्री०=देन।

†प्रत्य० [सं० दायिन्] देनेवाला। जैसे—सुखदैन।

दैनिक—वि० [स० दिन+ठञ्—इक] १ दिन-सबधी। दिन का। जैसे—दैनिक समाचार। २. एक दिन मे होनेवाला। ३ प्रति दिन या हर रोज किया जाने या होनेवाला। जैसे—दैनिक चर्या। ४. नित्य या बराबर होता रहनेवाला। रोज-रोज का। जैसे—दैनिक चिंता, दैनिक झगडा।

पु० १ एक दिन काम करने का पारिश्रमिक, मजदूरी या वेतन। २ वह समाचार-पत्र जो प्रति दिन या रोज प्रकाशित होता हो। (डेली)

दैनिक-पत्र—पु० [कर्म० स०] वह समाचार-पत्र जो प्रति दिन या नित्य प्रकाशित होता हो। हर रोज छपनेवाला अखबार।

दैनिकी—स्त्री० [स० दैनिक+ङीष्] जेब मे रखी जानेवाली वह छोटी पुस्तिका जिसमे रोज के किये जानेवाले कामो का उल्लेख होता है। (डायरी)

दैन्य—पु० [स० दीन+ष्यञ्] १ दीन होने की अवस्था या भाव। दीनता। २ गरीबी। दरिद्रता। ३. नम्रता। ४ साहित्य मे, एक प्रकार का सचारी भाव जिसमे कष्ट, दु:ख आदि के कारण मनुष्य कातर, दीन और नम्र हो जाता है।

दैयत†—पु०=दैत्य।

दैया—पु० [हिं० दई] दई। दैव।

मुहा०—**दैयन कै**†=दैव दैव करते हुए। बहुत कठिनता से या किसी प्रकार।

†स्त्री० [हिं० दाई] १. माता। माँ। २ दाई।

अव्य० आश्चर्य, भय, दु:ख आदि का सूचक शब्द। हे परमेश्वर! (स्त्रियाँ)

दैयागति†—स्त्री०=दैवगति।

दैर—पु० [फा०] १ वह स्थान जहाँ लोग धार्मिक दृष्टि से पूजा, उपासना आदि करते हों। २. देव-मदिर। बुतखाना। ३ गिरजा।

दैर्घ्य—पु० [सं० दीर्घ+ष्यञ्] दीर्घ का भाव। दीर्घता। लंबाई।

दैव—वि० [सं० देव+अण्] [स्त्री० दैवी] १ देवता सबंधी। जैसे—दैव-कार्य। २. देवताओ की ओर से होनेवाला। जैसे—दैव-गति। ३ देवता को अर्पित किया हुआ।

पु० १. अर्जित शुभ और अशुभ कर्म जो फल देनेवाले होते हैं। प्रारब्ध। होनी। २. विधाता। ईश्वर।

मुहा०—**(किसी को) दैव लगना**=(किसी पर) ईश्वर का कोप होना।

३. आकाश।

मुहा०—**दैव बरसना**=पानी बरसना।

४ योगियो के योग मे होनेवाले पाँच प्रकार के विघ्नो मे से एक जिसमे योगी उन्मत्तो की तरह आँखें बद करके चारो ओर देखता है। (मार्कंडेय पु०)

दैव-कृत-दुर्ग—पु० [स० दैव-कृत तृ० त०, दैवकृत-दुर्ग कर्म० स०] वह स्थान जो चारो ओर से पर्वतो, नदियो आदि से घिरा होने के कारण सुरक्षित हो।

दैव-कोविद—पु० [स० ष० त०] १ देवताओ के विषय की सब बातें जाननेवाला। २ ज्योतिषी। दैवज्ञ।

दैव-गति—स्त्री० [कर्म० स०] १. ईश्वरीय या दैवी घटना। २. भाग्य। प्रारब्ध।

दैवग्य†—पु० = दैवज्ञ।

दैव-चिंतक—पु० [ष० त०] ज्योतिषी।

दैवज्ञ—वि० [स० दैव√ज्ञा (जानना)+क] [स्त्री० दैवज्ञा] दैव-सबधी सब बातें जाननेवाला।

पु० १ ज्योतिषी। २ बगाली ब्राह्मणो की एक जाति या वर्ग।

दैव-तंत्र—वि० [ब० स०] भाग्य पर आश्रित या उसके अधीन रहनेवाला।

दैवत—वि० [स० देवता+अण्] देवता-सबधी।

पु० १. देवता। २ देवता की प्रतिमा या मूर्ति। विग्रह। ३. यास्क मुनि के निरुक्त का तीसरा काड।

दैवत-पति—पु० [प० त०] देवताओं का राजा इद्र।

दैव-तीर्थ—पु० [मध्य० स०] उँगलियो के अग्रभाग या नोकें जिनसे आचमन किया जाता है।

दैवत्य—पु० [स० देवता+ष्यञ्] देवता।

दैवत्व—पु० [स० दैव+त्व] दैव होने की अवस्था, गुण या भाव।

दैव-दुर्विपाक—पु० [ष० त०] १ ऐसी स्थिति जिसमे होनेवाली खराबी दैव के प्रतिकूल होने पर होती है। २ भाग्य की खोटाई या दोष।

दैव-प्रमाण—पु० [ब० स०] ऐसा व्यक्ति जो पूर्णत भाग्य के भरोसे रहे।

दैव-युग—पु० [कर्म० स०] देवताओ का एक युग जो मनुष्यो के चारो युगो के बराबर होता है।

दैव-योग—पु० [ष० त०] ईश्वरकृत सयोग। इत्तिफाक। जैसे—दैव-योग से आप ठीक समय पर यहाँ आ गये।

दैवल—पु० [स० देवल+अण्] देवल ऋषि का वशज।

दैव-लेखक—पु० [ष० त०] ज्योतिषी।

दैव-वर्ष—पुं० [कर्म० स०] देवताओ का वर्ष जो १३१५२१ सौ दिनो के बराबर होता है।

दैव-वश—अव्य० [ष० त०] १. दैवयोग से। २ सयोगवश।

दैव-वशात्—अव्य० = दैववश।

दैव-वाणी—स्त्री० [कर्म० स०] १ देवताओ की भाषा, सस्कृत। २. देवताओ द्वारा कही हुई बात जो आकाश से सुनाई पडती है। आकाशवाणी।

दैववादी (दिन्)—वि० [सं० दैव√वद् (बोलना)+णिनि] १ मुख्यत: दैव या भाग्य के भरोसे रहनेवाला। ३. आलसी।

दैवविद्—पु०]स० दैव√विद् (जानना)+क] ज्योतिषी।

दैव-विवाह—पु० [कर्म० स०] स्मृतियो मे वर्णित आठ प्रकार के विवाहो से एक जिसमे कन्या यज्ञ करानेवाले ऋत्विक् को व्याह दी जाती थी।

दैव-श्राद्ध—पु० [कर्म० स०] देवताओ के उद्देश्य से किया जानेवाला श्राद्ध।

दैव-सर्ग—पु० [कर्म० स०] देवताओं की सृष्टि जिसके ब्राह्म, प्राजापत्य, ऐंद्र, पैत्र, गाधर्व, यक्ष, राक्षस और पैशाच ये आठ भेद माने गये हैं।

दैवाकरि—पु० [स० दिवाकर+इञ्] १ दिवाकर अर्थात् सूर्य के पुत्र, (क) यम। (ख) शनि।

दैवाकरी—स्त्री० [स० दिवाकर+अण्-ङीप्] (सूर्य की पुत्री) जमुना नदी।

दैवागत—वि० [स० दैव-आगत प० त०] १ दैव-योग से होनेवाला। २ सहसा होनेवाला। आकस्मिक।

दैवात्—अव्य० [स० विभक्तिप्रतिरूपक अव्यय] १. दैवयोग से। इत्तिफाक से। २ अकस्मात्। अचानक।

दैवात्यय—पु० [दैव-अत्यय मध्य० स०] १ दैवी उपद्रव। २ आकस्मिक उत्पात या उपद्रव।

दैवाधीन—वि० [दैव-अधीन ष० त०] भाग्य के भरोसे रहनेवाला।

दैवायत्त—वि० [दैव-आयत्त ष० त०] दैवाधीन।

दैवारिप—पु० [स० देवारि√पा (रक्षा)+क, देवारिप - समुद्र+अण्] शंख।

दैवासुर—पु० [स० देवासुर+अण्] देवताओ और असुरो का पारस्परिक वैर।

दैविक—वि० [स० देव+ठक—इक] १ देवता-सबधी। देवताओ का। जैसे—दैविक श्राद्ध। २ देवताओं का किया हुआ। जैसे—दैविक ताप।

दैवी—वि० [स० दैव+ङीप्] १ देवता-सबधी। २ देवताओ की ओर से होनेवाला। ३ सात्त्विक। ४ आप से आप, प्रारब्ध या सयोगवश घटित होनेवाला। आकस्मिक। ५ दिव्य। स्वर्गीय।

स्त्री० १ दैव विवाह द्वारा ब्याही हुई पत्नी। २ एक प्रकार का दैविक छद।

पु० [स०] ज्योतिषी।

दैवीगति—स्त्री० [स० व्यस्त पद] १ ईश्वर की की हुई बात। २ भावी। होनहार।

दैवोपहत—वि० [दैव-उपहत तृ० त०] भाग्य का मारा हुआ। अभागा।

दैव्य—वि० [स० देव+यञ्] देवता-सबधी।

पु० १ दिव्य होने की अवस्था या भाव। दिव्यता। २ दैव। ३ भाग्य।

दैशिक—वि० [स० देश+ठञ्-इक] १ देश या स्थान-सबधी। देश का। २ देश अर्थात् राज्य मे होनेवाला। ३ राष्ट्रीय।

दैष्टिक—वि० [स० दिष्ट+ठक्-इक] भाग्य मे बदा हुआ।

पु० भाग्यवादी।

दैहिक—वि० [स० देह+ठञ्-इक] १. देह-सबंधी। शारीरिक। २ देह या शरीर से उत्पन्न।

दैहिकी—स्त्री० [स० दैहिक+ङीष्] वह विद्या या शास्त्र जिसमे जीवधारियो के भिन्न-भिन्न अगो के कार्य, स्वरूप आदि का विवेचन होता है। शरीर-शास्त्र। (फिजियालोजी)

दैह्य—वि० [स० देह+ष्यञ्] देह-सबधी। शारीरिक।

पु० आत्मा।

दोंकना—अ० [अनु०] गुर्राना।

दोंकी†—स्त्री० १ = धौकनी। २ = गुर्राहट।

दोंच†—स्त्री० दोच।

दोंचना—स० = दोचना।

दोंर—पु० [देश०] एक प्रकार का साँप।

दो—वि० [स० द्वि] १ जो गिनती मे एक से एक अधिक हो। तीन से एक कम।

पद—दो-एक एक से एक या दो अधिक। कुछ। जैसे—उनसे दो-एक बाते कर लो। दो चार -दो, तीन अथवा चार। कुछ। थोडा। जैसे—दो-चार दिन बाद आना। **दो दिन का**—बहुत थोडे समय का। हाल का। जैसे—यह तो अभी दो दिन की बात है। **किसके दो सिर हैं?**=किसे फालतू सिर है? कौन व्यर्थ अपने प्राण गवाना चाहता है।

मुहा०—(आँखें) दो-चार होना सामना होना। **(किसी से) दो-चार होना**=भेट या मुलाकात होना। **दो दो बातें करना**=सक्षिप्त परतु स्पष्ट प्रश्नोत्तर करना। साफ-साफ कुछ बाते पूछना और कहना। **दो नावो पर पैर रखना**। दो आश्रयो या दो पक्षो का अवलबन करना। ऐसी स्थिति मे रहना कि जब जिधर चाहे, तब उधर मुड या हो सके।

२ विभिन्न या परस्पर-विरोधी। जसे—देश की सुरक्षा के सबध मे दो राय हो ही नही सकती।

पु० १ एक के ठीक बादवाली सख्या। एक और एक का जोड। २ उक्त का सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—२ ३ जोडा। ४ दुक्की।

दो-आतशा—वि० [फा०] जो दो बार भभके से खीचा या चुआया गया हो। दो बार का उतारा हुआ। जैसे—दो आतशा अरक या शराब।

दोआब—पु० = दोआबा।

दोआबा—पु० [फा० दोआब] दो नदियो के बीच का अथवा उनमे घिरा हुआ प्रदेश।

दोइ†—वि०, पु० = दो।

दोउ†—वि० [हि० दो] दोनो।

दोऊ—वि० [हि० दो] दोनो।

दोक—पु० [हि० दो+का (प्रत्य०)] दो वर्ष की उम्र का बछेडा।

दोकड़ा†—पु० [हि० दो+टुकडा] टुकडा।

दो कला—वि० [हि० दो+कल] दो कलो या पेचोवाला।

पु० १ वह ताला जिसके अदर दो कले या पेंच होते है। २ उक्त प्रकार की बेडी जो साधरण बेडी से अधिक मजबूत होती है।

दोका—पु० = दोक।

दो-कोहा—पु० [हि० दो+कोह = कूबड] वह ऊँट जिसकी पीठ पर दो कूबड होते हैं।

दो-खंभा—पु० [हि० दो+खभा] एक प्रकार का नैचा जिसमे कुल्फी नही होती।

दोख†—पु० = दोष।

दोखना—स० [हि० दोष+ना (प्रत्य०)] किसी पर दोष लगाना।

दोखी†—वि० [हिं० दोष] १. अपराधी। दोषी। २ ऐबी। ३. दुष्ट। पाजी। ४. वैरी। शत्रु। (डिं०)

दो-गंग—पु० [हिं० दो+गगा] दो नदियो के बीच का प्रदेश। दोआबा।

दोगंडी—स्त्री० [हिं० दो+गडी = गोल घेरा या चिह्न] १. वह चित्ती कौडी या इमली का चीआँ जिसे लडके जूआ खेलने मे बेईमानी करने के लिए दोनो ओर से घिस लेते है। २ उक्त प्रकार की कौडियो से खेलनेवाला अर्थात् बेईमान आदमी। ३ उपद्रवी या शरारती आदमी।

दोगर†—पु० = डोगरा।

दोगला—पु० [फा० दोगल] [स्त्री० दोगली] १ ऐसा जीव जो दो विभिन्न जातियों या नस्लो के माता-पिता के योग से उत्पन्न हुआ हो। वर्णसकर। २ उक्त के आधार पर उत्पन्न होनेवाला ऐसा जीव जो प्राय कुरूप तथा अशक्त होता है। ३ ऐसा मनुष्य जो अपनी माता के गर्भ से परन्तु उसके उपपति या यार के योग से उत्पन्न हुआ हो। जो ऐसे व्यक्ति की सतान हो जिससे उसकी माता का विवाह न हुआ हो। जारज।

पु० [हिं० दो + कल] बाँस की कमाचियो का बना हुआ एक प्रकार का गोल और कुछ गहरा पात्र जिससे किसान खेतो मे पानी उलीचते है।

दोगा—पु० [स० द्विक, हिं० दुक्का] १ लिहाफ के काम आनेवाला एक तरह का मोटा कपडा। २ पानी मे घोला हुआ चूना, सीमेट आदि जिसे दीवारो, छतो आदि पर पोतकर उन्हें चिकना बनाया जाता है।

दोगाडा—पु० [हिं० दो + ?] दोनली बदूक।

दोगाना—पु० [हिं० दो + गाना] एक तरह का गीत जिसके एक चरण मे एक व्यक्ति कुछ प्रश्न करता है और दूसरे चरण मे दूसरा व्यक्ति उसका उत्तर देता है।

† स्त्री० = दुगाना। (देखें)

दोगुना†—वि० दुगना (दूना)।

दोग्ध्री—स्त्री० [स० √दुह (दुहना)+तृच्—ङीप्] १. दूध देनेवाली गाय। २ दूध पिलानेवाली दाई। धाय।

दोघ—वि० [स०] गौ आदि दुहनेवाला।

दोघरा—वि० [हिं० दो + घर] १ जिसमे दो घर (खाने या विभाग) हो। २ दो घरो से सबध रखनेवाला।

दोचद—वि० [फा० दुचद] दुगना। दूना।

दोच†—स्त्री० = दोचन।

दोचन—स्त्री० [हिं० दबोच] १ दुबधा। असमजस। २ कष्ट। तकलीफ। दु ख। ३ विपत्ति। सकट। ४ किसी ओर से पडनेवाला दबाव।

दोचना—स० [हिं० दोन] कोई काम करने के लिए किसी पर बहुत जोर देना। दबाव डालना।

दोचल्ला—पु० [हिं० दो + चल्ला (पल्ला) ?] वह छाजन जो बीच मे उभरी हुई और दोनो ओर ढालुई हो। दो-पलिया छाजन।

दो-चित्ता—वि० [हिं० दो + चित्ता] [स्त्री० दोचित्ती] जिसका चित्त एकाग्र न हो, बल्कि दो कामो या बातों मे बँटा या लगा हुआ हो।

दोचित्ती—स्त्री० [हिं० दो+चित्त] १ 'दो-चित्ता' होने की अवस्था या भाव। ध्यान का दो कामो या बातो मे बँटा रहना। २ चित्त की उद्विग्नता या विकलता।

दो-चोबा—पु० [हिं० दो+फा० चोब] वह बडा खेमा जिसमे दो दो चोबें लगती हो।

दोज—स्त्री० [हिं० दो] चांद्र मास के किसी पक्ष की द्वितीया तिथि। दूज।

पु० [स०] सगीत मे, अष्टताल का एक भेद।

वि० [फा०] १ सिलाई करने या सीनेवाला। जैसे—जरदोज। २ किसी के साथ बिलकुल मिला या सटा हुआ। जैसे—जमीन दोज मकान, अर्थात् ऐसा मकान जो ढहकर जमीन के बराबर हो गया हो।

दोजई—स्त्री० [देश०] वह उपकरण जिससे नक्काश लोग वृत्त आदि बनाते हैं।

दोजख—पु० [फा० दोज़ख] १ इस्लामी धर्म के अनुसार नरक जिसके सात विभाग कहे गये हैं और जिसमे दुष्ट तथा पापी मनुष्य मरने के उपरात रखे जाते है। २ नरक।

†पु० [?] सुदर फूलोवाला एक प्रकार का पौधा।

दोजखी—वि० [फा०] १ दोजख-सबधी। दोजख का। २ दोजख मे जाने या रहनेवाला। नारकी। ३ बहुत बडा दुष्ट और पापी।

दो-जरबा—वि० [फा०] दो बार भभके मे खीचा या चुआया हुआ। दो-आतशी।

दोजर्बी—स्त्री० [फा०] १ दोनली बदूक। २ दो बार चुआई हुई शराब।

दोजा—पु० [हिं० दो] [स्त्री० दोजी] पुरुष जिसका दूसरा विवाह हुआ हो।

†वि० = दूजा (दूसरा)।

दोजानू—अव्य० [हिं० दो + स० जानु (घुटना)] घुटनो के बल या दोनो घुटने टेककर।

दोजिया—स्त्री० = दोजीवा।

दोजी—स्त्री० [फा०] सीने का काम। सिलाई। जैसे—जरदोजी।

दोजीरा—पु० [हिं० दो + जीरा] एक प्रकार का चावल।

दोजीवा—स्त्री० [हिं० दो+जीव] वह स्त्री जिसके पेट मे एक और जीव या बच्चा हो। गर्भवती स्त्री।

दोढ़—वि० = डेढ।

दोत†—पु० = दूत।

स्त्री० = दवात।

दो-तरफा—वि० [फा० दुतर्फ़] [स्त्री० दोतरफी] दोनो तरफ का। दोनों ओर से सबध रखनेवाला।

क्रि० वि० दोनो ओर। दोनो तरफ। इधर भी और उधर भी।

दोतर्फा—वि० = दो-तरफा।

दोतला†—वि० = दो-तल्ला।

दो-तल्ला—वि० [हिं० दो+तल्ला] (घर या मकान) जिसमे दो खड या मजिलें हो। दो-मजिला।

दोतही—स्त्री० [हिं० दो+तह] एक प्रकार की देशी मोटी चादर जो दोहरी करके बिछाने के काम आती है। दोसूती।

दोता†—पु० = दोहता (दौहित्र)।

दोतारा—पु० [हिं० दो+तार] १ एक प्रकार का दुशाला। २ सितार की तरह का एक बाजा, जिसमे दो तार लगे होते हैं।

दोदना—स०[हिं० दो (दोहराना)] १ किसी की कही हुई बात सुनकर भी यह कहना कि तुमने ऐसा नहीं कहा था। २ किसी के सामने एक बार कोई बात कहकर भी बार-बार यह कहना कि हमने ऐसा नही कहा था।
वि० दोदने या मुकरनेवाला।

दोदरी—स्त्री० [नैपाली] एक तरह का सदाबहार पेड़ जो पूर्वी बगाल, सिक्किम और भूटान में होता है।

दोदल—पु० [स० द्विदल] १ चने की दाल और उससे बनी हुई तरकारी। २ कचनार की कलियाँ जिनकी तरकारी बनती और अचार पड़ता है।

दोदस्ता—वि० [फा० दुदस्त] १ दोनो हाथो से किया जानेवाला या होनेवाला।

दोदा—पु० [देश०] एक तरह का डेढ़-दो हाथ लबा कौआ।

दोदाना—स० [हिं० दोदना] किसी को दोदने मे प्रवृत्त करना। (दे० 'दोदना')

दोदामी†—स्त्री० = दुदामी।

दोदिम—पु० [देश०] रीठे की जाति का एक प्रकार का पेड़ जिसके फला की फेन से कपड़े साफ किये जाते है।

दोदिला—वि० [हिं० दो+फा० दिल] [भाव० दोदिली] दोचित्ता (दे०)।

दोध—पु० [स० √दुह्+अच, नि० सिद्धि] [स्त्री० दोधी] १ ग्वाला। अहीर। २ गौ का बच्चा। बछड़ा। ३ पुरस्कार के लोभ से कविता करनेवाला कवि।

दोधक—पु० [स०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसमे तीन भगण और अत मे दो गुरु वर्ण होते हैं। इसे 'बधु' भी कहते हैं।
वि० दूहनेवाला।

दोधार (ा)—वि० [हिं० दो+धार] [स्त्री० दोधारी] जिसके दोनो ओर धार या बाढ हो।
पु० बरछा। भाला।
पु० [देश०] एक प्रकार का थूहर।

दोन—पु० [हिं० दो] १ दो पहाड़ो के बीच की नीची जमीन। दून। २. दो नदियो के बीच का प्रदेश। दो आबा। ३ दो नदियो का सगम स्थान। ४ दो वस्तुओं का एक मे होनेवाला मेल या सगम।
पु० [स० द्रोण] काठ का वह खोखला लबा टुकड़ा जिससे धान के खेतो में सिचाई की जाती है।

दोनली—वि० [हिं० दो+नल] जिसमे दो नलियाँ या नल हो।
स्त्री० दो नलोवाली बदूक या तोप।

दोना—पु० [स० द्रोण] [स्त्री० अल्पा० दोनियाँ, दोनी] १ पलास, महुए आदि के पत्ते या पत्तो को सीको से खोसकर बनाया जानेवाला अजली या कटोरे के आकार का पात्र। २ उक्त मे रखी हुई वस्तु। जैसे—एक दोना उन्हे भी तो दो।
मुहा०—**दोना चढ़ाना**=समाधि आदि पर फूल-मिठाई चढ़ाना। **दोना या दोने चाटना**=बाजार से पूड़ी, मिठाई आदि खरीदकर पेट भरने का शौक होना। **दोना देना**=(क) किसी बड़े आदमी का अपने भोजन के थाल मे से कुछ भोजन किसी को देना जिससे देनेवाले की प्रसन्नता और पानेवाले का सम्मान प्रकट होता है। (ख) दोना चढ़ाना। (देखें ऊपर) **दोना लगाना**=दोने मे रखकर फूल-मिठाई आदि बेचने का व्यवसाय करना। **दोनो की चाट पड़ना या लगना**=बाजारी चीजें खाने का चस्का पड़ना।
†पु०=दौना (पौधा)।

दोनों—वि० [हिं० दो+नो (प्रत्य०)] दो मे से प्रत्येक। यह भी और वह भी। उभय। जैसे—दोनो भाई काम करते हैं।

दोपट्टा†—पु०=दुपट्टा।

दोपलका—पु० [हिं० दो+फलक या पलक] १ वह दोहरा नगीना जिसके अन्दर या नीचे नकली या हलका नग हो और ऊपर या चारो ओर असली या बढ़िया नग हो। दोहरा नगीना जो कम मूल्य का और घटिया होता है। २. एक प्रकार का कबूतर।

दोपलिया†—वि०=दोपल्ला।
स्त्री०=दोपल्ली।

दोपल्ला—वि० [हिं० दो+पल्ला] [स्त्री० दोपल्ली] १ जिसमे दो पल्ले हो। २ दो परतोंवाला। दोहरा।

दोपल्ली—वि० [हिं० दो+पल्ला+ई (प्रत्य०)] दो पल्लोवाला। जिसमे दो पल्ले हो। जैसे-दोपल्ली टोपी।
स्त्री० मलमल आदि की पुरानी चाल की एक प्रकार की टोपी जो कपड़े के दो टुकड़ो या पल्लो को एक मे सीकर बनाई जाती थी।

दोपहर—स्त्री० [हिं० दो+पहर] १ दिन के ठीक मध्य का समय। मध्याह्न। २. दिन के बारह बजे और उसके आस-पास का कुछ समय।
क्रि० प्र०—चढ़ना। —ढलना।

दोपहरिया†—स्त्री०=दोपहर।

दोपहरी—वि० स्त्री० [हिं० दो+पहर] हर दो पहरो पर होनेवाला। जैसे—दोपहरी नौबत।
†स्त्री०=दोपहर।

दो-पीठा—वि० [हिं० दो+पीठ] १ जो दोनो पीठों अर्थात् दोनो ओर समान रग-रूप का हो। दोरुखा। २ (छापेखाने मे, ऐसा कागज) जो दोनो ओर छपा हो।

दो-पौआ—पु० [हिं० दो+पाव] १ किसी वस्तु का दो पाव, आधा अश या भाग। २ दो पाव का बटखरा। अध-सेरा। ३ पान की आधी ढोली। (तमोली)

दो-प्याजा—पु० [फा०] अधिक मात्रा मे प्याज डालकर पकाया हुआ मास।

दो-फसली—वि० [फा० दुफस्ली] १ (पौधा या वृक्ष) जो वर्ष मे दो बार फलता और फूलता हो। २ दोनो फसलो से सबध रखनेवाला। ३. (खेत या जमीन) जिसमे रबी और खरीफ दोनो फसलें होती हो। ४ (बात) जो दोनो पक्षो मे लग सके। जिसका उपयोग दोनो ओर हो सके फलत अनिश्चित और सदिग्ध।

दोबल—पु० [?] दोष। अपराध। लाछन।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

दोबा†—पु०=दुबिधा।

दो-बाजू—पु० [हिं० दो+फा० बाज] १ वह कबूतर जिसके दोनो पैर सफेद हो। २ एक प्रकार का गिद्ध।

दोबारा—क्रि० वि० [फा० दुबार:] एक बार हो चुकने के उपरान्त फिर दूसरी बार। दूसरी दफा। पुन:। फिर।
वि० दूसरी बार होनेवाला।

पुं० १. वह अरक या शराब जो एक बार चुआने के बाद फिर दूसरी बार भी चुआई गई हो और फलत बहुत तेज हो। दो-आतशा।

स्त्री० १ एक बार साफ करने के बाद फिर दूसरी बार साफ की हुई चीनी। २. एक बार तैयार करने के उपरान्त उसी तैयार चीज से फिर दूसरी बार तैयार या ठीक की हुई चीज।

दोबाला—वि० [फा० दुबाला] दूना। दुगना।

दोभाषिया †—पु० =दुमाषिया।

दोमंजिला—वि० [फा० दुमंजिल] (इमारत) जिसमे दो खड या तल्ले हों।

पु० दो खंडोवाला मकान।

दोमट—स्त्री० [हिं० दो+मिट्टी] ऐसी जमीन जिसकी मिट्टी मे बालू भी मिला हुआ हो। बलुई जमीन।

दो-मरगा—पु० [हिं० दो+मार्ग] १ पुरानी चाल का एक प्रकार का देशी मोटा कपडा।

दो-महला—वि० दे० 'दोमजिला'।

दोमुँहा—वि० [हिं० दो+मुँह] १ जिसके दो मुँह हों। २ जिसके दोनो ओर मुँह हो। जैसे—दो मुँहा साँप। ३ दो तरह की बातें करने-वाला। ४. दोहरी चाल चलनेवाला।

दोमुँहा साँप—पु० [हिं० दो+मुँहा+साँप] १. एक प्रकार का साँप जो प्राय हाथ भर लबा होता है और जिसकी दुम मोटी होने के कारण मुँह के समान ही जान पडती है। इसमे न तो विष होता है और न यह किसी को काटता है। २ एक तरह का साँप जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि छ महीने इसके एक तरफ मुँह रहता है और छ महीने दूसरी तरफ। (चुकरैंड) ३. ऐसा व्यक्ति जो दोहरी चालें चलकर बहुत अधिक घातक सिद्ध होता हो।

दोमुँही—स्त्री० [हिं०दो+मुँह] नक्काशी करने का सुनारो का एक उपकरण।

दोय†—वि०, पु० =दो।

वि० =दोनो।

दोयण—पु० [फा० दुश्मन?] शत्रु। उदा०—दाटक अनड दड नह दीधो, दोयण घड सिर दाव दियो।—दुरसाजी।

दोयम—वि० [फा०] १ जो क्रम या गिनती मे दूसरे स्थान पर पडे। दूसरा। २. जो महत्त्व, मान आदि के विचार से द्वितीय श्रेणी का हो।

दोयरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जगली पेड जिसकी लकडी का कोयला बनाया जाता है।

दोयल—पुं० [देश०] बया पक्षी।

दोरंगा—वि० [हिं० दो+रग] [स्त्री० दोरगी] १ दो रगोवाला। जिसमे दो रग हो। जैसे—दोरगा कागज। २ जिसमे दोनों ओर दो रग हो। ३. (कथन) जो दोनो पक्षो मे समान रूप से लग सकें। ४ दे० 'दोगला'।

दोरंगी—स्त्री० [हिं० दोरंगा] १ दो रगोवाला होने की अवस्था या भाव। २ ऐसी बात या व्यवहार जो दोनो पक्षो मे लग सके।

दोर—पु० [स० दो या दोषा] हाथ। भुजा। (राज०) उदा०—दोर सु बरण तणा किरि डोर।—प्रिथीराज।

स्त्री० [हिं० दौड़] १ पहुँच। २. स्थान। उदा०—मेरे आसा चितवनि तुमरी, और न दूजी दोर।—मीराँ।

†पु० =द्वार।

†पु० [स० द्वार] दरवाजा। (बुन्देल०) उदा०—रोको बीरन मोरे दोर बहिन तोरी कहाँ चली।—लोक-गीत।

स्त्री० [हिं० दो] दो बार जोती हुई जमीन। वह जमीन जो दो दफे जोती गई हो।

स्त्री० =डोर (रस्सी)।

दोरक—पु० [स० -डोरक नि० ड को द] ? वीणा के तारा को बाँधने की ताँत। २ डोरी।

दोरदंड †—वि० =दुर्दंड।

दोरस—स्त्री० [हिं० दो+रस] ऐसी जमीन जिसकी मिट्टी मे बालू मिला हुआ हो।

दो-रसा—वि० [हिं० दो+रस] १ दो प्रकार के रस या स्वादवाला। जिसमे दो तरह के रस या स्वाद हो। जैसे—दो-रसा तमाकू (पीने का)। २ (दिन या समय) जिसमे थोडी-थोडी गरमी या सरदी दोनो पडती हो। ऋतु परिवर्तन के समय का। जैसे—दो-रसे दिन। ३ (स्त्रियो के सबध मे स्थिति) जिसमे दो अथवा अनेक प्रकार के भाव या विचार मन मे उठते हो (अर्थात् गर्भवती होने के दिन)।

पु० एक प्रकार का पीने का तमाकू जिसका धूआँ कुछ कड़ुआ और कुछ मीठा होता है।

दोरा—पु० [देश०] हल की मुठिया के पास लगी हुई बाँस की वह नली जिसमे बोने के लिए बीज डाले जाते है।

दोराब—स्त्री० [देश०] एक तरह की छोटी समुद्री मछली।

दो-राहा—पु० [हिं० दो+राह] वह स्थान जहाँ से दो मार्गों की ओर जाया जा सकता हो।

दोरी—स्त्री० =डोरी।

दो-रुखा—वि० [फा०] [स्त्री० दोरुखी] १ जिसके दोनों ओर समान रग या बेल-बूटे हो। जैसे-कपडे का दोरुखा छापा। २ जिसमे एक ओर एक रग और दूसरी ओर दूसरा रग हो। जैसे—ओढने की दोरुखी चादर। ३ (आचरण या व्यवहार) जिसका आशय दोनो ओर या दोनो पक्षो मे प्रयुक्त हो सकता हो।

पु० सुनारो का एक उपकरण।

दो-रेजी—स्त्री० [फा० दोरेजी] नील की वह फसल जो एक फसल कट जाने के उपरान्त उसकी जडो से फिर होती है।

दोर्ज्या—स्त्री० [स० दोस्-ज्या उपमि० स०] सूर्य सिद्धात के अनुसार वह ज्या जो भुज के आकार की हो।

दोर्दंड—पु० [स० दोस्-दड ष० त०] भुजदड।

दोर्मूल—पु० [स० दोस्-मूल ष० त०] भुज-मूल।

दोर्युद्ध—पु० [स० दोस्-युद्ध तृ० त०] कुश्ती।

दोल—पु० [स०√दुल् (झुलाना)+घञ्] १ झूला। हिंडोला। २ डोली।

दो-लड़ा—वि० [हिं० दो+लड] [स्त्री० दोलडी] जिसमे दो लडे हो। दो लडोवाला।

दोलत्ती—स्त्री० =दुलत्ती।

दोलन—पु० [स० दुल्+ल्युट्-अन] झूलना।

दोल-यात्रा—स्त्री० [मध्य० स०] =दोलोत्सव।

दोला—स्त्री० [स० दोल+टाप्] १ झूला। १ हिंडोला। २ डोली

या पालकी। ३ ऐसी स्थिति जिसमे किसी विषय मे मनुष्य का विचार कभी एक ओर, और कभी दूसरी ओर होता है। जैसे—विमर्श-दोला। ४ नील का पौधा

दोलाधिरूढ़—वि०[स०दोला-अधिरूढ द्वि० त०] १ झूले पर चढा हुआ। २ जिसके सबध मे अभी तक कोई निश्चय न हुआ हो।

दोला-यंत्र—पु०[स० मध्य० स०] वैद्यक मे, औषधियो का अरक उतारने या निकालने का एक यत्र।

दोलायमान—वि०[स० दोला+क्यङ्+शानच्] झूलता हुआ। हिलता-डुलता हुआ।

दोलायित—वि० [स० दोला+क्यङ्+क्त] दोलित।

दोला-युद्ध—पु०[स० उपमि० स०] वह युद्ध जिसमे कभी किसी एक पक्ष का पलडा भारी पडता हो और कभी दूसरे पक्ष का।

दोलावा—पु०[?] वह कूआँ जिसमे दो ओर दो गराडियाँ लगी हों।

दोलिका—स्त्री०[स० दोला+कन्-टाप्, इत्व] १ हिंडोला। झूला। २ डोली।

दोलित—वि०[स० दुल्+णिच्+क्त] १ झूलता हुआ। २ हिलता-डुलता हुआ।

दोली—स्त्री०[स०√दुल्+णिच्+इन्-ङीष्] १ डोली। २ पालना। ३ झूला।

दोलोही—स्त्री०=दुलोही।

दोल्—पु० [?] दाँत। (डि०)

दोलोत्सव—पु०[स० दोल-उत्सव मध्य० स०] फाल्गुन की पूर्णिमा को होनेवाला वैष्णवो का उत्सव जिसमे भगवान कृष्ण को हिंडोले पर झुलाते हैं।

दोवटी (वडी)—†स्त्री०[स०द्विपट्ट, पु० हिं० दोवटा] १ साधारण देशी मोटा कपडा। गजी। गाढा। (राज०) उदा०—गौणो तो म्हारो माला दोवडी और चदन की कुटकी।—मीराँ। २ चादर। दुपट्टा। उदा० पाँच राज दोवटी माँगी, चून लियौ सानि।-कबीर। ३ दो पाट की चादर।

दोवा†—पु० देवबाँस।

दोश—पु०[देश०] एक प्रकार का लाख जिसका व्यवहार रग बनाने मे होता है।

पु०[फा०] कधा।

†पु० =दोष।

दोशमाल—पु०[फा०] वह अँगोछा या तौलिया जो कमाई अपने पास या कधे पर रखते हैं।

दोशाखा—पु०[फा० दुशाख] १ वह शमादान जिसमे दो बत्तियाँ जलती हों। २ लकडी का वह उपकरण जिसमे दो छोटी लकडियो के बीच मे कपडा लगा रहता है और जिसमे पीसी हुई भग, दूध आदि छानते है।

वि० दो शाखाओ या डालोवाला।

दोशाला†—पु०=दुशाला।

पु०[फा०दुशाल]एक प्रकार की ओढने की बढिया कामदार ऊनी चादर।

दोशीजगी—स्त्री०[फा० दोशीजगी] १ लडकियों की कुमारावस्था। कौमार्य। २ अल्हडपन।

दोशीजा—स्त्री०[फा० दोशीज] १ कुमारी कन्या। २ अल्हड़ लड़की।

दोष—पु०]स०√दुष् (विकृति)+णिच्+घञ्] १ किसी चीज या बात मे होनेवाली कोई ऐसी खराबी या बुराई जिसके कारण उसकी उपादेयता, महत्ता आदि मे कमी या बाधा होती हो। ऐब। खराबी बुराई। (फॉल्ट)

विशेष—इसके अनेक प्रकार और रूप होते हैं। यथा—(क) पदार्थ या रचना मे किसी अग या अश का अभाव या न्यूनता। जैसे—आँख या कान का दोष, जिससे ठीक तरह से दिखाई या सुनाई नही देता। (ख) पदार्थ या रचना मे होनेवाला कोई प्राकृतिक या स्वाभाविक दुर्गुण या विकार। जैसे—नीलम या हीरे का दोष, औषध या खाद्य पदार्थ का दोष। (ग) कर्त्ता के रचना-कौशल की कमी के कारण होनेवाली कोई खराबी या त्रुटि। जैसे-वाक्य मे होनेवाला व्याकरण-सबधी दोष। (घ) रूप-रग, शोभा, सौन्दर्य आदि मे बाधक होनेवाला तत्त्व। जैसे—चन्द्रमा का दोष। साराश यह कि किसी पदार्थ या वस्तु का अपने सम्यक् रूप मे न होना अथवा आवश्यक गुणो से रहित होना ही उसका दोष माना जाता है। कुछ अवस्थाओं मे परपरा, परिपाटी, रीति-नीति आदि के आधार पर भी और कुछ क्षेत्रो मे पारिभाषिक वर्ग की भी कुछ ऐसी बातें स्थिर हो जाती है जिनकी गणना दोषो मे होती है।

२ किसी चीज या बात मे होनेवाला कोई ऐसा अभाव जिससे उसका ठीक या पूरा उपयोग न हो सकता हो। अपूर्णता। कमी। त्रुटि। (डिफेक्ट) ३ न्याय शास्त्र मे, मिथ्या ज्ञान के कारण उत्पन्न होनेवाले मनोविकार जो मनुष्य को अच्छे और बुरे कामो मे प्रवृत्त करते है। जैसे—राग, द्वेष आदि हमारे मनोगत दोष है। ४ नव्य न्याय मे, तर्क के अवयवो के प्रयोग मे होनेवाली त्रुटि या भूल। ५ मीमासा मे, वह अदृष्ट फल जो विधियो का ठीक तरह से पालन न करने अथवा उनके विपरीत आचरण करने से प्राप्त होता है। ६ वैद्यक मे, शरीर के अतर्गत रहनेवाले कफ, पित्त और वात नामक तत्त्वो अथवा अन्यान्य रसो का प्रकोप या विकार जिससे अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते है। ७ साहित्य मे, वे बाते जिनसे काव्य या रचना के निश्चित गुणो या स्वरूपो मे कुछ कमी रहती या बाधा होती हो। जैसे—अर्थ-दोष, काव्य-दोष, रस-दोष। ८ आचार, चरित्र या व्यवहार मे, कोई ऐसा काम, तत्त्व या बात जो धार्मिक, सामाजिक आदि दृष्टियो से अनुचित या निदनीय मानी जाती हो। (गिल्ट)

मुहा०—**(किसी को) दोष देना**—यह कहना कि इसके कारण अमुक खराबी या बुराई हुई है। **(किसी मे) दोष निकालना**—यह कहना कि इसमे अमुक दोष या बुराई है।

९ किसी पर लगाया जानेवाला ऐसा अभियोग, कलक या लाछन जो नैतिक, विधिक आदि दृष्टियों से अपराध माना जाता या दडनीय समझा जाता हो। अपराध। कसूर। जुर्म। (गिल्ट)

क्रि० प्र०—लगाना।

१० पातक। पाप। ११ सध्या का समय। प्रदोष। १२ भागवत के अनुसार आठ वसुओ मे से एक।

†पु० =द्वेष। उदा०—सो जन जगत-जहाज है जाके राग न दोष। —तुलसी।

दोषक—पु०[स० दोष+कन्] गौ का बच्चा। बछड़ा।

दोषग्राही (हिन्)—पुं० [सं० दोष√ग्रह् (ग्रहण)+णिनि] १ वह जो केवल दूसरो के दोषो पर ध्यान दे। २ दुर्जन। दुष्ट।

दोषघ्न—पुं० [सं० दोष√हन् (मारना)+टक्] वह औषध जिससे शरीर के कुपित कफ, वात और पित्त का दोष शात हो।

दोषज्ञ—पुं० [सं० दोष√ज्ञा (जानना)+क] पडित।

दोषण—पुं० [सं०√दुष्+णिच्+ल्युट्-अन] दोषारोपण।

दोषता—स्त्री० [सं० दोष+तल्-टाप्] दोष का भाव।

दोषत्व—पुं० [सं० दोष+त्व] दोष का भाव।

दोषन—पुं० [सं० दूषण] १. दोष। २ दूषण।

दोषना—स० [हिं० दूषण+न (प्रत्य०)] किसी पर दोषारोपण करना। दोष लगाना।

दोष-पत्र—पुं० [ष० त०] वह पत्र जिसमे अपराधी के अपराधो, दोषो आदि का विवरण लिखा होता है।

दोष-प्रमाणित—वि० [ब० स०] जिसका दोष प्रमाणित हो चुका हो। जो दोषी सिद्ध हो चुका हो।

दोषल—वि० [सं० दोष+लच्] दोष या दोषो से भरा हुआ। दूषित।

दोषसिद्ध—वि० दे० 'दोष-प्रमाणित'।

दोषा—स्त्री० [सं०√दुष्+आ] १ रात्रि का अंधकार। २ रात्रि। रात। ३ सायकाल। सध्या। ४ बाँह। भुजा।

दोषाकर—पुं० [सं० दोष-आकर ष० त०] १ दोषो का केन्द्र या भडार। २ [दोषा√कृ+ट] चन्द्रमा।

दोषाक्लेशी—स्त्री० [सं० दोषा√क्लिश् (कष्ट देना)+अण्-ङीप्] बन-तुलसी।

दोषाक्षर—पुं० [सं० दोष-अक्षर ब० स०] किसी पर लगाया हुआ अपराध। अभियोग।

दोषा-तिलक—पुं० [ष० त०] दीपक। दीया।

दोषारोपण—पुं० [सं० दोष-आरोपण ष० त०] १ यह कहना कि इसमे अमुक दोष है। २ यह कहना कि इसने अमुक दोष किया है।

दोषावह—वि० [सं० दोष-आ√वह् (वहन)+अच्] जिसमे दोष हो। दोषपूर्ण।

दोषिक—पुं० [सं० दोष+ठन्-इक्] रोग। बीमारी।
वि० १=दोषी। २ दूषित।

दोषित†—वि० =दूषित।

दोषिता—स्त्री० [सं० दोषिन्+तल्-टाप्] दोषी होने की अवस्था या भाव। (गिल्ट)

दोषिन—स्त्री० [हिं० दोषी का स्त्री०] १ अपराधिनी। २ पापपूर्ण आचरणवाली स्त्री। ३ दुष्ट स्वभाववाली और दूसरो पर दोष लगाती रहनेवाली स्त्री। ४ वह कन्या जिसने विवाह से पहले ही किसी से सबध स्थापित कर लिया हो।

दोषी (षिन्)—पुं० [सं० दोष+इनि] १. जिसने कोई अपराध या दोष किया हो। २ जिस पर कोई दोष लगा हो। ३. दोषपूर्ण। ४. दुष्ट। ५ पापी।
वि० [सं० द्वेष] द्वेष करनेवाला। उदा०—गुरु-दोषी सग की मृतु पाव।—गुरु गोविंद सिंह।
विशेष—यहाँ यह ध्यान रखना चाहिए कि 'दोष' का प्रयोग 'द्वेष' के अर्थ में गोस्वामी तुलसीदास ने भी किया है। (दे० 'दोष')

दोस†—पुं० =दोष।

दोसदार†—पुं०=दोस्तदार (मित्र)।

दोसदारी—स्त्री०=दोस्ती।

दोसरता†—पुं० [हिं० दूसरा+ता (प्रत्य०)] द्विरागमन। गौना।
†पुं०=दुजायगी। (भेद-भाव)

दोसरा†—वि० [स्त्री० दोसरी] =दूसरा।

दोसरी†—स्त्री० [हिं० दो] दो बार जोती हुई जमीन।

दोसा—पुं० [देश०] जल मे होनेवाली एक तरह की घास जिसमे एक प्रकार के दाने अधिकता से होते है।
†पुं० [?] मदरास देश मे बननेवाला एक प्रकार का पकवान जो उलटे या चीले की तरह का होता है और जिसके अन्दर कुछ तरकारियाँ आदि भी भरी होती है।
स्त्री०=दोषा (रात)।

दोसाध—पुं०=दुसाध।

दोसाल—पुं० [?] एक तरह का हाथी।

दोसाला—वि० [हिं० दो+साल=वर्ष] १ जिसकी अवस्था दो वर्ष की हो। २ जिसके दो वर्ष बीत चुके हो। ३ (विद्यार्थी) जो दो वर्षों तक प्राय अनुत्तीर्ण होने के कारण एक ही कक्षा मे रहे।

दोसाही—वि० [हिं० दो+?] (जमीन) जिसमे साल मे दो फसलें पैदा हो। दो-फसला।

दोसी†—पुं० [देश०] दही।
†पुं० =घोसी।
वि०=दोषी।

दोसूती—स्त्री०=दुसूती।

दोस्त—पुं० [फा०] १ प्राय समान अवस्था का तथा सग रहनेवाला वह व्यक्ति जिससे किसी का स्नेहपूर्ण सबध हो। मित्र। २ वह जिससे किसी का अनुचित सबध हो। (बाजारू)

दोस्तदार—पुं०=दोस्त।

दोस्तदारी—स्त्री० =दोस्ती।

दोस्ताना—पुं० [फा० दोस्तान] १ दोस्ती। मित्रता। २ मित्रता का आचरण या व्यवहार।
वि० दोस्तो या मित्रो का-सा। दोस्तो या मित्रो की तरह का। जैसे—दोस्ताना बरताव।

दोस्ती—स्त्री० [फा०] १ दोस्त अर्थात् मित्र होने की अवस्था या भाव। २ स्त्री और पुरुष का होनेवाला पारस्परिक अनुचित सबध। (बाजारू)

दोस्तीरोटी—स्त्री० [फा० दोस्ती+हिं० रोटी] दो परतोंवाला एक तरह का पराठा जो दो लोइयाँ बेलकर और साथ मिलाकर बनाया जाता है। दुपडी।

दोह†—पुं०=द्रोह।

दोहग†—पुं०=दोहगा। (राज०)

दोहगा—स्त्री० [सं० दुर्भगा] पर-पुरुष के साथ पत्नी के रूप मे रहनेवाली विधवा स्त्री।

दोहज—पुं० [सं०] दूध।

दोहड़ा†—वि०=दोहरा।

दोहता—पु०[स० दौहित्र] [स्त्री० दोहती] लडकी का लडका। नाती। नवासा।

दोहती—स्त्री० १=दोस्ती। २ =दोस्ती-रोटी।
स्त्री० हिं० 'दोहता' का स्त्री०।

दोहत्थड़—वि०[हिं० दो+हाथ] दोनो हाथो से किया जाने या होने वाला। जैसे—दोहत्थड मार पडना।
पु० ऐसा आघात या प्रहार जो दोनो हाथो की हथेलियो से एक साथ हो।
क्रि० वि० दोनो हाथो की हथेलियो से एक साथ प्रहार करते हुए। जैसे—दोहत्थड छाती या सिर पीटना।

दोहत्था—वि०[हिं० दो+हाथ] [स्त्री० दोहत्थी] १ दोनो हाथो से किया जानेवाला। जैसे—दुहत्थी मार। २ जिसमे दो हत्थे या दस्ते लगे हो। दो मूठोवाला।
क्रि० वि० दोनो हाथो से।

दोहत्थाशासन—पु० =द्विदल शासन।

दोहत्थी—स्त्री०[हिं० दो+हाथ] मालखभ की एक कसरत जिसमे मालखभ को दोनो हाथो से कुहनी तक लपेटा जाता है और फिर जिधर का हाथ ऊपर होता है उधर की टाँग को उठाकर मालखभ को पकडा जाता या उस पर सवारी की जाती है।

दोहद—पु०[स० दोह√दा (देना)+क] १ गर्भकाल मे गर्भवती स्त्री के मन मे उत्पन्न होनेवाली अनेक तरह की इच्छाएँ या कामनाएँ। २ वह काम, चीज या बात जिसकी उक्त अवस्था और रूप मे इच्छा या कामना होती हो। ३ गर्भवती रहने या होने की दशा मे होनेवाली मिचली या ऐसा ही कोई सामान्य शारीरिक विकार। डकौना। ४ गर्भवती होने की अवस्था या भाव। ५ गर्भवती होने के चिह्न या लक्षण। ६ भारतीय साहित्य मे, कविसमय के अनुसार कुछ विशिष्ट पौधो, वृक्षो आदि के सबध मे यह मान्यता कि जब वे खिलने या फूलने को होते है, तब उनमे गर्भवती स्त्रियो की तरह कुछ इच्छाएं और कामनाएँ होती है जिनकी पूर्ति होने पर व जल्दी, समय से पहले और खूब अच्छी तरह खिलने या फूलने लगते है। जैसे—सुन्दरी स्त्री के पैरो की ठोकर से अशोक, पान की पीक थूकने से मौलसिरी, गाने से गम या नाचने से कचनार खिलने अथवा फलने-फूलने लगते हैं। (दे० 'वृक्ष दोहद') ७ फलित ज्योतिष के अनुसार यात्रा के समय कुछ ऐसी विशिष्ट चीजे खाने या पीने का विधान जिनसे तिथि, दिशा, वार आदि से सबध रखनेवाले दोषो का परिहार या शाति होती है।

दोहदवती—स्त्री०[स० दोहद+मतुप् ङीप्] गर्भवती स्त्री। गर्भिणी।

दोहदान्विता—स्त्री०[स० दोहद+अन्विता तृ० त०]=दोहदवती।

दोहदी (दिन्)—वि० [स० दोहद+इनि] जिसे प्रबल इच्छा हो।
स्त्री० गर्भवती स्त्री।

दोहदोहीय—पु०[स०] एक प्रकार का वैदिक गीत या साम।

दोहन—पु० [स०√दुह् (दुहना)+ल्युट्-अन] गाय-भैंस आदि के स्तनो से दूध निकालने की क्रिया या भाव।
†पु०=दोहनी।

दोहना*—स०[स० दोष+ना] १ दोष लगाना। दूषित ठहराना। २. तुच्छ या हीन ठहराना।
†स०=दूहना।

दोहनी—स्त्री०[स० दोहन] १. दूध दुहने की क्रिया या भाव। २ [स० दोहन+ङीप्] वह पात्र जिसमे दूध दूहा जाता हो।

दोहर—स्त्री०[हिं० दो+घडी=तह] दो पाटोवाली चादर। दोहरी सिली हुई चादर।

दोहर-कम्मा—पु०[हिं० दोहरा+काम] व्यर्थ परिश्रम करके दोबारा किया जानेवाला ऐसा काम जो पहली बार ही ठीक तरह से किया जा सकता था।

दोहरना—स०[हिं० दोहरा] १ दोहरा करना। २ दोबारा करना। दोहराना।
अ० १ दोहरा होना। २ दोबारा किया जाना। दोहराया जाना।

दोहरफ—पु०[फा० दो+अ० हर्फ] धिक्कार। लानत।
क्रि० प्र०—भेजना।

दोहरा—वि०[हिं० दो+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० दोहरी] १ दो तहो, परतो या पल्लोवाला। २ जो दो बार किया जाय या किया जाता हो। जैसे—दोहरी सिलाई। ३ दुगुना। दूना। ४ दो पक्षो पर लागू होनेवाला (कथन)।
पु० १ लगे हुए पानो के दो बीडे जो एक ही पत्ते मे लपेटे हुए हो। २ कतरी हुई सुपारी।
†पु० [दोहा] दोहे की तरह का एक छन्द जो दोहे के विषम पादो मे एक एक मात्रा घटा देने से बनता है।

दोहराई—स्त्री०[हिं० दोहराना] १ दोहराने की क्रिया या भाव। दोबारा कोई काम करना। २ किसी काम को अधिक ठीक बनाने के लिए उसे अच्छी तरह से देखना। ३ दोहराने के बदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक।

दोहराना—स०[हिं० दोहरा] १ किसी चीज को दो तहो या परतो मे माडना। दोहरा करना। २ कोई काम या बात फिर से उसी प्रकार करना या कहना। पुनरावृत्ति करना। ३ किये हुए काम को फिर से आदि से अत तक इस दृष्टि से देखना कि उसमे कही कोई कसर या भूल तो नही रह गई है।
सयो० क्रि०—जाना।—डालना।—देना।

दोहरापाट—पु०[हिं० दोहरी+पट] कुश्ती का एक पेंच।

दोहल—पु०[स० दोह√ला (लेना)+क] दोहद। (दे०)

दोहलवती—वि०[स० दोहल+मतुप् ङीप्]=दोहदवती।

दोहला—वि० स्त्री[हिं० दो+हल्ला] दो बार की ब्याई हुई (गाय या भैंस)। (गौ या भैंस) जो दो बार बच्चा दे चुकी हो।

दोहली—पु०[स०] १ अशोक वृक्ष। २ आक। मदार।
स्त्री०[?] ब्राह्मण को दान करके दी हुई जमीन।

दोहा—पु०[स० दोधक या द्विपदा] १ चार चरणोवाला एक प्रसिद्ध छद जिसके पहले और तीसरे चरणो मे १३-१३ और दूसरे तथा चौथे चरणों मे ११-११ मात्राएँ होती हैं। २. सगीत मे, संकीर्ण राग का एक भेद।

दोहाई†—स्त्री०=दुहाई।

दोहाक†—पु० =दोहाग।

दोहाग—पु०[स० दौर्भाग्य] दुर्भाग्य। बदनसीबी।

दोहागा—पु०[हि० दोहाग] [स्त्री० दोहागिन] अभागा। बदकिस्मत।

दोहान—पु०[देश०] गौ का जवान बछडा।

दोहाव†—पु० =दुहाव।

दोहित †—पु०=दोहता (दौहित्र)।

दोही (हिन्)—वि०[स०√दुह +घिनुण्] दूहनेवाला।

पु० ग्वाला।

स्त्री०[हि० दो] एक प्रकार का छद जिसके पहले और तीसरे चरणो मे १५–१५ और दूसरे तथा चौथे चरणो मे ११–११ मात्राएँ होती है। इसके अत मे एक लघु होना आवश्यक है।

दोहिया—पु०[?] एक प्रकार का पौधा।

वि०[हि० दूहना] दूहनेवाला।

दोहुर—स्त्री[देश०] अधिक बलुई जमीन।

दोह्य—वि०[स०√दुह+ण्यत्] जो दूहा जा सके। दूहे जाने के योग्य।

पु० १ दूध। २ ऐसे मादा पशु जो दूहे जाते या दूध देते हो।

दोह्या—स्त्री०[स० दोह्य+टाप्] गाय।

दौं—अव्य०[स० अथवा] अथवा। या। वा। (दे० 'धौं')

†स्त्री० [स० दाव] १ आग। उदा०—हिरदै अदर दौं लगी, धूआँ न परगट होय। २ गरमी के कारण लगनेवाली प्यास। ३ गरमी के कारण होनेवाली बचैनी या विकलता। ४. जलन।

क्रि० प्र०—लगना।

दौंकना†—अ० =दमकना।

दौंगरा—पु० =दवँगरा।

दौंच—स्त्री० =दोच (दुविधा)।

दौंचना—स० [हि० दबोचना] १. किसी पर दबाव डालकर उससे कुछ लेना। २ किसी न किसी प्रकार ले लेना। ३. लेने के लिए जोर से पकड़ना। ४ दबोचना।

दौंजा—पु०[देश०] मचान।

दौंरी—स्त्री०[?] झुड।

†स्त्री० =दँवरी।

दौःशील्य—पु०[स० दु शील+ष्यञ्] दु शील होने की अवस्था या भाव। स्वभाव की दुष्टता।

दौःसाधिक—पु०[स० दुर्-साध प्रा० स०,+ठक्-इक] १. द्वारपाल। २. ग्राम-निरीक्षक।

दौ—स्त्री० [स० दव] १ जगल की आग। दावानल। २ जगल। वन। ३ दु ख। सताप। ४ दाह।

दौकूल—वि०[स० दुकूल+अण्] १ दुकूल-सबधी। २ दुकूल या कपडे का बना हुआ।

दौड़—स्त्री०[हि० दौडना] १ दौडने की क्रिया या भाव।

मुहा०—**दौड़ मारना या लगाना**=(क) दौडते हुए कही जाना। (ख) लबी यात्रा करना। चलकर बहुत दूर पहुँचना।

२ ऐसी क्रीड़ा विशेषत प्रतियोगिता जिसमे वेगपूर्वक आगे बढा जाय। जैसे—घुड़दौड। ३. किसी क्षेत्र मे बहुत से लोगो का एक दूसरे से आगे बढ़ने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ४. सिपाहियो का एकाएक किसी को पकडने अथवा तलाशी लेने के लिए किसी के घर पर वेगपूर्वक पहुँचना। ५. उक्त उद्देश्य से आने या पहुँचनेवाले सिपाही। ६ वेगपूर्वक किया जानेवाला आक्रमण। चढाई। ७ गति, प्रयत्न आदि का वेग या सीमा। जैसे—मियाँ की दौड मसजिद तक।

क्रि० प्र०—लगाना।

८ बुद्धि या समझ की गति या सीमा। जैसे—बस यही तक तुम्हारी दौड है। ९ लबाई या विस्तार का वह अश जिस पर कोई चीज चलती या लगती हो या कोई काम होता हो। जैसे—साडी मे बेल या बूटे की दौड। १० किसी पदार्थ का लबाई के बल का विस्तार। जैसे—इस दीवार की दौड ४० गज है। ११ जहाज पर की वह चरखी जिसमे लकडी डालकर घुमाने से वह जजीर खिसकती है जिसमे पतवार बँधा रहता है।

दौड़-धपाड़—स्त्री० =दौड-धूप।

दौड़-धूप—स्त्री० [हि० दौडना+धूपना=धापना] ऐसा प्रयत्न जिसमे अनेक स्थानो पर बार-बार आना-जाना तथा अनेक आदमियो स मिलना और उनसे अनुनय करनी पडे। जैसे—चुनाव के समय उम्मीदवारो को काफी दौड-धूप करनी पडती है।

दौड़ना—अ०[स० धोरण] [भाव० दौडाई] १ जीव या अजीव वस्तुओ का तीव्र गति से किसी दिशा की ओर या किसी पथ पर बढना।—जैसे (क) मनुष्य, हाथी या इजन दौडना। (ख) कागज पर कलम दौडना।

विशेष—मनुष्य तो दौड़ने के समय जब एक पैर जमीन पर रख लेता है, तब दूसरा पैर उठाता है, परन्तु पशु प्राय उछल-उछल कर जमीन पर से अपने चारो पैर ऊपर उठाते हुए दौडते है।

सयो० क्रि०—जाना।—पडना।

२ (व्यक्ति का) अपेक्षया अधिक तीव्र गति या वेग से किसी ओर जाना या बढना। जैसे—दौडकर मत चलो, नही तो ठोकर लगेगी। ३ किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए बार-बार कही आना-जाना। जैसे—अभी उसे दो-चार दिन दौड लेने दो, तब आप ही उसकी बुद्धि ठिकाने हो जायगी।

मुहा०—**दौड़ दौड़कर आना**=जल्दी-जल्दी और बार-बार आना। जैसे—हमारे यहाँ दौड-दौड कर तुम्हारा आना व्यर्थ है। **दौड पड़ना**=एकाएक तीव्र गति या वेग से चलना आरभ करना। जैसे—जहाँ तुम खेल-तमाशे का नाम सुनते हो, वही दौड पडते हो। **(किसी काम या बात के पीछे) दौड़ पडना**=बिना सोचे-समझे किसी ओर वेगपूर्वक प्रवृत्त होना। **(किसी पर) चढ़ दौड़ना**=आक्रमण या चढाई करने के लिए बहुत तेजी से आगे बढना। जैसे—गुडे मार-पीट करने के लिए उनके मकान पर चढ़ दौडे।

४ दौड की किसी प्रतियोगिता मे सम्मिलित होना। ५ तरल पदार्थ के सबध मे, धारा का वेगपूर्वक किसी ओर बढना। जैसे—(क) नसो मे खून दौडना। (ख) नालियो मे पानी दौडना। ६ किसी चीज का अश या प्रभाव कार्यकारी, विद्यमान या व्याप्त होना। जैसे—(क) चेहरे पर लाली या स्याही दौडना। (ख) शरीर मे जहर या विष दौडना।

दौड़हा†—पु० [हि० दौडना+हा (प्रत्य०)] वह जिसका काम दौडकर समाचार या पत्र आदि ले आना और ले जाना हो। हरकारा।

दौड़ाई—स्त्री०[हि० दौडना+आई (प्रत्य०)] १ दौडने की क्रिया या भाव। २ बार-बार इधर से उधर आते-जाते रहने का काम या भाव। ३. दौड़ने के बदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक या पुरस्कार।

दौड़ा-दौड़—क्रि० वि०[हि० दौड+दौड][भाव० दौड़ा-दौड़ी] बहुत तेजी से और बिना रुके। बेतहाशा। जैसे—सब लोग दौड़ा-दौड़ वहाँ जा पहुँचे।
†स्त्री० =दौड़ा-दौड़ी।

दौड़ा-दौड़ी—स्त्री०[हि० दौड़ना] १ बहुत से लोगों के एक साथ दौड़ने की क्रिया या भाव। २ दौड़-धूप। ३ आतुरता। जल्दी। हड़बड़ी।

दौड़ान—स्त्री०[हि० दौड़ना] १ दौड़ने की क्रिया या भाव। दौड़। २ गति की तीव्रता या वेग। झोंक। ३ क्रम। सिलसिला। ४ लबाई। विस्तार।

दौड़ाना—स० [हि० दौड़ना का सकर्मक रूप] १ किसी को दौड़ने मे प्रवृत्त करना। जैसे—इजन या घोड़ा दौड़ना। २ किसी को बहुत जल्दी या तुरन्त कोई काम कर आने के लिए भेजना। जैसे—रोगी की दशा खराब देखकर डाक्टर को लाने के लिए आदमी दौड़ाया गया।
सयो० क्रि०—देना।
३ किसी काम मे ऐसी आनाकानी करना कि उसके लिए किसी को कई बार आना-जाना पड़े। जैसे—वे रुपए तो देते नही, बार-बार हमारे आदमी को दौड़ाते है। ४ किसी चीज को जमीन के साथ घसीटते हुए अथवा ऊपर कुछ दूर तक बढ़ाते हुए बराबर आगे ले जाना। जैसे—बिजली का तार उस कमरे तक दौड़ा दो। ५ किसी चीज को जल्दी जल्दी आगे बढ़ने मे प्रवृत्त करना। जैसे—कागज पर कलम दौड़ाना।
सयो० क्रि०—देना।

दौत्य—वि०[स० दूत+व्यञ्] दूत-सबधी।
पु० दूत का काम, पद या भाव। दूतत्व।

दौन—पु०=दमन।

दौना—पु०[स० दमनक] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ कटावदार होती है और जिनमे तेज सुगध निकलती है।
†स०[स० दमन] दमन करना। दबाना।
पु०=दोना (पत्तो का)।

दौनागिरि—पु० [स० द्रोणगिरि] द्रोणगिरि नामक पर्वत जो पुराणो मे क्षीरोद समुद्र मे स्थित कहा गया है। लक्ष्मण को शक्ति लगने पर हनुमान जी यही सजीवनी बूटी लेने गये थे।

दौनाचल—पु०=द्रोणाचल।

दौनी†—स्त्री० १ दावनी। २ =देवरी।

दौर—पु०[अ०] १ चक्कर। फेरा। २ वह क्रम, व्यवस्था अथवा समय जिसमे उपस्थित व्यक्ति कोई काम एक एक बार बारी-बारी से सपादित करे। जैसे—(क) शराब का पहला दौर। (ख) मुशायरे का दूसरा या तीसरा दौर। ३ अच्छे और बुरे अथवा सौभाग्य और दुर्भाग्य के दिनो का चलता रहनेवाला चक्र। ४ प्रताप और वैभव अथवा उसके फलस्वरूप चारो और फैलनेवाला आतक या दबदबा।
पद—दौर-दौरा। (दे०)
†स्त्री० दौड़।

दौर-दौरा—पु०[फा०] किसी की ऐसी प्रधानता या प्रबलता जिसके सामने और बाते या लोग दबे रहते हो। जैसे—आज-कल राजनीतिक नेताओ का दौर-दौरा है।

दौरना†—अ०=दौड़ना।

दौरा—पु०[अ० दौर] १ चारो ओर घूमने की क्रिया। चक्कर। भ्रमण। २ बराबर इधर-उधर या चारो ओर घूमते-फिरते रहने की अवस्था या दशा। ३ ऐसा आना-जाना जो समय-समय पर बराबर होता रहता हो। सामयिक आगमन। फेरा। जैसे—कभी-कभी इधर भी उनका दौरा हो जाता है। ४ जाँच-पड़ताल, निरीक्षण आदि के लिए अधिकारी का केन्द्र से चलकर आस-पास के स्थानो मे घूमने या फेरा लगाने की क्रिया।
मुहा०—**दौरे पर रहना या होना**=जाँच-पड़ताल या देख-भाल के लिए केन्द्र मे बाहर रहना या आस-पास के स्थानो मे घूमना।
५ जिले के प्रधान न्यायाधीश या जज के द्वारा होनेवाली फौजदारी अभियोगो की वह सुनवाई जो प्राय आदि से अत तक बराबर एक साथ होती है।
मुहा०—(**किसी को**) **दौरा सुपुर्द करना**=निम्नस्थ अधिकारी का सगीन मुकदमे के अभियुक्त को विचार तथा निर्णय के लिए सेशन जज के पास भेजना।
६ बार-बार होती रहनेवाली बात का किसी एक बार होना। ऐसी बात होना जो समय-समय पर प्राय होती रहती हो। ७ किसी ऐसे रोग का होनेवाला कोई उत्कट आक्रमण जो प्राय या बीच-बीच मे होता रहता हो। जैसे—पागलपन, मिरगी या सिर के दर्द का दौरा।
पु०[स० द्रोण] [स्त्री० अल्पा० दौरी] बाँस की पट्टियो, बेत आदि का बुना हुआ टोकरा।

दौरा जज—पु०[हि० दौरा+अ० जज] किसी जिले का वह प्रधान न्यायाधिकारी (जज) जो फौजदारी के सगीन मुकदमे सुनता और उनका निर्णय करता हो। (सेशन्स जज)

दौरात्म्य—पु०[स० दुरात्मन्+व्यञ्] १ दुरात्मा होने की अवस्था, भाव या वृत्ति। २ दुर्जनता।

दौरादौर—क्रि० वि०, स्त्री० दौड़ा-दौड़।

दौरान—पु०[फा०] १ दौर। चक्र। २ काल का चक्र। दिनो का फेर। ३ उतना समय जितने मे कोई काम बराबर चलता या होता रहता हो। भोगकाल। जैसे—बुखार के दौरान मे वे कभी-कभी बेहोश भी हो जाते थे। ४ दो घटनाओ के बीच का समय। ५ पारी। फेरा। बारी।

दौराना—स० दौड़ाना।

दौरित—पु०[स०?] क्षति। हानि।

दौरी—स्त्री०[हि० दौरा का स्त्री० अल्पा०] १ बाँस या मूँज की छोटी टोकरी। छोटा दौरा। २ वह टोकरी जिसकी सहायता से खेतो मे सिचाई के लिए पानी डालते है। ३ खेतो मे उक्त प्रकार से पानी सीचने की क्रिया।

दौर्गन्ध्य—पु० [स० दुर्गन्ध+ष्यञ्] दुर्गंध।

दौर्ग—वि० [स० दुर्ग+अण्] १ दुर्ग-सबधी। दुर्ग का। २ दुर्गा-सबधी। दुर्गा का।

दौर्गत्य—पु०[स० दुर्गति+ष्यञ्] दुर्गति होने की अवस्था या भाव। दुर्दशा।

दौर्ग्य—पु०[स० दुर्ग+ष्यञ्] कठिनता।

दौर्ग्रह—पु०[स० दुर्ग्रह+अण्] अश्वमेध यज्ञ।

दौर्जन्य—पु०[सं० दुर्जन+ष्यञ्] दुर्जनता।

दौर्बल्य—पु०[सं० दुर्बल+ष्यञ्] दुर्बल होने की अवस्था या भाव। दुर्बलता।

दौर्भाग्य—पु०[सं० दुर्भग+ष्यञ्] दुर्भाग्य।

दौर्भ्रात्र—पु०[सं० दुर्भ्रातृ+अण्] भाइयों का परस्पर का झगड़ा या विवाद

दौर्मनस्य—पु०[सं० दुर्मनस्+ष्यञ्] १ 'दुर्मनस' होने की अवस्था या भाव। २ दुर्जनता।

दौर्य—पु०[सं० दूर+ष्यञ्] 'दूर' का भाव। दूरता। दूरी।

दौर्योधनि—पु०[सं० दुर्योधन+इञ्] दुर्योधन के कुल में उत्पन्न व्यक्ति। दुर्योधन का वंशज।

दौर्वृत्य—पु०[सं० दुर्वृत्त+ष्यञ्] १. दुर्वृत्त होने की अवस्था या भाव। २ दुराचार।

दौर्हार्द—पु०[सं० दुर्हृद्+अण्] १ दुर्हृद होने की अवस्था या भाव। २ दुष्ट स्वभाव। ३ किसी के प्रति मन में होनेवाला दुर्भाव, द्वेष या बैर।

दौर्हृद—पु०[सं० दुर्हृद्+अण्] दुर्हृदय होने की अवस्था या भाव। २ मन या हृदय की खोटाई। दुष्टता। ३ दे० 'दोहद'।

दौर्हृदय—पु०[सं० दुर्हृदय+अण्] १ दुर्हृदय होने की अवस्था या भाव। २ शत्रुता।

दौर्हृदिनी—स्त्री०[सं० दौर्हृद+इनि-ङीप्] गर्भवती स्त्री। गर्भिणी।

दौलत—स्त्री०[अ०] १ वे अधिकृत सभी वस्तुएँ जिनका आर्थिक मूल्य हो। धन और संपत्ति। २ उक्त प्रकार की वे बहुत-सी वस्तुएँ जिनके अधिकार में होने पर कोई गरीब या धनी कहलाता है। ३ लाक्षणिक अर्थ में कोई अमूल्य तथा महत्त्वपूर्ण चीज। जैसे—लेखनी ही उनकी दौलत है।

दौलत-खाना—पु०[फा० दौलतखान] १ संपत्ति रखने का स्थान। २ निवास स्थान। (बड़ों के लिए आदर सूचक) जैसे—आपके दौलत-खाने पर हाजिर होऊँगा।

दौलत-मंद—वि० [फा०] [भाव० दौलतमंदी] अमीर। धनवान। माल-दार।

दौलति†—स्त्री०=दौलत।

दौलताबादी—पु०[दौलताबाद, दक्षिण भारत का नगर] एक प्रकार का बढ़िया कागज जो दौलताबाद (दक्षिण भारत का एक प्रदेश) में बनता है।

दौलेय—पु०[सं० दुलि+ढक्—एय] कच्छप। कछुआ।

दौल्मि—पु०[सं० दुल्म+इञ्] इंद्र।

दौवारिक—पु०[सं० द्वार+ठक्—इक] [स्त्री० दौवारिकी] १ द्वारपाल। २ एक प्रकार के वास्तुदेव।

दौवालिक—पु०[सं०] १ एक प्राचीन देश का नाम। २ उक्त देश का निवासी।

दौश्चर्म्य—पु०[सं० दुश्चर्मन्+ष्यञ्] दुश्चर्म्मा होने की अवस्था या भाव। दे० 'दुश्चर्मा'।

दौश्चर्य—पु०[सं० दुश्चर+ष्यञ्] १ दुराचरण। २ दुष्टता। ३. दुष्कर्म।

दौष्कुल—वि०[सं० दुष्कुल+अण्] बुरे या हीन कुल में उत्पन्न।

दौष्मंत—पु०[सं० दुष्मंत+अण्] दुष्मंत के कुल में उत्पन्न व्यक्ति।

दौष्मंति—पु०[सं० दुष्मंत+इञ्] =दौष्मंत।

दौष्यंति—पु०[सं० दुष्यंत+इञ्] दुष्यंत का शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न पुत्र, भरत।

दौहित्र—पु०[सं० दुहितृ+अञ्] [स्त्री० दौहित्री] १. लड़की का लड़का। दोहता। नाती। २ तलवार। ३ तिल। ४ गौ का घी।

दौहित्रक—वि०[सं० दौहित्र+ठक्—क] दौहित्र-संबंधी।

दौहित्रायण—पु०[सं० दौहित्र+फक्-आयन] दौहित्र का पुत्र।

दौहित्री—स्त्री०[सं० दौहित्र—ङीप्] बेटी की बेटी। नतनी।

दौहृद—पु०[सं० दौर्हृद] गर्भवती की इच्छा। दोहद। (दे०)

दौहृदिनी—स्त्री०[सं० दौर्हृदिनी] गर्भवती स्त्री।

द्याना*—स०=दिलाना।

द्यावना*—स०=दिलाना।

द्यु—पु०[सं०√दिव् (चमकना)+उन्] १ दिन। दिवस। २ आकाश। ३ स्वर्ग। ४ सूर्य लोक। ५ अग्नि। आग।

द्युक—पु० [सं० द्यु+कन्] उल्लू।

द्युकारि—पु०[सं० द्युक-अरि ष० त०] कौआ।

द्युग—वि० [सं० द्यु√गम् (गति)+ड] आकाश में गमन करनेवाला। पु० चिड़िया। पक्षी।

द्यु-गण—पु० [सं० ष० त०] दे० 'अहगण'।

द्युचर—वि० [सं० द्यु√चर (गति)+ट] आकाश में चलने या विचरण करनेवाला।

पु० १ चिड़िया। पक्षी। २ ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशस्थ पिंड।

द्यु-ज्या—स्त्री० [सं० उपमि० स०] अहोरात्र वृत्त की व्यासरूप ज्या।

द्युत—वि०[सं०√द्युत् (प्रकाश)+क] जिसमें द्युति या प्रकाश हो। चम-कीला।

पु० किरण।

द्युति—स्त्री०[सं०√द्युत्+इन्] १ प्रकाशमान होने की अवस्था, गुण या भाव। चमक। २ शारीरिक सौन्दर्य। शरीर की कांति। ३. लावण्य। छवि। ४ किरण।

पु० चतुर्थ मनु के समय के एक ऋषि। (पुराण)

द्युति-कर—वि० [ष० त०] प्रकाश उत्पन्न करनेवाला। चमकनेवाला। पु० ध्रुव।

द्युतित—भू० कृ० द्योतित।

द्युति-धर—वि०[ष० त०] प्रकाश या कांति धारण करनेवाला। पु० विष्णु।

द्युतिमत—वि० द्युतिमान्।

द्युतिमा—स्त्री०[हिं० द्युति+मा (प्रत्य०)] १ प्रकाश। रोशनी। २ चमक। द्युति। ३ तेज।

द्युतिमान (मत्)—वि०[सं० द्युति+मतुप्] [स्त्री० द्युतिमती] जिसमें चमक या आभा हो। प्रकाशवाला।

पु० १ स्वायंभुव मनु के एक पुत्र। २ महाभारत काल में शाल्व देश के एक राजा जिन्हें क्रौंच द्वीप का राज्य मिला था।

द्युन—पु०[सं०] जन्मकुंडली में लग्न से सातवाँ स्थान।

द्यु-निश—पु०[सं० द्वं० स०] दिन और रात।

द्यु-पति—पु०[ष० त०] १ सूर्य। २ इन्द्र।

द्युपथ—पु०[सं०] आकाशमार्ग।

द्यु-मणि—पुं०[सं० ष० त०] १ सूर्य। २ आक। मदार। ३ वैद्यक में शोधा हुआ तांबा।

द्युमत्सेन—पुं०[सं०] शाल्व देश के एक राजा जो सत्यवान् के पिता थे और दुर्भाग्य से अंधे हो गये थे।

द्युमद्गान—पुं०[सं०] एक प्रकार का सामगान।

द्युमयी—स्त्री०[सं०] विश्वकर्मा की कन्या जो सूर्य को ब्याही थी।

द्युमान् (मत्)—वि०[सं० दिव्+मतुप्, उत्व]=द्युतिमान्।

द्युम्न—पुं०[सं० द्यु√म्ना (अभ्यास)+क] १ सूर्य। २ अन्न। ३ धन ४ बल। शक्ति।

द्यु-लोक—पुं०[सं० कर्म० स०] स्वर्गलोक।

द्युवा (वन्)—पुं०[सं०√द्यु (आगे बढ़ना)+कनिन्] १ सूर्य। २ स्वर्ग।

द्युषद्—पुं०[सं०द्यु√सद्(गति)+क्विप्] १ देवता। २ ग्रह, नक्षत्र आदि आकाशचारी पिंड।

द्यु-सद्म (न्)—पुं०[सं० ब० स०] स्वर्ग।

द्यु-सरित्—स्त्री०[सं० ष० त०] स्वर्ग की मंदाकिनी नदी।

द्यू—पुं० [सं०√दिव् (क्रीडा)+क्विप्, ऊठ्] जूआ खेलनेवाला। जुआरी।

द्यूत—पुं० [सं०√दिव्+क्त, ऊठ्] ऐसा खेल जिसमें दाँव पर धन लगाया जाय और उसकी हार-जीत हो। जूआ।

द्यूत-कर, द्यूतकार—वि० [सं० ष०त०, द्यूत√कृ (करना)+अण्] जूआ खेलनेवाला। जुआरी।

द्यूत-दास—पुं०[मध्य० स०] [स्त्री० द्यूतदासी] जूए में जीतकर प्राप्त किया हुआ व्यक्ति, जिसे अपने विजेता का दास बनकर रहना पड़ता था।

द्यूत-पूर्णिमा—पुं०[च० त०] आश्विन की पूर्णिमा। कोजागरी। प्राचीन काल में लोग इस रात रात भर जागकर जूआ खेलते थे।

द्यूत-फलक—पुं०[ष०त०] वह चौकी या तख्ता जिस पर बिसात बिछाई जाती थी और कौड़ी या पासा फेंका जाता था।

द्यूत-बीज—पुं० [ष० त०] जूआ खेलने की कौड़ी।

द्यूत-भूमि—स्त्री०[ष० त०] जूआ खेलने का स्थान। जुआरियों का अड्डा।

द्यूत-मंडल—पुं०[ष० त०] १ जुआरियों की मंडली। २ वह स्थान जहाँ बैठकर लोग जूआ खेलते हों। जूआखाना।

द्यूत-समाज—पुं०[ष० त०] जुआरियों का जमघट।

द्यूताध्यक्ष—पुं०[द्यूत-अध्यक्ष ष० त०] प्राचीन भारत में वह राजकीय अधिकारी जो जूए का निरीक्षण करता था और जुआरियों से राजकीय प्राप्य भाग लिया करता था। (कौ०)

द्यूताभियोग—पुं०[द्यूत-अभियोग ष० त०] जूआ खेलने के अपराध में चलाया जानेवाला अभियोग या मुकदमा।

द्यूतावास—पुं०[द्यूत-आवास ष० त०] जूआखाना।

द्यूति प्रतिपदा—स्त्री०[सं० द्यूतप्रतिपत्] कार्तिक शुक्ल प्रतिपदा जिस दिन लोग जूआ खेलते हैं।

द्यून—पुं०[सं०√दिव्+क्त, ऊठ्, नत्व] जन्म-कुंडली में लग्न स्थान से सातवीं राशि।

द्यो—स्त्री०[सं०√द्युत्+डो] १. स्वर्ग। २ आकाश। ३ शतपथ ब्राह्मण के अनुसार आठ वसुओं में से एक।

द्योकार—पुं०[सं० द्यो०√कृ+अण्] भवन बनानेवाला राज।

द्योत—पुं०[सं०√द्युत् (चमकना)+घञ्] १ प्रकाश। २ धूप।

द्योतक—वि०[सं०√द्युत्+णिच्+ण्वुल्-अक] १. द्योतन करनेवाला। २ जो किसी चीज को प्रकाश में लावे। ३ प्रकट करनेवाला। ४ अभिव्यक्त या व्यक्त करनेवाला।

द्योतन—पुं०[सं०√द्युत्+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० द्योतित] प्रकाश से युक्त करने की क्रिया या भाव। २ दिखाने की क्रिया या भाव। दिग्दर्शन। ३ प्रकट या व्यक्त करने की क्रिया या भाव। ४ [√द्युत्+युच्-अन] ४ दीआ। दीपक।

वि० चमकीला। प्रकाशमान।

द्योतनिका—स्त्री०[सं० द्योतन+ङीप्+कन्-टाप्, ह्रस्व] किसी ग्रन्थ की टीका या व्याख्या।

द्योतित—भू० कृ०[सं०√द्युत्+णिच्+क्त] १ द्युति या प्रकाश से युक्त किया हुआ। २ प्रकट या व्यक्त किया हुआ।

द्योतिरिंगण—पुं० [सं० ज्योतिरिंगण पृषो० सिद्धि] खद्योत। जुगनूँ।

द्यो-भूमि—पुं०[सं० ब० स०] पक्षी।

द्योषद्—पुं०[सं० द्यो√सद्+क्विप्] देवता।

द्योहरा†—पुं०=देवहरा (देवालय)।

द्यौ—स्त्री० [सं० द्यो] १ स्वर्ग। २ आकाश।

द्यौस—पुं०[सं० दिवस्] दिन।

द्यौसक—पुं०[हिं० द्यौस=दिवस+एक] दो-एक दिन। कुछ ही दिन।

द्रंक्षण—पुं०[सं०√द्राक्ष् (आकांक्षा)+ल्युट्-अन, पृषो० ह्रस्व] तौल का एक पुराना मान जो दो कर्ष अर्थात् एक तोले के बराबर होता था। इसे 'कोल' और 'वटक' भी कहते थे।

द्रंग—पुं०[सं०] वह नगर जो पत्तन से बड़ा और कर्वट से छोटा हो।

द्रग†—पुं० =दृग।

द्रगड़ा—पुं०[सं०] एक प्रकार का पुराना बाजा। दगड़ा।

द्रगा†—पुं० दृग।

द्रढिमा—स्त्री० [सं० दृढ+इमनिच्] दृढ़ता।

द्रढिष्ठ—वि०[सं० दृढ+इष्ठन्] खूब दृढ़। बहुत मजबूत।

द्रप्पन†—पुं० =दर्पण।

द्रप्स—वि०[सं०√दृप् (गति)+क्स, र आदेश] तेज चलनेवाला।

पुं० १ वह तरल पदार्थ जो अधिक गाढ़ा न हो। २ तक्र। मठा। ३. रस। ४ वीर्य।

द्रप्स्य—पुं०=द्रप्स।

द्रब—पुं०=द्रव्य।

द्रमिल—पुं०[सं०] तमिल देश का पुराना नाम।

द्रम्म—पुं०[अ० फा० दिरम] १ एक प्रकार का पुराना सिक्का, जिसका मान या मूल्य भिन्न-भिन्न समयों में अलग-अलग था। २ उक्त सिक्के के बराबर की तौल।

द्रवंती—स्त्री०[सं०√द्रु (गति)+शतृ-ङीप्] १. नदी। २ मूसाकानी (वनस्पति)।

द्रव—वि०[स०√द्रु+अप्] १ पानी की तरह पतला। तरल। २ आर्द्र। गीला। तर। ३ पिघला हुआ।
पु० १ द्रव या तरल पदार्थ का चूना, बहना या रसना। द्रवण । २ आसव। ३ रस। ४ बहाव। ५ दौड़ने या भागने की क्रिया। पलायन। ६ तेजी। वेग। ७ हँसी-ठट्ठा। परिहास। ८ दे० 'द्रवत्व'।
द्रवक—वि०[स०√द्रु+ण्वुल्-अक] १ भागनेवाला। भगेड़। भगू। २ चूने, बहने या रसनेवाला। ३ द्रवित करने या होनेवाला।
द्रवज—वि०[स० द्रव√जन्(उत्पत्ति)+ड] द्रव पदार्थ से निकला या बना हुआ।
पु० किसी प्रकार के रस से बनी हुई वस्तु। जैसे—गुड़, चीनी आदि।
द्रवड़ना *—अ०=दौड़ना। (राज०)
द्रवण—पु०[स०√द्रु+ल्युट्-अन] [वि० द्रवित] १ गमन। २ दौड़। ३ रसना या बहना। क्षरण। ४. पिघलना या पसीजना। ५ चित्त के द्रवित या दयापूर्ण होने की वृत्ति। ६ कामदेव का एक बाण जो हृदय को द्रवित करनेवाला कहा गया है। उदा०—परठि द्रविण सोखण सरपच। —प्रिथीराज।
द्रवण-शील—वि०[ब० स०] [भाव० द्रवणशीलता] १ पिघलनेवाला। २ (व्यक्ति) जिसके हृदय मे दूसरो का कष्ट देखकर दया उत्पन्न होती हो और फलत जो उनके प्रति कठोर व्यवहार नही करता और दूसरो को वैसा करने से रोकता है। पसीजनेवाला।
द्रवणांक—पु० [स० द्रवण-अक ष० त०] ताप का वह मान जिस पर कोई ठोस चीज पिघलने लगती है। (मेल्टिंग प्वाइंट)
विशेष—विभिन्न वस्तुओं का द्रवणांक विभिन्न होता है।
द्रवता—स्त्री०[स० द्रव+तल्-टाप्] द्रवत्व।
द्रवत्पत्री—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] चॅगोनी नामक पौधा।
द्रवत्व—पु० [स० द्रव+त्व] द्रव होने की अवस्था, गुण या भाव।
द्रवना—अ० [स० द्रवण] १ द्रवित होना अर्थात् पिघलना। २ प्रवाहित होना। बहना। ३. हृदय मे किसी के प्रति दया उपजना। दयार्द्र होना।
द्रव-रसा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] १ लाख। लाह। २ गोंद।
द्रवाधार—पु० [स० द्रव-आधार ष० त०] १ छोटा पात्र। २ अजलि। ३ चुल्लू।
द्रविड—पु० [स० द्रामिल ?] १ दक्षिण भारत के पूर्वी तट पर स्थित एक विस्तृत प्रदेश का पुराना नाम। आधुनिक आध्र और मदरास इसी प्रदेश मे है। २. उक्त प्रदेश का निवासी। ३ ब्राह्मणो का एक विभाग जिसके अतर्गत आध्र, कर्णाटक, गुर्जर, द्रविड और महाराष्ट्र ये पाँच वर्ग है।
वि० द्रविड प्रदेश अथवा उसके निवासियो से सबध रखनेवाला। द्राविड।
द्रविड़-शाजन—पु० [ष० त०] सहिजन का पेड़। शोभाजन।
द्रविड़ी—स्त्री० [स० द्रविड+ङीष्] एक प्रकार की रागिनी।
द्रविण—पु० [स० √द्रु+इनन्] १. धन। द्रव्य। २. सोना। स्वर्ण। ३. पराक्रम। पौरुष। ४ पुराणानुसार कुश द्वीप का एक पर्वत। ५. क्रौंच द्वीप का एक वर्ष या देश। ६. राजा पृथु का एक पुत्र।
पुं० =द्रवण (अस्त्र)।
द्रविण-प्रद—पु० [ष० त०] विष्णु।
द्रविणाधिपति—पु० [द्रविण-अधिपति ष० त०] कुबेर।
द्रविणोदा (स्)—पु० [स०] १ वैदिक देवता। २ अग्नि।
द्रवीभवन—पु० [स०] [भू० कृ० द्रवीभूत] १ किसी घन पदार्थ का द्रव रूप धारण करना। २ भाप से पानी बनने की क्रिया जिसमे या तो भाप का घनत्व या ताप-क्रम कम हो जाता है।
द्रवीभूत—भू० कृ० [स० द्रव+च्वि√भू+क्त] १ द्रव या तरल रूप मे आया या लाया हुआ। २ पिघला या पिघलाया हुआ। ३. (व्यक्ति) जिसके हृदय मे दया उत्पन्न हुई हो । ४ दया से विह्वल (हृदय)।
द्रव्य—वि० [स० √द्रु+यत् नि० सिद्धि] १ द्रुम-सबधी। पेड़ का। २ पेड़ से निकला हुआ। ३ पेड़ की तरह का।
पु० १ चीज। पदार्थ। वस्तु। २ दार्शनिक क्षेत्र मे, वह पदार्थ जिसमे किसी प्रकार की क्रिया या गुण अथवा दोनो हो और जो किसी का समवाय कारण हो, अर्थात् जिससे कोई चीज बनती हो।
विशेष—वैशेषिको ने जो सात पदार्थ माने है, उनमे से द्रव्य भी एक है। रामानुजाचार्य ने इसे तीन प्रभेदो मे से एक प्रभेद माना है, और इसके ये छ भेद कहे है—ईश्वर, जीव, नित्य, विभूति, ज्ञान, प्रकृति और काल।
३ लौकिक व्यवहार मे, वह उपादान या सामग्री जिसमे और चीजें बनती हैं। सामान। जैसे—चाँदी, ताँबा, मिट्टी, रूई आदि वे द्रव्य हैं जिनसे गहने, कपड़े बरतन आदि बनते है। ४ धन-दौलत, रुपए आदि। जैसे—उन्होंने व्यापार मे बहुत-सा द्रव्य कमाया था। ५ पीतल। ६ जड़ी-बूटी अथवा ओषधि। ७ मद्य। शराब। ८ गोंद। ९ लेप। १० लाख। लाक्षा।
द्रव्यक—वि० [स० द्रव्य+कन्] द्रव्य या कोई पदार्थ उठाने या वहन करनेवाला।
द्रव्यत्व—पु० [स० द्रव्य+त्व] 'द्रव्य' होने की अवस्था, गुण या भाव। द्रव्यता।
द्रव्य-पति—पु० [ष० त०] १ बहुत से द्रव्यो या पदार्थों का स्वामी। २ धन का मालिक। धनवान। ३ आकाशस्थ राशियाँ, जो विभिन्न पदार्थो की स्वामी मानी गई है। (फलित ज्योतिष)
द्रव्यमय—वि० [स०द्रव्य+मयट्] १ द्रव्य अर्थात् पदार्थ से युक्त। २ पदार्थ सबधी। ३ धन से परिपूर्ण। सपत्तिवान्।
द्रव्य-वन—पु० [मध्य० स०] लकड़ियों के लिए रक्षित वन। (कौ०)
द्रव्यवन-भोग—पु० [ष० त०] वह जागीर या उपनिवेश जिसमें लकड़ी तथा अन्य वन्य पदार्थों की अधिकता हो। (कौ०)
द्रव्यवान (वत्)—वि० [स० द्रव्य+मतुप्] [स्त्री० द्रव्यवती] १ द्रव्य अर्थात् पदार्थ से युक्त। २ धनवान्। सम्पन्न।
द्रव्य-सार—पु० [ष० त०] बहुमूल्य पदार्थ। उपयोगी पदार्थ।
द्रव्यांतर—पु० [द्रव्य-अतर मयू० स०] प्रस्तुत द्रव्य से भिन्न कोई और द्रव्य।
द्रव्याधीश—पु० [द्रव्य-अधीश] १ धन के स्वामी, कुबेर। २ बहुत बड़ा धनवान्।
द्रव्यार्जन—पु० [द्रव्य-अर्जन ष० त०] धन अर्जित करने की क्रिया या भाव।

द्रव्याश्रित—वि० [द्रव्य-आश्रित प० त०] द्रव्य मे वर्तमान या विद्यमान रहनेवाला।

द्रष्टव्य—वि० [स०√दृश् (देखना)+तव्यन्] १ दिखाई देने या पडनेवाला। दृष्टिगोचर। २ देखने मे बहुत अच्छा लगनेवाला। दर्शनीय। ३ देखने, जानने अथवा निरीक्षण किये जाने के योग्य। ४ जो दिखाया, बतलाया या समझाया जाने को हो। ५ जिसे कुछ दिखाना, बतलाना या समझाना हो। ६ जो निश्चित और प्रत्यक्ष रूप से किया जाने को हो। कर्तव्य।

द्रष्टा (ष्टृ)—वि० [स०√दृश्+तृच्] १ देखनेवाला। २ साक्षात् या सामना करनेवाला। ३ दिखलाने या बतलानेवाला।

पु० १ साक्षी। २ साख्य के अनुसार पुरुष और योग के अनुसार आत्मा जिसे दार्शनिक लोग सब प्रकार के सासारिक कार्यो को केवल देखनेवाला मानते है, करने या भोगनेवाला नही मानते।

द्रष्टार—पु० [स०] विचारपति। न्यायाधीश।

द्रह—पु० [स० ह्रद, पृषो० सिद्धि] १ बहुत गहरी झील। २ जलाशय मे वह स्थान जो बहुत गहरा हो। दह।

द्राक्ष-शर्करा—स्त्री० [स० अगूर के रस को रासायनिक प्रक्रिया से सुखा कर बनाई जानेवाली चीनी। (ग्लूकोज)

द्राक्षा—स्त्री० [स०√द्राक्ष् (चाहना)+अ—टाप्] अगूर। दाख।

द्राघिमा (मन्)—स्त्री० [स० दीर्घ+इमनिच्] १ दीर्घता। लबाई। २ अक्षाश सूचित करनेवाली वे कल्पित रेखाएँ जो भूमध्य रेखा के समानातर पूर्व-पश्चिम को मानी गई है। ३ किसी तरह की वह स्थिति जिसमे वह पृथ्वी से अधिकतर दूरी पर होता है। (एपेजी)

द्राण—भू० कृ० [स०√द्रा (सोना, भागना)+क्त] भागा हुआ। २ सोया हुआ। सुप्त।

पु० १ पलायन। भागना। २ स्वप्न। सपना।

द्राप—पु० [स०√द्रा+णिच्, पुक्+अच्] १ आकाश। २ कौडी। ३ शिव। ४ मूर्ख व्यक्ति।

द्रामिल—वि० [स०द्राविड] द्रामिल या द्रविड देशवासी।

पु० चाणक्य का एक नाम।

द्राव—पु० [स०√द्रु (गति)+घञ्] १ जाने या भागने की क्रिया या भाव। २ वेग। गति। ३ चूना, बहना या रसना। क्षरण। ४ गलना या पिघलना। ५ ताप। ६ अनुताप। पछतावा।

द्रावक—वि० [स०√द्रु+णिच्+ण्वुल्—अक] १ द्रव रूप मे करने या लानेवाला। ठोस चीज को पानी की तरह पतला करने और बहानेवाला। २ गलाने या पिघलानेवाला। ३ हृदय मे दया आदि कोमल भाव उत्पन्न करनेवाला। ४ पीछा करनेवाला। ५ चुरानेवाला। ६ दौडाने या भगानेवाला। ७ चतुर। चालाक। ८ चालबाज। धूर्त। ९ दिवालिया।

पु० १ चद्रकातमणि। २ बहुत बडा चालाक आदमी। ३ चोर। ४ व्यभिचारी व्यक्ति। ५ मोम। ६ सुहागा।

द्रावक-कद—पु० [ब० स०] तैलकद। तिलकदग।

द्रावकर—वि० [स० द्राव√कृ (करना)+ट] द्रवित करनेवाला।

पु० सुहागा, जो सोने को गलाता या पिघलाता है।

द्रावण—पु० [स०√द्रु+णिच्+ल्युट्—अन] १ द्रवीभूत करने का कार्य या भाव। गलाने या पिघलाने की क्रिया या भाव। २ दौडाने या भगाने की क्रिया। ३ रीठा।

द्राविका—स्त्री० [स०√द्रु+ण्वुल्—अक, टाप्, ह्रस्व] १. थूक। लार। २ मोम।

द्राविड—वि० [स० द्रविड+अण्] [स्त्री० द्राविडी] १ द्रविड देश-सबधी। द्रविड का। २ द्रविड देश मे रहने या होनेवाला।

पु० १ कचूर। २ आँबा हलदी। ३ द्रविड। ४ दक्षिण भारत की भाषाओं का सामूहिक परिवार।

द्राविडक—पु० [स० द्राविड+कन्] १ विट् लवण। सोचर नमक। २ आँबा हलदी।

द्राविड-गौड़—पु० [कर्म० स०] रात्रि के समय गाया जानेवाला एक राग।

द्राविड-प्राणायाम—पु० [स० कर्म० स०] कोई काम ठीक प्रकार से और सीधे रास्ते न करके वही काम घुमा-फिराकर तथा उलटे ढग से करना।

द्राविडी—स्त्री० [स० द्राविड+ङीष्] छोटी इलायची।

वि० [स०] द्रविड-सबधी।

स्त्री० १ द्रविड प्रदेश की स्त्री। २ छोटी इलायची।

द्राविडी-प्राणायाम—पु० =द्राविड-प्राणायाम।

द्रावित—भू० कृ० [स०√द्रु+णिच्+क्त] १ द्रव किया हुआ। २ गलाया या पिघलाया हुआ। ३ दयार्द्र किया हुआ। ४ भगाया हुआ।

द्राह्यायण—पु० [स०द्रह+यत्र+फक्—आयन] द्रह ऋषि के गोत्र मे उत्पन्न एक ऋषि।

द्रिठि*—स्त्री० [स० दृष्टि] नजर। दृष्टि। उदा०—वेलवि अर्णा मृठि द्रिठिब्रिधि—प्रिथीराज।

द्रिढ़*—वि० =दृढ़।

द्रिब*—पु० = द्रव्य।

द्रिष्टि*—स्त्री० =दृष्टि।

द्रु—पु० [स०√द्रु+डु] १ वृक्ष। पेड। २ वृक्ष की शाखा। पेड की डाल।

द्रु-किलिम—पु० [स०√किल् (श्वेत होना)+किमच, द्रु-किलिम स० त०] देवदारु।

द्रुग्ग—पु० =दुर्ग।

द्रुग्ध—भू० कृ० [स०√द्रुह (द्रोह)+क्त] जिसके विरुद्ध षडयत्र रचा गया हो। ३ जिसे द्वेष आदि के कारण हानि पहुँचाई गई हो।

द्रुघण—पु० [स० द्रु√हन् (मारना), अप्, घनादेश णत्व] १ लोहे का मुग्दर। २ कुठार। कुल्हाडा। ३ परशु या फरसे की तरह का एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ४ भू-चपा। ५ ब्रह्मा।

द्रुण—पु० [स०√द्रुण (हिंसा)+क] १ धनुष। कमान। २ खड्ग। तलवार। ३ बिच्छू। ४ भृगो नाम का कीडा।

द्रुणा—स्त्री० [स० द्रुण+अच्—टाप्] धनुष की डोरी। ज्या।

द्रुणी—स्त्री० [स०√द्रुण+इन्—ङीप्] १ मादा कछुआ। कछुई। २ कन-खजूरा। ३ कठवत। कठौता।

द्रुत—वि० [स०√द्रु+क्त] १ पिघला हुआ। २ शीघ्रतापूर्वक और वेग से आगे बढने या कोई काम करनेवाला। ३ जो भागकर

बच निकला हो। ४ (संगीत में स्वर, लय आदि) जिसकी गति साधारण की अपेक्षा द्रुत हो। जैसे—द्रुत लय या द्रुत विलंबित।

क्रि० वि० जल्दी। शीघ्र। उदा०—फिर तुम तम में, मैं प्रियतम में हो जावें द्रुत अंतर्धान।—पंत।

पुं० १ बिच्छू। २ बिल्ली। ३ वृक्ष। पेड़। ४ संगीत में, उतने समय का आधा जितना साधारणतः एक मात्रा का होता या माना जाता है। लेखन में इसका चिह्न है। ५ संगीत में, गाने की वह लय जो मध्यम से भी कुछ और तीव्र होती है।

द्रुत-गति—वि० [ब० स०] जल्दी या तेज चलनेवाला। शीघ्रगामी।

द्रुतगामी (मिन्)—वि० [सं० द्रुत√गम् (जाना)+णिनि] [स्त्री० द्रुतगामिनी] जल्दी या तेज चलनेवाला। शीघ्रगामी।

द्रुत-त्रिताली—स्त्री० = जल्द तिताला (ताल)।

द्रुत-पद—पुं० [कर्म० स०] १ शीघ्रगामी चरण। २ १२-१२ अक्षरों के चार चरणोंवाला एक प्रकार का छंद जिसका चौथा, ग्यारहवाँ और बारहवाँ अक्षर गुरु और शेष अक्षर लघु होते हैं।

द्रुत-मध्या—स्त्री० [ब० स०] एक अर्द्ध-सम-वृत्ति जिसके प्रथम और तृतीय पद में ३ भगण और दो गुरु होते है।

द्रुत-विलंबित—पुं० [कर्म० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः १ नगण २ भगण और १ रगण होता है। इसे 'सुंदरी' भी कहते है।

द्रुति—स्त्री० [सं० √द्रु+क्तिन्] १ तरल पदार्थ। द्रव। २. द्रवित होने की अवस्था या भाव। ३ गति। चाल।

द्रुते—अव्य० [सं० द्रुत] शीघ्रता से। जल्दी।

द्रु-नख—पुं० [सं० ष० त०] काँटा।

द्रुपद—पुं० [सं०] उत्तर पांचाल के एक प्रसिद्ध राजा जिनकी कन्या कृष्णार्जुन आदि पांडवो को ब्याही गई थी। २ खंभे का आधार या पाया। ३ खड़ाऊँ।

द्रुपदा—स्त्री० [सं० द्रुपद+अच्-टाप्] एक वैदिक ऋचा जिसके आदि में द्रुपद शब्द है।

[स्त्री० — द्रौपदी।

द्रुपदात्मज—पुं० [द्रुपद-आत्मज ष० त०] [स्त्री० द्रुपदात्मजा] १ शिखंडी। २ धृष्ट-द्युम्न।

द्रुपदादित्य—पुं० [द्रुपदा-आदित्य मध्य० स०] काशी खंड के अनुसार सूर्य की एक प्रतिमा जो द्रौपदी द्वारा प्रस्थापित मानी जाती है।

द्रुम—पुं० [सं० द्रु+म] १ वृक्ष। पेड़। २ पारिजात। परजाता। ३ कुबेर। ४ रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

द्रुम-कंटिका—स्त्री० [ष० त०] सेमर का पेड़।

द्रुम-नख—पुं० [ष० त०] पेड़ का नाखून, काँटा।

द्रुम-मर—पुं० [सं० द्रुम√मृ० (मरना)+अप्] काँटा। कटक।

द्रुम-व्याधि—स्त्री० [ष० त०] १. पेड़ों के होनेवाले रोग। २. लाख। लाक्षा। ३ गोंद।

द्रुम-शीर्ष—पुं० [ष० त०] १. पेड़ का ऊपरी भाग या सिरा। २. [ब० स०] वास्तु शास्त्र में गोल मंडप के आकार की एक प्रकार की छत।

द्रुम-श्रेष्ठ—पुं० [सं० त०] ताड़ का पेड़।

द्रुम-सार—पुं० [ष० त०] अनार का पेड़।

द्रुम-सेन—पुं० [सं०] महाभारत का एक योद्धा जो धृष्टद्युम्न के हाथों मारा गया था।

द्रुमामय—पुं० [द्रुम-आमय ष० त०] १ पेड़ों को होनेवाले रोग। २ लाख। लाक्षा।

द्रुमारि—पुं० [द्रुम-अरि ष० त०] पेड़ का शत्रु, हाथी।

द्रुमालय—पुं० [द्रुम-आलय ष० त०] वृक्ष का घर। जंगल।

द्रुमाश्रय—वि० [द्रुम-आश्रय ब० स०] वृक्षों पर निवास करनेवाला। पुं० गिरगिट।

द्रुमिणी—स्त्री० [सं० द्रुम+इनि-ङीप्] १ वृक्षों का समूह। २. जंगल। वन।

द्रुमिल—पुं० [सं०] १ एक दानव जो सौभ देश का राजा था। २. नौ योगेश्वरों में से एक।

द्रुमिला—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का छंद जिसके चरणों में ३२-३२ मात्राएँ होती है।

द्रुमेश्वर—पुं० [सं० द्रुम-ईश्वर ष० त०] १ चंद्रमा। २ पारिजात। परजाता। ३ ताड़ का पेड़।

द्रुमोत्पल—पुं० [सं० द्रुम-उत्पल ब० स०] कर्णिकार वृक्ष। कनकचंपा। कनियारी।

द्रुवय—पुं० [सं० द्रु+वय] लकड़ी की एक पुरानी माप।

द्रु-सल्लक—पुं० [सं० स० त०] चिरौंजी का पेड़।

द्रुह—पुं० [सं०√द्रुह् (अनिष्ट चाहना) +क] [स्त्री० द्रुही] १ पुत्र। बेटा २ वृक्ष। पेड़।

द्रुहण—पुं० [सं० द्रु√हन् (हिंसा)+अच्] ब्रह्मा।

द्रुहिण—पुं० [सं०√द्रुह्+इनन्] ब्रह्मा।

द्रुही—स्त्री० [सं० द्रुह+ङाप्] कन्या।

द्रुह्यु—पुं० [सं०] १ एक वैदिक जाति। २ राजा ययाति का शर्मिष्ठा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र।

द्रू—पुं० [सं०√द्रु (पिघलना)+क्विप्] सोना। स्वर्ण।

द्रूण—पुं० [सं० द्रुण, पृषो० सिद्धि] बिच्छू।

द्रेका—स्त्री० [सं०] बकायन। महानिंब।

द्रेक्क—पुं० [यू० डेकनस] राशि का तृतीयांश।

वि० दे० 'दृक्काण'।

द्रेष्काण—पुं० [यू० डेकनस] ज्योतिष में, राशि का तृतीयांश।

द्रोण—पुं० [सं०√द्रु (गति)+न] १ लकड़ी का वह घड़ा या बरतन जिसमें वैदिक काल में सोम रखा जाता था। २ लकड़ी का बड़ा बरतन। कठवत। ३ एक प्रकार की पुरानी तौल जो चार आढ़क या सोलह सेर अथवा किसी-किसी के मत से बत्तीस सेर की होती थी। ४ नाव। नौका। ५ अरणी की लकड़ी। ६ रथ। ७ पत्तों का दोना। ८ डोम कौआ। ९ बिच्छू। १० पेड़। वृक्ष। ११ नील का पौधा। १२ केला। १३ दीर्घिका और पुष्करिणी से बड़ा वह तालाब जो चार सौ धनुष लंबा और इतना ही चौड़ा होता था। १४ मेघों का एक नायक जिसके भोगकाल में खूब वर्षा होती है। १५ दे० 'द्रोणाचार्य'। १६ दे० 'द्रोणाचार्य'।

द्रोण-कलश—पुं० [उपमि० स०] यज्ञ आदि में सोम छानने का वैकक लकड़ी का बना हुआ एक प्राचीन पात्र।

द्रोण-काक—पु० [उपमि० स०] डोम कौआ।

द्रोण-गंधिका—स्त्री० [ब० स० टाप्, ह्रस्व] रासना।

द्रोण-गिरि—पु० [मध्य० स०] द्रोणाचल।

द्रोण-पदी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] कुंभपदी।

द्रोण-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] एक छोटा पौधा। गूमा।

द्रोण-मुख—पु० [ब० स०] वह गाँव जो ४०० गाँवों मे प्रधान हो।

द्रोण-मेघ—पु० [ब० स०] बहुत अधिक जल बरसाने वाला मेघ।

द्रोण-शर्मपद—पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

द्रोणस—पु० [स०] एक दानव का नाम।

द्रोणा—स्त्री० [स० द्रोण+अच्—टाप्] गूमा। द्रोणपर्णी।

द्रोणाचल—पु० [स० द्रोण-अचल मध्य० स०] एक प्रसिद्ध पर्वत जहाँ से लक्ष्मण के लिए हनुमान सजीवनी बूटी लाये थे। रामायण के अनुसार यह क्षीरोद सागर के किनारे था। द्रोणगिरि।

द्रोणाचार्य—पु० [स० द्रोण-आचार्य मध्य स०] ऋषि भारद्वाज के पुत्र तथा परशुराम के शिष्य एक प्रसिद्ध योद्धा जो कौरवों और पाडवों के गुरु थे और महाभारत के युद्ध मे कौरवों की ओर से लडे थे। इनका वध राजा द्रुपद के पुत्र धृष्टद्युम्न ने किया था।

द्रोणायन—पु० [स० द्रोण+फक्—आयन, द्रोण+फिञ्—आयन] द्रोणाचार्य के पुत्र, अश्वत्थामा। २ आठवें मन्वतर के एक ऋषि। स्त्री० = द्रोणी।

द्रोणिका—स्त्री० [स० द्रोणि√कै (मालूम पडना)+क—टाप्] नील का पौधा।

द्रोणी—स्त्री० [स० द्रोणि+ङीष्] १ छोटी नाव। डोंगी। २ पत्ते का छोटा दोना। दोनियाँ। ३ लकडी का बना हुआ गोल चौडा पात्र। कठवत। कठौता। ४ लकडी की छोटी कटोरी या प्याली। डोकी। ५ दो पर्वतों के बीच की भूमि। दून। ६ दो पर्वतों के बीच का मार्ग। गिरि-सकट। दर्रा। ७ एक प्राचीन नदी। ८ द्रोण की पत्नी, कृपी। ९ एक प्रकार का नमक। १० एक प्रकार का पुराना परिमाण जो दो सूर्प या १२८ सेर का होता था। ११ शीघ्रता। जल्दी। १२ नील का पौधा। १३ केला। १४ इन्द्रायन।

द्रोणी-दल—पु० [ब० स०] केतकी का फूल।

द्रोणी-लवण—पु० [मध्य० स०] कर्णाटक देश के आस-पास होनेवाला एक तरह का नमक। बिरिया।

द्रोणोदन—पु० [स०] सिंहहनु के पुत्र, जो शाक्य मुनि बुद्ध के चाचा थे।

द्रोण्याश्रय—पु० [स० द्रोणी-आश्रम मध्य स०] शरीर के अदर का एक प्रकार का रोग।

द्रोन—पु० १ = द्रोण। २ = द्रोणाचार्य।

द्रोब†—स्त्री० = दूर्वा (दूब)। उदा० —हरी द्रोब केसर हलिद्र।—प्रिथीराज।

द्रोह—पु० [स० √द्रुह्+घञ्] [स्त्री० द्रोही] १ मन की वह वृत्ति जिसके फलस्वरूप मनुष्य किसी से असतुष्ट और दुःखी होकर उसका अहित करने हुए उससे बदला चुकाना चाहता है। २ द्वेषवश षड्यत्र रचकर किसी को हानि पहुँचाने की क्रिया या भाव।

द्रोहाट—पु० [स०द्रोह√अट् (गति)+अच्] १ ऐसा व्यक्ति जो ऊपर से देखने पर भला या सीधा-सादा जान पड़े, परन्तु जो अदर से कपटी या दुष्ट हो। पाखण्डी। २. झूठा व्यक्ति। ३ शिकारी। ४. वेद की एक शाखा।

द्रोही(हिन्)—वि० [स० √द्रुह्+घिनुण्] [स्त्री० द्रोहिणी] १ द्रोह करनेवाला। किसी के विरुद्ध षडयत्र रचनेवाला।
पु० वैरी। शत्रु।

द्रौणि—पु० [स० द्रोण+इञ्] अश्वत्थामा।

द्रौणिक—वि० [स० द्रोण+ठक्—इक] द्रोण सबधी। द्रोण का।
पु० वह खेत जिसमे एक द्रोण (३८ सेर) बीज बोया जाय।

द्रौणिकी—स्त्री० [स० द्रौणिक+ङीष्] १ १६ सेर की एक पुरानी तौल। २ नापने का वह पात्र जिसमे १६ सेर अनाज आता था।

द्रौपद—वि० [स० द्रुपद+अण्] द्रुपद सबधी।
पु० [स्त्री० द्रौपदी] द्रुपद का पुत्र धृष्टद्युम्न।

द्रौपदी—स्त्री० [स० द्रौपद+ङीप्] पाचाल देश के राजा द्रुपद की कन्या जिसका वरण स्वयवर मे अर्जुन ने किया था।

द्रौपदेय—पु० [स० द्रौपदी+ढक्—एय] द्रौपदी का पुत्र।

द्वद—पु० [द्वद्व] दो चीजों का जोडा। युग्म।
पु० [स० द्वद्व] घडियाल जिस पर आघात करके समय सूचित किया जाता है।
पु० [स० द्वन्द्व] १ जोडा। युग्म। २ दो आदमियों मे होनेवाली लडाई। ३ उत्पात। उपद्रव। ४ झगडा। बखेडा। ५ उलझन। झझट।
क्रि० प्र०—खडा करना।—मचाना।
६ कष्ट। दुःख। ७ आशका। खटका। ८ डर। भय। ९ असमजस। दुबिधा। १० दे० 'द्वद्व'।
स्त्री० = दुदुभी।

द्वदज—वि० = द्वद्वज।

द्वद-युद्ध—पु० = द्वद्व-युद्ध।

द्वदर—वि० [स० द्वद्वालु] झगडालू। लडाका।

द्वद्व—पु० [स० द्वि शब्द से नि० सिद्धि] १ जोडा। युग्म। २ ऐसे दो गुण, पदार्थ या स्थितियाँ जो परस्पर विरोधी हो। जैसे—सुख और दुःख ताप और शीत। ३ प्राचीन काल मे दो शस्त्र योद्धाओं मे होनेवाला सघर्ष जिसमे पराजित को विजेता की आज्ञा माननी पडती थी अथवा उसके वश मे होकर रहना पडता था। ४ दो विरोधी अथवा विभिन्न शक्तियों विचार धाराओं आदि मे स्वय आगे बढ़ने और दूसरी को पीछे हटाने के लिए होनेवाला सघर्ष। ५ मानसिक सघर्ष। ६ उत्पात। उपद्रव। ७ झगडा। बखेडा।
क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।
८ व्याकरण मे एक प्रकार का समास जिसमे के दोनों अथवा सभी पदों की समान रूप से प्रधानता होती है और जिसका अन्वय एक ही क्रिया के साथ होता है। जैसे—सुख-दुःख यों ही आते-जाते रहते है। ९ गुप्त बात। रहस्य। १० किला। दुर्ग।

द्वद्वचर—वि० [स० द्वद्व√चर् (गति)+ट] (पशु या पक्षी) जो अपने जोडे के साथ रहता हो।
पु० चकवा या चक्रवाक पक्षी।

द्वंद्वचारी (रिन्)—पु० [स० द्वद्व √चर्+णिनि] [स्त्री० द्वद्वचारिणी] चकवा।

द्वंद्वज—वि० [स० द्वंद्व√जन्(उत्पत्ति)+ड] किसी प्रकार के द्वद्व से उत्पन्न। जैसे—(क) कफ और वात के प्रकोप से उत्पन्न द्वद्वज रोग। (ख) राग-द्वेष से उत्पन्न द्वद्वज कष्ट या दूषित मनोवृत्ति।

द्वंद्व-युद्ध—पु० [ष० त०] १ वह युद्ध या लडाई जो दो दलो, व्यक्तियो आदि मे हो और जिसमे कोई तीसरा सम्मिलित न हो। २ दो आदमिओ मे होनेवाली हाथा-पाई या कुश्ती।

द्वद्वी (द्विन्)—वि० [स० द्वद्व+इनि] १ परस्पर मिलकर युग्म बनानेवाले (दो)। २ परस्पर विरुद्ध रहनेवाले (दो)। ३ द्वद्व (उपद्रव या झगडा) करने या मचानेवाला।
पु० झगडालू व्यक्ति।

द्वय—वि० [स० द्वि+तय्] दो।
पु० जोडा। युग। (समस्त पदो के अन्त मे) जैसे—देवता-द्वय।

द्वयवादी (दिन्)—वि० [स०द्वय√वद् (बोलना)+णिनि] दो तरह की या दोरगी बाते कहनेवाला।
पु० गणेश।

द्वय-हीन—वि० [स० तृ० त०] जो न पुलिंग हो और न स्त्री-लिंग, अर्थात् नपुसक (शब्द)।

द्वयाग्नि—पु० [स० द्वय अग्नि ब० स०] लाल चीता।

द्वयातिग—वि० [स०] (सिद्ध पुरुष) जिसके सत्त्वगुण ने शेष दोनो गुणो (रज और तम) को दबा लिया हो।

द्वा स्थ—पु० [स०] [द्वार√स्था (ठहराना)+क] १ द्वारपाल। २ नदिकेश्वर।

द्वाचत्वारिंश—वि० [स० द्वाचत्वारिंशत्+डट्] बयालीसवाँ।

द्वाचत्वारिंशत्—वि० [स० द्वि० चत्वारिंशत् मध्य स०] बयालिस।
पु० उक्त की सूचक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४२।

द्वाज—पु० [स० द्वि√जन्+ड पृषो० सिद्धि] किसी स्त्री का वह पुत्र जो उसके पति से नही, वल्कि किसी दूसरे पुरुष से उत्पन्न हुआ हो। जारज। दोगला।

द्वात्रिंश—वि० [स० द्वात्रिंशत्+डट्] बत्तीसवाँ।

द्वात्रिंशत्—वि० [स० द्वि-त्रिंशत् मध्य स०] जो सख्या मे तीस और दो हो। बत्तीस।
पु० बत्तीस की सख्या या उसका सूचक अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—३२।

द्वादश—वि० [स० द्वि-दशन् मध्य स०] १ जो सख्या मे दस और दो हो। बारह। २ क्रम के विचार से बारह के स्थान पर पडनेवाला। बारहवाँ।
पु० बारह का सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१२

द्वादशक—वि० [स० द्वादस+कन्] बारहवें स्थान पर पडनेवाला। बारहवाँ।

द्वादश-कर—वि० [ब० स०] जिसके बारह हाथ हो।
पु० १ कार्तिकेय। २ कार्त्तिकेय के एक अनुचर। ३. बृहस्पति।

द्वादश-बानी—वि० =बारहबानी (खरा)।

द्वादश-भाव—पु० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे जन्म कुडली के बारह घर जिनके नाम क्रम से तनु, धन आदि फलानुसार रखे गये हैं।

द्वादश-रात्र—पु० [द्विगु स०] बारह दिनो मे पूरा होनेवाला एक यज्ञ।

द्वादस-लोचन—पु० [ब० स०] कार्तिकेय।

द्वादश-वर्गी—स्त्री० [द्विगु स० ङीप्] क्षेत्र, होरा आदि बारह वर्गों का समूह जिसके आधार पर ग्रहो का बलाबल जाना जाता है। (फलित ज्यो०)

द्वादश-वार्षिक—वि० [स० द्वादश-वर्ष द्विगु स०,+ठक्—इक] बारह वर्षों मे होनेवाला।
पु० एक तरह का व्रत जो ब्रह्म-हत्या लगने पर उसके पाप से मुक्ति पाने के लिए बारह वर्षों तक जगल म रहकर किया जाता था।

द्वादश-शुद्धि—स्त्री० [मध्य० स०] वैष्णव सप्रदाय मे तत्रोक्त बारह प्रकार की शुद्धियाँ। जैसे—देवता की परिक्रमा करने से होनेवाली पदशुद्धि, देवता का स्पर्श करने से होनेवाली हस्त-शुद्धि, नाम कीर्त्तन से होनेवाली वाक्य-शुद्धि, देव-दर्शन से होनेवाली नेत्र-शुद्धि आदि।

द्वादशांग—वि० [द्वादश-अग ब० स०] जिसके बारह अग या अवयव हो।
पु० एक तरह की धूप जो गुग्गल, चदन आदि बारह गध द्रव्यो के योग से बनती है।

द्वादशांगी—स्त्री० [द्वादश-अग ब० स०, ङीप्] जैनो के द्वादश अग ग्रथो का समूह।

द्वादशांगुल—वि० [द्वादश-अगुल ब० स०] १ जो नाप मे बारह अगुल हो। २ बारह उँगलियोंवाला।
पु० बारह अगुल की माप। बित्ता। बालिश्त।

द्वादशांश—पु० [द्वादश-अश ब० स०] बृहस्पति।

द्वादशाक्ष—पु० [द्वादश-अक्षि ब० स०] १ कार्त्तिकेय।
वि० [स०] जिसकी बारह आँखे हो।
पु० १ कार्तिकेय। २ गौतम बुद्ध।

द्वादशाक्षर—पु० [द्वादश-अक्षर ब० स०] विष्णु का एक मत्र जिसमे बारह अक्षर है और जो इस प्रकार है—ओ नमो भगवते वासुदेवाय।

द्वादशाख्य—पु० [द्वादश-आख्या ब० स०] बुद्धदेव।

द्वादशात्मा† (त्मन्)—पु० [द्वादश-आत्मन् ब० स०] १ सूर्य। २ आक। मदार।

द्वादशायतन—पु० [द्वादश-आयतन मध्य० स०] पाँच ज्ञानेद्रियाँ, पाँच कर्मेद्रियाँ तथा मन और बुद्धि इन बारह पूज्य स्थानो का समूह। (जैन)

द्वादशाह—पु० [द्वादश-अहन् द्विगुस०] १ बारह दिनो का समूह। २ एक यज्ञ जो बारह दिनो मे पूरा होता था। ३ मृतक के उद्देश्य से उसकी मृत्यु के बारहवें दिन किया जानेवाला श्राद्ध।

द्वादशी—स्त्री० [स० द्वादश+ङीप्] चाद्रमास के किसी पक्ष की बारहवी तिथि।

द्वादसबानी†—वि० =बारहबानी (खरा)।

द्वापर—पु० [स० द्वि पर =प्रकार ब० स०, पृषो० सिद्धि] पुराणानुसार त्रेता और कलियुग के बीच का युग जिसका मान ८६४००० वर्षों का कहा गया है। भगवान् कृष्ण ने इसी युग मे अवतार लिया था।

द्वामुष्यायण—पु० [स० =द्वयामुष्यायण पृषो० सिद्धि] १ वह व्यक्ति जो दो पिताओ का (एक का औरस और दूसरे का दत्तक) पुत्र हो। २. वह व्यक्ति जो दो ऋषियो के गोत्र मे हो। ३ उद्दालक मुनि का एक नाम। ४ गौतम बुद्ध का एक नाम।

द्वार—पु० [सं०√दृ (विदारण)+णिच्+अच्] १ किसी घेरे, चहार-दीवारी, दीवार आदि मे आवागमन के लिए बना हुआ कोई खुला विशेषत मुख्य स्थान जिसमे प्राय खोलने और बद करने के लिए दरवाजे, पल्ले आदि लगे होते है।

मुहा०—**द्वार द्वार फिरना** - (क) कार्य सिद्धि के लिए अनेक प्रकार के लोगो के यहाँ पहुँचकर अनुनय करना। (ख) भीख माँगना। **(किसी का आकर) द्वार लगना** किसी उद्देश्य या कार्य के लिए दरवाजे पर आकर पहुँचना। जैसे—सध्या का बरात द्वार लगेगी। **(किसी के) द्वार लगना** किसी उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए किसी के दरवाजे पर (या किसी के यहाँ) जाकर बैठना। उदा०—यह जान्यो जिय राधिका द्वारे हरि लागे।—सूर।

२ उक्त स्थान या अवकाश को आवश्यकतानुसार बद करने के लिए उसमे लगाये जानेवाले लकडी, लोहे आदि के पल्ले।

मुहा०—**द्वार लगना** दरवाजा बद होना। **(किसी बात के लिए) द्वार लगना** दूसरो की बातें चुपके मे या छिपकर सुनने के लिए दरवाजो की आड़ म छिपकर खडे होना। **द्वार लगाना**—किवाड या दरवाजा बद करना।

३ दो स्थानो के बीच मे पडनेवाला कोई ऐसा अवकाश या मार्ग जिससे होकर किसी प्रकार की आने-जाने की क्रिया होती हो। जैसे—किसी समय खैबर का दर्रा भारत वर्ष मे आने-जाने का मुख्य द्वार था। ४ लाक्षणिक रूप मे, काम करने का वह विधि-विहित या नियत मार्ग जो उपाय या साधन के अग के रूप मे हो। मार्ग-साधन। (चैनेल) जैसे—धन कमाने का एक ही द्वार है, पर गवाने के सैकडो।

मुहा०—**(किसी काम या बात के लिए) द्वार खुलना** किसी काम या बात के होने के लिए मार्ग या साधन निकलना। जैसे—अब आपके लिए सरकारी नौकरी का द्वार खुल गया है।

५ शारीरिक इद्रियो के विशिष्ट छिद्र या मार्ग जिनमे से होकर शरीर के विकार बाहर निकलते रहते हैं और जिनके द्वारा कुछ चीजे शरीर के अदर जाती है। जैसे—आँख, कान, नाक, मुँह आदि।

द्वार-कटक—पु० [ष० त०] दरवाजे की कीली या सिटकिनी।

द्वार-कपाट—पु० [ष० त०] दरवाजे का पल्ला।

द्वारका—स्त्री० [सं० द्वार+कै (प्रकाशित होना)+क—टाप्] गुजरात की एक प्राचीन नगरी जिसे कुशस्थली भी कहते है, और जो आज-कल एक प्रसिद्ध तीर्थ है। जरासध के उत्पातो से दुखी होकर श्रीकृष्ण मथुरा छोडकर यहा जा बसे थे।

द्वारकाधीश—पु० [द्वारका-अधीश ष० त०] १ श्रीकृष्णचद्र। २ श्रीकृष्ण की वह मूर्ति जो द्वारका मे है।

द्वारकानाथ—पु० [ष० त०] द्वारकाधीश।

द्वारकेश—पु० [द्वारका-ईश ष० त०] द्वारकाधीश।

द्वारचार—पु० दे० 'द्वार-पूजा'।

द्वार-छेकाई—स्त्री० [हि० द्वार+छेकना=रोकना] १ विवाह के समय की एक रीति, जो विवाह कर के वधू समेत अपने घर आने पर होती है। इसमे बहन वर और वधू का रास्ता रोककर खडी हो जाती और कुछ पाने पर रास्ता छोडती है। २ उक्त अवसर पर बहन को मिलनेवाला धन या नेग।

द्वार-ताल—पु० दे० 'ताला-बदी'।

द्वार-पडित—पु० [मध्य स०] मध्ययुग मे, किसी राजा के यहाँ रहनेवाला प्रधान पडित।

द्वारप—पु० [सं० द्वार√पा (रक्षा)+क] १ द्वारपाल। २ विष्णु।

द्वार-पटी—स्त्री० [ष० त०] दरवाजे पर टाँगने का परदा। उदा०—आये सखि द्वारपटी हाथ से हटा के पिय।—तुलसी।

द्वारपाल—पु० [सं० द्वार√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] [स्त्री० द्वारपाली, द्वारपालिनी, द्वारपालिन] १ वह पुरुष जो दरवाजे पर पहरा देने के लिए नियुक्त हो। ड्योढीदार। दरबान। २ किसी प्रधान देवता के द्वार का रक्षक कोई विशिष्ट देवता। (तत्र) ३ सरस्वती नदी के तट पर का एक प्राचीन तीर्थ।

द्वार-पालक—पु० [ष० त०] द्वारपाल।

द्वार-पिडी—स्त्री० [ष० त०] दहलीज।

द्वार-पूजा—स्त्री० [मध्य० स०] १ पूजन आदि मे वे धार्मिक कृत्य जो दरवाजे पर बरात आने के समय कन्या-पक्ष द्वारा होते है। द्वारचार। २ जैनो मे एक प्रकार की पूजा।

द्वारमती—स्त्री० द्वारका (पुरी)।

द्वार-यत्र—पु० [मध्य-स०] ताला।

द्वारवती*—स्त्री० [सं० द्वार+मतुप—ङीप्, वत्व,] द्वारका (नगरी)।

द्वार-समुद्र—पु० [सं०] दक्षिण भारत का एक पुराना नगर जहा कर्नाटक के राजाओ की राजधानी थी।

द्वारस्थ—वि० [सं० द्वार√स्था (ठहरना)+क] जो द्वार पर बैठा, लगा या स्थित हो।

पु० द्वारपाल।

द्वारा—पु० [सं० द्वार] १ द्वार। २ दरवाजा। ३ स्थान। जैसे—गुरुद्वारा।

अव्य० [सं० द्वारात्] १ किसी माध्यम के आधार पर। जरिये। जैसे—अब तो खबरे भी रेडियो के द्वारा भेजी जाने लगी। २ किसी के हस्ते। हाथ से। जैसे—पत्र नौकर द्वारा भेजा गया था। ३ किसी कारण या प्रक्रिया के फलस्वरूप। जैसे—(क) उदाहरण के द्वारा समझाई हुई बात। (ख) रोग के द्वारा होनेवाला कष्ट। ४ किसी के कर्तृत्व या प्रयत्न से। जैसे—बच्चन द्वारा रचित मधुशाला। ५ किसी अभिकर्त्ता की मारफत।

द्वाराचार—पु० [द्वार-आचार मध्य० स०] द्वारचार (द्वार-पूजा)।

द्वारादेयशुल्क—पु० [द्वार-आदेय स० त०, द्वारादेय-शुल्क कर्म० स०] किसी स्थान के प्रवेश द्वार पर लिया जानेवाला शुल्क या महसूल। चुगी। (कौ०)

द्वाराधिप—पु० [द्वार-अधिप ष० त०] द्वारपाल।

द्वाराध्यक्ष—पु० [द्वार-अध्यक्ष ष० त०] द्वारपाल।

द्वारावती—स्त्री० [सं० द्वार+मतुप्, नि० दीर्घ] द्वारका (नगरी)।

द्वारिक—पु० [द्वार+ठन्—इक] द्वारपाल।

द्वारिका†—स्त्री० [सं० द्वारिका+टाप्] द्वारका।

द्वारी(रिन्)—पु० [सं० द्वार+इनि] द्वारपाल।

†स्त्री० [सं० द्वार] छोटा दरवाजा।

द्वाल—स्त्री० [फा० दुआल] चमडे का तसमा।

द्वालबंद—पु० =दुआलबंद ।
द्वाला—पु० [सं० द्विधारा] डिंगल भाषा का एक प्रकार का छंद ।
द्वाली†—स्त्री० =दुआली ।
द्वाविंश—वि० [सं० द्वाविंशति+डट्] बाईसवें स्थान पर पड़नेवाला।
द्वाविंशति—वि० [सं० द्वि-विंशति मध्य० स०] जो संख्या में बीस और दो हो। बाईस।
स्त्री० उक्त की सूचक संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—२२
द्वाषष्ठ—वि० [सं० द्वाषष्ठि+डट्] बासठवाँ ।
द्वाषष्ठि—वि० [सं० द्वि-षष्ठि मध्य० स०] जो गिनती में साठ से दो अधिक हो। बासठ।
पु० उक्त की सूचक संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—६२
द्वासप्तत—वि० [सं० द्वासप्तति+डट्] बहत्तरवाँ ।
द्वासप्तति—वि० [सं० द्वि-सप्तति मध्य० स०] जो गिनती में सत्तर और दो हो। बहत्तर।
पु० उक्त की सूचक संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७२
द्वास्थ—पु० [सं० द्वार√स्था+क, विसर्गलोप] द्वारपाल।
द्वि—उप० [सं०√द्व (संवरण)+डि] दो।
द्विक—वि० [सं० द्वि+कन्] १ जिसमें दो अंग या अवयव हों। २ दोहरा।
पु० [द्वि०-क ब० स०] १ कौआ। २ चकवा।
द्वि-ककार—पु० [ब० स०] १ कौआ। २ चकवा।
द्वि-ककुद्—पु० [ब० स०] ऊँट।
द्वि-कर्मक—वि० [ब० स०, कर्म] (क्रिया) १ दो कर्मोंवाला। (व्याकरण में, क्रिया) जिसके साथ दो कर्म लगे हो। ३. (व्याकरण में, क्रिया) जो अकर्मक और सकर्मक दोनों रूपों में चलती हो। जैसे—खुजलाना।
द्वि-कल—पु० [हिं० द्वि+कला] दो मात्राओं का समूह। (पिंगल)
द्वि-क्षार—पु० [द्विगु स०] शोरा और सज्जी का समूह।
द्विगु—वि० [ब० स०] जिसके पास दो गौएँ हों।
पु० तत्पुरुष समास का एक भेद जिसमें पूर्वपद संख्या वाचक होता है। जैसे—त्रिभुवन, पंचकोण, सप्तदशी आदि।
विशेष—पाणिनि ने इसे कर्मधारय के अंतर्गत रखा है, पर और लोग इसे स्वतंत्र समास मानते है।
द्विगुण—वि० [सं० द्वि√गुण (गुणा करना)+अच् (कर्म में)] दुगना। दूना।
द्वि-गुणित—भू० कृ० [तृ० त०] १ दो से गुणा किया हुआ। २ जिसे दुगना किया हो। ३ दूना।
द्वि-गूढ़—पु० [सं० त०] नाट्यशास्त्र के अनुसार लास्य के दस अंगों में से एक, जिसमें सब पद सम और सुंदर होते हैं, संधियाँ वर्त्तमान होती है तथा रस और भाव सुसपन्न होते हैं।
द्विघटिका—स्त्री० [द्विगुस-] दु-घड़िया मुहूर्त्त।
द्विचत्वारिंश—वि० [सं० द्विचत्वारिंशत+डट्] बयालीसवाँ।
द्विचत्वारिंशत्—वि० [मध्य० स०] जो चालीस से दो अधिक हो। बयालीस।
पु० उक्त की सूचक संख्या या अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—४२

द्वि-चर्मा (र्मन्)—पु० [ब० स०] १ वह जिसे कोई चर्म रोग हुआ हो। २ कोढ़ी।
द्विज—वि० [सं० द्वि√जन् (उत्पत्ति)+ड] जिसका जन्म दो बार हुआ हो। जो दो बार उत्पन्न हुआ हो।
पु० १ अंडे से उत्पन्न होनेवाले जीव-जंतु जो एक बार अंडे के रूप में और दूसरी बार अंडे में से बाहर निकलने के समय (इस प्रकार दो बार) जन्म लेते है। २ चिड़िया। पक्षी। ३ हिंदुओं में ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य वर्ण के पुरुष जिनको शास्त्रानुसार यज्ञोपवीत धारण करने का अधिकार है और यज्ञोपवीत के समय जिनका दूसरा जन्म होना माना जाता है। ४ ब्राह्मण। ५ चंद्रमा, जिसका पुराणानुसार दो बार जन्म हुआ था। ६ दाँत, जो एक बार लड़कपन में टूट चुकने पर फिर दोबारा निकलते है। ७ नेपाली धनियाँ। तुंबुरु।
द्विज-दंपति—पु० [सं० द्विज-दंपती] दान, पूजा आदि के लिए बना हुआ धातु का वह पत्तर जिस पर स्त्री और पुरुष या लक्ष्मी और नारायण की युगल मूर्तियाँ बनी होती है।
द्वि-जन्मा (न्मन्)—वि० [ब० स०] जिसका दो बार जन्म हुआ हो।
पु० =द्विज।
द्विज-पति—पु० [ष० त०] १ ब्राह्मण। २ चंद्रमा। ३ गरुड़। ४ कपूर।
द्विज-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] सोमलता।
द्विज-बंधु—पु० [ष० त०] १ नाममात्र का वह द्विज जिसका जन्म तो द्विज माता-पिता से हुआ हो, पर जो स्वयं द्विजों के संस्कार और कर्म न करता हो। २ नाम मात्र का ब्राह्मण।
द्विज-ब्रुव—पु० [द्विज√ब्रू (बोलना)+क, उप० स०] =द्विज-बंधु।
द्विज-राज—पु० [ष० त०] १ श्रेष्ठ ब्राह्मण। २ चंद्रमा। ३ गरुड़। ४ कपूर।
द्विजलिंगी (गिन्)—पु० [सं० द्विज-लिंग ष० त०, +इनि] १ वह जो किसी हीन वर्ण का होने पर भी ब्राह्मणों की तरह या उनके वेश में रहता हो। २ क्षत्रिय।
द्विज-वाहन—पु० [ब० स०] विष्णु, जिनका वाहन गरुड़ (पक्षी) है।
द्विज-व्रण—पु० [ष० त०] दाँत का एक रोग। दंतार्बुद।
द्विज-शप्त—पु० [तृ० त०] बर्बट या भटवास, जिसे खाना ब्राह्मणों के लिए वर्जित है।
द्विजांगिका—स्त्री० [सं० द्विज-अंग ब० स०, कप्-टाप्, इत्व] कुटकी।
द्विजांगी—स्त्री० [सं० द्विज-अंग ब० स०, ङीष्] कुटकी।
द्विजा—स्त्री० [सं० द्विज+टाप्] १ ब्राह्मण या द्विज की स्त्री। २. पालक का साग जो एक बार काट लिये जाने पर भी दोबारा बढ़ जाता है। ३ संभालू का बीज। रेणुका। ४ नारंगी।
द्विजाग्रज—पु० [सं० द्विज-अग्रज ष० त०] श्रेष्ठ ब्राह्मण।
द्विजाति—पु० [सं० ब० स०] =द्विज। (देखें)
द्विजानि—पु० [सं० द्वि-जाया ब० स०, नि आदेश] ऐसा व्यक्ति जिसकी दो पत्नियाँ हो।
द्विजायनी—स्त्री० =दुजायनी।
द्विजायनी—स्त्री० [सं० द्विज-अयन ष० त०, ङीप्] यज्ञोपवीत।
द्विजालय—पु० [सं० द्विज-आलय ष० त०] १. द्विज का घर। २. घोंसला।

द्विजावंती—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

द्वि-जिह्व—वि० [सं० ब० स०] १ जिसे दो जीभें हों। २ इधर की बातें उधर और उधर की इधर कहने या लगानेवाला। ३ कठिन या दुःसाध्य।

पुं० १ साँप। २ खल। दुष्ट। ३ चोर। ४ एक प्रकार का रोग।

द्विजेंद्र—पुं० [सं० द्विज-इंद्र ष० त०] १ चंद्रमा। २. ब्राह्मण। ३ गरुड़। ४ कपूर।

द्विजेश—पुं० [सं० द्विज-ईश ष० त०] = द्विजेंद्र।

द्विजोत्तम—पुं० [सं० द्विज-उत्तम स० त०] द्विजों में श्रेष्ठ, ब्राह्मण।

द्विट्(ष्)—वि० [सं०√द्विष् (शत्रुता)+क्विप्] शत्रु-भाव रखनेवाला। पुं० दुश्मन। वैरी। शत्रु।

द्विट्सेवी (विन्)—पुं० [सं० द्विट्-सेवा ष० त०, +इनि] वह जो राजा के शत्रु से मिला हो या मित्रता रखता हो।

द्विठ—पुं० [सं० ब० स०] १ विसर्ग। २ स्वाहा।

द्वित—पुं० [सं०] १ एक देवता का नाम। २ एक प्राचीन ऋषि।

द्वितय—वि० [सं० द्वि+तयप्] १ दो अंगों या अवयवोंवाला। २ जो दो प्रकार की चीजों से मिलकर बना हो। ३ दोहरा।

द्वितीय—वि० [सं० द्वितीय] [स्त्री० द्वितीया] १ गिनती में दूसरा। २ महत्त्व, मान आदि की दृष्टि से दूसरी श्रेणी का। मध्यकोटि का।

पुं० पुत्र, जो अपनी आत्मा का ही दूसरा रूप माना जाता है।

द्वितीयक—वि० [सं० द्वितीय+कन्] १ दूसरा। २ किसी एक चीज के अनुकरण पर या अनुरूप बना हुआ वैसा ही दूसरा। (डुप्लिकेट)।

द्वितीय-त्रिफला—स्त्री० [सं० कर्म० स०] गंभारी।

द्वितीया—स्त्री० [सं० द्वितीय+टाप्] १ चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की दूसरी तिथि। दूज। २ वाम-मार्गियों की परिभाषा में, खाने के लिए पकाया हुआ मांस।

द्वितीयाकृत—वि० [सं० द्वितीय+डाच्] कृ+क्त] जो दो बार जोता गया हो।

द्वितीयाभा—स्त्री० [सं० द्वितीया-आ√भा (दीप्ति)+क—टाप्] दारुहल्दी।

द्वितीयाश्रम—पुं० [सं० द्वितीय-आश्रम कर्म० स०] गार्हस्थ्य आश्रम जो ब्रह्मचर्य आश्रम के बाद पड़ता है।

द्वित्व—पुं० [सं० द्वि+त्व] १ एक साथ दो होने की अवस्था या भाव २ दोहरे होने की अवस्था या भाव। ३ व्याकरण में एक ही व्यंजन का एक साथ दो बार या दोहरा होनेवाला संयोग। जैसे—'विपन्न' में का 'न्न' और 'सम्पत्ति' में का 'त्त' द्वित्व है। ४ भाषा विज्ञान में, जोर, देने के लिए किसी शब्द का दो बार होनेवाला उच्चारण। जैसे—जल्दी जल्दी काम पूरा करो।

द्वि-दल—वि० [सं० ब० स०] १ (अन्न) जिसमें दो दल या खंड हों। जैसे—अरहर, चना, आदि। २ दो दलों या पत्तोंवाला। ३ दो पटलों या पखड़ियोंवाला।

पुं० १ वह जिसमें दो दल (खंड, पत्ते या पखड़ियाँ) हों। २ ऐसा अन्न जिससे दाल बनती हो। जैसे—अरहर, चना, मूंग आदि। ३ दाल।

द्वि-दल-शासन-प्रणाली—स्त्री० [सं० द्वि-दल द्विगु स०, द्विदल-शासन ष० त०, द्विदल शासन-प्रणाली ष० त०] वह शासन प्रणाली जिसमें शासन-अधिकार दो व्यक्तियों (या दलों अथवा वर्गों) के हाथ में रहता है। दुहत्था-शासन। दे० 'द्वैधशासन प्रणाली'। (डायार्की)

द्वि-दाम्नी—स्त्री० [सं० द्वि-दामन् ब० स० ङीप्] वह नटखट गाय जो दो रस्सियों से बाँधी जाय।

द्वि-देवता—वि० [सं० ब० स०] १ दो देवताओं से संबंध रखनेवाला (चरु आदि) २ जिसके दो देवता हों। जो दो देवताओं के लिए हो। पुं० विशाखा नक्षत्र।

द्वि-देह—वि० [सं० ब० स०] दो देहों या शरीरोंवाला।

पुं० गणेश (जिनका सिर एक बार कट गया था, फिर हाथी का सिर जोड़ा गया था।)

द्वि-द्वादश—पुं० [सं० द्व० स०] फलित ज्योतिष में एक प्रकार का योग जो विवाह की गणना में अशुभ माना गया है।

द्विधा—क्रि० वि० [सं० द्वि-धाच्] १ दो प्रकार से। दो तरह से। २ दो खंडों, टुकड़ों या भागों में। ३ दोनों ओर।

स्त्री० दुविधा।

द्विधा-करण—पुं० [ष० त०] दो भागों में विभाजित करना। दो खंड करना।

द्विधा-गति—पुं० [ब० स०] जल और स्थल दोनों में विचरण करनेवाला। प्राणी। जैसे—केकड़ा, मगर, मेढक आदि।

द्विधातविक—वि० [सं०द्विधातु+ठन्—इक] १ दो अलग-अलग धातुओं से संबंध रखनेवाला (बाइमेटलिक)

द्वि-धातु—वि० [सं० ब० स०] जो दो धातुओं के योग से बना हो।

पुं० १ दो धातुओं के मेल से बनी हुई मिश्रित धातु। २. गणेश।

द्विधातुता—स्त्री० [सं० द्विधातु+तल्—टाप्] द्विधातु होने की अवस्था या भाव।

द्विधातुत्व—पुं० [सं० द्विधातु+त्व] = द्विधातुता।

द्विधातु-वाद—पुं० [ष० त०] अर्थशास्त्र का एक सिद्धान्त जिसके अनुसार किसी देश में दो विभिन्न धातुओं के सिक्के चलते हैं और दोनों की गिनती वैध मुद्रा में होती है। (बाइमेटलिज्म)

द्विधात्मक—पुं० [सं० द्विधा-आत्मन् ब० स०, कप्] जायफल।

द्विधालेख्य—पुं० [सं० द्विधा√लिख्+ण्यत् (आधा के)] हिंताल का पेड़।

द्वि-नग्नक—पुं० [सं० द्वि=द्वितीय-नग्नक] वह व्यक्ति जिसकी सुन्नत हुई हो।

द्वि-नवति—वि० [सं० मध्य० स०] बानबे।

स्त्री० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९२

द्वि-नेत्रभेदी (दिन्)—पुं० [सं० द्वि-नेत्र द्विगु स०, द्विनेत्र√भिद् (फाड़ना)+णिनि] वह जिसने किसी की दोनों आँखें फोड़ दी हों।

द्वि-पंचमूली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] दशमूल।

द्वि-पंचाशत्—वि० [सं० द्विगु स०] बावन।

स्त्री० उक्त की सूचक संख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—५२

द्विप—पुं० [सं० द्वि√पा (पीना)+क] १ हाथी। २. नागकेसर।

द्वि-पक्ष—वि० [सं० ब० स०] दे० 'द्विपक्षी'।

पुं० १. दो पक्षों का समय अर्थात् पूरा चांद्र मास। २. चिड़िया।

पक्षी ३ महीना। मास। ४. वह स्थान जहाँ दो रास्ते मिलते हों। दो-राहा।

द्विपक्षी (क्षिन्)—वि० [स०द्वि-पक्ष द्विगु स०,+इनि] १ सौर मास के दो पक्षों अर्थात् एक महीने मे होनेवाला। २ कुछ एक पक्ष मे और कुछ दूसरे पक्ष मे पड़नेवाला जैसे —गया का द्विपक्षी श्राद्ध। ३ दो दलों, पक्षों या पार्श्वों से सबध रखनेवाला। (बाई-लेटरल) जैसे—द्विपक्षी निर्णय या समझौता।

द्विपट-बान—पु० [स० पट-बान ष० त०, द्वि पटवान ब० स०] १ दोहरे अरज का कपडा। २ बडे अरज का कपडा। (कौ०)

द्वि-पद —वि० [स० ब० स०] १ जिसके दो पद या पैर हों। जैसे—मनुष्य, पक्षी आदि। २ जिसमे दो पद या शब्द हों। समस्त। यौगिक। ३ (गणित मे ऐसी सख्या) जिसमे दो अलग-अलग अक या सख्याएँ एक साथ मानी और ली जायँ। (बाईनेमिअल) जैसे—$\frac{3}{4}+\frac{1}{2}$।

पु० १ दो पैरोंवाला जतु या जीव। २. आदमी। मनुष्य। ३ ज्योतिष के अनुसार मिथुन, तुला, कुभ, कन्या और धनु लग्न का पूर्व भाग। ४ वास्तु मडल मे का एक कोठा या घर।

द्वि-पदा—स्त्री० [स० द्विपद+टाप्] दो पदोवाली ऋचा।

द्वि-पदिक—पु० [स० द्विपदी+कन्, ह्रस्व] शुद्धराग का एक भेद।

द्वि-पदी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] १ प्राकृत भाषा का एक प्रकार का छद। २ दो चरणो की कविता या गीत। ३ एक तरह का चित्र काव्य।

द्वि-पर्णा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] एक प्रकार के जगली बेर का पेड।

द्वि-पाद—पु०, वि० = द्विपद।

द्विपाद-वध—पु० [ष० त० या तृ० त०] अपराधी के दोनो पैर काट लेने का दड।

द्वि-पायी (यिन्)—पु० [स० द्वि√पा (पीना)+णिनि] [स्त्री० द्विपायिनी] हाथी।

द्वि-पार्श्विक—वि० [स० द्वि-पार्श्व द्विगु स०,+ठन्—इक] १ दो या दोनो पार्श्वों से सबध रखनेवाला। २ दो या दोनो पक्षो की ओर से होनेवाला। द्विपक्षी।

द्वि-पास्य—पु० [स० द्विप-आस्य ब० स०] गणेश (जिनका मुख हाथी के मुख के समान है)।

द्वि-पृष्ठ—पु० [स० ब० स०] जैनो के नौ वासुदेवो मे से एक।

द्वि-बाहु—वि० [स० ब० स०] जिसके दो बाहु हों। द्विभुज।

पु० दो हाथोंवाले जीव या प्राणी।

द्वि-भा—स्त्री० [स० द्विगु० स०] १ प्रकाश। २ प्रभा। चमक। उदा०—जगत ज्योति तमस द्विभा।—पन्त।

द्वि-भाव—वि० [स० ब० स०] १ जिसमे दो भाव हों। २ कपटी। छली।

पु० १ किसी से रखा जानेवाला द्वेषभाव। २ दुराव। छिपाव। ३. कपट। छल।

द्वि-भाषी (षिन्)—पु० [स० द्वि√भाष् (बोलना)+णिनि] दो भाषाएँ जानने और बोलनेवाला। २ दे० 'दुभाषिया'।

द्वि-भुज—वि० [स० ब० स०] १. जिसके दो हाथ हो। दो हाथोंवाला। २. (क्षेत्र या आकृति) जिसकी दो भुजाएँ हो।

पु० मनुष्य।

द्वि-भूम—वि० [स० ब० स० अच्] दो खडोवाला (मकान)।

द्वि-मातृ—वि० [स० ब० स०] १ जिसकी दो माताएँ हों। २ जो दो माताओं के गर्भ से उत्पन्न हो।

पु० १ जरासध। २ गणेश।

द्विमातृज—वि० पु० [स० द्वि-मातृ द्विगु स०,√जन् (उत्पत्ति)+ड] द्विमातृ।

द्वि-मात्र—वि० [स० ब० स०] दो मात्राओंवाला।

पु० दीर्घ स्वर और उसका चिह्न।

द्विमीढ—पु० [स०] हस्तिनापुर के राजा हस्ति का एक पुत्र जो अजमीढ का भाई था। (हरिवश)

द्वि-मुख—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० द्विमुखी] जिसके दो मुख हों। दो मुँहोंवाला।

पु० १ पेट मे से निकलनेवाला एक प्रकार का सफेद कीडा। २ दो-मुँहा साँप।

द्वि-मुखा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] जोंक।

द्वि-मुखी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] १ वह गाय जो बच्चा दे रही हो। (अर्थात् जिसके एक ओर एक तथा दूसरी ओर दूसरा मुँह हो)।

वि० स० 'द्विमुख' का स्त्री०।

द्वि-यजुष—स्त्री० [स० ब० स०] यज्ञ-मडप आदि बनाने की एक तरह की ईंट।

पु० यजमान।

द्वि-रद—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० द्विरदा] दो दाँतोंवाला।

पु० १ हाथी। २ दुर्योधन के भाई का नाम।

द्विरदांतक—पु० [स० द्विरद-अतक ष० त०] हाथी को मार डालनेवाला, सिह।

द्विरदाशन—पु० [स० द्विरद-अशन ब० स०] सिह।

द्वि-रसन—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० द्विरसना] १ दो जिह्वाओं वाला। २ कभी कुछ और कभी कुछ कहनेवाला। जिसकी बात का विश्वास न किया जा सके।

पु० साँप।

द्विरागमन—पु० [स० द्विर्-आगमन सुप्सुपा स०] १ दूसरी बार आना। पुनरागमन। २ वधू का अपने पति के साथ दूसरी बार अपनी ससुराल मे आना। गौना।

द्विराज-शासन—पु० [स०] [मू० कृ० द्विराज-शासित] किसी देश या प्रदेश पर दो राज्यों या दो राष्ट्रों का होनेवाला सम्मिलित शासन। (कान्डोमीनियम)

द्वि-रात्र—पु० [स० द्विगु स०, अच्] दो रातों मे पूर्ण होनेवाला एक तरह का यज्ञ।

द्विराप—पु० [स० द्विर्-आ√पा (पीना)+क] हाथी।

द्विरुक्त—वि० [स० द्विर्-उक्त सुप्सुपा स०] [भाव० द्विरुक्ति] १ दो बार कहा हुआ। २ दुबारा कहा हुआ। ३ दो प्रकार से कहा हुआ और फलत अनावश्यक या निरर्थक।

पु० पुनर्कथन।

द्विरुक्ति—स्त्री० [सं० द्विर्-उक्ति सुप्सुपा स०] १ कोई बात दुबारा या दूसरी बार कहना। पुनरुक्ति। २ दे० 'द्वित्व'।

द्विरूढ़ा—स्त्री० [सं० द्विर्-ऊढ़ा सुप्सुपा स०] वह स्त्री जिसके एक विवाह के बाद दूसरा विवाह हुआ हो।

द्वि-रेता (तस्)—पुं० [सं० ब० स०] १ दो भिन्न जातियों के पशुओं से उत्पन्न पशु। जैसे—खच्चर। २ दोगला। वर्ण-संकर।

द्वि रेफ—पुं० [सं० ब० स०] १ भ्रमर। भौंरा। २ बर्बर।

द्वि-षडस्रक—पुं० [सं० मध्य० स०, [कन्] ऐसा घर जिसमें सोलह कोण हों। सोलह कोनोंवाला घर।

द्वि-विंदु—पुं० [सं० ब० स०] विसर्ग।

द्विविद—पुं० [सं०] १ एक बंदर जो रामचंद्र जी की सेना का एक सेनापति था। २ पुराणानुसार एक बंदर जिसे बलदेव ने मारा था।

द्वि-विध—वि० [सं० ब० स०] दो प्रकार का। दो तरह का।

क्रि० वि० दो तरह या प्रकार से।

द्वि-विधा—पुं० [सं० द्विगु स०] दुबधा। असमंजस।

द्वि-विवाह—पुं० [सं० द्विगु स०] वह सामाजिक प्रथा जिसमें कोई स्त्री या पुरुष एक ही समय में एक साथ दो पुरुषों या स्त्रियों के साथ विवाह संबंध स्थापित करके दाम्पत्य जीवन बिताता हो। (बाइगैमी)

द्वि-वेद—वि० [सं० द्विगु स०, [अण्—लुक्] दो वेदों का ज्ञाता।

द्विवेदी (दिन्)—पुं० [सं० द्विवेद+इनि] १ दो वेदों का ज्ञाता। २ ब्राह्मणों की एक उपजाति। दूबे।

द्विवेशरा—स्त्री० [सं० द्वि-वेश द्विगु स०√रा (दान)+क—टाप्] दो पहियों की छोटी गाड़ी।

द्वि-व्रण—पुं० [सं० मध्य० स०] एक ही व्यक्ति को होनेवाले दो प्रकार के व्रण या घाव।

द्वि-शफ—पुं० [सं० ब० स०] ऐसा पशु जिसके खुर फटे हों। जैसे—गाय, हिरन आदि।

द्वि-शरीर—पुं० [सं० ब० स०] ज्योतिष के अनुसार कन्या, मिथुन, धनु और मीन राशियाँ जिनका प्रथमार्द्ध स्थिर और द्वितीयार्द्ध चर माना जाता है।

द्विशिर—वि० [सं० द्विशिरस्] जिसके दो सिर हों। दो सिरोंवाला।

मुहा०— **कौन द्विशिर** कौन अपनी जान देना चाहता है? किसे अपने मरने का भय नहीं है?

द्वि-शीर्ष—वि० [सं० ब० स०] जिसके दो सिर हों।

पुं० १ वैरी। शत्रु। २ अग्नि।

द्विसंतप—वि० [सं० द्विषन्√तप् (संताप)+णिच्+खच्, मुम्, ह्रस्व] अपने द्वेषियों या शत्रुओं को कष्ट पहुँचानेवाला।

द्विष्—वि० [सं०√द्विष् (शत्रुता)+क्विप्] द्वेष रखनेवाला।

द्विष्ट—वि० [सं०√द्विष्+क्त] १ जो द्वेष से युक्त हो। द्वेषपूर्ण। २ जिसके प्रति द्वेष किया जाय या हो।

पुं० तांबा।

द्विसदनात्मक—वि० [सं० द्वि-सदन द्विगु स०, द्विसदन-आत्मन ब० स०, कप्] (शासन प्रणाली) जिसमें कानून, या विधान आदि बनानेवाली एक की जगह दो संस्थाएँ (विधानमंडल) होती है। (बाइकेमरल)

द्वि-सदस्य निर्वाचनक्षेत्र—पुं० [सं० द्वि-सदस्य, द्विगु स०, द्विसदस्य निर्वाचिन् ष० त०, क्षेत्र व्यस्त पद] ऐसा निर्वाचन-क्षेत्र जिसमें से एक साथ दो सदस्य निर्वाचित होते हों। (डबल मेंबर कांस्टिट्यूएन्सी)

द्वि-सप्तति—वि० [सं० मध्य० स०] १ बहत्तर। २ बहत्तरवाँ।

पुं० बहत्तर की संख्या या उसका सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—७२।

द्विसहस्राक्ष—पुं० [सं० द्वि-सहस्र द्विगु स०, द्विसहस्र-अक्षि ब० स०] शेषनाग।

द्विहन्—पुं० [सं० द्वि√हन् (मारना)+क्विप्] हाथी (जो सूँड़ से मारता है)।

द्वि-हरिद्रा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] दारुहल्दी।

द्वि-हृदया—वि०, स्त्री० [सं० ब० स०] गर्भवती (स्त्री)।

द्वीन्द्रिय—वि० [सं० द्वि-इंद्रिय ब० स०] (जंतु) जिसके शरीर में दो ही इंद्रियाँ हों।

द्वीप—पुं० [सं० द्वि-अप् ब० स०, अच्, ईत्व] १ चारों ओर समुद्र से घिरा हुआ कोई प्रदेश या भू-भाग। जल के बीच का स्थल। टापू।

विशेष—द्वीप कई प्रकार के होते और कई प्राकृतिक कारणों से बनते हैं। बहुत-से छोटे-छोटे द्वीपों के समूह को द्वीपपुंज और बहुत बड़े द्वीप को महाद्वीप कहते है।

२ पुराणानुसार पृथ्वी के सात बहुत बड़े-बड़े विभागों में से प्रत्येक विभाग, जिनके नाम इस प्रकार है—जंबू द्वीप, प्लक्ष द्वीप, शाल्मलि द्वीप, कुश द्वीप, क्रौंच द्वीप, शाक द्वीप और पुष्कर द्वीप। ३ वह जिसका अवलंबन किया जा सके। आधार। आश्रय। ४ बाघ का चमड़ा।

द्वीप-कर्पूर—पुं० [ष० त०] चीनी कपूर।

द्वीप-पुंज—पुं० [ष० त०] समुद्र में होनेवाले बहुत-से छोटे-छोटे और पास पास के द्वीपों का समूह। (आर्की पैलगो)

द्वीपवत्—पुं० [सं० द्वीप+मतुप्] १ समुद्र। २ नद।

द्वीपवती—स्त्री० [सं० द्वीपवत्+ङीप्] १ एक प्राचीन नदी का नाम। २ भूमि। जमीन।

द्वीपवान् (वत्)—वि० [सं० द्वीप+मतुप्] जिसमें द्वीप हों।

पुं० समुद्र।

द्वीप-शत्रु—पुं० [सं० ष० त०] शतावरी। सतावर।

द्वीप-समूह—पुं० [सं० ष० त०] द्वीप-पुंज।

द्वीपांतर—पुं० [सं० द्वीप-अंतर मयू० स०] प्रस्तुत से भिन्न कोई दूसरा द्वीप।

द्वीपांतरण—पुं० [सं० द्वीपांतर+क्विप्+ल्युट्—अन] १ एक द्वीप (अथवा देश) से दूसरे द्वीप में होनेवाला अंतरण। २ किसी भीषण अपराधी का दंड-स्वरूप किसी दूसरे और दूर के द्वीप में ले जाकर रखना। काले पानी की सजा।

द्वीपिका—स्त्री० [सं० द्वीप+ठन्—इक, टाप्] शतावरी। सतावर।

द्वीपि-नख—पुं० [सं० ष० त०] व्याघ्रनख एक गंधद्रव्य।

द्वीपि-शत्रु—पुं० [सं० ष० त०] शतमूली।

द्वीपी (पिन्)—वि० [सं० द्वीप+इनि] १ द्वीप-संबंधी। द्वीप का। २ द्वीप में रहनेवाला।

पुं० १ बाघ। व्याघ्र। २ चीता। ३. चित्रक नामक वृक्ष। चीता।

द्वीप्य—त्रि० [स० द्वीप+यत्] १ द्वीप-सम्बन्धी। २ द्वीप मे उत्पन्न। ३ द्वीप मे रहने या होनेवाला।
पु० १ व्यास। २ रुद्र।

द्वीश—वि० [स० द्वि-ईश ष० त०] १ जो दो का स्वामी हो। २ [ब० स०] जिसके दो स्वामी हो। ३ (चरु) जो दो देवताओ के लिए हो।
पु० विशाखा नक्षत्र।

द्वेष—पु० [स०√द्विष् (शत्रुता)+घञ्] १ किसी को दूसरा या पराया समझने और उससे पार्थक्य का व्यवहार करने का भाव। २ किसी के प्रति होनेवाले विरोध, वैमनस्य, शत्रुता आदि के फल-स्वरूप मन मे रहनेवाला ऐसा भाव, जिसके कारण मनुष्य उसका बनता या होता हुआ काम बिगाड देता है अथवा उसे हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता है।

द्वेषाग्नि—स्त्री० [स० द्वेष-अग्नि कर्म० स०] द्वेषानल।

द्वेषानल—पु० [स० द्वेष-अनल कर्म० स०] द्वेष या वैर रूपी अग्नि। द्वेष का उग्र या प्रबल रूप।

द्वेषी (षिन्)—वि० [स०√द्विष्+घिनुण्] [स्त्री० द्वेषिणी] द्वेष करने या रखनेवाला।
पु० वैरी। शत्रु।

द्वेष्टा (ष्टृ)—वि० [स०√द्विष्+तृच्] [स्त्री० द्वेष्टी] द्वेषी।

द्वेष्य—वि० [स०√द्विष्+ण्यत्] १ जिससे द्वेष किया जाय। २ जिसके प्रति द्वेष रखना उचित हो।
पु० वैरी। शत्रु।

द्वेष्य-पक्ष—पु० [कर्म० स०] क्रोध, ईर्ष्या आदि जो द्वेष के अवातर भेद है।

द्वै—वि० [स० द्वय] १ दो। २ दोनो।

द्वैक*—वि० [हि० द्वै+एक] दो-एक। थोडे-से। कुछ।

द्वैगुणिक—वि० [स० द्विगुण+ठक्—इक] दूना सूद खानेवाला (महाजन)।

द्वैगुण्य—पु० [स० द्विगुण+ष्यञ्] १ द्विगुण या दूने होने की अवस्था या भाव। २ दूनी रकम या परिमाण। ३ सत्त्व, रज और तम मे से दो गुणो से युक्त होने की अवस्था या भाव। ४ दे० 'द्वैत'

द्वैज—स्त्री० [स० द्वितीय, प्रा० दुइय] द्वितीया तिथि। दूज।

द्वैत—पु० [स० द्वि-इत तृ० त०, +अण्] १ दो होने की अवस्था या भाव। २ जोडा। युग्म। ३ किसी को अन्य या पराया समझने का भाव ४ असमजस। ५ अज्ञान। ६ एक वन का नाम। ७ 'द्वैतवाद' दे०।

द्वैत-चिंतामणि—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

द्वैत-परिपूर्णा—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

द्वैतवन—पु० [स० द्वि=शोक, मोह—इत=नष्ट ब० स०,+अण्, द्वैत-वन कर्म स०] एक तपोवन, जिसमे युधिष्ठिर वनवास के समय कुछ दिनो तक रहे थे।

द्वैत-वाद—पु० [ष० त०] १ वह दार्शनिक सिद्धान्त, जिसमे आत्मा-परमात्मा अर्थात् जीव और आत्मा अथवा आत्मा और अनात्मा मे भेद माना जाता है। अद्वैतवाद से भिन्न और उसका विरोधी मत या सिद्धात। २ उक्त के अतर्गत वह सूक्ष्म भेद, जिसमे और चित् शक्ति अथवा आत्मा और शरीर दो भिन्न पदार्थ माने जाते है।
विशेष—उत्तर मीमांसा या वेदात का यह मत है कि आत्मा और परमात्मा दोनो एक हैं, परतु शेष पाँचो दर्शन इस मत के विरोधी है। ३ दो स्वतत्र और विभिन्न सिद्धान्त एक साथ माननेवाली विचार-शैली।

द्वैतवादी (दिन्)—वि० [स० द्वैतवाद+इनि] [स्त्री० द्वैतवादिनी] ईश्वर और जीव मे भेद मानने वाला। द्वैतवाद का अनुयायी।

द्वैतानदी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाट की पद्धति की एक रागिनी।

द्वैती (तिन्)—वि० [स० द्वैत+इनि] द्वैतवादी।

द्वैतीयीक—वि० [स० द्वितीय+ईकक्] दूसरा।

द्वैध—पु० [स० द्वि+धमुञ् वा द्विधा+अण्] १ दो प्रकार के होने की अवस्था या भाव। २ दो मे होनेवाली भिन्नता या भेद-भाव। ३ दो तरह की चाले चलने या नीतियाँ बरतने की अवस्था, गुण या भाव।
विशेष—प्रचीन भारतीय राजनीति मे इसे छ गुणो के अतगत माना गया है। ऊपर से कुछ और प्रकार का व्यवहार करने और अदर अदर कुछ और प्रकार का व्यवहार करने की नीति ही द्वैध है। यह आधुनिक डिप्लोमेसी के सम-कक्ष है।
३ वह शासन-प्रणाली जिसमे कुछ विभाग सरकार के हाथ मे और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियो के हाथ मे हो। (डायार्की)

द्वैधीकरण—पु० [स० द्वैध+च्वि √कृ० +ल्युट+अन] किसी चीज के दो टुकडे करना।

द्वैधीभाव—पु० [स० द्वैध+च्वि√भू+घञ्] १ द्विधा भाव। अनिश्चय। दुबधा। २ ऊपर से कुछ और मन मे कुछ और भाव रखने की अवस्था या गुण। ३ दोनो ओर मिलकर चलने या रहने की अवस्था या भाव।

द्वैप—वि० [स० द्वीपिन्+अञ्] १ बाघ या व्याघ्र से सबध रखनेवाला। २ व्याघ्र के या बाघ के चमडे का बना हुआ।
पु० बाघ का चमडा। व्याघ्र-चर्म।
वि० दे० 'द्वैप्य'।

द्वैपायन—वि० [स० द्वीप-अयन ब० स०,+अण्] द्वीप मे जन्म लेनेवाला।
पु० १ वेदव्यासजी का एक नाम। २ कुरुक्षेत्र के पास का एक ताल जिसमे युद्ध से भागकर दुर्योधन छिपा था।

द्वैप्य—वि० [स० द्वीप+यञ्] १ द्वीप सबधी। टापू-का। २ द्वीप मे उत्पन्न होने या रहनेवाला।

द्वैमातुर—वि० [स० द्विमातृ+अण्, उत्व] जिसकी दो माताए हो।
पु० १ गणेश। २ जरासध।

द्वैमातृक—पु० [स० द्वि-मातृ ब० स० कप्,+अण्] वह प्रदेश जहाँ खेती नदी के जल (सिचाई) द्वारा भी की जाती है और वर्षा से भी होती है।

द्वैयह्निक—वि० [स० द्वि-अहन् द्विगु स०,+ठञ्-इक] १ दो दिन की अवस्थावाला। २ दो दिन मे किया जानेवाला।

द्वैराज्य—पु० [स० द्विराज+ष्यञ्] वह शासन-प्रणाली, जिसमे किसी एक दुर्बल या पराजित राज्य पर अन्य दो शक्तिशाली राज्य मिल-जुल कर शासन करते हो। (कॉन्डोमीनियम)

द्वैवार्षिक—वि० [स० द्विवर्ष+ठञ्-इक] प्रति दो वर्षों पर होनेवाला। (बाईनियल)

द्वैविध्य—पु० [स० द्विविध+ष्यञ्] १ द्विविध अर्थात् दो प्रकार के होने की अवस्था या भाव। २ असमजस। दुबधा।

द्वैषणीया—स्त्री० [स० द्वेषण+अण्+छ-ईय, टाप्] नागवल्ली का एक भेद।

द्वैसमिक—त्रि० [स० द्विसमा+ठक्-इक] दो वर्षों का।

द्वैहायन—पु० [स० द्विहायन+अण्] [वि० द्वैहायनिक] दो वर्ष का समय

द्वैहायनिक—वि० [स० द्विहायन+ठक्-इक] १. दो वर्षों मे होनेवाला। २ प्रति दो वर्षों पर (या मे) होनेवाला।

द्वौ†—वि० [हि० दो+ऊ, दोउ] दोनों।

†स्त्री० =दव।

द्व्यक्ष—वि० [स० द्वि-अक्ष ब० स०] दो नेत्रोवाला। द्विनेत्र।

द्व्यणुक—वि० [स० द्वि-अणु ब० स०, कप्] जिसमे दो अणु हो। दो अणुओवाला।

पु० वह-द्रव्य जो दो अणुओ के सयोग से उत्पन्न हो। वह मात्रा, जो दो अणुओ की हो।

द्व्यर्थ, द्व्यर्थक—वि० [स० द्वि-अर्थ ब० स०] कप् विकल्प से जिसमे से दो या दो प्रकार के अर्थ निकलते हो।

द्व्यशीति—वि० [स० द्वि-अशीति मध्य० स०] जो गिनती मे अस्सी से दो अधिक हो। बयासी।

स्त्री० उक्त की सूचक सख्या—८२

द्व्यष्ट—पु० [स० द्वि√अश् (व्याप्ति)+क्त] ताम्र। ताँबा।

द्व्याक्षायण—पु० [स०] एक ऋषि का नाम।

द्व्याग्नि—पु० [स०] लालचीता (वृक्ष)।

द्व्यातिग—वि० [स० द्वि-आ-अति√गम् (जाना)+ड] जो रजोगुण तथा तमोगुण से रहित, परन्तु सत्त्वगुण से युक्त हो।

द्व्यात्मक—पु० [स० द्वि आत्मन् ब० स०, कप्] दो स्वभाव की राशियाँ जो, जो ये है—मिथुन, कन्या, धनु और मीन।

द्व्यामुष्यायण—पु० [स० अमुष्य+फक्-आयन, द्वि-आमुष्यायण ष० त०] किसी व्यक्ति का वह पुत्र, जो दूसरे के द्वारा दत्तक के रूप मे ग्रहण किया गया हो और जिसे दोनो पिता अपना, अपना पुत्र मानते हो।

ध

ध—देवनागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यजन जो व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से दत्य, घोष, महाप्राण और स्पर्शी है।

पु० धैवत स्वर का सूचक सक्षिप्त रूप। (सगीत)

धंका*—पु० =धक्का।

धंगर—पु० [देश०] १ चरवाहा। २ ग्वाला। अहीर।

धगा†—पु० [देश०] खाँसी।

धधर—पु० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का धारीदार कपडा।

धध*—पु० [स० द्वद्व] झझट। बखेडा।

धधक—पु० [हि० धधा] झझट। बखेडा।

पु० [?] एक प्रकार का ढोल।

धधक-धोरी—पु० =धधक-धोरी।

धधक-धोरी—पु० [हि० धधक+धोरी] सासारिक झझटो या बखेडो मे फँसा रहनेवाला व्यक्ति।

धँधका—पु० [देश०] [स्त्री० अल्पा धँधकी] एक प्रकार का ढोल।

धँधरक—पु० [हि० धधा] काम-धधे का जजाल, बखेडा या बोझ।

धँधरक-धोरी—पु० =धधक-धोरी।

धँधला—पु० [हि० धाँधल] १ कपटपूर्ण आचरण या व्यवहार। छल-छद। २ आडबर। ढोग। ३ बहाना। मिस। हीला। (स्त्रियाँ) ४ दे० 'धाँधली'।

धँधलाना—अ० [हि० धँधला] १ छल छद करना। ढग रचना।

अ० [हि० धाँधली] १ धाँधली करना। २ जल्दी मचाना।

धधा—पु० [स० धन-धान्य] १ वह उद्योग या कार्य जो जीविका-निर्वाह के लिए किया जाय। जैसे—अब उन्होने वकालत (या वैद्यक) का धधा छोड दिया है। २ व्यवसाय। व्यापार। ३ ऐसा काम जिसमे कुछ समय तक लगा रहना पडे। जैसे—घर का भी कुछ धधा किया करो। ३ दूसरो का चौका-बरतन करने की नौकरी।

†पु० =द्वद्व। (राज०)

धँधार—स्त्री० [हि० धूँआ] १ आग की लपट। २ बहुत अधिक मानसिक सताप।

†वि० अकेला। एकाकी।

पु० भारी लकडियाँ, पत्थर आदि उठाने के काम आनेवाला लकडी का एक तरह का लबा डडा।

धधारि*—स्त्री० १ =धँधार। २ =धधारी।

धधारी—स्त्री० [हि० धधा] गोरखपथी साधुओं का गोरख धधा।

स्त्री० [?] १ अकेलापन। २ एकान्त या सुनसान स्थान। ३ निस्तब्धता। सन्नाटा।

धधाला—स्त्री० [हि० धधा] कुटनी। दूती।

धधालू—वि० [हि० धधा] जो किसी काम या धधे मे लगा रहता हो।

धँधेरा—पु० [देश०] राजपूतो की एक जाति।

धँधोरा—पु० [अनु० धाँय-धाँय आग दहकने का शब्द] १ होलिका। होली। २ आग की लपट। ज्वाला।

धँवना*—स० [हि० धौकना] आग सुलगाने के लिए भाथी से हवा करना।

उदा०—बिरहा पूत लोहार का धवै हमारी देह।—कबीर।

धँवरख—स्त्री० [देश०] पडुक (चिडिया)।

धँस†—स्त्री० =धँसना।

धँसन—स्त्री० [हि० धँसना] १ धँसने की क्रिया, ढग या भाव। २ ऐसा स्थान जिसमे कोई धँस सकता हो। ३ दलदल।

धँसना—अ० [स० दशन] १ किसी नुकीली या भारी चीज का स्वय अपने भार के कारण अथवा दाब आदि पडने के फलस्वरूप अपेक्षाकृत किसी नरम तल मे नीचे की ओर जाना। जैसे—दल-दल मे धँसना। २ दीवार, मकान आदि के सबध मे, उसके किसी पक्ष का जमीन मे किसी प्रकार की कमजोरी होने के कारण प्रसम स्तर से नीचे जाना। ३ किसी प्रकार की कडी तथा नुकीली वस्तु का किसी तल मे प्रविष्ट होना। गडना। जैसे—हाथ मे सूई या पैर मे काँटा धँसना। ४ नेत्रो के

सबंध मे, उनका शारीरिक निर्बलता के कारण कुछ दबा हुआ या अंदर की ओर धुसा हुआ-सा प्रतीत होना। ५ व्यक्ति का भीड़-भाड मे लोगो को दबाते या हटाते हुए आगे की ओर बढ़ना। ६ किसी चीज का वेगपूर्वक किसी दूसरी चीज मे प्रविष्ट होना। जैसे—शरीर मे गोली या तीर धँसना। ७ बात या विचार के सबध मे, समझ मे आना। जैसे—उनके दिमाग मे तो कोई बात धँसती ही नहीं।

†अ० [स० ध्वसन] ध्वस्त होना। नष्ट होना। मिटना।

†स० ध्वस्त या नष्ट करना। मिटाना।

धँसनि†—स्त्री० १ धँसन। २ धँसान।

धँसान—स्त्री० [हिं० धँसना] १ धँसने की क्रिया, ढंग या भाव। २ कीचड या दल-दल से भरी वह जमीन जिसमे सहज मे कोई धँस सकता हो। ३ ढालुआँ स्थान। (क्व०) ४ भीड-भाड मे वेगपूर्वक लोगो को इधर-उधर ढकेलते या हटाते हुए आगे बढने की क्रिया या भाव। जैसे—भेडिया धँसान।

धँसाना—स० [हि० धँसना] १ किसी चीज को धँसने मे प्रवृत्त करना। २ गडाना। चुभाना। ३ जोर लगाकर अन्दर प्रविष्ट करना या कराना। ४ किसी तल पर ऐसा दबाव डालना कि वह नीचे की ओर धँसे।

धँसाव—पु० [हिं० धँसना] १ धँसने की क्रिया या भाव। २ ऐसा स्थान, जिसमे कुछ या कोई सहज मे धँस सके। ३ दे० 'धँसान'।

धई—स्त्री० [देश०] एक तरह का जगली कद, जिसे पहाडी जातियो के लोग खाते है।

धउरहर†—पु० =धौरहर।

धक—स्त्री० [अनु०] १ भय आदि के कारण कलेजे के सहसा धडकने से होनेवाला परिणाम। जैसे—चोर को देखते ही कलेजा धक-धक करने लगा।

मुहा०—**जी धक-धक करना**—कलेजा धडकना। **जी धक होना**—(क) भय या उद्वेग से जी धडक उठना। डर से जी दहल जाना। (ख) चौक पडना।

२ मन की उमग या भाव। ३ साहस। हिम्मत। उदा०—सौ भी सौ धक कतरी, मूँछाँ भूह मिलाय।—कविराजा सूर्यमल। ४ तृष्णा। लालसा।

क्रि० वि० १ एक-बारगी। अचानक। सहसा। २ वेगपूर्वक। तेजी से। उदा०—दरै कति कुप्पि धर धक दाव भरै कति भूरि भरै मृत मान।—कविराजा सूर्यमल।

स्त्री० [देश०] सिर मे पडनेवाली एक प्रकार की जूँ।

धकधकना—अ० =धक धकाना।

धकधकाना—अ० [अनु० धक] १. भय, उद्वेग आदि के कारण हृदय का धक-धक शब्द करना। कलेजा या हृदय धडकना। २ (आग) दहकना। सुलगना।

स० (आग) दहकाना या सुलगाना।

धकधकाहट†—स्त्री० =धकधकी।

धक-धकी—स्त्री० [अनु० धक] १. कलेजे के धक-धक करने की अवस्था, क्रिया या भाव। हृदय की धडकन। २. आशंका। खटका। ३ आगा-पीछा। असमंजस। दुबधा। ४. दे० 'धुकधुकी'।

धक-पक—स्त्री० [अनु०] १ कलेजे की धडकन। धकधकी। २. मन मे होनेवाली आशका। खुटका।

क्रि० वि० १ धक-धक या धक-पक करते हुए। २ धडकते हुए कलेजे से।

धकपकाना—अ० [अनु० धक] जी मे दहलना। मन मे डरना।

† स० किसी को डरने या दहलने मे प्रवृत्त करना।

धकपेल—स्त्री० = धका-पेल।

धका—पु० = धक्का।

†स्त्री० = धाक।

धका-धकी—स्त्री० =धका-पेल।

धका-धूम—स्त्री० =धका-पेल।

धकाना—स० [हिं० दहकाना] (आग) दहकाना। सुलगाना।

†अ० = (आग) दहकना। सुलगना।

धका-पेल—स्त्री० [हिं० धक्का+पेलना] भीडभाड मे होनेवाली धक्के-बाजी। धक्कमधुक्का।

क्रि० वि० दूसरो को धक्के देकर हटाते हुए। जैसे—सब लोग धका-पेल घुसते चले जा रहे थे।

धकार—पु० [देश०] १ कान्यकुब्ज और सरजूपारी ब्राह्मणो के वर्ग का वह ब्राह्मण, जो उनकी दृष्टि मे निम्न कुल का हो। २ एक राजपूत जाति। ३ कम या थोडे पानी मे होनेवाला एक तरह का धान। (पजाब)

†स्त्री० = धिक्कार।

† वि० =दोगला।

धकारा—पु० [अनु० धक] धकधकी। आशका। खटका।

क्रि० प्र०—पडना।—लगना।

धकियाना—स० [हिं० धक्का] १. धक्का देना। ढकेलना। २ धक्का देकर बाहर निकालना। ३ आगे बढ़ने के लिए विशेष रूप से प्रेरित तथा प्रोत्साहित करना।

धकेलना—स० [हि० धक्का] १ धक्का देना। ढकेलना। २ इस प्रकार किसी को धक्का देना कि वह गिर पडे। ३ पशु यान आदि के सबध मे, पीछे से इस प्रकार धक्का देना कि वह आगे बढ़ने या चलने लगे। ४ आगे बढ़ने मे प्रवृत्त करना। आगे बढ़ाना।

धकेलू—पु० [हिं० धकेलना] १ ढकेलने या धक्का देनेवाला। २. स्त्री का उपपति या यार। (बाजारू)

धकैत—वि० [हिं० धक्का+ऐत (प्रत्य०)] धक्कम धक्का करनेवाला।

धकोना†—स० = धकियाना।

धक्क—स्त्री० = धक।

धक्क-पक्क—स्त्री०, क्रि० वि०= धक-धक।

धक्कम-धक्का—पु० [हिं० धक्का] १ बार-बार बहुत अधिक या बहुत-से आदमियो का परस्पर धक्का देने की क्रिया या भाव। २ ऐसी भीड, जिसमे लोगो को बार-बार उक्त प्रकार से धक्के लगते हो।

धक्का—पु० [स० धम, हिं० धमक या स० धक्क--नष्ट करना] १. किसी को धकेलने या आगे बढाने के लिए उसके पीछे की ओर से डाला जानेवाला दबाव या किया जानेवाला आघात। जैसे—दरवाजा धक्के से खुलेगा। २. किसी ओर से वेगपूर्वक आकर लगनेवाला वह आघात जो किसी

को ढकेलता या दबाता हुआ उसके स्थान से आगे बढ़ा, हटा या गिरा दे। जैसे—गाड़ी के धक्के से वह जमीन पर गिर पड़ा।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

३ किसी को अनादर या उपेक्षापूर्वक कहीं से निकालने या हटाने के लिए किया जानेवाला उक्त प्रकार का आघात। जैसे—कुछ लोग तो वहाँ से धक्का देकर निकाले गये।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—सहना।

मुहा०—**धक्के खाना** = बार-बार धक्कों का आघात सहते हुए हटाया जाना। जैसे—बहुत दिनों तक वह जगह-जगह धक्के खाता रहा। **(किसी को) धक्का (या धक्के) देकर निकालना**=बहुत ही अनादर या तिरस्कारपूर्वक दूर करना या हटाना।

४ किसी को दुर्दशाग्रस्त करने या हीन स्थिति में पहुँचाने के लिए किया जानेवाला कोई कार्य। जैसे—अँगरेजी शासन को एक धक्का और लगा। ५ जन-समूह या भीड़ की वह स्थिति, जिसमें चारों ओर से लोगों को धक्के लगते हों। जैसे—मेले-तमाशों में धक्का बहुत होता है। ६ लाक्षणिक रूप में, किसी दुःखद बात के परिणामस्वरूप होनेवाला मानसिक आघात; जैसे—लड़के की मृत्यु के धक्के ने उन्हें बहुत दुर्बल कर दिया है।

क्रि० प्र०—पहुँचना।—लगना।

७ कोई ऐसा आघात जिसमें किसी प्रकार की विशेष क्षति हो। जैसे—(क) आप की बातों के फेर में हमें भी सौ रुपए का धक्का लगा। (ख) बाहर से माल आ जाने के कारण बाजार (या व्यापारियों) को बहुत धक्का लगा है।

क्रि० प्र०—बैठना।—लगना।

८ कुश्ती का एक पेंच, जिसमें बायाँ पैर आगे रखकर विपक्षी की छाती पर दोनों हाथों से धक्का देते हुए उसे नीचे गिराते हैं। ठाप। ठोढ।

धक्काड़—वि० [हिं० धाक] १ चारों ओर जिसकी महत्ता की खूब धाक जमी हो। २ अपने विषय का बहुत बढ़ा-चढ़ा विशेष ज्ञाता या पंडित। ३ बहुत बड़ा।

धक्का-मार—वि० [हिं०] १ धक्का देने या बल-प्रयोग करनेवाला। २ उद्दंडतापूर्ण आघात करनेवाला (आचरण या व्यवहार)।

धक्का-मुक्की—स्त्री० [हिं० धक्का+मुक्का] ऐसी लड़ाई, जिसमें एक दूसरे को धक्के देते हुए घूँसों से मारें। मुठ-भेड़।

धगड़—पुं० =धगड़ा।

धगड़बाज—वि० स्त्री० [हिं० धगड़ा+फा० बाज] धगड़ा या उपपति बनाने या रखनेवाली। कुलटा। व्यभिचारिणी।

धगड़ा—पुं० [सं० धव=पति] [स्त्री० धगड़ी] १ किसी स्त्री का जार। उपपति। २ वह जिसे किसी स्त्री ने बिना विवाह किये अपना पति बना लिया हो। ३ बदमाश। लुच्चा।

धगड़ी—स्त्री० [हिं० धगड़ा] १. व्यभिचारिणी स्त्री। कुलटा स्त्री। २ उपपत्नी। रखेली। ३ धाय। (पूरब)

धग-धगाना—अ० [हिं०] १ धड़कना। २ दहकना।

†स० (आग) दहकाना। सुलगाना।

धगरा—पुं० = धगड़ा।

धगरिन—स्त्री० [हिं० धाँगर] धाँगर जाति की स्त्री, जो तुरन्त के जनमे हुए बच्चे की नाल काटती है।

†स्त्री० = धगड़ी।

धगवरी†—वि० [हिं० धगड़ा=पति या यार] १ पति की दुलारी और मुँह-लगी। २ कुलटा। व्यभिचारिणी।

धगा†—पुं० = धागा (तागा)।

धगुला†—पुं० [देश०] हाथ में पहनने का एक आभूषण।

धग्गड़—पुं० [?] आटे आदि की वह टिकिया, जो फोड़े, सूजन आदि पर उन्हें दबाने के लिए बाँधी जाती है।

†पुं० =धगड़ा।

धचकचाना—स० [देश०] डराना। दहलाना।

†अ० धचकना।

धचकना—अ० [देश०] १ दलदल में धँसना। २ संकट में पड़ना। स० हलका आघात करते हुए दबाना।

धचका—पुं० [हिं० धचकना] १ धचकने की क्रिया या भाव। २ धक्का। ३ क्षति। नुकसान। हानि।

क्रि० प्र०—उठाना।

धचकाना—स० [हिं० धचकना] १ दलदल में फँसाना। २ संकट में डालना। ३ दबाने के लिए हलका आघात करना।

धचना†—अ० [देश०] शान्त या स्थिर होना। ठहरना।

धज—स्त्री० [सं० ध्वज=चिह्न, पताका] १ मोहित करनेवाली सुंदर चाल-ढाल या रंग-ढंग। २ कोई काम करने का सुंदर ढंग या प्रकार। ३ बनाव-सिंगार। उदा०—वाह ! क्या धज है मेरे भोले की। शकल कोल्हे की हुँट सोले की।—अकबर। ४ ठसक। नखरा। ५ शोभा।

धजबड़—स्त्री० [?] तलवार। (डिं०)

धजा—स्त्री० [सं० ध्वज] १ ध्वजा। पताका। २ कपड़े की कतरन या धज्जी।

धजीला†—स्त्री० = धव।

वि० [हिं० धज+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० धजीली] १ आकर्षक। मनोहर अथवा सुन्दर धजवाला। २ बनाव-सिंगार किया हुआ।

धज्जी—स्त्री० [सं० धटी] कपड़े, कागज, चादर, धातु पत्थर, लकड़ी, आदि का वह पतला लंबा टुकड़ा या पट्टी, जो उन्हें काटने, चीरने, फाड़ने आदि पर निकलती है।

मुहा०—**(किसी चीज की) धज्जियाँ उड़ाना** = काट, चीर, तोड़ या फाड़कर इतने छोटे-छोटे टुकड़े करना कि वे किसी काम के न रह जायँ। **(किसी व्यक्ति की) धज्जियाँ उड़ाना** =(क) बहुत अधिक मारना-पीटना। (ख) दोषों या बुराइयों की इतने जोरों से चर्चा करना कि लोग उसका वास्तविक स्वरूप समझकर उसके प्रति उपेक्षा या घृणा का व्यवहार करने लगें। **(किसी बात या सिद्धांत की) धज्जियाँ उड़ाना** गलत या दोषपूर्ण सिद्ध करते हुए उसका सारा महत्त्व नष्ट करना। निरर्थक सिद्ध करना। **(किसी को) धज्जियाँ लगना** = इतना अधिक दीन-हीन या दरिद्र हो जाना कि चीथड़े लपेटकर रहना पड़े। **(किसी का) धज्जियाँ लेना** = (किसी की) धज्जियाँ उड़ाना। **(किसी व्यक्ति का) धज्जी हो जाना**=बहुत ही कृश, क्षीण या दुर्बल हो जाना।

घट—पु० [सं० घ=घन√अट् (प्राप्ति) +अच्, पररूप] १ तुला। तराजू। २ तुला राशि। ३ तुलापरीक्षा। ४. धर्म।

घटक—पु० [सं० घट्√कै (प्रकाशित होना)+क] ४२ रत्तियो के बराबर की एक पुरानी तौल।

घटिका—स्त्री० [सं० घटी+कन्, टाप्, ह्रस्व] १ पाँच सेर की एक पुरानी तौल। पसेरी। २ कपड़े की धज्जी। चीर। ३ कौपीन। लँगोटी।

घटी—पु० [सं० घट्+ङीष्] १ तुला राशि। २ शिव।

वि० [सं० घटिन] [स्त्री० घटिनी] तराजू की डंडी पकड़कर चीजें तौलनेवाला। तुला-धारक।

स्त्री० १ कपड़े की धज्जी। छीर। २ कौपीन। लँगोटी। ३. वे वस्त्र जो प्राचीन काल मे स्त्रियो को गर्भवती होने पर पहनने के लिए दिये जाते थे।

घडंग—वि० [हिं० धड+अग] नगा। जैसे—नग-धड़ग खड़े हो जाना।

धड़—पु० [सं० धर+धारण करनेवाला] १. मनुष्य के शरीर का वह बीचवाला अश, जिसके अतर्गत छाती, पीठ और पेट होते है। सिर और हाथ-पैर को छोड शरीर का बाकी भाग। कमर से ऊपर और गले के नीचे का भाग। २ पशु-पक्षियो आदि मे हाथ, पैर दुम, पर और सिर को छोडकर शरीर के बीच का बाकी सारा भाग।

मुहा०—(कोई चीज) धड मे डालना=निगल या खा जाना। पेट मे उतारना। **(किसी का) धड़ रह जाना**=लकवे या ऐसे ही किसी रोग के कारण देह या शरीर निष्क्रिय और स्तब्ध हो जाना। **धड से सिर अलग करना**=सिर काट लेना, जिससे मृत्यु हो जाय।

३ पेड का वह सबसे मोटा और कडा भाग, जो जड से कुछ दूर ऊपर तक रहता है और जिसके ऊपरी भाग मे से निकलकर डालियाँ इधर उधर फैलती रहती है। पेडी। तना।

पु० [अनु०] एक प्रकार का बडा ढोल या नगाडा।

पु० [अनु०] किसी चीज के जोर से गिरने का शब्द। धड़ाम। जैसे—वह धड से गिर पडा।

पद—धड़ से=चटपट। तुरत। जैसे—तुम भी धड से नहा लो।

धड़क—स्त्री० [हिं० धडकना] १. धडकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ अनाभ्यास, भय, सकोच आदि के कारण कोई काम करने से पहले या करते समय मन मे होनेवाला असमजस या आशका।

मुहा०—(किसी काम या बात में) धड़क खुलना=पहले की-सी आशका, भय या सकोच न रह जाना।

पद—बेधड़क=बिना किसी प्रकार के भय या सकोच के। भय रहित या निस्सकोच होकर।

३ दे० 'धड़कन'।

धड़कन—स्त्री० [हिं० धड़क] १. धडकने की क्रिया या भाव। २. हृदय की गति बहुत तीव्र होने पर उसका तीव्र और स्पष्ट स्पदन। ३ हृदय का एक रोग जिसमे वह प्राय धडकता रहता है। धडकी। ४ दे० 'धडक'।

धड़कना—अ० [अनु०] १ धड-धड शब्द उत्पन्न होना। २ आशका, उद्वेग, आदि तीव्र मनोविकारो अथवा कुछ रोगो के कारण हृदय मे इस प्रकार जोर की गति होना कि उसमे से धड़-धड या हलका शब्द होने लगे। कलेजा धक-धक करना। जैसे—डाकुओ को देखते ही स्त्रियो का कलेजा (या दिल) धडकने लगा।

† अ०, स० = धडधडाना।

धड़का—पु० [अनु० धड] १ दिल की धडकन। २ दिल धड़कने से उत्पन्न होनेवाला शब्द। ३ आशका। खटका। भय। जैसे—चलो मार खाने का धडका छूटा। ४ खेतो मे से चिड़िया को उडाकर भगाने के लिए खडा किया जानेवाला वह पुतला या बाँस, जिसे खट-खटाने से धड-धड शब्द होता है। धोखा।

† पु० = धडाका।

धड़काना—स० [हिं० धडक] १ किसी के दिल मे धडक पैदा करना। धडकने मे प्रवृत्त करना। २ किसी के मन मे आशका या खटका उत्पन्न करके उसे दहलाना।

सयो० क्रि०—देना।

३ धड-धड शब्द उत्पन्न करना।

धड़क्का—पु० १ धडका। २ धडाका। ३ 'धूम' का निरर्थक अनु-करणात्मक शब्द।

धड़-टूटा—वि० [हिं० धड+टूटना] १ कमर झुकने के कारण जिसका धड आगे की तरफ लटकता हो। २ कुबडा।

धड़-धड़—स्त्री० [अनु०] किसी भारी वस्तु के वेगपूर्वक या एक बारगी गिरने, फेंके जाने या छूटने से उत्पन्न होनेवाला धड-धड शब्द। जैसे—गोलियो की धड-धड सुनकर हम लोग घर से बाहर निकल आये।

क्रि० वि० १ धड-धड शब्द करते या होते हुए। जैसे—उस पर धड-धड मार पडने लगी। २ दे० 'धडाधड'।

धड़धड़ाना—स० [अनु० धडधड] १ इस प्रकार कोई काम करना कि उससे धड-धड शब्द हो। २ किसी प्रकार धड-धड शब्द करना। अ० धड-धड शब्द होना।

धड़ल्ला—पु० [अनु० धड] १ वेग के साथ गिरने, पडने आदि का धड-धड शब्द। धडाका। २ तेजी। वेग। ३ निर्भीकता तथा उत्साह-पूर्वक कोई काम करने की उत्कट प्रवृत्ति।

पद—धड़ल्ले से=(क) बिना झिझके और खूब तेजी से। जैसे—वह ससुर से धडल्ले मे बातें करती है। (ख) एक बारगी। जैसे—लडके ने अपना सारा पाठ धडल्ले से सुना दिया। ४ धूम-धाम। ५ बहुत अधिक भीड़। कश-मकश।

धड़वा†—पु० [देश०] मैना के आकार का एक तरह का पक्षी।

धड़वाई†—पु० [हिं० धडा] अनाज आदि तौलनेवाला। बया।

धड़ा—पु० [सं० धट] [स्त्री० धडी] १. एक प्रकार की पुरानी तौल जो कही चार सेर की और कही पाँच सेर की मानी जाती थी। २ तौलने का बटखरा। बाट। ३ तराजू। तुला।

मुहा०—धड़ा उठाना=तौलने के लिए तराजू उठाकर हाथ मे लेना। **धड़ा करना**=तौलने से पहले तराजू उठाकर यह देखना कि दोनो पलड़े बराबर है या नही और यदि दोनो मे कुछ अतर हो, तो किसी ओर पासंग रखकर वह अतर दूर करना। **धड़ा बाँधना**=(क) धडा करना। (देखें ऊपर) (ख) लाक्षणिक रूप मे, ऐसी युक्ति करना कि कोई दूसरा आदमी दोषी सिद्ध हो।

पुं० जत्था। झुंड। दल।

मुहा०—धड़ा बाँधना=अपना अलग दल या वर्ग बनाना। दलबदी करना।

धड़ाक†—क्रि० वि० [अनु०] १ धड शब्द करते हुए। जैसे—वह धड़ाक से गिर पडा। २ एकाएक। सहसा। जैसे—इतने मे वह वहाँ धड़ाक से आ पहुँचा।

† पु० = धडाका।

धड़ाका—पु० [अनु० धड] १ 'धड' से होनेवाला जोर का शब्द धमाका। जैसे—तोप या बदूक का धडाका।

क्रि० वि० चटपट। तुरत। जैसे—वह धड़ाका उठकर चल खडा हुआ।

पद—धड़ाके से = चट पट। तुरत। धडल्ले से।

धड़ा-धड़—क्रि० वि० [अनु० धड] १. धड-धड शब्द करते हुए। जैसे—धडा-धड ईंट-पत्थर फेंकना या गोलियाँ चलाना। २ जल्दी-जल्दी और बराबर। निरतर लगातार। जैसे—धडाधड बोलते चलना।

धड़ाबंदी—स्त्री० [हिं० धडा+फा० बदी] १ कोई चीज तौलने से पहले तराजू का पडा, पासग आदि रखकर ठीक करने की क्रिया या भाव। २ किसी प्रकार की प्रतियोगिता, विरोध आदि के लिए प्रस्तुत होने के समय अपने सब अग और पक्ष ठीक करना। ३ युद्ध के समय दोनो पक्षो का अपना सैनिक बल शत्रु के सैनिक बल के बराबर करना।

धड़ाम—पु० [अनु० धड़] ऊँचाई से वेगपूर्वक नीचे आकर पड़ने, गिरने आदि का शब्द। धड़ या धम शब्द।

पद—धड़ाम से = जल्दी या वेगपूर्वक और धड या धडाम शब्द करते हुए। जैसे—वह धड़ाम से नदी मे कूद पडा।

धड़िया†—पु० [?] बच्चो की लँगोटी।

धड़ी—स्त्री० [स० धटिका, धटी] १ चार या पाँच सेर की एक पुरानी तौल। धडा। २ मान, सख्या आदि की बहुलता या यथेष्टता।

मुहा०—धड़ी धड़ी करके लूटना = खूब अच्छी तरह या बहुत लूटना।

३ पाँच सौ रुपये की रकम। ४ ढेर। राशि। उदा०—सज्जा-णिया सावण हुया, धडि उकती भडार।—ढोला मारू। ५ मोटी रेखा या लकीर। जैसे—मिस्सी लगाने या पान खाने से होठो पर धडी जम जाती है।

क्रि० प्र०—जमना।

मुहा०—धड़ी जमाना= मिस्सी करके होठो पर काली या नीली मोटी रेखा बनाना।

धण—स्त्री० [स० धन्या] १ स्त्री। नारी। उदा० —धण नागर देखे सधण।—प्रिथीराज। २. पत्नी। जोरू। ३ कन्या। बेटी।

पु० [स० धन्य, हिं० धणियो का पु०] १. पति। २. प्रियतम। उदा०—धणियाँ धण सालण लगा। —ढोलामारू।

†पु० =धन।

धणी †—पु० = धनी।

धत—अव्य० [अनु०] १ दुतकारने या तिरस्कारपूर्वक हटाने का शब्द। दूर हो। हटजा। २ हाथी को पीछे हटाने का शब्द। (महावत)

†स्त्री० लत (बुरी आदत या बात)।

क्रि० प्र०—पडना।—लगना।

धतकारना—स० १ दुतकारना। २. धिक्कारना।

धता—वि० [अनु० धत्] जो दूर हो गया हो या किया गया हो। हटा या हटाया हुआ।

मुहा०—धता बताना = अपना पीछा छुडाने के लिए इधर-उधर की बातें करके उपेक्षापूर्वक किसी को चलता करना या दूर हटाना। (बाजारू)

धतिया—वि० [हिं० धत] जिसे किसी बात की धत या बुरी लत पड गई हो

धतींगड—वि० [देश०] १. बहुत बडा, भारी या मोटा ताजा। २. जारज। दोगला।

धतींगड़ा—वि० धतींगड।

धतूर—पु० [अनु० धू + स० तूर] नरसिंहा नाम का बाजा। धूतू। सिंहा। तुरही।

†पु० =धतूरा।

धतूरा—पु० [स० धुस्तूर] १ दो-तीन हाथ ऊँचा एक प्रकार का पौधा, जिसके पत्ते पानके आकार के नोकदार तथा कोमल होते है तथा फल सेब की तरह गोल होते है, किन्तु ऊपर छोटे-छोटे कोमल काँटे होते हैं। इसके फल तथा बीज बहुत अधिक जहरीले तथा मादक होते है, इसी लिए फल शिवजी को चढाये जाते है। २ उक्त पौधे का फल जो बहुत जहरीला होता है। ३ कोई जहरीली वस्तु।

मुहा०—धतूरा खाये फिरना इस प्रकार उन्मत्त और नशे मे चूर होकर घूमना, मानो धतूरे के बीज अथवा ऐसी ही कोई जहरीली चीज खा ली हो।

धतूरिया—पु० [हिं० धतूर+इया (प्रत्य०)] ठगो का वह दल, जो पथिको को धतूरे का बीज खिलाकर बेहोश करता और लूटता था।

धत्ताँ†—वि० [?] बहुत अधिक (गहरा या तेज) उदा०— ये तो रँग धत्ताँ लग्यो माय।—मीराँ।

धत्ता—पु० [देश०] १ एक प्रकार का छद, जिसके विषम चरणो मे १८ और सम चरणो मे १६ मात्राएँ होती हैं। अत मे तीन लघु होते है। २ थाली की बाढ का ढालुआँ अश या भाग।

धत्तानद—पु० [स०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे ११+७+१३ के विश्राम से ३१ मात्राएँ और अत मे एक नगण होता है।

धत्तूर—पु० [स०√धे (पीना) +उरच्, पृषो० सिद्धि] धतूरा।

धत्तूरक—पु० [स० धत्तूर+कन्] धतूरा।

धत्तूरका—स्त्री० [स० धत्तूरक+टाप्] धतूरा।

धधक—स्त्री० [हिं० धधकना] १ धधकने की क्रिया, दशा या भाव। २ आग की लपट। ३ आँच। ताप।

क्रि० प्र०—उठना।—जाना।

धधकना—अ० [हिं० धधक] १ आग का लपटें छोड़ते तथा शब्द करते हुए जलना। दहकना। २ भड़कना।

धधकाना—स० [हिं० धधकना] ऐसी क्रिया करना जिसमे आग धधकने लगे। दहकाना।

संयो० क्रि०—देना।

धधाना†—अ० = धधकना।

स० = धधकाना।

धनंजय—वि० [स० धन√जि (जीतना)+खच्, मुम्] धन जीतने अर्थात् प्राप्त करनेवाला।
पुं० १. विष्णु। २ अग्नि। आग। ३. चित्रक या चीता नाम का वृक्ष। ४ पाँचो पाडवो में के अर्जुन का एक नाम। ५ अर्जुन वृक्ष। ६ एक नाग जो जलाशयों का अधिपति कहा गया है। ७ शरीर मे रहनेवाली पाँच वायुओ मे से एक, जिसकी गिनती उप-प्राणो मे होती है और जिससे जँभाई आती है। ८ एक गोत्र का नाम। ९ सोलहवें द्वापर के व्यास का नाम।

धनंतर—पु० [स० धन्वतरु = सोम का एक भेद] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ मोटी और फूल नीले होते हैं।
†पु० =धन्वतरि।

धन—पु० [स० √धन् (शब्द)+अच्] १ वह मूल्यवान् पदार्थ, जिससे जीवन-निर्वाह मे यथेष्ट सहायता मिलती हो और जिसे अर्जित या प्राप्त करने के लिए परिश्रम करना और पूँजी तथा समय लगाना पडता हो। जैसे—खेत, जमीन, मकान, रुपया-पैसा। २ यथेष्ट मात्रा या सख्या मे उक्त प्रकार की कोई चीज। उदा०—गो-धन, गज-धन बाजि-धन और रतन-धन खान। जब आवै सतोष-धन सब धन धूरि समान।—तुलसी। ३ लोक-व्यवहार मे मुख्य रूप से चाँदी, ताँबे, सोने आदि के सिक्के। रुपया-पैसा। जैसे—व्यापार मे धन लगाना।
क्रि० प्र०—कमाना।—भोगना।—लगाना।
४ प्राणो के समान परम प्रिय व्यक्ति। जैसे—भगवान ही हमारे जीवन-धन है। ५ जन्म, कुडली मे जन्म-लग्न से दूसरा स्थान, जिसे देखकर यह विचार किया जाता है कि अमुक व्यक्ति धनी होगा या निर्धन। ६ लेन-देन मे उधार दी हुई वह रकम, जिसमे अभी व्याज का सूद न जोडा गया हो। मूल। ७. गणित मे, जोडने या मिलाने का वह चिह्न, जो इस प्रकार लिखा जाता है— +। ८ व्यवहार मे, वह स्थिति, जिसमे किसी विशिष्ट गुण, तथ्य, तत्त्व या वस्तु की सत्ता वर्तमान होती है, अभाव नही होता। 'ऋण' का विपर्याय। जैसे—धन विद्युत्। ९ खनको की परिभाषा मे, खान से निकली और बिना साफ की हुई कच्ची धातु।
वि० १ लेखे आदि मे जो 'हाँ' के पक्ष का हो। २ हिसाब-किताब मे जो जोडा या बढ़ाया जाने को हो। ३ किसी के यहाँ से अमानत या उधार के रूप मे आया हुआ। जो हिसाब-किताब मे किसी के नाम से जमा हो। (क्रेडिट) ४. दे० 'सहिक'।
†वि० =धन्य। उदा०—धन धन भारत की छत्रानी।—भारतेदु।
स्त्री० [स० धन्या] १ पत्नी या वधू। २ सुदर या स्नेह-पात्र युवती या स्त्री।
†पु० हिं० 'धान' का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक शब्दो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—धन कटी, धन-कर, धन कुट्टी आदि-आदि।

धनई†—स्त्री० =धनुई (छोटा धनुष)।

धनक—पुं० [स०] १. धन पाने की इच्छा। २ लालच। लोभ। ३. राजा कृतवीर्य के पिता का नाम।
†स्त्री० [स० धनुष] स्त्रियों की एक प्रकार की ओढ़नी।
†पु० १ धनुष। २. इद्र धनुष।

धन-कटी—स्त्री० [हिं० धान+कटना] १ धान की कटाई या उसका समय। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।

धन-कर—पु० [हि० धान+कर (प्रत्य०)] १ वह कडी मिट्टी, जिसमे धान बोया जाता है और जिसमे बिना अच्छी वर्षा हुए हल नही चल सकता। २. वह खेत जिसमे धान होता हो।

धन-कुट्टी—स्त्री० [हिं० धान+कूटना] १ धान कूटने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ धान कूटने का ऊखल या मूसल। ३. खूब अच्छी तरह मारने-पीटने की क्रिया या भाव। (परिहास और व्यग ४ लाल रग का एक तरह का फतिगा जो अपना धड इस प्रकार ऊपर नीचे हिलाता है, जिस प्रकार धान कूटने की ढेकली हिलती है।

धन-कुबेर—पु० [हिं० धन+कुबेर] बहुत बडा धनवान् और सम्पन्न व्यक्ति।

धन-केलि—पु० [ब० स०] कुबेर।

धन-कोटा—पुं० [देश०] हिमालय के कुछ भागो मे होनेवाला एक तरह का पौधा जो कागज बनाने के काम आता है। चमोई सतबखा। सतपुरा।

धनखर†—पु० [हिं० धान] धान बोने का खेत। धनऊँ।

धन-चिडी—स्त्री० [हिं० धान+चिडी] एक तरह की चिडिया।

धन-जन—पु० [स० धन+जन] १ वह व्यक्ति जिसके पास धन-दौलत हो। उदा०—करत रहत धन-जन के, चरन की गुलामी। —हरिश्चद्र। २ धन-सपत्ति और व्यक्ति। जैसे—इस आँधी पानी मे धन-जन का भी कुछ नाश हुआ है।

धन-तेरस—स्त्री० [स० धन=हिं० तेरस (त्रयोदशी)] कार्तिक कृष्ण त्रयोदशी। इस दिन धन की प्राप्ति के लिए लक्ष्मी का पूजन करने का विधान है।

धन-दड—पु० [तृ० त०] अर्थ-दड। जुरमाना।

धनद—वि० [स० धन√दा (देना)+क] [स्त्री० धनदा] १ धन देनेवाला। २ उदार तथा दानी (पुरुष)।
पु० १ कुबेर। २ अग्नि। आग। ३ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ४ समुद्र-फल। हिज्जल। ५ धनपति नामक वायु। ६ हिमालय मे उत्तरा खड के अन्तर्गत एक प्राचीन तीर्थ।

धनद-तीर्थ—[स० कर्म० स०] कुबेर तीर्थ जो ब्रज मडल मे है।

धनदा—स्त्री० [स० धनद+टाप्] आश्विन कृष्ण एकादशी।
स्त्री० स० 'धनद' का स्त्री०।

धनदाक्षी—स्त्री० [स० धनद-अक्षि ब० स०, अच्+ङीप्] लता करज।

धनवायन—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसके काढे से ऊनी कपडो पर माडी लगाते हैं।

धन-देव—पु० [ष० त०] धन के स्वामी, कुबेर।

धन-धानी—स्त्री० [ष० त०] कोष। खजाना।

धन-धान्य—पु० [द्व० स०] धन और खाद्य पदार्थ।

धन-धाम—पु० [द्व० स०] घर-बार और धन-सपत्ति।

धन-धारी (रिन्)—पु० [स० धन√धृ (धारण)+णिनि] १ कुबेर। २ धनवान।

धननंद—पु० [स०] सिंहल के महावश (ग्रथ) के अनुसार मगध के नंद वश का अतिम राजा, जिसका नाश चाणक्य ने किया था।

धन-नाथ—पु० [ष० त०] कुबेर।

धन-नायकी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

धन-पक्ष—पु० [ष० त०] १ बही-खाते आदि मे का वह पक्ष या विभाग

जिसमे दूसरो से मिलनेवाले रुपये या अन्य चीजें और उनका मूल्य लिखा जाता है। जमावाला पक्ष। (क्रेडिट साइड) २. वह पक्ष जिसमे पूँजी, लाभ या उपयोगी बातो का विचार या उल्लेख हो।
धन-पति—पु० [ष० त०] १ कुबेर। २ धनवान् व्यक्ति। ३ ३ पुराणानुसार एक वायु का नाम।
धन-पत्र—पु० [ष० त०] १ शासन या सरकार द्वारा प्रचलित किया हुआ वह मुद्रित कागज का टुकडा जो सिक्को के सदृश और उनके स्थान पर लेन-देन मे काम आता है। (करेन्सी नोट)
† २ बही-खाता।
धन-पात्र—पु० [ष० त०] धनवान्। धनी।
धनपाल—वि० [स० धन√पाल् (रक्षा)+क] धन का रक्षक।
पु० कुबेर।
धन-पालिनी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
धन-प्रयोग—पु० [ष० त०] व्यापार मे धन लगाने या ब्याज पर उधार देने का कार्य। पूजी का उपयोग।
धन-प्रिया—स्त्री० [उपमि० स०] एक प्रकार का छोटा जामुन।
धन-बहेड़ा—पु० दे० 'अमलतास' (वृक्ष)।
धन-मद—पु० [ष० त०] वह अभिमान या मद। जो पास मे यथेष्ट धन होने पर होता है।
धनमान—वि० धनवान्।
धनमाला—पु० [स०] अस्त्रो का एक प्रकार का सहार।
धन-राशि—स्त्री० [ष० त०] १ धन का ढेर। २ बहुत अधिक धन। ३ लेन-देन आदि विशेष कार्यों के लिए देय या प्राप्य नियत धन। रकम। (एमाउन्ट, सम)
धनवंत—वि० [स्त्री० धनवती] = धनवान्।
धनवती—स्त्री० [स० धनवत्+ङीप्] धनिष्ठा नक्षत्र।
वि० स० 'धनवान्' का स्त्री०।
धनवा—पु० [हि० धान] एक प्रकार की घास।
†पु० धन्वा (धनुष)।
धनवान् (वत्)—वि० [स० धन+मतुप्] [स्त्री० धनवती] जिसके पास अत्यधिक या बहुत धन हो। धनी। दौलत-मद।
धन-विधेयक—पु० [ष० त०] वह अर्थ-सबधी विधेयक, जो विधान सभा के समक्ष विचारार्थ रखा जाता है, और जिसमे किसी माँग की स्वीकृति के लिए अथवा कोई नया कर लगाने का प्रस्ताव होता है। (मनी बिल)
धनशाली (लिन्)—वि० [स० धन√शाल् (शोभित होना)+णिनि] [स्त्री० धनशालिनी] धनवान्। धनी।
धन-सपत्ति—स्त्री० [द्व० स०] सभी प्रकार की वे वस्तुएँ जिनका कुछ अधिक मूल्य हो तथा जिनका क्रय-विक्रय हो सकता हो। रुपये-पैसे, जमीन-जायदाद आदि मूल्यवान वस्तुएँ। २ किसी व्यक्ति, समाज, राष्ट्र आदि के अधिकार मे रहनेवाली उक्त वस्तुएँ।
धनसार—पु० [हि० धान+सार (शाला)] अनाज आदि रखने की ऐसी कोठरी जिसमे केवल दो खिडकियाँ क्रमात् अनाज रखने और निकालने के लिए होती है।
धनसिरी—स्त्री० [स० धन+श्री] एक प्रकार की चिडिया।
धनसू—पु० [स०] धनेस नाम की चिडिया।
धनस्यक—वि० [स० धन+क्यच्, सुक्,+ण्वुल्—अक] जिसे धन की लालसा हो।
पु० गोखरू (वनस्पत्ति)।
धन-स्वामी (मिन्)—पु० [ष० त०] कुबेर।
धनहर—वि० [स० धन√हृ(हरण)+ट] धन का अपहरण करनेवाला।
पु० १ चोर। २ डाकू। लुटेरा। ३ चोर नामक गधद्रव्य।
†पु० = धनखर।
धन-हीन—वि० [तृ० त०] जिसके पास धन न हो। निर्धन। गरीब।
धनांक—पु० [स० धन-अक ष० त०] लेन-देन आदि के लिए किसी निश्चित धन राशि का सूचक शब्द। धन-राशि। रकम। (एमाउन्ट)।
धना—स्त्री० [स० धनिका, हि० धनिया = युवती] १. युवती। २ वधू।
स्त्री० [?] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।
†पु० = धनिया।
धनाग्र—पु० [धन-अग्र ष० त०] विद्युत्-शास्त्र मे धन दण्ड का वह भाग जिसमे विद्युत् निकलकर ऋणदड मे पहुँचती है। (एनोड)
धनाढ्य—वि० [धन-आढय तृ० त०] बहुत बडा धनी। धनवान्।
धनाणु—पु० [स० धन-अणु ष० त० ?] वह अणु जो सदा धनात्मक विद्युत् से आविष्ट रहता है। (पाजिटिव)
धनात्मक—वि० [धन-आत्मन् ब० स०, कप] १ धन-पक्ष सबधी। २ धनवाले तत्त्व से युक्त। विशेष दे० 'सहिक'।
धनादेश—पु० [धन-आदेश ष० त०] १ किसी को कुछ धन देने का आदेश या आज्ञा। २ डाकखाने के द्वारा किसी अन्य स्थान पर रहनेवाले व्यक्ति को भेजा जानेवाला धन। (मनी आर्डर) ३ किसी बैंक (अधिकोष) को, जिसमे किसी व्यक्ति का हिसाब हो, दिया गया इस आशय का लिखित आदेश कि वाहक अथवा अमुक निर्दिष्ट व्यक्ति को लिखित रकम मेरे खाते मे दे दे। (पे आर्डर)
धनाध्यक्ष—पु० [धन-अध्यक्ष ष०, त०] १ कोषाध्यक्ष। खजानची। २ कुबेर।
धनाना—अ० [स० धेनु = नवसूतिका गाय] गाड आदि के सयोग से गाय, भैस आदि का गर्भवती होना।
स० गाय, भैस आदि का गर्भाधान कराना।
धनापहार—पु० [धन-अपहार, ष० त०] १ अर्थदड। जुरमाना। २ लूट।
धनार्चित—वि० [धन-अर्चित तृ० त०] धन आदि की भेट देकर सम्मानित या सतुष्ट किया हुआ।
धनार्थी—वि० [स० धन√अर्थ (चाहना)+णिनि] धन का इच्छुक।
धनाश्री—स्त्री० [स०] सगीत मे आडव-सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो हनुमत् के मत से श्रीराग की तीसरी पत्नी है। इसका प्रयोग प्राय वीर रस मे होता है।
धनासी*—स्त्री० [स० धन्या+श्री] १ पत्नी। २ प्रेमिका।
धनि—स्त्री० [स० धनी] १ युवती स्त्री। २ पत्नी। वधू।
वि० = धन्य। उदा०—धनि धनि भारत की छत्रानी।—भारतेन्दु।
धनिक—वि० [स० धन+ठन्—इक] [स्त्री० धनिका] जिसके पास धन हो। धनी।
पु० १ धनवान् व्यक्ति। अमीर। २ स्त्री का पति। स्वामी।

३ वह जो लोगों को धन उधार देता हो। महाजन। ४ [धनिन् √कै +क] धनिया।

धनिक-तंत्र—पु० [ष० त०] [वि० धनिक तंत्री] आधुनिक राजनीति में, ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमें शासन का वास्तविक सूत्र प्रत्यक्ष अथवा अप्रत्यक्ष रूप से देश के बड़े-बड़े धनवानों के ही हाथ में रहता हो। (प्लुटो कैसी)

विशेष—(क) ऐसी प्रणाली राजसत्ताक देशों में भी हो सकती है और प्रजासत्ताक देशों में भी। (ख) इंगलैंड और अमेरिका की आधुनिक शासन-प्रणालियाँ मुख्यतः धनिक-तंत्री ही मानी जाती हैं।

धनिका—स्त्री० [सं० धनिक+टाप्] १ धनी स्त्री। २ युवती और सुंदर स्त्री। ३ पत्नी। वधू। ४ प्रियंगु वृक्ष।

धनिता—स्त्री० [सं० धनिन्+तल्—टाप्] धन-सम्पन्न होने की अवस्था या भाव।

धनियाँ †—पु०, स्त्री० = धनिया।

धनिया—पु० [सं० धन्याक, धनिका] एक प्रकार का छोटा पौधा, जिसके सुगंधित बीज मसाले के काम में आते हैं, और इसकी सुगंधित पत्तियों की चटनी बनाई जाती है। २ उक्त पौधे के बीज, जो मसाले के रूप में बाजार में मिलते हैं। वैद्यक में इसे त्रिदोषनाशक, तथा खाँसी और कृमिघ्न माना गया है।

मुहा०—**(किसी को) धनिये की खोपड़ी का पानी पिलाना** = बहुत तंग या परेशान करना। (स्त्रियाँ)

†स्त्री० [सं० धन्या] १ पत्नी। वधू। २ सुंदर और स्नेह पात्र स्त्री। प्रेमिका। उदा०—कोठवा पर से झाँकैली बारी से धनियाँ, से नासि अइलैना। (पूरबी लोकगीत)

धनिया-माल—स्त्री० [हिं० धनी+माला] गले में पहनने का एक तरह का गहना।

धनिष्ट—वि० [सं० धनिन्+इष्ठन्, इन—लोप] [स्त्री० धनिष्ठा] धनी। धनाढ्य।

धनिष्ठा—स्त्री० [सं० धनिष्ठ+टाप्] सत्ताईस नक्षत्रों में से तेइसवाँ नक्षत्र जो ९ ऊर्ध्वमुख नक्षत्रों में से एक है और जिसमें पाँच तारे हैं।

धनी (निन्)—पु० [सं० धन+इनि] १ जिसके पास धन हो। धनवान्। मालदार। दौलतमंद। २ मालिक। स्वामी। ३ वह जो किसी चीज का मालिक हो अथवा उसे अपनी समझकर उसकी देख-रेख करता हो।

पद—**धनी-धोरी** = मालिक और रक्षक। जैसे—जान पड़ता है कि इस मकान का कोई धनी-धोरी ही नहीं है। **धनी सिर जोखिम** दे० 'जोखिम' के अंतर्गत 'जोखिम धनी सिर'। **बात का धनी** = अपनी कही हुई बात या दिए हुए वचन पर दृढ़ रहनेवाला।

५ स्त्री का पति। शौहर। ६ वह जो किसी प्रकार के कौशल, गुण आदि में बहुत श्रेष्ठ हो। जैसे—तलवार का धनी = तलवार चलाने में बहुत कुशल। बात का धनी = अपनी बात या वचन का पक्का और पूरी तरह से पालन करनेवाला।

स्त्री० [सं० धन+अच्—ङीष्] १ पत्नी। वधू। २ स्नेह-पात्री युवती। प्रेमिका।

धनी-मानी—वि० [हिं०] जिसके पास यथेष्ट धन भी हो और जिसका अच्छा मान या प्रतिष्ठा भी हो।

धनीयक—पु० [सं० धन+छ—ईय+कन्] धनिया।

धनु.पट—पु० [सं० धनुस्-पट ब० स०] पयाल वृक्ष। चिरौंजी का पेड़।

धनुःशाखा—पु० [सं० धनुस्-शाखा ब० स०] पयाल वृक्ष।

धनुःश्रेणी—स्त्री० [सं० धनुस्-श्रेणी, ष० त०] १ मूर्वा। मुर्रा। २ महेंद्र-वारुणी।

धनु—पु० [सं० √धन (शब्द)+उ] १ धनुष। चाप। कमान। २. चार हाथ लंबी एक पुरानी नाप। ३ किसी गोलाकार क्षेत्र का आधे से कम भाग जो धनुष के आकार का होता है। ४ ज्योतिष की बारह राशियों में से नवीं राशि, जिसके अंतर्गत मूल और पूर्वाषाढ़ नक्षत्र तथा उत्तराषाढ़ा का एक चरण आता है। इसे तौक्षिक भी कहते हैं। ५ फलित ज्योतिष में एक लग्न। ६ हठ योग में, एक प्रकार का आसन। ७ पयाल वृक्ष। ८ नदी का रेतीला किनारा।

धनुआ—पु० [सं० धन्वन्, धन्वा] [स्त्री० अल्पा० धनुई] १ धनुष। कमान। २ धनुष के आकार का वह उपकरण जिससे धुनिए रूई धुनते हैं। धुनकी। धन्वा।

धनुई†—स्त्री० [सं० धनु+ई(प्रत्य०)] १ छोटा धनुष। २ धुनकी।

धनुक†—पु० [सं० धनुष] १ कमान। धनुष। उदा०—भौहें धनुक साँधि सर फेरी।—जायसी। २ इंद्रधनुष।

धनुकना†—स० धुनकना।

धनुक-बाई—स्त्री० [हिं० धनुक+बाई] लकवे की तरह का एक वायु रोग जिसमें जबड़े आपस में सट जाते हैं और मुँह नहीं खुलता।

धनु-पानि*—पु० [सं० धनुष+पाणि = हाथ] १ वह जिसके हाथ में धनुष हो। २ धनुर्द्धर। ३ रामचन्द्र।

धनुर्गुण—पु० [सं० धनुष्-गुण, ष० त०] धनु की डोरी। पतंचिका। चिल्ला।

धनुर्गुणा—स्त्री० [सं० धनुस्-गुण ब० स०, टाप्] मूर्वा। मरोड़-फली।

धनुर्ग्रह—पु० [सं० धनुस्√ग्रह् (पकड़ना)+अच्] १ धनुष चलानेवाला योद्धा। २ धनुर्विद्या। ३ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

धनुर्द्धर—पु० [सं० धनुस्√धृ (धारण)+अच्] १ धनुष धारण करनेवाला और चलानेवाला व्यक्ति। कमनैत। तीरंदाज। २ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम

धनुर्द्धारी (रिन्)—वि० [सं० धनुस्√धृ+णिनि] [स्त्री० धनुर्द्धारिणी] धनुष धारण करनेवाला।

पु० [सं०] धनुष रखने और चलानेवाले योद्धा।

धनुर्द्रुम—पु० [सं० धनुस्-द्रुम, ष० त०] बाँस।

धनुर्भृत्—पु० [सं० धनुस्√भृ (धारण)+क्विप्] धनुष धारण करनेवाला योद्धा।

धनुर्मख—पु० [सं० धनुस्-मख, मध्य० स०] धनुर्यज्ञ।

धनुर्माला—स्त्री० [सं० धनुस्-माला, ष० त०] मूर्वा। मरोड़फली।

धनुर्यज्ञ—पु० [सं० धनुस्-यज्ञ, तृ० त०] १ प्राचीन भारत में एक प्रकार का उत्सव जिसमें धनुष का पूजन तथा उसे चलाने की प्रतियोगिता होती थी। २ उक्त प्रकार का वह समरोह जो जनक ने सीता के स्वयंवर के समय किया था।

धनुर्यासा—पु० [सं० धनुस्-यास, उपमि० स०] जवासा।

धनुर्लता—स्त्री० [सं० धनुस्-लता, उपमि० स०] सोमलता।

धनुर्वक्त्र—पु० [सं० धनुष्-वक्त्र, ब० स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

धनुर्वात—पु० [सं०] १ एक प्रकार का वायु रोग, जिसमें शरीर धनुष की तरह झुककर टेढ़ा हो जाता है। २ धनुक-बाई नामक रोग। ३ शरीर के घाव या व्रण के विषाक्त होने पर होनेवाला उक्त रोग। धनुष टकार। (टिटैनस)

धनुर्विद्या—स्त्री० [सं० धनुस्-विद्या ष० त०] धनुष चलाने की विद्या। तीरदाजी।

धनुर्वृक्ष—पु० [सं० धनुष-वृक्ष ष० त०] १ धामिन का पेड। २ बाँस। ३ भिलावाँ। ४ पीपल का वृक्ष।

धनुर्वेद—पु० [सं० धनुष्-वेद ष० त०] यजुर्वेद का उपवेद जिसमें विशेष रूप से धनुष चलाने की विद्या का निरूपण है।

धनुष (स्)—पु० [सं०√धन् (शब्द)+उस्] १ अर्ध गोलाकार एक तरह का उपकरण जो बाँस या लोहे के लचीले डडे को झुकाकर और उनके दोनों छोरों के बीच डोरी या तात बाँधकर बनाया जाता है। और जिस पर तान कर तीर दूर फेका जाता है। कमान। २ दूरी की चार हाथ की एक पुरानी नाप। ३ रहस्य सप्रदाय मे, परमात्मा का ध्यान। ४ हठ योग का एक आसन। ५ चिरौंजी का पेड। पयाल।

धनुष-टकार—पु० [सं०] १ धनुष की प्रत्यचा के हिलने से होनेवाला शब्द। २ एक घातक रोग जिसमें व्रण आदि के विषाक्त होने पर शरीर अकड कर धनुष के समान टेढ़ा हो जाता है। धनुर्वात।(टिटैनस)

धनुष-यज्ञ—पु० = धनुयज्ञ।

धनुष्कोटि—पु० [सं०] रामेश्वर से दक्षिण पूर्व का एक स्थान, जहाँ समुद्र में स्नान करने का माहात्म्य है।

धनुष्मान (ष्मत्)—पु० [सं० धनुष+मतप्] उत्तर दिशा का एक पर्वत। (बृहत्सहिता)

धनुस—पु० = धनुष।

धनुस्स्वन—पु० [सं०] धनुष की टकार।

धनुहाई—स्त्री० [हि० धनु+हाई] १ धनुष से तीर चलाने की कला या विद्या। २ तीर-धनुष से होनेवाला युद्ध या लड़ाई।

धनुहिया†—स्त्री० धनुही।

धनुही†—स्त्री० [हि० धनु+ही (प्रत्य०)] लडकों के खेलने की छोटी कमान।

धनू—स्त्री० [सं०√धन् (शब्द)+उ] धनुष।
पु० अन्न का भडार।

धनूयक—पु० [सं०] धनिया।

धनेश—पु० [सं० धन-ईश, ष० त०] १ धन का स्वामी। २ कुबेर। ३ विष्णु। ४ जन्म-कुडली में लग्न से दूसरा स्थान जिसके अनुसार व्यक्ति की धन-सपन्नता का विचार होता है।

धनेश्वर—पु० [सं० धन-ईश्वर, ष० त०] १ धन का स्वामी। २ कुबेर। ३ विष्णु।

धनेस—पु० [देश०] लबी गरदन तथा लबी चोंचवाली एक तरह की बगले के आकार की चिड़िया।

धनैषणा—स्त्री० [सं० धन-एषणा ष० त०] धन पाने की इच्छा।

धनैषी (षिन्)—वि० [सं० धन√इष् (चाहना)+णिनि] धन पाने का इच्छुक। धन चाहनेवाला।

धनोष्मा (मन्)—स्त्री० [सं० धन-ऊष्मन्, ष० त०] धन की गरमी या घमड।

धन्न*—वि० = धन्य।

धन्ना†—पु० = धरना।
पु० १ दे० 'धन्ना भगत'। २ दे० 'धन्ना सेठ'।

धन्नाभगत—पु० [?] राजस्थान के एक प्रसिद्ध जाट भक्त जो ई० १५वीं शताब्दी में हुए थे।

धन्नासिका—स्त्री० [सं०] एक रागिनी जिसका ग्रह षडज है और जिसमें ऋ वर्जित है।

धन्ना सेठ—पु० [हि० धन+सेठ] बहुत बडा धनवान् व्यक्ति। (परिहास और व्यग्य

पद—धन्ना सेठ का नाती अमीर घराने में पैदा व्यक्ति। (परिहास और व्यग्य)

धन्नि †—स्त्री० = धन्या।

धन्नी—स्त्री० [सं० (गो) धन] १ गायो, बैलो की एक जाति जो पजाब में होती है। २ घोडों की एक जाति।
† पु० [?] वह आदमी जो किसी काम के लिए बेगार में पकडा गया हो।

धन्यमन्य—वि० [सं० धन्य√मन् (मानना)+खश्, मुम्] अपने को धन्य या भाग्यशाली माननेवाला।

धन्य—वि० [सं० धन+यत्] [स्त्री० धन्या] [भाव० धन्यता] १ जिसमें कोई ऐसी बहुत बडी योग्यता या विशेषता हो, जिसके कारण सब लोग उसका अभिनदन और प्रशसा करें। अच्छे काम करनेवाला और पुण्यवान्। सुकृति। २ कृतार्थ। जैसे—आपके इस कुटिया में पधारने से हम धन्य हुए। ३ धन देनेवाला। धनद।
पु० १ विष्णु। २ नास्तिक। ३ धनिया। ४ अश्वकर्ण वृक्ष।

धन्यता—स्त्री० [सं० धन्य+तल्—टाप्] धन्य होने की अवस्था या भाव।

धन्य-वाद—पु० [सं० ष० त०] १ किसी का धन्य कहना या मानना। प्रशसा। वाह-वाही। साधुवाद। २ एक प्रकार का औपचारिक या हार्दिक कथन जिसमें किसी के प्रति उसके द्वारा किए हुए अनुग्रह, कृपा आदि के लिए कृतज्ञता का भाव निहित होता है। जैसे—(क) आपका पत्र मिला, एतदर्थ धन्यवाद। (ख) इस उपहार के लिए धन्यवाद।

धन्या—स्त्री० [सं० धन्य+टाप्] १ वन-देवी। २ उप-माता। विमाता। ३ ध्रुव की पत्नी जो मनु की कन्या थी। ४ धनिया। ५ छोटा आँवला।
वि० स्त्री० 'धन्य' का स्त्री रूप।

धन्याक—पु० [सं०√धन्+आकन्, नि० सिद्धि] धनिया।

धन्वग—पु० [सं० धनु-अग, ब० स०] धामिन का पेड।

धन्वतर—पु० [सं०] चार हाथ की एक प्राचीन माप।

धन्वतरि—पु० [सं० धनु-अत, ष० त०, धन्वत√ऋ (गति)+इ] १. देवताओं के प्रधान चिकित्सक जिनके सबध में प्रसिद्ध है कि वे समुद्र मथन के समय हाथ में अमृत का पात्र लिये हुए उसमें से प्रकट हुए थे। २ विक्रमादित्य के नवरत्नों में से एक।

धन्व—पु० [सं०√धन् (शब्द)+वन्] १ धनुष। २ मरु-प्रदेश। रेगिस्तान।

धन्वज—वि० [सं० √जन् (उत्पत्ति)+ड] रेगिस्तान में उपजने या जनमनेवाला।

धन्व-दुर्ग—पु० [सं० मध्य० स०] मरुभूमि में स्थित दुर्ग।

धन्वन—पु० [सं०√धन्व्+ल्यु—अन] धामिन का पेड़।

धन्व-यवास—पु० [सं० मध्य० स०] दुरालभा। जवासा।

धन्वा (न्वन्)—पु० [सं०√धन्व् (गति)+कनिन्] १ धनुष। कमान। २ मरु भूमि। रेगिस्तान। ३ सूखी जमीन (स्थल)। ४ आकाश।

धन्वाकार—वि० [सं० धन्वन्-आकार, ब० स०] कमान या धनुष के आकार का। अर्द्ध चंद्राकार।

धन्वायी (यिन्)—वि० [सं० धन्वन्√इ (गति)+णिनि] धनुर्द्धर। पु० रुद्र का एक नाम।

धन्विन्—पु० [सं०√धन्व्+इनन्] शूकर। सूअर।

धन्वी (न्विन्)—वि० [सं० धनु+इनि] १ धनुष धारण करनेवाला। २ चतुर। होशियार।

पु० १ पाँचो पाडवों में से अर्जुन का एक नाम। २ अर्जुन वृक्ष। ३ बकुल। मौलसिरी। ४ जवासा। ५ विष्णु। ६ शिव। तामस मनु का एक पुत्र।

धप—स्त्री० [अनु०] १ भारी चीज के मुलायम चीज पर गिरने से होनेवाला शब्द। २ सिर पर मारा जानेवाला थप्पड़। धौल।

क्रि० प्र०—जड़ना।—देना।—मारना।—लगाना।

धपना—अ० [सं० धावन, या हि० धाप] १ जल्दी-जल्दी या तेजी से चलना। २ झपटना।

स० [हि० धप+ना (प्रत्य०)] १ सिर पर थप्पड़ मारना। २ मारना। पीटना।

धपाड़†—स्त्री० [हि० धपना] धपने की क्रिया या भाव। जैसे—दौड़-धपाड़।

धपाना—स० [हि० धपना] १ जल्दी जल्दी या तेजी से चलाना। २ झपटने में प्रवृत्त करना। झपटाना।

धप्पड़†—पु० = थप्पड़।

धप्पा—पु० [अनु० धप] १ हाथ से किसी का किया जानेवाला हलका आघात। हलका थप्पड़। (पश्चिम) २ ऐसा आघात जिसमें आर्थिक हानि हो।

क्रि० प्र०—बैठना।—लगना।

धप्पाड़†—स्त्री० = धपाड़।

धबकना*—अ० [अनु०] चमकना। उदा०—धडि धडि धबाकि धार धाख जलू।—प्रिथीराज।

स० (थप्पड़ आदि) जड़ना। मारना। जैसे—पीठ पर मुक्का या मुँह पर थप्पड़ धबकना।

धब-धब—स्त्री० [अनु०] १ भारी और मुलायम चीज के गिरने का शब्द। २. भारी और मोटे आदमी के चलने के समय जमीन पर पैर पड़ने का शब्द।

धबला—पु० [देश०] १ कमर के नीचे के अंग ढकने का कोई ढीला-ढाला पहनावा। २. स्त्रियों का घाघरा। लहँगा।

धब्बा—पु० [?] १ किसी तल पर लगा हुआ किसी रंग का ऐसा चिह्न, जिससे उस तल की शोभा बहुत कुछ घटे या नष्ट हो जाय। जैसे—कपड़े पर लगा हुआ स्याही का धब्बा, दीवार पर लगा हुआ तेल का धब्बा। २ प्राय रँगे हुए कपड़े के सबध में, ऐसा चिह्न जो कहीं अधिक और कहीं कम रंग चढने के कारण बना हो। ३ कलक। दाग।

धमकना*—स० [हि० धौंकना] १ न रहने देना। नष्ट करना। उदा०—काटित पातक व्यूह विकट जम-जूह धमकनि।—रत्नाकर। २ दे० 'धौंकना'।

धम—स्त्री० [अनु०] भारी चीज के गिरने का शब्द। धमाका। जैसे—धम से गिरना।

पद—धमसे—(क) धम शब्द करते हुए। धड़ाम से। (ख) धमाधम। (ग) निरंतर। लगातार।

पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ यम। ३ चद्रमा। ४ श्रीकृष्ण का एक नाम।

धमक—स्त्री० [हि० धमकना] १ धमकने की क्रिया या भाव। २ किसी भारी चीज के जमीन पर गिरने के कारण होनेवाला वह धम शब्द जिसके साथ जमीन में हलका कंपन भी हो। जैसे—फरश पर किसी चीज के गिरने या किसी के चलने से होनेवाली धमक। ३ वह कंप जो भारी चीज के गिरने, चलने आदि से आस-पास के स्तर पर होता है। जैसे—रेल के चलने से आस-पास की जमीन में होनेवाली धमक। ४ आघात। प्रहार। ५ रोग, विकार आदि के कारण शरीर के किसी अंग में होनेवाला हलका कष्ट-दायक कंप या सवेदन। जैसे—बुखार के कारण सिर में (या सारे शरीर में) होनेवाली धमक। ६ रास्ते में पड़नेवाला गड्ढा। (पालकी ढोने वाले कहारों की परिभाषा में)

वि० [सं०] [स्त्री० धमिका] धौंकनेवाला।

पु० लोहार।

धमकना—अ० [हि० धमक] १ गिरने आदि के कारण धम शब्द होना। २ उक्त प्रकार के शब्द के कारण कुछ-कुछ काँपना या हिलना। ३ सहसा भारी बोझ पड़ने से हिलते हुए दबना। उदा०—चरण भार से सुदृढ़ धरा कँप गई धमक कर।—मैथिली शरण। ४ यौगिक क्रिया के रूप में, आना और जाना क्रियाओं के साथ लगने पर वेगपूर्वक इस प्रकार गमन करना कि लोग कुछ डर या सहम जायँ। जैसे—इतने में पुलिसवाले वहाँ आ धमके। ५ रह-रहकर हलका आघात और उसके कुछ साथ कंप-सा होता हुआ जान पड़ना। जैसे—बुखार में सिर धमकना।

स० इस रूप में आघात करना या दंड देना कि वह कुछ अनुचित या उग्र-सा जान पड़े। जैसे—(क) उन्होंने बिना सोचे-समझे उसे एक मुक्का धमक दिया। (ख) अदालत ने उन्हें सौ रुपये जुरमाना धमक दिये।

†स०=धौंकना।

धमका—पु० [सं० धमा] उमस। गरमी। उदा०—धमका विषम ज्यौं न पात खरकत हैं। —सेनापति।

धमकाना—स० [हि० धमकी+आना (प्रत्य०)] यह कहना कि यदि तुम ऐसा काम करोगे (अथवा अमुक काम न करोगे) तो हम तुम्हे अमुक प्रकार का कष्ट या दंड देंगे।

धमकी—स्त्री० [हि०] वह बात जो किसी को धमकाते हुए कही जाय।

इस प्रकार का कथन कि यदि तुम आगे से ऐसा करोगे (अथवा अमुक काम न करोगे) तो हम तुम्हें अमुक प्रकार का कष्ट या दंड देंगे।

क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—(किसी को) धमकी में आना=किसी के धमकाने या धमकी देने पर उससे डरते हुए उसके अनुकूल आचरण या व्यवहार करना।

धमक्का†—पुं०=धमाका।

धम-गजर—पुं० [अनु० धम+सं० गर्जन] १. उत्पात। ऊधम। उपद्रव। २. ऐसी लड़ाई-झगड़ा, जिसमें मार-पीट भी हो।

धम-धम—पुं० [सं०] कार्तिकेय के गण जो पार्वती के क्रोध से उत्पन्न हुए थे। (हरिवंश)

क्रि० वि०=धमाधम।

धमधमाना—स०[अनु० धम] १. कूद-फाँद या चल-फिर कर धम-धम शब्द उत्पन्न करना। २. धम-धम शब्द करते हुए थप्पड़ मुक्के आदि लगाना। अ० धम-धम शब्द होना।

धम-धूसर—वि० [अनु० धम+सं० धूसर मटमैला, या गदला] बहुत भद्दा और मोटा। स्थूल और बेडौल।

धमन—पुं० [सं०√धम् (शब्द)+ल्युट्—अन] १. किसी चीज में हवा फूँककर भरना। २. भाथी से हवा करना। धौंकना। ३. उक्त काम के लिए बनी हुई पोली नली। ४. धौंकनी। ५. नरकट।

धमन-भट्टी—स्त्री० [सं० धमन+हिं० भट्ठी] धातुएँ आदि गलाने की एक विशेष प्रकार की भट्ठी, जिसमें आग सुलगाने के लिए हवा बहुत तेजी से पहुँचाई जाती है। (ब्लास्ट फर्नेस)

धमना†—स० [सं० धमन] १. धौंकना। २. नल आदि में भरकर हवा के जोर से कोई चीज अंदर पहुँचाना।

धमनि—स्त्री० [सं० धम्+अनि] १. प्रह्लाद के भाई ह्लाद की स्त्री जो वातापि और इल्वल की माता थी। २. वाक्-शक्ति। वाणी। ३. धमनी। नाड़ी।

धमनिका—स्त्री० [सं०] १. छोटी और पतली धमनी। (आर्टरी पोल) २. तुरही नाम का बाजा। (कौ०)

धमनी—स्त्री० [सं० धमनि+ङीष्] १. गरदन। गला। २. शरीर के अन्दर की उन नलियों या नसों का समूह जिनके द्वारा हृदय से निकलकर चलनेवाला रक्त सारे शरीर में पहुँचता या फैलता है। (आर्टरी)

विशेष—सुश्रुत में इनकी संख्या २४ बतलाई गई है और कहा गया है कि इनकी छोटी-छोटी हजारों शाखाएँ सारे शरीर में फैली हुई हैं। इन छोटी-छोटी शाखाओं को धमनिका कहते हैं।

३. गमन या यातायात का कोई मुख्य मार्ग या साधन। जैसे—नदियाँ अथवा रेलें और सड़कें हमारे देश की धमनियाँ हैं।

धमसा†—पुं०=धौंसा।

धमाका—पुं० [अनु०] १. भारी वस्तु के गिरने से होनेवाला धम शब्द। वेगपूर्वक नीचे कूदने या गिरने का शब्द। २. बहुत जोर से होनेवाला 'धम' का सा शब्द। जैसे—बंदूक छूटने का धमाका। ३. धक्का। ४. आघात। प्रहार। ५. पथर कला बंदूक। ६. वह तोप जो हाथी पर लादकर चलती थी।

धमा-चौकड़ी—स्त्री० [अनु० धम+हिं० चौकड़ी] १. ऐसी उछल-कूद, उपद्रव या ऊधम जिसमें रह-रहकर धम-धम शब्द भी होता हो। २. ऐसी मार-पीट जिसमें उठा-पटक भी होती हो। ३. उपद्रव। ऊधम।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

धमा-धम—क्रि० वि० [अनु० धम] १. धम-धम शब्द करते हुए। (क) लड़के धमाधम नीचे कूद पड़े। (ख) उन पर धमाधम थप्पड़ और मुक्के पड़ने लगे। २. लगातार। निरंतर।

स्त्री० १. लगातार होनेवाला धमधम शब्द। लगातार गिरने, पड़ने आदि की आवाज। २. ऐसा आघात, प्रहार या मार-पीट जिसमें धम-धम शब्द भी होता हो।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

धमार—स्त्री० [अनु०] १. उछल-कूद। धमा-चौकड़ी। २. उत्पात। उपद्रव। ३. नटों की उछलकूद, कलाबाजी आदि। ४. एक विशेष प्रकार के लोकगीत जो मुख्यतः फागुन में गाये जाते हैं। अब इनका प्रवेश शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भी हो गया है।

मुहा०—धमार खेलना आनंद-मंगल और क्रीड़-कौतुक करना।

५. उक्त गीत के साथ बजनेवाला ताल। ५. वह क्रिया, जिसमें कुछ लोग मंत्र-बल से दहकती हुई आग या जलते हुए कोयले पर चलते हैं।

धमारिया—पुं० [हिं० धमार] १. नट जो प्रायः उछल-कूद करते रहते हैं। २. उत्पाती या उपद्रवी व्यक्ति। ३. वह जो धमार गाने में निपुण हो। ४ वह जो मंत्र-बल आदि से जलती हुई आग या दहकते हुए अंगारों पर चलता हो।

धमारी—वि० [हिं० धमार]=धमारिया।

स्त्री० धमा-चौकड़ी।

धमाल†—स्त्री० =धमार।

धमाला†—पुं० [सं० धूम्रनेत्र] [स्त्री० अल्पा० धमाली] दीवार में बना हुआ वह छेद, जिसका ऊपरी मुँह छत में खुलता है और जिसमें से धुआँ निकलकर बाहर जाता है।

धमाली—स्त्री० [हिं० धमार] जोगीड़े की तरह के एक प्रकार के अश्लील गीत।

धमासा—पुं० [सं० यवासा] एक हाथ ऊँचा एक तरह का क्षुप, जिसमें तीक्ष्ण कंटक होते हैं। इसका जड़ ताम्रवर्ण होती है।

धमिका—स्त्री० [सं०] लोहार जाति की स्त्री। लोहारिन।

धमिल—पुं० [सं०] सिर के बालों का बँधा हुआ जूड़ा।

धमूका†—पुं० [अनु० धम] १. धमाका। २. घूँसा। मुक्का।

धमेख—स्त्री० [सं० धर्म चक्र] सारनाथ (काशी) के पास का वह स्तूप जो उस स्थान पर बनाया गया था, जहाँ बुद्धदेव ने अपना धर्मचक्र अर्थात् धर्मोपदेश आरंभ किया था।

धम्मन—पुं० [देश०] एक प्रकार की घास जिसे चरवा भी कहते हैं।

धम्माल—स्त्री० =धमार।

धम्मिल्ल—पुं० [सं०√धम् (शब्द)+क्विप्,√मिल् (मिलना)+क, पृषो० सिद्धि] सिर के बालों को लपेटकर बनाया जानेवाला जूड़ा।

धम्हा†—पुं० दे० 'धमन-भट्ठी'।

धयना—अ० =धाना (दौड़ना)।

धरता—वि० [हिं० धरना=पकड़ना] १. धरने या पकड़नेवाला। २. दे० 'धरता'।

धर—वि० [सं०√धृ (धारण)+अच्] १. धारण करने या अपने ऊपर

लेनेवाला। २ समस्त पदों के अंत में, उठाने या धारण करनेवाला। हाथ में पकड़ने या रखनेवाला। जैसे—गिरिधर, चक्रधर, महीधर।
पुं० १ कच्छप जो पृथ्वी को अपने ऊपर धारण किये हुए है। २ विष्णु। ३ श्रीकृष्ण। ४ पर्वत। पहाड़। ५ एक वसु का नाम। ६ व्यभिचारी। ७ कपास का डोडा। ८ तलवार।
स्त्री० [हिं० धरना] धरने अर्थात् पकड़ने की क्रिया या भाव।
पद—धर-पकड़। (देखें)
†स्त्री० [सं० धरा] पृथ्वी। उदा०—मानहुँ शेष अशेष धर धरनहार बरिबंड।—केशव।
पद—धर-अंबर=पृथ्वी से आकाश तक।
†पुं०=धड़।

धरक—पुं० [सं०] अनाज तौलने का काम करनेवाला।
†स्त्री०=धड़क।

धरकना*—अ०=धड़कना।

धरका†—पुं० धड़का।

धरकार—पुं० [?] एक जाति जो बाँसों आदि की टोकरियाँ बनाने का काम करती है।

धरण—पुं० [सं०√धृ+ल्युट्—अन] १ धारण करने की क्रिया या भाव। धारण। २ एक प्रकार की पुरानी तौल जो कहीं २४ रत्ती की, कहीं १६ माशे की और कहीं १० पल की कही गयी है। ३ जगत्। संसार। ४ सूर्य। ५ छाती। स्तन। ६ धान। ७ जलाशय का बाँध। ८ पुल। ९ एक नाग का नाम।
*स्त्री० धरणी (पृथ्वी)।

धरणि—स्त्री० [सं०√धृ+अनि]=धरणी।

धरणि-धर—पुं० [ष० त०] धरणीधर।

धरणी—स्त्री० [सं० धरणि+ङीष्] १ पृथ्वी। २ नस। नाड़ी। ३ सेमल का पेड़। शाल्मली। ४ शहतीर।

धरणी-कंद—पुं० [मयू० स०] एक प्रकार का कंद जिसे बनकंद भी कहते है।

धरणी-कीलक—पुं० [ष० त०] पर्वत। पहाड़।

धरणी-धर—वि० [ष० त०] पृथ्वी को धारण करनेवाला।
पुं० १ शेषनाग। २ कच्छप। कछुआ। ३ विष्णु। ४ शिव। ५ पर्वत। पहाड़।

धरणी-पुत्र—पुं० [ष० त०] १ मंगल ग्रह। २ नरकासुर।

धरणीपूर—पुं० [सं० धरणी√पूर (पूर्ति)+अण्] समुद्र।

धरणीभृत्—पुं० [सं० धरणी+भृ (धारण)+क्विप्] १ शेषनाग। २ विष्णु। ३. पर्वत। पहाड़। ४ राजा।

धरणीय—वि० [सं० धृ+अनीयर] १. धारण किये जाने के योग्य। २. जिसे पकड़कर सहारा ले सके।

धरणीश्वर—पुं० [सं० धरणी-ईश्वर, ष० त०] १. शिव। २ विष्णु। ३. राजा।

धरणी-सुत—पुं० [ष० त०] १. मंगल ग्रह। २. नरकासुर राक्षस।

धरणी-सुता—स्त्री० [ष० त०] सीता। जानकी।

धरता—वि० [हिं० धरना] [स्त्री० धरती] १. धारण करनेवाला। २ अपने ऊपर किसी कार्य का भार लेनेवाला।
पद—करता-धरता=सब-कुछ करने धरनेवाला।
पुं० १ वह जिसने किसी से कुछ धन उधार लिया हो। ऋणी। कर्जदार। २ वह बँधा हुआ अंश जो किसी को कोई रकम देने के समय धर्मार्थ अथवा किसी उद्देश्य से काट लिया जाता हो। कटौती।

धरति†—स्त्री० धरती (पृथ्वी)।

धरती—स्त्री० [सं० धरित्री] १ पृथ्वी। जमीन।
मुहा०—धरती बहाना—(क) खेत जोतना। (ख) हल जोतने की तरह का बहुत अधिक परिश्रम करना।
पद—धरती का फूल—(क) खुमी। छत्रक। (ख) मेढक। (ग) ऐसा व्यक्ति जो अभी हाल में अमीर हुआ हो।
२ जगत्। संसार।

धरधर—पुं० [सं० धराधर] पर्वत। उदा०—धरधर शृंग सघर सुपनि पयोधर।—प्रिथीराज।
†स्त्री० धड़-धड़।
†पुं०=धड़ाधड़।

धरधरा†—पुं० [अनु०] १ कलेजे की धड़कन। २ धड़का।

धरधराना—अ०, स० धड़धड़ाना।

धरन—स्त्री० [हिं० धरना] १ धरने की क्रिया, ढंग या भाव। पकड़। २ अपनी बात पर दृढ़तापूर्वक अड़े रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। हठ। जिद। टेक।
मुहा०—धरन धरना*—अपनी बात पर अड़े रहना। हठ या जिद न छोड़ना।
स्त्री० [सं० धरणी] १ आमने-सामने की दीवारों के सिरे पर रखा जानेवाला लकड़ी का वह मजबूत मोटा लट्ठा या छोटा शहतीर, जिसके सहारे पर ऊपर की छत टिकी रहती या पाटी जाती है। कड़ी। धरनी। २ स्त्रियों के गर्भाशय के ऊपरी भाग की वह नस, जो उसे इधर-उधर से रोके रखकर यथास्थान स्थित रखती है।
मुहा०—धरन खिसकना, टलना या सरकना—गर्भाशय की उक्त नस का अपने स्थान से कुछ इधर-उधर हो जाना, जिससे गर्भाशय के आस-पास बहुत पीड़ा होती है।
३ गर्भाशय।
†पुं०=धरना।
†स्त्री०=धरणी (पृथ्वी)।
†वि०=धरण (धारण करनेवाला)।

धरनहार†—वि० [हिं० धरना+हार (प्रत्य०)] धारण करनेवाला।
वि० [हिं० धरना=पकड़ना] धरने या पकड़नेवाला।

धरना—स० [सं० धारण] १ कोई चीज इस प्रकार दृढ़ता से पकड़ना या हाथ में लेना कि वह जल्दी छूट न सके अथवा इधर-उधर न हो सके। पकड़ना। थामना।
संयो० क्रि०—लेना।
२ ग्रहण या धारण करना। ३ अधिकार या रक्षा में लेना।
मुहा०—धर दबाना—(क) पकड़कर वश में कर लेना। आक्रांत करना। जैसे—बिल्ली ने कबूतर को धर दबाया। (ख) लाक्षणिक रूप में, वेगपूर्वक कोई ऐसी बात कहना जिससे विपक्षी दब जाय या चुप

हो जाय। **धर दबोचना**=धर पकड़ना।

पद--धर-पकड़कर किसी की इच्छा न होते हुए भी उसके प्रति कुछ बल-प्रयोग करते हुए। जैसे—धर-पकड़कर मुझे भी लोग वहाँ ले ही गये।

४ किसी स्थान पर किसी चीज को रखना। जैसे—संदूक में कपड़े धरना।

सयो० क्रि० —देना।—लेना।

मुहा०—(किसी चीज या बात का) धरा रह जाना=इस रूप में व्यर्थ पड़ा रहना कि समय पर काम न आ सके। जैसे—उनके सामने जाते ही आपकी सारी चालाकी (या बहादुरी) धरी रह जायगी।

पद—धरा-ढका समय पर काम करने के लिए बचाकर रखा हुआ। जैसे—ये सब कपड़े यों ही धरे ढके रहने दो, समय पर काम आवेंगे। ५. किसी के अधिकार में देना या किसी के पास रखना। जैसे—ये पुस्तकें किसी मित्र के पास धर दो। ६ निश्चित या स्थिर करना। जैसे—किसी काम के लिए कोई दिन धरना। ७ धारण करना। जैसे—बहुरूपिए तरह-तरह के रूप धरते है। ८ पत्नी (या पति) के रूप में किसी को अपने यहाँ रखना। उदा०—ब्याही लाख, धरी दस कुबरी, अतहि कान्ह हमारो। —सूर। ९ कोई चीज गिरवी या रहन रखना। बंधक रखना। जैसे—यह अँगूठी धरकर रुपये ले आया है। १० फैलनेवाली वस्तु का किसी दूसरी वस्तु में लगना या उस पर प्रभाव डालना। जैसे—आग धरना।

पु० अपनी प्रार्थना या बात मनवाने, अपनी माँग पूरी करने या किसी का कोई अनुचित काम करने से रोकने के लिए उसके दरवाजे पर, पास या सामने तब तक अड़कर बैठे रहना, जब तक वह प्रार्थना या माँग पूरी न हो जाय अथवा वह अनुचित काम बंद न हो जाय। (पिकेटिंग)

क्रि० प्र०—देना।

धरनि*—स्त्री० [हि० धरना] जिद। टेक। हठ।

*स्त्री०=धरणी।

धरनी†—स्त्री० [हि० धरना या स० धारण] किसी बात पर दृढ़तापूर्वक अड़े रहने की क्रिया या भाव। जिद। टेक। हठ।

क्रि० प्र०—धरना।

स्त्री०=धरणी (पृथ्वी)।

धरनैत†—पु० [हि० धरना+एत (प्रत्य०)] किसी काम या बात के लिए अड़कर किसी स्थान पर बैठने या धरना देनेवाला।

धर-पकड़—स्त्री० [हि० धरना+पकड़] १ धरने या पकड़ने की क्रिया या भाव। २ सिपाहियों आदि द्वारा अनेक संदिग्ध अभियुक्तों को पकड़कर थाने ले जाना।

धरबी—स० [स० धारण] १ धारण करेगा। २ पकड़ेगा। (बुंदेल०)

धरम†—पु०=धर्म।

धरमसार†—स्त्री० धर्मशाला।

धरमाई—स्त्री० =धार्मिकता। उदा०—हाहि परिच्छा तौ कछु परहि जानि धरमाई।—रत्ना०।

धरमी—वि० [स० धर्म्म] १ धर्म के अनुसार आचरण करनेवाला। २ किसी धर्म या मत का अनुयायी। ३ धर्म-संबंधी। धार्मिक। ४. दे० 'धर्मी'।

धरमेसुर†—वि०=धर्मेश्वर।

धरवाना—स० [हि० धरना का प्रे०] १ धरने का काम किसी दूसरे से कराना। २ पकड़वाना। थमाना। ३ रखवाना।

धरषना—अ०, स०=धरसना।

धरसना—स० [स० धर्षण] १ अच्छी तरह कुचलते या रौंदते हुए दबाना। मर्दन करना। २ अपमानित करना। ३ दुर्दशा करना। अ० १ अच्छी तरह कुचला या दबाया जाना। २ अपमानित होना। ३ दुर्दशाग्रस्त होना। ४ डर या सहम जाना।

धरसनी†—स्त्री० =धर्षणी।

धरहर—स्त्री० [हि० धरना+हर (प्रत्य०)] १ दो या अधिक लड़नेवालों को धर पकड़कर अलग करने या लड़ाई बंद कराने का कार्य। बीच-बचाव। २ किसी को पकड़े जाने या मार खाने से बचाने के लिए किया जानेवाला काम। बचाव। रक्षा। ३ धीरज। धैर्य। ४ दृढ़ निश्चय। उदा०—जमकरि मुँह तर हरि परयौ, इहि धरि हरि चित लाउ।—बिहारी। ५ दे० 'धर-पकड़'।

वि० रक्षक।

धरहरना*—अ० १ दे० 'धड़कना'। २ दे० 'धड़धड़ाना'।

स० दे० 'धड़धड़ाना'।

धरहरा—पु० [हि० धुर ऊपर+घर] १ खंभे के सदृश ऐसी ऊँची वास्तु-रचना, जिस पर चढ़ने के लिए अंदर से सीढ़ियाँ बनी होती है। धौरहर। मीनार। २ 'जल-स्तंभ'।

धरहरि—स्त्री०, वि०=धरहर।

धरहरिया—पु० [हि० धरहरि] १ धर-पकड़कर बचानेवाला। बीच-बचाव करनेवाला। २. रक्षक।

धरा—स्त्री० [स०√धृ+अप्+टाप्] १ पृथ्वी। जमीन। धरती। २ जगत। दुनिया। संसार। ३ गर्भाशय। ४ चरबी। मेद। ५ नस। नाड़ी। ६ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु होता है।

पु० धड़ा।

धराउर†—स्त्री० धरोहर।

धराऊ—वि० [हि० धरना+आऊ (प्रत्य०)] १ (ऐसा माल) जो बहुत दिन का पड़ा या रखा हुआ हो और फलत बिका न हो। पुराना। २ जो अप्राप्य या दुर्लभ होने के कारण केवल विशेष अवसरों के लिए रखा रहे।

धरा-कदंब—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का कदंब।

धराका—पु० =धड़ाका।

धरा-तल—पु० [ष० त०] १ पृथ्वी का ऊपरी तल। जमीन। धरती। २ कोई ऐसा अलग या स्वतंत्र विस्तार जिसका विचार दूसरे तलों से बिलकुल अलग किया जाय। तल। सतह। जैसे—आपने अपनी मीमांसा से यह विषय एक नये धरातल पर ला रखा है। ३ किसी चीज की चौड़ाई और लंबाई का गुणन-फल। रकबा। ४. पृथ्वी।

धरात्मज—पु० [धरा-आत्मज, ष० त०] १ मंगलग्रह। २ नरकासुर।

धरात्मजा—स्त्री० [धरा-आत्मजा ष० त०] सीता। जानकी।

धरा-धर—पु० [ष० त०] १ वह जो पृथ्वी को धारण करे। २ शेष नाग। ३. विष्णु। ४ पर्वत। पहाड़।

धरा-धरन†—पु० धराधर ।
धरा-धरी—स्त्री० =धर-पकड़ ।
धराधार—पु० [धरा-आधार ष० त०] शेषनाग ।
धराधिप, धराधिपति—पु० [धरा-अधिप, ष०त०, धरा-अधिपति, ष० त०] राजा।
धराधीश—पु० [धरा-अधीश ष० त०] राजा।
धराना—स० [हि० 'धरना' का प्रे०] १ पकड़ाना । थमाना । २ पकड़वाना । ३ किसी को कहीं कुछ धरने या रखने मे प्रवृत्त करना। जैसे—चोरो से माल धराना । ३ रखवाना । रखाना । ४ नियत, निश्चित या स्थिर कराना । जैसे—किसी काम या बात के लिए दिन धराना , अर्थात् निश्चित कराना । जैसे—मुहूर्त धराना ।
धरा-पुत्र—पु० [ष० त०] १ मगल ग्रह । २ नरकासुर।
धराभृत—पु० [स० धरा√भृ (धारण) +क्विप्, तुक्—आगम] पर्वत। पहाड़।
धरामर—पु० [स०] ब्राह्मण।
धरावत—स्त्री०[हि० धरना]१ धरने की क्रिया, ढग या भाव। २ जमीन की वह माप या क्षेत्र-फल जो कूतकर मान लिया गया हो।
धरावना†—स० =धराना ।
धराशायी (यिन्)—वि० [स० धरा+शी (सोना)+णिनि] [स्त्री० धराशायिनी] १ जमीन पर पड़ा, लेटा या सोया हुआ। जैसे—युद्ध मे वीरो का धराशायी होना, अर्थात् गिर पडना या गिरकर मर जाना। २ गिर, ढह या टूटकर जमीन के बराबर हो जाना। जैसे—भवन या स्तूप धराशायी होना।
धरा-सुत—पु० [ष० त०] १ मगल ग्रह। २ नरकासुर ।
धरा-सुर—पु० [स० त०] ब्राह्मण।
धरास्त्र—पु० [स०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र, जिसका प्रयोग विश्वामित्र ने वशिष्ठ पर किया था।
धराहर†—पु० [हि० धुर ऊपर+घर] =धौरहर (मीनार)।
धरिंगा—पु० [देश०] एक तरह का चावल ।
धरित्री—स्त्री० [स०]धरती। पृथ्वी ।
धरिमा (मन्)—स्त्री० [स०√धृ(धारण)+इमनिच्] १ तराजू । २ रूप । शकल ।
धरी—स्त्री० [हि० धरना] १ अवलब। आश्रय। उदा०—अब मौको धरि (धरी) रहीन कोऊ तातै जाति भरी।—सूर। २ अर्थात् उपपत्नी के रूप मे रखी हुई स्त्री । रखेली । स्त्री० [हि० ढार] कान मे पहनने का ढार या बिरिया नाम का गहना। †स्त्री० घडी । †स्त्री० [हि० धार] १ जल की धार। २ वर्षा की झड़ी ।
धरीता—वि० [हि० धरना] धरा या पकडा हुआ । पु० दे० 'धरेला' ।
धरुण—वि० [स०√धृ+उनन्] धारण करनेवाला। १ ब्राह्मण। २ स्वर्ग। ३ जल। ४. राय। ५ वह स्थान जहाँ कोई वस्तु सुरक्षित अवस्था मे रखी जा सके। ६ अग्नि। ७ दुधमुहाँ बछड़ा।
धरेया—वि०, पु० =धरेला।
धरेजा—पु० [हि० धरना=रखना+एजा (प्रत्य०)] किसी विधवा स्त्री का पत्नी की तरह घर मे रखने की क्रिया या प्रथा । स्त्री० इस प्रकार रखी हुई स्त्री ।
धरेला—वि० [हि० धरना] [स्त्री० धरेली] जो किसी रूप मे धर या पकडकर अपने पास रखा या अपने अधिकार मे किया गया हो। पु० १ किसी स्त्री की दृष्टि से, वह पुरुष जिसे उसने अपना पति बनाकर अपने पास या साथ रखा हो। २ कुछ जातियो मे प्रचलित वह प्रथा, जिसमे बिना विवाह किये ही लोग विधवा स्त्री का सगाई आदि करके अपनी पत्नी बनाकर रख लेते है, और उनके समाज मे उनका ऐसा सबध विधि-सगत माना जाता है ।
धरेली—स्त्री० [हि० धरेला] रखेली। उपपत्नी ।
धरेवा—पु० दे० 'करेवा'। (विवाह का एक प्रकार)।
धरेश—पु० [स० धरा-ईश, ष० त०] राजा।
धरेस—पु० धरेश ।
धरैया—वि० [हि० धरना] १ धरने या पकडनेवाला । २ धारण करनेवाला । पु० कच्छप, शेषनाग आदि जो पृथ्वी को धारण करनेवाले कहे जाते है। स्त्री० वह प्रथा जिसके अनुसार कोई व्यक्ति (पुरुष या स्त्री) किसी दूसरे व्यक्ति (स्त्री या पुरुष) को अपना जीवन-सहचर बनाकर रखता है ।
धरोड़†—स्त्री० धरोहर।
धरोहर—स्त्री० [हि० धरना] १ वह धन या सपत्ति, जो किसी विश्वस्त व्यक्ति के पास कुछ समय तक सुरक्षित रखने के लिए रखी जाय। अमानत । क्रि० प्र०—धरना।—रखना । २ वह वस्तु या गुण जो निधि के रूप मे हम पूर्वजो से मिला हो। थाती। जैसे—हमे यह सस्कृति अपने पूर्वजो से धरोहर के रूप मे मिली है।
धरौआ—पु० [हि० धरना] बिना विधिपूर्वक विवाह किये स्त्री या पुरुष को पत्नी या पति बनाकर रखने की प्रथा। धरैया । वि० उक्त प्रथा के अनुसार अपने साथ या पास रखा हुआ(व्यक्ति)।
धरौना—पु० =धरैया (प्रथा) ।
धरौली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड, जो भारतवर्ष मे प्राय सब जगह विशेषत हिमालय की तराई मे पाया जाता है। इसमे सफेद, लाल या पीले फूल लगते है।
धर्ता (र्तृ)—वि० [स०√धृ (धारण)+तृच्] १ धारण करनेवाला। २ अपने ऊपर किसी काम या बात का भार लेनेवाला। पद-- **कर्ता-धर्ता** । (दे० 'कर्ता' के अतर्गत)
धर्ती—स्त्री० =धरती ।
धर्तूर—पु० [स० धुस्तुर पृषा० सिद्धि] धतूरा ।
धर्त्र—पु० [स०√धृ+त्र] १ घर। गृह । २ सहारा । टेक । ३ यज्ञ। ४ पुण्य। ५ नैतिकता।
धर्म—पु० [स०√धृ+मन्] [वि० धार्मिक] १ पदार्थ मात्र का वह प्राकृतिक तथा मूलगुण, विशेषता या वृत्ति, जो उसमे बराबर स्थायी रूप से वर्तमान रहती हो, जिससे उसकी पहचान होती हो और उससे कभी अलग न की जा सकती हो। जैसे—आग का धर्म जलना और

जलाना या जीव का धर्म जन्म लेना और मरना है। २ सामाजिक क्षेत्र मे नियम, विधि, व्यवहार आदि के आधार पर नियत तथा निश्चित वे सब काम या बाते जिनका पालन समाज के अस्तित्व या स्थिति के लिए आवश्यक होता है और जो प्रायः सर्वत्र सार्विक रूप से मान्य होती है। जैसे—अहिंसा, दया, न्याय, सत्यता आदि का आचरण मनुष्य मात्र का धर्म है। ३ लौकिक क्षेत्र में वे सब कर्म तथा कृत्य, जिनका आचरण या पालन किसी विशिष्ट स्थिति के लिए विहित हो। जैसे—(क) माता-पिता की सेवा करना पुत्र का धर्म है। (ख) पढ़ना-पढ़ाना यज्ञ आदि करना, किसी समय ब्राह्मणों का मुख्य धर्म माना जाता है। ४ आध्यात्मिक क्षेत्र में, ईश्वर, देवी-देवता, देव-दूत (पैगम्बर) आदि के प्रति मन मे होनेवाले विश्वास तथा श्रद्धा के आधार पर स्थित वे कर्तव्य कर्म अथवा धारणाएँ, जो भिन्न-भिन्न जातियों और देशों के लोगों में अलग-अलग रूपों मे प्रचलित है और जो कुछ विशिष्ट प्रकार के आचार-शास्त्र तथा दर्शन-शास्त्र पर आश्रित होती है। जैसे—ईसाई-धर्म, बौद्ध-धर्म, हिंदू-धर्म आदि।

विशेष—साधारणतः ऐसे धर्म या तो किसी विशिष्ट महापुरुष द्वारा प्रवर्तित और संस्थापित होते है, या किसी मुख्य और परम मान्य ग्रंथ पर आश्रित होते है, जिसे धर्मग्रंथ कहते है। ऐसे ग्रंथो मे उल्लिखित बातों का पालन, पारलौकिक सुख या स्वर्ग की प्राप्ति के उद्देश्य से उस धर्म के अनुयायियों के लिए आवश्यक या कर्तव्य समझा जाता है।

पद—**धर्म-कर्म, धर्म-ग्रंथ, धर्म-चर्चा आदि।**

मुहा०—**धर्म कमाना**=धर्म करके उसका फल संचित करना। **धर्म-खाना**=धर्म को साक्षी बनाकर या धर्म की शपथ करते हुए कोई बात कहना। **धर्म रखना**=धर्म के अनुसार आचरण या व्यवहार करना। **धर्म लगना या धर्म से कहना**=धर्म का ध्यान रखकर उचित और न्याय-संगत बात कहना। उचित ठीक या सच बात कहना।

५ भारतीय नागर नीति में, वे सब नैतिक या व्यावहारिक नियम और विधान, जो समाज का ठीक तरह से संचालन करने के लिए प्राचीन ऋषि-मुनि समय-समय पर बनाते चले आये है और जो स्वर्गादि शुभ फल देनेवाले कहे गये है। जैसे—धर्म-शास्त्र क्षेत्र में उक्त प्रकार के तथ्यों या बातों से मिलती-जुलती वे सब धारणाएँ विचार और विश्वास, जिनका आचरण तथा पालन कुछ लोग अपने लिए आवश्यक और कर्तव्य समझते हैं। जैसे—मानवता (या राष्ट्रीयता) के सिद्धान्तों का पालन करना ही हमारा धर्म है। ७ सदाचार। ८ पुण्य। सत्कर्म। ९ अलंकार शास्त्र मे वह गुण या वृत्ति, जो उपमेय और उपमान दोनों में समान रूप से वर्तमान रहती है और जिसके आधार पर एक वस्तु की उपमा दूसरी वस्तु से दी जाती है। १० न्यायशीलता और विवेक-बुद्धि।

मुहा०—**धर्म मे आना**=मन में उचित या ठीक जान पड़ना। जैसे—जो तुम्हारे धर्म मे आवे, सो करो। ११ धर्मराज। यमराज। १२ कमान। धनुष। १३ सोमपान करनेवाला व्यक्ति। १४ वर्तमान अवसर्पिणी के १५ वें अर्हत का नाम। (जैन)

वि० सबंध सूचक शब्दों के आरंभ में, धर्म के अनुसार या धर्म को साक्षी करके बनाया या माना हुआ। जैसे—धर्म-पत्नी, धर्म-पिता।

धर्म-कर्म—पु० [ष० त०] १ वे कार्य जो धर्म-ग्रंथो मे मनुष्य मात्र के लिए कर्तव्य कहे गये हो। २ किसी विशिष्ट धर्म के अनुसार किये जानेवाले लौकिक कृत्य।

धर्म-काम—पु० [सं० धर्म√कम् (चाहना)+णिङ्+अण्] अपना कर्तव्य समझकर धार्मिक कृत्य करनेवाला व्यक्ति।

धर्म-काय—पु० [च० त०] बौद्ध-दर्शन मे बुद्ध का वह परमार्थ-भूत शरीर जो अनिर्वचनीय, अनंत, अपरिमेय और सर्वव्यापक माना गया है।

धर्म-काल—पु० [ष० त०] १ राज्य का शासन। २ शासन करनेवाली सत्ता।

धर्मकेतु—[ब० स०] १ कश्यप वंशीय सुकेतु राजा के पुत्र का नाम। २ गौतम बुद्ध।

धर्म-क्षेत्र—पु० [ष० त०] १ कुरुक्षेत्र। २ भारतवर्ष, जो भारतीय आर्यों की दृष्टि मे धर्म-कार्य करने के लिए विशेष रूप से उपयुक्त माना गया है।

धर्म-खाता—पु० [सं० धर्म+हि० खाता] कार्य के विभाग या व्यय का वह मद जो केवल दान, परोपकार आदि के कामों मे लगाने के लिये हो।

धर्म-गडिका—स्त्री० [सं०] यज्ञ आदि मे वह खूँटा, जिस पर बलि चढ़ाये जानेवाले जानवर का सिर रखा जाता था।

धर्मगुप्—पु० [सं० धर्म√गुप् (रक्षा)+क्विप्] विष्णु।

धर्म-गुरु—पु० [ष० त०] १ धार्मिक उपदेश या गुरु-मंत्र देनेवाला गुरु। २ किसी धर्म या सम्प्रदाय का प्रधान आचार्य। जैसे—कबीर, नानक, शंकराचार्य आदि।

धर्म-ग्रंथ—पु० [ष० त०] किसी जाति या संप्रदाय का उसकी दृष्टि मे पूज्य ग्रंथ, जिसमे मनुष्य के धार्मिक व्यवहारो, पूजन-विधियो तथा सामाजिक संबधो का निर्देशन होता है।

धर्म-घट—पु० [च० त०] १ दान के रूप मे दिया जानेवाला सुगंधित जल से भरा हुआ घड़ा। २ बस्तियों मे घर-घर रखा जानेवाला वह घड़ा जिसमे दान-कार्य के लिये नित्य थोड़ा अनाज डालकर इकट्ठा किया जाता है।

धर्म-घड़ी—स्त्री० [सं० धर्म+हि० घड़ी] वह बड़ी घड़ी, जो ऐसे स्थान पर लगी हो, जहाँ से उसे सब लोग देख सकें।

धर्म-चक्र—पु० [ष० त०] १ धर्म का सारा क्षेत्र और उसके सब आचरण तथा व्यवहार। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ३ धर्मशिक्षा रूपी वह चक्र या पहिया जो गौतम बुद्ध ने काशी में सबको धर्म की शिक्षा देने के लिए चलाया था। ४ गौतम बुद्ध, जो उक्त चक्र चलानेवाले थे।

धर्म-चर्या—स्त्री० [ष० त०] धार्मिक ग्रंथो में प्रतिपादित सिद्धान्तो के अनुसार किये जानेवाले सब आचरण और व्यवहार।

धर्मचारी (रिन्)—वि० [सं० धर्म√चर् (गति)+णिनि] धार्मिक नियमो तथा सिद्धांतो के अनुसार आचरण करनेवाला।

धर्म-चिंतन—पु० [ष० त०] धर्म-संबंधी बातों पर किया जानेवाला चिंतन, मनन या विचार।

धर्म-च्युत—वि० [पं० त०] [भाव० धर्मच्युति] अपने धर्म से गिरा या हटा हुआ। जिसने अपना धर्म छोड़ दिया हो।

धर्मज—वि० [सं० धर्म√जन् (उत्पत्ति)+ड] धर्म से उत्पन्न।

पु० १ किसी का वह औरस पुत्र जो उसकी धर्म-पत्नी से पहले-पहल

उत्पन्न हुआ हो। २ धर्मराज युधिष्ठिर, जो धर्म के पुत्र माने गये है। ३ एक बुद्ध का नाम। ४ नर-नारायण।

धर्म-जन्मा (न्मन्)—पु०[स० ब०स०] युधिष्ठिर का एक नाम।

धर्मजीवन—पु०[स० ब०स०] धार्मिक कृत्य कराकर जीविका उपार्जित करनेवाला ब्राह्मण।

धर्मज्ञ—वि०[स० धर्म√ज्ञा (जानना)+क] १ धर्म-सबधी नियमो तथा सिद्धातो का ज्ञाता। २ धर्मात्मा।

धर्मण—पु० [स० धर्म√नम् (झुकना)+ड] १ धामिन वृक्ष। २ धामिन साँप। ३ धामिन पक्षी।

धर्मणा—क्रि० वि० =धर्मत।

धर्म-तत्र—पु०[ष०त०] ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमे किसी विशिष्ट धर्म या मजहब का ही प्रभुत्व होता और शासन व्यवस्था प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप मे धर्म-पुरोहितो के हाथ मे रहती है। (थियोक्रेसी)

धर्मत (तस्)—अव्य०[स० धर्म+तस्]१ धार्मिक सिद्धातो के अनुसार। २ धर्म की दुहाई देते हुए। ३ धर्म के आधार पर।

धर्मद—वि०[स० धर्म√दा (देना)+क] अपने धर्म का पुण्य या फल दूसरा को दे देनेवाला।

धर्म-दान—पु०[मध्य०स०] बिना किसी प्रकार की फल-प्राप्ति के निहित उद्देश्य से और केवल परोपकार की दृष्टि से दिया जानेवाला दान।

धर्म-दारा—स्त्री०[मध्य०स०] धर्मपत्नी। ब्याहता स्त्री।

धर्म-देशक—पु०[ष०त०] धर्मोपदेशक।

धर्मद्रवी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्] गगा नदी।

धर्म-धक्का—पु०[स०+हि०] १ ऐसा कष्ट जो धर्मानुसार कोई कार्य सपादित करते समय अथवा उसके फलस्वरूप सहना या उठाना पडे। ३ अच्छा काम करने पर भी मिलनेवाली आपत्ति या बुराई।

धर्म-धातु—पु०[स० धर्म√धा (धारण)+तुन्] गौतमबुद्ध।

धर्म-ध्वज—पु०[ब०स०]१ ऐसा व्यक्ति जो धर्म की आड लेकर स्वार्थ-साधन तथा अनेक प्रकार के कुकर्म करता हो। २ मिथिला के एक ब्रह्मज्ञानी राजा जो राजा जनक के वशजो मे से थे।

धर्म-ध्वजता—स्त्री०[स० धर्मध्वज+तल्—टाप्] १ धर्म-ध्वज होने की अवस्था या भाव। २ धर्म की आड मे किया हुआ आडबर।

धर्म-ध्वजी—पु० =धर्मध्वज।

धर्म-नदन—पु०[ष०त०] युधिष्ठिर।

धर्मनदी (दिन्)—पु०[स०] अनेक बौद्धशास्त्रो का चीनी भाषा मे अनुवाद करनेवाले एक बौद्ध पडित।

धर्म-नाथ—पु०[ष०त०]१ न्यायकर्त्ता। २ जैनो के पन्द्रहवे तीर्थंकर।

धर्म-नाभ—पु०[धर्म-नाभि ब०स०, अच्] १ विष्णु। २ एक प्राचीन नदी।

धर्म-निरपेक्ष—वि०[प० त०] (राज्य अथवा शासन-प्रणाली) जहाँ अथवा जिसमे किसी धार्मिक सम्प्रदाय का पक्षपात या प्रभुत्व न हो। (सेक्युलर)

धर्म-निष्ठ—वि०[ब०स०] [भाव० धर्मनिष्ठा] जिसकी अपने धर्म मे निष्ठा हो।

धर्म-निष्ठा—स्त्री०[स०त०] अपने धर्म के प्रति होनेवाली निष्ठा या दृढ विश्वास।

धर्मपट्ट—पु०[ष०त०] शासन अथवा धर्माधिकारी की ओर से किसी को भेजा हुआ पत्र।

धर्म-पति—पु० [ष० त०] १ धर्म पर अधिकार रखनेवाला पुरुष। धर्मात्मा। २ वरुण देवता।

धर्म-पत्तन—पु०[स०] १ बृहत्सहिता के अनुसार कूर्मविभाग मे दक्षिण का एक जन-स्थान जो कदाचित् आधुनिक धर्मापटम (जिला मलाबार) के आस-पास रहा हो। २ श्रावस्ती नगरी। ३ काली या गोल मिर्च।

धर्म-पत्नी—स्त्री० [च० त०] सबध के विचार से वह स्त्री, जिसके साथ धर्मशास्त्र द्वारा निर्दिष्ट रीति से विवाह हुआ हो।

धर्म-पत्र—पु०[ब०स०] गूलर।

धर्म-परायण—वि० [धर्म-पर-अयन, ब०स०] [भाव० धर्म-परायणता] धर्म द्वारा निर्दिष्ट ढग से काम करनेवाला। धर्म के विधानो के अनुसार निष्ठापूर्वक काम करनेवाला। (रेलिजस)

धर्मपरायणता—स्त्री०[स० धर्मपरायण+तल्—टाप्] धर्म-परायण होने की अवस्था या भाव। (रेलिजसनेस)

धर्म-परिणाम—पु० [ष०त०] १ योग-दर्शन के अनुसार सब भूतो और इद्रियो के एक रूप या स्थिति से दूसरे रूप या स्थिति मे प्राप्त होने की वृत्ति। एक धर्म की निवृत्ति होने पर दूसरे धर्म की प्राप्ति। २ धर्म।

धर्म-परिषद्—स्त्री०[ष०त०] न्याय करनेवाली सभा। धर्म सभा।

धर्म-पाठक—पु० [ष०] धर्म-ग्रथो का अध्ययन करनेवाला व्यक्ति।

धर्मपाल—वि०[स० धर्म√पाल् (पालन)+णिच्+अण्] धर्म का पालन या रक्षा करनेवाला।

पु० १ वह जो धर्म का पालन करता हो। २ दड या सजा, जिसके आधार पर धर्म का पालन किया या कराया जाता है। ३ राजा दशरथ के एक मत्री।

धर्म-पिता (तृ)—पु०[तृ० त०] वह जो धार्मिक भाव से किसी का पिता या सरक्षक बन गया हो (जन्मदाता पिता से भिन्न)।

धर्म-पीठ—पु०[ष०त०]१ वह स्थान, जो धार्मिक दृष्टि से प्रधान या मुख्य माना जाता हो। २ वह स्थान, जहाँ से लोगो को धर्म की व्यवस्था मिलती हो। ३ काशी नगरी का एक नाम।

धर्म-पीड़ा—स्त्री०[ष०त०]१ धर्म या न्याय का उल्लघन। २ अपराध।

धर्म-पुत्र—पु०[ष० त०]१ धर्म के पुत्र युधिष्ठिर। २ नर-नारायण। ३ वह जो अपना औरस पुत्र तो न हो, परन्तु धार्मिक रीति या विधि से अथवा धर्म को साक्षी रखकर अपना पुत्र बना लिया गया हो।

धर्म-पुरी—स्त्री०[ष०त०] १ धर्मराज या यमराज की यमपुरी, जहाँ शरीर छूटने पर प्राणियो के किये हुए धर्म और अधर्म का विचार होता है। २ कचहरी। न्यायालय।

धर्म-पुस्तक—स्त्री०[ष०त०] =धर्म-ग्रथ।

धर्म-प्रतिरूपक—पु०[ष०त०] मनु के अनुसार ऐसा दान, जो अपने सगे-सम्बन्धियो के दीन-दुःखी रहते हुए भी केवल नाम या यश कमाने के लिए दूसरो को दिया जाय। (ऐसा दान निन्दनीय और धर्म की विडम्बना करनेवाला कहा गया है।)

धर्म-प्रभास—पु०[स०] गौतम बुद्ध।

धर्म-प्रवचन—पु० [धर्म-प्र√वच् (बोलना)+ल्युट्—अन] १ कर्तव्य-शास्त्र। २ बुद्धदेव।

धर्म-बुद्धि—स्त्री०[स०त०] धर्म-अधर्म का विवेक। भले-बुरे का विचार।

धर्म-भगिनी—स्त्री०[मध्य०स०]१ वह स्त्री जो धर्म का साक्षी करके बहन बनाई जाय। २ गुरु-कन्या।

धर्म-भागिनी—स्त्री०[स०त०] धर्मपत्नी।

धर्म-भाणक—पु०[ष०त०] धर्म का बखान करनेवाला व्यक्ति। कथा-वाचक।

धर्म-भिक्षुक—पु०[च०त०] मनु के अनुसार नौ प्रकार के भिक्षुकों में से वह जो केवल धार्मिक कार्यों के लिए भिक्षा माँगता हो।

धर्म-भीरु—वि० [स०त०] [भाव०] धर्म भीरुता (व्यक्ति) जो धर्म के भय के कारण अधर्म या दूषित काम न करता हो।

धर्मभृत्—पु०[स० धर्म√भृ (धारण)+क्विप्]१ राजा। २ धर्म-परायण व्यक्ति।

धर्म-भ्रष्ट—वि०[प०त०] [भाव०धर्म भ्रष्टता] जो अपने धर्म से गिरकर भ्रष्ट हो गया हो। धर्म-च्युत।

धर्म-मत—पु०[मयू० स०] धर्म के रूप मे प्रचलित मत या सप्रदाय। मजहब (धर्म के व्यापक अर्थ और रूप मे भिन्न)।

धर्म-मति—स्त्री० धर्म-बुद्धि।

धर्म-मूल—पु०[ष०त०] धर्म का मूल, वेद।

धर्ममेघ—पु०[स० धर्म√मिह (बरसना)+अच्, घ आदेश] योग मे वह स्थिति जिसमे वैराग्य के अभ्यास से चित्त सब वृत्तियो से रहित हो जाता है।

धर्म-यज्ञ—पु०[तृ०त०] ऐसा यज्ञ जिसमे पशुओ की बलि न दी जाती हो।

धर्म-युग—पु०[मध्य०स०] सत्ययुग।

धर्म-युद्ध—पु०[तृ०त०] १ ऐसा युद्ध जिसमें छल-कपट या धोखा-धड़ी न हो, बल्कि नैतिक दृष्टि से उच्च स्तर पर हो और किसी की दुर्बलता का अनुचित रूप से लाभ न उठाया जाय। २ धर्म की रक्षा के लिए अथवा किसी बहुत अच्छे उद्देश्य से किया जानेवाला युद्ध।

धर्म-योनि—पु०[ष०त०] विष्णु।

धर्मराई†—पु० धर्मराज।

धर्मराज—पु०[धर्म√राज् (शोभित होना)+अच्]१ धर्म का पालन करनेवाला, राजा। २ युधिष्ठिर। ३ यमराज। ४ जैनों के जिन देव। ५ न्यायाधीश।

धर्मराज परीक्षा—स्त्री०[ष०त०] स्मृतियो के अनुसार एक प्रकार की दिव्य परीक्षा,जिसमे यह जाना जाता था कि धर्म की दृष्टि मे अभियुक्त दोषी है या निर्दोष।

धर्मराय†—पु० धर्मराज।

धर्म-लिपि—स्त्री०[ष०त०]१ वह लिपि जिसमे किसी धर्म की मुख्य पुस्तक लिखी हो। २ भिन्न-भिन्न स्थानो पर खुदे हुए सम्राट् अशोक के धार्मिक प्रज्ञापन।

धर्म-लुप्ता उपमा—स्त्री० [धर्म-लुप्ता तृ० त०, धर्म-लुप्ता और उपमा व्यस्त पद] उपमा अलकार का एक भेद, जिसमे धर्म अर्थात् उपमान और उपमेय मे समान रूप से पाई जानेवाली बात का कथन या उल्लेख नही होता।

धर्मवर्ती (तिन्)—वि०[स० धर्म√वृत् (बरतना)+णिनि] धर्म के अनुकूल आचरण करनेवाला।

धर्म-वर्धन—पु०[ष०त०] शिव।

धर्मवान् (वत्)—वि०[स० धर्म+मतुप्] धर्मात्मा। धर्मनिष्ठ।

धर्म-वासर—पु०[प०त०] पूर्णिमा तिथि।

धर्म-वाहन—पु० [ष०त०]१ धर्म के सबध मे किया जानेवाला चिंतन या विचार। २ धर्मराज का वाहन, भैसा।

धर्मविजयी (यिन्)—पु०[तृ०त०] वह जो नम्रता या विनय से ही सतुष्ट हो जाय।

धर्म-विवाह—पु०[तृ०त०] धार्मिक सस्कारो से किया हुआ विवाह।

धर्म-विवेचन—पु०[ष० त०]१ धर्म के सबध मे किया जानेवाला चिंतन या विचार। २ धर्म और अधर्म का विचार। ३ इस बात का विचार कि अमुक काम अच्छा है या बुरा।

धर्म-वीर—पु०[स०त०] वह जो धर्म करने मे सदा तत्पर रहता हो।

धर्म-वृद्ध—वि०[तृ०त०] जो निरन्तर धर्माचरण करने के कारण श्रेष्ठ माना जाता हो।

धर्म-वैतंसिक—पु०[स०त०] वह जो पाप के द्वारा धन कमाकर लोगो को दिखाने और धार्मिक बनने के लिए बहुत दान-पुण्य करता हो।

धर्म-व्याध—पु०[मध्य०स०] मिथिला का निवासी एक प्रसिद्ध व्याध जिसने कौशिक नामक वेदाध्यायी ब्राह्मण को धर्म का तत्त्व समझाया था।

धर्मव्रता—स्त्री०[स०] विश्वरूपा के गर्भ से उत्पन्न धर्म नामक राजा की कन्या, जिसने पातिव्रत्य की प्राप्ति के लिए घोर तप किया था, और मरीचि ने जिसे परम पतिव्रता देखकर अपनी पत्नी बनाया था।

धर्म-शाला—पु०[च०त०]१ वह स्थान, जहाँ धर्म और अधर्म का निर्णय होता हो। न्यायालय। विचारालय। २ वह स्थान, जहाँ नियमपूर्वक धर्मार्थ के विचार से दीन-दुखियो को दान दिया जाता हो। ३ परोपकार की दृष्टि से बनवाया हुआ वह भवन, जिसमे हिंदू-यात्री आदि बिना किसी प्रकार का शुल्क दिये कुछ समय तक ठहर या रह सकते हो।

धर्म-शास्त्र—पु० [ष०त०] प्राचीन भारतीय समाज तथा हिन्दुओ मे, पारम्परिक व्यवहार से सबध रखनेवाले वे सब नियम या विधान, जो समाज का नियत्रण तथा सचालन करने के लिए बड़े-बड़े आचार्य तथा महापुरुष बनाते थे और जो लोक मे धार्मिक दृष्टि से विशेष महत्त्वपूर्ण और मान्य समझे जाते थे। जैसे—मानव धर्म-शास्त्र।

धर्म-शास्त्री (स्त्रिन्)—पु०[स० धर्मशास्त्र+इनि] वह जो धर्मशास्त्र के अनुसार व्यवस्था देता हो।

धर्म-शील—वि०[ब०स०] [भाव० धर्मशीलता] जिसकी प्रवृत्ति धर्म मे हो। धार्मिक।

धर्म-सकट—पु०[ष०त०] असमजस या दुबधा की ऐसी स्थिति जिसमे धर्म का अनुसरण करनेवाला व्यक्ति यह समझता है कि दोनो मे से किसी पक्ष मे जाने पर धर्म का कुछ न कुछ उल्लघन करना पड़ेगा। उभय सकट। (डिलेम्मा)

धर्म-सगीति—स्त्री०[ष०त०] दे० 'सगायन'।

धर्म-सभा—स्त्री०[ष०त०]१ वह सभा या सस्था जिसमे केवल धार्मिक बातो या विषयो का विचार और विवेचन होता हो। (सिनॉड) २ कचहरी। न्यायालय। ३ दे० 'सगायन'।

धर्मसारी†—स्त्री०=धर्मशाला।

धर्म-सावर्णि—पु०[मय० स०] पुराणो के अनुसार ग्यारहवें मनु।

धर्म-सुत—पु०[ष० त०] युधिष्ठिर।

धर्मसू—वि०[स० धर्म√सू (प्रेरणा)+क्विप्] धर्म की प्रेरणा करनेवाला।

पु० एक पक्षी।

धर्म-सूत्र—पु०[ष०त०] जैमिनि प्रणीत धर्मनिर्णय-सबधी एक ग्रथ।

धर्म-सेतु—वि० [ष०त०] सेतु की तरह धर्म को धारण करने, अर्थात् धर्म का पालन करनेवाला।

धर्मसेन—पु०[स०]१ एक प्राचीन महास्थविर या बौद्ध महात्मा, जो ऋषिपत्तन (सारनाथ, काशी) सघ के प्रधान थे। २ जैनो के बारह अगविदो मे से एक।

धर्मस्कंध—पु०[स०] धर्मास्तिकाय पदार्थ। (जैन)

धर्म-स्थ—वि०[स० धर्म√स्था (ठहरना)+क] धर्म मे स्थित।

पु० धर्माध्यक्ष। न्यायाधीश।

धर्मस्थीय—पु०[स०] न्यायालय।

धर्मस्व—वि०[च०त०] धर्मार्थ कामो मे लगाया या समर्पित किया हुआ (धन आदि) पुण्यार्थ।

पु० ऐसा समाज या सस्था, जिसकी स्थापना धार्मिक उद्देश्यो की सिद्धि के लिए हुई हो।

धर्मांग—पु०[धर्म-अग, ब० स०] बगला (शरीर के सफेद रग के आधार पर)।

धर्मांतर—पु०[धर्म-अतर, मयू०स०] स्वकीय या प्रस्तुत धर्म से भिन्न कोई और धर्म।

धर्मांतरण—पु०[स० धर्मातर+क्विप्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० धर्मांतरित] अपना धर्म छोडकर दूसरा धर्म ग्रहण करना।

धर्मांध—वि०[धर्म-अध तृ० त०]१ (व्यक्ति) जो अपने धर्मशास्त्रो मे बतलाई हुई बातो के अतिरिक्त दूसरी अथवा दूसरे धर्मो की अच्छी बाते भी मानने को तैयार न होता हो। २ स्वधर्म मे अध-श्रद्धा होने के फलस्वरूप दूसरे धर्मों के प्रति तिरस्कार या द्वेष की भावना रखनेवाला। ३ धर्म के नाम पर दूसरा से लडने को अथवा अनुचित काम करने का तैयार होनेवाला।

धर्मागम—पु०[धर्म-आगम, ष०त०] धर्म ग्रथ।

धर्माचरण—पु०[धर्म-आचरण, ष०त०] [कर्त्ता धर्माचारी] किया जानेवाला पवित्र और शुद्ध आचरण।

धर्माचार्य—पु० [धर्म-आचार्य, स०त०] किसी धर्म की शिक्षा देनेवाला गुरु विशेषत प्रधान गुरु।

धर्मात्मज—पु०[धर्म-आत्मज, ष०त०]१ धर्मपुत्र। २ धर्मराज। युधिष्ठिर।

धर्मात्मा (त्मन्)—वि०[धर्म-आत्मन्, ब०स०] १ धर्म-ग्रथो द्वारा प्रतिपादित सिद्धातो के अनुसार आचरण करनेवाला। २ बहुत ही नेक और भला (व्यक्ति)।

धर्मादा—पु०[स० धर्म-दाय]धर्मार्थ निकाला हुआ धन।

धर्माधर्म—पु०[धर्म-अधर्म, द्व० स०]१ धर्म और अधर्म। २ धर्म और अधर्म का ज्ञान या विचार।

धर्माधिकरण—पु०[धर्म-अधिकरण, ष०त०] वह स्थान, जहाँ राजा व्यवहारों (मुकदमो) पर विचार करता है। विचारालय।

धर्माधिकरणिक—पु०[स० धर्माधिकरण+ठन्-इक] धर्म-अधर्म का निर्णय करनेवाला राज-कर्मचारी। न्यायाधीश।

धर्माधिकरणी (णिन्)—पु० [स० धर्माधिकरण+इनि] न्यायाधीश।

धर्माधिकारी (रिन्)—पु० [स० धर्म-अधि √कृ (करना)+णिनि] १ धर्म और अधर्म की व्यवस्था देनेवाला, विचारक। न्यायाधीश। २ भारतीय देशी रियासतो और बडे-बडे धनवानो के यहाँ का वह अधिकारी जो यह निश्चय करता था कि धर्म के किस काम मे कितना धन व्यय किया जाय।

धर्माधिकृत—पु०[धर्म-अधिकृत, स० त०] धर्माध्यक्ष।

धर्माधिष्ठान—पु०[धर्म-अधिष्ठान, ष०त०] न्यायालय।

धर्माध्यक्ष—पु० [धर्म-अध्यक्ष, स०त०] १ धर्माधिकारी। २ विष्णु। ३ शिव।

धर्मानुष्ठान—पु० [धर्म-अनुष्ठान, ष०त०] धर्माचरण।

धर्मापेत—वि०[धर्म-अपेत] जो धर्म के अनुकूल न हो। अधार्मिक। अन्याय पगत।

पु०१ अधर्म। २ अन्याय। ३ पाप।

धर्माभास—पु० [स० धर्म+आ√भास् (दीप्ति)+अच्] ऐसा असद् धर्म जो नाम-मात्र के लिए धर्म कहलाता हो, पर वस्तुत श्रुति-स्मृतियो की शिक्षाओ के विपरीत हो।

धर्मारण्य—पु०[धर्म-अरण्य, मध्य०स०]१ तपोवन। २ पुराणानुसार एक प्राचीन वन, जिसमे धर्म उस समय लज्जा के मारे जा छिपा था, जब चद्रमा ने गुरुपत्नी तारा का हरण किया था। ३ गया के पास का एक तीर्थ। ४ पुराणानुसार कूर्म विभाग का एक प्रदेश।

धर्मार्थ—वि० [धर्म-अर्थ, ब०स०]१ धार्मिक कार्यों के लिए अलग किया या निकाला हुआ (धन)। २ (कार्य) जो धर्म, परोपकार, पुण्य आदि की दृष्टि से किया जाय।

क्रि० वि० केवल धर्म, अर्थात् परोपकार या पुण्य के उद्देश्य या विचार से। जैसे—वे हर महीने १०, धर्मार्थ देते है।

पु० धार्मिक दृष्टि से किया हुआ दान।

धर्मार्थी (र्थिन्)—पु०[धर्म-अर्थिन्, ष० त०] वह जो धर्म और उसके फल की इच्छा या कामना रखता हो।

धर्मावतार—पु०[धर्म-अवतार ष० त०]१ वह जो इतना बडा धर्मात्मा हो कि धर्म का साक्षात् अवतार जान पडे। परम धर्मात्मा। २ धर्म और अधर्म का निर्णय करनेवाला। न्यायाधीश। ३ युधिष्ठिर।

धर्मावस्थायी (यिन्)—पु०[स० धर्म-अव√स्था (ठहरना)+णिनि] धर्माधिकारी।

धर्मासन—पु०[धर्म-आसन, च०त०] न्यायाधीश का आसन।

धर्मास्तिकाय—पु०[धर्म-अस्तिकाय, ष०त०] जैन शास्त्रानुसार छ द्रव्यो मे से एक जो अरूपी है और जीव तथा पुद्गल की गति का आधार या सहायक माना गया है।

धर्मिणी—स्त्री०[स० धर्म+इनि+ङीप्]१ पत्नी। २ रेणुका।

वि० स० 'धर्मी' का स्त्री०।

धर्मिष्ठ—वि०[स० धर्म-इष्ठन्]१ धर्म पर आरूढ या स्थित रहनेवाला। २ पुण्यात्मा।

धर्मी (मिन्)—वि०[स० धर्म+इनि] [स्त्री० धर्मिणी]१. किसी विशिष्ट

धर्म, गुण आदि से युक्त। जैसे—ताप-धर्मी, द्रव-धर्मी। २ धर्म की आज्ञाएँ और सिद्धान्त माननेवाला। ३ किसी विशिष्ट धर्म या मत का अनुयायी। जैसे—सनातन-धर्मी।

पु०१ वह जो किसी विशिष्ट धर्म, गुण या तत्त्व का आधार हो। २. धर्मात्मा व्यक्ति। ३ विष्णु।

स्त्री० धर्म का भाव। जैसे—हठ-धर्मी।

धर्मीपुत्र—पु० [स०] १ नाटक का कोई पात्र या अभिनय कर्त्ता। २ नट।

धर्मेन्द्र—पु०[धर्म-इन्द्र, स०त०]१ यमराज। २ युधिष्ठिर।

धर्मेयु—पु०[स०] पुरुवशी राजा रौद्राश्व का एक पुत्र। (महाभारत)

धर्मेश, धर्मेश्वर—पु०[धर्म-ईश ष०त०, धर्म-ईश्वर ष०त०] यमराज।

धर्मोत्तर—वि० [धर्म-उत्तर ब०स०] जो धर्म-अधर्म का बहुत ध्यान रखता हो। अति धार्मिक।

धर्मोन्माद—पु०[धर्म-उन्माद, तृ० त०] १ वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का उन्माद या पागलपन, जिसमे मनुष्य दिन-रात धर्म-सबधी कार्यो या विचारो मे मग्न रहता है। २ मनुष्य की वह मानसिक अवस्था जिसमे वह धर्म के नाम पर अधा होकर भले-बुरे का विचार छोड देता है। (थियोमेनिया)

धर्मोपदेश—पु०[धर्म-उपदेश ष०त०]१ धर्म-सबधी तत्त्वो, शिक्षाओं, सिद्धान्तो आदि से सबध रखनेवाला वह उपदेश जो दूसरों को धर्मनिष्ठ बनाने के लिए दिया जाय। २ धर्मशास्त्र।

धर्मोपदेशक—पु० [धर्म-उपदेशक, ष०त०] लोगो को धर्म-सबधी उपदेश देनेवाला व्यक्ति।

धर्मोपाध्याय—पु०[धर्म-उपाध्याय, ष०त०] पुरोहित।

धर्म्य—वि०[स० धर्म+यत्]१ धर्म-सबधी। २ धर्म-सगत। न्यायपूर्ण।

धर्म्य-विवाह—पु०[कर्म०स०] धर्म-विवाह।

धर्ष—पु०[स०√धृष् (झिडकना, दबाना)+घञ्] १ ऐसा आचरण या व्यवहार जिसमे शिष्टता, शील आदि का पूरा अभाव हो। अविनय और धृष्टता का व्यवहार। गुस्ताखी। २ असहन-शीलता। ३ अधीरता। ४ अनादर। अपमान। ५ (किसी स्त्री का) सतीत्व नष्ट करने की क्रिया। ६ हिंसा। ७ अशक्तता। असमर्थता। ८ प्रतिबन्ध। रुकावट। रोक। ९ नपुसकता। १० नपुसक। हिजडा।

धर्षक—वि०[स०√धृष्+ण्वुल्—अक] दबानेवाला। दमन करनेवाला। २ अनादर या अपमान करनेवाला। ३ असहिष्णु। ४ स्त्रियो का सतीत्व नष्ट करनेवाला। व्यभिचारी। ५ अभिनेता। नट।

धर्षकारी (रिन्)—वि० [स० धर्ष√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० धर्षकारिणी]=धर्षक।

धर्ष-कारिणी—वि० [स० धर्षकारिन्+ङीप्] (स्त्री) जिसका सतीत्व नष्ट हो चुका हो। व्यभिचारिणी।

धर्षण—पु०[स०√धृष्+ल्युट्—अन] [वि० धर्षणीय, धर्षित]१ किसी को जोर से पकडकर दबाने या दबोचने की क्रिया या भाव। २ किसी को परास्त करते हुए नीचा दिखाना। ३ अनादर। अपमान। ४ असहिष्णुता। ५ स्त्री के साथ किया जानेवाला प्रसग। सम्भोग। ६ एक प्रकार का पुराना अस्त्र। ७ शिव का एक नाम।

धर्षणा—स्त्री०[स०√धृष्+णिच्+युच्—अन, टाप्]१ धर्षण करने की क्रिया या भाव। धर्षण। २ अपमान। अवज्ञा। ३ स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। ४ स्त्री-प्रसग। सभोग।

धर्षणी—स्त्री० [स० √कृष् (खीचना)+अनि—ङीष्, क—ध] असती स्त्री। कुलटा।

धर्षणीय—वि०[स०√धृष्+अनीयर्] जिसका धर्षण किया जा सकता हो या किया जाना उचित हो।

धर्षित—भू०कृ० [स०√धृष्+क्त] [स्त्री० धर्षिता]१ जिसका धर्षण किया गया हो। दबाया या दमन किया हुआ। २ पराभूत। हराया हुआ। ३ जिसे नीचा दिखाया गया हो।

पु० प्रसग। मैथुन।

धर्षिता—स्त्री०[स० धर्षित+टाप्]१ व्यभिचारिणी स्त्री। २ वेश्या।

धर्षी (र्षिन्)—वि०[स० √धृष् +णिनि] [स्त्री० धर्षिणी]१ धर्षण करनेवाला। २ दबाने या दबोचनेवाला। ३ अपमान या तिरस्कार करनेवाला। ४ परास्त करने या हरानेवाला। ५ नीचा दिखाने-वाला।

धलड—पु०[स०] अकोल का पेड। ढेरा।

धव—पु०[स०√धू (कपन)+अच्]१ एक प्रकार का जगली पेड जिसकी पत्तियाँ अमरूद या शरीफे की पत्तियो की-सी होती है। इन पत्तियो से चमडा सिझाया जाता है। इसकी पत्ती, फल और जड तीनो दवा के काम मे आते है। धौ। २ स्त्री का पति या स्वामी। जैसे—माधव। ३ पुरुष। मर्द। चालाक। धूर्त। ५ एक वसु का नाम।

धवई—स्त्री०[स० धातकी, धवनी] एक प्रकार का पेड जो उत्तरीय भारत मे अधिकता से होता है। इसे धाय भी कहते है। इसमे एक प्रकार का गोद भी निकलता है।

धवनी—स्त्री०[स०] शालिपर्णी। सरिवन।

†स्त्री० [स० धवल] १ धौंकनी। भाथी। २ दे० 'धमनी'।

धवर—पु०[स० धवल] पडुक की तरह का एक प्रकार का पक्षी जिसका गला लाल और सारा शरीर सफेद होता है।

†वि० धवल (सफेद)।

धवरहर†—पु० धौरहर।

धवरा†—वि०[स० धवल] [स्त्री० धवरी] उजला। सफेद।

धवराहर†—पु० धौरहर।

धवरी—स्त्री०[हि० धवर]१ धवर पक्षी की मादा। २ सफेद रग की गौ।

वि० हि० 'धवर' का स्त्री०।

धवल—वि०[स०√धाव् (गति, शुद्धि)+कल, ह्रस्व]१ उजला। सफेद। २ निर्मल। शुभ्र। स्वच्छ। ३ मनोहर। सुन्दर।

पु०१ सफेद कोढ। २ श्वेत कुष्ठ। ३ धौ का पेड। ३ चिनिया कपूर। ४ सिंदूर। ५ सफेद गोल मिर्च। ६ अर्जुन वृक्ष। ७ सफेद परेवा या धौरा नामक पक्षी। ८ बहुत बडा बैल। ९ छप्पय छन्द का ४२ वा भेद। १० एक राग जो भरत के मत मे हिंडोल राग का ८ वाँ पुत्र है। ११ राजस्थान मे गाये जानेवाले एक प्रकार के मगल गीत।

धवल-गिरि—पु०[कर्म०स०]हिमालय की एक प्रसिद्ध चोटी, जो सदा बरफ से ढकी रहती है।

धवल-गृह—पु०[कर्म०स०]१ प्राचीन भारत मे राजप्रासाद का वह ऊपरी और कुछ ऊँचा उठा हुआ खड, जिसमे राजा और रानियाँ रहती थी और जो प्राय सफेद रग का होता था। २ प्रासाद। महल।

धवलता—स्त्री०[स० धवल+तल्+टाप्] धवल होने की अवस्था, गुण या भाव।

धवलत्व—पु०[स० धवल+त्व]=धवलता।

धवलना—स०[स० धवल] उज्ज्वल करना। चमकाना।
अ० उज्ज्वल होना।

धवल-पक्ष—पु०[कर्म०स०] १ चाद्र मास का शुक्ल पक्ष। उजला पाख। २ हस।

धवल-मृत्तिका—स्त्री०[कर्म०स०] सफेद अर्थात् खरिया मिट्टी। दुद्धी।

धवल-श्री—स्त्री०[कर्म०स०] ओडव जाति की एक रागिनी जो सध्या समय गाई जाती है।

धवलहर—पु० [स० धवल-गृह] १ प्रासाद। महल। उदा०—धवला गिरि कि ना धवलहर। —प्रिथीराज। २ दे० 'धौरहर'।

धवलांग—वि० [धवल-अग, ब० स०] धवल अर्थात् सफेद अगोवाला।
पु० हस।

धवला—स्त्री०[स० धवल+टाप्] सफेद गाय।
पु०[स० धवल] सफेद बैल।
वि० स० 'धवल' का स्त्री०।

धवलाई*—स्त्री०=धवलता।

धवलागिरि—पु०[स० धवल+गिरि]=धवलगिरि।

धवलित—भू०कृ० [स० धवल+इतच्] १. जो धवल अर्थात् सफेद किया गया हो। उज्ज्वल। जैसे—तुषार धवलित 'पर्वत'। २ खूब साफ या स्वच्छ किया हुआ।

धवलिमा(मन्)—स्त्री०[स० धवल+इमनिच्] १ श्वेता। सफेदी। २ उज्ज्वलता।

धवली—स्त्री०[स० धवय+ङीप्]१ सफेद गाय। २ सफेद गोल मिर्च। ३ समय से पहले बाल सफेद होने का रोग।

धवलीकृत—भू० कृ०[स० धवल+च्वि √कृ(करना)+क्त]जो धवल अर्थात् सफेद किया या बनाया गया हो।

धवलीभूत—भू०कृ०[स० धवल+च्वि√भू (होना)+क्त] जो सफेद हो गया हो।

धवलोत्पल—पु०[स० धवल-उत्पल, कर्म०स०] सफेद कमल।

धवा†—पु० =धव (वृक्ष)।

धवाना†—स०[हि० धाना का प्रे०] किसी को धाने या दौडने मे प्रवृत्त करना। दौडाना।
*अ०[स० ध्वनि]१ ध्वनि या शब्द होना। २ ध्वनित होना।
स० ध्वनि या शब्द उत्पन्न करना।

धवित्र—पु०[स०√धू (कपन)+इत्र] हिरन की खाल का बना हुआ पखा, जिससे यज्ञ की आग सुलगाई जाती थी।

धस—स्त्री०[?] एक प्रकार की जमीन जिसकी मिट्टी भुरभुरी होती है।
†स्त्री०[हि० धँसना] धँसने की क्रिया या भाव। धँसान।

धसक—स्त्री०[हि० धसकना]१ धसकने की क्रिया या भाव। २ ईर्ष्या, द्वेष, भय आदि कारणो से कलेजा या दिल धँसने या बैठने की अवस्था या भाव। ३ कोई काम करने मे झिझकने या दहलने की अवस्था या भाव।
स्त्री०[अनु०]१ खाँसने के समय गले मे होनेवाला खस-खस या धस-धस शब्द। २ सूखी खाँसी।

धसकन—स्त्री०[हि० धसकना] १ धसकने की क्रिया, भाव या स्थिति। २ धसक (डर या भय)।

धसकना—अ०[हि० धँसना]१ नीचे की ओर धँसना या दबना। २. ईर्ष्या आदि के कारण मन का दु खी होना। ३ (कलेजा या दिल) बैठना। उदा०—उठा धसक जिउ औ सिर धुन्न। —जायसी। ४. भय आदि के कारण झिझकना। ५ दहलना।

धसका—पु०[हि० धसक] चौपायो के फेफडो का एक सक्रामक रोग।

धसना—अ०[स० ध्वसन] ध्वस्त या नष्ट होना। मिटना।
स० ध्वस्त या नष्ट करना। मिटाना।
†अ०=धँसना।

धसनि—स्त्री० धँसनि।

धसमसाना†—अ० =धँसना।
†स० धँसाना।

धसान—स्त्री०[स० दशार्ण] पूर्वी मालवा और बुदेलखड की एक छोटी नदी।
†स्त्री० =धँसान।

धसाना—स० धँसाना।

धसाव—पु० धँसवा।

धाँक—पु०[देश०] भीलो की तरह की एक जगली जाति।
†स्त्री० =धाक।

धाँकना†—अ० स०=धाकना।

धाँगड—पु०[देश०]१ एक अनार्य जगली जाति जो विध्य और कैमोर की पहाडियों पर रहती है। २ एक जाति, जो कुएँ, तालाब आदि खोदने का काम करती है।

धाँगर—पु०=धाँगड।

धाँधना—स०[देश०]१ बन्द करना। भेडना। २ बहुत अधिक खाना। पेट मे भोजन ठूँसना। ३ नष्ट-भ्रष्ट करना। ध्वस्त करना। ४ त्रस्त या परेशान करना। उदा०—धर कर धरा धूप ने धाँधी। धूल उडाती है यह आँधी।—मैथिलीशरण गुप्त।
†अ० दौड-धूप करना।

धाँधल†—स्त्री० धाँधली।

धाँधलपन—पु०[हि० धाँधल+पन (प्रत्य०)]१ पाजीपन। शरारत। २ दे० 'धाँधली'।

धाँधली—स्त्री०[अनु०]१ उत्पात। उपद्रव। ऊधम। २ पाजीपन। शरारत। ३ कपट। छल। धोखा। ४ ऐसा कार्य या प्रयत्न जो उचित या न्यायसगत तथ्य या वास्तविकता का ध्यान न रखकर मनमाने ढग से और बुरे उद्देश्य से किया जाय। ५ जबरदस्ती अपनी गलत बात भी ठीक ठहराने या सबसे ऊपर रखने का प्रयत्न करना। ६ शीघ्रतापूर्वक कोई काम करने अथवा किसी काम के लिए दूसरो को उद्यत करने के लिए की जानेवाली जल्दबाजी या ताकीद।
क्रि० प्र०—मचाना।

धांधा—स्त्री०[स०] इलायची।

धांय—स्त्री०[अनु०] बदूक, तोप आदि के चलन से होनेवाला शब्द। धायँ।

धांस—स्त्री०[अनु०] कटु तथा तीक्ष्ण वस्तुओ की वह उत्कट गध, जिसके फलस्वरूप आँख, नाक, फेफडे आदि मे सुरसुराहट होने लगती है, या उनमे से कुछ पानी निकलने लगता है। जैसे—तमाकू या सुँघनी की धाँस, मिर्च या प्याज की धाँस।

धांसना—अ०[अनु०]१ घोडे आदि पशुओ का खाँसना। २ घोडे आदि की तरह जोर-जोर से खाँसना। ढाँसना।

धांसी—स्त्री०[अनु०]१ घोडो की खाँसी। २ दे० 'ढाँसी'।

धा—वि०[स० √धा (धारण)+क्विप्] धारक। धारण करनेवाला।
पु० १ ब्रह्मा। २ बृहस्पति।
प्रत्य० तरह का। प्रकार का। भाँति का। जैसे—नवधा भक्ति।
पु०[स० धैवत] सगीत मे धैवत स्वर का वाचक शब्द।
पु०[अनु०] तबले, मृदग आदि का एक बोल। जैसे—कुडान धा।
†स्त्री० धाय (दाई)।
†पु०=धव (धौ वृक्ष)।

धाइ—स्त्री० धाय (दाई)।
पु०=धौ (वृक्ष)।

धाई—स्त्री०=धाय(दाई)।

धाउ†—पु०=धाव।

धाऊ—पु०[स० धाना=दौडना] वह जो आवश्यक कामो के लिए इधर उधर दौडाया जाय। हरकारा।
†पु० धव (वृक्ष)।

धाक—पु०[स० √धा+क]१ वृष। साँड। २ आहार। भोजन। ३ अन्न। अनाज। ४ खभा। ५ आधार। सहारा। ६ पानी का हौज। ७ ब्रह्म।
स्त्री०[?]१ किसी व्यक्ति के ऐश्वर्य, गुण, पद आदि का वह प्रभाव जिससे और लोग दबे तथा भयभीत रहते और उसका सामना करने से डरते हो। आतक। दबदबा। जैसे—आज-कल बाजार मे उनकी धाक है।
मुहा०—**धाक जमना या बँधना**=रोब या दबदबा होना। आतक छाना। **धाक जमाना या बाँधना**=ऐसा काम करना जिससे लोगो पर दबदबा या रोब छा जाय।
२ ख्याति। प्रसिद्धि। शोहरत।
†पु०=ढाक (पलास)।

धाकड—वि०[हि० धाक]१ जिसकी धाक या दबदबा चारो ओर हो। २ ख्यात। प्रसिद्ध। ३ हृष्ट-पुष्ट। तगडा। बलवान।
पु० १ साँड। २ बैल।
†पु०=धाकर।

धाकना*—अ०[हि० धाक+ना (प्रत्य०)]१ धाक या रोब जमाना। २ किसी की धाक से प्रभावित होना।

धाकर—पु०[?]१ कुलीन ब्राह्मण। २ राजपूतो की एक जाति। ३ एक तरह का गेहूँ जिसकी फसल को जल की आवश्यकता नही होती।
†वि०[?] वर्ण-सकर। दोगला।
†वि०, पु०=धाकड।

धाकरा—पु०=धाकड।

धाख†—पु०[हि० धाक]१ डर। भय। २ दुःख। उदा०—कि सखि कहब कहेते धाख।—विद्यापति।
*पु०=ढाक (पलास)।

धाखा*—पु०=ढाक। (पलास)।

धागा—पु०[हि० तागा]१ बटा हुआ महीन सूत जो प्राय सीने-पिरोने के काम आता है। २ लाक्षणिक अर्थ मे, दो पक्षो को जोडनेवाली बात या वस्तु। सूत्र।

धाड—स्त्री०[हि० धार]१. डाकुओ का आक्रमण। २ आक्रमण। चढाई। उदा०—महि अपण मेवाड, राड धाड अकबर रचै।—दुरसा-जी।
क्रि० प्र०—पडना।
३ जीव-जन्तुओ का ऐसा दल या समूह जो दूर तक पक्ति के रूप मे चला गया हो। जैसे—च्यूँटियो या बन्दरो की धाड।
†स्त्री० १ डाढ। २ ढाड।
स्त्री०[हि० दहाड] जोर-जोर से चिल्लाकर रोने का शब्द।
क्रि० प्र०—मारना।

धाडना†—अ०=दहाडना।

धाडस†—पु०=ढारस।

धाडी—स्त्री०[हि० धाड]१ डाकुओ या लुटेरो का जत्था या दल। २ उक्त जत्थे का कोई व्यक्ति। डाकू। लुटेरा।

धाणक—पु०[स०√धा+आणक] एक प्राचीन परिमाण या मुद्रा।
†पु० दे० 'धानुक'।

धात†—स्त्री० धातु।

धातकी—स्त्री०[स० धातु+णिच्, टिलोप+ण्वुल्—अक+ङीष्]१ एक प्रकार का झाड जिसके फूलो का व्यवहार रँगाई के काम मे होता है। २ धव या धौ का पेड और उसका फूल।

धातविक—वि०[स० धातु+ठक्—इक] धातवीय।

धातवीय—वि० [स० धातु+छ—ईय] १ धातु-सबधी। धातु का। २ धातु का बना हुआ।

धाता (तृ)—वि० [स०√धा+तृच्]१ धारण करनेवाला। २ पालन-पोषण करनेवाला। पालक। ३ रक्षक।
पु०१ विधाता। ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ शिव। ४ शेषनाग। ५. बारह सूर्यो मे से एक। ६ ब्रह्मा के एक पुत्र का नाम। ७ भृगु मुनि के एक पुत्र का नाम। ८ उनचास वायुओ मे से एक। ९ साठ सवत्सरो मे से एक। १० टगण का आठवाँ भेद। ११ सप्तर्षि। १२ उप-पति।

धातु—स्त्री०[स०√धा+तुन्]१ वह मूल तत्त्व जिससे कोई चीज बनी हो। पदार्थ या वस्तु का उपादान। २ पृथ्वी, जल, तेज, वायु और आकाश इन पाँचो महाभूतो मे से प्रत्येक जो अलग-अलग या मिलकर पदार्थों की रचना या सृष्टि करते है। ३ शरीर को धारण करने या बनाये रखनेवाले तत्त्व जिनकी सख्या वैद्यक मे ७ कही गई है। यथा—रस, रक्त, मास, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र।
विशेष—कहा गया है कि जो कुछ हम खाते-पीते हैं, उन सबसे क्रमात्

उक्त सात धातुएँ बनती है, जिनसे हमारा शरीर बनता है। कुछ लोग वात, पित्त और कफ की गणना भी धातुओ मे ही करते है। कुछ लोग इन सात धातुओ मे केश, त्वचा और स्नायु को भी सम्मिलित करके इनकी सख्या १० मानते हैं।

४ कुछ विशिष्ट प्रकार के खनिज पदार्थ जिनकी सख्या हमारे यहाँ ७ कही गई है। यथा—चाँदी, जस्ता, ताँबा, राँगा, लोहा, सीसा, और सोना।

विशेष—उक्त सात धातुओ के सिवा हमारे यहाँ वैद्यक मे सात उप-धातुएँ भी कही गई हैं—काँसा, तूतिया, पीतल, रूपामक्खी, सोनामक्खी शिलाजीत, और सिंदूर। इसके सिवा खडिया, गंधक, मैनसिल, आदि सभी खनिज पदार्थों की गिनती हमारे यहाँ धातुओ मे होती है। परन्तु आधुनिक विज्ञान की परिभाषा के अनुसार धातु उस खनिज पदार्थ को कहते हैं, जो चमकीला तो हो, परन्तु पारदर्शी न हो, जिसमे ताप, विद्युत् आदि का सचार होता हो, जो कूटने, खीचने, पीटने आदि पर बढ सके अर्थात् जिसके तार और पत्तर बन सकें। इन सात धातुओ के सिवा काँसा, पीतल आदि धातु ही हैं। समय-समय पर अनेक नई धातुएँ भी मिलती रहती हैं। खानो मे ये धातुएँ अपने विशुद्ध रूप मे नही निकलती, बल्कि उनमे अनेक दूसरे तत्त्व भी मिले रहते है। उन मिश्रित रूपो को साफ करने पर धातुएँ अपने बिलकुल शुद्ध रूप मे आती हैं।

५ सस्कृत व्याकरण मे, क्रियाओ के वे मूल रूप जिससे उनके भिन्न-भिन्न विकारी रूप बनते है। जैसे—अस्, कृ, घृ, भू आदि।

विशेष—इन्ही के आधार पर अब हिन्दी मे भी कर, खा, जा, आदि रूप धातु माने जाने लगे है। ६ गौतम बुद्ध अथवा अन्य बौद्ध महापुरुषो की अस्थियाँ जिनको उनके अनुयायी डिब्बो मे बन्द करके स्मारक रूप मे स्थापित करते थे। ७ बौद्ध-दर्शन मे वे तत्त्व या शक्तियाँ जिनसे सब घटनाएँ होती है। ८ पुरुष का वीर्य। शुक्र।

मुहा०—**धातु गिरना या जाना**=पेशाब के रास्ते या उसके साथ वीर्य का पतला होकर निकलना जो एक रोग है।

९ परमात्मा। परब्रह्म। १० आत्मा। ११ इद्रिय। १२ अश, खड या भाग। १३ पेय पदार्थ।

धातु-काशीस (कसीस)—पु०[मध्य०स०] दे० 'कसीस'।

धातु-क्षय—पु०[ष०त०]१ खाँसी का रोग जिससे शरीर क्षीण होता है। २ प्रमेह आदि रोग जिनसे धातु अर्थात् वीर्य का क्षय होता है। ३ क्षयरोग।

धातु-गर्भ—पु०[ब०स०] वह डिब्बा या पिटारी जिसमे बौद्ध लोग बुद्ध या अपने अन्य साधु महात्माओ के दात या हड्डियाँ आदि सुरक्षित रखते है। देहगोप।

धातुगोप—पु०=धातु-गर्भ।

धातुघ्न—वि०[स० धातु√हन् (मारना)+टक्] धातु को नष्ट करने या मारनेवाला।

पु० वह पदार्थ जिससे शरीर का धातु नष्ट हो। जैसे—काँजी, पारा आदि।

धातु-चैतन्य—वि० [ब०स०] धातु को जाग्रत तथा चैतन्य करनेवाला।

धातुज—वि०[स० धातु√जन् (उत्पत्ति)+ड] धातु से उत्पन्न, अर्थात् निकला या बना हुआ।

पु० खनिज या शैलज तेल।

धातु-द्रावक—वि०[ष०त०] धातु को गलाने या पिघलानेवाला।

पु० सुहागा जिसके योग से सोना आदि धातुएँ गलाई जाती हैं।

धातु-नाशक—वि०, पु०[ष०त०] =धातुघ्न।

धातुप—पु०[स० धातु√पा (रक्षा)+क] वैद्यक के अनुसार शरीर का वह रस या पतला धातु जो भोजन के उपरात तुरन्त बनता है और जिससे शरीर की अन्य धातुओं का पोषण होता है।

धातु-पाठ—पु० [ब०स०] पाणिनि कृत सस्कृत व्याकरण के अनुसार उन धातुओ अर्थात् क्रियाओ के मूलरूपो की सूची जो सूत्रो से भिन्न है। (यह सूची भी पाणिनि की ही प्रस्तुत की हुई मानी जाती है।)

धातु-पुष्ट—वि०[ब०स०] शरीर का वीर्य बढाने तथा पुष्ट करनेवाला।

धातु-पुष्पिका—स्त्री० [ब०स०, ङीप्+कन्—टाप्, ह्रस्व] धव या धौ का फूल।

धातु-पुष्पी—स्त्री०[ब०स०, ङीष्]=धातु-पुष्पिका।

धातु-प्रधान—पु०[स०त०] वीर्य। (डि०)

धातुबैरी—पु० [स० धातुवैरिन्] गधक।

धातुभृत्—वि०[स० धातु√भृ (पोषण)+क्विप्] जिससे धातु का पोषण हो।

पु० पर्वत। पहाड।

धातुमत्ता—स्त्री०[स० धातुमत्+तल्—टाप्] धातुमान होने की अवस्था, गुण या भाव।

धातुमय—वि० [स० धातु+मयट्] १. जिसमे धातु मिली हो। धातु से युक्त। २ (प्रदेश या स्थान) जिसमे धातुओ आदि की खाने हो।

धातु-मर्म—पु०=धातुवाद। (देखें)

धातु-मल—पु०[ष०त०]१ शरीरस्थ धातुओ के विकारी अश जो कफ, नख, मैल आदि के रूप मे शरीर से बाहर निकलते है। २ धातुओ आदि को गलाने पर उनमे से निकलनेवाला फालतू या रद्दी अश। खेडी। (स्लैग)

धातु-माक्षिक—पु०[मध्य०स०] सोनामक्खी नामक उपधातु।

धातु-मान् (मत्)—वि०[स० धातु+मतुप्] जिसमे या जिसके पास धातुएँ हो।

धातुमारिणी—स्त्री०[स० धातुमारिन्+ङीष्] सुहागा।

धातु-मारी (रिन्)—पु०[स० धातु√मृ(मरना)+णिच्+णिनि]गंधक।

धातुयुग—पु० [ष०त०]मानव जाति के इतिहास मे वह युग जब उसने पहले पहल धातुओ का उपयोग करना प्रारभ किया था। और जो प्रस्तर-युग के बहुत बाद आया था। (मैटलिक एज)

धातुराग—पु० [मध्य०स०] ऐसा रग, जो धातुओ मे से निकलता हो अथवा उनके योग से बनाया जाता हो। जैसे—ईंगुर, गेरू आदि।

धातु-राजक—पु०[ष० त०+कन्] प्रधान या श्रेष्ठ शरीरस्थ धातु—शुक्र (वीर्य)।

धातु-रेचक—वि०[ष०त०] (वस्तु) जिसके सेवन से धातु का स्खलन हो।

धातु-वर्द्धक—वि०[ष०त०] धातु (वीर्य) का अभिवर्द्धन करनेवाला।

धातु-वल्लभ—पु०[स०त०] सुहागा।

धातु-वाद—पु०[ष०त०]१ वह कला या विद्या जिसमे खान से निकली हुई कच्ची धातुएँ साफ की जाती और एक मे मिली हुई कई धातुएँ अलग-अलग की जाती हैं। (इसकी गिनती ६४ कलाओं मे की गई है) २. भिन्न-भिन्न धातुओ म सोना बनाने की विद्या। कीमियागरी। ३ रसायन शास्त्र।

धातुवादी (दिन्)—पु०[स० धातुवाद+इनि]१. वह जो धातुवाद का अच्छा ज्ञाता हो। २ रसायन शास्त्र का ज्ञाता।

धातु-विज्ञान—पु०[ष०त०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि धातु मे क्या-क्या गुण या विशेषताएँ होती है, उसकी भौतिक रचना कैसे हुई है, किस प्रकार परिष्कृत या शुद्ध की जाती हैं और उन्हे किस प्रकार मिलाकर भिन्न धातुएँ बनाई जाती है। (मेटलर्जी)

धातु-वैरी (रिन्)—पु०[ष०त०] गधक।

धातु-शेखर—पु०[ष०त०]१ कसीस। २ सीसा।

धातु-संज्ञ—पु०[ब०स०] सीसा।

धातु-स्तंभक—वि०[ष०त०](औषध या पदार्थ) जो वीर्य को शरीर मे रोक रखे और जल्दी से निकलने या स्खलित न होने दे।

धातुहन—पु०[स० धातु√हन् (नष्ट करना)+अच्] गधक।

धातू—स्त्री० धातु।

धातूपल—पु० [धातु-उपल, मध्य०स०] खड़िया मिट्टी।

धातृका—स्त्री० [स० धात्रिका] वह स्त्री जो रोगियो की सेवा-शुश्रूषा विशेषत जच्चा और बच्चो की देख-रेख करती हो और ऐसे कार्य करने मे प्रशिक्षित हो। (नर्स)

धातृ-पुत्र—पु०[स० ष०त०] ब्रह्मा के पुत्र सनत्कुमार।

धातृ-पुष्पिका (पुष्पी)—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्, कन्+टाप्, ह्रस्व] धवर्क या धौ के फूल।

धात्र—पु०[स०√धा+ष्ट्रन्]१ पात्र। बरतन। २ आधान।

धात्रिका—स्त्री०[स० धात्री+कन्—टाप्, ह्रस्व] छोटा आँवला। आमलकी।

धात्री—स्त्री०[स० धात्र+ङीष्]१ माता। माँ। २ बच्चे को दूध पिलानेवाली दाई। धाय। ३ गायत्री स्वरूपिणी भगवती और माता। ४ पृथ्वी जो सब की माता है। ५ गौ, जिसका दूध माता के दूध के समान होता है। ६ गंगा नदी। ७ आँवला। ८ फौज। सेना। ९ आर्या छन्द का एक भेद।

धात्री-पत्र—पु०[ब०स०]१ तालीस-पत्र। २ आँवले की पत्ती।

धात्री-पुत्र—पु०[ष०त०] धाय का लड़का।

धात्री-फल—पु०[ष०त०] आँवला।

धात्री-विद्या—स्त्री० [ष०त०] वह विद्या जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि गर्भवती स्त्रियो को किस प्रकार प्रसव कराना चाहिए और प्रसूता तथा शिशु की किस प्रकार देख-रेख करनी चाहिए। (मिडवाइफरी)

धात्रेयी—स्त्री० [स० धात्री+ढक्—एय+ङीप्]१ धात्री की बेटी। २ धात्री। दाई।

धात्वर्थ—पु०[स० धातु-अर्थ] शब्द या वह पहला या मूल अर्थ जो उसकी धातु (पद या शब्द की प्रकृति) से निकलता हो। प्राथमिक अर्थ। जैसे—प्रभाकर का धात्वर्थ है—प्रभा या प्रकाश करनेवाला।

धात्वीय—वि०[स० धातु+छ—ईय] १ धातु-सबधी। धातु का। २. धातु का बना हुआ।

धाधना †—स०[?] देखना।

अ०, स०, =धाँधना।

धान—पु०[स० धान्य]१ तृण जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके बीजो का चावल होता है। व्रीहि। शालि। (इसकी सैकड़ो जातियाँ या प्रकार होते है)२ चावल का वह रूप जिसमे उसके चारो ओर छिलका लगा रहता है।

विशेष—जब धान कूटा जाता है, तब उसका छिलका या भूसी उतर जाती है और अन्दर से चावल निकल आता है।

३ अन्न। अनाज। ४ किसी का दिया हुआ भोजन।

धानक—पु०[स० धन्याक, पृषो० सिद्धि] १ धनियाँ। २ एक रत्ती का चौथाई भाग।

पु०[स० धानुष्क]१ धनुर्धर। २ रूई धुननेवाला। धुनिया। ३ एक पहाड़ी जाति।

धानकी—पु०[हि० धानुक]१ धनुर्धर। धनुर्द्धारी। २ कामदेव। (डि०)

धानजई—पु०[हि० धान+जई] धान की एक किस्म।

धान-पान—पु०[हि० धान+पान] विवाह से कुछ ही पहले होनेवाली एक रसम जिसमे वर-पक्ष से कन्या के घर धान और हल्दी भेजी जाती है। वि० धान और पान की तरह बहुत ही कोमल अथवा दुबला-पतला। नाजुक। उदा०—चोटी का बोझ ऊई, उठाय जो यह कमर, बूता नही है इतना मुझ धान-पान मे।—जान साहब।

धानमाली—पु०[स०?] दूसरे के चलाये हुए अस्त्र का प्रतिकार करने या उसे रोकने की एक क्रिया।

धाना—अ०[स० धावन] १ दौड़ना। २ बहुत तेजी से चलते हुए आगे बढ़ना।

मुहा०—**धाय पूजना**=(क) धाकर और दौड़ते हुए जाकर किसी को पूजना। (ख) बिलकुल अलग या बहुत दूर रहना। (परिहास और व्यग्य)

३ किसी काम के लिए प्रयत्न करते समय इधर-उधर दौड़-धूप करना। स्त्री०[स०√धा(धारण)+न—टाप्]१ भुना हुआ जौ या चावल। बहुरी। २ अन्न का कण या छोटा दाना। ३. सत्तू। ४ धान। ५ अनाज। अन्न। ६ पौधो आदि का अकुर। ७ धनियाँ।

धाना-चूर्ण—पु०[ष०त०] सत्तू।

धाना-भर्जन—पु०[ष०त०] अनाज भूनना।

धानी—स्त्री० [स०√धा+ल्युट्—अन+ङीप्]१ जगह। स्थान। २ ऐसा स्थान जिसमे किसी का निवास हो या कोई रहे। जैसे—राजधानी। ३ ऐसी जगह जो किसी के लिए आधार या आश्रय का काम दे। उदा०—सका तें सकानी, लका रावन की राजधानी, पजरट पानी धूरि धानी भयो जात है।—सेनापति। ४ ऐसा आधार जिसमे या जिस पर कोई चीज रखी जाय। (स्टैंड) जैसे—शूकधानी। ५ धनियाँ। ६. पीलू वृक्ष।

वि० [स० धारण] धरण करनेवाला।

स्त्री०[स० धाना] भुना हुआ गेहूँ या जौ। जैसे—गुड़धानी।

स्त्री०[?] सपूर्ण जाति की एक रागिनी।
वि० [हिं० धान] धान की हरी पत्तियो के से रग का। हलका हरा। जैसे—धानी दुपट्टी।
पु० उक्त प्रकार का हलका हरा रग जो धान की पत्तियो के रग से मिलता-जुलता है।

धानुक—पु०[स० धानुष्क]१ धनुष चलाने मे कुशल व्यक्ति। कमनैत। धनुर्द्धर। उदा०—धानुक आयु बेझ जग कीन्हा।—जायसी। २. एक जाति जो प्राय कहारो की तरह सेवा-कार्य करती है। ३ इस जाति का व्यक्ति।

धानुकी†—पु० =धानुक (धनुर्धारी)।

धानुर्दंडिक—पु० [स० धनुर्दंड+ठक्—इक] =धानुष्क।

धानुष्क—पु० [स० धनुस्+ठक्—क] कमनैत। धनुर्धर।

धानुष्का—स्त्री० [स० धानुष्क+टाप्] अपामार्ग। चिचडा।

धानुष्य—पु० [स० धनुस्+ष्यञ्] एक प्रकार का बाँस जिससे धनुष बनते थे।

धानेय—पु० [स० धाना+ढक्—एय] धनियाँ।

धान्य—पु० [स० धान+यत्] १ अनाज। अन्न। गल्ला। २ ऐसा चावल जिसका छिलका निकाला न गया हो। धान।
पद—धन-धान्य- आर्थिक सपत्ति और खाने-पीने के समस्त पदार्थ या साधन।
३ धनियाँ। ४ प्राचीन काल की चार तिलो के बराबर एक तौल या परिमाण। ५ केवटी मोथा। ६ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

धान्यक—पु० [स० धान्य+कन्] १ धनियाँ। २ धान।

धान्य-कूट—पु० धान्य-कोष्ठक।

धान्य-कोष्ठक—पु० [प० त०] अनाज रखने के लिए बना हुआ बडा बरतन। कोठिला। गोला।

धान्य-चमस—पु० [मघ्य० स०] चिडवा।

धान्यचारी (रिन्)—पु०[स० धान्य√चर् (गति)+णिनि] चिडिया। पक्षी।

धान्यजीवी (विन्)—वि० [स० धान्य√जीव् (जीना)+णिनि] धान्य खाकर जीवन-निर्वाह करनेवाला।
पु० चिडिया। पक्षी।

धान्यतुषोद—पु० [स०] काँजी।

धान्य-धेनु—स्त्री० [मध्य० स०] अन्न की ढेरी जिसे गौ मानकर दान किया जाता था।

धान्य-पचक—पु० [ष० त०] १ शालि, व्रीहि, शूक, शिबी, और क्षुद्र ये पाँच प्रकार के धान। २ वैद्यक मे एक प्रकार का तैयार किया हुआ पानी जो पाचक कहा गया है। ३ वैद्यक मे एक प्रकार का औषध।

धान्य-पति—पु० [ष० त०] १ चावल। २ जौ।

धान्य-पानक—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का पन्ना या पेय पदार्थ जो धनिये के योग से बनाया जाता है।

धान्य-बीज—पु० [ष० त०] धनिये के बीज।

धान्य-भोग—पु० [स०] ऐसी उपजाऊ भूमि जिसमें अन्न बहुत अधिक मात्रा मे उत्पन्न होता हो।

धान्यमालिनी—स्त्री० [स०] रावण के दरबार की एक राक्षसी जिसे उसने जानकी को बहकाने के लिए नियुक्त किया था।

धान्यमाष—पु० [स०] अन्न मापने का एक प्राचीन परिमाण।

धान्य-मुख—पु० [ब० स०] चीर-फाड करने का एक प्राचीन उपकरण। (सुश्रुत)

धान्य-मूल—पु० [ब० स०] काँजी।

धान्य-यूष—पु० [ष० त०] काँजी।

धान्य-योनि—स्त्री० [ब० स०] काँजी।

धान्य-राज—पु० [ष० त०] जौ।

धान्य-वर्धन—पु० [ब० स०] अन्न उधार देने की वह रीति जिसमे मूल और ब्याज दोनों अन्न के रूप मे ही लिया जाता था।

धान्य-वाप—पु० [ब० स०] ऐसी उपजाऊ भूमि जहाँ अन्न बहुतायत से पैदा होता हो।

धान्य-बीज—पु० [ष० त०] १ धान का बीज। २ [ब० स०] धनियाँ।

धान्य-वीर- पु० [स० त०] उडद। माष।

धान्य-शर्करा—स्त्री० [मध्य० स०] चीनी मिला हुआ धनिए का पानी जो अतर्दाह शात करने के लिए पीया जाता है।

धान्य-शीर्षक—पु० [ष० त०] गेहूँ, धान आदि पौधो की बाल।

धान्य-शैल—पु० [मध्य० स०] दान करने के निमित्त लगाई हुई अन्न की बहुत बडी ढेरी।

धान्य-सार—पु० [ष० त०] चावल।

धान्या—स्त्री० [स० धान्य+टाप्] धनिया।

धान्याक—पु० [स० धान्य√अक् (गति)+अण्] धनिया।

धान्याचल—पु० [धान्य-अचल, मध्य० स०] =धान्य-शैल।

धान्याभ्रक—पु०[स०] १ वैद्यक मे भस्म बनाने के लिए धान की सहायता से शोधा और साफ किया हुआ अभ्रक। २ उक्त प्रकार से अभ्रक शोधने की क्रिया।

धान्याम्ल—पु० [धान्य-अम्ल, मध्य० स०] काँजी।

धान्याम्लक—पु० [स० धान्याम्ल+कन्] धान से बनी हुई काँजी।

धान्यारि—पु० [धान्य-अरि, ष० त०] धान का शत्रु, चूहा।

धान्यार्थ—पु० [धान्य-अर्थ, मध्य० स०] अन्न या धान के रूप मे होनेवाली सपत्ति।

धान्याशय—पु० [धान्य-आशय, ष० त०] अन्नशाला। अन्न का भडार।

धान्यास्थि—स्त्री० [धान्य-अस्थि ष० त०] धान का छिलका। भूसी।

धान्योत्तम—पु० [धान्य-उत्तम, स० त०] उत्तम प्रकार का धान, शालि।

धान्वतर्य—पु० [स० धन्वन्तरि+ष्यञ्] धन्वतरि देवता के उद्देश्य से होनेवाले होम आदि।

धान्व—वि०[स० धन्व+अण्] १ धन्व से सबध रखनेवाला। २ धन्व देश मे होनेवाला। ३ मरुदेश सबधी।

धान्वन—वि० [स०]=धान्व।

धाप†—पु० [हिं० धापना] १ धापने की क्रिया या भाव। २ दूरी की प्राय एक अनिश्चित नाप। उतनी दूरी जितनी प्राय एक साँस मे दौडकर पार की जा सके।
पद—धाप भर=थोडी दूर पर। पास ही मे।
३ लबा-चौडा मैदान।

पु० [?] पानी की धार। (लश०)

स्त्री० [?] तृप्ति।

धापना—अ० [सं० धावन] १ दूर तक चलना। २ किसी काम के लिए इधर-उधर आना-जाना या दौड़-धूप करना। ३ दौड़ना। ४ परेशान या हैरान होना।

अ० [?] तृप्त होना। अघाना।

स० तुष्ट या तृप्त करना।

धाबरी—स्त्री० [देश०] कबूतरों का दरबा।

धाबा—पु० [देश०] १ छत के ऊपर का कमरा। अटारी। २ वह स्थान जहाँ दाम देने पर पकी-पकाई कच्ची रसोई बैठकर खाने को मिलती हो। बासा।

धा-भाई—पु० [हिं० धा=धाय+भाई] दो विभिन्न माताओं के गर्भ से उत्पन्न वे बच्चे जो एक ही धाय या धाई का दूध पीकर पले हों। दूध-भाई।

धाम(न्)—पु० [सं०√धा (धारण)+मनिन्] १ रहने का स्थान। २ घर। मकान। ३ कोई बहुत बड़ा तीर्थ, देवस्थान या पुण्य-स्थान। जैसे—चारों धाम।

पद—परम धाम=स्वर्ग।

४ ब्रह्मा। ५ परलोक। ६ स्वर्ग। ७ विष्णु। ८ आत्मा। ९ देह। शरीर १० जन्म। ११ किरण। उदा०—धाम की है निधि, जाके आगे चंद मंद-दुति।—सेनापति। १२ ज्योति। उदा०—भाल मध्य निकर दहन दिन धाम के।—सेनापति। १३ तेज। १४ शोभा। १५ प्रभाव। १६ अवस्था। दशा। १७ बागडोर। लगाम। १८ चारदीवारी। प्राचीर। १९ देवताओं का एक वर्ग। (महाभारत) २० फौज। सेना। २१ समूह। २२ कुटुंब या परिवार का आदमी।

पु० [देश०] फालसे की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड़ जो मध्य और दक्षिण भारत में पाया जाता है।

धामक—पु० [सं० धानक, पृषो० सिद्धि] माशा (तौल)।

धामक-धूमक†—स्त्री०=धूम-धाम।

धामन—पु० [देश०] १ फालसे की एक जाति। २ एक प्रकार का बाँस।

स्त्री० रेतीली भूमि में होनेवाली एक प्रकार की घास।

स्त्री० धामिन।

धामनिका—स्त्री०=धामनी।

धामनिधि—पु० [ष० त०] सूर्य।

धामनी—स्त्री०=धमनी।

धामभाज्—पु० [सं० धामन्√भज् (पाना)+ण्वि] अपना भाग लेने के लिए यज्ञ में सम्मिलित होनेवाले देवता।

धामश्री—स्त्री० [सं०] एक रागिनी जिसके गाने का समय दिन में २५ दंड से २८ दंड तक माना गया है।

धामस-धूमस†—स्त्री०=धूम-धाम।

धामा—पु० [हिं० धाम] १ ब्राह्मणों को मिलनेवाला भोजन का निमंत्रण। खाने का न्योता। २ बेंत का बुना हुआ एक प्रकार का टोकरा या बड़ी दौरी। ३ अनाज आदि रखने का बड़ा बरतन। (पश्चिम)

धामार्गव—पु० [सं० धा-मार्ग ष० त०, धामार्ग√वा (गति)+क] १ लाल चिचड़ा। २ घीआ-तोरी।

धामासा†—पु०=धमासा।

धामिन—स्त्री० [हिं० धाना=दौड़ना] हरे रंग की झलक लिये हुए सफेद रंग का साँप जो बहुत तेज चलने या दौड़ने के लिए प्रसिद्ध है।

पु०=धामन।

धामिया—पु० [हिं० धाम] १ एक आधुनिक पंथ या सम्प्रदाय। २ उक्त पंथ का अनुयायी व्यक्ति।

धायँ—स्त्री० [अनु०] १ बंदूक, तोप आदि चलने से होनेवाला भीषण शब्द। २ आग की लपटों से हवा के टकराने में होनेवाला शब्द।

पद—धायँ धायँ=धायँ धायँ शब्द करते हुए। जैसे—चिता धायँ धायँ जल रही थी।

धाय—स्त्री० [सं० धात्री] वह स्त्री जो किसी के बच्चे को दूध पिलाती हो। दूध पिलानेवाली दाई।

पु० [सं०] पुरोहित।

पु०=धव (वृक्ष)।

धायक—वि० [सं०√धा+ण्वुल्—अक] धारण करनेवाला।

वि० [हिं० धाना]=धावक (दौड़नेवाला)।

धयना—अ०=धाना (दौड़ना)।

धाया—स्त्री० [सं०] वह वेद मंत्र जो अग्नि प्रज्वलित करते समय पढ़ा जाता है।

स्त्री० धाय (दाई)।

धार—पु० [सं० धारा+अण्] १ जोरों से होनेवाली वर्षा। २ वर्षा का इकट्ठा किया हुआ जल। ३ उधार लिया हुआ धन या पदार्थ। ऋण। कर्ज। ४ प्रदेश। प्रांत। ५ विष्णु। ६ आमला। ७ सीमा। ८ एक प्रकार का पत्थर।

वि० [√धृ (धारण)+अण्] १ धारण करनेवाला। २ सहारा देनेवाला। ३ बहता हुआ या बहनेवाला। ४ गहरा। गंभीर।

स्त्री० [सं० धारा] १ किसी तरल पदार्थ के किसी दशा में निरंतर बहते हुए होने की अवस्था। धारा। जैसे—पानी-कल की धार के नीचे बैठकर नहाना।

मुहा०—धार टूटना=धार का प्रवाह बीच में खंडित होना या रुकना। **(कोई चीज) धार पर मारना**=(किसी चीज पर) धार मारना। **धार बँधना**=तरल पदार्थ का इस प्रकार गिरना या बहना कि उसकी धार बन जाय। **(किसी चीज पर) धार मारना**=इतनी अधिक उपेक्षा सूचित करना कि मानो उस पर पेशाब कर रहे हों। जैसे—ऐसी नौकरी पर हम धार मारते हैं।

२ पानी का सोता। चश्मा। ३ जल-डमरू-मध्य। (लश०) ४ पशु आदि का स्तन दबाने पर उसमें से धारा के रूप में निकलने-वाला दूध।

मुहा०—धार चढ़ाना=पवित्र नदी, देवता आदि को दूध चढ़ाना। **धार देना**=धार चढ़ाना। **(मादा पशु का) धार देना**=दुहने पर दूध देना। **धार निकालना**=मादा पशुओं को दुहकर उसके स्तनों से दूध की धार निकालना।

५ काट करने वाले हथियार का वह तेज या पैना किनारा जिससे कोई चीज काटते हैं। बाढ़। जैसे—चाकू या तलवार की धार।

मुहा०—(किसी हथियार की) धार बाँधना=मंत्र बल से ऐसा प्रभाव उत्पन्न करना कि हथियार की धार काट करने मे असमर्थ हो जाय।

६ किनारा। छोर। सिरा। ७. सेना। फौज। ८ बहुत से लोगो के द्वारा कुछ लोगो पर होनेवाला आक्रमण अथवा उक्त प्रकार के आक्रमण के लिए होनेवाला अभियान। धाड।

मुहा०—धार पड़ना=उक्त प्रकार का आक्रमण होना।

९ बहुत बडा दल या समूह। जैसे—धार की धार बदर आ गये। १० ओर। तरफ। दिशा। ११ जहाज के फर्श पर तख्तों के बीच का जोड या संधि जो सीधी रेखा के रूप मे होती है। कस्तूरा। (लश०) १२ पहाडो की शृखला। पर्वत-माला। १३ रेखा। लकीर।

पुं० [सं० धारण] १ चोबदार या द्वारपाल। (डि०) २. लकड़ी का वह टुकडा जो कच्चे कूएँ के मुँह पर इसलिए लगाया जाता है कि ऊपर की मिट्टी कूएँ मे न गिरने पावे।

प्रत्य० [स०] १ एक प्रत्यय जो कुछ सस्कृत शब्दो के अत मे लगकर 'धारण करनेवाला' का अर्थ देता है। जैसे—कर्ण-धार। २ एक प्रत्यय जो कुछ हिन्दी धातुओ के अत मे लगकर 'कर्ता', 'धारक' आदि का अर्थ देता है। जैसे—लिखधार =लिखनेवाला।

धारक—वि० [स०√धृ+ण्वुल्—अक] १ धारण करनेवाला। धारनेवाला। २ रोकनेवाला। ३ उधार लेनेवाला। ४ (व्यक्ति) जो कोई चीज कही लेकर जाय। वाहक। जैसे—इस चेक या हुंडी के धारक को रुपए दे दें।

पुं० कलश। घडा।

धारका—स्त्री० [स० धारक+टाप्] १ स्त्री की मूत्रेंद्रिय। २ भग। योनि।

धारण—पु० [स०√धृ+णिच्+ल्युट्—अन] १. कोई चीज ठीक तरह उठाना, पकडना या सँभालना। जैसे—शस्त्र धारण करना। २ आभूषण, वस्त्र आदि के सबध मे अगो पर रखना, लपेटना या चढ़ाना। पहनना। ३ स्मृति मे रखना। याद रखना। ४ कोई बात, विचार या सकल्प मन मे स्थिर करना। जैसे—व्रत धारण करना। ५. अगीकार करना। ६ खाद्य के रूप मे सेवन करना। खाना। ७ उधार या ऋण लेना। ८ शिव। ९ कश्यप के एक पुत्र का नाम।

धारणक—पु० [स०] ऋणी। कर्जदार।

धारणा—स्त्री० [सं०√धृ+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ धारण करने की अवस्था, क्रिया, गुण या भाव। २ वह आंतरिक शक्ति जिसके द्वारा जानी, देखी या सुनी हुई बात का ज्ञान या ध्यान मन मे स्थायी रूप से रहता है। ३ किसी कार्य, विषय या प्रसग के सबध मे मन मे बना हुआ कोई व्यक्तिगत विचार या विश्वास। जैसे—हमारी तो अब तक यही धारणा है कि रुपए वही चुरा ले गया है। ४ मर्यादा। ५ याद। स्मृति। ६ योग के आठ अगो में से एक जिसमें प्राणायाम करते हुए मन को सब ओर से हटाकर निर्विकार, शांत और स्थिर किया जाता है। ७ मन की दृढता और स्थिरता। ८. बृहत्संहिता के अनुसार ज्येष्ठ मास की शुक्ला अष्टमी से एकादशी तक पड़नेवाला एक योग, जिसमें वायु की गति देखकर यह निश्चित किया जाता है कि इस वर्ष अच्छी वर्षा होगी या नही।

धारणावान् (वत्)—वि० [स० धारण+मतुप्] [स्त्री० धारणावती] जिसकी धारणा-शक्ति बहुत प्रबल हो। मेधावी।

धारणिक—पु० [स० धारण+ठक्—इक] १ ऋणी। कर्जदार। २ धन जमा कर के रखने की जगह। खजाना। ३ वह व्यक्ति जिसके पास कोई चीज अमानत या धरोहर के रूप मे जमा की जाय। महाजन।

धारणी—स्त्री० [स०√धृ+णिच्+ल्युट्—अन, ङीष्] १ नाडिका। नाडी। २ पंक्ति। श्रेणी। ३ सीधी रेखा या लकीर। ४. पृथ्वी जो सबको धारण किये रहती है। ५ बौद्ध-तत्र का एक अग।

धारणीमति—स्त्री० [स०] योग मे एक तरह की समाधि।

धारणीय—वि० [स०√धृ+णिच्+अनीयर] [स्त्री० धारणीया] जो धारण किये जाने के योग्य हो। जिसे धारण करना आवश्यक या उचित हो।

पु० १ धरणीकद। २ तात्रिको का एक प्रकार का मत्र।

धार-धूरा—पु० [हि० धार+धूरा (धूल)] नदी के उतरने पर निकलनेवाली जमीन। गगबरार।

धारना—स० [स० धारण] १ अपने ऊपर रखना या लेना। धारण करना। २ ग्रहण करना। लेना। उदा०—दड छोड कोदड-कमडलु, धार चला था। —मैथिली शरण। ३ ऋण या कज लेना। ४ मन में कुछ निश्चय करना। धारणा बनाना।

स० =ढारना या ढालना।

†स्त्री० =धारणा।

†स०[हि० धरना] स्थापित करना। रखना। उदा०—जहँ जहँ नाथ पाउँ तुम धारा।—तुलसी।

धारयिता (तृ)—वि० [स०√धृ+णिच्+तृच्] [स्त्री० धारयित्री] १ धारण करनेवाला। २ ऋण लेनेवाला।

धारयित्री—वि० स्त्री० [स० धारयितृ+ङीप्] 'धारयिता' का स्त्री०। स्त्री० पृथ्वी।

धारयिष्णु—वि० [स०√धृणिच्+इष्णुच्] धारण करने मे समर्थ। जो धारण कर सकता हो।

धारस† —पु० =ढारस।

धाराकुर—पु० [सं० धारा-अकुर ष० त०] १ सरल का गोंद। २ आकाश से गिरनेवाला ओला। घनोपल।

धारांग—पु० [स० धारा-अग ब० स०] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ खड्ग।

धारा—स्त्री० [स०√धृ+णिच्+अङ्—टाप्] १ पानी या किसी तरल पदार्थ की तेज और लगातार बहनेवाली धार। तरल पदार्थ का एक रेखा मे निरतर चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—नदी की धारा, रक्त की धारा। २ पानी या तरल पदार्थ का रेखा के रूप मे ऊपर से निरतर गिरता रहनेवाला क्रम। जैसे—बादलो से धारा के रूप मे जल बरस रहा था। ३. लाक्षणिक रूप मे, किसी चीज या बात का निरतर चलनेवाला क्रम। ४ किसी का निरतर प्रवाह या स्रोत। जैसे—विद्युत् की धारा। ५ पानी का झरना। सोता। चश्मा। ६ घड़े आदि मे पानी गिरने के लिए बनाया हुआ छेद। ७ किसी चीज

का किनारा या छोर। ८ हथियार की धार। बाढ़। ९ शब्दो की पंक्ति। वाक्यावली। १० बहुत जोरो से होनेवाली वर्षा। ११. झुंड। दल। समूह। १२ सेना का अगला भाग। १३ औलाद। संतान। १४ उत्कर्ष। उन्नति। तरक्की। १५. रथ का पहिया। १६. कीर्ति। यश। १७. मध्य भारत की एक प्राचीन नगरी जो मालवा की राजधानी थी। १८ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ। १९ रेखा। लकीर। २० पहाड़ की चोटी। २१ घोड़े की गति या चाल। २२. आज-कल किसी नियम, नियमावली, विधान आदि का वह स्वतंत्र अंश जिसमे किसी एक विषय से संबंध रखनेवाली सब बातो का एक अनुच्छेद मे उल्लेख होता है और जिससे पहले क्रमात् संख्या-सूचक अंक लगे होते हैं। दफा। (सेक्शन) जैसे—भारतीय संविधान की १४४ वी धारा।

धारा-कदंब—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का कदंब का पेड़।

धारा-गृह—पु० [मध्य० स०] १ प्रासाद या महल का वह कमरा जिसमे राज-परिवार के लोगो के नहाने के लिए फुहारे आदि लगे रहते थे। २. स्नानागार।

धाराग्र—पु० [सं० धार-अग्र ष० त०] तीर या बाण का आगेवाला चौड़ा सिरा।

धाराट—पु० [सं० धारा√अट्(गति)+अच्] १. चातक पक्षी। २ बादल। मेघ। ३ घोड़ा। ४ मस्त हाथी।

धारा-धर—पु० [ष० त०] १ धाराओ को धारण करनेवाला, बादल। २ तलवार।

धारा-पूप—पु० [धारा-अपूप मध्य० स०] दूध मे सने हुए मैदे का बना हुआ पूआ।

धारा-प्रवाह—पु० [ष० त०] धारा का बहाव। धारा का वेग।
क्रि० वि० नदी आदि की धारा के प्रवाह के रूप मे या उसकी तरह। निरंतर तथा अटूट क्रम से। जैसे—वे संस्कृत मे धारा-प्रवाह भाषण करते थे।

धारा-फल—पु० [ब० स०] मदनवृक्ष। मैनफल वृक्ष।

धारा-यंत्र—पु० [ष० त०] वह यंत्र जिसमे धारा के रूप मे जल निकले। जैसे—पिचकारी, फुहारा।

धाराल—वि० [सं० धारा+लच्] (अस्त्र) जिसकी धार चोखी या तेज हो।

धाराली—स्त्री० [सं० धाराल] १ तलवार। २. कटार। (डिं०)

धारावनि—पु० [सं० धारा-अवनि ष० त०] वायु। हवा।

धारावर—पु० [सं० धारा√वृ (आच्छादन)+अच्] मेघ। बादल।

धारा-वर्ष—पु० [तृ० त०] धारा के रूप मे होनेवाली बहुत तेज वर्षा।

धारावाहिक—वि० [सं० धारावाहिन्+कन्] १ जिसका क्रम धारा की तरह निरंतर चलता रहे। २ (पत्र, पत्रिकाओ आदि मे प्रकाशित होने वाला लेख) जो क्रमश खंडो के रूप मे बराबर कई अंशो मे प्रकाशित होता रहे।

धारावाही (हिन्)—वि० [सं० धारा√वह (बहना)+णिनि]=धारावाहिक।

धारा-विष—पु० [ब० स०] खड्ग। तलवार।

धारा-संपात—पु० [ब० स०] बहुत तेज और अधिक वृष्टि। जोरों की बारिश।

धारा-सभा—स्त्री० [ष० त० ?] आधुनिक लोक-तंत्री शासन मे, प्रजा के प्रतिनिधियो की वह सभा जो विधान आदि बनाती है। विधान-सभा। विधायिका।

धारासार—वि० [धारा-आसार ष० त०] धारा के रूप मे लगातार होता रहनेवाला। जैसे—धारासार वर्षा।

धारा-स्नुही—स्त्री० [सं० मध्य० स०] तिधारा थूहर।

धारि—स्त्री० [सं० धारा] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक रगण और एक लघु होता है। २ झुंड। समूह। ३ दे० 'धार'।

धारिणी—स्त्री० [सं०√धृ (धारण)+णिनि—ङीष्] १. पृथ्वी। २. सेमल का पेड़। ३ एक प्रकार की पुरानी नाव जो १६० हाथ लंबी, ३० हाथ चौड़ी और १६ हाथ ऊँची होती थी। ४ चौदह देवताओ की स्त्रियाँ जिनके नाम ये हैं—शची, वनस्पति, गार्गी, धूम्रोर्णा, रुचिराकृति, सिनीवाली, कुहू, राका, अनुमति, आयाति, प्रज्ञा, सेला और बेला।
वि० सं० 'धारी' (धारण करनेवाला) का स्त्री०।

धारित—भू० कृ० [सं०√धृ+णिच्+क्त] १. धारण किया हुआ। २ अपने ऊपर लिया या सँभाला हुआ।

धारिता—स्त्री० [सं० धारिन्+तल्—टाप्] १ धारण करने का गुण योग्यता या सामर्थ्य। २. वस्तु, व्यक्ति आदि की उतनी पात्रता जितने मे वह कुछ धारण कर सके। समाई। (कपैसिटी) जैसे—इस हंडे मे एक मन पानी की धारिता है।

धारी (रिन्)—वि० [सं०√धृ+णिनि] १. धारण करनेवाला। जैसे—शस्त्रधारी। २ पहननेवाला। जैसे—खद्दर धारी। ३. जिसकी धारणा-शक्ति प्रबल हो। ४. ऋण लेनेवाला। ५. ग्रंथो आदि का तात्पर्य समझानेवाला।
†वि० [हिं० धार] १. किनारदार। २ तेज धारवाला।
स्त्री० [सं० धारा] १ एक ही सीध मे दूर तक गई हुई रेखा या लकीर। २ किसी एक रंग के तल पर खींची हुई किसी दूसरे रंग की सीधी रेखा। जैसे—कपड़े या कागज पर की धारियाँ।
पद—धारीदार।
३ धातुओ, वनस्पतियो आदि मे दिखाई देनेवाली (नसो की तरह की) लंबी रेखा। (वीन) ४. झुंड। दल। ५ फौज। सेना। ६ जलाशय के किनारे बना हुआ पुश्ता या बाँध।
पु० १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे पहले तीन जगण और तब एक मगण होता है। २. पीलू का पेड़। ३ दे० 'धारि'।

धारीदार—वि० [हिं० धारी+फा० दार] १ जिसमे कोई रेखाकार चिह्न बना हो। जैसे—धारीदार कागज। २. (कपड़ा) जिसकी जमीन एक रंग की और धारियाँ दूसरे रंग की हो।

धारूजल—स्त्री० [सं० धारा—जल] जल की तरह उज्ज्वल धारवाली तलवार। उदा०—धड़ि धड़ि धबकि धार धारू जल। —प्रिथीराज।

धारोष्ण—वि० [सं० धारा-उष्ण स० त०] (दूध) जो तुरत का दूहा हुआ और इसी लिए कुछ गरम भी हो।

धार्त्तराष्ट्र—वि० [सं० धृतराष्ट्र+अण्] [स्त्री० धार्त्तराष्ट्री] १.

धृतराष्ट्र-संबंधी । धृतराष्ट्र का । २. धृतराष्ट्र के वंश का । पुं० १ एक नाग का नाम । २. एक प्रकार का हंस जिसकी चोंच और पैर काले होते हैं।

धार्त्तराष्ट्र-पदी—स्त्री० [स० ब० स० ङीष्] हंसपदी लता। लाल रंग का लज्जालु।

धार्म—वि० [सं० धर्म+अण्] धर्म-संबंधी। धर्म का।

धार्मपत—वि० [स० धर्मपति+अण्] धर्मपति-संबंधी।

धार्मिक—वि० [स० धर्म+ठक्—इक] [भाव० धार्मिकता] १ (व्यक्ति) जो धर्म का सदा ध्यान रखता तथा पालन करता हो। धर्मशील। पुण्यात्मा। २ (कथन या विषय) जो धर्म से संबंध रखता हो। जैसे—धार्मिक ग्रंथ, धार्मिक भाषण। ३ (कार्य) जो धर्मशास्त्रों के अनुसार उचित और कर्त्तव्य हो। जैसे—धार्मिक कृत्य।

धार्मिकता—स्त्री० [स० धार्मिक+तल्—टाप्] धार्मिक होने की अवस्था, गुण या भाव।

धार्मिक्य—पु० [स० धार्मिक+यक्] =धार्मिकता।

धार्मिण—पु० [स० धर्मिन्+अण्] धार्मिक व्यक्तियों की मंडली या समूह।

धार्मिणेय—पु० [स० धर्मिणी+ढक्—एय] [स्त्री० धार्मिणेयी] धर्मवती स्त्री का पुत्र।

धार्य—वि० [स०√धृ+ण्यत्] [भाव० धार्यत्व] १ जो धारण किये जाने के योग्य हो। जिसे धारण कर सके। धारणीय। २. जिसे धारण करना उचित या आवश्यक हो। ३ जिसे धारणा-शक्ति ग्रहण कर सके।

पु० पहनने का कपड़ा। पोशाक।

धार्यत्व—पु० [स० धार्य+त्व] १. धार्य होने का भाव। ऋण, देन आदि जिसका चुकाना आवश्यक हो। (लायबिलिटी)

धार्ष्ट, धार्ष्ट्य—पु० [स० धृष्ट+अण्, धृष्ट+ष्यञ्] धृष्टता।

धाव—पुं० [स० धव] एक प्रकार का लंबा और बहुत सुंदर पेड़ जिसे गोलरा, धावरा और बकली भी कहते हैं।

धावक—वि० [स०√धाव् (दौड़ना)+ण्वुल्—अक] दौड़कर चलनेवाला। पु० १. हरकारा। २ कपड़े धोनेवाला। धोबी। ३ संस्कृत के एक प्राचीन आचार्य और कवि।

धावड़ा†—पु० [हिं० धव] धव या धौ का पेड़।

धावण—पु० [स० धावन] दूत। हरकारा। (डिं०)

धावन—पुं० [स०√धाव्+ल्युट्—अन] १ बहुत तेजी से या दौड़कर जाना। २ दूत। हरकारा। जैसे—बारा घर धावन। ३ कपड़े धोने और साफ करने का काम। कपड़ों की धुलाई। ४ धोबी। ५. वह चीज जिसकी सहायता से कोई चीज धोकर साफ की जाय।

धावना—अ० [सं० धावन=गमन] वेग से चलना। दौड़ना। धाना।

धावनि—स्त्री० [स०√धाव्+अनि] पिठवन। पृश्निपर्णी लता। स्त्री० [हिं० धावना=दौड़ना] १. धावने अर्थात् दौड़ने की क्रिया या भाव। जल्दी-जल्दी चलना या दौड़ना। २. चढ़ाई। धावा।

†स्त्री हिं० धावन (हरकारा) का स्त्री०।

धावनिका—स्त्री० [स० धावनि+कन्—टाप्] १. कंटकारिका। कटेरी। २. पृश्निपर्णी। पिठवन। ३. कटिंबार मकोय।

धावनी—स्त्री० [स० धावनि+ङीष्] १. पृश्निपर्णी लता। पिठवन। २ कटकारी। ३. धौ का फूल।

धावमान—वि० [स०√धाव्+लट्—शानच्] १. दौड़नेवाला। २. दौड़ता हुआ। ३ चढ़ाई करनेवाला।

धावरा—वि० [स्त्री० धावरी]=धौरा (धवल)।

पुं०=धव।

धावरी†—स्त्री०=धौरी (सफेद गाय)।

धावल्य—पु० [स० धवल+ष्यञ्] धवलता।

धावा—पु० [हिं० धाना=तेजी से चलना] १. किसी काम के लिए बहुत तेजी से चलते हुए कहीं दूर जाने की क्रिया या भाव। द्रुत गमन।

मुहा०—**धावा मारना**=बहुत तेजी से चलते हुए कहीं दूर जाना अथवा दूर से आना। जैसे—हम तो चार कोस से धावा मार कर यहाँ आये, और आपने ऐसा कोरा जवाब दिया।

२ शत्रु पर आक्रमण करने के लिए दल-बल सहित उसकी ओर बढ़ने की क्रिया या भाव। आक्रमण या चढ़ाई के लिए जल्दी-जल्दी चलना या जाना। ३. हमला।

मुहा०—(किसी पर) **धावा बोलना**=अपने साथियों या सैनिकों को यह आज्ञा देना कि शत्रु पर चढ़ चलो और उसका नाश करो।

धावित—वि० [स०√धाव्+क्त] १ बहुत तेज दौड़ता हुआ। २ धोया और साफ किया हुआ।

धाह—स्त्री० [अनु०] १ जोर से चिल्लाकर रोना। धाड़। २. जोर से चिल्लाना। चीत्कार करना।

मुहा०—**धाह मेलना**=जोर से आवाज करना। चिल्लाना। उदा०—धाह मेलि कै राजा रोवा।—जायसी।

३. आवाज। शब्द।

धाही†—स्त्री०=धाय (दाई)।

धिंग†—स्त्री०=धींगा-धींगी।

धिंगरा†—पु०=धींगड़ा।

धिंगा—पु० [स० दृढ़ांग] १. उपद्रवी। शरारती। २. दुष्ट। पाजी। बदमाश। ३ निर्लज्ज। बेशरम।

धिंगाई—स्त्री० [हिं० धिंगा] १ धींगापन। धींगा-मस्ती। २ उपद्रव। शरारत। ३ पाजीपन। बदमाशी। ४ निर्लज्जता। बेशरमी।

धिंगा-धिंगी—स्त्री० =धींगा-धींगी।

धिंगाना†—अ० [हिं० धिंगा] धींगा-धींगी करना।

स० किसी को धींगा-धींगी करने मे प्रवृत्त करना।

धिंगी—स्त्री० [स० दृढ़ांगी] १. बदमाश स्त्री। दुश्चरित्रा। २ निर्लज्ज स्त्री। ३ दे० 'धिंगाई'।

धि—प्रत्य० [स०√धा (धारण)+कि (उत्तर पद होने पर] जो समस्त पदों के अंत मे लगकर निधि या भंडार का अर्थ देता है। जैसे—जलधि, वारिधि आदि।

धिआ—स्त्री० [स० दुहिता, प्रा० धीआ] १. पुत्री। बेटी। २ कन्या। लड़की।

धिआन†—पु०=ध्यान।

धिआना—स०=ध्याना (ध्यान करना)।

धिक्—अव्य० [सं०√धक्क् (धरण या नाश)+डिकन्] घृणा और

तिरस्कारपूर्वक भर्त्सना करने का शब्द। लानत है। जैसे—धिक् तुमने ऐसा दुष्कर्म किया।

धिक—अव्य० =धिक्।

धिकना—अ० [स० दग्ध या हिं० दहकना] १. आग का अच्छी तरह जलना या दहकना। २. आग की गरमी से किसी चीज का तपकर लाल होना।

धिकलना—स० =धकेलना।

धिकाना—स० [हिं० धिकना का स०] १ आग को तेजी से जलाने की क्रिया करना। दहकाना। २ आग मे तपाकर खूब लाल करना।

धिक्कार—स्त्री० [स० धिक्-कार ष० त०]बहुत ही बुरा काम करनेवाले अथवा अपने कर्तव्य का निर्वाह न करनेवाले व्यक्ति का अपमान-सूचक शब्दो मे की जानेवाली भर्त्सना। लानत।

विशेष—सस्कृत मे धिक्कार पु० है।

अव्य० दे० 'धिक्'।

धिक्कारना—स० [स० धिक्कार] अनुचित या दूषित काम करनेवाले की कठोर तथा अपमान-सूचक शब्दो मे निन्दा करना। जैसे—इस देश-द्रोही का देश एक-स्वर मे धिक्कार रहा है।

धिक्कृत—भू० कृ० [स० धिक्√कृ (करना)+क्त] जो धिक्कारा गया हो। जिसे 'धिक्' कहा गया हो।

धिक्-पारुष्य—पु० [स० व्यस्त पद] धिक्कार। भर्त्सना।

धिग—अव्य०='धिक्'।

पु० =धिक्कार।

धिग्दड—पु० [सं०धिक्-दड मध्य० स०] धिक्कारपूर्वक भर्त्सना के रूप मे (किसी को) दिया जानेवाला दड। जैसे—पचो ने उसे धिग्दड देकर छोड दिया।

धिग्वण—पु० [स०] ब्राह्मण पिता और अयोगवी माता से उत्पन्न एक प्राचीन सकर जाति।

धिठाई†—स्त्री० =ढिठाई।

धिमचा—पु० [देश०] एक तरह का इमली का पेड।

धिय—स्त्री० [स० दुहिता] १ पुत्री। बेटी। २ कन्या। लडकी।

धियांपति—पु० [स०] बृहस्पति।

धिया—स्त्री० =धिय।

†स्त्री० धिक्कार। (क्व०)

धियान*—पु० =ध्यान।

धियाना—अ० =ध्याना (ध्यान करना)।

धियानी*—वि० =ध्यानी।

धियारी—स्त्री० =धी (पुत्री)।

धिरकार—स्त्री० =धिक्कार।

धिरयना* —स० =धिरवना।

धिरवना—स० =धिराना।

धिराना—स० [स० धर्षण] १ भयभीत करना। डराना। २ धमकाना।

स० [स० धैर्य्य] १ धीरज दिलाना। २ शात करना।

अ० १ धीरज रखना। २ शात होना।

अ०[स० धीर] १ मद पडना। धीमा होना। उदा०—यो कहि धिरई चढाई भौह . ।—रत्नाकर। २. ठहरना। ३. शांत होना।

धिया-वसु—पु० [स०अलुक् समास] वैदिक युग के एक देवता जो 'धी' अर्थात् बुद्धि के अधिष्ठाता माने जाते थे, और 'सरस्वती' के वर्ग के थे।

धिषण—पु० [स०√धृष् (दबाना)+क्यु—अन, धिषादेश] १ बृहस्पति। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ गुरु। शिक्षक।

धिषणा—स्त्री० [स०धिषण+टाप्] १. बुद्धि। अक्ल। २ प्रशसा। स्तुति। ३ वाक्शक्ति। वाणी। ४ पृथ्वी। ५ जगह। स्थान।

धिषणाधिप—पु० [स० धिषणा-अधिप ष० त०] बृहस्पति।

धिष्ट्य—पु० [स० धिष्ण्य नि० णकोट] १ स्थान। जगह। २ घर। मकान। ३ नक्षत्र। ४ अग्नि। आग। ५ बल। शक्ति। ६ शुक्राचार्य का एक नाम।

धिष्ण्य—पु० [स०√धृष्+ण्य नि० ऋ को इ] १ जगह। स्थान। २ घर। मकान। ३ अग्नि। आग। ४ नक्षत्र। ५ शक्ति। ६ शुक्र ग्रह। ७ शुक्राचार्य। ८ तारा। ९ एक प्रकार की उल्का।

धींग—वि० [स० दृढाग] १ हट्टा-कट्टा। हृष्ट-पुष्ट। २ ताकतवर। बलवान। ३ दृढ। पक्का। मजबूत। ४ दुष्ट। पाजी। ५ खराब। बुरा। ६ कुमार्गी। दुराचारी।

धींगड़—पु०, वि० =धीगडा।

धींगड़ा—वि० [स० डिगर] [स्त्री० धीगडी] १ मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा। २ दुष्ट। पाजी। शरारती। ३ दोगला। वर्ण-सकर।

पु० १ गुडा। २ स्त्री का उपपति। जार। यार।

धींग-धुकड़ी—स्त्री० [हिं० धीग] १ धीगा-मस्ती। २ दुष्टता। पाजीपन। ३ शरारत।

धींगरा—पु० =धीगडा।

धींगा—वि०, पु० =धीगडा।

धींगा-धींगी—स्त्री० [हि० धीग] १ ऐसी उठा-पटक या लडाई-झगडा जो उपद्रवी या दुष्ट हट्टे-कट्टे लोगो मे होता है। २. उपद्रव। ऊधम। ३ दो पक्षो मे होनेवाली ऐसी छीना-झपटी या लडाई-झगडा जिसमें जबरदस्ती या बल-प्रयोग होता हो। ४ अपना काम निकालने के लिए अनुचित रूप मे की जानेवाली ऐसी जबरदस्ती जिसमे अपनी चालाकी या शक्ति का भी उपयोग किया जाता हो। जैसे—वे धीगा-धीगी करके हमारे हिस्से की चीजे भी उठा ले गये।

धींगा-मस्ती—स्त्री० =धीगा-मुश्ती।

धींगा-मुश्ती—स्त्री० [हिं० धीगा+फा० मुश्त =मुट्ठी] ऐसा उपद्रव या ऊधम जिसके साथ कुछ घूँसे-थप्पड भी चलें या मार-पीट भी हो। हाथा-बाही। उदा०—बस, चलो बैठो परे, वर्ना बुरी हो जायगी। धीगा-मुश्ती मे मेरी अँगिया की चोली चल गई।—नजीम।

धींद्रिय—स्त्री०[स० धी-इद्रिय मध्य०स०]१. वह इद्रिय जिससे चीजों और बातो का ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञानेंद्रिय। २ अक्ल। बुद्धि।

धींवर—पु०=धीवर।

धी—स्त्री०[स० √ध्यै (चिन्तन)+क्विप् सम्प्रसारण]१ बुद्धि। अकल। समझ। २. मन। ३. कर्म। ४ कल्पना। ५ विचार। ६. भक्ति।

७. यज्ञ। ८. न्याय-बुद्धि। ९. जन्म कुडली मे लग्न से पाँचवाँ स्थान।

†स्त्री०[स० दुहिता, प्रा० धीया]पुत्री। बेटी।

धीआ†—स्त्री०=धी (पुत्री)।

धीग†—पु०, वि०=धीगड़ा।

धीजना—स०[स० धृ, धार्य, धैर्य]१ ग्रहण या स्वीकार करना। अगीकार करना। २ प्रतीति या विश्वास करना। उदा०—उज्ज्वल देखिन धीजिए बग ज्यो माँडे ध्यान।—कबीर।

अ०१ धैर्य से युक्त होना। धीर बनना। २ बहुत प्रसन्न होना। ३ शात या स्थिर होना। उदा०—चित भूल तो भूलत नाहिं सुजान जु चचल ज्यौ कछु धीजत है।—घनानद।

धीठ†—वि०=ढीठ।

धीत—भू० कृ०[स०√धे(पीना)+क्त] [भाव० धीति]१ जो पिया गया हो। २ जिसका अनादर या तिरस्कार हुआ हो। ३ जिसका आराधन किया गया हो। ४ जो सतुष्ट किया गया हो।

धीति—स्त्री०[स०√धे+क्तिन्]१ पान करने की क्रिया। पीना। २ पिपासा। प्यास। ३. विचार। ४ आराधन । ५ सतुष्ट करना। तोषण।

धीदा—स्त्री०[स०] १ बुद्धि। २ कुँआरी लडकी। ३ पुत्री। बेटी। ४ कुमारी कन्या।

धीन—पु०[हि०] लोहा।

धी-पति—पु०[स० ष०त०] बृहस्पति।

धीम†—वि०=धीमा।

धीमर—पु०=धीवर।

धीमा—वि०[स० मध्यम से वर्ण व०] [स्त्री० धीमी]१ जिसकी गति मे तेजी न हो। 'तेज' का विपर्याय। २ जो अपनी साधारण चाल या वेग की अपेक्षा धीरे-धीरे या कम वेग से चल रहा हो। ३ जिसमे तीव्रता, तेजी या प्रचडता बहुत कम हो। जिसमे प्रखरता न हो। 'तेज' का विपर्याय। जैसे—आग (या बत्ती) धीमी कर दो। ४ जो अप्रतिभ या निस्तेज हो गया हो। जैसे—अब वे पहले से बहुत धीमे पड गये हैं।

क्रि० प्र०—पडना।

धीमा तिताला—पु०[हि० धीमा+तिताला] सगीत मे १६ मात्राओ का एक ताल जिसमें तीन आघात और एक खाली होता है ।

धीमान (मत्)—पु०[स० धी+मतुप्] [स्त्री० धीमती]१ बृहस्पति। २. बुद्धिमान्।

धीमे†—अव्य० [हि० धीमा] १. धीरे-धीरे हलकी गति या वेग से। जैसे—गाड़ी धीमे चल रही है। २ मद स्वर मे। जैसे—धीमे बोलो।

धीय—स्त्री०[स० दुहिता] पुत्री। बेटी।

†पु० जामाता। दामाद। (डि०)

धीयड़ी—स्त्री० =धी (बेटी)। उदा०—थारी धीयडी ने परदेस दीजौ।—राज० लोक-गीत।

धीया—स्त्री०[सं० दुहिता, प्रा० धीदा, धीया] पुत्री। बेटी।

धीर—वि०[स० धी√रा (देना)+क]१ (व्यक्ति) जो शांत स्वभाव-वाला हो तथा जो विपरीत परिस्थितियों मे भी जल्दी उद्विग्न या विचलित न होता हो । २ ठहरा हुआ। ३ बलवान्। शक्तिशाली। ४. नम्र। विनीत। ५ गभीर। ६ मनोहर। सुन्दर। ७ धीमा।

पु०१ केसर। २ मत्र। ३ समुद्र। ४ पडित। विद्वान्। ५ ऋषभ नाम की औषधि। ६ राजा बलि का एक नाम। ७. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश तीन तगण और दो गुरु होते हैं।

पु०[स० धैर्य] १ धैर्य। धीरज २ मन की शाति या स्थिरता। ३ सतोष। सब्र।

क्रि० प्र०—धरना।

धीरक*—पु०=धीरज (धैर्य)।

धीर-चेता (तस्)—पु०[ब० स०] दृढ तथा स्थिर चित्तवाला।

धीरज†—पु०=धैर्य।

धीरजमान—पु०=धैर्यवान्।

धीरट—पु०[?] हस पक्षी। (डि०)

धीरता—स्त्री०[स० धीर+तल्—टाप्]१ धीर होने की अवस्था, गुण या भाव। धैर्य। २ स्थिरता। ३ सतोष। सब्र। ४ चातुर्य। चालाकी। ५ पाडित्य। विद्वत्ता।

धीरत्व—पु०[स० धीर+त्व] =धीरता।

धीर-पत्री—स्त्री०[ब० स०, ङीष्] जमीकद।

धीर-प्रशांत—पु०=धीर-शात।

धीर-ललित—पु०[कर्म० स०]साहित्य मे, वह नायक जो हँसमुख और कोमल स्वभाववाला हो, विभिन्न कलाओ से प्रेम करता हो और सुखी तथा सपन्न हो। जैसे—स्वप्नवासवदत्ता का नायक उदयन।

धीर-शात—पु०[कर्म० स०] साहित्य मे, वह नायक जिसमे सभी सामान्य गुण हो अर्थात् जो दयालु, वीर, शात और सुशील हो। जैसे—'मालती-माधव' का नायक माधव।

धीरा—स्त्री०[स० धीर+टाप्] १ साहित्य मे, वह नायिका जो अपने प्रेमी के शरीर पर पर-स्त्री-रमण के चिह्न देखकर शात भाव से व्यग्यपूर्ण शब्दो मे कोप प्रकट करे। २ गिलोय। गुडुच। ३ काकोली। ४ मालकगनी।

†वि०=धीमा।

†पु०=धीरज।

धीराधीरा—स्त्री० [धीरा-अधीरा कर्म० स०] साहित्य मे, वह नायिका जो अपने नायक के शरीर पर परस्त्री रमण के चिह्न देखकर कुछ गुप्त और कुछ प्रकट रूप से रोष प्रकट करती हो।

धीरावी—स्त्री० [स० धीर√अव् (प्रसन्न करना)+अण्—ङीप्] शीशम का पेड।

धीरी—स्त्री०[?]आँख की पुतली।

धीरे—क्रि० वि०[हि० धीर] १ धीमी या मद गति से। आहिस्ता। २ नीचे या हलके स्वर मे। जैसे—बालिका धीरे बोलती है। ३ इस ढग या प्रकार से कि जल्दी किसी को पता न चले। चुपके से। जैसे—वह धीरे से कपडा उठाकर चल दिया।

धीरे-धीरे—अव्य० [हि०]१ हलकी चाल से। २ मद स्वर मे। ३ समीचीन गति से। जैसे—यह काम धीरे-धीरे करना चाहिए।

धीरोदात्त—पु०[धीर-उदात्त कर्म० स०]१ साहित्य मे, वह नायक जो अपनी

भावनाओं पर पूर्ण नियंत्रण रखता हो तथा जो क्षमावान्, गंभीर, दृढ़-प्रतिज्ञ और विनयी हो। जैसे—उत्तर रामचरित का नायक राम। २. वीर रस प्रधान नाटक का मुख्य नायक।

धीरोद्धत—पु०[स० धीर-उद्धत कर्म० स०] साहित्य मे, वह नायक जो बहुत असहिष्णु, उग्र स्वभाव का तथा सदा अपने गुणो का बखान करता रहता हो।

धीरोष्णी (ष्णिन्)—पु०[सं०] एक विश्वदेव।

धीर्य—पुं० [सं० धीर+यत्] कातर।

†पु०=धैर्य।

धीलटि, धीलटी—स्त्री०[स० धी√लट् (बच्चा बनना)+इन्] पुत्री। बेटी।

धीवर—पु०[स०√धा (धारण)+ष्वरच्] [स्त्री० धीवरी] १ एक जाति जो प्राय नाव खेने, मछली पकडने और मछली बेचने का काम करती है। मछुआ। मल्लाह। केवट। २ पुराणानुसार एक प्राचीन देश। ३ उक्त देश का निवासी। ४ काले रग का आदमी। ५ नौकर। सेवक।

धीवरी—स्त्री०[स० धीवर+ङीष्] १ धीवर जाति की स्त्री। मल्लाहिन। २ मछली फँसाने की कटिया या बंसी।

धीहड़ी†—स्त्री०=धी (बेटी)। उदा०—माई कहै सुन धीहडी।—मीरां।

धुँआं—पु०=धूआँ।

धुँआंस—स्त्री०=धुवांस।

धुँआंसा†—पुं०[हिं० धूआँ]बहुत अधिक धूआँ लगने के कारण जमनेवाली कालिख।

वि० धूएँ की गध या स्वाद से युक्त।

धुँआना—अ०[हिं० धूआँ+ना (प्रत्य०)] अधिक या निरतर धूआँ लगने के कारण किसी चीज का रग काला पड जाना और उसमे से धूएँ की गध या स्वाद आना। जैसे—खीर या दूध का धुँआना।

स० अधिक धूआं लगाकर किसी चीज का धूएँ की गध या स्वाद से युक्त करना।

धुँआयंध—वि०[हिं० धुआँ+गध] जिसमे धूएँ की महक आ गई हो। धूएँ की तरह महकनेवाला। जैसे—धुँआयंध डकार आना।

स्त्री०१ धूएँ के कारण उत्पन्न होनेवाली गंध। २ अन्न न पचने की दशा मे, पेट के अदर धूआँ-सा उठने की अनुभूति।

धुँआरा†—वि०[हिं० धूआँ] धूएँ के रग का काला। धूमिल।

पु० छत मे धूआँ निकलने के लिए बना हुआ छेद या नल। चिमनी।

वि०=धुँधला।

धुँई†—स्त्री०=धूनी।

धुँकार—पु० [स० ध्वनि कार] जोर का शब्द। गड़गड़ाहट।

धुँकारना—अ०[हिं० धुँकार] हुंकारना।

धुँगार—स्त्री०=बघार (छौंक या तड़का)।

धुँगारना—स०[हिं० धुँगार]१ खाने की चीज मे तडका देना। छौंकना। बघारना। २ अच्छी तरह मारना-पीटना।

धुंज†—वि०=धुँधला।

पु०=धुंध।

धुंद—पु० १.=धुध। २ दुद (द्वन्द्व या द्वंद्व)।

धुंदुल—पु०[देश०] एक तरह का मझोले कद का पेड।

धुंध—पु०[स० धूम्र-अध]१ वह स्थिति जिसमे धुँधलापन हो। २. गरदे और धूल से भरी हुई हवा चलने के कारण वातावरण मे छानेवाला अँधेरा।

पद—अंधाधुंध। (देखें)

३ हवा मे उडती हुई धूल। ४. आँख का एक रोग जिसमे दृष्टि या देखने की शक्ति कम हो जाती है और आकृतियाँ, चीजें आदि धुँधली दिखाई देने लगती हैं।

धुधक†—पु०=धुध।

धुंधका—पु०[हिं० धूआँ] दीवार, छत आदि मे का वह छेद या मार्ग जिसमे होकर धूआँ कमरे आदि से बाहर निकलता हो।

धुंधकार—पु०[हिं० धुकार]१ गरज। गडगडाहट। धुकार। २ अधकार। अँधेरा।

धुंधमार—पु०=धुधुमार।

धुंधमाल†—पु० =धुधुमार।

धुंधर—स्त्री० [हिं० धुंध] १ हवा के साथ उड़नेवाली धूल। गरदा। गुबार। २ उक्त प्रकार की धूल के कारण छानेवाला अँधेरा।

धुंधरा—वि०[स्त्री० धुँधरी]=धुँधला।

धुंधराना—अ०, स०=धुँधलाना।

धुँधरी—स्त्री०[हिं० धुँधरी]१ गर्द-गुबार से उत्पन्न अँधेरा। २. धुँधलापन। ३ आँख का धुध नामक रोग।

धुंधलका—वि०[हिं० धुँधला]=धुँधला।

पु० वह समय या स्थिति जिसमे धुँधला प्रकाश हो। जैसे—सायकाल का धुधलका।

पद—धुँधलके का समय=सबेरे या सध्या का ऐसा समय जिसमे चीजें स्पष्ट रूप से दिखाई नही देती।

धुंधला—वि० [हिं० धुध+ला] [स्त्री० धुंधली] १ धुध मे भरा हुआ।

२ धूएँ की तरह का, कुछ-कुछ काला। ३ (नेत्र) जिसमे धुध नामक राग होने के कारण चीजें अस्पष्ट दिखाई पड़ती हो। ४ (दर्पण) जिसकी चमक खराब हो जाने के कारण प्रतिबिब स्पष्ट न दिखाई पडे। ५ लाक्षणिक अर्थ मे, (बात) जो अब ठीक-ठीक स्मरण न हो। जैसे—धुँधली स्मृतियाँ।

धुंधलाई†—स्त्री०=धुँधलापन।

धुंधलाना—अ०[हिं० धुँधला]धुँधला पडना या होना।

स० धुँधला करना।

धुंधलापन—पु०[हिं० धुँधला+पन]धुँधले या अस्पष्ट होने की अवस्था या भाव।

धुंधली†—स्त्री० =धुध।

धुंधाना—अ०[हिं० धुंध] धुँधला पड़ना या होना।

स० धुँधला करना।

धुंधार—वि०१ =धुँधला। २. धूआँधार।

धुंधि—स्त्री०=धुध।

धुंधियारा—वि०=धुँधला।

धुंधु—पु०[स०] एक राक्षस जो मधु नामक राक्षस का पुत्र था।

धुंधुआना—अ०[सं० धूम्र, हिं० धूआँ] इस प्रकार जलना कि खूब धूआँ उठे। धूआँ देते हुए जलना।
स० इस प्रकार जलाना कि खूब धूआँ उठे।

धुंधकार—पुं०[हिं० धुधु+कार]१. अधकार। अँधेरा। २. धुंधलापन। ३. नगाड़ा बजने का शब्द। ४. आग के धू-धू करके जलने का शब्द।

धुंधुमार—पु०[स० धुधु√मृ (मरना)+णिच्+अण्] १. राजा त्रिशकु का पुत्र। २. कुवलयाश्व का एक नाम।

धुंधुरित—वि०[हिं० धुंधुर]१ धुंधला। २. धूमिल।

धुंधुरी†—स्त्री०=धुंधरी।

धुंधुराना†—अ०, स०=धुंधुआना।

धुंधेरी—स्त्री०=धुंधरी।

धुंधेला—वि० [हिं० धुध+ऐला (प्रत्य०)]१. दुष्ट। पाजी। २ धोखे-बाज।
†वि०=धुंधला।

धुंवाँ†—पु०=धूआँ।

धुंवाँकश†—पु०=धूआँकश।

धुंवाँदान†—पु०=धूआँदान।

धुंवाधार—वि०, क्रि० वि०=धूआँधार।

धु—स्त्री० [स०] कपन

धुअ†—वि०, पुं०=ध्रुव।

धुआँ—पु०=धूआँ।

धुआँकश—पुं०=धूआँकश।

धुआँदान—पु०=धूआँदान।

धुआँधार—वि० क्रि०, वि०=धूआँधार।

धुआना—अ०=धुंआना।

धुआँयँध—वि०, स्त्री० =धुंआयँध।

धुआँस—पु०=धुवाँस।

धुआँ—पुं०=धूआँ (शव)।

धुकता†—वि०[हिं० धुकना=दहकना] [स्त्री० धुकती] धुकता अर्थात् दहकता हुआ।

धुकती†—स्त्री०[हिं० धुकना=दहकना] मन में निरंतर होता रहनेवाला बहुत अधिक मानसिक कष्ट या सताप।

धुक—स्त्री०[देश०] कलाबत्तू बटने की सलाई।

धुकड़-पुकड़—स्त्री०[अनु०]१. भय आदि की आशका से होनेवाली मन की वह स्थिति जिसमे रह-रहकर कलेजे मे हलकी धडकन होती हो। २. आगा-पीछा। असमजस।

धुकड़ी—स्त्री०[देश०] छोटी थैली। बटुआ।
स्त्री०=धुकड-पुकड़।

धुकधुकी—स्त्री०[अनु०] १. पेट और छाती के बीच का भाग जो कुछ गहरा-सा और छोटे गड्ढे की तरह होता है। २ कलेजा। हृदय। ३ भय, सकोच आदि के कारण होनेवाली कलेजे या हृदय की धडकन। ४. डर। भय।
क्रि० प्र०—लगना।
५. गले मे पहनने का एक प्रकार का गहना जिसका लटकन छाती के बीचवाले भाग पर पड़ता है।

धुकना—अ०[हिं० झुकना]१. नीचे की ओर ढलना। झुकना। २. गिरना। ३ वेगपूर्वक किसी ओर या किसी पर झपटना। टूट पड़ना।
अ०[हिं० धुकधुक] धुक-धुक करना। धडकना।
†स०[स० धूम+करना] धूनी देना।
अ०१.=दहकना। २=धुकरना।

धुकनी†—स्त्री०१ =धौंकनी। २ =धूनी।

धुकरना†—अ०[अनु०] धुक-धुक शब्द होना।

धुकान—स्त्री०[हिं० धुकना]१ धुकने की क्रिया या भाव। २. आक्रमण। चढ़ाई। उदा०—सैयद समर्थ भूप अली अकबर दल, चलत बजाय मारू दुदुभी धुकान की।—गुमान।
†स्त्री०=धुकार।

धुकाना—स०[हिं० धुकना] १. झुकाना। नवाना। २ गिराना। ३. ढकेलना। ४ पछाडना। पटकना। ५ दहकाना। सुलगाना। ६. धूनी देना।

धुकार—स्त्री०[धू से अनु०]१ जोर का शब्द। २ नगाडे का शब्द।

धुकारी—स्त्री०=धुकार।

धुक्कन†—स्त्री०=धुकार।

धुक्कना—अ०=धुकना।

धुक्कारना—स०=धुकाना।

धुगधुगी†—स्त्री०=धुकधुकी।

धुज†—पु०=ध्वज।
†स्त्री०=ध्वजा।

धुजा†—स्त्री०=ध्वजा।

धुजानी†—स्त्री०[स० ध्वजिनी]सेना।

धुजिनी—स्त्री०=धुजानी।

धुडंगा—वि०[हिं० धूर+अगी][स्त्री० धुडगी]१ जिसके शरीर पर धूल ही धूल हो, वस्त्र न हो। नगा-धडगा। २ जिस पर धूल पडी हो।

धुडगी†—वि०=धुडगा।

धुड़ी†—स्त्री०=धूल।

धुत†—अव्य०=दुत।

धुतकार—स्त्री०=दुतकार।

धुतकारना—स०=दुतकारना।

धुताई*—स्त्री०=धूर्तता।

धुतारा*—वि०[स्त्री० धुतारी]=धूर्त।

धुतू†—पु०=धूतू।

धुतूरा†—पुं०=धतूरा।

धुत्त—वि०[अनु०] नशे मे चूर। बेसुध।
†अव्य०=धुत (दुत)।

धुत्ता†—पु०[स० धूर्तता] १ धूर्तता। २. कपट। छल। दगाबाजी।
मुहा०—(किसी को) धुत्ता देना या बताना=कपट, छल या धूर्तता का व्यवहार करके किसी को दूर हटाना।
स्त्री०[?] एक प्रकार की मछली।

धुधुकार—स्त्री०[धू धू से अनु०]१. धू धू का-सा जोर का शब्द, जैसा आग जलने पर होता है। २. जोर का शब्द। गड़गड़ाहट। गरज। उदा०—सीमा पर बजनेवाले धौंसों की अब धुधुकार नही।—दिनकर।

धुधुकारी—स्त्री० =धुधुकार।
धुधुकी†—स्त्री० १ =धुधुकार। २ =धुकधुकी।
धुन—पु०[सं०] १ आवाज या शब्द करना। २ रह-रहकर हिलना। काँपना। ३ संपूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।
स्त्री०[हिं० धुनना, मि० सं० धुन]१ धुनने की क्रिया या भाव। २ कोई विशिष्ट काम प्राय करते रहने की स्वभावजन्य प्रवृत्ति या मनोदशा। ऐसी लगन जिसमें उद्देश्य को छोड़कर और किसी बात का ध्यान न रहे। जैसे—(क) आज-कल उन्हें नई-नई पुस्तकें पढ़ने (या रुपए कमाने) की धुन है। (ख) रामधुन लागी, गोपाल-धुन लागी।—लोकगीत।
पद—धुन का पक्का =वह जो अपनी धुन से सहसा विरत न हो। कोई काम आरंभ करने पर उसे बिना पूरा किये न छोड़नेवाला अथवा बार बार करता रहनेवाला।
२ किसी काम या बात की ओर जाग्रत होनेवाली प्रबल प्रवृत्ति। मन की तरंग या मौज। जैसे—जब धुन आई (या उठी) तब घूमने निकल पड़े। ३. किसी काम या बात का ऐसा चिंतन या मनन जो और कामों या बातों की ओर से ध्यान बिलकुल अलग कर दे। जैसे—आज-कल न जाने वे किस धुन में रहते हैं कि जल्दी लोगों से बात ही नहीं करते।
क्रि० प्र०—चढ़ना।—लगना।—समाना।—सवार होना। (उक्त सभी अर्थों में)
४ संगीत में कोई चीज गाने या बजाने का वह विशिष्ट ढंग, प्रकार या शैली जिसमें स्वरों का उतार-चढ़ाव अन्य प्रकारों या शैलियों से बिलकुल अलग और निराला होता है। जैसे—(क) रामायण की चौपाइयाँ अनेक धुनों में गाई जाती हैं। (ख) यह गजल सोहिनी की धुन में भी गाई जाती है और भैरवी की धुन में भी।
धुनक—स्त्री०[हिं० धुनकना] धुनकने की क्रिया या भाव।
†पु० धनुष।
धुनकना—स० धुनना।
धुनकी—स्त्री०[सं० धनुस्, हिं० धुनकना]१ लड़कों के खेलने का छोटा धनुष। २ धुनियों का एक प्रकार का प्रसिद्ध उपकरण, जिससे वे रूई धुनते हैं। पिंजा। फटका।
धुनना—स०[सं० धूनन] १ धुनकी की सहायता से रूई पर इस प्रकार बार बार आघात करना कि उसके तार या रेशे अलग-अलग हो जायँ और बिनौले निकल जायँ।
विशेष—अब मशीनों द्वारा भी रूई धुनी जाने लगी है।
२ लाक्षणिक अर्थ में, इस प्रकार निरन्तर आघात या प्रहार करना जिससे किसी को अत्यधिक शारीरिक कष्ट हो।
मुहा०—सिर धुनना =दे० 'सिर' के अंतर्गत।
संयो० क्रि०—डालना।—देना।
स० [हिं० धुन]१ धुन में आकर अपनी ही बात कहते चलना। २ कोई काम लगातार करते चलना।
अ०[?]१ अधिकता या बहुतायत होना। २ ऊपर या चारों ओर से घिर आना। आच्छादित होना। छाना। उदा०—धामधाम धूपनि कौ धूम धुनियतु है।—देव।
धुनवाई—स्त्री०[हिं० धुनवाना]१ धुनवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'धुनाई'।
धुनवाना—स०[हिं० धुनना]१ धुनने का काम किसी दूसरे से कराना। जैसे—रूई धुनवाना। २ खूब पिटवाना। मार खिलवाना।
धुनवी†—स्त्री० =धुनकी।
धुना†—पु० =धुनियाँ।
धुनाई—स्त्री०[हिं० धुनना] धुनने की क्रिया, भाव या मजदूरी।
धुनि—स्त्री०[सं०√धु (कंपन) +नि]नदी।
†स्त्री०१ =ध्वनि। २ =धूनी।
धुनियाँ—पु० [हिं० धुनना] [स्त्री० धुनियाइन] वह व्यक्ति जो धुनकी की सहायता से रूई धुनने का काम या पेशा करता हो। बेहना।
धुनिहाव†—पु०[?] हड्डी में का दर्द।
धुनी—स्त्री०[सं० धुनि+ङीष्] नदी।
पद—सुर-धुनी। (दे०)
†स्त्री० १ =ध्वनि। २ =धूनी।
धुनी-नाथ—पु०[ष० त०] धुनी (नदी) के स्वामी, सागर।
धुनेचा—पु० [देश०] सन की जाति का एक पौधा, जो बंगाल में काली मिर्च की बेलों पर छाया रखने के लिए लगाया जाता है।
धुनेहा†—पु० =धुनियाँ।
धुप-धुप—वि० [हिं० धूप]१ साफ। स्वच्छ। २ उज्ज्वल। चमकीला।
धुपना—अ०[हिं० धूप] धूप आदि के धूएँ से सुगंधित किया जाना या होना।
अ०[सं० धूपन=श्रांत होना]१ दौड़ना। २. हैरान होना। जैसे—दौड़ना-धुपना (धूपना)।
†अ० =धुलना। (पश्चिम)
धुपाना—स०[हिं० धूप=सुगंधित द्रव्य] धूप आदि के सुगंधित धूएँ से बासना।
स० [हिं० धूपना] किसी को धूपने में प्रवृत्त करना।
†स०[हिं० धूप] सुखाने के लिए धूप में रखना या धूप दिखाना।
†स० =धुलवाना।
धुपेना†—पु० =धूपदानी।
धुपेली†—स्त्री०[हिं० धूप+एला(प्रत्य०)] धूप में अधिक घूमने अथवा गरमी के प्रभाव के कारण शरीर में निकलनेवाले छोटे-छोटे दाने। पित्ती।
धुप्पल—स्त्री०[हिं० धोपा=धोखा]१. अपना काम निकालने के लिए किसी को आतंकित करते हुए दिया जानेवाला धोखा। धुप्पस। (ब्लफ) २ छल। धोखा।
धुप्पस†—स्त्री० =धुप्पल।
धुबला—पु०[?] घाघरा। लहँगा।
धुमई†—वि०[धूम्र+ई (प्रत्य०)] धूएँ के रंग का।
स्त्री० एक प्रकार का रंग जो देखने में धूएँ जैसा होता है।
पु० उक्त रंग का बैल, जो प्राय अन्य बैलों की अपेक्षा अधिक सशक्त होता है।
धुमरा†—वि० =धुआरा (धूमिल)।
धुमला†—वि०[सं० धूम्र+ला (प्रत्य०)]१. धूमिल। २. अंधा। (क्व०)

घुमलाई†—स्त्री० =घुमिलाई।
घुमारा †—वि० =धुआँरा।
घुमिलना*—स०[हिं० धूमिल+आना (प्रत्य०)]१ धूमिल करना। २ धुँधला करना।
अ० १. धूमिल होना। २ धुँधला होना। मद पडना।
घुमिला†—वि० =धूमिल।
घुमिलाई†—स्त्री० [हिं० धूमिल+आई (प्रत्य०)]१ धूमिल होने की अवस्था या भाव। २ धुँधलापन। ३ अधकार। अधेरा।
घुमिलाना—अ०[हिं० धूमिल] १ धूमिल होना। २ काला पडना।
स०=धूमिल करना।
घुमैला†—वि०=धूमिल।
घुम्मर*—वि०=धूमिल।
पुं०=धूम्र (धूआँ)।
धुर्—स्त्री० [स० धुर्व् (हिंसा)+क्विप्]१ बैलो आदि के कधे पर रखा जानेवाला जूआ। २ बोझ। भार। ३ गाडी के पहियों का धुरा। अक्ष। ४ खूँटी। ५ ऊँचा और श्रेष्ठ स्थान। ६ उँगली। ७ चिनगारी। ८ अश। भाग। ९ धन-सपत्ति। १० गगा का एक नाम। ११ रथ का अगला भाग।
धुरधर—वि०[स० धुर√धृ (धारण)+खच्, मुम्] १ धुर अर्थात् जूआ धारण करनेवाला। २ भार आदि से लदा हुआ। ३ जो बहुत अधिक अच्छे गुण या विद्याएँ धारण किए हो। किसी विषय मे औरो से बहुत अधिक बढा-चढा या श्रेष्ठ। जैसे—धुरधर पडित। ४ प्रधान। मुख्य।
पु० १ वह, जो बोझ ढोता हो। २ ऐसा पशु जिस पर बोझ लादा जाता हो। ३ एक राक्षस जो प्रहस्त का मत्री था। ४ धौ का पेड़। धव।
धुर—पु०[स० √धुर्वी+क] १ गाडी या रथ आदि का धुरा। अक्ष। २ ऊँचा और श्रेष्ठ स्थान। ३. बोझ। भार। ४ गाडी का धुरा। ५ बैलो के कधे पर रखने का जूआ। ६ जमीन की एक नाप, जो बिसवे के बीसवे भाग के बराबर होती है। धूर। बिस्वासी।
अव्य०[स० धुर् या ध्रुव] एक अव्यय जो कई प्रकार के प्रयोगो मे किसी नियत स्थान की अतिम सीमा या सिरा सूचित करता है। ठेठ। जैसे—धुर ऊपर की छत। उदा०—(क) मोती लादन पिय गये, धुर पाटन गुजरात। —गिरधर। (ख) हमको तो सोई लखे जो धुर पूरब का होय।—कबीर।
पद—धुर का=हद दरजे का। परम। **धुर सिर से**। बिलकुल आरभ से। **धुर से**=धुर सिर से
वि०[स० ध्रुव]१ दृढ़। पक्का। २. ठीक। दुरुस्त।
पुं०[?]बीच। मध्य।
†स्त्री०=धरा (पृथ्वी)। उदा०—अज्ज गहौं प्रथिराज, बोल बुलत गजंत धुर।—चदवरदाई।
धुरई†—स्त्री०[हिं० धुर] कूएँ के खभे आदि के बीच मे आडे टिकाए हुए वे दोनो बाँस या लकड़ियाँ, जिनके नीचेवाले सिरे आपस में सटाकर मजबूती से बँधे रहते थे।
धुरकट—पुं०[हिं० धुर=सिर(आरभ)+कट=कटौती] वह लगान जो असामी अपने जमीदार को जेठ मे पेशगी देते थे।

धुर-किल्ली—स्त्री० [हिं० धुरा+कील] गाडी मे वह कील जो धुरी की आँक मे अटकाने के लिए अन्दर की ओर धुरी के सिरे पर लगी रहती है।
धुरचट† —स्त्री० [?] अधिकता। प्रचुरता।
धुरजटी—पु०=धूर्जटी (शिव)।
धुरडडी† —स्त्री०=धुलेंडी।
धुरना—स० [सं० धूर्वण] १ मारना-पीटना। २ बाजो आदि के सबध मे आघात करते हुए बजाना। ३ कोदों, धान आदि के सूखे डठलो का भूसा बनाने के लिए उसे दाँना।
धुरपद† —पु०=ध्रुपद।
धुरमुट†—पुं०=दुरमुस।
धुरवा†—पु० [स० धुर्+वाह्] बहुत दूरी पर दिखाई पडनेवाला धुँधला बादल। उदा०—धुरवा होहि न अलि इहै धुआँ धरनि चहुँ ओर।—बिहारी।
धुरा—पु० [स० धुर+टाप्] [स्त्री० धुरी] १ लकडी या लोहे का वह छड या डडा जो पहियो की गराडी के बीचोबीच रहता है और जिसके सहारे ठहरा रहकर पहिया चारो ओर घूमता है। अक्ष। (एक्सिस) २ वह मुख्य या मूल आधार जिसके सहारे कोई चीज ठहरी रहती और चक्कर लगाती या अपना काम करती है।
पु० [स० धुर] १ बोझ ढोनेवाला पशु। २ बोझ। भार।
धुरिया-धुरग—वि० [?] १ जिसके साथ और कोई न हो। अकेला। २. जिसके साथ उसके आवश्यक अग-उपाग न हो। ३ (गीत) जिसके साथ कोई बाजा या साज न बजता हो।
धुरियाना—स० [हिं० धूर] १ किसी वस्तु को धूल से ढकना या युक्त करना। किसी वस्तु पर धूल डालना। २ ऊख का खेत पहले-पहल गोडना। ३ किसी कलक, खराबी या बुराई पर धूल या मिट्टी डालना, अर्थात् उसे दबाना और फैलने न देना।
अ० १ किसी चीज का धूल पडने के कारण दबना या मैला होना। २ ऊख के खेत का पहले-पहल गोडा जाना। ३ कलक, दोष आदि का छिपाया या दबाया जाना।
धुरिया मलार—पु०=धूरिया मलार।
धुरी—स्त्री० हिं० 'धुरा' का स्त्री० अल्पा० रूप (दे० 'धुरा')।
धुरीण—वि० [स० धुर+ख—ईन] १ जो बोझ या भार सँभालने या ले चलने के योग्य हो। २. प्रधान। मुख्य। ३ दे० 'धुरधर'।
धुरीन† —वि०=धुरीण।
धुरीय—वि० [स० धुर+छ—ईय] १ बोझ लादकर ले चलनेवाला। २ धुर या धुरे से सबध रखनेवाला।
धुरी राष्ट्र—पु० [हिं० धुरी+स० राष्ट्र] दूसरे महायुद्ध से पहले सार्वराष्ट्रीय राजनीति मे जरमनी, इटली और जापान ये तीनो राष्ट्र, जिनका एक गुट था।
धुरेंडी† —स्त्री०=धुलेंडी।
धुरेटना—अ० [हिं० धूर+एटना (प्रत्य०)] १ धूल मे लेटना। २ इस प्रकार लेटकर वस्त्र, शरीर आदि गदे करना। धूल से युक्त करना।
स० धूल लगाना।
धुर्य—वि० [स० धुर+यत्] १ जिस पर बोझ या भार लादा जा सके।

बोझ ढोने के योग्य। २. जो अपने ऊपर उत्तरदायित्व या भार ले सके। ३. दे० 'धुरधर'।

पु० १ भार ढोनेवाला पशु। २ बैल। ३. विष्णु। ४. ऋषभ नामक ओषधि।

धुर्रा—पु० [हिं० धूर=धूल] १. धूल का कण। २ किसी चीज का छोटा या सूक्ष्म कण या टुकडा।

मुहा०—**(किसी चीज के) धुर्रे उड़ाना**=बहुत छोटे-छोटे खड या टुकड़े करके बेकाम कर देना। छिन्न-भिन्न करना। **(किसी के विचारो आदि के) धुर्रे उड़ाना**=पूरी तरह से खडन करके तुच्छ सिद्ध करना। **(किसी व्यक्ति के) धुर्रे उड़ाना या उडा देना**=बहुत अधिक मारना-पीटना।

धुलना—अ० [हिं० धोना] १. वस्त्र आदि के सबध मे; जल, साबुन आदि की सहायता से स्वच्छ किया जाना। धोया जाना। जैसे—सिर धुलना। २ गदगी आदि के बह या हट जाने के फलस्वरूप किसी चीज का साफ होना। जैसे—वर्षा के जल से सडक धुलना। ३ लगे हुए कलक, दोष, बुराई आदि का छूटना, मिटना या न रह जाना। नष्ट होना। जैसे—पाप या बदनामी धुलना।

धुलवाना—स० [हिं० धोना का प्रे०] धोने का काम किसी दूसरे से कराना।

धुलवाई—स्त्री० [हिं० धुलवाना] १ धुलवाने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ दे० 'धुलाई'।

धुलाई—स्त्री० [हिं० धोना] १ धुलने या धोये जाने की क्रिया या भाव। २ धोने के बदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक।

धुलाना—स० =धुलवाना।

धुलियापीर—पु० =धूलिया-पीर।

धुलिया-मिटिया—वि० [हिं० धूल+मिट्टी] १ जिस पर धूल या मिट्टी पडी हो अथवा डाली गई हो और इसी लिए जो बिलकुल खराब या निकम्मा हो गया हो। जैसे—कपडे धुलिया-मिटिया करना। २ दबाया या शात किया हुआ (झगडा, बखेडा आदि)। ३ नष्ट, बरबाद या मटियामेट किया हुआ।

धुलेंडी—स्त्री० [हिं० धूल+उडाना] १ हिंदुओ का एक त्योहार जो होली जलने के दूसरे दिन चैत बदी १ को होता है और जिसमे सबेरे के समय लोगों पर कीचड, धूल आदि और सध्या को अबीर, गुलाल आदि डालते है। २ उक्त त्योहार का दिन।

धुव—पु० [?] कोप। क्रोध। गुस्सा। (डिं०)

† पु० =ध्रुव।

धुवका—पु० [स० धुवक] गीत का पहला पद। टेक।

धुवन—वि० [स०√धु+क्युन्—अन] १ चलानेवाला। २ कँपाने या हिलानेवाला।

पु० अग्नि। आग।

धुवाँ†—पु० =धूआँ।

धुवाँकश†—पु० =धूआँकश।

धुवाँधार—वि० क्रि०, वि० =धूआँधार।

धुवाँधज*—पु० [स० धूमध्वज] अग्नि। (डिं०)

धुवाँरा—पु० [हिं० धूआँ] छत मे बना हुआ वह छेद जिसमे से रसोईघर का धूआँ बाहर निकलता है।

वि० =धुआँरा।

धुवाँस—स्त्री० [हिं० धूर+माष, या धूमसी] उरद का आटा जिससे पापड, कचौडी आदि पकवान बनाते हैं।

धुवाना—स० =धुलाना।

धुवित्र—पु० [स०√धु+इत्र] प्राचीन काल का एक प्रकार का पंखा जो हिरन के चमडे आदि से बनाया जाता था और जिसका व्यवहार यज्ञ की आग को सुलगाने मे होता था।

धुस्तूर—पु० [स०√धु+उर, स्तुट् आगम] धतूरा।

धुस्स—पु० [स० ध्वस] १ गिरे हुए मकान की मिट्टी, ईंटों, पत्थरों आदि का ढेर। ऊँचा ढेरा। टीला। २. जलाशय पर बाँधा हुआ बाँध। ३ मिट्टी की ऊँची और मोटी दीवार, जो किले की पक्की दीवारों के आगे सुरक्षा के लिए खडी की जाती थी।

धुस्सा—पु० [स० दूष्यम्, प्रा० दुस्स=कपडा, पाली०, दुस्स] घटिया किस्म के ऊन की बुनी हुई मोटी लोई।

धूँआँ—पु० =धूआँ।

धूँका†—पु० =धोखा।

धूँध†—स्त्री० १ =धुध। २. =धोखा।

धूँधना—स० [हिं० धुध] धोखा देना।

धूँधर†—स्त्री० [हिं० धुध] १ धुध। २ उक्त के फलस्वरूप होनेवाला अँधेरा।

वि० =धुँधला।

धूँधला†—वि० =धुँधला।

धूँसना*—अ० [?] जोर का शब्द करना। उदा०—प्रबल वेग सो धमकि धूँसि दसहूँ दिसि दूसहि।—रत्नाकर।

स० [स० ध्वसन] १ नष्ट या बरबाद करना। २ मारना-पीटना।

धूँसा†—पु० =धौंसा।

धू†—वि० [स० ध्रुव] स्थिर। अचल।

पु० १ ध्रुव तारा। २. राजा उत्तानपाद का पुत्र जो प्रसिद्ध ईश्वर-भक्त था। ३ गाडी का धुरा।

धूआँ—पु० [स० धूम] १ काले या नीले रग का वह वातीय पदार्थ जो किसी चीज के जलने पर उसमे से निकलकर ऊपर चढता और हवा के साथ इधर-उधर फैलता है। धूम।

क्रि० प्र०—उठना।—देना।—निकलना।

पद—**धूएँ का धौरहर**=ऐसी चीज या बात जो धूएँ की तरह थोडी देर मे नष्ट हो जाय। अस्थायी और क्षणभगुर चीज या बात।

धूएँ के बादल=(क) ऐसे बादल जो देखने भर को हों पर जिनसे वर्षा न हो। (ख) कोई ऐसी चीज जो देखने मे बहुत बडी जान पड़े पर जिसमे सार कुछ भी न हो।

मुहा०—**(किसी चीज का) धूआँ देना**=जलने पर किसी चीज का अपने अन्दर से धूआँ निकालना। जैसे—यह कोयला (या तेल) बहुत धूआँ देता है। **(किसी चीज को किसी दूसरी चीज का) धूआँ देना**=कोई चीज जलाकर उसका धूआँ किसी दूसरी चीज पर लगाना। धूएँ के प्रभाव से युक्त करना। जैसे—(क) सिर के बालो को गुगल (या धूप) का धूआँ देना। (ख) बवासीर के मस्सो को बायविडग का धूआँ देना। (ग) किसी की नाक मे

मिरचों का धूआँ देना। (अपने अन्दर का) धूआँ निकालना=(क) मन में दबा हुआ कष्ट या रोष अपनी बातों से प्रकट करना। मन की भड़ास निकालना। (ख) अपने संबंध मे बहुत बढ़-बढ़कर बातें करना। डींग या शेखी हाँकना। धूआँ रमना=चारों ओर धूआँ छाना, फैलना या भरना। धूएँ के बादल उड़ाना=बिलकुल निरर्थक और व्यर्थ की बातें कहकर बहुत बड़ा आडम्बर खड़ा करना। झूठ-मूठ की बहुत बड़ी-बड़ी बातें खड़ी करना या बनाना। धूएँ-सा मुँह होना या मुँह धूआँ होना=ग्लानि, लज्जा आदि के कारण चेहरे का रग काला या फीका पड़ना। चेहरे की रगत उड जाना।

२ किसी चीज के उड़नेवाले ऐसे बहुत-से कण जो धूएँ की तरह चारो ओर फैलते हो।

पद—धूआँ-धार। (देखें स्वतत्र शब्द)

३ किसी चीज या बात की उड़ती हुई धज्जियाँ या धुर्रे।

मुहा०—(किसी चीज के) धूएँ उड़ाना या बिखेरना=छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट करना। धज्जियाँ या धुर्रे उड़ाना।

४ मृत शरीर। लाश। शव। उदा०—धूआँ देखि खर-दूषन केरा। जाइ सुपनखा रावन प्रेरा।—तुलसी।

धूआँ-कश—पु० [हिं० धूआँ+फा० कश-खीचना] भाप के जोर से चलनेवाली नाव या जहाज। अगिनबोट। (स्टीमर)

धूआँदान—पु० [हिं० धूआँ+फा० दान] छत आदि मे बना हुआ वह छेद या नल जिसमे से होकर घर के अन्दर का धूआँ बाहर निकलता है। चिमनी।

धूआँधार—वि० [हिं० धूआँ+धार] १. धूएँ से भरा हुआ। २. धूएँ की तरह के गहरे काले रगवाला। ३ तड़क-भड़कवाला। ४. खूब जोरो का। घोर। प्रचंड। ५ मान, मात्रा आदि मे बहुत अधिक। क्रि० वि० निरतर और जोरो से। जैसे—धूआँधार गोले या पानी बरसना।

धूई—स्त्री०=धूनी।

धूक—पु० [स०] १ वायु। २ काल।

वि० चालाक। धूर्त।

पुं०[फा०दूक=तकला] कलाबत्तू बटने की लोहे की पतली गोल सीख।

धूकना*—अ० [हिं० ढुकना] १. किसी ओर बढ़ना या झुकना। २. दे० 'ढुकना'।

धूजट*—पु०=धूर्जटि (शिव)।

धूजना—अ० [स० धूत] १ हिलना। २. काँपना।

धूत—वि० [सं०√धू (कपन)+क्त] १. काँपता, थरथराता या हिलता हुआ। कपित। २. जिसे डाँटा-डपटा या धमकाया गया हो। ३. छोड़ा या त्यागा हुआ। त्यक्त।

† वि०=धौत। उदा०—धो दिया श्रेष्ठ कुल-धर्म धूत।—निराला।

† वि०=धूर्त।

धूतना—स० [सं० धूर्त] १ किसी के साथ धूर्तता करना। २. किसी को ठगना। ३. धूर्ततावश किसी की कोई चीज नष्ट करना। उदा०—अवधू तूँ कै या तन धूतौं, बधिका ह्वै मन मारूं।—कबीर।

धूत-पाप—वि० [ब० स०] जिसके पाप धुलकर दूर या नष्ट हो चुके हों।

धूत-पापा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] काशी की एक प्राचीन नदी, जो पचगगा घाट के समीप गगा मे मिली थी।

धूता—स्त्री० [स० धूत+टाप्] पत्नी। भार्या।

धूताई†—स्त्री०=धूर्तता।

धूतार (ा) —वि०=धूर्त।

धूति—स्त्री० [स√धू+क्तिन्] १ हिलते रहने या हिलने देने की अवस्था या भाव। २. हठयोग मे शरीर शुद्ध करने की एक क्रिया।

धूती—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

धूतुक—पु०=धूतू।

धूतू—पु० [अनु०] १ कल-कारखाने आदि की सीटी का शब्द। २ तुरही। ३ नरसिंहा।

धूधू—पु० [अनु०] वस्तुओ के जलने के समय होनेवाला धूधू शब्द।

धून—वि० [स०√धू+क्त, नत्व] कपित।

† पुं०=धून।

धूनक—वि० [स०√धू+णिच्, नुक्+ण्वुल्—अक] १. हिलाने-डुलानेवाला। २ चालाक। धूर्त।

पु० सरल या साल का गोद। राल।

धूनन—पुं० [स०√धू+णिच्, नुक्+ल्युट्—अन] १ हवा। २ कपन। ३ क्षोभ।

धूनना—स० [हिं० धूनी] १ आग मे कोई ऐसी वस्तु छोड़ना जिसके जलने मे सुगधित धूआँ निकले। २ उक्त प्रकार के धूएँ से कमरा, घर आदि सुवासित करना। धूनी देना।

स० दे० 'धुनना'।

धूना—पु० [हिं० धूनी] आसाम आदि की पहाड़ियो पर होनेवाला एक तरह का गुग्गुल की जाति का बड़ा पेड। इसकी छाल आदि से वारनिश बनाई जाती है।

धूनि—स्त्री० [स०√धू+क्तिन्, नत्व] हिलने की क्रिया। कपन।

धूनी—स्त्री० [हिं० धूआँ या धूई] १ वह आग जो साधु लोग या तो ठढ से बचने के लिए या शरीर को तपाकर कष्ट पहुँचाने के लिए अपने सामने जलाये रखते हैं।

मुहा०—धूनी जगाना, रमाना या लगाना=(क) साधुओ का अपने सामने धूनी जलाकर तपस्या करना। (ख) अपना शरीर तपाने या अपना वैराग्य प्रकट करने के लिए साधु होकर या साधुओ की तरह अपने सामने धूनी जलाये रखना।

२. सुगंधित धूआँ उठाने के लिए, गुगल, धूप, लोबान आदि गध द्रव्य जलाने की क्रिया। जैसे—ठाकुर जी की मूर्ति के आगे की धूनी। क्रि० प्र०—जलाना।—देना।

३ धूआँ उठाने के लिए कोई चीज जलाने की क्रिया। जैसे—मिरचो की धूनी देकर किसी के सिर पर चढ़ा हुआ भूत भगाना।

क्रि० प्र०—देना।

धूप—पुं०[सं०√धूप (तपाना)+अच्] १. कोई ऐसा गध द्रव्य या सुगधित पदार्थ जिसे जलाने पर सुगधित धूआँ निकलता हो। जैसे—अगर, चन्दन का चूरा, लोबान आदि। २ देव-पूजन, वायु-शुद्धि, सुगंध-प्राप्ति आदि के लिए उक्त प्रकार के पदार्थों को जलाने पर उनमे से निकलनेवाला सुगधित धूआँ।

मुहा०—धूप देना=उक्त उद्देश्यो की सिद्धि के लिए सुगंधित पदार्थ जलाना।

३ कई प्रकार के सुगधित द्रव्यो को कूटकर कडी लेई के रूप मे बनाया हुआ वह पदार्थ जो सुगधित धूआँ उत्पन्न करने के लिए जलाने के काम आता है।

पद—धूप-बत्ती। (देखें)

क्रि० प्र०—जलाना।

४ चीड या धूप सरल नामक वृक्ष जिसमे से गंधाबिरोजा निकलता है।

स्त्री०[स० धूप, प्रा० धुप्पा, पा० प० धुप्प] दिन के समय होनेवाला सूर्य का वह प्रकाश जिसमे गरमी या ताप भी होता है। आतप। घाम।

मुहा०—धूप खाना या लेना=ऐसी स्थिति मे होना कि शरीर पर धूप पडे। शरीर मे गरमाहट लाने के लिए धूप मे बैठना। **(किसी चीज को) धूप खिलाना, दिखाना या लगाना**=कोई चीज ऐसी स्थिति मे रखना कि उस पर धूप पडे या लगे। जैसे—बरसात के बाद गरम कपडा को धूप खिलानी या दिखानी पडती है। **धूप चढ़ना या निकलना**=सूर्योदय होने पर प्रकाश का बढना और फैलना। घाम निकलना। **(किसी चीज पर) धूप पड़ना या लगना**=सूर्य के प्रकाश मे पहुँचने पर धूप के प्रभाव से युक्त होना। **धूप मे बाल या चूड़ा सफेद करना**=बिना कुछ अनुभव या जानकारी प्राप्त किये जीवन का बहुत-सा भाग बिता देना। (प्राय नहिक या निषेधात्मक रूप मे प्रयुक्त) जैसे—हमने धूप मे बाल नही सफेद किये हैं जो तुम्हारी इन बातो मे आ जायँ।

धूपक—पु०[स०]धूप, अगरबत्ती आदि बनाने तथा बेचनेवाला।

धूप-घड़ी—स्त्री०[हिं० धूप+घडी] एक प्रकार का यत्र, जिसमे बने हुए गोल चक्कर के बीच मे गडी हुई कील की परछाई से समय जाना जाता है।

धूप-छाँह—स्त्री०[हिं० धूप+छाँह]वह रगीन कपडा, जिसमे एक ही स्थान पर कभी एक रग और कभी दूसरा रग दिखाई देता है।

विशेष—जब किसी कपडे का ताना एक रग का और बाना दूसरे रग का होता है, तब उसमे यह बात आ जाती है।

धूपदान—पु०[स० धूप-आधान] [स्त्री० अल्पा० धूपदानी] १ धूप नामक सुगधित द्रव्य रखने का डिब्बा या बरतन। २ वह पात्र जिसमे धूप, राल आदि सुगधित द्रव्य रखकर सुगधित धूएँ के लिए जलाये जाते है। ३ वह पात्र जिसमे जलाने के लिए धूप-बत्ती खोसी, रखी या लगाई जाती है।

धूपदानी—स्त्री०[हिं० धूपदान]छोटा धूपदान।

धूपन—पु०[स० √धूप+ल्युट्—अन] [वि० धूपित] धूप आदि के धूएँ से सुवासित करने की क्रिया या भाव।

धूपना—अ०[मं० धूप=गरम होना] किसी काम के लिए इधर-उधर आने-जाने मे परेशान होना। जैसे—दौडना-धूपना।

स०[स० धूपन] सुगधित धुएँ के लिए धूप या और कोई गधद्रव्य जलाना।

धूप-पात्र—पु०[ष०त०]१ धूप रखने का बरतन। २ दे० 'धूप-दान'।

धूप-बत्ती—स्त्री०[हिं० धूप+बत्ती] मसाला लगी हुई सीक या बत्ती जिसे जलाने से सुगधित धूआँ उठकर फैलता है।

धूप-वास—पु०[तृ० त०] [भू० कृ० धूप-वासित] स्नान कर चुकने के बाद सुगधित धूएँ से शरीर, बाल आदि बासने का कार्य।

धूप-वासित—भू० कृ०[तृ०त०] धूप आदि सुगंधित द्रव्यो के धूएँ से बासा अर्थात् सुगधित किया हुआ।

धूप-वृक्ष—पु० [मध्य०स०] सलई या गुग्गुल का पेड़ जिसके गोंद से धूप आदि सुगधित द्रव्य बनाये जाते हैं।

धूपायित—वि०[स० √धूप+आय्+क्त]=धूपित।

धूपित—वि०[सं०√धूप+क्त] १ धूप के सुगंधित धूएँ से सुवासित किया हुआ। धूप के धूएँ से बासा हुआ। २ दौडने-धूपने के कारण थका हुआ। शिथिल और श्रात।

धूम—पु०[स०√धू (कपन)+मक्]१ आग का धूआँ। २ कुछ विशिष्ट औषधियो आदि को जलाकर उत्पन्न किया हुआ वह धूआँ, जो कुछ रोगो मे रोगियो के शरीर या पीडित अग पर पहुँचाया जाता है। ३ अजीर्ण या अपच मे आनेवाला धुँआयँध डकार। ४ धूमकेतु। पुच्छलतारा। ५ उल्कापात। ६ एक प्राचीन ऋषि का नाम।

स्त्री०[अनु०]१ वह स्थिति, जिसमे बहुत से लोग उत्साहपूर्वक प्रसन्नता व्यक्त करते हुए इधर-उधर आते-जाते, दौडते-फिरते और हो-हल्ला मचाते हो। उत्सवो, त्योहारो आदि के समय की जन-समूह की उल्लासपूर्ण चहल-पहल। जैसे—आज सारे भारत मे स्वराज्य दिवस की धूम है। २ उत्सवों, मेलो, समारोहो आदि के सबध मे पहले से होनेवाला उत्साहपूर्ण आयोजन, ठाठ-बाट और तैयारी। जैसे—शहर मे अभी से राष्ट्रपति के आने की धूम है।

पद—धूम-धाम।

३ उक्त प्रकार के कामो या बातो के सबध मे लोगो मे चारो ओर होने-वाली चर्चा। जैसे—आज शहर मे उनकी बरात की सवेरे से ही धूम है।

मुहा०—(किसी बात की) धूम मचना=किसी बात की चर्चा चारो ओर फैल जाना।

४ ऐसा उत्पात, उपद्रव, उछल-कूद या धीगा-मस्ती, जिसमे हो-हल्ला भी हो। जैसे—लडके दिन भर गलियो मे धूम मचाते रहते है। ५ कोलाहल। शोर। हो-हल्ला। जैसे—निम्न कक्षाओ के लड़के बहुत धूम करते है।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

विशेष—पुरानी हिन्दी तथा स्थानिक बोलियो मे कही कही इस शब्द के साथ 'डालना' क्रिया का भी प्रयोग होता है।

स्त्री०[देश०] नालो मे होनेवाली एक प्रकार की घास।

धूमक—पु०[स० धूम+कन्]१ धूआँ। १. एक प्रकार का साग।

धूमक-धैया—स्त्री०[हिं० धूम] १ ऐसी उछल-कूद और उपद्रव या हो-हल्ला जो अशिष्टतापूर्ण हो और इसी लिए अच्छा न लगे।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

२ दे० 'धूम-धाम'।

धूम-केतन—पु०[ब० स०]१ अग्नि। आग। २. धूमकेतु। पुच्छलतारा।

धूम-केतु—पु०[ब०स०] १ अग्नि, जिसकी पताका धूआँ है। २ शिव का एक नाम। ३ रावण की सेना का एक राक्षस। ४. ऐसा घोडा जिसकी दुम पर भौंरी हो। (ऐसा घोड़ा ऐबी या दूषित समझा जाता है।) ५. एक प्रकार का केतु या तारा, जिसमे पीछे की ओर दूर तक झाड़ू की तरह बहुत लबी दुम लगी हुई होती है। पुच्छलतारा। (कामेट)

धूम-गंधिक—पु०[धूम-गंध, ब०स०, इत्व, धूमगन्धि+कन्] रोहिष तृण। रूसा घास।

धूम-ग्रह—पु०[मध्य०स०] राहु नामक ग्रह।

धूमज—वि०[स० धूम√जन् (उत्पत्ति)+ड] धूएँ से उत्पन्न।
पु० १ बादल या मेघ जो धूएँ से उत्पन्न माना गया है। २ मुस्तक। मोथा।

धूम-जांगज—पुं०[स० धूमज-अग ष०त०, धूमजाग+जन्√ड] नौसादर।

धूम-दर्शी (शिन्)—पु० [स० धूम√दृश (देखना)+णिनि] वह व्यक्ति जिसे आँखो के दोष के कारण सब चीजे धुधली दिखाई देती है।

धूम-धड़क्का—पु०[हि० धूम+अनु० धडक्का] आनद, प्रसन्नता, हर्ष आदि के कारण होनेवाली चहल-पहल और हो-हल्ला।

धूम-धर—पु०[ष०त०] अग्नि। आग।

धूम-धाम—स्त्री०[हि० धूम+धाम (अनु०)] उत्साह तथा उल्लास से युक्त होनेवाला ऐसा आयोजन या तैयारी, जिसमे खूब चहल-पहल और ठाठ-बाट हो।
पद—धूम-धाम से-ठाठ-बाट और सज-धज के साथ। जैसे—धूम-धाम से जलूस, बरात या सवारी निकलना।

धूमधामी—वि० [हि० धूमधाम] १ धूम-धाम से काम करनेवाला। २ धूम-धाम या आडबर से युक्त। जैसे—धूमधामी आयोजन या समारोह। ३ नटखट। उपद्रवी।

धूम-ध्वज—पु०[ब०स०] अग्नि। आग।

धूम-नेत्र—पु०=धूम्र-नेत्र।

धूम-पट—पु०[प०त०]१ धूएँ की वह दीवार, जो युद्ध-क्षेत्र मे विपक्षियो की नजर से अपनी तोपे आदि छिपाने के निमित्त खडी की जाती थी। २ वास्तविक स्थिति या तथ्य छिपाने के लिए उसके सामने खडी की जानेवाली कोई आड या परदा। (स्मोक स्क्रीन)

धूम-पथ—पु०[मध्य०स०]१. वह रास्ता जिससे किसी स्थान का धूआँ बाहर निकलता है। धुआँरा। २ दे० 'पितृयान'।

धूम-पान—पु०[ष०त०]१ साधुओ आदि का आग के धूएँ मे पडे रहना। २ सुश्रुत के अनुसार कुछ विशिष्ट प्रकार की औषधियो का धूआँ जो नल द्वारा रोगी को सेवन कराया जाता था। ३ तमाकू, सुरती आदि को सुलगाकर (नशे आदि के लिए) बार-बार खीचकर मुँह मे लेना और बाहर निकालना। तमाकू, बीडी, सिगरेट आदि पीना।

धूम-पोत—पु०[मध्य०स०] धूएँ या भाप की सहायता से समुद्र मे चलनेवाला आधुनिक ढग का जहाज । धूआँ-कश।

धूम-प्रभा—स्त्री०[ब०स०] नरक, जो सदा धूएँ से भरा रहता है।

धूम-यान—पु०[ब०स०] पुराणानुसार, पृथ्वी के नीचे की ओर का वह मार्ग जिससे होकर पापियो की आत्माएँ नीचे या अध लोक की ओर जाती हैं।

धूम-योनि—पु०[ब०स०] बादल, जिसकी उत्पत्ति धूएँ से मानी गई है।

धूमर—वि०=धूमिल।

धूम-रज (स्)—पु०[ष०त०]१ घर का धूआँ। २ छतो और दीवारों मे लगनेवाली धूएँ की कालिख।

धूमरा—वि०=धूमर (धूमिल)।

धूमरी†—स्त्री०१.=धूम। २.=धूम्र।

धूमल—वि०[स० धूम√ला (लेना)+क]धूएँ के रग का। लाली लिये काले रग का।
†वि०=धूमिल।

धूमला†—वि०=धूमिल।

धूमवान् (वत्)—वि०[सं० धूमवत्] [स्त्री० धूमवती] जिसमे या जहाँ धूआँ हो। धूएँ से युक्त।

धूम-सार—पु०[ष०त०] घर का धूआँ।

धूमसी—स्त्री०[स०] उरद का आटा या चूर्ण। धुआँस।

धूमांग—वि०[धूम-अग ब०स०] धूएँ के रग के-से अगोवाला।
पु० शीशम का पेड।

धूमाक्ष—वि०[धूम-अक्षि ब०स०, अच्] [स्त्री० धूमाक्षी] जिसकी आँखें धूएँ के रग जैसी हों।

धूमाग्नि—स्त्री०[धूम-अग्नि मध्य०स०] ऐसी आग जिसमे से धूआँ ही निकलता हो, लपट न उठती हो।

धूमाभ—वि०[धूम-आभा ब०स०] धूएँ के रग जैसा।

धूमायन—पुं०[स० धूम+क्यङ्+ल्युट—अन] १ धूआँ उठाना या उत्पन्न करना। २ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह भाप बनकर उडने लगे। ३ गरमी। ताप।

धूमायमान†—वि०[स० धूम+क्यङ+शानच्, मुक्]१ जो धूएँ के रूप मे हो। २ धूएँ से भरा हुआ। धूएँ से युक्त या व्याप्त।

धूमाली—स्त्री०[स० धूम+आली] आकाश मे चारो ओर छाया हुआ धूआँ। उदा०—माली की मडई से उठ नभ के नीचे नभ सी धूमाली।

धूमावती—स्त्री०[स० धूम+मतुप्—ङीप्, वत्व, दीर्घ] दस महाविद्याओ मे से एक।

धूमिका—स्त्री०[स० धूम+ठन्—इक, टाप्] कोहरा।

धूमित—वि०[स० धूम+इतच्]१ धूएँ से ढका हुआ। २ जिसमे धूआँ लगा हो।
पु० तत्र शास्त्र मे, सादे अक्षरो का मत्र जो दूषित समझा जाता है।

धूमिता—स्त्री०[स० धूमित+टाप्] वह दिशा जिसमे सूर्य पहले-पहल उन्मुख या प्रवृत्त होता हो।

धूमिनी—स्त्री०[स० धूमिन्+ङीप्] =धूमी।

धूमिल—वि०[स० धूम+इलच्] १ धूएँ के रग का। लाली लिये काले रग का। २ जिसमे इतना कम प्रकाश हो कि साफ दिखाई न पडे। धुँधला। ३ मलिन। गदा।

धूमी (मिन्)—वि०[स० धूम+इनि] धूएँ से भरा हुआ।
स्त्री०१ अजमीढ की एक पत्नी का नाम। २ अग्नि की एक जिह्वा का नाम।

धूमोत्थ—वि०[सं० धूम-उद्√स्था (ठहरना)+क] धूएँ से निकला हुआ।
पु० नौसादर। वज्रक्षार।

धूमोद्गार—पु०[धूम-उद्गार ष०त०] अजीर्ण या अपच के कारण आने-वाला धूएँ का-सा खट्टा डकार।

धूमोपहत—भू० कृ० [धूम-उपहत तृ० त०] धूएँ के फलस्वरूप जिसका गला घुट गया हो।
पु० एक तरह का रोग।

धूमोर्णा—स्त्री०[सं०]१ यम की पत्नी का नाम। २. मार्कण्डेय की पत्नी का नाम।

धूम्या—स्त्री०[स० धूम+य—टाप्] १ धूम-पुंज। २. धूएँ का गहरा और घना बादल।

धूम्याट—पुं०[स० धूम्या√अट (गति)+अच्] एक पक्षी। भृंग।

धूम्र—वि०[स० धूम√रा (देना)+क, पृषो० सिद्धि] धूएँ के रंग का। लाली लिये काले रंग का।

पुं०१. धूएँ का या धूएँ का-सा रंग। लाली लिये काला रंग। २. मानिक या लाल का धुँधलापन जो एक दोष माना गया है। ३ महादेव। शिव। ४ कार्तिकेय का एक अनुचर। ५ राम की सेना का एक भालू। ६ फलित ज्योतिष मे एक प्रकार का योग। ७ मेढ़ा। ८. शिलारस नामक गंध द्रव्य।

धूम्रक—पुं०[स० धूम्र√कै (प्रकाशित होना)+क] ऊँट।

धूम्र-कांत—पुं०[कर्म० स०] एक प्रकार का रत्न या नग।

धूम्र-केतु—पुं०[ब०स०] राजा भरत के एक पुत्र का नाम। (भागवत)

धूम्र-केश—पुं०[ब०स०] १ राजा पृथु का एक पुत्र। २ कृष्णाश्व का एक पुत्र, जो उसकी अर्चि नाम की स्त्री से उत्पन्न हुआ था। (भागवत)

धूम्र-नेत्र—पुं०[ब०स०] छत या दीवार मे से धूआँ निकलने का छेद। धुआँरा। धुआँदान।

धूम्र-पट—पुं०=धूमपट।

धूम्र-पत्रा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] एक प्रकार का पौधा जो आयुर्वेद मे तीता, रुचिकारक, गरम, अग्निदीपक तथा शोथ, कृमि और खाँसी को दूर करनेवाला माना गया है। सुलभा। गृध्रपत्रा।

धूम्र-पान—पुं०=धूम-पान।

धूम्र-मूलिका—स्त्री०[ब०स०, कप्, टाप्, इत्व] शूली नामक तृण।

धूम्र-लोचन—पुं०[ब०स०] १ कबूतर। २ शुंभ दानव का एक सेनापति।

धूम्र-वर्ण—वि० [ब० स०] धूएँ के रंग का। ललाईपन लिये काला। धूमिल।

पुं० उक्त प्रकार का रंग।

धूम्रवर्णा—स्त्री०[स० धूम्रवर्ण+टाप्] अग्नि की सात जिह्वाओ मे से एक।

धूम्र-शूक—पुं०[ब०स०] ऊँट।

धूम्रा—स्त्री०[धूम्र+अच्—टाप्] एक प्रकार की ककड़ी।

धूम्राक्ष—वि०[धूम्र-अक्षि ब०स०, अच्] जिसकी आँखें धूएँ के रंग की हो। पुं० रावण का एक सेनापति।

धूम्राट—पुं०[स० धूम्र√अट् (गति)+अच्] धूम्याट पक्षी। भिंगराज।

धूम्राभ—पुं० [धूम्र-आभा ब०स०]१. वायु। २ वायुमडल।

धूम्रार्चि (स्)—स्त्री०[धूम्र-अर्चिस ब०स०] अग्नि की दस कलाओ मे से एक।

धूम्राश्व—पुं०[धूम्र-अश्व ब० स०] इक्ष्वाकु वंशीय एक राजा।

धूम्रिका—स्त्री० [स० धूम्रा+कन्—टाप्, ह्रस्व, इत्व]शीशम की तरह का एक प्रकार का पेड़।

धूम्रीकरण—पुं० [स० धूम्र+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] (रोग के कीटाणुओ से मुक्त करने के लिए या हवा की गदगी दूर करने के लिए) कमरे आदि मे सुगंधित धूप, संक्रमणनाशक वाष्प आदि प्रसारित करना। (फ्यूमिगेशन)

धूर—स्त्री० [स० धुर] जमीन की एक नाप जो एक बिस्वांसी के बराबर होती है। बिस्वे का बीसवाँ भाग।

स्त्री० [?]एक प्रकार की घास।

†स्त्री०=धूल।

अव्य०=धुर।

पुं० [?]बादल।

धूरकट—पुं० दे० 'धुरकुट'।

धूरजटी—पुं० धूर्जटि।

धूर डाँगर—पुं०[देश०] पशु, विशेषत सींगोंवाला पशु।

धूरत†—वि०=धूर्त।

धूर-धान—पुं०=धूल-धानी।

धूर-धानी†—स्त्री०=धूल-धानी।

धूर-यात्रा†—स्त्री०=धूलियात्रा।

धूर-संझा—स्त्री०[स० धूलि+संध्या] गाधूलि का समय।

धूरा—पुं०[हिं० धूर]१ धूल। गर्द। २ महीन चूर्ण। बुकनी। ३ रोगी के हाथ-पैर ठढे हो जाने पर गरम राख या सोठ आदि के चूर्ण से वे अंग धीरे-धीरे मलने की क्रिया, जिससे हाथ-पैर मे फिर गरमाहट आ जाती है।

क्रि० प्र०—करना।—देना।

४ अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए की जानेवाली चापलूसी या मीठी-मीठी बातो से दिया जानेवाला भुलावा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।

धूरि—स्त्री० =धूल। उदा०—जब आवत संतोष धन, सब धन धूरि समान।—तुलसी।

धूरि-छेत्र*—पुं०[स० धूलि+क्षेत्र] जगत। संसार। उदा०—धूरि क्षेत्र मे आइ कर्म करि हरिपद पावै।—नंददास।

धूरिया-बेला—पुं०[हिं०धूर+बेला]एक प्रकार का बेला (पौधा और फूल)।

धूरिया-मलार—पुं० [धूरिया? +स०मल्लार] सपूर्ण जाति का एक प्रकार का मल्लार जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

धूरे—अव्य० १. धौरे। २ धीरे।

धूर्जटि—पुं० [स० धूर्—जटि ब० स०] शिव। महादेव।

धूर्त—वि० [स०√धूर्व् (हिंसा)+तन्] [भाव० धूर्तता] १. जो कपट या छलपूर्ण आचरण करके अथवा चालाकी या दाँव-पेंच के द्वारा अपना काम इस प्रकार निकाल लेता हो कि लोगो को सहसा उसके वास्तविक स्वरूप का पता तक न चलने पाता हो। बहुत बड़ा चालाक। २. कपटी। छली। धोखेबाज। ३ दुष्ट। पाजी।

पुं० १ साहित्य मे, शठ नायक का एक भेद। २ जुआरी जो तरह-तरह के दाँव-पेच करता है। ३. चोर नामक गंध-द्रव्य। ४. लोहे की मैल या मोरचा। ५ धतूरा। ६ विट् लवण।

धूर्तक—पुं [स० धूर्त+कन्] १ जुआरी। २. गीदड़। ३. कौरव्य कुल का एक नाग।

धूर्त-चरित—पुं० [ष० त०] १. धूर्तों का चरित्र। २. [ब० स०] संकीर्ण नाटक का एक भेद।

धूर्तता—स्त्री० [सं० धूर्त+तल्—टाप्] धूर्त होने की अवस्था, गुण या भाव। दुष्ट उद्देश्य से की जानेवाली चालाकी।

धूर्त-मानुषा—स्त्री० [धूर्त=हिंसित-मानुष ब० स०, टाप्] रास्ना लता।

धूर्त-रचना—स्त्री० [ष० त०] छल-कपट।

धूर्धर—वि० [सं० धूर्-धर ष० त०] १. बोझ ढोनेवाला। भारवाही। २ दे० 'धुरधर'।

धूर्य—पु० [सं०=धुर्य पृषो० सिद्धि] विष्णु।

धूर्वह—वि० [सं० धुर्-वह ष० त०, पृषो० दीर्घ] १ भार वहन करनेवाला। २ कार्य का दायित्व अपने ऊपर लेनेवाला।
पुं० बोझ ढोनेवाला पशु।

धूर्वी—स्त्री० [सं० धूर्√अज् (गति)+क्विप्, वी आदेश] रथ का अग्रभाग।

धूल—स्त्री० [सं० धूलि] १ सूखी मिट्टी के वे सूक्ष्म कण जो हवा या आँधी के समय वातावरण मे उड़ते रहते है। गर्द। रज। जैसे—लड़के धूल उड़ाते हैं।
क्रि० प्र०—उड़ना।
मुहा०—(किसी जगह) **धूल उड़ना या बरसना**=ध्वस्त या नष्ट हो जाने के कारण या चहल-पहल न रहने के कारण बहुत उदासी छाना। तबाही या बरबादी के लक्षण स्पष्ट दिखाई देना। (किसी व्यक्ति की) **धूल उड़ाना**=(क) किसी की त्रुटियो, दोषो, बुराइयो आदि की खूब चर्चा करके उसे परम तुच्छ ठहराना। (ख) खूब उपहास करना। दिल्लगी उडाना। (किसी का) **धूल उड़ाते या फाँकते फिरना**=दुर्दशा भोगते हुए इधर-उधर मारे-मारे फिरना। **धूल की रस्सी बटना**=(क) बिना किसी आधार या तत्त्व के कोई बड़ा काम करने का प्रयत्न करना। (ख) अनहोनी या व्यर्थ की बात के लिए परिश्रम या प्रयत्न करना। (किसी के आगे) **धूल चाटना**=बहुत गिड़गिड़ाकर अपनी अधीनता या दीनता प्रकट करना। (जगह-जगह की) **धूल छानना**=किसी काम के लिए जगह-जगह दुर्दशा भोगते हुए या मारे-मारे फिरना। (किसी की) **धूल झड़ना**=मारे-पीटे जाने पर भी इस प्रकार ज्यो के त्यो रहना कि मानो कुछ हुआ ही न हो। (परिहास और व्यग्य) जैसे—अच्छा जाने दो; तुम्हारे शरीर की धूल झड गई।
२. किसी वस्तु पर पडे हुए उक्त कण। जैसे—कपडे पर बहुत धूल पडी है।
क्रि० प्र०—पडना।
मुहा०—**धूल झाड़कर अलग या चलता होना**=अपमान, आघात आदि सहकर भी उसकी उपेक्षा करना। (किसी की) **धूल झाड़ना**=(क) (किसी को) मारना-पीटना। (विनोद) (ख) बहुत ही तुच्छ या हीनभाव से किसी की चापलूसी और सेवा-शुश्रूषा करना। (किसी बात पर) **धूल डालना**=(क) उपेक्ष्य या तुच्छ समझकर जाने देना। ध्यान न देना। (ख) अनुचित और निंदनीय समझकर किसी बुरी बात की चर्चा फैलने न देना। जान-बूझकर छिपाने या दबाने का प्रयत्न करना। **धूल फाँकना**=(क) दुर्दशा भोगते हुए व्यर्थ का प्रयत्न करना। (ख) जान-बूझकर सरासर झूठ बोलना। (अपने) **सिर पर धूल डालना**=कोई अनुचित काम हो जाने पर बहुत पछताना और सिर धुनना। (किसी के) **सिर पर धूल डालना**=बहुत ही तुच्छ या हीन समझकर उपेक्षा करना या दूर हटाना।
पद—**पैरों की धूल**=अत्यत तुच्छ या हीन। परम उपेक्ष्य। जैसे—वह तो आपके पैरो की धूल है।
३ मिट्टी।
मुहा०—**धूल मे मिलना**=(क) पूर्णतया नष्ट हो जाना कि नाम-निशान तक न रहे। (ख) चौपट हो जाना।
४. धूल के समान तुच्छ वस्तु। जैसे—इस कपडे के सामने वह धूल है।
क्रि० प्र०—समझना।

धूलक—पु० [सं० √धू (काँपना)+लक] जहर। विष।

धूल-कूप—पु० [सं०] हिम-नदी के तल पर कही-कही दिखाई देनेवाले वे गहरे गड्ढे जो कड़ी धूप पडने से बनते हैं और जिनमे ऊपर पडी हुई धूल समाकर नीचे बैठ जाती है। (डस्ट वेल)

धूल-धक्कड़—पु० [हिं० धूल+धक्का] १. चारो ओर उड़नेवाली धूल। २ चारो ओर मचनेवाला निदनीय उत्पात या उपद्रव। जैसे—चुनाव के समय हर जगह एक-सा धूल-धक्कड़ दिखाई देता था।

धूल-धान—पु० धूल-धानी।

धूल-धानी—स्त्री० [हिं० धूल+धान ?] १ गर्द या धूल का ढेर। २ चूर-चूर करके धूल की तरह बनाने की क्रिया या भाव। ३ ध्वस। विनाश। ४ सर्वनाश।

धूल-यात्रा—स्त्री०=धूलि-यात्रा।

धूला†—पु० [देश०] टुकड़ा। खड। कतरा।
†पु०=धूल।

धूलि—स्त्री० [सं०√धू+लि] धूल। गर्द।

धूलि-कदब—पु० [ब० स०] एक प्रकार का कदब का वृक्ष और उसका फल।

धूलिका—स्त्री० [सं० धूलि+कन्—टाप्] १ महीन जल-कणो की झड़ी। फुहार। २ कोहरा।

धूलि-गुच्छक—पुं० [ष० त०] अबीर-गुलाल आदि, जो होली मे एक-दूसरे पर डाले जाते हैं।

धूलि-चित्र—पु० [मध्य० स०] वे आकृतियाँ या कोष्ठक, जो रगो के चूर्ण जमीन पर भुरक कर बनाये जाते है। साँझी। (देखें)

धूलि-धूसर—वि०=धूलि-धूसरित।

धूलि-धूसरित—वि० [तृ० त०] धूल पड़ने के कारण जिसका रग धूसर या मटमैला हो गया हो।

धूलि-ध्वज—पु० [ब० स०] वायु। हवा।

धूलि-पुष्पिका—स्त्री० [ब० स०, कप्—टाप्, इत्व] केतकी।

धूलि-यात्रा—स्त्री० [मध्य० स० ?] किसी देवता के धाम मे पहुँचने पर उसके मन्दिर मे जाकर किया जानेवाला वह दर्शन जो रास्ते मे पैरो पर पड़ी हुई धूल बिना धोये अर्थात् सीधे मन्दिर मे पहुँचकर किया जाता है। (पैदल यात्री)

धूलिया-पीर—पु० [हिं० धूल+फा० पीर] एक कल्पित पीर जिसका नाम बच्चे खेलो आदि मे लिया करते हैं। जैसे—तुम्हे धूलिया-पीर की कसम है, वहाँ मत जाना।

धूर्वां—पुं० =धूआँ।

धूसना—स० [सं० ध्वसन] १ खराब या निकम्मा करने के लिए कुचलना, दबाना या मलना-दलना। दलन या मर्दन करना। २ दे० 'ठूसना'।

धूसर—वि० [सं०√धू+सरन्] १ धूल के रंग का। भूरे या मटमैले रंग का। खाकी। २ जिसमे धूल लगी या लिपटी हो।
पुं० १ पीलापन लिये सफेद अर्थात् भूरा या मटमैला रंग। २ गधा। ३ ऊँट। ४ कबूतर। ५ एक व्यापारिक जाति, जिसे कुछ लोग वैश्यो मे और कुछ लोग ब्राह्मणो मे मानते है। ढूसर।

धूसरच्छदा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] एक प्रकार का पौधा, जिसे बुहना या बोहला भी कहते है।

धूसर-पत्रिका—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीप्+कन्, टाप्, ह्रस्व] हाथीसूँड का पौधा।

धूसरा—वि० [सं० धूसर] [स्त्री० धूसरी] १ धूल के रंग का। मटमैला। खाकी। २ जिस पर धूल पडी या लगी हो। धूल से सना हुआ।
स्त्री० [सं०] पाडुफली।

धूसरित—वि० [सं० धूसर+इतच्] १ धूल लगने के कारण जो मैला-कुचैला हो गया हो। धूल से लिपटा हुआ। २ भूरे या मटमैले रंग का।

धूसरी—स्त्री० [सं०] किन्नरियो का एक वर्ग।

धूमला†—वि० धूसरा।

धूस्तूर—पुं० [सं०√धूस् (कान्ति)+क्विप्,√तूर् (शीघ्रता)+क, धूस्-तूर कर्म० स०] धतूरा।

धूहा—पुं० [हिं० ढूह] १ ढूह। २ बॉस पर टाँगी जानेवाली काली हाँडी या पुतला, जो खेतो मे पक्षियो को डराकर दूर रखने के लिए खडा किया जाता है।

धृक—अव्य० =धिक्।

धृग—अव्य० =धृक।

धृत—वि० [सं०√धृ (धारण)+क्त] १ हाथ से धरा या पकडा हुआ। २ गिरफ्तार किया हुआ। ३ धारण किया हुआ। ४ निश्चित या स्थिर किया हुआ। ५ पतित।
पुं० १ ग्रहण या धारण करने का भाव। २ कुश्ती लडने का एक ढंग। ३ तेरहवे मनु रौच्य के पुत्र का नाम। ४ पुराणानुसार द्रुह्यु-वंशीय धर्म का एक पुत्र।

धृतकेतु—पुं० [सं०] वसुदेव के बहनोई का नाम। (गर्ग संहिता)

धृत-दंड—वि० [ब० स०] १ जिसे दंड मिला हो। दंडित। २ दंड देनेवाला।

धृतदेवा—स्त्री० [सं०] देवक की एक कन्या।

धृतमाली—पुं० [सं०] अस्त्रो को निष्फल करनेवाला एक प्रकार का अस्त्र। अस्त्रो का एक संहार। (रामायण)

धृत-राष्ट्र—पुं० [ब० स०] १ ऐसा देश जिसे कोई अच्छा और योग्य राजा धारण करता अर्थात् अपने शासन मे रखता हो। २ ऐसा राजा जिसका राज्य और शासन दृढ हो, अर्थात् जो देश को पूर्णत अपने अधिकार या वश मे रखता हो। ३ महाभारत काल के एक प्रसिद्ध राजा, जो विचित्रवीर्य के पुत्र और दुर्योधन के पिता थे। ये अन्धे थे। ४. एक नाग का नाम। ५ बौद्धो के अनुसार एक गंधर्व राजा। ६ जनमेजय के एक पुत्र। ७ एक प्रकार का हंस, जिसकी चोंच और पैर काले होते है।

धृतराष्ट्री—स्त्री० [सं० धृतराष्ट्र+ङीष्] १ कश्यप ऋषि की पत्नी ताम्रा से उत्पन्न ५ कन्याओ मे से एक, जो हंसो की आदि माता थी। २ धृतराष्ट्र की पत्नी।

धृत-वर्मा (र्मन्)—वि० [ब० स०] जिसने वर्म अर्थात् कवच धारण किया हो।
पुं० त्रिगर्त्त का राजकुमार, जिसके साथ अर्जुन को उस समय युद्ध करना पडा था जब वे अश्वमेध के घोडे की रक्षा के लिए उसके साथ गये थे।

धृत-विक्रय—पुं० [मध्य० स०] तौलकर चीजे बेचने का ढंग या प्रकार। (कौ०)

धृतव्रत—वि० [ब० स०] जिसने कोई व्रत धारण किया हो।
पुं० पुरुवंशीय जयद्रथ के पुत्र विजय का पौत्र।

धृतात्मा (त्मन्)—वि० [धृत-आत्मन् ब० स०] १ जो अपनी आत्मा या मन को अच्छी तरह वश मे और स्थिर रखता हो। २ धीर।
पुं० विष्णु।

धृति—स्त्री० [सं०√धृ+क्तिन्] १ धारण करने की क्रिया या भाव। २ धारण करने का गुण या शक्ति। धारणा-शक्ति। ३ चित्त या मन की अविचलता, दृढता या स्थिरता। ४ धीर होने की अवस्था या भाव। धैर्य। ५ साहित्य मे, एक संचारी भाव जिसमे इष्टप्राप्ति के कारण इच्छाओ की पूर्ति होती है। ६ दक्ष की एक कन्या, जो धर्म की पत्नी थी। ७ अश्वमेध की एक आहुति। ८ सोलह मातृकाओ मे से एक। ९ अठारह अक्षरोवाले वृत्तो की संज्ञा। १० चंद्रमा की सोलह कलाओ मे से एक कला का नाम। ११ फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का योग।
पुं० १ जयद्रथ राजा के पौत्र का नाम। २ एक विश्वेदेव का नाम। ३ यदुवंशी बभ्रु का पुत्र।

धृतिमान (मत्)—वि० [सं० धृति+मतुप्] [स्त्री० धृतिमती] १ धैर्यवान्। २ तुष्ट। तृप्त।

धृत्वरी—स्त्री० [सं०√धृ+क्वनिप्+ङीप्, र आदेश] पृथ्वी।

धृत्वा (त्वन्)—पुं० [सं०√धृ+क्वनिप्] १ विष्णु। २ ब्रह्मा। ३ धर्म। ४ आकाश। ५ समुद्र। ६ चतुर आदमी।

धृषित—वि० [सं०] =धृषु।

धृषु—वि० [सं०√धृष्+कु] १ पराजित करनेवाला। वीर। २ आक्रमण करनेवाला।
पुं० राशि। समूह।

धृष्ट—वि० [सं०√धृष्+क्त] [भाव० धृष्टता] १ बडो के समक्ष लज्जा या संकोच त्यागकर ओछा या बेहूदा काम करनेवाला। २. ऐसा काम करनेवाला जिससे बडो के सम्मान को कुछ धक्का लगता हो। ३ जो अनुचित काम करने से भयभीत या संकुचित न होता हो। दुस्साहसी।
पुं० १ साहित्य मे, वह नायक जो बार-बार वही काम करता हो जिससे प्रेमिका खिन्न होती हो और मना किये जाने पर भी न मानता हो।

२. चेदिवंशीय कृति का पुत्र। (हरिवंश) ३. सातवें मनु का एक पुत्र। ४. अस्त्रों का एक प्रकार का प्रतिकार या संहार।

धृष्टकेतु—पुं० [सं०] १ चेदि देश के राजा शिशुपाल का एक पुत्र जिसका वध द्रोणाचार्य ने महाभारत के युद्ध में किया था। २. नवें मनु रोहित के पुत्र। ३ जनक-वंशीय सुध्वति के पुत्र।

धृष्टता—स्त्री० [सं० धृष्ट+तल्—टाप्] १. धृष्ट होने की अवस्था या भाव। २ स्वभाव की ऐसी उद्दंडता जो शील-संकोच के अभाव के कारण होती है। ३ धृष्ट बनकर किया जानेवाला आचरण या व्यवहार। ४ बड़ों के सामने किया जानेवाला ओछा या बेहूदा आचरण। गुस्ताखी।

धृष्टद्युम्न—पुं० [सं०] राजा द्रुपद का एक पुत्र, जिसने पिता का बदला चुकाने के लिए महाभारत के युद्ध मे द्रोणाचार्य का वध किया था।

धृष्टा—स्त्री० [सं० धृष्ट+टाप्] दुश्चरित्रा स्त्री।
वि० 'धृष्ट' का स्त्री०।

धृष्टि—पुं० [सं०√धृष्+क्तिच्] १ एक प्रकार का यज्ञ-पात्र। २ हिरण्याक्ष का एक पुत्र। ३. दशरथ का एक मंत्री।.

धृष्णक्—वि० [सं०√धृष्+नजिङ्]=धृष्ट।

धृष्णि—पुं० [सं०√धृष्+नि] प्रकाश की रेखा। किरण।

धृष्णु—वि० [सं०√धृष्+क्नु]=धृष्ट।
पुं० १ वैवस्वत मनु के एक पुत्र। २ सावर्णि मनु के एक पुत्र। ३ एक रुद्र का नाम।

धृष्णोजा (जस्)—पुं० [सं०] कार्तवीर्य के एक पुत्र।

धृष्य—वि० [सं०√धृष्+क्यप्] १. जिसका धर्षण हो सके या होना उचित हो। धर्षणीय। २ जिस पर आक्रमण किया जा सके। आक्रमण किये जाने के योग्य। ३ जीते जाने के योग्य।

धेड़ी कौआ—पुं० [धेडी ? +हिं० कौआ] बड़ा काला कौआ। डोम कौआ।

धेन—पुं० [सं०√धे (पान)+नन्] १ समुद्र। २ नद।
†स्त्री०=धेनु।

धेना—स्त्री० [सं० धेन+टाप्] १ नदी। २. वाणी। ३ दुधारू गाय।

धेनिका—स्त्री० [सं० धेन+कन्—टाप्, इत्व] धनिया।

धेनु—स्त्री० [सं०√धे+नु] १ दुधारू गाय। सवत्सा गौ। २ गाय। गौ। ३ पृथ्वी। ४. भेंट।

धेनुक—पुं० [सं० धेनु+कन्] १ एक प्राचीन तीर्थ। २ वह राक्षस जिसे बलदेव जी ने मारा था। ३. दे० 'धैनुक' (आसन)।

धेनुका—स्त्री० [सं० धेनुक+टाप्] १. धेनु। गौ। २. कोई मादा पशु। ३. कामशास्त्र मे, हस्तिनी स्त्री। ४. पार्वती। ५ छोटी तलवार। कटार।

धेनु-दुग्ध—पुं० [ष० त०] १. गाय का दूध। २. [ब० स०] चिर्भिटा नामक वनस्पति।

धेनु-दुग्ध-कर—पुं० [ष० त०] गाजर, जिसे खाने से गौओं का दूध बढ़ता है।

धेनु-धूलि—स्त्री० दे० 'गो-धूलि'।

धेनु-मक्षिका—स्त्री० [मध्य० स०] बड़े मच्छड़, जो चौपायों को काटते हैं। डाँस। डस।

धेनुमती—स्त्री० [सं० धेनु+मतुप्—ङीप्] गोमती नदी।

धेनु-मुख—पुं० [ब० स०] गोमुख नाम का बाजा। नरसिंहा।

धेनुष्या—स्त्री० [सं० धेनु+यत्, षुक्, टाप्] वह गाय जो बंधक या रेहन रखी गई हो।

धेय—वि० [सं०√धा (धारण)+यत्, ईत्व] १ जो धारण किये जाने के योग्य हो। जिसे धारण कर सकें। धार्य। २ जो पीया जा सके। पेय। ३. जिसका पालन-पोषण किया जा सके या किया जाने को हो। पाल्य।
प्रत्य० एक प्रत्यय जो संज्ञाओं के अन्त मे लगकर अधिकारी, पात्र, वाला आदि का अर्थ देता है। जैसे—नामधेय, भागधेय।

धेयना*—अ०=ध्यान करना।

धेर—पुं० [देश०] एक अनार्य्य जाति; जो मरे हुए जानवरो का मांस खाती है।

धेरा—वि० [हिं० डेरा=भेंगा] भेंगा।
पुं० [हिं० धेरी] १. पुत्र। २ लड़की का पुत्र। नाती।

धेरी—स्त्री० [सं० दुहिता] पुत्री।

धेलचा†—पुं० [हिं० अधेला] आधा पैसा। अधेला। धेला।
वि० एक अधेले अथवा धेले के मूल्य का। उदा०—मानो कोई धेलचा कनकौआ गंडेवाले कनकौवे को काट गया हो।—प्रेमचन्द।

धेला—पुं०=अधेला। (पश्चिम)

धेली—स्त्री० [हिं० आधा] आधा रुपया या उसका सिक्का। अठन्नी।

धेवता†—पुं० [स्त्री० धेवती] दोहता (नाती)।

धै†—अव्य० [हिं० दुहाई] दुहाई। जैसे—राम-धै।

धैताल†—वि०=धौताल।

धैनव—वि० [सं० धेनु+अञ्] १. धेनु अर्थात् गौ से संबंध रखनेवाला। २. गौ से उत्पन्न या प्राप्त होनेवाला। जैसे—धैनव दुग्ध।
पुं० धेनु अर्थात् गौ का बच्चा। बछड़ा।

धैना†—पुं० [हिं० धरना=पकड़ना] १. पकड़ा या ग्रहण किया हुआ काम। २ पकड़ी या ग्रहण की हुई आदत। टेव। ३. जिद। हठ।
†स०=धरना (पकड़ना)।

धैनुक—पुं० [सं० धेनु+ठक्—क] १. गौओं का दल। २. कामशास्त्र में, एक प्रकार का आसन या रति-बंध।

धैर्य—पुं० [सं० धीर+ष्यञ्] १. मन का वह गुण या शक्ति जिसकी सहायता से मनुष्य कष्ट या विपत्ति पडने पर भी विचलित या व्यग्र नहीं होता और शान्त रहता है। संकट के समय भी उद्विग्नता, घबराहट, विकलता आदि से रहित होने की अवस्था या भाव। धीरज। सब्र।
क्रि० प्र०—धरना।

धैवत—पुं० [सं० धीमत्+अण्,पृषो० म को व] संगीत मे, सात स्वरो मे से छठा स्वर जो मदती, रोहिणी और रम्या नाम की तीन श्रुतियो के योग से बनता है। पंचम और निषाद के बीच का स्वर। इसका संकेत-चिह्न 'ध' है।
विशेष—कहते हैं कि इस स्वर का उच्चारण मूलत नाभि से होता है, और किसी के मत से घोड़े के हिनहिनाने और किसी के मत से मेंढक के टरटराने के समान होता है। यह षाड़व जाति का, क्षत्रिय वर्ण

का और पीले रग का माना गया है और भयानक तथा बीभत्स रस के लिए उपयुक्त कहा गया है।

धैवत्य—पु० [स० धीवन्+ष्यम्, न को त] चतुराई। चालाकी।

धोंकना†—अ० [?] कांपना, थरथराना या बार-बार हिलना। स०=धौंकना।

धोंडाल—वि० [हिं०] (जमीन या मिट्टी) जिसमे ककड़-पत्थर आदि मिले हो।

धोंधवा†—पुं० [हिं० धूआँ] [स्त्री० अल्पा० धोपकी] वह मार्ग जो घर का धूआँ बाहर निकालने के लिए छत या दीवार मे बनाया जाता है।

धोंधा—पु० [अनु०] १. मिट्टी आदि का बे-डौल पिंड। लोदा। २. भद्दी और बे-डौल आकृति, पिंड या शरीर।

वि० १ बे-डौल। बे-ढगा। २ मूर्ख। मूढ़।

पद—धोंधा बसंत=बहुत मोटा और वज्र मूर्ख। (व्यग्य)

धो†—पु० [हि० धोना] एक बार किसी वस्त्र के धुलने या धोये जाने का भाव। धोव। जैसे—दो धो मे धोती फट गई।

धोई—स्त्री० [हि० धोना] १ वह दाल जो भिगो और धोकर छिलके से अलग कर ली गई हो। २ अफीम बनाने के बरतन की धोवन।

धोकड़ (ा)†—वि० [देश०] मोटा-ताजा। हृट्टा-कट्टा।

धोका†—पु०=धोखा।

धोख†—पु०=धोखा।

धोखा—पु० [स० द्रोध प्रा० दोह] १ किसी को बहला या बहकाकर उसके स्वार्थ और अपने वचन के विरुद्ध किया जानेवाला अनैतिक आचरण। जैसे—आज भी वे समय पर धोखा देंगे।

मुहा०—धोखा खाना=ठगा जाना। **धोखा देना**=किसी के साथ छलपूर्ण व्यवहार करना।

२ पहचानने, समझने आदि मे होनेवाली भूल। भ्रम। जैसे—आँखे धोखा खा गई और रस्सी को साँप समझ बैठी।

क्रि० प्र०—खाना।

३ भ्रम उत्पन्न करनेवाली कोई बात। ऐसी चीज जिसे देखकर धोखा होता हो।

पद—धोखे की टट्टी=(क) वह टट्टी या आवरण जिसकी आड से शिकारी शिकार करते है। (ख) दूसरो को भ्रम मे डालनेवाली चीज या बात।

मुहा०—धोखा खड़ा करना=आडबर रचना।

४. अनजान या अज्ञान से होनेवाली भूल।

पद—धोखे मे या धोखे से=भूल से। जैसे—यह प्रश्न धोखे से छूट गया।

५ अनिष्ट की सभावना। जैसे—इस काम मे धोखा है। ६ आशा या विश्वास के विरुद्ध होनेवाला कार्य या फल।

मुहा०—(किसी व्यक्ति का) धोखा दे जाना=असमय मे ही मर जाना। जैसे—भाई साहब बहुत बुरे समय मे धोखा दे गये।

७ बेसन, मैदे आदि का एक पकवान, जिसमे रूई आदि मिलाकर दूसरो को छकाने या बेवकूफ बनाने के लिए खिलाया जाता है। ८ दे० 'बिजूखा'। ९ दे० 'खट-खटा'।

धोखेबाज—वि० [हिं० धोखा+फा० बाज] [भाव० धोखेबाजी] जो प्राय लोगो को धोखा देता रहता है। छली। धूर्त।

धोखेबाजी—स्त्री० [हिं० धोखेबाज] धोखेबाज होने की अवस्था, गुण या भाव। छल। धूर्तता।

धोटा†—पु० [स्त्री० धोटी]=ढोटा (पुत्र या बालक)।

धोड़—पु० [स०] एक प्रकार का साँप।

धोतर—पु० [स०] १ एक प्रकार का मोटा कपडा जो गाढ़े की तरह का होता है। अधोतर। २ पहनने की धोती। (महाराष्ट्र)

धोतरा†—पु० [?] १=धोतर। २=धतूरा।

धोती—स्त्री० [स० अधोवस्त्र] प्राय नौ-दस हाथ लम्बा और दो-ढाई हाथ चौडा कपडा, जो कमर और उसके नीचे के अग ढकने के लिए पहना जाता है।

विशेष—स्त्रियाँ इससे कमर के नीचे के अग ढकने के सिवा ऊपर के अग भी ढक लेती है।

मुहा०—धोती ढीली होना=साहस छूट जाना।

स्त्री० दे० 'धौति'।

धोना—स० [स० धावन=धोना] १. जल या कोई तरल पदार्थ डालकर गदगी, धूल, मैल आदि दूर करना। जल की सहायता से साफ या स्वच्छ करना।

विशेष—इस क्रिया का प्रयोग उस आधार के सबध मे भी होता है जिस पर कोई अवाछित तत्त्व या पदार्थ पडा हो, जैसे—कपडा, बरतन, या हाथ-पैर धोना, और उस अवाछित तत्त्व या पदार्थ के सबध मे भी होता है, जिसे किसी आधार या चीज पर से हटाना अभीष्ट होता है; जैसे—कालिख, मैल या रग धोना।

पद—धोया-धाया=(क) धोकर बिलकुल साफ या स्वच्छ किया हुआ। (ख) सब प्रकार के दोषो आदि से रहित।

२ कपडो आदि के सबध मे, खार, सज्जी, साबुन आदि की सहायता से अच्छी तरह मल या रगडकर गदगी, दाग, मैल आदि दूर करना। जैसे—यह धोबी कपडे ठीक नही धोता। ३ जल या किसी तरल पदार्थ का किसी तल पर होते हुए चलना या बहना अथवा उसे स्पर्श करते हुए इधर-उधर होना। जैसे—(क) समुद्र हमारे देश के चरण धोता है। (ख) वह दिन-रात आँसुओ से मुँह धोती रहती थी। ४. इस प्रकार दूर करना या हटाना कि मानो जल से अच्छी तरह रगडकर नष्ट या समाप्त कर दिया गया हो। जैसे—आपके अनुग्रह ने मेरे सब पाप धो दिये।

मुहा०—धो बहाना=पूरी तरह से दूर, नष्ट या समाप्त करना। नाम को भी न रहने देना। जैसे—आपने तो उनके सारे उपकार धो बहाये। **(किसी चीज से) हाथ धोना या धो बैठना**=सदा के लिए या स्थायी रूप से किसी चीज से रहित या वचित होना। बिलकुल गवाँ देना। जैसे—अपनी जरा-सी भूल से वे इतनी बड़ी सपत्ति से हाथ धो बैठे। **हाथ धोकर (किसी काम या बात के) पीछे पड़ना**=और काम या बातें छोडकर पूरी तरह से एक ही काम या बात मे लग जाना। जैसे—आज-कल वह हाथ धोकर मुकदमे के पीछे पडे हैं। **हाथ धोकर (किसी आदमी के) पीछे पड़ना**=किसी को पूरी तरह से अपमानित, दुःखी या पीड़ित करने के प्रयत्न मे लग जाना। जैसे—तुम तो जिससे नाराज होते हो, हाथ धोकर उसी के पीछे पड़ जाते हो।

धोप—स्त्री० [?] तलवार। खग।
पु०=धो (धोव)।

धोपा—पुं० १=धोखा। २ =धोपेबाजी।

धोपेबाजी—स्त्री० [हिं० धोपा+फा० बाजी] किसी की आँख में धूल झोंककर या उसे मूर्ख बनाकर धोखा देने की क्रिया या भाव।

धोब†—पु०=धो या धोव।

धोबइन†—स्त्री०=धोबिन।

धोबन—स्त्री०=धोबिन।

धोबिन—स्त्री० [हिं० धोबी का स्त्री०] १ कपड़े धोने का व्यवसाय करनेवाली अथवा धोबी जाति की स्त्री। २ दस-बारह अंगुल लंबी एक प्रकार की सुन्दर चिड़िया, जो जलाशयों के किनारे रहती है। इसकी बोली बहुत मीठी होती है। ३ बीर-बहूटी नाम का कीड़ा। ४ शीशम की जाति का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी परतदार होती और इमारत के काम में आती है।

धोबिया-पाट—पु०=धोबीपाट।

धोबी—पु० [हिं० धोना] [स्त्री० धोबिन] १. एक जाति जो मैले कपड़े धोकर साफ करने का काम करती है। २ उक्त जाति का व्यक्ति।
पद—**धोबी का कुत्ता**=ऐसा तुच्छ, निकम्मा और व्यर्थ का व्यक्ति, जिसका कहीं ठौर-ठिकाना न हो। (धोबी का कुत्ता, घर का न घाट का, वाली कहावत के आधार पर)

धोबी-घाट—पु० [हिं० धोबी+घाट] वह घाट जहाँ धोबी कपड़े धोते हैं।

धोबी-घास—स्त्री० [हिं०] बड़ी दूब। दूबा।

धोबी पछाड़—पु०=धोबीपाट।

धोबी-पाट—पु० [हिं०] कुश्ती का एक पेंच जिसमें जोड़ का हाथ पकड़कर अपने कंधे की ओर खींचते हैं और उसे कमर पर लाद कर उसी तरह जमीन पर पटकते हैं जिस प्रकार धोबी कपड़े पछाड़ने के समय उन्हें पत्थर पर पटकता है।

धोम†—पु०=धूम (धूआँ)।

धोमय†—वि० [सं० धूममय] १ धूसर। धूमिल। २. गंदा। मैला।

धोर†—पु० [?] किनारा। तट। उदा०—अड को धोर ह्वाँ ते रहाई।—कबीर।
अव्य०=धोरे (पास)।

धोरण—पु० [सं०√धोर् (गति)+ल्युट्—अन] १. सवारी। २ घोड़े की सरपट चाल। ३ दौड़। ४ कार्य करने का ढंग या नीति। (महाराष्ट्र)

धोरणि—स्त्री० [सं०√धोर्+नि] १ शृंखला। २ श्रेणी। ३. परंपरा।

धोरा†—वि०[स्त्री० धोरी]=धौरी (धवल या सफेद)।

धोरित—पु०[सं० √सं० धोर्+क्त]१ गमन। चाल। २. घोड़े की दुलकी चाल।

धोरी—वि०[हिं० धुरा ?]१ धुरा अर्थात् मूल भार सँभालनेवाला। २ प्रधान। मुख्य।
पु०१. वह जो स्वामी के रूप में पूरी तरह से देख-भाल, रक्षण आदि करता हो। जैसे—इस मकान का कोई धनी-धोरी नहीं है। उदा०—काहू को सरन है, कुबेर ऐसे धोरी को।—हठी। २ वह जो निरंतर कोई विशेष काम करता रहता हो। जैसे—धधक-धोरी। ३ श्रेष्ठ व्यक्ति। ४. नेता। ५ बैल।

धोरे—अव्य०[सं० धार=किनारा] निकट। पास। समीप।

धोला—पु०[सं० दुरालभा] जवासा। धमासा।

धोलाना†—स०=धुलाना।

धोव—पु०[हिं० धोना] कपड़ा साफ करने के लिए होनेवाली उसकी प्रत्येक बार की धुलाई। वस्त्र के एक बार धुलाने का भाव। धो। जैसे—इस धोती पर अभी चार धोव भी नहीं पड़े कि यह फट गई।
क्रि० प्र०—पड़ना।

धोवत†—पु०=धोबी।

धोवती†—स्त्री० =धोती।

धोवन—स्त्री०[हिं० धोवना=धोना]१ धोने की क्रिया या भाव। २ वह पानी जो कोई चीज धोने पर निकला हो। जैसे—चावलों की धोवन।

धोवना*—स०=धोना।

धोवा—पु०[हिं० धोवना=धोना]१ कोई चीज धोने पर निकला हुआ गंदा या मैला पानी। धोवन। २ जल। पानी। ३. अरक।

धोवाना†—स०=धुलाना।
अ०=धुलना।

धोसा†—पु०[?] गुड़ आदि का सूखा हुआ पिंड। भेली।

धौं—अव्य०[सं० अथवा]अवधी, ब्रज आदि बोलियों का एक अव्यय, जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों और रूपों में होता है—१ विकल्पात्मक कथन में, अनिश्चय या संशय के साथ किंचित् कुतूहल का भाव सूचित करने के लिए। ठीक कहा नहीं जा सकता कि ऐसा है या वैसा, अथवा यह है या वह। उदा०—गुनत सुदामा जात मनहिं मन चीन्हिंगे धौं नाहीं।—सूर। २. न जाने। पता नहीं। मालूम नहीं। उदा०—अब धौं कहा करिहि करतारा।—तुलसी। ३ 'तो' 'भला' आदि की तरह किसी बात या शब्द पर केवल जोर देने के लिए। उदा०—(क) जड़ पच मिलै जेहि देह करी, करनी लखु धौ धरनीधर की।—तुलसी।(ख)तुम कौन धौं पाठ पढ़े हो लला।—घनानंद। ४ तुम्हीं कहो या बताओ तो सही। उदा०—(क)अब धौं कहाँ कौन दर जाऊँ।—सूर। (ख) कृपा सो धौं कहाँ बिसारी राम।—तुलसी। ५. संयोजक अव्यय 'कि' की तरह या उसके स्थान पर। उदा०—हमहूँ न जानैं धौं सो कहाँ।—जायसी। ६ खाली'तो' की तरह या उसके स्थान पर। जैसे—कि धौं या की धौं। ७ निश्चित या स्पष्ट रूप से। अच्छी तरह। उदा०—तिमि अवध तुलसीदास प्रभु बिनु समुझि धौं जियँ भामिनी।—तुलसी।

धौंक—स्त्री०[हिं० धौंकना]धौंकने की क्रिया या भाव।
†स्त्री०[हिं० धधकना] आग की लपट। लौ।

धौंकना—स०[सं० धमन या धम्?]१ आग दहकाने के लिए पंखे, भाथी आदि की सहायता से, उस पर निरन्तर जोर की हवा पहुँचाते रहना। (ब्लोइंग)२ उग्रता या कठोरतापूर्वक किसी पर कोई भार रखना या लादना। जैसे—तुमने भी तो छोटे-से लड़के पर मन भर का भार धौंक दिया। ३. दंड के संबंध में उग्रता या कठोरतापूर्वक आदेश देना। जैसे--किसी पर जुरमाना धौंकना।

धौंकनी—स्त्री०[हिं० धौंकना, स० धमनिका] १. प्राय चमड़े की थैली का बना हुआ एक उपकरण, जिसे बार-बार खोलकर बन्द करने और दबाने से उसके अदर भरी हुई हवा नीचे लगी हुई नली के रास्ते आग तक पहुँचकर उसे दहकाने या उसे सुलगाने मे सहायक होती है। भाथी।

विशेष—प्राय लोहार, सुनार आदि अपनी भट्ठी सुलगाने के लिए इसका प्रयोग करते हैं।

२. धातु, बाँस आदि की वह पतली नली जिससे मुँह से हवा फूँककर आग आदि सुलगाई जाती है। फुकनी।

धौंका—पु०[हिं० धौंकना] गरमी मे चलनेवाली तेज गरम हवा का झोका।

धौंकिया—पु०[हिं० धौंकना] १ धौंकनी चलाने अर्थात् धौंकनेवाला आदमी। २ वह कारीगर जो बरतनो की मरम्मत या उन पर कलई करने के लिए धौंकनी साथ लेकर जगह-जगह घूमता हो।

धौंकी—पु०=धौंकिया।

स्त्री०=धौंकनी।

धौंज—स्त्री०[हिं० धावना=धाना या दौडना] १ दौड-धूप। २ दौड-धूप करने के लिए होनेवाली घबराहट या परेशानी।

धौंजन—स्त्री०=धौंज।

धौंजना—अ०[हिं० धौंज] १ दौड-धूप करना। २ परेशान या हैरान होना।

स०१ पैरो से कुचलना। रौंदना। २. परेशान या हैरान करना।

धौंटा—पुं०[?] नटखट पशुओं की आँखो पर बाँधा जानेवाला आवरण या पट्टी। अँधियारी।

†पु०=धोटा (पुत्र या बालक)।

धौंताल—वि०[हिं० धुन ?] १ जो काम करने में अपनी धुन का पक्का हो। २ चतुर। चालाक। ३. चचल। चपल। ४ निपुण। पटु। ५ साहसी। ६. उजड्ड। गँवार। ७. उपद्रवी। शरारती। (सभवत व्यग्यात्मक)

धौं-धौं-मार—स्त्री०[अनु० धम-धम+हिं० मार] उतावली। जल्दी। शीघ्रता।

क्रि० प्र०—मचाना।

धौंर†—स्त्री०[स० धवल] एक प्रकार की सफेद ईख।

धौंस—स्त्री०[स० दश या हिं० धौंकना] १ किसी को असमजस मे पड़ा हुआ या दुर्बल समझकर उसके साथ किया जानेवाला ऐसा आचरण या व्यवहार अथवा उससे कही जानेवाली ऐसी बात जिससे वह डरकर धोखे मे पड जाय और प्रतिकूल या विरुद्ध आचरण न कर सके। (प्राय बराबरवालो के लिए प्रयुक्त) जैसे—तुम भी उनकी धौंस मे आकर सौ रुपए गँवा बैठे।

विशेष—यह शब्द धमकी का बहुत-कुछ समानक होने पर भी भाव-व्यजन की दृष्टि से कुछ हलका तथा धोखेबाजी के भाव से युक्त है।

२. इस प्रकार दिखाया जानेवाला भय तथा जमाया जानेवाला आतक। जैसे—अच्छा, अब आप बहुत धौंस मत दिखाइए।

क्रि० प्र०—दिखाना।—देना।—मे आना।

३. स्वार्थ-साधन के लिए किसी को दिया जानेवाला चकमा। झाँसा-पट्टी। भुलावा। ४. अधिकार, प्रभुत्व आदि का आतंक। धाक।

क्रि० प्र०—जमना।—जमाना।—बँधना।—बाँधना।

मुहा०—**धौंस की चलना**=अपना आतक जमाते या भय दिखाते हुए धूर्ततापूर्ण आचरण या व्यवहार करना अथवा गहरी चाल चलना।

५ ब्रिटिश भारत मे वह रुपया जो लगान या मालगुजारी ठीक समय पर न देने के कारण दड-स्वरूप असामी या जमींदार से वसूली के खर्च के रूप मे लिया जाता था।

मुहा०—**धौंस बाँधना**=दड आदि के रूप मे किसी के जिम्मे कोई खर्च लगाना या उससे वसूल करना।

†स्त्री०=घुबाँस।

धौंसना—स०[स०, दर्शन, हिं० धौंस] १. दड आदि के रूप मे कोई काम, खरच या भार किसी के जिम्मे लगाना। धौंकना। २. अपना काम निकालने के लिए किसी तरह की जबरदस्ती या बल-प्रयोग करना। ३. डराना-धमकाना। ४. डाँटना-डपटना। ५ मारना-पीटना।

धौंस-पट्टी—स्त्री०[हिं० धौंस+पट्टी] १ ऐसी बात-चीत जिसमे कुछ धमकी भी हो और कुछ भुलावा भी दिया जाय। २ झाँसा-पट्टी।

क्रि० प्र०—देना।

मुहा०—**(किसी की) धौंस-पट्टी में आना**=किसी की धमकी से डरकर या बहकावे मे आकर कोई काम कर बैठना।

धौंसा—पु० [हिं० धौंसना] १. बडा नगारा। डका।

मुहा०—**धौंसा देना**=सेना का आक्रमण या कूच करने के लिए डका या नगाडा बजाना।

२ शक्ति। सामर्थ्य। जैसे—किसी का क्या धौंसा है जो इस काम मे हाथ डाले।

धौंसिया—पु०[हिं० धौंस] १ दूसरो पर केवल धौंस जमाकर अपना काम निकालनेवाला। २ चालाक। धूर्त। ३. मध्ययुग मे, वह व्यक्ति जो कुछ पारिश्रमिक लेकर जमीदारो की बाकी मालगुजारी असामियों से वसूल करने का काम करता था।

पु०[हिं० धौंसा] वह जो धौंसा बजाने का काम करता हो।

धौ—पु०[स० धव] एक ऊँचा झाड या सदाबहार पेड, जिसकी पत्तियाँ और छाल चमडा सिझाने के काम मे आती है और फूलो से लाल रग बनाया जाता है। धव।

पु०[स० धव] समस्त पदों के अत मे, पति। उदा०—गिराधौ, रमाधौ, उमाधौ अनता।—केशव।

धौकना—स०=धौंकना।

धौकनी—स्त्री०=धौंकनी।

धौकरा†—पु०=धौरा (बाकली की तरह का वृक्ष)।

धौ-काँदव—पु०[स० धान्य-कर्दम] एक प्रकार का धान और उसका चावल।

धौत—वि० [स०√धाव् (शुद्धि)+क्त] १. जो धोया या धोकर साफ किया जा चुका हो। २ उजला। सफेद। ३ जो नहा-धो चुका हो। स्नात।

पु० चाँदी। रूपा।

धौतय—पु०[स० धौत√ या (गति)+क] सेंधा नमक।

धौत-शिला—स्त्री०[कर्म०स०] बिल्लौर। स्फटिक।

धौतात्मा (त्मन्)—वि०[धौत-आत्मन्, ब० स०] जिसकी आत्मा पापों के धुल जाने के कारण पवित्र और शुद्ध हो गई हो। पवित्रात्मा।

धौताल—वि०=धौंताल।

धौति—स्त्री०[सं० √धाव्+क्तिन्]१ धोकर साफ करने की क्रिया। धुलाई। २. योग की एक क्रिया जिसमे दो अगुल चौडी और आठ-दस हाथ लंबी कपडे की धज्जी मुँह से पेट के नीचे उतारते हैं, और फिर पानी पीकर उसे धीरे-धीरे बाहर निकालते हैं। इस क्रिया से पेट और आँतें धुलकर साफ हो जाती हैं। ३. उक्त क्रिया के लिए काम मे लाई जानेवाली कपडे की धज्जी या पट्टी।

धौम्य—पु०[सं० धूम+यत्]१. एक ऋषि, जो देवल के भाई और पाडवो के पुरोहित थे। और जो अब पश्चिमी आकाश मे स्थित एक तारे के रूप में माने जाते हैं। २ एक ऋषि जो महाभारत के अनुसार व्याघ्रपद नामक ऋषि के पुत्र और बहुत बडे शिव-भक्त थे। और शिव के प्रसाद से अजर, अमर और दिव्य ज्ञान सपन्न हो गये थे। ३. एक ऋषि का नाम जिन्हें आयोद भी कहते थे। इनके आरुणि, उपमन्यु और वेद नामक तीन शिष्य थे। ४ एक ऋषि, जो पश्चिम दिशा में तारे के रूप मे स्थित माने जाते हैं।

धौम्र—वि०[सं० धूम्र+अण्]धूएँ के रग का।
पु० उक्त प्रकार का रग।

धौर—पु०[हिं० धौरा=सफेद] सफेद परेवा।

धौरहर—पु०[सं० धवलगृह]१ मकान का वह ऊपरी भाग, जो खंभे की तरह बहुत ऊँचा गया हो और जिस पर चढ़ने के लिए अन्दर-अन्दर सीढ़ियाँ बनी हों। धरहरा। २ उक्त मे बना हुआ कमरा। ३ दे०'धरहरा'।

धौरा—वि०[सं० धवल] [स्त्री० धौरी]१. श्वेत। सफेद। २ उजला। साफ।
पु०१. सफेद रग का बाल। २ धौ का पेड। ३. पडुक की तरह की एक चिड़िया, जो उससे कुछ बड़ी और खुलते रग की होती है।
†पु०[सं० धव]बाकली की तरह का एक प्रकार का वृक्ष जो मध्यभारत मे अधिकता से होता है।

धौरादित्य—पु०[सं०] शिवपुराण के अनुसार एक तीर्थ।

धौराहर—पु०=धौरहर।

धौरितक—पु०[सं० धोरित+अण्+कन्] घोडे की पाँच प्रकार की चालों में से एक।

धौरेय—पुं०[सं० धौरेय] बैल।

धौरी—स्त्री०[हिं० धौरा]१. सफेद रग की गाय। कपिला। २ एक प्रकार की चिड़िया।
स्त्री०=बाकली।

धौरे—अव्य०= धोरे (निकट या पास)। उदा०—धरि रहे हाथ माथ के धौरे।—नन्ददास।

धौरेय—वि०[सं० धुरा+ढक्—एय] धुर (रथ आदि) खींचनेवाला।
पुं० रथ में जोता जानेवाला बैल।

धौर्तक—पु०[सं० धूर्त+वुञ्—अक]=धूर्तता।

धौर्त्य—पुं०[सं० धूर्त+ष्यञ्] धूर्तता।

धौर्य—पुं०[सं० धुर+ष्यत्] घोड़े की एक प्रकार की चाल।

धौल—स्त्री०[अनु०]१. हाथ के पजे या हथेली से सिर पर किया जाने-वाला आघात।
क्रि० प्र०—जडना।—जमाना।—देना।—पडना।—मारना।—लगाना।

पद—धौल-धप्पा या धौल-धप्पड़=परस्पर धौल और धप्पड मारना। २. आर्थिक आघात या धक्का। जैसे—दस रुपए की धौल तुम्हे भी लगी।
क्रि० प्र०—पडना।—लगना।
स्त्री० [सं० धवल] कानपुर, बरेली आदि मे होनेवाली एक प्रकार की ईख।
पुं० [सं० धवल] धौ का पेड। धव।
वि० १. उजला। सफेद। २ बहुत बडा। जैसे—धौल धूर्त=बहुत बडा धूर्त।
†पु=धवलगृह (धौरहर)।

धौलाई—स्त्री०=धवलता।

ध्मात—वि० [सं०√ध्मा (शब्द)+क्त] १ बजाया हुआ। २ क्षुब्ध किया हुआ।

ध्मान—पु० [सं०√ध्मा+ल्युट्—अन] बजाने की क्रिया।

ध्मापन—पु०[सं०√ध्मा+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन][भू० कृ० ध्मापित] १. फूंककर कोई चीज फुलाने का कार्य। २. जलाकर राख करना।

ध्यात—भू० कृ० [सं०√ध्यै (चिंतन)+क्त] १. जिसका ध्यान किया गया हो। २. जो ध्यान में लाया गया हो। विचारा या सोचा हुआ।

ध्यान—पु० [सं०√ध्यै+ल्युट्—अन] १. अतःकरण या मन की वह वृत्ति या स्थिति जिसमे वह किसी चीज या बात के सबध मे चिंतन, मनन या विचार करने मे अग्रसर या प्रवृत्त होता है। किसी विषय को मानस-क्षेत्र मे लाने या प्रत्यक्ष करने की अवस्था, क्रिया या भाव। मन का किसी विशिष्ट काम या बात की ओर लगना या होना। खयाल। जैसे—(क) हमारी बात ध्यान से सुनो। (ख) अभी वे किसी और ध्यान मे हैं, उन्हे मत छेडो।
क्रि० प्र०—आना। —जाना। —दिलाना। —देना। —लगना। —लगाना।

विशेष—मानसिक और शारीरिक क्षेत्रो के अधिकतर कामो मे हम मुख्यत ध्यान की प्रेरणा और बल से ही प्रवृत्त होते है। कभी तो बाह्य इंद्रियो का कोई व्यापार हमारा ध्यान किसी ओर लगाता है,(जैसे—कोई चीज दिखाई पडने पर उसकी ओर ध्यान जाना) और कभी मन स्वतः किसी प्रकार के ध्यान मे लग जाता है, (जैसे—कोई बात याद आने पर उसकी ओर ध्यान जाना या लगना)। यह हमारे अतःकरण या चेतना की जाग्रत अवस्था का ऐसा व्यापार है जिससे कोई बात, भाव या रूप हमारे विचार का केंद्र बन जाता या हमारे मन मे सर्वोपरि हो जाता है।

मुहा०—(किसी चीज या बात पर) **ध्यान जमना**=चित्त का एकाग्र होकर किसी ओर उन्मुख होना। किसी काम या बात मे मन का समुचित रूप से प्रवृत्त होकर स्थित होना। **ध्यान बँटना**=जब ध्यान एक ओर लगा हो, तब कोई दूसरा काम या बात सामने आने पर उसमे बाधा या विघ्न होना। **ध्यान बँधना या लगना**=(क) दे० ऊपर 'ध्यान जमना'। (ख) किसी प्रकार के मानसिक चिंतन का क्रम बराबर चलता रहना। जैसे—जब से उनकी बीमारी का समाचार मिला है, तब से हमारा ध्यान उन्हीं की तरफ बँधा (या लगा) है। (किसी के)

ध्यान में डूबना, मग्न होना या लगना=किसी के चिंतन, मनन या विचार मे इस प्रकार प्रवृत्त या लीन होना कि दूसरी बातो की चिंता, विचार या स्मरण ही न रह जाय। उदा०—कब की ध्यान-लगी लखै, यह घर लगिहै काहि।—बिहारी। **(किसी को) ध्यान मे लाना**=(क) किसी को अपने मानस-क्षेत्र मे स्थान देना या स्थापित करना। बराबर मन मे बनाये रखना। उदा०—(क) ध्यान आनि ढिग प्रान-पति रहति मुदित दिन राति।—बिहारी। (ख) किसी का कुछ महत्त्व समझते या सम्मान करते हुए उसके सबध मे कुछ विचार करना या सोचना। चिंता या परवाह करना। जैसे—वह तुम्हारे भाई साहब को तो ध्यान मे लाता ही नही, तुम्हे वह क्या समझेगा ? **(किसी काम, चीज या बात का) ध्यान रखना**--इस प्रकार सतर्क या सावधान रहना कि कोई अनुचित या अवाछनीय काम या बात न होने पावे अथवा कोई क्रम इष्ट और यथोचित रूप मे चलता रहे। जैसे—(क) ध्यान रखना, यहाँ से कोई चीज गुम न होने पावे। (ख) हमारी अनुपस्थिति मे रोगी का ध्यान रखना।

पद—ध्यान से=तत्पर, दत्तचित्त या सावधान होकर। जैसे—चिट्ठी जरा ध्यान से पढ़ो।

२ अतःकरण या मन की वह वृत्ति या शक्ति जो उसे किसी चीज या बात का बोध कराती, उसमे कोई धारणा उत्पन्न करती अथवा कोई स्मृति जाग्रत करती है। जैसे—हमने उन्हे एक बार देखा तो है, पर उनकी आकृति हमारे ध्यान मे नही आ रही है।

मुहा०—ध्यान पर चढ़ना=किसी बात का चित्त या मन मे कुछ समय के लिए अपना स्थान बना लेना। जैसे—अब तक वही दृश्य हमारे ध्यान पर चढ़ा है। **ध्यान से उतरना**=ध्यान के क्षेत्र से बाहर हो जाना। याद न रह जाना। जैसे—आपकी पुस्तक लाना मेरे ध्यान से उतर गया।

३ धार्मिक क्षेत्र मे उपासना, पूजा आदि के समय अपने इष्टदेव अथवा अध्यात्म-सबधी तत्त्वो या विषयो के सबध मे भक्ति और श्रद्धा से मन मे शातिपूर्वक किया जानेवाला चिंतन, मनन या विचार। उदा०—बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू।—तुलसी।

क्रि० प्र०—करना।—छूटना।—टूटना।—लगना।—लगाना।

विशेष—इसका मुख्य उद्देश्य यही होता है कि ध्याता अपने ध्येय के विचार मे तन्मय और लीन होकर उसके साथ तादात्म्य स्थापित करने का प्रयत्न करे। शृगारिक क्षेत्र मे प्रिय का किया जानेवाला ध्यान भी बहुत-कुछ इसी प्रकार का होता है। यथा—पिय कै ध्यान गही गही, रही वही ह्वै नारि।—बिहारी।

मुहा०—(किसी का) ध्यान करना=अपने मन के सामने किसी की मूर्ति या रूप रखकर उसके चिंतन या मनन मे लीन होना। परमात्मा-चिंतन के लिए मन एकाग्र करके बैठना। जैसे—अपने इष्टदेव या ईश्वर का ध्यान करना।

४ योगशास्त्र मे, आत्मा और परमात्मा के स्वरूप का साक्षात्कार करने के लिए चित्त या मन पूरी तरह से एकाग्र और स्थिर करने की क्रिया या भाव।

विशेष—योग के आठ अगो मे 'ध्यान' सातवाँ अग कहा गया है। यह 'धारणा' नामक अग के बाद आनेवाली वह स्थिति है जिसमे धारणीय तत्त्व के साथ चित्त एक-रस हो जाता है। इसी की चरम तथा पूर्ण अवस्था 'समाधि' कहलाती है। जैन और बौद्ध मे भी इस प्रकार के 'ध्यान' का विशेष महत्त्व है।

५ किसी अमूर्त तत्त्व को व्यक्ति के रूप मे मानकर उसके कल्पित गुण, मुद्रा, स्थिति आदि के आधार पर स्थिर की हुई वह प्रतिकृति या मूर्त्ति जो हम अपने मानस-क्षेत्र मे उसके प्रत्यक्ष दर्शन या साक्षात्कार के लिए कल्पित या निरूपित करते हैं।

विशेष—धार्मिक ग्रथो मे देवी-देवताओ, तात्रिक ग्रथो मे मत्र-यत्रो, सगीतशास्त्र के ग्रथो मे राग-रागिनियो और साहित्यिक ग्रथो मे ऋतुओ, रसा आदि के इस प्रकार के विशिष्ट ध्यान छदोबद्ध रूप मे निरूपित हैं जिनके आधार पर उनके चित्र, मूर्तियाँ आदि बनाई जाती हैं।

ध्यान-योग—पु० [मध्य० स०] योग अर्थात् कार्य-साधन का वह प्रकार जिसमे ध्यान की प्रधानता हो।

ध्यानस्थ—वि० [स० ध्यान√स्था (ठहरना)+क] जो ध्यान करने मे मग्न या लगा हुआ हो। ध्यान मे लीन।

ध्याना—स० [स० ध्यान] १ किसी विषय, व्यक्ति आदि का ध्यान करना। २ ईश्वर का चिंतन करना।

ध्यानावस्थित—वि० [ध्यान-अवस्थित, स०त०]=ध्यानस्थ।

ध्यानिक—वि० [स० ध्यान+ठक्—इक] १ ध्यान-सबधी। ध्यान का। २ जो ध्यान के द्वारा प्राप्त या सिद्ध हो सके। ध्यान-साध्य।

ध्यानिक बुद्ध—पु० [स०] एक प्रकार के अशरीरी बुद्ध जिनकी सख्या १० कही गई है।

ध्यानी (निन्)—वि० [स० ध्यान+इनि] १ ध्यान करनेवाला। २ जो ध्यान लगाकर बैठता या बैठा हो। ३ समाधि लगानेवाला (योगी)।

ध्येय—वि० [स०√ध्यै+यत्] १ जिसे ध्यान मे लाया जा सके। २. जो ध्यान का विषय हो। जिसका ध्यान किया जा रहा हो।

पु० वह तत्त्व, कार्य या बात जिसे ध्यान मे रखकर उसकी सिद्धि के लिए प्रयत्न किया जाय।

ध्रगध्रगी†—स्त्री०=धगधगी (धुकधुकी)।

ध्रम, ध्रम्म*—पु० धर्म।

ध्रिग†—स्त्री० धिक्कार।

ध्रुपद—पु० [स० ध्रुवपद] राग-रागिनियाँ गाने की एक विशिष्ट शैली या प्रकार जिसमे लय और स्वर बिलकुल बँधे हुए होते हैं और जिसमे नियत रूप से कुछ भी विचलन नही हो सकता। इसका प्रचलन ई० १५ वी शती के अत मे ग्वालियर के राजा मान तोमर ने किया था।

ध्रुपदिया—पु० [हिं० ध्रुपद+ईया (प्रत्य०)] वह गवैया जो ध्रुपद मे गाने गाता हो।

ध्रुव—वि० [स०√ध्रु (स्थिर होना)+क] [भाव० ध्रुवता] १. सदा एक स्थान पर अथवा ज्यो का त्यो बना रहनेवाला। अचल। अटल। २ सदा एक ही अवस्था या रूप मे बना रहनेवाला। नित्य। शाश्वत। ३ जिसमे किसी प्रकार का अतर न पड सके या परिवर्तन न हो सके। बिलकुल निश्चित और दृढ या पक्का।

पु० १ आकाश। २ शकु। ३. पर्वत। ४ खभा। ५. वट वृक्ष। ६ आठ वसुओं मे से एक। ७ विष्णु। ८. ध्रुपद नामक गीत।

९. नाक का अगला भाग। १० फलित ज्योतिष में एक प्रकार का शुभ योग, जिसमे जन्म लेनेवाला बालक ज्योतिषियो के मत से बहुत ही बुद्धिमान्, विद्वान् और यशस्वी होता है। ११ भूगोल मे, पृथ्वी के वे दोनो नुकीले सिरे जिनके बीच की सीधी रेखा अक्ष-रेखा कहलाती है।

विशेष—ये दोनों सिरे उत्तरी ध्रुव या सुमेरु और दक्षिणी ध्रुव या कुमेरु कहलाते हैं। इन ध्रुवो के आस-पास के प्रदेश बहुत अधिक ठंढे हैं। जब सूर्य उत्तरायण होता है तब उत्तरी ध्रुव मे छः महीने तक दिन रहता है, और दक्षिणी ध्रुव मे रात रहती है। सूर्य के दक्षिणायन होने पर दक्षिणी ध्रुव मे छः महीने तक दिन रहता है, और उत्तरी ध्रुव मे रात होती है। १२ एक प्रसिद्ध तारा जो सदा उत्तरी ध्रुव या सुमेरु के ठीक ऊपर रहता है।

विशेष—वास्तव मे यह तारा शिशुमार नामक तारकपुंज के सात तारो मे से एक है। इस तारक-पुंज का जो तारा पृथ्वी के अक्ष-बिंदु की सीध से परम निकट होता है, वही पृथ्वी के निवासियों की दृष्टि मे ध्रुव (अर्थात् अचल और अटल) होता है। परंतु ज्योतिषियो का कहना है कि अयन वृत्त के चारो ओर नाडी मडल के मेरु की जो गति होती है उसके फलस्वरूप बारह हजार वर्ष बीतने पर आज-कल का ध्रुव तारा मेरु की सीध से दूर हट जायगा और तब शिशुमार तारक-पुंज का अभिजित् नामक दूसरा तारा हम लोगो का ध्रुव तारा हो जायगा। आज-कल हमारे मेरु से वर्तमान ध्रुव का व्यवधान-अतर केवल १ अश ३ कला है, पर आज से दो हजार वर्ष पहले यह अतर १२ अश था। इसी आधार पर यह पता चलता है कि आज से ५ हजार वर्ष पहले कोई दूसरा तारा हमारा ध्रुव था। यह भी कहा जाता है कि उत्तरी ध्रुव तारे की तरह एक दक्षिणी ध्रुव तारा भी है जो कुमेरु की ठीक सीध मे है।

१३ पुराणानुसार राजा उत्तानपाद के एक पुत्र, जो उनकी सुनीति नामक पत्नी के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

विशेष—कहते हैं कि इनकी एक विमाता भी थी, जिसका नाम सुरुचि था, और जिसके पुत्र का नाम उत्तम था। एक दिन जब उत्तम अपने पिता की गोद में बैठा खेल रहा था तब ध्रुव भी पिता की गोद मे जा बैठा। इस पर सुरुचि ने अवज्ञापूर्वक ध्रुव को वहाँ से हटा दिया। इससे खिन्न होकर ध्रुव घर से निकल गये और वन मे जाकर तपस्या करने लगे। विष्णु ने इनकी तपस्या से प्रसन्न होकर इन्हे वरदान दिया था कि तुम सब ग्रह-नक्षत्रो तथा लोको के ऊपर और उनके आधार बनकर एक जगह अचल भाव से रहोगे और तुम्हारे रहने का स्थान ध्रुवलोक कहलायेगा। तभी से पृथ्वी के उत्तरी ध्रुव के ऊपर ये ध्रुव तारे के रूप मे अचल और अटल भाव से स्थित हैं।

१४. फलित ज्योतिष मे नक्षत्रों का एक गण, जिसमे उत्तराफाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा, उत्तरभाद्रपद और रोहिणी नामक नक्षत्र है। १५ सोम रस का वह भाग जो सबेरे से सन्ध्या तक किसी देवता को अर्पित हुए बिना यो ही पड़ा रहे। १६ एक प्रकार का यज्ञ-पात्र। १७ मुँह का एक रोग, जिसमें तालू में पीडा, लाली और सूजन होती है। १८ छदशास्त्र मे, रगण का अठारहवाँ भेद, जिसमें पहले एक लघु, तब एक गुरु और तब फिर तीन लघु होते है। १९ घोड़ो के शरीर के कुछ विशिष्ट स्थानो मे होनेवाली भौंरी या चक्र। दे० 'ध्रुवावर्त्त'

ध्रुवण—पुं० [स०] १ किसी वस्तु की ध्रुवता का पता लगाना या उसकी ध्रुवता स्थिर करना। २ वैज्ञानिक प्रक्रियाओ मे, विद्युत्, सूर्य आदि का प्रकाश ऐसी स्थिति मे लाना कि क्षैतिज या बेडे बल मे फैलनेवाली किरणें भिन्न-भिन्न तत्त्वो मे भिन्न-भिन्न प्रकार के निश्चित रूप धारण करें। (पोलराइजेशन)

विशेष—साधारणत प्रकाश की किरणे सब ओर समान रूप से पडती हैं परतु जब उन्हे एक निश्चित दिशा और निश्चित रूप मे लाना अभीष्ट होता है तब उनका ध्रुवण किया जाता है।

ध्रुवता—स्त्री० [स० ध्रुव+तल्—टाप्] १ ध्रुव होने की अवस्था, गुण या भाव। २ वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, पदार्थों, पिंडो आदि का वह गुण या स्थिति, जो उनके दो परस्पर-विरोधी अगो या दिशाओ के बीच एक सीध मे वर्तमान रहती और परस्पर विरोधी तत्त्वो, शक्तियो आदि से युक्त रहती है। (पोलेरिटी)

ध्रुव-दर्शक—पु० [ष० त०] १ सप्तर्षि मडल। २. कुतुबनुमा।

ध्रुव-दर्शन—पु० [ष० त०] १ वर-वधू को विवाह-संस्कार के उपरान्त ध्रुव तारे का कराया जानेवाला दर्शन। २ उक्त प्रथा या रीति।

ध्रुव धेनु—स्त्री० [कर्म० स०] बहुत ही सीधी गाय, जो दूहे जाने के समय हिले तक नही।

ध्रुवनद—[स०] राजा नद का एक भाई।

ध्रुवपद—पु० =ध्रुपद।

ध्रुवमत्स्य—पु० [कर्म० स०] दिशाओं का बोध करानेवाला यत्र। कुतुबनुमा।

ध्रुवरत्ना—स्त्री० [स०] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

ध्रुव-लोक—पु० [मध्य० स०] सत्यलोक के अतर्गत एक प्रदेश जिसमे ध्रुव स्थित है। (पुराण)

ध्रुवा—स्त्री० [स० ध्रुव+टाप्] १ एक प्रकार का यज्ञ-पात्र। २ मूर्वा। मरोडफली। ३ शालपर्णी। सरिवन। ४ ध्रुपद नामक गीत। ५ सती और साध्वी स्त्री।

ध्रुवाक्ष—पु० [ध्रुव-अक्ष, मध्य० स०] ज्योतिष्क यत्रो का वह अक्ष जो आकाशस्थ ध्रुव की सीध मे पडता अथवा उसकी ओर अभिमुख रहता है। (पोलर एक्सिस)

ध्रुवाक्षर—पु० [ध्रुव-अक्षर, कर्म० स०] विष्णु।

ध्रुवावर्त्त—पु० [ध्रुव-आवर्त्त, मध्य० स०] १ घोडो के शरीर के कुछ विशिष्ट अगो मे होनेवाली भौरी या चक्र।

विशेष—घोडो के अपान, भाल, मस्तक, रध्र या वक्ष स्थल पर होनेवाली भौंरियाँ 'ध्रुवावर्त्त' कहलाती हैं।

२ वह घोड़ा जिसके शरीर पर उक्त भौरी हो।

ध्रुवीय—वि० [स० ध्रुव+छ—ईय] [भाव० ध्रुवीयता] १ ध्रुव (तारा) सबधी। २ ध्रुव-प्रदेश का। (पोलर)

ध्रुवीयक—पु० [स० ध्रुव से] वह उपकरण या तत्त्व जो ध्रुवीयण करता हो। (पोलराइजर)

ध्रुवीयण—पु० [स० ध्रुव से] ऐसी प्रक्रिया करना जिससे कही से आनेवाले ताप या प्रकाश का किसी लब के दोनो सिरो पर भिन्न-भिन्न तत्त्वो का सूचक अलग-अलग प्रकार का प्रभाव या रूप दिखाई पडे। (पोलराइजेशन)

ध्रू—पु० [सं० धुर] मस्तक। सिर। उदा०—ध्रू माला संकर धरी।—प्रिथीराज।

ध्रौव्य—पु० [सं० ध्रुव+ष्यञ्] = ध्रुवता।

ध्वंस—पु० [सं०√ध्वस् (नष्ट होना)+घञ्] १. इमारत, भवन आदि का गिर तथा ढहकर खड-खड हो जाना। मिट्टी मे मिल जाना। २ पूरी तरह से होनेवाला विनाश। ३. न्याय मे, अभाव का एक प्रकार का भेद।

ध्वंसक—वि० [सं०√ध्वस्+ण्वुल्—क०] ध्वस या विनाश करनेवाला। विध्वसक।

ध्वंसन—पु० [सं०√ध्वस्+ल्युट्—अन्] १ ध्वस करने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज को दुष्ट उद्देश्य से इस प्रकार गिराना कि वह नष्टप्राय हो जाय। तोड-फोड। (सेबोटेज)

ध्वसावशेष—पु० [सं० ध्वस-अवशेष, ष० त०] १ किसी चीज के टूट-फूट जाने पर उसके बचे हुए रद्दी टुकडे या अश। (रेकेज) २ इमारतो के वे अश जो उनके टूटने या ढह जाने पर बच रहते है। खँडहर।

ध्वसी (सिन्)—वि० [सं०√ध्वस्+णिनि] =ध्वसक।

ध्वज—पु० [सं०√ध्वज् (गति)+अच्] १. बाँस आदि की तरह की कोई लबी, सीधी लकडी। डडा। २. वह डडा जिसके सिरे पर कपडा लगाकर झडा बनाया जाता है। ३ झडा। ध्वजा। पताका। ४ किसी वस्तु या व्यक्ति का चिह्न या निशान। जैसे—देव-ध्वज, मकर-ध्वज, सीम-ध्वज आदि। ५ व्यापारियो आदि का परिचायक वह चिह्न या निशान, जो उनकी वस्तुओ आदि पर अकित हो। (ट्रेड मार्क) ६. सन्तान उत्पन्न करने की इद्रियाँ—भग और लिंग। ७ अपने कुल या वर्ग का ऐसा प्रधान या श्रेष्ठ व्यक्ति, जो उसका भूषण अथवा मान-मर्यादा बढानेवाला हो। (यौ० पदो के अन्त मे) जैसे—वशध्वज। ८ वह जो ध्वजा या पताका लेकर राजा, सेना आदि के आगे-आगे चलता हो। ९ मद्य बनाने और बेचनेवाला व्यक्ति। शौडिक। १०. वह घर या मकान जो किसी विशिष्ट पदार्थ या स्थान के पूर्व मे स्थित हो। ११ वह डडा जिस पर साधु आदि प्राचीन काल मे खोपड़ी टाँग कर अपने साथ ले चलते थे। १२ खाट या चारपाई की पाटी। १३ आडबर। ढोग। १४. मिथ्या अभिमान।

ध्वजक—पु० [सं० ध्वज+कन्] सैनिक या नौ-सैनिक झडा। (स्टैंडर्ड)

ध्वज-दड—पु० [ष० त०] वह डडा जिसके सिरे पर पताका का कपड़ा लगा रहता है।

ध्वज-पट—पु० [ष० त०] झडा। पताका।

ध्वज-पात—पु० [ष० त०]=ध्वज-भग।

ध्वज-पोत—पु० [मध्य० स०] बेडे का वह जहाज जिस पर उसका नौ-सेनापति यात्रा करता है और जिस पर उसका झडा फहराता है। (फ्लैगशिप)

ध्वज-भंग—पु० [ष० त०] १ वह स्थिति जिसमे पुरुष मे स्त्री-सभोग की शक्ति नही रह जाती। २. क्लीवता। नपुसकता। हिजडापन।

ध्वज-मूल—पु० [ष० त०] चुगीघर की सीमा। (कौ०)

ध्वज-यष्टि—स्त्री० [ष० त०]=ध्वज-दड।

ध्वजांशुक—पु० [ध्वज-अशुक, ष० त०] दे० 'ध्वज-पट'।

ध्वजा—स्त्री० [सं० ध्वज] १ झंडा। पताका। २. मालखभ की एक प्रकार की कसरत। ३. छन्दशास्त्र मे ठगण का पहला भेद, जिसमे पहले लघु और तब गुरु होता है।

ध्वजादि—पु० [ध्वज-आदि, ब० स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार की गणना, जिसमे नौ कोष्ठको का ध्वजा के आकार का एक चक्र बनाया जाता है और तब उसके आधार पर प्रश्नो के उत्तर या फल कहे जाते हैं।

ध्वजारोपण—पु० [ध्वज-आरोपण, ष० त०] झडा गाडना या लगाना।

ध्वजाहृत—पु० [ध्वज-आहृत, तृ० त०] १ वह धन जो शत्रु को युद्ध मे जीतकर प्राप्त किया गया हो। २. पद्रह प्रकार के दासो मे से वह दास जो लडाई मे जीतकर प्राप्त किया या लाया गया हो।

ध्वजिक—पु० [सं० ध्वज+ठन्—इक] ढोगी। पाखडी।

ध्वजिनी—स्त्री० [सं० ध्वजिन्+ङीप्] १ सेना की एक टुकडी जिसका परिमाण कुछ लोग 'वाहिनी' का दूना बताते हैं। २ पाँच प्रकार की सीमाओ मे से वह सीमा, जिस पर वृक्षो आदि के रूप मे चिह्न या निशान लगे हो।

ध्वजी (जिन्)—वि० [सं० ध्वज+इनि] [स्त्री० ध्वजिनी] १ जो हाथ मे ध्वजा या पताका लिये हुए हो। २ जिस पर कोई चिह्न या निशान हो।

पु० १ वह जो सेना के आगे ध्वजा लेकर चलता हो। २. युद्ध। लडाई। सग्राम। ३ ब्राह्मण। ४ घोडा। ५ मोर। ६ साँप। ७ पर्वत। पहाड।

ध्वजोत्थान—पु० [ध्वज-उत्थान, ष० त०] १ ध्वजा उठाना या फहराना। २. प्राचीन भारत का इन्द्रध्वज नामक महोत्सव।

ध्वन—पु० [सं०√ध्वन् (शब्द)+अप्] १. शब्द। २ गुजार।

ध्वनन—पु० [सं०√ध्वन्+ल्युट्—अन] १ ध्वनि या शब्द करना। २ ध्वनि के रूप मे कुछ अभिव्यक्त करने की क्रिया या भाव। ३ व्यग्यार्थ के बोध कराने की क्रिया या भाव। ४ अस्पष्ट शब्द।

ध्वनि—स्त्री० [सं०√ध्वन्+इ] १ वह जो कानो से सुनाई पडे या सुना जा सके। श्रवणेंद्रिय का विषय। आवाज। शब्द।

विशेष—किसी प्रकार का आघात होने से जो स्वर-लहरी उत्पन्न होकर वायु, जल आदि मे से होती हुई हमारे कानो तक पहुँचती है, वही ध्वनि कहलाती है। कुछ आचार्य तो उसी को ध्वनि कहते हैं जो केवल अवर्णात्मक हो, अथवा जिसके वर्ण अलग-अलग और स्पष्ट न सुनाई पडते हो; और कुछ लोग वर्णात्मक तथा अवर्णात्मक दोनो प्रकार के शब्दो को ध्वनि कहते हैं। जो लोग केवल अवर्णात्मक शब्दो को ध्वनि मानते हैं, वे वर्णात्मक शब्दो से उत्पन्न होनेवाले परिणाम को 'स्फोट' कहते हैं।

२ ऐसी आवाज, नाद या शब्द जिसका कुछ भी अर्थ या आशय न हो। जैसे—पशु-पक्षियो के कठ की ध्वनि; बादल गरजने से होनेवाली ध्वनि। ३. बाजे आदि बजने से उत्पन्न होनेवाले शब्द। जैसे—घटे या घडियाल की ध्वनि। ४ किसी उक्ति या कथन का वह गूढ और व्यग्यपूर्ण आशय, जो उसके वाच्यार्थ से भिन्न तथा स्वतत्र हो और वक्ता का कोई विशिष्ट अभिप्राय या मनोभाव ऐसे रूप मे व्यक्त करता हो, जो सहज मे और साधारणत. सब लोगों की समझ मे न आवे।

विशेष—कथन का जो आशय व्यंजना नामक शब्द-शक्ति से निकलता

है वही साहित्य के क्षेत्र मे 'ध्वनि' कहलाता है। जैसे—यदि किसी झूठे या बहानेबाज आदमी से कहा जाय, 'आप बहुत सत्यवादी है।' तो इस वाक्य का व्यग्यार्थ यही होगा कि 'आप बहुत झूठे है।' और इस प्रकार निकलनेवाला व्यग्यार्थ ही 'ध्वनि' कहलाता है। साहित्य मे इस प्रकार का व्यग्यार्थवाला काव्य, बहुत ही चमत्कारपूर्ण होने के कारण, परम उत्कृष्ट और प्रथम श्रेणी का माना जाता है।

ध्वनिक—वि० [सं० ध्वनि से] ध्वनि-सबधी। (फोनेटिक)

ध्वनि-क्षेपक—वि० [ष० त०] ध्वनि को चारो ओर फैलानेवाला।

ध्वनि-क्षेपक-यंत्र—पु० [कर्म० स०] एक प्रसिद्ध यत्र जिसके माध्यम से वक्ता की ध्वनि दूर स्थित लोगो को सुनाई जाती है। (माइक्रोफोन)

ध्वनि-क्षेपण—पु० [ष० त०] किसी स्थान पर उत्पन्न होनेवाली ध्वनि का एक विशेष प्रकार के वैद्युत्यत्र की सहायता से चारों ओर बहुत दूर तक फैलाना या पहुँचाना।

ध्वनि-ग्राम—पु० [ष० त०] ध्वनि-विज्ञान मे, मनुष्य के गले से निकलनेवाली ध्वनि के भिन्न-भिन्न रूप जो कुछ विशिष्ट अवस्थाओ मे बनते है। (फोनीम) जैसे—का, की, कू, के आदि के उच्चारण मे 'क' की ध्वनि के रूप कुछ अलग-अलग होते हैं।

ध्वनित—वि० [स०√ध्वन्+क्त] १ जो ध्वनि के रूप मे प्रकट हुआ हो। २ किसी वाक्य आदि मे झलकता हुआ (कोई गूढ़ आशय)।

ध्वनि-तरग—स्त्री० [ष० त०] हवा की वह लहर जिसमे किसी स्थान मे होनेवाली ध्वनि के फलस्वरूप एक विशेष प्रकार का कपन होता है तथा जो कानो को उस ध्वनि का ज्ञान कराती है। (साउड वेव)।

ध्वनि-विज्ञान—पु० [ष० त०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि बोलते समय मनुष्य के स्वर-यत्र से किस प्रकार ध्वनियाँ या शब्द उत्पन्न होते है, उनके कैसे और कितने भेद-प्रभेद होते हैं। (फोनोटिक्स)

ध्वन्यात्मक—वि० [स० ध्वनि-आत्मन्, ब० स०, कप्] ध्वनि से युक्त।

ध्वन्यार्थ—वि० [स० ध्वन्यर्थ] किसी शब्द या पद का व्यग्यार्थ।

ध्वन्यालेख—पु० [स० ध्वनि-आलेख, ष० त०] वह उपकरण जिसमे किसी की वक्तृता, गीत आदि अभिलिखित होता है और विशेष प्रक्रिया से उसी स्वर मे फिर से बजाया जा सकता है। (रिकार्ड)

ध्वन्यालेखन—पु० [स० ध्वनि-आलेखन, ष० त०] किसी की ध्वनि को इस प्रकार किसी विशेष प्रक्रिया से सुरक्षित करना कि फिर उसकी पुनरावृत्ति की जा सके। (रिकार्डिंग)

ध्वांत—पु० [स०√ध्वन्+क्त] अधकार।

ध्वांत-धाम—पु० [ष० त०] नरक।

ध्वांताराति—पु० [ध्वांत-अराति, ष० त०] १ सूर्य। २ चद्रमा। ३. अग्नि। ४ श्वेत वर्ण।

ध्वांतोन्मेष—पु० [ध्वात-उन्मेष, ब० स०] खद्योत। जुगनूं।

ध्वान—पु० [स०√ध्वन्+घञ्] १ शब्द। आवाज। नाद। २ गुजन।

न

न—देवनागरी वर्णमाला का २० वाँ वर्ण जो व्याकरण और भाषा-विज्ञान की दृष्टि से घोष, अल्पप्राण, अनुनासिक तथा वर्त्स्य व्यजन है।

अव्य० एक अव्यय जिसका प्रयोग आज्ञा, विधि, हेतुहेतुमद्भाव आदि के प्रसगो मे नीचे लिखे अर्थों मे होता है। १ नकारात्मक या निषेधात्मक कथनो मे 'नहीं' की जगह। जैसे—(क) वहाँ न जाना ही ठीक है। (ख) यदि उसे कुछ भी न दिया जाय तो भी वह अपना काम चला लेगा। २. प्रश्नवाचक वाक्यो के अत मे, कि नहीं। या नहीं। जैसे—(क) तुम कल तो यहाँ आओगे न? (ख) वह चला जायगा न?

विशेष—ऐसे अवसरो पर इसमे किंचित् आशा, निश्चय या विश्वास का भाव भी निहित रहता है।

३ कहीं-कहीं एक ही क्रिया की पुनरावृत्ति के बीच मे आने पर प्राय उसी समय या तुरत। थोडे समय मे। उदा०—चौंककर सोते न सोते उठ पड़ेंगे।—मैथिलीशरण।

प्रत्य० ब्रज भाषा मे संज्ञाओ के अत मे लगकर उन्हे बहु व० का रूप देनेवाला प्रत्यय। जैसे—कटाछ से कटाछन।

पुं० १. सोना। स्वर्ण। २. मणि। रत्न। ३. उपमा। ४ गौतम बुद्ध।

नंग—वि० [हिं० नंगा] १ नंगा। २. बदमाश। लुच्चा।

पुं० १. नंगे होने की अवस्था या भाव। नंगापन। नग्नता। २ पुरुष अथवा स्त्री का गुप्त अग।

पु० [फा०] प्रतिष्ठा। इज्जत।

नंगटा—वि० =नगा।

नग-धड़ग (१)—वि० [हिं० नगा+धडग (अनु०)] [वि० स्त्री० नग-धड़गी] (व्यक्ति) जो सब वस्त्र उतारकर बिलकुल नगा हो गया हो।

नंग-पैरा—वि० [हिं० नगा+पैर+आ (प्रत्य०)] १ नगे पैरोवाला। २. नगे पैर चलनेवाला।

क्रि० वि० बिना जूता या पादत्राण पहने। नगे पैरो।

नंग-मनंगा—वि० =नग-धडग।

नंगर[१]—पु० =लगर।

नंगर वारी—स्त्री० [हिं० लगर+वाला] वह छोटी समुद्री नाव जो तूफान के समय किसी रक्षित स्थान पर लगर डालकर ठहर जाती है। (लश०)

नंगा—वि० [स० नग्न] [वि० स्त्री० नगी] १ (व्यक्ति) जिसने गोप्य अंग वस्त्र आदि के द्वारा न ढके हुए हों। जो कोई कपडा न पहने हो। दिगंबर।

पद—नंगा उघाड़ा—जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। विवस्त्र। **अलिफ नंगा**—वैसा ही नगा जैसा उर्दू या फारसी लिपि का अलिफ वर्ण होता है। **मादरजाद-नंगा**—वैसा ही नगा, जैसा शिशु अपनी माता के गर्भ से जन्म लेने के समय रहता है। बिलकुल नगा।

२. (शरीर का कोई अग) जिस पर कोई आच्छादन या आलकारिक वस्तु न हो। जैसे—नगा गला या हाथ (आभूषण-रहित), नगा सिर (टोपी या पगड़ी से रहित)। ३ (पदार्थ) जिस पर कोई आवरण न हो। आच्छादन-रहित। खुला हुआ। जैसे—दही या दूध कभी नगा नही रखना चाहिए। ४. निर्लज्ज। बेहया। बेशर्म। ५. ऐसा दुष्ट, लुच्चा या पाजी जो कलक, बदनामी आदि से कुछ भी न डरता हो।

पद—नगा लुच्चा। (देखें)

६. (बात या विषय) जिसका वास्तविक स्वरूप स्पष्ट रूप से व्यक्त हो रहा हो।

पु० १. शिव। महादेव। २. कश्मीर की सीमा पर का एक बड़ा पर्वत।

नंगा-झोरी—स्त्री०=नगा-झोली।

नंगा-झोली—स्त्री० [हिं० नगा+झोरना] खोई हुई चीज ढूँढ़ने के उद्देश्य से सदेहवश किसी के कपड़े आदि उतरवाकर अथवा यो ही अच्छी तरह यह देखना कि उसने कोई चीज अदर छिपाकर रखी तो नही है। जामा-तलाशी।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

नंगा-धड़ंगा—वि० [हिं०] जिसके शरीर पर एक भी वस्त्र या आवरण न हो। बिलकुल नगा।

नंगा-नाच—पु० [हिं० नगा+नाच] निर्लज्ज होकर किया जानेवाला परम दूषित और हेय आचरण।

नगा-बुंगा—वि० [हिं० नगा+बुगा (अनु०)] १. जिसके शरीर पर कोई वस्त्र न हो। बिलकुल नगा। २. जिस पर कोई आच्छादन या आवरण न हो।

नंगा-बुच्चा—वि०=नगा-बूचा।

नंगा-बूचा—वि० [हिं० नगा+बूचा=खाली] जिसके पास कुछ भी न हो। परम निर्धन।

नंगा-मुनंगा—वि०=नगा-धड़गा।

नंगा-लुच्चा—वि० [हिं० नंगा+लुच्चा] (व्यक्ति) जो निर्लज्ज होकर दूसरो की प्रतिष्ठा पर आघात करता हो। निर्लज्ज। दुष्ट।

नंगियाना—स० [हिं० नगा+इयाना] [भाव० नगियावन] १ नगा करना। शरीर पर वस्त्र न रहने देना। २. किसी का इस प्रकार सब-कुछ छीन लेना कि उसके पास कुछ भी न बच रहे। ३ वास्तविक रूप मे प्रकट करना।

नंग्याना *—स०=नँगियाना।

नचना—अ०=नाचना।

नंजन *—पु०=नर्तन (नाचना)।

नवत—वि० [स०√नन्द्+झच्—अन्त] प्रसन्न करनेवाला।

पु० १ पुत्र। बेटा। २. मित्र। ३ राजा।

नवन—वि०, पु०=नदन।

नंद—वि० [स०√नन्द्+अच्] [स्त्री० नदा] १ आनद या सुख देनेवाला। २ उत्तम श्रेष्ठ। ३ शुभ।

पु० [स०] १ आनद। हर्ष। २. सच्चिदानद परमात्मा। ३ विष्णु। ४ वासुदेव का एक पुत्र जो मदिरा के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ५ कार्तिकेय का एक अनुचर। ६ एक नाग का नाम। ७. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ८. नदन। पुत्र। बेटा। ९. क्रौंच द्वीप का एक वर्ष-पर्वत। १०. एक प्रकार का मृदंग। ११. चार प्रकार की बाँसुरियो मे से एक जो ग्यारह अगुल लबी होती और श्रेष्ठ समझी जाती है। इसके देवता रुद्र कहे गये है। १२. सगीत मे, एक प्रकार का राग जिसे कुछ लोग मालकोश राग का पुत्र मनते हैं। १३. पुराणानुसार नौ निधियो मे से एक। १४. मेढक। १५. गोकुल मे गौओ के नायक या मुखिया जिनके पास वासुदेव श्रीकृष्ण को जन्म के समय पहुँचा गये थे और जिनके यहाँ उनकी बाल्यावस्था बीती थी। १६. गौतम बुद्ध के एक भाई जो उनकी विमाता के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। १७. पिंगल मे डगण के दूसरे भेद का नाम जिसमे एक गुरु और एक लघु होता है और जिसे ग्वाल भी कहते है। जैसे—काम, नाम, लाभ। १८. मगध का एक प्रसिद्ध राजवश। दे० 'नद वश'।

† स्त्री०=ननद (स्त्री के पति की बहन)।

नदक—वि० [स०] १ आनद और सुख या सतोष देनेवाला। २. अपने कुल या परिवार का पालन करनेवाला।

पु० १. श्रीकृष्ण का खड्ग। २ कार्तिकेय का एक अनुचर। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४ एक नाग का नाम। ५ श्रीकृष्ण के पालक नद। ६ मेढक। ७ दे० 'नद वश'।

नंदकि—स्त्री० [स०] पीपल।

नंद-किशोर—पु० [स०] नद के पुत्र श्रीकृष्ण।

नदकी (किन्)—पु० [स० नदक+इनि] विष्णु।

नंद-कुँवर—पु०=नदकुमार।

नंद-कुमार—पु० [ष० त०] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंद-गाँव—पु० [स० नंद+हिं० गाँव] वृदावन के पास का एक गाँव जहाँ नद-गोप रहते थे।

नंद-गोपिता—स्त्री० [ष० त०] रास्ना या रायसन नामक वनस्पति।

नंद-ग्राम—पु० [ष० त०] १.=नद गाँव। २.=नदि ग्राम।

नंदथु—पु० [स०√नन्द्+अथुच्] प्रसन्नता।

नंदद—वि० [स० नंद√दा (देना)+क] आनद देनेवाला।

पु० पुत्र। बेटा।

नंद-नद (न)—पु० [ष० त०] नद के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र।

नंद-नंदिनी—स्त्री० [ष० त०] नद की कन्या। योगमाया।

विशेष—श्रीकृष्ण को नद के घर रखकर इसी को उनके बदले मे अपने साथ ले गए थे।

नंदन—वि० [स० नन्द+णिच्+ल्यु—अन] आनद देने या प्रसन्न करने-वाला।

पु० १. पुत्र। बेटा। २. राजा। ३. दोस्त। मित्र। ४. नदन कानन। (दे०) ५ कामाख्या देश का एक पर्वत जहाँ लोग इन्द्र की पूजा करते हैं। ६. कार्तिकेय का एक अनुचर। ७ शिव। महादेव। ८. विष्णु। ९. एक प्रकार का विष। १० केसर। ११. चदन। १२. बादल। मेघ। १३. मेढक। १४. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। १५ वह मकान जो षट्कोण हो, जिसका विस्तार बत्तीस हाथ हो और जिसमे सोलह शृंग हो। (वास्तु) १६. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से नगण, जगण, भगण, जगण और दो रगण होते हैं। १७. साठ सवत्सरो मे से छब्बीसवाँ संवत्सर।

कहते हैं कि इस संवत्सर में अन्न खूब होता है, गौएँ खूब दूध देती हैं और लोग नीरोग रहते हैं।

नंदनक—पु० [स० नदन+कन्] पुत्र।

नंदन-कानन—पुं० [मध्य० स०] स्वर्ग में स्थित इन्द्र का प्रसिद्ध उपवन या बगीचा जो परम सुन्दर और सुखद माना गया है। नंदन।

नंदनज—पु० [स० नंदन√जन् (उत्पत्ति)+ड] १. हरिचंदन। २. श्रीकृष्ण।

नंदन-प्रधान—पु० [ष० त०] नंदन के प्रधान, इन्द्र।

नंदन-माला—स्त्री० [कर्म० स०] एक प्रकार की माला जो श्रीकृष्ण को बहुत प्रिय थी। (पुराण)

नंदन-वन—पु० [मध्य० स०] १ नदन-कानन। २ कपास।

नंदना—अ० [स०√नद्+णिच्+युच्—अन, टाप्] आनदित होना। प्रसन्न होना।

स्त्री० [नदन+टाप्] पुत्री। बेटी।

स० आनदित या प्रसन्न करना।

स्त्री० [स० नद=बेटा] १ पुत्री। बेटी। २. लडकी।

नंदनी—स्त्री० [स० नदन+ङीष्] १.=नंदना। २=नंदिनी।

नंदपाल—पु० [स० नद√पाल् (रक्षा)+णिच्+अच्] वरुण।

नंद-पुत्री—स्त्री० [ष० त०] नंद नंदिनी।

नंदप्रयाग—पु० [?] बदरिकाश्रम के निकट का एक तीर्थ जो सात प्रयागों मे से एक है।

नंदरानी—स्त्री० [स० नंद+हिं० रानी] नंद की स्त्री। कृष्ण की माता। यशोदा।

नंद रूख—पु० [हिं० नद+रूख=वृक्ष] अश्वत्थ की जाति का एक पेड जिसकी पत्तियाँ रेशम के कीड़े खाते हैं।

नंदलाल—पु० [स० नद+हिं० लाल] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंद-वंश—पु० [ष० त०] मगध का एक प्राचीन राजवश जिसका नाश कौटिल्य ने किया था।

नंदा—वि० स्त्री० [स०√नन्द्+अच्—टाप्] १ आनद देनेवाली। २. शुभ।

स्त्री० [स०] १. दुर्गा। २ गौरी। ३. धन-सपत्ति। ४. एक प्रकार की कामधेनु। ५ एक प्रकार की सक्रांति। ६. आनद या प्रसन्नता की अधिष्ठात्री देवी जो हर्ष की पत्नी कही गई है। ७. सगीत मे, एक मूर्च्छना। ८ स्वर्ग की एक अप्सरा। ९ विभीषण की कन्या। १०. पानी रखने का मिट्टी का घड़ा। ११ पुराणानुसार शाकद्वीप की एक नदी। १२. स्त्री के पति की बहन। ननद। १३ चांद्र मास के किसी पक्ष की प्रतिपदा, षष्ठी और एकादशी तिथियो की संज्ञा। १४. पुराणानुसार कुबेर की पुरी के पास बहनेवाली एक नदी। १५ जैन पुराणों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के दसवें अर्हत् की माता का नाम। १६. पिंगल में बरवै छंद का एक नाम। १७. एक मातृका या बाल-ग्रह जिसके विषय मे यह माना जाता है कि इसके कारण बालक अपने जीवन के पहले दिन, पहले मास और पहले वर्ष मे ज्वर से पीडित होकर बहुत रोता और अचेत हो जाता है। १८. दे० 'नंदा-तीर्थ'।

नंदातीर्थ—पु० [स०] हेमकूट पर्वत पर स्थित एक तीर्थ। (महाभारत)

नंदात्मज—पुं० [नंद-आत्मज, ष० त०] नंद के पुत्र, श्रीकृष्ण।

नंदात्मजा—स्त्री० [नंद-आत्मजा, ष० त०] नंद की पुत्री। योगमाया।

नंदा-देवी—[सं०] यमुनोत्तरी के पूर्व दक्षिणी हिमालय की एक चोटी जो समुद्र तल से २५००० फुट ऊँची है।

नंदा-पुराण—पु० [स०] एक उपपुराण जिसमे नदा का माहात्म्य वर्णित है और जिसके वक्ता कार्तिक कहे गये हैं। मत्स्य और शिवपुराण के मत से यह तीसरा उपपुराण है।

नंदार्च—पु० [सं०] शाकद्वीपी ब्राह्मणो की एक जाति।

नंदाश्रम—पु० [नद-आश्रम, ष० त०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

नंदि—पु० [स०√नन्द्+इन्] १. आनद। २ वह जो पूर्णत आनंदमय हो। ३. सच्चिदानद परमात्मा। ४ शिव। ५ दे० 'नंदिकेश्वर'।

नंदिक—पु० [सं० नद+ठन्—इक] १. नदी वृक्ष। तुन का पेड। २ धव का पेड। धौ। ३. आनद।

नंदिकर—पु० [स०] शिव।

नंदिका—स्त्री० [सं० नंदिका+टाप्] १ पानी रखने की मिट्टी की नाँद। २. चांद्रमास के प्रत्येक पक्ष की प्रतिपद, षष्ठी और एकादशी तिथियाँ। ३. हँसमुख स्त्री। ४. नंदनकानन।

नंदिकावर्त्त—पुं० [स०] एक प्रकार का रत्न। (बृहत्संहिता)

नंदि-कुंड—पु० [स० मध्य० स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महा०)

नंदिकेश—पु० [स०] नंदिकेश्वर।

नंदिकेश्वर—पु० [सं०] १ शिव के द्वारपाल बैल का नाम। नंदि। २ नदी द्वारा उक्त एक पुराण। ३ नदि के स्वामी, शिव।

नंदिग्राम—पुं० [स०] अयोध्या के निकट का एक प्राचीन गाँव जहाँ राम-वनवास के समय भरत १४ वर्षों तक रहे थे।

नंदि-घोष—पु० [स० ब० स०] अर्जुन का एक रथ जो उन्हे अग्निदेव से मिला था।

नंदित—वि० [स०√नन्द्+क्त] आनदित। सुखी। आनदयुक्त। प्रसन्न।

वि० [हिं० नाद] नाद करता या बजाता हुआ।

नंदि-तरु—पु० [स० कर्म० स०] धव। धौ।

नंदि-तूर्य—पु० [स० मध्य० स०] एक पुराना बाजा।

नंदिन—स्त्री० [स० नदिनी] एक तरह की बडी मछली।

नंदिनी—स्त्री० [स०√नन्द्+णिनि—ङीष्] १ पुत्री। बेटी। २. उमा। ३. गगा। ४ दुर्गा। ५ कार्तिकेय की मातृका। ६ व्याडि मुनि की माता। ७ जोरू। पत्नी। ८ स्त्री के पति की बहिन। ९ जटामासी। बाल-छड़। १० रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ११ वसिष्ठ की कामधेनु जो सुरभि के गर्भ से उत्पन्न हुई थी। १२. तेरह अक्षरो का एक वर्ण-वृत जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, एक जगण, फिर दो सगण और अत मे एक गुरु होता है। इसे कलहस और सिंहनाद भी कहते हैं।

नंदि-मुख—पुं० [ब० स०] १. शिव। महादेव। २ एक प्रकार का चावल। ३ एक प्रकार का पक्षी।

†पुं०=नांदी मुख (श्राद्ध)।

नंदिमुखी—पु० [?] ऐसा पक्षी जिसकी चोंच का ऊपरी भाग बहुत कडा और गोल हो। ऐसे पक्षी का मांस पित्तनाशक, चिकना, भारी, मीठा

और वायु, कफ, बल तथा शुक्रवर्धक कहा गया है। (भाव प्रकाश)
स्त्री० तद्रा।

नंदिघ्न—पु० [स०] शिव का एक नाम।

नंदि-वर्द्धन—पु०[स०नदि√वृध् (बढना) । णिच् +ल्यु—अन]नदिवर्धन ।

नंदि-वर्धन—वि० [स०] आनद बढानेवाला ।
पु० १. शिव । २ पुत्र। बेटा । ३ दोस्त । मित्र। ४ एक तरह का प्राचीन विमान । ५ प्राचीन वास्तु शास्त्र के अनुसार कुछ विशिष्ट विस्तारवाला मदिर । ६. बिबमार का पुत्र।

नंदिवारलक—पु० [स०] एक तरह की समुद्री मछली । (सुश्रुत)

नंदिषेण—पु० [स०] कुमार के अनुचर का नाम ।

नंदी (दिन्)—वि० [स०√नद् +णिनि] आनदित रहनेवाला । प्रसन्न।
पु० १ शिव के एक प्रकार के गण, जिनके ये तीन भेद कहे गये हैं—कनक नदी, गिरिनदी, और शिवनदी । २ शिव के द्वारपाल बैल का नाम। ३ शिव के नाम पर उत्सर्ग किया हुआ साड। ४ वह बैल जिसके शरीर पर बहुत-सी गाँठे हो। ऐसा बैल खेती के काम का नही होता। इसे फकीर लोग लेकर घुमाते और लोगो को उसके दर्शन कराके पैसे माँगते हैं। ५ विष्णु। ६ जैनो के एक श्रुत पारग । ७ उडद । ८ धौ का पेड। धव । ९ गर्दभाड या पाखर नाम का पेड। १० बरगद। वट । ११ तुन नाम का पेड। १२ बगाल के कायस्थो, तेलियो आदि की कुछ जातियो की उपाधि।

नदीगण—पु० [स० नदिगण] १. शिव के द्वारपाल बैल । २ शिव के नाम पर दागकर खुला छोडा हुआ बैल। साँड।

नदीघटा—पुं० [स० नदी +हिं० घटा] बैलो के गले मे बाँधने का बिना डाँडी का घटा।

नदीपति—पु० [स० नदिपति] नदि के स्वामी, शिव। महादेव।

नंदीमुख—पु० [स०] १ =नांदि-मुख। २ =नादी-मुख।

नदीवृक्ष—पु० [स०] १ मेढा-सिगी। २ तुन नाम का पेड।

नदीश—पु० [स० नदिन्-ईश ष० त०] =नदीश्वर।

नंदीश्वर—पु० [स० नदिन्-ईश्वर, ष० त०] १ शिव। २ सगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदो मे से एक। ३ वृदावन का एक तीर्थ। ४ शिव का एक प्रसिद्ध गण जो पुराणानुसार काले रग का, बौना, बदर के-से मुँह और मुँडे हुए सिरवाला माना गया है।

नंदेऊ—पु० =नदोई।

नंदोई—पु० [हिं० ननद+आई (प्रत्य०)] सबध के विचार से ननद का पति।

नंदोला*—पु० [हिं० नाँद का अल्पा०] मिट्टी की छोटी नाँद।

नंदोसी—पु० =नदोई।

नद्*—पु० १ =नाद। २ =नद।

नंद्यावर्त्त—पु० [स० नदि-आवर्त्त, ब० स०] १ ऐसा भवन जिसमे पश्चिम ओर द्वार न हो। २ तगर नाम का पेड़।

नबर—वि० पु० [अ०] [वि० नबरी] १. सख्या-सूचक अक।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
२ अदद। सख्या। ३ गणना। गिनती। ४ कपडे आदि नापने का गज जो ३६ इच लबा होता है। ५. सामयिक पत्र या पत्रिका का कोई स्वतत्र अक।

नंबरदार—पु० [अ०+फा०] ब्रिटिश शासन मे गाँव का वह जमीदार जो अपनी पट्टी के दूसरे हिस्सेदारो से मालगुजारी आदि वसूल करने में सहायता देता था।

नंबरदारी—स्त्री० [अ०+फा०]नबरदार होने की अवस्था, पद या भाव।

नंबरवार—क्रि० वि० [अ० नबर+हिं० वार] १. अक या संख्या के क्रम से। २ सिलसिलेवार।

नबरी—वि०[अ० नबर] १ जिस पर नबर या अक लगा हो। २. नंबर सबधी। जैसे—नबरी गज। ३. बहुत बडा और मशहूर। जैसे—नबरी चोर, नबरी गुडा।

नंबरी गज—पु० [अ०+हिं०] कपडे आदि नापने का अगरेजी गज जो ३६ इच लबा होता है।

नंबरी चोर—पु० [हिं०] वह कुख्यात चोर जिसका उल्लेख पुलिस के अभिलेखो मे विशेष रूप से हो।

नंबरी तह—स्त्री० [हिं०] कपड़े के थान की इस प्रकार लगी हुई तह कि उसकी प्रत्येक परत एक एक गज लबी हो और क्रमात् एक दूसरी के ऊपर पडती हो।
विशेष—ऐसी तह उस तह से भिन्न होती है जो पहले दोहरी, तब चौहरी आदि करके लगाई जाती है।

नंबरी नोट—पु० [हिं०] १ ब्रिटिश भारत मे, सौ या इससे अधिक रुपयोवाला कोई बडा नोट जिसका नबर लेन-देन के समय बही खातो मे लिख लेने की प्रथा थी। २ आज-कल सौ रुपयो का नोट।

नबरी सेर—पु० [हिं०] तौलने का वह सेर जो ब्रिटिश शासन मे ८० अँगरेजी रुपयो के बराबर अर्थात् ८० भर होता था। अभी तक (अर्थात् दशमलव पद्धति प्रचलित होने के पहले तक) यही सेर मानक माना जाता था।

नंबूरी—पु० [?] मालाबार प्रात के ब्राह्मणो की एक जाति।

नशुक—वि० [स०√नश् (नाश)+शुकन्, नुमागम] १ नाश करनेवाला। २ हानिकारक। ३ भटकनेवाला। ४ बहुत छोटा। ५. सूक्ष्म।

नंस*—पु० =नाश।
वि० =नष्ट।

नंसना†—स० [स० नाश] नष्ट करना।
अ० नष्ट होना।

नइया†—स्त्री० =नाव (नौका)।

नइहर—पु० [स० मातृगृह, पु० हिं० मैहर] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर। पीहर। मैका।

नई†—वि० [स० नयी=नयवान्] नीतिमान। नीतिज्ञ।
स्त्री०=नदी।
वि० हिं० 'नया' का स्त्री०।

नउंजी— स्त्री०- लीची (फल)।

नउ*—वि० १ =नव (नया)। २ =नौ (सख्या)।

नउआ—पु० [स्त्री० नउनिया]—नाऊ (नापित या हज्जाम)।

नउका—स्त्री०=नौका (नाव)।

नउज †—अव्य०=नौज।

नउन †—वि०=नत (झुका हुआ)।

नउनियाँ—स्त्री० [हिं० नाऊ] नाई जाति की स्त्री। नाउन।

नउरंग—पु० १ =नारंग। २ =नौरंग।
स्त्री०=नारंगी।

नउर—पु०=नकुल (नेवला)।

नउरा†—पुं० [स्त्री० नेउरी]=नौकर।
†पुं०=नेवला।

नउलि† —वि०=नवल (नया या विलक्षण)।

नएपंज—पु० [हिं० नया+पाँच] पाँच वर्ष की अवस्था का घोडा। जवान घोड़ा।

नओढ़†— वि०, पु०=नवोढ़।
वि० स्त्री०=नवोढ़ा।

नओढा †—वि० स्त्री०=नवोढ़ा।

नक—पुं० [?] १ आकाश। नभ। २ स्वर्ग।
स्त्री० हिं० 'नाक' का वह् सक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदो के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—नक-कटा, नक-चढा, नक-छिकनी, नक-बेसर आदि।
† स्त्री०=नख (नाखून)।

नक-कटा—वि० [हिं० नाक+कटना] [स्त्री० नक-कटी] १ जिसकी नाक कटी हुई हो। २ दूसरो द्वारा विदित होने पर भी जो लज्जा का अनुभव न करे। बहुत बडा निर्लज्ज।

नक-कटी—स्त्री० [हिं० नाक+कटना] १ नाक कटने की अवस्था या भाव। २ दुर्दशापूर्ण अपमान।

नक-घिसनी—स्त्री० [हिं० नाक+घिसना] १ जमीन पर नाक घिसने अर्थात् रगडने की क्रिया या भाव। २ बहुत अधिक दीनतापूर्वक की जानेवाली क्षमायाचना, प्रतिज्ञा अथवा प्रार्थना।

नक-चढ़ा—वि० [हिं० नाक+चढ़ना] १ जिसकी नाक हर समय चढी रहती हो या बात-बात मे चढ जाती हो। २ जो जल्दी अप्रसन्न या रुष्ट हो जाता हो। चिडचिडा। बद-मिजाज।

नक-चोटी—स्त्री०=नख-चोटी।

नक-छिकनी—स्त्री० [हिं० नाक+छीकना] एक पौधा जिसके घुडी के आकार के फूलो के सूँघने से छीकें आती हैं।

नकटा—वि० [हिं० नाक+कटना] [स्त्री० नकटी] १. जिसकी नाक कट गई हो। २ निर्लज्ज। बेशरम। ३ अपमानित और दुर्दशा-ग्रस्त। उदा०—नकट। जीया, बुरे हवाल।—कहा०।
पु० [हिं० नटका से व० वि०] १. मगल तथा शुभ अवसरो पर गाये जानेवाले एक तरह के गीत। २. बत्तख की जाति का एक तरह का पक्षी जिसके नर की चोच पर काला दाना या मास-खड उभरा रहता है।

नकटेसर—पु० [?] एक प्रकार का पौधा जिसमे सुगधित सुन्दर फूल लगते हैं।

नकड़ा—पु० [हिं० नाक] बैलो का एक रोग जिसमे उनकी नाक मे सूजन आने के फल-स्वरूप उन्हें साँस लेने मे कष्ट होता है।

नक-तोड़ा—पु० [हिं० नाक+तोड़ना] ऐसा अभिमान या नखरा जो दूसरो का नाक तोड़नेवाला अर्थात् बहुत ही कष्टप्रद अथवा असह्य जान पड़े।
महा०—(किसी के) नक-तोड़े उठाना=बहुत ही अनुचित और अप्रिय जान पडनेवाले नखरे भी बरदाश्त करना या सहना।

नकंच—पु० [?] एक प्रकार का बढ़िया चावल जो कौगडे मे होता है।

नकद—वि०, पु०=नगद।

नकवाबा—पु० [?] ऐसी पकी हुई दाल जिसमे बडियाँ भी पडी हो।

नकदी—वि०, स्त्री० नगदी।

नकना—स० [स० लघन, हिं० नाकना] १ उल्लघन करना। डाकना। लाँघना। २ छोडना। त्यागना।
अ० गमन करना। चलना।
अ० [हिं० नाक] इतना दुखी और परेशान होना कि मानो नाक मे दम आ गया या हो रहा हो।

नकन्याना†—अ० [हिं० नाक] नाक मे दम होना। तग या परेशान होना। उदा०—हाय बुढापा तुम्हरे मारे हम तो अब नकन्याय गयन। —प्रतापनारायण मिश्र।
स० नाक मे दम करना। तग या परेशान करना।

नकपोड़ा—पु० [हिं० नाक+पकौडा] बहुत बडी तथा फूली हुई नाक। (परिहास या व्यग्य)

नकफूल—पु० [हिं० नाक+फूल] नाक मे पहनने का एक प्रकार का फूल। लौग।

नकब—स्त्री० [अ० नक्ब] चोरी करने के उद्देश्य से दीवार मे किया हुआ बडा छेद जिसमे से होकर मकान मे घुसा जाता है। सेंध।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

नकबजनी—स्त्री० [अ० नक्ब+फा० जनी] चोरी करने के लिए किसी के घर मे नकब या सेंध लगाने की क्रिया।

नकबानी—स्त्री० [हिं० नाक+बानी ?] नाक मे दम करने अर्थात् बहुत तग या परेशान करने की क्रिया या भाव।

नकबेसर—स्त्री० [हिं० नाक+बेसर] नाक मे पहनने की छोटी नथ। बेसर।

नकमोती—पु० [हिं० नाक+मोती] नाक मे पहनने का मोती जिसे लटकन भी कहते है।

नकल—स्त्री० [अ० नक्ल] १ किसी को कुछ करते हुए देखकर उसी के अनुसार कुछ करने की क्रिया या भाव। अनुकरण। जैसे—अब तुम भी उनकी नकल करने लगे।
क्रि० प्र०—उतारना।
२ परीक्षा मे, एक परीक्षार्थी का दूसरे परीक्षार्थी द्वारा लिखी हुई बात छल से देखकर अपनी पुस्तिका मे लिखना।
क्रि० प्र०—मारना।
३ ऐसी कृति जो किसी दूसरी कृति को देखकर उसी के ढग पर या उसी की तरह बनाई गई हो। अनुकृति। जैसे—यह खिलौना उसी विलायती खिलौने की नकल है।
क्रि० प्र०—उतारना।—बनाना।
४ किसी की रहन-सहन, वेश-भूषा, हाव-भाव आदि का ज्यो का त्यो किया जानेवाला अभिनयात्मक अनुकरण जो उसे उपहासास्पद सिद्ध करने अथवा लोगो का मनोरजन करने के लिए किया जाय। स्वाँग। जैसे—अफीमची की नकल, गुडे-बदमाशो की नकल।

क्रि॰ प्र॰—उतारना।

५ किसी प्रकार की विलक्षण और हास्यास्पद कृति, रूप-रग, व्यवहार आदि। जैसे—जब देखो तब आप एक नई नकल बनाकर आ पहुँचते हैं। ६ हास्यरस का कोई छोटा अभिनय, कथा, कहानी, चुटकुला आदि। ७. किसी प्रकार के अकन, चित्र, लेख, लेख्य, साहित्यिक कृति आदि की ज्यो की त्यो की हुई प्रतिलिपि। जैसे—इस पत्र की एक नकल अपने पास रख लो।

विशेष—नकल में मुख्य भाव यही होता है कि इसमे नवीनता, मौलिकता, वास्तविकता, सजीवता आदि का अभाव है। केवल बाहरी रूप-रग किसी के अनुकरण पर या उसे देखकर बनाया गया होता है।

नकलची—वि॰ [हिं॰ नकल+ची (प्रत्य॰)] १. जो तुच्छतापूर्वक दूसरो का अनुकरण करता हो। नकल करनेवाला। २ (वह विद्यार्थी) जो अपने सहपाठी की पुस्तिका मे लिखे हुए लेख आदि की नकल करता हो।

नकल-नवीस—पु॰ [अ॰ नकल+फा॰ नवीस] [भाव॰ नकलनवीसी] कार्यालय आदि का वह लिपिक जो दस्तावेजो आदि की नकल तैयार करता हो।

नकलनोर—पु॰ [?] मुनिया (चिडिया)।

नकलपरवाना—पु॰ [अ॰ +फा॰] पत्नी का भाई। साला।

विशेष—इस पद का प्रयोग केवल परिहास और व्यग्य के रूप मे यह सूचित करने के लिए होता है, कि अमुक की पत्नी का जो रूप-रग है, उसी की अनुकृति का परिचायक या सूचक उसका भाई है।

नकल बही—स्त्री॰ [हिं॰] १ वह बही जिसमे भेजे जानेवाले पत्रो की नकल या प्रतिलिपि रखी जाती थी। २ वह पजिका या फाइल जिसमे पत्रो की प्रतियाँ रखी जाती हैं।

नकली—वि॰ [अ॰ नक्ली] १ जो किसी की नकल भर हो। किसी के अनुकरण पर बना हुआ। २ उक्त के आधार पर जो मौलिक न हो। कृत्रिम। ३ (पदार्थ) जो महत्त्व, मान, मूल्य आदि के विचार से घटकर हो और प्राय दूसरो को धोखा देने के उद्देश्य से बनाया गया हो। ४ काल्पनिक। ५ झूठ। मिथ्या।

नकलोल—वि॰ [हिं॰ नाक+लोल (प्रत्य॰)] १. (ऐसा व्यक्ति) जिसकी जिधर चाहे नाक घुमाई जा सके। २ निर्बुद्धि। मूर्ख। पुं॰=नकलनोर।

नकवा†— पु॰ [हिं॰ नाक ?] नया निकला हुआ अकुर। कल्ला। पुं॰ १.=नाक। २ नाका (तराजू, सूई आदि का छेद)।

नकश—पु॰ १ दे॰ 'नक्श'। २ दे॰ 'नकश-मार'।

नकश-मार—स्त्री॰ [अ॰ नक्श+हिं॰ मारना] ताश के पत्तो का एक प्रकार का खेल जिसकी गिनती जूए मे होती है।

नकशा—पु॰ [अ॰ नक्श] १ रेखाओ आदि के द्वारा किसी वस्तु की अकित की हुई वह आकृति या प्रतिकृति जो उस वस्तु के स्वरूप का सामान्य परिचय कराती हो।

क्रि॰ प्र॰—उतारना।—खींचना।—बनाना।

मुहा॰—(किसी चीज या बात का) **नकशा खींचना** ऐसा यथातथ्य और सविस्तार वर्णन करना कि सारा रूप या स्थिति स्पष्ट हो जाय।

२ किसी आकृति, वस्तु आदि का परिचय या बोध करानेवाले चिह्न, रेखाएँ आदि जो उसके उतार-चढ़ाव, स्वरूप आदि का ज्ञान कराती हो। आकृति या ढाँचा। रूप-रेखा। जैसे—तोड़-फोड और नई बस्तियों से तो सारे शहर का नकशा ही बदल गया है।

पद—नाक-नकशा—किसी व्यक्ति के चेहरे की गठन। जैसे—भले ही उनका रूप साँवला हो, पर नाक-नकशा बहुत अच्छा है, अर्थात् रूप देखने मे सुन्दर है।

३ पृथ्वी अथवा उसके किसी विशिष्ट अश और उस पर स्थित मुख्य-मुख्य वस्तुओ आदि का परचायक चित्र। मानचित्र। (मैप)

क्रि॰ प्र॰—खीचना।—बनाना।

विशेष—(क) ऐसे नकशो मे जलाशय, नगर, नदियाँ, पहाड़, अनेक प्रकार के विभाजन (जैसे—खेती, जमीन, बाग, सडकें आदि) सभी मुख्य बातें अकित होती हैं। (ख) नकशे किसी जिले, तहसील, नगर, बस्ती, भवन आदि के भी बनते हैं। (ग) किसी देश के भिन्न-भिन्न भागो की आबादी, पैदावार, वर्षा-मान आदि के भी सूचक नकशे बनते है। (घ) पृथ्वी के सिवा समूचे आकाश या उसके किसी अश के भी ऐसे नकशे बनते हैं, जिनमे भिन्न-भिन्न ग्रहो, तारो, नक्षत्रो आदि की स्थितियाँ दिखाई जाती है।

४ कोई ऐसा अकन जो किसी प्रकार की स्थिति बतलाने या स्पष्ट करने मे सहायक होता हो। जैसे—शतरज के अच्छे खिलाडी शतरज के ऐसे नये-नये नकशे बनाकर लोगो के सामने रखते हैं कि उनकी शर्तों के अनुसार चलकर विपक्षी को मात करना बहुत ही कठिन होता है।

विशेष—ऐसे नकशो मे दोनो पक्षो के भिन्न-भिन्न मोहरे कुछ विशिष्ट घरो मे रखे हुए दिखाए जाते हैं।

५ किसी चीज का आकार-प्रकार, रूप-रेखा आदि बतलानेवाला वह रेखा-चित्र जो वह चीज बनाने से पहले यह सूचित करने के लिए बनाया जाता है कि बनकर तैयार होने पर वह चीज कैसी होगी अथवा उसका रूप क्या होगा। जैसे—(क) जब तक कारखाने (या मकान) का नकशा अधिकारी मजूर न कर लें, तब तक कारखाना (या मकान) बनाने का काम शुरू नही हो सकता। (ख) अच्छे कारीगर कोई चीज बनाने से पहले उसका नकशा तैयार करते हैं। ६ कोई ऐसी आकृति या क्रिया, घटना या स्थिति जिसका स्वरूप प्रत्यक्ष और स्पष्ट दिखाई देता हो। जैसे—उस दिन के जलसे का नकशा अभी तक हमारी आँखो के सामने है।

मुहा॰—**नकशा जमाना**=ऐसे अच्छे ढग से कोई काम कर दिखाना कि सब लोग उससे प्रभावित और मुग्ध होकर उसकी प्रशंसा करने लगें। जैसे—उस सगीत सम्मेलन मे कई गवैयो ने अच्छा नकशा जमाया था।

७ किसी व्यक्ति के आचार-व्यवहार, चाल-चलन, रहन-सहन आदि का बाह्य रूप जो उसकी प्रवृत्ति, मनोवृत्ति, स्थिति आदि के सिवा उसके भविष्य का भी परिचायक होता है। जैसे—(क) आज-कल इस लडके का नकशा अच्छा नहीं दिखाई देता। (ख) अब तो धीरे-धीरे आपके भाई साहब का नकशा भी बदलने लगा है। ८. दे॰ 'सारिणी'।

नकशानवीस—पु० [अ० नक्श+नवीस] वह व्यक्ति जो चीजो (देशो, घरो, कारखानो) आदि के नकशे बनाता हो।

नकशी—वि० [अ० नक्शी] जिस पर नक्श अर्थात् बेल-बूटे अकित हो अथवा खुदे या बने हो।

नकशीदार—वि०=नकशी।

नकशीमैना—स्त्री० [अ०+हिं०] तेलिया नामक मैना।

नकस—पु०=नकशा।

नकसमार—स्त्री०=नकश-मार।

नकसा—पुं०=नकशा।

नकसीर—स्त्री० [हिं० नाक+स० क्षीर=जल] १. एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमे गरमी आदि के कारण नाक मे से खून बहता है। २ उक्त रोग के कारण नाक मे से बहनेवाला खून।

क्रि० प्र०—फूटना।—बहना।

नका†*—पु०=निकाह (विवाह)। उदा०—घण पड़ियाँ सांकडिया घड़ियाँ ना धीहड़ियाँ पळी नका।—दुरसाजी।

नकाना—अ० [हिं० नाक] नाक मे दम होना। बहुत परेशान होना।

स० नाक मे दम करना। तग या परेशान करना।

† स०=नकियाना।

नकाब—स्त्री० [अ० निकाब] १ अपने को छिपाये रखने के लिए चेहरे पर डाला जानेवाला जालीदार रगीन कपड़ा। मुखावरण।

क्रि० प्र०—उठाना।—डालना।

विशेष—इसका प्रयोग प्राय स्त्रियाँ अपना रूप दूसरो की दृष्टि मे पड़ने से बचाने के लिए और चोर, डाकू आदि अपनी आकृति छिपाये रखने के लिए करते हैं।

२. स्त्रियो की साड़ी या चादर का वह भाग जिससे उनका मुख ढका रहता है। घूंघट।

मुहा०—नकाब उलटना=नकाब ऊपर उठाकर इस प्रकार पीछे उलटना या हटाना कि लोग आकृति देख सकें।

३. लोहे की वह जाली जो खिलम मे नाक की रक्षा के लिए लगी रहती है।

नकाबपोश—वि० [अ० निकाब+फा० पोश] (व्यक्ति) जिसने अपने चेहरे पर नकाब अर्थात् जालीदार कपड़ा डाल रखा हो।

नकार—पु० [स० न+कार] १. 'न' अक्षर या वर्ण। २ न या नही का बोधक शब्द या वाक्य।

स्त्री० [हिं० नकारना] किसी काम या बात के लिए नही करने या कहने की क्रिया या भाव। इन्कार।

नकारची—पु०=नक्कारची।

नकारना—अ० [हिं० न+कारना (प्रत्य०)] १. असहमति प्रकट करते हुए 'न' या 'नहीं' कहना। २. न मानना। अस्वीकृत करना।

नकारा—वि० [फा० नाकारः] [स्त्री० नकारी] १. जिसे कोई काम न हो। निष्कर्म। २. जो किसी काम का न हो। निकम्मा। ३ खराब। निष्प्रयोजन। व्यर्थ। ४. खराब। बुरा।

† पु०=नक्कारा।

नकारात्मक—वि० [स० नकार-आत्मन्, ब० स०, कप्] १. (उत्तर या कथन) जिसमे कोई बात न मानी गई हो या कुछ करने से इन्कार किया गया हो। 'सकारात्मक' का विपर्याय। २ दे० 'नहिक'।

नकाश—पु०=नक्काश।

नकाशना—स० [अ० नक्श] किसी चीज पर नक्श करना या बनाना अर्थात् उस पर बेल-बूटे आदि खोदकर अंकित करना या उकेरना। नक्काशी करना।

नकाशी—स्त्री०=नक्काशी।

नकाशीदार—वि०=नकशी।

नकास—पु० १.=नक्काश। २.=नखास।

नकासना—स०=नकाशना।

†स०=निकासना (निकालना)।

नकासी—स्त्री०=नक्काशी।

†स्त्री०=निकासी।

नकासीदार—वि० दे० 'नकशी'।

न-किंचन—वि० [स० सहसुपा समास]=अकिंचन।

नकियाना—अ० [हिं० नाक] १ नाक से कुछ श्वास निकालते हुए शब्दो का इस प्रकार उच्चारण करना या बोलना कि मात्राएँ, वर्ण, आदि अनुनासिक से जान पड़ें। २. नाक में दम होना। बहुत ही तग या परेशान होना।

स० किसी की नाक मे दम करना। बहुत ही तग या परेशान करना।

नकीब—पु० [अ० नक्कीब] १. प्राचीन काल मे राजा-महाराजा की सवारी के आगे-आगे चलनेवाला और उनके आगमन की उच्च स्वर मे घोषणा करनेवाला चोबदार। २. भाट। चारण। ३. कड़खा गानेवाला व्यक्ति। कड़खैत।

नकुच—पु० [?] मदार (पेड़)।

†पु०=लकुच (वृक्ष और फल)।

नकुट—पु० [स० न√कुट् (कुटिल होना)+क] =नाक।

नकुड़ा—पु० [स० नकुल] नेवला (जन्तु)।

पु० [हिं० नाक] १. नाक विशेषतः उसका अग्र भाग। २. नथना।

नकुल—पु० [स० ब० स०] १. नेवला। २. माद्री के गर्भ से उत्पन्न युधिष्ठिर, अर्जुन, और भीम के सौतेले भाई। ३ पुत्र। बेटा। ४. शिव। ५. एक प्रकार का पुराना बाजा।

†पु०=दे० 'नुकल।'

नकुल-कंद—पु० [मध्य० स०] गधनाकुली या रास्ना (कद)।

नकुलक—पु० [स० नकुल+कन्] १. प्राचीन काल का एक प्रकार का गहना। २ रुपए आदि रखने की एक प्रकार की थैली।

नकुल-तैल—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे, एक प्रकार का तैल जो नेवले के मांस में बहुत सी दूसरी औषधियाँ मिलाकर बनाया जाता है। इसका उपयोग आमवात, अगो का कप और कमर, पीठ, जाँघ आदि के दर्द मे होता है।

नकुलांध—पु० [नकुल-अध, उपमित स०] सुश्रुत के अनुसार आँख का एक रोग जिसमे आँखें नेवले की आँखो की तरह चमकने लगती हैं और चीजें रग-बिरगी दिखाई देने लगती हैं।

वि० जिसे उक्त प्रकार का रोग हो।

नकुलांधता—स्त्री० [सं० नकुलांध+तल्—टाप्] नकुलांध रोग होने की अवस्था या भाव।

नकुला—स्त्री० [सं० नकुल+टाप्] पार्वती।
वि० सं० 'नकुल' का स्त्री०।
†पुं०=नाक।

नकुलाढ्या—स्त्री० [सं० नकुल-आढ्या, तृ० त०] गंधनाकुली। नकुलकंद।

नकुली—स्त्री० [सं० नकुल+ङीष्] १ जटामासी। २ केसर। ३ शंखिनी। ४ नेवले की मादा।

नकुलीश—पुं० [सं०] नकुलेश।

नकुलेश—पुं० [सं०] तांत्रिकों के एक भैरव का नाम।

नकुलेष्टा—स्त्री० [सं० नकुल-इष्टा, ष० त०] रास्ना। रायसन।

नकुलौष्ठी—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा, जिसमे बजाने के लिए तार लगे हुए होते थे।

नकुवा—पुं० १ नाक। २.=नाका।

नकेल—स्त्री० [हिं० नाक+एल (प्रत्य०)] १ ऊँट, बैल आदि के नथने मे से आर-पार निकाली हुई वह रस्सी जो लगाम का काम देती है, और जिसके सहारे वह चलाया जाता है। मुहार। २ किसी को अपने अधिकार या वश मे रखने की युक्ति या शक्ति।
मुहा०—(किसी की) **नकेल हाथ में होना**=किसी पर सब प्रकार का अधिकार होना। किसी से बलपूर्वक मनमाना काम करा लेने की शक्ति होना। जैसे—उनकी नकेल तो हमारे हाथ मे है।

नक्कना†—स०[सं० लंघन] लाँघना।

नक्कल†—पुं० [अ० नुक्ल=गजक] जल-पान।

नक्का—पुं० [हिं० नाक] १ सूई का वह छेद जिसमे डोरा डाला जाता है। २ कौडी। ३ दे० 'नाका'। ४ दे० 'नक्कीमूठ'।

नक्कादूआ—पुं०=नक्कीमूठ।

नक्कार—पुं० नकारा।

नक्कारखाना—पुं० [अ० नक्कार+फा० खान] वह स्थान जहाँ नक्कारा या नौबत बजती है। नौबतखाना।
पद—**नक्कारखाने मे तूती की आवाज**=(क) बहुत भीड-भाड या शोर-गुल मे कही गई कोई सामान्य-सी बात जो सुनाई नही पडती। (ख) बडे-बडे लोगो के सामने छोटे आदमियो की बात।

नक्कारची—पुं० [अ० नक्कार+फा० ची (प्रत्य०)] नगाडा बजानेवाला। वह जो नक्कारा बजाता हो।

नक्कारा—पुं० [अ० नक्कार] नगाडा नाम का बाजा। (दे० 'नगाडा')

नक्काल—पुं० [अ०] १ वह जो केवल नकल या अनुकरण करता हो अथवा जिसने किसी की नकल या अनुकरण मात्र किया हो। २. वह जो केवल दूसरो का मनोरंजन करने अथवा दूसरो को उपहासास्पद सिद्ध करने के लिए तरह-तरह की नकलें करता हो। जैसे—बहुरूपिये, भाँड आदि।

नक्काली—स्त्री० [अ०] १ नकल या अनुकरण करने की क्रिया या भाव। २. दूसरो की नकल उतारने की कला या विद्या। ३ भाँडपन।

नक्काश—पुं० [अ०] नक्काशी का काम करनेवाला कारीगर। वह जो धातुओं आदि पर खोदकर बेल-बूटे बनाता हो।

नक्काशी—स्त्री० [अ०] १ धातु, पत्थर, लकड़ी आदि पर खोदकर बेल-बूटे आदि बनाने का काम या कला। २. उक्त प्रकार से बनाये हुए बेल-बूटे आदि।

नक्की—स्त्री० [हिं० नक्का=कौडी या एक?] १ जूए के खेल मे वह दाँव जिसके लिए 'एक' का चिह्न नियत हो अथवा जिसकी जीत किसी प्रकार के 'एक' चिह्न से सबद्ध हो। २ दे० 'नक्की-मूठ'।
स्त्री० [हिं० नाक] मनुष्य के गले से होनेवाला ऐसा उच्चारण जिसमे श्वास का कुछ अश नाक से भी निकलता हो और जिसका उच्चारण अनुनासिक-सा होता है। जैसे—यह लडका इतना बडा हो गया, पर अभी तक नक्की बोलता है।
क्रि० प्र०—बोलना।
वि० [हिं० एक?] १. (काम) जो हर तरह से ठीक और पूरा हो चुका हो। २ (बात) जिसका दृढ निश्चय हो चुका हो। ३. (ऋण या देन) जो अदा या चुकता हो गया हो। जैसे—किसी का हिसाब नक्की करना।

नक्कीपूर—पुं० =नक्कीमूठ।

नक्कीमूठ—स्त्री० [हिं०] जूए का एक प्रकार का खेल जो प्राय स्त्रियाँ और बालक कौडियो से खेलते है। इसमे एक दूसरे को काटती हुई दो सीधी लकीरे खीची जाती हैं। एक खिलाडी अपनी मुट्ठी मे कुछ कौडियाँ लेकर अपने दाँव पर रख देता है। तब बाकी खिलाडी अपने अपने दाँव पर कौडियाँ लगाकर हार-जीत करते हैं।

नक्कू—वि० [हिं० नाक] १ बडी नाकवाला। जिसकी नाक बडी हो। २ अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित या औरो से बढ़कर समझनेवाला। ३ जिसका कोई आचरण या कृत्य औरो से बिलकुल भिन्न और असाधारण हो, और इसी लिए जिसकी ओर लोग उपेक्षापूर्वक उँगलियाँ उठाते हो। जैसे—हम तुम्हारी सलाह मानकर नक्कू नही बनना चाहते।

नक्खत्र*—पुं०=नक्षत्र।

नक्तंदिन, नक्तंदिव—अव्य० [सं० नक्तम्-दिन, द्व० स०, नक्तम्दिवा, द्व० स०] रात-दिन।

नक्त—वि० [सं०√नज् (लजाना)+क्त] जो शरमा गया हो। लज्जित।
पुं० [सं०] १ वह समय जब दिन का केवल एक मुहूर्त बाकी रह गया हो। बिलकुल सध्या का समय। २ रात। रात्रि। ३ शिव। ४ राजा पृथु के एक पुत्र का नाम। ५ दे० 'नक्त व्रत'।
स्त्री० रात।

नक्तक—पुं० [सं० नक्त+कन्] फटा-पुराना और मैला कपडा।

नक्तचर—वि० [सं० नक्त√चर् (गति)+ट] १ रात को घूमने, चलने या विचरण करनेवाला।
पुं० १ शिव। २ राक्षस। ३ उल्लू। ४. बिल्ली।

नक्तचारी (रिन्)—वि०, पुं० [सं० नक्त√चर्+णिनि]=नक्तचर।

नक्तमाल—पुं० [सं० नक्तम्-आ√अल् (पर्याप्ति)+अच्] करंज वृक्ष। कजे का पेड।

नक्त-मुखा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] रात।

नक्त-व्रत—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का व्रत जो अगहन के शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा को किया जाता है। इसमे दिन के समय बिलकुल

भोजन नही करते केवल रात को तारे देखकर और विष्णु की पूजा करके भोजन करते हैं।

नक्तांध—वि० [स० नक्त-अंध, स० त०] जिसे रात को न दिखाई देता हो। जिसे रतौंधी हो।

पु०=नक्तांध्य।

नक्तांधता—स्त्री० [स० नक्तांध+तल्—टाप्]=नक्तांध्य।

नक्तांध्य—पु० [स० नक्त-अंध्य, स० त०] आँख का रतौंधी नामक रोग।

नक्ता—स्त्री० [स० नक्त+टाप्] १ कलियारी नामक विषैला पौधा। २ हलदी। ३. रात। रात्रि।

नक्ताह—पु० [स०] करंज वृक्ष। कंजा।

नक्ति—स्त्री० [स०√नज्+क्तिन्] रात।

नक्द—वि०, पु०=नगद।

नक्दी—स्त्री० दे० 'नगदी'।

नक्र—पु० [स०न√क्रम् (गति)+ड] १ नाक नामक जल-जन्तु। मगर। २ कुंभीर या घडियाल नामक जल-जतु।

नक्र-राज—पु० [ष० त०] १ घडियाल। २ मगर (जलजतु)।

नक्रा—स्त्री० [स० नक्र+टाप्] नाक।

नक्ल—स्त्री०=नकल।

विशेष—'नक्ल' के यौ० पदो के लिए दे० 'नकल' के यौ० पद।

नक्श—वि० [अ० नक्श] जिम पर नक्काशी का काम हुआ हो।

पु० १ वे चिह्न, बेल-बूटे आदि जो पत्थर, लकडी आदि पर खोदकर बनाये गये हो। २ छाप या मोहर जिस पर कोई अक, चित्र, नाम आदि खुदा रहता है। ३ विभिन्न शारीरिक अगो मुख्यत चेहरे की सामूहिक गठन और उनसे अभिव्यक्त होनेवाला सौदर्य। जैसे—लडकी का रग तो साँवला है परन्तु नक्श ठीक है। ४. कागज, भोज-पत्र आदि पर सारिणी या कोष्ठक के रूप मे लिखा हुआ एक तरह का यत्र।

विशेष—यह अनेक रोगो का नाशक माना जाता है और इसे बाँह पर या गले मे पहना जाता है।

५ जादू। टोना। ६ एक तरह के गीत। ७ 'ताश' मे खेला जानेवाला एक तरह का खेल। नक्श-मार।

नक्श-निगार—पु० [अ० नक्श+फा० निगार] खोदकर बनाया हुआ चित्र या बेल-बूटा।

नक्शमार—पु०=नकशमार।

नक्शा—पु०=नकशा।

नक्शानवीस—पु०=नकशानवीस।

नक्शानवीसी—स्त्री०=नकशानवीसी।

नक्शी—वि०=नकशी।

नक्षत्र—वि० [स०√नक्ष् (गति)+अत्रन्] जो क्षत न हो।

पु० १ रात के समय आकाश मे दिखाई पडनेवाले सभी चमकते हुए पिंड या तारे, अथवा उनमे मे प्रत्येक तारा या सितारा। २ विशिष्ट रूप से, वे २७ तारक-पुंज जो पृथ्वी की परिक्रमा करते समय चद्रमा के भ्रमण-मार्ग मे पड़ते हैं, और जिनके रूप-रेखाओ के आधार पर कुछ विशिष्ट आकृतियाँ मानकर ये सत्ताइस नाम रखे गये हैं।—अश्विनी, भरणी, कृत्तिका, रोहिणी, मृगशिरा, आर्द्रा, पुनर्वसु, पुष्य, अश्लेषा, मघा, पूर्वा-फाल्गुनी, उत्तरा-फाल्गुनी, हस्त, चित्रा, स्वाती, विशाखा, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढा, उत्तराषाढा, श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वभाद्रपद, उत्तर भाद्रपद और रेवती।

विशेष—आधुनिक ज्योतिषियो का मत है कि इन २७ तारकपुंजो मे सब मिलाकर लगभग सवा दो सौ तारे है जो वास्तव मे हैं तो बहुत बडे-बडे, परन्तु वे हमारे सौर जगत् से बहुत दूर पर स्थिति होने के कारण हमे बहुत ही छोटे तारो के रूप मे और बिलकुल स्थिर दिखाई देते हैं। इन्ही नक्षत्रो मे से कुछ नक्षत्रो के नाम पर हमारे यहाँ के १२ महीनो के नाम रखे गए हैं। पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा जिस नक्षत्र पर रहता है, उसी नक्षत्र के नाम पर उस महीने का नाम रखा गया है। यथा—महीने का चैत्र नाम इसलिए पडा है कि उसकी पूर्णिमा को चन्द्रमा प्राय चित्रा नक्षत्र पर रहता है। इसी प्रकार पूर्णिमा के दिन उसके विशाखा, ज्येष्ठा आदि नक्षत्रो पर रहने के कारण वैशाख, ज्येष्ठ आदि नाम पडे हैं। नक्षत्रो के सबध मे ध्यान रखने की एक बात और है। जिन उक्त तारो के बीच से होकर चद्रमा परिक्रमा करता हुआ दिखाई देता है, उन्ही में से होकर चलता हुआ सूर्य भी दिखाई देता है। सूर्य का भ्रमणमार्ग जिन १२ राशियो मे विभक्त है, वे भी वस्तुत उक्त तारो के ही वर्गीकरण है। अन्तर यही है कि नक्षत्र उन तारो के अपेक्षया छोटे वर्ग है, और राशियाँ उनके बडे वर्गों के रूप मे है, इसी-लिए राशियो मे दो-दो, तीन-तीन नक्षत्र आ जाते हैं।

३ सत्ताइस मोतियो की माला। ४ मोती।

नक्षत्र-कल्प—पु० [ष० त०] अथर्ववेद का एक परिशिष्ट जिसमे चद्रमा की स्थिति आदि का वर्णन है।

नक्षत्र-कांति-विस्तार—पु० [स० नक्षत्र-कांति, ष० त०, नक्षत्रकांति-विस्तार, ब० स०] सफेद ज्वार।

नक्षत्र-गण—पु० [ष० त०] कुछ विशिष्ट नक्षत्रो के अलग-अलग समूह या गण। (फलित ज्योतिष)

नक्षत्र-चक्र—पु० [ष० त०] १ सत्ताइस नक्षत्रो का वह चक्र जिसमे से होकर चन्द्रमा २७-२८ दिनो मे पृथ्वी की परिक्रमा करता है। २ राशिचक्र। ३ तात्रिको का एक प्रकार का चक्र जिसके अनुसार दीक्षा के समय नक्षत्रो आदि के विचार से गुरु यह निश्चय करता है कि शिष्य को कौन सा मत्र दिया जाय।

नक्षत्र-चिंतामणि—पु० [उपमि० स० ?] एक प्रकार का कल्पित रत्न जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि उससे माँगी हुई चीजे प्राप्त हो जाती हैं।

नक्षत्र-दर्श—पु० [स० नक्षत्र√दृश् (देखना)+अण्] १ वह जो नक्षत्र देखता हो। २ ज्योतिषी।

नक्षत्र-दान—पु० [स० त०] पुराणानुसार भिन्न-भिन्न नक्षत्रो के उद्देश्य से किया जानेवाला भिन्न-भिन्न पदार्थों का दान।

नक्षत्र-नाथ—पु० [ष० त०] चन्द्रमा।

नक्षत्र-पति—पु० [ष० त०] चद्रमा।

नक्षत्र-पत्र—पु० [स० नक्षत्र√पा (रक्षा)+क] चन्द्रमा।

नक्षत्र-पथ—पु० [ष० त०] नक्षत्रो के चलने का मार्ग।

नक्षत्र-पद-योग—पु० [ष० त० ?] जन्मकुडली का वह योग जब सूर्य जन्म राशि से छठे स्थान पर या मेष राशि मे होता है और चद्रमा वृष राशि मे।

नक्षत्र-पुरुष—पु० [सुप्सुपा स०] विभिन्न नक्षत्रो को विभिन्न शारीरिक अगो के रूप में मानकर उनके आधार पर बननेवाला कल्पित पुरुष।

नक्षत्र-माला—स्त्री० [मध्य० स०] वह हार जिसमे सत्ताइस मोती हों।

नक्षत्र-याजक—पु० [ष०त०] ग्रहों और नक्षत्रों आदि के दोषों की मत्र-जाप आदि की सहायता से शाति करानेवाला ब्राह्मण।

नक्षत्र-योग—पु० [ष० त०] नक्षत्र के साथ ग्रहों का योग।

नक्षत्र-योनि—स्त्री० [ष० त०] वह नक्षत्र जो विवाह के लिए निषिद्ध हो।

नक्षत्र-राज—पु० [ष० त०] नक्षत्रों के स्वामी, चद्रमा।

नक्षत्र-लोक—पु० [ष० त०] १ सितारों की दुनिया। २ पुराणानुसार एक लोक जो चद्रलोक से ऊपर स्थित माना गया है।

नक्षत्र-वीथि—स्त्री० [ष० त०] नक्षत्रों मे गति के अनुसार तीन-तीन नक्षत्रों के बीच का कल्पित मार्ग।

नक्षत्र-वृष्टि—स्त्री० [ष० त०] तारे का टूटना। उल्कापात।

नक्षत्र-व्यूह—पु० [ष० त०] फलित ज्योतिष मे वह चक्र जिसमे यह दिखलाया जाता है किन-किन पदार्थों, जातियों आदि का कौन-कौन नक्षत्र स्वामी है।

नक्षत्र-व्रत—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार किसी विशिष्ट नक्षत्र के उद्देश्य से किया जानेवाला ऐसा व्रत जिसमे उसके स्वामी की आराधना की जाती है।

नक्षत्र-शूल—पु० [उपमि० स०] कुछ विशिष्ट नक्षत्रों का किसी विशिष्ट दिशा मे रहने का ऐसा काल या समय जिसमे यात्रा आदि निषिद्ध हो।

नक्षत्र-सधि—स्त्री० [ष० त०] ग्रहों का नक्षत्र के पूर्व पक्ष से उत्तर पक्ष मे प्रविष्ट होने की सधि या समय।

नक्षत्र-सत्र—पु० [मध्य० स०] वह यज्ञ जो नक्षत्रों के उद्देश्य से विशेषत दुष्ट ग्रहों की शाति के लिए किया जाय।

नक्षत्र-साधन—पु० [ष० त०] किसी नक्षत्र मे किसी ग्रह के रहने का समय जानने के लिए की जानेवाली गणना।

नक्षत्र-सूचक—पु० [ष० त०] ऐसा व्यक्ति जो बिना शास्त्रों का अध्ययन किये ही ज्योतिषी बन बैठा हो।

नक्षत्र-सूची (चिन्)—पु० [स० नक्षत्र√सूच् (बताना)+णिनि]=नक्षत्र-सूचक।

नक्षत्रामृत—पु० [नक्षत्र-अमृत, स० त०] किसी विशिष्ट दिन मे किसी विशिष्ट नक्षत्र का होनेवाला उत्तम योग जो यात्रा आदि के लिए शुभ माना जाता है।

नक्षत्रिय—वि० [स० नक्षत्र+घ+इय] १ नक्षत्र-सबधी। २ सत्ताइस (नक्षत्रों की सख्या के आधार पर)।

नक्षत्री—वि० [स० नक्षत्र+हि० ई (प्रत्य०)] १ जिसकी जन्मकुडली मे अच्छे नक्षत्र हों। अच्छे नक्षत्रों मे जन्म लेनेवाला। २ बहुत बडा भाग्यवान।

पु० [स० नक्षत्रिन्] १ चद्रमा। २ विष्णु।

नक्षत्रेश—पु० [नक्षत्र-ईश, ष० त०] १ चद्रमा। २ कपूर।

नक्षत्रेश्वर—पु० [नक्षत्र-ईश्वर, ष० त०] नक्षत्रों का स्वामी, चद्रमा।

नक्षत्रेष्टि—पु० [नक्षत्र-इष्टि, मध्य० स०] नक्षत्रों की तुष्टि के निमित्त किया जानेवाला यज्ञ।

नख—पु० [स०√नह् (बधन)+ख, हलोप] १ हाथों तथा पैरों की उँगलियों के ऊपरी तल का वह सफेद अश जो अधिक कडा तथा तेज धार या तेज नोकवाला होता है। २ उक्त का वह चन्द्राकार अगला भाग जो कैंची आदि से काटकर अलग किया जाता है। ३. घोंघे या सीप की जाति के कीडों का वह मुखावरण जो नाखून के समान चन्द्राकार होता है। ४ खड। टुकडा।

स्त्री० [फा०] १ एक प्रकार का बटा हुआ महीन रेशमी तागा जिससे गुड्डी उडाते और कपडा सीते है। २ गुड्डी उडाने का डोरा या तागा जिस पर माँझा दिया होता है। डोर।

नख-कर्तनि—स्त्री० [ष० त०] नहरनी। (दे०)

नख-कुट्ट—वि० [स० नख√कुट्ट (काटना)+अण्] नाखून काटनेवाला।

पु० नाई। हज्जाम।

नख-क्षत—पु० [तृ० त०] १ वह क्षत या चिह्न जो शरीर मे नाखून गडने या उसकी खरोच लगने के कारण बना हो। २ शृंगारिक क्षेत्र मे स्त्री के शरीर पर का विशेषत स्तन आदि पर का वह चिह्न जो पुरुष के मर्दन आदि के कारण उसके नाखूनों से बन जाता है। और जो यह सूचित करता है कि पुरुष के साथ इसका सभोग हुआ है।

नखखादी (दिन्)—पु० [स० नख√खाद् (खाना)+णिनि] दाँतों से अपने नाखून काटनेवाला व्यक्ति (जो अभागा समझा जाता है)।

नखचारी (रिन्)—वि० [स० नख√चर् (गति)+णिनि] पजों के बल चलनेवाला (जीव या प्राणी)।

नखचीर—पु० [फा० नख्चिर] १ आखेट। शिकार। २ वह जगली जानवर जिसका शिकार किया गया हो। मारा हुआ शिकार।

नख-चोंटी—स्त्री० [स० नख=नाखून+चोटना=तोडना] हज्जामों का मोचना, जिससे बाल नोंचे या उखाडे जाते है।

नखच्छत†—पु०=नख-क्षत।

नख-छोलिया—पु० नख-क्षत।

नखजाह—पु० [स० नख+जाहच्] नाखून का सिरा।

नखत—पु०=नक्षत्र।

नखतर†—पु०=नक्षत्र।

नखतराज*—पु०=नक्षत्रराज (चद्रमा)।

नखतराय*—पु०=नक्षत्रराज (चन्द्रमा)।

नखता—पु० [देश०] एक प्रकार की चिडिया जो विभिन्न ऋतुओं मे विभिन्न स्थानों पर रहती है।

नखतेस*—पु०=नक्षत्रेश (चन्द्रमा)।

नख-दारण—पु० [ष० त०] नहरनी। (दे०)

नखना—स० [स० लघन] १ उल्लघन करना। लाँघना। २ पार उतरना या जाना। पारण।

अ० उल्लघन होना। लाँघा जाना।

स० [स० नाशन] नष्ट करना।

नखनिष्पाव—पु० [स० नख-निर्√पू (अनुकरण)+अण्] एक तरह की सेम का पौधा।

नख-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] बिच्छू नामक घास।

नख-पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्] पृक्का नामक गन्ध-द्रव्य।

नखपूर्विका—स्त्री० [स०] हरी सेम।

नखबान*—पु० [स० नख+वाण] नख। नाखून।

नखमुच—पु० [स० नख√मुच् (छोडना)+क] चिरौंजी (वृक्ष)।

नख-रंजनी—स्त्री० [ष० त०] नहरनी। (दे०)

नखर—पु० [सं० नख√रा (देना)+क] १ नख। नाखून। २ एक प्रकार का पुराना अस्त्र जिसका अगला भाग नाखूनों की तरह नुकीला होता था। ३ उक्त प्रकार की कोई पकड़नेवाली चीज। जैसे—चिमटी, सँड़सी आदि। ४ चीता, भालू, शेर आदि जन्तु।

नखरा—पु० [फा० नखर] १ खुशामद कराने की भावना। २ लाड़-प्यार आदि के कारण की जानेवाली ऐसी हठपूर्ण परन्तु सुकुमारतापूर्ण चेष्टा जिसमे किसी के आग्रह को न मानने या टालने का भाव निहित होता है।

विशेष—नखरा प्राय स्त्रियाँ दूसरों को रिझाने अथवा उन्हे अपना अभिमान दिखाने के लिए करती है।

क्रि० प्र०—करना।—दिखाना।—निकालना।—बघारना।

३ किसी का आग्रह टालने के लिए झूठ-मूठ की बनाकर कही जानेवाली बात।

नखरा-तिल्ला—पु० [फा०+हि०(अनु०)] नखरा और इसी तरह की दूसरी चेष्टाएँ जो झूठा बड़प्पन दिखाने, रिझाने आदि के लिए की जाती हैं।

नखरायुध—पु० [नखर-आयुध, ब० स०] १ शेर। २ चीता। ३ कुत्ता।

नखराह्व—पु० [नखराह्वा, ब० स०] कनेर।

नखरी—स्त्री० [स० नखर+अच्—ङीष्] नख नामक गध-द्रव्य।

नखरीला—वि० [फा० नखरा+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नखरीली] बहुत अधिक या हर काम मे नखरा दिखानेवाला।

नख-रेखा—स्त्री० [ष० त०] १ शरीर मे लगा हुआ नाखूनो का चिह्न जो साहित्य म सभोग का चिह्न माना जाता है। नखरोट। २ कश्यप ऋषि की एक पत्नी जो बादलो की माता थी।

नखरेबाज—वि० [फा०] [भाव० नखरेबाजी] प्राय नखरे दिखानेवाला। नखरीला।

नखरेबाजी—स्त्री० [फा०] नखरा करने या दिखाने की क्रिया या भाव।

नखरोट—स्त्री० [स० नख+हि० खरोट] शरीर पर होनेवाला वह घाव जो नाखून गड़ने से बना हो। नख क्षत।

नख-बिंदु—पु० [मध्य० स०] नाखून पर महावर, मेहदी आदि का बनाया हुआ चिह्न।

नख-विष—वि० [ब० स०] (जीव) जिसके नाखूनो मे विष हो। जैसे—कुत्ता, छिपकली, बदर आदि।

नख विष्किर—पु० [स० नख-वि√कृ+क, सुट्] ऐसे पशु-पक्षी जो अपना शिकार नाखून से फाड़कर खाते है। जैसे—शेर, बाज आदि।

नख-वृक्ष—पु० [उपमि० स०] नील का पेड़।

नख-शख—पु० [उपमि० स०] छोटा शख।

नख-शस्त्र—पु० [मध्य० स०] नहरनी।

नख-शिख—पु० [स०] पैर के नाखून से लेकर सिर के बालो तक के सब अग।

पद—**नख-शिख से**=सिर से पैर तक। ऊपर से नीचे तक। जैसे—वह *नख-शिख से दुरुस्त है।* **नख-शिख से ठीक या दुरुस्त**= आदि से अत तक सब अगो या बातो मे ठीक और दुरुस्त।

२. साहित्य मे वह कवित्वमय वर्णन जिसमे किसी के नख से शिख तक या नीचे से ऊपर तक के सब अगो का सौदर्य बतलाया गया हो। जैसे—किसी देवता या नायिका का नख-शिख।

नख-शूल—पु० [ष० त०] एक रोग जिसके फल-स्वरूप नाखूनो मे विकार होने के कारण कष्ट होता है।

नख-हरणी—स्त्री० [ष० त०]=नहरनी।

नखांक—पु० [नख-अक, ब० स०] १ व्याघ्र का नख। २. नख-क्षत।

नखांग—पु० [नख-अग, ब० स०] १. नख नामक गध-द्रव्य। २. नलिका या नली नामक गन्ध-द्रव्य।

नखाघात—पु० [नख-आघात, तृ० त०] नख-क्षत।

नखानखि—स्त्री० [नख-नख, ब० स०] ऐसा द्वन्द्व जिसमे विपक्षी पर नखो मे प्रहार किया जाय।

नखायुध—पु० [नख-आयुध, ब० स०] १ शेर। २. चीता। ३ कुत्ता।

नखारि—पु० [नख-अरि, ष० त०] शिव का एक अनुचर।

नखालि—पु० [स०] छोटा शख।

नखालु—पु० [स० नख+आलुच्] नील (वृक्ष)।

नखाशी (शिन्)—वि० [स० नख√अश् (खाना)+णिनि] जो नाखूनो की सहायता से खाता हो।

पु० उल्लू।

नखास—पु० [अ० नख्खास] १ वह बाजार जिसमे दासो, पशुओ आदि का क्रय-विक्रय होता हो। जैसे—घर घोडा नखास मोल। (कहा०) २ बाजार।

मुहा०—**कोई चीज नखास पर चढ़ाना या भेजना**=बेचने के लिए कोई चीज बाजार भेजना।

पद—**नखास की घोड़ी या नखासवाली**=बाजार मे बैठनेवाली स्त्री, अर्थात् कसबी।

नखित्र†—पु०=नक्षत्र।

नखिद्द†—वि० [स० निषिद्ध] १ निषेध किया हुआ। २ तुच्छ कोटि या प्रकार का। निकृष्ट।

नखियाना—स० [हि० नख] नख चुभाकर घाव करना।

नखी (खिन्)—पु० [स० नख+इनि] १ वह जानवर जो नाखूनो से किसी पदार्थ को चीर या फाड सकता हो। २ शेर। ३. चीता। ४ नख नामक गन्ध-द्रव्य।

नखेद*—पु०=निषेध।

नखोटना—स० [हि० नख] नाखून से खरोचना या नोचना।

नखोरा†—पु०= निमोना।

नख्खास—पु०=नखास।

नग—वि० [स० न√गम् (जाना)+ड] १ न गमन करनेवाला। न चलने-फिरनेवाला। २ अचल। स्थिर।

पु० १. पर्वत। पहाड। २ पेड़। वृक्ष। ३ साँप। ४. सूर्य।

पु० १ अ० नगीना का सक्षिप्त रूप। २. अदद या सख्या का सूचक एक शब्द। जैसे—चार नग गाँठे आई है।

नग-चाना—अ०, स०=नगिचाना।

नगज—वि० [स० नग√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो पहाड़ से उत्पन्न हो। जैसे—गेरू, शिलाजीत आदि।

पु० हाथी।

नगजा—स्त्री० [सं० नगज+टाप्] १ पार्वती। २ पाषाणभेदी लता। पखानभेद।

नगण—पु० [सं० ष० त०] तीन लघु अक्षरो का एक गण। (पिंगल) जैसे—कमर, परम, मदन।

विशेष—इस गण से छन्द का आरभ करना अशुभ माना गया है।

नगणा—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] मालकँगनी।

नगण्य—वि० [सं० अगण्य] १ जो गिनने या गिने जाने के योग्य न हो। जो किसी गिनती मे न हो। २ बहुत ही तुच्छ या हीन।

नगवंती—स्त्री० [सं०] विभीषण की स्त्री का नाम।

नगद—पु० [अ० नक्द] १ सोने-चाँदी का सिक्का। २. रुपया-पैसा। ३ सिक्को आदि के रूप मे होनेवाला खडा धन जो देन आदि के बदले मे तुरत चुकाया जाता हो। 'उधार' का विपर्याय।

वि० १ (रुपया) जो तैयार या सामने हो। २ जिसका मूल्य रुपए-पैसे आदि के रूप मे तुरन्त दिया या चुकाया जाय। ३ बढ़िया।

क्रि० वि० तुरत दिये हुए रुपए के बदले मे।

नगद-नारायण—पु० [हिं०+सं०] नगद रुपए।

नगदी—क्रि० वि० [हिं० नगद+ई (प्रत्य०)] नगद या सिक्के के रूप मे। (इन्कैश)

पु०, वि०=नगद।

नगधर—पु० [सं०] पर्वत धारण करनेवाले, श्रीकृष्ण। गिरिधर।

नगधरन†—पु०=नगधर।

नग-नंदिनी—स्त्री० [सं० ष० त०] हिमालय पर्वत की पुत्री, पार्वती।

नगन†—वि० -नग्न (नगा)।

पु०=नगण।

नग-नदी—स्त्री० [सं० मध्य० स०] पहाडी नदी (बरसाती नदी से भिन्न)।

नगना—स्त्री०= नग्ना।

नगनिका—स्त्री० [सं०] १ सकीर्ण राग का एक भेद। २ क्रीडा नामक वृत्त का दूसरा नाम जिसके प्रत्येक चरण मे एक यगण और एक गुरु होता है।

नगनी—स्त्री० [सं० नग्न] १ ऐसी छोटी लडकी जिसमे अभी यौवन का कोई लक्षण न दिखाई देता हो और इसी लिए जो अपने शरीर का ऊपरी भाग नगा रखकर घूम सकती हो। कन्या। लडकी। २ पुत्री। बेटी। ३ नगी स्त्री।

नगन्निका—स्त्री० -नगनिका।

नग-पति—पु० [सं० ष० त०] १ पर्वतो का राजा, हिमालय। २. शिव। ३ सुमेरु पर्वत। ४ चन्द्रमा।

नगपुग—पु० [सं० नागपाश] असमजस की या विकट स्थिति। अडस। उदा०—हाँ भले नगपुग-परे गठीबैं अब ए गढ़न महरि मुख जोए। —तुलसी।

नगफनी†—स्त्री०=नागफनी।

नगभिद्—पु० [सं० नग√भिद् (विदारण)+क्विप्] १ पखानभेद-लता। २ इन्द्र।

वि० [सं०] पत्थर तोडनेवाला।

नग-भू—वि० [सं० ब० स०] जो पहाड से उत्पन्न हुआ हो।

पु० १ पहाडी जमीन। २. पाषाण-भेदी लता। पखान-भेद।

नगमा—पु० [अ० नग्म] १ सुरीली आवाज। २ गाया जानेवाला किसी प्रकार का मनोहर और सुरीला गीत या राग-रागिनी।

नगर—पु० [सं० नग+र] १. मनुष्यो की वह बस्ती जो गाँवो, कस्बो आदि की तुलना मे बहुत बडी हो। शहर। २ उक्त बस्ती का कोई मुहल्ला जो एक स्वतत्र बस्ती के रूप मे हो। जैसे—कमलानगर, नेहरूनगर, राजेन्द्रनगर।

नगर-कीर्तन—पु० [सं० त०] नगर की गलियो, सडको आदि मे घूम-घूमकर किया जानेवाला सामूहिक कीर्तन।

नगर-कोट—पु० दे० 'परकोटा'।

नगरघात—पु० [सं० नगर√हन् (नष्ट करना)+अण्] हाथी।

नगरतीर्थ—पु० [सं०] गुजरात प्रदेश मे स्थित एक प्राचीन तीर्थ जहाँ किसी समय शिव का निवास माना जाता था।

नगर-नायिका—स्त्री० [मध्य० स०] वेश्या। रडी।

नगर-नारी—स्त्री० [मध्य० स०] रडी। वेश्या।

नगर-निगम—पु० [ष० त०] दे० 'नगर-महापालिका'।

नगरपाल—पु० [सं० नगर√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] १ प्राचीन भारत मे वह अधिकारी जिसका कर्तव्य नगर की शांति और सुरक्षा की देख-रेख करना होता था। २ आधुनिक भारत मे किसी नगर की नगरपालिका का चुना हुआ सदस्य।

नगर-पालिका—स्त्री० [सं०] आधुनिक नगर व्यवस्था मे नगर निवासियो के निर्वाचित प्रतिनिधियो की वह सस्था जो सारे नगर के यातायात, स्वास्थ्य, जल, नल, रोशनी आदि का प्रबन्ध करने के लिए बनाई जाती है। (म्यूनिस्पैलिटी)

नगर-पिता (तृ)—पु० -नगर-प्रमुख।

नगर-प्रमुख—पु० [ष० त०] नगरपालिका या नगर-महापालिका का प्रधान प्रशासनिक अधिकारी। (मेयर)

नगरमर्दी (र्दिन्)—पु० [सं० नगर√मृद् (कुचलना)+णिच्+णिनि] मतवाला हाथी।

नगर-महापालिका—स्त्री० [सं०] किसी बडे नगर की स्वायत्त सस्था जिसे नगरपालिका की अपेक्षा कुछ अधिक अधिकार प्राप्त होते है। (कारपोरेशन)

नगर-मार्ग—पु० [ष० त०] नगर का सबसे बडा तथा चौडा बाजार।

नगर-मुस्ता—स्त्री० [सं०] नागरमोथा।

नगरवा—पु० [?] ईख की एक प्रकार की बोआई जो मध्यप्रदेश के उन प्रान्तो मे होती है जहाँ की मिट्टी काली या करैली होती है। इसमे खेतो को सीचने की आवश्यकता नही होती, बल्कि बरसात के बाद जब ईख के अकुर फूटते है तब जमीन पर इसलिए पत्तियाँ बिछा देते हैं कि उसका पानी सूख न जाय। पलवार।

नगरवासी (सिन्)—पु० [सं० नगर√वस् (बसना)+णिनि] १. नगर या शहर मे रहनेवाला। पुरवासी। २ नागरिक।

नगर-विवाद—पु० [सं० त०] घर-गृहस्थी और ससार के झगडे-बखेडे।

नगर-वृद्ध—पु० [सं० त०] आधुनिक भारत मे किसी नगरमहापालिका या नगरनिगम का वह अधिकारी जिसका दरजा नगर-प्रमुख से कुछ छोटा और उसके चुने हुए सदस्यो से कुछ बडा होता है। (एल्डरमैन)

नगर-सन्निवेश—पु० [ष० त०] नये नगर बनाने और उसके मार्ग, भवन, विभाग आदि निरूपित करने की कला या विद्या। (सिटी प्लैनिंग)

नगर-सेठ—पु० [स०+हिं०] नगर का सबसे बड़ा महाजन, सेठ या सपन्न व्यक्ति।

नगरहा—वि० [हिं० नगर+हा (प्रत्य०)] शहर मे रहने या होनेवाला। पु० नगर का निवासी। नागरिक। शहरी।

नगरहार—पु० [स०] उत्तर-पश्चिमी भारत के एक प्राचीन कपिश राज्य के अतर्गत की एक नगरी जिसका वर्णन ह्वेन-साग ने किया है।

नगराई—स्त्री० [हिं० नगर+आई (प्रत्य०)] १ नागरिकता। शहरातीपन। २. चतुराई। चालाकी।

नगराधिप—पु० [नगर-अधिप, ष० त०] नगर का प्रधान शासक। प्रशासक।

नगराध्यक्ष—पु० [नगर-अध्यक्ष, ष० त०] नगर का प्रधान शासक। प्रशासक।

नगरी—स्त्री० [स० नगर+ङीष्] छोटा नगर या शहर।
पु० [स० नगरिन्] नगर मे होने या रहनेवाला व्यक्ति। नागरिक।

नगरी-काक—पु० [ष० त०] बक।

नगरीय—वि० [स० नगर+छ—ईय] १ नगर-सबधी। २ नगर मे बनने या होनेवाला।

नगरोत्था—स्त्री० [नगर-उत्थान, ब० स०] नागरमोथा।

नगरोपांत—पु० [नगर-उपात, ष० त०] नगर के आस-पास का क्षेत्र या स्थान। उप-नगर। (सबर्ब)

नगरौका (कस्)—पु० [नगर-ओकस्, ब० स०] नागरिक। नगर-वासी।

नगरौषधि—स्त्री० [नगर-ओषधि, मध्य० स०] केला।

नगवास†—पु० =नाग-पाश।

नगवासी†—स्त्री०= नागपाश।

नग-वाहन—पु० [ब० स०] शिव का एक नाम।

नग-स्वरूपी—स्त्री० [स०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक जगण, एक रगण, एक लघु और एक गुरु होता है। इसे प्रमाणी और प्रमाणिका भी कहते है।

नगाटन—वि० [स० नग√अट् (गति)+ल्युट्—अन] पहाड़ पर विचरण करनेवाला।
पु० बदर।

नगाड़ा—पु० [अ० नक्कार] डुगडुगी की तरह का चमड़ा मढा हुआ एक प्रकार का बहुत बड़ा प्रसिद्ध बाजा जो कभी तो अकेला और कभी ठीक उसी तरह के दूसरे छोटे बाजे के साथ प्राय चोब (लकडी का छोटा डडा) का आघात करके बजाया जाता है। डका। धौसा।

नगाधिप—पु० [स० नग-अधिप, ष० त०] १ पर्वतराज, हिमालय। २ सुमेरु पर्वत।

नगारा—पु०=नगाड़ा।

नगारि—पु० [स० नग-अरि, ष० त०] इन्द्र।

नगावास—पु० [स० नग-आवास, ब० स०] मोर।

नगाश्रय—वि० [स० नग-आश्रय, ब० स०] पहाड़ पर रहनेवाला।
पु० हस्तिकद।

नगी—स्त्री० [स०] १ पर्वतराज हिमालय की कन्या, पार्वती। २. पहाड़ पर रहनेवाली स्त्री।
†स्त्री० [हिं० नग] छोटा नग या रत्न।

नगीच—क्रि० वि०=नजदीक।

नगीना—पु० [स० नग से फा० नगीन] १ बहुमूल्य पत्थर आदि का वह रगीन चमकीला टुकड़ा जो शोभा के लिए गहनो मे जड़ा जाता है। मणि। रत्न।
पद—नगीना-सा=बहुत छोटा और सुंदर। अँगूठी का नगीना=किसी बड़ी चीज के साथ अथवा उसमे रहनेवाली कोई छोटी सुन्दर, बहुमूल्य और आदरणीय वस्तु (प्राय व्यक्तियो के लिए भी प्रयुक्त)।
२ पुरानी चाल का एक प्रकार का कारखानेदार कपड़ा।

नगीनागर—पु० दे० 'नगीनासाज।'

नगीनासाज—पु० [फा०] [भाव० नगीनासाजी] आभूषणो आदि में नगीने जड़नेवाला कारीगर।

नगेंद्र—पु० [स० नग-इन्द्र, ष० त०] पर्वतराज, हिमालय।

नगेश—पु० [सं० नग-ईश, ष० त०]=नगेंद्र।

नगेसर†—पु० १ =नागेश्वर। २ =नाग-केसर।

नगोड़ा—वि० =निगोड़ा।

नगौक (स्)—पु० [स० नग-ओकस्, ब० स०] १ पक्षी। चिड़िया। २. शेर। सिंह। ३ कौआ।

नग्न—वि० [स०√नज् (लजाना)+क्त] [भाव० नग्नता] नगा (सभी अर्थों मे, देखे)।
पु० १ एक प्रकार के दिगम्बर जैन साधु जो कौपीन पहनते है।
२ ऐसी साहित्यिक रचना जिसमे कोई अलकार और चमत्कार न हो।

नग्नक—पु० [स० नग्न+कन्]=नग्न।

नग्नकरण—पु० [स० नग्न+च्वि√कृ+ल्युट्—अन, मुम्] किसी को नगा करने की क्रिया या भाव।

नग्न-क्षपणक—पु० [कर्म० स०] बौद्ध भिक्षुओ का एक भेद या सप्रदाय।

नग्नजित्—पु० [स०] १. वैदिककाल मे, गान्धार के एक राजा। २. पुराणानुसार कोशल के एक राजा जिसकी सत्या नाम की कन्या श्रीकृष्ण को ब्याही थी।

नग्नता—स्त्री० [स० नग्न+तल्—टाप्] १. नगे होने की अवस्था या भाव। नगापन। २ सब कुछ प्रकट कर देने की अवस्था या स्थिति।

नग्नपर्ण—पु० [ब० स०] एक प्राचीन देश का नाम।

नग्न-वाद—पु० [ष० त०] वह सिद्धान्त या दृष्टिकोण जिसमे यह माना जाता है कि मनुष्य को नीरोग रहने के लिए कुछ समय तक अवश्य नगे रहना चाहिए। (न्यूडिज्म)

नग्न-वादी (दिन्)—पुं० [स० नग्नवाद+इनि] जो नग्नवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (न्यूडिस्ट)

नग्नाट—पु० [स० नग्न√अट् (गति)+अच्] ऐसा जीव या प्राणी जो सदा नगा रहता हो।

नग्निका—स्त्री० [स० नग्न+कन्—टाप्, इत्व] १. निर्लज्ज स्त्री। २. वह लड़की जो रजस्वला न हुई हो।

नग्मा—पु० दे० 'नगमा'।
नग्र—पु०=नगर।
नग्रोध—पु० [स० न्यग्रोध] बरगद का पेड़। वट वृक्ष।
नघना—स०=लाँघना।
†अ०=लाँघना।
नघाना†—स०=लघाना।
नचना†—अ०=नाचना।
वि० [हिं० नाचना] [स्त्री० नचनी] १. नाचनेवाला। २. जो बराबर इधर-उधर घूमता रहे। (व्यग्य) ३ बराबर हिलता-डुलता रहनेवाला।
नचनि—स्त्री० [हिं० नाचना] नाच। नृत्य।
नचनिया†—पु० [हिं० नाचना] [स्त्री० नचनी] वह जो नाच दिखला-कर जीविका उपार्जित करता हो।
नचनी—स्त्री० [हिं० नाचना] करघे की वह दोनो लकड़ियाँ जिनके नीचे राछे बँधी रहती है। इन्हे चक भी कहते है।
वि० हिं० 'नचना' का स्त्री०।
नचवैया—पु० [हिं० नाचना] १ वह जो नाचने की कला का पडित हो, अथवा दूसरो को नाचना सिखाता हो। नर्तक। २ दूसरो को नचाने-वाला अथवा नाचने मे प्रवृत्त करनेवाला।
नचाना—स० [हिं० नाचना का प्रेर०] १ किसी को नाचने मे प्रवृत्त करना। जैसे—बदर या रीछ नचाना। २ किसी को इस प्रकार हिलाना-डुलाना कि वह नाचता हुआ-सा जान पड़े। जैसे—आँखे या आँखो की पुतलियाँ नचाना। ३ किसी को बार-बार कही भेजना, बुलाना या उठाना-बैठाना कि वह परेशान हो जाय। जैसे—हमारे ये अतिथि महोदय नौकर को नचा मारते हैं।
क्रि० प्र०—डालना।—मारना।
४ किसी को कार्य-रत होने या अच्छी तरह चलने मे प्रवृत्त करना। उदा०—कपि उर अजिर नचावहि बानी।—दीनदयालगिरि।
नचार†—क्रि० वि०, वि०=लाचार।
नचारी†—स्त्री०=लाचारी।
स्त्री० [हिं० नाचना] मिथिला प्रदेश मे गाये जानेवाले एक तरह के गीत।
नचिंत†—वि०=निश्चिंत।
नचिकेता (तस्)—पु० [?] १ वाजश्रवा ऋषि का पुत्र जिसने मृत्यु ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था।
विशेष—इसने अपने पिता से पूछा था कि मुझे किसको प्रदान करते है। पिता ने खिजलाकर कह दिया कि मै तुम्हे मृत्यु को अर्पित करता हूँ। इस पर वह मृत्यु के पास चला गया और वहाँ तीन दिन तक निरा-हार रहकर उससे उसने ब्रह्मज्ञान प्राप्त किया था।
२ अग्नि। आग।
नचिर—वि० [स० सहसुपा स०] जो अधिक समय तक स्थिर न रहे। अस्थायी।
नचीला—वि०=नचौहाँ।
नचौहाँ—वि० [हिं० नाचना+औहाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० नचौही] १. जो प्राय नाचता रहता हो। २ जो दूसरे के कहे अनुसार चलता हो। ३. अस्थिर।

नछत्र—पु०=नक्षत्र।
नछत्री—वि०=नक्षत्री।
नजदीक—क्रि० वि० [फा०] वक्ता अथवा किसी विशिष्ट प्रदेश, बिन्दु, स्थान आदि से थोड़ी ही दूरी पर। कम फासले पर। निकट। पास।
नजदीकी—वि० [फा० नज्दीक] १ निकट या पास का। जिसके साथ निकट या पास का सबध हो।
स्त्री० सामीप्य।
नजर—स्त्री० [अ० नजर] १ दृष्टि। निगाह।
मुहा०—नजर आना या पड़ना—दिखाई देना या पड़ना। दृष्टि-गोचर होना। **(किसी ओर या किसी पर) नजर करना, डालना या फेरना**—किसी की ओर आँखे करते हुए देखना। **नजर फेंकना**=देखने के लिए दूर तक निगाह दौड़ाना या डालना।
विशेष—'नजर' के शेष मुहा० के लिए दे० 'आँख' और 'निगाह' के मुहा०।
२ अनुग्रह या कृपा से युक्त दृष्टि। मेहरबानी की निगाह। जैसे—इस लड़के पर भी कुछ नजर हो जाती तो अच्छा था। ३ किसी की देख-रेख करने या उसका हाल-चाल लेने के लिए उसकी ओर रखा जानेवाला सतर्कतापूर्ण ध्यान। जैसे—आज-कल उस पर भी पुलिस की नजर है।
क्रि० प्र०—रखना।
४ ख्याल। ध्यान। विचार। जैसे—अभी इस बात पर मेरी नजर नही गई थी। ५ गुण-दोष, भले-बुरे आदि की परख या पहचान। जैसे—इस चीज की नजर तो किसी जौहरी को ही हो सकती है। ६. देखने की वह कल्पित शक्ति जो अच्छे, दृष्ट अथवा सुदर पदार्थों, व्यक्तियो, व्यवहारो आदि पर पड़ते ही उन पर अपना दूषित प्रभाव डालकर उन्हे खराब, रोगी या विकृत करने मे समर्थ मानी जाती है।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
विशेष—कहते है कि खाने-पीने की अच्छी चीजो पर यदि ऐसी नजर लग जाय तो या तो वे बिगड़ जाती है या खानेवाले को पचती नही। सुदर बालको को नजर लगने पर वे बीमार हो जाते है, और अच्छे कामो या बातो मे नजर लगने पर वे बिगड़ जाती है। कहते है कि कुछ विशिष्ट व्यक्ति ऐसे होते है जिनकी नजर या निगाह मे ऐसा दूषित प्रभाव डालने की विशेष शक्ति होती है। परतु कुछ अवसरो पर साधा-रण व्यक्तियो की नजर मे भी ऐसा कुप्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति आ जाती या आ सकती है।
मुहा०—नजर उतारना या झाड़ना—जादू-मतर या टोने-टोटके के द्वारा नजर का प्रभाव दूर करना। **नजर खाना**—नजर के बुरे प्रभाव मे पड़कर उसका परिणाम भोगना। **नजर जलाना**—नजर का बुरा प्रभाव दूर करने के लिए टोटके के रूप मे नमक, मिर्च, राई आदि चीजे आग मे डालना।
स्त्री० [अ० नज्र] १ वह चीज जो किसी बड़े को प्रसन्न करने अथवा उसके प्रति आदर-सम्मान का भाव प्रगट करने के लिए उसे उपहार या भेट के रूप मे दी जाय। उपहार। भेट। २. अधीनता, नम्रता, श्रद्धा आदि प्रकट करने के लिए उक्त प्रकार से भेंट आदि देने की क्रिया या भाव।

विशेष—पुराने राज-दरबारों मे राजाओं आदि को अपनी हथेली पर रुपया,अशरफी, तलवार आदि रखकर उनके आगे उपस्थित करने की प्रथा थी, जिसे कभी तो वे ले लेते थे और कभी केवल छूकर छोड देते थे।

मुहा०—नजर-गुजारना या देना=उक्त प्रकार से हथेली पर कोई चीज रखकर किसी बडे के सामने उपस्थित करना।

पद-नजर-गुजर=नजर या इसी प्रकार की और कोई बात। जिसके सबध मे लोगों का यह विश्वास हो कि इसका बुरा प्रभाव पडता है।

नजरना—अ० [हि० नजर+ना (प्रत्य०)] दृष्टिपात करना। देखना। स० १ नजर अर्थात् भेंट के रूप मे कोई पदार्थ किसी को देना। २ बुरा प्रभाव उत्पन्न करनेवाली दृष्टि से देखना। नजर लगाना।

नजरबद—वि० [अ० नजर+फा० बद] [भाव० नजरबदी] किसी को इस प्रकार बदी के रूप मे कहीं रखना कि उसकी चेष्टाओं पर नजर रखी जा सके।

विशेष—ऐसी अवस्था मे न तो नजरबद व्यक्ति को घर या किसी नियत स्थान से बाहर जाने दिया जाता है और न लोगो को उससे स्वतन्त्रतापूर्वक मिलने-जुलने दिया जाता है।

पु० जादू या इन्द्रजाल का ऐसा खेल जिसके विषय मे लोगो का यह विश्वास है कि वह लोगो की दृष्टि मे ऐसा भ्रम उत्पन्न कर देता है कि उन्हे कुछ का कुछ दिखाई देने लगता है।

नजरबदी—स्त्री० [अ० नजर+फा० बदी] १ नजरबद होने की अवस्था या भाव। २ किसी को नजरबद करने का आदेश। ३ इन्द्रजाल आदि के द्वारा लोगों की दृष्टि मे भ्रम उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

नजरबाग—पु० [अ०] प्रासाद या महल के आगे या चारो ओर का बाग।

नजरबाज—वि० [अ० नजर+फा० बाज (प्रत्य०)] [भाव० नजरबाजी] १ शृंगारिक क्षेत्र मे अनुराग प्रकट करने अथवा अपनी ओर ध्यान आकृष्ट करने के लिए आँखे लडानेवाला। २ ताक-झाँक करनेवाला। ३ पारखी।

नजरबाजी—स्त्री० [अ० नजर+फा० बाजी] १ आँखे लडाने का व्यापार। २ ताकना-झाँकना। ३. परख।

नजर-सानी—स्त्री० [अ० नजरेसानी] १ कोई किया हुआ काम इस दृष्टि से दोबारा देख जाना कि उसम कहीं कोई त्रुटि या भूल तो नहीं रह गई है। २ विधिक क्षेत्र मे किसी मुकदमे का उसी अदालत मे होनेवाला पुनर्विचार। (रिवीजन)

नजरहाया†—वि० [हि० नजर+हाया (प्रत्य०)] १ जिसकी कुदृष्टि से दुष्परिणाम होता हो। २ जिसे किसी की बुरी नजर लग गई हो। जो नजर के प्रभाव से पीडित हुआ हो।

नजरा—वि० [अ० नजर] जिसमे अच्छाई-बुराई, गुण-दोष आदि पहचानने की शक्ति हो। पारखी।

पु० [देश०] एक तरह का देशी आम जो आकार-प्रकार मे बम्बई के आम जैसा परन्तु स्वाद मे उससे घटकर होता है।

नजरानना—स० [अ० नजर] नजर करना। भेंट स्वरूप देना। अ०=नजराना।

नजराना—अ० [अ० नजर] किसी की कुदृष्टि लगना जिसके फलस्वरूप कोई क्षति या हानि होती है।

स० १. नजर करना। भेंट स्वरूप देना। २. नजर लगाना।

पु० १ वह चीज जो किसी को नजर की जाय अर्थात् भेंट-स्वरूप दी जाय। २ आज-कल वह धन जो कोई सुभीता प्राप्त करने के लिए उसे उचित के अतिरिक्त और काम होने से पहले दिया जाय। पगडी। जैसे—यह दुकान किराये पर लेने के लिए दस हजार नजराना देना पडा।

नजरि—स्त्री० =नजर।

नजला—पु० [अ० नज़्ल] यूनानी हिकमत के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमे गरमी के कारण सिर का विकारयुक्त पानी ढलकर भिन्न-भिन्न अगो की ओर प्रवृत्त होता, और जिस अग की ओर ढलता है उसे खराब कर देता है। जैसे—अगर बालों पर नजला गिरे तो वे समय से बहुत पहले सफेद हो जाते है; और अगर आँखों पर गिरे तो दृष्टि मन्द पड जाती है।

क्रि० प्र०—उतरना।—गिरना।

मुहा०—(किसी पर किसी का) नजला गिरना=किसी के क्रोध, भर्त्सना आदि का पात्र होना।

२ जुकाम या प्रतिश्याय नामक रोग। सरदी।

नजलाबद—पु० [अ० नज्ल+फा० बद] अफीम और चूने आदि का वह फाहा जो नजले को गिरने से रोकने के लिए कनपटी पर लगाया जाता है।

नजाकत—स्त्री० [अ० नज़ाकत] १. शारीरिक कोमलता या सुकुमारता। २ सुकुमार अगो की कोई मृदु चेष्टा।

नजात—स्त्री० [अ०] १ दृढ बधनों, कठोर यातनाओं या कठिन दायित्वों से होनेवाली मुक्ति। २ ऐसी स्थिति जिसमे कोई अपने को हर प्रकार के कष्टों, झझटों आदि से अलग या दूर समझे।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

नजामत—स्त्री० [अ० निज़ामत] १ शासन सबधी प्रबध या व्यवस्था। २ नाजिम का कार्य, पद या भाव। ३ नाजिम का कार्यालय या विभाग।

नजारत—स्त्री० [अ० नजारत] १ नाजिर अर्थात् दर्शक या निरीक्षक होने की अवस्था पद, या भाव। २ नाजिर का कार्यालय या विभाग।

नजारा—पु० [अ० नज्जार] १ वह जो दिखाई दे। २ अद्भुत और सुदर दृश्य। ३ दृष्टि। नजर। ४ किसी (पराये पुरुष या स्त्री) को बार-बार दूर से अनुरागपूर्ण दृष्टि से अपनी ओर आकृष्ट करने के लिए देखने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—मारना।—लडना।—लडाना।

५ तमाशा।

नजारेबाज—वि० [अ० फा० नज्जार बाज] जो पर-पुरुष या पर-स्त्री से आँखे लडाता हो।

नजारेबाजी—स्त्री० [अ० फा० नज्जार बाजी] स्त्री या पुरुष का पराये पुरुष या स्त्री को लालसा या प्रेम की दृष्टि से बार-बार देखना। आँखे लडाना।

नजासत—स्त्री० [अ०] १. नजिस होने की अवस्था या भाव। २. गदगी। मैलापन। ३ अपवित्रता।

नजिकाना—स० [हि० नजीक=नजदीक] नजदीक अर्थात् निकट या पास पहुँचना।

स० नजदीक अर्थात् निकट या पास पहुँचाना।

नजिस—वि० [अ०] १ अपवित्र। अशुद्ध। २ गंदा। मैला।

नजीक†—क्रि० वि०=नजदीक (निकट या पास)।

नजीब—वि० [अ०] श्रेष्ठ कुल मे उत्पन्न। कुलीन।

पु० सिपाही। सैनिक।

नजीर—स्त्री० [अ० नज़ीर] १. उदाहरण। दृष्टांत। मिसाल। २ विधिक क्षेत्र मे, किसी पुराने मुकदमे के सबध मे किसी उच्च न्यायालय का वह निर्णय जो अपना पक्ष पुष्ट करने के उद्देश्य से न्यायालय के सम्मुख उपस्थित किया जाय।

क्रि० प्र०—दिखलाना।—देना।

३ कोई बारीक काम करने के समय देर तक उसकी ओर लगी रहनेवाली दृष्टि जो आँखों को जल्दी थका देती है।

क्रि० प्र०—लगाना।

नजूमी†—पु० [अ० नुजूम] ज्योतिष विद्या।

नजूमी—पु [अ० नुजूमी] ज्योतिषी।

नजूल—पु० [अ० नुजूल] १ ऊपर से नीचे आने, उतरने या गिरने की क्रिया या भाव। अवतरण। २ सामने आकर उपस्थित होना। उपस्थिति। ३ वह भूमि जिसका कोई स्वामी न रह गया हो। और इसी लिए जो नगर-पालिका या सरकार के हाथ मे आ गई हो। ४ नजला नामक रोग। ५ उक्त रोग के फल-स्वरूप होनेवाला मोतिया-बिंद।

नज्म—पु० [अ०] आकाश का तारा या नक्षत्र।

स्त्री० [अ० नज्म] १ कविता। २. पद्य।

नट—पु० [स०√नट् (नृत्य)+अच्] [स्त्री० नटी] १ अभिनय मे वह व्यक्ति जो किसी का रूप धारण करके उसकी चेष्टाओं का अभिनय करता हो। २ सूत्रधार। ३ मनु के अनुसार क्षत्रियो की एक जाति जिसकी उत्पत्ति व्रात्य क्षत्रियो से कही गई है। ४ पुराणानुसार एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति मालाकार पिता और शूद्रा माता से कही गई है। ५ प्राचीन भारत की एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौचिकी स्त्री और शाडिक पुरुष से कही गई है और जिसका पेशा गाना-बजाना था। ६ [स्त्री० नटिन्, नटिनी] एक आधुनिक जाति जो गाने-बजाने और तरह-तरह के शारीरिक कौशल और बाजीगरी के खेल दिखाने का पेशा करती है। ७ एक नाग जिसे गौतम बुद्ध ने बौद्धधर्म की दीक्षा दी थी। ८ सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है तथा जो रात के दूसरे पहर मे गाया जाता है। ९. अशोक वृक्ष। १० श्योनाक वृक्ष। सोनापाढा।

नटई†—स्त्री० [?] १ गला। गरदन। २ गले के अदर की श्वास-नली। ३ गले के अदर की घटी। कौआ।

नटक—पु० [स० नट+कन्] नट।

नटका—पु० [सं० नट] [स्त्री० नटकी] नट जाति का पुरुष। (तुच्छता-सूचक) उदा०—मोती मानिक परत न पहरूँ मैं कब की नटकी।—मीराँ।

नट-कुंडल—पु० [स० नट+कुडल] [स्त्री० अल्पा० नट-कुडली] बेत, धातु आदि का वह गोल चक्कर जिसमे से होकर नट एक ओर से दूसरी ओर कूद जाते हैं।

नट-खट—वि० [हिं० नट+खट (अनु०)] [भाव० नट-खटी] १ जो स्वभावत या जान-बूझकर कुछ न कुछ शरारत करता रहता हो। २. जो दूसरो को तग करने की नियत से कुछ ऊल-जलूल काम करता हो।

नट-खटी—स्त्री० [हि० नट-खट] १. नटखट होने की अवस्था या भाव। २. बदमाशी। शरारत। पाजीपन।

नट-चर्या—स्त्री० [ष० त०] अभिनय।

नटता—स्त्री० [स० नट+तल्—टाप्] १. नट होने की अवस्था या भाव। २. नट का काम।

नटन—पु० [स०√नट्+ल्युट्—अन] १ नाचना। २ अभिनय करना।

नटना—अ० [स० नटन] १ नाट्य करना। अभिनय करना। २ कही हुई बात या की हुई प्रतिज्ञा निभाने से पीछे हटना या आना-कानी करना। प्रतिज्ञा, वचन आदि से मुकरना।

अ० [स० नर्तन] नृत्य करना। नाचना।

अ० [स० नष्ट] नष्ट या बरबाद होना।

स० नष्ट या बरबाद करना।

पु० १. बाँस की बनी छलनी जिससे रस छाना जाता है। २ मछली पकडने का वह झाबा या टोकरा जिसका पेंदा कटा हुआ होता है। टाप।

नट-नागर—पु० [स०] श्रीकृष्ण।

नट-नारायण—पु० [ष० त०] सगीत मे, एक प्रकार का राग जो हनुमत् के मत से मेघराग का तीसरा पुत्र और भरत के मत मे दीपक राग का पुत्र है।

नटनि—स्त्री० [स० नटन] १. नृत्य। नाच।

२ अपनी प्रतिज्ञा या बात मे नटने अर्थात् पीछे हटने की क्रिया या भाव। मुकरना।

स्त्री० [हि० नट] नट जाति की स्त्री। नटिन।

नटनी—स्त्री० [हि० नट] १ अभिनेत्री। २ नट जाति की स्त्री।

नट-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्—टाप्, इत्व] बैगन। भाँटा।

नट बनिनी—स्त्री० दे० 'नटनी'।

नट-भूषण—पु० [ब० स०] हरताल।

नट-मडक—पु० नटमडन।

नट-मडन—पु० [ष० त०] हरताल।

नटमल—पु० [स०] एक प्रकार का राग।

नट मल्लार—पु० [स०] नट और मल्लार के योग से बना हुआ सपूर्ण जाति का एक सकर राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

नट-राज—पु० [ष० त०] १ नटो मे प्रधान या श्रेष्ठ नट। कुशल और निपुण नट। २ शिव। महादेव। ३ शिव की एक विशिष्ट प्रकार की मूर्ति या रूप जिसमे वे ताडव नृत्य करते हुए दिखाई देते है। ४. श्रीकृष्ण।

नटवना—अ० [हि० नट] १ नाचना। २. अभिनय करना।

स० १ नचाना। २. अभिनय कराना।

नट-वर—पु० [स० त०] १ नाट्य-कला मे बहुत कुशल और प्रवीण व्यक्ति। २ श्रीकृष्ण का एक नाम।

वि० बहुत अधिक चतुर या चालाक।

नटवा—पु० [हि० नाटा] छोटे कद या कम उमर का बैल।

पु॰ [हिं॰ नट] एक प्रकार का गीत जिसे नट जाति के लोग ढोलक आदि के साथ नाचते हुए गाते हैं।

†वि॰=नाटा।

†पु॰=नट।

नटवा सरसों—पु॰ [हिं॰ नाटा+सरसों] साधारण सरसों।

नट-संज्ञक—पु॰ [ब॰ स॰, कप्] १. गोदंती हरताल। २ नट।

नटसार—स्त्री॰=नाट्य शाला।

नटसाल—स्त्री॰ [हिं॰ नट?+सालना] १. काँटे का वह अंश जो धँसने पर टूटकर शरीर के अंदर रह जाता है और सालता या कसकता रहता है। २ तीर या बाण की गाँसी का वह अंश जो शरीर के अंदर टूटकर रह गया हो। ३. ऐसी मानसिक पीड़ा या व्यथा जो अन्दर ही रह-रहकर बहुत दुःखी करती हो। कसक।

नटांतिका—स्त्री॰ [नट-अंतिका, ष॰ त॰] १. लज्जा। शरम। २. नम्रता। विनय।

नटाई—स्त्री॰ [हिं॰ नट] जुलाहों का वह उपकरण जिससे वे किनारे का ताना तानते हैं।

नटि—स्त्री॰ [हिं॰ नटना] नटने की क्रिया या भाव। नटनि।

स्त्री॰=नटी।

नटित—पु॰ [स॰√नट्+क्त] अभिनय।

नटिन—स्त्री॰ [हिं॰ नट] नट जाति की स्त्री।

नटी—स्त्री॰ [सं॰ नट+ङीष्] १ नाटक मे, अभिनेत्री। २. सूत्रधार की स्त्री। ३ नर्तकी। ४. नट जाति की स्त्री। ५. रंडी। वेश्या। ६ नखी नामक गन्ध द्रव्य।

नटुआ—पु॰ १.=नट। २ =नटई (गला)।

नटेश—पु॰ [नट-ईश, ष॰ त॰] १. नटों मे सर्वश्रेष्ठ। २. महादेव। शिव।

नटेश्वर—पु॰ [नट-ईश्वर, ष॰ त॰] =नटेश।

नटैया*—स्त्री॰=नटई (गरदन या गला)।

नट्टु—पु॰=नट।

नठना—अ॰ [सं॰ नष्ट] नष्ट होना।

स॰ नष्ट करना।

अ॰ [?] १. भागना। (पश्चिम) २ किसी बात या व्यक्ति से घबराना तथा दूर भागना।

नड—पु॰ [स॰√नल् (महँकना)+अच्, ल को ड] १ एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि का नाम। २. नरकट। नरसल। ३ एक आधुनिक जाति जो चूड़ियाँ आदि बनाने का पेशा करती है।

†पुं॰=नद।

नडक—पुं॰ [सं॰ नड+कन्] १. हड्डी के अंदर का छेद। २. कंधों के बीच की हड्डी।

नड-मीन—पु॰ [मध्य॰ स॰] झींगा नाम की मछली।

नडिनी—स्त्री॰ [सं॰ नड+इनि—ङीप्] ऐसी नदी जिसमे सरपत (घास) बहुत अधिक उगी हुई हो।

नडी—स्त्री॰ [सं॰ नड] नरकट के छोटे-छोटे टुकड़ों में मसाला भरकर बनाई जानेवाली आतिशबाजी जो आग लगाकर छोड़ने पर हवा मे उड़ती है।

नड्वल—पुं॰ [स॰ नड+ड्वलच्] १. सरपत की बनी हुई चटाई। २. ऐसा प्रदेश जहाँ सरपत अधिकता से होता हो। ३. एक वैदिक देवता का नाम।

स्त्री॰ पुराणानुसार वैराज मनु की पत्नी का नाम।

नड्वला—स्त्री॰ [स॰] १ वैराज मनु की पत्नी। २. नरकट का ढेर।

नथना—स॰ [हिं॰ नाधना का स्था॰ रूप] १. गूँथना। पिरोना। २. कसकर बाँधना।

नत—वि॰ [स॰√नम् (झुकना)+क्त] [भाव॰ नति] १. झुका हुआ। २. जो किसी के सामने नम्र होकर झुक गया हो। ३ नम्र। विनीत। ४. कुटिल। टेढ़ा।

पु॰ १. तगर-मूल। २. गणित ज्योतिष मे मध्यदिन रेखा से किसी ग्रह की दूरी।

*अव्य॰=नतु।

नतइत—पु॰=नतैत।

नतकुर†—पुं॰ दे॰ 'नाती'।

नत-गुल्का†—पु॰ [?] घोघा।

नत-नाड़ी—स्त्री॰ [स॰] फलित ज्योतिष मे, मध्याह्न और मध्यरात्रि के बीच का जन्म-काल।

नतनी—स्त्री॰ [हिं॰ 'नाती' का स्त्री॰] बेटी की बेटी।

नतपाल—पु॰ [स॰ नत√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] वह जो अपने सामने आकर नत या विनीत होनेवाले अर्थात् शरण मे आये हुए व्यक्ति का पालन या रक्षा करे।

नतभ्रू—वि॰ [सं॰ नत] टेढ़ा। बाँका।

नत-मस्तक—वि॰ [ब॰ स॰] जिसने किसी के आगे सिर झुका दिया हो। नम्र या विनीत होनेवाला।

नतमी—स्त्री॰ [?] एक तरह का वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत चिकनी होती है।

नतर—क्रि॰ वि॰=नतरु।

नतरक†—क्रि॰ वि॰=नतरु।

नतरकु—क्रि॰ वि॰=नतरु। उदा॰—नतरकु इन विय लगत कत उपजत विरह-कृसानु।—बिहारी।

नतरु*—क्रि॰ वि॰ [स॰ न+तु] नही तो। अन्यथा। उदा॰—नतरु लखन सिय राम वियोगा।—तुलसी।

नतांग—वि॰ [नत-अंग, ब॰ स॰] जिसका बदन झुका हुआ हो।

नतांगी—स्त्री॰ [स॰ नतांग+ङीष्] स्त्री। औरत।

नतांश—पु॰ [नत-अंश] ग्रहों आदि की स्थिति निश्चित करने मे काम आनेवाला एक प्रकार का वृत्त जिसका केंद्र भूकेंद्र पर होता है और जो विषुवत् रेखा पर लंब होता है।

नताउल—पु॰ [?] १. एक तरह का वृक्ष जिसकी लकड़ी मुलायम तथा चिकनी होती है। २. उक्त पेड़ की राल जो विषैली होती है और इसी लिए जिसे तीरों के फलों पर लगाया जाता था।

नति—स्त्री॰ [स॰√नम्+क्तिन्] १. नत होने अर्थात् झुकने की क्रिया या भाव। २ झुके हुए होने की अवस्था या भाव। ३. किसी ओर होनेवाली मन की प्रवृत्ति। (इन्क्लिनेशन) ४ ढालुएँ होने की अवस्था

या भाव। उतार। ढाल। ५ नमस्कार। प्रणाम। ६. नम्रता। विनयशीलता। ७. ज्योतिष में एक विशिष्ट प्रकार की गणना।

नतीजा—पुं० [अ० नतीजः] १ परिणाम। फल।

क्रि० प्र०—निकलना।—पाना।—मिलना।

२. परीक्षाफल। ३ जाँच का फल। ४. अंत। आखीर।

नतु—क्रि० वि० [सं० न-तु, द्व० स०] नहीं तो। अन्यथा।

नतैत—पुं० [हिं० नाता+ऐत (प्रत्य०)] वह जिसके साथ कोई नाता (अर्थात् रिश्ता या पारिवारिक संबंध) हो। नातेदार। रिश्तेदार। संबंधी।

नतोदर—वि० [सं० नत-उदर] जिसका ऊपरी भाग या तल कुछ नीचे या अंदर की ओर हो। अवतल। (कॉनकेव)

नत्थ—स्त्री०=नथ।

नत्थी—स्त्री० [हिं० नाथना] १ नाथने की क्रिया या भाव। २. छोटे-मोटे बहुत से कागजों आदि को एक साथ (आलपीन, डोरे, आदि से) नाथने की क्रिया। ३ उक्त प्रकार से नाथकर एक साथ किए हुए कागज आदि।

नत्यूह—पुं० [सं०] कठफोड़वा।

नत्वर्थक—वि० [सं० नतु-अर्थ ब० स०, कप्] १. जिसमें किसी वस्तु या बात का अस्तित्व न माना गया हो। २ जिसमे कोई प्रस्ताव या सुझाव न मान्य किया गया हो। नकारात्मक। नहिक। (नेगेटिव)

नथ—स्त्री० [हिं० नाथना] १ सोने के तार आदि का बना हुआ एक प्रकार का गोलाकार गहना जो स्त्रियाँ नाक मे पहनती है। इसमे प्राय गूँज के साथ चदक, बुलाक या मोतियो की जोडी पहनाई रहती है। इसकी गिनती हिन्दुओ मे सौभाग्य-चिह्नों मे होती है। २ तलवार की मूठ पर लगा हुआ धातु का छल्ला। ३ दे० 'नथनी'।

नथना—पुं० [सं० नस्त+हिं० ना (प्रत्य०)] नाक का अगला भाग जिसमे दोनो ओर दो छेद होते है।

मुहा०—(किसी से) नथना फुलाना=आकृति से असतोष, रोष आदि के लक्षण प्रकट करना।

अ० [हिं० नाथना का अ०] १ नाथा जाना। २ नत्थी होना। ३ किसी के साथ जोड़ा, बाँधा या लगाया जाना। ४ छेदा या भेदा जाना। छिदना। भिदना। जैसे—पैर मे काँटा नथना।

नथनी—स्त्री० [हिं० नथ] १ नाक मे पहनने की छोटी नथ।

मुहा०—नथनी उतरना=वेश्याओं की परिभाषा मे वेश्या बननेवाली लडकी का पहले-पहल किसी वेश्यागामी से सम्पर्क या संबंध होना। नथनी उतारना=वेश्या बननेवाली स्त्री के साथ पहले-पहल संभोग करना।

२ बुलाक। बेसर। ३ नथ के आकार का वह छल्ला जो तलवार की मूठ पर लगा रहता है। ४ नथ के आकार की कोई गोलाकार छोटी चीज। ५ वह रस्सी जिससे बैल नाथे जाते हैं। नाथ।

नथि—स्त्री०=नथ।

नथिया†—स्त्री०=नथ।

नथी†—अव्य० =नहीं।

नथुना—पुं० [स्त्री० नथुनी]=नथना।

नथ्थ†—स्त्री०=नथ।

*पुं०=अनर्थ।

नद—पुं० [सं०√नद् (शब्द करना)+अच्] १. बहुत बड़ी नदी जिसका नाम प्राय पुं० होता है। जैसे—दामोदर, ब्रह्मपुत्र, सिंधु, सोन आदि। २ एक प्राचीन ऋषि।

†पुं०=नाद।

नदन—पुं० [सं०√नद्+ल्युट्-अन] १. नाद या शब्द करना अथवा होना। २ नाद। शब्द।

नदना—अ० [सं० नाद] १ नाद अर्थात् आवाज या शब्द होना। २. बाजो आदि का बजना। ३ पशुओ आदि का नाद या शब्द करना। बोलना। ४. गरजना।

नदनु—वि० [सं०√नद्+अनुङ] १ नाद या जोर का शब्द करने अर्थात् गरजनेवाला।

पुं० १ नाद। शब्द। २. शेर। सिंह। ३ बादल। मेघ।

नदम—स्त्री० [?] कपास की एक किस्म।

नदर—पुं० [सं० नद+र] नद या नदी का निकटवर्ती प्रदेश।

†वि०=निडर।

नद-राज—पुं० [सं० ष० त०] समुद्र।

नदान†—वि०=नादान।

नदारत—वि०=नदारद।

नदारद—वि० [फा० न+दारद=नदारद] १. जो न रह गया हो। २ गायब। लुप्त। ३ खाली।

नदि—स्त्री० [सं०√नद्+इ] स्तुति।

†स्त्री०=नदी।

नदिया—पुं० [सं० नवद्वीप] बंगाल का एक प्रसिद्ध नगर जो न्यायशास्त्र का विद्यापीठ माना जाता है।

†स्त्री०=नदी।

नदी—स्त्री० [सं० नद+ङीप्] १. जल का वह लंबा प्राकृतिक प्रवाह जो चौड़ाई मे नाले, नहर आदि से अधिक बड़ा होता है और दूर तक चला जाता है।

पद—नदी नाव संयोग=संयोगवश होनेवाली मुलाकात।

२. वह भूमि जिसमे उक्त जल प्रवाहित होता है। ३ किसी तरल पदार्थ का बहाव। जैसे—रक्त की नदी। ४ रहस्य संप्रदाय मे, आराधन के समय ध्यान और जप के समय नाम का होनेवाला प्रवाह।

नदी-कदंब—पुं० [ब० स०] बड़ी गोरखमुंडी।

नदी-कांत—पुं० [ष० त०] १ समुद्र। २. [ब० स०] समुद्र-फल। ३ सिंदुवार नामक वृक्ष।

नदी-कांता—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १. जामुन का पेड। २ काक-जंघा।

नदीकुकठ—पुं० [सं० ?] नैपाल का एक तीर्थस्थल। (बौद्ध)

नदी-गर्भ—पुं० [ष० त०] नदी के दोनो किनारो के बीच का अवकाश।

नदी गूलर—पुं० [?] लिसोढ़ा।

नदीज—वि० [सं० नदी√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो नदी से उत्पन्न हुआ हो।

पुं० १. समुद्र-फल। २ अर्जुन वृक्ष। ३ सेंधा नमक। ४. सुरमा। ५. महाभारत के अनुसार गंगा के गर्भ से उत्पन्न एक राजा।

नदीजा—स्त्री० [सं० नदीज+टाप्] अरणी का वृक्ष।

नदी जामुन—स्त्री० [सं०+हिं०] छोटा जामुन।
नदी तर—पुं० [सं० नदी√तृ (तैरना)+अच्] १. वह स्थान जहाँ से नदी पार की जाय। २ घाट।
नदी-तल—पुं० [ष० त०] पृथ्वी का वह गहरा भाग जिस पर होकर नदी बहती है। (बेसिन)
नदी-दत्त—पुं० [सं०] बुद्धदेव का एक नाम।
नदी-दुर्ग—पुं० [मध्य०स०] नदी के बीच मे या द्वीप मे बना हुआ दुर्ग। (कौ०)
नदी-दोह—पुं० [मध्य० स०] वह कर या महसूल जो नदी पार करने के समय देना पड़ता है।
नदी-धर—पुं० [ष० त०] गंगा नदी को मस्तक पर धारण करनेवाले, शिव। महादेव।
नदीन—पुं० [नदी-ईन ष० त०] १ समुद्र। २. वरुण देवता। ३ वरुण या बरना नामक जगली वृक्ष जो प्राय पलास की तरह का होता है।
नदी-निष्पाव—पुं० [मध्य० स०] बोरो नाम का धान जिसका चावल कड़ा होता है।
नदी-पति—पुं० [ष० त०] १ समुद्र। २. वरुण।
नदीपत्र—पुं०=नदीतल।
नदी-भल्लातक—पुं० [मध्य० स०] भिलावें की जाति का एक वृक्ष और उसका फल।
नदीभव—वि० [सं० नदी√भू (होना)+अच्] जो नदी मे उत्पन्न हुआ हो।
पुं० सेंधा नमक।
नदी-मातृक—वि० [ब० स०, कप्] ऐसा प्रदेश जिसमें नदियो के जल से खेतो की सिंचाई होती हो। 'देवमातृक' से भिन्न।
नदीमापक—पुं० [सं०] मानकंद या मानकच्चू नामक कद।
नदी-मुख—पुं० [ष० त०] वह स्थान जहाँ नदी समुद्र मे गिरे। नदी का मुँहाना।
नदी-वट—पुं० [मध्य० स०] वट वृक्ष।
नदीश—पुं० [नदी-ईश, ष० त०] समुद्र।
नदीश-नंदिनी—स्त्री० [ष० त०] लक्ष्मी।
नदीश्वर—पुं० [नदी-ईश्वर, ष० त०]=नदीश।
नदीसर—पुं०=नदीश्वर (समुद्र)।
नदी-सर्ज—पुं० [ष० त०] अर्जुन वृक्ष।
नदेया—स्त्री० [सं० नदी+ढक्-एय, टाप्] छोटा जामुन।
नदेयी—स्त्री० [सं० नदी+ढक्-एय, ङीप्] छोटा जामुन।
नदोला—पुं० [हिं० नाँद] मिट्टी की छोटी नाँद।
नद्द—पुं० १ =नदी। २ =नाद।
नद्दी—स्त्री०=नदी।
नद्ध—वि० [सं०√नह् (बंधन) क्त] १. नधा या नाधा हुआ। २. बँधा या बाँधा हुआ।
नद्धना—अ०=नधना।
नद्धी—स्त्री० [हिं० नाधना] १. चमड़े की डोरी। ताँत। २. दे० 'नधी'।
नद्य—वि० [सं० नदी+यत्] नदी-संबंधी। नदी का।
नद्याम्र—पुं० [नदी-आम्र, ष० त०] एक तरह का पौधा। कोकुआ। समष्ठिला।
नद्यावर्त्तक—पुं० [नदी-आवर्त्तक, ष० त०] एक योग जो यात्रा के लिए शुभ माना जाता है। (फलित ज्यो०)
नद्युत्सृष्ट—पुं० [नदी-उत्सृष्ट, तृ० त०] गग बरार। (दे०)
नधना—अ० [हिं० नधना] १ नाथा जाना। २ नाक मे रस्सी डाल कर बाँधा जाना। जैसे—बैल नधना। ३ किसी के साथ जबरदस्ती जोडा, बाँधा या लगाया जाना। ४ तत्परतापूर्वक किसी काम मे लगना या लगाया जाना। ५. किसी कार्य का अनुष्ठित या आरम्भ होना। काम का ठनना। जैसे—जब वह काम नध गया है तब उसे पूरा ही कर डालना चाहिए।
नधाव—पुं० [हिं० नधना] नाधे जाने की क्रिया या भाव।
पुं० [?] वह गड्ढा जिसमे से पानी उलीचकर सिंचाई के लिए ऊँचाई पर स्थित गड्ढे मे फेंका जाता है।
ननंद—स्त्री० =ननद।
ननंदा—स्त्री० [सं० न√नन्द् (सतुष्ट होना)+ऋन्] ननद।
ननका†—वि० [हिं० नन्हा] [स्त्री० ननकी] अवस्था, आकार आदि में सबसे छोटा या बहुत छोटा। जैसे—ननका बबुआ।
ननकारना†—अ० =नकारना।
ननकिरवा†—वि०=ननका।
पुं० छोटा लडका।
ननद—स्त्री० [सं० ननंदा] किसी विवाहिता स्त्री के सबध के विचार से उसके पति की बहन।
पद—ननद के बीर या भैया=(क) पति। (ख) रहस्य सप्रदाय मे, परमात्मा।
ननदी†—स्त्री०=ननद।
ननदोई—पुं० [हिं० ननद+ओई (प्रत्य०)] विवाहिता स्त्री के सबध के विचार से वह व्यक्ति जिससे उसके पति की बहन ब्याही हुई हो। ननद का पति।
ननसार†—स्त्री०=ननिहाल (नाना का घर)।
नना—स्त्री० [सं० न√नम् (झुकना)+ड-टाप्] १ माता। २. पुत्री। बेटी। ३ कन्या। लडकी।
ननिअउरा(आउर)†—पुं०=ननिहाल।
ननिया—वि० [हिं० नाना] सबध के विचार से नाना या नानी के स्थान पर पडनेवाला। जैसे—ननिया ससुर, ननिया सास।
ननिया ससुर—पुं० [हिं०] [स्त्री० ननिया सास] १ पति की दृष्टि मे, उसकी पत्नी का नाना। २ स्त्री की दृष्टि मे, उसके पति का नाना।
ननिया सास—स्त्री० [हिं०] १ पति की दृष्टि मे, उसकी पत्नी की नानी। २. स्त्री की दृष्टि मे, उसके पति की नानी।
ननिहारी—स्त्री० [हिं० नन्हा] पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी ईंट।
ननिहाल—पुं० [हिं० नाना+सं० आलय] १. नाना का घर या घराना। ननसार। २. वह गाँव, नगर या प्रदेश जिसमें किसी के नाना का घर या मूल-निवास स्थान हो।
ननु—अव्य० [सं० न√नुद् (प्रेरणा)+डु] एक अव्यय जिसका व्यवहार

कुछ पूछने, कोई संदेह प्रकट करने अथवा वाक्य के आरंभ में यों ही किया जाता है। (क्व०)

नमु-नच—पु० [द्व० स०] किसी बात में की जानेवाली छोटी-मोटी आपत्ति।

नमोई—स्त्री०=तिन्नी (धान और उसका चावल)।

नन्ना†—वि०=नन्हा।

†पु०=नाना।

नन्यौरा†—पुं०=ननिअउरा (ननिहाल)।

नन्हा—वि० [प्रा० लण्हा] [स्त्री० नन्ही] १. अवस्था, आकार आदि में बहुत या सब से छोटा। जैसे—नन्हा बच्चा, नन्हे महाराज। २ पतला। महीन।

मुहा०—नन्हा कातना=(क) महीन सूत कातना। (ख) बहुत ही बारीक या कठिन काम करना।

पद—नन्हा मुन्ना=बहुत छोटा बच्चा।

नन्हाई—स्त्री० [हिं० नन्हा+ई (प्रत्य०)] १ 'नन्हा' अर्थात् 'छोटा' होने की अवस्था या भाव नन्हापन। २ तुच्छ या हीन होने की अवस्था या भाव। अप्रतिष्ठा। हेठी।

नन्हिया—स्त्री०=तिन्नी (धान और उसका चावल)।

नन्हैया†—वि० नन्हा।

नपत—स्त्री० [हिं० नापना] नापे जाने की अवस्था, क्रिया या भाव। नपाई।

नपता—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसके डैनो पर काली या लाल चित्तियाँ होती हैं।

†पु० [सं० नप्तृ] लड़की का लड़का। नाती।

नपना—अ० [हिं० 'नापना' का अ०] नापा जाना।

पद—नपा-तुला। (दे०)

पु० वह पात्र जिसमे डाल कर कोई चीज विशेषत कोई तरल पदार्थ नापा जाय। जैसे—दूध या तेल का नपना।

नपरका—पु० [देश०] एक तरह का पक्षी जिसकी गरदन तथा पेट लाल रग का और पैर तथा चोंच पीले रग की होती है।

न-पराजित—पु० [स० सहसुपा स०] शकर। शिव।

नपाई—स्त्री० [हिं० नाप+अई (प्रत्य०)] १ नापने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†२ =नाप।

नपाक—वि०=नापाक (अपवित्र)।

नपात्—पुं० [स० न√पा (रक्षा)+शतृ] देवयान।

नपुंसक—वि० [स० न स्त्री न पुमान्, नि० नपुसक आदेश] [भाव० नपुसकता] १ (वह व्यक्ति) जिसमे काम-वासना या स्त्री-सभोग की शक्ति बिलकुल न हो अथवा बहुत ही कम हो। क्लीव।

विशेष—वैद्यक मे, नपुसक पाँच प्रकार के माने गये हैं—आसेक्य, सुगधी, कुभीक, ईर्ष्यक और षड।

२. कायर।

पु० १ वह पुरुष जिसमे स्त्री-सभोग की शक्ति न हो। नार्मदा २. ऐसा मनुष्य जिसमे न तो पूर्ण पुरुषो के चिह्न हो न स्त्रियो के ही। हिजड़ा।

विशेष—वैद्यक के अनुसार जब पुरुष का वीर्य और माता का रज समान होता है तब नपुसक संतान उत्पन्न होती है।

३ दे० 'नपुसक लिंग'।

नपुंसकता—स्त्री० [स० नपुसक+तल्—टाप्] १. नपुसक होने की अवस्था या भाव। हिजड़ापन। २ वैद्यक मे, एक प्रकार का रोग जिसमे मनुष्य का वीर्य इस प्रकार नष्ट हो जाता है कि वह स्त्री के साथ सभोग करने के योग्य नहीं रह जाता। नामर्दी।

नपुंसकत्व—पु० [स० नपुसक+त्व]=नपुसकता।

नपुंसक-मंत्र—पु० [स० कर्म० स०] जैनो के अनुसार वह मत्र जिसके अंत मे 'नम' हो।

नपुंसक-लिंग—पु० [स० मध्य० स०] १ सस्कृत व्याकरण में तीन प्रकार के लिंगो मे से एक जिसमे ऐसे पदार्थों का अतर्भाव होता है जो न तो पुंलिंग हो और न स्त्री लिंग।

विशेष—सस्कृत के सिवा अग्रेजी, मराठी आदि भाषाओ में भी यह तीसरा लिंग होता है, परन्तु हिन्दी, पजाबी आदि भाषाओ में नहीं होता।

पुंसक-वेद—पु० [स० मध्य० स०] जैनियो के अनुसार एक प्रकार का मोहनीय कर्म जिसके उदय होने पर स्त्री के सिवा बालक या पुरुष के साथ भी सभोग करने की इच्छा उत्पन्न होती है।

नपुआ†—पु०=नपना।

नपुत्रा†—वि० [स्त्री० नपुत्री]=निपूता।

नप्ता (प्तृ)—स्त्री० [स० न√पत् (गिरना)+तृच्] लड़के या लड़की की सतान।

नप्तृका—स्त्री० [स० नप्तृ+कन्—टाप्] वैद्यक में ऐसा पक्षी जिसका मांस दोष नाशक माना जाता है।

नप्त्री—स्त्री० [स० नप्तृ+ङीप्] १. पौत्री। २. नतनी।

नफर—पु० [फा० नफ़र] १ आदमी। व्यक्ति। (विशेषतः संख्या सूचित करने के समय) जैसे—चार नफर मजदूर और बढ़ाओ। २. तुच्छ सेवाएँ करनेवाला सेवक। खिदमतगार। दास। ३. श्रमिक। मजदूर।

नफरत—स्त्री० [अ० नफ्रत] १. किसी के प्रति होनेवाली अरुचिपूर्ण भावना या विरक्ति। २. घृणा।

नफरी—स्त्री० [फा० नफर=आदमी] १ नफर अर्थात् मजदूर का दिन भर का काम। २ काम या मजदूरी के दिनो की वाचक संज्ञा। जैसे—चार नफरी मे यह दरवाजा बनेगा। ३ एक दिन काम करने का पारिश्रमिक। जैसे—इस राज की नफरी ३) है।

नफ़स—पु० [अ० नफ़स] १. श्वास। साँस। २. क्षण। पल।

पु० [अ० नफ़्स] १. अस्तित्व। २. सत्यता। ३. काम-वासना। ४. लिंगेन्द्रिय। ५. आत्मा के दो भेदो मे से एक जो निम्नकोटि का माना जाता है। (सूफी-सम्प्रदाय)

नफसा-नफसी—स्त्री० [अ० नफ़्सी नफ़्सी] १. आपा-धापी। २. वैमनस्य।

नफसानी—वि० [अ० नफ्सानी] १ भौतिक और शारीरिक। २. काम-वासना या भोगेच्छा संबंधी।

नफा—पु० [अ० नफ़्अ] १ लाभ। हित। २. आर्थिक लाभ। ३. किसी प्रकार की प्राप्ति। ४. ब्याज। सूद।

नफासत—स्त्री० [अ० नफ़ासत] १. नफीस (अर्थात् उत्तम कोटि का) और सुन्दर होने की अवस्था या भाव। २ कोमलता। ३. निर्मलता।

नफीरी—स्त्री० [फा० नफ़ीरी] १. बाँसुरी की तरह का एक प्रकार का बाजा जो शहनाई के साथ बजता है। २. शहनाई।

नफीस—वि० [फा० नफीस] [भाव० नफासत] १. जो उत्तम होने के सिवा देखने मे भी बहुत प्रिय या मनोहर हो। २ निर्मल। स्वच्छ।

नफ़ेरी†—स्त्री०=नफीरी।

नफ़्स—पुं०=नफस।

नफ़्सा-नफ़्सी—स्त्री० [अ०] आपा-धापी।

नफ़्सानियत—स्त्री० [अ०] १. स्वार्थपरता। २ अभिमान।

नबी—पुं० [अ०] पैगबरी धर्मों मे ईश्वर का दूत। पैगबर।

नबेड़ना—स०=निबेडना।

नबेड़ा—पु०=निबेडा।

नबेरना—स० दे० 'निबेडना'।

नबेरा—पु०=निबेडा।

नब्ज—स्त्री० [अ० नब्ज] हाथ की वह रक्तवाहिनी नलिका जिसके कलाई पर पडनेवाले अश की गति से शारीरिक आरोग्य, बल आदि की स्थिति जानी जाती है। नाडी।

क्रि० प्र०—चलना।—देखना।—दिखाना।

नब्बीगर—पुं० [फा० नमद+गर] शामियाना बनानेवाला कारीगर।

नब्बे—वि० [स० नवति] जो गिनती मे अस्सी से दस अधिक हो। सौ से दस कम।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९०।

नभःकेतन—पु० [स० ब० स०] सूर्य।

नभ. कांती (तिन्)—पुं० [स० नभ. क्रांत+इनि] सिंह।

नभः पांथ—पु० [स० ष० त०] सूर्य।

नभः प्रभेद—पु० [स०] एक वैदिक ऋषि जो विरूप के वशज थे।

नभः प्राण—पु० [स० ष० त०] वायु। हवा।

नभः श्वास—पु० [स० ष० त०] वायु।

नभः सद्—वि० [स० नभस्√सद् (गति)+क्विप्] आकाश मे विचरनेवाला।

पु० १. देवता। २ पक्षी।

नभः सरित्—स्त्री० [स० ष० त०] आकाश गगा।

नभः सुत—पुं० [स० ष० त०] पवन। हवा।

नभः स्थित—वि० [सं० स० त०] आकाश मे स्थित।

पु० एक नरक।

नभ (स्)—पु० [सं०√नह् (बधन)+असुन्, भ आदेश] १. आकाश। आसमान। २ बिलकुल खाली या शून्य स्थान। ३ शून्य का सूचक चिह्न। बिन्दु। सुन्ना। सिफर। ४ सावन और भादो के महीने जिनमें आकाश से पानी बरसता है। ५ बादल। मेघ। ६ जल की वर्षा। ७. जल। पानी। ८. आधार। आश्रय। ९. पुराणानुसार चाक्षुष मनु के एक पुत्र का नाम। १० शिव। ११. अबरक। १२. जन्मकुडली मे लग्न स्थान से दसवाँ स्थान। १३. कमल नाल। १४. राजा नल का एक पुत्र।

वि० हिंसक।

अव्य० निकट। पास।

नभग—वि० [स० नभ√गम् (गति)+ड] १ आकाश मे चलनेवाला। आकाशचारी। २ अभागा। बद-किस्मत।

पु० १ चिडिया। पक्षी। २. वायु। हवा। ३ बादल। मेघ। ४. भागवत के अनुसार वैवस्वत मनु के एक पुत्र का नाम।

नभग-नाथ—पु० [स०] पक्षियो के राजा, गरुड।

नभगामी (मिन्)—वि० [स० नभ√गम्+णिनि] आकाश मे चलनेवाला। नभचर।

पुं० १ सूर्य। २ चन्द्रमा। ३ देवता। ४. चिड़िया। पक्षी।

नभगेश—पु० [स० नभग–ईश ष० त०] गरुड।

नभचर—वि० [स० नभश्चर] आकाश मे चलनेवाला।

नभ-ध्वज—पु० [स० नभोध्वज] बादल। मेघ।

नभनीरप—पु० [स० नभोनीरप] चातक। पपीहा।

नभयान—पु० [स० नभोयान] आकाश में उडनेवाला यान। वायुयान।

नभश्चक्षु (स्)—पु० [स० ष० त०] सूर्य।

नभश्चमस—पु० [स० ष० त०] १ चद्रमा। २ इद्रजाल।

नभश्चर—वि० [स० नभस्√चर् (गति)+ट] आकाश मे चलनेवाला। आकाशचारी।

पु० १ देवता। २. पक्षी। ३ बादल। मेघ। ४ वायु। हवा। ५ ग्रह, नक्षत्र आदि।

नभसंगम—पु० [स० नभस√गम् (जाना)+खश्, मुम्] पक्षी।

नभस—पु० [स०√नभ् (शब्द)+असच्] दसवें मन्वतर के एक सप्तर्षि। (हरिवश)

नभस्थल—पु० [स० नभ स्थल] १ आकाश। २ शिव।

नभस्थित—वि० [स० नभ स्थित] आकाश मे स्थित।

पु० पुराणानुसार एक नरक का नाम।

नभस्य—पु० [स० नभस्+यत्] १ हरिवश के अनुसार स्वारोचिष मनु के एक पुत्र का नाम। २ भाद्रपद। भादो।

नभस्वान् (स्वत्)—वि० [स० नभस्+मतुप्] कुहरे या बादलो से भरा हुआ।

पु० वायु।

नभा—स्त्री० [स०] पीकदान।

नभाक—पु० [स०√नभ्+आक] १. अँधेरा। अधकार। २ राहु। ३. एक प्राचीन ऋषि।

नभि—स्त्री० [स०] चक्र। पहिया।

नभोग—पु० [स० नभस्√गम् (जाना)+ड] १. आकाश मे चलनेवाले देवता, पक्षी, ग्रह आदि। २ जन्म-कुडली मे लग्न से दसवाँ स्थान। ३. दसवे मन्वतर के सप्तर्षियो में से एक।

नभोगज—पु० [स० नभोग√जन् (उत्पत्ति)+ड] बादल।

नभोगति—वि० [सं० नभस्–गति ब० स०] जिसकी गति या पहुँच आकाश मे हो।

पु० देवता, पक्षी, ग्रह आदि जो आकाश मे चलते है।

नभोगामी (मिन्)—वि० [स० नभस्√गम् (जाना)+णिनि] नभ मे चलनेवाला।

नभोद—पुं० [सं०] एक विश्वदेव। (हरिवंश)

नभोदुह—पुं०[नभस्√दुह् (भरना)+क] बादल। मेघ।

नभोदृष्टि—वि०[सं० नभस्-दृष्टि, ब०स०]१ जिसकी दृष्टि आकाश की ओर हो। २. अंधा।

नभोद्वीप—पुं०[सं० नभस्-द्वीप, स०त०] बादल।

नभोधूम—पुं०[सं० स०त०] बादल।

नभोध्वज—पुं०[सं० नभस्-ध्वज, स०त०] बादल।

नभो नदी—स्त्री०[सं० नभस्-नदी, ष०त०] आकाश-गंगा।

नभोमंडल—पुं०[सं० नभस्-मंडल ष०त०] मंडलाकार आकाश।

नभोमणि—पुं०[सं० नभस-मणि, ष०त०] सूर्य।

नभोयोनि—पुं०[सं० नभस्-योनि, ब०स०] महादेव। शिव।

नभोरज (स्)—पुं०[सं० नभस्-रजस्, ष०त०] अंधकार।

नभोरूप—वि०[सं० नभस्-रूप, ब०स०] नभ अर्थात् आकाश के रंग का। आसमानी या हलका नीला।

नभोरेणु—पुं०[सं० नभस् -रेणु, स० त०] कुहासा। कोहरा।

नभोलय—वि०[सं०नभस्-लय, ब०स०] जो आकाश में लीन हो जाय। पुं० धूआँ।

नभोलिह—वि०[सं० नभस्√लिह् (चाटना)+क] गगनचुंबी।

नभोवट—पुं०[सं०] आकाश-मंडल

नभोवीथी—स्त्री०[सं० नभस्-वीथी, स०त०] छायापथ। (दे०)

नभौका (कस्)—पुं०[सं० नभ-ओकस, ब० स०]१ पक्षी। २ देवता। ३ ग्रह आदि जो आकाश में चलते हैं।

नभ्य—पुं०[सं० नाभि+यत् नभ्रादेश] १ पहिये के नीचे का भाग। २. पहियों में दी जानेवाली चिकनाई या तेल। ३ अक्ष। धुरी। वि० मेघाच्छन्न।

नभ्यसी—पुं०[सं० नभस]१ आकाश। २ सावन का महीना।

नभ्राट् (ज्)—पुं०[सं० न√भ्राज् (दीप्ति)+क्विप्, नि० सिद्धि] बादल। मेघ।

नम (स्)—पुं०[सं०√नम (झुकना)+असुन्]१ नमस्कार। २ त्याग। ३. अन्न। ४. वज्र। ५ यश। ६ स्तोत्र।
वि०[फा०] भीगा हुआ। आर्द्र। गीला।

नमक—पुं०[फा०] एक प्रसिद्ध क्षार पदार्थ जो मुख्यत खारे जल से तैयार किया जाता है और कहीं-कहीं चट्टानो के रूप में भी मिलता है। लवण।
पद—नमक-हराम, नमक-हलाल। (देखें)
मुहा०—(किसी का) **नमक अदा करना**=किसी के किये हुए उपकारो का कृतज्ञतापूर्वक पूरा पूरा प्रतिफल देना। (**किसी का**) **नमक खाना**=किसी का दिया हुआ अन्न खाना। किसी के आश्रय में रहकर पलना। (**किसी का**) **नमक फूटकर निकलना**=स्वामी या आश्रयदाता के प्रति कृतघ्न होने या उसकी बुराई करने का दंड मिलना। कृतघ्नता का बुरा फल मिलना। (**किसी बात में**) **नमक-मिर्च मिलाना या लगाना**=कोई बात बहुत अधिक बढ़ा-चढ़ा कर और अतिरंजित तथा आकर्षक बनाकर कहना। **कटे पर नमक छिड़कना**=ऐसा काम करना या ऐसी बात कहना जिससे दुःखी व्यक्ति और अधिक दुःखी हो।
२. लावण्य। सलोनापन।

नमक-ख्वार—वि०[फा०] (व्यक्ति) जिसने किसी का नमक खाया हो। किसी के द्वारा पालित होनेवाला।

नमकदान—पुं०[फा०] [स्त्री० अल्पा० नमकदानी] पिसा हुआ नमक रखने का पात्र।

नमकसार—पुं०[फा०]१ वह स्थान जहाँ से नमक निकलता हो। २. वह खेत जिसमें समुद्र-जल से नमक तैयार किया जाता है।

नमक-हराम—वि०[फा०+अ०] [भाव० नमक-हरामी] जो अपने आश्रयदाता, उपकारक या स्वामी के प्रति कृतज्ञ न रहकर उसका अहित करता हो या चाहता हो। कृतघ्न।

नमक-हरामी—स्त्री०[फा० नमक+अ० हराम+ई (प्रत्य०)]१. नमक हराम होने की अवस्था या भाव। २ नमक हराम का अन्नदाता या आश्रयदाता के प्रति किया जानेवाला कोई द्रोहपूर्ण कार्य।
†वि०=नमक-हराम।

नमक-हलाल—वि०[फा०+अ०] [भाव० नमक-हलाली] जो अपने आश्रयदाता, उपकारक या स्वामी की कृपा के लिए उसका उपकार मानने और उसकी भलाई करने के लिए सदा तत्पर रहे।

नमक हलाली—स्त्री०[फा०नमक+हलाल+ई (प्रत्य०)]१. नमक-हलाल होने का भाव। स्वामिनिष्ठा। स्वामिभक्त। २. ऐसा कार्य जिससे उपकारक या स्वामी के प्रति कृतज्ञता और भक्ति प्रकट होती है।

नमकीन—वि० [फा०] [भाव० नमकीनी]१ जिसमें नमक पड़ा या मिला हो। जैसे—नमकीन समोसा। २ जो स्वाद में नमक के स्वाद जैसा हो। ३ (व्यक्ति) जो देखने में साँवला होने पर भी सुन्दर हो।

नमगीरा—पुं०[फा० नमगीर]१ एक तरह का छोटा शामियाना जो ओस से बचने के लिए ताना जाता है। २ तिरपाल या पाल जो धूप, वर्षा आदि से रक्षित रहने के लिए किसी स्थान के ऊपर टाँगते या फैलाते है।

नमत—वि०[सं०√नम्+अतच्]१ झुका हुआ। २ नम।
पुं०१ नट। २ स्वामी। ३ बादल। ४ धूआँ।

नमदा—पुं०[फा० नमद] एक प्रकार का ऊनी कंबल जो गद्दे की तरह बिछाया जाता है।

नमन—पुं०[सं०√नम्+ल्युट्—अन] [वि० नमनीय, नमित]१. झुकने की क्रिया या भाव। २ नमस्कार। प्रणाम।

नमना—अ०[सं० नमन]१ नत होना। झुकना। २. नमस्कार या प्रणाम करना। ३ नम्र होना।

नमनि†—स्त्री०[हिं० नमना] १ नमन। २ नम्रता।

नमनीय—वि०[सं०√नम्+अनीयर्] [भाव० नमनीयता]१ जो झुक सके या झुकाया जा सके। २. जिसके आगे झुकना उचित हो, अर्थात् पूज्य या मान्य।

नमश—स्त्री०[फा०] दूध का वह फेन जो ठंडक के कारण जम-सा गया हो। निमस।

नमसित—भू० कृ०[सं० नमस्+क्यङ्+क्त, यलोप]१ जिसे नमस्कार किया गया हो। २ पूजित।

नमस्कार—पुं०[सं० नमस्√कृ (करना)+घञ्]१ किसी पूज्य व्यक्ति के आगे झुककर उसका अभिवादन करना। २ [नमस्-कार, ब०स०] एक प्रकार का विष।

नमस्कारी—स्त्री०[सं० नमस्कार+अच्—ङीष्] १ लज्जावती। २. वराह-क्रान्ता। ३ खदरी या खदरिका नामक क्षुप।

नमस्कार्य—वि०[सं० नमस्√कृ+ण्यत्]१. जिसके सामने नमस्कार करना उचित हो। नमस्कार किये जाने के योग्य। २. पूज्य। वंदनीय।

नमस्क्रिया—स्त्री०[सं० नमस्√कृ+श—इयङ्, टाप्] नमस्कार।

नमस्ते—[सं० नमस् ते व्यस्त पद] एक पद जो अव्यय की तरह प्रयुक्त होता है और जिसका अर्थ है—मैं आपको नमस्कार करता हूँ।

नमस्य—वि०[सं० नमस्+क्यङ्+यत्, अ और म् का लोप] नमस्कार करने के योग्य। पूज्य। वंदित।

नमस्या—स्त्री०[सं०√नमस्य+अ—टाप्]१ पूजा। २ नम्रता।

नमाज—स्त्री०[अ० नमाज] मुसलमानों की एक विशिष्ट प्रकार और रूप की ईश्वर-प्रार्थना जो दिन में पाँच बार करने का विधान है।

क्रि०प्र०—अदा करना।—गुजारना।—पढ़ना।

नमाजगाह—स्त्री०[अ०+फा०]१ नमाज पढ़ने का स्थान। २. मसजिद।

नमाजबंद—पु०[अ० नमाज+फा० बंद] कुश्ती का एक पेंच।

नमाजी—पु०[अ० नमाजी] मुसलमानी धर्म के अनुसार समय पर नमाज पढ़नेवाला व्यक्ति। धर्मनिष्ठ मुसलमान।

पु० वह वस्त्र जिस पर बैठकर नमाज पढ़ी जाय।

नमाना—स०[सं० नमन]१ झुकाना। २ अपने अधीन या वश मे करना।

नमित—वि०[सं०√नम्र+णिच्+क्त] १ झुका हुआ। २. झुकाया हुआ।

नमिश—स्त्री०[फा० नमश या नमिश्क] एक विशेष प्रकार से तैयार किया हुआ दूध का फेन जो प्राय जाड़े में बनता और बहुत स्वादिष्ट होता है।

नमी—स्त्री०[फा०]१. आर्द्रता। तरी। २. सीड़।

वि०[सं० नमिन्]१ झुकनेवाला। २ जो झुक सकता हो।

नमुचि—पु०[सं० न √मुच्(छोड़ना)+इन्]१ एक ऋषि का नाम। २. एक दानव जिसे इन्द्र ने मारा था। ३ एक दैत्य जो शुभ और निशुभ का छोटा भाई था। ४ कामदेव।

नमुचि-रिपु—पु० [ष० त०] इंद्र, जिन्होंने नमुचि का वध किया था।

नमुचिसूदन—पु०[सं० नमुचि√सूद् (मारना)+ल्यु—अन] इंद्र।

नमूद—स्त्री०[फा० नमूद]१ आविर्भाव। प्रकट होना। २ अस्तित्व। ३. धूम-धाम। तड़क-भड़क।

नमूदार—वि०[फा० नुमूदार] [भाव० नमूदारी] आविर्भूत। प्रकट।

नमूना—पु०[फा० नमून]१. किसी वस्तु की बहुत-सी इकाइयों मे से कोई इकाई जो उस वस्तु का स्वरूप बतलाने के लिए दिखाई जाती है। जैसे—पुस्तक की नमूने की प्रति आपको भेजी गयी थी। २. किसी पदार्थ का कोई ऐसा अश जो उसके गुण और स्वरूप का परिचय कराने के लिए निकाला गया हो। बानगी। जैसे—चावल का नमूना। ३ वह जिसे देखकर उसके अनुसार वैसा ही कुछ और बनाया जाय। प्रतिमान। जैसे—इस बेल का नमूना कागज पर उतार लो। ढाँचा। †पुं० दे० 'निमोना'(सालन)।

नमेरु—पु०[√नम्+एरु]१. रुद्राक्ष का पेड़। २. एक तरह का पुन्नाग (वृक्ष)।

नम्र—वि०[सं० √नम्+र]१. (पदार्थ) जो झुका हो। २ (व्यक्ति) जिसमें नम्रता और विनय हो।

नम्रक—पु०[सं० नम्र√कै (प्रतीत होना)+क] बेंत।

नम्रता—स्त्री०[सं० नम्र+तल्—टाप्] नम्र होने की अवस्था, गुण या भाव।

नम्रांग—वि०[सं० नम्र-अंग, ब०स०]१ झुका हुआ। २. झुके हुए अगोंवाला।

नम्रित—वि०=नमित।

नय—वि०[सं०√नी (ले जाना)+अच्?]१ किसी को किसी ओर ले जानेवाला। २ मार्ग-दर्शक। ३ उचित। ठीक। वाजिब।

पु०[√नी+अप्]१ बरताव। व्यवहार। २. जीवन बिताने का ढंग। आचरण। ३ अच्छा या श्रेष्ठ आचरण। सदाचार। ४. दूरदर्शिता और बुद्धिमत्ता। ५. नम्रता। विनय। ६ न्यायपूर्वक और समझदारी से उचित या ठीक काम करने का ढंग और योग्यता। नीति। ७ प्रबंध, व्यवस्था और शासन करने का कोई व्यक्तिगत और कौशलपूर्ण ढंग या नीति। राजनीति। ८ अच्छी तरह से काम करने के लिए बनाई हुई योजना। ९ दार्शनिक मत या सिद्धान्त। १०. एक प्रकार का खेल या जूआ। ११ विष्णु का एक नाम। १२. जैन दर्शन मे, प्रमाणों द्वारा निश्चित अर्थ या तत्त्व ग्रहण करने की वृत्ति जो सात प्रकार की कही गई है। यथा—नैगम, संग्रह, व्यवहार, ऋजुसूत्र शब्द, समाभिरूढ और एवंभूत।

स्त्री०[सं० नद या नदी] नदी। उदा०—केते औगुन जग करत नय वय चढ़ती बार।—बिहारी।

नय-ऋति*—पु०=नैऋंत।

नयक—वि०[सं० नय+वुन्—अक] कुशल। चतुर।

पु०१ कुशल कार्यकर्ता। २ राजनीति मे निपुण व्यक्ति। कुशल राज-नीतिज्ञ। ३ नेता।

नयकारी—पु०[?]१ नर्तकों के दल का नायक। नाचनेवालों का मुखिया। २ नाचनेवाला। नर्तक।

नयज्ञ—वि०=नीतिज्ञ।

नयण*—पु०=नयन।

नयन—पु०[सं०√नी+ल्युट्—अन]१ किसी को कहीं या किसी ओर ले जाने की क्रिया या भाव। २ प्रबन्ध, व्यवस्था या शासन करने की क्रिया या भाव। ३ समय बिताने या व्यतीत करने की क्रिया या भाव। ४ आँखें या नेत्र जो हमें कहीं या किसी ओर ले जाने मे सहायक होते हैं।

नयन-गोचर—वि०[ष०त०]१. जो आँखों मे दिखाई देता हो। दिखाई देनेवाला। २ जो आँखों के सामने हो। समक्ष।

नयनच्छद—पु०[ष०त०] आँख को ढकनेवाली पलक।

नयन-जल—पु०[ष०त०] आँखों से बहनेवाला पानी अर्थात् आँसू। अश्रु।

नयनता—स्त्री०[हिं०]'नयन' का भाव। उदा०—कुछ कुछ खुली नयनता से, कुछ रुकी मुस्कान से, छीनते किस भाँति हो तुम धैर्य को।—पंत।

नयन-पट—पु०[ष०त०]=पलक।

नयन-पथ—पु०[ष०त०] १. दृष्टि का मार्ग। २ वह सारा विस्तार जो किसी ओर देखने पर आँखों के सामने आता या होता है।

नयन-पुट—पु०[ष०त०] वह कोटर या गड्ढा जिसमे आँख स्थित रहती है।

नयन-वारि—पुं०[ष०त०] नयन-जल। आँसू।

नयन-सलिल—पुं०[ष० त०] नयन-जल। आँसू।

नयनांबु—पुं०[नयन-अंबु, ष०त०] आँसू।

नयना—अ०[सं० नमन]१ झुकना। २ किसी के आगे नम्र या विनीत होना।

स०१ झुकना। २ लाक्षणिक अर्थ मे न रहने देना या कम करना। उदा०—अंबर हरत द्रौपदी राखी ब्रह्म इन्द्र की मान नयो।—सूर।

†पुं०=नयन (आँख)।

नय-नागर—वि०[सं० स०त०]१. नय अर्थात् नीतिशास्त्र मे निपुण। नीतिज्ञ। २ चतुर। चालाक।

नयनाभिराम—वि०[सं० नयन-अभिराम, ब०स०] जो देखने मे प्रिय तथा सुन्दर हो।

नयनिमा—स्त्री०[सं० नयन से]१ आँख का भाव। आँख पन। नेत्रता। २. चितवन। उदा०—कहाँ नयनिमा ने पाये ये फूलो के मादक शर।—पन्त।

नयनी—स्त्री०[सं० नयन] आँख की पुतली।

वि० स्त्री० नयनो या आँखोवाली। (यौ० के अन्त मे।) जैसे—मृग नयनी।

नयनू—पुं०[नवनीत] १ मक्खन। २ पुरानी चाल की एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

नयनोत्सव—पुं०[सं० नयन-उत्सव, ब०स०] १ ऐसी सुन्दर वस्तु जिसे देखने से नेत्रो को बहुत सुख मिले। २ दीपक। दीया।

नयनौषध—पुं०[सं० नयन-औषध, ष०त०] पुष्पकसीस। पीला कसीस।

नयर—पुं०=नगर।

नय-वाद—पुं०[सं० ष०त०] एक दार्शनिक वाद या सिद्धान्त जिसमे यह माना जाता है कि आत्मा एक भी है और अनेक भी।

नयवादी (दिन्)—पुं०[सं० नयवाद+इनि]१ नयवाद का अनुयायी या ज्ञाता। २ नीतिज्ञ। ३ राजनीतिज्ञ।

नयशाली (लिन्)—वि०[सं० नय√शाल् (शोभित होना)+णिनि]=नय-शील।

नय-शास्त्र—पुं०[ष०त०]=राजनीति शास्त्र।

नय-शील—वि०[सं० ब०स०]१ जो झुक सकता या झुकाया जा सकता हो। २ बुद्धिमान। विचारशील। ३ नीतिज्ञ। ४ नम्र। विनीत। ५ विजयी।

नया—वि०[सं० नव] [स्त्री० नयी, नई] १ जिसका अस्तित्व पहले न रहा हो, बल्कि जो अभी हाल मे निकला, बना या हुआ हो। जो कुछ ही समय पहले प्रस्तुत हुआ हो। नवीन। जैसे—शहर मे बहुत से नये मकान बने हैं।

मुहा०—(कोई पदार्थ) नया कर देना खराब या नष्ट कर डालना। निकम्मा या रद्दी बना देना। (मगल-भाषित रूप मे प्राय स्त्रियो द्वारा प्रयुक्त) जैसे—इस लडके को जो कपड़ा दो, वह दो दिन मे नया करके रख देता है, अर्थात् जला देता, फाड डालता या मैला कर देता है।

२ जिसकी उत्पत्ति या उपज अभी हाल मे हुई हो। नई पैदावार मे का। जैसे—नया आलू, नया चावल, नया पान।

मुहा०—(अनाज या फल) नया करना=प्रस्तुत ऋतु मे होनेवाला अनाज, तरकारी या फल पहले-पहल खाना। जैसे—इस साल हमने आज ही गोभी नई की है, अर्थात् पहले-पहल खाई है।

३ जिसका आविर्भाव, रचना या सृजन हुए अधिक समय न बीता हो। थोडे दिनो का। हाल का। ताजा। जैसे—नई जवानी, नया नियम, नई सभ्यता। ४. जिसका अस्तित्व या सत्ता तो पहले से रही हो, परतु जिसका अधिकार, ज्ञान या परिचय हाल मे प्राप्त हुआ हो। जैसे—(क) वे यह मकान छोडकर किसी नये मकान मे चले गये है। (ख)—ज्योतिषी नित्य नये तारो का पता लगाते रहते हैं। (ग) हमारे लिए तो यह अनुभव (या विचार) नया ही है। ५. जो पहले किसी के उपयोग या व्यवहार मे न आया हो। जिससे पहले किसी ने काम न लिया हो। जैसे—यह लडका रोज नये कपडे पहनना चाहता है। ६ जो पहले था, उससे भिन्न और उसके स्थान पर आनेवाला दूसरा। जैसे—(क) अब नये अधिकारी आकर इस विषय का निर्णय करेंगे। (ख) विद्यालय मे कई नये अध्यापक आये है।

मुहा०—(कोई पुराना पदार्थ) नया करना या कर देना=टूट-फूट जाने अथवा निकम्मे या रद्दी हो जाने पर उसके स्थान पर दूसरा नया लाकर रखना। जैसे—आपका जो शीशा हमसे टूट गया है, वह हम नया कर देंगे।

७ परिवर्तन, मरम्मत, सुधार आदि करके ऐसे रूप मे लाया हुआ जो पहले से बिलकुल भिन्न जान पडे। नये अथवा हाल के बने हुए के समान। जैसे—(क) दो हजार रुपये खरच करो तो यह मकान बिलकुल नया हो जायगा। (ख) दस रुपए मे घड़ी-साज ने घडी बिलकुल नई कर दी है। (ग) इस बार की धुलाई मे यह कोट बिलकुल नया हो गया है। ८. जो किसी काम मे अथवा किसी पद या स्थान पर पहले-पहल आकर लगा हो। जैसे—(क) नये आदमी को काम सँभालने और समझने मे कुछ समय लगता ही है। (ख) इस यत्र का नया पुरजा कुछ खडखड करता है। ९ जो एक बार बहुत कुछ नष्ट या समाप्त होने की दशा मे पहुँचकर भी फिर से बना या काम मे आने के योग्य हुआ हो। जैसे—इस बीमारी मे लडके की नई जिंदगी हुई है या इसे नया जीवन मिला है। १० जिसका क्रम या चक्र फिर से चलने लगा हो। जैसे—नया चद्रमा, नया वर्ष। ११. जो अपने वर्ग के दूसरो की तुलना मे अभी हाल का या औरो के बाद का हो और जिसका नामकरण किसी पूर्ववर्ती के अनुकरण पर हुआ हो। (प्राय बस्तियो, महल्लो आदि के नामो के सबध मे) जैसे—नई दिल्ली, नई बस्ती, नया बाजार। १२ ऐसा अजनबी या पराया जो पहले कभी न देखा गया हो। जैसे—नये आदमी को देखकर कुत्ते भूँकने लगते हैं (या लडके घबरा जाते है)।

विशेष—यह शब्द सभी अर्थों मे 'पुराना' का विपर्याय है।

नयापन—पुं० [हि० नया+पन (प्रत्य०)]१. नये होने की अवस्था या भाव। नवीनता। नूतनत्व। २ कोई ऐसा नवीन गुण या विशेषता, जिसके फलस्वरूप किसी चीज मे कोई चमत्कार या सौंदर्य उत्पन्न हो जाय।

नयाम—पुं०[फा० नियाम] तलवार की म्यान। कोष।

नरंग—पुं०[सं० नारग] नारगी का पेड।

नरंधि—पुं० [सं० नर√धा (धारण)+कि, पृषो० मुम्] लौकिक या सांसारिक जीवन।

नरंधिप—पुं० [सं०] विष्णु।

नर—वि० [सं०√नृ(नय)+अच्] १. जिसमे वे सब शारीरिक अवयव हो जो किसी विशिष्ट वर्ग के वीर्यवान् जीवो मे होते है। (रज युक्त जीवों को मादा कहते है) जैसे—नर व्यक्ति, नर हाथी। २. बहादुर। वीर। ३. जो अपने वर्ग मे सबसे बढ़कर, बड़ा या श्रेष्ठ हो। जैसे—नर हीरा।

पु० [स०] १ विष्णु। २ शिव। ३ अर्जुन। ४. एक प्रकार की देव-योनि। ५ पुराणानुसार एक ऋषि जिनके भाई का नाम नारायण था, और जो धर्मराज के पुत्र थे। ६ गय राक्षस का एक नाम। ७ पुरुष। मर्द। ८ नौकर। सेवक। ९. वह खूंटी जो छाया की दिशा, गति आदि जानने के लिए गाडी जाती है। लब। शकु। १०. दोहे का एक भेद जिसमे १५ गुरु और १८ लघु होते हैं। ११ छप्पय का एक भेद जिसमे १० गुरु और १३ लघु होते है। १२ एक प्रकार का क्षुप जिसे गधेल, राय-कपूर, रोहिस और सेंधिया भी कहते हैं।

पु० १ =नरकट। २ =नल।

नरई—स्त्री० [?] १ वनस्पति का कोई ऐसा डठल जो अंदर से खोखला या पोला हो। २ जलाशयो के पास होनेवाली एक प्रकार की घास।

नरकत—पु० =नरकात (राजा)।

नरक—पु०[सं०√नृ(क्लेश देना)+अच्] [वि० नारकीय] १. वह स्थान जहाँ मृत्यु के उपरात दुष्ट जीवो की आत्माओ को रहना तथा यातनाएँ सहनी पडती हैं। (पुराण)

क्रि० प्र०—भोगना।

२. बहुत गदा और दुर्गंधपूर्ण स्थान। ३. ऐसा स्थान जहाँ अनेक प्रकार के कष्ट होते हों। ४. किसी चीज का बहुत ही गंदा और मैला अश। ५ पुराणानुसार कलि के पौत्र का नाम जो कलि के पुत्र भय और पुत्री मृत्यु के गर्भ से उत्पन्न हुआ था और जिसने अपनी बहन यातना के साथ विवाह किया था। ६ विप्रचित्त दानव के एक पुत्र का नाम। ७ 'नरकासुर'।

पु० [स०] राजा।

नरक-गति—स्त्री० [स० त०] वह दूषित कर्म जिसके फलस्वरूप नरक मे वास होता है। (जैन)

नरकगामी (मिन्)—वि० [स० नरक√गम् (जाना)+णिनि] जिसे अपने पापों का फल भोगने के लिए नरक जाना पड़े।

नरक-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी जिस दिन घर का सारा कूडा-करकट निकालकर बाहर फेंका जाता है।

विशेष—नरकासुर इसी दिन मारा गया था।

नर-कचूर—पु०=कचूर।

नरक-चौदस—स्त्री०=नरक-चतुर्दशी।

नरकट—पु० [हिं०] बेंत की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसके डंठल मजबूत किंतु खोखले होते हैं और अनेक प्रकार के कामों मे लाये जाते हैं।

नर-कटिया†—वि० स्त्री० [हिं० नार+काटना] नवजात शिशु को नाल काटनेवाली (स्त्री)।

स्त्री० चमारिन।

नरक-भूमिका—स्त्री० [ष० त०] नरक। (जैन)

नरकल†—पुं०=नरकट।

नरकस—पु० =नरकट।

नरकस्था—स्त्री० [स० नरक√स्था (स्थित होना)+क—टाप्] वैतरणी नदी।

नरकांतक—पु० [स० नरक-अतक ष० त०] विष्णु।

नरका—पु० [स० नरकट] हल के पीछे की वह नली जिसमे बोने के लिए बीज डाले जाते हैं।

नरकामय—पु० [स० नरक-आमय, ब० स०] प्रेत।

नरकारि—पु० [स० नरक-अरि, ष० त०] श्रीकृष्ण।

नरकावास—वि० [स० नरक-आवास, ब० स०] नरक मे रहनेवाला।

पु० नरक मे होनेवाला वास या निवास।

नरकासुर—पु० [स० नरक-असुर मध्य स०] एक प्रसिद्ध राक्षस जो पृथ्वी का एक पुत्र था तथा जिसे विष्णु ने प्रागज्योतिषपुर का राज्य दिया था। इसके अत्याचारो से क्षुब्ध होकर भगवान कृष्ण ने इसका सिर सुदर्शन से काटा था।

नरकी—वि०=नारकी।

वि० [सं० नारकिन्] बहुत बड़ा पापी जो नरक मे जाने योग्य कर्म करता हो।

नरकुल—पु०=नरकट।

नर-केशरी—पु०[स० मयू० स०] १ वह जो पुरुषो मे सिंह के समान वीर और साहसी हो। २. विष्णु का नृसिंह अवतार।

नर-केसरी—पुं० =नरकेशरी।

नर-केहरि—पु० [स० नर +हिं केहरि] नर केशरी (नृसिंह)।

नर-कौतुक—पु० [स० ब० स०] कोई चमत्कारपूर्ण या जादू-भरा खेल।

नरखड़ा—पु० [?] गला।

नर-गण—पु० [स० ब० स०] उत्तरा फाल्गुनी, उत्तराषाढ़, पूर्वभाद्रपद, रोहिणी, भरणी और आर्द्रा नक्षत्रो का एक गण जिसमे जन्म लेनेवाला बुद्धिमान् तथा सुशील होता है। (फलित ज्यो०)

नरगा—पु० [यू० नर्गा] १. शिकारी पशुओं को घेरने के लिए बनाया जानेवाला मनुष्यो का घेरा। २. जन-समूह। ३. विपत्ति।

नरगिस—स्त्री० [फा० नर्गिस] १ एक प्रकार का पौधा जो ठीक प्याज के पेड का-सा होता है। २ उक्त पौधे का फूल जो कटोरी के आकार का गोल तथा काला धब्बा लिये सफेद रग का होता है। ३ आँख जिसका उक्त फूल उपमान माना जाता है।

नरगिसी—वि० [फा० नर्गिस] १ नरगिस-सबधी। २. नरगिस के आकार-प्रकार, रूप-रग आदि का।

पुं० १. पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा जिस पर नरगिस के फूलो के आकार की बूटियाँ होती थी। २ एक तरह का कबाब जो अडो पर कीमा चढ़ाकर बनाया जाता है।

नरचा—पु० [स०] पटसन की एक जाति।

नरजना—अ० [फा० नाराज] नाराज होना।

स० [अ० नजर से वि०] कोई चीज नापना या तौलना।

नरजा—पुं० [हिं० नरजना] पलड़ा (तराजू का)।

नरजी—पु० [हिं० नरजना] वह जो अनाज तौलने का काम करता हो। बया।

नरतक* —पु०=नर्तक।
नर-त्राल—पु० [स० ष० त०] राजा।
नर-त्राण—पु० [स० ष० त०] १ मनुष्यो का रक्षक, राजा। २ श्रीकृष्ण।
नरत्व—पु० [स० नर+त्व] नर होने की अवस्था, गुण या भाव। नरता।
नरदँवा†—पु०=नरदमा।
नरद—स्त्री० [फा० नर्द] १ चौसर का खेल। २ चौसर खेलने की गोटी।
पु० [स० नर्द] नाद। शब्द।
नरदन—पु० [स० नर्दन] शब्द करने की क्रिया या भाव।
नरदमा—पु० [?] नाबदान। पनाला।
नरदा†—पु० नाबदान (पनाला)।
नर-दारा—पु० [स० नर और दारा] १ जनखा। हिजडा। २ वह जो पुरुष होने पर भी स्त्रियो के से हाव-भाव दिखाता या रूप-रग रखता हो। जनाना। ३ डरपोक व्यक्ति।
†स्त्री० नर-नारि (द्रौपदी)।
नर-देव—पु० [स० उपमि० स०] १ राजा। २ ब्राह्मण।
नर-नाथ—पु० [स० उपमि० स०] नरदेव। (दे०)
नर-नायक—पु० [स० उपमि० स०] राजा।
नर-नारायण—पु० [स० द्व० स०] नर और नारायण नामक दो भाई जो प्रसिद्ध ऋषि हुए है और विष्णु के अवतार माने जाते है। (महाभारत)
नर-नारि—स्त्री० [स०] नर (अर्जुन) की स्त्री, द्रौपदी।
नरनाह—पु० [स० नरनाथ] राजा।
नर-नाहर—वि० [स० नर+हिं० नाहर (सिंह)] जो पुरुषो मे शेर के समान वीर और साहसी हो।
पु० नृसिह नामक अवतार।
नरनी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा।
नर-पति—पु० [स० ष० त०] राजा। नृपति।
नर-पद—पु० [स० ष० त०] १ जनपद। २ देश।
नर-पशु—वि० [स० उपमि० स०] जो मनुष्य होने पर भी पशुओ का-सा आचरण करता हो।
पु० १ आचार-विचार हीन व्यक्ति। २ नृसिह नामक अवतार।
नरपाल—पु० [स० नर√पाल् (बचाना)+णिच्+अण्] राजा। भूपति।
नरपालि—पु० [स० नर√पाल्+णिच्+इन्] छोटा शख।
नर-पिशाच—पु० [स० उपमि० स०] मनुष्य होने पर भी जो पिशाचो के-से निकृष्ट कर्म करता हो। परम क्रूरतापूर्ण और हेय कर्म करनेवाला व्यक्ति।
नर-पुर—पु० [स० ष० त०] मनुष्य-लोक। पृथ्वी।
नर-प्रिय—पु० [स० ष० त०] नील का पेड।
नरबदा—स्त्री०=नर्मदा।
नरभक्षी (क्षिन्)—वि० [स० नर√भक्ष् (खाना)+इनि] मनुष्यो को खानेवाला।
पु० दैत्य। राक्षस।
नर-भू, नर-भूमि—स्त्री० [स० ष० त०] भारतवर्ष।

नरम—वि० [फा० नर्म] १ (पदार्थ) जिसमें कडापन न हो। जो दबाये जाने पर सहज मे दब सके। मुलायम। २ जिसमे उग्रता या कठोरता न हो। जैसे—नरम स्वभाव। कोमल। मृदुल। ३ पिलपिला या लचीला। ४ मद। धीमा। ५ जल्द पचनेवाला। ६ जिसमें पौरुष या पुसत्व न हो।
पु० [स० नर्मन्] १ हँसी-दिल्लगी। २ साहित्य मे, सखाओ का एक प्रकार या भेद। दे० 'नर्म-सचिव।'
नरमट—स्त्री० [हिं० नरम+मिट्टी] ऐसी जमीन, जिसकी मिट्टी नरम हो।
नरमदा—स्त्री०=नर्मदा।
नरम रोआँ—पु० [हिं० नरम+रोआँ] बुनाई के लिए भेंड-बकरियो का लाल या सफेद रग का रोआँ जो प्राय बहुत मुलायम होता है।
नरम लोहा—पु० [हिं० नरम+लोहा] आग मे तपाया हुआ लोहा, जिसे पीटकर सहज मे दूसरा रूप दिया जा सकता है।
नरमा—स्त्री० [हिं० नरम] १ एक प्रकार का विदेशी पौधा जिसमे कपास होती है। २ उक्त पौधे की रूई। ३ सेमल की रूई।
पु० कान के नीचे का कोमल अश।
नरमाई—स्त्री०=नरमी।
नरमाना—स० [हिं० नरम+आना (प्रत्य०)] १ नरम अर्थात् कोमल या मुलायम करना। २ धीमा, मद्धिम या शात करना।
अ० १ नरम अर्थात् कोमल या मुलायम होना। २ धीमा, मद्धिम या शात होना।
नरमानिका—स्त्री०=नरमानिनी।
नरमानिनी—स्त्री० [स० नर√मन् (मनना)+णिनि—ङीष्] ऐसी स्त्री जिसके चेहरे पर मूँछ और दाढी के कुछ बाल हो।
नरमावडी—स्त्री० [हिं० नरमा] बन-कपास।
नरमाहट—स्त्री०=नरमी।
नरमी—स्त्री० [फा० नर्मी] १ नरम या नर्म होने की अवस्था, गुण या भाव। २ कठोरतापूर्ण व्यवहार न करने का गुण।
पद—नरमी से- शाति तथा ठढे स्वभाव से।
नर-मेध—पु० [स० ब० स०] १ प्राचीन काल मे होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ जिसमे मनुष्य के मास की आहुति दी जाती थी। २ बहुत अधिक मनुष्यो का प्राय एक साथ होनेवाला सहार या हत्या।
नर-यत्र—पु० [सं०] ज्योतिष मे एक प्रकार का शकु-यत्र जिसकी सहायता से धूप की छाया देखकर समय का बोध होता था।
नरर्षभ—पु० [स० नर-ऋषभ स० त०] राजा।
नर-लोक—पु० [स० ष० त०] मनुष्य-लोक। मृत्यु-लोक। ससार।
नर-वध—पु० [स० ष० त०] मनुष्य को मार डालना। नर-हत्या।
नरवरी—स्त्री० [?] क्षत्रियो की एक जाति।
नरवा—पुं० [देश०] एक प्रकार की चिडिया।
नरवाई—स्त्री० [?] घास-फूस।
नर-वाहन—पु० [स० मयू० स०] १ ऐसी सवारी जिसे मनुष्य खीचता या ढोता हो। जैसे—डोली, पालकी आदि। २ [ब० स०] कुबेर। ३ किन्नर।
नरवै*—पु०=नरपति (राजा)।

नर-व्याघ्र—पु० [स० उपमि० स०] १. वह जो मनुष्यों में व्याघ्र की तरह वीर और साहसी हो। २ वह जो मनुष्यो मे परम श्रेष्ठ हो। ३. राजा। नृपति। ४. एक समुद्री जतु जिसका निचला भाग मनुष्य के आकार का और ऊपरी भाग सिह के आकार का होता है।

नर-शक—पुं० [स० उपमि० स०] राजा।

नरसल†—पु०=नरकट।

नर-सार—पुं० [स० ब० स०] नौसादर।

नरसिंग—पु० [?] एक प्रकार का विलायती फूल।

नरसिंगा—पु०=नरसिहा।

नरसिंघ—पु०=नृसिह।

नरसिंघा—पु० [हिं० नर=बडा+सिंघा] तुरही के आकार का फूँककर बजाया जानेवाला ताँबे का एक बाजा।

नर-सिंह—पु० [स० उपमि० स०] =नृसिह।

नरसिंह-ज्वर—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का ज्वर जो एक-एक दिन का नागा कर लगातार तीन-तीन दिन तक चढा रहता है। (वैद्यक)

नरसिंह-पुराण—पु० [स० मध्य० म०] =नृसिह पुराण।

नरसी मेहता—पु०[?] गुजरात के एक प्रसिद्ध भक्त (सवत् १४७२–१५३८ वि०) जो दिन-रात भगवान का कीर्तन किया करते थे।

नरसेज—पु० दे० 'तिधारा' (वृक्ष)।

नरसो—अव्य० [हि० परसो का अनु०] १. परसो के बाद आनेवाले दिन मे। २ (बीते हुए) परसो के पहलेवाले दिन मे। दे० 'अतरसों'।

नर-हत्या—स्त्री० [ष० त०] १ मनुष्य की हत्या। २ विधिक क्षेत्र मे, किसी के द्वारा अनजान मे होनेवाली मनुष्य की ऐसी हत्या जो कानून की दृष्टि मे विशेष अपराधपूर्ण नही होती। (होमीसाइड)

नरहर—स्त्री०[हि० नल] पैर की वह हड्डी जो पिंडली के ऊपर होती है।

नर-हरि—पु० [स० उपमि० स०] नृसिह भगवान जो दस अवतारो मे से चौथे अवतार हैं। नृसिह (अवतार)।

नरहरी—पु० [स०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ और ५ के विराम से १९ मात्राएँ और अत मे एक नगण और एक गुरु होता है।

नरहा†—पुं० [देश०] एक प्रकार का जगली वृक्ष जिसे चिल्ला (देखें) भी कहते हैं।

नर हीरा—पु० [हिं० नर=बडा+हि०हीरा] वह बड़ा हीरा जिसके छ या आठ पहल हो।

नरांतक—पु० [स० नर-अतक, ष० त०] रावण का एक पुत्र जो युद्ध मे अगद के हाथो मारा गया था।

नरा—पु० [हि० नल या नरकट] १. नरकट की वह छोटी नली जिसके ऊपर सूत लपेटा जाता है। २ खेत का वह गड्ढा जिसमे पानी भरा हो।

नराच—पु० [स० नाराच] १. तीर। बाण। २ चार चरणो का एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे जगण, रगण, जगण, रगण, जगण और अंत में एक गुरु होता है। इसे पंचचामर और नागराज भी कहते हैं।

नराचिका—स्त्री० [स०] छन्द शास्त्र मे वितान वृत्त का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में नगण, रगण, लघु और गुरु होता है।

नराज—वि०=नाराज।

नराजगी†—स्त्री० =नाराजगी।

नराजना—स० [हिं० नराज] अप्रसन्न या नाराज करना।

अ० अप्रसन्न या नाराज होना।

नराट—पु० [स० नरराट्] राजा।

नराधम—पु० [स० नर-अधम, स० त०] मनुष्यो मे अधम या नीच व्यक्ति। बहुत बडा अधम या नीच।

नराधार—पु० [स० नर-आधार, ष० त०] महादेव। शिव।

नराधिप—पु० [स० नर-अधिप, ष० त०] राजा।

नरायन†—पु० =नारायण (विष्णु)।

नराश, नराशन—वि० [स० नर√अश् (खाना)+अण्, नर-अशन ब० स०] मनुष्यो को खानेवाला।

पु० राक्षस।

नरिंद*—पु० नरेन्द्र (राजा)।

नरि†—स्त्री० =नदी। उदा०—दुसह जमुना नरि एलहु भाँगि।—विद्यापति।

नरियर—पु० =नारियल।

नरियरि—स्त्री० =नरेली।

नरियल†—पु० =नारियल।

नरिया—पु० [हि० नाली] मिट्टी का एक प्रकार का खपडा जो मकान की छाजन पर रखने के काम मे आता है। यह अर्द्धवृत्ताकार और नली की तरह लबा होता है और इसे "थपुआ" खपडे की सधियो पर औंधाकर इसलिए रखते हैं कि उन सधियों मे से पानी नीचे न चूने पावे।

नरियाना—अ० =नर्राना।

नरी—स्त्री०[?] १ बकरी या बकरे का रँगा हुआ चमडा। २. लाल रग का चमड़ा। ३ सिझाया हुआ मुलायम चमडा।

स्त्री० [हिं० नल] १ नली। २ जुलाहों की ढरकी मे की वह नली जिस पर सूत लपेटा रहता है। नार। ३ जलाशयो के किनारे होनेवाली एक प्रकार की घास।

स्त्री० [फा०] =नरमन।

स्त्री० [स० नर=पुरुष] औरत। स्त्री।

पु० [?] एक प्रकार का बगला।

नरु*—पु० =नर (मनुष्य)।

नरुआ†—पु० [हिं० नल] [स्त्री० अल्पा० नरुई] अनाज के पौधो का पतला डठल जो अदर से पोला होता है।

नरेंद्र—पु० [स० नर-इद्र, ष० त०] १ राजा। नरेश। २ वह जो बिच्छू, साँप आदि का विष दूर करने की कला या विद्या जानता हो। विष-वैद्य। ३ श्योनाक। सोना-पाठा। ४ सार नामक छद का दूसरा नाम।

नरेन्द्र-मंडल—पु० [ष० त०] अँगरेजी शासन-काल मे देशी रियासता के राजाओ की एक सस्था जो देशी रियासतो की हित-रक्षा के उद्देश्य से बनी थी। (चैम्बर ऑफ प्रिंसेज)

नरेतर—पु० [स० नर-इतर, प० त०] मनुष्य से भिन्न श्रेणी का प्राणी अर्थात् जानवर या पशु।

नरेबी—स्त्री० [?] शिवसागर और सिलहट प्रदेशो मे होनेवाला एक तरह का पेड़ जिसकी छाल से खाकी रंग निकलता है।

नरेली—स्त्री० [हिं० नारियल] १ छोटा नारियल। २. नारियल की खोपडी या उसका ऊपरी कड़ा आवरण। ३. नारियल की खोपड़ी का बना हुआ हुक्का।

नरेश—पुं० [स० नर-ईश, ष० त०] मनुष्यो का स्वामी, राजा।

नरेश्वर—पु० [स० नर-ईश्वर, ष० त०] राजा।

नरेस—पु०=नरेश।

नरों—अ० य०=नरसो (अतरसो)।

नरोत्तम—वि० [स० नर-उत्तम, स० त०] नरो या मनुष्यो मे उत्तम अर्थात् श्रेष्ठ।

पु० ईश्वर।

नर्क—पु० दे० 'नरक'।

नर्कुट†—पु०=नरकट।

नर्कुटक—पु० [स०] नासिका। नाक।

नर्गिस—स्त्री० [फा०] नरगिस।

नर्गिसी—वि० [फा०] =नरगिसी।

नर्त—पु० [स०√नृत् (नाचना)+अच्] नर्तक।

नर्तक—पु० [स०√नृत+ण्वुल्—अक] [स्त्री० नर्तकी] १ वह जो नाचता या नृत्य करता हो। नाचनेवाला व्यक्ति। नचनियाँ। २ नट। ३ चारण। ४ खड्ग की धार पर नाचनेवाला व्यक्ति। केलक। ५ राजा। ६. महादेव। शिव। ७ पुराणानुसार एक सकर जाति जिसकी उत्पत्ति धोबी पिता और वेश्या माता से कही गई है। ८ हाथी। ९ महुआ। १० नरकट।

नर्तकी—स्त्री० [स० नर्तक+ङीष्] १ नाचने का पेशा करनेवाली स्त्री। २ नटी। ३ रडी। वेश्या। ४ नली नामक गन्ध द्रव्य।

नर्तन—पु० [स० √नृत्+ल्युट्—अन] १. नाचने की क्रिया या भाव। २ नाच। नृत्य।

नर्तन-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] नृत्यशाला। नाचघर।

नर्तना*—अ० [स० नर्तन] नाचना। उदा०—लरत कहूँ पायक सुभट कहुं नर्तत नटराज।—केशव।

नर्तयिता (तृ)—पुं० [स०√नृत्+णिच्+तृच्] १ नाचनेवाला। २ नाच सिखलानेवाला।

नर्तित—वि० [स०√नृत+णिच्+क्त] १ नचाया हुआ। २ नाचता हुआ। ३ जो नाच चुका हो या नचाया जा चुका हो।

नर्तु—पु० [स०√नृत्+तुन्] वह जो तलवार की धार पर नाचता हो।

नर्तू—स्त्री० [स नर्तु+ऊङ्] १. नर्तकी। २. अभिनेत्री।

नर्द—स्त्री० [फा०] १. चौसर का खेल। २ चौसर की गोटी।

नर्दकी—स्त्री० [देश०] एक तरह की कपास। इसे कटील-निमरी और बगई भी कहते हैं।

नर्दन—पुं० [सं०√नर्द् (शब्द)+ल्युट्—अन] भीषण ध्वनि या नाद। गरज।

नर्दबाज—पु० [फा० नर्दबाज] चौसर का खिलाड़ी।

नर्दबाजी—स्त्री० [फा०] १ चौसर का खेल। २ चौसर खेलने का व्यसन।

नर्दबान—पु० [फा०] १ सीढ़ी, विशेषत. काठ की सीढी। २. मार्ग। रास्ता।

नर्दमा—पु० [हिं० नल] वह नल जिसमे से कीचड और मैला पानी बहता हो। गदा नाला।

नर्दा†—पु०=नर्दमा।

नर्दित—वि० [स०√नर्द+क्त] १ गरजा हुआ। २. गरजता हुआ। पु० १ एक तरह का पासा। २ पासा फेंकने का एक ढग।

नर्बदा—स्त्री०=नर्मदा।

नर्म(न्)—पु० [स०√नृ (ले जाना)+मनिन्] १. परिहास। हँसी-ठट्ठा। मजाक। २ साहित्य, मे नायक का ऐसा सखा जो हँसी-ठट्ठा करके उसे प्रसन्न रखता हो।

वि० दे० 'नरम'।

नर्मट—पु० [स० नर्मन्+अटन्, पृषो० सिद्धि] सूर्य।

नर्मठ—पु० [स० नर्मन्+ अठन्, पृषो० सिद्धि] १ वह जो परिहास आदि मे कुशल हो। दिल्लगीबाज। ठठोल। २ स्त्री का उपपति या यार। ३ ठोढ़ी। ४ स्तन।

नर्मद—वि० [स० नर्मन्√दा (देना)+क] १ आनद देनेवाला। २ सुख देनेवाला।

पु० १ परिहास-प्रिय। दिल्लगीबाज। ठठोल। मसखरा। २ भाँड।

नर्मदा—स्त्री० [स० नर्मद+टाप्] १ अमर-कटक से निकलनेवाली एक प्रसिद्ध नदी जो भड़ौच के पास खभात की खाडी मे गिरती है। २ पुराणानुसार एक गन्धर्व स्त्री जो केतुमती, वसुदा और सुन्दरी की माता थी। ३ असवर्ग या पृक्का नामक गन्ध-द्रव्य।

नर्मदेश्वर—पु० [स० नर्मदा-ईश्वर, मध्य० स०] एक प्रकार के अडाकार शिव-लिंग जो नर्मदा नदी मे से निकलते हैं।

नर्म-द्युति—स्त्री० [स०] नाट्यशास्त्र के अनुसार प्रतिमुख सधि के तेरह अगो मे से एक।

नर्म-सचिव, नर्म-सुहृद्—पु० [स० स० त०] राजा का वह सखा जो उसका मन बहलाने और उसे हँसाने के लिए उसके साथ-साथ रहता हो। विदूषक।

नर्मी—स्त्री० =नरमी।

नर्राना—अ० [हिं० नला (गले का)] गला फाड़कर चिल्लाना।

नर्री—स्त्री० [?] १ एक प्रकार की बारहमासी घास जो ऊसर जमीन मे भी होती है। २ हिमालय मे होनेवाला एक प्रकार का बाँस।

नल—पु० [स० नाल] [स्त्री० अल्पा० नली] १. ऐसा वर्तुलाकार लबा खड या रचना जिसका भीतरी भाग खोखला या पोला हो और जिसके अदर एक सिरे से दूसरे सिरे तक चीजें आती-जाती हों। जैसे—घरो मे पानी पहुँचाने का (धातु का) नल। २. नल-कल का वह सिरा जिसमे टोटी लगी होती है और जिसका पेंच दबाने या घुमाने से पानी निकलता है। जैसे—नल के पानी से कूएँ का पानी अच्छा होता है।

पद—नल-कूप। (देखें)

३. आधुनिक नगरो आदि मे उक्त आकार-प्रकार की वह वास्तु-रचना जिसमें से होकर घरो का मल-मूत्र और गदा पानी नगर के बाहर कहीं दूर ले जाकर गिराया या पहुँचाया जाता है। नाला। ४. पेड़

के अंदर की वह नाली जिसमे होकर पेशाब नीचे उतरता है। नला।

मुहा०—नल टलना=किसी प्रकार के आघात आदि के कारण पेशाब की उक्त नाली मे किसी प्रकार का व्यतिक्रम होना जिससे पेट मे बहुत पीडा होती है।

पुं० [सं०√नल् (महँकना, बाँधना)+अच्] १. नरकट। २. कमल। ३. निषध देश के चद्रवशी राजा वीरसेन के एक पुत्र जिनका विवाह विदर्भ देश के राजा भीमसेन की पुत्री दमयती से हुआ था।(साहित्य मे, इन पति-पत्नी के संबध में अनेक आख्यान और कथाएँ प्रसिद्ध हैं) ५ राम की सेना का एक बदर जो विश्वकर्मा का पुत्र था तथा जिसने पत्थरों को तैराकर रामचद्र की सेना के लिए समुद्र पर पुल बाँधा था। ६ एक दानव का नाम जो विप्रचित्ति का चौथा पुत्र था और सिंहिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ७ यदु के एक पुत्र का नाम। ८. प्राचीन काल का (धौंसे की तरह का) एक प्रकार का बाजा जो युद्ध के समय घोडे की पीठ पर रखकर बजाया जाता था।

*पु० [स० नर] आदमी। उदा०—कहहि कबीर नल अजहूँ न जागा।—कबीर।

नलक—पु० [स० नल√कै (मालूम पड़ना)+क] शरीर की कोई लबी हड्डी।

नलका†—पु० [हिं० नल] १ एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से जमीन में से पानी ऊपर खीचा जाता है। (पश्चिम) २ वह नल जिसमे से नहाने, पीने आदि का पानी घरो में पहुँचता है। ३. बडी नली। नल।

नलकिनी—स्त्री० [स० नलक+इनि—ङीप्] १ जाँघ। रान। २. घुटना। जानु।

नलकी—स्त्री० [हिं० नलका] १ छोटा नल। नली। २. हुक्के के पेचवान, सटक आदि का वह अगला भाग जिसे मुँह मे लगाकर धूआँ खीचा जाता है।

नल-कूप—पु० [हिं० नल+स० कूप] एक विशेष प्रकार का आधुनिक यत्र जिसके द्वारा सिंचाई के लिए जमीन के अदर से पानी निकाला जाता है। (ट्यूबवेल)

नल कूबर—पु० [स०] १. कुबेर का एक पुत्र। (महाभारत) २ ताल का एक भेद जिसमे चार गुरु और चार लघु मात्राएँ होती हैं।

नलकील—पु० [देश०] एक तरह का बैल।

नल दंबु—पु० [सं०] नीम (पेड)।

नलद—पु० [सं० नल√दो (टुकडा करना)+क] १. पुष्प रस। मकरद। २. जटामासी। बालछड। ३ उशीर। खस।

नलदा—स्त्री० [स०] जटामासी। बालछड़।

नलनी*—स्त्री०=नलिनी।

नलनीरुह—पु०=नलिनीरुह।

नलपुर—पु० [स०] बौद्ध ग्रंथो में उल्लिखित एक प्राचीन नगर।

नलबाँस—पु० [हिं० नल+बाँस] हिमालय में होनेवाला एक प्रकार का बाँस जिसे बिधुली और देवबाँस (देखें) भी कहते हैं।

नलमीन—पुं० [स०] झींगा मछली।

नलवा—पुं० [हिं० नल] १. बाँस की टोटी जिससे बैलों को घी पिलाया जाता है। चोगा। २ बाँस आदि की कोई बडी और मोटी नली।

नलवाही—वि० [स० नाल+वाहिन्] बदूक धारण करनेवाला। पु० सिपाही।

नल-सेतु—पुं० [स० मध्य० स०] नल नामक बदर का बनाया हुआ वह पुल जिस पर से रामचद्र की सेना ने लका प्रवेश के समय समुद्र पार किया था।

नला—पु० [हिं० नल] १. बहुत बडा नल। नाली। २ पेड़ू के अदर की वह नाली जिसमे से होकर पेशाब नीचे उतरता है।

मुहा०—नला टलना=आघात आदि के कारण पेशाब की उक्त नाली का अपने स्थान से खिसक जाना जिसके फलस्वरूप पीडा होती है।

३. हाथ और पैर की वे लबी हड्डियाँ जो बडी नली के आकार की होती हैं।

नलाना—स०=निराना।

नलाई—स्त्री०=निराई (खेत की)।

नलिका—स्त्री० [स० नल+ठन्—इक, टाप्] १ नल के आकार की कोई वर्तुलाकार, पोली, लबी चीज। चोंगी। नली। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिसके विषय मे कुछ लोगो का अनुमान है कि यह आज-कल की बदूक की तरह का होता था और इसके द्वारा लोहे की बहुत छोटी-छोटी गोलियाँ या तीर छोडे जाते थे। ३ तीर रखने का तरकश। तूणीर। ४ करेमू नामक साग। ५ पुदीना। ६ प्राचीन भारतीय वैद्यक मे एक प्रकार का यत्र जिसकी सहायता से जलोदर के रोगी के पेट मे का पानी बाहर निकाला जाता था। ७. मूँगे की तरह का एक प्रकार का गंध-द्रव्य जो वैद्यक मे कृमि, अर्श और शूल रोग का नाशक तथा मलशोधक माना जाता है।

नलित—पु० [सं०√नल् (बाँधना)+क्त] एक तरह का साग जो वैद्यक मे पित्तनाशक और शुक्रवर्धक माना गया है।

नलिन—पु० [स०√नल्+इनच्] [स्त्री० अल्पा० नलिनी] १ पद्म। कमल। २ नीलिका। नील। ३. जल। पानी। ४ नीम। ५ करौंदा। ६ सारस पक्षी। ७ नाडिका नामक साग।

नलिनी—स्त्री० [स० नल+इनि—ङीप्] १. कमलिनी। कमल। २ वह देश या स्थान जहाँ कमल अधिकता से होते हो। ३. नदी। ४ पुराणानुसार गंगा नदी की एक धारा या शाखा। ५ एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य। ५ नाक का बायाँ नथना। ७ नारियल की शराब। ८. सेमल की फली जो लाल रग की और रूई से भरी हुई होती है। ९ एक तरह का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे पाँच-पाँच सगण होते हैं।

नलिनीनंदन—पु० [स० नलिनी√नन्द् (प्रसन्न होना)+णिच्+ल्यु—अन] कुबेर का उपवन।

नलिनीरुह—पु० [स० नलिनी√रुह् (उत्पत्ति)+क] १ कमल का नाल। मृणाल। २. ब्रह्मा, जो कमल की नाल से निकले हुए माने जाते हैं।

नलिनेशय—पु० [सं० नलिने√शी (सोना)+अच्] ब्रह्मा।

नलिया—पुं० [हिं० नल] बहेलिया जो नली की सहायता से तोते आदि पक्षी पकड़ता है।

नली—स्त्री० [स०√नल्+अच्—ङीष्] १ मैनसिल। २ नलिका नाम का गन्ध-द्रव्य।

स्त्री० [हिं० नल का स्त्री० अल्पा०] १ छोटा नल। २ शरीर मे की वह मोटी गोल हड्डी जिसमें मज्जा होती है। ३ पिंडली मे की बड़ी लबी हड्डी। ४ धातु आदि का बना वह पोला भाग जो बदूक के आगे लगा होता है और जिसमे से होकर गोली बाहर निकलती है। ५ जुलाहो की नाल।

नली मोज—पु० [?] एक तरह का कबूतर जिसके लवे पर पजो तक लटके होते है।

नलुआ†—पु० [हिं० नल] १ पशुओ का एक रोग। २ छोटा नल। ३ बाँस की पोर।

नलोत्तम—पु० [स० नल-उत्तम, स० त०] बड़ा नरसल। देव नरसल।

नलोपाख्यान—पु० [स० नल-उपाख्यान, ष० त०] १ राजा नल की कथा। २ महाभारत के वनपर्व का एक अवातर पर्व।

नल्ला†—पु० [स्त्री० अल्पा० नल्ली] १ =नल। २ =नाला।

नल्ली†—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास जिसे पलवान भी कहते हैं।

नल्व—पु० [स०√नल्+व] चार सौ हाथ की एक पुरानी नाप।

नवंबर—पु० [अ० नवेम्बर] अँगरेजी वर्ष का ग्यारहवाँ महीना जो ३० दिनो का होता है।

नव—वि० [स०√नु (स्तुति)+अप्] १ नया। नवीन। २ आधुनिक।
वि० [स० नवन्] १ जो गिनती मे आठ से एक अधिक हो। नौ। २ नौ तरह या प्रकार का। जैसे—नवरत्न।
पु० १ आठ और एक के योग की सूचक सख्या या अक जो इस प्रकार लिखा जाता है—९
पु० स्तोत्र। २ लाल गदहपूरना। ३ पुराणानुसार उशीनर का एक पुत्र।

नवक—वि० [स० नव+कन्] जिसमे नौ हो।
पु० नौ वस्तुओ का कुलक या समूह।
वि० [स०] नया।
†स्त्री० नौका।

नव-कलेवर—पु० [स० कर्म० स०] जगन्नाथपुरी मे अधिमास के बाद पड़नेवाली रथ-यात्रा के समय होनेवाला वह उत्सव जिसमे जगन्नाथ की पुरानी मूर्ति के स्थान पर नई मूर्ति स्थापित की जाती है।

नव-कल्प—पु० [स० कर्म० स०] भू-तत्त्व विज्ञान के अनुसार पृथ्वी-रचना के इतिहास मे मध्य कल्प के बाद का वह पाँचवाँ और आधुनिक कल्प जिसका आरभ लगभग छ करोड वर्ष पहले हुआ था तथा जिसमे स्तनपायी जीवो और मनुष्यो की सृष्टि आरभ होने लगी थी। (सेनोजोइक एरा)
विशेष—इसके पहले के चार कल्प ये है—आदि कल्प, उत्तर कल्प, पुरा कल्प और मध्य कल्प।

नवका†—वि०=नया (नवीन)।

नवकार—पु० [स०] जैनो का एक प्रकार का मत्र।

नव-कारिका—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ नई विवाहिता स्त्री। २ बालिका, जो पहली बार रजस्वला हुई हो।

नवकालिका—स्त्री० =नवकारिका।

नव-कुमारी—स्त्री० [स० मध्य० स०] कुमारिका, त्रिमूर्ति, कल्याणी, रोहिणी, काली, चडिका, शाभवी, दुर्गा और सुभद्रा ये नौ कुमारियाँ जिनकी पूजा नौरात्र मे की जाती है।

नव-खंड—पु० [स० द्विगु स०] पुराणानुसार पृथ्वी के ये नौ खड या ये विभाग, भारत, इलावृत, किंपुरुष, भद्र, केतुमाल, हरि, हिरण्य, रम्य और कुश।

नव-ग्रह—पु० [स० द्विगु स०] सूर्य, चद्र, मगल, बुध, गुरु, शुक्र, शनि, राहु तथा केतु, ये नौ ग्रह (फ० ज्यो०)
विशेष—कर्मकाड के अनुसार इन्ही नौ ग्रहो का पूजन होता है।)

नवग्रही—वि० [स० नव ग्रह+हिं० ई (प्रत्य०)] नवग्रह-सबधी।
स्त्री० नौ ग्रहो के प्रतीक नौ रत्नो से जड़ा हुआ कोई गहना। जैसे—नवग्रही पहुँची, नवग्रही माला आदि। उदा०—गजरा नवग्रही प्रोंचिया प्रोचे।—प्रिथीराज।

नवछावरि†—स्त्री०=निछावर।

नव-जात—वि० [स० कर्म० स०] (जीव) जिसका जन्म कुछ ही समय पहले हुआ हो।

नव-ज्वर—पु० [स० कर्म० स०] वह बुखार जिसका अभी आरभ हुआ हो। कुछ ही दिनो से आनेवाला ज्वर।

नवड़ा†—पु० [?] मरसा नामक साग।

नवतंतु—पु० [स०] विश्वामित्र का एक पुत्र। (महा०)

नवत—पु० [स०√नु+अतच्] १ कबल। २ हाथी की झूल। ३ आवरण।

नवतन†—वि०=नूतन (नया)।

नवता†—स्त्री० [स० नव+तल्—टाप्] नवीनता। नयापन।
पु० [हिं० नवना] ढालुई जमीन। उतार। (कहार)

नवति—वि० [स० नवन्+डति] जो सख्या मे अस्सी से दस अधिक हो। नब्बे।
स्त्री० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९०।

नवतिका—स्त्री० [स० नव√तिक् (गति)+क—टाप्] तूलिका।

नव-दडक—पु० [स० ब० स० ?] पुरानी चाल का एक तरह का राज-छत्र।

नव-दल—पु० [स० कर्म० स०] १ नया दल (पत्ता)। कल्ला। २ कमल की वह पखड़ी जो उसके केसर के पास होती है।

नव-दीधिति—पु० [स० ब० स०] मगल ग्रह।

नव-दुर्गा—स्त्री० [स० मध्य० स०] शैलपुत्री, ब्रह्मचारिणी, चित्रघटा, कुष्माडा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, कालरात्रि, महागौरी और सिद्धिदा जो दुर्गा के नौ रूप या विग्रह हैं।

नव-द्वार—पु० [स० द्विगु स०] शरीर मे के ये नौ द्वार, दो आँखें, दो कान, दो नाक, दो गुप्तेंद्रियाँ, और एक मुख, लोगो का विश्वास है कि जब मनुष्य मरने लगता है तब उसके प्राण इन्ही नौ द्वारो मे से किसी एक द्वार से होकर निकलते है।

नवद्वीप—पु० [स०] बगाल प्रदेश मे गगा तट पर बसी हुई एक प्रसिद्ध प्राचीन नगरी जो राजा लक्ष्मण सेन की राजधानी थी।
विशेष—पहले यहाँ छोटे-छोटे नौ गाँव थे, जिनके समूह को नवद्वीप कहते थे।

नवधा—अव्य० [स० नवन्+धाच्] १ नौ प्रकार से। २. नौ भागो मे। नौ टुकड़ो या खडो मे।

नवधा-अंग—पुं० [स० सहसुपा स०] शरीर के ये नौ अंग, दो आँखें, दो कान, दो हाथ, दो पैर, और एक नाक।

नवधा-भक्ति—स्त्री० [स० सहसुपा स०] १. भक्ति के ये नौ प्रकार—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पादसेवन, अर्चन, वंदन, सख्य, दास्य और आत्मनिवेदन। २ उक्त नवो प्रकारो से की जानेवाली भक्ति।

नवन†—पुं०=नमन।

नवना—अ० [स० नमन] १ नत होना। झुकना। २ किसी के सामने नम्र या विनीत होना।

नवनि*—स्त्री० [स० नमन] १ झुकने की क्रिया या भाव। २ नम्रता। विनय।

नव-निधि—स्त्री० [स० द्विगु स०] कुबेर की ये नौ निधियाँ—पद्म, महापद्म, शख, मकर, कच्छप, मुकुद, कुद, नील और खर्व।

नवनी—स्त्री० [सं० नव√नी (ले जाना)+ड—ङीप्] नवनीत।

नवनीत—पु० [स०√नी+क्त, नव-नीत, ष० त०] १ मक्खन। २ श्रीकृष्ण।

नवनीतक—पु० [स० नवनीत+कन्] १ घृत। घी। २ मक्खन।

नवनीत-गणप—पुं० [स० उपमि० स०] एक गणपति। (पुराण०)

नवनीत-धेनु—स्त्री० [स० मध्य० स०] मक्खन की वह ढेरी जो धेनु के रूप मे मान कर दान दी जाती है।

नव-पत्रिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] केले, अनार, धान, हलदी, मानकच्चू, कच्चू, बेल, अशोक और जयती इन नौ वृक्षो की पत्तियाँ।

नव-पद—पु० [स० ब० स०] जैनो की एक उपास्य मूर्ति।

नवपदी—स्त्री० [स० ब० स०, डीष्] चौपाई या जनकरी छद का एक नाम।

नव-प्रसूत—वि० [स० कर्म० स०] नव-जात।

नव-प्राशन—पु० [स० ष० त०] नई फसल का अन्न या फल पहली बार खाना।

नवफलिका—स्त्री० [स० ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] नवकलिका।

नव-भक्ति—स्त्री० [स० मध्य० स०] दे० 'नवधा-भक्ति'।

नवम—वि० [स० नवन्+डट्—मट्] नौ के स्थान पर पड़नेवाला। नवाँ।

नव-मल्लिका—स्त्री० [स० कर्म० स०] १ चमेली (पौधा और उसका फूल)। २ नेवारी (पौधा और फूल)।

नवमांश—पु० [स० नवम-अश, कर्म० स०] १. किसी पदार्थ का नवाँ अश या भाग। २ दे० 'नवाश'।

नव-मालिका—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमश: एक एक नगण, जगण, भगण, और यगण होता है। इसे 'नव-मालिनी' भी कहते हैं। २. नेवारी (पौधा और फूल)।

नव-मालिनी—स्त्री० [स० कर्म० स०]=नवमल्लिका।

नव-युवक—पु० [स० कर्म० स०] [स्त्री० नवयुवती] जो अभी हाल मे युवक हुआ हो। नौजवान। तरुण।

नव-युवती—स्त्री० [सं० कर्म० स०] नौजवान स्त्री। तरुणी।

नव-युवा (वन्)—पु०=नवयुवक।

नव-योनिन्यास—पु० [स०] तत्र मे एक प्रकार का न्यास।

नव-यौवन—पु० [स० कर्म० स०] नई जवानी।

नव-यौवना—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] वह स्त्री, जिसमे युवावस्था के चिह्न दृष्टिगोचर होने लगे हो। नौजवान स्त्री।

नव रंग—वि० [स० नव और रंग] १ नवीन अथवा निराली शोभा-वाला। सुंदर। २ नये ढग का। नवेला।
पु०-नारगी।

नवरंगी—वि० [हि० नवरग] १ सुदर। २ रगीला।
स्त्री०=नारगी।

नव-रत्न—पु० [स० द्विगु स०] १ मोती, पन्ना, मानिक, गोमेद, हीरा, मूँगा, लहसुनियाँ, पद्मराग और नीलम ये नौ रत्न। २ गले मे पहनने का एक प्रकार का हार जिसमे उक्त नौ प्रकार के अथवा अनेक प्रकार के रत्न जडे होते हैं। ३ धन्वतरि, क्षपणक, अमरसिंह, शकु, बेताल भट्ट, घटखर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि इन नौ महान् व्यक्तियो की सामूहिक सज्ञा।
विशेष—किवदती के अनुसार ये महाराज विक्रमादित्य की सभा के सदस्य माने जाते हैं। परतु ऐतिहासिक तथ्यो के अनुसार यह बात अप्रामाणिक सिद्ध होती है।
४ एक प्रकार की मीठी चटनी जो कई तरह के मसालो के योग से बनती है।

नव-रस—पु० [स०] हिन्दी साहित्य मे, शृंगार, करुण, हास्य, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत और शात ये नौ प्रकार के रस।

नवरा†—वि०-नेवला।
वि०=नवल।

नवराता†—पु०=नौराता (नवरात्र)।

नवरात्र—पु० [स० नवन्-रात्रि, द्विगु स०,+अच्] १ नौ दिनो का समय। २ नौ दिनो मे समाप्त होनेवाला एक तरह का यज्ञ। ३. चैत्र शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन। वसती नवरात्र। ४ आश्विन शुक्ल प्रतिपदा से नवमी तक के नौ दिन। शारदीय नवरात्र।
विशेष—उक्त वसती और शारदीय नवरात्रो मे दुर्गा का व्रत तथा पूजन किया जाता है।

नवल—वि० [स०] १ नया। नवीन। २ ऐसा नया या नवीन जिसमे कोई नया आकर्षण या नई विशेषता हो। अनोखा और बढ़िया। ३. नव-युवक। जवान। ४ उज्ज्वल।। स्वच्छ।
पु० [अ० नैवेल] वह भाडा जो सामान ढोने के बदले मे जहाज के अधिकारी लेते हैं।

नवल-अनंगा—स्त्री० [स०] मुग्धा नायिका का एक भेद। (केशव)

नवल-किशोर—पु० [स०] श्रीकृष्णचद्र।

नवल-वधू—स्त्री० [स०] दे० 'नवल-अनगा'।

नवला—स्त्री० [सं०] जवान स्त्री। तरुणी। युवती।

नवलेवा—पु० [स० नव+हि० लेवा=कीचड का लेप] वह कीचड जो बढ़ी हुई नदी के उतरने पर बच रहता है। नदी के किनारे की दलदल।

नवबरि (री)*—स्त्री० दे० 'निछावर'।

नव-वर्ष—पुं० [सं० कर्म० स०] १. नया वर्ष। २ नये वर्ष के आरंभिक दिन।

नव-वल्लभ—पु० [सं०] अगर नामक गन्ध-द्रव्य का एक भेद।

नव-वासुदेव—पु० [सं० मध्य० स०] त्रिपृष्ठ, द्विपष्ट, स्वयंभू, पुरुषोत्तम, सिंहपुरुष, पुंडरीक, दत्त, लक्ष्मण और श्रीकृष्ण ये नौ वासुदेव। (जैन)

नव-वास्तु—पु० [सं० ब० स०] वैदिक काल के एक राजर्षि।

नव-विंश—वि० [सं० नवविंशति+डट्] उन्तीसवाँ।

नव-विंशति—वि०[सं० मध्य०स०] बीस और नौ। तीस से एक कम। पु० उक्त के सूचक अंक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२९।

नव-विष—पु०[सं० द्विगु स०] वत्सनाभ, हारिद्रक, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, श्रृंगक, कालकूट, हलाहल और ब्रह्मपुत्र ये नौ प्रकार के विष।

नव-शक्ति—स्त्री०[सं० मध्य०स०] प्रभा, माया, जया, सूक्ष्मा, विशुद्धा, नंदिनी, सुप्रभा, विजया और सर्वसिद्धिदा ये नौ शक्तियाँ। (पुराण)

नव-शायक—पु०[सं० मध्य०स०] ग्वाला, माली, तेली, जुलाहा, हलवाई, बरई, कुम्हार, लोहार और हज्जाम ये नौ जातियाँ। (पाराशर संहिता)

नव-शिक्षित—वि०[सं० कर्म०स०] [स्त्री० नव-शिक्षिता]१ जिसने अभी हाल मे कुछ पढना-लिखना सीखा हो। २ नवीन शिक्षा पद्धति के अनुसार जिसे शिक्षा मिली हो।

नव-शोभ—वि०[सं० ब०स०] नई शोभावाला।

नव-संगम—पु०[सं० कर्म०स०]१ नया मिलन। २ पति और पत्नी की प्रथम भेंट या समागम।

नवसत—वि०[हिं० नव -नौ+सात] जो गिनती मे नौ और सात अर्थात् १६ हो।
पु० स्त्रियो के होनेवाले सोलहो श्रृंगार।

नव-सप्त (न्)—पु०[सं० द्व०स०]=नवसत।

नवसर—पु०[हिं० नौ +सर=लड़ी] एक प्रकार का हार जिसमे नौ लड़ियाँ होती हैं।
वि०[सं० नव-वत्सर] नई उमर का। नव वयस्क।
†पु० =नौसर।

नवससि*—पु०[सं० नव-शशि] नया अर्थात् दूज का चद्रमा।

नवसिखा*—वि०, पु० = नौसिखुआ।

नवाँ—वि०[सं० नव] नौ के स्थान पर पड़नेवाला।

नवांग—पु०[सं० नवन-अंग, मध्य०स०] सोंठ, पीपल, मिर्च, हड़, बहेड़ा आँवला, चाब, चीता और वायबिडंग ये नौ पदार्थ।

नवांगा—स्त्री०[ब०स०] काकड़ासिंगी।

नवांश—पु०[सं० नव-अंश, कर्म० स०]१ किसी पदार्थ का नवाँ भाग। नवमांश। २ फलित ज्योतिष, मे एक राशि का नवाँ भाग जिसका विचार किसी नवजात बालक के चरित्र, आकार और चिह्न आदि निश्चित करने मे होता है।

नवा—वि०[स्त्री० नवी]=नया।
पु०[फा०]१ आवाज। शब्द। २ गाना-बजाना। संगीत।

नवाई—स्त्री०[हिं० नवना]१ नवने अर्थात् झुकने की क्रिया या भाव। नमन। २ किसी के आगे नम्र या विनीत होना।
स्त्री०[सं० नव=नया] नयापन। नवीनता।
वि०=नवा (नया)।

नवागत—वि०[सं० नव-आगत, कर्म०स०]१. नया आया हुआ। २. जो अभी आया हो। जैसे—नवागत अतिथि। ३ जिसका आविर्भाव अभी हाल मे हुआ हो। जो कुछ ही पहले अस्तित्व मे आया हो। जैसे—नवागत सेना अर्थात् नई भरती की हुई सेना।

नवाजना—स० [फा० नवाजिश] अनुग्रह या कृपा करना।

नवाजिश—स्त्री०[फा० नवाजिश] अनुग्रह। कृपा। मेहरबानी।

नवाड़ा—पु०[हिं० नाव]१ एक प्रकार की छोटी नाव। २. बीच धारा मे नाव को इस प्रकार खेना कि वह चक्कर खाने लगे।

नवान†—पु०=नवान्न।

नवाना—स०[सं० नवन्]१ झुकाना। जैसे—किसी के आगे सिर नवाना। २ किसी को नम्र या विनीत होने मे प्रवृत्त करना।

नवान्न—पु०[सं० नव-अन्न, कर्म०स०]१ फसल का नया आया हुआ अनाज। २ ताजा पका या बना हुआ अन्न। ३ एक प्रकार का श्राद्ध जिसमे नया उपजा हुआ अन्न पितरो के नाम पर दिया या बाँटा जाता था। ४ पहले-पहल नई फसल का अन्न मुँह लगाने अर्थात् खाने की क्रिया या भाव।

नवाब—पु०[अ०नव्वाब]१ बादशाह की ओर से नियुक्त किसी प्रदेश का प्रधान शासक। २ किसी प्रदेश का मुसलमान शासक। जैसे—रामपुर के नवाब। ३ मुसलमान रईसो को अँगरेजी शासन की ओर से मिलनेवाली एक उपाधि। ४ आवश्यकता से अधिक अपना अधिकार, ठाठ-बाट या प्रभुत्व दिखलानेवाला व्यक्ति। (व्यंग्य)

नवाबजादा—पुं०[अ० नव्वाब +फा० जाद]१ नवाब का पुत्र। नवाब का बेटा। २ वह जो बहुत बड़ा शौकीन हो तथा रईसों की तरह रहता हो।

नवाबपसंद—पुं०[फा०]१ भादों के अंतिम और क्वार के आरंभिक दिनो मे होनेवाला एक प्रकार का धान। २ उक्त धान का चावल जो बढ़िया होता है।

नवाबी—वि०[हिं० नवाब +ई]१. नवाबों का। जैसे—नवाबी शासन। २ नवाबों के रंग-ढंग जैसा। नवाबों के अनुकरण पर किया हुआ। जैसे—नवाबी शान।
स्त्री०१ नवाब होने की अवस्था या भाव। २ नवाब का कार्य या पद। ३ नवाबो का शासन-काल। ४ नवाबो की तरह ठाठ-बाट से रहने और खूब खरच करने की अवस्था या भाव। ५ नवाबो का सा मनमाना आचरण और ठसक या हुकूमत।
पु० पुरानी चाल का एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

नवाभ्युत्थान—पु०[सं० नव-अभ्युत्थान, कर्म०स०] नया अर्थात् दोबारा होनेवाला उत्थान।

नवार†—वि०=नया।

नवारना—अ०[?]१ चलना। टहलना। २ यात्रा या सफर करना।
स०=निवारना (निवारण करना)।

नवारा—पु०=नवाड़ा।

नवारी —स्त्री०=नेवारी (पौधा और उसका फूल)।

नवार्चि (स्)—पु०[सं०] मंगल ग्रह।

नवासा—पु०[फा० नवास·] बेटी का बेटा। नाती।

नवासी—वि०[सं० नवा शीति] जो संख्या में अस्सी से नौ अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक संख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—८९
†स्त्री० हि० 'नवासा' का स्त्री०।

नवाह—पु०[सं०] चांद्र मास के किसी पक्ष का नया दिन।
पु० [सं० नवाह्न] नौ दिनों का समूह।
वि० नौ दिनों तक चलता रहने या नौ दिनों में पूरा होनेवाला। जैसे—भागवत या रामायण का नवाह पाठ।
पुं०[अ०] आस-पास या चारों ओर का क्षेत्र, प्रदेश या स्थान।

नवि—अव्य०=नहीं। उदा०—मारूँ नवि काढूँ मगर, यही भाव मन आणिया।—जटमल।

नविश्ता—वि०[फा० नविश्त] लिखा हुआ। लिखित।

नवी†—स्त्री० नोई (बछड़े के गले में बाँधने की रस्सी)।
वि०[फा०]१ नवीन। २ आधुनिक। ३. पाश्चात्य।

नवीन—वि०[सं० नव+ख—ईन] [भाव० नवीनता]१. जो अभी का या थोड़े समय का हो। नया। नूतन। 'प्राचीन' का विपर्याय। २ जो पहले-पहल या मूल रूप में बना हो। जैसे—नवीन आदर्श। ३ अपूर्व और विचित्र या विलक्षण। अनोखा। ४ तरुण। नवयुवक।

नवीनता—स्त्री०[सं० नवीन+तल्—टाप्] नया होने की अवस्था या भाव। नूतनता।

नवीनीकरण—पु०[सं० नवीन+च्वि ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १ नवीन रूप देने की क्रिया या भाव। २ किसी चीज या बात की अवधि समाप्त होने पर उसे फिर से नियमित तथा वैध नया रूप देना या उसकी अवधि बढ़ाना। (रिन्यूअल)

नवीस—वि०[फा०] समस्त पदों के अंत में, लिखनेवाला। लिपिक। जैसे—अर्जी नवीस।

नवीसी—स्त्री०[फा०] लिखने की क्रिया या भाव। लिखाई।

नवेद—पु०[सं० निवेदन से फा०]१ शुभ सूचना। २ निमंत्रण। ३. निमंत्रण-पत्र।

नवेरड़ा†—वि०[स्त्री० नवेरड़ी] नवेला।

नवेला—वि०[सं० नव] [स्त्री० नवेली] १ नवीन और सुन्दर। २. जिसमें औरों से अधिक कोई विशेषता हो और इसी लिए जो दूसरों से अच्छा या बढ़ा-चढ़ा समझा जाता हो।

नवैयत—स्त्री०[अ०] किसी वस्तु की विशिष्टता सूचित करनेवाला प्रकार या भेद। जैसे—इस बैनामे में खेत (या जमीन) की नवैयत तो लिखी ही नहीं है; अर्थात् यह नहीं लिखा है कि वह किस प्रकार या वर्ग की है।

नवोढ़—वि०[सं० नव-ऊढ, कर्म० स०] [स्त्री० नवोढ़ा] जिसका विवाह हाल में हुआ हो।
पु०१. विवाहित पुरुष। २ नौजवान आदमी। नवयुवक।

नवोढ़ा—स्त्री०[सं० नवा-ऊढा, कर्म०स०]१ नव विवाहिता स्त्री। वधू। २ नौ जवान स्त्री। नव-युवती। ३ साहित्य में नव-विवाहिता लज्जाशीला नायिका, जिसे आचार्यों ने मुग्धा का और कुछ ने ज्ञातयौवना का एक स्वतन्त्र भेद माना है।

नवोदक—पुं०[सं० नव-उदक, कर्म०स०]१. नया जल अर्थात् पहली वर्षा का जल अथवा नया कूआँ खोदने पर उसमें से पहले-पहल निकाला जानेवाला जल।

नवोद्धृत—वि०[सं० नव-उद्धृत, कर्म० स०] नया उद्धृत किया हुआ।
पु० मक्खन।

नव्य—वि०[सं० नव+यत्] १ नया। नवीन। २ आधुनिक। ३. जिसके आगे नमन करना उचित हो।
पु० लाल गदहपूरना।

नव्वाब—पु०=नवाब।

नव्वाबी—वि०, स्त्री०=नवाबी।

नशन—पु०[सं०√नश(नाश होना)+ल्युट्—अन] नष्ट होना। नाश। विनाश।

नशना—अ०[सं० नशन] नष्ट होना।
स०=नाशना (नष्ट करना)।

नशा—पु०[फा० नश्‌अ]१ वह मानसिक विकृति जो अफीम, गाजा, भाँग, शराब आदि मादक द्रव्यों का सेवन करने से उत्पन्न होती है। मादक द्रव्यों का उपयोग या व्यवहार करने पर उत्पन्न होनेवाली ऐसी स्थिति जिसमें मनुष्य बदहवास हो जाता है।
विशेष—ऐसी स्थिति में मनुष्य थोड़े समय के लिए प्रायः कष्ट और दुःख भूलकर निश्चिन्त और मस्त हो जाता है, ज्ञान अथवा बुद्धि पर उसका नियंत्रण शिथिल पड़ जाता है, मानसिक संतुलन बिगड़ जाता है, वह ऐसे काम या बातें करने लगता है, जो साधारण स्थिति में नहीं होते। नशे की मात्रा बढ़ने पर आदमी बेहोश हो जाता है और कुछ अवस्थाओं में मर भी सकता है। यह कुछ समय के लिए शारीरिक क्लांति दूर करके मन में नई-नई उमंगें पैदा करता है।
क्रि० प्र०—उतरना।—चढ़ना।—जमना।—टूटना।
मुहा०— **नशा किरकिरा होना**=कोई अप्रिय घटना या बात होने पर नशे के आनंद या मस्ती में बाधा पड़ना। **नशा हिरन हो जाना**=कोई विकट घटना या बात होने पर नशा बिलकुल दूर हो जाना।
२ वह पदार्थ जिसके सेवन से मनुष्य की उक्त प्रकार की मानसिक स्थिति होती हो। मादक द्रव्य। ३ कोई मादक पदार्थ सेवन करते रहने की प्रवृत्ति या बान। ४ किसी प्रकार के अधिकार, प्रवृत्ति, बल मनोविकार आदि की अधिकता, तीव्रता या प्रबलता के कारण उत्पन्न होनेवाली उक्त प्रकार की अनियंत्रित अथवा असंतुलित मानसिक अवस्था। मद। जैसे—जवानी, दौलत या मुहब्बत का नशा!
मुहा०—**(किसी का) नशा उतारना**=कष्ट, दंड आदि देकर घमंड या मद दूर करना।
५ ऐसी स्थिति जिसमें मनुष्य आनन्दपूर्वक किसी धुन में लगा रहना चाहता हो। मस्ती।

नशाखोर—पु०[फा० नश्‌अ+खोर][भाव० नशाखोरी] वह जो किसी मादक पदार्थ का सेवन करता हो।

नशाना—स०[सं० नाशन] नष्ट करना। बरबाद करना।
अ०१. नष्ट होना। २ खो जाना। गुम होना।
†पु०=निशाना।

नशावन—वि०[सं० नाश] नष्ट या नाश करनेवाला।

नशीन—वि०[फा० नशी] [भाव० नशीनी]१ समस्त पदों के अंत में,

बैठनेवाला। जैसे—तख्तनशीन (तख्त पर बैठनेवाला)। २. स्थित।

नशीनी—स्त्री०[फा०] नशीन अर्थात् बैठे हुए या स्थित होने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—तख्तनशीनी।

नशीला—वि०[फा० नश्श+हिं० ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नशीली]१ (पदार्थ) जिसके सेवन से नशा चढ़ता हो। मादक। २. (व्यक्ति) जो किसी मादक पदार्थ के प्रभाव से बेसुध या मस्त हो। ३ (शारीरिक अंग) जिसमे मादक वस्तु के सेवन के फलस्वरूप कोई विकार दृष्टि-गोचर हो रहा हो। जैसे—नशीली आँखें।

नशेड़ी†—वि०[हिं० नशा, भँगेड़ी का अनु०] नशेबाज।

नशेब—पुं०[फा० निशेब]१ नीची भूमि। २ निचाई।

नशेबाज—पु०[अ० नश्श+फा० बाज] [भाव० नशेबाजी] जो अभ्यास-वश कोई नशा किया करता हो। जिसे कोई मादक पदार्थ सेवन करने की आदत पड़ी हो।

नशोहर—वि०[स० नाश+हिं० ओहर] नाश करनेवाला। नाशक।

नश्तर—पु०[फा० निश्तर]१ वह उपकरण जिससे शारीरिक अंगो की चीर-फाड़ की जाती है।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

२ लोहे की वह बड़ी धारदार पट्टी जिसकी सहायता से दफ्तरी लोग कागज काटते हैं।

नश्यत्प्रसूतिका—स्त्री०[स० नश्यन्ती-प्रसूति, ब० स०, कप्, टाप्, ह्रस्व] वह प्रसूता या जच्चा जिसका बच्चा मर गया हो।

नश्र—पु०[अ०]१ मृतक का पुन जीवित होना। २ किसी बात का चारो ओर फैलाया जाना। प्रसार।

नश्वर—वि०[स० √नश्+क्वरप्] [भाव० नश्वरता] जिसका किसी दिन नाश होने को हो। जो सदा बना न रह सकता हो। नाशवान्।

नश्वरता—स्त्री०[स० नश्वर+तल्—टाप्] नश्वर होने की अवस्था या भाव।

नष†—पु०=नख।

नषत*—पु०=नक्षत्र।

नषना—स०[म० नक्ष]१ फेंकना। २ डालना। ३ रोकना।

नष-शिष*—पु०=नख-शिख।

नष्ट—वि०[स० √नश+क्त]१ जो आँखो से ओझल हो गया हो। २ जो दिखाई न देता हो। अदृश्य। ३ जो इस तरह टूट-फूट या बिगड गया हो कि फिर काम मे न आ सके। चौपट। बरबाद। जैसे—बाढ़ मे बहुत से गाँव नष्ट हो गये। ४ जो मर या मिट चुका हो। जैसे—हमारी कई पीढियाँ गुलामी मे नष्ट हो चुकी हैं। ५ जो पूरी तरह से निष्फल या व्यर्थ हो गया हो। जैसे—तुमने हमारा सारा परिश्रम नष्ट कर दिया। ६ (व्यक्ति) जिसका चरित्र बहुत अधिक भ्रष्ट हो चुका हो। पतित और हीन। ७. धन-हीन। दरिद्र।

पु०१. नाश। विनाश। २. अदृश्य या तिरोहित होना।

नष्ट-चंद्र—पु०[कर्म० स०] भादो के दोनो पक्षो की चतुर्थी तिथियो के चद्रमा जिनके दर्शन का निषेध है। कहते हैं कि उक्त तिथियो मे चन्द्रमा का दर्शन करने पर कलक लगता है।

नष्ट-चित्त—वि०[ब०स०]१ जिसका विवेक नष्ट हो चुका हो। २. मद से उन्मत्त या बेसुध।

नष्ट-चेत (स्)—वि०[ब०स०] बे-सुध। बे-होश।

नष्ट-चेष्ट—वि०[ब०स०] जिसकी चेष्टाएँ करने की शक्ति नष्ट हो चुकी हो। जो कोई चेष्टा न कर सकता हो। चेष्टाहीन। निश्चेष्ट।

नष्टचेष्टता—स्त्री०[स० नष्टचेष्ट+तल्—टाप्]१ नष्टचेष्ट होने की अवस्था या भाव। २ बेहोशी। मूर्च्छा। ३ साहित्य में, एक प्रकार का सात्विक भाव जिसमे व्यक्ति ध्यान या प्रेम मे लीन होकर निश्चेष्ट हो जाता है।

नष्ट-जन्मा (न्मन्)—पु०[ब०स०] जारज। दोगला।

नष्ट-जातक—पु०[स० कर्म०स०] =नष्ट-जन्मा।

नष्टता—स्त्री०[स० नष्ट+तल्—टाप्]१ नष्ट होने की अवस्था या भाव। नाश। २ चरित्र आदि की भ्रष्टता।

नष्ट-दृष्टि—वि०[ब०स०] जिसमे देखने की शक्ति न रह गई हो।

नष्ट-निधि—वि०[ब०स०]१ जो अपनी सपत्ति गँवा चुका हो। २ जो अपने जीवन की सबसे प्रिय वस्तु खो चुका हो।

पु० दिवालिया।

नष्ट-प्रभ—वि०[ब०स०] जिसकी प्रभा नष्ट हो चुकी हो। जो कांति या तेज से रहित हो चुका हो।

नष्ट-प्राय—वि०[सुप्सुपा स०] जो बहुत-कुछ नष्ट हो चुका हो। जो पूरी तरह से नष्ट होने के पास पहुँच चुका हो।

नष्ट-बुद्धि—वि०[ब०स०]१ जिसकी बुद्धि नष्ट हो चुकी हो। २ जिसकी बुद्धि बहुत बुरी हो।

नष्ट-भ्रष्ट—वि० [कर्म० स०] १ जो कट-फट या टूट-फूटकर किसी काम के लायक न रह गया हो। २ सब तरह से खराब और बरबाद।

नष्ट-राज्य—पुं०[ब०स०] एक प्राचीन देश।

नष्ट-रूपा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] अनुष्टुप् छन्द का एक भेद।

नष्ट-विष—वि० [ब०स०] (जीव) जिसमे विष न रह गया हो। जिसका विष नष्ट हो चुका हो।

नष्ट-शुक्र—वि०[ब०स०] (व्यक्ति) जिसका शुक्र (वीर्य) नष्ट हो चुका हो।

नष्टा—स्त्री०[स० नष्ट+टाप्] (स्त्री) जिसका चरित्र या सतीत्व नष्ट हो चुका हो।

स्त्री०१. कुलटा। दुराचारिणी। २ रडी। वेश्या।

नष्टाग्नि—पु०[नष्ट-अग्नि, ब०स०] वह साग्निक ब्राह्मण या द्विज जिसके यहाँ की अग्नि आलस्य, प्रमाद आदि के कारण बुझ चुकी हो।

नष्टात्मा (त्मन्)—वि०[नष्ट-आत्मन्, ब०स०]१ जिसकी आत्मा नष्ट हो चुकी हो। २ बहुत बड़ा दुष्ट तथा नीच।

नष्टाप्तिसूत्र—पु० [नष्ट-आप्ति, ष०त०, नष्टाप्ति-सूत्र, ष०त०] वह सूत्र या सुराग जिससे खोई या चोरी गई हुई चीज की खोज की जाती है।

नष्टार्तव—पु०[स० नष्ट-आर्तव, ब०स०] एक रोग जिसमे स्त्री का मासिक धर्म बन्द हो जाता है।

वि० [स्त्री०] जिसे मासिक-धर्म न होता हो या जिसका मासिक-धर्म होना बद हो चुका हो।

नष्टार्थ—वि०[नष्ट-अर्थ, ब०स०]१ (व्यक्ति) जिसका धन नष्ट हो चुका हो। २ (शब्द) जिसका कोई अर्थ उससे बिलकुल छूट चुका हो।

नष्टाश्वदग्धरथन्याय—पु० [नष्ट-अश्व, ब०स०, दग्ध रथ, ब०स०, नष्टाश्व-दग्धरथ द्व०स०, रथ-न्याय ष०त०] घोड़ो के खोने और रथ के जलने की एक कथा पर आधारित एक न्याय जिसका आशय यह है कि दो व्यक्ति आपसी सहयोग से किसी काम मे सफल हो सकते हैं।

विशेष—दो व्यक्ति अपने अपने रथो पर कही जा रहे थे। किसी पड़ाव पर एक व्यक्ति के घोड़े खो गये और दूसरे का रथ जल गया। तब एक के रथ में दूसरे के घोड़े जोतकर वे दोनों गतव्य स्थान पर पहुँचने में समर्थ हुए थे।

नष्टि—स्त्री०[स०नश्+क्तिन्] नष्ट होने की अवस्था या भाव। नाश।

नष्टेन्द्रिय—वि०[नष्ट-इन्द्रिय, ब०स०] जिसकी इद्रियाँ नष्ट अर्थात् अचेष्ट हो चुकी हो।

नष्टेन्दुकला—स्त्री०[नष्टा-इन्दुकला, ब० स०]१. प्रतिपदा। २ अमावस्या की रात।

नसंक—वि०=नि शक।

नस—स्त्री०[सं० स्नायु]१ शरीर-शास्त्र की परिभाषा मे, शरीर के अदर का वह तंतु-जाल जिसकी सहायता से मासपेशियाँ आपस मे भी और हड्डियो के साथ भी बँधी या सटी रहती हैं। २. साधारण बोल-चाल मे, शरीर के अदर की कोई रक्त-वाहिनी नली या नाडी।

मुहा०—**नस चढ़ना**=खिचाव, तनाव, दबाव आदि के कारण किसी नस का अपने स्थान से कुछ इधर-उधर हो जाना, जिससे कुछ पीड़ा और कभी-कभी कुछ सूजन भी होती है। **(किसी की) नस ढीली होना**=(क) अधिक परिश्रम करने के कारण शरीर इस प्रकार शिथिल होना कि मन मे कुछ उत्साह या उमग बाकी न रह जाय। (ख) किसी के द्वारा दडित या पीडित होने पर अथवा सकट की स्थिति मे पडने पर ओज, तेज आदि का ऐसा ह्रास होना कि मनुष्य निराश और हतोत्साह हो जाय। जैसे—इस मुकदमे मे उनकी नस ढीली हो गई है। **नस नस फड़क उठना**=कोई अच्छी चीज या बात देख या सुनकर सारे शरीर मे प्रसन्नता की लहर दौड़ जाना। **नस पर नस चढ़ना**=दे० ऊपर 'नस-चढ़ना'। **नस भड़कना**=(क) दे० ऊपर 'नस-चढ़ना'। (ख) उन्मत्त या पागल हो जाना (जो मस्तिष्क की किसी नस के विकृत होने का परिणाम माना जाता है)।

पद—**चोड़ा नस**–(दे० स्वतन्त्र पद) **नस नस में**=सारे शरीर और उसके सब अगो तथा उपागो मे। जैसे—पाजीपन तो उसकी नस नस मे भरा है।

३. पुरुष या स्त्री की जननेंद्रिय। लिंग या भग।

मुहा०—**नस ढीली पड़ना या होना**=काम-वासना, सभोग-शक्ति आदि का अभाव या ह्रास होना।

४ पत्तों आदि में चारो ओर फैले हुए वे मोटे तन्तु या रेशे जो उसके तल पर उभरे हुए दिखाई देते हैं।

†पुं०=नसवार या नस्य।

स्त्री०[अ०]१. कुरान की वह सूक्ति जिसका आशय स्पष्ट हो। २ ऐसी बात जिससे किसी प्रकार का भ्रम या संदेह न होता हो।

नस-कट—वि०[हिं० नस+काटना]१. नस या नसें काटनेवाला। २. जिससे नस कटती हो।

पद—**नस-कट खाट**=ऐसी छोटी खाट जिससे एड़ी के ऊपर की नस मे रगड़ लगे।

नस-कटा—पुं०[हिं० नस+काटना]१ जिसकी नस अर्थात् लिंगेंद्रिय काट ली गई हो। बखोजा। २ नपुसक। हीजड़ा।

नस-तरंग—पु०[हिं०नस+तरग]पुरानी चाल का शहनाई की तरह का एक बाजा।

नसतालीक—वि०, पु०=नस्तालीक।

नसना—अ०[स० नशन]१ नष्ट होना। बरबाद होना। २. खराब होना। बिगड़ना।

†अ०[हिं० नटना]भागना। (पश्चिम)

नस-फाड़—पु०[हिं० नस+फाडना] हाथियो के पैर सूजने का एक रोग।

नसब—पु०[अ०]१ कुल। खानदान। वश। २ वशावली।

नसर—स्त्री०[अ० नस्र] गद्य।

नसरी—स्त्री०[?]१. एक तरह की मधुमक्खी। २ उक्त मक्खी के छत्ते का मोम।

नसल—स्त्री०[अ० नस्ल]१ वश। २ सतति।

नसवार—स्त्री०[हिं० नास+वार (प्रत्य०)] तमाकू के पत्तो की बुकनी जो प्राय सूँघी जाती है। सूँघनी।

नसहा—वि०[हिं० नस+हा (प्रत्य०)] जिसमे नसें हो। नसोवाला।

नसा—स्त्री०[स०] नासिका। नाक।

†पु० =नशा।

नसाना—स०[सं० नाशन]१ नष्ट करना। २. खराब करना। बिगाड़ना।

†अ०१ नष्ट होना। २ खराब होना। बिगडना।

स० [हिं० नसना]१ दूर करना या हटाना। २ भगाना।

नसावन—वि०[हिं० नसाना]१. नसाने अर्थात् भगानेवाला। दूर या नष्ट करनेवाला।

नसावना—स०, अ०=नसाना।

नसी—स्त्री० [?] १. हल की कुसी या फार की नोक। २. हल।

पद—**नसी-पूजा** (दे०)।

नसीठ—पु० [देश०] बुरा शकुन। असगुन।

नसीत*†—स्त्री०=नसीहत।

नसीनी†—स्त्री०=निसेनी (सीढ़ी)।

नसी-पूजा—स्त्री० [हिं० नसी+स० पूजा] हल की वह पूजा जो खेत मे बीज बोने के उपरात की जाती है।

नसीब—पु० [अ०] १. भाग्य। प्रारब्ध। किस्मत। तकदीर। २. हिस्सा।

मुहा०—**नसीब आजमाना**=भाग्य की परीक्षा के भरोसे कोई काम करना। **नसीब खुलना, चमकना, जागना या सीधा होना**=भाग्य का उदय होना। किस्मत चमकना। **नसीब टेढ़ा होना**=बुरे दिन आना। **नसीब पलटना**=भाग्य की स्थिति बदलना ।

वि० अच्छे भाग्य के कारण मिला हुआ। सौभाग्य से प्राप्त। (प्रायः नहिक वाक्यों में प्रयुक्त) जैसे—भला ऐसा मकान हमे कहाँ नसीब होगा।

नसीब-जला—वि० [अ० नसीब+हिं० जलना] [स्त्री० नसीब-जली] अभागा।

नसीबवर—वि० [अ०] भाग्यवान्। खुशकिस्मत।

नसीबा—पु० [अ० नसीब] नसीब। भाग्य।

नसीम—स्त्री० [अ०] धीमी और ठंढी हवा। समीर।

नसीर—पु० [अ०] १ वह जो दूसरों की सहायता करता हो। २ ईश्वर।

नसीला†—वि० [स्त्री० नसीली] १ =नशीला। २ =नसदार।

नसीहत—स्त्री० [अ०] १ अच्छी सम्मति। सत्परामर्श। २ सदुपदेश। ३. ऐसा दंड जिससे आगे के लिए कोई अच्छी शिक्षा मिलती हो। ४. उक्त दंड के फल-स्वरूप होनेवाला ज्ञान या मिलनेवाली शिक्षा। क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

नसीहा—पु० [देश०] एक प्रकार का हलका हल जिससे नरम जमीन जोती जाती है।

नसूड़िया—वि० [हिं० नासूर+इया (प्रत्य०)] १ नासूर-संबंधी। २ बहुत ही उग्र और भीषण। ३ अमांगलिक। ४ जिसकी उपस्थिति या संपर्क से काम बिगड़ जाता हो। जैसे—नसूड़िया हाथ मत लगाओ।

नसूर†—पु०=नासूर।

नसेनी†—स्त्री०=निसेनी (सीढ़ी)।

नस्त—पु० [सं०√नस् (टेढ़ा होना)+क्त] १ नाक। २ नसवार। सुँघनी।

नस्तक—पु० [सं० नस्त+कन्] १ पशुओं की नाक में किया हुआ छेद जिसमें रस्सी डाली जाती है। २ नाक में का छेद।

नस्त-करण—पु० [ष० त०] नाक में दवा डालने का एक प्राचीन उपकरण।

नस्तन—पु० [फा०] १ सेवती (सफेद गुलाब) का पौधा और उसका फूल। २ पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।

नस्ता—पु० [सं० नस्त+टाप्] नस्तक (दे०)।

नस्तालीक—वि० [अ० नस्तऽलीक] जिसकी चाल-ढाल या रूप-रंग बहुत आकर्षक तथा सुन्दर हो।
पु० अरबी और फारसी लिपि लिखने का वह ढंग या प्रकार जिसमें अक्षर बहुत ही साफ, सुडौल और सुपाठ्य रूप में लिखे जाते हैं। (उर्दू पुस्तकों की छपाई इसी लिपि में होती है)।

नस्तित—वि० [सं० नस्त+इतच्] १ (पशु) जिसे नाथ पहनाया गया हो। २ नत्थी में लगाया हुआ। (फाइल्ड)
पु० एक तरह का बैल।

नस्य—पु० [सं० नासिका+यत्, नस् आदेश] १ सुँघनी। नसवार। नास। २ वह औषधि जिसे नाक के रास्ते दिमाग में चढ़ाया जाता है। ३ बैलों की नाक में बाँधी जानेवाली रस्सी। नाथ।

नस्या—स्त्री० [सं० नस्य+टाप्] १ नाक। २. नाक का छेद। नथना।

नस्याधार—पु० [सं० नस्य-आधार ष० त०] सुँघनी रखने का पात्र। नासदानी।

नस्ल—स्त्री० दे० 'नसल'।

नस्वर†—वि०=नश्वर।

नहँ—पु० [देश०] उत्तर प्रदेश में होनेवाला एक प्रकार का बढ़िया चावल।
पु० =नख (नाखून)।
†अव्य० =नहीं।

नह—पु०=नख (नाखून)।

नहछू—पु० [सं० नखक्षौर] १. एक प्रथा जिसमें विवाह से पहले वर के बाल, नाखून आदि काटे जाते है और उसे मेंहदी आदि लगाई जाती है। २ द्वार-पूजा के बाद की एक रीति जिसमें कन्या के नाखून काटे जाते और उसे नहलाया जाता है।

नहट्टा—पु० [हिं० नहँ =नाखून] नख-क्षत।

नहन—पु० [हिं० नाँधना] मोट या पुरवट खींचने की मोटी रस्सी। नार।

नहना—स० [हिं० नाँधना] १ नाधना। २ बैलों आदि को हल में जोतना। ३ किसी को काम में लगाना।

नहन्नी†—स्त्री० =नहरनी।

नहर—स्त्री० [फा०] [वि० नहरी] १ सिंचाई और यातायात के निमित्त बनाया हुआ कृत्रिम जल-मार्ग। २ कोई ऐसी नाली जिसमें से द्रव पदार्थ चलता या बहता हो।

नहरनी—स्त्री० [हिं० नँह=नख] १ नाखून काटने का धारदार एक छोटा उपकरण। २ उक्त के आकार जैसा एक उपकरण जिससे पोस्ते की ढोंढी चीरते है।

नहरम—स्त्री० [देश०] एक तरह की मछली।

नहरी—वि० [फा० नहर+हिं० ई(प्रत्य०)] नहर-संबंधी। नहर का। जैसे—नहरी पानी।
स्त्री० वह जमीन जिसकी सिंचाई नहर के पानी से होती हो।

नहरुआ†—पु०=नारू (रोग)।

नहरू†—पु० नारू (रोग)।

नहला—पु० [हिं० नौ] ताश का वह पत्ता जिसमें नौ बूटियाँ होती हैं।
पु० [?] धातु, लकड़ी आदि का करनी की तरह का एक औजार जिससे राज मिस्तरी, दीवारों पर बेल-बूटे का काम बनाने में सहायता लेते है।

नहलाई—स्त्री० [हिं० नहलाना+ई] १ नहलाने की क्रिया या भाव। २ नहलाने के बदले में मिलनेवाला पारिश्रमिक या पुरस्कार। ३ नहलानेवाली दाई या दासी। जैसे—खिलाई, दाई और नहलाई अलग अलग नियुक्त थी।

नहलाना—स० [हिं० नहाना का स० रूप] [भाव० नहलाई] किसी को नहाने में प्रवृत्त करना।

नहवाना†—स० नहलाना।

नहस—वि० [अ० नह्स] अमांगलिक। अशुभ।

नहसुत—पु० [सं० नख+सूत्र] नख की रेखा। नखक्षत।
पु० [सं० नख (वृक्ष)] पलास की तरह का एक पेड़। फरहद।

नहाँ—पु० [सं० नख, हिं० नँह] १ पहिए के ठीक बीच का वह गोल छेद जिसमें धुरी पहनाई जाती है। २ घर के आगे का आँगन। ३ नख। नाखून।
वि० नहँ अर्थात् नाखूनोंवाला या नाखूनों की तरह का। जैसे—बघनहाँ।

नहान—पु० [हिं० नहाना] १ नहाने की क्रिया या भाव। २ नहाने का शुभ अवसर या पर्व। जैसे—छठी का नहान, संक्रान्ति का नहान। ३ किसी शुभ अवसर पर बहुत से लोगों का एक साथ नहाना।

नहाना—अ० [सं० स्नान, प्रा० ण्हाण, बँदे० हनाना] १ खुले जल से पूरे शरीर को तर करना और धोना। स्नान करना।

विशेष—(क) शरीर को स्वच्छ रखने के निमित्त नहाया जाता है। (ख) नहाने से आलस्य और थकान दूर होती है।

पद—दूधों नहाओ पूतों फलो=धन और परिवार से समृद्ध होओ। (आशीर्वाद)

२ रजोधर्म से निवृत्त होने पर स्त्री का स्नान करना। ३ किसी तरल पदार्थ से शरीर का लथ-पथ होना। जैसे—पसीने या लहू से नहाना।

नहानी—स्त्री० [हिं० नहाना] १ रजस्वला स्त्री, जिसे चौथे दिन नहाकर शुद्ध होना पड़ता है। २ स्त्री के रजस्वला होने की स्थिति।

नहार—वि० [सं० निराहार से फा० नाहार] १ निराहार। २ बासी मुँह।

मुहा०—नहार तोड़ना=सबेरे के समय जलपान या हल्का भोजन करना। **नहार रहना**=निराहर या भूखे रहना।

पद—नहार-मुँह=सबेरे के समय बिना कुछ खाये या जलपान किये। जैसे—नहार-मुँह उठकर चल पड़े थे।

नहारी—स्त्री० [हिं० नहार] १ वह हल्का भोजन जो एक दिन निराहार रहने पर दूसरे दिन बासी मुँह किया जाता है। २ जलपान। नाश्ता। ३ वह धन जो नौकरों-मजदूरों आदि को जल-पान कराने के बदले मे दिया जाता है। ४ घोड़ों को खिलाया जानेवाला गुड़ मिला हुआ आटा। ५ एक प्रकार का शोरबेदार गोश्त।

नहिं*—अव्य०=नहीं।

नहिअन—पु० [हिं० नहँ=नख] पैर की छोटी उँगली मे पहनने का बिछिया के आकार का एक गहना।

नहिक—वि० [सं० नहि=नहीं+हिं० क (प्रत्य०)] १. अस्वीकृत करने या न माननेवाला। 'नहीं' कहने या करनेवाला। नकारात्मक। २ जिसमे किसी विशेष वस्तु का अभाव हो। किसी विशिष्ट वस्तु, तत्त्व या बात से रहित। ३ जो किसी तत्त्व या बात का अवरोधक, बाधक या मारक हो। ४ (प्रतिकृति या मूर्ति) जिसमे मूल की छाया के स्थान पर प्रकाश और प्रकाश के स्थान पर छाया हो। 'सहिक' का विपर्याय। (अपोजिट, उक्त सभी अर्थों के लिए)

पु० १ वह कथन या बात जिसमे कोई दूसरी बात न मानी गई हो या किसी बात से इनकार किया गया हो। असम्मति-सूचक बात। २. किसी विषय, निश्चय आदि का वह अश, अग या पक्ष जिसमे उसके सहिक या सकारात्मक पक्ष का खंडन या विरोध हो। ३ किसी की वह प्रतिकृति या मूर्ति जिसमें मूल की छाया के स्थान पर प्रकाश और प्रकाश के स्थान पर छाया हो। ४ छाया-चित्र मे, वह शीशा जिस पर किसी वस्तु का उलटा प्रतिबिंब या आकृति अंकित होती है और जिसमे कागज पर उसकी सही प्रतियाँ छापी जाती हैं। 'सहिक' का विपर्याय। (नेगेटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)

नहियाँ—स्त्री० दे० 'नहिअन'।

नहिरनी†—स्त्री०=नहरनी।

नहीं—अव्य० [सं० नहि] एक अव्यय जिसका प्रयोग असहमति, अस्वीकृति, विरोध आदि प्रकट करने के लिए होता है।

मुहा०—नहीं तो=अमुक काम या बात न होने पर। अन्य या विपरीत अवस्था मे।

नहुष—पु० [सं०√नह् (बन्धन)+उषच्] १ अयोध्या के एक इक्ष्वाकु वशी राजा जो अबरीष का पुत्र और ययाति का पिता था। महाभारत मे इसे चद्रवशी आयु राजा का पुत्र कहा गया है। २ एक प्राचीन ऋषि जो मनु के पुत्र कहे गए हैं और जो ऋग्वेद के कुछ मत्रो के द्रष्टा हैं। ३. एक नाग का नाम। ४ कुशिक वशी एक ब्राह्मण राजा का नाम। ५ वैदिक काल के एक राजर्षि। ६ पुराणानुसार एक मरुत् का नाम। ७ विष्णु का एक नाम।

नहुषाख्य—पु० [सं० नहुष-आख्या, ब० स०] तगर पुष्प।

नहुषात्मज—पु० [सं० नहुष-आत्मज, ष० त०] ययाति।

नहूर—स्त्री० [देश०] एक तरह की तिब्बती भेड़।

नहूसत—स्त्री० [अ०] नहस या मनहूस होने की अवस्था या भाव। मनहूरियत।

नाँउँ*—पु०=नाम।

नाँखना—स० [सं० नश्] १ फेकना। २ नष्ट करना।

स० [सं० रक्षण ?] १ रखना। २ डालना। (डि०) उदा०—रजतिणि सिर नाँखे गज-राज। —प्रिथीराज।

नाँगा†—वि० [स्त्री० नाँगी] =नगा।

पु० [हिं० नगा] वह साधु जो नगा रहता हो। दे० 'नागा'।

नाँघना†—स०=लाँघना।

नाँठना—अ० [सं० नष्ट] नष्ट होना।

नाँद—स्त्री० [सं० नदक] चौड़े मुँह तथा गोल पेंदेवाला मिट्टी का एक प्रकार का पात्र जिसमे गाय, भैस आदि को चारा खिलाया जाता है।

नाँदना—अ० [सं० नदन] १ आनदित या प्रसन्न होना। २ दीपक का बुझने के पहले कुछ भभककर जलना। ३ दीपक की लौ का रह-रहकर नाचना या हिलना।

अ० [सं० नाद] १ नाद या शब्द करना। २ शोर मचाना। चिल्लाना। ३ छीकना।

नांदिकर—पु० [सं० नादी√कृ+ट, हृस्व] सूत्रधार जो नादी का पाठ करता है।

नांदी—स्त्री० [सं० √नन्द् (समृद्धि)+घञ्,पृषो० सिद्धि] १ अभ्युदय। समृद्धि। २ नाटक मे वह आशिर्वादात्मक पद्य जो सूत्रधार अभिनय आरंभ करने से पहले मगलाचरण के रूप मे उच्च स्वर मे गाता या पढ़ता है। मगलाचरण।

नांदीक—पु० [सं० नादी√कै (प्रकाशित होना)+क] १ तोरण स्तभ। २ दे० 'नादीमुखश्राद्ध'।

नांदी-पट—पु० [ष० त०] लकड़ी की वह रचना जिससे कूएँ का ऊपरी भाग ढका जाता है।

नांदी-मुख—पु० [ब० स०] १ कूएँ के ऊपर का ढकना। २ परिवार मे किसी प्रकार की वृद्धि होने के शुभ अवसर पर पितरो का आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए किया जानेवाला श्राद्ध। वृद्धि श्राद्ध।

वि० (पितर) जिनके उद्देश्य से नादी-मुख श्राद्ध किया जाता है।

नांदीमुखी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः दो नगण, दो तगण और दो गुरु होते हैं।

नाँघना—स०=लाँघना।

नाँव—पु० [स०] अपने आप उगनेवाला धान।

नाँयँ†—पु०=नाम।

†अव्य०=नहीं।

नाँवँ†—पु०=नाम।

नाँवगर—पु० [सं० नौका+घर] मल्लाह।

नाँवाँ—पु० [हिं० नाम] १. नाम। २. बही-खाते मे किसी के नाम पडी हुई चीज या रकम। ३ नगद रुपए-पैसे जो दिये या लिये जाने को हो। ४. दाम। मूल्य।

नाँह†—पुं० [स० नाथ] पति। स्वामी।

अव्य०=नही।

ना—अव्य० [स० न] एक प्रत्यय जिसका प्रयोग किसी को कोई काम करने से या निषेध करने के लिए 'न' या 'नहीं' की तरह होता है। जैसे—ना, ऐसा मत करो।

विशेष—कुछ अवस्थाओ मे लोग इसका प्रयोग भी 'न' की तरह केवल आग्रह करने या जोर देने के लिए करते है। जैसे—अभी बैठो ना, अर्थात् बैठो न।

*पुं० [स० नाभि] नाभि।

*पु०=नर (मनुष्य)।

उप० [सं० न से फा०] एक उपसर्ग जिसका प्रयोग विशेषणो और सज्ञाओ से पहले अभाव, नहिकता अथवा विरोधी भाव प्रकट करने के लिए होता है। जैसे—ना-लायक, ना-समझी आदि।

ना इत्तिफाकी—स्त्री० [फा०] १. इत्तिफाक अर्थात् मैत्रीपूर्ण एकता का अभाव होना। २ मतभेद।

नाइन—स्त्री० [हिं० नाई] १ नाई जाति की स्त्री। २ नाई की पत्नी।

नाइब—पुं०=नायब

नाई—स्त्री० [स० न्याय] समान दशा।

अव्य० १ तुल्य। समान। २. की तरह। जैसे। उदा०—कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाई।—तुलसी। ३ लिए। वास्ते। उदा०—अल्लह राम जिवउ तेरे नाईं।—कबीर।

नाई—पु० [स० नापित] वह जो लोगो के बाल काटता और हजामत बनाता हो। नापित। हज्जाम।

स्त्री० [?] नाकुलीकद।

स्त्री० [हिं० नखना=डालना] =नरका (हल के पीछे की नली)।

नाउ—स्त्री०=नाव।

†पुं०=नाम।

नाउत—पु० [देश०] ओझा। सयाना।

नाउन†—स्त्री०=नाइन।

ना-उमेद—वि० =ना-उम्मीद।

ना-उम्मीद—वि० [फा०] [भाव० ना-उम्मीदी] जिसे आशापूर्ण होने की सभावना न दिखाई पडती हो।

नाऊ†—पु०=नाई।

नाकंद—वि० [फा० ना+कद] १. (बछड़ा) जिसके दूध के दांत अभी न टूटे हो। २ मूर्ख।

नाक—स्त्री० [सं० नासिका] १. जीव-जतुओ या प्राणियो के चेहरे पर का वह उभरा हुआ लबोतरा अग जो आँखो के नीचे और मुख-विवर के ऊपर बीचो-बीच रहता है और जिसमें दोनो ओर वे दो नथने या छिद्र रहते हैं, जिनसे वे सांस लेते और सूंघते हैं। सांस लेने और सूंघने की इद्रिय।

विशेष—(क) नाक से बोलने और स्वरो आदि का उच्चारण करने में भी सहायता मिलती है। (ख) मस्तक या मस्तिष्क के अदर के मल का कुछ अश प्राय कफ आदि के रूप मे दोनो नथनो के रास्ते बाहर निकलता है। (ग) लोक व्यवहार मे, नाक को प्राय प्रतिष्ठा, मर्यादा, सौंदर्य आदि के प्रतीक के रूप मे भी मानते हैं, जिसके आधार पर इसके अधिकतर मुहावरे बने हैं।

पद—**नाक का बांसा**=नाक के दोनो नथनो के बीच का भीतरी परदा। **(किसी की) नाक का बाल**=ऐसा व्यक्ति जो किसी बडे आदमी का घनिष्ठ समीपवर्ती हो और साथ ही उस बडे आदमी पर अपना यथेष्ट प्रभाव रखता हो। जैसे—उन दिनो वही खवास राजा साहब की नाक का बाल हो रहा था। **नाक की सीध मे**=बिना इधर-उधर घूमे या मुडे हुए और ठीक सामने या सीधे। जैसे—नाक की सीध मे चले जाओ, सामने ही उनका मकान मिलेगा। **बैठी हुई नाक**=चिपटी नाक।

मुहा०—**नाक कटना**=प्रतिष्ठा या मर्यादा नष्ट होना। इज्जत जाना। **(किसी की) नाक काटना**=(क) प्रतिष्ठा या मर्यादा नष्ट करना। इज्जत बिगाडना। (ख) अपनी तुलना मे किसी को बहुत ही तुच्छ या हीन प्रमाणित अथवा सिद्ध करना। जैसे—यह मकान मुहल्ले भर के मकानो की नाक काटता है। **नाक-कान (या नाक-चोटी) काटना**=बहुत अधिक अपमानित और दडित करने के लिए शरीर के उक्त अग काटकर अलग कर देना। **(किसी के आगे या सामने) नाक घिसना या रगड़ना**=बहुत ही दीन-हीन बनकर और गिड़गिड़ाते हुए किसी प्रकार की प्रार्थना प्रतिज्ञा या याचना करना। **नाक (अथवा नाक भौं) चढ़ाना या सिकोड़ना**=आकृति से अरुचि, उपेक्षा, क्रोध, घृणा, विरक्ति आदि के भाव प्रकट या सूचित करना। जैसे—आप तो दूसरो का काम देखकर यो ही नाक (अथवा नाक-भौं) चढ़ाते या सिकोड़ते हैं। **नाक तक खाना**=इतना अधिक खाना या भोजन करना कि पेट मे और कुछ भी खा सकने की जगह न रह जाय। **(किसी स्थान पर) नाक तक न दी जाना**=इतनी अधिक दुर्गंध होना कि आदमी से वहाँ खडा न रहा जा सके। **नाक पकड़ते दम निकलना**=इतना अधिक दुर्बल होना कि छू जाने से गिर पडने या मर जाने का डर हो। अधिक अशक्त या क्षीण होना। **नाक पर उँगली रख कर बातें करना**=स्त्रियों या हिजडो की तरह नखरे से बाते करना। **नाक पर गुस्सा रहना या होना**=ऐसी चिड़चिडी प्रकृति होना कि बात-बात पर क्रोध प्रकट होता रहे। जैसे—तुम्हारी तो नाक पर गुस्सा रहता है; अर्थात् तुम जरा सी बात पर बिगड जाते हो। **(कोई चीज) किसी की नाक पर रख देना**=किसी की चीज उसके मागते ही तुरंत या ठीक समय पर उसे लौटा या दे देना। तुरंत दे देना। जैसे—हम हर महीने किराया उनकी नाक पर रख देते हैं। **नाक पर दीया बाल कर आना**=यशस्वी, विजयी या सफल होकर आना। **(अपनी) नाक पर मक्खी न बैठने देना**=इतनी खरी या साफ प्रकृति का होना कि किसी को भी कुछ भी कहने-सुनने का अवसर न मिले। **(किसी की) नाक पर सुपारी तोड़ना या**

फोड़ना=बहुत अधिक तंग या परेशान करना। नाक कटना या कटने लगना=कहीं इतनी अधिक दुर्गंध होना कि आदमी से वहाँ खड़ा न रहा जा सके। नाक-भौं चढ़ाना या सिकोड़ना=दे० ऊपर 'नाक चढ़ाना या सिकोड़ना'। नाक में तीर करना या डालना=खूब तंग या हैरान करना। बहुत सताना। नाक रगड़ना=दे० ऊपर 'नाक घिसना'। नाक में बोलना=इस प्रकार बोलना कि श्वास का कुछ अंश नाक से भी निकले, और उच्चारण सानुनासिक हो। नकियाना। नाक लगाकर बैठना=अपने आपको बहुत प्रतिष्ठित या बड़ा समझते हुए औरों से बहुत-कुछ अलग या दूर रहना। (किसी का) नाक में दम करना या लाना=बहुत अधिक तंग या हैरान करना। बहुत सताना। जैसे—इस लड़के ने हमारी नाक मे दम कर दिया है। नाक मारना=दे० ऊपर 'नाक चढ़ाना या सिकोड़ना'। नाक सिकोड़ना=दे० ऊपर। 'नाक चढ़ाना या सिकोड़ना। (किसी से) नाकों चने चबवाना=किसी को इतना अधिक तंग या दुःखी करना कि मानो उसे नाक के रास्ते चने चबाकर खाने के लिए विवश किया जा रहा हो। नाकों दम करना=दे० ऊपर 'नाक मे दम करना'।

२ मस्तिष्क का वह तरल मल जो नाक के नथनों से होकर बाहर निकलता है। नेटा। रेंट।

मुहा०—नाक छिनकना या सिनकना=नाक के रास्ते इस प्रकार जोर से हवा बाहर निकालना कि उसके साथ अंदर का कफ दूर जा गिरे। नाक बहना=सरदी आदि के कारण नाक से पतला कफ या पानी निकलना।

३ गौरव, प्रतिष्ठा या सम्मान की चीज, बात या व्यक्ति। जैसे—वही तो इस समय हमारे महल्ले की नाक हैं। उदा०—नाक पिनाकहि संग सिधाई।—तुलसी। ४ किसी चीज के अगले या ऊपरी भाग मे आगे की ओर निकला हुआ कुछ मोटा, नुकीला और लंबा अंग या अंश। ५ चरखे मे लगी हुई वह खूँटी या हत्था जिसकी सहायता से उसे घुमाते या चलाते है। ६. लकड़ी का वह डंडा जिस पर रखकर पीतल आदि के बरतन खरादे जाते हैं।

पुं० [सं० न-अक=दुःख, ब० स०] १ स्वर्ग। २ अंतरिक्ष। आकाश। ३. अस्त्र चलाने का एक प्रकार का ढंग।

पुं० [सं० नक्र] मगर की तरह का एक प्रकार का जल-जंतु। घड़ियाल।

वि० [फा०] १ भरा हुआ। पूर्ण। (प्रत्यय के रूप मे यौगिक शब्दों के अंत मे) जैसे—खौफनाक, दर्दनाक।

नाक-कटैया†—स्त्री० [हिं० नाक+काटना] १. नाक कटने या काटे जाने की अवस्था या भाव। २ रामलीला का वह प्रसंग जिसमें लक्ष्मण ने शूर्पणखा की नाक काटी थी और जिसके स्वाँग प्रायः राम-लीला के समय निकलते हैं।

नाक-चर—पुं० [सं०] देवता।

नाकड़ा—पुं० [हिं० नाक] नाक के पकने का एक रोग।

ना-कदर—वि०[फा० ना+अ० कद्र] [भाव० ना-कदरी] १ जिसकी कोई कदर न हो। जिसकी कोई प्रतिष्ठा न हो। २. जो किसी की कदर या आदर करना न जानता हो। जो गुण-ग्राही न हो।

ना-कदरी—स्त्री० [फा० ना+अ० कद्र] ऐसी स्थिति जिसमें किसी का पूरा-पूरा या उचित आदर या सम्मान न हुआ या न किया गया हो।

नाक-नदी—स्त्री० [सं०] स्वर्ग की नदी। अप्सरा।

नाकना—स० [सं० लंघन, हिं० नाँघना] १ उल्लंघन करना। डाँकना। लाँघना। २. दौड़, प्रतियोगिता आदि मे किसी से आगे बढ़ जाना। स० [हिं० नाक+ना (प्रत्य०)] १. चारों ओर से नाके या रास्ते रोकना। नाकाबंदी। करना। २ आने-जाने के सब द्वार या रास्ते बंद करके किसी को घेरना। ३. कठिनता या बाधा को दूर या पार करना। उदा०—मैं नहिं काहू कौ कछु चाल्यो पुन्यनि करवर नाक्यो।—सूर।

नाक-नाथ—पुं० [सं० ष० त०]=नाक-पति।

नाक-पति—पुं० [सं० ष० त०] स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

नाक-पृष्ठ—पुं० [सं० ष० त०] स्वर्ग।

नाक-बुद्धि—वि० [हिं० नाक+बुद्धि] १. जो नाक से सूँघकर या गंध द्वारा ही भक्ष्याभक्ष्य, भले-बुरे आदि का विचार कर सके, बुद्धि द्वारा नहीं। अर्थात् क्षुद्र या तुच्छ बुद्धिवाला।

स्त्री० उक्त प्रकार की क्षुद्र या तुच्छ बुद्धि।

नाक-वनिता—स्त्री० [सं० ष० त०] अप्सरा।

नाक-वास—पुं० [सं० ष० त०] स्वर्ग मे होनेवाला वास।

नाक-वेधक—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र।

नाका—पुं० [हिं० नाकना] १. रास्ते आदि का वह छोर जिससे होकर लोग किसी ओर जाते, बढ़ते या मुड़ते हैं। प्रवेश-द्वार। मुहाना। २. वह स्थान जहाँ से दुर्ग, नगर आदि मे प्रवेश किया जाता है। जैसे—नाके पर पहरेदार खड़े थे।

क्रि० प्र०—छेंकना।—बाँधना।

पद—नाकेबंदी। (दे०)

३ उक्त के अंतर्गत वह स्थान जहाँ चौकी, पहरे आदि के लिए रक्षक या सिपाही रहते हो, अथवा जहाँ प्रवेश-कर आदि उगाहे जाते हों। ४ चौकी। थाना। ५ सूई के सिरे का वह छेद जिसमे डोरा या तागा पिरोया जाता है। ६ करघे का वह अंश जिसमे तागे के ताने बँधे रहते हैं।

†पुं० [सं० नक्र] घड़ियाल या मगर की तरह का एक जल-जंतु।

स्त्री० [अ० नाक] मादा ऊँट। ऊँटनी।

नाकादार—वि०, पुं०=नाकेदार।

नाका-बंदी—स्त्री०=नाकेबंदी।

ना-काबिल—वि० [फा० ना+अ० काबिल] [भाव० ना-काबिलियत] जो काबिल अर्थात् योग्य न हो। अयोग्य।

ना-काम—वि० [फा०] [भाव० नाकामी] जिसे अपने प्रयत्न मे सफलता न मिली हो। ना-कामयाब।

ना-कामयाब—वि० [फा०] [भाव० ना-कामयाबी]=ना-काम।

नाकारा—वि० [फा० नाकारः] १ निष्कर्म। २. (व्यक्ति) जो किसी काम का न हो। निकम्मा। ३. (पदार्थ) जो काम मे न आ सके। निष्प्रयोजन।

†पुं०=नकुल (नेवला)।

नाकिस—वि० [अ० नाक़िस] १. जिसमे कोई नुक्स या दोष हो; अर्थात् खराब या बुरा। २. जिसमें अपूर्णता या त्रुटि हो। ३ निकम्मा। रद्दी।

पु० अरबी भाषा मे वह शब्द जिसका अतिम वर्ण अलिफ, वाव या ये हो।

नाकी (किन्)—वि० [स० नाक+इनि] स्वर्ग मे वास करनेवाला।

पु० देवता।

स्त्री०=नक्की।

नाकु—पु० [स०√नम् (झुकना)+उ, नाक् आदेश] १ दीमको की मिट्टी का ढूह। बिमौट। बल्मीक। २ टीला। भीटा। ३ पर्वत। पहाड। ४ एक प्राचीन ऋषि।

नाकुल—वि० [स० नकुल+अण्] १ नकुल-सबधी। नेवले का। २ नेवले की तरह का।

पु० १ नकुल के वशज या सन्तान। २ चव्य। चाब। ३ यव-तिक्ता। ४ सेमल का मूसला। ५ रास्ना।

नाकुलक—वि० [स० नकुल+ठञ्—क] नेवले की पूजा करनेवाला।

नाकुलि—पु० [स० नकुल+इञ्] १ नकुल का पुत्र। २ नकुल गोत्र का मनुष्य।

नाकुली—वि० [स०] नकुल-सबधी। नकुल का। नाकुल।

स्त्री० [स० नकुल+अण्—ङीप्] १ एक प्रकार का कद जो सब प्रकार के विषो, विशेषकर सर्प के विष को दूर करनेवाला कहा गया है। नाकुली दो प्रकार की होती है। एक नाकुली, दूसरी गध-नाकुली जो कुछ अच्छी होती है। २ यवतिक्ता। ३ रास्ना। ४ चव्य। चाब। ५ सफेद भटकटैया।

नाकू†—पु० [स० नक्र] घडियाल। मगर।

नाकेदार—वि० [हि० नाका+फा० दार] जिसमे कोई चीज पहनाने या पिरोने के लिए नाका या छेद हो।

पु०१ वह रक्षक या सिपाही जो किसी नाके पर चौकी, पहरे आदि के लिए नियुक्त हो। २ वह अफसर या कर्मचारी जो आने-जाने के मुख्य स्थानो पर किसी प्रकार का कर, महसूल आदि वसूल करने के लिए नियत रहता हो।

नाकेबदी—स्त्री० [हि० नाका+फा० बदी] १ ऐसी व्यवस्था जो नाका अर्थात् कही आने-जाने का मार्ग रोकने के लिए हो। २ आधुनिक राजनीति मे, विपक्षी या शत्रु के किसी तट, बदरगाह अथवा स्थान को इस प्रकार घेरना कि न तो उसके अदर कोई प्रवेश करने पावे और न वहाँ से कोई बाहर निकलने पावे। (ब्लाकेड)

नाकेश—पु० [स० नाक-ईश, ष० त०] इद्र।

नाक्षत्र—वि० [स० नक्षत्र+अण्] १. नक्षत्र-सबधी। २ नक्षत्रो की गति आदि के विचार से जिसका मान निश्चित हो। जैसे—नाक्षत्र दिन, नाक्षत्र मास।

पु० चाद्र मास।

नाक्षत्र-दिन—पु० [कर्म० स०] उतना समय जितना चद्रमा को एक नक्षत्र से दूसरे नक्षत्र तक पहुँचने अथवा एक नक्षत्र को एक बार याम्योत्तर रेखा से होकर फिर वही आने मे लगता है। नाक्षत्र-मास का पूरा एक दिन।

विशेष—यह ठीक उतना ही समय है जितना पृथ्वी को एक बार अपने अक्ष पर घूमने मे लगता है। यह समय कभी घटता-बढता नही, सदा एक-सा रहता है, इसलिए ज्योतिषी लोग दिन-मान का ठीक और पूरा विचार करने के समय इसी का व्यवहार करते है।

नाक्षत्र-मास—पु० [कर्म० स०] वह समय जितने मे चद्रमा को एक नक्षत्र से चल कर क्रमश सब नक्षत्रो पर होते हुए फिर उसी नक्षत्र पर आने मे लगता है और जो प्राय. २७-२८ दिनो का होता है।

नाक्षत्र-वर्ष—पु० [कर्म० स०] १२ नाक्षत्र मासों का समूह।

नाक्षत्रिक—वि० [स० नक्षत्र+ठक्—इक] [स्त्री० नाक्षत्रिकी] नक्षत्र सबधी। नाक्षत्र।

पु० १ नाक्षत्र अर्थात् चाद्रमास। २ छद शास्त्र मे २७ मात्राओ के छदो की सज्ञा।

नाख—स्त्री० [फा० नाख] एक प्रकार की बढिया नाशपाती और उसका वृक्ष।

नाखना—स० [स० नाशन] १ नष्ट करना। २ बिगाडना। ३ गिराना, डालना, फेकना या रखना। ४ (शस्त्र) चलाना।

स० =नाकना।

नाखुदा—वि० [फा० नाखुदा] खुदा को न माननेवाला। नास्तिक।

पु० १ मल्लाह। नाविक। २ कर्णधार।

नाखुन†—पु० =नाखून।

नाखुना—पु० [फा० नाखुन] १ आँख का एक रोग जिसमे उसके तल पर खून की बिदी या दाग पड जाता है। २ घोडो का एक रोग जिसमे उनकी आँखो मे लाल डोरे या धारियाँ पड जाती हैं। ३ एक प्रकार का अगुश्ताना जिसे पहनकर चीरावद लोग चीरा बनाते या बाँधते थे।

पु० =नाखूना (कपडा)।

नाखुर—पु० =नहछू।

ना-खुश—वि० [फा०] [भाव० ना-खुशी] जो खुश या प्रसन्न न हो। अप्रसन्न। नाराज।

नाखून—पु० [फा० नाखुन] १ हाथो तथा पैरो की उँगलियो के ऊपरी तल का वह सफेद अग जो अधिक कडा तथा तेज धारवाला होता है। २ उक्त का वह चद्राकार अगला भाग जो कैंची आदि से काटकर अलग किया जाता है। ३ चौपायो के पैरो का वह अगला भाग जो मनुष्य के नखो के समान कडा होता है।

मुहा०—**नाखून लेना**=नाखून काटकर अलग करना। **(घोड़े का) नाखून लेना**=चलने मे घोडे का ठोकर खाना।

नाखूना—पु० [हि० नाखून] एक तरह का कपडा जिसका ताना सफेद होता है और बाने मे कई रगो की धारियाँ होती है। यह आगरे मे बहुत बनता था।

पु०=नाखुना।

नाग—पु० [स० नग=पर्वत+अण्] [स्त्री० नागिन] १ सर्प। साँप। २ काले रग का, बडा और फनवाला साँप। करैत।

मुहा०—**नाग खेलाना**=नागों या साँपो को खेलाने की तरह का ऐसा विकट काम करना जिसमे प्राण जाने का भय हो।

३ पुराणानुसार पाताल मे रहनेवाला एक उप-देवता जिसका ऊपरी आधा भाग मनुष्य का और नीचेवाला आधा भाग साँप का कहा गया है। ४ कद्रु से उत्पन्न कश्यप की सतान जिनका निवास पाताल मे माना गया है। इनके वासुकि, तक्षक, कुलक, कर्कोटक, पद्म, शख चूड, महा-पद्म और धनजय ये आठ कुल हैं। ५. एक प्राचीन देश। ६. उक्त देश मे बसनेवाली एक प्राचीन जाति।

विशेष—नाग जाति संभवतः भारत के उत्तर मे और हिमालय के उस पार रहती थी, क्योकि तिब्बतवाले अपने आपको नाग-वशी कहते हैं। महाभारत काल तक ये लोग भारत मे आ गये थे। और उत्तर भारतीय आर्यों से इनका बहुत वैमनस्य था। इसी लिए जनमेजय ने बहुत से नागो का नाश किया था। बाद मे ये लोग मध्यभारत मे आ कर फैल गए थे, जहाँ नागपुर, छोटा नागपुर आदि नगर और प्रदेश इनके नाम की स्मृति के रूप मे अब तक अवशिष्ट हैं। ये लोग नागो (बड बड़े फनदार साँपो) की पूजा करते थे। इसी से इनका यह नाम पडा था। बगाल मे अब तक हिंदुओं मे 'नाग' एक जाति का नाम मिलता है।

७ एक प्राचीन पर्वत। ८ हाथी। ९ एक प्रकार की घास। १० नागकेसर। ११ पुन्नाग। १२ नागर-मोथा। १३. ताबूल। पान। १४ सीसा नामक धातु। १५ ज्योतिष के करणो मे से तीसरा करण, जिसे 'ध्रुव' भी कहते हैं। १६ बादल। मेघ। १७ दीवार मे लगी हुई खूँटी। १८ कुछ लोगो के मत से 'सात' की और कुछ के मत से 'आठ' की सख्या। १९ आश्लेषा नक्षत्र का एक नाम। २० शरीर मे रहनेवाले पाँच प्राणो या वायुओं मे से एक जिससे डकार आता है।

वि० १ (व्यक्ति) जो बहुत अधिक क्रूर, घातक और दुष्ट हो।

२ यौ० के अत मे, सब मे श्रेष्ठ। जैसे—पुरुष नाग।

नाग-कद—पु० [ब० स०] हस्तिकद।

नाग-कन्या—स्त्री० [ष० त०] नाग जाति की बालिका या स्त्री।

नाग-कर्ण—पु० [ष० त०] १ हाथी का कान। २ एरड या रेंड जिसका पत्ता हाथी के कान के आकार का होता है।

नाग-किंजल्क—पुं० [ब० स०] नागकेसर।

नाग-कुमारिका—स्त्री० [ष० त०] १ गुरुच। गिलोय। २. मजीठ। ३ नाग-कन्या।

नाग-केसर—पु० [ब० स०] एक सदाबहार वृक्ष और उसके सुगधित फूल। इसके बीजो की गिनती गध द्रव्यो मे होती है।

नाग-खड—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार जबू द्वीप के अतर्गत भारतवर्ष के नौ खडो मे से एक खड।

नाग-गंधा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] नकुलकंद।

नाग-गति—स्त्री० [स०] किसी ग्रह की अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रो से होकर निकलने की अवस्था या गति।

नाग-गर्भ—पु० [ब० स०] सिंदूर।

नाग-चंपा—पुं० [स०] नागकेसर (पेड और उसका फूल)।

नाग-चूड़—पु० [ब० स०] शिव।

नागच्छत्रा—स्त्री० [स०] नागदंती (वृक्ष)।

नागज—वि० [स० नाग√जन् (उत्पत्ति)+ड] नाग से उत्पन्न।

पुं० १. सिंदूर। २ राँगा।

नाग-जिह्वा—स्त्री० [स० ष० त०] १. अनतमूल। २ सारिवा।

नाग-जिह्विका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] मैनसिल नामक खनिज द्रव्य।

नाग-जीवन—पु० [ब० स०] फूँका हुआ राँगा।

नाग-झाग—पु० [स० नाग+हिं० झाग] १ साँप की लार। अहिफेन। २ अफीम।

नाग-दंत—पु० [ष० त०] १ हाथी दाँत। २. [नागदन्त+अच्] दीवार पर गडी हुई खूँटी।

नाग-दंतिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] वृश्चिकाली नामक पौधा।

नाग-दंती—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] कुभा नामक औषधि।

नाग-दमन—पु० [ष० त०] नागदौना (पौधा)।

नाग-दमनी—स्त्री०=नागदमन (नागदौना)।

नागदला—पु० [स० नाग-दल] एक प्रकार का बडा पेड जिसकी लकडी बहुत कडी और मजबूत होती है और पानी मे भी जल्दी नही सडती। इसलिए इसकी लकडी से नावें बनती है। इसके बीजो का तेल जलाने के काम आता है।

नागदुमा—वि० [स० नाग+फा० दुम] जिसकी दुम या पूँछ नाग के फन के समान हो।

पुं० उक्त प्रकार की दुमवाला हाथी जो ऐबी माना जाता है।

नागदौन (१)—पु० [स० नागदमन] १ छोटे आकार का एक पहाडी पेड। २. एक प्रकार का पौधा जिसमे डालियाँ नही होती, केवल हाथ-हाथ भर लबे-लबे पत्ते होते हैं जो देखने मे साँप के फन की तरह होते हैं। कहते है कि इसके पास भी साँप नही आता। ३ एक प्रकार का कँटीला पेड़ जिसकी सूखी पत्तियाँ लोग कागजो और कपड़ो की तहो मे उन्हें कीड़ो से बचाने के लिए रखते है।

नाग-द्रु (द्रुम)—पु० [मध्य० स०] १ सेहुड। थूहर। २ नागफनी।

नाग-द्वीप—पु० [मध्य० स०] भारतवर्ष के नौ खंडो में से एक खड। (विष्णु पुराण)

नाग-धर—वि० [ष० त०] नाग को धारण करनेवाला।

पु० शिव।

नाग-ध्वनि—स्त्री० [सं०] मल्लार और केदार या सूहा अथवा कान्हड़े और सारग के योग से बनी हुई एक सकर रागिनी।

नाग-नक्षत्र—पु० [मध्य० स०] आश्लेषा नक्षत्र।

नाग-नग—पु० [स० नाग+हिं० नग]=गज मुक्ता।

नाग-नामक—पु० [ब० स०, कप्] राँगा।

नाग-नामा (मन्)—पु० [ब० स०] तुलसी।

नाग-पंचमी—स्त्री० [मध्य स०] श्रावण शुक्ला पचमी जिस दिन नागो की पूजा करने का विधान है।

नाग-पति—पु० [ष० त०] १ सर्पों के राजा, वासुकि। २ हाथियो के राजा, ऐरावत।

नाग-पत्रा—स्त्री० [ब० स०, टाप्]=नागदमनी (नागदौना)।

नाग-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] लक्ष्मणा (कद)।

नाग-पद—पु० [स०] एक प्रकार का रतिबध जो सोलह रतिबधो मे से दूसरा माना जाता है।

नाग-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] पान।

नाग-पाश—पु० [उपमि० स०] १ वरुण का एक अस्त्र जिससे वे शत्रुओ को लपेटकर उसी प्रकार बाँध लेते थे जिस प्रकार नाग या साँप किसी चीज को अपने शरीर से लपेटकर बाँध लेता है। २. सर्पों का फदा

जो वे किसी चीज के चारो ओर अपना शरीर लपेटकर बनाते हैं। ३ डोरी आदि का ढाई फेर का फंदा। नाग-बध।

नाग-पुर—पुं० [ष० त०] १ नागो का पुर, पाताल। २. हस्तिना नामक पुर जहाँ पर्वत के रूप मे स्वलील दानव ने गगा का मार्ग रोका था।

नाग-पुष्प—पुं० [ब० स०] १ नागकेसर। २ पुन्नाग। ३ चपा।

नाग-पुष्पिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] १. पीली जूही। २. नागदौन।

नाग-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] १ नागदौन। २ मेढा सीगी।

नागपूत—पुं० [स० नागपुत्र] कचनार की जाति की एक प्रकार की लता।

नागफनी—स्त्री० [हिं० नाग+फन] १ थूहर की जाति का एक प्रसिद्ध पौधा जिसमे टहनियाँ नही होती, केवल साँप के फन के आकार के गूदेदार मोटे दल एक दूसरे के ऊपर निकलते चले जाते हैं। इन दलो मे बहुत से काँटे होते है जिनसे किसी स्थान को घेरने के लिए इसकी बाढ लगाई जाती है। २ नागफनी के दल के आकार की एक प्रकार की कटार जिसका फल आगे की ओर चौडा और पीछे की ओर पतला होता है। ३ नरसिघे की तरह का एक प्रकार का नेपाली बाजा। ४ कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना। ५ वह कौपीन या लँगोटी जो नागा साधु पहनते या बाँधते हैं।

नाग-फल—पुं० [ब० स०] परवल।

नागफाँस—पुं० [स० नाग+हिं० फाँस] नाग-पाश। (दे०)

नाग-फेन—पुं० [ष० त०] १ साँप की लार। २. अफीम।

नाग-बध—पुं० [उपमि० स०] किसी चीज को लपेटकर बाँधने का वह विशेष प्रकार जो प्राय वैसा ही होता है जैसा नाग का किसी जीव-जतु या वृक्ष आदि को अपने शरीर मे लपेटने का होता है। उदा०—सेस नाग कौ नाग-बध तापर कसि बाँध्यौ।—रत्ना०।

नाग-बधु—पुं० [ष० त०] पीपल का पेड।

नाग-बल—वि० [ब० स०] हाथी की तरह बलवान्।

पुं० भीम।

नाग-बला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] गँगेरन।

नागबेल—स्त्री० [स० नागवल्ली] १ पान की बेल। पान। २. किसी चीज पर बनाई जानेवाली वह लहरियेदार बेल जो देखने मे साँप की चाल की तरह जान पडे। ३ घोडे आदि पशुओ की टेढ़ी-तिरछी चाल।

नाग-भगिनी—स्त्री० [ष०त०] जरत्कारु (वासुकि की बहन)।

नाग-भिद्—पुं० [नाग√भिद् (विदारण)+क्विप्] १. सर्पों की एक जाति। २ उक्त जाति का सर्प, जो बहुत ही जहरीला और भीषण होता है।

नाग-भूषण—पुं० [ब०स०] शिव।

नागमडलिक—पुं० [स० नाग-मडल ष०त०,+ठन्-इक] सँपेरा।

नागमरोड़—पुं० [हिं० नाग+मरोडना] कुश्ती का एक पेंच जिसमे प्रतिद्वद्वी को अपनी गर्दन के ऊपर से या कमर से एक हाथ से घसीटते हुए गिराते है।

नाग-मल्ल—पुं० [स० त०] ऐरावत।

नाग-माता (तृ)—स्त्री० [ष०त०] १. नागो की माता, कद्रु। २. सुरसा नाम की राक्षसी। ३. मनसा देवी। ४. मैनसिल।

नाग-मार—पुं० [नाग√मृ (मरना)+णिच्+अण्] काला भँगरा।

नाग-मुख—पुं० [ब०स०] गणेश।

नाग-यष्टि—स्त्री० [मध्य०स०] तालाब के बीचोबीच गड़ा हुआ लकडी या पत्थर का खभा।

नाग-रंग—पुं० [ब०स०] नारगी।

नागर—वि० [स० नगर+अण्] [स्त्री० नागरी, भाव० नागरता] १ नगर-सबधी। नगर का। (अर्बन) २. नगरवासियो मे होने अथवा उनसे सबध रखनेवाला। (सिविल) जैसे—नागर अधिकार। (सिविल राइट) ३ नगरपालिका, महापालिका या नगर परिषद् से सबध रखनेवाला। (म्युनिस्पल) जैसे—नागर निधि। (म्युनिस्पल फड) ४ नागरिको और उनके अधिकारो तथा कर्तव्यो से सबध रखनेवाला। (सिविक) ५ चतुर। होशियार।

पुं० १ नगर मे रहनेवाला व्यक्ति। नागरिक। २ चतुर, शिष्ट और सभ्य व्यक्ति। ३ विवाहिता स्त्री का देवर। ४ सोठ। ५. नागर मोथा। ६ नारगी। ७ गुजरात प्रदेश मे रहनेवाले ब्राह्मणो की एक जाति। ८ नागरी लिपि का कोई अक्षर।

पुं० [?] दीवार का टेढ़ापन।

नागरक—पुं० [स० नगर+वुञ्—अक] १ नगर का प्रबध या शासन करनेवाला अधिकारी। २. कारीगर। शिल्पी। ३ चोर। ४. कामशास्त्र मे एक प्रकार का आसन या रतिबध। ५ सोठ।

वि० =नागर।

नाग-रक्त—पुं० [मध्य०स०] १ सर्प का रक्त। २ हाथी का रक्त। ३ सिंदूर।

नागर-घन—पुं० [मयू० स०] नागर मोथा।

नागरता—स्त्री० [स० नागर+तल्—टाप्] नागर होने की अवस्था, गुण या भाव। (सिटिज़नशिप) २ आचार, व्यवहार आदि का वैसा सभ्यतापूर्ण और शिष्ट प्रकार जैसा साधारणत शिक्षित और सभ्य नगरवासियो मे प्रचलित हो। (सिविलिटी) ३ चतुरता। ४ दे० 'नागरिकता'।

नागरनट—पुं० =नटनागर।

नागर बेल—स्त्री० [स० नागवल्ली] पान की बेल।

नागर-मुस्ता—स्त्री० [उपमि०स०] =नागरमोथा।

नागरमोथा—पुं० [स० नागरोत्थ] एक प्रकार का तृण जिसकी पत्तियाँ मूँज या कार की पत्तियो की तरह होती और दवा के काम आती हैं।

नाग-राज—पुं० [ष०त०] १ बहुत बडा सर्प। २. शेषनाग। ३ ऐरावत। ४ नराच या पचामर छद का एक नाम।

नागराह्वन—पुं० [स० नागर-आह्वा ब०स०] सोठ।

नागरिक—वि० [स० नगर+ठञ्—इक] [भाव नागरिकता] १ (व्यक्ति) जिसने नगर मे जन्म लिया हो और नगर मे ही जिसका पालन-पोषण हुआ हो। २ चतुर। चालाक।

पुं० किसी राज्य मे जन्म लेनेवाला वह व्यक्ति जिसे उस राज्य मे रहने, नौकरी या व्यापार करने, सपत्ति रखने तथा स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचार आदि प्रकट करने के अधिकार जन्म से ही स्वत प्राप्त होते हैं। (सिटिजन)

विशेष—अन्य राज्यो मे जन्म लेनेवाले व्यक्ति भी कुछ विशिष्ट

अवस्थाओं में तथा कुछ विशिष्ट शर्तें पूरी करने पर किसी दूसरे राज्य के नागरिक बन सकते हैं।

नागरिकता—स्त्री०[सं० नागरिक+तल्—टाप्] १ नागरिक होने की अवस्था, पद या भाव। २ नागरिक होने पर प्राप्त होनेवाले अधिकार तथा सुविधाएँ।

नागरिक-शास्त्र—पुं० [ष०त० या मध्य०स०] वह शास्त्र जिसमें नागरिको के अधिकारो और कर्तव्यो का उल्लेख और उसके देश, जाति आदि के परस्पर सबधो पर विचार होता है। (सिविक्स)

नाग-रिपु—पु०[ष० त०] शेर। सिंह।

नाग-रिपुछाला—स्त्री० दे० 'बाघबर'।

नागरी—स्त्री० [सं० नागर+ङीप्] १ नगर की रहनेवाली स्त्री। शहर की औरत। २ चतुर या होशियार स्त्री। ३. पशु आदि की मादा। जैसे—नाग-नागरी=हथिनी। ४. थूहर। ५ पत्थर की मोटाई नापने की एक नाप। ६ पत्थर का बहुत बड़ा और मोटा चौकोर टुकड़ा। ७ देव-नागरी नाम की लिपि। दे० 'देवनागरी'।

नागरीट—पु०[सं० नागरी√इट् (गति)+क]१. कामुक और व्यसनी पुरुष। २ स्त्री का उपपति। जार। ३ विवाह करानेवाला व्यक्ति। घटक।

नागरुक—पु०[सं० नाग√रु (गति)+क बा०]नारगी (वृक्ष और फल)।

नाग-रेणु—पु०[ष०त०]सिंदूर।

नागरेयक—वि० [सं० नगर+ठकञ्—एय] १ जो नगर मे उत्पन्न हुआ हो। २ नागरिक सबधी। जैसे—नागरेयक अधिकार।

नागरोत्थ—पु०[सं० नागर-उद्√स्था (स्थिति)+क] नागरमोथा।

नागर्य—पु०[सं० नागर+ष्यञ्] १ नागरता। २. नगरवासियो की-सी चतुराई या चालाकी।

नागल—पु०[देश०]१. हल। २ वह रस्सी जिससे बैल जूए मे जोड़े या बाँधे जाते है।

नाग-लता—स्त्री०[उपमि०स०] पान की बेल।

नाग-लोक—पु०[ष०त०] नागो का देश, पाताल।

नाग-वंश—पु०[ष०त०]१ नागो का वश। २. शक जाति की एक शाखा।

नागवंशी (शिन्)—वि०[सं० नागवश+इनि] १ नागवश मे उत्पन्न। २ नागवश-सबधी।

नाग-वल्लरी—स्त्री०[उपमि०स०] पान।

नाग-वल्ली—स्त्री०[उपमि० स०] पान की लता।

ना-गवार—वि०[फा० ना+गवार=अच्छा लगनेवाला] [भाव० नागवारी] अच्छा न लगनेवाला। अप्रिय या अरुचिकर।

ना-गवारा—वि०=नागवार।

नाग-वारिक—पु० [सं० नाग-वार, ष०त० +ठक्—इक] १. राज-कुंजर। २ हाथियो का झुड। ३. महावत। ४ गरुड़। ५. मोर।

नाग-वीथी—स्त्री०[ष०त०] १ चन्द्रमा के मार्ग का वह अश जिसमे अश्विनी, भरणी और कृत्तिका नक्षत्र पड़ते हैं। २ कश्यप की एक पुत्री।

नाग-वृक्ष—पु० [मध्य०स०] नागकेसर नामक पेड़।

नाग-शत—पु०[ब०स०] एक प्राचीन पर्वत। (महाभारत)

नाग-शुंडी—स्त्री० [सं० नाग-शुंड ष०त०, +अच्—ङीप्] एक प्रकार की ककड़ी।

नाग-शुद्धि—स्त्री०[ष०त०] मकान की नीव रखते समय इस बात का रखा जानेवाला ध्यान कि कही पहला आघात सर्प के मस्तक या पीठ पर न पड़े।

विशेष—फलित ज्योतिष मे, विशिष्ट समयो मे सर्प का मुख निश्चित दिशाओं मे माना जाता है। भादो, कुआर और कार्तिक मे पूरब की ओर, अगहन, पूस और माघ मे दक्षिण की ओर आदि आदि सर्प का मुख होता है। कहते हैं कि सर्प के मस्तक पर पहला आघात लगने से स्वामिनी की मृत्यु होती है। पेट पर होनेवाला आघात शुभ माना जाता है।

नाग-संभव—पु०[ब०स०]१ सिंदूर। २ एक प्रकार का मोती।

नाग-संभूत—पु०[प० त०]=नाग-सभव।

नाग-साह्वय—पु०[ब०स०] हस्तिनापुर।

नाग-सुगंधा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] एक प्रकार की रास्ना।

नाग-स्तोकक—पु०[स०] वत्सनाभ नामक विष।

नाग-स्फोता—स्त्री०[उपमि०स०]१ नागदती। २ दतीवृक्ष।

नाग-हनु—पु०[ष०त०] नख नामक गध द्रव्य।

ना-गहाँ—क्रि० वि०[फा०] १ अचानक। अकस्मात्। एकाएक। २. कुसमय मे।

ना-गहानी—वि०[फा०] अकस्मात् या अचानक आकर उपस्थित होनेवाला। जैसे—नागहानी आफत, बला या मौत।

नागांग—पु०[नाग-अग, ब०स०] हस्तिनापुर।

नागांगना—स्त्री०[ना-गअगना ष०त०] हथिनी।

नागांचला—स्त्री०[नाग-अचल, ब०स०, टाप्] नाग-यष्टि।

नागांजना—स्त्री० [नाग-अजन, ब० स०, टाप्] १ नाग-यष्टि। २. हथिनी।

नागांतक—वि०[नाग-अतक, ष०त०] नागो का अत या नाश करनेवाला। पु० १. गरुड। २ मोर। ३ सिंह।

नागा—वि०[सं० नग्न] १ नगा। २ खाली। रहित। रीता। उदा०—नागे हाथे ते गए जिनके लाख करोड।—कबीर।

पुं०१ शैव साधुओ का एक प्रसिद्ध सप्रदाय। २. उक्त सप्रदाय के साधु जो प्राय बिलकुल नगे रहते हैं।

पु०[सं० नाग]१. असम देश की एक पर्वत-माला। २ एक प्रकार की अर्द्ध-सभ्य जगली जाति जो उक्त पर्वत-माला में रहती है।

पु०[तु० नाग]१. वह दिन जिसमे कोई व्यक्ति अपने काम पर उपस्थित न हुआ हो। जैसे—नौकर ने इस महीने मे चार नागे किये हैं। २ वह दिन जिसमे परम्परा आदि के कारण कोई काम नही किया जाता अथवा काम पर उपस्थित नही हुआ जाता। जैसे—रविवार को प्राय नौकर नागा करते हैं। ३ वह दिन जिसमे कोई नित्य किया जानेवाला काम छूट या रह जाय। जैसे—पढ़ाई का नागा, दूकान का नागा। ४ अनवधान के कारण होनेवाली चूक या व्यतिक्रम। उदा०—नागा करमन कौ करत दुरि छिपि छिपि।—सेनापति।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—पड़ना।

नागाख्य—पु०[नाग-आख्या, ब०स०] नागकेसर।

नागानंद—पुं०[स०] हर्ष का एक प्रसिद्ध नाटक।

नागानन—पु०[नाग-आनन, ब०स०] गणेश।

नागाभिभू—पु०[स०] महात्मा बुद्ध।

नागाराति—वि०, पु०[नाग-आराति, ष०त०]=नागातक।

नागारि—पु०[नाग-अरि, ष०त०]=नागातक।

नागार्जुन—पु०[स०] एक प्रसिद्ध बौद्ध चिंतक जो माध्यमिक शाखा के प्रवर्तक और बौद्ध धर्म के प्रचारक थे और जिन्होंने बौद्ध धर्म को दार्शनिक रूप दिया था। इनका समय ईसा से लगभग १०० वर्ष अथवा ईसवी पहली शती के आस-पास माना गया है।

नागार्जुनी—स्त्री०[स०] दुद्धी नाम की घास।

नागालाबु—पु०[नाग-अलाबु, उपमि०स०] गोल कद्दू।

नागाशन—वि०[नाग-अशन, ष०त०] नागो का नाशक।
पु०१ गरुड। २. मोर। ३. सिंह। शेर।

नागाश्रय—पु० [नाग-आश्रय, ष०त०] हस्तिकद।

नागाह्व—पु०[ब०स०] नागकेसर (वृक्ष और फूल)।

नागाह्वा—स्त्री० [स० नाग-आह्वे √ ह्वे (स्पर्धा) +अच्—टाप्] लक्ष्मणकद।

नागिन—स्त्री०[स०]१ नाग जाति की स्त्री। २ नाग (सर्प) की मादा। ३ बोलचाल मे दूसरो का अपकार, अहित आदि करनेवाली दुष्ट और निष्ठुर स्त्री। ४ मनुष्यो, पशुओ आदि की गरदन या पीठ पर होनेवाली एक प्रकार की भौरी या लबी रोमावली जो बहुत ही अशुभ मानी जाती है।

नागिनी—स्त्री०=नागिन।

नागी (गिन्)—पु०[नाग+इनि] शिव। महादेव।
स्त्री० स० ['नाग' की स्त्री०] हथिनी।

नागुला—पु०[स० नकुल]१ नेवला। २ नाकुली नाम की वनस्पति।

नागेंद्र—पु०[नाग-इद्र, ष०त०]१ बहुत बडा सॉप। २ वासुकि, शेष आदि नाग। ३ बहुत बडा हाथी। ४ ऐरावत।

नागेश—पु० [नाग-ईश, ष० त०] १ शेष नाग। २. एक सस्कृत व्याकरण का नाम।

नागेश्वर—पु० [नाग-ईश्वर, ष०त०]१ नागेश। शेषनाग। २ वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध।

नागेसर—पु० १ =नागकेसर। २ =नागेश्वर।

नागेसरी—वि०[हि० नागेसर] नागकेसर के रग का।
पु० उक्त प्रकार का रग।

नागोद—पु०[स०] लोहे का तवे के आकार का वह उपकरण, जिसे प्राचीन काल मे योद्धा छाती पर बाँधते थे।
†पु० =नागौद।

नागोदर—पु०[नाग-उदर, ब०स०] दे० 'नागोद'।

नागोदरिका—स्त्री०[नाग-उदर, ब०स०, कप्-टाप् ह्रस्व] एक प्रकार का दस्ताना जो युद्ध मे हाथ की रक्षा के लिए पहना जाता था। (कौ०)

नागोद्भेद—पु०[नाग-उद्भेद, ब०स०] मेरु पर्वत का एक स्थान जहाँ सरस्वती की गुप्त धारा ऊपर देखाई पडती है।

नागौद—पु०[हि० नव+नगर] मारवाड के अतर्गत एक नगर जहाँ की गौएँ और बैल बहुत प्रसिद्ध हैं।

नागौर—पु०=नागौद।
वि०=नागौरा।

नागौरा—वि०[हि० नागौद] [स्त्री० नागौरी]१ नागौद या नागौर नामक नगरी से सबध रखनेवाला। २ अच्छी या बढ़िया जाति या नसल का (चौपाया)।

नागौरी—वि०[हि० नागौद]१ नागौर का। २ अच्छी जाति या नसल का (चौपाया)। जैसे नागौरी जाति का बैल।
पु० नागौर का बैल।
स्त्री० १ नागौर की गाय। २ छोटी टिकिया की तरह की एक प्रकार की फूली हुई पूरी। (पकवान)

नाच—पु०[स० नृत्य, प्रा० नच्च या नाच्च] १ नाचने की क्रिया जो सगीत का एक प्रसिद्ध अग है और जिसमे अनेक प्रकार के हावभाव कलात्मक ढग से प्रदर्शित करने के लिए पैर थिरकाते हुए शरीर के भिन्न-भिन्न अग आकर्षक तथा मनोहर रूप मे और ताल-लय आदि से युक्त रखकर सचालित किये जाते है। (दे० 'नाचना')

विशेष—नाच का आरम्भ मुख्यत अपने मन का उल्लास और निश्चिततापूर्ण प्रसन्नता प्रकट करने के प्रसग मे हुआ था, और अब तक जगली तथा अर्द्धसभ्य जातियो के लोग तथा अनेक पशु-पक्षी इसी प्रकार नाचते है, पर बाद मे जब इसका कला-पक्ष विशेष विकसित हुआ, तब दूसरो के मनोरजन के लिए भी लोग नाच दिखाने लगे और कुछ पशुओ को अपने ढग पर नाच सिखाने लगे।

मुहा०—**नाच काछना** =नाचने के लिए तैयार होना।

२ लाक्षणिक रूप मे अनेक प्रकार के कौतुको से युक्त कुछ विलक्षण प्रकार की होनेवाली क्रियाएँ और गतियाँ।

मुहा०—**(किसी को) तरह-तरह के नाच नचाना**=मनमाने ढग से किसी को अनेक प्रकार के ऐसे असगत और विलक्षण कार्य मे प्रवृत्त करना, जिससे वह तग, दु खी या परेशान हो।

३ किसी प्रकार की कौतुकपूर्ण क्रिया या गति, जो देखने मे क्रीडा या खेल की तरह जान पडे। जैसे—वह बहुत तरह के नाच नाच चुका है।

नाच-कूद—स्त्री० [हि० नाच+कूद] १ रह-रहकर नाचने और कूदने की क्रिया या भाव। २ ऐसा कृत्य जो दूसरो की दृष्टि मे तमाशे का-सा मनोरजक और हास्यास्पद हो। ३ ऐसा बडा उद्योग या प्रयत्न जो अत मे प्राय निरर्थक सिद्ध हो।

नाच-घर—पु०[स० नाच+घर] वह स्थान जहाँ नाचना-गाना आदि होता हो। नृत्यशाला।

नाचना—अ०[स० नर्तन, हि० नाच]१ उमग मे आकर और विशुद्ध हार्दिक प्रसन्नता प्रकट करने के लिए पैरो को थिरकाते हुए और अनेक प्रकार से शरीर के भिन्न-भिन्न अग हिलाते हुए मनमाने ढग से उछलना-कूदना। जैसे—सरदार को सकुशल लौटते देखकर सब भील नाचने लगे।

मुहा०—**नाच उठना** =बहुत अधिक प्रसन्नता के आवेग मे उछल पड़ना। जैसे—पिताजी के हाथ मे खिलौने और मिठाइयाँ देखकर बच्चे नाच उठे।

२ उक्त प्रकार के अग-सचालन और शारीरिक गतियो का वह कलात्मक विकसित रूप, जो आज-कल शिक्षित और सभ्य समाजो मे प्रचलित है, और जिसके साथ ताल और लय का मेल तथा गाना-बजाना भी सम्मि-

लित हो गया है। ३. किसी पदार्थ का बहुत-कुछ उसी प्रकार की चक्राकार गति मे आना या होना, जैसी चक्राकार गति नाच के समय मनुष्यो की होती है। जैसे—आतिशबाजी की चरखी या लट्टू का नाचना। ४ किसी वस्तु या व्यक्ति का रह-रहकर जल्दी-जल्दी इधर-उधर आना-जाना, हिलना-डुलना या किसी प्रकार की गति मे होना। जैसे—(क) यह लड़का दिन भर इधर-उधर नाचता रहता है; कही स्थिर होकर नही बैठता। (ख) जब हवा चलती है, तब दीए की लौ नाचती रहती है। (ग) शिकारी का तीर नाचता हुआ सामने से निकल गया।

मुहा०—(किसी अशुभ बात का) **सिर पर नाचना**=इतना पास आ पहुँचना कि तुरन्त कोई बुरा परिणाम दिखाई पड सकता हो। जैसे—(क) ऐसा जान पडता है कि उसके सिर पर मौत नाच रही है। (ख) अब तुम्हारा पाप तुम्हारे सिर पर नाचने लगा है। **आँखों के सामने नाचना**=उपस्थित या प्रस्तुत न होने पर भी रह-रहकर सामने आता या होता हुआ दिखाई देना। जैसे—वह भीषण दृश्य अब तक मेरी आँखो के सामने नाच रहा है।

५ किसी प्रकार के तीव्र मनोवेग के फलस्वरूप उग्र या विकट रूप से इधर-उधर होना। जैसे—क्रोध से नाच उठना। ६ अनेक प्रकार के ऐसे सासारिक प्रपचो और प्रयत्नो मे लगे रहना जिनका कोई विशेष सुखद परिणाम न हो। उदा०—अब मैं नाच्यौं बहुत गोपाल।—सूर। ७ दूसरो के कहने पर चलना अथवा उसके इगितो का अनुसरण करते चलना। जैसे—तुम जिस तरह नचाते हो, मै उसी तरह नाचता हूँ।

नाच-महल—पु० नाचघर।

नाच-रग—पु० [हिं० नाच+रग] १ वह उत्सव या जलसा जिसमे नाच-गाना हो। २ आमोद-प्रमोद।

ना-चाकी—स्त्री० [फा० ना+तु० चाकी] १ वैमनस्य। २ अनबन। ३ रोग।

ना-चार—वि० [फा०] [भाव० नाचारी] १. जिसका कोई चारा या प्रतिकार न हो सकता हो। २ लाचार। विवश। ३ तुच्छ। निरर्थक। व्यर्थ। (क्व०)

क्रि० वि० लाचार या विवश होकर।

नाचिकेत—पु० [स० नचिकेतस्+अण्] १ अग्नि। २. नचिकेता (ऋषि)।

ना-चीज—वि० [फा० नाचीज] १. जिसकी गिनती किसी चीज मे न हो अर्थात् तुच्छ और हीन। २. निकम्मा या रद्दी।

विशेष—कभी-कभी वक्ता इसका प्रयोग अति नम्रता प्रदर्शित करने के लिए अपने सबध मे भी करता है।

नाचीन—पु० [स०] १ एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

नाज—पु० [हिं० अनाज] १ अनाज। अन्न। २. भोजन की सामग्री। खाद्य पदार्थ।

पु० [फा० नाज] १. आकृष्ट करने या लुभाने के लिए दिखाये जानेवाले कोमल हाव-भाव। चोचला। ठसक। नखरा।

मुहा०—(किसी के) **नाज उठाना**=किसी को प्रसन्न रखने के लिए बिना रुष्ट हुए उसके चोचले या नखरे सहना।

पद—नाज-अदा, नाज-नखरा।

२ किसी की वह देख-रेख जो बहुत दुलार, प्यार, लाड या सम्मान से की जाय। जैसे—यह लड़का बहुत नाज (या नाजो) से पाला हुआ है। ३ ऐसा अभिमान या गर्व जो साधारण होने के सिवा प्रशसनीय या वाछनीय भी हो। जैसे—हमे अपने मुल्क पर नाज है।

नाज-अदा—स्त्री० [फा०] अगभगी। (दे०)

नाज-नखरा—पु० [फा०] किसी को आकृष्ट करने के लिए कुछ कुछ मानपूर्वक की जानेवाली मोहक चेष्टाएँ।

नाजनी—वि० [फा०] सुदर।

स्त्री०=सुदर स्त्री।

नाज-बरदारी—स्त्री० [फा०] किसी के चोचले या नखरे सहन करना।

नाजबू—स्त्री० [फा०] मरुआ (पौधा और फूल)।

नाजरीन—पु० बहु० [अ० नाज़िर (=दर्शक) का बहु०, शुद्ध रूप नाजिरीन] उपस्थित दर्शक-गण।

नाजाँ—वि० [फा० नाजाँ] किसी प्रकार के गुण, विशेषता आदि का अभिमान या गर्व करनेवाला।

ना-जायज—वि० [फा० नाजायज] १ जो जायज अर्थात् उचित न हो।

२ जो नियम, विधि आदि के विरुद्ध हो। अवैध।

नाजिम—पु० [फा० नाजिम] १ मुसलमानी शासन मे किसी प्रदेश या प्रान्त का प्रबन्ध करनेवाला अधिकारी। २ आज-कल कचहरी या न्यायालय के किसी विभाग के लिपिकों आदि का प्रधान अधिकारी। २ मत्री। सेक्रेटरी।

नाजिर—वि० [अ० नाजिर] १ देखनेवाला। दर्शक। २ देख-रेख करनेवाला। निरीक्षक।

पु० १ वह जो किसी विभाग के लिपिकों आदि का प्रधान अधिकारी हो। २ मुसलमानी शासन मे अन्त पुर, या महल की रक्षा करनेवाला अधिकारी जो हिजडा होता था। ३ नाचने-गानेवाली वेश्याओं का दलाल।

नाजिरात—स्त्री० [हिं० नाजिर+आत (प्रत्य०)] १ नाजिर का काम, पद या भाव। २ नाजिर का कार्यालय। ३ वह दलाली जो नाजिर को नाचने-गानेवाली वेश्याओ आदि से मिलती है।

नाजिरीन—पु०=नाजरीन।

नाजिल—वि० [अ० नाजिल] १ जो ऊपर से (अर्थात् ईश्वर की ओर से) नीचे आया या उतरा हो। अवतरित। २ आया हुआ।

नाजी—पु० [जर० नात्सी] १ जर्मनी का एक प्रसिद्ध राजनीतिक दल, जो अपने आप को राष्ट्रीय साम्यवादी कहता था, और जिसका पराभव दूसरे महायुद्ध मे हुआ था। २ उक्त दल का सदस्य।

वि० बहुत ही क्रूर।

नाजीवाद—पु० [हिं०+सं०] वह सिद्धान्त कि जो प्रबल या सबल हो, उन्ही को राष्ट्र और फलत ससार का शासन-सूत्र बलपूर्वक अपने हाथो मे लेकर चलाना चाहिए। यह सिद्धात व्यक्ति-स्वातत्र्य और जनतत्र का परम विरोधी है।

नाजुक—वि० [फा० नाजुक] [भाव० नजाकत] १ कोमल। सुकुमार। २. पतला। बारीक। महीन। ३. गूढ और सूक्ष्म (भाव या विचार)।

४. इतना कोमल कि सहज मे टूट-फूट जाय या बिगड जाय। ५ (समय) जिसमे अनिष्ट, अपकार, हानि की विशेष सभावना हो।

नाजुक-दिमाग—वि० [फा०+अ०] १ जिसका दिमाग या मस्तिष्क इतना कोमल हो कि अपनी इच्छा, रुचि आदि के विपरीत होनेवाली छोटी-सी बात भी न सह सके। २. बात-बात पर चिडचिडाने या बिगड़नेवाला व्यक्ति।

नाजुक-बदन—वि० [फा०] सुकुमार शरीरवाला। कोमलाग।

पु० १ डोरिए की तरह की एक प्रकार की (पुरानी चाल की) मलमल। २ गुल्लाला नामक पौधे और फूल का एक प्रकार।

नाजुक-मिजाज—वि० [फा०+अ०] १ बहुत ही कोमल और मृदु प्रकृतिवाला। २. दे० 'नाजुक दिमाग'।

ना-जेब—वि० [फा० नाजेबा] १ जो देखने मे उपयुक्त या ठीक न जान पडे। अनुपयुक्त। बेमेल। २ भद्दा। भोडा। ३. अश्लील।

नाजो—स्त्री० [फा० नाज] १ चटक-मटक से रहने और नाज-नखरे दिखानेवाली स्त्री। २ कोमल और प्यारी या लाडली स्त्री।

नाट—पुं० [स०√नट् (नाचना)+घञ्] १ नृत्य। नाच। २ नकल। स्वाँग। ३ कर्नाटक के पास का एक प्राचीन देश। ४ उक्त देश का निवासी। ५ सगीत मे, एक प्रकार का राग, जो किसी के मत से मेघराग का और किसी के मत से दीपक राग का पुत्र है।

†पु० [?] काँटे, कील आदि की नोक जो चुभने पर शरीर के अदर टूट कर रह जाती है। उदा०—चुंबक साँवरे पीय बिनु क्यो निकसहि ते नाट।—नददास।

नाटक—पु० [स०√नट्+ण्वुल्—अक] १ नाट्य या अभिनय करने-वाला। नट। २ नटो या अभिनेताओ के द्वारा रगमच पर होनेवाला ऐसा अभिनय, जिसमे दूसरे पात्रो का रूप धरकर उनके आचरणो, कार्यों, चरित्रो, हाव-भावो, आदि का प्रदर्शन करते हैं। अभिनय। (ड्रामा) ३ वह साहित्यिक रचना, जिसमे किसी कथा या घटना का ऐसे ढग से निरूपण हुआ हो कि रग-मच पर सहज मे उसका अभिनय हो सके। ४ कोई ऐसा आचरण या व्यवहार जो शुद्ध हृदय से नही, बल्कि केवल दूसरो को दिखलाने या धोखे मे रखने के उद्देश्य से किया जाय। जैसे—यह पचायत क्या हुई है, उसका नाटक भर हुआ है।

नाटक-शाला—स्त्री० =नाट्यशाला।

नाटका-देवदारु—पु० [नाटक+देवदारु] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक प्रकार का छोटा पेड़, जिसकी लकडी से एक प्रकार का तेल निकलता है। इसकी फलियो का साग बनता है और फल गरीब लोग दुर्भिक्ष के समय खाते हैं।

नाटकावतार—पु० [सं० नाटक-अवतार, ष० त०] किसी नाटक मे अभिनय के अतर्गत होनेवाला दूसरे नाटक का अभिनय।

नाटकिया—पु० [स० नाटक+हिं० ईया (प्रत्य०)] १ नाटक मे अभिनय करनेवाला। २ बहुरूपिया।

नाटकी—स्त्री० [स०] इद्रसभा।

पु० [स० नाटक] नाटक करके जीविका उपार्जन करनेवाला व्यक्ति। नाटकिया।

वि० =नाटकीय।

नाटकीय—वि० [स० नाटक+छ—ईय] १. नाटक-सबधी। नाटक का। २ बहुत ही आकस्मिक रूप से, परन्तु कुशलता और चतुरता-पूर्वक किया जानेवाला।

नाटना—अ०=नटना (पीछे हटना या मुकरना)।

नाट वसत—पु० [स०] सगीत मे एक प्रकार का संकर राग।

नाटा—वि० [स० नत=नीचा] [स्त्री० नाटी] १ जिसकी ऊँचाई या डील साधारण से कम हो। छोटे कद या डील का। कम ऊँचा या कम लबा। जैसे—नाटा आदमी, नाटा पेड।

पु० कम ऊँचा या छोटे डील का बैल।

नाटा करज—पु० [हिं० नाटा+करज] एक प्रकार का करज।

नाटाम्र—पु० [स०] तरबूज।

नाटार—पु० [स० नटी+आरक्] अभिनेत्री का पुत्र।

नाटिका—स्त्री० [स० नाटक+टाप्, इत्व] कल्पित कथावाला एक प्रकार का दृश्य-काव्य जिसका नायक राजा, नायिका कनिष्ठा तथा अधिकतर पात्र राज-कुल के होते हैं। इसमे स्त्री-पात्रो और नृत्य-गीत आदि की बहुलता होती है।

नाटित—भू० कृ० [स०√नट्+णिच्+क्त] (नाटक) जिसका अभिनय हो चुका हो। अभिनीत।

पु० अभिनय।

नाट्य—पु० [स० नट+ष्यञ्] १ नट का काम या भाव। २ नाचने-गाने, बाजे आदि बजाने और अभिनय करने का काम। ३ अभिनय आदि के रूप मे किसी की नकल करने या स्वाँग भरने की क्रिया या भाव। ४ ऐसा नक्षत्र जिसमे नाट्य या नाटक का आरभ शुभ माना जाता हो।

नाट्यकार—पु० [स० नाट्य√कृ (करना)+अण्] १ नाटक करने-वाला। नट। २ नाटक मे अभिनय करनेवाला व्यक्ति। अभिनेता। ३ नाटककार।

नाट्यधर्मिका—स्त्री० [स० नाट्य-धर्म, ष० त०+ठन्—इक] वह पुस्तिका जिसमे अभिनय-सबधी निर्देश हो।

नाट्य-प्रिय—पु० [ब० स०] महादेव।

नाट्य-मदिर—पु० [ष० त०] नाट्यशाला।

नाट्य-रासक—पु० [स०] एक प्रकार का उपरूपक दृश्य-काव्य जिसमे एक ही अक होता है। इसका नायक उदात्त, नायिका वासक-सज्जा और उपनायक पीठमर्द होता है। इसमे अनेक प्रकार के गीत और नृत्य होते हैं।

नाट्य-शाला—स्त्री० [स० ष० त०] विशिष्ट आकार-प्रकार का बना हुआ वह भवन या मकान जिसमे एक ओर अभिनय या नाटक करने का मच और दूसरी ओर दर्शको के बैठने के लिए स्थान होता है। रग-शाला।

नाट्य-शास्त्र—पु० [ष० त०] वह शास्त्र जिसमे नाचने-गाने और अभिनय आदि करने की कलाओ का विवेचन होता है।

नाट्यागार—पु० [नाट्य-आगार, ष० त०] नाट्यशाला।

नाट्यालंकार—[पु० नाट्य-अलकार, ष० त०] अभिनय या नाटक का सौंदर्य बढानेवाली वे विशिष्ट बाते, जिन्हे साहित्यकारों ने उनके अलंकार के रूप में माना है।

विशेष—साहित्य-दर्पण मे ये ३३ नाट्यालकार कहे गए हैं—आशीर्वाद, अर्क्रद, कपट, अक्षमा, गर्व, उद्यम, आश्रय, उत्प्रासन, स्पृहा, क्षोभ, पश्चात्ताप, उपपत्ति, आशंसा, अध्यवसाय, विसर्प,

उल्लेख, उत्तेजन, परीवाद, नीति, अर्थ विशेषण, प्रोत्साहन, सहाय्य, अभिमान, अनुवृत्ति, उतकीर्तन, यांचा, परिहार, निवेदन, पवर्तन, आख्यान, युक्ति, प्रहर्ष और शिक्षा।

नाट्योक्ति—स्त्री० [नाट्य-उक्ति, स० त०] भारतीय नाट्यशास्त्र मे विशिष्ट पात्रो के लिए बतलाई हुई कुछ विशिष्ट रूप की उक्तियाँ या कथन-प्रकार, यथा—ब्राह्मणो को 'आर्य', राजा को 'देव', पति को 'आर्यपुत्र' आदि कहकर सबोधित करने का विधान।

नाट्योचित—वि० [नाट्य-उचित, ष० त०] १ जो नाट्य या नाटक के लिए उचित या उपयुक्त हो। २ जिसका अभिनय हो सके।

नाठ—पु० [स० नष्ट, प्र० नट्ठ] १. नाश। ध्वस। २. अभाव। कमी। ३ ऐसी सपत्ति, जिसका कोई अधिकारी या स्वामी न रह गया हो।

मुहा०—नाठ पर बैठना=ऐसी सपत्ति का अधिकार पाना, जिसका कोई स्वामी न रह गया हो।

नाठना—स० [स० नष्ट, प्रा० नष्ट] नष्ट करना, ध्वस्त करना।
अ० नष्ट होना।
अ० दे० 'नटना'।

नाठा—पु० [हि० नाठ] वह जिसके आगे-पीछे कोई वारिस न रह गया हो।
†पु० [स० नासिका] नाक।

नाड़—स्त्री० [स० नाल, ड़स्म ल.] १ ग्रीवा। गर्दन। २. दे० 'नार'। ३ दे० 'नाल'।

नाड़क—वि० [स०] नली या नल के आकार का और लबा।
पु० एक प्रकार की बड़ी और बहुत लबी मछली।

नाड़ा—पु० [स० नाड] १ सूत की वह मोटी डोरी, जिससे स्त्रियाँ घाघरा बाँधती हैं। इजारबद। नीबी।

मुहा०—नाड़ा खोलना=किसी के साथ सभोग करने के लिए उद्यत होना। (बाजारू)

२ वह पीला या लाल रँगा हुआ गडेदार सूत जिसका उपयोग देव-पूजन आदि मे होता है। मौली।

मुहा०—नाड़ा बाँधना=किसी को कोई कला या विद्या सिखलाने के लिए अपना शिष्य बनाना।

३. पेट की अदर की वह नली जिससे होकर मल आँतो की ओर आता है।

मुहा०—नाड़ा उखड़ना=उक्त नली का अपने स्थान से कुछ खिसक जाना, जिसके फलस्वरूप दस्त आने लगते हैं। **नाड़ा बैठाना**=झटके आदि से उक्त नली को फिर अपने स्थान पर लाना।

नाडिंधम—वि० [स० नाडी√ध्मा (शब्द)+खश्, मुम् धमादेश ह्रस्व] १ नली के द्वारा हवा फूँकनेवाला। २. नाड़ियो को हिला देनेवाला। ३ श्वास-प्रश्वास की क्रिया को तीव्र करनेवाला।
पु० सुनार।

नाडिंधय—वि० [स० नाडी√धे (पीना)+खश्, मुम्, ह्रस्व] नाड़ी के द्वारा पान करनेवाला।

नाडि—स्त्री० [सं०√नड्+णिच्+इन्] १. नाड़ी। २. नली।

नाडिक—पु० [स० नाडि+कन्] १. एक प्रकार का साग जिसे पटुआ भी कहते हैं। २ समय का घटिका या दड नामक मान। ३. दे० नाडी।

नाड़िका—स्त्री० [स० नाड़ी+कन् –टाप्, ह्रस्व] एक घड़ी का समय। घटिका।

नाड़िकेल—पु० [स०=नारिकेल+रस्य ड] नारियल।

नाड़िपत्र—पु० [स०] एक प्रकार का साग। पटुआ नामक साग।

नाड़िया—पु० [हि० नाडी] नाडी देखकर रोग का पता लगानेवाला अर्थात् वैद्य।

नाड़ी—स्त्री० [स० नाडि+ङीप्] १ नली। २ शरीर के अदर मांस और ततुओ से मिलकर बनी हुई बहुत-सी नालियो मे से कोई या हर एक जो हृदय से शुद्ध रक्त लेकर सब अगो मे पहुँचाती है। धमनी। ३ कलाई पर की वह नाडी, जिसकी गति आदि देखकर रोगी की शारीरिक अवस्था विशेषत ज्वर आदि का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। (वैद्य)

मुहा०—नाड़ी चलना=कलाई की नाडी मे स्पदन या गति होना, जो जीवित रहने का लक्षण है। **नाड़ी छूटना**=उक्त नाड़ी का स्पदन बद हो जाना जो मृत्यु हो जाने का सूचक होता है। **नाड़ी देखना**=कलाई की नाडी पर उगलियाँ रखकर उनकी गति देखना और उसके आधार पर रोग का निदान करना। (वैद्यो की परिभाषा) **नाड़ी धरना या पकड़ना**=नाड़ी देखना। **नाड़ी बोलना**=नाडी मे गति या स्पदन होता रहना। जैसे—अभी नाडी बोल रही है, अर्थात् अभी शरीर मे प्राण है।

४ बदूक की नली। ५ काल का एक मान जो ६ क्षणो का होता है। ६ गाँडर दूब। ७ वशपत्री। ८ कपट। छल। ९ फोड़े आदि का मुंह। १० फलित ज्योतिष मे, वैवाहिक गणना मे काम आनेवाले चक्रो मे बैठाये हुए नक्षत्रो का समूह। ११ तृण या वनस्पति का पोला डठल।

नाड़ीक—पु० [स० नाडी√कै (मालूम पडना)+क] एक प्रकार का साग। पटुआ साग।

नाड़ी-कलापक—पु० [स० ब० स०, कप्] सर्पाक्षी या भिडनी नाम की घास।

नाड़ीका—स्त्री० [स० नाड़ी+कन्—टाप्] श्वास-नलिका।

नाड़ी-कूट—पुं० [स० ब० स०] नाडी-नक्षत्र।

नाड़ी-केल—पु० [स०=नारिकेल, पृषो० सिद्धि] नारियल।

नाड़ीच—पु० [स० नाड़ी√चि (चयन)+ड] पटुआ (साग)।

नाड़ी-चक्र—पु० [स०] १ हठयोग के अनुसार नाभिदेश मे कल्पित एक अडाकार गाँठ, जिससे निकलकर सब नाड़ियाँ फैली हुई मानी गई है। २ फलित ज्योतिष मे वह चक्र जो वैवाहिक गणना के लिए बनाया जाता है और जिसके भिन्न-भिन्न कोष्ठो मे भिन्न-भिन्न नक्षत्रो के नाम लिखे होते है।

नाड़ी-चरण—पु० [स० ब० स०] पक्षी।

नाड़ी-जंघ—पु० [स० ब० स०] १. महाभारत के अनुसार एक बगला जो कश्यप का पुत्र, ब्रह्मा का अत्यत प्रिय-पात्र और दीर्घ-जीवी था। २. एक प्राचीन ऋषि। ३. कौआ।

नाड़ी-तरंग—पुं० [स० ब० स०] १ काकोल। २. हिडक।

नाड़ी-तिक्त—पु० [तृ० त०] नेपाली नीम। नेपाल निंब।

नाड़ी-देह—वि० [ब० स०] अत्यंत दुबला-पतला।
पु० शिव का एक द्वारपाल।

नाड़ी-नक्षत्र—पु० [मध्य० स०] फलित ज्योतिष मे, वैवाहिक गणना के काम के लिए बनाए हुए कल्पित चक्रो मे स्थित नक्षत्र।

नाड़ी मंडल—पुं० [सं०] विषुवत् रेखा। (दे०)

नाड़ी-यंत्र—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार का प्राचीन उपकरण, जिससे नाडियों की चीर-फाड की जाती थी और उनमे घुसी हुई चीजें निकाली जाती थी। (सुश्रुत)

नाड़ी-वलय—पु० [ष० त०] समय का ज्ञान करानेवाली एक प्रकार का प्राचीन उपकरण।

नाड़ी-व्रण—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का घाव जो नली के छेद के समान होता है तथा जिसमे से मवाद निकलता रहता है। नासूर। (साइनस)

नाड़ी-शाक—पु० [मध्य० स०] पटुआ (साग)।

नाड़ी-हिंगु—पु० [मध्य० स०] १ एक तरह का वृक्ष जिसके गोद मे हीग की सी गध होती है। २ उक्त वृक्ष का गोद जो औषधि के काम आता है।

नाडूवाना—पु० [देश०] मैसूर राज्य मे होनेवाले एक तरह के बैल, जो कद मे छोटे होने पर भी अधिक परिश्रमी होते है।

नाणक—पु० [स०√अण् (शब्द)+ण्वुल्—अक, न० त०] १ धातु। २ निष्क नाम का पुराना सिक्का। ३ सिक्का।

नात—स्त्री० [अ० नअत] १ मुहम्मद साहब की छदोबद्ध स्तुति। २ प्रशसा। स्तुति।
†पु० १ =नाता (सबध)। २ =नातेदार (सबधी)।

नातका—पु० [अ० नातिक] बोलने की शक्ति। वाक्-शक्ति।
मुहा०—(किसी का) नातका बंद करना=वाद-विवाद मे निरुत्तर और परास्त करना।

ना-तमाम—वि० [फा०] १ जो अभी पूरा न हुआ हो। अपूर्ण। २ जिसका कुछ अश अभी पूरा होने को बाकी हो। अधूरा।

नातरि—अव्य० =नातरु।

नातरु—अव्य० [हिं० न+तो+अरु] नही तो। अन्यथा।

नातवाँ—वि० [फा० नातुवाँ] [भाव० नातवानी] शारीरिक दृष्टि से अशक्त। दुर्बल।

नातवानी—स्त्री० [फा० नातुवानी] शारीरिक अशक्तता। दुर्बलता।

नाता—पु० [स० ज्ञाति, प्रा०, णाति, हिं०, नात] १ मनुष्यों मे होनेवाला वह पारिवारिक लगाव या सबध जो रक्त-सबध के कारण अथवा विवाह आदि सूत्रो के कारण स्थापित होता है। रिश्ता। जैसे—वे नाते मे हमारे भतीजे होते है।
पद—नाता-गोता, नातेदार। (दे०)
२ वैवाहिक सबध का निश्चय। जैसे—अभी उनके लडके का नाता कही पक्का नहीं हुआ है। ३ किसी प्रकार का लगाव या सबध। जैसे—प्यार या मुहब्बत का नाता, दोस्ती का नाता।
क्रि० प्र०—जोडना।—तोडना।—लगाना।

ना-ताकत—वि० [फा० ना०+अ० ताकत] [भाव० नाताकती] जिसमे ताकत न हो। अशक्त।

ना-ताकती—स्त्री० [फा० ना+अ० ताकत+ई (प्रत्य०)] नाताकत होने की अवस्था या भाव। कमजोरी। दुर्बलता।

नाता-गोता—पु० [हिं० नाता+गोता] वश और गोत्र के कारण होनेवाला पारस्परिक संबध।

नातिन†—स्त्री० हि० 'नाती' का स्त्री०।

नातिनी—स्त्री० =नातिन।

नाती—पु० [स० नप्तृ] [स्त्री० नातिनी, नातिन] १ लडकी का लडका। बेटी का बेटा। †२ लडके का लडका। उदा०—उत्तम कुल पुलस्त्य कर नाती।—तुलसी।

नाते—अव्य० [हिं० नाता] १ लगाव या सबध के विचार से। २ किसी प्रकार के सबध के विचार मे। व्याज से। जैसे—चलो इसी नाते उनका आना-जाना तो शुरू हुआ। ३ वास्ते। हेतु।
पद—किस नाते किस उद्देश्य से। किस लिए।

नातेदार—वि० [हिं० नाता+दार] [भाव० नातेदारी] (व्यक्ति) जिससे कोई नाता हो। रिश्तेदार। सबधी।

नात्र—पु० [स०√नम् (प्रणाम करना)+ष्ट्रन्, आत्व] शिव।

नाथ—पु० [स०√नाथ (ऐश्वय)+अच्] १ प्रभु। स्वामी। जैसे—दीनानाथ, विश्वनाथ। २ अधिपति। मालिक। ३ विवाहिता स्त्री का पति। ४ शिव। ५ आदिनाथ और मत्स्येन्द्रनाथ के अनुयायियो या गोरखपथियो का सप्रदाय। ६ उक्त सप्रदाय के अनुयायी साधुओ के नाम के अत मे लगनेवाली उपाधि। ७ उक्त सप्रदाय के अनुयायियो के अनुसार वह सबसे बडा योगीश्वर जो सब बातो से अलिप्त रहकर मोक्ष का अधिकारी हो चुका हो। ८ साँप पालनेवाले एक प्रकार के मदारी।
स्त्री० [स० नाथ या हिं० नाथना] १ नाथने की क्रिया या भाव। २ वह रस्सी जो ऊँटो, बैलो, आदि के नथनो मे उन्हे वश मे रखने के लिए डाली या बाँधी जाती है।
†स्त्री० =नथ (नाक मे पहनने की)।

नाथता—स्त्री० [स० नाथ+तल्—टाप्] 'नाथ' होने की अवस्था या भाव। नाथत्व।

नाथत्व—पु० [स० नाथ+त्व] =नाथता।

नाथ-द्वारा—पु० [स० नाथद्वार] उदयपुर के अतर्गत वल्लभ-सप्रदाय के वैष्णवो का एक प्रसिद्ध तीर्थ, जहाँ श्रीनाथजी की मूर्ति स्थापित है।

नाथना—स० [स० नस्तन] १ कुछ विशिष्ट पशुओ के नथने मे छेद करना। जैसे—ऊँट या बैल नाथना। २ इस प्रकार किए हुए छेद मे लबी रस्सी पहनाना जो लगाम का काम करती है तथा जिससे पशु को वश मे रखा जाता है।
मुहा०—नाक पकडकर नाथना=बलपूर्वक वश मे करना।
३. किसी चीज के सिरे मे छेद करके उसे डोरे, रस्सी आदि से बाँधना। ४ कई चीजे एक साथ रखने की लिए उन मे उक्त प्रकार की क्रिया करना। नत्थी करना। ५ लडी के रूप मे गूँथना, जोडना या पिरोना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।

नाथ-पंथ—पु० [स०] गुरु गोरखनाथ और उनके शिष्यों का चलाया हुआ

एक संप्रदाय जिसकी ये बारह शाखाएँ है—सत्यनाथी, धर्मनाथी, रामपथ, नटेश्वरी, कन्हण, कपिलानी, वैरागी, माननाथी, आईपथ, पागलपथ, धजपथ, और गंगानाथी। ये सभी शिव के भक्त हैं।

नाथपंथी—पु० [सं०] नाथ पथ का अनुयायी।

नाथवान् (वत्)—वि० [सं० नाथ+मतुप्] पराधीन।

नाथ-हरि—पु० [सं०नाथ√हृ (हरण)+इन्] पशु।

नाद—पु० [सं०√नद् (शब्द)+घञ्] १ आवाज। शब्द। २ जोर की वह आवाज या ध्वनि, जो कुछ समय तक बराबर होती रहे। ३ वेदात मे, विश्व मे उत्पन्न होनेवाला वह क्षोभ जो उपाधियुक्त चैतन्य से उपाधियुक्त शक्ति का सयोग होने के समय होता है। इसे 'परनाद' भी कहते है। ४ हठयोग मे, अतरात्मा मे होती रहनेवाली एक प्रकार की सूक्ष्म ध्वनि या शब्द जो एकाग्र चित्त होकर अभ्यास करने पर सुनाई पडती है और जिसे सुनते रहने से चित्त अत मे नाद-रूपी ब्रह्म मे लीन हो जाता है। ५ वर्णों का अव्यक्त मूल-रूप। ६ भाषा-विज्ञान और व्याकरण मे वर्णों के उच्चारण मे होनेवाला एक विशेष प्रकार का प्रयत्न जिसमे कठ मे वायु का स्वर निकालने के लिए न तो उसे बहुत फैलाना ही पडता है और न बहुत सिकोडना ही पडता है। ७ गाना-बजाना। सगीत।

पद—नाद-विद्या -सगीत शास्त्र।

८ कुछ-कुछ अनुस्वार के समान उच्चरित होनेवाला वर्ण या स्वर जो अर्द्ध-चद्र पर बिंदु देकर इस प्रकार लिखा जाता है ँ। ९ सिंगी नामक बाजा। उदा०—सेली नाद बभूत न बटवो अर्जूं मुनी मुख खोल।—मीराँ।

नादना—अ० [सं० नाद] १ ध्वनि या शब्द होना। २ बजना। ३ गरजना, चिल्लाना या शोर मचाना।

स० १ ध्वनि या शब्द उत्पन्न करना। २ बजाना।

अ० [सं० नदन] १ दीए की लौ का हवा लगने से रह-रहकर हिलना। २ प्रसन्नतापूर्वक इधर-उधर हिलना-डोलना। उदा०—उठति दिया लौ, नादि हरि लिय तिहारो नाम।—बिहारी। ३ लहराना।

नाद-मुद्रा—स्त्री० [सं० मध्य० स०] तत्र मे हाथ की वह मुद्रा जिसमे दाहिने हाथ का अँगूठा सीधा और खडा रखा जाता है और मुट्ठी बंधी रहती है।

नादली—स्त्री० [अ० नादे अली] सग यशब नामक पत्थर की वह चौकोर टिकिया जिसे रोग या बाधा दूर करने के लिए गले मे या बाँह पर पहनते है। हौल-दिली। (दे०)

नादान—वि० [फा०] [भाव० नादानी] १ अवस्था मे कम होने के कारण जिसे समझ न आई हो। ना-समझ। २ जो अकुशल या अनाडी हो। ३. मूर्ख।

ना-दानिस्ता—क्रि० वि० [फा० नादानिस्त] १ बिना जाने या समझे हुए। २ अनजान मे।

नादानी—स्त्री० [फा०] १ नादान होने की अवस्था या भाव। २ अकुशलता। अनाडीपन। ३ मूर्खता या मूर्खतापूर्ण कोई कार्य।

नादार—वि० [फा०] [भाव० नादारी] जिसके पास कुछ न हो। परम निर्धन। कंगाल।

पु० गजीफे के खेल मे, बिना रग या बिना मीर की बाजी।

नादारी—स्त्री० [फा०] 'नादार' होने की अवस्था या भाव। निर्धनता। गरीबी।

नादि—वि० [सं० नादिन] १ शब्द करनेवाला। २ गरजनेवाला।

नादित—भू० कृ० [सं० नाद+इतच्] १ जो नाद से युक्त किया गया हो अथवा हुआ हो। २ शब्द करता हुआ। बजता हुआ। ३ गूँजता हुआ।

नादिम—वि० [अ०] [भाव० नदामत] १ लज्जित। शर्मिदा। २ पश्चात्ताप करनेवाला।

नादिया—पु० [सं० नदी] १ नदी। २ वह विकृत, विलक्षण, या अधिक अग या अगोवाला साँड, जिसे जोगी अपने साथ लेकर भीख माँगने निकलते है।

नादिर—वि० [फा० नादिर] १ विचित्र। विलक्षण। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

नादिरशाह—पु० [अ०] पारस (फारस) देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसने मुहम्मद शाह के समय मे भारत पर आक्रमण किया था।

विशेष—यह अपनी क्रूरता के लिए प्रसिद्ध है। इसने एक छोटी-सी बात पर क्रुद्ध होकर दिल्ली के लाखों निवासियों की हत्या करवा डाली थी।

नादिरशाही—स्त्री० [हिं० नादिरशाह] १ नादिरशाह का वह बर्बरता पूर्ण व्यवहार जो उसने दिल्ली मे किया था और जिसके फल-स्वरूप लाखो आदमी मारे गए थे। २ ऐसा आचरण, व्यवहार या शासन, जो बहुत ही निर्दयतापूर्वक और मनमाने ढंग से किया जाय।

वि० वैसा ही उग्र, कठोर और मनमाना, जैसा दिल्ली मे नादिरशाह का आचरण या व्यवहार था। नादिरी।

नादिरी—वि० [अ०] १ नादिरशाह-सबधी। २ अत्याचार और क्रूरतापूर्ण।

स्त्री० १ एक प्रकार की कुरती या सदरी जो मुगल बादशाहों के समय मे पहनी जाती थी।

पु० गजीफे का वह पत्ता जो खेल के समय निकालकर अलग रख दिया जाता है।

मुहा०—(किसी पर) नादिरी चढ़ाना=बहुत बुरी तरह से मात करना या हराना।

नादिहंद—वि० [फा०] जो किसी की चीज या धन लेकर जल्दी लौटाता न हो। देन लौटाने मे बराबर टाल-मटोल करता रहनेवाला।

नादिहंदी—स्त्री० [फा०] नादिहद होने की अवस्था या भाव। देन लौटाने मे टाल मटोल करना।

नादी—वि० [सं० नादिन्] [स्त्री० नादिनी] १ नाद या शब्द-सबधी। २ नाद या शब्द करनेवाला। ३ बजानेवाला।

नादेअली—स्त्री० दे० 'नादली'।

नादेय—वि० [सं० नदी+ढक्—एय] [स्त्री० नादेयी] १. नदी-सबधी। २. नदी में होनेवाला।

पु० १ सेंधा नमक। २ सुरमा। ३ जलबेत। ४ काँस नामक घास।

नादेयी—स्त्री० [सं० नादेय+ङीप्] १ जलबेत। २ भुइँ जामुन।

३ नारगी। ४ वैजयन्ती। ५ जपा। अड़हुल। ६. अग्निमय। अँगेथू।

वि० सं० 'नादेय' का स्त्री०।

नादेहंद—वि०=नादिहद।

नाद्य—वि० [सं० नदी+ड्यण्] नदी-सबधी।

†कमल।

नाधन—स्त्री० [हि० नाधना] १ नाधने की क्रिया या भाव। २ चरखे के तकले मे लगा हुआ गत्ते, चमड़े आदि का वह गोल टुकड़ा जो तागे को इधर-उधर होने से रोकता है।

नाधना—स० [स० नद्ध] १ कोई कार्य अनुष्ठित या आरभ करना। ठानना। २ दे० 'नाथना' (सभी अर्थों मे)।

नाधा—पु० [हि० नाधना] वह रस्सी या चमड़े की पट्टी जिससे जुए मे कोल्हू, हल आदि बाँधे जाते हैं।

पु० [?] वह स्थान जहाँ जलाशय से पानी निकाल कर फेंका जाता है और जहाँ से नालियो मे होता हुआ वह सिंचाई के लिए खेतो मे जाता है।

नान—स्त्री० [फा०] १ मोटी बड़ी रोटी।

पद—नान-नुफ़का=रोटी और कपड़ा, अर्थात् खाने-पीने और पहनने आदि की सामग्री।

२ तदूर मे पकाई जानेवाली एक प्रकार की मोटी खमीरी रोटी। ३ खमीरी रोटी।

नानक—वि० [प० नानका=ननिहाल] [स्त्री० नानकी] जो ननिहाल मे उत्पन्न हुआ हो।

पु० कबीर के समकालीन एक प्रसिद्ध निर्गुण ज्ञानी भक्त जो सिक्ख सप्रदाय के आदि गुरु माने जाते हैं। (वि० स० १५२६-९७)

नानक-पथ—पु० [हि०] गुरु नानक का चलाया हुआ सिक्ख-सप्रदाय।

नानक-पंथी—वि० [हि० नानक+पथ] १ नानक पथ-सबधी। २ नानक का अनुयायी।

नानकशाह—पु०=नानक (महात्मा)।

नानकशाही—वि०=नानकपथी।

नानकार—स्त्री० [फा० नान=रोटी+कार (प्रत्य०)] वह जमीन जो सेवक को पुरस्कार रूप मे जीविका-निर्वाह के लिए दी जाती थी।

नानकीन—पु० [चीनी नानकिङ] चीन के नानकिङ नगर मे बननेवाला एक तरह का बढ़िया सूती कपड़ा, जो अब सभी देशो मे बनने लगा है और 'मारकीन' के नाम से प्रसिद्ध है।

नान-खताई—स्त्री० [फा० नान=रोटी+खता (एक प्रदेश का नाम)] १ खता नामक प्रदेश मे बननेवाली एक प्रकार की मीठी खस्ता रोटी। २ मैदे, सूजी आदि का बना हुआ एक तरह का मीठा खस्ता पकवान।

नानबाई—पु० [फा० नान+बा=बेचनेवाला] वह जो नान अर्थात् रोटियाँ बेचता हो।

नानस—स्त्री० [?] ननिया सास का सक्षिप्त रूप।

नाना—वि० [स० न+नाञ्] [भाव० नानत्व] १ अनेक प्रकार के। बहुत तरह के। विविध। (बहु०) २. अनेक। बहुत।

पु० [देश०] [स्त्री० नानी] माता का पिता या मातामह।

†स० [स० नमन] १ नवाना। झुकाना। २ प्रविष्ट करना। घुसाना। ३ अन्दर रखना। डालना। ४ सयो० क्रि० के रूप मे, पूरा करना। उदा०—अस मनमथ महेश कै नाई।—तुलसी।

पु० [अ० नअ्नअ्] पुदीना। जैसे—अर्कनाना=पुदीने का अरक।

नानाकंद—पु० [स०] पिंडालू।

नानात्मवादी (दिन्)—वि० [स० नाना-आत्मन्, कर्म० स०, नानात्मन् √वद् (बोलना)+णिनि] साख्य दर्शन का अनुयायी जो यह मानता हो कि व्यक्ति की आत्मा विश्वात्मा से अलग अस्तित्व रखती है।

नानार्थ—वि० [स० नाना-अर्थ, ब० स०] १ (शब्द) जिसके अनेक अर्थ हो। २ (वस्तु) जो अनेक कामो मे प्रयुक्त हो सके।

नानिहाल—पु० ननिहाल (नाना का घर)।

नानी—स्त्री० [हि० नाना का स्त्री०] माँ की माँ। माता की माता। मातामही।

मुहा०—नानी मरना या मर जाना=(क) इतना उदास, खिन्न या दु खी हो जाना कि मानो नानी मर गई हो। (ख) बहुत अधिक विपत्ति या झझट मे पड़ना। **नानी याद आना**=ऐसी विपत्ति या सकट मे पड़ना कि मानो बच्चो की तरह नानी की सहायता या सरक्षण की अपेक्षा कर रहे हो। (परिहास और व्यग्य)

पद—नानी की कहानी=पुरानी और व्यर्थ की लबी-चौड़ी बातें।

ना-नुकर—पु० [हि० न+करना] 'नही', 'नही' कहने की क्रिया या भाव। इन्कार।

नानुसारी—वि० [हि० न+अनुसारी] अनुसरण न करनेवाला।

नान्ह†—वि० [प्रा० लान्हा] १ नन्हा। छोटा। २ तुच्छ या हीन कुल अथवा वश का। ३ पतला। बारीक। महीन।

मुहा०—नान्ह कातना=ऐसा बारीक या सूक्ष्म काम करना जिसमे बहुत अधिक परिश्रम और समझदारी की आवश्यकता हो।

नान्हक—पु०=दे० 'नानक'।

नान्हरिया—वि०=नान्हा (नन्हा)।

नान्हा—वि० दे० 'नन्हा'। २ दे० 'नान्ह'।

नाप—स्त्री० [हि० नापना] १ नापने की क्रिया या भाव। किसी पदार्थ के विस्तार का निर्धारण। जैसे—यह थान नाप मे पूरा बीस गज उतरेगा।

पद—नाप-जोख, नाप-तौल। (दे०)

२ किसी चीज की ऊँचाई, लबाई, चौड़ाई, गहराई-मोटाई आदि के विस्तार का वह परिमाण जो उसे नापने पर जाना जाता या निकलता है। माप। जैसे—इस जमीन की नाप १०० गज लबी और चौड़ाई ५० गज है। ३ वह निर्दिष्ट परिमाण जिसे इकाई मानकर कोई चीज नापी जाती है। जैसे—कपड़े के गज की नाप ३६ इच की और लकड़ी के गज की नाप २४ इच की होती है। ४. वह उपकरण जो उक्त प्रकार की इकाई का मानक प्रतीक हो और जिससे चीजें नापी जाती हों। जैसे—कपड़ा या लकड़ी नापने का गज, तेल या दूध नापने का नपना या नपुआ।

नापत†—स्त्री० १ नाप। २ =नपत।

नाप-जोख—स्त्री० [हि० नापना+जोखना] १ किसी चीज की लबाई-चौड़ाई आदि नापने अथवा किसी चीज या बात का गुरुत्व, मान, शक्ति आदि आँकने अथवा समझने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) आज-कल

देहातो मे खेतो की नाप-जोख हो रही है। (ख) किसी से लड़ाई छेड़ने (या ठानने) से पहले उसके बल, साधनो आदि की नाप-जोख कर लेनी चाहिए। २. दे० 'नाप-तौल'।

विशेष—साधारण बोल-चाल मे 'नाप-जोख' पद का प्रयोग मूर्त पदार्थों के सिवा अमूर्त तत्त्वो या बातो के सबध मे भी देखने मे आता है, जैसा कि ऊपर के (ख) उदाहरण से स्पष्ट है। अत कहा जा सकता है कि अर्थ की दृष्टि से 'नाप-तौल' की तुलना मे 'नाप-जोख' पद अधिक व्यजक तथा व्यापक है।

नाप-तौल—स्त्री० [हि० नापना+तौलना] १ कोई चीज नापने या तौलने की क्रिया या भाव। २ दे० 'नाप-जोख' और उसके अतर्गत विशेष टिप्पणी।

नापना—स० [स० मापन] १. नियत या निर्धारित नाप, मान या माप-दड की सहायता से किसी चीज की लबाई-चौडाई, गहराई-ऊँचाई आदि अथवा किसी प्रकार के आयत या विस्तार का ठीक ज्ञान प्राप्त करना या पता लगाना। मापने की क्रिया करना। जैसे—गज, बित्ते, हाथ आदि से कपडा नापना। (गरदन नापना, रास्ता नापना आदि मुहावरो के लिए देखें गरदन, रास्ता आदि के मुहा०)।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

विशेष—चीजें नापने के लिए सुभीते के अनुसार अलग-अलग प्रकार की इकाइयाँ स्थिर कर ली जाती है। जैसे—अँगुल, बित्ता, हाथ, गज आदि, और तब उन्ही इकाइयो के आधार पर चीजो की नाप की जाती है। जैसे—यह धोती नापने पर पौने पाँच गज निकली, अथवा यह रस्सी नापने पर बीस हाथ ठहरी।

२ कुछ विशिष्ट तरल पदार्थों के सबध मे, किसी नियत इकाई की सहायता से उसके परिमाण, भार आदि का पता लगाना या स्थिर करना। जैसे—नपने से तेल या दूध नापना।

विशेष—वास्तव मे इस क्रिया का उद्देश्य किसी पदार्थ को तौलना ही होता है, परतु इसके लिए कोई ऐसा पात्र स्थिर कर लिया जाता है, जिसमे कोई चीज तौल के हिसाब से किसी विशिष्ट इकाई के बराबर आती हो, और तब वही पात्र (जिसे नपना या नपुआ कहते हैं) बार-बार भरकर उस चीज की तौल या मान स्थिर करते हैं। इससे तौलने की झझट से बचत होती है। आज-कल अधिकतर तरल पदार्थ इसी प्रकार नापे (वस्तुत तौले) जाते हैं। कुछ ही दिन पहले अनाज आदि भी इसी तरह नाप (वस्तुत. तौल) कर बेचे जाते थे।

३. अदाज करना।

नाप-मान—पु०=मान-दड।

ना-पसन्द—वि० [फा०] जो पसन्द न आवे। जो अच्छा न जान पड़े। जो पसन्द न हो। अप्रिय। अरुचिकर।

नापाक—वि० [फा०] [भाव० नापाकी] १ अपवित्र। अशुचि। २ गदा या मैला।

नापाकी—स्त्री० [फा०] १. अशुचिता। २. गंदगी।

ना-पायदार—वि० [फा० नापाइदार] [भाव० नापायदारी] १. जो अधिक समय तक ठहरने या चलनेवाला न हो। जो टिकाऊ न हो। क्षण भंगुर। २. जो दृढ़ या मजबूत न हो। ३ जिस पर भरोसा न किया जा सके। जैसे—नापायदार जिंदगी।

ना-पास—वि० [हि० ना+अ० पास] १ जो पास अर्थात् स्वीकृत न किया गया हो। २ जो परीक्षा मे पास या उत्तीर्ण न हुआ हो। अनुत्तीर्ण।

नापित—पु० [स० न√आप् (व्यक्ति)+तन्, इट् आगम] नाई। हज्जाम।

नापित्य—पु० [स० नापित+ष्यञ्] १. नापित होने की अवस्था या भाव । २ नापित का लडका। ३ नापित का काम या पेशा।

नापैद—वि० [फा० ना+पैदा] १ जो कभी पैदा ही न हुआ हो। २. जो अब पैदा न होता हो। ३. जो इतना अप्राप्य या दुर्लभ हो कि मानो कही पैदा ही न होता हो।

नाफ—स्त्री० [स० नाभि से फा० नाफ] १. नाभि। २ किसी चीज का केंद्र या मध्य-भाग।

ना-फरमाँ—पु० [फा०] गुले लाला का एक भेद जो कुछ नीले रग का होता है।

वि० दे० 'ना-फरमान'।

ना-फरमान—वि० [फा०] [भाव० नाफरमानी] जो बडो की आज्ञा न मानता हो।

ना-फरमानी—स्त्री० [फा०] बडो की आज्ञा न मानने की वृत्ति।

नाफा—पु० [स० नाभि से फा० नाफ] मृगनाभि।

नाब-दान—पु० [फा०] मकान की मोरी। पनाला।

मुहा०—नाबदान में मुँह मारना=बहुत ही घृणित और निंदनीय काम करना।

ना-बालिग—वि० [अ०+फा०] [भाव० नाबालिगी] १ जो बालिग अर्थात् वयस्क न हो। २ विधिक क्षेत्र मे, जो अभी उस नियत अवस्था या वय तक न पहुँचा हो, जिस अवस्था या वय तक पहुँचने पर कोई सब बातें समझने और अपना घर-बार सँभालने के योग्य समझा जाता हो। (साधारणत २१ वर्ष से कम की अवस्था का व्यक्ति ना-बालिग माना जाता है)।

ना-बालिगी—स्त्री० [फा०] नाबालिग होने की अवस्था या भाव।

नाबूद—वि० [फा०] १ जो अस्तित्व मे न रह गया हो। २ बरबाद। विध्वस्त। ३ गायब। लुप्त।

नाभ—पु० [स०] नाभि का वह सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदो के अन्त मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पद्मनाभ। २ शिव का एक नाम। ३. भगीरथ के एक पुत्र। ४ अस्त्रो का एक सहार।

नाभक—पु० [स० √नभ् (नष्टकरना)+ण्वुल्—अक] हर्रे।

नाभस—वि० [स० नभस्+अण्] [स्त्री० नाभसी] १ नभ-सबधी। २ स्वर्गीय।

नाभा—पु०=नाभादास।

नाभाग—पु० [सं०] १ वाल्मीकि के अनुसार इक्ष्वाकुवशीय एक राजा जो ययाति के पुत्र थे और जिनके पुत्र अज थे। परन्तु रामायण के अनुसार नाभाग के पुत्र अबरीष थे। २. कारुषवशीय राजा दिष्टि के एक पुत्र। ३ वैवस्वत मनु के एक पुत्र।

नाभादास—पु० सत्रहवी शताब्दी के छठे और सातवे दशक मे वर्तमान एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त जो जाति के डोम थे। उन्होने अपने गुरु अग्रदास की आज्ञा से 'भक्तमाल' नामक प्रसिद्ध ग्रथ लिखा था।

नाभारल—स्त्री०[म० नाभ्यावर्त] घोड़े की नाभि के नीचे की भौंरी जो अशुभ मानी जाती है।

नाभारिष्ट—पु०[स०] वैवस्वत मनु के एक पुत्र

नाभि—स्त्री०[स०√नह् (बधन)+इञ्, भ आदेश] १ जरायुज जतुओ के पेट के बीचो-बीच वह छोटा गड्ढा, जिससे गर्भावस्था मे जरायु नाल जुड़ा रहता है। ढोंटी। धुन्नी। तुन्नी। तुदी। २ कस्तूरी। ३ उक्त प्रकार का कोई छोटा गड्ढा। ४ पहिए के बीच का वह गड्ढा जिसमे धुरा पहनाया या बैठाया जाता है। नाह्।

विशेष—यद्यपि सस्कृत मे नाभि इस अतिम या तीसरे अर्थ मे पु० है, फिर भी हिंदी मे इस अर्थ मे यह स्त्री० रूप मे ही प्रयुक्त होता है।

पु०१ किसी चीज का केंद्र या मध्य-भाग। ऐसा भाग जिसके चारो ओर वस्तुएँ आकर इकट्ठी होती या हुई हो। २ प्रधान या मुख्य व्यक्ति। नेता। मुखिया। ३ परम स्वतन्त्र और बहुत बड़ा राजा। ४ वह पारस्परिक सबध जो एक ही कुल, गोत्र या परिवार मे उत्पन्न होने पर होता है। ५ क्षत्रिय। ६ महादेव। शिव। ७ भागवत के अनुसार आग्नीध्र राजा के पुत्र जिनकी पत्नी मेरु देवी के गर्भ से ऋषभ देव की उत्पत्ति हुई थी। ८ राजा प्रियव्रत के एक पौत्र का नाम।

नाभि-कटक—पु०[ष०त०] नाभि का उभरा हुआ या मासल अश। निकली हुई तुदी।

नाभिका—स्त्री०[म० नाभि√कै (मालूम पडना)+क—टाप्] १ नाभि के आकार का छोटा गड्ढा। २ कटभी (वृक्ष)।

नाभिगुलक—पु०[स०]नाभिकटक।

नाभि-गोलक—पु०[ष०त०] नाभिकटक। (दे०)

नाभि-छेदन—पु० [ष० त०] गर्भ से निकले हुए जरायुज जीवो का जरायु नाल काटने की क्रिया या भाव। नाल काटना।

नाभिज—वि०[म० नाभि√जन् (उत्पत्ति)+ड] नाभि से उत्पन्न। पु० ब्रह्मा।

नाभि-नाड़ी—स्त्री०[ष०त०] नाभि की नाडी जो गर्भ काल मे माता की रसवहा नाडी से जुडी रहती है।

नाभि-पाक—पु०[ष०त०] नाभि पकने का राग।

नाभिल—वि०[स० नाभि+लच्]१ नाभि से युक्त। जिसमे नाभि हो। २ (जीव) उभरी हुई नाभिवाला।

नाभि-वर्द्धन—पु०[ष०त०] नाभि बढाना अर्थात् काटना।(मगलभाषित)

नाभि-वर्ष—पु०[ष०त०] जबूद्वीप का वह भाग (आधुनिक भारत) जो राजा नाभि को उनके पिता राजा आग्नीध्र ने दिया था।

विशेष—नाभि के पौत्र भरत हुए जिसके नाम से हमारे देश का नाम भारत हुआ।

नाभि-सबध—पु०[ष०त०] व्यक्तियो का वह पारस्परिक सबध जो उनके किसी एक गोत्र मे जन्म लेने पर होता है।

नाभी—स्त्री०[स० नाभि+ङीष्]=नाभि।

नाभील—पु० [स० नाभी√ला (लेना)+क] १ स्त्रियो की कमर के नीचे का भाग। उरु-सधि। २. नाभि का गड्ढा। ३ कष्ट तकलीफ।

नाभ्य—वि०[स० नाभि+यत्] नाभि-सबधी।

पु० महादेव। शिव।

ना-मजूर—वि०[फा० ना+अ० मजूर] [भाव० ना-मजूरी] जो मजूर या स्वीकृत न हुआ हो।

ना-मजूरी—स्त्री०[फा०+अ०] ना-मजूर या अस्वीकृत होने की अवस्था या भाव।

नाम (न्)—पु०[स०√म्ना (अभ्यास)+मनिन्]१ वह शब्द या पद जिसका प्रयोग किसी तत्त्व, प्राणी या वस्तु अथवा उसके किसी वर्ग या समूह का परिज्ञान अथवा बोध कराने के लिए उसके वाचक के रूप मे किया जाता है और जिससे वह लोक मे प्रसिद्ध होता है। आख्या। सज्ञा। जैसे—(क) इस रग का नाम लाल है। (ख) इस फल का नाम आम है। (ग) इस लडके का नाम मोहनलाल है।

विशेष—हर चीज का कुछ न कुछ नाम इसी लिए रख लिया जाता है कि उसकी पहचान हो सके तथा औरो को सहज मे उसका ज्ञान या बोध कराया जा सके। किसी वस्तु या व्यक्ति का नाम लेते ही उसका स्वरूप अथवा उसके सबध की सब बाते सुननेवाले के ध्यान मे आ जाती है। प्रयोगो तथा मुहावरो के विचार मे नाम कई विशिष्ट तत्त्वो और स्थितियो का भी बोधक होता है। यथा—(क)जब कोई व्यक्ति कुछ अच्छा या बुरा काम करता है, तब लोग उसका नाम लेकर ही कहते हैं कि उसने अमुक काम किया है। इसलिए 'नाम' किसी की ख्याति अथवा प्रसिद्धि (अथवा कुख्याति या कुप्रसिद्धि) का भी प्रतीक या वाचक हो गया है। (ख) विशिष्ट प्रसगो मे लोग ईश्वर या उपास्य देव का नाम लेते है, इसलिए कभी-कभी यह ईश्वर या देवता का भी वाचक या सूचक होता है। (ग) नाम किसी तत्त्व, वस्तु या व्यक्ति का वाचक मात्र होता है, स्वय उस तत्त्व, वस्तु या व्यक्ति से उसका कोई आधारिक या तात्त्विक सबध नही होता, इसलिए कुछ अवस्थाओ मे यह केवल बाह्य आकृति या रूप अथवा अस्तित्व या सत्ता का ही बोधक होता है, अथवा यह सूचित करता है कि उसे कुछ कहा या किया गया है, वह नामधारी के उद्देश्य या हेतु-मात्र से है। इसी आधार पर लेन-देन आदि व्यवहारो मे उस अश या पक्ष का भी वाचक हो गया है जिसमे किसी को दी हुई या किसी के जिम्मे लगाई हुई कोई चीज या रकम लिखी जाती है। यहाँ जो पद और मुहावरे दिए जाते हैं, वे उक्त सब आशयो के मिले-जुले रूपो से सबद्ध हैं।

पद—**(किसी के)नाम**—किसी के उद्देश्य या हेतु से अथवा किसी के प्रति या उसे लक्ष्य करके। जैसे—(क) पितरो के नाम दान करना। (ख) विधिक क्षेत्र मे, किसी के अधिकार या स्वामित्व मे। जैसे—उसके कई मकान तो उसकी स्त्री के नाम है। **नाम का (या को)**=दे० 'नाम मात्र का' (या को)। **नाम-चार का (या को)**—दे० **'नाम मात्र का'** (या को)। **नाम पर**=(क) किसी का नाम लेते हुए उसके उद्देश्य या हेतु से। जैसे—बड़ो के नाम पर (या भगवान के नाम पर) कोई काम करना या किसी को कुछ देना। **नाम मात्र**=नाम लेने या कहने भर के लिए, अर्थात् यथेष्ट और वास्तविक रूप मे नही, बल्कि जरा-सा या बहुत थोडा। जैसे—उनके कथन मे नाम मात्र सत्यता है। **नाम मात्र का (या को)**=उचित, पूर्ण या वास्तविक रूप में नही, बल्कि यो ही कहने-सुनने या दिखलाने भर के लिए, और फलत जरा-सा या थोडा-सा। जैसे—दाल मे घी तो नाम मात्र का (या को) था। **नाम मात्र के लिए**-नाममात्र का (या को)। **(किसी का) नाम लेकर**=

नाम का उच्चारण करके। जैसे—जब तुम्हारा नाम लेकर कोई पुकारे तब यहाँ आना। **(ईश्वर, देवी-देवता का) नाम लेकर**—श्रद्धापूर्वक नाम का उच्चारण और स्मरण करते हुए और शुद्ध हृदय से। जैसे—भगवान का नाम लेकर चल पडो। **नाम से**—(क) नामधारी को जिम्मेदार ठहराते या बतलाते हुए और उसके नाम का उपयोग करते हुए। जैसे—(क) किसी के नाम से खाता खोलना या मकान खरीदना। (ख) नाम का उच्चारण होते ही। नाम भर लेने पर। जैसे—अब तो वह तुम्हारे नाम से काँपता है। (ग) दे० ऊपर 'नाम पर'।

मुहा०—**(किसी का) नाम उछलना**=बहुत अपकीर्ति, निदा या बदनामी होना। **(अपना या बड़ों का) नाम उछालना**=ऐसा घृणित या निदनीय काम करना कि अपनी या पूर्वजो की बदनामी हो। **नाम उठ जाना**=अस्तित्व या सत्ता न रह जाना। जैसे—आज-कल ससार से भलमनसत का नाम ही उठ गया है। **नाम कमाना**=कीर्ति या यश सपादित करते हुए ख्यात या प्रसिद्ध होना। **नाम करना**=कीर्ति या यश सपादित करते हुए प्रसिद्ध या मशहूर होना। ऐसी उत्कृष्ट स्थिति मे होना कि लोग बहुत दिनो तक याद रखे। जैसे—यह धर्मशाला बनवाकर वह भी अपना नाम कर गए। **(किसी बात में किसी दूसरे का) नाम करना**=दे० नीचे '(किसी दूसरे का) नाम लगाना।' **(किसी के) नाम का कुत्ता न पालना**=किसी को इतना घृणित, तुच्छ या नीच समझना कि उसका नाम तक लेना या सुनना भी बहुत अप्रिय या बुरा लगे। जैसे—हम तो उसके नाम का कुत्ता भी ना पाले। **(कोई काम अपने) नाम के लिए करना**=कोई काम केवल कीर्ति या प्रसिद्धि प्राप्त करने अथवा मर्यादा की रक्षा के उद्देश्य से करना। **(कोई काम) नाम के लिए या नाम मात्र के लिए करना**=मन लगाकर या वास्तव मे नही, बल्कि केवल कहने-सुनने या दिखलाने भर के लिए थोडा-सा या यो ही करना। **नाम को मरना**=नाम की मर्यादा या लज्जा रखने अथवा कीर्ति या यश बनाये रखने के लिए यथासाध्य प्रयत्न करते रहना। **(किसी का) नाम चमकना**=चारो ओर कीर्ति या यश फैलाना। प्रसिद्धि होना। **(किसी का) नाम चलना**=कीर्ति परपरा, वश आदि का अस्तित्व या क्रम चलता या बना रहना। **नाम जगना**=(क) ख्याति या प्रसिद्धि होना। (ख) फिर से किसी के नाम की ऐसी चर्चा या प्रचार होना कि लोगो मे उसकी स्मृति जाग्रत हो। **(किसी का) नाम जगाना**=ऐसा काम करना जिससे किसी की याद या स्मृति बनी रहे। **(किसी का) नाम जपना**=प्रेम, भक्ति श्रद्धा आदि से प्रेरित होकर बराबर किसी का नाम लेते रहना या उसे याद करते रहना। **(कोई चीज या रकम किसी के) नाम डालना**=बही-खाते मे, किसी के नाम के आगे लिखना। यह लिखना कि अमुक चीज या रकम अमुक व्यक्ति के जिम्मे है या उससे ली जाने को है। जैसे—यह रकम हमारे नाम डाल दो। **नाम डुबाना**=कलक या लांछन के पात्र बनकर प्रतिष्ठा, मर्यादा आदि नष्ट करना। **नाम तक मिटना या मिट जाना**=कही कुछ भी अवशेष या चिह्न बाकी न रह जाना। **(किसी के) नाम देना**=खाते मे किसी के नाम लिखकर कुछ देना। **(किसी को कोई) नाम देना**=किसी का नामकरण करना। नाम रखना। (दे० नीचे) **(किसी को किसी देवता का) नाम देना**=धार्मिक क्षेत्रो मे, गुरु बनकर किसी को किसी देवता के नाम या मत्र का उपदेश देना। **(किसी वस्तु या व्यक्ति का) नाम धरना**=(क) नाम रखना या स्थिर करना। नामकरण करना। (ख) कोई ऐब या दोष लगाकर बुरा ठहराना या बतलाना। निदा या बदनामी करना। **नाम धराना**=(क) नाम स्थिर कराना। (ख) लोगो मे निदा या बदनामी कराना। **नाम न लेना**=अरुचि, घृणा, दुःख, भय आदि के कारण चर्चा तक न करना। बिलकुल अलग या दूर रहना। मन मे विचार न करना। जैसे—अब वह कभी वहाँ जाने का नाम न लेगा। **नाम निकलना या निकल जाना**=किसी बात के लिए नाम प्रसिद्ध हो जाना। किसी विषय मे ख्याति हो जाना। (अच्छी और बुरी सभी प्रकार की बातो के लिए युक्त) **नाम निकलवाना**=(क) किसी प्रकार की ख्याति या प्रसिद्धि कराना। (ख) कोई चीज चोरी जाने पर टोने-टोटके, मत्र-यत्र आदि की सहायता से यह पता लगाना कि वह चीज किसने चुराई है। **नाम निकालना**=(क) किसी काम या बात के लिए नाम प्रसिद्ध करना (ख) टोने-टोटके, मत्र-यत्र आदि की सहायता से अपराधी या दोषी के नाम का पता लगाना। **नाम पड़ना**=नाम निश्चित होना या रखा जाना। नामकरण होना। **(कोई चीज या रकम किसी के) नाम पड़ना**=बही-खाते आदि मे यह लिखा जाना कि अमुक चीज या रकम अमुक व्यक्ति को दी गई है और वह चीज या उसका मूल्य उससे लिया जाने को है। **(किसी के) नाम पर बैठना**=(क) किसी के भरोसे या विश्वास पर सतोष करके चुपचाप तथा धैर्य-पूर्वक पड़े रहना या बैठे रहना। जैसे—हम तो ईश्वर के नाम पर बैठे ही हैं, जो चाहेगा सो करेगा। (ख) किसी की प्रतिष्ठा की रक्षा के विचार से शात स्थिर भाव से दिन बिताना। जैसे—उसे विधवा हुए दस वर्ष हो गए, पर आज तक वह अपने पति के नाम पर बैठी है। **(किसी के) नाम पर मरना या मिटना**=किसी की प्रतिष्ठा या मान-रक्षा के लिए अथवा किसी के प्रेम के आवेग मे बहुत-कुछ कष्ट या हानि सहना। जैसे—जाति या देश के नाम पर मरना या मिटना। **नाम पाना**=कोई अच्छा काम करके ख्यात या प्रसिद्ध होना। **नाम बद या बदनाम करना**=ऐब या कलक लगाना। बदनामी करना। **(किसी का) नाम बिकना**=ख्याति या प्रसिद्धि हो चुकने पर आदर, प्रचार आदि होना। **नाम भर बाकी रहना**=और सब बातो का अत हो जाने पर भी कीर्ति, यश आदि के रूप मे केवल नाम की याद या स्मृति बच रहना। जैसे—अब तो इद्रप्रस्थ का नाम भर बाकी है। **(किसी का) नाम रखना**=(क) नाम निश्चित करना। नामकरण करना। कीर्ति या यश सुरक्षित रखना। (ग) किसी चीज या बात मे कोई कलक या दोष निकालना या लगाना। बदनाम करना। **(अपकार, अपराध आदि के सबंध मे, किसी का) नाम लगना**=झूठ-मूठ यह कहा जाना कि अमुक व्यक्ति ने यह अपकार या अपराध किया है। किसी के सिर झूठा कलक मढ़ा जाना। जैसे—किताब फाडी तो उस लडके ने और नाम लगा तुम्हारा। **(किसी का) नाम लगाना**=किसी अपराध या दोष के सबध मे किसी के सिर झूठा कलक मढ़ना। अपराध का कलक लगाना। जैसे—तुम्ही ने सारा काम बिगाडा, और अब दूसरो का नाम लगाते हो। **(कोई चीज या रकम किसी के) नाम लिखना**=दे० ऊपर (कोई चीज या रकम किसी के) नाम डालना। **(किसी का) नाम लेना**=(क) नाम का उच्चारण करना। नाम जपना या रटना। जैसे—सबेरे-संध्या कुछ देर तक

ईश्वर का नाम लिया करो। (ख) किसी के उपकार आदि के बदले मे कृतज्ञतापूर्वक उसके नाम का उल्लेख या चर्चा करना। जैसे—अब तो उनका घर भर तुम्हारा ही नाम लेता है। (ग) यो ही साधारण रूप से उल्लेख या चर्चा करना। जैसे—अब अगर तुमने उनके घर जाने का नाम लिया, तो ठीक न होगा। **नाम से पुजना या बिकना**=केवल सुनाम प्राप्त हो चुकने अथवा कीर्ति या यश फैल जाने के कारण आदर या सम्मान का भाजन बनना। **नाम होना**=(क) खूब ख्याति या प्रसिद्धि होना। (ख) दे० ऊपर 'नाम लगना'। **तो मेरा नाम नहीं**=तो समझ लेना कि मैं कुछ भी नही हूँ। तो मुझे बिलकुल अकर्मण्य, तुच्छ या हीन समझ लेना। जैसे—यदि मै उसे हराकर न छोड़ूँ तो मेरा नाम नही।

नामक—वि० [स०] उत्तर पद मे, नाम का या नाम वाला। जैसे—यहाँ कोई राम नामक लडका रहता है?

नाम-करण—पु० [म० त०] १ किसी का नाम रखने या किसी को नाम देने की क्रिया या भाव। जैसे—इस नाटक का नाम-करण उसके नायक के नाम पर हुआ है। २ हिंदुओ मे एक सस्कार, जिसमे विधि-वत् पूजा-पाठ करके बच्चे का नाम रक्खा जाता है।

नाम-कर्म (न्)—पु० [ष० त०] नामकरण (सस्कार)।

नाम-कीर्तन—पु० [ष० त०] कीर्तन का वह प्रकार जिसमे भगवान के किसी एक नाम का कुछ समय तक बराबर उच्च स्वर मे जाप किया जाता है।

नाम-कोश—पु० [ष० त०] ऐसा कोश जिसमे नामवाचक सज्ञाओ का सकलन और उनके अर्थ या व्याख्याएँ हो। (नामेक्लेचर)

नाम-चढ़ाई—स्त्री० [हिं० नाम+चढाना] वह क्रिया जिसमे सरकारी कागज-पत्रो आदि पर सपत्ति आदि के स्वामित्व पर से एक व्यक्ति का नाम हटाकर दूसरे का नाम चढाया जाता है। दाखिल खारिज। (म्यूटेशन)

नाम-जद—वि० [फा० नामजद] [भाव० नामजदगी] १ नामाकित। २ मनोनीत। ३ प्रसिद्ध। ४ (बालिका) जिसकी मगनी हो चुकी हो।

नाम-जदगी—वि० [फा० नामजदगी] नामजद अर्थात् नामांकित या मनोनीत करने या होने की क्रिया या भाव।

नामतः (तस्)—अव्य० [स० नामन्+तस्] नाम से। नाम के द्वारा।

नामदार—वि० [फा०] नामवर। प्रसिद्ध।

नामदेव— पु० १ वामदेव के दोहित्र एक प्रसिद्ध भक्त जो भगवान कृष्ण (मूर्ति) के दूध न पीने पर आत्म-हत्या करने पर उतारू हो गए थे। कहते हैं कि अत मे भगवान ने स्वय प्रकट होकर दूध पीया और उन्हे आत्म-हत्या करने से रोका। २ महाराष्ट्र के एक प्रसिद्ध वैष्णव भक्त कवि। (सवत् १३२६—१४०७ वि०)

नाम-द्वादशी—स्त्री० [स०] देवी पुराण के अनुसार अगहन सुदी तीज को रखा जानेवाला व्रत, जिसमे गौरी, काली, उमा, भद्रा, काति, सरस्वती मगला, वैष्णवी, लक्ष्मी, शिवा और नारायणी इन बारह देवियो की पूजा की जाती है।

नामधन—पु० [स०] एक प्रकार का सकर राग जो मल्लार, शंकराभरण, बिलावल, सूहे और केदारे के योग से बना है।

नाम-धरता†—पु० [हिं० नाम+धरना=रखना] जो किसी का कोई नाम रखे या स्थिर करे। नामकरण करनेवाला।

नाम-धराई—स्त्री० [हिं० नाम+धराना] १ नाम विशेषतः चिढ़ धरने की क्रिया या भाव। २. बदनामी।

नाम-धाम—पु० [हिं० नाम+धाम] व्यक्ति का नाम और उसका निवास-स्थान। नाम और पता-ठिकाना।

नाम-धारक—वि० [स० ष० त०] जो केवल नाम के लिए हो, पर जिससे कोई काम न निकल सकता हो। नाम मात्र का।

नामधारी (रिन्)—वि० [स० नामन्√धृ (धारण)+णिनि] नाम धारक।

पु० [हिं० नाम+धारना] १ सिक्खो का एक सप्रदाय, जिसके सस्था-पक थे रामसिंह। २ उक्त सप्रदाय का अनुयायी सिक्ख।

नामधेय—वि० [स० नामन्+धेय] नामवाला।

पु० १ नाम। २ नामकरण।

नाम-निक्षेप—पु० [स० ष० त०] नाम स्मरण। (जैन)

नाम-निर्देशन—पु० [म० ष० त०] नामाकन।

नाम-निर्देश पत्र—पु० [म० नाम-निर्देश, ष० त०, नामनिर्देश-पत्र, ष० त०] =नामाकन पत्र।

नाम-निवेश—पु० [स० ष० त०] १ खाते, रजिस्टर आदि मे नाम चढ़ाया जाना। (एनरोलमेट) २ दे० 'नाम-चढ़ाई'।

नाम-निशान—पु० [फा०] किसी वस्तु का नाम और उसके सूचक शेष चिह्न या पता-ठिकाना। ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे किसी चीज या बात के अस्तित्व का पता चलता या प्रमाण मिलता हो। जैसे—अब तो उस गाँव का नाम-निशान भी नही रह गया है।

नाम-पट्ट—पु० [स० ष० त०] वह पट्ट या तख्ता जिस पर व्यक्ति, सस्था, दुकान आदि का नाम लिखा होता है। (साइनबोर्ड)

नाम-पत्र—पु० [स० ष० त०] कागज की वह चिप्पी जो जिस पर लगाई जाती है उसका विवरण बताती है। (लेबल)

नामपत्रित—भू० कृ० [स० नामपत्र+इतच्] जिस पर नामपत्र लगाया गया हो।

नाम-बोला—पु० [हिं० नाम+बोलना] ऐसा व्यक्ति, जो ईश्वर या देवता के नाम का उच्चारण या जप करता हो।

नाम-माला—स्त्री० [स० ष० त०] १ बहुत से नामो की अवली, माला या शृखला। २ दे० 'नाम-कोश'।

नाम-यज्ञ—पु० [स० मध्य० स०] ऐसा यज्ञ जो नाम कमाने के लिए किया जाय।

नाम-राशी—वि० [हिं० नाम+स० राशि] किसी की दृष्टि से उसी के नाम और राशिवाला। हम-नाम।

नाम-रूप—पु० [स० द्व० स०] १ किसी वस्तु या व्यक्ति का वह नाम और रूप जिससे उसका परिज्ञान होता हो। २ मन से युक्त दृश्यमान् शरीर। ३ बौद्ध दर्शन मे, गर्भ मे स्थित एक महीने के भ्रूण की सज्ञा।

नामर्द—वि० [फा०] [भाव० नामर्दी] १. जो मर्द अर्थात् पुरुष न हो। २ जिसमे पुरुष की शक्ति न हो। नपुसक। ३ जिसमे पुरुषो जैसा हौसला न हो। भीरु।

नामर्दी—स्त्री० [फा०] १. नामर्द होने की अवस्था या भाव। २ वह रोग या स्थिति जिसमे पुरुष स्त्री से संभोग करने मे असमर्थ होता है। नपुंसकता। ३. कायरता। भीरुता।

नाम-लिखाई—स्त्री० [हिं० नाम+लिखना] १ किसी सस्था आदि के सदस्य बनने पर उसकी पजी, तालिका आदि मे नाम लिखा जाना। २ वह धन या शुल्क जो उक्त अवसर पर देना पडता है।

नाम-लेवा—पु० [हिं० नाम+लेवा=लेनेवाला] १ ऐसा व्यक्ति जो किसी का विशेषत उसके मरने पर उसका स्मरण करे। २ औलाद। सतान।

नामवर—वि० [फा०] [भाव० नामवरी] जिसका नाम आदर से लिया जाता हो। अति प्रसिद्ध।

नामवरी—स्त्री० [फा०] प्रसिद्धि।

नाम-शेष—वि० [स० ब० स०] १ जो अस्तित्व मे न रह गया हो, बल्कि जिसका केवल नाम ही लोग जानते हों। २ ध्वस्त। ३ मृत।

ना-महरम—वि० [फा०+अ०] १ अनजान। अपरिचित। २ पराया। गैर। ३ (व्यक्ति) जिसके सामने स्त्रियाँ न हो सकती हो और जिनसे बात-चीत करना उनके लिए धर्म शास्त्रानुसार निषिद्ध हो। जिससे परदा करना स्त्रियो के लिए उचित तथा विहित हो। (मुसल०)

नाम-हँसाई—स्त्री० [हिं० नाम+हँसना] लोगो मे किसी के नाम की हँसी उडना या उपहास होना। उपहास करानेवाली बदनामी।

नामांक—पु० [स० नामन्-अक, ब० स०] वह सख्या जो किसी सूची मे लिखित नामो पर क्रमश लगाई गई हो।
वि० =नामाकित।

नामांकन—पु० [स० नामन्-अकन, प० त०] १ नाम अकित करने की क्रिया या भाव। २ किसी का किसी पद, स्थान, निर्वाचन आदि के लिए आधिकारिक रूप से नाम प्रस्तावित किया जाना। ३ वह स्थिति जिसमे किसी को किसी पद, सेवा आदि के लिए आधिकारिक रूप से नियुक्त किया जाता है। (नामिनेशन, उक्त सभी अर्थों मे)

नामांकन-पत्र—पु० [स० ष० त०] वह पत्र जिसमे सबद्ध अधिकारी को यह सूचित किया जाता है कि अमुक पद के लिए अमुक व्यक्ति उम्मेदवार के रूप मे खडा हो गया है, और उस अधिकारी से तत्सबधी स्वीकृति की प्रार्थना की जाती है। (नामिनेशन पेपर)

नामांकित—वि० [स० नामन्-अकित ब०, स०] १ जिस पर नाम अंकित किया अर्थात् लिया या खुदा हो। २ जिसका किसी काम या पद के लिए नामाकन हुआ हो। नामजद। (नामिनेटेड) ३ प्रसिद्ध।

नामांकित—पु० [स० नामाकित] वह जो किसी चुनाव, पद, कार्य मे नामांकित किया गया हो। (नामिनी)

नामांतर—पुं० [स० नामन्-अतर, मयू०स०] १ किसी एक ही व्यक्ति का दूसरा नाम। २ उपनाम। ३. पर्याय।

नामांतरण—पु० [स० नामान्तर+णिच्+ल्युट्—अन] १ नाम बदलने की क्रिया या भाव। २ किसी संपत्ति पर स्वामी के रूप मे लिखा हुआ पुराना नाम हटाकर उसकी जगह किसी दूसरे नये व्यक्ति का स्वामी के रूप मे नाम चढाया जाना। दाखिल खारिज। (म्यूटेशन)

नामांतरित—भू० कृ० [स० नामातर+णिच्+क्त] १ जिसका नामांतरण हुआ हो। २. जिसका नाम किसी पुराने स्वामी के नाम की जगह नये सिरे से चढा या लिखा गया हो।

नामा—वि० [स० नाम] नामधारी।
पु० प्रसिद्ध भक्त नामदेव का संक्षिप्त रूप।
†पु० [हिं० नाम (पडी हुई रकम)] १ किसी से प्राप्य धन। पावना। २ रुपया-पैसा। नावाँ।
पु० [फा० नाम] पत्र। चिट्ठी।

ना-माकूल—वि० [फा० ना+अ० माकूल] [भाव० नामाकलियत] १ जो माकूल अर्थात् उचित, उपयुक्त या ठीक न हो। २ अपूर्ण। अधूरा। ३ बेढगा। बेढब। ४ अयोग्य। ५ नालायक।

नामानुशासन—पु० [स० नामन्-अनुशासन, ष० त०] शब्दकोश।

नामाभिधान—पु० [स० नामन्-अभिधान, ष० त०] शब्दकोश।

ना-मालूम—वि० [फा० ना+अ० मालूम] जो मालूम अर्थात् ज्ञात न हो। अज्ञात।

नामावली—स्त्री० [स० नामन्—आवली, ष० त०] १ ऐसी सूची जिसमे चीजों या व्यक्तियो के नाम दिए हुए हो। २ भक्तों के ओढने-पहनने का वह कपडा जिसपर कृष्ण, राम, शिव आदि देवताओं के नाम छपे होते है।

नामि—पु० [स०] विष्णु।

नामिक—वि० [स०] १ नाम या सज्ञा-सबधी। २ जो केवल नाम के लिए या सकेत रूप मे हो और जिसका वास्तविक तथ्य से कोई विशेष सबध न हो। नाम भर का। (नॉमिनल)

नामित—वि० [स०√नम् (झुकना)+णिच्+क्त] झुकाया हुआ।

नामी—वि० [फा०] १ नामवाला। २ जिसका नाम या प्रसिद्धि हो। नामवर। प्रसिद्ध। मशहूर।

नामी-गिरामी—वि० [फा०] प्रसिद्ध और पूजनीय।

ना-मुआफिक—१ [फा० नामुआफिक] जो मुआफिक या अनुकूल न हो। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। ३ जो किसी से सहमत न हो। अ-सहमत।

ना-मुनासिब—वि० [फा०+अ०] जो मुनासिब अर्थात् उचित न हो। अनुचित।

ना-मुमकिन—वि० [फा० ना+अ० मुम्किन] जो मुमकिन अर्थात् सभव न हो। असभव।

ना-मुराद—वि० [फा०] [भाव० ना-मुरादी] १ जिसकी मुराद अर्थात् कामना पूरी न हुई हो। विफल मनोरथ। २ अभागा। बद-नसीब।

ना-मुवाफिक—वि०=ना-मुआफिक।

नामूद—स्त्री० [फा० नमूद] १ आविर्भाव। २ धूम-धाम। तडक-भडक। ३ ख्याति। प्रसिद्धि।
†वि० प्रसिद्ध। मशहूर। (अशुद्ध प्रयोग)

नामूसी—स्त्री० [अ० नामूस=इज्जत] १ बेइज्जती। अप्रतिष्ठा। २ बदनामी। निंदा।

ना-मेहरबान—वि० [फा० नामेह्रबाँ] [भाव० नामेह्रबानी] जो मेहरबान अर्थात् अनुकूल या प्रसन्न न हो।

नामोल्लेख—पु० [सं० नामन्-उल्लेख, ष० त०] किसी प्रसग या विषय मे किसी के नाम का होनेवाला उल्लेख।

ना-मौजूं—वि० [फा०] १. जो मौजूं या उपयुक्त न हो। अनुपयुक्त।

२. अनुचित। ना मुनासिब। ३. (शेर का पद अर्थात् चरण) जो वज़न से खारिज हो अर्थात् जिसमे मात्राएँ या वर्ण कम-बेशी हों।

नाम्ना—वि० [स० नामन् शब्द के तृतीया विभक्ति का एक वचन रूप ?] [स्त्री० नाम्नी] नामवाला। नायक।

नाम्य—वि० [स०√नम्+णिच्+यत्] १ झुकाये जाने के योग्य। २ जो झुकाया जा सके। लचीला।

नायँ*—पु० नाम।

अव्य० नहीं।

नाय—पु० [स०√नी(ले जाना)+घञ्] १ नय। नीति। २ उपाय। युक्ति। ४ अगुआ। नेता। ४ नेतृत्व।

†स्त्री० नाव।

नायक—पु० [स०√णी+ण्वुल्—अक] १ लोगों को अपनी आज्ञा के अनुसार चलानेवाला व्यक्ति। जैसे—सामाजिक या राजनैतिक नेता। २ अधिपति। स्वामी। जैसे—गण-नायक। ३ प्रधान अधिकारी। जैसे—सेनानायक। ४ साहित्य-शास्त्र के अनुसार किसी साहित्यिक रचना का प्रधान पुरुष पात्र। धीरललित, धीरशात, धीरोदात्त और धीरोद्धत इसके ये चार प्रमुख भेद हैं। ५ शृगार रस की कविताओ या पद्यो मे आलबन विभाव। इसके पति, अनुकूल पति, दक्षिणनायक शठनायक, धृष्टनायक, उपपति, वैशिक, मानी, वचन-चतुर, क्रियाचतुर, प्रेषित आदि अनेक भेद है। ६ बजारा। ७ हार के मध्य की मणि या रत्न। ८ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। ९ एक राग जो दीपक राग का पुत्र माना जाता है। १० सगीत-कला मे निपुण व्यक्ति। ११ एक जाति जिसके पुरुष नाचने-गाने आदि की शिक्षा देते हैं और स्त्रियाँ वेश्यावृत्ति भी करती है।

नायका—स्त्री० [स० नायिका] १ वह वयस्क या बूढ़ी स्त्री, जो युवती स्त्रियो को अपने पास रखकर उनसे गाने-बजाने का पेशा और व्यभिचार कराती हो। २ कुटनी। ३ दे० 'नायिका'।

नायकी—वि० [स० नायक] नायक सबधी। नायक या नायकों का। जैसे—नायकी कान्हडा।

स्त्री० नायक होने की अवस्था, पद या भाव। नायकत्व।

नायकी कान्हड़ा—पु० [हि० नायकी+कान्हडा] एक प्रकार का कान्हडा (राग) जिसम सब कोमल स्वर लगते है।

नायकी मल्लार—पु० [स० नायक+मल्लार] सपूर्ण जाति का एक प्रकार का मल्लार (राग) जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

नायत—पु० [?] वैद्य। (डि०)

नायन—स्त्री० [हि० नाई का स्त्री० रूप] १ नाई जाति की स्त्री। २ नाई की पत्नी।

नायब—वि० [अ० नाइब] १ (अधिकारी) जो किसी प्रधान अधिकारी का सहायक हो। जैसे—नायब तहसीलदार। २ स्थानापन्न। ३ किसी का प्रतिनिधि बनकर काम करनेवाला।

नायबी—स्त्री० [हि० नायब+ई (प्रत्य०)] नायब होने की अवस्था, पद या भाव।

नायाब—वि० [फा०] [भाव० नायाबी] १ जो न मिलता हो। अप्राप्य। २ जो सहज मे न मिलता हो। दुष्प्राप्य। ३ बहुत बढ़िया या श्रेष्ठ।

नायिका—स्त्री० [स० नायक+टाप्, इत्व] १ स्वामिनी। २ पत्नी। ३ साहित्य शास्त्र मे, किसी नाटक की प्रधान पात्री। ४ शृगार रस मे पुरुष से सबध रखनेवाली पात्री जिसके धर्म के विचार से स्वकीया, परकीया और सामान्या ये तीन प्रमुख भेद। स्वभाव के अनुसार उत्तमा, मध्यमा और अधमा तथा अन्य अनेक दृष्टियो से दूसरे बहुत-से भेद माने गए है। ४ कहानी उपन्यास आदि की मुख्य पात्री।

नायिकाधिप—पु० [स० नायिका-अधिप, ष० त०] राजा।

नारग—पु० [स०√नृ (ले जाना)+अगच्, वृद्धि] १ नारगी। २. गाजर। ३ पिप्पलिरस। ४ यमज प्राणी।

नारगी—स्त्री० [स० नागरग, अ० नारज] १ नीबू की जाति का एक प्रकार का मझोला पेड, जिसमे मीठे सुगधित और रसीले फल लगते हैं। २ उक्त पेड का फल।

वि० नारगी (फल) के छिलके की तरह के पीले रग का।

पु० उक्त प्रकार का रग।

नार—वि० [स० नर+अण्] १ नर या मनुष्य-सबधी। नर का। २ आध्यात्मिक।

पु० १ गौ का बछडा। २ जल। पानी। ३ मनुष्यो का झुड, दल या समूह। ४ सोठ।

स्त्री० [स० नाल] १ गला। २ गरदन। ग्रीवा।

मुहा०—नार नवाना या नीची करना लज्जा सकोच आदि से अथवा आदर-सम्मान प्रकट करने के लिए किसी के आगे गरदन या सिर झुकाना।

३ वह नाडी या नली जिसमे नव-जात शिशु माता के गर्भ से बँधा रहता है। नाल। (दे०)

पद—नार-बेवार। (दे०)

४ छोटा रस्सा। ५ वह डोरी जो घाघरे, पाजामे आदि के नेफे मे पिरोई रहती है और जिसकी सहायता से वे कमर मे बाँधे जाते है। नाडा। नाला। ६ पौधो के वे डठल जो बालें काट लेने के बाद बच रहते है। ७ मैदानो मे चरनेवाले चौपायो का झुड।

†स्त्री० नारि (स्त्री)। उदा०—नीके है छीके छुए ऐसे ही रह नार। —बिहारी।

नारक—पु० [स० नरक+अण्] १ नरक। २ नरक मे रहनेवाला प्राणी।

नारकिक—वि०=नारकी।

नारकी—वि० [स० नारकिन्] १ नरक मे पडा हुआ। जो नरक भोग रहा हो। २ जिसका नरक मे जाना निश्चित हो, अर्थात् परम दुराचारी या पापी।

नारकीट—पु० [स०] १ एक प्रकार का कीडा। अश्मकीट। २ वह जो किसी को आशा मे रखकर निराश करे, फलत अधम या नीच।

नारकीय—वि० [स० नरक+छण्—ईय] १ नरक-सबधी। २ नरक मे रहने या होनेवाला। ३ बहुत ही अधम या पापी (व्यक्ति)।

नारद—पु० [स० नार-आत्मज्ञान√दा (देना)+क] १ एक प्रसिद्ध देवर्षि और भगवान के परम भक्त जो ब्रह्मा के पुत्र कहे गए हैं, और जिनका नाम अनेक आख्यानो, कथाओ आदि मे आता है। २ उक्त के आधार पर ऐसा व्यक्ति जो प्राय लोगो मे लड़ाई-झगडे कराता

रहता हो। ३. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। ४ एक प्रजापति। ५ चौबीस बुद्धो मे से एक बुद्ध। ६ कश्यप ऋषि की सतान, एक गन्धर्व। ७ शाक द्वीप का एक पर्वत।

नारद-पुराण—पु० [स० मध्य स०] १ अठारह महापुराणो मे से एक जिसमे सनकादिक ने नारद को सबोधन करके अनेक कथाएँ कही हैं और उपदेश दिए है। इसमे तीर्थों और व्रतो के माहात्म्य बहुत अधिक हैं। २ एक-उपपुराण, जिसे बृहन्नारदीय भी कहते हैं।

नारदी (दिन्)—पु० [स० नारद+इनि] विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम।

नारदीय—वि० [स० नारद+छ—ईय] नारद का। नारद-सबधी। जैसे—नारदीय पुराण।

नारन—पु० [स० नार+हि० न (प्रत्य०)] नर-समूह। मनुष्यो का समुदाय। उदा०—मनौ तज्यो तारन बिरद, बारक नारन तारि। —बिहारी।

नारना—स० [स० ज्ञान, प्रा० णाण+हि० न] थाह लगाना। पता लगाना। भाँपना। ताडना।

नारफ़िक—पु० [अ०नारफिक] इग्लैण्ड के नारफॉक प्रदेश मे होनेवाले घोड़ो की एक जाति।

नार-बेवार—पु० [हि० नार+स० विवार फैलाव] तुरत के जनमे हुए बच्चे की नाल, खेडी आदि।

नारमन—पु० [अ०] १ फ्रास के नारमडी प्रदेश का निवासी, व्यक्ति या इन व्यक्तियो की जाति। २ जहाज पर का वह खूँटा जिसमे रस्सा बाँधा जाता है।

स्त्री० फ्रांस के नारमडी प्रदेश की बोली या भाषा।

ना-रसा—वि० [फा०] [भाव० ना-रसाई] १ जो पहुँच न सके। २ जिसकी पहुँच न हो।

ना-रसाई—स्त्री० [फा०] पहुँच न होने की अवस्था या भाव।

नारसिंह—पु० [स० नरसिंह+अण्] १ नरसिंह रूपधारी विष्णु। २ एक उप-पुराण जिसमे नृ-सिंह अवतार की कथा है। ३ एक तात्रिक ग्रथ।

नारसिंही—वि० [स० नारसिंह] १ नारसिंह-सबधी। नारसिंहका। २ बहुत उग्र, प्रबल या विकट। जैसे—नरसिंही टोना-टोटका।

नारांतक—पु० [स०] रावण का एक पुत्र।

नारा—पु० [स० नाल, हि० नार] १ घाघरे, पाजामे आदि के नेफे मे की वह मोटी डोरी जो पहनावे पहनते समय कमर मे बाँधी जाती है। २ रँगा हुआ लाल रग का वह सूत जो प्राय पूजन के अवसर पर देवताओ को चढाया जाता है। ३ हल के जूए मे बँधी हुई रस्सी।

पु० [स्त्री० नारी] बडी नाली। नारा।

पु० [अ० नअरः] १ जोर का शब्द। २ किसी दल, समुदाय आदि की तीव्र अनुभूति और इच्छा का सूचक कोई पद या गठा हुआ वाक्य जो लोगो को आकृष्ट करने के लिए उच्च स्वर से बोला और सब को सुनाया जाता है। जैसे—भारत माता की जय।

नाराइन—पु०=नारायण।

नाराच—पु० [स० नार-आ√चम् (खाना)+ड] १ ऊपर से नीचे तक लोहे का बना हुआ तीर या बाण। २. ऐसा दिन जिसमें बादल घिरे रहे। मेघो से आच्छादित दिन। दुर्दिन। ३ एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे २४ मात्राएँ होती है। ४ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो नगण और चार रगण होते है। इसे महामालिनी और नारका भी कहते है।

नाराच घृत—पु० [स०] चीते की जड, त्रिफला, भटकटैया, बायबिडग आदि एक साथ मिलाकर तथा घी मे पकाकर तैयार किया हुआ एक औषध जो मालिश, लेप आदि के काम आता है।

नाराचिका—स्त्री० [स० नाराच+ठन्—इक,टाप्] सुनारो आदि का छोटा काँटा या तराजू।

नाराची—स्त्री० [स० नाराच+अच्—ङीप्] सुनारो आदि का छोटा काँटा।

नाराज—वि० [फा० नाराज़] [भाव० नाराजगी] अप्रसन्न। रुष्ट। नाखुश। खफा।

नाराजगी—स्त्री० [फा०] नाराज होने की अवस्था या भाव।

नाराजी†—स्त्री०=नाराजगी।

नारायण—पु० [स० नार-अयन, ब० स०] १ ईश्वर। परमात्मा। भगवान। २ विष्णु। ३ कृष्ण यजुर्वेद क अतर्गत एक उपनिषद्। ४ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ५ 'अ' अक्षर की सज्ञा। ६ पूस का महीना। पौष मास।

नारायण-क्षेत्र—पु० [ष० त०] गगा के प्रवाह मे चार हाथ तक की भूमि।

नारायण तैल—पु [स०] आयुर्वेद मे एक तरह का तेल जो मालिश करने के काम आता है।

नारायण-प्रिय—पु० [ष० त० या ब० स०] १ महादेव। शिव। २ पाँचो पाडवो मे के सहदेव। ३ पीला चदन।

नारायण-बलि—स्त्री० [मध्य० म० या च० त०] आत्म-हत्या आदि करके मरे हुए व्यक्ति की आत्मा की शाति तथा शुद्धि के लिए उसके दाह-सस्कार से पहले प्रायश्चित्त के रूप मे ब्रह्मा, विष्णु, शिव, यम और प्रेत के उद्देश्य से दी जानेवाली बलि।

नारायणी—स्त्री० [स० नारायण+अण्—ङीप्] १ दुर्गा। २ लक्ष्मी। ३ गगा। ४ मुद्गल ऋषि की पत्नी का नाम। ५ श्रीकृष्ण की वह प्रसिद्ध सेना जो उन्होने महाभारत के युद्ध मे दुर्योधन को उसकी सहायता के लिए दी थी। ६ शतावर। ७ सगीत मे, खम्माच ठाठ की एक रागिनी।

†वि०=नारायणी। जैसे—नारायणी माया।

नारायणीय—वि० [स० नारायण+छ—ईय] नारायण-सबधी। नारायण का।

पु० महाभारत के शाति-पर्व का एक उपाख्यान जिसमे नारद और नारायण ऋषि की कथाएँ है।

नाराशस—वि० [स० नर-आ√शम् (स्तुति)+घञ्, नाराशस पितर+अण्] मनुष्यो की प्रशसा या स्मृति से सबध रखनेवाला।

पु० १. वेद मे के रुद्र दैवत्य मत्र, जिनमे मनुष्यो की प्रशसा की गई है। २ ऊम, और्व और काव्य, ये तीन पितृगण। ३ उक्त पितृगणो के निमित्त यज्ञ आदि मे छोडा जानेवाला सोमरस। ४ एक तरह का पात्र जिसमे यज्ञ मे उक्त उद्देश्य से सोमरस छोडा जाता था। ५ पितर।

नाराशंसी—स्त्री० [स० नार-आशसी, ष० त०] १ मनुष्यो की प्रशसा

या स्तुति । २ वेदो का वह मंत्र-भाग जिसमें अनेक राजाओ के दानो आदि का प्रशसात्मक उल्लेख है।

नारि—स्त्री० [हिं० नाल] १ बड़ी तोप, विशेषत हाथी पर रखकर चलाई जानेवाली तोप। २ दे० 'नाड' । ३ गरदन। उदा०—अति अधीन सुजान कनौडे गिरिधर नारि नवावति।—सूर।

स्त्री० [सं० नार] १. समूह। झुड। २ आगार। भंडार।

स्त्री० =नारी (स्त्री) ।

नारिक—वि० [स० नार+ठक्—इक] १ जल का। जल-सबधी। २ जल से युक्त। आध्यात्म-सबधी। आध्यात्मिक ।

पु० [?] पीतल, फूल आदि के वे पुराने बरतन जो दूकानदार लोग मरम्मत करके फिरसे नये के रूप मे बेचते है। (कसेरे)

नारिकेर—पु० =नारिकेल (नारियल) ।

नारिकेरी—स्त्री० =नारिकेली।

नारिकेल—पु० [स०√किल् (क्रीडा) । घञ्, नारी-केल, ष० त०, पृषो० ह्रस्व] नारियल नामक वृक्ष और उसका फल ।

नारिकेल-क्षीरी—स्त्री० [स०] दूध मे गरी डालकर बनाई जानेवाली खीर।

नारिकेल-खड—पु० [स०] नारियल की गरी से बनाई जानेवाली एक तरह की ओषधि । (वैद्यक)

नारिकेली—स्त्री० [स० नारिकेल+अण्—ङीष्] नारियल के पानी से बनाई जानेवाली एक तरह की मदिरा ।

नारिदान†—पु०=नाबदान (पनाला) ।

नारि-माला†—स्त्री०[हिं० नली+माला] हल के पीछे लगी हुई वह नली और उसके ऊपर बना हुआ कटोरी के आकार का पात्र जिसमे बीज बोने के लिए छोडे जाते हैं। नली को नारि और उसके मुँह पर के पात्र को माला कहते हैं।

नारियल—पु० [स० नारिकेल] १ समुद्र के किनारे और उसके आस-पास की भूमि मे होनेवाला खजूर की जाति का एक तरह का ऊँचा बडा पेड जिसके फल की ऊपरी खोपडी को तोडने पर अदर से गरी निकलती है। २ उक्त पेड का फल।

पद—**नारियल की जटा**=नारियल के फल के ऊपर के कडे और मोटे रेशे जिनसे रस्से आदि बनाये जाते और गद्दे भरे जाते हैं।

मुहा०—**नारियल तोडना**=मुसलमानो की एक रीति जो गर्भ रहने पर की जाती है। नारियल तोडकर उससे लडका या लडकी होने का शकुन निकालते है।

३ नारियल की खोपडी से बनाया हुआ हुक्का ।

नारियल पूर्णिमा—स्त्री० [हिं०+स०] बम्बई प्रदेश मे मनाया जानेवाला एक उत्सव जिसमें समुद्र मे नारियल फेंकते हैं।

नारियली—स्त्री० [हिं० नारियल+ई (प्रत्य०)] १ नारियल की खोपडी। २ उक्त खोपडी का बना हुआ हुक्का। ३. नारियल की ताडी।

नारी—स्त्री० [स०नृ+अञ्—ङीन्] [भाव० नारीत्व] १ स० 'नर' का स्त्री० रूप। मनुष्य जाति का लिंग के विचार से वह वर्ग जो गर्भधारण करके प्राणियो को जन्म देता है। २ विशेषत. वह स्त्री जिसमे लज्जा, सेवा, श्रद्धा आदि गुणो की प्रधानता हो। ३ युवती तथा वयस्क स्त्रियों की सामूहिक सज्ञा। ४ धार्मिक क्षेत्र मे तथा साधको की परिभाषा मे (क) प्रकृति और (ख) माया। ५ तीन गुरु वर्णों की एक वृत्ति।

स्त्री० [हिं० नार] वह रस्सी जिससे जुए मे हल बाँधा जाता है।

*स्त्री० [स० नारीष्टा] चमेली। मल्लिका।

†स्त्री० [?] जलाशयो के किनारे रहनेवाली एक तरह की भूरे रग की चिडिया।

†स्त्री० १ =नाडी। २ =नाली।

नारी-कवच—पु० [ब० स०] एक सूर्यवशी राजा जिसे स्त्रियो ने अपने बीच मे घेर कर परशुराम से वध किये जाने से बचा लिया था। क्षत्रियो का वश विस्तार इन्ही से माना जाता है।

नारीकेल—पु०=नारिकेल (नारियल) ।

नारीच—पु० [स० नाडीच, ड-र] नालिता नाम का शाक ।

नारी-तरंगक—पु० [ष० त०] १ वह व्यक्ति जो नारी का हृदय तरगित करे। २ प्रेमी। ३ व्यभिचारी व्यक्ति।

नारी-तीर्थ—पु० [मध्य० स०] एक तीर्थ जहाँ अर्जुन ने ब्राह्मण के शाप से ग्राह बनी हुई पाँच अप्सराओ का उद्धार किया था।

नारी-मुख—पु० [ब० स०] पुराणानुसार कूर्म विभाग से नैर्ऋत् की ओर का एक देश।

नारीष्टा—स्त्री० [नारी-इष्टा, ष० त०] चमेली। मल्लिका।

नारुंतुद—वि० [स० न-अरुन्तुद] जिसके शरीर पर कोई आघात न लगता हो।

नारू—पु० [देश०] १ जूँ। ढील। २. एक प्रसिद्ध रोग जिसमे शरीर मे होनेवाली फुसियो मे से सफेद रग के सूत के समान लबे-लबे कीडे निकलते हैं। ये कीडे त्वचा के ततु-जाल मे से निकलते हैं, रक्त मे से नही।

पु० [हिं० नाली, पु० हिं० नारी] क्यारियो मे की जाने या होनेवाली बोआई।

नार्वल†—पु० [देश०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

नार्पत्य—वि० [स० नृपति+ष्यञ्] नृपति अर्थात् राजा से सबध रखने-वाला ।

नार्मद—वि० [स० नर्मदा+अण्] नर्मदा-सबधी। नर्मदा नदी का।

पु० नर्मदा मे से निकलनेवाले एक प्रकार के शिव लिंग ।

नार्मर—पु० [स०] ऋग्वेद मे वर्णित एक असुर जिसका वध इन्द्र ने किया था ।

नार्य्यंग—पु० [स० नारी-अग, ब० स०] नारगी।

नार्य्यतिक्त—पु० [स०] चिरायता ।

नालदा—पु० [स०] मगध मे स्थित एक जगत्-विख्यात प्राचीन विश्व-विद्यालय जो पाटलिपुत्र से ३० कोस दक्षिण मे था ।

नालब—*वि० [स्त्री० नालबा] निरवलब। उदा०—पर हाय आज वह हुई निपट नालबा।—मैथिलीशरण गुप्त।

नालबी—स्त्री० [स०] शिव की बीणा ।

नाल—स्त्री० [स०√नल् (बधन)+ण] १ कमल, कुमुद आदि फूलो की पोली लबी डडी। डाँडी। २ पौधो म डठल। काड। ३ गेहूँ, जौ आदि की वह डडी जिसमे बालें निकलती हैं। ४. नल या नली। २ बदूक के आगे निकला हुआ पोला लबा अश जिसमे से गोली निकलती है। ७ जुलाहो की नली जिसमे वे सूत लपेटकर रखते हैं। छूँछा। कैंडा। छुच्छा। ८. वह रेशा जो कलम बनाते समय छीलने पर निक-

लता है। ९ रस्सी के आकार की वह नली जो एक ओर गर्भ के बच्चे की नाभि से और दूसरी ओर गर्भाशय से मिली होती है। आँवला।

मुहा०—**नाल काटना**=बच्चे का जन्म होने पर नाल काटकर उसे माता के शरीर से अलग करना। **(किसी की कहीं) नाल गड़ी होना**=(क) किसी स्थान से अति घनिष्ठ प्रेम या संबंध होना। (ख) किसी स्थान पर कोई स्वत्व होना।

१० बाँस या मोटे कागज की वह नली जो आतिशबाजी की चरखियो मे लगी रहती है और जिसमे विस्फोटक मसाले भरे रहते है। ११ छोटा नाला या पनाला।

स्त्री० [अ० नअल] १. लोहे का वह अर्द्ध-चन्द्राकार टुकड़ा जो घोड़ो की टाप मे नीचे की ओर जड़ा जाता है।

क्रि० प्र०—जड़ना।

२ उक्त आकार का लोहे का पतला टुकड़ा जो जूतो के नीचे उनकी एड़ीं घिसने से बचाने के लिए लगाया जाता है। ३ पत्थर का वह भारी कुंडलाकार टुकड़ा जिसे कसरत करनेवाले अभ्यास के लिए उठाते हैं। ४ लकड़ी का वह कुंडलाकार घेरा या चक्कर जिसके ऊपर कूएँ की जोड़ाई की जाती है। ५ वह धन जो जूआ खेलनेवाला व्यक्ति हर बार जीतनेवाले व्यक्ति से वसूल करता है।

क्रि० वि० [?] संग या साथ मे। (पश्चिम)

नालक—पु० [देश०] १ पीतल की एक किस्म। २ उक्त किस्म के पीतल का बना हुआ पात्र। ३ एक प्रकार का बाँस।

नाल-कटाई—स्त्री० [हिं०] तुरन्त के जन्मे हुए बच्चे की नाक काटने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नालकी—स्त्री० [स० नाल=डंडा] एक तरह की लबी पालकी जिसमे वर को बैठाकर बरात निकाली जाती है।

विशेष—कुछ नालकियाँ खुली होती है और कुछ पर मेहराबदार छाजन होती है।

नालकेर—पु० [स० नारिकेल] नारियल।

नालबंद—प० [अ० +फा०] [भाव० नालबदी] १ वह व्यक्ति जो घोड़ो के खुर मे नाल जड़ता हो। २ ऐस मोची जो जूतों में नाल लगाता हो।

नालबंदी—स्त्री० [अ० नाल+फा० बदी] जूतों की एडी अथवा घोड़ो के खुर मे नाल जड़ने का काम।

पु० मुसलिम शासन-काल मे एक प्रकार का कर जो जमीदार और छोटे राजा अपनी प्रजा से, उनकी रक्षा के लिए घुड़सवार रखने के बदले मे लिया करते थे।

नाल-बाँस—पु० [स० नल+हि० बाँस] एक तरह का बढ़िया और मजबूत बाँस।

नालवंश—पुं० [स० उपमि० स०] नरसल। नरकट।

नाल-शहतीरी—पुं० [अ० नाल+फा० शहतीर] लकड़ी की एक तरह की मेहराब जिसमे अनेक छोटी-छोटी मेहराबें कटी होती हैं।

नाल-शाक—पु० [सं०] सूरन की नाल जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

नाला—पु० [स० नाल] [स्त्री० अल्प० नाली] १. वह गहरा तथा लबा कृत्रिम जल-मार्ग जो नहर आदि की अपेक्षा कम चौड़ा होता है तथा जिसमें बरसाती, गंदा या फालतू पानी बहकर किसी नदी आदि में जा गिरता है। २. रंगीन गड़ेदार सूत। ३. दे० 'नाड़ा'।

स्त्री० [सं० नाल+टाप्] १. कमलदड। २ पौधे का कोमल तना।

पु० [अ० नाल] आर्तनाद। चीत्कार।

नालायक—वि० [फा० ना+अ० लाइक] १ जिसमे योग्यता का अभाव हो। २ जो मूर्खतापूर्वक दुष्ट आचरण या व्यवहार करता हो।

नालायकी—स्त्री० [हिं० नालायक+ई (प्रत्य०)] १ नालायक होने की अवस्था या भाव। अयोग्यता। २ मूर्खतापूर्वक किया हुआ कोई दुष्ट आचरण।

नालि—स्त्री० [स०√नल्+णिच्+इन्] १ नालिका। नली। उदा०—जुआलि नालि तसु गरम चेहवी।—पृथीराज। २ बदूक।

नालिक—पु० [स० नाल+ठन्—इक] १. कमल। २ बाँसुरी। ३. भैंसा। ४. प्राचीन काल का एक अस्त्र जिसकी नली मे कुछ चीजें भरकर चलाई या फेंकी जाती थी।

नालिका—स्त्री० [स० नाला+कन्—टाप्, इत्व] १ छोटी नाल या डठल। २ नली। ३ पानी आदि बहने की नाली। ४ करघे मे की वह नली जिसके अदर लपेटा हुआ सूत रहता है। ५ पटुआ नाम का साग। ६ एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य।

नालिकेर—पु०=नारिकेल (नारियल)।

नालि-केरी—स्त्री० [स० नालिकेर+ङीष्] एक तरह का शाक।

नालि-जंघ—पु० [स० ब० स०] डोम कौआ।

नालिता—स्त्री० [स०] १. पटसन। पटुआ। २ उक्त के कोमल पत्तो का बनाया जानेवाला शाक।

नालिनी—स्त्री० [स०] तत्र मे नाक का छेद।

नालिश—स्त्री० [फा०] १ किसी के सबध मे की जानेवाली फरियाद। २ किसी के विरुद्ध दायर किया जानेवाला मुकदमा।

नाली—स्त्री० [हिं० नाला का स्त्री० अल्पा० रूप] १ गदा पानी बहने का घर, गली आदि मे का पतला और छिछला मार्ग। छोटा नाला। मोरी। २ जल-मार्ग जो प्राय कम चौड़ा और छिछला होता है। जैसे—खेत मे की नाली। ३ वह गहरी लकीर जो तलवार की बीचो बीच पूरी लबाई तक गई होती है। ४ पतला। नल। नली। ५ पुरानी चाल की बदूक। उदा०—बान नालि हथनाल, तुपक तीरह सब सज्जिय।—चदबरदाई। ६ कुम्हार के आँवे का वह नीचे की ओर गया हुआ छेद जिससे आग डालते हैं। ७ घोड़े की पीठ पर का गड्ढा। ८. चोगा। ढरका।

स्त्री० [स० नालि+ङीष्] १. नाड़ी। २ करेमू का साग। ३ कमल का डठल। ४ एक उपकरण जिससे हाथी का कान छेदा जाता है। ५ एक तरह का बाजा। ६ घड़ी।

नालीक—पु० [स० नाली√कै (शब्द)+क] १ पुरानी चाल का एक तरह का तीर जो बाँस की नली मे रखकर चलाया जाता था। तुफग। २. भाला। ३ कमलो का जाल या समूह। ४ कमल-नाल। ५. कमडलु।

नालीकिनी—स्त्री० [स० नालीक+इनि—ङीप्] १ पद्म समूह। २ कमलो से पूर्ण जलाशय।

नालीदार—वि० [हिं० नाली+फा० दार] जिसमे नाली या नालियाँ बनी या लगी हो।

नालीप—पु० [स०] कदब।

नाली-व्रण—पु० [स० मध्य० स०] नासूर।

नालूक—वि० [स०] कृश। दुबला।
पु० एक प्रकार का गन्ध-द्रव्य।

नालौट—वि० [हिं० ना+लौटना] बात कहकर पलट जानेवाला। मुकरनेवाला।

नालौर—वि०=नालौट।

नावँ†—पु०=नाम।

नाव—स्त्री० [स० नौ से फा०] १ नदी से पार उतरने की एक प्रसिद्ध सवारी जिसे मल्लाह डाँडो या पतवारो से खेते है। किश्ती। नौका। २. तलवार आदि मे रेखाकार बना हुआ चिह्न। खाँचा। नाली। जैसे—दुनावी तलवार या चौनावा खाँचा।

नावक—पु० [फा०] १ पुरानी चाल का एक तरह का तीर जो बहुत गहरी चोट करता था। २ मधुमक्खी का डक।
†पु०=नाविक।

नाव का पुल—पु० [हि०] नदी के एक किनारे से दूसरे किनारे तक लगा हुआ आपस मे बँधी हुई नावो का क्रम या शृखला, जो पुल का काम देती है। (बोट ब्रिज)

ना-वक्त—अव्य० [फा०+अ०] १ अनुपयुक्त समय मे। २ देर करके।

नाव-घाट†—पु० [हि०] नदी, झील आदि का वह स्थान जहाँ नावें रहती है।

नावण†—पु० नहान।

नावना—स० [स० नामन] १ किसी के अदर कुछ गिराना, डालना या रखना। २ प्रविष्ट करना। घुसाना।
†स०=नवाना (झुकाना)।

नावनीत—वि० [स० नवनीत+अण्] १ नवनीत-सबधी। २ मुलायम।

नावर—स्त्री० [हिं० नाव] १ नाव। नौका। २ नाव को नदी के बीच मे जाकर चक्कर खिलाने की क्रीडा।

नावरा—पु० [देश०] दक्षिण भारत मे होनेवाला एक तरह का पेड जिसकी लकडी चिकनी तथा मजबूत होती है।

नावरि—स्त्री०=नावर।

नावाँ—पु०=नाँवाँ।

ना-वाकिफ—वि० [फा० ना+अ० वाकिफ़] [भाव० नावाकिफीयत] १ जिसे किसी से वाकिफीयत अर्थात् जान-पहचान न हो। २ अनजान। ३ अज्ञात।

ना-वाजिब—वि० [फा० ना+अ० वाजिब] जो वाजिब अर्थात् उचित न हो। अनुचित।

नावाधिकरण—पु० [स० नौ-अधिकरण, ष० त०=नावधिकरण] १ राज्य या राष्ट्र का वह विभाग जो जहाजी बेडो से सबधित हो और नौ-सेना आदि का सचालन करता हो। २ उक्त विभाग के अधिकारियो का वर्ग। ३ राज्य के जहाजी बेडे। (एडमिरलटी, उक्त सभी अर्थों मे)

नाविक—पु० [स० नौ+ठन्—इक] वह जो नौका खेता हो। मल्लाह। माँझी।

नावी (विन्)—पु० [स० नौ+इनि] नाविक। मल्लाह।

नावेल—पु० [अ० नावेल] उपन्यास। (देखें)

नाव्य—वि० [स० नौ+यत्] १ जिसे नाव से पार किया जा सके। २ नाव से पार करने योग्य। ३ प्रशसनीय।

नाव्य-जलमार्ग—पु० [स० कर्म० स०] वह जल मार्ग जिसमे नावें चलती या चल सकती हो। नावो के यातायात के लिए उपयुक्त जल-मार्ग। (नैविगेबुल)

नाश—पु० [स०√नश् (नष्ट होना)+घञ्] [कर्ता० नाशक, भू० कृ० नष्ट] १ ऐसी स्थिति जिसमे किसी वस्तु की सत्ता मिट चुकी होती है। २ सत्ता से च्युत या रहित करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। ३ रचनाओ का टूट-फूटकर ध्वस्त होना। ४. चौपट होने की अवस्था या भाव।

नाशक—वि० [स०√नश्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ ध्वस या नाश करनेवाला। मिटाने या दूर करनेवाला। २ मारने या बध करनेवाला।

नाशकारी (रिन्)—वि० [स० नाश√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० नाश कारिणी] नाश करनेवाला। नाशक।

नाशन—पु० [स०√नश्+णिच्+ल्युट्—अन] नाश करना।
वि० [स्त्री० नाशिनी] नाश करनेवाला।

नाशना†—स० [स० नाश] नाश करना।

नाशपाती—स्त्री० [फा० नाशपाती] सेब की जाति का एक प्रसिद्ध पेड और उसका फल जो काश्मीर मे बहुत होता है।

नाश-वाद—पु० [स० ष० त०] १ यह वाद या सिद्धान्त कि ससार मे जो कुछ है, उसका नाश अवश्य होगा। २ एक आधुनिक पाश्चात्य सिद्धात जिसके अनुसार सभी धार्मिक, राजनीतिक और सामाजिक मान्यताएँ तथा व्यवस्थाएँ बुरी समझी जाती हैं। (निहलिज्म)

ना-शाइस्ता—वि० [फा० नाशाइस्त] १ अनुचित। नामुनासिब। २ अशिष्ट। ३ असभ्य। ४ अश्लील।

ना-शाद—वि० [फा०] १ जो शाद अर्थात् खुश या प्रसन्न न हो। दुःखी। २ अभागा। बदनसीब।

नाशित—भू० कृ० [स०√नश्+णिच्+क्त] जिसका नाश हो चुका हो। नष्ट।

नाशी (शिन्)—वि० [स० नाश+इनि] [स्त्री० नाशिनी] १ नाश करनेवाला। नाशक। २ नष्ट होनेवाला। नश्वर।

नाशुक—वि० [स०√नश्+उकञ्] नष्ट होनेवाला। नश्वर।

ना-शुदनी—वि० [फा०] १ (घटना या बात) जो कभी न हो सके। असंभव। २ (व्यक्ति) जो बहुत ही अभागा या बुरा हो।
स्त्री० ऐसी अनिष्टकारी या अप्रिय घटना जो असभाव्य होने पर भी अचानक घटित हो जाय।

नाश्ता—पुं० [फा० नाश्त] सबेरे अथवा दोपहर के भोजन से कुछ समय पहले बासी मुँह किया जानेवाला जल-पान। कलेवा।

नाश्य—वि० [सं०√नश्+णिच्+यत्] १ जिसका नाश हो सके या होने को हो। २ जिसका नाश किया जाना उचित हो।

नाष्टिक—वि० [स० नष्ट+ठञ्+इक] १ जो नष्ट हो चुका हो।
पुं० वह व्यक्ति जिसकी कोई चीज नष्ट हो चुकी हो।

नाष्टिक—वि० [स० नष्ट+ठञ्—इक] जो नष्ट हो चुका हो।

पु० वह व्यक्ति जिसकी कोई चीज नष्ट हो चुकी हो।

नाष्टिक-धन—पु० [स० कर्म० स०] खोया हुआ धन। (स्मृति)

नास—स्त्री० [स० नासा] १ वह चूर्ण जो नाक मे डाला जाय। वह औषध जो नाक से सूँघी जाय। नस्य।

क्रि० प्र०—लेना।—सूँघना।

२ नसवार। सुँघनी।

†पु०=नाश।

नासत्य—पु० [स० नअसत्य, नञ्समास, प्रकृतिवद्भाव] अश्विनीकुमार।

नासत्या—स्त्री० [स० नासत्य+टाप्] अश्विनी नक्षत्र।

नासदान—पु० [हि० नास+फा० दान] सुँघनी रखने की डिबिया।

नासना—स० [स० नाशन्] १ नष्ट या बरबाद करना। २ न रहने देना। अन्त कर देना। ३ मार डालना।

नासपाली—पु० [?] अनारी रग। (टार्टन गोल्ड)

वि० उक्त प्रकार के रग का।

नास-पीटा—वि० [स० नाश+हि० पीटना] [स्त्री० नास-पीटी] ऐसा परम नीच और हीन, जिसका कष्ट हो जाना ही अभीष्ट हो। (ब्रज मे, स्त्रियो की गाली या शाप)

ना-समझ—वि० [हि० ना+समझ] [भाव० ना-समझी] १ (व्यक्ति) जिसे समझ न हो। मूर्ख। २ कम समझवाला। नादान।

ना-समझी—स्त्री० [हि० ना-समझ] ना-समझ होने की अवस्था या भाव।

नासा—स्त्री० [स०√नास्+अ—टाप्] [वि० नास्य] १ नासिका। नाक। २ नाक के दोनो छेद। नथना। ३ दरवाजे म चौखट के ऊपर की लकडी। ३ अडूसा। वासक।

नासाखत*—पु० दे० 'नक-घिसनी'।

नासाग्र—पु० [स० नासा+अग्र ष० त०] नाक का अगला नुकीला अश या भाग।

ना-साज—वि० [फा० नासाज] [भाव० नासाजी] (शारीरिक स्थिति) जिसमे किसी प्रकार की बेचैनी, रोग या शिथिलता न हो।

नासा-ज्वर—पु० [मध्य० स०] नाक मे एक प्रकार की गाँठ होने के फल-स्वरूप चढनेवाला बुखार।

नासानाह—पु० [स०] एक तरह का रोग जिसमे कफ से नथने रुँधे रहते हैं।

नासा-परिशोष—पु० [ष० त०] नासाशोष रोग।

नासा-पाक—पु० [ष० त०] नाक के पकने का एक रोग।

नासा-पुट—पु० [ष० त०] नाक का वह चमडा जो छेदो के किनारे परदे का काम देता है। नथना।

नासा-योनि—पु० [ब० स०] वह नपुसक जिसे घ्राण करने पर उद्दीपन हो। सौगधिक नपुसक।

नासालु—पुं० [स०] कायफल।

नासा-वंश—पुं० [उपमि० स०] नाक की हड्डी।

नासा-वेध—पु० [ष० त०] १ नथ आदि पहनने के लिए नाक मे छेद करने की रसम। २ उक्त काम के लिए नाक के अगले भाग मे किया हुआ छेद।

नासाभणि—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाट की पद्धति का एक राग।

नासा-शोष—पु० [ष० त०] एक रोग जिसमे नाक मे कफ जम तथा सूख जाता है।

नासा-स्राव—पु० [ष० त०] नाक मे से कफ या पानी निकलना।

नासिकंधम—वि० [स० नासिका√ध्मा (शब्द)+खश्, मुम्, ह्रस्व] बोलते समय जिसके नाक मे भी ध्वनि निकलती हो।

नासिक—स्त्री० [स० नासिक्य] बम्बई राज्य मे गोदावरी के तट पर की एक प्रसिद्ध नगरी जो तीर्थ मानी जाती है।

नासिका—स्त्री० [स०√नास्+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १ नाक। नासा। २ नाक की तरह आगे निकली हुई कोई लबी चीज। ३ हाथी की सूँड। ४ दरवाजे मे, चौखट के ऊपर की लकडी।

नासिका-भूषणी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

नासिक्य—वि० [स० नासिका+ष्यञ्] नासिका से उत्पन्न।

पु० १ नासिका। नाक। २ अश्विनीकुमार। ३ दक्षिण भारत का नासिक नामक तीर्थ। ४ अनुनासिक स्वर।

नासिर—पु० [अ०] नस्र अर्थात् गद्य लिखनेवाला लेखक। गद्य-लेखक।

नासी—वि० =नाशी।

नासीर—वि० [स०√नास्+क्विप्, नास√ईर् (गति)+क] आगे आगे चलनेवाला।

पु० सेना का अगला भाग।

नासूत—पु० [अ०] इहलोक। मर्त्यलोक। (सूफी सप्रदाय)

नासूर—पु० [?] एक प्रकार का घाव जिसका मुँह नली के आकार का होता है और जिसमे से बराबर मवाद निकलता रहता है। नाडी व्रण। (साइनस)

क्रि० प्र०—पडना।

मुहा०—**(किसी के) कलेजे या छाती में नासूर डालना**—किसी को बहुत अधिक दु:खी करना।

नास्तिक—पु० [स० नास्ति+ठक्—क] [भाव० नास्तिकता] ईश्वर, परलोक, मत-मतातरो आदि को न माननेवाला। 'आस्तिक' का विपर्याय।

नास्तिकता—स्त्री० [स० नास्तिक+तल्—टाप्] नास्तिक होने की अवस्था या भाव।

नास्तिक्य—पु० [स० नास्तिक+ष्यञ्] नास्तिकता।

नास्तिद—पु० [स०] आम का पेड।

नास्तिवाद—पु० [स० मध्य०स०] १ नास्तिको का तर्क। २ नास्तिकता।

नास्य—वि० [स० नासा+यत्] १ नासिका-सबधी। नाक का। २ नासिका से उत्पन्न।

पु० बैल के नथनो मे नाथी या बाँधी जानेवाली रस्सी। नाथ।

नाह—पु० [स० नाथ] १ नाथ। स्वामी। मालिक। २ स्त्री का पति। ३ बन्धन। ४ हिरन आदि फँसाने का जाल या फदा।

†पु० [स० नाभि] पहिए के बीच का छेद। नाभि।

†अव्य०=नही।

नाहक—क्रि० वि० [फा० ना+अ० हक] अनुचित रूप से और अकारण। व्यर्थ।

नाहट—वि० [देश०] १ बुरा। २ नटखट।

नाह-नूँह—स्त्री० [हि० नाही] १ कई बार किया जानेवाला 'ना' 'ना' या 'नहीं' 'नहीं' शब्द। २ कुछ-कुछ दबी जबान से किया जानवाला इन्कार।

नाहर—पु० [स० नरहरि] १ सिंह। शेर। २. बाघ। ३. बहुत बड़ा वीर और साहसी पुरुष।
पु० [?] टेसू का पौधा और फूल।

नाहर-मुखी—पु० दे० 'शेर-मुखी'।

नाहर सांस—पु० [हिं० नाहर+सांस] घोड़ों के सांस फूलने का एक रोग।

नाहरू†—पु० १ =नाहर। २ =नारू (रोग)।

नाहिन*—अव्य० [हिं० नाही] नहीं।

नाहीं—अव्य० दे० 'नहीं'।
स्त्री० [हिं० नहीं] नहीं करने या कहने की क्रिया या भाव।

नाहीं†—पु० [स० नाथ] स्वामी।

नाहुष—वि० [स० नहुष+अण्] नहुष-संबंधी। नहुष का।
पु० नहुष के पुत्र ययाति।

नाहुषि—पु०=नाहुष।

नित—क्रि० वि०=नित्य।

निंद†—वि०=निंद्य।

निंदक—वि० [स०√निंद (कलंक लगाना)+ण्वुल्—अक] निंदा-करनेवाला।

निंदना—स० [स० निंदन] निंदा करना। बुरा कहना।

निंदनीय—वि०[स०√निंद्+अनीयर] (व्यक्ति अथवा उसका आचरण) जिसकी निंदा की जानी चाहिए। निंदा किए जाने के योग्य।

निंदरना—स० [स० निंदा] १ निंदा करना। बुरा कहना। २. बदनाम करना।

निंदरा—स्त्री०=निद्रा।

निंदरिया—स्त्री०=निद्रा।

निंदा—स्त्री० [स०√निंद्+अ—टाप्] [भू० कृ० निंदित, वि० निंद-नीय] १ किसी के दोषों, बुराइयों आदि का दूसरों के समक्ष किया जानेवाला वह बखान जो उसे दूसरों की नजरों मे गिराने या हेय सिद्ध करने के लिए किया जाय। २ व्यक्ति अथवा उसके किसी कार्य की इस उद्देश्य से की जानेवाली कटु आलोचना कि लोग उसे बुरा समझने लगें। ३ अपकीर्ति। बदनामी।

निंदाई—स्त्री०=निराई (खेतों की)।

निंदाना—स०=निराना।

निंदा-प्रस्ताव—पु० [स० ष० त०] किसी सभा मे उपस्थित किया जाने-वाला वह प्रस्ताव जिसमे किसी अधिकारी, कार्यकर्ता या सदस्य के किसी काम के संबंध मे अपना असंतोष प्रकट करते हुए उसकी निंदा का उल्लेख किया जाता है। (सेन्सर मोशन)

निंदारा—वि०=निंदासा।

निंदासा—वि० [हिं० नींद] १ (जीव) जिसे नींद आ रही हो। २ (आँखें) जिनमे नींद भरी हुई हो।

निंदा-स्तुति—स्त्री०=व्याज स्तुति।

निंदित—भू० कृ० [स०√निंद्+क्त] १ जिसकी निंदा हुई हो या की गई हो। २ दे० 'निंदनीय'।

निंदिया— स्त्री०=नींद।

निंदु—स्त्री०[स०√निंद्+उ]वह स्त्री जिसे मरा हुआ बच्चा पैदा हुआ हो।

निंद्य—वि० [स०√निंद्+ण्यत्] निंदा किये जाने के योग्य। निंदनीय।

निंब—स्त्री० [स० निम्ब् (सींचना)+अच्, बवयोरभेदात् नस्य मः] नीम का पेड़।

निंबकौरी†—स्त्री०=निमकौड़ी।

निंबरिया†—स्त्री० [हिं० नीम+बरी] वह उपवन जिसमे नीम के बहुत से पेड़ हों।

निंबादित्य—पु० [स०] दे० 'निंबार्काचार्य'।

निंबार्क—पु० [स०] १ निंबादित्य का चलाया हुआ वैष्णव सप्रदाय। २ निंबार्काचार्य।

निंबार्काचार्य—पु० [स०] भक्तमाल म उल्लिखित एक प्रसिद्ध कृष्णभक्त जो निंबार्क सप्रदाय के संस्थापक थे। कुछ लोग इन्हें श्री राधिका जी के कंकण का अवतार और कुछ लोग इन्हे सूर्य के अंश से उत्पन्न मानते हैं। [स० ११७१-१२१९ वि०]

निंबू†—पु०=नीबू (पौधा और उसका फल)।

निः—उप० [स० निस्] एक उपसर्ग जो शब्दों के पहले लगकर उन्हे नहिक भाव या राहित्य का सूचक बनाता है। जैसे—निःशुल्क, निःशेष आदि।

निःकपट—वि०=निष्कपट।

निःकाम—वि० निष्काम।

निःकारण—वि० =निष्कारण।

निःकासन—पु० [वि० निःकासित]=निष्कासन।

निःकासित—वि० [स०] निष्कासित। (दे०)

निःक्षत्र—वि० [स० निर्-क्षत्र, ब० स०] (स्थान) जिसमे क्षत्रिय न रहते हों। क्षत्रिय रहित। क्षत्रिय शून्य।

निःक्षेप—पु० [स० निर्√क्षिप् (प्रेरणा)+घञ्] निक्षेप। (दे०)

निःक्षोभ—वि० [स०] जिसमे क्षोभ अर्थात् खलबली या घबराहट न हो।

निःछल—वि० [स० निर्-क्षोभ, ब० स०] निश्छल। (दे०)

निःपक्ष—वि० [स०] निष्पक्ष। (दे०)

निःपाप—वि० [स०] निष्पाप।

निःप्रभ—वि० [स०] निष्प्रभ। (दे०)

निःप्रयोजन—वि० [स०] निष्प्रयोजन। (दे०)

निःफल—वि० [स०] निष्फल। (दे०)

निःशंक—वि०[स० निर्-शंका, ब० स०] १ जिसे किसी प्रकार की शंका न हो। २ निधड़क।
क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की शंका या डर के।

निःशत्रु—वि० [स० निर्-शत्रु, ब० स०] जिसका कोई शत्रु न हो।

निःशब्द—वि० [स० निर्-शब्द, ब० स०] १ (स्थान) जिसमे शब्द न हो रहा हो। २ जो शब्द न करता हो।

निःशब्दक—पु० [स० निःशब्द+णिच्+ण्वुल्—अक] यंत्रों मे रहनेवाला एक उपकरण जो यंत्रों के कुछ पुरजों को अधिक जोर का शब्द या शोर नहीं करने देता। (साइलेन्सर)

निःशम—पु० [स० निर्-शम, प्रा० स०] १ असुविधा। २ चिंता।

निःशरण—वि० [स० निर्-शरण, ब० स०] जिसे कोई शरण देनेवाला न हो। असहाय।

निःशलाक—वि० [स० निर्-शलाका, ब० स०] एकांत। निर्जन।

निःशल्य—वि० [स० निर्-शल्य, ब० स०] [स्त्री० निःशल्या] १ जिसके पास शल्य अर्थात् तीर न हो। २ जिसमे शल्य न हो। कटक रहित। ३ जिसमे कोई खटकनेवाली बात न हो। ४ जिसमे कोई बाधा या रुकावट न हो। निष्कटक।

निःशाख—वि० [स० निर्-शाखा, ब० स०] जिसमे शाखाएँ न हो। बिना शाखाओ का।

निःशुक्र—वि० [स० निर्-शुक्र, ब० स०] १. शक्तिहीन। २ निरुत्साह।

निःशुल्क—वि० [स० निर्-शुल्क, ब० स०] १ जिस पर कोई शुल्क न लगता हो या न लगा हो। २ (व्यक्ति) जो नियत शुल्क न देता हो या जिसका शुल्क क्षमा कर दिया गया हो।

निःशूक—पु० [स० निर्-शूक, ब० स०] एक तरह का धान।

निःशून्य—वि० [स० निर्-शून्य, प्रा० स०] बिलकुल खाली।

निःशेष—वि० [स० निर्-शेष, ब० स०] १ जिसका कुछ भी अश बाकी न बचा हो। जिसका कुछ भी न रह गया हो। २. पूरा। समूचा। ३ पूरी तरह से समाप्त या सम्पन्न किया हुआ (काम)।

निःशोक—वि० [स० निर्-शोक, ब० स०] शोक रहित।

निःशोध्य—वि० [स० निर्-शोध्य, ब० स०] जिसका शोधन न किया जा सके।

निःश्रयणी (यिणी)—स्त्री० [स० निर्√श्रि+ल्युट्-अन, ङीप्; निर्√श्रि+णिनि—ङीप्] निःश्रेणी।

निःश्रीक—वि० [स० निर्-श्री, ब० स०, कप्] श्री से रहित। कातिहीन।

निःश्रेणी—स्त्री० [स० निर्-श्रेणी, ब० स०] सीढ़ी विशेषत काठ या बाँस की बनी हुई सीढ़ी।

निःश्रेयस—पु० [स० निर्-श्रेयस्, प्रा० स०, अच्] १ मोक्ष। मुक्ति। २ कल्याण। मगल। ३ विज्ञान। ४ भक्ति।

निःश्वसन—पु० [स० निर्√श्वस् (साँस लेना)+ल्युट्-अन] साँस बाहर निकालने की क्रिया।

वि० [स्त्री० निःश्वसना] साँस बाहर निकालने या फेकनेवाला। उदा०—जीवन-समीर शुचि निःश्वसना।—निराला।

निःश्वास—पु० [स० निर्√श्वस्+घञ्] वह हवा जो साँस लेने पर नाक के रास्ते बाहर निकाली जाती है।

पद—दीर्घ निःश्वास=गहरा और ठढा साँस।

निःशील—वि० [स०]=निश्शील।

निःसंकोच—अव्य० [स० निर्-सकोच, ब० स०] सकोच बिना। बे-धड़क।

निःसंख्य—वि० [स० निर्-सख्या, ब० स०] जो गिना न जा सके। अनगिनत। बे-शुमार।

निःसंग—वि० [स० निर्-सग, ब० स०] १. जिसका किसी से सग न हो। किसी से सबध न रखनेवाला। निर्लिप्त। २ जिसके साथ और कोई न हो। अकेला।

निःसंचार—वि० [स० निर्-सचार, ब० स०] १ सचरण न करनेवाला २ घर के अन्दर ही पड़ा रहनेवाला।

निःसंज्ञ—वि० [स० निर्-सज्ञा, ब० स०] जिसमे सज्ञा न हो या न रह गई हो। सज्ञा रहित।

निःसंतान—वि०=निस्सतान।

निःसंदेह—वि० [स० निर्-सदेह, ब०स०] जिसमे कुछ भी सदेह न हो। सदेह-रहित।

क्रि० वि० बिना किसी प्रकार के सन्देह के। २ निश्चित रूप से। अवश्य। बेशक।

निःसंधि—वि० [स० निर्-सधि, ब० स०] १ सधि से रहित। २ जिसमे कही छेद दरज या ऐसा ही और कोई अवकाश न हो। ३ जिसमे कही जोड न हो या न लगा हो। ४ दृढ़। पक्का। मजबूत। ५ अच्छी तरह कसा य गठा हुआ।

निःसंपात—वि० [स०निर्-सपात, ब० स०] जिसमे आना-जाना न हो सके।

पु० रात का अधकार।

निःसंबल—वि० [स० निर्-सबल, ब० स०] १ जिसके पास सबल न हो। जिसे कोई सबल या सहायता देनेवाला न हो।

अव्य० बिना किसी सबल या सहारे के।

निःसंबाध—वि० [स० निर्-सबाधा, ब० स०] १ विस्तृत। २ बड़ा।

निःसंशय—वि० [स० निर्-सशय, ब० स०] जिसमे या जिसे कुछ भी सशय न हो।

अव्य० किसी प्रकार के सशय के बिना।

निःसत्त्व—वि० [स० निर्-सत्त्व, ब० स०] १ जिसमे सत्व या सार न हो। थोथा। २ निःसार। जिसमे कुछ भी बल या शक्ति न रह गई हो। ३ जो अस्तित्व मे न रह गया हो।

निःसपत्न—वि० [स० निर्-सपत्न, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसका कोई प्रतिद्वद्वी या शत्रु न हो। २ (वस्तु) जिसका केवल एक अधिकारी हो। ३ (स्त्री) जिसकी कोई सपत्नी या सौत न हो।

निःसरण—पु० [स० निर्√सृ (गति)+ल्युट्—अन] १ बाहर आना या निकलना। २ बाहर निकलने का मार्ग या रास्ता। निकास। ३ कठिनाई से निकलने का मार्ग या युक्ति। ४ मोक्ष। निर्वाण। ५ मरण। मृत्यु। मौत।

निःसार—वि० [स० निर्-सार, ब० स०] १ (पदार्थ) जिसमे कुछ भी सार न हो। थोथा। २ जिसका कुछ भी महत्त्व न हो। महत्त्वहीन। ३ जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध न हो सके। निरर्थक। व्यर्थ।

पु० १ शाखोट या सिहोर नामक वृक्ष। २ सोनपाढा।

निःसारण—पु० [स० निर्√सृ+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निःसारित] १ कोई चीज निकालने, विशेषत बाहर निकालने की क्रिया या भाव। २ निकलने का मार्ग। निकास। ३ वनस्पतियो की गाँठो या शरीर की गिल्टियो का अपने अदर से कोई तत्त्व या तरल अश बाहर निकालना जो अगो को विशुद्ध और ठीक दशा मे रखने या ठीक तरह से चलाने के लिए आवश्यक होता है। ४ इस प्रकार निकलनेवाला कोई पदार्थ। (सीक्रेशन)

निःसारा—स्त्री० [स निर्-सार, ब० स०, टाप्] कदली। केला।

निःसारित—भू० कृ० [स० निर्√सृ+णिच्+क्त] १ निकाला हुआ। २. बाहर किया हुआ।

निःसाव—पु० [स० निर्-सीमन्, ब० स०] ताल के साठ भेदो मे से एक।

निःसीम (न्)—वि० [स० निर्-सीमन्, ब० स०] १ जिसकी कोई सीमा न हो। २ बहुत अधिक।

निःशुकि—पु० [स०] १ एक तरह का गेहूँ का पौधा, जिसकी बालो मे टूँड (बाल का ऊपरी नुकीला भाग) नही लगता। २ उक्त पौधे मे से निकलनेवाला गेहूँ।

निःसृत—भू० कृ० [स० निर्√सृ (गति)+क्त] जिसका निःसरण हुआ हो। बाहर निकला हुआ।

निःस्नेह—वि० [स० निर्-स्नेह, ब० स०] जिसमे स्नेह (क) तेल या (ख) प्रेम न हो।

निःस्नेहा—स्त्री० [स० निःस्नेह+टाप्] अलसी। तीसी।

निःस्पंद—वि० [स० निर्-स्पद, ब० स०] स्पदनहीन। निश्चल।

निःस्पृह—वि० [स० निर्-स्पृहा, ब० स०] १ जिसे किसी बात की स्पृहा अर्थात् आकाक्षा न हो। कामनाओं, वासनाओ आदि से रहित। २ स्वार्थ आदि की दृष्टि से जो किसी के प्रति उदासीन हो। निःस्वार्थ भाववाला। जैसे—निःस्पृह सेवक।

निःस्रव—पु० [स० निर्√स्रु (गति)+अप्] १ निकलने का मार्ग। निकास। २ बचा हुआ अश। अवशेष। ३ बचत।

निःस्राव—पु० [स० निर्√स्रु+अण्] १ बहकर निकला हुआ। अश। २ माड।

निःस्व—पु० [स० निर्-स्व, ब० स०] १ जो स्व अर्थात् आपा या अपनापन छोड या भूल चुका हो। २ जिसे सुध-बुध न रह गई हो। ३ दरिद्र। धनहीन।

निःस्वादु—वि० [स० निर्-स्वाद, ब० स०] बिना स्वाद का। जिसमे कुछ भी स्वाद न हो।

निःस्वार्थ—वि० [स० निर्-स्वार्थ, ब० स०] १ जिसमे स्वार्थ-साधन की भावना न हो। २ जो बिना किसी स्वार्थ के कोई काम विशेषत परोपकार करता हो। ३ (काम) जो बिना किसी स्वार्थ से किया जाय।

अव्य० बिना किसी प्रकार के स्वार्थ के।

नि—उप० [स०√नी (ले जाना)+डि] एक उपसर्ग जो कुछ शब्दो के आरभ मे लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है—(क) नीचे की ओर। जैसे—निपात। (ख) सग्रह या समूह। जैसे—निकर, निकाय। (ग) आदेश। जैसे—निदेश (घ) नित्यता। जैसे—निवेश। (ङ) कौशल। जैसे—निपुण। (च) बधन। जैसे—निबधन। (छ) अतर्भाव। जैसे—निपीत। (ज) सामीप्य। जैसे—निकट। (झ) अपमान। जैसे—निकार। (ञ) दर्शन। जैसे—निदर्शन। (ट) आश्रय। जैसे—निकुज, निलय, निकेतन। (ठ) अलग होने का भाव। जैसे—निधन, निवृत्ति। (ड) सपूर्ण। जैसे—निखिल। (ढ) अच्छी तरह से। जैसे—निगूढ, निग्रह। (त) बहुत अधिक। जैसे—नितात, निपीडना।

पु० सगीत मे, निषाद स्वर का सूचक सक्षिप्त रूप।

उप० [हि०] रहित। हीन। जैसे—निकम्मा, निछोह,

निअर—अव्य० [स० निकट, प्रा० निअड] निकट। पास। समीप।

वि० तुल्य। बराबर। समान।

निअराना—स० [हि० निअर] निकट या समीप पहुँचाना या ले जाना।

अ० निकट या पास जाना अथवा पहुँचना।

निअरे†—अव्य० निकट (पास)।

निआउ†—पु० न्याय।

निआथि†—स्त्री० [स० नि+अर्थता] निर्धनता। गरीबी। उदा०—साथी आथि निआथि भै, सकेसि न साथ निबाहि।—जायसी।

वि० निर्धन।

निआन†—पु० [स० निदान] निदान। अन्त। उदा०—देखेन्हि बूझि निआन न साथा।—जायसी।

अव्य० अन्त मे। आखिर।

निआना*—वि० १ निआरा (न्यारा)। उदा०—अनुराजा सो जरै निआना।—जायसी। २ अनजान।

निआमत—स्त्री० [अ० नेअमत] १ ईश्वर द्वारा प्रदत्त अथवा उसकी कृपा से प्राप्त होनेवाली धन-सपत्ति या कोई बहुमूल्य गुण अथवा पदार्थ। २ किसी के द्वारा प्रदत्त बहुत ही बहुमूल्य पदार्थ।

निआरा†—वि० [स्त्री० निआरी] न्यारा।

निआर्थी*—स्त्री० [स० नि+अर्थता] १ अर्थहीनता। २ दरिद्रता। गरीबी।

वि० धन-हीन। दरिद्र।

निउँजी†—स्त्री० न्योजी (लीची का वृक्ष और फल)।

निऋति—स्त्री० [स० निर्-ऋति,] दक्षिण-पश्चिम कोण की अधिष्ठात्री देवी। २ अधर्म की पत्नी। ३ अधर्म की कन्या। ४ लक्ष्मी की बहन अलक्ष्मी। दरिद्रा देवी। ५ भारी विपत्ति। ६ मृत्यु।

निकटक†—वि० [स० निष्कटक] १ कटक रहित। २ अबाध।

निकदन—पु० [स० नि√कद् (विकलता)+णिच्+ल्युट्-अन] १ नाश। २ सहार।

निकदना*—स० [स० निकदन] १ नष्ट करना। न रहने देना। २ सहार करना।

अ० १ नष्ट होना। २ सहार होना।

निकद रोग—पु० दे० 'योनि कद'।

निकट—अव्य० [नि√कट् (जाना)+अच्] १ कुछ या थोडी दूरी पर। पास ही मे। २ किसी की दृष्टि या विचार मे। ३ किसी के लेखे या हिसाब से। जैसे—तुम्हारे निकट भले ही यह काम बहुत बडा न हो, पर सब लोग ऐसा नही कर सकते।

वि० लगाव या सबध के विचार से समीप-स्थित। पास का। जैसे—निकट-सबधी।

निकटता—स्त्री० [स० निकट+तल्—टाप्] १ 'निकट' होने की अवस्था या भाव। २ ऐसी स्थिति जिसमे किसी से निकट सबध हो।

निकटपना—पु०—निकटता।

निकट-पूर्व—पु० [स० कर्म० स०] योरपवालों की दृष्टि से, एशिया महाद्वीप का पश्चिमी भाग, जो भारत की दृष्टि से 'निकट पश्चिम' होगा।

निकटवर्ती (तिन्)—वि० [स० निकट√वृत् (रहना)+णिनि]—निकटस्थ।

निकटस्थ—वि० [स० निकट√स्था (ठहरना)+क] १ (वह) जो

किसी के निकट रहता या होता हो। २ संबध आदि के विचार मे पास का।

निकसी—स्त्री० [स० निष्क ; मिति ?] छोटा तराजू। काँटा।

निकम्मा—वि० [स० निष्कर्ष, प्रा० निकम्मा] १ जिसके हाथ मे कोई काम न हो। काम-धन्धे से खाली या रहित। जैसे—आज-कल वे निकम्मे बैठे है। २ जो कोई काम-धधा करने के योग्य न हो। अयोग्य। जैसे—ऐसा निकम्मा आदमी लेकर हम क्या करेंगे। ३ (पदार्थ) जो किसी काम मे आने के योग्य न हो। रद्दी। जैसे—निकम्मी बातें।

निकर—पु० [स० नि√कृ (व्याप्ति)+अच्] १ झुड। समूह। जैसे—रवि-कर-निकर। २ ढेर। राशि। ३ निधि। खजाना।

क्रि० वि० निकट।

पु० [अ०] कमर मे पहनने का एक प्रकार का चौडी मोहरीवाला अँगरेजी पहनावा जो घुटनो तक लबा होता है।

निकरना†—अ० निकलना।

निकर्तन—पु० [स० नि√कृत् (छेदन)+ल्युट्—अन] काटना।

निकर्मा—वि० [स० निष्कर्मा] १ जो कोई कर्म या काम न करे। जो कुछ उद्योग-धधा न करे। २ आलसी। ३ दे० 'निकम्मा'।

नि-कर्षण—पु० [स० ब० स० ?] १ खेल का मैदान। २ परती जमीन। ३ आँगन। ४ पडोस।

निकलंक—वि० [स० निष्कलक] जिसे या जिसमे कोई कलक न हो।

निकलंकी—वि० =निष्कलक।

पु० =कल्कि (अवतार)।

निकल—स्त्री० [अ०] एक तरह की सफेद मिश्रित धातु, जिसके सिक्के आदि ढाले जाते हैं।

निकलना—अ० [हिं० 'निकालना' का अ०] १ अदर या भीतर से बाहर आना या होना। निर्गत होना। जैसे—आज हम सवेरे से ही घर से निकले हैं।

सयो० क्रि०—आना।—जाना।—पडना।

मुहा०—**(किसी व्यक्ति का घर से) निकल जाना**=इस प्रकार कही दूर चले जाना कि लोगो को पता न चले। जैसे—कई बरस हुए, उनका लडका घर से निकल गया था। **(किसी स्त्री का घर से) निकल जाना**=पर-पुरुष के साथ अनुचित सबध होने पर उसके साथ चले या भाग जाना। **(कोई चीज कहीं से) निकल जाना**=इस प्रकार दूर या बाहर हो जाना कि फिर से आने या लौटने की सभावना न रहे। जैसे—गली, मुहल्ले या शहर की गदगी निकल जाना।

२ कही छिपी, दबी या रुकी हुई चीज प्राप्त होना या सामने आना। पाया जाना। मिलना। जैसे—(क) उसके घर चोरी का माल निकला था। (ख) जगलो और पहाडो में से बहुत-सी चीजे निकलती है। (ग) इस प्रणाली मे बहुत से दोष निकले, इसलिए इसका परित्याग कर दिया गया।

सयो० क्रि०—आना।

३. किसी प्रकार की परिधि, मर्यादा, सीमा आदि मे से छूटकर या और किसी प्रकार बाहर आना या होना। जैसे—(क) जेल मे से कैदी निकलना। (ख) कूएँ मे से पानी निकलना। (ग) किसी प्रकार के दोष आदि के कारण दल, बिरादरी, संस्था आदि से निकलना।

मुहा०—**(कोई चीज हाथ से) निकल जाना**=खोने, चोरी जाने आदि के कारण अधिकार, स्वामित्व आदि मे इस प्रकार बाहर हो जाना कि फिर से प्राप्त होने की सभावना न रहे। जैसे—अँगूठी या कलम हाथ से निकल जाना। **(कोई अवसर, कार्य या बात हाथ से) निकल जाना**=असावधानता, प्रमाद, भूल आदि के कारण अधिकार, कृतित्व आदि से इस प्रकार बाहर हो जाना कि फिर उसके सबध से कुछ किया न जा सके। जैसे—अब तो वह बात हमारे हाथ से निकल गई; हम उसके लिए कुछ नही कर सकते।

४ किसी प्रकार के अधिकार, नियत्रण, बधन आदि मे रहित होने पर किसी ओर प्रवृत्त होने के लिए बाहर आना। जैसे—(क) कमान मे से तीर या बदूक मे से गोली निकलना। (ख) फदे मे गला निकलना।

५ किसी चीज मे पडी, मिली या लगी हुई अथवा व्याप्त वस्तु का उससे छूटकर या और किसी प्रकार अलग, दूर या बाहर होना। जैसे—(क) कपडे मे से मैल या रग निकलना। (ख) पत्तियो या फलो मे से रस अथवा बीजो मे से तेल निकलना। (ग) दूध या मलाई मे से घी या मक्खन निकलना।

सयो० क्रि०—आना।—जाना।

६ उत्पत्ति या निर्माण के स्थान अथवा उद्गम के स्थान से बाहर होकर प्रकट या प्रत्यक्ष होना। सामने आना। जैसे—(क) अडे या गर्भ मे से बच्चा निकलना। (ख) पेड मे से डालियाँ या डालियो मे स पत्तियाँ अथवा मसूडो मे से दाँत निकलना। (ग) विश्वविद्यालय मे से योग्य स्नातक निकलना।

सयो० क्रि०—आना।—पडना।

७ किसी अज्ञात स्थान, स्थिति आदि से बाहर होकर सामने आना। आगे आकर उपस्थित होना या दिखाई देना। जैसे—आज न जाने कहाँ से इतनी च्यूँटियाँ (या मक्खियाँ) निकल आई (या निकल पडी) हैं।

सयो०क्रि०—आना।—पडना।

८ किसी पदार्थ या स्थान मे से कोई नई रचना, वस्तु या स्थिति उत्पन्न अथवा प्राप्त होना। जैसे—(क) इस कपडे मे म दो कुर्तो के सिवा एक टोपी भी निकलेगी। (ख) यह दालान तोड दिया जाय तो इसमे तीन दूकानें निकलेगी। (ग) जगल कट जाने पर खेती-बारी और बस्ती के लिए जगह निकल आती है।

सयो० क्रि०—आना।—जाना।

९ शरीर मे छिपे या दबे हुए विकार या विष का रोग के रूप मे प्रकट या प्रत्यक्ष होना। जैसे—गरमी, चेचक, या मँहासा निकलना।

विशेष—इस अर्थ मे इस क्रिया का प्रयोग कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे ही रोगो या विकारो के सबध मे ही होता है जो किसी प्रकार के विस्फोट के रूप मे होते है।

१० शरीर अथवा उसके किसी अग से कोई तरल पदार्थ बाहर आना। जैसे—(क) शरीर मे पसीना निकलना। (ख) फोडे मे से पीब या मवाद निकलना। (ग) नाक या मुँह से खून निकलना।

११ किसी बडी राशि मे मे कोई छोटी राशि कम होना या घटना। जैसे—(क) इस रकम मे से दो सौ रुपए ब्याज के निकल गए। (ख) सेर भर घी तो टीन मे से चूकर निकल गया।

सयो० क्रि०—जाना।

१२. किसी गूढ़ तत्त्व, बात या विषय के आशय, उद्देश्य, रहस्य या रूप का स्पष्टीकरण होना। कोई बात खुलना या प्रकट होना। जैसे—(क) किसी पद, वाक्य या श्लोक का अर्थ निकलना। (ख) किसी काम के लिए मुहूर्त निकलना।
सयो० क्रि०—आना।
१३. किसी ऐसी चीज या बात का नये सिरे से आविर्भूत, प्रगट या प्रत्यक्ष होना जो पहले न रही हो या सामने न आई हो। जैसे—(क) किसी प्रदेश मे ताँबे या सोने की खान निकलना। (ख) नया कानून, कायदा, प्रथा या हुकुम निकलना। (ग) उपाय तरकीब या युक्ति निकलना।
सयो० क्रि—आना। —जाना।
१४ किसी नई वास्तु-रचना का प्रस्तुत होकर उपयोग मे आने के योग्य होना। जैसे—(क) कही से कोई नहर या सडक निकलना। (ख) दीवार मे नई खिडकी निकलना। (ग) यातायात के सुभीते के लिए किसी प्रदेश या प्रात मे रेल निकलना। १५ किसी चीज के किसी अग या अश का असाधारण रूप स आगे या बाहर की ओर बढा हुआ होना अथवा सब की दृष्टि के सामने होना। जैसे—(क) उस मकान मे दाहिनी तरफ एक बरामदा निकला है। (ख) उनकी दीवार मे एक नई खिडकी निकली है।
सयो० क्रि०—आना।
१६ अपने कर्तव्य, निश्चय, वचन आदि का ध्यान छोडकर अलग या दूर हो जाना। लगाव या सपर्क बाकी न रहने देना। जैसे—तुम तो यो ही दूसरो का गला फँसाकर (या वादा करके) निकल जाते हो।
सयो० क्रि०—जाना।—भागना।
१७ पुस्तको, विज्ञापनो, समाचार-पत्रो आदि के सबध मे छपकर प्रकाशित होना या सर्वसाधारण के सामने आना। जैसे—(क) किसी विषय की कोई नई पुस्तक निकलना। (ख) समाचार-पत्रो मे विज्ञापन या सूचना निकलना। (ग) कही से कोई नया मासिक-पत्र निकलना। १८ बिकनेवाली चीजो के सबध मे, खपत या बिक्री होना। जैसे—उनकी दूकान पर जितना माल आता है, सब निकल जाता है। १९ किसी स्थान पर स्थित किसी तत्त्व या बात का अपने पूर्व मे बना न रहना। अलग, दूर या नष्ट हो जाना। जैसे—इस एक दवा से ही हमारे कई रोग निकल गए।
सयो० क्रि०—जाना।
२० कुछ पशुओ के सबध मे सधाये या सिखाये जाने पर इस योग्य होना कि जुताई, ढुलाई, सवारी आदि के काम मे ठीक तरह से आ सके। जैसे—यह घोडा अच्छी तरह निकल गया है, अर्थात् गाडी मे जोते जाने या सवारी के काम मे आने के योग्य हो गया है। २१ हिसाब-किताब होने पर कोई रकम किसी के जिम्मे बाकी ठहरना। जैसे—अभी सौ रुपए और तुम्हारे नाम निकलते है। २२ कोई अभिप्राय या उद्देश्य सफल या सिद्ध होना। मनोरथ पूर्ण होना। जैसे—किसी से कोई काम या मतलब निकलना।
सयो० क्रि०—आना।—जाना।
२३ किसी जटिल प्रश्न या समस्या की ठीक मीमासा होना। हल होना। जैसे—गणित के ऐसे प्रश्न सब लोगो से नही निकल सकते।
सयो० क्रि०—आना।—जाना।—सकना।
२४ कठ से उच्चरित होना। जैसे—गले से स्वर निकलना, मुँह से आवाज या बात निकलना।
सयो० क्रि०—आना।—जाना।
विशेष—उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप में इस क्रिया का प्रयोग बाजा आदि के सबध मे भी होता है। जैसे—मृदग मे से शब्द या सारगी मे से राग अथवा स्वर निकलना।
मुहा०—(कोई बात मुँह से) **निकल जाना**=असावधानी के कारण या आकस्मिक रूप से उच्चरित होना। जैसे—मुँह से कोई अनुचित बात निकल जाना।
२५ चर्चा, प्रसग या बात के सबध मे, आरभ होना। छिड़ना। जैसे—(क) बात-चीत या व्याख्यान मे वहाँ और भी कई प्रसग निकले। (ख) बात निकलने पर मुझे भी कुछ कहना ही पडा।
सयो० क्रि०—आना। —जाना।
२६ ग्रह, नक्षत्र आदि का आकाश मे उदित होकर क्षितिज से ऊपर और आँखो के सामने आना। जैसे—चद्रमा, तारे या सूर्य निकलना।
सयो० क्रि० आना।—जाना।
२७ किसी व्यक्ति या कुछ लोगो का किसी मार्ग से होते हुए किसी ओर चलना, जाना या बढना। जैसे—जलूस, बरात या यात्रियो का दल (किसी ओर से) निकलना। २८ समय के सबध मे, व्यतीत होना। गुजरना। बीतना। जैसे—(क) हमारे दिन भी जैसे-तैसे निकल ही रहे हैं। (ख) अब बरसात निकल जायगी।
सयो० क्रि०—जाना।
२९ निर्विवाद और स्पष्ट रूप से ठीक ठहरना। प्रमाणित या सिद्ध होना। जैसे—(क) उनका यह लड़का तो बहुत लायक निकला। (ख) आपकी भविष्यद्वाणी ठीक निकली।

निकलवाना—स०[हिं० निकालना का प्रे०]१ किसी को कुछ निकालने मे प्रवृत्त करना। २ जोर या जबरदस्ती से किसी को छिपाकर रखी हुई कोई चीज उपस्थित करने के लिए बाध्य करना।

निकलाना†—स०=निकलवाना।

निकष—पु०[स० नि √कष् (पीसना)+घ] १ कसने, घिसने, रगड़ने आदि की क्रिया या भाव। २ सान, जिस पर रगडकर हथियारो की धार तेज की जाती है। ३ कसौटी, जिस पर परखने के लिए सोना कसा या रगडा जाता है।

निकषण—पु०[स० नि√कष्+ल्युट्—अन]१ कसने, घिसने, रगडने आदि की क्रिया या भाव। २ हथियारो की धार तेज करने के लिए उन्हे सान पर चढाना। ३ परखने के लिए कसौटी पर सोना कसना या रगडना। ४ गुण, योग्यता, शक्ति आदि परखने की क्रिया या भाव।

निकषा—स्त्री०[स० नि √कष् (हिंसा)+अच्—टाप्]रावण की माता।

निकषात्मज—पु०[स० निकषा+आत्मज, ष० त०]१ राक्षस। २. रावण अथवा उसका कोई भाई।

निकषोपल—पु०[स० निकष-उपल मध्य०स०]१ कसौटी (पत्थर)। २ कोई ऐसा साधन जिससे कोई चीज परखी जाय।

निकस—पु०[स०]=निकष।

निकसना—अ०=निकलना।

निका†—पु०=निकाह।

निकाई—स्त्री०[हिं० नीका=अच्छा]१. अच्छापन। २ अच्छाई। ३ खूबसूरती। सुन्दरता।

स्त्री०[हिं० निकाना] खेत मे से घास-पात काटकर अलग करने की क्रिया, भाव या मजदूरी। निराई।

पु०=निकाय।

निकाज—वि०[हिं० नि+काज] =निकम्मा।

निकाना—स०[?] नाखून गडाना या चुभाना।

स०=निराना (खेत)।

निकाम—वि०[हिं० नि+काम]१ जिसे कोई काम न हो। २ निकम्मा।

वि०=निष्काम।

*क्रि० वि० व्यर्थ।

*वि० [?] प्रचुर।

निकाय—पु०[स० नि√चि (चयन)+घञ्, कुत्व]१ झुड। समूह। २. प्राचीन भारत मे कुछ विशिष्ट सप्रदाय, विशेषत बौद्ध धर्म के वे सप्रदाय जिनकी सख्या अशोक के समय मे १८ तक पहुँच चुकी थी। ३ दे० 'समुदाय'। ४ एक ही प्रकार की वस्तुओ का ढेर या राशि। ५ रहने का स्थान। निवास स्थान। निलय। ६ परमात्मा।

निकाय्य—पु०[स० नि √चि+ण्यत् नि० सिद्धि]घर। गृह।

निकार—पु०[स० नि √कृ (करना)+घञ्] १ पराभव। हार। २ अपकार। ३ अपमान। ४ तिरस्कार। ५ ईख या गन्ने का रस पकाने का कड़ाहा। ६ दे०'निकासी'।

निकारण—पुं०[सं०नि√कृ(मारना)+णिच्+ल्युट्—अन] मारण।वध।

निकारना—स०=निकालना।

निकारा—†वि०[फा० नाकार] [स्त्री० निकारी] १ तुच्छ। निकम्मा। २ खराब। बुरा। उदा०—हरी चद काहु नहिं जान्यो मन की रीति निकारी।—भारतेन्दु।

निकाल—पु०[हिं० निकालना]१ निकलने की क्रिया, ढग या भाव। २ निकलने का मार्ग। निकास। ३. कठिनाई, सकट आदि से निकलने का ढग या युक्ति। जैसे—कुश्ती मे किसी दाँव या पेंच का निकाल। ४ विचार, विवेचन आदि के फलस्वरूप निकलनेवाला परिणाम या सिद्धान्त।

निकालना—स०[स० निष्कासन, पु० हिं० निकासना]१ जो अदर हो, उसे बाहर करना या लाना। निर्गत या बहिर्गत करना। जैसे—अलमारी मे से किताबें, बरतन मे से घी या सदूक मे से कपडे निकालना।
सयो० क्रि०—देना।—लेना।

२. किसी को किसी क्षेत्र, परिधि, मर्यादा, सीमा आदि मे से किसी प्रकार या रूप मे अलग, दूर या बाहर करना। जैसे—किसी को दल, बिरादरी, सस्था, समाज आदि से निकालना।
संयो० क्रि०—देना।

मुहा०—(किसी को कहीं से) निकाल ले जाना =किसी प्रकार के घेरे, बधन सीमा आदि मे से छल या बल-पूर्वक अपने अधिकार मे करके अपने साथ ले जाना। जैसे—(क) किसी स्त्री को उसके घर से निकाल ले जाना। (ख) कैदी को जेल से निकाल ले जाना। (ग) किसी के यहाँ से कुछ माल निकाल ले जाना।

३ कही छिपी, ठहरी, दबी या रुकी हुई चीज किसी प्रकार वहाँ से हटाकर अपने हाथ मे लाना या लेना। बाहर करना या लाना। जैसे—(क) कूएँ मे से पानी, खान मे से सोना, फोडे में से मवाद या म्यान मे से तलवार निकालना। (ख) किसी के यहाँ से चोरी का माल निकालना। ४ किसी चीज मे पडी या मिली हुई अथवा उसके साथ जुडी, बधी या लगी हुई कोई दूसरी चीज अलग या दूर करना अथवा हटाना। जैसे—(क) चावल या दाल मे से ककड़ियाँ निकालना। (ख) कान मे से बाली या नाक मे से नथ निकालना। ५ किसी वस्तु मे से कोई ऐसी दूसरी वस्तु किसी युक्ति से अलग या दूर करना, जो उसमे ओत-प्रोत रूप मे मिली हुई या व्याप्त हो। जैसे—(क) कपडो मे की मैल, बीजो मे से तेल या पत्तियो मे से रस निकालना। ६ किसी को किसी कठिन, विकट या सकटपूर्ण स्थिति आदि से बाहर करके उसका उद्धार करना। जैसे—आपने ही मुझे इस विपत्ति से निकाला है।

मुहा०—(किसी को या कोई चीज कहीं से) निकाल ले जाना= चुरा-छिपाकर या युक्ति-पूर्वक सकटो आदि से बचाते हुए सुरक्षित रूप मे कही ले जाना। जैसे—शिवाजी के साथी उन्हे औरगजेब की कैद से निकाल ले गये।

७ किसी चीज, तत्त्व या बात को उसके स्थान से इस प्रकार हटाकर अलग या दूर करना कि उसका अत, नाश या समाप्ति हो जाय। न रहने देना। अस्तित्व मिटाना। जैसे—(क) दवा से शरीर का रोग या विकार निकालना। (ख) शहर से गदगी निकालना। (ग) किसी वस्तु या व्यक्ति के दुर्गुण या दोष निकालना। (घ) किसी की चालाकी या शेखी निकालना। ८ किसी कार्य या पद पर नियुक्त व्यक्ति को वहाँ से हटाकर अलग या दूर करना। पद, नौकरी, सेवा आदि से हटाना। जैसे—छँटनी मे दस आदमी इस विभाग से भी निकाले गये हैं। ९ एक मे मिली हुई बहुत-सी चीजो मे से कोई चीज या कुछ चीजें किसी विशिष्ट उद्देश्य से बाहर करना या सामने लाना। जैसे—दूकानदार अपने यहाँ की तरह-तरह की चीजें निकाल कर ग्राहको को दिखाते हैं।
सयो० क्रि०—देना।—लाना।—लेना।

१०. किसी बडी राशि मे से कोई छोटी राशि अलग, कम या पृथक् करना। जैसे—इसमे से सेर भर दूध (या गज भर कपडा) निकाल दो।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

११ कही रखी हुई अपनी कोई चीज या उसका कुछ अश वहाँ से उठा या लेकर अपने अधिकार या हाथ मे करना। जैसे—(क) किसी के यहाँ से अपनी धरोहर निकालना। (ख) बक से रुपए निकालना। १२ देन, प्राप्य आदि के रूप मे किसी के जिम्मे कोई रकम ठहराना। बाकी लगाना। जैसे—वे तो अभी और सौ रुपए तुम्हारी तरफ निकालते है। १३ कोई चीज बेचकर या और किसी रूप मे अपने अधिकार, नियत्रण, वश आदि से अलग या बाहर करना। जैसे—(क) वे यह मकान भी निकालना चाहते हैं। (ख) यह दूकानदार अपने यहाँ की पुरानी और रद्दी चीजें निकालने मे बहुत होशियार है। १४ कोई ऐसी चीज या बात नये सिरे से आरंभ करके प्रचलित या प्रत्यक्ष करना, जो पहले न रही हो। नवीन रूप मे जारी या प्रचलित करना। जैसे—नया कानून, कायदा या रीति निकालना। १५ आविष्कार, उपज्ञा, सूझ आदि के फलस्वरूप कोई नई चीज या बात बनाकर या और

किसी प्रकार प्रस्तुत करना या सबके सामने लाना। जैसे—(क) आज-कल के वैज्ञानिक नित्य नय यत्र (या सिद्धात) निकालते रहते है। (ख) आपके तर्क (या मत) मे उसने बहुत-से दोष निकाले है। १६ उपाय, युक्ति आदि के सबध मे, सोच-विचारकर नये सिरे से और ऐसे रूप मे कोई बात सामने रखना या लाना जो पहले अपने आपको या औरो को न सूझी हो। जैसे—उद्देश्य पूरा करने की कोई नई तरकीब या नया रास्ता निकालना। १७ किसी गूढ तत्त्व, बात या विषय का आशय, रहस्य या रूप स्पष्ट करना, सामने रखना या लाना। खोलकर प्रकट करना। जैसे—(क) किसी वाक्य या शब्द का अर्थ निकालना। (ख) कही जाने के लिए मुहूर्त निकालना।
सयो० क्रि०—देना।—लेना।
१८ किसी प्रश्न या समस्या का ठीक उत्तर या समाधान प्रस्तुत करना। मीमांसा या हल करना। जैसे—(क) गणित के प्रश्नो के उत्तर निकालना। (ख) किसी मामले का कोई हल निकालना। १९ अपना उद्देश्य, कार्य या मनोरथ सफल या सिद्ध करना। जैसे—अभी तो किसी तरह उनसे अपना काम निकालो, फिर देखा जायगा।
सयो० क्रि०—लेना।
२० कोई ऐसी नई वास्तु-रचना प्रस्तुत करना, जो किसी दिशा मे दूर तक चली गई हो। जैसे—कही से कोई नई नहर, रेल की लाइन या सडक निकालना। २१ किसी प्रकार की रचना करने के समय उसका कोई अग इस प्रकार प्रस्तुत करना कि वह अपने प्रसम या साधारण रूप अथवा नियत रेखा से कुछ आगे बढा हुआ हो। जैसे—मिस्तरी ने इस दीवार का एक कोना कुछ आगे निकाल दिया है। २२ किसी पदार्थ को छेदते या भेदते हुए कोई चीज एक दिशा या पार्श्व से उसकी विपरीत दिशा या पार्श्व मे पहुँचाना या ले जाना। किसी के आर-पार करना। जैसे—पेड के तने पर तीर (या गोली) चलाकर उसे दूसरी ओर निकालना। २३ पुस्तको, समाचार-पत्रो, सूचनाओ आदि के सबध मे छापकर अथवा और किसी प्रकार प्रचारित करना या सब के सामने लाना। जैसे—अखबार या विज्ञापन निकालना। २४ शब्द या स्वर कठ या मुँह (अथवा वाद्य-यत्रो आदि) से उत्पन्न या बाहर करना। जैसे—(क) गले से आवाज या मुँह से बात निकालना। (ख) तबले, सारगी या सितार से बोल निकालना। २५ किसी प्रकार की चर्चा, प्रसग या विषय आरभ करना। छेडना। जैसे—अपने भाषण मे उन्होने यह प्रसग भी निकाला था। २६ सलाई, सूई आदि से बनाये जानेवाले कामो के सबध मे, कढाई, बुनाई आदि के रूप मे बनाकर तैयार या प्रस्तुत करना। जैसे—(क) दिन भर मे एक गुलूबद या मोजा निकालना। (ख) कसीदे के काम मे बेल-बूटे निकालना। २७ दल आदि के रूप मे कुछ लोगो को साथ करके किसी ओर से या कही ले जाना। जैसे—जलूस या बरात निकालना। २८ जुताई, सवारी आदि के कामो मे आनेवाले पशुओ के सम्बन्ध मे उन्हे सधा या सिखाकर इस योग्य बनाना कि वे जुताई, ढुलाई, सवारी आदि के काम मे ठीक तरह से आ सकें। जैसे—यह घोड़ा (या बैल) अभी निकाला नही गया है, अर्थात् अभी सवारी (या हल मे जोते जाने) के योग्य नही हुआ है। २९ समय, स्थिति आदि के सम्बन्ध मे किसी प्रकार निर्वाह करते हुए उसे पार या व्यतीत करना। जैसे—यह जाडा तो हम इसी कोट से निकाल ले जायँगे।
सयो० क्रि०—देना।—ले जाना।—लेना।

निकाला—पु०[हि० निकालना] १ निकलने या निकालने की क्रिया, ढग या भाव। जैसे—अब घर से जल्दी निकाला नही होता। २ किसी स्थान से बाहर निकाले जाने का दड या सजा। जैसे—देश-निकाला।
क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

निकाश—पु०[स० नि√काश् (चमकना)+घञ्]१ दृश्य। २ क्षितिज। ३ समीपता। ४ अनुरूपता।

निकाष—पु०[स० नि √कष् (खरोचना)+घञ्] १ खुरचना। २. रगडना।

निकास—पु०[स० निष्कास, हिं० निकसना]१ निकसने अर्थात् निकलने की क्रिया या भाव। २ वह उद्गम स्थान जहाँ से कोई चीज निकल या बढकर पूर्णतया प्रकट रूप मे सामने आती हो। ३ वह मार्ग या विस्तार जिसमे से होकर कोई चीज जाती हो। ४ घर आदि से निकलने का द्वार, विशेषत मुख्य द्वार। ५ खुला हुआ स्थान। मैदान। ६ आमदनी या आय का रास्ता। ७ आमदनी। ८ विपत्ति, सकट आदि से बचने की युक्ति। ९ दे० 'निकासी'।
पु०[स० निकाश]समानता। उदा०—सनीर जीमूत-निकाश सोभहि।—केशव।

निकासना†—स० =निकालना।

निकास-पत्र—पु० [हि० निकास+स० पत्र] वह पत्र जिसमे किसी दुकान, सस्था आदि के जमा खरच, बचत आदि का विवरण दिया हो। रवन्ना।

निकासी—स्त्री०[हि० निकास] १ निकलने या निकालने की क्रिया, ढग या भाव। २ व्यक्ति का घर से बाहर निकलने विशेषत काम-काज या यात्रा के लिए बाहर निकलने का भाव। ३ दुकान मे रखे हुए अथवा कारखाना आदि मे तैयार होनेवाले माल का बिकना और बाहर आना। ४ वह माल जितना उक्त रूप मे निकलकर बाहर जाय। खपता। बिक्री। ५ आय। आमदनी। ६ ब्रिटिश शासन मे, वह धन जो सरकारी मालगुजारी देने के उपरात जमीदार के पास बच रहता था। बचत। ७ चुगी। ८ दे० 'निकासी-पत्र'।

निकासी-पत्र—पु०[हिं० निकासी+स० पत्र] वह अधिकार-पत्र जिसके अनुसार कोई व्यक्ति या वस्तु कही से निकल कर बाहर जा सके। (ट्रानजिट पास)

निकाह—पु०[अ०] इस्लाम की धार्मिक पद्धति से होनेवाला विवाह।

निकाही—वि०[अ० निकाह] (स्त्री०) जो निकाह अर्थात् धार्मिक पद्धति से विवाह करके घर मे लाई गई हो। मुसलमान की विवाहिता (पत्नी)।

निकियाई—स्त्री०[हि० निकियाना] निकियाने की क्रिया, भाव और मजदूरी।

निकियाना—स०[देश०] किसी चीज को इस प्रकार से नोचना कि उसका अश या अवयव अलग हो जाय। जैसे—पक्षी के पर या पशु के बाल निकियाना।

निकिष्ट—वि० =निकृष्ट।

निकुंच—पु०[स० नि√कुच् (कुटिलता)+अच्] १ कुजी। ताली।

निकुंचक—पु०[सं० नि√कुच्+ण्वुल्—अक]१ एक तरह का पुराना माप जो कुडव के चौथाई अंश के बराबर होता था। २ जल-बेंत।

निकुंचन—पु०[सं० नि√कुच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निकुंचित] संकुचन।

निकुंज—पु०[सं० नि-कु√जन्(उत्पत्ति)+ड, पृषो० सिद्धि] उपवन, वन, वाटिका आदि में का वह प्राकृतिक स्थल जो वृक्षों तथा लताओं द्वारा आच्छादित तथा कुछ पार्श्वों से घिरा होता है। कुंज।

निकुंभ—पु०[सं० नि√कुम्भ (ढाँकना)+अच्] १ कुंभकरण का एक पुत्र जो रावण का मंत्री था। २ भक्त प्रह्लाद के एक पुत्र का नाम। ३ शतपुर का एक असुर राजा जिसने कृष्ण के मित्र ब्रह्मदत्त की कन्याओं का हरण किया था इसी लिए कृष्ण ने इसे मार डाला था। ४ हरिवंश के अनुसार, हर्यश्व राजा का एक पुत्र। ५ एक विश्वेदेव। ६ कौरवों की सेना का एक सेनापति। ७ कुमार का एक गण। ८ महादेव का एक गण। ९ दंती (वृक्ष)। १० जमालगोटा।

निकुंभित—पु०[सं० नि√कुम्भ+क्त] नृत्य का एक विशेष प्रकार या मुद्रा।

निकुंभिला—स्त्री०[सं०] १ लंका के पश्चिम भाग में की एक गुफा। २ उस गुफा की अधिष्ठात्री देवी (कहते हैं कि युद्ध करने से पहले मेघनाद इसी देवी का पूजन किया करता था)।

निकुंभी—स्त्री०[सं० निकुंभ+ङीष्] १ कुंभकरण की कन्या का नाम। २ दंती वृक्ष।

निकुटना—अ०[हिं० निकोटना का अ०] निकोटा जाना।
स० = निकोटना।

निकुही—स्त्री०[देश०] एक तरह की चिड़िया।

निकुरंब—पु०[सं० नि√कुर् (शब्द)+अम्बच् (बा०)]समूह।

निकुलीनिका—स्त्री०[सं०]१ वह कला जो किसी ने अपने पूर्वजों से सीखी हो। २ वह कला जिसमें किसी जाति विशेष के लोग निपुण तथा सिद्धहस्त समझे जाते हैं।

निकूल—पु०[सं०] वह देवता जिसके निमित्त नरमेध और अश्वमेध यज्ञों में छठे यूप में बलि चढ़ाया जाता है।

निकृंतन—पु०[सं० नि √ कृत्+ल्युट्—अन]१ काटना। २ नष्ट करना।

निकृत—भू० कृ०[सं० नि √ कृ+क्त]१ अपमानित या तिरस्कृत किया हुआ। २ जो दूसरों द्वारा ठगा गया हो। प्रतारित। ३ अधम। नीच। ४. दुष्ट।

निकृति—स्त्री०[सं० नि √ कृ+क्तिन्]१ अपमान। तिरस्कार। २ दूसरों को ठगने की क्रिया या भाव। ३ दुष्टता। ४ दीनता। ५.पृथ्वी। ६ धर्म का पुत्र एक वसु जो सीध्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

निकृत्त—वि०[सं० नि √ कृत्+क्त] १ जड़ या मूल से कटा हुआ। २. छिन्न। विदीर्ण।

निकृष्ट—वि०[सं० नि √ कृष् (खींचना)+क्त] [भाव० निकृष्टता] जो महत्त्व, मान आदि की दृष्टि से निम्न कोटि का और फलतः तिरस्कृत हो। जैसे—निकृष्ट विचार, निकृष्ट व्यक्ति।

निकृष्टता—स्त्री०[सं० निकृष्ट+तल्—टाप्] निकृष्ट होने की अवस्था या भाव।

निकेत—पु०[सं० नि √कित् (बसना)+घञ्] रहने का स्थान। घर।

निकेतन—पु०[सं० नि √कित्+ल्युट्—अन] निकेत।

निकोचक—पु०[सं० नि√कुच् (शब्द)+वुन्—अक] अकोल (वृक्ष)।

निकोचन—पु०[सं० नि √ कुच्+ल्युट्—अन] सिकुड़ने की क्रिया या भाव।

निकोटना—स०[हिं० बकोटना का अ०]१ नाखूनों की सहायता से तोड़ना। २ नोचना। ३ दे० 'बकोटना'।
स०[हिं० नि+कूत] कोई चीज गढ़ने या बनाने के लिए खोदना, तराशना आदि। (राज०)

निकोठक—पु०[सं० निकोचक, पृषो० सिद्धि] अकोल (वृक्ष)।

निकोसना—स० १ दाँत निकालना। २ दाँत किटकिटाना या पीसना।

निकौड़िया—पु०[हिं० नि+कौड़ी] [स्त्री० निकौड़ी]१ व्यक्ति, जिसके पास कौड़ी भी न हो। २ परम निर्धन या दरिद्र व्यक्ति।

निकौनी†—स्त्री०[हिं० निकाना=निराना] निराई (खेत की)।

निक्का—वि०[सं० न्यक्क नत, नीचा] [स्त्री० निक्की]१ (व्यक्ति) जो वय में अपने सभी भाइयों से छोटा हो। २ अवस्था में बहुत छोटा। जैसे—निक्का काका। (पश्चिम)

निक्रीड़—पु०[सं० नि√क्रीड् (खेलना)+घञ्] क्रीड़ा। खेल।

निक्वण—पु०[सं० नि√क्वण् (शब्द)+अप्]१ वीणा की झंकार या शब्द। २ किन्नरों का शब्द या स्वर।

निक्षण—पु०[सं० निक्ष् (चूमना)+ल्युट्—अन] चुंबन। चुम्मा।

निक्षा—स्त्री०[सं०√निक्ष्+अच्—टाप्] जूँ का अंडा। लीख।

निक्षिप्त—भू० कृ०[सं० नि√क्षिप् (प्रेरणा)+क्त] १ फेंका हुआ। २ डाला या रखा हुआ। ३ छोड़ा या त्यागा हुआ। त्यक्त। ४ अमानत या धरोहर के रूप में किसी के पास जमा किया या रखा हुआ। (डिपाजिटेड) ५ भेजा हुआ। (कन्साइंड) ६ बंधनों आदि से छूटा हुआ।

निक्षिप्तक—पु०[सं० निक्षिप्त+कन्]१ वह वस्तु जो कहीं भेजी जाय। (कन्साइनमेंट) २ वह धन जो किसी कोश, खाते या मद में इकट्ठा किया जाय।

निक्षिप्ति—स्त्री०[सं० नि√क्षिप्+क्तिन्] निक्षेप। (दे०)

निक्षिप्ती—पु०[सं० निक्षिप्त]वह व्यक्ति जिसके नाम कोई वस्तु, विशेषतः पारसल के रूप में भेजी गई हो। (कनसाइनी)

निक्षुभा—स्त्री०[सं० निक्षुभ (हलचल)+क—टाप्] १ ब्राह्मणी। २ सूर्य की एक पत्नी।

निक्षेप—पु०[सं० नि√क्षिप् (प्रेरणा)+घञ्] [भू० कृ० निक्षिप्त]१ फेंकने, डालने, चलाने, छोड़ने आदि की क्रिया या भाव। २. किसी के पास कोई चीज भेजने की क्रिया या भाव। ३ इस प्रकार भेजी जाने-वाली वस्तु। ४ वह धन या वस्तु जो किसी के यहाँ अमानत या धरोहर के रूप में रखी गई हो। ५ वह धन जो कहीं जमा किया गया हो। (डिपाजिट) ६ कोई चीज कहीं जमा करने अथवा किसी के पास अमानत या धरोहर के रूप में रखने की क्रिया या भाव।

निक्षेपक—वि०[सं० नि√क्षिप्+ण्वुल्—अक] फेंकने, चलाने या छोड़ने-वाला।

पु०१. वह जो किसी को कोई वस्तु विशेषत पारसल करके भेजता हो। (कन्साइनर) २. वह जो किसी के पास धन जमा करे। ३ धरोहर के रूप में रखा हुआ पदार्थ। (कौ०)

निक्षेपण—पु०[स० नि√ क्षिप्+ल्युट्—अन] [वि० निक्षिप्त, निक्षेप्य] १ कोई चीज चलाना, छोडना, डालना या फेंकना। २ धन आदि किसी के पास जमा करना। ३ अमानत या धरोहर के रूप मे कोई चीज किसी के पास रखना।

निक्षेप-निर्णय—पु०[स० तृ० त०] सिक्का आदि उछालकर उसके चित या पट गिरने के आधार पर किया जानेवाला किसी प्रकार का निर्णय। (टॉस)

निक्षेपित—भू० कृ० [स० निक्षिप्त] जिसका निक्षेपण हुआ हो। निक्षिप्त।

निक्षेपी (पिन्)—वि०[स० नि√क्षिप्+णिनि]१ चलाने, छोडने, डालने या फेंकनेवाला। २ अमानत या धरोहर के रूप मे किसी के पास कोई चीज रखनेवाला।

निक्षेप्ता (प्तृ)—पु०[स० नि√क्षिप्+तृच] =निक्षेपी।

निक्षेप्य—वि०[स० नि√क्षिप्+णिनि]१ चलाये, छोड़े, डाले या फेंके जाने के योग्य। २ अमानत या धरोहर के रूप मे रखे जाने के योग्य। ३ जमा किये जाने के योग्य।

निखंग†—पु० =निषग (तरकश)।

निखंगी—वि० =निषगी (तरकश धारण करनेवाला)।

निखंड—वि० दो बिन्दुओ या कालो के ठीक बीच मे होनेवाला। जैसे—निखड बेला।

निखटक—क्रि० वि०=बेखटके।

निखट्टर—वि०[हि० नि+कट्टर=कड़ा] कठोर हृदयवाला। निर्दय और निष्ठुर।

निखट्टू—वि०[हि० नि+खटना=कमाना]१ (व्यक्ति) जो कुछ भी कमाता न हो। २ बेकार।

निखनन—पु० [स० नि√खन् (खोदना)+ल्युट्—अन] १ खनना। खोदना। २ खोदने पर निकलनेवाली मिट्टी। ३ गाड़ना।

निखरक—क्रि० वि०=निखटक (बेखटके)।

निखरचे—क्रि० वि० [हि० नि+खरच] बिना किसी प्रकार का खरच विशेषत माल आदि का दलाली, ढुलाई, रेल-भाड़ा, डाक-व्यय आदि जोडे या मिलाये हुए। जैसे—आपको यह माल ५०) मन निखरचे मिलेगा। अर्थात् ऊपरी खरच विक्रेता के जिम्मे होगे।

निखरना—अ०[स० निक्षरण छँटना]१ ऊपर की मैल आदि हट जाने के कारण खरा या साफ होना। २ स्वच्छ करनेवाली किसी क्रिया के फल-स्वरूप वास्तविक तथा अधिक सुन्दर रूप प्रकट होना। ३ रंगत, रूप आदि का खिलना या साफ होना। ४ कला-पूर्ण ढग से सपादित होने के कारण किसी कार्य या वस्तु का ऐसे उत्कृष्ट या निर्दोष स्थिति या रूप मे सामने आना कि वह यथेष्ट सजीव तथा सौंदर्यपूर्ण जान पडे। जैसे—दूसरे संस्करण मे जो सशोधन तथा सुधार हुए हैं उनके कारण यह ग्रथ और भी निखर गया है। (दे० 'निखार' और 'निखारना')

सयो० क्रि०—आना।—उठना।—जाना।

निखरवाना—स० [हि० निखारना] किसी को कुछ निखारने मे प्रवृत्त करना। निखारने का काम दूसरे से कराना।

निखरी—स्त्री०[हि० निखरना] घी की पकी हुई रसोई। पक्की रसोई। 'सखरी' का विपर्याय।

निखर्व—वि०[स०]१ जो गिनती मे दस हजार करोड हो। 'खर्व' का सौ-गुना। २ बौना। वामन।

पु० दस हजार करोड या सौ खर्व की सूचक सख्या या अक।

निखवख*—वि०, क्रि० वि० [स० न्यक्ष =सारा, सब] बिलकुल। निरा।

निखात—भू० कृ०[स० नि√खन्+क्त]१ (जमीन या गड्ढा) खोदा हुआ। २ खोदकर निकाला हुआ। ३ गाडा हुआ।

निखाद—पु० =निषाद।

निखार—पु० [हि० निखरना] १ निखरने की क्रिया या भाव। २. निर्मलता। स्वच्छता। ३ सजावट।

निखारना—स० [हि० खारना] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज निखर उठे। २ निर्मल, पवित्र या शुद्ध करना।

विशेष—प्राय कई विशिष्ट प्रकार के कारीगर चीज तैयार कर लेने पर उसे कई तरह के खारो (क्षारो) आदि के घोल मे डालकर उसे सुन्दर और स्वच्छ बनाते है। यही क्रिया कही 'खारना' और कही 'निखारना' कहलाती है।

निखारा—पु० [हि० निखारना] वह बडा कड़ाहा जिसमे ऊख का रस उबाल कर निखारा जाता है।

निखालिस—वि० =खालिस। (असिद्ध रूप)

निखिउ*— वि० =निक्षिप्त।

निखिद्ध†—वि० =निषिद्ध।

निखिल—वि० [स० नि-खिल=शेष, ब० स०] १ अखिल। सपूर्ण। २ समस्त। सारा।

निखुटना—अ० [स० निक्षित ?] १ उपयोग मे लाई जानेवाली वस्तु का कोई काम पूरा होने से पहले ही समाप्त हो जाना। बीच मे ही समाप्त हो जाना। जैसे—पत्र भी न लिखा गया और स्याही निखुट गई। २ बाकी न बचना।

निखेद—पु० =निषेध।

निखेधना—स० [स० निषेध] निषेध या वर्जन करना। मना करना।

निखोट—वि० [हि० नि०+खोटा] १ (वस्तु) जो बिलकुल शुद्ध, खरी या खालिस हो। जिसमे कोई खोट न हो। खरा। साफ। २ (व्यक्ति) जो खोटा अर्थात् दुष्ट-प्रकृति का न हो। खरा। साफ। ३ (बात) छल-कपट से रहित और स्पष्ट।

क्रि० वि० खुलकर और स्पष्ट रूप से।

निखोड़ना†—स० [हि० नि+खोदना] १ खोदना, विशेषत नाखून से खोदना। २. नोचकर अलग करना।

निखोड़ा—वि० [हि० नि+खोड आवेश] [स्त्री० निखोडी] १. बहुत जल्दी या अधिक आवेश मे आनेवाला। २ आवेशयुक्त होकर काम करनेवाला। ३ क्रूर। निर्दय।

निखोरना†—स० =निखोडना।

निगंध—पु० [स० निर्गंध] ओषधि के काम आनेवाली एक रक्त-शोधक बूटी।

निगंदना—स० [हिं० निगदा] रूई भरे हुए कपडे के दोनो परतो मे सूई-धागे से इसलिए बडे-बडे टाँके लगाना कि उसके अदर की रूई इधर-उधर न होने पाये।

निगंदा—पु० [फा० निगद] उक्त प्रकार के कपडो मे लगा हुआ बडा टाँका। बखिया।

निगंध—वि०--निर्गंध (गध हीन)।

निगड़—स्त्री० [स० नि√गल् (बधन)+अच्, लस्य ड] १ जजीर, जिससे हाथी के पैर बाँधे जाते हैं। आँदू। २. अपराधियो के पैरो मे पहनाई जानेवाली बेडी।

निगड़न—पु० [स० नि√गल्+ल्युट्—अन, लस्य ड] निगड पहनाने या बाँधने की क्रिया या भाव।

निगड़ित—वि० [स० निगड+इतच्] निगड से बाँधा हुआ।

निगण—पु० [स० निगरण, पृषो० सिद्धि] यज्ञाग्नि या आहुति के जलने से उत्पन्न होनेवाला धूआँ।

निगति—वि० [हि० नि+स० गति] १ जिसकी गति अर्थात् मुक्ति न हुई हो। २ जिसकी गति या मुक्ति न हो सकती हो; अर्थात् बहुत बडा पापी।

निगद—पु० [स० नि√गद् (कहना)+अप्] १ कहना या बोलना। भाषण। २ उक्ति। कथन। ३ ऐसा जप जिसका उच्चारण जोर-जोर से किया जाय। ४. पढने का वह ढग जिसमे कोई पाठ बिना अर्थ समझे हुए पढा या रटा जाता है।

निगदन—पु० [स० नि√गद्+ल्युट्—अन] १ कहना। २ रटा, सीखा या स्मरण किया हुआ पाठ दोहराना।

निगदित—भू० कृ० [स० नि√गद्+क्त] जिसका निरादर किया गया हो।

निगना†—अ० [स० निगमन्] चलना। (राज०)

निगम—पु० [स० नि√गम् (जाना)+अप्] १ पथ। मार्ग। रास्ता। २ प्राचीन भारत मे, वह पथ या रास्ता जिस पर होकर व्यापारी लोग अपना माल लाते और ले जाते थे। ३ उक्त के आधार पर रोजगार या व्यापार। ४. वेद जिसकी, शिक्षाएँ सब के चलने के लिए सुगम मार्ग के रूप मे हैं। ५ वेद का कोई शब्द, पद या वाक्य अथवा इनमे से किसी की टीका या व्याख्या। ६ ऐसा ग्रंथ जिसमे वैदिक मतो का निरूपण या प्रतिपादन हो। ७ विधि या विधान के अनुसार अस्तित्व मे आई हुई ऐसी सस्था जो शरीरधारी व्यक्ति की तरह काम करती है और जिसके कुछ निश्चित अधिकार, कृत्य तथा कर्तव्य होते हैं। ८ दे० 'नगर महापालिका'। ९ मेला। १० कायस्थो की एक शाखा।

निगमन—सज्ञा—[स० नि√गम्+ल्युट्—अन] १ किसी सस्था या को निगम का रूप देने की क्रिया या भाव। २ न्याय मे, वह कथन प्रतिज्ञा, जो हेतु, उदाहरण और उपनय तीनो से सिद्ध हुई या होती हो। (डिडक्शन)

निगमनिवासी (सिन्)—पु० [स० निगम नि√वस् (बसना)+णिनि] विष्णु।

निगमपति—पु० [सं० ष० त०] १ निगम का प्रधान अधिकारी। २. दे० 'नगर-प्रमुख'।

निगम-बोध—पु० [सं० ब० स०] पृथ्वीराज रासो में उल्लिखित एक पवित्र स्थान जो यमुना नदी के तट पर तथा दिल्ली के पास था।

निगम-सचारी—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

निगमागम—पु० [स० निगम-आगम, द्व० स०] वेद और शास्त्र।

निगमित—वि० [स०] जिसे निगम का रूप दिया गया हो। (इन्कारपोरेटेड)

निगमी (मिन्)—वि० [स० निगम+इनि] वेदज्ञ।

निगमीकरण—पु० [स० निगम+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] किसी सस्था को निगम का रूप देना। (इन्कारपोरेशन)

निगमीकृत—भू० कृ० [स० निगम+च्वि, ईत्व√कृ+क्त]=निगमित।

निगर—पु० [स० नि√गृ (निगलना)+अप्] १ निगलने की क्रिया या भाव। २ भोजन। ३ गला। ४ एक प्रकार की पुरानी तौल जो ५५ मोतियो के बराबर होती थी।

†वि० [स० निकर] कुल। सब।

†पु० समूह।

निगरण—पु० [स० नि√गृ+ल्युट्—अन] १. खाना या निगलना। २. गला। ३ यज्ञाग्नि का धूआँ।

निगरना†—स०=निगलना।

निगरभर—वि० [स० नि+गह्वर] बहुत ही घना।

क्रि० वि० घने रूप मे।

निगराँ—वि० [फा०] १ निगरानी करनेवाला। जो चौकस होकर किसी की देखभाल करे। २ निरीक्षक।

निगरा—स्त्री० [स० निगर] ५५ मोतियो की वह लडी जो तौल मे ३२ रत्ती हो।

वि० [हिं० नि+गरण] (ऊख का रस) जिसमे पानी न मिलाया गया हो।

निगराना—स० [स० नय+करण] १ निर्णय करना। २ छाँट कर अलग या पृथक् करना। ३ स्पष्ट करना।

अ० १. अलग होना। २ स्पष्ट होना।

निगरानी—स्त्री० [फा०] १ व्यक्ति के सबध मे उसके कार्य, गति-विधि आदि पर इस प्रकार ध्यान रखना कि कोई अनौचित्य या सीमा का उल्लघन न होने पाये। २ वस्तु के सबध मे, इस प्रकार ध्यान रखना कि उसे किसी प्रकार की क्षति या व्यतिक्रम न होने पाये।

निगरू—वि० [हि० नि+स० गुरु] जो गुरु अर्थात् भारी न हो। हलका।

†वि०=निगुरा।

निगलन—पु० [स०] -निगरण।

निगलना—स० [स० निगरण, निगलन] कोई कडी या ठोस चीज बिना चबाये ही गले के अदर उतार लेना।

संयो० क्रि०—जाना।

निगह—स्त्री०=निगाह।

निगहबान—वि० [फा०] १ निगाह रखने अर्थात् देख-रेख करनेवाला। २ रक्षक।

निगहबानी—स्त्री० [फा०] निगहबान होने की अवस्था या भाव। देख-रेख। रक्षण।

निगाद—पुं० [स० नि√गद्+घञ्] निगद। (दे०)

वि० वक्ता।

निगार—पु० [स० नि√गृ+घञ्] १ निगलने की क्रिया या भाव। २ भक्षण।

पु० [फा०] १ प्रतिमा। मूर्ति। २ ऐसा चित्रण जिसमे बेल-बूटे भी हो। ३ फारस देश का एक राग।

वि० १ अंकित करनेवाला। २ लिखनेवाला।

निगाल—पु० [देश०] १ एक प्रकार का पहाड़ी बाँस जिसे रिगाल भी कहते है। २ [स०निगार, रस्य ल] घोड़े की गरदन।

स्त्री०—निगाली।

निगालवान (वत्)—पु० [स० निगाल+मतुप्] घोड़ा।

निगालिका—स्त्री० [स०] आठ अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण म क्रमश जगण, रगण और लघु-गुरु होते है। इसे 'प्रमाणिक' और 'नाग स्वरूपिणी' भी कहते हैं।

निगाली—स्त्री० [हि० निगार] १ बांस की पतली नली। २ हुक्के की वह नली जिस मुँह मे लगाकर धूआं खीचा जाता है।

निगाह—स्त्री० [फा०] १ दृष्टि। नजर। २ कृपा-दृष्टि। ३ किसी बात की देख-रेख के लिए उस पर रखा जानेवाला ध्यान। ४ किसी काम, चीज या बात के सबध म होनेवाली परख। सूक्ष्म दृष्टि।

निगिभ—वि० [स० निगुह्य] अत्यत गोपनीय।

निगीर्ण—भू० कृ० [स० नि√गृ+क्त] १ निगला हुआ। २ अतर्भूत। समाविष्ट।

निगुफ—पु० [स० नि√गुम्फ (गूँथना)+घञ्] १ समूह। २ गुच्छा।

निगुण†—वि०=निर्गुण।

निगुना†—वि० १ =निर्गुण। २ =निगुनी।

निगुनी—वि० [हि० नि+गुनी] जिसमे कोई गुण न हो।

निगुरा†—वि० [हि० नि+गुरु] जिसने धार्मिक दृष्टि से किसी को अपना गुरु न बनाया हो, जिसने किसी से दीक्षा न ली हो। फलत गुण-रहित और हीन।

विशेष—सतो के समाज मे, और उसके आधार पर लोक मे भी ऐसा व्यक्ति अपटु, अयोग्य और निकृष्ट माना जाता है।

निगूढ—वि० [स० नि√गुह् (छिपाना)+क्त] १ जिसका अर्थ छिपा हो। २ अत्यत गुप्त।

निगूढार्थ—वि० [स० निगूढ-अर्थ, ब० स०] जिसका अर्थ छिपा हो।

पु० [कम० स०] छिपा हुआ अर्थ।

निगूहन—पु० [स० नि√गुह्+ल्युट्—अन] गुप्त रखने या छिपाने की क्रिया या भाव।

निगृहीत—भू० कृ० [स० नि√ग्रह् (पकड़ना)+क्त] [भाव० निगृहीति] १ धरा, पकड़ा या रोका हुआ। २ जिस पर आक्रमण हुआ हो। आक्रमित। ३ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद मे हारा हुआ। ४ जिसे दड मिला हो। दडित। ५ जिसे कष्ट पहुँचा हो। पीडित।

निगृहीति—स्त्री० [स० नि√ग्रह+क्तिन्] १ धरने, पकड़ने या रोकने का भाव। २ आक्रमण। ३ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद मे होनेवाली हार। ४ दड। ५ कष्ट।

निगोड़ा—वि० [हि० नि+गोड=पैर] [स्त्री० निगोड़ी] जिसके गोड अर्थात् पैर न हों अथवा टूटे हुए हो। फलत अकर्मण्य। (स्त्रियो की एक प्रकार की गाली)

वि० दे० 'निगुरा'।

निगोल—स्त्री० [?] किसी मकान के ऊपरी भाग मे सीढ़ियो के ऊपर की वह छायादार रचना जो आस-पास की छतो और रचनाओं मे सबसे ऊँची हो।

निग्रह—पु० [स० नि√ग्रह+अप्] १ नियत्रण, बधन, रोक आदि के द्वारा किसी आवेग, क्रिया, वस्तु या व्यक्ति को स्वतत्रतापूर्वक आचरण न करने देना। २ उक्त का इतना अधिक उग्र या कठोर रूप कि किसी बात या वृत्ति का दमन हो जाय। ३ रोककर या वश मे रखनेवाली चीज या बात। अवरोध। रोक। ४ चिकित्सा, जिससे रोग आदि दबाये या रोके जाते हैं। ५ दड। सजा। ६ पीडित करना। सताना। ७ बाधनेवाली चीज या बात। बधन। ८ डॉट-डपट। ९ भर्त्सना। १० सीमा। हद। १० शिव। ११ विष्णु।

निग्रहण—पु० [स० नि√ग्रह+ल्युट्—अन] १ निग्रह करने की क्रिया या भाव। (दे० 'निग्रह') २ पराजय। ३ युद्ध। लड़ाई।

निग्रहना—स० [स० निग्रहण] १ निग्रह करना। २ नियत्रण, बधन या रोक मे रखना। ३ दमन करना। ४ दडित करना।

निग्रह-स्थान—पु० [स० ष० त०] तर्क म वह स्थल या स्थान जहाँ वादी के अतर्क-सगत बाते कहने पर वाद-विवाद बद कर देना पड़े।

निग्रही (हिन्)—वि० [स० निग्रह+इनि] १ निग्रह करनेवाला। २ नियत्रण, बधन या रोक म रखनेवाला। दमन करनेवाला। ३ दड देनेवाला।

निग्राह—पु० [स० नि√ग्रह+घञ्] १ आक्रोश। शाप। २ दड। सजा।

निग्राहक—वि० [स० नि√ग्रह+ण्वुल्—अक] निग्रह करनेवाला।

पु० वह प्राचीन शासनिक अधिकारी जो अपराधियो, आततायियो आदि को दड देता था।

निग्रोध—पु० [स० न्यग्रोध] राजा अशोक के भाई का पुत्र।

निघटिका—स्त्री० [स० नि√घट् (शोभित होना)+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] गुलचा नाम का कद।

निघटु—पु० [स० नि√घट्+कु] १ शब्दो की सूची, विशेषत यास्क द्वारा उल्लिखित वैदिक शब्दो की सूची। २ कोई ऐसा कोश, जिसमे किसी प्राचीन भाषा के अथवा बहुत पुराने और अप्रचलित शब्दो के अर्थ और विवेचन हो (लेक्सिकन)। ३ शब्द-सग्रह अथवा शब्द-कोश।

निघ—वि० [स० नि√हन् (जानना)+क नि० सिद्धि] जो लबाई और चौड़ाई मे बराबर हो।

पु० १ गेंद। २ पाप।

निघटना—स० [हि० नि+घटना] न घटे हुए के समान करना।

अ० १ उत्पन्न होना। २ घटित होना। ३ युक्त या सपन्न होना।

निघर-घट—वि० [हि० नि+घर घाट] १ जिसका कही घर-घाट या ठौर-ठिकाना न हो। २ निलज्ज। बेहया।

मुहा०—(किसी को) निघर-घट देना=बुरी तरह से झिड़कते या फटकारते हुए लज्जित करना। उदा०—दुरै न निघर-घटी दिये, यह रावरी कुचाल।—बिहारी।

निघरा—वि० [हि० नि+घर] १ जिसका घर-द्वार न हो। २. जिसकी घर-गृहस्थी न हो अर्थात् तुच्छ और हीन।

निघर्ष—पु० [स० नि√घृष् (घिसना)+घञ्] १. घर्षण। रगड। २ पीसने का भाव।

निघस—पु० [स० नि√अद् (खाना)+अप्, घस् आदेश] आहार। भोजन।

निघात—पु० [स० नि√हन्+घञ्] १ आघात। प्रहार। २ सगीत मे, अनुदात्त स्वर।

निघाति—स्त्री० [स० नि√हन्+इञ्, कुत्व] १. लोहे का डडा। २ हथौडा। ३ निहाई जिस पर धातु के टुकडे रखकर पीटते हैं।

निघाती (तिन्)—वि० [स० निघात+इनि] [स्त्री० निघातिनी] १ आघात या प्रहार करनेवाला। २ वध या हत्या करनेवाला।

निघृष्ट—भू० कृ० [स० नि√घृष्+क्त] १ रगड खाया हुआ। २ पराजित।

निघोर—वि० [स० नि-घोर, प्रा० स०] अत्यत या परम। घोर।

निघ्न—वि० [स० नि√हन्+क] १ अधीन। २ अवलबित। ३ आश्रित। ४. गुणा किया हुआ। गुणित।

निचत†—वि० =निश्चित।

निचंद्र—पु० [स०] एक दानव का नाम।

निचक्षु—पु० [स०] हस्तिनापुर के एक राजा जिन्होने बाद मे कौशांबी मे राजधानी बनाई थी।

निचय—पु० [स० नि√चि (चयन)+अच्] १ ढेर। राशि। २ समूह। ३ सचय। ४ निश्चय। ५ किसी विशेष कार्य के लिए इकट्ठा किया जानेवाला धन। निधि। (फड)

निचयन—पु० [स० नि√चि+ल्युट्—अन] १ निचय अर्थात् किसी काम के लिए धन जमा या इकट्ठा करने की क्रिया या भाव। २ किसी के हिसाब या खाते मे उसकी ओर से या उसके लिए कुछ धन जमा करना। (फडिग)

निचर†—वि० =निश्चल।

निचल†—वि० =निश्चल।

निचला—वि० [हिं० नीचा] [स्त्री० निचली] अवस्था, पद, स्थिति आदि के विचार से निम्न स्तर पर या नीचे होनेवाला। नीचेवाला। जैसे—(क) मकान का निचला (अर्थात् नीचेवाला) खड। (ख) निचला अधिकारी।

†वि० [स० निश्चल] जो निश्चल या शात भाव से एक जगह बैठ न सके। चचल और चिलबिल्ला।

क्रि० वि० निश्चल और शात भाव से। जैसे—बहुत हो चुका, अब निचले बैठो।

निचाई—स्त्री० [हिं० नीचा] १ निम्न स्थल पर होने की अवस्था या भाव। २ निम्न स्थल की ओर का विस्तार।

*स्त्री० नीचता।

निचान—स्त्री० [हिं० नीचा+आन (प्रत्य०)] १. नीचेवाले स्तर पर होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ ऐसी भूमि जो अपेक्षया नीचे की ओर हो। ३. भूमि आदि की नीचे की ओर होनेवाली प्रवृत्ति। ढाल।

निचाय—पु० [स० नि√चि+घञ्] ढेर। राशि।

निचिंत†—वि० [स्त्री० निचितता] निश्चित।

निचिकी—स्त्री० [स० नि√चि+डि=निचि=शिरोभाग, निचि√कै (शोभा)+क—ङीष्] अच्छी गाय।

निचित—भू० कृ० [स० नि√चि+क्त] १ ढका या छाया हुआ। २ इकट्ठा किया हुआ। सचित। ३ पूरित। व्याप्त। ४ बनाया हुआ। निर्मित। ५ सकीर्ण।

निचुड़ना—अ० [हिं० निचोडना का अ० रूप] आर्द्र या रस से भरी वस्तु मे से तरल अश का दबाकर निकाला जाना। निचोडा जाना।

निचुल—पु० [स० नि√चुल् (ऊँचा होना)+क] १ बेत। २ हिज्जल नामक वृक्ष। ३ ओढने या ढकने का वस्त्र। आच्छादन।

निचुलक—पु० [स० निचुल+कन्] १ युद्ध के समय छाती पर बाँधा जानेवाला लोहे का तवा। २ छाती ढकने का कपडा।

निचेत—वि० =अचेत।

निचै†—पु० =निचय।

निचोड़—पु० [हिं० निचोडना] १ निचोडने की क्रिया या भाव। २ वह अश जो निचोडने पर निकले। ३ किसी लबी-चौडी बात का सक्षिप्त और सार अश। साराश।

निचोड़ना—स० [हिं० नि+स० च्यवन] १ आर्द्र वस्तु का जल अथवा रस से भरी हुई वस्तु मे से उसका तरल अश या रस निकालने के लिए उसे ऐंठना, घुमाना, दबाना या मरोडना। जैसे—गीली धोती निचोडना, आम का रस निचोडना। २ उक्त प्रकार से पीडित करते हुए किसी चीज का सार भाग निकालना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी की जमा-पूँजी या सार-भाग पूरी तरह से लेकर उसे खोखला या नि सार करना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।

निचोना†—स० =निचोडना।

निचोर†—पु० १ =निचोड। २ =निचोल।

निचोरना†—स० =निचोडना।

निचोल—पु० [स० नि√चुल्+घञ्] १ शरीर ढाँकने का कपडा। आच्छादन। २ स्त्रियो की ओढ़नी या चादर। ३ उत्तरीय वस्त्र। ४ स्त्रियो का घाघरा या लहँगा। ५ कपडा। वस्त्र।

निचोलक—पु० [स० निचोल√कै (मालूम पडना)+क] १ प्राचीन भारत का कचुकी या चोली नाम का पहनने का कपडा जो अगे की तरह का होता था। २ बख्तर। सन्नाह।

निचोवना†—स० =निचोडना।

निचौहाँ—वि० [हिं० नीचा+औहाँ (प्रत्य०)] १ नीचे की ओर झुका हुआ या प्रवृत्त। नत। नमित। २ जिसकी नीचे की ओर जाने की प्रवृत्ति हो।

निचौहैं—अव्य० [हिं० निचौहाँ] नीचे की ओर।

निछंद—वि० [स० निश्छद] स्वच्छद।

निछवि—स्त्री० [स० नि-छवि, ब० स०] तिरहुत।

पु० एक प्रकार के व्रात्य क्षत्रिय।

निछह*—अव्य० [?] १ पूरी तरह से। २ एक-दम से। बिलकुल।

निच्छिवि—पु० [स०] एक वर्ण-सकर जाति।

निछक्का—पु० [स० निस्+चक्र =मडली] १ ऐसी स्थिति जिसमे परम आत्मीय के सिवा और कोई पास न हो। २ एकात या निर्जन स्थान।

निछत्र—वि०[सं० निश्छत्र]१ जिसके सिर पर छत्र न हो। छत्र-हीन। बिना छत्र का। २ जिसके पास राज्य अथवा उसका कोई चिह्न न हो या न रह गया हो।
वि०[स० नि क्षत्र] जिसमे या जहाँ क्षत्रिय न रह गये हो। क्षत्रियो से रहित।

निछद्म†—पु० दे० 'निछक्का'।

निछनियाँ*—क्रि० वि० निच्छत।

निछल†—वि०—निश्छल।

निछला†—वि०—निच्छल (निश्छल)।
वि०[?]निरा। खालिस।

निछावर—स्त्री० [स० न्यास+अवर्त =न्यासावर्त, मि० अ० निसार] १ किसी के गुण, रूप, सुख-समृद्धि आदि को सुरक्षित रखने की कामना से तथा उसे नजर आदि के दूषित प्रभावो से बचाने के लिए उसके ऊपर से कोई चीज घुमाकर उत्सर्ग करना। २ इस प्रकार उत्सर्ग की हुई वस्तु।
विशेष—वस्तु के सिवा ऐसे प्रसगो मे स्वय अपने आप को अथवा अपने प्राण को निछावर करने के भी प्रयोग होते है।

निछावरि†—स्त्री० -निछावर।

निछोह—वि० =निछोही।

निछोही—वि०[हि० नि+छोह]१ जिसे किसी के प्रति छोह या प्रेम न हो। निर्मम। २ निर्दय। निष्ठुर।

निज—वि०[स० नि √जन् (उत्पत्ति)+ड]१ किसी की दृष्टि से स्वय उसका।
पद—निज का -निजी।
२ प्रधान। मुख्य। ३ ठीक। यथार्थ।
अव्य० १ निश्चित रूप से। २ पूरी तरह से। ३. विशेष रूप से। ४ अत मे। उदा०—आई उघरि कनक कलई सी, दे निज गए दगाई।—सूर।

निजकाना—अ०[फा० नजदीक] नजदीक या निकट पहुँचना।

निजकारी—स्त्री०[हि० निज+कर]१ ऐसी फसल जिसका कुछ अश दूसरो को बाँटना भी पडता हो। २ वह जमीन जिसमे उत्पन्न वस्तु का कुछ अश लगान के रूप मे लिया या दिया जाता था।

निजता—स्त्री०[स० निज+तल—टाप्]'निज' का भाव। निजत्व।

निजन†—वि० निर्जन (जन-रहित)।

निजरि†—स्त्री० नजर।

निजा—पु०[अ० निजाअ] झगडा। विवाद।

निजाई—वि०[अ०] जिसके विषय मे दो पक्षो मे कोई झगडा या विवाद चल रहा हो। जैसे—निजाई-जमीन, निजाई-जायदाद।

निजात—स्त्री० -नजात (छुटकारा या मोक्ष)।

निजाम—पु०[अ० निजाम] १ प्रबध। व्यवस्था। २ प्रबध या व्यवस्था का क्रम। ३ किसी प्रकार का चक्र या मडल। ४ ब्रिटिश तथा मराठा शासन-काल मे हैदराबाद (दक्षिण) के शासको की उपाधि।

निजामशाही—पु० [अ+फा०] १ निजाम का शासन। २ मध्ययुग मे, निजामाबाद आध्र मे बननेवाला एक प्रकार का बढिया कागज।

निजी—वि०[स० निज]१ किसी की दृष्टि से स्वय उससे सबध रखनेवाला। निज का। जैसे—निजी बात। २ किसी विशिष्ट वर्ग के लोगों से ही सबधित। जिससे औरो का कोई सबध न हो। जैसे—वह दोनो भाइयो का निजी झगडा है। ३ अपने अधिकार मे होनेवाला। व्यक्तिगत (सार्वजनिक से भिन्न)।

निजी सहायक—पु०[स०] वह सहायक जो किसी उच्च अधिकारी या बडे आदमी के व्यक्तिगत कार्यो मे हाथ बँटाता हो। (पर्सनल असिस्टेन्ट)

निजु—अव्य०[?] निश्चित रूप से। निश्चयपूर्वक। उदा०—निजु ये अविकारी, सब सुखकारी।—केशव।

निजू†—वि०- निजी।

निजूठा—वि०[हि० नि+जूठा] [स्त्री० निजूठी]१ (खाद्य पदार्थ) जिसे किसी ने जूठा न किया हो। २ (उक्ति, भावना या विचार) जो पहले किसी को न सूझा हो या जो पहले किसी के मुख से न निकला हो। उदा०—कवि की निजूठी कल्पना सी कोमल।

निजोर†—वि० [हि० नि+फा० जोर] जिसमे जोर या शक्ति न हो। अशक्त। दुर्बल।

निज्ज—*वि० =निज (निजी)।

निझरना—अ० [हि० नि+झरना] १ अच्छी तरह झड जाना। जैसे—पेड से फलो का निझरना। २ (किसी अवलब या आश्रय का) अगो के झड जाने के कारण रहित और शोभा रहित होना। जैसे—फलो के झड जाने के कारण पेड का निझरना। ३ सार-भाग से वचित या रहित होना। ४. अच्छी और सुखद बातो या वस्तुओ के निकल जाने के कारण उनसे रहित हो जाना। ५ पल्ला या हाथ झाडकर इस प्रकार अलग हो जाना कि मानो कोई अपराध या दोष किया ही न हो।
सयो० क्रि०—जाना।

निझाटना†—स० [हि० नि+झपटना ?] झपटकर कोई चीज किसी से ले लेना।

निझोटना†—स०—निझाटना।

निझोल†—पु०[हि० नि+झोल] हाथी का एक नाम।
पु०[हि० नि+झूल] वह जिस पर झूल पडी हो अर्थात् हाथी।

निटर—वि०[देश०]१ (भूमि) जो उपजाऊ न हो। २ अशक्त। बेदम। ३ मृत।

निटल—पु० [स० नि√टल् (बेचैन होना)+अच्] मस्तक। माथा।

निटलाक्ष—पु०[स० निटल-अक्षि, ब०स०] महादेव। शकर।

निटिया†—पु०[हि० नाटा?] एक तरह का छोटे कद का बैल।

निटिलाक्ष—पु० =निटलाक्ष।

निटोल—वि०[हि० नि+टोल] जो अपने टोल (जत्थे या झुड) से अलग हो गया हो।
†पु० -टोला (महल्ला)।

निट्ठ, निट्ठि*—अव्य०[हि० नीठि] ज्यो-त्यो करके। कठिनाई से।

निठ, निठि—अव्य० =निट्ठ।

निठल्ला—वि०[हि० उप० नि =नही+टहल =काम या हि० ठाला?] १ (व्यक्ति) जिसके हाथ मे कोई काम-धधा या रोजगार न हो। प्राय खाली बैठा रहनेवाला। २ समय बिताने के लिए जिसके पास कोई काम या साधन न हो।
क्रि० प्र०—बैठना।

निठल्लू†—वि०=निठल्ला।

निठाला†—पु०=ठाला।

निठुर—वि०[सं० निष्ठुर] [भाव० निठुरई, निठुरता] जिसके हृदय मे दया, प्रेम, सहानुभूति आदि कोमल या मधुर भाव बिलकुल न हों। जिसे दूसरो के कष्ट, पीडा आदि की अनुभूति न होती हो। कठोर-हृदय। निष्ठुर।

निठुरई†—स्त्री०=निठुरता (निष्ठुरता)।

निठुरता†—स्त्री० [हिं० निठुर+सं० ता (प्रत्य०), असिद्ध रूप] निठुर अर्थात् कठोर हृदय होने की अवस्था या भाव। निष्ठुरता।

निठुराई—स्त्री०=निठुरई (निष्ठुरता)।

निठुराव†—पु०=निठुरई (निष्ठुरता)।

निठौर—वि०[हिं० नि+ठौर] जिसका कोई ठौर या ठिकाना न हो।
पु० १ अनुचित या बुरा स्थान। २ जोखिम या सकट का स्थान।

निडर—वि०[हिं० नि+डर] [भाव० निडरपन]१ जो डरता या भय-भीत न होता हो। जिसे किसी आदमी या बात से कुछ भी डर न लगता हो। निर्भय। २ साहसी। ३. जो बडो के समक्ष धृष्टतापूर्ण आचरण करता हो। ढीठ।
पु० निर्भयता।

निडरपन(ा)—पु०[हिं० निडर+पन (प्रत्य०)] निडर होने की अवस्था या भाव।

निडीन—पु० [सं० नि√डी (उडना)+क्त] ऊपर से नीचे की ओर आना।

निडै—अव्य०[हिं० नियर] निकट। समीप।

निढाल—वि०[हिं० नि+ढाल—गिरा हुआ] १ अधिक चलने या परिश्रम करने के फलस्वरूप जिसके अग चूर-चूर हो गये हो। बहुत अधिक थका हुआ। २ जो विफल मनोरथ होने पर उत्साह-हीन हो गया हो।

निढिल—वि०[हिं० नि+ढीला]१ चुस्त। जो ढीला न हो। कसा या तना हुआ। २ जो ढिलाई न करता हो। चुस्त। ३ कडा। कठोर।

नितंत—वि०[सं० निद्रित] १ सोया हुआ। २ बसा हुआ। ३ उपस्थित। वर्तमान। उदा०—सबकर करम गोसाई जानइ जो घट घट महँ नितत।—जायसी।
अव्य०=नितात।

नितब—पु०[सं० नि√तम्ब् (पीडित करना)+अच्] १ चूल्हे (टाँग और कमर का जोड) के ऊपर का वह उभरा हुआ पिछला मांसल और प्राय गोलाकार भाग जिसे टेककर जमीन आदि पर आदमी बैठते है। चूतड। २ कधा। ३ तट। तीर। ४. पर्वत का ढालुवाँ किनारा।

नितंबिनी—स्त्री०[सं० नितम्ब+इनि—ङीप्] सुन्दर नितबोवाली स्त्री। सुन्दरी।

नितंबी (बिन्)—वि०[सं० नितम्ब+इनि][स्त्री० नितबिनी] बड़े तथा भारी नितबोवाला।

नित*—अव्य०=निमित्त। उदा०—नित सेवा नित धावैं, कै परनाम।—नूर मोहम्मद।
†अव्य०=नित्य।

नितराम्—अव्य०[सं० नि+तरप्, अम्]१ सदा। हमेशा। निरतर। २ अवश्य।

नितल—पु०[सं० नि+तल, ब०स०] पुराणानुसार पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोको मे पहला लोक।

नितांत—वि०[सं० नि√तम् (चाहना)+क्त, दीर्घ]१ बहुत अधिक। २ हद दर्जे का। असाधारण। ३ बिलकुल।

निति*—अव्य०=नित्य।

नितह*—अव्य०=नित्य।

नित्य—वि०[सं० नि+त्यप्] [भाव० नित्यता] जो निरतर या सदा बना रहे। अविनाशी। शाश्वत।
अव्य० १. प्रतिदिन। हर रोज। २ हर समय। सदा। हमेशा।

नित्य-कर्म (न्)—पु०[कर्म०स०]१ वह काम जो प्रतिदिन करना पडता हो। रोज का काम। २. वे धार्मिक कृत्य जो प्रतिदिन आवश्यक रूप से किये जाते हो। जैसे—तर्पण, पूजन, सध्या, वदन आदि।

नित्य-क्रिया—स्त्री० दे० 'नित्य-कर्म'।

नित्य-गति—वि०[ब०स०] जो सदा गतिशील रहता हो।
पु० वायु। हवा।

नित्यता—स्त्री०[सं० नित्य+तल्—टाप्] नित्य अर्थात् शाश्वत होने या सदा वर्तमान रहने की अवस्था या भाव।

नित्यत्व—पु०[सं० नित्य+त्व] दे० 'नित्यता'।

नित्यदा—अव्य०[सं० नित्य+दाच्] सदा से।

नित्य-नर्त—पु० [ब० स०] महादेव। शकर।

नित्य-नियम—पु०[कर्म०स०] ऐसा निश्चित या नियत नियम जिसका पालन प्रतिदिन करना पडता हो या किया जाता हो।

नित्य-नैमित्तिक-कर्म (न्)—पु०[कर्म०स०] नित्य अर्थात् नियमित रूप से तथा किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के निमित्त किये जानेवाले सब कर्म।

नित्य-प्रति—अव्य० [सं० अव्य०स०] प्रतिदिन। हररोज।

नित्य-प्रलय—पु०[कर्म०स०] वेदात के अनुसार जीवो की नित्य होती रहनेवाली मृत्यु।

नित्य-बुद्धि—वि०[ब०स०] (व्यक्ति) जो यह समझता हो कि हर चीज नित्य या शाश्वत है।

नित्य-भाव—पु०[ष०त०] दे० 'नित्यता'।

नित्य-मित्र—पु०[कर्म०स०] नि स्वार्थ-भाव से सदा मित्र बना रहनेवाला व्यक्ति। शाश्वत मित्र।

नित्य-मुक्त—पु०[कर्म०स०] परमात्मा।

नित्य-यज्ञ—पु०[मध्य०स०] प्रतिदिन का कर्तव्य यज्ञ। जैसे—अग्निहोत्र।

नित्य-यौवना—वि० स्त्री०[सं०] (स्त्री) जिसका यौवन सदा बना रहे। चिरयौवना।
स्त्री० द्रौपदी।

नित्यर्तु—वि०[नित्य-ऋतु, ब०स०]१ जो सब मौसमो मे और सदा बना रहे। २. निरंतर अपनी ऋतु मे होनेवाला।

नित्यशः (शस्)—अव्य० [सं०नित्य+शस्] १. प्रतिदिन। रोज। नित्य। २. सदा। सर्वदा।

नित्य-संबंध—पुं० [कर्म०स०]१ दो वस्तुओ मे परस्पर होनेवाला नित्य

या स्थायी संबध। २ व्याकरण मे, दो शब्दो का वह पारस्परिक सबध जिससे वाक्याशो मे दोनो शब्दो का आगे-पीछे आना अनिवार्य तथा आवश्यक होता है। जैसे—'जब मैं कहूँ तब तुम वहाँ जाना।' मे 'जब' और 'तब' मे नित्य-सबध है।

नित्य-संबंधी (धिन्)—वि० [स० नित्यसबध+इनि] (व्याकरण मे ऐसे शब्द) जिनमे परस्पर नित्य-सबध हो।

नित्यसम—पु० [तृ०त०] तर्क या न्याय मे, यह दूषित सिद्धांत कि सभी चीजें वैसी ही या वही बनी रहती है। (इसकी गणना २४ जातियो अर्थात् दूषित तर्कों मे की गई है।)

नित्या—स्त्री० [स० नित्य+टाप्] १ पार्वती। २ मनसादेवी। ३ एक शक्ति का नाम।

नित्याचार—पु० [नित्य-आचार, कर्म०स०] ऐसा आचार या सदाचार जिसके निर्वाह या पालन मे कभी त्रुटि न हुई हो।

नित्यानंद—पु० [स० नित्य-आनन्द, कर्म०स०] मन मे निरन्तर या सदा बना रहनेवाला आनंद, जो सर्वश्रेष्ठ कहा गया है।

नित्यानध्याय—पु० [नित्य-अनध्याय, कर्म० स०] धर्मशास्त्र के अनुसार ऐसी स्थिति जिसके उपस्थित होने पर सदा अनध्याय रखना आवश्यक है। मनु के अनुसार—पानी बरसते समय, बादल के गरजने के समय अथवा ऐसे ही अन्य अवसरों पर सदा अनध्याय रखना चाहिए।

नित्यानित्य—वि० [नित्य-अनित्य, द्व०स०] नित्य और अनित्य। नश्वर और अनश्वर।

नित्यानित्य वस्तु-विवेक—पु० [म०] ऐसा विवेक जिसके फल-स्वरूप ब्रह्म, सत्य और जगत् मिथ्या भासित होता है।

नित्याभियुक्त—वि० [नित्य-अभियुक्त, कर्म०स०] (योगी) जो देह की रक्षा के निमित्त हल्का और थोडा भोजन करता हो।

नित्योद्युत—पु० [स०] एक बोधिसत्व।

नियंब (थभ)†—पु० स्तभ (खभा)।

नियरना—अ० [स० निस्तरण] तरल पदार्थ का ऐसी स्थिति मे रहना या होना कि उसमे घुली या मिली हुई चीज अपने भारीपन के कारण उसके नीचे या तल मे बैठ जाय।

निथरवाना—स० [हिं० निथारना का प्रे०] किसी को कुछ निथारने मे प्रवृत्त करना।

निथार—पु० [हिं० निथारना] १ निथरने की क्रिया या भाव। तरल पदार्थ मे घुली या मिली हुई वस्तु का नीचे बैठना। २ इस प्रकार नीचे या तल मे बैठी हुई कोई वस्तु। ३ वह तरल पदार्थ जिसमे घुली या मिली हुई चीज नीचे तल मे बैठ गई हो।

निथारना—स० [हिं० निस्तारण] कोई तरल पदार्थ इस प्रकार स्थिर करना कि उसमे घुली या मिली हुई कोई वस्तु उसके तल मे बैठ जाय। (डिकैन्टेशन)

निथालना†—स० =निथारना।

निंद—वि० [स०√निंद (निंदा करना)+क, नलोप] निंदा करनेवाला। पु० [स०] विष।

निदई†—वि०=निर्दय।

निदद्रु—वि० [स० नि-दद्रु, ब०स०] जिसे दाद रोग न हुआ हो।

निदय—वि० [स० निर्दय] १ जिसमे दया न हो। दयाहीन। २. निष्ठुर। निर्दय। उदा०—निदय हृदय मे हूक उठी क्या।—प्रसाद।

निदरना—स० [हिं० निरादर] १ अनादर या तिरस्कार करना। २. तुच्छ या हेय ठहराना या सिद्ध करना।
स० [हिं० नि+दलन] १ दलन करना। २ पराजित करना।

निदरसना—अ० [हिं० नि+दरसना] अच्छी तरह दिखलाई देना या पड़ना।
स० अच्छी तरह देखना।

निदर्शक—वि० [स० नि√दृश् (देखना)+णिच्+ण्वुल्—अक] निदर्शन करने अर्थात् दिखाने या प्रदर्शित करनेवाला।

निदर्शन—पु० [स० नि√दृश+ल्युट्—अन्] १ दिखाने या प्रदर्शित करने की क्रिया या भाव। २ किसी कथन या सिद्धान्त की पुष्टि के लिए उदाहरण-स्वरूप कही जानेवाली ऐसी बात जो बहुधा कल्पित या स्वरचित परन्तु सादृश्य के तत्त्व या भाव से युक्त होती है। ३ भौतिक विज्ञान, रेखागणित आदि मे किसी मूल कथन को सिद्ध करने के लिए खीची या बनाई जानेवाली आकृतियाँ। (इलस्ट्रेशन, उक्त दोनो अर्थों मे)

निदर्शना—स्त्री० [स० नि√दृश+णिच्+ल्यु—अन, टाप्] साहित्य मे, एक अलंकार जिसमे उपमान और उपमेय मे सादृश्य का आरोप करके इस प्रकार सबध स्थापित किया जाता है कि दोनो मे बिंब-प्रतिबिंब का भाव प्रकट होता है। जैसे—यह मुख चद्रमा की शोभा धारण कर रहा है।

निदलन—पु० =निर्दलन।

निदहना—स० [स० निदहन] जलाना।
अ० जलना।

निदाघ—पु० [स० नि√दह् (जलाना)+घञ्] १ गरमी। ताप। २ धूप। ३ रोग का निदान।

निदान—पु० [स० नि√दा (देना)√दो (छेदन)+ल्युट्—अन] १ किसी क्रिया का कारण विशेषत कोई मूल और प्रमुख कारण। २ चिकित्सा-शास्त्र मे, यह निश्चय करना कि (क) रोगी को कौन रोग है। और (ख) इस रोग का मूल और प्रमुख कारण क्या है। (डायग्नोसिस) ३ उक्त विषय की विद्या या शास्त्र। निदानशास्त्र। (इटियॉलाजी) ४ अत। अवसान। ५ घर। ६ स्थान। जगह।
अव्य० १ अत में। २ इसलिए।

निदान-गृह—पु० [ष०त०] वह चिकित्सालय, जहाँ रोगियो के रोगो का निदान होता या पहचान की जाती है। (क्लीनिक)

निदानज्ञ—पु० [स० निदान√ज्ञा (जानना)+क] वह चिकित्सक जो निदान-शास्त्र का ज्ञाता हो, और फलत रोगो का ठीक निदान करता हो। (पैथालोजिस्ट)

निदान-शास्त्र—पु० [ष० त०] वह शास्त्र जिसमे रोगो के निदान या पहचान का विवेचन होता है। (इटियॉलोजी)

निदारा*—वि० [स० निर्दार] जिसकी दारा अर्थात् पत्नी न हो। बिन-ब्याहा हुआ या रँडुआ।

निदारुण—वि० [स० नि-दारुण, प्रा० स०] १ घोर और भयानक या भीषण। २ दुसह। ३ निर्दय। निष्ठुर।

निदाह—पु० =निदाघ।

निदिग्ध—वि० [सं० नि√दिह् (उपचय)+क्त] छोपा या लीपा हुआ।

निदिग्धा—स्त्री०[स० निदिग्ध+टाप्] इलायची।

निदिग्धिका—स्त्री०[स० निदिग्धा+कन्, ह्रस्व]=निदिग्धा।

निदिध्यास—पु०[स० नि√ध्यै (चिन्तन)+सन्+घञ्]=निदिध्यासन।

निदिध्यासन—पुं०[स०नि√ध्यै+सन+ल्युट्—अन्]१. अनवरत चिंतन। २ निरंतर या सदा किसी का स्मरण करना।

निदिया†—स्त्री०=निंदिया (नीद)।

***निदिष्ट**—वि०=निर्दिष्ट।*

निदेश—पु० [स० नि√दिश् (बताना)+घञ्]१ दे० 'निर्देश'। २ शासन। ३ किसी आज्ञा, नियम, निश्चय आदि के सबध मे लगाई हुई कोई शर्त या बधन। (प्रॉविजन) ४ उक्ति। कथन। ५ बात-चीत। ६ पडोस। ७ सान्निध्य।

निदेशक—पु० [स०] वह जो दूसरो को कोई काम कैसे, कहाँ और कब करने के सबध मे सूचनाएँ या आदेश देता हो। (डाइरेक्टर)

निदेशालय—पु० [स] निदेशक का कार्यालय।

निदेशिनी—स्त्री०[स० नि√दिश्+ल्युट्—अन, ङीप्] दिशा।

निदेशी (शिन्)—वि०[स० नि√दिश्+णिनि]निर्देशक। (दे०)

निदेष्टा (ष्टृ)—पु०[स० नि√दिश्+तृच]निर्देशक। (दे०)

निदेस—पु०=निर्देश।

निदोष—वि०=निर्दोष।

निद्धि†—स्त्री० =निधि।

निद्र—पु०[स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र जिसे चलाने पर शत्रुओ को नीद आ जाती थी।

निद्रा—स्त्री०[स०√निद+रक्, नलोप टाप्] प्राणियो की वह स्थिति जिसमे वे सुस्ताने तथा आरोग्य लाभ करने के निमित्त प्रकृतिश कुछ समय तक चुपचाप निश्चेष्ट होकर पडे रहते है। नीद। (साहित्य मे यह एक सचारी भाव माना गया है।)

निद्रा-गति—स्त्री०[स०त०] एक प्रकार का रोग जिसमे रोगी निद्रा की अवस्था मे ही उठकर चलने-फिरने या कोई काम करने लगता है। (स्लीप वाकिंग) २ वनस्पतियां आदि का निद्रित अवस्था मे भी बराबर बढते या इधर-उधर होते रहना। (स्लीपिंग मूवमेन्ट)

निद्राण—वि०[स० नि√द्रा (सोना)+क्त, तस्य न, णत्व]१ जो सो रहा हो। २ मुदा हुआ। मीलित।

निद्रायमाण—वि०[स० नि√द्रा+यक्+शानच्, मुक्] जो निद्रित अवस्था मे हो। सोया हुआ।

निद्रालस—वि०[निद्रा-अलस, तृ० त०] १ जो नीद आने के कारण शिथिल हो रहा हो। २ गहरी नीद मे सोया हुआ।

निद्रालु—वि०[स० नि√द्रा+आलुच्]१ जो निद्रा मे हो या सो रहा हो। २. जिसे बहुत नीद आ रही हो। ३ जिससे नींद आने का परिचय मिल रहा हो। जैसे—निद्रालु आँखें।

स्त्री० १. वन-तुलसी। २ बैंगन। ३ नली नामक गध-द्रव्य।

निद्रासंजन—पुं०[स० निद्रा-समजन् (उत्पत्ति)+णिच्+ल्यु ट्-अन्] कफ निकलने का रोग (जिसके कारण बहुत नीद आती है)।

***निद्रित**—भू० कृ० [स० निद्र+क्त] जो सोया या निद्रा मे भरा हो।*

निधड़क—क्रि० वि०[हिं० नि+धडक]=बेधड़क।

निधन—पु०[स० नि√धा (धारण)+क्यु—अन] १ नाश। २ मरण। मृत्यु। (प्राय बडे आदमियो के सबध मे प्रयुक्त) जैसे—महामना मालवीय जी का निधन। ३ जन्म-कुण्डली मे लग्न से आठवाँ स्थान। (फलित ज्यो०) ४ जन्म-नक्षत्र से सातवाँ, सोलहवाँ और तेइसवाँ नक्षत्र। ५ कुल। वश। ६ कुल का अधिपति। ७ विष्णु।

वि०[स०] निर्धन। (दे०)

निधनक्रिया—स्त्री०[ष०त०]१. शवदाह। २ अन्त्येष्टि।

निधनपति—पु०[ष० त०] प्रलय करनेवाले, शिव।

निधनी—वि०[हिं० नि+धनी] जिसके पास धन न हो। निर्धन। उदा०—धन मुझ निधनी का लोचनो का उजाला।—हरिऔध।

निधरक—क्रि० वि०=निधडक (बेधडक)। उदा०—निधरक तूने ठुकराया तब, मेरी टूटी मृदु प्याली।—प्रसाद।

निधातव्य—वि०[स० नि√धा+तव्यत्] जिसका निधान किया जा सके।

निधान—पु०[स० नि√धा +ल्युट्—अन]१ रखने या स्थापित करने की क्रिया या भाव। स्थापन। २ सुरक्षित रखना। ३ वह पात्र या स्थान जिसमे कुछ स्थापित या स्थित हो। आधार। आश्रय। जैसे—दया-निधान। ४ भडार। ५ निधि। ६ वह स्थान, जहाँ कोई पहुँचकर नष्ट या समाप्त होता हो।

निधि—स्त्री०[स० नि√धा+कि]१ वह आधार, पात्र या स्थान जिसमे कोई गुण या पदार्थ व्याप्त अथवा स्थित हो। आश्रय-स्थान। जैसे—दयानिधि, गुणनिधि, क्षीरनिधि, जलनिधि। २ जमीन मे गडी हुई धनराशि। ३ किसी विशेष कार्य के लिए अलग रखा या जमा किया हुआ धन। जैसे—नागर-निधि। ४ कुबेर के नौ रत्न, यथा—पद्म, महापद्म, शख, मकर, कच्छप, मुकुद, कुद, नील और बर्च्च। ५ उक्त के आधार पर नौ की सख्या। ६ विष्णु। ७ शिव। ८ जीवक नामक ओषधि। ८ नली नामक गधद्रव्य।

निधिनाथ—पु०[ष०त०]१ निधियो (जो गिनती मे नौ हैं) के स्वामी, कुबेर। २ वह व्यक्ति जिसकी देख-रेख मे कोई निधि, सपत्ति या कुछ वस्तुएँ रखी गई हो।

निधिप—पु०[स० निधि √पा (रक्षा)+क] निधिनाथ। (दे०)

निधि-पति—पु०[ष०त०] निधिनाथ। (दे०)

निधिपाल—पु०[निधि √पाल् (रक्षा)+णिच्+अच्] निधिनाथ। (दे०)

निधिबन—पु०[स०] वृन्दावन के पास का एक कुज। उदा०—निधिबन करि दडौत, बिहारी कौ मुख जोवैं।—भगवत रसिक।

निधीश, निधीश्वर—पु०[स० निधि-ईश, ष०त०, निधि-ईश्वर, ष०त०] निधिनाथ। (दे०)

निधुवन—पु० [स० नि-धुवन, ब०स०]१ मैथुन। २ केलि-कर्म। ३. हसी-ठट्ठा। परिहास। ४. कप।

निधेय—वि०[स० नि√धा+यत्] १ निधान अर्थात् रखे या स्थापित किये जाने के योग्य। २ (धन या पदार्थ) जो निधान (या धरोहर) रूप मे कहीं रखा जा सके या रखा जाने के योग्य हो। ३ स्थापित किये जाने के योग्य।

***निध्यात**—भू० कृ० [स० नि√ध्या(चिन्तन)+क्त] जिस पर मनन या विचार किया गया हो।*

निध्यान—पुं० [सं० नि√ध्या+ल्युट्—अन्] १ ध्यान करना। २ देखना। ३ दृश्य। ४ निदर्शन।
निध्रुव—पु० [स०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।
निध्वान—पु० [स० नि√ध्वन् (शब्द)+घञ्] ध्वनि। शब्द।
निनद*—पु० [स० नि√नद् (शब्द)+अप्]=निनाद (शब्द)।
निनदी—वि०=निनादी।
निनयन—पु० [सं० नि√नी (ले जाना)+ल्युट्—अन] १ सपादित करना। २. जल छिडकना। ३ अभिषेक करना।
निनरा*—वि० [स्त्री० निनरी]=न्यारा।
निनर्द—पु० [स० नि√नर्द् (शब्द)+घञ्] वेद के मत्रो का विशेष प्रकार का उच्चारण।
निनाद—पु० [स० नि√नद्+घञ्] शब्द, विशेषत उच्च या घोर शब्द।
निनादना— स० [स० निनाद] उच्च या घोर शब्द करना।
निनादित—वि० [स० निनाद+इतच्] १ शब्द से भरा हुआ। गुजायमान। २ शब्द करता हुआ। शब्दित।
पु० शब्द।
निनादी (दिन्)—वि० [स० निनाद+इनि] [स्त्री० निनादिनी] १ जिसमे से शब्द निकल रहा हो। २ जो शब्द उत्पन्न कर रहा हो।
निनान*—पु०, अव्य०=निदान।
निनानबे—वि०, पु०=निन्यानबे।
निनाया†—पु० [?] खटमल।
निनार—वि० =निनारा (न्यारा)।
निनारना†—स० =निकालना (अलग करना)।
निनारा†—वि० [हिं० निनारना निकालना] [स्त्री० निनारी] १ अलग किया या निकाला हुआ। २ न्यारा।
निनावाँ—पु० [?] एक रोग जिसमे जीभ, तालू आदि मे छोटे छोटे-दाने निकल आते है तथा जिनमे फरफराहट और पीडा होती है।
वि० [हिं० नि+नाँव (नाम)] १ जिसका कोई नाम न हो। बेनाम। २ जिसका नाम अमागलिक या अशुभ होने के कारण न लिया जाता हो या न लिया जाय। (स्त्रियों मे प्रचलित भूत-प्रेत, साँप आदि के लिए साकेतिक शब्द।)
निनौना†—स०=नवाना (झुकाना)।
निनौरा†—पु०=ननिहाल।
निन्यानबे—वि० [स० नवनवति] जो गिनती मे नब्बे से नौ अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९९।
मुहा०—निन्यानबे के फेर मे आना या पडना=धन या रुपया कमाने, जमा करने या बढाने की धुन मे होना। धन बढाने की चिंता मे पडना।
विशेष—एक कहानी है कि किसी अपव्ययी को मितव्ययी बनाने के उद्देश्य से किसी ने निन्यानबे रुपए दे दिये थे। उसने सोचा कि इसमे एक और रुपया मिलाकर इसे पूरा सौ रुपया कर लेना चाहिए। तब से उसे धन एकत्र करने का चस्का लग गया और वह धनी हो गया। इसी कहानी के आधार पर यह मुहा० बना है।
निन्यारा†—वि० =न्यारा।
निन्हियाना†—अ० [अनु० ना ना] बहुत अधिक दीनता प्रकट करना। गिड़गिडाना।

निपग—वि० [स० नि-पगु] १ पगु। २ निकम्मा।
निप—पु० [स० नि√पा (पीना)+क] १ कलस। २ [नीप पृषो० सिद्धि] कदम (वृक्ष)।
निपज—स्त्री० [हिं० उपज का अनु०] वह सारा माल जो किसी कारखाने मे कुछ निश्चित समय के अदर बनकर बिक्री के लिए तैयार होता है। (आउट-पुट)
निपजना—अ० [स० निष्पद्यते, प्रा० निपज्जइ] १ उत्पन्न होना। उपजना। २ पुष्ट होते हुए बढना। ३ बनकर तैयार होना।
निपजी—स्त्री० [हिं० निपजना] १ लाभ। मुनाफा। २ दे० 'उपज'।
निपट—स्त्री० [हिं० निपटना] निपटने की अवस्था, क्रिया या भाव।
अव्य० [हिं० नि+पट] १ जिसमे किसी एक साधारण तत्त्व या अस्तित्व के सिवा और कुछ भी गुण या विशेषता न हो। निरा। जैसे—निपट गॅवार या देहाती। २ एकदम से। सरासर। बिलकुल। जैसे—निपट झूठ बोलना। ३ बहुत। अधिक नितात।
निपटना—अ० [स० निवर्त्तन, प्रा० निबट्टना, पु० हि० निबटना] १ कार्य आदि के सबध मे, पूर्ण और सपन्न होना। २ (व्यक्ति का) कोई काम पूर्ण या सपन्न करने के उपरात निवृत्त होना। ३ शौच, स्नान आदि नित्य के आवश्यक कार्यों से निवृत्त होना। (बाजारू) ४ झगडे, विवाद आदि का निपटारा होना। ५ निपटारा करने के लिए किसी से भिडना, जूझना या लडना। जैसे—तुम रहने दो, हम उनसे निपट लेगे। ६ किसी चीज का खतम या समाप्त होना। जैसे—दीए का तेल निपटना।
पद—निपटी रकम—ऐसा व्यक्ति जो विशेष समर्थ या काम का न रह गया हो।
७ ऋण, देन आदि का चुकता होना।
निपटाना—स० [हिं० निपटना का स०] १ कार्य आदि पूर्ण या सपादित करना। २ दो व्यक्तियो का अथवा परस्पर का झगडा तै या खतम करना। ३ ऋण, देन आदि चुकाना।
निपटारा—पु० [हिं० निपटना] १ निपटने या निपटाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ झगडे, विवाद आदि का ऐसा अत जिससे दोनो पक्ष सतुष्ट रहे। ३ अत। समाप्ति। ४ निर्णय। फैसला।
निपटावा†—पु० =निपटारा।
निपटेरा—पु०=निपटाना।
निपठ—पु० [स० नि√पठ् (पढना)+अप्] पाठ। अध्ययन।
निपठन—पु० [स० नि√पठ्+ल्युट्—अन] १ पढना। २ किसी की कविता या पद कठस्थ करके सुदर रूप मे पढकर लोगो को, उनके मनोविनोद के लिए सुनाना। (रेसिटेशन)
निपतन—पु० [स० नि√पत् (गिरना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निपतित] नीचे की ओर गिरना। निपात। पतन।
निपतित—भू० कृ० [स० नि√पत्+क्त] जिसका निपतन हुआ हो। गिरा हुआ।
निपत्र—वि० [सं० निष्पत्र] (पौधा या वृक्ष) जिसमे पत्ते न हों। पत्रहीन।
निपना†—अ० [स० निष्पन्न] पूरा या सपन्न होना।
†अ०=निपजना।

वि० [सं० निपुण] १. चतुर। चालाक। होशियार। २ भोला-भाला। सीधा-सादा।

निपत्ता†—वि० [सं० नि+हिं० पता] जिसका पता-ठिकाना न हो।
†वि० [सं० निष्पत्र] पत्र-हीन।

निपत्या—स्त्री० [सं० नि√पत्+क्यप्—टाप्] १ रण-क्षेत्र। युद्ध की भूमि। २ गीली, चिकनी जमीन। ३ फिसलन।

निपंगुर—वि० [हिं० नि+पगु] १ लँगडा। २ अपाहिज। पगु।

निपाक—पु० [सं० नि√पच् (पकाना)+घञ्] १ परिपक्व होना। २ पकना या पकाया जाना। ३ पसीना। ४ किसी बुरे काम का परिणाम।

निपात—पु० [सं० नि√पत्+घञ्] [वि० नैपातिक] १ नीचे गिरने की अवस्था, क्रिया या भाव। पतन। २ अध पतन। ३ विनाश। ४ मरण। मृत्यु। ५ नहाने का स्थान। स्नानागार। (कौ०) ६. भाषा-विज्ञान और व्याकरण मे, ऐसा शब्द जो व्याकरण के नियमो के अनुसार न बने होने पर भी प्राय. शुद्ध माना जाता हो। ७ अव्यय (शब्द)।
†वि० निपत्र (पत्र-हीन)।

निपातक—पु० [सं० नि-पातक प्रा० स०] दूषित या बुरा कर्म। पाप।

निपातन—पु० [सं० नि√पत्+णिच्+ल्युट्—अन] १ गिराने की क्रिया या भाव। २ ध्वस। विनाश। ३ मार डालने या वध करने की क्रिया या भाव। हत्या।

निपातना—स० [सं० निपातन] १. काट या मारकर अथवा और किसी प्रकार नीचे गिराना। २ ध्वस्त या नष्ट करना।

निपातित—भू० कृ० [सं० नि√पत्+णिच्+क्त] १ गिराया हुआ। २ नष्ट या वध किया हुआ। ३ अनियमित रूप से बना हुआ।

निपाती (तिन्)—वि० [सं० निपात+इनि] १ गिराने या फेंकनेवाला। २ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला। ३. मार गिरानेवाला।
पु० महादेव। शिव।
†वि०=निपत्र (बिना पत्तों का)।

निपान—पु० [सं० नि√पा+ल्युट्—अन] १ जल पीना। २ ऐसा गड्ढा जिसमे पानी जमा हो या जमा होता हो। ३ कूआँ। ४. दोहनी। ५ आश्रय-स्थान।

निपीड़क—वि० [सं० नि√पीड् (दुःख देना)+ण्वुल्—अक] १. पीडा देनेवाला। दुःखदायक। २ दबाने या मलने-दलनेवाला। ३ निचोडने वाला। ४. पेरनेवाला।

निपीड़न—पु० [सं० नि√पीड्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निपीडित] १ कष्ट पहुँचाने या पीडित करने की क्रिया या भाव। पीडित करना। कष्ट या तकलीफ देना। २ खूब मलना-दलना। ३ निचोडना। ४. पसेव निकालना। पसाला। ५. पेरना।

निपीड़ना†—स० [सं० निपीडन] १ खूब अच्छी तरह दबाना या मलना-दलना। २ बहुत कष्ट या तकलीफ देना। ३. निचोडना। ४ पेरना।

निपीड़ित†—भू० कृ० [सं० नि√पीड्+क्त] १ जिसका निपीडन हुआ हो। २ जिसे कष्ट पहुँचाया गया हो। पीडित। ३ जिस पर आक्रमण हुआ हो। आक्रात। ४. कुचल या दबाकर, जिसका रस निकाला गया हो। पेरा हुआ। ५. निचोडा हुआ।

निपीत—भू० कृ० [सं० नि√पा (पीना)+क्त] १ पीया हुआ। २ सोखा हुआ। शोषित।

निपीति—स्त्री० [सं० नि√पा+क्तिन्] पीने की क्रिया या भाव। पान।

निपुड़ना†—अ० [सं० निष्पुट, प्रा० निप्फुड] १ खुलना। २ उघरा होना।
स० १. खोलना। २ उघरा करना।

निपुण—वि० [सं० नि√पुण् (अच्छा कार्य करना)+क] [भाव० निपुणता] (कला, विद्या आदि मे) अनुभव, अभ्यास आदि के कारण जो कोई काम विशेष अच्छी तरह से करता हो। दक्ष। प्रवीण।

निपुणता—स्त्री० [सं० निपुण+तल्—टाप्] निपुण होने की अवस्था, गुण या भाव।

निपुणाई†—स्त्री०=निपुणता।

निपुत्र†—वि० [स्त्री० निपुत्री] दे० 'निपूता'।

निपुन†—वि० =निपुण।

निपुनई†—स्त्री०=निपुणाई (निपुणता)।

निपुनता†—स्त्री० =निपुणता।

निपुनाई—स्त्री० =निपुणता।

निपूत—वि० [स्त्री० निपूती] =निपूता।

निपूता—वि० [हिं० नि+पूत] [स्त्री० निपूती] जिसके आगे पुत्र न हो या न हुआ हो। निःसतान। (प्राय गाली के रूप मे प्रयुक्त)

निपेटा†—वि० [हिं० नि+पेट] [स्त्री० निपेटी] १. जिसका पेट खाली हो अर्थात् जिसने कुछ खाया न हो। २ भुक्खड।

निपोड़ना—स०=निपोरना।

निपोरना—स० [सं०] खोलना।

निफन—वि० [सं० निष्पन्न, प्रा० निप्फन्न] १ पूरा या समाप्त किया हुआ। २. पूरा। सब। सारा।
क्रि० वि० पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

निफरना—अ० [हिं०=निफारना का अ०] चुभकर या धँसकर इस पार से उस पार होना। छिद कर आरपार होना।
अ० [सं० नि+स्फुट] १ खुलना। २ खुल कर उघारा या स्पष्ट होना।

निफल†—वि०=निष्फल।

निफला—स्त्री० [सं० नि-फल, ब० स०, टाप्] ज्योतिषमती लता।

निफाक—पु० [अ० निफाक] १ एकता का अभाव। २ द्वेषपूर्ण या विरोधजन्य स्थिति। वैमनस्य। फूट।
क्रि० प्र०—डालना।—पडना।—होना।

निफारना†—स० [हिं० न+फारना] १ इस पार से उस पार तक छेद करना। आरपार करना। बेधना। २. इस पार से उस पार निकालना या ले जाना। ३ उद्घाटित या प्रकट करना। खोलना। ४ स्पष्ट या साफ करना।

निफालन—पु० [सं०] देखने की क्रिया या भाव। देखना।

निफोट—वि० [सं० नि+स्फुट] व्यक्त। स्पष्ट।

निबंध—पु० [सं० नि√बन्ध् (बाँधना)+घञ्] १ कोई चीज किसी के साथ जोडने, बाँधने या लगाने की क्रिया या भाव। २ अच्छी तरह गठा या बँधा हुआ पदार्थ। ३ वह जिसमे कोई चीज किसी के साथ

जोडी, बाँधी या लगाई जाय। बधन। ४ प्राचीन भारत मे, राज्य या शासन की ओर से निकलनेवाली आज्ञा या आदेश। (कौ०) ५ किसी के साथ बाँधकर रखनेवाला अनुराग या सपर्क। ६ ग्रथ, लेख आदि लिखने की क्रिया या भाव। ७ आज-कल साहित्यिक क्षेत्र मे, वह विचारपूर्ण विवरणात्मक और विस्तृत लेख जिसमे किसी विषय के सब अगो का मौलिक और स्वतन्त्र रूप से विवेचन किया गया हो। (एसे)

विशेष—हमारे यहाँ के प्राचीन साहित्यिक ऐसी व्याख्या को निबध कहते थे, जिसमे सब प्रकार के मतो का उल्लेख और गुण-दोष आदि की आलोचना या विवेचन होता था। आज-कल पाश्चात्य साहित्यशास्त्र के आधार पर उसकी व्याख्या और स्वरूप का कुछ परिमार्जन हुआ है। ८ गीत। ९ ऐसी चीज जिसे किसी दूसरे को देने का वचन दिया जा चुका हो। १० आनाह नामक रोग जिसमे पेशाब बद हो जाता है। ११ नीम का पेड।

निबधक—पु० [स० नि√बध्+ण्वुल्—अक] १ निबधन करनेवाला व्यक्ति। २ वह अधिकारी जो लेख आदि की प्रामाणिकता सिद्ध करने के लिए उन्हे राजकीय पजी मे प्रतिलिपि के रूप मे निबधित करता या लिखता है। (रजिस्ट्रार, न्याय और शासन विभाग का) ३ इसी से मिलता-जुलता वह अधिकारी जो किसी विभाग या सस्था के सब प्रकार के लेख रखता या निबधित करता है। जैसे—विश्वविद्यालय या सहयोग-समितियो का निबधक।

निबंधन—पु० [स० नि√बध्+ल्युट्—अन्] [वि० निबद्ध] १ निबध के रूप मे लाने की क्रिया या भाव। २ बाँधने की क्रिया या भाव। ३ वह जिससे कोई चीज बाँधी जाय। बधन। ४ नियमो आदि मे बाँध कर रखना। व्यवस्था। ५ कर्तव्य आदि के रूप मे होनेवाला बधन। ६ कारण। हेतु। ७ लेखो आदि के प्रामाणिक होने के लिए किसी राजकीय पजी मे लिखा या चढाया जाना। (रजिस्ट्रेशन) ८ वीणा, सारगी, सितार आदि की खूटियाँ जिनमे तार बँधे होते हैं। उपनाह। कान।

निबधनी—स्त्री० [स० निबधन+ङीप्] १ बाँधने की वस्तु। २ बेडी।

निबधी (धिन्)—वि० [सं० निबध+इनि] १ बाँधनेवाला। २ किसी के साथ जुडा हुआ। सबद्ध। ३ कारण के रूप मे रहकर कुछ करने या बनानेवाला।

पु० =निबधक।

निब—स्त्री० [अ०] लोहे आदि का वह छोटा तथा चोच के आकार का उपकरण जो कलम के अगले भाग मे लगा रहता है और जिसे स्याही मे डुबोकर लोग लिखते है।

निबकौरी—स्त्री० =निमकौडी।

निबटना—अ० =निपटना।

निबटाना†—स० =निपटाना।

निबटारा—पु० =निपटारा।

निबटाव—पु० =निपटारा।

निबटेरा—पु० =निपटारा।

निबडना—अ० =निपटना।

निबड़ा—पु० [?] एक तरह का घडा।

निबद्ध—भू० कृ० [स० नि√बध्+क्त] १ बँधा हुआ। २ रुका हुआ। निरुद्ध। ३ गुथा हुआ। गुफित। ४ कही जडा, बैठाया या किसी मे लगाया हुआ। ५ किसी पर अच्छी तरह ठहरा या लगा हुआ। जैसे—भगवान पर दृष्टि निबद्ध होना। ६ (आज-कल लेख या लेख्य) जो प्रामाणिक या यथार्थ सिद्ध करने के लिए सरकारी पजी मे विधिवत् चढवा या लिखवा दिया गया हो। जिसका निबधन हो चुका हो। (रजिस्टर्ड)

पु० ऐसा गीत जो सगीत-शास्त्र के नियमो के अनुसार हर तरह से ठीक हो और जिसमे ताल, पद, रस, समय आदि के विधानो का पूरा पालन हुआ हो।

निबर—वि० निर्बल।

निबरना—अ० [स० निवृ्त, प्रा० निबिड्ड] १ बँधी, फँसी या लगी हुई वस्तु का अलग होना। छूटना। २ एक मे मिली हुई वस्तुओ का अलग होना। ३ कष्ट, बधन आदि से मुक्त होना। उबरना। ४ समाप्त होना। ५ दूर होना। न रह जाना। ६ दे० 'निपटना'।

सयो० क्रि०—जाना।

निबर्हण—पु० [स० नि√बर्ह् (हिसा)] १ नष्ट करने की क्रिया या भाव। २ मारना। वध।

निबल—वि० [स० निर्बल] [भाव० निबलाई] १ निर्बल। दुर्बल। २ दूसरो की तुलना मे घटिया और कम मूल्य या योग्यता का।

निबह*—पु० [?] समूह। झुड। उदा०—मनहु उडगन निबह आए मिलत तम तजि द्वेषु।—तुलसी।

†पु० १ =निर्वह। २ =निबाह।

निबहना†—अ० =निभना।

निबहुर†—पु० [हि० नि+बहुरना=लौटना] ऐसा स्थान जहाँ से कोई लौटकर न आता हो। यम-द्वार।

निबहुरा—वि० [हि० नि+बहुरना] १ जो जाकर लौटा न हो। २ ऐसा, जिसका लौटकर आना अभीष्ट न हो। (गाली)

निबारना—स० [स० निवारण] निवारण करना। छोडना।

निबाह—पु० [स० निर्वाह] १ निभने या निभाने की अवस्था, क्रिया या भाव। निर्वाह। २ ऐसी स्थिति मे काम चलाना या दिन बिताना जिसमे साधारणत निश्चितता से और सुख-पूर्वक काम न चलता हो या दिन न बीतते हो। कठिनता से, परतु सहनशीलता-पूर्वक किया जानेवाला निर्वाह। ३ किसी चले आए हुए क्रम या परपरा का अथवा अपनी प्रतिज्ञा, वचन आदि का जैसे-तैसे परतु बराबर किया जानेवाला पालन। जैसे—प्रीति या बडो की चलाई हुई रीति का निबाह।

विशेष—यद्यपि आज-कल 'निबहना' और 'निबाहना' की जगह 'निभना' और 'निभाना' रूप ही अधिक प्रशस्त तथा शिष्ट-सम्मत माने जाते है, फिर भी इन क्रियाओ का भाव-वाचक रूप 'निबह' ही अधिक प्रचलित है, 'निभाव' नही।

निबाहक—वि० [स० निर्वाहक] निबाहने या निभानेवाला। निबाह करनेवाला।

निबाहना—स० [स० निर्वहण] १ निर्वाह या निबाह करना।

*२ निस्तार करना। छुड़ाना। उदा०—आजु स्वामि साँकरे निबाहौं।—जायसी। ३ दे० 'निभाना'।

निबिड़†—वि० =निविड।

निबुआ†—पु० =नीबू।

निबुकना†—अ० =निपटना।

निबेड़ना—स० [सं० निवृत्त, प्रा० निविड्ड] १ बँधी, फँसी या लगी हुई वस्तु को अलग करना। मुक्त करना। छुड़ाना। २ आपस मे मिली हुई चीजें अलग-अलग करना। छाँटना। ३ अलग या दूर करना। हटाना। ४ छोड़ना। त्यागना। ५. (काम या झगड़ा) निपटाना। ६. उलझन दूर करना। सुलझाना। ७ निर्णय या फैसला करना। झगड़ा निपटाना।

निबेड़ा—पु० [हिं० निबेडना] १ निबेडने की क्रिया या भाव। २. कष्ट, विपत्ति आदि से होनेवाला उद्धार। ३ एक मे मिली हुई चीजे चुन या छाँटकर अलग-अलग करना। ४ छोड़ देना। त्याग। ५ झगडे का निर्णय या फैसला। ६ दे० 'निपटारा'।

निबेरना—स० १ =निबेडना। २ =निपटाना।

निबेरा—पु० =निबेडा (निपटारा)।

निबेहना†—स० १ =निबेडना (निपटारा करना)। २ =निबाहना।

निबेही*—वि० [सं० निर्वेध] १ जिसका वेधन न किया जा सके। वेधरहित। २ छल-कपट आदि से रहित। उदा०—कोउ न मान मद तजेउ निबेही।—तुलसी।

निबोधन—पु० [सं० नि√बुध् (जानना)+ल्युट्—अन] १ कोई काम समझने और सीखने की अवस्था या भाव। २ [नि√बुध्+णिच्+ल्युट्—अन] कोई काम सिखलाने और समझाने की क्रिया या भाव।

निबौरी (बौली)—स्त्री० =निमकौडी (नीम का फल)।

निभ—वि० [सं० नि√भा (दीप्ति)+क] अनुरूप, तुल्य या समान प्रतीत होनेवाला। (समस्त पदों के अत मे)

पु० १ प्रकाश। २ अभिव्यक्ति। ३ धूर्ततापूर्ण चाल।

निभना—अ० [हिं० निबहना का पश्चिमी रूप] १ कार्य के सबध मे, किसी तरह पूरा या सपादित होना। २ आज्ञा, आदेश, प्रतिज्ञा, वचन आदि के सबध मे, चरितार्थ और फलित होना। ३ व्यक्ति के सबध मे, पारस्परिक सबध न बिगड़ते हुए बरताव, व्यवहार या सौहार्द बना रहना। जैसे—दोनो भाइयो मे नही निभेगी। ४ स्थिति के सबध मे, उसके अनुरूप अपने को बनाते हुए रहना या समय बिताना।

क्रि० प्र०—जाना।

५ व्यक्ति का अपने कार्य, व्यवहार आदि मे खरा और पूरा उतरना। उदा०—निभें युधिष्ठिर से नर-रत्न, एक साथ है तीन प्रयत्न।—मैथिलीशरण गुप्त। ६ छुट्टी या छुटकारा पाना।

विशेष—यद्यपि यह शब्द मूलत 'निर्वहण' से ही व्युत्पन्न है, अत. इसका रूप 'निबहना' ही अधिक सगत है, फिर भी पश्चिमी हिन्दी मे इसका 'निभना' रूप ही प्रचलित है और वही प्रशस्त तथा शिष्ट-सम्मत है।

निभरम—वि० [सं० निर्भ्रम] जिसे या जिसमे किसी प्रकार का भ्रम या शका न हो।

क्रि० वि० बिना किसी खटके, डर या शका के। बेधड़क।

निभरमा—वि० [सं० निर्भ्रम] १ जिसका रहस्य खुल या प्रकट हो गया हो। २ जिसका विश्वास उठ गया हो।

निभरोस (सी)—वि० [हिं० नि+भरोसा] [भाव० निभरोसा] १ जिसे किसी का भरोसा न हो। असहाय। निराश्रय। २ जिस पर भरोसा या विश्वास न किया जा सके।

निभाउ†—वि० [हिं० नि+भाव] १ जिसमे कोई भाव न हो। भाव-रहित। २ अच्छे भावो या गुणो मे रहित।—उदा० असरन सरन नाम तुम्हारौ हौ कामी कुटिल निभाउ।—सूर।

पु० =निबाह।

निभागा—वि० =अभागा।

निभाना—स० [हिं० निभना का स० रूप] १ उत्तरदायित्व, कार्य आदि का निर्वाह करना। २ आज्ञा, आदेश, प्रतिज्ञा, वचन आदि चरितार्थ या पालित करना। ३ थोड़ा-बहुत कष्ट सहते या त्याग करते हुए भी इस प्रकार आचरण, बरताव या व्यवहार करते चलना जिसमे परस्पर सबध बना रहे और कटुता न उत्पन्न होने पावे। ४ किसी दशा या स्थिति के अनुरूप अपने आपको ढाल या बनाकर समय बिताना।

निभालन—पु० [सं० नि√भल (देखना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ देखना। दर्शन। २ ज्ञान प्राप्त करना। परिचित होना। मालूम करना।

निभाव—पु० [हिं० निभना] निभने या निभाने की क्रिया या भाव। निर्वाह। निबाह। (देखें)

निभूत—वि० [सं० नि-भूत प्रा० स०] बीता हुआ। गत।

निभृत—वि० [सं० नि√भृ (धारण)+क्त] १ धरा या रखा हुआ। २. छिपा हुआ। गुप्त। ३ अटल। निश्चित। ४ निश्चित। स्थिर। ५ बद किया हुआ। ६ विनीत। नत। ७ धीर। शात। ८ एकात। निर्जन। सूना। ९ भरा हुआ। पूर्ण। १० अस्त होने के समय या स्थिति के पास पहुँचा हुआ। ११ विश्वसनीय और सच्चा।

निभृतात्मा (त्मन्)—वि० [सं० निभृत-आत्मन्, ब० स०] १ धीर। २ दृढ़।

निभ्रांत†—वि० =निर्भ्रान्त।

निमत्रण—पु० [सं० नि√मत्र (बुलाना)+ल्युट्—अन] [वि० निमत्रित] १. किसी को किसी काम के लिए आदरपूर्वक बुलाने की क्रिया या भाव। आग्रहपूर्वक यह कहना कि आप अमुक कार्य के लिए अमुक समय पर हमारे यहाँ पधारे। २ ब्राह्मणो को भोजन कराने के लिए अपने यहाँ बुलाने की क्रिया या भाव। ३ विवाह आदि शुभ अवसरों पर लोगों को आदरपूर्वक अपने यहाँ बुलाने की क्रिया या भाव। न्योता।

क्रि० प्र०—देना।—भेजना।—मानना।

निमंत्रण-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसमे यह लिखा रहता है कि आप अमुक समय पर हमारे यहाँ आने की कृपा करे।

निमंत्रना—स० [सं० निमत्रण] निमत्रण देना। समादर बुलाना।

निमत्रित—भू० कृ० [सं० नि√मत्र+क्त] जिसे किसी काम या बात के लिए निमत्रण दिया गया हो या मिला हो। बुलाया हुआ। आहूत।

निम—पु० [सं०] शलाका। शकु।

†स्त्री० =नीम (पेड)।

निमक†—पु० =नमक।

निमकी—स्त्री०[फा० नमक]१ नीबू का अचार। २ छोटी टिकिया के आकार का एक प्रकार का नमकीन मोयनदार पकवान।
†वि०=नमकीन।

निमकौड़ी—स्त्री०[हिं० नीम+कौडी] नीम का फल जिसमे उसका बीज रहता है और जो देखने मे प्राय कौडी की तरह का होता है।

निमग्न—वि०[स० नि √मग्न् (डूबना)+क्त] [स्त्री० निमग्ना]१ डूबा हुआ। मग्न। २ कार्य, विचार आदि मे पूर्ण रूप से तन्मय। लीन।

निमछड़ा—पु०[हिं० छोडना]१ ऐसा समय जिसमे कोई काम न हो। २ छुट्टी।

निमज्जक—वि०[स० नि√मज्ज्+ण्वुल्—अक]गोता या डुबकी लगाकर स्नान करनेवाला।

निमज्जन—पु० [सं० नि√मज्ज्+ल्युट्—अन]१ गोता लगाकर किया जानेवाला स्नान। २ किसी वस्तु को किसी तरल पदार्थ मे डुबाने की क्रिया या भाव। (इम्मर्शन)३ किसी बात या विषय मे अच्छी तरह मग्न या लीन होना।

निमज्जना—अ०[स० निमज्जन] गोता लगाकर स्नान करना।

निमज्जित—भू० कृ०[स० नि√मज्ज्+क्त]१ जो नहा चुका हो, विशेषत गोता लगाकर नहाया हुआ। २ डूबा हुआ। ३ डुबाया हुआ।

निमटना†—अ० -निपटना।

निमटाना†—स०-निबटाना।

निमटेरा†—पु०—निपटारा।

निमत—वि०[हिं० नि+सं० मत्त] १ जो मत्त न हो। २ जिसका होश ठिकाने हो।

निमता—वि० [हिं० नि+सं० मत्त] १ जो मत्त न हो। २ जो उन्मत्त न हो। फलत धीर और शात।

निमद—पु० [स० नि√मद् (हर्ष)+अप्]स्पष्ट किन्तु मद उच्चारण।

निमय—पु०[स० नि√मि (फेंकना)+अच्]१. अदला-बदली। २. विनिमय।

निमरी—स्त्री०[देश०] मध्यभारत मे होनेवाली एक तरह की कपास।

निमाज—स्त्री० नमाज (देखें)।
पु०=नवाज।

निमाजी—वि०=नमाजी। (देखे)

निमान—वि०[सं० निम्न=गड्ढा]१ नीचा। २ ढालुआँ।
पु० १ नीचा या ढालुआँ स्थान। २ जलाशय।
†वि०[स०] निमग्न।

निमाना—वि०[स० निम्न] [स्त्री० निमानी]१ जो नीचे की ओर हो। नीचा। २ जिसकी नति या प्रवृत्ति नीचे की ओर हो। ३ ढालुआँ। ४ नम्र और विनीत स्वभाववाला। ५. सबसे डर और दबकर रहनेवाला। दब्बू।
†स० नवाना।
स०[स० निर्माण] निर्माण करना। बनाना। रचना। उदा०—माम खीनिम निमाइ।—विद्यापति।

निमानिया—वि०[हिं० न मानना] [भाव० निमानी] १ न माननेवाला। २ जो नियम, मर्यादा, विनय आदि का पालन न करता हो। मनमानी करनेवाला। निरकुश।

निमानी—वि०[हिं० नि+मानना]निमानिया। (दे०)
स्त्री० मनमाना आचरण या व्यवहार। स्वेच्छाचार।

निमाल—वि०, पु०=निर्माल्य।

निमि—पु०[स०]१ आँखो की पलकें झपकाने की क्रिया या भाव। निमेष। २ महाभारत के अनुसार एक ऋषि जो दत्तात्रेय के पुत्र थे। ३. राजा इक्ष्वाकु के एक पुत्र जिनसे मिथिला का विदेह-वश चला था।

निमिख—पुं०=निमिष।

निमित्त—पु० [स० नि√मिद् (स्नेह)+क्त] [वि० नैमित्तिक] १ वह कार्य या बात जिससे किसी दूसरे कार्य या बात का साधन हो। २ व्यक्ति, जो नाम-मात्र के लिए कोई काम कर रहा हो, जब कि वह कार्य करवाने या प्रेरणाशक्ति देनेवाला और कोई होता है। ३. हेतु। ४. चिह्न। लक्षण। ५ शकुन। ६ उद्देश्य। लक्ष्य। ७ बहाना। मिस। अव्य० किसी काम या बात के उद्देश्य या विचार से। लिए। वास्ते। जैसे—पितरो के निमित्त दान देना।

निमित्तक—वि०[स० निमित्त+कन्] जो निमित्त मात्र हो।
पु० =चुबन।

निमित्त-कारण—पु०[स० कम०स०] न्याय मे, वह चीज, बात या व्यक्ति जो किसी के घटित होने, बनने आदि का आधार या मूल कारण हो।

निमि-राज—पु०[स०ष०त०] निमिवशीय राजा जनक।

निमिष—पु०[स० नि√मिष् (आँख खोलना)+क] १ पलकों का गिरना या बद होना। आँखें मिचना। निमेष। २ काल या समय का उतना मान जितना एक बार पलक गिरने या झपकने मे लगता है। ३ सुश्रुत के अनुसार पलको में होनेवाला एक प्रकार का रोग। ४ खिले हुए फूलो का मुँह बन्द होना। ५ विष्णु।

निमिष-क्षेत्र—पु०[स० मध्य० स० या ष० त०] नैमिषारण्य।

निमिषांतर—पु० [स० निमिष-अतर, ष०त०] पलक गिरने या मारने का समय।

निमिषित—भू० कृ०[स० नि√मिष्+क्त]निमीलित। मिचा या मुँदा हुआ।

निमीलन—पु०[स० नि√मील् (बन्द करना)+ल्युट्—अन] १ पलक गिराना या झपकाना। २ उतना समय जितना एक बार पलक गिरने मे लगता है। निमिष। ३ मनुष्य की आँखे सदा के लिए बद होना। अर्थात् मरना। मौत।

निमीला—स्त्री० [स० नि√मील्+अ—टाप्] निमीलिका। (दे०)

निमीलिका—स्त्री०[स० निमीला+कन्, टाप्, ह्रस्व, इत्व] १ आँख झपकने या बद करने की क्रिया या भाव। २ [नि√मील्+णिच्+वुल् अक, टाप्, इत्व।] छल। व्याज।

निमीलित—भू० कृ० [सं० नि√मील्+क्त]१. झपका, झपकाया या बद किया हुआ। २ छिपा या छिपाया हुआ। ३ मरा हुआ। मृत।

निमुँहा†—वि०[हिं० नि+मुंह] [स्त्री० निमुँही] १ जिसका या जिसे मुँह न हो। बिना मुँह का। २ जो कुछ कहने या बोलने के समय भी चुप रहता हो। ३ लज्जा आदि के कारण जिसे कुछ कहने का साहस न होता हो। ४ जो बिना कुछ कहे-सुने अत्याचार, कष्ट आदि सह लेता हो। उदा०—निमुँही जानके वो मुझको मार लेते हैं।—जान साहब।

निर्मूंद—वि० [हिं० नि+मूंदना] १ जो मुँदा या बद किया हुआ न हो। २ मुद्रित। बद। उदा०—कौडा आँसू बूँदि कसि, साँकर बरुनी सजल। कीने बदन निर्मूंद, दृग-मलिंग डारे रहत।—बिहारी।

निमूल†—वि० =निर्मूल।

निमूहा†—वि० [स्त्री० निमुँही] =निर्मुँहा।

निमेख—पु० =निमेष।

निमेखना—स० [सं० निमेष] पलकें गिराना, झपकाना या मूँदना।

निमेट*—वि० [हिं० नि+मिटना] जिसे मिटाया न जा सके। न मिटनेवाला। अमिट। उदा०—काहू कहीं हौं ओहि सो जेई दुख कीन्ह निमेट।—जायसी।

निमेष—पु० [स० नि√मिष्+घञ्] १ आँख की पलक का गिरना या झपकना। २ उतना समय जितना एक बार पलक गिराने या झपकाने मे लगता है। ३ आँख की पलकें फडकने का रोग। ४ एक प्रकार का चना।

निमेषक—पु० [स० निमेष+कन्] १ पलक। २. जुगनूँ।

निमेषकृत—स्त्री० [स० निमेष√कृ (करना)+क्विप्, तुक्] बिजली। विद्युत्।

निमेषण—पु० [स० नि√मिष्+ल्युट्—अन] पलकें गिरना या गिराना।

निमोना—पु० [स० नवान्न] हरे चने या मटर को पीसकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का सालन या रसेदार तरकारी।

निमोनिया—पु० [अं०] अत्यधिक सरदी लगने के कारण होनेवाला एक प्रसिद्ध रोग, जिसमे फेफडे मे सूजन आ जाती है।

निमौनी—स्त्री० [सं० नवान्न] ऊख की फसल की कटाई आरभ करने का दिन।

निम्न—वि० [स० नि√म्ना (अभ्यास)+क] १ जो प्रसम, धरातल या स्तर से नीचा हो। २ जो अपेक्षाकृत कम ऊँचे स्तर पर हो। ३ जिसमे तीव्रता, बेग आदि साधारण से कम हो। जैसे—निम्न रक्त-चाप।

पु० चित्र-कला मे दिखाया जानेवाला ऐसा स्थान, जो आसपास के स्थानो से नीचा या गहरा हो।

निम्नग—वि० [स० निम्न√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० निम्नगा] जो नीचे की ओर जाता हो। जिसकी प्रवृत्ति नीचे की ओर हो।

निम्नगा—स्त्री० [स० निम्नगा+टाप्] १ नदी। २ रहस्य सप्रदाय मे, नाडी।

निम्नयोधी (धिन्)—वि० [स० निम्न√युध् (लडना)+णिनि] किले के नीचे से या नीची जमीन पर से लड़नेवाला। वि० दे० 'स्थल योधी'।

निम्नांकित—वि० [स० निम्न-अकित, स०त०] १ जिसका अकन नीचे हुआ हो। २ निम्नलिखित।

निम्नारण्य—पु० [स० निम्न-अरण्य, कर्म०स०] पहाड की घाटी। (कौ०)

निम्नोन्नत—वि० [स० निम्न-उन्नत, द्व०स०] (स्थल आदि) जो कही से नीचा और कहीं से ऊँचा हो। ऊबड़-खाबड़।

पु० चित्र-कला में आवश्यकतानुसार दिखाई जानेवाली ऊँचाई और निचाई। नतोन्नत। उच्चित्र (रिलीफ)

निम्मन†—वि० [देश०] बढ़िया।

निम्लुक्ति—स्त्री० [स० नि√म्लुच् (गति)+क्तिन्] सूर्यास्त।

निम्लोच—पु० [स० नि√म्लुच्+घञ्] सूर्य का अस्त होना।

निम्लोचनी—स्त्री० [स०] मानसरोवर के पश्चिम मे स्थित वरुण की नगरी।

निम्लोचा—स्त्री० [स०] एक अप्सरा का नाम।

नियंतव्य—वि० [स० नि√यम् (नियत्रण)+व्यत्] जिसे नियन्त्रित या नियमित किया जा सके अथवा करना हो।

नियंता (तृ)—वि० [स० नि√यम्+तृच्] [स्त्री० नियत्री] १ नियत्रण करने या रखनेवाला। दूसरो को दबाकर और वश मे रखनेवाला। २. किसी कार्य का उचित रूप से प्रबध या व्यवस्था करनेवाला। प्रबधक और शासक।

पु० १ विष्णु। २ वह जो घोडे फेरने या निकालने अर्थात् उन्हे चलना आदि सिखाने का काम करता हो। चाबुक-सवार।

नियंत्रक—पु० [स० नि√यत्र् (निग्रह)+ण्वुल्—अक] =नियता।

नियंत्रण—पु० [स० नि√यत्र्+ल्युट्—अन] १ किसी प्रकार के नियम या बधन मे बाँधना। २ किसी को मनमाने क्रिया-कलाप आदि करने से रोकने के लिए उस पर कडे बधन लगाना। ३ व्यापारिक क्षेत्र मे, शासन की किसी वस्तु का मूल्य स्वय निश्चित करना और वह वस्तु समान मान या मात्रा मे सब को अथवा किसी की आवश्यकता के अनुसार उसे देने का प्रबंध करना। (कंट्रोल, उक्त सभी अर्थो मे)

नियंत्रित—भू० कृ० [स० नि√यत्र्+क्त] १ जिस पर नियत्रण किया गया हो या हुआ हो। २ जिसे नियम आदि से बाँधकर ठीक रास्ते पर चलायी या लाया गया हो। ३ अधिकार या वश मे किया या लाया हुआ। वश और शासन मे रखा हुआ।

निय*—वि० [स० निज] अपना। निजी। उदा०—तिय निय हिय जु लगी चलत.।—बिहारी।

नियत—वि० [स० नि√यम्+क्त] १ जो बाँध या रोककर रखा गया हो। बंधा हुआ। पाबंद। २ जो नियत्रण या वश मे किया या रखा गया हो। ३ ठीक किया या ठहराया हुआ। निश्चित। जैसे—किसी काम के लिए समय नियत करना। ४ आज्ञा, विधान आदि के द्वारा स्थिर किया हुआ। (प्रेस्क्राइब्ड) ५ (व्यक्ति) जिसे किसी कार्य या पद पर नियुक्त या मुकर्रर किया गया हो। काम पर लगाया हुआ। (पोस्टेड) जैसे—किसी काम की देख-रेख के लिए अधिकारी नियत करना।

पु० महादेव। शिव।

नियत-श्राव्य—पु० [तृ०त०] नाटक मे किसी पात्र का ऐसा कथन, जो सब लोगो को सुनाने के लिए न हो, बल्कि कुछ विशिष्ट पात्रो को सुनाने के लिए ही हो।

नियतांश—पु० [नियत-अश, कर्म०स०] किसी बडी राशि मे से कुछ लोगो के लिए अलग-अलग नियत या निश्चित किया हुआ अश। (कोटा) जैसे—सब लोगो के लिए कपड़े या खाद्य पदार्थों का नियताश स्थिर करना।

नियतात्मा (त्मन्)—वि० [नियत-आत्मन्, ब०स०] अपने आपको वश मे रखनेवाला। जितेंद्रिय। सयमी।

नियताप्ति—स्त्री० [नियता-अप्ति, कर्म०स०] नाटक मे वह स्थिति जिसमें अन्य उपायो को छोड़कर एक ही उपाय से कार्य सिद्ध होने पर विश्वास

प्रकट किया या रखा जाता है। जैसे—अब तो ईश्वर ही हमारा उद्धार कर सकता है।

नियति—स्त्री०[स० नि√यम्+क्तिन्] १ नियत होने की अवस्था या भाव। २ बद्ध होने की अवस्था या भाव। ३ कोई ऐसा बँधा हुआ नियम जिसमे कुछ या कोई भी परिवर्तन न होता या न हो सकता हो। ४. ईश्वर या प्रकृति का विधान जो पहले से नियत होता है और जिसके अनुसार सब कार्य अपने समय पर बिना किसी व्यतिक्रम के और अवश्यम्भावी रूप से आप से आप होते चलते है। दैव। (डेस्टिनी) ५ प्रारब्ध या भाग्य जो उक्त का अथवा पूर्वकाल मे अपने किये हुए कर्मों का परिणाम या फल माना जाता है और जिस पर मनुष्य का कोई वश नही चलता। अदृष्ट। ६ निश्चित या स्थिर होने की अवस्था या भाव। मुकर्ररी। ७ दुर्गा या भगवती का एक नाम।

नियतिवाद—पु०[ष०त०] वह सिद्धात जिसमे यह माना जाता है कि (क) ससार मे जो कुछ होता है, वह सब परपरागत कारणो के अवश्यभावी परिणाम या फल के रूप मे होता है, और (ख) लौकिक कार्यों मे मनुष्य का पुरुषार्थ गौण तथा ईश्वर की इच्छा या प्रकृति की प्रेरणा और विधान ही सबसे अधिक प्रबल होता है। (डिटरमिनिज्म)

विशेष—प्राचीन काल मे इसकी गणना नास्तिक मतो मे की जाती थी।

नियतिवादी (दिन्)—वि०[स० नियति√वद् (बोलना)+णिनि]नियतिवाद-सबधी।

पु० वह जो नियतिवाद का सिद्धात मानता हो अथवा उसका अनुयायी हो। (डिटरमिनिस्ट)

नियतेंद्रिय—वि०[म० नियत-इद्रिय, ब०स०] जितेद्रिय।

नियम—पु०[स० नि√यम्+अप्] १ ठीक तरह से चलाने के लिए बाँध या रोक कर रखना। २ प्रतिबध। रुकावट। रोक। ३ आचार-व्यवहार, रीति-नीति आदि के सबध मे प्रणाली या प्रथा के रूप मे निश्चित की हुई वे बाते, जिनका पालन आवश्यक कर्तव्य के रूप मे होता है। कायदा। (रूल) जैसे—सस्था या समाज का नियम, राज्यशासन के नियम। ४ ऐसा निश्चित सिद्धान्त जो परम्परा से चला आ रहा हो और जिसका पालन किसी काम या बात मे सदा एक-सा होता रहता हो। दस्तूर। परपरा। जैसे—प्रकृति का नियम। ५ अनुशासन। नियत्रण। ६ कोई काम या बात नियमित रूप से अथवा किसी विशेष ढग से करने या करते रहने का क्रम। जैसे—उनका नियम है कि वे रोज सवेरे उठकर टहलने जाते हैं। ७ योग के आठ अगो मे से एक जिसके अन्तर्गत तपस्या, दान, शुचिता, सतोष, स्वाध्याय आदि बातें आती है।(योग के यम नामक अग की तुलना मे नियम नामक अग का पालन उतनी कठोरता या दृढ़ता से करना आवश्यक नही होता।) ८ मीमासा मे वह विधि जिससे अप्राप्त अश की पूर्ति होती है। ९ साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थालकार, जिसमे किसी काम या बात के एक ही व्यक्ति मे या स्थान पर स्थित होने का उल्लेख होता है। जैसे—अब तो इस विषय के आप ही एक-मात्र ज्ञाता (या पडित) हैं। १० किसी प्रकार की लगाई हुई शर्त। ११ विष्णु। १२ शिव।

नियम-तत्र—वि०[ष०त०] जो किसी नियम के द्वारा चलता या चलाया जाता हो।

नियमत (तस्)—अव्य० [स० नियम+तस्] नियम के अनुसार।

नियमन—पु०[स० नि√यम्+ल्युट्—अन] [वि० नियमित, नियम्य] १ कोई काम ठीक तरह से चलाने अथवा लोगो को ठीक तरह से रखने के लिए नियम आदि बनाने और उनकी व्यवस्था करने की क्रिया या भाव। ठीक तरह से काम चलाने के लिए कायदे-कानून बनाना। (रेगुलेटिंग) २ नियम, बधन आदि के द्वारा रोकना। निरोध। (रेस्ट्रिक्शन) ३ नियत्रण। ४ शासन। ५ दमन। निग्रह।

नियम-पत्र—पु०[ष०त०] प्रतिज्ञा-पत्र। शर्त-नामा।

नियम-पर—वि०[म०त०] नियम के अनुसार चलने, चलाया जाने या होनेवाला।

नियम-बद्ध—वि०[तृ० त०] १ नियम या नियमो से बँधा हुआ। २ दे० 'नियमित'।

नियम-स्थिति—स्त्री०[ब०स०] तपस्या।

नियमापत्ति—स्त्री०[नियम-आपत्ति, स०त०] आधुनिक राजनीति में किसी सभा-समिति मे बने हुए नियमो या विधानो अथवा परपराओं या रूढ़ियो के विरुद्ध कोई आचरण, कार्य या व्यवहार होने पर उसके सबध मे की जानेवाली आपत्ति जिसके सबध मे अतिम निर्णय करने का अधिकार सभापति को होता है। (प्वाइट ऑफ आर्डर)

नियमावली—स्त्री०[नियम-आवली, ष० त०] १ किसी सस्था आदि से सबध रखनेवाले नियमो की विवरण पुस्तिका। २ किसी कार्य-क्षेत्र या विभाग के कार्य-सचालन अथवा कार्यकर्ताओं का पथ-प्रदर्शन करनेवाले नियमो आदि की पुस्तिका। (मैनुअल)

नियमित—भू० कृ० [स० नियम+णिच्+क्त] १ नियमो के अनुसार बँधा या स्थिर किया हुआ। नियम-बद्ध। २ जो नियम, विधान आदि के अनुकूल हो। ३ जो बराबर या सदा किसी नियम के रूप मे होता आ रहा हो। (रेगुलर) जैसे—नियमित रूप से अपने समय पर कार्यालय मे उपस्थित होना।

नियमी (मिन्)—वि०[स० नियम+इनि] १ नियम के अनुसार होनेवाला। २ नियम-सबधी। ३ (व्यक्ति) जो नियम या नियमो का पालन करता हो।

नियम्य—वि०[स० नि√यम्+यत्] १ जिसके सबध मे नियम बनाया जा सकता हो। जो नियम बनाकर बाँधा जा सकता हो या बाँधा जाने को हो। नियमो के क्षेत्र मे आने या लाये जाने के योग्य। २ जो नियत्रण या शासन मे रखा जा सकता हो या रखा जाने को हो।

नियर—अव्य०[स० निकट, प्रा० निअड]समीप। पास। नजदीक।

नियराई—स्त्री०[हि० नियर=निकट+आई (प्रत्य०)]निकटता। सामीप्य।

नियराना—अ०[हि० नियर+आना]पास या समीप आना या पहुँचना। स० पास या समीप पहुँचाना।

नियरे—अव्य०=नियर (नजदीक)।

नियाज—स्त्री०[फा०नियाज]१ प्रार्थना। २ इच्छा। ३. जान-पहचान। परिचय। ४ आज्ञा। ५ मृतक के उद्देश्य से दरिद्रो को दिया जानेवाला भोजन। (मुसल०)

नियाजमद—वि०[फा०] [भाव० नियाजमदी] १ प्रार्थना करनेवाला। २ इच्छुक। ३ परिचित। ४ आज्ञाकारी।

नियान—अव्य०, पु०=निदान।

नियाम—पु०[सं० नि√यम्+घञ्] नियम।
पु०[फा०] तलवार का कोश। मियान।

नियामक—वि०[सं० नि√यम्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० नियामिका] १. नियम या विधान बनानेवाला। २ नियमों के क्षेत्र या बंधन में रखने या लानेवाला। ३ प्रबंध या व्यवस्था करनेवाला।
पु० मल्लाह। माँझी।

नियामक-गण—पु०[ष०त०] पारे को मारनेवाली औषधियों का समूह। (रसायन)

नियामत—स्त्री०[अ०] १ ईश्वर का दिया हुआ धन या वैभव। २ धन। संपत्ति। ३ अलभ्य या दुर्लभ पदार्थ। ऐसी बहुत बढ़िया चीज जो जल्दी न मिलती हो।

नियार—पु०[हिं० न्यारा?]जौहरियों, सुनारों आदि की दुकान का वह कूड़ा-करकट जो न्यारिये लोग ले जाकर साफ करते हैं और जिसमें से कभी-कभी बहुमूल्य धातुओं, रत्नों आदि के कण निकालते हैं।

नियारना*—स० [हिं० नियार]जौहरियों, सुनारों आदि का कूड़ा-करकट साफ करके उसमें से बहुमूल्य धातुओं, रत्नों आदि के कण अलग करना।

नियारा†—वि० =न्यारा।
पु०=नियार।

नियारिया—पु०=न्यारिया।

नियारे†—अव्य० =न्यारे।

नियाव†—पु० =न्याय।

नियुक्त—भू० कृ० [सं० नि√युज्(जोड़ना)+क्त]१ जिसका नियोग या नियोजन किया गया हो अथवा हुआ हो। २ जो किसी काम या पद पर नियत किया या लगाया गया हो। तैनात या मुकर्रर किया हुआ। ३ जो किसी काम के लिए उद्यत, तत्पर या प्रेरित किया गया हो। ४ ठहराया या निश्चित किया हुआ। स्थिर। जैसे—समय नियुक्त करना।

नियुक्ति—स्त्री०[सं० नि√युज्+क्तिन्] १. नियुक्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ किसी व्यक्ति को किसी काम या पद पर लगाने की क्रिया या भाव। तैनाती। मुकर्ररी। (एप्वाइंटमेंट)

नियुत—वि०[सं० नि√यु (मिलाना)+क्त] दस लाख।
पु० १ दस लाख की संख्या। २ पुराणानुसार वायु के घोड़े का नाम।

नियुत्वत्—पु०[सं० नियुत+मतुप्, मस्य व] वायु। हवा।

नियुद्ध—पु०[सं० नि√युध् (लड़ना)+क्त]१ हाथा-बाँही। २. कुश्ती।

नियोक्तव्य—वि० [सं०नि√युज्+तव्यत्] जिसका नियोजन किया जाने को हो या किया जा सकता हो।

नियोक्ता (क्तृ)—वि०[सं० नि√युज+तृच्]१ नियुक्त या नियोजित करनेवाला। २ लोगों को अपने यहाँ काम पर नियुक्त करनेवाला। (एम्पलायर)

नियोग—पु०[सं० नि√युज्+घञ्] १ नियुक्त या नियोजित करने की अवस्था, क्रिया या भाव। नियत या मुकर्रर करना। २ किसी पदार्थ का उपयोग या व्यवहार। काम में लाना। ३ आज्ञा। आदेश। ४ निश्चय। ५ प्रेरणा। ६ अवधारण। ७ आयास। प्रयत्न। ८ प्राचीन भारतीय राजनीति में, कोई आपत्ति टालने या दूर करने का कोई विशिष्ट उपाय। ९. प्राचीन भारतीय आर्यों में प्रचलित एक प्रथा जिसके अनुसार किसी निःसंतान विधवा से संतान उत्पन्न कराने के लिए उसके देवर या पति के किसी उपयुक्त सगोत्री को उस विधवा के साथ संभोग करने के लिए नियत या नियुक्त किया जाता था। (धर्म-शास्त्रों ने बाद में यह प्रथा वर्जित कर दी थी)

नियोगस्थ—वि० [सं० नियोग√स्था (ठहरना)+क] जिसका नियोग हुआ हो।

नियोगी (गिन्)—वि० [सं० नियोग+इनि] १ नियुक्त। २ (किसी स्त्री के साथ) नियोग करनेवाला।

नियोग्य—वि०[सं० नि√युज्+ण्यत्](पुरुष या स्त्री) जिसका या जिससे नियोग हो सकता हो।
पु० प्रभु। मालिक। स्वामी।

नियोजक—पु० [सं० नि√युज्+णिच्+ण्वुल्—अक] वह जो दूसरों को किसी काम पर लगाता हो।

नियोजन—पु०[सं० नि√युज्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० नियोजित, नियोज्य, नियुक्त] १ दूसरों को किसी काम में लगाने या नियुक्त करने की क्रिया या भाव। २ दे० 'आयोग'।

नियोजना*—स० [सं० नियोजन] किसी को काम पर नियुक्त करना या लगाना। नियोजन करना।

नियोजनालय—पु०[सं० नियोजन-आलय, ष०त०] वह कार्यालय जो बेकारों को नौकरी आदि पर लगाने की व्यवस्था करता है। (एम्प्लायमेंट एक्सचेंज)

नियोजित—भू० कृ०[सं० नि√युज्+णिच्+क्त] जिसका कहीं नियोजन हुआ हो। काम पर लगाया हुआ।

नियोज्य—वि०[सं० नि√युज्+णिच्+यत्] जिसका नियोजन होने को हो या किया जाने को हो।

नियोद्धा (द्धृ)—पु०[सं० नि√युध+तृच्]कुश्ती लड़नेवाला, पहलवान।

निर्—अव्य०[सं०√नृ(ले जाना)+क्विप्, इत्व] एक अव्यय जो स्वरों या कोमल व्यंजनों से आरम्भ होनेवाले शब्दों में पहले (निस् के स्थान पर) लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—अलग, दूर, बाहर, रहित, हीन आदि।
जैसे—निरकुश, निरतर, निरक्ष, निरर्थक, निराहार, निरुत्तर, निरुपाय आदि।

निरंक—वि० [सं० निर्-अंक, ब० स०] (कागज) जिस पर कोई अंक (अक्षर या चिह्न) न हो। कोरा। (ब्लैंक)

निरंकार—वि०, पु० =निराकार।

निरंकुश—वि० [सं० निर्-अंकुश, ब० स०] [भाव० निरंकुशता] १ जिस पर किसी प्रकार का अंकुश या नियंत्रण न हो। २. (व्यक्ति) जो स्वेच्छापूर्वक मनमाना आचरण या व्यवहार करता हो। ३ (शासक) जो मनमाना और अत्याचारपूर्ण शासन करता हो। (डेस्पॉट)

निरंकुशता—स्त्री० [सं० निरंकुश+तल्—टाप्] १ निरंकुश होने की अवस्था या भाव। २ मनमाना और अत्याचारपूर्ण आचरण या व्यवहार।

निरंकुश-शासन—पु० [सं० ष० त०] वह राज्य जिसका सारा अधिकार किसी एक व्यक्ति (राजा) के हाथ में हो और जिस पर प्रजा के प्रतिनिधियों का कोई नियंत्रण न हो। (एब्सोल्यूट मॉनर्की)

निरंग—वि० [सं० निर्-अंग, ब० स०] जिसका या जिसमे कोई अंग न हो। अंग-हीन।
पुं० रूपक अलंकार का एक भेद। (साहित्य)
वि० [हिं० नि+रंग] १ जिसका कोई एक रंग न हो। २. बेमेल। ३. खालिस। विशुद्ध।
अव्य० निपट। निरा।

निरंजन—वि० [सं० निर्-अंजन ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसने अंजन न लगाया हो। २ (नेत्र) जिसमे अंजन न लगा हो। ३ सब प्रकार के दुर्गुणों और दोषों से रहित। ३. माया, मोह आदि से निर्लिप्त या रहित।
पु० १ निर्गुण ब्रह्म। परमात्मा। २ महादेव। शिव। ३ वह परम शक्ति जो सृष्टि, स्थिति और प्रलय करती है। (कबीर पंथी)

निरंजना—स्त्री० [सं० निरंजन+टाप्] १ पूर्णिमा। २ दुर्गा।

निरंजनी—वि० [सं० निरंजन] १. निरंजन संबंधी। २ निरंजनी संप्रदायवालों का।
पु० १ निर्गुण ब्रह्म की उपासना करनेवाला एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय जिसके प्रवर्तक स्वामी निरंजन भगवान थे। २ उक्त संप्रदाय का अनुयायी साधु।

निरंतर—वि० [सं० निर्-अंतर, ब० स०] १ अंतर रहित। जिसमें या जिसके बीच अंतर या दूरी न हो। २ जिसका क्रम बराबर चला गया हो। जिसकी परंपरा बीच मे कहीं टूटी न हो। ३ घना। निविड। ४ सदा एक-सा बना रहनेवाला। स्थायी। जैसे—निरंतर नियम। ५ जिसमे कोई अंतर या भेद न हो। तुल्य। समान। ६ जो अंतर्धान या आँखो से ओझल न हो।
क्रि० वि० १ बराबर। लगातार। २. सदा। हमेशा।

निरंतराभ्यास—पु० [सं० निरंतर-अभ्यास, कर्म० स०] १ किसी काम या बात का निरंतर (नित्य या बराबर) किया जानेवाला अभ्यास। २ स्वाध्याय। (देखें)

निरंतराल—वि० [सं० निर्-अंतराल, ब० स०] जिसमे अंतराल (अवकाश) न हो।

निरंध—वि० [सं० निर्-अंध, प्रा० स०] १ बहुत अधिक या पूरा अन्धा। निरा अंधा। २ ज्ञान, बुद्धि आदि मे बिलकुल रहित। ३. बहुत अधिक या घोर अंधकार से युक्त। उदा०—जाका गुरु भी अंधला, चेला खरा निरंध।—कबीर।
वि० [सं० निरंधस्] बिना अन्न का। निरन्न।

निरंबर—वि० [सं० निर्-अंबर, ब० स०]=दिगंबर (नंगा)।

निरंबु—वि० [सं० निर्-अंबु, ब० स०] १ जिसमे जल या उसका कोई अंश न हो। निर्जल। २ जो बिना जल पीये रहता हो। ३. जिसमे जल का उपयोग या संपर्क न हो सकता हो। निर्जल। जैसे—निरंबु व्रत।

निरंभ—वि० [सं० निरंभस्] १ निर्जल। २ जो बिना पानी पीये रहता या रह सकता हो।

निरंश—वि० [सं० निर्-अंश, ब० स०] (व्यक्ति) जिसे अपना प्राप्य अंश न मिला हो या न मिल सकता हो।

निरकार*—वि०, पु०=निराकार।

निरकेवल—वि० [सं० निस्+और केवल] १. जिसमे किसी तरह का मेल न हो। खालिस। विशुद्ध। २ साफ। स्वच्छ।
अव्य०=केवल।

निरक्ष—वि० [सं० निर्-अक्ष, ब० स०] १ बिना पासे का। २. जो पृथ्वी के मध्य भाग मे हो।
पु० पृथ्वी की भूमध्य रेखा। (ईक्वेटर)

निरक्ष-देश—पु० [ष० त०] भूमध्य रेखा के आसपास के प्रदेश जिनमे रात-दिन का मान प्राय बराबर रहता है।

निरखन†—पु०=निरीक्षण।

निरक्षर—वि० [सं० निर्-अक्षर ब० स०] १ जिसमे अक्षर का प्रयोग न हो। २ जिसका अक्षर से कोई संबंध न हो, अर्थात् जो कुछ भी पढ़ा-लिखा न हो। ३ जो एक अक्षर भी न बोल रहा हो। अर्थात् बिलकुल चुप।

निरक्ष-रेखा—स्त्री० [ष० त०] नाड़ी-मंडल।

निरखना—स० [सं० निरीक्षण] १ ध्यानपूर्वक देखना। २ निरीक्षण करने के लिए देखना।

निरग—पु०=नृग।

निरगुन†—वि०=निर्गुण।

निरगुनिया†—वि०=निरगुनी।

निरगुनी—†वि० [सं० निर्गुण] १ जिसमे कोई गुण या विशेषता न हो। २ दे० 'निर्गुण'।

निरग्नि—वि० [सं० निर्-अग्नि, ब० स०] अग्निहोत्र न करनेवाला।

निरघ—वि० [सं० निर्-अघ, ब० स०] जिसने अघ या पाप न किया हो निष्पाप।

निरचू—वि० [सं० निश्चित] १ जिसे अपने काम से अवकाश या छुट्टी मिल गई हो। २ जो हाथ मे काम न होने के कारण खाली हो। ३ निश्चित।

निरच्छ—वि० [सं० निरक्षि] १ जिसे आँखें न हो। २ जिसे दिखाई न दे। अंधा।

निरजर*—वि०, पु०=निर्जर।

निरजल—वि०=निर्जल।

निरजी—स्त्री० [देश०] संगमर्मर तराशने की संगतराशों की एक तरह की टाँकी।

निरजोस—पु० [सं० निर्यास] १ निचोड़। २ निर्णय। ३ दे० 'निर्यास'।

निरजोसी—वि० [हिं० निरजोश] १ निचोड़ निकालनेवाला। २ निर्णय करनेवाला।

निरझर†—पु०=निर्झर।

निरझरनी—स्त्री०=निर्झरणी।

निरझरी—स्त्री०=निर्झरी।

निरना†—पु०=निर्णय।

निरत—वि० [सं० नि√रम् (रमना)+क्त] किसी काम मे लगा हुआ। रत। लीन।
†पु० [सं० नृत्य] नाच।

निरतना—स० [सं० नर्तन] नाचना।

निरति—स्त्री० [सं० नि√रम्+क्तिन्] १. अच्छी तरह किसी काम या बात मे रत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। अत्यत रति। २ किसी काम मे लिप्त या लीन होने की अवस्था या भाव।
†स्त्री० [?] सुख।

निरतिशय—वि० [सं० निर्—अतिशय, प्रा० स०] जिसमे बढकर या अतिशय और कुछ न हो सके। हद दरजे का।
पुं० परमात्मा।

निरत्यय—वि० [सं० निर्—अत्यय, ब० स०] १ जो खतरे, भय आदि से अलग, दूर या परे हो। २ दोषरहित।

निरदई†—वि०=निर्दय।

निरदोषी—वि०=निर्दोष।

निरधन*—वि० [सं० नि+धन्या] स्त्री-रहित। उदा०—नैरति प्रसरि निरधण गिरि नीझर।—प्रिथीराज।
†वि०-निर्धन।

निरधातु—वि० [सं० निर्धातु] १ जो या जिसमे धातु न हो। २ जिसके शरीर मे धातु (वीर्य या शक्ति) न हो। बहुत ही कमजोर या दुर्बल।

निरधार—क्रि० वि० [सं० निर्धारण] निश्चित रूप से। उदा०—पाती पीछे-पीछे हम आवत हैं निरधार।—सेनापति।
वि०=निराधार।
पु०—निर्धारण।

निरधारना—स० [सं०निर्धारण] १. निश्चित या स्थिर करना। ठहराना। २. मन मे धारण करना या समझना।

निरधिष्ठान—वि० [सं० निर्—अधिष्ठान, ब० स०] १ जिसका अधिष्ठान न हुआ हो। २ जिसका कोई आधार या आश्रय न हो। निराधार।

निरध्व (न्)—वि० [सं० निर्—अध्वन्, ब० स०] १ जो रास्ता भूल गया हो। २ भटकनेवाला।

निरनउ (य)†—पु०=निर्णय।

निरना—वि०=निरन्ना।

निरनुग—वि० [सं० निर्—अनुग, ब० स०] जिसका कोई अनुग या अनुयायी न हो।

निरनुनासिक—वि० [सं० निर्—अनुनासिक, ब० स०] (वर्ग) जिसका उच्चारण करते समय नाक से ध्वनि निकलती हो। अनुनासिक का विपर्याय।

निरनुबंध—पु० [सं० निर्—अनुबंध, ब० स०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे, ऐसी कार्रवाई जिसके द्वारा नि स्वार्थ भाव से किसी दूसरे राजा या राष्ट्र का कोई उद्देश्य या कार्य सिद्ध कराया जाय। यह अर्थनीति का एक भेद कहा गया है।

निरनुरोध—वि० [सं० निर्—अनुरोध, ब० स०] १. अनुरोध से रहित। २ सद्भावशून्य। अमैत्रीपूर्ण।

निरनै†—पु० =निर्णय।

निरन्न—वि० [सं० निर्—अन्न, ब० स०] १. अन्न-रहित। बिना अन्न का। २. जिसने अभी तक अन्न न खाया हो। निराहार।

निरन्ना—वि० [सं० निरन्न] जिसने अभी तक अन्न न खाया हो। निराहार।
पद—निरन्ने मुँह -बिना कुछ खाये हुए। जैसे—यह दवा निरन्ने मुँह खाइयेगा।

निरन्वय—वि० [सं० निर्—अन्वय, ब० स०] १ जिसके आगे सतान न हो। २. जिसका किसी से लगाव या सबध न हो। ३ जिसका ठीक या पूरा पता न चला हो।

निरपत्रप—वि० [सं० निर्—अपत्रप, ब० स०] १ निर्लज्ज। २ धृष्ट।

निरपना—वि० [हिं० निर+अपना] जो अपना न हो अर्थात् पराया या बेगाना।

निरपराध—वि० [सं० निर्—अपराध, ब० स०] जिसने कोई अपराध न किया हो। निर्दोष।
क्रि० वि० बिना किसी अपराध के। बिना अपराध किये।

निरपराधी†—वि०=निरपराध।

निरपवर्त्त—पु० [सं० निर्—अपवर्त्त ब० स०] पीछे न मुडनेवाला।

निरपवाद—वि० [सं० निर्—अपवाद, ब० स०] १. जिसमे कोई अपवाद न हो। बिना अपवाद का। २ जिसमे अपवाद, अर्थात् निंदा या बुराई की कोई बात न हो। अच्छा। भला। ३ निरपराध। निर्दोष।

निरपाय—वि० [सं० निर्—अपाय, ब० स०] १ जिसमे दोष या बुराई न हो। अच्छा। भला। २. जो नश्वर न हो। अविनश्वर।

निरपेक्ष—वि० [सं० निर्—अपेक्षा, ब० स०] [भाव० निरपेक्षी] १ जिसे किसी चीज की अपेक्षा न हो। २ जिसे किसी की चिंता या परवाह न हो। बे-परवाह। ३ जो किसी के अवलब, आधार या आश्रय पर न हो। ४ जो किसी से कुछ लगाव या सपर्क न रखता हो। तटस्थ। ५ किसी से बचकर या अलग रहनेवाला। जैसे—भागवत-निरपेक्ष-वैष्णव भागवतो से दूर या बचकर रहनेवाला। ६ दे० 'निष्पक्ष'।
पु० १. अनादर। २. अवज्ञा। अवहेलना।

निरपेक्षा—स्त्री० [सं० निर्—अपेक्षा, प्रा० स०] १ वह स्थिति जिसमे किसी चीज या बात की अपेक्षा न हो। २ लगाव या सपर्क का अभाव। ३ अवज्ञा। ४. ला-परवाही। ५ निराशा।

निरपेक्षित—वि० [सं० निर्—अपेक्षित, प्रा० स०] १ जिसको किसी की अपेक्षा न हो। २. जिससे कोई लगाव असपर्क न रखा गया हो।

निरपेक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० निर्—अप√ईक्ष् (देखना)+णिनि] निरपेक्ष। (दे०)

निरफल—वि०=निष्फल।

निरबंध—वि० = निर्बंध।

निरबंसिया—वि० = निरबंसी।

निरबंसी—वि० [सं० निर्वंश] जिसके आगे वश चलानेवाली सतान न हो। (गाली या शाप)

निरबर्ती—पु० [सं० निवृत्ति] १. त्यागी। २ विरक्त।

निरबल—वि० =निर्बल।

निरबहना—अ०=निबहना (निभना)।

निरबान—पुं०=निर्वाण।

निरबाहना—सं० =निबाहना (निभाना)।

निरबिसी—स्त्री०=निर्विषी (ओषधि)।

निरबेरा—पु० निबेडा (निपटारा)।

निरभय—वि० निर्भय।

निरभर—वि० निर्भर।

निरभिमान—वि० [सं० निर्-अभिमान, ब० स०] जिसमें या जिसे अभिमान या घमंड न हो। अहंकार-रहित।

निरभिलाष—वि० [सं० निर्-अभिलाष, ब० स०] जिसे किसी काम या बात की अभिलाषा या इच्छा न हो।

निरभेद—वि० [सं० निर्+भेद] जो किसी प्रकार का भेद-भाव न रखता हो। भेद-भावशून्य।

निरभ्र—वि० [सं० निर्-अभ्र, ब० स०] (आकाश) जिसमें अभ्र या बादल न हों।

निरमना—स० [सं० निर्माण] निर्मित करना। बनाना।

निरमर—वि० [हिं० निर+मरना] १ जो कभी मरे नहीं। अमर। २ जो जल्दी नष्ट न हो।

वि० निर्मल।

निरमल—वि० निर्मल।

निरमली—स्त्री० निर्मली। (देखें)

निरमसार—पु० [निरम ? +सार जड] एक प्रकार की जडी जिससे अफीम का मादक प्रभाव दूर हो जाता है। (पंजाब)

निरमान†—पु० निर्माण।

निरमाना—स० [सं० निर्माण] निर्मित करना। बनाना। रचना।

निरमायल†—पु० =निर्माल्य।

निरमित्र—वि० [सं० निर्-अमित्र, ब० स०] जिसका कोई अमित्र अर्थात् शत्रु न हो।

पु० १ त्रिगर्तराज का एक पुत्र जिसने कुरुक्षेत्र में वीरगति प्राप्त की थी। २ नकुल (पांडव) का एक पुत्र।

निरमूल†—वि० निर्मूल।

निरमूलना—स० [सं० निर्मूलन] १ निर्मूल करना। जड से उखाडना। २ इस प्रकार पूरी तरह से नष्ट करना कि फिर से पनपने या बढने की संभावना न रह जाय। समूल नष्ट करना।

निरमोल—वि० अनमोल।

निरमोलिक—वि० निरमोल (अनमोल)।

निरमोही—वि० निर्मोही।

निरय—पु० [सं० निर्√इ (गति)+अच्] नरक।

निरयण—वि० [सं० निर्-अयन, ब० स०] १ अयन-रहित। २ (ज्योतिष में काल-गणना) जो अयन अर्थात् राशि-चक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित न हो।

पु० भारतीय ज्योतिष में काल-गणना और पंचांग बनाने की वह विधि (सायन से भिन्न) जो अयन अर्थात् राशि-चक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित नहीं होती, बल्कि जिसमें किसी स्थिर तारे या बिंदु से सूर्य के भ्रमण का आरंभ स्थान माना जाता है।

विशेष—सूर्य राशि-चक्र में बराबर घूमता या चक्कर लगाता रहता है। प्राचीन ज्योतिषी रेवती नक्षत्र को सूर्य के चक्कर का आरंभ स्थान मानकर काल-गणना करते थे, और वहीं से वर्ष का आरंभ मानते थे। पर आगे चलकर पता चला कि इस प्रकार की गणना में एक दूसरी दृष्टि से त्रुटि है। वसंत संपात और शारद संपात के समय दिन और रात दोनों बराबर होते हैं, इसलिए वसंत-संपात के दिन से गणना करने पर जो वर्ष-मान स्थिर होता था, वह उक्त पुरानी विधि के वर्ष-मान से ८ ६ पल बडा होता था। यह नई गणना-विधि अयन अर्थात् राशि-चक्र की गति पर आश्रित थी; इसलिए इसे सायन गणना कहने लगे, और इसके विपरीत पुरानी गणना-विधि निरयण कही जाने लगी। फिर भी बहुत दिनों से प्रायः सारे भारत में ग्रहलाघव आदि ग्रंथों के आधार पर पंचांगों में काल-गणना उसी पुरानी निरयण विधि से होती आई है, परंतु और आगे चलने पर पता चला कि सायन गणना-विधि में भी कुछ वैसी ही त्रुटि है, जैसी निरयण गणना-विधि में है, क्योंकि दोनों में दृश्य या प्रत्यक्ष गणित से कुछ न कुछ अंतर पडता है, इसलिए अनेक आधुनिक विचारशील ज्योतिषियों का आग्रह है कि किसी प्रकार दोनों विधियों की त्रुटियाँ दूर करके पंचांग दृश्य अर्थात् नक्षत्रों, राशियों आदि की ठीक और वास्तविक स्थिति के आधार पर और उसी प्रकार बनने चाहिएँ, जिस प्रकार उन्नत पाश्चात्य देशों में नॉटिकल एक, मेनक आदि बनते हैं।

निरर्गल—वि० [सं० निर्-अर्गल, ब० स०] १ जिसमें अर्गल न हो। २ जिसमें या जिसके मार्ग में कोई बाधा या रुकावट न हो।

निरर्थ—वि० [सं० निर्-अर्थ, ब० स०] निरर्थक।

निरर्थक—वि० [सं० निर्-अर्थ, ब० स०, कप्] १ (पद या शब्द) जिसका कोई अर्थ न हो। अर्थरहित। २ (कार्य या प्रयत्न) जिससे प्रयोजन सिद्ध न होता हो। ३ व्यर्थ। निष्फल।

पु० न्याय के २२ निग्रह-स्थानों में से एक जो उस दशा में माना जाता है, जब वादी के कथन का उत्तर इतना उलटा-पुलटा होता है कि उसका कुछ अर्थ ही न निकले।

निरर्बुद—पु० [सं०] एक नरक का नाम।

निरलस—वि० [सं० निरालस्य] जिसमें आलस्य न हो। आलस्य से रहित। उदा०—निरलसरेवे स्वयं, अहर्निशि रहते जाग्रत।—पन्त।

निरवकाश—वि० [सं० निर्-अवकाश ब० स०] १ (स्थान) जिसमें अवकाश या खाली जगह न हो। २ (व्यक्ति) जिसे अवकाश या फुरसत न हो।

निरवग्रह—वि० [सं० निर्-अवग्रह, ब० स०] १ प्रतिबंध से रहित। स्वतंत्र। स्वच्छंद। २ जो किसी दूसरे की इच्छा पर अवलंबित या आश्रित न हो। ३ जिसमें कोई बाधा या विघ्न न हो। निर्विघ्न।

निरवच्छिन्न—वि० [सं० निर्-अवच्छिन्न, प्रा० स०] १ जिसका क्रम या सिलसिला न टूटा हो। अनवच्छिन्न। २ निर्मल। विशुद्ध।

क्रि० वि० १ निरंतर। लगातार। २ निपट। निरा।

निरवद्य—वि० [सं० निर्-अवद्य, प्रा० स०] [स्त्री० निरवद्या] जिसमें कोई ऐब या दोष न हो और इसी लिए जिसे कोई बुरा न कह सके। अनिंद्य।

निरवधि—वि० [सं० निर्-अवधि, ब० स०] १ जिसकी अवधि नियत न हो। २ सीमा-रहित।

क्रि० वि० निरंतर। लगातार।

निरवलंब—वि० [सं० निर्-अवलंब, ब० स०] १ जिसका कोई अवलंब, आश्रय या सहारा न हो। २ जिसका कोई ठौर-ठिकाना या रहने का स्थान न हो।

निरवशेष—वि० [सं० निर्-अवशेष, ब० स०] संपूर्ण। समग्र।

निरवसाद—वि० [सं० निर्-अवसाद, ब० स०] अवसाद से रहित।

निरवसित—वि० [सं० निर्-अवसित, प्रा० स०] १ (व्यक्ति) जिसके स्पर्श से खाने-पीने की चीजें और उनके पात्र अपवित्र या अशुद्ध हो जायँ अर्थात् छोटी जाति का। २ जाति से निकाला हुआ। जैसे—चांडाल।

निरवस्कृत—वि० [सं० निर्-अवस्कृत, प्रा० स०] साफ किया हुआ। परिष्कृत।

निरवहलिका—स्त्री० [सं० निर्-अव√हल् (जोतना)+ण्वुल्—अक, टाप्, ह्रस्व] १ चहारदीवारी। प्राचीर। २ चहारदीवारी से घिरा हुआ स्थान। बाड़ा।

निरवाना—स० [हिं० निराना का प्रे०] निराने का काम दूसरे से कराना। †पु०=निवारना।

निरवार—पु० [हिं० निरवारना] १ निरवारने की क्रिया या भाव। २ छुटकारा। निस्तार।

निरवारना—स० [सं० निवारण] १ निवारण करना। २ झंझट, बखेड़ा अथवा बाधक तत्त्व या बात दूर करना या हटाना। ३ बंधन आदि से मुक्त या रहित करना। ४ कष्ट या संकट दूर करना। ५ छोड़ना। त्यागना। ६ सुलझाना। ७ झगड़ा या विवाद निपटाना।

निरवाह†—पु० निर्वाह।

निरवाहना—स० [सं० निर्वाह] निर्वाह करना।

निरवेद—पु० -निर्वेद।

निरव्यय—वि० [सं० निर्-अव्यय, प्रा० स०] नित्य। शाश्वत।

निरशन—वि० [सं० निर्-अशन, ब० स०] १ जिसने खाया न हो या जो न खाय। २ जिसमें भोजन करना मना हो।

पु० भोजन न करने अर्थात् निराहार रहने की अवस्था या भाव। उपवास।

निरसक†—वि० -निःशक।

निरस—वि० [हिं० नि+रस] १ जिसमें रस न हो। रस से रहित। २ जिसमें कोई स्वाद न हो। फीका। ३ किसी की तुलना में घटकर या हीन। ४ रूखा। सूखा। ५ विरक्त।

*पु० - निरसन।

निरसन—पु० [सं० निर्√अस् (फेंकना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निरसित, निरस्त, वि० निरस्य] १ दूर करना। हटाना। २ साधिकार पहले का निश्चय या आज्ञा आदि रद करना। (कैन्सिलेशन, रिपील, रिसाइंडिंग)। ३ रद करने का अधिकार या शक्ति। ४. निराकरण। परिहार। ५. नाश। ६ वध। ७ बाहर करना। निकालना। (डिसचार्ज)

निरसा—स्त्री० [सं० नि-रस, ब० स०, टाप्] एक प्रकार की घास जो कोंकण देश में होती है।

†वि०=निरस।

निरसित—भू० कृ०=निरस्त।

निरस्त—भू० कृ० [सं० निर्√अस्+क्त] जिसका निरसन हुआ हो। (सभी अर्थों में)

निरस्त्र—वि० [सं० निर्-अस्त्र, ब० स०] १ जिसके पास अस्त्र न हो। अस्त्ररहित। उदा०—प्रेम शक्ति से चिर निरस्त्र हो जावेगी पाशवता।—पंत। २ जिससे अस्त्र छीन या ले लिया गया हो। (अन-आर्म्ड)

निरस्त्रीकरण—पु० [सं० निरस्त्र+च्वि, ह्रस्व, दीर्घ√कृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निरस्त्रीकृत] १ अस्त्रों से रहित करना। २ आधुनिक राजनीति में, परस्पर युद्ध की संभावना कम करने के लिए आविष्कृत एक उपाय जिसके अनुसार देश की सेना या सैनिक बल कम किया जाता है जिससे उसमें युद्ध करने की समर्थता घट जाय। (डिस-आर्मामेंट)

निरस्त्रीकृत—भू० कृ० [सं० निरस्त्र+च्वि,√कृ+क्त] (देश या सैनिक) जो अस्त्रहीन कर दिया गया हो।

निरस्थि—वि० [सं० निर्-अस्थि, ब० स०] जिसमें हड्डी न हो अथवा जिसमें से हड्डी निकाल दी गई हो।

निरस्य—वि० [सं० निर्√अस्+यत्] जिसका निरसन होने को हो या किया जा सके।

निरहंकार—वि० [सं० निर्-अहंकार, ब० स०] जिसमें या जिसे अहंकार न हो।

निरहंकृत—वि० [सं० निर्-अहंकृत, प्रा० स०] अहंकार-शून्य।

निरहम्—वि० [सं० निर्-अहम्, ब० स०] जिसमें अहं भाव न हो।

निरहेतु—वि० -निर्हेतु।

निरहेल—वि० [सं० हेय] अधम। तुच्छ।

निरा—वि० [सं० निरालय, पु० हिं० निराल] [स्त्री० निरी] १ (व्यक्ति) जिसमें कोई एक ही (उल्लिखित) गुण या अवगुण हो। जैसे—निरा पाजी, निरा मूर्ख। २ (पदार्थ) जिसमें कोई ऐसा तत्त्व न मिलाया गया हो, जिससे उसकी उपयोगिता या महत्त्व घटता हो। विशुद्ध। ३ केवल। सिर्फ। जैसे—निरी दाल के साथ रोटी खाना।

निराई—स्त्री० [हिं० निराना] निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

निराक—पु० [सं० निर्√अक् (वक्र गति)+घञ्] १ पाचन क्रिया। २ पसीना। ३ बुरे कर्म का विपाक।

निराकरण—पु० [सं० निर्-आ√कृ+ल्युट्—अन] [वि० निराकरणीय, निराकृत] १ अलग या पृथक् करना। २ निकालना, दूर करना या हटाना। ३ निर्वासन। ४ अस्वीकृत या निरस्त करना। ५ उठाये या किए हुए प्रश्न, आपत्ति आदि का तर्कपूर्वक खंडन, निवारण या परिहार करना। ६ दे० 'निरसन'।

निराकांक्ष—वि० [सं० निर्-आकांक्षा, ब० स०] जिसे कोई आकांक्षा या इच्छा न हो।

निराकांक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० निर्-आ√कांक्ष् (चाहना)+णिनि] [स्त्री० निराकांक्षिणी]—निराकांक्ष।

निराकार—वि० [सं० निर्-आकार, ब० स०] १ जिसका कोई आकार न हो। आकार-रहित। २ कुरूप। बेडौल। भद्दा।

पु० १ ब्रह्म। २ विष्णु। ३ शिव। ४ आकाश।

निराकाश—वि० [सं० निर्-आकाश, ब० स०] जिसमें आकाश अर्थात् कुछ भी खाली स्थान न हो या गुंजाइश न हो।

निराकुल—वि० [स० निर्-आकुल, प्रा० स०] १ जो आकुल या विकल न हो। २ किसी के अदर भरा हुआ या व्याप्त। ३ बहुत अधिक आकुल या विकल।

निराकृत—वि० [स० निर्-आ√कृ+क्त] [भाव० निराकृति] १ जिसका निराकरण हो चुका हो। २ रद्द या व्यर्थ किया हुआ। ३ जिसका खडन हो चुका हो। ४ जो घबराया न हो।

निराकृति—वि० [स० निर्-आकृति, ब० स०] १ आकृति-रहित। निराकार। २ जो वेद-पाठ या स्वाध्याय न करता हो। ३ जो पच महायज्ञ न करता हो।

पु० १ रोहित मनु के एक पुत्र का नाम। २ [निर्-आ√कृ+क्तिन्] निराकरण।

निराकृती (तिन्)—वि० [स० निराकृत+इनि] निराकरण करनेवाला।

निराक्रद—वि० [स० निर्-आक्रद, ब० स०] १ जो चिल्लाता या शिकायत न करता हो। २ (ऐसा स्थान) जहाँ किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पडता हो।

निराखर†—वि० निरक्षर।

निराग—वि० [स० नि-राग, ब० स०] १ रागहीन। २ विरक्त।

निरागस्—वि० [स० निर्-आगस्, ब० स०] पाप-रहित। निष्पाप।

निराचार—वि० [स० निर्-आचार, ब० स०] १ (व्यक्ति) जो आचार-हीन हो। २ (चाल या रीति) जिसे समाज से मान्यता या स्वीकृति न मिली हो।

निराजी—स्त्री० [?] करघे मे, हत्थे और तरौछी के सिरो को मिलानेवाली लकडी। (जुलाहे)

निराट—वि० [हि० निराल] १ दे० 'निराला'। २ दे० 'निरा'।

निराटा—वि० [स्त्री० निराटी] निराला। उदा०—सोच है यहै कै सग ताके रग भौन माहिँ कौन धौ अनोखो ढग रचत निटारी है।—रत्नाकर।

निराडबर—वि० [स० निर्-आडबर, ब० स०] आडबरहीन।

निरातक—वि० [स० निर्-आतक, ब० स०] १ जो आतकित न हो। २ जो आतक न उत्पन्न करे। ३ रोग-रहित। नीरोग।

निरातप—वि० [स० निर्-आतप, ब० स०] १ जो तपता न हो। २ छायादार। ३ जो ताप से सुरक्षित हो।

निरातपा—वि० स्त्री० [स० निरातप+टाप्] जो तपती न हो।

स्त्री० रात।

निरात्म—वि० [स० निर्-आत्मन्, ब० स०] [भाव० नैरात्म्य] आत्मा से रहित या हीन।

निरादर—पु० [स० निर्-आदर, प्रा० स०] १ आदर का अभाव। २ अपमान।

निरादान—वि० [स० निर्-आदान, ब० स०] जो कुछ भी प्राप्त न कर रहा हो।

पु० [प्रा० स०] १ आदान या लेने का अभाव। २ (ब० स०) एक बुद्ध का नाम।

निरादेश—पु० [स० निर्-आ√दिश्+घञ्] चुकता करना। भुगताना।

निराधार—वि० [स० निर्-आधार, ब० स०] १ जिसका कोई आधार (अवलब या आश्रय) न हो। २ जिसकी कोई जड या बुनियाद न हो। निर्मूल। ३ (कथन) जिसका कोई प्रमाण न हो और इसी लिए जो ठीक या वास्तविक न हो, फलत अमान्य। ४ जिसे अभी तक कुछ या कोई सहारा न मिला हो।

निराधि—वि० [स० निर्-आधि, ब० स०] आधि अर्थात् रोग, चिंताओ आदि से मुक्त या रहित।

निरानद—वि० [स० निर्-आनद, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसके मन मे या जिसे आनद अथवा प्रसन्नता न हो। २ (काम या बात) जिसमे कुछ भी आनद न मिल सकता हो।

पु० १ आनद का अभाव। २ दुख।

निराना—स० [स० निराकरण] [भाव० निराई] खेत मे फसल के साथ आप से आप उगे हुए और फसल को हानि पहुँचानेवाले निरर्थक पौधो तथा वनस्पतियो को उखाडना या खोदकर निकालना।

निरापद—वि० [स० निर्-आपदा, ब० स०] १ जिसके लिए कोई आपदा या सकट न हो। २ जिसमे कोई आपदा या सकट न हो। ३ जिससे किसी प्रकार की आपदा या सकट की सभावना न हो।

क्रि० वि० बिना किसी प्रकार की आपत्ति या सकट के।

निरापन—वि० [हि० निर+सग० आपन] १ जो अपना न हो। २ पराया। बेगाना।

निरापुन—वि० = निरापन।

निराबाध—वि० [स० नि-आबाधा, ब० स०] जिसके साथ छेड-छाड न हो। बाधा-रहित।

निरामय—वि० [स० निर्-आमय, ब० स०] १ जिसे रोग न हो फलत नीरोग और स्वस्थ। २ कुशल।

पु० १ जगली बकरा। २ सूअर।

निरामिष—वि० [स० निर्-आमिष, ब० स०] १ (खाद्य पदार्थ या भोजन) जिसमे आमिष अर्थात् मास या उसका कोई अश अथवा रूप (अडा या मछली) न मिला हो। २ (व्यक्ति) जो मास (अडा, मछली आदि) न खाता हो।

निरामिष भोजी (जिन्)—वि० [स० निरामिष√भुज् (खाना)+णिनि] जो मास न खाता हो, फलत शाकाहारी। (वेजिटेरियन)

निराय—वि० [स० निर्-आय, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसे आय न हो रही हो। २ (व्यापार) जिससे आय न हो रही हो।

निरायत—वि० [स० निर्-आयत, प्रा० स०] जो फैलाया या बढाया हुआ न हो, फलत सिकोडा हुआ।

निरायास—वि० [स० निर्-आयास, ब० स०] बिना आयास या परिश्रम के होनेवाला।

क्रि० वि० बिना आयास या परिश्रम किये।

निरायुध—वि० [स० निर्-आयुध, ब० स०] निरस्त्र।

निरार (ा)—वि० [स्त्री० निरारी] १ = निराला। २ = न्यारा।

निरालब—वि० [स० निर्-आलब, ब० स०] १ जिसका कोई आलब या सहारा न हो। २ जिसे कोई आश्रय या सहायता देनेवाला न हो। ३ आधार-हीन।

निरालबा—स्त्री० [स० निरालब+टाप्] छोटी जटामासी

निराल—वि० [हिं० निराला] १ निराला। २ निपट। निरा। ३ विशुद्ध।

निरालक—पु० [सं०] एक तरह की समुद्री मछली।

निरालंभ*—वि० =निरालंब।

निरालय—वि० [?] अपवित्र। उदा०—ऐसन देह निरालय बौरे मुए छुवँ नहि कोई हो।—कबीर।

निरालस—वि०, पु०- निरालस्य।

निरालस्य—वि० [सं० निर्-आलस्य, ब० स०] जिसे आलस्य न हो, फलत फुर्तीला।

पु० आलस्य का अभाव।

निराला—वि० [सं० निरालय] [स्त्री० निराली] १ (स्थान) जहाँ कोई आदमी या बस्ती न हो। २ एकांत और निर्जन। ३ (बात, वस्तु या व्यक्ति) जो अपनी बनावट, रूप, विशिष्टताओं आदि के कारण सबसे अलग तरह का और अनोखा हो। अनूठा।

पु० ऐसा स्थान जहाँ लोगों की भीड़-भाड़ या आना-जाना न हो। एकांत और निर्जन स्थान।

निरालोक—वि० [सं० निर्-आलोक, ब० स०] १ आलोक अर्थात् प्रकाश से रहित। २ अंधकारपूर्ण। अँधेरा।

पु० शिव।

निरावना†—स० निराना।

निरावरण—वि० [सं० निर्-आवरण ब० स०] जिसके आगे या सामने कोई परदा न पड़ा हो। आवरण-रहित। खुला हुआ।

पु० [भू० कृ० निरावृत] १ आगे या सामने का परदा हटाने की क्रिया या भाव। २ दे० 'अनावरण'।

निरावलंब—वि० [सं० निरवलंब] जिसका कोई अवलंब या सहारा न हो। अवलंब-रहित।

निरावृत—भू० कृ० [सं० निर्-आवृत, प्रा० स०] जिस पर से आवरण हटाया गया हो।

निराश—वि० [सं० निर्-आशा, ब० स०] [भाव० निराशा] जिसे आशा न रह गई हो, अथवा जिसकी आशा नष्ट हो चुकी हो। हताश।

निराशक—वि० दे० 'निराश'।

निराशा—स्त्री० [सं० निर्-आशा, प्रा० स०] १ आशा का अभाव। २ निराश होने की अवस्था या भाव।

निराशावाद—पु० [प०त०] वह लौकिक सिद्धांत जिसमें यह माना जाता है कि संसार दुःखों से भरा है और इसलिए अच्छी बातों की ओर से मनुष्य को निराश रहना चाहिए, उनकी आशा नहीं करनी चाहिए। (पेसिमिज़म)

निराशावादी (दिन्)—वि० [सं० निराशावाद+इनि] निराशावाद-संबंधी।

पु० वह जो निराशावाद के सिद्धांत को ठीक मानता हो। (पेसिमिस्ट)

निराशिष्—वि० [सं० निर्-आशिष्, ब० स०] १ आशीर्वाद शून्य। २ तृष्णा, वासना आदि से रहित।

निराशी—वि०= निराश।

निराश्रय—वि० [सं० निर्-आश्रय, ब० स०] १ जिसे कहीं कोई आश्रय या सहारा न मिल रहा हो। आश्रय-रहित। आधारहीन। बिना सहारे का। २ जिसका कोई संगी-साथी न हो।

निरास—पु० [सं०] निरसन। (देखें)

†वि० =निराश।

निरासन—वि० [सं० निर्-आसन, ब० स०] आसन-रहित।

पु० =निरसन।

निरासा—स्त्री० - निराशा।

निरासी—वि० =निराश।

निरास्वाद—वि० [सं० निर्-आस्वाद, ब० स०] जिसका या जिसमें स्वाद न हो। स्वाद-रहित।

निराहार—वि० [निर्-आहार, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसने भोजन का समय बीत जाने पर भी अभी तक खाया न हो। जिसने अभी तक भोजन न किया हो। २ (कर्म या व्रत) जिसके अनुष्ठान में भोजन न करने का विधान हो।

क्रि० वि० बिना भोजन किये। भूखे रह कर।

पु० कुछ न खाने-पीने अर्थात् भूखे रहने की अवस्था या भाव।

निरिंग—वि० [सं० निर्-इंग, ब० स०] निश्चल। अचल।

निरिंगिणी—स्त्री० [सं० निर्√इंग् (गति)+इनि—ङीप्] चिक। झिलमिली। परदा।

निरिंद्रिय—वि० [सं० निर्-इंद्रिय, ब० स०] १ जिसे कोई इंद्रिय न हो। इन्द्रियों से रहित। २ जिसकी इंद्रियाँ ठीक तरह से काम न देती हों।

निरिच्छ—वि० [सं० निर्-इच्छा, ब० स०] जिसे कोई इच्छा न हो। इच्छा रहित।

निरिच्छन*—पु० निरीक्षण।

निरिच्छना—स० [सं० निरीक्षण] निरीक्षण करना।

निरीक्षक—वि० [सं० निर्√ईक्ष् (देखना)+ण्वुल्—अक] १ देखने-वाला। २ निरीक्षण करनेवाला।

पु० वह अधिकारी जो किसी काम का निरीक्षण या देख-भाल करने के लिए नियुक्त हो। (इन्सपेक्टर)

निरीक्षण—पु० [सं० निर्√ईक्ष्+ल्युट्—अन] [वि० निरीक्षित, निरीक्ष्य] १ देखना। दर्शन। २ यह देखना कि सब काम ठीक तरह से हुए है या नहीं अथवा सब बातें ठीक है या नहीं। (इन्सपेक्शन)। ३ देखने की मुद्रा। ४ नेत्र। आँख।

निरीक्षा—स्त्री० [सं० निर्√ईक्ष्+अ—टाप्] १ देखना। दर्शन। २ निरीक्षण।

निरीक्षित—भू० कृ० [सं० निर्√ईक्ष्+क्त] १ देखा हुआ। २ जिसका निरीक्षण हुआ हो।

निरीक्ष्य—वि० [सं० निर्√ईक्ष्+ण्यत्] १ जो देखा जा सके। जो दिखाई दे सके। २ जिसका निरीक्षण करना उचित हो। ३ जिसका निरीक्षण होने को हो।

निरीक्ष्यमाण—वि० [सं० निर्√ईक्ष्+यक्+शानच्] जो देखा जाता हो।

निरीति—वि० [सं० निर्-ईति, ब० स०] ईति अर्थात् अति-वृष्टि से रहित।

निरीश—वि० [सं० निर्-ईश, ब० स०] १ जिसका कोई ईश या स्वामी न हो। बिना मालिक का। २ जो ईश्वर को न मानता हो। निरीश्वर-वादी। नास्तिक।

पु० हल का फाल।

निरीश्वर—वि० [स० निर्-ईश्वर, ब० स०] १ (मत या सिद्धात) जिसमे ईश्वर का अस्तित्व न माना जाता हो। २ (व्यक्ति) जो ईश्वर का अस्तित्व न मानता हो। नास्तिक।

निरीश्वरवाद—पु० [ष० त०] यह विचारधारा या सिद्धात कि विश्व का नियामक या स्रष्टा कोई ईश्वर नही है। ईश्वर को न माननेवाला मत या सिद्धात।

निरीश्वरवादी (दिन्)—वि० [स० निरीश्वरवाद+इनि] निरीश्वरवाद-सबधी। पु० निरीश्वरवाद का अनुयायी।

निरीष—पु० [स० निर्-ईषा, ब० स०] हल का फाल।

निरीह—वि० [स० निर्-ईहा, ब० स०] [भाव० निरीहता, निरीहत्व] १ जिसे किसी काम या बात की ईहा (अर्थात् इच्छा या कामना) न हो। जिसे किसी तरह की चाह या वासना न हो। २ जो कुछ भी करना न चाहता हो और इसी लिए कुछ भी न करता हो। ३ उदासीन। विरक्त। ४ जो इतना नम्र और शात हो कि किसी का अपकार या अहित न करता हो या न कर सकता हो। ५ सुकुमार। सुकोमल। जैसे—निरीह रूप।

निरीहा—स्त्री० [स० निर्-ईहा, प्रा० स०] १ ईहा या चाह का अभाव। २ ईहा के अभाव के कारण होनेवाली निश्चेष्टता।

निरुआर—पु०=निरुवार (छुटकारा)।

निरुआरना†—स० =निरवारना।

निरुक्त—भू० कृ० [स० निर्√वच् (कहना)+क्त] [भाव० निरुक्ति] १ ठीक, निश्चित और स्पष्ट रूप मे कहा, बतलाया या समझाया हुआ। जिसका उच्चारण, कथन या निरूपण उचित और यथेष्ट रूप मे हुआ हो। सन्देह-रहित और स्पष्ट। २ जिसका निर्देश या विधान स्पष्ट रूप से हुआ हो। ३ चिल्लाकर या जोर से कहा हुआ। उद्घोषित।

पु० १ शब्द का ऐसा अर्थ या विश्लेषण जिसमे उसके मूल या व्युत्पत्ति का भी पता चलता हो। २ वह ग्रन्थ या शास्त्र जिसमे शब्दो के अर्थ, पर्याय और व्युत्पत्तियाँ बतलाई गई हो। शब्दो की व्युत्पत्ति और विकारी रूपो के तत्त्व या सिद्धात बतलानेवाला ग्रथ या शास्त्र। शब्द-शास्त्र। (एटिमॉलाजी)

विशेष—हमारे यहाँ इस शास्त्र का आरभ ऐसे वैदिक शब्दो के विवेचन से हुआ था, जो पुराने पड चुके थे और जिनके अर्थो के सबध मे मत-भेद या सदेह होता था। शब्दो के ठीक अर्थ और आशय समझने-समझाने के लिए उनके व्युत्पत्तिक आधार का निरूपण या विवेचन करना आवश्यक होता था। यह काम वैदिक साहित्य के ही सम्बन्ध मे हुआ था, अत इसे छ वेदागो मे चौथा स्थान मिला था।

३ उक्त विषय का यास्काचार्य कृत वह ग्रथ जो वैदिक निघटु की व्याख्या के रूप मे है और जिसमे यह बतलाया गया है कि शब्दो मे वर्ण-लोप, वर्ण-विपर्यय, वर्णागम आदि किस प्रकार के और कैसे होते है।

विशेष—यास्काचार्य का स्थान उस समय के निरुक्तकारो मे चौदहवाँ था। इसी से पता चल जाता है कि हमारे यहाँ इस विषय का विवेचन कितने प्राचीन काल मे आरभ हुआ था।

निरुक्ति—स्त्री० [स० निर्√वच्+क्तिन्] १ निरुक्त होने की अवस्था या भाव। २ शब्दो का ऐसा निरूपण या विवेचन जो यह बतलाता हो कि शब्द किस प्रकार और किन मूलो से बने है और उनके रूपो मे किस प्रकार परिवर्तन या विकार होते है। शब्दो की व्युत्पत्ति और विकारी रूपो के तत्त्व या सिद्धान्त बतलानेवाली विद्या या शास्त्र। शब्द-शास्त्र। (एटिमॉलाजी) ३ किसी शब्द का मूल रूप। व्युत्पत्ति। (डेरिवेशन) ४ साहित्य मे, एक प्रकार का गौण अर्थालकार जिसमे किसी शब्द के व्युत्पत्तिक विश्लेषण के आधार पर कोई अनूठी और कौशलपूर्ण बात कही जाती है, अथवा किसी नाम या सज्ञा का साधारण से भिन्न कोई विलक्षण व्युत्पत्तिक अर्थ निकालकर उक्ति मे चमत्कार उत्पन्न किया जाता है। यथा—(क) ताप करत अबलान को, दया न चित कछु आतु। तुम इन चरितन सौच ही दोषाकर विख्यातु। यहाँ 'दोषाकर' शब्द के कारण निरुक्ति अलकार हुआ है। चद्रमा का दोषाकर इसलिए कहते है कि वह दोषा (रात) करता है। पर यहाँ दोषाकर का प्रयोग दोषो का आकार या भडार के अर्थ मे किया गया है। (ख) रूप आदि गुण सो भरी तजिकै ब्रज बनितान। उद्धव कुब्जा बस भये निर्गुण वहै निदान। यहाँ 'निर्गुण' शब्द की दो प्रकार की निरुक्तियो या व्युत्पत्तियो का आधार लेकर चमत्कार उत्पन्न किया गया है। आशय यह झलकाया गया है कि जो कृष्ण निर्गुण (अर्थात् सत्त्व, रज और तम तीनो गुणो से परे या रहित) कहे जाते है, वे कुब्जा जैसी निर्गुण (अर्थात् सब प्रकार के अच्छे गुणो या बातो से रहित या हीन) स्त्री के फेर मे पडकर अपना 'निर्गुण' वाला विशेषण चरितार्थ या सार्थक कर रहे हैं। इसी प्रकार के कथनो की गिनती निरुक्ति अलकार मे होती है।

निरुच्छ्वास—वि० [स० निर्-उच्छ्वास, ब०स०] १ (स्थान) जहाँ बहुत से लोग इस प्रकार भरे हो कि उन्हे साँस तक लेने मे बहुत कठिनता हो। २ (स्थान) जहाँ बैठने मे दम घुटता हो।

निरुज—वि०=नीरुज (नीरोग)।

निरुत्तर—वि० [स० निर्-उत्तर, ब०स०] १ (व्यक्ति) जो किसी प्रश्न का उत्तर न दे सकने के कारण मौन हो गया हो। २ (प्रश्न) जिसका उत्तर न दिया गया हो या न दिया जा सके।

निरुत्साह—वि० [स० निर्-उत्साह, ब०स०] १ जिसमे उत्साह न हो। २ जिसका उत्साह न रह गया हो।

पु० [प्रा०स०] उत्साह का न होना।

निरुत्साहित—भू० कृ० [स० निरुत्साह+इतच्] जिसका उत्साह नष्ट हो गया हो या नष्ट कर दिया गया हो।

निरुत्सुक—वि० [स० निर्-उत्सुक, प्रा०स०] [भाव० निरुत्सुकता] जो (किसी काम या बात के लिए) उत्सुक न हो।

निरुदक—वि० [स० निर्-उदक, ब०स०] १ बिना जल का। २ (स्थान) जिसमे या जहाँ जल न हो।

निरुदन—पु० [स०] [भू० कृ० निरुदित]=निर्जलीकरण।

निरुद्देश्य—वि० [स० निर्-उद्देश्य, ब० स०] जिसका कोई उद्देश्य न हो। अव्य० बिना किसी उद्देश्य के। यो ही।

निरुद्ध—वि० [स० नि√रुध् (रोकना)+क्त] [भाव० निरोध] १. जिसका निरोध किया गया हो। २ रुका या रोका हुआ। ३. बन्धन मे डाला या पडा हुआ।

पु० योग में वर्णित पाँच प्रकार की मनोवृत्तियों में से एक, जिसमें चित्त अपनी कारणीभूत प्रकृति में मिलकर निश्चेष्ट हो जाता है।

निरुद्धकंठ—वि०[ब०स०] १ जिसका दम घुट गया हो। २ जिसका गला (आवेश, मनोवेग आदि के कारण) रुँध गया हो और इसी लिए जिससे स्पष्ट उच्चारण न निकलता हो।

निरुद्धगुद—पु० [ब०स०] पेट में मल जमा होने या रुकने का एक रोग।

निरुद्ध-प्रकाश—पु०[ब०स०] एक प्रकार का रोग, जिसमें मूत्रद्वार बद-सा हो जाता है और पेशाब बहुत रुक-रुककर होता है।

निरुद्यम—वि० [स० निर्-उद्यम, ब०स०] [भाव० निरुद्यमता] १ जो उद्यम या उद्योग न करता हो। २ जिसके पास कोई उद्यम या उद्योग न हो।

निरुद्यमी (मिन्)—वि०[स० निरुद्यम+इनि] (व्यक्ति) जो उद्यम न करता हो, फलत आलसी और कामचोर।

निरुद्योग—वि०[स० निर्-उद्योग, ब०स०]१ जो उद्योग या प्रयत्न न करता हो। २ जिसके हाथ में कोई उद्योग या काम न हो।

निरुद्योगी—वि०=निरुद्योग।

निरुद्वेग—वि०[निर्-उद्वेग, ब०स०] जिसमें उद्वेग न हो। उत्तेजना और क्षोभ से रहित, फलत धीर और शात।

निरुपकार-आधि—स्त्री० [स०] वह पूँजी, जो किसी आमदनी वाले काम में न लगी हो, बल्कि यो ही व्यर्थ पड़ी हो।

निरुपजीव्य भूमि—स्त्री० [स० निर्-उपजीव्या, प्रा० स०] ऐसी भूमि जिस पर किसी का गुजर या निर्वाह न हो सकता हो। (कौ०)

निरुपद्रव—वि० [स० निर्-उपद्रव, ब०स०] [भाव० निरुपद्रवता] १ (स्थान) जहाँ उपद्रव न होता हो। २ (व्यक्ति) जो उपद्रवी न हो।

निरुपद्रवता—स्त्री० [स० निरुपद्रव+तल्—टाप्] निरुपद्रव होने की अवस्था या भाव।

निरुपद्रवी (विन्)—वि० [स० निर्-उपद्रविन्, प्रा०स०] जो कुछ भी उपद्रव न करे, फलत धीर और शात।

निरुपपत्ति—वि०[स० निर्-उपपत्ति, ब०स०] १ जिसकी कोई उपपत्ति न हो। २ जो उपयुक्त या युक्त न हो।

निरुपभोग—वि०[स० निर् उपभोग, ब०स०] १ (पदार्थ) जिसका किसी ने उपभोग न किया हो। २. (व्यक्ति) जिसने किसी विशिष्ट वस्तु का भोग या उपभोग कर आनद प्राप्त न किया हो।

पु०[प्रा० स०] उपभोग का अभाव।

निरुपम—वि० [स० निर्-उपमा, ब०स०] जिसकी कोई उपमा न हो, अर्थात् बहुत बढ़िया और बेजोड़।

पु० राष्ट्रकूट-वश के एक राजा का नाम।

निरुपमा—स्त्री०[स० निरुपम+टाप्] गायत्री का एक नाम।

निरुपमित—वि०[स० निर्-उपमित, प्रा०स०] [स्त्री० निरुपमिता] जिसकी उपमा किसी से न दी जा सकती हो। निरुपम। उदा०—वह खड़ी शीर्ण प्रिय-भाव-मग्न निरुपमिता।—निराला।

निरुपयोग—वि० [स० निर्-उपयोग, ब०स०] (पदार्थ) जिसका कोई उपयोग न हो अथवा जो अभी तक उपयोग में न लाया गया हो।

निरुपयोगी (गिन्)—वि०[स० निर्-उपयोगिन्, प्रा०स०] जो उपयोग में आने के योग्य न हो। निकम्मा।

निरुपस्कृत—वि०[स० निर्-उपस्कृत, प्रा०स०] १ जो उपस्कृत न हो। अलाछित। २ जो बदला न गया हो। ३ जिसमें मिलावट न हुई हो। बेमेल। विशुद्ध।

निरुपहत—वि० [स० निर्+उपहत, प्रा० स०] १ जो उपहत या आहत न हुआ हो। २ शुभ।

निरुपाख्य—वि०[स० निर्-उपाख्या, ब०स०] १ जिसकी व्याख्या न हो सके। २ जो कभी हीन हो सकता हो। असभव और मिथ्या।

पु० ब्रह्म।

निरुपाधि—वि०[स० निर्-उपाधि, ब०स०]१ जिसमें किसी प्रकार की उपाधि न हो। २ जो कुछ भी उपद्रव न करता हो। धीर और शात। ३ जिसमें बधन, बाधा, रुकावट या विघ्न न हो। ३ माया, मोह आदि से रहित।

पु० ब्रह्म की एक सज्ञा।

निरुपाधिक—वि०=निरुपाधि।

निरुपाय—वि०[स० निर्-उपाय, ब०स०] १ (व्यक्ति) जो कोई उपाय न कर रहा हो या न कर सकता हो। २ (कार्य या विषय) जिसका या जिसके लिए कोई उपाय न हो सके।

अव्य० उपाय न रहने की दशा में। लाचारी की हालत में।

निरुपेक्ष—वि० [स० निर्-उपेक्षा, ब० स०] जिसकी उपेक्षा न की जा सकती हो।

निरुवरना—अ०[स० निवारण] निवारण या निवारित होना। दूर होना।

स०=निरुवारना।

निरुवार—पु०[स० निवारण]१ निवारण करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. छुटकारा। बचाव। ३ निपटारा। निराकरण। ४ निर्णय। फैसला। ५ निश्चय।

निरुवारना—स०[हि० निरुवार]१ निवारण करना। २ बधन आदि से मुक्त करना। छुड़ाना। ३ उलझी हुई चीज को सुलझाना। ४ निपटारा करना। ५ निर्णय या निश्चय करना।

निरूढ़—वि०[स० निर्√रुह् (उत्पत्ति)+क्त] [स्त्री० निरूढ़ा] १ उत्पन्न। २ प्रसिद्ध। विख्यात। ३ अविवाहित। कुँआरा। ४ (शब्द का अर्थ) जो उसके व्युत्पत्तिक अर्थ से भिन्न होता है और परम्परा से स्वीकृत होता है।

पु० एक प्रकार का पशु यज्ञ।

निरूढ़-लक्षणा—स्त्री० [स० कर्म०स०] लक्षणा का एक भेद, जो उस अवस्था में माना जाता है, जब किसी शब्द का गृहीत अर्थ (व्युत्पत्तिक अर्थ से भिन्न) प्रचलित और रूढ़ हो जाता है।

निरूढ़वस्ति—स्त्री०[स० कर्म०स०]पिचकारी के आकार का एक प्रकार का उपकरण जिसके द्वारा रोगी के गुदा-मार्ग से ओषधि पहुँचाई जाती है। (वैद्यक)

निरूढ़ा—स्त्री०[स निरूढ़+टाप्] निरूढ़-लक्षणा। (दे०)

निरूढ़ि—स्त्री०[स० नि√रुह्+क्तिन्]१ ख्याति। प्रसिद्धि। २ दे० 'निरूढ़-लक्षणा'।

निरूप—वि० [हि० नि+स० रूप] १. जिसका कोई रूप न हो। २ कुरूप। बद-शकल। भद्दा।

पु०[स०]१ वायु। हवा। २ देवता। ३ आकाश।

निरूपक—वि० [सं० नि√रूप्(विचार करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] किसी बात या विषय का निरूपण करनेवाला।

निरूपण—पुं०[सं० नि√रूप्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निरूपित, वि० निरूप्य] १ छान-बीन तथा सोच-विचार कर किसी बात या विषय का विवेचन करना। २ अपना मत दूसरों को समझाते हुए उनके सम्मुख रखना। ३ निर्णय। ४ निदर्शन।

निरूपना—अ०[सं० निरूपण] १ निरूपण करना। २ निर्णय या निश्चय करना।

निरूपम—वि० निरुपम।

निरूपित—भू०कृ० [सं० नि√रूप्+णिच्+क्त] (बात या विषय) जिसका निरूपण हो चुका हो।

निरूपिति—स्त्री०[सं० नि√रूप+णिच्+क्तिन्] निरूपण।

निरूप्य—वि०[सं० नि√रूप्+णिच्+यत्] जिसका निरूपण होने को हो या किया जाना चाहिए।

निरूह—पुं०[सं० निर्√ऊह् (वितर्क)+घञ्] १ वस्ति का एक भेद। २ तर्क। ३ निश्चय। ४ पूर्ण वाक्य।

निरूहण—पुं०[सं० निर्‌ऊह+ल्युट्—अन] १ वस्ति का प्रयोग। २ तर्क करना। ३ निश्चय करना।

निरूह-वस्ति—स्त्री०[सं० मयू०स०] निरूहवस्ति। (दे०)

निरेखना—स०=निरखना।

नि-रेभ—वि०[सं० ब०स०] शब्द-हीन। निःशब्द।

निरै—पुं०[सं० निरय] नरक।

निरैंठा*—पुं० [सं० निर्+ईहा या इष्ट] [स्त्री० निरैंठी] मनमौजी। मस्त। उदा०—रूप गुन ऐंठी सु अमैंठी, उर पैठी बैठी ताडनि निरैंठी मति बोलनि हरैं हरी —घनानंद।

निरोग(गा)—वि०=नीरोग।

निरोठा—वि०[?] कुरूप। बद-सूरत।

निरोद्धव्य—वि० [सं० नि√रुध् (रोकना)+तव्यत्] जिसका निरोध किया जा सकता हो या किया जाने को हो।

निरोध—पुं०[सं० नि√रुध्+घञ्] [भू० कृ० निरुद्ध] १ रोकने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ अवरोध। रुकावट। रोक। ३ किसी के चारों ओर डाला जानेवाला घेरा। ४ आज-कल, किसी उपद्रवी या संदिग्ध व्यक्ति को (उसे उपद्रव करने से रोकने के लिए) किसी घिरे हुए स्थान में शासन द्वारा रोक रखने की क्रिया या भाव। (डिटेंशन) ५ योग में, चित्त की वृत्तियों को रोकना। ६ नाश।

निरोधक—वि०[सं० नि√रुध्+ण्वुल्—अक] निरोध करने या रोकनेवाला।

निरोधन—पुं०[सं० नि√रुध्+ल्युट्—अन] १ निरोध करने की क्रिया या भाव। बंधन या रोक में रखना। २ रुकावट। रोक। ३ वैद्यक में पारे का एक संस्कार, जो उसका शोधन करने के समय किया जाता है।

निरोधना—स०[सं०] १ निरोध या निरोधन करना। २ अपने अधिकार या वश में करना।

निरोध-परिणाम—पुं०[सं० मयू०स०] योग में, चित्तवृत्ति की एक विशेष अवस्था जो व्युत्थान और निरोध के मध्य में होती है।

निरोधा—स्त्री०[सं०] किसी ऐसे स्थान से जहाँ संक्रामक रोग फैला हो, आये हुए व्यक्तियों आदि को नये प्रदेश के लोगों में मिश्रित होने से रोकना जिससे रोग उस प्रदेश में फैलने और बढ़ने न पाये। २ वह स्थान जहाँ उक्त उद्देश्य से रोके हुए व्यक्तियों को स्थायी रूप से रोक रखा जाता है। (क्वारैंनटीन)

निरोधाचार—पुं०[सं० निरोध-आचार, ष०त०] सब कामों में होने या डाली जानेवाली रुकावट।

निरोधाज्ञा—स्त्री०[सं० निरोध-आज्ञा, ष०त०] ऐसी आज्ञा जिससे किसी को कोई कार्य करने से रोका जाता है।

निरोधी (धिन्)—वि०[सं० नि√रुध्+णिनि] निरोधक। (दे०)

निर्ऋत—भू० कृ० [सं० निर√ऋ (क्षयकरना)+क्त] जिसका क्षय हुआ हो।

निर्ऋति—स्त्री०[सं० निर् (निगत) ऋति—अशुभ, ब०स०] १ नैर्ऋत्य कोण की देवी। २ पृथ्वी के नीचे का तल। ३ [निर्√ऋ+क्तिन्] क्षय। नाश। ४ मृत्यु। मौत। ५ दरिद्रता। निर्धनता। ६ विपत्ति। संकट।

निर्ख—पुं०[फा०] वह भाव जिस पर कोई चीज बिकती हो। दर। भाव।

निर्ख-दरोगा—पुं०[फा०] मध्ययुग में वह अधिकारी, जो चीजों के भावों पर निगरानी रखता था।

निर्ख-नामा—पुं०[फा०] मध्ययुग में वह सूची, जिसमें वस्तुओं के बाजार-भाव लिखे होते थे।

निर्ख-बंदी—स्त्री०[फा०] वस्तुओं के बाजार भाव निश्चित करने या बाँधने की क्रिया या भाव।

निर्गंध—वि०[सं० निर्-गंध, ब०स०] [भाव० निर्गंधता] गंधहीन।

निर्गंध-पुष्पी—पुं०[सं० ब०स०, ङीप्] सेमर का पेड़।

निर्ग—पुं०[सं० निर्√गम्(जाना)+ड] प्रदेश। स्थल।

निर्गत—भू० कृ०[सं० निर√गम्+क्त] १ बाहर निकला या आया हुआ। २ दूर गया हुआ। ३ हटाया हुआ।

निर्गम—पुं०[सं० निर्√गम्+अप्] [वि० निर्गमित] १ बाहर निकलने की अवस्था, क्रिया या भाव। निकासी। २ वह मार्ग जिससे बाहर कोई चीज निकलती हो। निकास। ३ आज्ञा, आदेश आदि का निकलना या प्रकाशित होना। ४ किसी वस्तु विशेषतः धन आदि का किसी स्थान या देश से बहुत अधिक मात्रा में बाहर जाना। (ड्रेन) ५ विधिक क्षेत्र में, किसी व्यवहार या दीवानी मुकदमे की वह विचारणीय बात जिसका एक पक्ष स्थापन करता हो और जिसे दूसरा पक्ष न मानता हो और फलतः जिसके आधार पर उस व्यवहार या मुकदमे का निर्णय होने को हो। वादपद। साध्य। (इश्यू)

विशेष—यह दो प्रकार का होता है—(क) विधिक या कानूनी प्रश्नों से संबंध रखनेवाला निर्गम (इश्यू आफ ला) और (ख) वास्तविक घटनाओं या तथ्यों से संबंध रखनेवाला अर्थात् तथ्यक निर्गम (इश्यू ऑफ फैक्ट्स)।

निर्गमन—पुं०[सं० निर्√गम्+ल्युट्—अन] १ बाहर आने या निकलने की क्रिया या भाव। निकासी। २ वह द्वार जिससे होकर कुछ या कोई बाहर निकले। ३ प्रतिहार।

निर्गमना—अ०[सं० निर्गमन] बाहर निकलना।

निर्गम-मूल्य—पु०[सं० मध्य०स०] (वास्तविक मूल्य से भिन्न) वह मूल्य जो कुछ विशेष अवसरों पर किसी चीज की निकासी के समय कुछ घटाकर निश्चित किया जाता है। (इश्यू प्राइस)

निर्गमित पूंजी—स्त्री०[सं० निर्गमित+हि० पूँजी] वह पूँजी या रकम जो कारखाने, व्यापार आदि की दैनिक आवश्यकताएँ पूरी करने के लिए बाहर निकाली गई हो। (इश्यू कैपिटल)

निर्गर्व—वि०[सं० निर्-गर्व, ब०स०] जिसे गर्व न हो। निरभिमान।

निर्गवाक्ष—वि०[सं० निर्-गवाक्ष, ब०स०] (कमरा या घर) जिसमें खिड़की न हो।

निर्गुंठी—स्त्री०=निर्गुंडी।

निर्गुंडी—स्त्री०[सं० निर्-गुड=वेष्टन, ब० स०, ङीप्] एक प्रकार का क्षुप जिसके प्रत्येक सींके में अरहर की पत्तियों के समान पाँच-पाँच पत्तियाँ होती है। इसका उपयोग औषधो आदि मे होता है।

निर्गुण—वि०[सं० निर्-गुण, ब०स०] [भाव० निर्गुणता] १ जिसमें कोई गुण न हो। सत्त्व, रज और तम इन तीनों प्रकार के गुणों से रहित। २ जिसमें कोई अच्छा गुण या खूबी न हो। गुणरहित।
पु० परमात्मा का वह रूप जो सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से परे तथा रहित माना जाता है।

निर्गुणता—स्त्री० [सं० निर्गुण+तल्—टाप्] निर्गुण होने की अवस्था या भाव।

निर्गुण-धारा—स्त्री० [सं० ष०त०] हिन्दी साहित्य की वह ज्ञानाश्रयी धारा या शाखा जिसमें मुख्यत निर्गुण ब्रह्म की उपासना आदि के काव्य और पद है।

निर्गुण-भूमि—स्त्री० [सं० कर्म०स०] वह भूमि जिसमे कुछ भी पैदा न होता हो। ऊसर या बंजर जमीन। (कौ०)

निर्गुण-सम्प्रदाय—पु०[सं०ष०त०] भारतीय धार्मिक क्षेत्र मे, ऐसे एकेश्वरवादी संतों और साधुओं का सम्प्रदाय, जो निर्गुण ब्रह्म मे विश्वास रखते और उसकी उपासना करते है। (कहते है कि मूलत इस्लाम धर्म की देखा-देखी जाति-पाँति का भेद मिटाने और लोगों को सगुणोपासना से हटाकर एकेश्वरवाद की ओर लाने के लिए स्वामी रामानंद, कबीर आदि ने इसका समर्थन किया था।)

निर्गुणिया—वि०=निर्गुणी।

निर्गुणी—वि० [सं० निर्गुण] (व्यक्ति) जिसमें कोई गुण या खूबी न हो।

निर्गुन—पु०[सं० निर्गुण] पूर्वी हिन्दी के एक प्रकार के लोक-गीत, जिनमे मुख्यत निर्गुण ब्रह्म की भक्ति और रहस्यवादी भावनाओं की चर्चा रहती है।
वि०=निर्गुण।

निर्गूढ़—वि० [सं० निर्√गुह् (छिपना)+क्त] जो बहुत ही गूढ़ हो।
पु० वृक्ष का कोटर।

निर्ग्रंथ—वि०[सं० निर्-ग्रंथ, प्रा० स०] १. निर्धन। गरीब। २ मूर्ख। बेवकूफ। ३ असहाय। ४ दिगबर। नगा।
पु०१ वह जो किसी धार्मिक ग्रंथ का अनुयायी न हो, अथवा जिसके पथ मे कोई सर्वमान्य धार्मिक ग्रंथ न हो। २ बौद्ध क्षपणक या भिक्षु। ३ एक प्राचीन मुनि।

निर्ग्रंथक—वि०[सं० निर्ग्रंथ+कन्]१ चतुर। २ एकाकी। ३ परित्यक्त। ४ फलहीन।
पु०[स्त्री० निर्ग्रंथिका]१ बौद्ध क्षपणक या सन्यासी। २ जुआरी।

निर्ग्रंथन—पु०[सं० निर्√ग्रंथ (कौटिल्य)+ल्युट्—अन] वध करना। मारना।

निर्ग्रंथिक—वि०[सं० निर्-ग्रंथि, ब०स०, कप्] क्षपणक।
वि०, पु०[सं०] निर्ग्रंथक।

निर्ग्राह्य—वि०[सं० निर्-√ग्रह् (ग्रहण)+ण्यत्] १ देखने योग्य। २ ग्रहण करने योग्य।

निर्घंट—पु०[सं० निर्√घट् (दीप्ति)+घञ्] १ शब्द-संग्रह। शब्द-सपद। २ दे० 'निघंटु'।

निर्घट—पु० [सं० निर्-घट, ब०स०] वह हाट या बाजार जहाँ कोई राज-कर न लगता हो।

निर्घात—पु०[सं० निर्√हन् (हिंसा)+घञ्]१ तेज हवा के चलने से होनेवाला शब्द। २ बिजली की कड़क। ३ बहुत जोर का शब्द। ४ आघात। प्रहार। ५ उत्पात। उपद्रव। ६ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

निर्घातन—पु० [सं० निर्√हन्+णिच्+ल्युट्—अन] शल्य-चिकित्सा मे, अस्त्रों से किया जानेवाला एक प्रकार का उपचार। (सुश्रुत)

निर्घृण—वि०[सं० निर्-घृणा, ब०स०]१ जिसे घृणा न हो। घृणा से रहित। २ जिसे गदी चीजों से घृणा न होती हो। ३ जिसे बुरे काम करने से घृणा न हो; अर्थात् बहुत ही नीच। ४ जिसमे करुणा या दया न हो। निर्दय। ५ बेहया।

निर्घृणा—स्त्री० [सं० निर्-घृणा, प्रा०स०] १ निष्ठुरता। २ धृष्टता।

निर्घोष—वि०[सं० निर्√घुष् (शब्द)+घञ्] जिसमे घोष या शब्द न हो अथवा न होता हो। घोष-रहित।
पु०१ शब्द। आवाज। २ घोर शब्द।

निर्चा—पु०[सं०] चचु (साग)।

निर्छल†—वि०=निश्छल।

निर्जन—वि०[सं० निर्-जन, ब०स०] (स्थान) जहाँ जन या मनुष्य न हो। एकात।

निर्जय—स्त्री०[सं० निर्-जय, प्रा० स०] पूर्ण विजय।

निर्जर—वि०[सं० निर्-जरा, ब०स०] [स्त्री० निर्जरा] जरा अर्थात् वृद्धावस्था से रहित। जो कभी बुड्ढा न हो।
पु० १ देवता। २ अमृत।

निर्जरा—स्त्री०[सं० निर्जर+टाप्]१ तपस्या करके संचित कर्मों का क्षय या नाश करने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ तालपर्णी। ३ गिलोय। गुडूची।

निर्जल—वि०[सं० निर्-जल, ब०स०] [स्त्री० निर्जला] १ (आधान या पात्र) जिसमे जल न हो। २ (व्यक्ति) जिसने जल न पीया हो। ३ (नियम या व्रत) जिसमे जल तक पीने का निषेध हो। ४ (क्रिया या प्रयोग) जिसमे जल की अपेक्षा न होती हो, बल्कि उसका काम रासायनिक पदार्थों से किया जाता हो। (ड्राई) जैसे—निर्जल खेती, निर्जल धुलाई।

पु० १ वह स्थान, जहाँ जल बिलकुल न हो। २ ऐसा उपवास या व्रत जिसमे जल न पीया जाता हो।

निर्जल खेती—स्त्री० [स० + हि०] ऐसी खेती जिसमे वर्षा के जल की अपेक्षा न हो, बल्कि वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से फसल तैयार कर ली जाय। (ड्राई फारमिंग)

निर्जल धुलाई—स्त्री० [स० + हि०] कपडा आदि की ऐसी धुलाई, जिसमे बिना जल का उपयोग किये वे वैज्ञानिक प्रक्रियाओं से साफ किये जाते हैं। (ड्राई वाशिंग)

निर्जल प्रतिसारण—पु० [स० कर्म० स०] घावों आदि के धोने की वह प्रक्रिया जिसमे उन्हे साफ करके उनमे केवल रूई भरी जाती है, तरल औषधों का प्रयोग नही होता। (ड्राई ड्रेसिंग)

निर्जला एकादशी—स्त्री० [स० व्यस्त पद] जेठ सुदी एकादशी, जिस दिन निर्जल व्रत रखने का विधान है।

निर्जलित—भू० कृ० [स० निर्√जल् (ढकना) + क्त] जिसके अंदर का जल निकाल या सुखा दिया गया हो। (डिहाइड्रेटेड)

निर्जलीकरण—पु० [स० निर्जल + च्वि, ईत्व √कृ + ल्युट्—अन] रासायनिक प्रक्रिया द्वारा किसी वस्तु में से उसका जलीय अंश निकाल लेना या उसे सुखा देना। (डिहाइड्रेशन) जैसे—तरकारियों या फलों का निर्जलीकरण।

निर्जात—वि० [स० निर्√जन (उत्पत्ति) + क्त] जो आविर्भूत या प्रकट हुआ हो।

निर्जित—भू० कृ० [स० निर्√जि (जीतना) + क्त] [भाव० निर्जिति] १ पूरी तरह से जीता हुआ। २ वश में किया हुआ।

निर्जिति—स्त्री० [स० निर्√जि + क्तिन्] पूर्ण विजय।

निर्जीव—वि० [स० निर्-जीव, ब० स०] १ जिसमे जीवन या प्राण न हो। २ मरा हुआ। मृत। ३ जिसमे जीवनी-शक्ति का अभाव या कमी हो। ४ जिसमे ओज, दम या सजीवता न हो। जैसे—निर्जीव कहानी। ५ उत्साहहीन।

निर्झर—पु० [स० निर्√झॄ (झरना) + अप्] झरना।

निर्झरिणी, निर्झरी—स्त्री० [स० निर्झर + इनि—ङीप्, निर्झर + ङीष्] झरने से निकलनेवाली नदी।

निर्णय—पु० [स० निर्√नी (ले जाना) + अच्] १ कही से कुछ ले जाना या हटाना। २ किसी बात या विषय की ठीक और पूरी जानकारी प्राप्त करके अथवा किसी सिद्धान्त पर विचार करके कोई मत स्थिर करना। निश्चय या परिणाम निकालना। ३ उक्त प्रकार से स्थिर किया हुआ मत या निकाला हुआ निष्कर्ष। ४ किसी प्रकार के मतभेद, विवाद आदि के सबंध में दोनो पक्षों की सब बातों पर विचार करके यह निश्चय करना कि कौन-सा पक्ष या मत ठीक है। ५ विधिक क्षेत्र में, वादी और प्रतिवादी के सब आरोपों, उत्तरों, प्रमाणों आदि पर अच्छी तरह विचार करते हुए न्यायाधिकारी या न्यायालय का यह निश्चित या स्थिर करना कि किस पक्ष की बातें ठीक है, अथवा इस विषय का उचित रूप क्या होना चाहिए। ६ न्यायाधिकारी का लिखा हुआ वह लेख्य जिसमे उक्त विषय की सब बातों का विवेचन करते हुए अपना अंतिम निष्कर्ष या मत प्रकट करता है। फैसला। (डिसीजन)

निर्णयन—पु० [स० निर्√नी + ल्युट्—अन] निर्णय करने की क्रिया या भाव।

निर्णयात्मक—वि० [स० निर्णय-आत्मन्, ब० स०, कप्] १ निर्णय-सबधी। २ निर्णय के रूप में होनेवाला। ३ (तत्त्व या बात) जिससे किसी विवादास्पद बात का निर्णय होता हो। (दे० 'निर्णायक')

निर्णयोपमा—स्त्री० [स० निर्णय-उपमा, मध्य० स०] एक अर्थालंकार जिसमे उपमेय और उपमान के गुणों और दोषों का विवेचन करते हुए कुछ निष्कर्ष निकाला या निर्णय किया जाता है।

निर्णर—पु० [स०] सूर्य का एक घोडा।

निर्णायक—वि० [स० निर्√नी + ण्वुल्—अक] १ निर्णय करनेवाला। २ (घटना या बात) जिससे किसी झगडे या विषय का निर्णय होता हो। (डिसाइसिव)

पु० १ वह व्यक्ति जो किसी प्रकार के विवाद का निर्णय करता हो। २ खेल मे, वह व्यक्ति जो खेलाडियों को खेल के नियमों के अनुसार खिलाता है और जिसका निर्णय अंतिम होता है। (अम्पायर)

निर्णायक-मत—पु० [स० ष० त०] सभा-समितियों आदि में किसी विवादात्मक प्रश्न के सबंध में होनेवाले मत-दान के समय उस प्रश्न के पक्ष और विपक्ष में बराबर-बराबर मत आने पर सभापति का वह अंतिम मत जिसके आधार पर उस प्रश्न का निर्णय होता है। (कास्टिंग वोट)

निर्णिक्त—वि० [स० निर्√निज् (शुद्धि) + क्त] [भाव० निर्णिक्ति] १ धुला हुआ। २ शोधित। ३ जिसके लिए प्रायश्चित्त किया गया हो।

निर्णिक्ति—स्त्री० [स० निर्√निज् क्तिन्] १ धोना। २ शोधन। ३ प्रायश्चित्त।

निर्णीत—भू० कृ० [स० निर्√नी + क्त] १ जिसका निर्णय हो चुका हो या किया जा चुका हो। २ (विवाद) जिसके सबंध में निर्णय हो चुका हो। ३ (खेल) जिसमे हार-जीत का फैसला हुआ हो।

निर्णेक—पु० [स० निर्√निज् + घञ्] १ धोना। साफ करना। २ स्नान। ३ प्रायश्चित्त।

निर्णेजक—वि० [स० निर्√निज् + ण्वुल्—अक] १ धोने या साफ करनेवाला। २ प्रायश्चित्त करनेवाला।

पु० धोबी। रजक।

निर्णेजन—पु० [स० निर्√निज् + ल्युट्—अन] निर्णेक।

निर्णेता (तृ)—वि०, पु० [स० निर्√नी + तृच्] निर्णायक।

निर्त†—पु० - नृत्य।

निर्तक†—पु० - नर्तक।

निर्तना†—अ० - नाचना।

निर्तास†—पु० - निर्यास।

निर्दंड—वि० [स० निर्-दंड, ब० स०] जिसे सब प्रकार के दण्ड दिए जा सके।

पु० शूद्र, जिसे सब प्रकार के दंड दिये जाते थे या दिये जा सकते थे।

निर्दंत—वि० [स० निर्-दंत, ब० स०] (मुँह या व्यक्ति) जिसमे या जिसे दाँत न हो।

निर्दंभ—वि० [स० निर्-दंभ, ब० स०] दंभ-हीन।

निर्दई— वि० निर्दय।

निर्दग्ध—वि० [सं० निर्√दह् (जलाना)+क्त] जो जला हुआ न हो।

निर्दय—वि० [सं० निर्-दया, ब० स०] [भाव० निर्दयता] १ दया-हीन। २ (व्यक्ति) जो बहुत ही कठोर होकर अत्याचारपूर्ण काम करता हो और इस प्रकार दूसरों को सताता हो।

निर्दयता—स्त्री० [सं० निर्दय+तल्—टाप्] निर्दय होने की अवस्था या भाव।

निर्दयी†—वि०=निर्दय।

निर्दर—वि० [सं० निर्-दर=छिद्र, ब० स०] १ कठिन। कठोर। २ निर्दय।

पु० [सं० निर्√दृ (विदारण)+अप्] १ निर्झर। २ गुफा। ३ सार।

निर्दल—वि० [सं० निर्-दल, ब० स०] १ जिसमे दल न हो। दल-रहित। २ जो किसी दल (पक्ष या वर्ग) मे न हो। सब दलो से अलग।

निर्दलन—पु० [सं० निर्√दल् (फाड़ना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ नाश करना। २ भग करना।

वि० दलन करनेवाला।

निर्दहन—पु० [सं० निर्√दह्+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह जलाना। २ भिलावाँ।

निर्दहना*—स० [सं० दहन] दहन करना। जलाना।

निर्दहनी—स्त्री० [सं० निर्दहन+ङीप्] मराड़फली। मूर्वा लता।

निर्दाता (तृ)—पु० [सं० निर्√दा (देना)+तृच्] १ खेत निराने या निराई का काम करनेवाला व्यक्ति। २ कृषक। किसान। ३ दाता।

निर्दारण—पु० [सं०] [भू० कृ० निर्दारित]=विदारण।

निर्दिष्ट—भू० कृ० [सं० निर्√दिश (बताना)+क्त] १ जिसके प्रति या जिसकी ओर निर्देश हुआ हो। २ कहा, बतलाया या समझाया हुआ। वर्णित। ३ नियत या निश्चित किया हुआ। ठहराया हुआ। जैसे—निर्दिष्ट समय पर काम करना। ४ निर्णीत। ५ (बात या नियम) जिसके लिए कोई व्यवस्था की गुंजाइश निकाली गई या शर्त लगाई गई हो। (प्रोवाइडेड)

निर्दूषण—वि०=निर्दोष।

निर्देश—पु० [सं० निर्√दिश्+घञ्] १ स्पष्ट रूप से कहकर कुछ बतलाना या समझाना। (इन्स्ट्रक्शन) २ किसी चीज या बात की ओर ध्यान दिलाते या सकेत करते हुए यह बतलाना कि यही अभीष्ट अथवा अमुक है। इस प्रकार का उल्लेख या कथन कि यही वह है अथवा वही यह है। (रेफरेन्स)

पद—निर्देश-ग्रंथ। (देखें)

३ यह कहना, बतलाना या समझाना कि अमुक काम या बात इस प्रकार अथवा इस रूप में होनी चाहिए। (डाइरेक्शन) ४ निश्चित करना। ठहराना। ५ आज्ञा। आदेश। ६ उल्लेख। चर्चा। जिक्र। ७. नाम। सज्ञा। ८ आस-पास का स्थान। पड़ोस।

निर्देशक—वि० [सं० निर्√दिश्+ण्वुल्—अक] निर्देश या निर्देशन करनेवाला।

पु० वह व्यक्ति जिसका काम किसी प्रकार का निर्देश करना हो। (डाइरेक्टर)

निर्देश-ग्रंथ—पु० [ष० त०] वह ग्रंथ या पुस्तक जो सामान्यत अध्ययन के लिए न लिखी गई हो; वरन् जिसका उपयोग विशेष अवसरो पर कुछ बातों की जानकारी प्राप्त करने के लिए किया जाता हो। (रेफरेन्सबुक)

निर्देशन—पु० [सं० निर्√दिश्+ल्युट्—अन] १ निर्देश करने की क्रिया या भाव। २ यह कहना या बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार या इस रूप मे होना चाहिए। ३ वह स्थिति जिसमे कोई कार्य किसी की पूर्ण देख-रेख मे और उसके निर्देशानुसार हुआ हो। (डाइरेक्शन) ४ कोई ग्रंथ लिखने के समय उसमे आये हुए उद्धरणो, प्रसगो आदि के सबध मे यह बतलाना कि इनकी विशेष जानकारी अमुक ग्रंथ मे अमुक स्थान पर मिलेगी। (रेफरेंस)

निर्देष्टा—वि० पु०, [सं० निर्-√दिश्+तृच्]=निर्देशक।

निर्दैन्य—वि० [सं० निर्-दैन्य, ब० स०] दैन्य या दीनता से रहित अर्थात् निश्चित और सुखी रहने की अवस्था या भाव।

निर्दोष—वि० [सं० निर्-दोष, ब० स०] [भाव० निर्दोषता] १ जिसमे कोई अवगुण, दोष या बुराई न हो। बेऐब। २ (व्यक्ति) जिसने कोई दोष या अपराध न किया हो। निरपराध। ३ (कार्य) जो दोष से युक्त न हो।

निर्दोषता—स्त्री० [सं० निर्दोष+तल्—टाप्] निर्दोष होने की अवस्था या भाव।

निर्दोषी†—वि०=निर्दोष।

निर्द्रव्य—वि० [सं०]=निधन।

निर्द्वंद्व—वि० [सं० निर्+द्वंद्व, ब० स०] १ जो सब प्रकार के द्वंद्वो से परे या रहित हो। द्वन्द्व-हीन। २ जो सुख-दुःख, राग-द्वेष आदि से रहित हो। ३ जिसका कोई प्रतिद्वंद्वी या विरोधी न हो। ४. सब प्रकार से स्वच्छंद।

क्रि० वि० १ बिना किसी प्रकार के द्वंद्व या विघ्न-बाधा के। २ बिलकुल मनमाने ढंग से और स्वच्छंदतापूर्वक।

निर्धन—वि० [सं० निर्-धन] १ (व्यक्ति) जिसके पास धन न हो। धन-हीन। २ जिसने कोई अमूल्य वस्तु खो दी हो।

निर्धनता—स्त्री० [सं० निर्धन+तल्—टाप्] धनहीनता। गरीबी।

निर्धर्म्य—वि० [सं० निर्-धर्म्य, ब० स०] १ जो धर्म से रहित हो। २. (व्यक्ति) जिसका कोई धर्म न हो।

निर्धातु—वि० [सं० निर्-धातु, ब० स०] १ (पदार्थ) जो धातु के योग से न बना हो। २ (व्यक्ति) जिसकी धातु या वीर्य क्षीण हो गया हो।

निर्धार—पु०=निर्धारण।

निर्धारण—पु० [सं० निर्√धृ (धारण)+णिच्+ल्युट्—अन] १ किसी विचार को कार्य का रूप देने से पहले मन मे उसे करने की दृढ धारणा बनाना। तै या निश्चित करना। २ निश्चय के रूप में सभा, समितियों आदि का कोई प्रस्ताव पारित करना। ३ अर्थ-शास्त्र मे, निर्मित वस्तुओं के विक्रय-मूल्य निश्चित करना अथवा माँग और पूर्ति के आधार पर स्वय मूल्य निश्चित होना। ४ यह निश्चय करना कि अमुक काम से कितनी आय या कितना व्यय होना चाहिए। (एसेस्मेंट) ५ न्याय मे, किसी एक जाति के पदार्थों मे से गुण, कर्म आदि के विचार से कुछ को अलग करना। जैसे—यदि कहा जाय कि 'अमुक जाति के आम बहुत अच्छे होते हैं' तो यह उस जाति के आमो का निर्धारण होगा

निर्धारना—स० [सं० निर्धारण] निर्धारित या निश्चित करना। ठहराना।

निर्धारित—भू० कृ० [सं० निर्√धृ+णिच्+क्त] १ (बात) जिसे कार्य का रूप देने के लिए निश्चय कर लिया गया हो। २ (वस्तु) जिसका मूल्य निश्चित हो चुका हो। ३ (व्यापार या संपत्ति) जिसकी आय तथा व्यय आँका जा चुका हो।

निर्धारिती—पु० [सं०] वह जिसके संबंध में यह निर्धारित किया जाय कि इसे इतना कर आदि देना चाहिए। (एसेसी)

निर्धार्य—वि० [सं० निर्√धृ+ण्यत्] १ जिसके संबंध में निर्धारण होने को हो अथवा हो सकता हो। २ दृढ़। पक्का। ३ उत्साही। ४ निर्भीक।

निर्धूत—भू० कृ० [सं० निर्√धू (काँपना)+क्त] १ निकाला या हटाया हुआ। २ त्यक्त। ३ नष्ट किया हुआ। ४ टूटा हुआ। वि०=धौत (धोया हुआ)।

निर्धूम—वि० [सं० निर्-धूम, ब० स०] १ (स्थान) जिसमे धूआँ न हो। २ (उपकरण) जो धूआँ न छोड़ता हो। जैसे—निर्धूम गाड़ी।

निर्धौत—वि० [सं० निर्√धाव् (शुद्धि)+क्त] १ जो धुल चुका हो। २ चमकाया हुआ।

निर्नर—वि० [सं० निर्-नर, ब० स०] १ जिसमे नर या मनुष्य न हो। मनुष्यों से रहित। २ मनुष्यों द्वारा छोड़ा या त्यागा हुआ।

निर्नाथ—वि० [सं० निर्-नाथ, ब० स०] [भाव० निर्नाथता] जिसका कोई नाथ अर्थात् स्वामी न हो। अनाथ।

निर्निमित्त—वि० [सं० निर्-निमित्त, ब० स०] जिसका कोई निमित्त या कारण न हो।
अव्य० बिना किसी निमित्त या कारण के।

निर्निमित्तक—वि०=निर्निमित्त।

निर्निमेष—अव्य० [सं० निर्-निमेष, ब० स०] बिना पलक झपकाये। टक लगाकर। एकटक।
वि० १ जिसकी पलक न गिरे। २ जिसमे पलक न गिरे। जैसे—निर्निमेष दृष्टि।

निर्पक्ष—वि०=निष्पक्ष।

निर्फल—वि०=निष्फल।

निर्बंध—वि० [सं० निर्-बंध, ब० स०] जो बंधन या बंधनों से रहित हो।
पु० १ अड़चन। बाधा। २ रुकावट। रोक। ३ जिद। हठ। ४ आग्रह। ५ काव्य का वह प्रकार या भेद, जिसमे कोई क्रमबद्ध कथा न हो, बल्कि स्वच्छंद रूप से किसी तथ्य, भाव या रस का विवेचन हो।

निर्बंधन—पु० १ =निर्बंध। २ =निबंधन।

निर्बद्ध—भू० कृ० [सं० निर्√बंध् (बाँधना)+क्त] जिसके संबंध मे किसी प्रकार का निबंध लगा या हुआ हो। (रेस्ट्रिक्टेड)

निर्बल—वि० [सं० निर्-बल, ब० स०] [भाव० निर्बलता] १ (व्यक्ति) जिसमे बल न हो। २ जिसमे सहनशक्ति का अभाव हो। जैसे—निर्बल हृदय। ३ जिसमे यथेष्ट ओज या सजीवता न हो। जैसे—निर्बल विचारधारा।

निर्बलता—स्त्री० [सं० निर्बल+तल्—टाप्] निर्बल होने की अवस्था या भाव। कमजोरी।

निर्बर्हण—पु०=निबर्हण।

निर्बहना—अ० [सं० निर्वहन] १ निर्वाह होना। निभना। २. अलग या दूर होना।
स० १. निर्वाह करना। निभाना। २ अलग या दूर करना।

निर्बाध—वि० [सं० निर्-बाधा, ब० स०] जिसमे कोई बाधा न हो या न लगाई गई हो।
अव्य० १ बिना किसी बाधा के। २ निरंतर। लगातार।

निर्बाधित—वि०=निर्बाध।

निर्बान*—पु०=निर्वाण।

निर्बीज—वि० [सं० निर्-बीज, ब० स०] जिसका बीज या जनन-शक्ति बिलकुल नष्ट हो गई हो या नष्ट कर दी गई हो।

निर्बीजन—पु० [सं०] [भू० कृ० निर्बीजित] १. निर्बीज करना। २ ऐसी प्रक्रिया करना जिससे कोई वस्तु या प्राणी अपनी वंश-वृद्धि करने मे असमर्थ हो जाय।

निर्बीर—वि०=निर्वीर्य।

निर्बुद्धि—वि० [सं० निर्-बुद्धि, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसे बुद्धि न हो। २ मूर्ख।

निर्बोध—वि० [सं० निर्-बोध, ब० स०] जिसे बोध या ज्ञान न हो। अज्ञान। अनजान।

निर्भग्न—वि० [सं० निर्-भग्न, प्रा० स०] १ अच्छी तरह टूटा या तोड़ा हुआ। २ झुकाया हुआ।

निर्भट—वि० [सं० निर्√भट् (पोषण)+अच्] दृढ़। पक्का।

निर्भय—वि० [सं० निर्-भय, ब० स०] [भाव० निर्भयता] जिसे भय न हो।
पु० १ बढ़िया घोड़ा, जो जल्दी डरता न हो। २ रौच्य मनु का एक पुत्र।

निर्भयता—स्त्री० [सं० निर्भय+तल्—टाप्] निर्भय होने की अवस्था या भाव। निर्भीकता।

निर्भर—वि० [सं० निर्-भर, ब० स०] १ अच्छी या पूरी तरह से भरा हुआ। २. किसी के साथ मिला या लगा हुआ। युक्त। ३ आज-कल बँगला के आधार पर (कार्य, बात या व्यक्ति) जो किसी दूसरे पर अवलंबित या आश्रित हो। किसी पर ठहरा हुआ।
पु० ऐसा सेवक जिसे वेतन न दिया जाता हो।

निर्भर्त्सन—पु० [सं० निर्√भर्त्स (दुतकारना)+ल्युट्—अन] १ भर्त्सन। डाँट-डपट। २ निंदा।

निर्भर्त्सना—स्त्री० [सं० निर्√भर्त्स्+णिच्+युच्—अन, टाप्] भर्त्सना।

निर्भाग्य—वि० [सं० निर्-भाग्य, ब० स०] अभागा।
पु०=दुर्भाग्य।

निर्भास—पु० [सं०] प्रकट या भासित होना।

निर्भिन्न—वि० [सं० निर्√भिद् (विदारण)+क्त] १ छिदा हुआ। २ फाड़ा हुआ।

निर्भीक—वि० [सं० निर्-भी, ब० स०, कप्] [भाव० निर्भीकता] (व्यक्ति) जो बिना डरे या बिना किसी के दबाव मे आये और बहादुरी से कोई काम करता हो।

निर्भीकता—स्त्री० [सं० निर्भीक+तल्—टाप्] निर्भीक होने की अवस्था या भाव।

निर्भीत—वि०=निर्भीक।

निर्भूति—स्त्री० [सं० निर्√भू (होना)+क्तिन्] ओझल या लुप्त होना। अंतर्धान होना।

निर्भृति—वि० [सं० निर्-भृति, ब० स०] जो बेगार में या अपेक्षया बहुत कम पारिश्रमिक पर किसी की सेवा करता हो।

निर्भेद—पु० [सं० निर्√भिद् (विदारण)+घञ्] १ छेदना। २ फाड़ना। ३ भेद या रहस्य खोलना।

वि० [निर्-भेद, ब० स०] भेद-रहित।

निर्भ्रम—वि० [सं० निर्-भ्रम, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसे भ्रम न हो। २ (बात या विषय) जिसमें भ्रम के लिए अवकाश न हो।

क्रि० वि० १ बिना किसी प्रकार के भ्रम के। २ बेखटके। बेधड़क।

निर्भ्रांत—वि० [सं० निर्√भ्रम (घूमना)+क्त] १. (व्यक्ति) जिसे भ्रांति न हो। २ (बात या विषय) जिसमें किसी प्रकार की भ्रांति के लिए अवकाश न हो।

निर्मक्षिक—वि० [सं० निर्-मक्षिका, अव्य० स०] १ (स्थान) जहाँ मक्खियाँ न हों। मक्खियों से रहित। २ जिसमें कोई विघ्न-बाधा न हो। निर्विघ्न।

निर्मत्सर—वि० [सं० निर्-मत्सर, ब० स०] दूसरों से द्वेष न करनेवाला। मत्सर-रहित।

निर्मथ—पु० [सं० निर्√मथ् (रगड़ना)+घञ्] १ रगड़ना। २. वह लकड़ी जिसे रगड़ने पर आग निकले।

निर्मथ्या—स्त्री० [सं० निर्√मथ्+ण्यत्, टाप्] नालिका या नली नामक गंध-द्रव्य।

निर्मद—वि० [सं० निर्-मद, ब० स०] १. मद से रहित। २ अभिमान-रहित।

पु० संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

निर्मना—स० [सं० निर्माण] निर्माण करना। बनाना। रचना।

निर्मनुज—वि० [सं० निर्-मनुज, ब० स०] (स्थान) जिसमें मनुष्य वास न करते हों।

निर्मनुष्य—वि० [सं० निर्-मनुष्य, ब० स०] निर्मनुज।

निर्मम—वि० [सं० निर्-मम, ब० स०] [भाव० निर्ममता] १ जिसमें ममत्व की भावना न हो। २. जो अपने मन की कोमल भावनाओं को नष्ट कर कोई कठोर आचरण करता हो। ३. (काम) जो निर्दयता-पूर्वक किया जाय। जैसे—निर्मम हत्या।

निर्मल—वि० [सं० निर्-मल, ब० स०] [भाव० निर्मलता] १. (वस्तु) जिसमें मल या मलिनता न हो। साफ। स्वच्छ। २. (व्यक्ति) जिसके चरित्र पर कोई धब्बा न लगा हो। ३. (हृदय) जिसमें दूषित या बुरी भावनाएँ न हों। शुद्ध।

पु० १ अभ्रक। अबरक। २. दे० 'निर्मली'।

निर्मलता—स्त्री० [सं० निर्मल+तल्—टाप्] निर्मल होने की अवस्था या भाव।

निर्मलांगी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

निर्मला—पु० [सं० निर्मल] १ एक नानकपंथी त्यागी संप्रदाय, जिसके प्रवर्तक गुरु रामदास थे। इस संप्रदाय के लोग गेरुए वस्त्र पहनते और साधु-संन्यासियों की तरह रहते हैं। २ उक्त संप्रदाय का अनुयायी साधु।

निर्मली—स्त्री० [सं० निर्मल] १. एक प्रकार का मझोला सदाबहार पेड़ जिसकी लकड़ी इमारत और खेती के औजार बनाने के काम में आती है। २ रीठे का वृक्ष और उसका फल।

निर्मलोत्पल—पु० [सं० निर्मल-उत्पल, कर्म० स०] स्फटिक।

निर्मलोपल—पु० [सं० निर्मल-उपल, कर्म० स०] स्फटिक।

निर्मल्या—स्त्री० [सं० निर्मल+यत्—टाप्] असबरग। स्पृक्का।

निर्मांस—वि० [सं० निर्-मांस, ब० स०] १ जिसमें मांस न हो। मांस-रहित। २ (व्यक्ति) जो भोजन आदि के अभाव या रोग आदि के कारण बहुत दुबला हो गया हो और जिसके शरीर का अधिकतर मांस गल-पच गया हो।

निर्माण—पु० [सं० निर्√मा (मापना)+ल्युट्—अन] १ गढ़ या ढालकर अथवा किसी चीज के सब अंगों, उपांगों, उपादानों आदि के योग से कोई नई चीज तैयार करना या बनाना। रचना। जैसे—भवन या सेतु का निर्माण, कपड़े, कागज आदि का निर्माण, ग्रंथ या पुस्तक का निर्माण। २ उक्त प्रकार से बनकर तैयार होनेवाली चीज। ३ किसी चीज को उच्चतम या उत्कृष्टतम रूप देना। जैसे—चरित्र का निर्माण करना। ४ नापना। मापन। ५ रूप। शकल। ६ अंश। हिस्सा। ७ सार-भाग। ८ मज्जा।

निर्माण-विद्या—स्त्री० [ष० त०] इमारत, नहर, पुल आदि बनाने की विद्या। वास्तु-विद्या। वास्तु-कला।

निर्माता (तृ)—वि० [सं०निर्√मा+तृच्] जो किसी चीज का निर्माण करता हो। बनाने या रचनेवाला।

निर्मात्रिक—वि० [सं० निर्-मात्रिक, प्रा०स०] बिना मात्रा का। जिसमें मात्रा न हो। जैसे—निर्मात्रिक पद्य-रचना।

निर्मान*—वि० [सं० निर्+मान] १ जिसका मान या परिमाण न हो। बेहद। अपार। उदा०—नित्य निर्मय नित्य युक्त निर्मान हरि ज्ञान घन सच्चिदानंद मूल।—तुलसी। २ जिसका मान या प्रतिष्ठा न हो।

†पु०= निर्माण।

निर्माना—स० [सं० निर्माण] निर्माण करना। बनाना। रचना।

निर्मायक—वि० [सं० निर्√मा+ण्वुल्—अक] निर्माण करनेवाला। निर्माता।

निर्मार्जन—पु० [सं० निर्√मार्ज् (शुद्धि)+ल्युट्—अन] १ साफ करना। २ धोना।

निर्माल्य—वि० [सं० निर् √मल् (ग्रहण)+ण्यत्] निर्मल। शुद्ध।

पु० १ निर्मलता। २ देवता पर चढ़े या चढ़ाये हुए पदार्थ।

निर्माल्या—स्त्री०=निर्माल्य।

निर्मित—भू० कृ० [सं० निर्+मा+क्त] [भाव० निर्मिति] जिसका निर्माण हुआ हो या किया गया हो। बनाया या रचा हुआ।

निर्मिति—स्त्री०[सं० निर्√मा+क्तिन्] १. निर्माण करने की क्रिया या भाव। २ निर्माण करके तैयार की हुई चीज।

निर्मुक्त—वि०[सं० निर्+मुच् (छोड़ना)+क्त] [भाव० निर्मुक्ति] १ जो मुक्त हुआ हो या जिसे निर्मुक्ति मिली हो। २ जो सब प्रकार

के बंधनों से रहित हो। ३ (साँप) जो अभी निर्मोक या केंचुली छोड़कर अलग हुआ हो।

निर्मुक्ति—स्त्री०[सं० निर्+मुच्+क्तिन्] १ मुक्ति। छुटकारा। २ २ मोक्ष। ३ बंदियों विशेषत राजनैतिक बंदियों को एक साथ क्षमा करके छोड़ देना। (एम्नेस्टी)

निर्मूल—वि०[सं० निर्-मूल, ब० स०] १ जिसमें जड़ न हो। बिना जड़ का। २ जड़ के पूर्ण रूप से नष्ट हो जाने के कारण जो न बच रहा हो। पूरी तरह से विनष्ट। जैसे—रोग निर्मूल करना। ३ जिसका कोई मूल अर्थात् आधार या बुनियाद न हो। बेसिर-पैर का। जैसे—निर्मूल दोषारोपण।

निर्मूलक—वि० [सं० ब० स०, कप्] निर्मूल।

निर्मूलन—पु०[सं० निर्मूल+णिच्+ल्युट्-अन] १ जड़ से उखाड़ना। निर्मूल करना। २ पूर्ण रूप से नष्ट करने की क्रिया या भाव। पूर्ण विनाश। ३ निराधार या बेबुनियाद सिद्ध करना।

निर्मृष्ट—भू० कृ० [सं० निर्√मृज् (शुद्धि)+क्त] १ धुला या साफ किया हुआ। २ मिटाया हुआ।

निर्मेघ—वि०[सं० निर्-मेघ, ब० स०] मेघ या बादलों से रहित। निरभ्र।

निर्मेध—वि० [सं० निर्-मेधा, ब० स०] मेधाशक्ति से रहित। मूर्ख।

निर्मोक—पु०[सं० निर्+मुच्+(छोड़ना) घञ्] १ स्वतंत्र या स्वाधीन करना। २ साँप की केंचुली। ३ शरीर के ऊपर की पतली खाल या झिल्ली। ४ आकाश। ५ सावर्णि मनु के एक पुत्र। ६ तेरहवें मनु के सप्तर्षियों में से एक।

निर्मोक्ष—पु०[सं० निर्-मोक्ष, प्रा० स०] १ त्याग। २ धर्मशास्त्रों के अनुसार ऐसा मोक्ष या मुक्ति जिसमें आत्मा के साथ कोई संस्कार लगा न रह जाय। पूर्ण मोक्ष।

निर्मोचन—पु०[सं० निर्√मुच्+ल्युट्-अन] छुटकारा। मुक्ति।

निर्मोल—वि०=अमूल्य।

निर्मोह—वि०[सं० निर्-मोह, ब० स०] १ जिसे या जिसमें मोह न हो। मोह-रहित। २ दे० 'निर्मोही'। ३ रैवत मनु के एक पुत्र का नाम। ४ सावर्णि मनु के एक पुत्र का नाम।

निर्मोही—वि० [सं० निर्मोह] [स्त्री० निर्मोहिनी] जिसे या जिसमें मोह या ममत्व न हो। किसी के प्रति अनुराग स्नेह न रखनेवाला।

निर्यंत्रण—पु०[सं० निर्√यंत्र् (निग्रह)+ल्युट्-अन] यंत्रण से रहित करने की क्रिया या भाव।

निर्याण—पु०[सं० निर्√या (जाना)+ल्युट्—अन] १ बाहर निकलना या जाना। प्रयाण। प्रस्थान। २ सेना का युद्ध-क्षेत्र की ओर होनेवाला प्रस्थान। ३ नगर या बस्ती से बाहर की ओर जानेवाला मार्ग या सड़क। ४ अदृश्य या गायब होना। अंतर्धान। ५ शरीर का आत्मा से बाहर निकलना। ६ मुक्ति। मोक्ष। ७ गति में लाना। ८ जहाज आदि का ठीक ढंग से संचालन करना। (पाइलॉटिंग) ९ पशुओं के पैरों में बाँधी जानेवाली रस्सी। १० हाथी की आँख का बाहरी कोना।

निर्यात—पु०[सं० निर्√या+क्त] १ माल बाहर भेजने की क्रिया या भाव। २ किसी देश की दृष्टि से उसका वह माल जो विदेशों में बिक्री के लिए भेजा जाय। (एक्सपोर्ट)

निर्यातक—वि०[सं० निर्यात+णिच्+ण्वुल्—अक] जो वस्तुओं का निर्यात करता हो। बिक्री के लिए माल विदेश भेजनेवाला। (एक्सपोर्टर)

निर्यात-कर—पु०[ष० त०] निर्यात शुल्क। (दे०)

निर्यातन—पु० [सं० निर्√यत (प्रयत्न)+णिच्+ल्युट्—अन] १ निर्यात करने की क्रिया या भाव। २ प्रतिकार करना। बदला चुकाना। ३ ऋण चुकाना। ४ मार डालना। वध।

निर्यात-शुल्क—पु०[सं० ष० त०] वह शुल्क जो देश से वस्तुओं का निर्यात करने के समय चुकाना पड़ता हो। (एक्सपोर्ट ड्यूटी)

निर्याति—स्त्री०[सं० निर्√या+क्तिन्] १ बाहर जाने या निकलने की क्रिया या भाव। २ मृत्यु।

निर्यामक—पु०[सं निर्√यम्(नियंत्रण)+णिच्√ण्वुल्-अक] १ नाविक। मल्लाह। २ हवाई जहाज आदि चलानेवाला। (पाइलॉट)

निर्यास—पु०[सं० निर्√यम् (प्रयत्न)+घञ्] १ निकलना या बहना। २ वह तरल पदार्थ जो पौधे, वृक्ष आदि के तने, शाखा, पत्ते आदि में से निकले। ३ गोंद। ४ जड़ी-बूटियाँ, वनस्पतियों को उबालकर निकाला हुआ रस। काढ़ा। क्वाथ।

निर्युक्तिक—वि०[सं० निर्-युक्ति, ब० स०, कप्] जिसमें कोई युक्ति न हो। युक्ति-रहित।

निर्यूथ—वि०[सं० निर्-यूथ ब० स०] जो अपने यूथ या दल से अलग हो गया हो।

निर्यूष—पु०[सं० निर्-यूष, प्रा०स०] निर्यास। (दे०)

निर्यूह—पु०[सं० निर्√ऊह (तर्क)+क, पृषो० सिद्धि] १ औषधियों का काढ़ा। क्वाथ। २ दरवाजा। द्वार। ३ सिर पर पहनने की कोई चीज। जैसे—टोपी, पगड़ी, मुकुट आदि। ४ दीवार में लगा हुआ वह तख्ता जिस पर चीजें रखी जाती हैं।

निर्लज्ज—वि० [सं० निर्-लज्जा, ब० स०] [भाव० निर्लज्जता] १ (व्यक्ति) जिसे किसी बात में लज्जा न आती हो। बेशरम। २ (कार्य) जो निर्लज्ज होकर किया गया हो।

निर्लज्जता—स्त्री०[सं० निर्लज्ज+तल्-टाप्] निर्लज्ज होने की अवस्था या भाव। बेशरमी। बेहयाई।

निर्लिंग—वि०[सं० निर्-लिंग, ब० स०] जिसमें कोई लिंग अर्थात् परिचायक चिह्न न हो।

निर्लिप्त—वि०[सं० निर्√लिप् (लीपना)+क्त] [भाव० निर्लिप्तता] १ जो किसी के साथ या किसी में लिप्त न हो। जो किसी से लगाव या संबंध न रखता हो। २ सांसारिक माया-मोह, राग-द्वेष आदि से परे और रहित।

निर्लुंचन—पु०[सं० निर्√लुंच् (फाड़ना)+ल्युट्—अन] १ फाड़ना। २ छिलके या भूसी अलग करना।

निर्लुंठन—पु०[सं० निर्√लुठ् (स्तेय)+ल्युट्—अन] १ लूटना। २ फाड़कर अलग करना।

निर्लेखन—पु०[सं० निर्√लिख् (लिखना)+ल्युट्—अन] १ किसी चीज पर जमी हुई मैल आदि खुरचना। २ वह चीज जिससे मैल खुरची जाय। खुरचने का उपकरण।

निर्लेप—वि० [सं० निर्-लेप, ब० स०] १ जिस पर किसी प्रकार का लेप न हो। २ दोष आदि से रहित। ३ दे० 'निर्लिप्त'।

निर्लोभ—वि० [सं० निर्-लोभ, ब० स०] [भाव० निर्लोभता] जिसे किसी प्रकार का लोभ न हो। लोभ-रहित।

निर्लोभी—वि० = निर्लोभ।

निर्वंश—वि० [सं० निर्-वंश, ब० स०] [भाव० निर्वंशता] १ जिसके वंश में और कोई न बच रहा हो। २ (व्यक्ति) जिसे संतान न हो और इसी लिए जिसके वंश की वृद्धि न हो सके।

निर्वक्तव्य—वि० [सं० निर्√वच् (कहना)+तव्यत्] जो कहा न जा सके।

निर्वचन—वि० [सं० निर्-वचन, ब० स०] जो कुछ बोल न रहा हो। चुप। मौन।

पु० [निर्-√वच्+ल्युट्-अन] १ उच्चारण करना। कहना। बोलना। २ समझाकर और निश्चित रूप से कोई बात कहना या बतलाना। ३ अपने दृष्टि-कोण से किसी शब्द, पद या वाक्य की विवेचना या व्याख्या करना। (इंटरप्रेटेशन)

निर्वचनीय—वि० [सं० निर्√वच्+अनीयर] (शब्द, पद या वाक्य) जिसका निर्वचन किया जाने या होने को हो।

निर्वपण—पु० [सं० निर्√वप्-(बोना)+ल्युट्-अन] १ पितृ-तर्पण। २ दान।

निर्वयणी—स्त्री० [सं० निर्√वे (बुनना)+ल्युट्-अन, ङीप्] साँप की केंचुली।

निर्वर—वि० [सं० निर्-वर, ब० स०] १ निर्लज्ज। बेशरम। २ निडर। निर्भीक।

निर्वर्णन—पु० [सं० निर्√वर्ण (वर्णन)+ल्युट्-अन] अच्छी तरह या ध्यान से देखना।

निर्वर्तन—पु० [सं० निर्√वृत् (बरतना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० निर्वर्तित] निष्पत्ति। (दे०)

निर्वर्तित—वि० [सं० निर्वृत्त] निष्पन्न। (दे०)

निर्वसन—वि० [सं० निर्-वसन, ब० स०] [स्त्री० निर्वसना] जिसने वस्त्र धारण न किये हों। नंगा।

निर्वसु—वि० [सं० निर्-वसु, ब० स०] दरिद्र। गरीब।

निर्वहण—पु० [निर्√वह (ढोना)+ल्युट्-अन] १ निबाह। निर्वाह। गुजर। २ अन्त। समाप्ति।

निर्वहण-संधि—स्त्री० [सं० ष० त०] नाटक में पाँच संधियों में से एक जो उस स्थिति की सूचक होती है जहाँ प्रमुख प्रयोजन में कार्य और फलागम के साथ अन्यान्य अर्थों का भी पर्यवसान होता है।

निर्वहना—अ० [सं० निर्वहन] निभना।

स० निभाना।

निर्वाक (क्)—वि० [सं० निर्-वाच्, ब० स०] १ जिसकी वाक्शक्ति अवरुद्ध हो। २ जो बोल न रहा हो। चुप। मौन।

निर्वाक्य—वि० [सं० निर्-वाक्य, ब० स०] निर्वाक्।

निर्वाचक—पु० [सं० निर्√वच्+णिच्+ण्वुल्—अक] निर्वाचन करनेवाला।

पु० निर्वाचन में खड़े हुए उम्मीदवारों को मत देनेवाला व्यक्ति। (एलेक्टरेट)

निर्वाचक-मंडल—पु० [सं० ष० त०] जो अप्रत्यक्ष रूप से जनता का प्रतिनिधित्व करते हुए विशिष्ट अधिकारी या अधिकारियों का चुनाव करता है। (एलेक्टोरल कालेज)

निर्वाचक-सूची—स्त्री० [सं० ष० त०] वह सूची जिसमें किसी क्षेत्र के मतदाताओं के नाम, उम्र, पेशे आदि लिखे होते हैं।

निर्वाचन—पु० [सं० निर्√वच्+णिच्+ल्युट्—अन] १ बहुत-सी चीजों में से अपने काम की या अपने पसन्द से कुछ चीजें चुनना या छाँटना। २ आज-कल लोकतंत्र प्रणाली में, विशिष्ट अधिकार-प्राप्त मतदाताओं का कुछ लोगों को इसलिए अपना प्रतिनिधि चुनना कि वे उस संस्था के सदस्य बनकर उसका सारा प्रबंध, व्यवस्था या शासन करें। चुनाव। (इलेक्शन)

निर्वाचन-अधिकारी (रिन्)—पु० [सं० ष० त०] वह अधिकारी जिसकी देख-रेख में किसी संस्था के लिए सदस्यों का निर्वाचन होता है। (रिटर्निंग आफिसर)

निर्वाचन-क्षेत्र—पु० [सं० ष० त०] वह क्षेत्र या भू-भाग जिसके निवासी या नागरिक किसी विशिष्ट चुनाव में मत देने के अधिकारी होते हैं। (कान्स्टीच्यूएन्सी)

निर्वाचित—भू० कृ० [सं० निर्√वच+णिच्+क्त] १ जिसका निर्वाचन हुआ हो। २ (उम्मीदवार) जो निर्वाचन में सबसे अधिक मत प्राप्त करने के कारण सफल घोषित हो। (इलेक्टेड)

निर्वाच्य—वि० [सं० निर्√वच्+ण्यत्] १ (कथन या शब्द) जो कहा न जा सके, अथवा जिसका उच्चारण करना ठीक न हो। २ जिसमें कोई दोष न निकाला जा सके। ३ (व्यक्ति) जिसका निर्वाचन होने को हो अथवा हो सकता हो।

निर्वाण—भू० कृ० [सं० निर्√वा (गति)+क्त] १ (आग या दीया) बुझा हुआ। २ (ग्रह या नक्षत्र) डूबा हुआ। अस्त। ३ धीमा या मंद पड़ा हुआ। ४ मरा हुआ। मृत। ५ निश्चल। शांत। ६ शून्य स्थिति में पहुँचा हुआ।

वि० बिना वाण का। जिसमें वाण न हो।

पु० √[निर् वा+ल्युट्—अन] १ आग या दीए का बुझना। २ नष्ट या समाप्त होना। न रह जाना। ३ अंत। समाप्ति। ४ अस्त होना। डूबना। ५ शांति। ६ मुक्ति। मोक्ष। ७ शरीर से जीवन या प्राण निकल जाना। मृत्यु। ८ धार्मिक क्षेत्रों में, वह अवस्था जिसमें जीव परमपद तक पहुँचता या उसे प्राप्त करता है।

विशेष—यद्यपि प्राचीन भारतीय साहित्य में 'निर्वाण' का प्रयोग मुक्ति या मोक्ष के अर्थ में ही हुआ है, परन्तु बौद्ध-दर्शन में यह एक स्वतंत्र पारिभाषिक शब्द हो गया था, और उस परमपद की प्राप्ति का वाचक हो गया था, जिसके लिए साधक लोग साधना करते थे, परवर्ती संत सम्प्रदायों में भी इसकी यही अथवा बहुत कुछ इसी प्रकार की व्याख्या गृहीत हुई है। यह वही अवस्था है जिसमें जीव सब प्रकार के संस्कारों से रहित या शून्य हो जाता है और जन्म-मरण के बंधन से छूट जाता है।

निर्वाणी—वि० [सं० निर्वाण] निर्वाण-संबंधी। निर्वाण का। जैसे—निर्वाणी अखाड़ा।

पु० जैनों के एक देवता।

निर्वात—वि० [सं० निर्-वात, ब० स०] १ (अवकाश या स्थान)

जिसमे वात या वायु न रह गई हो। (वक्यूम) वातरहित। २ शात। स्थिर।

निर्वाद—पुं० [सं० निर्√वद् (बोलना)+घञ्] १ अपवाद। निदा। २ अवज्ञा। ला-परवाही।

निर्वाप—पु० [स० निर्√वप्+घञ्] १ दान। २ पितरो के उद्देश्य से किया हुआ दान।

निर्वापण—पु० [स० निर्√वा+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] १ बुझाना। २ मारना। वध करना। ३ (अधिकार या स्वत्व) अन्त या समाप्त करना। (एक्स्टेंक्शन)

निर्वापित—भू० कृ० [स० निर्√वा+णिच्, पुक्+क्त] १ बुझाया हुआ। २ हत। ३ अन्त या समाप्त किया हुआ। ४ विनष्ट। बरबाद।

निर्वार†—पु०=निवारण। उदा०—प्रभु, उमका निर्वार करो हे।—निराला।

निर्वार्य—वि० [स० निर्√व (वारण)+ण्यत्] १ जो नि शक होकर परिश्रमपूर्वक कर्म करे। २. जिसका वारण या निवारण न हो सके। जो रोका न जा सके।

निर्वास—वि० [स० निर्-वास, ब० स०] १ वास अर्थात् गध से रहित। २. वास-स्थान से रहित। जिसके रहने के लिए कोई जगह न हो।
पु० १ निर्वासन। २ विदेश-यात्रा। प्रवास।

निर्वासक—वि० [स० निर्√वस (बासना)+णिच्+ण्वुल्—अक] निर्वासन या देश-निकाले का दड देनेवाला।

निर्वासन—पु० [स०निर्√वस्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० निर्वासित] १ बलपूर्वक किसी को किसी राज्य या भू-भाग से निकालना। २ देश-निकाले का दड। ३ मार डालना।

निर्वासित—भू० कृ० [स० निर्√वस्+णिच्+क्त] १ जो किसी राज्य या भू-भाग से निकाल दिया गया हो। २ जिसे देश-निकाले का दड मिला हो।

निर्वास्य—वि० [स० निर्√वस्+णिच्+यत्] जो निर्वासित किये जाने के योग्य हो या किया जाने को हो।

निर्वाह—पु० [स० निर्√वह् (वहन)+घञ्] १. अच्छी तरह वहन करना। २ इस प्रकार आचरण या प्रयत्न करना जिससे कोई क्रम, परम्परा या सबध बराबर बना रहे। ३ अधिकारो, कर्त्तव्यो आदि का किया जानेवाला पालन। ४ अन्त। समाप्ति।

निर्वाहक—वि० [स० निर्√वह्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ निर्वाह करनेवाला। निभानेवाला। २ आज्ञा, निश्चय आदि का निर्वाहण या पालन करनेवाला। (एक्जिक्यूटर)

निर्वाहण—पु० [स० निर्√वह्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० निर्वाहणिक, निर्वाहणीय] १ निर्वाह करना। निभाना। २ किसी की आज्ञा या निश्चय के अनुसार ठीक तरह से काम करना। ३. कुछ समय के लिए किसी का काम या भार अपने ऊपर लेना।

निर्वाहणिक—वि० [स० नैर्वाहणिक] १ निर्वाह-सबधी। २ निर्वाह करनेवाला। ३ किसी के पद पर अस्थायी रूप से रहकर उसके कार्य का निर्वाहण करनेवाला। स्थानापन्न। (आफिशिएटिंग)

निर्वाहना—अ० [स० निर्वाह] निर्वाह करना। निभाना।

निर्वाह-निधि—स्त्री० [स० मध्य० स०] दे० 'सभरण-निधि'।

निर्वाह-भृति—स्त्री० [स० मध्य० स०] उतना वेतन जितने मे किसी परिवार का भरण-पोषण अच्छी तरह हो सके। (लिविंग वेज)

निर्विकल्प—वि० [स० निर्-विकल्प, ब० स०] १ जिसमे विकल्प, परिवर्तन या भेद न हो। सदा एक-रस और एक-रूप रहनेवाला। २ निश्चल। स्थिर।
पु०=निर्विकल्प समाधि।

निर्विकल्पक—पु० [स० ब० स०, कप्] १ वेदात के अनुसार वह अवस्था, जिसमे ज्ञाता और ज्ञेय मे भेद नही रह जाता। दोनो मिलकर एक हो जाते है। २ न्याय म, वह अलौकिक और प्राकृतिक ज्ञान जो इद्रियजन्य ज्ञान से भिन्न होता और वास्तविक माना जाता है। (बौद्ध-दर्शन मे इसी प्रकार का ज्ञान प्रमाण माना जाता है।)

निर्विकल्प-समाधि—स्त्री० [स० कर्म० स०] समाधि का वह भेद या रूप जिसमे ज्ञेय और ज्ञाता आदि का कोई भेद नही रह जाता।

निर्विकार—वि० [स० निर्-विकार, ब० स०] जिसमे विकार न हो या न होता हो। अविकारी।

निर्विकास—वि० [स० निर्-विकास, ब० स०] १. विकास से रहित। २ अविकसित।

निर्विघ्न—वि० [स० निर्-विघ्न, ब० स०] जिसम कोई विघ्न न हो। विघ्न या बाधा से रहित।
अव्य० बिना किसी प्रकार के विघ्न या बाधा के।

निर्विचार—वि० [स० निर्-विचार, ब० स०] विचार-शून्य।
पु० योग मे, समाधि का एक भेद।

निर्विण्ण—वि० [स० निर्√विद् (ज्ञान)+क्त] १ जिसके मन मे निर्वेद उत्पन्न हुआ हो। विरक्त। २ खिन्न या दुखी। ३ नम्र। ४ शात। ५ निश्चित। स्थिर।

निर्वितर्क—वि० [स० निर्-वितर्क, ब० स०] जिसके सबध मे तर्क-वितर्क न किया जा सके या न किया जाता हो।

निर्वितर्क समाधि—स्त्री० [स० कर्म० स०] योग म, समाधि की वह स्थिति जिसमे योगी स्थूल आलबन मे तन्मय हो जाता है।

निर्विद्य—वि० [स० निर्-विद्या, ब० स०] विद्याहीन। अपढ़।

निर्विधायन—पु०[?] यह निश्चय करना कि जो अमुक बात हुई है वह वस्तुत. निर्विध या विधान-विरुद्ध है। (नलिफिकेशन) जैसे—विवाह या सविदा का निर्विधायन।

निर्विधायित—भू० कृ० [स०] जिसका निर्विधायन हुआ हो। निर्विध। हटाया हुआ। (नलिफाइड)

निर्विधि—वि०[स० निर्-विधि, ब० स०] [भाव० निर्विधिता] जिसे विधि या कानून का आधार या बल प्राप्त न हो। विधिक दृष्टि मे अमान्य। (नल)

निर्विधिता—स्त्री० [स० निर्विधि+तल्—टाप्] निर्विधि होने की अवस्था या भाव। (नलिटी)

निर्विरोध—वि० [स० निर्-विरोध, ब० स०] १ जिसका कोई विरोध न करे, अथवा कोई विरोध न हो। २ जिसमे किसी प्रकार की बाधा या रुकावट न हो।
अव्य० बिना किसी प्रकार के विरोध के।

निर्विवाद—वि० [सं० निर्-विवाद, ब० स०] (बात या सिद्धान्त) जिसके सही होने के संबध मे कोई विवाद न हो।
अव्य० बिना किसी प्रकार का विवाद किये।

निर्विवेक—वि० [सं० निर्-विवेक, ब० स०] [भाव० निर्विवेकता] विवेक-रहित।

निर्विशेष—वि० [सं० निर्-विशेष, ब० स०] १ तुल्य। समान। २ सदा एक रूप रहनेवाला।
पु० परब्रह्म।

निर्विष—वि० [सं० निर्-विष, ब० स०] विष-हीन।

निर्विषा—स्त्री० [सं० निर्विष+टाप्] निर्विषी। (दे०)

निर्विषी—स्त्री० [सं० निर्विष+ङीष्] एक तरह की घास या बूटी जो विष का प्रभाव नष्ट करनेवाली मानी गई है।

निर्विष्ट—वि० [सं० निर्√विश् (प्रवेश)+क्त] १ जो भोग कर चुका हो। २ जो विवाह कर चुका हो। विवाहित। ३ जो अग्नि-होत्र कर चुका हो। ४ जो मुक्त हो चुका हो।

निर्वीज—वि० [सं० निर्-वीज, ब० स०] १ जिसमे बीज न हो। बीज-रहित। २ जिसका बीज या मूल न रह गया हो; अर्थात पूर्ण-रूप से विनष्ट। ३ जिसका कोई मूल या कारण न हो। कारण-रहित।

निर्वीज-समाधि—स्त्री० [सं० कर्म० स०] योग मे, समाधि की वह अवस्था, जिसमे चित्त का निरोध करते-करते उसका अवलबन या बीज विलीन हो जाता है।

निर्वीजा—स्त्री० [सं० निर्वीज+टाप्] किशमिश।

निर्वीर—वि० [सं० निर-वीर, ब० स०] वीर-विहीन।

निर्वीरा—वि० स्त्री० [सं० निर्वीर+टाप] पति और पुत्र से विहीन (स्त्री)।

निर्वीर्य—वि० [सं० निर-वीर्य, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसमे वीर्य न हो, फलत नपुसक। २ बल, तेज आदि से रहित, फलत अशक्त। ३ (भूमि) जिसमे उर्वरा-शक्ति न हो।

निवृत्त—वि० [सं० निर्√वत् (बरतना)+क्त] [भाव० निर्वृत्ति] १. वापस आया या लौटा हुआ। २ निष्पन्न।

निर्वृत्ति—स्त्री० [सं० निर√वृत्+क्तिन] वापस आना। लौटना।

निर्वेश—पु० [सं०] भृत्ति। वेतन।

निर्वेग—वि० [सं० निर्-वेग, ब० स०] वेग-हीन।

निर्वेद—पु० [सं० निर्√विद्+घञ्] १ ग्लानि। घृणा। २ मन मे स्वय अपने संबध मे होनेवाली खेदपूर्ण ग्लानि और निराशा। ३ उक्त के फलस्वरूप सासारिक बातो से होनेवाली विरक्ति। वैराग्य। ४ उक्त के आधार पर साहित्य मे, तैंतीस सचारी भावो मे से पहला भाव जिसकी गणना कुछ आचार्यों ने स्थायी भावो मे भी की है।
विशेष—कहा गया है कि कष्ट, दरिद्रता, प्रियजनों के विरोध, रोग आदि के कारण मन मे जो खेद तथा ग्लानि होती है, वही साहित्य का निर्वेद है। प्राय. इसके मूल में आध्यात्मिक और तात्त्विक विचार होते हैं, इसलिए कुछ आचार्य इसे शात रस का स्थायी भाव मानते हैं। पर अधिकतर लोग इसे भरत के आधार पर सचारी भाव ही कहते है। यह वही मनोवृत्ति है जो मनुष्य को सांसारिक विषयो की ओर से उदासीन करके परमात्म-चिंतन मे प्रवृत्त करती है, और इस दृष्टि से रति या शृगार रस के बिलकुल विपरीत है।

निर्वेश—पु० [सं० निर्√विश्+घञ्] १ भोग। २ वेतन। तनख्वाह। ३ विवाह। ४ मोक्ष। ५ मूर्च्छा। बेहोशी। ६ बदला लेना।

निर्वेष्टन—पु० [सं० निर्-वेष्टन, ब० स०] जुलाहों की सूत लपेटने की ढरकी।

निर्वैर—वि० [सं० निर्-वैर, ब० स०] वैर, द्वेष आदि से रहित।
पु० वैर का अभाव।

निर्व्यथन—पु० [सं० निर्√व्यथ् (पीडा)+ल्युट्—अन] १ तीव्र पीडा या वेदना। २ पीडा से होनेवाला छुटकारा।

निर्व्यलीक—वि० [सं० निर्-व्यलीक, ब० स०] १ छल आदि से रहित। निष्कपट। २ जो किसी को कष्ट न पहुँचाये। निरीह। ३ प्रसन्न। ४ सुखी।

निर्व्याज—वि० [सं० निर्-व्याज, ब० स०] १ व्याज अर्थात् कपट या छल से रहित। २ बाधा या विघ्न से रहित। निर्विघ्न।

निर्व्याधि—वि० [सं० निर्-व्याधि, ब० स०] व्याधि या रोग से मुक्त या रहित।

निर्व्यापार—वि० [सं० निर्-व्यापार, ब० स०] व्यापार-हीन।

निर्व्यूढ़—वि० [सं० निर्-वि√वह्+क्त] [भाव० निर्व्यूढ़ि] १. पूरा बनाया हुआ। २ बढा हुआ। विकसित। ३ त्यक्त। ४ भाग्य-वान्। ५ सफल। ६ धकेला या निकाला हुआ।

निर्व्यूढ़ि—स्त्री० [सं० निर्-वि√वह्+क्तिन्] १ अन्त। समाप्ति। २ कलगी। ३ चोटी। ४. खूँटी। ५ काढा।

निर्व्रण—वि० [सं० निर्-व्रण, ब० स०] जिसे व्रण, या घाव न हो या न लगा हो।

निर्हरण—पु० [सं० निर्√हृ (हरण)+ल्युट्—अन] १ जलाने के लिए शव को अर्थी पर ले जाना। २ शव जलाना। ३ नष्ट करना।

निर्हार—पु० [सं० निर्√हृ+घञ्] १. गाडी या धँसी हुई चीज को निकालना। २ मल-मूत्र आदि का त्याग करना। 'आहार' का विपर्याय। ३ धन, संपत्ति आदि जोडना।

निर्हारक—वि० [सं० निर्√हृ+ण्वुल्—अक] मुरदे उठाने या ढोने-वाला।

निर्हारी (रिन्)—वि० [सं० निर्√हृ+णिनि] १ वहन करनेवाला। २ फैलानेवाला।
पु०=निर्हारक।

निर्हेतु—वि० [सं० निर्-हेतु, ब० स०] हेतु-रहित।
क्रि० वि० बिना किसी हेतु के।

निलंबन—पु०=अनुलबन।

निल—पु० [सं०] विभीषण का एक मन्त्री जो माली राक्षस का पुत्र था।

निलज†—वि०=निर्लज्ज।

निलजई, निलजता †—स्त्री०=निर्लज्जता।

निलज्ज—वि०=निर्लज्ज।

निलय—पु० [सं० नि√ली (छिपना)+अच्] १ छिपने का स्थान।

जैसे—पशुओ की माँद या पक्षियों का घोसला। २ अपने को छिपाने की क्रिया या भाव। ३ रहने का स्थान। घर। ४ शरीर-शास्त्र मे हृदय के उन दोनो अवकाशों मे से हर एक जिनके द्वारा सारे शरीर मे रक्त का सचार होता है। (वेन्ट्रिकल)

निलयन—पु० [स० नि√ली+ल्युट्—अन] १ छिपना। २ वास करना। रहना। ३ -निलय।

निल्हा—वि० [हि० नीला+हा (प्रत्य०)] १ नीले रगवाला। २ नीले रग मे रँगा हुआ। ३ नील-सबधी। नीलवाला। जैसे—निल्हा साहब वह अगरेज जो नील की खेती करता और व्यापार करता था।

निलाज†—वि०=निर्लज्ज।

निलाट—पु० -ललाट।

निलाम†—पु०=नीलाम।

निलिंप—पु० [स० नि√लिप्+श, मुम्] देवता।

निलिंप-निर्झरी—स्त्री० [स० ष० त०] आकाश-गगा।

निलिंपा—स्त्री० [स० निलिम्प+टाप्] गाय।

निलीन—वि० [स० नि√ली+क्त, तस्य न] १ छिपा हुआ। २ विनष्ट। ३ गला या पिघला हुआ।

निलोह—वि० [हि० नि+लोह?] १ जिसमे मिलावट न हो। विशुद्ध। २ जिस पर किसी प्रकार की आँच न आई हो।

निवछरा*—वि० [स० निवृत्त] (ऐसा समय) जिसमे करने के लिए कोई काम-काज न हो।

निवछावर†—स्त्री० -निछावर।

निवड़िया—स्त्री० [हि० नावर] छोटा नवाड़ा (नाव)।

निवत्त†—वि०=निवृत्त।

निवना†—अ० नवना (झुकना)।

निवपन—पु० [स०] १ पितरो आदि के उद्देश्य से दान करना। २ वह पदार्थ जो पितरों के उद्देश्य से दान किया जाय।

निवर—वि० [स० नि√वृ (रोकना)+अच्] १ निवारण करनेवाला। २ रोकनेवाला।

पु० आवरण। परदा।

निवरा—वि० स्त्री० [स० नि√वृ (वरण)+अप्—टाप्] जिसका वर या पति न हो, अर्थात् कुँआरी।

निवर्तक—वि० [स० नि√वृत् (बरतना)+णिच्+ण्वुल्—अक] निवर्तन करनेवाला।

निवर्तन—पु० [स० नि√वृत्+णिच्—ल्युट्—अन] १ घूम-फिरकर अपने पहले स्थान पर आना। वापस आना। लौटना। २ फिर घटित न होना। अन्त या समाप्ति न होना। ३ किसी काम या बात से अलग या दूर रहना। बचना। ४ कार्य अथवा क्रिया से रहित या शून्य होना। ५ आगे न बढने देना। रोक रखना। ६ आज-कल न्यायालय की वह प्रक्रिया जो किसी बने हुए विधान को रद या समाप्त करने के लिए होती है। कानून या विधान रद करना। (रिपील) ७ अन्दर की ओर घूमना या मुडना। ८ वह अग या पदार्थ जो अन्दर की ओर घूम या मुडकर बना हो। ९ कोई ऐसी क्रिया, जो अन्त या ह्रास की ओर ले जाती हो। अन्त या समाप्ति निकट लानेवाली क्रिया। १० अरविंद-दर्शन मे, चेतना का क्रमश अन्तर्निहित या तिरोभूत होना जिसके द्वारा अनन्त भागवत चेतना का अन्त होता है। 'विवर्तन' का विपर्याय। (इन्वोल्यूशन, अतिम चारो अर्थों के लिए) ११ जमीन की एक पुरानी नाप जो २० लट्ठों की होती थी।

निवर्तित—भू० कृ० [स० नि√वृत+णिच्+क्त] १ लौटा या लौटाया हुआ। २ जिसका निवर्तन हुआ हो। रद।

निवर्ती (तिन्)—पु० [स० नि√वृत्+णिनि] १ वह जो पीछे की ओर हट आया हो। २ वह जो-युद्ध क्षेत्र से भाग आया हो।

वि० निर्लिप्त।

निवसति—स्त्री० [स० नि√वस् (बसना)+अतिच्] रहने का स्थान। घर।

निवसथ—पु० [स० नि√वस्+अथच्] १ गाँव। २ सीमा। हद।

निवसन—पु० [स० नि√वस्+ल्युट्—अन] १ निवास करने की क्रिया या भाव। २ निवास के योग्य अथवा निवास का स्थान। जैसे—गाँव का घर। ३ वसन। वस्त्र। कपडा। ४ स्त्रियों के पहनने का अधोवस्त्र।

निवसना—अ० [स० निवास] निवास करना। रहना।

निवह—पु० [स० नि√वह्+घ] १ समूह। यूथ। २ सात वायुओ मे से एक वायु।

निवाई—वि० [स० नव] १ नवीन। नया। २ अनोखा। विलक्षण।

†स्त्री० नयापन। नवीनता।

†स्त्री० [?] १ गरमी। ताप। २ ज्वर। बुखार।

निवाक्—वि० [स०नि√वच् (बोलना)+घण्] चुप। मौन।

निवाज—वि० नवाज। (देखें)

†स्त्री०=नमाज।

निवाजना—स० [फा० निवाज] अनुग्रह या प्रार्थना करना।

निवाजिश—स्त्री० [फा०] १ अनुग्रह। कृपा। २ दया। मेहरबानी।

निवाड†—स्त्री० -निवार।

निवाडा—पु० १ नवाडा। २ -नावर (नावो की क्रीडा)।

निवाडी—स्त्री० -निवारी।

निवाण—स्त्री० [स० निम्न] नीची या ढालुई जमीन।

निवात—पु० [स० नि√वा (गति)+क्त] १ रहने का स्थान। घर। २ ऐसा कवच या वर्म जो शस्त्रों से छेदा न जा सके। ३ सुरक्षित स्थान। ४ शान्ति।

वि०=निर्वात।

निवान—पु० [स० निम्न] १ नीची जमीन जहाँ सीड, कीचड या पानी भरा रहता हो। २ झील या तालाब।

†पु०=नवान्न।

निवाना—वि० [स्त्री० निवानी] =निमाना। उदा०—हरीचन्द नित रहत दिवाने, सूरज अजब निवानी के।—भारतेन्दु।

स०=नवाना (झुकाना)।

निवान्या—स्त्री० [स० नि√वा+क+निव (पीनेवाला)—अन्य ब० स०, टाप्] वह मृतवत्सा गौ जो दूसरी गाय के बछडे को लगाकर दूही जाय।

निवार—स्त्री० [फा० नवार] मोटे सूत की बनी हुई तीन-चार अंगुल चौड़ी वह पट्टी जिससे पलंग बुने जाते हैं।
स्त्री० [सं० नेमि+आर] पहिए की तरह का लकड़ी का वह गोल चक्कर जो कूएँ की नींव में धँसाया जाता है और जिसके ऊपर कोठी की जोड़ाई होती है। जमवट।
पुं० [सं० नीवार] तिन्नी का धान।
स्त्री० [?] एक प्रकार की बड़ी और मोटी मूली।

निवारक—वि० [सं० नि√वृ (रोकना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ निवारण करनेवाला। २ दूर करने, रोकने या हटानेवाला।

निवारण—पुं० [सं० नि√वृ+णिच्+ल्युट्—अन] १ किसी को बढ़ने या फैलने से रोकना। २ दूर करना। हटाना। ३. आनेवाली बाधा या संकट को बीच में ही रोकने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। रोक-थाम। (प्रिवेन्शन) ४ निषेध। मनाही। ५ छुटकारा। निवृत्ति।

निवारन†—पुं०=निवारण।

निवारना—स० [सं० निवारण] १ निवारण करना। २ संकट आदि दूर करना, रोकना या हटाना। ३ संकट आदि से किसी को बचाना या उसकी रक्षा करना। ४ कोई काम या बात टालते या रोकते हुए समय बिताना। ५ निषेध करना। मना करना।

निवार-बाफ—पुं० [फा० नवार+बाफ=बुननेवाला] [भाव० निवार-बाफी] निवार अर्थात् पलंग बुनने की सूत की पट्टी बुननेवाला जुलाहा।

निवारी—स्त्री० [सं० नेपाली या नेमाली] १ चैत में फूलनेवाला जूही की जाति का सुगंधित फूलोंवाला एक पौधा। २ इस पौधे के फूल जो सफेद और सुगंधित होते है।
वि० [हिं० निवार] १ निवार-संबंधी। निवार का। २ निवार से बुना हुआ। जैसे—निवारी पलंग।

निवाला—पुं० [फा० निवाल] कौर। ग्रास।

निवास—पुं० [सं० नि√वस्+घञ्] १ किसी स्थान को अपना घर बनाकर वहाँ बसने या रहने की क्रिया या भाव। वास। जैसे—आज-कल आप प्रयाग में निवास करते है। २ उक्त प्रकार से बसकर रहने का स्थान। ३ विश्राम करने का स्थान। ४ घर। मकान। ५ भौगोलिक दृष्टि से ऐसा स्थान, जहाँ किसी जाति के जीव रहते या कोई वनस्पति होती हो। ६ पहनने के वस्त्र। पोशाक।

निवासन—पुं० [सं० निवसन] १ किसी स्थान पर निवास करना या बसकर रहना। २ घर। मकान। ३ समय बिताने की क्रिया या भाव।

निवास-स्थान—पुं० [सं० ष० त०] १. वह स्थान जहाँ कोई व्यक्ति निवास करता या रहता हो। रहने की जगह। २ घर। मकान।

निवासित—भू० कृ० [सं० नि√वस्+णिच्+क्त] १ (स्थान) जो आबाद किया गया हो। बसाया हुआ। २ बसा हुआ।

निवासी (सिन्)—वि० [सं० नि√वस्+णिनि] (स्थान-विशेष में) रहने या निवास करनेवाला। जैसे—भारत निवासी या लंका निवासी।

निवास्य—वि० [सं० नि√वस्+ण्यत्] (स्थान) जहाँ निवास किया जा सकता हो या किया जाने को हो। रहने के योग्य। निवास-स्थान के रूप में काम आने के योग्य।

निविड़—वि० [सं० नि√विड् (संघात)+क] [भाव० निविडता] १ जिसमे अवकाश या स्थान न हो। २ घना। सघन। ३ गंभीर। ४. भारी डील-डौलवाला। ५ चिपटी, टेढ़ी या दबी हुई नाकवाला।

निविड़ता—स्त्री० [सं० निविड+तल—टाप्] १ निविड होने की अवस्था या भाव। घनापन। २ गंभीरता। ३ वंशी के पाँच गुणों मे से एक जो उसके स्वर की गंभीरता पर आश्रित होता है।

निविधान—पुं० [सं० निविद√धा (धारण)+ल्युट्—अन] एक दिन में समाप्त होनेवाला यज्ञ।

निविरीश—वि० [सं० नि+विरीसच्] १ घना। २ गहरा। ३ भद्दा।
स्त्री० १ घनता। २ गहराई। ३ भद्दापन।

निविल—वि०=निविड।

निविशमान—वि० [सं०] जिसने कहीं निवास किया हो या जो कहीं निवास कर रहा हो।
पुं० वह लोग जो किसी उपनिवेश में बसाये गये हों।

निविशेष—वि० [सं० निर्विशेष] १ जिसमें दूसरों से कोई विशेषता न हो। साधारण। सामान्य। २ तुल्य। समान।
पुं० १ समानता। २ एक-रूपता।

निविष†—वि० निर्विष (विषहीन)।

निविष्ट—वि० [सं० नि√विश् (प्रवेश)+क्त] [भाव० निविष्टता] १ बैठा हुआ। आसीन। २ जो कहीं निवेश बनाकर या डेरा डालकर ठहरा हो। ३ किसी काम या बात के लिए तत्पर या तुला हुआ। ४ (मन) एकाग्र करके नियंत्रित किया हुआ। ५ क्रम या व्यवस्था से लगाया हुआ। ६ जिसका प्रवेश हुआ हो। प्रविष्ट। ७ कहीं लिखा, दर्ज किया या चढ़ाया हुआ। (एन्टर्ड) ८ बाँधा या लपेटा हुआ। ९ ठहरा या ठहराया हुआ। स्थित। १० किसी के अन्दर भरा या रखा हुआ।

निविष्टि—स्त्री० [सं० नि√विश्+क्तिन्] १ मैथुन या संभोग करना। २ विश्राम करना। ३ खाते आदि में लिखने, दर्ज करने या चढ़ाने की क्रिया या भाव। ४ इस प्रकार चढ़ी, चढ़ाई या लिखी हुई बात या रकम। (एन्ट्री)

निवीत—पुं० [सं० नि√व्ये (आच्छादन)+क्त] १ यज्ञोपवीत, जो गले में पहना हुआ हो। २ ओढ़ने का कपड़ा। चादर। ओढ़नी।

निवीती (तिन्)—वि० [सं० निवीत+इनि] १ जो यज्ञोपवीत पहने हो। २ जो चादर ओढ़े हो।

निवीर्य—वि०=निर्वीर्य।

निवृत्त—भू० कृ० [सं० नि√वृत्+क्त] १ वापस आया या लौटाया हुआ। २ जिसकी सांसारिक विषयों में प्रवृत्ति न रह गई हो। ३ जो कोई काम करके उससे छुट्टी पा चुका हो। जो अपना काम कर चुका हो। ४ (कार्य) जो पूरा हो चुका हो। मुक्त।
पुं० १ आवरण। २ परदा। ३ लपेटने का कपड़ा। बेठन।

निवृत्ति—स्त्री० [सं० नि√वृत्+क्तिन्] १ निवृत्त होने की क्रिया या भाव। २. वापस आना या लौटना। ३ किसी काम की प्रवृत्ति का अभाव होना। ४. सांसारिक विषयों का किया जानेवाला त्याग। ५ 'प्रवृत्ति' का विपर्याय। ६ छुटकारा। मुक्ति। ७ अपने कार्य

या पद से अवकाश पाकर अथवा अवधि पूरी हो जाने पर सदा के लिए हट जाना। (रिटायरमेंट) ८ एक प्राचीन तीर्थ।

निवृत्तिक—वि० [स०] निवृत्ति-सबधी। जैसे—निवृत्तिक मार्ग या साधना।

निवेद†—पु० [स० नैवेद्य] देवता को चढाया हुआ पदार्थ।

निवेदक—वि० [स० नि√विद् (जानना)+णिच्+ण्वुल्—अक] (व्यक्ति) जो नम्रतापूर्वक किसी से कोई बात कहे। निवेदन करनेवाला।

निवेदन—पु० [स० नि√विद्+णिच+ल्युट्—अन] १ नम्रतापूर्वक किसी से कोई बात कहना। २ इस प्रकार कही हुई कोई बात जो प्राय सुझाव के रूप मे होती है। ३ समर्पण। ४ आहुति।

निवेदन-पत्र—पु० [स० ष० त०] वह पत्र जिसमे किसी एक या कई व्यक्तियों ने निवेदन लिखा हो। (लेटर आफ रिक्वेस्ट)

निवेदना—स० [स० निवेदन] १ विनती, निवेदन या प्रार्थना करना। २ सेवा मे भेट आदि के रूप मे उपस्थित करना।

निवेदित—भू० कृ० [स० नि√विद्+णिच्+क्त] १. (बात) जो निवेदन या प्रार्थना के रूप मे कही गई हो। २ (पदार्थ) जो भेट आदि के रूप मे अर्पित या समर्पित किया गया हो।

निवेद्य—पु० [स० नि√विद्+ण्यत्] नैवेद्य। (दे०)

निवेरना—स०=निबेडना (निपटाना)।

निवेरा—वि० [हि० नि+स० वरण] [स्त्री० निवेरी] १ चुना या छाँटा हुआ।

वि० [स० नवल] १ नवेला। २ अनोखा।

पु०=निबेडा।

निवेश—पु० [स० नि√विश्+घञ्] [वि० नैवेशिक, भू० कृ० निवेशित, निविष्ट] १ डेरा। शिविर। २. प्रवेश। पैठ। ३ घर। मकान। ४. विवाह। ५ ठहराया या रखा जाना। स्थापन। ६. किसी निश्चय, विधि आदि मे पडनेवाली कठिनता या होनेवाली बाधा से बचने के लिए निकाला हुआ मार्ग या निश्चित किया हुआ विधान। (प्रॉविजन)

निवेशन—पु० [स० नि√विश्+ल्युट्—अन] १ डेरा। २ घर। ३ नगर।

निवेशनी—स्त्री० [स० निवेशन+ङीप्] पृथ्वी।

निवेष्ट—पु० [स० नि√वेष्ट् (लपेटना)+घञ्] १ वह कपडा जिसमे कोई चीज ढकी या लपेटी जाय। बेठन। २ सामवेद का एक प्रकार का मत्र।

निवेष्टन—पु० [स० नि√वेष्ट्+ल्युट्—अन] १ ढकने या लपेटने की क्रिया या भाव। २ ढकने या लपेटनेवाली चीज। बेठन।

निवेष्य—पु० [स० नि√विष् (व्याप्ति)+ण्यत्] १ व्याप्ति। २ बरफ का पानी। ३ जल-स्तभ। (देखें)

निव्याधी (धिन्)—पु० [स० नि√व्यध् (मारना)+णिनि] एक रुद्र का नाम।

निव्यूढ—पु० [स० नि-वि√ऊह् (वितर्क)+क्त] १ अध्यवसाय। २ शक्ति। ३ उत्साह।

निशक—वि०=नि शक।

निशग—पु०=निषग।

निश—स्त्री० निशा (रात्रि)।

निशचर—वि०, पु० निशाचर।

निशठ—पु० [स०] बलदेव के एक पुत्र का नाम। (पुराण)

निशतर—पु० [फा०] वह उपकरण जिससे चीर-फाड की जाय। नश्तर। (शल्य-चिकित्सा)

निशब्द—वि० [स० नि शब्द] १ (स्थान) जो शब्द से रहित हो। २ (व्यक्ति) जो चुप या मौन हो।

निशब्दक—वि० [स० नि शब्दक] शब्द न करनेवाला। (साइलेंसर)

निशमन—पु० [स० नि√शम् (शान्ति)+णिच्+ल्युट्—अन] १ दर्शन। देखना। २. श्रवण। सुनना।

निशरण—पु० [स० नि√शृ (हिंसा)+ल्युट्—अन] मारण। वध।

निशल्या—स्त्री० [स०] दती (वृक्ष)।

निशात—वि० [स० नि-शात, प्रा० स०] १ (व्यक्ति) पूर्ण रूप से या बहुत अधिक शात। २ (वातावरण या स्थान) जिसमे शाति न हो।

पु० १ निशा अर्थात् रात्रि का अत। पिछली रात। रात का चौथा प्रहर। २ तडका। प्रभात। ३ घर। मकान।

निशांध—वि० [स० निशा-अन्ध, स० त०] जिसे रात का दिखाई न दे। जिसे रतौंधी हो।

निशांधा—स्त्री० [स० निशा√अन्ध् (दृष्टि-विघात)+अच—टाप्] जतुका लता।

निशांधी—स्त्री० [स० निशा√अन्ध्+अच्—ङीप्] १ जतुका या पहाडी नामक लता। २ राजकुमारी।

निशा—स्त्री० [स० नि√शा (क्षीण करना)+क—टाप्] १ रात्रि। रजनी। रात। २ हलदी। ३ दारु हलदी। ४ फलित ज्योतिष मे, इन छ राशियो का समूह—मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धनु और मकर।

निशाकर—वि० [स० निशा√कृ (करना)+ट] निशा करनेवाला।

पु० १ चन्द्रमा। २ महादेव। शिव। ३ कुक्कुट। मुरगा। ४ कपूर।

निशा-केतु—पु० [स० ष० त०] चन्द्रमा।

निशाखातिर—स्त्री० [फा० निशा+अ० खातिर] किसी काम या बात के सबध मे मन मे होनेवाला वह पूरा विश्वास जो किसी दूसरे के समझाने पर उत्पन्न होता है।

निशाख्या—स्त्री० [स० निशा-आख्या, ब० स०] हलदी।

निशा-गृह—पु० [स० मध्य० स०] शयनागार।

निशाचर—वि० [स० निशा√चर् (गति)+ट] रात के समय चलने या विचरण करनेवाला।

पु० १ राक्षस। २ गीदड। ३ उल्लू। ४ साँप। ५ चकवा-पक्षी। चकवाक। ६ भूत, प्रेत आदि। ७ चोर। ८. महादेव। शिव। ९ चनेर नामक गध-द्रव्य। १० बिल्ली। ११. एक प्रकार की प्रश्निपर्णी या गठिवन।

निशाचर-पति—पु० [स० ष० त०] १ रावण। २. शिव।

निशाचरी—वि० [स० निशाचर+ङीष्] १ निशाचर-संबंधी। निशाचर का। जैसे—निशाचरी माया। २. निशाचरों की तरह का।

स्त्री० १ राक्षसी। २ कुलटा या व्यभिचारिणी। ३ अभिसारिका नायिका। ४ केशिनी नामक गध-द्रव्य।

निशा-चर्म—पु० [स० म०त०] अधकार। अधेरा।

निशा-जल—पु० [स० मध्य०स०] १ हिम। पाला। २ ओस।

निशाट—पु० [स० निशा√अट् (भ्रमण)+अच्] १ उल्लू। २ निशाचर।

निशाटक—पु० [स० निशा√अट्+ण्वुल्—अक] गुग्गल।

निशाटन—वि० [स० निशा√अट्+ल्यु—अन] रात्रि को चलनेवाला। निशाचर।

पु० उल्लू।

निशात—वि० [स० नि√शो (तेज करना)+क्त] १ सान पर चढाकर तेज किया हुआ। २ ओप आदि लगाकर चमकाया हुआ।

वि० [फा० नशात] १ आनद। सुख। २ सुखभोग।

निशातिक्रम, निशात्यय—पु० [स० निशा-अतिक्रम, निशा-अत्यय, ष०त०] १ रात का बीतना। २ प्रात काल।

निशाद—वि० [स० निशा√अद् (खाना)+अच्] रात को खानेवाला।

पु० निषाद। (दे०)

निशादि—पु० [स० निशा-आदि, ब०स० या ष०त०] साय। सध्या।

निशान—पु० [फा०] १ चिह्न। लक्षण। २ ऐसा प्राकृत या आकस्मिक चिह्न या लक्षण जिससे कोई चीज पहचानी जाय या जिससे किसी घटना या बात का परिचय, प्रमाण या सूत्र मिले। ३ मोहर आदि की छाप। ४ झडा या पताका जिससे किसी सप्रदाय, राज्य आदि की पहचान होती है। ५ प्राचीन काल मे वह झडा जो राजाओं की सवारियों के आगे चलता था। ६ कलक। धब्बा। ७ वह चिह्न जो लेख्यों आदि पर अशिक्षित लोग अपने हस्ताक्षर के बदले बनाते है। जैसे—अगूठे का निशान। ८ पता। ठिकाना।

मुहा०—**निशान देना**=सम्मन आदि तामील करने के लिए यह बताना कि यही असामी है।

९ निशाना। १० दे० 'निशानी'।

निशान-कोना—पु० [स० ईशान+हि० कोना] उत्तर और पूर्व का कोण।

निशानची—वि० [फा०] १. बढ़िया निशाना लगानेवाला।

पु० जलूस या राजा आदि की सवारी के आगे-आगे झडा लेकर चलनेवाला व्यक्ति।

निशान-देही—स्त्री० [फा० निशाँ देही] १ किसी का पता-ठिकाना बतलाना। २. न्यायालय के सम्मन आदि की तामील के लिए चपरासी के साथ जाकर यह बतलाना कि यही वह आदमी है जिसे सम्मन दिया जाना चाहिए। प्रतिवादी की पहचान कराना।

निशान-पट्टी—स्त्री० [फा० निशान+हि० पट्टी] १ चेहरे की गठन और रूप रग का वर्णन। हुलिया।

निशान-बरदार—पु० [फा०] झडा हाथ मे लेकर जुलूस, सवारी आदि के आगे चलनेवाला व्यक्ति।

निशाना—पु० [फा० निशान] १. वह वस्तु या बिंदु जिस पर शस्त्र से आघात किया जाय।

क्रि० प्र०—करना।—बनाना।

२. किसी पदार्थ को लक्ष्य बनाकर उसकी ओर किसी प्रकार का वार करने की क्रिया। वार।

मुहा०—**निशाना बाँधना**=निशाना साधना। (देखें नीचे) **निशाना मारना या लगाना**=ताक कर अस्त्र-शस्त्र आदि का वार करना। **निशाना साधना**=(क) ठीक लक्ष्य पर वार करना। (ख) ठीक लक्ष्य पर वार करने का अभ्यास करना।

३. मिट्टी आदि का वह ढेर या और कोई पदार्थ, जिस पर निशाना साधा जाय। ४ वह जिसे लक्ष्य बनाकर कोई उग्र या विकट आघात या क्रिया की जाय। जैसे—किसी की नजर का निशाना, किसी के ताने या व्यग्य का निशाना।

निशा-नाथ—पु० [स० ष०त०] १ चद्रमा। २ कपूर।

निशानी—स्त्री० [फा०] १ वह चीज जो किसी घटना या व्यक्ति का स्मरण करनेवाली हो। स्मृति-चिह्न। यादगार। जैसे—(क) यही लडका भाई साहब की निशानी है। (ख) विधवा के पास यही अंगूठी उसके पति की निशानी बच रही है।

क्रि० प्र०—देना।—रखना।

२ पहचान का चिह्न। निशान।

निशा-पति—पु० [ष०त०] १ चद्रमा। २ कपूर।

निशा-पुत्र—पु० [ष०त०] नक्षत्र आदि आकाशीय पिड।

निशापुष्प—पु० [स० निशा√पुष्प् (खिलना)+अच्] कुमुदनी। कोई।

निशा-बल—पु० [ब० स०] मेष, वृष, मिथुन, कर्क, धन और मकर ये छ राशियाँ जो रात के समय अधिक बलवती मानी जाती है। (फलित ज्योतिष)

निशा-भगा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] दुग्धपुच्छी नामक पौधा।

निशा-मणि—पु० [ष० त०] १ चद्रमा। २ कपूर।

निशामन—पु० [स० नि√शम् (शाति)+णिच्+ल्युट्—अन] १ दर्शन। देखना। २ आलोचना। ३ श्रवण। सुनना।

निशा-मुख—पु० [ष० त०] सध्या काल।

निशा-मृग—पु० [मध्य०स०] गीदड। शृगाल।

निशा-रत्न—पु० [ष०त०] १ चद्रमा। २ कपूर।

निशा-रुक—पु० दे० 'निशासक'।

निशा-वन—पु० [ब० स०] सन का पौधा।

निशावसान—पु० [निशा-अवसान, ष०त०] निशा के समाप्त होने का समय। प्रभात का समय।

निशा-विहार—पु० [ब०स०] राक्षस।

निशासक—पु० [स०] सगीत मे एक प्रकार का रूपक ताल जिसमे दो लघु और दो गुरु मात्राएँ होती है।

निशास्ता—पु० [फा० नशास्त] १ गेहूँ का सार। २ कपडो मे लगाया जानेवाला कलफ या माडी।

निशाहस—पु० [स० निशा√हस् (हँसना)+अच्] कुमुदनी।

निशा-हासा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] शेफालिका।

निशाह्वा—स्त्री० [स० निशा-आह्वा, ब० स०, टाप्] १ हलदी। २ जतुका नामक लता।

निशि—स्त्री० [स० नि√शो+इन्?] १ रात्रि। रात। २ स्वप्न।

३ हलदी। ४ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण और एक लघु होता है।

निशिकर—पु०[स० निशि√कृ+ट]१ चद्रमा। शशि।

निशिचर—पु०[स० निशि√चर् (गति)+ट]=निशाचर।

निशिचर-राज—पु०[स० ष०त०] राक्षसो का राजा, विभीषण।

निशित—वि०[स० नि√शो (तीक्ष्ण करना)+क्त] जो सानपर चढा हो अर्थात् चोखा या तेज।

पु० लोहा।

निशिता—स्त्री०[स० निशित+टाप्] रात्रि। निशा। रात।

निशिदिन—अव्य० [स० निशि+दिन] १ रात-दिन। २ सदा। सर्वदा।

निशिनाथ—पु०=निशानाथ।

निशि-नायक—पु० =निशिनाथ (चद्रमा)।

निशि-पति—पु०[ष० त०] चद्रमा।

निशिपाल—पु०[स० निशि√पाल् (बचाना)+णिच्+अच्]१ चद्रमा। २ एक छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश भगण, जगण, नगण और रगण होते है।

निशि-पुष्पा—स्त्री०[ब० स०] शेफालिका।

निशिपुष्पिका, निशिपुष्पी—स्त्री०[ब० स०, कप्, टाप्, इत्व, ब०स०, ङीप्] शेफालिका।

निशि-वासर—अव्य० [द्व०स०] १ रात-दिन। २ सदा। सर्वदा।

निशीत—पु०= निशीथ।

निशीथ—पु०[स० नि√शी (सोना)+थक्] १ रात। २ आधी रात। ३ पुराणानुसार रात्रि का एक कल्पित पुत्र। ४ छाल या रेशे से बना हुआ कपडा।

निशीथ-नाथ—पु०[ष० त०]१ चद्रमा। २ कपूर।

निशीथ्या—स्त्री०[स०] रात्रि।

निशुंभ—पु०[स० नि√शुम्भ् (हिसा)+घञ्] १ वध। २ हिसा। दनु का पुत्र एक राक्षस जिसका वध दुर्गा ने किया था। (पुराण)

निशुंभन—पु०[स० नि√शुम्भ्+ल्युट्—अन] मार डालना। वध करना।

निशुंभ-मर्दिनी—स्त्री०[स० ष० त०] दुर्गा

निशुंभी (म्भिन्)—पु० [स० निशुम्भ=माहनाश+इनि] एक बुद्ध का नाम।

निशेश—पु०[स० निशा-ईश, ष०त०] निशा के पति, चद्रमा।

†वि०=नि शेष।

निशैत—पु०[स० निशा-एत=(गमन), ब०स०] बगुला।

निशोत्सर्ग—पु०[स० निशा-उत्सर्ग, ष० त०] प्रभात।

निश्कुल—वि० दे० 'निष्कुल'।

निश्चक्रिक—वि०[स०] छल-छद्म से रहित, फलत ईमानदार या सच्चा।

निश्चक्षु—वि०[स० निर्-चक्षुस्, ब० स०] नेत्रहीन। अधा।

निश्चद्र—वि०[स० निर्-चद्र, ब० स०] १ चद्रमा रहित। २ जिसमे आभा या चमक न हो। फीका।

निश्चय—पु०[स० निर्√चि (चयन)+अप्] १ कोई कार्य करने का अतिम निर्णय या सकल्प करना। २ इस प्रकार ठीक की हुई बात या प्रस्ताव। (रिजोल्यूशन) ३ निर्णय। ४ एक अर्थालकार जिसमे एक बात का निषेध करके प्रकृत या यथार्थ बात के स्थापन का उल्लेख होता है। (सर्टेन्टी) ५ विश्वास।

अव्य० निश्चित रूप से। अवश्य।

निश्चयात्मक—वि०[स० निश्चय-आत्मन्, ब० स०, कप्] [भाव० निश्चयात्मकता] निश्चय के रूप मे होने वाला।

निश्चर—पु०[स०] एकादश मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक।

†पु०=निशाचर।

निश्चयेन—अव्य०[स० निश्चय का विभक्त्यन्त रूप] निश्चित रूप से। निश्चयपूर्वक।

निश्चल—वि०[स० निर्√चल (गति)+अच्] [भाव० निश्चलता] १ जो अपने स्थान से जरा भी इधर-उधर चलता या हिलता-डोलता न हो। अचल। स्थिर। २ अपरिवर्तनशील।

निश्चलता—स्त्री०[स० निश्चल+तल्+टाप्] निश्चल होने की अवस्था या भाव।

निश्चलांग—वि० [स० निश्चल-अग, ब० स०] जिसके अग हिलते-डुलते न हो। सदा अचल या स्थिर रहनेवाला।

पु० १ पर्वत २ बगुला।

निश्चायक—वि० [स० निर्√चि+ण्वुल्—अक] १ निश्चय या प्रतीति करानेवाला २ जिसके कारण या द्वारा किसी बात का निश्चित ज्ञान होता हो। जैसे—निश्चायक प्रमाण।

निश्चारक—पु०[स० निर्√चर् (गति)+ण्वुल्—अक] १ एक रोग जिसमे बहुत दस्त आते है। २ वायु। हवा।

निश्चित—वि०[स० निर्-चिन्ता, ब० स०] [भाव० निश्चितता] (व्यक्ति) जिसे कोई चिता न हो। बेफिक्र।

निश्चितता—स्त्री०[स० निश्चित+तल्+टाप्] निश्चित होने की अवस्था या भाव। बे-फिक्री।

निश्चित—भू० कृ०[स० निर्√चि+क्त] १ (बात या प्रस्ताव) जिसके सबध मे निश्चय हो चुका हो। २ जो अटल या स्थिर हो। ३ जो यथार्थ या सत्य हो। ४ जिसमे कोई परिवर्तन न हो सके।

निश्चितई—स्त्री० निश्चितता।

निश्चिति—स्त्री०[स० निर्√चि+क्तिन्]१ निश्चित करने की क्रिया या भाव। २ निश्चय।

निश्चिरा—स्त्री०[स०] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

निश्चिला—स्त्री० [स०] १ शालपर्णी। २ पृथ्वी। ३ पुराणानुसार एक नदी।

निश्चिक्कण—पु०[स० निर्-चुक्कण, ब० स०] मिस्सी।

निश्चेतन—वि०[स० निर्-चेतन, ब० स०] चेतना या सज्ञा रहित।

पु० चेतना से रहित करना।

निश्चेष्ट—वि०[स० निर्-चेष्टा, ब० स०] जो चेष्टा न करता हो या न कर रहा हो।

निश्चेष्ट-करण—पु०[ष०त०]१ निश्चेष्ट करने की क्रिया या भाव। २ कामदेव का एक बाण। ३ वैद्यक मे, एक प्रकार का औषध।

निश्चेष्टीकरण—पु० [स० निश्चेष्ट+च्वि, ईत्व √कृ+ल्युट्—अन]=निश्चेष्ट-करण।

निश्चै—पु०, अव्य० निश्चय।

निश्च्यवन—पु०[स०]१ वैवस्वत मन्वतर के सप्तर्षियो मे से एक ऋषि का नाम (पुराण)। २ एक प्रकार की अग्नि। (महाभारत)

निश्छंद (स्)—वि०[सं० निर्-छदस्, ब० स०] जिसने वेद न पढ़ा हो।

निश्छल—वि०[सं० निर्-छल, ब०स०] १. (व्यक्ति) छल-कपट से रहित। २ (हृदय) जिसमे छल-कपट न भरा हो।

निश्छाय—वि०[सं० निर्-छाया, ब०स०] छाया रहित।

निश्छेद—पु०[सं० निर्-छेद, ब० स०] गणित मे वह राशि, जिसका किसी गुणक के द्वारा भाग न दिया जा सके। अविभाज्य।

निश्रम—पु०[सं० नि श्रम] न थकना।

निश्रयणी—स्त्री०[सं० नि श्रयणी] सीढ़ी।

निश्रीक—पु०[सं० नि श्रीक] सीढ़ी।

निश्रेणिकातृण—पु०[सं० नि श्रेणिकातृण] एक तरह की घास, जिसके खाने से पशु निर्बल हो जाते है।

निश्रेणी—स्त्री०[सं० नि श्रेणी] १ सीढ़ी। जीना। २ वह साधन जिसके द्वारा एक बिन्दु से दूसरे बिन्दु तक पहुँचा जाय। ३ मुक्ति। ४ खजूर का पेड।

निश्रेयस—पु०[सं० नि श्रेयस्]१ दु ख का अत्यन्त अभाव। २ मोक्ष। ३ कल्याण। मगल।

निश्वास—पु०[सं० नि श्वास]१ अन्दर खीचा हुआ साँस बाहर निकालना या छोडना। २ नाक या मुँह से बाहर निकलनेवाला श्वास। ३ गहरी या ठढा साँस।

निश्शंक—वि०=नि शक।

निश्शक्त—वि०=नि शक्त।

निश्शर—वि०[सं० नि शर] शर या बाण से रहित।

निश्शील—वि०[सं० नि शील] [भाव० निश्शीलता]१ जिसका शील या स्वभाव अच्छा न हो। २ जिसमे शील या सकोच न हो। बे-मुरौवत।

निश्शेष—वि०=नि शेष।

निषंग—पु०[सं० नि√सञ्ज् (लगाव) +घञ्]१ विशेष रूप से होनेवाला आसग या आसक्ति। लगाव। २ तरकश। ३ खड्ग। तलवार। ४ पुरानी चाल का एक तरह का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

निषंगथि—वि० [सं० नि√सञ्ज्+थिन्] १ आलिगन करने या गले लगानेवाला। २ धनुष धारण करनेवाला।

पु० १ आलिगन। २ रथ। ३ सारथी। ४ कधा।

निषंगी (गिन्)—वि०[सं० निषग+इनि]१ जो किसी पर आसक्त हो। २. धनुषधारी। तीर चलानेवाला। ३ खड्गधारी।

पु० धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

निष†—अव्य०=तनिक।

निषक-पुत्र—पु०[सं०] असुर। राक्षस।

निषकर्ष—पु०[सं०] सगीत मे स्वर साधन की एक प्रणाली, जिसमे प्रत्येक स्वर का आलाप दो-दो बार करना पड़ता है।

निषक्त—वि०[सं० नि√सञ्ज्+क्त]जो किसी पर विशेष रूप से आसक्त हो।

निषण्ण—वि० [सं० नि√सद् (बैठना)+क्त] १. बैठा हुआ। २ आश्रित।

निषण्णक—पु०[सं० निषण्ण+कन्]१ बैठने की जगह। २. आसन।

निषत्र—पु०=नक्षत्र।

निषद्—स्त्री०[सं० नि√सद्+क्विप्] यज्ञ की दीक्षा।

निषद—पु०=निषाद (स्वर)।

निषद्या—स्त्री० [सं० नि√सद्+क्यप्+टाप्] १ बैठने की छोटी चौकी या खाट। २ व्यापारी की दूकान की गद्दी। ३ बाजार। हाट।

निषद्यापरीषत्—पु० [सं०] जैन भिक्षुओं का एक आचार जिसमे ऐसे स्थान पर रहना वर्जित है, जहाँ स्त्रियाँ और हिजडे आते-जाते हों, और यदि वहाँ रहना ही पडे, तो चित्त को चचल न होने देना।

निषद्वर—पु०[सं० नि√सद्+ष्वरच्] १ कीचड। २ कामदेव।

निषद्वरी—स्त्री०[सं० निषद्वर+ङीप्]रात्रि।

निषध—वि०[सं०]१ पुराणानुसार एक पर्वत। २ कुश के एक पौत्र का नाम। ३ जनमेजय का एक पुत्र। ४ कुरु का एक पुत्र। ५ ५ विन्ध्य की पहाडियों पर का एक प्राचीन देश, जहाँ राजा नल राज करते थे। ६ निषाद (स्वर)।

निषधाभास—पु०[सं०] 'आक्षेप' अलकार के ५ भेदो मे से एक।

निषधावती—स्त्री०[सं०] विध्य पर्वत से निकलनेवाली एक प्राचीन नदी। (मारकण्डेय पुराण)

निषधाश्व—पु०[सं०] कुरु का एक पुत्र।

निषाद—पु०[सं० नि√सद्+घञ्]१ एक प्राचीन अनार्य जगली जाति, अथवा उक्त जाति का कोई व्यक्ति। २ शृगबरपुर के पास का एक प्राचीन देश।

विशेष—निषाद जाति के लोग मूलत इसी प्रदेश के निवासी माने गये हैं और इनकी भाषा की गिनती मुडा भाषाओ के वर्ग मे होती है।

३ नीच जाति का व्यक्ति। ४ ऐसा व्यक्ति जो शूद्रा माता और ब्राह्मण पिता से उत्पन्न हुआ हो। ५ सगीत मे, सरगम का सातवाँ स्वर, जो अन्य सब स्वरों से ऊँचा होता है। इसका सक्षिप्त रूप 'नि' है।

विशेष—यह हाथी के स्वर के समान गभीर और ललाट मे उच्चरित होनेवाला स्वर माना गया है। यह वैश्य जाति, विचित्र वर्ण का और गणेश के स्वरूपवाला कहा गया है। इसका देवता सूर्य और छद जगती है। यह उग्रा और क्षोभिणी नाम की दो श्रुतियों के योग से बना है।

निषादकर्षु—पु० [सं०] एक प्राचीन देश।

निषाद-प्रिय—पु०[सं०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

निषादित—भू०कृ०[सं० नि √सद्+णिच् +क्त]१ बैठाया हुआ। २ पीडित।

निषादी (दिन्)—वि०[सं० नि√सद्+णिनि] १ बैठनेवाला। २ जो आराम कर रहा या सुस्ता रहा हो।

पु० महावत। हाथीवान।

निषिक्त—भू० कृ०[सं० नि√सिच् (छिडकना)+क्त]१ (स्थान) जिस पर जल छिडका गया हो। २ (खेत) जो सीचा गया हो। ३ भीतर पहुँचाया हुआ। ४ जिसके अदर या गर्भ मे कोई चीज पहुँचाई गई हो।

पु० वीर्य से उत्पन्न गर्भ।

निषिद्ध—भू०कृ०[सं० नि√सिध् (गति)+क्त] [भाव० निषिद्धि] १ जिसे उपयोग, प्रयोग, या व्यवहार मे लाने का निषेध किया गया हो। २ रोका हुआ। ३ बहुत ही बुरा और परम त्याज्य।

निषिद्धि—स्त्री०[सं० नि√सिध्+क्तिन्] १ निषिद्ध होने की अवस्था या भाव। २ निषेध।

निषूदन—वि०[सं० नि√सूद् (वध करना)+णिच्+ल्युट्—अन] समस्त पदों के अंत में, मारने या वध करनेवाला। जैसे—अरिनिषूदन।

निषेक—पुं०[सं० नि√सिच् (सींचना)+घञ्] [वि० निषिक्त] १ जल छिड़कने या जल से सिंचाई करने की क्रिया या भाव। २. चूने, टपकने या रसने की क्रिया या भाव। ३ वीर्य। ४ गर्भ धारण कराना। ५ किसी के अंदर कोई चीज या शक्ति भरना। ६ इस प्रकार भरी हुई वस्तु या शक्ति। (इम्प्रेगनेशन)

निषेचन—पुं०[सं० नि√सिच्+णिच्+ल्युट्—अन] १ छिड़कना। सींचना।

निषेध—पुं०[सं० नि√सिध्+घञ्] १ अधिकारपूर्वक और कारणवश यह कहना कि ऐसा मत करो। मना करने की क्रिया या भाव। मनाही। (फारबिडिंग) २ वह कथन या आज्ञा, जिसमें कोई बात न मानी गई हो या न किये जाने का विधान हो। (नेगेशन) ३ अपवाद। ४ अड़चन। बाधा। रुकावट। ५ अस्वीकृति। इन्कार।

निषेधक—वि०[सं० नि√सिध्+ण्वुल्—अक] १. (व्यक्ति) निषेध या मनाही करनेवाला। २ (आज्ञा या कथन) जिसके द्वारा निषेध या मनाही की जाय। ३ बाधक।

निषेधन—पुं०[सं० नि√सिध्+ल्युट्—अन] निषेध करने की क्रिया या भाव।

निषेध-पत्र—पुं०[ष०त०] वह पत्र जिसमें किसी को कोई काम न करने के लिए आदेश दिया गया हो।

निषेध-विधि—स्त्री०[सं० स०त०] वह आज्ञा, कथन या बात, जिससे किसी काम का निषेध किया जाय। जैसे—यह काम नहीं करना चाहिए। यह निषेध-विधि है।

निषेधाक्षेप—पुं०[सं०निषेध-आक्षेप, ब०स०] साहित्य में आक्षेप अलंकार के तीन भेदों में से एक, जिसमें कोई बात इस ढंग से मना की जाती है कि ध्वनि से उसे करने का विधान सूचित होता है।

निषेधात्मक—वि० [सं० निषेध-आत्मन्, ब०स०, कप्] १ (कथन या विधान) जो निषेध के रूप में हो। २ दे० 'नहिक'।

निषेधाधिकार—पुं०[सं० निषेध-अधिकार, ष० त०] १ ऐसा अधिकार जिससे किसी का कोई काम करने से रोका जा सके। २ राज्य, संस्था आदि के प्रधान के हाथ में होनेवाला वह अधिकार, जिससे वह विधायिका सभा द्वारा पारित प्रस्ताव को कानून या विधि बनने से रोक सकता है। ३ किसी संस्था के सदस्यों के हाथ में रहनेवाला उक्त प्रकार का वह अधिकार, जिससे कोई स्वीकृत प्रस्ताव व्यवहार में आने से रोका जा सकता है (वीटो)

निषेधित—भू० कृ० [सं० नि√सिध्+णिच्+क्त] जिसके या जिसके लिए निषेध किया गया हो। मना किया हुआ।

निषेवण—पुं० [सं० नि√सेव् (सेवा)+ल्युट्—अन, षत्व] १ सेवा करना। २ आराधन या पूजा करना। ३ अनुष्ठान। ४ प्रयोग या व्यवहार में लाना। ५ बसना। रहना।

निषेवा—स्त्री० [सं० नि√सेव्+अङ्—टाप्,षत्व] =सेवा।

निषेवित—भू० कृ०[सं० नि√सेव्+क्त, षत्व] जिसका निषेवण हुआ हो।

निषेवी (विन्)—वि० [सं० नि√सेव्+णिनि] [स्त्री० निषेविनी] १. निषेवण करनेवाला। २. सेवक। ३ आराधक।

निषेव्य—वि० [सं० नि√सेव्+ण्यत्] जिसका निषेवण या सेवन करना उचित हो या किया जाने को हो। सेवनीय।

निष्कंटक—वि० [सं० निर्-कंटक, ब० स०] १ जिसमें काँटे न हों। २ जिसमें कोई बाधा या बखेड़ा न हो। ३ (राज्य) जिसमें शासक का कोई वैरी शत्रु न हो।
अव्य० १ बिना किसी प्रकार की बाधा या रुकावट के। २ बिना किसी प्रकार के वैर या शत्रुता की संभावना के। बेखटके।

निष्कंठ—पुं० [सं० निर्-कंठ, ब० स०] वरुण (पेड़)।

निष्कंप—वि० [सं० निर्-कंप, ब० स०] जिसमें कंपन न हो रहा हो। जो काँप न रहा हो, फलत स्थिर।

निष्कंभ—पुं० [सं०] गरुड़ के एक पुत्र।

निष्कंभु—पुं० [सं०] देवताओं के एक सेनापति। (पुराण)

निष्क—पुं० [सं० निस्√कै (शोभा)+क] १. वैदिक काल का एक प्रकार का सोने का सिक्का जिसका मान समय-समय पर घटता-बढ़ता रहता था। फिर भी साधारणत यह १६ माशे का माना जाता था। २ उक्त सिक्के के बराबर की तौल। ३ सोना। ४ सोने का पात्र या बरतन। ६ चांडाल।

निष्कपट—वि० [सं० निर्-कपट, ब० स०] [भाव० निष्कपटता] कपट-रहित।

निष्कपटी—वि० [सं० निष्कपट] कपट-रहित।

निष्कर—वि० [सं० निर्-कर, ब० स०] जिस पर कर या शुल्क न लगता हो।
स्त्री० भूमि जिस पर कर न लगता हो। माफी।

निष्करुण—वि० [सं० निर्-करुण ब० स०] जिसके हृदय में या जिसमें करुणा न हो। करुणा-रहित।

निष्कर्तन—पुं० [सं० निर्√कृत् (काटना)+ल्युट्-अन] काट या फाड़ कर अलग करना।

निष्कर्म—वि० [सं० निर्-कर्मन्, ब०स०] १ जो कोई कर्म न करता हो। २ जो कर्म करने पर भी उसमें आसक्ति न रखता या लिप्त न होता हो। अकर्मा।

निष्कर्मण्य—वि० [सं० निर्-कर्मण्य, प्रा० स०] अकर्मण्य। निकम्मा।

निष्कर्मा (र्मन्)—वि० [सं० निर्-कर्मन्, ब० स०] १ जो कर्मों में लिप्त न हो। २ जो किसी काम का न हो। निकम्मा।

निष्कर्ष—पुं० [सं० निस्√कृष् (खींचना)+घञ्] १ खींचकर निकालना या बाहर करना। २ खींच या निकालकर बाहर की हुई चीज या तत्त्व। ३ विचार-विमर्श, सोच-विचार आदि के उपरांत निकलनेवाला परिणाम या स्थिर होनेवाला सिद्धांत। (कन्क्लूजन) ४ निश्चय। ५ इस बात का विचार कि कोई चीज कितनी या कैसी है। ६ राजा या शासन का प्रजा को कष्ट देते हुए उससे धन खींचना या लेना।

निष्कर्षक—वि० [सं० निस्√कृष्+ण्वुल्-अक] निष्कर्ष या निष्कर्षण करनेवाला।

निष्कर्षण—पुं० [सं० निस्√कृष्+ल्युट्-अन] १ खींचकर निकालना या बाहर करना। २ दूर करना। ३ मिटाना। ४ घटाना।

निष्कर्षी (र्षिन्)—पु० [स० निस्√कृष्+णिनि] एक प्रकार का मरुत्।
वि०=निष्कर्ष।

निष्कलंक—वि० [स० निर्-कलंक, ब० स०] जिस पर या जिसमें कलंक न हो।
पु० पुराणानुसार एक तीर्थ जिसमें स्नान करने से कलंक या दोष नष्ट हो जाते है।

निष्कलंकित—वि०=निष्कलंक।

निष्कलंकी—वि०=निष्कलंक।

निष्कल—वि० [स० निर्-कला, ब० स०] [स्त्री० निष्कला] १ (व्यक्ति) जो कोई कला या हुनर न जानता हो। २ (कार्य) जो कलापूर्ण ढंग से न किया गया हो। ३ अगहीन। ४ जिसका वीर्य नष्ट हो चुका हो। जैसे—नपुंसक या वृद्ध। ४ पूरा। समूचा।
पु० ब्रह्म।

निष्कला—स्त्री० [स० निष्कल+टाप्] ऐसी स्त्री जिसे मासिक-धर्म होना बंद हो गया हो।

निष्कली—स्त्री० [स० निष्कल+ङीष्] =निष्कला।

निष्कलुष—वि० [स० निर्-कलुष, ब० स०] कलुष-रहित। निर्मल या पवित्र।

निष्कषाय—वि० [स० निर्-कषाय, ब० स०] १ विशुद्ध चित्तवाला। २ मुमुक्षु।
पु० एक जिन देव।

निष्काम—वि० [स० निर्-काम, ब० स०] [भाव० निष्कामता] १ (व्यक्ति) जिसके मन में कामनाएँ या वासनाएँ न हो, फलत जो सब बातों से निर्लिप्त रहता हो। २ (कार्य) जो बिना किसी प्रकार की कामना के किया जाय।

निष्कामी—वि०=निष्काम (व्यक्ति)।

निष्कारण—वि० [स० निर्-कारण, ब० स०] जिसका कोई कारण या सबब न हो।
अव्य० १ बिना किसी कारण या वजह के। २ व्यर्थ।
पु० १ कहीं ले जाना या हटाना। २ मारण। वध।

निष्कालक—वि० [स०निर्√कल् (गति)+णिच्+ण्वुल्-अक] जिसके बाल, रोएँ आदि मूँड़े गए हो।

निष्कालन—पु० [स० निर्√कल्+णिच्+ल्युट्-अन] १ चलाने की क्रिया या भाव। २ पशुओं आदि को निकालना या भगाना। ३ मार डालना। वध।

निष्कालिक—वि० [स० निर्-कालिक, प्रा० स०] १ जो कुछ ही दिन और जीने को हो। २ जिसका अंत निकट हो। ३ अजेय।

निष्काश—पु० [स० निर्√काश् (शोभित होना)+अच्] १ किसी पदार्थ का बाहर निकला हुआ भाग। (प्रोजेक्शन) जैसे—मकान का बरामदा।

निष्काशन—पु० निष्कासन। (दे०)

निष्काशित—भू० कृ०=निष्कासित।

निष्काष—पु० [सं० निर्√कष् (खरोचना)+घञ्] दूध का वह भाग जो उसके अधिक औटाये जाने के कारण बरतन में ही लगकर रह गया हो और खुरचकर निकाला जाय।

निष्कास—पु० [सं० निर्√कास् (खाँसना)+घञ्] १ बाहर निकालने की क्रिया या भाव। २ किसी पदार्थ का आगे या बाहर निकला हुआ भाग। ३ वह अंश या स्थान जहाँ से कोई चीज बाहर निकलकर आगे जाती हो। (आउट-फॉल)

निष्कासन—पु० [स० निर्√कास्+ल्युट्-अन] १ किसी क्षेत्र या स्थान में निवास करनेवाले व्यक्ति को वहाँ से स्थायी रूप से और अधिकार या बल-पूर्वक बाहर करना। २ किसी कर्मचारी को उसके पद से हटाना और उसे नौकरी से छुटाना। ३ देश से बाहर निकाले जाने का दंड।

निष्कासित—भू० कृ० [स० निर्√कास्+क्त] जिसका निष्कासन हुआ हो। किसी क्षेत्र, पद, स्थान आदि से निकाला या हटाया हुआ।

निष्कासिनी—स्त्री० [स० निर्√कास्+णिनि+ङीप्] वह दासी जिस पर स्वामी ने कोई प्रतिबंध न लगाया हो।

निष्किंचन—वि० [स०निर्-किञ्चन, ब० स०] जिसके पास कुछ भी न हो। अकिंचन। दरिद्र।

निष्किल्विष—वि० [स० निर्-किल्विष, ब० स०] किल्विष (दोष या पाप) से रहित।

निष्कीटक—वि० [स० निर्-कीट, ब० स०] १ कीटाणुओं आदि से रहित। २ कीटाणुओं का नाश करनेवाला।
पु० वह प्रक्रिया या यंत्र जिसकी सहायता से कीटाणु नष्ट किये जाते हो। (स्टर्लाईजर)

निष्कीटन—पु० [स० निष्कीट+णिच्+ल्युट्-अन] १ किसी वस्तु को तपाकर अथवा रासायनिक प्रक्रियाओं से कीटा या कीटाणुओं से रहित करना। २ उत्पादन करनेवाले कीटाणु नष्ट करके अनुर्वर, नपुंसक या बाँझ करना। (स्टर्लाइजेशन)

निष्कीटित—भू० कृ० [सं० निष्कीट+णिच्+क्त] जो कीटाणुओं से रहित किया गया हो। (स्टर्लाइज्ड)

निष्कुंभ—वि० [स० निर्-कुंभ, ब० स०] कुंभ रहित।
पु० [निस्√कुंभ् (ढाँकना)+अच्] दंती वृक्ष।

निष्कुट—पु० [स० निस्√कुट् (टेढ़ा होना)+क] १ घर के पास का उद्यान। नजर-बाग। २ खेत। ३ किवाड़ा। दरवाजा। ४ अंत पुर। जनानखाना। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६ खोखला वृक्ष।

निष्कुटि—स्त्री० [स० निस्√कुट्+इन्] बड़ी इलायची।

निष्कुटिका—स्त्री० [स०] कुमार की अनुचरी एक मातृका। (पुराण)

निष्कुटी—स्त्री० [स० निष्कुटि+ङीष्] बड़ी इलायची।

निष्कुल—वि० [स० निर्-कुल, ब० स०] [स्त्री० निष्कुला] १ जिसके कुल में कोई न रह गया हो। २ जो अपने किसी दोष या पाप के कारण अपने कुल या परिवार से अलग कर दिया या निकाल दिया गया हो।

निष्कुलीन—वि० [स० निर्-कुलीन, प्रा० स०] अ-कुलीन।

निष्कुषित—भू० कृ० [सं० निस्√कुष् (खींचना)+क्त] १ छीला हुआ। २ जिसकी खाल उतार ली गई हो। ३ जहाँ-तहाँ काटा या खाया हुआ। (जैसे—कीटनिष्कुषित) खुरचकर निकाला हुआ। ४ निष्कासित।

निष्कुह—पु० [स० निर्√कुह् (विस्मित करना)+अच्] पेड़ का खोखला अंश। कोटर। खोंडरा।

निष्कूज—वि० [सं० निर्–कूज, ब० स०] ध्वनि या शब्द से रहित।

निष्कूट—वि० [सं० निर्-कूट, ब० स०] कूट या छल-कपट से रहित।

निष्कृत—भू० कृ० [सं० निर्√कृष् (खींचना)+क्त] [भाव० निष्कृति] १ हटाया हुआ। २ मुक्त। ३ उपेक्षित। निरस्कृत। ४. जिसे क्षमा मिली हो।

पु० १. मिलन-स्थान। २ प्रायश्चित्त।

निष्कृति—स्त्री० [सं० निर्√कृष्+क्तिन्] १ हराने की क्रिया या भाव। २ छुटकारा। मुक्ति। ३ उपेक्षा। तिरस्कार। ४ क्षमा। ५ प्रायश्चित्त।

निष्कृति-धन—पु० [सं० मध्य० स०] वह धन जो किसी को अपने वश मे से निकालकर मुक्त करने के बदले मे अथवा किसी को किसी के वश से मुक्त कराने के बदले मे लिया या दिया जाय। (रैन्सम)

निष्कृप—वि० [सं० निर्–कृपा, ब० स०] १ दूसरों पर कृपा न करनेवाला। २ तेज। धारदार।

निष्कृष्ट—वि० [सं० निर्√कृष्+क्त] १ निचोडकर निकाला हुआ। २ सारभूत

निष्कैतव—वि० [सं०] निश्छल।

निष्कैवल्य—वि० [सं० निर्-कैवल्य, ब० स०] १ विशुद्ध। २ पूर्ण। ३ मोक्ष-रहित।

निष्कोषण—पु० [सं० निर्√कुष् (छीलना)+ल्युट्–अन] १ छीलना। २ शरीर पर से खाल उतारना। ३ काट या फाडकर छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट करना। ४ खुरचना। ५ निष्कासन।

निष्क्रम—वि० [सं० निर्-क्रम, ब० स०] क्रम-हीन। बे-तरतीब।

पु० १ मन की तृप्ति। किसी को जाति से बाहर निकालना। ३ दे० 'निष्क्रमण'।

निष्क्रमण—पु० [सं० निर्√क्रम् (गति)+ल्युट्–अन] [वि० निष्क्रांत] १ बाहर निकालना। २ हिन्दुओं मे एक संस्कार जिसमे चार महीने के शिशुओं को पहले-पहल घर से बाहर निकालकर सूर्य के दर्शन कराते हैं।

निष्क्रमणार्थी(र्थिन्)—पु० [सं० निष्क्रमण-अर्थिन, ष० त०] १ कहीं से निकलने की इच्छा रखनेवाला। २ दे० 'निष्क्रमिती'।

निष्क्रमणिका—स्त्री० [सं०] हिन्दुओं का निष्क्रमण नामक संस्कार।

निष्क्रमिती—पु० [सं० निष्क्रमी] वह जो किसी संकट आदि से बचने के लिए अपना निवास स्थान छोड़कर दूसरी जगह जाय या जाना चाहे। (इवैकुई)

निष्क्रय—पु० [सं० निर्√क्री (विनिमय)+अच्] १ वह धन जो किसी को कोई काम या सेवा करने के बदले या किसी वस्तु का उपयोग करने के बदले मे दिया जाय। जैसे—भाडा, मजदूरी, वेतन आदि। २ इनाम। पुरस्कार। ३ किसी चीज का दाम। मूल्य। ४ चीजों की अदला-बदली। विनिमय। ५ बेचने की क्रिया या भाव। बिक्री। ६ किसी काम या बात से छुटकारा पाने के लिए उसके बदले मे दिया जानेवाला धन। जैसे—(क) यदि गौ दान न कर सके, तो उसका कुछ निष्क्रय दे दो। (ख) ओल मे रखा हुआ व्यक्ति प्रायः निष्क्रय देकर छुडाया जाता है। ७ शक्ति। सामर्थ्य। ८. उचित धन देकर दूसरे के हाथ मे पडी हुई चीज अपने हाथ मे करना या लेना। (रिडेम्पशन)

निष्क्रयण—पु० [सं० निर्√क्री+ल्युट्–अन] १ निष्क्रय करने की क्रिया या भाव। २ निष्क्रय के रूप मे दिया जानेवाला धन या रकम।

निष्क्रांत—भू० कृ० [सं० निर्√क्रम्+क्त] १ निकला या निकाला हुआ। २ जिसका निष्क्रमण हो चुका हो। ३ (संपत्ति) जिसका स्वामी जिसे छोडकर दूसरे देश मे चला गया हो।

निष्क्रामित—वि० निष्क्रांत।

निष्क्राम्य—वि० [सं० निर्√क्रम्+ण्यत्] (माल) जो बाहर भेजा जाने का हो या भेजा जाता हो। चलानी (माल)।

निष्क्रिय—वि० [सं० निर्-क्रिया, ब० स०] [भाव० निष्क्रियता] १ जिसमे किसी किसी प्रकार की क्रिया या व्यापार न हो। निश्चेष्ट। जैसे—निष्क्रिय प्रतिरोध। २ जो किसी किसी प्रकार की क्रिया या चेष्टा न करता हो अथवा जिसकी क्रिया या गति बीच मे कुछ समय के लिए ठहर या रुक गई हो। ३ जो विहित कर्म न करता हो।

पु० ब्रह्म जो सब प्रकार की क्रियाओं, चेष्टाओं और व्यापारों से रहित माना जाता है।

निष्क्रियता—स्त्री० [सं० निष्क्रिय+तल्, टाप्] निष्क्रिय होने की अवस्था या भाव।

निष्क्रिय-प्रतिरोध—पु० [सं० कर्म० स०] किसी अनुचित आज्ञा या आदेश का किया जानेवाला ऐसा प्रतिरोध या विरोध जिसमे मिलनेवाले दंड, या होनेवाली हानि की परवाह नहीं की जाती। (पैसिव रेजिस्टन्स)

निष्क्रीत—वि० [सं० निर्√क्री+क्त] १ जिसने या जिसके लिए निष्क्रय दिया गया हो। (कम्पेन्सेटेड) २ (ऋण या दन) जो चुका दिया गया हो। (रिडीम्ड)

निष्क्लेश—वि० [सं० निर्+क्लेश, ब० स०] १ जिसे किसी प्रकार का क्लेश न हो। सब प्रकार के क्लेशों से मुक्त या रहित। २ बौद्धधर्म मे, दस प्रकार के क्लेशों से मुक्त।

निष्क्वाथ—पु० [सं० निर्-क्वाथ, ब० स०] मांस आदि का रसा। शोरबा।

निष्टानक—पु० [सं० निर्–तानक, प्रा० स०, षत्व, ष्टुत्व] १ गर्जन। २ कलरव।

निष्टि—स्त्री० [सं०√निश् (एकाग्र होना)+क्तिच्] दिति का एक नाम।

निष्टिग्री—स्त्री० [सं०] अदिति का एक नाम।

निष्ट्य—वि० [सं० निस्+त्यप्, षत्व, ष्टुत्व] परकीय। बाहरी।

पु० १ चांडाल। २ वैदिक काल मे एक प्रकार के म्लेच्छ।

निष्ठ—वि० [सं० नि√स्था (ठहरना)+क] १ ठहरा हुआ। स्थित। २ किसी काम या बात मे पूरी तरह से लगा रहनेवाला। जैसे—कर्मनिष्ठ। ३ किसी के प्रति निष्ठा (भक्ति और श्रद्धा) रखनेवाला। ४ विश्वास रखनेवाला। जैसे—धर्म-निष्ठ। ५ किसी कार्य या विषय मे बराबर मन से लगा रहनेवाला। जैसे—कर्तव्य-निष्ठ। (प्रायः यौगिक पदों के अंत मे प्रयुक्त)

निष्ठांत—वि० [सं० निष्ठा (नाश)+अन्त, ब० स०] नश्वर।

निष्ठा—स्त्री० [सं० नि√स्था+अङ्+टाप्] १. अवस्था। दशा। स्थिति। २ आधार। नींव। ३ दृढता-पूर्वक टिके या ठहरे रहने की अवस्था या भाव। ४ मन मे होनेवाला दृढ निश्चय या विश्वास ५ किसी बात, या व्यक्ति के संबंध मे होनेवाली वह भावुकतापूर्ण

मनोवृत्ति जो हमारी आंतरिक पूज्य बुद्धि, विश्वास, श्रद्धा आदि से उत्पन्न होती है और जो हमे उस (बात, विषय या व्यक्ति) के प्रति विशिष्ट रूप से आसक्त, प्रवृत्त तथा सलग्न रखती है। किसी के प्रति होनेवाली मन की ऐसी एकात अनुरक्ति या प्रवृत्ति जो बहुत-कुछ भक्ति की सीमा तक पहुँचती हुई होती है। जैसे—अपने कर्त्तव्य, गुरु, धर्म या नेता के प्रति होनेवाली निष्ठा। ६ धार्मिक क्षेत्र मे, ज्ञान की वह अतिम या चरम अवस्था, जिसमे आत्मा पूर्ण रूप से ब्रह्म मे लीन हो जाती है। ७ विष्णु जिनमे प्रलय के समय समस्त भूतो का विलय हो जाता है। ८ किसी चीज या बात का नियत समय पर होनेवाला अत या समाप्ति। ९ विनाश। १० दक्षता। प्रवीणता। ११ विपत्ति। सकट।

निष्ठान—पु० [स० नि√स्था+ल्युट्—अन] चटनी आदि चटपटी चीजे।

निष्ठानक—पु० [स० निष्ठान+कन्] =निष्ठान।

निष्ठावान् (वत्)—वि० [स० निष्ठा+मतुप्] जिसकी किसी के प्रति निष्ठा हो। निष्ठा रखनेवाला।

निष्ठित—भू० कृ० [स० नि√स्था+क्त] १ अच्छी तरह टिका या ठहरा हुआ। जमकर लगा हुआ। दृढ रूप से स्थिति। २ (व्यक्ति) जिसमे निष्ठा हो। निष्ठावान्।

निष्ठीव—पु० [स० नि√ष्ठिव् (थूकना)+घञ्, दीर्घ] =निष्ठीवन (थूक)।

निष्ठीवन—पु० [स० नि√ष्ठिव्+ल्युट्—अन, दीर्घ] १. मुँह से थूक या कफ निकालकर बाहर फेंकना। २ खखार। थूक। ३ वैद्यक में, एक औषध, जिसका व्यवहार गले या फेफडे से कफ निकालने मे किया जाता है।

निष्ठुर—वि० [स० नि√स्था+उरच्] [स्त्री० निष्ठुरा] [भाव० निष्ठुरता] १. कठिन। कडा। सख्त। २. उग्र। तेज। ३ जिसके हृदय मे दया, ममता, मोह आदि न हो। दूसरो के कष्टो की परवाह न करनेवाला।

निष्ठुरता—स्त्री० [स० निष्ठुर+तल्—टाप्] १ निष्ठुर होने की अवस्था या भाव। २ आचरण व्यवहार आदि की निर्दयता-पूर्ण कठोरता।

निष्ठुरिक—पु० [स०] एक नाग जिसका उल्लेख महाभारत मे है।

निष्ठेवन—पु० निष्ठीवन (थूक)।

निष्ठ्यूत—वि० [स० नि√ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] १ थूका हुआ। २ उगला हुआ। ३ बाहर निकाला हुआ। ४ कहा हुआ। उक्त।

निष्ण—वि० [स० नि√स्ना (नहाना)+क, षत्व, णत्व] =निष्णात। वि० [स०] (काम) जो सपन्न या पूरा किया जा चुका हो। (एक-म्पिलइड)

निष्णात—वि० [स० नि√स्ना+क्त, षत्व, णत्व] १ किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता या जानकार। २. किसी बात मे बहुत अधिक-निपुण। ३ ठीक तरह से पूरा या समाप्त किया हुआ। ४ उत्तम। श्रेष्ठ।

निष्पक—वि० [स० निर्-पक, ब० स०] १. (भूमि) जिसमे कीचड न हो। २ (वस्तु) जिसे कीचड न लगा हो। ३ साफ-सुथरा। स्वच्छ।

निष्पंद—वि० [स० नि-स्पन्द, ब० स०] जिसमे स्पदन न हो या न होता हो। स्पदन-हीन।

निष्पक्व—वि० [स० निस्-पक्व, प्रा० स०] [भाव० निष्पक्वता] अच्छी तरह पका या पकाया हुआ।

निष्पक्ष—वि० [स० निर्-पक्ष, ब० स०] [भाव० निष्पक्षता] १ (व्यक्ति) जो किसी पक्ष या दल मे सम्मिलित न हो। २. जिसकी किसी पक्ष से विशेष सहानुभूति न हो। तटस्थ। ३ बिना पक्षपात के होने-वाला। पक्षपात-रहित। जैसे—निष्पक्ष न्याय।

निष्पक्षता—स्त्री० [स० निष्पक्ष+तल्+टाप्] १ निष्पक्ष होने की अवस्था या भाव। २ निष्पक्ष होकर किया जानेवाला आचरण।

निष्पताक—वि० [स० निर्-पताक, ब० स०] बिना पताका का। पताका-रहित।

निष्पत्ति—स्त्री० [स० निर्√पद् (गति)+क्तिन्] १ आविर्भाव। उत्पत्ति। जन्म। २ परिपाक या पूर्णता। ३ आज्ञा, आदेश, निश्चय आदि के अनुसार किसी कार्य का किया जाना। (एकज़िक्यूशन) ४ उद्देश्य, कार्य आदि की सिद्धि। ५ निर्वाह। ६. मीमासा। ८ निश्चय। ९ हठयोग मे, नाद की चार अवस्थाओं मे से अतिम अवस्था।

निष्पत्ति लेख—पु० [ष० त०] इस बात का सूचक लेख कि अमुक कार्य या व्यवहार से हमारा कोई सबध नही रह गया। फारखती।

निष्पत्ति-विधि—स्त्री० [ष० त०] दे० 'प्रत्ययवृत्ति'।

निष्पत्र—वि० [स० निर्-पत्र, ब० स०] १ जिसमे पत्ते न हो। पत्र-हीन। २ जिसे पख न हो।

निष्पत्रिका—स्त्री० [स० निष्पत्र+क+टाप्, इत्व] करील (पेड़)।

निष्पद—वि० [स० निर्-पद, ब० स०] १ जिसके पद या पैर न हो। पु० बिना पहियोंवाला यान या सवारी।

निष्पन्न—वि० [स० निर्√पद+क्त] १ जन्मा हुआ। उत्पन्न। २ भली-भाँति पूरा किया हुआ। ३ जो आज्ञा, आदेश, निश्चय आदि के अनुसार पूरा किया गया हो। (एकज़िक्यूटेड)

निष्पराक्रम—वि० [स० निर्-पराक्रम, ब० स०] पराक्रमहीन।

निष्परिकर—वि० [स० निर्-परिकर, ब० स०] जिसने कोई तैयारी न की हो।

निष्परिग्रह—वि० [स० निर्-परिग्रह, ब० स०] १ जिसके पास कुछ न हो। २ जो दान आदि न ले। ३ जिसकी पत्नी न हो, अर्थात् कुँवारा या रडुआ। ४ विषय-वासना आदि से अलग रहनेवाला। पु० १ यह प्रतिज्ञा या व्रत कि हम किसी से दान न लेगे। २. यह प्रतिज्ञा या व्रत कि हम विवाह न करेंगे। या गृहस्थी बनाकर न रहेंगे।

निष्परुष—वि० [स० निर्-परुष, ब० स०] जो सुनने मे परुष अर्थात् कर्कश न हो। कोमल। और मधुर।

निष्पर्यन्त—वि० [स० निर्-पर्यंत, ब० स०] पर्यंत या सीमा से रहित। अपार। असीम।

निष्पलक—अव्य० [स० निर्+हिं० पलक] बिना पलक गिराये या झपकाये।

निष्पवन—पुं० [स० निस्√पू (पवित्र करना)+ल्युट्—अन] धान आदि की भूसी निकालना। कूटना। दौना।

निष्पात—पुं० [स० निस्√पत् (गिरना)+घञ्] १ न गिरना। २. पूरी तरह से गिरना।

निष्पाव—पु० [सं० निर्√पद्+घञ्] १ अनाज की भूसी निकालने का काम। दॅवॉं। २ मटर। ३ सेम। ४ बोडा। लोबिया।

निष्पादक—वि० [सं० निर्√पद्+णिच्+ण्वुल्—अक] निष्पत्ति या निष्पादन करनेवाला।

पु० १ आज्ञा, आदेश, निश्चय आदि के अनुसार कोई काम करनेवाला व्यक्ति। २ वह जो किसी की वसीयत मे उल्लखित बातों का पालन या व्यवस्था करने का अधिकारी बनाया गया हो। (एकजिक्यूटर)।

निष्पादन—पु० [सं० निर्√पद्+णिच्+ल्युट्—अन] आज्ञा, आदेश, नियम, निश्चय आदि के अनुसार कोई काम ठीक तरह से पूरा करना। तामील। (एकजिक्यूशन)

निष्पादित—भू० कृ० [सं० निर्√पद्+णिच्+क्त] जिसकी निष्पत्ति या निष्पादन हो चुका हो। निष्पन्न।

निष्पाप—वि० [सं० निर्-पाप, ब० स०] १ (व्यक्ति) जिसने पाप न किया हो। २ (कार्य) जिसके करने से पाप न लगता हो।

निष्पार—वि० [सं०] अपार।

निष्पाव—पु० [सं० निर्√पू+घञ्] १ अनाज के दानों आदि की भूसी निकालना। २ उक्त काम के लिए सूप से की जानेवाली हवा। ३ सेम।

निष्पीडन—पु० [सं० निस्√पीड् (दबाव)+ल्युट्—अन] निचोड़ने की क्रिया या भाव।

निष्पुत्र—वि० [सं० निर्-पुत्र, ब० स०] पुत्र-हीन।

निष्पुरुष—वि० [सं० निर्-पुरुष, ब० स०] १ पुरुषहीन। २ जहाँ आबादी न हो।

निष्पुलाक—वि० [सं० निर्-पुलाक, ब० स०] (अन्न) जिसमें से सारहीन दाने निकाल दिए गए हों। २ भूसी निकाला हुआ।

पु० आगामी उत्सर्पिणी के १४ वें अर्हत् का नाम।

निष्पेषण—पु० [सं० निर्√पिष् (पीसना)+ल्युट्—अन] १ पेरना। २ पीसना। ३ रगड़ना।

निष्पेषित—भू० कृ० [सं० निर्√पिष्+णिच्+क्त] १ पेरा हुआ। २ पीसा हुआ।

निष्पौरुष—वि० [सं० निर्-पौरुष, ब० स०] पौरुष-हीन।

निष्प्रकंप—पु० [सं० निर्-प्रकंप, ब० स०] तेरहवें मन्वतर के सप्तर्षियों में से एक।

निष्प्रकारक—वि० [सं० निर्-प्रकार, ब० स०, कप्] जो किसी विशिष्ट प्रकार का न हो, अर्थात् साधारण या सामान्य। जैसे—निष्प्रकारक ज्ञान।

निष्प्रकाश—वि० [सं० निर्-प्रकाश, ब० स०] अधकार-पूर्ण।

निष्प्रचार—वि० [सं० निर्-प्रचार, ब० स०] जो एक स्थान से दूसरे स्थान पर न जा सके। जिसमें गति न हो। न चल सकने योग्य।

पु० गति न होने की अवस्था या भाव।

निष्प्रताप—वि० [सं० निर्-प्रताप, ब० स०] प्रताप-रहित।

निष्प्रतिघ—वि० [सं० निर्-प्रतिघ, ब० स०] जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो। अबाध।

निष्प्रतिभ—वि० [सं० निर्-प्रतिभा, ब० स०] जिसमे प्रतिभा न हो या न रह गई हो।

निष्प्रतीकार—वि० [सं० निर्-प्रतीकार, ब० स०] जिसका प्रतिकार न किया जा सके या न हो सके।

निष्प्रभ—वि० [सं० निर्-प्रभा, ब० स०] प्रभा-हीन।

निष्प्रयोजन—वि० [सं० निर्-प्रयोजन, ब० स०] १. जिसमे कोई प्रयोजन या मतलब न हो। जैसे—निष्प्रयोजन प्रीति। २ जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध न होता हो। व्यर्थ का। निरर्थक। फजूल।

अव्य० बिना किसी प्रयोजन या मतलब के।

निष्प्राण—वि० [सं० निर्-प्राण, ब० स०] १ जिसमे प्राण न हों। निर्जीव। २ मरा हुआ। मृत। ३ जिसमे कोई महत्त्वपूर्ण गुण न हो। जैसे—निष्प्राण साहित्य।

निष्प्रेही—वि० निष्पृह।

निष्फल—वि० [सं० निर्-फल, ब० स०] १ (कार्य या बात) जिससे किसी फल की प्राप्ति या सिद्धि न हो। जैसे—निष्फल प्रयत्न। २ (पौधा या वृक्ष) जिसमे फल न लगता हो या न लगा हो। ३ (व्यक्ति) जिसे अड-कोश न हो या जिसका अड-कोश निकाल लिया गया हो।

पु० धान का पयाल।

निष्फला—वि० [सं० निष्फल+टाप्] (स्त्री) जिसका रजोधर्म होना बद हो गया हो।

निष्फलि—पु० [सं०] अस्त्रों को काटने या निष्फल करनेवाला अस्त्र।

निष्यंद—पु० निस्यद।

निसंक—वि० =निःशक।

निसंकी—वि० [सं० निःशक] १ निःशक। २ निःशक हो कर बुरे काम करनेवाला। उदा०—नीच, निसील, निरीस निसकी।—तुलसी।

निसंग*—वि० निस्सग।

निसँठ†—वि० [हिं० नि+सठ-पूँजी] जिसके पास धन या पूँजी न हो। निर्धन। गरीब।

निसस†—वि० [हिं० नि+सास] जो साँस न ले रहा हो, अर्थात् मरा हुआ या मरे हुए के समान।

निसस†—वि० नृशस (क्रूर)।

निससना—अ० [सं० निःश्वास] १ निःश्वास लेना। २ हाँफना।

निसा†—स्त्री० निशा (रात्रि)।

निसक†—वि० [सं० निः+शक्त] अशक्त। कमजोर। दुबल।

निसकर†—पु० =निशाकर (चद्रमा)।

निसचय*—पु० =निश्चय।

निसत—वि० [हिं० नि+सं० सत्य] असत्य। मिथ्या।

वि० [हिं० नि+सत] जिसमे कुछ भी सत्त्व या सार न हो। निःसत्त्व।

निसतरना—अ० [सं० निस्तार] निस्तार अर्थात् छुटकारा पाना।

स० निस्तार या उद्धार करना।

निसतार—पु० =निस्तार।

निसतारना*—स० [सं० निस्तार+ना (प्रत्य०)] निस्तार करना। छुटकारा देना।

निसद†—वि० =निःशब्द।

निस-द्योस—अव्य० [सं० निशि+दिवस] रात-दिन। नित्य। सदा।

निसनेही—स्त्री० =निःस्नेहा (अलसी)।

निसबत—स्त्री० [अ० निस्बत] १ सबध। लगाव। ताल्लुक।

२. वैवाहिक संबंध की ठहरौनी या पक्की बात-चीत। मँगनी। सगाई।
३ तुलना। मुकाबला।
क्रि० प्र०—देना।

निसबती—वि० [अ०] १ 'निसबत' का। २ जिससे निसबत (रिश्ता या संबंध) हो।
पद—निसबती भाई=बहनोई या साला।

निसयाना†—वि० [हि० नि+सयाना?] १ जिसकी सुध-बुध खो गई हो। २ अनजान।

निसरना†—अ०=निकलना।

निसराना†—स० १ =निकालना। २ =निकलवाना।

निसर्ग—पु० [सं० नि√सृज् (छोड़ना)+घञ्] [वि० नैसर्गिक] १ उपहार, भेंट, दान, दक्षिणा आदि के रूप में किसी को कुछ देना। २ छोड़ना या त्यागना। उत्सर्ग करना। ३ बाहर निकालना। ४ मल त्याग करना। ५ आकृति या रूप। ६ विनिमय। ७ सृष्टि। ८ वह तत्त्व या शक्ति जिससे सृष्टि के समस्त कार्य या व्यापार संपन्न होते हैं। प्रकृति। ९ स्वभाव। प्रकृति। (नेचर, अंतिम दोनों अर्थों में)

निसर्गज—वि० [सं० निसर्ग√जन् (उत्पत्ति)+ड] निसर्ग से उत्पन्न। नैसर्गिक। प्राकृतिक।

निसर्गत (तस्)—अव्य० [सं० निसर्ग+तस्] निसर्ग या प्रकृति के अनुसार, अथवा उसकी प्रेरणा से। प्राकृतिक या स्वाभाविक रूप से। प्रकृतितः। स्वभावतः।

निसर्गवाद—पु० =प्रकृतिवाद।

निसर्गवादी—पु० =प्रकृतिवादी।

निसर्ग-विज्ञान—पु०=प्रकृति-विज्ञान।

निसर्गविद्—पु० =प्रकृतिवेत्ता।

निसर्गवेत्ता—पु० =प्रकृतिवेत्ता।

निसर्ग-सिद्ध—वि० [सं० प० त०] १ प्राकृतिक। २ स्वभाव-सिद्ध। स्वाभाविक।

निसर्गायु (स्)—स्त्री० [सं० निसर्ग-आयुस्, मध्य०स०] फलित ज्योतिष में आयु निकालने की एक गणना।

नि-सवाद—वि० [सं० नि स्वाद] जिसमें कोई स्वाद न हो। स्वाद-रहित। बे-सवादी।

निसवासर—पु० [सं० निशिवासर] रात और दिन।
अव्य० नित्य। सदा।

निसस—वि० =निर्सँस (क्रूर)।

निसहाय—वि०=निस्सहाय (असहाय)।

निसाँक—अव्य०, वि०=निश्शंक।

निसाँस—पु० [सं० निःश्वास] ठंढा साँस। लंबा साँस।
वि० =निसाँसा।

निसाँसा—वि० [हि० नि+साँस] [स्त्री० निसाँसी] जो साँस न ले रहा हो या न ले सकता हो, अर्थात् मरा हुआ या मरे हुए के समान।
उदा०—अब हौ मरौं निसाँसी, हिए न आवै साँस।—जायसी।

निसाँसी—वि०=निसाँसा।

निसा—स्त्री० [हि० निशाखातिर] १ तृप्ति। तुष्टि।
पद—निसा भर=जी भर के। खूब अच्छी तरह।
२ संतोष।
†पु० = नशा।
†स्त्री० निशा (रात)।

निसाकर*—पु०=निशाकर (चंद्रमा)।

निसाचर†—वि०, पु० =निशाचर।

निसाथा†—वि० [हि० नि+साथ] जिसके साथ और कोई न हो। अकेला।

निसाद—पु० [सं० निषाद] १ भंगी। मेहतर। २ दे० 'निषाद'।

निसान—पु० [फा० निशान] १ निशान। चिह्न। २ धौंसा। नगाड़ा।

निसानन—पु० [सं० निशानन] संध्या का समय। प्रदोष काल।

निसाना†—पु०=निशाना।

निसानाथ—पु०=निशानाथ (चंद्रमा)।

निसानी—स्त्री०=निशानी।

निसापति—पु० =निशापति (चंद्रमा)।

निसाफ†—पु०=इंसाफ (न्याय)।

निसार—पु० [सं० नि√सृ (गति)+घञ्] १ समूह। २ सोनापाढ़ा।
पु० [अ०] १ कुरबान। बलि। २ निछावर। सदका। ३ मुगल शासन काल का एक सिक्का जो रुपये के चौथाई मूल्य का होता था।
†वि०=निस्सार।

निसारक—पु० [सं०] शालक राग का एक भेद।
†वि० [हि० निसारना=निकालना] निकालनेवाला।

निसारना—स० [सं० निःसरण] निकालना। बाहर करना।
स० [अ० निसार] निछावर करना।

निसारा—स्त्री० [सं० नि सारा] केले का पेड़।
पु० [अ०] ईसाई। मसीही।

निसावारा—पु० [देश०] कबूतरों की एक जाति।

निसास—पु० =निसाँस (निःश्वास)।
वि०=निसाँसा (बेदम)।

निसासी—वि० =निसाँसा।

निसिंध—पु० [सं०] सँभालू नामक पेड़।

निसि—स्त्री० =निशि।

निसिकर—पु०=निशाकर (चंद्रमा)।

निसिचर—वि०, पु०=निशाचर।

निसिचारी—वि०, पु०=निशाचर।

निसिदिन—अव्य० [सं० निशिदिन] १. रात-दिन। आठों पहर। २ हर समय। सदा।
पु० रात और दिन।

निसिनाथ—पु०=निशिनाथ (चंद्रमा)।

निसिनाह—पु०=निशिनाथ (चंद्रमा)।

निसि-निसि—स्त्री० [सं० निशि निशि] अर्ध-रात्रि। निशीथ। आधी रात।

निसिपति—पु०=निशिपति (चंद्रमा)।

निसिपाल—पु०=निशिपाल (चंद्रमा)।

निसिमणि—पु० =निशामणि (चंद्रमा)।

निसियर—पु०=निशिकर (चद्रमा)।
निसिवासर—पु०=निसिदिन (रात-दिन)।
निसीठा—वि० [स० नि +हिं० सीठी] [स्त्री० निसीठी] १ जिसमे कुछ तत्त्व न हो। नि सार। २ नीरस।
निसीथ—पु०=निशीथ (अर्द्ध रात्रि)।
निसुंद—पु० [म०] प्रह्लाद के भाई ह्लाद के पुत्र का नाम।
निसुंभ†—पु०=निशुभ।
निसु†—स्त्री०=निशा (रात्रि)।
निसुका*—वि० [स० नि स्वक] १ निर्धन। दरिद्र। गरीब। २ गुण, विशेषता आदि से रहित। उदा०—हौं कछु कै रिस के करो ये निस के हसि देत।—बिहारी।
निसुग्गा†—वि०=निसोग।
निसुर—वि० [म० नि स्वर] १ शब्द-रहित। २ चुप। मौन।
निसूदक—वि० [म० नि√सूद् (हिंसा)+णिच्+ण्वुल्—अक] मारने या वध करनेवाला।
निसूदन—पु० [स० नि√सूद्+णिच्+ल्युट्—अन] १ वध करना। २ नष्ट करना।
निसृत—भू० कृ० [नि सृत] निकाला हुआ।
निसृता—स्त्री० [स० नि√सृ (गति)+क्त+टाप्] निसोथ।
निसृष्ट—भू०, कृ० [स० नि√सृज् (छोडना)+क्त] १ उपहार, भेंट, दान, दक्षिणा आदि के रूप मे दिया हुआ। २ त्यागा या छोडा हुआ। ३ भेजा हुआ। प्रेषित। ४ जिसे स्वीकृति दी गई हो। ५ जलाया हुआ। वि० मध्यस्थ।
पु० प्रतिदिन के हिसाब से दी जानेवाली मजदूरी या वेतन। दैनिक भृति। (कौ०)
निसृष्टार्थ—पु० [स० निसृष्ट-अर्थ, ब० स०] १ वह धीर और बुद्धिमान् व्यक्ति जिसे किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के प्रबध या व्यवस्था का भार सौपा जाय या सौपा जा सके। २ सन्देशवाहक। दूत। ३ साहित्य मे, तीन प्रकार के दूतो (या दूतियो) मे से एक जो प्रेमिका और प्रेमी का पारस्परिक स्नेह देखकर स्वय उनके मिलन या सयोग की व्यवस्था करे।
निसेनी,—स्त्री० [स० नि श्रेणी] सीढी। जीना। सोपान।
निसेष—वि०=नि शेष।
निसेस—पु० [स० निशेश] चद्रमा।
निसैनी—स्त्री० =निसेनी (सीढी)।
निसोग—वि० [स० नि शोक] १ जिसे कोई शोक या चिंता न हो। २ जिसे किसी बात की चिंता या फिक्र न हो। लापरवाह।
निसोच—वि० [स० नि शोच] जिसे सोच या चिता न हो।
निसोत (१)—वि० [स० नि सयुक्त] [वि० स्त्री० निसोती] जिसमे और किसी चीज का मेल न हो। शुद्ध। निरा।
स्त्री०=निसोथ।
निसोत्तर—पु०=निसोत।
निसोथ—स्त्री०[स०निसृता] १ एक प्रकार की लता जिसके पत्ते गोल और नुकीले होते है और जिसमे गोल फल लगते हैं। २ उक्त लता का फल।
निसोधु—स्त्री० [हिं० सोध या सुध] १ सुध। खबर। २ सन्देश। सँदेसा।

निस्की—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रेशम का कीडा।
निस्केवल†—वि०=निष्केवल।
निस्तंतु—वि०[स० निर्-ततु, ब० स०] १ ततुओ से रहित। २ जिसके आगे कोई सतान न हो।
निस्तंद्र—वि० [स० निर्-तद्रा, ब० स०] १ जिसे तद्रा न हो। २. जिसमे आलस्य न हो। निरालस्य। ३ बलवान। शक्तिशाली।
निस्तत्त्व—वि० [स० निर्-तत्त्व, ब०स०] जिसमे तत्त्व न हो। तत्त्व-हीन।
निस्तनी—स्त्री० [स० नि-स्तन, ब० स०, ङीष्] औषध की वटिका। गोली।
निस्तब्ध—वि० [स० नि√स्तम्भ् (रोकना)+क्त] [भाव० निस्तब्धता] १ जो हिलता-डोलता न हो। जिसमे गति या व्यापार न हो। २ निश्चेष्ट।
निस्तमस्क—वि० [स० निर्-तमस्, ब० स०, कप्] जिसमे अँधेरा न हो।
निस्तरंग—वि० [स० निर्-तरग, ब० स०] जिसमे तरगे न उठ रही हो, फलत शात और स्थिर। उदा०—उड गया मुक्त नभ निस्तरग। —निराला।
निस्तर†—पु०=निस्तार। उदा०—निस्तर पाइ जाइँ इक बारा। —जायसी।
निस्तरण—पु० [निर्√तृ (पार होना)+ल्युट्—अन] १ पार उतरना या होना। २. झझटो-बखेडो, भव-बधनो आदि मे छुटकारा मिलना या पाना।
निस्तरना—अ० [स० निस्तरण] १ पार होना। २ मुक्त होना। छुटकारा पाना।
स० १ पार उतराना। २ मुक्त करना। उदा०—अजहूँ सूर पतित पदतज तौ जौ औरहू निस्तरतो।—सूर।
निस्तरी—स्त्री० [देश०] रेशम के कीडो की एक जाति जिनका रेशम कुछ कम चमकदार और कुछ कम मुलायम होता है। इसकी तीन उपजातियाँ–मदरासी, सोनामुखी और कृमि है।
निस्तर्क्य—वि० =अतर्क्य।
निस्तल—वि० [स० निर्-तल, ब० स०] [भाव० निस्तलता] १ बिना तल का। जिसका तल न हो। २ जिसके तले का पता न हो। बहुत गहरा। अतहीन। उदा०—प्रेयसी के, प्रणय के, निस्तल विभ्रम के। —निराला।
निस्तला—स्त्री० [स० निस्तल+टाप्] वटिका। गोली।
निस्तार—पु० [स० निर्√तृ+घञ्] १ तर या तैर कर पार होने की क्रिया या भाव। २ बधन, सकट आदि से बचकर निकलने की क्रिया या भाव। उद्धार। छुटकारा। ३ काम पूरा करके उससे छुट्टी पाना। ४ अभीष्ट की प्राप्ति या सिद्धि।
निस्तारक—वि० [स० निर्√तृ+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० निस्तारिका] १ पार उतारनेवाला। २ झझटो, बधनो आदि से छुडानेवाला।
निस्तारण—पु० [स० निर्√तृ+णिच्+ल्युट्—अन] १. नदी आदि के पार करना या ले जाना। २ बधनो आदि से छुडाना। मुक्त करना। ३. जीतना। ४ सामने आये हुए कार्य, व्यवहार आदि को नियमित

रूप से पूरा करना अथवा उसका निराकरण करना। (डिस्पोजल) ५ रसायनशास्त्र में, निथारने की क्रिया या भाव।

निस्तारन—पु० = निस्तारण।

निस्तारना—स० [सं० निस्तार + ना (प्रत्य०)] १. पार उतारना। २. उद्धार करना। छुड़ाना।

निस्तार-बीज—पु० [सं० ष० त०] वह बीज या तत्त्व जिसकी सहायता से मनुष्य भव-सागर से पार उतरता हो। (पुराण)

निस्तारा†—पु० = निस्तार।

निस्तिमिर—वि० [सं० निर्-तिमिर, ब० स०] तिमिर या अंधकार से रहित।

निस्तीर्ण—भू० कृ० [सं० निर्√तृ + क्त] १ जो पार उतर चुका हो। २ जिसका निस्तार या छुटकारा हो चुका हो। मुक्त। ३ पूरा किया हुआ। निष्पन्न।

निस्तुष—वि० [सं० निर्-तुष, ब० स०] १ जिसमें भूसी न हो या जिसकी भूसी निकाल ली गई हो। बिना भूसी का। २ निर्मल। साफ।

निस्तुष-क्षीर—पु० [सं० ब० स०] गेहूँ।

निस्तुष-रत्न—पु० [सं० कर्म० स०] स्फटिक मणि।

निस्तुषित—भू० कृ० [सं० निस्तुष + णिच् + क्त] १ जिसका छिलका या भूसी अलग कर दी गई हो। २ छीला हुआ। ३. त्यागा हुआ। त्यक्त। ४ छोटा या पतला किया हुआ।

निस्तेज—वि० [सं० निर्-तेज, ब० स०] जिसमें तेज न हो। तेज-हीन।

निस्तैल—वि० [सं० निर्-तैल, ब० स०] जिसमें तेल न हो अथवा जिस पर तेल न लगा हो।

निस्तोद—पु० [सं० निस्√तुद् (व्यथित करना) + घञ्] १. चुभाने की क्रिया या भाव। २ डंक मारना।

निस्त्रप—वि० [सं० निर्-त्रपा, ब० स०] निर्लज्ज। बेशर्म।

निस्त्रिंश—वि० [सं० नृशंस] जिसमें दया न हो। निर्दय।
पु० [सं० निर्-त्रिंशत्, प्रा० स०] १ खड्ग। २ एक प्रकार का तांत्रिक मंत्र।

निस्त्रिंश-पत्रिका—स्त्री० [सं० ब० स०, + कप्, + टाप्, इत्व] थूहर।

निस्त्रुटी—स्त्री० [सं०] बड़ी इलायची।

निस्त्रैगुण्य—वि० [सं० निर्-त्रैगुण्य, ब० स०] जो तीनों गुणों से रहित या हीन हो।
पु० सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से परे या रहित होने की अवस्था या भाव।

निस्त्रैणपुष्पिक—पु० [?] धतूरा।

निस्नेह—वि० [सं० निर्-स्नेह, ब० स०] १ जिसमें स्नेह या प्रेम न हो। २ जिसमें स्नेह या तेल न हो।
पु० एक प्रकार का तांत्रिक मंत्र।

निस्नेह-फला—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] भटकटैया। कटेरी।

निस्पंद—वि० [सं० निर्-स्पंद, ब० स०] जिसमें स्पंदन न हो। स्पंदनरहित।
पुं० = स्पंदन।

निस्पृह—वि० [सं० निर्-स्पृहा, ब० स०,] जिसे किसी प्रकार की स्पृहा या इच्छा न हो। इच्छा या स्पृहा से रहित।

निस्पृहता—स्त्री० [सं० निस्पृह + तल् + टाप्] निस्पृह होने की अवस्था या भाव।

निस्पृहा—स्त्री० [सं० निस्पृह + टाप्] अग्निशिखा या कलिहारी नामक पेड़।

निस्पृही—वि० = निस्पृह।

निस्नेही*—वि० = निस्पृह।

निस्फ—वि० [फा० निस्फ़] अर्द्ध। आधा।

निस्फल†—वि० = निष्फल।

निस्फी—वि० [फा० निस्फ़] निस्फ या आधे के रूप में होनेवाला। जैसे—निस्फी बँटाई-ऐसी बँटाई जो दो बराबर भागों में अर्थात् आधी आधी हो।

निस्बत—स्त्री० [अ०] निसबत। (दे०)
स्त्री० दे० 'दो-सखुना'।

निस्बती—वि० = निसबती।

निस्यंद—पु० [सं० नि√स्यन्द् (चूना) + घञ्] १ चूना या रिसना। क्षरण। २ परिणाम। ३ प्रकट करना।

निस्यंदी (दिन्)—वि० [सं० नि√स्यन्द् + णिनि] बहने या रसनेवाला।

निस्यों*—वि० [सं० निश्चित] निश्चिन्त। बे-फिक्र।
पद*—**निस्यो करि** = निश्चिन्त होकर।

निस्राव—पु० [सं० नि√स्रु (बहना) + घञ्] १ वह जो चू, बह या रसकर निकला हो। २ भात की पीच। माँड।

निस्व—वि० [सं० नि स्व] जिसके पास 'स्व' अर्थात् अपना कुछ भी न हो; अर्थात् दरिद्र।

निस्वन—पु० [सं० नि√स्वन् (शब्द) + अप्] शब्द। ध्वनि।

निस्वान—पु० [सं० नि√स्वन् + घञ्] १. शब्द। ध्वनि। निस्वन। २ तीर के चलने से होनेवाली हवा में सुरसुराहट।
†पु० = निश्वास।

निस्संकोच—वि० [सं० निर्-संकोच, ब० स०] जिसमें संकोच या लज्जा न हो। संकोचरहित।
अव्य० बिना किसी संकोच के। बे-धड़क।

निस्संग—वि० [सं० निर्-संग, ब० स०] १ जिसका किसी से संग या साथ न हो। २. अकेला। ३. विषय वासनाओं से रहित। ४. एकांत। निर्जन।

निस्संतान—वि० [सं० निर्-संतान, ब० स०] जिसे कोई सन्तान न हो।

निस्संदेह—वि० [सं० निर्-संदेह, ब० स०] जिसमें कोई या कुछ भी संदेह न हो। असंदिग्ध।
अव्य० १ बिना किसी प्रकार के सन्देह के। २ निश्चित रूप से। अवश्य।

निस्सत्त्व—वि० [सं० निर्-सत्त्व, ब० स०] सत्त्वहीन।

निस्सरण—पु० [सं० निर्-सरण, ब० स०] निकलने की क्रिया या भाव। २. निकलने का मार्ग या स्थान।

निस्सहाय—वि० [सं० निर्-सहाय, ब० स०] जिसकी सहायता करने-वाला कोई न हो। असहाय।

निस्सार—वि० [सं० निर्-सार, ब० स०] सारहीन।

निस्सारक—वि० [सं० निर्√सृ (गति)+णिच्+ण्वुल्—अक] निकालनेवाला।

निस्सारण—पुं० [सं० निर्√सृ+णिच्+ल्युट्—अन] निकालने की क्रिया या भाव।

निस्सारित—भू० कृ० [सं० निर्√सृ+णिच्+क्त] निकाला हुआ। बाहर किया हुआ।

निस्सीम—वि० [सं० निर्-सीम, ब० स०] १ जिसकी कोई सीमा न हो। असीम। २ बहुत अधिक।

निस्सृत—भू० कृ० [सं० निर्√सृ+क्त] बाहर निकला हुआ। पुं० तलवार के ३२ हाथों में से एक।

निस्स्नेह—वि० [सं० निर्-स्नेह, ब० स०] स्नेहरहित।

निस्स्नेह-फला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] सफेद भटकटैया।

निस्स्पंद—वि० =निस्पंद।

निस्स्वक—वि० [सं० निर्-स्व, ब० स०, कप्] दरिद्र। धनहीन।

निस्स्वादु—वि० [सं० निर्-स्वादु, ब० स०] १ जिसका या जिसमें कोई स्वाद न हो। २ जिसका स्वाद अच्छा न हो।

निस्स्वार्थ—वि० [सं० निर्-स्वार्थ, ब० स०] (कार्य) जो बिना किसी निजी स्वार्थ के और विशेषतः परमार्थ की भावना से किया गया हो। जैसे—निस्स्वार्थ सेवा।
अव्य० बिना किसी स्वार्थ या मतलब के।

निहंग—वि० [सं० निःसंग] १ एकाकी। अकेला। २ जो घर-गृहस्थी की झंझटों में न पड़ा हो, अर्थात् अविवाहित और परिवार-हीन। ३ नंगा। ४ निर्लज्ज। बेशरम।
पुं० १ एक प्रकार के वैष्णव साधु। २ अकेला रहनेवाला विरक्त या साधु। ३ सिक्खों का एक संप्रदाय, जो 'कूका' भी कहलाता है।

निहंगम—वि० निहंग।

निहंग-लाडला—वि० [हिं० निहंग+लाडला] जो माता-पिता के दुलार के कारण बहुत ही उद्दंड और लापरवाह हो गया हो।

निहंता (तृ)—वि० [सं० नि√हन् (मारना)+तृच्] [स्त्री० निहंत्री] १ विनाशक। नाश करनेवाला। २ मार डालने या हत्या करनेवाला।

निह*—उप० [सं० निस्] नहिक भाव का सूचक एक उपसर्ग या पूर्व प्रत्यय। जैसे—निहकर्मा, निहकलंक, निहपाप आदि।

निहकर्मा—वि० [सं० निष्कर्म] कर्म न करनेवाला।

निहकलंक—वि० निष्कलंक।

निहकाम—वि०=निष्काम।

निहकामी—वि० निष्काम।

निहचक—पुं० [सं० नेमि+चक्र] पहिए के आकार का काठ का वह गोल चक्कर जिसके ऊपर कूएँ की कोठी खड़ी की जाती है। निवार। जमवट। जाखिम।

निहचय—पुं०=निश्चय।

निहचल—वि०=निश्चल।

निहचित†—वि०=निश्चित।

निहठ, निहठा—स्त्री० [सं० निष्ठा] लकड़ी का वह टुकड़ा जिस पर रखकर बढ़ई गढ़ने की चीजें बसूले से गढ़ते हैं।

निहत—भू० कृ० [सं० नि√हन्+क्त] १ चलाया या फेंका हुआ। २ नष्ट किया हुआ। विनष्ट। ३ जो मार डाला गया हो।

निहतार्थ—पुं० [सं० निहत-अर्थ, ब० स०] काव्य में एक प्रकार का दोष।

निहत्था—वि० [हिं० नि+हाथ] १ जिसके हाथ में कोई अस्त्र न हो। शस्त्रहीन। २ जिसके हाथ में कुछ या कोई साधन न हो।

निहनन—पुं० [सं० नि√हन्+ल्युट्—अन] वध। मारण।

निहनना—स० [सं० निहनन] मारना। मार डालना।

निहपाप†—वि०=निष्पाप।

निहफल†—वि०=निष्फल।

निहल†—पुं० दे० 'गंग-बरार'।

निहव—पुं० [सं० नि√ह्वे (बुलाना)+अप्] पुकारना। बुलाना।

निहसरना—अ० [सं० निःसरण] बाहर आना या निकलना। (राज०) उदा०—निहसरता नव्वरें नर।—प्रिथीराज।

निहस—पुं० [?] चोट। प्रहार। (डिं०) उदा०—नीसाने पड़ती निहस।—पृथ्वीराज।

निहसना—स० [सं० निघोषण] शब्द करना।
अ० शब्द होना।
अ० [सं० विलसन] सुशोभित होना। लसना। उदा०—नासा अग्रि मुताहल निहसनि।—प्रिथीराज।

निहाई—स्त्री० [सं० निघाति, मि० फा० निहाली] लोहारों और सुनारों का जमीन में गड़ा या लकड़ी आदि में जड़ा हुआ लोहे का वह टुकड़ा जिस पर वे धातु के टुकड़ों को रखकर हथौड़े से कूटते या पीटते हैं।

निहाऊ—पुं० [सं० निघाति] लोहे का घन।

निहाका—स्त्री० [सं०] १ गोह नामक जंतु। २ घड़ियाल।

निहाना—स० [सं० नि+घात] १ नष्ट करना। मारना। २ दबाना।

निहानी—स्त्री० [सं० निखनित्री] नक्काशी करने का एक उपकरण।

निहाय†—पुं० निहाई।

निहायत—अव्य० [अ०] बहुत अधिक। अत्यन्त।

निहार—स्त्री० [हिं० निहारना] निहारने की क्रिया या भाव।
पुं० [सं० निस्सरण] निकलने का मार्ग। निकास।
पुं० [?] लट्टू।
पुं० =नीहार। (देखें)
वि० =निहाल।

निहारना—स० [सं० निभालन=देखना] १ अच्छी तरह और ध्यान-पूर्वक अथवा टक लगाकर देखना। २ ताकना।

निहारनि—स्त्री० [हिं० निहारना] निहारने की क्रिया या भाव। निहार।

निहारिका—स्त्री० नीहारिका।

निहारुआ—पुं०=नहरुआ (रोग)।

निहाल—वि० [फा०] १ जिस पर किसी की बहुत अधिक या विशेष कृपा हुई हो और इसी लिए जो प्रफुल्लित तथा संतुष्ट हो। २ धन, दौलत आदि मिलने पर जो मालामाल या समृद्ध हुआ हो। पूर्ण-काम। सफल-मनोरथ।

पु० पौधा।

निहालचा—पु० [फा० निहालच] बच्चों के सोने की छोटी गद्दी।

निहालना*—स० =निहारना।

निहाल लोचन—पु० दे० 'निहालचा'।

निहाली—स्त्री [फा०] बिस्तर पर बिछाने का गद्दा।

स्त्री० निहाई।

निहाव—पु० [स० निपाति] निहाई।

निहिंसन—पु० [स० नि√हिंस् (मारना)+ल्युट्—अन] मार डालना। वध करना।

निहि—उप० स० 'निस्' उपसर्ग का एक विकृत रूप। जैसे—निहिचय, निहिचित।

निहिचय†—पु०=निश्चय।

निहिचित†—वि०=निश्चित।

निहित—वि० [स० नि√धा (धारण)+क्त, हि आदेश] १ (चीज) जो किसी दूसरी चीज के अन्दर स्थित हो और बाहर से न दिखाई देती हो। अन्दर छिपा या दबा हुआ। (लेटेन्ट) २ स्थापित किया हुआ। ३ दिया या सौंपा हुआ।

निहीन—वि० [स० नि-हीन, प्रा० स०] परमहीन। बहुत क्षुद्र या तुच्छ।

निहुँकना—अ० निहुरना (झुकना)।

निहुड़ना—अ०=निहुरना (झुकना)।

स० =निहुराना (झुकाना)।

निहुरना—अ० [हि० नि+होड़न] १ झुकना। नवना। २ नम्र होना।

निहुराई—स्त्री० [हि० निहुरना] झुकने की क्रिया या भाव।

†स्त्री० निठुराई (निष्ठुरता)।

निहुराना—स० [हि० निहुरना का प्रे०] १ झुकाना। नवाना। २ नम्र होने के लिए विवश करना।

निहोर†—पु०=निहोरा।

निहोरना—अ० [हि० निहोरा] प्रार्थना या विनती करना।

स० किसी पर अनुग्रह करके उसे उपकृत या कृतज्ञ करना। उदा०—सोइ कृपालु केवटहि निहोरे।—तुलसी।

निहोरा—पु० [स० मनोहार, हि० मनुहार] १ किसी के किए हुए अनुग्रह या उपकार के बदले मे प्रकट की या मानी जानेवाली कृतज्ञता। एहसान।

क्रि० प्र०—मानना।

मुहा०—**(किसी का) निहोरा लेना**=ऐसी स्थिति मे होना कि कोई उपकार करे और इसके लिए उसका कृतज्ञ होना पड़े।

२ निवेदन। प्रार्थना। ३ विनती। विनय। ४ आसरा। भरोसा।

क्रि० प्र०—लगना।

अव्य० के लिए। वास्ते। दे० 'निहोरे'।

निहोरे—अव्य० [हि० निहोरा] किसी के किये हुए अनुग्रह या उपकार के आधार पर अथवा उसके कारण। जैसे—हम किस निहोरे उनके यहाँ जायँ, अर्थात् उन्होने हमारी कौन सी भलाई या कौन-सा सद्-व्यवहार किया है, जिसके लिए हम उनके यहाँ जायँ। उदा०—धरहुँ देह नहि आन निहोरे।—तुलसी।

निह्नव—पु० [स० नि√ह्नु (छिपाना)+अप्] १ निहित अर्थात् छिपे हुए होने की अवस्था या भाव। २ अविश्वास। ३ शुद्धता। पवित्रता। ४ एक प्रकार का साम-गान।

निह्नवन—पु० [स० नि√ह्नु+ल्युट्—अन] १ इनकार। २ बहाना।

निह्नवोत्तर—पु० [स० निह्नव-उत्तर-मध्य० स०] टाल, मटोलवाला उत्तर। बहानेबाजी।

निह्नुत—भू० कृ० [स० नि√ह्नु+क्त] [भाव० निह्नुति] १ अस्वीकृत किया हुआ। २ छिपाया हुआ।

निह्नुति—स्त्री० [स० नि√ह्नु+क्तिन्] अस्वीकार। इन्कार। २ छिपाव। दुराव। गोपन।

निह्राद—पु० [स० नि√ह्लद् (शब्द)+घञ्] ध्वनि। शब्द।

नींद—स्त्री० [स० निद्रा] १ प्राणियों की वह प्राकृतिक स्थिति जिसमे वे थोड़े-थोड़े समय पर और प्राय नियमित रूप से अपनी बाह्य चेतना और ज्ञान से रहित होकर पड़े रहते है और जिसमे उनके मन, मस्तिष्क तथा शरीर को पूर्ण विश्राम मिलता है। जागते रहने के विपरीत की अर्थात् सोने की अवस्था, क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—आना।—टूटना।—लगना।

मुहा०—**नींद उचटना या उचाट होना**=किसी विघ्न या बाधा के कारण नीद मे भग पड़ना। **नींद करना**=(क) सोना। (ख) उदासीन, निश्चित या लापरवाह होना। उदा०—सतो जागत नीद न कीजै।—कबीर। **नींद खुलना या टूटना**=ठीक समय पर नीद पूरी हो जाने पर उसका अन्त होना। **नींद पड़ना**=कष्ट, चिता आदि की दशा मे किसी प्रकार नीद आना। **नींद भर सोना**—जितनी इच्छा हो, उतना सोना। इच्छा भर सोना। **नींद लेना**=निद्रा की अवस्था मे होना। सोना। **नींद सचरना**=नीद आना। **नींद हराम होना**=ऐसे कष्ट या चिता की स्थिति मे होना कि नीद बिलकुल न आवे या बहुत कम आवे।

नींदड़ा (ड़ी)—स्त्री० नीद।

नींदना—अ०=सोना (नीद लेना)।

स०=निराना।

नींदर†—स्त्री०=नीद। (पश्चिम)

नींदालु—वि० [स० निद्रालु] [स्त्री० नीदालो] १ जिसे नीद आ रही हो। २ सोया हुआ।

नींन†—स्त्री०=नीद।

नींब†—स्त्री०=नीम (पेड़)।

नींबू—पु० [स० निम्बुक, अ० लेमूँ] १ एक पौधा जिसके गोलाकार या लबोतरे छोटे फल खट्टे रस से भरे होते हैं। २ उक्त पौधे का फल।

नींबू-निचोड़—वि० [हि० नीबू+निचोड़ना] १ (व्यक्ति) जो किसी का सारा तत्त्व उसी प्रकार निकाल लेता हो जिस प्रकार नीबू का रस निकाला जाता है। २ (व्यक्ति) जो थोड़ा-सा परिश्रम या सहायता करके उसी प्रकार यथेष्ठ लाभ उठाता हो जिस प्रकार कोई व्यक्ति किसी तरकारी या दाल मे अपनी तरफ से नीबू का थोड़ा-सा रस डालकर उसमे साझेदार बन बैठता है।

नींव—स्त्री० [सं० निमि, प्रा० नेह] १ मकान, महल, आदि की दीवार का वह निचला हिस्सा जो जमीन के अन्दर रहता है।

२. उक्त अंश बनाने से पहले जमीन में खोदा जानेवाला गड्ढा। ३ लाक्षणिक अर्थ में, वह आरम्भिक तथा मौलिक कार्य जिसे आगे चलकर बहुत अधिक उत्कृष्ट या उन्नत रूप मिला हो।

पद—नींव का पत्थर=वह तत्त्व, बात या व्यक्ति जो किसी बहुत बड़े कार्य का आधार या मूल हो।

नीअर†—अ० दे० 'निकट'।

नीक†—पु० [स० निक्त] १ अच्छापन। उत्तमता। २ कल्याण। भलाई। उदा०—आपन, मोर नीक जौं चहहू।—तुलसी।

वि०=नीका।

नीका—वि० [स० निक्त=साफ, स्वच्छ] १ उत्तम। बढिया। २ अच्छा। भला। उदा०—काकपच्छ सिर सोहत नीके।—तुलसी।

क्रि० प्र०—लगना।

नीके—अव्य० [हिं० नीक] अच्छी तरह।

नीको—वि०=नीका।

नीखर†—वि०[स० नि+क्षरण] १. निखरा हुआ। २ स्वच्छ। साफ।

नीगना†—वि० [हिं० न+गिनना]=अनगिनत (अगणित)।

नीग्रो—पु० दे० 'हबशी'।

नीच—वि०[स० भाव० नीचता]१ आचार, व्यवहार, गुण-कर्म, जाति-पाँति आदि के विचार से बहुत ही छोटा, और फलत तुच्छ या हीन।

पद—नीच ऊँच=(क) बुराई और अच्छाई। (ख) हानि और लाभ। (ग) दुख और सुख।

२ नैतिक, धार्मिक आदि दृष्टियों से बहुत ही निदनीय, बुरा या हीन।

पद—नीच कमाई=अनुचित या दूषित ढग से प्राप्त किया जानेवाला धन।

पु० १ चोर नामक गध द्रव्य। २ दशार्ण देश का एक पर्वत। ३ फलित ज्योतिष मे, किसी ग्रह के उच्च स्थान से सातवें घर मे होने की स्थिति। नीच-ग्रह। ४ किसी ग्रह के भ्रमण मार्ग मे वह स्थान जो पृथ्वी से सबसे अधिक दूर हो।

नीचक—वि० [स० नीच+कन्] १ बहुत ही छोटे कदवाला। ठिंगना। २ धीमा। मद। ३ क्षुद्र। कमीना। नीच।

नीच-कदब—पु० [स० ब० स०] गोरखमुडी।

नीचका—स्त्री० [स० नि-ई√चक् (प्रतिघात)+अच्—टाप्] अच्छी और बढिया गौ।

नीचकी (किन्)—वि० [स० नि-ई√चक्+इनि] [स्त्री० नीचकिनी] १ उच्च। ऊँचा। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

पु० १ ऊपरी भाग। २ वह जिसके पास अच्छी गौएँ हों।

नीचग—वि० [स० नीच√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० नीचगा] १ नीचे की ओर जानेवाला। २ ओछा। तुच्छ। नीच। ३. नीच कुल की स्त्री के साथ सभोग करनेवाला।

पु० १ जल। पानी। २ फलित ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जो अपने उच्च स्थान के सातवें पड़ा हो।

नीचगा—स्त्री० [स० नीचग+टाप्] १ नदी। २ नीच कुल के पुरुष के साथ सभोग करनेवाली स्त्री।

नीचगामी (मिन्)—वि० [स० नीच√गम्+णिनि] [स्त्री० नीच-गामिनी] १ नीचे की ओर जानेवाला। २ ओछा। तुच्छ।

पु० जल। पानी।

नीच-गृह—पु० [स० ब० स०] कुडली मे वह ग्रह जो अपने घर मे सातवें घर मे स्थित हो।

नीचट—वि० [स० निश्चय] दृढ। पक्का।

नीचता—स्त्री० [स० नीच+तल्+टाप्] १ नीच होने की अवस्था या भाव। २ बहुत ही हेय आचरण या व्यवहार।

नीचत्व—पु० [स० नीच+त्व] नीचता।

नीच-वज्र—पु० [स० कर्म० स०] वैक्रान्त मणि।

नीचा—वि० [स० नीच] [स्त्री० नीची, भाव० नीचाई] १ जो किसी प्रसम धरातल या स्तर से निम्न स्तर पर स्थित हो। जैसे—नीची जमीन, नीची सड़क।

पद—नीचा-ऊँचा=कही से नीचा और कही से ऊँचा। ऊबड़-खाबड़।

२ जो किसी की तुलना मे कम ऊँचा हो अथवा जिसका विस्तार ऊपर की ओर कम हो। जैसे—नीची दीवार, नीची टोपी। ३ झुका हुआ। नत। जैसे—नीचा सिर। ४ जिसका झुकाव या विस्तार नीचे की ओर हो। जैसे—नीची धोती, नीचा पाजामा।

मुहा०—नीचा देना=पक्षी का झोके या तेजी से सीधे नीचे की ओर आना। गोतना। उदा०—उठि ऊँचे नीचौ दयो मन कुलिंग झपि झौर।—बिहारी।

†५ अधिकार, पद, मर्यादा आदि के विचार से जो औरों से घटकर हो। छोटा। जैसे—नीची अदालतें, नीची जाति।

मुहा०—नीचा दिखाना=(क) तुच्छ ठहराना। (ख) परास्त करना। (ग) लज्जित करना। **नीचा देखना**=(क) तुच्छ ठहरना। (ख) परास्त होना। (ग) लज्जित होना।

६ स्वर आदि के सबध मे, धीमा या मद्धिम।

नीचाई—स्त्री० [हिं० नीचा] अपेक्षाकृत नीचे होने की अवस्था या भाव। निचाई।

नीचान—स्त्री०=नीचाई।

नीचाशय—वि० [स० नीच-आशय, बा० स०] तुच्छ विचार का। क्षुद्र। ओछा।

नीचू—वि० [हिं० नि+चूना] जो चूता न हो। न चूनेवाला।

वि०=नीचा।

क्रि० वि०=नीचे।

नीचे—क्रि० वि० [हिं० नीचा] १ किसी की तुलना मे, निम्न धरातल पर या मे। जैसे—ऊपर मकान मालिक और नीचे किरायेदार रहता है। २ ऐसी स्थिति मे जिसमे उसके ठीक ऊपर भी कुछ हो। जैसे—(क) कुरते के नीचे गजी पहन लो। (ख) मोटी किताब के नीचे पतली किताब रखना।

पद—नीचे ऊपर=उलट-पलट। अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित। जैसे—सब चीजें ज्यों की त्यों रहने दो, नीचे-ऊपर मत करो। **नीचे से ऊपर तक**=(क) एक सिरे से दूसरे सिरे तक। (ख) सब अगों या भागों मे। सर्वत्र।

मुहा०—नीचे उतारना=मरते हुए व्यक्ति को खाट, पलग आदि पर से हटाकर नीचे जमीन पर लेटाना। (हिंदू) **नीचे गिरना**=आचार-विचार, मान-मर्यादा आदि की दृष्टि से पतित या हीन होना। जैसे—हम नही जानते थे कि तुम इतना नीचे गिरोगे। **नीचे लाना**=

(क) जमीन पर गिराना और पछाड़ना। (ख) नीचे उतारना। (ऊपर देखें)

३ किसी की अधीनता या वश में। जैसे—उसके नीचे पाँच कर्मचारी काम करते हैं।

नीज—पु० [?] रस्सी।

नीजन—वि०, पु०=निर्जन।

नीजू—स्त्री० [?] रस्सी।

नीझर†—पु०=निर्झर।

नीठ—वि०=नीठा।

अव्य०=नीठि।

नीठा*—वि० [सं० अनिष्ट, प्रा० अनिट्ठ] [भाव० नीठि] १ जो अच्छा न लगे। अरुचिकर। २ अनिष्टकारक। बुरा।

नीठि—स्त्री० [हिं० नीठ] अरुचि। अनिच्छा।

अव्य० बहुत कठिनता या मुश्किल से। ज्यों-त्यों करके। जैसे-तैसे।

पद—नीठि नीठि=ज्यों-त्यों करके। बहुत कठिनता से। किसी न किसी प्रकार। जैसे-तैसे। उदा०—नीठि नीठि भीतर गई, डीठि डीठि सो जोरि।—बिहारी।

नीड़—पु० [सं० नि√ईड् (स्तुति)+घञ्] १ बैठने या ठहरने का स्थान। २ चिड़ियों का घोंसला। ३ रथ में रथी के बैठने का स्थान।

नीड़क—पु० [सं० नीड√कै (शोभित होना)+क] १ पक्षी। चिड़िया। २ घोंसला।

नीड़ज—पु० [सं० नीड√जन् (उत्पत्ति)+ड] पक्षी।

नीडोद्भव—पु० [सं० नीड-उद्भव, ब० स०] पक्षी। चिड़िया।

नीत—भू० कृ० [सं०√नी (ले जाना)+क्त] १ कहीं पहुँचाया या लाया हुआ। २ ग्रहण किया हुआ। गृहीत। ३ पाया या मिला हुआ। प्राप्त। ४ स्थापित।

नीति—स्त्री० [सं०√नी+क्तिन्] [वि० नैतिक] १ ले जाने या ले चलने की क्रिया, ढंग या भाव। २ उचित या ठीक रास्ते पर ले चलने की क्रिया या भाव। ३ आचार, व्यवहार आदि का ढंग, पद्धति या रीति। ४ आचार, व्यवहार आदि का वह प्रकार या रूप जो बिना किसी का उपकार किये या किसी को कष्ट पहुँचाये अपने लिए भी और दूसरों के लिए भी मंगलकारी, शुभ तथा सम्मानजनक हो। ५ ऐसा आचार-व्यवहार जो सबकी दृष्टि में लोक या समाज के कल्याण के लिए आवश्यक और उचित ठहराया गया हो या माना जाता हो। सदाचार, सद्व्यवहार आदि के नियम और रीतियाँ। ६ राज्य या शासन की रक्षा और व्यवस्था के लिए अथवा शासक और शासित का संबंध ठीक तरह से बनाये रखने के लिए स्थिर किये हुए तत्त्व या सिद्धान्त। ७. अपना उद्देश्य सिद्ध करने या काम निकालने के लिए कौशल तथा चतुरता से किया जानेवाला आचरण या व्यवहार। तरकीब। युक्ति। हिम्मत। (पॉलिसी) ८ किसी काम या बात की उपलब्धि, प्राप्ति या सिद्धि। ९ दे० 'नीति-शास्त्र'। १०. दे० 'राजनीति'।

नीति-कुंतली—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

नीतिज्ञ—वि० [सं० नीति√ज्ञा (जानना)+क] नीति का जाननेवाला। नीतिकुशल।

नीतिमान् (मत्)—वि० [सं० नीति+मतुप्] [स्त्री० नीतिमती] १ नीति परायण। २ सदाचारी।

नीतिवाद—पु० [सं० मध्य० स०] वह वाद या सिद्धान्त जिसमें व्यवहार और आचार संबंधी नीति की प्रधानता हो।

नीतिवादी (दिन्)—वि० [सं० नीतिवाद+इनि] १ नीतिवाद—संबंधी। २ नीतिवाद का अनुयायी। ३ जो नीति-शास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार सब काम करता हो।

नीति-शास्त्र—पु० [सं० ष० त०] वह शास्त्र जिसमें देश, काल और पात्र के अनुसार समाज के कल्याण के लिए उचित और ठीक आचार-व्यवहार करने के नियमों, सिद्धांतों आदि का विवेचन होता है। (इथिक्स) २ उक्त विषय पर लिखा हुआ कोई प्रामाणिक और मान्य ग्रंथ।

नीदना—अ०=नींदना।

नीधना†—वि०=निर्धन।

नीध्र—पु० [सं० नि√धृ (धारण)+क, पूर्वदीर्घ] १ छाजन की ओलती। वलीक। २ जंगल। वन। ३ पहिए का धुरा। नेमि। ४ चंद्रमा। ५ रेवती नक्षत्र।

नीप—पु० [सं०√नी+प] १ कदंब। २ भू-कदंब। ३ गुलदुपहरिया। बन्धूक। ४ नीला अशोक। ५ पहाड़ के नीचे का तल या भाग। ६ एक प्राचीन देश।

पु० [अं० निपर] कोई चीज बाँधने के लिए लगाया जानेवाला डोरी या रस्सी का फंदा।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।—लेना।

नीपजना†—अ०=निपजना।

नीपना†—स०=लीपना।

नीपर—पु० [अं० निपर] १ लंगर में बँधी हुई रस्सियों में से एक। २. वह डंडा जिससे उक्त रस्सी कसी जाती है।

नीपातिथि—पु० [सं०] एक वैदिक ऋषि।

नीपाना—स० [सं० निष्पन्न?] १ पूरा करना। २ उत्पन्न करना। उदा०—गिरि नीपायौ नदि निकुटी ए।—पृथीराज।

नीब†—स्त्री०=नीम।

नीबर—वि०=निर्बल (कमजोर)।

नीबी†—स्त्री० नीवि।

नीबू—पु० =नींबू।

नीम—स्त्री० [सं० निंब] छोटी-छोटी पत्तियोंवाला एक प्रसिद्ध पेड़ जिसकी पतली शाखाओं की दतुअन बनती है। इस पेड़ की पत्तियाँ और छाल अनेक प्रकार के कृमियों की नाशक मानी गई हैं।

मुहा०—नीम की टहनी हिलाना=उपदंश या गरमी की बीमारी से युक्त होना।

विशेष—उक्त रोग के रोगी प्रायः नीम की टहनी से पीड़ित अंग पर हवा करते हैं। इसी से यह मुहावरा बना है।

वि० [फा०] १ आधा। अर्द्ध। २. आधे के लगभग या थोड़ा-बहुत। जैसे—नीम पागल, नीम राजी, नीम हकीम। ३ रंग के संबंध में, जो साधारण से हलका हो। जैसे—नीम प्याजी।

नीम गिर्दा—पु०[?] बढ़इयों का एक उपकरण।

नीमच—पु०[हि० नदी+मच्छ] एक तरह की मछली।

नीमचा—पु०[फा० नीमच] खाँडा।

नीमजाँ—वि०[फा०] अध-मुआ। मृतप्राय।

नीम-टर—वि०[फा० नीम+हि० टरटर] अर्द्धशिक्षित। (परिहास और व्यग्य)

नीमन—वि०[स० निर्मल] १ उत्तम। बढ़िया। २. रोगरहित। तन्दुरुस्त। नीरोग। ३ हर तरह से ठीक और काम मे आने योग्य।

नीमर—वि०=निर्बल।

नीम-रजा—वि० [फा० नीम+अ० रजा] जो किसी काम या बातके लिए आधा अर्थात् थोडा-बहुत राजी या सहमत हो गया हो।

नीमबर—पु०[फा०] कुश्ती का एक पेच जिसमे पीछे खडे हुए जोड को चित गिराया जाता है।

नीमषारण, नीमषारन—पु०=नैमिषारण्य।

नीमस्तीन—स्त्री० दे० 'नीमास्तीन।'

नीमा—पु०, वि०[हि० नीव]नीचा।

वि०[फा० नीम] अर्ध। आधा।

पु० एक तरह का पाजामा।

नीमावत—पु०[हि० निब] निबार्काचार्य का अनुयायी एक वैष्णव सप्रदाय

नीमास्तीन—स्त्री०[फा० नीम+आस्तीन] एक प्रकार की कुरती या फतुही जिसकी आस्तीन आधी अर्थात् कोहनी तक होती है।

नीयत—स्त्री०[अ०] कोई काम करने या कोई चीज पाने के सबध मे मन मे बनी रहनेवाली स्वभावजन्य वृत्ति अथवा होनेवाला विचार। आतरिक आशय, उद्देश्य या लक्ष्य। भावना। मनशा। (इन्टेन्शन)

मुहा०—**नीयत डिगना** अच्छा या उचित सकल्प दृढ न रहना। मन मे विकारपूर्ण भावना या विचार उत्पन्न होना। बुरा सकल्प होना। **नीयत बदल जाना** अच्छे विचार या सकल्प के स्थान पर दूषित या बुरा विचार अथवा सकल्प होना। **नीयत बाँधना**=मन मे दृढ विचार या सकल्प करना। **नीयत बिगडना** नीयत डिगना। (दे० ऊपर) **नीयत भरना**=मन तृप्त होना। इच्छा पूरी होना। जी भरना। जैसे—अभी इस लडके की नीयत भरी नही है, इसे थोडी मिठाई और दो। **नीयत मे फरक आना** नीयत डिगना या बिगडना। **(किसी काम, चीज या बात में) नीयत लगी रहना**=किसी काम की सिद्धि या वस्तु की प्राप्ति की ओर ध्यान लगा रहना।

नीर—पु०[स०√नी+रक्]१ जल। पानी। २ जल की तरह का कोई तरल पदार्थ। जैसे—नयनो का नीर आँसू, शीतला का नीर=चेचक के फफोलो मे से निकलनेवाला चेप या रस।

मुहा०— **(किसी की आँखों का) नीर ढल जाना**=आँखो मे लज्जा या शील-सकोच न रह जाना। **(आँखों से)नीर ढलना** मरने के समय आँखो से जल निकलना या बहना।

३ आब। काति। चमक। उदा०—आड हू भुलावै नख-सिख भरी नीर की।—सेनापति। ४ नीम के पेड से निकलनेवाला स्राव। ५ सुगधबाला। ६ रहस्य सप्रदाय मे, सहस्रार चक्र से झरनेवाला वह रस जो परम आवश्यक कहा गया है। उदा०—आगामी सरुभरिआ नीर। ता यहि केवल बहु बिस्थीर।—नानक।

नीर-क्षीर-विवेक—पु० [स० नीर-क्षीर,द्व० स०, नीरक्षीर-विवेक, ष०त०] ऐसा विवेक या ज्ञान जो भले-बुरे, न्याय-अन्याय आदि मे ठीक, पूरा और स्पष्ट भेद या विभाग कर सके।

विशेष—कहा जाता है कि हस मे इतना ज्ञान होता है कि वह पानी मिले हुए दूध मे से दूध तो पी लेता है और पानी छोड देता है। इसी आधार पर यह पद बना है।

नीरछ*—पु० नीरद (मेघ)।

नीरज—वि० [स० नीर√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो जल या जल से उत्पन्न हुआ हो। जलीय।

पु०१ कमल। २ मोती। ३ कुट नामक ओषधि। ४ एक प्रकार का तृण।

नीरण—पु०[स० नीर से]१ जल देना या पहुँचाना। २ नल आदि की सहायता से जल या कोई तरल पदार्थ एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना। (पाइपिंग)

नीरत—वि०[स० निर्-रत, प्रा० स०]विरत।

नीरद—वि०[स० नीर√दा (देना) क] नीर अर्थात् जल देनेवाला।

पु०१ बादल। मेघ। २ उत्तराधिकारी या वशज जो अपने पितरो या पूर्वजो को जल देता अर्थात् उनका तर्पण करता हो।

वि०[स० नि+रद] जिसे दाँत न हो। बिना दाँतोवाला। दत हीन।

नीरधर—वि०[स० नीर√धृ (धारण)+अच्] जल धारण करनेवाला।

पु० मेघ।

नीरधि—पु०[स० नीर√धा+कि] समुद्र। सागर।

नीरना—स०[हि० नीर]१ जल छिडकना। २ सीचना। ३ पोषक द्रव्य, भोजन आदि देकर जीवित रखना। पालना-पोसना।

स०[?] छितराना। बिखरना।

नीर-निधि—पु०[स० ष०त०] समुद्र।

नीर-पति—पु०[स० ष०त०] वरुण देवता।

नीर-प्रिय—पु०[स० ब०स०] जल-बेत।

नीरम—पु०[देश०] वह बोझ जो जहाज पर केवल उसका सतुलन ठीक रखने के लिए रखा जाता है।

नीरव—वि० [स० निर्-रव, ब०स०] १ जिसमे से रव अर्थात् ध्वनि या शब्द न निकलता हो। २ जिसमे रव या शब्द न होता हो। ३ जो बोल न रहा हो। चुप। मौन।

नीरस—वि०[स० निर्-रस, ब०स०] [भाव० नीरसता]१ जिसमे रस न हो। रस-हीन। २ जिसके स्वाद मे मिठास न हो। फीका। ३ जिसमे या जिसमे मन को रस अर्थात् आनन्द न मिलता हो। ४ जिसमे कोई आकर्षक, मनोरजक या रुचिकर तत्त्व या बात न हो। ५ सूखा हुआ। शुष्क।

नीराँजन—पु० दे० 'नीराजन'।

नीराँजनी—स्त्री०[स० नीराजन] वह आधार या पात्र जिसमे आरती के लिए दीप जलाये जाते है। आरती।

नीरा—स्त्री०[स० नीर] खजूर या ताड के वृक्ष का वह रस जो प्रात-काल उतारा जाता है और जो पीने मे बहुत स्वादिष्ट और गुणकारी होता है।

अव्य० [हिं० नियर] समीप। पास। उदा०—दूरि बात खल पाया नीरा।—कबीर।

नीराखु—पु०[स० नीर-आखु, ष०त०] ऊदबिलाव।

नीराजन—पु०[स० निर्√राज (शोभित होना)+ल्युट्—अन]१ देवता को दीपक दिखाने की क्रिया। आरती। दीप-दान।

क्रि० प्र०—उतारना।—वारना।

२ हथियारों को साफ करके चमकाने की क्रिया या भाव। ३ मध्य युग मे, वर्षाकाल बीतने पर और प्राय आश्विन मास मे राजाओ के यहाँ होनेवाला एक पर्व जिसमे युद्ध से पहले सब हथियार साफ करके चमकाये जाते थे।

नीराजना—स०[स० नीराजन]१ नीराजन मे दीप जलाकर किसी देवी या देवता की आरती करना। २ हथियार माँजकर साफ करना और चमकाना।

नीराशय—पु०=जलाशय।

नीरिंगु—पु०[स० नि√ईर्+क्विप्, नीर√इन्द्+उण्] सिहोर (वृक्ष)।

नीरुज—वि०[स० निर्-रुज, ब०स०, रलोप, दीर्घ] रोग-रहित।

पु० कुट नामक ओषधि।

नीरे†—अव्य०=नियरे (निकट)।

नीरोग—वि०[स० निर्-रोग, ब०स०, रलोप, दीर्घ] १ (व्यक्ति) जिसे कोई रोग न हो। स्वस्थ। २ जिसमे दोष, विकार आदि न हो। जैसे—नीरोग वातावरण।

नीरोवर—पु०[स०नीरवर]समुद्र। (सरोवर के अनुकरण पर) उदा०—नीरोवरि प्रवसति नई।—पृथीराज।

नीलिंगु—पु०[स० नि√लग् (गति)+कु, नि० पूर्वदीर्घ]१ एक तरह का कीडा। २ गीदड। शृगाल। ३ भौंरा। भ्रमर। ४ फूल।

नील—वि०[स०√नील् (रग होना)+अच्]गहरे आसमानी रग का।

पु० १ नीला रग। २ एक प्रसिद्ध पौधा जो २½/३ हाथ लबा होता तथा जिसमे नीले रग के छोटे छोटे फूल लगते है, जिनसे नीला रग तैयार किया जाता है।

विशेष—यह पौधा मूलत भारतीय है और इसकी लगभग ३०० जातियाँ है। बहुत प्राचीन काल से इस पौधे का रग भारत से विदेशो को जाता रहा है। ईस्ट इडिया कपनी ने इसके पौधो की खेती की व्यापारिक दृष्टि से विस्तृत व्यवस्था की थी। अब भी इसके रग का उपयोग अनेक औद्योगिक कार्यों मे होता है। अपने रग के नीलेपन के कारण यह शब्द कलक या लाछन का भी वाचक हो गया है।

पद—नील का खेत=ऐसा स्थान जहाँ जाने पर कलक या लाछन लगना निश्चित हो।

३ उक्त पौधे से निकाला हुआ नीला रग जो प्राय धुलाई, रगाई आदि के कार्यों मे आता है। (इडिगो)

पद—नील का टीका=कलक या लाछन का काम या बात।

मुहा०—(किसी की आँखों में) नील की सलाई फिरवा देना=अधा कर देना। (यह प्राचीन काल का एक प्रकार का दड था, जिसमे नील गरम करके सलाई से आँखो मे लगा दिया जाता था।) **नील घोटना**=व्यर्थ का ऐसा झगडा या बखेडा बढाना जिससे कलंक या लांछन लगने के सिवा और कोई प्राप्ति या सिद्धि न हो। **नील जलाना**=पानी बरसने के लिए नील जलाने का टोटका करना। **नील बिगडना**=(क) आचरण, चाल-चलन या रग-ढग खराब होना। (ख) किसी काम, चीज या बात का बुरी तरह से खराब होना या बिगडना। (ग) खराबी या दुर्दशा के दिन या समय आना। (घ) बहुत बडी खराबी या हानि होना। (नील के पौधो से नील (रग) निकालने के लिए उन्हे पानी मे भिगोकर सडाया और मथा जाता था। यदि इस प्रक्रिया मे कोई त्रुटि होती थी तो नील (रग) तैयार नही होता था। इसी आधार पर उक्त मुहावरा बना है, और उसमे कई प्रकार के अर्थ लग गए है।)

४ शरीर पर चोट लगने या मार पडने के कारण होनेवाला दाग जो बहुत-कुछ नीले रग का होता है।

क्रि० प्र०—पडना।

मुहा०—नील डालना=इतना पीटना या मारना कि शरीर पर नीले रग का दाग पड जाय।

५ राम की सेना का एक बदर। ६ एक नाग का नाम। ७ राजा अजमीढ का एक पुत्र जो नीलनी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। ८ महाभारत के अनुसार माहिष्मती का एक राजा जिसकी एक अत्यन्त सुन्दरी कन्या थी। उस पर मोहित होकर अग्नि देवता ब्राह्मण के वेश मे राजा से कन्या माँगने आये। कन्या पाकर अग्नि देवता ने राजा को वर दिया था कि तुम पर जो चढाई करेगा वह भस्म हो जायगा। जब राजसूय के समय सहदेव ने माहिष्मती पर चढाई की थी, तब उसकी सेना भस्म होने लगी थी, पर सहदेव के प्रार्थना करने पर अग्निदेव ने प्रकट होकर बीच-बचाव किया और दोनो को सतुष्ट करके युद्ध बद कराया था। ९ यम का एक नाम। १० मजुश्री का एक नाम। ११ इद्रनील मणि। नीलम। १२ मागलिक घोष या शब्द। १३ वटवृक्ष। बरगद। १४ तालीशपत्र। १५ जहर। विष। १६ एक प्रकार का विजय साल। १७ काच लवण। १८ नृत्य मे एक प्रकार का करण। १९ पुराणानुसार इलावृत्त खड का एक पर्वत जो रम्यक वर्ष की सीमा पर है। २० पुराणानुसार नौ निधियो मे से एक। २१ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे २१ वर्ण होते है। २२. दस हजार अरब या सौ खरब की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००००००००००००००।

नील-कठ—वि०[स० ब०स०] जिसका कठ या गला नीला हो।

पु० १ शिव का एक नाम जो इसलिए पडा था कि समुद्र-मथन से निकला हुआ विष उन्होंने अपने गले मे रख लिया था, जिसमे उनका गला नीला हो गया था। २ मयूर। मोर। ३ एक प्रकार की छोटी चिडिया जिसका गला और डैने नीले होते हैं। ४ गौरा पक्षी। चटक। ५ मूली। ६ पिया-साल।

नीलकठाक्ष—पु० [स० नीलकठ-अक्ष, ब०स०] रुद्राक्ष (वृक्ष)।

नीलकठी—स्त्री०[स०] १ एक प्रकार की पहाडी छोटी चिडिया, जिसकी बोली बहुत ही मधुर और सुरीली होती है। २ एक प्रकार का सुन्दर छोटा पौधा जो बगीचो मे शोभा के लिए लगाया जाता है।

नीलकंठीर*—पु०=नील-कठ।

नील-कंद—पु०[स० ब०स०] भैसा कद। महिषकद। शुभ्रालु।

नीलक—पु०[स० नील+कन्]१ काच लवण। २ बीदरी लोहा।

३ बीजगणित में, एक प्रकार की अव्यक्त राशि। ४ मटर। ५ भ्रमर। भौंरा। ६ पिया-साल। ७ काला घोड़ा।

नील-कण—पुं०[स० ष०त०] १ नीलम का कण या टुकड़ा। २ गोदे हुए गोदने का छोटा चिह्न या बिंदु।

नीलकणा—स्त्री०[स० ब०स०, टाप्] काला जीरा।

नील-कांत—पुं०[ब०स०]१ विष्णु। २ इन्द्रनील मणि। नीलम। ३ एक प्रकार की पहाड़ी चिड़िया जिसका सिर, पैर और कंठ के नीचे का भाग काला होता है और पूँछ नीली होती है। दिगदल।

नील-केशी—स्त्री०[ब०स०, ङीप्] नील का पौधा।

नील-कांता—स्त्री०[तृ०त०] कृष्णा पराजिता (लता)।

नील-क्रौंच—पुं०[कर्म०स०] काले रंग का बगला।

नील-गंगा—स्त्री०[स०] एक प्राचीन नदी।

नील-गाय—स्त्री०[हिं० नील+गाय] गाय के आकार का एक तरह का नीलापन लिये भूरे रंग का वन्य-पशु। गवय। रोझ।

नीलगिरि—पुं०[म०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

नील-ग्रीव—पुं० नील कंठ (शिव)।

नील-चक्र—पुं०[कर्म०स०] १ जगन्नाथजी के मंदिर के शिखर पर स्थित एक चक्र। २ दंडक वृत्त का एक भेद।

नील-चर्मा (र्मन)—वि० [ब०स०] जिसका चमड़ा नीले रंग का हो। पुं० फालसा।

नीलच्छद—वि०[नील-छद, ब०स०] जिसके ऊपर नीले रंग का आवरण हो।

पुं० १ गरुड़। २ खजूर।

नीलज—वि०[स० नील√जन् (उत्पत्ति)+ड] नील से उत्पन्न।

पुं० एक तरह का लोहा। वर्मलोह।

नीलजा—स्त्री०[स० नीलज+टाप्] नील पर्वत से उत्पन्न वितस्ता (झेलम) नदी।

नीलज्ज†—वि० निलज्ज।

नील-झिंटी—स्त्री०[कर्म०स०] नीली कठसरैया।

नील तरा—स्त्री०[स०] गांधार देश की एक प्राचीन नदी जो उरुवेलारण्य में होकर बहती थी। यहीं पहुँचकर बुद्धदेव ने उरुवेल काश्यप, गया काश्यप और नदी काश्यप नामक तीन भाइयों का अभिमान दूर किया था। (बौद्ध)

नील-तरु—पुं०[कर्म०स०] नारियल।

नीलता—स्त्री० [स० नील+तल्+टाप्] १ रंग के विचार से नीले होने की अवस्था या भाव। नीलापन। नीलिमा। २ कालापन। स्याही।

नील-ताल—पुं०[कर्म०स०]१ श्याम तमाल। हिंताल। २ तमालवृक्ष।

नील दूर्वा—स्त्री०[कर्म०स०] हरी दूब।

नील-द्रुम—पुं०[कर्म०स०] असन वृक्ष।

नील-ध्वज—पुं०[उपमि०स०] १. तमाल वृक्ष। २ [ब०स०] एक राजा।

नील-निर्यासक—पुं०[ब०स०, कप्] पियासाल का पेड़।

नील-निलय—पुं०[ष०त०] आकाश।

नील-पंक—पुं० [उपमि०स०]१. काला कीचड़। २ अंधकार। अँधेरा।

नील-पत्र—पुं०[ब०स०] १ नील कमल। २ गोनरा नामक घास, जिसकी जड़ में कसेरू होता है। ३ अनार। ४ विजयसाल। (वृक्ष)

नीलपत्रिका, नीलपत्री—स्त्री० [ब० स०,+कप्+टाप्, इत्व, ब०स०, ङीप्] १ नील का पौधा। २ कृष्णतालमूली।

नील-पद्म—पुं०[कर्म०स०] नीले रंग का कमल।

नील-पर्ण—पुं०[ब०स०] बंदार वृक्ष।

नील-पिच्छ—पुं०[ब०स०] बाज (पक्षी)।

नील-पुष्प—पुं०[कर्म०स०]१ नीला फूल। २ [ब०स०] नीली भँगरैया। ३ काला कोरांठा। ४ गठिवन।

नील-पुष्पा—स्त्री०[ब०स०, टाप्]१ नील का पौधा। २ अलसी। तीसी।

नील-पुष्पिका—स्त्री० =नील-पुष्पा।

नील-पृष्ठ—पुं०[ब०स०] अग्नि।

नील-फला—स्त्री०[ब०स०, टाप्]१ जामुन। २ बैंगन। भंटा।

नीलबरी—स्त्री० [स० नील+हिं० बरी]कच्चे नील की बट्टी।

नील बिरई—स्त्री०[हिं० नील+बिरई]सनाय का पौधा।

नील-भृंगराज—पुं०[कर्म०स०] नीला भँगरा।

नीलम—पुं०[फा०, मिलाओ स० नीलमणि] १ नीले रंग का एक प्रसिद्ध रत्न। (सैफायर) २ एक प्रकार का बढ़िया आम।

स्त्री० पुरानी चाल की एक तरह की तलवार।

नील-मणि—पुं०[कर्म०स०] नीलम (रत्न)।

नील-माष—पुं०[कर्म०स०] काला उड़द।

नील-मीलिका—स्त्री० [स० नील-मील, मध्य० स०,+ठन्—इक, टाप्] जुगनूँ।

नील-मृत्तिका—स्त्री०[कर्म०स०] काली मिट्टी।

नीलमोर—पुं०[हिं० नील+मोर]कुरही (पक्षी)।

नील-लोह—पुं०[कर्म०स०] बीदरी लोहा।

नील-लोहित—वि०[कर्म०स०] नीलापन लिये लाल। बैंगनी।

पुं० महादेव। शिव।

नील-लोहिता—स्त्री०[कर्म०स०]१ जामुन की एक जाति। २ पार्वती।

नील-वर्ण—वि० [ब०स०] नीले रंग का।

नील-वल्ली—स्त्री०[कर्म० स०] बंदाक। बाँदा। परगाछा।

नील-वसन—वि० [ब० स०] जिसने नीले रंग के वस्त्र पहने हो।

पुं० १ [कर्म० स०] नीला कपड़ा। २ [ब० स०] शनिग्रह। ३ बलराम।

नील-वानर—पुं०[कर्म०स०] दक्षिण भारत के पश्चिमी तट पर रहनेवाले एक तरह के बंदर जिनके चेहरे पर चारों ओर लंबे और घने बाल होते हैं।

नीलवासा (सस्)—वि० नील वसन।

पुं० शनिग्रह।

नील-बीज—पुं०[ब०स०] पिया-साल।

नील-वृत—पुं०[ब०स०]तूल। रूई।

नील-वृष—पुं०[कर्म०स०] लाल रंग का ऐसा साँड जिसका मुँह, सिर, पूँछ और खुर सफेद हो।

विशेष—ऐसा साँड श्राद्ध में उत्सर्ग करने के लिए प्रशस्त माना गया है।

नील-वृषा—स्त्री०[सं० नील√वृष् (उत्पादन)+क+टाप्]बैंगन।
नील-वेणी—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
नील-शिखंड—पुं०[ब०स०] रुद्र का भेद।
नील-शिग्रु—पुं०[कर्म०स०] सहिजन का पेड़। शोभाजन।
नील-संध्या—स्त्री०[उपमि०स०] कृष्णा पराजिता।
नील-सार—पुं०[ब०स०] तेंदू का पेड़।
नील-सिर—स्त्री०[हिं० नील+सिर]एक तरह की बत्तख जिसके सिर का रंग नीला होता है।
नील-स्वरूप (क)—पुं० [ब०स०, कप्] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रमशः तीन तीन भगण और दो दो गुरु अक्षर होते है।
नीलांग—वि०[नील-अंग, ब०स०] जिसके अंग नीले रंग के हों। नीले अंगोंवाला।
पुं० सारस (पक्षी)।
नीलांजन—पुं०[नील-अंजन, कर्म०स०]१ नीला सुरमा। २ तूतिया।
नीलांजना—स्त्री० [सं० नील√अंज (मिलाना)+णिच्+ल्यु—अन, टाप्]१ बिजली। नीलाजनी। २ काली कपास।
नीलांजनी—स्त्री०[सं० नीलांजन+ङीप्]=नीलांजना।
नीलांजसा—स्त्री० [सं०] १ बिजली। विद्युत्। २ एक अप्सरा का नाम। ३ एक प्राचीन नदी।
नीलांबर—वि०[सं० नील-अंबर, ब०स०] नीले कपड़ेवाला। नीला वस्त्र धारण करनेवाला।
पुं०१ नील रंग का कपड़ा। २ बलदेव। ३ शनैश्चर। ४ राक्षस। ५ तालीशपत्र।
नीलांबरी—स्त्री० [सं० नीलांबर+ङीप्] संगीत में, एक प्रकार की रागिनी।
नीलांबुज—पुं०[नील-अंबुज, कर्म० स०] नील कमल।
नीला—वि०[सं० नील][स्त्री० नीली] आकाश या नील की तरह के रंग का। नील वर्ण का। आसमानी। (ब्ल्यू)
विशेष—राजस्थान में प्रायः हरा (रंग) ही नीला कहलाता है।
मुहा०—**(किसी को नीला करना)**=मारते मारते शरीर पर नीले दाग डालना। बहुत मार मारना। **(किसी का) नीला-पीला होना**=सहसा किसी बड़े मानसिक आघात या रोग के कारण सारे शरीर का रंग इस प्रकार बदल जाना कि मानों मृत्यु बहुत पास आ गई है। **(किसी पर) नीले-पीले होना**=बहुत अधिक क्रोध या रोष प्रगट करना। खूब बिगड़ना। **चेहरा नीला पड़ जाना**=भय आदि के कारण चेहरे का रंग उतर जाना। **चेहरा या हाथ पैर नीले पड़ना**=चेहरे या शरीर का रंग इस प्रकार बदल जाना कि मानो शरीर में रक्त ही न रह गया हो।
पुं०१ इंद्र नील मणि। नीलम। २. एक प्रकार का कबूतर।
स्त्री०१ नीली मक्खी। २. नीली पुनर्नवा। ३ नील का पौधा। ४ एक प्रकार की लता। ५ एक प्राचीन नदी। ६. संगीत में, एक प्रकार की रागिनी जो मल्लार राग की भार्या कही गई है।
नीलाक्ष—वि०[नील-अक्षि, ब०स०] नीली आँखोंवाला। जिसकी आँखें नीले रंग की हों।
पुं० राजहंस।
नीलाचल—पुं०[नील-अचल, कर्म०स०]१ नील गिरि पर्वत। २ जगन्नाथ पुरी के पास की एक छोटी पहाड़ी।
नीलाणी—स्त्री०[हिं० नीला+हरा]हरियाली। (डिं०)
नीला थोथा—पुं०[सं० नील तुत्थ] तांबे की एक उपधातु जो कृत्रिम और खनिज दो प्रकार की होती है। तूतिया।
नीलाम—पुं०[पुर्त० लेलम् या लेइलम्]१ वस्तुओं की होनेवाली वह सार्वजनिक बिक्री जिसमें सबसे अधिक या बढ़कर दाम लगानेवाले के हाथ वस्तुएँ बेची जाती है। २ इस प्रकार चीजे बेचने की क्रिया, ढंग या भाव।
विशेष—हमारे यहाँ इस प्रकार की विक्रय-प्रथा को 'प्रतिक्रोश' कहते थे।
मुहा०—**(किसी चीज का) नीलाम पर चढ़ना**=किसी चीज का ऐसी स्थिति में आना कि उसकी बिक्री नीलाम के रूप में हो। जैसे—अदालत की आज्ञा से उसका मकान नीलाम पर चढ़ा है।
नीलामघर—पुं०[हिं० नीलाम+घर] वह स्थान जहाँ चीजें नीलाम की जाती हों।
नीलामी—वि० [हिं० नीलाम] नीलाम के रूप में बिकनेवाला या बिका हुआ। जैसे—नीलामी घड़ी।
स्त्री० दे० 'नीलाम'।
नीलाम्ला—स्त्री०[नीला-अम्ला, कर्म०स०?] नीली कठसरैया।
नीलाम्लान—पुं०[नील-आम्लान, कर्म०स०] १. एक प्रकार का पौधा जिसमें सुन्दर फूल लगते हैं। काला कोराठा। २ उक्त पौधे का फूल।
नीलारुण—पुं०[नील-अरुण, कर्म०स०] ऊषा।
नीलालक—वि०[सं० नील-अलक, ब०स०][स्त्री० नीलालका] नीले या काले बालोंवाला। उदा०—घन नीलालका दामिनी जित ललना वह।—निराला।
नीलालु—पुं०[नील-आलु, कर्म०स०] एक तरह का कंद।
नीलालेप—पुं०[सं०] बालों में लगाया जानेवाला खिजाब।
नीलावती—स्त्री०[सं० नीलवती] एक तरह का चावल।
नीलाशी—स्त्री०[सं० नील√अश् (व्याप्ति)+अण्+ङीप्] नीला सिंदुवार।
नीलाश्म (न्)—पुं०[नील-अश्मन्, कर्म०स०] नीलम।
नीलाश्व—पुं०[सं०] एक प्राचीन देश।
नीलासन—पुं० [नील-असन, कर्म०स०]१ पियासाल का पेड़। २ काम-शास्त्र में, एक प्रकार का आसन या रति-बंध।
नीलाहट†—स्त्री०[हिं० नीला+आहट (प्रत्य०)] किसी चीज में दिखाई पड़नेवाली हलके नीले रंग की झलक।
नीलि—स्त्री०[सं०√नील् +इन्]१. नील का पौधा। २ नीलिका रोग। ३ एक प्रकार का जल-जंतु। ४ नीलिका अर्थात् आँखें तिलमिलाने का रोग।
वि०=नीला।
नीलिका—स्त्री०[सं० नीली+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. नीलबरी। २ नीला सभालू। नीली निर्गुंडी। ३. आँखें तिलमिलाने का रोग। लिंग-नाश। ४. आघात, चोट आदि लगने पर शरीर पर पड़ा हुआ नीला दाग। नील।

नीलिका-मुद्रण—पु० [मध्य०स०] १. एक प्रकार की छपाई जिसमें नीली जमीन पर सफेद अक्षर और सफेद रेखाएँ अंकित होती है। (ब्ल्यू प्रिंटिंग) २. उक्त प्रकार से छापा हुआ कागज। (ब्ल्यू प्रिन्ट) विशेष—प्राय जमीनों, मकानों आदि के नकशे आज-कल इसी रूप में छपते या बनते है।

नीलिनी—स्त्री० [स० नील+इनि+ङीप्] १ नील का पौधा। २ नील।

नीलिमा—स्त्री० [स० नील+इमनिच्] १ नीले होने की अवस्था, गुण या भाव। नीलापन। २ कालापन। श्यामलता। स्याही।

नीली—स्त्री० दे० 'नीलि' और 'नीलिका'।

वि० हि० 'नीला' का स्त्री०।

नीली-कर्म—पु० [स०] सिर के बाल रँगने की क्रिया। खिजाब लगाना।

नीली घोड़ी—स्त्री० [हि० नीली+घोड़ी] एक प्रकार का स्वाँग जिसमे जाम के साथ मिली हुई कागज की ऐसी घोडी होती है जिसे पहन लेने से जान पडता है कि आदमी घोडे पर सवार है। पहले डफाली इसे पहन कर गीत गाते हुए भीख माँगने निकलते थे।

नीली चकरी—स्त्री० [हि० नीली+चकरी] एक तरह का पौधा।

नीली चाय—स्त्री० [हि० नीली+चाय] अगिया घास या यज्ञकुश।

नीली-राग—पु० [स० नील+अच्+ङीष्, नीली-राग उपमि० स० ?] १ प्रगाढ प्रेम। २ [ब० स०] घनिष्ठ मित्र।

नीली-सधान—पु० [ष० त०] नील का खमीर।

नीलू—स्त्री० [हि० नील] एक तरह की घास। पलवान।

नीलोत्पल—पु० [नील-उत्पल, कर्म० स०] नील कमल।

नीलोत्पली (लिन्)—पु० [स० नीलोत्पल+इनि] १ शिव का एक अंश। २ बौद्ध महात्मा मंजुश्री का एक नाम।

नीलोफर—पु० [स० नीलोत्पल से फा०] १. नील कमल। २ कुमुदनी। कोई।

नीवँ—स्त्री०=नीव।

नीवर—पु० [?] १ परिव्राजक। सन्यासी। २ बौद्ध भिक्षु। ३. राजगार। वाणिज्य। ४. रोजगारी। वणिक। ५ कीचड। ६ जल। पानी।

नीवाक—पु० [स० नि√वच् (बोलना)+घञ्, कुत्व, दीर्घ] १ अकाल के समय किसी चीज की होनेवाली अत्यधिक माँग। २ अकाल। दुर्भिक्ष।

नीवानास—वि० [हि० नीव+स० नाश] चौपट। बरबाद। विनष्ट।

पु० जड-मूल से होनेवाला नाश। बरबादी।

नीवार—पु० [स० नि√वृ (स्वीकार)+घञ्, दीर्घ] जलीय भूमि मे आप से आप होनेवाला धान। तीनी।

स्त्री०=निवार।

नीवि (वी)—स्त्री० [स० नि√व्य (आच्छादन करना)+इञ्, यलाप, उपसर्ग-दीर्घ] १ कमर में लपेटी हुई धोती मे की वह गाँठ जो स्त्रियाँ यों ही अथवा उसके ऊपर डोरी से बाँधती है। २ वह डोरी जिसे स्त्रियाँ कमर मे धोती के ऊपर लपेट कर बाँधती है। फुबनी। ३ लहँगे के नेफे मे पडी हुई डोरी। इजारबद। नाला। ४ जनानी धोती या साडी। (क्व०)। ५ लँगोटी। ६ मूलधन। पूँजी। ७ वह जमा किया हुआ मूलधन जिसका केवल ब्याज दूसरे कामों मे लगता हो। (कौ०)

नीवी-ग्राहक—पु० [स० ष० त०] वह व्यक्ति जिसके पास चन्दे का अथवा और किसी प्रकार का धन जमा हो और जो उस धन का प्रबध करता हो। (कौ०)

नीव्र—पु० [स० नि√वृ+क, पूर्वदीर्घ] दे० 'नीध्र'।

नीशार—पु० [स० नि√शृ (नष्ट करना)+घञ्, दीर्घ] १ सरदी, हवा आदि के बचाव के लिए टाँगा जानेवाला परदा या कनात। २ मसहरी। ३ सरदी से बचने के लिए ओढा जानेवाला कपडा। जैसे—कबल, लोई आदि।

नीस†—पु० [?] सफेद धतूरा।

नीसक†—वि० =नि शक्त।

अव्य०=निश्शक।

नीसरणी†—स्त्री०=निसेनी (सीढी)।

नीसाण†—पु०=निशान।

नीसानी—स्त्री० [?] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे २३ मात्राएँ होती है और १३वी और १०वी मात्रा पर विराम होता है।

†स्त्री०=निशानी।

नीसार*—पु० =नीशार।

नीसू— पु० [?] जमीन मे गडा हुआ लकडी का ठीहा जिस पर रखकर गन्ना, चारा आदि काटा जाता है।

नीहँ†—स्त्री० =नीव। (पश्चिम)

नीहार—पु० [स० नि√हृ (हरण)+घञ्, दीर्घ] १ कोहरा। २ तुषार। पाला।

नीहार-जल—पु० [स० ष० त०] ओस।

नीहारिका—स्त्री० [स० नीहार+कन्+टाप्, इत्व] रात के समय आकाश मे दिखाई पडनेवाले घन कोहरे की तरह के प्रकाश-पुज। (नेब्युला)

नुकता—पु० [अ० नुक्त] १ लेखन मे अक्षरों के साथ लगाई जानेवाली बिंदी। २ शून्य का सूचक चिह्न। ३ किसी प्रकार की बिंदी या बिंदु। पु० १ ऐसी छिपी हुई या रहस्यपूर्ण बात जो सहसा सब की समझ मे न आ सके। २ ऐब। दाग।

क्रि० प्र०—निकालना।

पद—**नुकता-चीनी**। (देखें)

३ चटपटी और मजेदार बात। चुटकुला।

क्रि० प्र०—छोडना।

४ वह झालर जो घोडा की आँखों पर उन्हे मक्खियो से बचाने के लिए बाँधी जाती है। निम्हरी।

नुकता-चीन—वि० [अ० नुक्त+फा० चीन] [भाव० नुकताचीनी] दूसरे के दोष या बुराइयाँ ढूँढनेवाला। छिद्रान्वेषी।

नुकता चीनी—स्त्री० [अ० नुक्त+फा० चीनी] १ दूसरे के दोष या बुराइयाँ ढूँढना। छिद्रान्वेषण। २ दूसरों के दोषो की ओर इगित करना। दोष दरशाना।

नुकती—स्त्री० [फा० नुख्दी] महीन और मीठी बुँदिया जिसके प्राय लड्डू बनाये जाते है।

नुकना†—अ० लुकना (छिपना)।

नुकरा—पु० [फा० नुक़्र] १ चाँदी। २ घोडो का सफेद रग। ३ सफेद रग का घोडा।
वि० (घोडा) जिसका रग सफेद हो।

नुकरी—स्त्री० [अ० नुक़्र] जलाशयो के किनारे रहनेवाली एक छोटी चिडिया जिसके पैर सफेद और चोच काली होती है।

नुकसान—पु० [फा० नुक्सान] १ कमी। छीज। २ किसी काम या व्यापार मे होनेवाला घाटा। हानि।
क्रि० प्र०—उठाना।
३ ऐसी क्षति जिससे किसी काम, बात या व्यवहार मे कमी पडती या बाधा होती है। जैसे—भूकप मे कई मकानो का नुकसान हुआ है।
क्रि० प्र०—पहुँचना।—पहुँचाना।
मुहा०—(किसी का) नुकसान भरना—किसी की क्षति या हानि होने पर उसकी पूर्ति करना।
४ किसी प्रकार होनेवाली खराबी या विकार। जैसे—बुखार मे नहाना नुकसान करता है।

नुकसानी—स्त्री० [फा० नुक्सान] १ नुकसान। हानि। २ हानि पूरी करने के लिए दिया जानेवाला धन। क्षति-पूर्ति।
†वि० (पदार्थ) जिसका कुछ अश टूट-फूट या बिगड गया हो। जैसे—नुकसानी माल।

नुकाई—स्त्री० [हि० नुकाना] खुरपी से निराने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

नुकाना†—स० [देश०] खुरपी से निराना।
स० लुकाना (छिपाना)।

नुकीला—वि० [हि० नोक+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० नुकीली] १. जिसमे नोक हो। २ तेज नोकवाला। ३ नोक-झोक अर्थात् सज-धजवाला। बाँका तिरछा। जैसे—नुकीला जवान।

नुक्कड—पु० [हि० नोक] १ नोक की तरह आगे निकला हुआ कोना या सिरा। २ कोना। ३ मकान, गली या रास्ते का वह अत या सिरा जहाँ कोई मोड पडता हो।

नुक्का—पु० [हि० नोक] १ नोक। २ गेडी खेलने की छोटी लकडी या डडा।
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

नुक्का टोपी—स्त्री० [हि० नोक+टोपी] एक तरह की पतली दोपलिया नोकदार टोपी।

नुक्स—पु० [अ० नुक्स] १ किसी चीज मे होनेवाली कोई ऐसी कमी या त्रुटि जिससे उस वस्तु मे अपूर्णता रहती हो। २. चारित्रिक दोष।

नुखरना—अ० [देश०] भालू का चित लेटना। (कलदर)

नुखार—स्त्री० [देश०] छडी से भालू के मुँह पर किया जानेवाला आघात। (कलदर)
†पु०=लुकाट (लकुट का पेड और फल)।

नुगदी†—स्त्री० १ =नुकती। २ =लुगदी।

नुचना—अ० [हि० 'नोचना' का अ०] नोचा जाना। (दे० 'नोचना')
†पु०=नोचना (बाल नोचने की चिमटी)।

नुचवाना—स० [हि० नोचना का प्रे०] नोचने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ नोचने मे प्रवृत्त करना।

नुचित*—वि० [स० लुचित] १ नोचा हुआ। २ जिसके सिर के बाल नुचे हुए हो। (जैन साधु)

नुजट—पु० [?] सगीत मे, २४ शोभाओ मे से एक।

नुजूम—पु० [अ०] ज्योतिष।

नुजूमी—वि० [अ०] नुजूम-सबधी।
पु० ज्योतिषी।

नुत—भू० कृ० [स०√नु (स्तुति)+क्त] १ वदित। २ स्तुत। ३ पूजित।

नुति—स्त्री० [स०√नु+क्तिन्] १ वदना। २ स्तुति। ३ पूजन।

नुत्त—भू० कृ० [स०√नुद् (प्रेरणा)+क्त] १ चलाया या फेका हुआ। क्षिप्त। २ हटाया हुआ। ३ प्रेरित।

नुत्फा—पु० [अ० नुत्फ] १ पुरुष का वीर्य। शुक्र।
मुहा०—नुत्फा ठहरना=स्त्री सभोग के फलस्वरूप गर्भ रहना।
२ औलाद। सतान।

नुत्फा हराम—वि० [अ०] जिसका जन्म व्यभिचार मे हुआ हो।

नुनखरा—वि० [हि० नून+खारा] जिसमे कुछ कुछ खारापन हो।

नुनना—स० [स० लवण, लून] खेत काटना। लुनना।
वि०=नुनखरा।

नुनाई*—स्त्री० १ =लुनाई (लावण्य)। २=लुनाई। (लुनने की क्रिया या भाव)।

नुनी—स्त्री० [देश०] शहतूत की जाति का एक पेड।

नुनेरा—पु० [हि० नून+एरा] १ नमक बनानेवाला, विशेषत नोना मिट्टी मे से नमक निकालनेवाला। २ अमलोनी या नोनी नामक साग। नोनिया।

नुमा—प्रत्य० [फा०] १ दूसरो को कुछ दिखलाने या प्रदर्शित करनेवाला। जैसे—राहनुमा=मार्ग प्रदर्शक। २ दिखाई देने या प्रकट होनेवाला। जैसे—खुशनुमा। ३ देखने मे किसी के अनुरूप या सदृश्य या समान जान पडने या होनेवाला। जैसे—सन्दूक-नुमा मकान। ४ किसी की ओर सकेत करनेवाला। जैसे—कुतुबनुमा=दिग्दर्शक यत्र। (समस्त पदो के अत मे प्रयुक्त)।

नुमाइदगी—स्त्री० [फा०] नुमाइदा अर्थात् प्रतिनिधि होने की अवस्था या भाव। प्रतिनिधित्व।

नुमाइदा—पु० [फा० नुमाइद] वह जो दूसरा का प्रतिनिधित्व करता हो।

नुमाइश—स्त्री० [फा०] [वि० नुमाइशी] १ ऊपर या बाहर से सब लोगो को दिखाने की क्रिया या भाव। दिखावट। प्रदर्शन। २ ऊपरी ठाठ-बाट या तडक-भडक। सज-धज। ३ अनोखी, उपयोगी, नई या इसी तरह की बहुत-सी चीजे इस प्रकार एक जगह रखना कि सब लोग उन्हे देख सके और उनका परिचय प्राप्त कर सके। ४ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार से बहुत-सी चीजे इकट्ठी कर के लोगो को दिखाने के लिए रखी जाती है। प्रदर्शनी (एग्जिबिशन)
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

नुमाइशगाह—स्त्री० [फा०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार की उत्तम और अद्भुत वस्तुएँ इकट्ठी कर के दिखाई जाती हैं।। प्रदर्शनी-स्थल।

नुमाइशी—वि० [फा० नुमाइश] १ नुमाइश-सबधी। २ (वस्तु) जो

नुमाइश मे रखी गई हो या रखी जाने को हो। ३ सुदर। ४ जिसके अदर या नीचे विशेष तत्त्व न हो। दिखावटी। दिखौआ।

नुमाई—स्त्री० [फा०] ऊपर से दिखाने की क्रिया या भाव। प्रदर्शन। (समस्त पदो के अत मे प्रयुक्त) जैसे—**खुद-नुमाई**=आत्म-प्रदर्शन या अभिमानपूर्वक यह दिखलाना कि हम ऐसे हैं।

नुमाया—वि० [फा०] जो साफ दिखाई देता हो। जाहिर प्रकट।

नुसखा—पु० [अ० नुस्खः] १ कागज का ऐसा टुकडा जिस पर कुछ लिखा हो। २ छपी अथवा हाथ की लिखी हुई पुस्तक की प्रति। ३ वह कागज जिस पर रोगी के लिए औषध और उसका सेवन विधि लिखी हो।

मुहा०—**नुसखा बाँधना**=वैद्य या हकीम के लिखे अनुसार औषधियो की पुडिया बाँधकर रोगियो को देना।

४ व्यय का अवसर या योग। जैसे—वहाँ जाना भी ५) का नुसखा है।

नुहरना†—अ०—निहुरना (झुकना)।

नू—विभ० व्रज, पजाबी, राजस्थानी आदि भाषाओं मे कर्मकारक की विभक्ति, को।

नूका—पु० [?] कज्जल नामक छद।

नूत†—वि० नूतन।

नूतन—वि० [स० नव+तनप्, नू-आदेश] [भाव० नूतनता, नूतनत्व] १ नया। नवीन। २ तुरत या हाल का। ताजा। ३ अनूठा। अनोखा।

नूतन-चद्रिक—पु० [स०] सगति मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

नूतनता—स्त्री० [स० नूतन+तल्+टाप्] नूतन होने की अवस्था या भाव।

नूतनत्व—पु० [स० नूतन+त्व] नूतनता।

नूत्न—वि० [स० नव+त्नप्, नू आदेश]=नूतन।

नूद—पु० [स०√नुद्+क, पृषो० दीर्घ] शहतूत।

नूधा—पु० [देश०] एक तरह का देशी तबाकू।

नून—पु० [?] १ आल। २ आल की जाति की एक प्रकार की लता।

पु० [स० लवण] नमक।

पद—**नून-तेल**=घर-गृहस्थी के निर्वाह के लिए आवश्यक खाद्य पदार्थ और शेष सामग्री।

नून ताई— स्त्री० =न्यूनता।

नूनी—स्त्री० [स० न्यून हिं० नूनी] लिंगेंद्रिय, विशेषत बच्चों की।

नूपुर—पु० [स०√नू (प्रशसा)+क्विप् नू√पुर् (आगे जाना)+क] १ स्त्रियो के पैर का एक आभूषण। पैजनी। २ घुँघरू। ३ नगण का पहला भेद। ४ इक्ष्वाकु वश के एक राजा।

नूर—पु० [अ०] १ ज्योति। प्रकाश।

पद—**नूर का तड़का**=(क) प्रभात का समय। (ख) आभा। चमक। (ग) शोभा। श्री।

खुदा का नूर=दाढी पर के बढाये हुए बाल। (मुसल०) उदा०—और तो मे क्या कहूँ, बन आये हो लगूर-से। दाढी मुडवाओ, म बाज आई खुदा के नूर से।—जान साहब।

मुहा०—**नूर बरसना**=बहुत अधिक शोभा या श्री चारो ओर फैलना।

४ सूफी सप्रदाय मे, ईश्वर का एक नाम। ५ फारसी सगीत मे, बारह मुकामा या गायन-प्रकारो मे से एक।

नूरबाफ—पु० [अ० नूर+फा० बाफ] जुलाहा। ताँती।

नूरा—पु० [अ० नूर] १ ऐसी कुश्ती जिसमे दोनो पहलवानो मे पहले से तै होता है कि एक दूसरे को चित नही गिरायेगे। २ दवाओं का वह चूर्ण जो स्त्रियाँ अपने गुप्त अग के बाल साफ करने के लिए लगाती है। (मुसल० स्त्रियाँ)

वि० १ चमकता हुआ। प्रकाशमान। २ तेजस्वी।

नूरानी—वि० [अ०] १ जिसमे नूर या प्रकाश हो। २ चमक-दमक-वाला।

नूरी—वि० [अ०] नूर-सबधी।

पु० [फा०] लाल रग की एक तरह की चिडिया।

नूह—पु० [अ०] शामी या इबरानी मतो के अनुसार एक पैगबर जिनके समय मे भयकर तूफान आया था और जिसके फलस्वरूप सारी सृष्टि जलमग्न हो गई थी। कहते है कि उस समय जो थोडे से लोग बचे थे उन्ही की सतान इस समय है। (यह तूफान भारतीय खड प्रलय के समान माना गया है।)

नृ—पु० [स०√नी (ले जाना)+ऋन्, डित्] १. नर। मनुष्य। २ शतरज का मोहरा।

नृ-कपाल—पु० [ष० त०] मनुष्य की खोपडी।

नृ-केशरी (रिन्)—पु० [कर्म० स०] १ ऐसा व्यक्ति जो सिंह या शेर के समान पराक्रमी और श्रेष्ठ हो। २ नृसिंह अवतार।

नृग—पु० [स०] १ मनु के एक पुत्र का नाम। २ उशीनर का पुत्र जो यौधेय वश का मूल पुरुष था।

नृगा—स्त्री० [स०] राजा उशीनर की पत्नी का नाम।

नृघ्न—वि० [स० नृ√हन् (हिंसा)+टक्] मनुष्य घातक।

नृतक—पु० =नर्त्तक।

नृतना—अ० [स० नृत] नृत्य करना। नाचना।

नृति—स्त्री० [स०√नृत् (नाचना)+इन्] नाच। नृत्य।

नृतु (तू)—पु० [स०√नृत्+कु] नर्त्तक।

नृत्त—पु० [स०√नृत्+क्त] वह नाच जिसमे अगो का विक्षेप भी किया जाता है।

नृत्तांग—पु० [स०] नृत्य के अग।

नृत्य—पु० [स०√नृत्+क्यप्] ताल, लय आदि के अनुसार मन-बहलाव के लिए शरीर के अगो का किया जानेवाला सचालन। विशेष दे० 'नाच'।

नृत्यकी†—स्त्री० =नर्त्तकी।

नृत्य-गीत—पु० [स०] धार्मिक, सामाजिक आदि अवसरो पर होनेवाला ऐसा नृत्य जिसमे नर्त्तक साथ ही साथ गाते भी हैं। जैसे—गुजरात का गरबा प्रसिद्ध नृत्य-गीत है।

नृत्य-नाट्य—पु० [स०] ऐसा अभिनय या नाट्य जिसमे नृत्यो की अधिकता हो।

नृत्य-प्रिय—पु० [ब० स०] १ महादेव। २ कार्तिकेय का एक अनुचर।

नृत्य-शाला—स्त्री० [ष० त०] नाचघर।

नृ-दुर्ग—पु० [स० मध्य० स०] वह दुर्ग जिसके चारो ओर मनुष्यो विशेषत सैनिकों का घेरा हो।

नृ-देव—पु० [स० स० त०] १ राजा। २ ब्राह्मण।

नृ-धर्मा (र्मन्)—पु० [स० ब० स०, अनिच्] कुबेर।
नृपंजय—पु० [स० नृप√जि (जीतना)+खश्, मुम्] एक पुरुवंशी नरेश।
नृप—वि० [स० नृ√पा (रक्षा)+क] [भाव० नृपता] मनुष्यों की रक्षा करनेवाला।
पु० राजा।
नृप-कंद—पु० [मध्य० स०] लाल प्याज।
नृप-जय—पु० [स०] एक पुरुवंशीय राजा।
नृपता—स्त्री० [स० नृप+तल्+टाप्] नृप अर्थात् राजा होने की अवस्था, गुण या भाव। राजत्व।
नृ-पति—पु० [स० ष० त०] १ राजा। २ कुबेर।
नृप-द्रुम—पु० [मध्य० स०] १ अमलतास। २ खिरनी का पेड़।
नृप-द्रोही (हिन्)—पु० [स० नृप√द्रुह् (द्रोह करना)+णिनि] परशुराम।
नृप-प्रिय—पु० [ष० त०] १ लाल प्याज। २ राम शर। सरकंडा। ३ एक प्रकार का बाँस। ४ जड़हन धान। ५ आम का पेड़। ६ पहाड़ी तोता।
नृप-प्रिय-फला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] बैंगन।
नृप-प्रिया—स्त्री० [स० नृपप्रिय+टाप्] १ केतकी। २ पिंडखजूर।
नृपमांगल्य (क)—पु० [ब० स०, कप्] तरवट का पेड़। आहुल।
नृप-मान—पु० [ष० त०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा जो राजाओं के भोजन के समय बजाया जाता था।
नृप-वल्लभ—पु० [ष० त०] १ आम। २ राजा का सखा।
नृप-वल्लभा—स्त्री० [ष० त०] १ रानी। २ केतकी।
नृप-वृक्ष—पु० [मध्य० स०] सोनालु का पेड़।
नृप-शासन—पु० [ष० त]० राजा की आज्ञा।
नृ-पशु—पु० [उपमि० स०] वह जो मनुष्य होने पर भी पशुओं का-सा आचरण करता हो।
नृप-सुत—पु० [ष० त०] [स्त्री० नृप-सुता] राजकुमार।
नृप-सुता—स्त्री० [ष० त०] १ राजकन्या। राजकुमारी। २ छुछूँदर।
नृपांश—पु० [नृप-अंश, ष० त०] आय, उपज आदि का वह अंश जो राजा को दिया जाता हो।
नृपात्मज—पु० [नृप-आत्मज, ष० त०] [स्त्री० नृपात्मजा] राजकुमार।
नृपाध्वर—पु० [नृप-अध्वर, मध्य० स०] राजसूय यज्ञ।
नृपान्न—पु० [नृप-अन्न, ष० त०] १ राजा का अन्न। २ राजभोग धान।
नृपाभीर—पु० [स० अभि√ईर् (सूचना)+क, नृप-अभीर, ष० त०] एक तरह का बाजा। विशेष० दे० 'नृपमान'।
नृपामय—पु० [आमय-नृप, ष० त०, पूर्वनिपात] यक्ष्मा राजरोग।
नृपाल—पु० [स० नृ√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] राजा।
नृपावर्त्त—पु० [स० नृप+आ√वृत् (बरतना)+अच्] एक तरह का रत्न। राजावर्त्त।
नृपासन—पु० [नृप-आसन, ष० त०] राजसिंहासन। तख्त।
नृपाह्व—पु० [नृप-आह्वा, ब० स०] लाल प्याज।
नृपाह्वय—वि० [स० नृप-आ√ह्वे (स्पर्धा)+अच्] राजा कहलानेवाला। राजा नामधारी।

नृपोचित—वि० [नृप-उचित, ष० त०] राजाओं के लिए उचित या उपयुक्त। राजाओं के योग्य। जैसे—नृपोचित व्यवहार।
पु० एक प्रकार का काला बड़ा उरद। राज-माष। २ लोबिया।
नृमणा—स्त्री० [स० नृ-मन, ब० स०, टाप्, णत्व] प्लक्षद्वीप की एक महानदी। (भागवत)
नृमणि—पु० [स०] एक पिशाच जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि वह बच्चों को तंग किया करता है।
नृ-मर—वि० [स० ष० त०] मनुष्यों को मारनेवाला।
पु० राक्षस।
नृमल—वि० =निर्मल।
नृ-मिथुन—पु० [स० ष० त०] १ स्त्री-पुरुष का जोड़ा। २ मिथुन राशि।
नृ-मेध—[स० ष० त०] नरमेध। (दे०)
नृ-यज्ञ—पु० [स० मध्य० स०] गृहस्थ के लिए आवश्यक माने हुए पंचयज्ञों में से एक जिसमें अतिथि का सत्कार उचित ढंग से करने को कहा गया है।
नृ-लोक—पु० [स० ष० त०] मनुष्यों का लोक। मर्त्यलोक।
नृ-वराह—पु० [स० कर्म० स०] वाराह रूपीधारी विष्णु भगवान्।
नृ-वाहन—पु० [स० ब० स०] कुबेर।
नृ-वेष्टन—पु० [स० ब० स०] शिव।
नृशंस—वि० [स० नृ√शंस् (हिंसा)+अण्] [भाव० नृशंसता] १ क्रूर। निर्दय। २ अत्याचारी। ३ बहुत बड़ा अनिष्ट या अपकार करनेवाला।
नृशंसता—स्त्री० [स० नृशंस+तल्+टाप्] नृशंस होने की अवस्था, गुण या भाव।
नृ-शृंग—पु० [स० ष० त०] मनुष्य के सींग के समान अस्तित्वहीन और कल्पित वस्तु।
नृ-सिंह—पु० [स० कर्म० स०] वह जो मनुष्यों में उसी प्रकार प्रधान और श्रेष्ठ हो, जिस प्रकार पशुओं में सिंह होता है। सिंह-जैसे पराक्रम वाला व्यक्ति। २ पुराणानुसार विष्णु का चौथा अवतार जो आधे मनुष्य और आधे सिंह के रूप में हुआ था।
विशेष—विष्णु का यह रूप भक्त प्रह्लाद की रक्षा करने के लिए हुआ था, और इसी अवतार में उन्होंने राक्षसों के राजा हिरण्यकश्यप को मारा था।
३ कामशास्त्र में, एक प्रकार का आसन या रति बंध।
नृसिंह-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] बैशाख शुक्ल चतुर्दशी, इसी तिथि को भगवान नृसिंह अवतरित हुए थे।
नृसिंह-पुराण—पु० [मध्य० स०] एक उपपुराण।
नृसिंह-पुरी—पु० [स०] मुलतान (पश्चिमी पाकिस्तान) में स्थित एक प्राचीन तीर्थ-स्थान।
नृसिंह-वन—पु० [स०] एक प्राचीन देश। (बृहत्संहिता)
नृ-सोम—पु० [उपमि० स०] ऐसा मनुष्य जो चंद्रमा के समान प्रकाशमान हो। बहुत बड़ा आदमी।
नृ-हरि—पु० [कर्म० स०] नृसिंह। (दे०)
ने—विभ० [स० एन] १. हिन्दी में, सकर्मक भूतकालिक क्रिया के कर्ता के साथ लगनेवाली एक विभक्ति। जैसे—राम ने खाया, कृष्ण ने

मारा। २ गुजराती तथा राजस्थानी में कर्म तथा सप्रदान कारकों की विभक्ति। 'को' के स्थान पर प्रयुक्त।

नेअमत—स्त्री० [अ०]=नियामत (देन)।

नेई, नेई— स्त्री०=नीव।

नेउछाउरि†—स्त्री० =निछावर।

नेउतना— स० [हि० न्योता] निमत्रण देना। बुलाना।

नेउतहरि (री)—वि० [हि० न्योता] १ जिसे न्योता (निमत्रण) दिया गया हो। निमन्त्रित। २ (वह) जो निमत्रण पर आया हो।

नेउता†—पु०१ =न्योता (निमत्रण)। २ नौरता (त्योहार)।

नेउर—पु०[स० नूपुर] १ पैंजनी। २ घुंघरू। उदा०—सूँधा वास ऊनै नेउर सद।—प्रिथीराज।

नेउला—पु० =नेवला।

नेक—वि०[स० निक्त (=नीका, अच्छा) से फा०] १ अच्छा। भला। २ उत्तम। श्रेष्ठ। जैसे—नेक-चलन। ३ शिष्ट। सज्जन। सदाचारी। जैसे—नेक आदमी। ४ मागलिक। शुभ। जैसे—नेक सायत। ५ जिसमे केवल उपकार या भलाई हो। सद्। जैसे—नेक सलाह।

वि० [हि० न+एक] जरा-सा। थोडा-सा।

अव्य० किंचित्। कुछ। जरा। उदा०—नेकु हँसौही बानि तजि, लखौ परत मुख नीठि।—बिहारी।

नेक-चलन—वि०[फा० नेक+हि० चलन] [भाव० नेक-चलनी] जिसका आचरण उत्तम हो।

नेकचलनी—स्त्री०[हि० नेक चलन+ई (प्रत्य०)] अच्छा आचरण।

नेक-नाम—वि०[फा०] [भाव० नेकनामी] जिसकी किसी अच्छे काम या बात के लिए प्रसिद्धि हो। सुख्यात।

नेकनामी—स्त्री०[फा०] नेकनाम होने की अवस्था या भाव। सुख्याति।

नेक-नीयत—वि०[फा० नेक+अ० नीयत] [भाव० नेकनीयती] १ जिसकी नीयत (उद्देश्य, विचार या सकल्प) अच्छी हो। सदाशय। २ ईमानदार और सच्चा।

नेक-नीयती—स्त्री०[फा०+अ०]१ नेक-नीयत होने की अवस्था या भाव। सदाशयता। २ ईमानदारी और सचाई।

नेक-बख्त—वि०[फा०] [भाव० नेक-बख्ती]१ भाग्यवान। सौभाग्य-शाली। २ सुशील। ३ भोला-भाला।

नेक-बख्ती—स्त्री०[फा०]१ अच्छा भाग्य। सौभाग्य। २ सुशीलता। ३ भलमसत।

नेकरी—स्त्री०[?] समुद्र की लहर का थपेडा। हांक। (लश०)

नेकी—स्त्री० [फा०] १ नेक होने की अवस्था या भाव। २ अच्छाई, भलाई। ३ शिष्टता और सौजन्य। सदाशयता। ४ दूसरे के साथ किया जानेवाला नेक कार्य अर्थात् किसी के उपकार या हित का काम। परोपकार।

पद—नेकी और पूछ पूछ किसी का उपकार करने के लिए उससे पूछने की क्या आवश्यकता है? किसी का उपकार उसके कुछ कहे बिना ही करना चाहिए। **नेकी बदी**—(क) भलाई और बुराई। (ख) पाप-पुण्य। (ग) शुभ और अशुभ घटनाएं।

नेकु†—अव्य० [हि० न+एक] जरा। थोडा-सा। उदा०—जहां नेकु सयानप बांक नहीं।—घनानन्द।

नेख†—पु० [?] शस्त्र। हथियार।

नेग—पु० [स० नैयमिक?] १ मागलिक और शुभ अवसरों पर सबधियों, नौकरों-चाकरों तथा अन्य आश्रितों (जैसे—नाई, धोबी, चमार आदि) को कुछ धन आदि देने की प्रथा। २ इस प्रकार दिया जाने-वाला धन या वस्तु। ३ उक्त के आधार पर किसी प्रकार का परम्परा-गत अधिकार या स्वत्व। दस्तूर। ४ कोई शुभ कार्य। जैसे—सौ रुपए खर्च करके तुमने कोई नेग तो किया नहीं। ५ अनुग्रह। कृपा।

*पु० [स० निकट?] १ निकटता। सामीप्य। २ सबध। सम्पर्क।

मुहा०—किसी के नेग लगना=(क) सबध या सपर्क में आना। (ख) किसी में लीन होना। समाना। **(किसी चीज या बात का) नेग लगना**=सार्थक या सफल होना। जैसे—चलो, ये रुपए तो नेग लगे, अर्थात् इनका व्यय होना सफल हुआ।

नेग-चार—पु० [हि० नेग+स० चार] १ मागलिक अवसरों पर होने-वाले सामाजिक उपचार, क्रियाएँ, विधान आदि। २ उक्त अवसरों पर नेग के रूप में, लोगों को थोडा-थोडा धन देने की क्रिया या भाव। ३ दे० 'नेग-जोग'।

नेग-जोग—पु० [हि० नेग+अनु० जोग] १ शुभ अवसरों पर सबधियों तथा काम करनेवालों को कुछ धन दिये जाने की प्रथा। २ ऐसा मागलिक या शुभ अवसर जिस पर लोगों को नेग देने की प्रथा हो।

नेगटी—पु० [हि० नेग+टा (प्रत्य०)] नेग या परम्परागत रीति का पालन करनेवाला। दस्तूर पर चलनेवाला।

नेगी—पु० [हि० नेग] १ शुभ अवसरों पर नेग पाने का अधिकारी। जैसे—धोबी, नाई, भाट, आदि। २ किसी की उदारता, दया आदि से लाभ उठाकर बराबर उसकी आकाक्षा और आशा रखनेवाला व्यक्ति। उदा०—गरलामृत शिव आशुतोष बलविश्व सकल नेगी।—निराला।

नेगी-जोगी—पु० [हि० नेग जोग] नेगी।

नेचर—पु० [अ०] निसर्ग। प्रकृति।

नेचरिया—वि० [अ० नेचर+इया (प्रत्य०)] जो केवल प्रकृति को सृष्टि का कर्ता मानता हो, ईश्वर को न मानता हो। प्रकृतिवादी। नास्तिक।

नेचवा†—पु० [देश०] पलग का पाया।

नेछावर†—स्त्री० =निछावर।

नेज†—पु० नेजा (भाला)। उ०—हयी नेज चामड, वीर दा सहस लरै सर।—चदबरदाई।

नेजक—पु० [स०√निज् (साफ करना)+ण्वुल्—अक] रजक। धोबी।

नेजन—पु० [स०√निज्+ल्युट्—अन] १ कपडे धोने की क्रिया या भाव। २ सफाई करना।

नेजा—पु० [फा० नैज] १ भाला। बरछा। २ सांग।

पु० [देश०] चिलगोजा नाम का सूखा मेवा। (पश्चिम)

नेजा-बरदार—वि० [फा० नैज़ा बरदार] भाला लेकर चलनेवाला।

नेजाल†—पु० [फा० नेज] भाला। बरछा।

नेजोछना†—स० अंगोछना या अग पोछना। (मिथिला)

नेटा†—पु० [हिं० नाक+टा] नाक से निकलनेवाला कफ या बलगम। क्रि० प्र०—निकलना।—बहना।

नेठना—अ०, स० =नाठना (नष्ट होना या करना)।

नेड़उ—अव्य० [सं० निकट, प० नेड़े] समीप। नजदीक। उदा०—दिन नेड़उ आइयो दुरी।—प्रिथीराज।

नेड़ो†—स्त्री० =लेंडी।

नेड़े— अव्य० [सं० निकट, प्रा० निअड] नजदीक। निकट। पास। (पश्चिम)

नेत—पु० [सं० नेत्रम्] १ वह रस्सी जिसमे मथानी चलाई जाती है। नेती। २ एक तरह का बढ़िया रेशमी कपड़ा। ३ झडे मे लगा हुआ फहरानेवाला कपड़ा। पताका। ४ बिछाने की चादर। उदा०—पुनि गज हस्ति चढावा, नेत, बिछावा बाट।—जायसी।

पु० [सं० नियति=ठहराव] १ किसी बात का स्थिर होना। ठहराव। निर्धारण। २ दृढ निश्चय या सकल्प। ३ प्रबध। व्यवस्था।

†स्त्री० दे० 'नीयत'।

नेतली—स्त्री० [सं० नेत्रम्] १ मथानी चलाने की डोरी। २ एक प्रकार की पतली डोरी। (लश०)

नेता (तृ)—पु० [सं०√नी (ले जाना)+तृच्] [स्त्री० नेत्री] १ वह पशु जो अपने झुड के आगे आगे चलता हो। २ मनुष्यो मे, वह जो लोगो को मार्ग दिखलाता हुआ आगे चलता हो और दूसरो को अपने साथ ले जाता हो। अगुआ। नायक। ३ आज-कल किसी धार्मिक सप्रदाय अथवा किसी राजनैतिक या सामाजिक दल का वह व्यक्ति जो आवश्यक बातो मे लोगो का मार्ग-प्रदर्शन करता हो और लोगो को अपना अनुयायी बनाकर रखता हो। (लीडर) ४ प्रभु। मालिक। स्वामी। ५ कार्य का निर्वाह या सचालन करनेवाला अधिकारी। ६ नीम का पेड़। ७ वह जो दूसरो को दड आदि देता हो। ८ नाटक का नायक। ९ विष्णु का एक नाम।

पु० [हिं० नेत] मथानी की रस्सी। नेती।

नेतागिरी—स्त्री० [हिं० नेता+फा० गीरी] नेता बनकर दूसरो का मार्ग-प्रदर्शन करने का काम।

नेति—अव्य० [सं० न+इति, व्यस्तपद] इसका कहीं अन्त नहीं है। यह अनन्त है। (प्राय ईश्वर, ब्रह्म आदि की महिमा मे प्रयुक्त) स्त्री० नेती।

नेती—स्त्री० [सं० नेत्रम्] १ मथानी चलाने की रस्सी। २ दे० 'नेती धोती'।

नेती धोती—स्त्री० [सं० नेत्र, हिं० नेता+सं० धौति] आँतों और पेट का मल साफ करने की हठयोग की एक क्रिया, जिसमे कपड़े की लबी पट्टी मुँह के रास्ते पेट मे उतारी जाती है और तब इसे बाहर खीचने पर इसके साथ मल बाहर निकलता है।

नेतुल्ली—पु० [हिं० नेता+उल्ली (प्रत्य०)] छोटा या तुच्छ नेता। (उपहास और व्यग्य)

नेतृत्व—पु० [सं० नेतृ+त्व] नेता बनाकर किसी सम्प्रदाय या दल का मार्ग-दर्शन तथा उसके कार्यों का सचालन करना।

नेत्र—पु० [सं०√नी+ष्ट्रन्] १. आँख। २ दोनो आँखो के आधार पर दो की सख्या। ३ मथानी की रस्सी। ४. पेड़ की जड़। ५ जटा। ६ रथ। ७ नाड़ी। ८ एक तरह का रेशमी कपड़ा। ९ वैद्यक मे, वस्ति-कर्म मे काम आनेवाली सलाई। १० दे० 'नेता'।

नेत्र-कनीनिका—स्त्री० [ष० त०] आँख की पुतली।

नेत्रच्छद—पु० [सं० नेत्र√छद् (ढँकना)+णिच्+क, ह्रस्व] पलक।

नेत्रज—पु० [सं० नेत्र√जन् (उत्पत्ति)+ड] आँसू।

नेत्र-जल—पु० [ष० त०] आँसू।

नेत्रण—पु० [सं० नेत्र से] किसी को ठीक मार्ग दिखलाते हुए ले चलना।

नेत्र-पर्यंत—पु० [ष० त०] आँख का कोना।

नेत्र-पाक—पु० [ष० त०] आँख का एक रोग।

नेत्र-पिंड—पु० [ष० त०] १ आँख का डेला। २ [ब०स०] बिल्ली।

नेत्र-पुष्करा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] रुद्र जटा नामक लता।

नेत्र-बध—पु० [ब० स०] आँख-मिचौली का खेल। (महाभारत)

नेत्र-बाला—स्त्री० [सं०] सुगधबाला नामक वनौषधि।

नेत्र-भाव—पु० [ष० त०] नृत्य और सगीत मे वे भाव जो केवल आँखों की मुद्रा से प्रकट किये जाते है।

नेत्र-मडल—पु० [ष० त०] आँख का डेला।

नेत्र-मल—पु० [ष० त०] आँख मे से निकलनेवाला कीचड़ या मल। गिद्।

नेत्र-मार्ग—पु० [ष० त०] हठयोग मे माना जानेवाला अन्त करण के पास का वह नेत्र-गोलक जिसका एक सूत्र के द्वारा मस्तिष्क तक सबध होता है।

नेत्र-मीला—स्त्री० [ब० स०, पृषो० ल—न] यवतिक्ता लता।

नेत्र-योनि—पु० [ब० स०] १ इद्र (गौतम के शाप से इनके शरीर पर योनि के आकार के चिह्न निकल आये थे)। २ चन्द्रमा।

नेत्र-रजन—पु० [ष० त०] कज्जल। काजल।

नेत्र-रोग—पु० [ष० त०] आँखो मे होनेवाले रोग।

नेत्ररोगहा (हन्)—पु० [सं० नेत्ररोग√हन् (हिसा)+क्विप्] वृश्चिकाली (वृक्ष)।

नेत्र-रोम (न्)—पु० [ष० त०] बरौनी।

नेत्रवस्ति—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार की छोटी पिचकारी।

नेत्र-वारि—पु० [ष० त०] आँसू।

नेत्रविट् (ष्)—पु० [ष० त०] आँख का कीचड़।

नेत्र-विष—पु० [ब० स०] एक प्रकार का साँप जिसकी आँखो मे विष होना माना जाता है। कहते है कि इसके देखने मात्र से प्राणियों पर विष का प्रभाव पड़ता है।

नेत्र-संधि—स्त्री० [ष० त०]आँख का कोना।

नेत्र-स्तभ—पु० [ष० त०] वह स्थिति जिसमे आँखो की पलकों का उठना और गिरना बन्द हो जाता है।

नेत्र-स्राव—पु० [ष० त०] आँखो से पानी बहना।

नेत्रहा (हन्)—पु० [सं० नेत्र√हन्+क्विप्] वृश्चिकाली (वृक्ष)।

नेत्रांत—पु० [ष० त०] आँख का बाहरी कोना।

नेत्राबु—पु० [नेत्र-अबु, ष० त०] आँसू।

नेत्रांभ (स्)—पु० [नेत्र-अभस्, ष० त०] आँसू।

नेत्राभिष्यंद—पु० [नेत्र-अभिष्यद, ष० त०] छूत से फैलनेवाला एक नेत्र-रोग।

नेत्रामय—पु० [नेत्र-आमय ष० त०] आँख का रोग।

नेत्रारि—पु० [नेत्र-अरि, ष० त०] थूहर। सेंहुड़।

नेत्रिक—पु० [स० नेत्र+ठन्—इक] १ एक प्रकार की छोटी पिच-कारी। (सुश्रुत) २ कलछी।

नेत्री—स्त्री० [स० नेतृ+ङीप्] १ स० 'नेता' का स्त्री०। स्त्री नेता। २ लक्ष्मी। ३. नाडी। ४ नदी।

नेत्रोत्सव—पु० [नेत्र-उत्सव, ष० त०] १ नेत्रों का आनन्द। देखने का मजा। २ दर्शनीय और सुन्दर वस्तु।

नेत्रोपमफल—पु० [नेत्र-उपमा, ब० स०, नेत्रोपम-फल, कर्म०स०] बादाम। (भाव प्रकाश)

नेत्रौषध—पु० [नेत्र-औषध, ष० त०] १. आँख की दवा। २ पुष्प कसीस।

नेत्रौषधि (धी)—स्त्री० [नेत्र-औषधि, ष० त०] मेढासिगी (पौधा)।

नेत्र्य—वि० [स०] १ नेत्र-सबधी। २ नेत्रों को सुख देनेवाला।

नेत्र्य-गण—पु० [स० नेत्र+यत्, नेत्र्य-गण, कर्म० स०] रसौत, त्रिफला, लोध, ग्वालपाठा, बनकुलथी आदि ओषधियों का वर्ग।

नेदिष्ठ—वि० [स० अन्तिक+इष्ठन्, नेद-आदेश] १ निकट का। पास का। २ दक्ष। निपुण।
पु० १ अकोट या ढेरे का वृक्ष।

नेदिष्ठी (ठिन्)—वि० [स० नेदिष्ठ+इनि] समीप का। निकटस्थ।
पु० सगा या सहोदर भाई।

नेनुआ†—पु० [देश०] १ एक प्रसिद्ध लता। २ उक्त का लबोतरा फल जिसकी तरकारी बनाई जाती है। वैद्यक मे यह वात तथा पित्त नाशक माना गया है। घिया-तरोई।

नेप—पु० [स०√नी+प] १ पुरोहित। २ जल।

नेपचून—पु० [फ्रांसीसी] सूर्य की परिक्रमा करनेवाला एक नक्षत्र। एक ग्रह जिसका पता कुछ ही दिन पहले लगा है। वरुण।

नेपथ्य—पु० [स०√नी+विच्, ने(नेता)+पथ्य, प० त०] १ सजावट। सज्जा। २ पहनने के कपडे। पोशाक। (विशेषत अभिनेताओं की) ३ वेष-भूषा। ४ रग-मच का वह भाग जो दर्शकों की दृष्टि से ओझल रहता है और जिसमे अभिनेता या नट उपयुक्त वेश-भूषा आदि से सज्जित होते है। ५ रग-भूमि। रगशाला।

नेपाल—पु० [देश०] उत्तर प्रदेश के उत्तर और हिमालय के तल मे स्थित एक पहाडी देश तथा राज्य।

नेपालक—पु० [स० नेपाल+कन्] ताँबा।

नेपालजा—स्त्री० [स० नेपाल√जन् (उत्पत्ति)+ड+टाप्] मन-शिला। मैनसिल।

नेपाल-निब—पु० [मध्य० स०] एक तरह का चिरायता।

नेपाल-मूलक—पु० [स०] हस्तिकद (कद)।

नेपालिका—स्त्री० [स० नेपालक+टाप्, इत्व] मन शिला। मैनसिल।

नेपाली—वि० [हि० नेपाल] १. नेपाल राज्य से सबध रखनेवाला। २ नेपाल मे बसने, होने या रहनेवाला।
पु० नेपाल देश का नागरिक या निवासी।
स्त्री० नेपाल देश की भाषा।
†स्त्री० निवारी (पौधा और उसका फूल)।

नेपुर†—पु०=नूपुर।

नेफा—पु० [फा० नेफ] पायजामे, लहँगे आदि का नेफा जिसमे नाला डाला जाता है।
पु० [अ० नार्थ, ईस्ट फ्रटियर एजेंसी के आरभिक अक्षरों का समूह] वे पहाडी प्रदेश जो भारत के उत्तर पूर्व मे पड़ते हैं।

नेब†—पु०=नायब।

नेबू†—पु०=नीबू।

नेम—वि० [स०√नी+मन्] १ अर्ध। आधा। २ अन्य। दूसरा।
पु० [स०] १ काल। समय। २ अवधि। ३ खड। टुकडा। ४. दीवार। ५ धोखेबाजी। छल। ६ गड्ढा। गर्त। ७ सध्या का समय। ८ जड। मूल।
पु० [स० नियम] १ नियम। कायदा। २ नियमित रूप से या बराबर होती रहनेवाली बात।
पद—नेम-धरम=पूजा-पाठ, देव-दर्शन आदि धार्मिक-कृत्य।
३ प्रथा। रीति।

नेमत—स्त्री०=नियामत।

नेमता—स्त्री० [स०] नाचने-गाने का व्यवसाय करनेवाली स्त्री। नर्तकी।

नेमि—स्त्री० [स०√नी+मि] १ पहिए का चक्कर या घेरा। चक्र-परिधि। २ किसी प्रकार का चक्कर या घेरा। ३ कूएँ के ऊपर का चबूतरा। जगत। ४ कूएँ की जमवट। ५ किनारा। तट। ६ तिनिश वृक्ष। ७ वज्र। ८ पुराणानुसार एक दैत्य। ९ दे० 'नेमि नाथ'।

नेमिचक्र—पु० [स०] एक राजा जो परीक्षित के वशजों मे से था।

नेमी (मिन्)—पु० [स० नेम+इनि] तिनिश वृक्ष।
स्त्री० =नमि।
वि० [स० नियम] किसी प्रकार के नियम, विशेषत धार्मिक कृत्य-सबधी नियम का दृढतापूर्वक और सदा पालन करनेवाला। जैसे—गगा-स्नान या देव-दर्शन का नेमी।
पद—नेमी-धरमी।

नेमी-धरमी—वि० [स० नियम-धर्मी] १ धार्मिक नियमों और सिद्धान्तो का दृढतापूर्वक पालन करनेवाला। २ नित्य पाठ-पूजा, देव-दर्शन आदि धार्मिक कृत्य करनेवाला।

नेयार्थ—पु० [स० नेय-अर्थ, कर्म० स०] एक पद-दोष जो उस समय माना जाता है जब किसी शब्द से उसके ऐसे लाक्षणिक अर्थ का बोध कराया जाता है जो साधारणत उससे अभिव्यजित नही होता।

नेयार्थता—स्त्री० [स० नेयार्थ+तल्+टाप्] नेयार्थ दोष होने की अवस्था या भाव।

नेर†—क्रि० वि० दे० 'नियर'।

नेरता—स्त्री० [स० नैर्ऋत] नैर्ऋत्य दिशा। पश्चिम-दक्षिण का कोना।

नेरबाती—स्त्री० [देश०] एक तरह की नीले रग की पहाडी भेड।

नेरा†—वि० [हि० नेक?] [स्त्री० नेरी] जरा-सा। थोडा-सा।
उदा०—अब ऐसी अनेरी पत्याति न नरी।—घनानन्द।

नेराना—अ०, स०=नियराना।
नेरुआ†—पु० [सं० नल,हिं नाली, नारी] वह नाली जिसमे से कोल्हू मे का तेल बाहर निकलता है।
नेरे†—अव्य० [हिं० नियर] निकट। पास। समीप।
नेव†*—वि०=नायब।
†स्त्री०=नीव।
नेवग†—पु०=नेग। (डिं०)
नेवगी—पु०=नेगी। (डिं०)
नेवछावर†—स्त्री०=निछावर।
नेवज†—पु०=नैवेद्य।
नेवजा—पु०=नेजा (चिलगोजा)।
नेवजी†—स्त्री०=नेवारी (पौधा और फूल)।
नेवत†—पु०=न्योता। (निमत्रण)।
नेवतना†—स० [हिं० न्योता] न्योता या निमत्रण देना।
नेवतहरी—पु० [हिं० न्योता] वह व्यक्ति जिसे किसी मागलिक अवसर पर न्योता दिया गया हो या जो न्योता देने पर आया हो।
नेवता†—पु०=न्योता।
नेवती†—पु० दे० 'नेवतहरी'। उदा०—नेवती भएउँ बिरह की आगी। —जायसी।
नेवना*—अ० [सं० नमन] १ झुकना। २ नम्र होना।
स० झुकाना।
नेवर—पु० [सं० नूपुर] १ पैरों मे पहनने का नूपुर नाम का गहना। पैंजनी। २ घुँघरू। ३ घोडो के पैर मे होनेवाला वह घाव जो दूसरे पैर की रगड या ठोकर लगने से होता है।
क्रि० प्र०—लगना।
†वि० [सं० निर्बल] १ कमजोर। २ खराब। बुरा।
नेवरना*—अ० [सं० निवारण] निवारण होना। दूर होना।
स० १ निवारण करना। २ निपटाना। भुगताना।
नेवरा—पु० [देश०] लाल कपडे की वह खोली जो झारी पर चढाई जाती है।
†पु०=नेवला।
नेवल—पु० १. =नेवर। २ =नेवला।
नेवला—पु० [सं० नकुल,प्रा० नउल] चूहे के आकार का भूरे रग का चार पैरोंवाला एक प्रसिद्ध जतु जो साँप को मार डालता है।
नेवा—पु० [सं० नियम] १ प्रथा। दस्तूर। रवाज। २ कहावत। लोकोक्ति।
वि० [?] चुप। मौन।
†पु० =लेवा।
†अव्य०=नाई (तरह या समान)।
नेवाज—वि०=निवाज (दयालु)।
नेवाजना—स० निवाजना (दया करना)।
नेवाड़ा†—पु०=निवाडा।
नेवाड़ी†—स्त्री०=नेवारी।
नेवाना*†—स०=नवाना। (झुकाना)।
नेवार—पु० [देश०] नेपाल की एक आदिम जाति।
स्त्री०=निवार।
नेवारना* †—स० [सं० निवारण] निवारण करना। हटाना। दूर करना।
नेवारी—स्त्री० [सं० नेपाली] १ चमेली की जाति का सुगधित फूलो का एक प्रसिद्ध पौधा जो चैत मे फूलता है। २ उक्त पौधे का फूल।
नेष्टा (ष्टृ)—पु० [सं०√नी+तृन्, नि० सिद्धि] १ एक ऋत्विक्। २ त्वष्टा देवता।
नेष्टु—पु० [सं० निश् (एकाग्रता)+तुन्] मिट्टी का ढेला।
नेस—पु० [फा० नेश] १. जगली सूअर के आगे निकला हुआ दाँत। सीग। २ दश। डक।
नेसकुन—पु० [देश०] बदरा का जोडा। (कलदर)
नेसुक†—अव्य०, वि० =नेक या नेकु। (जरा या थोडा)
नेसुहा†—पु० दे० 'ठीहा'।
नेस्त—वि० [फा०] [भाव० नेस्ती] १ जो न हो। २ नष्ट। बरबाद।
नेस्त-नाबूद—वि० [फा०] जड-मूल से नष्ट। समूल नष्ट।
नेस्ती—स्त्री० [सं० नास्ति से फा०] १ न होने की अवस्था या भाव। अनस्तित्व। २ आलस्य। सुस्ती। ३ नाश। बरबादी।
वि० चौपट या सर्वनाश करनेवाला।
नेह—पु० [सं० स्नेह] १. स्नेह। प्रीति। प्यार। मुहब्बत। २. घी, तेल या ऐसा ही कोई चिकना और तरल पदार्थ।
नेहाल—वि० =निहाल।
नेही*—वि० =स्नेही।
नै—स्त्री० [सं० नदी, प्रा० णई] नदी।
स्त्री० [फा०] १ नरकट। नरसल। २ बाँस की नली। ३ हुक्के की निगाली। ४ बाँसुरी।
*विभ० =ने (कर्मकारक की विभक्ति)। (व्रज०)
नैऋत— वि०=नैर्ऋत्य।
नैक—वि० [सं० न-एक, सहसुपा स०] १ जो एक नही, बल्कि उससे कुछ अधिक हो। अनेक। २ जो अकेला न हो।
पु० विष्णु।
वि०, अव्य०=नेक (जरा या थोडा)।
नैकचर—वि० [सं० नैक√चर् (गति)+ट] जो अकेला न चलता हो। फलत झुडो मे रहनेवाला। जैसे—भेंड, हाथी, हिरन आदि।
नैकटिक—वि० [सं० निकट+ठक—इक] निकटवर्ती। पास का।
नैकट्य—पु० [सं० निकट+ष्यञ्] निकटता। नजदीकी।
नैकधा—अव्य० [सं० नैक+धाच्] अनेक प्रकारो से। अनेक रूपों मे।
नैक-भेद—वि० [सं० ब० स०] विभिन्न प्रकार का। अलग तरह का।
नैक-शृंग—पु० [सं० ब० स०] विष्णु।
नैकषेय—पु० [सं० निकषा+ढक्—एय] रावण की माता, निकषा के वशज।
नैकृतिक—वि० [सं० निकृति+ठक्—इक] दूसरो की हानि करके

निष्ठुरतापूर्वक जीविका चलानेवाला। २ कटु बातें कहनेवाला। कटु-भाषी।

नैगम—वि० [सं० निगम+अण्] १ निगम-संबंधी। निगम का। २ वेदों अथवा अन्य धर्म ग्रन्थों में लिखा हुआ। ३ जिसमें ब्रह्म के स्वरूप आदि का प्रतिपादन हो। आध्यात्मिक।

पु० १ उपनिषद्। २ नय। नीति।

नैगम-नय—पु० [सं० कर्म० स०] जैन दर्शन का वह तर्क या सिद्धान्त कि सामान्य के बिना विशेष और विशेष के बिना सामान्य नहीं रह सकता।

नैगमिक—वि० [सं० निगम+ठक्—इक] १ जिसका संबंध वेदों से हो। २ वेदों से निकला हुआ।

नैगमेय—पु० [सं०] १ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २ दे० 'नैगमेष।'

नैगमेष—पु० [सं०] बालकों का एक ग्रह जिसका प्रकोप होने पर बच्चे रोते है, उनके मुँह से फेन गिरता है तथा ज्वर आदि विकार भी होते है।

नैघंटुक—पु० [सं० निघंटु+ठक्—क] वैदिक शब्दों की वह शब्दावली, जिसकी व्याख्या यास्क ने अपने निरुक्त में की है।

नैचा—पु० [फा० नैच] नरकट की नलियों का वह ढाँचा जो हुक्के में लगा होता है और जिसके द्वारा तमाखू का धूआँ खींचा जाता है।

नैचाबंद—पु० [फा० नैच, बन्द] हुक्का के नैचे बनानेवाला।

नैचाबंदी—स्त्री० [फा० नैच बन्दी] नैचा बनाने का काम और पारिश्रमिक।

नैचिक—पु० [सं० नीचा+ठक्—इक] बैल का माथा।

नैचिकी—स्त्री० [सं० नीचि=गोशिरोभाग+कन्+अण्+ङीप्] अच्छी गाय।

नैंची—स्त्री० [हि० नीचा] कूएँ के पास की वह ढालुई जमीन जिस पर से बैल मोट खींचते समय नीचे आते-जाते रहते हैं।

नैचुल—वि० [सं० निचुल+अण्] निचुल-संबंधी। हिज्जल वृक्ष-संबंधी।

पु० निचुल या हिज्जल का बीज या फल।

नैज—वि० [सं० निज+अण्] निज का। निजी।

नैटो†—स्त्री० [देश०] दुद्धी या दुधिया घास।

नैड़ो*—क्रि० वि० नड़े (नजदीक)।

नैड़ो*—क्रि० वि०=नेड़े।

नैतल—पु० [सं० नितल+अण्] नीचे का लोक।

नैतल-सद्म (न्)—पु० [सं० ब० स०] नैतल में रहनेवाले यम।

नैतिक—वि० [सं० नीति+ठक्—इक] [भाव० नैतिकता] १ नीति का। नीति-संबंधी। जैसे—नैतिक विचार। २ नीति के अनुसार होनेवाला। जैसे—नैतिक उत्तरदायित्व। ३ नीति युक्त आचरण या व्यवहार से संबंध रखनेवाला। जैसे—नैतिक पतन।

नैतिकता—स्त्री० [सं० नैतिक+तल्—टाप्] नीति शास्त्र के सिद्धान्तों का होनेवाला ज्ञान और उनके अनुसार किया जानेवाला अच्छा आचरण।

नैत्य—वि० [सं० नित्य+अण्] १ नित्य-संबंधी। नित्य का। २ नित्य या रोज होनेवाला। दैनिक।

पु० नियमित रूप से और नित्य किये जानेवाले काम। नित्य-कर्म।

नैत्यक—वि० [सं० नैत्य+कन्] नित्य होने या किया जानेवाला। नैत्य।

पु० व्यापारिक अथवा कार्यालय संबंधी कार्यों का नित्य का बँधा हुआ क्रम। (रूटीन)

नैत्र—वि० [सं०] नेत्रों या आँखों से संबंध रखनेवाला।

नैत्रिकी—स्त्री० [सं० नेत्र से] आधुनिक चिकित्सा की वह शाखा जिसमें नेत्र-संबंधी रोगों और उनकी चिकित्सा-प्रणाली की विवेचना होती है। (आप्थेलमॉलोजी)

नैदाघ—वि० [सं० निदाघ+अण्] १ निदाघ-संबंधी। निदाघ का। २ गरमी या ग्रीष्म ऋतु में होनेवाला।

पु० गरमी का मौसम। ग्रीष्म ऋतु।

नैदाघिक—वि० [सं० निदाघ+ठञ्—इक] नैदाघ।

नैदाघीय—वि० [सं० निदाघ+छण—ईय] निदाघ-संबंधी। नैदाघ।

नैदानिक—वि० [सं० निदान+ठक्—इक] निदान संबंधी। रोगों के निदान से संबंध रखनेवाला। (क्लिनिकल)

पु० वह जो विशिष्ट रूप से रोगों का निदान करता हो।

नैदानिकी—स्त्री० [सं० नैदानिक से] रोगों का निदान करने की विद्या या शास्त्र।

नैदेशिक—वि० [सं० निदेश+ठक्—इक] १ निदेश-संबंधी। २ निदेश का पालन करनेवाला।

पु० नौकर। सेवक।

नैद्र—वि० [सं० निद्रा+अण्] निद्रालु।

नैधन—वि० [सं० निधन+अण्] जिसका निधन या नाश होने को हो। नश्वर।

पु० जन्मकुंडली में लग्न से आठवाँ घर जिसके आधार पर मृत्यु का विचार होता है। (ज्यो०)

नैधानी—स्त्री० [सं० निधान+अण्+ङीप्] भू-भाग अलग अलग करने के लिए बनाई जानेवाली ऐसी सीमा जिसमें कोयल, भूसी आदि से भरे हुए घड़े गड़े हों। (स्मृति)

नैधेय—वि० [सं० निधि+ढक्—एय] निधि-संबंधी। निधि का।

नैन†—पु० [सं० नयन] १ आँख। नयन। २ दीवार में से धूआँ निकलने का छेद। धूम-नेत्र। धमाला।

*पु० [सं० नवनीत] मक्खन।

*पु० अन्याय।

नैन-पटी—स्त्री० [सं० नयन+पट] आँख या आँखों पर बाँधी जानेवाली पट्टी।

नैनसुख—पु० [सं० नयन+सुख] एक प्रकार का सफेद चिकना। सूती कपड़ा।

नैना*—पु० [सं० नयन] आँख। नेत्र।

†अ० नवना।

†स०=नवाना।

नैनू—पु० [हि० नैन=आँख] पुरानी चाल की एक प्रकार की बूटीदार मलमल।

†पु० [सं० नवनीत] मक्खन।

नैपातिक—वि० [सं० निपात+ठक्—इक] निपात-संबंधी।

नैपाल—वि०[स० नेपाल+अण्] नेपाल देश-सबधी। नेपाल का।
पु०१ नेपाल निब। २. एक प्रकार की ईख। ३ नेपाल देश।

नैपालिक—वि० [स० नेपाल+ठक्—इक] नेपाल मे बनने, होने या रहने वाला।
पु० ताँबा।

नैपाली—वि०[हि० नैपाल] नैपाल देश का।
पु०१ नेपाल देश का निवासी।
स्त्री० [स०] १. नव-मल्लिका। निवारी। २ मैनसिल। ३ नील का पौधा। ४ एक प्रकार की निर्गुंडी।
स्त्री०[हि० नैपाल] नैपाल देश की बोली या भाषा।

नैपुण्य—पु०[स०निपुण+ष्यञ्]१ निपुणता। २ ऐसा कार्य या विषय जिसके लिए निपुणता आवश्यक हो।

नैभृत्य—पु० [स० निभृत+ष्यञ्] १ नम्रता। विनय। २ छिपाव। दुराव। ३ स्थिरता।

नैमन्त्रणक—पु०[स० निमन्त्रण+वुञ्—अक] बहुत से लोगो को बुलाकर कराया जानेवाला भोजन। भोज। दावत।

नैमय—पु०[स०] व्यवसायी। रोजगारी।

नैमित्त—वि०[स० निमित्त+अण्]१ निमित्त-सबधी। २ निमित्त से उत्पन्न। ३ चिह्न-सबधी।

नैमित्तिक—वि०[स० निमित्त+ठक्—इक]१ जो किसी निमित्त से किया जाय। २ जो किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए हो। जैसे—नैमित्तिक कर्म। ३ आकस्मिक। अप्रायिक।
पु० ज्योतिषी।

नैमित्तिक प्रलय—पु०[स०] वेदात के अनुसार प्रत्येक कल्प के अत मे होनेवाला तीनो लोको का क्षय या पूर्ण विनाश। ब्राह्म प्रलय।

नैमित्तिक लय—पु०[स०कर्म०स०] एक प्रकार का प्रलय जिसमे बारहो सूर्य उदित होते है और १०० वर्ष अनावृष्टि होती है। (गरुड पुराण)

नैमिश—पु०=नैमिष।

नैमिष—वि०[स० निमिष+अण्]१ निमिष-सबधी। २ क्षणिक।
पु०१ नैमिषारण्य तीर्थ। २ एक प्राचीन जाति जो महाभारत के समय यमुना के किनारे बसी थी।

नैमिषारण्य—पु०[सं० नैमिष-अरण्य, कर्म०स०] एक प्राचीन वन जो आजकल के सीतापुर जिले मे पडता है और एक प्रसिद्ध तीर्थ है। नीमखार।

नैमिषि—पु० [स० नि√मिष्+क, निमिष+इञ्] नैमिषारण्य का निवासी।

नैमिषीय—वि०[स० निमिष+छण्—ईय] निमिष-सबधी। निमिष का।

नैमिषेय—वि० [निमिष+ढक्—एय] १ नैमिष-सबधी। २. नैमिषारण्य का।

नैमेय—पु०[स० नि√मि (लेनदेन)+यत्+अण्]१ वस्तुओ का अदला-बदला। विनिमय। २. रोजगार। वाणिज्य।

नैयग्रोध—पु०[स० न्यग्रोध+अण्, ऐ—आगम] बट वृक्ष का फल।

नैयत्य—वि०[स० नियत+ष्यञ्] नियत, प्रतिष्ठित या स्थिर होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

नैयमिक—वि०[स० नियम+ठक्—इक]१. नियम-सबधी। २ नियम के अनुसार होने या किया जानेवाला।

नैया†—स्त्री०=नाव।

नैयायिक—पु०[स० न्याय+ठक्—इक]न्याय दर्शन का ज्ञाता। न्याय-वेत्ता।

नैरग—पु०[फा०]१. अद्भुत या विलक्षण चीज या बात। २ इद्रजाल। जादू। ३ कपट। छल। धोखा।

नैरगबाज—वि०[फा०] [भाव० नैरगबाजी]१ मायावी। जादूगर। २ कपटी। छली।

नैरगी—स्त्री० [फा०] १ दे० 'नैरग।' २. चालबाजी। धूर्तता। ३ चित्र की चचलता।

नैरंजना—स्त्री० [स०] फल्गु नदी का प्राचीन नाम।

नैरतर्य—पुं० [स० निरतर+ष्यञ्] निरतरता।

नैरति—स्त्री०[स०नैर्ऋत्य]दक्षिण-पश्चिम के बीच की दिशा। नैर्ऋत्य कोण।

नैर*—पु०[स० नगर]१ नगर। शहर। २ जनपद। देश।

नैरपेक्ष्य—पु०[स० निरपेक्ष+ष्यञ्]१ निरपेक्षता। २ उपेक्षा।

नैरयिक—वि०[स० निरय+ठक्—इक] नरक-सबधी। २ नरक मे रहने या होनेवाला।

नैरर्थ्य—पु०[स० निरर्थ+ष्यञ्] निरर्थकता।

नैरात्म्य—पु०[स० निरात्मन्+ष्यञ्] १ निरात्म होने की अवस्था या भाव। २ एक दार्शनिक सिद्धात जिसमे यह प्रतिपादित किया जाता है कि वास्तव मे आत्मा का कोई अस्तित्व नही है। (निहिलिज्म)

नैरात्म्यवाद—पु०=अनात्मवाद।

नैराश्य—पु०[स० निराश+ष्यञ्]१ निराश होने की अवस्था या भाव। ऐसी स्थिति जिसमे मनुष्य निराश हो जाता हो। ना-उम्मेदी। २ निराश होने के फलस्वरूप होनेवाली उदासी।

नैरास्य—पु०[स०] बाण चलाने का एक मत्र।

नैरिक—वि०[स० नीर+ठक्—इक]नीर या जल सबधी। जैसे—नैरिक चिह्न, नैरिक रेखा।

नैरिकेय—पु०[स०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे जल विशेषत भूतल के नीचे के जल के गुणो, नियमो, प्रवाहो विभाजनो आदि का विचार होता है। (हाइड्रॉलाजी)

नैरुक्त—वि०[स० निरुक्त+अण्]१ शब्दो की निरुक्ति या व्युत्पत्ति से सबध रखनेवाला। २ निरुक्त शास्त्र से सबध रखनेवाला।
पु०१ वह व्यक्ति जो शब्दो की निरुक्ति या व्युत्पत्ति जानता हो। २ वह ग्रथ जिसमे शब्दो की निरुक्ति या व्युत्पत्ति बतलाई गई हो।

नैरुक्तिक—वि०, पु० [सं० निरुक्त+ठक—इक]=नैरुक्त।

नैरुज्य—पु०[स० निरुज+ष्यञ्]निरुज या निरोग होने की अवस्था या भाव। आरोग्य। तदुरुस्ती। स्वस्थता।

नैरूहिक—पु०[स० निरूह+ठक्—इक] एक तरह की वस्ति। (सुश्रुत)

नैर्ऋत—वि०[स० निर्ऋति+अण्] निर्ऋति-सबधी।
पु०१ निर्ऋति की सतान अर्थात् राक्षस। २ नैर्ऋत्य अर्थात् पश्चिम-दक्षिण कोण का स्वामी राहु। ३ मूल नक्षत्र।

नैर्ऋती—स्त्री० [स० नैर्ऋत+ङीप्]१ दक्षिण-पश्चिम के मध्य की दिशा या कोण। २ दुर्गा।

नैर्ऋतेय—वि०[स० निर्ऋति+ढक्—एय] निर्ऋति सबधी।
पु० निर्ऋति देवता के वशज।

नैर्ऋत्य—वि० [सं०] निर्ऋति संबंधी।
पु० १ निर्ऋति का वंशज। निशाचर। २ दक्षिण पश्चिम की दिशा। ३ मूल नक्षत्र।

नैर्गुण्य—पु० [सं० निर्गुण+ष्यञ्] १ निर्गुणता। २ कला-कौशल आदि के ज्ञान का अभाव। ३ सत्त्व, रज और तम तीनों गुणों से रहित होने की अवस्था या भाव।

नैर्देशिक—वि० [सं० निर्देश+ठक्—इक] १ निर्देश-संबंधी। २ निर्देश के रूप में होनेवाला। ३ निर्देश का पालन करनेवाला।
पु० नौकर। भृत्य।

नैर्मल्य—पु० [सं० निर्मल+ष्यञ्] १ निर्मलता। २ विषय-वासना आदि से रहित होना।

नैर्लज्य—पु० [सं० निर्लज्ज+ष्यञ्] निर्लज्जता। बेहयाई।

नैर्वाहिक—वि० [सं० निर्वाह+ठक्—इक] १ निर्वाह-संबंधी। २ जो निर्वाह के लिए हो। ३ जिसका या जिसमें निर्वाह हो सके।

नैल्य—पु० [सं० नील+ष्यञ्] नीले होने की अवस्था या भाव। नीलापन।

नैवासिक—वि० [सं० निवास+ठक्—इक] १ निवास-संबंधी। २ निवास के अनुकूल या योग्य (स्थान)।

नैवेद्य—पु० [सं० निवेद+ष्यञ्] देवता या मूर्ति को भेंट की या चढ़ाई हुई खाद्य वस्तु। भोग।
क्रि० प्र०—लगाना।

नैवेशिक—वि० [सं० निवेश+ठक्—इक] निवेश-संबंधी।
पु० १ गृहस्थी के उपकरण या पात्र। २ ब्राह्मण को दी जानेवाली भेंट।

नैश—वि० [सं० निशा+अण्] १ निशा-संबंधी। निशा का। २ रात में किया जाने या होनेवाला। ३ अंधकार-पूर्ण।

नैशिक—वि० [सं० निशा+ठक्—इक] नैश।

नैश्चल्य—पु० [सं० निश्चल+ष्यञ्] निश्चल होने की अवस्था या भाव। निश्चलता। स्थिरता।

नैश्चित्य—पु० [सं० निश्चित+ष्यञ्] १ निश्चित होने की अवस्था या भाव। निश्चिंतता। २ निश्चय।

नैश्रेयस (सिक)—वि० [सं० निश्श्रेयस्+अण्, निश्श्रेयस्+ठक्—इक] १ कल्याणकारक। २ मोक्ष दायक।

नैषध—वि० [सं० निषध+अण्] निषध-देश संबंधी। निषध देश का।
पु० १ निषध देश का राजा। २ राजा नल। ३ निषध देश का निवासी। ४ श्री हर्षकृत एक प्रसिद्ध संस्कृत काव्य जिसमें निषध देश के राजा नल की कथा है।

नैषधीय—वि० [सं० नैषध+छ—ईय] १ नैषध-संबंधी। २ राजा नल के संबंध का।

नैषध्य—पु० [सं० निषध+ण्य] राजा नल का वंशज।

नैषाद, नैषादि—पु० [सं० निषाद+अण्, निषाद+इञ्] निषाद का वंशज।

नैषेचनिक—पु० [सं० निषेचन+ठक्—इक] राज्याभिषेक के अवसर पर दिया जानेवाला उपहार। (कौ०)

नैष्कर्म्य—पु० [सं० निष्कर्मन्+ष्यञ्] १ निष्कर्म होने की अवस्था या भाव। २ कर्मों का परित्याग। निष्क्रियता। ३ आसक्ति और फल की कामना छोड़कर कार्य करना। ४ अकर्मण्यता और आलस्य। ५ आत्मज्ञान।

नैष्किक—वि० [सं० निष्क+ठक्—इक] १ निष्क-संबंधी। निष्क का। २ निष्क देकर खरीदा या मोल लिया हुआ।
पु० टकसाल या टकसाल का प्रधान अधिकारी।

नैष्कृतिक—वि० [सं० निष्कृति+ठक्—इक] दूसरे की हानि करके अपना प्रयोजन सिद्ध करनेवाला। स्वार्थी।

नैष्क्रमण—पु० [सं० निष्क्रमण+अण्] निष्क्रमण नामक कृत्य या संस्कार।

नैष्ठिक—वि० [सं० निष्ठा+ठक्—इक] [स्त्री० नैष्ठिकी] १ निष्ठावान्। निष्ठायुक्त। २ अंतिम और निश्चित रूप में किया जानेवाला। (डेफिनिट) ३ निश्चित। ४ दृढ़। पक्का। ५ सर्वोत्तम। ६ परिपूर्ण।
पु० ऐसा ब्रह्मचारी जो उपनयन संस्कार होने पर आजीवन गुरु के आश्रम में रहकर ब्रह्मचर्य का पालन करे।

नैष्ठुर्य—पु० [सं० निष्ठुर+ष्यञ्]=निष्ठुरता।

नैष्ठ्य—वि० [सं० निष्ठा+ण्य] निष्ठायुक्त। आचरणशील।

नैसर्गिक—वि० [सं० निसर्ग+ठक्—इक] [स्त्री० नैसर्गिकी] १ निसर्ग या प्रकृति से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। प्राकृतिक। २ निसर्ग से उत्पन्न। ३ स्वाभाविक।

नैसर्गिकी—स्त्री० [सं० नैसर्गिक से] १ वे बातें या विचार जो निसर्ग से संबंध रखती या उससे उत्पन्न होती हों। २ दार्शनिक क्षेत्रों में, यह धारणा या विश्वास कि सारी सृष्टि वास्तविक है और इसमें कोई अलौकिक या दैवी तत्त्व अथवा भाव नहीं है। ३ कला-पक्ष और साहित्य में यह सिद्धांत कि संसार में नैसर्गिक या प्राकृतिक रूप में जो कुछ वस्तुतः होता हुआ दिखाई देता है उसका अंकन या चित्रण ज्यों का त्यों उसी रूप में होना चाहिए, और उसमें आदर्शों, नैतिक विचारों आदि का आरोप नहीं किया जाना चाहिए। ४ आधुनिक धार्मिक क्षेत्र में, यह धारणा या विश्वास कि मनुष्यों में धर्म तत्त्व का आविर्भाव किसी अलौकिक या दैवी शक्ति की प्रेरणा से नहीं हुआ है, और मनुष्य ने धर्मसंबंधी सभी भावनाएँ तथा विचार नैसर्गिक या प्राकृतिक जगत से ही लिये हैं। (नैचुरलिज्म, उक्त सभी अर्थों में)

नैसर्गिकी दशा—स्त्री० [सं० व्यस्त पद] फलित ज्योतिष में ग्रहों की एक प्रकार की दशा।

नैसना†—स० [सं० नाशन] नष्ट करना।

नैसा†—वि० [सं० अनिष्ट] [स्त्री० नैसी] अनैसा। बुरा। खराब।

नैसुक†—वि० =नेसुक (थोड़ा)।

नैहर—पु० [सं० ज्ञाति, प्रा० णाति, णाई=पिता+हिं० घर] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पिता का घर। माँ-बाप का घर। पीहर। मायका। 'ससुराल' का विपर्याय।

नोआ†—पु० [हिं० नोवना] [स्त्री० अल्पा० नोइनी, नोई] दूध दुहते समय गाय के पिछले पैरों में बाँधी जानेवाली रस्सी। बंधी।

नोइनी, नोई†—स्त्री० हिं० 'नोआ' का स्त्री० रूप।

नोक—स्त्री० [फा०] [वि० नुकीला] १ किसी कड़ी चीज का वह सिरा जो बराबर पतला होता हुआ इतना सूक्ष्म हो गया हो कि सहज में दूसरी चीज के तल में गड़ या धँस सके। शंकु की

तरह का अगला सिरा। अनी। जैसे—छुरी, पेंसिल या सूई की नोक।

मुहा०—नोक दुम भागना=(क) बहुत तेजी से सीधे भागना। (ख) बेतहाशा भागना।

२ किसी चीज का आगेवाला वह सिरा जो शेष अंशों की तुलना में पतला हो। जैसे— पानी में निकली हुई जमीन की नोक। ३ कोण बनानेवाली दो रेखाओं के मिलने का स्थान या बिंदु। जैसे—चबूतरे या दीवार की नोक।

मुहा०—नोक बनाना=(क) ऐसा रूप देना कि सुन्दर और सुडौल जान पड़े। (ख) बनाव-सिंगार करना।

४ मान-मर्यादा। इज्जत। प्रतिष्ठा। ५ ऐसी टेक या प्रतिज्ञा जिसका निर्वाह या पालन आवश्यक समझा जाता हो। आन। जैसे—चलिए, किसी तरह आपकी नोक तो रह गई।

मुहा०—नोक की लेना=बहुत बढ़-बढ़कर बातें बघारना। शेखी हाँकना। उदा०—फकीर होके न ले नोक की अमीरों में। ये तुझको करनी है ऐ जान आन-बान खराब। —जान-साहब।

नोक-झोंक—स्त्री०[फा० नोक+हिं० झोंक]१ बनाव-सिंगार। सजावट। २ ठाठ-बाट। शान। जैसे—उनका हर काम नोक-झोंक से होता है। ३ तपाक। तेज। दर्प। जैसे—उस दिन तो वह बहुत नोक-झोंक से बातें करते थे। ४ खटकने या चुभनेवाली व्यंग्यपूर्ण बात। ताना। ५ आपस में होनेवाली ऐसी कहा-सुनी या वाद-विवाद जिसमें कटुता की मात्रा कम और आक्षेप तथा व्यंग्य की मात्रा अधिक हो। जैसे—आज-कल उन लोगों में खूब नोक-झोंक चल रही है।

क्रि० प्र०—चलना।

नोक-दम—अव्य० [हिं० नोक+फा० दम] ठीक सामने की ओर। बिल्कुल सीधे। जैसे—नोक-दम भागना।

नोकदार—वि०[फा०]१ जिसमें नोक हो। नोकवाला। २ मन में चुभने या भला लगनेवाला। ३ तड़क-भड़कवाला। सजीला।

नोकना—अ०[हिं० नोक] अनुराग, लोभ आदि के कारण आगे की ओर प्रवृत्त होना या बढ़ना। उदा०—रीझि रहे उत हरि इत राधा, अरस-परस दाउ नोकन।—सूर।

नोक-पलक—स्त्री०[हिं० नोक+पलक]१ चेहरे की गठन या बनावट। २ बनावट या रचना के विचार से किसी चीज के भिन्न-भिन्न अंग या अवयव। जैसे—यह जूता नोक पलक से ठीक है। उदा०—इस संस्करण में मैंने 'मधुबाला' की नोक-पलक सुधार दी है।—बच्चन। ३ पहनावे आदि के विचार से व्यक्ति का रूप-रंग। (व्यंग्य) जैसे—वकील साहब नोक-पलक से दुरुस्त थे।

नोक-पान—पु०[हिं०] १ पान के आकार का वह चमड़ा जो जूते की नोक और एड़ी पर लगा रहता है। २ देशी जूतों की बनावट में काट-छाँट, सुन्दरता या मजबूती।

नोका-झोंकी—स्त्री०=नोक-झोंक।

नोकीला—वि०=नुकीला।

नोखा†—वि०[स्त्री० नोखी]=अनोखा।

नोच—स्त्री० [हिं० नोचना] १ नोचने की क्रिया या भाव। २ झपटकर जबरदस्ती छीन लेने या छीनकर भागने की क्रिया या भाव।

पद—**नोच-खसोट**। (देखें)

नोच-खसोट—स्त्री०[हिं० नोचना+अनु० खसोटना] १ दो जीवों का परस्पर लड़ते समय अपने-अपने दाँतों, नाखूनों आदि से दूसरे के अंगों में से बाल, मांस आदि नोचना। २ दे० 'छीना-झपटी'।

नोचना—स०[सं० लुंचन?]१ किसी जमी या लगी हुई वस्तु को निर्दयता-पूर्वक झटके से खींचकर अलग करना। जैसे—पेड़ के पत्ते या सिर के बाल नोचना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

२ नाखून, दाँत, पंजे आदि से पकड़कर झटके में कुछ अंश निकालना। जैसे—गीदड़ ने बच्चे को जगह-जगह से नोच डाला था। ३ किसी के हाथ में पकड़ी हुई वस्तु बलात् उससे छीनने का प्रयत्न करना।

संयो० क्रि०—लेना।

४ किसी को किसी काम या बात के लिए इस प्रकार बार-बार तंग या परेशान करना कि ऐसा जान पड़े कि उसका अंग नोचा जा रहा है। जैसे—(क) नालायक लड़के रुपए-पैसे के लिए माँ-बाप को नोचते रहते हैं। (ख) दिवालिए को तगादा करनेवाले नोचते हैं।

पु० वह छोटी चिमटी जिससे शरीर के फालतू बाल आदि खींचकर उखाड़े जाते हैं। मोचना।

नोचा-नोची†—स्त्री०=नोच-खसोट।

नोचू—वि० [हिं० नोचना]१ नोचनेवाला। २ छीना-झपटी करनेवाला। ३ किसी काम या बात के लिए बार-बार बहुत तंग करनेवाला।

नोट—पु०[अं०]१ वह छोटा लेख जो किसी बात का ध्यान रखने-रखाने के लिए उसके संबंध में कहीं टाँक या लिख लिया गया हो। २ लिखी हुई संक्षिप्त चिट्ठी या परचा। ३ अभिप्राय, आशय, विचार आदि प्रकट करनेवाला छोटा लेख। टिप्पणी। ४ राज्य या शासन की ओर से निकाला या प्रचलित किया हुआ कागज का वह टुकड़ा जिस पर धन की संख्या या अंकित मूल्य लिखा रहता है, और यह भी लिखा रहता है कि इसे लानेवाले को राज्य या शासन इतना धन देगा। इसका प्रचलन सिक्कों की ही तरह और उनके स्थान पर होता है। जैसे—एक रुपये, पांच रुपये, दस रुपये और सौ रुपये के नोट आज-कल चलते हैं।

नोट-बुक—स्त्री०[अं०] वह छोटी कापी अथवा बही जिस पर कुछ बातें स्मरण रखने के लिए लिखी जाती हैं।

नोटिस—स्त्री०[अं०] १. विज्ञप्ति। सूचना। २. इश्तहार। विज्ञापन।

नोदन—पु०[सं० √नुद्(प्रेरणा)+णिच्+ल्युट्—अन]१ पशुओं को चलाने या हाँकने की क्रिया या भाव। २ वह कोड़ा या छड़ी जिससे पशु चलाये या हाँके जाते हैं। औगी। पैना। प्रतोदन। ३. खंडन।

नोदना—स्त्री०[सं०√नुद्+णिच्+युच्—अन, टाप्] प्रेरणा।

नोदयिता (तृ)—वि०[सं०√ नुद्+णिच्+तृच्] प्रेरित करने या आगे बढ़ानेवाला।

नोन—पु०[सं० लवण, हिं० लोन] नमक।

नोनखा—पु०[हिं० नोन+फा० अचार]१ नमकीन अचार। २ आम की फाँकों का वह अचार जो केवल नमक डालकर बनाया गया हो। ३ नमक मिली हुई बादाम की गिरी। ४ ऐसी भूमि जिसमें नोना अधिक हो।

नोनछी—स्त्री०[हिं० नोन+छार]लोनी मिट्टी।

नोनहरा—पु०[हिं० नोन] पैसा। (गधवों की बोली)

नोनहरामी†—वि०=नमक-हराम।

नोना†—वि० [हिं० नोन=नमक] [स्त्री० नोनी, भाव० नोनाई]१ खार या नमक के स्वादवाला। खारा। जैसे—इस कूएँ का पानी नोना है। नमकीन। ३ अच्छा। बढिया। ४ सलोना। सुन्दर।

पु०१ वह खारा या नमकीन अश या क्षार जो मिट्टी की पुरानी दीवारो या सीडवाली जमीन मे प्राकृतिक रूप से निकलकर ऊपर आता है।

क्रि० प्र०—लगना।

२ नोनी मिट्टी। ३ शरीफा। सीताफल। ४ प्राय नावो आदि के पेंदे मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा । उधई।

†स० दे० 'नोवना'।

नोना चमारी—स्त्री०[हि०] एक प्रसिद्ध कल्पित जादूगरनी जिसकी दोहाई मत्रो मे रहती है।

नोनिया—पु०[हिं० नोना] लोनी मिट्टी से नमक निकालने का काम करने-वाली एक जाति।

स्त्री० अमलोनी या लोनिया नामक पौधा जिसके पत्तो का साग बनता है।

नोनी†—स्त्री०[स० लवण] १ खारी या लोनी मिट्टी। नोना। २ अमलोनी या लोनिया नाम का पौधा।

वि० हि० 'नोना' का स्त्री०।

नोबुल पुरस्कार—पु० [नोबुल (व्यक्ति का नाम)+स० पुरस्कार] एक जगत् प्रसिद्ध बहुत बडा और सम्मानास्पद पुरस्कार जो प्रति वर्ष नीचे लिखे पाँच विषयो मे काम करनेवाले सर्वश्रेष्ठ व्यक्तियों को दिया जाता है—भौतिक विज्ञान, रसायन शास्त्र, चिकित्सा शास्त्र, साहित्य और शांति-रक्षा।

विशेष—यह पुरस्कार एक लाख रुपया से कुछ ऊपर का होता है , और स्वीडन के सुप्रसिद्ध व्यापारी, धनकुबेर और दानशील एल्फ्रेड बर्नहार्ड नोबुल (सन् १८३३-१८९६ई०) द्वारा स्थापित एक बहुत बड़े दान-खाते से दिया जाता है।

नोर*—वि०[स० नवल] नवीन। नया।

नोल—वि०=नार (नवल)।

स्त्री० [देश०] चिड़िया की चोंच।

नोवना—स० [स० नद्ध, हि० नढना,नहना] (गाय के पिछले पैरो मे)नोआ बाँधना। बधी बाँधना।

नोहर†—वि०[स० नोपलभ्य, प्रा० नोल्लह, या मनोहर] १ जल्दी न मिलनेवाला। अलभ्य। दुर्लभ। २ अद्भुत। अनोखा।

नौं-धरई†—स्त्री० =नाम-धराई।

नौं-धराई†—स्त्री० =नाम-धराई।

नौ-धरी†—स्त्री० =नाम-धराई।

नौ—वि०[स० नव] जो गिनती मे आठ मे एक अधिक हो। जैसे—नौखडा महल।

मुहा०—**नौ दो ग्यारह होना** =चुपचाप या धीरे मे खिसक जाना या चल देना। निकल या हट जाना।

वि०[स० नव (नया) से फा०] हाल का। नया। (प्राय यौगिक पदो के आरभ मे प्रयुक्त) जैसे—नौ-जवान, नौ-सिखुआ।

पु० [स०√नुद+डौ] १ समुद्र मे चलनेवाला जहाज। जल-यान। २ उक्त पर चलनेवाला आदमी। ३ नाविक। मल्लाह।

स्त्री०[अ०नौअ]१ ऐसी जाति या वर्ग जिसमे एक ही तरह की चीजे या जीव सम्मिलित हो। २ तरह। प्रकार।

नौकड़ा†—वि०[हिं० नौ=नव या नया+कडा (प्रत्य०)] [स्त्री० नौकडी] १ अभी हाल का। ताजा। २ नव-युवक। नौ-जवान।

पद—**नौकडा वीर** हनुमान जी।

पु०[हिं० नौ+कौडी] एक प्रकार का जूआ जो तीन आदमी हाथ मे तीन-तीन कौडियाँ लेकर खेलते है।

नौकर—पु०[फ़ा०][स्त्री० नौकरानी, भाव० नौकरी] १ वह जो घर-गृहस्थी के दौड-धूप के छोटे-मोटे काम या सेवाएँ करने के लिए वेतन देकर नियुक्त किया जाता है। भृत्य। सेवक। जैसे—नौकर भेजकर बाजार से सब चीजें मँगा लो। २ वह जो लिखा-पढ़ी, व्यवस्था आदि के कामो मे सहायता देने या उन्हे सपन्न करने के लिए वेतन पर नियुक्त किया जाता या होता है। कर्मचारी। (सर्वेन्ट) जैसे—अब कार्यालय मे कई नए लिपिक नौकर रखे गए है।

क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।

नौकरशाह—पु०[तु० +फा०] वह कर्मचारी जिसके हाथ मे पूर्ण शासन की सत्ता हो। जो नौकर होते हुए भी अपने को मालिक या शाह समझता हो।

नौकरशाही—स्त्री० [तु० नौकर+फा० शाही =शासन]१ शासन द्वारा नियुक्त कर्मचारी-वृन्द। २ एक आधुनिक शासन-प्रणाली जिसमे यह माना जाता है कि देश का वास्तविक शासन राजा या निर्वाचित प्रतिनिधियो के द्वारा नही हो रहा है, बल्कि उनके सहायकों तथा अन्य बडे-बडे सरकारी कर्मचारियों के द्वारा हो रहा है। (ब्यूरोक्रेसी)

नौकराना—पु०[तु० नौकर+हि० आना (प्रत्य०)] वह धन जो नौकर को उसके वेतन के अतिरिक्त और किसी रूप मे दिया जाता या मिलता हो। जैसे—बाजार से सौदा लाने की दस्तूरी, विशिष्ट अवसरो पर दिया जानेवाला पुरस्कार।

नौकरानी—स्त्री०[तु० नौकर+हि० आनी (प्रत्य०)] घर-गृहस्थी के काम करनेवाली दासी।

नौकरी—स्त्री० [तु० नौकर+हि० ई० (प्रत्य०)] १ नौकर बनकर किसी की सेवा करने अथवा उसके निर्देशानुसार काम करते रहने की अवस्था या भाव। २ वह पद या काम जिसके लिए वेतन मिलता हो। ३ किसी के कृपा-पात्र बने रहने के लिए किये जानेवाले कार्य।

मुहा०—**(किसी की) नौकरी बजाना**=(क) किसी की तरह-तरह की सेवाएँ करना। (ख) आदेश पालन करना। **(किसी काम या बात के लिए) नौकरी लिखाना**=किसी प्रकार की सेवा या भार अपने ऊपर लेना। जैसे—हमने तुम्हारे सब काम करने की नौकरी नहीं लिखाई है।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लगना।—लगाना।

नौकरी-पेशा—पु०[हि० नौकरी+पेशा] वह जो नौकरी करके जीविका चलाता हो।

नौ-कर्ण—पु०[स० ष० त०] जहाज या नाव की पतवार।

नौ-कर्णी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका।

नौ-कर्म (र्मन्)—पु० [स० ष० त०] जहाज या नाव चलाने का पेशा या वृत्ति। मल्लाही।

नौका—स्त्री० [स० नौ+कन्+टाप्] १ नाव। २ जहाज।

नौकाधिकरण—पु० =नावाधिकारण।

नौका-बिहार—पु० [सं० तृ० त०] नौका पर बैठकर नदी आदि की की जानेवाली सैर।

नौ-क्रम—पु० [स० ष० त०] नावो का पुल।

नौ-खडा—वि० [हि० नौ+स० खड] [स्त्री० नौखडी] नौ खडो या मजिलोवाला (मकान)।

नौगमन—पु० दे० 'नौतरण'।

नौगरही—स्त्री० =नौग्रही।

नौगरी—स्त्री० =नौग्रही।

नौग्रही—स्त्री० [स० नवग्रह] १ एक प्रकार का हार जिसमे नौग्रहो की शाति के लिए नौ प्रकार के रत्न या नग जडे रहते है। २ उक्त प्रकार का कगन।

नौचर—वि० [स० नौ√चर् (गति)+ट] जहाज पर जानेवाला।
पु० मल्लाह। माँझी।

नौचा—पु० [फा० नौच] [स्त्री० नौची] नवयुवक।

नौची—स्त्री० [फा०] १ नवयुवती। २ पेशा कमाने के उद्देश्य से कुटनी या वेश्या द्वारा पाली हुई लडकी या युवती स्त्री।

नौज—अव्य० [स० नवद्य, प्रा० नवज्ज] १ ईश्वर न करे कि कभी ऐसा हो। (शुभाकाक्षा के रूप मे) २ न हो तो न सही। (उपेक्षा सूचक) ३ ऐसा कभी न हो। (कामना-सूचक)

नौ-जवान—वि० [फा०] [भाव० नौजवानी] १ जिसमे युवावस्था का आरभ हुआ हो। २ जवान। युवक।

नौजवानी—स्त्री० [फा०] नौजवान होने की अवस्था या भाव। युवावस्था।

नौजा—पु० [अ० लौज] १ बादाम। २. चिलगोजा। ३ गले के अदर का कौआ या घटी।

नौजो—स्त्री० [फा० लौज ?] लीची।

नौजीवक—पु० =नौजीविक।

नौ-जीविक—पु० [स० ब० स०] मल्लाह। माँझी।

नौटका—वि० [हि० नौ+टक (तौल)] [स्त्री० नौटकी] १. तौल मे बहुत ही हलका। २ बहुत ही कोमल तथा सुकुमार अगोवाला।

नौटकी—स्त्री० [हि० नौटका (तौल मे बहुत हलका) स्त्री०] साधारण जनता मे अभिनीत होनेवाला एक प्रकार का लोक-नाट्य जिसका कथानक प्राय. शृगार और वीर रस से युक्त होता है। और जिसके सवाद प्राय प्रश्नोत्तरात्मक तथा पद्य प्रधान होते है। इसमे सगीत की प्रधानता होती है और दुक्कड या नगाडे पर विशेष रूप से चौबोले गाये जाते हैं।

नौडी†—स्त्री० =लौडी।

नौढ़ा*—स्त्री० =नवोढ़ा।

नौतन†—वि० =नूतन।

नौतना—स० =न्योतना (न्योता या निमत्रण देना)।

नौतनी—स्त्री० [हि० न्योतना] वर-वधू को उनके सबधियो द्वारा अपने-अपने घर बुलाकर उन्हे भोजन कराने तथा धन, वस्त्र आदि देने की एक प्रथा।

नौतम—वि० [स० नवतम] १ अत्यन्त नवीन। बिलकुल नया। २ हाल का। ताजा।
†पु० [हि० नवना] नम्रता।

नौ-तरण—पु० [स० तृ० त०] [वि० नौतरणीय, भू० कृ० नवतरित] जल-मार्ग से यात्रा करना।

नौ-तरणीय—वि० [स० तृ० त०] (नदी, समुद्र) जिसमे नौका, जहाज आदि चल सकते हो। (नैविगेबुल)

नौ-तल—पु० [स० ष० त०] वह लबा शहतीर या लोहे की पटरी जो नाव या जहाज के सबसे नीचे रहती है और जिस पर उसका सारा ढाँचा खडा होता है। (कील)

नौता†—वि० [स० नव या नूतन] हाल का। ताजा। नया।
*स्त्री० [स० नौ] नम्रता।
स्त्री० =नवता (नवीनता)।
†पु० [?] जादूगर।
पु० न्योता (निमत्रण)।

नौ-तेरही—स्त्री० [हि० नौ+तेरह] १ पुरानी चाल की वह छोटी ईंट जो नौ जौ चौडी और तेरह जौ लबी होती थी। ककई या लखौरी ईंट। २ पासे से खेला जानेवाला एक प्रकार का जूआ।
पु० =न्योतहरी (निमत्रित पुरुष)।

नौतोड—वि० [हि० नौ=नया+तोडना] नया तोडा हुआ। जो पहले-पहल जोता गया हो। जैसे—नौतोड जमीन।

नौदर†—पु० [हि० नौ+दर=दाँत] वह बैल जिसके नौ दाँत हो।

नौदसी—स्त्री० [हि० नौ+दस] महाजनी व्यवहार मे, ऋण चुकाने की वह रीति जिसमे हर नौ रुपए के बदले दस रुपए देने पडते है।

नौधा†—पु० [हि० नौ (नया)+पौधा] १ बीजो या पौधो से निकलनेवाला नया कल्ला। २ वर्षारभ मे बोई जानेवाली नील की फसल। ३ नया बाग।
वि० =नवधा।

नौन*—पु० [स० लवण] नमक।

नौनगा—वि० [हि० नौ+नग] जिसमे नौ नग या रत्न हो। जैसे—नौनगा हार।
पु० एक प्रकार का हार जिसमे नौ नग जडे रहते है।

नौना—अ० [स० नमक] १. नवना। झुकना। २ किसी के आगे नम्र या विनीत होना।
†पु० =नोना।

नौ-निहाल—पु० [फा०] १ नया पौधा। २. बालक। बच्चा।
वि० नया परतु होनहार शिशु।

नौनी†—स्त्री० =नवनीत (मक्खन)।
†स्त्री० =नोई।

नौ-नेता (तृ)—पु० [स० ष० त०] जहाज की पतवार पकडनेवाला। पतवरिया।

नौप्रभार—पु० [स० मध्य० स०] अधिक से अधिक भार का वह मान जो किसी जहाज पर लादा जा सकता हो। (टनेज)

विशेष—आज-कल जहाज की पात्रता या भार ढोने का सामर्थ्य पहले से नाप-जोखकर स्थिर कर लिया जाता है, और निश्चित हो जाता है कि इसमे इतने टन (१ टन =लगभग २७½ मन) से अधिक भार नही लदेगा।

नौ-बंधन—पु० [स० ब० स०] हिमालय का वह सर्वोच्च शृग जिस पर मनु ने प्रलय के समय अपनी नाव बाँधी थी।

नौ-बढ़—वि० [हि० नौ+बढना] जो अभी हाल मे आगे बढा अर्थात् हीन से उच्च अवस्था मे पहुँचा हो।

नौबत—स्त्री० [अ०] [वि० नौबती] १ किसी काम या बात की पारी। बारी। २ किसी अनिष्ट या अवाछनीय घटना के घटित होने की पारी या स्थिति। जैसे—सँभलकर रहो, नही तो भूखो मरने (या मार खाने) की नौबत आवेगी।

क्रि० प्र०—आना।—पहुँचना।

३ दुर्गति। दुर्दशा। जैसे—(क) इसी लिए तो तुम्हारी यह नौबत हो रही है। (ख) सीधी तरह से रहो, नही तो कोई नौबत बाकी न रखूँगा। ४ नगाडा, शहनाई आदि मागलिक बाजे जो मदिरो, महलो आदि मे नित्य कुछ नियमित अवसरो या समयो पर बजा करते है।

क्रि० प्र०—बजना।—बजाना।

पद—नौबत-खाना। (दे०) **नौबत बजाकर**=डके की चोट। खुले आम।

मुहा०—नौबत झडना=नियत समय पर नौबत या मागलिक बाजे बजना। **(किसी के यहाँ) नौबत बजना**=(क) खूब आनद-मगल होना। (ख) प्रताप और वैभव की खूब वृद्धि होना। **नौबत बजाना**=ऐश्वर्य, प्रभुत्व या शान दिखलाना।

नौबत-खाना—पु० [अ० नौबत+फा० खान] द्वार या फाटक के ऊपर का वह स्थान जहाँ नौबत बजती है। नक्कार-खाना।

नौबती—वि० [अ०] १ बारी से होनेवाला। जैसे—नौबती बुखार। २ जिसके घटित होने की सभावना हो।

पु० १ नौबत बजानेवाला। नक्कारची। २ महलो के फाटक पर का पहरेदार। ३ बिना सवार का सजा हुआ घोडा। कोतल घोडा। ४ बहुत बडा तबू। शामियाना।

नौबतीदार—पु० [अ० नौबत+फा० दार] राजा-महाराजाओ के महलो और शामियानो का पहरेदार।

नौबलाध्यक्ष—पु०=नौसेनाध्यक्ष।

नौबहार—स्त्री० [फा०] वसत ऋतु।

नौमासा—वि० [स० नवमास] नौ महीने का।

पु० १ स्त्री के गर्भ का नवाँ महीना। २ उक्त अवसर पर होनेवाली रसम या सस्कार।

नौमि*—अव्य० [स० नमामि का अपभ्रश] मैं प्रणाम करता हूँ।

स्त्री० =नवमी या नौमी (तिथि)।

नौरंग—पु० [स० नव-रग] एक प्रकार की चिडिया।

पु० औरग (औरगजेब बादशाह) का अपभ्रष्ट रूप।

नौरंगा—पु० [इ० नौरग] वह स्थान जहाँ नये पौधे उगाये, रोपे या लगाये जाते है। केडवारी। (नर्सरी)

नौरंगी†—स्त्री०=नारगी।

नौ-रतन—पु० [स० नव-रत्न] १ नौ प्रकार के रत्नो का समूह। २ नौ-नगा नाम का गले मे पहनने का गहना। ३ एक प्रकार की बढिया मीठी चटनी जिसमे नौ तरह की चीजे पडती है।

नौरता—पु० [स० नवरात्र] १ नवरात्र। २ बुदेलखड, ब्रज आदि मे मनाया जानेवाला एक प्रकार का त्योहार जिसमे कुमारी लडकियाँ गौरी या दुर्गा की पूजा करती है।

नौरसा—पु० [देश०] एक तरह का साग।

नौरस—वि० [स० नव=नया+रस] १ (फलो, फूलो आदि के सबध मे) जिसमे नया रस आया हो अर्थात् हाल का। ताजा। २ नई उमर का। नौ-जवान। युवा।

नौरातर—पु० =नवरात्र।

नौरूप—पु० [हि० नौ+रोपना] नील की फसल की पहली कटाई।

नौरोज—पु० [फा० नौरोज] १ नया दिन। २ साल का नया दिन विशेषत ईरानियो मे फवरदीन मास का पहला दिन।

विशेष—ईरानी लोग इस दिन बहुत बडा उत्सव मनाते है।

नौल—पु० [अ० नॅवेल] जहाज पर माल लादने का भाडा।

†वि०=नवल।

नौ-लखा—वि० [स्त्री० नौ-लखी] १ जिसका मूल्य नौ-लाख रुपयो के बराबर हो। २ जडाऊ और बहुमूल्य।

नौलखी—स्त्री० [?] करघे मे ताने को दबाने के लिए उस पर रखी जानेवाली वह लकडी जिसमे भारी पत्थर बँधे रहते है। (जुलाहे)

नौला†—पु० नेवला।

नौलासी—वि० [स० नवल] कोमल। नरम। मुलायम।

नौलेवा—पु० [हि० नौ=नया+लेवा=मिट्टी] वह मिट्टी जो बाढ आने पर नदी के किनारो पर जमा हो जाती है।

नौवाब—पु० [भाव० नौवाबी]=नवाब।

नौ-विज्ञान—पु० [स० ष० त०] वह विज्ञान जिसमे समुद्र मे जहाज आदि चलाने की कला या विद्या का विवेचन होता है। (नॉटिकल सायन्स)

नौशा—पु० [फा० नौश] [स्त्री० नौशी] दूल्हा। वर।

नौशी—स्त्री० [फा०] नववधू। दुलहिन।

नौशेरवाँ—पु० [फा०] ईरान देश का एक सम्राट जो अपनी न्यायप्रियता के लिए विश्व मे प्रसिद्ध है। (५३१-५७९ ई०)

नौसत—वि० [हि० नौ+सात] सोलह।

पु० सोलहो शृगार। उदा०—नौसत साजे चली गोपिका गिरवर पूजा हेत।—सूर।

नौ-सफर—वि० [फा०+अ०] जो पहले-पहल सफर या यात्रा कर रहा हो।

नौसर—वि० [हि० नौ+सर=लडी] नौ-लडो या लडियोवाला। उदा०—यो तो म्हाँरे नौसर हार।—मीराँ।

पु० [हि० नौ+सर=बाजी] १ ताश के कुछ विशिष्ट खेलो मे ऐसे पत्ते या सर जिसके आने पर नौ-गुना दाँव दिया या लिया जाता है। २ बहुत बडी चालबाजी, धूर्तता और धोखेबाजी।

नौसरा—पु० [हि० नौ+सर] नौ लडियोवाला बडा हार।

नौसरिया—वि० [हि० नौसर] १ बहुत बड़ा धूर्त और धोखेबाज। २ जालसाज। जालिया।

नौसादर—पु० [फा० नौशादर] एक प्रकार का तीक्ष्ण झालदार क्षार या नमक, जिसका उपयोग औषधों में होता है।

नौसार—स्त्री० [हि० नोन+सार, स० लवणशाला] वह स्थान जहाँ नोनी मिट्टी से नमक बनाया जाता हो।

नौसिख†—वि०=नौसिखिया।

नौसिखिया—वि० [स० नवशिक्षित प्रा० नवसिक्खिअ] जिसने अभी हाल में कोई काम सीखा हो और फलतः जो अभी तक उस काम में कुशल या निपुण न हुआ हो।

नौसिखुआ†—वि०=नौसिखिया।

नौ-सेना—स्त्री० [मध्य० स०] वह सेना जो जहाजों पर रहती और समुद्र में रहकर शत्रुओं से युद्ध करती है। (नैवी)

नौसेनाध्यक्ष—पु० [स० नौसेना-अध्यक्ष, ष०त०] नौ सेना का सबसे बड़ा अधिकारी। (एडमिरल)

नौसेनापति—पु०=नौसेनाध्यक्ष।

नौ-सेवा—स्त्री० [स० मध्य० स०] १ नौ सेना में की जानेवाली सेवा या नौकरी। २ नौसेना में काम करनेवालों का समूह। (नॉवल सर्विस)

नौसैनिक—वि० [स० नौसेना+ठक—इक] नौसेना संबंधी।

नोहँड—पु० [स० नव नया+हि० हाँडी] मिट्टी की नई हाँडी। कोरी हँडिया।

नोहँडा—पु० [स० नव+भांड] पितृपक्ष जिसमें मिट्टी के पुराने बरतन फेंककर उनके स्थान पर नये बरतन रखे जाते हैं।

नोहर—स्त्री० [?] अँगड़ाई।

न्यक—पु० [स०] रथ का एक अंग।

न्यकु—वि० [स०] बहुत तेज चलने या दौड़नेवाला।
पु० १ एक प्रकार का बारहसिंघा या हिरन। २ वह शिष्य जो गुरु के पास रहकर विद्यार्जन करता हो।

न्यकु-भूरुह—पु० [स० उपमि० स०] श्योनाक नामक वृक्ष। सोनापाठा।

न्यकुसारिणी—स्त्री० [स०] एक प्रकार का वैदिक छंद।

न्यग—पु० [स० नि√अज् (स्पष्ट होना)+घञ्] १ चिह्न। निशान। २ जाति। प्रकार।

न्यचन—पु० [स० नि०+अचन, प्रा० स०] १ नीचे की ओर मुड़े हुए होने की अवस्था या भाव। २ नीचे फेंकना। ३ छिपने का स्थान। ४ विवर। बिल।

न्यंचनी—स्त्री० [स० न्यचन+ङीष्] गोद।

न्यचित—भू० कृ० [स० नि√अच्+णिच्+क्त] १ नीचे की ओर झुकाया हुआ। २ नीचे फेंका हुआ।

न्यंजलिका—स्त्री० [स० नि-अंजलिका, प्रा० स०] नीचे झुकाई हुई अंजली।

न्यक्करण—पु० [स० न्यक्√कृ (करना)+ल्युट्—अन] (किसी को) नीचा दिखाना।

न्यक्कार—पु० [स० न्यक्√कृ+घञ्] तिरस्कार।

न्यक्ष—वि० [स० नि-अक्षि, ब० स०, षच्] १ अधम। निकृष्ट। २ समग्र।
पु० १ भैसा। २ परशुराम।

न्यग्भाव—पु० [स० न्यक्-भाव, ष० त०] [भू० कृ० न्यग्भावित] नीची अवस्था में लाये जाने अथवा तिरस्कृत किये जाने का भाव।

न्यग्रोध—पु० [स० न्यक्√रुध् (रोकना)+अच्] १ बड़ का पेड़। बरगद। २ शमी वृक्ष। ३ मोहनौषधि। ४ मूसाकानी। मूषिकर्णी। ५. विष्णु। ६ शिव। ७ बाँह। ८ लबाई की एक नाप जो उतने विस्तार की होती है जितना विस्तार पूरी तरह से दोनों हाथ फैलाने पर एक हाथ की उँगलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उँगलियों के सिरे तक होता है।

न्यग्रोध-परिमंडल—पु० [स० ब० स०] वह जिसकी लबाई-चौड़ाई एक व्याम या पुरसा हो। (मत्स्यपुराण)

न्यग्रोध-परिमंडला—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप्] कठोर स्तनों, विशाल नितबों और क्षीण कटिवाली फलतः सुंदरी स्त्री। (स्त्रियों का एक प्रकार या भेद)

न्यग्रोधा—स्त्री० [स० न्यग्रोध+टाप्]=न्यग्रोधी।

न्यग्रोधादिगण—पु० [स० न्यग्रोध-आदि, ब० स०, न्यग्रोधादि-गण, ष० त०] वैद्यक में वृक्षों का एक गण जिसके अन्तर्गत बरगद, पीपल, गूलर आदि कई वृक्ष सम्मिलित है।

न्यग्रोधिक—वि० [स० न्यग्रोध+ठन्—इक] (स्थान) जहाँ बहुत से वट-वृक्ष हों।

न्यग्रोधिका—स्त्री० [स० न्यग्रोधी+कन्—टाप्, ह्रस्व] विषपर्णी।

न्यग्रोधी—स्त्री० [स० न्यग्रोध+ङीष्] विषपर्णी।

न्यच्छ—पु० [स० नि-अच्छ, प्रा० स०] एक प्रकार का चर्मरोग जिसमें शरीर पर सफेद रंग के चकत्ते पड़ जाते है।

न्यय—पु० [स० नि√इ (गति)+अच्] क्षय। नाश।

न्यर्बुद—वि० [स० नि+अर्बुद, प्रा० स०] दस अरब।

न्यर्बुदि—पु० [स० नि-अर्बुदि, ब० स०] एक रुद्र का नाम।

न्यसन—पु० [स० नि√अस् (फेंकना)+ल्युट्—अन] १ किसी के पास कोई चीज जमा करना। २ अपने अधिकार से जाने देना। ३ उल्लेख करना।

न्यस्त—भू० कृ० [स० नि√अस्+क्त] १ किसी स्थान पर विशेषतः नीचे धरा या रखा हुआ। २ जमाया, बैठाया या स्थापित किया हुआ। ३ चुनकर रखा या सजाया हुआ। ४ चलाया या फेंका हुआ। (अस्त्र) ५ छोड़ा या त्यागा हुआ। परित्यक्त। ६ न्यास के रूप में या अमानत रखा हुआ। जमा किया हुआ। ७ (धन) जो किसी विशिष्ट कार्य की सिद्धि के लिए अलग किया या निकाला गया हो। ८ छिपा या दबा हुआ। निहित।

न्यस्तलिंग—पु० दे० 'लिंग' (न्याय-शास्त्रवाला विवेचन)।

न्यस्त-शस्त्र—वि० [स० ब० स०] १. जिसने डर या हारकर हथियार रख दिये हों। २ जिसने हथियार न चलाने की प्रतिज्ञा कर ली हो।
पु० पितृ लोक।

न्यस्य—वि० [स० नि√अस्+यत् बा०] १ न्यास के रूप में रखे जाने के योग्य। २ चलाये या छोड़े जाने के योग्य। ३ छिपा या दबाकर रखे जाने के योग्य।

न्यांकव—वि० [स० न्यंकु+अण्] रंकु या बारहसिंघे से संबंध रखने या उससे होनेवाला।

पु० रंकु या बारहसिंघे की खाल।

न्याइ†—पु० न्याय।
 †अव्य०=नाईं (तरह)।

न्याउ†—पु०=न्याय।

न्याक्य—पु०[सं० नि√अक् (टेढ़ी चाल)+ण्यत्] भुना हुआ चावल। फरुही।

न्यात—पु० [हिं० न्याति] जाति के लोग। नातेदार। सबंधी। उदा०—न्यात कहे कुल नासी रे।—मीराँ।

न्याति*—स्त्री० [सं० ज्ञाति, प्रा० णाति] जाति।

न्याद—पु० [सं० नि√अद् (खाना)+ण] १ भक्षण करना। खाना। २ आहार। भोजन।

न्यान—स्त्री०[?]लद्दाख, सिक्किम, तिब्बत आदि मे होनेवाली भूरे रग की एक तरह की भेड।

न्याना†—वि० [सं० अज्ञान] १ जो कुछ न जानता हो। अनजान। निर्बोध। २ छोटी उमर का। अल्प-वयस्क। (पश्चिम)

न्याय—पु० [सं० नि√इ (गति)+घञ्] १ कोई काम ठीक तरह से पूरा करने का ढग, नियम या योजना। २ उचित, उपयुक्त या ठीक होने की अवस्था या भाव। ३ ऐसा आचरण या व्यवहार जिसमे नैतिक दृष्टि से किसी प्रकार का अनौचित्य, पक्षपात या बेईमानी न हो। ४ प्रमाणो द्वारा विषयो का किया जानेवाला परीक्षण। ५ विवाद आदि के प्रसगो मे, आधिकारिक अथवा प्रामाणिक रूप से निष्पक्ष होकर यह निर्णय या निश्चय करना कि कौन-सा पक्ष उचित और कौन-सा अनुचित है, अथवा भविष्य मे कार्य का निर्वाह किस प्रकार होना चाहिए और किसे कौन-सी वस्तु अथवा क्या दड मिलना चाहिए। ६ उक्त के सबध मे आधिकारिक रूप से होनेवाला निर्णय या निश्चय। ७ व्याकरण मे, ऐसा नियम या सिद्धात जिसका पालन सब जगह समान रूप से होता हो। ८ तुल्यता। समानता। ९ प्राय कहावत या लोकोक्ति के रूप मे प्रचलित वह दृष्टात वाक्य जो किसी ऐसे तथ्य का सूचक हो जो प्रस्तुत घटना या प्रसग मे ठीक बैठता या लगता हो। जैसे—आपकी यह बात तो देहली-दीपक न्याय से दोनो तरफ ठीक बैठती है।

विशेष—हमारे यहाँ सस्कृत मे इस प्रकार के बहुत से न्याय या दृष्टात-वाक्य प्रचलित थे जिनमे से कुछ का अब भी उपयुक्त अवसरो पर प्रयोग होता है। जैसे—अध-गज न्याय, अरण्य-रोदन न्याय, कपिथ्य न्याय, घुणाक्षर न्याय, पिष्ट पेषण न्याय, बीजाकुर न्याय आदि। इस प्रकार के न्याय या तो कुछ प्रसिद्ध तथ्यो पर आश्रित होते है या प्रचलित लोक-कथाओ पर, और सस्कृत साहित्य मे प्राय प्रयुक्त होते हुए दिखाई देते है। इनमे से कुछ प्रसिद्ध न्यायो के आशय यथा-स्थान देखे जा सकते है।
१० हमारे यहाँ के छ मुख्य आस्तिक दर्शनो मे से एक प्रसिद्ध दर्शन-या शास्त्र जिसके कर्ता गौतम मुनि है और जिसमे इस बात का विवेचन है कि किस प्रकार किसी पदार्थ या विषय का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तार्किक दृष्टि से उसके सब अगो या पक्षो के विकारो का निरूपण या योजना होनी चाहिए।

विशेष—उक्त दर्शन मे, तर्क-वितर्क के नियमो के निरूपण के सिवा आत्मा, इद्रिय, पुनर्जन्म, सुख-दु ख आदि के स्वरूपो का भी विवेचन है, और कहा जाता है कि इन बातो का यथार्थ ज्ञान होने पर ही मनुष्य को अपवर्ग या मोक्ष मिल सकता है।

११ तर्कशास्त्र। १२ तर्कशास्त्र मे, वह सम्यक् तर्क जो प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, अनय और निगमन नामक पाँचो अवयवो से युक्त हो। १३ विष्णु का एक नाम।
 *वि० १. उचित। ठीक। वाजिब। २ तुल्य। समान।
 अव्य० की तरह। के समान।

न्यायकर्ता(र्तृ)—वि०[सं० ष० त०] (विवाद आदि का) न्याय करनेवाला। पु० न्यायालय का वह अधिकारी जो विवादो का न्याय या फैसला करता है।

न्यायज्ञ—पु० [सं० न्याय√ज्ञा (जानना)+क] न्याय-शास्त्र का ज्ञाता।

न्यायत. (तस्)—अव्य० [सं० न्याय+तस्] न्याय की दृष्टि या विचार से। अर्थात् उचित और सगत रूप से। न्यायपूर्वक।

न्याय-पथ—पु० [सं० ष० त०] न्याय का मार्ग।

न्याय-पर—वि० [सं० ब० स०] [भाव० न्यायपरता] १. न्यायपूर्ण आचरण करनेवाला। २. न्याय के अनुसार ठीक।

न्याय-परता—स्त्री० [सं० न्यायपर+तल्+टाप्] न्याय पर या न्याय-परायण होने की अवस्था या भाव। न्याय-परायणता।

न्याय-परायण—वि० [सं० स० त०] [भाव० न्याय-परायणता] न्याय-पूर्ण आचरण करनेवाला।

न्याय-प्रिय—वि० [सं० ब० स०] [भाव० न्याय-प्रियता] जिसे न्याय प्रिय हो। न्यायपूर्ण पक्ष का समर्थन करनेवाला।

न्याय-मूर्ति—पु० [सं० ष० त०] राज्य के मुख्य न्यायालय के न्यायज्ञ की उपाधि। (जस्टिस)

न्यायवान् (वत्)—पु० [सं० न्याय+मतुप्, वत्व] न्यायपूर्ण आचरण करनेवाला।

न्याय-शास्त्र—पु० [सं० कर्म० स०] भारतीय आर्यो के दर्शनो मे से एक दर्शन या शास्त्र जिसमे किसी तथ्य या बात का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तार्किक दृष्टि से उसके विवेचन के नियम और सिद्धात निरूपित है। (इसके कर्ता गौतम ऋषि हैं)

न्याय-शुल्क—पु०[सं० मध्य० स०] वह शुल्क जो न्यायालय मे कोई प्रार्थना-पत्र उपस्थित करने के समय अकपत्र (स्टाम्प) के रूप मे देना पडता है। (कोर्ट फी)

न्याय-सगत—वि० [सं० तृ० त०] १ (आचरण) जो न्याय की दृष्टि से ठीक हो। २ (निर्णय) जिसमे पूरा पूरा न्याय हो। (जस्ट)

न्याय-सभा—स्त्री० [ष० त०] अदालत। वह सभा जहाँ न्याय होता हो अर्थात् कचहरी।

न्याय-सभ्य—पु० [सं०मध्य० स०] फौजदारी के कुछ खास-खास मुकदमो का विचार करते समय दौरा जज की सहायता करने के लिए नियुक्त सभ्यगण, जिनकी सख्या प्राय ३ से ७ तक होती है। इनसे न्याया-धीश का मत भेद होने पर मामला उच्च न्यायालय मे भेज दिया जाता है। (जूरी)

न्यायाधिकरण—पु० [सं० न्याय-अधिकरण, ष० त०] विवाद-ग्रस्त विषयो पर निर्णय देनेवाला न्यायालय या अधिकारी वर्ग। (ट्रिब्यूनल)

न्यायाधिपति—पु०[सं० न्याय-अधिपति ष०त०] दे० 'न्यायमूर्ति'।

न्यायाधीश—पु०[सं० न्याय-अधीश, ष०त०] न्यायालय का वह अधिकारी जो विवादग्रस्त विषयो पर अपना निर्णय देता है।

न्यायालय—पु०[स०न्याय-आलय, ष० त०] वह स्थान जहाँ पर न्यायाधीश न्याय करता हो। अदालत। कचहरी। (कोर्ट)

न्यायिक-अधिकारी—पुं० [स० न्याय से] न्याय विभाग का प्राधिकारी। (जुडिशियल अथॉरिटी)

न्यायिक-निर्णय—पु० [स० न्याय से] १ न्यायासन पर बैठकर किसी मामले के सबध मे निर्णय देना। २ इस तरह दिया हुआ निर्णय। (एडजुडिकेशन)

न्यायी (यिन्)—पु० [स० न्याय+इनि] वह जो न्याय करता हो। बिना पक्षपात के निर्णय करनेवाला।

वि० न्यायशील।

न्यायोचित—वि०[स० तृ०त०] जो न्यायत उचित हो। न्याय-सगत।

न्याय्य—वि०[स० न्याय+यत्] न्यायोचित। न्याय-सगत।

न्यार—पु०[हि० निवार] पसही धान। मुन्यन्न।

पु० नियार। (देखे)

वि० न्यारा।

न्यारा—वि०[स० निनिकट, प्रा० निन्निअड, पु० हि० निन्यार] [स्त्री० न्यारी]१ जो पास न हो। २ अलग। जुदा। पृथक्। ३ अन्य। दूसरा। भिन्न। जैसे—यह बात न्यारी है। ४ जो अपने किसी विलक्षण गुण या विशेषता के कारण औरो से भिन्न और श्रेष्ठ हो। निराला। जैसे—मथुरा तीन लोक से न्यारी। (कहा०)

न्यारिया—पु०[हि० नियार]वह व्यक्ति जो जौहरिया, सुनारो आदि की दुकानो मे से निकाला हुआ नियार (कूडा-करकट) साफ करके उसमे से रत्न, सोने-चाँदी आदि के कण निकालने का काम करता हो।

न्यारे—क्रि० वि०[हि० न्यारा]१ अलग। पृथक्। २ दूर।

न्याव—पु० [स० न्याय] १ न्याय। इन्साफ। २ विवेक। ३ उचित और कर्तव्य का पक्ष।

मुहा०—**न्याव चुकाना**-दो पक्षो के विवाद का न्याय करना।

न्यास—पु०[स० नि√अस् (फेकना)+घञ्] [वि० न्यस्त]१ कोई चीज कही जमा या बैठाकर रखना। स्थापित करना। २ चीजे चुन या सजाकर यथा-स्थान रखना। ३ किसी चीज के कही रखे जाने के फल-स्वरूप उस स्थान पर बननेवाला चिह्न या निशान। जैसे—चरण-न्यास, नख-न्यास, शस्त्र-न्यास। ४ वह द्रव्य या धन जो किसी के पास धरोहर के रूप मे रखा जाय। अमानत। थाती। धरोहर। ५ कोई चीज किसी को देना या सौंपना। अर्पण। भेट। ६ अकित या चित्रित करना। ७ सामने लाकर उपस्थित करना या रखना। ८ छोडना। त्यागना। ९ पूजन, वदन आदि मे धार्मिक विधि के अनुसार भिन्न भिन्न देवताओ का ध्यान करते हुए इस प्रकार अपने शरीर के भिन्न भिन्न अगो का स्पर्श करना कि मानो उन अगो मे देवता स्थापित किये जा रहे हो। १० रोगी का रोग आदि शात करने के लिए मत्र पढ़ते हुए उक्त प्रकार से रोगी के भिन्न-भिन्न अगो पर हाथ रखना या उन्हे स्पर्श करना। ११. चढा हुआ स्वर उतारना या मद करना। १२. सन्यास। १३. आज-कल किसी विशिष्ट कार्य के लिए अलग किया या निकाला हुआ वह धन या सपत्ति जो कुछ विश्वस्त व्यक्तियो को इस दृष्टि से सौंपी गई हो कि वे दाता की इच्छानुसार उसका उचित उपयोग और व्यवस्था करेंगे। (ट्रस्ट)१४ उक्त प्रकार के धन की व्यवस्था करनेवाले लोगों की समिति।

न्यास-भग—पु०[ष० त०] किसी के द्वारा स्थापित किये हुए न्यास का उसके प्रबध करनेवाला द्वारा किया जानेवाला कुप्रबध और दुरुपयोग। (ब्रीच आफ ट्रस्ट)

न्यास-स्वर—पु०[ष०त०] उतारा या मन्द किया हुआ वह स्वर जिस पर गीत या राग-रागिनियो का अत या समाप्ति होती है।

न्यासिक—वि०[स० न्यास+ठन्—इक]=न्यासी।

न्यासी (सिन्)—पु०[स० न्यास+इनि]वह जिसे किसी विशेष कार्य के लिए कुछ धन या सपत्ति सौंपी गई हो। (ट्रस्टी)

न्युब्ज—वि० [स० नि√उब्ज (झुकना)+अच्]१. अधोमुख। औधा। २ कुब्ज। कुबड़ा। ३ रोग आदि के कारण जिसकी कमर झुक गई हो।

पु०१ वट वृक्ष। बरगद। २ कुश। कुशा। ३ कुश की बनी हुई स्रुवा। ४ कमरख (वृक्ष और फल)। ५ माला।

न्यून—वि०[स०नि√ऊन्(घटाना)+अच्] [भाव० न्यूनता]१ आवश्यक या उचित से कम। थोडा। २ किसी की तुलना मे घटकर या हल्का। ३ क्षुद्र। नीच। ४ जिसमे कुछ विकार आ गया हो। विकृत।

न्यून-कोण—पु०[कर्म०स०] ज्यामिति मे, वह कोण जो समकोण मे छोटा होता है। (एक्यूट ऐंगिल)

न्यून-तम—वि०[न्यून+तमप्]जो सबसे कम, थोडा घटकर या सक्षिप्त हो।

न्यूनता—स्त्री० [स० न्यून+तल्+टाप्] १ न्यून होने की अवस्था या भाव। २. अल्पता। कमी। ३ हीनता। ३ साहित्य मे अर्थालकारो का एक दोष जो उस समय माना जाता है जब वर्णन मे उपमेय से उपमान मे कोई जातिगत, धर्मगत या प्रमाणगत कमी या त्रुटि दिखाई देती है।

न्यूनन—पु०[स० नि√ऊन्+ल्युट्—अन]कम, थोडा या सक्षिप्त करना। घटाना।

न्यून-पद—पु०[स०ब०स०] साहित्य मे ऐसा कथन जिसमे कोई आवश्यक शब्द या पद अज्ञान या भूल मे छूट गया हो।

न्यूनांग—वि०[स० न्यून-अग, ब०स०] जिसमे कोई अग कम हो।

न्यूनाधिक—वि०[स० न्यून-अधिक, द्व० स०] [भाव० न्यूनाधिक्य]१ जो कुछ बातो मे कही कुछ कम और कुछ बातो मे कही कुछ अधिक हो। २. उक्त प्रकार से कम या अधिक हो सकनेवाला। (मार्जिनल)

न्यूनी*—पु०[स० नवनीत] मक्खन।

न्यों—अव्य०=यो (इस तरह)।

न्योछावर—स्त्री०=निछावर।

न्योजी—स्त्री०[?] लीची नामक फल। उदा०—कोई नारग कोई झाड चिरौजी। कोई कटहर बडहर कोई न्योजी।—जायसी।

स्त्री०=नेजा (चिलगोजा)।

न्योतना—स०[हि० न्योता+ना (प्रत्य०)]१ न्योता या निमत्रण देना। २. जान-बूझकर अपने पास बुलाना।

न्योतनी—स्त्री०[हि० न्योतना]मगल अवसरो पर दिया जानेवाला भोज।

न्योतहरी—पु०[हि० न्योता]वह व्यक्ति जिसे निमत्रण दिया गया हो। न्योता मिलने पर आया हुआ अतिथि।

न्योता—पु० [स० निमन्त्रण] १ घर मे होनेवाले किसी मागलिक उत्सव और विशेषत भोज मे सम्मिलित होन के लिए किसी से कहना। निमत्रण। २ वह धन जो शुभ अवसरो पर इष्ट-मित्रा के यहाँ से न्योता आने पर भेजा जाता है।

न्यौजी†—स्त्री० न्योजी।

न्यौरता†—पु० -नौरता (त्योहार)।

न्यौरा†—पु०१ दे० 'नेवला'। २ दे० 'नूपुर'।

न्यौला—पु० नेवला।

न्यौली—स्त्री० [स० नली] नेती, धोती की तरह हठयोग की एक क्रिया।

न्रिमल*—वि० निर्मल।

न्रीजन*—वि०- निर्जन।

न्वैंनी*—स्त्री० दे० 'नोई'।

न्हान*—पु० -नहान।

न्हाना†—अ०=नहाना।
वि० दे० 'नन्हा'।

न्हावना†—स० -नहलाना।

न्हास†—पु० -नाश।

न्हैरना†—स०[हि० निहारना का पुराना रूप] देखना। उदा०—बांझ केरा बालूडा चषि बिन न्हैरेलो पिगुल तरवर चढिया।—गोरखनाथ।

प

प—देवनागरी वर्णमाला मे पवग का पहला वर्ण, जो भाषा-विज्ञान तथा व्याकरण के विचार से ओष्ठय, स्पर्शी, अघोष, अल्पप्राण व्यजन है। पु० सगीत मे यह पचम स्वर का सक्षिप्त रूप माना जाता है। प्रत्य० कुछ शब्दो के अत मे लगकर यह निम्नलिखित अर्थ देता है—(क) पीनेवाला। जैसे—मद्यप, द्विप। (ख) पालन, रक्षा या शासन करनेवाला। जैसे—गोप, नृप।

प०—स० 'पडित' का सक्षिप्त रूप।

पक—पु० [स०√पच् (विस्तार)+घञ्, कुत्व] १ मिट्टी मिला हुआ गँदला पानी। कीचड। कर्दम। २ लेप आदि के काम मे आनेवाला उक्त प्रकार का और कोई गाढा गीला पदार्थ। जैसे—चदन-पक। ३ बहुत बडी राशि। ४ कलुषित या गन्दा करनेवाली कोई चीज। जैसे—पाप-पक।

पक-कीर—पु० [मध्य० स०] टिटिहरी नाम की चिडिया।

पक-क्रीड—वि०[ब०स०] कीचड मे क्रीडा करने या खेलनेवाला।
पु० सूअर।

पक-क्रीडनक—पु० [ब० स०] सूअर।

पक-गडक—पु०[मध्य०स०] एक प्रकार की छोटी मछली।

पक-ग्राह—पु०[स० सप्त० त० मध्य०स०] मगर।

पकच्छिद—पु०[स० पक√छिद्(काटना)+क]निर्मली।

पकज—वि० [स० पक√जन् (पैदा होना)+ड] कीचड मे उत्पन्न। होनेवाला
पु० कमल।

पक-जन्मा (न्मन्)—पु०[ब०स०]१ कमल। २ सारस पक्षी।

पकज-नाभ—पु०[ब०स०] विष्णु।

पकज-योनि—पु०[ब०स०] ब्रह्मा।

पकज-राग—पु०[ब०स०] पद्मराग-मणि।

पकज-वाटिका—स्त्री०[स०] तेरह अक्षरो का एक वर्ण-वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक भगण, एक नगण, दो जगण और अत मे एक लघु होता है। इसे 'एकावली' और 'कजावली' भी कहते हैं।

पक-जात—पु०[प० त०] कमल।

पकजासन—पु०[पकज-आसन, ब० स०] ब्रह्मा।

पकजित्—पु०[स० पक√जि (जीतना)+क्विप] गरुड के एक पुत्र का नाम।

पकजिनी—स्त्री०[स० पकज+इनि—ङीप] १ कमल के पौधो और फूलो से भरा हुआ जलाशय। कमलाकर। २ कमलिनी।

पकण—पु०[स० पक्वण, पृषो० सिद्धि] चाडाल का घर।

पक-दिग्ध—वि० [तृ०त०] (स्थान) जिस पर मिट्टी का लेप किया गया हो।

पकदिग्ध-शरीर—पु०[ब०स०] एक दानव का नाम।

पकदिग्धाग—पु० [पकदिग्ध-अग, ब० स०] कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम।

पक-धूम—पु०[ब०स०] जैनो के अनुसार एक नरक का नाम।

पक-पर्पटी—स्त्री०[प०त०] सौराष्ट्रमृत्तिका। गोपी-चदन।

पक-प्रभा—पु०[ब०स०] एक नरक का नाम जो कीचड से भरा हुआ माना गया है।

पक-भारक—वि०[ब०स०, कप्]१ कीचड मे भरा हुआ। २ मिट्टी मे पुता हुआ।

पक-मडूक—पु०[स०त०]१ घोघा। २ सीपी।

पक-रस—पु०[स० पकज-रस] पराग। उदा०—पुहुप पक-रस अम्रित सांधे।—जायसी।

पकरुह—पु०[स० पक√रुह (उत्पन्न होना)+क] कमल।

पक-वारि—स्त्री० [ब०स०] काँजी।

पक-वास—पु०[ब०स०] केकडा।

पक-शुक्ति—स्त्री०[मध्य०स०]१ ताल मे होनेवाली सीपी। २ घोघा।

पकार—पु०[स० पक√ऋ (गति)+अण्] १ कीचड और गड्ढो मे होनेवाली कुकुरमुत्ते की जाति की एक वनस्पति। २ सिघाडा। ३ जल-कुब्जक। ४ सिवार। ५ नदी का बाँध। ६ नदी का पुल।

पकिल—वि०[स० पक+इलच्] [भाव० पकिलता]१ जिसमे कीचड हो। कीचड से युक्त। जैसे—पकिल जल, पकिल ताल। २ गन्दा। मैला।

पकिलता—स्त्री० [स० पकिल+तल्—टाप्]१ १ पकिल होने की अवस्था या भाव। २ गन्दगी। मैल। ३ कलुष। कालिमा।

पकेज—पु०[स० पके√जन्(उत्पत्ति)+ड, अलुक स०] कमल।

पकेरुह—पु०[स० पके√रुह(उत्पत्ति)+क, अलुक् स०] कमल।

पकेशय—वि०[स० पके√शी (सोना) +अच्, अलुक् स०] [स्त्री० पकेशया] कीचड मे रहनेवाला।

पकेशया—स्त्री० [स० पकेशय+टाप्]जोक।

पक्ति—स्त्री०[स० √पच्+क्तिन्]१ एक ही वर्ग की बहुत-सी चीजो का एक सीध मे एक दूमरी से सटकर अथवा कुछ अतर पर स्थित होने का क्रम या शृखला। जैसे—पेडा या मकानो की पक्ति। २. आज-कल किसी काम या बात की प्रतीक्षा मे एकत्र होनेवाले लोगो की वह परपरा या शृखला, जो चढा-ऊपरी, धक्कम-धक्का आदि रोकने के लिए दूर तक एक सीध म बनाई जाती है। (क्यू) ३ बिरादरी आदि के विचार से एक साथ बैठकर भोजन करनेवालो का समूह। ४. उक्त आधार पर कुलीन और सम्मानित ब्राह्मणो का वर्ग या श्रेणी। ५ एक ही वर्ग के जतुओ, पशुओ आदि का समूह। जैसे—च्यूँटियो या बदरो की पक्ति। ६ एक ही सीध मे दूर तक बनी हुई रेखा। लकीर। ७ पुस्तको, पत्रो आदि मे लिखे या छपे हुए अक्षरो की एक सीध मे पढ़ने के क्रम से लगी हुई शृखला। ८ प्राचीन भारत मे दस-दस सैनिको का एक वर्ग। ९ छदशास्त्र मे दस अक्षरोवाले छदो की सज्ञा। १० उक्त के आधार पर दस की सूचक सख्या। ११ जीवो या प्राणियो की वर्तमान पीढी। १२ पृथ्वी। १३ गौरवपूर्ण ख्याति या प्रसिद्धि। १४. परिपक्व, पुष्ट या पूर्ण होना।

पक्ति-कटक—वि०[ष० त०]=पक्ति-दूषक।

पक्तिका—स्त्री०[स० पक्ति+कन्—टाप्]=पक्ति।

पक्ति-कृत—वि०[स० त०] श्रेणीबद्ध।

पक्ति-ग्रीव—पु०[ब०स०]रावण।

पक्तिचर—पु०[स० पक्ति√चर् (गति)+ट] कुरर पक्षी।

पक्ति-च्युत—वि०[प०त०] [भाव० पक्ति-च्युति] (व्यक्ति) जिसे उसकी बिरादरो के लोग अपने साथ बैठाकर भोजन न करते हो। बिरादरी से बहिष्कृत।

पक्ति-दूषक—वि०[ष०त०]१ जिसके साथ एक पक्ति मे बैठकर भोजन न कर सकते हो, अर्थात् जाति-च्युत या नीच। २ (ब्राह्मण) जिसे भोजन के लिए निमत्रित करना या दान देना निषिद्ध हो।

पक्ति-पावन—पु०[स०त०]१ ऐसा ब्राह्मण, जिसे स्मृतियो के अनुसार यज्ञादि मे बुलाना, भोजन कराना और दान देना श्रेष्ठ माना गया हो। २ अग्निहोत्र करनेवाला गृहस्थ।

पक्ति-बद्ध—वि०[तृ०त०] जो पक्ति अर्थात् एक सीध मे खडे या लगे हो अथवा खडे किये या लगाये गये हो।

पक्ति-बाह्य—वि० [प०त०] जाति मे निकाला हुआ। बिरादरी से बहिष्कृत।

पक्ति-रथ—पु०[ब०स०] राजा दशरथ।

पख—पु०[स० पक्ष, प्रा० पक्ख]१. मनुष्य के हाथ के अनुरूप पक्षियो का तथा कुछ जतुओ का वह अग, जिसके द्वारा वे हवा मे उड़ते है। पर।

मुहा०—पख जमना या निकलना=(क) बधन में से निकलकर इधर-उधर घूमने की इच्छा उत्पन्न होना। बहकने या बुरे रास्ते पर जाने का रग-ढग दिखाई देना। जैसे—इस लडके को भी अब पख जम रहे है। (ख) अत या मृत्यु के लक्षण प्रकट होना या समय पास आता हुआ दिखाई देना।

विशेष—बरसात के अत मे कुछ कीडो के पख निकल आते है और वे प्राय अग्नि या दीपक के प्रकाश के पास मॅडराते हुए उसी मे जल मरते है। इसी आधार पर यह मुहावरा बना है।

मुहा०—(किसी को) पख लगना=बहुत वेगपूर्वक दौडना।

२ बिजली के पखे का हाथ के आकार का वह अग जिसके घूमने मे हवा आती है।

पखडी—स्त्री०[स० पक्ष्म]फूल के अग के रूप मे रहनेवाले और पत्तियो के आकार-प्रकारवाले वे कोमल दल (या उनम से प्रत्येक) जिनके सयोग से उसका ऊपरी और मुख्य रूप बनता है। पुष्प-दल।

पखा—पु०[हि० पख] [स्त्री० अल्पा० पखी] १ पक्षियो के पखो या परो के आकार का ताड आदि का वह उपकरण जिसे हवा मे उसका वेग बढाने के लिए डुलाया जाता है।

क्रि० प्र०—झलना।

२ उक्त के आधार पर कोई ऐसा उपकरण, जिसस हवा का वेग बढाया जाता हो। जैसे—बिजली का पखा।

क्रि० प्र०—खीचना।—चलाना।—झलना।—डुलाना।

विशेष—आरभ मे पखे ताड की पत्तियो, बास की पट्टिया आदि से बनते थे, जिन्हे हाथ से बार-बार हिलाकर लोग या तो गरमी के समय शरीर मे हवा लगाने के अथवा आग सुलगाने के काम मे लाते थे, और अब तक इनका प्राय व्यवहार होता है। बडे आदमी प्राय काठ के चौखटो पर कपडा मढवाकर उसे छत मे टाँगते थे, और किसी आदमी के बार-बार खीचते और ढीलते रहने पर उस पखे मे हवा निकलती थी, जिसस उसके नीचे बैठे हुए लोगो को हवा लगती थी। आज-कल प्राय बिजली की सहायता से चलनेवाले अनेक प्रकार के पखे बनने लगे है।

३ किसी चीज मे लगा हुआ कोई ऐसा चिपटा लबा टुकडा, जो पानी या हवा की सहायता से अथवा किसी यात्रिक क्रिया से बार-बार हिलता या चक्कर लगाता रहता हो। जैसे—जहाज या पनचक्की के चक्कर मे का पखा।

पखा-कुली—पु० [हि० पखा+तु० कुली] वह कुली या नौकर जो विशेषत छत मे लगा हुआ पखा खीचने के लिए नियत हो।

पखाज—पु० =पखावज।

पखा-पोश—पु० [हि० पखा+फा० पोश] पखे के ऊपर लगाया जानेवाला गिलाफ।

पखि—पु०=पक्षी।

स्त्री०=पखी।

पखिया*—स्त्री० [हि० पख] १ भूसी के महीन टुकडे। २ पखडी। पखी।

पखी—पु० [हि० पख] चिडिया। पक्षी।

स्त्री० १ उडनेवाला कोई छोटा कीडा या फतिगा। २ करघे मे कबूतर के पख या पर से बँधी सूत की वह डोरी जो ढरकी के छेद मे फँसाकर लगाई जाती है। ३ गढवाल, शिमले आदि की पहाडी भेडो पर से उतरनेवाला एक प्रकार का बढिया मुलायम और हलका ऊन। ४. उक्त प्रकार के ऊन से बनी हुई चादर। ५ वह पतली हलकी पत्तियाँ जो साखू के फल के सिरे पर होती है।

स्त्री० हिं० 'पंखा' का स्त्री० अल्पा० रूप।

†स्त्री०=पंखड़ी।

पंखुड़ा†—पु० [सं० पक्ष, हिं० पंख] कंधे और बाँह का जोड़। पँखौरा।

पंखुड़ी—स्त्री०=पंखड़ी।

पंखुरा†—पु०=पँखुड़ा।

पंखेरू†—पु० =पखेरू (पक्षी)।

पंग—वि० [सं० पंगु] १ लँगड़ा। २ गति-हीन। निश्चल। ३ परम चकित और स्तब्ध। उदा०—सूर हरि की निरखि सोभा, भई मनसा पंग।—सूर।

पु० [?] एक प्रकार का विलायती नमक, जो पहले लिवरपूल से आता था।

पंगत, पंगति—स्त्री० [सं० पंक्ति] १ पंक्ति। पाँति। २ बहुत-से लोगों का साथ बैठकर भोजन करना। भोज। ३ भोज के समय भोजन करने के लिए एक साथ बैठनेवालों की पंक्ति या समूह। जैसे—संध्या से दो पंगतें तो बैठ चुकी हैं अभी दो पंगतें और बैठेंगी।

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।—लगना।—लगाना।

४. एक ही जाति या प्रकार के बहुत-से लोगों का समाज या समूह। ५ जुलाहों का एक औजार जो दो सरकंडों को एक में बाँधकर बनाया जाता है।

पंगला—वि० =पंगुल।

पंगा—वि० पंगु।

पंगायत†—स्त्री० [हिं० पंग] पैताना। (देखें)

पंगी—स्त्री० [सं० पंक, हिं० पाँक] धान के खेत में लगनेवाला एक प्रकार का कीड़ा।

स्त्री० [?] कीर्ति। यश। उदा०—पूगी समदाँ पार, पंगी राण प्रतापसी।—दुरसाजी।

पंगु—वि० [सं०√खञ्ज् (लँगड़ा होना)-कु-पंगदेश, नुक्] [भाव० पंगुता, पंगुत्व] १ जो पैर या पैरों के टूटे हुए होने के कारण चल न सकता हो। लँगड़ा। उदा०—जौ संग राखत ही बनै तौ करि डारहु पंगु।—रहीम। २ लाक्षणिक अर्थ में, (व्यक्ति) जो ऐसी स्थिति या स्थान में लाया गया हो, जिसमें या जहाँ वह कुछ काम न कर सके।

पु० १ एक प्रकार का वात रोग जिसमें घुटने जकड़ जाते हैं और आदमी चल-फिर नहीं सकता। २ मध्य युग में एक प्रकार के साधु, जो केवल मल-मूत्र का त्याग करने या भिक्षा माँगने के लिए कुछ दूर तक जाते थे, और शेष सारा समय अपनी जगह पर बैठे-बैठे बिताते थे। ३ शनि ग्रह, जिसकी गति अपेक्षया बहुत मंद होती है।

पंगुक—वि० पंगु या पंगुल।

पंगु-गति—स्त्री० [कर्म० स०] वार्णिक छंदों का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जब किसी छंद में लघु के स्थान में गुरु अथवा गुरु के स्थान में लघु आ जाता है। जैसे—'फूटि गये श्रुति ज्ञान के केशव आँखि अनेक विवेक की फूटी।' में 'के' और 'की' का लघु होना चाहिए।

पंगु-ग्राह—पु० [कर्म० स०] १ मगर। २ मकर राशि।

पंगु-पीठ—पु० [ब० स०] वह सवारी जिसपर किसी पंगु व्यक्ति को बैठाकर कहीं ले जाया जाता है।

पंगुल—वि० [सं० पंगु+लच्] १ जिसके हाथ-पैर टूटे हुए हों और इसी लिए जो कहीं आ-जा न सकता हो या काम-धंधा न कर सकता हो। २ बहुत बड़ा अकर्मण्य और आलसी।

पु० १ अंडी या रेंड का पेड़। २ सफेद रंग का घोड़ा।

पंगो—स्त्री० [हिं० पाँक] बरसाती नदी द्वारा किनारों पर छोड़ी हुई मिट्टी।

पँच—वि० [हिं० पाँच] हिं० पाँच का वह संक्षिप्त रूप, जो उसे यौगिक पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पँच-तोलिया, पंच-लड़ी आदि।

पंच—पु० [सं०] १ पाँच या अधिक मनुष्यों का समाज या समुदाय। जनता। लोक। जैसे—पंच कहै सो कीजै काज। (कहा०)

पद—पंच की दुहाई सब लोगों से अन्याय दूर करने या सहायता पाने के लिए की जानेवाली पुकार। **पंच की भीख** =सब लोगों का अनुग्रह। सब का आशीर्वाद। **पंच-परमेश्वर** लोक या समाज जो ईश्वर या देवता के समान पवित्र और पूज्य माना जाता है।

२ वह व्यक्ति या कुछ लोगों का वर्ग जो आपस के झगड़ा आदि का निर्णय करने के लिए चुना या नियत किया गया हो। (आर्बीट्रेटर)

विशेष—प्राचीन भारतीय समाज में ऐसे लोगों की संख्या प्रायः पाँच होती थी। जब बहुत-सी जातियाँ या बिरादरियाँ बनने लगी, तब प्रायः हर बिरादरी या समाज में कुछ लोग पंच बना दिये जाते थे, जो सब प्रकार के सामाजिक विवादों का निर्णय करते थे।

३ वह व्यक्ति जो फौजदारी के दौरे के मुकदमे में दौरा जज की अदालत में मुकदमे के फैसले में जज की सहायता के लिए नियत हो। (ज्यूरी या असेसर) ४ एक संज्ञा जो दलाल लोग प्रायः (मैं या हम के स्थान पर) स्वयं अपना व्यक्तित्व सूचित करने के लिए प्रयुक्त करते हैं। ५ खेल, विवाद आदि में हार-जीत, औचित्य-अनौचित्य आदि का निर्णय करने के लिए नियत किया हुआ व्यक्ति। ६ वह व्यक्ति जिसने किसी विषय में मुख्यता प्राप्त की हो। ७ रहस्य-संप्रदाय में, वह व्यक्ति जिसने पूरा आत्मज्ञान प्राप्त कर लिया हो। सिद्ध। ८ हास्य और व्यंग्य की बातों से संबंध रखनेवाला सामयिक पत्र। जैसे—अवध-पंच, गुजराती-पंच, हिन्दू-पंच आदि। इस अर्थ में यह अँगरेजी के 'पंच' का समध्वनिक है।

पंचक—वि० [सं० पंचन्+कन्] जिसके पाँच अंग अवयव या भाग हों।

पु० १ एक ही तरह की पाँच वस्तुओं का वर्ग, संग्रह या समूह। जैसे—इंद्रिय-पंचक, पद्य-पंचक। २ पाँच रुपये प्रति सैकड़े के हिसाब से दिया या लिया जानेवाला ब्याज या सूद। ३ फलित ज्योतिष में धनिष्ठा, शतभिषा, पूर्वाभाद्रपद, उत्तराभाद्रपद और रेवती ये पाँचों नक्षत्र जिनमें किसी नये या शुभ कार्य का आरंभ निषिद्ध है तथा कोई दुर्घटना होना बहुत ही अशुभ माना जाता है। पंचखा।

विशेष—साधारण लोक में इस अर्थ में 'पंचक' का प्रयोग स्त्री० में होता है।

४ शकुन शास्त्र। ५ पाशुपत दर्शन में गिनाई हुई ये ८ वस्तुएँ जिनमें से प्रत्येक के पाँच-पाँच भेद किये गये हैं। यथा—लाभ, मल, उपाय, देश, अवस्था, विशुद्धि, दीक्षा कारिक और बल।

पंच कन्या—स्त्री० [द्विगु स०] पुराणानुसार ये पाँच स्त्रियाँ जो विवाहिता

होने पर भी कन्याओं के समान ही पवित्र मानी गई हैं—अहल्या, द्रौपदी, कुन्ती, तारा और मदोदरी।

पच-कपाल—पु० [द्विगु स०+अण्-लुक्] यज्ञ का वह पुरोडाश जो पाँच कपालों से पृथक्-पृथक् पकाया जाता था।

पच-कर्पट—पु० [ब० स०] महाभारत के अनुसार एक पश्चिमी देश जिसे नकुल ने राजसूय यज्ञ के समय जीता था।

पच-कर्म (न्)—पु० [द्विगु स०] १ वैशेषिक दर्शन के अनुसार ये पाँच प्रकार के कर्म—उत्क्षेपण अवक्षेपण, आकुचन, प्रसारण और गमन। २. चिकित्सा की ये पाँच क्रियाएँ—वमन, विरेचन, नस्य, निरूहवस्ति और अनुवासन।

पच-कल्याण—पु० [ब० स०] वह घोडा, जिसका सिर (माथा) और चारो पैर सफेद हो और शेष शरीर लाल, काला या किसी और रग का हो।

पच-कवल—पु० [द्विगु स०] पाँच ग्रास जो स्मृति के अनुसार भोजन आरभ करने के पहले कुत्ते, पतित, कोढी, रोगी, कौए आदि के लिए अलग निकाल दिये जाते है। अग्रासन।

पच-कषाय—पु० [ष० त०] जामुन, सेमर, खिरैंटी, मौलसिरी और बेर इन पाँचों वृक्षों का कषाय (कसैला) रस।

पच-काम—पु० [मध्य० स०] तत्रसार के अनुसार पाँच कामदेव जिनके नाम ये है—काम, मन्मथ, कन्दर्प, मकरध्वज और मीनकेतु।

पच-कारण—पु० [स० द्विगु स०] जैन-शास्त्र के अनुसार वे पाँच कारण, जिनसे किसी कार्य की उत्पत्ति होती है। यथा—काल, स्वभाव, नियति, पुरुष और कर्म।

पंचकुर—स्त्री० [हि० पाँच+कुरा] एक प्रकार की बँटाई, जिसमें खेत की उपज के पाँच भागों मे से एक भाग जमीदार लेता था।

पच-कृत्य—पु० [द्विगु स०] १ ईश्वर या शिव के ये पाँच प्रकार के कर्म—सृष्टि, स्थिति, ध्वस, विधान और अनुग्रह। (सर्व-दर्शन) २ पचौते का पेड।

पच-कृष्ण—पु० [ष० त०] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीडा।

पच-कोण—वि० [द्विगु स०] पाँच कोनोवाला।
पु० जन्म-कुडली मे लग्न से पाँचवाँ और नवाँ स्थान।

पच-कोल—पु० [द्विगु स०] पीपल, पिपरामूल, चव्य, चित्रक, और सोठ इन पाँचों का वर्ग या समूह।

पच-कोश—पु० [द्विगु० स०] उपनिषद् और वेदान्त के अनुसार शरीर सघटित करनेवाले पाँच कोश—अन्नमय कोश, प्राणमय कोश, मनोमय कोश, विज्ञानमय कोश और आनन्दमय कोश।

पच-कोष—पु० दे० 'पच-कोश'।

पच-कोस†—पु० =पच-क्रोश (काशी)।

पच-कोसी—स्त्री० =पच-क्रोशी।

पंच-क्रोश—पु० [स० पच-क्रोश] काशी नगरी जो पहले पाँच कोस की लबाई और चौडाई मे बसी हुई थी।

पच-क्रोशी—स्त्री० [पच-क्रोश, ब० स०—ङीप्] १. पाँच कोस की लबाई और चौडाई मे बसी हुई काशी। २ उसकी परिक्रमा जो साधारणत. पाँच या छ: दिनो मे पूरी की जाती है। ३. इसी प्रकार की प्रयाग तीर्थ की होनेवाली परिक्रमा।

पंच-क्लेश—पु० [द्विगु स०] योगशास्त्रानुसार अविद्या, अस्मिता, राग, द्वेष और अभिनिवेश ये पाँच क्लेश।

पचक्षार-गण—पु० [पच-क्षार, द्विगु स०, पचक्षार-गण, ष० त०] वैद्यक के अनुसार ये पाँच मुख्य क्षार या लवण—काच, सैंधव, सामुद्र, विट् और सौवर्चल।

पच-गगा—स्त्री० [समा० द्वि०] १ पाँच नदियो का समूह—गगा, यमुना, सरस्वती, किरणा और धूतपापा। २ काशी का एक प्रसिद्ध घाट जहाँ पहले गगा मे किरणा और धूतपापा नदियाँ मिलती थी और जो एक तीर्थ के रूप मे माना जाता है। (किरणा और धूतपापा दोनों अब लुप्त हो गई है।)

पच-गण—पु० [ष० त०] विदारी गधा, बृहती, पृश्निपर्णी, निदिग्धिका और भूकूष्माड इन पाँच ओषधियो का गण या समूह। (वैद्यक)

पच-गत—वि० [ब० स०] (राशि) जिसमे पाँच वर्ण हो। (बीजगणित)

पच-गव्य—पु० [द्विगु० स०] गौ से प्राप्त होनेवाले पाँच द्रव्य—दूध, दही, घी, गोबर और गोमूत्र जो बहुत पवित्र माने जाते है।

पचगव्य-घृत—पु० [मध्य० स०] आयुर्वेद के अनुसार बनाया हुआ एक प्रकार का घृत जो अपस्मार (मृगी) और उन्माद मे दिया जाता है।

पच-गीत—पु० [द्विगु स०] श्रीमद्भागवत के दशम स्कध के अन्तर्गत पाँच प्रसिद्ध प्रकरण—वेणुगीत, गोपीगीत, युगलगीत, भ्रमरगीत और महिषीगीत।

पच-गुटिया—स्त्री० =लिगिनी (लता)।

पच-गुण—वि० [द्विगु स०] पाँच गुना।
पु० शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध ये पाँच गुण।

पचगुणी—स्त्री० [ब० स०+ङीष्] पृथ्वी।

पचगुना—वि० [स० पचगुण] जो अनुपात, मान या मात्रा मे किसी जैसे पाँच के बराबर हो। पाँच गुना।

पच-गुप्त—पु० [ब० स०] १ चार्वाक दर्शन, जिसमे पचेन्द्रिय का गोपन प्रधान माना गया है। २ कछुआ, जो अपना सिर और चारो पैर सिकोडकर अन्दर कर लेता या छिपा लेता है।

पच-गोटिया—स्त्री० [हि० पाँच+गोट] एक प्रकार का खेल जो जमीन पर रेखाएँ खीचकर पाँच गोटियो से खेला जाता है।

पच-गौड़—पु० [ष० त०] सारस्वत, कान्यकुब्ज, गौड, मैथिल और उत्कल इन पाँच देशो के ब्राह्मणों का वर्ग।

पच-ग्रह—पु० [द्विगु स०] मगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि इन पाँच ग्रहों का समूह।

पच-घात—पु० [ब० स०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

पच-चक्र—पु० [द्विगु० स०] तत्रशास्त्रानुसार ये पाँच प्रकार के चक्र—राजचक्र, महाचक्र, देवचक्र, वीरचक्र और पशुचक्र।

पच-चक्षु—पु० [ब० स०] गौतम बुद्ध।

पच-चत्वारिंश—वि० [स० पचचत्वारिंशत्+डट्] पैतालीसवाँ।

पच-चत्वारिंशत—स्त्री० [मध्य० स०] पैंतालीस की सख्या।

पच-चामर—पु० [द्विगु स०] नाराच नामक छन्द का दूसरा नाम।

पच-चीर—पु० [ब० स०] एक बुद्ध का नाम।

पंच-चूड—वि० [ब० स०] [स्त्री० पचचूडा] पाँच शिखाओंवाला।

पंच-चूड़ा—स्त्री० [ब० स०] एक अप्सरा। (रामायण)

पच-चोल—पु० [ब० स०] हिमालय पर्वत-श्रेणी का एक भाग।

पच-जन—पु० [द्विगु स०] १ पाँच या पाँच प्रकार के जनों या लोगों का समूह। २ गधर्व, पितर, देव, असुर और राक्षस इन पाँचों का समूह। ३ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और निषाद इन पाँचों वर्गों का समूह। ४ जन-समुदाय। ५ प्राण। ६ एक प्रजापति। ७ पाताल मे रहनेवाला एक राक्षस, जिसकी हड्डी से श्रीकृष्ण का पाचजन्य नामक शख बना था। ८ राजा सगर का एक पुत्र।

पंचजनी—स्त्री० [स० पचजन+ङीष्] पाँच मनुष्यों की मडली। पचायत।

पंचजनीन—पु० [स० पचजन+ख—ईन] वे लोग जो अभिनय, परिहास, आदि के द्वारा लोगों का मनोविनोद करते है। जैसे—नट, भाँड, विदूषक आदि।

पचजन्य—पु० [स० पाचजन्य] श्रीकृष्ण का प्रसिद्ध शख, जो पचजन नामक राक्षस की हड्डी से बना था।

पच-तत्र—पु० [ब० स०] सस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ, जिसमे नीतिशास्त्र के उपदेश दिये गये है।

पच-तत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] पाँच तारा की बनी वीणा।
स्त्री० एक प्रकार की वीणा, जिसमे पच तार होते है।

पच-तत्व—पु० [द्विगु स०] १ पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पाँचों तत्त्व या भूत। २ मद्य, मास, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन इन पाँचो का समुदाय। (वाममार्ग) ३ गुरुतत्त्व, मत्रतत्त्व, मनस्तत्त्व, देवतत्त्व और ध्यानतत्त्व। (तत्र)

पच-तन्मात्र—पु० [मध्य० स०] शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध—ये पाँच तत्त्व, जिनसे पच महाभूतो की उत्पत्ति होती है।

पच-तप—वि० पचतपा।

पच-तपा (पस्)—वि० [स० पचन्√तप् (तपना)+असुन्] पचाग्नि तापनेवाला।

पच-तरु—पु० [द्विगु स०] मदार, पारिजात, सतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन, इन पाँचों वृक्षों का वर्ग।

पचता—स्त्री० =पचत्व।

पच-ताल—पु० [द्विगु स०] सगीत मे अष्टताल का एक भेद।

पचतालेश्वर—पु० [पचताल-ईश्वर, ष० त०] शुद्ध जाति का एक भाग।

पच-तिक्त—पु० [द्विगु स०] गुरुच, भटकटैया, सोंठ कुट और चिरायता इन पाँच कडवी ओषधियों का वर्ग।

पच-तीर्थ—पु० [द्विगु स०] पाँच तीर्थों का समूह। पचतीर्थी।

पच-तीर्थी—स्त्री० [स० पचतीर्थ+ङीप्] विश्रान्ति, शौकर, नैमिष, प्रयाग और पुष्कर (वराह) ये पाँच तीर्थ।

पच-तृण—पु० [द्विगु स०] कुश, कास, डाभ और ईख ये पाँच तृण।

पचतोरिया—स्त्री० =पचतोलिया।

पचतोलिया—स्त्री० [हि० पाँच+तोला] पाँचतोले का बाटखरा।
वि० जो तौल मे पाँच तोले का हो।
पु० [हि० पाँच+तार ?] पुरानी चाल का एक प्रकार का बहुत झीना कपडा।

पचत्रिश—वि०, [स० पचत्रिशत्+डट्] पैंतीसवाँ।

पचत्रिशत—वि० [मध्य० स०] पैंतीस।

पचत्व—पु० [स० पचन्+त्व] १ 'पच' होने की अवस्था या भाव। पचता। २ शरीर की वह स्थिति जिसमे उसका निर्माण करनेवाले पाँचो तत्त्व या भूत एक दूसरे से बिलकुल अलग हो जाते है, अर्थात् मृत्यु।
क्रि० प्र०—प्राप्त करना। —प्राप्त होना।

पच-दश (शन्)—वि० [स० मध्य० स०] पद्रह।
पु० पद्रह की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१५।

पच-दशाह—पु० [पचदशन्-अहन्, कर्म० स०] पद्रह दिनका समय।

पचदशी—स्त्री० [स० पचदशन्+डट्-ङीप्] १ पूर्णमासी। २ अमावस्या। ३ वेदान्त का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

पच-दीर्घ—वि० [ब० स०] (व्यक्ति) जिसके बाहु, नेत्र, कुक्षि, नासिका और वक्षस्थल दीर्घ हो।
पु० उक्त पाँचो अग।

पच-देव—पु० [द्विगु स०] स्मार्त हिंदुओं के अनुसार ये पाँच देव—विष्णु, शिव, सूर्य, गणेश और दुर्गा।

पच-द्रविड़—पु० [द्विगु स०] विन्ध्याचल के दक्षिण मे बसनेवाले ब्राह्मणो के ये पाँच भेद—महाराष्ट्र, तैलग, कर्णाट, गुर्जर और द्रविड।

पच-धा—अव्य० [स० पचन्+धा] पाँच तरह से।

पच-नख—वि० [ब० स०] पाँच नखोंवाला।
पु० १ हाथी। २ कछुआ। ३ शेर। ४ बदर।

पच-नद—पु० [द्विगु स०] १ पजाब की वे पाँच प्रधान नदियाँ, जो सिंधु मे मिलती है—सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम। २ (ब० स०) पजाब देश जिसमे से होकर ये पाँचो नदियाँ बहती है। ३ काशी का पचगगा नामक घाट और तीर्थ।

पच-नवत—वि० [स० पचनवति+डट्] पचानबेवाँ।

पच-नवति—स्त्री० [मध्य० स०] पचानबे की सख्या।

पच-नाथ—पु० [द्विगु स०] ये पाँच देवता, जिनके नाम के अन्त मे 'नाथ' पद है—बदरीनाथ, द्वारकानाथ, जगन्नाथ, रगनाथ और श्रीनाथ।

पच-नामा—पु० [हि० पच+फा० नाम] १ पत्र, जिसके अनुसार दो विरोधी पक्षो ने अपना निर्णय कराने के लिए किसी को पच चुना हो। २ वह पत्र जिस पर पचो का निर्णय लिखा हो।

पच-निंब—पु० [द्विगु स०] पत्ती, छाल, फूल, फल और मूल, नीम के उक्त पाँचो अग।

पच-निर्णय—पु० [स० ष० त०] पचो द्वारा किया हुआ निर्णय।

पचनी—स्त्री० [स०√पच्+ल्युट्—अन, ङीप्] चौपड, शतरज आदि की बिसात।

पच-नीराजन—पु० [मध्य० स०] दीपक, कमल, आम, वस्त्र और पान से की जानेवाली आरती।

पंच-पक्षी (क्षिन्)—पु० [ब० स०] एक प्रकार का शकुन शास्त्र, जिसमे अ, इ, उ, ए और ओ इन पाँच वर्णो का पक्षी मानकर शुभाशुभ फलो का विचार किया जाता है।

पच-पत्र—पु० [ब० स०] एक पेड। चडाल कद।

पच-पदी—स्त्री० [पच-पाद, ब० स० ङीप् पद्भाव] १ एक प्रकार की ऋचा। २ चलने मे पाँच कदम या डग। ३ पाँच पदो का समूह।

४. ऐसा संबंध जिसमें वैसी ही साधारण जान-पहचान हो, जैसी दस-पाँच कदम साथ चलने पर होती है।

पंच-पनड़ी—स्त्री० 'दे० पँचौली' (पौधा)।

पंच-पर्णिका—स्त्री० [ब० स०, कप्,—टाप् ह्रस्व] गोरखी नाम का पौधा।

पंच-पर्व (न्)—पुं० [द्विगु स०] अष्टमी, चतुर्दशी, पूर्णिमा, अमावस्या और रवि संक्रान्ति—ये पाँचों पर्व।

पंच-पल्लव—पुं० [द्विगु स०] पीपल, गूलर, पाकड़ और बड़ अथवा आम, जामुन, कैथ, बेल और बिजौरा के पत्ते, जिनका उपयोग शुभकर्मों में पूजन के समय होता है।

पंच-पात—पुं० [सं० पंचपत्र] पँचौली नाम का पौधा। पँचपनडी।

पंच-पात्र—पुं० [समा०] १ पाँच पात्रों का समाहार। २ एक तरह का श्राद्ध, जिसमें पाँच पात्र रखे जाते हैं। ३ गिलास की तरह का एक पात्र जिसमें पूजन आदि के लिए जल रखा जाता है।

पंच-पाद—वि० [ब० स०, अन्त्यलोप] पाँच पैरोंवाला।
पुं० एक संवत्सर।

पंचपिता (तृ)—पुं० [द्विगु० स०] पिता, आचार्य, श्वसुर, अन्नदाता और भयत्राता इन पाँचों का समाहार।

पंच-पित्त—पुं० [द्विगु स०] सूअर, बकरे, भैंसे, मछली और मोर इन पाँचों जीवों का पित्ता, जो वैद्यक में काम आता है।

पंच-पीरिया—वि० [हिं० पाँच+फा० पीर] (व्यक्ति) जो पाँच पीरों की पूजा करता हो।

पंच-पुष्प—पुं० [द्विगु स०] चंपा, आम, शमी, कमल और कनेर—इन पाँचों वृक्षों के फूलों का समाहार।

पंच-प्राण—पुं० [द्विगु स०] शारीरिक वात के इन पाँच भेदों का समाहार—प्राण, अपान, समान, व्यान और उदान।

पंच-प्यारे—पुं० पंज-प्यारे।

पंच-प्रासाद—पुं० [ब० स०] वह मंदिर जिसके चारों कोणों पर एक एक शृंग और बीच में एक गुंबद हो।

पंच-बटी—स्त्री० दे० 'पंचवटी'।

पंच-बला—स्त्री० [द्विगु स०] बला, अतिबला, नागबला, राजबला और महाबला नामक ओषधियों का समाहार। (वैद्यक)

पंच-बाण—पुं०=पंचवाण।

पंच-बाहु—पुं० [ब० स०] शिव।

पंच-भद्र—वि० [ब० स०] १ पाँच गुणों वाला (खाद्य पदार्थ या व्यंजन)। २ दुष्ट।
पुं० [द्विगु स०] १ वैद्यक में ओषधियों का एक गण, जिसमें गिलोय, पित्तपापड़ा, मोथा, चिरायता और सोंठ है। २. दे० 'पंच-कल्याण'।

पंच-भर्तारी—वि० [हिं० पंच+भर्तार+ई (प्रत्य०)] जिसके पाँच पति हों।
स्त्री० द्रौपदी।

पंच-भुज—वि० [ब० स०] जिसकी पाँच भुजाएँ हों।
पुं० ज्यामिति में पाँच भुजाओंवाले क्षेत्र की संज्ञा। (पेन्टागन)

पंच-भूत—पुं० [द्विगु स०] भारतीय दर्शन के अनुसार आकाश, वायु, अग्नि, जल और पृथ्वी ये पाँच भूत या मूलतत्त्व जिनमें सृष्टि की रचना हुई है।

पंचम—वि० [सं० पंचन्+डट्, मट्] १ पाँचवाँ। २ मनोहर। सुंदर। ३ दक्ष। निपुण।
पुं० [सं०] १ संगीतशास्त्र में, सरगम का पाँचवाँ स्वर, जिसका संक्षिप्त रूप 'प' है।
विशेष—कहा गया है कि इसके उच्चारण में प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पाँचों प्राणों या वायुओं का उपयोग होता है, इसी लिए इसे 'पंचम' कहते हैं। यह ठीक कोकिल के स्वर के समान होता है और इसके उच्चारण में क्षिति, रक्ता, संदीपनी और आलापिनी नाम की चार श्रुतियाँ लगती है।
२ छः प्रधान रागों में तीसरा राग, जिसे कुछ लोग हिंडोल और कुछ लोग भैरव का पुत्र मानते हैं। ३ व्यंजनों में प्रत्येक वर्ग का अंतिम वर्ण। जैसे—ङ, ञ, ण आदि। ४ चमार, डोम आदि जातियाँ। अन्त्यज। हरिजन। ५ मैथुन, जो तांत्रिकों के अनुसार पाँचवाँ मकार है।

पंच-मकार—पुं० [ब० स०] 'म' अक्षर से आरंभ होनेवाली ये पाँच वस्तुएँ—मद्य, मांस, मत्स्य, मुद्रा और मैथुन।

पंच-महापातक—पुं० [द्विगु स०] ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी से गमन और उक्त पातक करनेवालों से किया जानेवाला मेल-जोल या संसर्ग—ये पाँच बहुत बड़े पाप।

पंच-महायज्ञ—पुं० [द्विगु स०] गृहस्थ के लिए अनिवार्य ये पाँच यज्ञ—ब्रह्मयज्ञ (स्वाध्याय), देवयज्ञ (होम), भूतयज्ञ (बलि वैश्वदेव), पितृयज्ञ (पिंडक्रिया) और नृयज्ञ (अतिथिसत्कार)।

पंच-महाव्याधि—स्त्री० [द्विगु स०] अर्श, यक्ष्मा, कुष्ठ, प्रमेह और उन्माद—ये पाँच कठिन और दुःसाध्य व्याधियाँ। (वैद्यक)

पंच-महाव्रत—पुं० [द्विगु स०] योगशास्त्र के अनुसार इन पाँच आचरणों की प्रतिज्ञा या व्रत—अहिंसा, सूनृता, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। इन्हें 'यम' भी कहते हैं।

पंच-महाशब्द—पुं० [द्विगु स०] शृंग (सींग), तम्मट (खँजड़ी), शंख, भेरी और जया घंटा—इन पाँच बाजों का समाहार।

पंचमांग—पुं० [सं० पंचम-अंग, कर्म० स०] १ किसी काम, चीज या बात का पाँचवाँ अंग। २ आधुनिक राजतंत्र में राज्य या शासन का वह पाँचवाँ अंग या विभाग जो गुप्त रूप से दूसरे देशों के देश-द्रोहियों से मिलकर और उन्हें अपनी ओर मिलाकर उन देशों को हानि पहुँचाता है। राज्य या शासन के शेष चार अंग ये है—स्थल-सेना, जल-सेना, वायु सेना और समाचार-प्रकाशन विभाग। (फिफ्थ कालम)

पंचमांगी (गिन्)—वि० [सं० पंचमांग+इनि] पंचमांग-संबंधी। पंचमांग का।
पुं० किसी देश या राज्य का वह निवासी जो दूसरे देशों के साथ गुप्त संबंध स्थापित करके अपने देश को हानि पहुँचाता हो। शत्रुओं के साथ मिला हुआ देश-द्रोही। (फिफ्थ कालमिस्ट)

पंचमाक्षर—पुं० [सं० पंचम-अक्षर, कर्म० स०] वर्णमाला में किसी वर्ग का पाँचवाँ व्यंजन। जैसे—ङ, ञ, ण आदि।

पंचमास्य—वि० [सं० पंच-मास, कर्म० स०+यत्] हर पाँच महीने होने वाला।
पुं० [पंचम-आस्य, ब० स०] कोकिल या कोयल, जो पंचम स्वर में बोलती है।

पंचमी—स्त्री० [सं० पंचम+ङीप्] १ चांद्र मास के प्रत्येक पक्ष की

पाँचवीं तिथि। २ द्रौपदी, जिसके पाँच पति थे। ३ संगीत में एक प्रकार की रागिनी। ४ व्याकरण में अपादान कारक और उसकी विभक्ति। ५ वैदिक युग में एक प्रकार की ईंट, जो एक पुरुष की लंबाई के पाँचवें भाग के बराबर होती थी और यज्ञ में वेदी बनाने के काम आती थी। ६ तंत्र में एक प्रकार की मंत्र-विधि।

पंच-मुख—वि० [स० ब० स०] पाँच मुँहोंवाला। जैसे—पंचमुख गणेश। पंचमुख शिव।
पु० १ शिव। २ सिंह। शेर। ३ एक प्रकार का रुद्राक्ष, जिस पर पाँच लकीरें होती हैं।

पंचमुखी—वि० [स० पंचमुख] जिसके पाँच मुख हों। पंच-मुख।
स्त्री० [पंचमुख+ङीष्] १ पार्वती। २ मादा सिंह। शेरनी। ३ अडूसा। ४ गुडहल। जपा या जवा।

पंच-मुद्रा—पु० [मध्य० स०] तंत्र के अनुसार पूजनविधि की ये पाँच प्रकार की मुद्राएँ—आवाहनी, स्थापनी, सन्निधापनी, संबोधनी और सम्मुखीकरणी।

पंच-मूत्र—पु० [द्विगु स०] गाय, बकरी, भेड़, भैंस और गधी इन पाँचों पशुओं के मूत्रों का मिश्रण।

पंच-मूर्ति—पु० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

पंच-मूल—पु० [ब० स०] वैद्यक में एक पाचन औषध जो पाँच प्रकार की वनस्पतियों की जड़ या मूल से बनती है।

पँच-मेल—वि० [हि० पाँच+मेल] १ जिसमें पाँच तरह की चीजें मिली हों। जैसे—पँचमेल मिठाई। २ जिसमें कई या सब तरह की चीजें मिली-जुली हों।

पँच-मेवा—पु० [हि० पाँच+मेवा] किशमिश, गरी, चिरौंजी, छुहारा और बादाम ये पाँच प्रकार के मेवे, अथवा इन सब का मिश्रण।

पंचमेश—पु० [पंचम-ईश, ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्म-कुंडली में पाँचवें घर का स्वामी।

पंच-यज्ञ—पु० =पंच-महायज्ञ।

पंच-याम—पु० [ब० स०] दिन।

पंच-रंग—पु० [हि० पाँच+रंग] मेहदी का चूरा, अबीर, बुक्का, हल्दी और सुरवाली के बीज, जिन्हें मिलाकर शुभ कार्यों के समय चौक पूरते हैं।
वि० =पँच-रंगा।

पँचरंगा—वि० [हि० पाँच+रंग] [स्त्री० पँचरंगी] १ जिसमें पाँच भिन्न रंग हों। पाँच रंग का या पाँच रंगोंवाला। २ पाँच प्रकार के रंगों में बना हुआ। ३ जिसमें बहुत-से रंग मिले हों।
पु० पंच-रंग से पूरा या बनाया हुआ चौक।

पंच-रक्षक—पु० [ब० स०] पखौड़ा वृक्ष।

पंच-रत्न—पु० [द्विगु स०] नीलम, पद्मराग मणि, मूँगा, मोती और हीरा—ये पाँच प्रकार के रत्न।

पंच-रश्मि—पु० [ब० स०] सूर्य।

पंच-रसा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] आँवला।

पंच-रात्र—वि० [द्विगु स०, अच्] पाँच रातों में होनेवाला।
पु० १ पाँच रातों का समूह। २ एक प्रकार का यज्ञ, जो पाँच दिनों में पूरा होता था।

पंच-राशिक—पु० [ब० स०, कप्] गणित में एक प्रकार की प्रक्रिया, जिसमें चार ज्ञात राशियों की सहायता से पाँचवीं अज्ञात राशि का पता लगाया जाता है।

पंच-रीक—पु० [ब० स०, कप्] संगीत में एक प्रकार का ताल।

पंचल—पु० [स०√पच्, अलच्] शकरकंद।

पंच-लक्षण—पु० [द्विगु स०] ये पाँच बातें, जिनके समुचित विवेचन से किसी ग्रन्थ को पुराण की संज्ञा प्राप्त होती थी—सृष्टि की उत्पत्ति, प्रलय, देवताओं की उत्पत्ति और वंश-परम्परा, मन्वन्तर तथा मनु के वंश का विस्तार।

पँचलड़ा—वि० [हि० पाँच+लड़] [स्त्री० पँचलड़ी] पाँच लड़ों-वाला। जैसे—पँचलड़ा हार।
पु० [स्त्री० अल्पा० पँचलड़ी] गले में पहनने का पाँच लड़ोंवाला हार।

पंच-लवण—पु० [मध्य० स०] दे० 'पंच क्षारगण'।

पँच-लोना—वि० [हि० पाँच+लोन (लवण)] जिसमें पाँच प्रकार के नमक पड़े या मिले हों।
पु० पंच-लवण।

पंच-लौह—पु० [द्विगु स०] १ कांची, पाण्डि, कांत, कालिंग और वज्रक, लोहे के उक्त पाँच भेद। २ सोना, चाँदी, ताँबा, सीसा और रांगा इन पाँच धातुओं के योग से बनी हुई एक मिश्र धातु।

पंचवई†—स्त्री० =पँचवाई (एक तरह की देशी शराब)।

पंच-वक्त्र—पु० [ब० स०] दे० 'पंचमुख'।

पंचवक्त्रा—स्त्री० [पंचवक्त्र टाप्] दुर्गा।

पंच-वट—पु० [कम० स०] यज्ञोपवीत।

पंच-वटी—स्त्री० [पंच-वट, द्विगु स०+ङीष्] १ पीपल, बेल, वट, हड़ और अशोक—ये पाँच वृक्ष। २ दंडकारण्य में गोदावरी के तट का एक प्रसिद्ध स्थान (आधुनिक नासिक से दो मील दूर स्थित) जहाँ श्रीरामचन्द्र ने वन-वास के समय कुछ दिनों तक निवास किया था।

पंच-वदन—पु० [ब० स०] शिव।

पंचवर्ग—पु० [द्विगु स०] एक ही प्रकार की पाँच वस्तुओं का समूह।

पंच-वर्ण—पु० [द्विगु स०] १. प्रणव के ये पाँच वर्ण—अ, उ, म, नाद और बिंदु। २ एक प्राचीन वन। ३ उक्त वन के पास का एक प्राचीन पर्वत।

पंच-वल्कल—पु० [द्विगु स०] वट, गूलर, पीपल, पाकर और बेत इन पाँच वृक्षों की छालें।

पँचवाँसा—पु० [हि० पाँच+मास] गर्भवती स्त्री के गर्भ के पाँचवें महीने होनेवाला एक संस्कार।

पँचवाई—स्त्री० [हि० पाँच+वाई (प्रत्य०)] चावल, जौ आदि से बनाई जानेवाली एक प्रकार की देशी शराब।

पंच-बाण—पु० [द्विगु स०] १ कामदेव के ये पाँच बाण—द्रवण, शोषण, तापन, मोहन और उन्मादन। २ कामदेव के ये पाँच पुष्प-बाण—कमल, अशोक, आम, नवमल्लिका और नीलोत्पल। ३ [ब० स०] कामदेव। मदन।

पंचवातीय—पु० [स० पंच-वात, द्विगु स०+छ—ईय] राजसूय के अन्तर्गत एक प्रकार का होम।

पंच-वाद्य—पु० [द्विगु स०] युद्धक्षेत्र मे, बजनेवाले ये पाँच प्रकार के वाद्य—तत्र, आनद्ध, सुशिर और घन के शब्द तथा वीरो का गर्जन।

पंच-वार्षिक—वि० [स० पचवर्ष+ठक्—इक] हर पाँचवे वर्ष होनेवाला।

पँचवाह (हिन्)—वि० [स० पचवाह+इनि] पुरानी चाल की एक सवारी जिसमे पाँच घोडे जोते जाते थे।

पचविंश—वि० [स० पचविशति+डट्] पचीसवाँ।

पंचविंशति—वि० [मध्य० स०] पचीस।

पच-वृक्ष—पु० [द्विगु स०] मदार, पारिजात, सतान, कल्पवृक्ष और हरिचन्दन—ये पाँच वृक्ष।

पच-शब्द—पु० [द्विगु स०] १ तत्री, ताल, झांझ, नगाडा और तुरही—ये पाँच प्रकार के बाजे और इनसे निकलनेवाला स्वर। २ पाँच प्रकार की ध्वनियाँ। ३ व्याकरण के अनुसार सूत्र, वार्तिक, भाष्य, कोष और महाकवियों के प्रयोग—जो प्रामाणिक माने जाते है।

पच-शर—पु० दे० 'पच-वाण'।

पच-शस्य—पु० [द्विगु स०] धान, मूग, तिल, उडद और जौ—इन पाँच प्रकार के अन्नो की सामूहिक सज्ञा।

पच-शाख—पु० [ब० स०] १ हाथ, जिसमे उगलियो के रूप मे पाँच शाखाएँ होती है। २ दे० 'पजशाखा'। ३ हाथी।

पंच-शाखा—स्त्री० =पज-शाखा।

पच-शारदीय—पु० [पचशरद+छण्—ईय] एक प्रकार का यज्ञ।

पच-शिख—पु० [ब० स०] १ कपिल मुनि की शिष्य-परपरा मे से एक आचार्य, जो साख्य-शास्त्र के बहुत बडे पडित थे। २ सिह। ३ नरसिहा (बाजा)।

पंचशीर्ष—पु० [ब० स०] एक प्रकार का साँप।

पंचशील—पु० [मध्य० स०] १ बौद्धधर्म मे शील या सदाचार की ये पाँच मुख्य बातें, जिनका आचरण तथा पालन प्रत्येक सत्पुरुष के लिए आवश्यक कहा गया है—अस्तेय (चोरी न करना), अहिंसा (हिंसा न करना), ब्रह्मचर्य (व्यभिचार न करना), सत्य (झूठ न बोलना) और मादक पदार्थों का परित्याग (नशा न करना)। २ एशिया और अफ्रीका के प्रमुख देशों द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय तनातनी कम करने तथा शाति बनाये रखने के उद्देश्य से बाँडुग सम्मेलन (१९५४) मे उक्त के आधार पर स्थिर किये हुए ये पाँच राजनीतिक सिद्धान्त—पारस्परिक सम्मान (एक दूसरे को सम्मान की दृष्टि से देखना), अनाक्रमण (एक दूसरे की सीमा का उल्लघन न करना), अ-हस्तक्षेप (एक दूसरे की आतरिक बातो मे दखल न देना), समानता (किसी को अपने से बडा या छोटा न समझना) और सह-अस्तित्व (अपना अस्तित्व भी बनाये रखना और दूसरो का अस्तित्व भी बना रहने देना)।

पच-शूरण—पु० [मध्य० स०] सूरन के ये पाँच प्रकार—अत्यम्ल पर्णी मालकद, सूरन, सफेद सूरन और काडवेल।

पचशैल—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार एक पर्वत का नाम।

पंच-षष्टि—वि० [मध्य० स०] जो सख्या मे साठ से पाँच अधिक हो। पैंसठ।

स्त्री० पैंसठ की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६५।

पंच-संधि—स्त्री० [द्विगु स०] व्याकरण मे ये पाँच सधियाँ—स्वर-सधि, व्यजन-सधि, विसर्ग-सधि, स्वादि-सधि और प्रकृति भाव।

पंच-सप्तति—वि० [मध्य० स०] पचहत्तर।

स्त्री० पचहत्तर की सख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—७५।

पँचसर(1)—पु० =पचशर (कामदेव)।

पचसिद्धौषधि—स्त्री० [सिद्ध-ओषधि, कर्म० स०, पच-सिद्धौषधि, द्विगु स०] वैद्यक की ये पाँच ओषधियाँ—सालिब मिश्री, वराही कन्द, रोदसी, सर्पाक्षी और सरहटी।

पंच-सुगंधक—पु० [ब० स०, कप्] वैद्यक की ये पाँच सुगधित औषधियाँ—लौंग, शीतल चीनी, अगर, जायफल और कपूर। कुछ लोग अगर के स्थान पर सुपारी भी मानते है।

पच-सूना—स्त्री० [मध्य०] गृहस्थी की ये पाँच वस्तुएं जिनके द्वारा अनजान मे जीव-हत्याएँ होती है—चूल्हा, चक्की, सिलबट्टा, झाड़ू, ओखली और कुभ (घडा)।

पंच-स्कंध—पु० [ब० स०] बौद्ध दर्शन मे ये पाँच स्कध या गुणो की समष्टियाँ—रूपस्कध, वेदनास्कध, सज्ञास्कध, सस्कारस्कध और विज्ञानस्कध।

पंच-स्नेह—पु० [द्विगु स०] घी, तेल, मज्जा, चरबी और मोम—ये पाँचों चिकने या स्निग्ध पदार्थ।

पच-स्रोत (स्)—पु० [ब० स०] १ एक प्रकार का यज्ञ। २ एक प्राचीन तीर्थ। ३ हठयोग मे इडा, पिगला, वज्जा, चित्रिणी और ब्रह्म नाडी नामक पाँचो नाडियाँ।

पंच-स्वेद—पु० [द्विगु स०] वैद्यक मे ये पाँच प्रकार के स्वेद—लोष्ट स्वेद, बालुका स्वेद, वाष्प स्वेद, घट स्वेद और ज्वाला स्वेद।

पँचहजारी—पु० पज-हजारी।

पँचहरा—वि० [हि० पाँच+हरा(प्रत्य०)] १ पाँच परतो या तहोवाला। पाँच बार मोडा हुआ। जैसे—पँचहरा कपडा या कागज। २ पाँच बार किया हुआ। जैसे—पँचहरा काम।

पंचांग—वि० [पचन्-अग, ब० स०] पाँच अगोवाला।

पु० १ किसी चीज के पाँच अग। २ पाँच अगोवाली चीज या वस्तु। ३ वह पजी या पुस्तिका जिसमे आकाशस्थ ग्रह-नक्षत्रो की दैनिक स्थिति बतलाई गई हो। ४ वह पजी या पुस्तिका जिसमे प्रत्येक मास या वर्ष के वारो, तिथियो, नक्षत्रो, योगो और करणो का समुचित निरूपण या विवेचन होता हो। जत्री। पत्रा। ५ प्रणाम करने का वह प्रकार, जिसमे दोनो घुटने, दोनो हाथ और मस्तक पृथ्वी पर टेककर प्रणम्य की ओर देखते हुए मुँह से प्रणाम-सूचक शब्द कहा जाता है। ६ वनस्पतियो, वृक्षो आदि के पाँच अग—जड, छाल, पत्ती, फूल और फल। ७ तत्र मे जप, होम, तर्पण, अभिषेक और ब्राह्मण-भोजन जो पुरश्चरण के समय आवश्यक होते है। ८ तात्रिक उपासना मे किसी इष्टदेव का कवच, स्तोत्र, पद्धति, पटल और सहस्रनाम। ९ राजनीति-शास्त्र के अन्तर्गत सहाय, साधन, उपाय, देश,काल, भेद और विपद् प्रतीकार—ये पाँच मुख्य कार्य। १० पच-कल्याण। घोडा। ११ कच्छप या कछुआ जो अपने चारो पैर और सिर खीचकर अन्दर छिपा लेता है।

पंचांग-मास—पु० [मध्य० स०] पहली से अन्तिम तिथि या तारीख

तक का वह पूरा महीना जो पचाग मे प्रत्येक महीने के अन्तर्गत दिख-लाया जाता है। (केलेंडर मन्थ)

पंचांग-वर्ष—पु० [मध्य स०] किसी पचाग मे दिखाया हुआ आदि से अन्त तक कोई सम्पूर्ण या पूरा वर्ष (सवत् या सन्)। (केलेंडर ईयर)

पचांग-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] पचाग के पाँचो अगो (तिथि, वार, नक्षत्र, योग और करण) का शुद्ध निरूपण।

पंचांगिक—वि० [स० पचाग+ठन्—इक] जिसके या जिसमे पाच अग हो।

पंचांगी—वि० [स० पचाग] पाँच अगोवाला।

स्त्री० [पचाग+ङीप्] हाथी की कमर मे बाँधने का रस्सा।

पंचांगुल—वि० [पच-अगुलि, ब० स०, अच्] १ (हाथ या पैर) जिसमे पाँच उँगलियाँ हो। २ जो पाँच अगुल लम्बा हो।

पु० १ अडी या रेंड का वृक्ष। २ तेज-पत्ता। ३ भूसा बटोरने का पाँचा नामक उपकरण।

पचागुलि—वि० [ब० स०] जिसे पाँच उँगलियाँ हो।

पचांतरीय—पु० [स० पचन्-अतर, द्विगु स०, छ—ईय] बौद्धमत के अनुसार ये पाँच प्रकार के घातक—माता, पिता, अर्हत (ज्ञानी पुरुष) और बुद्ध का घात तथा यज्ञ करनेवालो से विवाद।

पंचांश—पु० [पचन्-अश, कर्म० स०] किसी वस्तु के पाँच बराबर भागो मे से कोई एक भाग। पचमाश।

पचाइत†—स्त्री० [वि० पचाइती] =पचायत।

पचाक्षर—वि० [पच-अक्षर, ब० स०] जिसमे पाँच अक्षर हो। पाँच अक्षरोवाला। जैसे—पचाक्षर मत्र, पचाक्षर शब्द।

पु० १ प्रतिष्ठा नामक वृत्ति जिसमे पाँच अक्षर होते है। २ शिव का 'नम शिवाय' मत्र जिसमे पाँच अक्षर होते है।

पचाग्नि—वि० [पचन्-अग्नि, ब० स०] पाँच प्रकार की अग्नियो का आधान करनेवाला।

स्त्री० [द्विगु स०] १ अन्वाहार्यपचन या दक्षिण, गार्हपत्य, आहवनीय, आवसथ्य और सभ्य अग्नि के उक्त पाँच प्रकार। २ छादोग्य उपनिषद् के अनुसार सूर्य, पर्जन्य, पृथ्वी, पुरुष और योषित्—जो अग्नि के रूप माने गये है। ३ आयुर्वेद के अनुसार चीता, चिचिडी, भिलावाँ, गधक और मदार नामक औषधियाँ जो बहुत गरम होती है। ४ एक प्रकार की तपस्या जिसमे तपस्वी अपने चारो ओर आग जलाकर दिन-भर धूप मे बैठता और ऊपर से सूर्य का जलना हुआ ताप भी सहता है।

क्रि० प्र०—तापना।

५ सब ओर से पहुँचनेवाला कष्ट, दुख या सन्ताप। उदा०—पलता था पचाग्नि बीच व्याकुल आदर्श हमारा।—मैथिलीशरण गुप्त।

पचाग्नि-विद्या—स्त्री० [स०] छादोग्य उपनिषद् मे सूर्य, बादल, पृथ्वी, पुरुष और स्त्री-सबधी तात्त्विक ज्ञान या विज्ञान।

पचाज—पु० [पचन्-आज, द्विगु स०] अजा अर्थात् बकरी से प्राप्त होनेवाले ये पाँच पदार्थ—दूध, दही, घी, लेडी और मूत्र।

पंचाट—पु० [स० पच से] विवाद के सबध मे पचो का किया हुआ निर्णय या फैसला। परिनिर्णय। (अवार्ड)

पचातप—पु० [स० पचन्-आ√तप् (तपना)+अच्] पचाग्नि तापने की क्रिया या भाव। चारो ओर आग जलाकर तथा धूप मे बैठकर की जानेवाली तपस्या।

पचात्मा (त्मन्)—स्त्री० [पचन्-आत्मन्, द्विगु० स०] शरीर मे रहनेवाले ये पाँच प्राण—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान।

पचानन—वि० [पचन्-आनन, ब० स०] जिसके पाँच आनन या मुँह हो। पचमुखी।

पु० १ शिव। २ शेर। सिह। ३ किसी विषय का बहुत बडा पडित या विद्वान्। जैसे—तर्क पचानन। ४ सगीत मे स्वर-साधन की एक प्रणाली जो इस प्रकार की होती है, आरोही— सा रे ग म प। रे ग म प ध। ग म प ध नि। म प ध नि सा। अवरोही—सा नि ध प म। नि ध प म ग। ध प म ग रे। प म ग रे सा।

पचाननी—स्त्री० [स० पचानन+ङीष्] १ दुर्गा। २ शेर की मादा। शेरनी।

पंचानबे—वि० [स० पचनवति, पा० पचनवइ] जो गिनती मे नब्बे से पाँच अधिक हो। पाँच कम सौ।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—९५।

पंचाप्सर—पु० पपासर। (देखे)

पचामरा—स्त्री० [पचन्-अमरा, द्विगु स० टाप्] दूर्वा, विजया, बिल्व-पत्र, निर्गुडी और काली तुलसी—इन पाँच पौधो का वर्ग।

पचामृत—पु० [पचन्-अमृत, द्विगु स०] १ दूध, दही, घी मधु और चीनी के मिश्रण से बना हुआ घोल जिसे हिंदू लोग देवताओ को चढाते है तथा स्वय प्रसाद के रूप मे पीते है। २ वैद्यक मे ये पाँच परम गुणकारी ओषधियाँ—गिलोय, गोखरू, मुसली, गोरखमुडी और शतावरी।

पचाम्ल—पु० [पचन्-अम्ल, द्विगु स०] ये पाँच खट्टे फल—बेर, अनार, अमलबेत, चूक और बिजौरा।

पचायत—स्त्री० [स० पचायतन] १ पचो की सभा। २ प्राचीन भारतीय समाज मे चुने हुए थोडे-से (प्राय पाँच) आदमियो का वह दल जो आपस के सामाजिक अर्थात् जाति-बिरादरी के झगडो या विवादो का निर्णय करता था और जिसका निर्णय बिरादरी या समाज को मान्य होता था। ३ बिरादरी या समाज के लोगो की वह सभा जिसमे पच लोग बैठकर उक्त प्रकार के झगडो का विचार और निर्णय करते थे। जैसे—अग्रवालो या खत्रियो की पचायत।

विशेष—'पचायत' और 'मध्यस्थता' के अतर के लिए दे० 'मध्यस्थता' का विशेष।

पद—पंचायत-घर। (देखें)

क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।

मुहा०—पचायत बटोरना=अपने किसी विवाद का निर्णय कराने के लिए पचो और बिरादरी या समाज के सब लोगो को बुलाकर इकट्ठा करना।

४ उक्त प्रकार के समाज या समुदाय मे होनेवाला पारस्परिक वाद-विवाद। ५ आज-कल, दो दलो मे होनेवाले आर्थिक विवाद के सबध मे दोनो दलो या पक्षो के चुने हुए लोगो का वह वर्ग या समूह जो दोनो पक्षो की बाते सुनकर उनका निर्णय करता है। ६ कुछ लोगो का वह समाज जिसमे वे बैठकर तरह-तरह के और प्राय व्यर्थ के झगडे-बखेडो की बाते करते है। ७ झगडा। विवाद।

पंचायत-घर—पु० [हिं०] वह स्थान जहाँ गाँव, बिरादरी या समाज के लोग बैठकर पचायत या वाद-विवाद करते और पचो से उनका निर्णय कराते हैं।

पचायतन—पु० [पचन्-आयतन, द्विगु स०] किसी देवता और उसके साथ रहनेवाले चार व्यक्तियों का वर्ग या समूह। जैसे—शिव-पचायतन, राम-पचायतन आदि।

पचायत-बोर्ड—पु० [हिं० + अ०] वर्तमान भारत मे ग्रामीण लोगो की वह विचार-सभा जिसमे गाँव के प्रतिनिधि आपसी विवादो आदि का निर्णय करते है। ग्राम-पचायत।

पचायती—वि० [हिं० पचायत] १ पचायत-सबधी। पचायत का। २ पचायत द्वारा किया या दिया हुआ। जैसे—पचायती निर्णय, पचायती हुकुम। ३ (वस्तु) जिस पर पचायत या सारे समाज का अधिकार या नियत्रण हो। जैसे—पचायती धर्मशाला, पचायती मदिर। ४ जिसे सब लोग समान रूप से प्रामाणिक मानते हो। जैसे—पचायती तौल। ५ दोगला। वर्णसकर। (बाजारू)

पचायती राज्य—पु०=गणतत्र।

पचायुध—पु० [पचन्-आयुध, ब० स०] विष्णु, जिनके पाँच आयुध माने जाते है।

पचारी—स्त्री० [स० पच√ऋ (जाना)+अण्—ङीप्, उप० स०] चौसर, शतरज आदि की बिसात।

पचार्चि (स्)—पु० [पचन्-आर्चिस्, ब० स०] बुध ग्रह।

पचाल—पु० [स०√पच कालन्] [वि० पाचाल] १ पचमुख महादेव। २ पाँचों ज्ञानेद्रियो के पाँच विषय। ३ क्षत्रियो की एक प्राचीन शाखा। ४ उक्त शाखा के क्षत्रियो का देश जो हिमालय और चबल के बीच मे गगा के दोनो ओर स्थित था। ५ उक्त देश का निवासी। ६ बाभ्रव्य गोत्र के एक ऋषि। ७ शिव। ८ एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण (ऽऽ।) होता है। ९ दक्षिण भारत की एक जाति जो लकडी और लोहे का काम करती है। १० एक प्रकार का जहरीला कीडा।

पचालिका—स्त्री० [स० पच=प्रपच+अल् (शोभा)+ण्वुल्—अक, टाप्, इत्व] १ गुडिया। २. साहित्य मे पाचाली रीति का दूसरा नाम।

पचालिस†—वि०, पु०=पैंतालीस।

पचाली—वि० [स० पचाल+इन्] १ पचाल देश मे रहनेवाला। २ पचाल का।

स्त्री० १. द्रौपदी। २ गुडिया। ३ चौपड या चौसर की बिसात। ४ एक प्रकार का गीत जिसे पाचाली भी कहते हैं। दे० 'पाचाली'।

पचावयव—वि० [पचन्-अवयव, ब० स०] जिसके पाँच अवयव या अग हो। पचागी।

पु० १ प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय और निगमन—इन पाँच अवयवोंवाला न्याय-वाक्य। २ न्याय के पाँच अवयव।

पंचावस्थ—वि० [पचन्-अवस्था, ब० स०] पाँचवी अवस्था मे पहुँचा हुआ अर्थात् मरा हुआ। मृत।

पु० लाश। शव।

पचाविक—पु० [पचन्-आविक, द्विगु स०] भेड का दूध, दही, घी, लेंडी और मूत्र ये पाँचो पदार्थ।

पचाश—वि० [स० पचाशत्+डट्] पचासवाँ।

पचाशत्—वि० [स० पचदशन्, नि० सिद्धि] जो गिनती मे चालीस से दस अधिक हो। पचास।

पु० उक्त को सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५०।

पचाशिका—स्त्री० [स० पचाशत्+डिनि+क—टाप्] पचास श्लोकों या कवित्तो का सग्रह या समूह।

पंचाशीत—वि० [स० पचाशीति+डट्, टिलोप] क्रम या गिनती मे पचासी के स्थान पर पडनेवाला। पचासीवाँ।

पंचाशीति—स्त्री० [पचन्-अशीति, मध्य०स०] पचासी की सूचक सख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—८५।

पंचास्य—वि०, पु० [पचन्-आस्य, ब० स०]=पचानन। (दे०)

पचाह—पु० [पचन्-अहन्, द्विगु स०] १ पाँच दिनों का समूह। २ पाँच दिनो मे होनेवाला एक तरह का यज्ञ। ३ सोमयाग के अन्तर्गत वह कृत्य जो सुत्या के पाँच दिनो मे किया जाता था।

पचिका—स्त्री० [स० पचन+ठन्—इक, टाप्] १ वह पुस्तक, जिसमे पाँच अध्याय हो। २ पाँच गोटियों से खेला जानेवाला एक प्रकार का जूआ।

पंचीकरण—पु० [स० पचन्+च्वि, नलोप, ईत्व√कृ+ल्युट्—अन] १ वेदात मे एक पद जो उस क्रिया का सूचक होता है जिसमे से पचभूतो के द्वारा किसी चीज का सघटन होता है। (किसी चीज के सघटन मे आधा अश एक तत्त्व से बना होता है और शेष आधे अश मे बाकी चारों तत्त्वो का समान रूप से अस्तित्व माना जाता है।) २ हठयोग की एक सिद्धि, जिसके सबध मे यह माना जाता है कि इससे साधक जब चाहे तब अपने पचभौतिक शरीर को पाँचों भूतो मे विलीन करके अदृश्य या तिरोहित हो सकता है और फिर जब चाहे तब अपना पहले वाला शरीर धारण कर सकता है।

पचीकृत—भू० कृ० [स० पचन्+च्वि, नलोप, ईत्व√कृ+क्त√कृ (करना)—कर्मणि क्त] (तत्त्व या भूत) जिसका पचीकरण हुआ हो या किया गया हो।

पचूरा—पु० [हिं० पानी+चूना] बच्चो के खेलने का एक प्रकार का मिट्टी का खिलौना जिसके पेंदे मे बहुत से छेद होते है और जिसमे पानी भरने से बूँदे टपकती है।

पचेंद्रिय—स्त्री० [पचन्-इद्रिय, द्विगु स०] १ पाँच ज्ञानेद्रियाँ। २ पाँच कर्मेंद्रियाँ।

पचेषु—पु० [पचन्-इषु, ब० स०] पचशर। कामदेव।

पँचैया†—स्त्री० [स० पचमी] नागपचमी।

पंचो—पु० [देश०] गुल्ली-डडे के खेल मे, बाएँ हाथ से गुल्ली को उछाल कर दाहिने हाथ मे पकडे हुए डडे से उस पर किया जानेवाला आघात।

पँचोतर सौ—पु० [स० पचोत्तर शत] सौ और पाँच की सख्या या अक। एक सौ पाँच की सख्या जो अको मे इस प्रकार लिखी जाती है—१०५।

पँचोतरा—पु० [स० पञ्चोत्तर] कन्या-पक्ष के पुरोहित का एक नेग जिसमे उसे दायज मे विशेषकर तिलक के समय वर-पक्ष को मिलनेवाले रुपयों आदि मे से सैकडे पीछे पाँच मिलते है।

पंचोपचार—पुं० [पचन्-उपचार, द्विगु स०] हिंदुओं मे देव-पूजन के अवसर पर षोडशोपचार के साधन मे किसी कारणवश असमर्थ होने पर केवल गध, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य (इन पांच उपचारों) से किया जानेवाला पूजन।

पंचोपविष—पुं० [पचन्-उपविष, द्विगु स०] थूहड, मदार, कनेर, जलपीपल और कुचला—ये पाँच प्रकार के उपविष।

पंचोपसिता—स्त्री० =पचोपचार।

पंचोली—स्त्री० [स० पच-आवलि] एक पौधा जो पश्चिमी और मध्य भारत मे होता है। इसकी पत्तियों और डठलो से सुगन्धित तेल निकलता है।

पुं० [स० पचकुल, पचकुली] कुछ जातियो मे वश-परम्परा से चली आती हुई एक उपाधि।

पंचोषण—पुं० [पचन्-उषण, द्विगु स०] पिप्पली, पिप्पलीमूल, चव्य, मिर्च और चित्रक ये पाँच ओषधियाँ।

पंचोष्मा (ष्मन्)—पुं० [पचन्-ऊष्मन्, द्विगु स०] शरीर के अन्दर की वे पांच प्रकार की अग्नियाँ जो भोजन पचाती है।

पंचौदन—पुं० [पचन्-ओदन, ब० स०] एक प्रकार का यज्ञ।

पचौली—स्त्री०=पचोली।

पंचौवर†—वि० [हि० पाँच+स० आवर्त ?] जिसकी पाँच तह की गई हो। पाँच परतो का। पँचहरा।

पंछा—पुं० [हि० पछाला] १ शरीर पर होनेवाले छाले या फुन्सी के फूटने पर उसमे से निकलनेवाला सफेद स्राव। २ वनस्पतियों, पौधों, वृक्षो आदि का कोई अग छिलने पर उसमे से निकलनेवाला पानी की तरह का स्राव।

क्रि० प्र०—निकलना।—बहना।

पंछाला—पुं० [हि० पानी+छाला] १ फफोला। छाला। २. =पछा।

†पुं० दे० 'पुछल्ला'।

पछी—पुं० [स० पक्षी] चिडिया। पक्षी।

पज—वि० [स० पच से फा०] पच की तरह का पाँच का सक्षिप्त रूप। जैसे—पज-प्यारे। पज-हजारी।

पजक—पुं० [हि० पजा] १ पजे का निशान। २ मागलिक अवसरो पर दीवारो पर लगाई जानेवाली हाथ के पजे से किसी रग की छाप। ३ चित्रकला मे, वह अकन जिसमे पाँच-पाँच दल या शाखाएँ (हाथ की उँगलियो की तरह) दिखाई गई हो। (पामेट)

पज-कल्यान†—पुं० पच कल्यान।

पँजडी—स्त्री० [हि० पज+डी (प्रत्य०)] चौसर के खेल मे एक दाँव।

पज-तन—पुं० [फा०] हजरत मुहम्मद, हजरत अली, फातिमा और उनके दोनो पुत्र हसन तथा हुसैन ये पाँच व्यक्ति जिन्हे मुसलमान परम-पूज्य मानते है।

पँजना—अ० [स० पज=दृढ होना, रुकना] बरतनो मे जोड या टाँका लगाना।

पज-प्यारे—पुं० [हि० पज+प्यारा] गुरु गोविन्दसिह के वे पाँच प्रिय भक्त जिन्हे उन्होने खालसा-पथ की स्थापना के समय परीक्षा के रूप मे मार डालने के लिए बुलाया था, पर जिन्हे मारा नही था।

पंजर—पुं० [स०√पज् (रोकना)+अरन्] १ शरीर। देह। २ हड्डियो आदि का वह ढाँचा जिस पर मास, त्वचा आदि होते है और जिनके आधार पर शरीर ठहरा रहता है। ककाल। ठठरी। ३ किसी चीज का वह भीतरी ढाँचा, जिस पर कुछ आवरण रहते है और जिनसे उसका अस्तित्व बना रहता है।

मुहा०—अजर-पजर ढीला होना आघात, प्रहार, भार आदि के कारण ऐसी स्थिति उत्पन्न होना कि कार्यों या शरीर का ठीक तरह निर्वाह न हो सके।

४. पिजडा। ५ कलियुग। ६ काल नामक कन्द। ७ गाय या गौ का एक सस्कार।

पजरक—पुं० [स० पजर+कन्] डठलो आदि का बुना हुआ बडा टोकरा। खाँचा। झाबा।

पंजरना—अ०=पजरना।

पँजरी—स्त्री० [स० स्त्रीत्वात्-ङीप्, पजर=ठठरी] अर्थी। टिकठी।

वि० [स० पजर] जो पजर के रूप मे या पजर मात्र हो।

पंज-रोजा—वि० [फा० पजरोज] १ पाँच दिनो का। २ पाँच दिनो मे पूरा या समाप्त होनेवाला। ३ अस्थायी और नश्वर।

पज-हजारी—पुं० [फा०] १ पाँच हजार सैनिको का सेनापति। २ मुगल शासनकाल मे एक प्रकार का सैनिक पद जो बडे-बडे अमीरो, दर-बारियो और सरदारो का उनके सम्मान के लिए प्रदान किया जाता था।

पजा—पुं० [स० पचक से फा० पज] १ एक ही तरह की पाँच चीजो का वर्ग या समूह। गाही। जैसे—चार पजे आम। २ हाथ (या पैर) का वह अगला भाग जिसमे हथेली (या तलवा) और पाँचो उग-लियाँ होती है। ३ उँगलियो और हथेली का सपुट जिसमे चीजे उठाई, पकडी या ली जाती है, अथवा जिनसे पशु-पक्षी आदि प्रहार या वार करते है। चगुल।

पद—पजे मे =अधिकार या वश मे। चगुल मे। जैसे—उनके पजे मे फँसकर निकलना सहज नही है।

मुहा०—पजा फैलाना या बढ़ाना=(क) कुछ लेने के लिए हाथ आगे करना। हाथ पसारना या बढाना। (ख) अपने अधिकार या वश मे करने के लिए उद्यत या तत्पर होना। हथियाने का प्रयत्न करना। **पजा मारना**=(क) झपट कर आघात या प्रहार करना। (ख) लेने के लिए झपटकर आगे बढना या लपकना। **पजे झाड़कर (किसी से) चिमटना या (किसी के) पीछे पड़ना**=जी-जान से या सारी शक्ति लगाकर किसी से कुछ लेने, उसे तग करने या हानि पहुँचाने पर उतारू होना। **पजो के बल चलना** बहुत अधिक अभिमान या मद के कारण इस प्रकार उछलते हुए चलना कि पूरे पैर जमीन पर न पडने पाये।

४ जूते का वह अगला भाग जिसमे पैर का पजा रहता है। जैसे—इस जूते का पजा कुछ ज्यादा चौडा है। ५ एक प्रकार की शारीरिक बल-परीक्षा जिसमे दो व्यक्ति अपने दाहिने हाथ की उँगलियाँ आपस मे फँसाकर एक-दूसरे का हाथ उमेठने या मरोडने का प्रयत्न करते है।

क्रि० प्र०—लडाना।—लेना।

मुहा०—(किसी से) पंजा लड़ाना=सामने आकर बल-परीक्षा करना। उदा०—मृत्यु लडाएगी तुमसे पजा।—दिनकर।

६ कुछ ऐसे यत्र जिनका अगला भाग या तो हाथ के पजे के आकार का

होता है या बहुत-कुछ वही काम करता है जो साधारणतः पंजे से लिया जाता है। जैसे—पीठ खुजलाने का पंजा, मल आदि उठाने या हटाने का भंगियों और मेहतरों का पंजा, भट्ठी में की आग हटाने-बढ़ाने का लोहारों या हलवाइयों का पंजा। ७ धातु का वह खंड जिसका अगला भाग हाथ के पंजे और हथेली के आकार का होता है और जो ताजिए आदि के साथ झंडे या निशान के रूप में चलता है। ८ ताश का वह पत्ता अथवा पासे का वह पार्श्व जिस पर पाँच बिंदियाँ या बूटियाँ होती हैं। ९ जूए का वह दाँव जिसकी जीत-हार पाँच की संख्या पर आश्रित होती है। (जुआरी) जैसे—दो पंजे तो मार चुके, अब एक पंजा और मारो तो सब लोग ठंढे हो जायँ।

पद—छक्का-पंजा=छल-कपट, दाँव-पेंच।

१० कोई ऐसी चीज जिसमें उँगलियों की तरह के बहुत से अंग या अंश इधर-उधर निकले हों। जैसे—केले के इस पंजे में तो दस ही केले हैं, दो केले और ले लो तो पूरे एक दरजन हो जायँ। ११ पुट्ठे के ऊपर का मांस जो हाथ के पंजे की तरह विस्तृत होता है। (कसाई या बूचड़)

पंजा-तोड़—पुं० [हिं०] कुश्ती का एक प्रकार का पेंच, जिसमें विपक्षी से हाथ मिलाकर उसका पंजा पकड़कर उमेठते हुए अपनी कोहनी उसके पेट में लगाकर उसे अपनी पीठ पर ले आते हैं और तब झटके से उसे जमीन पर चित गिरा देते हैं।

पंजाब—पुं० [फा०] १ अविभाजित भारत का उत्तर-पश्चिम का एक प्रसिद्ध प्रदेश जिसमें सतलज, व्यास, रावी, चनाब और झेलम—ये पाँच नदियाँ बहती हैं। २ उक्त प्रदेश का वह अंश, जो पाकिस्तान बनने के बाद अब भी भारत का एक राज्य है।

पंजा-बल—पुं० [हिं० पंजा+बल] पालकी ढोनेवाले कहारों की बोली में, यह सूचित करने का पद कि आगे की भूमि ऊँची है। (अगला कहार पिछले कहार को इसी के द्वारा सचेत करता है।)

पंजाबी—वि० [हिं० पंजाब] १ पंजाब-संबंधी। पंजाब का। २. पंजाब में बनने, होने या रहनेवाला। ३ गुरुमुखी भाषा-संबंधी। जैसे—पंजाबी सूबा।

पुं० १ पंजाब का नागरिक। २ ढीली बाँह का कुरता जिसका प्रचलन पंजाब में हुआ था।

स्त्री० पंजाब की भाषा जो गुरुमुखी लिपि में लिखी जाती है।

पंजारा†—पुं०=पिंजारा (धुनिया)।

पंजिका—स्त्री० [सं०√पंज्+इन्+कन्—टाप्] १. वह टीका जिसमें प्रत्येक शब्द का अर्थ स्पष्ट किया गया हो। २ यमराज की वह लेखा-बही, जिसमें मनुष्यों के शुभाशुभ कर्मों का लेखा लिखा जाता है। ३. हिसाब या विवरण लिखने की पुस्तिका। (रजिस्टर)

पंजियाड़†—पुं०=पंजीकार।

पंजी—स्त्री० [सं०√पंज्+इन्—ङीप्] हिसाब, विवरण आदि लिखने की पुस्तिका। रजिस्टर। बही।

पंजीकरण—पुं० [सं० पंजी+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १ किसी लेख या लेखे का पंजी में लिखा जाना। २ नाम-सूची में नाम लिखा या चढ़ाया जाना।

पंजीकार—पुं० [सं० पंजी√कृ+अण्] १ वह जो पंजी या बही-खाता लिखने का काम करता हो। आय-व्यय आदि का लेखक। मुनीम। २. वह ज्योतिषी जो पंचांग बनाने का काम करता हो। ३ मिथिला में वह पंडित जिसके पास भिन्न-भिन्न गोत्रों के लोगों की वंशावलियाँ रहती हैं, और जो यह व्यवस्था देता है कि अमुक-अमुक परिवारों में वैवाहिक संबंध स्थापित हो सकता है या नहीं।

पंजीकृत—भू० कृ० [सं० पंजी√कृ+क्त] (लेख) जिसका पंजीकरण हुआ हो।

पंजी-बंधन—पुं० [सं० ष० त०] पंजीयन।

पंजीबद्ध—भू० कृ० [सं० स० त०] पंजीकृत।

पंजीयक—पुं० [सं० पंजीकार] १ वह जो पंजी पर लेख, विवरण आदि लिखता हो। २ किसी संस्था अथवा विभाग के अभिलेख सुरक्षित रखनेवाला प्रधान अधिकारी। (रजिस्ट्रार)

पंजीयन—स्त्री० [सं० पंजीकरण] किसी लेख या लेखे का किसी कार्यालय की पंजी में (विशेषतः राजकीय पंजी में) लिखा जाना। (रजिस्ट्रेशन)

पंजीरी—स्त्री० [हिं० पाँच+ईरी (प्रत्य०)] कई तरह की चीजों और मसालों को भूनकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का मीठा चूर्ण जो खाने के काम में आता है। कसार। जैसे—सत्यनारायण की पूजा के लिए बननेवाली पँजीरी, प्रसूता अथवा दुर्बला को खिलाने के लिए बनाई जानेवाली पौष्टिक पँजीरी।

स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसके कुछ अंगों का उपयोग औषध के रूप में होता है। अज-पाद। इन्दुपर्णी।

पंजेरा—पुं० [हिं० पाँजना] १. बरतन झालने का काम करनेवाला। बरतन में टाँके आदि देकर जोड़ लगानेवाला। २ दे० 'पिंजारा'।

पंड—वि० [सं०√पंड् (जाना)+अच्] फल-रहित। निष्फल।

पुं० १ नपुंसक। हिजड़ा। २. (वृक्ष) जो कभी फलता न हो।

स्त्री० [सं० पिंड] बड़ी और भारी गठरी। (पश्चिम)

पंडग—पुं० [सं० पंड√गम् (जाना)+ड?] १ नपुंसक। हिजड़ा। २ खोजा।

पंडत†—वि०, पुं०=पंडित। (पश्चिम)

पंडत-खाना—पुं० [हिं०] १ जेलखाना। बंदीगृह। २ जूआखाना। (पश्चिम)

पंडरा†—पुं० [हिं० पानी+ढरना (ढरा)] पनाला। नाबदान।

पुं०=पंडवा (भैंस का बच्चा)।

पंडरी—स्त्री० [हिं० पंडना] वह परती भूमि जिसमें ऊख बोया जाने को हो।

क्रि० प्र०—छोड़ना।—रखना।

पँडरू—पुं०=पंडवा।

पंडल—वि० [सं० पांडुर] पांडु वर्ण का। पीला।

पुं० [सं० पिंड] बदन। शरीर।

†पुं०=पांडव।

पँडवा—पुं० [?] भैंस का बच्चा। पड़वा।

पंडवा†—पुं०=पांडव।

पंडा—पुं० [सं० पंडित] [स्त्री० पंडाइन] १ वह ब्राह्मण जो तीर्थ यात्रियों को मंदिरों आदि के दर्शन कराता तथा उनसे प्राप्त होनेवाले

धन से अपनी जीविका चलाता हो। २ रसोई बनानेवाला ब्राह्मण। ३. रहस्य सम्प्रदाय में, बुद्धि।

पंडाइन—स्त्री० हिं० 'पाँडे' का स्त्री०।

पडाइन—स्त्री० हिं० 'पडा' का स्त्री०।

पंडापूर्व—पु० [स० पड-अपूर्व, सुप्सुपा० स०] धर्म और अधर्म से उत्पन्न वह अदृष्ट जो कर्म के अनुसार फल न दे सकता हो अथवा ऐसे फल की प्राप्ति मे बाधक हो। (मीमासा)

पंडाल—पु०[तमिल पेंडल] कनाता आदि से घिरा और तबुओं से छाया हुआ वह बहुत बडा मडप, जिसके नीचे सस्थाओं, सभाओं आदि के अधिवेशन होते है।

पंडित—वि० [स० पडा+इतच्] [स्त्री० पडिता, पडिताइन, पडितानी] कुशल। दक्ष। निपुण।

पु० १ वह जो किसी विद्या या शास्त्र का बहुत अच्छा ज्ञाता हो। विद्वान्। २ शास्त्रों आदि का ज्ञाता ब्राह्मण। ३ ब्राह्मणो के नाम के पहले लगनेवाली आदरसूचक उपाधि। ४ सार्वराष्ट्रीय मार्कोतिकी मे वह बहुत चमकीला और तेज प्रकाश जो समुद्री और हवाई जहाजो को उनका मार्ग और ठहरने का स्थान बतलाता है।

पंडितक—पु० [स० पडित+कन्] धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम।

पडित-जातीय—वि० [स० पडित-जाति, ष० त०+छ—ईय] १ जो पडित न होने पर भी किसी रूप मे पडितो के वर्ग मे आ सकता हो। २ साधारण या सामान्य रूप से कुशल या दक्ष।

पडितमानिक—वि० पडितमानी।

पडितमानी (निन्)—वि० [स० पडित√मन (मानना)+णिनि] ऐसा दभी जो पडित न होने पर भी अपने आप को पडित समझता हो।

पडितम्मन्य—वि० [स० पडित√मन् खश्, मुम्, श्यन्] =पडितमानी।

पडितराज—पु० [प० त०] १ बहुत बडा पडित या विद्वान्। २ सस्कृत के प्रसिद्ध विद्वान् जगन्नाथ की उपाधि।

पडितवादी (दिन्)—वि० [स० पडित√वद् (बोलना)+णिनि] =पडितमानी।

पडिता—वि० स्त्री० [स० पडित+टाप्] पडित (स्त्री)। विदुषी।

पडिताइन†—स्त्री० =पडितानी।

पडिताई—स्त्री० [हिं० पडित+आई (प्रत्य०)] १ पाडित्य। विद्वत्ता।

मुहा०—पडिताई छाँटना=अनावश्यक रूप से कुअवसर पर अपने पाडित्य का व्यर्थ परिचय देना। २ पडितो की वृत्ति या व्यवसाय।

पडिताऊ—वि० [स० पडित] १ पडितो जैसा। पडितो की तरह का। २ विद्वत्तापूर्ण। ३ पडितो मे प्रचलित और मान्य। ४ आडम्बरपूर्ण।

पडितानी—स्त्री० [स० पडित] १ पडित की स्त्री। २ ब्राह्मणी।

पडितिमा (मन्)—स्त्री० [स० पडित+इमनिच्] पाडित्य। विद्वत्ता।

पडु—वि० [स०√पड् (गति)+कु] १ पीलापन लिये हुए मटमैला। २ पीला। ३ सफेद।

पडुक—पु० [स० पाडु] [स्त्री० पडुकी] फाख्ता नामक पक्षी। पेडकी।

पडुर—पु० [स० पडु√रा (देना)+क] पानी मे रहनेवाला साँप। वि० पाडुर।

पडोह†—पु० [हिं० पानी+दह] पनाला।

पडौ*—पु० =पाडव।

पंढ्क—वि० [स०] १ पगु। २ नपुसक।

पत—पु०=पथ।

पु० [?] पश्चिमी उत्तरप्रदेश मे रहनेवाले पहाडी ब्राह्मणो की एक जाति।

पति*—स्त्री०=पक्ति।

पंती*—स्त्री० पक्ति।

पँतीजना†—स० पीजना (रूई आदि ओटना)।

पँतीजी—स्त्री० [हिं० पँतीजना] रूई पीजने का उपकरण। धुनकी।

पँत्यारी*—स्त्री० पक्ति।

स्त्री० [स० पक्ति] पक्ति। कतार। उदा०—धूप-दीप फल-फूल द्रव्य की लगी पत्यारी।—रत्ना०।

पंथ—पु० [स० पथ] १ मार्ग। रास्ता। उदा०—पथ रहने दो अपरिचित।—महादेवी।

क्रि० प्र०—गहना।—दिखाना।—पकडना।—लगना।—लगाना।

मुहा०—(किसी का) पथ जोहना, निहारना या सेना रास्ता देखना। प्रतीक्षा करना।

२ आचार-व्यवहार या रहन-सहन का ढग या प्रणाली।

मुहा०—पथ पर या पथ मे पाँव देना=(क) चलने मे प्रवृत्त होना। चलना आरभ करना। (ख) कोई आचार, व्यवहार ग्रहण करना। **(किसी के) पथ लगना**=(क) किसी का अनुयायी बनना। (ख) किसी को दग या परेशान करने के लिए उसके कार्य या मार्ग मे बाधक होना। **(किसी को) पथ पर लगाना या लाना** अच्छे और ठीक रास्ते पर लगाना या लाना।

३ कोई ऐसा धार्मिक मत या सम्प्रदाय जिसमे किसी विशिष्ट प्रकार की उपासना या साधना-पद्धति प्रचलित हो। (कल्ट) जैसे—कबीर या नानक पथ। ४ सिक्खो का एक सम्प्रदाय।

पथक—वि० [स० पथिन्+कन्, पथ आदेश] मार्ग मे उत्पन्न होनेवाला।

पथकी† —वि०=पथिक।

पथाई*—पु० =पथी।

पथान*—पु०=पथ।

पथिक†—वि० पथिक।

पंथी—पु० [स० पथिन] १ पथ या पथ पर चलनेवाला। पथिक। बटोही। राही। २ किसी पथ या सम्प्रदाय का अनुयायी। जैसे—कबीर-पथी। ३ सिक्खो के पथ नामक दल का सदस्य।

स्त्री० [हिं० पथ] १ पथ होने की अवस्था या भाव। २ एक पद जो कुछ शब्दो के अन्त मे लगकर भाववाचक प्रत्यय 'ता' या 'पन' का अर्थ देता है। जैसे—अवारापथी, गधापथी।

पद—स्त्री० [फा०] [कर्त्ता पदगर] १ सदुपदेश। नसीहत। २ परामर्श।

पद्रह—वि० [स० पचदश, पा० पण्णरस, प्रा० पण्णरस, पण्णरह] जो गिनती मे दस से पाँच अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१५।

पद्रहवाँ—वि० [हि० पद्रह] [स्त्री० पद्रहवी] क्रम या गिनती मे पद्रह के स्थान पर पड़ने या होनेवाला।

पद्रहियो—अव्य० [हि० पद्रह] लगभग पन्द्रह या इनसे भी कुछ अधिक दिनो का समय। जैसे—जरा से काम मे तुमने पन्द्रहियो लगा दिये।

पप—पु० [अ०] १ पानी का नल, विशेषत ऐसा नल जिसमे हवा के जोर स पानी किसी नीचे स्तर से ऊँचे स्थान पर चढाया जाता हो। २ पिचकारी। ३ माइकलो आदि की ट्यूबो मे हवा भरने का उपकरण। ४ एक प्रकार का जूता।

पपा—स्त्री० [स०√पा (रक्षा)+मुट्, नि० सिद्धि] १ दक्षिण भारत की एक प्राचीन नदी। २ इस नदी के किनारे का एक नगर। ३ उक्त नगर के पास का एक तालाब या सर। यही शातकर्णि मुनि तप करते थे।

पपाल†—वि० =पापी।

वि० [स० पाप] १ पाप करनेवाला। २ दुष्ट। उदा०—बुरो पेट पपाल है ।—गग।

पबकी—वि० [हि पबा] सूती। (पश्चिम)

पबा—पु० [फा० पुब] १ कपास। २ रूई।

पु० [देश०] एक प्रकार का पीला रग जिससे ऊन रँगा जाता है।

पँवर†—स्त्री० पँवरी।

पँवरना†—अ० [स० प्लवन] १ पौडना या तैरना। २ गहराई की थाह लेना या पता लगाना।

अ० [हि० पँवारना का अ०] पँवारा या फेका जाना।

पँवरि†—स्त्री० पँवरी।

पँवरिया—पु० [हि० पँवाडा] पुत्र-जन्म आदि अवसरो पर मगल गीत गानेवाला याचक।

†पु०=पौरिया (द्वारपाल)।

पँवरी—स्त्री० [हि० पाँव] पाँवो मे पहनने का खडाऊँ नामक उपकरण। पाँवरी।

†स्त्री० [स० प्रतोली, प्रा० पओली, पवरी] १ ड्योढी। पौरी। २ दरवाजा। द्वार।

पँवाडा—पु० दे० 'पवाडा'।

पँवार—पु० =परमार (क्षत्रियो का एक वर्ग)।

पँवारना—स० [स० प्रवारण] १ कोई काम करने से रोकना। २ उपेक्षापूर्वक दूर करना या हटाना। ३ फेकना।

पँवारी—स्त्री० [?] एक प्रसिद्ध उपकरण जिससे लोहार लोहे मे छेद करते हैं।

पशाखा†—पु० =पनसाखा।

पँसरहट्टा—पु० [हि० पसारी+हट्ट, हाट] पसारियो का बाजार। पसरहट्टा।

पँसरहट्टी—स्त्री० [हि० पँसरहट्टा] पसारी की दुकान।

पसारी—पु० [स० प्रसार या प्रसारी ?] वह बनिया जो मुख्यत जीरा, धनियाँ, मिर्च, लौग, हल्दी आदि मसाले और साधारण जडी-बूटियाँ आदि बेचता हो।

पसा-सार—पु० [हि० पासा+स० सारि=गोटी] पाँसे का खेल। चौसर।

पँसियाना†—स० [हि० पाँसा] १. पाँसा या पासा फेकना। २ पासे से मारना।

पँसुरी†—स्त्री०=पसली।

पँसुली†—स्त्री०=पसली।

पँसेरा†—पु० १ =पसारी। २ =पसरहट्टा।

पु० [हि० पाँच सेर] [स्त्री० अल्पा० पँसेरी] पाँच सेर का बटखरा। पसेरी।

पँह†—अव्य० [स० पार्श्व] १ निकट। समीप। २ मे।

पइ*—विभ०=पै (पर)।

पइग†—पु०=पग (डग)।

पइज†—स्त्री०=पैज (१ टेक। २ होड)।

पइठ†—स्त्री० =पैठ (पहुँच)।

पइठना†—अ०=पैठना (बैठना)।

पइता—पु०=पाइता (छन्द)।

पइना†—वि०=पैना।

पइलइ†—वि०=परला। उदा०—सरवर पइलइ तीर =सरोवर का परला तट।

पइला†—पु० [?] अनाज नापने का एक तरह का पुरानी चाल का पाँच सेर की तौल का बडा बरतन।

† वि०=परला।

पइसना†—अ० =पैठना।

पइसार—पु० [हि० पइसना] पैठ। पहुँच।

पई—स्त्री० [?] पौधो मे से डोडे, फूल आदि चुनने या तोडने का काम। जैसे—कपास या कुसुम की पई।

पउआ—पु०=पौआ।

पउनार†—स्त्री० =पौनार।

पउला†—पु०=पौला।

पकठोस—वि० [हि० पक्का+ठोस] १ पक्का और ठोस। २ (व्यक्ति) जो जवानी की उमर पार कर चुका हो।

पकड—स्त्री० [हि० पकडना] १ पकडने की क्रिया या भाव। २ पकडने का ढग या तरीका। ३ पकड या रोककर रखने की शक्ति। उदा०—मै एक पकड हूँ जो कहती ठहरो कुछ सोच-विचार करो।—प्रसाद। ४ किसी काम या बात का वह अग या पक्ष जिससे उसकी त्रुटि या दोष का पता चल सकता हो। ५ प्राप्ति या लाभ का डौल या सुभीता। जैसे—कचहरी के मामूली चपरासियो की भी रोज दो-चार रुपयो की पकड हो जाती है। ६ दो व्यक्तियो मे होनेवाला, कोई ऐसा काम जिसमे दोनो एक दूसरे को पकडकर गिराने, दबाने आदि का प्रयत्न करते हो। भिडत। जैसे— (क) आओ, एक पकड कुश्ती और हो जाय। (ख) इस विषय मे दोनो मे कई पकड कहा-सुनी (या धुक्का-फजीहत) हो चुकी है।

पकड-धकड†—स्त्री० =धर-पकड।

पकड़ना—स० [स० प्रक्रमण या पर्क (मधुपर्क की तरह)?] १ कोई चीज इस प्रकार दृढ़तापूर्वक हाथ मे थामना कि वह गिरने, छूटने

या इधर-उधर न होने पावे। थामना। धरना। २ वेगपूर्वक आती हुई चीज को आगे बढ़ने से रोकना। जैसे—(क) गेंद पकड़ना। (ख) मारनेवाले का हाथ पकड़ना। ३ जो छिपा या भागा हुआ हो, छिप या भाग सकता हो अथवा छिपने या भागने को हो, उसे इस प्रकार अधिकार या वश में करना कि वह छिप, बच, भाग न सके। गिरफ्तार करना। जैसे—चोर या डाकू को पकड़ना; नादिहन्द आसामी को पकड़ना। ४ जो छिपा हुआ हो या सबके सामने न हो, उसे ढूँढ़कर इस प्रकार निकालना कि वह सबके सामने आ जाय। जैसे—किसी की चोरी या भूल पकड़ना। ५ किसी प्रकार के जाल या फंदे में फँसाकर पशु-पक्षियों आदि को अपने अधिकार या वश में करना। जैसे—चिड़िया, मछली या हिरन पकड़ना। ६ जो आगे चलता या बढ़ता जा रहा हो, अथवा आगे निकल जाने को हो, उसकी बराबरी या साथ करने के लिए ठीक समय पर उसके पास तक पहुँचना। जैसे—(क) घुड़-दौड़ में एक घोड़े का दूसरे घोड़े को पकड़ना। (ख) स्टेशन पर पहुँचकर रेलगाड़ी पकड़ना। ७ अनुचित अथवा अवैध काम करते हुए किसी व्यक्ति को ढूँढ़ निकालना। जैसे—किसी को जुआ खेलते या शराब पीते हुए पकड़ना। ८ किसी को कोई काम करने से रोकना। जैसे—बोलनेवाले की जबान पकड़ना। ९ ठीक तरह से किसी चीज को जानना और पहचानना। जैसे—अक्षर पकड़ना, स्वर पकड़ना। १० एक वस्तु का दूसरी वस्तु से चिपक जाना। जैसे—दफ्ती का कागज को पकड़ना। ११ रोग या विकार का ऐसा उग्र रूप धारण करना कि शरीर अथवा उसका कोई अंग ठीक तरह से काम न कर सके। जैसे—(क) महीनों से उसे बुखार ने पकड़ रखा है। (ख) गठिया ने उसका घुटना पकड़ लिया है। (ग) जुकाम में कफ बढ़कर कलेजा (या सिर) पकड़ लेता है। १२ किसी फैलनेवाली वस्तु के सम्पर्क में आकर उसके प्रभाव से युक्त होना। जैसे—(क) पत्थर का कोयला देर में आँच पकड़ता है। (ख) रसोई बनाते समय उसकी साड़ी के आँचल ने आग पकड़ ली। (ग) कोरा और खुरदुरा कपड़ा जल्दी रंग नहीं पकड़ता। १३ किसी का आचार-विचार, रंग-ढंग, रीति-वृत्ति आदि ग्रहण करके उसके अनुरूप बनना या होना। जैसे—(क) बाजारू लड़कों के साथ रहकर तुमने यह नई चाल पकड़ी है। (ख) खरबूजे को देखकर खरबूजा रंग पकड़ता है।

अ० अच्छी तरह या ठीक रूप में स्थायी या स्थिर होना। जैसे—(क) हवा करने से किसी चीज में आग जल्दी पकड़ती है। (ख) यह पौधा इस जमीन में जड़ नहीं पकड़ेगा।

पकड़वाना—स० [हि० पकड़ना का प्रे०] १ किसी को कुछ पकड़ने में प्रवृत्त करना। किसी के पकड़े जाने में सहायक होना। २ दे० 'पकड़ाना'।

संयो० क्रि०—देना।—लेना।

पकड़ाना—स० [हि० पकड़ना का प्रे० रूप] १ किसी के हाथ या अधिकार में कोई चीज देना। २ दे० 'पकड़वाना'।

अ० पकड़ लिया जाना। पकड़ा जाना।

पकना—अ० [सं० पक्व, हि० पक्का, पका+ना (प्रत्य०)] १ पक्का या परिपक्व होना। २ अनाज आदि का आँच पर रखे जाने से उबल या तपकर इस प्रकार कोमल होना या गलना कि वह खाया जा सके या खाने पर सहज में पच सके। जैसे—कढ़ी या खीर पकना। ३ कच्ची मिट्टी से बनी हुई चीजों के संबंध में, आँच से तपकर इस प्रकार कड़ा होना कि सहज में टूट न सके। जैसे—ईंटें या मटके पकना। ४ फलों आदि के संबंध में, वृक्षों में लगे रहने की दशा में अथवा उनसे तोड़ लिए जाने पर किसी विशिष्ट क्रिया से इस प्रकार कोमल, पुष्ट और स्वादिष्ट होना कि वे खाये जाने के योग्य हो सकें। जैसे—अमरूद या बेल पकना। ५ घाव, फोड़े आदि का ऐसी स्थिति में आना या होना कि उनमें मवाद आ जाय या भर जाय। जैसे—पुल्टिस बाँधने से फोड़ा पक जाता है। ६ शरीर के किसी अंग का छोटे-छोटे घावों, फुँसियों आदि से इस प्रकार भरना कि उनमें कोई विषाक्त तरल पदार्थ भर जाय। जैसे—कान पकना, जीभ या मुँह पकना।

मुहा०—**कलेजा पकना**=कष्ट या दुःख सहते-सहते किसी ऐसी स्थिति में पहुँचना कि प्रायः मानसिक व्यथा बनी रहे।

७ लेन-देन या व्यवहार आदि में, कोई बात निश्चित या स्थिर होना। पक्का होना। जैसे—(क) सलाह पकना। (ख) यह सौदा पक जाय तो सौ रुपये मिलेंगे। ८ चौसर की गोट के संबंध में चलते-चलते सब घर पार करके ऐसी स्थिति में पहुँचना जहाँ वह मर न सके। ९ बालों के संबंध में, वृद्धावस्था अथवा किसी प्रकार के रोग के कारण सफेद होना। १० ऐसी अवस्था में पहुँचना जहाँ से पतन, ह्रास आदि आरंभ होता है। जैसे—दादा जी अब अधिक पक चले हैं। ११ (बात) अच्छी तरह से स्मरण या याद हो जाना। जैसे—कविता कहानी या पहाड़ा पकना। (पश्चिम)

पकरना†—अ०, स०=पकड़ना।

पकरिया†—स्त्री० हि० 'पाकर' का स्त्री० अल्पा०।

पकला†—पु० [हि० पकना] फोड़ा।

पकली—स्त्री० [हि० पकड़ना] चारा बाँधने का एक प्रकार का जाल।

पकवान—पु० [सं० पक्वान्न] घी में तला या घी से पकाया हुआ खाद्य पदार्थ। जैसे—कचौरी, समोसा आदि।

पकवाना—स० [हि० पकाना का प्रे०] पकाने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को कुछ पकाने में प्रवृत्त करना।

पकसना†—अ० [अनु०] ऊमस या गर्मी की अधिकता के कारण किसी चीज का सड़ने लगना। बजब जाना। जैसे—पके हुए आम दो दिन में पकसने लगते हैं।

पकसालू—पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस।

पकाई—स्त्री० [हि० पकाना] १ पकाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ पक्कापन। दृढ़ता। ३ किसी काम या बात का कौशल या निपुणता।

†स्त्री० दे० 'पक्कापन'।

पकाना—स० [हि० पकना का स०] १ ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ पके। पकने में प्रवृत्त करना। २ अन्न आदि आँच पर चढ़ाकर उन्हें इस प्रकार उबालना, गरमाना या तपाना कि वे गलकर मुलायम हो जायँ और खाये जाने के योग्य हो जायँ। पाक करना। राँधना। जैसे—तरकारी, दाल या रोटी पकाना। ३ कच्चे फलों आदि के संबंध में, ऐसी क्रिया करना कि वे मीठे और मुलायम होकर खाये जाने

के योग्य हो जायँ। जैसे—आम या केला पकाना। ४ कच्ची मिट्टी से बनाये हुए बरतनों तथा दूसरी चीजों के सबध में, उन्हें आग पर चढ़ाकर इस प्रकार कड़ा और मजबूत करना कि वे सहज में टूट या पानी में गल न सकें। जैसे—ईंटें, खपडे, घड़े आदि पकाना। ५ फोडों आदि के सम्बन्ध में, उन पर पुलटिस आदि बाँधकर इस प्रकार मुलायम करना कि उनके अन्दर का मवाद या विषाक्त अश ऊपर का चमडा फाड़कर बाहर निकल सके।

मुहा०—(किसी का) कलेजा पकना—किसी को इतना अधिक कष्ट या दु.ख पहुँचाना कि उसके हृदय में बहुत अधिक मानसिक व्यथा होने लगे।

६. पाठ आदि रटकर याद करना। ७ कार्यों आदि के सबध मे, अभ्यास करके पक्का करना। ८ कोई बात या विषय इस प्रकार निश्चित, दृढ़ या पक्का करना कि उसमे सहज मे उलट-फेर न हो। जैसे—लेन-देन की बात या सौदा पकाना। ९ सिर के बालो के सबध मे, किसी प्रकार की क्रिया अथवा कालयापन के द्वारा उन्हे ऐसी स्थिति मे लाना कि उनका रग भूरा पड जाय। जैसे—(क) बाजारू तेल बहुत जल्दी बाल पका देते है। (ख) हमने धूप मे ही बाल नही पकाये है, अर्थात् बिना अनुभव प्राप्त किये इतना जीवन नही बिताया है। सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

१० चौसर की गोट सब घरों मे आगे बढाते हुए ऐसी स्थिति मे पहुँचाना कि वह मारी न जा सके।

पकार—पु० [स० प+कार] 'प' अक्षर।

पकारांत—वि० [स० पकार-अत, ब० स०] (शब्द) जिसके अन्त मे 'प' अक्षर हो।

पकाव—पु० [हि० पकना] १ पके हुए होने की अवस्था या भाव। परिपाक। २ पीब या मवाद जो फोड़ा पक जाने पर उसमे से निकलता है।

पकावन*—पु०=पकवान।

पकौड़ा—पु० [हि० पाक+बरी, बडी] [स्त्री० अल्पा० पकौडी] घी, तेल आदि मे तलकर फुलाई हुई बेसन या पीठी की ऐसी बडी जिसके अन्दर प्राय कोई और चीज भी भरी रहती है। जैसे—आलू, गोभी या साग का पकौडा।

पकौड़ी—स्त्री०='पकौडा' का स्त्री० अल्पा०।

पक्कटी—स्त्री० [स० पक्=√पच् (पकाना)+क्विप्, कटी-√कट् आवरण)+अच्—ङीष्, पक्-करी, द्व० स०] पाकर का पेड।

पक्कण—पु० [स० पक्,√पच्+क्विप्, कण=√कण् (सकुचित करना) +अच्, पक्-कण, कर्म० स०] १ चाडाल का घर। २ चाडालो की बस्ती।

पक्का—वि० [स० पक्व] [स्त्री० पक्की, भाव० पक्कापन] १ जो अच्छी तरह से और पूरा पक चुका हो या पकाया जा चुका हो। २ (खाद्य पदार्थ या भोजन) जो आँच पर उबाल, गला, भून या सेंककर खाने के योग्य बना लिया गया हो। पका या पकाया हुआ।

पद—पक्का खाना या पक्की रसोई=सनातनी हिंदुओ मे अन्न का बना हुआ ऐसा भोजन जो घी में तला या पकाया हुआ हो, और फलत. जिसे ग्रहण करने में छूत-छात का विशेष विचार न किया जाता हो। 'कच्ची रसोई' से भिन्न और उसका विपर्याय। सखरा। जैसे—हमारे यहाँ दिन मे कच्ची रसोई बनती है और रात मे पक्की। **पक्का पानी**=(क) आग पर औटाया हुआ पानी। (ख) शुद्ध और स्वास्थ्यवर्धक पानी।

३ फलो आदि के सबध मे, जो या तो पेड पर रहकर अच्छी तरह पुष्ट, मधुर और स्वादिष्ट हो चुका हो अथवा पेड से अलग करके कुछ विशिष्ट क्रियाओ के द्वारा पुष्ट, मधुर तथा स्वादिष्ट कर लिया गया हो। जैसे—पक्का आम, पक्का केला, पक्का पान। ४. जो अच्छी तरह विकसित होकर पुष्ट तथा पूर्ण हो चुका हो अथवा पूरी बाढ पर पहुँच चुका हो। जैसे—पक्की उमर, पक्की बुद्धि, पक्की लकडी। ५ जो आँच पर पकाकर या और किसी क्रिया से खूब कडा और मजबूत कर लिया गया हो और फलत जल्दी टूट-फूट या नष्ट न हो सकता हो। जैसे—पक्की ईंट, मिट्टी का पक्का घडा, पक्का रग।

पद—पक्का घर या मकान=पकाई हुई ईंटो, गारे, चूने, पत्थरो आदि से बना मजबूत मकान।

६ हर तरह से निश्चित और पूरा। जैसे—पक्के बारह (चौपड का एक दाँव)। ७ जिसमे किसी प्रकार की खोट या मिलावट न हो और इसी लिए जिसका महत्त्व या मूल्य सहसा घट न सकता हो अथवा जिसके रूप-रग मे जल्दी किसी प्रकार का विकार न हो सकता हो। जैसे—पक्की जरी का काम, पक्के सोने का गहना। ८ जो पककर किसी विशिष्ट क्रिया के लिए उपयुक्त अथवा योग्य हो गया हो। जैसे—पक्का फोडा=जो चीरे जाने के योग्य हो गया हो अथवा पूरी तरह से मवाद से भर जाने के कारण फूटकर बह निकलने को हो। ९ जो पूरी तरह से इतना निश्चित और स्थिर हो चुका हो कि उसमे सहसा कोई परिवर्तन या हेर-फेर न हो सकता हो। जैसे—पक्की नौकरी, पक्का भरोसा, पक्का मत या विचार, पक्की सलाह।

१० जिसमे किसी प्रकार का दोष या त्रुटि न हो। जसे—पक्का चिट्ठा=आय-व्यय आदि बतलाने वाला वह कागज जिसकी सब मदे अच्छी तरह जाँच ली गई हो और जिसमे कोई भूल न रह गई हो। पक्की बही=वह बही जिस पर अच्छी तरह जँचा हुआ और बिलकुल ठीक हिसाब लिखा जाता है। ११ जो साधारणत सब जगह समान रूप से प्रामाणिक और मानक माना जाता हो। जैसे—पक्की तौल। १२ जिसका अच्छी तरह सशोधन और सस्कार हो चुका हो। जैसे—पक्की चीनी, पक्का शोरा। १३ (क) यथेष्ट अभ्यास आदि के कारण जिसमे निपुणता या प्रौढता आ गई हो अथवा (ख) जिसमे कोई कोर-कसर या त्रुटि न रह गई हो। जैसे—(क) पक्का चोर, पक्का धूर्त। (ख) पक्के अक्षर या पक्की लिखावट। १४ चतुर, दक्ष या प्रवीण। जैसे—अब वह अपने काम मे पक्का हो गया है। १५ सिर के बाल के सबध मे, जो वृद्धावस्था के कारण भूरा या सफेद हो गया हो। जैसे—मूँछों के पक्के बाल निकाल दो। १६ जो बढते-बढते अपने अन्त या विनाश के बहुत पास पहुँच चुका हो। जैसे—वृद्ध लोग तो पक्के आम (या पक्के पान) होते है अर्थात् अधिक दिनों तक जी या ठहर नही सकते।

पक्काइत†—स्त्री० =पक्कापन।

पक्का कागज—पु० [हि०] १. ऐसा कागज या लेख्य जो विधिक दृष्टि से निश्चित और प्रामाणिक माना जाता हो।

मुहा०—पक्के कागज पर लिखना=कोई ऐसा दस्तावेज या पत्र लिखना जो विधिक दृष्टि से मान्य हो।

२ कुछ निश्चित और विशिष्ट मूल्य का वह सरकारी कागज जिस पर विधिक दृष्टि से अनुबंध आदि लिखे जाते हैं। (स्टाम्प पेपर)

पक्का गवैया—पु० [हि०] पक्के गाने अर्थात् शास्त्रीय संगीत या राग-रागिनियाँ आदि गानेवाला गवैया।

पक्का गाना—पु० [हि०] शास्त्रीय गाना जो राग-रागिनियों के रूप में बँधा हुआ होता है।

पक्का चिट्ठा—पु० [हि०] तलपट। तुलनपत्र। (बैलेन्स शीट)

पक्का पानी—पु० [हि०] १ पकाया अर्थात् औटाया हुआ पानी। २ स्वास्थ्यकर जल।

पक्की गोट—स्त्री० [हि०] चौसर के खेल में, वह गोट जो सब घरों में होती हुई अन्त में पुगकर काठे में पहुँच गई हो।

पक्की निकासी—स्त्री० [हि०] किसी सम्पत्ति में से होनेवाली ऐसी आय जिसमें से व्यय आदि निकाला जा चुका हो। कुल आय में से होनेवाली बचत। (नेट एसेटम)

पक्की रसोई—स्त्री० [हि०] घी में तले या पकाये हुए खाद्य पदार्थ। (कच्ची रसोई से भिन्न)

पक्के बारह—पु० दे० 'पौ बारह'।

पक्खर†—वि०=पक्का।

*स्त्री० =पाखर (युद्ध के समय हाथी को पहनाई जानेवाली लोहे की झूल)।

पक्खा†—पु० पाखर।

†पु० [स्त्री० अल्पा० पक्खी] पखा। (पश्चिम)

पक्ता (क्तृ)—वि० [स०√पच्+तृच्] [भाव० पक्ति] १ पकाने-वाला। २ पचानेवाला।

पु० १ रसोइया। २ जठराग्नि।

पक्ति—स्त्री० [स०√पच्+क्तिन्] १ पकने की क्रिया या भाव। २ शरीर के अन्दर के वे अंग जिनमें भोजन पकता है। ३ ख्याति। प्रसिद्धि। ४ कीर्ति। यश।

पक्ति-शूल—पु० [मध्य० स०] अजीर्ण के कारण पेट में होनेवाला दर्द।

पक्व—वि० [स०√पच्+क्त, तस्य व] [भाव० पक्वता, पक्वत्व] १ पका हुआ। २ पक्का। ३ दृढ़। पुष्ट। ४ वयस्कता तक पहुँचा हुआ। जैसे—पक्व वय।

पक्व-केश—वि० [ब० स०] जिसके बाल पककर सफेद हो गये हों।

पक्वता—स्त्री० [स० पक्व+तल्—टाप्] पक्व होने का भाव। पक्का-पन।

पक्वत्व—पु० [स० पक्व+त्व] पक्वता।

पक्व-रस—पु० [कर्म० ब० स०] पकाया हुआ रस अर्थात् मदिरा।

पक्व-वारि—पु० [स० ब० स० त०] काँजी।

पक्वश—पु० [स० पुक्वश, पृषो० सिद्धि] १ एक असभ्य और अंत्यज जाति। २ चांडाल।

पक्वातीसार—पु० [पक्व-अतीसार, कर्म० स०] अतिसार के पाँच भेदों में से एक।

पक्वाधान—पु० [पक्व-आधान, ष० त०] पक्वाशय।

पक्वान्न—पु० [पक्व-अन्न, कर्म० स०] १ पका हुआ अन्न। २. दे० पकवान।

पक्वाशय—पु० [पक्व-आशय ष० त०] पेट का वह भीतरी भाग जहाँ पहुँचकर खाया हुआ अन्न पचता है।

पक्ष—पु० [स०√पक्ष् (ग्रहण)+अच्] १ पक्षियों का डैना और उस पर के पंख या पर जिनके कारण वे 'पक्षी' कहलाते हैं। २ वे पर जो तीर के सिरे पर उसकी गति ठीक रखने या बढ़ाने के लिए बाँधे या लगाये जाते हैं। ३ जीव-जन्तुओं और मनुष्यों की दाहिनी या बाईं ओर का पार्श्व। ४ किसी वस्तु का वह किनारा या पार्श्व या सिरा जो उसके आगे, पीछे, ऊपर और नीचेवाले भागों से भिन्न हो और किसी बगल में पड़ता हो। पार्श्व। जैसे—सेना का दाहिना पक्ष कुछ दुर्बल पड़ता था। ५ किसी चीज या बात के दो भागों में से प्रत्येक भाग। जैसे—वाम पक्ष और दक्षिण पक्ष। ६ चन्द्रमास के दो बराबर भागों में से प्रत्येक भाग जो प्रायः १५ दिनों का होता है।

विशेष—पूर्णिमा से अमावस तक के दिन 'कृष्ण पक्ष' और अमावस से पूर्णिमा तक के दिन 'शुक्ल पक्ष' में गिने जाते हैं।

७ किसी बात या विषय के ऐसे दो या अधिक अंग या पहलू जो आमने-सामने या अगल-बगल पड़ते हों और इसी लिए जिनमें किसी प्रकार का विभेद या विरोध हो। जैसे—(क) पहले आप दोनों पक्षों की बातें सुन लें, तब कुछ निर्णय करें। (ख) इस प्रश्न के कई पक्ष हैं, जिन पर अच्छी तरह विचार होना चाहिए।

मुहा०—पक्ष गिरना=वाद-विवाद, परीक्षण आदि में युक्तिसंगत सिद्ध न होने पर किसी पक्ष का अप्रामाणिक और अमान्य सिद्ध होना।

८ किसी प्रकार की प्रतियोगिता, विरोध, विवाद आदि में सम्मिलित होनेवाले दलों या व्यक्तियों में से प्रत्येक दल या व्यक्ति।

मुहा०—(किसी का) पक्ष करना=औचित्य, न्याय सत्य आदि का विचार किये बिना ही इस प्रकार का आग्रह करना कि अमुक व्यक्ति जो कहता है, वही ठीक है या वही होना चाहिए। पक्षपात करना। (किसी का) पक्ष लेना=वाद-विवाद या वैर-विरोध में किसी एक दल या पक्ष की ओर होकर उसके कथन या मत का समर्थन करना।

९. तर्कशास्त्र में वह कथन, बात या विचार जो प्रमाणों, युक्तियों आदि के द्वारा ठीक सिद्ध किया जाने को हो। ऐसी बात जिसे सिद्ध करना अपेक्षित हो। जैसे—पूर्व पक्ष और उत्तर पक्ष। १० किसी चीज या बात का कोई विशिष्ट अंग, पार्श्व या स्थिति। ११ किसी मत या सिद्धांत के अनुयायियों और समर्थकों का दल, वर्ग या समुदाय। १२ किसी चीज या बात का कोई ऐसा अंग, तल या पार्श्व जो विशिष्ट रूप से सामने हो अथवा आया हो अथवा जिस पर विचार होता हो। १३ समर्थक, सहायक और साथी। १४ घर। मकान। १५ चूल्हे का वह गड्ढा या मुँह जिसमें राख इकट्ठी होती है। १६. राजा की सवारी का हाथी। १७ हाथ में पहनने का कड़ा। वलय। १८ महाकाल। १९ अवस्था। दशा। २० शरीर का कोई अंग। २१ फौज। सेना। २२ दीवार। २३ उत्तर। जवाब। २४ पड़ोस। २५ चिड़िया। पक्षी। २६ परस्पर विरोधी तत्त्वों के आधार पर,

'दो' की सूचक मज्ञा। २७ 'बाल' या उसके पर्यायों के साथ प्रयुक्त होने पर, राशि या समूह। जैसे—केश-पक्ष।

पक्षक—पु० [स० पक्ष+कन्] किसी पक्ष या पार्श्व मे पडनेवाली खिडकी या दरवाजा।

पक्षका—स्त्री० [स० पक्षक+टाप्] किसी पक्ष या पार्श्व मे की दीवार। बगल की दीवार।

पक्षकार—पु० [स०] १ कोई ऐसा व्यक्ति जो किसी काम या बात मे सम्मिलित रहता हो या हुआ हो। जैसे—मैं इस निश्चय मे पक्षकार नहीं बन सकता। २ झगडा करने या मुकदमा लडनेवाले दलो या पक्षो मे से प्रत्येक। (पार्टी) जैसे—वह भी उस मुकदमे मे एक पक्षकार थे।

पक्षगम—वि० [स० पक्ष√गम् (जाना)+अच्] पखो की सहायता से जानेवाला। उडनेवाला।

पक्ष-ग्रहण—पु० [ष० त०] किसी पक्ष मे मिलना अथवा उसका समर्थन करना।

पक्षघात—पु० =पक्षाघात।

पक्षचर—पु० [स० पक्ष√चर् (गति)+ट] १ चद्रमा। २. यूथ से बहका हुआ हाथी। ३ सेवक।

पक्षच्छिद्—पु० [स० पक्ष√छिद् (काटना) क्विप्] इन्द्र।

पक्षज, जन्मा (न्मन्)—पु० [स० पक्ष√जन् (उत्पत्ति)+ड] [ब० स०] चन्द्रमा।

पक्षति—स्त्री० [स० पक्ष+ति] १ पख की जड। २ शुक्ल पक्ष की पहली तिथि।

पक्ष-द्वार—पु० [सप्त० त०] चोर दरवाजा।

पक्ष-धर—वि० [ष० त०] विवाद आदि मे किसी का पक्ष लेनेवाला। पक्षपाती।

पु० चिडिया। पक्षी।

पक्ष-नाडी—स्त्री० [ष० त०] पक्ष का मोटा पर जिसकी कलम बनाई जाती है।

पक्षपात—पु० [सप्त० त०] [भाव० पक्षपातिता, पक्षपातित्व] न्याय के समय, राग, सबध आदि के कारण अनुचित रूप से किसी पक्ष के प्रति होनेवाली अनुकूल प्रवृत्ति।

पक्ष-पाती (तिन्)—वि० [स० पक्षपात+इनि] पक्षपात करनेवाला।

पक्षपालि—पु० [ष० त०] खिडकी।

पक्ष-पुट—पु० [ष० त०] चिडियो का पख। डैना।

पक्ष-प्रद्योत—पु० [ब० स०] नृत्य मे हाथ की एक प्रकार की मुद्रा।

पक्ष-बिदु—पु० [ब० स०] कक पक्षी।

पक्ष-भाग—पु० [ष० त०] हाथी का पार्श्व।

पक्ष-भुक्ति—स्त्री० [ष० त०] एक पक्ष भर में सूर्य द्वारा तै की जानेवाली दूरी।

पक्ष-मूल—पु० [ष० त०] १ डैना। पर। २ प्रतिपदा तिथि जो चन्द्रमास के पक्ष के आरभ मे पडती है।

पक्ष-रचना—स्त्री० [ष० त०] १ पक्ष साधन के लिए किया हुआ आयोजन। २ षड्यत्र। चक्र।

पक्ष-रूप—पु० [ब० स०] महादेव।

पक्ष-वध—पु० दे० 'पक्षाघात'।

पक्ष-वर्द्धिनी—स्त्री० [ष० त०] एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक रहनेवाली द्वादशी तिथि।

पक्ष-वाद—पु० [ष० त०] किसी एक पक्ष की कही हुई बात या दिया हुआ बयान।

पक्षवान् (वत्)—वि० [स० पक्ष+मतुप, वत्व] [स्त्री० पक्षवती] १ जिसके पक्ष या पर हो। परोवाला। २ उच्च कुल मे उत्पन्न। कुलीन।

पु० पर्वत, जो पुराणानुसार पहले पख या पर से युक्त होते और उडते थे।

पक्ष-वाहन—पु० [ब० स०] पक्षी।

पक्ष-विदु—पु० [ब० स०] कक पक्षी।

पक्ष-सुन्दर—पु० [स० त०] लोध्र। लोध।

पक्ष-हत—वि० [ब० स०] जिसका एक पार्श्व टूट-फूट या बेकाम हो गया हो।

पक्ष-होम—पु० [मध्य० स०] एक पक्ष या १५ दिनो तक चलता रहनेवाला यज्ञ।

पक्षांत—पु० [पक्ष-अन्त, ष० त०] १ अमावस्या। २ पूर्णिमा।

पक्षांतर—पु० [पक्ष-अन्तर, मयू० स०] दूसरा पक्ष।

पक्षाघात—पु० [पक्ष-आघात, ब० स०] एक प्रसिद्ध वात रोग जिसमे शरीर का बायाँ या दाहिना पार्श्व पूर्णत बेकाम और शिथिल हो जाता है। लकवा।

पक्षाभास—पु० [पक्ष-आभास, ष० त०] सिद्धान्ताभास।

पक्षालिका—स्त्री० [स०] कुमार की अनुचरी मातृका।

पक्षालु—पु० [स० पक्ष+आलुच] पक्षी।

पक्षावसर—पु० [पक्ष-अवसर, ब० स०] पूर्णिमा।

पक्षाहार—पु० [पक्ष-आहार, स० त०] पक्ष मे केवल एक बार भोजन करने का नियम या व्रत।

पक्षिणी—स्त्री० [स० पक्षिन्+ङीप्] १ मादा चिडिया। मादा पक्षी। २ पूर्णिमा तिथि। ३ दो दिनो और एक रात का समय।

स्त्री० स० 'पक्षी' का स्त्री०।

पक्षि-तीर्थ—पु० [मध्य० स०] दक्षिण भारत का एक प्राचीन (आधुनिक तिरुक्कडुकुनरम) तीर्थ।

पक्षि-राज—पु० [ष० त०] गरुड।

पक्षिल—पु० [स० पक्ष+इलच्] गौतम के न्याय-सूत्र का भाष्य लिखनेवाले वात्स्यायन मुनि का एक नाम।

पक्षी (क्षिन्)—वि० [स० पक्ष+इनि] १ पर या परो से युक्त। परोवाला। २ किसी का पक्ष लेनेवाला। तरफदार। ३ पक्षपात करनेवाला।

पु० १ चिडिया। २ वाण। ३ शिव।

पक्षी-पति—पु० [स० पक्षि-पति] जटायु का भाई, सपाति।

पक्षी-पालन—पु० [स०] व्यापारिक दृष्टि से चिडियो के पालने और उनका वश बढाने का धधा या पेशा। (एवीकल्चर) जैसे—अडे बेचने के लिए बत्तखें या मुरगियाँ पालना।

पक्षी-पुंगव—पु० [स० पक्षि-पुगव] जटायु।

पक्षी-प्रवर—पु० [स० पक्षि-प्रवर] गरुड।

पक्षीय—वि० [स० पक्ष+छ+ईय,] समस्त पदो के अन्त मे, किसी पक्ष, दल आदि से सबध रखनेवाला। जैसे—कुरुपक्षीय।

पक्षी-राज—पु० [स० पक्षि-राज] पक्षियो के राजा, गरुड।

पक्षी-विज्ञान—पु० [स० पक्षि-विज्ञान] वह विज्ञान जिसमे पक्षियो के प्रकारो, उनकी जातियो, रहन-सहन के ढगो, प्रकृति, स्वभाव आदि का विवेचन होता है। (आर्निकालोजी)

पक्षी-शाला—स्त्री० [स० पक्षि-शाला] पक्षियो के रहने का स्थान। जैसे—घोसला, पिंजरा, चिड़िया-घर आदि।

पक्षेष्टि—वि० [स० पक्ष-इष्टि, ब० स०] पाक्षिक।
पु० [मध्य० स०] चन्द्रमास के प्रत्येक पक्ष मे किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

पक्ष्म (न्)—पु० [स०√पक्ष् (ग्रहण)+मनिन्] १ आँख की बरौनी। २ फूल का केसर। ३ फूल की पखडी। ४ पख। पर। ५ बाल।

पक्ष्मकोप—पु० [स० ष० त०] आँख की पलको का एक रोग।

पक्ष्मल—वि० [स० पक्ष्मन्+लच्] १ (व्यक्ति अथवा उसकी आँख) जिसकी सुन्दर बरौनी हो। २ बालोवाला।

पक्ष्य—वि० [स० पक्ष+यत्] १ पक्ष या पखवारे मे होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। २ किसी पक्ष या दल का तरफदार। पक्षपाती।

पखड—पु०=पाखड।

पखडी—वि०=पाखडी।
†पु० कठपुतलियाँ नचानेवाला व्यक्ति।

पख—पु० [स० पक्ष] पक्ष। पखवारा।
स्त्री० १ अलग या ऊपर से जोडी या लगाई हुई ऐसी बात या शर्त जो या तो बिलकुल व्यर्थ हो या जिससे कोई अडचन या बाधा खडी होती हो। अडगा।
क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।
२ व्यर्थ ही तग या परेशान करनेवाला काम या बात। झझट। बखेडा।
३ व्यर्थ का छिद्रान्वेषण या दोष-दर्शन। जैसे—तुम तो यो ही हर बात मे एक पख निकाला करते हो।
क्रि० प्र०—निकालना।

पखड़ी†—स्त्री०=पखडी।

पखनारी†—स्त्री० [स० पक्ष+नाल] चिड़ियो के परो की डठी जो ढरकी के छेद मे तिल्ली रोकने के लिए रखी जाती है।

पख-पान—पु०=पायदान।

पखरना—अ० [हि० पखारना का अ० रूप] पखारा या धोया जाना।
†स०=पखारना।

पखराना—स० [हि० पखारना का प्रे०] किसी को पखारने मे प्रवृत्त करना।

पखरिया—पु० [हि० पखारना] वह जो पखारने का काम करता हो
†स्त्री०=पखरी।

पखरी—स्त्री० [हि० पख+री (प्रत्य०)] गद्दी, कुरसी आदि आसनो मे दोनो तरफ के वे स्थान जो बगल मे पडते है। उदा०—गाधी पखरी पीठि लगे लाने लचकीले।—रत्ना०।
†स्त्री०=पखडी।

पु० [हि० पाखर] १ वह घोडा या हाथी जिस पर पाखर पडी हो। २ ऐसे घोडे या हाथी का सवार योद्धा।

पखरैत—पु० [हि० पाखर+ऐत (प्रत्य०)] वह घोडा, बैल या हाथी जिस पर पाखर अर्थात् लोहे की झूल पडी हो।

पखरौटा†—पु० [हि० पखडी+औटा (प्रत्य०)] पान का बीडा जिस पर सोने या चाँदी का वरक लगा हो।

पखवाडा†—पु० [स० पक्ष आधा चान्द्रमास+हि० वाडा (प्रत्य०)] १ चान्द्रमास का कोई पक्ष। २ पूरे १५ दिनो का समय। जैसे—तुमने जरा-से काम मे एक पखवाडा लगा दिया।

पखवारा†—पु० पखवाडा।

पखा*—पु० [?] दाढी।
पु० १ =पक्ष। २ =पख (जैसे—मार-पखा)।

पखाउज†—पु० पखावज।

पखाटा—पु० [स० पक्ष] धनुष का कोना।

पखान*—पु० =पाषाण (पत्थर)।
*पु० [स० उपाख्यान] किसी घटना या बात का लम्बा-चौडा ब्योरा।
मुहा०—पखान बखानना—बहुत ही विस्तार-पूर्वक किसी की त्रुटियो, दोषो आदि का उल्लेख करना। (पश्चिम)

पखाना—पु० [स० उपाख्यान] कहावत। लोकोक्ति।
†पु० =पाखाना।

पखा-पखी—स्त्री० [स० पक्ष] कई पक्षो की आपस मे होनेवाली खीचा-तानी या विरोध। उदा०—पखा-पखी के पेखणै सब जगत भुलाना।—कबीर।

पखारना—स० [स० प्रक्षालन, प्रा० पक्खाडन] किसी चीज पर पानी डालकर उस पर की धूल, मैल आदि छुड़ाना। धोकर साफ करना। धोना। जैसे—पाँव या बरतन पखारना।

पखाल—स्त्री० [स० पक्ष+खल्ल] १ बैल आदि के चमडे की बनी हुई पानी भरने की मशक। २ धौकनी।

पखाल-पेटिया—वि० [हि० पखाल+पेट+ईया (प्रत्य०)] १ पखाल अर्थात् मशक की तरह बहुत बडे पेटवाला। २ बहुत खानेवाला। पेटू।

पखाली—वि० [हि० पखाल] पखाल अर्थात् मशक-सबधी।
पु० मशक से पानी भरनेवाला। भिश्ती।

पखावज—स्त्री० [स० पक्षावाद्य, प्रा० पक्खाउज्ज] मृदग के आकार-प्रकार का परन्तु उससे कुछ छोटा एक प्रकार का बाजा।

पखावजी—वि० [हि० पखावज+ई (प्रत्य०)] पखावज-सबधी।
पु० वह जो पखावज बजाकर अपनी जीविका चलाता हो अथवा पखावज बजाने मे निपुण हो।

पखिया—वि० [हि० पख] १ हर बात मे पख या व्यर्थ का दोष निकालनेवाला। २ व्यर्थ का झगडा-बखेडा खडा करनेवाला झगडालू। बखेडिया।

पखी†—वि० =पखिया।
†पु०=पक्षी।

पखीरा†—पु० [स्त्री० पखीरी]=पक्षी (चिड़िया)।

पखुआ†—पु०=पखुरा।

पखड़ी†—स्त्री० =पखडी।

पखुरा†—पु० [सं० पक्ष] १ बाँह का कंधे और कोहनी के बीच का अंग या अवयव। (पूरब) २ पाखा।

पखुरी—स्त्री०=पखडी।

पखेरू*—पु० [सं० पक्षालु, प्रा० पक्खाड़ु] पक्षी। चिड़िया।

पखेव—पु० [देश०] उड़द, गुड़, मोठ आदि का वह मिश्रण जो गायों-भैसों को प्रसव के बाद ६ दिनों तक खिलाया जाता है।

पखौड़ा—पु०=पखुरा (वृक्ष)।

पखौआ†—पु० [सं० पक्ष] किसी पक्षी विशेषत मोर का पर जो टोपी या सिर के बालों में शोभा आदि के लिए लगाया जाता था। उदा०—कीट-मुकुट सिर जाँहि पखौआ मोरन कौ क्यों धार्यौ।—भारतेन्दु।

पखौटा—पु० [हिं० पख] १ डैना। पर। २ मछली का पक्ष या पर।

पखौड़ा—पु० =पखुरा।

पखौरा—पु०=पखुरा।

पख्तून—पु० [फा० पुख्तोन] पुख्तो अर्थात् पश्तो भाषा बोलनेवाला व्यक्ति।

पख्तूनिस्तान—पु० [फा० पुख्तोनिस्तान] अविभाजित भारत का और अब पाकिस्तान की उत्तर पश्चिमी सीमा पर स्थित अफगानिस्तान से सटा हुआ वह प्रदेश, जहाँ की भाषा पुख्तो अर्थात् पश्तो है।

पख्तो—स्त्री० [फा० पुख्तो] पश्तो भाषा जो पख्तूनिस्तान में बोली जाती है।

पग—पु० [सं० पदक, प्रा० पऊक, पक] १ पैर। पाँव।

मुहा०—**पग रोपना**=कोई प्रतिज्ञा करके किसी जगह दृढ़ता पूर्वक पैर जमाना।

२ उतना अन्तर या दूरी जितनी चलने में एक पैर से दूसरे पैर तक होती है। फाल। ३ चलने के समय हर बार पैर उठाकर आगे रखने की क्रिया। डग।

पद—**पग-पग पर**—(क) बहुत ही थोड़ी-थोड़ी दूरी पर। (ख) बराबर। लगातार।

पगडंडी—स्त्री० [हिं० पग+डंडा] १ खेतों आदि के बीच का पतला या सकीर्ण मार्ग। २ जंगल या मैदान की संकीर्ण राह जो आने-जाने के कारण बन गयी हो।

पगड़ी—स्त्री० [सं० पटक, हिं० पाग+ड़ी (प्रत्य०)] १ सिर पर लपेटकर बाँधा जानेवाला लंबा कपड़ा। उष्णीष। पाग। साफा।

क्रि० प्र०—**बँधना**।—बाँधना।

विशेष—मध्ययुग में पगड़ी प्रतिष्ठा और मान-मर्यादा की सूचक होती थी, इसी से इसके कई अर्थों और मुहावरों का विकास हुआ है।

मुहा०—**(किसी की) पगड़ी उतारना या उतार लेना**=छीन या ठगकर किसी से बहुत-कुछ धन ले लेना। **(किसी के सिर) पगड़ी बँधना**=(क) महत्त्वपूर्ण या शीर्ष स्थान प्राप्त होना। (ख) किसी का उत्तराधिकारी या स्थानापन्न बनाया जाना। **(किसी से) पगड़ी बदलना**=किसी से भाई-चारे और घनिष्ठ मित्रता का संबंध स्थापित करना।

विशेष—मध्ययुग में जब किसी से बहुत अधिक या घनिष्ठ मित्रता का संबंध हो जाता था, तब उस मित्रता को स्थायी बनाये रखने के प्रतीक के रूप में अपनी पगड़ी उसके सिर पर रख दी जाती थी और उसकी पगड़ी आप पहन ली जाती थी।

२ पगड़ी बाँधनेवाले अर्थात् वयस्क पुरुष का वाचक शब्द या संज्ञा। जैसे—गाँव भर से पगड़ी पीछे एक रुपया ले लो, अर्थात् प्रत्येक वयस्क पुरुष से एक रुपया ले लो। ३ व्यक्ति की प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा।

मुहा०—**(किसी से) पगड़ी अटकना**=किसी के साथ ऐसा मुकाबला, विरोध या स्पर्धा होना कि उसकी हार-जीत पर प्रतिष्ठा की हानि या रक्षा अवलंबित हो। **(आपस में) पगड़ी उछलना**=एक के हाथों दूसरे की दुर्दशा और बेइज्जती होना। जैसे—आज-कल उन दोनों में खूब पगड़ी उछल रही है। **(किसी की) पगड़ी उछालना**=किसी को अपमानित करके उपहासास्पद बनाना। दुर्दशा करना। **(किसी की) पगड़ी उतारना**=अपमानित या दुर्दशा-ग्रस्त करना। **(किसी के सिर किसी बात की) पगड़ी बँधना**=किसी काम या बात का यश या श्रेय प्राप्त होना। जैसे—इस काम के लिए प्रयत्न चाहे जिसने किया हो, पर इसकी पगड़ी तो तुम्हारे ही सिर बँधी है। **(किसी की) पगड़ी रखना**=प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा की रक्षा करना। **(किसी के आगे) पगड़ी रखना या रख देना**=किसी से दीनता और नम्रतापूर्वक यह कहना कि हमारी प्रतिष्ठा या लाज की रक्षा आप ही कर सकते है।

४ आज-कल, दुकान, मकान आदि किराये पर लेने के समय उसके मालिक को अनुकूल तथा संतुष्ट करने के लिए अवैध रूप से पेशगी दिया जानेवाला धन। जैसे—इस दुकान का किराया तो ५०) महीना ही है; पर दुकान का मालिक हजार रुपये पगड़ी माँगता है।

पगतरा—पु० [हिं० पग+तरा (निचला भाग)] [स्त्री० अल्पा० पगतरी] जूता।

पग-तल—पु० [हिं० पग+सं० तल] पैर का नीचेवाला भाग। पैर का तलवा।

पगदासी—स्त्री० [हिं० पग+दासी] १ जूता। २ खड़ाऊँ। (साधुओं की परिभाषा)

पगना—अ० [सं० पाक, हिं० पाग] १ हिं० पागना का अ०। पागा जाना। २ शरबत, शीरे आदि के पाग में किसी खाद्य पदार्थ का पड़कर उसके रस में भीगना। मीठे रस से ओत-प्रोत होना। जैसे—मुरब्बा बनाने के समय आँवले या आम का शीरे में पगना। ३ किसी प्रकार के गाढ़े तरल पदार्थ या रस से ओत-प्रोत होना। ४ लाक्षणिक रूप में, बात के रस में अथवा किसी व्यक्ति के प्रेम में पूर्णत डूबना या मग्न होना।

संयो० क्रि०—जाना।

पगनियाँ†—स्त्री० =पगनी (जूती)।

पगनी†—स्त्री० [सं० पग] १. जूता। २ खड़ाऊँ।

स्त्री० [हिं० पगना] पगने या पागने की क्रिया या भाव।

पग-पान—पु० [हिं० पग+पान] पैर में पहनने का एक आभूषण। पलानी। गोड़सकर।

पगरना†—पु० [देश०] सोने, चाँदी आदि के आभूषणों, बरतनों आदि पर नक्काशी करनेवालों का एक उपकरण।

पगरा—पु० [हिं० पग+रा (प्रत्य०)] पग। डग। कदम।

पु० [फा० पगाह -सवेरा] प्रभात या प्रातःकाल जो यात्रा आरंभ करने के लिए सबसे अच्छा समय माना गया है।

*वि० =पागल।

पगरी—स्त्री० =पगड़ी।

पगला†—वि० =पागल।

पगहा—पु० [सं० प्रग्रह, प्रा० पग्गह] [स्त्री० पगही] पशुओं के गले में बाँधी जानेवाली वह रस्सी जिससे उन्हें खूँटे से बाँधा जाता है। पघा।

पगा†—पु० १ =पाग (पगड़ी)। २ =पघा (पगहा)। ३ =पगरा।

पगाना—स० [हिं० पगना] १ पागने का काम किसी दूसरे से कराना। किसी को पागने में प्रवृत्त करना। २ (पदार्थ) ऐसी स्थिति में रखना कि वह पगे। ३. किसी को किसी ओर या किसी काम में अनुरक्त या पूर्ण रूप से प्रवृत्त करना।

पगार—पु० [सं० प्राकार] १ चहारदीवारी। परकोटा। २ घेरा। ३ दीवार।

पु० [हिं० पग+गारना] १ पैरों से कुचलकर जोड़ाई के काम के लिए तैयार किया हुआ गारा। २ कीचड़।

पु० [फा० पायाब] वह नाला या नदी जिसे पैदल चलकर पार किया जा सके। उदा०—जल कै पगार, निज दल के सिगार आदि ।—केशव।

स्त्री० [पुर्त० पागा से मराठी] वेतन।

पगारना†—स० =फैलाना।

स० [हिं० पग+गारना] १ पैरों से मिट्टी को रौंदकर गारा बनाना। २ फैलाना।

पगाह—पु० [फा०] १ यात्रा आरंभ करने का उपयुक्त समय अर्थात् तड़का या प्रभात। २ प्रातःकाल। सवेरा।

पगिआना—स० =पगियाना।

पगिया†—स्त्री० =पगड़ी।

पगियाना†—स० [हिं० पाग =पगड़ी] पगड़ी बाँधना।

स० =पगाना।

पगु*—पु० =पग।

पगुराना†—अ० [हिं० पागुर] १ चौपायों का पागुर करना। जुगाली करना। २ पचा जाना। हजम कर लेना।

पगोडा—पु० [बर्मी०] बुद्ध भगवान का मन्दिर।

पग्ग—पु० =पग।

पग्गड़—पु० [हिं० पाग =पगड़ी] बहुत बड़ी और भारी पगड़ी।

पघा†—पु० [हिं० पागना या पकाना] पीतल, ताँबा आदि गलाने की घरिया। पागा।

पघरना—अ० =पिघलना। (पश्चिम) उदा०—मैन तुरग चढे पावक बिच, नाही पघरि परेंगे।—नागरीदास।

पघराना—स० =पिघलाना।

पघा—पु० [सं० प्रग्राह] वह रस्सी जिससे पशु खूँटे पर बाँधे जाते है। पगहा।

पघिलना†—अ० =पिघलना।

पघिलाना—स० =पिघलाना।

पगैया—वि० [हिं० पग+ऐया (प्रत्य०)] पैदल चलनेवाला।

पु० वह व्यापारी जो गाँवों आदि में घूम-घूमकर चीजें बेचता हो।

पच—वि० =पँच (पाँच का संक्षिप्त रूप)। (पच के यौ० के लिए दे० 'पँच' और 'पंच' के यौ०)

पचक—पु० [सं०] कट नामक गुल्म।

स्त्री० [हिं० पचकना] १. पिचकने की अवस्था या भाव। २ पिचकने के कारण पड़ा हुआ गड्ढा या निशान।

†पु० पाचक (रसोइया)।

पचकना—अ० पिचकना।

पचकल्यान—पु० =पंचकल्याण।

पचकाना—स० =पिचकाना।

पचखना—वि० [हिं० पाँच+सं० खंड] (मकान) जिसमें पाँच खंड या मंजिलें हों।

अ० =पिचकना।

पचखा†—पु० दे० 'पचक' (पाँच अशुभ तिथियाँ)।

पचड़ा—पु० [हिं० पाँच (प्रपंच)+ड़ा (प्रत्य०)] १ व्यर्थ की झंझट। बखेड़े का काम या बात।

क्रि० प्र०—निकालना।—फैलाना।

२ खयाल या लावनी की तरह का एक प्रकार का लोक-गीत जिसमें पाँच चरण या पद होते हैं। ३ एक प्रकार का गीत जो ओझा लोग देवी आदि के सामने गाते है।

पचतावा—पु० पछतावा (पश्चात्ताप)।

पचतूरा—पु० [देश०] एक प्रकार का बाजा।

पचतोरिया—पु० =पँच-तोरिया (कपड़ा)।

पचतोलिया—पु०, वि० पँच-तोलिया।

पचन—वि० [सं०√पच् (पाक)+ल्युट्—अन] पकानेवाला।

पु० १ भोजन आदि पकने या पकाने की क्रिया या भाव। २ पेट में पहुँचने पर भोजन आदि पचने की क्रिया या भाव। पाचन। ३ अग्नि। आग। ४ जठराग्नि।

पचन-संस्थान—पु० [ष० त०] शरीर के अन्दर के वे सब अंग और यंत्र जो भोजन पचाते हैं। (एलिमेन्टरी सिस्टम)

पचना—अ० [सं० पचन] १ खाने पर पेट में पहुँचे हुए खाद्य-पदार्थ का जठराग्नि की सहायता से गलकर रस आदि में परिणत होना।

विशेष—जो चीज पच जाती है उसका फोक या सीठी गुदा मार्ग से मल के रूप में बाहर निकल जाती है और जो चीज ठीक तरह से नहीं पचती, वह प्रायः उसी रूप में गुदा मार्ग से या मुँह के रास्ते बाहर निकल जाती है और यदि पेट में रहती भी है, तो कई प्रकार के विकार उत्पन्न करती है।

२ किसी दूसरे का धन आदि इस प्रकार अधिकार में आना या भोगा जाना कि उसके पहले स्वामी के हाथ में न जाय और उसका कोई दुष्परिणाम भी न भोगना पड़े। जैसे—हराम की कमाई किसी को नहीं पचती (अर्थात् उसे उसका दुष्परिणाम भोगना पड़ता है)। ३ किसी चीज या बात का कहीं इस प्रकार छिपा या दबा रहना कि औरों को उसका पता न लगने पाये। जैसे—तुम्हारे पेट में तो कोई बात पचती ही नहीं। ४ किसी चीज या बात का इस प्रकार अंत या

समाप्त होना कि उसके फिर से उभरने की संभावना न रह जाय। जैसे—रोग या विकार पचना, घमंड या शेखी पचना।
संयो० क्रि०—जाना।
५ किसी व्यक्ति का परिश्रम, प्रयत्न आदि करते-करते थककर चूर या परम शिथिल हो जाना। मेहनत करते-करते हार जाना या बहुत हैरान होना।
पद—पच-पचकर—बहुत अधिक परिश्रम या प्रयत्न करके। उदा०—काँचो दूध पियावत पचि-पचि देत न माखन रोटो।—सूर।
मुहा०—पच मरना या पच हारना—कोई काम करते-करते थककर बैठ या हार जाना। उदा०—पचि हारी कछु काम न आई, उलटि सबै विधि दीन्ही।—भारतेन्दु।
६ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ में पूर्ण रूप से लीन होना। खप या समा जाना। जैसे—सेर भर खीर में पाव भर घी तो सहज में पच जाता है।

पचनागार—पु० [पचन-आगार, ष० त०] पाकशाला। रसोईघर।

पचनाग्नि—पु० [पचन-अग्नि, मध्य० स०, ष० त०] पेट की आग जिससे खाया हुआ पदार्थ पचता है। जठराग्नि।

पचनिका—स्त्री० [स० पचनी+कन्, टाप्, ह्रस्व] कड़ाही।

पचनी—स्त्री० [स० पचन+ङीप्] बिहारी नींबू।

पचनीय—वि० [स०√पच्+अनी, यर्] जो पच सकता हो या पचाया जा सकता हो। पचने के योग्य।

पचपच—पु० [स०√पच्+अच्, द्वित्व] शिव का एक नाम।

पचपचा—वि० [हि० पचपच] (अध-पका खाद्य पदार्थ) जिसमें डाला हुआ पानी अभी सूखा न हो।

पचपचाना—अ० [हि० पचपच] १ किसी पदार्थ का आवश्यकता से अधिक इतना गीला होना कि उसे हिलाने-डुलाने से पच-पच शब्द निकले। २ जमीन का कीचड़ से युक्त होना।
स० ऐसी क्रिया करना जिससे किसी गाढ़े तरल पदार्थ में से पच-पच शब्द निकलने लगे।

पचपन—वि० [स० पंचपंचाश, पा० पंचपण्णासा] जो गिनती में पचास और पाँच हो, पाँच कम साठ।
पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५५।

पचपनवाँ—वि० [हि० पचपन] पचपन के स्थान पर आने, पड़ने या होनेवाला।

पचपल्लव†—पु०=पंचपल्लव।

पचमेल—वि०=पँच-मेल।

पचरा—पु०=पचड़ा।

पचलड़ी—स्त्री० [हि० पाँच+लड़ी]=पँच-लड़ी।

पच-लोना—वि०, पु०=पंच-लोना।

पचवना*—स०=पचाना।

पचहत्तर—वि० [स० पञ्चसप्तति, प्रा० पचहत्तरि] गिनती या संख्या में जो सत्तर से पाँच अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७५।

पचहत्तरवाँ—वि० [हि० पचहत्तर+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में पचहत्तर के स्थान पर आने, पड़ने या होनेवाला।

पचानक—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

पचाना—स० [हि० पचना का स० रूप] १ खाई हुई वस्तु को पक्वाशय की जठराग्नि से रस में परिणत करना। २ दूसरों का माल हजम करना। ३ परिश्रम करा के या कष्ट देकर किसी के शरीर, मस्तिष्क आदि का क्षय करना। ४ अच्छी तरह अन्त या समाप्त कर देना। जैसे—किसी की मोटाई पचाना। ५ एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने में विलीन कर या समा लेना।

पचारना—स० [स० प्रचारण] कोई काम करने के पहले उन लोगों के सामने उसकी घोषणा करना जिनके विरुद्ध वह काम किया जाने को हो। ललकारना। जैसे—हाँक-पचारकर लड़ाई छेड़ना।

पचाव—पु० [हि० पचना+आव (प्रत्य०)] पचने या पचाने की क्रिया या भाव। पाचन।

पचास—वि० [स० पंचाशत, प्रा० पचासा] जो गिनती या संख्या में चालीस से दस अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५०।

पचासवाँ—वि० [हि० पचास+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में पचास के स्थान में आने, पड़ने या होनेवाला।

पचासा—पु० [हि० पचास] १. एक ही जाति की पचास वस्तुओं का कुलक या समूह। २ पचास रुपये। जैसे—सैर करने में पचासा लगेगा। ३ वह बटखरा या बाट जो तौल में पचास रुपयों या पचास भरी के बराबर हो। ४ संकटसूचक वह घड़ियाल जो लगातार कुछ समय तक बराबर टन-टन करते हुए बजाया जाता है और जिसका उद्देश्य आस-पास के सिपाहियों को केन्द्र में बुलाना होता है।

पचासी—वि० [स० पंचाशीति, प्रा० पंचासाई, पच्चासी] जो गिनती या संख्या में अस्सी से पाँच अधिक हो।
पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८५।

पचासीवाँ—वि० [हि० पचासी+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में पचासी के स्थान पर आने, पड़ने या होनेवाला।

पचासों—वि० [हि० पचास] बहुत अधिक विशेषत पचास से अधिक। जैसे—लड़की के घर त्यौहारों पर पचासों रुपये नकद या मिठाइयों के रूप में भेजने पड़ते हैं।

पचि—स्त्री० [स०√पच्+इन्] १ पकाने की क्रिया या भाव। पाचन। २ अग्नि। आग।

पचित—भू० कृ० [स०] १ अच्छी तरह पचा हुआ। २ अच्छी तरह घुला या मिला हुआ।
वि० [हि० पच्ची] जिस पर पच्चीकारी का काम किया हुआ हो। (क्व०)

पची†—स्त्री०=पच्ची।

पचीस—वि० [स० पंचविंशति, पा० पंचवीसति, अपभ्रंश, प्रा० पच्चीस] क्रम या गिनती में बीस से पाँच अधिक।
पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—२५।

पचीसवाँ—वि० [हि० पचीस+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में पचीस के स्थान पर आने, पड़ने या होनेवाला।

पचीसी—स्त्री० [हि० पचीस] १ एक ही प्रकार की पचीस वस्तुओं का समूह। जैसे—बैताल पचीसी (पचीस कहानियों का संग्रह)। २ व्यक्ति की आयु के आरंभिक २५ वर्षों का समय, जिसे व्यंग्य से 'गदह-

पचीसी' भी कहते हैं। ३ गणना का वह प्रकार जिसमें पचीस चीजों की एक इकाई मानी जाती है। जैसे—अमरूद, आम आदि की गिनती पचीसी गाही (१२५ फलों) की होती है। ४ चौसर का वह खेल जो पासों के स्थान पर सात कौड़ियाँ फेंककर खेला जाता है और जिसमें दाँवों का संकेत चित्त और पट्ट पड़नेवाली कौड़ियों की संख्या के विचार से होता है। ५ चौसर खेलने की बिसात।

पचूका†—पु० =पिचकारी।

पचेलिम—वि०[सं०√पच्+केलिमर्]आसानी से और जल्दी पचनेवाला। पु० १ अग्नि। २ सूर्य।

पचेलुक—पु०[सं०√पच्+एलुक] रसोइया।

पचोतर—वि०[सं० पञ्चोत्तर] (किसी संख्या से) पाँच अधिक। पाँच ऊपर। जैसे—पचोतर सौ।

पचोतर सौ—पु० =पचोतर सौ।

पचोतरा†—पु० =पँचोतरा।

पचोआ—पु०[हिं० पचना] कपड़े पर छींट की छपाई करने के बाद उसे १०-१२ दिनों तक धूप में रखने की क्रिया, जिससे छपाई के समय कपड़े पर पड़े हुए दाग या धब्बे छूट जाते हैं।

पचौनी—स्त्री०[सं० पाचन]१ पचने या पचाने की क्रिया या भाव। २ अँतड़ी। आँत।

पचौर—पु०[हिं० पंच या पचौली] गाँव का मुखिया। सरदार।

पचौली—पु०[हिं० पंच+कुली]१ गाँव का मुखिया। सरदार। पंच। २ दे० 'पचोली'।

पु०[?] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियों से सुगंधित तेल निकलता है।

पचौवर—वि० =पचौवर (पचहरा)।

पच्चड़—पु० =पच्चर।

पच्चर—पु०[सं० पचित या पच्ची]१ बाँस, लकड़ी आदि का वह छोटा तथा पतला टुकड़ा जो काठ की चीजों के जोड़ कसने के लिए उनकी दरारों या संधियों में जड़ा, ठोंका या लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—जड़ना।—ठोंकना।—लगाना।

२ लाक्षणिक रूप में व्यर्थ खड़ी की जानेवाली अड़चन, बाधा या रुकावट।

क्रि० प्र०—अड़ाना।—लगाना।

मुहा०—पच्चर ठोंकना या मारना—तंग या परेशान करने के लिए बहुत बड़ी अड़चन या बाधा खड़ी करना। ऐसा उपाय करना कि काम किसी तरह आगे बढ़ ही न सके।

पच्ची—स्त्री०[सं० पचित]१ पचने या पचाने की क्रिया या भाव। २ खपाने की क्रिया या भाव। जैसे—माथा पच्ची, सिर पच्ची। ३ धातुओं, पत्थरों आदि पर नगीने या धातु, पत्थर, आदि के छोटे-छोटे टुकड़े जड़ने की वह क्रिया या प्रकार, जिसमें जड़ी जानेवाली चीज गड्ढों में इस प्रकार जमाकर जड़ी या बैठाई जाती है कि उसका ऊपरी तल उभरा हुआ नहीं रह जाता। जैसे—सोने के कंगन में हीरों की पच्ची, ताँबे के लोटे पर चाँदी के पत्तरों की पच्ची, संगमरमर की पटिया पर रंग-बिरंगे पत्थरों के टुकड़ों की पच्ची।

पद—पच्चीकारी। (देखें)

मुहा०—(किसी में) पच्ची हो जाना=किसी से बिलकुल मिल जाना या उसी के रूप का हो जाना। लीन हो जाना। जैसे—यह कबूतर जब उड़ता है, तब आसमान में पच्ची हो जाता है।

वि०[हिं० पक्ष] किसी का पक्ष लेकर उसकी ओर से झगड़ा या विवाद करनेवाला।

पच्चीकारी—स्त्री०[हिं० पच्ची+फा० कारी=करना]१ पच्ची की जड़ाई करने की क्रिया या भाव। २ पच्ची करके तैयार किया हुआ काम।

पच्छताई*—स्त्री०[सं० पक्ष]१ किसी का पक्ष ग्रहण करने का भाव। २ पक्षपात। तरफदारी।

पच्छम—वि०, पु० =पश्चिम।

पच्छाघात—पु० =पक्षाघात।

पच्छि*—पु० =पक्षी।

पच्छिनी—स्त्री० =पक्षिणी (चिड़िया)।

पच्छिम—पु० =पश्चिम (दिशा)।

†वि० =पिछला।

पच्छिराज*—पु० =पक्षिराज (गरुड़)।

पच्छिवँ†—पु० =पश्चिम।

पच्छी—पु० पक्षी।

पछँहीं—वि० [सं० पश्चिम] पश्चिम में होने या रहनेवाला।

पछ†—वि० हिं० पाछे (पीछे) का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पछलगा (पिछलगा)। पु० =पक्ष।

पछइ—अव्य० पीछे।

पछड़ी—स्त्री०[देश०] तलवार। (डिं०)

पछड़ना—अ०[हिं० 'पछाड़ना' का अ०] १ कुश्ती आदि लड़ने में पछाड़ा या पटका जाना। २ प्रतियोगिता आदि में बुरी तरह से परास्त होना या हराया जाना।

†अ० पिछड़ना।

पछताना—अ०[हिं० पछताव] पश्चात्ताप करना।

पछतानि—स्त्री० =पछतावा (पश्चात्ताप)।

पछताव—पु० पछतावा।

पछतावना†—अ० पछताना।

पछतावा—पु० [सं० पश्चात्ताप]पछताने की क्रिया या भाव। मन में होनेवाला इस बात का दुःखजन्य विचार कि मैंने ऐसा अनुपयुक्त या अनुचित काम क्यों किया अथवा अमुक उचित या उपयुक्त काम क्यों न किया। पश्चात्ताप।

पछना—अ० [हिं० पाछना का अ० रूप] पाछा अर्थात् छुरे के आघात से हलका चीरा लगाया जाना।

पछमन†—अव्य० पीछे।

पछरना†—अ० १ =पछड़ना। २ =पिछड़ना।

पछरा†—पु० पछाड़।

पछलगा—पु० =पिछलगा।

पछलत्त†—स्त्री० पिछलत्ती।

पछ-लागा—पु० =पिछलगा।

पछवत—स्त्री०[हिं० पीछे+वत]ऐसी फसल जिसकी बोआई उपयुक्त ऋतु के अंत में या ठीक समय के बाद हुई हो।

पछवाँ—वि०[सं० पश्चिम]१ पश्चिम-दिशा संबंधी। २ पश्चिम की ओर से आनेवाला। जैसे—पछवाँ हवा।
स्त्री० पश्चिम की ओर से आनेवाली हवा।
पु०[हिं० पीछे] अँगिया, कुरती आदि का वह भाग जो पीछे की ओर रहता है।
पु० दे० 'पछुआ'।
अव्य०=पीछे।

पछवारा†—पु०[हिं० पीछा]१ पिछला भाग। २ पीठ। पृष्ठ। ३ दे० 'पिछवाड़ा'।
†वि०=पिछल्ला।

पछाँह—पु०[सं० पश्चात्, प्रा० पच्छ] किसी प्रदेश की दृष्टि से, उसके पश्चिम विशेषत सुदूर पश्चिम मे स्थित प्रदेश।

पछाँहिया—वि०=पछाँही।

पछाँही—वि० [हिं० पछाँह+ई (प्रत्य०)] १ पछाँह-संबंधी। २ जो पछाँह मे रहता या होता हो।

पछाड़—स्त्री०[हिं० पछाड़ना]१ पछाड़ना की क्रिया या भाव। २ पछाड़े जाने की अवस्था या भाव। ३ वह अवस्था जिसमे मनुष्य बहुत बड़े शोक का आघात होने पर खड़ा-खड़ा एक दम से जमीन पर गिर जाता और प्राय बेसुध-सा हो जाता है।
मुहा०—**पछाड़ खाकर गिरना** = बहुत अधिक शोकाकुल होने के कारण खड़े-खड़े बेसुध होकर गिरना।

पछाड़ना—स०[सं० प्रक्षालन]धोकर साफ करने के लिए कपड़ों को जोर जोर से जमीन या पत्थर पर पटकना।
स० [हिं० पीछे+ढकेलना]१ कुश्ती आदि मे किसी को जमीन पर चित गिराना और उसे जीतना। २ किसी प्रकार की प्रतियोगिता, वादविवाद आदि मे किसी को बुरी तरह से नीचा दिखाना, परास्त करना या हराना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।

पछाड़ी†—स्त्री०=पिछाड़ी (पिछला भाग)।

पछानना†—स०=पहचानना। (पश्चिम)

पछाया—पु० दे० 'पिछाड़ी'।

पछार—स्त्री०=पछाड़।
अव्य०=पछवाँ (पीछे)।

पछारना—स०=पछाड़ना।

पछावर (रि)—स्त्री० [हिं० पीछे?] छाछ आदि का बना हुआ एक प्रकार का पेय जो भोजन के अंत मे पिया जाता है।

पछाहँ†—पु०=पछाँह।

पछाहीं†—वि०, पु०=पछाँही।
†स्त्री०=परछाईं।

पछिआना—स०[हिं० पाछे+आना]१ किसी भागते हुए व्यक्ति को पकड़ने या पाने के लिए उसके पीछे-पीछे तेजी से बढ़ना। पीछा करना। २ किसी के पीछे-पीछे अनुगामी बनकर चलना। अनुकरण करना।

पछिउँ†—पु०=पश्चिम।

पछिताना—अ०=पछताना।

पछितानि—स्त्री०=पछतावा।

पछिताव†—पु०[देश०] पशुओं का एक प्रकार का रोग।
पु०=पछतावा।

पछियाँव†—स्त्री०[सं० पश्चिम+वायु] पश्चिम दिशा से आनेवाली हवा।
क्रि० प्र०—चलना।—बहना।

पछियाना—स०=पछिआना (पीछा करते हुए दौड़ाना)।

पछियाव—स्त्री० [हिं० पच्छिम+वायु] पश्चिम की हवा।
पु०=पीछा (पिछला भाग)।

पछियावर—स्त्री०=पछावर।

पछिलना†—अ०१ =पिछड़ना। २ =फिसलना।

पछिला—वि०[स्त्री० पछिली]=पिछला।

पछिवाँ—वि०, स्त्री०=पछवाँ।

पछिवाई†—स्त्री०[सं० पश्चिम+वायु]पश्चिम दिशा से आनेवाली हवा।

पछीत—स्त्री०[सं० पश्चात्, प्रा० पच्छा]१. घर का पिछवाड़ा। मकान के पीछे का भाग। २ घर या मकान के पीछेवाली दीवार।
†अव्य० =पीछे।

पछुआँ—वि०, पु०, स्त्री०=पछवाँ।

पछुआ—पु० [हिं० पीछा] पैरों मे पहनने का कड़े के आकार का एक गहना।

पछेड़ा†—पु०[हिं० पीछे] किसी को तंग करने के लिए उसके पीछे पड़ने की क्रिया या भाव। उदा०—पतवार पुरानी, पवन प्रलय का कैसा किए पछेड़ा है।—प्रसाद।

पछेलना—स० [हिं० पीछे+एलना (प्रत्य०)] १. चलते, दौड़ते अथवा कोई काम करते समय किसी को पीछे छोड़ या डालकर स्वयं उससे आगे निकलना या बढ़ना। २ पीछे की ओर ढकेलना या हटाना।

पछेला—वि०[स्त्री० पछेली] पिछला।
पु०=पिछेला (गहना)।

पछेलिया†—स्त्री० =पिछेली (गहना)।

पछेली†—स्त्री० =पिछेली (गहना)।

पछोड़न—स्त्री० [हिं० पछाड़ना] अनाज पछोड़ने पर निकलनेवाला कूड़ा-करकट।

पछोड़ना—स०[सं० प्रक्षालन, प्रा० पच्छाड़ना] अन्न आदि सूप मे रखकर इस प्रकार उछालना और हिलाना कि उसमे का कूड़ा-करकट निकलकर अलग हो जाय। (अनाज) फटकना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
पद—फटकना-पछोड़ना=उलट-पुलटकर परीक्षा करना। अच्छी तरह देखना-भालना। उदा०—सूर जहाँ लौं स्याम गात है देखे फटकि पछोरी।—सूर।

पछोरना—स०=पछोड़ना।

पछौरा†—पु० =पिछौरा (दुपट्टा)।

पछ्यावर—स्त्री०[देश०]=पछावर।

पजर—पु०[सं० प्रक्षरण]१ चूने या टपकने की क्रिया या भाव। २ पानी का झरना या सोता।
स्त्री०[हिं० पजरना] पजरने अर्थात् जलने का भाव।

पजरना—अ० [सं० प्रज्वलन] १ प्रज्वलित होना। २ जलना। ३ तपना।
स०=पजारना।

पजरे†—क्रि० वि० =पास (निकट)।

पजहर—पुं० [फा०] पीलापन या हरापन लिए हुए सफेद रंग का एक तरह का बढ़िया पत्थर जिस पर नक्काशी की जाती है।

पजाना—स० [हिं० पजा ?] चोखा या तेज करना। उदा०—तो भी पजा पजा रहा है, साइबेरिया का भालू।—दिनकर।

पजामा†—पुं० पाजामा। (पश्चिम)

पजारना—स० [हिं० पजरना] १ प्रज्वलित करना। २ जलाना। ३ तपाना। ४ पीड़ित या संतप्त करना।

पजावा—पुं० [फा० पजाव] ईंटे, चूना, आदि पकाने का भट्टा। आँवाँ।

पजूसण—पुं० [सं०] जैनों का एक व्रत।

पजोखा—पुं० [?] किसी के मरने पर उसके संबंधियों के सामने किया जानेवाला शोक-प्रकाश। मातम-पुरसी।

पजोड़ा†—वि० पाजी (दुष्ट)।

पज्ज—पुं० [सं० पद्√जन् (उत्पत्ति)+ड] शूद्र।

पज्जर—पुं० पांजर।

पज्झलिका—स्त्री० [सं० पद्धटिका] १ छोटी घटी। २ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं तथा आठवीं और छठी मात्रा पर एक एक गुरु होता है। इसमें जगण का निषेध है।

पटतर†—पुं० =पटतर।

पटंबर—पुं० [सं० पट-अंबर] रेशमी कपड़ा। कौषेय।

पट—पुं० [सं० पट् (लपेटना)+क] १ पहनने के कपड़े। पोशाक। २ कपड़ा। वस्त्र। ३ आवरण। परदा। जैसे—चित्र-पट। ४ उक्त के आधार पर दरवाजा। द्वार। जैसे—पालकी का पट, दरवाजे का पट।

मुहा०—**(मंदिर का) पट उघड़ना या खुलना** नियत समय पर मंदिर का दरवाजा इसलिए खुलना (या उसके आगे पड़ा हुआ परदा इसलिए हटना) कि दर्शनार्थी लोग देव-मूर्ति के दर्शन कर सकें।

५ कोई ऐसी चीज जो खूब, अच्छी तरह और सुन्दर बनी हो।

पुं० [सं० परम्] फूस, सरकंडे आदि से छाया हुआ छप्पर। छानी। जैसे—नाव या बैलगाड़ी के ऊपर का पट।

पुं० [सं० चित्र-पट में का पट] १ कपड़े, कागज, धातु आदि का वह टुकड़ा, जिस पर हाथ से कोई चित्र अंकित किया हुआ हो। चित्र-पट। २ जगन्नाथपुरी, बदरिकाश्रम आदि तीर्थों में दर्शनार्थियों को प्रसाद के रूप में मिलनेवाला उक्त देवताओं का चित्रपट।

वि० [सं० चित्र-पट में का पट अर्थात् नीचे वाला भाग] १ जिसका मुँह नीचे की ओर तथा पीठ ऊपर की ओर हो। उलटा पड़ा हुआ। औंधा। 'चित' का विपर्याय। जैसे—(क) कुश्ती में, पट पड़े हुए पहलवान को चित करने से ही जीत होती है। (ख) तलवार उस पर पट पड़ी थी, इसलिए उसे अधिक चोट नहीं आई।

विशेष—प्राचीन काल में कपड़े पर अंकित किये जानेवाले चित्र को चित्र-पट कहते थे। उसका चित्रवाला ऊपरी भाग तो 'चित्र' होता ही था, जिससे हिन्दी का 'चित' विशेषण बना है, नीचेवाला कपड़ा 'पट' होता था, जिससे हिन्दी का उक्त अर्थवाला 'पट' विशेषण बना है। यहाँ इसके (विशेषण रूप में) जो और अर्थ दिये जाते हैं, वे सब उक्त पहले अर्थ के विकसित रूप हैं।

२ बिलकुल खाली पड़ा हुआ। जिसमें या जिसपर कुछ भी न हो। जैसे—खेत (या रास्ता) बिलकुल पट पड़ा था। ३ धीमा या मन्द। मद्धिम या सुस्त। जैसे—आज-कल कपड़े का बाजार बिलकुल पट है। ४ चौपट। बरबाद। जैसे—तुमने तो सारा काम ही पट कर दिया।

पट—चौपट। (देखें)

पुं० १ किसी वस्तु का चिपटा और चौरस तल। २ चौरस जमीन।

पुं० [?] चिरौंजी का पेड़। पयाल। २ कपास। ३ गंध-तृण। ४ टाँग। पैर। ५ कुश्ती का एक पेच।

पुं० [सं० पट्ट] राज-सिंहासन।

पट—पट-रानी। (देखें)

पुं० [अनु०] छोटी चीज के धीरे से गिरने पर होनेवाला 'पट' शब्द।

अव्य० [हिं० चट का अनु०] तत्काल। तुरन्त। जैसे—चटपट यह काम खत्म करो।

पटइन—स्त्री० [हिं० पटना] पटवा जाति की स्त्री जो गहने गूँथने का काम करती है।

पटई†—स्त्री० दे० 'बहँगी'।

पटक—पुं० [सं० पट+कन्] १ सूती कपड़ा। २ [पट√कै+क] खेमा। तंबू।

स्त्री० [हिं० पटकना] पटकने की क्रिया या भाव। पटकान। जैसे—दोनों में उठा-पटक होने लगी।

पटकन†—स्त्री० =पटकान।

पटकना—स० [सं० पतन+करण] १ किसी को या कोई चीज उठा-कर या हाथ में लेकर जोर से जमीन पर डालना या गिराना। जोर के साथ ऊँचाई से भूमि की ओर फेंकना। जैसे—(क) किसी लड़के को जमीन पर पटकना। (ख) गिलास या थाली पटकना।

संयो० क्रि०—देना।

मुहा०—**(कोई काम) किसी के सिर पटकना**—किंचित उग्र रूप से या जबरदस्ती किसी के जिम्मे लगाना। मढ़ना। जैसे—तुम तो सब काम यों ही मेरे सिर पटक देते हो।

२ अपना कोई अंग जोर से किसी तल पर गिराना या रखना। जैसे—जमीन पर सिर या हाथ पटकना। ३. किसी खड़े या बैठे हुए व्यक्ति को उठाकर जोर से नीचे गिराना। दे मारना। ४ कुश्ती में प्रतिद्वन्द्वी को जमीन पर गिराना या पछाड़ना।

अ० १ ऊपरी तल का दबकर कुछ नीचे हो जाना। पचकना। २ (अनाज आदि का) सूखकर सिकुड़ना। ३ (सूजन आदि का) दबकर कम होना। ४ 'पट' शब्द करते हुए किसी चीज का चटक, टूट या फूट जाना। जैसे—मिट्टी का बरतन पटकना।

पटकनिया—स्त्री० [हिं० पटकना] १ पटकने का ढंग, भाव अथवा युक्ति। २ दे० 'पछाड़'।

पटकनी—स्त्री० [हिं० पटकना] १ पटकने की क्रिया या भाव। पटकान।

क्रि० प्र०—देना।

२ पटके जाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—खाना।

३ पछाड़ खाकर जमीन पर गिरने और लोटने की क्रिया या भाव।

पटकरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बेल।

पटकर्म (मन्)—पु० [ष० त०] कपड़े बुनने का काम, धंधा या पेशा। वयन।

पटका—पु० [सं० पट्टक] १ कमर में बाँधने का दुपट्टा या बड़ा रूमाल। कमरबन्द।

मुहा०—(किसी का) पटका पकड़ना=(क) किसी काम या बात के लिए किसी को उत्तरदायी ठहराना। (ख) किसी से कुछ पाने या लेने के लिए आग्रह करना। (किसी काम के लिए) पटका बाँधना=किसी काम के लिए तैयार होना। कमर कसना।

२ गले में डालने का दुपट्टा। ३ एक प्रकार का चारखाना या धारीदार कपड़ा। ४ दीवार के ऊपर की वह पट्टी जो शोभा के लिए कमरे में अन्दर की ओर बनाई जाती है। कँगनी। कारनिस।

पटकान—स्त्री० [हिं० पटकना] १ पटकने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

२ झटके या झोंके से किसी के द्वारा नीचे गिराये जाने का भाव।

क्रि० प्र०—खाना।

३ पटके जाने के कारण होनेवाली पीड़ा। ४ छड़ी। डंडा।

पटकार—पु० [सं० पट√कृ (करना)+अण्] १ कपड़ा बुननेवाला। जुलाहा। २ चित्रपट बनानेवाला। चित्रकार।

स्त्री० [हिं० पटकना] १ वह लंबी रस्सी, जिसे जमीन पर पटककर किसान लोग खेत की चिड़ियाँ उड़ाते है। २ उक्त रस्सी के पटके जाने पर होनेवाला शब्द।

पटकी†—स्त्री० =पटकान।

पट-कुटी—स्त्री० [मध्य० स०] रावटी। खेमा। (डिं०)

पट-कूल—पु० [सं०] कपड़ा। वस्त्र।

पट-चित्र—पु० [सप्त० त०] १ कपड़े पर बना हुआ वह चित्र, जो लपेटकर रखा जा सके। २ दे० 'चित्र-पट'।

पटच्चर—पु० [सं० पटत्√पट्+अति, पटच्चर पटत्√चर् (गति)+अच्] १. फटा-पुराना कपड़ा। चीथड़ा। २ चोर। ३ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

पटझोल*—पु० [सं० पट=कपड़ा+झोल] १ पहने हुए कपड़े में पड़नेवाला झोल। २ आँचल। पल्ला।

पटड़ा†—पु० [स्त्री० पटड़ी]=पटरा।

पटण*—पु० =पत्तन (नगर)।

पटतर—पु० [सं० पट्ट-तल] १ तुल्यता। बराबरी। समानता। २ उपमा जो तुल्यता या सादृश्य के आधार पर दी जाती है। ३ तुलना। उदा०—सुरपति-सदन न पटतर पावा।—तुलसी।

क्रि० प्र०—देना।— *लहना।

†वि० चौरस। समतल।

क्रि० वि० तुल्य। बराबर। समान। उदा०—राम नाम पटतरै देबै को कछु नाहि।—कबीर।

पटतरना—स० [हिं० पटतर] १ किसी को किसी दूसरे के तुल्य या बराबर ठहराना। २ किसी के साथ उपमा देना। ३ तुलना करना। ४ (जमीन आदि का) पटतर या समतल बनाना।

अ० १ तुल्य या बराबर ठहराया जाना। २ उपमित किया जाना। ३ तुलना किया जाना। ४ पटतर या समतल बनाया जाना।

पटतारना—स० [हिं० पटा+तारना=अंदाजना] खड्ग, भाला आदि इस रूप में पकड़ना कि उससे वार किया जा सके।

स० [हिं० पटतर] ऊँची-नीची भूमि चौरस या बराबर करना।

पटताल—पु० [सं० पट्ट-ताल] मृदंग का एक ताल जो एक दीर्घ या दो ह्रस्व मात्राओं का होता है।

पटद—पु० [सं० पट√दा (देना)+क] कपास जिससे पट या कपड़ा बनता या मिलता है।

पट-दीप—पु० [सं०] एक प्रकार का राग।

पटधारी (रिन्)—वि० [सं० पट√धृ (धारण करना)+णिनि] जो कपड़ा पहने हो।

पु० राजाओं के तोशाखाने का प्रधान अधिकारी।

पटन—पु० दे० 'पट्टन'।

पटना—अ० [हिं० पाटना का अनु०] १ पाटा जाना। २ गड्ढे आदि का भरे जाने के कारण आस-पास के तल के बराबर होना। ३ किसी स्थान का किसी चीज से बहुत अधिक भर जाना। जैसे—आज-कल बाजार आम (या खरबूजा) से पट गया है। ४ दीवारों के ऊपर इस प्रकार छत या छाजन बनना कि उनके बीच की भूमि पर छाया हो जाय। पाटन पड़ना या बनना। ५ खेतों आदि का पानी से सींचा जाना। ६ रुचि, विचार, स्वभाव आदि में समानता होने के कारण आपस में एक-रसता, निर्वाह या सौजन्यपूर्ण संबंध होना। जैसे—दोनों भाइयों में अब फिर पटने लगी है। ७ उक्त प्रकार की अवस्था में किसी पर विश्वास होना। उदा०—मीराँ कहै प्रभु हरि अबिनासी तन-मन ताहि पटै रे।—मीराँ। ८ लेन-देन, व्यवहार आदि में दोनों पक्षों में ब्यौरे की बातों में सहमति होना। खरीद-बिक्री आदि के संबंध की सब बातें तय या निश्चित होना। जैसे—सौदा पटना। ९ ऋण, देन आदि का चुकता हो जाना। जैसे—अब उनका सारा ऋण पट गया।

पु० [सं० पट्टन] भारत की प्राचीन प्रसिद्ध नगरी पाटलिपुत्र का आधुनिक नाम जो आधुनिक बिहार राज की राजधानी है।

पटनिया†—वि० [हिं० पटना+इया (प्रत्य०)] पटना नगर का। पटना नगर से संबंध रखनेवाला।

पटनिहा—वि० =पटनिया।

पटनी—स्त्री० [हिं० पटना=तै होना] १ पटने की अवस्था या भाव। २ पाटने की क्रिया या भाव। ३ छत। ४ वह कमरा जिसके ऊपर कोई और कमरा भी हो। ५ चीजें आदि रखने के लिए दीवार में लगा हुआ तख्ता या पटरी। ६ जमीन या जमींदारी का वह अंश जो किसी को निश्चित लगान पर सदा के लिए दे दिया गया हो। ६ मध्य-युग की वह पद्धति, जिसके अनुसार जमीनों का बंदोबस्त उपर्युक्त रूप से सदा के लिए कर दिया जाता था।

पट-पट—स्त्री० [अनु०] प्राय हलकी वस्तुओं के गिरने से उत्पन्न होनेवाला 'पट' शब्द।

पद—पट-पट की नाव=बैलगाडी।

क्रि० वि० पट-पट शब्द करते हुए।

पटपटाना—अ० [हिं० पटकना] १ किसी चीज से पट-पट शब्द होना। २ भूख-प्यास, सरदी-गरमी आदि के कारण बहुत कष्ट पाना। ३ दुःख या शोक करना।

स० १ पट-पट शब्द उत्पन्न करना। २ ऐसा काम करना, जिससे कोई भूख-प्यास, सरदी-गरमी, आदि के कारण बहुत कष्ट पावे और तड़पे।

पटपर—वि० [हिं० पट+अनु० पर] १ चौरस। सम-तल। २ पूरी तरह से नष्ट या बरबाद। जिसमे कही कुछ भी न हो। बिलकुल खाली। जैसे—सारा घर पटपर पडा है।

पु० १ बिलकुल उजाड और सुनसान जगह। २ नदी के किनारे की वह भूमि जो वर्षा ऋतु मे प्राय डूबी रहती है। ऐसी जमीन मे केवल रबी की फसल होती है।

पट-परिवर्तन—पु० [स० ष० त०] १ रग-मच का परदा बदलना। २ एक दृश्य या स्थिति के स्थान पर दूसरा दृश्य या स्थिति उत्पन्न होना।

पट-बधक—पु० [हिं० पटना+स० बधक] कोई सपत्ति बधक या रेहन रखने का वह प्रकार जिसमे सपत्ति की सारी आय महाजन ले लेता है, और उस आय मे से सूद निकाल लेने के बाद जो धन बच रहता है, वह मूल ऋण मे जमा करता चलता है। सारा ऋण पट जाने पर सपत्ति महाजन के हाथ मे निकलकर उसके वास्तविक स्वामी के हाथ मे चली जाती है।

वि० (मकान या स्थान) जो उक्त प्रकार से रेहन रखा गया हो।

पट-बीजना—पु० [हिं० पट=बराबर+विज्जु=बिजली ?] जुगनूं। खद्योत।

पट-भाक्ष—पु० [स० पट√भा (दीप्ति)+क, पटभ√अक्ष् (व्याप्ति)+अच्] प्राचीन काल का एक यत्र जिससे आँख को देखने मे सहायता मिलती थी। एक तरह का प्रकाश-यत्र।

पट-मजरी—पु० [स०] सगीत मे, सपूर्ण जाति की एक प्रकार की रागिनी जो हिंडाल राग की भार्या कही गई है और जो वसत ऋतु मे आधी रात के समय गाई जाती है।

पट-मडप—पु० [मध्य० स०] कपडे का मडप अर्थात् तबू।

पटम—वि० [हिं० पटपटाना] १ जिसकी आँखे भूख से पटपटा या बैठ गई हो। जो भूख के मारे अधा हो गया हो। २ (आँख) जिससे दिखाई न दे।

पटमय—वि० [स० पट+मयट्] कपडे का बना हुआ।

पु० खेमा। तबू।

पटरक—पु० [स०√पट्+अरन्+कन्] पटेर। गोद पटेर।

पटरा—पु० [स० पट्ट+हिं० रा (प्रत्य०) अथवा स० पटल] [स्त्री० अल्पा० पटरी] १ काठ का लम्बा, चौकोर और चौरस चीरा हुआ टुकडा। तख्ता। पल्ला।

मुहा०—(कोई चीज) पटरा कर देना—(क) कोई चीज काटकर इस प्रकार गिरा देना कि वह जमीन पर पडे हुए पटरे के समान हो जाय। (ख) बिलकुल नष्ट या बरबाद कर देना। **(किसी व्यक्ति को) पटरा कर देना**=मार डालकर या अध-मरा करके जमीन पर गिरा देना।

२ धोबी का पाट। ३ बैठने के लिए बना हुआ काठ का पीढ़ा। पाटा। ४ खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेंगा।

मुहा०—(किसी चीज पर) पटरा फेरना=पूरी तरह से नष्ट या बरबाद कर देना।

पट-रानी—स्त्री० [स० पट्ट+रानी] वह स्त्री जिसके साथ किसी राजा का पहला विवाह होता था।

विशेष—पट-रानी को ही राजा के साथ सिंहासन पर बैठने का अधिकार होता था, शेष रानियो को नही।

पटरी—स्त्री० [हिं० पटरा का स्त्री० अल्पा०] १ काठ का छोटा पतला और लबोतरा टुकडा। छोटा पटरा। २ वह तख्ती या पट्टी जिस पर बच्चे लिखने का अभ्यास करते है। ३ वह चौडा खपडा जिसकी सधियो पर नरिया औधी करके रखी जाती है। थपुआ। ४ सडक के दोनो किनारो का वह कुछ ऊंचा और कम चौडा पथ जो पैदल चलनेवालो के लिए सुरक्षित रहता है। ५ उक्त प्रकार के वे दोनो छोटे रास्ते जो नहरो आदि के दोनो किनारो पर बने रहते है। ६ उक्त के आधार पर लोहे के वे लबे छड या टुकडे जो समानान्तर लगे रहते है और जिनके ऊपर से रेल-गाडी चलती है। जैसे—रेल-गाडी के दो डब्बे पटरी से उतर गये। ७ बगीचे मे क्यारियो के इधर-उधर के पतले रास्ते जिनके दोनो ओर सुन्दरता के लिए घास लगा दी जाती है और जिन पर से होकर लोग आते-जाते है। ८ हाथ मे पहनने की एक तरह की नक्काशीदार चौडी चूडी। ९ गले मे पहनने की चौकी, जतर या ताबीज। १० लाक्षणिक रूप मे, पारस्परिक व्यवहार मे वह स्थिति जिसमे परस्पर सौहार्दपूर्वक निर्वाह होता है।

मुहा०—(किसी से) पटरी बैठना=प्रकृति, रुचि आदि की समानता होने के कारण सहज मे और सुगमतापूर्वक निर्वाह होना। जैसे—दोनो बहुत दुष्ट है, इसी लिए उनमे खूब पटरी बैठती है।

११ घोडे की सवारी मे वह स्थिति जिसमे सवार की दोनो जाँघे घोडे की पीठ या जीन पर ठीक तरह से और उपयुक्त स्थान पर बैठती या रहती है।

मुहा०—पटरी जमाना या बैठाना=घुडसवारी मे सवार का अपनी रानो को इस प्रकार जीन पर चिपकाना कि घोडे के बहुत तेज चलने या शरारत करने पर भी उसका आसन स्थिर रहे।

पटल—पु० [स०√पट्+कलच्] १ छप्पर। २ छत। ३ आड़ करने का आवरण। परदा। ४ तह। परत। ५ पक्ष। पहलू। पार्श्व। ६ आँख का मोतियाबिन्द नामक रोग। ७ लकडी का तख्ता या पटरा। ८ पुस्तक का विशिष्ट खड या भाग। परिच्छेद। ९ टीका। तिलक। १० ढेर। राशि। ११ बडे आदमियो के साथ रहनेवाले बहुत-से लोग। परिच्छद। लवाजमा।

पटलक—पु० [स० पटल+कन्] १ आवरण। परदा। २ वह कपडा जिसपर इत्र या सुगधित द्रव्य लगा हो। ३ झाबा। डलिया। ४ पिटारी या सन्दूक। ५ ढेर। राशि।

पटलता—स्त्री० [स० पटल+तल्—टाप्] अधिकता।

पटल-प्रांत—पु० [ष० त०] छप्पर का सिरा या किनारा।

पटली—स्त्री० [सं० पटल+ङीप्] १ छप्पर। २ छत।
† स्त्री०=पटरी।

पटवा—पु० [हिं० पाट+वाह (प्रत्य०)] [स्त्री० पटइन] वह जो दानों, मनको आदि को सूत या रेशम की डोरी मे गूँथने या पिरोने का काम करता हो। पटहार।
पु० [?] १ पीले रग का एक प्रकार का बैल जो खेती के लिए अच्छा समझा जाता है। २ पटसन। पाट।

पटवाद्य—पु० [सं० तृ० त०] झाँझ के आकार का एक प्राचीन बाजा जिससे ताल दिया जाता था।

पटवाना—स० [हिं० पाटना का प्रे०] पाटने का काम दूसरे से कराना। किसी को कुछ पाटने मे प्रवृत्त करना। जैसे—खेत, गड्ढा या छत पटवाना , करज या देन पटवाना।
स० [हिं० 'पटाना' का प्रे०] किसी को पटाने (कम होने, दबने, बैठने आदि) मे प्रवृत्त करना। जैसे—दरद या सूजन पटवाना। वि० दे० 'पटाना'।

पट-वाप—पु० [ब० स०] खेमा। तबू।

पटवारगिरी—स्त्री० [हिं० पटवारी+फा० गरी] पटवारी का काम, पद या भाव।

पटवारी—पु० [सं० पट्ट+हिं० वारी (प्रत्य०)] खेती-बारी की जमीनो तथा उसकी उपज, मालगुजारी आदि का लेखा रखनेवाला एक सरकारी कर्मचारी। लेख-पाल।
स्त्री० [सं० पट=कपडा+हिं० वारी (प्रत्य०)] मध्ययुग मे, वह दासी जो रानियो अथवा अन्य बडे घरों की स्त्रियो को कपडे, गहने आदि पहनाती थी।

पट-वास—पु० [मध्य० स०] १. कपड़े का बना हुआ घर अर्थात् खेमा या तबू। २ छावनी। शिविर। ३ लँहगा।
पु० [सं० पट√वास् (सुगधित करना)+णिच्+अण्] वह सुगधित वस्तु जिससे कपड़े बसाये या सुगधित किये जाते हो।

पटवासक—पु० [सं० पटवास+कन्] सुगधित वस्तुओं का वह चूर्ण जिससे वस्त्र आदि बसाये या सुगधित किये जाते थे।

पट-बिहाग—पु० [सं० पट+बिहाग] सगीत मे, बिलावल ठाठ का एक संकर राग।

पट-वेश्म(न्)—पु० [मध्य० स०] तबू। खेमा।

पटसन—पु० [सं० पाट+हिं० सन] १ सन या सनई नामक प्रसिद्ध पौधा जिसके डठलो के रेशो को बट या बुनकर रस्सियाँ, बोरे आदि बनाये जाते हैं। २ उक्त रेशे। जूट। पटुआ। पाट।

पटसार†—स्त्री० [सं० पटशाला] खेमा। तबू।

पटसाली—पु० [सं० पट्टशाली] वस्त्र बुननेवालो की एक जाति। (मध्यप्रदेश)

पटहंसिका—स्त्री० [सं० ष० त०] सपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

पटह—पु० [सं० पट√हन् (चोट करना)+ड] १. डुगडुगी। २. ढोल। ३ नगाडा। ४. क्षति या हानि पहुँचाना। ५. हिंसा। ६. किसी काम मे हाथ डालना या लगाना।

पटह-घोषक—पु० [ष० त०] डुगडुगी, ढोल या नगाडा बजानेवाला व्यक्ति।

पटह-भ्रमण—पु० [ब० स०] १. लोगो को इकट्ठा करने के लिए घूम-घूमकर ढिढोरा या ढोल पीटनेवाला व्यक्ति। २ [तृ० त०] डुगडुगी, ढोल आदि बजाते हुए चलना।

पटहार (१)—पु० [सं० पाट+हिं० हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० पटहारिन, पटहारी] सूत, रेशम आदि के तागों मे गहनो के दाने, मनके आदि गूँथनेवाला व्यक्ति। पटवा।

पटा—पु० [सं० पट] १. प्राय दो हाथ लोहे की वह पट्टी जिससे तलवार से वार करने और दूसरो के वार रोकने की कला का अभ्यास किया जाता है।
विशेष—इसका अभ्यास प्राय बनेठी के साथ होता है , और प्राय. लोग अपना कौशल दिखलाने के लिए खेल के रूप मे इसका प्रदर्शन भी करते है।
२ लबी धारी या लकीर। ३ लगाम की मोहरी। ४ चटाई।
पु० [सं० पट्ट] १ पीढ़ा। पटरा।
पद—पटा-फेर -विवाह की एक रसम जिसमे कन्यादान हो चुकने पर वर और वधू के आसन परस्पर बदल दिये जाते है।
विशेष—जब तक कन्यादान नही होता, तब तक वधू को वर की दाहिनी ओर बैठना पडता है। कन्यादान हो चुकने पर वधू को वर के बाएँ बैठाते हैं। उस समय परस्पर आसन का जो परिवर्तन होता है, वही पटाफेर कहलाता है।
मुहा०—(राजा का किसी रानी को) पटा बाँधना=पट-रानी या प्रधान महिषी बनाना। उदा०—चौदह सहस तिया मैं तो को पटा बँधाऊँ आज।—सूर।
२ अधिकार-पत्र। सनद। पट्टा। (देखें)
पु० [सं० पट] १ कपडा। वस्त्र। २ दुपट्टा। ३ पगडी।
पु० [सं० पटना=तै होना] क्रय-विक्रय, विनिमय आदि के रूप मे होनेवाला पारस्परिक लेन-देन या व्यवहार। सौदा।
*वि० [हिं० पट=औंधा] १ औंधाया हुआ। २ मारकर गिराया हुआ। उदा०—कीजै कहा बिधि की बिधि कौ दियो दारुन लोट पटा करिबे कौ।—पद्माकर।

पटाई—स्त्री० [हिं० पाटना] १ पाटने की क्रिया या भाव। २ पाटने का पारिश्रमिक या मजदूरी।
स्त्री० [हिं० पटाना] १. ऋण, देन आदि पटाने या चुकता करने की क्रिया या भाव। २ क्रय-विक्रय, लेन-देन अथवा समझौता आदि के लिए किसी को राजी करने की क्रिया या भाव। ३ सौदा आदि पटाने पर मिलनेवाला पुरस्कार।

पटाक—स्त्री० [अनु०] किसी भारी चीज के गिरने, अथवा किसी चीज पर कठोर आघात लगने या लगाने से होनेवाला शब्द। जैसे—किसी के मुँह पर जोर से चपत लगाने से होनेवाला शब्द।
पद—पटाक-पटाक=निरतर पटाक शब्द करते हुए।

पटाका—पु० [हिं० पटाक] १ पट या पटाक से होनेवाला जोर का शब्द। २. तमाचा। थप्पड़।
क्रि० प्र०—जड़ना। —देना। —लगाना।

३. आतिशबाजी की एक प्रकार की गोली जिसे जमीन पर पटकने से जोर का शब्द होता है।

क्रि० प्र०—छूटना। —छोड़ना।

४ किसी प्रकार की आतिशबाजी मे होनेवाला उक्त प्रकार का शब्द।

५ युवा तथा सुन्दर स्त्री। (बाजारू)

स्त्री० [स०√पट् (गति)+आक नि०, टाप्] झंडा। ध्वजा। पताका।

पटाक्षेप—पु० [स० पट-आक्षेप, ष०त०] १ परदा गिरना या गिराना। २ रगमच पर अभिनय के समय नाटक का एक अग पूरा हो जाने पर कुछ समय के लिए परदा गिरना, जो थोडी देर के अवकाश का सूचक होता है। ३ लाक्षणिक अर्थ मे किसी घटना या बात की होनेवाली समाप्ति। जैसे—चार वर्ष बाद युद्ध का पटाक्षेप हुआ।

पटाखा†—पु० पटाका।

पटान—स्त्री० [हि० पाटना] १ पाटने की क्रिया या भाव। २ =पाटन।

स्त्री० [हि० पटाना] (ऋण, देन आदि) पटाने अर्थात् चुकता करने की क्रिया या भाव। पटाई।

पटाना—स० [हि० पाटना का प्रे०] [भाव० पटाई] १ गड्ढा आदि पाटने मे किसी को प्रवृत्त करना। २ किसी से छाजन आदि डलवाना।

†अ० १ पाटा जाना। पटना। २ कम होना। घटना। जैसे—रोग या सूजन पटाना। ३ शात और स्थिर होना। (पूरब)

स० [हि० पटना का स०] १ ऐसा काम करना जिससे कोई क्रिया सपन्न होती हो अथवा कोई बात तय या हल होती हो। जैसे—(क) ऋण पटाना। (ख) सौदा पटाना। २ बात-चीत के द्वारा किसी को अपने अनुकूल करके क्रय-विक्रय, लेन-देन, समझौता आदि करने के लिए राजी करना। जैसे—ग्राहक या यजमान पटाना।

पटापट—अव्य० [अनु० पट] १ लगातार पट-पट शब्द करते हुए। जैसे—पटापट थप्पड पडना। २ बहुत जल्दी-जल्दी। चट-पट। तुरन्त। जैसे—पटापट दूकानें बन्द होने लगी।

स्त्री० निरतर 'पटपट' होनेवाली ध्वनि या शब्द।

पटापटी—स्त्री० [अनु०] वह वस्तु जिस पर कई रगो की आकृतियाँ, बेल-बूटे, फूल-पत्तियाँ आदि बनी हों। उदा०—बाँधी बँदनवार विविध बहु पटापटी की।—रत्नाकर।

पटार†—पु० [स० पिटक] १ पिटारा। मजूषा। २ पिंजडा।

पु० [स० पट] १ रेशम की डोरी या रस्सी।

† पु० =कनखजूरा।

पटालुका—स्त्री० [स० पट√अल् (पर्याप्ति) उक-टाप्] जोक। जलौका।

पटाव—पु० [हि० पाटना] १ पाटने की क्रिया, ढग या भाव। २. वह कूडा-करकट, मिट्टी आदि जिससे गड्ढे आदि पाटे गये हो। पाटकर बराबर किया हुआ स्थान। ३ पाटकर बनाई गई छत। पाटन। ४ दरवाजे मे चौखट के ऊपर रखी जानेवाली वह लकडी, जिस पर दीवार की चुनाई की जाती है। भरेठा।

पटास—स्त्री० [हि० पाटना+आस (प्रत्य०)] पटाने या पाटने की क्रिया या भाव।

पटासन—पु० [स० पट-आसन, मध्य० स०] कपडे आदि का बना हुआ आसन।

पटि—स्त्री० [स०√पट्+इन] १ रगीन कपडा या वस्त्र। २ जल-कुभी। ३ रगमच का परदा। यवनिका। ४ कनात।

पटिआ†—स्त्री० =पटिया।

पटिका—स्त्री० [स० पटि+कन्—टाप्] १ कपडा। वस्त्र। २ कपडे का टुकडा। वस्त्र खड।

पटि-क्षेप—पु० पटाक्षेप।

पटिमा (मन्)—स्त्री० [स० पटु+इमनिच्] १ पटुता। दक्षता। २ कर्कशता। ३ रूखापन। ४ तेजी। उग्रता। ५ अम्लता।

पटिया—स्त्री० [स० पट्टिका] १ पत्थर का आयताकार, चौरस या लबा टुकडा जो साधारणत डेढ-दो इच से मोटा नही होता।

विशेष—यह फरश बनाने के लिए जमीन पर बिछाई जाती है और इससे छतें भी पाटी जाती है।

२ लकडी का आयताकार चौरस छोटा टुकडा जिस पर बच्चे आदि लिखने का अभ्यास करते है। तख्ती। पाटी। ३ छोटा हेगा। ४ लबा किंतु कम चौडा खेत का टुकडा। ५ सीधी लबी रेखा या विभाग। उदा०—आठ हाथ की बनी चुनरिया पँच रग पटिया पारी।—कबीर।

स्त्री० १ माँग या सीमन्त निकालकर झाडे हुए बाल। पाटी।

क्रि० प्र०—सँवरना।

२ दे० 'पाटी'।

पटी—स्त्री० [स० पटि+ङीप्] १ कपडे का पतला लबा टुकडा। पट्टी। २ पगडी। साफा। ३ कमरबन्द। पटका। ४ आवरण। परदा। ५ नाटक या रग-मच का परदा।

पटीमा—पु० [हि० पट्टी] पटिया के आकार का अधिक लबा और कम चौडा छीपियों का तख्ता जिस पर रखकर वे कपडे आदि छापते है।

पटीर—पु० [स०√पट्+ईरन्] १ एक प्रकार का चन्दन। २. कत्था। खैर। ३ कत्थे या खैर का पेड। खदिर वृक्ष। ४ मूली। ५ बड का पेड। वटवृक्ष। ६ क्यारी। ७ उदर। पेट। ८ क्षेत्र। मैदान। ९ जुकाम या प्रतिश्याय नामक रोग। १० चलनी। छाननी। ११ बादल। मेघ।

पटीलना—स० [हि० पटाना] १ किसी को फुसलाकर किसी काम के लिए राजी कर लेना। किसी को समझा-बुझाकर अपने अर्थ-साधन के अनुकूल करना। २ छलना। ठगना। ३ सफलतापूर्वक कोई काम पूरा उतारना। ४ परास्त करना। हराना। ५ पीटना। मारना। (बाजारू)

पटु—वि० [स०√पट्+उन्] [भाव० पटुता] १. किसी काम या बात मे कुशल अथवा दक्ष। निपुण। प्रवीण। २ चतुर। चालाक। ३ धूर्त। मक्कार। ४ कठोर हृदयवाला। निष्ठुर। ५ नीरोग। स्वस्थ। ६ तीक्ष्ण। तेज। ७. उग्र। प्रचड। ८ जो स्पष्ट रूप से सामने आया हुआ हो। प्रकाशित। व्यक्त। ९ मनोहर। सुन्दर। १० कर्कश (स्वर)। ११ विकसित।

पु० १ नमक। २ पांशु लवण। पाँगा नमक। ३ चीनी कपूर। ४. नक-छिकनी। ५ परवल (लता और फल)। ६ करेला। ७. चिरमिटा नामक लता। ८ जीरा। ९ बच।

पटुआ—पु० [स० पाट] १ पाट या सन का पौधा। जूट। पटसन। २ करेमू। ३ वह डडा जिसके सिरे पर गून या डोरी बँधी रहती है और जिसे पकडकर मल्लाह लोग नाव खीचते है।

†पु० [?] तोता (पक्षी)।

पटुक—पु० [स० पटु+कन्] परवल।

पु० [स० पट] कपडा। वस्त्र।

पटुका—पु०=पटका।

पटुता—स्त्री० [स० पटु+तल्—टाप्] पटु होने की अवस्था या भाव। प्रवीणता। निपुणता। होशियारी।

पटु-तुलक—पु०=पटुतृणक।

पटु-तृणक—पु० [स० पटु-तृण, मध्य० स०, +कन्] लवणतृण (घास)।

पटु-त्रय—पु० [स० प० त०] काला, बिड और सेधा इन तीन प्रकार के लवणो का समाहार।

पटुत्व—पु० [स० पटु+त्व] पटुता।

पटु-पत्रिका—स्त्री० [स० पटु-पत्र, ब० स०, कप्—टाप्, इत्व] चेच नामक साग।

पटु-पर्णिका—स्त्री० [स० पटु-पर्ण, ब० स०, +कप्—टाप्, इत्व] मकोय।

पटु-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] मकोय।

पटु-रूप—वि० [स० पटु+रूपप] जो किसी काम मे बहुत अधिक पटु हो।

पटुली—स्त्री० [स० पट्ट] १ काठ की वह पटरी जो झूले के रस्सो पर रक्खी जाती है। पाटा। २ चौकी। ३. छकडे या बैल-गाडी के बगल मे जडी हुई लबी पटरी।

पटुवा†—पु० १ =पटुआ। २ =पटवा।

पटूका†—पु०=पटका।

पटे—वि० [हि० पटना] (ऋण, देन आदि) जो पट या पटाया जा चुका हो।

पद—बर पटे—पूरी तरह से या बिलकुल चुकता।

पटेबाज—पु० [हि० पटा+फा० बाज] [भाव० पटेबाजी] १ वह जो पटा-बनेठी आदि खेलता या पटा हाथ मे लेकर लडता हो। पटैत। २ मनुष्य के आकार का एक प्रकार का खिलौना जो डोरी खीचने से दोनो हाथो मे पटा खेलता है। ३ उक्त प्रकार की एक आतिश-बाजी।

वि० १. दुश्चरित्रा और पुश्चली। छिनाल (स्त्री)। २ बहुत चालाक या धूर्त्त (पुरुष या स्त्री)।

पटेबाजी—स्त्री० [हि० पटेबाज] १ पटेबाज का कार्य और कौशल। २ व्यभिचार। छिनाला। ३ धूर्तता।

पटेर—स्त्री० [स० पटेरक] जलाशयो मे होनेवाला सरकडे की जाति का एक पौधा जिसके पत्तो की चटाइयाँ, टोकरियाँ आदि बनाई जाती है।

पटेरा†—पु० १ =पटेला। २ =पटरा।

पटेल—पु० [स० पट्ट+हि० वाल (प्रत्य०)] १ गाँव का नबरदार। (म० प्र०) २ गाँव का चौधरी या मुखिया।

पटेलना—स०=पटीलना।

पटेला—पु०=पटैला।

पटैत—पु० [हि० पटा+ऐत (प्रत्य०)] पटा खेलने या लडनेवाला खिलाडी। पटेबाज।

पु० [हि० पट्टा+ऐत (प्रत्य०)] १ वह जिसके नाम किसी जमीन या जायदाद का पट्टा लिखा गया हो। २ गाँव भर का पुरोहित जिसे पौरोहित्य का पट्टा मिला करता था।

पु० [हि० पटाना] वह जिसे सहज मे पटाया अथवा अपने अनुकूल बनाया जा सकता हो, फलत मूर्ख या सीधा-सादा।

पटैला—पु० [हि० पाटना] [स्त्री० अल्पा० पटैली] १ एक प्रकार की बडी नाव जिसका बीचवाला भाग ऊपर से पटा या छाया हुआ रहता है।

मुहा०—किसी के पटैले के साथ अपनी पनसुइया बाँधना—किसी बहुत बडे कार्य या व्यक्तित्व के साथ अपना तुच्छ कार्य या व्यक्तित्व सबद्ध करना।

२ पटेर नाम का पौधा जिससे चटाइयाँ आदि बनती है। ३ हेगा। ४ पत्थर की पटिया। ५ कुश्ती का एक प्रकार का पेच।

पु० [हि० पाटा] दरवाजा बद करते समय अदर से लगाया जानेवाला डडा। ब्योडा। अर्गल।

पटैली—स्त्री० [हि० पटैला] छोटी पटैला नाव।

पटोटज—पु० [स० पट-उटज, मध्य० स०] १ खेमा। २ [पट-उट प० त०, पटोट √ जन् (उत्पत्ति)+ड] कुकुरमुत्ता। ३ छत्रक।

पटोर—पु० [स० पटोल] १ पटोल। परवल। २ रेशमी कपडा। उदा०—मैं कोरी सँग पहिरि पटोरा।—जायसी। ३ स्त्रियो के पहनने की अगिया या चोली।

पद—लहरा पटोर। (देखें)

पटोरी—स्त्री० [स० पाट+ओरी (प्रत्य०)] १ रेशमी धोती या साडी २ रेशमी किनारे की धोती या साडी।

पटोल—पु० [स० √पट्+आलच्] १ गुजरात मे बननेवाला एक तरह का रेशमी कपडा। २ परवल की लता और उसका फल।

पटोलक—पु० [स० पटोल √कै (चमकना)+क] सीपी। शुक्ति।

पटोल-पत्र—पु० [ब० स०] एक तरह की पोई।

पटोला—पु० [हि० पटोल] १ एक तरह का रेशमी कपडा। २ कपडे का वह छोटा टुकडा जिससे बच्चे खेलते है और विशेषत जिसे गुडिया को पहनाते है। (पश्चिम)

पटोलिका—स्त्री० [स० पटोल+कन्—टाप्, इत्व] १ एक तरह का पट्टा। २ कोई लिखित विधिक मत। ३ पेटी। मजूषा। उदा०—पटोलिका मे अलक्तक (महावर) मन शिला, हरिताल, हिगुल और राजावर्त्त का चूर्ण रखा हुआ था।—हजारीप्रसाद द्विवेदी। ४ एक तरह की तरोई।

पटोली*—स्त्री० पटोलिका।

पटौसिर†—पु० [हि० पट+सिर] पगडी। साफा।

पटौंधन—पु० [हि० पटाना] रेहन रखी हुई चीज का रुपया किसी प्रकार या रूप मे चुकाकर वह चीज फिर से अपने हाथ मे कर लेने की क्रिया या भाव।

पटौतन—पु०=पटौनी।

पटौनी—पु०[देश०] माँझी। मल्लाह।

स्त्री०[हिं० पटाना]१. ऋण आदि चुकाने या पटाने की क्रिया या भाव। २ दे० 'पटौधन'।

पटौहाँ—वि०[हिं० पाटना] १ पाटकर बनाया हुआ। २. पाटा हुआ।

पु०१. पटा हुआ स्थान। २ पाटन। छत। ३ ऐसा कमरा जिसके ऊपर कोई और कमरा भी हो। ४ पटबधक।

वि०[हिं० पटाना] (ऋण) जो पटाकर पूरा किया जा सकता हो।

पट्ट—पु०[स०√पट्+क्त]१ बैठने की चौकी या पीढ़ा। पाटा। २ लिखने का अभ्यास करने की तख्ती। पटिया। ३ लकडी का वह बड़ा टुकड़ा, जिस पर नाम आदि लिखा अथवा सूचनाएँ आदि लगाई जाती है। जैसे—नाम-पट्ट, सूचना-पट्ट। ४ पट्टा। (दे०) ५. पत्थर, लकडी, लोहे आदि का चौकोर या बडा टुकडा। ६ ताँबे आदि धातुओं का पत्तर, जिस पर राजकीय आज्ञाएँ, दान-पत्र आदि उकेरे या खोदे जाते थे। ७ घाव पर बाँधने की कपडे की पट्टी। ८ ढाल। ९ पगडी। १० दुपट्टा। ११ नगर। शहर। १२ चौमुँहानी। चौराहा। १३ राजसिंहासन।

पद—पट्ट-महिषी। (देखे)

१४ रेशम। १५ पटसन। पाट। १६ टसर का बना हुआ कपडा।

वि०[अनु०] -पट (चित्त का विपर्याय)।

पु० दे० 'पट्टा' (ठीके आदि का लेख्य)।

पट्टक—पु०[स० पट्ट+कन्]१ लिखने की तख्ती या पट्टी। २ घाव, चोट, सूजन आदि पर बाँधने की पट्टी। ३ एक प्रकार का रेशमी लाल कपड़ा, जिसकी पगड़ियाँ बनती थीं। ४ ताँबे आदि का वह पत्तर जिस पर राजकीय आज्ञाएं, दान-लेख आदि उकेरे या खोदे जाते थे।

पट्टकीट—पु०[प०त०] रेशम का कीडा।

पट्टज—पु०[पट्ट√जन्(उत्पन्न होना)+ड] रेशम के कीडो की एक जाति।

पट्ट-देवी—स्त्री०[मध्य०स०] प्राचीन काल मे राजा की वह प्रथम ब्याही हुई स्त्री, जो उसके साथ सिंहासन पर बैठती थी।

पट्टदोल—स्त्री० [मध्य०स०] एक तरह का झूला जो कपडे का बना होता था।

पट्टन—पु०[स०√पट्ट+तनप्] नगर। शहर।

पट्टनी—स्त्री०[स० पट्टन्+ङीप्]१ छोटा नगर। नगरी। २ रेशमी कपडा।

पट्ट-महिषी—स्त्री०[मध्य०स०] पट-रानी। (दे०)

पट्ट-रग—पु०[ष०त०] पतग या बक्कम जिसकी लकड़ी से रग निकलता है।

पट्ट-रजक, पट्ट-रजन—पु०-पट्ट-रग।

पट्ट-राज—पु०[मध्य०स०] पुजारी। (महाराष्ट्र)

पट्ट राज्ञी—स्त्री०[मध्य०स०] पट-रानी।

पट्टला—स्त्री०[स० पट्ट √ ला (लेना)+क—टाप्]१ आधुनिक जिले की तरह की एक प्राचीन शासनिक इकाई। २ उक्त इकाई मे रहनेवाला जन-समूह। (कम्यूनिटी)

पट्ट-लेख्य—पु०[ष०त०] वह लेख्य जिसमे पट्टे की शर्ते आदि लिखी हो। (लीज डीड)

पट्ट-वस्त्र, पट्ट-वासा (सस्)—वि० [ब०स०] जो रगीन या रेशमी वस्त्र पहनता हो।

पट्टशाक—पु०[कर्म०स०] पटुआ

पट्टह घोषक—पु०[स० पटहघोषक] ढिढोरा पीटने या मुनादी करनेवाला व्यक्ति।

पट्टांशुक—पु०[स० पट्ट-अशुक, कर्म०स०] १ रेशमी कपडा। २ शरीर के ऊपरी भाग मे पहनने या ओढने का कपडा।

पट्टा—पु०[स० पट्ट] १ वह अधिकार-पत्र जो भूमि या स्थावर सपत्ति का स्वामी किसी असामी, किरायेदार या ठेकेदार को इसलिए लिखकर देता है कि वह उस भूमि या स्थावर सपत्ति का कुछ समय के लिए उचित उपयोग कर सके, उससे होनेवाली आय वसूल कर सके अथवा उसकी पैदावार बेच सके, और उसका कुछ अश भूमि या सपत्ति के स्वामी को भी देता रहे।

क्रि० प्र०—देना।—लिखना।

२ वह पत्र या लेख्य जो मध्ययुग मे असामी या काश्तकार किसी जमींदार की जमीन जोतने-बोने के लिए लेते समय उसे इसलिए लिखकर देता था कि नियत समय के उपरात जमींदार को उस जमीन का फिर से मनमाना उपयोग करने का अधिकार हो जायगा।

विशेष—इसकी स्वीकृति का सूचक जो लेख्य जमींदार लिख देता था, उसे 'कबूलियत' कहते थे।

क्रि० प्र०—लिखना।—लिखाना।

३ कुछ स्थानो मे वे नियम, जो लगान वसूल करनेवाले कर्मचारियो के लिए बनाये जाते थे। ४ उक्त के आधार पर कहार, धोबी, नाई, भाट आदि का वह नेग, जो उन्हे वर-पक्ष से दिलवाया जाता था।

क्रि० प्र०—चुकवाना।—चुकाना।—दिलाना।—देना।

५ चमड़े आदि का वह तस्मा या पट्टी जो कुछ पशुओं के गले मे उन्हे बाँधकर रखने के लिए पहनाई जाती है। जैसे—कुत्ते, बदर या बिल्ली के गले का पट्टा। ६ उक्त के आधार पर, कमर मे बाँधने का चमडे आदि का वह तस्मा, जिसमें चपरास टँगी रहती या तलवार लटकाई जाती है। ७ उक्त के आधार पर, दक्षिण भारत या महाराष्ट्र देश की एक प्रकार की तलवार, जो कमर मे लटकाई जाती थी। ८ किसी चीज का कोई कम चौडा और अधिक लबा टुकडा, जिससे कोई विशेष काम लिया जाता हो। जैसे—कामदार जूते या टोपी का पट्टा=मखमल आदि का वह लबा टुकडा जिसपर सलमे-सितारे का काम बना हो। ९ कुछ चौडी पटरी के आकार का, कलाई पर पहना जानेवाला एक प्रकार का गहना। १० कोई ऐसा चिह्न या निशान जो कुछ कम चौड़ा और अधिक लबा हो। जैसे—घोडे या बैल के माथे का पट्टा। ११. एक प्रकार का लबोतरा गहना जो घोडो के माथे पर लटकाया जाता है। १२ पुरुषो के सिर के दोनो ओर के बाल जो मध्ययुग मे बडी पट्टी के रूप मे, सँवारकर दोनो ओर लटकाये जाते थे।

विशेष—स्त्रियो के इस प्रकार सँवारकर बाँधे हुए बाल 'पट्टी' कहलाते हैं।

१३ बैठने के लिए बना हुआ काठ का पटरा। पीढ़ा।

पु०[?]कोई ऐसा अनाज, फली या दानों की बाल जो अभी पूरी तरह से पककर तैयार न हुई हो। (पूरब)

पु०[सं० पट्टी] [स्त्री० अल्पा० पट्टी]१ एक प्रकार का प्राचीन शस्त्र। २. लड़ाई-भिड़ाई के समय का पैंतरा।

पट्टाधारी—पु०[हिं० स०] वह व्यक्ति जिसने किसी निश्चित अवधि के लिए कुछ शर्तों पर किसी से कोई जमीन या संपत्ति भोगार्थ प्राप्त की हो। पट्टे पर जमीन आदि लेनेवाला। (लीज-होल्डर)

पट्टा-पछाड़—पु० =पट्टे-पछाड़।

पट्टा-बैठक—स्त्री० =पट्टे-बैठक।

पट्टाभिषेक—पु०[सं० पट्ट-अभिषेक, स० त०] १ राज्याभिषेक। २. वे विशिष्ट कृत्य जो जैन विद्वानों को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने के समय होते हैं। ३ वह साहित्यिक रचना, जिसमे उक्त कृत्यो का वर्णन होता है।

पट्टार—पु०[सं० पट्ट√ऋ (गति)+अण्] [वि० पट्टारक] एक प्राचीन देश।

पट्टारक—वि०[सं० पट्टार+वुन्—अक] पट्टार देश का।

पट्टाही—स्त्री०[पट्ट-अही स० त०] पटरानी।

पट्टिका—स्त्री०[सं० पट्ट+कन्—टाप्, इत्व]१ छोटी तख्ती। पटिया। २ छोटा चित्र-पट या ताम्र-पट। ३ कपड़े की छोटी पट्टी। ४. रेशमी फीता। ५ पठानी लोध। ६ दस्तावेज। पट्टा।

पट्टिकाख्य—पु०[सं० पट्टिका-आख्या, ब०स०]पठानी-लोध। रक्त-लोध्र।

पट्टिका-बैठक—स्त्री० पट्टे-बैठक।

पट्टिकार—पु०[सं० पट्टिका √ऋ+अण] रेशमी वस्त्र बनानेवाला कारीगर।

पट्टिका-लोध्र—पु०[मयू०स०] पठानी लोध।

पट्टिका-वायक—पु०[ष०त०] =पट्टिकार।

पट्टिय*—स्त्री०[सं० पट्टिका]केश-विन्यास।

पट्टिल—पु०[सं० पट्ट+इलच्] पूतिकरंज। पलंग।

पट्टिलोध्र (क)—पु० पट्टिका-लोध्र।

पट्टिश—पु०[सं० √पट (गति)+टिशन्] आधुनिक पटा नामक अस्त्र के आकार का एक प्राचीन अस्त्र।

पट्टिशी (शिन्)—वि०[सं० पट्टिश+इनि]१ पट्टिश बाँधनेवाला। २ पट्टिश हाथ में लेकर लड़नेवाला। पटेबाज।

पट्टिस—पु०[सं० पट्टिश] पटा नामक शस्त्र।

पट्टी—स्त्री०[सं० पट्टिका]१ लकड़ी की वह लंबोतरी, चौरस और चिपटी पटरी जिस पर बच्चों को अक्षर लिखने का अभ्यास कराया जाता है। तख्ती। पटिया। पाटी। २ अभ्यास आदि के लिए पट्टी पर दिया जानेवाला पाठ। सबक। ३ आदेश। शिक्षा। ४ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे कोई ऐसी उलटी-सीधी बात जो किसी को अपने अनुकूल बनाने के लिए अथवा किसी अन्य दुष्ट उद्देश्य से अच्छी तरह समझा-बुझाकर किसी के मन मे बैठा दी गई हो। बुरी नियत से दी जानेवाली सलाह।

मुहा०—(किसी को) पट्टी पढ़ाना=किसी को उलटी-सीधी बातें समझा-बुझा या सिखा-पढ़ाकर अपने अनुकूल करना अथवा गलत रास्ते पर लगाना या बहकाना। उदा०—मीत सुजान अनीति की पाटी इतै पै न जानिये कौन पढ़ाई।—घनानद। **(किसी की) पट्टी में आना**=किसी के द्वारा सिखलाई उलटी-सीधी अथवा अनुचित बात सही मानकर उसके अनुसार आचरण या कार्य करना।

४ कपड़े, काठ, धातु आदि का वह लंबा किंतु कम चौड़ा और पतला टुकड़ा, जो किसी बड़े अंश से काट, चीर या फाड़ कर अलग किया या निकाला गया हो। ५. कपड़े का उक्त आकार का ऐसा टुकड़ा, जो घाव, चोट आदि पर बाँधा जाता है। ६ बुना हुआ ऐसा कपड़ा जिसकी चौड़ाई सामान्य माप के अन्य कपड़ों से अपेक्षाकृत कम या बहुत कम होती है। जैसे—(क) घुटने और टखने के बीचवाले अंश मे बाँधी जानेवाली पट्टी। (ख) इस साड़ी पर कला बत्तू की पट्टी लग जाय तो अच्छा हो। ७ उक्त आकार का टाट का वह टुकड़ा जो वैसी ही और टुकड़ों के साथ जोड़ या सीकर जमीन पर बिछाया जाता है। ८ ऊन का बुना हुआ देशी गरम कपड़ा जिसकी चौड़ाई अन्य सूती कपड़ों की चौड़ाई से कम होती। जैसे—इस कोट मे पट्टू की एक पूरी पट्टी लग जायगी। ९ कपड़े की बुनावट मे उसकी लंबाई के बल मे कुछ मोटे सूतों से बना हुआ किनारा। १० लकड़ी के वे लंबे टुकड़े, जो खाट या चारपाई के ढाँचे मे लंबाई के बल लगे रहते है। पाटी। ११ उक्त आकार-प्रकार की वह लकड़ी, जो छत या छाजन के नीचे लगाई जाती है। बल्ली। १२. छाजन मे लगी हुई कड़ियों की पंक्ति। १३ नाव के बीचो-बीच का तख्ता। १४ पत्थर का लंबा, कम चौड़ा और पतला आयताकार टुकड़ा। पटिया। १५. किसी रचना का ऐसा विभाग, जो एक सीध मे दूर तक चला गया हो। जैसे—खेमो, झोपड़ियों या दुकानों की पट्टी। १६ स्त्रियों के सिर के बालों की वह रचना जो कंघी की सहायता से बना-सँवारकर माँग के दोनो ओर प्रस्तुत की जाती है। पाटी।

पद—माँग-पट्टी। (देखें)

मुहा०—पट्टी जमाना=माँग के दोनों ओर के बालों को गोंद या चिपचिपे पदार्थ की सहायता से इस प्रकार बैठाना कि ये सिर के साथ बिलकुल चिपक जायँ और जमी हुई पट्टी की तरह मालूम होने लगें।

१७ मध्ययुग मे, किसी संपत्ति अथवा उससे होनेवाली आय का वह अंश जो उसके किसी हिस्सेदार को मिलता था। पत्ती।

पद—पट्टी का गाँव=मध्ययुग मे, ऐसा गाँव जिसके बहुत से मालिक होते थे और इसी कारण जहाँ प्राय अव्यवस्था या कुप्रबंध रहता था।

१८ वह अतिरिक्त कर जो जमींदार किसी विशिष्ट कार्य के लिए धन एकत्र करने के उद्देश्य से अपने असामियों या खेतिहरों पर लगाता था। अबवाब। नेग। १९ एक प्रकार की मिठाई जो चाशनी मे चने की दाल, तिल आदि पागकर पतली तह के रूप मे जमाकर बनाई जाती है। जैसे—तिल-पट्टी, दाल-पट्टी। २० घोड़े की दौड़ का वह प्रकार जिसमे वह एक सीध मे दूर तक सरपट दौड़ता हुआ चला जाता है।

स्त्री० [सं०]१. पठानी-लोध। २ पगड़ी मे लगाई जानेवाली कलगी या तुर्रा। ३ घोड़ों आदि के मुँह पर बाँधा जानेवाला तोबड़ा। ४ घोड़े की पीठ और पेट मे बाँधा जानेवाला तस्मा। तंग।

पट्टीदार—पु०[हिं० पट्टी=पत्ती+फा० दार] [भाव० पट्टीदारी]१ वह व्यक्ति जिसका किसी जमीन, संपत्ति आदि मे हिस्सेदारी हो।

हिस्सेदार। २ एक हिस्सेदार के सबध के विचार से दूसरा हिस्सेदार। ३ बराबर का अधिकारी।

†वि० [हि० पट्टी + फा० दार] (वस्त्र) जिसमे पट्टी आदि टँगी या लगी हुई हो।

पट्टीदारी—स्त्री० [हि० पट्टीदार] १ पट्टीदार होने की अवस्था या भाव। २ दो या कई पट्टीदारो मे होनेवाला पारस्परिक सबध।

मुहा०—(किसी से) पट्टीदारी अटकना-ऐसा झगड़ा उपस्थित होना, जिसका कारण पट्टी या हिस्सेदारी हो। पट्टीदारी के कारण विरोध होना। ३ किसी के साथ किया जानेवाला बराबरी का दावा। यह कहना कि हम भी अमुक काम या बात मे तुम्हारे बराबर या बराबरी के हिस्सेदार है। ४ मध्ययुग मे वह जमीदारी, जिसके पट्टीदार या मालिक कई आदमी सयुक्त रूप से होते थे।

पट्टीवार—अव्य० [हि० पट्टी + फा० वार] हर पट्टी या हिस्से के विचार से। अलग-अलग। जैसे—यह हिसाब पट्टीवार बना है।

वि० (ऐसी बही या लिखा-पढ़ी) जिसमे पट्टियो का हिसाब अलग-अलग रखा जाता हो। जैसे—पट्टीवार जमाबदी।

पट्टू—पु० [हि० पट्टी] १ एक प्रकार मोटा ऊनी देशी कपडा, जो साधारण सूती कपडो की अपेक्षा कम चौडा और प्राय लम्बी पट्टी के रूप मे बुना हुआ होता है। २ एक प्रकार का चारखानेदार कपडा।

†पु० [?] तोता (पक्षी)।

पट्टे-पछाड—पु० [हि० पट + पछाडना] कुश्ती का एक पेच।

पट्टे-बैठक—स्त्री० [हि० पट + बैठक] कुश्ती का एक पेच।

पट्टैत—पु० [हि० पट्टा + ऐत (प्रत्य०)] काले, नीले या लाल रग का वह कबूतर जिसके गले मे सफेद कठी हो।

†पु०—पटैत (पटेबाज)।

पट्टोला—पु० [स० पट्टदुकूल] १ रेशमी वस्त्र। २ कपडे की वह कतरन या धज्जी जिससे बच्चे खेलते है। (पश्चिम)

पट्टोलिका—स्त्री० [स० पट्टोलिका, पृषो० सिद्धि] १ पट्टा। अधिकार-पत्र। २ दे० 'पटोलिका'।

पट्ठमान—वि० [स० पठ्यमान] (ग्रथ) जिसे पढना उचित हो या जो पढा जाने को हो।

पट्ठा—वि० [स० पुष्ट, प्रा० पुट्ठ] [स्त्री० पट्ठी, पठिया] १ (व्यक्ति) जो हृष्ट-पुष्ट तथा नौजवान हो। २ जीवो या प्राणियो का ऐसा बच्चा जिसमे यौवन का आगमन हो चुका हो, पर पूर्णता न आई हो। नवयुवक।

पद—उल्लू का पट्ठा-बहुत बडा मूर्ख। (गाली)

पु० १ कुश्ती लडनेवाला या पहलवान। २ किसी प्रकार का दलदार, मोटा और लबा पत्ता। जैसे—घी-कुआर या मुरली का पट्ठा। ३ शरीर के अदर के वे तन्तु या नसे, जो मास-पेशियो को हड्डियो के साथ बाँधे रखती है।

मुहा०—पट्ठा चढ़ना-किसी नस का तन कर दूसरी नस पर चढ जाना जो एक आकस्मिक और कष्टकर शारीरिक विकार है। **(किसी के) पट्ठो में घुसना**-किसी से गहरी दोस्ती या मेल-जोल पैदा करना। ४ एक प्रकार का चौडा गोटा, जो रुपहला और सुनहला दोनो प्रकार का होता है। ५. उक्त के आकार-प्रकार की वह गोट जो अतलस आदि पर बुनकर बनाई जाती है। ६ पेड़ू के नीचे कमर और जाँघ के जोड का वह स्थान, जहाँ छूने से गिल्टियाँ मालूम होती हैं।

पट्ठा-पछाड—वि० स्त्री० [हि० पट्ठा + पछाडना] (स्त्री) जो पुरुष को पछाड सकती हो, अर्थात् खूब हृष्ट-पुष्ट और बलवती।

पठ†—स्त्री० [हि० पट्ठा] वह जवान बकरी जो ब्यायी न हो। पाठ।

पठक—वि० [स०] पढनेवाला।

पढ़त—स्त्री० [हि० पढना] १ पढने की क्रिया, ढग या भाव।

पद—लिखत-पढ़त। (देखे)

२ दे० 'वाचन'।

पठन—पु० [स० √पठ् (पढना) + ल्युट्—अन] पढने की क्रिया या भाव। पढना।

पद—पठन-पाठन पढना और पढाना।

पठनीय—वि० [स० √पठ् + अनीयर्] (ग्रथ या पाठ) जो पढने के योग्य हो या पढा जाने को हो। पाठ्य।

पठनेटा—पु० [हि० पठान + एटा = बेटा (प्रत्य०)] पठान का बेटा। पठान जाति का पुरुष।

पठवना†—स० पठाना (भेजना)।

पठवाना—स० [हि० पठाना का प्रे०] पठाने या भेजने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को पठाने या भेजने मे प्रवृत्त करना। भेजवाना।

पठान—पु० [फा० पुश्तान] [स्त्री० पठानिन, पठानी] १ पुश्तो या पश्तो भाषा बोलनेवाला व्यक्ति। २ उक्त भाषा बोलनेवाली एक प्रसिद्ध जाति जो अफगानिस्तान-पख्तूनिस्तान प्रदेश मे रहती है। ३ पख्तूनिस्तान का नागरिक या निवासी।

पठाना—स० [स० प्रस्थान, प्रा० पट्ठान] रवाना करना। भेजना।

पठानिन—स्त्री० हि० 'पठान' का स्त्री०।

पठानी—वि० [हि० पठान] १ पठानो का। पठान-सबधी। जैसे—पठानी राज्य।

स्त्री० पठान होने की अवस्था या भाव।

स्त्री० 'हि० पठान' का स्त्री०।

पठानी लोध—स्त्री० [स० पट्टिका लोध्र] कुमाऊँ, गढवाल आदि प्रदेश मे होनेवाला एक जगली वृक्ष जिसकी लकडी और फूल औषध और पत्तियाँ तथा छाल रग बनने के काम मे आती है।

पठार—पु० [देश०] एक पहाडी जाति।

पु० [स० पृष्ट + धार] भूगोल मे, वह ऊँचा विस्तृत मैदान जो समीपवर्ती निचले प्रदेशो मे ढालुएँ अश से मिला रहता है तथा जिसका ऊपरी भाग बहुत अधिक चौडा तथा चपटा होता है। (प्लटो)

पठावन—पु० [हि० पठाना] १ पठाने अर्थात् भेजने की क्रिया या भाव। २ व्यक्ति, जो इस प्रकार भेजा जाय। ३ सदेशवाहक। दूत।

पठावनी—स्त्री० [हि० पठाना] १ किसी को कही पठाने अर्थात् भेजने की क्रिया या भाव। किसी को कही कोई वस्तु या सदेश पहुँचाने के लिए भेजना।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—भेजना।

पठावर—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास।

पठित—भू० कृ० [स० √पठ् + क्त] १ (ग्रथ या पाठ) जो पढा जा चुका हो। २ (व्यक्ति) जो पढा-लिखा हो। शिक्षित। (असिद्ध प्रयोग)

पठियर†—स्त्री०[हिं० पाटी] वह बल्ली या पटिया जो कूएँ के मुँह पर बीचोबीच या किसी एक ओर इसलिए रख दी जाती है कि पानी खींचनेवाला उसी पर पैर रखकर पानी खींचे।

पठिया—स्त्री०[हिं० पट्ठा+इया (प्रत्य०)] १ हिं० पट्ठा का स्त्री०। २ हृष्ट-पुष्ट तथा नौजवान स्त्री। (बाजारू)

पठोर—स्त्री०[हिं० पट्ठा+ओर (प्रत्य०)] १ जवान परन्तु बिना ब्याई हुई बकरी। २ मुरगी, जो जवान तो हो गई हो, पर जो अभी अडे न देती हो।

पठौना†—स०=पठाना (भेजना)।

पठौनी†—स्त्री०=पठावनी।

पठ्यमान*—वि० [स०√पठ्+लट् (कर्म मे), यक्+शानच्, मुक्] (ग्रथ या पाठ) जो पढा जाने को हो या पढा जा सके।

पड—पुं०[स० पट=चित्रपट] वह चित्रपट जिसमे किसी व्यक्ति से सबध रखनेवाली घटनाएँ अकित हो। (राज०)

पड़की—स्त्री०=पडुक।

पडकुलिया†—स्त्री०[सं० पडुक] एक प्रकार की चिड़िया।

पडछत्ती†—स्त्री० =परछत्ती।

पड़त—स्त्री० =पडता।

पड़ता—पु०[हिं० पडना] १ व्यापारिक क्षेत्र मे, खरीदी हुई और बेची जानेवाली चीज या माल की वह आर्थिक स्थिति, जो इस बात की सूचक होती है कि वह चीज या माल कितने दाम पर खरीदा गया है अथवा उस पर कितनी लागत आई है और उसके सबध मे कितने अनिवार्य तथा आवश्यक व्यय करने पडते है या करने पड़ेंगे।

विशेष—व्यापारी लोग जब कोई माल कही से मँगाते या अपने यहाँ तैयार कराते या बनवाते है, तब पहले हिसाब लगाकर यह समझ लेते है कि इस पर वास्तविक रूप से हमारा इतना धन लगा है, और तब उस पर अपना मुनाफा रखकर उसे बेचते हैं।

मुहा०—**पड़ता खाना**=ऐसी स्थिति होना कि उचित मूल्य या लागत निकालने के बाद कुछ मुनाफा या लाभ हो सके। जैसे—(क) आज-कल देहात से गेहूँ मँगाकर बाजार मे बेचने से हमारा पडता नही खाता। (ख) बारह रुपए जोडे पर यह धोती बेचने मे हमारा पडता नही खाता। **पड़ता निकालना, फैलाना या बैठाना**=भाडे, मूल्य, लागत, सूद आदि का हिसाब लगाकर यह देखना कि किसी चीज पर सब मिलाकर वस्तुत हमारा कितना व्यय हुआ है।

२ आर्थिक दृष्टि से आय-व्यय आदि का औसत या माध्यम। जैसे—इस दूकान से उन्हे दस रुपए रोज मुनाफे का पडता पड जाता है।

क्रि० प्र०—पडना।—बैठना।

३ भू-कर की दर। लगान की शरह।

पड़ताल—स्त्री०[स० परितोलन] १. कोई काम या चीज आदि से अत तक अच्छी तरह जाँचते हुए यह देखना कि उसमे कही कोई कसर या भूल तो नही है। अच्छी तरह की जानेवाली छान-बीन या देख-भाल। २ पटवारियो (आधुनिक लेखपालो) के द्वारा अपने खातो या पत्रियों की वह जाँच, जो यह जानने के लिए की जाती है कि खेतो को जोतने-वालो के नापो और उसमे होनेवाली फसलों का ब्योरा कही गलत तो नही लिखा गया है। ३. उक्त के फलस्वरूप किया जानेवाला सशोधन या सुधार। ४ तुलना। बराबरी। मुकाबला। (क्व०)

पड़तालना—स०[हिं० पड़ताल+ना (प्रत्य०)] आदि से अत तक सब बाते देखते हुए पड़ताल अर्थात् अनुसधान या जाँच करना।

पड़ती—स्त्री०[हिं० पडना] वह खेत जो जमीन की उर्वरा-शक्ति बढ़ाने के लिए किसी विशिष्ट ऋतु मे जोता-बोया न गया हो।

क्रि० प्र०—छोडना।—पडना।—रखना।

मुहा०—**पड़ती उठना**=(क) पड़ती का जोता जाना। पडती पर खेती होना। **पड़ती उठाना**= पड़ती पडी हुई जमीन किसी खेतिहर को जोतने-बोने के लिए लगान पर देना।

पड़-दादा—पु० =परदादा।

पड़ना—अ०[स० पतन, प्रा० पडन] १ किसी चीज का किसी आधान या पात्र मे छोडा, डाला या पहुँचाया जाना। अन्दर प्रविष्ट किया जाना या होना। जैसे—(क) कान मे दवा पडना, (ख) तरकारी (या दाल मे) नमक पडना, (ग) पेट मे भोजन पडना, (घ) पेटी मे मत-पत्र पडना। २ किसी चीज का ऊपर से गिरकर या बाहर से आकर किसी दूसरी चीज पर (या मे) विद्यमान या स्थित होना। जैसे—आँख मे ककडी या दूध मे मक्खी पडना। ३ इधर-उधर या ऊपर से आकर किसी प्रकार का आघात या प्रहार या वार होना। जैसे—(क) किसी पर घूँसा, थप्पड या लात पडना। (ख) गरदन पर तलवार या सिर पर लाठी पडना। ४ एक चीज का किसी दूसरी चीज पर ठीक ढग या तरह से डाला, फैलाया, बिछाया या रखा जाना। जैसे—(क) आँगन मे (या छत पर) पलग पडना। (ख) खभो (या दीवारो) पर छत पडना। (ग) जूएखाने मे जूए का फड पडना। ५ किसी आपा-तिक रूप मे आकर उपस्थित, प्राप्त या प्रत्यक्ष होना। जैसे—(क) इस साल बहुत गरमी (या सरदी) पडी है। (ख) आज चार दिन से बराबर पानी (या ओला) पड (बरस) रहा है। (ग) अंत मे यही बदनामी हमारे पल्ले पडी है। ६ कोई अनिष्ट, अवांछित या कष्टदायक घटना घटित होना अथवा ऐसी ही कोई विकट परिस्थिति या बात सामने आना। जैसे—(क) सिर पर आफत या बला पड़ना। (ख) किसी के घर डाका पडना।

विशेष—विपत्ति, सकट आदि के प्रसगो मे इस क्रिया का प्रयोग बिना किसी सज्ञा के भी होता है। जैसे—जब तुम पर पडेगी, तब तुम्हे मालूम होगा।

७ आकस्मिक रूप अथवा सयोग से उपस्थित होना या सामने आना अथवा पहुँचना। जैसे—(क) एक दिन घूमता-फिरता मै भी वहाँ जा पडा। (ख) बात (या मौका) पडने पर तुम भी सारा हाल साफ-साफ कह देना। (ग) अब की विजया दशमी (या होली) रविवार को पडेगी। ८ आलस्य, थकावट, रोग आदि के कारण अथवा विश्राम करने के लिए चुपचाप लेटे रहने की स्थिति मे होना। जैसे—(क) नीद खुल जाने पर भी वे घटो बिस्तर पर पडे रहते हैं। (ख) इधर महीनो से वे बिस्तर पर पडे हैं। (अर्थात् बीमार हैं)। (ग) थोडी देर यो ही पड़े रहो, तबियत ठीक हो जायेगी। ९ बिना किसी उद्देश्य, कार्य या प्रयोजन के कही रहकर दिन काटना। यो ही या व्यर्थ रहकर दिन काटना। यो ही या व्यर्थ रहकर समय गुजारना या बिताना। जैसे—(क) दिन भर सब लोग धर्मशाले मे पडे रहे। (ख) महीनो

से बहू अपने मैके मे पडी है। १० कुछ काम-धधा न करते हुए हीन अवस्था मे कही रहकर दिन बिताना। जैसे—आजकल तो वह कलकत्ते मे अपने भाई के यहाँ पडे है।

मुहा०—पड़ रहना—जैसे-तैसे हीन अवस्था मे लेटकर सोना। 'शयन' के लिए उपेक्षासूचक पद। उदा०—मसजिद मे पडे रहेगे जो मैखाना बद है।—कोई शायर। **पड़े रहना**—(क) लेटे रहना। (ख) हीन अवस्था मे कही रहकर दिन बिताना। जैसे—अभी दो-चार दिन तुम यही पडे रहो। (ग) रोगी होने की दशा मे लेटे रहना। जैसे—आज दिन भर चुपचाप पडे रहो। सध्या तक तबियत ठीक हो जायगी।

११ किसी के किसी काम या बात के बीच मे इस प्रकार सम्मिलित होना कि उससे कोई विशिष्ट सबध सूचित हो अथवा किसी प्रकार अथवा किसी प्रकार का हस्तक्षेप होता हुआ जान पडे। जैसे—मैं इस मामले मे पडना नही चाहता हूँ। १२ किसी काम, चीज या बात का ऐसी स्थिति मे रहना या होना कि आवश्यक या उचित उपयोग अथवा कार्य न हो रहा हो। जैसे—(क) सारा मकान खाली पडा है। (ख) आधे से ज्यादा काम बाकी पडा है। (ग) मुकदमा वर्षों से हाईकोर्ट मे पडा है। (घ) ये पुस्तके यहाँ यो ही पडी है। १३ किसी विशिष्ट प्रकार की परिस्थिति या स्थिति मे अवस्थित या वर्तमान रहना या होना। जैसे—(क) आजकल वह धन कमाने के फेर मे पडे है। (ख) उनका मकान अभी तक बधक पडा है। (ग) चार दिन मे इसका रग काला पड जायगा। (घ) दो कौडियाँ चित और तीन कौडियाँ पट पडी है। १४ टिकने ठहरने आदि के लिए कुछ समय तक कही अवस्थान होना। कुछ समय तक रहने के लिए डेरा या पडाव डाला जाना। जैसे—चार दिन से तो वे हमारे यहाँ पडे हैं। १५ डेरे, पडाव आदि के सबध मे, नियत या स्थित किया जाना। बनाया जाना। जैसे—आज सध्या को रामनगर मे डेरा (या पडाव) पडेगा। १६ यात्रा आदि के मार्ग मे प्रत्यक्ष या विद्यमान होना। ऐसी स्थिति मे होना कि रास्ते मे दिखाई दे या सामने आवे। जैसे—उनके मकान के रास्ते मे एक पुल (या मदिर) भी पडता है। १७ किसी प्रकार अथवा रूप मे उत्पन्न होकर या यो ही उपस्थित, प्रस्तुत या विद्यमान होना। जैसे—(क) फल मे कीडे पडना। (ख) घाव मे मवाद पडना। (ग) मन मे कल (या चैन) पडना। १८ किसी प्रकार की विशेष आवश्यकता या प्रयोजन होना। गरज या जरूरत होना। जैसे—जब उसे गरज (या जरूरत) पडेगी, तब वह आप ही आवेगा।

विशेष—कभी-कभी इस अर्थ मे बिना सज्ञा के भी इसका प्रयोग होता है। जैसे—हमे क्या पडी है, जो हम उनके बीच मे बोलने खडे हो।

१९ बहुत अधिक या उत्कट अभिलाषा, चिंता अथवा प्रवृत्ति होना। किसी काम या बात के लिए छटपटी, बेचैनी या विकलता होना। (प्राय बिना सज्ञा के ही प्रयुक्त) जैसे—तुम्हे तो बस तमाशे (या बरात) मे जाने की पडी है। २० तारतम्य, तुलना आदि के विचार से अपेक्षया कुछ घटा या बढा हुई अथवा किसी विशिष्ट स्थिति मे आना, रहना या सिद्ध होना। जैसे—(क) यह कपडा कुछ उससे अच्छा पडता है। (ख) अब तो वह पहले से कुछ नरम पड रहा है। (ग) यह लडका दरजे (या पढने) मे कमजोर पडता है। (घ) पाव भर आटा उसके खाने के लिए कम पडता है। २१ तौल, दूरी, नाप आदि के प्रसग मे, किसी विशिष्ट परिमाण या मान का ठहरना या सिद्ध होना। जैसे—(क) उनका मकान यहाँ से कोस भर पडता है। (ख) यह धोती नापने पर नौ हाथ ही पडती है। २२ आर्थिक प्रसगो मे, किसी काम, चीज या बात का हानि-लाभ की दृष्टि या विचार से किसी विशिष्ट स्थिति मे आना, रहना या होना। जैसे—(क) इकट्ठा लिया हुआ सौदा सस्ता पडता है। (ख) शहरो मे रहने पर खर्च अधिक पड़ता है। (ग) आजकल यहाँ के मिस्तरियो का चार-पाँच रुपए रोज पड जाता है। (घ) इस काम मे इतना खरच (या घाटा) पडता है। २३ व्यापारिक क्षेत्रो मे, किसी चीज की दर, भाव, मूल्य, लागत आदि के विचार से किसी स्थिति मे आना, रहना या होना। जैसे—यह थान घर आकर २० का पडता है। २४ किसी काम, चीज या बात का अनुकूल, उपयुक्त या बराबरी का ठहरना या सिद्ध होना। जैसे—तुम्हे तो दस रुपया रोज भी पूरा नही पडेगा। २५ बही-खाते, लेन-देन, हिसाब-किताब आदि मे किसी खाते या विभाग मे अथवा किसी व्यक्ति के नाम लिखा जाना। जैसे—(क) यह खरच प्रकाशन खाते मे पडेगा। (ख) महीनो से १००) तुम्हारे नाम पडे है। २६ आकार-प्रकार, रूप-रग आदि मे शिशु या सतान का किसी के अनुरूप या अनुसार होना। जैसे—लडका तो अपने बाप पर पडा है और लडकी माँ पर। २७ अनुभूत या ज्ञात होना। लगना। जैसे—जान पडना, दिखाई पड़ना। २८ कुछ विशिष्ट पशुओ के सबध मे, नर या मादा के साथ मैथुन या सभोग करना। जैसे—जब यह घोडा (या साँड) किसी घोडी (या गाय) पर पडता है, तब-तब कुछ न कुछ बीमार हो जाता है।

विशेष—इस क्रिया मे मुख्य तीन भाव वही है, जो ऊपर आरभ (सख्या १, २ और ३) मे बतलाये गये हैं। अधिकतर शेष अर्थ इन्ही तीनो भावो मे से किसी-न-किसी भाव के परिवर्तित विकसित या विकृत रूप है। सैद्धातिक दृष्टि से यह हिंदी की स० क्रिया 'डालना' का अकर्मक रूप है। अनेक अकर्मक क्रियाओ के साथ इसका प्रयोग सयो० क्रि० के रूप मे भी होता है। कही तो वह किसी क्रिया का आकस्मिक आरभ सूचित करती है, जैसे—चल पडना, चौक पडना, जाग पडना, हँस पडना आदि और कही इससे किसी क्रिया या व्यापार का घटित, पूर्ण या समाप्त होना सूचित होता है। जैसे—कूद पडना, गिर पडना, घुस पडना, घूम पडना आदि। क्रियार्थक सज्ञाओ के साधारण रूप के साथ लगकर यह कही-कही किसी प्रकार की बाध्यता या विवशता भी सूचित करती है। जैसे—(क) मुझे रोज उनके यहाँ जाकर घटो बैठना पडता था। (ख) तुम्हे भी उनके साथ जाना पडेगा। अवधारण बोधक क्रियाओ के साथ लगकर यह बहुत कुछ 'जाना' या 'होना' की तरह का अर्थ देती और उन सकर्मक क्रियाओ को अकर्मक का-सा रूप देती है। जैसे—जान पडना, दिखाई (या देख) पडना। कुछ सज्ञाओ के साथ लगकर यह बहुत कुछ 'आना' या 'होना' की तरह का भी अर्थ देती है। जैसे—खयाल पडना, याद पडना, समझ पडना। कभी-कभी इसके योग से कुछ पदो मे मुहावरे का तत्त्व भी आ लगता है। जैसे—(क) ऐसी समझ पर पत्थर पडे। (ख) आजकल रुपया तो मानो उनके घर फटा पडता है। (ग) बहुत बोलने (या सरदी लगने) से गला पड (अर्थात् बैठ) जाना। (घ) यह अकेला ही दो

आदमियों पर भारी पड़ता है। (ङ) इस तरह हाथ धोकर किसी के पीछे पड़ना ठीक नहीं है। कुछ अवस्थाओं में यह शक्यता, संभावना, सामर्थ्य आदि की भी सूचक होती है। जैसे—बन पड़ा तो मैं भी किसी दिन आऊँगा। कभी-कभी यह तुल्यता या समकक्षता की भी सूचक होती है। जैसे—(क) तुम तो आदमी के ऊपर गिर पड़ते हो। (ख) उसकी आँखों में आँसू उमड़े पड़ते थे।

पड़-नाना—पु० =पर-नाना।

पड़-पड़—स्त्री० [अनु०] १. निरंतर पड़-पड़ होनेवाला शब्द।

क्रि० वि० पड़-पड़ शब्द करते हुए।

पु० [?] मूल धन। पूँजी। (डिं०)

पड़पड़ाना—अ० [अनु०] [भाव० पड़पड़ाहट] पड़-पड़ शब्द होना।

स० पड़-पड़ शब्द उत्पन्न करना।

†अ० =परपराना।

पड़पड़ाहट—स्त्री० [हिं० पड़पड़ाना] पड़-पड़ शब्द करने या होने की क्रिया या भाव।

†स्त्री० =परपराहट।

पड़-पोता—पु० =पर-पोता।

पड़म—पु० [देश०] एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा, जो प्रायः कनातें, खेमे आदि बनाने में काम आता है।

पड़या†—पु० [?] वह ब्राह्मण जो शनिवार के दिन तेल आदि काले पदार्थ शनि के दान के रूप में लेता है।

पड़रू†—पु० =पड़वा।

पड़वा—स्त्री० [सं० प्रतिपदा, प्रा० पडिवआ] प्रत्येक पक्ष की प्रथम तिथि। परिवा।

पु० [?] [स्त्री० पड़िया] भैंस का नर बच्चा।

पड़वाना—स० [हिं० 'पड़ना' का प्रे०] पड़ने का काम किसी से कराना। किसी को पड़ने में प्रवृत्त करना।

पड़वी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की ईख।

पड़ह—पु० [सं० पटह] ढोल। दुंदुभी।

पड़ा—पु० =पड़वा (भैंस का बच्चा)।

पड़ाइन—स्त्री० =पँडाइन।

पड़ाका—पु० =पटाका।

पड़ाना—स० =पड़वाना।

पड़ापड़—क्रि० वि०, स्त्री० =पटापट।

पड़ाव—पु० [हिं० पड़ना+आव (प्रत्य०)] १ मार्ग में पड़नेवाला वह स्थान जहाँ यात्री रात बिताने, विश्राम आदि करने के लिए ठहरते या रुकते हैं।

मुहा०—**पड़ाव मारना**=(क) पड़ाव पर ठहरे हुए यात्रियों को लूटना। (ख) बहुत अधिक वीरता या साहस का काम करना। (व्यंग्य)

२. वह स्थान जहाँ यात्रा करनेवाला सैनिक तंबू-कनातें आदि लगाकर कुछ समय के लिए ठहरा हो।

विशेष—यह स्थान प्रायः शहरों से दूर और जंगलों में होता था।

पड़िया—स्त्री० हिं० पड़वा का स्त्री० रूप।

वि० पु० दे० 'परिया'। (जाति)

पड़ियाना—अ० [हिं० पड़िया+आना (प्रत्य०)] भैंस का भैंसे से संयोग हो जाना। भैंसाना।

स० भैंस का भैंसे से संभोग कराना।

पड़िवा—स्त्री० =पड़वा (प्रतिपदा)।

पड़ी†—स्त्री० [हिं० पड़ना=लेटना] चुपचाप पड़े या सोये रहने की अवस्था या भाव। (बाजारू)

मुहा०—पड़ी साधना=सो जाना।

पड़ेरू†—पु० =पड़रू (पड़वा)।

पड़ोस—पु० [सं० प्रतिवेश या प्रतिवास, प्रा० पडिवेश पडिवास] १ वह स्थान जो किसी के निवास-स्थान के बगल या समीप में हो।

मुहा०—(**किसी का**) **पड़ोस करना**=किसी के पड़ोस में जाकर बसना।

२ किसी प्रदेश, स्थान आदि से सटा हुआ अथवा उसके आस-पास का स्थान।

पद—**पास-पड़ोस**=समीपवर्ती स्थान।

पड़ोसी—पु० [हिं० पड़ोस+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० पड़ोसिन] वह जिसका घर पड़ोस में हो। एक मकान के पासवाले दूसरे मकान में रहनेवाला। प्रतिवासी। प्रतिवेशी। हमसाया।

पड़ौआ†—पु० [?] ढोलक, तबले आदि पर लगाई जानेवाली चाँटी।

पढ़ंत—स्त्री० [हिं० पढ़ना+अंत (प्रत्य०)] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। जैसे—लिखत-पढ़त होना। २ पढ़ा हुआ पाठ। ३ जादू या टोने-टोटके के लिए मंत्र पढ़ने की क्रिया या भाव। ४ उक्त प्रकार से पढ़ा जानेवाला मंत्र।

वि० (समाज) जिसमें दूसरों की कृतियाँ पढ़कर सुनाई जाती हों। जैसे—पढ़ंत कवि-सम्मेलन।

पढ़त—स्त्री० [हिं० पढ़ना] पढ़ने की क्रिया, ढंग या भाव। पठन। वाचन। (रीडिंग) जैसे—विधेयक की तीसरी पढ़त।

पद—**लिखत-पढ़त-लिखा-पढ़ी**।

पढ़ना—स० [सं० पठन] [भाव० पढ़ाई] १ (क) किसी लिपि या वर्णमाला के अक्षरों या वर्णों के उच्चारण, रूप आदि का ज्ञान या परिचय प्राप्त करना। (ख) उक्त के आधार पर किसी भाषा के शब्दों, पदों आदि के अर्थ का ज्ञान या परिचय प्राप्त करना। जैसे—अँगरेजी या हिन्दी पढ़ना। २ अंकित, मुद्रित या लिखित चिह्नों, वर्णों आदि को देखते हुए मन-ही-मन उनका अभिप्राय, अर्थ या आशय जानना और समझना। यह जानना कि जो कुछ छपा या लिखा हुआ है, उसका मतलब क्या है। जैसे—अखबार या पुस्तक पढ़ना।

क्रि० प्र०—जानना। —डालना। —लेना।

३ छपे या लिखे हुए शब्दों, पदों, वाक्यों आदि का कुछ ऊँचे स्वर से उच्चारण करते चलना। जैसे—(क) किसी को सुनाने-समझाने आदि के लिए चिट्ठी या दस्तावेज पढ़ना। (ख) सभा या समिति के सामने उसका कार्य-विवरण पढ़ना। (ग) कवि-सम्मेलन में कविता पढ़ना।

संयो० क्रि०—जाना।—डालना।—देना।

४. कोई चीज या बात स्थायी रूप से स्मरण रखने के लिए उसके पदों, शब्दों आदि का बार बार उच्चारण करते हुए अभ्यास करना। जैसे—गिनती, पहाड़ा या पाठ पढ़ना। ५. किसी कला, विद्या, विषय या शास्त्र

की सब बातें जानने के लिए उसका विधिवत् अध्ययन करना। जैसे—(क) आज-कल वह इतिहास (दर्शन शास्त्र या व्याकरण) पढ रहा है। (ख) ब्याह की अभी क्या चिंता है, लडका तो अभी पढ़ ही रहा है। ६ ग्रथ,लेख आदि का ठीक-ठीक अभिप्राय या आशय जानने और समझने के लिए उनका अध्ययन और मनन करना। जैसे—(क) यह पुस्तक लिखने के लिए आपको सैकडो बडे बडे ग्रथ पढ़ने पडे थे। (ख) किसी विषय पर प्रामाणिक पुस्तक लिखने से पहले उस विषय का सारा साहित्य पढना पडता है।

क्रि०प्र०—जाना। —डालना। —लेना।

७ कोई याद की हुई चीज (पद या बात) गुनगुनाते हुए या बहुत धीमे स्वर से उच्चरित करना। जैसे—(क) जप, पूजन, सध्या-वदन आदि के समय मत्र या श्लोक पढना। (ख) टोना-टोटका करने के समय किसी पर जादू या मतर पढना। ८ उक्त के आधार पर किसी प्रकार का जादू या टोना-टोटका करना। मत्र फूंकना। जैसे—ऐसा जान पडता है कि मानो इस लडके पर किसी ने कुछ पढ दिया है।

सयो० क्रि०—देना।

मुहा०—(किसी पर) **कुछ पढ़कर मारना**=मत्र पढ़कर प्रभावित करने के लिए किसी पर कोई चीज फेकना। जैसे—मूंग पढकर मारना।

९ किसी प्रकार के अकन, चिह्न,लक्षण आदि देखते हुए उनका आशय, परिणाम या फल इस प्रकार जानना और समझना मानो कोई पुस्तक या लेख पढ रहे हो। जैसे—सामुद्रिक शास्त्र की सहायता से किसी की हस्तरेखाएँ पढ़ना। १० मनुष्यो की बोली की नकल करनेवाले पक्षियों का ऐसे पद या शब्द बोलना जिनका उच्चारण उन्हे सिखाया गया हो। जैसे—यह तोता 'राम राम' पढ़ता है।

†पु० पढिना (मछली)।

पढ़नी—पु० [देश०] एक प्रकार का धान।

पढ़नीउड़ी—स्त्री० [हि० पढनी (?)+उडी -उडाना] कसरत मे एक प्रकार का अभ्यास जिसम कोई ऊँची चीज उड अर्थात् उछलकर लाँघी जाती है।

पढ़वाना—स० [हि० पढ़ना तथा पढाना का प्रे०] १ किसी को पढने मे प्रवृत्त करना। बँचवाना। २ किसी से (पाठ आदि) पढ़ाने की क्रिया कराना। किसी को पढाने मे प्रवृत्त करना।

पढ़वैया—वि० [हि० पढ़ना+ऐया (प्रत्य०)] १. पढनेवाला। २ पढानेवाला।

पढ़ाई—स्त्री० [हि० पढ़ना+आई (प्रत्य०)] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। २ वह विषय जिसका कक्षा, विद्यालय आदि मे विद्यार्थी अध्ययन करते हो। ३ पढने के बदले मे दिया जानेवाला पारिश्रमिक। स्त्री० [हि० पढ़ाना] १ पढ़ाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक। २ कक्षा, विद्यालय आदि मे पढ़ाया जानेवाला विषय या सिखलाई जानेवाली कला। ३ पढ़ाने का ढग, प्रकार या शैली। ४. पढ़ाने के बदले मे मिलनेवाला धन।

पढ़ाना—स० [स० पाठन] १ हि० 'पढ़ना' क्रिया का प्रे०। ऐसा काम करना जिससे कोई पढ़े। किसी को पढ़ने मे प्रवृत्त करना। २. (क) वर्णमाला या लिपि के अक्षरो के उच्चारणो और रूपो का परिचय कराना। (ख) किसी भाषा के शब्दो या पदो के अर्थ, आशय आदि का ज्ञान या बोध कराना, अथवा तत्सबधी अध्ययन, अभ्यास आदि कराना। जैसे—अरबी, फारसी, बँगला या मराठी पढ़ाना। ३ अकित, मुद्रित या लिखित बातो का ज्ञान प्राप्त करने या आशय समझने के लिए किसी से उसका पाठ या वाचन कराना। जैसे—किसी से चिट्ठी पढाना। ४ किसी को भाषा, विषय, शास्त्र आदि का ज्ञान कराने के लिए सम्यक् रूप से शिक्षा देना। जैसे—पडित जी सस्कृत तो पढाते ही हैं, साथ ही दर्शन (या साहित्य) भी पढाते है। ५ कोई काम या बात अच्छी तरह बतलाना, समझाना या सिखाना। अच्छी तरह किसी के ध्यान मे बैठाना। जैसे—मालूम होता है कि किसी ने तुम्हे ये सब बाते पढाकर यहाँ भेजा है। ६ किसी विशिष्ट क्रिया, सस्कार आदि से सबध रखनेवाले मत्रो, वाक्यो आदि का विधिपूर्वक उच्चारण सम्पन्न कराना। जैसे—(क) ब्राह्मण से मत्र पढ़ाकर दान (या सकल्प) कराना। (ख) काजी (या मुल्ला) को बुलाकर निकाह पढाना। ७ मनुष्य की बोली का अनुकरण या नकल करनेवाले पक्षियो के सामने किसी पद या शब्द का इस उद्देश्य से उच्चारण करते रहना कि वे भी इसी तरह बोलना सीख जायँ। जैसे—तुम भी बुड्ढे तोते को पढाने चले हो।

सयो० क्रि०—देना।

पढ़िना—पु० [स० पाठीन] एक प्रकार की बिना सेहरे की मछली। पढ़ना। पहिना।

पढ़ैया—वि० [हि० पढ़ना+ऐया (प्रत्य०)] पढनेवाला।

स्त्री० पढने या पढ़े जाने की क्रिया या भाव। जैसे—कुल-पढैया=ऐसी नमाज जो बस्ती के सब मुसलमान एक साथ मिलकर पढ़ते हो।

पण—पु० [स०√पण् (व्यवहार)+अप्] १ वह खेल जो पासों से खेला जाता हो। २ वह खेल जिसकी हार-जीत मे दाँव पर कुछ धन लगाया जाता हो। जूआ। द्यूत। ३ किसी काम या बात के लिए लगाई जानेवाली बाजी। शर्त। ४ वह धन जो जूए के दाँव अथवा बाजी या शर्त बदने के समय लगाया जाता हो। ५ दो व्यक्तियो मे पारस्परिक होनेवाला निश्चय या प्रतिज्ञा। कौल। करार। ६ ६ वह धन जो उक्त प्रकार के निश्चय, प्रतिज्ञा आदि के फलस्वरूप दिया या लिया जाता हो। जैसे—पारिश्रमिक, भाडा, सूद आदि। ७ किसी चीज का दाम। कीमत। मूल्य। ८ फीस। शुल्क। ९. धन-दौलत। सम्पत्ति। १०. वह चीज जो खरीदी और बेची जाती हो। माल। सौदा। ११ रोजगार। व्यापार। १२ प्रशसा। स्तुति। १३ प्राचीन काल की एक नाप जो एक मुट्ठी अनाज के बराबर होती थी। १४ किसी के मत से ११ और किसी के मत से २० माशे के बराबर ताँबे का टुकडा जिसका व्यवहार सिक्के की भाँति होता था।

पण-क्रिया—स्त्री० [ष० त०] दाँव, बाजी या शर्त लगाने का काम।

पण-ग्रंथि—स्त्री० [ब० स०] बाजार। हाट।

पणता—स्त्री०, पु० [स० पण+तल्—टाप्, पण+त्वल्] मूल्य।

पणत्व—पु० [स० पण+त्व]=पणता।

पण-दंड—पु० [ष० त०] अर्थ-दड।

पण-धर—वि० [ष० त०] प्रण रखनेवाला। उदा०—कोड़ी दै नह काढ़, पणधर राण प्रताप सी।—दुरसाजी।

पणन—पु० [सं०√पण्+ल्युट्—अन] १ खरीदने की क्रिया या भाव। क्रय करना। मोल लेना। २. बेचने की क्रिया या भाव। विक्रय। ३ बाजी या शर्त लगाने की क्रिया या भाव। ४ व्यवहार, व्यापार आदि करने की क्रिया या भाव।

पणनीय—वि० [स०√पण्+अनीयर्] १ जो खरीदा या बेचा जा सके। पणन के योग्य। २. जिससे धन के लोभ से कोई काम कराया जा सके। भाड़े का टट्टू।

पण-बंध—पु० [ष० त०] बाजी बदना। शर्त लगाना।

पणव—पु० [स० पण√वा (गति)+क] १. छोटा ढोल या नगाड़ा। २ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक मगण, एक नगण, एक भगण और अन्त मे एक गुरु होता है।

पणवा—स्त्री०=पणव।

पणवानक—पु० [पणव-आनक, कर्म० स०] नगाड़ा।

पणवी (विन्)—पु० [स० पणव+इनि] शिव।

पणस—पु० [स०√पण्+असच्] वस्तु, विशेषत बेची जानेवाली वस्तु।

पण-सुन्दरी—स्त्री० [मध्य० स०] वेश्या। रडी।

पण-स्त्री—स्त्री० [मध्य० स०] रडी। वेश्या।

पणांगना—स्त्री० [पण-अगना, मध्य० स०] रडी। वेश्या।

पणाया—स्त्री० [स०√पण्+आय+अ—टाप्] १ व्यापारियों का एक माल किसी को देकर उसके बदले मे दूसरा माल लेना। विनिमय। २ चीजे ले या देकर उनका दाम चुकाना या वसूल करना। आर्थिक क्षेत्र मे लेन-देन आदि करना। (ट्रैन्जैक्शन) ३. रोजगार। व्यापार। ४ रोजगार या व्यापार मे होनेवाला लाभ। ५. बाजार। ६. जूआ। ७ स्तुति।

पणायित—भू० कृ० [स०√पण्+आय+क्त] १. (पदार्थ) जो खरीदा या बेचा जा चुका हो। २. जिसकी स्तुति की गई हो।

पणार्पण—पु० [पण-अर्पण, ष० त०] क्रय-विक्रय के लिए दो पक्षो मे होनेवाला निश्चय या पक्की बात।

पणाशी*—वि० =प्रनाशी (नाश करनेवाला)।

पणास्थि—स्त्री० [पण०अस्थि, ष० त०] कौडी। कपर्दक।

पणि—स्त्री० [स०√पण्+इन्] बाजार। हाट।

पु० १ पणन अर्थात् क्रय-विक्रय करनेवाला व्यक्ति। २ कजूस। ३ पापी।

पणित—भू० कृ० [सं०√पण्+क्त] १. (पदार्थ) जिसका पणन अर्थात् क्रय-विक्रय हो चुका हो। २. जिसके सबध मे बाजी लगाई गई हो। ३ जिसके संबध मे कोई प्रतिबध या शर्त लगा हो। (कन्डिशन्ड) ४. प्रशसित। स्तुत।

पु० १ बाजी। शर्त। २ जूआ। ३. जुआरी। ४. अग्रिम या पेशगी दिया जानेवाला धन। बयाना।

पणितव्य—वि० [स०√पण्+तव्यत्] १ जिसका क्रय-विक्रय हो सके। २. जिसका लेन-देन या व्यवहार हो सके। ३ जिसके साथ लेन-देन या व्यवहार किया जा सके। ४. जिसकी प्रशसा या स्तुति की जा सके।

पणिता (तृ)—पु० [स०√पण्+तृच्] पणन अर्थात् क्रय-विक्रय करनेवाला व्यक्ति।

पणिहारा*—पु० [स्त्री० पणिहारी]=पनिहारा।

पणी (णिन्)—पु० [स० पण+इनि] क्रय-विक्रय करनेवाला रोजगारी।

पण्य—वि० [स० पण्+यत्]=पणितव्य।

पु० १ वह चीज जो खरीदी और बेची जाती हो। माल। सौदा। २. रोजगार। व्यापार। ३. बाजार। हाट। ४ दूकान।

पण्य-क्षेत्र—पु० [ष० त०]=पण्य-भूमि।

पण्य-चरित्र—पु० [ष० त०] किसी मडी या हाट के बँधे हुए नियम या प्रथाएँ।

पण्य-चिह्न—पु० [ष० त०] दे० 'वाणिज्य चिह्न'।

पण्य-दास—पु० [कर्म० स०] [स्त्री० पण्यदासी] वह दास जो धन लेकर उसके बदले मे दास्यवृत्ति करता हो।

पण्य-निचय—पु० [ष० त०] बेचने के लिए माल इकट्ठा करके रखना।

पण्य-निर्वाहण—पु० [ष० त०] चुगी या महसूल दिये बिना ही चोरी से माल निकाल ले जाना। (कौ०)

पण्य-पति—पु० [ष० त०] १. बहुत बडा रोजगारी या व्यापारी। २ बहुत बडा साहूकार। नगर-सेठ।

पण्य-पत्तन—पु० [ष० त०] १ वह नगर जिसमे अनेक मडियाँ हों। २. मंडी। ३ बाजार। हाट।

पण्य-परिणीता—स्त्री० [कर्म० स०] रखेली स्त्री।

पण्य-फल—पु० [ष० त०] व्यापार करने स प्राप्त होनेवाली आय या लाभ।

पण्य-भूमि—स्त्री० [ष० त०] १ वह स्थान जहाँ वस्तुओ का व्यापार होता हो। २ मडी। हाट। ३ गोदाम।

पण्य-योषित—स्त्री० [मध्य० स०] रडी। वेश्या।

पण्य-वस्तु—स्त्री० [कर्म० स०] वे पदार्थ या वस्तुएँ जो बाजारो मे बेंचने के उद्देश्य से बनाई जाती है। खरीद और बिक्री का माल। पण्य-द्रव्य। (कमोडिटी, मर्चेन्डाइज) जैसे—कपडा, कागज, गेहूँ, जौ आदि।

पण्य-विलासिनी—स्त्री० [कर्म० स०] वेश्या।

पण्य-वीथि (का)—स्त्री० [ष० त०] १ बाजार। २ छोटी दुकान।

पण्य-शाला—स्त्री० [ष० त०]=पण्य-वीथि (का)।

पण्य-समवाय—पु० [ष० त०] व्यापारिक वस्तुओं का सग्रह।

पण्य-स्त्री—स्त्री० [कर्म० स०] वेश्या।

पण्यांगना—स्त्री० [पण्या-अगना कर्म० स०] वेश्या।

पण्यांधा—स्त्री० [स० पण्य√अध् (अधा करना)+अच्—टाप्] कँगनी नाम का कदन्न।

पण्या—स्त्री० [स० पण्य+टाप्] मालकगनी।

पण्याजीव—पु० [स० पण्य-आ√जीव् (जीना)+क] १ ऐसा व्यक्ति जिसकी जीविका पण्य अर्थात् रोजगार से चलती हो। रोजगारी। व्यापारी।

पण्याजीवक—पु० [स० पण्याजीव+कन्] १ =पण्याजीव। २. [पण्याजीव√कै (चमकना)+क] बाजार।

पण्यावर्त्त—पुं० [स०] क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि का व्यवहार।

(ट्रैन्जैक्शन)

पतंखा।—पुं० =पतोखा।

पतंग—वि० [सं०√पत् (गिरना)+अगच्] १ जो गिरता हुआ जाता हो। २. उड़नेवाला।

पुं० १ सूर्य। २ मकड़ी। ३ पतिंगा। शलभ। ४ चिड़िया। पक्षी। ५ कंदुक। गेंद। ६ एक गंधर्व का नाम। ७ एक प्राचीन पर्वत। ८ बदन। शरीर। ९. नाव। नौका। १० जैनों के एक देवता जो वाणव्यंतर नामक देवगण के अन्तर्गत हैं। ११ चिनगारी। १२ जड़हन धान। १३ जलमछुआ। १४ एक प्रकार का वृक्ष जिसकी लकड़ी रक्त चन्दन की लकड़ी जैसी परन्तु निर्गन्ध होती है।

स्त्री० [सं० पतग=उड़नेवाला] कागज की वह बहुत बड़ी गुड्डी जो डोर की सहायता से हवा में उड़ाई जाती है। कन-कौआ। चंग। तुक्कल।

क्रि० प्र०—उड़ाना।—लड़ाना।

मुहा०—**पतंग काटना**=पेंच लड़ाकर किसी की पतंग की डोरी काट देना। **पतंग बढ़ाना**=डोर ढीलते हुए पतंग और अधिक ऊँचाई या दूरी पर पहुँचाना।

पुं० [सं० पत्रग] एक तरह का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी से बढ़िया लाल रंग निकाला जाता है। (सपन)

पुं० [फा०] १ रोशनदान। २ खिड़की।

पतंग-छुरी—वि० [सं० पतंग=उड़ानेवाला अथवा चिनगारी+हिं० छुरी] पीठ पीछे बुराई करनेवाला। चुगलखोर।

पतंगबाज—पुं० [हिं० पतंग+फा० बाज] [भाव० पतंगबाजी] वह जिसको पतंग उड़ाने का शौक या व्यसन हो।

पतंगबाजी—स्त्री० [हिं० पतंगबाज+ई (प्रत्य०)] पतंग उड़ाने की क्रिया, भाव या शौक।

पतंगम—पुं० [सं० पतद्√गम्+खच्, नि० सिद्धि] १ पक्षी। चिड़िया। २ पतिंगा। शलभ।

पतंगा—पुं० [सं० पतंग] १ परोंवाला वह कीड़ा जो हवा में उड़ता हो। २ एक तरह का साधारण कीटों से बड़ा कीड़ा जो पेड़ों की पत्तियाँ, फसलें आदि खाता तथा नष्ट-भ्रष्ट करता है। ३ दीये का फूल। ४ चिनगारी।

पतंगिका—स्त्री० [सं० पतंग+कन्—टाप्, इत्व] १ छोटा पक्षी। २ एक तरह की मधुमक्खी।

पतंगी (गिन्)—पुं० [सं० पतंग+इनि] पक्षी।

पतंगेंद्र—पुं० [सं० पतंग-इंद्र, ष० त०] पक्षियों के स्वामी, गरुड़।

पतंचल—पुं० [सं०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

पतंचिका—स्त्री० [सं० पतम्+चिक्क् (पीड़ा) पृषो० सिद्धि] धनुष का चिल्ला। प्रत्यंचा।

पतंजलि—पुं० [सं० पतत्-अंजलि, ब० स०, शक० पर रूप] पाणिनि के सूत्रों पर महाभाष्य नामक टीका लिखनेवाले एक प्रसिद्ध ऋषि जो योगदर्शन के प्रतिपादक भी कहे जाते हैं।

पत—स्त्री० [सं० प्रतिष्ठा ?] प्रतिष्ठा। आबरू। इज्जत। लाज।

क्रि० प्र०—जाना।—रखना।—रहना।

मुहा०—(किसी की) **पत उतारना**=किसी को अपमानित करना। (किसी की) **पत रखना**=अपमानित होनेवाले की अथवा अपमानित होते हुए की इज्जत बचाना। लाज रखना। **पत लेना**=पत उतारना।

पुं० [सं० पति] १ पति। २ स्वामी।

पुं० [हिं० पत्ता] 'पत्ता' का संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पत-झड़।

पतई—स्त्री० १ =पत्ती। २ =पताई।

पतउड़—पुं० [सं० पति+उडु] चन्द्रमा। (डिं०)

पत-खोवन—वि० [हिं० पत+खोवन=खोनेवाला] अपनी अथवा दूसरों की प्रतिष्ठा नष्ट करनेवाला।

पतग—पुं० [सं० पत√गम् (गति)+ड] पक्षी। चिड़िया। पखेरू।

पतगेंद्र—पुं० [सं० पतग-इन्द्र ष० त०] पक्षिराज। गरुड़।

पतचौली—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा।

पत-झड़—पुं० [हिं० पत्ता+झड़ना] १ पेड़ों के पत्तों का झड़ना। २ शिशिर ऋतु जिसमें अधिकांश पेड़ों के पत्ते झड़ जाते हैं। ३ उन्नति के उपरांत होनेवाला ह्रास। विशेषतः ऐसी स्थिति जिसमें वैभव, संपत्ति आदि नष्ट हो चुकी होती है।

पतझर—पुं०=पत-झड़।

पतझल—स्त्री० =पत-झड़।

पतझाड़—स्त्री० =पत-झड़।

पतझार—स्त्री० =पत-झड़।

पतता—स्त्री० [सं० पतिता] =पतित्व। उदा०—परी है विपत्ति पति लागि पतता नहीं।—सेनापति।

पतत्—वि० [सं०√पत्+शतृ] १ नीचे की ओर आता, उतरता या गिरता हुआ। २ उड़ता हुआ।

पुं० चिड़िया।

पतत्पतंग—पुं० [सं० पतत्-पतंग, कर्म० स०] अस्त होता हुआ सूर्य।

पतत्प्रकर्ष—वि० [सं० पतत्-प्रकर्ष, ब० स०] जो प्रकर्ष से गिर चुका हो।

पुं० साहित्यिक रचना का एक दोष जो उस समय माना जाता है जब कोई बात आरंभ में तो उत्कृष्ट रूप में कही जाती है परन्तु आगे चलकर वह उत्कृष्टता कुछ घट या नष्टप्राय हो जाती है। जैसे—पहले तो किसी को चन्द्रमा कहना और बाद में जुगनूँ कहना। (एन्टीक्लाइमैक्स)

पतत्र—पुं० [√पत्+अत्रन्] १ पक्ष। डैना। २ पंख। पर। ३ वाहन। सवारी।

पतत्रि—पुं० [सं०√पत्+अत्रिन्] पक्षी। चिड़िया।

पतत्रि-केतन—पुं० [ब० स०] विष्णु।

पतत्रि-राज—पुं० [ष० त०] गरुड़।

पतत्रि-वर—पुं० [सं० त०] गरुड़।

पतत्री (त्रिन्)—पुं० [सं० पतत्र+इनि] १ पक्षी। २ वाण। ३ घोड़ा।

पतद्ग्रह—पुं० [सं० पतद्√ग्रह् (पकड़ना)+अच्] १. उगालदान। पीकदान। २ भिक्षा-पात्र। ३ सरक्षित सेना।

पतद्-भीरु—पुं० [सं० ब० स०] बाज पक्षी।

पतन—पुं० [सं०√पत्+ल्युट्—अन] १ ऊपर से नीचे आने या

गिरने की क्रिया या भाव। २ नीचे धँसने या बैठने की क्रिया या भाव। ३ व्यक्ति का, उच्च आदर्श, स्तुत्य आचरण आदि छोड़कर निन्दनीय और हीन आचरण या कार्य करने मे प्रवृत्त होना। ४ जाति, राष्ट्र आदि का ऐसी स्थिति मे आना कि उसकी प्रभुता और महत्ता नष्ट प्राय हो जाय। ५ मृत्यु। ६ पाप। पातक। ७ उड़ने की क्रिया या भाव। उड़ान। ८ किसी नक्षत्र का अक्षाश।

वि० [√पत्+ल्यु-अन] १ गिरता हुआ या गिरनेवाला। २. उड़ता हुआ या उड़नेवाला।

पतन-शील—वि० [स० ब० स०] [भाव० पतनशीलता] जिसका पतन हो रहा हो, अथवा जिसकी प्रवृत्ति पतन की ओर हो। गिरता हुआ या गिरनेवाला।

पतना—पु० [?] योनि का किनारा।

†अ० [स० पतन] १ गिरना। २ पतन होना।

†स०=पाथना।

पतनारा—पु० [?] नाबदान। पनाला। मोरी।

पतनीय—वि० [स०√पत्+अनीयर्] जिसका पतन होने को हो अथवा जिसका पतन होना सभावित या स्वाभाविक हो।

पतनोन्मुख—वि० [स० स० त० पतन उन्मुख] जो पतन की ओर उन्मुख हो।

पत-पानी—पु० [हि० पत+पानी] प्रतिष्ठा। मान। इज्जत। आबरू।

पतम—पु० [स०√पत्+अम] १ चन्द्रमा। २ चिड़िया। पक्षी। ३ पतिगा। शलभ।

पतयालु—वि० [स०√पत्+णिच्+आलु] पतनशील।

पतयिष्णु—वि० [स०√पत्+णिच्+इष्णुच्] पतनशील।

पतर—वि० पातर (पतला)।

पु०=पत्र।

स्त्री०=पत्तल।

पतरा—पु० [स० पत्र] १ वह पत्तल जो तँबोली लोग पान रखने के टोकरे या डलिये मे बिछाते है। २ सरसो का साग या पत्ता।

†पु०=पत्रा (पचाग)।

†वि० [स्त्री० पतरी] -पतला।

पतराई—स्त्री० =पतलाई।

पतरिंगा—पु० [?] गोरैया के आकार का लबी चोच तथा लबी पूँछ-वाला एक पक्षी जिसका रग सुनहलापन लिये हरे रग का होता है तथा आँखें लाल रग की तथा नुकीली चोच काले रग की होती है।

पतरी†—स्त्री० =पत्तल।

पतरेंगा—पु० =पतरिंगा (पक्षी)।

पतरौल—पु० [अ० पेट्रोल] गश्त लगानेवाला सैनिक।

पतला—वि० [स० पत्राल] [स्त्री० पतली, भाव० पतलापन] १ तीन विमाओवाली ठोस वस्तु के सबध मे, जिसमे मोटाई या गहराई उसकी लबाई तथा चौड़ाई की अपेक्षा कम हो। जैसे—पतला डडा, पतली बाँह। २ व्यक्ति, जिसका शरीर हृष्ट-पुष्ट न हो, बल्कि कृश या क्षीण हो।

पद—दुबला-पतला।

३. कपड़े, कागज आदि के सबध मे, जो तल की मोटाई के विचार से झीना या महीन हो। ४ जिसका घेरा अपेक्षया बहुत कम हो। जैसे—पतली कमर। ५ जिसकी चौड़ाई बहुत कम हो। जैसे—पतली गली। ६ तरल पदार्थ के सबध मे, जिसमे गाढ़ापन न हो। जिसमे तरलता अधिक हो। जैसे—पतला दूध, पतला रसा। ७ लाक्षणिक अर्थ मे, जिसमे शक्ति या समर्थता न हो अथवा जिस रूप मे या जितनी होनी चाहिए, उस रूप मे अथवा उतनी न हो।

पद-पतला हाल=निर्धनता और विपत्ति की अवस्था। **पतली फसल**=ऐसी फसल जिसमे अन्न बहुत कम हुआ हो। **पतले कान**=ऐसे कान (फलत उन कानो से युक्त व्यक्ति) जिनमे सुनी-सुनाई बाते बिना विचार किये मान लेने की विशेष प्रवृत्ति हो। जैसे—उनके कान पतले है, उनसे जो कुछ कहा जाय, उसे वे सच मान लेते है।

पतलाई—स्त्री०=पतलापन।

पतलापन—पु० [हि० पतला+पन (प्रत्य०)] 'पतला' होने की अवस्था या भाव।

पतली—स्त्री० [लश०] जूआ। द्यूत।

वि० स्त्री० हि० पतला का स्त्री० रूप।

पतलून—पु० [अ० पैंटलून] खुली मोहरियो, सीधे पायँचा तथा जेबो-वाला एक तरह का विदेशी पायजामा जिसमे मियानी नही होती।

पतलूननुमा—वि० [हि० पतलून+फा० नुमा=दर्शक] जो देखने मे पतलून की तरह हो।

पु० वह पाजामा जो देखने मे पतलून से मिलता-जुलता हो।

पतलो—स्त्री० [देश०] १ सरकडे या सरपत की पताई। २ सरकडा। सरपत।

पतवर—क्रि० वि० [स० हि० पाँती+वार (प्रत्य०)] १ पक्तिक्रम से। २ बराबर-बराबर।

पतवा—पु० [हि० पत्ता+वा (प्रत्य०)] जगली जानवरो का शिकार करने के लिए बनाई हुई एक तरह की ऊँची मचान।

†पु० १=पत्ता। २=पता।

पतवार—स्त्री० [स० पत्रवाल, पात्रपाल, प्रा० पात्तवाड] १ बड़ी नावो और विशेषत पुराने देशी समुद्री जहाजो का वह तिकोना पिछला अग या उपकरण जो आधा जल मे और आधा जल के बाहर रहता है और जिसके सचालन से नाव का रुख दूसरी ओर घुमाया जाता है। कर्ण। २ ऐसा सहारा या साधन जो कठिन समय मे भवसागर से पार उतारे।

पु० [हि० पत्ता] १ पौधो विशेषत सरकडा आदि की सूखी पत्तियाँ। २ कूडा-करकट। जैसे—खर-पतवार।

पतवारी—स्त्री० [हि० पता, पत्ता] ऊख का खेत।

†स्त्री०=पतवार।

पतवाल†—स्त्री०=पतवार।

पतवास—स्त्री० [स० पतत्=चिड़िया+वास] पक्षियो का अड्डा। चिक्कस।

पतस—पु० [स०√पत्+असच्] १. पक्षी। चिड़िया। २ पतिगा। शलभ। ३ चद्रमा।

पतस्वाहा—पु० [हि०] अग्नि।

पता—पु० [स० प्रत्यय, प्रा० पत्तय=ख्याति] १ किसी काम, चीज, जगह या बात का परिचायक वह विवरण जिसकी सहायता से उसके पास तक

पहुँचा जा सके या उसके रूप, स्थिति आदि का ज्ञान प्राप्त किया जा सके।

पद—पता-ठिकाना (दे०)।

२. चिट्ठी आदि के ऊपर का वह विवरणात्मक लेख जो सूचित करता है कि यह पत्र किस स्थान के निवासी किस व्यक्ति का है अथवा किसके पास पहुँचना चाहिए। ३ किसी अज्ञात विषय, व्यक्ति आदि के संबंध की ऐसी जानकारी जो अभी तक प्राप्त न हुई हो और जिसे प्राप्त करना अभीष्ट या आवश्यक हो। जैसे—चोर (या मुजरिम) का अभी तक पता नहीं है।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।—लगना।—लगाना।

पद—पते का =वास्तव में उस स्थान का जिसका सब को परिचय न हो। ४ किसी बात या विषय के गूढ़ तत्त्व या रहस्य की ऐसी जानकारी जो प्राप्त की जाने को हो। जैसे—यह पता लगाना चाहिए कि उसके पास रुपया कहाँ से आता है।

पद—पते की बात =ऐसी बात जिससे कोई भेद खुल जाता या रहस्य स्पष्ट हो जाता है। जैसे—वाह! तुमने भी क्या पते की बात कही है।

विशेष—इस अर्थ में इसका प्रयोग केवल 'पते की' के रूप में भी होता है।

स्त्री०[लता का अनु०] लता या उसी तरह की और चीज। लता के साथ प्रयुक्त। जैसे—लता-पता।

पताई—स्त्री०[हि० पत्ता (वृक्ष का)]१ वृक्ष या पौधे की ऐसी पत्तियाँ जो सूखकर झड़ गई हों।

मुहा०—पताई लगाना चूल्हे, भट्ठी आदि में सूखी पत्तियाँ झोंकना। **(किसी के मुँह में) पताई लगाना** = मुँह फूँकना। (स्त्रियों की गाली)

२ कूड़ा-कर्कट।

स्त्री०[हि० पत्ता (कान का)] गहना। जेवर। जैसे—गहना-पताई कुछ नहीं मिला।

पताकरा—पु०[देश०] एक प्रकार का वृक्ष जो बंगाल, आसाम और पश्चिमी घाट में होता है। इसके फल खाए जाते हैं।

पताकांक—पु०[सं० पताका-अंक ष०त०, ब०स०] दे० 'पताका स्थान'।

पताकांशु—पु०[सं० पताका-अंशु, ष०त०]झंडा। झंडी। पताका।

पताका—स्त्री०[सं०√पत् + आकन्—टाप्]१ लकड़ी आदि के डंडे के सिर पर पहनाया हुआ वह तिकोना या चौकोना कपड़ा जिस पर कभी कभी किसी राजा या संस्था का विशिष्ट चिह्न भी अंकित रहता है। झंडा। झंडी। फरहरा। २ झंडा। ध्वजा। (मुहा० के लिए दे० 'झंडा' के मुहा०)

पद—विजय की पताका = युद्ध आदि में किसी स्थान पर विजयी पक्ष की वह पताका जो विजित पक्ष की पताका गिराकर उसके स्थान पर उड़ाई जाती है। विजय-सूचक पताका।

३ वह डंडा जिसमें पताका पहनाई हुई होती है। ध्वज। ४ सौभाग्य। ५ तीर चलाने में उँगलियों की एक विशिष्ट प्रकार की स्थिति। ६ दस खर्व की संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जायगी—१०००००००००००० । ७ पिंगल के नौ प्रत्ययों में से आठवाँ जिसके द्वारा किसी निश्चित गुरु, लघु वर्ण के छंद अथवा छंदों का स्थान जाना जाय। ८ साहित्य में, नाटक की प्रासंगिक कथा के दो भेदों में से एक। वह कथा जो रूपक (या नाटक की) आधिकारिक कथा की सहायतार्थ आती और दूर तक चलती है। इसका नायक अलग होता है और पताका नायक कहलाता है। जैसे—प्रसाद के स्कंद गुप्त नाटक में मालव की कथा 'पताका' है और उसका नायक बन्धुवर्मा पताका नायक है। (दूसरा भेद प्रकरी कहलाता है।)

पताका-दंड—पु० [सं०ष०त०] बाँस आदि जिसमें पताका लगी होती है।

पताका वेश्या—स्त्री०[सं०] बहुत ही निम्न कोटि की वेश्या। टकाही रंडी।

पताका स्थानक—पु०[सं०मध्य०स०] साहित्य में, नाटक के अंतर्गत वह स्थिति जिसमें किसी प्रसंग के द्वारा आगे की या तो अन्योक्ति पद्धति पर या समासोक्ति पद्धति पर सूचित की जाती है।

पताकिक—पु०[सं० पताका + ठन्—इक] वह जो आगे आगे झंडा या पताका लेकर चलता हो।

पताकित—वि०[सं० पताका + इतच्] (स्थान) जिस पर पताका लगाई गई हो।

पताकिनी—स्त्री०[सं० पताका + इनि—ङीप्]१ सेना। फौज। २ एक देवी का नाम।

पताकी (किन्)—वि०[सं० पताका + इनि] [स्त्री० पताकिनी] झंडा लेकर चलनेवाला।

पु०१ रथ। २ फलित ज्योतिष में, राशियों का एक विशेष वेध जिससे जातक के अरिष्ट काल की अवधि जानी जाती है।

पतामी—स्त्री०[देश०] एक तरह की नाव।

पतार—पु०[सं० पाताल] १ घना जंगल। सघन वन। २ नीची भूमि। ३ दे० 'पाताल'।

पतारी—स्त्री०[देश०] जलाशयों के किनारे रहनेवाली एक तरह की चिड़िया जिसका शिकार किया जाता है।

पताल†—पु० =पाताल।

पताल-आँवला—पु०[सं० पाताल-आमलकी] औषध के काम में आनेवाला एक पौधा।

पताल-कुम्हड़ा—पु०[सं० पाताल-कुष्मांड]एक तरह का जंगली पौधा।

पताल-दंती†—पु० =पातालदंती।

पतावर—पु०[हि० पत्ता] पेड़ के सूखे झड़े हुए पत्ते।

पताशा†—पु० =पताशा।

पतासी—स्त्री०[देश०] एक तरह की छोटी रुखानी (बढ़ई)।

पतिंग—पु० = पतंग।

पतिंगा—पु० =पतंगा।

पतिंवरा—वि०[सं० पति√वृ (वरण करना) + खच्, मुम्]१. (स्त्री) जो अपना पति स्वयं चुने। स्वेच्छा से पति का वरण करनेवाली (स्त्री)। स्वयंवरा।

स्त्री० काला जीरा।

पति—पु०[सं०√पा (रक्षा) + डति] [स्त्री० पत्नी]१ किसी वस्तु का मालिक या स्वामी। अधिपति। प्रभु। जैसे—गृहपति। २ स्त्री की दृष्टि से वह पुरुष जिसके साथ उसका विधिवत् विवाह हुआ हो। खाविंद। दूल्हा। शौहर।

विशेष—साहित्य में शृंगार रस का आलम्बन वह नायक 'पति' माना जाता है, जिसने नायिका का विधिवत् पाणि-ग्रहण किया हो।

३ पाशुपत दर्शन के अनुसार सृष्टि, स्थिति और संहार का वह कारण जिसमे निरतिशय, ज्ञान-शक्ति और क्रियाशक्ति होती है और ऐश्वर्य से जिसका नित्य संबंध होता है। ईश्वर। ४. जड। मूल।

स्त्री०[हिं० पत=प्रतिष्ठा]१ प्रतिष्ठा। सम्मान। २ लज्जा। धर्म। उदा०—जो पति संपति हूँ बिना, जदुपति राखे जाह।—बिहारी।

पतिआना†—स०=पतियाना।

पतिआर—वि०[हिं० पतियाना] जिस पर विश्वास किया जा सके। पु० विश्वास।

पतिक—पु०[स० प्रतिक] कार्षापण नाम का पुराना सिक्का।

पति-कामा—वि०[स० ब०स०, टाप्] (स्त्री) जिसके मन मे किसी पुरुष से विधिवत् विवाह करने की इच्छा हो।

पतिघातिनी—स्त्री० [स० पति√हन् (हिंसा)। णिनि—ङीप्]१ पति की हत्या करनेवाली स्त्री। पति का मार डालनेवाली स्त्री। २. फलित ज्योतिष मे, ऐसी स्त्री जिसका ग्रहो के प्रभाव के कारण विधवा हो जाना अवश्यम्भावी या निश्चित हो। ३ सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार स्त्रियो के हाथ मे होनेवाली एक रेखा जिसके प्रभाव से उनका विधवा हो जाना निश्चित माना जाता है।

पतिघ्न—वि०[स० पति √ हन्। ठक्]पति को मार डालनेवाला या वाली।

पु० स्त्रियो मे होनेवाला वह अशुभ चिह्न या लक्षण जिससे उसके पति के शीघ्र ही मर जाने की संभावना सूचित होती है।

पतिघ्नी—स्त्री०[स० पतिघ्न+ङीप्] =पतिघातिनी।

पतिजिया—स्त्री०[स० पुत्रजीवा] जीया पोता नामक वृक्ष।

पतित—भू० कृ० [स०√पत्+(गिरना)+क्त] [स्त्री० पतिता, भाव० पतितता] १ ऊपर से नीचे आया या गिरा हुआ। २ नीचे की ओर झुका हुआ। नत। ३ (व्यक्ति) जिसका नैतिक दृष्टि से पतन हो चुका हो। ४ अपनी जाति या वर्ग के धर्म या धार्मिक प्रथाओ, विश्वासो आदि को न माननेवाला, उनका उल्लघन करनेवाला अथवा उन्हे हेय समझनेवाला। ५ बहुत बडा अधम, नीच या पापी। ६ जो अपनी जाति, धर्म या समाज से किसी हीन आचरण के कारण निकाला या बहिष्कृत किया गया हो। ७ जो युद्ध आदि मे गिरा, दबा या हरा दिया गया हो। ८ अपवित्र। मलिन। ९. गिराया या फेका हुआ।

पतित-उधारन—वि० [स० पतित+हिं० उधारना (स० उद्धरण)] पतितो का उद्धार करनेवाला तथा उन्हे सद्गति देनेवाला।

पु० ईश्वर।

पतितता—स्त्री०[स० पतित+तल्—टाप्] १. पतित होने की अवस्था या भाव। २ जाति या धर्म से च्युत होने का भाव। ३. अपवित्रता। ४ अधमता। नीचता।

पतित-पावन—वि० [पतित√पाव+ल्युट्—अन] [स्त्री० पतितपावनी] पतित को भी पवित्र करनेवाला। पतितो को शुद्ध करनेवाला।

पु० परमेश्वर।

पतित-वृत्त—वि० [कर्म० स०] पतित दशा मे रहनेवाला। जातिच्युत होकर जीवन बितानेवाला।

पतितव्य—वि०[स० √पत्+तव्यत्] जो पतित होने को हो या पतित होने के योग्य हो।

पतित-सावित्रीक—वि० [ब०स० कप्] (ब्राह्मण, क्षत्रिय अथवा शूद्र) जिसका यज्ञोपवीत विधिवत् न हुआ हो अथवा हुआ ही न हो।

पतित्व—पु०[स० पति+त्व]१ प्रभुत्व। स्वामित्व। २. पति या पाणि-ग्राहक होने की अवस्था, भाव या समर्थता।

पति-देवा—वि०[ब०स०] (ऐसी स्त्री) जो अपने पति या स्वामी को ही सबसे बडा देवता मानती हो, अर्थात् पतिव्रता।

पति-धर्म—पु० [ष०त०]१ पति या स्वामी का कर्तव्य और धर्म। २ पति के प्रति पत्नी का कर्तव्य और धर्म।

पतिधर्मवती—वि० [स० पतिधर्म+मतुप्, वत्व, ङीप्] (स्त्री) जो पति के प्रति अपने कर्तव्य करने के लिए सचेत हो।

पतिनी†—स्त्री० पत्नी।

पतिपारना—स०[स० प्रतिपालन]१ प्रतिपालन करना। पूरा करना। २ पालन-पोषण करना।

पति-प्राणा—स्त्री०[स० ब०स०, टाप्] पति को प्राणो के समान समझने-वाली अर्थात् पतिव्रता स्त्री।

पतिया*—स्त्री० =पाती (चिट्ठी या पत्री)।

पतियाना—स०[स० प्रत्यय+हिं० आना (प्रत्य०)]१ किसी की कही हुई बात आदि पर विश्वास करना। सच समझना। २ किसी व्यक्ति का विश्वसनीय या सच्चा समझना।

पतियार (ा)†—वि०[हिं० पतियाना] विश्वसनीय।

पु० प्रत्यय। विश्वास।

पति-रिपु—वि०[स० ब०स०] पति से द्वेष या शत्रुता करनेवाली। पति से वैर रखनेवाली (स्त्री)।

पति-लंघन—पु०[स० ष०त०] स्त्री का दूसरे पति से विवाह करके पहले मृत-पति का तिरस्कार करना।

पति-लोक—पु०[स० ष०त०]पुराणानुसार वह लोक जिसमे स्त्री का मृत पति रहता है और जहाँ अच्छी स्त्री भी मरने पर भेजी जाती है।

पतिवती—वि०[स० पति-मती] (स्त्री) जिसका पति जीवित या वर्तमान हो। सधवा।

पतिवंती—वि०=पतिवती।

पतिवत्नी—वि० स्त्री०[स० पति+मतुप्, वत्व, ङीप्, नुक्]=पतिवती।

पतिवर्त्ता—स्त्री०=पतिव्रता।

पतिवाह—पु०[?] उत्तर प्रदेश के कुछ पूर्वी जिलो मे रहनेवाली अहीरो की एक जाति।

पति-वेदन—वि०[स० ष०त०] जो पति प्राप्त करावे। पति प्राप्त कराने-वाला।

पु० महादेव। शिव।

पति-वेदना—स्त्री०[स० ष०त०] तत्र-मत्र या और किसी उपचार से पति को प्राप्त करनेवाली स्त्री।

पति-व्रत—पु०[स० ष०त०] विवाहिता स्त्री का यह व्रत कि मै सदा पति

मे अनन्य भक्ति रखूँगी, आज्ञाकारिणी बनकर सेवा करूँगी और पर-पुरुष की ओर कभी कुदृष्टि से नही देखूँगी। पातिव्रत्य।

पतिव्रता—वि० [सं० ब०स०, टाप्] पति-धर्म ही जिसका व्रत हो। अर्थात् पति मे पूर्ण निष्ठा रखनेवाली तथा उसका अनुसरण करनेवाली सच्चरित्रा (स्त्री)।

पतिष्ठ—वि० [सं० पतितृ + इष्ठन् 'तृ' का लोप] पूरी तरह मे पतन की ओर प्रवृत्त रहने या होनेवाला। अत्यन्त पतन-शील।

पती†—पु०=पति।

पतीआ*—स्त्री०=प्रतिज्ञा।

पतीजना—अ० [हिं० प्रतीत+ना (प्रत्य०)] प्रतीति या एतबार करना। भरोसा या विश्वास करना। उदा०—इही राहु भा मानहि, राघौ मनहि पतीजु।—जायसी।

पतीणना*—स०=पतीतना।

पतीतना—स० पतीजना (विश्वास करना)।

पतीना*—स० पतीतना (विश्वास करना)।

पतीर—स्त्री० [स० पक्ति] कतार। पक्ति।

†वि० पतला।

पतीरी—स्त्री० [हिं० पात=पत्ता] एक प्रकार की चटाई।

पतील†—वि०=पतला।

पतीला—पु० [स० पतिली] [स्त्री० अल्पा० पतीली] ताँबे, पीतल आदि का ऊँचे तथा खडे किनारेवाला और गोल घेरेवाला एक प्रसिद्ध बरतन।

†वि०=पतील (पतला)।

पतीली—स्त्री० हिं० पतीला का स्त्री० अल्पा० रूप।

पतुका†—पु० [स० पात्र] [स्त्री० अल्पा० पतुकी] १. बडी हाँडी। मटका। उदा०—पतुकी धरी श्याम खिसाई रहे उत ग्वारि हसी मुख आँचल कै।—केशव। २ पतीला। (बुदे०)

पतुरिया—स्त्री० [स० पतिलि=स्त्री विशेष] १ वेश्या, विशेषत नाचने, गाने का पेशा करनेवाली वेश्या। पातुरी। २ दुश्चरित्रा और व्यभिचारिणी स्त्री। पुश्चली। (दे० पातुरी)

पतुली†—स्त्री० [देश०] कलाई मे पहनने का एक गहना। (अवध)

पतुही†—स्त्री० [हिं० पत्ता] मटर की वह हरी फली जिसमे पूरे तथा पुष्ट दाने न हो।

पतूखी†—स्त्री० =पताखी (पताखा का स्त्री० रूप)।

पतेना†—स्त्री० [?] हरे सुनहले रग की एक चिड़िया जिसकी गरदन और पेट नीला होता है। इसकी चोच नीचे की ओर झुकी हुई, नुकीली और लबी होती है।

पतोई—स्त्री० [देश०] ईख का रस खौलाते समय उसमे से निकलनेवाली मैली झाग।

पतोखर†—स्त्री० [स० हिं० पत्ता] वह ओषधि जो किसी वृक्ष, पौधे, तृण, पत्ते, फूल आदि के रूप मे हो। खर-बिरई।

पु० [स० ओषधिपति] चद्रमा।

पतोखरी—स्त्री० =पतोखा।

पतोखा—पु० [हिं० पत्ता] [स्त्री० अल्पा० पतोखी] १ पत्ते अथवा पत्तो का बना हुआ अजुली या कटोरे के आकार का पात्र। २ पत्तो का बना हुआ छाता। ३ एक प्रकार का बगला पक्षी। पतखा।

पतोखी—स्त्री० [हिं० पतोखा] १ एक पत्ते का बना हुआ छोटा दोना। २ पत्तो का बना हुआ छोटा छाता।

पतोरा—पु०=पत्योरा (एक तरह का पकवान)।

पतोहू (हू)—स्त्री० [स० पुत्रवधू, प्रा० पुत्तबहू] पुत्र की स्त्री। पुत्रवधू।

पतौआ†—पु०=पत्ता।

पतौखा (था)—पु० [स्त्री० अल्पा० पतौखी (थी)]=पतोखा।

पत्तग—पु० [स० पत्राग, पृषो० सिद्धि] पतग नामक लकडी। बक्कम।

पत्त†—पु० =पत्र।

पत्तन—पु० [स० √पत्+तनन्] १ छोटा नगर। कस्बा। २ मृदग।

पत्तन-आयुध—पु० [स० ष० त०] वे आयुध जिनसे नगर की रक्षा की जाती हो।

पत्तन-क्षेत्र—पु० [स० ष०त०] वह पत्तन या कस्बा जिसका शासन तथा व्यवस्था वहाँ के निर्वाचित लोग करते हो। (टाउन-एरिया)

पत्तन-पाल—पु० [स० पत्तन√पाल् (रक्षा)+णिच्+अण्] पत्तन या कस्बे का प्रधान शासक।

पत्तर—पु० [स० पत्र] धातु आदि का कागज के समान लचीला तथा पतला टुकडा।

†स्त्री०=पत्तल।

पत्तल—स्त्री० [स० पत्र, हिं० पत्ता] १ पलाश, महुए आदि के पत्तो को छोटी-छोटी सीकों की सहायता से जोडकर थाली के सदृश बनाया हुआ गोलाकार आधार।

कहा०—जिस पत्तल मे खाना, उसी मे छेद करना=अपने उपकारक, पालक, सरक्षक आदि का भी अपकार करना।

पद—एक पत्तल के खानेवाले=परस्पर घनिष्ठ सामाजिक सबध रखनेवाले। परस्पर रोटी-बेटी का व्यवहार करनेवाले। सजातीय। **जूठी पत्तल**=किसी की जूठी की हुई भोजन सामग्री। उच्छिष्ट।

मुहा०—**पत्तल खोलना**=जिस काम की प्रतिज्ञा की या शर्त रखी गई हो, उसके पूरे होने पर ही भोजन करना। (दे० नीचे 'पत्तल बाँधना') **पत्तल पड़ना**=भोजन के समय खानेवालों के लिए पत्तलें क्रम से बिछाई या रखी जाना। **पत्तल परसना**=(क) खानेवालों के सामने पत्तलें रखना। (ख) उक्त पत्तलों पर भोजन की सामग्री रखना। **पत्तल बाँधना**=यह प्रतिज्ञा करना या लगाना कि जब तक अमुक काम न हो जायगा, तब तक भोजन नहीं किया जायगा। (किसी को) **पत्तल में खाना**=(किसी के साथ) खान-पान का सबध करना या रखना। **पत्तल लगाना**=पत्तल परसना (दे० ऊपर)।

२ पत्तल पर परोसे हुए खाद्य पदार्थ।

क्रि० प्र०—लगाना।

३ उतना भोजन जितना एक साधारण आदमी करता हो। जैसे—जो खाने के लिए न आवे, उसके घर पत्तल भेज देना।

पत्ता—पु० [स० पत्र] [स्त्री० पत्ती] १ पेड-पौधो आदि के तनो, शाखाओं आदि मे लगनेवाले प्राय हरे रग के चिपटे लचीले अवयवो मे से हर एक जो हवा मे लहराता या हिलता-डुलता रहता है। पर्ण।

मुहा०—**पत्ता खड़कना**=(क) किसी प्रकार की गति आदि की आहट मिलना। (ख) किसी प्रकार की आशका या खटका होना। **पत्ता तक न हिलना**=हवा का इतना बद रहना या बिल्कुल न चलना कि वृक्षो

के पत्ते तक न हिल रहे हों। पत्तातोड़ भागना=जान बचाने या मुँह छिपाने के लिए बहुत तेजी से भागकर दूर निकल जाना। (फल आदि में) पत्ता लगना=पत्ते से सटे रहने के कारण फल मे दाग पड जाना या उसके कुछ अश सड जाना। पत्ता हो जाना=बहुत तेजी से भागकर अदृश्य या गायब हो जाना।

२. उक्त के आधार पर, चाट आदि वे वस्तुएँ जो पत्तों पर रखकर बेची जाती हैं। जैसे—एक पत्ता दही बड़ा इन्हे भी दो।

मुहा०—पत्ते चाटना=बाजारी चीजे खाना।

३ पत्ते के आकार का वह चिह्न जो कपडे, कागज आदि पर छापा, बनाया या काढ़ा जाता है। ४. कान मे पहनने का एक प्रकार का गहना जो बालियो मे लटकाया जाता है। ५ ताश की गड्डी मे का कोई एक कागज का खड। ६ सरकारी चलनसार नोट। जैसे—दस रुपए का पत्ता, सौ रुपए का पत्ता।

वि० पत्ते की तरह का बहुत पतला और हलका।

पत्ता-फेर—पु०=पटा-फेर।

पत्ति—पु०[स० √पद् (जाना)+क्तिन्]१ पैदल चलनेवाला व्यक्ति। २ पैदल सिपाही। प्यादा। ३. योद्धा। वीर। ४ नायक।

स्त्री० प्राचीन भारतीय सेना की एक इकाई जो सेनामुख की एक तिहाई होती थी।

पत्तिक—वि०[स० पत्ति+कन्] पैदल चलनेवाला।

पत्ति-काय—पु०[ष०त०]१. पैदल सेना। २ पैदल चलनेवाला सिपाही।

पत्तिगण—पु०=पत्ति-गणक।

पत्ति-गणक—पु०[ष०त०] प्राचीन भारत मे, वह सैनिक अधिकारी जो पत्ति अर्थात् पैदल सेना की गणना करता था।

पत्तिपाल—पु० [स० पत्ति√पाल् (रक्षा)+णिच्=अण्, ष० त०] पत्ति का नायक।

पत्ति-व्यूह—पु०[ष०त०] वह सैनिक व्यूह-रचना जिसमे आगे कवचधारी सैनिक हों और पीछे धनुर्धर।

पत्ति-सैन्य—पु०[कर्म०स०] दे० 'पत्ति-काय'।

पत्ती—स्त्री०[हि० पत्ता+ई (प्रत्य०)]१. पेड-पौधो का बहुत छोटा पत्ता। जैसे—मेंहदी, नीम या बेले की पत्ती। *२ भाँग नामक पौधे मे लगनेवाले छोटे-छोटे पत्ते जो नशीले होते है। (पूरब) *३ तमाकू के बडे-बडे पत्तो का विशेष प्रक्रिया से बनाया हुआ चूरा जिसे लोग पान आदि के साथ खाते हैं। (पूरब)४. फूल की पखडी। ५. लकडी, धातु आदि का छोटा टुकडा। ६. लोहे का तेज धार वाला वह छोटा पतला टुकडा जिसकी सहायता से दाढ़ी बनाई जाती है। (ब्लेड) ७ ताश का कोई पत्ता। ८ रोजगार, व्यवसाय आदि में होनेवाला साझे का अश। जैसे—इस व्यापार मे इनकी भी दो आना पत्ती है।

पत्तीदार—वि० [हि० पत्ती+फा० दार=रखनेवाला] १. (पौधा या वृक्ष) जिसमे पत्तियाँ हो। २. (व्यक्ति) जिसकी किसी व्यापार या सम्पत्ति मे पत्ती (भाग या हिस्सा हो)।

पत्तूर—पु० [स०√पत्+ऊर, नि० सिद्धि] १. शाति या शालिंच नामक शाक। २. जल-पीपल। ३. पाकर का पेड। ४. शमी का पेड़। ५. पतंग या बक्कम नामक वृक्ष की लकड़ी।

पत्थ—पुं० १.=पथ्य। २.=पथ।

पत्थर—पु० [स० प्रस्तर, प्रा० पत्थर] [वि० पथरीला, क्रि० पथराना] १. धातुओ से भिन्न वह कड़ा, ठोस और भारी भू-द्रव्य जो खानों के नीचे बनता है। भू-कम्प आदि के कारण यही भू-द्रव्य ऊपर उठकर पर्वतों का रूप धारण करता है। २ खानो मे से खोदकर या पर्वतो मे से काटकर निकाला हुआ उक्त भू-द्रव्य का कोई खड या पिंड।

पद—पत्थर का कलेजा, दिल या हृदय=अत्यन्त कठोर हृदय। किसी के कष्ट से न पसीजनेवाला दिल या हृदय। पत्थर का छापा=पुस्तकों आदि की एक प्रकार की छपाई जिसमे छापे जानेवाले लेख की एक प्रतिलिपि पत्थर पर उतारी जाती है और उसी पत्थर पर कागज रखकर छापते हैं। लीथो की छपाई। पत्थर की छाती=(क) ऐसा हृदय जो बहुत बड़े-बडे कष्ट भी सहज मे और चुपचाप सह लेता हो। (ख) 'दे० ऊपर पत्थर का कलेजा'। पत्थर कील कीर=ऐसी प्रतिज्ञा या बात, जो उसी प्रकार दृढ़ और स्थायी हो, जैसी पत्थर के ऊपर छेनी आदि से खीची हुई लकीर होती है।

मुहा०—पत्थर को (या में) जोंक लगाना=बिलकुल अनहोनी या असभव बात करना। ऐसा काम करना जो औरो के लिए असभव या बहुत अधिक कठिन हो। (शस्त्र आदि को) पत्थर चटाना=छुरी, कटार आदि की धार पत्थर पर घिसकर तेज करना। पत्थर तले हाथ आना या दबना=ऐसे सकट मे पडना या फँसना जिससे छूटने का कोई उपाय न सूझता हो। बुरी तरह फँस जाना। पत्थर तले से हाथ निकालना=बहुत बडे सकट या विकट स्थिति मे से किसी प्रकार बचकर निकलना। पत्थर निचोड़ना=(क) अनहोनी बात या असभव काम कर दिखाना। (ख) ऐसे व्यक्ति से कुछ प्राप्त कर लेना जिससे प्राप्त करना औरो के लिए बिलकुल असभव हो। पत्थर पिघलना या पसीजना=(क) बिलकुल अनहोनी या असभव बात होना। (ख) परम कठोर हृदय का भी द्रवित होना। पत्थर सा खींच या फेंक मारना=बहुत ही रुखाई से उत्तर देना या बात करना। पत्थर से सिर फोड़ना या मारना=असभव काम या बात के लिए प्रयत्न करना। व्यर्थ सिर खपाना।

३. सडका पर लगा हुआ वह पत्थर जिस पर वहाँ से विशिष्ट स्थान की दूरी अकित होती है। ४. ओला। बिनौला।

क्रि० प्र०—गिरना। पडना।

पद—पत्थर पड़े=चौपट हो जाय। नष्ट हो जाय, मारा जाय। ईश्वर का कोप पडे। (अभिशाप या गाली) जैसे—पत्थर पडे तुम्हारी इस करनी (या बुद्धि) पर।

मुहा०—(किसी चीज या बात पर) पत्थर पड़ना=बुरी तरह से चौपट या नष्ट-भ्रष्ट हो जाना। जैसे—तुम्हारी बुद्धि पर पत्थर पड गया है। पत्थर-पानी पड़ना=बहुत जोरो की वर्षा होना और उसके साथ ओले गिरना।

५. नीलम, पन्ना, लाल, हीरा आदि रत्न जो वस्तुत. बहुमूल्य पत्थर ही होते हैं। जवाहिर। ६ ऐसी चीज जो पत्थर की ही तरह कठोर, जड़, ठोस या भारी हो। जैसे—(क) यह गठरी क्या है, पत्थर है। (ख) तुम्हारा कलेजा क्या है, पत्थर है। ७ ऐसा अन्न आदि जो जल्दी गलता या पचता न हो।

अव्य० नाम को भी कुछ नही। बिलकुल नही। जैसे—वहाँ क्या रखा है, पत्थर!

पत्थर-कला—स्त्री० [हिं० पत्थर+कल] एक तरह की पुरानी चाल की बन्दूक जिसमे लगे हुए चकमक पत्थर की सहायता से बारूद दागा जाता था।

पत्थर-चटा—पु० [हिं० पत्थर+अनु० चट चट] एक प्रकार की घास जिसकी टहनियाँ नरम और पतली होती हैं।

पु० [हिं० पत्थर+चाटना] १ एक प्रकार का साँप जो प्राय. पत्थर चाटता हुआ दिखाई देता है। २ एक प्रकार की समुद्री मछली जो प्राय चट्टानो से चिपटी रहती है। ३ वह जो प्राय घर के अन्दर रहता हो और जल्दी घर से बाहर न निकलता हो। ४. वह जो बहुत बडा कजूस या मक्खीचूस हो।

पत्थर-चूर—पु० [हिं० पत्थर+चूर] एक तरह का पौधा।

पत्थर-फूल—पु० [हिं०पत्थर+फूल] दवा तथा मसाले के काम मे आनेवाला एक तरह का पौधा जो प्राय पथरीली भूमि मे होता है। छरीला। शिलापुष्प।

पत्थर-फोड़—पु० [हिं० पत्थर+फोडना] १ पत्थर तोडने का पेशा करनेवाला। सगतराश। २ छरीला या शैलाख्य नामक पौधा जो पत्थरो की सधियो मे उत्पन्न होता है। ३ दे० 'हुदहुद पक्षी'।

पत्थरबाज—वि० [हिं० पत्थर+फा० बाज] [भाव० पत्थरबाजी] पत्थर फेंक-फेंककर लोगो को मारनेवाला।

पु० वह जिसे ढेलवाँस मे ककड-पत्थर फेंकने का अभ्यास हो। ढेलवाह।

पत्थरबाजी—स्त्री० [हिं० पत्थरबाज] दूसरो पर पत्थर फेंकने की क्रिया या भाव। ढेलेबाजी।

पत्थल†—पु० =पत्थर।

पत्नी—स्त्री० [सं० पति+ङीप्, नुक्] किसी पुरुष के सबध के विचार से वह स्त्री जिसके साथ उस पुरुष का विधिवत् पाणि-ग्रहण या विवाह हुआ हो। भार्या। जोरू।

पत्नी-व्रत—पु० [सं० ष० त०] पत्नी के अतिरिक्त अन्य किसी स्त्री से गमन न करने का व्रत या सकल्प।

पत्नीव्रती (तिन्)—वि० [सं० पत्नीव्रत+इनि] जिसने पत्नी-व्रत धारण किया हो, अथवा जो पत्नी-व्रत का पालन करता हो।

पत्नी-शाला—स्त्री० [सं० ष०त०] यज्ञ मे वह गृह जो पत्नी के लिए बनाया जाता था। यह यज्ञशाला के पश्चिम की ओर होता था।

पत्य—पु० [सं० पति+यत्] पति होने की अवस्था, धर्म या भाव। जैसे—पातिव्रत्य।

पत्याना—स०=पतियाना।

पत्यारा वि०, पु०=पतियारा।

पत्यारी—स्त्री० [सं० पक्ति] पक्ति। कतार।

पत्योरा—पुं० [हिं० पत्ता+और (प्रत्य०)] अब्बू के पत्ते का रिकवँछ।

पत्रंग—पु० [सं० पत्र-अग, ष० त०, शक० पररूप] पतग नाम की लकड़ी या पेड। बक्कम।

पत्र—पु० [सं०√पत् (गिरना)+ष्ट्रन्] १ वृक्ष का पत्ता। पत्ती। पर्ण। २ वह कागज जिस पर किसी को भेजने के लिए कोई सदेश या समाचार लिखा हो। खत। चिट्ठी।

विशेष—प्राचीन काल मे, जब कागज नही होता था, सदेश, समाचार आदि प्राय. वृक्षो के बडे पत्तो पर ही लिखकर भेजे जाते थे, इसीलिए यह शब्द अब खत या चिट्ठी का वाचक हो गया है।

३ वह कागज या धातु-पट जिस पर विशेष व्यवहार के प्रमाण-स्वरूप कुछ लिखा गया हो। जैसे—दान-पत्र, प्रतिज्ञा-पत्र आदि। ४. वह लेख जो किसी व्यवहार या घटना के प्रमाण-स्वरूप लिखा गया हो। कोई पट्टा या दस्तावेज। ५ समाचार-पत्र। अखबार। ६ समाचार-पत्रो या सामयिक पत्रो का वर्ग या समूह। (प्रेस) ७ पुस्तक आदि का पृष्ठ। पन्ना। ८ धातु आदि का पत्तर। जैसे—स्वर्ण-पत्र। ९. पक्षियो का वह पर जो तीर मे बाँधा या लगाया जाता है। पख। १० सौदर्य-वृद्धि के लिए रगो, सुगधित द्रव्यो आदि से बनाई जानेवाली आकृतियाँ या अकन। ११ तेजपात। १२ पक्षी। चिड़िया। १३ वाहन। सवारी। १४ छुरी, तलवार आदि का]ल।

†पु० [सं० पात्र] बरतन। उदा०—ऊँधा पत्र बुदबुद जल आकृति।—प्रिथीराज।

पत्रक—पु० [सं० पत्र+कन्] १ पत्ता। २ पत्तियो की शृखला। पत्रावली। ३ शालि नामक साग। ४ तेजपत्ता। ५ वह पत्र जिस पर स्मृति के लिए सूचना आदि के रूप मे कोई बात लिखी हो। स्मृति-पत्र। (मेमो, नोट)

वि० १ पत्र-सबधी। २ पत्र या कागज का बना हुआ या पत्र के रूप मे होनेवाला। जैसे—पत्रक-धन।

पत्रक-धन—पु० [सं० मध्य० स०] निश्चित मान का वह धन जो छपे हुए कागज या पत्र अर्थात् धन-पत्र के रूप मे हो। (पेपर मनी)

पत्र-कर्तक—पु० [सं० ष० त०] उपकरण जिससे कागज काटे जाते हैं। (पेपर कटर)

पत्रकार—पु० [सं० पत्र√कृ (करना)+अण्] वह व्यक्ति जो समाचार पत्रो को नित्य नये समाचारो की सूचना देता, उन पर टीका-टिप्पणी करता अथवा दूसरा द्वारा भेजे हुए समाचारो को सम्पादित करता हो। (जरनलिस्ट)

पत्रकारिता—स्त्री० [सं० पत्र√कृ+णिनि+तल्+टाप्] १ पत्रकार होने की अवस्था या भाव। २ पत्रकार का काम। ३ वह विद्या जिसमे पत्रकारो के कार्यों, कर्तव्यों, उद्देश्यों आदि का विवेचन होता है। (जरनलिज्म)

पत्र-कारी†—स्त्री०=पत्रकारिता।

पत्र-काहला—स्त्री० [सं० ष० त०] पक्षी के परो के फडफडाने अथवा पत्तो के हिलने से होनेवाला शब्द।

पत्र-कृच्छ्र—पु० [मध्य० स०] एक व्रत जिसमे पत्तो का काढ़ा पीकर रहना पडता है।

पत्र-गुप्त—पु० [सं० ब० स०] तिधारा। थूहर। त्रिकटक।

पत्र-घना—स्त्री० [ब० स०, टाप्] सातला नाम का पौधा।

पत्रघ्न [स्त्री० [सं० पत्र√हन् (हिंसा)+टक्] सेहुँड। थूहर।

पत्रज—पु० [सं० पत्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड] तेजपत्ता।

पत्र-जात—पु० [ष० त०] १ किसी सस्था, सभा अथवा किसी विषय

से संबंध रखनेवाले सभी आवश्यक कागज। कागज-पत्तर। (पेपर्स) २. इस प्रकार के पत्रों की नत्थी। (फाइल)

पत्रणा—स्त्री० [सं० पत्र√नम् (झुकना)+ड, णत्व, टाप्] १. पत्र-रचना। २. बाण में पंख लगाना।

पत्र-तंडुली—स्त्री० [सं० पत्रतंडुल, ब० स०, ङीष्] यवतिक्ता लता।

पत्र-तरु—पुं० [मध्य० स०] दुर्गंध खैर।

पत्र-दारक—पुं० [सं०√दृ (विदारण)+णिच्+ण्वुल्—अक, पत्र-दारक, ष० त०] लकड़ी चीरने का आरा।

पत्र-द्रुम—पुं० [मध्य० स०] ताड़ का पेड़।

पत्र-नाडिका—स्त्री० [ष० त०] पत्ते की नस।

पत्र-पंजी—स्त्री० [ष० त०] वह पंजी या रजिस्टर जिसमें आनेवाले पत्रों और उनके दिये जानेवाले उत्तरों का विवरण रखा जाता है। (लेटरबुक)

पत्र-परशु—पुं० [सं० त०] सुनारों की छेनी।

पत्र-पाल—पुं० [ब० स०] १ बड़ी छुरी। २ दे० 'डाकपाल'।

पत्रपाली—स्त्री० [सं० पत्रपाल+ङीष्] १ बाण का पिछला भाग। २ कैंची।

पत्र-पाश्या—स्त्री० [ष० त०] पुरानी चाल का एक तरह का आभूषण जो स्त्रियाँ माथे पर बाँधती थीं।

पत्र-पिशाचिका—स्त्री० [सुप्सुपा समास] पत्तियों की बनी हुई छतरी।

पत्र-पुट—पुं० [ष० त०] पत्ते का बना हुआ पात्र। दोना।

पत्र-पुरा—स्त्री० [सं०] पुरानी चाल की एक तरह की नाव जिसकी लम्बाई ९६ हाथ और चौड़ाई तथा ऊँचाई ४८-४८ हाथ होती थी।

पत्र-पुष्प—पुं० [ब० स०] १ लाल तुलसी। २ एक विशेष प्रकार की तुलसी जिसकी पत्तियाँ छोटी-छोटी होती हैं। ३ सत्कार या पूजा की बहुत ही साधारण सामग्री। ४. सामान्य या तुच्छ उपहार।

पत्र-पुष्पक—पुं० [सं० पत्रपुष्प+कन्] भोजपत्र।

पत्र-पुष्पा—स्त्री० [सं० पत्रपुष्प+टाप्] १ तुलसी। २. छोटी पत्तियों वाली तुलसी।

पत्रपेटिका—स्त्री० =पत्र-पेटी।

पत्र-पेटी—स्त्री० [ष० त०] १ पत्र रखने की पेटी। २. डाक-विभाग द्वारा विभिन्न स्थानों पर स्थापित किया हुआ वह बड़ा डिब्बा जिसमें बाहर भेजे जानेवाले पत्र छोड़े जाते हैं। ३ उक्त के आधार पर वह डिब्बा जो किसी के घर पर लगा होता अथवा जिस पर किसी का नाम लिखा होता है और जिसमें डाकिये आदि उस विशिष्ट व्यक्ति की डाक डाल जाते हैं। (लेटरबाक्स, उक्त तीनों अर्थों में)

पत्र-बंध—पुं० [ब० स०] १ फूलों से बाँधना अथवा सजाना। २ फूलों से किया जानेवाला एक तरह का शृंगार।

पत्र-भंग—पुं० [ब० स०] पत्तियाँ, फूलों आदि के आकार का वह रेखांकन जो विशिष्ट अवसरों पर स्त्रियों के मुख की शोभा बढ़ाने के लिए कस्तूरी, केसर आदि के लेप से किया जाता है।

पत्र-भंगी—स्त्री० [सं० पत्रभंग+ङीष्] दे० 'पत्रभंग'।

पत्र-भद्र—पुं० [ब० स०] एक प्रकार का पौधा।

पत्र-मंजरी—स्त्री० [ष० त०] पत्रयुक्त मंजरी के आकार का एक तरह का तिलक।

पत्र-माल—पुं० [ब० स०] बेंत।

पत्र-मित्र—पुं० [मध्य० स०] एक दूसरे से दूर रहनेवाले ऐसे व्यक्ति जिनका कभी साक्षात्कार तो न हुआ हो, फिर भी जो केवल पत्र-व्यवहार के द्वारा आपस में मित्र बन गये हों। (पेन फ्रेंड)

पत्र-यौवन—पुं० [ब० स०] नया और कोमल पत्ता। किसलय।

पत्र-रचना—स्त्री० पत्रभंग। (दे०)

पत्र-रथ—पुं० [ब० स०] पक्षी।

पत्र-रेखा—स्त्री० पत्रभंग। (दे०)

पत्र-लता—स्त्री० [मध्य० स०] १. सजावट के लिए बनाई जानेवाली फूल-पत्तियाँ या बेल-बूटे। पत्रावली। २ पत्रभंग। साटी।

पत्र-लवण—पुं० [मध्य० स०] एक प्रकार का नमक जो एरंड, मोरवा, अडूसा, कुंज, अमिलतास और चीते के हरे पत्तों से निकाला जाता है।

पत्र-लेखा—स्त्री० [सं०] १ =पत्रभंग। २ चित्रों में सजावट के लिए फूल-पत्तियाँ या बेल-बूटे आदि अंकित करना।

पत्र-वल्लरी—स्त्री० [मध्य० स०] पत्रभंग। (दे०)

पत्र-वल्ली—स्त्री० [ष० त० या मध्य० स०] १ शकरजटा। २ तांबूल। पान। ३ पलाशी नाम की लता। ४ पर्ण-लता।

पत्र-वाज—पुं० [ब० स०] १ पक्षी। चिड़िया। २ तीर। बाण।

पत्रवाह—पुं० [सं० पत्र√वह् (ढोना)+अण्] १ वह जो पत्र लेकर कहीं जाय। पत्रवाहक। २ वह सरकारी कर्मचारी जिसका काम पत्र आदि लोगों के यहाँ पहुँचाना होता है। चिट्ठीरसाँ। डाकिया। ३ चिड़िया। पक्षी। ४. तीर। बाण।

पत्र-वाहक—वि० [ष० त०] पत्र ले जानेवाला।

पुं० वह व्यक्ति जिसके हाथ कोई पत्र किसी के पास भेजा जाय।

पत्रवाह-पंजी—स्त्री० [ष० त०] वह पंजी जिसमें पत्रवाहक द्वारा भेजे हुए पत्रों का विवरण होता है और जिस पर पत्र पानेवाले व्यक्ति के हस्ताक्षर भी कराये जाते हैं। (पियन बुक)

पत्र-विशेषक—पुं० [ब० स०, कप्] १ तिलक। २ पत्रभंग। साटी।

पत्र-विष—पुं० [मध्य० स०] पत्तों से निकलनेवाला विष।

पत्र-वृश्चिक—पुं० [उपमि० स०] एक प्रकार का उड़नेवाला छोटा कीड़ा जिसके काटने से बड़ी जलन होती है। पतबिछिया। पनबिछिया।

पत्र-वेष्ट—स्त्री० [ब० स०] एक तरह का करनफूल।

पत्र-व्यवहार—पुं० [ष० त०] पत्राचार। (दे०)

पत्र-शबर—पुं० [मध्य० स०] प्राचीन काल की एक अनार्य जाति।

पत्र-शाक—पुं० [मध्य० स०] वह पौधा जिसके पत्तों का साग बनाया जाता हो। जैसे—चौलाई, पालक आदि।

पत्र-शिरा—स्त्री० [ष० त०] पत्ते की नस।

पत्र-शृंगी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] मूसाकानी लता।

पत्र-श्रेणी—स्त्री० [ष० त०] १ पत्तों की श्रेणी। पत्रावली। २. मूसाकानी।

पत्र-श्रेष्ठ—पुं० [सं० त०] बेल का पत्ता। बिल्वपत्र। [ब० स०] बिल्ववृक्ष।

पत्र-साहित्य—पुं० [सं०] ऐसा साहित्य जिसमें किसी बड़े आदमी के लिखे हुए पत्रों (चिट्ठियों आदि) का संग्रह हो।

पत्र-सूची—स्त्री० [ष० त०] १ काँटा। कंटक। २ बाहर भेजे जानेवाले अथवा बाहर से आये हुए पत्रों की सूची।

पत्रांग—पुं॰ [पत्र-अग, ब॰ स॰] १. लाल चन्दन। २. पतग या बक्कम नाम का वृक्ष। ३. भोजपत्र। ४ कमलगट्टा।

पत्रांगुलि—स्त्री॰ [पत्र-अगुलि, ब॰ स॰] केसर, चन्दन आदि के लेप से किसी के ललाट, मुख, कंठ आदि पर बनाये जानेवाले चिह्न या अलकरण।

पत्रांजन—पु॰ [पत्र-अजन, ष॰ त॰] स्याही।

पत्रा—पु॰ [स॰ पत्र] १. तिथिपत्र। २. पुस्तक का पन्ना। पृष्ठ।

पत्राख्य—पु॰ [पत्र-आख्या, ब॰ स॰] १. तेजपात। २ तालीशपत्र।

पत्राचार—पु॰ [पत्र-आचार, ष॰ त॰] १ परस्पर एक दूसरे को पत्र लिखना, अथवा आये हुए पत्रों के उत्तर देना। २. इस प्रकार लिखे हुए पत्र।

पत्राढ्य—पु॰ [पत्र-आढ्य, तृ॰ त॰] १. पीपलामूल। २ पर्वत नामक तृण। ३ लाल चन्दन। ४. पतग। बक्कम। ५ नरसल। ६. तालीशपत्र।

पत्रान्य—पु॰ [स॰ पत्रग, पृषो॰ सिद्धि] १ पतग। बक्कम। २ लाल चन्दन।

पत्रालय—पु॰ [पत्र-आलय, ष॰ त॰] डाकखाना। डाकघर।

पत्रालाप—पु॰ [पत्र-आलाप, तृ॰ त॰] पत्राचार (दे॰)।

पत्राली—स्त्री॰ [पत्र-आली, ष॰ त॰] १. पत्रों की शृखला। २. एक आकार के कटे हुए कोरे या निरक कागज की वह गड्डी जिसके पत्रों पर चिट्ठियाँ लिखी जाती है। (पैड)

पत्रालु—पु॰ [स॰ पत्र+आलुच्] १ कासालु। २. इक्षुदर्भ।

पत्रावली—स्त्री॰ [पत्र-आवली, ष॰ त॰] १. सजावट के लिए बनाई जानेवाली फूल-पत्तियाँ या बेल-बूटे आदि। पत्र-लता। २. सुगधित द्रव्यों और रगों से चेहरे पर की जानेवाली पत्र-रचना। (देखें) ३ गेरू।

पत्राहार—पु॰ [पत्र-आहार, ष॰त॰] पत्तों का किया जानेवाला भोजन।

पत्राहारी (रिन्)—वि॰ [स॰ पत्राहार+इनि] वृक्षों के पत्ते खाकर ही रहनेवाला।

पत्रिका—स्त्री॰ [स॰ पत्री+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. चिट्ठी। खत। पत्र। २. कोई छोटा लेख। जैसे—लग्न-पत्रिका। ३ जन्मपत्री। ४ प्राय नियमित रूप से निकलनेवाली ऐसी पुस्तिका जिसमे विभिन्न विषयों पर लेख, कहानियाँ, कविताएँ आदि होती है। जैसे—सम्मेलन पत्रिका।

पत्रिकाख्य—पु॰ [स॰ पत्रिका-आख्या, ब॰ स॰] एक प्रकार का कपूर। पानकपूर।

पत्रिणी—स्त्री॰ [स॰ पत्र+इनि, ङीष्] बडा पत्ता।

पत्री (त्रिन्)—वि॰ [स॰ पत्र+इनि] जिसमे पत्ते हों। पत्रयुक्त। पत्तावाला।

पु॰ १ बाण। तीर। २. चिडिया। पक्षी। ३ बाज पक्षी। ४ पेड़। वृक्ष। ५ पर्वत। पहाड। ६ ताड का पेड। ७ रथ का सवार। रथी।

स्त्री॰ [स॰ पत्र+ङीप्] १ चिट्ठी। खत। २ कोई छोटा लेख। पत्रिका। जैसे—जन्मपत्री, लग्नपत्री। ३ पत्तों का बना हुआ दोना। ४. धमासा। ५. खैर का पेड़। ६ ताड़ का पेड। ७. महातेज पत्र।

स्त्री॰ [हि॰ पत्तर] हाथ मे पहनने का जहाँगीरी नाम का गहना।

पत्रोपस्कर—पु॰ [स॰ पत्र-उपस्कर, ब॰ स॰] कसौंदी। कासमर्द।

पत्रोर्ण—पु॰ [स॰ पत्र-ऊर्ण मध्य॰ स॰,+अच्] १: रेशमी वस्त्र। २ सोनापाठा।

पत्रोल्लास—पु॰ [सं॰ पत्र-उल्लास, ष॰ त॰] अँखुआ। कोपल।

पथ—पु॰ [स॰√पथ् (गति)+क] १ मार्ग। रास्ता। राह। २. कार्य-सम्पादन, आचार, व्यवहार आदि का निश्चित और प्रकाशित रीति। ३ ऐसा द्वार या साधन जिसमे होकर कुछ आगे बढ़ता हो। जैसे—कर्ण-पथ, दृष्टि-पथ।

†पु॰=पथ्य।

पथक—वि॰ [स॰ पथ+कन्] पथ या मार्ग बतलानेवाला। पथ-दर्शक।

पु॰ प्रांत। देश।

प॰=पथिक।

पथ-कर—पु॰ [ष॰ त॰] =मार्ग-कर।

पथ-कल्पना—पु॰ [ब॰ स॰] जादू के खेल। बाजीगरी।

पथगामी (मिन्)—पु॰ [स॰ पथ√गम् (जाना)+णिनि] पथ या रास्ते पर चलनेवाला।

पथचारी (रिन्)—पु॰ [स॰ पथ√चर् (गति)+णिनि] पथिक।

पथ-दर्शक—पु॰ [ष॰ त॰] रास्ता दिखानेवाला। मार्ग-दर्शक।

पथ-दर्शन—पु॰ दे॰ 'मार्ग-दर्शन'।

पथना—अ॰ [हि॰ पाथना का अ॰ रूप] पाथा जाना।

स॰ १ खूब मारना-पीटना। २. दे॰ 'पाथना'।

वि॰=पथेरा (पाथनेवाला)।

पथ-प्रदर्शक—पु॰ [ष॰ त॰] दे॰ 'मार्गदर्शक'।

पथर—पु॰ [हि॰ पत्थर] 'पत्थर' का वह सक्षिप्त रूप जो उसे समस्त पदों के आरभ मे लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पथरकला, पथर-चटा।

पथर-कला—स्त्री॰ [?] पुरानी चाल की एक तरह की बदूक जिसमे लगे हुए चकमक पत्थर की सहायता से राग उत्पन्न कर उसमे का बारूद जलाया जाता था।

पथर-चटा—पु॰ [?] पखान भेद-नाम की वनस्पति।

पथरना—स॰ [हि॰ पत्थर+ना (प्रत्य॰)] औजारों को पत्थर पर रगडकर तेज करना।

†अ॰ पत्थर की तरह कठोर तथा ठोस होना।

पथराना—अ॰ [हि॰ पत्थर+आना (प्रत्य॰)] १ सूखकर पत्थर की तरह कडा हो जाना। पत्थर की तरह कठोर तथा ठोस होना। २. सूखकर निष्प्रभ या शुष्क हो जाना। ३ पत्थर की तरह स्तब्ध और स्थिर हो जाना। जैसे—आँखें पथराना।

स॰ १ ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज पत्थर की तरह कठोर, जड़ या नीरस हो जाय। २ किसी को आघात पहुँचाने के लिए उस पर पत्थर के टुकडे आदि फेंकना।

पथराव—पु॰ [हि॰ पथराव-पत्थर की तरह होना] पत्थर की तरह कठोर और स्तब्ध होने की क्रिया, दशा या भाव। जैसे—आँखों का पथराव।

पु० [हिं० पथराना=पत्थरो से मारना] किसी पर बार-बार पत्थर के टुकड़े फेंकते रहने की क्रिया। जैसे—वह उसकी कामनाओ के शीश-महल पर इसी प्रकार पथराव करती रही।

पथरी—स्त्री० [हिं० पत्थर+ई (प्रत्य०)] १. पत्थर का बना हुआ कटोरी या कटोरे के आकार का पात्र। २ पत्थर का वह टुकडा जिस पर रगड़कर छुरे आदि की धार तेज करते है। सिल्ली। ३. कुरड पत्थर जिसके चूर्ण को लाख आदि मे मिलाकर औजार तेज करने की सान बनाते है। ४. चकमक पत्थर। ५ एक प्रकार का रोग जिसमे मत्राशय मे पत्थर के टुकडो के समान कोई चीज उत्पन्न हो जाती है, जिसके फलस्वरूप पेशाब रुक-रुककर और बहुत कष्ट से होता है और कभी कभी बन्द भी हो जाता है। ६. पक्षियो के पेट का वह पिछला भाग जिसमे अनाज आदि के बहुत कडे दाने जाकर पचते है। ७. एक प्रकार की मछली। ८ जायफल की जाति का एक वृक्ष जो कोकण आदि के जगलो मे होता है।

पथरीला—वि० [हिं० पत्थर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० पथरीली] १. जिस जमीन मे पत्थर के कण मिले हो। २ जिसमे पत्थर हो, अथवा जो पत्थर या पत्थरो से बना हो। जैसे—पथरीला रास्ता। ३. पत्थर के समान कठोर, ठोस अथवा शुष्क।

पथरौटा—पु० [हिं० पत्थर+औटा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० पथरौटी] पत्थर का बना हुआ कटोरे की तरह का एक प्रकार का बड़ा पात्र। बडी पथरी।

पथरौड़ा—पु० [हिं० पाथना] वह स्थान जहाँ पर गोबर (अथवा कडे) पाथे जाते हो।

पथ-शुल्क—पु० पथ-कर (दे०)।

पथ-सुन्दर—पु० [स० स० त०] एक प्रकार का पौधा।

पथस्थ—वि० [स० पथ√स्था (ठहरना)+क] जो पथ या मार्ग मे स्थित हो। मार्गस्थ।

पथारना†—स० [स० प्रस्तार] =पसारना।

†अ०=पथराना।

पथिआ†—स्त्री० [?] टोकरी।

पथिक—पु० [स० पथिन+कन्] १ वह जो पथ पर चल रहा हो। बटोही। राही। २. वह जो किसी लक्ष्य तक पहुँचने के लिए प्रयत्नशील हो।

पथिक-चत्वर—पु० [च० त०] पथिको के बैठकर सुस्ताने के लिए रास्ते मे बना हुआ चबूतरा।

पथिका—स्त्री० [स० पथिक+टाप्] १. मुनक्का। २ एक प्रकार की शराब जो पहले मुनक्के या अगूर से बनाई जाती थी।

पथिकाश्रय—पु० [स० पथिक-आश्रय, ष० त०] १. विशेष रूप से निर्मित पथिको के लिए आश्रय-स्थान। २ धर्मशाला।

पथिकृत्—पु० [स० पथिन्√कृ (करना)+क्विप्, तुक्] मार्गदर्शक।

पथिचक्र—पु० [स० √पथ्+इन्, पथि-चक्र, कर्म० स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जिससे यात्रा का शुभ और अशुभ फल जाना जाता है।

पथि-देय—पु० [स० अलुक् स०] पथ-कर (दे०)।

पथिद्रुम—पु० [स० पथि,√पथ्,+इन, पथिद्रुम, कर्म०स०] खैर का पेड़।

पथि-प्रिय—पु० [स० अलुक् स०] साथ यात्रा करनेवाला मित्र। हमराही। हमसफर।

पथिया—स्त्री० [?] टोकरी।

पथिल—पु० [स०√पथ्+इलच्] पथिक।

पथि-वाहक—वि० [स० अलुक् स०] निष्ठुर। निर्दय।

पु० १. शिकारी। बहेलिया। २ बोझ ढोनेवाला मजदूर। मोटिया।

पथिस्थ—वि० [स० पथि√स्था+क] जो पथ पर चल रहा हो। जाता हुआ।

पथी (थिन्)—पु० [स० पथ+इनि] १ रास्ता चलनेवाला मुसाफिर। यात्री। पथिक। २ मार्ग। रास्ता। ३ यात्रा। ४ मत। सम्प्रदाय। ५ एक नरक का नाम।

पथीय—वि० [स० पथ+छ—ईय] १. पथ-सम्बन्धी। पथ या मार्ग का। २. किसी मत या सम्प्रदाय से सबध रखनेवाला। पथी।

पथु*—पु०=पथ।

पथेय*—पु०=पाथेय।

पथेरा—वि० [हिं० पाथना+एरा (प्रत्य०)] पाथनेवाला।

पुं० १. गोबर को पाथकर कडे बनानेवाला व्यक्ति। २. वह व्यक्ति जो भट्ठे मे पकाने के लिए कच्ची ईंटें ढालता हो। ३ कुम्हार।

पथौड़ा—पु०=पथौरा।

पथौरा†—पु०=पथौडा।

†पु० महाराज पृथ्वीराज चौहान का एक नाम जो उर्दू-फारसी के ग्रथो मे मिलता है।

पत्थार†—पु०=विस्तार।

पथ्य—वि० [स० पथिन्+यत्] १ पथ-सबधी। पथ का। २ (आहार, व्यवहार) जो स्वास्थ्य विशेषत: रोगी की स्वास्थ्य-रक्षा के विचार से आवश्यक या उचित हो। ३ गुणकारी। लाभदायक। हितकर। उदा० —पूत पथ्य गुरु आयसु अहई। —तुलसी। ४ अनुकूल। मुआफिक।

पु० १ वह हलका भोजन जो रोगी अथवा अस्वस्थ व्यक्ति को दिया जाय। २. स्वास्थ्य के लिए हितकर खान-पान और रहन-सहन। मुहा०—**पथ्य से रहना**=सयम मे रहना। परहेज से रहना। ३ सेधा नमक। ४. छोटी हर्रे। ५. कल्याण। मगल।

पथ्यका—स्त्री० [स० पथ्य+कन्+टाप्] मेथी।

पथ्य-शाक—पु० [स० कर्म० स०] चौलाई का साग।

पथ्या—स्त्री० [स० पथ्य+टाप्] १ हरीतकी। हड़। २. बन-ककोडा। ३. सेंधनी। ४ चिरमिटा। ५ गगा। ६. आर्या छन्द का एक भेद जिसके कई उपभेद है।

पथ्यादिक्वाथ—पु० [स० पथ्या-आदि ब०, स० पथ्यादिक्वाथ कर्म० स०] त्रिफला, गुड़ुच, हलदी, चिरायते, नीम आदि का काढा जो पाचक माना जाता है।

पथ्यापक्ति—पु० [स० ब० स०] पाँच चरणोवाला वैदिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ-आठ वर्ण होते है।

पथ्यापथ्य—पु० [स० पथ्य-अपथ्य, द्व० स०] पथ्य और अपथ्य। रोग की अवस्था मे हितकर और अहितकर चीजें। जैसे—तुम्हे पथ्यापथ्य का सदा ध्यान रखना चाहिए।

पथ्याशन—पु० [स० पथ्य-अशन, कर्म० स०] पाथेय। सबल।

पथ्याशी (शिन्)—वि० [स० पथ्य√अश् (खाना)+णिनि] जो पथ्य (रोग के अनुकूल भोजन) खाकर रहता हो।

[**पद**—पु० [स०√पद् (गति)+अच्] १ कदम। पाँव पैर।
मुहा०—पद टेकना=किसी जगह पैर जमाकर रखना। **(किसी के आगे) पद टेकना**=दीनतापूर्वक घुटने टेककर बैठना। उदा०—भरद्वाज राखे पद टेकी।—तुलसी।
२ चलते समय दो पैरों के बीच में होनेवाली दूरी। डग। पग। ३ चलने के समय पैरों से बननेवाले चिह्न। ४. चिह्न। निशान। ५ जगह। स्थान। ६ प्रदेश। जैसे—जन-पद। ७ त्राण। रक्षा। ८. निर्वाण। मोक्ष। ९ चीज। वस्तु। १० आवाज। शब्द। ११ किसी चीज का चौथाई अंश या भाग। पाद। १२ छंद, श्लोक आदि का चतुर्थांश। चरण। १३ एक प्रकार की पुरानी नाप। १४. शतरंज आदि की बिसात में बना हुआ चौकोर खाना। १५ व्याकरण में, किसी वाक्य में आया हुआ वह शब्द या शब्द-वर्ग जिसका कुछ अर्थ हो। वाक्य का अंश या खंड। १६ वह स्थान जिस पर रहकर कोई विशिष्ट कार्य करता हो। ओहदा। जगह। जैसे—उन्हें भी कार्यालय में एक पद मिल गया। १७ सम्मानजनक उपाधि या स्थान। १८ ऐसा गीत या भजन जिसमें ईश्वर की महिमा आदि वर्णित हो। जैसे—तुलसी या सूर के पद। १८ पुराणानुसार दान के लिए जूते, छाते, कपड़े, अँगूठी, आसन, बरतन और भोजन का समूह। जैसे—विवाह के समय ब्राह्मणों को तीन पद दिये जाते है।

पद-कंज—पु० [उपमि० स०] ऐसे चरण जो कमल के समान सुन्दर अथवा कमल के रूप में हो।

पदक—पु० [स० पद+वुन्—अक] १ गहने के रूप में पहना जानेवाला वह धातु-खंड जिस पर किसी देवता के चरण-चिह्न अंकित हो। २ पूजन आदि के लिए बनाया हुआ किसी देवता का चरण-चिह्न। ३ वह जो वेदों के पद-पाठ का ज्ञाता हो। ४ एक प्राचीन गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। ५ आजकल, सोने-चाँदी या किसी और धातु का बना हुआ वह गोल या चौकोर टुकड़ा जो किसी व्यक्ति अथवा समाज को कोई विशिष्ट योग्यतापूर्ण काय करने पर उसका सम्मान करने के लिए दिया जाता है। तमगा। (मेडल)

पदकधारी (रिन्) पु० [स० पदक√धृ (धारण)+णिनि] वह जिसे पदक मिला हो।

पद-कमल—पु० =पद-कंज।

पद-क्रम—पु० [ष० त०] १. चलना। डग भरना। २ वेद-मंत्रो के पदो को एक दूसरे से अलग करने का कार्य।

पदग—वि० [स० पद√गम् (जाना)+ड] पैदल चलनेवाला।
पु० पैदल चलनेवाला सिपाही। प्यादा।

पद-गति—स्त्री० [ष० त०] चलने का ढंग।

पद-ग्रहीता (तृ)—वि० [ष० त०] (वह) जो किसी का पद ग्रहण करे और इस प्रकार उसे अपने पद से कुछ समय के लिए हटने का अवसर दे। (रिलीविंग) जैसे—पद-ग्रहीता अधिकारी।

पद-चतुरूर्ध्व—पु० [स० ?] एक तरह का विषम वर्णवृत्त जिसके पहले चरण में ८, दूसरे में १२, तीसरे में १६ और चौथे में २० वर्ण होते है। इसमें गुरु, लघु का नियम नही होता।

पद-चर—वि० [स० पद√चर् (गति)+ट] १ पैरो से चलनेवाला। २ पैदल चलनेवाला।
पु० पैदल। प्यादा।

पद-चार (रिन्)—पु० [तृ० त०] १ पैदल चलना। २ घूमना-फिरना। टहलना।

पदचारी (रिन्)—वि० [स० पद√चर्+णिनि] [स्त्री० पदचारिणी] पैदल चलनेवाला।

पद-चिह्न—पु० [ष० त०] १ जमीन पर पड़नेवाली पैर की छाप। २ दूसरों विशेषत बड़ो द्वारा बतलाये हुए आदर्श अथवा कार्य करने के ढंग। जैसे—भारत को गाधी जी के पद-चिह्नो का अनुसरण करना चाहिए।

पदच्छेद—पु० [ष० त०] व्याकरण में प्रत्येक पद को नियमो के अनुसार अलग-अलग करने की क्रिया।

पद-च्युत—वि० [ष० त०] [भाव० पद-च्युति] १ जो अपने पद से हट चुका हो अथवा हटा दिया गया हो। २ नौकरी में बरखास्त किया हुआ। (डिस्मिस्ड)

पद-च्युति—स्त्री० [ष० त०] अपने पद से हटने या गिरने की अवस्था या भाव। पदच्युत होना। (डिसमिसल)

पदज—वि० [स० पद√जन् (उत्पत्ति)+ड] जो पैर से उत्पन्न हुआ हो।
पु० १ शूद्र। २ पैर की उँगली या उंगलियाँ।

पद-जात—वि० [ष० त०] पैरों से उत्पन्न।
पु० परस्पर संबद्ध पदों और वाक्यों का समूह।

पद-तल—पु० [ष० त०] पैर का तलवा।

पद-त्याग—पु० [ष० त०] अपने पद से त्याग-पत्र देकर हट जाना।

पदत्र—पु० [स० पद√त्रा (रक्षा)+क] १ ढालुआँ स्थान। २ किले आदि की ऐसी दीवार जो नीचे अधिक चौड़ी या मोटी और ऊपर कम चौड़ी या पतली हो। (टैलस)

पद-त्राण—पु० [ब०स०] पैरों की रक्षा करनेवाला अर्थात् जूता।

पद-त्रान—पु०=पद-त्राण।

पद-त्वरा—स्त्री० [ब०स०] जूता।

पद-दलित—वि० [तृ० त०] १ पैरों से कुचला या रौंदा हुआ। २ (व्यक्ति या जाति) जिसे समाज ने दबाकर बहुत हीन अवस्था में रखा हो और उन्नति का अवसर न दिया हो। (डीप्रेस्ड)

पद-दारिका—स्त्री० [ष० त०] बिवाई (पैर फटने का एक रोग)।

पदधारी (रिन्)—पु० [स० पद√धृ (धारण करना)+णिनि] १. वह जो कोई पद धारण करता हो। २. किसी पद पर रहकर काम करनेवाला अधिकारी।

पद-नाम—पु० [ष० त०] १ किसी पदाधिकारी के पद का सूचक नाम। जैसे—कुलपति, तहसीलदार, मजिस्ट्रेट आदि। २ किसी कार्य, व्यवहार, संस्था आदि का वह मुख्य नाम जिससे वह प्रसिद्ध हो। (डेजिग्नेशन)

पद-न्यस्त—वि० [स० न्यस्तपद] (वह अधिकारी) जो अपना अधिकार किसी दूसरे (पदग्रहीता) को सौंपकर किसी कारणवश कुछ समय के

लिए अपने पद से हटा हो। (रिलीव्ड) जैसे—पदन्यस्त अधिकारी।

पदन्यास—पुं०[ष० त०]१. पैर रखना। गमन करना। चलना। २. चलने मे पैर रखने की एक विशिष्ट प्रकार की मुद्रा। ३ चलने का ढग। ४ पदो को यथास्थान रखने या पद बनाने का काम। ५ गोखरू। ६. कुछ समय के लिए किसी कारणवश अपने पद से किसी का हटना।

पद-पंक्ति—पुं०[ष० त०] १. पद-चिह्न। पद-श्रेणी। २. पाँच चरणो-वाला एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे पाँच-पाँच वर्ण होते हैं।

पद-पद्धति—स्त्री०[ष०त०] पद-चिह्नो की पक्ति या श्रेणी।

पद-पलटी—स्त्री०[स० पद+हिं० पलटना] एक प्रकार का नाच।

पद-पाठ—पुं० [ष० त०] १ वेद-मत्रो आदि का इस प्रकार लिखा जाना कि उनका प्रत्येक पद अपने मूल रूप में रहे। (सहिता-पाठ से भिन्न) २. वह ग्रथ जिसका सपादन उक्त दृष्टिकोण से हुआ हो।

पद-पूरण—पुं०[ष० त०]१. किसी वाक्य मे छूटे अथवा विशेष रूप से छोडे हुए शब्दो की पूर्ति करना। (फिल-इन-ब्लैंक्स)

पद-प्रवर—पुं०[स० त०] किसी कार्यालय का सबसे बड़ा अधिकारी।

पद-बध—पुं०[ष० त०] पग। डग।

पद-भंजन—पुं०[ष०त०] व्याकरण मे, समस्त-पदो के पूर्व और उत्तर पद आदि अलग-अलग करने की क्रिया या भाव।

पद-भजिका—स्त्री०[ष० त०] टिप्पणी, टीका या व्याख्या।

पद-भार—पुं० [ष०त०] वह उत्तरदायित्व या भार जिसका निर्वहण करना किसी पद पर रहने के नाते आवश्यक और कर्तव्य होता है। (चार्ज)

पद-भ्रंश—पुं०[ष० त०] पद-च्युति। (दे०)

पदम—पुं० [स० पद्मकाष्ठ] १. बादाम की जाति का एक जगली पेड जो कहीं-कहीं लगाया भी जाता है। इसका फल शराब बनाने के लिए विदेशों मे जाता है। अमलगुच्छ। पद्माख। २. उक्त वृक्ष का फल। †पुं०=पद्म।

पदमकाठ—पुं०[हिं०] पदम वृक्ष की लकडी। पद्मकाष्ठ।

पदमचल—पुं०[देश०] रेवद चीनी।

पदमणि—स्त्री०=पद्मिनी।

पदमनाभ—पुं०[स० पद्मनाभ] १. विष्णु। २. सूर्य। (डिं०) ३. दे० 'पद्म-नाभ'।

पदमाकर†—पुं०=पद्माकर।

पद-माला—स्त्री० [ष० त०] १. पद-श्रेणी। २. मोहिनी विद्या।

पद-मुद्रा—स्त्री० [ष० त०]१. वह मुद्रा या मोहर जो कोई उच्च अधिकारी महत्त्वपूर्ण मानपत्रो पर अपने हस्ताक्षर के साथ यह सूचित करने के लिए अकित करता है कि यह लेख आधिकारिक और प्रामाणिक है। २. उक्त मुद्रा या मोहर की छाप। (सील ऑफ ऑफिस)

पद-मूल—पुं०[ष० त०] १. पैर का तलवा। २. आश्रय। ३ शरण।

पद-मैत्री—स्त्री०[स० त०]किसी चरण, वाक्य आदि के पदो में होनेवाला वर्णों का साम्य। अनुप्रास।

पदम्मी—पुं०[सं० पद्मी]हाथी। (डिं०)

३—४९

पद-योजना—स्त्री०[ष० त०] किसी चरण, पद, वाक्य आदि मे शब्दो का बैठाया जाना।

पदर—पुं०[देश०][१. एक प्रकार का पेड। २ महल के फाटक के पास का वह स्थान जहाँ द्वारपाल बैठते हैं। पौर। (डिं०)

पद-रिपु—पुं० [ष० त०] पैर का शत्रु अर्थात् काँटा।

पद-रोगी (गिन्)—वि०[स० त०] जिसे प्राय छोटे-छोटे रोग होते रहते हों।

पद-वाद्य—पुं०[तृ० त०] एक प्रकार का पुरानी चाल का ढोल।

पदवाना—स०[हिं० पदाना का प्रे०] पदाने का काम किसी दूसरे से कराना।

पद-विक्षेप—पुं०[ष० त०] डग भरना।

पद-विच्छेद—पुं०[ष०त०] पदच्छेद। (दे०)

पद-विधान—पुं० [सं०] दे० 'रूप-विधान' के अतर्गत।

पद-विन्यास—पुं०[ष० त०] पदो या शब्दो को वाक्य मे ठीक स्थान पर बैठाने या रखने की क्रिया या भाव।

पद-विराम—पुं०[स० त०] पदो या चरणो के अत मे लगाया जानेवाला विराम-चिह्न।

पदवी—स्त्री०[स०√पद्+अवि+ङीष्]१ पथ। रास्ता। २. पद्धति। प्रणाली। ३ राजकीय, सैनिक आदि सेवाओ मे कोई ऊँचा पद। (रैंक) ४. किसी बहुत बडी सस्था अथवा राज्य द्वारा प्रदत्त किसी को सम्मानित उपाधि। (टाइटिल)

पदवी-पत्र—पुं०[ष० त०] वह पत्र जिस पर यह लिखा हो कि अमुक व्यक्ति को अमुक काम करने अथवा अमुक विषय मे योग्यता प्राप्त करने के उपलक्ष्य मे अमुक पदवी या उपाधि दी जाती है। (डिप्लोमा)

पद-वृद्धि—स्त्री०[ष० त०] ऊँचे पद पर जाना या पहुँचना। पद, स्थिति आदि के विचार से होनेवाली उन्नति।

पद-वेदी (दिन्)—पुं० [स० पद√विद् (जानना)+णिनि] शब्दो का ज्ञाता। शब्द-शास्त्री।

पद-शब्द—पुं०[ष० त०] किसी के चलने पर उसके पैरो की धमक से होने-वाला शब्द। पग-ध्वनि।

पद-सघात—पुं० [ष० त०]१ सहिता मे वियुक्त पदो को जोडने या मिलाने का कार्य। २ लेखक। ३ सकलनकर्ता।

पद-समय—पुं०[ष० त०] दे० 'पद-पाठ'।

पदस्थ—वि० [स० पद√स्था (ठहरना)+क] १ पैदल चलनेवाला। २. जो अपने पैरो के बल खडा हो या चल रहा हो। ३. जो किसी पद या ओहदे पर स्थित हो।

पद-स्थान—पुं०[ष० त०] १ वह स्थान जहाँ पैर रखा गया हो। २ उक्त स्थान पर बननेवाला चिह्न।

पदांक—पुं०[पद-अक, ष०त०] पैर का अक अर्थात् चिह्न या छाप। पद-चिह्न।

पदांगी—स्त्री०[पद-अंग, ब०स०, ङीष्] हसपदी लता।

पदांत—पुं०[पद-अत, ष० त०]१ किसी पद का अंतिम अश। २. श्लोक आदि का अंतिम भाग।

पदांतर—पुं०[पद-अतर, मयू० स०]१ दो पैरो के बीच की दूरी। २ दूसरा पैर। ३. दूसरा स्थान।

पदांभोज—पुं० [पद-अंभोज, कर्म० स०] कमलरूपी या कमलवत् चरण।

पदाक्रांत—भू० कृ० [पद-आक्रांत, तृ० त०] १ जो पैरों से कुचला, दबाया या रौंदा गया हो। २ दे० 'पद-दलित'।

पदाघात—पु० [पद-आघात, तृ० त०] पैर से लगाई जानेवाली ठोकर। (किक)

पदाजि—पु० [स० पद√अज् (गति)+इण्] पैदल सिपाही।

पदात—पु० [स० पद√ अत् (गति)+अच्] पदाति। (दे०)

पदाति—पु० [स० पद√अत्+इण्] १ वह जो पैदल चलता हो। प्यादा। २. पैदल सिपाही। ३. नौकर। सेवक। ४ जनमेजय के एक पुत्र का नाम।

पदातिक—पु० [स० पदाति+कन्] पदाति। (दे०)

पदादपि—अव्य० [स० पदात् अपि] १ पद से भी। २. पद की तुलना मे भी। उदा०—ते पाइ सुर दुर्लभ पदादपि परत हम देखत हरी।—तुलसी।

पदादि—पु० [पद-आदि, ष० त०] १ पद का आरभिक अश (पदात का विपर्याय)। २ छद के चरण का आरभिक भाग।

पदातिका—स्त्री० [स० पदातिक] पैदल सेना।

पदाधिकार—पु० [पद-अधिकार, ष० त०] किसी पद पर काम करनेवाले को प्राप्त होनेवाला अधिकार।

पदाधिकारी (रिन्)—पु० [पद-अधिकारिन्, ष० त०] किसी पद पर रहकर अधिकारपूर्वक काम करनेवाला अधिकारी। ओहदेदार।

पदाध्ययन—पु० [पद-अध्ययन, ष०त०] वेदो का वह अध्ययन जो पद-पाठ की दृष्टि से किया जाय।

पदाना—स० [हिं० पादना का प्रे०] १ किसी दूसरे को पादने मे प्रवृत्त करना। २ बहुत अधिक दौडाना तथा तग या परेशान करना। ३ खेल मे, एक दल के खेलाडियो का दूसरे दल के (हारे हुए) खेलाडियो को बहुत अधिक दौडाना-घुपाना। (पश्चिम)

पदानुग—वि० [पद-अनुग, ष० त०] किसी का अनुसरण करनेवाला। पु० अनुयायी।

पदानुराग—पु० [पद-अनुराग, ष० त०] १ किसी के चरणो मे होनेवाला अनुराग। २ नौकर। सेवक। ३ सेना।

पदानुशासन—पु० [पद-अनुशासन, ष० त०] शब्दानुशासन। व्याकरण।

पदानुस्वार—पु० [पद-अनुस्वार, ब० स०] एक प्रकार का सामगान।

पदाब्ज—पु० [पद-अब्ज, कर्म० स०] चरण-कमल।

पदायता—स्त्री० [मध्य०स०] जूता।

पदार—पु० [स० पद√ऋ (गति)+अण्] १ पैर की धूल। चरण-रज। २ पैर का ऊपरी भाग।

पदारथ†—पु०—पदार्थ।

पदारविंद—पु० [पद-अरविंद, उपमि० स०] चरण-कमल।

पदार्घ्य—पु० [पद-अर्घ्य, मध्य० स०] वह जल जिससे पूज्य व्यक्तियों के चरण धोये जाते है।

पदार्थ—पु० [स० पद-अर्थ, ष० त०] १ वाक्यों आदि मे आनेवाले पद (या शब्द) का अर्थ। (वर्ड-मीनिंग) २ वह वस्तु जिसका ज्ञान या बोध किसी विशिष्ट पद (या शब्द) से होता है। अभिधेय वस्तु। जैसे—'चावल' शब्द से चावल नामक पदार्थ का बोध होता है। ३ जिसका कोई दृश्य अथवा कोई बाह्य आकार या रूप हो अथवा जो पिंड, शरीर आदि के रूप मे मूर्त हो। चीज। वस्तु। (मेटीरियल आब्जेक्ट) जैसे—किताब, घडी, पखा आदि। ४. वह आधारिक, तात्त्विक या मौलिक अश या वस्तु जिससे कोई दूसरी वस्तु बनी हो। (मेटीरियल) जैसे—धातु और मिट्टी वे पदार्थ है, जिनसे बरतन बनते हैं। ५. वह जिसका कुछ नाम हो और जिसका ज्ञान प्राप्त किया जा सके, भले ही वह अमूर्त हो। ज्ञान या बोध का विषय।

विशेष—इसी व्याख्या के आधार पर न्यायसूत्र मे प्रमाण, प्रमेय, सशय, सिद्धात आदि की गणना सोलह पदार्थों मे की गई है।

६ प्राचीन भारतीय दार्शनिक क्षेत्रों मे वे आधारिक और मौलिक बाते या विषय जिनका सम्यक् ज्ञान मोक्ष की प्राप्ति के लिए आवश्यक कहा गया है।

विशेष—वैशेषिक दर्शन मे द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष और समवाय नाम के छः पदार्थ माने है। न्याय-सूत्र मे प्रमाण, प्रमेय, सशय, प्रयोजन, दृष्टात, सिद्धात, अवयव, तर्क, निर्णय, वाद, जल्प, वितडा, हेत्वाभास, छल, जाति और निग्रह-स्थान ये सोलह पदार्थ माने गये हैं। साख्य दर्शन मे पुरुष, प्रकृति, महत् आदि और इनके विकारो के आधार पर २५ पदार्थ माने गये है। परन्तु वेदात दर्शन मे आत्मा और अनात्मा यही दो पदार्थ माने गये हैं। जैन दर्शनो मे भी पदार्थ माने तो गये है, पर उनकी सख्या आदि मे बहुत मतभेद है। प्राचीन दार्शनिकों ने मोक्ष-प्राप्ति के लिए पदार्थों का ज्ञान आवश्यक माना था, इसलिए पौराणिको ने अपने दृष्टिकोण से धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष ये चार पदार्थ माने थे। इसी परपरा के अनुसार वैद्यक मे रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति ये पाँच पदार्थ माने गये हैं।

पदार्थवाद—पु० [स० ष०त०] १ वह वाद या सिद्धात जिसमे भौतिक पदार्थों को ही वास्तविक तथा सब-कुछ माना जाता है और आत्मा अथवा ईश्वर का अस्तित्व नही माना जाता। (अध्यात्मवाद मे भिन्न) २ आज-कल अधिक प्रचलित अर्थ मे, यह सिद्धात कि धन-सपत्ति के भोग मे ही मनुष्य को आनन्द या सुख मिलता है, आत्म-चितन आदि व्यर्थ की बाते हैं। (मेटीरियलिज्म)

पदार्थवादी—वि० [स० पदार्थ√वद् (बोलना)+णिनि] पदार्थवाद सबधी।

पु० पदार्थवाद का अनुयायी या समर्थक। (मेटीरियलिस्ट)

पदार्थ-विज्ञान—पु० [ष० त०] भौतिक-विज्ञान। (दे०)

पदार्थ-विद्या—स्त्री० [ष० त०] १ वह विद्या जिसमे विशिष्ट सज्ञाओ द्वारा सूचित पदार्थों का तत्त्व बतलाया गया हो। जैसे—वैशेषिक। २ दे० 'भौतिक विज्ञान'।

पदार्पण—पु० [पद-अर्पण, ष० त०] किसी स्थान मे होनेवाला प्रवेश। आना। (बहुत बडे लोगो के सबध मे आदरसूचक पद) जैसे—महाराज का यहाँ पदार्पण ही हम लोगो के लिए विशेष सम्मानजनक है।

पदालिक—पु० [पद-अलिक, ष० त०] पैर का ऊपरी भाग।

पदावधि—स्त्री० [पद-अवधि, ष० त०] किसी पद पर किसी व्यक्ति के काम करते रहने की अवधि। (टेन्योर)

पदावनत—वि० [पद-अवनत, स० त०] १ जो पैरो पर झुका हो। २. जो झुककर प्रणाम कर रहा हो। ३ नम्र। विनीत। ४. जो अपने पद से अवनत कर दिया गया हो या निम्न पद पर नियुक्त कर दिया गया हो।

पदावली—स्त्री० [पद-आवली, ष० त०] १ पदो की अवली, क्रम, शृंखला या समूह। २ लेख या साहित्यिक रचना मे प्रयुक्त होनेवाले सब शब्दो और पदो का (उनके रूप और विन्यास दोनो के विचार से) वर्ग या समूह। ३ शब्द-योजना का ढग या प्रकार। ४. किसी विशिष्ट विषय के पारिभाषिक पदो और शब्दो का सग्रह या सूची। (फ्रेजियॉलोजी) ५. गाये जानेवाले गीतो, पदो या भजनो का सग्रह। जैसे—सूर-पदावली।

पदावास—पु० [पद-आवास, मध्य० स०] राज्य की ओर से मिला हुआ निवासस्थान। पदाधिकारी के रहने का निवासस्थान। (आफिशल-रेसिडेंस)

पदाश्रित—वि० [पद-आश्रित, स० त०] १ जिसने पैरो मे आश्रय लिया हो। शरण मे आया हुआ। शरणागत। २ जो किसी के आश्रय मे रहता हो।

पदास—स्त्री० [हि० पादना + आस (प्रत्य०)] पादने की क्रिया, भाव या प्रवृत्ति।

पदासन—पु० [पद-आसन, ष० त०] वह आसन या चौकी जिसपर पैर रखे जाते है।

पदासा—वि० [हि० पदास] १ जिसकी पादने की इच्छा या प्रवृत्ति हो। २. बहुत अधिक पादनेवाला।

पदाहत—भू० कृ० [पद-आहत, तृ० त०] पैर से ठुकराया हुआ।

पदिक—पु० [स० पद + ष्ठन्—इक, पद् आदेश] पैदल सेना।

पु० [स० पदक] १ गले मे पहनने का वह गहना जिस पर किसी देवता आदि के चरण-चिह्न अकित हो। २ गले मे पहनने का जुगनूँ नाम का गहना। ३ हीरा। ४. जवाहर। रत्न।

पद—पदिक हार=मणिमाला।

†पु०—पदक।

पदी (दिन्)—वि० [स० पद + इनि] १ जिसमे पैर हो। पदवाला। जैसे—एक पदी, बहु-पदी। २ (रचना) जिसमें पद हो।

पु० पैदल। प्यादा।

पदु*—पु०=पद।

पदुम—पु० [स० पद्म] १ घोडो का एक चिह्न या लक्षण जो भारत मे शुभ, परन्तु ईरान मे अशुभ माना जाता है। २ दे० 'पद्म'।

पदुमिनी*—स्त्री० =पद्मिनी।

पदेक—पु० [पद-एक, ब० स०] बाज।

पदेन—अव्य० [स० तृ० विभक्ति का रूप] किसी पद पर आरूढ होने के अधिकार से। पद पर रहने के नाते से। (एक्स-ऑफीशियो, बाइ वरचू ऑफ आफिस)

पदोड़ा—वि० [हि० पाद+ओडा (प्रत्य०)] १ जो बहुत पादता हो। अधिक पादनेवाला। २. कायर। डरपोक। (क्व०)

पदोत्तार—पु० [पद-उत्तार, मध्य०स०] वह छोटा पुल जिसे पैदल चलकर ही पार करना पडता हो।

पदोदक—पु० [पद-उदक, मध्य०स०] १. वह जल जिससे (प्राय. पूज्य व्यक्तियो के) चरण धोये जायँ। २ चरणामृत।

पदोन्नति—स्त्री० [पद-उन्नति, ष०त०] किसी पद पर काम करनेवाले को उससे ऊँचे पद पर नियुक्त किया जाना। तरक्की। (प्रमोशन)

पदौक—पु० [देश०] एक प्रकार का वृक्ष जो बरमा मे अधिकता से होता है। इसकी लकडी मजबूत और कुछ लाली लिये सफेद रग की होती है।

पद्ग—पुं० [स० पद√ गम् (जाना) + ड] पैदल सिपाही।

पद्दू—वि० [हि० पादना] बहुत अधिक पादनेवाला। पदोडा।

पद्धटिका—स्त्री० [स०] एक मात्रिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे १६-१६ मात्राएँ होती हैं और अत मे जगण होता है।

पद्धडी—स्त्री०=पद्धटिका।

पद्धति—स्त्री० [स० पद √ हन् (गति) + क्तिन्, पद् आदेश] १ पथ। मार्ग। रास्ता। २ कोई काम करने का विशिष्ट प्रकार, प्रणाली या विधि। ३ परिपाटी। रवाज। रीति।

विशेष—परिपाटी, पद्धति और प्रथा का अतर जानने के लिए दे० 'प्रथा' का विशेष।

४ ढग। तरीका। ५ पक्ति। श्रेणी। ५. वह पुस्तक जिसमे किसी प्रकार की प्रथा या कार्य-प्रणाली लिखी हो। कर्म या सस्कार विधि की पोथी। जैसे—विवाह-पद्धति। ६ वह पुस्तक जिसमे किसी दूसरी पुस्तक का आशय, तात्पर्य या भाव समझाया गया हो।

पद्धती—स्त्री०=पद्धति।

वि० पद्धति के अनुसार कार्य करनेवाला।

पद्धरि—स्त्री० =पद्धटिका।

पद्धिम—पु० [पाद-हिम, पद् आदेश, ष०त०] पैर का ठढापन।

पद्धी—स्त्री० [देश०] खेल मे किसी लडके का जीतने पर, दाँव लेने के लिए हारनेवाले लडके की पीठ पर चढना।

क्रि० प्र०—देना।—लेना।

पद्म—पु० [स०√पद् (गति) + मन्] १ कमल का पौधा और फूल। २ सामुद्रिक के अनुसार कमल के आकार का एक प्रकार का चिह्न जो किसी के पैर के तलुआ मे होता और शुभ तथा सौभाग्य-सूचक माना जाता है। ३ विष्णु का एक आयुध जो कमल के आकार का है। ४ तत्र और हठयोग के अनुसार शरीर के अदर के षट् चक्रो में से हर एक जो कमल के आकार का और बहुत ही चमकीले सुनहले रग का कहा गया है। ५ गणित की इकाई, दहाईवाली गिनती मे सोलहवें स्थान पर पडनेवाली सख्या की सज्ञा जो १०० नील होती है। ६ कुबेर की नौ निधियो मे एक निधि की सज्ञा। ७ वास्तु-कला मे, खभे या स्तम्भ के सातवें भाग की सज्ञा। ८ वास्तु-कला मे, आठ हाथ लबा और इतना ही चौडा वह घर जो एक ही कुरसी पर बना हो और जिसके ऊपर एक ही शिखर हो। ९ गले में पहनने का एक प्रकार का पुरानी चाल का गहना या हार। १० शरीर पर होनेवाला श्वेत कुष्ठ या सफेद दाग। ११. वह चित्रकारी जो हाथी के मस्तक और सूँड पर तरह-तरह के रगों से की जाती है। १२ साँप के फन पर बने हुए तरह-तरह के चिह्न। १३ काम शास्त्र मे, १६ प्रकार के रतिबधो मे से एक। १४. पुराणानुसार जबूद्वीप के दक्षिण-पश्चिम का एक देश। १५ पुराणानुसार एक नरक का नाम। १६ पुराणानुसार एक कल्प का नाम। १७. बौद्धो के अनुसार एक नक्षत्र का नाम। १८ जैनो के अनुसार भारत के नवें चक्रवर्ती का नाम। १९ बलदेव का एक नाम। २० एक नाग का नाम। २१ कार्तिकेय के एक अनुचर का नाम। २२ कश्मीर का एक प्राचीन राजा जिसने पद्मपुर नामक नगर बसाया था। २३.

पद्मा नदी का एक नाम। २४ सीसा। २५ पद्माख वृक्ष। २६. पुष्करमूल। २७ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक नगण, एक सगण, और अत मे लघु गुरु होते है। २८. दे० 'पद्मपुराण'। २९. दे० 'पद्मव्यूह'। ३० दे० 'पद्मासन'।

पद्मकंद—पु०[ष०त०] कमल की जड। भसीड।

पद्मक—पु०[स० पद्म√ (चमकना)+क] १ पदम या पदमकाठ नाम का पेड। २. हाथी की सूँड पर का चिह्न या दाग। ३ सेना का पद्मव्यूह। ४ सफेद कोढ़। ५ कुट नाम की ओषधि। ६. पद्मासन।

पद्म-कर—वि०[ब०स०] जिसके हाथ मे कमल हो।

पु०१. विष्णु। २ सूर्य। ३ [उपमि०स०] हाथ जो पद्मवत् हो।

पद्म-करा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] लक्ष्मी।

पद्म-कर्णिका—स्त्री०[ष०त०]१. कमल का बीजकोश। २ पद्म-व्यूह के मध्य मे स्थित सेना।

पद्म-कांति—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

पद्म-काष्ठ—पु०[ब०स०] १ पद्म काठ (वृक्ष)। २ उक्त वृक्ष की सुगधित लकडी जो ओषधि के काम आती है।

पद्म-काह्वय—पु०[पद्मक-आह्वय, ब०स०] पद्माख या पदम नाम का वृक्ष।

पद्म-किंजल्क—पु०[ष०त०] कमल का केसर।

पद्मकी (किन्)—पु०[स० पद्मक+इनि]१ हाथी। २ भुर्ज नाम का वृक्ष जिसके पत्ते भोज-पत्र नाम से प्रसिद्ध है।

पद्म-कीट—पु०[स० उपमि०स०] एक जहरीला कीडा।

पद्म-केतन—पु०[ब०स०] गरुड का एक पुत्र।

पद्म-केतु—पु०[उपमि०स०] एक तरह का पुच्छलतारा। (बृहत्सहिता)

पद्म-केशर—पु०[ष०त०] कमल का केसर।

पद्म-कोश—पु०[ष०त०] १ कमल का सपुट। २ कमल का वह छत्ता या बीज-कोश जिसमे उसके बीज (कमल-गट्टा) रहते हैं। ३ उँगलियों की एक मुद्रा जो कमल के सपुट के आकार की होती है।

पद्म-क्षेत्र—पु०[ष०त०] उत्कल राज्य का एक तीर्थ।

पद्म-गध—स्त्री०[ष०त०] कमल के फूल मे से निकलनेवाली गध।

पद्म-गंधि—पु०[ब०स०, ह्रस्व] पद्माख या पदम नाम का वृक्ष।

पद्म-गर्भ—पु०[ष०त०]१ कमल का वह अश जिसमे बीज होते है। २. ब्रह्मा। ३ सूर्य। ४ गौतम बुद्ध। ५. एक बोधिसत्त्व।

पद्मगुप्ता—स्त्री० [स० पद्म√गुप् (मत्रणा)+क+टाप्] १ लक्ष्मी। २ लौंग।

पद्म-गुरु—पु०[मध्य०स०] रहस्य सप्रदाय मे, शरीर के अदर के कमलों या चक्रो मे विद्यमान माना जानेवाला सत्-गुरु या परमात्मा का अश।

पद्म-गृहा—स्त्री०[ब०स०, टाप्] १ लक्ष्मी। २. लौंग।

पद्मचारिणी—स्त्री० [स० पद्म√चर् (गति)+णिनि+ङीप्] १ गेंदा। २. शमी वृक्ष। ३. हलदी। ४. लाक्षा। लाख।

पद्मज—वि० [स० पद्म√जन्+ड] कमल मे से उत्पन्न।

पु० ब्रह्मा।

पद्मजात—वि०, पुं०=पद्मज।

पद्म-तंतु—पु० [ष० त०] कमल की नाल। मृणाल।

पद्म-दर्शन—पु० [ब० स०] लोहबान।

पद्म-नाभ—पु० [ब० स०, अच्] १. विष्णु। २. जैनो के अनुसार भावी उत्सर्पिणी के पहले अर्हत् का नाम। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४ एक नाग। ५ शत्रु के चलाये हुए अस्त्र को निष्फल करने के उद्देश्य से पढा जानेवाला एक मत्र।

पद्म-नाभि—पु० [ब० स०] विष्णु।

पद्म-नाल—स्त्री० [ष० त०] कमल की नाल। मृणाल।

पद्म-निधि—स्त्री० [ष० त०] कुबेर की नौ निधियो मे से एक निधि।

पद्म-नेत्र—वि० [ब० स०] जिसके नेत्र कमलवत् हो।

पु० १. एक बुद्ध का नाम। २ एक प्रकार का पक्षी।

पद्म-पत्र, पद्म-पर्ण—पु० [ष० त०] १. कमल की पँखडी। २ पुष्कर-मूल।

पद्म-पाणि—वि० [ब० स०] जिसके हाथ मे कमल का फूल हो।

पु० १ ब्रह्मा। २ सूर्य। ३ गौतम बुद्ध की एक विशिष्ट प्रकार की मूर्ति। ४ एक बोधिसत्त्व जो अमिताभ बुद्ध के पुत्र थे।

पद्म-पुराण—पु० [स० ब० स०] अठारह पुराणो मे से एक पुराण।

पद्म-पुष्प—पु० [स० ब० स०] १ कनेर का पेड। २ एक प्रकार की चिडिया।

पद्म-प्रभ—पु० [ब० स०] एक बुद्ध जिनका अवतार अभी होने को है।

पद्म-प्रिया—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] वासुकि नाग की बहन मनसा।

पद्म-बध—पु० [ब० स०] चित्र काव्य का एक प्रकार जिसमे अक्षरो को इस प्रकार सजाया जाता है कि पद्म या कमल का आकार बन जाता है।

पद्म-बीज—पु० [ष० त०] कमलगट्टा।

पद्म-भवानी—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

पद्म-भास—पु० [ब० स०] शिव।

पद्मभू—पु० [स० पद्म√भू (होना)+क्विप्] ब्रह्मा।

पद्म-भूषण—पु० [मध्य० स०] स्वतत्र भारत मे सुयोग्य देश-सेवियो, राजकर्मचारियो, विद्वानो आदि को भारत सरकार की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाला एक प्रकार का अलकरण जो तृतीय श्रेणी का माना गया है।

पद्ममालिनी—स्त्री० [स० पद्म-माला, ष० त०,+इनि+ङीप्] लक्ष्मी।

पद्ममाली (लिन्)—पु० [स० पद्ममाला+इनि] एक राक्षस का नाम।

पद्म-मुखी—स्त्री० [ब० स०, ङीप्] १ दूब। २. सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

पद्म-मुद्रा—स्त्री० [मध्य० स०] तात्रिक उपासना और पूजन मे एक मुद्रा जिसमे दोनो हथेलियो को सामने करके उँगलियाँ नीचे रखते हैं और अँगूठे मिला देते हैं।

पद्म-योनि—पु० [ब० स०] १ ब्रह्मा। २ गौतम बुद्ध का एक नाम।

पद्म-राग—पु० [ब० स०] १. मानिक या लाल नामक प्रसिद्ध रत्न। २ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

पद्म-रेखा—स्त्री० [मध्य० स०] सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार हाथ की हथेली मे होनेवाली कमल के आकार की एक रेखा, जो धनवान होने का लक्षण मानी जाती है।

पद्म-लांछन—पु० [ब० स०] १ ब्रह्मा। २. कुबेर। ३. सूर्य।

पद्म-लांछना—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] १. सरस्वती का एक नाम। २ तारा देवी का एक नाम।

पद्म-लोचन—वि० [ब० स०] जिसके नेत्र कमल के समान बड़े और सुन्दर हों।

पद्म-वर्ण—पु० [ब० स०] १ यदु के एक पुत्र। २ पुष्करमूल।

पद्मवर्णक—पु० [ब० स०, कप्] पुष्करमूल।

पद्मवासा—स्त्री० [ब० स०+टाप्] लक्ष्मी।

पद्म-विभूषण—पु० [मध्य० स०] स्वतत्र भारत मे, सुयोग्य देश-सेवियों, राजकर्मचारियों, विद्वानो आदि को भारत सरकार की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाला एक प्रकार का अलकरण जो द्वितीय श्रेणी का माना गया है।

पद्म-बीज—पु० [ष० त०] कमल गट्टा।

पद्म-बीजाभ—पु० [पद्मबीज-आभा, ब० स०] मखाना।

पद्म-वृक्ष—पु० [मध्य० स०] पद्मकाठ नामक वृक्ष।

पद्म-व्याकोश—पु० [ष० त०] सपुटित कमल के आकार की (दीवारो मे लगाई जानेवाली) सेंध।

पद्म-व्यूह—पु० [मध्य० स०] १ प्राचीन भारत मे एक तरह की सैनिक व्यूह-रचना जिसमे सैनिक इस प्रकार खडे किये जाते थे कि कमल की आकृति बन जाती थी। २ एक तरह की समाधि।

पद्म-श्री—पु० [ब० स०] १ एक नाधिसत्व का नाम। २ स्वतत्र भारत मे सुयोग्य देश-सेवियों, राजकर्मचारियो, विद्वानो आदि को भारत सरकार की ओर से सम्मानार्थ मिलनेवाला एक प्रकार का अलकरण जो चतुर्थ श्रेणी का माना गया है।

पद्म-सभव—पु० [ब० स०] ब्रह्मा।

पद्म-सद्मा (द्मन्)—पु० [ब० स०] ब्रह्मा।

पद्म-सूत्र—पु० [ष० त०] कमल के फूलो की माला।

पद्म-स्नुषा—स्त्री० [ष० त०] १ गगा का एक नाम। २ दुर्गा का एक नाम।

पद्म-स्वस्तिका—पु० [मध्य० स०] वह स्वस्तिक चिह्न जिसमे कमल भी बना हो।

पद्म-हस्त—वि०, पु० =पद्म-कर।

पद्महास—पु० [ब० स०] विष्णु।

पद्मांतर—पु० [पद्म-अतर, मयू० स०] कमल-दल।

पद्मा—स्त्री० [स० पद्म+टाप्] १ लक्ष्मी। २ मनसा देवी का एक नाम। ३ बगाल मे होनेवाली गगा की दो शाखाओ मे से पूर्वी शाखा की सज्ञा। ४ गेदे का पौधा। ५ कुसुम का फूल। ६ लौंग। ७. पद्मचारिणी लता।

पद्माक—पुं० दे० 'पद्माख'।

पद्माकर—पु० [पद्म-आकर, ष० त०] वह जलाशय जिसमे कमल खिले हों।

पद्माक्ष—पु० [पद्म-अक्षि, ष० त०] १ कमल-गट्टा। कमल के बीज। २ विष्णु का एक नाम।

पद्माख—पु० [स० पद्मकम्] पर्वतीय प्रदेश मे होनेवाला एक तरह का ऊँचा पेड जिसके पत्ते लकुच के पत्तो की तरह और फूल कदम के फूलो जैसे होते है।

पद्माचल—पु० [पद्म-अचल, मध्य० स०] एक पर्वत। (पुराण)

पद्माट—पु० [स० पद्म√अट् (गति)+अच्] चकवेंड।

पद्माधीश—पु० [पद्म-अधीश, ष० त०] विष्णु।

पद्मालय—पु० [पद्म-आलय, ब० स०] ब्रह्मा।

पद्मालया—स्त्री० [स० पद्मालय+टाप्] १ लक्ष्मी। २ लौंग।

पद्मावती—स्त्री० [स० पद्म+मतुप्, वत्व, दीर्घ] १ पटना नगर का प्राचीन नाम। २. पन्ना नगर का पुराना नाम। ३ उज्जयिनी का पुराना नाम। ४ जरत्कारु ऋषि की पत्नी लक्ष्मी का दूसरा नाम। ५. मनसा देवी का एक नाम। ६ पुराणानुसार एक अप्सरा। ७. युधिष्ठिर की एक रानी। ८. एक प्राचीन नदी। ९ लोक-कथा के अनुसार सिंहल की एक राजकुमारी जिसे चित्तौड के राजा रत्नसेन ब्याह कर लाये थे। १० एक मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे ३२ मात्राएँ १०,८ और १४ की यति पर होती है।

पद्मासन—पु० [पद्म-आसन, उपमि० स०] १ कमल का आसन। २ योग-साधना के समय पलथी मारकर तथा तनकर बैठने की एक विशेष मुद्रा। ३ वह जो उक्त आसन लगाकर बैठा हो। ४ कामशास्त्र के अनुसार स्त्री के साथ सभोग करने का एक आसन या रतिबध। ५ ब्रह्मा। ६. शिव। ७ सूर्य।

पद्माह्वा—स्त्री० [पद्म-आह्व, ब० स०,+टाप्] १ गेदा। २ लौंग।

पद्मिनी—स्त्री० [स० पद्म+इनि—ङीप्] १. कमल का पौधा। २. कमल की नाल। ३ कमलो का समूह। ४. ऐसा तालाब जिसमे बहुत से कमल खिले हो। ५. मादाहाथी। हथिनी। ६ काम शास्त्र मे रूप, शील और स्वभाव की दृष्टि से नायिकाओ के चार वर्गों मे से पहला और सर्वश्रेष्ठ वर्ग। ७ उक्त वर्ग की नायिका जिसका शरीर चम्पा की तरह गौर वर्ण होता है, कमल-दल की तरह कोमल होता है और जिसके अग अग से सुरभित गध निकलती है। यह अत्यन्त लज्जाशीला किंतु बहुत मानिनी भी होती है।

पद्मिनी-कंटक—पु० [ष० त०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जो कुष्ठ के अन्तर्गत माना जाता है।

पद्मिनी-कांत—पु० [ष० त०] सूर्य।

पद्मिनी-खंड—पु० [ष० त०] वह प्रदेश जहाँ कमलो की प्रचुरता हो।

पद्मिनी-वल्लभ—पु० [ष० त०] सूर्य।

पद्मिनी-षंड—पुं० [ष० त०] पद्मिनी-खड।

पद्मी (द्मिन्)—वि० [सं० पद्म+इनि] १ जिसमे कमल होता हो। २. कमल से युक्त।

पु० १ वह प्रदेश जहाँ पद्म या कमल बहुत होते हो। २ पद्मो या कमलो का समूह। ३ विष्णु। ४. बौद्धो के अनुसार एक लोक का नाम। ५. उक्त लोक मे रहनेवाले एक बुद्ध जिनका अवतार आगे चलकर होगा।

पद्मेशय—पु० [स० पद्मे√शी (सोना)+अच्, अलुक् स०] पद्मो पर सोनेवाले, विष्णु।

पद्मोत्तर—पुं० [स० पद्म-उत्तर, ष० त०] १. कुसुम। बर्रे। २. एक बुद्ध का नाम।

पद्मोद्भव—पु० [स० पद्म-उद्भव, ब० स०] ब्रह्मा।

पयोद्भवा—स्त्री० [सं० पयोद्भव+टाप्] वासुकि नाग की बहन, मनसा।

पद्य—वि० [सं० पद्+यत्] १ पद (पैर अथवा चरण) संबंधी। २ जो पदों अर्थात् काव्य के रूप में हो।

पु० १ पद अर्थात् गण, मात्रा आदि के नियमों के अनुसार होनेवाली साहित्यिक रचना। छंदो-बद्ध रचना। (वर्स) २ काव्य। ३ शूद्र जिनकी उत्पत्ति ब्रह्मा के चरणों से मानी जाती है। ४ शठता।

पद्या—स्त्री० [सं० पद्य+टाप्] १. पैदल चलने से बननेवाला रास्ता। पगडंडी। २ पटरी। ३ शर्करा।

पद्यात्मक—वि० [पद्य-आत्मन्, ब० स०+कप्] पद्य के रूप में होनेवाला। छंदोबद्ध।

पद्र—पु० [सं०√पद्+रक्] गाँव।

पद्रथ—पु० [सं० पद्-रथ, ब० स०] प्यादा। पैदल सिपाही।

पद्व—पु० [सं०] १ मनुष्य-जगत्। २ पृथ्वी। ३ मार्ग। सड़क। ४ रथ।

पद्वा (द्वन्)—पु० [सं०√पद्+वनिप्] मार्ग।

पधरना†—अ० =पधारना।

पधराना—स० [हि०, पधारना] १ अपने यहाँ आये हुए व्यक्ति का सत्कार करना और आदरपूर्वक आसन देना। २ प्रतिष्ठित या स्थापित करना।

पधरावनी—स्त्री० [हि० पधराना] १ पधारने की क्रिया या भाव। २ किसी देवता की स्थापना।

पधारना—अ० [हि० पग+धारना] १ किसी की दृष्टि में उसके यहाँ किसी पूज्य व्यक्ति का आना। २ किसी बड़े आदमी का किसी उत्सव, समारोह आदि में सम्मिलित होने के लिए पहुँचना। ३ आ पहुँचना। आना। ४ गमन करना। चलना। (परिहास और व्यंग्य)

स० आदरपूर्वक बैठाना। पधराना। प्रतिष्ठित करना। उदा०—तिल पिंडिन में हरिहि पधारै। बिबिध भाँति पूजा अनुसारै।—रघुनाथ।

पनग—पु० [सं० पन्नग] सर्प। साँप। (डिं)

पन—पु० [सं० पर्वन्] आयु अथवा जीवन-काल की कोई अवस्था या स्थिति। जैसे—उन्हें चौथे पन में कुछ आराम मिला।

प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ संज्ञाओं और गुणवाचक विशेषणों के अन्त में लगकर उनका भाववाचक रूप बनाता है। जैसे—बचपन, लड़कपन, पीलापन, हरापन आदि।

पु० [हि० पान] पान का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौगिक पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पनवाड़ी।

पु० [हि० पानी] पानी का वह संक्षिप्त रूप जो उसे यौ० पदों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पन-चक्की, पन-डुब्बी, पन-बिजली, पन-भरा आदि।

†पु०=प्रण।

क्रि० प्र०—रोपना। —लेना।

†पु० =पण्य (मूल्य)।

पन-कटा—पु० [हि० पानी+काटना] वह मनुष्य जो खेतों में नालियाँ काटकर इधर-उधर पानी ले जाता या सींचता हो।

पन-कपड़ा—पु० [हि० पानी+कपड़ा] चोट, घाव आदि पर बाँधा जानेवाला गीला कपड़ा।

पन-काल—पु० [हि० पानी+काल या अकाल] १ पानी का अकाल। २ अत्यधिक वर्षा तथा उसके फल-स्वरूप खेती आदि नष्ट होने के कारण पड़नेवाला अकाल।

पन-कुकड़ी—स्त्री०=पनकौआ।

पन-कुट्टी—स्त्री० [हि० पान+कूटना] पान कूटने का छोटा खरल।

पन-कौआ—पु० [हि० पानी+कौआ] एक प्रकार का जल-पक्षी। जल-कौआ।

पनखट—पु० [हि० पनहा+काठ] जुलाहों की वह लचीली धुनकी जिस पर उनके सामने बुना कपड़ा फैला रहता है।

पनग*—पु० [स्त्री० पनगनि] पन्नग (साँप)।

पनगाचा—पु० [हि० पानी+गाछी (बाग)] वह खेत जिसमें पानी भरा या सींचा गया हो।

पनगोटी—स्त्री० [हि० पानी+गोटी] मोतिया शीतला।

पनघट—पु० [हि० पानी+घाट] १ वह घाट जहाँ से लोग पानी भरते हों। २ कोई ऐसा स्थान जहाँ से पानी घड़े आदि में भरकर ले जाया जाता हो। जैसे—कूआँ।

पनच—स्त्री० [सं० पतंचिका] प्रत्यंचा।

पन-चक्की—स्त्री० [हि० पानी+चक्की] आटा आदि पीसने की ऐसी चक्की जो पानी के बहाव के जोर से चलती हो।

पनची—स्त्री० [देश०] गेंडी के खेल में खेलने के लिए पतली लकड़ी या गेंडी।

पनचोरा—पु० [हि० पानी+चोर] जल भरने का एक तरह का बरतन जिसका पेट चौड़ा और मुँह सँकरा हो।

पनडब्बा—पु० [हि० पान+डब्बा] [स्त्री० अल्पा० पनडब्बी] पान-दान।

पनडब्बी—स्त्री० [हि० पन+डब्बी] पानों के लगे हुए बीड़े रखने की छोटी डिबिया।

पनडुब्बा—पु० [हि० पानी+डूबना] १ पानी में गोता लगानेवाला। गोताखोर। २ [स्त्री० पनडुब्बी] काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जो जलाशय में गोता लगाकर मछलियाँ पकड़ता हो। ३ मुरगाबी। ४ एक प्रकार का कल्पित भूत जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि वह जलाशय में नहानेवालों को डुबा देता है।

पनडुब्बी—स्त्री० [हि० पानी+डूबना] १ जलाशयों में डुबकी लगाकर मछलियाँ पकड़नेवाली एक चिड़िया। २ पानी के अन्दर डूबकर चलनेवाली एक प्रकार की आधुनिक नाव। (सब-मेरीन)

पनवनियाँ†—स्त्री० [हि० पानदान का स्त्री० अल्पा०] पानों के लगे हुए बीड़े रखने की छोटी डिब्बी। पन-डब्बी।

पनपना—अ० [सं० पण+पर्ण=पत्ता, या पर्णय=हरा होना] १ पेड़-पौधों के सम्बन्ध में, उनका भली-भाँति विकास और वृद्धि होना। २ रोजगार आदि के संबंध में, उसका उन्नति पर होना। चमकना। ३ व्यक्ति के संबंध में, उसका नये सिरे से या फिर से तन्दुरुस्त, सम्पन्न अथवा सशक्त होने लगना। अच्छी स्थिति में आने लगना।

पनपनाहट—स्त्री० [अनु०] बार-बार होनेवाले पन-पन शब्द का भाव।

पनपाना—स० [हि० पनपना का स० रूप] किसी को पनपने मे प्रवृत्त करना या सहायता करना।

पनपिआइ†—स्त्री० [हि० पानी+पिलाना] नाश्ता।

पन-बट्टा—पु० [हि० पान+बट्टा (डिब्बा)] वह छोटा डिब्बा जिसमे लगे हुए पानो के बीडे रखे जाते है।

पन-बदरा—पु० [हि० पानी+बादल] ऐसी वातावरणिक स्थिति जिसमे पानी और बादल के साथ धूप भी निकली होती है।

पनबिच्छी—स्त्री० [हि० पानी+बीछी] बिच्छी की तरह का डक मारनेवाला एक जल-जतु।

पन-बिछिया—स्त्री० =पनबिच्छी।

पन-बिजली—स्त्री० [हि० पानी+बिजली] झरनो और नदियो के बहाववाले पानी से तैयार की जानेवाली बिजली।

पनबिजली-शक्ति—स्त्री० दे० 'जलविद्युत्-शक्ति'।

पनबुडवा—पु० =पनडुब्बा।

पनबुडिया—स्त्री० =पनडुब्बी।

पनभता†—पु० [हि० पानी+भात] केवल पानी मे उबाले हुए चावल। साधारण भात।

पन-भरा—पु० [हि० पानी+भरना] वह जो घरो मे पानी भरकर पहुँचाने या ले जाने का काम करता हो। पनहरा।

पन-मंडिया—स्त्री० [हि० पानी+माँडी] एक तरह की पतली माँड जिससे जुलाहे बुनाई के समय टूटे हुए तागो को जोडते है।

पनरगा—वि० [हि० पानी+रग] [स्त्री० पनरगी] पानी के रग जैसा अर्थात् मटमैलापन लिये सफेद। उदा०—कटि धोती पनरगी धरे गमछा-कल काँधे।—रत्ना०।

पनलगवा, पनलगा—पु० [हि० पानी+लगाना] खेतो मे पानी लगाने या सीचनेवाला व्यक्ति। पनकटा।

पनलोहा—पु० [हि० पानी+लोहा] एक प्रकार का जल-पक्षी जो हर ऋतु मे रग बदलता है।

पनव—पु० प्रणव।

पनवाँ—पु० [हि० पान+वाँ (प्रत्य०)] हुमेल आदि मे लगी हुई बीचवाली चौकी जो पान के आकार की होती है। टिकडा। पान।

पनवाडी—स्त्री० [हि० पान+वाडी] वह खेत या भूमि जिसमे पान पैदा होता है।

पु० दे० 'तमोली'।

पनवार—स्त्री० [स० पर्ण] पत्तो की बनी हुई पत्तल।

पनवारा—पु० [हि० पान=पत्ता+वार (प्रत्य०)] १ पत्तो की बनी हुई पत्तल जिस पर रखकर लोग भोजन करते है।

मुहा०—पनवारा लगाना=पत्तल पर भोजन परोसना।

२ पत्तल पर परोसा हुआ उतना भोजन जितना एक आदमी खा सके। (दे० 'पत्तल')

पु० [?] एक प्रकार का साँप।

पनवारी—स्त्री० =पनवाडी।

पु०=तमोली।

पनस—पु० [स०√पन् (स्तुति)+असच्] १. कटहल का वृक्ष। २ कटहल का फल। ३ राम की सेना का एक बदर। ४ विभीषण का एक मत्री।

पन-सखिया—स्त्री० [हि० पाँच+शाखा] १ एक प्रकार का पौधा। २. उक्त पौधे का फूल।

पनसतालिका—स्त्री० [स० पनस-ताल, कर्म०स०,+ठन्—इक,+टाप्] कटहल।

पनसनालिका—पु० [स०] कटहल।

पनसल्ला†—पु०=पनसाल (प्याऊ)।

पनसाखा—पु० [हि० पाँच+शाखा] एक प्रकार की मशाल जिसमे तीन या पाँच बत्तियाँ साथ जलती हैं।

पनसार—पु० [हि० पानी+स० आसार=धार बाँधकर पानी गिराना] पानी से किसी स्थान को तर करने या सीचने की क्रिया या भाव। भर-पूर सिचाई।

पनसारी—पु० =पसारी।

पनसाल—स्त्री० [हि० पानी+स० शाला] १ वह स्थान जहाँ सर्व-साधारण को पानी पिलाया जाता है। पौसरा। प्याऊ। २ नदी आदि मे नावो के चलने के समय पानी की गहराई नापने की क्रिया। ३ वह उपकरण जिससे उक्त अवसरो पर पानी की गहराई नापी जाती है।

पनसिगा—पु० [देश०] जलपीपल।

पनसिका—स्त्री० [स० पनस+ठन्—इक,+टाप्] कान मे होनेवाली एक तरह की फुसी जो कटहल के काँटो की तरह नोकदार होती है।

पनसी—स्त्री० [स० पनस+ङीष्] १ कटहल का फल। २ पनसिका।

पनसुइया—स्त्री० [हि० पानी+सूई] एक तरह की पतली तथा छोटी नाव।

पनसूर—पु० [देश०] एक तरह का बाजा।

पनसेरी—स्त्री०=पसेरी।

पनसोई—स्त्री०=पनसुइया।

पनसोह—वि० [हि० पानी+सुहाना] १ जिसका स्वाद जल जैसा हो। २ फीका। ३ नीरस।

पनस्यु—वि० [स० पन+क्यच्, सुगागम,+उ] प्रशसा या तारीफ सुनने का इच्छुक। जिसे प्रशसित होने की लालसा हो।

पनह†—स्त्री०=पनाह (शरण)।

पनहडा—पु० [हि० पान+होंडी] वह पात्र जिसमे तमोली पान आदि धोने के लिए पानी रखते हैं।

पनहरा—पु० [हि० पानी+हरा (प्रत्य०)] [स्त्री० पनहारन, पनहारिन] १ वह व्यक्ति जो दूसरो के यहा पानी भरता हो और इस प्रकार प्राप्त होनेवाले पारिश्रमिक से अपनी जीविका चलाता हो। पन-भरा। २. वह पात्र जिसमे सोनार गहने धोने आदि के लिए पानी रखते है।

पनहा—पु० [स० परिणाह=विस्तार, चौडाई] १ कपडे, दीवार आदि की चौडाई। अरज। २ गूढ आशय। तात्पर्य। मर्म। भेद।

पु० [स० पण=रुपया-पैसा+हार] १ चोरी का पता लगानेवाला। २. वह पुरस्कार जो चुराई हुई वस्तु लौटा या दिला देने के लिए दिया जाय।

†स्त्री०=पनाह।

पनहारा—पु० =पनहरा।

पनहिया†—स्त्री०=पनही।

पनहिया-भद्र†—पु० [हिं० पनही+भद्र=मुंडन] सिर पर इतने जूते पड़ना कि बाल उड़ जायँ। जूतों की मार।

पनही—स्त्री० [सं० उपानह्] जूता।

पना—पु० [सं० प्रपानक या पानीय] भुने हुए आम, इमली आदि का बनाया जानेवाला एक तरह का खट-मीठा शरबत। पन्ना।
प्रत्य०=पन। जैसे—पाजीपना।

पनाती—पु० [सं० प्रनप्तृ] [स्त्री० पनातिन] पुत्र अथवा कन्या का नाती। पोते अथवा नाती का पुत्र। परनाती।

पनार(रा)†—पु०=पनारा।

पनारि—स्त्री० [हिं०प=पर+नारि] पराई स्त्री। उदा०—जौ पनारि कौ रसिक । मतिराम।

पनाला†—पु० [स्त्री० अल्पा० पनाली]=परनाला।

पनालिया†—वि० [हिं० पनाला=परनाला] पनाले या परनाले के समान गंदा और त्याज्य। जैसे—पनालिया पत्र।

पनालिया-पत्र—पु० [हिं० पनालिया+सं० पत्र] वह समाचार-पत्र (या समाचार-पत्रों का वर्ग) जिसमें अधिकतर बातें अशिष्टतापूर्ण और अश्लील ढंग से कही जाती हैं और दूषित भाव से लोगों पर कीचड़ उछाला जाता है। (गटर प्रेस)

पनास—पु० [हिं० पनासना] १ पालन-पोषण। २ दे० 'पोस'।

पनासना—स० [सं० पालाशन] पोषण करना। पालना-पोसना।

पनाह—स्त्री० [फा०] १ शत्रु के उपद्रव या दूसरे संकटों से प्राण-रक्षा या अपना बचाव करने की क्रिया या भाव। त्राण। २ उक्त आशय से किसी की रक्षा या शरण में जाने की क्रिया या भाव।
मुहा०—(किसी काम, बात या व्यक्ति से) पनाह माँगना=किसी बहुत ही अप्रिय या अनिष्ट वस्तु अथवा विकट व्यक्ति से दूर रहने की कामना करना। किसी से बहुत बचने की इच्छा करना। जैसे—मैं आप से पनाह माँगता हूँ।
३ ऐसा स्थान जहाँ छिप या रहकर कोई शत्रु, संकट आदि से बचता हो। बचाव या रक्षा की जगह।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना।
मुहा०—पनाह लेना=विपत्ति से बचने के लिए रक्षित स्थान में पहुँचना। शरण लेना।

पनिक—पु० [देश०] दो बाँसों की कैंचीनुमा रचना। (जुलाहे)
विशेष—ऐसी ही दो रचनाओं के बीच में पाई करने के उद्देश्य से ताना फैलाया जाता है।

पनिक्क†—पु०=पनिक।

पनिगर†—वि०=पानीदार।

पनिघट†—पु०=पनघट।

पनिच*—स्त्री०=पनच (प्रत्यंचा)।

पनिड़ो—स्त्री०=पुंडरीक (ईख का एक भेद)।

पनियाँ†—वि० [हिं० पानी+इया (प्रत्य०)] १. जल-संबंधी। पानी का। २ पानी में रहने या होनेवाला। जैसे—पनियाँ साँप। ३. जिसमें पानी हो या मिला हो। जैसे—पनियाँ दूध। ४. पानी के रंग का।
†पु० दे० 'पनुआ'।

पनियाना—स० [हिं० पानी+आना (प्रत्य०)] खेत आदि को पानी से सींचना।
स०=पनिहाना।

पनियार—पु० [हिं० पानी+यार (प्रत्य०)] १ वह स्थान जहाँ पानी ठहरता या रुकता हो। २. वह दिशा जिधर ढाल होने के कारण पानी बहता हो।

पनियारा†—पु० [हिं० पानी] १ पानी की बाढ़।
वि०, पु०=पनियाला।

पनियाला—पु० [?] एक प्रकार का वृक्ष और उसका फल।
वि०=पनियाँ।

पनियाव†—पु० [हिं० पानी+इयाव (प्रत्य०)] कूआँ खोदते समय मिलनेवाला वह स्थान जहाँ पानी यथेष्ट होता है।

पनिया-सोत—वि० [हिं० पानी+सोता] (तालाब या खाईं) जिसके तल में से पानी का प्राकृतिक सोता निकला हो। अर्थात् बहुत गहरा। जैसे—पनिया-सोत खाईं।

पनिवा—पु०-पनुआँ।

पनिसिगा†—पु० दे० 'जल पीपल'।

पनिहरा †पु पनहरा।

पनिहा—पु० [?] चोर पकड़ने अथवा उनका पता बतलानेवाले तांत्रिक।
पु० दे० 'पनुआ'।
†वि०=पनियाँ।

पनिहाना†—स० [हिं० पनही=जूता] १ जूतों से मारना।
२ बहुत अधिक मारना-पीटना।

पनिहार†—पु० [स्त्री० पनिहारिन] =पनहरा।

पनिहारिन—स्त्री० [हिं० पनिहरा=पानी भरनेवाला] १ वह स्त्री जो लोगों के घर पानी भर कर पहुँचाने का काम करती हो। २ गाँव-देहातों में कहरवा की तरह के एक प्रकार के गीत जो उक्त अथवा कहार जाति की स्त्रियाँ पानी भरने और लोगों के घर पानी पहुँचाने के समय गाती हैं।

पनी—वि० [सं० पण] जिसने प्रण या व्रत धारण किया हो।
†स्त्री०=पत्नी।

पनीर—पु० [फा०] १ दही का वह घन अंश जो उसमें से पानी निकाल देने पर बच रहे। २ फटे या फाड़े हुए दूध का घन अंश। छेना।
मुहा०—(किसी को) पनीर चटाना=काम निकालने के उद्देश्य से किसी को कुछ खिलाना-पिलाना और खुशामद करना। **पनीर जमाना**=ऐसी बात करना जिससे आगे चलकर कोई बहुत बड़ा उद्देश्य या स्वार्थ सिद्ध हो।

पनीरी—वि० [फा०] १ पनीर-संबंधी। २ पनीर का बना हुआ। जैसे—पनीरी मिठाई।
स्त्री० [देश०] १ फूल-पत्तोंवाले वे छोटे पौधे जो दूसरी जगह रोपने के लिए उगाये गये हों। फूल-पत्तों के बेहन।
क्रि० प्र०—जमाना।
२. वह क्यारी जिसमें उक्त प्रकार के पौधे उगाये जाते हैं। ३. गलगल नींबू की फाँक का गूदा।

पनीला†—वि०=पनियाँ।
पुं० [?] एक तरह का सन।
पनु*—पुं०=प्रण।
पनुआँ—पुं० [हिं० पानी+उआँ (प्रत्य०)] १ वह शरबत जो गुड़ के कड़ाहे से पाग निकाल लेने के बाद उसे धोकर तैयार किया जाता है। पनियाँ। २ तरबूज। (पूरब)
पनेथी†—स्त्री० [हिं० पानी+पोथी] वह रोटी जिसमे पलेथन के स्थान पर पानी लगाया गया हो।
पनेरी—स्त्री०=पनीरी।
पुं०=पनवाड़ी (तँबोली)।
पनेवा†—पुं० [?] एक प्रकार की चिड़िया।
पनेहड़ी†—स्त्री० दे० 'पनहड़ी'।
पुं०=पनहरा।
पनेहरा—पुं०=पनहरा।
पनैला—वि०=पनियाँ।
पुं०=पनीला।
पनौआ—पुं० [हिं० पान+औआ (प्रत्य०)] पान के पत्तो का पकौड़ा या पकौड़ी।
पनौटी—स्त्री० [हिं० पान+औटी (प्रत्य०)] पान रखने की पुरानी चाल की पिटारी।
पन्न—वि० [स०√पद्+क्त] १ गिरा या पड़ा हुआ। जैसे—शरणा-पन्न। २ जो नष्ट या समाप्त हो चुका हो।
पुं० खिसकते या सरकते हुए चलना। रेंगना।
†पुं०=पर्ण (पत्ता)।
पन्नई†—वि० [हिं० पन्ना+ई (प्रत्य०)] पन्ने के रग का। फिरोजी या गहरे हरे रग का।
पन्नग—पुं० [स० पन्न√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० पन्नगी] १ सर्प। साँप। २ एक प्रकार की जड़ी या बूटी। ३ सीसा।
†पुं०=पन्ना (मरकत)।
पन्नग-केसर—पुं० [ब० स०] नागकेसर।
पन्नगारि—पुं० [पन्नग-अरि, ष० त०] गरुड़।
पन्नगाशन—पुं० [पन्नग-अशन, ब० स०] गरुड़।
पन्नगिनि*—स्त्री०=पन्नगी।
पन्नगी—स्त्री० [स० पन्नग+ङीष्] १ सर्पिणी। साँपिन। २ सर्पिणी नाम की जड़ी या बूटी।
पन्नद्धा, पन्नध्री—स्त्री० [स० पद्-नद्धा, स० त०, पद्-नध्री, ष० त०] जूता।
पन्ना—पुं० [स० पर्ण] एक तरह का गहरे हरे या फिरोजी रग का बहु-मूल्य रत्न।
पुं० [हिं० पान] १ पृष्ठ। वरक। २ भेड़ों के कान का वह भाग जहाँ का ऊन काटा जाता है। ३ पान के आकार का जूते का वह अग जिसे 'पान' कहते है।
पन्निक†—पुं०=पनिक।
पन्नी—स्त्री० [हिं० पन्ना] १. राँगे, पीतल आदि का पत्तर जिसे सौदर्य और शोभा के लिए छोटे-छोटे टुकड़ो मे काटकर अन्य वस्तुओ पर चिपकाया जाता है। २ एक तरह का रगीन चमकीला कागज। ३ सुनहला या रुपहला कागज।
स्त्री० [हिं० पना] इमली, कच्चे आम आदि से बनने वाला एक पेय।
स्त्री० [?] १ बारूद की एक तौल जो आध सेर के बराबर होती है। २ एक तरह की घास जो छप्पर छान के काम आती है।
पन्नीसाज—पुं० [हिं० पन्नी+फा० साज बनानेवाला] [भाव० पन्नी-साजी] पन्नी बनानेवाले कारीगर।
पन्नीसाजी—स्त्री० [हिं० पन्नीसाज] पन्नी बनाने का काम या व्यव-साय।
पन्नू—पुं० [देश०] १ एक प्रकार का पौधा। २ उक्त पौधे का फूल।
पन्यारी—स्त्री० [देश०] एक तरह का जगली वृक्ष, जिसकी लकड़ी चमकदार तथा मजबूत होती है।
पन्हाना†—स० १ =पहनाना। २=पनिहाना।
अ०=पेन्हाना (थन मे दूध उतरना)।
पन्हारा—पुं० [हिं० पानी+हारा] एक प्रकार का तृण धान्य जो गेहूँ के खेतो मे आप से आप होता है। अंकरा।
पन्हीं—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास। गाँडर। बीरन।
पन्हैया—स्त्री०=पनही।
पपटा—पुं० [?] छिपकली।
†पुं०=पपड़ा।
पपड़ा—पुं० [स० पर्पट] [स्त्री० अल्पा० पपड़ी] १ लकड़ी का रूखा, करकरा और पतला छिलका। चिप्पड़। २ किसी चीज के ऊपर का पतला किंतु कड़ा और सूखा छिलका। जैसे—रोटी का पपड़ा।
पपड़िया—वि० उभय० [हिं० पपड़ी+इया (प्रत्य०)] जो आकार, रूप आदि मे पपड़ी की तरह का हो। जैसे—पपड़िया कत्था, पपड़िया लाख आदि।
पपड़िया कत्था—पुं० [हिं० पपड़ी+कत्था] सफेद कत्था। श्वेतसार।
पपड़ियाना—अ० [हिं० पपड़ी+आना (प्रत्य०)] १ किसी चीज पर पपड़ी जमना। २ पपड़ी की तरह सूखकर कड़ा हो जाना।
स० ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज सूखकर पपड़ी के रूप मे हो जाय।
पपड़ी—स्त्री० [हिं० पपड़ा] १ प्राय किसी गीली वस्तु के सूखने पर उसकी ऊपरी परत की वह स्थिति जब वह सूखकर कुछ चिटक, सिकुड़ और ऐंठ जाती है। जैसे—होठो पर की पपड़ी।
क्रि० प्र०—जमना। —पड़ना।
मुहा०—(किसी चीज का) पपड़ी छोड़ना=मिट्टी की तह का सूख और सिकुड़कर चिटक जाना। पपड़ी पड़ना। (किसी व्यक्ति का) पपड़ी छोड़ना=बहुत सूखकर बिलकुल दुबला और क्षीण हो जाना।
२. घाव का खुरड।
क्रि० प्र०—जमना। —पड़ना।
३ सोहन-पपड़ी या अन्य कोई मिठाई जिसकी तह जमाई गई हो। ४ पापड़ की तरह का कोई छोटा पकवान। ५ वृक्ष की छाल पर सूखने के कारण बनी दरारे।

पपड़ीला—वि० [हिं० पपडी+ईला (प्रत्य०)] जिसमे पपडी की तरह की तह या परत हो। पपडीदार।

पपनी—स्त्री० [देश०] पलक के बाल। बरौनी।

पपरी—स्त्री० [स० पर्पट] १. एक प्रकार का पौधा, जिसकी जड़ दवा के काम मे आती है। २ दे० 'पपडी'।

पपहा—पु० [देश०] १ धान की फसल को हानि पहुँचानेवाला एक प्रकार का कीडा। २ गेहूँ, जौ आदि मे लगनेवाला एक प्रकार का घुन।

पपि—पु० [स०√पा (पीना)+कि, द्वित्व] चन्द्रमा।

पपिहा†—पु०=पपीहा।

पपी—पु० [स०√पा+ईक्, द्वित्व] १ सूर्य। २. चन्द्रमा।

पपीता—पु० [मला० पपाया] १ एक प्रसिद्ध पौधा जिसमे बडे मीठे लबोतरे फल लगते हैं। २ उक्त पौधे का फल जो मीठा तथा रेचक होता है।

पपीतिया—पु० [हिं० पपीता] १ एक तरह का पौधा। २ उक्त पौधे का बीज जो प्लेग से रक्षा के लिए किसी अग मे बाँधा जाता है। (इग्नेटियसबीन)

पपीती—स्त्री० [हिं० पपीता] मादा पपीता (पौधा) जिसमे फल नही लगते।

पपीलि—स्त्री०=पिपीलिका (च्यूँटी)।

पपीहरा†—पु०=पपीहा।

पपीहा—पु० [देश०] १ एक प्रसिद्ध पक्षी जिसकी आँखें, चोच तथा टाँगे पीली होती हैं और डैने सिलेटी रग के होते हैं तथा जो बसत और वर्षा मे बहुत ही मधुर स्वर मे 'पी-कहाँ' 'पी-कहाँ' की तरह का शब्द बोलता है। २. सितार के छ तारो मे से एक जो लोहे का होता है। ३ आल्हा के पिता के घोडे का नाम। ४ दे० 'पपैया'।

पपु—वि० [स०√पा+कु, द्वित्व] १. पालन करनेवाला। २ रक्षक। स्त्री० दाई। धाय।

पपैया—पु० [अनु०] आम की गुठली को घिसकर बनाई जानेवाली सीटी।

पपोटन—स्त्री० [देश०] एक पौधा जिसके पत्ते फोडे पर उसे पकाने के उद्देश्य से बाँधे जाते है।

पपोटा—पु० [स० प्र+पट] पलक। दृगचल।

पपोरना—स० [देश०] अपनी बाहो को हिलाना-डुलाना और उनकी पुष्टता देखना।

पपोलना—अ० [हिं० पोपला] पोपले का चुभलाना।

पप्पील*—स्त्री० [स० पिपीलिका] च्यूँटी।

पबई—स्त्री० [देश०] मैना की जाति की मधुर स्वर मे बोलनेवाली एक चिडिया।

पबना*—स० -पाना।

पबलिक—स्त्री० [अ० पब्लिक] जन-साधारण। जनता।
वि० जन-साधारण-सबधी।

पबारना†—स० =पँवारना (फेंकना)।

पबि*—पु०=पवि (वज्र)।

पब्बय*—पु० [स० पर्वत] १. पहाड। पर्वत। २ पत्थर।
†पु० [?] एक प्रकार की चिडिया।

पब्बि—पु०=पवि (वज्र)।

पब्लिक—स्त्री०, वि० [अ०]=पबलिक।

पमरा—स्त्री० [देश०] शल्लुकी नामक सुगधित पदार्थ।

पमाना*—अ० [?] डीग मारना। उदा०—कायर बहुत पमावही बड़क न बोलै सूर।—कबीर।

पमार—पु० [स० पामारि] चकवँड। चक्रमर्दक।

पमुंकना—स० [स० प्र+मुक्त] छोडना। त्यागना।

पम्मन—पु० [देश०] बडे दानोवाला एक प्रकार का गेहूँ। कठिया गेहूँ।

पयःकडा—स्त्री० [स० ब० स०,+टाप] क्षीरविदारी। भुकुम्हडा।

पयः पयोष्णी—स्त्री० [स० मध्य० स०] एक प्राचीन नदी।

पयःपुर—पुं० [स० ष० त०] छोटा तालाब। पुष्करिणी।

पयःपेटी—स्त्री० [सं० ष० त०] नारियल।

पयःफेनी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीष्] दुग्धफेनी।

पय (स्)—पु० [सं०√पय् (पीना)+असुन्] १ दूध। दुग्ध। २. जल। पानी। ३ अनाज। अन्न।
†पु०=पद।

पयज—वि० [स०] पय या दूध से उत्पन्न अथवा बना हुआ।
†स्त्री०=पैज।

पयद्ठ†—स्त्री०=पैठ।

पयद—पु० [सं० पयोद] १. बादल। मेघ। २ छाती। स्तन।

पयधि—पु०=पयोधि।

पयना†—वि०, पु०=पैना।

पयनिधि*—पु०=पयोनिधि।

पयपूर—पु० [स० पय] समुद्र। उदा०—तप्यौ तपनीय पयपूर ज्यौ बहत है।—सेनापति।

पयम्बर†—पु० =पैगबर।

पयल्ल†—वि०=पहला। (राज०)

पयश्चय—पु० [स० पयस्-चय, ब० स०] जलाशय।

पयस्य—वि० [स० पयस्+यत्] १ जल-सबधी। २ दूध-सबधी।
पु० दूध से बनी हुई चीजें। जैसे—घी, दही, मक्खन आदि।

पयस्या—स्त्री० [स० पयस्य+टाप्] १ दुग्धिका या दुधिया नाम की घास। २. अर्क-पुष्पी। क्षीर-काकोली।

पयस्वती—स्त्री० [स० पयस्+मतुप्, वत्व, ङीप्] नदी।

पयस्वल—वि० [स० पयस्+वलच्] १ जलयुक्त। पनीला। २. जिसमे दूध हो। दूध से युक्त।
पु०[स्त्री० पयस्वली] बकरा।

पयस्वान् (स्वत्)—वि० [स० पयस्+मतुप्, वत्व] [स्त्री० पयस्वती] १ जल से युक्त। २ दूध से युक्त।

पयस्विनी—स्त्री० [स० पयस्+विनि+ङीप्] १ ऐसी गौ जो प्रस्तुत समय मे दूध दिया करती हो। दुधारी गाय। २ गाय। गौ। ३. बकरी। ४. नदी। ५ चित्रकूट की एक विशिष्ट नदी। ६. क्षीर-काकोली। ७. दूध-बिदारी। ८ दूध-फेनी।

पयस्वी (स्विन्)—वि० [स० पयस्+विनि] [स्त्री० पयस्विनी] १. जिसमे जल हो। २. दूध से युक्त।

पयहारी—पुं०[सं० पयोहारी] केवल जल या दूध पीकर रहनेवाला साधु।

पया—पुं०[देश०] दस सेर अनाज की तौल का एक बरतन। उदा०—अपने यहाँ पया से तौल नही की जाती।—वृन्दावन लाल वर्मा।

पयाण†—पुं०=प्रयाण।

पयादा†—वि०, पुं०=प्यादा।

पयान—पुं०[सं० प्रयाण] कही जाने या पहुँचने के लिए यात्रा आरम्भ करना। प्रस्थान। रवानगी।

पयाम—पुं०[फ़ा०] सन्देश। सदेसा।

पयामबर—पुं०[फ़ा०] सन्देश ले जानेवाला व्यक्ति। सन्देशवाहक।

पयार—पुं०=पयाल।

पयाल—पुं०[सं० पलाल] १ धान, कोदो आदि के सूखे हुए ऐसे डठल जिनमे से दाने झाड लिये गये हो। पुराल। पुआल। पियरा।

मुहा०—पयाल गाहना या झाड़ना=(क) ऐसा श्रम करना जिसका कुछ फल न हो। व्यर्थ मेहनत करना। उदा०—फिरि फिरि कहा पयारहि गाहे।—सूर। (ख) ऐसे व्यक्ति की सेवा करना जिससे कुछ लाभ न हो सकता हो।

२ एक तरह का वृक्ष जिसके फल खट-मीठे होते हैं। ३ उक्त वृक्ष का फल।

पुं०[सं० प्रियाल] चिरौंजी का पेड।

†वि०=प्यारा।

पयूख†—पुं०=पीयूष(अमृत)।

पयोगड़—पुं०=पयोगल।

पयोगल—पुं०[सं० पयस्√गल् (गलना)+क] १ ओला। २. टापू। द्वीप।

पयोग्रह—पुं०[सं० पयस्√ग्रह् (ग्रहण करना)+अच्] एक प्रकार का यज्ञ-पात्र।

पयोघन—पुं [सं० पयस्-घन, तृ० त०] ओला।

पयोज—पुं०[सं० पयस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] कमल।

पयोजन्मा (न्मन्)—पुं०[सं० पयस्-जन्मन्, ब० स०] १ मेघ। बादल। २. नागरमोथा।

पयोद—पुं०[सं० पयस्√दा (देना)+क] १ बादल। मेघ। २ मुस्तक। मोथा।

पयोदन—पुं०[सं० पयस्-ओदन] १ दूध मे मिलाया हुआ भात। २. खीर।

पयोदा—स्त्री०[सं० पयोद+टाप्] कुमार की अनुचरी एक मातृका।

पयोदानिल—पुं०[सं०] बरसाती हवा।

पयोदेव—पुं०[सं० पयस्-देव, ष० त०] वरुण।

पयोधर—पुं० [सं० पयस्-धर, ष० त०] १ जल धारण करनेवाला—(क) बादल, (ख) तालाब, (ग) समुद्र। २ दूध धारण करनेवाला अर्थात् स्तन। ३ गौ का थन। ४. नारियल। ५. नागरमोथा। ६. कसेरू। ७. आक। मदार। ८. एक प्रकार की ईख। ९ पर्वत। पहाड। १०. ऐसा पौधा या वृक्ष जिसके तने, पत्रों आदि से दूध की तरह का सफेद तरल पदार्थ निकलता हो। ११. दोहा छद का ११वाँ भेद। १२. छप्पय छन्द का २७ वाँ भेद।

पयोधा (धस्)—पुं० [सं० पयस्√धा (धारण करना)+असुन्] १ जलाधार। २ समुद्र।

पयोधार†—पुं०=पयोधर।

पयोधारागृह—पुं०[सं० पयस्-धारा-गृह, ष० त०] वह स्नानागार जिसमे जल धारा के रूप मे गिरता हो।

पयोधि—पुं०[सं० पयस्√धा+कि] समुद्र।

पयोधिक—पुं०[सं० पयोधि√कै (चमकना)+क] समुद्रफेन।

पयोनिधि—पुं०[सं० पयस् निधि, ष० त०] समुद्र।

पयोमुख—वि०[सं० पयस्-मुख, ब० स०] दुधमुँहा (बच्चा)।

पयोमुच्—पुं०[सं० पयस्√मुच् (छोडना)+क्विप्] १. बादल। मेघ। २ नागरमोथा।

पयोर—पुं०[सं० पयस्√रा (दान)+क] खैर का पेड।

पयोराशि—पुं०[सं० पयस्-राशि, ष० त०] समुद्र।

पयोलता—स्त्री०[सं० पयस्-लता, मध्य० स०] दूधविदारी कद।

पयोवाह—पुं०[सं० पयस्√वह् (ढोना)+अण्] १.मेघ। बादल। २ मोथा।

पयोव्रत—पुं०[सं० पयस्-व्रत, मध्य० स०] १. मत्स्य पुराण के अनुसार एक प्रकार का व्रत जिसमे एक दिन रात या तीन रात केवल जल पीकर रहना पडता है। २. भागवत के अनुसार कृष्ण का एक व्रत जिसमे बारह दिन दूध पीकर रहने और कृष्ण का स्मरण और पूजन करने का विधान है।

पयोष्णी—स्त्री० [सं० पयस्-उष्ण, ब० स०,+ङीष] विंध्य प्रदेश की एक प्राचीन नदी।

पयोष्णी-जाता—स्त्री०[ब० स०] सरस्वती नदी।

पयोहर*—पुं०=पयोधर।

परंच—अव्य०[सं० द्व० स०] १. और भी। २. तो भी। ३ परतु। लेकिन।

परंज—पुं०[सं० पर √जि (जीतना)+ड, मुम्] १ तेल पेरने का कोल्हू। २ छुरी आदि का फल। ३ फेन।

परंजन—पुं०[सं० पर√जन्+अच्, मुम्] (पश्चिमी दिशा के स्वामी) वरुण।

परंजय—वि०[सं० पर√जि (जीतना)+अच्, मुम्] शत्रु को जीतनेवाला। पुं० वरुण देवता।

परंजा—स्त्री०[सं० परंज+टाप्] उत्सव आदि में होनेवाली अस्त्रो, उपकरणो आदि की ध्वनि।

परंतप—वि०[सं० पर√तप् (तपना)+णिच्+खच्, मुम्] १. तपस्या द्वारा इद्रियो को वश मे करनेवाला। २ अपने ताप या तेज से शत्रुओ को कष्ट देनेवाला।

पुं० १. चितामणि। २. तामस मनु के एक पुत्र का नाम।

परंतु—अव्य०[सं० द्व० स०] १. इतना होने पर भी। जैसे—जी तो नहीं चाहता है परंतु जाना पडा। २. इसके विरुद्ध। जैसे—वह गरीब है परतु अभिमानी है।

परंदा—पुं०[फ़ा० परद=चिडिया] १ एक प्रकार की हवादार नाव जो काश्मीर की झीलो में चलती है। २ चिडिया। पक्षी।

परंपद—पुं०[सं० परमपद] १ बैकुंठ। २. मोक्ष। ३ उच्च पद।*

परंपर—पु० [सं० परम्परा+अच्] १ एक के पीछे दूसरा चलनेवाला क्रम। चला आता हुआ सिलसिला। अनुक्रम। २ पुत्र, पौत्र, प्रपौत्र आदि के रूप मे चलनेवाला क्रम या परपरा। ३ वशज। ४ कस्तूरी।

परंपरया—अव्य० [सं० परम्परा शब्द के तृ० का रूप] परपरा के अनुसार। परपरा से।

परंपरा—स्त्री० [सं० परम्√पृ (पूर्ण करना)+अच्+टाप्] १ वह व्यवहार जिसमे पुत्र पिता की, वशज पूर्वजो की और नई पीढीवाले पुरानी पीढीवालो की देखा-देखी उनके रीति-रिवाजो का अनुकरण करते है। २ वह रीति-रिवाज जो बडो, पूर्वजो या पुरानी पीढीवालो की देखा-देखी किया जाय। ३ नियम या विधान से भिन्न अथवा अनुल्लिखित वह कार्य जो बहुत दिनो से एक ही रूप मे होता चला आ रहा हो और इसी लिए जो सर्व-मान्य हो। (ट्रैडिशन) ४ सतति। ५ हिंसा।

परंपराक—पु० [सं० परम्परा√अक् (कुटिल गति)+घञ्] यज्ञ के लिए पशुओ का वध, जो पहले परपरा मे होता आ रहा था।

परंपरागत—वि० [सं० परम्परा-आगत, तृ० त०] (कार्य रीति या रिवाज) जो बडो, पूर्वजो या पुरानी पीढीवालो की देखादेखी किया जाय। परपरा से प्राप्त होनेवाला। (ट्रैडिशनल)

परंपरावाद—पु० [सं०] वह मत या सिद्धान्त कि जो चीजे या बाते परपरा से चली आ रही है, वही ठीक या सत्य है, और नई बाते ठीक या सत्य नही है। (ट्रैडिशनलिज्म)

परंपरावादी—वि० [सं०] परपरावाद-सबधी। परपरावाद का।
पु० वह जो परपरावाद का अनुयायी और समर्थक हो।

परंपरित—भू० कृ० [सं० परम्परा+इतच्] जो परम्परा के रूप मे हो अथवा जो किसी प्रकार की परपरा से युक्त हो। जैसे—परपरित रूपक।

परंपरित-रूपक—पु० [कर्म०स०] साहित्य मे रूपक अलकार का एक भेद जिसमे एक आरोप किसी दूसरे आरोप का कारण बनकर आरोपो की परपरा बनाता है। यह परपरा शब्दो के साधारण अर्थ के द्वारा भी स्थापित हो सकती है, और श्लिष्ट शब्दो के द्वारा भी। साधारण अर्थ के आधार पर स्थित परपरित रूपक का उदाहरण है—बाडव ज्वाला सोती इस प्रणय-सिंधु के तल मे। प्यासी मछली सी आँखे थी विकल रूप के जल मे।—प्रसाद।

परंपरीण—वि० [सं० परम्परा ख–ईन] १ वशक्रम से प्राप्त। २. परपरा-गत।

पर.पुंसा—स्त्री० [सं० सह सुपा स०, सुट् का आगम] अपने पति से असतुष्ट होने पर, पर-पुरुष से प्रेम करनेवाली स्त्री।

परःपुरुष—वि० [सं० सहसुपा स०, सुट् का आगम] जो साधारण मनुष्यो से बढकर या श्रेष्ठ हो।

पर.शत—वि० [सं० सहसुपा स०, सुट् का आगम] सौ से अधिक। शताधिक।

परःश्व (स्)—अव्य० [सं० प० त०] परसो।

परई—स्त्री० [सं० पार -कटोरा, प्याला] सिकोरे की तरह का मिट्टी का कुछ बडा पात्र।

परक—प्रत्य० [सं० समास मे] एक प्रत्यय जो शब्दो के अत मे लगाकर निम्न-लिखित अर्थ देता है, (क) पीछे या अत मे लगा हुआ। जैसे—विष्णु-परक नामावली =अर्थात् ऐसी नामावली जिसके अत मे विष्णु या उसका वाचक और कोई शब्द हो। (ख) सबध रखनेवाला। जैसे—अध्यात्म-परक, प्रशसा-परक।

पर—वि० [सं०] १ अपने से भिन्न। अन्य। दूसरा। जैसे—पर-देश। २. दूसरे का। पराया। जैसे—पर-पुरुष, पर-स्त्री। ३ किसी के पीछे या बाद मे आने या होनेवाला। जैसे—परवर्ती। ४ इस ओर या सिरे के विपरीत। उस ओर का। जैसे—पर-लोक, पर-पार। ५. वर्तमान से ठीक पहले या ठीक बाद का। जैसे—पर-सर्ग, पर-साल। ६. विरुद्ध पडनेवाला। ७ आगे बढा हुआ। बाकी बचा हुआ। ९ अवशिष्ट।
अव्य० [सं० परम] १ उपरान्त। बाद। जैसे—इत. पर। २ परन्तु। लेकिन। जैसे—मैं जाता तो सही पर तुमने मुझे रोक दिया। ३ निरन्तर। लगातार। जैसे—तीर पर तीर चलाओ, तुम्हे डर किसका है।
प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दो के अन्त मे लगाकर उद्यत, रत, लगा हुआ आदि अर्थ सूचित करता है। जैसे—तत्पर, स्वार्थपर, आहारपर।
उप० [हिं०] एक उपसर्ग जो ऊपर या नीचे की कुछ पीढियो का सम्बन्ध बतलानेवाले शब्दो के पहले लगता है। जैसे—पर-दादा, पर-नाना, पर-पोता।
विभ० १ सप्तमी या अधिकरण का चिह्न। जैसे—इस पर।
विशेष—'ऊपर' और 'पर' का अतर जानने के लिए देखें 'ऊपर' का विशेष।
२ के बदले मे। जैसे—१०० रु० महीने पर नया नौकर रख लो।
पु० [फा०] १ कीडे-मकोडो, पक्षियो आदि के दोनो ओर के वे अग जिनकी सहायता से हवा मे उडते है। डैना। पख। जैसे—कबूतर के पर, मक्खी के पर।
मुहा०—**पर जमना**=किसी मे कोई नई अनिष्टकारक वृत्ति उत्पन्न होना। जैसे—तुम्हे भी पर जमने लगे है, तुम आवारा लडको के साथ घूमने लगे हो। **पर न मार सकना**=किसी जगह या किसी के पास न आ सकना। जैसे—वहाँ फरिश्ते भी पर नही मार सकते थे। **बेपर की उड़ाना**=बिलकुल बेसिर-पैर की और मन-गढत बात कहना।
२ वे विशिष्ट उपाग जो ऐसे लम्बे सीके के रूप मे होते है जिसके दोनो ओर आपस मे जुडे हुए बहुत से बाल होते है। जैसे—मोर या सुरखाब का पर।

पर-कटा—वि० [फा० पर+हिं० कटना] [स्त्री० पर-कटी] १ (पक्षी) जिसके पर काट दिये गये हो। जैसे—पर-कटा सुग्गा। २ लाक्षणिक अर्थ मे, (ऐसा व्यक्ति) जिसके अधिकार छीन लिये गये हो या जिसकी शक्ति नष्ट कर दी गई हो।

परकना—अ० [?] न रह जाना या दूर हो जाना। उदा०—छोग जात्यो ढरकि परकि उर सोग जात्यो जोग जात्यो सरकि सकप कलियान तै।—रत्नाकर।
अ० =परचना।

परकलत्र—पु० [सं० ष० त०] दूसरे व्यक्ति की विवाहिता स्त्री। पर-स्त्री।

परकसना—अ० [हिं० परकासना] १ प्रकाशित होना। जगमगाना। २ प्रकट या जाहिर होना।

पर-काजी—वि० [हिं० पर+काज] १ जो दूसरो का काम करता रहता हो। २ परोपकारी।

परकान—पु० [हिं० पर+कान] तोप का वह भाग जहाँ बत्ती दी जाती है (लश०)

परकाना—स० [हिं० परकाना] किसी को परकने मे प्रवृत्त करना। परचाना।

परकाय-प्रवेश—पु० [स० परकाय, ष०त०, परकाय प्रवेश, स०त०] अपनी आत्मा को दूसरे के शरीर मे प्रविष्ट करने की क्रिया जो योग की एक सिद्धि मानी जाती है।

परकार—पु० [फा०] वृत्त या गोलाई बनाने का एक प्रसिद्ध औजार जो पिछले सिरो पर परस्पर जुडी हुई दो शलाकाओ के रूप मे होता है। इसकी एक शलाका केन्द्र मे रखकर दूसरी शलाका चारो ओर घुमाने से पूर्ण वृत्त बन जाता है।

†पु०=प्रकार।

परकारना†—स० [फा० परकार+हिं० ना (प्रत्य०)] परकार से वृत्त बनाना।

†स०=परकाना।

परकाल—पु० परकार।

परकाला—पु० [स० प्राकार या प्रकोष्ठ] १ सीढी। जीना। २ चौखट। ३ दहलीज।

पु० [फा० परगाल] १ शीशे का टुकडा। २ चिनगारी।

पद—आफत का परकाला=वह जो बडे-बडे विकट काम कर सकता हो।

परकास†—पु० प्रकाश।

परकासना—स० [स० प्रकाशन] १ प्रकाशित करना। २ प्रकाशमान करना। चमकाना। ३ प्रकट करना। सामने लाना।

अ० १ प्रकाशित होना। २ चमकना। ३ प्रकट होना। सामने आना।

परकिति—स्त्री०=प्रकृति।

परकीकरण—पु० [स० परकीयकरण] किसी चीज को परकीय बनाने की क्रिया। (असिद्ध रूप)

परकीय—वि० [स० पर+छ—ईय, कुक्—आगम] [स्त्री० परकीया] १ जिसका सबध दूसरे से हो। २ दूसरे का। पराया।

परकीया—स्त्री० [स० परकीय+टाप्] साहित्य मे, वह नायिका जो पर-पुरुष से प्रेम करती और अपने पति की अवहेलना करती हो।

परकीरति†—स्त्री०=प्रकृति।

पर-कृति—स्त्री० [स० ष०त०] १ दूसरे की कृति। दूसरे का किया हुआ काम। २ दूसरे के काम या वृत्ति का वर्णन। ३. कर्मकाड मे दो परस्पर विरुद्ध वाक्यो की स्थिति।

†स्त्री०=प्रकृति।

परकोटा—पु० [स० परकोटि] १. किसी गढ या स्थान की रक्षा के लिए चारो ओर उठाई हुई ऊँची और बडी दीवार। कोट। २ किसी प्रकार की बहुत ऊँची और बडी चहारदीवारी। ३. पानी की बाढ़ रोकने के लिए बनाया हुआ बाँध।

परकोसला†—पु०=ढकोसला (अन-मिल कविता)।

पर-क्षेत्र—पु० [स० ष०त०] १ पराया खेत। २ पराया शरीर। ३ पराई स्त्री।

परख—स्त्री० [हिं० परखना] १. परखने की क्रिया या भाव। २ गुण-दोष, भलाई-बुराई, आदि परखने की क्रिया या भाव। ३ वह दृष्टि या मानसिक शक्ति जिससे आदमी गुण-दोष, भलाई-बुराई आदि पहचानने और समझने मे समर्थ होता है। ठीक-ठीक पता लगाने या वस्तु-स्थिति जानने की योग्यता या सामर्थ्य।

परखचा—पु० [?] टुकडा। खड।

मुहा०—परखचे उडाना=टुकडा-टुकडा कर देना। छिन्न-भिन्न करना।

परखना—स० [स० परीक्षण, प्रा० परीक्खण] १ ठोक-बजाकर तथा अन्य परीक्षणो द्वारा किसी चीज का गुण, दोष, महत्त्व, मान आदि जानना। २ अच्छे बुरे की पहचान करना। ३ कार्य-व्यवहार आदि देखकर समझना कि यह क्या अथवा कैसा है।

सयो० क्रि०—लेना।

अ० [हिं० परेखना] प्रतीक्षा करना। उदा०—जेवत परखि लियौ नहि हम कौ तुम अति करी चँडाई।—सूर।

परखनी†—स्त्री०=परखी।

परखवाना—स० परखाना।

परखवैया—पु० [हिं० परख+वैया (प्रत्य०)] १ परखनेवाला व्यक्ति। २ दे० 'परखैया'।

परखाई—स्त्री० [हिं० परख] १ परखने की क्रिया या भाव। परखाव। २ परखने की मजदूरी या पारिश्रमिक।

परखाना—स० [हिं० 'परखना' का प्रे०] १ परखने का काम दूसरे से कराना। जाँच या परीक्षा करवाना। २ कोई चीज देने के समय अच्छी तरह ध्यान दिलाते हुए उसकी पहचान कराना। सहेजना।

परखी—स्त्री० [हिं० परखना] लोहे का एक तरह का नुकीला लबोतरा उपकरण जिसकी सहायता से अन्न के बद बोरो मे से नमूने के तौर पर उसके कण या बीज निकाले जाते हैं।

पु० दे० 'पारखी'।

परखुरी†—स्त्री०=पखडी।

परखैया—पु० [स०] परखने या जाँचनेवाला व्यक्ति।

परग—पु० [स० पदक] पग। डग। कदम।

परगट—वि० =प्रकट।

परगटना—अ० [हिं० प्रकट] प्रकट या जाहिर होना।

स० प्रकट या जाहिर करना।

पर-गत—वि० [स० द्वि० त०] १ दूसरे या पराये मे गया या मिला हुआ अथवा उससे सबध रखनेवाला। २ दे० 'वस्तुनिष्ठ'।

†स्त्री० [स० प्रकृति] मनुष्य की प्रकृति और स्वभाव।

मुहा०—पर-गत मिलना=प्रकृति या स्वभाव अनकूल होने के कारण मेल-जोल होना। जैसे—उनसे उनकी खूब पर-गत मिली।

परगन†—पु०=परगना।

परगना—पु० [फा० मि० स० परिगण+घर] किसी जिले का वह भू-भाग जिसके अतर्गत बहुत से ग्राम हों।

परगनी—स्त्री०=परगहनी।

परगसना†—अ० [सं० प्रकाशन] प्रकाशित होना। प्रकट होना।

परगह—पुं०=पगहा (पघा)।

परगहनी—स्त्री० [सं० प्रग्रहण] सुनारों का नली के आकार का एक औजार जिसमें करछी की-सी डाँडी लगी होती है। परगनी।

परगहा†—पुं० [सं० प्रग्रहण] वास्तु-कला में एक प्रकार का अलंकरण या साज जो खंभों पर बनाया जाता है।

परगाछा—पुं० [हिं० पर+गाछा—पेड़] १ एक प्रकार की परजीवी वनस्पति जो प्रायः गरम देशों में दूसरे पेड़ों पर उग आती है और उन्हीं पेड़ों के रस से अपना पोषण करती है। बंदाक। बाँदा। २ परजीवी पौधों का वर्ग।

परगाछी—स्त्री० [हिं० परगाछा] अमरबेल। आकाशबौर।

परगाढ़†—वि०=प्रगाढ़।

परगास†—पुं० =प्रकाश।

परगासना†—अ० [हिं० परगसना] प्रकाशित होना।
स० प्रकाशित करना।

पर-गुण—वि० [सं० ब०स०] जो दूसरों के लिए हितकर हो।

पर-ग्रंथि—स्त्री० [सं० ब०स०] (उँगली की) पोर।

परघट†—वि० =प्रकट।

परघनी†—स्त्री०=परगहनी।

परचंड†—वि०=प्रचंड।

परचई†—स्त्री० [सं० परिचय] १ परिचय। २ ऐसी पुस्तक जो किसी विषय का सामान्य ज्ञान कराती हो। ३ परिचय-पत्र।

पर-चक—स्त्री० [?] हलकी मारपीट या धौल-धप्पड़। जैसे—आज उन्होंने नौकर की अच्छी परचक ली।
क्रि० प्र०—लेना।

पर-चक्र—पुं० [सं० ष०त०] १ शत्रुओं का दल या वर्ग। २. शत्रु-दल का क्षेत्र। ३ शत्रु की सेना और उसके द्वारा होनेवाला आक्रमण या उपद्रव।

परचत†—स्त्री०] परिचय।

परचना—अ० [सं० परिचयन] १ किसी से इतना अधिक परिचित होना या हिल-मिल जाना कि उससे व्यवहार करने में कोई संकोच या खटका न रहे। जैसे—यह कुत्ता अभी घर के लोगों से परचा नहीं है।
मुहा०—**मन परचना**=मन का इस प्रकार किसी ओर प्रवृत्त होना कि उसे दुःख, शोक आदि का ध्यान न आये।
२ जो बात एक या अनेक बार अपने अनुकूल हो चुकी हो, जिसमें कोई बाधा या रोक-टोक न हुई हो, उसकी ओर फिर किसी आशा से उन्मुख या प्रवृत्त होना। जैसे—दो-तीन बार इस भिखमंगे को यहाँ से रोटी मिल चुकी है, अतः यह यहाँ आने के लिए परच गया है।
संयो० क्रि०—जाना।
†अ० १ =सुलगना (आग का)। २ =जलाना (दीपक आदि का)।

परचर—पुं० [देश०] बैलों की एक जाति जो अवध के खीरी जिले के आस-पास पाई जाती है।

परचा—पुं० [फा० पर्चः] १ कागज का टुकड़ा। चिट। २. कागज के टुकड़े पर लिखी हुई छोटी चिट्ठी या सूचना।
मुहा०—(किसी बड़े की सेवा में) **परचा गुजरना**=निवेदन-पत्र या सूचना-पत्र उपस्थित किया जाना।
३ विद्यार्थियों की परीक्षा में आनेवाला प्रश्न-पत्र। जैसे—हिंदी का परचा बिगड़ गया है। ४ अखबार। समाचार-पत्र। ५ कोई ऐसा सूचना-पत्र जो छाप या लिखकर लोगों में बाँटा जाता हो। (हैंड-बिल)
†पुं० [सं० परिचय] १ जानकारी। परिचय।
मुहा०—**परचा देना**=ऐसा लक्षण या चिह्न बताना जिससे लोग जान जायँ। नाम-ग्राम बताना। **परचा माँगना**=किसी देवी-देवता से अपना प्रभाव या शक्ति दिखाने के लिए आग्रहपूर्ण प्रार्थना करना।
२ प्रमाण। सबूत। ३ जाँच। परख। ४ रहस्य संप्रदाय में, किसी बात का निश्चित प्रत्यय या पहचान। प्रत्यभिमान। उदा०—साईं के परचे बिना अंतर रह गई रेख।—कबीर।
पुं० [फा० पर्चः] जगन्नाथजी के मंदिर का वह प्रधान पुजारी जो मंदिर की आमदनी और खर्च का प्रबंध करता और पूजा-सेवा आदि की देख-रेख करता है।

परचाना—स० [हिं० परचना का स०] १ किसी को परचने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना जिससे कोई परच जाय। २ किसी से हेल-मेल बढ़ाकर या लोभ दिखाकर उससे घनिष्ठता स्थापित करना। उसके मन का खटका या भय दूर करना। जैसे—किसी को दो-चार बार कुछ खिला या देकर परचाना।
संयो० क्रि०—लेना।
स० १ =चलाना। २ =सुलगाना।

परचार†—पुं०=प्रचार।

परचारना—पुं०=प्रचारना।

परची—स्त्री० [हिं० परचा] १ कागज का छोटा टुकड़ा। छोटा परचा। २. कागज का ऐसा छोटा टुकड़ा जिसमें कोई सूचना या ज्ञातव्य बात लिखी गई हो।

परचून—पुं० [सं० पर=अन्य,+चूर्ण=आटा] आटा, चावल, दाल, नमक, मसाला आदि भोजन का फुटकर सामान। जैसे—परचून की दूकान।
वि०, पुं० दे० 'खुदरा'।

परचूनिया—वि० [हिं० परचून] परचून-संबंधी।
पुं० =परचूनी।

परचूनी—पुं० [हिं० परचून] आटा, दाल, नमक आदि बेचनेवाला बनिया। मोदी।
स्त्री० परचून बेचने का काम या रोजगार।

परचौं†—पुं०=परिचय।

परच्छंद—वि० [ब० स०] जो दूसरे के छंद अर्थात् शासन में हो। परतंत्र।

परछत्ती—स्त्री० [सं० परि=अधिक, ऊपर+हिं० छत=पटाव] १. कमरे में सामान आदि रखने के लिए, छत के नीचे छाई हुई छोटी पाटन या टाँड। मियानी। २ वह हलका छप्पर जो दीवारों पर यों ही अटका, बाँध या रख दिया जाता है। फूस आदि की छाजन।

परछन—स्त्री० [सं० परि+अर्चन] द्वार पर वर के पहुँचने पर होनेवाली

एक रीति जिसमे स्त्रियाँ दही और अक्षत का टीका लगाती, उसकी आरती करतीं तथा उसके ऊपर से मूसल, बट्टा आदि घुमाती हैं।

परछना—स० [हिं० परछन] द्वार पर बरात लगने पर कन्या-पक्ष की स्त्रियो का वर की आरती आदि करना। परछन करना।

परछाँवाँ—पु० [सं० प्रतिच्छाय] १. छाया। परछाई। २. किसी व्यक्ति की पड़नेवाली ऐसी छाया या परछाई जो कुछ स्त्रियो की दृष्टि मे अनिष्टकर या अशुभ होती है।

मुहा०—(किसी का) परछाँवाँ पड़ना=उक्त प्रकार की छाया के कारण कोई बुरा प्रभाव पडना।

३ किसी व्यक्ति की ऐसी छाया या परछाईं जो स्त्रियो के विश्वास के अनुसार गर्भवती स्त्री पर पडने से गर्भ के शिशु को उस पुरुष के अनु-रूप आकार-प्रकार, स्वभाव आदि बनानेवाली मानी जाती है।

परछाँही—स्त्री०=परछाईं।

परछा—पु० [सं० प्रणिच्छद] १. वह कपडा जिससे तेली कोल्हू के बैल की आँखो मे अँधोटी बाँधते हैं। २ जुलाहो की वह नली या फिरकी जिस पर बाने का सूत लपेटा रहता है। घिरनी।

पु० [सं० परिच्छेद] १ बहुत सी घनी वस्तुओ के घने समूह मे से कुछ के निकल जाने से पडा हुआ अवकाश। विरलता। २. मनुष्यो की वह विरलता जो किसी स्थान की भीड छँट जाने पर होती है। ३ अंत। समाप्ति। ४. निपटारा। ५. निर्णय।

पु० [?] [स्त्री० अल्पा० परछी] १ बडी बटलोई। देगची। २ कडाही। ३ मँझोले आकार का मिट्टी का एक बरतन।

परछाईं—स्त्री० [सं० प्रतिच्छाया] १ प्रकाश के सामने आने से पीछे की ओर अथवा पीछे की ओर प्रकाश होने पर आगे की ओर बननेवाली किसी वस्तु की छायामय आकृति।

मुहा०—(किसी की) परछाईं से डरना या भागना=किसी से इतना अधिक डरना कि उसके सामने जाने की हिम्मत न पडे।

२ दे० 'परछावाँ'।

क्रि० प्र०—पडना।

३ दे० 'प्रतिबिंब'।

परछ्या†—स्त्री०=परीक्षा।

परजंक*—पु०=पर्यंक।

परज—वि० [सं० पर√जन् (उत्पत्ति)+ड] दूसरे या पराये से उत्पन्न। परजात।

पु० कोकिल। कोयल।

पु० [सं० पराजिका] ओडव-संपूर्ण या षाडव-संपूर्ण जाति का एक राग जो रात के अंतिम पहर मे गाया जाता है।

परजन—पु०=परिजन।

परजन्म (न्)—पु० [सं० कर्म०स०] [वि० पारजन्मिक] इस जीवन के बाद होनेवाला दूसरा जन्म।

परजन्य—पु०=पर्जन्य।

परजरना—अ० [सं० प्रज्वलन] १. प्रज्वलित होना। जलना। दहकना। सुलगना। २. बहुत क्रुद्ध होना। बिगडना। ३. मन ही मन कुढना या जलना।

स० १ प्रज्वलित करना। दहकाना। सुलगाना। २ क्रुद्ध करना। ३. संतप्त करना। जलाना।

परजलना—अ० [सं० प्रज्वलन] जलना।

परजवट†—पु०=परजौट।

परजा†—स्त्री० [सं० प्रजा] १. प्रजा। रैयत। २ देहातो मे गृहस्थो के अनेक प्रकार के काम तथा सेवाएँ करनेवाले लोग। जैसे—कुम्हार, चमार, धोबी, नाई आदि। ३ ब्रिटिश शासन के समय, वे खेतिहर जो जमींदार की जमीन लगान पर लेकर खेती-बारी करते थे। असामी। काश्तकार।

परजात—वि० [ष० त०] दूसरे से उत्पन्न।

पु० कोयल।

पु० [सं० पर+जाति] दूसरी या भिन्न जाति का व्यक्ति। दूसरी बिरादरी का आदमी।

वि० दूसरी जाति से संबंध रखनेवाला।

परजाता—पु० [सं० परिजात] १ मँझोले आकार का एक पेड जिसमे शरद् ऋतु मे छोटे-छोटे सुगंधित फूल लगते हैं। हर-सिंगार। २. उक्त पेड का फूल।

पर-जाति—स्त्री० [कर्म० स०] दूसरी जाति।

परजाय—पु०=पर्याय।

परजित—वि० [तृ० त०] १ दूसरे के द्वारा पाला-पोसा हुआ। २ जिसे किसी ने जीत लिया हो। विजित।

पु० कोयल।

परजीवी (विन्)—वि० [सं० पर√जीव् (जीना)+णिनि] जिसका जीवित रहना दूसरो पर अवलंबित हो। दूसरो पर आश्रित रहनेवाला। पु० वे वनस्पतियाँ या कीडे-मकोड़े जो दूसरे वृक्षों या जीव-जंतुओ के शरीर पर रहकर और उनका रस या खून चूसकर जीते तथा पलते हैं। (पैरासाइट)

परजौट—पु० [हिं० परजा (प्रजा)+औट (प्रत्य०)] घर आदि बनाने के निमित्त किसी से वार्षिक कर या देन पर जमीन लेने की प्रथा या रीति।

परजौटी—वि० [हिं० परजौट] १. परजौट-संबंधी। २ जो परजौट पर दिया या लिया गया हो। जैसे—परजौटी जमीन।

परज्वलना*—अ० [सं० प्रज्वलन] प्रज्वलित होना।

परठना*—स०=पठाना (भेजना)।

परठना—स० [सं० प्र+स्था] १. स्थापित करना। उदा०—परठि द्रविड सोलण सर पच।—प्रिथीराज। २. दे० 'पाना'।

परठित—भू० कृ० [सं० प्र+स्थित] १ प्रतिष्ठित। २ सुशोभित।

परणना—स० [सं० परिणयन] ब्याह करना। विवाह करना। उदा०—पर दल पिण जीवि पदमणी परणे।—प्रिथीराज।

अ० विवाहित होना। ब्याहा जाना।

परणाना†—स०=परणना।

परणी—स्त्री० [सं० परिणीता] वह स्त्री जिसका परिणय या विवाह हो चुका हो।

परतगण—पु० [सं०] एक प्राचीन देश। (महाभारत)

परतंगा†—स्त्री० [सं० प्रतिज्ञा] १. प्रसिद्धि। २ प्रतिष्ठा। मान। ३. पातिव्रत्य। सतीत्व।

परतंचा*—स्त्री० –प्रत्यचा (धनुष की डोरी)।

परतंत्र—वि० [ब० स०] १ जो दूसरे के तत्र या शासन मे हो। २ पराधीन। परवश।

पु० १ उत्तम शास्त्र। २ उत्तम वस्त्र।

परतः (तस्)—अव्य० [स० पर+तस्]१ दूसरे मे। अन्य से। २. पीछे। बाद मे। ३ आगे। परे। ४ पहले या मुख्य के बाद। दूसरे स्थान पर। (सेकन्डरिली)

परतः प्रमाण—पु० [ब० स०] जो स्वत प्रमाण न हो, बल्कि दूसरे प्रमाणो के आधार पर ही प्रमाण के रूप मे दिखाया या माना जा सके।

परत—स्त्री० [स० परिवर्त्त–दोहराया जाना]१ किसी प्रकार के तल या स्तर का ऐसा विस्तार जो किसी दूसरी चीज के तल या स्तर पर कुछ मोटे रूप मे चढा, पडा या फैला हुआ हो। तह। जैसे—सफाई न होने के कारण पुस्तको पर धूल की एक परत चढ़ चुकी थी।

क्रि० प्र०—चढना। —पडना।

२ किसी लचीली वस्तु को दोहरा, चौहरा आदि करने पर, उसके बनने-वाले खडो या विभागो मे से हर-एक।

क्रि० प्र०—लगाना।

३ ऐसा कोई तल या विस्तार जो उसी तरह के कोई और तलो या विस्तारो के ऊपर या नीचे फैला हुआ हो। जैसे—(क) हर युग मे बालू, मिट्टी आदि की एक नई परत चढते-चढते कुछ दिनो मे ऊँची चट्टाने बन जाती हैं। (ख) खानो मे से कोयले की एक परत निकाल लेने पर उसके नीचे दूसरी परत निकल आती है।

स्त्री०[हि० परतना] परतने की क्रिया या भाव।

परतछ*—वि० प्रत्यक्ष।

परतच्छ*—वि०=प्रत्यक्ष।

परतछ्छ—वि० प्रत्यक्ष।

परतना—अ०[स० परावर्तन]१ कही जाकर वहाँ से वापस आना। लौटना। २ पीछे की ओर घूमना। जैसे—परतकर देखना।

मुहा०—परतकर कोई काम न करना–भूल कर भी कोई काम न करना। उदा०—मोती मानिक परत न पहरूँ।—मीराँ।

३ किसी ओर घूमना। मुडना। जैसे—दाहिनी ओर परत जाना। ४. उलटना।

स०[हि० परत] परत के रूप मे करना, रखना या लगाना।

परतर—वि०[स० पर-तरप्] [भाव० परतरता] क्रम के विचार से जो ठीक किसी के बाद हुआ हो।

परतरा—वि० –परतर।

परतल—पु० [स० पट–वस्त्र+तल–नीचे] घोडे की पीठ पर रखा जानेवाला वह बोरा जिसमे सामान भरा या लादा जाता है। गून।

परतला—पु०[स० परितन–चारो ओर खीचा हुआ] कपडे या चमडे की वह चौडी पट्टी जो कधे से कमर तक छाती और पीठ पर से तिरछी होती हुई आती है तथा जिसमे तलवार लटकाई जाती है।

परतवि*—वि०=प्रत्यक्ष।

परता†—पु० –पडता।

परताजना—पु० [देश०] सुनारो का एक औजार जिससे वे गहना पर मछली के सेहरे की तरह की नक्काशी करते है।

परताना—स० [हि० परतना] १ वापस भेजना। लौटाना। २. २ घुमाना। मोडना।

परताप†—पु०=प्रताप।

परतारना†—स० [स० प्रतारण] ठगना।

स्त्री० –प्रतारणा।

परताल†—स्त्री०=पडताल।

परतिचा†—स्त्री० प्रत्यचा (धनुष की डोरी)।

परतिज्ञा†—स्त्री० प्रतिज्ञा।

परती—स्त्री० [?] वह चादर जिससे हवा करके अनाज के दानो का भूसा उडाते है।

मुहा०—परती लेना–चादर से हवा करके भूसा उडाना। बरसाना। ओसाना।

†स्त्री० –पडती (भूमि)।

परतीछा*—स्त्री०=प्रतीक्षा।

परतीति—स्त्री०=प्रतीति।

परतेजना*—स० [स० परित्यजन] परित्याग करना। छोडना।

परतेला—वि०[हि० पडना] उबाले हुए रग का घोल। (रगरेज)

परतो—पु० [फा०] १ प्रकाश। रोशनी। २ किरण। रश्मि। ३ किसी पदार्थ या व्यक्ति की पडनेवाली छाया। परछाई। ४ प्रतिच्छाया। प्रतिबिम्ब।

परतोली—स्त्री० [स० प्रतोली] गली।

परत्र—अव्य० [स० पर+त्रल्] १ अन्य या भिन्न स्थान पर दूसरी जगह। २ परकाल मे। दूसरे समय। ३ परलोक मे। मरने पर।

परत्र-भीरु—वि० [स० स० त०] जिसे परलोक का भय हो।

परत्व—पु० [स० पर+त्व] १ पर अर्थात् अन्य या गैर होने का भाव। २ पहले या पूर्व मे होने का भाव।

परथन—स्त्री० दे०–'पलेथन'।

परथाव†—पु०=प्रस्ताव। (पूरब) उदा०—की दहु हो इति एहि परथाव।—विद्यापति।

परद†—पु० पारद (पारा)।

परदच्छिना†—स्त्री० –प्रदक्षिणा।

परदा—पु० [फा० पद] १ कोई ऐसा कपडा या इसी तरह की और चीज जो आड या बचाव करने के लिए बीच मे फैलाकर टाँगी या लटकायी जाय। पट। (कर्टेन) जैसे—खिडकी या दरवाजे का परदा।

क्रि० प्र०—उठाना। —खोलना। —डालना। —हटाना।

पद—ढका परदा–ऐसी स्थिति जिसमे अन्दर की त्रुटियाँ, दोष आदि बाहरवालो की जानकारी या दृष्टि से बचे रहे। **ढके परदे**–बिना औरो पर भेद प्रकट हुए।

मुहा०—(किसी का) परदा खोलना–किसी की छिपी बात, भेद या रहस्य प्रकट करना। **परदा डालना**–ऐसी स्थिति उत्पन्न करना कि दोष या भेद औरो पर प्रकट न होने पावे। **(किसी चीज पर) परदा पडना** ऐसी स्थिति उत्पन्न होना कि औरो की दृष्टि न पड सके। **(किसी का) परदा रहना**–(क) प्रतिष्ठा या मान-मर्यादा बनी रहना। (ख) भेद या रहस्य छिपा रहना।

२ अभिनय, खेल-तमाशो आदि मे, वह लबा-चौडा कपडा जो दर्शको के सामने लटका रहता और जिस पर या तो कुछ दृश्य अकित होते हैं या प्रतिबिबित होते है। यवनिका। पट। (कर्टेन) जैसे—रग-मच का परदा, चल-चित्र या सिनेमा का परदा। ३ बीच मे पडकर आड खडा करनेवाली कोई चीज या बात। ओट। व्यवधान। ४ कोई ऐसी चीज या बात जो गति, दृष्टि आदि के मार्ग मे बाधक हो। जैसे—उस समय हमारी बुद्धि पर न जाने कैसा परदा पड गया था कि मैंने तुम्हारी बात नही मानी। ५ मुसलमानो और उनकी देखा-देखी हिंदुओं मे भी प्रचलित वह प्रथा जिसके अनुसार भले घर की स्त्रियाँ आड मे रहती है और पर-पुरुषो के सामने नही होती।

पद—परदा-नशीन। (दे०)

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—होना।

मुहा०—परदा लगाना=स्त्रियो का ऐसी स्थिति मे आना या होना कि पर-पुरुषो की दृष्टि उन पर न पड सके। जैसे—जब से वह ब्याही गई है, तब से हमसे भी परदा करने लगी है। **परदे मे बैठना**=किसी स्त्री का पर-पुरुषो की दृष्टि से ओझल होकर घर के अन्दर रहना। जैसे—पहले तो वह वेश्या थी पर बाद मे एक नवाब के यहाँ परदे मे बैठ गई। **परदे में रहना**=घर के अन्दर सब लोगो की दृष्टि से बचकर रहना।

६ मकान आदि की कोई दीवार। जैसे—इस मकान का पूरबवाला परदा बहुत कमजोर है या गिरने को है। ७ किसी प्रकार का तल। या परत। तह। जैसे—(क) आसमान के सात परदे कहे गये है। (ख) मैने दुनिया के परदे पर ऐसी बात नही देखी। ८. शरीर के किसी अग की कोई ऐसी झिल्ली या परत जो किसी तरह की आड़ या व्यवधान करती हो। जैसे—आँख का परदा, कान का परदा। ९ अँगरखे काट, शेरवानी आदि की वह परत जो आगे की ओर और छाती पर रहती है। १० बीन, सितार, हारमोनियम आदि बाजो मे स्वरो के विभाजक स्थानो की सूचक किसी प्रकार की रचना। ११ फारसी सगीत मे बारह प्रकार के रागो मे से हर राग। १२ नाव की पतवार।

परदाख्त—स्त्री० [फा० पर्दाख्त] १ देख-भाल। २. सरक्षण। ३ पालन-पोषण।

परदाज—पु० [फा० पर्दाज] १ शौर्य। वीरता। २ ढग। तरीका ३ सजावट। ४ कामा मे लगे रहने का भाव। ५ चित्र मे अंकित की जानेवाली महीन रेखाएँ।

पर-दादा—पु० [हिं० पर+दादा] [स्त्री० परदादी] सबधी के विचार से पिता का दादा।

परदा-दार—वि० =परदेदार।

परदा-नशीन—वि० स्त्री० [फा० पर्दनशी] १ (स्त्री) जो बड़ो तथा पर-पुरुषो से परदा करती हो। २. लाक्षणिक अर्थ मे, जो घर मे ही रहे, बाहर न निकले।

परदापोश—वि० [फा० पर्दपोश] [भाव० परदापोशी] दूसरो के अव-गुणो, दोषो आदि को छिपानेवाला।

परदा-प्रथा—स्त्री० [हिं०+स०] कुछ एशियाई देशो और समाजो मे प्रचलित वह प्रथा जिसके अनुसार स्त्रियो को घर के अन्दर, परदे मे रखा जाता है और पर-पुरुषो के सामने नहीं होने दिया जाता।

परदुम्न*—पु० =प्रद्युम्न।

परदेदार—वि० [हिं० परदा+फा० दार] १ जिसके आगे, जिसमे या जिसपर किसी प्रकार का परदा लगा हो। जैसे—परदेदार एक्का या बहली। २ जो घर के अन्दर परदे मे रहती हो, और पर-पुरुषो के सामने न होती हो।

परदेदारी—स्त्री० [फा० पर्दादारी] १ परदेदार होने की अवस्था या भाव। २ स्त्रियो के घर के अन्दर रहने और पर-पुरुषो के सामने न आने की अवस्था या भाव। ३. वह स्थिति जिसमे किसी से कोई बात छिपाई जाती हो। उदा०—कुछ तो है जिसकी परदेदारी है।—कोई शायर।

परदेश—पु० [ष० त०] १ अपने देश से भिन्न दूसरा देश। २ वह देश जहाँ कोई व्यक्ति अपना देश छोड़कर आया हो। विदेश।

परदेशी (शिन्)—वि० [स० परदेश+इनि] परदेश-सबधी।

पु० वह व्यक्ति जो अपना देश छोडकर किसी दूसरे देश मे आया या रहता हो।

परदेस—पु० =परदेश।

परदेसिया—पु० [हिं० परदेसी] पूरब मे गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत जिनमे परदेस गये हुए पति के सबध मे उसकी प्रियतमा के उद्गारो का उल्लेख होता है और जिनके प्रत्येक चरण के अत मे 'परदेसिया' शब्द होता है। (बिदेसिया के अनुकरण पर) जैसे—घरी राति गइली पहर राति गइली, ते दुअरा करेला ठाढ़ मोर परदेसिया।

परदेसी—वि०, पु० =परदेशी।

परदोस*—पु० =प्रदोष।

परद्दा—पु० =परदा।

परधान—वि० =प्रधान।

पु० =परिधान।

पर-धाम—पु० [कर्म० स०] १ परलोक। बैकुठ-धाम। २ ईश्वर।

परन—पु० [म० पर्ण?] मृदग आदि बाजो को बजाते समय मुख्य बोलो के बीच-बीच मे बजाये जानेवाले बोलो के खड।

†पु० =प्रण (प्रतिज्ञा)।

*पु० =पर्ण।

*स्त्री० =परनि (आदत)।

परना—पु० [स० उपरना] अँगोछा। गमछा।

* अ० =पडना।

पर-नाद—पु० [कर्म० स०] वेदात मे, नाद का दूसरा नाम।

पर-नाना—पु० [हिं० पर+नाना] [स्त्री० पर-नानी] नाना का पिता।

पर-नाती—पु० [हिं० पर+नाती] [स्त्री० पर-नातिनी] नाती का लडका।

परनाम†—पु० =प्रणाम।

परनाल—पु० [स्त्री० अल्पा० परनाली] =पनाला (बडा नाला)।

परनाली—स्त्री० [?] अच्छे घोडो की पीठ के मध्य भाग का (पुट्ठो और कधो की अपेक्षा) नीचापन जो उनके तेज और बढिया होने का सूचक होता है।

क्रि० प्र०—पडना।

†स्त्री० =प्रणाली।

स्त्री० हिं० 'परनाला' (पनाला) का स्त्री० अल्पा०।

परनि, परनी—स्त्री० [हिं० पडना] पडी हुई आदत। अभ्यास। टेव। बान।

उदा०—राखौं हरकि उतै को धावें उनकी बैसिय परनि परी री।—सूर।

स्त्री० [हिं० आ पड़ना] आक्रमण। धावा। उदा०—अहे परनि भरि प्रेम की पहरथ पारि न प्रान।—बिहारी।

परनापरनी—स्त्री०=पन्नी (पतला वरक)।

परनै*—पु०=परिणय।

परनौत†—स्त्री०=प्रणाम।

परपंच—पुं०=प्रपंच।

परपंचक—वि०=परपंची।

परपंची—वि०[सं० प्रपंची] १. बखेड़िया। फसादी। २ चालाक। धूर्त। ३ मायावी।

पर-पक्ष—पु० [कर्म० स०] १ विपरीत या विरुद्ध पक्ष। २ अन्य या दूसरा पक्ष। ३ अन्य अथवा विपरीत पक्ष का कथन या मत।

परपट—पु० [हिं० पर+सं० पट=चादर] चौरस या समतल भूमि। वि०=चौपट।

परपटी—स्त्री० =पर्पटी।

परपरा*—वि०[अनु० पर-पर] 'पर-पर' आवाज के साथ टूटनेवाला। कुरकुरा।

वि०[हिं० पर-पराना] जिससे मुँह या कोई और अंग परपराये।

परपराना—अ०[अनु०][भाव० परपराहट] अंग मे मिर्च अथवा किसी अन्य कडवी या तीखी वस्तु का संयोग होने पर उसमे जलन होना। जैसे—मिर्च लगने से आँख या मुँह परपराना।

परपाक—पु०[सं० मध्य० स०] दूसरे के उद्देश्य से अथवा पंच यज्ञ के लिए भोजन बनाना।

पर-पाजा—पु०[हिं० पर+आजा] [स्त्री० परपाजी] आजा या दादा का बाप। पर-दादा।

पर-पार—पु०[कर्म० स०] उस ओर का तट। दूसरी तरफ का किनारा

परपिंडाद—वि०[सं० परपिण्ड, ष० त०, परपिण्ड√अद् (खाना)+अण्] दूसरो का अन्न खाकर जीवन बितानेवाला।

पु० दास। भृत्य।

पर-पीड़क—वि०[सं० ष० त०] १ दूसरो को सतानेवाला। २ दूसरो की पीडा या कष्ट का सहानुभूतिपूर्वक अनुभव करनेवाला। पराई पीडा समझनेवाला। (क्व०)

पर-पुरुष—पु०[कर्म० स०] १ विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पति से भिन्न कोई और पुरुष। २ साहित्य मे वह नायक जो परकीया से प्रेम करता हो। ३. परम पुरुष (परमात्मा)।

पर-पुष्ट—वि० [तृ० त०] [स्त्री० पर-पुष्टा] जिसका पोषण दूसरे ने किया हो।

पु० कोयल।

परपुष्टा—स्त्री०[सं० परपुष्ट+टाप्] १ वेश्या। रंडी। २ परगाछा। बाँदा।

परपूठा—वि०[सं० परिपुष्ट, प्रा० परिपुष्ट][स्त्री० परपूठी] पक्का। प्रौढ।

स्त्री०=परपुष्टा।

पर-पूर्वा—स्त्री०[सं० ब० स०, टाप्] वह स्त्री जिसने अपने पहले पति के मर जाने अथवा उसे छोडकर दूसरा पति कर लिया हो।

परपोता—पु० [हिं० परपौत्र] [स्त्री० परपोती] पोते का लडका।

परपौत्र—पु० [सं० प्रपौत्र] [स्त्री० परपौत्री] परपोता।

पर-प्रत्यय—पु०[सं० कर्म० स०] व्याकरण मे वह प्रत्यय जो शब्द के अन्त मे कोई विशेषता लाता हो। (टरमिनेशन, सफिक्स) जैसे—सरलता मे 'ता' पर-प्रत्यय है।

परफुल्ल†—वि०=प्रफुल्ल।

परफुल्लित†—भू० कृ०=प्रफुल्लित।

परबंचकता*—स्त्री०=प्रवंचकता।

परबंध—पु०[सं० पटबंध] नाच की एक गति जिसमे नाचने वाला एड़ियो के बल पैर खडे करके खडा रहता है और उसकी दोनो कोहनियाँ कमर से सटी रहती है।

परबंध†—पु०=प्रबंध।

परब—स्त्री०[हिं० पोर] १ पोर। २ जवाहिर या रत्न का छोटा टुकडा। पु० पर्व।

परबत†—पु०[सं० पर्वत] १ पर्वत। पहाड। २. पहाड पर बना हुआ किला या दुर्ग। ३ किला। दुर्ग। उदा०—परबत कहँ जो चला परबता।—जायसी। ४ दे० 'परबत्ता'। ५. दे० 'पर्वत'।

परबता—पु० =परबत्ता। उदा०—कहुँ परबते जो गुन तोहि पाहाँ।—जायसी।

परबतिया—वि० [हिं० परबत+इया (प्रत्य०)] पर्वत संबंधी। पर्वत पर होनेवाला। पहाडी।

स्त्री० पूर्वी नेपाल की बोलियो का वर्ग।

परबत्ता—पु०[सं० पर्वत] पहाडी तोता जो साधारण देशी तोते से बडा होता है। करमेल।

परबल†—पु० प्रबल।

पु०=परवल।

परबस—वि०[भाव० परबसताई]=परवश।

परबाल—पु०[हिं० पर=दूसरा+बाल=रोयाँ] आँख की पलक पर निकलनेवाला बाल या बिरनी जिसके कारण बहुत पीडा होती है।

पु० =प्रवाल।

परबी—स्त्री०[सं० पर्व] १ पर्व का दिन। २ पर्व का समय। पुण्य-काल।

परबीन†—वि०[भाव० परबीनता]=प्रवीण।

परबेस†—पु०=प्रवेश।

परबोध†—पु० प्रबोध।

परबोधना—स०[सं० प्रबोधन] १ प्रबोधन करना। २ जगाना। ३ अच्छी तरह समझना-बूझना। ४. ज्ञान प्राप्त कराना। ५. तसल्ली या दिलासा देना। धैर्य या सान्त्वना देना।

पर-ब्रह्म—पु०[सं० कर्म० स०] १ निर्गुण या निरुपाधि ब्रह्म। २ दादू दयाल द्वारा स्थापित एक सम्प्रदाय।

परभंजन†—पु० प्रभंजन।

परभव—पु० [कर्म स०] दूसरा जन्म। जन्मांतर।

परभा†—स्त्री०=प्रभा।

परभाइ, परभाउ†—पु० =प्रभाव।

पर-भाग—पु०[सं० कर्म० स०] १ दूसरी ओर का भाग या हिस्सा। २.[ष०

त०] कपड़ो की कढ़ाई, छपाई मे वह नीचेवाली पहली तह जिसके ऊपर रंग के सूतो से अथवा रग से आकृतियाँ बनाकर सौदर्य लाया जाता है। ३. चित्र-कला मे, चित्र की भूमिका या पृष्ठ भाग का दृश्य। (बैक-ग्राउड)
पु०[कर्म० स०] १ पश्चिमी भाग। २ अवशिष्ट या बचा हुआ भाग। ३. उत्तम सपदा। ४. उत्तम या श्रेष्ठ गुण अथवा उसका उत्कर्ष।

परभाग्योपजीवी (विन्)—वि० [स० पर-भाग्य, ष० त०, परभाग्य+उप√जीव् (जीना)+णिनि] दूसरे की कमाई खाकर रहनेवाला।

परभात—पु० =प्रभात।

परभाती—स्त्री० =प्रभाती।

परभारा—वि०[?] [स्त्री० परभारी] १ ऊपरी या बाहरी। २ तटस्थ या पराया (व्यक्ति)।

परभारे—अव्य० [?] १. ठीक मार्ग या साधन छोड़कर। २ अलग, दूसरे या बाहरी रास्ते से। (बुदेल०) जैसे—तुम बिना हमसे पूछे परभारे उनसे रुपए माँग लाये, यह तुमने ठीक नही किया।

परभाव—†पु० =प्रभाव।

पर-भुक्त—वि०[स० तृ० त०] [स्त्री० पर-भुक्ता] जिसका भोग कोई और कर चुका हो। दूसरे का भोगा हुआ।

परभुक्ता—स्त्री० [स० परभुक्त+टाप्] ऐसी स्त्री जिसके साथ पहले कोई और समागम कर चुका हो।

पर-भृत—वि०[तृ० त०] जिसका पालन किसी दूसरे ने किया हो। स्त्री० कोयल।
पु० कार्तिकेय।

परम—वि०[स० पर√मा (मान)+क] १ जो किसी क्षेत्र या वर्ग मे सबसे अधिक उन्नत, महत्त्वपूर्ण या योग्य हो। २. किसी दिशा या सीमा मे सबसे आगे बढा हुआ। अत्यत। ३ जिसके हाथ मे कुल या सब अधिकार या शक्तियाँ निहित हो। (एब्सोल्यूट) ४. मुख्य। प्रधान। ५ आरभिक या आदिम।
पु० १ शिव। २ विष्णु।

परम-आज्ञा—स्त्री० [स० कर्म० स०] ऐसी आज्ञा जो अतिम हो और जिसमे किसी प्रकार का परिवर्तन न हो सकता हो। (एब्सोल्यूट आर्डर)

परमक—वि० [स० परम+कन्] १ सर्वोच्च। सर्वोत्तम। सर्वश्रेष्ठ। २ चरम सीमा का। परले सिरे का।

परम-गति—स्त्री०[स० कर्म०स०] वह उत्तम गति जो मरने पर सत्पुरुषो को प्राप्त होती है। मोक्ष।

परमजा—स्त्री०[स० परम√जन् (उत्पन्न होना)+ड+टाप्] प्रकृति।

परमट—पु०[देश०] सगीत में एक प्रकार का ताल।
†पु०=परमिट।

परमटा—पु०[?]एक प्रकार का चिकना रगीन कपडा जो प्राय कोट के अस्तर के काम आता है। पनैला।

परमत—स्त्री०[सं० परमता?] १ साख। २. ख्याति। प्रसिद्धि।

परम-तत्त्व—पु० [कर्म० स०] १. दर्शन-शास्त्र और विज्ञान के अनुसार, वह मूलतत्त्व जो सृष्टि की समस्त वस्तुओ का सृष्टिकर्त्ता माना गया है। पदार्थ। २. ब्रह्म।

पर-मतिया—वि० [हिं० पर +मत] जो अपनी समझ से नही बल्कि दूसरो के सिखाने पर सब काम करता हो। दूसरो की मत से चलनेवाला।

पर-मद—पु०[स० ब० स०]बहुत अधिक मद्य पीने से होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर भारी हो जाता है और बहुत अधिक प्यास लगती है।

परम-धाम—पु०[कर्म० स०] बैकुठ। स्वर्ग।

परमन†—पुं० =परिमाण।

परमान्न—पु० [स० परम+अन्न] खाने-पीने की बहुत बढ़िया बढ़िया चीजें।

परमन्यु—पु०[ब० स०] यदुवशी कक्षेयु के एक पुत्र का नाम।

परम-पद—पु०[स० कर्म स०] १ सबसे श्रेष्ठ पद वा स्थान। २ सांसारिक बधनो से मिलनेवाला मोक्ष।

परम-पिता—पु०[स० कर्म० स०] ईश्वर। परमेश्वर।

परम-पुरुष—पु०[स० कर्म० स०] १. परमात्मा। २. विष्णु।

परम-फल—पु० [कर्म० स०] १ सबसे उत्तम फल या परिणाम। २. मुक्ति। मोक्ष।

परम-ब्रह्म (न्)—पु०[कर्म० स०]=परब्रह्म।

परम-ब्रह्मचारिणी—स्त्री०[कर्म० स०] दुर्गा।

परम-भट्टारक—पु० [कर्म० स०] [स्त्री० परम भट्टारिका] प्राचीन भारत मे एक-छत्र राजाओ की एक उपाधि।

परम-भट्टारिका—स्त्री०[स० कर्म० स०] प्राचीन भारत मे परम भट्टारक की रानी की उपाधि।

परम-रस—पु०[कर्म० स०] पानी मिला हुआ मट्ठा।

परमर्द्धिदेव—पु०[स० परम-ऋद्धि, ब० स०, परमर्द्धि-देव, कर्म० स०] महोबे के एक चदेलवशी राजा जो परमाल के नाम से भी प्रसिद्ध हैं।

परमर्षि—पु०[स० परम-ऋषि, कर्म० स०] वह जो ऋषियो मे परम हो। सर्वश्रेष्ठ ऋषि।

परमल—पु०[स० परिमल =कूटा य मला हुआ] ज्वार या गेहूँ का हरा या भिगोकर भुनाया हुआ चबेना।
†पु०=परिमल।

परमवीर-चक्र—पु०[स० परमवीर, कर्म० स०, परमवीरचक्र, ष० त०] विशिष्ट सैनिक अधिकारियो को असाधारण वीरता प्रदर्शित करने पर भारत-सरकार द्वारा प्रदान किया जानेवाला एक अलकरण।

परम-सत्ता—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वह सत्ता जो सबसे बढकर हो और जिसके ऊपर कोई और सत्ता न हो। (एब्सोल्यूट पावर)

परमसत्ताधारी (रिन्)—पु०[स० परमसत्ता√धृ (धारण)+णिनि] वह जिसे परम सत्ता प्राप्त हो।

परम-हस—पु० [कर्म० स०] १. परमात्मा। परमेश्वर। २ ज्ञान मार्ग मे बहुत आगे बढ़ा हुआ सन्यासी। ३. सन्यासियो का एक भेद जिन्हें दड, शिखा, सूत्र आदि धारण करना आवश्यक नही होता।

परमांगना—स्त्री० [सं० परमा-अगना, कर्म० स०] अच्छी और सुदरी स्त्री।

परमा—स्त्री०[स० परम+टाप्] बहुत बढ़ी-चढी हुई छवि या शोभा।
†स्त्री०=प्रमा (यथार्थ ज्ञान)।

†पु०=प्रमेह (रोग)।

परमाक्षर—पु०[सं० परम-अक्षर, कर्म० स०] ओंकार।

परमाटा—पु०[देश०] १ संगीत में एक प्रकार का ताल। २. पर्नैला या परमटा नाम का कपड़ा।

परमाणवीय—वि० दे० 'पारमाणविक'।

परमाणविक—वि०=पारमाणविक।

परमाणु—पु० [सं० परम-अणु, कर्म०स०] [वि० पारमाणविक, परमाणवीय] १ अत्यंत सूक्ष्म कण। २ विज्ञान में किसी तत्त्व का वह सबसे छोटा टुकड़ा या खण्ड जिसके टुकड़े हो ही न सकते हों। (एटम)

विशेष—अनेक परमाणुओं के योग से ही अणु बनते हैं।

परमाणु-परीक्षण—पुं०[सं०] नये बने हुए पारमाणिक शस्त्रों की शक्ति आदि का परीक्षण। (एटॉमिक टेस्ट)

परमाणु-बम—पु० [सं० परमाणु+अं० बाम्ब] एक प्रकार का बम (गोला) जिसमें रासायनिक क्रियाओं द्वारा अणु का विस्फोट होता है तथा जिसके फल-स्वरूप भीषण तथा व्यापक संहार होता है। (एटम बाम्ब)

परमाणुवाद—पु० [सं० प० त०] १ यह मत या सिद्धान्त कि परमाणुओं से ही जगत् की सृष्टि हुई है। (न्याय या वैशेषिक) (एटमिज्म) २. परमाणुओं को उपयोग में लाने का काम।

परमाणुवादी (दिन्)—वि० [सं० परमाणुवाद+इनि] परमाणुवाद-संबंधी।

पुं० वह जो परमाणुवाद का सिद्धांत मानता हो। (एटॉमिस्ट)

परमाणिकी—स्त्री० [सं०] भौतिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें परमाणुओं की रचना, शक्ति, आदि का विवेचन होता है। (एटमिस्टिक)

परमात्मा (त्मन्)—पु०[सं० परम-आत्मन्, कर्म० स०] ब्रह्म। परब्रह्म। ईश्वर।

परमादेश—पु० [सं० परम-आदेश, कर्म० स०] उच्च न्यायालय की ऐसी आज्ञा या आदेश जिसके द्वारा कोई काम करने अथवा न करने के लिए कहा गया हो। (रिट, रिट ऑफ मेंडामेस)

परमाद्वैत—पु०[सं० परम-अद्वैत, कर्म० स०] १ परमात्मा, जो सब प्रकार के भेदों आदि से रहित है। २ विष्णु।

परमाधिकार—पु० [सं० परम-अधिकार, कर्म० स०] वह सबसे बड़ा अधिकार जो किसी को उसके पद, लिंग, विशिष्ट गुण आदि के कारण प्राप्त होता है। (प्रेरोगेटिव) जैसे—(क) राजा या राज्यपाल को शासन का, (ख) मनुष्यों को सोच-समझकर काम करने का, (ग) स्त्रियों को संतान उत्पन्न करने का परमाधिकार होता है।

परमानंद—पु० [सं० परम-आनंद, कर्म० स०] १ वह उच्चतम आनंद जो आत्मा को परमात्मा में लीन करने पर प्राप्त होता है। २ आनंद स्वरूप ब्रह्म।

परमान†—पु० [सं० प्रमाण] १ प्रमाण। सबूत। २ यथार्थ या सत्य बात।

पु०[सं० परिमाण] १ नियत, अवधि मान या सीमा। जैसे—थाह, यह सदा १० हाथ लंबा ही होता है। २ सीमा। हद।

परमानना—प० [सं० प्रमाण] १ प्रमाण के द्वारा ठीक सिद्ध करना। २. प्रामाणिक या बिलकुल ठीक मानना या समझना। ३ मान लेना। स्वीकृत करना।

परमान्न—पु०[सं० परम-अन्न, कर्म० स०] खीर। पायस।

परमामुद्रा—स्त्री० [सं० व्यस्त पद] त्रिपुरदेवी की पूजा में एक प्रकार की मुद्रा।

परमायु (युस्)—स्त्री० [सं० परम-आयुस्, कर्म० स०] जीवनकाल की चरम सीमा।

विशेष—हमारे यहाँ उक्त सीमा १०० वर्ष मानी गई है।

परमायुध—पु०[सं० ब० स०, अच्] विजयसाल का पेड़। असन।

परमार—पु०[सं० पर =शत्रु + हिं० मारना]अग्निकुल के अन्तर्गत राजपूतों का एक वंश। पँवार।

परमारथ†—पु०=परमार्थ।

परमाराध्य—वि० = परम आराध्य।

परमार्थ—पु०[सं० परम-अर्थ, कर्म० स०] [वि० परमार्थी, परमार्थिक] १ ऐसा पदार्थ या वस्तु जो सबसे बढ़कर हो। जैसे—ब्रह्म पद या मोक्ष। २ वह परम तत्त्व जो नाम, रूप आदि से परे और सबसे बढ़कर वास्तविक माना गया है।

विशेष—न्याय में ऐसा सुख परमार्थ माना गया है जिसमें दुःख का सर्वथा अभाव हो।

३ बौद्ध दर्शन में, वस्तु का वास्तविक रूप और ज्ञान। ४ मोक्ष। ५ दूसरों का उपकार या भलाई। परोपकार।

परमार्थता—स्त्री०[सं० परमार्थ+तल्+टाप्] वास्तविक और सच्चे रूप में होनेवाली आध्यात्मिक यथार्थता।

परमार्थवाद—पु०[सं० प० त०] यह मत या सिद्धांत कि परमार्थ या परमतत्त्व का चिंतन और प्राप्ति ही मनुष्य का सबसे बड़ा कर्त्तव्य है।

परमार्थवादी (दिन्)—वि० [सं० परमार्थ√वद्+णिनि] परमार्थवाद संबंधी।

पु० १ परमार्थवाद का अनुयायी या पोषक। २ बहुत बड़ा ज्ञानी और तत्त्वज्ञ।

परमार्थी (थिन्) वि० [सं० परमार्थ+इनि] १ परमार्थ संबंधी ज्ञान का उपासक और चिन्तक। यथार्थ या वास्तविक तत्त्व को ढूंढ़नेवाला। २ मोक्ष चाहनेवाला। मुमुक्षु। ३ दूसरों की भलाई करनेवाला। परोपकारी।

परमावधि—स्त्री०[सं० परमा-अवधि, कर्म० स०] किसी काम या बात की अंतिम अवधि या चरम सीमा।

परमाह—पु० [सं० परम-अहन्, कर्म० स०,+टच्] १ सबसे बड़ा दिन। २ शुभ दिन।

परमिट—पु०[अं०] १ वह अधिकारिक लिखित अनुमति, जिसमें कोई काम करने अथवा कोई चीज खरीदने की अनुमति दी गई हो। २ कागज का वह टुकड़ा जिस पर उक्त अनुमति लिखी होती है।

परमिति—स्त्री०[कर्म० स०] १ परिमित। २ परम सीमा। ३ मर्यादा।

परमिन—पु०[?] एक प्रकार का साँप। कहते हैं कि इसकी फुफकार या हवा लगने से फोड़े निकल आते हैं।

परमीकरण मुद्रा—स्त्री०[सं० परमीकरण, परम+च्वि√कृ(करना)+ल्युट्—अन परमीकरण-मुद्रा, ष० त०], दे० 'महामुद्रा'।

परमीन—वि०=पराया। (पूरब) उदा०—कर कुटुम्ब सब मेलह परमीन। —मैथिली लोकगीत।

पर-मुख—वि०[ब० स०] १. जिसका मुँह दूसरी ओर या फिरा हुआ हो। विमुख। २. जो उपेक्षा कर रहा हो और ध्यान न दे रहा हो। †वि०=प्रमुख।

पर-मृत्यु—पुं० [ब० स०] कौआ, जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि आप से आप नहीं मरता।

परमेव†=प्रमेह (रोग)।

परमेश—पु०[सं० परम-ईश, कर्म० स०] परमेश्वर।

परमेश्वर—पु०[सं० परम-ईश्वर, कर्म० स०] १ सगुण ब्रह्म जो सारी सृष्टि का रचयिता और संचालक है। २. विष्णु। ३ शिव।

परमेश्वरी—वि०[सं० परमा-ईश्वरी, कर्म० स० ङीष्] परमेश्वर-संबंधी। स्त्री० दुर्गा।

परमेष्ट—वि०[सं० परम-इष्ट, कर्म० स०] [भाव० परमेष्टि] परम इष्ट।

परमेष्टि—स्त्री०[सं० परम-इष्टि, कर्म० स०] १ अंतिम अभिलाषा। २ मुक्ति। मोक्ष।

परमेष्ठ—पु०[सं० परमे√स्था (ठहरना)+क, अलुक् स०] चतुर्मुख ब्रह्मा। प्रजापति। (यजु०)

परमेष्ठिनी—स्त्री० [सं० परमेष्ठिन्+ङीप्] १ परमेष्ठी की शक्ति। देवी। २ श्री। ३ वाग्देवी। सरस्वती। ४ ब्राह्मी नाम की वनस्पति।

परमेष्ठी (ष्ठिन्)—पु०[सं० परमे√स्था+इनि, अलुक् स०] १ ब्रह्मा, अग्नि आदि देवता। २ तत्त्व। भूत। ३ प्राचीन काल का एक प्रकार का यज्ञ। ४ शालिग्राम की एक विशिष्ट प्रकार की मूर्ति। ५. विराट् पुरुष जो परम-ब्रह्म का एक रूप है। ६ चाक्षुष मनु का एक नाम। ७ गरुड। ८ जैनों के एक जिन देव। परमेसर।

परमेसुर—पु० =परमेश्वर।

परमेसरी—वि०, स्त्री०=परमेश्वरी।

परमोक *—पु० [सं० परिमोक्ष]=मोक्ष।

परमोद†—पु०=प्रमोद।

परमोदना†—स०=परमोधना।

परमोधना—स०[सं० प्रबोधन] १. प्रबोधन करना। परबोधना। २ मीठी-मीठी बातें करके किसी को अपनी ओर मिलाना।

परयंक†—पु०=पर्यंक।

परयस्तापह्नुति—स्त्री० दे० 'पर्यस्तापह्नुति'।

परयाग†—पु०=प्रयाग।

पर-राष्ट्र—पु०[सं० कर्म० स०] एक राष्ट्र की दृष्टि में दूसरा राष्ट्र। अपने राष्ट्र से भिन्न दूसरा राष्ट्र। अन्य राष्ट्र।

परराष्ट्र-नीति—स्त्री०[ष० त०] अन्य राष्ट्रों के प्रति किये जानेवाले व्यवहार के संबंध में बरती जानेवाली नीति। (फारेन पालिसी)

परराष्ट्र-मंत्रालय—पु०[ष० त०] पर-राष्ट्र मंत्री का मंत्रालय।

परराष्ट्र-मंत्री (त्रिन्)—पुं०[सं० ष० त०] किसी राष्ट्र के मंत्री-मंडल का वह सदस्य जिस पर विभिन्न राष्ट्रों से होनेवाले व्यवहारों, संबंधों आदि के निर्वाह का भार रहता है। (फारेन मिनिस्टर)

परराष्ट्रीय—वि० [सं० परराष्ट्र+छ—ईय] जिसका संबंध परराष्ट्र से हो।

परर—पु०[सं०√पृ(पूर्ण करना)+अरु] नीली भँगरैया।

परलउ—पु०[?] पत्थर।

परलय†—स्त्री०=प्रलय।

परला—वि०[सं० पर=उधर का, दूसरा+हिं० ला (प्रत्य०)] [स्त्री० परली] १ उधर का या उस ओरवाला। २ बहुत ही बढ़ा-चढ़ा। जैसे—परले सिरे का।

पद—परले सिरे का=अंतिम सीमा तक पहुँचा हुआ।

मुहा०—परले पार होना=(क) बहुत दूर तक जाना। (ख) समाप्त होना।

परलै†—स्त्री०=प्रलय।

पर-लोक—पु०[सं० कर्म० स०] १ इस लोक से भिन्न दूसरा लोक। २ वह सर्वश्रेष्ठ लोक, जहाँ मृत्यु के उपरान्त पवित्र आत्माएं निवास करती है। (हिंदू)

पद—परलोक-वास=मृत्यु।

मुहा०—परलोक सिधारना=परलोक जाना। स्वर्ग में जाना।

३ मृत्यु के उपरान्त आत्मा की दूसरी स्थिति की प्राप्ति।

परलोक-गमन—पु०[सं० त०] १. परलोक जाना। २ स्वर्ग सिधारना। मरना।

परलोक-प्राप्ति—स्त्री०[ष० त०] परलोक की प्राप्ति अर्थात् मृत्यु।

पर-वंचक—वि० [सं० ष० त०] [भाव० परवंचकता] दूसरों को ठगने या धोखा देनेवाला।

परवर†—पु० =परवल।

†पु०=परवाल (आँख का रोग)।

†पु० =प्रवर।

वि०[फा० पर्वर] परवरिश या पालन-पोषण करनेवाला। जैसे—गरीब परवर।

परवर-दिगार—वि० [फा० पर्वरदिगार] सबका पालन करनेवाला। पु० परमेश्वर।

परवरना†—अ०[सं० प्रवर्तन] चलना-फिरना।

परवरिश—स्त्री०[फा० पर्वरिश] पालन-पोषण।

परवर्त *—वि०=प्रवर्तित। उदा०—विष्णु की भक्ति परवर्त जग मैं करी।—सूर

परवर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० पर √वृत् (रहना) +णिनि] १. काल-क्रम या घटना-क्रम की दृष्टि से बाद में या पीछे होनेवाला। (लेटर) २ बाद के समय का। (सबसीक्वेन्ट) ३ जो पहले एक बार या एक रूप में हो चुकने पर बाद में कुछ और रूप में हो। (सेकेन्डरी) जैसे—पौधों की परवर्ती वृद्धि।

परवल—पु०[सं० पटोल] १. एक प्रसिद्ध लता। २ उक्त लता का फल जिसकी तरकारी बनाई जाती है। ३ चिचडा जिसके फलों की तरकारी होती है।

पर-वश—वि०[सं० ब० स०] [भाव० परवशता] १ जो दूसरे के वश में हो और इसी लिए जो स्वतंत्रतापूर्वक आचरण न कर सकता हो। २. जो दूसरे पर निर्भर करता हो।

पर-वश्य—वि०[ष० त०] [भाव० परवश्यता] परवश।

परवस्ती†—स्त्री० दे० 'परवरिश'।

परवा†—पु० =पुरवा।
†स्त्री०[देश०] एक प्रकार की घास।
स्त्री० =प्रतिपदा (तिथि)।
†स्त्री० =परवाह।

परवाई†—स्त्री० =परवाह।

पर-वाच्य—वि०[तृ० त०] दूसरों द्वारा निंदित।

परवाज—वि०[फा० पर्वाज़] [भाव० परवाजी] समस्त पदों के अंत में; उड़नेवाला। जैसे—बलंदपरवाज =ऊँचा उड़नेवाला।
स्त्री० उड़ने की क्रिया या भाव। उड़ान।

परवाणि—पुं० [सं० पर√वण् (शब्द करना)+णिच्+इन्] १ धर्माध्यक्ष। २ कार्तिकेय का वाहन, मोर। ३ वत्सर। वर्ष।

परवान् (वत्) [सं० पर+मतुप्, वत्व] १. पराश्रयी। २ पराधीन। ३ असहाय।

परवान—पुं० [सं० प्रमाण] १. प्रमाण। सबूत। २ ठीक, वास्तविक या सत्य बात। ३ सीमा। हद।
वि० १. उचित। ठीक। वाजिब। २. प्रमाणिक और विश्वसनीय।
पु० [फा० पर्वाल] १ उड़ान।
मुहा०—**परवान चढ़ना** =(क) बहुत अधिक उन्नति करते हुए परम सुखी और सौभाग्यशाली होना। (स्त्रियाँ) (ख) पूर्णता तक पहुँचना। (ग) सफल होना।
२ जहाजों के ठहरने की जगह। बन्दरगाह।
†पु० =प्रमाण।

परवानगी—स्त्री० [फा० पर्वानगी] आज्ञा। अनुमति।

परवानना*—स०[सं० प्रमाण] किसी बात को ठीक और प्रामाणिक मानना या समझना।

परवाना—पु०[फा० पर्वान] १ प्राचीन काल में वह लिखित आज्ञा जो राजा की ओर से किसी को भेजी जाती थी। २ किसी प्रकार के अधिकार या अनुमति का सूचक पत्र। जैसे—तलाशी का परवाना, राहदारी का परवाना। ३ पतिंगा, विशेषत वह पतिंगा जो दीपक की लौ के चारों ओर मँडराता हो और अंत में उसी से जल मरता हो। शलभ। ४ लाक्षणिक अर्थ में, वह व्यक्ति जो किसी पर अत्यन्त मुग्ध हो और उसके प्रेम में अपने आप को बलिदान कर दे अथवा आत्म-बलिदान के लिए प्रस्तुत रहे। जैसे—देश का परवाना। ५ प्रेमिका के रूप-सौंदर्य पर अत्यधिक मुग्ध व्यक्ति। ६ लोमड़ी के आकार का एक वन्य पशु जो शेर के आगे-आगे चलता है।

परवाना राहदारी—पु० दूसरे क्षेत्र या दूसरे देश में जाने अथवा कोई चीज ले आने के लिए अधिकारी की ओर से मिलनेवाला स्वीकृति-पत्र।

परवाया—पु०[हिं० पैर+पाया] ईंट, पत्थर या लकड़ी का वह टुकड़ा जो चारपाई के पाये के नीचे रखा जाय।

परवाल—पु० १ =परबाल। २ =प्रवाल।

परवास*—पु०[सं० प्रवास] १ प्रवास। २ आच्छादन।

पर-वासिका, पर-वासिनी—स्त्री०[सं० त०] बाँदा। बदाक। परगाछा।

परवाह—स्त्री०[फा० पर्वा] १ कोई काम (विशेषत अनुपयुक्त या अनुचित काम) करते समय मन को होनेवाला यह औचित्यपूर्ण विचार कि इस काम से बड़ों के मान को ठेस तो न लगेगी।
विशेष—यह शब्द इस अर्थ में प्राय नहिक रूप में ही प्रयुक्त होता है। जैसे—हमें इस बात की परवाह नहीं है।
२ आसरा। भरोसा। उदा०—जग में गति जाहि जगत्पति की परवाह सो ताहि कहा नर की। —तुलसी। ३ चिंता। फिक्र।
†पु० =प्रवाह।

परवाहना—स०[सं० प्रवाह+हिं० ना (प्रत्य०)] प्रवाहित करना।

पर-विंदु—पु०[कर्म० स०] वेदांत में विंदु का दूसरा नाम।

परवी—स्त्री०[सं० पर्व] पर्व-काल।

परवीन†—वि० =प्रवीण।

परवेल†—पु० =परिवेश।

परवेज—पु०[फा० पर्वेज] १ विजयी। २ नौशेरवाँ का पोता जो शीरीं का आशिक था।

परवेश†—पु० =प्रवेश।

पर-वेश्म (श्मन)—पु०[ब० स०?] स्वर्ग।

पर-व्रत—पु०[ब० स०] धृतराष्ट्र का एक नाम।

परश—पु०[सं० स्पर्श, पृषो० सिद्धि] स्पर्शमणि। पारस पत्थर।
पु० =स्पर्श।

परशु—पु०[सं० पर√शृ (हिंसा)+कु, डित्व] कुल्हाड़ी की तरह का पर उससे बड़ा एक अस्त्र जिससे प्राचीन काल में योद्धा लोग एक दूसरे पर प्रहार करते थे।

परशु-धर—वि०[ष० त०] परशु नामक अस्त्र धारण करनेवाला।
पु० परशुराम।

परशु-मुद्रा—पु०[मध्य० स०] तंत्र में एक प्रकार की मुद्रा।

परशु-राम—पु०[ब० स०] रेणुका के गर्भ से उत्पन्न जमदग्नि ऋषि के पुत्र जिन्होंने २१ बार क्षत्रिय वंश का नाश किया था।
विशेष—ये विष्णु के छठवें अवतार कहे गये हैं। इनका यह नाम 'परशु' धारण करने के कारण पड़ा था।

परशु-वन—पु० [सं० मध्य० स०] एक नरक का नाम।

परश्वध—पु० [सं० पर√दिव (वृद्धि)+ड परश्व, ष० त०,√धे (पान)+क] परशु नामक अस्त्र।

परसंग†—पु० प्रसंग।

परसंसा†—स्त्री० प्रशंसा।

परस†—पु० [सं० स्पर्श] परसने की क्रिया या भाव। स्पर्श।
पु० [सं० परश] पारस पत्थर।

परसन—पु० [सं० स्पर्शन] परसने की क्रिया या भाव। छूना। स्पर्श। जैसे—दरसन-परसन।

परसना—स० [सं० स्पर्शन] १ स्पर्श करना। छूना। २ अनुभूत करना। उदा०—कछु भेदियाँ पीर हिये परसों। —घनानन्द। ३. भोजन करनेवालों की थालियों, पत्तलों आदि में खाद्य पदार्थ रखना। ५ भोजन कराना। परोसना।
अ० खाद्य पदार्थों का पत्तलों आदि में रखा या लगाया जाना।

परसन्न—वि० [भाव० परसन्नता] प्रसन्न।

परसमनि—पु० स्पर्शमणि (पारस पत्थर)।

परसर्ग—पु० [सं० ब० स०] आधुनिक भाषा-विज्ञान में, ने, को, के, से, में आदि संज्ञा-विभक्तियाँ जिनके संबंध में यह कहा जाता है कि ये

प्रकृति के साथ सटाकर नहीं बल्कि प्रकृति से हटाकर लिखी जानी चाहिए।

पर-सवर्ण—पु० [स० समान-वर्ण, कर्म० स०, स—आदेश, पर-सवर्ण, तृ० त०] पर या उत्तरवर्ती वर्ण के समान वर्ण।

परसा—पु०=परशु। २ =फरसा।
† पुं०=परोसा।

परसाद—पु०=प्रसाद।
†अव्य० [स० प्रसादात्] १. प्रसाद या कृपा से। २. वजह से। कारण।

परसादी—स्त्री० =परसाद (प्रसाद)।

परसाना—स० [हिं० परसना] १. स्पर्श कराना। छुआना। २ भोजन परसने या परोसने का काम किसी से कराना।

पर-साल—अव्य० [स० पर+फा० साल] १. गत वर्ष। पिछले साल। २. आगामी वर्ष। अगले साल।
†स्त्री० पास सारी नामक घास।

परसिद्ध† —वि० =प्रसिद्ध।

परसिया—पु० [देश०] एक तरह का पेड जिसकी लकडी मेज, कुरसियाँ आदि बनाने के काम आती है।
स्त्री० [स० परशु, हिं० परसा] १. छोटा परशु। २ हँसिया।

परसी—स्त्री० [देश०] एक तरह की छोटी मछली।

परसु†—पु०=परशु।

पर-सूक्ष्म—पु० [स० कर्म० स०] आठ परमाणुओं के बराबर की एक तौल।

परसूत†—वि०=प्रसूत।

परसेद†—पु० =प्रस्वेद।

परसों—अव्य० [स० परश्व] १. बीते हुए दिन से ठीक पहलेवाला दिन। २ आगामी कल के बादवाला दूसरा दिन।

परसोतम†—पु०=पुरुषोत्तम।

परसोर†—पु० [देश०] एक तरह का अगहनी धान।

परसौहाँ *—वि० [हिं० परसना+औहाँ (प्रत्य०)] स्पर्श करने या छूनेवाला।

पर-स्त्री—स्त्री० [ष० त०] दूसरे की स्त्री। विशेषत अपनी पत्नी से भिन्न दूसरे की पत्नी।

परस्त्री-गमन—पु० [स० परस्त्रीगमन, स० त०] पराई स्त्री के साथ संभोग करना जो विधिक दृष्टि से अपराध और धार्मिक दृष्टि से पाप है।

परस्पर—अव्य० [स० पर, द्वित्व, सकार का आगम] १. एक दूसरे के साथ। जैसे—दोनो रेखाओ को परस्पर मिलाओ। २. दो या दो से अधिक पक्षों में। जैसे—बच्चे परस्पर मिठाई बाँट लेगे। ३ एक दूसरे के प्रति। जैसे—इन लोगो मे परस्पर वैर है।

परस्पर-व्यापी—वि० [स०] (चीजे, बातें या स्थितियाँ) जो आपस मे आंशिक रूप मे एक दूसरे के क्षेत्र का अतिक्रमण करके उनमे व्याप्त हो। अतिच्छादित। (ओवरलैपिंग)

परस्परोपमा—स्त्री० [स० परस्पर-उपमा, ष० त०] उपमेयोपमा। (दे०)

परस्मैपद—पु० [स० अलुक स०] संस्कृत धातुओ का एक वर्ग जिनसे बननेवाली क्रियाएँ कर्त्ता की अनुसारी होती है। 'आत्मनेपद' से भिन्न।

परस्व—पु० [स०] १. दूसरे की सपत्ति। २. पराधीनता।

पर-हथ—अव्य० [हिं० पर+हाथ] दूसरे के हाथ मे। दूसरे की अधीनता मे।

परहरना *—स० [स० परिहास] छोडना। तजना।

परहार†—पु०=प्रहार।
†पु०=परिहार।

परहारी—पु० [स० प्रहरी] जगन्नाथ जी के मदिर के वे पुजारी जो मदिर ही मे रहते है।

परहेज—पु० [फा० पर्हेज] १ ऐसी वस्तुओं का सेवन न करना अथवा ऐसे कार्य न करना जिनसे स्वास्थ्य बिगडता हो अथवा सुधरती हुई शारीरिक स्थिति मे बाधा पहुँचती हो। २ सयमपूर्वक रहना। ३ बुरी बातो से दूर रहना या बचना।

परहेजगार—पु० [फा० पर्हेजगार] [भाव० परहेजगारी] १ परहेज करनेवाला। २ इद्रियो को वश मे रखनेवाला। सयमी। ३ धार्मिक दृष्टि से दोषो, पापो आदि से बचकर रहनेवाला। धर्म-निष्ठ।

परहेजगारी—स्त्री० [फा०] परहेजगार होने की अवस्था या भाव।

परहेलना—स० [स० अवहेलना] अवहेलना या उपेक्षा करना। उदा०—तेहि रिस हौ परहेलिउँ।—जायसी।

परांग—पु० [स० पर-अग, ष० त०] १ दूसरे का अग। [कर्म० स०] २ श्रेष्ठ अग।

परांगद—पु० [स० पराग√दा (देना)+क] शिव।

परांगभक्षी (क्षिन्)—वि० [स० पराग√भक्ष (खाना)+णिनि] १. वह जो दूसरो के अग खाता हो। २ परजीवी।

परांगव—पु० [स० पराग√वा (गति)+क] समुद्र।

परांचा—पु० [फा० प्राच] १ तख्ता। २ तख्ता की पाटन। ३ नावो का बेडा।

परांज—पु० [स० पर√अञ्ज् (चिकना करना)+अच्] १ तेल निकालने का यत्र। कोल्हू। २ फेन। ३ छुरी, तलवार आदि का फल।

परांजन—पु० =पराज।

परांठा—पु० [हिं० पलटना] [स्त्री० अल्पा० परांठी] तवे पर घी लगाकर सेकी हुई रोटी।

परांत—पु० [स० पर-अत, कर्म० स०] मृत्यु।

परांतक—पु० [स० पर-अतक, कर्म० स०] शिव।

परांत-काल—पु० [ष० त०] १. मृत्यु का समय। २ वह समय जब कोई आवागमन के चक्र से छूटने के लिए अतिम बार शरीर छोड रहा हो।

परांदा†—पु० [फा० परद] [स्त्री० अल्पा० परांदी] स्त्रियों के बाल गूँथने की चोटी।

परा—उप० एक संस्कृत उपसर्ग जो निम्नलिखित अर्थों मे प्रयुक्त होता है—(क) दूरी पर। परे। जैसे—पराकरण। (ख) आगे की ओर। जैसे—पराक्रमण। (ग) विपरीतता। जैसे—पराजय, पराभव।
वि० [स० पर का स्त्री०] १. जो सब से परे हो। २ उत्तम। श्रेष्ठ।
स्त्री० [स०√पृ (पूर्ति)+अच्+टाप्] १ चार प्रकार की वाणियों मे पहली जो नाद स्वरूपा और मूलाधार से निकली हुई मानी गई है।

२. वह विद्या जो ऐसी वस्तु का ज्ञान कराती है जो सब गोचर पदार्थों से परे हो। ब्रह्मविद्या। ३ एक प्रकार का साम-गान। ४ एक प्राचीन नदी। ५ गगा। ६ बाँझ-ककोडा।

पु० [हि० पारना] रेशम फेरनेवाला का लकडी का एक औजार।

†पु० [?] कतार। पक्ति। जैसे—फौजें परा बाँधकर खडी थी। क्रि० प्र०—बाँधना।

पराई*—वि० हि० 'पराया' का स्त्री०।

पराक—पु० [स० पर-आक, ब० स०] १ दे० 'कृच्छ्रपराक'। २ खड्ग। ३ एक प्रकार का रोग। ४ एक प्रकार का छोटा कीडा या जतु।

परा-करण—पु० [स० परा√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १ दूर करना या परे हटाना। २ अस्वीकृत कराना। ३ तिरस्कृत करना।

पराकाश—पु० [स० परा√काश् (चमकना)+घञ्] १ शतपथ ब्राह्मण के अनुसार दूर-दर्शिता। दूर की सूझ। २ दूरवर्ती आशा। ३ दूर का दृश्य।

पराकाष्ठा—स्त्री० [स० व्यस्तपद] १ चरम सीमा। सीमात। हद। अन्त। २ लाक्षणिक अर्थ मे किसी कार्य या बात की ऐसी स्थिति जहाँ से और आगे ले जाने की कल्पना असभव हो। जैसे—झूठ की पराकाष्ठा। ३ ब्रह्मा की आधी आयु की सख्या। ४ गायत्री का एक भेद।

पराकोटि—स्त्री०=पराकाष्ठा।

पराक्पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०,+ङीप्] आपामार्ग। चिचडी।

पराक्रम—पु० [स० परा√क्रम् (गति)+घञ्] [वि० पराक्रमी] १ आगे की ओर अथवा किसी के विरुद्ध गमन करना या चलना। २ आगे बढकर किसी पर आक्रमण करना। ३ वह गुण या शक्ति जिसके द्वारा मनुष्य कठिनाइयों को पार करता हुआ आगे बढता है और उत्साह, वीरता आदि के अच्छे और बडे काम करता है। ४ उद्योग। पुरुषार्थ।

मुहा०—**पराक्रम चलना**=शारीरिक सामर्थ्य के आधार पर पुरुषार्थ या उद्योग हो सकना। जैसे—जब तक हमारा पराक्रम चलता है, तब तक हम कुछ न कुछ काम करते ही रहेंगे।

पराक्रमण—पु० [स० परा√क्रम्+ल्युट्—अन] आगे की ओर अथवा किसी के विरुद्ध बढना।

पराक्रमी (मिन्)—वि० [स० पराक्रम+इनि] १ जिसमे यथेष्ठ पराक्रम हो। २ पराक्रम करने या दिखानेवाला अर्थात् बलवान या वीर। ३ पुरुषार्थी।

पराक्रात—वि० [स० परा√क्रम्+क्त] १ पीछे की ओर मोडा हुआ। २ जिसमे उत्साह और वीरता हो। ३ आक्रात।

पराग—पु० [स० परा√गम् (जाना)+ड] १ वह रज या धूल जो फूलों के बीच लम्बे केसरो पर जमा रहती है। पुष्पराज। (पोलेन) २ धूलि। रज। ३ चन्दन। ४ कपूर के छोटे कण। ५ एक प्राचीन पर्वत। ६ उपराग। स्वच्छन्द रूप मे होनेवाली गति। ८ प्राचीन भारत मे नहाने से पहले शरीर पर लगाने का एक सुगधित चूर्ण।

पराग-केसर—पु० [मध्य० स०] फूलो के बीच का वह केसर (गर्भ केसर से भिन्न) या सींगा जो उसका पुलिंग अग माना जाता है। (स्टैमेन)

परागज्वर—पु० [स०] एक प्रकार का रोग जो कुछ घासो और वृक्षो का पराग शरीर मे पहुँचने से उत्पन्न होता है। इसमे आँखें और ऊपरी स्वास सस्थान मे सूजन होती है जिससे छीके आने लगती हैं और कभी-कभी ज्वर तथा दमा भी हो जाता है।

परागण—पु० [स० परागकरण] पेड-पौधो का पराग या पुष्परज से युक्त होना या किया जाना। (पोलिनेशन)

परागत—भू० कृ० [स० परा√गम् (जाना)+क्त] १. दूर गया हुआ। २ मरा हुआ। मृत। ३ घिरा हुआ। ४. फैला हुआ। विस्तृत।

परागति—स्त्री० [स० परा√गम्+क्तिन] गायत्री।

परागना—अ० [स० उपराग विषयाशक्ति] आसक्त होना।

अ० [स० पराग+हि० ना (प्रत्य०)] पराग से युक्त होना।

स० पराग मे युक्त करना।

पराङमुख—वि० [स० ब० स०] १ जो पीछे की ओर मुँह फेरे हुए हो। विमुख। २ जो किसी की ओर ध्यान न देकर उसकी ओर से मुँह फेर ले। ४ उदासीन। ४. विपरीत। विरुद्ध।

पराच्—वि० [स० परा√अञ्च् (गति)+क्विप्] १ प्रतिलोमगामी। उलटा चलन या जानेवाला। ऊर्ध्वगामी। ३ परोक्ष मे जानेवाला। ३ जिसका मुँह बाहर की ओर हो।

पराचीन—वि० [स० पराच्+ख—ईन] १ पराङमुख। २ दूसरी ओर स्थित।

†वि० प्राचीन।

पराछित*—पु०=प्रायश्चित। उदा०—मारयाँ परछित लागसी म्हाँने दीजा पीहर मल।—मीराँ।

पराजय—स्त्री० [स० परा√जि (जीतना)+अच्] प्रतियोगिता, युद्ध आदि मे होनेवाली हार। शिकस्त। 'जय' का विपर्याय।

पराजिका—स्त्री० [स० उपराजिका या हि० परज] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

पराजित—भू० कृ० [स० परा√जि+क्त] हराया या हारा हुआ।

पराणसा—स्त्री० [स० परा√अन् (जीना)+अस+टाप्] चिकित्सा। औषधोपचार। इलाज।

परात—स्त्री० [स० पात, मि० पुर्त्त० प्राट] थाली के आकार का ऊँचे किनारोवाला एक बडा बरतन।

परात्पर—वि० [स० अलुक् स०] जिसके परे या जिससे बढकर कोई दूसरा न हो। सर्वश्रेष्ठ।

पु० १ परमात्मा। २ विष्णु।

परात्प्रिय—पु० [स० अलुक् स०] कुश की तरह की एक प्रकार की घास जिसम जौ या गेहू के से दाने पडते है। उलपतृण।

परात्मा (त्मन्)—पु० [स० पर-आत्मन्, कर्म० स०] परमात्मा। परब्रह्म।

परादन—पु० [स० पर-अदन, ब० स०] अरब या फारस देश का एक प्रकार का घोडा।

पराधि—स्त्री० [स० पर-आधि, कर्म० स०] तीव्र मानसिक व्यथा।

पराधीन—वि० [सं० पर-अधीन, ष० त०] [भाव० पराधीनता] जो दूसरे या दूसरों के अधीन हो। जिसपर किसी दूसरे का अंकुश या शासन हो।

पराधीनता—स्त्री० [सं० पराधीन+तल्+टाप्] पराधीन होने की अवस्था या भाव।

परान†—पुं०=प्राण।

पराना—अ० [सं० पलायन] १ भागना। २. दूर होना।
स० १. भगाना। २. दूर करना।
*वि० [स्त्री० परानी]=पुराना।
†स०=पिराना।

परानी†—पुं० =प्राणी।

परान्न—पुं० [सं० पर-अन्न, ष० त०] दूसरे का दिया हुआ अन्न या भोजन। पराया धान्य।

परान्नभाजी (जिन्)—वि० [सं० परान्न√भुज् (खाना)+णिनि] जो दूसरों का दिया हुआ अन्न खाकर पलता हो।

परापति†—स्त्री०=प्राप्ति।

परापर—वि० [सं० पर+अपर] १ पर और अपर। २. जिसमें परत्व और अपरत्व दोनों गुण हों। (वैशेषिक) ३. अच्छा और बुरा
पुं० फालसा।

परापरज्ञ—वि० [सं०] १. पर और अपर का ध्यान रखनेवाला। २. ऊँच-नीच या भला-बुरा समझनेवाला।

पराभक्ति—स्त्री० [सं० व्यस्त पद] मनुष्य के मन में ईश्वर के प्रति होनेवाली वह विशुद्ध भक्ति जिसमें अपने स्वार्थ या हित की कुछ भी कामना नहीं होती। साध्या भक्ति।

पराभव—पुं० [सं० परा√भू (होना)+अप्] १ व्यक्ति, जाति देश आदि का होनेवाला पतनोन्मुखी तथा ह्रासमय अंत। २. नाश। विनाश। ३ पराजय। हार। ४ अपमान। बेइज्जती।

पराभिक्ष—पुं० [सं० पर-आ√भिक्ष् (माँगना)+अण्] एक प्रकार का वानप्रस्थ जो थोड़ी सी भिक्षा से निर्वाह करता हो।

पराभूत—भू० कृ० [सं० परा√भू+क्त] १. जिसका पराभव किया गया हो, या हुआ हो। हराया या हारा हुआ। पराजित। परास्त। २ ध्वस्त। विनष्ट।

पराभूति—स्त्री० [सं० परा√भू+क्तिन्] दे० 'पराभव'।

परा-मनोविज्ञान—पुं० [सं०] आधुनिक खोजों और प्रयोगों के आधार पर स्थित एक नया विज्ञान जिसमें यह सिद्ध होता है कि मनुष्य में अथवा उसकी आत्मा या मन में कुछ ऐसी आध्यात्मिक और मानसिक शक्तियाँ हैं जो काल, देश तथा शरीर की सीमाओं में बद्ध नहीं हैं और जो ऐसे अद्भुत कार्य करती हैं जिनका साधारण बुद्धि या विज्ञान से किसी प्रकार का समाधान नहीं होता। (पैरा-साइकोलाजी)

परा-मनोवैज्ञानिक—वि० [सं०] परा-मनोविज्ञान-संबंधी।
पुं० परा-मनोविज्ञान का ज्ञाता या पंडित।

परामर्श—पुं० [सं० परा√मृश् (छूना)+घञ्] १. पकड़ना। खींचना। जैसे—केश-परामर्श। २. विवेचन। विचार। ३. विवेचन या विचार के लिए आपस में होनेवाली सलाह। ४. किसी विषय में दूसरे से ली जानेवाली सलाह। ५. निर्णय।

क्रि० प्र०—करना। देना।—माँगना।—लेना।
६. अनुमान। अन्दाज। अटकल। ७. याद। स्मृति। ८. तरकीब युक्ति।

परामर्श-दाता (तृ)—पुं० [सं० ष० त०] [स्त्री० परामर्शदात्री] दूसरों को परामर्श या सलाह देनेवाला।

परामर्शदात्री-परिषद्—स्त्री० [सं० व्यस्तपद]=परामर्श-समिति।

परामर्शन—पुं० [सं० परा√मृश्+ल्युट्—अन] १ खींचना। २. परामर्श अथवा सलाह करने की क्रिया या भाव। ३ चिन्तन, ध्यान या स्मरण।

परामर्श-समिति—स्त्री० [सं० व्यस्त पद] वह समिति जो किसी विषय के संबंध में अपनी राय देने के लिए नियुक्त की जाती है।

परामृत—वि० [सं० पर-अमृत, कर्म० स०] जिसने मृत्यु को जीत लिया हो।

परामृष्ट—भू० कृ० [सं० परा√मृश्+क्त] १. पकड़कर खींचा हुआ। २. पीड़ित। ३. जिसके संबंध में परामर्श हो चुका हो। ४ जिसके विषय में विचार के उपरांत निर्णय या निश्चय हो चुका हो।

परायचा—पुं० [फा० पार्चः] १ कपड़ों के कटे टुकड़ों की टोपियाँ आदि बनाकर बेचनेवाला। २ सिले-सिलाये कपड़े बेचनेवाला रोजगारी।

परायण—वि० [सं० पर-अयन, ब० स०] [स्त्री० परायणा] १. गया या बीता हुआ। गत। २ किसी काम या बात में अच्छी तरह लगा हुआ। निरत। जैसे—कर्तव्यपरायण। ३ किसी के प्रति पूर्ण निष्ठा या भक्ति रखनेवाला। जैसे—धर्मपरायण स्त्री।
पुं० १ वह स्थान जहाँ शरण मिली हो। शरण का स्थान। २ विष्णु।

परायत्त—वि० [सं० पर-आयत्त, ष० त०] पराधीन।

पराया—वि० पुं० [सं० पर+हिं० आया (प्रत्य०) [स्त्री० पराई] १. जिसका संबंध दूसरे से हो। अपने से भिन्न। 'अपना' का विपर्याय। २ आत्मीय या स्वजन से भिन्न।
पद—पराया समझकर=आत्मीयता के भाव से रहित या विमुख होकर।

परायु (युस्)—पुं० [सं० पर-आयुस्, ब० स०] ब्रह्मा, जिनकी आयु सब से अधिक कही गई है।

परार†—वि०=पराया।

परारध†—पुं०=परार्द्ध।

परारब्ध†—पुं०=प्रारब्ध।

परारि—अव्य० [सं० पूर्वतर+अरि, नि० पर—आदेश] पूर्वतर वर्ष में। परियार साल।

परारु—पुं० [सं० परा√ऋ (गति)+उण्] करेला।

परारुक—पुं० [सं० परा√ऋ+उक] १ चट्टान। २. पत्थर।

परार्थ—वि० [सं० पर-अर्थ, नित्य स०] [भाव० परार्थता] जो दूसरे के निमित्त हो।
पुं० १. दूसरों का ऐसा काम जो उपकार की दृष्टि से किया जाता हो। २. दे० 'परमार्थ।'

परार्थवाद—पुं० [सं० ष० त०] यह सिद्धांत कि जहाँ तक हो सके, दूसरों का उपकार करते रहना चाहिए। (एल्ट्रूइज्म)

परार्थवादी (दिन्)—वि० [सं० परार्थ√वद् (बोलना)+णिनि] परार्थवाद-संबंधी।
पु० १ परार्थवाद का अनुयायी। २ वह जो सदा दूसरों का उपकार करता हो।

परार्द्ध—पु० [सं० अर्ध,√ऋधे (वृद्धि)+अच्, पर-अर्ध, कर्म० स०] १. बादवाला आधा अंश। उत्तरार्द्ध। २. वह संख्या जिसे लिखने में अठारह अंक होते हैं। एक शंख। १०००००००००००००००००। ३. ब्रह्मा की आयु का परवर्ती आधा अंश।

परार्द्धि—पु० [सं० परा-ऋद्धि, ब० स०] विष्णु।

परार्घ्य—वि० [सं० परार्ध+यत्] १ श्रेष्ठ। २ उत्तम।
पु० १ असीम संख्या। २. सबसे बड़ी वस्तु।

परालब्ध†—पु०=प्रारब्ध।

पराव—पु० =परायापन।
† वि० =पराया।
पु० [हिं० पराना] भागने की क्रिया या भाव।

परावत—पु० [सं० परा√अव् (रक्षण आदि)+अतच्] फालसा।

परावन—पु० [सं० पलायन, हिं० पराना] १ एक साथ बहुत से लोगों का भागना। भगदड़। पलायन।
वि० भागनेवाला। भग्गू।
पु० [हिं० पड़ना, पड़ाव] गाँववालों का गाँव के बाहर डेरा डालकर उत्सव मनाना।

परावर—वि० [सं० पर-अवर, कर्म० स०] [स्त्री० परावरा] १ पहले और पीछे का। २ निकट और दूर का। ३ सर्वश्रेष्ठ।
पु० १ कारण और कार्य। २ विश्व। ३ अखिलता।

परावर्त—पु० [सं० परा√वृत् (बरतना)+घञ्] १ लौटकर पीछे आना। प्रत्यावर्तन। २ अदला-बदली। विनिमय। ३ दे० 'प्रति-वर्तन'।

परावर्तक—वि० [सं० परा√वृत्+ण्वुल्—अक] १. लौटकर पीछे आने या जानेवाला। २ अदल-बदल जानेवाला।

परावर्तन—पु० [सं०परा√वृत्+ल्युट्—अन] १ लौटकर पीछे आना। प्रत्यावर्तन। २. उलटने पर फिर ज्यों का त्यों हो जाना। ३ उल-टाया जाना। ४. दे० 'अतरण'। ५ धार्मिक ग्रंथों का पुनर्पठन। (जैन)

परावर्त-व्यवहार—पु० [सं० ष० त०] किसी निर्णय पर होनेवाला पुनर्विचार।

परावर्तित—भू० कृ० [सं० परा√वृत्+णिच्+क्त] पलटाया हुआ। पीछे फेरा हुआ। पीछे की ओर लौटाया हुआ।

परावर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० परा√वृत्+णिनि] १ लौटकर पुन अपने स्थान पर आने या पहुँचनेवाला। २ फिर से पहलेवाली स्थिति में आनेवाला।

परा-वसु—पु० [सं० प्रा० ब० स०] १. असुरों का पुरोहित। २ रैभ्य मनु के एक पुत्र का नाम। ३. विश्वामित्र के एक पौत्र का नाम।

परावह—पु० [सं० परा√वह् (ढोना)+अच्] वायु के सात भेदों में से एक।
विशेष—अन्य छः भेद आवह, उदह, परिवह, प्रवह, विवह और संवह हैं।

परावा†—वि०=पराया।

पराविद्ध—पुं० [सं० परा√व्यध् (ताडन करना) +क्त] कुबेर।

परावृत्त—वि० [सं० परा√वृत्+क्त] [भाव० परावृत्ति] १. पलटा या पलटाया हुआ। फेरा हुआ। परावर्तित। २ बदला हुआ।

परावृत्ति—स्त्री० [सं० परा√वृत्+क्तिन्] १. पलटने या पलटाने का भाव। पलटाव। परावर्तन। २ व्यवहार या मुकदमे पर फिर से होनेवाला विचार।

परावेदी (दिन्)—स्त्री० [सं० परा-आ√विद्+णिनि] भटकटैया।

पराव्याध—पु० [सं० परा√व्यध्+घञ्] परास।

पराशय—वि० [सं० परा√शी (सोना)+अच्] बहुत अधिक।

पराशर—पु० [सं० पर-आ√शृ (हिंसा)+अच्] १ वशिष्ठ के पौत्र और कृष्ण द्वैपायन व्यास के पिता जो पराशर स्मृति के रचयिता माने जाते है। २. एक ज्योतिष ग्रंथ (पराशरी संहिता) के रचयिता। ३ आयुर्वेद के एक प्रधान आचार्य।

पराशरी (रिन्)—पु० [सं० पाराशर्य+णिनि, यलोप, पृषो० ह्रस्व] १. भिक्षुक। २ संन्यासी।

पराश्रय—पु० [सं० पर-आश्रय, ष० त०] १ दूसरे का अवलंब या आश्रय। २. परवशता। पराधीनता।

पराश्रया—स्त्री० [सं० पर-आश्रय, ब० स०+टाप्] बाँदा। परगाछा।

पराश्रयी (यिन्)—वि० [सं० पराश्रय+इनि] १ दूसरे के आश्रय और सहारे पर रहनेवाला। २. दे० 'पर-जीवी'।
पु० ऐसे कीटाणुओं, वनस्पतियों आदि का वर्ग जो दूसरे जतुओं, वन-स्पतियों आदि के अंगों पर रहकर जीवन-निर्वाह करते हों। (पैरे-साइट)

पराश्रित—वि० [सं० पर-आश्रित, ष० त०] १ जो किसी दूसरे के आश्रय में रहता हो। २ जो दूसरे के आसरे पर या भरोसे चलता या रहता हो।

परास—पु० [सं० परा√अस् (फेंकना)+घञ्] १ उतना अवकाश या दूरी जितनी कोई चलाई या फेंकी जानेवाली चीज उड़ते-उड़ते पार करती हो। जैसे—बंदूक की गोली या तीर का परास। २ उतना क्षेत्र जहाँ तक किसी क्रिया का प्रभाव या फल होता हो। ३ उतना प्रदेश जितने में कोई चीज पाई जाती हो। (रेंज)

परासन—पु० [सं० परा√अस्+ल्युट्—अन] १. जान से मारना। २ वध करना।

परासी—स्त्री० [सं० परास+ङीष्] पलाश्री नाम की रागिनी।

परासु—वि० [सं० परा-असु, ब० स०] [भाव० परासुता] मरा हुआ। मृत।

परास्कंदी (दिन्)—पु० [सं० पर-आ√स्कन्द् (गति, शोषण)+णिनि] चोर।

परास्त—वि० [सं० परा√अस्+क्त] १ द्वंद्व, प्रतियोगिता आदि में हारा या हराया हुआ। पराजित। २ किसी के सामने झुका या दबा हुआ। ३ ध्वस्त। विनष्ट।

पराह—पु० [सं० पर-अहन्, कर्म० स०, टच्] अन्य या दूसरा दिन।

पराहत—वि० [सं० परा-आ√हन् (हिंसा)+क्त] १. जो आघात के द्वारा गिराया या पीछे हटाया गया हो। २. आक्रांत। ३ नष्ट किया या मिटाया हुआ। ध्वस्त। ४. जिसका खंडन हुआ हो। खंडित। ५. जोता हुआ।

पराहति—स्त्री० [सं० परा-आ√हन्+क्तिन्] १ खंडन। २ विरोध।

पराह्न—पु० [सं० पराह्न] दोपहर के बाद का समय। अपराह्न।

पराहृत—भू० कृ० [सं० परा-आ√हृ (हरण करना)+क्त] हटाया हुआ।

परिंदगी—स्त्री० [फा०] १ पक्षियों का जीवन। २. परिन्दों की उड़ान।

परिंदा—पु० [फा० परिंद.] चिड़िया। पक्षी।

परि—उप० [सं० √पृ (पूर्ति) +इन्] एक संस्कृत उपसर्ग जो प्रायः क्रियाओं से बनी हुई संज्ञाओं के पहले लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है। १ आस-पास या चारों ओर। जैसे—परिक्रमण, परिभ्रमण आदि। २ अच्छी या पूरी तरह अथवा हर तरह। जैसे—परिकल्पन, परिवर्द्धन, परिरक्षण आदि। ३ अतिरिक्त रूप से, बहुत अधिक या बहुत जोरों से। जैसे—परिकंप, परिताप, परित्याग, परिश्रम आदि। ४. दोष दिखलाते या निंदनीय ठहराते हुए। जैसे—परिवाद, परिहास आदि। ५. किसी विशिष्ट क्रम या नियम से। जैसे—परिच्छेद। विशेष—(क) कुछ अवस्थाओं में यह विशेषणों और अन्य प्रकार की संज्ञाओं तथा प्रत्ययों के पहले भी लगता और बहुत-कुछ उक्त प्रकार के अर्थ देता है। जैसे—परिपूर्ण=अच्छी तरह भरा हुआ, परिलघु=बहुत ही छोटा, परित=चारों ओर, परिधि=चारों ओर का घेरा; पर्यग्नि=चारों ओर जानेवाली अग्नि से घिरा हुआ, पर्यश्रु=उमड़ते हुए आँसुओंवाला। (ख) जुए के दाँव, पासे, संख्या आदि के प्रसंग में यह कुछ शब्दों के अन्त में लगकर 'हारा हुआ' का भी अर्थ देता है। जैसे—अक्षपरि=पासे के खेल में हारा हुआ। (ग) कहीं-कहीं इसके रूप 'परी' भी हो जाता है, परन्तु अर्थ ज्यों का त्यों रहता है। जैसे—परिवाह और परीवाह, परिहास और परीहास आदि।

अव्य० [?] १. तरह या प्रकार से। उदा०—पिंडि पहिर तै नवी परि।—प्रिथीराज। २. के तुल्य। के बराबर। समान। उदा०—नेखि कली पदमिणी परी।—प्रिथीराज।

विशेष—उक्त अर्थों में यह शब्द राजस्थानी के अतिरिक्त गुजराती और मराठी में भी इसी रूप में प्रचलित है।

परि-कंप—पु० [सं० परि√कम्प् (काँपना)+घञ्] बहुत जोरों का कंपन।

परिक—स्त्री० [देश०] बहुत अधिक खोटी या मिलावटवाली चाँदी।

परि-कथा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ बौद्धों के अनुसार, कोई धार्मिक कथा या विवरण। २. कहानी।

परि-कर—पु० [सं० परि√कृ (विक्षेप)+अप्] १. पर्यंक। पलंग। २. घर या परिवार के लोग। ३ किसी के आस-पास या संग-साथ रहनेवाले लोग। जैसे—राजाओं का परिकर। ४. वृन्द। समूह। ५. तैयारी। समारंभ। ६. कमरबन्द। पटका। ७. विवेक। ८. एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी विशेष्य से पहले किसी विशिष्ट अभिप्राय से विशेषण लगाये जाते हैं। जैसे—हिमकर बदनी (ताप हरण करनेवाली नायिका)।

परिकरमा†—स्त्री०=परिक्रमा।

परिकरांकुर—पु० [सं० परिकर-अंकुर, ष० त०] वह अर्थालंकार जिसमें विशेष्य का कथन किसी विशिष्ट अभिप्राय से किया जाता है।

परिकर्तन—पु० [सं० परि√कृत् (काटना)+ल्युट्—अन्] १. चारों ओर से काटना। २. गोलाकार काटना। ३. शूल।

परिकर्तिका—स्त्री० [सं० परि√कृत्+ण्वुल्—अक+टाप्, इत्व] शूल।

परिकर्म (कर्मन्)—पु० [सं० परि√कृ (करना)+मनिन्] १. देह को सजाने का काम। २ शरीर का शृंगार या सजावट।

परिकर्मा (कर्मन्)—पु० [सं० प्रा० ब० स०] नौकर। सेवक।

परिकर्षण—पु० [सं०] खेती-बारी के काम के लिए जमीन जोतना, बोना आदि।

परिकलक—पु० [सं० परि√कल् (गिनना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. परिकलन करने अर्थात् हिसाब लगाने या लेखा करनेवाला व्यक्ति। २. एक तरह का आधुनिक यंत्र जो कई प्रकार का काम जल्दी और सहज में करता है। ३ वह पुस्तक जिसमें अनेक प्रकार के लगे हुए हिसाबों के बहुत से कोष्ठक होते हैं। (कैलकुलेटर, उक्त दोनों अर्थों में)

परिकलन—पु० [सं० परि√कल्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिकलित] १ गणित में वह गणना जो कुछ जटिल होती है तथा जिसमें कुछ विशिष्ट तथा निश्चित क्रियाओं की सहायता लेनी पड़ती है। (कैलकुलेशन)

परिकलित—भू० कृ० [सं० परि√कल्+णिच्+क्त] जिसका परिकलन हो चुका हो।

परिकल्पन—पु० [सं० परि√कृप् (सामर्थ्य)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिकल्पित] १ परिकल्पना करने की क्रिया या भाव। २. किसी विषय पर होनेवाला चिंतन या मनन। ३ बनावट। रचना। ४ विभाजन। ५ दे० 'परिकल्पना'।

परिकल्पना—स्त्री० [सं० परि√कृप्+णिच्+युच्—अन+टाप्] १. जिस बात की बहुत-कुछ संभावना हो उसे पहले ही मान लेना या उसके नाम, रूप आदि की कल्पना कर लेना। २ केवल तर्क के लिए कोई बात मान लेना। ३ कुछ विशिष्ट आधारों पर कोई बात ठीक या सही मान लेना। ४ गणित में कोई विशिष्ट मान या राशि निकलने से पहले उसके लिए कोई निश्चित मान राशि या चिह्न अवधारित करना। (प्रिज़म्पशन)

परिकल्पित—भू० कृ० [सं० परि√कृप्+क्त] १ (बात या विषय) जिसकी परिकल्पना की गई हो। २ (पदार्थ या रूप) जो परिकल्पना के फल-स्वरूप बना या प्रस्तुत हुआ हो। ३ जो केवल तर्क के लिए मान लिया गया हो। ४. जो कुछ विशिष्ट आधारों पर ठीक या सही मान लिया गया हो। ५ कल्पित। मन-गढ़न्त। ६ ठहराया या ठीक किया हुआ। निश्चित। ७. बनाया हुआ। रचित।

परिकांक्षित—पु० [सं० परि√कांक्ष् (चाहना)+क्त] १. भक्त। २. तपस्वी।

परिकीर्ण—भू० कृ० [स० परि√कृ+क्त, इत्व, नत्व] १. फैला या फैलाया हुआ विस्तृत। २ छितरा या छिटकाया हुआ। ३. समर्पित।

परिकीर्तन—पु० [स० परि√कृत् (जोर से शब्द करना)+ल्युट्—अन] १. खूब ऊँचे स्वर से कीर्तन करना। २ किसी के गुणो के बहुत अधिक और विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन।

परिकीर्तित—भू० कृ० [स० परि√कृत्+क्त] जिसका परिकीर्तन हुआ हो या किया गया हो।

परि-कूट—पु० [स० मध्य० स०] १ नगर या दुर्ग के फाटक को घेरनेवाली खाई। २ एक नागराज का नाम।

परिकूल—पु० [स० प्रा० स०] कूल अर्थात् किनारे के पास का स्थान।

परिकेंद्र—पु० [स० प्रा० स०] ज्यामिति मे परिवृत्त (देखें) का केन्द्र।

परिकोप—पु० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक या प्रचड क्रोध।

परिक्रम—पु० [स० परि√क्रम् (गति)+घञ्] १ चारो ओर घूमना। २ घूमना। ३ सैर करने के लिए घूमना। टहलना। ४ किसी काम की जाँच या निरीक्षण के लिए जगह-जगह जाना या घूमना। (टूर) ५ प्रवेश। ६ दे० 'क्रम'। ७ दे० 'परिक्रमा'।

परिक्रमण—पु० [स० परि√क्रम्+ल्युट्—अन] १ चारो ओर चलन अथवा घूमन, टहलने या सैर करने की क्रिया या भाव। २ किसी काम की देख-रेख के लिए जगह-जगह जाना। दौरा करना। ३ परिक्रमा करना।

परिक्रम-सह—पु० [स० परिक्रम√सह् (सहना)+अच्] बकरा।

परिक्रमा—स्त्री० [स० परि√क्रम्+अ+टाप्] १. चारो ओर चक्कर लगाना या घूमना। २ किसी तीर्थ, देवता या मदिर के चारो ओर भक्ति और श्रद्धा से तथा पुण्य की भावना से चक्कर लगाने की क्रिया। प्रदक्षिणा। ३ इस प्रकार लगाया जानेवाला चक्कर या फेरा। प्रदक्षिणा। ४ उक्त प्रकार का चक्कर लगाने के लिए नियत किया या बना हुआ मार्ग।

परिक्रय—पु० [स० परि√क्री (खरीदना)+अच्] १ खरीदने की क्रिया या भाव। खरीद। २ भाडा। ३ मजदूरी। ४ पारिश्रमिक या मजदूरी तै करके किसी को किसी कार्य पर लगाना। ५ व्यापारिक कार्यों के लिए माल आदि का होनेवाला विनिमय। ६ इस प्रकार दिया या लिया हुआ माल।

परिक्रांत—वि० [स० परि√क्रम्+क्त] जिसके चारो ओर चला या चक्कर लगाया जा सके।

परिक्रामी—वि० [स०] १ परिक्रमा करने अर्थात् चारो ओर घूमनेवाला। २ बराबर एक स्थान से दूसरे पर जाता या घूमता रहनेवाला।

परिक्रिया—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ किसी चीज को चारो ओर से दीवार, खाई आदि से घेरने की क्रिया या भाव। २ स्वर्ग की कामना से किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ। ३ आनन्द, मोह आदि के लिए की जानेवाली कोई क्रिया या आयोजन।

परिक्लांत—वि० [स० परि√क्लम् (थकना)+क्त] जो थककर चूर हो गया हो।

परिक्लिष्ट—वि० [स० परि√क्लिश् (कष्ट सहना)+क्त] १. बहुत अधिक क्लिष्ट। २ तोडा-फोडा और नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ।

परिक्लेद—पु० [स० परि√क्लिद् (गीला होना)+घञ्] आर्द्रता। नमी।

परिक्वणन—वि० [स० परि√क्वण् (शब्द करना)+ल्युट्+अन] बहुत ऊँचा (स्वर)।

पु० बादल जो बहुत ऊँचा स्वर करता है।

परिक्षत—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० परिक्षति] १ जिसे बहुत अधिक क्षति पहुँची हो। २ जिसे बहुत अधिक चोट लगी हो। आहत। ३. नष्ट-भ्रष्ट।

परिक्षय—पु० [स० प्रा० स०] पूरा और सामूहिक विनाश।

परिक्षव—पु० [स० परि+क्षु (शब्द करना)+अप्] अशुभ सगुनवाली छीक।

परिक्षा—स्त्री० [स० प्रा० स०] कीचड।

†स्त्री० =परीक्षा।

परिक्षाम—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक क्षीण या दुर्बल।

परिक्षालन—पु० [स० √क्षल् (धोना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ वस्त्र आदि धोने की क्रिया या भाव। २ धोने का काम।

परिक्षित्—पु० [स० परि√क्षि (नाश)+क्विप्, तुक्-आगम] १ एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जो अभिमन्यु के पुत्र और जनमेजय के पिता थे। २ अग्नि।

परिक्षिप्त—भू० कृ० [स० परि√क्षिप् (प्रेरणा)+क्त] १ जो चारो ओर से घिरा या घेरा गया हो। २ फेंका और त्यागा हुआ।

परिक्षीण—वि० [स० प्रा० स०] १ बहुत अधिक दुर्बल। २ निर्धन। ३ दे० 'शोषाक्षय'।

परिक्षेत्रिक—वि० [स०] दे० 'परिनागर'।

परिक्षेप—पु० [स० परि√क्षिप्+घञ्] १ गदा को चारो ओर घुमाते हुए प्रहार करना। २ अच्छी तरह से चलना-फिरना या घूमना टहलना। ३ वह पट्टी या सीमा जिसमे कोई चीज घिरी हुई हो। ४. फेंकना। ५ परित्याग करना।

परिखन—वि० [हि० परिखना] १ परखनेवाला। २ प्रतीक्षा करनेवाला।

†स्त्री० =परख।

परिखना—अ० १ =परखना। २ =परेखना (प्रतीक्षा करना)।

परिखा—स्त्री० [स० परि√खन् (खोदना)+ड+टाप्] १ दुर्ग, नगरी आदि के चारो ओर बनी हुई गहरी खाई। २. गहराई।

परिखात—पु० [स० प्रा० स०] १. किसी चीज के चारो ओर बना हुआ गड्ढा। २ खाई। परिखा।

परिखान—स्त्री० [स० परिखात] कच्ची सडक या जमीन पर बना हुआ गाडी के पहिए का चिह्न।

परिखिन्न—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक खिन्न या दु.खी।

परिखेद—पु० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक थकावट।

परिख्यात—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० परिख्याति] जिसकी यथेष्ट ख्याति हो।

परिख्याति—स्त्री० [प्रा० स०] चारो ओर फैली हुई यथेष्ट ख्याति।

परिगतव्य—वि० [स० परि√गम् (जाना)+तव्यत्] १. जिसे प्राप्त

किया जा सके। २ जिसे जाना जा सके। ३. जिस तक पहुँचा जा सके।

परिगणक—पुं० [स० परि√गण्+ण्वुल्—अक] परिगणन करनेवाला अधिकारी या कर्मचारी। (इन्यूमेरेटर)

परिगणन—पुं० [स० परि√गण् (गिनना)+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह गिनना। २ किसी विशिष्ट उद्देश्य से किसी स्थान पर होनेवाली वस्तुओं आदि को एक-एक करके गिनना। (इन्यूमेरेशन) जैसे—जन-सख्या का परिगणन, पुस्तकालय की पुस्तकों का परिगणन।

परिगणना—स्त्री० [स० प्रा० स०] =परिगणन।

परिगणनीय—वि० [स० परि√गण्+अनीयर्] परिगणन किये जाने के योग्य। २ जिसका परिगणन होने को हो या हो सके।

परिगणित—वि० [स० परि√गण्+क्त] १ जिसका परिगणन हो चुका हो। २ जिसका उल्लेख या गणन किसी अनुसूची मे हुआ हो। अनुसूचित। जैसे—परिगणित जन-जतियाँ। (शेड्यूल्ड)

परिगण्य—वि० [स० परि√गण्+यत्] परिगणनीय।

परिगत—भू०कृ० [स०प्रा०स०] १. चारो ओर से घिरा हुआ। (सर्कम-स्क्राइब्ड) २ गुजरा या बीता हुआ। गत। ३ मरा हुआ। मृत। ४ भूला हुआ। विस्मृत। ५ जाना हुआ। ज्ञात। मिला हुआ। प्राप्त।

परिगमन—पुं० [स० प्रा० स०] १ किसी के चारो ओर जाना। २ जानना। ३ प्राप्त करना।

परिगर्भिक—पुं० [स० परिगर्भ, प्रा०स०, +ठन्—इक] गर्भवती माता का दूध पीने से बच्चों को होनेवाला एक प्रकार का रोग।

परिगर्वित—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक गर्व या घमड करनेवाला। बहुत बडा अभिमानी।

परिगर्हण—पुं० [स० प्रा० स०] अतिनिंदा।

परिगलित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १ गिरा हुआ। च्युत। २ अच्छी तरह गला हुआ। ३. पिघला हुआ। तरल। ४ गायब। लुप्त। ५ डूबा हुआ।

परिगह—पुं० [स० परिग्रह] घर या परिवार के अथवा आपसदारी के लोग। आत्मीय और कुटुंबी।

परिगहन—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक गहन।

परिगहना*—स० [स० परिग्रहण] ग्रहण करना। अगीकार या स्वीकार करना।

परिगीत—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जिसका बहुत अधिक गुण-कीर्तन हुआ या किया गया हो।

परिगीति—स्त्री० [स० प्रा० स०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।

परिगुठन—पुं० [स०प्रा०स०] [भू० कृ० परिगुठित] अच्छी तरह ढकना।

परिगुण—पुं० [स० प्रा० स०] [वि० परिगुणी] शिक्षा, प्रशिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया हुआ वह गुण या योग्यता जिससे मनुष्य ज्ञान आदि के किसी नियत और मान्य मानक तक पहुँच जाता है। और प्राय उसका प्रमाण-पत्र प्राप्त कर लेता है। (क्वालिफिकेशन)

परिगुणन—पुं० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० परिगुणित] किसी चीज को बढ़ाकर या सख्या को गुणा करके कई गुना अधिक बढ़ाना। (मल्टी-प्लिकेशन)

परिगुणित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जिसका परिगुणन हुआ हो।

परिगुणी (णिन्) वि० [स० परिगुण]+इनि] जिसने कोई परिगुण अर्जित या प्राप्त किया हो। (क्वालिफायड)

परिगूढ़—वि० [स० प्रा० स०] परिगहन। (दे०)

परिगृद्ध—वि० [स० प्रा० स०] बहुत बडा लालची। अतिलोभी।

परिगृहीत—भू० कृ० [स० परि√ग्रह् (स्वीकार)+क्त] १ अगीकार ग्रहण या स्वीकार किया हुआ। गृहीत। स्वीकृत। २ प्राप्त। ३. किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ। सम्मिलित।

परिगृहीता—स्त्री० [स० प्रा० स०] वह जिसे ग्रहण किया गया हो अर्थात् पत्नी।

परिग्रह—पुं० [स० परि√ग्रह्+अप्] १ दान लेना। प्रतिग्रह। २ प्राप्ति ३ धन आदि का सग्रह। ४ मजूरी। स्वीकृति। ५ अनुग्रह। दया। मेहरबानी। ६ किसी स्त्री को पत्नी के रूप मे ग्रहण करना। पाणि-ग्रहण। ७ पत्नी। भार्या। ८ परिवार के लोग। परिजन। ९ उपहार, भेंट आदि के रूप मे ग्रहण की जानेवाली वस्तु। १० सेना का पिछला भाग। ११. सूर्य या चद्र का ग्रहण। १२ कद। मूल। १३. शाप। १४ कुसुम। शपथ। १५ विष्णु का एक नाम। १६. कुछ विशिष्ट वस्तुएँ सग्रह करने का व्रत। १७ जैन शास्त्रों के अनुसार तीन प्रकार के प्रगति निबधन कर्म—द्रव्य परिग्रह, भाव परिग्रह और द्रव्यभाव परिग्रह।

परिग्रहण—पुं० [स० प्रा० स०] १ पूरी तरह से ग्रहण करना। २. कपड़े पहनना।

परिग्रहीता (तृ)—पुं० [स० परी√ग्रह्+तृच्] १ वह जिसने किसी को अगीकार या ग्रहण किया हो। २ पति। ३ किसी को दत्तक बनाने या गोद लेनेवाला व्यक्ति।

परिग्राम—पुं० [स० अव्य० स०] गाँव के चारो ओर या सामने का भाग।

परिग्राह—पुं० [स० प्रा० स०] १ एक विशेष प्रकार की यज्ञ वेदी। २ बलि चढ़ाने के स्थान पर बना हुआ चारो ओर का घेरा।

परिग्राह्य—वि० [स० प्रा० स०] जो आदरपूर्वक ग्रहण किये जाने के योग्य हो।

परिघ—पुं० [स०परि√हन् (हिंसा)+अप्, घ—आदेश] १ लकडी, लोहे आदि का ब्योढ़ा। अर्गल। २ आड या रुकावट के लिए खड़ी की हुई कोई चीज। ३. कोई ऐसा तत्त्व या बात जो किसी काम को यथा-साध्य पूरी तरह से रोकने मे समर्थ हो। (बेरियर) ४ वह डडा जिसके सिरे पर लोहा जडा हुआ हो। लोहाँगी। ५ बरछा। भाला। ६. मुद्‌गर। ७. कलश। घडा। ८. गोपुर। फाटक। ९ घर। मकान। १० तीर। वाण। ११. पर्वत। पहाड। १२. वज्र। १३. जल का घडा। १४ चद्रमा। १५. सूर्य। १६. नदी। १७. स्थल। १८. एक प्रकार का मूढ़ गर्भ। १९. कार्तिकेय का एक अनुचर। २० ज्योतिष के २७ योगो मे से १९वाँ योग। २१. शेषनाग। २२. अविद्या जो मनुष्य को आनद और सुख से दूर रखती है। २३. वे बादल जो सूर्य के उदय या अस्त होने के समय उसके सामने आ जायँ।

परिघट्टन—पुं० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० परिघट्टित] तरल पदार्थ को चलाना।

परिघ-मूढ़-गर्भ—पुं० [स० मूढ-गर्भ कर्म० स०, परिघ-मूढ़ा—गर्भ, उपमि०

स०] वह बालक जो प्रसव के समय अर्गल या परिघ की तरह अटक जाय।

परिघर्म—पुं०[स० परि√घृ (बहना)+ मन्] एक तरह का यज्ञ-पात्र जिसमे मदिरा आदि बनाई जाती थी।

परिघर्म्य—पुं०[स० परिघर्म+यत्] यज्ञ मे काम आनेवाला एक प्रकार का पात्र।

परिघात—पुं०[स०परि+हन् (मारना)+घञ्, वृद्धि—न, त] १ मार-डालना। हत्या। हनन। २ ऐसा अस्त्र जिससे किसी की हत्या हो सकती हो।

परिघातन—पुं०[स० परि√हन्+णिच्+ल्युट्-अन] मार डालने की क्रिया या भाव। वध। हत्या।

परिघाती (तिन्)—वि०[स० परि√हन्+णिच्+णिनि] हत्यारा।

परिघृष्ट—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक या चारो ओर से घिरा हुआ।

परिघृष्टिक—पुं०[स० परिघृष्ट+तन्—इक] एक प्रकार का वानप्रस्थ।

परिघोष—पुं०[स० प्रा० स०] १ जोर का शब्द। घोर आवाज। २ [प्रा० ब० स०] बादल की गरज। मेघ-गर्जन।

परिचक्रा—स्त्री०[स० ब० स०, टाप्] एक प्राचीन नगरी।

परिचना—अ०=परचना।

परिचपल—वि०[स० प्रा० स०] बहुत अधिक चचल या चपल।

परिचय—पुं०[स०परि√चि (इकट्ठा करना)+अच्] १. ऐसी स्थिति जिसमे दो व्यक्ति एक दूसरे को प्राय प्रत्यक्ष भेंट के आधार पर जानते और पहचानते हो। जैसे—पडित जी से मेरा परिचय रेल मे हुआ था। २ किसी व्यक्ति के नाम-धाम या गुण-कर्म आदि से सबध रखनेवाली सब या कुछ बातें जो किसी को बतलाई जायँ। जैसे—गोष्ठी मे आये हुए कवि अपना अपना परिचय स्वय देंगे। ३ किसी विषय, रचना, साहित्य आदि का थोडा-बहुत अध्ययन करने पर उसके सबध मे होनेवाला ज्ञान। जैसे—बगला साहित्य से उनका कुछ परिचय है। ४ गुण, धर्म शक्ति आदि जतलाने या प्रदर्शित करने की क्रिया या भाव। जैसे—उसने अपनी योग्यता या हठवादिता का खूब परिचय दिया। ५ हठ योग मे, नाद की चार अवस्थाओ मे से तीसरी अवस्था।

परिचय-पत्र—पुं० [ष० त०] १ ऐसा पत्र जिसमे किसी का नाम, पता, ठिकाना, पद आदि लिखा होता है और जो किसी को किसी का परिचय देने के लिए दिया जाता है। २ किसी वस्तु अथवा सस्था विषयक वह पत्रक या पुस्तिका जिसमे उस वस्तु की सब बातों अथवा सस्था के उद्देश्या, कार्य-क्षेत्रो और कार्य-प्रणालियों आदि का परिचय या विवरण दिया हो। (मेमोरेन्डम)

परिचर—पुं० [स० परि√चर् (गति)+अच्] [स्त्री० परिचरी] १ सेवा-शुश्रूषा करनेवाला सेवक। टहलुआ। २ रोगी की सेवा शुश्रूषा करनेवाला व्यक्ति। ३ वह सैनिक जो रथ और रथी की रक्षा करने के लिए रथ पर रहता था। ४. सेनापति। ५ दडनायक।

परिचरजा†—स्त्री० =परिचर्या।

परिचरण—पुं० [स० परि√चर्+ल्युट्-अन] [वि० परिचरणीय, परिचारितव्य] परिचर्या करना।

परिचरता†—स्त्री०[?] प्रलय। कयामत।

परिचरिता (तृ)—पुं०[स० परि√चर्+तृच्] सेवा-शुश्रूषा करनेवाला व्यक्ति।

परिचरी—स्त्री०[स० परिचर+ङीष्] दासी। लौंडी।

परिचर्चा—स्त्री० [स०] किसी तथ्य, विषय, पुस्तक आदि की विशेष तथा विस्तृत रूप से की जानेवाली चर्चा।

परिचर्जा†—स्त्री० =परिचर्या।

परिचर्मण्य—पुं०[स० परिचर्मन्+यत्] चमडे का फीता।

परिचर्या—स्त्री० [स० परि√चर्+श, यक्, नि०] १ किसी की की जानेवाली अनेक प्रकार की सेवाएँ। खिदमत। २ रोगी की सेवा-शुश्रूषा। ३ किसी सघटित गोष्ठी या सभा-समिति मे होनेवाली ऐसी बात-चीत जिसमे किसी विशिष्ट विषय का विचार या विवेचन होता है। (सिम्पोजियम)

परिचायक—वि०[स० परि√चि+ण्वुल्-अक] १ जिसके द्वारा किसी का परिचय प्राप्त होता हो। जैसे—यह चिह्न धर्म-ध्वजता का परिचायक है। २ अच्छी तरह से जतलाने, बतलाने या सूचित करनेवाला। परिचय करानेवाला।

परिचाय्य—पुं०[स० परि√चि+ण्यत्] १ यज्ञ की अग्नि। २ यज्ञकुड।

परिचार—पुं० [स० परि√चर्+घञ्] १ सेवा। टहल। खिदमत। २ ऐसा स्थान जहाँ लोग टहलने के लिए जाते हों। ३ ऐसी देख-रेख या सेवा-शुश्रूषा जिससे कम अवस्थावाले बच्चो, पौधा, आदि का भरण-पोषण, लालन-पालन तथा अभिवर्द्धन ठीक क्रम तथा ढग से हो सके। (नर्सिंग) ४ अशक्त, रुग्ण तथा पगु व्यक्तियों की की जानेवाली टहल। सेवा।

परिचारक—वि०[स० परि√चर्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० परिचारिका] जो परिचार करता हो। परिचार करनेवाला।

पुं० १ नौकर। सेवक। २ परिचर्या करनेवाला व्यक्ति। ३ देव-मदिर का प्रबध करनेवाला व्यक्ति।

परिचार-गाडी—स्त्री०[स०+हि०] वह गाडी जिस पर घायल,रुग्ण लोगो को उठाकर चिकित्सा-स्थल आदि पर ले जाया जाता है। (एम्ब्युलेंस कार)

परिचारण—पुं० [स० परि√चर्+णिच्+ल्युट्-अन] १ सेवा या टहल करना। २ सग या साथ रहना।

परिचारना—स०[स० परिचरण] परिचार या सेवा करना।

परिचारिका—स्त्री०[स० परिचारक+टाप्, इत्व] १ दासी। सेविका। परिचार करनेवाली स्त्री।

परिचारित—वि०[स० परि√चर्+णिच्+क्त] जिसका परिचारण किया गया हो या हुआ हो।

पुं० १ क्रीडा। खेल। २ मनोविनोद।

परिचारी (रिन्)—वि०[स०परि√चर्+इन्] टहलनेवाला। भ्रमण करने वाला।

पुं० टहल या सेवा करनेवाला। सेवक। टहलुआ।

परिचार्य—वि०[स० परि√चर्+ण्यत्] जिसका परिचार या सेवा करना उचित हो। सेव्य।

परिचालक—वि०[स० परि+चल् (चलना)+णिच्+ण्वुल्-अक] [भाव. परिचालकता] १ परिचालन करनेवाला। २ बहुत बड़ा चालाक।

परिचालकता—स्त्री० [सं० परिचालक+तल्–टाप्] परिचालक होने की अवस्था, गुण या भाव।

परिचालन—पुं० [सं० परि√चल्+णिच्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० परिचालित] १. ठीक तरह से गति में लाना। चलाना। जैसे—नौका या रथ का परिचालन। २. उचित रूप से किसी कार्य का निर्वाह करना। संचालन। जैसे—किसी संस्था या सभा अथवा उसके कार्यों का परिचालन करना। ३. हिलाना।

परिचालित—भू० कृ० [सं० परि√चल्+णिच्+क्त] जिसका परिचालन किया गया हो। जो चलाया गया हो।

परिचिंतन—पुं० [सं० परि√चिन्त् (स्मरण करना)+ल्युट्–अन] अच्छी तरह से चिंतन करना।

परिचित—वि० [सं० परि√चि० (चयन करना)+क्त] [भाव० परिचिति] १ जिसका या जिसके साथ परिचय हो चुका हो। जिसे जान लिया गया हो या जिसकी जानकारी हो चुकी हो। जाना-बूझा या समझा हुआ। ज्ञात। जैसे—वे मेरे परिचित है। २. जिसे परिचय मिल चुका हो या जानकारी हो चुकी हो। जैसे—मैं उनसे भली-भाँति परिचित हूँ। ३ जिससे जान-पहचान और मेल-जोल हो। जैसे—वहाँ हमारे कई परिचित हैं। ४. इकट्ठा किया हुआ। संचित।
पुं० जैन दर्शन के अनुसार वह स्वर्गीय आत्मा जो दोबारा किसी चक्र मे आ चुकी हो।

परिचिति—स्त्री० [सं० परि√चि+क्तिन्] १ परिचित होने की अवस्था या भाव।
†वि०=परिचित। (पूरब)

परिचित्र—पुं० [सं० परि+चित्र] दे० 'चार्ट'।

परिचिह्नित—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] १ जिसे अच्छी तरह से चिह्नित किया गया हो। २ जिस पर हस्ताक्षर किये जा चुके हों। (स्मृति)

परिचेय—वि० [सं० परि√चि+यत्] १ जिसका परिचय प्राप्त किया जा सके, या किया जाने को हो। २ जिसका परिचय प्राप्त करना उचित या कर्त्तव्य हो। ३. जिसका चयन (संग्रह या संचय) किया जा सके या किया जाने को हो। संग्राह्य।

परिचौ*—पुं० [सं० परिचय]=परिचय।

परिच्छद—पुं० [सं० परि√छद् (ढाँकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] १. किसी चीज को चारो ओर से ढकनेवाला कपड़ा। जैसे—तकिये की खोली या गिलाफ। २ शरीर पर पहने जानेवाले कपड़े। पहनावा। पोशाक। (ड्रेस) ३ वह विशिष्ट पहनावा जो किसी दल, वर्ग या सेवा विशेष के लोगो के लिए नियत या निर्धारित होता है। (यूनिफार्म) ४. राज-चिह्न। ५ राजा-महाराजाओं के साथ रहनेवाले लोग। परिचर। ६ कुटुंब या परिवार के लोग। ६ असबाब। सामान।

परिच्छन्न—भू० कृ० [सं० परि√छद्+क्त] १. जो चारो ओर से अथवा अच्छी तरह ढका हुआ हो। २ छिपा या छिपाया हुआ। ३ जो परिच्छद तथा वस्त्र पहने हुए हो। ४. साफ या स्वच्छ किया हुआ।

परिच्छा†—स्त्री०=परीक्षा।

परिच्छित्ति—स्त्री० [सं० परि√छिद् (काटना) +क्तिन्] १. सीमा। हद। २. विभाग करने के लिए सीमा का निर्धारण। ३ किसी प्रकार का पृथक्करण या विभाजन।

परिच्छिन्न—भू० कृ० [सं० परि√छिद्+क्त] १. जिसका परिच्छेद (अलगाव या विभाजन) किया गया हो। २. जो ठीक प्रकार से मर्यादित या सीमित किया गया हो। ३ घिरा हुआ। ४. छिपा या ढका हुआ।

परिच्छेद—पुं० [सं० परि√छिद्+घञ्] १ कोई चीज या बात इस प्रकार अलग-अलग या विभक्त करना कि उसका अच्छापन एक तरफ आ जाय और बुराई दूसरी तरफ। २ बँटवारा। ३ खंड। भाग। ४. ग्रन्थों आदि का ऐसा विभाग जिसमे किसी विषय या उसके किसी अंग का स्वतंत्र रूप से प्रतिपादन, वर्णन या विवेचन किया गया हो। ५. अध्याय। प्रकरण। ६. सीमा। हद। ७ निर्णय।

परिच्छेदक—वि० [सं० परि√छिद्+ण्वुल्–अक] १ सीमा निर्धारित करनेवाला। हद बतलाने या मुकर्रर करनेवाला।
पुं० १ सीमा। हद। २, नाप, परिमाण आदि।

परिच्छेदकर—पुं० [सं० ष० त०] एक प्रकार की समाधि।

परिच्छेदन—पुं० [सं० परि√छिद्+ल्युट्–अन] १. परिच्छेद अर्थात् खंड या विभाग करना। २ अच्छाई और बुराई अलग अलग कर दिखलाना। ३. अध्याय। प्रकरण। ४ निर्णय।

परिच्छेद्य—वि० [सं० परि√छिद्+ण्यत्] १ जिसे गिन, तौल या नाप सकें। परिमेय। २ जिसे काटकर या और किसी प्रकार अलग कर सकें। ३ जिसका बँटवारा या विभाजन हो सके। विभाज्य। ४. जिसकी परिभाषा ठीक प्रकार से की जा सके।

परिच्युत—वि० [सं० परि√च्यु (गति)+क्त] [भाव० परिच्युति] १ सब प्रकार से गिरा हुआ। २ पतित और भ्रष्ट। ३ जाति या बिरादरी से निकाला हुआ। जातिबहिष्कार।

परिच्युति—स्त्री० [सं० परि√च्यु+क्तिन्] परिच्युत होने की अवस्था या भाव।

परिछत्र—पुं० [सं० प्रा० स०] एक तरह की बहुत बड़ी छतरी जिसकी सहायता से हवाबाज उड़ते हुए जहाजों से कूदकर नीचे उतरते हैं। (पैराशूट)

परिछत्रक—वि० [सं० परिछत्र] परिछत्र की सहायता से उतरनेवाला। जैसे—परिछत्रक सेना।

परिछन†—पुं०=परछन।

परिछाहीं—स्त्री०=परछाईं।

परिछिन्न—वि०=परिच्छिन्न।

परिजटन—पुं०=पर्यटन।

परिजन—पुं० [सं० प्रा० स०] [भाव० परिजनता] १. चारो ओर के लोग विशेषतः परिवार के सदस्य। २ अनुगामी और अनुचर वर्ग।

परिजनता—स्त्री० [सं० परिजन+तल्+टाप्] १ परिजन होने की अवस्था या भाव। २ अधीनता।

परिजन्मा (न्मन्)—पुं० [सं० परि√जन् (उत्पत्ति)+मन, नि०] १ चंद्रमा। २. अग्नि।

परिजप्त—वि० [सं० परि√जप् (जपना)+क्त] मंद स्वर में कहा हुआ।

परिजय्य—वि० [सं० परि√जि (जीतना)+यत् नि० या आदेश] जो चारो ओर जय करने में समर्थ हो। सब ओर जीत सकनेवाला।

स्त्री० चारो दिशाओ मे होनेवाली विजय ।

परिजल्पित—पुं० [सं० परि√जल्प् (बोलना)+क्त] १ दूसरो के अवगुण,दोष, धूर्तता आदि दिखलाते हुए अप्रत्यक्ष रूप से अपनी उच्चता, श्रेष्ठता, सच्चाई आदि दिखलाना । २ अवमानित या उपेक्षित नायिका । ३ अवमानित या उपेक्षित नायिका का व्यग्यपूर्ण शब्दो द्वारा नायक की निर्दयता का वर्णन करना ।

परिजा—स्त्री० [सं० परि√जन्+ड+टाप्] १ उद्भव । २. जन्म आदि का मूल स्थान।

परिजात—वि० [सं० प्रा० स०] जन्मा हुआ । उत्पन्न।

परिजीवन—पु० [सं० प्रा० स०] १. अपने चारो ओर रहनेवालो विशेषत अपनी जाति, वर्ग आदि के सदस्यो के न रह जाने पर भी प्राप्त होनेवाला दीर्घ जीवन । २ नियत काल से अधिक चलनेवाला जीवन । (सर्वाइवल, उक्त दोनो अर्थों मे)

परिजीवित—वि० [सं० प्रा० स०] जो अपने चारो ओर रहनेवालो। आदि के न रहने पर भी बचा हुआ और जीवित हो।

परिजीवी (विन्)—पुं० [सं० प्रा० स०] वह जो दूसरो की अपेक्षा अधिक समय तक जीता या बचा रहे । (सर्वाइवर)

परिज्ञप्ति—स्त्री० [सं० परि√ज्ञप् (जतलाना)+क्तिन्] १. बात-चीत। कथोपकथन । वार्त्तालाप । २ परिचय । ३ पहचान।

परिज्ञा—स्त्री० [सं० परि√ज्ञा (जानना)+अङ्—टाप्] १ ज्ञान। २ निश्चयात्मक, विशुद्ध और संशय-रहित ज्ञान ।

परिज्ञात—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] अच्छी तरह या विशेष रूप से जाना हुआ ।

परिज्ञाता (तृ)—पु० [सं० परि√ज्ञा+तृच्] वह जिसे परिज्ञान हो।

परिज्ञान—पु० [सं० प्रा० स०] १ किसी चीज या बात का ठीक और पूरा ज्ञान । पूर्ण या सम्यक् ज्ञान । २. ऐसा ज्ञान जिसका भरोसा किया जा सके । निश्चयात्मक और सच्चा ज्ञान। ३ अतर, भेद आदि के सबध मे होनेवाला सूक्ष्म ज्ञान।

परिज्वा (ज्वन्)—पु० [सं० परि√जु (गति)+कनिन्] १ चद्रमा । २. अग्नि । ३ नौकर । ४. इन्द्र । ५ वह जो यज्ञ करता हो। याजक ।

परिठना†—अ० [?] देखना। उदा०—नारकेलि फल परिठ दुज, चौक पूरी मनि मुत्ति।—चदबरदाई ।

परिडीन—पु० [सं० परि√डी (उडना)+क्त] पक्षी की वृत्ताकार उडान। पक्षी का चक्कर काटते हुए उडना ।

परिणत—भू०कृ० [सं० परि√नम् (झुकना)+क्त] [भाव० परिणति] १ बहुत अधिक झुका या झुकाया हुआ । बहुत अधिक नत। २ बहुत अधिक नम्र या विनीत। ३ जिसमे किसी प्रकार का परिवर्तन, रूपान्तर या विकार हुआ हो। जैसे—दूध जमाने पर दही के रूप मे परिणत हो जाता है। ४ जो ठीक प्रकार से पका, बना या विकसित हुआ हो। ५ पचाया हुआ । ६. समाप्त ।

परिणति—स्त्री० [सं० परि√नम्+क्तिन्] १ परिणत होने की अवस्था या भाव। २. झुकाव। नति। ३ किसी प्रकार के परिवर्तन या विकार के कारण बननेवाला नया रूप । ४. अच्छी तरह पकने या पचने की क्रिया दशा या भाव। परिपाक । ५ पुष्टता । प्रौढता। ६. वृद्धावस्था । ७. अत । समाप्ति ।

परिणद्ध—वि० [सं० परि√नह् (बाँधना)+क्त] १. दूर तक फैला हुआ। लबा-चौड़ा । विस्तृत । २ बहुत बड़ा, भारी या विशाल ।

परिणमन—पु० [सं० परि√नम्+ल्युट्—अन] १. परिवर्तन या रूपांतर होना । ३ किसी रूप मे परिणत होना ।

परिणय—पु० [सं० परि√नी (ले जाना)+अच्] विवाह। शादी ।

परिणयन—पु० [सं० परि√नी+ल्युट्—अन] पाणी-ग्रहण। विवाह।

परिणहन—पु० [सं० परि√नह् (बाँधना)+ल्युट्—अन] =परिणाह।

परिणाम—पु० [सं० परि√नम्+घञ्] १ किसी पदार्थ की पहली या प्रकृत अवस्था, गुण, रूप आदि मे होनेवाला ऐसा परिवर्तन या विकार जिससे वह पदार्थ कुछ और ही हो जाय अथवा किसी अन्य अवस्था, गुण या रूप से युक्त प्रतीत होने लगे । एक रूप के स्थान पर होनेवाले दूसरे रूप की प्राप्ति। तबदीली। रूपातरण। जैसे—घडा गीली मिट्टी का, दही जमे हुए दूध का या राख जलती हुई लकडी का परिणाम है ।

विशेष—साख्य दर्शन के अनुसार परिणाम वस्तुत प्रकृति का मुख्य गुण या स्वभाव है। सभी चीजें अपनी एक अवस्था या रूप छोडकर दूसरी अवस्था या रूप धारण करती रहती है। यही अवस्थातरण या रूपातरण उनका 'परिणाम' कहलाती है । जब सत्त्व, रज और तम तीनो गुणो की साम्यावस्था नष्ट या भग्न हो जाती है, तब उसके परिणाम-स्वरूप सृष्टि के सब पदार्थों की रचना होती है, और जब यही क्रम उलटा चलने लगता है, तब उसके परिणाम के रूप मे सृष्टि का नाश या प्रलय होता है । इसी रूपांतरण के आधार पर पतजलि ने योग-दर्शन मे चित्त के ये तीन परिणाम माने है—निरोध, समाधि और एकाग्रता । अन्य पदार्थों मे भी धर्म, लक्षण और अवस्था के विचार से तीन प्रकार के परिणाम होते हैं। जैसे—मिट्टी से घडे का बनना धर्म-परिणाम है। देखी-सुनी हुई चीजो या बातो मे भूत और वर्तमान का जो अन्तर होता है, वह लक्षण-परिणाम है, और उनमे स्पष्टता तथा अस्पष्टता का जो अन्तर होता है, वह अवस्था-परिणाम है ।

२ किसी काम या बात का तर्क-सगत रूप मे अत होने पर उससे प्राप्त होनेवाला फल । नतीजा । (रिजल्ट) जैसे—(क) इस वाद-विवाद का परिणाम यह हुआ कि काम जल्दी और अच्छे ढग से होने लगा । (ख) धर्म, न्याय और सत्य का परिणाम सदा सुख ही होता है। किसी कार्य के उपरात क्रियात्मक रूप से पडनेवाला उसका प्रभाव। (कांसीक्वेन्स) जैसे—आपस के लडाई-झगडे का परिणाम यह हुआ कि दोनो घर चौपट हो गये। ४ बहुत-सी बातें सुन-समझकर उनसे निकाला हुआ निष्कर्ष । नतीजा। (कन्क्लूजन) जैसे—उनकी बातें सुनकर हम इसी परिणाम पर पहुँचे हुए है कि वे पूरे नास्तिक हैं। ५. अन्न आदि का पेट मे पहुँचकर पचना । परिपाक। ६ किसी पदार्थ का अच्छी तरह पुष्ट, प्रौढ या विकसित होकर पूर्णता तक पहुँचना। ७. अत। अवसान। समाप्ति। ८ वृद्धावस्था। बुढ़ापा। ९ साहित्य मे एक अर्थालंकार जिसमे किसी कार्य के होने पर उसके साथ उस कार्य के परिणाम का भी उल्लेख होता है। (कम्यूटेशन) जैसे—मुख चद्र के दर्शनो से मन का सारा संताप शात हो जाता है ।

विशेष—यह अलकार अभेद और सादृश्य पर आश्रित होता है, फिर भी इसमें आरोपण का तत्त्व प्रधान है । परवर्ती साहित्यकारो ने इस अलकार का लक्षण या स्वरूप बहुत-कुछ बदल दिया है। 'चद्रालोक' के मत से जहाँ उपमेय के कार्य का उपमान द्वारा किया जाना वर्णित होता है अथवा उपमान का उपमेय के साथ एक रूप होकर कोई काम करने का उल्लेख होता है, वहाँ परिणाम अलकार होता है। जैसे—यदि कहा जाय—राष्ट्रपति जी ने अपने कर-कमलो से प्रदर्शनी का उद्घाटन किया ।' तो वहाँ इसलिए परिणाम अलकार हो जायगा कि उन्होंने अपने करो से नही, बल्कि कर रूपी कमलो से उद्घाटन किया। रूपक अलकार से इसमे यह अतर है कि रूपक मे तो उपमेय पर उपमान का आरोप मात्र कर दिया जाता है, परतु परिणाम अलकार मे यह विशेषता होती है कि उपमेय का काम उपमान से कराकर अर्थ मे चमत्कार लाया जाता है।

१०. नाट्य-शास्त्र मे कथावस्तु, की वह अतिम स्थिति जिसमे सघर्ष की समाप्ति होने पर उसका फल दिखलाया जाता है। जैसे—हरिश्चद्र नाटक के अत मे रोहिताश्व का जी उठना और राजा हरिश्चद्र का अपनी पत्नी को पाकर फिर से परम सुखी और वैभवशाली होना 'परिणाम' कहा जायगा । इसी 'परिणाम' के आधार पर नाटको के दु.खात और सुखात नामक दो भेद हुए है।

परिणामक—वि० [स० परि√नम्+णिच्+ण्वुल्—अक] जिसके कारण कोई परिणाम हो।

परिणामदर्शी (शिन्)—वि० [स० परिणाम√दृश् (देखना) +णिनि] १ जिसे होनेवाले परिणाम का पहले से भान हो। २. जो परिणाम या फल का ध्यान रखकर काम करता हो ।

परिणाम-दृष्टि—स्त्री० [स० स० त०] वह दृष्टि या शक्ति जिससे मनुष्य किसी काम या बात का परिणाम अथवा फल पहले से जान या समझ लेता है।

परिणामन—पु० [स० परि√नम्+णिच्+ल्युट्—अन] १. अच्छी तरह पुष्ट करना और बढ़ाना। २ जातीय या सघीय वस्तुओ का किया जानेवाला व्यक्तिगत उपभोग। (बौद्ध)

परिणामवाद—पु० [स० ष० त०] साख्य का यह मत या सिद्धान्त कि जगत् की उत्पत्ति और विनाश दोनो सदा नित्य परिणाम के रूप मे होते रहते है।

परिणामवादी (दिन्)—वि० [स० परिणामवाद—इनि] परिणामवाद-सबधी।

पु० वह जिसका परिणामवाद मे विश्वास हो ।

परिणाम-शूल—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमे भोजन करने के उपरांत पेट मे पीड़ा होने लगती है।

परिणामिक—वि०[सं० पारिणामिक] १ परिणाम के रूप मे होनेवाला। जैसे—दुष्कर्मों का परिणामिक भोग। २. (भोजन) जो शीघ्र या सहज में पच जाय।

परिणामित्र—पु० [स०] आधुनिक यंत्र-विज्ञान मे एक प्रकार का यत्र जो एक प्रकार की विद्युत्-धारा को दूसरे प्रकार की विद्युत-धारा (अर्थात् निम्न को उच्च अथवा उच्च को निम्न) के रूप मे परिवर्तित करता है। (ट्रान्सफार्मर)

परिणामित्व—पु०[स० परिणामिन्+त्व] परिणामी अर्थात् परिवर्तनशील होने की अवस्था या भाव ।

परिणामि-नित्य—वि० [स० कर्म० स०] जो नित्य होने पर भी बदलता रहे। जिसकी सत्ता तो स्थिर रहे, पर रूप बराबर बदलता रहे । जो एक रस न होकर भी अविनाशी हो।

परिणामी (मिन्)—वि० [स० परिणाम+इनि] [स्त्री० परिणामिनी] १. परिणाम के रूप मे होनेवाला । २. परिणाम-सबधी। ३ जो बराबर बदलता रहे । रूपातरित होता रहनेवाला। परिवर्तनशील । ४. जो परिवर्तन मान या सह ले । ५ परिणाम-दर्शी ।

परिणाय—पु० [स० परि√नी (ले जाना) +घञ्] १. किसी वस्तु को जिस दिशा मे चाहे उस दिशा मे चलाना । सब ओर चलाना । २. चौसर, शतरज आदि की गोटियाँ एक घर से दूसरे घर मे ले जाना या ले चलना । ३ ब्याह । विवाह ।

परिणायक—पु० [स० परि√नी+ण्वुल्—अक] १ परिणय या विवाह करनेवाला, अर्थात् पति । २ पथप्रदर्शक। अगुआ। नेता । ३ सेनापति ।

परिणायक-रत्न—पु० [स० कर्म० स०] बौद्ध चक्रवर्ती राजाओ के सप्तधन अथवा सात कोषो मे से एक।

परिणाह—पु०[स०परि√नह् (बाँधना)+घञ्] १ विस्तार। फैलाव। २ घेरा । परिधि। ३ दीर्घ निश्वास।

परिणाहवान (वत्)—वि० [स० परिणाह+मतुप्, वत्व] फैला हुआ। प्रशस्त । विस्तृत।

परिणाही (हिन्)—वि० [स० परिणाह+इनि] फैला हुआ । प्रशस्त। विस्तृत।

परिणिसक—वि० [स० परि√निस् (चूमना)+ण्वुल्—अक] १ खाने या भक्षण करनेवाला । २ चुबन करनेवाला।

परिणिसा—स्त्री० [स० परि√निस्+अ+टाप्] १ भक्षण। खाना। २ चुबन ।

परिणीत—भू० कृ० [स० परि√नी+क्त] [स्त्री० परिणीता] १. जिसका परिणय हो चुका हो। ब्याहा हुआ । विवाहित । २ उक्त के आधार पर,जिसका किसी के साथ घनिष्ठ सबध स्थापित हो चुका हो। उदा०—तुम परिणीत नही इन योग्य विश्वासो से।—पत। ३ (कार्य) जो पूरा या सपन्न हो चुका हो। सपादित ।

परिणीत-रत्न—पु० [स० कर्म० स०]=परिणायकरत्न। (दे०)

परिणीता—वि० [स० परिणीत+टाप्] (स्त्री) जिसका किसी के साथ विधिवत् परिणय या विवाह हो चुका हो। विवाहिता । स्त्री० विवाहिता स्त्री या पत्नी।

परिणेता (तृ)—पु०[स०परि√नी+तृच्] परिणय या विवाह करनेवाला व्यक्ति । पति ।

परिणेया—वि० [स० परि√नी+यत्+टाप्] (स्त्री) जो पत्नी या भार्या बनाने के लिए उपयुक्त हो। २ जिसका परिणय या विवाह होने को हो या हो सकता हो।

परितः—अव्य० [स०परि+तस्] १. सब ओर। चारो ओर। २ पूरी तरह से। सब प्रकार से।

परितच्छ†—वि०=प्रत्यक्ष।

परितप्त—भू० कृ० [सं० परि√तप् (तपना)+क्त] १. अच्छी तरह तपा या तपाया हुआ। बहुत गरम। २. जिसे बहुत अधिक परिताप या दुःख हुआ हो। बहुत अधिक दुःखी और संतप्त।

परितप्ति—स्त्री० [सं० परि√तप्+क्तिन्] १ परितप्त होने की अवस्था या भाव। परिताप। २ जलन। डाह। ३. बहुत विकट। मानसिक व्यथा। मनस्ताप।

परितर्कण—पु० [सं० परि√तर्क (दीप्ति, विचार)+ल्युट्—अन] अच्छी तरह तर्क या विचार करना।

परितर्पण—पु० [सं० परि√तृप् (संतुष्ट करना)+ल्युट्—अन] अच्छी तरह प्रसन्न या संतुष्ट करना।

परिताप—पु० [सं० परि√तप्+घञ्] १ बहुत अधिक ताप जिससे चीजें जलने या झुलसने लगे। २ घोर व्यथा। संताप। ३ पछतावा। पश्चात्ताप। ४ डर। भय। ५ कँप-कँपी। कंप। ६ एक नरक का नाम।

परितापी (पिन्)—वि० [सं० परि√तप्+णिनि] १. परिताप-संबंधी। २ परिताप उत्पन्न करनेवाला। ३ दे० 'परितप्त'।

परितिक्त—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक तीता।
पु० निंब। नीम।

परितुलन—पु० [सं० परि√तुल् (तुलना करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परितुलित] साहित्य में किसी ग्रंथ की लिखित और मुद्रित प्रतियों और उनके भिन्न भिन्न संस्करणों आदि का यह जानने के लिए मिलान करना कि उनका ठीक और मूल रूप क्या है अथवा क्या होना चाहिए। (कोल्लेशन) जैसे—सूर सागर का सम्पादन करते समय रत्नाकर जी ने उसकी पचीसों हस्त-लिखित प्रतियों का परितुलन किया था।

परितुष्ट—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० परितुष्टि] १ जिसका परितोष हो चुका हो या किया जा चुका हो। अच्छी तरह से तथा सब प्रकार से तुष्ट। २ जो बहुत खुश या प्रसन्न हो।

परितुष्टि—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ पूरी तरह से की जानेवाली तुष्टि। परितोष। २ खुशी। प्रसन्नता।

परितृप्त—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० परितृप्ति] जो अच्छी तरह तृप्त हो चुका हो। पूर्ण रूप से तृप्त।

परितृप्ति—स्त्री० [सं० प्रा०स०] परितृप्त करने या होने की अवस्था या भाव।

परितृप्ति—पु०=परितोष।

परितोलन—पु० [सं०] [भू० कृ० परितौलित] दे० 'परितुलन'।

परितोष—पु० [सं० परि√तुष् (प्रीति)+घञ्] १ निश्चिन्तता युक्त सुख जो कामना या साध पूरी होने पर होता है। अच्छी तरह होनेवाला तोष। पूर्ण तृप्ति। २ खुशी। प्रसन्नता।

परितोषक—वि० [सं० परि√तुष्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ परितोष करनेवाला। संतुष्ट करनेवाला। २ प्रसन्न या खुश करनेवाला।

परितोषण—पु० [सं० परि√तुष्+णिच्+ल्युट्—अन] १. परितुष्ट करने की क्रिया या भाव। ऐसा काम करना जिससे किसी का परितोष हो। २ वह धन जो किसी को परितुष्ट करने के लिए दिया गया हो।

परितोषवान् (वत्)—वि० [सं० परितोष+मतुप्, वत्व] जो सहज में परितोष प्राप्त कर लेता है।

परितोषी (षिन्)—वि० [सं० परितोष+इनि] १ जिसे परितोष हो। २ जल्दी या सहज में परितुष्ट होनेवाला।

परितोस†—पु०=परितोष।

परित्यक्त—भू० कृ० [सं० परि√त्यज् (छोडना)+क्त] जिसे पूर्ण रूप से अथवा उपेक्षापूर्वक छोड दिया गया हो। (एबन्डन्ड)

परित्यक्ता—पु० [सं० परित्यक्त+टाप्] त्यागने या छोडनेवाला।
वि० स० 'परित्यक्त' का स्त्री०।
स्त्री० वह स्त्री जिसे उसके पति ने त्याग या छोड दिया हो।

परित्यजन—पु० [सं० परि√त्यज्+ल्युट्—अन] परित्याग करने की क्रिया या भाव। त्यागना। छोडना।

परित्यज्य—वि० [सं० परित्याज्य] =परित्याज्य।

परित्याग—पु० [सं० परि√त्यज्+घञ्] अधिकार स्वामित्व, संबंध, आधिकृत वस्तु, निजी संपत्ति, संबंधी आदि का पूर्ण रूप से तथा सदा के लिए किया जानेवाला त्याग। पूरी तरह से छोड देना। (एबन्डनिंग)

परित्यागना—स० [सं० परित्याग] पूरी तरह से या सदा के लिए परित्याग करना।

परित्यागी (गिन्)—वि० [सं० परि√त्यज्+घिनुण्] परित्याग करने अर्थात् पूरी तरह से या सदा के लिए छोडनेवाला।

परित्याजन—पु० [सं० परि√त्यज्+णिच्+ल्युट्—अन] परित्याग।

परित्याज्य—वि० [सं० परि√त्याज्+ण्यत्] जिसका परित्याग करना उचित हो या किया जाने को हो। जो पूरी तरह से या सदा के लिए छोडे जाने के योग्य हो।

परित्रस्त—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक त्रस्त या डरा हुआ।

परित्राण—पु० [सं० परि√त्रै (बचाना)+ल्युट्—अन] १. कष्ट, विपत्ति आदि से की जानेवाली पूर्ण रक्षा। २ शरीर पर के बाल या रोएँ। रोम।

परित्रात—भू० कृ० [सं० परि√त्रै+क्त] जिसका परित्राण या रक्षा की गई हो। रक्षा-प्राप्त।

परित्राता (तृ)—वि० [सं० परि√त्रै+तृच] जो दूसरो का परित्राण करता हो। पूरी रक्षा करनेवाला।

परित्रायक—वि० [सं० परि√त्रै+ण्वुल्-अक]=परित्राता।

परित्रास—पु० [सं० परि√त्रस् (डरना)+घञ्] अत्यधिक त्रास।

परिदंशित—भू० कृ० [सं० परिदंश, प्रा० स०],+इतच्] जो पूर्ण रूप से अस्त्रों से सुसज्जित हो या किया गया हो।

परिदत्त—भू० कृ० [सं० परि√दा (देना)+क्त] १. (व्यक्ति) जिसे परिदान मिला हो। २ (धन) जो परिदान के रूप में दिया गया हो।

परिदर—पु० [सं० परि√दृ (फाडना)+अप्] मसूडों में से खून और मवाद निकलने या बहने का एक रोग। (पायरिया)

परिदर्शन—पु० [सं० प्रा० स०] १. बहुत अच्छी तरह से किया जानेवाला या होनेवाला दर्शन। पूर्ण दर्शन। २ निरीक्षण। ३. न्यायालय में किसी मुकद्दमे की होनेवाली सुनवाई। (ट्रायल)

परिदष्ट—भू० कृ० [सं० परि√दश+क्त] १ जो काटकर टुकड़े-टुकड़े

कर दिया गया हो। २ जिसे डक या दाँत लगा हो। डंका या दाँत से काटा हुआ। दंशित।

परिदहन—पुं०[सं० परि√दह् (जलाना)+ल्युट्—अन] अच्छी तरह या पूर्ण रूप से जलाना।

परिदान—पुं० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० परिदत्त] १. लौटा देना। वापस कर देना। फेर देना। २. अदला-बदली। ३. अमानत लौटाना। ४ आज-कल वह आर्थिक सहायता जो राज्य सरकार व्यक्तियों, संस्थाओं आदि को उद्योगीकरण में प्रोत्साहित करने के लिए देती है। (सब्साइडी)

परिदाय—पुं०[सं० परि√दा (देना)+घञ्] सुगंधि। खुशबू।

परिदायी (यिन्)—वि०[सं० परि√दा+णिनि] जो ऐसे वर से अपनी कन्या का विवाह करता हो जिसका बड़ा भाई अभी तक कुँआरा हो।

परिदाह—पुं०[सं० प्रा० स०] १ अत्यंत जलन या दाह। २ मानसिक कष्ट। दुःख या संताप।

परिदिग्ध—वि०[सं० प्रा० स०] जिस पर कोई वस्तु बहुत अधिक मात्रा मे लगी या पुती हो।

परिदीन—वि०[सं० प्रा० स०] बहुत अधिक दीन या दुःखी।

परिदृढ़—वि०[सं० प्रा० स०] बहुत दृढ़।

परिदृष्टि—स्त्री०[सं०] किसी वस्तु का ऐसा दृश्य या रूप जिसमें दूर से देखने पर उसके सब अंग अपने ठीक अनुपात मे और एक दूसरे से उचित दूरी पर दिखाई दें। संदर्श। (परस्पेक्टिव)

परिदेव—पुं०[सं० परि√दिव् (गति)+घञ्] रोना-धोना। विलाप।

परिदेवन—पुं०[सं० परि√दिव्+ल्युट्—अन] १. कष्ट पहुँचने या हानि होने पर की जानेवाली चीख-पुकार। २ उक्त स्थिति मे की जानेवाली फरियाद या शिकायत। परिवाद। (कम्प्लेन्ट)

परिदेवना—स्त्री०=परिदेवन।

परिद्रष्टा (ष्टृ)—वि०[सं०परि√दृश् (देखना)+तृच्] परिदर्शन करनेवाला।

परिद्वीप—पुं०[सं० ब० स०] गरुड का एक पुत्र।

परिध—स्त्री०=परिधि।

परिधन—पुं०[सं० परिधान]कमर और उससे निचला भाग ढकने के लिए पहना जानेवाला कपड़ा। अधोवस्त्र।

परिधर्षण—पुं० [सं० परि√धृष् (झिड़कना)+ल्युट्—अन] १ आक्रमण। २. अपमान। तिरस्कार। ३. दूषित या बुरा व्यवहार।

परिधान—पुं०[सं० परि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १. शरीर पर वस्त्र आदि धारण करना। कपड़े ओढ़ना या पहनना। २ वे कपड़े जो शरीर पर धारण किये या पहने जायें। पोशाक। ३ कमर के नीचे पहनने या बाँधने का कपड़ा। जैसे—धोती, लुंगी आदि। ४ प्रार्थना स्तुति आदि का अंत या समाप्ति।

परिधानीय—वि०[सं० परि√धा+अनीयर्] [स्त्री० परिधानीया] जो परिधान के रूप मे धारण किया जा सके। पहने जाने के योग्य (वस्त्र)।

परिधाय—पुं० [सं० परि√धा+घञ्] १. कपड़ा। वस्त्र। २. पहनने के कपड़े। परिधान। पोशाक। ३ वह स्थान जहाँ जल हो।

परिधायक—वि०[सं० परि√धा+ण्वुल्—अक] १ ढकने, लपटने या चारो ओर से घेरनेवाला।

पुं० १ घेरा। २ चहारदीवारी। प्राचीर।

परिधापन—पुं० [सं० परि√धा+णिच्+ल्युट्—अन] १ पहनना। २ पोशाक।

परिधारण—पुं०[सं० प्रा० स०] [वि० परिधार्य, परिधृत] १ अच्छी तरह किया जानेवाला धारण। २ अपने ऊपर उठाना, लेना या सहना। ३ बचाकर या रक्षित रूप मे रखना।

परिधावन—पुं०[सं० प्रा० स०] बहुत अधिक या बहुत तेज दौड़ना।

परिधावी (विन्)—वि० [सं० परि√धाव् (गति)+णिनि] बहुत अधिक या बहुत तेज दौड़नेवाला।

पुं० ज्योतिष मे साठ संवत्सरो में से छियालीसवाँ संवत्सर।

परिधि—स्त्री०[सं०परि√धा+कि] १ वृत्त की रेखा। २ किसी गोलाकार वस्तु के चारों ओर खिंची हुई वृत्ताकार रेखा। (सरकम्फरेन्स) ३ वह गोलाकार मार्ग जिस पर कोई चीज चलती,घूमती या चक्कर लगाती हो। ४. प्रायः गोलाकार माना जानेवाला कोई ऐसा वास्तविक या कल्पित घेरा, जो दूसरे बाहरी क्षेत्रों से अलग हो। कुछ विशेष लोगो या कार्यों का स्वतंत्र क्षेत्र। वृत्त। (सर्किल) ५ सूर्य या चन्द्रमा के आस-पास दिखाई पड़नेवाला घेरा। परिवेश। मंडल। ६ किसी वस्तु की रक्षा के लिए बनाया हुआ घेरा। बाड़ा। चहारदीवारी। नियत या नियमित मार्ग। ८ वे तीन खूँटे जो यज्ञ-मंडप के आस-पास गाड़े जाते थे। ९ क्षितिज। १०. परिधान। ११ दे० 'परिवेश'।

परिधिक—वि०[सं०] १ परिधि-संबंधी। २. जिसका कार्य-क्षेत्र किसी विशेष परिधि मे हो। जैसे—परिधिक निरीक्षक। (सर्किल इन्स्पेक्टर)

परिधिस्थ—वि०[सं० परिधि√स्था (ठहरना)+क] जो किसी परिधि मे स्थित हो।

पुं०१ नौकर। सेवक। २ वह सेना जो रथ और रथी की रक्षा के लिए नियुक्त रहती थी।

परिधीर—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक धीरजवाला। परम धीर।

परिधूपित—भू०कृ० [सं० प्रा० स०] धूप से अच्छी तरह बसाया या सुगंधित किया हुआ।

परिधूमन—पुं०[सं०परिधूम, प्रा० स०,+क्विप्+ल्युट्—अन] १ डकार। २ सुश्रुत के अनुसार तृष्णा रोग का एक उपद्रव जिसमे एक विशेष प्रकार की कै होती है।

परिधूसर—वि०[सं० प्रा० स०] १ धूल से भरा हुआ। जिसमे खूब धूल लगी हो। २ धूल के रंग का। मटमैला।

परिधेय—वि०[सं०परि√धा (धारण)+यत्] जो परिधान के रूप मे काम आ सके। जो पहना जा सके या पहने जाने के योग्य हो।

पुं० १ पहनने के कपड़े। परिधान। पोशाक। २ अंदर या नीचे पहनने का कपड़ा। जैसे—गंजी, लहँगा या साया।

परिध्वंस—पुं०[सं० प्रा० स०] १ पूरी तरह से होनेवाला ध्वंस या नाश। सर्व-नाश। २ ध्वंस। नाश।

परिध्वस्त—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] जिसका पूरी तरह से ध्वंस या नाश हो चुका हो या किया जा चुका हो।

परिनगर—पु०[सं० प्रा० स०] नगर से कुछ हटकर बनी हुई बस्ती जो शासकीय दृष्टि से उसकी सीमा के अंतर्गत मानी जाती हो। (सबर्ब)

परिनय†—पु०=परिणय।

परिनागर—वि०[सं० पारिनगर] परिनगर-संबंधी। (सबर्बन)

परिनाम*—पु०=परिणाम।

परिनामी†—वि० =परिणामी।

परिनिर्णय—पु०[सं० प्रा० स०] १ किसी विवाद के संबंध मे दिया हुआ पचों का निर्णय। २ वह पत्र जिसमे पचो का निर्णय लिखा हुआ हो। पचाट। (अवार्ड)

परिनिर्वाण—पु०[सं० प्रा० स०] पूर्ण निर्वाण। पूर्ण मोक्ष।

परिनिर्वाति—स्त्री०[सं०परि-निर्√वा (गति)+क्तिन्]=परिनिर्वाण।

परिनिर्वृत—वि० [सं०प्रा० स०] [भाव० परिनिर्वृत्ति] १ जो मुक्त हो चुका हो। छूटा हुआ। २ जिसे मोक्ष मिल चुका हो।

परिनिर्वृत्ति—स्त्री०[सं० प्रा० स०] १ मोक्ष। २ छुटकारा। मुक्ति।

परिनिष्ठा—स्त्री०[सं० प्रा० स०] १ चरमसीमा या अवस्था। अंतिम सीमा। पराकाष्ठा। २ पूर्णता। ३ अभ्यास या ज्ञान की पूर्णता।

परिनिष्ठित—वि० [सं० परि-नि√स्था+क्त] १ (कार्य) जो पूरा या सम्पन्न किया जा चुका हो। निपटाया हुआ। २. जो किसी काम मे पूरी तरह से कुशल या दक्ष हो।

परिनिष्पन्न—वि० [सं० प्रा० स०] १. (काम) जो अच्छी तरह पूरा हो चुका हो। २ जो भाव-अभाव और सुख-दुःख की कल्पना से बिलकुल दूर या परे हो। (बौद्ध)

परिनैष्ठिक—वि०[सं० प्रा० स०] सर्वश्रेष्ठ। सर्वोत्कृष्ट।

परिन्यास—पु० [सं० प्रा०स०] १ किसी पद, वाक्य आदि के भाव मे पूर्णता लाना जो साहित्य मे एक विशिष्ट गुण माना गया है। २ साहित्यिक रचना मे उक्त प्रकार का स्थल। ३ नाटक मे आख्यान बीज अर्थात् मुख्य कथा की मूलभूत घटना का सकेत करना।

परिपंच†—पु०=प्रपंच।

परिपंथ—वि०[सं० परि√पथ् (गति)+अच्] जो रास्ता रोके हुए हो।

परिपंथक—वि०[सं० परि√पथ्+ण्वुल्—अक] मार्ग या रास्ता रोकने वाला।

पु० १ वह जो प्रतिकूल या विरुद्ध आचरण या व्यवहार करता हो। २ दुश्मन। शत्रु। उदा०—पार भई परिपंथि गजिमय।—गोरखनाथ। ३. लुटेरा। डाकू।

परिपंथिक—वि०, पु०=परिपंथक।

परिपंथी (थिन्)—वि०, पु०[सं० परि√पथ्+णिनि]=परिपंथक।

परिपक्व—वि०[सं० प्रा० स०] [भाव० परिपक्वता] १ जो अभिवृद्धि, विकास आदि की दृष्टि से पूर्णता तक पहुँच चुका हो। जैसे—परिपक्व अन्न, फल आदि। २ अच्छी तरह पचा हुआ (भोजन)। ३ जिसका उपयुक्त या नियत समय आ गया हो। (मैच्योर) ४ अच्छा अनुभवी, ज्ञाता और बहुदर्शी। ५ कुशल। दक्ष। निपुण।

परिपक्वता—स्त्री०[सं०परिपक्व+तल्+टाप्]परिपक्व होने की अवस्था या भाव।

परिपण—पु०[सं० परि√पण् (व्यवहार करना)+घ] मूलधन। पूंजी।

परिपणन—पु० [सं० परि√पण्+ल्युट्—अन] १. बाजी या शर्त लगाना। २ प्रतिज्ञा या वादा करना।

परिपणित—भू० कृ०[सं० परि√पण्+क्त] १ (कार्य या बात) जिस पर शर्त लगी या लगाई गई हो। २ (धन) जो बाजी या शर्त मे लगाया गया हो। ३ (बात) जिसके संबंध मे वादा किया गया हो।

परिपणित-काल-संधि—स्त्री०[सं० काल-संधि, ष० त० परिपणित-कालसंधि, कर्म० स०] प्राचीन भारत मे मित्र देशों मे होनेवाली एक तरह की संधि, जिसमे यह नियत किया जाता था कि कितने-कितने समय तक कौन-कौन सदस्य लडेगा।

परिपणित-देश-संधि—स्त्री०[सं० देश-संधि, ष० त०, परिपणित-देशसंधि, कर्म० स०] प्राचीन भारत मे मित्र देशों मे होनेवाली वह संधि, जिसमे यह नियत होता था कि कौन किस देश पर आक्रमण करेगा।

परिपणित-संधि—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वह संधि जिसमे कुछ शर्तें स्वीकार की गई हो।

परिपणितार्थ-संधि—स्त्री०[सं० अर्थ-संधि, ष० त० परिपणितअर्थसंधि, कर्म० स०] ऐसी संधि जिसके अनुसार किसी को पूर्व निश्चय के अनुसार कुछ काम करना पडता हो।

परिपतन—पु०[सं० प्रा० स०]किसी के चारों ओर उडना, चक्कर लगाना या मँडराना।

परिपति—वि०[सं० परि√पत् (गिरना)+इन्] जो सब का स्वामी हो।

पु० परमात्मा।

परिपत्र—पु०[सं० प्रा० स०]१ वह आधिकारिक पत्र जो विशिष्ट या संबद्ध पदाधिकारियों, सदस्यों आदि को सूचनार्थ भेजा जाता है। गश्ती चिट्ठी। (सरक्यूलर) २ वह पत्र जिसमे किसी को कुछ स्मरण कराने के लिए कुछ लिखा गया हो। स्मृतिपत्र। (मेमोरेण्डम)

परिपथ—पु० [सं०] १ किसी वृत्ताकार वस्तु के किनारे-किनारे बना हुआ पथ। २ अनेक नगरो, देशो, स्थलो आदि मे पारी-पारी से होते हुए जाने के लिए पहले से नियत किया हुआ मार्ग। (सरकिट)

परिपर—पु०[सं० परि√पृ (पूर्ति)+अप्]=परिपथ।

परिपवन—पु० [सं० परि√पू (पवित्र करना)+ल्युट—अन] १. अनाज ओसाना या बरसाना। २ अन्न ओसाने का सूप।

परिपांडिमा (मन्)—स्त्री० [सं० पांडिमन्, पाडु+इमनिच्, परिपांडिमन्, प्रा० स०] बहुत अधिक सफेदी या पीलापन।

परिपांडु—वि०[सं० प्रा० स०] १ बहुत हलका पीला। सफेदी लिए हुए पीला। २ दुबला-पतला। कृश और क्षीण।

परिपाक—पु०[सं० परि√पच् (पकाना)+घञ्] १ अच्छी तरह या ठीक पकना या पकाया जाना। २ पेट मे भोजन अच्छी तरह पचना। ३ किसी विषय या बात की ऐसी पूर्ण अवस्था तक पहुँचना जिसमे कुछ भी त्रुटि न रह जाय। ४ परिणाम। फल। ५ निपुणता। दक्षता।

परिपाकिनी—स्त्री०[सं० परिपाक+इनि+ङीप्] निसोथ।

परिपाचन—पु०[सं० परि√पच्+णिच्+ल्युट्-अन]अच्छी तरह पचाना। भली भाँति पचाना।

परिपाचित—भू० कृ०[सं० परि√पच्+णिच्+क्त] अच्छी तरह पकाया हुआ।

परिपाटल—वि०[सं० प्रा० स०] पीलापन लिए लाल रंगवाला।
पुं० उक्त प्रकार का रंग।

परिपाटलित—भू० कृ०[सं० परिपाटल+क्विप्+क्त] परिपाटल रंग में रँगा हुआ।

परिपाटि—स्त्री० [सं० परि√पट् (गति)+णिच्+इन्] =परिपाटी।

परिपाटी—स्त्री० [सं० परिपाटि+ङीष्] १. किसी जाति, समाज आदि में कोई काम करने का कोई विशिष्ट बँधा हुआ ढंग अथवा शैली। २ विशिष्ट अवसर पर कोई विशिष्ट काम करने की प्रथा। ३ उक्त प्रकार से काम करने का ढंग या प्रथा।
विशेष—परिपाटी, पद्धति और प्रथा का अन्तर जानने के लिए देखें 'प्रथा' का विशेष।

परिपाठ—पुं०[सं० परि√पठ्(पढ़ना)+घञ्] १ वेदों का पुनर्पठन। २ विस्तार के साथ उल्लेख या पाठ करना।

परिपार (रि)†—स्त्री०[सं० पाली=मर्यादा] मर्यादा। उदा०—किहिं नर किहिं सर राखियै खरै बढ़ै परिपारि।—बिहारी।

परिपार्श्व—वि०[सं० प्रा० स०] पार्श्व या बगल का। बहुत पास का।
पुं० १ पार्श्व। २ सामीप्य।

परिपालक—वि०[सं०परि√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] परिपालन करनेवाला।

परिपालन—पुं०[सं० परि+पाल+णिच्+ल्युट्—अन] १ रक्षा। बचाव २ बहुत ही सावधानी से किया जानेवाला पालन-पोषण या लालन-पालन।

परिपालना—स्त्री०[सं० परि√पाल्+णिच्+युच्—अन] रक्षण। बचाव।
स०[सं० परिपालन] परिपालन करना।

परिपालनीय—वि०[सं० परि√पाल्+णिच्+अनीयर्] जिसका परि-पालन करना या होना चाहिए।

परिपालयिता (तृ)—वि०[सं० परि√पाल्+णिच्+तृच्] परिपालन करनेवाला व्यक्ति। परिपालक।

परिपाल्य—वि० [सं० परि√पाल्+ण्यत्] जिसका परिपालन करना उचित हो या किया जाने को हो।

परिपिंजर—वि०[सं० प्रा० स०] हलके लाल रंग का।

परिपिच्छ—पुं०[सं० प्रा० स०] एक प्रकार का आभूषण, जो मोर की पूँछ के परों का बना होता था।

परिपिष्टक—पुं०[सं० परि√पिष् (चूर्ण करना)+क्त+कन्] सीसा।

परिपीड़न—पुं०[सं० प्रा० स०] १. अत्यंत पीड़ा पहुँचाना। बहुत कष्ट देना। २ अच्छी तरह दबाना या पीसना। ३ अनिष्ट, अपकार या हानि करना।

परिपीड़ित—भू० कृ०[सं० प्रा० स०] जो बहुत अधिक पीड़ित किया गया हो या हुआ हो।

परिपीवर—वि०[सं० प्रा० स०] बहुत अधिक मोटा या स्थूल।

परिपुष्करा—स्त्री०[सं० प्रा० ब० स०] गोडुब ककड़ी। गोडुबा।

परिपुष्ट—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] १. जिसका पोषण भली भाँति हुआ हो। पूर्ण रूप से पुष्ट।

परिपुष्टि—स्त्री० [सं० प्रा० स०] परिपुष्ट होने की अवस्था या भाव।

परिपूजन—पुं०[सं० प्रा० स०] सम्यक् प्रकार से किया जानेवाला पूजन या उपासना।

परिपूत—वि०[सं० प्रा० स०] अति पवित्र।
पुं० ऐसा अन्न जिसमें से कूड़ा-करकट, भूसी आदि निकाल दी गई हो। साफ किया हुआ अन्न।

परिपूरक—वि०[सं० प्रा० स०] १ परिपूर्ण करनेवाला। भर देनेवाला। २ धन-धान्य आदि से युक्त या संपन्न करनेवाला। ३ पूरा। संपूर्ण। सारा।

परिपूरणीय—वि०[सं० प्रा० स०] परिपूर्ण किये जाने के योग्य।

परिपूरना†—वि०=परिपूर्ण।

परिपूरित—भू० कृ०[सं० प्रा० स०] १ अच्छी तरह या पूरा-पूरा भरा हुआ। लबालब। २ पूरा या समाप्त किया हुआ।

परिपूर्ण—वि०[सं० प्रा० स०] १ जो सब प्रकार से पूर्ण हो। २ अच्छी तरह तृप्त किया हुआ। ३ जो पूरा या समाप्त हो चुका हो या किया जा चुका हो।

परिपूर्णेन्दु—पुं०[सं०परिपूर्ण-इन्दु, कर्म० स०] सोलहों कलाओं से युक्त चंद्रमा। पूर्णिमा का पूरा चाँद।

परिपूर्ति—स्त्री०[सं० प्रा० स०]परिपूर्ण होने की अवस्था, क्रिया या भाव। परिपूर्णता।

परिपृच्छक—वि०[सं० परिप्रच्छक] जिज्ञासा या प्रश्न करनेवाला। पूछनेवाला।

परिपृच्छनिका—स्त्री०[सं० प्रा० स०] वह बात जिसके संबंध में वाद-विवाद किया जाय। वाद का विषय।

परिपृच्छा—स्त्री०[सं० प्रा० स०] १ पूछने की क्रिया या भाव। पूछ-ताछ। २ जिज्ञासा।

परिपेल—पुं० [सं० परि√पेल् (कंपन)+अच्] केवटी मोथा। कैवर्त मुस्तक।

परिपेलव—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर तथा सुकुमार।
पुं० केवटी मोथा।

परिपोट(क)—पुं० [सं० परि√पुट् (फोड़ना)+घञ्] [परिपोट+कन्] कान का एक रोग जिसमें उसकी त्वचा गल या छिल जाती है।

परिपोटन—पुं०[सं० परि√पुट्+ल्युट्—अन] किसी चीज का छिलका अथवा ऊपरी आवरण हटाना।

परिपोषण—पुं० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० परिपोषित] अच्छी तरह किया जानेवाला पोषण। भली भाँति पुष्ट करना।

परिप्रश्न—पुं०[सं० प्रा० स०] कोई बात जानने के लिए किया जाने-वाला प्रश्न। (एन्क्वायरी)

परि-प्रश्नक—पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ विशेष रूप से किसी विशिष्ट विभाग या विषय से संबंध रखनेवाली बातों की पूछ-ताछ की जाती है। (एन्क्वायरी आफिस)

परिप्रेक्ष्य—पुं०[सं०] चित्रकला में, दृश्यों, पदार्थों, व्यक्तियों का ऐसा अंकन या चित्रण जिसमें उनका पारस्परिक अन्तर ठीक उसी रूप में दिखाई देता हो, जिस रूप में वह साधारणतः आँखों से देखने पर दिखाई देता है। (पर्स्पेक्टिव)

परिप्रेषण—पुं०[सं० प्रा० स०] [भू० कृ० परिप्रेषित] १ चारों ओर

भेजना। २. किसी को दूत या हरकारा बनाकर कहीं भेजना। ३. देश-निकाला। निर्वासन। ३ परित्याग।

परिप्रेषित—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] १. भेजा हुआ। प्रेषित। २ निकाला हुआ। निष्कासित। ३. छोड़ा या त्यागा हुआ। परित्यक्त।

परिप्रेष्य (ष्य्)—वि०[सं० प्रा० स०] जो भेजा जाने को हो या भेजे जाने के योग्य हो।

पुं० नौकर। सेवक।

परिप्लव—वि० [सं० परि√प्लु (गति)+अच्] १. तैरता या बहता हुआ। २ जो गति मे हो। ३ हिलता-कांपता हुआ।

पु० १ तैरना। २ पानी की बाढ़। ३ अत्याचार। ४ नाव। नौका।

परिप्लावित—भू० कृ० [सं०] (स्थान) जो बाढ के कारण जलमग्न हो चुका हो।

परिप्लुत—वि० [सं० परि√ प्लु+क्त] १ जिसके चारो ओर जल ही जल हो। २ भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। तर। ३. कांपता या हिलता हुआ।

पु० कही पहुँचने के लिए उछलकर आगे बढ़ने की क्रिया। छलाँग।

परिप्लुता—स्त्री०[सं० परिप्लुत+टाप्] १ मदिरा। शराब। २. ऐसी योनि जिसमे मैथुन या मासिक रज:स्राव के समय पीड़ा होती हो। (वैद्यक)

परिप्लुष्ट—वि०[सं० परि√प्लुष् (दाह)+क्त) १ जला या जलाया हुआ। २ झुलसा हुआ।

परिप्लोष—पु० [सं० परि√प्लुष्+घञ्] १ तपना। ताप। २. जलन। दाह। ३ शरीर के अन्दर का ताप।

परिफुल्ल—वि०[सं० प्रा० स०] १ अच्छी तरह खिला हुआ। खूब खिला हुआ। २ अच्छी तरह खुला हुआ। ३ बहुत अधिक प्रसन्न। ४. जिसके रोएँ खडे हो गये हों। जिसे रोमाच हुआ हो।

परिबधन—पु०[सं० प्रा० स०] [वि० परिबद्ध] ऐसा बधन जिसमे चारो ओर से किसी को जकडा जाय।

परिबर्ह—पु०[सं० परि√बर्ह् (दान)+घञ्] १ राजाओ के हाथी-घोडो पर डाली जानेवाली झूल। २ राजा के छत्र, चँवर आदि राज-चिह्न। राजा का साज-सामान। ३. घर-गृहस्थी मे नित्य काम आने-वाली चीजें। घर का सामान। ४ धन-सम्पत्ति। दौलत।

परिबर्हण—पु०[सं० परि√बर्ह्+ल्युट्—अन] १. पूजा। उपासना। २ सब प्रकार से होनेवाली वृद्धि। ३ सम्पन्नता। समृद्धि।

परिबल—पु०[सं० प्रा० स०] यत्रो आदि का वह बल या शक्ति जिसकी प्रेरणा से उसका कोई अग या पहिया किसी अक्ष या बिन्दु पर घूमता या चक्कर लगाता है। (मोमेन्टम)

परिबाधा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ बहुत बड़ी या विकट बाधा। २ कष्ट। पीडा। ३ परिश्रम। ४ थकावट। श्रांति।

परिबृंहण—पु० [सं० परि√बृह् (वृद्धि)+ल्युट्—अन] [भू०कृ० परि-बृंहित] १ चारो ओर या हर तरफ से बढ़ना। वर्धन। २. पूरक ग्रथ जो किसी मुख्य ग्रथ मे प्रतिपादित विचारो की पुष्टि और समर्थन करता हो।

परिबेख†—पु०=परिवेष।

परिबेठना—स० [सं० प्रतिवेष्ठन] आच्छादित करना। लपेटना। ढकना। उदा०—ग्रीष्म दुपहरी मिस जोन्ह महा विष ज्वाला सों परिबेठी।—देव

परिबोध—पु०[सं० प्रा० स०] १ ज्ञान। २. तर्क। ३ वे प्रतिबध या विघ्न जो दुर्बल चित्तवाले साधको को समाधिस्थ नही होने देते।

परिबोधन—पु०[सं० परि√बुध्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० परिबोध-नीय] १ ठीक प्रकार से बोध कराना। २ दड की धमकी देकर कोई विशेष कार्य करने से रोकना। चेतावनी देना। ३. चेतावनी।

परिबोधना—स्त्री०[सं० परि√बुध्+णिच्+युच्—अन, टाप्] चेतावनी।

परिभग—पु०[सं० प्रा० स०] टुकडे-टुकडे करना।

परिभक्ष—वि०[सं० परि√भक्ष् (खाना)+अच्] परिभक्षण करनेवाला।

परिभक्षण—पु०[सं० परि√भक्ष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिभक्षित] १ पूरी तरह से खाना। २ खूब खाना।

परिभक्षा—स्त्री०[सं० परि√भक्ष्+अ+टाप्] आपस्तब सूत्र के अनुसार एक प्रकार का विधान।

परिभर्त्सन—पु०[सं० प्रा० स०] चारो ओर से होनेवाली भर्त्सना।

परिभव—पु०[सं० परि√भू (होना)+अप्] अनादर। अपमान। तिर-स्कार। उदा०—चिर परिभव से श्रेष्ठ है मरण।—पत।

परिभवनीय—वि०[सं० परि√भू+अनीयर्] १ जो अनादर या अप-मान का पात्र हो। २ जिसकी पराजय निश्चित-प्राय हो।

परिभवी (विन्)—वि० [सं० परि√भू+इनि] दूसरो का अनादर या अपमान करनेवाला।

परिभाव—पु०[सं० परि√भू+घञ्] १ अनादर। अपमान। परिभव। २ मात करना। हराना। पराभव।

परिभावन—पु०[सं० परि√भू+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परि-भावित] १. मिलाप। सयोग। मिलन। २ चिंता। फिक्र।

परिभावना—स्त्री०[सं० परि√भू+णिच्+युच्—अन+टाप्] १. चिन्तन। विचार। २ चिंता। फिक्र। ३ साहित्य मे ऐसा वाक्य या पद जिससे अतिशय उत्सुकता उत्पन्न हो।

परिभावित—भू० कृ०[सं० परि√भू+णिच्+क्त] १. मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। २ व्याप्त। ३ जिस पर विचार किया जा चुका हो। विचारित।

परिभावी (विन्)—वि०[सं० परि√भू+णिच्+णिनि] अनादर, अपमान या तिरस्कार करनेवाला।

परिभावुक—वि०=परिभावी।

परिभाषक—वि०[सं० परि√भाष् (बोलना)+ण्वुल्—अक] १ निंदा के द्वारा किसी का अपमान करनेवाला। २ निंदक।

परिभाषण—पु०[सं० परि√भाष्+ल्युट्—अन] १. बात-चीत। वार्ता-लाप। २. दोषारोपण तथा निंदा करना। ३ नियम।

परिभाषा—स्त्री०[सं० परि√भाष्+अ+टाप्] १. बात-चीत। २. निंदा। ३ व्याकरण मे वह व्याख्यापक सूत्र जो पाणिनी के सूत्रों के साथ रहता और उनके प्रयोग की रीति बतलाता है। ४ किसी वाक्य मे आये हुए पद या शब्द का अर्थ अथवा आशय निश्चित रूप से स्पष्ट करने की

क्रिया या प्रकार। ५. ऐसा कथन या वाक्य जो किसी पद या शब्द का अर्थ या आशय स्पष्ट रूप से बतलाता या व्यक्त करता हो। व्याख्या से युक्त अर्थापन। (डेफिनेशन) ६ ऐसा शब्द जो किसी विज्ञान या शास्त्र में किसी विशिष्ट अर्थ में चलता या प्रयुक्त होता हो। परिभाषिक शब्द। (टेक्निकल टर्म)

परिभाषित—भू० कृ०[सं० परि√भाष्+क्त] (शब्द या पद) जिसकी परिभाषा की गई या हो चुकी हो। (डिफाइन्ड)

परिभाषी (षिन्)—वि० [सं० परि√भाष्+णिनि] बोलने या भाषण करनेवाला।

परिभाष्य—वि०[सं० परि√भाष्+ण्यत्] १ जो स्पष्ट रूप से कहा जा सकता हो या कहा जाने को हो। २ जिसकी परिभाषा की जा रही हो या की जाने को हो।

परिभिन्न—वि०[सं० प्रा० स०] १ टूटा-फूटा या फटा हुआ। २ विकृत।

परिभुक्त—भू०कृ०[सं० परि√भुज् (भोगना)+क्त] जिसका परिभोग किया गया हो या हो चुका हो।

परिभुग्न—वि०[सं० परि√भुज् (चूर्ण करना)+क्त] टेढ़ा।

परिभू—वि०[सं० परि√भू+क्विप्] १. जो चारो ओर से घेरे या आच्छादित किये हुए हो। २ नियम, बधन आदि मे रहनेवाला। ३ नियामक। परिचालक।

परिभूत—भू०कृ०[सं० परि√भू+क्त] [भाव० परिभूति] १. जिसका परिभव हुआ हो। २ अनादृत। तिरस्कृत। ३ हारा हुआ। परास्त।

परिभूति—स्त्री०[सं० परि+भू+क्तिन्] अपमानित होने या हारने की अवस्था या भाव।

परिभूषण—पु०[सं० परि√भूष् (सजाना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिभूषित] १ अच्छी तरह से भूषित करना। अलकृत करना। २ प्राचीन भारत मे, वह सधि जो आक्रमक को अपने देश का राजस्व देकर की जाती थी।

परिभूषित—भू०कृ०[सं० परि√भूष्+क्त] जिसका परिभूषण किया गया हो या हुआ हो।

परिभेद—पु०[सं० परि√भिद् (फाड़ना)+घञ्] १ अच्छी तरह से भेदन करना। २ शस्त्रो आदि से किया जानेवाला आघात। ३ उक्त प्रकार के आघात से होनेवाला क्षत। घाव। जखम।

परिभेदक—वि०[सं० परि√भिद्+ण्वुल्—अक] १ अच्छी तरह भेदन करने अर्थात् काटने या फाड़नेवाला। २. गहरा घाव करनेवाला। पु० यथेष्ट क्षत या घात करनेवाला शस्त्र।

परिभोक्ता (क्तृ)—वि०[सं०परि√भुज्+तृच्] १. परिभोग करनेवाला। २ दूसरे के धन का उपभोग करनेवाला। पु० गुरु के धन का उपभोग करनेवाला व्यक्ति।

परिभोग—पु०[सं० प्रा०स०] [वि० परिभोग्य] १ बहुत अधिक किया जानेवाला भोग। २. स्त्री के साथ किया जानेवाला मैथुन। सभोग।

परिभ्रंश—पु०[सं० परि√ भ्रंश् (अधःपतन)+घञ्] १. गिरना या गिराना। पतन। स्खलन। २. पलायन। भगदड़।

परिभ्रम—पु०[सं० परि√भ्रम् (घूमना)+घञ्] १. चारों ओर घूमना। पर्यटन। २ भ्रम। ३ सीधी तरह से कोई बात न कहकर उसे घुमा-फिराकर चक्करदार ढग या सांकेतिक रूप से कहना। जैसे—'नाक पर मक्खी न बैठने देना।' के बदले मे कहना—सूँघने की इन्द्रिय पर घर मे उड़ते फिरने वाले कीड़े या पतगे को आसन न लगाने देना।

परिभ्रमण—पु०[सं० परि√भ्रम्+ल्युट्—अन] १ चारो ओर घूमना। २ विज्ञान मे, किसी एक वस्तु का किसी दूसरी वस्तु को केन्द्र मानकर उसके चारो ओर घूमना या चक्कर लगाना। (रोटेशन) जैसे—चद्रमा पृथ्वी का और पृथ्वी सूर्य का परिभ्रमण करता है। ३ घेरा। परिधि।

परिभ्रष्ट—भू० कृ०[सं० परि√ भ्रंश् +क्त] १ गिरा हुआ। च्युत। पतित। २ स्खलित। भागा हुआ।

परिभ्रामी (मिन्)—वि० [सं० परि √भ्रम्+णिनि] परिभ्रमण करनेवाला।

परिमंडल—वि०[सं० प्रा०स०] [भाव० परिमडलता] १. गोल। वर्तुलाकार। २ जो तौल मे एक परमाणु के बराबर हो।
पुं० १ चक्कर। २ घेरा। विशेषत वृत्ताकार घेरा। परिधि। ३. एक तरह का जहरीला कीडा। ३ चद्रमा अथवा सूर्य के चारो ओर की प्रकाशमान वृत्ताकार रेखा। ४ चद्रमा या सूर्य का प्रभामडल। (कारोना)

परिमंडल कुष्ठ—पु०[सं० कर्म०स०] कुष्ठ का एक भेद।

परिमंडलता—स्त्री०[सं० परिमडल+तल्+टाप्] गोलाई।

परिमंडलित—भू० कृ० [सं० परिमडल+इतच्] चारो ओर से गोल किया हुआ। गोलाकृति बनाया हुआ।

परिमंथर—वि०[सं० प्रा०स०] बहुत अधिक मथर।

परिमंद—वि० [सं० प्रा० स०] १ अत्यधिक मद बुद्धि। २ बहुत ही शिथिल या सुस्त।

परिमन्यु—वि०[सं० अत्या० स०] जिसे बहुत अधिक क्रोध आता हो। क्रोधी स्वभाव का। गुस्सेवर।

परिमर—पु० [सं० परि√मृ (मरना)+अप्] १ पूर्ण नाश। २ किसी के पूर्ण नाश के लिए किया जानेवाला एक तात्रिक प्रयोग। ३ वायु।

परिमर्द—पु०[सं० परि√मृद् (मर्दन)+घञ्] बहुत अधिक या अच्छी तरह से किया जानेवाला मर्दन।

परिमर्श—पु०[सं० परि√मृश् (छूना, विचारना)+घञ्] १ छू जाना। लग जाना। २ लगाव होना। ३ अच्छी तरह किया जानेवाला विचार। परामर्श।

परिमर्ष—पु०[सं० परि√मृष् (सहना)+घञ्] १ ईर्ष्या। २ कुढ़न। ३. क्रोध।

परिमल—पु०[सं० परि √ मल् (धारण)+अच्] १. अच्छी तरह मलना। २ शरीर में सुगधित द्रव्य मलना या लगाना। ३ उक्त प्रकार से शरीर में मले या लगाये हुए पदार्थों से निकलनेवाली सुगध। ४ खुशबू। सुगध। सुवास। ५ पुष्पों आदि से निकलनेवाली वह सुगध जो चारो ओर दूर तक फैलती हो। ६ मैथुन। सभोग। ७ पंडितों या विद्वानो की मडली या समुदाय।

परिमलज—वि०[सं० परिमल√जन् (उत्पन्न होना)+ड] परिमल अर्थात् मैथुन से प्राप्त होनेवाला (सुख)।

परिमलित—भू० कृ० [सं० परिमल+इतच्] फूलो आदि की सुगध से सुगंधित किया हुआ।

परिमा—स्त्री० [सं० परि√मा (मापना)+अङ्+टाप्] १ सीमा। हद। २. ज्यामिति मे, किसी क्षेत्र की सीमा सूचित करनेवाली रेखा। (बाउंड)

परिमाण—पु०[सं० परि √मा+ल्युट्—अन]१ गिनने, तौलने, मापने आदि पर प्राप्त होनेवाला फल। २ नाप, जोख तौल आदि की दृष्टि से किसी वस्तु की लंबाई, चौड़ाई, भार, घनत्व विस्तार आदि। मान। (क्वान्टिटी) ३ चारो ओर का विस्तार। घेरा।

परिमाणक—पु० [सं० परिमाण+कन्] १. परिमाण। २ तौल। भार।

परिमाण-मंडल—पु०[सं०] भूगर्भ-शास्त्र मे पृथ्वी के तीन मुख्य पटलो या विभागो मे बीच का पटल या विभाग जो अनेक प्रकार की धातु-मिश्रित चट्टानो का बना हुआ बहुत गरम और ठोस है और जिसके ऊपरी पटल पर मनुष्य बसते और वनस्पतियाँ उगती हैं। (बैरिस्फीयर)

परिमाणी (णिन्)—वि०[सं० परिमाण+इनि] परिमाण युक्त। परिमाण विशिष्ट।

परिमाता (तृ)—वि०[सं० परि√मा+तृच्] परिमाण का पता लगाने-वाला। परिमाण स्थिर करनेवाला।

परिमाथी (थिन्)—वि०[सं० परि√ मथ् (मथना)+णिनि] कष्ट देनेवाला।

परिमान—पु०=परिमाण।

परिमाप—पु०[सं० परि√ मा+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन]१ मापने या नापने की क्रिया या भाव। २ लबाई, चौड़ाई आदि की नाप या लेखा। (डाइमेंशन) ३ वह उपकरण जिससे कोई चीज मापी या नापी जाय। (स्केल) ४ ज्यामिति मे किसी आकृति, क्षेत्र या तल को चारो ओर से घेरनेवाली बाहरी रेखा अथवा ऐसी रेखा की लबाई या विस्तार। (पेरिमीटर)

परिमार्ग—पु०[सं० प्रा०स०] किसी चीज के चारों ओर बना हुआ पथ या मार्ग। परिपथ।

परिमार्गन—पु०[सं० परि √ मार्ग (खोजना) +ल्युट्—अन] १ टोह या पता लगाने के लिए चारो ओर जाना। २ अन्वेषण। ३ मन-बहलाव या सैर-सपाटे के लिए घूमना। (एक्सकर्शन)

परिमार्गी (र्गिन्)—वि० [सं० परि√मार्ग+णिनि] टोह या पता लगाने वाला।

परिमार्जक—वि०[सं० परि√मृज् (शुद्धि करना)+ण्वुल्—अक]परि-मार्जन करनेवाला।

परिमार्जन—पु० [सं० परि√मृज्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिमार्जित] १ साफ करने के लिए अच्छी तरह धोना। २ अच्छी तरह साफ करना। ३ साहित्य मे, उनकी त्रुटियाँ, कमियाँ आदि को दूर करना और इस प्रकार उन्हे उज्ज्वल बनाना। ४ भूलें आदि सुधा-रना। ५ प्राचीन भारत मे एक प्रकार की मिठाई जो शहद मे पागकर बनाई जाती थी।

परिमार्जित—भू० कृ०[सं० परि√ मृज्+णिच्+क्त] जिसका परिमार्जन किया गया हो या हुआ हो। स्वच्छ किया या सुधारा हुआ।

परिमित—वि०[सं० परि√मा+क्त] [भाव० परिमिति] १ जो मापा जा चुका हो। २ परिमाण या मात्रा मे जो किसी विशिष्ट बिंदु, संख्या आदि से कम हो, कम किया गया हो अथवा उससे अधिक न बढ सकता हो। (लिमिटेड)

परिमितकथी (थिन्)—वि० [सं० परिमित √ कथ् (कहना)+णिनि] कम बोलनेवाला। नपे-तुले शब्द या बातें कहनेवाला। अल्प-भाषी।

परिमितायु (स्)—वि०[सं० परिमित-आयुस्, ब०स०] जिसकी आयु परिमित अर्थात् थोड़ी हो।

परिमिताहार—पु०[सं० परिमित-आहार, ब० स] अल्प भोजन। कम खाना।

वि० कम भोजन करनेवाला। अल्पाहारी।

परिमिति—स्त्री०[सं० परि√मा+क्तिन्] १. परिमित होने की अवस्था या भाव। २ परिमाण। ३ सीमा। हद। ४. क्षितिज। ५ प्रतिष्ठा। मर्यादा।

परिमिलन—पु०[सं० परि√ मिल् (मिलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिमिलित] १ मिलन। २ संपर्क। ३. स्पर्श। ४ संयोग।

परिमीढ—भू० कृ० [सं० परि√ मिह् (सींचना)+क्त] मूत्र से सिक्त।

परिमुक्त—वि०[सं० परि√ मुच् (छोड़ना)+क्त] [भाव० परिमुक्ति] बिलकुल स्वतन्त्र।

परिमृज्य—वि०[सं० परि √मृज्+क्विप्]१ परिमार्जित किये जाने के योग्य। २ जिसका परिमार्जन होने को हो।

परिमृष्ट—भू० कृ० [सं० परि √ मृज् (शुद्ध करना)+क्त]१, धोया हुआ। २ साफ किया हुआ। ३. अधिकार में किया या लिया हुआ। अधिकृत। ४ (व्यक्ति) जिससे परामर्श किया गया हो। ५ (विषय) जिसके संबंध मे परामर्श हो चुका हो। ६ आलिंगित।

परिमृष्टि—स्त्री०[सं० परिमृज्+क्तिन्] परिमृष्ट होने की अवस्था या भाव।

परिमेय—वि०[सं० परि√ मा+यत्]१ जिसका परिमाण जाना जा सके अथवा जाना जाने को हो। २ घनत्व, मान, विस्तार, संख्या आदि मे कम।

परिमोक्ष—पु० [सं० प्रा० स०] १ पूर्ण मोक्ष। निर्वाण। २ परित्याग। छोड़ना। ३ सब को मोक्ष देनेवाले, विष्णु। ४ मल-त्याग करना। हगना।

परिमोक्षण—पु० [सं० परि√मोक्ष (छोड़ना)+ल्युट्—अन]१ मुक्त करना या होना। २ मुक्ति या मोक्ष देना। ३ परित्याग करना। छोड़ना। ४ मल-त्याग करना। हगना। ५ हठयोग की धौति क्रिया से आँतें साफ करना।

परिमोष—पु०[सं० परि √मुष् (चोरी करना)+घञ्]१ चोरी। २ डाका।

परिमोषक—पु० [सं० परि √मुष्+ण्वुल्—अक]१ चोर। डाकू।

परिमोषण—पु०[सं० परि√ मुष्+ल्युट्—अन] चुराने या डाका डालने का काम। किसी को मूसना, अर्थात् उसका सब-कुछ ले लेना।

परिमोषी (षिन्)—पु०[सं० परि√मुष्+णिनि]१ चोर। २ डाकू।

परिमोहन—पु०[सं० प्रा०स०] सम्मोहन। (दे०)

परिम्लान—वि०[सं० प्रा०स०] १ कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। २ निस्तेज। हतप्रभ।

परियंक†—पु० =पर्यंक।

परियंत†—अव्य०=पर्यंत।

परियज्ञ—पु०[सं०ब०स०] किसी बड़े यज्ञ के पहले या पीछे किया जानेवाला छोटा यज्ञ।

परियत्त—भू० कृ० [स० परि √ यत् (प्रयत्न) +क्त] चारो ओर से घिरा हुआ।

परियष्टा (ष्टृ)—पु०[सं० परि√ यज् (देवपूजन) +तृच्] अपने बड़े भाई से पहले सोम-याग करनेवाला व्यक्ति।

परिया—पु०[ताभिल परैयान] दक्षिण भारत की एक प्राचीन अछूत या अस्पृश्य जाति।
वि० १ अछूत। अस्पृश्य। २ क्षुद्र। तुच्छ।
स्त्री०[देश०] वे लकड़ियाँ जिससे ताना ताना जाता है।

परियाण—पु०[स० परि √ या (जाना) +ल्युट्—अन]१ चारो ओर घूमना। २ पर्यटन।

परियाणिक—पु०[स० परियाण +ठन्—इक्]१ वह जो परियाण या पर्यटन कर रहा हो। २ वह गाडी जिस पर बैठकर घूमा-फिरा जाता हो।

परियात—वि०[म० परि√या +क्त]१. जो घूम-फिरकर लौट आया हो।

परियाना—अ०[म० प्र-याति] जाना। उदा०—केन कार्य परियासि कुत्र।—प्रिथीराज।
स०[?] अलग अलग करना। छाँटना।

परियार—पु०[देश०] बिहारी शाकद्वीपीय ब्राह्मणो की एक उपजाति। २ मदरास मे बसनेवाली एक छोटी जाति।

परियुक्ति—स्त्री०[स० परि√युज् (लगाना) +क्तिन्]१ काम, बात, समय आदि निश्चित या नियत करने अथवा इनके लिए किसी व्यक्ति को नियत या नियुक्त करने की क्रिया या भाव। २. वह स्थिति जिसमे किसी काम या बात के लिए कोई किसी से वचन-बद्ध हो। ठहराव। (एंगेजमेंट)

परियुद्धक—पु०[स०] युद्ध-काल मे वह देश जो अपने हितो के रक्षार्थ दूसरे देश या देशों मे लड़ रहा हो। (बेलीगरेन्ट)

परियोजना—स्त्री०[स०] कार्य-रूप में लायी जानेवाली योजना के सबंध मे नियमित और व्यवस्थित रूप से स्थिर किया हुआ विचार और स्वरूप। (स्कीम)

परिरभ, परिरंभण—पु०[स० परि√ रभ् (मलना) +घञ्, मुम्] [स० परि√ रभ्+ल्युट्—अन] [वि० परिरभित, परिरभी] अच्छी तरह से गले लगाना। कसकर गले मिलना। गाढ आलिंगन।

परिरंभना—स०[स० परिरभ+ना(प्रत्य०)] किसी को गले से लगाना। आलिंगन करना।

परिरक्षक—वि०[म० परि√रक्ष् (बचाना) +ण्वुल्—अक] जो सब ओर से रक्षा करता हो। हर तरफ से बचानेवाला।

परिरक्षण—पुं०[स० परि√ रक्ष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिरक्षित] हर तरह से रक्षा करना।

परिरथ्या—स्त्री० [सं० प्रा०स०] चौड़ा रास्ता जिस पर रथ चलते थे।

परिरब्ध—वि० [स० परि √रभ्+क्त] १. घिरा हुआ। गले लगाया हुआ।

परिरमित—वि०[सं० परिरत] (काम, क्रीड़ा आदि मे) लीन।

परिरावी (विन्)—वि०[स० परि√ रव् (रटना)+णिनुण्] १ चीखने-चिल्लानेवाला। २ कर्कश ध्वनि करनेवाला।

परिरूप—पु०[स० प्रा०स०]१ कला, शिल्प आदि के क्षेत्र मे, वह कलापूर्ण रेखा-चित्र जिसे आधार मानकर तथा जिसके अनुकरण पर कोई काम किया या रचना खडी की जाय। भाँत। २ उक्त के अनुकरण पर बनी हुई चीज। (डिजाइन, उक्त दोनो अर्थों मे) जैसे—शहरो मे कपडो और मकानो के नये-नये परिरूप देखने मे आते हैं।

परिरूपक—पु०[स० परि√ रूप् (रूपान्वित करना) +णिच्+ण्वुल्—अक]वह शिल्पी जो विभिन्न वस्तुओ के नये-नये परिरूप बनाता हो। (डिजाइनर)

परिरेखा—स्त्री०[स० प्रा०स०] किसी तिकोने, चौकोर अथवा बहुभुजी क्षेत्र के सब ओर पडनेवाली रेखा। (पेरिफेरी) जैसे—किसी टापू या पहाड की परिरेखा।

परिरोध†—पु०[स० परि √ रुध् (रोकना) +घञ्] चारो ओर से छेंकना।

परिलंघन—पु० [स० परि√लङ्घ् (लाँघना) +ल्युट्—अन] लाँघना।

परिलघु—वि० [म० अत्या० स०] १ बहुत छोटा। २ बहुत जल्दी पचनेवाला। लघुपाक।

परिलिखन—पु०[स० परि√लिख् (लिखना) +ल्युट्—अन][भू० कृ० परिलिखित] घिस या रगड कर किसी चीज को चिकना बनाना।

परिलिखित—भू० कृ० [म० परि√लिख् +क्त] घिस या रगडकर चिकना किया हुआ।

परिलीढ—भू० कृ० [स० परि√ लिह् (चाटना) +क्त] अच्छी तरह चाटा हुआ।

परिलुप्त—भू० कृ० [स० परि√लुप् (काटना) +क्त]१ जो लुप्त हो चुका हो। खोया हुआ। २ क्षतिग्रस्त।

परिलुप्त-संज्ञ—वि० [स० ब० स०] जिसकी संज्ञा न रह गई हो। बेहोश।

परिलून—भू० कृ० [स० परि√ लू +क्त] कटा अथवा काटकर अलग किया हुआ।

परिलेख—पु०[स० परि√लिख् +घञ्]१. चित्र का ढाँचा। रेखा-चित्र। खाका। २ चित्र। तसवीर। ३ चित्र अकित करने की कूँची या कलम। ४ उल्लेख। वर्णन। ५ बड़े अधिकारियो के पास भेजा जाने-वाला विवरण। (रिटर्न)

परिलेखन—पु०[स० परि√ लिख् +ल्युट्—अन]१ किसी वस्तु के चारो ओर रेखाएँ बनाना। २ लिखना। ३ चित्र अंकित करना।

परिलेखना*—स० [स० परिलेख] कुछ महत्त्व का मानना या समझना। किसी लेखे मे गिनना।

परिलेही (हिन्)—पु०[स० परि√लिह् +णिनि] एक रोग जिसमे कान की लोलक पर फुंसियाँ निकल आती हैं।

परिलोप—पु०[स० परि√लुप् (छेदन) +घञ्]१ लुप्त हो जाना। २ क्षति। हानि। ३ विनाश। विलोप।

परिवंचन—पु०[स० परि√ वञ्च् (ठगना) +ल्युट्—अन] धोखा देना ठगना।

परिवक्रा—स्त्री०[स० प्रा० स०] वृत्ताकार गड्ढा।

परिवत्सर—पु०[स० प्रा० स०] १ आदि से अत तक का पूरा वर्ष या

साल। २ ज्योतिष के पाँच विशेष संवत्सरों में से एक जिसका अधिपति सूर्य होता है।

परिवत्सरीय—वि० [सं० परिवत्सर+छ—ईय] परिवत्सर-संबंधी।

परिवदन—पु० [सं० परि√ वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] दूसरे की की जानेवाली निंदा या बुराई।

परिवपन—पु० [सं० परि√वप् (काटना)+ल्युट्—अन] १ कतरना। २ मूँडना।

परिवर्जन—पु० [सं० परि√वृज् (निषेध)+ल्युट्—अन] [वि० परिवर्जनीय, भू० कृ० परिवर्जित] परित्याग करना। त्यागना। छोड़ना। तजना। २ मार डालना। वध या हत्या करना।

परिवर्जनीय—वि० [सं० परिवृज+अनीयर्] परित्याज्य।

परिवर्जित—भू० कृ० [सं० परि√वृज्+णिच्+क्त] जिसका परिवर्जन हुआ हो। त्यागा हुआ।

परिवर्णी—वि० [सं० परिवर्ण+हिं० ई (प्रत्य०)] (शब्द) जो कई शब्दों के आरंभिक वर्णों या अक्षरों के योग से अथवा कुछ शब्दों के आरंभिक तथा कुछ शब्दों के अंतिम वर्णों या अक्षरों के योग से बना हो। (ऐक्रास्टिक) जैसे—भारतीय+युरोपीय के योग से 'भारोपीय' अथवा चनाब और जेहलम (झेलम) नदियों के बीचवाले प्रदेश का नाम 'चज' परिवर्णीशब्द है। इसी प्रकार चांद्रमास के पक्षों के 'बदी' (देखें) और 'सुदी' (देखें) भी परिवर्णी शब्द हैं।

परिवर्त—पु० [सं० परि√वृत् (बरतना)+घञ्] १ घुमाव। चक्कर। फेरा। २ अदला-बदली। विनिमय। ३ वह चीज जो किसी दूसरी चीज के बदले में दी या ली जाय। ४ किसी काल या युग का अंत होना या बीतना। ५ ग्रंथ का अध्याय या परिच्छेद। ६ संगीत में स्वर-साधन की एक प्रणाली।

परिवर्तक—वि० [सं० परि√वृत्+ण्वुल्—अक] घूमनेवाला। चक्कर खानेवाला।

वि० [परि√वृत्+णिच्+ण्वुल्] १ घुमानेवाला। फिरानेवाला। चक्कर देनेवाला। २ अदला-बदली या विनिमय करनेवाला। ३ किसी प्रकार का परिवर्तन करनेवाला। ४ युग का अंत करनेवाला। पु० मृत्यु के पुत्र दुस्सह का एक पुत्र।

परिवर्तन—पु० [सं० परि√ वृत्+ल्युट्—अन] [वि० परिवर्तनीय, परिवर्तित, परिवर्ती] १ इधर-उधर घूमना-फिरना। २ चक्कर या फेरा लगाना। ३ घुमाव। चक्कर। फेरा। ४ किसी काल या युग का अंत या समाप्ति। ५. एक चीज के बदले में दूसरी चीज देना। विशेषतः किसी की पसंद या सुभीते की चीज उसे देकर उसके बदले में अपनी पसंद या सुभीते की चीज लेना। (कम्यूटेशन) जैसे—नोटों का रुपये में और रुपये का रेजगी में परिवर्तन। ६ वह चीज जो इस प्रकार बदले में दी या ली जाय। ७ किसी की आकृति, गुण, रूप, स्थिति आदि में होनेवाला फेर-फार, सुधार, ह्रास आदि। जैसे—रंग, स्वास्थ्य या हृदय का परिवर्तन। ८ वह क्रिया जो किसी चीज या बात का रूप बदलने अथवा उसे नया रूप देने के लिए की जाय। (चेंज) ९ एक के स्थान पर दूसरे के आने का भाव। जैसे—ऋतु का परिवर्तन, पहनावे का परिवर्तन। १० भारतीय युद्ध-कला में शत्रु पर प्रहार करने के लिए उसके चारों ओर घूमना।

परिवर्तनीय—वि० [सं० परि√ वृत्+अनीयर्] जिसमें परिवर्तन किया जाने को हो।

परिवर्तिका—स्त्री० [सं० परि√वृत्+ण्वुल्—अक+टाप्, इत्व] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें अधिक खुजलाने, दबाने या चोट लगने के कारण लिंगचर्म उलट कर सूज आता है।

परिवर्तित—भू० कृ० [सं० परि√वृत्+णिच्+क्त] १ जिसमें परिवर्तन किया गया हो या हुआ हो। जिसका आकार या रूप बदला गया हो। बदला हुआ। रूपांतरित। २ जो किसी के परिवर्तन या बदले में मिला हो।

परिवर्तिनी—स्त्री० [सं० परिवर्तिन्+ङीप्] भादों के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

परिवर्ती (तिन्)—वि० [सं० परि√वृत्+णिनि] १ बराबर घूमता रहनेवाला। २ जिसमें परिवर्तन या फेर-बदल होता रहता हो। बराबर बदलता रहनेवाला। परिवर्तनशील। ३ परिवर्तन या विनिमय करनेवाला।

परिवर्तुल—वि० [सं० प्रा० स०] ठीक और पूरा गोल या वर्तुल।

परिवर्त्यता—स्त्री० [सं०] परिवर्त्य होने की अवस्था, गुण या भाव।

परिवर्द्धन—पु० [सं० परि√ वृध् (बढ़ना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिवर्द्धित] १ आकार-प्रकार, विषय-वस्तु आदि में की जानेवाली वृद्धि। (एनलार्जमेंट) जैसे—पुस्तक का परिवर्द्धन। २ इस प्रकार बढ़ाया हुआ अंश। ३ जोड़।

परिवर्द्धित—भू० कृ० [सं० परि√ वर्ध्+णिच्+क्त] जिसका परिवर्द्धन किया गया हो या हुआ हो। बढ़ा या बढ़ाया हुआ। (एनलार्ज्ड)

परिवर्म (र्मन्)—वि० [सं० ब० स०] वर्म से ढका हुआ। बख्तर से ढका हुआ। जिरहपोश।

परिवर्ष—पु० [सं०] उतना समय जितना किसी एक ग्रह को रवि-बीच से चलकर फिर दोबारा वहाँ तक पहुँचने में लगता है। (अनोमलस्टिक ईयर)

परिवर्ह—पु० [सं० परि√वर्ह् (उत्कर्ष)+घञ्] १ चँवर, छत्र आदि राजत्व की सूचक वस्तुएँ। २ राजाओं के दास आदि। ३ घर, कमरे आदि को सजाने के लिए उसमें रखी जानेवाली वस्तुएँ। सजावट की चीजें। ४ गृहस्थी में काम आनेवाली वस्तुएँ। ५ सम्पत्ति।

परिवर्हण—पु० [सं० परि√वर्ह्+ल्युट्—अन] १ अनुचर वर्ग। २ वेश-भूषा। पोशाक। ३ वृद्धि। ४. पूजा।

परिवसथ—पु० [सं० परि√वस् (बसना)+अथच्] गाँव। ग्राम।

परिवह—पु० [सं० परि√वह् (बहना)+अच्] १ सात पवनों में से छठा पवन, जो आकाश गंगा, सप्तऋषियों आदि को वहन करता है। २ अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक जिह्वा की संज्ञा।

परिवहन—पु० [सं० परि√वह्+ल्युट्—अन] माल, यात्रियों आदि को एक स्थान से ढोकर दूसरे स्थान पर ले जाने का कार्य, जो आज-कल रेलों, मोटरों, जहाजों, नावों आदि अनेक साधनों द्वारा किया जाता है। (ट्रान्सपोर्ट)

परिवहन तंत्र—पु० [सं०] दे० 'रक्तवह-तंत्र'।

परिवाँण†—पु०=प्रमाण।

परिवा†—स्त्री०=प्रतिपदा।

परिवाद—पुं० [सं० परि√वद् (बोलना)+घञ्] १ निंदा। बुराई। शिकायत। २ बदनामी। ३. झूठी निन्दा या शिकायत। मिथ्या दोषारोपण। ४ कोई असुविधा या कष्ट होने पर अधिकारियों के सामने की जानेवाली किसी काम, बात, व्यक्ति आदि की शिकायत। (कम्प्लेन्ट) ५ लोहे के तारों का वह छल्ला जिसे उँगली पर पहनकर वीणा, सितार आदि बजाई जाती है। मिजराब।

परिवादक—वि० [सं० परि√ वद्+ण्वुल्—अक] १ परिवाद या निंदा करनेवाला। निंदक। २ शिकायत करनेवाला।

पुं० वह जो वीणा, सितार या इसी तरह का और कोई बाजा बजाता हो।

परिवादिनी—स्त्री० [सं० परिवादिन्+ङीप्] एक तरह की वीणा जिसमें सात तार होते हैं।

परिवादी (दिन्)—वि० [सं० परि√वद् + णिनि] =परिवादक।

परिवान*—पुं०=प्रमाण।

परिवानना—स० [सं० प्रमाण] प्रमाण के रूप में या ठीक मानना।

परिवाप—पुं० [सं० परि√वप् (काटना)+घञ्] १ बाल आदि मूँड़ना। २ बोना। ३ जलाशय। ४ घर का उपयोगी सामान। ५ अनुचरवर्ग। ६ भूना हुआ चावल। लावा। फरुही। ७ छेना।

परिवापित—भू० कृ० [सं० परि√वप्+णिच्+क्त] मूँड़ा हुआ। मुंडित।

परिवार—पुं० [सं० परि√वृ (ढकना)+घञ्] १ एक ही पूर्व पुरुष के वंशज। २ एक घर में और विशेषत एक कर्ता के अधीन या संरक्षण में रहनेवाले लोग। ३ किसी विशिष्ट गुण, संबंध आदि के विचार से चीजों का बननेवाला वर्ग। जैसे—आर्य-भाषाओं का परिवार। (फेमिली) ४ किसी राजा, रईस आदि के आगे-पीछे चलने या साथ रहनेवाले लोग।

परिवारण—पुं० [सं० परि√वृ+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० परिवारित] १ ढकने या छिपाने की क्रिया। २ आवरण। आच्छादन। ३ तलवार की म्यान। कोष।

परिवार नियोजन—पुं० [सं०] आज-कल देश अथवा संसार की दिन पर दिन बढ़ती हुई जन-संख्या को नियंत्रित करने या सीमित रखने के उद्देश्य से गार्हस्थ्य जीवन के संबंध में की जानेवाली वह योजना जिससे लोग आवश्यकता अथवा औचित्य से अधिक संतान उत्पन्न न करें। (फैमिली प्लानिंग)

परिवारित—भू० कृ० [सं० परि√वृ+णिच्+क्त] घिरा या घेरा हुआ। आवेष्टित।

परिवारी—पुं० [सं० परिवार] १ परिवार के लोग। २. नाते-रिश्ते के लोग।

वि० पारिवारिक।

परिवार्षिक—वि० [सं० प्रा० स०] १. जो पूरे वर्ष भर चलता या होता रहे। जैसे—परिवार्षिक नाला—ऐसा नाला जो बराबर बहता रहे, गरमियों में सूख न जाय; परिवार्षिक वृक्ष=ऐसा वृक्ष जो बराबर हरा रहता हो, और जिसके पत्ते किसी ऋतु में झड़ते न हों। २. बराबर या बहुत दिन तक स्थायी रूप से बना रहनेवाला। (पेरीनियल)

परिवास—पुं० [सं० परि√वस्+घञ्] १. टिकना। ठहरना। २ घर। मकान। ३ खुशबू। सुगन्ध। ४ संघ से किसी भिक्षु का होनेवाला बहिष्करण। (बौद्ध)

परिवासन—पुं० [सं० परि√वस्+णिच्+ल्युट्—अन] खंड। टुकड़ा।

परिवाह—पुं० [सं० परि√वह् (बहना)+घञ्] १ ऐसा बहाव जिसके कारण पानी ताल, तालाब आदि की समाई से अधिक हो जाता हो। पानी का खूब भर जाने के कारण बाँध, मेड़ आदि के ऊपर से होकर बहना। २ वह नाली जिसके द्वारा आवश्यकता से अधिक पानी बाहर निकलता या निकाला जाता हो। जल की निकासी का मार्ग। ३ किसी प्रदेश की ऐसी नदियों की व्यवस्था जिनमें नावों आदि से माल भेजे जाते हों।

परिवाही (हिन्)—वि० [सं० परि√वह्+णिनि] [स्त्री० परिवाहिनी] (तरल पदार्थ) जो आधान या पात्र में या किनारों पर से इधर-उधर भर जाने पर ऊपर से बहता हो।

परिविंदक—पुं० [सं० परि√विद् (प्राप्त करना)+ण्वुल्—अक, नुम्] वह व्यक्ति जो बड़े भाई का विवाह होने से पहले अपना विवाह कर ले। परवेत्ता।

परिविंदत्—पुं० [परि√विन्द्+शतृ, नुम्] परिविंदक। (दे०)

परिविण्ण (न्न)—पुं० [सं० परि√विद् (लाभ)+क्त]=परिवित्त।

परिवितर्क—पुं० [सं० प्रा० स०] १ विचार। २ परीक्षा। (बौद्ध)

परिवित्त—पुं० [सं० परि√विद्+क्त] परिविंदक। (दे०)

परिवित्ति—पुं० [सं० परि√विद्+क्तिन्] परिवित्त। परिविंदक।

परिविद्ध—वि० [सं० परि√व्यध् (बेधना)+क्त] भली भाँति या चारों ओर से बिंधा हुआ।

पुं० कुबेर।

परिविविदान—पुं० [सं० परि√विद्+लिट्+कानच्] परिविंदक। (दे०)

परिविष्ट—भू० कृ० [सं० परि√विष् (व्याप्ति)+क्त] [भाव० परिविष्टि] १ घिरा अथवा घेरा हुआ। २ परोसा हुआ (भोजन)।

परिविष्टि—स्त्री० [सं० परि√विष्+क्तिन्] घेरा। वेष्टन। २ सेवा। टहल। ३ भोजन परोसना।

परिविहार—पुं० [सं० प्रा० स०] जी भरकर या भली-भाँति किया जानेवाला विहार।

परिवीक्षण—पुं० [सं० परि-वि√ईक्ष् (देखना)—ल्युट्—अन] १ भली भाँति देखना। २ चारों ओर ध्यानपूर्वक देखना।

परिवीजित—वि० [सं० परि√वीज् (पखा झलना)+क्त] जिस पर पखे से हवा की गई हो।

परिवीत—भू० कृ० [सं० परि√व्य (बुनना)+क्त] १ घिरा हुआ। लपेटा हुआ। २ छिपाया हुआ। ३ ढका हुआ। आच्छादित।

परिवृत्त—वि० [सं० परि√ वृ+क्त] १. घेरा, छिपाया या ढका हुआ। २ उलटा-पलटा हुआ।

पुं० कार्य, घटना आदि के संबंध में, दूसरों की जानकारी के लिए प्रस्तुत किया जानेवाला संक्षिप्त विवरण। (स्टेटमेंट)

परिवृत्ति—स्त्री० [सं० परि√वृ+क्तिन्] १ ढकने, घेरने या छिपानेवाली वस्तु। घेरा। वेष्टन। २ घुमाव। चक्कर। ३. विनिमय। ४ अंत। समाप्ति। ५. दोबारा कोई काम करने की क्रिया या भाव। ६. किसी के किये हुए काम को देखकर वैसा ही और कोई काम

करना। ७ व्याकरण मे, एक शब्द या पद को दूसरे ऐसे शब्द या पद से बदलना जिससे अर्थ वही बना रहे। जैसे—'कमललोचन' के 'कमल' के स्थान पर पद्म' अथवा 'लोचन के स्थान पर 'नयन' रखना। ८ साहित्य मे, एक अलकार जिसमे किसी को अनुपात मे कम या सस्ती वस्तु देकर अधिक या महगी वस्तु लेने का वर्णन होता है।

परिवृद्ध—वि० [स० परि√वृध् (बढ़ना)+क्त] [भाव० परिवृद्धि] १. जिसका परिवर्द्धन हुआ हो। २ चारो ओर से बढ़ा हुआ।

परिवृद्धि—स्त्री० [स० परि√वृध्+क्तिन्] परिवृद्ध होने की अवस्था या भाव।

परिवेत्ता (तृ)—पु०[स० परि√विद्+तृच्] परिविदक। (दे०)

परिवेद—पु० [स० परि√विद्+घञ्] १ पूर्ण ज्ञान। २. अनेक विषयों की होनेवाली जानकारी। ३ परिवेदन।

परिवेदन—पु० [स० परि√विद्+ल्युट्—अन] १ पूर्ण ज्ञान। परिवेद। २ बडे भाई के विवाह से पहले छोटे भाई का होनेवाला विवाह। ३ विवाह। शादी। ४ उपस्थिति। विद्यमानता। ५ प्राप्ति। लाभ। ६ वाद-विवाद। बहस। ७ कष्ट। विपत्ति।

परिवेदना—स्त्री० [स० परि√विद् (ज्ञान)+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की विवेक-शक्ति। २. चतुराई।

परिवेदनीया—स्त्री० [स० परि√विद्+अनीयर+टाप्] परिविदक की पत्नी। आविवाहित व्यक्ति की अनुज वधू।

परिवेदिनी—स्त्री० [स० परिवेद+इनि—ङीप्] =परिवेदनीया।

परिवेध—पु० [स० परि√विध्+घञ्] १ प्राय दो चीजो को जोडने के लिए उनमे किया जानेवाला ऐसा छेद जिसमे कील, पेच आदि लगाये अथवा चूल कसी जाती है। ३ इस प्रकार का बनाया जानेवाला छेद। (बोर)

परिवेधन—पु० [परि√विध्+ल्युट्] परिवेध करने की क्रिया या भाव। (बोरिंग)

परिवेश—पु० [स० परि√विश् (प्रवेश)+घञ्] १ वेष्टन। परिधि। घेरा। २ बदली के समय सूर्य या चद्रमा के चारो ओर दिखाई देनेवाला घेरा। ३ प्रकाशमान पिंडो के चारो ओर कुछ दूरी तक दिखाई देनेवाला प्रकाश जो मडलाकार होता है। ४ तेजस्वी पुरुषों, देवताओ आदि के चित्रों मे उनके मुखमडल के चारो ओर दिखलाया जानेवाला प्रकाशमान घेरा। प्रभा-मडल। भा-मडल। (हेलो)

परिवेष—पु० [स० परि√विष् (व्याप्ति)+घञ्] १ भोजन परसना या परोसना। २ चारो ओर से घेरकर रक्षा करनेवाली रचना या वस्तु। ३ परकोटा। प्राचीर। ४ दे० 'परिवेश'। ५. दे० 'प्रभावमडल'।

परिवेषक—पु० [स० परि√विष्+ण्वुल्—अक] वह व्यक्ति जो भोजन आदि परसता या परोसता हो।

परिवेषण—पु० [स० परि√विष+ल्युट्—अन] १ भोजन आदि परसने या परोसने का काम। २ घेरा। परिधि। ३ दे० 'परिवेष'।

परिवेष्टन—पु० [स० परि√वेष्ट् (घेरना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिवेष्टित] १ किसी चीज को घेरना अथवा उसके चारों ओर घेरा बनाना। २ घेरा। परिधि। ३ छिपाने या ढकनेवाली चीज। आच्छादन। आवरण।

परिवेष्टा (ष्टृ)—पु० [स० परि√विष्+तृच्] परिवेषक। (दे०)

परिवेष्टित—भू० कृ० [स० परि√वेष्ट्+क्त] १. जो चारो ओर से घिरा या घेरा हुआ हो। २ ढका हुआ। आच्छादित।

परिव्यक्त—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जो अच्छी तरह से व्यक्त हो चुका हो।

परिव्यय—पु० [स० प्रा० स०] १ किसी चीज के निर्माण मे होनेवाला व्यय। २ वह मूल्य जिस पर बिक्री के लिए उत्पादित की हुई अथवा मँगाई हुई वस्तु का घर पर परता बैठता हो। (कॉस्ट) ३ मूल्य। ४ किसी चीज की मरम्मत आदि करने पर बदले मे दिया जानेवाला धन। पारिश्रमिक। ५ शुल्क।

परिव्ययनीय—वि० [स० परि√व्यय् (खर्च करना)+अनीयर्] जो परिव्यय के रूप मे किसी से लिया या किसी को दिया जा सके। जिस पर परिव्यय जोडा या लगाया जा सके। (चार्जेबुल)

परिव्याध—वि० [स० परि√व्यध् (ताडना)+ण] चारो ओर से बेधने या छेदनेवाला।

पु० १ जलबेत। २ कनेर। ३ एक प्राचीन ऋषि।

परिव्याप्त—भू० कृ० [स० प्रा० स०] अच्छी तरह और सब अगो या स्थानों मे फैला या समाया हुआ।

परिव्रज्या—स्त्री० [स० परि√व्रज् (जाना)+क्यप्, टाप्] १ इधर-उधर घूमना-फिरना। भ्रमण। २ तपस्या। ३ सदा घूमते-फिरते रहकर और भिक्षा माँग कर जीवन बिताने का नियम, वृत्ति या व्रत।

परिव्राज (क)—पु० [स० परि√व्रज्+घञ् (सज्ञा मे), परि√व्रज्+ण्वुल्—अक] १ वह सन्यासी जो परिव्रज्या का व्रत ग्रहण करके सदा इधर-उधर भ्रमण करता रहे। २ सन्यासी। ३ बहुत बडा यती और परम हस।

परिव्राजी—स्त्री० [स० परि√व्रज्+णिच्+इन्, ङीष्] गोरखमुडी। मुडी।

परिव्राट (ज्)—पु० [स० परि√व्रज्+क्विप्] परिव्राजक। (दे०)

परिशंकी (किन्)—वि० [स० परि√शङ्क् (आशका करना)+णिनि] अत्यधिक आशका करने या सशकित रहनेवाला।

परिशयन—पु० [स० प्रा० स०] १ बहुत अधिक सोना। २ कुछ पशुओं और जीव-जतुओं की वह निद्रा या तद्रा वाली निष्क्रिय अवस्था जिसमे वे जाडे के दिनों मे शीत के प्रभाव से बचने के लिए बिना कुछ खाये-पीये चुप-चाप एक जगह दबे-दबाये रहते हैं। (हाइबरनेशन)

परिशिष्ट—वि० [स० परि√शिष् (बचना)+क्त] छूटा या बाकी बचा हुआ। अवशिष्ट।

पु० १ पुस्तकों आदि के अत मे दी जानेवाली वे बाते जो मूल मे आने से रह गई हो, अथवा जो मूल मे आई हुई बातो के स्पष्टीकरण के लिए हो। (एपेंडेक्स) २. अनुसूची। (दे०)

परिशीलन—पु० [स० परि√शील् (अभ्यास)+ल्युट्—अन] १ मननपूर्वक किया जानेवाला गभीर अध्ययन। २ स्पर्श।

परिशीलित—भू० कृ० [स० परि√शील्+क्त] (ग्रंथ या विषय) जिसका परिशीलन किया गया हो।

परिशुद्ध—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० परिशुद्धता, परिशुद्धि] १ बिलकुल शुद्ध। विशेषत जिसमे किसी दूसरी चीज का कुछ भी मेल न

हो। खरा। २. जिसमें कुछ भी कमी-बेशी या भूल-चूक न हो। बिलकुल ठीक। (एक्योरेट) ३. चुकता किया हुआ। ४ छोड़ा या बरी किया हुआ।

परिशुद्धता—स्त्री० [स० परिशुद्ध+तल्+टाप्]=परिशुद्ध।

परिशुद्धि—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ पूर्ण शुद्धि। सम्यक् शुद्धि। २. किसी बात या विषय की वह स्थिति जिसमे किसी प्रकार की कमी-बेशी या कोई भूल-चूक न हो। (एक्योरेसी)। ३ छुटकारा। मुक्ति।

परिशुष्क—वि० [स० प्रा० स०] १ बिलकुल सूखा हुआ। २ अत्यंत रसहीन। ३. रसिकता आदि से बिलकुल रहित।
पु० तला हुआ मास।

परिशून्य—वि० [स० प्रा० स०] जो बिलकुल शून्य हो।
पु० विज्ञान मे, वह स्थान जिसमे वायु आदि कुछ भी न हो या जिसमे वायु निकाल ली गई हो। (वायड)

परिशेष—वि० [स० परि√शिष्+घञ्] [भाव० परिशेषण] जो अब भी शेष हो। जो पूर्णत अब भी नष्ट या समाप्त न हुआ हो।
पु० १ वह अश या तत्त्व जो बाकी बच रहा हो। २ अत। समाप्ति। ३ दे० 'परिशिष्ट'।

परिशोध—पु० [स० परि√शुध् (शुद्ध करना)+घञ्] १ अच्छी तरह शुद्ध करना या बनाना। २ ऋण, देन आदि का चुकाया जाना। (रिपेमेंट) ३ किसी से चुकाया जानेवाला बदला। उपकार के बदले मे किया जानेवाला अपकार। प्रतिशोध।

परिशोधन—पु० [स० परि√शुध्+ल्युट्—अन] [वि० परिशोधनीय, भू० कृ० परिशोधित] १ ऐसी क्रिया करना जिसमे कोई चीज अच्छी तरह शुद्ध हो कर श्रेष्ठ अवस्था मे आ जाय। (रैक्टिफिकेशन) २. ऋण देन आदि चुकता करने की क्रिया या भाव। ३ प्रतिशोधन।

परिशोष—पु० [स० परि√शुष् (सूखना)+घञ्] १. किसी चीज को अच्छी तरह से सुखाना। २. पूरी तरह से सूखे हुए होने की अवस्था या भाव।

परिश्रम—पु० [स० परि√श्रम् (आयास करना)+घञ्] कोई कठिन, बड़ा या दुस्साध्य काम करने के लिए विशेष रूप से तथा मन लगाकर किया जानेवाला मानसिक या शारीरिक श्रम। मेहनत।

परिश्रमी (मिन्)—वि० [सं० परिश्रम+इनि] १ जो परिश्रमपूर्वक कोई काम करता हो। २ हर काम अपनी पूरी शक्ति लगाकर करनेवाला। मेहनती।

परिश्रय—पु० [स० परि√श्रि (सेवन)+अच्] १ परिषद्। सभा। २ आश्रय या शरण-स्थल।

परिश्रांत—वि० [स० परि√श्रम्+क्त] [भाव० परिश्रांति] बहुत अधिक थका हुआ। थका-माँदा।

परिश्रांति—स्त्री० [स० परि√श्रम्+क्तिन्] परिश्रांत होने की अवस्था या भाव। बहुत अधिक थकावट।

परिश्रित्—वि० [स० परि√श्रि+क्विप्] आश्रय देनेवाला।
पुं० यज्ञ मे काम आनेवाला पत्थर का एक विशिष्ट टुकड़ा।

परिश्रुत—वि० [स० प्रा० स०] १ (बात आदि) जो ठीक प्रकार से या भली-भाँति सुनी गई हो। २. ख्यात। प्रसिद्ध।

परिश्लेष—पु० [स० परि√श्लिष् (आलिंगन करना)+घञ्] आलिंगन। गले लगाना।

परिषत—स्त्री०=परिषद्।

परिषत्त्व—पु० [स० परिषद्+त्व] परिषद् का भाव या धर्म।

परिषद्—स्त्री० [स० परि√सद् (गति)+क्विप्] १. चारो ओर से घेर कर या घेरा बनाकर बैठना। २ वैदिक युग मे विद्वानो की वह सभा जो राजा किसी विषय पर व्यवस्था देने के लिए बुलाता था। ३ बौद्ध-काल मे वह निर्वाचित राजकीय सस्था या सभा जो राज्य या शासन से सबध रखनेवाली सब बातो पर विचार तथा निर्णय करती थी। **विशेष**—प्राचीन काल मे परिषदें तीन प्रकार की होती थी —(क) शिक्षा-सबधी। (ख) सामाजिक गोष्ठी-सम्बन्धी। और (ग) राज-शासन-सम्बन्धी।
४. आधुनिक राजनीति विज्ञान मे, निर्वाचित या मनोनीत विधायको की वह सभा जो स्थायी या बहुत-कुछ स्थायी होती है। (काउंसिल) ५ सभा। जैसे—सगीत परिषद्।

परिषद—पु० [स० परि√सद्+अच्] १ सवारी या जुलूस मे चलनेवाले वे अनुचर जो स्वामी को घेर कर चलते है। परिषद। २ दरबारी। मुसाहब। ३. सदस्य। सभासद।
स्त्री०=परिषद्।

परिषद्य—पु० [स० परिषद्+यत्] १ परिषद् का सदस्य। २ सभासद। सदस्य। ३ दर्शक। प्रेक्षक।

परिषद्वल—पु०[स० परिषद्+वलच्] सभासद। सदस्य।

परिषिक्त—भू० कृ० [स० परि√सिच् (सीचना)+क्त] १ जो अच्छी तरह से सीचा गया हो। २ जिस पर छिड़काव हुआ हो।

परिषीवण—पु० [स० परि√सिव् (सीना)+ल्युट्—अन] १ चारो ओर से सीना। २ गाँठ लगाना। बाँधना।

परिषेक—पु०[स० परि√सिच्+घञ्] १ पानी से तर करने की क्रिया। सिचाई। २ छिड़काव। ३ स्नान।

परिषेचक—वि० [स० परि√सिच्+ण्वुल्—अक] १ सीचनेवाला। २. छिड़कनेवाला।

परिषेचन—पु० [स० परि√सिच्+ल्युट्—अन] [वि० परिषिक्त] सीचना। छिड़कना।

परिष्कंद—पु०[स०परि√स्कन्द् (गति)+घञ्] वह जिसका पालन-पोषण माता-पिता द्वारा नही बल्कि किसी दूसरे व्यक्ति के द्वारा हुआ हो।

परिष्कर—पु० [स० परि√कृ (करना)+अप्, सुट्] सजावट। सज्जा।

परिष्करण—पु० [स०] [भू० कृ० परिष्कृत] परिष्कार करने अर्थात् साफ और सुदर बनाने की क्रिया या भाव। (एम्बेलिशमेन्ट)

परिष्करण शाला—स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ खनिज, तैल, धातुएँ आदि परिष्कृत या साफ की जाती हैं। (रिफाइनरी)

परिष्करणी—स्त्री० [स० परि√कृ+ल्युट्—अन, सुट्] वह कारखाना या स्थान जहाँ यत्रो आदि की सहायता से तेलो, धातुओ आदि मे की मैल निकालकर उन्हे परिष्कृत या साफ किया जाता हो। (रिफाइनरी)

परिष्कार—पु० [स० परि√कृ+घञ्, सुट्] [भू० कृ० परिष्कृत] १ अच्छी तरह ठीक और साफ करने की क्रिया या भाव। गदगी,

मिलावट, मैल आदि निकालकर किसी चीज को स्वच्छ बनाना। (रिफाइनिंग) २. त्रुटियाँ, दोष आदि दूर करके सुंदर, सुरुचिपूर्ण और स्वच्छ बनाना। (एम्बेलिशमेंट) ३ निर्मलता। स्वच्छता। ४. अलंकार। गहना। ५. शोभा। श्री। ६ बनाव-सिंगार। सजावट। ७ सजाने की सामग्री। उपस्कर। (फरनीचर) ८ सयम। (बौद्ध दर्शन)

परिष्कृति—स्त्री० [स० परि√कृ+क्तिन्, सुट्] १ परिष्कृत होने की अवस्था, गुण या भाव। २ परिष्कार। ३ आचार-व्यवहार की वह उन्नत स्थिति जिसमे अशिष्ट, उद्धत, ग्राम्य, परुष, रूक्ष आदि बातो का अभाव और कोमल, नागर, विनम्र, शिष्ट तथा स्निग्ध तत्त्वो की अधिकता और प्रबलता होती है। (रिफाइनमेंट)

परिष्क्रिया—स्त्री० [स० परि√कृ+सुट्,+टाप्] परिष्कार। (दे०)

परिष्कृत—भू० कृ० [स० परि√कृ+क्त, सुट्] [भाव० परिष्कृति] १. जिसका परिष्कार किया गया हो। अच्छी तरह ठीक और साफ किया हुआ। २ सवाँरा या सजाया हुआ। अलंकृत। ४ सुधारा हुआ।

परिष्कृति—स्त्री० [स० परि√कृ+क्तिन्, सुट्] परिष्कृत होने की अवस्था या भाव। परिष्कार।

परिष्टवन—पु० [स० प्रा० स०] प्रशंसा। स्तुति।

परिष्टोम—पु० [स० अत्या० स०] १ एक प्रकार का सामगान जिसमे ईश्वर की स्तुति होती है। २ घोड़े, हाथी आदि की झूल।

परिष्ठल—पु० [स० परि-स्थल, प्रा० स०] आस-पास की भूमि।

परिष्यंद—पु० [स० परि√ष्यद् (बहना)+घञ्, षत्व] परिस्यंद।

परिष्यंदी (दिन्)—वि० [स० परिष्यंद+इनि] बहानेवाला।

परिष्वंग—पु० [स० परि√स्वञ्ज् (आलिंगन)+घञ्] गले लगाना। आलिंगन।

परिष्वंजन—पु० [स० परि√स्वञ्ज् (चिपकना)+ल्युट्—अन] [वि० परिष्वक्त] गले लगाना। आलिंगन।

परिष्वक्त—भू० कृ० [स० परि√स्वञ्ज्+क्त] जिसे गले लगाया गया हो। आलिंगित।

परिसंख्या—स्त्री० [स० परि-सम्√ख्या (प्रसिद्ध करना)+अङ्+टाप्] १ गणना। गिनती। २ साहित्य मे, एक अलंकार जिसमे किसी स्थान मे होनेवाली बात या वस्तु का प्रश्न या व्यंग्यपूर्वक निषेध करके अन्य स्थान पर प्रतिष्ठापन करने का वर्णन होता है। ३. कुछ स्थानो पर होनेवाली वस्तुओ के संबंध मे यह कहना कि अब वे वहाँ नही रह गई केवल अमुक जगह मे रह गई हैं। जैसे—रामराज्य की प्रशंसा करते हुए यह कहना कि उसमे स्त्रियों के नेत्रो को छोडकर कुटिलता और कही नही दिखाई देती थी।

परिसंख्यान—पु० [स० परि—सम्√ख्या+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिसंख्यात] अनुसूची। (दे०)

परिसंघ—पु० [स० प्रा० स०] पारस्परिक तथा सामूहिक हितों के रक्षार्थ बननेवाला वह अंतरराष्ट्रीय संघटन जिसके सदस्य स्वतंत्र राष्ट्र होते है। (कनफेडरेशन)

परिसंचर—पु० [स० परि-सम्√चर् (गति)+अच्] प्रलय-काल।

परिसंचित—भू० कृ० [स० परि—सम्√चि (इकट्ठा करना)+क्त] इकट्ठा या संचित किया हुआ।

परिसंतान—पु० [स० अत्या० स०] १ तार। २ तन्त्री।

परिसंपद्—स्त्री० [स० प्रा० स०] व्यक्ति, संघटन, संस्था आदि का वह निजी या अधिकृत धन तथा संपत्ति जिसमे से उसका ऋण, देय आदि चुकाया जाता हो या चुकाया जा सके। (असेट्स)

परिसंवाद—पु० [स० परि-सम्√वद् (बोलना)+घञ्] १ दो या अधिक व्यक्तियो मे किसी बात, विषय आदि के संबंध मे होनेवाला तर्क संगत या विचारपूर्ण वादविवाद। (डिस्कशन) २ दे० परिचर्चा।

परिसंहत—वि० [स०] १ अच्छी तरह उठा हुआ। २ (कथन या लेख) जिसमे फालतू या व्यर्थ की बाते अथवा शब्द न हो। (टर्स)

परिसंहित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] बहुत अच्छी तरह गठा या गाठा हुआ। २ (साहित्य मे ऐसी गठी हुई तथा संक्षिप्त रचना) जिसमे ओज, प्रसाद आदि गुण भी यथेष्ट मात्रा मे हों।

परिसभ्य—पु० [स० प्रा० स] सभासद। सदस्य।

परिसमंत—पु० [स०प्रा०स०] वृत्त के चारो ओर की रेखा या सीमा।

परिसमापक—पु० [परि-सम्√आप् (व्याप्ति)+ण्वुल्—अक] परिसमापन करनेवाला अधिकारी। (लिक्वीडेटर)

परिसमापन—पु० [परि-सम्√आप्+ल्युट्—अन] १ समाप्त करना। २ किसी चलते हुए काम का समाप्त होना। (टरमीनेशन) ३ किसी ऋणग्रस्त संस्था का कार-बार बंद करते समय किसी सरकारी अधिकारी या आदाता द्वारा उसकी परिसंपद लहनेदारो मे किसी विशिष्ट अनुपात से बाँटा जाना। (लिक्वीडेशन) ३. दे० 'अपाकरण'।

परिसमाप्त—भू० कृ० [स० परि-सम्√आप+क्त] १ जो पूरी तरह से समाप्त हो चुका हो। २ (संस्था) जिसका परिसमापन हो चुका हो।

परिसमाप्ति—स्त्री० [स० परि-सम्√आप्+क्तिन्] परिसमापन।

परिसमूहन—पु० [स० परि-सम्√ऊह् (वितर्क)+ल्युट्—अन] १. एकत्र करना। २ यज्ञ की अग्नि मे समिधा डालना। ३ तृण आदि आग मे डालना। ४. यज्ञाग्नि के चारो ओर जल छिड़कने की क्रिया।

परिसर—वि० [स० परि√सृ (गति)+अप्] [स्त्री० परिसरा] १ किसी के चारो ओर बहने (अथवा चलने) वाला। २ किसी के साथ जुड़ा, मिला, लगा या सटा हुआ। ३ फैला हुआ। विस्तृत। उदा०—खुली रूप कलियो मे पत्थर स्तर स्तर सु-परिसरा। —निराला।

पु० १ किसी स्थान के आस-पास की भूमि या खुला मैदान। २. प्रांत भूमि। ३ मृत्यु। ४ ढंग। तरीका। विधि। ५ शरीर की नाड़ी या शिरा।

परिसरण—पु० [स० परि√सृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ० परिसृत] १. किसी के चारो ओर बहना (या चलना)। २ पर्यटन। ३. पराजय। हार। ४ मृत्यु। मौत। ५ दे० रसाकर्षण।

परिसर्प—पु० [स० परि√सृप् (गति)+घञ्] १. किसी के चारो ओर घूमना। परिक्रिया। परिक्रमण। २. घूमना-फिरना या टहलना। ३ ढूँढने या तलाश करने के लिए निकलना। ४. चारो ओर से घेरना। ५ साहित्य दर्पण के अनुसार नाटक मे किसी का किसी की

खोज और केवल मार्गचिह्नों आदि के सहारे उसका पता लगाने का प्रयत्न करना। जैसे—सीता-हरण के उपरान्त, राम का सीता को वन मे ढूँढ़ते फिरना। ६ सुश्रुत के अनुसार ११ प्रकार के क्षुद्र कुष्ठों में से एक जिसमें छोटी-छोटी फुसियाँ निकलती हैं और उन फुसियों से पक्का या मवाद निकलता है। ७. एक प्रकार का साँप।

परिसर्पण—पु० [सं० परि√सृप्+ल्युट्—अन] १ घूमना-फिरना। टहलना। २ साँप की तरह टेढ़े-तिरछे चलना या रेंगना।

परिसर्या—स्त्री० [स० परि√सृ (गति)+क्यप्+टाप्] १ मृत्यु। २ हार।

परिसांत्वन—पु० [स० परि√सान्त्व् (ढाढस देना)+ल्युट्—अन] १ बहुत अधिक सात्वना देना। २. उक्त प्रकार से दी हुई सान्त्वना।

परिसाम (मन्)—पु० [स० प्रा० स०] एक विशेष साम।

परिसार—पु० [स० परि√सृ+घञ्] =परिसरण।

परिसारक—वि० [स० परि√सृ+ण्वुल्—अक] जो परिसरण करे। चारो ओर चलने, जाने या बहनेवाला।

परिसारी (रिन्)—वि० [स० परि√सृ+णिनि] १ परिसरण-संबंधी। २ परिमारक। (दे०)

परिसिद्धिका—स्त्री० [स० प्रा० स०] वैद्यक मे, चावल की एक प्रकार की लपसी।

परिसीमन—पु० [स० परिसीमा से] [भू० कृ० परिसीमित] किसी क्षेत्र, विषय आदि की सीमाएँ निर्धारित करना। (डिलिमिटेशन)

परिसीमा—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ अंतिम या चरम सीमा। २ वह मर्यादा या रेखा जहाँ आगे किसी विषय का विस्तार न हो।

परिसीमित—भू० कृ० [स० परिसीमा+इतच्] जिसका परिसीमन हुआ या किया जा चुका हो। २ (सस्था) जिसकी पूँजी, हिस्सेदारी आदि कुछ विशिष्ट नियमो या सीमाओ के अन्दर रखी गई हो। (लिमिटेड)

परिसून—पु० [स० अत्या० स०] बिना अधिकार के और बूचड़खाने से बाहर मारा हुआ पशु।

परिसेवन—पु० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक सेवा करना।

परिसेवित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १ जिसकी बहुत अच्छी तरह सेवा की गई हो। २ जिसका बहुत अच्छी तरह सेवन किया गया हो।

परिस्कंद—पु० =परिष्कंद।

परिस्तरण—पु० [स० परि√स्तृ (आच्छादन)+ल्युट्—अन] १ इधर-उधर फेंकना या डालना। छितराना। २. फैलाना। ३. ढकना या लपेटना।

परिस्तान—पु० [फ़ा०] १ परियो अर्थात् अप्सराओ का जगत् या देश। २ ऐसा स्थान जहाँ बहुत-सी सुन्दर स्त्रियो का जमघट या निवास हो।

परिस्तोम—पु० [स० प्रा० ब० स०] चित्रित या अनेक रंगोवाली (हाथी की पीठ पर डाली जानेवाली) झूल।

परिस्थान—पु० [स० प्रा० स०] १. वासस्थान। २ दृढता।

परिस्थिति—स्त्री० [स० प्रा० स०] [वि० परिस्थितिक] किसी व्यक्ति के चारो ओर होनेवाली वे सब बाते या उनमे से कोई एक जिससे बाध्य या प्रेरित होकर वह कोई कार्य करता हो। (सर्कम्स्टैंसेज)

परिस्थिति विज्ञान—पु० [स०] आधुनिक जीव विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि देश, काल आदि की परिस्थितियो का जीव-जतुओ पर क्या प्रभाव पड़ता है। (इकालोजी)

परिस्पंद—पु० [स० परि√स्पद् (हिलना)+घञ्] १. काँपने की क्रिया या भाव। कप। कँपकँपी। २ दबाना या मलना। ३ ठाट-बाट। तड़क-भड़क। ४. फूलो आदि से सिर के बाल सजाना। ५ निर्वाह का साधन। ६ परिवार। ७ धारा। प्रवाह। ८ नदी। ९. द्वीप। टापू।

परिस्पंदन—पु० [स० परि√स्पद्+ल्युट्—अन] ८ बहुत अधिक हिलना। खूब काँपना। २. काँपना।

परिस्पर्द्धा—स्त्री० [स० प्रा० स०] =प्रतिस्पर्धा।

परिस्पर्द्धी (द्धिन्)—पु० [स० परि√स्पर्ध् (जीतने की इच्छा)+णिनि] =प्रतिस्पर्धी।

परिस्फुट—वि० [स० प्रा० स०] १ भली-भाँति व्यक्त। सब प्रकार से प्रकट या खुला हुआ। २ अच्छी तरह खिला हुआ। पूर्ण विकसित।

परिस्फुरण—पु० [स० परि√स्फुर् (गति)+ल्युट्—अन] १ कंपन। २ कलियो, कल्लो आदि का निकलना या फूटना।

परिस्मापन—पु० [स० परि√स्मि (विस्मय करना)+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] बहुत अधिक चकित या विस्मित करना।

परिस्यद—पु० [सं० परिष्यद] चूना। रसना।

परिस्यंदी (दिन्)—वि० [स० 'परिष्यदी] जिसमे प्रवाह हो। बहता हुआ।

परिस्रव—पु [स० परि√स्रु (बहना)+अप्] बहुत अधिक या चारो ओर से चूना या रसना।

परिस्राव—पु० [स० परि√स्रु+घञ्] १ चू या रसकर अधिक परिमाण मे निकलनेवाला तरल पदार्थ। २ एक रोग जिसमे रोगी को ऐसे बहुत अधिक दस्त होते है जिनमे कफ और पित्त मिला होता है।

परिस्रावण—पु० [स० परि√स्रु+णिच्+ल्युट्—अन] वह पात्र जिसमे कोई चीज चुआ या रसाकर इकट्ठी की जाय।

परिस्रावी (विन्)—वि० [स० परि√स्रु+णिनि] चूने, रसने या बहनेवाला।

पु० ऐसा भगदर रोग जिसमे फोड़े मे मे बराबर गाढ़ा मवाद निकलता रहता है।

परिस्रुत—वि० [स० परि√स्रु+क्त] १ जिसमे कुछ टपक या चू रहा हो। स्रावयुक्त। २ चुआया या टपकाया हुआ।

पु० फूलो का सुगंधित सार। (वैदिक)

स्त्री० मदिरा। शराब।

परिस्रुत-दधि—पु० [स० कर्म० स०] ऐसा दही जिसे निचोड़कर उसमे का जल निकाल दिया गया हो।

परिस्रुता—स्त्री० [स० परिस्रुत+टाप्] १. चुआई या टपकाई हुई तरल वस्तु। २ मद्य। शराब। ३ अंगूरी शराब।

परिहँस*—पु० [स० परिहास] १ हँसी-दिल्लगी। परिहास। २ लोक मे होनेवाली हँसी। उपहास। उदा०—परहँसि मरसि कि कौनेहु लाजा—जायसी। ३ खेद। दुख। रज। (मुख्यत लोक-निंदा, उपहास आदि के भय से होनेवाला) उदा०—कठ बचन न बोलि आवै हृदय परिहँस करि, नैन जल भरि रोई दीन्हो, ग्रसति आपद दीन।—सूर।

परिहत—भू० कृ० [स० परि√हन् (हिंसा)+क्त] १. जो मार डाला गया

हो। २. मरा हुआ। मृत। ३ पूरी तरह से नष्ट किया हुआ। ४ ढीला किया हुआ।

स्त्री० हल की वह लकड़ी जो चौभी में ठुकी रहती है, तथा जिसके ऊपरी भाग में लगी हुई मुठिया को पकड़कर हलवाहा हल चलाता है।

परिहरण—पु०[स० परि√हृ (हरण करना)+ल्युट्–अन] [वि० परिहरणीय] १ किसी की चीज पर बिना उसके पूछे और बलपूर्वक किया जानेवाला अधिकार। २ परित्याग। ३ दोष आदि दूर करने का उपचार या प्रयत्न। निवारण।

परिहरणीय—वि० [स० परि√हृ+अनीयर्] १ जो छीना जा सके या छीने जाने के योग्य हो। २ त्याज्य। ३ जिसका उपचार या निवारण हो सके। निवार्य।

परिहरना—स०[स० परिहरण] १. छीनना। २ त्यागना। छोड़ना।

परिहस*—पु०=परिहँस।

परिहस्त—पु०[स०अव्य०स०] हाथ में बाँधा जानेवाला एक तरह का तावीज या यत्र।

परिहाण—पु०[स० परि√हा(त्याग)+क्त] नुकसान या हानि उठाना।

परिहाणि, परिहानि—स्त्री०[स० परि√हा+क्तिन्] नुकसान। हानि।

परिहार—पु०[स० परि√हृ+घञ्] १ बलपूर्वक छीनने की क्रिया या भाव। २ युद्ध मे जीतकर प्राप्त किया हुआ धन या पदार्थ। ३ छोड़ने, त्यागने या दूर करने की क्रिया या भाव। ४ त्रुटियो, दोषो, विकारो आदि का किया जानेवाला अत या निराकरण। ५ पशुओ के चरने के लिए खाली छोड़ी हुई जमीन। चरागाह। ६ प्राचीन भारत मे, कष्ट या सकट के समय राज्य की ओर से प्रजा के साथ की जानेवाली आर्थिक रिआयत। ७ कर या लगान की छूट। माफी। ८ *खडन। ९ अवज्ञा। तिरस्कार। १० उपेक्षा। ११. मनु के अनु*सार एक प्राचीन देश। १२. नाटक मे किसी अनुचित या अविधेय कर्म का प्रायश्चित्त करना। (साहित्य दर्पण)

पु०[?] अवध, बुदेलखड आदि मे बसे हुए राजपूतो की एक जाति जिनके पूर्वज तीसरी शताब्दी मे कालिंजर के शासक थे।

परिहारक—वि०[स० परि√हृ+ण्वुल्–अक] परिहार करनेवाला।

परिहारना*—स० [स० परिहार] १ परिहरण करना। २ परिहार करना।

परिहारी (रिन्)—वि०[स० परि√हृ+णिनि] परिहरण करनेवाला।

परिहार्य—वि० [स० परि√हृ+ण्यत्] जिसका परिहरण होने को हो या हो सकता हो।

परिहास—वि० [स० परि√हस् (हँसना)+घञ्] १ बहुत जोरो की हँसी। २ हँसी-मजाक।

परिहासापह्नुति—स्त्री० [स० परिहास-अपह्नुति, मध्य० स०] साहित्य मे, अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमें पूर्वपद तो किसी अश्लील भाव का द्योतक होता है परतु उत्तर-पद से उस अश्लीलत्व का परिहार हो जाता है और श्रोता हँस पड़ता है। उदा०—तुमको लाजिम है पकड़ो अब मेरा। हाथ मे हाथ बामुहब्बतो प्यार।-कोई शायर।

परिहास्य—वि०[स० परि√हस्+ण्यत्] १ जिसके सबध मे परिहास किया जा सके या हो सके। २. हास्यास्पद।

परिहित—भू० कृ०[स० परि√धा (धारण करना)+क्त, हि–आदेश] १. चारो ओर से छिपाया या ढका हुआ। आवृत्त। आच्छादित। २. ओढ़ा या पहना हुआ। (कपड़ा)

परिहीण—वि० [स० प्रा० स०] १ सब प्रकार से दीन-हीन। अत्यत हीन। २ छोड़ा, निकाला या फेका हुआ।

परिहृति—स्त्री०[स० परि+हृ+क्तिन्] ध्वस। नाश।

परिहेलना—स० [स० प्रा० स०] अनादर या तिरस्कारपूर्वक दूर हटाना। उदा०—कै ममता करु राम-पद कै ममता परिहेलु।—तुलसी।

परी—स्त्री०[फा०] १ वह कल्पित रूपवती स्त्री जो अपने परो की सहायता से आकाश मे उड़ती है। अप्सरा।

विशेष—फारसी साहित्य मे इसका वास-स्थान काफ या काकेशस पर्वत माना गया है।

परीक्षक—पु० [स० परि√ईक्ष् (देखना)+ण्वुल्–अक] [स्त्री० परीक्षिका] १ वह जो किसी की परीक्षा करता या लेता हो। २ किसी के *गुण, योग्यता आदि का परीक्षण करनेवाला अधिकारी, विशेषत* परीक्षार्थियो के लिए प्रश्न-पत्र बनाने तथा उनकी उत्तर-पुस्तिकाएँ जाँचनेवाला अधिकारी। (इग्जामिनर) ३ जाँच-पड़ताल करनेवाला व्यक्ति। निरीक्षक।

परीक्षण—पु० [स० परि√ईक्ष्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० परीक्षित, वि० परीक्ष्य] १ परीक्षा करने या लेने की क्रिया या भाव। २ वैज्ञानिक क्षेत्र मे, किसी विशिष्ट पद्धति, प्रक्रिया या रीति से किसी चीज के वास्तविक गुण, योग्यता, शक्ति, स्थिति आदि जानने का काम। ३ न्यायालय मे इस प्रकार किसी से प्रश्न करना जिससे वस्तु-स्थिति पर प्रकाश पड़ता हो। (इग्जामिनेशन) ४ उपयोग, व्यवहार आदि मे लाकर किसी चीज के गुण-दोष जानना या परखना। ५ व्यक्ति को किसी *काम या पद पर स्थायी रूप से नियुक्त करने से पहले, कुछ समय तक* उससे वह काम करवा कर देखना कि उसमे यथेष्ट योग्यता या सामर्थ्य है या नहीं। (प्रोबेशन)

परीक्षण-काल—पु०[ष० त०] उतना समय जितने मे यह देखा जाता है, कि जो व्यक्ति किसी काम पर लगाया जाने को है, उसमे वह काम करने की पूरी योग्यता या समर्थता भी है या नहीं। (प्रोबेशन पीरियड)

परीक्षण-नलिका—स्त्री०[ष० त०] वैज्ञानिक क्षेत्रो मे शीशे की वह नली जिसमे कोई द्रव पदार्थ किसी प्रकार के परीक्षण के लिए भरा जाता है। परख-नली। (टेस्ट ट्यूब)

परीक्षण-शलाका—स्त्री०[ष० त०] किसी धातु का वह छड़ जो इस बात के परीक्षण के काम मे आता है कि इस धातु मे भार आदि सहने की कितनी शक्ति है। (टेस्ट पीस)

परीक्षणिक—वि०[स० पारीक्षणिक] १ परीक्षण-सबधी। २ नियुक्त किये जाने से पहले जिसकी समर्थता की परीक्षा ली जा रही हो। अस्थायी रूप से और केवल परीक्षण के लिए रखा हुआ कर्मचारी। (प्रोबेशनरी)

परीक्षना*—स० [स० परीक्षण] किसी की परीक्षा करना या लेना। परखना।

परीक्षा—स्त्री०[स० परि√ईक्ष्+अ+टाप्] १ किसी के गुण, धैर्य, योग्यता, सामर्थ्य आदि की ठीक-ठीक स्थिति जानने या पता लगाने की क्रिया या भाव। (एग्जामिनेशन) २ वह समुचित उपाय, विधि

या साधन जिससे किसी के गुणों आदि का पता लगाया जाता है। ३ वस्तुओं के संबंध मे, उनकी उपयोगिता, टिकाऊपन आदि जानने के लिए उनका उपयोग या व्यवहार किया जाना। जैसे—हमारे यहाँ अमुक वस्तुएँ मिलती है, परीक्षा प्रार्थित है। ४. वह प्रक्रिया जिससे प्राचीन न्यायालय किसी अभियुक्त अथवा साक्षी के सच्चे या झूठे होने का पता लगाते थे। विशेष दे० 'दिव्य'। ५ जाँच—पड़ताल। ६ देख-भाल।

परीक्षार्थ—अव्य०[स० परीक्षा-अर्थ, नित्य स०] परीक्षा के उद्देश्य से।

परीक्षार्थी(र्थिन्)—पु०[स० परीक्षा√अर्थ (चाहना)+णिनि] १. वह जो किसी प्रकार की परीक्षा देना चाहता हो। २ वह जिसकी परीक्षा ली जा रही हो अथवा जो परीक्षा दे रहा हो। (एग्ज़ामिनी)

परीक्षित्—पु०[स० परि√क्षि (क्षय)+क्विप्, तुक्] १ हस्तिनापुर के एक प्रसिद्ध प्राचीन राजा जो अभिमन्यु के पुत्र और जनमेजय के पिता थे। कहा जाता है कि इन्हीं के राज्य-काल मे द्वापर का अत और कलियुग का आरभ हुआ था। तक्षक नामक साँप के काटने पर इनकी मृत्यु हुई थी। २ कस का एक पुत्र।

परीक्षित—भू० कृ०[परि√ईक्ष+क्त] १ (व्यक्ति) जिसका परीक्षण किया जा चुका हो। जो परीक्षा मे सफल उतरा हो। ३ (वस्तु) जिसे उपयोग, व्यवहार आदि मे लाकर उसके गुण-दोष आदि देखे जा चुके हों। (टेस्टेड)

पु० परीक्षित्।

परीक्षितव्य—वि०[स० परि√ईक्ष्+तव्यत्] १ जिसकी परीक्षा, आजमाइश या जाँच की जा सके या की जाने को हो। २ जिसे जाँच या परख सके। ३ जिसकी परीक्षा (जाँच या परख) करना आवश्यक या उचित हो।

परीक्षिती—पु०[स०]=परीक्षार्थी।

परीक्ष्य—वि०[स० परि√ईक्ष्+ण्यत्] परीक्षितव्य। (दे०)

परीक्ष्यमाण—वि०[स०परि√ईक्ष्+यक्, शानच्, मुक्] परीक्षणिक।(दे०)

परीख†—स्त्री० =परख।

परीखना†—स० परखना।

परीछत—भू० कृ० =परीक्षित।

पु० परिक्षित्।

परीछम†—पु० [हि० परी+छमछम (अनु०)] पैर मे पहनने का एक तरह का चाँदी का गहना।

परीछा†—स्त्री० परीक्षा।

परीछित—भू० कृ०=परीक्षित।

पु० परीक्षित्।

परीजाद (I)—वि० [फा० परीजाद.] १. जो परी की सतान हो। २. लाक्षणिक रूप मे, परम सुन्दर व्यक्ति।

परीणाह—पु०[स०परि√नह् (बधन)+घञ्, दीर्घ] १ दे० 'परिणाह'। २ शिव। ३. गाँव के आस-पास तथा चारों ओर की वह भूमि जो सार्वजनिक सपत्ति के अन्तर्गत हो, अथवा जिसका उपयोग सब लोग कर सकते हो।

परीत†—स्त्री०=प्रीति।

†पुं०=प्रेत।

परीताप—पु०=परिताप।

परीति (ती)—स्त्री०=प्रीति।

परीतोष†—पु०=परितोष।

परीदाह†—पु=परिदाह।

परीधान†—पु०=परिधान।

परीप्सा—स्त्री०[स० परि√आप् (व्याप्ति)+सन्+अ+टाप्] १ किसी चीज को प्राप्त करने अथवा उसे अधिकार मे किये रखने की इच्छा या लालसा। २ जल्दी। शीघ्रता।

परीबंद—पु०[फा०] कलाई पर पहनने का एक आभूषण। बाजूबद। २ बच्चो के पैरो का एक घुँघरूदार गहना। ३. कुश्ती का एक पेच।

परीभव—पु०=परिभव।

परीभाव—पु०=परिभाव।

परीमाण—पु०=परिमाण।

परीरंभ—पु०=परिरंभ।

परीर—पु०[स०√पृ (पूर्ति करना)+ईरन्] वृक्ष का फल।

परीरू—वि०[फा०] परी की तरह सुन्दर आकृतिवाला। परम रूपवान या अति सुन्दर।

परीवर्तन—पु० =परिवर्तन।

परीवाद—पु० =परिवाद।

परीवार—पु० =परिवार।

परीवाह—पु०=परिवाह।

परीशान—वि०[फा० परीशाँ] [भाव० परीशानी] =परेशान। (देखे)

परीशेष—पु०=परिशेष।

परीषह—पु०[स० परि√सह् (सहना)+अच्, दीर्घ] जैन शास्त्रों के अनुसार त्याग या सहन।

परीष्ट—वि०[स० परि√ईष् (चाहना)+क्त] [भाव० परीष्टि] चाहने योग्य।

परीष्टि—स्त्री०[स०] १. इच्छा। २ खोज। छान-बीन। ३ सेवा।

परीसर्पा—स्त्री० =परिसर्पा।

परीसार—पु० परिसार।

परीहन†—पु० =परिधान।

परीहार—पु० =परिहार।

परीहास—पु०=परिहास।

परु—पु०[स०√पृ, उन्] १ गाँठ। जोड़। २ अवयव। ३ समुद्र। ४ स्वर्ग। ५ पर्वत। पहाड़।

अव्य०[हि० पर] १ बीता हुआ वर्ष। पर साल। २ आनेवाला वर्ष।

परुआ†—पु० पड़वा(भैंस का बच्चा)।

वि० १ (बैल) जो काम करने के समय बैठ जाय या पड़ा रहे। २ काम-चोर।

स्त्री०[?] एक तरह की जमीन।

परुई—स्त्री०[देश०] वह नाँद जिसमे भड़भूँजे अनाज के दाने भूँजते है।

परुख†—वि०[भाव० परुखता] परुष।

परुत्—अव्य०[स०परस्मिन्, नि० सिद्धि] बीता हुआ वर्ष। गत वर्ष।

परुष—वि० [स०√पृ+उषन्] [भाव० परुषता] १ (वचन, वस्तु या

व्यक्ति) जो गुण, प्रकृति, स्वभाव आदि की दृष्टि से कड़ा, रुक्ष तथा मृदुता-हीन हो। कठोर और कर्कश। २ उग्रतापूर्ण। तीव्र। ३ हृदयहीन। कठोर हृदयवाला। ४ रसहीन। नीरस। ५ खुरदरा। पु० १ नीली कटसरैया। २ फालसा। ३ तीर। बाण। ४ सरकंडा। सरपत। ५ खर-दूषण का एक सेनापति। ६ अप्रिय और कठोर बात या वचन।

परुषता—स्त्री०[स० परुष+तल्+टाप्] १. परुष होने की अवस्था या भाव। २ कठोरता। कड़ापन। सख्ती। ३ (वचन या स्वर की) कर्कशता। ४ निर्दयता। निष्ठुरता।

परुषत्व—पु०[स० परुष+त्वन्]=परुषता।

परुषा—स्त्री०[स० परुष+टाप्] साहित्य मे शब्द-योजना की एक विशिष्ट प्रणाली जिसमे टवर्गीय, द्वित्व, सयुक्त, रेफ, श, ष आदि वर्णों तथा लबे समासो की अधिकता होती है। २. रावी नदी। ३ फालसा।

परुसना†—स०=परोसना।

परूँगा—पु०[देश०] एक प्रकार का बलूत (वृक्ष)।

परूष, परूषक—पु०[स०√पृ+ऊषन्] [परुष+कन्] फालसा।

परेंद्रिय ज्ञान—पु० [स०] कुछ विशिष्ट मनुष्यो मे माना जानेवाला वह अतींद्रिय ज्ञान जिसकी सहायता से वे बहुत दूर के लोगों के साथ भी मानसिक सबध स्थापित करके विचार-विनिमय आदि कर सकते हैं। (टेलिपैथी)

परे—अव्य० [स० पर] १ वक्ता अथवा किसी विशिष्ट व्यक्ति से कुछ दूर हटकर या दूर रहकर। जैसे—परे हटकर खड़े होना।

मुहा०—परे परे करना=उपेक्षा, घृणा आदि के कारण यह कहना कि दूर रहो या दूर हट जाओ।

२ किसी क्षेत्र की सीमा से बाहर या दूर। जैसे—गाँव से परे पहाड़ है। ३ पहुँच, पैठ आदि से दूर या बाहर। जैसे— ईश्वर बुद्धि से परे है। ४ अलग, असबद्ध या वियुक्त स्थिति मे। जैसे वह तो जाति से परे है। ५ तुलना आदि के विचार से ऊँची स्थिति मे या बढ़कर। आगे, ऊपर या बढ़कर। जैसे—इससे परे और क्या बात हो सकती है।

मुहा०—परे बैठाना=अपनी तुलना मे तुच्छ ठहराना। अयोग्य या हीन सिद्ध करना। जैसे—यह घोड़ा तो तुम्हारे घोड़े को परे बैठा देगा।

६ पीछे। बाद। (क्व०)

परेई—स्त्री०[हिं० परेवा] १ पडुकी। फाखता। २ मादा कबूतर। कबूतरी।

परेखना—स०[स० परीक्षण] १ परीक्षा करना। २. दे० 'परखना'। अ०[स० प्रतीक्षा] प्रतीक्षा करना। राह देखना।

अ०[?] पश्चात्ताप करना। पछताना।

परेखा—पु०[स० परीक्षा] १ परीक्षा। जाँच। २ परखने की योग्यता या शक्ति। परख। ३ प्रतीति।

पु०[?] १ मन मे होनेवाला खेद या विषाद। २ चिंता। फिक्र। ३ पश्चात्ताप।

पु०=प्रतीक्षा।

परेग—स्त्री०[अ० पेग] लोहे की छोटी कील।

परेड—स्त्री०[अ०] १ वह मैदान जहाँ सैनिकों को सैनिक शिक्षा दी जाती है। २. सिपाहियो या सैनिको को दी जानेवाली सैनिक शिक्षा और उनसे सबध रखनेवाले कार्यों का कराया जानेवाला अभ्यास। सैनिको की कवायद।

परेत—पु०[स० प्रेत] १. दे० 'प्रेत'। २ मृत शरीर। लाश। शव।

परेता—पु०[स० परित=चारो ओर] १ बाँस की पतली चिपटी तीलियो का बना हुआ बेलन के आकार का एक उपकरण जिसके दोनो ओर पकड़ने के लिए दो लबी डडियाँ होती है और जिस पर जुलाहे लोग सूत या रेशम लपेट कर रखते हैं। २ उक्त की तरह का वह उपकरण जिस पर पतग उडाने की डोर लपेटी जाती है।

परेर*—पु०[स० पर=दूर, ऊँचा+हिं० एर] आकाश। आसमान।

परेला†—वि०[हिं० पडना] १ बैल जो चलते चलते पड या लेट जाता हो। २ निकम्मा और सुस्त।

परेली—स्त्री०[?] ताडव नृत्य का एक भेद जिसमे अग-सचालन अधिक और अभिनय या भाव-प्रदर्शन कम होता है। इसे 'देसी' भी कहते हैं।

परेव—पु० =परेवा।

परेवा†—पु०[स० पारावत] [स्त्री० परेई] १ पडुकी पक्षी। पेडुकी। फाखता। २ कबूतर। ३ कोई तेज उडनेवाला पक्षी।

*पु० दे० 'पत्रवाहक'।

परेश—पु०[स०पर-ईश, कर्म० स०] १ वह जो सब का और सबसे बढकर मालिक या स्वामी हो। २ परमेश्वर। ३ विष्णु।

परेशान—वि०[फा०] [भाव० परेशानी] १ बिखरा हुआ। विशृंखल। २ कार्याधिक्य, अथवा चिंता, दु ख आदि के भार से जो बहुत अधिक व्यस्त अथवा विकल और बदहवास हो। ३ दूसरो द्वारा तग किया अथवा सताया हुआ। जैसे—बच्चो से वह परेशान रहता था।

परेशानी—स्त्री०[फा०] १ परेशान होने की अवस्था या भाव। उद्वेग-पूर्ण विकलता। हैरानी। २ वह बात या विषय जिससे कोई परेशान हो। काम मे होनेवाला कष्ट या झझट।

क्रि० प्र०—उठाना।

परेषणी—पु०[स० प्रेषणी] वह व्यक्ति जिसके नाम रेल-पार्सल अथवा उसकी बिल्टी भेजी जाय। (कनसाइनी)

परेषित—भू० कृ०[स० प्रेषित] (माल या सामग्री) जो रेल पार्सल द्वारा किसी के नाम भेजी जा चुकी हो। (कनसाइन्ड)

परेष्टुका—स्त्री०[स० पर√इष्+तु+क+टाप्]ऐसी गाय जो प्राय बच्चे देती हो।

परेस†—पु०=परेश (परमेश्वर)।

परेह—पु०[?] बेसन आदि का पकाया हुआ वह घोल जिसमे पकौडियाँ डालने पर कढी बनती है।

परेहा†—पु०[देश०] जोती और सीची हुई भूमि।

परैधित—वि०[स० पर-एधित, तृ० त०] अन्य द्वारा पालित। पु० कोकिल।

परैना†—पु०[हिं० पैना] बैल आदि हाँकने की छड़ी या डडा।

परों†—अव्य०=परसों।

परोक्त-दोष—पु० [स० पर-उक्त, तृ० त०, परोक्त-दोष, कर्म० स०?] न्यायालय मे ऊट-पटाँग या गलत बयान देने का अपराध।

परोक्ष—वि०[स० अक्षि-पर अव्य० स०, टच्] [भाव० परोक्षत्व] १.

जो दृष्टि के क्षेत्र या पथ से बाहर हो और इसी लिए दिखाई न देता हो। आँखों से ओझल। २ जो सामने उपस्थित या मौजूद न हो। अनुपस्थित। गैर-हाजिर। ३ छिपा हुआ। गुप्त। 'प्रत्यक्ष' का विपर्याय। ४ किसी काम या बात से अनभिज्ञ। अनजान। अपरिचित। ५ जिसका किसी से प्रत्यक्ष या सीधा संबंध न हो, बल्कि किसी दूसरे के द्वारा हो। ६ जो उचित और सीधी या स्पष्ट रीति से न होकर किसी प्रकार के घुमाव-फिराव या हेर-फेर से हो। जो सरल या स्पष्ट रास्ते से न होकर किसी और या दूर के रास्ते से हो। (इनडाइरेक्ट) जैसे—परोक्ष रूप से आग्रह या संकेत करना।

पु० १ आँखो के सामने न होने की अवस्था या भाव। अनुपस्थिति। २ बीता हुआ समय या भूतकाल जो इस समय सामने न हो। 'प्रत्यक्ष' का विपर्याय। ३ व्याकरण मे पूर्ण भूतकाल। ४ वह जो तीनो कालो की बातें जानता हो, अर्थात् त्रिकालज्ञ या परम ज्ञानी। ५. ऐसी दशा, स्थान या स्थिति जो आँखो के सामने न हो, बल्कि दृष्टि-पथ के बाहर या इधर-उधर छिपी हुई हो। जैसे—परोक्ष से किसी के रोने का शब्द सुनाई पड़ा।

अव्य० किसी की अनुपस्थिति या गैर हाजिरी में। पीठ-पीछे। जैसे—परोक्ष मे किसी की निंदा करना।

परोक्ष-कर—पु०[कर्म०स०] अर्थशास्त्र मे, दो प्रकार के करो मे से एक (प्रत्यक्ष कर से भिन्न) जो लिया तो किसी और व्यक्ति (उत्पादक, आयातक आदि) से जाता है परन्तु जिसका भार दूसरो (अर्थात् उपभोक्ताओ) पर पड़ता है। (इनडाइरेक्ट टैक्स) जैसे—उत्पादनकर, आयात-निर्यात कर।

परोक्षत्व—पु०[स०परोक्ष+त्वन्]परोक्ष या अदृश्य होने की दशा या भाव।

परोक्ष-दर्शन—पु०[ष० त०] विशिष्ट प्रकार की आत्मिक शक्ति की सहायता से ऐसी घटनाओ, वस्तुओं, व्यक्तियो आदि के दृश्य या रूप दिखाई देना जो बहुत दूरी पर हो और साधारण मनुष्यो के दृश्य के बाहर हो। अतीन्द्रिय दृष्टि। (क्लेरवायंस)

परोक्ष-निर्वाचन—पु०[स० त०] निर्वाचन की वह पद्धति जिसमे उच्च-पदो के लिए अधिकारी या प्रतिनिधि सीधे जनता द्वारा नही चुने जाते हैं, बल्कि जनता के प्रतिनिधियो, निर्वाचन मडलो आदि के द्वारा चुने जाते है। (इनडाइरेक्ट इलेक्शन)

परोक्ष-श्रवण—पु०[ष० त०] विशिष्ट प्रकार की आत्मिक शक्ति की सहायता से ऐसे शब्द सुनाई देना या ऐसे कथनो का परिज्ञान होना जो बहुत दूर पर हो रहे हो और साधारण मनुष्यो के श्रवण-क्षेत्र के बाहर हो। अतींद्रिय-श्रवण। (क्लेअर आँडिएन्स)

परोजन†—पु०[स० प्रयोजन] १ प्रयोजन। २ कोई ऐसा पारिवारिक उत्सव या कृत्य जिसमे इष्ट-मित्रो, सबंधियो आदि की उपस्थिति आवश्यक हो।

परोढा—स्त्री०[स० पर-ऊढा, तृ०त०]=ऊढ़ा (नायिका)।

परोता—पु०[देश०] [स्त्री० परोती] गेहूँ के पयाल से बनाया जानेवाला एक तरह का टोकरा। (पजाब)

पु०[?] आटा, गुड, हल्दी, पान आदि जो किसी शुभ कार्य मे हज्जाम, भाँट आदि को दिये जाते हैं।

† पु०=पर-पोता।

परोद्वह—वि०[स० पर-उद्वह, ब० स०] अन्य द्वारा पालित।

पु० कोयल।

परोना† स०=पिरोना।

परोपकार—पु०[स० पर-उपकार, ष० त०] [भाव० परोपकारिता] ऐसा काम जिससे दूसरो का उपकार या भलाई होती हो। दूसरो के हित का काम।

परोपकारक—पु०[स० पर-उपकारक, ष० त०] परोपकारी।

परोपकारिता—पु०[स० परोपकारिन्+तल्+टाप्] १. परोपकार करने की क्रिया या भाव। २ परोपकार।

परोपकारी (रिन्)—पु०[स० परोपकार+इनि] [स्त्री० परोपकारिणी] वह जो दूसरो का उपकार या हित करता हो। दूसरो की भलाई या हित का काम करने अथवा ऐसी बातें बतलानेवाला जिनमे दूसरो का हित हो सकता हो।

परोपकृत—भू०कृ०[स० पर-उपकृत, तृ० त०] जिसका दूसरो ने उपकार किया हो। जिसके साथ परोपकार हुआ हो।

परोपजीवी (विन्)—वि०[स०]दूसरो के भरोसे जीवन निर्वाह करनेवाला। पु० ऐसे कीडे-मकोड़े या वनस्पतियाँ जो दूसरे जीव-जतुओ या वृक्षो के अगो पर रहकर जीवन निर्वाह करते हो। (पैरीसाइट)

परोपदेश—पु० [स० पर-उपदेश, ष० त०] दूसरो को दिया जानेवाला उपदेश।

परोपसर्पण—पु०[स० पर-उपसर्पण, ष० त०] भीख माँगना।

परोरजा (जस्)—वि० [स० रजस्-पर प० त०, सुट् नि०] जो राग, द्वेष आदि भावो से परे हो। विरक्त। विमुक्त।

परोरना—स०[?]मत्र पढकर फूँकना। अभिमन्त्रित करना। जैसे—रोगी को परोरकर पानी पिलाना।

परोल—पु० दे० 'पैरोल'।

परोष्णी—स्त्री० [स० पर-उष्ण, ब० स०, ङीप्] १ तेल चाटनेवाला एक कीड़ा। तेल-चटा। २ पुराणानुसार कश्मीर की एक नदी।

परोस†—स्त्री०[हि० परोसना] परोसने की क्रिया या भाव।

†पु०=पड़ोस।

परोसना—स०[स० परिवेषण] खानेवाले की थाली या पत्तल में खाद्य पदार्थ रखना। जैसे—दाल, पूरी और मिठाई परोसना।

परोसा—पु०[हि० परोसना] प्राय एक आदमी के खाने भर का वह भोजन जो उसे अपने साथ ले जाने के लिए दिया अथवा उसके यहाँ भेजा जाता है।

परोसी—पु०[स्त्री० परोसिन]=पड़ोसी।

परोसैया—पु०[हि० परोसना+ऐया (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जो पगत आदि मे बैठे हुए लोगो के लिए भोजन परोसता हो।

परोहन—पु०[स० प्ररोहण] वह पशु जिस पर चढकर सवारी की जाय या जिस पर बोझ लादा जाय।

परोहा†—पु०[सं० प्ररोहण] १. खेतो की सिंचाई का वह प्रकार जिसमे कम गहरे जलाशय मे बाँस आदि से झूलती हुई दौरी की सहायता से पानी उठाकर खेतों मे डाला जाता है। २ उक्त दौरी जिसमे पानी निकाला जाता है। ३. कूएँ से पानी निकालने का चरसा। मोट।

परौं†—अव्य०=परसों।

परौका†—स्त्री०[देश०] बांझ भेड।
परौठा†—पु०=परांठा।
परौता—स्त्री०[देश०] वह चादर जिससे हवा करके अनाज ओसाया जाता है। परती।
परौती†—स्त्री०=पडती।
पर्कट—पु०[देश०] बगला।
पर्कटी—स्त्री० [सं०√पृच् (जोडना)+अटि, कुत्व, ङीष्] १. पाकर वृक्ष। २ नई सुपारी।
स्त्री० हिं० पर्कट (बगला) का स्त्री०।
पर्कार —पु०[फा०] परकार। (दे०)
पर्काला†—पु०=परकाला।
पर्गना†—पु०=परगना।
पर्गार—पु०[फा०] परकारा। (दे०)
पर्चा—पु०=परचा।
पर्चाना—स०=परचाना।
पर्चून—पु०=परचून।
पर्छा—पु०=परछा।
पर्जंक†—पु०=पर्यंक।
पर्ज—स्त्री०=परज।
पर्जनी—स्त्री०[सं०√पृज् (स्पर्श करना)+अन्, ङीप्] दारू हल्दी।
पर्जन्य—पु० [सं०√पृष् (सींचना)+अन्य, ष—ज] १ गरजता तथा बरसता हुआ बादल। मेघ। २ इंद्र। ३ विष्णु। ४ कश्यप ऋषि के एक पुत्र जिसकी गिनती गंधर्वों में होती है।
पर्जन्या—स्त्री०[सं० पर्जन्य+टाप्] दारू हल्दी।
पर्ण—पु०[सं०√पृ+न] १ पेड का पत्ता। पत्र। जैसे—पर्ण-कुटी=पत्तो से छाकर बनाई हुई कुटी। २ पान का पत्ता। ताम्बूल। ३ ३ पलाश। ढाक। ४. पुस्तक, पंजी आदि का पृष्ठ। (लीफ) ५ कागज का वह टुकड़ा या परत जिसमे से वैसा ही दूसरा टुकडा या परत प्रतिलिपि के रूप मे काटकर अलग करते हैं। (फायल)
पर्णक—पु०[सं० पर्ण+कन्] पार्णकि गोत्र के प्रवर्तक एक ऋषि।
पर्णकार—पु०[सं० पर्ण√कृ (करना+)अण्] १ पान बेचनेवाला व्यक्ति तमोली। २ पान बेचनेवालो की एक पुरानी जाति।
पर्ण-कुटी—स्त्री०[मध्य० स०] वह झोपडी जिसकी छाजन पत्तों की बनी हो।
पर्ण-कूर्च—पु०[ब० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमे तीन दिन तक ढाक, गूलर, कमल और बेल के पत्तो का काढ़ा पीया जाता है।
पर्ण-कृच्छ्—पु०[ब० स०] एक प्रकार का पाँच दिनो का व्रत जिसमे पहले दिन ढाक के पत्तो का, दूसरे दिन गूलर के पत्तो का, तीसरे दिन कमल के पत्तो का, चौथे दिन बेल के पत्तो का पीकर पाँचवे दिन कुश का काढा पीया जाता था।
पर्ण-खंड—पु०[ब० स०] वह वृक्ष जिसमे फूल, पत्ते आदि न लगते हों।
पर्ण-ग्रंथि—स्त्री०[ष० त०] वनस्पति विज्ञान मे, पेड-पौधो के तने या स्तंभ का वह स्थान जहाँ से पत्ते निकलते है। (नोड)
पर्ण-चोरक—पु०[ष० त०] चोरक नाम का गंध द्रव्य।
पर्ण-नर—पु०[मध्य० स०] किसी अज्ञात स्थान मे मरनेवाले व्यक्ति का घास-फूस आदि का बनाया हुआ वह पुतला जो उसका शव न मिलने की दशा मे उसका शव मानकर जलाया जाता है।
पर्णभेदिनी—स्त्री०[सं० पर्ण√भिद् (फाडना) +णिनि+ङीप्] प्रियंगु लता।
पर्ण-भोजन—पु०[ब० स०] १ वह जिसका पत्ता ही भोजन हो। वह जो केवल पत्ते खाकर जीता हो। २ बकरी।
पर्णभोजनी—स्त्री०[सं० पर्णभोजन+ङीप्] बकरी।
पर्ण-मणि—स्त्री०[मध्य० स०] १ पन्ना या मरकत नामक रत्न। २. एक प्रकार का अस्त्र।
पर्णमाचल—पु०[सं० पर्ण-आ√चल्+णिच्+अण्, मुम्] कमरख का पेड।
पर्णमुक (च्)—पु०[सं० पर्ण√मुच् (छोडना)+क्विप्] पतझड।
पर्ण-मृग—पु० [मध्य० स०] पेडों पर रहनेवाले जंगली जीव-जंतु। जैसे— गिलहरी, बंदर आदि।
पर्णय—पु०[सं०] एक असुर जिसे इंद्र ने मारा था।
पर्णरुह—पु०[सं० पर्ण√रुह् (जनमना) + क] वसंत (ऋतु)।
पर्णल—वि०[सं० पर्ण+लच्] १ (वृक्ष) जिसमे बहुत अधिक पत्ते लगे हों। २ पत्तो से बनाया हुआ। पत्तो से युक्त।
पर्ण-लता—स्त्री०[मध्य० स०] पान की बेल या लता।
पर्णवल्क—पु०[सं०] एक प्राचीन ऋषि।
पर्ण-वल्ली—स्त्री०[मध्य० स०] पालाशी नामक लता।
पर्ण-वाद्य—पु०[मध्य० स०] १ पत्ते का बना हुआ बाजा। २ उक्त बाजे को बजाने से होनेवाला शब्द।
पर्ण-वीटिका—स्त्री० [ष० त०] पान का बीडा।
पर्ण-शब्द—पु०[ष० त०] पत्तो के खडखडाने का शब्द।
पर्ण-शय्या—स्त्री०[मध्य० स०] पत्तों का बिछावन या बिस्तर।
पर्ण-शबर—पु० [ब० स०] १ पुराणानुसार एक देश का नाम। २ उक्त देश मे रहनेवाली आदिम अनार्य जाति जो संभवत अब नष्ट हो गई है।
पर्ण-शाला—स्त्री०[मध्य० स०] पर्णकुटी।
पर्णशालाग्र—पु०[पर्णशाला-अग्र, ब० स०] पुराणानुसार भद्राश्व वर्ष का एक पर्वत।
पर्ण-संपुट—पुं०[ष० त०] पत्ते या पत्तों का बना हुआ दोना।
पर्ण-संस्तर—वि०[ब० स०] पर्णशय्या पर सोनेवाला।
पर्णसि—पु०[सं० √पृ+असि, नुक] १ कमल। २ साग। ३. पानी मे बनाया हुआ घर या मकान।
पर्णांग—पु०[पर्ण-अंग, ब० स०] एक विशिष्ट प्रकार के पौधो का वर्ग जिसमे केवल बडे-बडे सुंदर पत्ते होते है, फूल नहीं लगते। (फर्न)
पर्णाटक—पु०[सं०] एक प्राचीन ऋषि।
पर्णाद—पु०[सं० पर्ण√अद् (खाना)+अण्] १ वह जो पत्तो का भक्षण करता हो। २ एक प्राचीन ऋषि।
पर्णाशन—पु०[सं० पर्ण+अश् (खाना)+ल्यु—अन] १ वह जो केवल पत्ते खाकर रहता हो। २ बादल। मेघ।
पर्णास—पु०[सं० पर्ण√अस् (फेंकना)+अच्] तुलसी।
पर्णाहार—पु०—पर्णाशन। (दे०)

पर्णिक—पुं०[सं० पर्ण+ठन-इक] पत्तों का व्यवसाय करनेवाला। पत्ते बेचनेवाला।

पर्णिका—स्त्री० [सं० पर्णिक+टाप्] १ मानकंद। शालपर्णी। सरिवन। २. पिठवन। पृश्निपर्णी। ३. अग्निमथ। अरणी। ४ कागज का वह छोटा कटा या काटा हुआ टुकडा जो कहीं दिखलाने पर कुछ निश्चित धन या पदार्थ मिलता है, कोई काम होता है अथवा कोई सहायता या सेवा प्राप्त होती है। (कूपन)

पर्णिनी—स्त्री० [सं० पर्ण+इनि-ङीप्] १ माषपर्णी। २ एक अप्सरा।

पर्णिल—वि०[सं० पर्ण+इलच्] पत्तों से युक्त।

पर्णी (र्णिन्)—पुं०[सं० पर्ण+इनि] १ वृक्ष। पेड़। २. शालपर्णी। सरिवन। ३. पिठवन। ४ तेजपत्ता। ५ एक प्रकार की अप्सराएँ, कदाचित् परियाँ।

पर्णीर—पुं०[सं० पर्ण+ईरच्] सुगंधबाला।

पर्णोटज—पुं०[सं० पर्ण-उटज, मध्य० स०] पर्ण-कुटी।

पर्त†—स्त्री०=परत।

पर्द—पुं० [सं०√पृ (पूर्ति करना)+द]। १ सिर के बालों का समूह। २ गुदामार्ग से निकलनेवाली वायु। पाद।

पर्दन—पुं०[सं०√पर्द् +ल्युट्-अन] पादने की क्रिया। पादना।

पर्दनी—स्त्री०[सं० परिधानी] धोती।

पर्दा† —पुं० =परदा।

पर्धा—वि०[हिं० आधा का अनु०] आधे से कुछ कम या अधिक। आधे के लगभग। उदा०—वह पूरा कभी वसूल नहीं हो पाता था—कभी आधा कभी पर्धा।—वृन्दावन लाल वर्मा।

पर्ना—पुं०[फा०] एक तरह का बूटीदार रेशमी कपडा। पुं० =परना।

पर्प—पुं०[सं० पृ+प] १ हरी घास। २ वह पहियेदार छोटी गाडी जिस पर पंगुओं को बैठाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। ३ घर। मकान।

पर्पट—पुं० [सं०√पर्प् (गति)+अटन्] १ पित-पापडा। २ दाल आदि का बना हुआ पापड।

पर्पट-द्रुम—पुं०[सं० उपमि० स०] कुंभी वृक्ष।

पर्पटी—स्त्री० [सं० पर्पट+ङीष्] १ सौराष्ट्र आदि प्रदेशों मे होने-वाली एक तरह की मिट्टी जो सुगंधित होती है। २ उक्त मिट्टी मे से निकलनेवाली गंध। ३. गंध। महक। ४ पानडी। ५ पापड़ी। ६. वैद्यक की स्वर्ण-पर्पटी नाम की रसौषधि।
† स्त्री०=कनपटी। उदा०—माथे पर और पर्पटी पर मल दिया।—अज्ञेय।

पर्परी—स्त्री०[सं०पर्प√रा (देना)+क+ङीष्] स्त्रियों की कबरी। जूडा। स्त्री०[सं० पर्पट] १ पापड के छोटे छोटे टुकडे। २ कचरी।

पर्परीक—पुं०[सं०√पृ+ईकन्, द्वित्व, रुक्] १. सूर्य। २ अग्नि। ३ जलाशय।

पर्परीण—पुं०[सं०√पृ+यङ्, लुक्,+इनन्] पत्ते की नस।

पर्पिक—पुं०[सं० पर्प+ठन्—इक] पर्प में बैठनेवाला पंगु व्यक्ति।

पर्फरीक—पुं०[सं०√स्फुट् (सचलन)+ईकन्, नि० सिद्धि] नया और कोमल पत्ता।

पर्ब†—पुं०[सं० पर्व] १ =पर्व। २ वह शुभ दिन जिस दिन सिक्ख लोग उत्सव मनाते हैं। जैसे—गुरुपर्व=नानक के जन्म लेने का दिन।

पर्बत† —पुं०=पर्वत।

पर्बती—वि०[हिं० पर्बत] पर्वत-सबधी। पहाडी।

पर्यंक—पुं०[सं० परि-अंक, प्रा० स०] १ पलग। २ योग मे एक प्रकार का आसन। ३ वीरो के बैठने का एक प्रकार का आसन या ढग। ४ नर्मदा नदी के उत्तर ओर में स्थित पर्वत जो विन्ध्य पर्वत का पुत्र माना गया है।

पर्यंक-पादिका—स्त्री०[सं० पर्यंक-पाद, ब०स०, ठन्—इक, टाप्] एक तरह का सेम जिसकी फलियाँ काले रग की होती हैं।

पर्यंत—भू० कृ०[सं० परि-अंत, प्रा० स०] घिरा हुआ।
स्त्री० किसी क्षेत्र के विस्तार की समाप्ति सूचित करनेवाली रेखा। चौहद्दी। सीमा। (बाउण्डरी)
अव्य० तक। लौं।

पर्यंतिका—स्त्री०[सं० परि-अंतिका, प्रा०स०] नैतिकता तथा सद्गुणों का होनेवाला नाश।

पर्यग्नि—पुं० [सं० परि-अग्नि, प्रा०स०] १ हाथ मे अग्नि लेकर यज्ञ के लिए छोडे हुए पशु की परिक्रमा करना। २ वह अग्नि जो उक्त अवसर पर हाथ मे ली जाती थी।

पर्यटक—पुं०[सं० परि√अट् (गति)+ण्वुल्—अक] पर्यटन करनेवाला। दूसरे देशों मे घूमने-फिरनेवाला।

पर्यटन—पुं० [सं० परि√ अट्+ल्युट्—अन] अनेक महत्त्वपूर्ण स्थल देखने तथा मन-बहलाव के लिए अधिक विस्तृत भूभाग मे किया जानेवाला भ्रमण।

पर्यनुयोग—पुं० [सं० परि-अनुयोग, प्रा० स०] १ कोई बात मिथ्या सिद्ध करने अथवा किसी तथ्य का खण्डन करने के उद्देश्य से की जानेवाली पूछ-ताछ। २ निदा।

पर्यन्य†—पुं०=पर्जन्य।

पर्यय—पुं०[सं० परि√इ (जाना) +अच्] १ चारो ओर चक्कर लगाना। २ समय का बीतना। ३ समय का अपव्यय। ४ किसी लौकिक या शास्त्रीय बन्धन, मर्यादा आदि का उल्लघन।

पर्ययण—पुं०[सं०परि√ इ+ल्युट्—अन] १ किसी के चारो ओर चक्कर लगाना। २ घोडे की जीन। काठी।

पर्यवदात—वि०[सं० परि-अवदात, प्रा० स०] १. पूर्ण रूप से निर्मल और शुद्ध। २ निपुण। ३ ज्ञात और परिचित।

पर्यवरोध—पुं०[सं० परि-अवरोध, प्रा०स०] चारो ओर से होनेवाली बाधा।

पर्यवलोकन—पुं०[सं० परि-अवलोकन, प्रा० स०] १ चारो ओर देखना। २ चारो ओर इस तरह निरीक्षणात्मक दृष्टि से देखना कि समूचे क्षेत्र या उसमे होनेवाली चीजो का चित्र मस्तिष्क मे उतर आये। (सर्वे)

पर्यवसान—पुं०[सं० परि-अव √सो (समाप्ति)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० पर्यवसित] १ अत। समाप्ति। २ अतर्भाव। ३ क्रोध। गुस्सा। ४ अर्थ, आशय आदि के सबध मे होनेवाला ठीक ज्ञान या निश्चय।

पर्यवस्था—स्त्री० [सं० परि-अव√स्था (ठहरना)+अङ्—टाप्] १ विरोध। २. खडन।

पर्यवस्थान—पु०[स० परि-अव√स्था+ल्युट्—अन] १ विरोध करना। २ खडन करना।

पर्यवेक्षक—वि०[परि-अव√ईक्ष्+ण्वुल्—अक] पर्यवेक्षण करनेवाला। वह अधिकारी जो किसी काम के ठीक तरह से होते रहने की देख-रेख करने पर नियुक्त हो। (सुपरवाइजर)

पर्यवेक्षण—पु० [परि—अव√ईक्ष्+ल्युट्—अन] बराबर यह देखते रहना कि कोई काम ठीक तरह से चल रहा है या नही। (सुपरवाइजिंग)

पर्यश्रु—वि०[स० परि—अश्रु, ब० स०] १ आँसुओं से नहाया या भीगा हुआ। २ जिसकी आँखो मे आँसू भरे हो।

पर्यसन—पु०[स० परि√अस् (फेंकना) +ल्युट्—अन] [भू० कृ० पर्यस्त]१. दूर करना। बाहर करना। निकालना। २ भेजना। ३ नष्ट करना। ४ रद्द करना।

पर्यस्त—भू० कृ० [स० परि√ अस्+क्त] जिसका पर्यसन हुआ हो।

पर्यस्तापह्नुति—स्त्री० [स० पर्यस्ता-अपह्नुति, कर्म० स०] अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे किसी उपमान के धर्म का निषेध करके उस धर्म की स्थापना उपमेय मे की जाती है।

पर्यस्ति—स्त्री०[स० परि√ अस्+क्तिन्] १ दूर करना। २ वीरासन लगाकर बैठना।

पर्यस्तिका—स्त्री० [स० पर्यस्ति+कन्+टाप्] १ वीरासन। २ पलग।

पर्याकुल—वि०[स० परि-आकुल, प्रा०स०] गदला, क्षुब्ध (पानी)। २ डरा और घबराया हुआ। ३. अस्त-व्यस्त। ४ उत्तेजित। ५. भरा हुआ।

पर्यागत—वि०[स० परि-आ√ गम् (जाना)+क्त] १ जो पूरा चक्कर लगा चुका हो। २ जो अपने सासारिक जीवन का अत कर चुका हो।

पर्याचांत—पु०[स० परि-आ√चम् (खाना)+क्त] आचमन करने के बाद छोडा जानेवाला परोसा हुआ भोजन। (धार्मिक दृष्टि से ऐसा भोजन जूठा माना जाता है)

पर्याण—पु०[स० परि√ या (गति) +ल्युट्, पृषो०सिद्धि] घोडे की जीन। काठी।

पर्याप्त—वि०[स० परि√ आप् (व्याप्ति)+क्त] [भाव० पर्याप्ति] १ जितना आवश्यक हो उतना सब। पूरा। यथेष्ट। काफी। (सफिशिएन्ट) २ मिला हुआ। प्राप्त।

विशेष—यथेष्ट की तरह इसका प्रयोग भी केवल ऐसी चीजो या बातो के सबध मे होना चाहिए जो आवश्यक हो या जिनसे हमे तृप्ति या सतोष प्राप्त होता हो। जैसे—पर्याप्त धन, पर्याप्त सुख। यह कहना ठीक न होगा—मुझे वहाँ पर्याप्त कष्ट मिला था।

३ जोड, तुल्यता आदि की दृष्टि से उपयुक्त, अधिक बलवान या सशक्त। ४ परिमित। सीमित।

पु० १ पर्याप्त या यथेष्ट होने की अवस्था या भाव। २ तृप्ति। ३ शक्ति। ४ सामर्थ्य। ५ योग्यता।

पर्याप्ति—स्त्री०[स० परि√ आप्+क्तिन्]१ पर्याप्त होने की अवस्था या भाव। यथेष्टता। २ प्राप्ति। मिलना। ३ अन्त। समाप्ति। ४ योग्यता या सामर्थ्य। ५ तृप्ति। सतुष्टि। ६ निवारण। ७. रक्षा करना। रक्षण।

पर्याप्लाव—पु०[स० परि-आ√प्लु (गति)+घञ्] १ चक्कर। फेरा। २ घेरा।

पर्याप्लुत—भू० कृ० [स० परि-आ√ प्लु+क्त] घिरा या घेरा हुआ।

पर्याय—पु०[स०परि√ई (गति)+घञ्] १ पारस्परिक सबध की दृष्टि से वे शब्द जो सामान्यत किसी एक ही चीज, बात या भाव का बोध कराते हो। साधारणत पर्यायो के अभिधेयार्थ समान होते हैं, लक्ष्यार्थो मे भिन्नता हो सकती है। (सिनामिन) २. क्रम। सिलसिला। ३ एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे अनेक आश्रय ग्रहण करने का वर्णन होता है। ४. प्रकार। भेद। ५ अवसर। मौका। ६ बनाने या रचने की क्रिया। निर्माण। ७ द्रव्य का गुण या धर्म। ८. समय का व्यतीत होना। ९ दो व्यक्तियो मे होनेवाला ऐसा नाता या सबध जो एक ही कुल मे जन्म लेने के कारण माना जाता या होता है।

पर्यायकी—स्त्री० [स०] भाषा विज्ञान का एक अग, जिसमे पर्याय शब्दो के पारस्परिक सूक्ष्म अतरो और भेद-प्रभेदो का अध्ययन किया जाता है। (सिनॉनिमी)

पर्याय-कोश—पु० [ष० त०] वह शब्द-कोश जिसमे शब्दो के पर्याय बतलाये गये हो तथा उनमे होनेवाली परस्पर आर्थी अतरो का विवेचन किया गया हो।

पर्याय-क्रम—पु०[ष०त०]१ पद, मान आदि के विचार से स्थिर किया जानेवाला क्रम। बडाई-छोटाई आदि के विचार से लगाया हुआ क्रम। २ उत्तरोत्तर होती रहनेवाली वृद्धि।

पर्यायज्ञ—पु० [स० पर्याय √ ज्ञा (जानना)+क] पर्यायो के सूक्ष्म अतर जानने वाला विद्वान् व्यक्ति। (सिनानिमिस्ट)

पर्यायवाचक—वि० [स०] १ पर्याय के रूप मे होनेवाला। २ जो सबध के विचार से पर्याय हो।

पर्यायवाची(चिन्)—वि० [स०]=पर्यायवाचक।

पर्याय-वृत्ति—स्त्री० [स० ष० त०] ऐसा स्वभाव जिसके कारण एक छोडकर दूसरे को, फिर उसे छोडकर किसी और को अपनाते चलने का क्रम चलता रहता है।

पर्याय-शयन—पु० [तृ० त०] एक के बाद दूसरे का या पारी पारी से सोना।

पर्यायिक—वि० [स० पर्याय+ठन्—इक] १ पर्याय-सबधी। पर्याय का। २ पर्याय के रूप मे होनेवाला।

पु० नृत्य और सगीत का एक अग।

पर्यायी—वि०[स०] पर्यायवाचक।

पर्यायोक्ति—स्त्री०[स० पर्याय-उक्ति, तृ०त०] एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे (क) कोई बात सीधी तरह से न कहकर चमत्कारिक और विलक्षण ढग से कही जाती है। जैसे—नायक के बिछुडने के समय रोती हुई नायिका का अपने आँसुओ से यह कहना कि जरा ठहरो, और मेरे प्राण भी अपने साथ लेते जाओ। (ख) किसी बहाने या युक्ति से कोई काम करने का उल्लेख होता है। जैसे—पक्षियो और हिरनो को देखने के बहाने सीता जी बार-बार श्रीराम की ओर देखती थीं।

पर्यालोचन—पु० [स० परि-आ√लोच् (देखना)+ल्युट्—अन] १.

अच्छी तरह की जानेवाली देख-भाल। २. दुबारा या फिर से की जानेवाली देख-भाल। ३ दे० 'पुनरीक्षण'।

पर्यालोचना—स्त्री०[स० परि-आ√लोच्+णिच्+युच्—अन,+टाप्]=पर्यालोचन।

पर्यावरण—पुं०[सं० परि + आवरण] किसी व्यक्ति या विषय की परिस्थिति। वातावरण। उदा०—कवि पर किसी एक समाज के पर्यावरण का विशेष प्रभाव पडता है।—डा० सम्पूर्णानन्द।

पर्यावर्त—पु०[स० परि-आ√वृत् (बरतना)+घञ्] १ वापस आना। लौटना। २. मृत आत्मा का फिर से इस ससार में आकर जन्म लेना या शरीर धारण करना।

पर्यावर्तन—पु०[स० परि+आ√वृत्+ल्युट्—अन] १. वापस आना। लौटना। २. अदला-बदली। विनिमय।

पर्याविल—वि०[स० परि-आविल, प्रा० स०] गँदला (जल)।

पर्यास—पु०[सं० परि√अस् (फेंकना)+घञ्] १ पतन। गिरना। २. वध। हत्या। ३ नाश।

†पु०=प्रयास।

पर्यासन—पु०[स० परि√अस् (बैठना)+ल्युट्—अन] १ किसी को घेर कर बैठना। किसी के चारो ओर बैठना। २. परिक्रमा करना।

पर्याहार—पु०[स० परि-आ √ हृ (हरण करना)+घञ्] १. जूआ। २ ढोने की क्रिया। ३ बोझ। ४ घडा। ५ अन्न जमा करना।

पर्युक्षण—पु० [स० परि√ उक्ष् (सींचना)+ल्युट्—अन] श्राद्ध, होम, पूजा आदि के बिना मत्र पढ़े छिडका जानेवाला जल।

पर्युक्षणी—स्त्री०[स० पर्युक्षण+ङीप्] पर्युक्षण के लिए जल से भरा पात्र।

पर्युत्थान—पु०[स० परि-उद्√स्था (ठहरना)+ल्युट्—अन] उठ खडा होना।

पर्युत्सुक—वि०[सं० परि-उत्सुक, प्रा० स०] १. बहुत अधिक उत्सुक। २ उदास। खिन्न। ३ विकल। क्षिप्त।

पर्युदय—पु० [स० अत्या ० स०] सूर्योदय से कुछ पहले का समय। तडका।

पर्युदस्त—वि०[स० परि-उद्√अस्+क्त] १. निषिद्ध। २ जिसके सबध मे या जिस पर आपत्ति की गई हो।

पर्युदास—पु०[स० परि-उद्√अस्+घञ्] नियम आदि के विरुद्ध अपवाद के रूप मे कही जानेवाली बात।

पर्युपस्थान—पु०[स० परि-उप्√स्था+ल्युट्—अन] सेवा।

पर्युपासक—पु०[स० परि-उपासक, प्रा० स०] १ उपासक। २.सेवक।

पर्युपासन—पु०[स० परि-उपासन, प्रा० स०] १ उपासना। २. सेवा।

पर्युपासिता (तृ), पर्युपासी (सिन्)—पु०[स० परि-उप√ आस+तृच्, स० परि-उप√ अस्+णिनि] पर्युपासक। (दे०)

पर्युप्त—भू० कृ०[स०परि√वप् (बोना)+क्त] [भाव० पर्युप्ति] जो बोया गया हो।

पर्युप्ति—स्त्री०[स० परि√वप्+क्तिन्] बीज बोने की क्रिया या भाव। बोआई।

पर्युषण—पु०[स० परि√उष्+ल्युट्—अन] १. जैनियो के अनुसार तीर्थंकरों की पूजा या सेवा। २ जैनो का एक विशिष्ट पर्व जिसमे कई प्रकार के व्रतो का पालन किया जाता है।

पर्युषित—वि०[स० परि√वस्+क्त] १. जो ताजा न हो। एक दिन पहले का। बासी। (फूल या भोजन के लिए प्रयुक्त) २ मूर्ख।

पर्यूहण—पु०[सं० परि√ ऊह्+ल्युट्—अन] अग्नि के चारो ओर जल छिडकना।

पर्येषणा—स्त्री०[स० परि-एषणा, प्रा० स०]१ तर्कपूर्वक की जानेवाली पूछ-ताछ। २. छान-बीन। जाँच-पडताल। ३ पूजा।

पर्येष्टि—स्त्री०[स० परि-आ√ इष्+क्तिन्]। पर्येषणा (दे०)

पर्व (र्वन्)—पुं०[स०√ पृ (पूर्ण करना)+वनिप्] १ दो चीजों के जुडने का सधि-स्थान। जोड। गाँठ। जैसे—ऊँगली या गन्ने का पर्व (पोर)। २ शरीर का ऐसा अग जो किसी जोड के आगे हो और घुमाया फिराया या मोडा जा सकता हो। ३ अश। खड। भाग। ४ ग्रथ का कोई विशिष्ट अंश, खड या विभाग। जैसे—महाभारत मे अठारह पर्व हैं। ५ सीढ़ी का डडा। ६ कोई निश्चित या सीमित काल। अवधि, विशेषतः अमावास्या, पूर्णिमा और दोनो पक्षो की अष्टमियाँ। ७. वे यज्ञ जो उक्त तिथियो मे किये जाते थे। ८ आनन्द और उत्सव का दिन या समय। ९. वह दिन जब विशिष्ट रूप से कोई धार्मिक या पुण्य-कार्य किया जाता हो। १० कोई विशिष्ट अच्छा अवसर या समय। आनन्द या त्योहार मनाने का दिन। ११ उत्सव। १२. चद्रमा या सूर्य का ग्रहण। १३ सूर्य का किसी राशि मे सक्रमण काल। सक्राति। १४ चातुर्मास्य।

पर्वक—पु०[स० पर्वन्√ कै (प्रकाशित होना)+क]घुटना।

पर्वकार—पु०[स० पर्वन्√ कृ (करना)+अण्] वह ब्राह्मण जो धन के लोभ से पर्व के दिन का काम छोड दे, और फिर सुभीते से किसी दूसरे दिन करे।

पर्व-काल—पु०[स० ष०त०] १ वह समय जब कोई पर्व हो। पुण्य-काल। २ चद्रमा के क्षय के दिन, अर्थात् पूर्णमासी से अमावास्या तक का समय।

पर्वगामी (मिन्)—पु०[स० पर्वन्√गम् (जाना)+णिनि] शास्त्रो द्वारा वर्जित तिथि या पर्व पर स्त्री-गमन करनेवाला व्यक्ति।

पर्वण—पु०[स० √ पर्व् (पूर्ति)+ल्युट्—अन]१ कोई काम पूरा करने की क्रिया या भाव। २ एक राक्षस का नाम।

पर्वणिका—स्त्री० [स० पर्वणी+कन्+टाप्,ह्रस्व] पर्वणी नाम का आँख का रोग।

पर्वणी—स्त्री०[स० पर्वण+ङीप्]१ सुश्रुत के अनुसार आँख की सधि मे होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे जलन और सूजन होती है। २. पूर्णिमा। ३ दे० 'पर्विणी'।

पर्वत—पु०[स०√पर्व+अतच्]१ पत्थरो आदि का बना हुआ, मालाओ या श्रेणियो के रूप मे फैला हुआ तथा ऊँची चोटियोवाला वह भूखड जो आस-पास की भूमि से सैकडो-हजारो फुट ऊँचा होता है तथा जो भूगर्भ की प्राकृतिक शक्तियों से निकलनेवाले मल से बनता है। पहाड।

विशेष—पर्वत प्राय ढालुएँ होते हैं और उनके ऊपरी भाग निचले भागों की अपेक्षा बहुत कम विस्तृत होते हैं और उनके ऊपरी भाग चौडे तथा चिपटे होते हैं।

२. बहुत-सी चीजो का बना हुआ बहुत ऊँचा ढेर। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, अत्यधिक मात्रा में होने की अवस्था या भाव। जैसे—बातो का पहाड़।

४.पुराणानुसार एक देवर्षि जो नारद मुनि के बहुत बड़े मित्र थे। ५ एक प्रकार की मछली। ६ पेड़। वृक्ष। ७. एक प्रकार का साग। ८ दशनामी सप्रदाय के सन्यासियो का एक भेद या वर्ग, और उनके नाम के साथ लगनेवाली एक उपाधि। ९ मरीचि का एक पुत्र। १० एक गधर्व का नाम। ११ रहस्य-सप्रदाय मे (क) पाप, (ख) प्रेम, (ग) मन या ध्यान की ऊँची अवस्था, (घ) परमात्मा।

पर्वतक—पु०[स० पर्वत+कन्] छोटा पहाड़।

पर्वत-काक—पु०[मध्य०स०] डोम कौआ।

पर्वत-कीला—स्त्री०[ब०स०, टाप्] पृथ्वी।

पर्वतखंड—पु० [स०] १ पर्वत का टुकडा। २ पर्वतीय प्रदेश। ३ तटवर्ती प्रदेश मे ऊँची तथा अति तीव्र ढालवाली चट्टान की दीवार।

पर्वतज—वि०[स० पर्वत√जन् (उत्पन्न होना)+ड] जो पर्वत से उत्पन्न हुआ हो। पहाड से पैदा होने या निकलनेवाला।

पर्वतजा—स्त्री०[स० पर्वतज+टाप्]१ नदी। २ पार्वती।

पर्वत-जाल—पु०[ष०त०] पर्वत-माला।

पर्वत-तृण—पु०[स० मध्य०स०] एक तरह की घास जिसे पशु खाते है।

पर्वत-दुर्ग—पु०[मध्य०स०] पहाड पर बना हुआ किला।

पर्वत-नंदिनी—स्त्री०[ष०त०] पार्वती।

पर्वत-पति—पु०[ष०त०] पर्वतो का राजा, हिमालय।

पर्वत-प्रदेश—पु०[स०] ऐसा प्रदेश जिसमे प्राय पर्वत ही पर्वत हो।

पर्वत-माला—स्त्री०[ष०त०] भूगोल शास्त्र मे, पहाडो की ऐसी शृखला जो दूर तक समानातर चली गई हो। (चेन)

पर्वत-मोचा—स्त्री०[मध्य०स०] एक तरह के पहाडी केले का पौधा और उसका फल।

पर्वत-राज—पु०[ष० त०]१ बहुत बडा पहाड। २ हिमालय पर्वत।

पर्वतवासिनी—स्त्री० [स० पर्वत√ वस् (बसना) +णिनि+ङीप्] १ काली देवी। २ गायत्री। ३ छोटी जटामासी।

पर्वतवासी (सिन्)—पु०[स० पर्वत√वस्+णिनि] [स्त्री० पर्वतवासिनी] पहाड पर वास करनेवाला प्राणी।

पर्वतस्थ—वि०[स० पर्वत√स्था (ठहरना)+क] पर्वत पर स्थित।

पर्वतात्मज—पु०[स० पर्वत-आत्मज, ष० त०] मैनाक (पर्वत)।

पर्वतात्मजा—स्त्री० [पर्वत-आत्मजा, ष० त०] पार्वती।

पर्वताधारा—स्त्री०[पर्वत-आधार, ब०स०, टाप्] पृथ्वी।

पर्वतारि—पु०[पर्वत्-अरि ष० त०] इद्र।

पर्वताशय—पु०[स० पर्वत आ√शी (सोना)+अच] मेघ। बादल।

पर्वताश्रय—पु०[स० पर्वत-आश्रय ब० स०] १ शरभ। २ पर्वतवासी।

पर्वताश्रयी (यिन्)—पु० [स० पर्वत-आ√श्रि (सेवा)+णिनि] पर्वत-वासी।

पर्वतासन—पु०[स० पर्वत-आसन, मध्य०स०]हठ योग मे एक प्रकार का आसन।

पर्वतास्त्र—पु०[स० पर्वत-अस्त्र, मध्य०स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का कल्पित अस्त्र जिसके सबध मे कहा जाता है कि इनके फेंकते ही शत्रु की सेना पर बडे बडे पत्थर बरसने लगते थे अथवा अपनी सेना के चारो ओर पहाड खडे हो जाते थे, जिससे शत्रु के प्रभजनास्त्र विफल हो जाते थे।

पर्वतिया—पु० [स० पर्वत+इया (प्रत्य०)] १. नैपालियो की एक जाति। २ एक प्रकार का कद्दू। ३ एक प्रकार का तिल। †वि०=पर्वतीय (पहाडी)।

पर्वती—वि०=पर्वतीय।

पर्वतीय—वि०[स० पर्वत√छ—ईय] १. पर्वत-सबधी। पहाड का' पहाडी। २ पहाड़ पर रहने या होनेवाला। पहाडी। जैसे—पर्वतीय पावस।

पर्वतेश्वर—पु०[पर्वत-ईश्वर, ष०त०] हिमालय।

पर्वतोद्भव—पु० [पर्वत-उद्भव, ब०स०]१ पारा। २ शिंगरफ।

पर्वतोद्भूत—पु० [पर्वत्-उद्भूत, प० त०] अबरक।

पर्वतोर्मि—पु० [पर्वत-ऊर्मि, ब०स०] एक तरह की मछली।

पर्वधि—पु०[स० पर्वन√धा (धारण करना)+कि] चद्रमा।

पर्वपुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०, ङीष्]१ नागदती नामक क्षुप। २ रामदूती नाम की तुलसी।

पर्व-भाग—पु०[ष०त०] हाथ की कलाई।

पर्व-भेद—पु०[स० ब०स०] सधिभग नामक रोग का एक भेद।

पर्व-मूल—पु०[ष० त०] किसी पक्ष की चतुर्दशी और अमावस्या (अथवा पूर्णिमा) के सधिकाल का समय।

पर्व-मूला—स्त्री० [ब०स० टाप्] सफेद दूब।

पर्व-योनि—पु०[स० ब०स०] ऐसी वनस्पति जिसमे जगह जगह पर्व अर्थात् गाठे या पोर हो। जैसे—ऊख, बांस आदि।

पर्वर—प्रत्य०[फा०] पालन करनेवाला। परवर।

पु० परवल (पौधा और उसका फल)।

पर्वाना—पु०[फा० पर्वान] परवाना। (दे०)

पर्वानगी—स्त्री०[फा०] आज्ञा। अनुमति।

पर्वरुट (रुह्)—पु०[स० पर्वन्√रुह् (उत्पत्ति)+क्विप्]अनार।

पर्वरिश—स्त्री० परवरिश।

पर्वरीण—पु०[स० =पर्परीण, पृषो० सिद्धि०]१ पर्व। २ मृत शरीर। लाश। ३ अभिमान। घमड।

पर्व-वल्ली—स्त्री०[मध्य०स०] एक तरह की दूब। माला दूर्वा।

पर्व-सधि—पु०[ष० त०] १ पूर्णिमा (या अमावास्या) और प्रतिपदा का सधिकाल। २ चद्रमा अथवा सूर्य के ग्रहण का समय। ३ घुटनो का जोड। ४ दो अवस्थाओ के बीच मे पडनेवाला समय या स्थान।

पर्वा—स्त्री० परवाह।

स्त्री० प्रतिपदा।

पर्वानगी—स्त्री० परवानगी।

पर्वाना—पु० परवाना।

पर्वावधि—स्त्री० [स० पर्वन्-अवधि, ष० त०] गाँठ। जोड।

पर्वास्फोट—पु० [स०पर्वन्-आस्फोट, ष० त०] १. उँगलियाँ चटकाने की क्रिया या भाव। २ उगलियां चटकाने पर होनेवाला शब्द।

पर्वाह—पु० [पर्वन्-अहन, ष० त०, टच्] वह दिन जिसमे उत्सव मनाया जाय। पर्व का दिन।

स्त्री० [फा० पर्वा] परवाह। (दे०)

पर्विणी—स्त्री० [स०] १ छोटा और कम महत्त्वपूर्ण पर्व। २ पर्व का समय।

पर्वित—पु० [स०√पर्व् (पूर्ति)+क्त] एक प्रकार की मछली।

पर्वेश—पु० [सं० पर्वन्-ईश, ष० त०] फलित ज्योतिष मे ब्रह्मा, इंद्र, चद्र, कुबेर, वरुण अग्नि और यम देवता जो ग्रहण के अधिपति माने जाते हैं। इन सभी का भोगकाल छ छ महीने का होता है।

पर्श—पु० [सं०] एक प्राचीन योद्धा जाति जिसके वंशज अफगानिस्तान के एक प्रदेश मे रहते थे।

†पु०=स्पर्श।

पर्शनीय—वि० [स० स्पर्शनीय] स्पर्श किये जाने के योग्य। स्पृश्य।

पर्शु—पु० [स०√स्पृश् (छूना)+शुन्—पृ, आदेश] १. आयुध। अस्त्र। २ परशु। फरसा। ३. पसली।

पर्शुका—स्त्री० [स० पर्शु√कै (चमकना)+क+टाप्] पसली।

पर्शु-पाणी—पु० [ब० स०] १ गणेश। २. परशुराम।

पर्शुराम—पु० [मध्य० स०] परशुराम।

पर्शु-स्थान—पु० [ष० त०] अफगानिस्तान का एक प्रदेश जिसमे पर्शु जाति के लोग रहते थे।

पर्श्वध—पु० [स०=परश्वध, पृषो० सिद्धि] कुठार।

पर्षद्—स्त्री०=परिषद्।

पर्षद्वल—पु० [स० पर्षद्+वलच्] परिषद् का सदस्य।

पर्हेज—पु०=परहेज।

पर्हेजगार—वि०=परहेजगार।

पलंकट—वि० [स० पल√कट् (छिपाना)+खच्, मुम्] डरपोक। भीरु।

पलंकर—पु० [स० पल√कृ (करना)+खच्, मुम्,] पित्त।

पलंकष—पु० [स० पल√कष् (मारना)+खच्, मुम्] १. गुग्गुल। गुगल। २ राक्षस। ३ पलाश।

पलंकषा—स्त्री० [स० पलंकष+टाप्]=पलंकषी।

पलंकषी—स्त्री० [स० पलंकष+ङीष्] १ गोखरू। रास्ना। २ टेसू। पलास। ३ गुग्गुल। ४ लाख। ५. गोरखमुंडी।

पलंका—स्त्री० [हि० पर+लंका] लंका से भी और आगे का अर्थात् बहुत दूर का स्थान। अति दूरवर्ती देश। जैसे—लंका छोड पलंका जाय। (कहा०)

पलंग—पु० [स० पल्यंक से फा०] [स्त्री० अल्पा० पलंगड़ी] एक तरह की बड़ी तथा मजबूत चारपाई जो प्राय निवार से बनी होती है।

क्रि० प्र०—बिछाना।

मुहा०—**(स्त्री का) पलंग की लात मार खड़ा होना**=छठी, बरही आदि के उपरांत सौरी से किसी स्त्री का भली-चंगी बाहर आना। सौरी के दिन पूरे करके बाहर निकलना। (बोल-चाल) **(व्यक्ति का) पलंग को लात मारकर खड़ा होना**=बहुत बड़ी बीमारी झेलकर अच्छा होना। कड़ी बीमारी से उठना। **पलंग तोड़ना**=बिना कोई काम किये यों ही पड़े या सोये रहना। निठल्ला रहना। **पलंग लगाना**=किसी के सोने के लिए पलंग पर बिछौना बिछाना। बिस्तर ठीक करना।

पलंग-कस—पु० [हि० पलंग+कसना] एक प्रकार की औषधि जिसे खाने से स्त्रियों की संभोग शक्ति का बढ़ना माना जाता है। (पलंगतोड़ के जोड़ पर)

पलंगड़ी—स्त्री० [हि० पलंग+ड़ी (प्रत्य०)] छोटा पलंग।

पलंग-तोड़—वि० [हि०] १ वह जो प्राय. पलंग पर पड़े-पड़े समय बिताता हो अर्थात् आलसी तथा निकम्मा। २ एक प्रकार का औषध जिसे खाने से पुरुष की संभोग शक्ति का बढ़ना माना जाता है। (पलंग-कस के जोड़ पर)

पलंग-दंत—पु० [फा० पलंग=चीता+हि० दांत] जिसके दांत चीते के दांतो की तरह कुछ कुछ टेढ़े हो।

पलंगपोश—पु० [हि० पलंग+फा० पोश] पलंग पर बिछाई जानेवाली चादर।

पलँगरी†—स्त्री०=पलँगड़ी।

पलंगिया—स्त्री० [हि० पलंग+इया (प्रत्य०)] छोटा पलंग। पलंगड़ी।

पलंजी—स्त्री० [देश०] एक तरह की घास।

पलंडी—स्त्री० [देश०] मल्लाहों का वह बाँस जिससे वे पाल खड़ा करते हैं।

पल—पु० [स०√पल् (गति, रक्षा)+अच्] १ समय का एक बहुत प्राचीन विभाग जो ६० विपल अर्थात् २४ सेकेंड के बराबर होता है। घड़ी या दंड का ६० वाँ भाग।

पद—**पल के पल में**=बहुत थोड़े समय मे। क्षण भर मे। तुरत।

२ एक प्रकार की पुरानी तौल जो ४ कर्ष के बराबर होती थी। ३ चलने की क्रिया। गति। ४ धोखेबाजी। प्रतारणा। ५ तराजू। तुला। ६ गोश्त। मास। ७ धान का पयाल। ८ मूर्ख व्यक्ति। ९ लाश। शव।

†पु० [स० पलक] पलक। दृगचल।

मुहा०—**पल मारते या पल भर में**=बहुत ही थोड़े समय मे। तुरत। जैसे—पल मारते वह अदृश्य हो गया।

पलई†—स्त्री० [स० पल्लव] १ पेड़ की पतली और नरम डाली। २. पेड़ का ऊपरी सिरा।

†स्त्री० [हि० पसली] बच्चों को होनेवाला एक रोग जिसमे उनकी पसलियाँ जोर जोर से फड़कने या ऊपर-नीचे होने लगती हैं।

पलक—स्त्री० [फा०] १ आँख के ऊपर का वह पतला आवरण जिसके अगले भाग मे बालों की पंक्ति या बरौनी होती है और जिसके गिरने से आँख बंद होती और उठने से आँख खुलती है।

क्रि० प्र०—उठना।—गिरना।

मुहा०—**पलक झपकना**=पलक का क्षण भर के लिए या एक बार नीचे की ओर गिरना। **पलक (या पलकों) पर पानी फिरना**=आँखों मे जल भर आना। उदा०—रोषिहि रोष भरे दृग तरै फिरै पलक भर पानी।—सूर। **पलक पसीजना**=(क) आँखो मे आँसू आना। (ख) किसी के प्रति करुणा या दया उत्पन्न होना। **पलक भाँजना**=(क) पलक गिराना या हिलाना। (ख) पलके हिलाकर इशारा या संकेत करना। **पलक मारना**=(क) पलक झपकाना या गिराना। (ख) पलक हिलाकर इशारा या संकेत करना। **पलक लगना**=हलकी-सी नींद आना या निद्रा का आरंभ होना। झपकी आना। जैसे—दो दिन से रोगी की पलक नहीं लगी है। **पलक से पलक न लगना**=नाम को भी कुछ नींद न आना। **पलक से पलक न लगाना**=देखने के लिए टकटकी लगाना या आँख बंद न होने देना। **(किसी के रास्ते में या किसी के लिए) पलकें बिछाना**=किसी का अत्यंत आदर और प्रेम से स्वागत तथा सत्कार

करना। पलकें मूँदना=मृत्यु होना। मरना। पलकों से अथवा झाड़ना या तिनके चुनना=(क) अत्यंत श्रद्धा तथा भक्ति से किसी की सेवा करना। (ख) किसी को संतुष्ट और सुखी करने के लिए पूर्ण मनोयोग से प्रयत्न करना। जैसे—मैं आप के लिए पलकों से तिनके चुनूँगा।

विशेष—इस मुहावरे का मुख्य आशय यह है कि चलने-फिरने, उठने-बैठने की जगह या रास्ते में कुछ भी कष्ट न होने पावे।

पद—पलक झपकते या मारते=अत्यंत अल्प समय में। निमेष मात्र में। जैसे—पलक झपकते ही कुछ दूसरा दृश्य दिखाई पड़ा।

पु० [हिं० पल+एक] १. एक ही पल या क्षण भर का समय। उदा०—कोटि करम फिरे पलक में, जो रंचक आये नाँव।—कबीर।

पलक-दरिया—वि० [हिं० पलक+दरिया] बहुत बड़ा दानी। अति उदार।

पलक-दरियाव—वि० =पलक-दरिया।

पलकनेवाज†—वि० [हिं० पलक+फा० निवाज] क्षण भर में निहाल कर देनेवाला। बहुत बड़ा दानी। पलक-दरिया।

पलक-पीटा—पु० [हिं० पलक+पीटना] १ बरौनियाँ झड़ने का एक रोग। २. वह जिसे उक्त रोग हो।

पलकर्ण—पु० [सं०] धूपघड़ी के शंकु की उस समय की छाया की लंबाई जब मेष संक्रांति के मध्याह्नकाल में सूर्य ठीक विषुवत् रेखा पर होता है।

पलका†—पु० [स्त्री० अल्पा० पलकी]=पलंग।

पलकिया—स्त्री० [हिं० पलकी] १ पालकी। २ हाथी पर रखने का एक प्रकार का छोटा हौदा। उदा०—पलकिया में बहुत मुलायम गद्दी तकिए लगा दिए गए हैं और हाथी बहुत धीमे चलाया जायगा। —वृंदावनलाल वर्मा।

पलक्या—स्त्री० [सं० पलक+यत्+टाप्] पालक।

पलक्ष—वि० [सं०=वलक्ष, पृषो० सिद्धि] श्वेत। सफेद।

पु० सफेद रंग।

पल-क्षार—पु० [ष० त०] रक्त। खून। लहू।

पलक्षन—पु० [सं० पलक्ष] पाकर का पेड़।

पलगंड—पु० [सं० पल√गण्ड् (लीपना)+अण्] कच्ची दीवार में मिट्टी का लेप करनेवाला लेपक। मजदूर।

पलटन—स्त्री० [अं० प्लैटून] १ सैनिकों का बहुत बड़ा ऐसा दस्ता जिसका नायक लेफ्टीनेंट होता है। २ किसी प्रकार के प्राणियों का बहुत बड़ा झुंड। जैसे—चींटियों, बंदरों या बच्चों की पलटन।

† स्त्री० [हिं० पलटना] पलटने की क्रिया या भाव।

पलटना—अ० [सं० प्रलोटन] १ ऐसी स्थिति में आना या होना कि ऊपरी अंश या तल नीचे हो जाय और निचला अंश या तल ऊपर हो जाय। उलटा या औंधा होना। २ दशा, परिस्थिति आदि में होनेवाला इस प्रकार का बहुत बड़ा परिवर्तन कि उसका प्रवाह, रुख या रूप बिलकुल उलट जाय। अच्छी से बुरी या बुरी से अच्छी स्थिति को प्राप्त होना। ३ अपेक्षाकृत अधिक अवनत स्थिति को प्राप्त होना। ४ राज्य की सत्ता का एक के हाथ से निकलकर दूसरे के हाथ में जाना। जैसे—शासन पलटना। ५ पीछे या विपरीत दिशा की ओर जाना, घूमना या मुड़ना। ६ जहाँ से कोई चला हो, उसका उसी स्थान की ओर लौटना। वापस आना। ७ कही हुई या मानी हुई बातें मानने से पीछे हटना। मुकरना। जैसे—उन्हें पलटते देर नहीं लगती।

संयो० क्रि०—जाना।

स० १ उलटा या औंधा करना। २. आकार, रूप, दशा, स्थिति आदि को प्रयत्नपूर्वक बदल देना। बदलना। ३. अवनत को उन्नत या उन्नत को अवनत करना। ४ किसी को लौटने में प्रवृत्त करना। फेरना। ५. अदल-बदल करना।

विशेष—यह उलटना के साथ उसका अनुकरण-वाचक रूप बनकर भी प्रयुक्त होता है। जैसे—उलटना-पलटना।

पलटनिया—वि० [हिं० पलटन] पलटन-संबंधी।

पु० सैनिक।

पलटा—पु० [हिं० पलटना] १ पलटने की क्रिया या भाव। २ चक्कर के रूप में अथवा यों ही उलटकर पीछे की ओर आने अथवा किसी ओर घूमने या प्रवृत्त होने की क्रिया या भाव।

मुहा०—पलटा खाना=(क) पीछे अथवा किसी और दिशा में प्रवृत्त होना या मुड़ना। जैसे—भागते हुए चीते ने पलटा खाया और वह शिकारी पर झपटा। (ख) एक दशा से दूसरी, मुख्यत अच्छी दशा की ओर प्रवृत्त होना। जैसे—दस बरस बाद उसके भाग्य ने फिर पलटा खाया और उसने व्यापार में लाखों रुपये कमाये। पलटा देना=(क) उलटना। (ख) किसी दूसरी दशा या दिशा में प्रवृत्त करना या ले जाना।

३ किसी काम या बात के बदले किया जाने या होनेवाला काम या बात। बदला। जैसे—उसे उसकी करनी का पलटा मिल गया। ४ संगीत में वह स्थिति जिसमें बड़ी और लंबी तानें लेते समय ऊँचे स्वरों से पलटकर नीचे स्वरों पर आते हैं। जैसे—गवैये ने ऐसी-ऐसी तानें पलटीं कि सब लोग प्रसन्न हो गये।

क्रि० प्र०—लेना।

५ लोहे या पीतल की बड़ी खुरचनी जिसका फल चौकोर न होकर गोलाकार होता है। ६ नाव की वह पटरी जिस पर उसे खेनेवाला मल्लाह बैठता है। ७. कुश्ती का दाँव या पेंच।

पलटाना†—स० [हिं० पलटना] १ पलटने में प्रवृत्त करना। २ लौटाना। ३ बदलना। विशेष दे० 'पलटना' स०।

पलटाव—पु० [हिं० पलटा] पलटे जाने की क्रिया या भाव।

पलटावना—स० [हिं० पलटना का प्रे०] पलटने का काम किसी दूसरे से कराना।

पलटी†—स्त्री० =पलटा।

पलटे—अव्य० [हिं० पलटा] बदले में। एवज में। प्रतिफल स्वरूप।

पलड़ा—पु० [सं० पटल] १ तराजू के दोनों लटकते हुए भागों में से एक। २. शक्ति, समर्थता आदि की दृष्टि से दो पक्षों, दलों आदि में से कोई एक। जैसे—समाज-वादियों की अपेक्षा कांग्रेसियों का पलड़ा भारी है।

मुहा०—(किसी का) पलड़ा भारी होना=अपने विरोधी की अपेक्षा शक्ति का संतुलन अधिक होना।

† पु०=पल्ला (धोती आदि का आँचल)।

पलथा—पु० [हिं० पलटना] १ कलाबाजी, विशेषत पानी में कलैया मारने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—मारना।

२ दे० 'पलथी'।

पलथी—स्त्री० [सं० पर्यस्त, प्रा० पल्लत्थ] दाहिने पैर का पंजा बाएँ पट्ठे के नीचे और बाएँ पैर का पंजा दाहिने पट्ठे के नीचे दबाकर बैठने का एक आसन।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

पलद—वि० [सं० पल√दा (देना)+क] जिसके सेवन से मांस बढ़े।

पलना—अ० [हिं० पालना] १ विशिष्ट परिस्थितियों मे रहकर बड़े होना। जैसे—प्रकृति की गोद मे पलना। २ खा-पीकर खूब हृष्ट पुष्ट होना। ३. कर्त्तव्य, धर्म आदि के निर्वाह के रूप में पूरा उतरना। पालित होना। उदा०—पर भूलो तुम निज धर्म भले, मुझसे मेरा अधिकार पले।—मैथिलीशरण।

†स०=देना। (दलाल)

†पु०=पालना।

पलनाना—स० [हिं० पलान=जीन, +ना (प्रत्य०)]=पलानना।

पल-प्रिय—वि० [ब० स०] मांस खाकर प्रसन्न होनेवाला। जिसे मांस अच्छा लगता हो।

पु० डोम कौआ। द्रोण काक।

पलभक्षी(क्षिन्)—वि० [सं० पल√भक्ष् (खाना)+णिनि] [स्त्री० पलभक्षिणी] मांसाहारी। मांस-भक्षी।

पल-भरता—स्त्री० [हिं० पल+भर+ता (प्रत्य०)] पल भर या बहुत थोड़ी देर तक अस्तित्व बने रहने या होने की अवस्था या भाव। क्षण-भंगुरता।

पलभा—स्त्री० [ब० स०] धूप-घड़ी के शंकु की उस समय की छाया की चौड़ाई जब मेष संक्रांति के मध्याह्न मे सूर्य ठीक विषुवत रेखा पर होता है, पलविभा। विषुवत् प्रभा।

पलरा†—पु०=पलड़ा।

पलल—वि० [सं०√पल् (गति)+कलच्] बहुत मुलायम। पिलपिला।

पु० १ मांस। गोश्त। २ शव। लाश। ३ राक्षस। ४ पत्थर। ५ बल। शक्ति। ६. दूध। ७ कीचड़ ८ तिल का चूर्ण। ९ वह मीठा पकवान या मिठाई जो तिल के चूर्ण से बनी हो। १० मल। गन्दगी। ११ सेवार। शैवाल।

पलल-ज्वर—पु० [ष० त०] पित्त (धातु)।

पलल-प्रिय—वि० [ब० स०] जिसे मांस खाना अच्छा लगता हो।

पु० १ राक्षस। २ डोम कौआ। द्रोण काक।

पललाशय—पु० [सं० पलल-आ√शी (सोना)+अच्] गलगंड या घेघा नामक रोग।

पलव—पु० [सं०√पल्+अच्, पल√वा (हिंसा)+क] १ मछलियाँ फँसाने का एक तरह का बाँस की खपाचियो का बना हुआ झाबा। २ मछलियाँ पकड़ने का जाल।

पलवल†—स्त्री० [?] १. पारस्परिक आत्मीयता या घनिष्ठता। २. सामंजस्य।

मुहा०—पलवल मिलाना=किसी प्रकार की संगति या सामंजस्य स्थापित करना।

†पु०=परवल।

पलवा†—पु० [सं० पल्लव] १ ऊख के पौधे की ऊपरी कुछ पोरें जो प्रायः कम मीठी या फीकी होती हैं। अगौरा। कौंचा। २. पंजाब के कुछ प्रदेशो मे होनेवाली एक घास जिसे भैंसे चाव से खाती हैं। ३ अंजलि। चुल्लू।

पलवान—पुं०=पलवा (घास)।

पलवाना—स० [हिं० पालना] १. किसी को पालने मे प्रवृत्त करना। २ किसी से पालन कराना। पालन करने के लिए प्रवृत्त करना।

पलवार—पु० [हिं० पल्लव] कुछ विशिष्ट जातियो के ऊख के गड्डों मे अँखुएँ निकलने पर उन्हे बबूल के काँटो, अरहर के डंठलो आदि से ढकने की एक रीति।

पु० [हिं० पाल+वार (प्रत्य०)] पाल आदि की सहायता से चलनेवाली एक प्रकार की बड़ी नाव जिस पर माल लादा जाता है। पटैला।

पलवारी—पु० [हिं० पलवार] नाविक। मल्लाह।

पलवाल—वि० [सं० पल=मांस+वाल (प्रत्य०)] १ मांस-भक्षी। २ हृष्ट-पुष्ट।

पलवैया†—वि० [हिं० पालन+वैया (प्रत्य०)] पालन-पोषण करनेवाला।

वि० [हिं० पलवाना] पालन-पोषण करनेवाला।

पलस्तर—पु० [सं० प्लास्टर] १ मजबूती तथा सुरक्षा के लिए दीवारो, छतों आदि पर किया जानेवाला बरी, बालू, सीमेंट अथवा मिट्टी का मोटा लेप।

मुहा०—(किसी का) पलस्तर ढीला होना या बिगड़ना=कष्ट, रोग आदि के कारण बहुत-कुछ जर्जर या शिथिल होना।

२ किसी चीज के ऊपर लगाया जानेवाला कोई मोटा लेप। जैसे—शरीर के व्रण अंग पर लगाया जानेवाला औषध या पलस्तर।

पलस्तरकारी—स्त्री० [हिं० पलस्तर+फा० कारी] १ दीवारो, छतों आदि पर पलस्तर करने की क्रिया या भाव।

पलहना*—अ०=पलुहना (पल्लवित होना)।

स० पल्लवित करना।

पलहा*—पु० [सं० पल्लव] नया हरा पत्ता। कोंपल।

पलाँग—स्त्री०=फलाँग (छलाँग)।

पलांग—पु० [सं० पल-अंग, ब० स०] सूँस। शिशुमार।

पलांडु—पु० [सं० पल-अण्ड, ष० त०, पलाण्ड+क्विप्+कु] प्याज।

पला—स्त्री० [सं० पल] पल। निमिष।

†पु० [हिं० 'पली' का पु०] बड़ी पली।

†पु०=पल्ला।

पलाग्नि—पु० [सं० पल-अग्नि, ष० त०] पित्त।

पलाण—पु०=पलान।

पलातक—वि० [सं० पलायन] भगोड़ा।

पु० १. वह किसान जो अपना खेत छोड़कर भाग गया हो। २. वह जो अपना उत्तरदायित्व, कार्य, पद आदि छोड़कर भाग गया हो।

पलाद, पलादन—पु० [सं० पल√अद् (खाना)+अण्] [सं० पल-अदन, ब० स०] राक्षस।

पलान—पु० [फा० पालान] १. सवारी करने से पहले घोड़े, टट्टू आदि की पीठ पर डाला जानेवाला टाट या कोई और मोटा कपड़ा जिसे रस्सी आदि से कस दिया जाता है। २. काठी। जीन।

†पु०=पलान।

पलानना—स०[हिं० पलान+ना (प्रत्य०)] १ घोड़े आदि पर पलान कसना या बाँधना। २. किसी पर चढ़ाई या धावा करने की तैयारी करना।

पलाना—अ०[स० पलायन] पलायन करना। भागना।

स० [हिं० पलान] घोड़े की पीठ पर काठी का पलान रखना।

पलानि*—स्त्री० =पलान।

पलानी—स्त्री०[हिं० पलान] १. पान के आकार का पैर के पंजों में पहनने का एक गहना। २ छप्पर।

स्त्री०=पलाव।

पलाव—पु० [सं० पल-अन्न, मध्य० स०] वह पुलाव जिसमे मांस की बोटियाँ मिली हों।

पलाप—पु० [स० पल√ आप् (प्राप्ति)+घञ्] हाथी का गंडस्थल।

†पु० दे० 'पगहा'।

पलायक—पु०[सं० परा√अय् (गति)+ण्वुल्—अक, लत्व] १ वह जो पकड़े जाने या दंडित होने के भय से भागकर कहीं चला गया या छिप गया हो। २ भागा हुआ वह व्यक्ति जिसे शासन पकड़ना चाहता हो। भगोड़ा। (एब्सकांडर) ३. वह जो वाद-विवाद, तर्क-वितर्क मे बराबर पीछे हट जाता हो।

पलायन—पुं०[स० परा√अय्+ल्युट्—अन, लत्व] १. भागने की क्रिया या भाव। भागना। २. आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्रों मे, यह तत्त्व कि सृष्टि का प्रत्येक प्राणी और प्रत्येक वनस्पति अपने वर्तमान रूप से असंतुष्ट होकर प्राकृतिक रूप से अथवा स्वभावत किसी न किसी प्रकार की उत्क्रान्ति या उन्नति अथवा विकास की ओर प्रवृत्त होता है। दार्शनिक दृष्टि से इसे सब प्रकार के बन्धनों और सीमाओं से मुक्त होकर अनंत और असीम ब्रह्म की ओर अग्रसर होने की प्रवृत्ति कह सकते है। कला, साहित्य आदि के क्षेत्रों मे प्राचीन के प्रति असंतोष और नवीन के प्रति उत्साह या उमंग की भावना इसी प्रवृत्ति के फलस्वरूप होती है।

पलायनवाद—पु० [ष०त०] आजकल का यह वाद या सिद्धांत कि संसार की सभी चीजें और बातें अपने प्रस्तुत रूप और स्थिति से विरक्त होकर किसी न किसी प्रकार की नवीनता और विशिष्टता की ओर प्रवृत्त होती रहती है। (एस्केपइज्म)

विशेष—इस वाद का मुख्य आशय यह है कि जो कुछ है, उससे ऊबकर हर एक चीज उसकी ओर बढ़ती है, जो नहीं है—यदास्ति से यन्नास्ति की ओर प्रवृत्त होती है। आधुनिक हिंदी क्षेत्र में छायावाद, निराशावाद आदि की जो प्रवृत्तियाँ दिखाई देती हैं, वे भी इसी पलायनवाद के फल के रूप मे मानी जाती है। कुछ लोग इसे एक प्रकार की विकृति भी मानते हैं।

पलायनवादी (दिन्)—वि०[स०पलायनवाद+इनि]पलायनवाद-संबंधी।

पु० वह जो पलायनवाद का सिद्धांत मानता हो या उसका अनुयायी हो।

पलायमान—वि०[स०परा√अय्+शानच्, मुक्, लत्व] जो भाग रहा हो। भागता हुआ।

पलायित—भू० कृ० [स० परा√ अय्+क्त, लत्व] जो कहीं भागकर चला गया हो।

पलायी (यिन्)—पु०[स० परा√अय्+णिनि, लत्व] पलायक। (दे०)

पलाल—पु०[स०√ पल् (रक्षा)+कालन्] १. धान का सूखा डंठल। पयाल। २. किसी पौधे या वनस्पति का सूखा डंठल।

पलाल-दोहद—पु०[ब०स०] आम का पेड़।

पलाला—स्त्री०[स० पल+आ √ला (लेना)+क+टाप्] उन सात राक्षसियों मे से एक जो छोटे बच्चों को रुग्ण कर देती है।

पलालि, पलाली—स्त्री० [स० पल-आलि, ष० त०] गोश्त या मांस की ढेरी।

पलाव—पु०[स० पल√अव् (हिंसा)+अच्] वह काँटा जिससे मछलियाँ फँसाई जाती हैं। बंसी।

पलाश—पु०[स०√ पल् (गति)+क, पल√अश् (व्याप्ति)+अण्] १ ऊँचे स्थानों विशेषत ऊसर तथा बालुका मिश्रित भूमि मे होनेवाला एक पेड़ जिसमे बसंत काल मे लाल रंग के फूल लगते हैं। इसके पत्तों की पत्तलें बनाई जाती है। ढाक। टेसू। २ उक्त वृक्ष का फूल। ३ पत्ता। पर्ण। ४ मगध देश का पुराना नाम। ५. हरा रंग। ६ कचूर। ७ शासन। ८ परिभाषण। ९ बिदारी कंद।

वि०[स० पल√अश् (खाना) +अण्]१ मांसाहारी। २. कठोर-हृदय। निर्दय।

पु० १ राक्षस। २ एक प्रकार का मांसाहारी पक्षी।

पलाशक—पु०[स० पलाश+कन्]१ पलास का पेड़ और फूल। ढाक। टेसू। २. कपूर। ३ लाख। लाक्षा।

पलाशगंधजा—स्त्री०[स० पलाश-गंध, ष०त०, √जन्(उत्पन्न होना)+ड+टाप्] एक प्रकार का वंशलोचन।

पलाशच्छदन—पु०[स० ब०स०] तमालपत्र।

पलाशतरुज—पु०[स० पलाश-तरु,ष०त०, √जन्+ड]पलाश की कोंपल।

पलाशन—पु०[स० पल-अशन, ब०स०] मैना। सारिका।

पलाशपर्णी—स्त्री०[स० पलाश-पर्ण, ब०स०, ङीष्] अश्वगंधा। असगंध।

पलाशांता—स्त्री०[स० पलाश-अंत, ब० स०, टाप्] बनकचूर।

पलाशाख्य—पु० [स० पलाश-आख्या, ब०स०] नाड़ी हींग।

पलाशिका—स्त्री० [स० पलाश+कन्+टाप्, ह्रस्व] एक लता जो वृक्षों पर भी चढ़ती है।

पलाशी (शिन्)—वि० [स० पलाश+इनि] १. मांस खानेवाला। मांसाहारी। २ पत्तों से युक्त। जिसमे पत्ते हों।

पु०[पल√अश् (खाना)+णिनि] राक्षस।

पलाशी—स्त्री०[स० पलाश+ङीष्] १. क्षीरिका। खिरनी। २ कचूर। ३ कचरी। ४ लाख।

पलाशीय—वि०[स० पलाश+छ—ईय] (वृक्ष) जिसमे पत्ते लगे हों। पत्तोंवाला।

पलास—पु०[स० पलाश]१. एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसमे गहरे लाल रंग के अर्द्धचंद्राकार फूल लगते हैं, इसके सूखे लचीले पत्तों के दोने, पत्तलें, बीड़ियाँ आदि और रेशों से रस्सियाँ, दरियाँ आदि बनाई जाती हैं। इसकी फलियाँ औषध के काम आती हैं। टेसू। ढाक। २. उक्त वृक्ष का फूल। ३ गिद्ध की जाति का एक मांसाहारी पक्षी।

पलासना—स०[देश०] नये बनाये हुए जूतों मे फालतू बढ़े हुए चमड़े के अंशों को काटना और इस प्रकार जूता सुडौल बनाना। (मोची)

पलास पापड़ा—पु॰[हिं॰ पलास+पापड़ा] [स्त्री॰ अल्पा॰ पलास पपड़ी] पलास की फलियाँ जिसका उपयोग दवा के रूप मे किया जाता है।

पलिंजी—स्त्री॰[देश॰] एक प्रकार की घास जिसके दाने पक्षी तथा निर्धन लोग खाते हैं।

पलिक—वि॰[स॰ पल+ठन्—इक] १ पल-संबंधी। २ जो तौल मे एक पल हो।

पलिका—पु॰=पलका।

स्त्री॰[?] एक तरह का ऊनी कालीन।

पु॰=पलका (पलग)।

पलिक्नी—स्त्री॰[स॰ पलित+क्न, ङीप्]१. वह बूढ़ी स्त्री जिसके बाल पक गये हो। सफेद या पके हुए बालोवाली स्त्री। २. ऐसी गौ जो पहली बार गाभिन हुई हो। बाल-गर्भिणी।

पलिघ—स्त्री॰ [स॰=परिघ, लत्व] १. काँच का घड़ा। कराबा। २. उक्त के आधार पर, शीशे आदि की वह बोतल जो चमड़े, टीन आदि से मढ़ी रहती है तथा जिसमे यात्रा के समय लोग पानी, शराब आदि रखकर चलते है। (थर्मस) ३. घड़ा। मटका। ४. चहार-दीवारी। प्राचीर। ५ गाय बाँधने का घर। गो-गृह। ६ फाटक। ७. अर्गल। अगरी।

पलितकरण—वि॰ [स॰पलित+च्वि, √ कृ (करना)+ख्युन्—अन, मुम्] (बाल आदि) पकाने या सफेद करनेवाला।

पलित—वि॰[स॰ √ पल्+क्त] [स्त्री॰ पलिता] १ वृद्ध। बुड्ढा। २ पका हुआ या सफेद (बाल)।

पु॰१ सिर के बालो का पकना या सफेद होना। २ असमय मे बाल पकने का एक रोग। ३ गरमी। ताप। ४ छरीला नामक वनस्पति। ५ कीचड। ६ गुग्गल। ७. मिर्च।

पलिती (तिन्)—पु॰[स॰पलित+इनि] पलित रोग से पीड़ित व्यक्ति। वह जिसके बाल पक गये हो।

पलिया—पु॰[देश॰] एक रोग जिसमे पशुओं का गला सूज आता है।

पलिहर—पु॰[स॰ परिहर=छोड देना] ऐसा खेत जिसमे भदई और अगहनी फसलो की बोआई न की गई हो और इस प्रकार उन्हे परती छोड दिया गया हो। ऐसे खेत मे चैती फसल की बोआई होती है।

पली—स्त्री॰[स॰ पलिघ]१. तेल नापने की एक तरह की एक छोटी गहरी कटोरी।

मुहा॰—**पली पली जोड़ना**=थोड़ा-थोड़ा करके सगृहीत करना।

२ उक्त मे भरे हुए तेल या किसी और पदार्थ की मात्रा।

पलीत—वि॰, पु॰=पलीद।

पलीता—पु॰[फा॰ फतील: या फलीता (अशुद्ध किंतु उर्दू मे प्रचलित रूप)] [स्त्री॰ अल्पा॰ पलीती]१ चिराग की बत्ती। २ बत्ती के आकार का बारूद लगा हुआ एक छोटा डोरा जो पटाखों आदि मे लगा रहता है, और जिसके सुलगाये जाने पर पटाखा चलता है।

मुहा॰—**पलीता लगाना**=ऐसी बात कहना जिससे लोग परस्पर झगड़ने या लड़ने-भिड़ने लग जायँ।

३. नारियल, बट आदि की छाल या रेशों को कूट और बटकर बनाई हुई वह बत्ती जिससे बंदूक या तोप के रंजक में आग लगाई जाती है।

क्रि॰ प्र॰—दागना।—देना।—लगाना।

मुहा॰—**पलीता चढ़ाना**=तोप या बदूक मे उक्त प्रकार का पलीता रखकर जलाना।

४ बत्ती के आकार में लपेटा हुआ वह कागज जिस पर कोई मंत्र लिखा हो। यह प्राय. भूत-प्रेत आदि की बाधा दूर करने के लिए टोने के रूप में जलाया जाता है।

क्रि॰ प्र॰—जलाना।

पलीती—स्त्री॰[हिं॰ पलीता] छोटा पलीता।

पलीद—वि॰[फा॰ मि॰ स॰ प्रेत [भाव॰ पलीदी] १. अपवित्र। अशुचि। २ गदा। ३ घृणास्पद। ४ दुष्ट। नीच। ५. बहुत ही घृणित आचरण तथा विचारवाला।

पु॰ प्रेत। भूत।

पलुआ—पु॰[देश॰] सन की जाति का एक पौधा।

†वि॰ [हिं॰ पालना] पाला हुआ।

पलुटाना—स॰ [हिं॰ पलोटना का प्रे॰] (पैर) पलोटने का काम दूसरे से कराना। (पैर) दबवाना।

पलुवा†—पु॰, वि॰=पलुआ।

पलुहना—अ॰[सं॰ पल्लव]१ पौधे, वृक्ष आदि का पल्लवित होना। २. हरा होना। ३ व्यक्ति के सबध मे फूलना-फलना और उन्नति करना।

पलुहाना—स॰[हिं॰ पलुहना] पल्लवित करना।

अ॰= पलुहना।

पलूचना—स॰=पलना।

पलेट—स्त्री॰[अ॰ प्लेट]१. तश्तरी। रकाबी। २ कपड़े की वह लबी पट्टी जो प्राय. जनाने और बच्चो के पहनने के कपड़ो मे सुन्दरता लाने या कुछ विशिष्ट अशो को कड़ा करने के लिए लगाई जाती है। पट्टी।

पलेटन—पु॰[अ॰ प्लेटेन] छापे के यत्र मे लोहे का वह चिपटा या वर्तुलाकार भाग जिसके दबाव से कागज आदि पर अक्षर छपते हैं।

पलेटना—स॰=लपेटना।

पलेड़ना—स॰[स॰ प्रेरण] धक्का देना। ढकेलना।

पलेथन—पु॰[स॰ परिस्तरण=लपेटना] १ वह सूखा आटा जिसे रोटी बेलने के समय पाटे या बेलन पर इसलिए बिखेरते है कि गीला आटा हाथ मे या बेलन आदि मे चिपकने न पावे। परथन।

क्रि॰ प्र॰—लगाना।

मुहा॰—**(किसी का) पलेथन निकालना**=(क) बहुत अधिक मार-पीटकर अधमरा करना। (ख) बहुत अधिक परेशान करना।

२. किसी बडे व्यय या हानि के बाद तथा उसके फलस्वरूप होनेवाला अतिरिक्त व्यय। जैसे—तुम्हारे फेर मे पचासो रुपयो की हानि तो हुई ही, आने-जाने में पाँच रुपया और पलेथन लग गया।

क्रि॰ प्र॰—लगना।

पलेनर—पु॰[अ॰ प्लेन]काठ का वह छोटा चिपटा टुकड़ा जिससे दबाकर किसी चीज का ऊपरी स्तर चौरस या बराबर किया जाता है। जैसे—छापेखाने में सीसे के अक्षर बराबर करने या दीवार के पलस्तर पर फेरने का पलेनर।

पलेवा—स॰[?] बोने के पूर्व खेत सींचना।

†पु॰=पलेनर।

पलेव—पुं०[देश०] १. पलिहर खेत मे बैती की फसल बोने से पहले की जानेवाली सिंचाई। २ जूस। रसा। शोरबा।

पलेहड़ा—पु०[हिं० पानी+आला=स्थान] १. पानी के घडे आदि रखने का चबूतरा या चौखटा। २. पानी का घडा या मटका।

पलोटना—स०[सं० प्रलोठन] १ सेवा-भाव से किसी के पैर दबाना। २ सेवा करना।

अ०=लोटना।

अ०=पलटना।

पलोथन†—पुं०=पलेथन।

पलोवना†—स०[स० प्रलोठन]१. सेवा-भाव से किसी के पैर दबाना। २ किसी को प्रसन्न करने के लिए मीठी-मीठी बातें कहना या तरह तरह के उपाय करना।

पलोसना—स० [स० स्पर्श ? हि० परसना]१ धोना। २ अपना काम निकालने के लिए मीठी-मीठी बातें करके किसी को अपने अनुकूल करना।

पलौ*—पु०=पल्लव।

पलौठा†—वि० =पहलौठा।

पल्टन—स्त्री० =पलटन।

पल्टा†—पु०=पलटा।

पल्थी†—स्त्री०=पलथी।

पल्यंक—पु०=पर्यंक (पलग)।

पल्ययन—पु० [स० परि√ अय् (गति)+ल्युट्—अन, लत्व] घोडे के पीठ पर बिछाई जानेवाली गद्दी। पलान।

पल्ल—पु० [स० पाद्√ ला (लेना)+क, पद्—आदेश] १ वह आगार जिसमे अन्न सचित करके रखा जाता है। बखार। २ फल आदि पकाने के लिए विशिष्ट प्रकार से उन्हें रखने का ढग या युक्ति। पाल।

पल्लड़—पु०[हिं० पल्ला?] झुड। समूह। उदा०—पूर्व की ओर से अधकार के पल्लड के पल्लड नदी के स्वर्णरेखा पर मानो आवरण डालनेवाले थे। —वृदावनलाल वर्मा।

पल्लव—पु० [स०√पल्+क्विप्, √लू+अप्, पल्—लव, कर्म० स०] १ पौधे, वृक्ष आदि का कोमल, छोटा तथा नया पत्ता पत्ते की तरह की आगे की ओर निकली हुई। चिपटी गोलाकार चीज। जैसे—कर पल्लव। ३ गले मे पहनने का एक तरह का कोई आभूषण जो पत्ते के आकार का होता है। ४. एक तरह का कगन। ५ नृत्य मे हाथ का एक विशिष्ट प्रकार की मुद्रा। ६ बल। शक्ति। ७ चचलता। ८ आल का रग। ९. पहने जानेवाले वस्त्र का पल्ला। १० विस्तार। ११ पल्लव देश। १२. पल्लव देश का निवासी। १३. दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध राजवश जिसका राज्य किसी समय उडीसा से तुगभद्रा नदी तक था। वराहमिहिर के अनुसार इस वश के लोग पहिले दक्षिण-पश्चिम बसते थे। अशोक के समय मे गुजरात मे इनका राज्य था।

पल्लवक—पु० [स० पल्लव√कै (चमकना)+क]१ वेश्यागामी २. किसी वेश्या का प्रेमी। ३ अशोक (वृक्ष)। ४. नया हरा पत्ता। पल्लव। ५ एक तरह की मछली।

पल्लव ग्राहिता—स्त्री० [स० पल्लवग्राहिन्+तल्+टाप्] पल्लवग्राही होने की अवस्था या भाव।

पल्लवग्राही (हिन्)—पु० [स० पल्लव√ग्रह् (ग्रहण करना)+णिनि] वह जिसने किसी विषय की ऊपरी या बाहरी छोटी-मोटी बातो का ही सामान्य ज्ञान प्राप्त किया हो। किसी विषय को स्थूल रूप से जाननेवाला।

पल्लव-द्रु—पु०[स० मध्य०स०] अशोक (वृक्ष)।

पल्लवना—अ० [स० पल्लव+हि०ना (प्रत्य०)] १. पौधो, वृक्षो आदि मे नये नये पत्ते निकलना। पल्लवित होना। २. व्यक्तियो का फलना-फूलना और उन्नत अवस्था को प्राप्त होना।

स० पल्लवित करना। पनपाना।

पल्लवाद—पु० [स० पल्लव√अद् (खाना)+अण्] हिरन।

पल्लवाधार—पु०[स० पल्लव-आधार, ष० त०] डाली या शाखा जिसमे पत्ते लगते हैं।

पल्लवास्त्र—पु०[स० पल्लव-अस्त्र, ब० स०] कामदेव।

पल्लविक—पु०=पल्लवक।

पल्लवित—भू०कृ०[सं० पल्लव+इतच्] १ (पेड या पौधा) जो नये नये पत्तो से युक्त हुआ हो अथवा जिसमे नये-नये पत्ते निकल रहे हों। २. हरा-भरा तथा लहलहाता हुआ। ३ जिसे नई-नई चीजो, रचनाओं आदि से युक्त किया गया हो और इस प्रकार उसका अभिवर्द्धन तथा विकास हुआ हो। जैसे— लेखक अपनी रचनाओं से साहित्य का पल्लवित करते हैं। ३ लाख के रग मे रगा हुआ। ४ जिसे रोमाच हुआ हो। रोमाचित।

पल्लवी (विन्)—वि०[स० पल्लव+इनि] जिसमे पल्लव हों। पत्तों से युक्त।

पु० पेड। वक्ष।

पल्ला—पु० [स० पल्लव -कपडे का छोर] १ ओढे या पहने हुए कपडे का अतिम विस्तार। आँचल। छोर। जैसे—धोती या चादर का पल्ला। मुहा०—**(किसी से) पल्ला छूटना** - पीछा छूटना। छुटकारा मिलना। जैसे—चलो, किसी तरह इस दुष्ट से पल्ला छूटा। **पल्ला छुड़ाना** - बचाव या रक्षा करने के लिए किसी की पकड या बधन से निकलना। जैसे—तुम तो पल्ला छुडाकर भागे, पर पकड गए हम। **(किसी का) पल्ला पकड़ना** = रक्षा, सहायता, स्वार्थ-साधन आदि के लिए किसी को पकडना या उसके साथ होना। जैसे—उसने एक भले आदमी का पल्ला पकड लिया था, इसी लिए उसकी जिदगी अच्छी तरह बीत गई। **(किसी का) पल्ला पकडना**- किसी को किसी की अधीनता, सरक्षण आदि मे रखना। **(किसी के आगे या सामने) पल्ला पसारना या फैलाना**=अनुग्रह, भिक्षा आदि के रूप मे किसी से प्रार्थी होना। **पल्ले पडना** = (प्राय तुच्छ, हेय या भार स्वरूप वस्तु का) प्राप्त होना या मिलना। जैसे—यह बदनामी हमारे पल्ले पडी। **(लड़की या स्त्री का किसी के) पल्ले बंधना**-विवाह आदि के द्वारा किसी की पत्नी बनकर उसके साथ रहना या होना, किसी के जिम्मे होना। **(अपने) पल्ले बाँधना**=अधिकार सरक्षण आदि मे लेना। **(किसी के) पल्ले बाँधना** = (क) किसी के अधिकार, सरक्षण आदि मे देना। जिम्मे करना। सौपना। (ख) लडकियो, स्त्रियो आदि के सबध मे, किसी के साथ विवाह कर देना। **(बात को) पल्ले बाँधना**=बहुत अच्छी तरह से उसे स्मरण रखना तथा उसके अनुसार आचरण करना।

२. स्त्रियों की ओढ़नी चादर, साड़ी आदि का वह अंश जो उनके सिर पर रहता है और जिसे खींचकर वे घूँघट करती हैं।

मुहा०—(किसी से) पल्ला करना=पर-पुरुष के सामने स्त्री का घूँघट करना। पल्ला लेना= मुँह पर घूँघट करके और सिर झुकाकर किसी मृतक के शोक मे रोना।

३. अनाज आदि बाँधने का कपड़ा या चादर। ४ अपेक्षया अधिक दूरी या विस्तार। जैसे—(क) कोसों के पल्ले तक मैदान ही मैदान दिखाई देता था। (ख) उनका मकान यहाँ से मील भर के पल्ले पर है।

पु०[फा० पल्ल]१. तराजू की डंडी के दोनो सिरो पर रस्सियों, शृंखलाओ आदि की सहायता से लटकनेवाली दोनो आधारों या पात्रो मे से हर एक जिसमे से एक पर बटखरे रखे जाते हैं और दूसरी पर तौली जानेवाली वस्तु। २. कुछ विशिष्ट वस्तुओ के दो विभिन्न परन्तु प्रायः समान आकार-प्रकारवाले अवयवों या खंडो मे से हर एक। जैसे—(क) दरवाजे का पल्ला। (ख) कैंची का पल्ला। (ग) दुपलिया टोपी का पल्ला। ३ बराबर के दो प्रतियोगी या विरोधी पक्षो मे से हर एक।

मुहा०—पल्ला दबना=पक्ष कमजोर या हलका पड़ना। पल्ला भारी होना= पक्ष प्रबल या बलवान होना।

४ ओर। तरफ। दिशा। ५. पहल। पार्श्व।

पु० [स० पल?] तीन मन का बोझ।

पद—पल्लेदार। (दे०)

†वि०=परला (उस ओर का)।

पल्लि—स्त्री०=पल्ली।

पल्लिका—स्त्री०[स० पल्लि+कन्+टाप्] छोटा गाँव। छोटी बस्ती।

पल्लिवाह—पु०[स० पल्लि√वह् (ढोना)+अण्] लाल रग की एक प्रकार की घास।

पल्ली—स्त्री० [सं० पल्लि+ङीष्] १ छोटा गाँव। पुरवा। खेड़ा। २. कुटी। झोंपड़ी। ३. छिपकली।

पल्लू—पु० [हि० पल्ला] १. आँचल। छोर। २. स्त्रियो का घूँघट। ३. चौड़ी गोट या पट्टी।

पल्ले—अव्य०[हि० पल्ला] प्राप्ति, स्थिति आदि के विचार से अधिकार, वश या स्वत्व मे। पास या हाथ मे। जैसे—उसके पल्ले क्या रखा है? अर्थात् उसके पास कुछ भी नहीं है।

†पु०=प्रलय।

पल्लेदार—वि०[हि० पल्ला+फा० दार]१. जिसमे पल्ले लगे हुए हों। २. (आवाज या स्वर) जो अपेक्षाकृत अधिक ऊँचा, अधिक विस्तृत या अधिक जोरदार हो।

पद—पल्लेदार आवाज=ऐसी ऊँची आवाज जो दूर तक पहुँचती हो।

पु०[हि० पल्ला+फा० दार] [भाव० पल्लेदारी] १ वह जो गल्ले के बाजार मे दूकानों पर अनाज तौलने का काम करता है। बया। २. अनाज ढोनेवाला मजदूर।

पल्लेदारी—स्त्री० [हि० पल्लेदार+ई (प्रत्य०)] पल्लेदार का काम, पद, भाव या मजदूरी।

पल्लौ†—पुं० १. =पल्लव। २.=पल्ला।

पल्वल—पु०[स० √पल्+वल्] छोटा जलाशय।

पल्वलावास—पु०[स० पल्वल-आवास, ब० स०] कछुआ।

पल्हवना—अ०स०=पलुहना।

पवंग—पु०[स० प्लवंग]१. बंदर। २. हिरन। ३. घोड़ा। (डिं०)

पवँरि (री)—स्त्री० =पँवरी (ड्योढ़ी)।

पव—पुं० [स०√ पू (पवित्र करना)+अप्] १. गोबर। २. वायु। हवा। ३ अनाज की भूसी अलग करना। अनाज ओसाना या बरसाना।

†पु०=पौ।

पवई—स्त्री०[देश०] खाकी रग की एक चिड़िया जिसका निचला भाग सँरे रग का और चोंच पीली होती है।

पवन—पुं०[स०√पू (पवित्र करना)+ युच्—अन] १. वायु। हवा। २. विशेषत' वायु की वह हलकी धारा जो पृथ्वी के प्राणियो के आस-पास रहकर कभी कुछ तेज और कभी कुछ धीमी चलती है और जिसका ज्ञान हमारी स्पर्शेंद्रिय को होता है। (विंड)

विशेष—हमारे यहाँ पुराणो मे ४९ प्रकार के पवन कहे गये है। परन्तु लोक मे पवन उसी अर्थ मे प्रचलित है जो ऊपर बतलाया गया है।

३. हवा की सहायता से अनाज के दाने में से भूसा अलग करना। ओसाना। बरसाना। ४. श्वास। साँस।

मुहा०—पवन का भूसा होना=उसी प्रकार अदृश्य या नष्ट हो जाना जिस प्रकार हवा मे भूसा उड जाता है। ५ प्राण-वायु। ६ जल। पानी। ७ कुम्हार का आँवा। ८. विष्णु। ९ पुराणानुसार उत्तम मनु के एक पुत्र का नाम। १०. रहस्य सप्रदाय मे, प्राणायाम। उदा०—आसनु पवनु दूरि कर बवरे।—कबीर।

पवन-अस्त्र—पुं०=पवनास्त्र।

पवन-कुमार—पु० [ष०त०]१. हनुमान। २. भीमसेन।

पवनचक्की—स्त्री०[स० पवन+हि० चक्की] पवन के वेग से चलनेवाली चक्की। (विंडमिल)

विशेष—ऐसी चक्की मे ऊपर के ढाँचे मे बडा सा पखेदार चक्कर लगा रहता है। यह चक्कर हवा के जोर से घूमता है जिससे नीचे की चक्की का यंत्र चलने लगता है।

पवन-चक्र—पु०[ष०त०] चक्कर खाती हुई चलनेवाली जोर की हवा। चक्रवात। बवंडर।

पवनज—वि०[स० पवन√ जन्+ड] जो पवन से उत्पन्न हुआ हो। पु०१ हनुमान। २. भीमसेन।

पवन-तनय—पु०[ष०त०] १ हनुमान। २. भीमसेन।

पवन-नन्द—पु०[ष० त०] पवन-पुत्र। (दे०)

पवन-नन्दन—पु०[स० ष०त०]=पवन-तनय।

पवन-परीक्षा—स्त्री० [ष०त०]१ अषाढ शुक्ल पूर्णिमा को होनेवाली ज्योतिषियों की एक क्रिया जिसमे वायु की गति आदि की जाँच करके ऋतु-संबंधी विशेषतः वर्षा संबंधी भविष्य का ज्ञान प्राप्त किया जाता है। (कुछ स्थानों मे देहातो मे इस दिन मेले लगते हैं।) २ वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वायु की गति किस दिशा की ओर है। हवा देखना।

पवन-पुत्र—पु०[ष०त०] १. हनुमान। २. भीमसेन।

पवन-पूत—पु०=पवन-पुत्र।

पवन-प्रचार—पु०[सं०] एक प्रकार का यत्र जो यह सूचित करता है कि वायु का प्रवाह किस दिशा मे हो रहा है।

पवन-भट्ठी—स्त्री० [स० पवन+हिं० भट्ठी] धातुएँ आदि गलाने की एक विशेष प्रकार की आधुनिक यांत्रिक भट्ठी जिसमे नीचे से हवा पहुँचाकर आँच तेज की जाती है। (विड फर्नेस)

पवन-बाण—पु०[मध्य०स०]वह बाण जिसके चलाये जाने पर पवन का वेग बहुत अधिक बढ़ जाता था। (पुराण)

पवन-वाहन—पु०[ब०स०] अग्नि।

पवन-व्याधि—स्त्री०[ष०त०] वायु रोग।
पु०[ब०स०] श्रीकृष्ण के सखा उद्धव।

पवन-संघात—पु०[ष०त०] किसी विशिष्ट स्थान पर दो विभिन्न दिशाओ से पवनो का एक साथ आना तथा परस्पर टकराना जो पुराणानुसार अकाल, शत्रुओ के आक्रमण आदि अशुभ लक्षणो का सूचक माना गया है।

पवन-सुत—पु०[ष०त०]१ हनुमान। २ भीमसेन।

पवना—पु०[स्त्री० पवनी] पौना (झरना)।

पवनात्मज—पु० [स० पवन-आत्मज, ष०त०] १ हनुमान। २ भीमसेन। ३. अग्नि।

पवनाश—पु०[स० पवन√ अश् (खाना)+अण्] साँप।

पवनाशन—पु०[स० पवन-अशन, ब० स०] साँप।

पवनाशनाश—पु०[स० पवनाशन√ अश्+अण्]१ गरुड। २ मोर।

पवनाशी(शिन्)—वि० [स० पवन√अश्+णिनि] जो वायु पीकर जीता हो।
पु० साँप।

पवनास्त्र—पु० [स० पवन-अस्त्र, मध्य०स०] एक प्राचीन अस्त्र जिसके द्वारा वायु का वेग तीव्रतम किया जाता था। (पुराण)

पवनी—स्त्री०[स०√पू (पवित्र करना) +ल्युट्—अन, ङीप्] झाड़ू।
स्त्री०[हिं० पाना = प्राप्त करना] गाँव मे रहनेवाली वह प्रजा या कुछ जातियाँ जो अपने निर्वाह के लिए क्षत्रियो ब्राह्मणो अथवा गाँव के दूसरे रहनेवालो से नियमित रूप से कुछ नेग, पारिश्रमिक, पुरस्कार आदि के रूप मे अन्न-धन पाती है। जैसे—कुम्हार, चमार, नाऊ, बारी, धोबी आदि।
स्त्री० हिं० 'पौना का स्त्री० अल्पा०।

पवनेष्ट—पु० [स० पवन-इष्ट, स० त०] बकायन।

पवनोबुज—पु० [स० पवन-अबुज उपमि० स०, पृषा० सिद्धि] फालसा।

पवमान—पु० [स०√पू+शानच्, मुक्—आगम]१ पवन। वायु। हवा। २. गार्हपत्य अग्नि। ३. चद्रमा। ४ अग्नि की पत्नी स्वाहा के गर्भ से उत्पन्न एक पुत्र का नाम। ५. एक प्रकार का स्तोत्र।

पवर—स्त्री०=पँवरी (ड्योढी)।

पवरिया†—पु०=पौरिया (१ द्वारपाल। २ मगल-गीत गानेवाला याचक)।

पवरी—स्त्री०=पँवरी (ड्योढी)।

पवर्ग—पु० [स० ष०त०] व्याकरण मे प, फ, ब, भ और म इन पाँच अक्षरो या वर्णो की सामूहिक सज्ञा। ये सभी ओष्ठ्य तथा स्पर्श हैं, किन्तु प, फ अघोष और ब, भ, म घोष है तथा प, ब, म अल्पप्राण और फ, भ महाप्राण हैं।

पवाँड़ा†—पु०=पँवाड़ा।

पवाँर—पु०[देश०] पमार। चकवड़।
†पु०=प्रमार।

पवाँरना—स०=पँवारना (फेंकना)।

पवाँरी—स्त्री[?] लोहा छेदने का लोहारो का एक औजार।

पवाई—स्त्री०[हिं० पाँव] १ जूतो की जोडी मे से प्रत्येक जूता। २ चक्की के दोनो पाटो मे से प्रत्येक पाट।

पवाका—स्त्री०[स०√पू+आक—टाप्] चक्रवात। बवडर।

पवाड़—पु०[देश०] चकवँड।

पवाड़ा—पु० [मरा० पवाड (कीर्ति, महत्त्व), अथवा स० प्रवाद?] १. मराठी भाषा का एक प्रसिद्ध लोक छद जिसमे प्राय किसी बहुत बड़े या वीर पुरुष की कीर्ति, गुण, पराक्रम आदि का प्रशसात्मक वर्णन होता था। २. मध्य-युगीन राजस्थान मे वह लोककाव्य जिसे परवर्ती चारणो ने विरुदावली शैली के समस्त तत्त्वो से युक्त करके प्रचलित किया था और जो प्राय लोकगीत के रूप मे गाया जाता था। ब्रज मे इसी को 'पमारा' और मालवे मे 'पंवारा' कहते है। ३ किसी काम या बात का ऐसा व्यर्थ विस्तार जिसमे झगडे-झमेले की बहुत-सी बाते हो, और इसी-लिए जिनसे सहज मे जी ऊब जाय।

पवाना—स०[हिं० पाना का प्रे० रूप]१ प्राप्त करना। २ खिलाना।

पवार†—पु०=परमार (राजपूतो की एक जाति)।

पवि—पु०[स०√पू+इ] १ वज्र। २ वाण अथवा वाण की नोक। ३ वाणी। ४ वाक्य। ५ अग्नि। ६ थूहर। सेहुँड। ६ मार्ग। रास्ता। (डि०)

पवित†—वि०[स०] पवित्र।
पु० मिर्च।

पवितार्इ†—स्त्री०=पवित्रता।

पवित्तर†—वि० =पवित्र।

पवित्र—वि०[स०√ पू +इत्र] [भाव० पवित्रता]१. (पदार्थ) जो धार्मिक उपचारो से इस प्रकार शुद्ध किया गया हो अथवा स्वत अपने गुणो के कारण इतना अधिक शुद्ध माना जाता हो कि पूजा-पाठ, यज्ञ-होम आदि मे काम मे लाया या बरता जा सके। जैसे—पवित्र अग्नि, पवित्र जल। ३ (व्यक्ति) जो निश्छल, धार्मिक तथा सद्वृत्तिवाला होने के कारण पूज्य, मान्य तथा श्रद्धा का पात्र हो। जैसे—पवित्रात्मा। ३ (विचार) जो शुद्ध अत करण से सोचा गया हो और जिसमे किसी प्रकार का मल या विकार न हो। ४. साफ। स्वच्छ। निर्मल। ५ दाग, पाप आदि मे रहित।
पु०१. वह वस्तु या साधन जिससे कोई चीज निर्दोष, निर्मल या स्वच्छ की जाय। २ कुश या कुशा जिससे घी, जल आदि छिड़ककर चीजे पवित्र की जाती है। ३ कुश का वह छल्ला जो तर्पण, श्रद्धा आदि के समय उँगलियो मे पहना जाता है। पविती। पैंती। ४. यज्ञोपवीत। जनेऊ। ५ ताँबा। ६. मेह। वर्षा। ७. जल। पानी। ८. दूध। ९. घी। १० अर्घ्य देने का पात्र। ११. अरघा। १२ मधु।

छहुव। १३. विष्णु। १४. शिव। १५. कार्तिकेय। १६ तिल का पौधा। १७ पुत्र-जीवी नामक वृक्ष। १७. घर्षण। रगड।

पवित्रक—पु०[स० पवित्र√कै+क] १. कुशा। २ दौना (पौधा)। ३ गूलर का पेड। ४ पीपल। ५. क्षत्रियों का यज्ञोपवीत।

पवित्रता—स्त्री०[स० पवित्र+तल्+टाप्] पवित्र होने की अवस्था या भाव।

पवित्र-धान्य—पु०[कर्म०स०] जौ।

पवित्र-पाणि—वि०[ब०स०] जिसके हाथ मे कुश हो।

पवित्रवति—स्त्री०[स०] क्रौंच द्वीप मे होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति। (पुराण)

पवित्रा—स्त्री०[स० पवित्र+टाप्]१ तुलसी। २. हलदी। ३ पीपल। ४ श्रावण के शुक्ल पक्ष की एकादशी। ५ एक प्राचीन नदी। ६ रेशमी धागो से बने हुए मनको की एक तरह की माला।

पवित्रात्मा (त्मन्)—वि०[स० पवित्र-आत्मन्, ब० स०] जिसकी आत्मा पवित्र हो। शुद्ध तथा स्तुत्य आचरण और विचारवाला।

पवित्रारोपण—पु० [स० पवित्र-आरोपण, ष० त०] १ यज्ञोपवीत धारण करना। २ [ब० स०] श्रावण शुक्ला द्वादशी को भगवान श्रीकृष्ण का सोने, चाँदी, ताँबे या सूत आदि का यज्ञोपवीत पहनाने की एक रीति या उत्सव।

पवित्रारोहण—पु०। पवित्रारोपण। (दे०)

पवित्राश—पु०[स० पवित्र√ अश् (व्याप्ति)+अण्] सन का बना हुआ डोरा, जो प्राचीन भारत मे बहुत पवित्र माना जाता था।

पवित्रित—भू० कृ० [स० पवित्र+णिच्+क्त] पवित्र या शुद्ध किया हुआ।

पवित्री—वि०[स० पवित्र+ङीष्] पवित्र करने या बनानेवाला।
स्त्री० १ कुश का बना हुआ एक प्रकार का छल्ला जो कर्मकाड के समय अनामिका मे पहना जाता है। पैंती। २ सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

पविव—पु०[स०] एक प्राचीन ऋषि।

पवि-धर—वि०[स० ष०त०] वज्र धारण करनेवाला।
पु० इद्र।

पवीनव—पु०[स०] अथर्ववेद के अनुसार एक प्रकार के असुर जो स्त्रियो का गर्भ गिरा देते हैं।

पवीर—पु०[स०]१. हल की फाल। २ शस्त्र। हथियार। ३. वज्र। ४ हथियार।

पवेरना—स० [हि० पँवारना=फेंकना] [भाव० पवेरा] जोते हुए खेतो मे बीज छिडकना।

पवेरा—पु० [हि० पवेरना] खेतो में बीज छिडकने की क्रिया, ढग या भाव।

पव्य—पु० [सं०√पू+यत्] यज्ञ-पात्र।

पशम—स्त्री० [फा० पश्म] १. ऊन, विशेषत बढिया ऊन जिससे दुशाले, पशमीने आदि बनाये जाते हैं। २. पुरुष या स्त्री की मूत्रेंद्रिय पर के बाल।

मुहा०—**पशम उखाड़ना**=(क) झूठ-मूठ का काम करके व्यर्थ समय नष्ट करना। (व्यंग्य और हास्य) **पशम तक न उखाड़ना**=(क) कुछ भी काम न हो सकना। (ख) बहुत प्रयत्न करने पर भी कोई कष्ट या हानि न पहुँचा सकना। **पशम पर मारना या समझना**=बिलकुल तुच्छ या हीन समझना।

पशमीना—पु० [फा० पश्मीन·] १ पशम। २ पशम का बना हुआ बहुत बढिया या मुलायम कपडा।

पशव्य—वि० [स० पशु+यत्] १. पशु-सबधी। पशुओं का। २. पशुओ की तरह का। जानवरो का-सा। पाशव।
पु० पशुओ का झुड।

पशु—पु० [स०√दृश् (देखना)+कु, पशादेश] [भाव० पशुता, पशुत्व] १. चार पैरों से चलनेवाला कोई दुमदार जतु। जानवर। जतु। जैसे—ऊँट, घोडा, बैल, हाथी, कुत्ता, बिल्ली, आदि। २ प्राणधारी जीव। जतु। ३ वह जिसे कुछ भी ज्ञान या बुद्धि न हो, अथवा जिसमे सहृदयता का पूरा अभाव हो। ४ वह जिसका कोई धार्मिक सस्कार न हुआ हो। ५. परमात्मा। ६ ऐसा धार्मिक कृत्य जिसमे जानवर की बलि चढ़ाई जाती हो। ७ वह पशु जिसे बलि चढाते हो। ८ अग्नि। ९ शिव के अनुचर या गण।

पशुकर्म (कर्मन्)—पु० [ष० त०] १ यज्ञ आदि मे पशुओ का होनेवाला बलिदान। २ मैथुन।

पशुका—स्त्री० [स० पशु+कन्+टाप्] कोई छोटा पशु।

पशु-क्रिया—स्त्री० [ष० त०]=पशुकर्म।

पशु-गायत्री—स्त्री० [मध्य० स०] तत्र की रीति से बलिदान करने के समय बलि पशु के कान मे कहा जानेवाला एक प्रकार का मत्र।

पशुचर—पु० [स० पशु√चर्+ट] वह स्थान जो पशुओ के चरने-चराने के लिए सुरक्षित हो। गोचर भूमि। (पास्च्योर)

पशु-चर्या—स्त्री० [ष० त०] १ पशुओ के समान विवेकहीन आचरण। जानवरो की-सी चाल या व्यवहार। २ मैथुन।

पशु-चिकित्सक—पु० [स०] वह जो रोगी पशु, पक्षियो आदि की चिकित्सा करता हो। (वेटेरिनरी सर्जन)

पशु-चिकित्सा—स्त्री० [स०] चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा जिसमे पशु-पक्षियो आदि के रोगो के निदान और चिकित्सा का विवेचन होता है। (वेटेरिनरी)

पशुजीवी (विन्)—वि० [स० पशु√जीव् (जीना)+णिनि] १. पशुओ का मास खाकर जीनेवाला। २ वह जो पशुओ का पालन करके उनसे प्राप्त होनेवाली वस्तुओं से अपनी जीविका चलाता हो।

पशुता—स्त्री० [स० पशु+तल्+टाप्] १. पशु होने की अवस्था या भाव। २ पशुओ का-सा व्यवहार या स्वभाव। ३ वह गुण जिसके कारण किसी व्यक्ति की गिनती पशुओ मे की जाती हो।

पशुत्व—पु० [स० पशु+त्वल्] पशुता। (दे०)

पशुदा—स्त्री० [स० पशु√दा (देना)+क+टाप्] कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका देवी।

पशु-देवता—स्त्री० [मध्य० स०] वह देवता जिसके उद्देश्य से किसी पशु को बलि चढ़ाया जाय।

पशु-धन—पु० [मयू० स०] वे पालतू पशु जो किसी व्यक्ति, समाज या राज्य के आर्थिक उत्पादन, सुरक्षा आदि मे योग देते हो। (लिवस्टाक)

पशु-धर्म—पुं० [ष० त०] पशुओं का-सा आचरण या व्यवहार अर्थात् मनुष्यों के लिए निंद्य व्यवहार।

पशु-नाथ—पुं० [ष० त०] १ शिव। २. सिंह। शेर।

पशुनिरोधिका—स्त्री० [ष० त०] वह सरकारी या अर्द्ध सरकारी स्थान जहाँ पर लोगों के खुले तथा छूटे हुए पालतू पशु पकड़कर ले जाये जाते हैं। काजीहाउस। (कैटिलपाउंड)

पशुप—वि० [स० पशु√पा (रक्षा करना)+क] पशुओं का पालन करनेवाला या स्वामी।

पशुपताल्त्र—पुं० [स० पाशुपतास्त्र] महादेव का शूलास्त्र।

पशु-पति—पुं० [ष० त०] १ पशुओं का स्वामी। २ जीवमात्र का स्वामी अर्थात् ईश्वर या परमात्मा। ३ महादेव। शिव। ४ अग्नि। ५ ओषधि। दवा।

पशु-पल्वल—पुं० [ब० स०] कैवर्तमुस्तक। केवटी मोथा।

पशुपाल—वि० [स० पशु√पाल् (पोषण)+णिच्+अण्] पशुओं को पालनेवाला।

पुं० १ अहीर। ग्वाला। २. ईशान कोण का एक प्राचीन देश।

पशु-पालक—वि० [ष० त०] [स्त्री० पशुपालिका] पशुओं को पालनेवाला।

पशु-पालन—पुं० [ष० त०] जीविका-निर्वाह के लिए पशुओं का पालने की क्रिया या भाव। (एनिमल हस्बेंडरी)

पशु-पाश—पुं० [ष० त०] १. वह फंदा या रस्सी जिससे पशु विशेषत यज्ञ-पशु बाँधा जाता था। २ शैवदर्शन के अनुसार चार प्रकार के वे बंधन जिनमे सब जीव बंधे रहते है।

पशुपाशक—पुं० [स० पशुपाश √कै+क] एक प्रकार का रतिबंध। (काम-शास्त्र)

पशु-भाव—पुं० [ष० त०] १ पशुता। जानवरपन। २ तंत्र मे, मंत्रों आदि के तीन प्रकार के साधन-भेदों मे से एक।

पशु-यज्ञ—पुं० [मध्य० स०] ऐसा यज्ञ जिसमे पशु या पशुओं को बलि चढ़ाया जाय।

पशु-याग—पुं० [मध्य० स०] पशु-यज्ञ। (दे०)

पशु-रक्षण—पुं० [ष० त०] पशुपालन। (दे०)

पशु-रति—स्त्री० [स०] १ पशुओं की तरह की जानेवाली वह रति जो विशुद्ध काम-वासना की तृप्ति के लिए की जाती हो। २ पशु-वर्ग के किसी प्राणी के साथ मनुष्य द्वारा की जानेवाली रति। जैसे—पुरुष पक्ष मे, गौ या बकरी के साथ की जानेवाली रति, अथवा स्त्री पक्ष मे, कुत्ते के साथ की जानेवाली रति।

पशु-राज—पुं० [ष० त०] पशुओं के स्वामी, सिंह। शेर।

पशुलब—पुं० [स०] एक देश का प्राचीन नाम।

पशु-हरीतकी—स्त्री० [ष० त०] अम्रातक फल। आमड़े का फल।

पशू—पुं०=पशु।

पश्च—वि० [स० पश्चात्, पृषो० सिद्धि] [भाव० पश्चता] १ प्रस्तुत या वर्तमान से पहले का। पिछला। (बैक) जैसे—सामयिक पत्र का पश्च अंक। (बैक नम्बर) २. 'अग्र' का विपर्याय। जैसे—पश्चस्वर (बैक वावेल) आदि। ३. बाद का। परवर्त्ती। ४ पश्चिम का। पश्चिमी।

विशेष—'पश्च' और 'पश्चा' शब्द का प्रयोग वेद मे ही होता है। लौकिक संस्कृत मे इसका प्रयोग चिन्त्य है। फिर भी हिन्दी में इसके प्रयोग के चल पड़ने के कारण यहाँ इसके कुछ यौगिक शब्द रखे जा रहे हैं।

पश्च-गमन—पुं० [स० स० त०] १ पीछे की ओर चलना या हटना। 'अग्र-गमन' का विपर्याय। (रिग्रेशन) २ अवनति, दुरवस्था, ह्रास आदि की ओर प्रवृत्त होना। 'पुरोगमन' का विपर्याय। (रिट्रोग्रेशन)

पश्च-गामी (मिन्)—वि० [स० पश्च√गम् (जाना)+णिनि] १ पीछे की ओर चलना या हटता रहनेवाला। २ अवनति। दुरवस्था, ह्रास आदि की ओर प्रवृत्त रहनेवाला। 'पुरोगामी' का विपर्याय। (रिग्रेसिव)

पश्च-ज्ञान—पुं० [स० प० त०] विशिष्ट आत्मिक शक्ति की सहायता से इस जन्म या किसी पूर्व जन्म की ऐसी बीती हुई घटनाओं या बातों का होनेवाला ज्ञान जो कभी पहले जानी, देखी, पढ़ी या सुनी न हो। 'पूर्व-ज्ञान' का विपर्याय।

पश्च-दर्शन—पुं० [स० स० त०] १ पीछे की ओर मुड़कर देखना। २ पिछली या बीती हुई बातें याद करके उन पर विचार करना। (रिट्रस्पेक्शन) ३ विशिष्ट आत्मिक शक्ति की सहायता से ऐसी पुरानी घटनाएँ, बातें, व्यक्तियों की आकृतियाँ आदि आँखों के सामने देखना जो कभी देखी न हों। 'पूर्व दर्शन' का विपर्याय। (रिट्रो-कॉग्निशन)

पश्चदर्शिक—वि० [स०] १ जिसका संबंध पश्च-दर्शन से हो। पश्च-दर्शन का। २ जिसका परिणाम या प्रभाव पिछली या बीती हुई बातों पर भी पड़ता हो। पूर्व-व्यापित। (रिट्रास्पेक्टिव) जैसे—इस निर्णय का प्रभाव पश्च-दर्शिक होगा, अर्थात् पिछली या बीती हुई घटनाओं या बातों पर भी पड़ेगा।

पश्च-दर्शी (र्शिन्)—वि० [स० पश्च √दृश् (देखना)+णिनि] पश्च-दर्शन करनेवाला।

पश्च-परिणाम—पुं०=पश्च-प्रभाव।

पश्च-प्रभाव—पुं० [स० मध्य० स०] किसी कार्य या वस्तु का वह परिणाम या प्रभाव जो कुछ समय बीतने पर दिखाई देता हो। (आफ्टरएफेक्ट)

पश्च-लेख—पुं० [स०] कोई पत्र, लेख आदि लिखे जाने के उपरांत बाद मे याद आने पर उसके अंत मे बढ़ाकर लिखी जानेवाली कोई और बात या लेखांश। (पोस्टस्क्रिप्ट)

पश्चात्—अव्य० [स० अपर+आति, पश्च-आदेश] किसी अवधि, क्रम, घटना आदि के बीतने अथवा कुछ समय व्यतीत होने पर। उपरांत। पीछे। बाद।

पुं० १ पश्चिम दिशा। २ अंत। समाप्ति। ३ अधिकार।

पश्चात् कर्म (र्मन्)—पुं० [स० मध्य० स०] वैद्यक के अनुसार वह कर्म जिससे किसी रोगी के स्वस्थ होने के उपरान्त उसके शरीर के बल, वर्ण और अग्नि की वृद्धि होती हो। भिन्न-भिन्न रोगों से मुक्त होने पर भिन्न-भिन्न पश्चात् कर्म बतलाये गये हैं।

पश्चात्ताप—पुं० [स० मध्य० स०] अपने किसी कर्म के अनौचित्य का भान होने पर मन मे होनेवाला दुःख जो यह सोचने को विवश करता है कि मैंने यह काम क्यों किया। २ किसी किये हुए अनुचित कर्म के पाप से मुक्त होने के लिए अथवा अपनी आत्मा को शांति देने के लिए किया जानेवाला तप।

पश्चात्तापी (पिन्)—वि० [स० पश्चात्ताप+इनि] जो पश्चात्ताप करता हो।

पश्चाद्भाग—पुं०[स०ष०त०]१. पीछे का हिस्सा। २ पश्चिमी भाग।

पश्चाद्वर्ती (र्तिन्)—वि० [स० पश्चात् √वृ (बरतना)+णिनि] १. पीछे रहनेवाला। २ अनुसरण करनेवाला।

पश्चानुताप—पुं०[स० पश्च-अनुताप, स०त०] पश्चाताप।

पश्चापी (पिन्)—पुं०[सं० पश्चा√ आप् (लाभ)+ णिनि] नौकर। सेवक।

पश्चावज—पुं०[स० कर्म०स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जो कदन्न खानेवाली स्त्रियों का दूध पीनेवाले बालकों को होता है। इसमे बालकों को हरे-पीले रग के दस्त आने लगते है और तेज ज्वर होता है।

पश्चिम—वि०[स० पश्चात्+डिमच्] १ जो पीछे से या बाद मे उत्पन्न हुआ हो। २ अतिम। पिछला।

पुं०[वि० पश्चिमी] वह दिशा जिसमे सूर्य अस्त होता है। पूर्व दिशा के सामनेवाली दिशा। प्रतीची। वारुणी। पश्चिम।

पश्चिम-घाट—पुं०= पश्चिमी घाट।

पश्चिम-प्लव—पुं०[ब० स०] वह भूमि जो पश्चिम की ओर झुकी हो।

पश्चिम-याम-कृत्य—पुं०[स० पश्चिम-याम, कर्म०स०, पश्चिम परम-कृत्य, ष० त०] बौद्धों के अनुसार रात के पिछले पहर में किया जानेवाला धार्मिक कृत्य।

पश्चिम-वाहिनी—वि०स्त्री०[कर्म०स०] जो पश्चिम दिशा की ओर बहती हो।

पश्चिम-सागर—पुं०[कर्म०स०] आयरलैंड और अमेरिका के बीच का समुद्र। एटलांटिक या अतलांतक महासागर।

पश्चिमांचल—पुं०[पश्चिम-अचल, कर्म० स०] अस्ताचल। (दे०)

पश्चिमा—स्त्री०[स० पश्चिम+टाप्] पश्चिम दिशा।

पश्चिमार्द्ध—पुं०[पश्चिम-अर्द्ध, कर्म० स०] पीछेवाला आधा भाग। अपरार्द्ध।

पश्चिमी—वि०[स० पश्चिम]१. पश्चिम दिशा सबधी। २ पश्चिम की ओर अर्थात् पश्चिमी देशों में होनेवाला। ३ पश्चिम से आनेवाला। पछवाँ।

पश्चिमी-घाट—पुं०[हिं० पश्चिमी+घाट] केरल और आधुनिक महाराष्ट्र राज्य के बीच मे समुद्र के किनारे-किनारे गई हुई पर्वतमाला।

पश्चिमी हिंदी—स्त्री० [हिं०] भाषा-विद् ग्रियर्सन के मत से, पश्चिमी भारत में बोली जानेवाली खड़ी बोली, बाँगड़, ब्रजभाषा, कन्नौजी और बुंदेली बोलियों का एक वर्ग (पूर्वी हिन्दी से भिन्न) जो सभवत शौरसेनी अपभ्रंश से विकसित हुआ था।

पश्चिमोत्तर—वि० [स० पश्चिम-उत्तर, ब० स०] पश्चिम और उत्तर दिशाओं के बीच में स्थित।

पुं० वायव्य कोण।

पश्चिमोत्तरा—स्त्री० [स० पश्चिमोत्तर+टाप्] उत्तर और पश्चिम के बीच की विदिशा। वायव्य कोण।

पश्त—पुं०[लश०] खभा।

पश्ता—पुं०[फा० पुश्त.]१ बाँध। २. किनारा। तट। (लश०)

पश्तो—स्त्री०[फा० पुश्तो] आधुनिक पाकिस्तान के उत्तर पश्चिमी प्रदेशों तथा अफगानिस्तान की भाषा जिसकी गिनती आर्यभाषाओं मे होती है।

पुं०[देश०] ३॥ मात्राओं का एक ताल जिसमे दो आघात होते हैं।

पश्म—पुं०[फा०] बकरी, भेड आदि का रोयाँ। ऊन। पशम। (देखे)

पश्मीना—पुं०=पशमीना।

पश्यंती—स्त्री०[स०√दृश् (देखना)+शतृ+ङीप्] हठ योग मे, वह सूक्ष्म ध्वनियाँ नाद जो वाक् को उत्पन्न करनेवाली वायु के मूलाधार से हटकर नाभि मे पहुँचने पर होता है।

पश्यतोहर—वि० [स० पश्यत √हृ (हरण करना)+अच्, अलुक् स०] जो दूसरो को देखते रहने पर भी चतुरता से उनकी चीजें चुरा लेता हो।

पुं० सुनार।

पश्ववदान—पुं०[स० पशु-अवदान, ष०त०] बलि-पशु के अग विशेष का छेदन।

पश्वाचार—पुं०[स० पशु-आचार,ष० त०] तत्र मे,वैदिक रीति से तथा कामना और सकल्पपूर्वक किया जानेवाला देवी का पूजन।

पश्वाचारी (रिन्)—वि०[स० पश्वाचार+इनि] पश्वाचार-सबधी।

पुं० वह जो पश्वाचार की रीति से पूजन करता हो।

पष—पुं०[स० पक्ष]१ पख। डैना। २ ओर। तरफ। ३ चाद्र मास का आधा भाग। पक्ष।

पषा†—पुं०=पखा।

पषाण(न)†—पुं०=पाषाण (पत्थर)।

पषारना†—स०=पखारना (धोना)।

पष्य†—पुं०= पक्ष।

पष्वान†—पुं०=पाषाण।

पसंग (ा)†—पुं० =पासग।

पसंघ (ा)†—पुं० =पासग।

पसंती—स्त्री०=पश्यंती।

पसंद—वि०[फा०] आकार-प्रकार, गुण, रूप आदि के विचार से जो मन को भला तथा रुचिकर प्रतीत हुआ हो और इसलिए जिसे अनेकों या बहुतों मे से वरण किया या उसे वरीयता दी गई हो।

प्रत्य० उत्तर पद के रूप मे प्रत्यय की तरह प्रयुक्त—(क) पसद आनेवाला। जैसे—दिल-पसद=दिल को पसद आनेवाला। (ख) पसद करनेवाला। जैसे—हक-पसद।

स्त्री० १ मन को भला तथा रुचिकर प्रतीत होनेवाला कार्य, वस्तु या व्यक्ति। २ वरण करने, चुनने या वरीयता देने की क्रिया, प्रवृत्ति या भाव। ३ इस प्रकार चुनी या वरण की हुई वस्तु।

पसंदा—पुं०[फा० पसन्द] १ मास के एक प्रकार के कुचले हुए टुकडे का गोश्त। २ उक्त प्रकार के मास से बननेवाला एक प्रकार का कबाब।

पसंदीदा—वि० [फा०] [भाव० पसंददीदगी] पसद आनेवाला या पसद किया हुआ।

पसंदेश—वि० [फा०] [भाव० पसंदेशी] १ जो बीती हुई बातों के विषय मे विचार करता रहता हो। २ फलत. सकुचित बुद्धि।

पस—पुं०[अ०] घाव, फोडे आदि मे से निकलनेवाला लसीला तरल पदार्थ। मवाद।

अव्य० [फा०] १ अत या बाद मे। पीछे। २ पुन। फिर। ३. निस्सदेह। बेशक। ४. अतः। इसलिए।

पसई—स्त्री०[देश०] तराई मे होनेवाली एक तरह की राई और उसका पौधा।

स्त्री०=पसही (तिन्नी)।

पसकरन—वि०[सं० पश्च-करण] कायर। डरपोक। (डिं०)

पस-गैबत—क्रि० वि०[फा० पस+अ० गैबत] किसी के पीठ पीछे। अनुपस्थिति में।

पसघ—पुं० दे० 'पासंग'।

पसताल—पुं०[देश०] जलाशयों के किनारे होनेवाली एक तरह की घास जिसे पशु और जिसके दाने गरीब लोग भी खाते हैं।

पसनी†—स्त्री० दे० 'अन्न-प्राशन'।

पसपा—वि०[फा०] पराजित।

पसम*—स्त्री०=पशम।

पस-माँदा—वि०[फा० पसमाद] [भाव० पसमादगी]१ बचा हुआ। शेष। २ (काफिले या जत्थे का वह व्यक्ति) जो यात्रा करते समय पीछे छूट या रह गया हो।

पसमीना*—पुं०=पशमीना।

पसर—पुं०[सं० प्रसर]१. हथेली का कटोरी या दोने के आकार का बनाया हुआ वह रूप जिसमे कोई चीज भर कर किसी को दी जाती है। २ उक्त मे भरी हुई वस्तु या उसकी मात्रा। ३ मुट्ठी।

पुं० [देश०] १ रात के समय पशुओ को चराने का काम। उदा०—वह रात को कभी कभी पसर भी चराता था।—वृन्दावनलाल वर्मा। २ पशुओं के चरने की भूमि। चरागाह। ३ पशु चराते समय एक तरह के गाये जानेवाले गीत। ४ आक्रमण। चढाई। धावा।

†पुं०=प्रसार।

पसर-कटाली—स्त्री०[सं० प्रसर कटाली] भटकटैया। कटाई।

पसरन—स्त्री०[सं० प्रसारिणी] वृक्षो पर चढनेवाली एक जगली लता। स्त्री० [हिं० पसरना] पसरने की क्रिया, दशा या भाव।

पसरना—अ०[सं० प्रसरण]१ आगे की ओर बढना। फैलना। २ हाथ-पैर फैलाकर तथा अधिक जगह घेरते हुए बैठना या लेटना। ३ अपना आग्रह या इच्छा पूरी कराने के लिए तरह-तरह की बातें करना। सयो० क्रि०—जाना।

पसरहट्टा—पुं०[हिं० पसारी+हाट]वह बाजार या हाट जिसमे पसारियो की बहुत-सी दूकानें होती हैं।

पसरहा—पुं०=पसरहट्टा।

पसराना—स० [हिं० पसरना का प्रे०] किसी को पसरने में प्रवृत्त करना।

पसरी—स्त्री०=पसली।

पसरौहाँ†—वि०[हिं० पसरना+औहाँ (प्रत्य०)]१ पसरनेवाला। २ जिसमे अधिक पसरने की प्रवृत्ति हो।

पसली—स्त्री० [सं० पर्शुका] स्तनपायी जीवो की छाती के दोनो ओर की गोलाकार हड्डियों मे से हर एक।

पद—**पसली का रोग**—एक रोग जिसमे बच्चो का साँस जोरों से चलने लगता है।

मुहा०—**पसली फड़कना या फड़क उठना**—मन मे उत्साह या उमग उत्पन्न होना। जोश आना। **पसली ढीली करना या तोड़ना**—बहुत अधिक मारना।

पसवपेश†—पुं०=पसोपेश।

पसवा†—वि०[देश०] हलके गुलाबी रग का।

पुं० हलका गुलाबी रग।

पसवाड़ा†—पुं०=पिछवाडा (पृष्ठ-भाग)।

पसही—स्त्री०[देश०] तिन्नी नाम का धान या उसका चावल।

पसा†—पुं०=पसर। (दे०)

पसाइ—पुं०=पसाउ (प्रसाद)।

पसाई—स्त्री० [सं० प्रसातिका, प्रा० पसाइआ] पसताल नाम की घास जो तालों मे होती है।

†पुं०=पसही (तिन्नी)।

स्त्री०[हिं० पसाना] (माँड आदि) पसाने की क्रिया या भाव।

†स्त्री० पिसाई।

पसाउ—पुं०[सं० प्रसाद, प्रा० पसाव] १ प्रसाद। २ कृपा। अनुग्रह। ३ प्रसन्नता।

पसाना—स०[सं० प्रस्रवण, हिं० पसावना] [भाव० पसाई] १ पकाये हुए चावलो मे से माँड निकालना। २ किसी वस्तु में से उसका जलीय अश निकालना।

अ[सं० प्रसादन] अनुग्रह आदि करने के लिए किसी पर प्रसन्न होना।

पसार—पुं०[सं० प्रसार]१ पसरने की क्रिया या भाव। २ प्रसार। फैलाव। विस्तार। ३ दालान। (पश्चिम)

पुं०[सं० प्रसाद] प्राप्त होने पर मिलनेवाली चीज। उदा०—दुहुँ कुल अपजस पहिल पसार।—विद्यापति।

पसारना—स०[सं० प्रसारण, हिं० पसरना का स०] १ अधिक विस्तृत करना। २ फैलाना। जैसे—झोली पसारना। ३ आगे बढाना। जैसे—हाथ पसारना।

पसारा†—पुं०=पसार।

पसारी—पुं०[देश०]१ तिन्नी का धान। पसवन। पसही।

†पुं०=पसारी।

पसाव—पुं०[हिं० पसाना, आव (प्रत्य०)]१ माँड आदि पसाने की क्रिया या भाव। २ पसाने पर निकलनेवाला गाढ़ा तरल पदार्थ। पीच।

†पुं०=पसाउ (प्रसाद)।

पसावन†—पुं०=पसाव।

पसिंजर—पुं०[अ० पैसेंजर]१ यात्री, विशेषत रेल या जहाज का यात्री। २ यात्रियों की वह रेल-गाडी जो कुछ धीमी चाल से चलती और प्रायः सभी स्टेशनो पर ठहरती है।

पसित†—वि०[सं० पायश] बँधा या बाँधा हुआ।

पसीजना—अ०[सं० प्र√स्विद्, प्रस्विद्यति, प्रा० पसिज्ज]१ अधिक गरमी या ताप के प्रभाव के कारण किसी घन या ठोस पदार्थ मे से जल-कण निकलना। २ दूसरे के घोर कष्ट, दुःख आदि को देखने पर चित्त मे (प्राय कठोर चित्त मे) दया की भावना उमडना। ३ पसीने से तर होना।

पसीना—पुं०[सं० प्रस्वेदन, हिं० पसीजना]ताप, परिश्रम आदि के कारण शरीर या उसके अग मे से निकलनेवाले जल-कण। स्वेद।

क्रि० प्र०—आना।—छूटना।—निकलना।

पद—**पसीने की कमाई**=वह धन जो परिश्रमपूर्वक अर्जित किया गया हो, योंही अथवा मुफ्त में न मिला हो।

मुहा०—**किसी का पसीना छूटना**=कोई काम करते-करते बहुत अधिक परेशान हो जाना। **पसीने पसीने होना**=पसीने से बिलकुल भीग जाना।

पसु†—पु०=पशु।

पसुरी, पसुली —स्त्री०=पसली।

पसू†—पु०=पशु।

पसूज—स्त्री०[?] कपडो की सिलाई मे सूई-डोरे से भरे या लगाये जानेवाले एक प्रकार के सीधे टाँके।

पसूजना—स०[?] कपडो की सिलाई मे एक विशेष प्रकार के टाँके लगाना।

पसूता†—स्त्री०=प्रसूता।

पसूस—वि०[हि०] कठोर।

पसेउ (ऊ)*—पु०- पसेव।

पसेरी—स्त्री०[हि० पाँच+सेर+ई (प्रत्य०)]१ पाँच सेर का बाट। पसेरी। २ उक्त बाट से तौली हुई वस्तु की मात्रा या मान। जैसे—चार पसेरी गेहूँ।

पसेव—पु०[स० प्रस्राव] १ वह तरल पदार्थ जो कच्ची अफीम को सुखाने के समय उसमे से निकलता है। इस अश के निकल जाने पर अफीम सूख जाती है और खराब नही होती।

†पु०[स० प्रस्वेद]पसीना।

पसोपेश—पु०[फा० पसवपेश]१ कोई काम करने के समय मन मे होनेवाला यह भाव कि आगे बढे या पीछे हटे। असमजस। आगा-पीछा। सोच-विचार। २ इस बात का विचार कि यह काम करने पर क्या लाभ अथवा क्या हानि होगी। ऊँच-नीच।

पसो†—पु० पशु।

पस्त—वि०[फा०] [भाव० पस्ती]१ हारा हुआ। २ थका हुआ। शिथिल। ३ किसी की तुलना मे झुका या दबा हुआ। जैसे—हिम्मत पस्त होना। ४ छोटे आकार का। छोटा। (यौ० के आरभ मे) जैसे—पस्तकद। ५ कमीना। नीच। ६ तुच्छ। हीन। जैसे—पस्त खयाल। ७. पिछडा या हारा हुआ। जैसे—पस्त-हिम्मत। ८ मद। जैसे—पस्त - किस्मत।

पस्त-कद—वि०[फा०] ठिगना। नाटा।

पस्त-हिम्मत—वि०[फा०] [भाव० पस्तहिम्मती]१. जो विफल होकर के हिम्मत हार चुका हो। जिसका साहस छूट गया हो। हतोत्साह। २ कमहौसला। भीरु।

पस्तहौसला—वि०[फा ०] पस्त-हिम्मत।

पस्ताना†—अ०=पछताना।

पस्तावा —पुं०=पछतावा।

पस्ती—स्त्री०[फा०]१ पस्त होने की अवस्था या भाव। २ निचाई। ३ विचारों, व्यवहारों आदि की नीचता। कमीनापन।

पस्तो†—स्त्री० =पश्तो।

पस्त्य—पु०[स०√ पस् (बाधा)+क्तिन्+यत्]१. घर। वास-स्थान। २. कुल। परिवार।

पस्सर—पुं०[अं० परसर] जहाज पर खलासियो आदि को बर्तन, रसद आदि बाँटनेवाला कर्मचारी।

†पु०=पसर।

पस्सी बबूल—पु०[हि० पस्सी ?+हि० बबूल] एक प्रकार का बढिया कलमी बबूल का वृक्ष जिसके फूलो से कई प्रकार के सुगधित द्रव्य बनाये जाते हैं।

पहँ—अव्य०[स० पार्श्व] निकट। पास।

विभ० से।

पहँसुल—स्त्री०[स० प्रह्व=झुका हुआ+शूल] हँसिया की तरह का तरकारी काटने का एक छोटा उपकरण।

पह*—स्त्री०=पौ (प्रात काल का प्रकाश)।

†पु० =प्याऊ।

पहचनवाना—स० [हि० पहचानना का०] किसी से पहचानने का काम कराना।

पहचान—स्त्री०[स० प्रत्यभिज्ञान या परिचयन] १ पहचानने की क्रिया, भाव या शक्ति। २ कोई ऐसा चिह्न या लक्षण जिससे पता चले कि यह अमुक व्यक्ति या वस्तु है। जैसे—अपने कपडे (या लडके) की कोई पहचान बतलाओ। ३ किसी वस्तु की अच्छाई, बुराई, टिकाऊ-पन, स्वाद आदि देख-भाल कर जान लेने की शक्ति। जैसे—आम, कपडे, घी आदि की पहचान। ४ जीव या व्यक्ति के सबध मे, उसके आकार, चेष्टाओ, बातो आदि से उसका वास्तविक रूप अनुमानित करने की समर्थता। जैसे—आदमी या घोडे की पहचान। ४ दे०'जानपहचान'।

पहचानना—स०[हि० पहचान]१ किसी वस्तु या व्यक्ति को देखते ही उसके चिह्नो, लक्षणो, रूप-रग के आधार पर यह जान या समझ लेना कि यह अमुक व्यक्ति या वस्तु है। यह समझना कि वह यही वस्तु या व्यक्ति है जिसे मैं पहले से जानता हूँ। जैसे—मैं उसके कपडे पहचानता हूँ।

सयो० क्रि०—जानना।—लेना।

२ एक वस्तु का दूसरी वस्तु या वस्तुओ से भेद करना। अतर समझना या जानना। बिलगाना। जैसे—असल या नकल को पहचानना सहज नही है। ३ किसी वस्तु या व्यक्ति के गुण-दोषो , योग्यताओं आदि से भली-भाँति परिचित रहना। जैसे—तुम भले ही उनकी बातो मे आ जाओ, पर मैं उन्हे अच्छी तरह पहचानता हूँ।

पहटना†—स०=पहेटना।

पहटा—पु० १ दे० 'पाटा'। २ दे० 'पेठा'।

पहड़िया—वि०=पहाडी।

पु०[हि० पहाड] सथाल परगने मे रहनेवाली एक जाति।

पहन—पु०[फा०] वह दूध जो बच्चे को देखकर वात्सल्य भाव के कारण माँ की छातियो मे भर आवे और टपकने लगे या टपकने को हो।

पु०= पाहन (पाषाण)।

पहनना—स०[स० परिधान] (कपडे, गहने आदि) शरीर पर धारण करना। परिधान करना। जैसे—कुरता या धोती पहनना; अँगूठी या हार पहनना, खडाऊँ, चप्पल या जूता पहनना।

पहनवाना—स०[हि० 'पहनना' का प्रे०]१ किसी को कुछ पहनाने मे प्रवृत्त करना। जैसे—नौकर से लडके को कपडे पहनवाना। २ किसी को कुछ पहनने के लिए विवश करना। (पहनाना से भिन्न)। जैसे—माता ने बच्चे को कुरता पहनवाकर छोडा।

पहना—पुं० [फा० पहन] वह दूध जो बच्चे को देखकर वात्सल्य भाव के कारण माँ के स्तनों में भर आया हो और टपकता-सा जान पड़े।
†पुं०=पनहा।

पहनाई—स्त्री० [हिं० पहनाना] १ पहनने की क्रिया, ढंग या भाव। जैसे—जरा आपकी पहनाई देखिये। २ पहनने या पहनाने के बदले मे दिया या लिया जानेवाला पारिश्रमिक।
*स्त्री० [हिं० पाहन=पत्थर] १. पाहन या पत्थर होने की अवस्था या भाव। २. पाहन या पत्थर की-सी कठोरता, गुरुता या और कोई गुण। उदा०—पाहन ते न कठिन पहनाई।—तुलसी।

पहनाना—स० [हिं० पहनना] १ दूसरे को अपने हाथों मे कपड़े, गहने आदि धारण कराना। जैसे—कोट या जूता पहनाना। २ मारना-पीटना। (बाजारू)

पहनाव†—पु०=पहनावा।

पहनावा—पु० [हिं० पहनना] १ पहनने के कपड़े। पोशाक। २ किसी जाति, देश आदि के लोगों द्वारा सामान्यत तन ढकने के उद्देश्य से पहन जानेवाले कपड़े। जैसे—अँगरेजों का पहनावा पैंट, कोट, कमीज तथा हैट है और भारतीयों का धोती, कुरता और टोपी है। ३ विशिष्ट आकार, प्रकार या रंग के वे कपड़े जो किसी विद्यालय, सस्था आदि के कर्मचारियों, विद्यार्थियों, सदस्यों आदि को पहनने पड़ते हों। जैसे—स्कूली पहनावा।

पहपट—पु० [देश०] १ स्त्रियों द्वारा गाये जानेवाले एक तरह के गीत। २ शोर-गुल। हल्ला। ३ चारो ओर फैलनेवाली निन्दात्मक चर्चा या बदनामी। ४ छल। धोखा। बदनामी। (क्व०)

पहपटबाज—पु० [हिं० पहपट+फा० बाज] [भाव० पहपटबाजी] १. शोर-गुल करने या हल्ला मचानेवाला। २ उपद्रवी। फसादी। शरारती। झगड़ालू। ३ चारो ओर लोगों की निंदा फैलानेवाला। ४ छलिया। धोखेबाज।

पहपटहाया—वि० [स्त्री० पहपटहाई] =पहपटबाज।

पहमिनि†—स्त्री०=पद्मिनी। उदा०—कवल करी तू पहमिनि मैं निसि भएहु बिहान।—जायसी।

पहर—पु० [स० प्रहर] १ समय के विचार से दिन-रात के किये हुए आठ समान भागों मे से हर एक जो तीन-तीन घंटों का होता है। २ समय। ३ युग।

पहरना—स० [स० प्र+हरण] नष्ट करना। उदा०—जिडि पहरतँ नवी परि।—प्रिथीराज।
†स०=पहनना।

पहरा—पुं० [हिं० पहर] १ ऐसी अवस्था या स्थिति जिसमे किसी आदमी, चीज या जगह की रखवाली करने अथवा अपघात, हानि आदि रोकने के लिए एक या अधिक आदमी नियुक्त किये जाते है। इस बात का ध्यान रखने का प्रबध कि कहीं कोई अनुचित रूप से आ-जा न सके अथवा आज्ञा, नियम, विधान आदि के विरुद्ध कोई काम न करने पावे। चौकी। रखवाली।
विशेष—(क) पहले प्राय. इस प्रकार की देख-रेख करनेवाले लोग एक एक पहर के लिए नियुक्त किये जाते थे, इसी से उक्त अर्थ मे 'पहरा' शब्द प्रचलित हुआ था। (ख) पहरे का काम प्राय एक स्थान पर खड़े होकर, थोड़ी-सी दूरी मे इधर-उधर आ-जाकर अथवा किसी विशिष्ट क्षेत्र मे चारो ओर घूम-घूमकर किया जाता है।
मुहा०—**पहरा देना**=घूम-घूमकर बराबर यह देखते रहना कि कहीं कोई अनुचित रूप मे आ तो नहीं रहा है या कोई अनुचित काम तो नहीं कर रहा है। **पहरा पड़ना**=ऐसी व्यवस्था होना कि कहीं कुछ लोग पहरा देते रहे। जैसे—रात के समय शहरों मे जगह-जगह पहरा पड़ता है। **पहरा बदलना**=एक पहरेदार के पहरे का समय बीत जाने पर उसके स्थान पर दूसरे पहरेदार का आना। **पहरा बैठना**=किसी वस्तु या व्यक्ति के पास पहरेदार या रक्षक बैठाया जाना। चौकीदार को पहरे के काम पर लगाना। **पहरा बैठाना**—पहरा देने के काम पर किसी को लगाना। **(किसी को) पहरे मे देना**=किसी को इस उद्देश्य से पहरेदारों की देख-रेख मे रखना कि वह कहीं भागने, किसी से मिलने-जुलने या कोई अनुचित काम न करने पावे।
२ उतना समय जितने मे एक रक्षक अथवा रक्षक-दल का रक्षा-कार्य करना पड़ता है। जैसे—तुम्हारे पहरे मे तो कोई यहाँ नहीं आया था। ३ कोई पहरेदार या पहरेदारों का कोई दल। जैसे—जब तक नया पहरा न आवे, तब तक तुम (या तुम लोग) यहीं रहना। ४ वह जोर की आवाज जो पहरेदार लोगों को सावधान करने या रहने के लिए रह-रहकर देता या लगाता रहता है। जैसे—कल रात को इस महल्ले मे पहरा नहीं सुनाई पड़ा। ५ कुछ विशिष्ट प्रकार का काल या समय। जमाना। युग। जैसे—अभी क्या है! अभी तो इससे भी बुरा पहरा आवेगा।
†पु० [हिं० पौरा का विकृत रूप] किसी विशेष व्यक्ति के अस्तित्व, आगमन, सत्ता आदि का काल या समय। पौरा। जैसे—जब से उस लड़की का पहरा (पौरा) इस घर मे आया है, तब से इस घर मे लहर-बहर दिखाई देने लगी है।

पहराइत†—पु०=पहरेदार। उदा०—पीला भमर किया पहराइत।—प्रिथीराज।

पहराना†—स० पहनाना।

पहरावनी—स्त्री० [हिं० पहरावना] १ पहनावा। २ वे कपड़े जो किसी शुभ अवसर पर प्रसन्नतापूर्वक छोटों को दिये या पहनाये जाते है।

पहरावा†—पु०=पहनावा।

पहरी—पु०=प्रहरी (पहरेदार)।

पहरुआ—पु०=पहरेदार।

पहरू†—पु० पहरेदार।

पहरेदार—पु० [हिं० पहरा+फा० दार] [भाव० पहरेदारी] १ वह जिसका काम कहीं खड़े-खड़े या घूम-घूमकर पहरा देना हो। चौकीदार। संतरी। २ वह जो किसी की रक्षा के लिए कटिबद्ध तथा प्रस्तुत हो। जैसे—हम देश के पहरेदार है।

पहरेदारी—स्त्री० [हिं० पहरा+फा० दारी] १ पहरा देने का काम या भाव। २ पहरेदार का पद।

पहल—पु० [फा० पहलू, मि० स० पटल] १ किसी घन पदार्थ के तीन या अधिक कोनों अथवा कोरों के बीच का तल या पार्श्व। २. बगल। पहलू। जैसे—(क) पासे मे छ पहल होते हैं। (ख) इस नगीने मे बारह पहल कटे हैं।

क्रि० प्र०—काटना।—तराशना।—बनाना।

मुहा०—पहल निकालना= किसी पदार्थ के पृष्ठ देश या बाहरी सतह को तराश या छीलकर उसमें त्रिकोण, चतुष्कोण, षट्कोण आदि पहल बनाना।

२. ऊन, रूई आदि की कुछ कड़ी और मोटी तह या परत। गाला। उदा०—तूल के पहल किधौं पवन अधार के।—सेनापति। ३ किसी तरह की तह या परत।

स्त्री०[हिं० पहला]१ किसी नये कार्य का पहली बार होनेवाला आरभ। २ किसी कार्य, बात आदि का किसी एक पक्ष की ओर होनेवाला आरभ जिसके पश्चप्रभाव का उत्तरदायित्व उसी पक्ष पर माना जाता है। छेड। (इनीशिएटिव) जैसे—झगडे मे पहले तो उसने पहल की थी।

मुहा०—पहल करना= किसी काम या अपनी ओर से या आगे बढ़कर आरभ करना।

पहलदार—वि०[हि० पहल+फा० दार] जिसमे पहल कटे या बने हो। जिसमे चारो ओर अलग-अलग तल या सतहे हो।

पहलनी—स्त्री०[हि० पहल] सुनारो का एक औजार जिससे कोठा या घडी गोल करते है।

पहलवान—पु०[फा० पहलवान] [भाव० पहलवानी] १ वह व्यक्ति जो स्वय दूसरो से कुश्ती लडता हो अथवा दूसरो को कुश्ती लडना सिखलाता हो। २ मोटा-ताजा। तगडा। हट्टा-कट्टा।

वि० खूब बलवान और मोटा-ताजा।

पहलवानी—वि०[फा० पहलवानी]१ पहलवानो से सबध रखनेवाला। २ पहलवानो की तरह का।

स्त्री०१ पहलवान होने की अवस्था या भाव। २ पहलवान का पेशा, वृत्ति या शौक। ३ बलवान और सशक्त होने की अवस्था या भाव। जैसे—वह तुम्हारी सारी पहलवानी निकालकर रख देगा।

पहलवी—पु०, स्त्री०[फा०]=पह्लवी।

पहला—वि०[स० प्रथम, प्रा० पहिले] [स्त्री० पहली]१ समय के विचार से जो और सब से आदि मे हुआ हो। जैसे—यह उनका पहला लडका है। २ किसी चीज विशेषत किसी वर्गीकृत चीज के आरभिक या प्रारभिक अंश या वर्ग से सबध रखनेवाला। जैसे—पुस्तक का पहला अध्याय, विद्यालय का पहला दरजा। ३ तुलना, प्रतियोगिता आदि मे जो सब से आगे निकल पहुँच या बढ गया हो। जैसे—दौड, परीक्षा आदि मे पहला आना। ४ वर्तमान से पूर्व का। विगत। जैसे—पहला जमाना कुछ और ही तरह का था। ५. जो अत्यधिक उपयोगी, महत्त्वपूर्ण या मूल्यवान हो।

पहलाम—स्त्री०[हिं०पहला+म(प्रत्य०)] लड़ाई-झगड़े के सबध मे की जानेवाली छेड। पहल। जैसे—इस बार तो तुम्हीं ने पहलाम की थी।

पहलू—पु०[फा० पहलू]१. किसी वस्तु का कोई विशिष्ट पार्श्व या किसी दिशा मे पडनेवाला अग या विस्तार। २ व्यक्ति के शरीर का दाहिना या बायाँ अग। पार्श्व। बगल। जैसे—जो जल उठता है यह पहलू तो वह पहलू बदलते हैं।—कोई कवि।

मुहा०—(किसी का) पहलू गरम करना=किसी के शरीर से विशेषत प्रेयसी या प्रेमपात्र का प्रेमी के शरीर से सटकर बैठना। किसी के पास या साथ बैठकर उसे सुखी करना। **(किसी से) पहलू गरम करना**= किसी को विशेषत प्रेयसी या प्रेमपात्र को शरीर से सटाकर बैठाना। मुहब्बत मे बैठाना। **(किसी के) पहलू में रहना**=किसी के बहुत पास या बिलकुल साथ मे रहना।

३ करवट। बल। जैसे—किसी पहलू से चैन नही मिलता। ४ पडोस।

मुहा०—पहलू बसाना= किसी के पडोस मे जाकर रहना।

५ किसी समूह का कोई पार्श्व या भाग। जैसे—फौज का दाहिना पहलू ज्यादा मजबूत था।

मुहा०—पहलू दबना=किसी अग या पार्श्व का दुर्बल होने या हारने के कारण पीछे हटना। **(किसी के) पहलू पर होना**=विकट अवसर पर सहायता करने के लिए प्रस्तुत रहना।

६ किसी बात या विषय का अच्छाई-बुराई, गुण-दोष आदि की दृष्टि से कोई पक्ष। जैसे—मुकदमे के सब पहलू पहले से सोच रखो।

मुहा०—(किसी बात का) पहलू बचाना=इस बात का ध्यान रखना या युक्ति करना कि किसी अग, पक्ष या पार्श्व मे किसी प्रकार का अनिष्ट अथवा कोई अप्रिय घटना या बात न होने पावे। **(अपना) पहलू बचाना**= कोई काम करने से जी चुराना या टाल-मटोल करके पीछे हटना।

७. अगल-बगल या आस-पास का स्थान। पार्श्व। जैसे—पहाड के पहलू मे एक घना जगल था।

पद—पहलूनशी—(क) पास बैठनेवाला। (ख) पास बैठा हुआ।

मुहा०—(किसी का) पहलू बसाना= किसी के पडोस या समीप मे जा रहना। पडोस आबाद करना।

८ किसी पदार्थ के किसी पार्श्व का कोई समतल पृष्ठ-देश। पहल। जैसे—इस नगीने का कोई पहलू चौकोर नही है। ९ गूढ अर्थ। १० युक्ति। ११ बहाना। १२ रुख।

पहलूदार—वि०[फा०] जिसके कई पहलू (पक्ष या पहल) हो।

पहले—अव्य०[हि० पहला]१ आदि आरभ या शुरू मे। सर्वप्रथम। जैसे—पहले यहाँ कोई दूकान नही थी। २ काल, घटना, स्थिति आदि के क्रम के विचार से आगे या पूर्व। जैसे—उनके मकान के पहले एक पुल पडता है। ३ बीते हुए समय मे। पूर्वकाल मे। अगले जमाने मे। जैसे—पहले की-सी सस्ती अब फिर क्यो होने लगी।

पहलेज—पु० [देश०] एक प्रकार का लबोतरा खरबूजा।

पहले-पहल—अव्य० [हि० पहले] १. आदि या आरभ मे। सर्वप्रथम। सबसे पहले। २ जीवन मे पहली बार। जैसे—वह पहले-पहल दिल्ली गया है।

पहलौठा—वि० [हि० पहल+औठा (प्रत्य०)] [स्त्री० पहलौठी] (माता-पिता का वह पुत्र) जिसे (उन्होने) सबसे पहले जन्म दिया हो। अथवा जो सबसे पहले जन्मा हो। प्रथम प्रसव।

पहाड—पु० [स० पाषाण] [स्त्री० अल्पा० पहाडी] १ पृथ्वी तल के ऊपर प्राकृतिक रूप से उठा या उभरा हुआ वह बहुत बड़ा अश जो प्रायः चूने, पत्थर, मिट्टी आदि की बड़ी-बड़ी चट्टानों से बना होता है और जिसका तल प्राय. असम या ऊबड़-खाबड रहता है। पर्वत।

मुहा०—पहाड़ खोदकर चूहा निकालना=बहुत अधिक परिश्रम करके बहुत ही तुच्छ परिणाम तक पहुँचना।

२. किसी वस्तु का बहुत बड़ा और भारी ढेर। बहुत ऊँची राशि या ढेर। जैसे—पहले बाजारों मे अनाज के बोरों के पहाड़ लगे रहते थे। ३. पत्थरों की ढेर की तरह की कोई बहुत बड़ी या भारी चीज या बात अथवा कोई बहुत ही विकट काम या स्थिति। जैसे—(क) मुझे पत्र लिखना तो पहाड़ हो जाता है। (ख) तुम्हे तो मामूली काम भी पहाड़ मालूम होता है।

मुहा०—**पहाड़ उठाना**=कोई बहुत बड़ा, भारी या विकट काम अपने ऊपर लेना या पूरा कर दिखाना। **पहाड़ काटना**=(क) बहुत ही कठिन या विकट काम कर डालना। (ख) किसी प्रकार कोई बहुत बड़ी विपत्ति या सकट दूर करना। **(किसी पर) पहाड़ टूटना या टूट पड़ना**=अचानक कोई बहुत बड़ी विपत्ति आना। जैसे—उस पर तो आफत का पहाड़ टूट पडा है। **पहाड़ से टक्कर लेना**=अपने से बहुत अधिक बलवान व्यक्ति या शक्तिशाली से प्रतियोगिता करना या वैर उठाना। बहुत जबरदस्त या बहुत बड़े से भिडना।

४ कोई ऐसा कठिन या विकट कार्य, वस्तु या स्थिति जिसका निर्वाह बहुत ही कठिन हो अथवा सहज मे जिससे छुटकारा या निस्तार न हो सके। जैसे—पहाड की तरह विवाह के योग्य चार-चार लड़कियाँ उसके सामने बैठी थी।

पहाड़ा—पु० [स० प्रस्तार या क्रमात् पहाड की तरह ऊँचे होते जाने का क्रम] १ किसी अक के गुणनफलो के क्रमात् आगे बढती चलनेवाली सख्याओ की स्थिति। जैसे—तीन एकम तीन, तीन दूने छ, तीन तियाँ नौ, तीन चौके बारह आदि। २ उक्त प्रकार की क्रमात् बढती रहनेवाली सख्याओ की सूची। गुणन-सारणी। (मल्टिप्लिकेशन टेबुल) जैसे—पहाडे की पुस्तक।

क्रि० प्र०—पढ़ना।—पढाना।—लिखना।—लिखाना।

पहाड़िया†—वि० पहाडी।

पहाड़ी—वि० [हि० पहाड+ई (प्रत्य०)] १ पहाड-सबधी। जैसे—पहाड़ी रास्ता। २ पहाड पर मिलने, रहने या होनेवाला। जैसे—पहाडी वृक्ष, पहाडी व्यक्ति। ३ जिसमे पहाड हो। जैसे—पहाडी देश। ४ पहाड पर रहनेवाले लोगों से सबध रखनेवाला। जैसे—पहाडी पहनावा, पहाडी बोली।

पु० १. पहाड पर रहनेवाले व्यक्ति। जैसे—आज-कल शहर मे बहुत से पहाडी आये हुए हैं। २ एक प्रकार का बडा खीरा।

स्त्री० १ छोटा पहाड। २ काँगडे, कुमाऊँ, गढवाल आदि पहाडी प्रदेशो की बोलियो का वर्ग या समूह। ३ भारत के उत्तर-पश्चिमी पहाडो मे गाई जानेवाली एक प्रकार की धुन या सगीत-प्रणाली। ४ सगीत मे, सपूर्ण जाति की एक रागिनी जो साधारणत रात के पहले या दूसरे पहर मे गाई जाती है। ५ एक सुगधित वनस्पति।

पहान†—पु०=पाषाण (पत्थर)।

पहार—पु० [स्त्री० अल्पा० पहारी]=पहाड।

पहारना—स०=प्रहारना (प्रहार करना)।

पहारी† — स्त्री०=पहाडी।

पहारू† —पु०=पहरेदार।

पहासरा—पु० [?] १ पौ फटने का समय। तडका। २ प्रकाश। रोशनी। उदा०—चद के पहासरे मे आँगन मे ठाढ़ी भई, आली तेरी जोति किधौ चाँदनी छिपाई है।—नाग।

पहि—अव्य० [स० पर] पर। परतु। उदा०—पहि किम पूजै पांगुलौ।—प्रिथीराज।

पहिआ†—पु० [हि० पाह=पथ] १ रास्ता चलनेवाला। पथिक। बटोही। २ अतिथि। अभ्यागत। मेहमान। उदा०—आवत पहिआ खूधे जाहि।—कबीर। ३ जामाता। दामाद।

पु०=पहिया।

पहिचान—स्त्री०=पहचान।

पहिचानना—स०=पहचानना।

पहिती†—स्त्री० [स० प्रहति=सालन] पकाई हुई दाल।

पहिनना—स०=पहनना।

पहिना—स्त्री० [स० पाठीन] एक प्रकार की मछली।

पहिनाना† स०=पहनाना।

पहिनावा—पु० पहनावा।

पहिप†—पु०=पथिक।

पहियाँ†—अव्य० 'पहँ' (पास)।

पहिया—पु० [स० पथ्य, प्रा० पथ्य से पहिय] १ गाडी, यान आदि का वह नीचेवाला मुख्य आधार जो गोलाकार होता और धुरी पर घूमता है तथा जिसके धुरी पर घूमने पर गाड़ी या यान आगे बढता है। २ यत्रो आदि मे लगा हुआ उक्त प्रकार का गोलाकार चक्कर जिसके घूमने से उस यत्र को कोई क्रिया सम्पन्न होती है। चक्कर। (ह्वील)

पु० पहिआ (पथिक)।

पहिरना†—स०=पहनना।

पहिराना†—स० पहनाना।

पहिरावना†—स०=पहनाना।

पहिरावनी—स्त्री०=पहरावनी।

पहिल†—वि०=पहला।

क्रि० वि० पहले।

स्त्री०=पहल।

पहिला†—वि०=पहला।

पहिले—अव्य०=पहले।

पहिलौठा—वि० [स्त्री० पहिलौठी]=पहलौठा।

पहीत—स्त्री०=पहिती।

पहुँ—पु० [स० पिय ?] १ पति। २. प्रियतम।

पहुँच—स्त्री० [हि० पहुंचना] १ पहुंचने की क्रिया या भाव। २ किसी के कही पहुँचने की भेजी जानेवाली सूचना। जैसे—अपनी पहुँच तुरत भेजना। ३ ऐसा स्थान जहाँ तक किसी की गति हो सकती हो या कोई पहुँच सकता हो। जैसे—यह तसवीर बहुत ऊँची टँगी है, तुम्हारे हाथ की पहुँच उस तक नही होगी (या न हो सकेगी)। ४ किसी स्थान तक पहुँचने की योग्यता, शक्ति या सामर्थ्य। पकड। जैसे—वह स्थान बडे बड़ो की पहुँच के बाहर है। ५ किसी विषय का होनेवाला ज्ञान या परिचय। ६ अभिज्ञता की सीमा। ज्ञान की सीमा।

पहुँचना—अ० [स० प्रभूत, प्रा० पहुँच्च] १ (वस्तु अथवा व्यक्ति का) एक विंदु से चलकर अथवा और किसी प्रकार दूसरे विन्दु पर (बीच का

अवकाश पार करके) उपस्थित, प्रस्तुत या प्राप्त होना। जैसे—(क) रेलगाड़ी का दिल्ली पहुँचना। (ख) घड़ी की छोटी सूई का १२ पर पहुँचना। (ग) आदमी का घर या स्वर्ग पहुँचना। २ किसी से भेंट आदि करने के लिए उसके यहाँ जाकर उपस्थित होना।

पद-पहुँचा हुआ=(क) जिसके संबंध मे यह माना जाता हो कि वह सिद्धि प्राप्त करके ईश्वर तक पहुँच गया है। (ख) किसी काम या बात मे पूर्ण रूप से दक्ष या पारंगत। किसी बात के गूढ़ रहस्यो या मूल तत्त्वों तक का पूरा ज्ञान रखनेवाला।

३ किसी के द्वारा भेजी हुई चीज का किसी व्यक्ति को मिलना या प्राप्त होना। जैसे—पत्र या संदेश पहुँचना। ४ (किसी चीज का) किसी रूप मे मिलना या प्राप्त होना। जैसे—आघात या दुःख पहुँचना, फायदा पहुँचना। ५. फैलने या फैलाये जाने पर किसी चीज का किसी सीमा तक जाना या किसी दूसरी चीज को छूना अथवा पकड़ लेना। जैसे—(क) आग का जंगल की एक सीमा से दूसरी सीमा तक पहुँचना। (ख) हाथ का छीके तक पहुँचना। ६ मान, मात्रा, संख्या आदि मे बढ़ते-बढ़ते या घटते-घटते किसी विशिष्ट स्थिति को प्राप्त होना। जैसे—(क) हमारे यहाँ गेहूँ की उपज ५० मन प्रति बीघे तक जा पहुँची है। (ख) लड़का आठवे दरजे मे पहुँच गया है। (ग) ताप मान अभी ११० तक ही पहुँचा है। ७ बढ़कर किसी के तुल्य या बराबर होना। जैसे—अब तुम भी उनके बराबर पहुँचने लगे हो। ८ एक दशा या रूप से दूसरी दशा या रूप को प्राप्त होना। जैसे—जान जोखिम मे पहुँचना। ९ प्रविष्ट होना। घुसना। जैसे—वह भी किसी न किसी तरह अंदर पहुँच गया। १० किसी चीज का किसी दूसरी चीज मे प्रभावित होना। जैसे—कपड़ो मे सील पहुँचना। ११ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी प्रकार के तत्त्व, भाव, मनःस्थिति, रहस्य आदि को ठीक-ठीक जानने मे समर्थ होना। जैसे—यह बहुत गंभीर विषय है, इस तक पहुँचना सहज नहीं है।

पहुँचा—पु० [सं० प्रकोष्ठ अथवा हिं० पहुँचना] १ हाथ की कुहनी के नीचे और हथेली के बीच का भाग। कलाई। गट्टा। मणिबंध।

मुहा०—**(किसी का) पहुँचा पकड़ना**=बलपूर्वक किसी को कोई काम करने के लिए उसे रोक रखने के लिए उसकी कलाई पकड़ना। जैसे—वह तो राह-चलते लोगों से पहुँचा पकड़कर माँगने (या लड़ने) लगता है।

कहा०—**उँगली पकड़ते, पहुँचा पकड़ना**=किसी को जरा-सा अनुकूल या प्रसन्न देखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने के लिए उसके पीछे पड़ जाना।

२ टखने के कुछ ऊपर तथा पिंडली से कुछ नीचे का भाग। ३ पाजामे आदि की मोहरी का विस्तार। (पश्चिम)

पहुँचाना—स० [हिं० पहुँचा का स०] १. किसी चीज को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना। जैसे—(क) उनके यहाँ मिठाई (या पत्र) पहुँचा दो। (ख) यह ताँगा हमें स्टेशन तक पहुँचायेगा। २. किसी व्यक्ति के संग चलकर उसे कहीं तक छोड़ने जाना। जैसे—नौकर का बच्चे को स्कूल पहुँचाना। ३. किसी को किसी विशिष्ट स्थिति मे प्राप्त कराना। किसी विशेष अवस्था या दशा तक ले आना। जैसे—उन्हें इस उच्च पद तक पहुँचानेवाले आप ही हैं। ४. किसी रूप मे उपस्थित, प्राप्त या विद्यमान कराना। जैसे—किसी को कष्ट या लाभ पहुँचाना; आँखो मे ठंढक पहुँचाना, कही कोई खबर पहुँचाना। ५. प्रविष्ट करना।

पहुँची—स्त्री० [हिं० पहुँचा] १. कलाई पर पहनने का एक तरह का गहना। जिसमें बहुत से गोल या कँगूरेदार दाने कई पत्तियो मे गूँथे हुए होते हैं। २ प्राचीन काल मे युद्ध के समय कलाई पर पहना जानेवाला एक तरह का आवरण। ३ पायल। पाजेब। (पश्चिम)

पहु†—पु०=प्रभु।

स्त्री०=पौ (प्रातःकाल का हलका प्रकाश)।

पहुड़ना†—अ०१ =पौढ़ना (तैरना)। २ =पौढ़ना (लेटना)।

पहुतना—अ०=पहुँचना। (राज०)

पहुनई—स्त्री०=पहुनाई।

पहुना†—पु०=पाहुना।

पहुनाई—स्त्री० [हिं० पाहुना+आई (प्रत्य०)] १. पाहुने के रूप मे कहीं ठहरने तथा सेवा-सत्कार आदि कराने की क्रिया या भाव।

मुहा०—**पहुनाई करना**=बराबर दूसरो के यहाँ पाहुन या अतिथि बनकर खाते और रहते फिरना। दूसरो के आतिथ्य पर चैन से दिन बिताना।

२. अतिथि का भोजन आदि से किया जानेवाला सत्कार। आतिथ्य-सत्कार।

पहुनी—स्त्री० [हिं० पाहुना का स्त्री०] १ रखेली स्त्री। २ समधी की स्त्री। समधिन। ३ दे० 'पहुनाई'।

पहुमी—स्त्री० [देश०] वह पच्चर जो लकड़ी चीरते समय चिरे हुए अंश के बीच में इसलिए लगाया जाता है कि आरा चलाने के लिए बीच मे यथेष्ट अवकाश रहे।

पहुप†—पु०=पुष्प।

पहुमि (मी)*—स्त्री०=पुहमी (पृथ्वी)।

पहुरना—पु० [स्त्री० पहुरनी]=पाहुना।

पहुरी†—स्त्री० [देश०] संगतराशो की एक तरह की चिपटी टाँकी जिससे वे गढ़े हुए पत्थर चिकने करते है। मठरनी।

पहुला†—पु०[सं० प्रफुल] १. कुमुद। कोई। उदा०—पहुला हारु हियै लसै सन की बेंदी भाल।—बिहारी। २ गुलाब का फूल।

पहुवो*=पुहमी (पृथ्वी)। (राज०)

पहेटना—स० [सं० प्रखेट, प्रा० पहेट=शिकार] १ किसी को पकड़ने के लिए उसका पीछा करना। २ कोई कठिन काम परिश्रम-पूर्वक समाप्त करना। ३ औजारो की धार तेज करने के लिए उन्हें पत्थर या सान पर रगड़ना। ४. अच्छी तरह या डटकर खाना। खूब भर-पेट भोजन करना। ५ अनुचित रूप से ले लेना।

पहेरी†—स्त्री०=पहेली।

पु०=प्रहरी।

पहेली—स्त्री० [सं० प्रहेलिका] १ प्रस्ताव के रूप मे होनेवाली एक प्रकार की प्रश्नात्मक उक्ति या कथन जिसमें किसी चीज या बात के लक्षण बतलाते हुए अथवा घुमाव-फिराव से किसी प्रसिद्ध बात या वस्तु का स्वरूप मात्र बतलाते हुए यह कहा जाता है कि बतलाओ कि वह कौन सी बात या वस्तु है। (रिडल)

क्रि० प्र०—बुझाना।—बूझना।

विशेष—पहेलियाँ प्रायः दूसरो के ज्ञान या बुद्धि की परीक्षा के लिए होती हैं, और सभी जातियो तथा देशो मे प्रचलित होती हैं। यह आर्थी और शाब्दी दो प्रकार की होती हैं। यथा—'फाट्यो पेट, दरिद्री नाम। उत्तम घर में वाको ठाम।' शख की आर्थी पहेली है, और 'उस आधा आधा रफि होई। आधा-साधा समझै सोई।' अशरफी की शाब्दी पहेली है। हमारे यहाँ वैदिक युग में पहेली को 'ब्रह्मोदय' कहते थे, और अश्वमेध आदि यज्ञो मे बलि कर्म से पहले ब्राह्मण तथा होता लोगो से ब्रह्मोदय के उत्तर पूछते अर्थात् पहेलियाँ बुझाते थे। भारत की कई (आदिम) जातियो मे अब भी विवाह के समय पहेलियाँ बुझाने की प्रथा प्रचलित है।

२ कोई ऐसी कठिन या गूढ़ बात अथवा समस्या जिसका अभिप्राय, आशय, तत्त्व या निराकरण सहज मे न होता हो और जिसे सुनकर लोगो की बुद्धि चकरा जाती हो। दुर्ज्ञेय और विकट प्रश्न या बात। (रिडल, उक्त दोनो अर्थों मे) ३. अधिक विस्तार मे घुमा-फिराकर तथा अस्पष्ट रूप मे कही हुई कोई बात।

मुहा०—**पहेली बुझाना**=बहुत घुमाव-फिराव से ऐसी बात कहना जो लोगो को चक्कर मे डाल दे। जैसे—अब पहेलियाँ बुझाना छोड़ो, और साफ-साफ बतलाओ कि तुम क्या चाहते हो (या वहाँ क्या हुआ)।

पह्लव—पु० [स०] १ ईरान या फारस देश का प्राचीन निवासी। २ ईरान या फारस मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति। ३ ईरान या फारस देश।

पह्लवी—स्त्री० [फा०] आर्य-परिवार की एक प्राचीन भाषा जिसका प्रचलन ईरान या फारस देश मे ईसवी तीसरी, चौथी और पाँचवी शताब्दियो मे था।

पह्लिका—स्त्री० [स० अप√ह्लु+ड+कन्, इत्व, अकार-लोप] जल-कुभी।

पाँ†—पु०=पाँव।

पाँइ—पु०=पाँव।

मुहा०*—**पाँइ पारना**=दे० 'पाँव' के अतर्गत 'पाँव पारना' मुहा०।

पाँइता†—पु०=पायँता (पैताना, चारपाई का)।

पाँउ*—पु०=पाँव।

पाँउरी—*स्त्री०=पाँवड़ी।

पाँओं†—पु०=पाँव।

पाँक (१)†—पु०=पक (कीचड़)।

पाँक्त—वि० [स० पंक्ति+अञ्] १ पक्ति-सबधी। पक्ति का। २ पक्ति के रूप मे होनेवाला।

पांक्तेय—वि० [स० पक्ति+ढक्—एय] [पक्ति+ष्यञ्] (व्यक्ति) जो अपने अथवा किसी विशिष्ट वर्ग के लोगो के साथ एक पक्ति मे बैठकर भोजन कर सकता हो।

पांक्त्य—वि० [स० पक्ति+ष्यञ्]=पाक्तेय।

पाँख (ड़ा)†—पु०=पख (पक्षियो के)।

†पु०=पख (पखवाड़ा)।

पाँखड़ी†—स्त्री०=पखड़ी।

पाँखी—वि० [हि० पख] पंख या पखोवाला।

स्त्री० १. पक्षी। २ फतिगा। ३. काठ का एक उपकरण जिससे खेतो मे क्यारियाँ बनाई जाती हैं। ४. दे० 'पाँखा'।

पाँखुरी—स्त्री०=पंखड़ी।

पाँग—पु० [स० पक] वह नई जमीन जो किसी नदी के पीछे हट जाने से उसके किनारे पर निकलती है। कछार। खादर। गग-बरार।

†पु०[?] जुलाहो के करघे का ढाँचा।

पांगल—पु० [स० पागुल्य] ऊँट। (डि०)

पाँगा—पु०=पाँगा नमक।

पाँगा नमक—पु० [स० पक, हि० पाँग+नोन]=समुद्री नमक।

पाँगा नोन—पु०=पाँगा नमक।

पाँगुर—स्त्री० [हि० पाँव+उँगली] पैर की कोई उँगली।

†वि०—पगुल।

पाँगुरना—अ० [?] पनपना।

पाँगुरा—वि०=पागुर (पगुल)।

पाँगुल—वि०=पगुल।

पांगुल्य—पु० [स० पगुल+ष्यञ्] पगुल होने की अवस्था या भाव। लॅगड़ापन।

पाँच—वि० [स० पच] जो गिनती मे चार से एक अधिक अथवा छ मे एक कम हो।

मुहा०—**(किसी की) पाँचो उँगलियाँ घी मे होना**=हर काम मे किसी को सफलता मिलना या लाभ होना। **पाँचों सवारों में नाम लिखाना या पाँचवें सवार बनना**—जबरदस्ती अपने को अपने से श्रेष्ठ मनुष्यो की पक्ति या श्रेणी मे गिनना या समझना। औरो के साथ अपने को भी श्रेष्ठ गिनना। बड़ा बतलाने या समझने लगना।

पद—**पाँच जने की जमात**=घर-गृहस्थी और परिवार।

पु० [स० पच] १. पाँच का सूचक अक या सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—५। २ जात-बिरादरी या समाज के अच्छे या मुख्य लोग। ३ सब अच्छे आदमी। उदा०—जो पाँचहि मत लागै नीका।—तुलसी।

वि० बहुत अधिक चालाक या होशियार। उदा०—मेरे फदे मे एक भी न फँसा। पाँच बन्नो थी जिससे चार उलझे।—जान साहब।

पाँचक—पु०, स्त्री०=पचक।

पांचकपाल—वि० [स० पचकपाल+अण्] पचकपाल सबधी।

पांचजनी—स्त्री० [स० पचजन+अण्—ङीप्] भागवत के अनुसार पचजन नामक प्रजापति की असिकी नामक कन्या का दूसरा नाम।

पांचजन्य—पु० [स० पचजन+ण्य] १ पचजन राक्षस का वह शख जो भगवान कृष्ण उठाकर ले गये थे और स्वय बजाया करते थे। २ विष्णु के शख का नाम। ३ जम्बू द्वीप का एक नाम।

पांचदश्य—पु० [स० पचदशन्+ण्य] पद्रह की सख्या।

पांचनद—वि० [स० पचनद+अण्] पचनद या पजाब-सबधी।

पु० १ पजाब का निवासी। २ पजाब।

पाँचपंच—पु० बहु० [हि०] सब या मुख्य मुख्य लोग। जैसे—पाँच पच जो कुछ कहें, वह हम मानने को तैयार हैं।

पांच-भौतिक—वि० [स० पचभूत+ठक्—इक] १. जिसका संबध

पंचभूतों से हो। २. पंच-भूतों से मिलकर बना हुआ। जैसे—पांच भौतिक शरीर।

पांचयज्ञिक—वि० [सं० पंचयज्ञ+ठक्—इक] पंच यज्ञ-संबंधी। पुं० पाँच प्रकार के यज्ञों में से प्रत्येक।

पाँचर—पुं० [सं० पंजर] कोल्हू के बीच में जड़े हुए लकड़ी के वे छोटे टुकड़े जो गन्ने के टुकड़ों को दबाने के लिए लगाये जाते हैं।
पुं०=पच्चर।

पांचरात्र—पुं० [सं० पंचरात्रि+अण्] आधुनिक वैष्णव मत का एक प्राचीन रूप जिसमें परम, तत्त्व मुक्ति, भुक्ति योग और विषय (संसार) इन पाँच रात्रों (ज्ञानों) का निरूपण होता था। यह भागवत धर्म की दो प्रधान शाखाओं में से एक था।

पांचवर्षिक—वि० [सं० पंचवर्ष+ठञ्—इक] पाँच वर्षों में होनेवाला। पंचवर्षीय।

पाँचवाँ—वि० [हिं० पाँच+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० पाँचवी] क्रम या गिनती में पाँच के स्थान पर पड़नेवाला।

पांचशाब्दिक—पुं० [सं० पंचशब्द+ठक्—इक] करताल, ढोल, बीन, घंटा और भेरी ये पाँच प्रकार के बाजे।

पाँचा—पुं० [हिं० पाँच] खेत का एक उपकरण जिसमें एक डंडे के साथ छोटी छोटी फूलकड़ियाँ लगी रहती है। यह प्रायः कटी हुई फसल या घास-भूसा इकट्ठा करने के काम आता है।

पांचार्थिक—पुं० [सं० पंचार्थ+ठन्—इक, वृद्धि (बा०)] शैव।

पांचाल—वि० [सं० पंचाल+अण्] १ पंचाल देश से संबंध रखनेवाला। पंचाल का। २ पंचाल देश में होनेवाला।
पुं० १. पंचाल जाति के लोगों का देश जो भारत के पश्चिमोत्तर खंड में था। २. पंचाल जाति के लोग। ३ प्राचीन भारत में, बढ़इयों, नाइयों, जुलाहों, धोबियों और चमारों के पाँचों वर्गों का समूह।

पांचालक—वि० [सं० पांचाल+कन्] पंचालवासियों के संबंध का। पुं० पंचाल देश का राजा।

पांचाल-मध्यमा—स्त्री० [सं०] भारतीय नाट्य कला में, एक प्रकार की प्रवृत्ति या बात-चीत, वेश-भूषा आदि का ढंग, प्रकार या रूप जो पांचाल शूरसेन, कश्मीर, वाह्लीक, मद्र आदि जनपदों की रहन-सहन आदि के अनुकरण पर होता था।

पांचालिका—स्त्री० [सं० पांचाली+कन्+टाप्, ह्रस्व] =पंचालिका।

पांचाली—स्त्री० [सं० पंचाल+अण्—ङीष्] १ पंचाल देश की स्त्री। २. पाँचों पांडवों की पत्नी द्रौपदी जो पांचाल देश की राजकुमारी थी। ३. साहित्यिक रचनाओं की एक विशिष्ट रीति या शैली जो मुख्यतः माधुर्य, सुकुमारता आदि गुणों से युक्त होती है। इसमें प्रायः छोटे-छोटे समास और कर्ण-मधुर पदावलियाँ होती हैं। किसी किसी के मत से गौड़ी और वैदर्भी वृत्तियों के सम्मिश्रण को भी पांचाली कहते हैं। ४. संगीत में (क) स्वर-साधन की एक प्रणाली; और (ख) रुद्र ताल के छः भेदों में से एक। ५. छोटी पीपल।

पाँची†—स्त्री० [हिं० पच्ची का पुराना रूप] रत्नों आदि के जड़ाव का काम। पच्चीकारी। उदा०—आयत सपनु रहत ऊपर मनि, ज्यों कंचन संग पाँची।—हित हरिवंश।
स्त्री० [देश०] एक तरह की घास।

पाँचेक†—वि० [हिं० पाँच+एक] १ पाँच के लगभग। २ थोड़े-से। जैसे—वहाँ पाँचेक आदमी आये थे।

पाँचैं—स्त्री० [हिं० पंचमी] किसी पक्ष की पाँचवी तिथि। पंचमी।

पाँछना—स० १=पाछना। २ पोंछना का अनु०।

पाँज†—स्त्री० [सं० पाश] बाहु-पाश।
वि० [हिं० पाँव] (जलाशय या नदी) जिसमें इतना कम पानी हो कि यों ही पाँव पाँव चलकर पार किया जा सके।
स्त्री० छिछला जलाशय या नदी।
पुं० पुल। सेतु। उदा०—जनक-सुता हितु हरयो लंक-पति, बाँध्यो सागर पाँज।—सूर।
पुं० [हिं० पाँजना] पाँजने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पाँजना—स० [सं० प्रण द्रध, प्रा० पणज्झ पंज्झ] धातुओं के टुकड़ों को जोड़ने के लिए उनमें टाँका लगाना। झालना।

पाँजर—अव्य० [सं० पंजा] पास। समीप।
पुं० १. निकटता। सामीप्य। २ दे० 'पंजर'।

पाँजी†—स्त्री० १=पाँज। २ =पंजी।

पाँझ—स्त्री०=पाँज।

पाँडक—पुं०=पंडुक (पेंडुकी)।

पांडर—पुं० [सं०√पण्ड् (गति)+अर, दीर्घ] १ कुंद का वृक्ष और फूल। २ सफेद रंग। ३ सफेद रंग की कोई चीज। ४ मरुआ। ५ पानड़ी। ६ एक प्रकार का पक्षी। ७. महाभारत के अनुसार ऐरावत के कुल में उत्पन्न एक हाथी। ८ पुराणानुसार एक पर्वत जो मेरु पर्वत के पश्चिम में स्थित कहा गया है।

पांडर-पुष्पिका—स्त्री० [सं० ब० स०, कप्, टाप्, इत्व] सातला वृक्ष।

पाँडरा—पुं० [देश०] एक प्रकार की ईख।

पांडव—वि० [सं० पांडु+अण्] पांडु संबंधी। पांडु का।
पुं० १ कुंती और माद्री के गर्भ से उत्पन्न राजा पांडु के ये पाँचों पुत्र—युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव। २ प्राचीन काल में पंजाब का एक प्रदेश जो वितस्ता (झेलम) नदी के किनारे था। ३ उक्त प्रदेश का निवासी। ४ रहस्य संप्रदाय में, पाँचों इंद्रियाँ।

पांडव-नगर—पुं० [सं० ष० त०] हस्तिनापुर।

पांडवाभील—पुं० [सं० पांडव-अभी, ष० त०,√ला (लेना) +क] श्रीकृष्ण।

पांडवायन—पुं० [सं० पांडव-अयन, ब० स०] श्रीकृष्ण।

पांडविक—पुं० [सं० पांडु+ठञ्—इक] एक तरह की गौरैया।

पांडवीय—वि० [सं० पांडव+छ—ईय] पांडु के पुत्रों से संबंध रखनेवाला। पांडवों का।

पांडवेय—पुं० [सं० पांडु+अण्+ङीप्+ढक्—एय] १. पांडव। २ राजा परीक्षित का एक नाम।

पांडित्य—पुं० [सं० पंडित+ष्यञ्] १ पंडित होने की अवस्था या भाव। २. पंडित या विद्वान् को होनेवाला ज्ञान। विद्वत्ता।

पाँडीस—स्त्री० [?] तलवार। (डिं०)

पांडु—वि० [सं०√पड् (गति)+कु, नि० दीर्घ] [भाव० पांडुता] हलके पीले रंग का।
पुं० १. पांडु फली। २. सफेद रंग। ३ कुछ लाली

लिये पीला रंग। ४. त्वचा के पीले पड़ने का एक रोग। पीलिया। ५ हस्तिनापुर के प्रसिद्ध राजा जिनके युधिष्ठिर, भीम, अर्जुन, नकुल और सहदेव ये पाँच पुत्र थे। ६ सफेद हाथी। ७. एक नाग का नाम। ८ परवल।

पाँडुआ†—पु० [सं०] वह जमीन जिसकी मिट्टी में बालू भी मिला हो। दोमट जमीन।

पांडु-कंटक—पु० [ब० स०] अपामार्ग। चिचड़ा।

पांडु-कंबल—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का सफेद रंग का पत्थर।

पांडुकंबली (लिन्)—स्त्री० [सं० पांडुकंबल+इनि] ऊनी कंबल से आच्छादित गाड़ी।

पाँडुक†—पु० =पंडुक (पेंडकी)।

पांडुक†—पु० [सं० पाण्डु+कन्] १ पीला रंग। २ पीलिया रोग। ३ पांडुराजा।

पांडु-कर्म (र्मन्)—पु० [ष० त०] सुश्रुत के अनुसार व्रण-चिकित्सा का एक अंग जिसमें फोड़े के अच्छे हो जाने पर उसके काले वर्ण को औषधि के प्रयोग से पीला बनाते हैं।

पांडु-क्ष्मा—स्त्री० [ब० स० ?] हस्तिनापुर का एक नाम।

पांडु-चित्र—पु० [सं०] आलेख।

पांडु-तरु—पु० [कर्म० स०] धौ का पेड़।

पांडुता—स्त्री० [सं० पांडु+तल्+टाप] पांडु होने की अवस्था या भाव। पीलापन।

पांडु-तीर्थ—पु० [ष० त०] पुराणानुसार एक तीर्थ।

पांडु-नाग—पु० [उपमि० स०] १. पुन्नाग वृक्ष। २. [कर्म० स०] सफेद हाथी। ३. सफेद साँप।

पांडु-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] रेणुका नामक गंध-द्रव्य।

पांडु-पुत्र—पु० [ष० त०] राजा पांडु का पुत्र। पाँचों पांडवों में से प्रत्येक।

पांडु-पृष्ठ—वि० [ब० स०] १ जिसकी पीठ सफेद हो। २ लाक्षणिक अर्थ में, (वह व्यक्ति) जिसके शरीर पर कोई शुभ लक्षण न हो। ३. अकर्मण्य। निकम्मा।

पांडु-फला—पु० [ब० स०, टाप्] परवल।

पांडु-फली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] एक तरह का छोटा क्षुप।

पांडु-मृत्तिका—स्त्री० [कर्म० स०] १. खड़िया। दुधिया मिट्टी। २. राम-रज नाम की पीली मिट्टी।

पांडु-रंग—पु० [सं० पांडुर-अंग, ब० स०, शक०, पररूप] १. एक प्रकार का साग जो वैद्यक के अनुसार स्वाद में तिक्त और कृमि, श्लेष्मा, कफ आदि का नाश करनेवाला माना जाता है। २ पुराणानुसार विष्णु के एक अवतार।

पांडुर—वि० [सं० पांडु+र] १ पीला। जर्द। २ सफेद। श्वेत। पु० १ धौ का पेड़। २ सफेद ज्वार। ३ कबूतर। ४ बगला। ५ सफेद खड़िया। ६ कामला रोग। ७ सफेद कोढ़। ८ कार्तिकेय के एक गण का नाम। ९. सर्प। साँप। १०. साधु-संतों की आध्यात्मिक परिभाषा में, अज्ञान।

पांडुरक—वि० [सं० पाण्डुर+कन्] पांडु रंग का। पीला। पु० १ पीला रंग। २ पीलिया।

पांडुर-द्रुम—पु० [सं० कर्म० स०] कुटज। कुड़ा। कुरैया।

पांडु-पृष्ठ—पु० =पांडुपृष्ठ।

पांडुर-फली—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] एक प्रकार का छोटा क्षुप।

पांडुरा—स्त्री० [सं० पांडुर+टाप्] १ मषवन। माषपर्णी। २ ककड़ी। ३ बौद्धों की एक देवी या शक्ति।

पांडु-राग—पु० [ब० स०] दौना नाम का पौधा। पु० [कर्म० स०] सफेद रंग। सफेदी।

पांडुरिमा—स्त्री० [सं० पांडुर+इमनिच्] हलका पीलापन।

पांडुरेक्षु—पु० [सं० पांडुर-इक्षु, कर्म० स०] हलके पीले रंग की ईख।

पांडुलिपि—स्त्री० [सं०] १ पुस्तक, लेख आदि की हाथ की लिखी हुई वह प्रति जो छपने को हो। (मैनस्क्रिप्ट) २. दे० 'पांडुलेख'।

पांडु-लेख—पु० [कर्म० स०] १ हाथ से लिखा हुआ वह आरंभिक लेख जिसमें काँट-छाँट, परिवर्तन आदि होने को हो। २. उक्त का काट-छाँट कर तैयार किया हुआ वह रूप जो प्रकाशित किये या छापा जाने को हो। (ड्राफ्ट) ३ पांडुलिपि।

पांडु-लेखक—पु० [ष०त० ?] वह जो लेख आदि की पांडु-लिपि लिखकर तैयार करता हो। (ड्राफ्ट्समन)

पांडु-लेखन—पु० [ष० त० ?] लेख आदि की पांडुलिपि तैयार करने का काम। (ड्राफ्टिंग)

पांडु-लेख्य—पु० [कर्म० स०] १ =पांडुलिपि। २ =पांडुलेख।

पांडु-लोमश—वि० [कर्म० स०, +श] [स्त्री० पांडुलोमशा] सफेद रोएँ-वाला। जिसके रोयें या बाल सफेद हों।

पांडु-लोमशा—स्त्री० [सं० पांडुलोमश+टाप्] मषवन। माषपर्णी।

पांडु-लोमा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] पांडु-लोमशा। (दे०)

पांडु-शर्करा—स्त्री० [ब० स०] प्रमेह रोग का एक भेद।

पांडुशर्मिला—स्त्री० [सं०] द्रौपदी।

पांडू—स्त्री० [सं० पांडु-पीला] १ हलके पीले रंग की मिट्टी। २. ऐसा कीचड़ जिसमें बालू भी मिला हो। ३ ऐसी भूमि जिसमें वर्षा के जल से ही उपज होती हो। बारानी।

पाँडे—पु० [सं० पंडा या पंडित] १ दे० 'पाण्डेय'। २ अध्यापक। शिक्षक। ३ भोजन बनानेवाला ब्राह्मण। रसोइया। ४ पंडित। विद्वान्। (क्व०)

पांडेय—पु० [सं० पंडा या पंडित] १ कान्यकुब्ज और सरयूपारी ब्राह्मणों की शाखाओं का अल्ल या उपाधि। २ कायस्थों की एक शाखा। ३ दे० 'पाँडे'।

पाँत†—स्त्री० =पंक्ति।

पाँतरना—अ० [सं० पीत्रल] १ गलती या भूल करना। २ मूर्खता करना। उदा०—प्रमणै पित मात पूत मत पातरि।—प्रिथीराज।

पाँतरिया—वि० [सं० पत्रल] जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो। उदा०—पातरिया माता इ पिता।—प्रिथीराज।

पाँति—स्त्री० [सं० पंक्ति] १. अवली। कतार। पंगत। २ बिरादरी के वे लोग जो साथ बैठकर भोजन कर सकते हों।

पांथ—वि० [सं० पथिन्+अण्, पन्थ-आदेश] १ पथिक। २ वियोगी। विरही। पु० सूर्य।

*पु०=पथ (रास्ता)।

पांथ-निवास—पु० [ष० त०] =पांथ-शाला।

पांथ-शाला—स्त्री० [ष० त०] पथिकों और यात्रियों के ठहरने के लिए रास्ते में बनी हुई जगह (इमारत या घर)। जैसे—धर्मशाला, सराय, होटल आदि।

पाँपणि*—स्त्री० [हि० पश्चिमी हि० पपनी] पलक। उदा०—पाँपणि पख सँवारि नवी परि।—प्रिथीराज।

पाँय—पु०=पाँव।

पाँयचा—पु० [फा०] १. पाखानों आदि में बना हुआ पैर रखने के वे ईंटें या पत्थर जिन पर पैर रखकर शौच से निवृत्त होने के लिए बैठते हैं। २ पाजामे की मोहरी का वह अंश जो घुटनों के नीचे तक रहता है।

पाँयता†—पु०=पैताना।

पाँव—पु० [सं० पाद, प्रा० पाय, पाव] १ जीव-जंतुओं, पशुओं और विशेषतः मनुष्य के नीचेवाले वे अंग जिनकी सहायता से वे चलते-फिरते अथवा जिनके आधार पर वे खड़े होते हैं। पैर।

पद—**पाँव का खटका**=दे० 'पैर' में 'पैर की आहट।' **पाँव की जूती**=बहुत ही तुच्छ या हीन वस्तु या व्यक्ति। **पाँव की बेड़ी**=ऐसा बंधन जो किसी की स्वच्छंद गति या रहन-सहन में बाधक हो।

मुहा०—**(किसी काम या बात में) पाँव अड़ाना**=दे० 'टाँग' के अंतर्गत 'टाँग अड़ाना।' **पाँव उखड़ जाना**=दे० 'पैर' के अंतर्गत 'पैर उखड़ना या उखड़ जाना'। **पाँव उखाड़ना**=दे० 'पैर' के अंतर्गत। **पाँव उठाना**=दे० 'पैर' के अंतर्गत। **पाँव खींचना**=व्यर्थ इधर-उधर आना-जाना या घूमना-फिरना छोड़ देना। **पाँव गाड़ना**=दे० नीचे 'पाँव रोपना'। **पाँव घिसना**=(क) बार-बार कहीं बहुत अधिक आना-जाना। (ख) दे० नीचे 'पाँव रगड़ना'। **(किसी स्त्री के) पाँव छुड़ाना**=उपचार, औषध आदि की सहायता से ऐसा उपाय करना कि रुका हुआ मासिक रज-स्राव फिर से होने लगे। **(किसी स्त्री के) पाँव छूटना**=(क) स्त्री का मासिकधर्म से या रजस्वला होना। (ख) रोग आदि के कारण असाधारण रूप से और अपेक्षया अधिक समय तक रज-स्राव होता रहना। **(किसी के) पाँव छूना**=किसी बड़े का आदर या सम्मान करने के लिए उसके पैरों पर हाथ रखकर नमस्कार या प्रणाम करना। **पाँव ठहरना**=दृढ़तापूर्वक या स्थिर भाव से कहीं खड़े होना। ठहरना या रुकना। **पाँव तोड़कर बैठना**=स्थायी रूप और स्थिर भाव से एक जगह पर रहना और व्यर्थ इधर-उधर आना-जाना बंद कर देना **(किसी के) पाँव दबाना या दाबना**=थकावट दूर करने या आराम पहुँचाने के लिए टाँगें दबाना। **(किसी काम या बात में) पाँव धरना**=किसी काम में अग्रसर या प्रवृत्त होना। **(किसी के) पाँव धरना या पकड़ना**=किसी प्रकार का आग्रह, विनती आदि कहते मनाने के लिये किसी के पाँव पर हाथ रखना। उदा०—अब यह बात यहाँ जानि ऊधौ, पकरति पाँव तिहारे।—सूर। **(किसी जगह) पाँव धरना या रखना**=कहीं जाना या जाकर पहुँचना। पैर रखना। जैसे—अब कभी उन के यहाँ पाँव न रखना। **(किसी जगह) पाँव धारना**=कृतज्ञतापूर्वक पदार्पण करना। उदा०—धन्य भूमि बन पथ पहारा। जँह जँह नाथ पाँव तुम धारा।।—तुलसी। **(किसी के) पाँव धोकर पीना**=(क) चरणामृत लेना। (ख) बहुत अधिक पूज्य तथा मान्य समझकर परम आदर, भक्ति और श्रद्धा के भाव प्रकट करना। **पाँव निकालना**=(क) कहीं चलने या जाने के लिए पैर उठाना या बढ़ाना। (ख) नियंत्रण आदि की उपेक्षा करते हुए कोई नई प्रवृत्ति विशेषतः अनिष्ट या अवांछित प्रवृत्ति के लक्षण दिखलाना। जैसे—तुम तो अभी से पाँव निकालने लगे। **(किसी का) पाँव पड़ना**=आगमन होना। आना। जैसे—आपके पाँव पड़ने से यह घर पवित्र हो गया। **(किसी के) पाँव पड़ना**=(क) झुककर या पैर छूकर नमस्कार करना। (ख) अपनी प्रार्थना या विनती मनवाने के लिए बहुत ही दीनतापूर्वक आग्रह करना। **(किसी के) पाँव पर गिरना**=दे० ऊपर '(किसी के) पाँव पड़ना'। **पाँव पर पाँव रखकर बैठना**=काम-धंधा छोड़ बैठना या पड़े रहना। निठल्ले की तरह बैठना। **(किसी के) पाँव पर पाँव रखना**=दूसरे के चरण चिह्नों का अनुकरण करना। किसी का अनुगामी या अनुयायी बनना। **(किसी के) पाँव पर सिर रखना**=दे० ऊपर '(किसी के) पाँव पड़ना'। **पाँव पलोटना**=दे० 'पैर' के अंतर्गत 'पैर दबाना'। **पाँव पसारना**=दे० 'पैर' के अंतर्गत 'पैर फैलाना'। **पाँव-पाँव चलना**=पैदल चलना। जैसे—अब कुछ दूर पाँव-पाँव भी चलो। **(किसी को) पाँव पारना**=पैरों पड़ने के लिए विवश करना। उदा०—कहाँ तौ ताकौ तृन गहाइ कैं, जीवत पाइनि पारौं।—सूर। **पाँव पीटना**=(क) बेचैनी या यंत्रणा से पैर पटकना। छटपटाना। (ख) बहुत अधिक दौड़-धूप या प्रयत्न करना। **(किसी के) पाँव पूजना**=बहुत अधिक भक्ति या श्रद्धा दिखाते हुए आदर-सत्कार करना। **(वर के) पाँव पूजना**=विवाह में कन्या कुल के लोगों का वर का पूजन करना और कन्यादान में योग देना। **(किसी के) पाँव फूलना**=भय, शंका आदि से ऐसी मनोदशा होना कि आगे बढ़ने का साहस न हो। **(प्रसूता का) पाँव फेरने जाना**=बच्चा हो जाने पर शुभ शकुन में प्रसूता का अपने मायके में कुछ दिनों तक रहने के लिए जाना। **(वधू का) पाँव फेरने जाना**=विवाह होने पर ससुराल आने के बाद वधू का पहले-पहल कुछ दिनों तक अपने मायके में रहने के लिए जाना। **पाँव फैलाना**=दे० 'पैर' के अंतर्गत। **पाँव बढ़ाना**=दे० 'पैर' के अंतर्गत। **पाँव बाहर निकालना**=पाँव निकालना। **पाँव रगड़ना**=(क) बहुत दौड़-धूप करना। (ख) कष्ट या पीड़ा से छटपटाना। **(किसी काम या बात के लिए) पाँव रोपना**=(क) दृढ़तापूर्वक प्रण या प्रतिज्ञा करना। (ख) हठ करना। अड़ना। **(किसी के) पाँव लगना**=पैरों पर सिर रखकर नमस्कार या प्रणाम करना। **(किसी स्थान का) पाँव लगा होना**=किसी स्थान से इस रूप में ज्ञात या परिचित होना कि उस पर चल-फिर चुके हों। जैसे—वहाँ का रास्ता हमारे पाँव लगा है, आप से आप ठीक जगह पहुँच जाता हूँ। **(किसी काम या बात से) पाँव समेटना**=अलग, किनारे या दूर हो जाना। संबंध न रखना। छोड़ देना। जैसे—अब काम से हमने पाँव समेट लिये।

विशेष—या 'पाँव' और 'पैर' एक दूसरे के पर्याय या समानक ही हैं, फिर भी 'पाँव' पुराना और पूर्वी शब्द है, तथा 'पैर' अपेक्षया आधुनिक और पश्चिमी शब्द है। अधिकतर पुराने प्रयोग या मुहावरे 'पैर' से संबद्ध हैं, और 'पाँव' की तुलना में 'पैर' अधिक प्रचलित तथा शिष्ट-सम्मत हो गया है। फिर भी बोल-चाल में लोग यह अंतर न जानने या न समझने के कारण दोनों शब्दों के मिले-जुले प्रयोग करते हैं जिससे

दोनो के मुहावरे भी बहुत कुछ मिल-जुल गये हैं। यहाँ दोनो के कुछ विशिष्ट प्रयोगों और मुहावरो से कुछ अतर रखा गया है। अत. पाँव के शेष प्रयोगो और मुहावरो के लिए 'पैर' के मुहावरे देखने चाहिए। २. कोई ऐसा आधार जिस पर कोई चीज या बात टिकी या ठहरी रहे। मुहा०—पाँव कट जाना=आधार या आश्रय नष्ट हो जाना। (किसी के) पाँव न होना=(क) ऐसा कोई आधार या आश्रय न होना जिस पर कोई टिक या ठहर सके। जैसे—इस बात का न कोई सिर है न पाँव। (ख) खड़े रहने या ठहरने की शक्ति न होना। जैसे—चोर के पाँव नही होते, अर्थात् उसमे ठहरने या सामने आने का साहस नही होता।

पाँव-चप्पी—स्त्री० [हिं० पाँव+चापना=दबाना] पैर दबाने की क्रिया या भाव।

पाँवचा—पुं०=पाँयचा।

पाँवड़ा—पुं० [हिं० पाँव+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० पाँवड़ी] १ वह कपड़ा जो किसी बड़े और पूज्य व्यक्ति के मार्ग मे इस उद्देश्य से बिछाया जाता है कि वह इस पर से ही हो कर चले। २ वह कपड़ा या ऐसी ही और कोई चीज जो पैर पोछने के लिए कही पड़ा या बिछा रहता हो। पाँवदान। ३ दे० 'पाँवड़ी'।

पाँवड़ी—स्त्री० [हिं० पाँव+ड़ी (प्रत्य०)] १ खड़ाऊँ। २ जूता। ३. सीढ़ी। सोपान। ४. ऐसी चीज या जगह जिस पर प्राय पैर रखे जाते या पड़ते हो। ५. गोटा-पट्ठा बिननेवालो का एक औजार जो बुनते समय पैरो से दबाकर रखा जाता है और जिससे ताने के तार ऊपर उठते और नीचे गिरते रहते है।

स्त्री० [हिं० पौरि, पौरी] १ वह कोठरी जो किसी घर के भीतर घुसते ही रास्ते मे पड़ती हो। ड्योढ़ी। पौरी। २ बैठने का ऊपरी कमरा। बैठक। ३ दे० 'पौरी'।

पाँवर—वि०=पामर।

पु०=पाँवड़ा।

स्त्री०=पाँवड़ी।

पाँवरी—स्त्री०=पाँवड़ी।

पांशन—वि० [स०√पस् (नाश करना)+ल्यु—अन, दीर्घ, पृषो०] १ कलंकित करनेवाला। भ्रष्ट करनेवाला। २ दुष्ट। ३ हेय। (प्रायः समास मे व्यवहृत) जैसे—पौलस्त्य-कुल-पांशन।

पु०१ अपमान। २ तिरस्कार।

पांशव—पु० [स० पांशु+अण्] रेह का नमक।

पांशु—स्त्री० [स०√पस् (ह्)+उ, दीर्घ] १ धूलि। रज। २ बालू। ३ गोबर की खाद। पाँस। ४ पित्त पापड़ा। ५. एक प्रकार का कपूर। ६ भू-सपत्ति। जमीन। जायदाद।

पांशु-कसीस—पु० [उपमि० स०] कसीस।

पांशुका—स्त्री० [स० पांशु√कै (चमकना)+क+टाप्] केवड़े का पौधा।

पांशुकुली—स्त्री० [स० पांशु√कुल् (इकट्ठा होना)+क+ङीप्] राजमार्ग।

पांशु-कूल—पु० [ष० त०] १ धूल का ढेर। २ चीथड़ो आदि को सीकर बनाया हुआ बौद्ध भिक्षुओ के पहनने का वस्त्र। ३ गुदड़ी। ४ वह दस्तावेज या लेख्य जो किसी विशिष्ट व्यक्ति के नाम न लिखा गया हो।

पांशु-कृत—वि० [तृ० त०] १ धूल से ढका हुआ। २ पीला पड़ा हुआ। ३ मैला-कुचैला।

पांशु-क्षार—पु० [उपमि० स०] पाँगा नमक।

पांशु-चंदन—पु० [ब० स०] शिव।

पांशु-चत्वर—पु० [तृ० त०] ओला।

पांशुज—पु० [स० पांशु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] नोनी मिट्टी से निकाला हुआ नमक।

पांशु-धान—पु० [ष० त०] धूल का ढेर।

पांशु-पटल—पु० [ष० त०] किसी चीज पर जमी हुई धूल की तह या परत।

पांशु-पत्र—पु० [ब० स०] बथुआ (साग)।

पांशु-मर्दन—पु० [ब० स०] १ थाला। २ क्यारी।

पांशुर—पु० [स० पांशु√रा (देना)+क] १. डाँस। २ खज। ३ पगु व्यक्ति।

पांशु-रागिनी—स्त्री० [स० पांशु√रञ्ज् (रगना)+घिनुण्+ङीप्] महामेदा।

पांशु-राष्ट्र—पु० [स० मध्य० स०] एक प्राचीन देश। (महाभारत)

पांशुल—वि० [स० पांशु+लच्] [स्त्री० पांशुला] १ जिस पर गर्द या धूल पड़ी हो। मैला-कुचैला। २ पर-स्त्री-गामी। व्यभिचारी। पु० १ पूतिकरज। २ शिव।

पांशुला—स्त्री० [स० पांशुल+टाप्] १ कुलटा या व्यभिचारिणी स्त्री। २ रजस्वला स्त्री। ३ जमीन। भूमि। ४ केतकी।

पाँस—स्त्री० [स० पांशु] १ राख, गोबर, मल, मूत्र आदि, सड़ी-गली चीजें जो खेतो को उपजाऊ बनाने के लिए उसमे डाली जाती है। खाद। क्रि० प्र०—डालना।—देना।

२ कोई चीज सड़ाकर उठाया जानेवाला खमीर। ३ विशेषत मधु आदि का वह खमीर जो शराब बनाने के लिए उठाया जाता है। क्रि० प्र०—उठाना।

पाँसना—स० [हिं० पाँस+ना (प्रत्य०)] खेत मे पाँस या खाद डालना।

पाँसा—पु०=पासा।

पाँसी—स्त्री० [स० पाश] घास, भूसा आदि बाँधने के लिए रस्सियो की बनी हुई बड़ी जाली। जाला।

पांसु—स्त्री० [√पस्+उ, दीर्घ]=पांशु।

पांसु-क्षार—पु० [उपमि० स०] पागा नमक।

पांसु-खुर—पु० [ब० स०] घोड़ो के खुरो का एक रोग।

पांसु गुंठित—वि० [तृ० त०] धूल से ढका हुआ।

पांसु-चंदन—पु० [ब० स०] शिव। महादेव।

पांसु-चत्वर—पु० [तृ० त०] ओला।

पांसु-चामर—पु० [ब० स०] १ बड़ा खेमा। तबू। २ नदी का ऐसा किनारा जिस पर दूब जमी हो। ३. धूल। ४ प्रशसा।

पांसुज—वि० [स० पांसु√जन्+ड] पाँगा नमक।

पांसु-पत्र—पु० [ब० स०] बथुए का साग।

पांसु-भव—पु० [ब० स०] पाँगा नमक।

पांसु-भिक्षा—स्त्री० [स० पांसु √भिक्ष् (याचना)+अङ्—टाप्] घी का पेड़।

पांसु-मर्दन—पु० [ब० स०] १ थाला। २ क्यारी।
पांसुर—पु० [स० पांसु√रा (देना)+क] १. एक प्रकार का बड़ा मच्छड़। डंस। डाँस। २ लूला-लँगड़ा जीव या प्राणी।
पांसुरागिणी—स्त्री० [स० वे० 'पांसुरागिनी'] महामेदा।
पाँसुरी—स्त्री०=पसली।
पांसुल—वि० [स० पांसु+लच्] १ धूल से लथ-पथ। २ मलिन। मैला। ३. पापी। ४. पर-स्त्रीगामी।
पु० शिव।
पांसुला—वि० [स० पांसुल+टाप्] १ व्यभिचारिणी (स्त्री)। २ रजस्वला (स्त्री)।
स्त्री० १. पृथ्वी। २. केतकी।
पाँसू—पु० [हिं० पाँस+ऊ (प्रत्य०)] कुम्हारो का एक उपकरण जिससे वे गीली मिट्टी चलाते और सानते हैं।
पाँहीं—अव्य० [हिं० पँह] १. निकट। पास। समीप। २ प्रति।
पा—पु० [स० पाद से फा०] पैर। पाँव।
वि० १. दृढ़ पैरोवाला। २ अधिक समय तक टिकने या ठहरनेवाला। टिकाऊ। (यौ० के अत मे) जैसे—देर-पा=देर तक ठहरनेवाला।
पा-अंदाज—पु० [फा० पाअंदाज] वह छोटा बिछावन जो कमरो के दरवाजो पर पैर पोछने के लिए रखा जाता है। पावदान। उदा०—दृग-पग पोछन कौ कियो भूषण पायन्दाज (पा-अंदाज)।—बिहारी।
पाइ†—पु०=पा (पैर)।
मुहा०—पाइ न पारना=पाँव पारना। (दे०)
*स्त्री० [?] किरण।
पाइक—वि०, पु०=पायक।
स्त्री०=पताका।
पाइका—पु० [अं०] आकार के विचार से टाइपो का एक भेद जिसका मुद्रित रूप १।६ इच के बराबर होता है।
पाइट—स्त्री० [अं० प्लाइट] बाँसो, तख्तो आदि को रस्सियो से बाँधकर खड़ा किया हुआ वह ढाँचा जिस पर खड़े होकर राज-मजदूर दीवारे आदि बनाते तथा उन पर पलस्तर, चूना, रग आदि करते हैं।
पाइतरी—स्त्री०=पायँता (खाट या बिस्तर का)।
पाइबेल—वि०, पुं०=पैदल।
पाइप—पु० [अं०] १. नल या नली। २. किसी प्रकार का नल जिसके अदर से होकर कोई चीज एक जगह से दूसरी जगह जाती हो। जैसे—पानी का पाइप, गैस का पाइप। ३ तमाकू पीने की एक प्रकार की पाश्चात्य नली। ४ बाँसुरी की तरह का एक प्रकार का पाश्चात्य बाजा।
पाइपोस—पुं०=पापोश (जूता)।
पाइमाल—वि०=पायमाल।
पाइरा—पु० [हिं० पाँव+रा (प्रत्य०)] घोड़े की जीन-सवारी के साज मे की रकाब।
पाइरिल्ला—पु० [स०] भूरे रग का एक तरह का थूथनदार कीड़ा जो गन्ने के पौधो की पत्तियाँ खाता है।
पाइल—स्त्री०=पायल।
पाइलट—पु० [अं०] वायुयान चालक।
पाईं—वि० [फा० पाईन] १. सामनेवाला। २. नीचेवाला। ३. अतिम।
पाईंबाग—पु० [फा०+अ०] घर के साथ लगा हुआ बाग। नजरबाग।
पाई—स्त्री० [स० पाद, पु० हिं० पाय] १. खड़ी या सीधी लकीर। २. वह छोटी खड़ी रेखा जो वाक्य के अत में पूर्णविराम सूचित करने के लिए लगाई जाती है। लेखो आदि मे पूर्णविराम का सूचक चिह्न। ३. पाँव। पैर। ४. घेरा बाँध कर चलने या नाचने की क्रिया या भाव। ५ पतली छड़ियो या बेतो का बना हुआ। जुलाहो का एक ढाँचा जिस पर ताने का सूत फैलाकर उन्हे माँजते हैं। टिकटी। अट्ठा।
मुहा०—ताना-पाई करना=बार-बार इधर से उधर और उधर से इधर आते-जाते रहना।
६ ताने का सूत माँजने की क्रिया। ७ घोड़ो के पैर सूजने का एक रोग। ८. ताँबे का एक पुराना छोटा सिक्का जो एक पैसे के तिहाई मूल्य का होता था और जिसका चलन अब उठ गया है। ९ ताँबे का पैसा। (पूरब) १०. वह पिटारी जिसमे देहाती स्त्रियाँ साधारण गहने-कपड़े रखती हैं।
स्त्री० [हिं० पाना=प्राप्त करना] प्राप्त करने अर्थात् पाने की क्रिया या भाव। जैसे—भर-पाई की रसीद।
स्त्री० [हिं० पाया=पाई कीड़ा] एक प्रकार का छोटा लबा कीड़ा जो घुन की तरह अन्न मे लगकर उसे खा जाता है और उसे अकुरित होने के योग्य नहीं रहने देता।
क्रि० प्र०—लगना।
स्त्री० [अ०] १ ढेर के रूप मे मिले हुए छापे के टाइप। २ छापेखाने मे सीसे के वे अक्षर या टाइप जो घिस-पिस अथवा टूट-फूट जाने के कारण निकम्मे या रद्दी हो गये हों, और ढेर के रूप मे अलग रख दिये गये हों। ३ छापेखाने मे सीसे के अक्षरो या टाइपो का वह ढेर जो अव्यवस्थित रूप से कहीं पड़ा हो।
पाईगाह†—स्त्री० [फा० पाएगाह] १. अश्वशाला। तबेला। २. किसी बड़े आदमी के प्रासाद या महल की ड्योढ़ी।
पाईता—पु० [देश०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक मगण, एक भगण और एक सगण होता है।
पाउँ†—पु०=पाँव।
पाउंड—पु० [अं०] १ सोने का एक अगरेजी सिक्का। २ सात या साढ़े सात छटाँक के लग-भग की एक तौल।
पाउंड-पावना—पु० [अं० पाउंड+हिं० पावना] पाउंडो के रूप मे प्राप्त विदेशी मुद्रा। विशेषत. ब्रिटेन से किसी देश के पावने की वह रकम जो बैंक आफ इग्लैंड मे जमा रहती है और उसके साथ हुए समझौते की शर्तों के अनुसार क्रमश चुकाई जाती है। (स्टर्लिंग बैलेन्स)
पाउ—पुं०=पाँव।
†पु०=पाव।
पाउडर—पु० [अं०] १ कोई ऐसी चीज जो पीसकर बहुत महीन कर दी गई हो। चूर्ण। बुकनी। २ वह सुगंधित चूर्ण या बुकनी जो स्त्रियाँ अपने चेहरे तथा अन्य अंगो पर उन की रगत चमकाने और सुन्दर बनाने के लिए लगाती हैं।

पाउस—पुं० =पावस (वर्षा ऋतु)।

पाक—पुं० [सं०√पच् (पकाना)+घञ्] १ भोजन आदि पकाने की क्रिया या भाव। रींधना। २ किसी चीज के ठीक तरह से पके या पचे हुए होने की अवस्था या भाव। ३ पकाया हुआ भोजन। रसोई। ४. वह औषध या फल जो शीरे मे पकाया गया हो। जैसे—बदाम पाक, मेवा पाक, सुपारी पाक। ५ खाये हुये पदार्थ के पचने की क्रिया या भाव। पचन। ६ श्राद्ध मे पिंडदान के लिए पकाया हुआ चावल या खीर। ७ किसी चीज या बात का अपने पूर्ण रूप मे पहुँचना, अथवा उचित और यथेष्ट रूप से परिपुष्ट तथा परिवृद्ध होना। ८ एक दैत्य जो इंद्र के हाथो मारा गया था।

वि० १ छोटा। २ प्रशसनीय। ३. परिपुष्ट तथा पूर्ण अवस्था मे पहुँचा हुआ। ४ ईमानदार। सच्चा। ५ अनजान।

वि० [फा०] १ पवित्र। निर्मल। विशुद्ध। जैसे—पाक नजर, पाक मुहब्बत।

पद—पाक-साफ- (क) पवित्र और स्वच्छ। (ख) निष्कलक।

२ साफ। स्वच्छ। ३ दोषों आदि से रहित। निर्दोष। ४ धार्मिक दृष्टि से पवित्र, सदाचारी और पूज्य। ५ किसी अवांछित अश या तत्त्व से रहित। जैसे—यह जायदाद सब तरह के झगडों से पाक है।

मुहा०—(जानवर) पाक करना=जबह किये हुए पशु या पक्षी के पर, रोएँ आदि काटकर अलग करना। **झगडा पाक करना**=(क) झगडा तै करना या निपटाना। (ख) झझट, बाधा आदि दूर, नष्ट या समाप्त करना। (ग) (विरोधी, वैरी आदि का) अत या नाश करना।

पुं० पाकिस्तान का सक्षिप्त रूप। जैसे—भारत-पाक मे समझौता।

पाक-कर्म—पुं०=पाक क्रिया।

पाक-कृष्ण—पुं० [ब० स०] १ जगली करौदा। २ पानी आँवला।

पाक-क्रिया—स्त्री० [ष०त०] १ भोजन आदि पकाने की क्रिया या भाव। २ पाचन क्रिया।

पाकज—वि० [सं० पाक√जन्+ड] पाक से उत्पन्न।

पुं० १ कचिया नमक। २ भोजन के ठीक प्रकार से न पचने पर पेट मे होनेवाला शूल।

पाकजाद—वि० [फा० पाकजाद.] शुद्ध तथा स्वच्छ प्रकृतिवाला। शुद्धात्मा।

पाकट—पुं०=पाकेट।

वि० =पाकठ।

वि०=पाकठा।

पाकठ—वि० [हिं० पकना] १ अच्छी तरह पका हुआ। २ यथेष्ट चतुर या चालाक। दक्ष। होशियार। जैसे—अब यह लडका दूकानदारी के काम मे पाकठ हो गया है। ३ दृढ। मजबूत।

पाकड़—पुं० [सं० पर्कटी] बरगद की जाति का एक बडा पेड। पाकड।

पाक-दामन—वि० [फा०] [भाव० पाकदामनी] जिसका चरित्र पवित्र और निष्कलक हो। (विशेष रूप से स्त्रियों के लिए प्रयुक्त)

पाकदामिनी—स्त्री० [फा०] 'पाकदामन' होने की अवस्था। (स्त्री का) सदाचार या सच्चरित्रता।

पाक द्विष—पुं० [सं० पाक√द्विष् (शत्रुता करना)+क्विप्] इंद्र।

पाकना—अ०=पकना।

स०=पकाना।

पाकबाज—वि० [फा० पाक+बाज] [भाव० पाकबाजी] सदाचारी।

पाक-पात्र—पुं० [मध्य० स०] ऐसा बरतन जिसमे भोजन पकाया या बनाया जाता हो।

पाक-पुटी—स्त्री० [च० त०] कच्ची मिट्टी के बरतन पकाने का आँवाँ।

पाक-फल—पुं० [ब० स०] १ करौदा। २ पानी अमला।

पाक-भांड—पुं० = पाक-पात्र। (दे०)

पाक-यज्ञ—पुं० [मध्य० स०] १ वृषोत्सर्ग, गृह-प्रतिष्ठा आदि के समय किया जानेवाला होम जिसमे खीर की आहुति दी जाती है। २ पच महायज्ञ मे ब्रह्मयज्ञ के अतिरिक्त अन्य चार यज्ञ—वैश्वदेव होम, बलि-कर्म, नित्य श्राद्ध और अतिथि-भोजन।

पाक-याज्ञिक—वि० [सं० पाक-यज्ञ+ठञ्—इक] १ पाकयज्ञ-सबधी। पाक-यज्ञ का। २ पाक यज्ञ करनेवाला ३ पाक यज्ञ से उत्पन्न।

पुं० वह ग्रथ जिसमे पाक-यज्ञ के विधान आदि बतलाये गये हो।

पाक-रंजन—पुं० [सं० पाक√रञ्ज्+णिच्+ल्यु—अन] तेजपत्ता।

पाकर—पुं० [सं० पर्कटी] बरगद की तरह का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

पाकरिपु—पुं० [ष० त०] इंद्र।

पाकरी—स्त्री० [हिं० पाकर का स्त्री० अल्पा० रूप] छोटा पाकर।

पाकल—पुं० [सं० पाक√ला (लेना)+क] १ वह दवा जिससे कुष्ठ अच्छा होता हो। कुष्ठ रोग की दवा। २ फोडा पकानेवाली दवा। ३ अग्नि। आग। ४ एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जिसमे पित्त प्रबल, वात मध्य और कफहीन अवस्था मे होता है। वैद्यक के अनुसार इसका रोगी प्रायः तीन दिन मे मर जाता है। ५ हाथी को आनेवाला ज्वर या बुखार।

पाकलि, पाकली—स्त्री० [सं० √पा (पीना)+क्विप्√कल् (गिनती करना)+इन्] [सं० पाकलि+ङीष्] काकडासींगी। कर्कटी।

पाक-शाला—पुं० [ष० त०] वह स्थान जहाँ भोजन पकाया या बनाया जाता हो। रसोई-घर।

पाकशासन—पुं० [सं० पाक√शास् (शासन करना)+ल्यु—अन] इंद्र।

पाक-शास्त्र—पुं० [ष० त०] वह शास्त्र जिसमे विभिन्न खाद्य पदार्थों या व्यंजन बनाने की कला, प्रक्रियायों आदि का विवेचन होता है।

पाक-शुक्ला—स्त्री० [सं० त०] खडिया मिट्टी।

पाक-स्थली—स्त्री० [ष० त०] पक्वाशय।

पाकहंता (तृ)—पुं० [ष० त०] इंद्र।

पाका—पुं० [हिं० पकाना] १ शरीर के विभिन्न अगो के पकने की क्रिया या भाव। २ फोडा।

वि०=पक्का।

पाकागार—पुं० [सं० पाक-आगार, ष० त०] पाकशाला।

पाकात्यय—पुं० [सं० पाक-अत्यय, ब० स०] आँख का एक रोग जिसमे उसका काला भाग सफेद हो जाता है। पुतली का सफेद हो जाना।

पाकाभिमुख—वि० [सं० पाक-अभिमुख, स० त०] जो पक रहा हो अथवा पूर्ण रूप से पकने को हो।

पाकारि—पु० [पाक-अरि, ष० त०] १ इंद्र। २ सफेद कचनार।

पाकिट—पु० १ =पाकेट। २ =पैकेट।

वि० =पाकठ।

पाकिस्तान—पु० [फा०] भारत का विभाजन करके बनाया हुआ वह मुसलमानी राज्य जिसका कुछ अंश भारत के पश्चिम मे और कुछ पूर्व मे है। पश्चिमी पाकिस्तान मे सिंध, पश्चिमी पंजाब, पश्चिमोत्तर सीमाप्रांत तथा पूर्वी पाकिस्तान मे पूर्वी बंगाल नामक प्रदेश है।

पाकिस्तानी—वि० [फा०] १ पाकिस्तान देश संबंधी। पाकिस्तान का। २ पाकिस्तान मे होनेवाला।

पु० पाकिस्तान मे रहनेवाला व्यक्ति।

पाकी—स्त्री० [फा०] १. पाक होने की अवस्था या भाव। २ निर्मलता। शुद्धता। ३. पवित्रता। पावनता।

मुहा०—**पाकी लेना**=उपस्थ पर के बाल साफ करना।

पाकीजा—वि० [फा० पाकीज़] [भाव० पाकीजगी] १. पाक। पवित्र। शुद्ध। २ सब प्रकार के दोषो, विकारो आदि से रहित। जैसे—पाकीजा सूरत।

पाकु—वि० [सं०√पच्+उण्] १ पकानेवाला। २. [√पच्+उकञ्] पचानेवाला। पाचकी।

पु० बावरची। रसोइया।

पाकेट—पु० [अ० पाकेट] जेब। खीसा।

मुहा०—**पाकेट गरम होना**=(क) पास मे धन होना। (ख) अनुचित या अवैध रूप से किसी प्रकार की प्राप्ति या लाभ होना।

†पु०=पैकेट।

पु० [?] ऊँट। (डि०)

पाक्य—वि० [सं०√पच्+ण्यत्] १ जो पकाया जाने को हो। २ पचने योग्य।

पु० १ काला नमक। २ साँभर नमक। ३ जवाखार। ४. ४ शोरा।

पाक्य-क्षार—पु० [कर्म० स०] १ जवाखार नमक। २ शोरा।

पाक्यज—पु० [सं० पाक्य√जन्+ड] कचिया नमक।

पाक्या—स्त्री० [सं० पाक्य+टाप] १ सज्जी। २ शोरा।

पाक्ष—वि० पाक्षिक।

†पु० पक्ष।

पाक्षपातिक—वि० [सं० पक्षपात+ठक्—इक] १. पक्षपात करनेवाला। फूट डालनेवाला। २ पक्षपात के रूप मे होनेवाला।

पाक्षायण—वि० [सं० पक्ष+फक्—आयन] १ जो पक्ष (१५ दिन) मे एक बार हो या किया जाय। पाक्षिक। २. पक्ष (१५ दिन) का।

पाक्षिक—वि० [सं० पक्ष+ठञ्—इक] १. चांद्र मास के पक्ष से संबंध रखनेवाला। २. जो एक पक्ष (१५ दिन) मे एक बार होता हो। जैसे—पाक्षिक अधिवेशन, पाक्षिक पत्र या पत्रिका। (फोर्टनाइटली)। ३ किसी प्रकार का पक्षपात करनेवाला। पक्षपाती। तरफदार। ४ (पिंगल मे छंद) जिसमे (पक्ष के रूप मे) दो मात्राएँ हों। ५. वैकल्पित।

पु० १ पक्षियो को फँसा या मारकर जीविका चलानेवाला व्यक्ति। बहेलिया। २. व्याध। शिकारी। ३. विकल्प।

पाखंड—पु० [सं०√पा (रक्षा करना)+क्विप् पा√खंड (खंडन करना) +अण्] [वि० पाखंडी] १ वेदो की आज्ञा, मत या सिद्धांत के विरुद्ध किया जानेवाला आचरण। २ धार्मिक क्षेत्र मे, अपने धर्म पर सच्ची निष्ठा और भक्ति रखते हुए केवल लोगो को दिखलाने के लिए झूठ-मूठ बढा-चढ़ाकर किया जानेवाला पाठ-पूजन तथा अन्य धार्मिक आचार-व्यवहार। ३ लौकिक क्षेत्र मे, वे सभी आचार-व्यवहार जो झूठ-मूठ अपने आपको धर्म-परायण, नीति-परायण और सत्यनिष्ठ सिद्ध करने के लिए किये जाते हैं। अपना छल-कपट, धूर्तता, स्वार्थ-परता आदि छिपाने के लिए किया जानेवाला आचार-व्यवहार। आडंबर। ढकोसला। ढोंग (हिपोक्रिसी)

मुहा०—**पाखंड फैलाना**=दूसरो को ठगने और धोखे मे रखने के लिए आडंबरपूर्ण थोथे उपाय रचना। दुष्ट उद्देश्य से ऐसा दिखावटी काम करना जो अच्छे इरादे से किया हुआ जान पडे। ढकोसला खडा करना। जैसे—बाबाजी ने गाँव मे खूब पाखंड फैला रखा था। ४ वह व्यय जो किसी को धोखा देने के लिए किया जाय। ५. दुष्टता। पाजीपन। शरारत। ६ नीचता।

वि०=पाखंडी।

पाखंडी (डिन्)—वि० [सं० पाखंड+इनि] १ वेद-विरुद्ध आचार करनेवाला। २. वेदाचार का खंडन या निंदा करनेवाला। ३ बनावटी धार्मिकता, सदाचार आदि दिखलानेवाला। ४ दूसरो को ठगने या धोखा देने के लिए आडंबर या ढोंग रचनेवाला।

पाख—पु० [सं० पक्ष] १ चांद्रमास का कोई पक्ष। २ महीने का आधा समय। पंद्रह दिन का समय। पखवाडा। ३ कच्चे मकानो की दीवारो के वे ऊँचे भाग जिन पर बँडेर रहती है। ४ पंख। पर।

पाखर—स्त्री० [सं० पक्षर, प्रक्खर] १. युद्धकाल मे, घोडो या हाथियो पर डाली जानेवाली एक तरह की लोहे की झूल। २ उक्त झूल के वे भाग जो दोनो ओर झूलते रहते हैं। ३ जीन। ४ ऐसा टाट या और कोई मोटा कपडा जिस पर मोम, राल आदि का लेप किया हुआ हो। (ऐसा कपडा जल्दी भीगता या सड़ता-गलता नही है।)

†पु०=पाकर।

पाखरी—स्त्री० [हिं० पाखर=झूल] टाट का बिछावन जिसे गाडी मे बिछाते है तब उसमे अनाज भरते हैं।

पाखा—पु० [सं० पक्ष, प्रा० पक्ख] १ कोना। छोर। २ कुछ दीवारो मे, ऊपर की ओर की वह रचना जो बीच मे सबसे ऊँची और दोनो ओर ढालुई होती है। (ऐसी रचना इसलिए होती है कि उसके ऊपर ढालुई छत या छाजन डाली जा सके।) ३ दरवाजो के दोनो ओर के वे स्थान जिनके साथ, दरवाजे के खुले होने की अवस्था मे किवाड़ लगे या सटे रहते हैं। ४ पाख।

पाखान†—पु०=पाषाण (पत्थर)।

पाखान भेद—पु०=पाषाण भेद।

पाखाना—पु० [फा० पाखानः] १. विशिष्ट रूप से बनाया हुआ वह स्थान जहाँ मलत्याग किया जाय। शौचालय। २ शरीर का वह मल जो भोजन आदि पचने के उपरांत गुदा के रास्ते बाहर निकलता है। गुह। पुरीष।

मुहा०—**पाखाने जाना**=मलत्याग के लिए पाखाने मे या और कहीं

जाना। **(मारे डर के) पाखाना निकलना**=मारे भय के बुरा हाल होना। बहुत अधिक भयभीत होना। **पाखाना फिरना**=मलत्याग करना। **पाखाना फिर देना**=डर से बहुत अधिक घबरा जाना। भय से अत्यत विकल हो जाना। **पाखाना लगना**=मल-त्याग करने की आवश्यकता होना। यह प्रवृत्ति होना कि अब मल त्याग करना चाहिए।

पाग—पु० [स० पाक] १ वह खाद्य पदार्थ जो चाशनी या शीरे मे पकाकर तैयार किया गया हो। जैसे—कोहडा-पाग, बादाम-पाग। २. वह शीरा जिसमे रसगुल्ला, गुलाबजामुन आदि मिठाइयाँ भीगी पडी रहती हैं। ३ पागी हुई कोई ओषधि या फूल। पाक।

पागड़†—पु०=पाइरा (रकाब)।

पागना—स० [स० पाक] १ खाने की किसी चीज को चाशनी या शीरे मे कुछ समय तक डुबाकर रखना। २ ऐसी क्रिया करना जिससे किसी चीज पर शीरे का लेप चढे।

†अ०=पगना।

पागर†—स्त्री० [देश०] वह लबी रस्सी जिसका एक सिरा नाव के मस्तूल मे बँधा रहता है और दूसरा सिरा किनारे पर खडा आदमी, खीचते हुए किसी दिशा मे नाव को ले जाता है।

पागल—वि० [स०√पा (रक्षा)+क्विप्, पा√गल् (स्खलित होना)+अच्] [स्त्री० पगली] [भाव० पागलपन] १ जिसका मस्तिष्क उन्माद रोग के कारण इतना विकृत हो गया हो कि ठीक तरह से कोई काम या बात न कर सके। जिसके मस्तिष्क का सतुलन नष्ट हो चुका या बिगड गया हो। बावला। विक्षिप्त। २ जो कष्ट, क्रोध, प्रेम या ऐसे ही किसी तीव्र मनोविकार से अभिभूत होने के कारण सब प्रकार का ज्ञान या विवेक खो बैठा हो। जैसे—वह क्रोध (या प्रेम) मे पागल हो रहा था। ३ जो किसी काम मे इतना अनुरक्त, आसक्त या लीन हो रहा हो कि उसे और कामो या बातो की सुध-बुध न रह गई हो। जैसे—आज-कल तो वह चुनाव के फेर मे पागल हो रहा है। ४ जो इतना ना-समझ या मूर्ख हो कि प्राय पागलो या विक्षिप्तो का-सा आचरण या उन जैसी बाते करता हो। जैसे—यह लडका भी निरा पागल है।

पागलखाना—पु० [हि० पागल+फा० खाना] वह स्थान जहाँ विक्षिप्त व्यक्तियो को रखकर उनकी चिकित्सा की जाती है तथा जहाँ पर उनके रहने का भी प्रबध रहता है।

पागलपन—पु० [हि० पागल+पन (प्रत्य०)] १ पागल होने की अवस्था या भाव। २. वह आचरण, कार्य या बात जो पागल लोग साधारणतया करते हो। जैसे—बच्चे को रह-रहकर मारने लगना उनका पागलपन है। ३ बेवकूफी।

पागलिनी—स्त्री०=पागल (स्त्री)।

पागली—स्त्री०=पगली।

पागुर†—पु० दे० 'जुगाली'।

पाघ†—स्त्री०=पाग (पगडी)।

पाचक—वि० [स० √पच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० पाचिका] किसी प्रकार का पाचन करने (पकाने या पचाने) वाला। पाचन की क्रिया करनेवाला।

पु० १ वह जो भोजन पकाता या बनाता हो। बावर्ची। रसोइया। २. वह दवा जो खाई हुई चीज पचाती या पाचन शक्ति बढाती हो। ३. कुछ विशिष्ट प्रक्रियाओ से बनाया हुआ वह अवलेह या चूर्ण जो प्राय क्षारीय ओषधियों से बनाया जाता है और जिसका स्वाद खट-मीठा, नमकीन या मीठा होता है। ४ वैद्यक के अनुसार शरीर के अदर रहनेवाले पाँच प्रकार के पित्तो मे से एक जिसकी सहायता से भोजन पचता है। ५ वह अग्नि जिसका उक्त पित्त मे अधिष्ठान माना जाता है।

पाचन—पु० [स०√पच्+णिच्+ल्युट्—अन] १. आग पर चढ़ाकर खाने-पीने की सामग्री पकाना। भोजन बनाना। २. पेट मे पहुँचने पर खाये हुए पदार्थों के पचने या हजम होने की क्रिया। खाद्य पदार्थों के पेट मे पहुँचने पर शारीरिक धातुओ के रूप मे होनेवाला परिवर्तन। ३ पेट के अदर की वह शक्ति जो एक प्रकार की अग्नि के रूप मे मानी गई है और जिसकी सहायता से खाई हुई चीज पचती या हजम होती है। जठराग्नि। हाजमा। ४ कोई ऐसा अम्ल या खट्टा रस जो भोजन के पचने मे सहायक होता हो अथवा जिससे पेट के अदर का मल या अपक्व दोष दूर करता हो। ५ कोई पाचक औषध। ६. लाक्षणिक रूप मे, किसी प्रकार के दोष या विकार का धीरे-धीरे कम होकर नष्ट या शमित होना। जैसे—पाप या रोग का पाचन। ७. प्रायश्चित्त, जिससे पापो का शमन होता है। ८ आग या अग्नि जिसकी सहायता से खाने-पीने की चीजें पकाई जाती है। ९ लाल रेंड।

वि० १ खाई हुई चीजे पचाने या हजम करनेवाला। हाजिम। २ किसी प्रकार के अजीर्ण या आधिक्य का नाश या शमन करनेवाला।

पाचनक—पु० [स०√पच्+णिच्+ल्यु—अन+कन्] सुहागा।

पाचन-गण—पु० [ष० त०] पाचन ओषधियो का वर्ग।

पाचन-शक्ति—स्त्री० [ष० त०] १. खाये हुए पदार्थों को पचाने की शक्ति या समर्थता। २. हाजमा।

पाचना—स० १.=पकाना। २ पचाना।

पाचनी—स्त्री० [स० पाचन+ङीप्] हड।

पाचनीय—वि० [स०√पच्+णिच्+अनीयर्] १. जो पकाया जा सके। २ जो पचाया जा सके।

पाचयिता (तृ)—वि० [स०√पच्+णिच्+तृच्] १ पाक करनेवाला। २ पचानवाला।

पाचर—पु०=पच्चर।

पाचल—वि० [स०√पच्+णिच्+कलन्] १. पकानेवाला। २. पचानेवाला।

पु० १ रसोइया। २ अग्नि। ३. वायु। ४ पकाई जानेवाली वस्तु। ५. पचानेवाली वस्तु।

पाचा—पु० [सं० पाक] १. भोजन पकने या पकाने की क्रिया। पाक। २ भोजन पचने या पचाने की क्रिया। पाचन।

पाचा-पाड़—पुं० [हि० पाँच+पाड=किनारा] जनानी धोतियो का वह प्रकार जिसमे लम्बाई के बल ऊपर और नीचे जैसे दो किनारे बुने हुए होते हैं, वैसे ही तीन किनारे बीच मे भी बुने रहते हैं।

स्त्री० वह जनानी धोती या साडी जिसमे उक्त प्रकार के पाँच (तीन) किनारे बुने हुए हो।

पाचिका—स्त्री० [स० पाचक+टाप्, इत्व] रसोई बनानेवाली स्त्री।

पाची—वि० [सं०√पच्+णिच्+इन्+ङीष्] पाचन करनेवाला।
स्त्री० पच्ची या मर्कतपत्री नाम की लता।

पाछशा, पाछशाह†—पुं०=बादशाह।

पाच्य—वि० [सं०√पच्+ण्यत्, कुत्वाभाव] १. जो पच या पक सकता हो। २ पकाने या पचाने योग्य।

पाछ—स्त्री० [हिं० पाछना] १. पाछने अर्थात् जतु या पौधे के शरीर पर छुरी की तीखी धार लगाकर उसका रक्त या रस निकालने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—देना।—लगाना।
२ उक्त कार्य के लिए लगाया हुआ क्षत या किया हुआ घाव। ३ पोस्ते के डोडे पर छुरी से किया जानेवाला वह क्षत जिसमे से गोंद के रूप में अफीम बाहर निकलती है।
पु० [सं० पश्चात्,प्रा० पच्छा] किसी चीज का पिछला भाग। पीछा।
अव्य० =पीछे।

पाछना—स० [हिं० पाछा] किसी जीव या पौधे की त्वचा या छाल पर इस प्रकार हलका घाव करना जिससे उसका रक्त या रस थोडा थोडा करके बाहर निकलने लगे।

पाछल, पाछुला†—वि० =पिछला।
अव्य० =पीछे।

पाछा†—पु० १. दे० 'पाछ'। २ दे० पीछा'।

पाछिल—वि० =पिछला।

पाछी—अव्य० [हिं० पाछ] पीछे की ओर। पीछे।

पाछू†—अव्य० =पीछे।

पाछें, पाछे—अव्य० =पीछे।

पाज—पु० [सं० पाजस्य] १. पार्श्व। पार्श्वभाग। २. पजर।
पु० १. सेतु। पुल। २. आधार। ३ जड। ४. ढेर। राशि। ५ वज्र।

पाजरा—पु० [देश०] एक प्रकार की वनस्पति जिसकी पत्तियो से एक प्रकार का रस निकाला जाता है।

पाजस्य—पु० [सं०√पा+असुन्, जुट्+यत्] पार्श्व। बगल।

पाजा†—पु०=पायजा।

पाजामा—पु०[फा० पाजामः या पाएजाम]एक तरह का सिला हुआ वस्त्र जो कमर से एडी तक का भाग ढकने के लिए पहना जाता है और जो ऊपरी भाग के नेफे मे नाला डालकर कमर मे बाँधा जाता है।

पाजी—पु० [सं० पत्ति, प्रा० पडित से फा०] १ पैदल चलनेवाला व्यक्ति। २ पैदल सेना का सिपाही। प्यादा। ३.चौकीदार। पहरेदार। ४. साथ चलने या रहनेवाला व्यक्ति। साथी। ५ तुच्छ सेवाएँ करनेवाला नौकर। खिदमतगार। टहलुआ।
वि० [फा०] [भाव० पाजीपन] जो प्रायः अपने दुष्ट आचरण या व्यवहार से सबको तग या परेशान करता रहता हो। दुष्ट। लुच्चा।

पाजीपन—पु० [हिं० पाजी+पन (प्रत्य०)] पाजी या दुष्ट होने की अवस्था या भाव।

पाजेब—स्त्री० [फा० पाजेब] पैरों में पहनने का स्त्रियों का एक प्रसिद्ध आभूषण। मजीर। नूपुर।

पाटंबर—पुं० [सं० पट्ट+अम्बर] रेशमी वस्त्र। रेशमी कपड़ा।

पाट—पु० [सं० पट्ट,पाट] १ रेशम। २ रेशम का बटा हुआ महीन डोरा। नख। ३ एक प्रकार का रेशम का कीडा। ४. पटसन। ५ कपडा। वस्त्र।
पद—पाट पटबर=अच्छे अच्छे और कई तरह के कपडे।
६ बैठने का पाटा या पीढा। ७ राज-सिहासन। ८ चौडाई के बल का विस्तार। जैसे—नदी का पाट। ९ किसी प्रकार का तख्ता, पटिया या शिला। १० पत्थर की वह पटिया जिस पर धोबी कपडे धोते हैं। ११ चक्की के दोनो पल्लो मे से हर एक। १२ लकडी के वे तख्ते जो छत पाटने के काम आते हैं। १३ वह चिपटा शहतीर जिस पर कोल्हू हाँकनेवाला बैठता है। १४ वह शहतीर जो कूएँ के मुँह पर पानी निकालनेवाले के खडे होने के लिए रखा जाता है। १५ बैलो का एक रोग जिसमें उनके रोमकूपो मे से रक्त निकलता है।
क्रि० प्र०—फूटना।
१६. मृदग के चार वर्णों मे से एक।

पाटक—पु० [सं०√पट्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ एक तरह का बाजा। २ गाँव या बस्ती का आधा भाग। ३ तट। किनारा। ४ पासा। ५ एक तरह की बडी कलछी।

पाट-करण—पु० [सं० ब० स०] शुद्ध जाति के रागो का एक भेद।

पाटच्चर—वि० [सं० पटच्चर+अण्] चुरानेवाला।

पाटदार—वि०=पल्लेदार (आवाज)।

पाटन—पुं० [सं०√पट्+णिच्+ल्युट्—अन] चीरने-फाडने अथवा तोडने-फोडने की क्रिया या भाव।
स्त्री० [हिं० पाटना] १ पाटने की क्रिया या भाव। पटाव। २ वह छत जो दीवारो को पाटकर बनाई गई हो। ३ घर के ऊपर का दूसरा खड या मजिल। ४. साँप का जहर झाडने का एक प्रकार का मत्र।
पु० [सं० पत्तन]नगर या बस्ती के नाम के अत मे लगनेवाली 'पत्तन' सूचक सज्ञा। जैसे—झालरापाटन।
स्त्री० [अं० पैटर्न] पुस्तक की जिल्द के रूप मे बँधी हुई वे दफ्तियाँ जिन पर ग्राहको या व्यापारियो को दिखाने के लिए कपडो आदि के नमूने के टुकडे चिपकाये रहते हैं।

पाटना—स० [सं० पाट] १ खाई, गड्ढे आदि मे इतना भराव भरना जिससे वह आस-पास की जमीन के बराबर और समतल हो जाय। २. कमरे के सबध मे उसकी चारो ओर की दीवारो के ऊपरी भाग के खुले अवकाश को बद करने के लिए उस पर छत या पाटन बनाना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी स्थान पर किसी चीज की बहुतायत या भरमार करना। जैसे—माल से बाजार पाटना। ४ लाक्षणिक रूप मे, (क) ऋण आदि चुकाना, (ख)पारस्परिक दूरी, मत-भेद, विरोध आदि का अत या समाप्ति करना। ५ दे० 'पटाना'।

पाटनि—स्त्री०[सं० पट्ट] १. सिर के बालो की पट्टी। २ दे० 'पाटना'।

पाटनीय—वि० [सं०√पट्+णिच्+अनीयर्] चीरे-फाड़े या तोडे-फोडे जाने के योग्य।

पाटप†—वि० [हिं० पाट] सबसे बडा। उत्तम। श्रेष्ठ। (राज०)

पाट-महिषी—स्त्री० [सं० पट्ट=सिहासन,+महिषी =रानी] किसी राजा की वह विवाहिता और बडी रानी जो उसके साथ सिहासन पर बैठती अथवा उस पर बैठने की अधिकारिणी हो। पटरानी।

पाटरानी—स्त्री०=पटरानी।

पाटल—पु० [स०√पट्+णिच्+कलप्] १. पाडर या पाढर नामक पेड़, जिसके पत्ते आकार-प्रकार मे बेल वृक्ष के पत्तो के समान होते है। २. गुलाब।

वि० १. गुलाब-सबधी। २. गुलाब के रग का। उदा०—कर लै प्यौ पाटल बिमल प्यारी।—बिहारी।

पाटलक—वि० [स० पाटल+कन्] पाटल के रग का। गुलाबी रग का।

पु० गुलाबी रग।

पाटलकीट—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का कीडा।

पाटल-द्रुम—पु० [स० उपमि० स०] पुन्नाग वृक्ष। राज-चपक।

पाटला—स्त्री० [स० पावल+टाप्] १. पाडर का वृक्ष। २. लाल-लोध। ३ जलकुभी। ४ दुर्गा का एक रूप।

पु० [स० पटल] एक प्रकार का बढिया और साफ सोना।

पाटलावती—स्त्री० [स० पाटला+मतुप्, वत्व,+ङीप्] १ दुर्गा। २. एक प्राचीन नदी।

पाटलि—स्त्री० [स०√पट्+णिच्+अलि] १. पाडर का वृक्ष। २ पाडुफली।

पाटलिक—वि० [स० पाटलि+कन्] १ जो दूसरो के भेद या रहस्य जानता हो। २ जिसे देश और काल का ज्ञान हो।

पु० १ चेला। शिष्य। २. पाटलिपुत्र नगर।

पाटलित—भू० कृ० [स० पाटल+णिच्+क्त] गुलाबी रग मे रँगा हुआ।

पाटलि-पुत्र—पु० [स० ष० त० ?] अज्ञातशत्रु द्वारा बसाई हुई प्राचीन मगध की एक प्रसिद्ध ऐतिहासिक नगरी जो आधुनिक पटना नगर के पास थी। पुष्पपुर। कुसुमपुर।

विशेष—कुछ लोग वर्तमान पटने को ही पाटलिपुत्र समझते है परतु पटना शेरशाह सूरी का बसाया हुआ है।

पाटलिमा (मन्)—स्त्री० [स० पाटल+इमनिच्] १. गुलाबी रग। २ गुलाबी रगत। ३ गुलाबी होने की अवस्था या भाव। गुलाबीपन।

पाटली—स्त्री० [स० पाटलि+ङीष्] =पाटलि।

पाटली-तैल—पु० [स० ष० त०] एक प्रकार का औषध तैल जिसके लगाने से जले हुए स्थान की जलन, पीडा और चेप बहना दूर होता है।

पाटलीपुत्र—पु० =पाटलिपुत्र।

पाटव—पु० [स० पटु+अण्] १. पटुता। २ दृढता। मजबूती। ३ जल्दी। शीघ्रता। ४. आरोग्य। ५ शक्ति।

पाटविक—वि० [स० पाटव+ठन्—इक] १ पटु। कुशल। २ चालाक। धूर्त।

पाटवी—वि० [हि० पाट+वी (प्रत्य०)] १ रेशम का बना हुआ। रेशमी। २ पटरानी सबधी। पटरानी का। ३. पटरानी से उत्पन्न ४. सर्वश्रेष्ठ।

पु० पटरानी का पुत्र।

पाटसन —पुं०=पटसन।

पाटहिक—पु० [स० पटह+ठञ्—इक] नगाडा बजानेवाला व्यक्ति।

पाटहिका—स्त्री० [स० पटह+अण्, पाटह+ठञ्—इक+टाप्] गुजा। घुँघची।

पाटा—पु० [हि० पाट] [स्त्री० अल्पा० पाटी] १. बैठने का काठ का पीढा।

मुहा०—**पाटा फेरना**–विवाह मे कन्यादान के उपरात वर के पीढे पर कन्या को और कन्या के पीढे पर वर को बैठाना।

२. राज-सिंहासन। ३ लबी धरन की तरह की वह आयताकार लकडी जिसकी सहायता से जोते हुए खेत की मिट्टी के ढेले तोडकर उसे समतल करते हैं। ४ उक्त प्रकार का लकडी का वह छोटा टुकडा जिसके द्वारा राज लोग दीवारो का पलस्तर बराबर या समतल करते है।

क्रि० प्र०—चलाना।—फेरना।

५ दो दीवारो के बीच मे नख्ता, पटिया आदि लगाकर बनाया हुआ आधार स्थान।

पाटि—स्त्री० १ पाट। २ पाटी।

पाटिका—स्त्री० [स० पाटक+टाप्, इत्व] १. एक दिन की मजदूरी। २ एक पौधा। ३ छाल। छिलका।

पाटित—भू० कृ० [स०√पट्+णिच्+क्त] जो चीरा-फाडा अथवा तोडा-फाडा गया हो।

पाटी—स्त्री० [स०√पट्+इन+ङीप्] १ परिपाटी। अनुक्रम। रीति। २ गणित-शास्त्र। हिसाब। ३ श्रेणी। पक्ति। ४. बला नामक क्षुप। खरैटी।

स्त्री० [हि० पाटा का स्त्री० रूप] १ लकडी की वह तख्ती या पट्टी जिस पर विद्यारभ करनेवाले बच्चो को लिखना-पढना सिखाया जाता है। २ बच्चो को पढाया जानेवाला पाठ। सबक।

मुहा०—**पाटी पढ़ना**–(क) पाठ पढना। सबक लेना। (ख) किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करना, विशेषत ऐसी शिक्षा प्राप्त करना जो दुष्ट उद्देश्य से दी गई हो और जिसमे शिक्षा प्राप्त करनेवाले ने अपनी बुद्धि या विवेक का उपयोग न किया हो।

३ माँग के दोनो ओर गोद, जल, तेल आदि की सहायता से कघी द्वारा बैठाये हुए बाल जो देखने मे पटरी की तरह बराबर मालूम हो। पट्टी। पटिया।

मुहा०—**पाटी पारना या बैठाना**–कघी फेरकर सिर के बालो को समतल करके बैठना। उदा०—पाटी पारि अपने हाथ बेनी गुथि बनावे।—भारतेंदु।

४ खाट, पलग आदि के चौखट की लबाई के बल की लकडी। ५. चौडाई। ६. चट्टान। शिला। ७. मछली पकडने के लिए एक विशिष्ट प्रकार की क्रिया जिसमे बहते हुए पानी को मिट्टी के बाँध या वृक्षो की टहनियो आदि से रोक कर एक पतले मार्ग से निकलने के लिए बाध्य करते है, और उसी मार्ग पर उन्हे पकडते हैं। ८ खपरैल की नरिया का प्रत्येक आधा भाग। ९. जती।

पाटीगणित—पु० [स०] गणित की वह शाखा जिसमे ज्ञात अकों या सख्याओ की सहायता से अज्ञात अक या सख्याएँ जानी जाती हैं। (एरिथिमेटिक)

पाटीर—पु० [स० पटीर+अण्] १. चदन का वृक्ष और उसकी लकड़ी। २ खेत जोतने का हल। ३ खेत।

पाटूनी—पु० [देश०] वह मल्लाह जो किसी घाट का ठीकेदार भी हो घटवार।

पाट्य—पु० [स०√पट् +णिच् +यत्] पटसन।

पाठ—पु० [स०√पठ् (पढ़ना)+घञ्] १. पढ़ने की क्रिया या भाव। पढ़ाई। २ वह विषय जो पढ़ा जाय। ३. किसी ग्रथ का उतना अंश जितना एक दिन या एक बार मे गुरु या शिक्षक से पढ़ा जाय। सबक। (लेसन)

मुहा०—(किसी को) **पाठ पढ़ाना**=दुष्ट उद्देश्य से किसी को कोई बात अच्छी तरह समझाना। पट्टी पढाना। (व्यग्य)। **पाठ फेरना**=बार-बार दोहराना। उद्धरणी करना। **उलटा पाठ पढ़ाना**=कुछ का कुछ समझा देना। उलटी-पुलटी बातें कहकर बहका देना।

४. नियमपूर्वक अथवा श्रद्धा-भक्ति से और पुण्य-फल प्राप्त करने के उद्देश्य से कोई धर्मग्रथ पढने की क्रिया या भाव। जैसे—गीता या रामायण का पाठ। ५ किसी पुस्तक के वे अध्याय जो प्राय. एक दिन मे या एक साथ पढाये जाते है, और जिनमे एक ही विषय रहता है। ६ किसी ग्रथ या लेख के किसी स्थल पर शब्दो या वाक्यो का विशिष्ट क्रम या योजना। (टैक्स्ट) जैसे—अमुक पुस्तक मे इस पद का पाठ कुछ और ही है।

†पु०=पाठा।

†वि०=पठ्ठा।

पाठक—वि० [स०√पठ्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० पाठिका] १. पाठ पढनेवाला। २ पाठ करनेवाला। ३ पाठ पढानेवाला।

पु० १ विद्यार्थी। २ अध्यापक। ३ धर्मोपदेशक। ४ ब्राह्मणो की एक जाति। ५ आज-कल समाचार-पत्रो, पत्रिकाओ आदि की दृष्टि मे वे लोग जो समाचार-पत्र आदि पढते हो।

पाठच्छेद—पु० [ष० त०] एक पाठ की समाप्ति होने पर और अगले पाठ के आरभ किये जाने से पहले होनेवाला विराम।

पाठ-दोष—पु० [ष० त०] किसी ग्रथ के शब्दो के वर्णों तथा वाक्यों के शब्दो की अशुद्ध या भ्रामक योजना।

पाठन—पु० [स०√पठ्+णिच्+ल्युट्—अन] १ पाठ पढ़ाना। २. पढकर सुनाना। ३. वक्तृता देना।

पाठना—स० [स० पाठन] पढाना।

पाठ-निश्चय—पु० [ष० त०] किसी ग्रथ के पाठ के अनेक रूप मिलने पर विशिष्ट आधारो पर उसके शुद्ध पाठ का किया जानेवाला निश्चय।

पाठ-पद्धति—स्त्री० [ष० त०] पढने की रीति या ढग।

पाठ-प्रणाली—स्त्री० [ष० त०] पढ़ने की रीति या ढग।

पाठ-भू—स्त्री० [ष०त०] १. वह स्थान जहाँ वेदादि ग्रथो का पाठ होता या किया जाता हो। २ ब्रह्मण्य।

पाठ-भेद—पु० [ष० त०] वह भेद या अंतर जो एक ही ग्रथ की दो प्रतियो के पाठ मे कहीं-कहीं मिलता हो। पाठातर।

पाठ-मंजरी—स्त्री० [ष० त०] मैना। सारिका।

पाठ-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ विद्यार्थियों को पढ़ना-लिखना सिखाया जाता है।

पाठशालिनी—स्त्री० [स० पाठ√शल् (गति)+णिनि+ङीप्] मैना। सारिका।

पाठशाली (लिन्)—वि० [सं० पाठशाला+इनि] पाठ पढनेवाला। पु० विद्यार्थी।

पाठशालीय—वि० [स० पाठशाला+छ—ईय] पाठशाला-सबधी। पाठशाला का।

पाठांतर—पु० [स० पाठ-अतर, मयू० स०] किसी एक ही पुस्तक की विभिन्न हस्तलिखित प्रतियो मे अथवा विभिन्न सपादको द्वारा सपादित प्रतियो मे होनेवाला शब्दो अथवा उनके वर्णों के क्रम मे होनेवाला भेद।

पाठा—स्त्री० [स०√पठ्+घञ्+टाप्] पाढा नाम की लता।

वि० [स० पुष्ट] [स्त्री० पाठी] १. हृष्ट-पुष्ट। २ पट्ठा। जवान।

पु० जवान बकरा, बैल या भैसा। २ गाय-बैलो की एक जाति। (बुदेलखड)

पाठागार—पु० स० [पाठ-आगार, ष० त०] वह स्थान जहाँ बैठकर किसी विषय का अध्ययन, या ग्रथो का पाठ किया जाता हो। (स्टडी रूम)

पाठालय—पु० [पाठ-आलय, ष० त०] पाठशाला।

पाठालोचन—पु० [स० पाठ-आलोचन, ष० त०] आज-कल साहित्यिक क्षेत्र मे, इस बात का वैज्ञानिक अनुसधान या विवेचन कि किसी साहित्यिक कृति के सदिग्ध अश का मूलपाठ वास्तव मे कैसा और क्या रहा होगा। किसी ग्रथ के मूल और वास्तविक पाठ का ऐसा निर्धारण जो पूरी छान-बीन करके किया जाय। (टेक्सचुअल क्रिटिसिज्म)

विशेष—इस प्रकार का पाठालोचन मुख्यत प्राचीन हस्तलिखित ग्रथो की अनेक प्रतिलिपियों अथवा ऐसी साहित्यिक कृतियो के सबध मे होता है जिनका प्रकाशन तथा मुद्रण स्वय लेखक की देख-रेख मे न हुआ हो।

पाठिक—वि० [सं० पाठ+ठन्—इक] जो मूल पाठ के अनुसार हो।

पाठिका—वि० [स० पाठक+टाप्, इत्व] पाठक का स्त्रीलिग रूप। स्त्री० पाठा। पाढ़ा।

पाठित—भू० कृ० [स०√पठ+णिच्+क्त] (पाठ) जो पढाया जा चुका हो।

पाठी (ठिन्)—वि० [स० पाठ+इनि] समस्त पदो के अत मे, पाठ करनेवाला या पाठक। जैसे—वेद-पाठी, सह-पाठी।

पु० [पाठा+इनि] चीते का पेड। चित्रक वृक्ष।

पाठीकुट—पु० [स० पाठा√कुट् (टेढा होना)+क, पृषो० सिद्धि] चीते का पेड।

पाठीन—वि० [स० पाठि√नम् (झुकना)+ड, दीर्घ] पढानेवाला। पु० १ पहिना (मछली)। २. गुग्गल का पेड।

पाठ्य—वि० [स०√पठ्+ण्यत् या√पठ्+णिच+यत] १ जो पढा या पढ़ाया जाने को हो। २. पढने या पढाये जाने के योग्य।

पाठ्य-क्रम—पु० [ष०त०] वे सब विषय तथा उनकी पुस्तकें जो किसी विशिष्ट परीक्षा मे बैठनेवाले परीक्षार्थियो के लिए निर्धारित हो। (कोर्स)

पाठ्य-ग्रंथ—पु० [सं०] पाठ्य-पुस्तक। (दे०)

पाठ्य-चर्या—स्त्री० [स०] वह पुस्तिका जिसमे विभिन्न परीक्षाओ के लिए निर्धारित विषयों तथा तत्सबधी पाठ्य-क्रमो का उल्लेख होता है। (करिक्यूलम)

पाठ्य-पुस्तक—स्त्री० [कर्म० स०] वह पुस्तक जो पाठशालाओ मे

विद्यार्थियों को नियमित रूप से पढ़ाई जानी हो। पढ़ाई की पुस्तक। (टेक्स्ट बुक)

पाढ़—पु० [हिं० पाठ] १ धोती, साड़ी आदि का किनारा। २ मचान। ३ लकड़ी की वह जाली या ठठरी जो कूएँ के मुँह पर रखी रहती है। कटकर। चह। ४ पानी आदि रोकने का पुश्ता या बाँध। ५ वह तख्ता जिस पर अपराधी को फाँसी देने के समय खड़ा करते हैं। टिकठी। ६ इमारत बनाने के लिए खड़ा किया जानेवाला बाँसों का ढाँचा। पाइट। उदा०—बाँसे की गर हविस हो तो गिर्द उसके पाड़ बाँध।—कोई शायर। ७ दो दीवारों के बीच पटिया देकर या पाटकर बनाया हुआ आधार। पाटा। दासा।

पाडल†—पु०=पाटल।

पाडलीपुर—पु०=पाटलीपुत्र।

पाडवाली—पु० [देश०] १ दक्षिण भारत के जुलाहों की एक जाति। २. उक्त जाति का जुलाहा।

पाडा—पु० [सं० पट्टन] १. किसी बस्ती में कुछ घरों का अलग विभाग या समूह। टोला। मुहल्ला। जैसे—धोबी पाडा, मोची पाडा। २ खेत की सीमा या हद।

पु० [हिं० पाठा] [स्त्री० पड़िया, पाड़ी] भैंस का बच्चा। पँड़वा।

पुं० [देश०] एक तरह की बड़ी समुद्री मछली।

पाडिनी—स्त्री० [सं०√पड् (इकट्ठा होना)+णिनि+ङीप्] हाँडी। हँडिया।

पाढ़—पु० [सं० पाट, हिं० पाटा] १. पीढ़ा। २ पाटा। ३ गहनों पर नक्काशी करने का सुनारों का एक उपकरण। ४ लकड़ी की एक प्रकार की सीढ़ी। ५ मचान।

†पु० =पाड़।

पाढ़त—स्त्री० [हिं० पढ़ना] १ पढ़ने की क्रिया या भाव। पठन। २ वह जो पढ़ा जाय। वह जिसका पाठ किया जाय। ३ मंत्र जो पढ़कर फूँका जाता है। ४ कोई पवित्र पद या वाक्य जिसका जप किया जाता हो। उदा०—स्वाय जात जब आवत, पाढ़त जाय।—नूर मुहम्मद।

पाढर—पु० [सं० पाटल] १ पाडर का पेड़। २ एक प्रकार का टोना।

पाढल—पु० पाटल।

पाढ़ा—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा बारहसिंघा जिसकी खाल भूरे या हलके बादामी रंग की होती है और जिस पर सफेद चित्तियाँ होती हैं। चित्रमृग।

†पु० -पाठा।

पाढ़ित†—वि० [हिं० पढ़ना] १ पढ़ा हुआ। २ जिसे पढ़ा जाय।

पाढ़ी—स्त्री० [देश०] १ सूत की लच्छी। २. यात्रियों को नदी के पार पहुँचानेवाली नाव।

पाण—पु० [सं०√पण् (व्यवहार)+घञ्] १ व्यापार। व्यवसाय। २ व्यापारी। ३ दाँव। बाजी। ४ संधि। समझौता। ५ हाथ। ६. प्रशंसा।

पाणही†—स्त्री० =पनही (जूता)।

पाणि—पु० [सं०√पण्+इण] हाथ। कर।

पाणिक—वि० [सं० पण+ठक्—इक] १. व्यापार या व्यापारी-संबंधी। २. दाँव या बाजी लगाकर जीता हुआ।

पु० १ व्यापारी। २ सौदा। ३ हाथ। ४ कार्तिकेय का एक गण।

पाणि-कच्छपिका—स्त्री० [मध्य० स०] कूर्ममुद्रा।

पाणि-कर्मा (र्मन्)—पु० [ब० स०] १ शिव। २ वह जो हाथ से कोई बाजा बजाता हो, या ऐसा ही और कोई काम करता हो। ३ हाथ का कारीगर,। दस्तकार।

पाणिकर्ण—पु० =पाणिकर्मा (शिव)।

पाणिका—स्त्री० [सं० पाणि+कन्+टाप्] एक प्रकार का गीत।

पाणि-गृहीता—वि० [ब० स०, टाप्] (स्त्री) जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। विवाहिता (पत्नी)।

पाणि-गृहीती—वि० [ब० स०, ङीष्] (स्त्री) जिसका पाणिग्रहण संस्कार हो चुका हो। विवाहिता।

पाणि-ग्रह—पु० [सं०√ग्रह (पकड़ना)+अप्, ष० त०] पाणिग्रहण। (दे०)

पाणि-ग्रहण—पु० [ष० त०] १ किसी स्त्री को पत्नी रूप में रखने और उसका निर्वाह करने के लिए उसका हाथ पकड़ना। २. हिंदुओं में विवाह की एक रसम जिसमें वर उक्त उद्देश्य से अपनी भावी पत्नी का हाथ पकड़ता है।

पाणिग्रहणिक—वि० [सं० पाणिग्रहण+ठक्—इक] पाणिग्रहण या विवाह-संबंधी। विवाह के समय का। जैसे—पाणिग्रहणिक उपहार, पाणिग्रहणिक मंत्र।

पाणिग्रहणीय—वि० [सं० पाणिग्रहण+छ—ईय] =पाणिग्रहणिक।

पाणिग्राह, पाणि-ग्राहक—वि० [सं० पाणि√ग्रह्+अण्] [ष० त०] किसी का हाथ पकड़नेवाला। पाणिग्रहण करनेवाला।

पु० वर जो विवाह के समय कन्या का हाथ पकड़ता है।

पाणि-ग्राह्य—वि० [तृ० त०] १ जो मुट्ठी में आ सके या प्राप्त किया जा सके। २ जिसका पाणिग्रहण किया जा सके। जिसके साथ विवाह किया जा सके।

पाणिघ—पु० [सं० पाणि√हन् (हिंसा)+ट] १. हाथ से बजाये जानेवाले बाजे। जैसे—ढोल, मृदंग आदि। २ हाथ का कारीगर। दस्तकार। शिल्पी। ३ हाथ से बाजा बजानेवाला।

पाणि-घात—पु० [तृ० त०] १ हाथ से किया जानेवाला आघात। २ थप्पड़।

पाणिघ्न—पु० [सं० पाणि√हन्+टक] १ हाथ से आघात करनेवाला। २ ताली बजानेवाला। ३ शिल्पी।

पाणिज—वि० [सं० पाणि√जन्+ड] जो हाथ से उत्पन्न हुआ हो।

पु० १. उँगली। २ नाखून। ३ नखी।

पाणि-तल—पु० [ष० त०] १. हाथ की हथेली। २ वैद्यक में लगभग दो तोले की एक तौल या परिमाण।

पाणिताल—पु० [मध्य० स०] संगीत में एक प्रकार का ताल।

पाणि-धर्म—पुं० [मध्य० स०] विवाह संस्कार।

पाणिन—पु० [पणिन्+अण्]=पाणिनि।

पाणिनि—पु० [सं० पणिन्+अण्+इञ्] संस्कृत भाषा के व्याकरण को

चार हजार सूत्रों मे बाँधनेवाले एक प्रसिद्ध प्राचीन मुनि। (ई० पू० चौथी शताब्दी)

पाणिनीय—वि० [स० पाणिनि+छ—ईय] १ पाणिनि-सबधी। पाणिनि का। जैसे—पाणिनीय व्याकरण या सूत्र। २ पाणिनि का अनुयायी या भक्त। ३. पाणिनि का व्याकरण पढ़नेवाला।

पाणि-पल्लव—पु० [ष० त०] हाथ की उँगलियाँ।

पाणि-पात्र—वि० [ब० स०] १ हाथ मे लेकर अर्थात् अजलि से पानी पीनेवाला। २ जो अजलि से पात्र या बरतन का काम लेता हो।

पाणि-पीड़न—पु० [ब० स०] १ पाणिग्रहण। विवाह। २ [ष० त०] पश्चात्ताप आदि के कारण हाथ मलना। पछताना।

पाणि-पुट (क)—पु० [मध्य० स०] चुल्लू।

पाणि-प्रणयिनी—स्त्री० [ष० त०] विवाहिता स्त्री। धर्मपत्नी।

पाणिबंध—पु० [ब० स०] पाणिग्रहण। विवाह।

पाणिभुक् (ज्)—पु० [स० पाणि√भुज् (खाना)+क्विप्] [पाणि√भुज्+क] गूलर वृक्ष।

पाणिमर्द—पु० [स० पाणि√मृद् (मलना)+अण्] करमर्द। करौंदा।

पाणिमुक्त—वि० [तृ० त०] हाथ से फेंककर चलाया जानेवाला (अस्त्र)। पु० भाला।

पाणि-मुख—वि० [ब० स०] हाथ से खानेवाला।
पु० बहु० मृतपूर्वज। पितर।

पाणि-मूल—पु० [ष० त०] कलाई।

पाणिरुह—पु० [स० पाणि√रुह् (उगना, निकलना)+क] १ उँगली। २ नाखून।

पाणि-रेखा—स्त्री० [ष० त०] हथेली की रेखा। हस्त-रेखा।

पाणिवाद—वि० [स० पाणि√वद् (बोलना)+णिच्+अच्] १. मृदग, ढोल आदि बजानेवाला। २ ताली बजानेवाला।
पु० १ ढोल, मृदग आदि बाजे २ ताली बजाने की क्रिया। ताली पीटना।

पाणि-वादक—वि० [सं० पाणि√वद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. हाथ से मृदग आदि बजानेवाला। २ ताली बजानेवाला।

पाणि-हता—स्त्री० [तृ० त०] ललित विस्तार के अनुसार एक छोटा तालाब जो देवताओ ने बुद्ध भगवान के लिए तैयार किया था।

पाणी—पु० =पाणि (हाथ)।

पाणीकरण—पु० [स० अलुक् स०] विवाह। पाणिग्रहण।

पाण्य—वि० [स०√पण् (स्तुति)+ण्यत्] प्रशसा और स्तुति के योग्य।

पाण्याश—वि० [सं० पाणि√अश् (खाना)+अण्] हाथ से खानेवाला।
पु० मृत पूर्वज या पितर जो अपने वंशजो के हाथ का दिया हुआ अन्न ही खाते है।

पातंग—वि० [स० पतंग+अण्] १. फतिगे या फतिगों से सबध रखनेवाला। २ फतिगो के रंग का। भूरा।

पातंगि—पु० [स० पतग+इञ्] १. शनिग्रह। २. यम। ३ कर्ण। ४. सुग्रीव।

पातंजल—वि० [स० पतंजलि+अण्] १ पतजलि-संबंधी। २. पतंजलिकृत।
पु० १. पतजलिकृत योगसूत्र। २. वह जो उक्त योग-सूत्र के अनुसार योगसाधन करता हो। ३ पतजलिकृत महाभाष्य।

पातंजल-दर्शन—पु० [कर्म० स०] योगदर्शन।

पातंजल-भाष्य—पु० [कर्म० स०] महाभाष्य नामक प्रसिद्ध व्याकरण ग्रथ।

पातंजल-सूत्र—पु० [कर्म० स०] योगसूत्र।

पातंजलीय—वि०[स० पातजल] १. पतजलि-सबधी। २ पतजलिकृत।

पात—पु० [स०√पत् (गिरना)+घञ्] १ अपने स्थान से हटकर, टूटकर या और किसी प्रकार गिरने या नीचे आने की क्रिया या भाव। पतन। जैसे—उल्का-पात। [√पत्+णिच्+घञ्] २ गिराने की क्रिया या भाव। पतन। जैसे—रक्तपात। ३ अपने उचित या पूर्व स्थान से नीचे आने की क्रिया या भाव। जैसे—अध पात। ४ ध्वस्त, नष्ट या समाप्त होकर गिरने की क्रिया या भाव। जैसे—शरीर-पात। ५ किसी वस्तु की वह स्थिति जिसमे वह सारी शक्ति प्राय नष्ट हो जाने के कारण सहसा गिर, ढह या विनष्ट हो जाती है। सहसा किसी चीज का गिरकर बेकाम हो जाना। (कोलैप्स) ६ किसी प्रकार जाकर कही गिरने, पडने या लगने की क्रिया या भाव। जैसे—दृष्टि-पात। ७. आघात। चोट। उदा०—चलै फटि पात गदा सिर चीर, मनो तरबूज हनेकर कीर।—कविराजा सूर्यमल्ल। ८ गणित ज्योतिष मे, वह बिंदु या स्थान जिस पर किसी ग्रह या नक्षत्र की कक्षा क्रातिवृत्त को काटती है। ९ वह बिंदु या स्थान जहाँ एक वृत्त दूसरे वृत्त को काटता हो। १०. ज्यामिति मे वह बिंदु जहाँ कोई वक्र रेखा मुड़कर अपने किसी अश को काटती हो। (नोड)
११ ज्योतिष में, (क) वह बिंदु जहाँ कोई ग्रह सूर्य की कक्षा को पार करता हुआ आगे बढता है, अथवा कोई उपग्रह अपने ग्रह की कक्षा को पार करता हुआ आगे बढता है। (नोड)
विशेष—साधारणत ग्रहों, नक्षत्रों की कक्षाएँ जहाँ क्रातिवृत्त को काटती हुई ऊपर चढती या नीचे उतरती हैं, उन्हे पात कहते है। ये स्थान क्रमात् आरोह-पात और अवरोह-पात कहलाते हैं। चद्रमा के कक्ष मे जो आरोह-पात और अवरोहपात पडते है वे क्रमात् राहु और केतु कहलाते है। इसी आधार पर पुराणो और परवर्ती भारतीय ज्योतिष मे राहु और केतु दो स्वतत्र ग्रह माने गये हैं।
पु० [√पत+णिच्+अच्] राहु।
पु० [स० पत्र] १ वृक्ष का पत्ता। पत्र।
मुहा०—पातों आ लगना =पतझड होना या उसका समय आना।
२ वृक्ष के पत्ते के आकार का एक गहना जो कान मे पहना जाता है। पत्ता। ३. चाशनी। शीरा।
पु० [स० पात्र] कवि। (डि०)

पातक—वि० [स०√पत्+णिच्+ण्वुल्—अक] पात करने अर्थात् गिरानेवाला।
पु० ऐसा बड़ा पाप जो उसके कर्ता को नरक मे गिरानेवाला हो। ऐसा पाप जिसका फल भोगने के लिए नरक मे जाना पडता हो।
विशेष—हमारे यहाँ के धर्मशास्त्रों मे अति-पातक, उप-पातक, महा-पातक आदि अनेक भेद किये गये है। साधारण पातको के लिए उनमे प्रायश्चित्त का भी विधान है।

पातकी (किन्)—वि० [सं० पातक+इनि] पातक माने जानेवाले कर्मों के फल भोग के लिए नरक मे जानेवाला, अर्थात् बहुत बड़ा पापी।

पातघबरा—वि० [हिं० पात+घबराना] १ पत्तो की आहट तक से भयभीत और विकल होनेवाला। २. बहुत जल्दी घबरा जानेवाला। ३. बहुत बड़ा कायर या डरपोक।

पातन—पु० [सं०√पत्+णिच्+ल्युट्—अन] १ गिराने या नीचे ढकेलने की क्रिया या भाव। २ फेंकने की क्रिया या भाव। ३ वैद्यक मे, पारा शोधने के आठ सस्कारो मे से पाँचवाँ सस्कार।

पातनीय—वि० [सं०√पत्+णिच्+अनीयर्] १. जिसका पात हो सके या किया जाने को हो। २ जो गिराया जा सके या गिराया जाने को हो।

पातबंदी—स्त्री० [सं० पात या हिं० पाँति ?+बंदी] वह विवरण जिसमे किसी की सपत्ति और देय तथा प्राप्य धन का उल्लेख हो।

पातयिता (तृ)—वि० [सं०√पत्+णिच्+तृच्] १ गिरानेवाला। २ फेंकनेवाला।

पातर—वि० [सं० पात्रट, हिंदी पतला का पुराना रूप] १ जिसका दल मोटा न हो। पतला। २ क्षीणकाय। ३ बहुत ही सकीर्ण और तुच्छ स्वभाववाला। ४ नीच कुल का। अप्रतिष्ठित। उदा०—मयला अकर्ल मूल पातर खाँड खाँड करै भूखा।—सूर।

स्त्री० =पत्तल।

स्त्री० [सं० पातिली=एक विशेष जाति की स्त्री] १ वेश्या। २ तितली।

पातरा†—वि० [स्त्री० पातरी] =पतला।

पातराज—पु० [देश०] एक तरह का साँप।

पातरि (री)—स्त्री० =पातर (वेश्या)।

पातल†—वि० पतला।

†स्त्री० =पत्तल।

†स्त्री० =पातर (वेश्या)।

पातला†—वि० [स्त्री० पातली] =पतला।

पातव्य—वि० [सं०√पा (रक्षा करना)+तव्यत्] १ जिसकी रक्षा की जानी चाहिए। २ पीए जाने योग्य।

पातशाह—पु० [फा० बादशाह] [भाव० पातशाही] बादशाह। महाराज।

पाता (तृ)—वि० [सं०√पा+तृच्] १ रक्षा करनेवाला। २ पीनेवाला।

†पु० =पत्ता।

पाताखत—पु० [सं० पत्र+अक्षत] १. पत्र और अक्षत। २ देव पूजने की साधारण या स्वल्प सामग्री। ३ तुच्छ भेंट।

पाताबा—पु० [फा० पाताब] १ मोजे या जुराब के ऊपर पहना जानेवाला एक प्रकार का जूने का खोल। २.बूट, सैंडल आदि कुछ विशिष्ट जूतो के तलो के ऊपरी भाग मे उसी नाप या आकार-प्रकार का लगाया जानेवाला चमड़े का टुकड़ा। ३ जुराब। मोजा।

पातार†—पु० =पाताल।

पाताल—पु० [सं०√पत्+आलञ्] १ पृथ्वी के नीचे के कल्पित सात लोको मे से एक जो सबसे नीचे है और जिसमे नाग लोग वास करते हुए माने गये है। नाग लोक। अन्य ६ लोक ये हैं—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल और महातल। २ पृथ्वी के नीचे के सातो लोकों मे से प्रत्येक लोक। ३ बहुत अधिक गहरा और नीचा स्थान। ४ गुफा। ५. बिल। विवर। ६ बड़वानल। ७ जन्म-कुंडली मे जन्म के लग्न से चौथा स्थान। ८ पाताल यंत्र। (दे०)

पाताल-केतु—पु० [ब० स०] पाताल मे रहनेवाला एक दैत्य।

पाताल-खंड—पु० [ष० त०] पाताल (लोक)।

पाताल-गंगा—स्त्री० [मध्य० स०] १ पाताल लोक की एक नदी का नाम। २ भूगर्भ के अंदर बहनेवाली कोई नदी।

पाताल-गारुड़ी—स्त्री० [ष० त०] छिरिहटा नामक लता।

पाताल-तूंबी—स्त्री० [ष० त०] एक तरह की लता। पातालतौंबी।

पाताल-तौंबी—स्त्री० =पाताल-तूंबी।

पाताल-निलय—वि० [ब० स०] जिसका घर पाताल मे हो। पाताल में रहनेवाला।

पु० १ नाग जाति का व्यक्ति। २ साँप। ३ दैत्य। राक्षस।

पाताल-निवास—पु० =पाताल-निलय।

पाताल-यंत्र—पु० [मध्य० स०] वैद्यक मे, एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा धातुएँ गलाई, ओषधियाँ पिघलाई तथा अर्क, तेल आदि तैयार किये जाते है।

पाताल-वासिनी—स्त्री० [सं० पाताल√वस् (बसना)+णिनि+ङीप्] नागवल्ली लता। पान की लता।

पाताली—स्त्री० [देश०] ताड़ के फल के गूदे की बनाई तथा सुखाकर खाई जानेवाली टिकिया।

†वि० [सं० पाताल] १ पाताल-सबधी। २ पाताल मे रहने या होनेवाला। ३ पृथ्वी के नीचे होनेवाला। (अंडर ग्राउंड) जैसे—वृक्ष के पाताली तने।

पाताली पत्ती—स्त्री० [हिं०] वनस्पति विज्ञान मे, उत्पत्ति-भेद मे पत्तियो के चार प्रकारो मे से एक। प्राय भूमि पर अपने तने फैलानेवाले पौधो की पत्तियाँ जो प्राय बहुत छोटी होती है। (स्केल लीफ) जैसे—आलू की पाताली पत्ती।

पातालीय—वि० [सं०] १. पाताल-सबधी। २. पाताल का। ३ पाताल मे अर्थात् पृथ्वी-तल के नीचे या भूगर्भ मे रहने या होनेवाला।

पातालौका (कस्)—वि० [सं० पाताल-ओकस् ब० स०] पाताल लोक मे रहनेवाला।

पु० १. नाग जाति का व्यक्ति। २ साँप।

पाति—स्त्री० १=पाती (चिट्ठी)। २ =पत्ती।

पु० [सं०√पा+अति] १ स्वामी। २ पति। ३ पक्षी।

पातिक—वि० [सं० पात+ठन्—इक] १ फेंका हुआ। २. नीचे गिराया या ढकेला हुआ।

पु० सूँस नामक जल-जंतु।

पातिग†—पु० =पातक। उदा०—अनेक जनम ना पातिग छूटै।—गोरखनाथ।

पातित—भू० कृ० वि० [सं०√पत्+णिच+क्त] १. गिराया हुआ। २. फेंका हुआ। ३ झुकाया हुआ।

पातित्य—पु० [सं० पतित+ष्यञ्] १. पतित होने की अवस्था या भाव। गिरावट। २ अध पतन।

पातिल—स्त्री० [स० पातिली] एक तरह की मिट्टी की हँड़िया जिसमे विवाह आदि के समय दीया जलाया जाता है तथा हँड़िया का आधा मुँह ढक्कन से ढक दिया जाता है।
वि०=पतला।

पातिली—स्त्री० [स० पाति√ली (लीन होना) +ड+अण्+ङीष्] १. जाल। फंदा। २. मिट्टी की पातिल नामक हँड़िया। ३. किसी विशिष्ट जाति की स्त्री।

पातिव्रत—पु०=पातिव्रत्य।

पातिव्रत्य—पुं० [सं० पतिव्रता+ष्यञ्] पतिव्रता होने की अवस्था, गुण और भाव। पति के प्रति होनेवाली पूर्ण निष्ठा की भावना।

पातिसाह*—पु०=पातशाह (बादशाह)।

पाती—स्त्री० [स० पत्री, प्रा० पत्ती] १. चिट्ठी। पत्री। पत्र। २. निशान। पता। ३. वृक्ष का पत्ता या पत्ती।
स्त्री० [हिं० पति] १ प्रतिष्ठा। सम्मान। २ लोक-लज्जा।

पातुक—वि० [स०√पत्+उकञ्] १ गिरनेवाला। २ पतनोन्मुख।
पु० १ झरना। २ पहाड़ की ढाल। ३. एक स्तनपायी दीर्घाकार जल-जंतु। जल-हस्ती।

पातुर—स्त्री० [स० पातिली=स्त्री विशेष] वेश्या।

पातुरनी†—स्त्री०=पातुर (वेश्या)।

पात्य—वि० [स०√पत्+णिच्+यत्] १ जो गिराया जा सकता हो। २. दंडित किये जाने के योग्य। ३ प्रहार करने योग्य। ४. [√पत्+ण्यत्] गिरने योग्य।
पु० [पति+यक] पति होने का भाव। पतित्व।

पात्र—पु० [स०√पा (पीना, रक्षा करना)+ष्ट्रन्] [स्त्री० पात्री] [भाव० पात्रता] १ वह आधान जिसमे कुछ रखा जा सके। बरतन। भाजन। २ ऐसा बरतन जिसमे पानी पीया या रखा जाता हो। ३ यज्ञ मे काम आनेवाले उपकरण या बरतन। यज्ञ-पात्र। ४. जल का कुंड या तालाब। ५ नदी की चौड़ाई। पाट। ६ ऐसा व्यक्ति जो किसी काम या बात के लिए सब प्रकार से उपयुक्त या योग्य समझा जाता हो। अधिकारी। जैसे—किसी को कुछ देने से पहले यह देख लेना चाहिए कि वह उसे पाने या रखने का पात्र है या नहीं। ७. उपन्यास, कहानी, काव्य, नाटक आदि मे वे व्यक्ति जो कथा-वस्तु की घटनाओं के घटक होते हैं और जिनके क्रिया-कलाप या चरित्र से कथा-वस्तु की सृष्टि और परिपाक होता है। ८. नाटक मे, वे अभिनेता या नट जो उक्त व्यक्तियों की वेष-भूषा आदि धारण कर के उनके चरित्रों का अभिनय करते हैं। अभिनेता। जैसे—इस नाटक मे दस पुरुष और छ स्त्रियाँ पात्र हैं। ९. राज्य का प्रधान मंत्री। १०. वृक्ष का पत्ता। पत्र। ११. वैद्यक मे, चार सेर की एक तौल। आढ़क। १२. आज्ञा। आदेश।
वि० [स्त्री० पात्री] जो किसी कार्य या पद के लिए उपयुक्त होने के कारण चुना या नियुक्त किया जा सकता हो। (एलिजिबुल)

पात्रक—पुं० [सं० पात्र+कन्] १. प्याली, हाँड़ी आदि पात्र। २. भिखमंगों का भिक्षापात्र।

पात्रट—पुं० [सं० पात्र√अट्+अच्] १. पात्र। प्याला। २. फटा-पुराना कपड़ा। चिथड़ा।

पात्रटीर—पुं० [स० पात्र√अट्+ईरन्] १. योग्य मंत्री या सचिव। २ चाँदी। ३ किसी धातु का बना हुआ बरतन। ४ अग्नि। ५. कौआ। ६. कंक (पक्षी)। ७ लोहे मे लगनेवाला जंग या मोरचा। ८ नाक से बहनेवाला मल।

पात्रता—स्त्री० [स० पात्र+तल्+टाप] पात्र (अर्थात् किसी कार्य, पद, दान-दक्षिणा आदि का योग्य अधिकारी) होने की अवस्था, गुण और भाव।

पात्रत्व—पु० [स० पात्र+त्व] पात्रता।

पात्र-दुष्ट-रस—पु० [स० दुष्ट-रस, कर्म० स०, पात्र-दुष्ट-रस, स० त०] कविता मे परस्पर विरोधी बातें कहने का एक दोष। (कवि केशवदास)

पात्र-पाल—पु० [स० पात्र√पाल्+णिच्+अण] १. तराजू की डंडी। २ पतवार।

पात्रभृत्—पु० [स० पात्र√भृ (धारण करना)+क्विप्] बरतन माँजने-धोनेवाला नौकर।

पात्र-वर्ग—पु० [ष० त०] १ किसी साहित्यिक रचना के कुल पात्र। २ अभिनय करनेवालों का समूह।

पात्र-शुद्धि—स्त्री० [ष० त०] बरतन माँजने-धोने की क्रिया, भाव और पारिश्रमिक।

पात्र-शेष—पु० [स० त०] बरतनों मे छोड़ा जानेवाला उच्छिष्ट या जूठा भोजन। जूठन।

पात्रासादन—पु० [स० पात्र-आसादन, ष० त०] यज्ञपात्रों को यथास्थान या यथाक्रम रखना।

पात्रिक—वि० [स० पात्र+ठन्—इक] जो पात्र (आढ़क नामक तौल) से तौला या मापा गया हो
पु० [स्त्री० अल्पा० पात्रिका] छोटा पात्र या बरतन।

पात्रिकी—स्त्री० [स० पात्रिक+ङीष्] १ छोटा पात्र। २ थाली।

पात्रिय—वि० [स० पात्र+घ—इय] [पात्र+यत्] जिसके साथ बैठकर एक ही पात्र मे भोजन किया जाय या किया जा सके। सह-भोजी।

पात्री (त्रिन्)—वि०, पु० [स० पात्र+इनि] १ जिसके पास बरतन हो। पात्रवाला। २ जिसके पास सुयोग्य पात्र या अधिकारी व्यक्ति हो।
स्त्री० १ पात्र का स्त्री रूप। (दे० 'पात्र') २. छोटा पात्र या बर-तन। ३. एक प्रकार की अँगीठी या छोटी भट्ठी। ४ साहित्यिक रचना का कोई स्त्री पात्र। ५ नाटक आदि मे अभिनय करनेवाली स्त्री। अभिनेत्री।

पात्रीय—वि० [स० पात्र+छ—ईय] पात्र-संबंधी। पात्र का।
पु० एक प्रकार का यज्ञ-पात्र।

पात्रीर—पु० [स० पात्री√रा (देना)+क] वह पदार्थ जिसकी यज्ञ आदि मे आहुति दी जाती हो।

पात्रे-बहुल—वि० [स० अलुक् स०] दूसरो का दिया हुआ भोजन करनेवाला। पराम्न-भोजी।

पात्रे-समित—वि० [स० अलुक् स०] पात्रेबहुल। (दे०)

पात्रोपकरण—पुं० [सं० पात्र-उपकरण, ष० त०] अलंकरण के छोटे-मोटे साधन।

पात्र्य—वि० [स० पात्र+यत्] जिसके साथ बैठकर एक ही पात्र मे भोजन किया जाय या किया जा सके।

पाथ—पुं० [स०√पा (पीना, रक्षा)+थ] १ जल। २. सूर्य। ३ अग्नि। ४. अन्न। ५ आकाश। ६. वायु।

†पु०=पथ (मार्ग)।

पाथना—स० [स० प्रथन या थापना का वर्ण-विपर्यय] १ गीली मिट्टी, ताजे गोबर आदि को थपथपाते हुए या साँचों मे ढालकर छोटे छोटे पिंड बनाना। २ मारना-पीटना।

पाथ-नाथ—पु० [ष० त०] समुद्र।

पाथ-निधि—पु० [ष० त०] दे० 'पाथोनिधि'।

पाथर†—पु०=पत्थर।

पाथरना†—पु० [स० प्रस्तरण, प्रा० पत्थरण] बिछौना। (राज०)

पाथ-राशि—पु० [ष० त०] समुद्र।

पाथस्—पु० [स०√पा (पीना या रक्षा)+असुन्, थुक्] १ जल। २ अन्न। ३ आकाश।

पाथस्पति—पु० [स० ष० त०] वरुण।

पाथा—पुं० [स० प्रस्थ] १. एक तौल जो कच्चे चार सेर की होती है। २ उतनी भूमि जितनी मे उक्त मान का अन्न बोया जा सके। ३ अनाज नापने का एक प्रकार का बडा टोकरा। ४ हल की खापी जिसमे फाल जडा रहता है।

पु० [?] १ कोल्हू हाँकनेवाला व्यक्ति। २ अनाज मे लगनेवाला एक प्रकार का कीडा।

†पुं० दे० 'पाटा'।

पाथी† (थिस्)—पु० [स०√पा (पीना)+इसिन्, थुक्] १ समुद्र। २ आँख। ३ घाव पर का खुरड या पपडी। ४ दूध, मट्ठे का वह मिश्रण जिसमे प्राचीन काल मे पितृ-तर्पण किया जाता था।

पाथो†—पु० [हि० पथ] पथिक। बटोही।

मुहा०—**पाथो होना**=कही से चुपचाप चल देना। चलते बनना। उदा०—साथी पाथो भये जाग अजहूँ निसि बीती।—दीन दयाल गिरि।

पाथेय—वि० [स० पथिन्+ढञ्—एय] पथ-संबंधी। पथ का।

पु० १ वे खाद्य पदार्थ जो यात्रा के समय यात्री रास्ते मे खाने-पीने के लिए ले जाते है। रास्ते का भोजन। २ वह धन जो रास्ते के खर्च के लिए पास रखा जाता है। ३ वह साधन या सामग्री जिसकी आवश्यकता कोई काम करने के समय पडती हो और जिससे उस काम मे सहायता या सहारा मिलता हो। संबल। ४ कन्या राशि।

पाथोज—पुं० [स० पाथस्√जन् (उत्पन्न होना)+ड] कमल।

पाथोद—पु० [स० पाथस्√दा (देना)+क] बादल। मेघ।

पाथोधर—पु० [स० पाथस्√धृ (धारण करना)+अच्] बादल। मेघ।

पाथोधि—पु० [स० पाथस्√धा+कि] समुद्र।

पाथोन—पु० [यू० पर्थेनस] कन्या राशि।

पाथोनिधि—पु० [स० पाथस्-निधि, ष० त०] समुद्र।

पाथ्य—वि० [स० पाथस+ड्यन्] १ आकाश मे रहनेवाला। २ हृदयाकाश मे रहनेवाला। ३ वायु या हवा मे रहनेवाला।

पाद—पु० [स०√पद् (गति)+घञ्] १ चरण। पैर। पाँव। २. किसी चीज का चौथाई भाग। चतुर्थांश। जैसे—चिकित्सा के चार पाद हैं। ३ छद, श्लोक, आदि का चौथाई भाग जो एक चरण या पद के रूप मे होता है। ४ ज्यामति मे, किसी क्षेत्र या वृत्त का चौथाई अश। (क्वाड्रेन्ट) ५ कोई ऐसी चीज जिसके आधार पर कोई दूसरी चीज खडी या ठहरी हो। ६ किसी वस्तु का नीचेवाला भाग। तल। जैसे—पर्वत या वृक्ष का पाद भाग। ७ ग्रथ या पुस्तक का कोई विशिष्ट अश। खड या भाग। ८ किसी बडे पर्वत के पास का कोई छोटा पर्वत। ९ किरण। रश्मि। १० चलने की क्रिया या भाव। गति। गमन। ११ शिव।

पु० [स० पर्द] मलद्वार मे निकलनेवाली वायु। अपानवायु।

पादक—वि० [स०√पद्+ण्वुल्—अक] १. जो खूब चलता हो। चलनेवाला। २ किसी चीज का चौथाई अश।

पु० छोटा पैर।

पाद-कटक—पु० [ष० त०] नूपुर।

पाद-कमल—पु० [कर्म० स०] चरण-कमल।

पाद-कीलिका—स्त्री० [ष० त०] नूपुर।

पाद-कृच्छ्र—पु० [ष० त०] प्रायश्चित्त करने के लिए चार दिन तक रखा जानेवाला एक तरह का व्रत।

पादक्रमिक—वि० [स० पद-क्रम, ष० त०,+ठक्—इक] वेदो का पद-क्रम जानने या पढनेवाला।

पाद-क्षेप—पु० [ष० त०] चलने के समय पैर रखना। चलना।

पाद-गडोर—पु० [स० पाद-गण्डि+ई, ष० त०,+र] फीलपाँव या श्लीपद नामक रोग।

पाद-ग्रंथि—स्त्री० [ष० त०] टखना।

पाद-ग्रहण—पु० [ष० त०] पैर छूकर प्रणाम करने का एक प्रकार।

पाद-चतुर—वि० [स० त०] निंदा करनेवाला।

पु० १. बकरा। २ पीपल का पेड। ३ बालू का भीटा। ४ ओला।

पादचत्वर—वि०, पु० [स०] पाद-चतुर।

पादचारी(रिन्)—वि० [स० पाद√चर् (गति)+णिनि] १ पैरो से चलनेवाला। २ पैदल चलनेवाला।

पुं० प्यादा।

पादज—वि० [स० पाद√जन्+ड] जो पैरो से उत्पन्न हुआ हो।

पु० शूद्र।

पाद-जल—पु० [स० मध्य० स०] १ वह जल जिसमे किसी के पैर धोए गये हो। चरणोदक। २ मट्ठा जिसमे चौथाई अश पानी मिला हो।

पादजाह—पु० [स० पाद+जाहच्] १. पैर की एडी। २. पैर का तलवा। ३ टखना। ४. वह भूमि जहाँ पहाड शुरू होता हो। ५ चरणो का सान्निध्य।

पाद-टिप्पणी—स्त्री० [मध्य० स०] वह टिप्पणी जो किसी ग्रंथ में पृष्ठ के निचले भाग मे सूचना, निर्देश आदि के लिए लिखी गई हो। तल-टीप। (फुटनोट)

पाद-टीका—स्त्री०=पाद-टिप्पणी। (दे०)

पाद-तल—पुं० [ष० त०] पैर का तलवा।
पादत्र—पुं० [सं० पाद√त्रा (रक्षा)+क] पाद-त्राण।
पाद-त्राण—वि० [ब० स०] पैरों की रक्षा करनेवाला।
पुं० पैरों की रक्षा के लिए पहनी जानेवाली चीज। जैसे—खड़ाऊँ, चप्पल, जूता आदि।
पाद-त्रान—पुं०=पाद-त्राण।
पाद-दलित—वि० [तृ० त०] पद-दलित।
पाद-दारिका—स्त्री० [ष० त०] बिवाई (रोग)।
पाद-दाह—पुं० [सं० पाद√दह् (जलाना)+अण्] १ वात रोग के कारण पैर मे होनेवाली जलन। २ उक्त जलन पैदा करनेवाला वात रोग।
पाद-धावन—पुं० [ष० त०] १. पैर धोने की क्रिया। २ वह बालू या मिट्टी जिससे मलकर पैर धोते हैं।
पाद-धावनिका—स्त्री० [ष० त०] वह बालू जिससे पैर रगड़कर धोये जाते है।
पाद-नख—पुं० [ष० त०] पैरो की उँगलियो के नाखून।
पादना—अ० [हिं० पाद] १ मलद्वार से वायु विशेषत शब्द करती हुई वायु निकालना। २. खेल मे, विपक्षी द्वारा अधिक दौड़ाया, भगाया तथा परेशान किया जाना।
पाद-नालिका—स्त्री० [ष० त०] नूपुर।
पाद-निकेत—पुं० [ष० त०] पैर रखने की छोटी चौकी। पाद-पीठ।
पाद-न्यास—पुं० [ष० त०] १ बराबर पैर रखते हुए चलना। २ नाचना।
पाद-पंकज—पुं० [उपमि० स०] चरण-कमल।
पादप—पुं०[सं० पाद√पा (पीना)+क] १ वृक्ष। पेड़। २ पाद निकेत। पाद पीठ।
पादप-खंड—पुं० [ष० त०] १ वृक्षों का समूह। २ जगल। वन।
पाद-पथ—पुं० [ष० त०] पैदल चलने का छोटा और सँकरा मार्ग। पैदल का रास्ता, जिस पर सवारी न जा सकती हो। (फुटपाथ)
पाद-पद्धति—स्त्री० [ष० त०] १ रास्ता। २ पगडंडी।
पादपा—स्त्री० [सं० पाद√पा (रक्षा करना)+क+टाप्] १. खड़ाऊँ। २ जूता।
पाद-पालिका—स्त्री० [ष० त०] नूपुर।
पाद-पाश—पुं० [ष० त०] १ वह रस्सी जिससे घोड़ो के पिछले दोनो पैर बाँधे जाते हैं। पिछाड़ी। २ नूपुर।
पादपाशी—स्त्री० [सं० पादपाश+ङीष्] १ पैर मे बाँधने की जजीर या सिकड़ी। २ बेड़ी। ३ एक लता।
पाद-पीठ—पुं० [ष० त०] वह पीढ़ा या छोटी चौकी जिस पर ऊँचे आसन पर बैठनेवाले पैर रखकर बैठते हैं। (पेडेस्टल)
पाद-पीठिका—स्त्री० [ष० त०] १. नाई का पेशा। २. सफेद पत्थर।
पाद-पूरण—पुं० [ष० त०] १ किसी श्लोक या पद के किसी चरण को पूरा करना। पादपूर्ति। २ वह अक्षर या शब्द जिससे किसी श्लोक या पद की पूर्ति होती हो।
पाद-पूर्ति—स्त्री० [ष० त०] कविता मे, छंद का चरण पूरा करने के लिए उसमें कोई अक्षर या शब्द जोड़ना या बढ़ाना। चरणपूर्ति।
पाद-प्रक्षालन—पुं० [ष० त०] पैर धोना।
पाद-प्रणाम—पुं० [स० त०] साष्टाग दडवत्। पाँव पड़ना।
पाद-प्रतिष्ठान—पुं० [ष० त०] पाद-पीठ। (दे०)
पाद-प्रधारण—पुं० [ब० स०] १ खड़ाऊँ। २ जूता।
पाद-प्रसारण—पुं० [ष० त०] पैर फैलाने की क्रिया या भाव।
पाद-प्रहार—पुं० [तृ० त०] पैर से किया जानेवाला आघात या प्रहार। लात मारना। ठोकर मारना।
पाद-बंध—पुं० [ष० त०] १ कैदियों, पशुओं आदि के पैरों मे बाँधी जानेवाली जजीर। २ बेड़ी।
पाद-बंधन—पुं० [ष० त०] पाद-बंध।
पाद-भट—पुं० [मध्य० स०] पैदल सिपाही। प्यादा।
पाद-भाग—पुं० [ष० त०] १ पैर का निचला भाग। २ चौथा हिस्सा। चौथाई।
पाद-मुद्रा—स्त्री० [ष० त०] चरण-चिह्न।
पाद-मूल—स्त्री० [ष० त०] १ पैर का निचला भाग। २ पर्वत की तराई।
पादरक्ष (क)—पुं० [सं० पाद√रक्ष् (रक्षा करना)+अण्, पाद-रक्षक, ष० त०] वह जिससे पैरों की रक्षा की जाय। जैसे—जूता, खड़ाऊँ आदि।
पाद-रज (स्)—स्त्री० [ष० त०] चरण-धूलि।
पाद-रज्जु—स्त्री० [ष० त०] वह रस्सी या सिक्कड़ जिसमें पैर, विशेषत. हाथी के पैर बाँधे जाते है।
पादरथी—स्त्री० [सं० रथ+ङीष्, पाद-रथी, ष० त०] खड़ाऊँ।
पादरी—पुं० [पुर्त० पैड्रे] मसीही धर्मावलंबियो का धर्मगुरु या पुरोहित।
पादरोह, पादरोहण—पुं० [सं० पाद√रुह् (उत्पत्ति)+अच] [सं० पाद√रुह्+ल्यु—अन] बड़ का पेड़।
पाद-लग्न—वि० [स० त०] जो पैरों से आ लगा हो, अर्थात् शरण मे आया हुआ।
पाद-लेप—पुं० [ष० त०] पैरो मे किया जानेवाला आलते, महावर आदि का लेप।
पाद-वंदन—पुं० [ष० त०] १ पैर पकड़कर प्रणाम करना। २. चरणो की पूजा, सेवा या स्तुति।
पाद-वल्मीक—पुं० [स० त०] फीलपाँव (रोग)।
पादविंदु—पुं० [सं०]=अध स्वस्तिक।
पादविक—पुं० [सं० पदवी+ठक्—इक] पथिक।
पाद-वेष्टनिक—पुं० [ष० त०] पाताबा। मोजा।
पाद-शब्द—पुं० [ष० त०] किसी के चलने से होनेवाला शब्द। पैर की आहट।
पाद-शाखा—स्त्री० [ष० त०] १. पैर की उँगली। २ पैर की नोक।
पादशाह—पुं० [फा०] [भाव० पादशाही] बादशाह। सम्राट्।
पादशाहजादा—पुं० [फा०] बादशाहजादा। महाराजकुमार।
पादशाही—वि० [फा०] बादशाह का।
स्त्री० १. राज्य। २. शासन।
पादशिष्ट-जल—पुं० [सं० पाद-शिष्ट, तृ० त०; पादशिष्ट-जल, कर्म० स०] ऐसा जल जो औटाकर चौथाई कर लिया गया हो। (वैद्यक)

पादशुश्रूषा—स्त्री० [ष० त०] चरण-सेवा। पैर दबाना।

पाद-शैल—पु० [मध्य० स०] बड़े पहाड़ के नीचे या पास का कोई छोटा पहाड़।

पाद-शोथ—पु० [ष० त०] १ पैर मे होनेवाली सूजन। २ पैरो मे सूजन होने का रोग। फीलपाँव।

पाद-शौच—पु० [ष० त०] पैर धोना।

पाद-शलाका—स्त्री० [ष० त०] पैर की नली।

पाद-सेवन—पु०=पाद-सेवा।

पाद-सेवा—स्त्री० [ष० त०] चरण दबाना।

पाद-स्तंभ—पु० [ष० त०] वह लकडी जो किसी चीज को गिरने से रोकने के लिए उसके नीचे लगाई जाती है।

पाद-स्फोट—पु० [ष० त०] वैद्यक के अनुसार ग्यारह प्रकार के क्षुद्र कुष्ठो मे से एक।

पाद-स्वेदन—पु० [ष० त०] पैरो विशेषत पैरो के तलवो मे पसीना आना।

पाद-हत—भू० कृ० [तृ० त०] जिस पर पैर का आघात किया गया हो। जिसे पैर से मारा गया हो।

पाद-हर्ष—पु० [ष० त०] एक वात रोग जिसमें पैरो मे झुनझुनी होती है।

पाद-हीन—वि० [तृ० त०] १ पाद या पैर से रहित। २ जिसका चौथा चरण न हो।

पादांक—पु० [स० पाद-अक, ष० त०] पद-चिह्न।

पादांकुलक—पु० दे० 'पादाकुलक'।

पादांगद—पु० [स० पाद-अगद, ष० त०] नूपुर।

पादांगुलि (ली)—स्त्री० [पाद-अगुलि, ष० त०] पैर की उँगली।

पादांगुष्ठ—पु० [स० पाद-अगुष्ठ, ष० त०] पैर का अँगूठा।

पादांत—पु० [स० पाद-अत, ष० त०] पद का अन्तिम भाग।

पादांतस्थित—वि० [स० पादान्त-स्थित स० त०] पद के अन्त मे होनेवाला।

पादांबु—पु० [स० पाद-अबु, मध्य० स०] १ पैरो के धोने पर निकला हुआ जल। २ [ब० स०] मट्ठा।

पादांभ (स्)—पु० [स० पाद-अभस्, मध्य० स०] पैर धोने का जल।

पादाकुल—पु० =पादाकुलक।

पादाकुलक—पु० [स० पाद-आकुल, तृ० त०,+कन्] एक प्रकार का मात्रिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ होती है।

विशेष—भानु कवि के मत से वह छद पादाकुलक कहलाता है जिसके प्रत्येक चरण मे चार चौकल हो। यथा—गुरु-पद मृदु रज मजुल अजन नयन अमिय दृग दोष विभजन।—तुलसी। परन्तु अन्य आचार्यों के मत से १६ मात्राओंवाले सभी छद पादाकुलक कहलाते है। परन्तु उनके आरभ मे द्विकल अवश्य होना चाहिए, पर त्रिकल कभी नहीं होना चाहिए। इस दृष्टि से अटिल्ल, डिल्ला और पद्धति या छद भी पादाकुलक वर्ग मे आ जाते हैं। ऐसे छदो की चाल त्रोटक वृत्त की चाल से मिलती-जुलती होती है।

पादाक्रांत—वि० [स० पाद-आक्रात, तृ० त०] पैरों से कुचला या रौंदा हुआ। पद-दलित।

पादाग्र—पु० [स० पाद-अग्र, ष० त०] पैर का अगला भाग।

पादाघात—पु० [पाद-आघात, ष० त०] पैर से किया जानेवाला प्रहार। पाद-प्रहार।

पादात—पु० [स० पदाति+अण] १ पैदल सिपाही। २ पैदल सेना।

पादाति (क)—पु० [स० पाद√अत् (गमन)+इण्] [पादाति+कन्] पैदल सिपाही।

पादानत—भू० कृ० [पाद-आनत, स० त०] पैरो पर झुका या पड़ा हुआ।

पादा-नोन—पु० [देश०] काला नमक।

पादाभ्यंजन—पु० [पाद-अभ्यजन, ष० त०] १ पैरो मे कोई स्निग्ध पदार्थ मलने या रगड़ने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार रगड़ा जानेवाला स्निग्ध पदार्थ।

पादायन—पु० [स० पाद+फक्—आयन] पाद ऋषि का वशज।

पादारक—पु० [स० पाद√ऋ (गति)+ण्वुल्—अक] १ नाव के पार्श्वों में लबाई के बल लगी हुई दोनों पटरियो मे से हर एक जिस पर आरोही बैठते है। २ मस्तूल।

पादारघ*—पु०=पादार्घ।

पादारविंद—पु० [स० पाद-अरविन्द, उपमि० स०] चरण रूपी कमल। चरण-कमल।

पादार्पण—पु० [स० ष० त०] =पदार्पण।

पादालिंद—पु० [स० पाद-अलिंद, ब० स०] [स्त्री० अल्पा० पादालिंदा, पादालिंदी] नाव। नौका।

पादावर्त—पु० [स० पाद-आ√वृत् (बरतना)+अच्] पैरो से चलाया जानेवाला एक तरह का पुराना चक्र या यत्र जिसके द्वारा कुएँ मे से सिंचाई के लिए पानी निकाला जाता था।

पादावसेचन—पु० [स० पाद-अवसेचन, ष० त०] १ चरण धोना। २. पैर धोने का पानी।

पादाविक—पु० [स०=पादातिक, पृषो० साधु] पैदल सिपाही। प्यादा।

पादावृत्ति—स्त्री० [स०] साहित्य मे, यमक अलकार का एक भेद जिसमे पूरे पाद की आवृत्ति होती है। यथा—नगन जड़ाती ते वे नगन जड़ाती हैं।—भूषण।

पादाष्ठील—पु० [स०] पैर का टखना।

पादासन—पु० [स० पाद-आसन, ष० त०] वह आसन जिस पर पैर रखे जायँ। पाद-पीठ।

पादाहत—भू० कृ० [स० पाद-आहत, तृ० त०] [भाव० पादाहति] जिसे पैर से ठोकर लगाई गई हो।

पादाहति—स्त्री० [तृ० त०] पैर से लगाई जानेवाली ठोकर।

पादिक—वि० [स० पाद+ठक्—इक] जो किसी पूरी वस्तु या एक इकाई के चौथाई अश के बराबर हो।

पु० १ किसी पूरी वस्तु या एक इकाई का चतुर्थांश। २. पादकृच्छ्र नामक व्रत।

पादी (दिन्)—वि० [स० पाद+इनि] १ जिसे पाद या पैर हो। पैरोवाला। २. चार चरणोवाला। ३ चौथाई अश का हिस्सेदार। पु० पैरोवाला कोई जीव। विशेषत कछुआ, घड़ियाल मगर आदि जल-जन्तु। २. चौथाई अश का स्वामी या मालिक।

पादीय—वि० [सं० पाद+छ—ईय] १ पद या मर्यादावाला। २ किसी विशिष्ट पद या स्थान पर रहनेवाला। जैसे—कुमार-पादीय=कुमार पद पर प्रतिष्ठित।

पादुक—वि० [सं०√पद् (गति)+उकञ्] १. पैरो से चलनेवाला। २ पैदल चलनेवाला।

पादुका—स्त्री० [सं० पादू+क+टाप्, ह्रस्व] १ खड़ाऊँ। २ जूता। ३ पैरो मे पहनने का कोई उपकरण। पदत्राण। (फूट वियर) जैसे—खड़ाऊँ, चप्पल, जूता आदि।

पादू—स्त्री० [सं० पद+ऊ, णित्व—णि वृद्धि] जूता।

वि० [हिं० पादना] बहुत पादनेवाला। पदोड़ा।

पादोदक—पु० [पाद-उदक, मध्य० स०] १ वह जल जिसमे पैर धोया गया हो। चरणोदक। २ चरणामृत।

पादोदर—वि० [सं० पाद-उदर, ब० स०] जिसके पैर उदर मे अर्थात् अदर हो।

पु० सर्प। साँप।

पाद्म—वि० [सं० पद्म] पद्म-सम्बन्धी। पद्म का।

पाद्म-कल्प—पु० [कर्म० स०] पुराणानुसार वह महाकल्प जिसमे भगवान की नाभि से वह पद्म या कमल निकला था, जिस पर ब्रह्मा अधिष्ठित् थे।

पाद्य—वि० [सं० पाद+यत्] १ पाद (पैर, चरण आदि) से सबंध रखनेवाला। पाद का। २ पाद्य सबधी। पाद्यात्मक।

पु० वह जल जिससे किसी आये हुए पूज्य व्यक्ति या देवता के पैर धोते हैं अथवा जिसे पैर धोने के लिए आदर-पूर्वक उनके आगे रखते हैं।

पाद्य-दान—पु० [सं० ष० त०] १. पैर धोने के लिए जल देना। २ पूज्य या बडे व्यक्तियों का कही पधारना। कही पदार्पण करना या जाना। (आदर-सूचक) जैसे—गुरु का शिष्यो के घर पाद्य-दान।

पाद्यार्घ—पु० [सं०पाद्य-अर्घ, कर्म० स०] १ पैर तथा हाथ धोने या धुलाने का जल। २. देव-पूजन की सामग्री। ३ पूजन, सत्कार आदि के अवसर पर दिया जानेवाला धन या सामग्री। नजर। भेंट। ४. प्राचीन काल मे ब्राह्मण को दान रूप मे दी हुई वह भूमि जिस पर राजकर नही लगता था। माफी।

पाधरां—वि० =पाधरा।

पाधरा—वि० [?] १ अच्छा। बढ़िया। उदा०—घर बाँकी दिन पाधरा, मरद न मूकै माण।—प्रिथीराज। २ अनुकूल। ३ सम, सरल या सीधा।

पाधा—पु० [सं० उपाध्याय] १. आचार्य। उपाध्याय। २ पुरोहित। ३ पडित। ४. कर्म-काड करानेवाला पडित। ५ छोटे बच्चो को आरभिक शिक्षा देनेवाला गुरु या पंडित। (पश्चिम)

पान—पु० [सं०√पा (पीना, रक्षा करना)+ल्युट्—अन्] १. तरल पदार्थ को चुस्की भरते हुए,चूसते हुए अथवा घूँट-घूँट करके पीने की क्रिया या भाव। जैसे—जल-पान, दुग्धपान, रक्त-पान, स्तन-पान आदि। २. मद्य या शराब पीना। ३. मद्य या शराब बनाने और बेचनेवाला व्यक्ति। कलवार। ४. पीने का कोई तरल पदार्थ। ५. जल। पानी। ६. पौसरा। प्याऊ। ७. आब। चमक। ८. कटोरा, गिलास आदि पात्र जिसमे रखकर कोई तरल पदार्थ पीया जाता हो। ९ नहर। १०. रक्षण। रक्षा। ११ निःश्वास। १२ जीत। विजय।

पु० [सं० पर्ण, प्रा० पण्ण, फा० पान] १. वृक्ष का पत्ता। उदा०—उपजे एकही खेत मे, बोये एक किसान। होनहार बिरवान के होत चीकने पान। २. एक प्रसिद्ध पौधा या लता जिसके पत्तो पर कत्था, चूना आदि लगाकर मुँह का स्वाद बदलने और उसे सुगधित रखने के लिए गिलौरी या बीड़ा बनाकर खाते है। ताम्बूल। नागबेल। ३. लगा हुआ पान का पत्ता। गिलौरी। बीड़ा।

पद—पान-इलायची=किसी सामाजिक आयोजन या समारोह मे आमत्रित व्यक्तियो का पान-इलायची आदि से किया जानेवाला सत्कार। **पान-पत्ता**=(क) लगा या बना हुआ पान। (ख) तुच्छ उपहार या भेंट। **पान-फूल**=(क) सामान्य उपहार या भेंट। (ख) पान और फूलो की तरह बहुत ही कोमल या सुकुमार वस्तु। **पान-सुपाड़ी (री)**=दे० ऊपर 'पान-इलायची'।

मुहा०—पान उठाना=दे० 'बीड़ा' के अन्तर्गत 'बीड़ा उठाना'। **पान कमाना**=पान के पत्तो को पाल मे रखकर पकाना, और बीच-बीच मे उन्हे उलट-पलटकर देखते रहना और उनके सड़े-गले अश काटते या निकालते रहना। **(किसी को कुछ धन) पान खाने को देना**=(क) घूस या रिश्वत देना। (ख) इनाम, पुरस्कार आदि के रूप मे धन देना। **पान खिलाना**=कन्या पक्षवालो का विवाह के विषय मे वर पक्षवालो को वचन देना। **पान चीरना**=व्यर्थ का काम करना। ऐसा काम करना जिसमे कोई लाभ न हो। **पान देना**=दे० 'बीड़ा' के अन्तर्गत 'बीड़ा देना'। **पान फेरना**=पाल मे अथवा यो ही रखे हुए पानो को उलट-पलटकर देखना और उनके सडे-गले अश काट या निकालकर अलग करना। **पान बनाना**=(क) पान मे चूना, कत्था, सुपारी आदि रखकर बीड़ा तैयार करना। गिलौरी बनाना। पान लगाना। (ख) दे० ऊपर 'पान कमाना'। **पान लगाना**=दे० ऊपर 'पान बनाना'। **पान लेना**=बीड़ा उठाना। (दे० 'बीड़ा' के अन्तर्गत)

४ पान नामक लता के पत्ते के आकार की कोई रचना जो प्राय कई तरह के गहनो मे शोभा के लिए जड़ी या लगी रहती है। ५. जूते मे पान के आकार का चमड़े का वह टुकड़ा जड़ी के पीछे लगता है।

पद—नोक-पान=(देखे 'नोक' के अन्तर्गत स्वतत्र पद)

६ ताश के पत्तो पर बनी हुई पान के आकार की लाल रग की बूटियाँ। ७. उक्त आकार तथा रग की बनी हुई बूटियोवाले पत्तो की सामूहिक संज्ञा। जैसे—उन्होंने पान रग बोला है। ८ स्त्रियों की भग। योनि।

पुं० [?] नाव खीचने की गून या रस्सी। (लश०)

पु० [?] सूत को माँड़ी से तर करके ताना कसने की क्रिया। (जुलाहे)

*पु० १ =प्राण। २.=पाणि (हाथ)।

पानक—पु० [सं० पान+कन्] आम, इमली आदि के कच्चे फलो को भूनकर बनाया जानेवाला कुछ खट-मीठा पेय पदार्थ। पना। पन्ना।

पान-गोष्ठी—स्त्री० [ष० त०] मित्रो की वह मडली जो शराब पीने के लिए एकत्र हुई हो। (कॉकटेल पार्टी)

पानड़ी—स्त्री० [हिं० पान+ड़ी (प्रत्य०)] एक प्रकार की लता जिसकी

सुगंधित पत्तियाँ प्रायः मीठे पेय पदार्थों तथा तेल और उबटन आदि में उन्हें सुगंधित करने के लिए डाली जाती है।

पानदान—पुं० [हिं० पान+फा० दान (प्रत्य०)] वह डिब्बा जिसमें पान की सामग्री—कत्था, सुपारी आदि रखी जाती है। पनडब्बा।

पद—पानदान का खर्च=वह रकम जो बड़े घरों की स्त्रियों को पान तथा दूसरी निजी आवश्यकताओं के लिए दी जाती है। स्त्रियों का हाथ-खरच।

पान-दोष—पुं० [ष० त०] शराब पीने की लत या व्यसन।

पानन—पुं० [हिं० पान] मँझोले आकार का एक प्रकार का पेड़ जो हिमालय की तराई और उत्तर भारत में होता है।

पानप—पुं० [सं० पान√पा (पीना)+क] जिसे शराब पीने का व्यसन हो। मद्यप। शराबी।

पान-पर—वि० [स० त०] पानप। शराबी।

पान-पात्र—पुं० [ष० त०] १ वह पात्र जिसमें मद्यपान किया जाता हो। २ कटोरा या गिलास जिसमें पानी पीते है।

पान-वणिक (ज्)—पुं० [ष० त०] मद्य बेचनेवाला व्यक्ति। कलवार।

पानभांड—पुं० [ष० त०] पान-पात्र।

पान-भाजन—पुं० [ष० त०] पान-पात्र।

पान-भूमि—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ बैठकर लोग शराब पीते है। मद्यशाला।

पान-भोजन—पुं० [द्व० स०] १ खाना-पीना। २ पीना-खाना।

पान-मंडल—पुं० पान-गोष्ठी।

पान-मत्त—वि० [तृ० त०] जो शराब पीकर नशे में चूर हो।

पान-मद—पुं० [ष०त०] शराब का नशा।

पानरा—पुं० पनारा (पनाला)।

पान-विभ्रम—पुं० [मू० त०] शराब का अत्यधिक सेवन करने के फलस्वरूप होनेवाला एक रोग जिसमें सिर में पीड़ा होती रहती है, कै और मतली आती है, और रोगी बीच-बीच में मूर्छित हो जाता है।

पान-शौंड—वि० [स० त०] बहुत अधिक शराब पीनेवाला।

पानस—वि० [सं० पनस+अण्] पनस अर्थात् कटहल से सम्बन्ध रखनेवाला।

पुं० वह शराब जो कटहल को सड़ाकर बनाई जाती थी।

पानही—स्त्री० [सं० उपानह] =पनही।

पाना—स० [सं० प्रापण, प्रा० पावण, पु० हिं० पावना] १ ऐसी स्थिति में आना या होना कि कोई चीज अपने अधिकार, वश या हाथ में आवे या हो जाय। कोई चीज या बात प्राप्त करना। हासिल करना। जैसे—(क) तुमने ईश्वर के घर से अच्छा भाग्य पाया है। (ख) उन्होंने अपने पूर्वजों से अच्छी सम्पत्ति पाई थी। २ ऐसी स्थिति में आना या होना कि किसी की दी या भेजी हुई चीज या और कुछ अपने तक पहुँच या मिल जाय। जैसे—(क) किसी का पत्र, संदेशा या समाचार पाना। (ख) पदक या पुरस्कार पाना। ३ आकस्मिक रूप से या अपने प्रयत्न के फलस्वरूप कुछ प्राप्त या हस्तगत करना। जैसे—(क) कल मैंने सड़क पर पड़ा हुआ एक बटुआ पाया था। (ख) यह पुस्तक मैंने बहुत कठिनता से पायी थी। ४ ऐसी स्थिति में आना या होना कि किसी चीज तक हाथ पहुँच सके। उदा०—मैं बालक बहियन को छोटो छीका केहि बिधि पायो।—सूर। ५ किसी प्रकार के ज्ञान, परिचय आदि की मानसिक उपलब्धि करना। जैसे—(क) मैंने उन्हें बहुत ही चतुर और योग्य पाया। (ख) विदेश में रहकर उन्होंने अच्छी शिक्षा पाई थी। ६ गूढ़ तत्त्व, भेद, रहस्य आदि की गहनता, विस्तार, सीमा आदि का ज्ञान या परिचय प्राप्त करना। जानकारी हासिल करना। जैसे—(क) किसी के पांडित्य की थाह पाना। (ख) चोरी या चोरों का पता पाना। ७ अचानक सामना होने या सामने पहुँचने पर किसी को किसी विशिष्ट स्थिति में देखना। जैसे—(क) मैंने लड़कों को गली में खेलते हुए पाया। (ख) उसने अपना खेत (या घर) उजड़ा हुआ पाया। ८ किसी प्रकार के परिणाम या फल के रूप में अधिकारी या भोक्ता बनना या बनने की स्थिति में होना। जैसे—(क) दुःख या सुख पाना। (ख) छुट्टी या मजा पाना। ९ ईश्वर अथवा देवता के प्रसाद के रूप में कोई खाद्य या पेय पदार्थ ग्रहण या प्राप्त करना। आदर-पूर्वक शिरोधार्य करके कुछ खाना या पीना। (भक्तों की परिभाषा) जैसे—मैं उनके यहाँ से भोजन पाकर आया हूँ। १० कोई काम या बात ठीक तरह से पूरी करने में समर्थ होना। कर सकना। जैसे—तुम उसे नहीं जीत पाओगे। ११ प्रतियोगिता आदि में किसी के तुल्य या समान हो सकना। जैसे—बराबरी कर सकना। जैसे—चालाकी (या दौड़) में तुम उसे नहीं पाओगे।

पानागार—पुं० [सं० पान-आगार, ष०त०] वह स्थान जहाँ बहुत से लोग मिलकर शराब पीते हों। शराब पीने की जगह।

पानात्यय—पुं० [सं० पान-अत्यय, तृ०त०] पान-विभ्रम। (दे०)

पानि—पुं० =पानी।

पानिक—पुं० [सं० पान+ठक्—इक] वह जो शराब बनाता और बेचता हो। शौंडिक। कलवार।

पानिग्रहण—पुं० =पाणिग्रहण।

पानिप—पुं० [हिं० पानी+प (प्रत्य०)] १ आभा। द्युति। कांति। चमक। आब। २ शोभा। ३ पानी।

पानि-पतग*—पुं० [हिं० पानी+पतंगा] जलभौंरा या भौंतुआ नाम का कीड़ा।

पानिय—पुं० =पानी। उदा०—प्यासी तऊ तनु रूप सुधा बिनु, पानिय पी-कौ पपीहे पिआओ।—भारतेन्दु।

†वि० =पानीय।

वि० [?] रक्षित होने के योग्य। (क्व०)

पानिल—पुं० [सं० पान+इलच्] पानपात्र।

पानी—पुं० [सं० पानीय] १ वह प्रसिद्ध निर्गंध पारदर्शी और वर्ण-हीन तरल या द्रव पदार्थ जो झील, नदियों, समुद्रों आदि में भरा रहता है। तथा बादलों से वर्षा के रूप में पृथ्वी पर बरसता है और जो नहाने-धोने, पीने, खेत सींचने आदि के काम में आता है। जल।

विशेष—वायु के उपरांत जल या पानी जीव-जंतुओं वनस्पतियों आदि के पालन-पोषण तथा वर्धन के लिए सबसे अधिक आवश्यक है, इसलिए संस्कृत में इसे 'जीवन' भी कहते है। भारतीय दर्शन में इसकी गणना पंच महाभूतों में होती है परन्तु आधुनिक रासायनिक अनुसंधान के अनुसार यह दो तिहाई हाइड्रोजन तथा एक तिहाई आक्सिजन का मिश्रण

है। अधिक सरदी पड़ने पर यह जमकर बरफ बन जाता है। और अधिक ताप पाकर उबलने या खौलने लगता है अथवा भाप बनकर उड़ जाता है। वर्षा के प्रसंग में इसके साथ आना, गिरना, पड़ना, बरसना आदि जलाशयों के तल के विचार से उतरना, चढ़ना आदि और कूएँ के मूल सोते के विचार से आना, टूटना, निकलना आदि क्रियाओं का प्रयोग होता है। किसी तल के छोटे छोटे छिद्रों से आने या निकलने के प्रसंग में इसके साथ आना, चूना, छूटना, टपकना, निकलना, रसना आदि क्रियाएँ लगती है। किसी आधान में या स्थल पर एकत्र राशि के संबंध में प्रसंग के अनुसार ठहरना, बहना, रुकना आदि क्रियाओं का भी प्रयोग होता है। कुछ अवस्थाओं में इसकी कोमलता, तरलता, शीतलता, सरसता आदि गुणों के आधार पर भी इसके कई मुहावरे बनते हैं।

पद—पानी का आसरा=नाव की बारी पर लगा हुआ कुछ झुका हुआ वह तख्ता जिस पर छाजन की ओलती का पानी गिरता है। बारी। (लश०) **पानी का बताशा**=(क) बुलबुला। बुदबुद। (ख) दे० नीचे 'पानी का बुलबुला'। **पानी का बुलबुला**=बुलबुले की तरह क्षण भर में नष्ट हो जानेवाला। क्षण-भंगुर। नाशवान्। विनाशशील। **पानी की तरह पतला**=(क) अत्यन्त तुच्छ या हीन। (ख) बहुत कम महत्त्व का। **पानी की पोट**=ऐसा पदार्थ जिसमें अधिकतर पानी ही पानी हो। जिसमें पानी के सिवा और तत्त्व बहुत कम हो। (ख) ऐसी तरकारियाँ, साग आदि जिनमें जलीय अंश बहुत अधिक हो। **पानी के मोल**=प्रायः उतना ही सस्ता जितना पीने का पानी होता है। बहुत अधिक सस्ता। **पानी देवा**=वंशज जो पितरों को पानी देता अर्थात् उनका तर्पण करता है। **पानी भरी खाल**=मनुष्य का क्षणभंगुर और सारहीन शरीर। **पानी से पतला**=(क) बहुत ही तुच्छ या हीन। (ख) बहुत ही सहज या सुगम। **कच्चा पानी**=ऐसा पानी जो औटाया या पकाया हुआ न हो। **नरम पानी**=(क) ऐसा पानी जिसके बहाव में अधिक वेग न हो। (ख) ऐसा पानी जिसमें खनिज तत्त्व अपेक्षया कम हो। **पक्का पानी**=औटाया, गरम किया या पकाया हुआ पानी। **भारी पानी**=वह पानी जिसमें खनिज पदार्थ अधिक मात्रा में मिले हों। **हलका पानी**=ऐसा पानी जिसमें खनिज पदार्थ बहुत थोड़े हों। नरम पानी।

मुहा०—पानी काटना=(क) पानी की नाली या बाँध काट देना। एक नाली में से दूसरी में पानी ले जाना। (ख) तैरते समय हाथों से आगे का पानी हटाना। पानी चीरना। **पानी की तरह बहाना**=बहुत ही लापरवाही से और बहुत अधिक मात्रा या मान में व्यय करना।—जैसे (क) उन्होंने लाखों रुपए पानी की तरह बहा दिए। (ख) युद्ध क्षेत्र में सैनिकों ने पानी की तरह खून बहाया। **पानी के रेले में बहाना**=दे० ऊपर 'पानी की तरह बहाना'। **पानी चढ़ाना**=सिंचाई के काम के लिए खेत तक पानी पहुँचाना। **(किसी चीज पर) पानी चलाना**=चौपट या नष्ट करना। (दे० 'पानी फेरना') **पानी छानना**=बच्चे को पहले-पहल माता निकलने के बाद तथा उसका जोर कम होने पर किया जानेवाला एक प्रकार का मांगलिक उपचार या टोटका जिसमें माता उस बच्चे को इस प्रकार गोद में लेकर बैठती है कि भिगोये हुए चने का पानी जब बच्चे के सिर पर डाला जाता है, तब वह गिरकर माता की गोद में पड़ता है। (कहते हैं कि यह उपचार माता की गोद सदा भरी-पूरी रखने के लिए किया जाता है)। **पानी छूना**=मल-त्याग के उपरांत जल से गुदा को धोना। आबदस्त लेना। (ग्राम्य) **पानी टूटना**=कूएं, ताल आदि में इतना कम पानी रह जाना कि काम में लाया या निकाला न जा सके। **पानी तोड़ना**=नाव खेने के समय डाँड़ या बल्ली से पानी चीरना या हटाना। पानी काटना। (मल्लाह)। **पानी थामना**=धार या प्रवाह के विरुद्ध नाव ले जाना। धार पर चढ़ाना। (लश०) **(पशुओं को) पानी दिखाना**=घोड़े, बैल आदि को पानी पिलाने के लिए उनके सामने पानी भरा बरतन रखना या उन्हें जलाशय तक ले जाना। **पानी देना**=(क) सींचने के लिए क्यारियों, खेतों आदि में पानी डालना। (ख) पितरों का तर्पण करना। **पानी न माँगना**=भीषण आघात लगने पर ऐसी स्थिति में आना या होना कि पीने के लिए पानी तक माँगने की शक्ति न रह जाय। **पानी पढ़ना**=मंत्र पढ़कर पानी फूंकना। जल अभिमंत्रित करना। **पानी पर नींव (या बुनियाद) होना**=बहुत ही अनिश्चित या दुर्बल आधार होना। **पानी परारना**=दे० ऊपर 'पानी छानना'। **पानी पी पीकर**=बार बार शक्ति संचित करके। जैसे—पानी पी पीकर किसी को कोसना।

विशेष—बहुत अधिक बोलने से गला सूखने लगता है, जिसे तर करने के लिए बोलनेवाले को रह-रहकर पानी का घूंट पीना पड़ता है। इसी आधार पर यह मुहा० बना है।

(किसी चीज या बात पर) पानी फिरना या फिर जाना=पूरी तरह से चौपट, नष्ट या निरर्थक हो जाना। बिलकुल तत्वहीन या निःसार हो जाना। **पानी फूंकना**=खौलते हुए पानी में उबाल आना। **(किसी चीज या बात पर) पानी फेरना या फेर देना**=(क) पूरी तरह से नष्ट या चौपट करना। (ख) सारा किया-धरा विफल या व्यर्थ कर देना। जैसे—जरा सी भूल से तुमने मेरे सारे परिश्रम पर पानी फेर दिया। **पानी बराना**=(क) छोटी नालियाँ बनाकर और क्यारियाँ काटकर खेत सींचना। (ख) ऐसी व्यवस्था करना जिसमें नालियों का पानी इधर-उधर बहने न पावे। **(किसी का किसी के सामने) पानी भरना**=किसी की तुलना में बहुत ही तुच्छ या हीन सिद्ध होना। उदा०—फूले शफक तो जर्द हों गालों के सामने। पानी भरे घटा तेरे बालों के सामने।—कोई शायर। **(कहीं) पानी मरना**=किसी स्थान पर पानी का एकत्र होकर सोखा जाना या किसी संधि में प्रविष्ट होकर वास्तु-रचना को हानि पहुँचाना। जैसे—इस दरज से छत (या दीवार) में पानी मरता है। **(किसी के सिर) पानी मरना**=किसी का ऐसी स्थिति में आना या होना कि उस पर किसी प्रकार का आक्षेप, आरोप या कलंक हो या लग सके या उसे किसी बात से लज्जित होना पड़े। **पानी में आग लगाना**=(क) असंभव बात संभव कर दिखलाना। (ख) जहाँ लड़ाई-झगड़े की कोई संभावना न हो, वहाँ भी लड़ाई-झगड़ा खड़ा कर देना। **पानी में फेंकना या बहाना**=व्यर्थ नष्ट या बरबाद करना। **(कहीं) पानी लगना**=किसी स्थान पर पानी इकट्ठा होना। पानी जमा होना। **(दाँतों में) पानी लगना**=पानी की ठंढक से दाँतों में टीस होना। **पानी लेना**=दे० ऊपर 'पानी छूना'। **पानी सिर से (या पैर से) गुजरना**=दे० 'सिर' के अंतर्ग०। **पानी से पहले पाड़, पुल या बाँध बाँधना**=किसी प्रकार के अनिष्ट की संभावना न होने पर भी केवल आशंकावश बचाव का प्रयत्न या प्रयास करना। **गले गले पानी में**=लाख कठिनाइयाँ होने पर भी। जैसे—तुम्हारा रुपया तो हम गले गले पानी में भी चुका देंगे।

विशेष—बाढ़ आने पर आदमी का धड़ डूबता है और गले तक पानी आता है तब मृत्यु या विनाश समीप दिखाई देता है। इसी आधार पर यह मुहा० बना है।

२ उक्त तत्त्व का कोई ऐसा रूप जो किसी दूसरे पदार्थ में से आपसे आप या उबालने आदि पर निकला हो या उस पदार्थ के अंश से युक्त हो। जैसे—दही या नारियल का पानी, चूने या नमक का पानी, दाल या नीम का पानी।

क्रि० प्र०—आना।—निकलना।—रसना।

मुहा०—(किसी वस्तु का) पानी छोड़ना =किसी चीज में से थोड़ा-थोड़ा पानी या और कोई तरल पदार्थ रस-रसकर निकलना। जैसे—पकाने पर किसी तरकारी का पानी छोड़ना।

३, किसी विशिष्ट प्रकार के गुण या तत्व से युक्त किया हुआ कोई ऐसा तरल पदार्थ जिसके योग से किसी दूसरी चीज में कोई गुण या तत्त्व सम्मिलित किया जाता है अथवा किसी प्रकार का प्रभाव उत्पन्न किया जाता है। जैसे—जहर का पानी, मुलम्मे का पानी।

पद—खारा पानी =सोडा मिला हुआ वह पानी जो बंद बोतलों में पीने के लिए बिकता है। **मीठा पानी**=उक्त प्रकार का वह पानी जिसमें नीबू आदि का सत्त मिला रहता है। **विलायती पानी**=यंत्र की सहायता से और वाष्प के जोर से बोतलों में भरा हुआ पानी जो सम्मिश्रण, स्वाद आदि के विचार से अनेक प्रकार का होता है।

मुहा०—(किसी चीज पर) पानी चढ़ाना, देना या फेरना=किसी तरल पदार्थ या घोल के योग से किसी वस्तु में चमक लाना। ओप लाना। जिला करना। जैसे—चाँदी की अँगूठी पर सोने का पानी चढ़ाना। (किसी चीज से) **पानी बुझाना** =ईंट, धातु-खंड या ऐसी ही और कोई चीज आग में अच्छी तरह तपाकर और लाल करके इसलिए तुरत पानी में डालना कि उसका कुछ गुण या प्रभाव पानी में आ जाय। (चिकित्सा आदि के प्रसंग में ऐसे पानी का उपयोग होता है।) **(कोई चीज किसी) पानी में बुझाना**=किसी विशिष्ट क्रिया से तैयार किये हुए पानी में कोई चीज गरम करके इसलिए डालना कि उस चीज में उस पानी का कोई विशिष्ट गुण या प्रभाव आ जाय। जैसे—जहर के पानी से तलवार बुझाना।

४ उक्त के आधार पर काट करनेवाली चमकदार और बढ़िया तलवार या ऐसा ही और कोई बड़ा अस्त्र। ५ किसी प्रकार की प्रक्रिया में हरबार होनेवाला पानी का उपयोग या प्रयोग। जैसे—(क) तीन पानी का गेहूँ अर्थात् ऐसा गेहूँ जिसकी फसल तीन बार सींची गई हो। (ख) कपड़ों की दो पानी की धुलाई, अर्थात् दो बार धोया जाना।

६. आकाश से जल की होनेवाली वृष्टि। वर्षा। मेह।

क्रि० प्र०—आना।—गिरना।—पड़ना।—बरसना।

मुहा०—पानी उठना -आकाश में घटाओं या बादलों का आकर छाना जो वर्षा का सूचक होता है। **पानी टूटना**=लगातार होनेवाली वर्षा बन्द होना या रुकना। **पानी बाँधना**- जादू या टोना-टोटका करके बरसते या बहते हुए पानी की धार रोकना।

७ प्रतिवर्ष होनेवाली वर्षा के विचार से, पूरे एक वर्ष का समय। जैसे—अभी तो यह पेड़ तीन ही पानी का है, अर्थात् इसने तीन ही बरसातें देखी हैं, या यह तीन ही वर्ष का पुराना है। ८ उक्त के आधार पर कोई काम एक बार या हर बार होने की क्रिया या भाव। दफा। जैसे—(क) वहाँ मुसलमानों और राजपूतों में कई पानी भिड़त हुई थी। (ख) दोनों में एक पानी कुश्ती हो तो अभी फैसला हो जाय। ९. शरीर के किसी अंग के क्षत में से विकार आदि के रूप में निकलने या रसनेवाला तरल अंश या पदार्थ। जैसे—आँख या नाक से पानी जाना।

मुहा०—पानी उतरना =आँतों या पेट का पानी उतर कर नीचे अंडकोश में आना और एकत्र होना जो एक प्रकार का रोग है।

१०. किसी स्थान का जल-वायु अथवा प्राकृतिक या सामाजिक परिस्थिति जिसका प्रभाव प्राणियों के शारीरिक स्वास्थ्य अथवा आचार-विचार, रहन-सहन आदि पर पड़ता है। जैसे—अच्छे पानी का घोड़ा।

पद—कड़ा पानी =ऐसा जलवायु जिसमें उत्पन्न या पले हुए प्राणी ढीले और निर्बल होते हैं।

मुहा०—(किसी व्यक्ति को कहीं का) पानी लगना=(क) किसी स्थान के जलवायु का शरीर पर दूषित या हानिकारक परिणाम या प्रभाव होना। जैसे—(क) जब से उन्हें पहाड़ का पानी लगा है, तब से वे बराबर बीमार ही रहते हैं। (ख) कहीं के दूषित वातावरण या परिस्थितियों का प्रभाव पड़ना। जैसे—देहात से आते ही तुम्हें शहर का पानी लगा।

११. वह जो पानी की तरह कोमल, गीला, ठंढा, नरम या गरम हो। जैसे—तुमने आटा क्या गूँधा है, बिलकुल पानी कर दिया है।

मुहा०—(काम को) पानी करना=बहुत ही सरल, सहज, साध्य या सुगम कर डालना। जैसे—मैंने इस काम को पानी कर दिया। **(किसी व्यक्ति को) पानी करना या कर देना**=कठोरता, क्रोध आदि दूर करके शांत या सरस कर देना। **(किसी व्यक्ति का) पानी पानी करना** अत्यन्त लज्जित करना। **(किसी का) पानी पानी होना** (क) मन की कठोर वृत्ति का सहसा बदलकर बहुत ही कोमल हो जाना। (ख) किसी घटना या बात के प्रभाव या फल से बहुत ही लज्जित होना। **(किसी का) पानी होना या हो जाना**=उग्रता, क्रोध आदि का पूरी तरह से शमन होना, और उनके स्थान पर दया, नम्रता आदि का आविर्भाव होना।

१२ पानी की तरह फीका या स्वादहीन पदार्थ। जैसे—दूध क्या है, निरा पानी है। १३ मद्य। शराब। (बाजारू)

पद—गरम पानी =शराब।

१४. पुरुष का वीर्य या शुक्र।

मुहा०—पानी गिराना - स्त्री के साथ उदासीनता या उपेक्षापूर्वक अथवा विशिष्ट सुख का बिना अनुभव किये यों ही मैथुन या संभोग करना। (बाजारू)

१५ पुरुषत्व, मान-प्रतिष्ठा आदि के विचार से मनुष्य में होनेवाला अभिमान, वीरता या ऐसा ही और कोई तत्त्व या भावना। जैसे—ऐसा आदमी किस काम का जिसमें कुछ भी पानी न हो।

१६ मान। प्रतिष्ठा। इज्जत। आबरू।

क्रि० प्र०—जाना।—बचना।—बचाना।—रखना।—रहना।

पद—पत-पानी -प्रतिष्ठा और सम्मान। इज्जत-आबरू।

मुहा०—(किसी का) पानी उतारना या उतार लेना=अपमानित करना।

इज्जत उतारना। (किसी को) **बे-पानी करना** =अपमानित या अप्रतिष्ठित करना।

१७. किसी पदार्थ का वह गुण या तत्त्व जिसके फल-स्वरूप उसमें किसी तरह की आभा, चमक या पारदर्शकता आती हो। जैसे—मोती या हीरे का पानी।

वि०[?] बहुत सरल और सुगम। उदा०—गुलिस्ताँ के बाद फारसी की और किताबें पानी हो गई थी।—मिरजा रुसवा (उमराव जान मे)

पानी आँवला—पु०[स० पानीयामलक] आँवले की तरह का एक क्षुप जो जलाशयो के किनारे होता है।

पानी आलू—पु०[स० पानीयालु] जलाशय के किनारे होनेवाला एक प्रकार का कद। जलालू।

पानी-कल—पु० =जल-कल।

पानी-तराश—पु०[हिं० पानी+तराशना] जहाज या नाव के पेंदे मे वह बडी लकडी जिसमे वह पानी को चीरता हुआ आगे बढता है।

पानीदार—वि०[हिं० पानी+फा० दार (प्रत्य०)] १ जिसमे पानी अर्थात् आभा या चमक हो। जैसे—पानीदार हीरा। २ (धातु का कोई उपकरण) जिस पर किसी रासायनिक प्रक्रिया से चमक लाने के लिए किसी तरह का पानी चढ़ाया गया हो। जैसे—पानीदार तलवार। ३ (व्यक्ति) जिसे अपने गौरव, प्रतिष्ठा, मान आदि का पूरा-पूरा ध्यान हो। अपने गौरव, प्रतिष्ठा, मान आदि पर आँच न आने देनेवाला। स्वाभिमानी।

पानी-देवा—वि०[हिं० पानी+देवा=देनेवाला] पितरो को पानी देने अर्थात् उनका तर्पण, पिंडदान, श्राद्ध आदि करनेवाला, फलत वशज या सतान।

पुं०१ पुत्र। बेटा। २ अपने कुल या वश का व्यक्ति।

पानीपत—पु०[हिं०]१ दिल्ली से ५५ मील उत्तर की ओर स्थित एक प्रसिद्ध नगर। २ उक्त नगर के समीप स्थित एक प्रसिद्ध क्षेत्र या बहुत बडा मैदान जहाँ अनेक बड़े-बडे युद्ध हो चुके है।

पानीफल—पु०[हिं० पानी+फल] सिघाडा (फल)।

पानीबेल—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार की लता जो प्राय साल के जंगलो मे पाई जाती और गरमी मे फूलती तथा बरसात मे फलती है। इसके फल खाये जाते हैं और जड दवा के काम आती है।

पानीय—वि०[स०√पा (पीना, रक्षा करना)+अनीयर्] १ जो पीया जा सके अथवा जो पीये जाने के योग्य हो। २ जिसकी रक्षा की जा सके या जिसकी रक्षा करना आवश्यक अथवा उचित हो।

पु० कोई ऐसा तरल स्वादिष्ठ पदार्थ जो पीने के काम में आता हो। (ड्रिंक, बीवरेज)

पानीय-चूर्णिका—स्त्री०[ष० त०] बालू। रेत।

पानीय-नकुल—पुं०[स० त०] पानी में रहनेवाला नेवला अर्थात् ऊदबिलाव।

पानीय-पृष्ठज—पुं०[स० पानीय-पृष्ठ, ष०त०,√ जन् +ड] जलकुम्भी नामक पौधा।

पानीय-फल—पु०[ष०त०] मखाना।

पानीय-मूलक—पुं०[ब०स०, कप्] बकुची।

पानीय-शाला—स्त्री०[ष०त०] १ वह स्थान जहाँ सार्वजनिक रूप से राह-चलनेवालों को पानी पिलाने की व्यवस्था हो। पौसरा। प्याऊ।

पानीय शालिका—स्त्री०[ष०त०] पानीय-शाला।

पानीयामलक—पु०[स० पानीय-आमलक, मध्य०स०] पानी आँवला।

पानीयालु—पुं०[सं० पानीय-आलु, मध्य०स०] पानी आलू नामक कद। जलालू।

पानीयाशना—स्त्री०[सं० पानीय√अश् (खाना)+न+टाप्] एक प्रकार की घास। बल्वजा।

पानूस—पु०=फानूस।

पानौरा—पु०[हिं० पान+बरा] [स्त्री० अल्पा० पानौरी] पीठी, बेसन आदि से लपेटकर तला हुआ पान के पत्ते का पकौडा।

पान्यो*—पु०=पानी।

पान्हर—पु०[देश०] एक प्रकार का सरपत।

पाप—पु० [स०√पा (रक्षा करना)+प] [वि० पापी] १ धर्म और नीति के विरुद्ध किया जानेवाला ऐसा निंदनीय आचरण या काम जो इस लोक मे भी और पर-लोक मे भी सब तरह से बुरा और हानिकारक हो और जिसके फलस्वरूप मनुष्य को नरक भोगना पड़ता हो। 'पुण्य' का विपर्याय। गुनाह।

विशेष—हमारे यहाँ पाप का क्षेत्र दुष्कर्मों की तुलना मे बहुत विस्तृत माना गया है। धर्म-शास्त्रों के अनुसार दुष्कर्म करना तो पाप है ही, उचित और कर्त्तव्य कर्म न करना भी पाप माना गया है। साधारणत दुष्कर्मों का फल तो इसी लोक मे मिलता है; पर पाप के फलस्वरूप मनुष्य को मरने के बाद भी नरक मे रहकर उसका दड भोगना पडता है। यह कायिक, मानसिक और वाचिक तीनो प्रकार का माना गया है। पापो के फल-भोग से बचने के लिए शास्त्रो मे प्रायश्चित्त का विधान है।

पद—पाप की गठरी या मोट=किसी व्यक्ति के जन्म भर के सब पाप।

मुहा०—पाप कटना=पापो के दुष्परिणामो या प्रभाव का प्रायश्चित्त या दड-भोग से क्षीण या नष्ट होना। **पाप कमाना**=ऐसे दुष्कर्म करना जो पाप समझे जाते हो और जिनका फल भोगने के लिए नरक मे जाना पडे। **पाप काटना**=किसी प्रकार पापो के दुष्परिणामो का अत या नाश करना। **पाप बटोरना**=दे० ऊपर 'पाप कमाना'।

२ पूर्व जन्म मे किये हुए पापो के फलस्वरूप प्राप्त होनेवाली वह बुरी अवस्था जिसमे उन पापो का दड या बहुत अधिक कष्ट भोगने पडते हो। जैसे—ईश्वर करे, हमारे पाप शात हो।

मुहा०—पाप उदय होना=ऐसी बुरी अवस्था या समय आना जब अनेक प्रकार के कष्ट ही कष्ट मिलते हों। दुर्दशा के अथवा बुरे दिन आना। जैसे—न जाने हमारे कब के पापो का उदय हुआ था कि ऐसा नालायक लड़का मिला। **पाप पड़ना**=ऐसी बुरी स्थिति उत्पन्न होना जिससे बहुत अधिक कष्ट या दुख भोगना पडे। उदा०—सीरै जतननु सिसिर रितु, सहि बिरहिनि तनु-ताप। बसिबे को ग्रीषम दिननु परयो परोसिनि पापु।—बिहारी।

३. ऐसी अवस्था, जिसमें किसी काम का वैसा ही दुष्परिणाम भोगना पडता हो जैसा पापपूर्ण कर्म का। जैसे—मैं देखता हूँ कि यहाँ तो सच बोलना भी पाप है।

मुहा०—पाप लगना=ऐसी स्थिति आना या होना कि जिसमे मनुष्य पापो के फलभोग का भागी बनता हो। जैसे—पापी के ससर्ग से भी मनुष्य को पाप लगता है।

४. कोई ऐसा काम या बात जिससे मनुष्य को बहुत कष्ट भोगना अथवा दु:खी होना पडता हो। जैसे—तुमने तो जान-बूझकर यह मुकदमेबाजी का पाप अपने साथ लगा रखा है।

मुहा०—पाप काटना=बहुत बडी झझट या बखेडा दूर करना।

५ अपराध। कसूर। ६ बुरी बुद्धि या बुरा विचार। ७ अनिष्ट। अहित। खराबी। ८ दे० 'पापग्रह'।

वि० १ पाप करनेवाला। पापी। २ दुराचारी। ३. कमीना। नीच। ४. दुष्ट। पाजी। ५ अमागलिक। अशुभ। जैसे—पाप-ग्रह।

पापक—वि०[स० पाप+कन्]१ पाप-युक्त। २ पाप करनेवाला। पापी।

पाप-कर—वि०[ष०त०] =पापी।

पाप-कर्म(न्)—पु०[कर्म०स०] धार्मिक दृष्टि से ऐसा बुरा और निंदनीय काम जिसे करने से पाप लगता हो।

वि० पाप करनेवाला। पापी।

पापकर्मी (र्मिन्)—वि०[स० पापकर्म] [स्त्री० पापकर्मिणी] पाप करनेवाला। पापी।

पाप-कल्प—वि०[स० पाप-कल्पप्] पापी।

पु० खोटा और नीच व्यक्ति।

पाप-क्षय—पु०[ष०त०]१ ऐसी स्थिति जिसमे किये हुए पापो का फल नही भोगना पडता। पापो का होनेवाला अत या क्षय। २ तीर्थ, जहाँ जाने से पापो का क्षय या नाश होता है।

पाप-गति—वि०[ब०स०]१ जो किये हुए पापो का फल भोग रहा हो। २ अभागा।

पाप-ग्रह—पु०[कर्म०स०] मगल, शनि, केतु, राहु आदि अशुभ ग्रह जिनकी दशा लगने पर लोग दु ख पाते हैं।

पापघ्न—वि०[स० पाप√हन्(हिंसा)+टक्] पापो का नाश करनेवाला।

पु० तिल (जिसके दान करने से पापो का क्षय होना माना जाता है)।

पापघ्नी—स्त्री०[स० पापघ्न+ङीप] तुलसी।

पाप-चद्रमा—पु०[स० कर्म० स०] फलित ज्योतिष के अनुसार विशाखा और अनुराधा नक्षत्रो के दक्षिण भाग मे स्थित चन्द्रमा।

पापचर—वि०[स० पाप√चर् (गति)+ट] [स्त्री० पापचरा] पापपूर्ण आचरण करनेवाला। पापी।

पाप-चर्य—पु०[ब०स०]१ पापी (व्यक्ति)। २ राक्षस।

पापचारी(रिन्)—वि०[स० पाप√चर्+णिनि] [स्त्री० पापचारिणी] =पाप-चर्य।

पाप-चेता (तस्)—वि०[ब०स०] जो स्वभावत पापपूर्ण आचरण करने की बाते सोचता हो।

पापचेली—स्त्री०[स० पाप√चेल्+अच्+ङीप्] पाठा लता।

पापचैल—पु०[कर्म०स०] अशुभ या अमगल सूचक वस्त्र।

वि०[ब०स०] जो उक्त प्रकार के वस्त्र पहने हो।

पाप-जीव—वि०[कर्म०स०] पापी।

पु० पुराणानुसार स्त्री, शूद्र, हूण और शबर आदि जीव जिनका ससर्ग कष्टदायक कहा गया है।

पापड़—पु०[स० पर्पट, प्रा० पप्पड] उर्द, मूँग आदि दालो, मैदे, चौरेठे आदि अन्नो अथवा आलू की बनी हुई एक तरह की मसालेदार पतली चपाती जिसे तल या भूनकर भोजन आदि के साथ खाया जाता है।

मुहा०—पापड़ बेलना=(क) कोई काम इस रूप मे करना कि वह बिगड़ जाय। (ख) किसी प्रयोजन की सिद्धि के लिए तरह-तरह के और कष्टसाध्य काम करना। (प्राय ऐसे कामो से सिद्धि नही होती)। जैसे—आप सब पापड बेल कर बैठे है।

वि०१ पापड की तरह पतला या महीन। २ पापड़ की तरह सूखा और भुरभुरा।

पापड़ा—पु०[स० पर्पट]१ छोटे आकार का एक पेड जो मध्य-प्रदेश बगाल, मद्रास आदि मे उत्पन्न होता है। इसकी लकडी से कघियाँ और खराद की चीजे बनाई जाती है। २ दे० 'पित्त-पापडा'।

पापड़ा-खार—पु०[स० पर्पटक्षार] केले के पेड को जलाकर तैयार किया हुआ क्षार।

पापड़ी—स्त्री०[हिं० पापडा] एक प्रकार का पेड जो मध्यप्रदेश, पंजाब और मदरास मे बहुत होता है।

पापदर्शी (शिन्)—वि०[स० पाप√दृश् (देखना)+णिनि] पापपूर्ण दृष्टि से देखनेवाला। बुरी निगाहवाला।

पाप-दृष्टि—वि०[ब०स०] १ जिसकी दृष्टि पापमय हो। २ अमगलकारिणी या अशुभ दृष्टिवाला।

स्त्री० पाप-पूर्ण दृष्टि।

पाप-धी—वि०[ब०स०] जिसकी बुद्धि पापमय या पापासक्त हो। पापकर्मो मे मन लगानेवाला। पापमति। पापचेता।

पाप-नक्षत्र—पु०[कर्म०स०] फलित ज्योतिष मे, ज्येष्ठा आदि कुछ नक्षत्र जो अनिष्टकारक या बुरे माने गये है।

पाप-नामा (मन्)—वि०[ब०स०]१ अशुभ नामवाला। २ जिसकी सब जगह निंदा या बदनामी होती हो। बदनाम।

पाप-नाशक—वि०[ष०त०] पापो का नाश करनेवाला।

पाप-नाशन—वि०[ष०त०] पाप का नाश करनेवाला। पापनाशी।

पु०१ प्रायश्चित्त जिससे पाप नष्ट होते है। २ विष्णु। ३. शिव।

पाप-नाशिनी—स्त्री० [स० पापनाशिन्+ङीप्] १ शमी वृक्ष। २ काली तुलसी।

पापनाशी (शिन्)—वि०[स० पाप√ नश्(नष्ट होना)+णिच्+णिनि] [स्त्री० पापनाशिनी] पापो का नाश करनेवाला।

पाप-निश्चय—वि०[ब०स०] जिसने पाप करने का निश्चय कर लिया हो। खोटा काम करने को तैयार। पाप करने को कृतसकल्प।

पाप-पति—पु०[कर्म०स०] स्त्री का उपपति या यार।

पाप-पुरुष—पु०[कर्म०स० या मध्य०स०] १ पापी प्रकृतिवाला पुरुष। दुष्ट। २ तत्र मे कल्पित पुरुष जिसका सारा शरीर पाप या पापो से ही बना हुआ माना जाता है। ३ पद्म पुराण के अनुसार ईश्वर द्वारा सारे ससार के दमन के उद्देश्य से रचा हुआ पापमय पुरुष।

पाप-फल—वि०[ब०स०] (कर्म) जिसका परिणाम बुरा हो और जिसे करने पर पाप लगता हो।

पाप-बुद्धि—वि० [ब०स०] जिसकी बुद्धि सदा पापकर्मों की ओर रहती हो।

पाप-भक्षण—पु० [ब० स०] काल-भैरव।

पापभाक् (ज्)—वि० [सं० पाप√भज् (भजना)+ण्वि] पापी।

पाप-भाव—वि० [ब० स०]=पाप-मति।

पाप-मति—वि० [ब० स०] जो स्वभावतः पाप-कर्म करता हो। पाप-बुद्धि। पापचेता।

पाप-मना (नस्)—वि० [ब० स०] जिसके मन मे पापपूर्ण विचारों का निवास हो।

पाप-मित्र—पु० [कर्म० स०] बुरे कामो मे लगाने या बुरी सलाह देने-वाला मित्र।

पाप-मोचन—पु० [ष० त०] पापो को दूर या नष्ट करना।

पाप-मोचनी—स्त्री० [ष० त०] चैत्र कृष्णपक्ष की एकादशी।

पाप-यक्ष्मा (क्ष्मन्)—पु० [कर्म० स०] राजयक्ष्मा या क्षय नामक रोग। तपेदिक।

पाप-योनि—वि० [कर्म० स०] बुरी या हीन योनि में उत्पन्न होनेवाला। जैसे—कीट, पतंग आदि।

स्त्री० बुरी या हीन योनि।

पापर†—पु०=पापड़।

पु० [अ० पॉपर] १ कगाल। २ ऐसा व्यक्ति जिसे अपनी निर्धनता प्रमाणित करने पर दीवानी मे बिना रसूम दिये मुकदमा चलाने की अनुमति मिली हो।

पाप-रोग—पु० [मध्य० स०] १ वैद्यक मे कुछ विशिष्ट भीषण या विकट रोग जो पूर्व जन्मो के पापो के फल-स्वरूप होनेवाले माने गये हैं। जैसे—कोढ़, क्षयरोग, लकवा आदि। २. मसूरिका या वसन्त नामक रोग। छोटी माता।

पापरोगी (गिन्)—वि० [पाप रोग+इनि] [स्त्री० पापरोगिणी] जिसे कोई पाप-रोग हुआ हो।

पापर्द्धि—स्त्री० [सं० पाप-ऋद्धि, ब० स०] आखेट। मृगया। शिकार।

पापल—वि० [सं० पाप√ला (लेना)+क] जो पाप का कारण हो। पाप उत्पन्न करनेवाला।

पु० एक प्रकार की पुरानी नाप या परिमाण।

पापलेन—पु० [अ० पॉपलिन] मारकीन की तरह का परन्तु उससे कुछ बढ़िया सूती कपडा।

पाप-लोक—पु० [ष० त०] [वि० पापलोक्य] १. ऐसा लोक जिसमे पापकर्मों की अधिकता हो। २. नरक, जिसमें पापी लोग पापो का फल भोगने के लिए भेजे जाते हैं।

पाप-वाद—पु० [ष० त०] अशुभ या अमागलिक शब्द।

पाप-विनाशन—पु० [ष० त०] पाप-मोचन।

पाप-शमनी—वि०, स्त्री० [ष० त०] पापो का शमन या नाश करने-वाली।

स्त्री० शमी वृक्ष।

पाप-शील—वि० [ब० स०] [भाव० पापशीलता] जो स्वभावतः पाप-कर्मों की ओर प्रवृत्त रहता हो।

पाप-शोधन—पु० [ष० त०] १. पाप से शुद्ध होने की क्रिया या भाव। पापनिवारण। २. तीर्थ-स्थान।

पाप-संकल्प—वि० [ब० स०] जिसने पाप करने का पक्का इरादा या संकल्प कर लिया हो।

पाप-सूदन—पु० [सं० पाप√सूद् (नष्ट करना)+णिच्+ल्यु—अन] एक प्राचीन तीर्थ।

पाप-हर—वि० [ष० त०] पापनाशक। पापहारक।

पापहा (हन्)—वि० [सं० पाप√हन्+क्विप्] पापनाशक।

पापांकुशा—स्त्री० [पाप-अकुश, ष० त०,+टाप्] आश्विन शुक्ला एकादशी।

पापांत—पु० [पाप-अंत, ब० स०] पुराणानुसार एक तीर्थ का नाम।

पापा—स्त्री० [सं० पाप+टाप्] १ बुधग्रह की उस समय की गति जब वह हस्त, अनुराधा अथवा ज्येष्ठा नक्षत्र मे रहता है।

पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा कीड़ा जो ज्वार, बाजरे आदि की फसल मे प्राय अधिक वर्षा के कारण लगता है।

पु० [अनु०] १ पाश्चात्य देशो मे बच्चो की एक बोली में एक शब्द जिससे वे बाप को संबोधित करते हैं। बाबा। बाबू। २ प्राचीन काल मे बिशप पादरियों और आज-कल केवल यूनानी पादरियों के एक विशेष वर्ग की सम्मान-सूचक उपाधि।

पापाख्या—स्त्री० [सं० पाप+आ√ख्या (कहना)+क+टाप्] दे० 'पापा' (बुध की गति)।

पापाचार—वि० [पाप-आचार, ब० स०] पाप कर्म करनेवाला। पापी।

पु० [ष० त०] पापपूर्ण आचरण।

पापाचारी (रिन्)—वि० [सं० पापाचार+इनि] पापपूर्ण आचरण या कर्म करनेवाला। पापी।

पापात्मा (त्मन्)—वि० [पाप-आत्मन्, ब० स०] जिसकी आत्मा या मन सदा पापकर्मों की ओर रहता हो, अर्थात् बहुत बड़ा पापी। बड़े बड़े पाप करनेवाला।

पापाधम—पु० [पाप-अधम, स० त०] पापियो मे भी अधम अर्थात् महापापी।

पापानुबंध—पु० [पाप-अनुबन्ध, ष० त०] पाप का कुफल या दुष्परिणाम।

पापानुवसित—वि० [पाप-अनुवसित, तृ० त०] १ पापी। २ पाप-पूर्ण।

पापापनुत्ति—स्त्री० [पाप-अपनुत्ति, ष० त०] प्रायश्चित्त।

पापारंभ—वि० [पाप-आरंभ, ब० स०] दुष्कर्म करनेवाला। पापी।

पापारंभक—वि० [पाप-आरंभक, ष० त०] जो पापकर्म करना चाहता हो।

पापार्त्त—वि० [पाप-आर्त्त, तृ० त०] जो अपने पाप-कर्मों के फल से बहुत ही दुःखी हो।

पापाशय—वि० [पाप-आशय, ब० स०] जिसके मन मे पाप हो।

पापाह—पु० [पाप-अहन्, कर्म० स०, टच्] १ अशौच या सूतक के दिन का समय। २. अशुभ या बुरा दिन।

पापिष्ठ—वि० [सं० पाप+इष्ठन्] बहुत बड़ा पापी।

पापी (पिन्)—वि० [सं० पाप+इनि] [स्त्री० पापिनी] १ पाप मे रत या अनुरक्त। पाप करनेवाला। पातकी। अघी। २ लाक्षणिक और व्यंग्य के रूप मे, क्रूर, निर्मोही या निर्दय। जैसे—पिया पापी न जागे, जगाय हारी।—लोकगीत।

पु० वह जो पाप करता हो या जिसने कोई पाप किया हो।

पापीयस्—वि० [सं० पाप+ईयसुन्] [स्त्री० पापीयसी] पापी।

पापोश—स्त्री० [फा०] जूता। उपानह।

पापोशकार—पु० [फा०] [भाव० पापोशकारी] जूते बनानेवाला व्यक्ति। मोची।

पाप्मा (प्मन्)—वि० [सं०√आप् (व्याप्त करना)+मनिन्, नि० सिद्धि] पापी।

पु० पाप।

पा-प्यादा—क्रि० वि० [फा०] बिना किसी सवारी के। पैदल।

पाबंद—वि० [फा०] [भाव० पाबंदी] १ जिसके पैर बँधे हुए हों। २ किसी प्रकार के बन्धन में पड़ा हुआ। बद्ध। जैसे—नौकरी या मालिक का पाबंद। ३ पूर्ण रूप से किसी नियम, वचन, सिद्धांत आदि का ठीक समय पर पालन करनेवाला। जैसे—वक्त का पाबंद, हुकुम का पाबंद। ४ जो उक्त के आधार पर कोई काम करने के लिए बाध्य या विवश हो।

पु० १. घोड़े का पिछाड़ी, जिससे उसके पैर बाँधे जाते हैं। २ नौकर। सेवक।

पाबंदी—स्त्री० [फा०] १ पाबंद होने की अवस्था, क्रिया या भाव। बद्धता। २ वचन, समय, सिद्धान्त आदि के पालन करने की जिम्मेदारी। ३ उक्त के फल-स्वरूप होनेवाली लाचारी या विवशता।

पाम (मन्)—पु० [सं०√पा (पीना)+मनिन्] १ दानेदार चकत्ते या फुसियाँ। २ खाज। खुजली।

स्त्री० [देश०] १ वह डोरी जो गोटे, किनारी आदि बुनने के समय दोनों तरफ बाँधी जाती है। २ डोरी। रस्सी। (लश०)

पाम—पु० [अं०] ताड़ का पौधा या वृक्ष।

पामघ्न—वि० [सं० पामन्√हन् (नष्ट करना)+टक्] पामा रोग का नाश करनेवाला।

पु० गंधक।

पामघ्नी—स्त्री० [सं० पामघ्न+ङीप्] कुटकी।

पामड़ा†—पु० =पाँवड़ा।

पामड़ी†—स्त्री० =पानड़ी।

पामन—वि० [सं०√पा+मनिन्, पामन्+न, नलोप] १ जिसे या जिसमें पामा रोग हुआ हो। २ खल। दुष्ट।

पु० =पामा (रोग)।

पामना†—स० =पावना (पाना)।

पु० =पावना (प्राप्य धन)।

पामर—वि० [सं०√पा (रक्षा करना)+क्विप्, पा√मृ (मरना)+घ] १ बहुत बड़ा दुष्ट और नीच। अधम। २ पापी। ३ जिसका जन्म नीच कुल में हुआ हो। ४ निर्बुद्धि। मूर्ख।

पामर-योग—पु० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार का निकृष्ट योग। (फलित ज्योतिष)

पामरी—स्त्री० [सं० प्रावार] उपरना। दुपट्टा।

स्त्री० सं० 'पामर' का स्त्री०।

†स्त्री० =पाँवड़ी।

†स्त्री० =पानड़ी।

पामा—पु० [सं० पामन्+डाप्] १ एक प्रकार का चर्म रोग जिसमें शरीर पर चकत्ते निकल आते और उनमें की छोटी छोटी फुसियों में से पानी बहता है। (एक्जिमा) २ खाज या खुजली नामक रोग।

पामारि—पु० [पामा-अरि, ष० त०] गंधक।

पामाल—वि० [फा०] [भाव० पामाली] १. पैर से कुचला या पाँव-तले रौंदा हुआ। पद-दलित। २ बुरी तरह से तबाह या बरबाद।

पामाली—स्त्री० [फा०] १ पामाल होने की अवस्था या भाव। २ तबाही। बरबादी।

पामोज—पु० [?] १ एक प्रकार का कबूतर। २ ऐसा घोड़ा जो सवारी के समय सवार की पिंडली को अपने मुँह से पकड़ता हो।

पायँ†—पु० =पाँव।

पायँचा—पु० [हिं० पाँव] पायजामे की टाँग।

पायँजेहरि—स्त्री० [हिं० पाँय+जेहरी] पायजेब।

पायँत†—स्त्री० =पायँता।

पायँता—पु० [हिं० पायँ+सं० स्थान, हिं० थान] १ पलंग या चारपाई का वह भाग जिस पर पैर रहते हैं। पैताना। २ वह दिशा जिधर पैर फैलाकर कोई सोया हो।

पायँती—स्त्री० [हिं० पायँता] पायँता। पैताना।

पायंदाज—पु० [फा० पाअंदाज] पैर पोंछने का बिछावन। पावदान।

पायँपसारी—स्त्री० [हिं० पाँव+पसारना] निर्मली का पौधा और फल।

पाय—पु० [सं०√पा+घञ्, युक्] जल। पानी।

पु० [फा० पाय] फारसी 'पा' (=पैर) का वह संबंधकारक रूप जो उसे यौ० शब्दों के आरंभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पायखाना, पायजेब आदि।

पायक—वि० [सं०√पा (पीना)+ण्वुल्—अक, युक्] पान करनेवाला। पीनेवाला।

पु० [फा०] १ दूत। २ सेवक। दास। ३ पैदल सिपाही। ४ वह छोटा कर्मचारी जो प्रायः दौड़-धूपवाले कामों के लिए नियुक्त हो। ५ झंडा। पताका।

पु० [?] १ पहलवान। मल्ल। २ पटेबाज।

पायकार—पु० दे० 'पैकार'।

पायखाना†—पु० =पाखाना।

पायगाह—स्त्री० [सं०] १ पैर रखने की जगह। २ कचहरी। ३ अस्तबल। तबेला।

पायज†—पु० [?] पेशाब। मूत्र। उदा०—....निज पायज ज्यों जल अंक लगावै।—केशव।

पायजामा—पु० =पाजामा।

पायजेब—स्त्री० =पाजेब।

पाय-जेहरि†—स्त्री० =पाजेब।

पायठ—स्त्री० =पाइट।

पायड़ा—पु० दे० 'पैड़ा'।

पायतन—पु० =पायँता।

पायताबा—पु० [फा०] पाताबा (मोजा)।

पायदान—पु० =पावदान।

पायदार—वि० [फा० पाय दार] [भाव० पायदारी] टिकाऊ और मजबूत।

पायदारी—स्त्री० [फा०] दृढ़ता और मजबूती।

पायन—पु० [स०√पा+णिच्+ल्युट्—अन] किसी को कुछ पिलाने की क्रिया या भाव।

पायना—स्त्री० [स०√पा+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १. सींचना। २ गीला या तर करना। ३ सान धरना। धार तेज करना।

पायनिक—वि० [स० पायन+ठक्—इक] सिंचाई के काम मे आनेवाला।

पायपोश—पु०=पापोश।

पायबोसी—स्त्री० =पाबोसी।

पायमाल—वि० [भाव० पायमाली]=पामाल।

पायरा—पु० [हिं० पाय+रा (=रखना)] घोड़े की जीन।
पु० [स० पारावत] एक प्रकार का कबूतर।

पायल—स्त्री० [हिं० पाय+ल (प्रत्य०)] १. पैर मे पहनने का स्त्रियो का एक गहना। २ तेज चलनेवाली हथिनी। ३ बाँस की सीढ़ी।
वि० [बच्चा] जन्म के समय जिसके पैर पहले बाहर निकले हों।

पायस—पु० [स० पायस्+अण्] १. खीर। २. सरल का गोंद। निर्यास। ३ रसायन शास्त्र मे, दूधिया रग का वह तरल पदार्थ जिसमे तेल, मर्जरस आदि के कण सब जगह समान रूप से तैरते रहते हों। (एमल्शन) ४ दे० 'वसापायस'।

पायसा—पु० [स० पार्श्व, हि० पास] पड़ोस। आस-पास का स्थान।

पायसीकरण—पु० [स० पायस√कृ (करना)+च्वि, ईत्व+ल्युट्—अन] किसी तरल औषध या घोल को ऐसा रूप देना कि उसमे कुछ पदार्थों के कण तैरते रहे, नीचे बैठ न जायँ। (एमल्सिफिकेशन)

पायसोपवास—पु० [स० पायस-उपवास] अच्छी-अच्छी चीजें खाकर भी यह कहते चलना कि हमने तो कुछ भी नही खाया। उपहास करने का झूठा बहाना।

पाया—पु० [फा० पाय.] १ पलग, कुरसी, चौकी आदि का पावा या पैर। २ खभा। स्तभ। ३ नीव। बुनियाद। ४ दरजा। पद।
मुहा०—**पाया बुलन्द होना**=पदोन्नति होना।
५. घोड़ो के पैर मे होनेवाला एक रोग।

पायिक—पु० [स० पादविक, पृषो० साधु 'पादातिक' का प्रा० रूप] १. पादातिक। पैदल सिपाही। २ चर। दूत।

पायी (यिन्)—वि० [स०√पा (पीना)+णिनि] समस्त पदो के अन्त में, पीनेवाला। जैसे—स्तनपायी।
स्त्री०=पाई।

पायु—पु० [स०√पा (रक्षा)+उण्, युक् आगम] १ मलद्वार। गुदा। २. भरद्वाज के पुत्र।

पाय्य—वि० [स०√मा (मापना)+ण्यत्, नि० पादेश] १. जो पान किया जा सके। पीये जाने के योग्य। २. जो पीया जाता हो। पेय।
पु० १. जल। पानी। २. रक्षण।

पारंगत—वि० [स० पारगत] १. जो पार जा या पहुँच चुका हो। २ जिसने किसी विद्या या शास्त्र का बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त कर लिया हो।

पारंपरीण—वि० [स० परपरा+खञ्—ईन] परपरागत।

पारंपर्य—पु० [स० परपरा+ष्यञ्] १ परम्परा का भाव। २ परपरा से चली आई हुई प्रथा या रीति। आम्नाय। ३ परपरा का क्रम। ४ वश परपरा।

पारपर्योपदेश—पु० [पारपर्य-उपदेश ष० त०] १ परपरागत उपदेश। २ ऐतिह्य नामक प्रमाण।

पार—पु० [स० पर+अण्,√पृ (पूर्ति करना)+घञ्] १ (क) झील, नदी, समुद्र आदि के पूरे विस्तार का वह दूसरा किनारा या सिरा जो वक्ता के पासवाले किनारे या सिरे की विपरीत दिशा मे और उस विस्तार के अतिम सिरे पर पडता हो। उस ओर का और दूर पड़नेवाला किनारा या सिरा। ऊपर का तट या सीमा। (ख) उक्त या इस ओर अर्थात् इधर या पास का किनारा या सिरा। जैसे—(क) वह नाव पर बैठकर नदी के पार चला गया। (ख) गगा के इस पार से उस पार तक तैर के जाने मे एक घटा लगता है।
क्रि० प्र०—करना।—जाना।—होना।
पद—आर-पार, वार-पार। (देखें)
मुहा०—**पार उतरना**=नदी आदि के तल पर से होते हुए दूसरे किनारे तक पहुँचना। **पार उतारना**=नाव आदि की सहायता से जलाशय के उस पार पहुँचाना या ले जाना। **पार लगना**=उस पार तक पहुँचना। **पार लगाना**=उस पार तक पहुँचाना।
२ (क) किसी तल या पृष्ठ के किसी विंदु के विचार से उसके विपरीत या सामनेवाली दिशा के तल या पृष्ठ का कोई विंदु या स्थान। (ख) उक्त के आमने-सामने वाले अथवा एक सिरे से दूसरे सिरे तक के दोनो विंदुओं मे से प्रत्येक विंदु। जैसे—(क) तख्ते मे काँटा ठोककर उसकी नोक उस पार निकाल दो। (ख) गोली उसके पेट के इस पार से उस पार निकल गई। ३ किसी काम या बात का अंतिम छोर या सिरा। विस्तार या व्याप्ति की चरम सीमा या हद।
पद—**इस पार**=इस लोक मे। उदा०—इस पार प्रिये तुम हो उस पार न जाने क्या होगा।—बच्चन। **उस पार**=परलोक मे।
मुहा०—**(किसी का) पार पाना**=किसी की चरम सीमा, गभीरता, गहनता आदि का ज्ञान या परिचय प्राप्त करना। जैसे—इस विद्या का पार पाना कठिन है। **(किसी से) पार पाना**=किसी के विरुद्ध या सामने रहने पर उसकी तुलना या मुकाबले मे विजयी या सफल होना, अथवा बढ़ा हुआ सिद्ध होना। जैसे—चालाकी मे तुम उससे पार नही पा सकते। **(किसी काम या बात का) पार लगना**=ठीक तरह से अन्त या समाप्ति तक पहुँचना। पूरा होना। जैसे—तुम से यह काम पार नहीं लगेगा। **(किसी को) पार लगाना**=(क) कष्ट, सकट आदि से उद्धार करना। उबारना। (ख) जीवन-काल तक किसी का निर्वाह करना।
विशेष—यह मुहा० वस्तुत. 'किसी का बेडा पार लगाना' का सक्षिप्त रूप है।
४. किसी काम, चीज या बात का सारा अथवा समूचा विस्तार।

अव्य० अलग और दूर। परे और पृथक्। जैसे—तुम तो बात कहकर पार हो गये, सारा काम हमारे सिर पर आ पड़ा।

पु० [?] खेत की पहली जोताई।

पारई†—स्त्री०=परई।

पारक—वि० [स०√पृ+ण्वुल्—अक] [स्त्री० पारकी] १ पार करने या लगानेवाला। २ उद्धार करने या बचानेवाला। ३ पालन करनेवाला। पालक। ४ प्रीति या प्रेम करनेवाला। प्रेमी। ५ पूर्ति करनेवाला।

पु० १ सोना। स्वर्ण। २ वह पत्र जो परीक्षा आदि मे उत्तीर्ण होने का सूचक हो। ३ वह पत्र जिसे दिखलाकर कोई कही आ-जा सके या इसी प्रकार का और कोई काम करने का अधिकार प्राप्त करे। पार-पत्र। (पास)

पार-काम—वि० [सं० पार√कम् (चाहना)+अण्] जो पार उतरने अर्थात् उस पार जाने को इच्छुक हो।

पारकी—वि०=परकीय।

पारक्य—वि० [स० पर+ष्यञ्, कुक्] परकीय। पराया।

पु० पवित्र आचरण या पुण्य कार्य जो परलोक मे उत्तम गति प्राप्त कराता है।

पारख—पु०=पारखी।

स्त्री०=परख।

पारखद*—पु०=पार्षद् (सभासद)।

पारखी—पु० [हिं० परख+ई (प्रत्य०)] वह व्यक्ति जिसमे किसी चीज की अच्छाई-बुराई, गुण-दोष आदि जानने और परखने की पूर्ण योग्यता हो। जैसे—आप कविता के अच्छे पारखी हैं।

पारखू*—पु०=पारखी।

पारग—वि० [स० पार√गम्+ड] १ पार जानेवाला। २ काम पूरा करनेवाला। ३ किसी विषय का पूरा जानकार।

पार-गत—वि० [स० द्वि० त०] [भाव० पारगति] १ जो पार चला गया हो। २ जो किसी विषय का पूरा ज्ञान प्राप्त कर चुका हो। पारगत। ३ समर्थ।

पु० जिन देव।

पारगति—स्त्री० [स० स० त०] पारगत होने के लिए अध्ययन करना।

पार-गमन—पु० [स०] एक स्थान या स्थिति से दूसरे स्थान या स्थिति मे जाने की क्रिया, भाव या स्थिति। (ट्रान्जिट)

पारगामी(मिन्)—वि० [स० पार√गम्+णिनि] पार करने या जानेवाला।

पारचा—पु० [फा० पार्चः] १ टुकड़ा। खंड। धज्जी। २ कपड़ा। वस्त्र। ३ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४ पहनावा। पोशाक। ५ कच्चे कूओ मे, दो खड़ी लकड़ियो के ऊपर रखी हुई वह बेड़ी लकड़ी जिस पर से रस्सी कूएँ मे लटकाई जाती है। ६ पानी का छोटा हौज।

पारज—पु० [स०√पार (कर्म समाप्त करना)+अजिन्] सोना। सुवर्ण।

पारजन्मिक—वि० [स० पर-जन्मन्, कर्म० स०,+ठक्—इक] पर-जन्म अर्थात् दूसरे जन्म से सबध रखनेवाला।

पारजात†—पु०=परजाता (पारिजात)।

पारजायिक—पु० [स० पर जाया, ष० त०,+ठक्—इक] पराई जाया अर्थात् पर-स्त्री से गमन करनेवाला। व्यभिचारी।

पारटीट (टीन)—पु० [स०] १ पत्थर। २. शिला। चट्टान।

पारण—पु० [स०√पार्+ल्युट्—अन] १ पार करने, जाने या होने की क्रिया या भाव। २ किसी को पार ले जाने की क्रिया या भाव। ३ किसी व्रत या उपवास के दूसरे दिन किया जानेवाला तत्सम्बन्धी कृत्य, और उसके बाद किया जानेवाला भोजन। ४ तृप्त करने की क्रिया या भाव। ५ आज-कल, किसी प्रस्तावित विधान अथवा विधेयक के सबध मे उसे विचारपूर्वक निश्चित और स्वीकृत करने की क्रिया या भाव। ६ परीक्षा या जांच मे पूरा उतरना। उत्तीर्ण होना। (पासिंग) ७ रुकावट या बधन की जगह पार करके आगे बढ़ना। (पासिग) ८ पूरा करने की क्रिया या भाव। ९ बादल। मेघ।

पारणक—वि० [स०] पारण करनेवाला।

पारण-पत्र—पु० [स०] १. किसी प्रकार के पारण का सूचक पत्र। २ वह पत्र जिसके आधार पर या जिसे दिखलाने पर किसी को कहीं आ-जा सकने या इसी प्रकार का और कोई काम कर सकने का अधिकार प्राप्त होता हो। (पास)

पारणा—स्त्री० [स०√पार्+णिच्+युच—अन, टाप्] पारण।

पारणीय—वि० [स०√पार+अनीयर्] १ जिसे पार किया जा सके। २ जिसे पूरा या समाप्त किया जा सके।

पारतंत्र्य—पु० [स० परतत्र+ष्यञ्] परतत्रता।

पारत—पु० [स० पार√तन् (विस्तार)+ड] एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। पारद (जाति और देश)।

पारतल्पिक—पु० [स० परतल्प+ठक्—इक] पर-स्त्री गामी। व्यभिचारी।

पारत्रिक—वि० [स० परत्र+ठक्—इक] १ परलोक-सबधी। पारलौकिक। २ (कर्म या काम) जिससे पर-लोक मे उत्तम गति प्राप्त हो।

पारत्र्य—पु० [स० परत्र+ष्यञ्] परलोक मे मिलनेवाला फल।

पारथ†—पु०=पार्थ (अर्जुन)।

पारथिया†—वि० [स० प्रार्थित] माँगा हुआ। याचित।

पारथिव†—वि०, पु०=पार्थिव।

पारधी—पु० [स० पापर्द्धिक=बहेलिया।] १ बहेलिया २ शिकारी। ३ हत्यारा।

पारद—पु० [स०√पृ+णिच्+तन् पृषो० त—द] १ पारा। २ एक प्राचीन जाति जो पारस के उस प्रदेश मे निवास करती थी जो कैस्पियन सागर के दक्षिण के पहाड़ों को पार करके पड़ता था। ३ उक्त जाति के रहने का देश।

पारदर्शक—वि० [स० ष० त०] [भाव० पारदर्शकता] प्रकाश की किरणें जिसे पार करके दूसरी ओर जा सकती हो और इसी लिए जिसके इस पार से उस पार की वस्तुएँ दिखाई देती हो। (ट्रान्सपेरेन्ट) जैसे—साधारण शीशे पारदर्शक होते हैं।

पारदर्शकता—स्त्री० [स० पारदर्शक+तल्+टाप्] पारदर्शक होने की अवस्था, गुण या भाव।

पारदर्शी (र्शिन्)—वि० [स० पार√दृश्+णिनि] [भाव० पार-

दर्शिता] १. आर-पार अर्थात् बहुत दूर तक की बात देखने और समझनेवाला। दूरदर्शी। २ पारदर्शक। (दे०)

पारदारिक—वि०, पु० [सं० पर-दारा, ष० त०,+ठक्—इक] पराई स्त्रियों से अनुचित संबंध रखनेवाला। पर-स्त्रीगामी।

पारदार्य—पु० [सं० परदारा+ष्यञ्] पराई स्त्री के साथ गमन। पर-स्त्री-गमन।

पारदिक—वि० [सं० पारद+ठक्—इक] १. पारद या पारे से संबंध रखनेवाला। २ जिसमे पारे का भी कुछ अंश हो। (मर्क्यूरिक)

पारदेशिक—वि० [सं० परदेश+ठक्—इक] दूसरे देश का। विदेशी। पुं० १ दूसरे देश का निवासी। २ यात्री।

पारदेश्य—वि०, पु० [सं० परदेश+ष्यञ्]=पारदेशिक।

पारद्रष्टा—वि० [सं०] जो उस पार अर्थात् इस लोक के परे की बातें भी देख या जान सकता हो।

पारधि—पु०=पारधी।

पारधी—पु० [सं० परिधान=आच्छादन] १ बहेलिया। व्याध। २. शिकारी। ३ बधिक। ४ काल। मृत्यु।
स्त्री० आड। ओट।

मुहा०—(किसी के) पारधी पड़ना—आड मे छिपकर कोई व्यापार देखना या किसी की बात सुनना।

पारन†—पु० पारण।
वि०=पारक (पार करने या लगानेवाला)।

पारना—स० [सं० पारण] १ गिराना। २ डालना। ३. लेटाना। ४ कुश्ती या लडाई मे पटकना। पछाडना। ५. प्रस्थापित या स्थापित करना। रखना। उदा०—प्यारे परदेश तें कबै धौं पग पारि हैं।—रत्नाकर।

मुहा०—पिंडा पारना मृतक के उद्देश्य से पिंडदान करना।

६ किसी के हाथ मे देना। किसी को सौंपना। ७ किसी के अन्तर्गत करना। किसी में सम्मिलित करना। ८. शरीर पर धारण करना। पहनना। ९ किसी विशिष्ट क्रिया से किसी के ऊपर जमाना या लगाना। जैसे—कजलौटे पर काजल पारना। १०. कोई अनुचित या अवांछित घटना या बात घटित करना। उदा०—तन जारत, पारति बिपति अपति उजारत लाज।—पद्माकर। ११ कोई काम स्वयं करना अथवा दूसरे से करा देना। उदा०. . . . बरनि न पारौं अंत।—जायसी। १२. कोई काम करने की समर्थता होना। कर सकना। उदा०—बूझि लेहु जौ बूझे पारहु।—जायसी। †१३ मचाना। जैसे—हल्ला पारना। १४ नियत या स्थिर करना। उदा०—अबहीं ते हद पारी।—सूर।

अ० [सं० पारण=योग्य, का हिं० पार, जैसे—पार लगना=हो सकना] कोई काम करने मे समर्थ होना। सकना।

†स०=पालना। (पालन करना) उदा०—जन प्रहलाद प्रतिज्ञा पारी।—सूर।

पार-पत्र—पु० [सं० ष० त०] वह राजकीय अधिकार-पत्र जो किसी राज्य की प्रजा को विदेश यात्रा के समय प्राप्त करना पडता है, और जिसे दिखाकर लोग उसमे उल्लिखित देशों में भ्रमण कर सकते हैं। (पास-पोर्ट)

विशेष—ऐसे पार-पत्र से यात्री को अपने मूल देश के शासन का भी संरक्षण प्राप्त होता है, और उन देशो के शासन का भी संरक्षण प्राप्त होता है जिनमे यात्रा करने का उन्हे अधिकार मिला होता है।

पारबती—स्त्री०=पार्वती।

पार-ब्रह्म—पु०=पर-ब्रह्म।

पारभृत—पु०=प्राभृत (भेंट)।

पारमहंस—पु०=पारमहंस्य।

पारमहंस्य—वि० [सं० परमहंस+ष्यञ्] जिसका संबंध परमहंस से हो। परमहंस-संबंधी।

पारमाणविक—वि० [सं०] परमाणु-संबंधी। परमाणु का। (एटमिक)

पारमार्थिक—वि० [सं० परमार्थ+ठक्—इक] परमार्थ-संबंधी। परमार्थ का। जैसे—पारमार्थिक ज्ञान। २ परमार्थ सिद्ध करनेवाला। परमार्थ का शुभ फल दिलानेवाला। जैसे—पारमार्थिक कृत्य। ३ सत्यप्रिय। ४ सदा एक-रस और एक रूप बना रहनेवाला। ५. उत्तम। श्रेष्ठ।

पारमार्थ्य—पु० [सं० परमार्थ+ष्यञ्] १ 'परमार्थ' का गुण या भाव। २. परम सत्य।

पारमिक—वि० [सं० परम+ठक्—इक] १ मुख्य। प्रधान। २ उत्तम। सर्वश्रेष्ठ। ३ परम।

पारमित—वि० [सं० पारम् इत, व्यस्तपद] [स्त्री० पारमिता] १ जो उस पार पहुँच गया हो। २ पारगत। ३ अतिश्रेष्ठ।

पारमिता—स्त्री० [सं० पारम् इता, व्यस्तपद] सीमा। हद।

पारमेश्वर—वि० [सं० परमेश्वर+अण्] परमेश्वर संबंधी।

पारमेष्ठ्य—पु० [सं० परमेष्ठिन्+ष्यञ्] १ प्रधानता। २ सर्वोच्च पद। ३. प्रभुत्व। ४ राजचिह्न।

पारयिष्णु—वि० [सं०√पार्+णिच्+इष्णुच्] १. जो पार जाने मे समर्थ हो। २. विजयी। ३ सफल। ४ रुचिकर और तृप्तिकारक।

पारयुगीन—वि० [सं० परयुग+खञ्—ईन] परवर्ती युग से संबंध रखनेवाला अथवा उसमे पाया जाने या होनेवाला।

पारलौक्य—वि० [सं० परलोक+ष्यञ्] पारलौकिक।

पारलौकिक—वि० [सं० परलोक+ठक्—इक] १ परलोक-संबंधी। परलोक का। २ (कर्म) जिससे परलोक मे शुभ फल की प्राप्ति हो। परलोक सुधारनेवाला।
पु० अंत्येष्टि क्रिया।

पारवत—पु० [सं०] पारावत। (दे०)

पारवर्ग्य—वि० [सं० परवर्ग+ष्यञ्] १ अन्य या दूसरे वर्ग से संबंध रखने अथवा उसमें होनेवाला। २ प्रतिकूल।
पुं० वैरी। शत्रु।

पारवश्य—पु० [सं० परवश+ष्यञ्]=परवशता।

पार-वहन—पु० [सं०] चीजें आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया, भाव या स्थिति। (ट्रान्जिट)

पारविषयिक—वि० [सं० पर विषय+ठक्—इक] दूसरे के विषयों से संबंध रखनेवाला।

पारशव—पु० [सं० परशु+अण्] १ लोहा। २ [उपमि० सं०] ब्राह्मण पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न व्यक्ति। ३. पराई स्त्री के गर्भ

से उत्पन्न करके प्राप्त किया हुआ पुत्र। ४ एक प्रकार की गाली जिससे यह व्यक्त किया जाता है कि अमुक के पिता का कोई पता नहीं वह तो हरामी का है। ५. एक प्राचीन देश, जिसके सबध मे कहा जाता है कि वहाँ मोती निकलते थे।

वि० लौह-सबधी।

पारशवी—स्त्री० [स० पारशव+ङीष्] वह कन्या या स्त्री जिसका जन्म शूद्रा माता और ब्राह्मण पिता से हुआ हो।

पारश्व—पु० =पारश्वधिक।

पारश्वधिक—पु० [स० परश्वध+ठञ्—इक] परशु या फरसे से सज्जित योद्धा।

पारस—पु० [स० स्पर्श, हिं० परस] १ एक कल्पित पत्थर जिसके विषय मे प्रसिद्ध है कि लोहा इसके स्पर्श से सोना हो जाता है। स्पर्श-मणि। २ पारस पत्थर के समान उत्तम, लाभदायक या स्वच्छ अथवा आदरणीय और बहुमूल्य पदार्थ या वस्तु। जैसे—(क) यदि उनके साथ रहोगे तो कुछ दिनो मे पारस हो जाओगे। (ख) यह दवा खाने से शरीर पारस हो जायगा।

पु० [हिं० परसना] १ परोसा हुआ भोजन। २ परोसा।

अव्य० [स० पार्श्व] समीप। नजदीक। पास। उदा०—पारस प्रासाद सेन सपेखे।—प्रिथीराज।

पु० [स० पलाश] पहाडो पर होनेवाला बादाम या खूबानी की जाति का एक मझोले कद का पेड। गीदड-ढाक। जायन।

पु० [फा०] आधुनिक फारस देश का एक पुराना नाम।

पारसनाथ—पु० =पार्श्वनाथ (जैनो के तीर्थंकर)।

पारसल—पु० [अ०] डाक, रेल आदि द्वारा किसी के नाम भेजी जानेवाली गठरी या पाटली।

पारसव*—पु० =पारशव।

पारसा—वि० [फा०] [भाव० पारसाई] पवित्र और शुद्ध चरित्र तथा विचारोंवाला। बहुत बडा धर्मात्मा और सदाचारी।

पारसाई—स्त्री० [फा०] 'पारसा' होने की अवस्था या भाव। धार्मिकता और सदाचार।

पारसाल—पु० [फा०] १ गत वर्ष। २ आगामी वर्ष।

पारसिक—पु० [स० पारसीक, पृषो० सिद्धि] पारसीक। (दे०)

पारसी—पु० [स० पारसीक से फा० पार्सी] १ पारस अर्थात् फारस (आधुनिक ईरान) का रहनेवाला आदमी। २ आज-कल मुख्य रूप से पारस के वे प्राचीन निवासी जो मुसलमानी आक्रमण के समय अपना धर्म बचाने के लिए वहाँ से भारत चले आये थे। इनके वशज अब तक बम्बई और गुजरात मे बसे है। ये लोग अग्निपूजक हैं, और कमर मे एक प्रकार का यज्ञोपवीत पहने रहते हैं।

वि० पारस या फारस-सबधी। पारस का।

पारसीक—पु० [स०] १ आधुनिक ईरान देश का प्राचीन नाम। फारस। २ उक्त देश का निवासी। ३ उक्त देश का घोडा।

वि०, पु० =पारसी।

पारसीकयमानी—स्त्री० [स०] खुरासानी वच।

पारसीकवचा—स्त्री० [स०] खुरासानी वच।

पारसीकेय—वि० [स०] ईरान, पारस या फारस देश सबधी।

पु० कुकुम।

पारस्कर—पु० [स० पार√कृ०+ट, सुट्] १ एक प्राचीन देश। २ एक गृह्य-सूत्रकार मुनि।

पारस्त्रैणेय—पु० [स० पर-स्त्री, ष० त०,+ढक्—एय, इनङ्—आदेश] पराई स्त्री से सबध रखनेवाले व्यक्ति से उत्पन्न पुत्र। जारज पुत्र।

पारस्परिक—वि० [स० परस्पर+ठक्—इक] आपस मे एक दूसरे के प्रति या साथ होनेवाला। परस्पर होनेवाला। आपस का। आपसी। (म्यूचुअल)

पारस्परिकता—स्त्री० [स० पारस्परिक+तल्+टाप्] पारस्परिक होने की अवस्था या भाव।

पारस्य—पु० [स०] पारस देश।

पारस्स†—पु० १ =पार्श्व। २ =पार्श्ववर। ३ =पारस्य।

पारहस्य—वि० [स० परहस+ष्यञ्] =पारमहस्य।

पारा—पु० [स० पारद] एक प्रसिद्ध बहुत चमकीली और सफेद धातु जो साधारण गरमी या सरदी मे द्रव अवस्था मे रहती है और अनुपातिक दृष्टि से बहुत भारी या वजनी होती है। पारद। (मर्करी)

मुहा०—(किसी का) **पारा चढ़ना** =गुस्से से बेहाल होना। **पारा पिलाना**=(क) किसी वस्तु के अदर पारा भरना। (ख) किसी वस्तु को इतना अधिक भारी कर देना कि मानो उसके अदर पारा भर दिया गया हो।

पु० [स० पारि=प्याला] दीये के आकार का, पर उससे बडा मिट्टी का बरतन। परई।

पु० [फा० पार] खड या टुकडा।

पाराती—स्त्री० [स० प्रात] एक प्रकार के धार्मिक गीत जो देहाती स्त्रियाँ पर्वों आदि पर किसी तीर्थ या पवित्र नदी मे स्नान करने के लिए आते-जाते समय रास्ते मे गाती चलती हैं।

पारापत—पु० [स० पार—आ√पत् (गिरना)+अच्] कबूतर।

पारापार—पु० [स० पार-अपार, द्व० स०+अच्] १ यह पार और वह पार। २ इधर और उधर का किनारा। ३ समुद्र।

पारायण—पु० [स० पार-अयन, स० त०] [वि० पारायणिक] १ किसी अनुष्ठान या कार्य की होनेवाली समाप्ति। २ नियमित रूप से किसी धार्मिक ग्रथ का किया जानेवाला पाठ। † ३ किसी चीज का बार-बार पढ़ा जाना।

पारायणी—स्त्री० [स० पारायण+ङीप्] १. चिंतन या मनन करते हुए पारायण करने की क्रिया। २ सरस्वती। ३ कर्म। ४. प्रकाश।

पारावत—पु० [स० पर√अव (रक्षा)+शतृ+अण्] १ कबूतर। २ पेंडकी। ३ बदर। ४ पहाड। पर्वत।

पारावतघ्नी—स्त्री० [स०पारावत√हन् (हिंसा)+टक्+ङीष्] सरस्वती नदी।

पारावतपदी—स्त्री० [ब०स०, ङीष्] १ मालकगनी। २ काकजघा।

पारावताश्व—पु० [स० पारावत-अश्व, ब० स०] धृष्टद्युम्न।

पारावती—स्त्री० [स० पारावत+अच्+ङीप्] १ अहीरों के एक तरह के गीत। २ कबूतरी।

पारावारीण—वि० [स० पार-अवार, द्व० स०,+ख—ईन] १ जो दोनो किनारो पर जाता या पहुँचता हो। २. पारंगत।

पाराशर—वि० [सं० पराशर+अण्] १. पराशर-संबंधी। २. पराशर द्वारा रचित।
पुं० पराशर मुनि के पुत्र, वेदव्यास।

पाराशरि—पुं० [सं० पराशर+इञ्] १ शुकदेव। २. वेदव्यास।

पाराशरी (रिन्)—पुं० [सं० पाराशर्य+णिनि, य लोप] १. संन्यासी। २ वह सन्यासी जो व्यास द्वारा रचित शारीरिक सूत्रों का अध्ययन करता हो।

पाराशर्य—पुं० [सं० पराशर+यञ्]=पराशर।

पारींद्र—पुं० [सं० पारीन्द्र, पृषो० सिद्धि] सिंह। शेर।

पारि†—स्त्री०[हिं० पार] १. नदी, समुद्र आदि का किनारा। २ ओर। दिशा। ३ बाँध या मेड़। ४. मर्यादा। सीमा।

पारिकांक्षी (क्षिन्)—पुं० [सं० पारि-ब्रह्मज्ञान√काङ्क्ष (चाहना)+णिनि] तपस्वी।

पारिख†—पुं०=पारखी।
स्त्री० =परख।

पारिखेय—वि० [सं० परिखा+ढक्—एय] १ परिखा या खाई से सबध रखनेवाला। २ परिखा या खाई से घिरा हुआ।

पारिगर्भिक—पुं० [सं० परिगर्भ+ठक्—इक] बच्चों को होनेवाला एक रोग।

पारिग्रामिक—वि० [सं० परिग्राम+ठञ्—इक] किसी गाँव के चारो ओर का।

पारिजात—पुं० [सं० प० त०] १ स्वर्ग के पाँच वृक्षों में से एक वृक्ष, जो समुद्र-मथन के समय निकला था, तथा जिसके सबध मे कहा गया है कि इसे इंद्र नदनवन मे ले गये थे। २ परजाता या हरसिंगार नामक पेड़। ३ कचनार। ४ फरहद। ५ सुगध।

पारिणामिक—वि० [सं० परिणाम+ठञ्—इक] १. परिणाम-सबधी। २. जिसका कोई परिणाम या रूपांतरण हो सके। जो विकसित हो सके। ३ जो पच सके या पचाया जा सके।

पारिणाय्य—वि० [सं० परिणय+ष्यञ्] परिणय-सबधी।
पुं० १. वह धन जो कन्या को विवाह के अवसर पर दिया जाता है। दहेज। २. परिणय।

पारिणाह्य—पुं० [सं० परिणाह+ष्यञ्] घर-गृहस्थी के उपयोग मे आने-वाली वस्तुएँ या सामग्री।

पारित—वि० [सं०√पार्+णिच्+क्त] १. जिसका पारण हुआ हो। २ जो परीक्षा आदि मे उत्तीर्ण हो चुका हो। ३ (प्रस्ताव या विधेयक) जो विधिपूर्वक किसी सस्था के द्वारा स्वीकृत किया जा चुका हो। (पास्ड)

पारितोषिक—पुं० [सं० परितोष+ठक्—इक] १. वह धन जो किसी को देकर परितुष्ट किया जाता है। २. वह धन जो प्रतियोगिता मे विजयी या श्रेष्ठ सिद्ध होने पर अथवा कोई असाधारण योग्यता दिखलाने पर उत्साह बढ़ाने के लिए दिया जाता है। (प्राइज)

पारिद†—पुं०=पारद।

पारिध्वजिक—पुं० [सं० परिध्वज, प्रा० स०,+ठञ्—इक] वह जो हाथ में झडा लेकर चलता हो।

पारिपाट्य—पुं० [सं० परिपाटी+ष्यञ्]=परिपाटी।

पारिपात्र—पुं० [सं०] सात मुख्य पर्वत-मालाओ मे से एक। पारियात्र।

पारिपात्रिक—वि० [सं० पारिपात्र+ठक्—इक] १ पारिपात्र-सबधी। २. पारिपात्र पर बसने, रहने या होनेवाला।

पारिपार्श्व—पुं० [सं० परिपार्श्व+अण्] वह जो साथ-साथ चलता हो। अनुचर। सेवक।

पारिपार्श्विक—पुं० [सं० परिपार्श्व+ठक्—इक] [स्त्री० पारिपार्श्विका] १. सेवक। २. नाटक मे, स्थापक का सहायक।

पारिप्लव—वि० [सं० परि√प्लु (गति)+अच्+अण्] १. अस्थिर रहने, हिलने-डुलने या लहरानेवाला। २ तैरनेवाला। ३. विकल। ४ क्षुब्ध।
पुं० १. अस्थिरता। २. नाव। ३ विकलता।

पारिप्लाव्य—पुं० [सं० पारिप्लव+ष्यञ्] १ अस्थिरता। चचलता। २ कपन। ३. आकुलता। ४ हंस।

पारिभाव्य—पुं० [सं० परिभू+ष्यञ्] जमानत करने या जामिन होने का भाव।

पारिभाव्य-धन—पुं० [सं० ष० त०] वह धन जो किसी की कोई चीज व्यवहृत करने के बदले मे उसके यहाँ अग्रिम जमा किया जाता है और जो उसकी चीज लौटाने पर वापस मिल जाता है।

पारिभाषिक—वि० [सं० परिभाषा+ठञ्—इक] १. परिभाषा-संबंधी। २. (शब्द) जो किसी शास्त्र या विषय मे अपना साधारण से भिन्न कोई विशिष्ट अर्थ रखता हो। (टेकनिकल)

पारिभाषिकी—स्त्री० [सं० पारिभाषिक+ङीष्] पारिभाषिक शब्दों की माला या सूची। (टरमिनॉलॉजी)

पारिमाण्य—पुं० [सं० परिमाण+ष्यञ्] घेरा। मडल।

पारिमिता—स्त्री० [परिमित+अण्+टाप्] =सीमा।

पारिमित्य—पुं० [सं० परिमित+ष्यञ्] सीमा।

पारिमुखिक—वि० [सं० परिमुख+ठक्—इक] [भाव० पारिमुख्य] १. जो मुख के समक्ष या सामने हो। २. जो पास में हो या उपस्थित हो।

पारियात्र—पुं० [सं०] सात पर्वत-श्रेणियों मे से एक, जो किसी समय आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा के रूप मे मानी जाती थी। पारिपात्र।

पारियात्रिक—वि० [सं० परियात्रा प्रा० स०, +अण्+ठक्—इक]= पारिपात्रिक (परिपात्र-सबधी)।

पारियानिक—पुं० [सं० परियान प्रा० स०,+ठक्—इक] ऐसा यान जिस पर यात्रा की जाती हो।

पारिरक्षक—पुं० [सं० परि√रक्ष्+ण्वुल्—अक+अण्] सन्यासी।

पारिव्राज्य—पुं० [सं० परिव्राज्+ष्यञ्] सन्यास।

पारिश्रमिक—पुं० [सं० परिश्रम+ठक्—इक] किये हुए परिश्रम के बदले मे मिलनेवाला धन। कोई कार्य करने की मजदूरी। (रिम्यूनरेशन)

पारिख*—स्त्री०=परख।

पारिषद—पुं० [सं० परिषद्+अण्] परिषद् मे बैठनेवाला व्यक्ति। परिषद् का सदस्य। (काउंसिलर)

पारिषद्य—पुं० [सं० परिषद्+ण्य] अभिनय आदि का दर्शक। सामाजिक।

पारिस्थितिक—वि० [सं० परिस्थिति+ठक्—इक] १ परिस्थिति सबधी। २. जो परिस्थितियों का ध्यान रखकर या उनके विचार से किया गया हो। (सर्कस्टैन्शल)

पारिहारिकी—स्त्री० [स० परिहार+ठक्—इक+ङीष्] एक तरह की पहेली।

पारिहास्य—पुं० [स० परिहास+ष्यञ्]=परिहास।

पारी—स्त्री० [सं०] १ वह रस्सी जिससे हाथी के पैर बाँधे जाते हैं। २. जल-पात्र। ३. केसर।

स्त्री० [हिं० बार, बारी] १. कोई कार्य करने का क्रमानुसार आने या मिलनेवाला अवसर। बारी। २. गेंद-बल्ले के खेल मे, प्रत्येक दल को बल्लेबाजी करने का मिलनेवाला अवसर। पाली।

पारीक्षणिक—पु० [स० परीक्षण+ठक्—इक] वह कर्मचारी जो इस बात की परीक्षा या जाँच के लिए रखा गया हो कि यह अपने काम या पद के लिए उपयुक्त है या नही। (प्रोबेशनर)

वि० परीक्षण सबधी। परीक्षण का।

पारीक्षित—पु० [स० परीक्षित्+अण्] परीक्षित् के पुत्र, जनमेजय।

पारीछत—भू० कृ०=परीक्षित।

पारीण—वि० [स० पार+ख—ईन] १ उस पार पहुँचा हुआ। २ पारगत।

पारीय—वि० [स० पार+छ—ईय] समस्त पदो के अत मे, किसी विषय मे दक्ष।

पारुष्ण—पु० [स० परुष्ण+अण्] एक तरह का पक्षी।

पारुष्य—पु० [स० परुष+ष्यञ्] परुष होने की अवस्था, गुण या भाव। परुषता।

पारेरक—पु० [सं० पार√ईर् (गति)+ण्वुल्—अक] तलवार।

पारेवा—पु० [स० पारावत] कबूतर। परेवा।

पारेषक—वि० [स० पार√इष् (गति)+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रेषण करने या भेजनेवाला।

पु० विद्युत् से समाचार भेजने या बात करने के यत्रों का वह अग जिससे समाचार या सदेश भेजे जाते हैं। 'प्रतिग्राहक' का विपर्याय। (ट्रासमीटर)

पारोखना*—अ० [स० परोक्ष] १ परोक्ष या आड में होना। २ अतर्धान या अदृश्य होना।

पारोक्ष—वि० [स० परोक्ष+अण्] [भाव० पारोक्ष्य] १ रहस्यमय। २ गुप्त। ३ अस्पष्ट।

पार्क—पु० [अ०] शहरो मे, ऐसा उद्यान जिसमे घास उगी हुई हो तथा जहाँ छोटे-मोटे फूल-पौधे भी हो।

पार्जन्य—वि० [स० पर्जन्य+अण्] मेघ या वर्षा-सबधी।

पार्ट—पु० [अ०] १ अश। भाग। हिस्सा। २ किसी अभिनय, विषय आदि मे प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया जानेवाला अपने कर्तव्य का निर्वाह।

पार्टी—स्त्री० [अ०] १ दल। २. वह समारोह जिसमे आमंत्रित लोगों को भोजन, जलपान आदि कराया जाता है।

पार्ण—वि० [स० पर्ण+अण्] १ पर्ण-सबधी। पत्तो का। २ पत्तो के द्वारा प्राप्त होनेवाला। जैसे—पार्णकर।

पार्थ—पु० [स० पृथा+अण्] १. पृथा के पुत्र युधिष्ठिर, अर्जुन या भीम (विशेषत अर्जुन)। २ अर्जुन नाम का पेड़। ३ राजा।

पार्थक्य—पु० [स० पृथक्+ष्यञ्] १ पृथक् होने की अवस्था या भाव। २ वह गुण जिससे चीजो का पृथक्-पृथक् होना सूचित होता हो। ३ अतर। ४ जुदाई।

पार्थ-सारथि—पु० [ष० त०] १ कृष्ण। २ मीमांसा के एक प्राचीन आचार्य।

पार्थिव—वि० [स० पृथिवी+अञ्] १. पृथ्वी-सबधी। २ पृथ्वी से उत्पन्न। ३ पृथ्वी से उत्पन्न वस्तुओं का बना हुआ। ४ पृथ्वी पर शासन करनेवाला। ५ राजकीय।

पु० १ मिट्टी का बरतन। २ काया। देह। शरीर। ३ राजा। ४ पृथ्वी पर या पृथ्वी से उत्पन्न होनेवाला पदार्थ।

पार्थिव-आय—स्त्री० [ष० त०] मालगुजारी। लगान।

पार्थिव-नन्दन—पु० [ष० त०] [स्त्री० पार्थिव-नदिनी] राज-कुमारी।

पार्थिव-पूजन—पु० [ष० त०] कच्ची मिट्टी का शिव-लिग बनाकर उसका किया जानेवाला पूजन।

पार्थिव-लिंग—पु० [ष० त०] १ राजचिह्न। [कर्म० स०] २ कच्ची मिट्टी का बनाया हुआ शिव-लिग जिसके पूजन का कुछ विशिष्ट विधान है।

पार्थिवी—स्त्री० [स० पार्थिव+ङीप्] १. सीता। २ लक्ष्मी।

पार्थी—पु० [स० पार्थिव=पृथ्वी-सबधी] मिट्टी का बनाया हुआ शिवलिंग।

पार्पर—पु० [स० पपरी+अण्] १ मुट्ठी भर चावल। २ क्षय। (रोग)। ३ भस्म। राख। ४ यम।

पार्यंतिक—वि० [स० पर्यंत+ठक्—इक] पर्यंत का, अर्थात् अतिम।

पार्य—वि० [स० पार+ष्यञ्] जो पार अर्थात् दूसरे किनारे पर स्थित हो। पु० अत।

पार्याप्तिक—वि० [स० पर्याप्त+ठक—इक] १ पर्याप्त। यथेष्ट। २ सपूर्ण।

पार्लमेंट—स्त्री० [अ०] ससद्। (दे०)

पार्वण—वि० [स० पर्वन्+अण्] पर्व या अमावस्या के दिन किया जाने या होनेवाला।

पु० उक्त अवसर पर किया जानेवाला श्राद्ध।

पार्वतिक—पु० [स० पर्वत+ठक्—इक] पर्वतमाला। पर्वत-श्रेणी।

पार्वती—स्त्री० [स० पर्वत+अण्+ङीष्] पुराणानुसार हिमालय पर्वत की पुत्री, जिसका विवाह शिवजी से हुआ था। गिरिजा। भवानी।

पार्वती-कुमार—पु० [ष० त०] १ कार्त्तिकेय। २ गणेश।

पार्वती-नन्दन—पु० [ष० त०]=पार्वती-कुमार।

पार्वती-नेत्र—पु० [ष० त०]=पार्वती-लोचन।

पार्वती-लोचन—पु० [ष० त०] सगीत मे एक प्रकार का ताल।

पार्श्व—पु० [स०√स्पृश् (छूना)+श्वण्, पृ—आदेश] १ कधों और काँखों के नीचे के उन दोनो भागो मे से प्रत्येक जिनमे पसलियाँ होती है। छाती के दाहिने और बाएँ भागों मे से प्रत्येक भाग। बगल। २ पसली की हड्डियो का समुदाय। पजर। ३ किसी पदार्थ, प्राणी की लबाई वाले विस्तार मे इधर अथवा उधर पड़नेवाला अग या अश। बगलवाला छोर या सिरा। ४ किसी क्षेत्र या विस्तार का वह अग या अश जो किसी एक ओर या दिशा की सीमा पर पड़ता हो और कुछ दूर तक सीधा चला गया हो। जैसे—इस चौकोर क्षेत्र के चारो पार्श्व बराबर है। ५ किसी चीज के अगल-बगल या दाहिने-बाएँ अंशो के पास पड़नेवाला विस्तार। जैसे—गढ़ के दाहिने पार्श्व मे बन था।

६. लिखते समय कागज की दाहिनी (अथवा बाईं) ओर छोड़ा जानेवाला स्थान। हाशिया। ८ कपट या छल से भरा हुआ उपाय या साधन। ७ दे० 'पार्श्वनाथ'।

पार्श्वक—पु० [सं०] वह चित्र जिसमे किसी आकृति का एक ही पार्श्व दिखलाया गया हो।

पार्श्वग—वि० [सं० पार्श्व√गम् (जाना)+ड] साथ मे चलने या रहनेवाला।

पु० नौकर। सेवक।

पार्श्व-गत—वि० [सं० द्वि० त०] १ पार्श्व या बगल मे आया या ठहरा हुआ। २ (चित्र) जिसमे किसी आकृति का एक ही पार्श्व दिखाया गया हो, दूसरा पार्श्व सामने न हो। (प्रोफाइल) जैसे—दाहिनी ओर जाते हुए व्यक्ति के चित्र में उसकी पार्श्व-गत आकृति ही दिखाई देती है।

पु० वह जिसे अपने यहाँ रखकर आश्रय दिया गया हो या जिसकी रक्षा की गई हो।

पार्श्वगायन—पु० [सं०] आज-कल वह गायन जो नेपथ्य से किसी पात्र या पात्री के गाने के बदले मे होता है।

विशेष—जो अभिनेता या अभिनेत्री गान-विद्या मे पटु नही होती, उनके बदले मे नेपथ्य से कोई दूसरा अच्छा गायक या गायिका गाती है। यही गाना पार्श्वगायन कहलाता है।

पार्श्वचर—वि० [सं० पार्श्व√चर् (गति)+ट] पास मे रहकर साथ चलनवाला।

पार्श्वचित्र—पु० [सं०] पार्श्वक। (दे०)

पार्श्व-टिप्पणी—स्त्री० [मध्य० स०] पार्श्व अर्थात् हाशिये मे लिखी गई टिप्पणी। (मार्जिनल नोट)

पार्श्वद—पु० [सं० पार्श्व√दा (देना)+क] नौकर। सेवक।

पार्श्वनाथ—पु० [सं०] जैनो के तेइसवें तीर्थंकर।

पार्श्व-परिवर्त्तन—पु० [ष० त०] लेटे या सोये रहने की दशा मे करवट बदलना।

पार्श्ववर्ती—वि० [सं० पार्श्व√वृत (रहना)+णिनि] [स्त्री० पार्श्ववर्तिनी] १. किसी के पास या साथ रहनेवाला। जैसे—राजा के पार्श्ववर्ती। २ किसी के पार्श्व मे, आस-पास या इधर-उधर रहने या होनेवाला। जैसे—नगर का पार्श्ववर्ती वन।

पु० १. सहचर। साथी। २ नौकर। सेवक।

पार्श्व-शीर्षक—पु० [मध्य० स०] पार्श्व अर्थात् हाशियेवाले भाग में लगाया या लिखा हुआ शीर्षक। (मार्जिनल हेडिंग)

पार्श्व-शूल—पु० [मध्य० स०] बगल या पसलियो में होनेवाला शूल या जोर का दर्द।

पार्श्व-संगीत—पु० [मध्य० स०] १. आधुनिक अभिनयों, चल-चित्रों आदि में वह संगीत जो अभिनय होने के समय परोक्ष में होता रहता है। २ आधुनिक चल-चित्रों में किसी पात्र का ऐसा गाना जो वास्तव में वह स्वयं नहीं गाता, बल्कि उसका गानेवाला परोक्ष या परदे की आड में रहकर उसके बदले मे गाता है। (प्लेबैक)

पार्श्वस्थ—वि० [सं० पार्श्व√स्था (ठहरना)+क] जो पास या बगल में स्थित हो।

पार्श्वानुचर—पु० [पार्श्व-अनुचर, मध्य० स०] सेवक।

पार्श्वायात—वि० [पार्श्व-आयात, स० त०] जो पास आया हो,

पार्श्वासन, पार्श्वासीन—वि० [स० स० त०] पार्श्व अर्थात् बगल मे बैठा हुआ।

पार्श्विक—वि० [स० पार्श्व+ठक्—इक] १. पार्श्व-सबधी। २ किसी एक पार्श्व या अग मे होनेवाला। ३ किसी एक पार्श्व या अग की ओर से आने या चलनेवाला। (लेटरल)

पार्षद्—स्त्री० [स०=परिषद्, पृषो० सिद्धि] परिषद्। सभा।

पार्ष्णि—स्त्री० [स०√पृष् (सीचना)+नि, नि० वृद्धि] १ पैर की एडी। २ सेना का पिछला भाग। ३. किसी चीज का पिछला भाग। ४. पैर से किया जानेवाला आघात। ठोकर। ५. जीतने या विजय प्राप्त करने की इच्छा। जिगीषा। ६ जाँच-पडताल। छान-बीन।

पार्ष्णि-क्षेम—पु० [स०] एक विश्वेदेव।

पार्ष्णि-ग्रहण—पु० [ष० त०] किसी पर, विशेषत शत्रु की सेना पर पीछे से किया जानेवाला आक्रमण या आघात।

पार्ष्णि-ग्राह—पु० [स० पार्ष्णि√ग्रह् (ग्रहण)+अण्] १ वह जो किसी के पीठ पर या पीछे रहकर उसकी सहायता करता हो। २ सेना के पिछले भाग का प्रधान अधिकारी या नायक।

पार्ष्णि-घात—पु० [तृ० त०] पैर से किया जानेवाला आघात। ठोकर।

पार्सल—पु०=पारसल।

पालक—पु० [स०√पाल् (रक्षण)+क्विप्=पाल् अक, तृ० त०] १. पालक नाम का साग। २ बाज पक्षी। ३ एक प्रकार का रत्न जो काले, लाल या हरे रग का होता है।

पालकी—स्त्री० [स० पालक+ङीष्] १ पालकी नाम का साग। २. कुदुरू नाम का गध द्रव्य।

पालक्य—पु० [स० पालक+ष्यञ्] पालक (साग)।

पालक्या—स्त्री० [स० पालक्य+टाप्] कुदुरू नामक पौधा और उसका फल।

पालगं—पु०=पलग।

पाल—वि० [स०√पाल्+णिच्+अच्] १ पालन करनेवाला। पालक। २ आज-कल कुछ सज्ञाओ के अत मे लगनेवाला एक शब्द जिसका अर्थ होता है—काम, प्रबध या व्यवस्था करने अथवा सब प्रकार से रक्षित रखनेवाला। जैसे—कोटपाल, राज्यपाल, लेखपाल आदि।

पु० १ पीकदान। उगालदान। २ चीते का पेड। चित्रक वृक्ष। ३ बगाल का एक प्रसिद्ध राजवश जिसने बग और मगध पर साढे तीन सौ वर्षों तक राज्य किया था।

पु०[हिं० पालना] १. फलो को गरमी पहुँचाकर पकाने के लिए पत्तों आदि से ढककर या और किसी युक्ति से रखने की विधि।

क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

२ ऐसा स्थान जहाँ फल आदि रखकर उक्त प्रकार से पकाये जाते हों।

पु०[सं० पट या पाट] १ वह लबा-चौडा कपडा जिसे नाव के मस्तूल से लगाकर इसलिए तानते हैं कि उसमें हवा भरे और उसके जोर से नाव बिना डाँड चलाये और जल्दी-जल्दी चले।

क्रि० प्र०—उतारना।—चढ़ाना।—तानना।

२ उक्त प्रकार का वह लंबा-चौड़ा और मोटा कपड़ा जो धूप, वर्षा आदि से बचने के लिए खुले स्थान के ऊपर टाँगा या फैलाया जाता है। ३. खेमा। तंबू। शामियाना। ४ गाड़ी, पालकी आदि को ऊपर से ढकने का कपड़ा। ओहार।

स्त्री०[सं० पालि]१ पानी को रोकनेवाला बाँध या किनारा। मेंड। २ नदी आदि का ऊँचा किनारा या टीला। ३ नदी आदि के घाट पर के नीचे का ऐसा खोखला स्थान, जो नीव के कंकड़-पत्थर आदि बह जाने के कारण बन जाता है।

पुं०[सं० पालि] कबूतरों का जोड़ा खाना। कपोत-मैथुन।

क्रि० प्र०—खाना।

पुं०[?] वह जमीन जो सरकार की निजी संपत्ति होती है।

पालउ†—पुं०=पल्लव।

पालक—वि०[सं०√पाल्+णिच्+ण्वुल्—अक][स्त्री० पालिका]पालन करनेवाला।

पुं०१ पालकर अपने पास रखा हुआ लड़का। २ प्रधान शासक या राजा। ३. घोड़े का साईस। ४ चीते का पेड़। चित्रक।

पुं०[सं० पाल्यक] एक प्रकार का प्रसिद्ध साग।

†पुं०=पलंग। उदा०—खंड खंड साजी पालक पीढ़ी।—जायसी।

पालकजूही—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा जो दवा के काम मे आता है।

पालकरी—स्त्री०[हिं० पलंग] लकड़ी का वह छोटा टुकड़ा जो पलंग, चारपाई, चौकी आदि के पायों को ऊँचा करने के लिए उसके नीचे रखा जाता है।

पालकाप्य—पुं०[सं०]१. एक प्राचीन मुनि जो अश्व, गज आदि से संबंध रखनेवाली विद्या के प्रथम आचार्य माने गये हैं। २. वह विद्या या शास्त्र जिसमे हाथी घोड़े आदि के लक्षणों, गुणों आदि का निरूपण हो। शालिहोत्र।

पालकी—स्त्री० [सं० पल्यंक; प्रा० पल्लंक] एक प्रसिद्ध सवारी जिसमे सवार बैठता या लेटता है और जिसे कहार या मजदूर लोग कंधे पर उठा कर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं।

स्त्री०[सं० पालक] पालक का शाक।

पालकी गाड़ी—स्त्री० [हिं० पालकी+गाड़ी] एक तरह की घोड़ा-गाड़ी जिसका ऊपरी ढाँचा पालकी के आकार का तथा छायादार होता है।

पालगाड़ी—स्त्री०=पालकी गाड़ी।

पालघ्न—पुं०[सं० पाल√हन् (हिंसा)+क] कुकरमुत्ता।

पालट—पुं०[सं० पालन]१ पाला हुआ लड़का। २ गोद लिया हुआ लड़का। दत्तकपुत्र।

पुं०[सं० पर्यस्त, प्रा० पलट्ट]१ पलटने की क्रिया या भाव। पलट। २ परिवर्तन। ३ पटेबाजी मे एक प्रकार का प्रहार या वार।

पालटना*—स०=१ पलटना। २ =पलटाना।

पालड़ा—पुं०=पलड़ा।

पालतू—वि०[सं० पालना] (पशु-पक्षियों के संबंध मे) जो पकड़कर घर में रखा तथा पाला गया हो (जंगली से भिन्न)। जैसे—पालतू तोता पालतू बंदर।

पालथी—स्त्री० [सं० पर्य्यस्त=फैला हुआ] दोनों टाँगो को मोड़कर बैठने की वह मुद्रा, जिसमे पैर दूसरी टाँग की रान के नीचे पड़ते हैं। पद्मासन। कमलासन। पलथी।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

पालन—पुं० [सं०√पाल्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० पालनीय, पाल्य, भू० कृ० पालित]१ अपनी देख-रेख मे और अपने पास रखकर किसी का भरण-पोषण करने की क्रिया या भाव। (मेन्टेनेन्स)२ आज्ञा, आदेश, कर्तव्य आदि कार्यों का निर्वाह। (डिसचार्ज, परफॉरमेन्स) ३ अनुकूल आचरण द्वारा किसी निश्चय वचन आदि का होनेवाला निर्वाह। (एबाइड) ४ जीव-जंतुओ के संबंध मे उन्हे अपने पास रखकर उनका वंश, सामर्थ्य या उनसे होनेवाली उपज आदि बढ़ाने का काम। जैसे—मधुमक्षिका पालन, पशु-पालन आदि। ५ तत्काल ब्याई हुई गाय का दूध। पेवस।

पालना—स०[सं० पालन]१ व्यक्ति के संबंध मे, उसे भोजन, वस्त्र आदि देकर उसका भरण-पोषण करना। पालन करना। २ आज्ञा, आदेश, प्रतिज्ञा, वचन आदि के अनुसार आचरण या व्यवहार करना। पालन करना। ३ पशु-पक्षियों को मनोविनोद के लिए अपने पास रखकर खिलाना-पिलाना। पोसना। ४ (दुर्व्यसन या रोग) जान-बूझकर अपने साथ लगा रखना और उसे दूर करने का प्रयत्न न करना। ५ कष्ट या विपत्ति से बचाकर सुरक्षित रखना। रक्षा करना। उदा०—आनन सुखाने कहैं, क्यौहूँ कोउ पालि है।—तुलसी।

पुं०[सं० पल्यंक] एक तरह का छोटा झूला, जिसमे छोटे बच्चों को लेटाकर झुलाया या सुलाया जाता है।

पालनीय—वि०[सं० √ पाल्+णिच्+अनीयर] जिसका पालन किया जाना चाहिए अथवा किया जाने को हो।

पालयिता (तृ)—पुं०[सं०√पाल्+णिच्+तृच्] वह जो दूसरों का पालन अर्थात् भरण-पोषण करता हो। पालन-पोषण करनेवाला।

पाल-वंश—पुं० [सं०] दे० 'पाल' के अंतर्गत।

पालव—पुं०[सं० पल्लव] १ पल्लव। पत्ता। २ कोमल, छोटा और नया पौधा।

पाला—पुं०[सं० प्रालेय]१ बादलों मे रहनेवाले पानी या भाप के वे जमे हुए सफेद कण, जो अधिक सरदी पड़ने पर आकाश से पेड़-पौधो आदि पर पतली तह की तरह फैल जाते है और इस प्रकार उन्हें हानि पहुँचाते है।

क्रि० प्र०—गिरना।—पड़ना।

मुहा०—(किसी चीज पर) पाला पड़ना=(क) बुरी तरह से नष्ट होना। (ख) इतना दब जाना कि फिर जल्दी उठ न सके। जैसे—आशाओ पर पाला पड़ना। (फसल आदि को) पाला मार जाना=आकाश से पाला गिरने के कारण फसल की पैदावार खराब या नष्ट हो जाना।

२. बहुत अधिक ठंढ या सरदी जो उक्त प्रकार के पात के कारण होती है। जैसे—इस साल तो यहाँ बहुत अधिक पाला है।

पुं०[सं० पट्ट, हिं० पाड़ा]१ प्रधान स्थान। पीठ। २. वह धुस या भीटा अथवा बनाई हुई मेंड जिससे किसी क्षेत्र की सीमा सूचित होती हो। ३ कबड्डी आदि के खेलो मे दोनो पक्षो के लिए अलग-अलग

निर्धारित क्षेत्र मे जिसकी सीमा प्रायः जमीन पर गहरी लकीर खींचकर स्थिर की जाती है।

पु०[हिं०]१. पल्ला। २ लाक्षणिक रूप में, कोई ऐसा काम या बात जिसमें किसी प्रतिपक्षी को दबाना अथवा उसके साथ समानता के भाव से रहकर निर्वाह करना पड़ता है।

मुहा०—(किसी से) पाला पड़ना=ऐसा अवसर या स्थिति आना जिसमें किसी विकट व्यक्ति का सामना करना पड़े, या उससे संपर्क स्थापित हो। जैसे—ईश्वर न करे, ऐसे दुष्ट से किसी का पाला पड़े। **(किसी के) पाले पड़ना**=ऐसी स्थिति मे आना या होना कि जिससे काम पड़े, वह बहुत ही भीषण या विकट व्यक्ति सिद्ध हो। जैसे—तुम भी याद करोगे कि किसी के पाले पड़े थे।

३ वह जगह जहाँ दस-बीस आदमी मिलकर बैठा करते हों। ४ अखाड़ा। ५ कच्ची मिट्टी का वह गोलाकार ऊँचा पात्र, जिसमे अनाज भरकर रखते हैं। कोठला।

पु०[सं० पल्लव, हिं० पाल्हो] जंगली बेर के वृक्ष की पत्तियाँ जो चारे के काम आती हैं।

†पु०=पाड़ा (टोला या महल्ला)।

पालागन—स्त्री० [हिं० पावँ+पर+लगना] आदर-पूर्वक किसी पूज्य व्यक्ति के पैर छूने की क्रिया या भाव। प्रणाम।

पालागल—पु०[सं०]१ प्राचीन भारत में, समाचार लाने और ले जाने-वाला व्यक्ति। संदेशवाहक। संवादवाहक। हरकारा। २. दूत।

पालागली—स्त्री० [सं० पालागल+ङीष्] प्राचीन भारत मे, राजा की चौथी और सबसे कम आदर पानेवाली रानी जो शूद्र जाति की होती थी।

पालाश—वि०[सं० पलाश+अण्] १. पलाश-संबंधी। २ पलाश का बना हुआ। ३. हरा।

पु० १ तेज पत्ता। २. हरा रंग।

पालाशखंड—पु०[ब०स०] मगध देश।

पालाशि—पुं०[सं० पलाश+इञ्] पलाश गोत्र के प्रवर्तक ऋषि।

पालिंद—पु०[सं० पलिंद+अण्]कुंदुरू नामक गंध-द्रव्य।

पालिंदी—स्त्री०[सं० पालिंद+ङीप्] १ श्यामा लता। २ त्रिवृत्ता।

पालि—स्त्री०[सं०√ पल् (रक्षा करना)+इण्]१ कान के नीचे लटकने-वाला कोमल मांस-खंड जिसमें छेद करके बालियाँ आदि पहनी जाती हैं। कान की लौ। २. किसी चीज का किनारा या कोना। ३. कतार। पंक्ति। श्रेणी। ४. सीमा। हद। ५ पुल। सेतु। ६ बाँध। मेंड़। ७. घेरा। परिधि। ८. अंक। क्रोड़। गोद। ९ अंडाकार तालाब या सरोवर। १०. वह भोजन जो परदेशी विद्यार्थी को गुरुकुल से मिलता था। ११. ऐसी स्त्री जिसकी ठोढ़ी पर बाल तथा मूँछें हों। १२. चिह्न। निशान। १३ जूँ नाम का कीड़ा। १४. एक तौल जो एक प्रस्थ के बराबर होती थी। १५ दे० 'पाली'।

पालिक—पुं०[सं० पल्यंक]१. पलंग। २. पालकी।

पालिका—स्त्री० [सं० पालक+टाप्, ह्रस्व]१. पालन करनेवाली। २ समस्तपदों के अंत मे, वह जो पालन-पोषण तथा सुरक्षा का पूरा प्रबंध करती हो। जैसे—नगर पालिका, महानगर पालिका।

पालित—वि०[सं०√पाल्+णिच्+क्त] [स्त्री० पालिता] जिसे पाला गया हो। पाला हुआ।

पु० सिहोर का पेड़।

पालित्य—पु०[सं० पलित+ष्यञ्] वृद्धावस्था मे बालों का कुछ पीलापन लिये सफेद होना।

पालिधी—स्त्री०[सं०] फरहद का पेड़।

पालिनी—वि० स्त्री० [सं०√ पाल्+णिनि+ङीप्] जो दूसरो को पालती हो। दूसरो का भरण-पोषण करनेवाली।

पालिश—स्त्री०[अं०]१ वह लेप या रोगन जो किसी चीज को चमकाने के लिए उस पर लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—करना।—चढ़ाना।

२ उक्त प्रकार के लेप से होनेवाली चमक। ओप।

पालिसी—स्त्री०[अं०]१ नयी रीति। २ बीमा-संबंधी वह प्रतिज्ञा-पत्र जो बीमा करनेवाली संस्था की ओर से अपना बीमा करानेवाले को मिलता है।

पाली (लिन्)—वि० [सं०√पाल्+णिनि] [स्त्री० पालिनी]१ पालन या पोषण करनेवाला। २ रक्षा करनेवाला। रक्षक।

पाली—स्त्री० [?] १ देग। बटलोई। २. बरतन का ढक्कन। ३ ऊपरी तल या पार्श्व। जैसे—कपोलपाली=गाल का ऊपरी तल। ४ प्राचीन भारत की एक प्रसिद्ध भाषा जो गौतम बुद्ध के समय सारे भारत के सिवा बाह्लीक, बरमा, श्याम, सिंहल आदि देशों मे बोली और समझी जाती थी।

विशेष—गौतम बुद्ध ने इसी भाषा मे धर्मोपदेश किया था, और बौद्ध धर्म के सभी प्रमुख तथा प्राचीन ग्रंथ इसी भाषा मे है। विद्वानो का मत है कि यह मुख्यतः और मूलतः भारत के मूल देश की भाषा थी जिसमे मागधी का भी कुछ अंश सम्मिलित था; इस भाषा का साहित्य बहुत विशाल है।

५ पंक्ति। श्रेणी। ६ तीतर, बटेर, बुलबुल आदि का वह वर्ग जो प्रायः प्रतियोगिता के रूप मे लड़ाया जाता है। ७. वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार के पक्षी लड़ाये जाते हैं। ८ आज-कल कारखानो आदि मे, श्रमिकों के उन अलग-अलग दलो के काम करने का समय जो पारी पारी से आता है। (शिफ्ट) ९. आज-कल गेंद-बल्ले, चौगान आदि खेलो मे खिलाड़ियो के प्रतियोगी दलो को खेलने के लिए होनेवाली पारी। (इनिंग)

†वि०=पैदल। उदा०—धणपाल्ही, पिव पाखरयो, विहूं भला भड़ जुध्ध।—ढोलामारू।

†पु०[?] चरवाहा। (राज०)

पालीवत—पु०[देश०] एक प्रकार का पेड़।

पालीवाल—पु०[?] गौड़ ब्राह्मणो के एक वर्ग की उपाधि।

पालीशोष—पु०[सं०] कान का एक रोग।

पालू—वि० [हिं० पालना] पाला हुआ। पालतू।

पाले—अव्य०[हिं० पाला] अधिकार या वश मे।

मुहा० दे० 'पाला' के अंतर्गत।

पाल्हो—पुं०[सं० पालि?] ५ रुपए भर का बाट या तौल। (सुनार)

†पु० =पल्लव।

पाल्य—वि०[सं०√ पाल्+ण्यत्] जिसका पालन होने को हो या किया जाने को हो।

पाल्लवा—स्त्री०[सं० पल्लव+अण्+टाप्] प्राचीन भारत में, एक तरह का खेल जो पेड़ों की छोटी-छोटी टहनियों से खेला जाता था।

पाल्लविक—वि०[सं० पल्लव+ठक्—इक] फैलनेवाला। प्रसरणशील।

पाल्वल—वि०[सं० पल्वल+अण्]१ पल्वल (तालाब) संबंधी। २ पल्वल (तालाब) में होनेवाला।

पुं० छोटे ताल या तालाब का पानी।

पावँ—पुं०=पाँव।

पाव—पुं०[सं० पाद=चतुर्थांश]१ किसी पदार्थ का चौथाई अंश या भाग। २ वह जो तौल या मान में एक सेर का चौथाई भाग अर्थात् चार छटाँक हो। ३ उक्त तौल का बटखरा। ४ नौ गिरह का माप जो एक गज का चतुर्थांश होता है।

पद—पाव भर=(क) तौल में चार छटाँक। (ख) माप में नौ गिरह।

*स्त्री० दे० 'पो' (पासे का दाँव)।

पावक—वि०[सं०√ पू (पवित्र करना)+ण्वुल्—अक] पवित्र करनेवाला।

पुं०१ अग्नि। आग। २ अग्निमथ या अगियारी नामक वृक्ष। ३ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ४ भिलावाँ। ५. बाय-बिडंग। ६ कुसुम। बरें। ७ वरुण वृक्ष। ८. सूर्य। ९ सदाचार।

पावक-मणि—पुं० [सं० कर्म० स०] सूर्यकान्त मणि। आतशी शीशा।

पावका—स्त्री०[सं० पाव√कै+क+टाप्] सरस्वती। (वेद)

पावकात्मज—पुं० [सं० पावक-आत्मज, ष०त०] पावकि।

पावकि—पुं०[सं० पावक+इञ्]१ पावक का पुत्र। कार्तिकेय। २ इक्ष्वाकुवंशीय दुर्योधन की कन्या सुदर्शना का पुत्र सुदर्शन।

पावकी—स्त्री० [सं० पावक+ङीष्]१ अग्नि की स्त्री। २ सरस्वती। (वेद)

पाव-कुलक—पुं०=पादाकुलक।

पावचार*—वि०[सं० पावन-आचार] पवित्र और श्रेष्ठ आचरण करनेवाला। उदा०—तब देवि दुहूँ तिह पावचार।—गुरुगोविंदसिंह।

पुं० पवित्र और श्रेष्ठ आचरण।

पावड़ा†—पुं०=पाँवड़ा।

पावड़ी—स्त्री० पाँवरी (खड़ाऊँ या जूता)।

पावती—स्त्री०[हिं० पावना]१ किसी चीज के पहुँचने की लिखित सूचना या प्राप्ति की स्वीकृति। जैसे—पत्र की पावती भेजना। २ किसी से रुपए लेने पर उसको दी जानेवाली पक्की रसीद।

पावतीपत्र—पुं०=पावती।

पावदान—पुं०[फा० पाएदान या हिं० पाँव+फा० दान (प्रत्य०)]१ ऊँचे यानों या सवारियों में वह अंग या स्थान जिस पर पाँव रखकर उन पर सवार हुआ जाता है। जैसे—घोड़ागाड़ी या रेलगाड़ी का पावदान। २ मेज के नीचे रखी जानेवाली वह चौकी या लकड़ी की कोई रचना जिस पर कुरसी पर बैठनेवाले पैर रखते हैं। ३ जटा, मूँज, सन आदि अथवा धातु के तारों का बना हुआ वह चौकोर टुकड़ा जो कमरों के दरवाजे के पास पैर पोंछने के लिए रखा जाता है।

पावन—वि० [सं०√पू+णिच्+ल्यु—अन] [स्त्री० पावनी, भाव० पावनता]१. धार्मिक दृष्टि से, (वह चीज) जो पवित्र समझी जाती हो और दूसरों को भी पवित्र करती या बनाती हो। जैसे—पावन-जल। २ समस्त पदों के अंत में, पवित्र करने या बनानेवाला। जैसे—पतित-पावन। उदा०—सुनु खगपति यह कथा-पावनी।—तुलसी।

पुं० १ पावकाग्नि। २ सिद्ध पुरुष। ३ प्रायश्चित्त। ४. जल। पानी। ५ गोबर। ६ रुद्राक्ष। ७ चंदन। ८ शिलारस। ९ गोबर। १० कुट नामक ओषधि। ११ पीली भँगरैया। १२ चित्रक। चीता। १३ विष्णु। १४ व्यासदेव का एक नाम।

पावनता—स्त्री० [सं० पावन+तल्—टाप्] पावन होने की अवस्था या भाव। पवित्रता।

पावनताई†—स्त्री० =पावनता।

पावनत्व—पुं०[सं० पावन+त्व]=पावनता।

पावन-ध्वनि—पुं०[सं० ब०स०]१ शंख-नाद। २ शंख।

पावना—पुं०[सं० प्रापण, प्रा० पावण] वह जो अधिकार, न्याय आदि की दृष्टि से किसी से प्राप्त किया जाने को हो या किया जा सकता हो। प्राप्य धन या वस्तु। जैसे—बाजार में उनका हजारों रुपयों का पावना पड़ा (या बाकी) है। लहना। (ड्यूज)

स० १ प्राप्त करना। पाना। २ प्रसाद, भोजन आदि के रूप में मिली हुई वस्तु खाना या पीना। जैसे—हम यहीं प्रसाद पावेंगे। ३ किसी चीज या बात का ज्ञान, परिचय आदि प्राप्त करना। ४. दे० 'पाना'।

पावनि—पुं०[सं० पवन+इञ्] पवन के पुत्र हनुमान आदि।

पावनी—वि० स्त्री०[सं० पावन+ङीप्] पावन का स्त्रीलिंग रूप।

स्त्री०१ हड़। हर्रे। २. तुलसी। ३ गाय। गौ। ४ गंगा नदी। ५ पुराणानुसार शाक द्वीप की एक नदी।

पावनेदार—पुं०[हिं० पावना+फा० दार] वह जिसका किसी की ओर पावना निकलता हो। दूसरे से प्राप्य धन लेने का अधिकारी। लहनदार।

पावन्न†—वि०=पावन।

पावमान—वि०[सं० पवमान+अण्] (सूक्त) जिसमें पवमान अग्नि की स्तुति की गयी हो। (वेद)

पावमानी—स्त्री०[सं० पावमान+ङीप्] वेद की एक ऋचा।

पाव-मुहर—स्त्री०[हिं० पाव=चौथाई+मुहर] शाहजहाँ के समय का सोने का एक सिक्का जिसका मूल्य एक अशरफी या एक मुहर का चौथाई होता था।

पावर—पुं० [सं०] १ वह पासा जिस पर दो बिंदियाँ बनी हों। २ पासा फेंकने का एक प्रकार का ढंग या हाथ।

पुं०[अं०] १. वह शक्ति जिससे मशीनें चलाई जाती हैं। यंत्र चलानेवाली शक्ति (जैसे—विद्युत्)। २ अधिकार। शक्ति। ३. सैन्यबल। ४ शासनिक शक्ति।

*पुं०=पामर।

पाव-रोटी—स्त्री०[पुर्त० पाव=रोटी+हिं० रोटी] मैदे, सूजी आदि का खमीर उठाकर बनाई जानेवाली एक तरह की मोटी और फूली हुई रोटी। डबलरोटी।

पावल†—स्त्री०=पायल।

पावली—स्त्री० [हिं० पाव=चौथाई+ला (प्रत्य०)] एक रुपए के चौथाई भाग का सिक्का। चवन्नी।

पावस—स्त्री०[स० प्रावृष, प्रा० पाउस] १ वर्षाकाल। बरसात। २ वर्षा। वृष्टि। ३. वर्षाऋतु मे समुद्र की ओर से आनेवाली वे हवाएँ जो घटाओ के रूप मे होती हैं और जल बरसाती हैं। (मानसून)

पावा†—पु० =पाया।

पावी—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मैना (पक्षी)।

पाश—पु०[स०√ पश् (बाँधना)+घञ्]१ वह चीज जिससे किसी को फँसाया या बाँधा जाय। जैसे—जजीर, रस्सी आदि। २. रस्सी से बनाया जानेवाला वह घेरा जिसमे गागर आदि को फँसाकर कूएँ में लटकाया जाता है। ३ पशु-पक्षियो को फँसाकर पकडने का जाल। ४ बधन। ५ समस्त पदो के अत मे (क) सुन्दरता और सजावट के लिए अच्छी तरह बाँधकर तैयार किया हुआ रूप। जैसे—कर्ण-पाश। (ख) अधिकता और बाहुल्य। जैसे—केश-पाश। ५. वरुण देवता का अस्त्र जो फदे के रूप में माना गया है। ६ दे० 'फाँस'।

प्रत्य०[फा०] छिडकनेवाला। जैसे—गुलाब पाश।

पु० किसी चीज का अश या खड। टुकडा।

पद—पाश-पाश। (देखें)

पाश-कठ—वि०[स० ब०स०] जिसके गले मे फाँस या बधन पडा हो।

पाशक—पु०[स० √पश+णिच्+ण्वुल्—अक] १ जाल। फदा। २ चौपड खेलने का पासा।

पाश-क्रीड़ा—स्त्री०[तृ० त०] जूआ। द्यूत।

पाशधर—पु०[ष०त०] वरुण देवता (जिनका अस्त्र पाश है)।

पाशन—पु०[स०√पश+णिच्+ल्युट्—अन]१. रस्सी। २ बधन।

पाश-पाश—अव्य०[फा०] टुकडे टुकडे। चूर-चूर।

पाश-पीठ—पु०[ष०त०] बिसात (चौसर खेलने की)।

पाश-बध—पु०[स०त०] फदा।

पाश-बधक—पु०[स०] बहेलिया। चिडीमार।

पाश-बंधन—पु०[स०त०]१ जाल। २ फंदा।

पाश-बद्ध—भू०कृ०[स०त०] जाल या फदे में फँसा हुआ।

पाश-भृत्—पु०[स०पाश√भृ (धारण)+क्विप्, तुक्] वरुण (देवता)।

पाश-मुद्रा—स्त्री०[मध्य०स०] हाथ की तर्जनी और अगूठे के सिरो को सटाकर बनाई जानेवाली एक तरह की मुद्रा। (तत्र)

पाशव—वि० [स० पशु+अण्]१ पशु-सबधी। पशुओ का। २ पशुओ की तरह का। पशुओ का-सा। जैसे—पाशव आचरण।

पु० पशुओ का झुड।

पाशवता—स्त्री०=पशुता। उदा०—प्रेम शक्ति से चिर निरस्त्र हो जावेगी पाशवता।—पत।

पाशवान् (वत्)—वि०[स० पाश+मतुप्, वत्व] [स्त्री० पाशवती] जिसके पास पाश या फदा हो। पाशवाला। पशधारी।

पु० वरुण (देवता)।

पाशवासन—पु० स० पाशव-आसन कर्म०स०] एक प्रकार का आसन या बैठने की मुद्रा।

पाशविक—वि०[पशु+ठञ्—इक]१. पशुओं की तरह का ३. (आचरण)जो पशुओं के आचरण जैसा हो।

पाश-हस्त—पु० [ब० स०] १ वरुण। २ यम।

पाशात—पु० [स० =पार्श्व-अन्त, पृषो० सिद्धि] मिले हुए कपडे का पीठ की ओर पडनेवाला अश।

पाशा—पु० [तु०] तुर्किस्तान मे बडे बडे अधिकारियो और सरदारो को दी जानेवाली उपाधि।

पाशिक—पु० [स० पाश+ठक्—इक] चिडीमार। बहेलिया।

पाशित—भू० कृ०[स० पाश+णिच्+क्त] पाश मे या पाश से बँधा हुआ। पाशबद्ध।

पाशी (शिन्)—वि० [स० पाश+इनि] १ जो अपने पास पाश या फदा रखता हो। पाशवाला।

पु० १ वरुण देवता। २. यम। ३ बहेलिया। ४ अपराधियो के गले मे फंदा या फाँसी लगाकर उन्हे प्राण-दड देनेवाला व्यक्ति, जो पहले प्राय चाडाल हुआ करता था।

स्त्री० [फा०] १ जल या तरल पदार्थ छिडकने की क्रिया या भाव। जैसे—गुलाब-पाशी। २ खेत आदि को जल मे सीचने की क्रिया। जैसे—आब-पाशी।

पाशुपत—वि० [स० पशुपति+अण्] १ पशुपति-सबधी। पशुपति या शिव का।

पु० १ पशुपति या शिव के उपासक एक प्रकार के शैव। २ एक तत्र शास्त्र जो शिव का कहा हुआ माना जाता है। ३ अथर्ववेद का एक उपनिषद्। ४ अगस्त का फूल।

पाशुपत-दर्शन—पु० [कर्म० स०] एक प्राचीन दर्शन जिसमे पशुपति, पाश और पशु इन तीन सत्ताओ को मुख्य माना गया था और जिसमे पशु के पाश से मुक्त होने के उपाय बतलाये गये है।

पाशुपत-रस—पु० [कर्म० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध।

पाशुपतास्त्र—पु० [पाशुपत-अस्त्र, कर्म० स०] शिव का एक भीषण शूलास्त्र जिसे अर्जुन ने तपस्या करके प्राप्त किया था।

पाशुपाल्य—पु० [स० पशुपाल+ष्यञ्] पशुपालन।

पाशु-बधक—पु० [स० पशुबध+ठक्—क] यज्ञ मे वह स्थान जहाँ बलि पशु बाँधा जाता था।

पाश्चात्य—वि० [स० पश्चात्+त्यक्] १ पीछे का। पिछला। २ पीछे होनेवाला। ३ पश्चिम दिशा का। ४ पश्चिमी महादेश मे होने अथवा उससे सबध रखनेवाला। पौरस्त्य का विपर्याय। जैसे—पाश्चात्य दर्शन, पाश्चात्य साहित्य।

पाश्चात्यीकरण—पु० [स० पाश्चात्य+च्वि, ईत्व√कृ+ल्युट्—अन] किसी देश या जाति को पाश्चात्य सभ्यता के साँचे मे ढालना या पाश्चात्य ढग का बनाना। (वेस्टर्नाइजेशन)

पाश्या—स्त्री० [सं० पाश+यत्+टाप्] पाश। जाल।

पाषड—पु०[सं०√पा (रक्षा)+क्विप्=वेदधर्म,√षड् (खडन)+अच्] १. वे सब आचरण और कार्य जो वैदिक धर्म या रीति के हो। २. वैदिक रीतियो का खडन करनेवाले कार्य और विचार। ३ दूसरों को धोखा देने आदि के उद्देश्य से झूठ-मूठ किये जानेवाले धार्मिक कृत्य। ढोग।

पाषडी (डिन्)—वि० [सं० पा√षड्+णिच्+इनि] १ जो वेदो के सिद्धान्तों के विरुद्ध चलता हो और किसी दूसरे झूठे मत का अनुयायी

हो। २ जो दूसरो को धोखा देने के लिए अच्छा वेश बनाकर रहता हो।

पाषक—पुं० [स०√पष् (बाँधना)+ण्वुल्—अक] पैर मे पहनने का एक गहना।

पाषर†—स्त्री० =पाखर (हाथी की झूल)।

पाषाण—पु० [स०√पिष् (चूर्ण करना)+आनच्, पृषो० सिद्धि] १ पत्थर। प्रस्तर। शिला। २ नीलम, पन्ने आदि रत्नो का एक दोष। ३ गन्धक।

वि० [स्त्री० पाषाणी] १. निर्दय। २ कठोर। ३ नीरस।

पाषाण-गर्दभ—पु० [स०ष०त० ?] दाढ़ मे सूजन होने का एक रोग।

पाषाण-चतुर्दशी—स्त्री० [मध्य० स०] अगहन मास की शुक्ला चतुर्दशी। अगहन सुदी चौदस।

पाषाण-दारण—पु० [ष० त०] [वि० पाषाणदारक] पत्थर तोडने का काम।

पाषाण-भेद—पु०[ष०त०] एक प्रकार का पौधा जो अपनी पत्तियो की सुन्दरता के लिए बगीचो मे लगाया जाता है। पाखानभेद। पथरचूर।

पाषाण-भेदन—पु० [पाषाण√भिद् (तोडना)+ल्युट्—अन] =पाषाण भेद।

पाषाणभेदी (दिन्)—पु० [स० पाषाण√भिद्+णिनि] पाखान भेद। पथरचूर।

पाषाण-मणि—पु० [मयू० स०] सूर्यकात मणि।

पाषाण-रोग—पु० [ष० त०] अश्मरी या पथरी नाम का रोग।

पाषाण-हृदय—वि० [ब० स०] जिसका हृदय बहुत ही कठोर या अत्यन्त क्रूर हो।

पाषाणी—स्त्री० [स० पाषाण+ङीप्] बटखरा।

वि० स्त्री० निर्दय (स्त्री)।

पासंग—पु० [फा० पारसग] १ तराजू के दोना पलडो या पल्लो का वह सामान्य सूक्ष्म अन्तर जो उस दशा मे रहता है जब उन पर कोई चीज तौली नही जाती। पसगा।

विशेष—ऐसी स्थिति मे तराजू पर जो चीज तौली जाती है वह बटखरे या उचित मान से या तो कुछ कम होती है या अधिक, तौल मे ठीक और पूरी नही होती।

२ पत्थर, लोहे आदि के टुकडे के रूप मे वह थोडा-सा भार जो उक्त अवस्था मे किसी पल्ले या उसकी रस्सी मे इसलिए बाँधा जाता है कि दोनो पल्लो का अन्तर दूर हो जाय और चीज पूरी तौली जा सके।

विशेष—शब्द के मूल अर्थ के विचार से पासग का यही दूसरा अर्थ प्रधान है, परन्तु व्यवहारत इसका पहला अर्थ ही प्रधान हो गया है।

३ वह जो किसी की तुलना मे बहुत ही तुच्छ, सूक्ष्म या हीन हो। जैसे—तुम तो चालाकी मे उसके पासग भी नही हो।

पु० [?] एक प्रकार का जगली बकरा जो बिलोचिस्तान और सिन्ध मे पाया जाता है, जिसकी दुम पर बालो का गुच्छा होता है। भिन्न-भिन्न ऋतुओ मे इसके शरीर का रग कुछ बदलता रहता है। इसकी मादा 'बोज' कहलाती है।

पास—अव्य० [स० पार्श्व] १. जो अवकाश, काल आदि के विचार से अधिक दूरी पर न हो। समय, स्थान आदि के विचार से थोडे ही अन्तर पर। निकट। समीप। जैसे—(क) उनका मकान भी पास ही है। (ख) परीक्षा के दिन पास आ रहे हैं।

पद—पास-पास या पास ही पास=एक दूसरे के समीप। बहुत थोडे अन्तर पर। जैसे—दोनो पुस्तकें पास ही पास रखी हैं।

मुहा०—(किसी स्त्री के) पास आना, जाना या रहना=स्त्री के साथ मैथुन या सभोग करना। (किसी के) पास न फटकना =बिलकुल अलग या दूर रहना। (किसी के) पास बैठना=किसी की सगति मे रहना। जैसे—भले आदमियो के पास बैठने से प्रतिष्ठा होती है।

२ अधिकार मे। कब्जे मे। हाथ मे। जैसे—तुम्हारे पास कितने रुपए हैं? ३ किसी के निकट जाकर या किसी को सम्बोधित करके। उदा०—माँगत है प्रभु पास दास यह बार बार कर जोरी।—सूर।

पु० १. ओर। तरफ। दिशा। उदा०—अति उतुग जल-निधि चहुँपासा।—तुलसी। २ निकटता। सामीप्य। जैसे—उसके पास से हट जाओ। ३ अधिकार। कब्जा। जैसे—हमे दस रुपए अपने पास से देने पडे।

विशेष—इस अर्थ मे इसके साथ केवल 'मे' और, 'से' विभक्तियाँ लगती है।

पु० [फा०] किसी के पद, मर्यादा, सम्मान आदि का रखा जानेवाला उचित ध्यान या किया जानेवाला विनयपूर्ण विचार। अदब। लिहाज। जैसे—बडो का हमेशा पास करना (या रखना) चाहिए।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।

पु० [अ०] वह अधिकारपत्र जिसकी सहायता से कोई कही बिना रोक-टोक आ-जा सकता हो। पारक। पारपत्र। जैसे—अभिनय या खेल-तमाशे मे जाने का पास, रेल से कही आने-जाने का पास।

विशेष—टिकट या पास मे यह अन्तर है कि टिकट के लिए तो धन या मूल्य देना पडता है, परन्तु पास बिना धन दिये या मूल्य चुकाये ही मिलता है।

वि० १ जो किसी प्रकार की रुकावट आदि पार कर चुका हो। २ जो जाँच, परीक्षा आदि मे उपयुक्त या ठीक ठहरा हो, और इसी लिए आगे बढने के योग्य मान लिया गया हो। उत्तीर्ण। जैसे—(क) लडका का इम्तहान म पास होना। (ख) विधायिका सभा मे कोई कानून पास होना। ३ पावने, प्राप्यक, व्यय आदि के लेखे के सबध मे, जो उपयुक्त अधिकारी के द्वारा ठीक माना गया और स्वीकृत हो चुका हो। जैसे—कर्मचारियो के वेतन का प्राप्यक (बिल) पास होना।

†पु० [स० पास बिछाना, डालना] आँवे के ऊपर उपले जमाने का काम।

पु० [देश०] भेडो के बाल कतरने की कैंची का दस्ता।

पु० १ दे० 'पाश'। २ दे० 'पासा'।

पासक†—पु०=पाशक।

पासना—अ० [स० पयस्=दूध] स्तनो या थनो मे दूध उतरना या उनका दूध से भरना।

पासनी—स्त्री० [स० प्राशन] बच्चो का अन्नप्राशन। उदा०—कान्ह कुँवर की करहु पासनी।—सूर।

पास-बंद—पुं० [हिं० पास+फा० बंद] दरी बुनने के करघे की वह लकड़ी जिससे वे बँधी रहती है और जो ऊपर-नीचे जाया करती है।

पास-बान—पुं० [फा०] [भाव० पासबानी] पहरा देनेवाला व्यक्ति। द्वारपाल।

स्त्री० रखेली स्त्री। (राज०)

पासबानी—स्त्री०[फा०] १ द्वारपाल का काम और पद। २ पहरेदारी।

पास-बुक—स्त्री० [अं०]=लेखा पुस्तिका।

पासमान—पुं० [हिं० पास+मान (प्रत्य०)] पास रहनेवाला दास।

पुं०=पासबान।

पासवर्ती—वि०=पार्श्ववर्ती।

पाससार†—पुं० =पासासारि।

पासह†—अव्य०=पास।

पासा—पुं० [सं० पाशक, प्रा० पासा] १ हड्डी, हाथी दाँत आदि के छ. पहले टुकडे जिनके पहलो पर एक से छ तक बिंदियाँ अंकित होती है और जिन्हें चौसर आदि के खेलो मे खेलाडी बारी-बारी से फेंककर अपना दाँव निश्चित करते हैं। (डाइस)

मुहा०—**(किसी का) पासा पड़ना**=(क) पासे के पहल का किसी की इच्छा के अनुसार ठीक गिरना। जीत का दाँव पडना। (ख) ऐसी स्थिति होना कि उद्देश्य, युक्ति आदि सफल हो। **पासा पलटना**=(क) पासे का विपरीत प्रकार या रूप मे गिरने लगना। (ख) ऐसी स्थिति आना या होना कि जो क्रम चला आ रहा हो, वह उलट जाय, मुख्यत बुरी से अच्छी दशा या दिशा की ओर प्रवृत्त होना। **पासा फेंकना**=भाग्य के भरोसे रहकर और सफलता प्राप्त करने की आशा से किसी प्रकार का उपाय, प्रयत्न या युक्ति करना।

२ चौपड या चौसर का खेल, अथवा और कोई ऐसा खेल जो पासो से खेला जाता हो। ३ मोटी छ पहली बत्ती के आकार मे लाई हुई वस्तु। गुल्ली। जैसे—चाँदी या सोने का पासा (अर्थात् उक्त आकार मे ढाला हुआ खड)। ४ सुनारो का एक उपकरण जो काँसे या पीतल का चौकोर ढला हुआ खड होता है और जिसके हर पहल पर छोटे-बडे गोलाकार गड्ढे बने होते हैं। (इन्ही गड्ढों की सहायता से गहनो मे गोलाई लाई जाती है।) ५ कोई चीज ढालने का साँचा। (राज०)

पासार†—पुं० [फा० पासदार] [भाव० पासारी] १ तरफदार। पक्षपाती। २ शरणदाता। रक्षक।

पासासारि—पुं० [हिं० पासा+सारि=गोटी] १ पासो की सहायता से खेला जानेवाला खेल। जैसे—चौसर। २ चौसर आदि की गोट जो पासा फेंककर उसके अनुसार चलाते हैं।

पासिक—पुं० [सं० पाश] १. फंदा। २ बंधन।

पासिका—स्त्री० [सं० पाश] १. जाल। २. बंधन।

पासी—पुं० [सं० पाशिन्, पाशी] १. जाल या फंदा डालकर चिड़ियाँ पकड़नेवाला। बहेलिया। २ एक जाति जो ताड़ के पेडो से ताड़ी उतारने का काम करती है।

स्त्री० [सं० पाश] १. घोड़ों के पिछले पैर में बाँधने की रस्सी। पिछाड़ी। २. घास बाँधने की जाली या रस्सी।

†स्त्री०=पाश (फंदा)।

पासु*—पुं०=पाश।

अव्य०=पास।

पासुरी†—स्त्री०=पसली।

पाहँ—अव्य० [सं० पार्श्व, प्रा० पास; पाह] १ निकट। पास। समीप। २ प्रति। से। उदा०—जाइ कहहु उन पास सँदेसू।—जायसी।

पाह—स्त्री० [हिं० पाहन] एक तरह का पत्थर जिसमे लौग, फिटकरी, अफीम आदि घिसकर आँख पर लगाने का लेप बनाते है।

पुं० [सं० पथ] पथ। मार्ग।

पाहत—पुं० [सं० नि० सिद्धि० पररूप] शहतूत का पेड।

पाहन—पुं० [सं० पाषाण, प्रा० पाहाण] १ पत्थर। उदा०—पाहन ते न कठिन कठिनाई।—तुलसी। २ कसौटी का पत्थर। ३ पारस पत्थर। स्पर्शमणि। उदा०—इतर धातु पाहनहि परसि कंचन ह्वै सोहै।—नन्ददास।

वि० पत्थर की तरह कठोर हृदय का।

पाहरू—पुं० [हिं० पहर, पहरा] पहरा देनेवाला। पहरेदार।

पाहल—स्त्री० [हिं० पहला] किसी को सिक्ख धर्म की दीक्षा देने के समय होनेवाला धार्मिक कृत्य या समारोह।

पाहा—पुं० [सं० पथ] १. पथ। मार्ग। २ मेड।

पाहात—पुं० [सं० नि० सिद्धि] शहतूत का पेड।

पाहार†—पुं० [सं० पयोधर, प्रा० पयोहर] बादल। मेघ।

†पुं० पहाड़।

पाहि—अव्य० [सं० पार्श्व; प्रा० पास, पाह] १ पास। निकट। २ किसी की ओर या प्रति। ३. किसी के उद्देश्य से अथवा उसके पास जाकर।

पाहि—अव्य० [सं०√पा+लोट्+सिप्—हि] रक्षा करो। बचाओ।

पाहिमाम्—अव्य० [सं० पाहि और माम् व्यस्त पद] त्राहिमाम्।

पाहीं†—अव्य०=पाहि।

पाही—स्त्री० [हिं० पाह=पथ] किसी किसान की वह खेती जो उसके गाँव या निवास स्थान से कुछ अधिक दूरी पर हो। उदा०—तहाँ नरायन पाही कीन्हा, पल आवै पल जाई हो।—नारायणदास सन्त।

पाहुँचा—स्त्री०=पहुँच।

पाहुना—पुं० [सं० प्राघूर्ण, प्राघुण=अतिथि] [स्त्री० पाहुनी] १ अतिथि। मेहमान। अभ्यागत। २. जामाता। दामाद। (पूरब)

पाहुनी—स्त्री० [हिं० पाहुना] १ आतिथ्य। मेहमानदारी। पहुनई। २ रखेली स्त्री।

पाहुर—पुं० [सं० प्राभृत, प्रा० पाहुड=भेंट] १ उपहार। भेंट। नजर। २. शुभ अवसरो पर संबंधियो और इष्ट-मित्रो के यहाँ भेजे जानेवाले फल, मिठाइयाँ आदि। बैना। बायन।

पाहू—पुं० [सं० पथ, पुं० हिं० पाह] १. पथिक। बटोही। २ पाहुना। मेहमान। ३. दामाद। उदा०—पाहू घर आवे मुकलाऊ आये।—गुरु ग्रंथसाहब।

पुं० [?] दोनो ओर से थोड़ा मुड़ा हुआ वह मोटा लोहा जिससे इमारत में अगल-बगल रखे हुए पत्थर जकडकर स्थित किये जाते है।

पुं० [सं० पाहि] १. घृणा या तुच्छतापूर्वक किसी को पुकारने या संबोधित करने का शब्द। २. तुच्छ व्यक्ति।

पिंग—वि० [सं०√पिञ्ज् (वर्ण)+अच्, कुत्व] १. पीलापन लिये हुए भूरा। सुँघनी के रंग का। २. भूरापन लिये हुए लाल। तामड़ा।
पुं० १ भैसा। २ चूहा। ३ हरताल।

पिंग-कपिशा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] गुबरैले के आकार का एक कीड़ा जिसका रंग काला या तामड़ा होता है। तेलपायी। तेलचटा।

पिंग-चक्षु (स्)—वि० [ब० स०] जिसकी आँखें भूरे या तामड़े रंग की हों।
पुं० नक्र या नाक नामक जल-जंतु।

पिंगल—वि० [सं० पिंग+लच्] १ पीला। २. भूरापन लिये हुए पीला या लाल। तामड़ा
पुं० १. एक प्राचीन मुनि या आचार्य जिन्होंने छंदः सूत्र की रचना की थी। नागमुनि। २ उक्त मुनि का बनाया हुआ छंद शास्त्र। ३. किसी प्रकार का भाषा या छन्द शास्त्र। (प्रॉसोडी)
मुहा०—(किसी को) पिंगल पढ़ाना=अपना दोष छिपाने या मतलब निकालने के लिए उलटी-सीधी बातें समझाना। पिंगल साधना=(क) टालमटोल करना। (ख) नखरा करना। इतराना।
४. साठ संवत्सरों में से ५१वाँ संवत्सर। ५. संगीत में, सबेरे के समय गाया जानेवाला एक राग जो भैरव राग का पुत्र कहा गया है। ६ सूर्य का एक गण या पारिपार्श्वक। ७ एक यक्ष का नाम। ८ नौ निधियों में से एक। ९ अग्नि। आग। १० नकुल। नेवला। ११ बन्दर। १२ एक प्रकार का यज्ञ। १३ एक प्राचीन पर्वत। १४ पुराणानुसार भारत के उत्तर-पश्चिम का देश। १५ हरताल। १६ उल्लू। १७ पीपल। १८ उशीर। खस। १९ रास्ना। २० एक प्रकार का फनदार साँप। २१ एक प्रकार का स्थावर विष। † २२ ब्रजभाषा।
विशेष—किसी समय ब्रजभाषा में ही अधिकतर काव्यों की रचना होती थी, और वही काव्य की मुख्य भाषा मानी जाती थी, इसी से उसका यह नाम पड़ा था।
†पुं०=पंगुल।

पिंगला—स्त्री० [सं० पिंगल+टाप्] १. हठयोग में, सुषुम्ना नाड़ी के बाईं ओर स्थित एक नाड़ी जिससे दक्षिण नासा-पुट का श्वास चलता है। इसमें सूर्य का वास माना गया है। इसलिए इसे सूर्यनाड़ी भी कहते हैं। यह स्वभाव में उष्ण है। इसके अधिष्ठाता देवता विष्णु माने जाते हैं। २ लक्ष्मी। ३ दक्षिण दिशा के दिग्गज की पत्नी। ४ गोरोचन। ५ एक प्रकार की चिड़िया। ६ शीशम का पेड़। ७ राजनीति। ८ भागवत के अनुसार एक प्रसिद्ध भगवद् भक्त वेश्या।

पिंगलाक्ष—पुं० [सं० पिंगल+अक्षि, ब० स०, षच्] शिव।

पिंगलिका—स्त्री० [सं० पिंगल+कन्+टाप्, इत्व] १ एक प्रकार का बगला। २ एक प्रकार का उल्लू। ३ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की मक्खी जिसके काटने से जलन और सूजन होती है।

पिंगलित—वि० [सं० पिंगल+इतच्] ललाई लिये हुए भूरे रंग का।

पिंग-सार—पुं० [ब० स०] हरताल।

पिंग-स्फटिक—पुं० [कर्म० स०] गोमेदक मणि।

पिंगा—स्त्री० [सं० पिंग+टाप्] १ गोरोचन। २ हल्दी। ३ वंशलोचन। ४ हींग। ५ एक रक्त-वाहिनी नाड़ी। ६ चंडिका देवी।
वि० १ कोमल। नाजुक। २ कमजोर। दुर्बल। ३. दुबला-पतला। ४ टेढ़े-मेढ़े अंगोंवाला।
पुं० वह व्यक्ति जिसके पैर टेढ़े हों।

पिंगाक्ष—वि० [पिंग-अक्षि, ब० स०, षच्] [स्त्री० पिंगाक्षी] जिसकी आँखें कुछ ललाई लिये हुए भूरे रंग की हों।
पुं० १ शिव। २ नाक या कुंभीर नामक जल-जन्तु। ३ बिडाल। बिल्ला।

पिंगाक्षी—स्त्री० [सं० पिंगाक्ष+ङीप्] कुमार की अनुचरी एक मातृका।

पिंगाश—पुं० [सं० पिंग√अश् (व्याप्ति)+अण्] १ एक प्रकार की मछली जिसे बंगाल में पांगाश कहते हैं। २ गाँव का प्रधान या मुखिया। ३ खरा या शुद्ध सोना।

पिंगाशी—स्त्री० [सं० पिंगाश+ङीप्] नील का पौधा।

पिंगिमा (मन्)—स्त्री० [सं० पिंग+इमनिच्] ऐसा भूरापन जिसमें कुछ लाली भी हो।

पिंगी—स्त्री० [सं० पिंग+ङीष्] १ शमी का पेड़। २ चुहिया।

पिंगुरा†—पुं० [हिं० पेंग] छोटा पालना।

पिंगेक्षण—वि० [पिंग-ईक्षण, ब० स०] =पिंगाक्ष।
पुं० शिव।

पिंगेश—पुं० [पिंग-ईश, कर्म० स०] अग्नि का एक नाम।

पिंच्छ—पुं० =पिच्छ।

पिंज—वि० [सं०√पिंज्+घञ्+अच्] विकल। व्याकुल।
पुं० [√पिंज्+घञ्] १ बल। शक्ति। २ वध। हत्या। ३ एक प्रकार का कपूर। ४ चन्द्रमा। ५ समूह।

पिंजक—पुं० [सं०√पिञ्ज्+ण्वुल्—अक] धुनिया।

पिंजट—पुं० [सं०√पिञ्ज्+अटन्] आँख में से निकलनेवाला एक तरह का गाढ़ा सफेद मल या कीचड़।

पिंजड़ा—पुं० =पिंजरा।

पिंजन—पुं० [सं०√पिञ्ज्+ल्युट्—अन] १ रूई धुनने की धुनकी। २. रूई धुनने की क्रिया, ढंग या भाव।

पिंजना—स० [सं० पिंजन] धुनकी से रूई धुनना।

पिंजर—वि० [सं०√पिञ्ज्+रच्] १ ललाई लिये हुए पीले रंग का। २ पीला। ३ सुनहला।
पुं० १ पिंजरा। २ हड्डियों की ठठरी। पंजर। ३ हरताल। ४ सोना। ५ नागकेसर। ६ लाल रंग का वह घोड़ा जिसमें कुछ भूरापन भी हो।

पिंजरक—पुं० [सं० पिञ्जर+कन्] हरताल।

पिंजरा—पुं० [सं० पंजर] १ धातु, बाँस आदि की तीलियों का बना हुआ बक्स की तरह का वह आधान जिसमें पक्षी, पशु आदि बंद करके रखे जाते हैं। २ लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा स्थान जहाँ से किसी का बाहर निकलना प्रायः असंभव या दुष्कर हो।

पिंजरापोल—पुं० हिं० पिंजरा+पोल=फाटक] १. पशुशाला। २ गोशाला।

पिंजरिक—पुं० [सं०] पुरानी चाल का एक तरह का बाजा।

पिंजरित—भू० कृ० [सं० पिंजर+इतच्] पीले रंग का या पीले रंग में रंगा हुआ।

पिंजल—वि० [सं०√पिञ्ज्+कलच्] १. दुःख, भय संकट आदि के कारण जिसका वर्ण पीला पड़ गया हो। २ दुःखी। ३. व्याकुल। ४ बहुत अधिक आतंकित।

पुं० १ कुशा। २ हरताल। ३. जाल-बेंत।

पिंजली—स्त्री० [सं० पिंजल+ङीष्] एक में बँधी हुई कुश घास की दो नुकीली पत्तियाँ जिनका उपयोग यज्ञ में होता था।

पिंजा—स्त्री० [सं० पिंज+टाप्] १. हलदी। २ रूई।

†पुं०=पिंजारा (धुनिया)।

पिंजारा—पुं० [सं० पिंजन] रूई धुननेवाला कारीगर। धुनिया।

पिंजारी—स्त्री० [देश०] त्रायमाणा नाम की लता। गुरबियानी।

पिंजाल—पुं० [सं०√पिञ्ज्+आलच्] सोना। स्वर्ण।

पिंजिका—स्त्री० [सं०√पिञ्ज्+ण्वुल्—अक+टाप्, इत्व] धुनी हुई रूई की पूनी जो सूत कातने के काम आती है।

पिंजियारा—पुं० [सं० पिंजिका=रूई की बत्ती] १ रूई ओटनेवाला। २ रूई धुननेवाला। धुनिया।

पिंजूष—पुं० [सं०√पिञ्ज्+ऊषन्] कान की मैल। खूँट।

पिंड—वि० [सं०√पिण्ड् (ढेर लगाना)+अच्] [स्त्री० पिंडी] १. घन। ठोस। २ गुथा हुआ। ३ घना।

पुं० १ घनी या ठोस चीज का छोटा और प्रायः गोलाकार खंड या टुकड़ा। ढेला या लोंदा। जैसे—गुड़, धातु या मिट्टी का पिंड। २. कोई गोलाकार पदार्थ। जैसे—नेत्र-पिंड। ३ भोजन का वह अंश जो प्रायः गोलाकार रूप में लाकर मुँह में डाला जाय। कौर। ग्रास। ४ जौ के आटे, भात आदि का बनाया हुआ वह गोलाकार खंड जो श्राद्ध में पितरों के उद्देश्य से वेदी आदि पर रखा जाता है।

पद—पिंड-दान। (देखें)

मुहा०—(किसी को) पिंड देना=कर्मकांड की विधि के अनुसार किसी मृत व्यक्ति के उद्देश्य से उसका श्राद्ध करना।

५ ढेर। राशि। ६. खाद्य पदार्थ। आहार। भोजन। ७ जीविका या उसके निर्वाह का साधन। ८ भिक्षुकों को दिया जानेवाला दान। खैरात। ९. मांस। गोश्त। १०. गर्भ की आरंभिक अवस्था। भ्रूण। ११ मनुष्य की काया। देह। बदन। शरीर।

पद—पिंड-रोग। (देखें)

मुहा०—(किसी का) पिंड छोड़ना=जिसके पीछे पड़े हों, उसका पीछा छोड़ना। तंग या परेशान करने से बाज आना। जैसे—(क) वह जब तक उनका सर्वस्व नष्ट न कर देगा, तब तक उनका पिंड नहीं छोड़ेगा। (ख) आज महीने भर बाद बुखार ने पिंड छोड़ा है। (किसी के) पिंड पड़ना=किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करने के लिए किसी के पीछे पड़ना। (स्त्री के उदर में) पिंड पड़ना=स्त्री का गर्भधारण करना। उदा०—पिंड परै तउ प्रीति न तोरउ।—कबीर।

१२. जीव। प्राणी। १३. पैर की पिंडली। १४. तबले आदि के मुँह पर का चमड़ा। १५. पदार्थ। वस्तु। १६. घर का वह विशिष्ट भाग जो वास्तु-शास्त्र के नियमों के अनुसार उसे चौकोर बनाने के लिए बीच में स्थिर किया जाता है। १७. मकान के दरवाजे के सामने का छायादार स्थान। १८. जलाने का कोई सुगंधित पदार्थ। जैसे—धूप, राल आदि। १९ भूमिति में, किसी घन पदार्थ की घनता या मोटाई अथवा उसका परिमाण। २० गणित में त्रिज्या का चौबीसवाँ अंश या भाग। २१ बल। शक्ति।

पुं० [सं० पांडु] पांडु नामक रोग जिसमें सारा शरीर पीला हो जाता है। पीलिया। उदा०—पायाँ ज्यूँ पीली पड़ी रे, लोग कहैं पिंड रोग।—मीराँ।

पिंडक—पुं० [सं० पिण्ड√कै (चमकना)+क] १ गोलाकार पिंड। गोला। २ पिंडालू। ३. लोबान। ४. बोल। मुरमक्की। ५ शिलारस। ६ शिलारस। ७ गाजर।

पिंड-कंद—पुं० [मध्य० स०] पिंडालू नामक कंद।

पिंडकर—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में, ऐसा कर जिसकी राशि एक बार निश्चित कर दी जाती थी और जिसके मान में सहसा कोई परिवर्तन नहीं होता था।

पिंड-कर्कटी—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार का पेठा।

पिंडका—स्त्री० [सं० पिंडक+टाप्] छोटी माता या चेचक नाम का रोग।

पिंडकी—†स्त्री०=पंडुक।

पिंडखजूर—स्त्री० [सं० पिंडखर्जूर] १ खजूर की जाति का एक वृक्ष जिसके फल बहुत मीठे होते हैं। २. उक्त पेड़ के फल।

पिंड-खर्जूर—पुं० [मध्य० स०]=पिंड खजूर।

पिंड-खर्जूरी (रिका)—स्त्री० [सं० पिंडखजूर+ङीष्]=पिंड खजूर।

पिंडगोस—पुं० [सं० गो√सन् (अलग करना)+ड, पिण्ड-गोस, कर्म० स०] १ गंधरस। २ बोल।

पिंडज—पुं० [सं० पिंड√जन् (उत्पन्न होना)+ड] प्राणी के पिंड या शरीर अर्थात् गर्भ से उत्पन्न होनेवाला जीव। जैसे—मनुष्य, घोड़ा, गाय आदि। (अंडज और स्वेदज से भिन्न)

पिंडता—पुं०=पंडित। उदा०—छाछि छाँडि पिंडता पीवी।—गोरख-नाथ।

पिंड-तैल (क)—पुं० [ब० स०, कप्] १. कुछ वृक्षों से निकलनेवाला एक तरह का गंध-द्रव्य जिसे लोबान कहते हैं। २ शिलारस।

पिंडद—पुं० [सं० पिंड√दा (देना)+क] पिंडा देने अर्थात् मृतक का श्राद्ध करनेवाला व्यक्ति। वंशज। सन्तान।

पिंड-दान—पुं० [ष० त०] कर्मकाण्ड के अनुसार पितरों को पिंड देने का कर्म जो श्राद्ध में किया जाता है।

पिंडन—पुं० [सं०√पिण्ड्+ल्युट्—अन] १ पिण्ड अर्थात् गोलाकार वस्तुएँ बनाना। २ बाँध। ३. टीला।

पिंड-पात—पुं० [ष० त०] १. पिंड-दान। २ भीख माँगने के लिए इधर-उधर घूमना। ३ भिक्षापात्र में मिली हुई भिक्षा।

पिंडपातिक—पुं० [सं० पिंडपात+ठन्—इक] भिखमंगा। भिक्षुक।

पिंड-पाद—पुं० [ब० स०] हाथी।

पिंड-पुष्प—पुं० [ब० स०] १. अशोक का पेड़ और उसका फूल। २ अनार का पौधा। ३. जपा का फूल। ४. तगर का पुष्प। ५ कमल।

पिंड-पुष्पक—पुं० [सं० पिंडपुष्प+कन्] बथुआ (साग)।

पिंड-फल—पुं० [ब० स०] कद्दू।

पिंड-फला—स्त्री० [ब० स०, टाप्] तितलौकी।
पिंड-बीजक—पुं० [ब० स०, कप्] कनेर का पेड़।
पिंडभाक् (ज)—पु० [पिंड√भज् (प्राप्त करना)+ण्वि] पिंड पाने का अधिकारी अर्थात् पितर।
पिंडभृति—स्त्री० [ष० त०] जीवन निर्वाह के साधन। जीविका।
पिंड-मुस्ता—स्त्री० [कर्म० स०] नागरमोथा।
पिंड-मूल—पु० [ब० स०] १ गाजर। २. शलजम।
पिंडरी†—स्त्री०=पिंडली।
पिंड-रोग—पु० [कर्म० स०] १ ऐसा रोग जिसने शरीर घर कर लिया हो और जो जल्दी छूट न सकता हो। २ कोढ़।
पिंडरोगी (गिन्)—वि० [स० पिंड रोग+इनि] जो प्राय सदा रोगी रहता हो और जल्दी अच्छा न हो सकता हो।
पिंडली—स्त्री० [स० पिंड] घुटने और एड़ी के बीच का वह मासल स्थान जो पैर मे पीछे की ओर होता है।
मुहा०—**पिंडली हिलना**=(क) पैर काँपना या थर्राना। (ख) भय से कँपकँपी होना।
पिंड-लेप—पु० [ष० त०] पिंड का वह अंश जो पिंड-दान के समय हाथो मे चिपक जाता है तथा जिसके वृद्ध प्रपितामह आदि तीन पितर अधिकारी होते है।
पिंड-लोप—पु० [ष० त०] १. पिंडदान का न किया जाना। २ पिंड देनेवाले वशजो का लोप। निर्वंश होना।
पिंडवाही†—स्त्री० [?] पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।
पिंड-वेणु—पु० [कर्म० स०] एक तरह का बाँस।
पिंड-शर्करा—स्त्री० [मध्य० स०] ज्वार से बनी हुई चीनी या शर्करा।
पिंड-सबध—पु० [तृ० त०] १. जन्य या जनक का सम्बन्ध। २ पिंड-दाता या पिंड-भोक्ता होने का सबध।
पिंडस—पु० [स० पिंड√सन् (देना)+ड] भिखमगा।
पिंडस्थ—वि० [स० पिंड√स्था (ठहरना)+क] १ जो पिंड या शरीर मे स्थित हो। गर्भ मे स्थित। २ जो पिंड या लोदे के रूप मे आया या लाया गया हो। ३ किसी मे मिलाया हुआ। मिश्रित।
पिंड-स्वेद—पु० [मध्य० स०] औषध का वह लेप जो गरम करके फोडो आदि पर लगाया जाता है। पुल्टिस।
पिंडा—पु० [स० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पिंडी] १ ठोस या गीली वस्तु का टुकड़ा। पिंड। २ गोल-मटोल टुकड़ा। लोदा। जैसे—जौ के आटे, भात आदि का पिंडा जो श्राद्ध मे पितरो के उद्देश्य से वेदी पर रखा जाता है।
क्रि० प्र०—देना।
मुहा०—**पिंडा-पानी देना**=मृतक के उद्देश्य से श्राद्ध और तर्पण करना। **पिंडा पारना**=मृतक के उद्देश्य से पिंड-दान करना।
४ देह। शरीर।
मुहा०—**पिंडा धोना**=स्नान करना। नहाना। **पिंडा फीका होना**=जी अच्छा न होना। तबियत खराब होना।
५ स्त्रियो की भग। योनि।
मुहा०—**(किसी को) पिंडा दिखाना या देना**=स्त्री का पर-पुरुष से सभोग कराना।
स्त्री० [स० पिंड-टाप्] १ एक प्रकार की कस्तूरी। २. वंशपत्री। ३ इस्पात। ४ हलदी।
पिंडाकार—वि० [पिंड-आकार, ब० स०] पिंड अर्थात् प्राय गोलाकार बँधे लोदे के आकार का। गोलाकार।
पिंडात—पु० [स० पिंड√अत् (गति)+अच्] शिलारस।
पिंडाभ—पु० [स० पिंड-आ√भा (दीप्ति)+क] लोबान।
पिंडाभ्र—पु० [स० आभ्र, अभ्र+अण्,-पिंड-आभ्र, उपमि० स०] सफेद और चमकीला पिंड अर्थात् ओला।
पिंडायस—पु० [पिंड-आयस, कर्म० स०] इस्पात।
पिंडार—पु० [स० पिंड√ऋ (गति)+अण्] १ एक प्रकार का फल। २ क्षपणक। ३ भैस का चरवाहा। गोप। ४ विककत का पेड़।
पिंडारक—पु० [स० पिंडार+कन्] १ एक नाग का नाम। २. वसुदेव और रोहिणी का एक पुत्र। ३ एक पवित्र नद। ४ गुजरात देश मे समुद्र-तट का एक प्राचीन तीर्थ।
पिंडारा—पु० [स० पिंडार] एक प्रकार का शाक जो वैद्यक मे शीतल और पित्तनाशक माना गया है।
†पु०=पिंडारी।
पिंडारी—पु० [देश०] दक्षिण भारत की एक जाति जो पहले कर्णाट, महाराष्ट्र आदि मे बसकर खेती-बारी करती थी, पर पीछे मध्यप्रदेश और उसके आस-पास के स्थानो मे लूटमार करने लगी और मुसलमान हो गई थी।
पिंडालक्तक—पु० [पिंड-अलक्तक, कर्म० स०] महावर।
पिंडालु—पु० [पिंड-आलु, उपमि० स०]=पिंडालू।
पिंडालू—पु० [स० पिंड+हिं० आलू] १ एक प्रकार का कद या शकरकन्द जिसके ऊपर कड़े सूत की तरह के रेशे होते हैं। सुथनी। पिंडिया। २ एक प्रकार का रतालू या शफतालू।
पिंडाशक—पु० [पिंड-आशक, ष० त०] भिक्षुक।
पिंडाशी (शिन्)—पु० [स० पिंड√अश्+णिनि]=पिंडाशक।
पिंडाह्वा—स्त्री० [स० पिंड-आ√ह्वे (स्पर्द्धा करना)+क+टाप्] नाड़ी हींग।
पिंडि—स्त्री० [स०√पिंड्+इन्]=पिंडी।
पिंडिका—स्त्री० [स० पिंड+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] १ छोटा पिंड। पिंडी। २ किसी चीज का छोटा ढेला या ढोका। ३. पहिए के बीच का वह गोल भाग जिसमे धुरी पहिनाई रहती है। चक्रनाभि। ४ पिंडली। ५ इमली। ६. छोटा शिव-लिंग। ७ वह छोटी गोलाकार वेदी जिस पर देव-मूर्ति स्थापित की जाती है।
पिंडित—भू० कृ० [स०√पिंड+क्त] १ पिंड के रूप मे बँधा या बनाया हुआ। २ सूत की पिंडी की तरह लपेटा हुआ। ३ गुणा किया हुआ। गुणित।
पु० १. शिलारस। २. काँसा। ३ गणित या उसकी क्रिया।
पिंडितार्थ—पु० [पिंडित-अर्थ, कर्म० स०] कथन आदि का सारांश।
पिंडिनी—स्त्री० [स०√पिंड्+णिनि+ङीप्] अपराजिता लता।
पिंडिया†—स्त्री०=पिंडी (गुड़, रस्सी आदि की)।
पिंडिल—पु० [स० पिंड+इलच्] १. सेतु। पुल। २ गणक।

वि० बड़ी-बड़ी पिंडलियोंवाला।

पिंडिला—स्त्री० [सं० पिंडिल+टाप्] ककड़ी।

पिंडी—स्त्री० [सं० पिंड+अच्+ङीष्] १. ठोस या गीली वस्तु का छोटा गोल-मटोल टुकड़ा। लुगदी। जैसे—आटे या गुड़ की पिंडी। २ डोरी या सूत जो उक्त आकार या रूप में लपेटा हुआ हो। जैसे—रस्सी की पिंडी।

क्रि० प्र०—बनाना।—बाँधना।

३ कद्दू। घीया। ४ पिंडखजूर। ५ एक प्रकार का तगर। ६ बलि चढ़ाने की वेदी। ७ दे० 'पिंडिका'।

पिंडीकरण—पु० [सं० पिंड+च्वि, ईत्व,पिंडी,√कृ (करना)+ल्युट्—अन] किसी वस्तु को पिंड का रूप देना। पिंड अर्थात् गोलाकार वस्तुएँ बनाने की क्रिया।

पिंडीतक—पु० [सं० पिंडी√तक् (अनुकरण करना)+अच्] १ मैनफल। २ एक प्रकार का तगर जिसे हजारा तगर भी कहते है।

पिंडीपुष्प—पु० [ब० स०] अशोक वृक्ष।

पिंडीर—पु० [सं० पिंड√ईर् (प्रेरित करना)+अण्] १ अनार। २ समुद्रफेन।

पिंडी-लेप—पु० [ष० त०] एक तरह का उबटन।

पिंडी-शूर—पु० [स० त०] १ घर ही मे बैठे-बैठे बहादुरी दिखलानेवाला। २ बहुत अधिक खानेवाला। पेटू।

पिंडुरी (ली)स्त्री० =पिंडली।

पिंडूक—पु० [?] १. पडुक। २ उल्लू।

पिंडोदक क्रिया—स्त्री० [सं० पिंड-उदक, द्व० स०], पिंडोदकक्रिया, ष० त०] पूर्वजों के उद्देश्यों से किया जानेवाला पिंडदान और तर्पण।

पिंडोपजीवी (विन्)—पु० [सं० पिंड-उप√जीव् (जीना)+णिनि] भिखमगा।

पिंडोल—स्त्री० [सं० पाडु] पीले रग की मिट्टी। पोतनी मिट्टी।

पिंडोलि—स्त्री० [सं०] १ मुँह से गिरे हुए अन्न के छोटे-छोटे टुकड़े। २ जूठन।

पिंभ†—पु० =प्रेम।

पिंशन—स्त्री० =पेनशन।

पिंसी—स्त्री०= पीनस (रोग)।

पिअ†—पुं० [सं० प्रिय] १ स्त्री का पति। २. प्रेमी।

वि०=प्रिय।

पिअना†—स०=पीना।

पिअर†—वि०=पीला।

पु०=पीहर।

पिअरवा—वि०=प्यारा।

†पुं०=पिअ (पति या प्रेमी)।

पिअरा†—वि०=पीला।

पिअराई†—स्त्री० [हिं० पिअरा=पीला] पीलापन।

पिअरिया—पु० [हिं० पिअर=पीला+इया (प्रत्य०)] पीले रग का बैल जो बहुत मजबूत और तेज चलनेवाला होता है।

स्त्री०=पिअरी (धोती या साड़ी)।

वि०=प्यारी (प्रिय)।

पिअरी†—स्त्री० [हिं० पीअर =पीला] १ हल्दी के रग से रँगी हुई वह धोती जो विवाह आदि शुभ अवसरो पर वर या वधू को पहनाई जाती है। २ उक्त प्रकार की वह धोती जो प्राय गगा या किसी देवी को चढ़ाई जाती है।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।

वि० हिं० 'पिअरा' (पीला) का स्त्री०।

पिआज†—पु० =प्याज।

पिआना†—स०=पिलाना।

पिआनो—पु०=पियानो (बाजा)।

पिआर†—पु० =प्यार।

पिआरा†—वि०=प्यारा।

पिआस—स्त्री०=प्यास।

पिआसा—वि०=प्यासा।

पिउ†—पु० [सं० प्रिय] १ प्रियतम। २. पति। ३ ईश्वर।

पिउनी†—स्त्री० =पूनी (रूई की)।

पिक—पु० [सं० अपि√कै (शब्द करना)+क, अकार-लोप] [स्त्री० पिकी] कोयल। कोकिला।

पिक-प्रिया—स्त्री० [ष० त०] बड़ा जामुन।

पिक-बंधु—पु० [ष० त०] आम का वृक्ष।

पिक-भक्ष्या—स्त्री० [ष० त०] भूमि जबू। भू-जामुन।

पिक-राग—पु० [ब० स०] आम का वृक्ष।

पिक-वल्लभ—पु० [ष० त०] आम का वृक्ष।

पिकांग—पु० [पिक-अग, ब० स०] चातक (पक्षी)।

पिकाक्ष—पु० [ब० स०, अच्] १ रोचनी वृक्ष। २ तालमखाना।

वि० कोयल जैसी आँखोवाला।

पिकानद—पु० [सं० पिक-आ√नन्द् (प्रसन्न होना)+अण्] वसन्त ऋतु।

पिकी—स्त्री० [सं० पिक+ङीष्] मादा कोयल।

पिकेक्षणा—स्त्री० [पिक-ईक्षण, ब० स०,+अच्+टाप्] तालमखाना।

पिक्क—पु० [सं० पिक√कै+क, पृषो० सिद्धि] १ हाथी का बच्चा। २ ऐसा हाथी जो अवस्था मे बीस वर्ष का हो। ३ मोती की एक तौल।

पिघरना†—अ०=पिघलना।

पिघलना—अ० [सं० प्र०+गलन] १ ताप पाकर किसी घन या ठोस पदार्थ का द्रव रूप मे आना या होना। जैसे—घी या मोम पिघलना। २. लाक्षणिक अर्थ मे, कठोर चित्त का किसी प्रकार के प्रभाव के कारण कोमल या द्रवित होना। पसीजना। जैसे—तुम लाख रोओ, पर वह जल्दी पिघलनेवाला नही है।

पिघलाना—स० [हिं० पिघलना का स०]१ किसी घन या ठोस पदार्थ को पिघलने मे प्रवृत्त करना। २ किसी के हृदय की कठोरता दूर करके उसे कोमल या द्रवित करना।

पिचंड—पु० [सं० अपि√चम् (खाना)+ड, अकार-लोप] १ पेट। २ किसी जानवर का कोई अग।

वि० १. उदर या पेट-सबंधी। २ बहुत अधिक खानेवाला।

पिचंडिल—वि० [सं० पिचड+इलच्] बड़ी तोंदवाला। तोंदल।

पिचां —स्त्री० =पीच।

पिचक—स्त्री० [हिं० पिचकना] १ पिचकने की क्रिया या भाव। २ पिचके हुए होने की अवस्था।

स्त्री० ३ =पिचकारी।

पिचकना—अ० [स० पिच्च =दबाना] उभरे या फूले हुए अग के उभार या फूलन का कम होना। जैसे—गिरने के कारण लोटे का पिचकना, बीमारी के कारण गाल पिचकना।

पिचकवाना—स० [हिं० पिचकाना का प्रे०] पिचकाने का काम दूसरे से कराना।

पिचका—पु० [हिं० पिचकना] बडी पिचकारी।

पिचकाना—स० [हिं० पिचकना का प्रे०] ऐसा काम करना जिससे उभरी या फूली हुई चीज का तल दबता या पिचकता हो। पिचकने मे प्रवृत्त करना।

पिचकारी—स्त्री० [हिं० पिचकना] १ नली के आकार का धातु का बना हुआ एक उपकरण जिसके मुँह पर एक या अनेक ऐसे छोटे-छोटे छेद होते हैं, जिनके मार्ग से नली मे भरा हुआ तरल पदार्थ दबाव से धार या फुहार के रूप मे दूसरो पर या दूर तक छिडका या फेंका जाता है।

मुहा०—पिचकारी चलाना, छोड़ना या मारना=पिचकारी मे रग, गुलाब-जल आदि भरकर दूसरो पर छोडना। **पिचकारी भरना**=पिचकारी की नली का डाट इस प्रकार ऊपर खीचना कि उसमे रग या और कोई तरल पदार्थ भर जाय।

२. पिचकारी मे से निकलनेवाली तरल पदार्थ की धार। ३ किसी चीज मे से जोर से निकलनेवाली तरल पदार्थ की धार।

मुहा०—(किसी चीज में से) पिचकारी छूटना या निकलना=किसी चीज या जगह मे से किसी तरल पदार्थ का बहुत वेग से बाहर निकलना। जैसे—सिर से लहू की पिचकारी छूटने लगी।

४ चिकित्सा-क्षेत्र मे, एक तरह की छोटी पिचकारी जिसके अगले भाग मे खोखली सूई लगी रहती है और जिसे चुभोकर शरीर की नसो या रक्त मे दवाएँ पहुँचाई जाती है। सूई। वस्ति। (सीरिंज)

पिचकी†—स्त्री० =पिचकारी।

पिचपिचा† —वि० [हिं० पिचकना] १ जो पिचकता रहता हो। २ दबा हुआ और गुलगुला।

† वि०=चिपचिपा।

पिचपिचाना—अ० [अनु०] [भाव० पिचपिचाहट] किसी छेद मे तरल पदार्थ का पिचपिच शब्द करते हुए रसना या निकलना। जैसे—फोडे का चिपचिपाना।

अ० =पिचपिचाना।

पिचरिया—स्त्री० [हिं० पिचलना] छोटी कोठीवाला एक तरह का कोल्हू।

पिचलना—स० =कुचलना।

पिचव्य—पु० [स० पिचव्य] १ कपास का पौधा। २ वटवृक्ष। (डि०)

पिचास†—पु० =पिशाच।

वि०=पचास।

पिचु—पु० [स० पृषो०] १. रूई। २. एक प्रकार का कोढ़। ३. एक पुरानी तौल जो दो तोले के बराबर होती थी। ४ एक असुर का नाम। ५ एक तरह का अनाज।

पिचुक—पु० [स० पृषो०] मैनफल का वृक्ष।

पिचुकिया†—स्त्री० [हिं० पिचकना] १. छोटी पिचकारी। २. वह गुझिया (पकवान) जिसमें केवल गुड और सोठ भरी जाती है।

पिचुक्का†—पु० [हिं० पिचकना] १ पिचकारी। २. गोलगप्पा।

पिचु-तूल—पु० [स०] कपास की रूई।

पिचुमंद—पु० =पिचुमर्द।

पिचुमर्द—पु० [स० पिचु√मृद् (चूर्ण करना)+अण्] नीम का पेड।

पिचुल—पु० [स० पिचु√ला (लेना)+क] १. कपास की रूई। २. झाऊ का पेड। (डि०) ३ समुद्रफल। ४. गोताखोर।

पिचू—पु० [स० पिचु] १६ माशे की एक पुरानी तौल।

पिचुका†—पु० =पिचुक्का।

पिचैत†—पु० [?] पहलवान।

पिचोतरसौ—पु० [स० पंचोत्तर शत] एक सौ पाँच की सख्या।

वि० जो गिनती मे सौ से पाँच ऊपर हो।

पिच्चट—वि० [स०√पिच्च् (काटना)+अटन्] दबाकर चिपटा किया हुआ। निचोडा हुआ।

पु० १ सीसा। २ रांगा। ३ आँख का एक रोग।

पिच्चर—पु० =पिच्चट।

पिच्चा—स्त्री० [स०√पिच्च्+अ+टाप्] एक निश्चित तौल के १६ मोतियो की माला।

वि० [हिं० पिचकना] [स्त्री० पिच्ची] पिचका हुआ। दबे हुए तल-वाला।

पिच्चिट—पु० [स०] एक तरह का विषैला कीडा।

पिच्चित—पु० =पिच्चिट।

वि० [हिं० पिचकना] पिचका हुआ।

पिच्ची—स्त्री० =पच्ची।

वि० पिच्चित।

पिच्छ—पु० [स०√पिच्छ् (बाधा डालना)+अच्] किसी पशु की ऐसी दुम या पूँछ जिस पर बाल हो। लागूल। २ मोर की दुम या पूँछ। ३ मोर की चोटी। ४ बाण मे लगाया जानेवाला मोर आदि का पख। ५ सेमल का गोद। मोचरस।

पिच्छक—पु० [स० पिच्छ+कन्] १ पूँछ। २ पूँछ पर का पख। ३ सेमल का गोद। मोचरस।

पिच्छन—पु० [स०√पिच्छ्+ल्युट्—अन] १. किसी वस्तु को दबाकर चिपटा करने की क्रिया। २ अत्यन्त पीडन।

पिच्छ-पाद—पु० [ब० स०] घोडे के पैर मे होनेवाला एक तरह का रोग।

पिच्छपादी (दिन्)—वि० [स० पिच्छपाद+इनि] १ पिच्छपाद रोग-संबंधी। २. पिच्छपाद रोग से पीडित।

पिच्छ-बाण—पु० [ब० स०] बाज (पक्षी)।

पिच्छ-भार—पु० [ब० स०] मोर की पूँछ।

पिच्छल—वि० [स०] जिस पर पैर फिसलता हो। फिसलनेवाला।

पु० [सं०√पिच्छ्+कलच्] १. मोचरस। २. आकाशबेल। ३. शीशम का पेड़। ४ वासुकि के वंश का एक सर्प।
वि० [हिं० पिछला] १. पिछला। २. दौड़, प्रतियोगिता, होड़ आदि में जो पीछे रह गया हो।

पिच्छलपाई—स्त्री० [हिं० पीछा+पाई=पैरवाली] १. चुड़ैल या डाइन।
विशेष—लोगो की धारणा है कि चुड़ैलो के पैरो में एड़ी आगे और पंजे पीछे की ओर होते हैं।
२. टोना-टोटका करनेवाली स्त्री।

पिच्छा—स्त्री० [सं० पिच्छ+टाप्] १. सेमल का गोंद। मोचरस। २. सुपारी का पेड़। ३. शीशम। ४ नारगी का पेड़। ५. निर्मली का पेड़। ६ आकाशबेल। ७ पिच्छतकापाद नामक रोग। ८. पकाये हुए चावलो का माँड़। ९. पिंडली।

पिच्छिका—स्त्री० [सं० पिच्छ+कन्—टाप्, इत्व] १. चँवर। चामर। मोरछल। २ ऊन की वह चँवर जो जैन साधु अपने साथ रखते हैं।

पिच्छितिका—स्त्री० [सं० पृषो०] शीशम का पेड़।

पिच्छिल—वि० [सं० पिच्छा+इलच्] [स्त्री० पिच्छिल] १ सरस और स्निग्ध। गीला और चिकना। २ इतना या ऐसा चिकना जिस पर पैर फिसलता हो या फिसल सकता हो। ३ (पक्षी) जिसके सिर पर चूड़ा या चोटी हो। ४ (वैद्यक मे, पदार्थ) जो खट्टा, कोमल फूला हुआ और कफकारी हो।
पु० १. लिसोड़ा। २. सरस और स्निग्ध व्यजन। सालन। जैसे—कढ़ी, दाल, रसेदार तरकारी आदि।

पिच्छिलक—पु० [सं० पिच्छिल+कन्] १ मोचरस। २. धामिन वृक्ष।

पिच्छिलच्छदा—स्त्री० [ब० स०] १. बैर वृक्ष। २. पोई का साग।

पिच्छिल-त्वक्—स्त्री० [ब० स०] १ नारगी का पेड़। २ धामिन-वृक्ष।

पिच्छिल-दला—स्त्री० [ब० स०]=पिच्छिलच्छदा।

पिच्छिल-बस्ति—स्त्री० [सं० कर्म० स०] वैद्यक मे, निरूढवस्ति का एक भेद।

पिच्छिल-सार—पु० [ब० स०] सेमल का गोंद। मोचरस।

पिच्छिला—स्त्री० [सं० पिच्छिल+टाप्] १. पोई। २ शीशम। ३. सेमल। ४. तालमखाना। ५ वृश्चिकाली (जड़ी)। ६ शूलं घास। ७ अगर। ८. अलसी। ९ अरवी।
वि० दे० 'पिच्छिल'।

पिछ—पु० [हिं० पीछा] 'पीछा' का वह लघु रूप जो यौगिक पदो के आरम्भ मे लगता है। जैसे—पिछलगा, पिछलग्गू, पिछवाड़ा।

पिछड़ना—अ० [हिं० पीछे] १. गति, दौड़, प्रतियोगिता आदि मे दूसरों के आगे निकल या बढ़ जाने के कारण अथवा और किसी कारण से पीछे रह जाना। २. वर्ग, श्रेणी आदि में आगे न बढ़ सकने या उन्नति न कर सकने के कारण पीछे रह जाना।
संयो० क्रि०—जाना।

पिछ-लगा—वि० [हिं० पीछे+लगना] [भाव० स्त्री० पिछलगी] १ दीन भाव से किसी के पीछे-पीछे लगा रहनेवाला। २ शक्ति, सामर्थ्य आदि के अभाव मे, स्वतन्त्र न रह सकने के कारण किसी का अनुगमन या अनुसरण करनेवाला। ३ आश्रित।
पु० सेवक। दास।

पिछलगी—स्त्री० [हिं० पिछलगा] पिछलगा होने की अवस्था या भाव। २ अनुगमन। अनुवर्तन। अनुसरण।

पिछ-लगू (ग्गू)—वि०, पु०=पिछ-लगा।

पिछ-लत्ती—स्त्री० [हिं० पिछ+लात] १. पशुओ का पिछले पैरो से आघात करने की क्रिया या भाव। २ उक्त प्रकार से होनेवाला आघात।

पिछलना—अ० [हिं० पीछा] पीछे की ओर हटना या मुड़ना। (क्व०)
† अ०=फिसलना।

पिछलपाई—स्त्री०=पिच्छलपाई।

पिछला—वि० [हिं० पीछा] [स्त्री० पिछली] १ जो किसी वस्तु के पीछे अर्थात् पीठ की ओर पड़ता हो। पीछे का ओर को। 'अगला' का विपर्याय। जैसे—(क) इस मकान का पिछला हिस्सा गिर गया है। (ख) इस घोड़े की पिछली टाँगें टेढ़ी हैं। २ काल, घटना, स्थिति आदि के क्रम के विचार से किसी के पीछे अर्थात् पूर्व मे या पहले पड़ने या होनेवाला। जैसे—(क) इधर का हिसाब तो साफ हो गया है, पर पिछला हिसाब बाकी है। (ख) जब मैं पिछली बार आप के यहाँ आया था .। (ग) पिछला साल रोजगारियो के लिए अच्छा नही था। ३ पूर्वकाल मे होने अथवा उसमे सबध रखनेवाला। जैसे—पिछला जमाना, पिछले लोग। ४ जो क्रम के विचार से किसी के पीछे या बाद मे पड़ता हो। जैसे—इस पुस्तक के कई पिछले पृष्ठ फट गये हैं।
पद—पिछला पहर=दो पहर अथवा आधी रात के बाद का अर्थात् सध्या या प्रभात से पहले का पहर या समय। दिन अथवा रात का उत्तर काल। पिछली रात=रात मे आधी रात के बाद का और प्रभात या उसके कुछ पहले का समय।
५ गुजरा या बीता हुआ। गत। जैसे—पिछली बातो को भूल जाना ही अच्छा है।
पद—पिछला दिन=वह दिन जो वर्तमान से एक दिन पहले बीता हो। पिछली रात=आज से एक दिन पहले बीती हुई रात। कल की रात। गत रात्रि। पिछले दिन=बीते हुए दिन। भूतकाल।
पु० वह भोजन जो रोजे के दिनो मे मुसलमान लोग कुछ रात रहते खाते है। सहरी।

पिछवई (वाई)—स्त्री० [हिं० पीछे] मूर्तियों या उनके सिहासनो के पीछे लटकाया जानेवाला बेल-बूटेदार परदा।

पिछवाड़ा—पु० [हिं० पीछा+बाड़ा] १. किसी वस्तु विशेषत घर आदि के पीछेवाला भाग। घर का पृष्ठ भाग। २ घर के पीछे वाले भाग के पास की जमीन या मकान।

पिछवारा†—पु०=पिछवाड़ा।

पिछाड़—वि० [हिं० पीछा] पीछे या बाद में रहने या होनेवाला।
पु० [हिं० पिछड़ना] पिछड़ने की क्रिया या भाव।
पु०=पिछाड़ी।

पिछाड़ी—स्त्री० [हिं० पीछा] १. किसी काम, चीज या बात का पिछला

भाग। पीछे का हिस्सा। पृष्ठ भाग। २ घोड़े के पिछले दोनों पैर बाँधने की रस्सी।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

पद—अगाड़ी-पिछाड़ी (दे०)।

पिछान†—स्त्री० =पहचान। उदा०—मैं पिय लियो पिछान।—पद्माकर।

पिछानना†—स० =पहचानना।

पिछानी—पु० [हिं० पहचान] १. पहचाननेवाला। उदा०—ऐसा बेद मिलै कोइ भेदी देस-बिदेस पिछानी।—मीराँ। २ जान-पहचान-वाला। परिचित।

†स्त्री० =पहचान।

पिछारी†—स्त्री० =पिछाड़ी।

पिछुआर†—पु० =पिछवाड़ा।

पिछेलना—स० [हिं० पीछे] १ गति, दौड़, प्रतियोगिता आदि मे किसी से आगे निकलना और उसे पीछे छोड़ देना। २ धक्का देकर पीछे हटाना।

पिछोकड़—पु० [हिं० पीछा] पिछवाड़ा। (राज०) उदा०—म्हारे आँगण आम, पिछोकड़ मखों। (राज०)

पिछौंता—अव्य० [हिं० पीछा+औंता] १ पीछे की ओर। २ पीछे से। बाद में। (पूरब)

†वि० =पिछला।

पिछौंहा—वि० [स० पश्चिम] [स्त्री० पिछौंही] पश्चिम दिशा मे रहने या होनेवाला।

पिछौंही—स्त्री० =पिछौरी।

पिछौंहैं—अव्य० [हिं० पीछा] १ पीछे की ओर। २ पीछे की ओर से। वि० १ पीछे होनेवाला। २ (फसल, फल आदि) जो अपनी ऋतु या समय बीत जाने पर हो।

पिछौड़†—वि० [हिं० पीछे+औड़ (प्रत्य०)] जिसने अपना मुँह पीछे कर लिया हो। किसी के मुँह की ओर जिसकी पीठ पड़ती हो। अव्य० पीछे की ओर।

पिछौड़ा—अव्य० [हिं० पीछा+औड़ा (प्रत्य०)] पीछे की ओर।

†पु० =पिछवाड़ा।

पिछौरा—पु० [स० पक्ष या पश्च+पट, प्रा० पच्छवड, हिं० पछेवड़ा] [स्त्री० अल्पा० पिछौरी] पुरुषों के ओढ़ने की चादर। मर्दाना दुपट्टा।

पिछौरी—स्त्री० [हिं० पिछौरा] १ ओढ़ने की छोटी चादर। २ स्त्रियों की ओढ़नी या चादर।

पिटंकाकी—स्त्री० =पिटकाकी।

पिटंकोकी—स्त्री० [स० पिट्√कु शब्द)+ख, मुम्, +कन्+ङीष्] इद्रायन नामक लता।

पिटत—स्त्री० [हिं० पीटना+अत (प्रत्य०)] १ पीटने की क्रिया या भाव। २ पीटे जाने की अवस्था या भाव। ३ पड़नेवाली मार।

पिटक—पु० [स०√पिट (इकट्ठा होना)+क्वुन्—अक] १ पिटारा। २ धान्यागार। कोठार। ३ छोटा फोड़ा। फुसी। ४ इद्र की पताका मे लगाया जानेवाला एक प्रकार का अलकरण। ५ ग्रथ का कोई खड या विभाग।

पिटका—स्त्री० [स० पिटक+टाप्] १ छोटा पिटारा। पिटारी। २. छोटा फोड़ा। फुसी।

पिटना—अ० [हिं० पीटना] १ पीटा जाना। २ प्रतियोगिता आदि मे हारना। जैसे—इस बाजी मे तो वह बुरा पिटा। ३ कुछ खेलों मे गोटी, मोहरे आदि का मारा जाना। जैसे—शतरज में घोड़ा या वजीर का पिटना। ४ मार खाना। ५ 'पीटना' के सभी अर्थों का अ० रूप। पु० वह उपकरण जिससे कोई चीज पीटी जाय। जैसे—कपड़े धोने का पिटना, छत पीटने का पिटना।

पिटपिट—स्त्री० [अनु०] थापी, पिटने आदि से बराबर आघात करते रहने पर होनेवाला शब्द।

पिटपिटाना—अ० [अनु०] १ बहुत दुखी और लाचार होकर यों ही रह जाना। २ बहुत कष्ट मे पड़कर छटपटाना।

पिटरिया†—स्त्री० =पिटारी।

पिटरी†—स्त्री० =पिटारी।

पिटवाँ†—वि० [हिं० पीटना] जो पीटकर बनाया या तैयार किया गया हो। जैसे—पिटवाँ पत्तर।

पिटवाना—स० [हिं० पीटना] १ ऐसा काम करना जिससे कोई या कुछ पीटा जाय। पीटने का काम किसी दूसरे से कराना। २ ऐसा उपाय करना जिससे कोई पीटा जाय या किसी पर मार पड़े। ३ मैथुन या सभोग करना। (बाजारू)

पिटाई—स्त्री० [हिं० पीटना] १ पीटने की क्रिया या भाव। जैसे—छत की पिटाई। २ पीटने पर मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी। ३ किसी पर अच्छी तरह पड़नेवाली मार। पिटत।

पिटाक—पु० [स०√पिट्+काक] पिटारा।

पिटाना—स० [हिं० पीटना] १ पिटवाना। २ ऐसा काम करना जिससे कोई अत्यत दुखी तथा विकल हो।

पिटापिट—स्त्री० [हिं० पीटना] बार बार पिटने, पीटने आदि की क्रिया या भाव। जैसे—वहाँ खूब पिटापिट मची थी।

पिटारा—पु० [स० पिटक] [स्त्री० अल्पा० पिटारी] बाँस, बेंत, मूँज आदि के नरम छिलकों से बना हुआ एक प्रकार का ढक्कनदार बड़ा पात्र।

पिटारी—स्त्री० [हिं० पिटारा का स्त्री० और अल्पा०] छोटा पिटारा। पद—पिटारी का खर्च (क) वह धन जो स्त्रियों को पान के खर्च के लिए दिया जाय। पानदान खर्च। (ख) व्यभिचार कराने पर दुश्चरित्रा स्त्री को मिलनेवाला थोड़ा धन।

पिटावना—स० [हिं० पीटना] किसी को किसी व्यक्ति के द्वारा मार खिलवाना।

पिट्टक—पु० [स०√पिट्+ण्वुल्—अक, पृषो० सिद्धि] दाँतों की जड़ों मे जमनेवाली मैल।

पिट्टस—स्त्री० [हिं० पिटना+स (प्रत्य०)] १ शोक या दुःख से छाती पीटने की क्रिया या भाव। २ पिटने की अवस्था या भाव। पिटत। क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।

पिट्टू—वि० [हिं० पीटना] १. जो बराबर मार खाता रहता हो। २. जो मार खाकर ही कोई काम करता या सीधे रास्ते पर आता हो।

पिट्ठी†—स्त्री० =पीठी।

पिट्ठू—पु० [हिं० पीठ+ऊ (प्रत्य०)] १ किसी की पीठ के साथ लगा

रहनेवाला अर्थात् पीछे चलनेवाला। पिछलगा। अनुयायी।२ छिपे-छिपे किसी के साथ रहकर उसकी सहायता करनेवाला। ३ कुछ विशिष्ट खेलो मे किसी खिलाड़ी का वह कल्पित साथी जिसकी पारी आने पर उक्त खिलाड़ी को अपनी पारी खेल चुकने के उपरांत, पुनः खेलने का अवसर मिलता है। ४ किसी पक्ष के खिलाडी का साथी।

पिठमिल्ला—पुं०[हिं० पीठ+मिलना]अंगरखे का पीठ की तरफ का भाग।

पिठर—पु०[स० √ पिठ् (क्लेश देना)+करन्]१. मोथा। मुस्तक। २. मथानी। ३ थाली। ४. एक तरह का घर। ५ एक अग्नि का नाम।

पिठरक—पु० [सं० पिठर+कन्]१ थाली। २. एक नाग। ३ कड़ाही।

पिठरक-कपाल—पु०[ष० त०] बरतन का टुकडा।

पिठर-पाक—पु० [ष० त०] भिन्न-भिन्न परमाणुओ के गुणो में तेज के सयोग से होनेवाला फेर-फार। जैसे घडे का पककर लाल होना।

पिठरिका—स्त्री० [स० पिठर+कन्+टाप, इत्व] १ बटलोई। २. हाँडी।

पिठरी—स्त्री०=पिठरिका।

पिठवन—स्त्री०[स० पृष्ठपर्णी] जमीन पर फैलनेवाला तथा दो-ढाई फुट ऊँचा एक प्रसिद्ध क्षुप् जिसके गोल पत्ते तथा बीज दवा के काम आते हैं। ये रक्त-अतिसार, तृषा और वमननाशक तथा वीर्यवर्द्धक होते हैं। पिठौनी। पिथिवन।

पिठो†—स्त्री०=पीठी।

पिठीनस—पु०[स०] एक प्राचीन ऋषि।

पिठौनी—स्त्री०=पिठवन (क्षुप और उसके बीज)।

पिठौरी—स्त्री० [हिं० पीठी+औरी (प्रत्य०)]१ पीठी की पकौड़ी। २ पीठी की बरी।

पिडक—पु०[स०√पीड् (कष्ट देना)+ण्वुल्, नि० सिद्धि] छोटा फोड़ा। फुसी।

पिडका—स्त्री०[स० पिडक+टाप्]=पिड़क।

पिड़काना—स०[स० पीडा] ऐसा काम करना जिससे कोई झुझलाता और दुखी होता हो।

पिड़की—स्त्री०[स० पिडक] छोटा फोडा। फुसी।
स्त्री०=पेंडुकी।

पिड़िया—स्त्री०[स० पिंड] चौरेठे को गूँधकर बनाया जानेवाला लोदा जो उबालकर खाया जाता है।

पिड़ी—स्त्री०[स० पिंड] १. पिंड। २ वृक्ष का तना। (राज०)

पिढ़ई†—स्त्री०[हिं० पीढ़ा+ई (प्रत्य०)]१. छोटा पीढ़ा या पाटा। २ काठ का वह टुकडा जिस पर कोई यंत्र रखा रहता हो।

पिढ़ी—स्त्री०=पीढ़ी।

पिण—अव्य० [?] भी। (डि०) उदा०—परवल पिण जीणि पदमणी परणे।—प्रिथीराज।

पिण्या—स्त्री०[स० पण् (स्तुति करना)+यत्, पृषो०, इत्व] मालकगनी।

पिण्याक—पु०[स०√पण्+अकन्, नि० सिद्ध] १. तिल या सरसो की खली। २ हींग। ३ शिलाजीत। ४. शिलारस। ५ केसर।

पितंबर†—पुं०=पीताम्बर।

पित-पापड़ा—पु०[स० पर्पट]गेहूँ की फसल मे होनेवाला छोटे तथा बारीक पत्तोंवाला एक तरह का पौधा जिसमे लाल अथवा नीले रंग के फूल लगते हैं। यह औषधि के काम मे आता है तथा पिपासानाशक माना जाता है। दमनपापड।

पितर—पु०[स० पितृ, पितर] किसी व्यक्ति की दृष्टि से उसके वे पूर्वज जो स्वर्ग सिधार गये हो। परलोकवासी पूर्वज। कर्मकाण्ड के अनुसार इनके नाम पर श्राद्ध, तर्पण, आदि कृत्य किये जाते हैं।

पितरपख—पु०=पितृपक्ष।

पितरपति—पु०[स० पितृपति] यमराज।

पितराई—स्त्री०=पितरायँध।

पितरायँध—स्त्री० [हिं० पीतल+गध] पीतल के बरतन मे किसी पदार्थ विशेषत किसी खट्टे पदार्थ के पडे रहने तथा विकारयुक्त होने पर निकलनेवाली गध जो अप्रिय होती है।

पितरिहा—वि०[हिं० पीतल+हा] १ पीतल-सबधी। पीतल का। २. पीतल का बना हुआ।
†पु० पीतल का घडा।

पितलाना—अ०[हिं० पीतल+आना (प्रत्य०)] किसी पदार्थ के पीतल के बरतन मे पडे रहने पर पीतल के कसाव से युक्त होना।

पित-ससुर—पु० दे० 'पितिया-ससुर'।

पिता (तृ)—पु०[स०√पा (रक्षा करना)+तृच्] सबध के विचार से वह पुरुष जिसने किसी को जन्म दिया और उसका पालन-पोषण किया हो। जनक। बाप।

पितामह—पुं०[स० पितृ+डामह] [स्त्री० पितामही] १. पिता का पिता। दादा। २. ब्रह्मा। ३. शिव। ४ भीष्म। ५ एक धर्म-शास्त्रकार ऋषि।

पितिजिया—पु०[?] महाराष्ट्र के कुछ प्रदेशो मे होनेवाला एक ऊँचा तथा छायादार वृक्ष जिसके पत्ते तथा बीज कफ तथा वातविनाशक और वीर्यवर्द्धक होते हैं। पितौजिया। जियापोता।

पितिया—पु०[स० पितृव्य] [स्त्री० पितियानी] बाप का भाई। चाचा।

पितियानी—स्त्री० [हिं० पितिया+नी (प्रत्य०)] चाचा की स्त्री। चाची।

पितिया-ससुर—पु०[हिं० पितिया+ससुर] १ किसी पुरुष की दृष्टि से चाचा। २ किसी स्त्री की दृष्टि से उसके पति का चाचा। चचिया ससुर।

पितियासास—स्त्री०[हिं० पितिया+सास] सबध के विचार से ससुर के भाई की पत्नी। चचिया सास।

पितु—पुं०=पिता।

पितृ—पु०[स०√पा (रक्षा करना)+तृच्]१. किसी व्यक्ति के बाप, दादा, परदादा आदि मृत पूर्वज। २. ऐसा मृत व्यक्ति जो प्रेतत्व से मुक्त हो चुका हो। ३ एक प्रकार के देवता जो सब जीवो के आदि पूर्वज माने गये हैं। ४ पिता।

पितृ-ऋण—पुं०[ष०त०] धर्म-शास्त्रो के अनुसार, मनुष्य के तीन ऋणो मे से एक जिसे लेकर वह जन्म ग्रहण करता है। कहा गया है कि पुत्र उत्पन्न करने से उस ऋण से मुक्ति होती है।

पितृक—वि०[स० पैतृक, पृषो० सिद्धि]१. पितृ-सबधी। पितरो का। पैतृक। २ पिता का दिया हुआ। पिता के द्वारा प्राप्त। पैतृक। ३

(उत्तराधिकार, व्यवहार आदि की प्रथा) जिसमे गृहपति या पिता का पक्ष प्रधान माना जाता है, गृहस्वामिनी या माता के पक्ष का कोई विचार नही होता। (पेट्रिआर्कल)

पितृ-कर्म (न्)—पु॰ [मध्य॰स॰] पितरो के उद्देश्य से किये जानेवाले श्राद्ध, तर्पण आदि कर्म।

पितृ-कल्प—पु॰[मध्य॰स॰] श्राद्धादि कर्म।

पितृ-कानन—पु॰[ष॰त॰] श्मशान। मरघट।

पितृ-कार्य—पु॰[मध्य॰स॰] =पितृ-कर्म।

पितृ-कुल—पु॰[ष॰ त॰] बाप-दादा, परदादा या उनके भाई, बधुओ आदि का कुल।

पितृ-कुल्या—स्त्री॰[मध्य॰स॰] एक तीर्थस्थान। (महाभारत)

पितृ-कृत्य—पु॰[मध्य॰स॰] श्राद्ध, तर्पण आदि कार्य जो पितरो के उद्देश्य से किये जाते हैं।

पितृ-गण—पु॰[ष॰ त॰]१ पितर। २ मरीचि आदि ऋषियो के पुत्र।

पितृ-गाथा—स्त्री॰[मध्य॰स॰] पितरो द्वारा पढे जानेवाले कुछ विशेष श्लोक या गाथाएँ।

पितृगामी (मिन्)—वि॰[स॰पितृ√गम्(जाना)+णिनि] पिता-सबधी।

पितृ-गृह—पु॰[ष॰त॰]१ बाप का घर। विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर। मायका। २ श्मशान।

पितृ-ग्रह—पु॰[ष॰त॰] स्कद आदि नौ बाल ग्रहो मे से एक।

पितृघात—पु॰[स॰ पितृ√हन् (हिंसा)+अण्,] [वि॰पितृघातक, पितृघाती] पिता की की जानेवाली हत्या।

पितृ-तर्पण—पु॰[ष॰त॰]१ पितरो के उद्देश्य से किया जानेवाला जल-दान। विशेष दे॰ तर्पण। २ तिल जिसमे पितरो का तर्पण किया जाता है। ३. गया नामक तीर्थ, जहाँ श्राद्ध करने से पितरो का प्रेतयोनि से मुक्त होना माना जाता है।

पितृता—स्त्री॰[स॰ पितृ+तल्+टाप्]=पितृत्व।

पितृ-तिथि—स्त्री॰[मध्य॰स॰] अमावस्या।

पितृतीर्थ—पु॰[मध्य॰स॰]१ गया नामक तीर्थ। २ मत्स्य पुराण के अनुसार गया, वाराणसी, प्रयाग, विमलेश्वर आदि २२२ तीर्थ। ३ अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग जिसमे से तर्पण का जल गिराया या छोडा जाता है।

पितृत्व—पु॰[स॰ पितृ+त्व] पिता होने का भाव।

पितृ-दान—पु॰[ष॰त॰] पितरो के उद्देश्य से किया जानेवाला दान।

पितृ-दाय—पु॰[स॰ ष॰ त॰] उत्तराधिकार मे पिता से मिलनेवाली सपत्ति। बपौती।

पितृ-दिन—पु॰[ष॰त॰] अमावस्या।

पितृ-देव—पु॰[ष॰त॰] पितरो के अधिष्ठाता देवता। अग्निष्वातादि पितरगण।

पितृ-देश—पु॰[ष॰त॰] किसी की दृष्टि से, उसके पितरो या पूर्वजो के रहने का देश। वह देश जिसमे कोई अपने पूर्वजो के समय से रहता आया हो। (फादरलैंड)

पितृ-दैवत—वि॰ [स॰ पितृदेवता+अण्] पितृदेवता-सबधी। पितरो की प्रसन्नता के लिए किया जानेवाला (यज्ञ आदि)।

पु॰ मघा नक्षत्र।

पितृदैवत्य—वि॰[स॰ पितृदेवता+ष्यञ्] पितृदैवत।

पु॰(कुछ विशिष्ट मासो की) अष्टमी के दिन किया जानेवाला एक पितृ-कृत्य।

पितृ-नाथ—पु॰[ष॰त॰]१ यमराज। २ अर्यमा नाम के पितर जो सब पितरो मे श्रेष्ठ हैं।

पितृ-पक्ष—पु॰[ष॰त॰]१. कुआर या आश्विन का कृष्णपक्ष। २ पितृकुल।

पितृ-पति—पु॰[ष॰त॰] यम।

पितृ-पद—पु॰[ष॰त॰] १. पितरो का देश या लोक। २. पितृ या पितर होने का पद या स्थिति।

पितृ-पिता (तृ)—पु॰[ष॰त॰] पितामह।

पितृपैतामह—वि॰[स॰ पितृपितामह+अण्] जिसका सबध पिता-पितामह आदि से हो। बाप-दादो का।

पितृ-प्रसू—स्त्री॰[ष॰त॰]१ पिता की माता। दादी। २ सायकाल। सध्या।

पितृ-प्राप्त—वि॰[प॰ त॰] जो पिता से मिला हो।

पितृ-प्रिय—पु॰[ष॰ त॰]१ भँगरा। भँगरैया। भृगराज। २ अगस्त का पेड।

पितृ-बंधु—पु॰[ष॰त॰] वह व्यक्ति जिससे सबध पिता-पितामह आदि के विचार से हो। 'मातृबधु' का विपर्याय।

पितृ-भक्त—वि॰[ष॰त॰] [भाव॰ पितृभक्ति] अपने पिता की सेवा करने तथा उनकी आज्ञा को शिरोधार्य करनेवाला।

पितृ-भक्ति—स्त्री॰[ष॰त॰] पितृभक्त होने की अवस्था या भाव। पिता के प्रति होनेवाली भक्ति।

पितृ-भोजन—पु॰[ष॰त॰]१ पितरो को अर्पित किया जानेवाला भोजन। २ उडद। माष।

पितृ-मंदिर—पु॰[ष॰त॰] १. पिता का घर। पितृ-गृह। २ श्मशान या मरघट जो पितरो का वास-स्थान माना गया है।

पितृ-मेध—पु॰ [मध्य॰स॰] वैदिक काल का एक अत्येष्टि कर्म जिसमे अग्निदान और दस पिंडदान आदि कृत्य होते थे। (श्राद्ध से भिन्न)

पितृ-यज्ञ—पु॰[मध्य॰स॰] =पितृ-तर्पण।

पितृ-याण—पु॰[ष॰त॰]१. मृत्यु के अनतर जीव के पर-लोक जाने का वह मार्ग जिसमे वह चद्रमा मे पहुँचता है। कहते हैं कि इस मार्ग मे जानेवाले मृत व्यक्ति की आत्मा को निश्चित काल तक स्वर्ग आदि मे सुख भोगकर फिर ससार मे आना पडता है। २. वह मार्ग जिस पर पितर चलते है और अपने लिए नियत लोको मे जाते हैं।

पितृ-राज—पु॰[ष॰त॰] यम।

पितृ-रिष्ट—पु॰[ब॰ स॰]फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जिसमे जन्म लेनेवाला बालक पिता के लिए घातक समझा जाता है।

पितृरूप—पु॰[स॰ पितृ+रूपम्] शिव।

पितृ-लोक—पु॰[ष॰त॰] वह लोक जिसमे पितरो का निवास माना जाता है।

पितृ-वंश—पु॰[ष॰त॰] पिता का कुल।

पितृ-वन—पु॰[ष॰त॰] मरघट। श्मशान।

पितृवनेचर—पु॰ [स॰ अलुक् स॰]१. पितृ-वन अर्थात् श्मशान में बसनेवाले जीव। भूत-प्रेत। २ शिव।

पितृ-वसति—स्त्री०[ष०त०] श्मशान।

पितृ-वित्त—पु०[ष० त०] बाप-दादों द्वारा छोड़ी हुई संपत्ति। पैतृक या मौरूसी जायदाद।

पितृ-वेश्म (न्)—पु०[ष०त०] स्त्री के पिता का घर। नैहर। मायका।

पितृव्य—पु०[सं० पितृ+व्यत्] १. पिता के तुल्य आदरणीय व्यक्ति। २. चाचा।

पितृ-व्रत—पुं०[मध्य० स०] पितृ-कर्म।

वि० पितरो की पूजा करनेवाला।

पितृषद्—पु०[सं० पितृ√ सद्+क्विप्]=पितृ-गृह। (स्त्रियो के लिए)

पितृषदन—पुं०[सं० ष०त०] कुश।

पितृष्वसा (सृ)—स्त्री० [सं० ष०त०] पिता की बहन। बूआ। फूफी।

पितृष्वस्रीय—पु०[सं० पितृष्वसृ+छ—ईय] बूआ का पुत्र। फुफेरा भाई।

पितृ-सद्म (न्)—पु०[ष०त०] स्त्री के पिता का घर। मायका।

पितृसू—स्त्री० [सं० पितृ√ सू (प्रसव करना)+क्विप्] १ दादी। २ सायंकाल।

पितृ-स्थान—पुं०[ष०त०] पिता का स्थान या पद।

पितृस्थानीय—वि०[सं० पितृस्थान+छ—ईय] १. पिता के स्थान पर होनेवाला या उसका समकक्ष। २ अभिभावक।

पितृ-हंता (तृ)—वि०[ष०त०]=पितृहा।

पितृहा (हन्)—वि०[सं० पितृ √ (हन् (हिंसा)+क्विप्] जिसने पिता की हत्या की हो।

पितृहू—पु०[सं० पितृ√ ह्वे (बुलाना)+क्विप्] दाहिना कान।

पितृहूय—पु०[सं० पितृ √ ह्वे+क्यप्?] श्राद्ध आदि कार्यों के समय पितरो का आह्वान करना। पितरो को बुलाना।

पितौंजिया—पु०=पितिजिया।

पित्त—पु०[सं० अपि√ दो (काटना)+क्त, तादेश, अकार-लोप] १ वैद्यक के अनुसार शरीर के तीन मुख्य तत्त्वों मे से एक (अन्य दो वात और कफ है) जो नीलापन लिये तरल होता है और यकृत मे बनता है। (बाइल) २ उक्त का प्रमुख गुण, ताप या शक्ति जो भोजन पचाती है। मुहा०—**पित्त उबलना**=दे० 'पित्ता' के अंतर्गत 'पित्ता खौलना'। **पित्त उभरना**=पित्त का प्रकोप या विकार उत्पन्न होना। (**किसी का**) **पित्त गरम होना**=स्वभावत क्रोधी होना। मिजाज में गरमी होना। जैसे—अभी तुम जवान हो इसी से तुम्हारा पित्त इतना गरम है। **पित्त डालना**=कै करना।

पित्त-कर—वि०[ष०त०] पित्त को बढ़ानेवाला (पदार्थ)।

पित्त-कास—पु०[मध्य०स०] पित्त बिगड़ने के फलस्वरूप होनेवाली एक तरह की खाँसी।

पित्त-कोष—पु०[ष०त०] पित्ताशय। (दे०)

पित्त-क्षोभ—पुं०[ष०त०] पित्त के बिगड़ने से होनेवाले विकार।

पित्तगदी (दिन्)—वि०[सं० पित्त-गद, ष०त०, +इनि] जिसका पित्त बिगड़ा हुआ हो।

पित्त-गुल्म—पुं०[स०] पित्त की अधिकता के कारण होनेवाला पेट फूलने का एक रोग।

पित्तघ्न—वि०[सं० पित्त√ हन्+टक्] पित्त का नाश अथवा उसके विकारो को दूर करनेवाला।

पुं० घी। घृत।

पित्तघ्नी—स्त्री० [सं० पित्तघ्न+ङीष्] गुरुच।

पित्तज—वि०[सं०पित्त√जन् (उत्पत्ति)+ड] पित्त अथवा उसके प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला। जैसे—पित्तज ज्वर, पित्तज शोथ आदि।

पित्त-ज्वर—पुं०[मध्य०स०] पित्त बिगडने से होनेवाला ज्वर।

पित्तदाह—पुं० [सं०] पित्त-ज्वर। (दे०)

पित्तद्रावी (विन्)—वि० [सं० पित्त√द्रु (गति)+ णिच्+णिनि] पित्त को द्रवित करने अर्थात् पिघलानेवाला।

पु० मीठा नींबू

पित्त-धरा—स्त्री०[ष०त०] पित्त को धारण करनेवाली एक कला या झिल्ली। ग्रहणी।

पित्त-नाड़ी—स्त्री० [ष० त०] एक प्रकार का नाड़ी-व्रण जो पित्त के प्रकोप से होता है। (वैद्यक)

पित्त-नाशक—वि०[ष०त०] १ पित्त का नाश करनेवाला। २ पित्त का प्रकोप दूर करनेवाला।

पित्त-निर्बहण—वि०[ष०त०] =पित्त-नाशक।

पित्त-पथरी—स्त्री०[सं० पित्त+हिं० पथरी] एक प्रकार का रोग जिसमें पित्ताशय अथवा पित्तवाहक नालियों मे पित्त की कंकडियाँ बन जाती हैं। यद्यपि ये पित्ताशय में ही बनती है, पर यकृत और पित्त-प्रणालियो मे भी पाई जाती हैं।

पित्त-पांडु—पु०[ब०स०] पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाला एक रोग जिसमें रोगी के मूत्र, विष्ठा, और नेत्र के सिवा सारा शरीर पीला हो जाता है।

पित्त-पापड़ा—पु०=पितपापड़ा (दे०)।

पित्त-प्रकृति—वि०[ब०स०] जिसके शरीर मे वात और कफ की अपेक्षा पित्त की प्रधानता या अधिकता हो।

पित्त-प्रकोप—पु०[ष०त०] पित्त के अधिक बढ़ जाने अथवा उसमे विकार होने के फलस्वरूप उसका उग्र रूप धारण करना (जिसके फलस्वरूप अनेक रोग होते है)।

पित्त-प्रकोपी (पिन्)—वि०[सं० पित्त-प्रकोप, ष० त०, +इनि] पित्त को बढ़ाने या कुपित करनेवाला (द्रव्य)। जिसे खाने से पित्त की वृद्धि हो।

पित्त-भेषज—पु०[ष० त०] मसूर की दाल।

पित्त-रंजक—पु०[स०]=पित्तारुण।

पित्त-रक्त—पु०[मध्य० स०] रक्तपित्त नामक रोग।

पित्तल—वि०[सं० पित्त+ लच्] १ जिसमें पित्त की बहुलता हो। २. जिससे पित्त का प्रकोप या दोष बढे। पित्तकारी (द्रव्य)।

पु०१. पीतल। २ हरताल। ३. भोजपत्र।

पित्तला—स्त्री०[सं० पित्तल+टाप्] १. जल-पीपल। २ वैद्यक के अनुसार योनि का एक रोग जो दूषित पित्त के कारण होता है। इसके कारण योनि मे अत्यन्त दाह, पाक तथा शरीर मे ज्वर होता है।

पित्त-वर्ग—पु०[ष०त०] मछली, गाय, घोड़े, रुरु और मोर के पित्तो का समूह। पंचविधपित्त।

पित्त-वल्लभा—स्त्री० [ष०त०] काला अतीस।

पित्त-वायु—स्त्री०[मध्य०स०] पित्त के प्रकोप से पेट में उत्पन्न होनेवाली वायु।

पित्त-विदग्ध—वि० [तृ० त०] जिसका पित्त कुपित हो।

पित्त-विदग्ध-दृष्टि—पु० [ब० स०] आँख का एक रोग जो दूषित पित्त के दृष्टि-स्थान मे आ जाने के कारण होता है। इसके कारण रोगी दिन में नही देख सकता केवल रात मे देखता है।

पित्त-विसर्प—पु० [मध्य०स०] विसर्प रोग का एक भेद।

पित्त-व्याधि—स्त्री० [मध्य०स०] पित्त के कुपित होने से होनेवाला रोग।

पित्त-शमन—वि० [ष० त०] पित्त का प्रकोप दूर करनेवाला।

पित्त-शूल—पु० [मध्य०स०] पित्त के प्रकोप के कारण होनेवाला शूल।

पित्त-शोथ—पु० [मध्य०स०] पित्त के प्रकोप के कारण शरीर मे होनेवाला शोथ या सूजन।

पित्त-श्लेष्म ज्वर—पु० [स० पित्त-श्लेष्मन्, द्व० स०, पित्तश्लेष्म-ज्वर, मध्य०स०] पित्त और कफ दोनो के प्रकोप से होनेवाला एक तरह का ज्वर।

पित्त-श्लेष्मोल्बण—पु० [स० पित्तश्लेष्म-उल्वण, मध्य०स०] एक प्रकार का सन्निपात ज्वर जिसमे पतला मल निकलता है और सारे शरीर मे पीडा होती है।

पित्त-संशमन—पु० [ष०त०] आयुर्वेदोक्त ओषधियो का एक वर्ग। इस वर्ग की ओषधियाँ प्रकुपित पित्त को शात करनेवाली मानी जाती हैं। चन्दन, लालचदन, खस, सतावर, नीलकमल, केला, कमलगट्टा आदि इस वर्ग मे माने गये है।

पित्त-स्थान—पु० [ष० त०] १. पित्ताशय। २ शरीर के अदर के वे पाँच स्थान जिनमे वैद्यक के अनुसार पाचक, रजक आदि ५ प्रकार के पित्त रहते है। ये स्थान आमाशय-पक्वाशय, यकृत, प्लीहा, हृदय, दोनो नेत्र और त्वचा है।

पित्त-स्यंदन—पु० [मध्य०स०] पित्त के विकार से उत्पन्न एक नेत्र रोग।

पित्त-स्राव—पु० [ष०त०] सुश्रुत के अनुसार, एक प्रकार का नेत्ररोग जिसमे आँखो से पीला (या नीला) और गरम पानी बहता है।

पित्त-हर—पु० [ष०त०] खस। उशीर।

पित्तहा (हन्)—पु० [स० पित्त√हन्+क्विप्] पित्त पापडा।
वि० पित्त का प्रकोप शात करनेवाला।

पित्तांड—पु० [पित्त-अड, ब० स०] घोडो के अडकोश मे होनेवाला एक रोग।

पित्ता—पु० [स० पित्त] १ वह थैली जिसमे पित्त रहता है। पित्ताशय। (देखें) २ शरीर के अदर का पित्त, जिसका मनुष्य के मनोभावो पर विशेष प्रभाव पडता है।

पद—पित्तामार काम=ऐसा कठिन काम जो बहुत देर मे पूरा होता हो और जिसमे बहुत अधिक तल्लीनता अथवा सहिष्णुता की आवश्यकता हो।

मुहा०—पित्ता उबलना या खौलना=किसी कारणवश मन मे बहुत अधिक क्रोध उत्पन्न होना। **पित्ता निकलना**=बहुत अधिक कष्ट, परिश्रम आदि के कारण शरीर की दुर्दशा होना। **पित्ता पानी करना**=किसी काम को पूरा करने के लिए बहुत अधिक परिश्रम करना। **पित्ता मरना**=शरीर मे उत्साह, उमग आदि का बहुत-कुछ अत या अभाव हो जाना। **पित्ता मारना**=(क) मन के दूषित भाव या बुरी बातें उमडने न देना। (ख) मन के उत्साह, उमग आदि को दबा या रोककर रखना। जैसे—पित्ता मारकर काम करना सीखो।
३ हिम्मत। साहस। हौसला। जैसे—उसका क्या पित्ता है जो तुम्हारे सामने ठहरे। ४ कुछ पशुओ के शरीर से निकला हुआ पित्त नामक पदार्थ जिसका उपयोग औषध के रूप मे होता है। जैसे—बैल का पित्ता।

पित्तातिसार—पु० [पित्त-अतिसार, मध्य० स०] वह अतिसार रोग जो पित्त के प्रकोप या दोष से होता है।

पित्ताभिष्यद—पु० [पित्त-अभिष्यद, मध्य०स०] पित्त कोप से आँख आने का रोग।

पित्तारि—पु० [पित्त-अरि, ष० त०] १ पित्त पापडा। २. लाख। ३ पीला चदन।

पित्तारुण—पु० [स० पित्त-अरुण] आधुनिक विज्ञान मे, शरीर के रक्त-रस मे रहनेवाला एक रगीन तत्त्व जिसकी अधिकता से आदमियो को कामला या पीलिया नामक रोग हो जाता है। (बिली रुबिन)

पित्ताशय—पु० [पित्त-आशय, ष०त०] शरीर के अदर यकृत के पीछे की ओर रहनेवाली थैली के आकार का वह अग जिसमे पित्त रहता है। (गालब्लैडर)

पित्तिका—स्त्री० [स० पित्त+कन्+टाप्, इत्व] एक प्रकार की शतपदी (ओषधि)।

पित्ती—स्त्री० [हिं० पित्त+ई] १ एक रोग जो पित्त के प्रकोप से रक्त मे बहुत अधिक उष्णता होने के कारण होता है तथा जिसमे शरीर के विभिन्न अगो मे छोटे-छोटे ददोरे निकल आते है और जिन्हे खुजलाते-खुजलाते रोगी विकल हो जाता है।
क्रि० प्र०—उछलना।
२. वे लाल महीन दाने जो गरमी के दिनो मे पसीना मरने से शरीर पर निकल आते है। अमौरी।
क्रि० प्र०—निकलना।
पु० [स० पितृव्य] पिता का भाई। चाचा।

पित्तोत्क्लिष्ट—पु० [पित्त-उत्क्लिष्ट, ब०स०] आँख का एक रोग जिसमें पलको मे दाह, क्लेद और पीडा होती है तथा ज्योति कम हो जाती है। (वैद्यक)

पित्तोदर—पु० [पित्त-उदर, मध्य०स०] पित्त-गुल्म। (देखें)

पित्तोन्माद—पु० [पित्त-उमाद, मध्य०स०] [वि० पित्तोन्मादिक] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का उन्माद, रोग जिसमे साधारणतः बिना किसी कारण के रोगी बहुत ही खिन्न, चिन्तित और दुःखी रहता है और जो पित्ताशय के ठीक काम न करने से उत्पन्न होता है। (हाइपोकान्ड्रिया)

पित्तोपहत—वि० [पित्त-उपहत, तृ० त०] जिसे पित्त का प्रकोप हुआ हो।

पित्तोल्वण सन्निपात—पु० [पित्त-उल्वण, तृ० त०, पित्तोल्वण—सन्निपात, कर्म० स०] एक प्रकारका सन्निपातिक ज्वर। भ्रम, मूर्छा, मुँह और शरीर मे लाल दाने निकलना आदि इसके लक्षण हैं। (वैद्यक)

पित्र्य—वि० [स० पितृ+यत्] पिता-सबधी।
पु० १. बडा भाई। २ पितृतीर्थ। ३ तर्जनी और अँगूठे का अंतिम भाग। ४. शहद। ५ उडद।

पिऋया—स्त्री०[सं० पित्र्य+टाप्]१. मघा नक्षत्र। २ पूर्णिमा। पूर्णमासी। ३. अमावस्या। अमावस।

पिथ†—पु०=पृथ्वीराज।

पिथौरा†—पु०=पृथ्वीराज (दिल्ली के अंतिम हिन्दू सम्राट्)।

पिदकी†—स्त्री०=पिद्दी।

पिदारा*—पु०=पिद्दा।

पिद्दा—पु०[हिं० पिद्दी]१. पिद्दी का नर। विशेष दे० 'पिद्दी'। २ गुलेले की तांत मे लगी हुई निवाड आदि की वह गद्दी जिस पर फेंकने के समय गोली रखते हैं। फटकना।

पिद्दी—स्त्री०[हिं० पिद्दा]१ बया की तरह की एक सुन्दर छोटी चिड़िया जो अनेक रगो की होती है। इसे 'फुदकी' भी कहते हैं। २. अत्यन्त तुच्छ या नगण्य जीव।

पिधना†—स०[सं० परिधारण] शरीर पर धारण करना, पहनना। उदा०—पीत बसन हे जुवति पिधिलेह।—विद्यापति।

पिधान—पु०[सं० अपि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन, अकार-लोप] १. आच्छादन। आवरण। २. पर्दा। गिलाफ। ३. ढक्कन। ४ तलवार का कोष। म्यान। ५ किवाडा। दरवाजा।

पिधानक—पु०[सं० पिधान+कन्]१. ढक्कन। २. कोष। म्यान।

पिधायक—वि०[सं० अपि√धा+ण्वुल्—अक, अकार-लोप] १ ढकनेवाला। २ छिपानेवाला।

पिन—स्त्री०[अं०] धातु की तरह की पतली, नुकीली कील जिससे कागज नत्थी किये जाते हैं। आलपीन।

पिनक—स्त्री०[हिं० पिनकना]१ पिनकने की क्रिया या भाव। २ अफीमची की वह अवस्था जिसमे वह नशे की अधिकता के कारण सिर झुकाकर बैठे रहने की दशा मे बेसुध या सोया हुआ-सा रहता है।

क्रि० प्र०—लेना।

पिनकना—अ० [हिं० पीनक] १ अफीमची का नशे की हालत मे रह-रहकर ऊँघते हुए आगे की ओर झुकना। पीनक लेना। २ अधिक नीद आने के कारण सिर का रह-रहकर झुक पडना।

पिनकी—पु०[हिं० पीनक] वह जो अफीमचियो की तरह बैठे-बैठे सोता हो और नीचे की ओर सिर रह-रहकर झुकाता हो।

पिनद्ध—भू० कृ० [सं० अपि√नह् (बाधना)+क्त, अकार-लोप]१ कसा या बाँधा हुआ। २. पहना या धारण किया हुआ। ३ छाया, ढका या लपेटा हुआ।

पिनपिन—स्त्री०[अनु०]१. बच्चों के रह-रहकर रोने पर होनेवाला अनुनासिक और अस्पष्ट शब्द। २. रोगी या दुबले पतले बच्चे के रोने का शब्द।

क्रि० प्र०—करना।—लगाना।

पिनपिनहाँ—वि०[हिं० पिनपिन+हा (प्रत्य०)]१. पिनपिन करनेवाला (बच्चा)। जो हर समय रोया करे। २. प्राय. रोगी रहनेवाला दुबला-पतला (बच्चा)।

पिनपिनाना—अ०[हिं० पिनपिन]१. रोते समय नाक से पिनपिन का-सा स्वर निकालना। २. धीरे-धीरे, रुक-रुककर या हिचकियाँ लेते हुए रोना।

पिनपिनाहट—स्त्री०[हिं० पिनपिनाना] पिनपिन करने की क्रिया, भाव या शब्द।

पिनसन†—स्त्री०=पेंशन।

पिनाक—पुं०[सं०√ पा (रक्षा करना)+आकन्, नुट्, ह्रस्व] १. शिव का वह धनुष जो श्रीरामचंद्र ने सीता स्वयंवर मे तोडा था। अजगव। २. धनुष। ३. त्रिशूल। ४ नीला अभ्रक।

पिनाक-गोप्ता (प्तृ)—पु०[ष०त०] शिव।

पिनाक-धृत्—पु० [सं० पिनाक√धृ (धारण करना)+क्विप्] शिव।

पिनाक-पाणि—पु०[ब०स०] शिव।

पिनाक-हस्त—पु०[ब०स०] शिव।

पिनाकी (किन्)—पु०[सं० पिनाक+इनि]१ पिनाक धारण करनेवाले, महादेव। शिव। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमे बजाने के लिए तार लगा रहता था।

पिनस†—स्त्री०=पीनस (रोग)।

पिन्ना—वि०[हिं० पिनपिनाना] प्राय. पिनपिन करने अर्थात् रोता रहनेवाला।

पु०[हिं० पीजना] धुनिया।

पु०[हिं० पिन्नी का पु०] बडी पिन्नी।

पिन्नी—स्त्री०[सं० पिंडी]१ एक प्रकार का लड्डू जो आटे आदि मे कई तरह के मसाले और चीनी या गुड मिलाकर बनाया जाता है। २. सूत, धागे आदि को लपेटकर गोलाकार बनाया हुआ छोटा पिंड। जैसे—डोर या नग की पिन्नी।

पिन्यास—पु०[सं० अपि-न्यास, ब०स०, अकार-लोप] हींग।

पिन्हाना†—स०=पहनाना।

पिपर†—पु०=पीपल।

पिपरमिंट—पु०[अं० पेपरमिंट]१. पुदीने की जाति का परन्तु उससे भिन्न एक प्रकार का पौधा जो यूरोप और अमेरिका मे होता है। इसकी पत्तियो मे एक विशेष प्रकार की गध और ठढक होती है। २ उक्त पत्तियो का निकाला हुआ सत्त या सार भाग जो छोटे सफेद रवे के रूप मे होता और पाचक माना जाता है।

पिपरामूल—पुं०[हिं० पीपल+सं० मूल] पीपल की जड।

पिपराही—पु० [हिं० पिपर+आही (प्रत्य०)] पीपल का जंगल या वन।

पिपरिहा†—पु०[पिपरहा (स्थान)] राजपूतों की एक शाखा या अल्ल।

पिपली—स्त्री० [देश०] नैपाल, दार्जिलिंग आदि पहाडी इलाको मे होनेवाला एक तरह का वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती कामो मे आती है।

पिपाही†—स्त्री०= पिपीली।

पिपास—स्त्री०=पिपासा (प्यास)।

पिपासा—स्त्री०[सं० √ पा (पीना)+सन्+अ—टाप] १. पानी या और कोई तरल पदार्थ पीने की इच्छा। तृष्णा। तृषा। प्यास। २ कोई चीज पाने की इच्छा या लोभ।

पिपासित—वि० [सं० पिपासा+इतच्] जिसे प्यास लगी हो। प्यासा।

पिपासी(सिन्)—वि०[सं० पिपासा+इनि] प्यासा।

पिपासु—वि०[सं०√ पा+सन्+उ]१.जिसे पिपासा या प्यास लगी हो।

तृषित। प्यासा। २ पीने का इच्छुक। ३ जिसके मन में किसी प्रकार की उग्र कामना या लोभ हो। जैसे—रक्तपिपासु।

पिपियाना—अ०[हिं० पीप=मवाद] फोड़े आदि मे पीप पैदा होना। स० फोड़े आदि में मवाद उत्पन्न करना। फोड़ा पकाना।

पपिली—स्त्री०=पिपीली।

पिपीतकी—स्त्री०[सं० पिपीतक+अच्+ङीष्] वैशाख शुक्ल द्वादशी जो व्रत का दिन माना गया है। पहले-पहल कहते हैं कि पिपीतक नाम के एक ब्राह्मण ने किया था। इसी से इसका यह नाम पड़ा है।

पिपीलक—पु०[स० अपि√पील् (रोकना)+ण्वुल्—अक, अकार-लोप] [स्त्री० अल्पा० पिपीलिका] १ बड़ा चीटा। २. एक तरह का सोना।

पिपीलिक—पु०=पिपीलक।

पिपीलिका—स्त्री० [स० पिपीलक+टाप्, इत्व] १ च्यूँटी या चीटी नाम का छोटा कीड़ा। २ च्यूँटियो की तरह एक के पीछे एक चलने की प्रवृत्ति।

पिपीलिका भक्षी (क्षिन्)—पु०[स० पिपीलिका√भक्ष् (खाना)+णिनि] दक्षिण अफ्रीका का एक जतु जिसका बहुत लबा थूथन और बहुत बड़ी जीभ होती है। इसे दाँत नही होते यह अपने पजो से चीटियो के बिल खोदता है और उन्हे खाता है।

पिपीलिका-मार्ग—पु०[ष०त०] योग की साधना मे दो मार्गों मे से एक जिसके द्वारा साधक क्रमशः धीरे-धीरे आगे बढ़ता और षट् चक्रो को बेधता हुआ अपने प्राण ब्रह्माण्ड तक पहुँचाता है। इसकी तुलना म दूसरा अर्थात् विहगम मार्ग (देखें) श्रेष्ठ समझा जाता है।

पिपीलिकोद्वाप—पु०[पिपीलिका-उद्वाप, ष०त०] वल्मीक।

पिपीली—स्त्री०[स० अपि√पील्+अच्+ङीप् अलोप] चीटी। च्यूँटी।

पिप्पटा—स्त्री०[स०]१ पुरानी चाल की एक तरह की मिठाई। २ चीनी।

पिप्पल—पु०[स०√पा+अलच्, पृषो० सिद्धि] १ पीपल का पेड़। अश्वत्थ। २ एक प्रकार का पक्षी। ३ रेवती से उत्पन्न मित्र का एक पुत्र। (भागवत) ४ नगा आदमी। ५ जल। पानी। ६ वस्त्र-खड। कपड़े का टुकडा। ७ अगे आदि की बाँह या आस्तीन।

पिप्पलक—पु०[स० पिप्पल+कन्] स्तनमुख।

पिप्पलयांग—पु० [स०] चीन और जापान मे होनेवाला एक प्रकार का पौधा जो अब भारतवर्ष मे भी गढवाल, कुमाऊँ और काँगडे की पहाड़ियो मे पाया जाता है। इसके फलो के बीज के ऊपर चरबी की तरह का चिकना पदार्थ होता है जिसे चीनी मोम कहते हैं। मोमचीना।

पिप्पला—स्त्री०[स०] एक प्राचीन नदी।

पिप्पलाद—पु० [स० पिप्पल√अद् (खाना)+अण्] पुराणानुसार एक ऋषि जो अथर्ववेद की एक शाखा के प्रवर्तक माने गये हैं।

पिप्पलाशन—वि०[पिप्पल-अशन, ब०स०] जो पीपल का फल या गूदा खाता हो।

पिप्पलि—स्त्री०[स० पिप्पल+इन्] पीपल नामक लता और उसकी कली जो दवा के काम आती है।

पिप्पली—स्त्री०[स० पिप्पलि+ङीष्] पीपल (लता)।

पिप्पली-खड—पु० [ष०त०] वैद्यक के अनुसार एक औषध जो पीपल के चूर्ण, घी, शतमूली के रस, चीनी आदि को दूध मे पकाकर बनाई जाती है।

पिप्पलीमूल—पु०[ष०त०] पीपल की जड़। पिपरामूल।

पिप्पल्यादिगण—पु०[स० पिप्पली-आदि, ब०स०, पिप्पल्यादि-गण, ष०त०] सुश्रुत के अनुसार ओषधियो का एक वर्ग जिसके अतर्गत पिप्पली, चीता, अदरख, मिर्च, इलायची, अजवायन, इन्द्रजव, जीरा, सरसो, बकायन, हीग, भारंगी, अतिविषा, वच, विडग और कुटकी हैं।

पिप्पिका—स्त्री०[स०] दाँतो की मैल।

पिप्पीक—पु०[सं०] एक प्रकार का पक्षी।

पिप्लु—पु०[स० अपि√प्लु (गति)+डु, अकार-लोप] १. लसा। २. तिल।

पिय—पु०[स० प्रिय] १. स्त्री की दृष्टि से वह व्यक्ति जिससे वह प्रेम करती हो। प्रियतम। २ पति।

पियर†—वि०[भाव० पियरई] =पियरा (पीला)।

पियरई†—स्त्री०[हिं० पियर=पीला] पीलापन।

पियरवा†—पु०=प्यारा।

†वि० =पीला।

पियरा†—वि०[स्त्री० पियरी]=पीला।

पियराई†—स्त्री०=पियरई (पीलापन)।

पियराना—अ० [हिं० पियरा] १ पीला पडना। २ पीले रग का होना।

पियरी†—स्त्री० [हिं० पियरा] १ पीलापन। २. पीली रगी हुई वह धोती जो प्राय देवियो, नदियो आदि को चढ़ाई जाती है। उदा०—कोउ थाननि के थान तानि पियरी पहिरावत।—रत्ना०। ३. उक्त प्रकार की वह धोती जो वर और वधू को विवाह के समय पहनाई जाती है। ४ एक प्रकार की चिड़िया।

पियरोला—पु०[हिं० पीयर] मैना से कुछ छोटी तथा पीले रग की मधुर स्वरवाली एक चिड़िया।

पियली—स्त्री०[हिं० प्याली] नारियल की खोपरी का वह टुकड़ा जिसे बढ़ई आदि बरमे के ऊपरी सिरे के काटे पर इसलिए रख लेते हैं कि छेद करने के लिए बरमा सहज मे घूम सके।

पियल्ला—पु०[हिं० पीना] दूध पीनेवाला बच्चा।

पु० =पियरोला।

पियवास†—पु०=पियाबाँसा (कटसरैया)।

पिया†—पु०=पिय।

पियाज†—=प्याज।

पियाजी†—वि०=प्याजी।

पियादा†—पु०=प्यादा।

पियाना†—स०=पिलाना। (पूरब)

पियानो—पु०[अं०] हारमोनियम की तरह का एक प्रकार का बड़ा अंग-रेजी बाजा जो मेज के आकार का होता है।

पियाबाँसा—पु० [हिं० पिय+बाँस] कटसरैया। कुरबक।

पियामन—पुं०[?] राजजामुन। (वृक्ष)

पियार—पु०[स० पियाल] मझोले आकार का एक पेड़ जो देखने मे महुए की तरह का होता है। इसका फल फालसे के बराबर और गोल होता

है। बीज की गिरी बादाम और पिस्ते की तरह मीठी होती है और चिरौंजी कहलाती है।
वि० =प्यारा।
पुं०=प्यार।

पियारा†—वि०, पुं०=प्यारा।

पियाल—पु०[स०√पी (पीना)+कालन्, इयङ्] १. चिरौंजी का पेड़। पयार। २. उक्त पेड़ का बीज।
पु०[स० पाताल]१. पाताल। २ गहराई। उदा०—पैसि पियाल काली नाग नाथ्यो।—मीराँ।
†पुं० =पयाल।

पियाला†—पु०=प्याला।

पियाव-बड़ा—पुं०[पियाव ?+बड़ा] एक तरह की मिठाई।

पियास†—स्त्री०=प्यास।

पियासा†—वि०=प्यासा।

पिया-साल—पु०[स० पीतसाल,प्रियसालक] बहेड़े या अर्जुन की जाति का एक प्रकार का बड़ा पेड़ जो भारतवर्ष के जंगलो मे प्राय. सब जगह होता है। इसके पत्ते, छाल तथा लकड़ी कई तरह के कामो में आती है।

पियासी*—स्त्री०[?] एक प्रकार की मछली।

पियूख(ष)†—पु०=पियूष (अमृत)।

पियौसार†—स्त्री०[पिय+शाला] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके पति का घर अर्थात् ससुराल।

पिरकी†—स्त्री०[स० पिडक, पिडका] छोटा फोडा। फुंसी। (पूरब)

पिरता—पु०[स०पट्ट] काठ या पत्थर का वह टुकड़ा जिस पर रूई की पूनी रखकर दबाते हैं।

पिरथी†—स्त्री०=पृथ्वी।

पिरथीनाथ†—पु०=पृथ्वीनाथ।

पिरन†—पु०[देश०] चौपायो का लगड़ापन।

पिराई†—स्त्री०=पियरई।

पिराक—पु० [स० पिष्टक, प्रा० पिट्ठक; पिड़क] [स्त्री० अल्पा० पिराकडी] गुझिया या गोझा नामक पकवान, जो मैदे की पतली लोई के अदर सूजी, खोआ, मेवे आदि भरकर और उसे अर्द्धचन्द्राकार मोडकर घी मे तलकर बनाया जाता है।

पिराग†—पुं०=प्रयाग।

पिराना—अ०[स० पीडा+हिं० आना (प्रत्य०)]१ (किसी अग का) दर्द करना। पीडा होना। २. पीड़ा या दुःख अनुभव करना। ३ किसी को दुःखी देखकर स्वयं दुखी होना।

पिरारा†—पुं० १.=पिडारा (साग)। २.=पिडारी (डाकू)।

पिरिच—स्त्री० [देश०] तश्तरी विशेषतः चीनी मिट्टी की।

पिरिया—पु०[देश०]१. कूएँ से पानी निकालने का रहँट। २. एक तरह का बाजा।

पिरीतना—अ०[सं० प्रीति]१. प्रीति या प्रेम करना। २. प्रसन्न होना। उदा०—समुझ फिरें रिपु होहिं पिरीते।—तुलसी।

पिरीतम†—पु०=प्रियतम।

पिरीता—वि०[स० प्रीत=प्रसन्न] प्रिय।

पिरीती†—स्त्री०=प्रीति।

पिरोज—पु०[?] १ कटोरा। २ तश्तरी।

पिरोजन—पु०[स०प्रयोजन]१ बालक के कान छेदने की रीति। कनछेदन। २. दे० 'प्रयोजन'।

पिरोजा†—पु० =फीरोजा।

पिरोजी†—वि०=फीरोजी।

पिरोड़ा—स्त्री०[देश०] पीली, कड़ी मिट्टीवाली भूमि।

पिरोना—स०[स० प्रोत; प्रा० पोइअ, प्रोअ+ना (प्रत्य०)]१ किसी छेदवाली वस्तु मे धागा डालना। जैसे—सूई मे धागा पिरोना। २. छेदवाली बहुत-सी वस्तुओं को एक साथ धागे मे नत्थी करना। जैसे—माला पिरोना।

पिरोला—पु०[हिं० पीला]पियरोला नामक पक्षी।

पिरोहना†—स०=पिरोना।

पिरौहाँ†—वि० [स० पीडा] [स्त्री० पिरौही] मन मे पीडा उत्पन्न करनेवाला। कष्टदायक। उदा०—तब लखिमिनि दुख पूंछ पिरौही।—जायसी।

पिलई—स्त्री०[स० प्लीहा]१. शरीर के अदर का तिल्ली नामक अग। २. ताप-तिल्ली या प्लीहा नामक रोग।

पिलक—पु० [हिं० पीला]१ पीले रग की एक चिड़िया जो मैना से कुछ छोटी होती है और जिसका स्वर बहुत मधुर होता है। पियरोला। जर्दक। २ अबलक कबूतर।

पिलकना—स०[स० पिच्छिल]१ गिरना। २ ढकेलना। ३ झूलना। लटकना।
अ०१. गिरना। २ लुढकना।

पिलकिया—पु० [देश०] पीलापन लिये खाकी रग की एक तरह की छोटी चिड़िया जो पजाब से आसाम तक दिखाई देती है।

पिलखन—पु०[स० प्लक्ष] पाकर वृक्ष।

पिलचना—अ० [स० पिल=प्रेरणा] १ दो आदमियो का आपस मे भिड़ना। गुथना। लिपटना। २ किसी काम मे तत्पर या लीन होना।

पिलड़ी—स्त्री०[देश०] पकाया हुआ मसालेदार कीमा।

पिलद्दा—पु०[फा० पलीद (गदा) या पह्लवी पलीदीह] [स्त्री० अल्पा० पिलद्दी]१. गू। मल। विष्ठा। २. बहुत ही गन्दी या मैली चीज। ३. गदगी। ४ वह रूप जो किसी चीज को बहुत बुरी तरह से कूटने-पीटने पर प्राप्त होता है। कचूमर।

पिलना—अ०[स० पिल=प्रेरणा]१. वेगपूर्वक अन्दर की ओर धँसना या पठना। जैसे—सब लोग घर के अन्दर पिल पडे। २ पूरी शक्ति से किसी काम मे जुटना या लगना। ३. भिड जाना।
सयो० क्रि०—पड़ना।
४. ऊख, तिल आदि का पेरा जाना।
सयो० क्रि०—जाना।

पिलपिल—स्त्री०[हिं० पिलपिलाना] पिलपिल करने या होने की अवस्था या भाव।
वि०=पिलपिला।

पिलपिला—वि०[अनु०] [भाव० पिलपिलापन, स्त्री० पिलपिली] (पदार्थ) जो इतना अधिक कोमल हो कि हल्का स्पर्श करने मात्र से

उसका रस या गूदा बाहर निकलने लगे। जैसे—पिलपिला आम, पिलपिला फोड़ा।

पिलपिलाना—अ०[हिं० पिलपिला] पिलपिला होना।
क्रि० प्र०—जाना।
स० इस प्रकार किसी चीज को बार-बार हल्के हाथ से दबाना कि उसका गूदा रस में परिवर्तित होकर बाहर निकलने लगे।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।

पिलपिलाहट—स्त्री०[हिं० पिलपिला] पिलपिले होने की अवस्था या भाव। पिलपिलापन।

पिलवाना—स०[हिं० पिलाना का प्रे०] पिलाने का काम किसी दूसरे से कराना। दूसरे को पिलाने मे प्रवृत्त करना।
स० [हिं० पेलना का प्रे० रूप] किसी को कुछ पेलने या पेरने मे प्रवृत्त करना। जैसे—कोल्हू मे तिल पिलवाना।

पिलाई—स्त्री० [हिं० पिलाना] १ (जल आदि) पिलाने की क्रिया या भाव। २. बच्चो को अपना स्तन का दूध पिलानेवाली दाई। ३ कोई तरल पदार्थ इस प्रकार उँडेलना कि वह नीचे के छेदो या सधियो मे समा जाय। (ग्राउटिंग) जैसे—सडको पर अलकतरे की पिलाई। ४. गोली के खेल मे, गोली को किसी विशिष्ट गड्ढे मे डालने की क्रिया या भाव।

पिलाना—स०[हिं० पीना] १. किसी को कुछ पीने मे प्रवृत्त करना। जैसे—किसी को दवा या पानी पिलाना। २ किसी प्रकार के अवकाश या विवर मे कोई पदार्थ विशेषत तरल पदार्थ उँडेलना या डालना। जैसे—किसी के कान मे सीसा पिलाना। ३. कोई बात किसी के मन मे अच्छी तरह जमाना या बैठाना।
सयो० क्रि० —देना।
४ गोली के खेल मे, इस प्रकार गोली फेंकना कि वह किसी विशिष्ट गड्ढे मे जा गिरे।

पिलुंडा†—पु०[स्त्री० अल्पा० पिलुंडी] =पुलिदा।

पिलुक—पु० [स० अपि√ ला (लेना) +डु, अकार – लोप, +कन्] पीलू का पेड़।

पिलुनी—स्त्री० [स० अपि√ला+डुन+ङीष्, अकार–लोप] मूर्वा।

पिलु-पर्णी—स्त्री०[ब०स, ङीष्] मूर्वा (लता)।

पिल्ल—पु०[स०√ क्लिद् (गीला होना) + ल, पिल्–आदेश] एक नेत्र-रोग जिसमे आँखो से कीचड बहता रहता है।
वि० जिसके नेत्रो से कीचड निकलता हो।

पिल्लका—स्त्री०[स० पिल्ल√ कै (चमकना) +क+टाप्] मादा हाथी। हथिनी।

पिल्ला—पु०[तामिल] [स्त्री० पिल्ली] कुत्ते का बच्चा।

पिल्लू—पु०[स० पीलु=कृमि] सफेद रग का एक प्रकार का छोटा लबा कीडा जो सडे हुए फलो, घावो आदि मे देखा जाता है। ढोला।
क्रि० प्र०—पड़ना।

पिव*—पु०- पिय।

पिवाना—स०=पिलाना।

पिशंग—पु०[स०√ पिश् (अश होना) +अगच्] लाली लिये भूरा रंग।
वि० उक्त प्रकार के रग का।

पिशंगक—पु०[स० पिशंग+कन्]१ विष्णु। २ विष्णु का अनुचर।

पिशंगिला—स्त्री० [स० पिश√गिल् (लीलना)+स, मुम्, टाप्] काँसा नामक मिश्र धातु।

पिशंगी (गिन्)—वि०[स० पिशग+इनि] पिशग वर्ण का।

पिश—वि०[स०√पिश् +क] १. पाप आदि न करनेवाला। पाप-रहित। २ अनेक रूपोवाला।

पिशवाज—पु० =पेशवाज (स्वागत)।
स्त्री०[फा० पिश्वाज] एक तरह का घाघरा जिसे नर्तकियाँ पहनकर नाचती थी।

पिशाच—पु०[स० पिश+आ√ चम् (खाना)+ड, पृषो० सिद्धि][वि० पैशाच, पैशाची] [स्त्री० पिशाचिनी, पिशाची]१ एक प्रकार के भूत या प्रेत जिनकी गणना हीन देवयोनियो मे होती है तथा जो वीभत्स कर्म करनेवाले माने जाते हैं। २. उक्त के आधार पर वीभत्स तथा जघन्य कर्म करनेवाला व्यक्ति। ३ किसी काम या बात के सबध में वैसा ही उग्र और भीषण रूप रखनेवाला जैसा पिशाचो का होता है। जैसे—अर्थ-पिशाच, बुद्धि-पिशाच। ४. कश्मीर की सीमा से प्राचीन भारत की पश्चिमोत्तर सीमा तक के प्रदेश का प्राचीन नाम।
वि० मास खानेवाला। मांस-भोजी।

पिशाचक—पु०[स० पिशाच+कन्] पिशाच।

पिशाचकी (किन्)—पु०[स० पिशाचक+इनि] कुबेर।

पिशाचघ्न—वि०[स० पिशाच√हन् (मारना) +ठक्] पिशाचो को नष्ट या दूर करनेवाला।
पु०पीली सरसो जिसका प्रयोग प्राय ओझा और तांत्रिक भूत-प्रेत की बाधा दूर करने के लिए करते है।

पिशाच-चर्या—स्त्री०[ष० त०] पिशाचो की तरह श्मशान आदि मे घूमना।

पिशाचद्रु—पु०[मध्य० स०] सिहोर का पेड।

पिशाच-पति—पु०[ष० त०] शिव।

पिशाच-बाधा—स्त्री० [मध्य०स०] वह कष्ट जो किसी पिशाच के उपद्रवों के कारण प्राप्त हो।

पिशाच-भाषा—स्त्री०[ष०त०] पैशाची नामक प्राकृत भाषा।

पिशाच-मोचन—पु०[ष०त०]१ वह स्थान जहाँ पिडदान करने से मृत व्यक्तियों को पिशाच-योनि से मुक्ति होती है। २ काशी का एक प्रसिद्ध तालाब जिसके किनारे पिंडा पारा जाता है। प्रसिद्ध है कि यहाँ पिंड-दान करने मे जीवात्मा की पिशाच-योनि से मुक्ति हो जाती है।

पिशाच-सचार—पु०[ष०त०] किसी के शरीर मे पिशाच का होनेवाला वह सचार जिसके फलस्वरूप वह पिशाचो के-से घृणित और जघन्य कार्य करने लगता है।

पिशाचांगना—स्त्री०[पिशाच-अगना, ष०त०] पिशाच प्रदेश की स्त्री।

पिशाचालय—पु० [पिशाच-आलय, ष०त०] वह स्थान जहाँ फास्फोरस के कारण अधेरे मे प्रकाश होता है, और इसी लिए जिसे लोग पिशाचो के रहने का स्थान समझते हो।

पिशाचिका—स्त्री०[स० पिशाच+ङीष्+कन्+टाप्,ह्रस्व] १ पिशाच-योनि की स्त्री। २ छोटी जटामासी।

पिशाची—स्त्री०[पिशाच+ङीष्]१. पिशाच स्त्री। २. जटामासी।
†स्त्री०-पैशाची।

पिशिक—पुं०[सं०] एक प्राचीन देश। (बृहत्संहिता)

पिशित—पुं०[सं०√ पिश्+क्त] १. मांस। गोश्त। २. मांस का टुकड़ा या बोटी।

पिशिता—स्त्री०[सं० पिशित+टाप्] जटामासी।

पिशिताशन—पुं०[सं० पिशित-अशन, ब०स०] १ वह जो मनुष्यों को खाता हो। २ राक्षस। ३. भेड़िया।

पिशिनी—स्त्री० दे० 'पिशी'।

पिशी—स्त्री०[सं०√ पिश्+क+ङीष्] जटामासी।

पिशील—पुं०[सं० √ पिश्+ईल] मिट्टी का प्याला या कटोरा। (शतपथ ब्रा०)

पिशुन—वि०[सं०√ पिश्+उनन्] [भाव० पिशुनता] १. नीच। २. क्रूर। ३ चुगलखोर।

पुं० १. वह प्रेत जो गर्भिणी स्त्रियो को बाधा पहुँचाता हो। २ एक की दूसरे से बुराई करके दो पक्षो मे लड़ाई करानेवाला व्यक्ति। ३. केसर। ४ तगर। ५ कपास। ६. नारद। ७ कौआ।

पिशुनता—स्त्री०[सं० पिशुन+तल्+टाप्] १. पिशुन होने की अवस्था या भाव। २ चुगलखोरी। ३. असबर्ग।

पिशुन-वचन—पुं०[ष०त०] चुगली।

पिशुना—स्त्री०[सं० पिशुन+टाप्] चुगलखोरी।

पिशोन्माद—पुं०[ब०स०] वैद्यक मे, एक प्रकार का उन्माद या पागलपन जिसमे रोगी प्राय ऊपर को हाथ उठाये रहता, अधिक बकता और रोता तथा गन्दा या मैला-कुचैला बना रहता है।

पिशोर—पुं०[देश०] हिमालय मे होनेवाली एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पतली, लचीली टहनियाँ बोझ बाँधने तथा टोकरे आदि बनाने के काम आती है।

पिष्ट—वि०[सं०√ पिष् (पीसना)+क्त] १ पिसा या पीसा हुआ। चूर्ण किया हुआ। २ निचोड़ा हुआ।

पुं०१. पानी के साथ पिसा हुआ अन्न, विशेषत दाल। पीठी। २. कोई ऐसा पकवान जिसके अन्दर पीठी भरी हो। ३ सीसा।

पिष्टक—पुं०[सं० पिष्ठ+कन्] १ पिष्ट अर्थात् पीठी का बना हुआ खाद्य पदार्थ। २. तिल का चूर्ण। ३. फूली नामक नेत्र रोग।

पिष्ट-पचन—पुं०[ष० त०] १. कड़ाही। २ तवा।

पिष्ट-पशु—पुं० [ष० त०] बलि चढ़ाने के काम के लिए गूँधे हुए आटे का बनाया हुआ पशु।

पिष्ट-पाचक—पुं०[ष०त०] कड़ाही या तवा जिसपर पीसी हुई चीजें पकाई जाती हैं।

पिष्ट-पिंड—पुं०[ष० त०] बाटी नामक पकवान। लिट्टी।

पिष्ट-पूर—पुं०[सं० पिष्ट√पूर् (पूर्णकरना)+णिच्+अच्] =घृतपूर।

पिष्ट-पेषण—पुं०[ष० त०] १. पीसी हुई चीज को फिर से पीसना। २ उक्त के आधार पर ठीक तरह से पूरे किये हुए कार्य को फिर उसी तरह दोहराकर व्यर्थ परिश्रम करना जिस प्रकार पीसी हुई चीज को फिर से पीसने का व्यर्थ परिश्रम किया जाता है।

पिष्ट-प्रमेह—पुं०[ष० त०] वैद्यक में, एक प्रकार का प्रमेह जिसमे मूत्र के साथ चावल के पानी के समान तरल पदार्थ गिरता है।

पिष्ट-मेह—पुं०[ष० त०]=पिष्ट प्रमेह।

पिष्टवर्ति—स्त्री०[सं० पिष्ट√वृत् (बरतना)+इन्] किसी अन्न-चूर्ण का बना हुआ पिंड।

पिष्ट-सौरभ—पुं० [ब०स०] पीसे जाने पर सुगंध छोड़नेवाला चंदन।

पिष्टात—पुं०[सं० पिष्ट√अत् (गति)+अच्] अबीर। बुक्का।

पिष्टातक—पुं०[सं० पिष्टात+कन्] अबीर। बुक्का।

पिष्टाद—वि०[सं० पिष्ट√अद् (खाना)+अण्] जो अन्न-चूर्ण खाता हो।

पिष्टान्न—पुं०[पिष्ट-अन्न, कर्म० स०] पीसे हुए अन्न से बना हुआ पकवान।

पिष्टि—स्त्री०[सं०√ पिष्+क्तिन्] १. पीसा हुआ अन्न। अन्न-चूर्ण। २ पीठी।

पिष्टिक—पुं०[सं० पिष्ट+ठन्—इक] चावल की पीठी।

पिष्टोदक—पुं०[पिष्ट-उदक, मध्य० स०] ऐसा जल जिसमे पीसा हुआ अन्न मिला या मिलाया गया हो।

पिष्वना*—स०=पेखना।

पिसग—वि०, पुं०=पिशग।

पिसनहारा—पुं०[हिं० पीसना+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० पिसनहारी] वह व्यक्ति जो अन्न पीसकर अपनी जीविका चलाता हो।

पिसना—अ०[हिं० पीसना का अ०] १. पीसा जाना। २ बहुत बुरी तरह से इस प्रकार कुचला या दबाया जाना कि बहुत छोटे-छोटे खड हो जायँ। ३ किसी प्रकार के कष्ट, सकट आदि मे पड़ने के कारण अथवा बहुत अधिक परिश्रम आदि के कारण थककर चूर या परम शिथिल हो जाना। जैसे—दिन भर कार्यालय में काम करते करते वह पिसा जाता था।

सयो० क्रि०—जाना।

४. शोषित किया जाना। शोषित होना।

पिसर—पुं०[फा०] पुत्र। बेटा। लड़का।

पिसरे मुतबन्ना—पुं० [फा०] दत्तक पुत्र।

पिसवाज†—स्त्री०=पेशवाज।

स्त्री०[फा० पिश्वाज] नर्तकियों के पहनने का लँहगा।

पिसवाना—स०[हिं० पीसना का प्रे०] किसी को कुछ पीसने मे लगाना या प्रवृत्त करना।

पिसाई—स्त्री०[हिं० पीसना] १. पीसने की क्रिया, भाव या मजदूरी। २ चक्की पीसने का व्यवसाय। ३. चक्की पीसने पर मिलनेवाला पारिश्रमिक। ४ वह अवस्था जिसमे आदमी को बहुत अधिक परिश्रम करते-करते थककर चूर हो जाना पड़ता है। जैसे—दिन भर कार्यालय मे पिसाई करने पर सध्या को थका-माँदा घर आता था।

पिसाच†—पुं०=पिशाच।

पिसान—पुं०[हिं० पिसना+अन्न] पीसा हुआ अन्न, विशेषत गेहूँ या जौ का आटा।

पिसाना—स०=पिसवाना।

†अ०=पिसना।

पिसानी†—स्त्री०=पेशानी (ललाट)।

पिसिया—पुं०[हिं० पिसना] एक तरह का लाल रग का गेहूँ।

स्त्री० आटा पीसकर अर्थात् चक्की चलाकर जीविका चलाने का काम।

पिसी†—स्त्री०[हिं० पिसना] एक तरह का सफेद रग का गेहूँ।

पिसुन†—वि०, पुं०=पिशुन।

पिसुराई—स्त्री० [देश०] सरकंडे का वह छोटा टुकडा जिस पर रुई लपेट-कर पूनियाँ बनाते हैं।

पिसूरी—पुं० [?] भूरे रग का एक प्रकार का बहुत छोटा हिरन जो मध्य-प्रदेश, उड़ीसा, लका और दक्षिणी भारत के जगलो मे अधिकता से पाया जाता है। इसके बाल घने, पतले और मुलायम होते है।

पिसैरा†—पु०=पिसूरी (हिरन)।

पिसौनी*—स्त्री० [हिं० पीसना] १ पीसने की क्रिया या भाव। २ दे० 'पिसाई'।

पिस्टल—स्त्री० [अ०] पिस्तौल।

पिस्तई—वि० [हिं० पिस्ता] पिस्ते के रग का। पीलापन लिए हरे रग का। जैसे—पिस्तई धोती।

पु० उक्त प्रकार का रग।

पिस्तां—पु० [स० पयस्तन से फा०] स्त्री का स्तन। छाती।

पिस्ता—पु० [फा० पिस्त] १ एक प्रकार का छोटा पेड जो इराक और अफगानिस्तान आदि देशो मे होता है और जिसके फल की गिरी मेवों मे गिनी जाती है। २ उक्त के फलो की गिरी जो बहुत स्वादिष्ट होती है।

पिस्तौल—स्त्री० [अ० पिस्टल] गोली चलाने की एक प्रकार की छोटी जेबी बदूक। तमचा।

पिस्सी—स्त्री०=पिसी। (दे०)

पिस्सू—पु० [फा० पश्श] १. एक प्रकार का छोटा उडनेवाला कीडा जो मच्छर की तरह शरीर का रक्त चूसता है। २ मच्छर।

पिहकना—अ० [अनु०] कोयल, पपीहे, मोर आदि का पी पी या पिट्ट पिटट् करके चहकना या बोलना।

पिहान—पु० [स० पिधान] [स्त्री० अल्पा० पिहानी] ढक्कन। ढकना।

पिहानी—स्त्री० [हिं० पिहान] १ छोटा ढक्कन। २ ऐसी गुप्त बात जो दूसरो से छिपाई जाय।

पिहित—वि० [स० अपि√धा (धारण करना)+क्त, अकार—लोप] १ ढका हुआ। २. छिपा हुआ। गुप्त।

पु० साहित्य मे एक अर्थालकार जिसमे ऐसी क्रिया का वर्णन होता है जिसके द्वारा यह जतलाया जाता है कि हमने आपके मन का गुप्त भाव ताड लिया है।

पिहुआ†—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

पिहोली—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो मध्यप्रदेश मे और बरार से बबई तक होता है। इसकी पत्तियाँ सुगधित होती हैं जिनसे इत्र बनता है। इसे पिचौली भी कहते हैं।

पींग—स्त्री० [हिं० पेंग] १ पेड की डाल मे रस्सा लटकाकर बनाया जाने-वाला झूला। (पश्चिम) २ दे० 'पेंग'।

पींजन—पु० [स० पिजन] भेडो के बाल धुनने की धुनकी।

पींजना—स० [स० पिजन=धुनकी] रूई धुनना। पिंजना।

पु०†=धुनिया।

पींजर—पु० १ दे० 'पिजडा'। २ दे० 'पजर'।

पींजरा—पु०=पिंजरा।

पींड—पु० [स० पिड] १ वृक्ष का धड। तना। पेडी। २ कटहल के पुराने पेड़ो की जड और तने के बीच का वह अश जो जमीन मे रहता है तथा जिसमे फल लगते हैं जो खोदकर निकाले जाते है। ३ कोल्हू के चारो ओर गीली मिट्टी का बनाया हुआ घेरा जिससे ईख की अंगरियाँ या छोटे टुकडे छटककर बाहर नही निकल सकते। ४ चरखे का मध्य-भाग। बेलन। ४ दे० 'पिड'। ५ दे० 'पिड खजूर।'

पींडी†—स्त्री० १ =पिंडी। २. पिंडली।

पींडुरी†—स्त्री०=पिडली।

पी†—पु० दे० 'पिय'।

पु० [अनु०] पपीहे के बोलने का शब्द।

पीऊ—पु०=पिय (प्रियतम)।

वि० =परमप्रिय।

पीक—स्त्री० [स० पिच्च] १ चबाये हुए पान का वह रस जो थूका जाता है। पान की थूक। २ वह रग जो कपडे को पहली बार रग मे डुबाने से चढता है। (रगरेज)

वि० [?] ऊँचा-नीचा। ऊबड़-खाबड। (लश०)

पीकदान—पु० [हिं० पीक+फा० दान=पात्र] वह पात्र जिसमे पीक थूकी जाती है। उगालदान।

पीकना—अ० [पी-पी से अनु०] पीपी शब्द करना। जैसे—पपीहे का पीकना।

पीका—पु० [?] वृक्ष का नया कोमल पत्ता। कल्ला। कोंपल।

क्रि० प्र०—पनपना।—फूटना।

पीच—स्त्री० [स० पिच्च] वह लसीला तरल पदार्थ जो चावल उबालने पर बच रहता है। माँड।

पु० [अ० पिच] अलकतरा।

स्त्री० =पीक (पान की)।

पीचना†—अ० [स० पिच्च] पैरो से कुचलना या रौंदना।

पीचू—पु० [देश०] १ चीलू या जरदालू का पेड। २ करील का पका हुआ फूल। कचरा टेंटी।

पीछ—स्त्री० [हिं० पीछे या पिछला] पक्षी की दुम। पूँछ।

†स्त्री० =पीच (माँड)।

पीछा—पु० [स० पश्चात्, फा० पच्छा] १ किसी व्यक्ति के शरीर का वह भाग जो उसकी छाती, पेट, मुँह आदि की विपरीत दिशा मे पडता है। पीठ की ओर का भाग। पृष्ठ भाग। 'आगा' का विपर्याय। २ किसी चीज के पीछे की ओर का विस्तार।

मुहा०—(किसी का) पीछा करना=(क) किसी को पकडने, भागने, मारने-पीटने आदि के लिए अथवा उसका पता लगाने या भेद लेने के लिए उसके पीछे-पीछे तेजी से चलना या दौडना। जैसे—अपराधी, चोर या शिकार का पीछा करना। (ख) किसी का भेद या रहस्य जानने के लिए छिपकर उसके पीछे-पीछे चलना। जैसे—वह जहाँ जाता था, वही पुलिस उसका पीछा करती थी। (ग) दे० नीचे 'पीछा पकडना'। **(किसी काम या बात से) पीछा छुड़ाना**=अपने साथ होनेवाली किसी अनिष्ट या अप्रिय बात से अपना सम्बन्ध छुडाना। पिड छुडाना। जैसे—अफीम या शराब की लत से पीछा छुडाना। **(किसी व्यक्ति से) पीछा छुड़ाना**=जो व्यक्ति किसी काम या बात के लिए पीछे पड़कर बहुत तग कर रहा हो, उससे किसी प्रकार छुटकारा पाना। **पीछा छूटना**=(क) पीछा करनेवाले या पीछे पडे हुए व्यक्ति से छुटकारा मिलना। पिंड छूटना। जान छूटना। (ख) अनिष्ट अथवा अप्रिय काम या बात

से छुटकारा मिलना (ग)। किसी प्रकार का या किसी रूप में छुटकारा मिलना। बचाव या रक्षा होना। जैसे—महीनो बाद बुखार से पीछा छूटा है। **(किसी व्यक्ति का) पीछा छूटना**=किसी का पीछा करने का काम बंद करना। किसी आशा या प्रयोजन से किसी के साथ लगे फिरने या उसके पीछे-पीछे दौड़ने या उसे तग करने का काम बंद करना। **(किसी काम या बात का) पीछा छोड़ना**=जिस काम या बात मे बहुत अधिक उत्साह या तन्मयता से लगे रहे हो, उससे विरत होना अथवा उसका आसग या ध्यान छोडना। **पीछा दिखाना**=(क) सम्मुख या साथ न रहकर अलग या दूर हो जाना। पीठ दिखाना। जैसे—सकट के समय सगी-साथियो ने भी पीछा दिखाया। (ख) प्रतियोगिता, लड़ाई-झगडे आदि मे डर या हारकर भाग जाना। पीठ दिखाना। **पीछा देना**=दे० ऊपर 'पीछा दिखाना'। **(किसी का) पीछा पकड़ना**=किसी आशा से या अपने कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए किसी का अनुचर या साथी बनना। किसी के आश्रय या सहायता का आकाक्षी बनकर प्राय उसके साथ लगे रहना। जैसे—किसी रईस का पीछा पकडना। **(किसी काम या बात का) पीछा भारी होना**=(क) पीछे की ओर शत्रु या सकट की आशका या भय होना। (ख) अधिक उपयोगी या सहायक अश का पीछे की ओर आधिक्य होना। (ग) किसी काम के अतिम या शेष अश का अधिक कठिन या अधिक कष्टसाध्य होना। पिछला अश ऐसा होना कि सँभलना कठिन हो।

३ पीछे-पीछे चलकर किसी के साथ लगे रहने की क्रिया या भाव। जैसे—बडे का पीछा है, कुछ न कुछ दे ही जायगा। उदा०—प्रभु मैं पीछौ लियो तुम्हारौ।—सूर। ४. पहनने के वस्त्रो आदि का वह भाग जो पीछे अथवा पीठ की ओर रहता है। जैसे—इस कोट का पीछा ठीक नही सिला है।

पीछू†—अव्य० =पीछे।

पीछे—अव्य० [हि० पीछा] १ जिस ओर या जिस दिशा मे किसी का पीछा या पीठ हो, उस ओर या उस दिशा मे। किसी के मुख या सामनेवाली दिशा की विपरीत दिशा मे। 'आगे' और 'सामने' का विपर्याय। जैसे—(क) हम लोग सभापति के पीछे बैठे थे। (ख) मकान के पीछे बहुत बडा मैदान था।

विशेष—इस अर्थ मे उक्त ओर या दिशा मे होनेवाले विस्तार का भाव भी निहित है; और इसके अधिकतर मुहा० इसी आधार पर बने हैं।

मुहा०—**(किसी के) पीछे चलना**=किसी का अनुगामी या अनुयायी बनना। अनुकरण करना। जैसे—आज-कल तो जो नेता बन सके, उसी के पीछे हजारो आदमी चलने लगते है। **(किसी चीज या व्यक्ति का) पीछे छूटना**=किसी की तुलना मे या किसी के विचार से पीछे की ओर रह जाना। जैसे—(क) यात्रियो मे से कुछ लोग पीछे छूट गये थे। (ख) हम लोग बातें करते हुए आगे बढ़ गए, और उनका मकान पीछे छूट गया। **(किसी काम या बात में, किसी के) पीछे छूटना या रह जाना**=उन्नति, गति, दौड प्रतियोगिता आदि मे किसी से घटकर या कम योग्यता का सिद्ध होना। किसी की तुलना में पिछडा हुआ सिद्ध होना। जैसे—आणविक आविष्कारो के क्षेत्र मे बहुत से देश अमेरिका और रूस से पीछे छूट गये हैं। (इस मुहा० मे 'छूटना' के साथ संयो० क्रि० 'जाना' का प्रयोग प्राय: अनिवार्य रूप से होता है। **(किसी का किसी व्यक्ति के) पीछे छूटना या लगना**=किसी भागे हुए आदमी को पकडने के लिए या किसी का भेद, रहस्य आदि जानने के लिए किसी का नियुक्त किया जाना या होना। जैसे—डाकुओ का पता लगाने के लिए बीसियो जासूस (या सिपाही, उनके पीछे छूटे (या लगें) थे। **(किसी काम या बात में किसी को) पीछे छोड़ना**=किसी विषय मे औरो से बढ़कर इस प्रकार आगे हो जाना कि और लोग उसकी तुलना मे न आ सकें या बराबरी न कर सकें। कौशल, योग्यता सामर्थ्य आदि मे औरो से आगे बढ जाना। जैसे—अपने काम मे वह बहुतो को पीछे छोड गया है। **(किसी को किसी के) पीछे छोड़ना, भेजना या लगाना**=(क) जासूस या भेदिया बनाकर किसी को किसी के साथ लगाना। भेदिया नियुक्त करना या साथ लगाना। (ख) भागे हुए व्यक्ति को पकडकर लाने के लिए कुछ लोगो को नियुक्त करना। **(किसी को किसी के) पीछे डालना**=दे० ऊपर (किसी के) 'पीछे छोड़ना, भेजना या लगाना'। **(धन) पीछे डालना**=भविष्यत् की आवश्यकता के लिए खर्च से बचाकर कुछ धन एकत्र करके रखना। आगे के लिए सचय करना। जैसे—हर महीने दस-पाँच रुपए बचाकर पीछे भी डालते चलना चाहिए। **(किसी काम या व्यक्ति के) पीछे दौड़ना या दौड़ पड़ना**=बिना सोचे-समझे किसी काम या बात मे लग जाना या किसी का अनुगामी अथवा अनुयायी बनना। **(किसी को किसी के) पीछे दौड़ाना**=गये या जाते हुए आदमी को बुला या लौटा लाने या उसे कोई सदेशा पहुँचाने के लिए किसी को उसके पीछे भेजना। **(किसी काम या बात के) पीछे पड़ना या पड़ जाना**=किसी काम को कर डालने पर तुल जाना। किसी कार्य के लिए बहुत परिश्रमपूर्वक निरतर उद्योग करते रहना। (कुछ कुत्सित या हीन भाव का सूचक) जैसे—तुम्हारी यह बहुत बुरी आदत है कि तुम हर काम या बात) के पीछे पड जाते हो। **(किसी व्यक्ति के) पीछे पड़ना**=(क) कोई काम करने के लिए किसी से बहुत आग्रहपूर्वक और बार बार कहना। (ख) किसी को बहुत अधिक तग, दुःखी या परेशान करने के लिए अथवा किसी का बहुत अधिक अपकार, अहित या हानि करने के लिए कटिबद्ध होना। **(किसी के) पीछे लगना**=(क) किसी का अनुगामी या अनुयायी बनना। किसी का अनुकरण करना। (ख) दे० ऊपर (किसी काम, बात या व्यक्ति के) 'पीछे पडना'। **(किसी व्यक्ति को अपने) पीछे लगाना**=किसी को अपना अनुगामी या अनुयायी बनाना। **(कोई काम या बात अपने) पीछे लगाना**=कोई काम या बात इस प्रकार घनिष्ठ रूप में अपने साथ सम्बद्ध करना कि सहसा उससे बचाव, रक्षा या विरक्ति न हो सके। जान-बूझकर ऐसे काम या बात से सम्बद्ध होना जिससे तंग, दुःखी या परेशान होना पडे। जैसे—तुमने यह व्यर्थ का झगड़ा अपने पीछे लगा लिया है। **(किसी व्यक्ति को किसी के) पीछे लगाना**=किसी का भेद या रहस्य जानने अथवा किसी को तग, दुःखी या परेशान करने के लिए किसी दूसरे व्यक्ति को उत्साहित या नियत करना। जैसे—वे तो चुपचाप घर बैठे हैं, पर अपने आदमियो को उन्होने हमारे पीछे लगा दिया है। **(कोई काम या बात किसी के) पीछे लगाना**=कोई काम या बात इस प्रकार किसी के साथ सम्बद्ध करना कि वह उससे तग, दुःखी या परेशान हो, अथवा सहज मे अपना बचाव या रक्षा न कर सके। जैसे—बीडी पीने की लत तुम्ही ने उसके पीछे लगा दी है।

२. अनुपस्थित या अविद्यमान होने की अवस्था मे। किसी के सामने न रहने की दशा मे। जैसे—किसी के पीछे उसकी बुराई करना बहुत अनुचित है।

पद—पीठ पीछे= दे० 'पीठ' के अन्तर्गत यह पद।

३. किसी के इस लोक में न रह जाने की दशा मे। मर जाने पर। मरणोपरांत। जैसे—आदमी के पीछे उसका नाम ही रह जाता है। ४. कोई काम, घटना या बात हो चुकने पर, उसके बाद। उपरात। फिर। जैसे—पहले तो उन्होंने बहुत धन गँवाया था, पर पीछे वे सभल गये थे।

विशेष—इस अर्थ मे कभी कभी यह 'पीछे को' या 'पीछे से' के रूप मे भी प्रयुक्त होता है। जैसे—पीछे को (या पीछे से) हमे दोष मत देना। ५. कालक्रम, देश आदि के विचार से किसी के पश्चात् या उपरात। घटना या स्थिति के विचार से किसी के अनतर, कुछ दूर या कुछ देर बाद। उपरांत। पश्चात्। जैसे—सब लोग एक पक्ति मे एक दूसरे के पीछे चल रहे थे। ६ किसी के अर्थ से, कारण या खातिर। निमित्त। लिए। वास्ते। जैसे—तुम्हारे पीछे ही मैं ये सब कष्ट सह रहा हूँ। ७ प्रति इकाई के विचार या हिसाब से। जैसे—अब आदमी पीछे पाव भर आटा पडता या मिलता है।

पीटन†—पु०—पिटना।

पीटना—स०[स० पीडन] १ किसी जीव पर उसे चोट पहुँचाने अथवा सजा देने के उद्देश्य से किसी चीज से जोर से आघात करना। जैसे—लडके को छडी से पीटना। २. किसी पदार्थ पर इस प्रकार किसी भारी चीज से निरतर आघात करना कि उसमे कुछ विशिष्ट विकार आ जाय। जैसे—(क) दुरमुस से ककड पीटना। (ख) पिटने से कपडा पीटना। (ग) हथौडी से पत्तर पीटना। ३ घोर दुख, व्यथा या शोक प्रदर्शित करने के लिए दोनो हाथों की हथेलियो से अपने किसी अग पर जोरो से आघात करना। जैसे—छाती, मुँह या सिर पीटना। ४ चौसर, शतरज आदि के खेलो मे, विपक्षी की गोट या मोहरा मारना। जैसे—हाथी, घोडा या प्यादा पीटना ५ जैसे-तैसे किसी से कुछ प्राप्त या वसूल करना। ६. जैसे-तैसे कोई काम पूरा करना।

पु०१ मृत्यु-शोक। मातम। विलाप। जैसे—यहाँ यह कैसा पीटना पडा हुआ है! २ आपद। मुसीबत।

पीठ—पु०[स० पा√(पीना)+ठक्, पृषो० दीर्घ] १ लकडी, पत्थर या धातु का बना हुआ बैठने का आधार या आसन। जैसे—चौकी, पीढा, सिंहासन आदि। २ विद्यार्थियो, व्रतधारियो आदि के बैठने के लिए बना हुआ कुश का आसन। ३. नीचे वाला वह आधार जिस पर मूर्ति रखी या स्थापित की जाती है। ४ वह स्थान जहाँ बैठकर किसी प्रकार का उपदेश, शिक्षा आदि दी जाती हो। जैसे—धर्म-पीठ, विद्या-पीठ, व्यासपीठ आदि। ५ किसी बडे अधिकारी या सम्मानित व्यक्ति के बैठने का स्थान, आसन और पद। (चेयर) जैसे—(क) अमुक विद्यालय मे हिन्दी की उच्च शिक्षा के लिए एक पीठ स्थापित हुआ है। (ख) आपको जो कुछ कहना हो वह पीठ को सबोधित कर कहे। ६ न्यायाधीश अथवा न्यायाधीशो का वर्ग। (बेंच) ७ बैठने का एक विशिष्ट प्रकार का आसन, ढग या मुद्रा। ८ राजसिंहासन। ९. वेदी। १० प्रदेश। प्रान्त। ११ उन अनेक तीर्थों या पवित्र स्थानो मे से प्रत्येक जहाँ पुराणानुसार दक्ष-कन्या सती का कोई अग या आभूषण विष्णु के चक्र से कटकर गिरा था।

विशेष—भिन्न-भिन्न पुराणो मे ऐसे स्थानो की सख्या ५१, ५३, ७७ या १०८ कही गई है। इनमे से कुछ को उप-पीठ और कुछ को महापीठ कहा गया है। तान्त्रिको का विश्वास है कि ऐसे स्थानो पर साधना करने से सिद्धि बहुत शीघ्र प्राप्त होती है। प्रत्येक पीठ मे एक-एक शक्ति और एक एक भैरव का निवास माना जाता है।

१२ कस का एक मत्री। १३. एक असुर। १४ गणित में वृत्त के किसी अग का पूरक।

स्त्री०[स० पृष्ठ] प्राणियो के शरीर का वह भाग जो उनके सामनेवाले अंगो अर्थात् छाती, पेट आदि की विपरीत दिशा मे या पीछे की ओर पडता है और जिसमे लबाई के बल रीढ होती है। पृष्ठ। पुश्त।

विशेष—यह भाग गरदन के नीचेवाले भाग से कमर तक (अर्थात् रीढ की अतिम गुरिया तक) विस्तृत होता है। मनुष्यो मे यह भाग सदा पीछे की ओर रहता है, और कीडे-मकोडो, चौपायो आदि मे ऊपर या आकाश की ओर। पशुओ के इसी भाग पर सवारी की जाती और माल लादा जाता है, इसलिए इसके कुछ पद और मुहावरे इस तत्त्व के आधार पर भी बने हैं। यह भाग पीछे की ओर होता है। इसलिए इसके कुछ पदो और मुहा० मे परवर्ती पिछले या बादवाले होने का तत्त्व या भाव भी निहित है। इसके सिवा इसमे सहायक, साथी आदि के भाव भी इसलिए सम्मिलित है कि वे प्राय पीछे की ओर ही रहते हैं।

पद—पीठ का—दे० नीचे 'पीठ पर का'। **पीठ का कच्चा**=(घोडा) जो देखने मे हृष्ट-पुष्ट और सजीला हो, पर सवारी का काम ठीक तरह से न देता हो। **पीठ का सच्चा** (घोडा) जो सवारी का ठीक और पूरा काम देता हो। **पीठ पर**—एक ही माता द्वारा जन्मे, क्रम मे किसी के तुरन्त बाद या पीछे। जैसे—इस लडके के पीठ पर यही लडकी हुई थी। **पीठ पर का**—जन्म-क्रम मे अपने सहोदर या सहोदरा के तुरन्त बाद का। ठीक उपरान्त का। जैसे—इस लडकी की पीठ पर का यही लडका है। **(किसी के) पीठ पीछे**= किसी की अनुपस्थिति, अविद्यमानता या परोक्ष मे। किसी के सामने न रहने की दशा मे। किसी के पीछे। जैसे—किसी के पीठ-पीछे उसकी निन्दा नही करनी चाहिए।

मुहा०—(किसी की) पीठ खाली होना—पोषक या सहायक से रहित अथवा हीन होना। कोई सहारा देनेवाला या हिमायती न होना। जैसे—उसकी पीठ खाली है, इसी लिए उस पर इतने अत्याचार होते हैं। **(किसी की) पीठ ठोंकना**—(क) कोई अच्छा काम करने पर कर्ता की पीठ थप-थपाते हुए या यो ही उसका अभिनन्दन या प्रशसा करना, (ख) किसी को किसी काम मे प्रवृत्त करने के लिए उत्साहित करना, (ग) दे० नीचे 'पीठ थपथपाना'। **पीठ थपथपाना**=पशुओ आदि के विशेष परिश्रम करने पर उन्हे उत्साहित करने तथा धैर्य दिलाने के लिए अथवा क्रुद्ध होने अथवा बिगडने पर शात करने के लिए उनकी पीठ पर हथेली से धीरे धीरे थपकी देना। **(किसी को) पीठ दिखाकर जाना**= ममता, स्नेह आदि का विचार छोड़कर कही दूर चले जाना। जैसे—प्रेमी का

प्रेमिका को पीठ दिखाकर जाना, या मित्र का अपने बंधुओ और स्नेहियो को पीठ दिखाकर जाना। **पीठ दिखाना**=प्रतियोगिता, लड़ाई-झगड़े आदि के समय सामने न ठहर सकने के कारण पीछे हटना या भाग जाना। दबने के कारण मैदान छोड़कर सामने से हट जाना। जैसे—दो ही दिन की लड़ाई मे शत्रु पीठ दिखाकर भाग खड़े हुए। **पीठ देना**=(क) चारपाई या बिस्तर पर पीठ रखना। लेट कर आराम करना। जैसे—लड़के की बीमारी के कारण इन दिनो पीठ देना मुश्किल हो गया है। (ख) दे० नीचे 'पीठ फेरना'। **(किसी की ओर) पीठ देना**=किसी की ओर पीठ करके बैठना। **पीठ पर खाना**=भागते हुए मार खाना। भागने की दशा मे पिटना। (कायरता का सूचक) जैसे—पीठ पर खाना मरदो का काम नही है। **पीठ पर हाथ फेरना**=दे० ऊपर 'पीठ ठोंकना'। **(किसी का किसी की) पीठ पर होना**=जन्म-क्रम में अपने किसी भाई या बहन के पीछे होना। अपने सहोदरो में से किसी के ठीक पीछे जन्म ग्रहण करना। **(किसी का) पीठ पर होना**=सहायक होना। सहायता के लिए तैयार होना। मदद या हिमायत पर होना। जैसे—आज मेरी पीठ पर कोई नही है, इसी लिए न तुम इतना रोब जमाते हो। **पीठ फेरना**=(क) कही से प्रस्थान करना। बिदा होना। (ख) ममता, स्नेह आदि का ध्यान छोड़कर अलग या दूर होना। (ग) अरुचि, उदासीनता आदि प्रकट करते हुए विमुख या विरत होना। अलग, किनारे या दूर होना। (घ) सामने से भाग या हट जाना। **पीठ मींजना**=दे० ऊपर 'पीठ ठोंकना'। **(चारपाई से) पीठ लग जाना**=बीमारी के कारण उठने-बैठने मे असमर्थ हो जाना। जैसे—अब तो चारपाई से पीठ लग गई है, वे उठ-बैठ भी नही सकते। **(किसी व्यक्ति की) पीठ लगना**=कुश्ती मे हारकर चित्त होना। पटका जाना। पछाड़ा जाना। **(किसी पशु की) पीठ लगना**=काठी, चारजामे, जीन आदि की रगड़ के कारण पीठ पर घाव होना। जैसे—जिस घोड़े की पीठ लगी हो, उस पर सवारी नही करनी चाहिए। **(चारपाई से) पीठ लगना**=आराम करने के लिए लेटने की स्थिति मे होना। **(किसी व्यक्ति की) पीठ लगाना**=कुश्ती मे गिरा, पछाड़ या पटक कर चित्त करना है।

२ पहनने के कपड़ो का वह भाग जो पीठ की ओर रहता या पीठ पर पड़ता है। ३. आसन आदि मे वह भाग जो पीठ के सहारे के लिए बना रहता है। जैसे—कुरसी की पीठ खराब हो गई है, उसे बदलवा दो। ४. किसी वस्तु की रचना मे, उसके अगले, ऊपरी या सामनेवाले भाग का विपरीत भाग। साधारणत काम मे आने या सामनेवाले भाग से भिन्न और पीछेवाला भाग। जैसे—(क) पत्र की पीठ पर पता भी लिख दो। (ख) पदक की पीठ पर उसके दाता का नाम भी खुदा हुआ था। ५ पुस्तक का वह भाग जिसमे अन्दर के पृष्ठों की सिलाई रहती है और जो उसे अलमारी मे खड़ी करके रखने पर सामने की ओर रहता है। पुट्ठा। जैसे—पुस्तक की पीठ पर सुनहले अक्षरो मे उसका नाम छपा था।

पीठक—पु०[सं० पीठ+कन्]१. वह चीज जिसपर बैठा जाय। जैसे—कुरसी, चौकी, पीढ़ा आदि। २. एक तरह की पालकी।

पीठ-केलि—पु०[ब० स०] १. विश्वसनीय व्यक्ति। २. वह जो दूसरो का पोषण करता हो।

पीठ-गर्भ—पु०[ष०त०] वह गड्ढा जिसमे मूर्ति के पैर या निचला अंश जमाकर उसे खड़ा किया जाता है।

पीठ-चक्र—पु०[ब० स०] पुरानी चाल का एक प्रकार का रथ।

पीठ-देवता—पु० [मध्य० स०] आदि शक्ति जो सारी सृष्टि का मूल आधार है।

पीठ-नायिका—स्त्री०[ष० त०]१. पुराणानुसार किसी पीठस्थान की अधिष्ठात्री देवी। २. दुर्गा। ३ लोक मे, वह कुमारी जिसकी पूजा दुर्गा-पूजा के दिनो मे की जाती है।

पीठ-न्यास—पुं०[स० त०] तंत्र मे एक मुख्य न्यास जो प्राय सभी तांत्रिक पूजाओ में आवश्यक है।

पीठ-भू—पु०[मध्य० स०] प्राचीर के आसपास का भू-भाग। चहारदीवारी के आसपास की जमीन।

पीठ-मर्द—वि०[स० त०] बहुत अधिक ढीठ और निर्लज्ज।

पु० १. साहित्य मे नायक के चार प्रकार के सखाओ मे से वह जो रुष्ट नायिका को मनाने और उसका मान हरण करने में सहायक होता है। २. किसी साहित्यिक रचना के मुख्य पात्र का वह सखा जो गुणो मे उससे कुछ घटकर होता है। जैसे—रामायण मे राम का सखा सुग्रीव। ३. वेश्याओ को नाच-गाना सिखलानेवाला व्यक्ति। उस्ताद।

पीठ-मर्दिका—स्त्री०[ष०त०]नायिका की वह सखी जो नायक को रिझाने मे नायिका की सहायता करती है।

पीठ-विवर—पु०[ष० त०] पीठगर्भ। (दे०)

पीठ-सर्व—वि०[स० पीठ√सृप् (गति)+अच्] लगड़ा।

पीठसर्पी (पिन्)—वि०[स० पीठ √सृप्+णिनि] लगड़ा।

पीठ-स्थान—पु०[ष०त०] १ वे स्थान जो दक्ष की कन्या सती के अंग या आभूषण गिरने के कारण पवित्र माने जाते हैं। (दे० 'पीठ' १)२. प्रतिष्ठान (आधुनिक झूसी का एक पुराना नाम)।

पीठा—पु०[स० पिष्टक, प्रा० पिट्ठक] आटे की लोई में पीठी भरकर बनाया जानेवाला एक तरह का पकवान।

†पु०=पीढ़ा।

पीठासीन—वि०[पीठ-आसीन; स० त०] जो पीठ अर्थात् अध्यक्ष के स्थान पर आसीन हो। (प्रेसाइडिंग)

पीठासीन-अधिकारी—पु०[कर्म० स०] वह अधिकारी जो अध्यक्ष-पद पर रहकर अपनी देख-रेख में कोई काम कराता हो।

(प्रेसाइडिंग आफिसर)

पीठि—स्त्री०=पीठ।

पीठिका—स्त्री०[स० पीठ+कन्+टाप्, इत्व] १ छोटा पीढ़ा। पीढ़ी। २. वह आधार जिस पर कोई चीज विशेषत. देवमूर्ति रखी, लगाई या स्थापित की गई हो। ३. ग्रंथ के विशिष्ट विभागो मे से कोई एक। जैसे—पूर्वपीठिका, उत्तर-पीठिका।

पीठी—स्त्री०[सं० पिष्ट या पिष्टक; प्रा० पिट्ठा] १. भीगी हुई दाल को पीसने पर तैयार होनेवाला रूप। जैसे—उड़द या मूंग की पीठी।

क्रि० प्र०—पीसना।—भरना।

विशेष—पीठी की टिकिया तलकर बड़े, सुखाकर बरियाँ और लोई भरकर कचौड़ियाँ आदि बनाई जाती है।

पीड़—पुं० [सं० पिंड] मिट्टी का वह आधार जिसे घड़े को पीटकर बढ़ाते समय उसके अन्दर रख लेते है।
†पुं० = आपीड़।
†स्त्री० = पीड़ा।

पीडक—वि० [सं० √ पीड़ + ण्वुल् — अक] पीड़क। (दे०)

पीड़क—वि० [सं० पीडक से] १ जो दूसरों को शारीरिक कष्ट पहुँचाता हो। पीड़ा देनेवाला। २ अधिक व्यापक अर्थ मे, बहुत बड़ा अत्याचारी या जुल्मी। ३ दबाने या पीसनेवाला। जैसे—पीड़क-चक्र -वह पहिया जो दबाता या पीसता हो।

पीडन—पुं० [सं० √ पीड़ + ल्युट्—अन] पीड़न। (दे०)

पीड़न—पुं० [सं० पीडन से] [कर्ता पीड़क, वि० पीड़नीय, भू० कृ० पीड़ित] १ व्यक्तियों के सम्बन्ध मे, किसी को शारीरिक या मानसिक कष्ट पहुँचाना। तकलीफ देना। २ चीजो के सबध मे, जोर से कसना, दबाना या पीसना। ३ पेरना। ४ अच्छी तरह से या मजबूती से पकड़ना। ५ नष्ट करना। ६ ग्रहण। जैसे—ग्रह-पीड़न। ७ स्वरो के उच्चारण करने मे होनेवाला एक तरह का दोष।

पीडनीय—वि० [सं० √ पीड़ + अनीयर] पीड़नीय। (दे०)

पीड़नीय—वि० [सं० पीडनीय से] १ जिसका पीड़न हो सके या किया जाने को हो। २ जिसे कष्ट पहुँचाया जा सके या पहुँचाया जाने को हो।
पुं० याज्ञवल्क्य स्मृति के अनुसार ऐसा राजा या राज्य जो अच्छे मत्री और उपयुक्त सेना से रहित हो और इसी लिए जिसे सहज मे दबाकर अपने अधिकार मे किया जा सकता हो।

पीड़-पखा—पुं० [सं० आपीड + पक्ष = पख] [स्त्री० अल्पा० पीड़-पखी] १ सिर पर की चोटी या बालो की पट्टी। २ सिर पर पहना जानेवाला एक प्रकार का आभूषण। उदा०—कै मयूर की पीड़-पखी री।—सूर।

पीडा—स्त्री० [सं० √ पीड़ + अङ् + टाप्] पीड़ा। (दे०)

पीड़ा—स्त्री० [सं० पीडा से] १ प्राणियो को दु खित या व्यथित करनेवाली वह अप्रिय अनुभूति जो किसी प्रकार का मानसिक या शारीरिक आघात लगने, कष्ट पहुँचने या हानि होने पर उत्पन्न होती है और उसे बहुत ही खिन्न, चिंतित तथा विकल रखती है। तकलीफ। वेदना। व्यथा। (पेन) जैसे—धन-नाश, पुत्र-शोक, प्रिय के वियोग या विरह के कारण होनेवाली पीड़ा। २ सामान्य अर्थ मे, शरीर के किसी अग पर चोट लगने या उसमे किसी प्रकार का विकार उत्पन्न होने पर अथवा शारीरिक क्रियाओ को अव्यवस्थित होने पर उत्पन्न होनेवाली उक्त प्रकार की वह अनुभूति जिसका ज्ञान सारे शरीर को स्नायविक तत्र के द्वारा होता है। दरद। (पेन) जैसे—अपच के कारण पेट मे, ज्वर के कारण सिर मे अथवा ऊँचाई से गिर पड़ने के कारण हाथ-पैरो मे होनेवाली पीड़ा। ३ कोई ऐसी खराबी या गड़बड़ी जिसमे किसी प्रकार की व्यवस्था मे बाधा होती हो और वह ठीक तरह से न चलने पाती हो। कष्टदायक अव्यवस्था। जैसे—(क) राक्षसो के उपद्रव से ऋषि-मुनियो के आश्रम मे पीड़ा होती थी। (ख) दरिद्रता की पीड़ा से सारा परिवार छिन्न-भिन्न हो गया। (ग) काम वासना की पीड़ा से वह विकल हो रहा था। ४. बीमारी। रोग। व्याधि। ५. प्रतिबंध। रुकावट। ६ विनाश। ७ क्षति। नुकसान। हानि। ८. करुणा। दया। ९. चद्रमा या सूर्य का ग्रहण। उपराग। १० सिर पर लपेटकर बाँधी जानेवाली माला। शिरोमाला। ११ धूप-सरल या सरल नामक वृक्ष।

पीड़ाकर—वि० [सं० पीडा √ कृ (करना) + ट] पीड़ा या कष्ट देनेवाला।

पीड़ा-गृह—पुं० [ष० त०] वह स्थान जहाँ किसी को कष्ट पहुँचाया जाता हो।

पीड़ा-स्थान—पुं० [सं० स० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार जन्मकुण्डली मे उपचय अर्थात् लग्न से तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान के अतिरिक्त शेष स्थान जो अशुभ ग्रहो के स्थान माने गये है।

पीड़िका—स्त्री० [सं० पीडा + कन्—टाप्, इत्व] फुड़िया। फुसी।

पीडित—वि० [सं० √ पीड़ + क्त] पीड़ित। (दे०)

पीड़ित—वि० [सं० पीडित] १. जो किसी प्रकार की पीड़ा से ग्रस्त हो। जैसे—रोग से पीड़ित। २. जो दूसरो के अत्याचार, जुल्म आदि से आक्रांत और फलतः कष्ट मे हो। जैसे—पीड़ित जन-समाज। ३. जिसे दबाया या पीसा गया हो। ४ जो नष्ट कर दिया गया हो। ५. जो किसी चीज के प्रभाव या फल से अपने को दु खी समझता हो। सताया हुआ। जैसे—जग पीड़ित रे अति सुख से।—पत।

पीढ़ी—स्त्री० [सं० पीठ] १ देव-स्थान। देवपीठ। २ वेदी।

पीढ़ुरी†—स्त्री० = पिंडली।

पीढ़ा—पुं० [सं० पीठ अथवा पीठक] [स्त्री० अल्पा० पीढ़ी] १ प्राय. लकड़ी का बना हुआ चौकी के आकार का वह छोटा आसन जिसके पाये बहुत कम ऊँचे होते है और जिस पर हिन्दू लोग भोजन करते समय बैठते है। २. विस्तृत अर्थ मे, बैठने का कोई आसन।
मुहा०—(किसी को) ऊँचा पीढ़ा देना = विशेष आदर-सम्मान प्रकट करते हुए अच्छे या ऊँचे आसन पर बैठाना।
३ सिंहासन।

पीढ़ी—स्त्री० [हिं० पीढ़ा का स्त्री० अल्पा०] बैठने के लिए एक विशेष प्रकार की छोटी चौकी। छोटा पीढ़ा।
स्त्री० [सं० पीठिका] १. किसी कुल या वश की परम्परा मे, क्रम क्रम से आगे बढ़नेवाली सतान की प्रत्येक कड़ी या स्थिति। जैसे—(क) बाप, दादा और परदादा ये तीन पीढ़ियाँ, अथवा बाप, बेटे और पोते की तीन पीढ़ियाँ। (ख) हमारे पास अपने पूर्वजो के बीस पीढ़ियो के वश-वृक्ष हैं। २ उक्त कड़ी या स्थिति के वे सब लोग जो रिश्ते या सबध मे आपस मे प्राय बराबरी के हो। वश-क्रम मे प्रत्येक शृखला के क्षेत्र के सब लोग। जैसे—(क) उनकी दूसरी पीढ़ी मे तो दस ही आदमियो का परिवार था, पर चौथी पीढ़ी मे परिवारवालों की सख्या बढ़कर साठ तक पहुँची थी। (ख) हमारी सात पीढ़ियों मे से किसी पीढ़ी ने कभी ऐसा अनाचार न किया होगा। ३. किसी जाति, देश या समाज के वे सब लोग जो किसी विशिष्ट काल मे प्राय कुछ आगे-पीछे जन्म लेकर साथ ही साथ रहते हो। किसी विशिष्ट समय का वह सारा जनसमुदाय जिनकी अवस्था या वय मे अधिक छोटाई-बड़ाई न हो। जैसे—ये नई पीढ़ी के लोग ठहरे, इनमे पुरानी पीढ़ी के लोगो का-सा आचार-विचार नही रह गया है। ४. किसी प्रकार की परम्परागत

स्थिति। उदा०—सदा समर्थन करती उसका तर्क-शास्त्र की पीढ़ी।—प्रसाद।

पीत—वि० [सं०√प+क्त+अच्] [स्त्री० पीता] १ पीले रंग का। पीला। २ भूरा। (क्व०)

पु० [√पा+क्त] १ पीला रंग। भूरा रंग। ३ हरताल। ४. हरिचंदन। ५ कुसुम। बरें। ६ अकोल का वृक्ष। ढेरा। ७. सिहोर का पेड़। ८ धूप-सरल। ९ बेंत। १० पुखराज। ११. तुन। नंदिवृक्ष। १२. एक प्रकार की सोमलता। १३. पीली कटसरैया। १४ पद्मकाष्ठ। पदमाख। १५ पीला खस। १६ मूँगा।

भू० कृ० [सं०√ पा (पीना)+क्त] जो पान किया गया हो। पीया हुआ।

पीतकंद—पु० [ब०स०] गाजर।

पीतक—पु० [सं० पीत+क] १ हरताल। २. केसर। ३ अगर। ४. पदमाख। ५ सोनामाखी। ६ तुन। ७ विजयसार। ८. सोनापाठा। ९. हल्दी। हरिद्रा। १० किकिरात। ११ पीतल। १२ पीला चंदन। १३. एक प्रकार का बबूल। १४. शहद। १५. गाजर। १६ सफेद जीरा। १७ पीली लोध। १८. चिरायता। १९ अंडे के अंदर का पीला अंश। अंडे की जरदी।

वि० पीले रंग का। पीला।

पीत-कदली—स्त्री० [कर्म० स०] सोन केला।

पीतक-द्रुम—पु० [कर्म० स०] हलदुआ। हरिद्रवृक्ष।

पीत-करवीरक—पु० [कर्म० स०+क] पीले फूलोंवाला कनेर।

पीतका—स्त्री० [सं० पीतक+टाप्] १ कटसरैया। २ हलदी।

पीत-कावेर—पु० [सं० कु-बेर=शरीर, प्रा० स०, पीत-कावेर, ब० स०] १ केसर। २ पीतल के योग से बनी हुई एक मिश्र धातु जिसके घड़े आदि बनाये जाते है।

पीत-काष्ठ—पु० [कर्म० स०] १. पीला चंदन। २. पीला अगर।

पीत-कीला—स्त्री० [कर्म०स०] अवर्तकी लता। भागवत वल्ली।

पीत-कुरवक—पु० [कर्म० स०] पीली कटसरैया।

पीत-कुरंट—पु० [कर्म० स०] पीली कटसरैया।

पीतकुष्ठ—पु० [कर्म० स०] पीले रंग का कोढ़।

पीत-कूष्मांड—पु० [कर्म० स०] पीले रंग का कुम्हड़ा।

पीत-कुसुम—पु० [कर्म० स०] पीली कटसरैया।

पीत-केदार—पु० [ब० स०] एक तरह का धान।

पीत-गंध—पु० [द्व० स०] पीला चंदन। हरिचंदन।

पीत-गन्धक—पु० [कर्म० स०] गंधक।

पीत-घोषा—स्त्री० [कर्म० स०] पीले फूलोंवाली एक तरह की लता।

पीत-चंदन—पु० [कर्म० स०] पीले रंग का चंदन जो पहले द्रविड़ देशों से आता था। हरिचंदन।

पीत-चंपक—पु० [कर्म० स०] १. पीली चंपा। २ दीपक। चिराग।

पीत-चोप—पु० [सं०] पलास का फूल। टेसू।

पीत-झिंटी—स्त्री० [कर्म० स०] १. पीले फूलवाली कटसरैया। २. एक तरह की कटाई।

पीत-तंडुल—पु० [ब० स०] कँगनी नामक कदन्न।

पीतता—स्त्री० [सं० पीत+तल्+टाप्] पीलापन। जर्दी।

पीत-तुंड—पु० [ब०स०] बत्तख या हंस की जाति का एक तरह का पक्षी। कारंडव। बया।

पीत-तैल—स्त्री० [ब० स०] मालकँगनी।

पीतत्व—पु० [सं० पीत+त्व] पीतता। पीलापन।

पीतदंतता—स्त्री० [सं० पीत-दंत, कर्म० स०+तल्+टाप्] दाँतों का एक पित्तज रोग जिसमें दाँत पीले हो जाते है।

पीत-दारु—पुं० [कर्म० स०] १. देवदारु। २. धूपसरल। ३ हल्दुआ। ४. हलदी। ५. चिरायता। ६. कायकरंज।

पीत-दीप्ता—स्त्री० [द्व० स०, टाप्] बौद्धों की एक देवी।

पीत-दुग्धा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] १. दूध देनेवाली गाय। २. वह गाय जिसका दूध महाजन को ऋण के बदले मे दिया जाता हो। ३. कटेहरी। ४ ऊँटकटारा। भड़भाँड़। ५. सातला। थूहर।

पीतद्रु—पु० [कर्म० स०] १. दारु-हलदी। २ धूप-सरल ३ देव-दारु।

पीत-धातु—पु० [कर्म० स०] १. रामरज। २. गोपीचंदन।

पीतन, पीतनक—पु० [सं० पीत√नी+ड] [सं० पीतन+कन्] १ केसर २ हरताल। ३ धूपसरल। ४ अमड़ा। ५. पाकर।

पीत-निद्र—वि० [ब० स०] गहरी नींद मे सोया हुआ।

पीतनी—स्त्री० [सं० पीतन+ङीष्] सरिवन। शालपर्णी।

पीत-नील—पु० [कर्म० स०] नीले और पीले रंग के संयोग से बना हुआ रंग। हरा रंग।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

पीत-पराग—पुं० [कर्म० स०] कमल का केसर।

पीत-पर्णी—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] वृश्चिकाली (क्षुप)।

पीत-पादप—पु० [कर्म० स०] १ श्योनाक वृक्ष। सोना-पाढ़ा। २. लोध।

पीत-पादा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] मैना। सारिका।

पीत-पुष्प, पीत-पुष्पक—पु० [ब० स०] १ कनेर। २. घीया तरोई। ३. पीली कटसरैया। ४. चंपा। ५. पेठा। ६ तगर। ७. हिंगोट। ८. लाल कचनार।

पीत-पुष्पका—स्त्री० [ब० स०,+कप्+टाप्] जंगली ककड़ी।

पीत-पुष्पा—स्त्री० [ब० स,+टाप्] १ झिझरीटा। २. सहदेई। ३. अरहर। ४. तरोई। तोरी। ५. पीली कटसरैया। ६ पीला कनेर। ७. सोन-जूही।

पीत-पुष्पी—स्त्री० [ब० स०+ङीष्] १. शंखाहुली। २. सहदेई बूटी। ३. बड़ी तरोई। ४. खीरा। ५ इन्द्रायण। ६. सोन-जूही।

पीत-पृष्ठा—स्त्री० [ब० स०+टाप्] वह कौड़ी जिसकी पीठ पीली हो।

पीत-प्रसव—पु० [ब० स०] १. हिंगपुत्री। २. पीला कनेर।

पीत-फल—पु० [ब० स०] १ सिहोर। २. कमरख। ३. धव का पेड़।

पीत-फलक—पु० [ब० स०,+कप्] १. सिहोर। २. रीठा। ३. कमरख। ४. धव वृक्ष।

पीत-फेन—पु० [ब० स०] रीठा। अरिष्ठक वृक्ष।

पीत-बालुका—स्त्री० [ब० स०] हलदी।

पीत-बीजा—स्त्री० [ब० स०, टाप्] मेथी।

पीत-भद्रक—पुं० [कर्म० स०] एक प्रकार का बबूल। देवबर्बुर।

पीत-भृंगराज—पुं० [कर्म० स०] पीला भगरा।

पीतम†—वि० =प्रियतम।

पीत-मणि—पु० [कर्म० स०] पुखराज। पुष्पराज मणि।

पीत-मस्तक—पु० [ब० स०] पीले मस्तकवाला एक तरह का पक्षी।

पीत-माक्षिक—पु० [कर्म० स०] सोनामाखी।

पीत-मारुत—पु० [ब० स०] एक प्रकार का साँप।

पीतमुंड—पु० [ब० स०] एक प्रकार का हिरन।

पीत-मुद्ग—पु० [कर्म० स०] एक प्रकार का मूंग।

पीत-मूलक—पु० [ब० स०, + कप्] गाजर।

पीत-मूली—स्त्री० [ब० स०, + ङीष्] रेवद चीनी।

पीत-यूथी—स्त्री० [कर्म० स०] सोनजूही। स्वर्णयूथिका।

पीतर†—पु० =पीतल।

पीत रक्त—पु० [कर्म० स०] १. पुखराज। २. पीलापन लिये लाल रग।
वि० पीलापन लिये लाल रग का।

पीत-रत्न—पु० [कर्म० स०] पुखराज। पीतमणि।

पीत-रस—पु० [ब० स०] कसरू।

पीत-राग—पु० [ब० स०] १. पद्मकेसर। २. मोम। ३. पीला रग।
वि० पीले रग का।

पीत-रोहिणी—स्त्री० [स० पीत√ रुह् (उगना) + णिनि + ङीष्] १ जबीरी नीबू। २. पीली कुटकी। कुभेर।

पीतल—पु० [स० पित्तल] १ एक प्रसिद्ध मिश्र धातु जो तांबे और जस्ते के मेल से बनती है और जिसके प्राय बरतन बनते है। (ब्रॉस) २ पीला रग।
वि० पीले रग का।

पीतलक—पु० [स० पीतल√कै (भासित होना) + क] पीतल।

पीत-लोह—पु० [कर्म०स०] पीतल (धातु)।

पीत-वर्ण—पु० [ब० स०] १ पीला मेढक। स्वर्ण मडूक। २. ताड का पेड। ३. कदब। ४ हलदुआ। ५. लाल कचनार। ६ मैनसिल। ७ पीला चदन। ८ केसर।

पीत-वल्ली—स्त्री० [कर्म० स०] आकाश बेल।

पीतवान—पु० [?] हाथी की दोनों आँखों के बीच का स्थान।

पीत-वालुका—स्त्री० [ब०स०] हलदी।

पीत-वास (स्)—पुं० [ब०स०] श्रीकृष्ण।

पीत-बिंदु—पु० [कर्म०स०] विष्णु के चरण-चिह्नों मे से एक।

पीत-वृक्ष—पुं० [कर्म०स०] सोनापाठा।

पीतशाल—पु० [स० पीत√ शल् (जाना) + अण्] विजयसार नामक वृक्ष।

पीतशालक—पु० [स० पीतशाल + कन्] =पीतशाल।

पीत-शेष—वि० [स० सहसुपा स०] पीने के उपरात बचा हुआ (तरल पदार्थ)।

पीत-शोणित—वि० [ब० स०] १. जिसने किसी का रक्त पिया हो। २ खूनी। हत्यारा।

पीतसरा†—पुं० [स० पितृव्य, हिं० पितिया + ससुर] चचिया ससुर। ससुर का भाई।

पीत-सार—पु० [ब० स०] १. पीत चदन। हरिचदन। २. सफेद चदन। ३. गोमेद। ४. अकोल। ५ विजयसार। ६. शिलारस।

पीतसारक—पु० [स० पीतसार + कन्] १. नीम का पेड। २. डेरे का पेड।

पीतसारिका—स्त्री० [स० पीत √ सृ (गति) + णिच् + इन् + कन् + टाप्] काला सुरमा।

पीत-साल (क)—पु० =पीतशाल।

पीत-स्कध—पु० [ब० स०] १. सूअर। शूकर। २ एक वृक्ष।

पीत-स्फटिक—पु० [कम०म०] पुखराज।

पीत-स्फोट—पु० [कर्म०स०] १. खुजली। २. खसरा नामक रोग।

पीत-हरित—वि० [कर्म० स०] पीलापन लिये हरे रग का।
पु० पीलापन लिये हरा रग।

पीतांग—वि० [पीत-अग, ब०स०] पीले अगोवाला।
पु० १. एक तरह का मेढक जिसका रग पीला होता है। २. सोनपाठा (वृक्ष)

पीतांबर—पु० [पीत-अबर, ब०स०] १ पीले रग का वस्त्र। पीला कपडा। २. एक प्रकार की रेशमी धोती जो हिन्दू लोग प्राय पूजा-पाठ के समय पहनते है। ३ पीले वस्त्र धारण करनेवाला व्यक्ति। जैसे—कृष्ण, नट, सन्यासी विष्णु आदि।
वि० जो पीले कपडे पहने हुए हो।

पीता—स्त्री० [स० पीत + टाप्] १ हलदी। २. दारुहलदी। ३ बडी माल-कंगनी। ४ भूरा शीशम। ५ प्रियगु फल। ६. गोरोचन। ७ अतीस। ८ पीला केला। ९ जगली बिजौरा नीबू। १० जर्द चमेली। ११ देव दारु। १२ राल। १३ असगध। १४ शालि-पर्णी। १५ आकाश बेल।
वि० पीले रगवाली।

पीताब्धि—पु० [पीत-अब्धि, ब०स०] समुद्र पान करनेवाले, अगस्त्य मुनि।

पीताभ—वि० [पीता-आभा, ब०स०] जिसमे से पीली आभा निकलती हो। जिसमे से पीला रग झलक रहा हो।
पु० पीला चन्दन।

पीताभ्र—पु० [पीत-अभ्र, कर्म०स०] पीले रग का एक तरह का अभ्रक।

पीताम्लान—पु० [पीत-अम्लान कर्म०स०] पीली कटसरैया।

पीतारुण—पु० [पीत-अरुण, कर्म० स०] पीलापन लिये हुए लाल रग।
वि० [कर्म०स०] उक्त प्रकार के रग का। पीलापन लिए लाल।

पीतावशेष—वि० [स० पीत-अवशेष, सहसुपा स०] पीत-शेष।

पीताश्म (न्)—पु० [पीत-अश्मन, कर्म०स०] पुखराज। पुष्परागमणि।

पीताह्वा—पु० [पीता-आह्वा] राल।

पीति—स्त्री० [स०√ पा (पीना) + क्तिन्] १. पीने की क्रिया या भाव। २ गति। ३ सूंड।
वि० घाडा।

पीतिका—स्त्री० [स० पीत + क + टाप्, इत्व] १ हल्दी। २. दारु हल्दी। ३ सोनजूही।

पीती (तिन्)—पु० [स० पीत + इनि] घोडा।
†स्त्री० = प्रीति।

पीलु—पु० [स० √ पा (पीना या रक्षा करना) + लुन्, किद्‌त्व] १. सूर्य २. अग्नि। ३ झुड का प्रधान हाथी। यूथपति। ४ सेना में हाथियों के दल का नायक।

पीलुवाप—पुं० [ब०स०] १. गूलर। २. देवदार।

पीलोदक—पु०[पील-उदक, ब०स०] नारियल (जिसके अन्दर जल या रस रहता है)।

पीथ—पु० [स०√पा (पीना) +थक्] १. पानी। २. पेय पदार्थ। ३. घी। ४ अग्नि। ५. सूर्य। ६. काल। ७. समय।

पीथि—पुं० [स० पीति, पृषो० सिद्धि] घोडा।

पीढ़ी—स्त्री०=पिढ़ी।

पीन—वि०[स०√ प्याय्(बढ़ाना)+क्त, सप्रसारण, नत्व, दीर्घ] [भाव० पीनता] १. आकार-प्रकार की दृष्टि से भारी-भरकम। दीर्घकाय। बहुत बडा और मोटा। २. पुष्ट। ३. भरा-पूरा। सपन्न।

पु० मोटाई। स्थूलता।

पीनक—स्त्री०=पिनक।

पीनता—स्त्री०[स० पीन+तल्+टाप] १. पीन होने की अवस्था या भाव। २. मोटाई। स्थूलता।

पीनना†—स० =पीजना।

पीनस—पु०[म० पीन√सो (नष्ट करना)+क] १. सर्दी या जुकाम। २. एक रोग जिसमे नाक से दुर्गंधमय गाढ़ा पानी निकलता है।

स्त्री०[फा० फीनस] १. पालकी नाम की सवारी। २. एक प्रकार की नाव।

पीनसा—स्त्री०[स० पीनस+टाप] ककडी।

पीनसित, पीनसी (सिन्)—वि०[स० पीनस+इतच्] [पीनस+इनि] जिसे पीनस रोग हुआ हो। पीनस रोग से ग्रस्त।

पीना—स०[स० पान] १. जीवो के मुँह के द्वारा या वनस्पतियो का जडो के द्वारा स्वाभाविक क्रिया मे तरल पदार्थ विशेषत. जल आत्मसात् करना। २ किसी तरह पदार्थ मे मुँह लगाकर उसे धीरे-धीरे चूसते हुए गले के रास्ते पेट मे उतारना। जैसे—यहाँ रात भर मच्छर हमारा खून पीते हैं। ३. गाजे, तमाकू आदि का धूँआ नशे के लिए बार-बार मुँह मे लेकर बाहर निकालना। धूम्रपान करना। जैसे—चिलम, बीडी, सिगरेट या हुक्का पीना। ४. एक पदार्थ का किसी दूसरे तरल पदार्थ को अपने अन्दर खीचना या सोखना। जैसे—इतना ही आटा (या चावल) पाव भर घी पी गया। ५. लाक्षणिक अर्थ मे धन आत्मसात् करना या ले लेना। जैसे—(क) यह मकान मरम्मत मे ५०० रुपए पी गया। (ख) लडका बुढ़िया का सारा धन पी गया।

सयो० क्रि०—जाना।—डालना।—लेना।

६. मन मे कोई उग्र या तीव्र मनोविकार होने पर भी उसे अन्दर ही अन्दर दबा लेना और ऊपर या बाहर प्रकट न होने देना। चुपचाप सहकर रह जाना। जैसे—किसी के अपमान करने या गाली देने पर भी क्रोध या गुस्सा पीकर रह जाना। ७ कोई अप्रिय या निंदनीय घटना या बात हो जाने पर उसे चुपचाप दबा देना और उसके सबध मे कोई कार्रवाई न करना या लोगो मे उसकी चर्चा न होने देना। जैसे—ऐसा जान पडता है कि सरकार इस मामले को पी गई।

संयो० क्रि०—जाना।

मुहा०—(कोई गुण या भाव) घोलकर पी जाना= इस बुरी तरह से आत्मसात् करना या दबा डालना कि मानों उसका कभी कोई अस्तित्व ही नही था। जैसे—लज्जा (या शरम) तो तुम घोलकर पी गये हो।

पु० १. पीने की क्रिया या भाव। २. शराब पीने की क्रिया या भाव। जैसे—उनके यहाँ पीना-खाना सब चलता है।

पुं०[स० पीडन=पेरना] १. तिल, तीसी आदि की खली। २. किसी चीज के मुँह पर लगाई जानेवाली डाट। (लश०)

पीनी—स्त्री०[स० पिड या पीडन ?] तिल, तीसी या पोस्ते की खली।

पीनोरु—वि०[स० पीन-ऊरु, ब०स०] जिसकी जाँघे भारी और मोटी हो।

पीनोध्नी—स्त्री०[स० पीन-ऊधस्, ब०स०, ङीप्, अनङ्+आदेश] बडे और भारी थनवाली गाय।

पीप—स्त्री०[स० पूय] पके हुए घाव या फोडे के अन्दर मे निकलनेवाला वह सफेद लसदार पदार्थ जो दूषित रक्त का रूपान्तर और विषाक्त होता है। पीब। मवाद।

विशेष—रक्त मे श्वेत कणों की अधिकता होने से ही इसका रग सफेद हो जाता है।

क्रि० प्र०—निकलना।—बहना।

पीपर†—पु०=पीपल।

पीपर-पर्न—पुं०[हिं० पीपल+स० पर्ण=पत्ता] १ पीपल का पत्ता। २. कान मे पहनने का एक आभूषण।

पीपरा-मूल—पु०[स० पिप्पलीमूल] पीपल नामक लता की जड।

पीपरि—पुं०[स० अपि√पृ (बचाना)+इन्, अकार-लोप, दीर्घ] छोटा पाकर वृक्ष।

†पुं०=पीपल।

स्त्री०[स० पिप्पली] एक लता जिसके फल और जडें औषध के काम आती है। इस लता के पत्ते पान के पत्तो की तरह परन्तु कुछ छोटे, अधिक नुकीले तथा अधिक चिकने होते है।

पीपल—पु०[स० पिप्पल] बरगद की जाति का एक प्रसिद्ध वृक्ष जो भारत मे प्राय सभी स्थानो मे अधिकता से पाया जाता है। पर इसमे जटाएँ नही फूटती। इसका गोदा (फल) पकने पर मीठा होता है। हिन्दू इसे बहुत पवित्र मानते और पूजते है। चलदल। चलपत्र। बोधि-द्रुम।

स्त्री०[स० पिप्पली] एक प्रकार की लता जिसकी कलियाँ ओषधि के रूप मे काम मे आती है। कलियाँ तीन-चार अगुल लबी शहतूत (फल) के आकार की और स्वाद मे तीखी होती है। पिप्पली। मागधी।

पीपलामूल—पु० [स० पिप्पलीमूल] एक प्रसिद्ध ओषधि जो पीपल नामक लता की जड है। यह चरपरा, तीखा, गरम, रूखा, दस्तावर, पाचक, रेचक तथा कफ, वात, आदि को दूर करनेवाला माना जाता है।

पीपा—पु० [?] [स्त्री० अल्पा० पीपी] १. लकडी, लोहे आदि का बना हुआ तेल आदि रखने का एक प्रकार का बडा आधान। २. राजस्थान के एक प्रसिद्ध राजा जो अपना राज्य छोडकर साधु और रामानद के शिष्य बन गये थे।

पीबा—पुं०=पीप।

पीबा—पु० =पिय (प्रियतम)।

पीयर†—वि०=पीला।

पीया—पुं०=पिय (प्रियतम)।

पीयु—पुं०[स०√ पा (पीना)+कु,नि० सिद्धि] १. काल। २. सूर्य। ३. थूक। ४. कौआ। ५. उल्लू।
वि० १. हिंसक। २. प्रतिकूल।

पीयूक्षा—स्त्री०[स० पीयु√उक्ष् (सींचना)+अ+टाप्] पाकर की एक जाति।

पीयूखा—पु० =पीयूष।

पीयूष—पुं०[सं०√ पीय् (संतुष्ट करना)+ऊषन्] १. अमृत। सुधा। २. दूध। ३. गाय आदि के प्रसव के उपरांत, पहले सात दिनों का दूध जो अग्राह्य माना जाता है। पेऊस।

पीयूष-ग्रंथि—स्त्री०[मध्य०स०] शरीर के अंदर मस्तिष्क के निचले भाग की एक ग्रंथि जो कफ उत्पन्न करती है। (पिट्यूटरी ग्लैंड)

पीयूष-पाणि—वि०[ब०स०] १. जिसके हाथ में अमृत हो। २. जिसके हाथ की दी हुई चीज में अमृत का-सा गुण हो। जैसे—वे पीयूष-पाणि वैद्य थे।

पीयूष-भानु—पुं०[ब०स०] चंद्रमा।

पीयूष-रुचि—पु०[ब०स०] चंद्रमा।

पीयूष-वर्ष—पु०[स० पीयूष√ वृष् (बरसना) +अण्]१. अमृत की वर्षा करनेवाला, चंद्रमा। २ संस्कृत के जयदेव नामक कवि।३ कपूर। ४ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में १० और ९ के विश्राम से १९ मात्राएँ और अंत में गुरु-लघु होता है। इसे आनन्दवर्द्धक भी कहते हैं।

पीर—स्त्री०[स०पीडा]१. कष्ट। तकलीफ। दुख। २. दर्द। वेदना। ३ दूसरे का कष्ट या पीडा देखकर उसके प्रति मन में होनेवाली करुणा-पूर्ण भावना या सहानुभूति। दूसरे के दुःख से कातर होने की अवस्था या भाव। ४ प्रसव-काल के समय स्त्रियों को होनेवाली पीडा या दर्द।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।
मुहा०—(किसी की) पीर जानना या पाना=सहानुभूतिपूर्वक किसी का कष्ट या दुःख समझना।
वि०[फा०] [भाव० पीरी]१. वृद्ध। बुड्ढा। २. बडा और पूज्य। बुजुर्ग। ३ चालाक। धूर्त।
पु० १. परलोक का मार्ग-दर्शक। धर्म-गुरु। २. महात्मा और सिद्ध पुरुष। ३. मुसलमानों का धर्मगुरु। ४. सोमवार का दिन। चंद्रवार।

पीरजादा—पु०[फा० पीरजादा] [स्त्री० पीरजादी] किसी पीर या धर्म-गुरु का पुत्र।

पीरतनी—पु०[हि० पियरा+तन(प्रत्य०)] पीलापन। उदा०—कबीर हरदी पीरतनु हरै चून चिहनुन रहाइ।—कबीर।

पीरना*—स० पेरना। उदा०—तेली ह्वै तन कोल्हू करिहौ पाप पुन्नि दोऊ पीरौ।—कबीर।

पीर-नाबालिग—पु०[फा० पीर+अ० नाबालिग] ऐसा वृद्ध जो बच्चों के से आचरण, काम या बातें करे। सठियाया हुआ बुड्ढा। बुद्धिभ्रष्ट बूढ़ा।

पीर-भुखडी—पु० [फा+अनु०] जनखों या हिजडों के संप्रदाय के एक कल्पित पीर।

पीरमान—पु०[लश०] मस्तूल के ऊपर बँधे हुए वे डंडे जिनके दोनों सिरों पर लट्टू लगे रहते हैं और जिन पर पाल चढ़ाई जाती है। अड्डा।

पीर-मुरशिद—पु०[फा०] गुरु, महात्मा, और पूजनीय व्यक्ति। प्रायः राजाओं, बादशाहों और बडों के लिए भी इसका प्रयोग होता है।

पीरा†—स्त्री० =पीडा।
वि०[स्त्री० पीरी] पीला।

पीराई—पु०[फा० पीर+आई (प्रत्य०)]१. डफालियों की तरह की एक जाति जिसकी जीविका पीरों के गीत गाने से चलती है। २. उक्त जाति का व्यक्ति।
†स्त्री०=पीरी ('पीर' का भाव०)।

पीरानी—स्त्री० [फा०] पीर अर्थात् मुसलमानी धर्मगुरु की पत्नी।

पीरी—स्त्री० [फा०]१ वृद्ध होने की अवस्था, या भाव। वृद्धावस्था। २. किसी इस्लामी धर्म-स्थान के पीर (महन्त) होने की अवस्था या भाव। ३. दूसरों को अपना अनुयायी या शिष्य बनाने का धन्धा या पेशा। ४. बहुत बडी चालाकी या बहादुरी। जैसे—इतना-सा काम करके तुमने कौन-सी पीरी दिखला दी। ५. किसी प्रकार का विशेषा-धिकार। इजारा। ठेका। (व्यंग्य) जैसे—यहाँ क्या तुम्हारे बाबा की पीरी है। ६ कोई अलौकिक या चमत्कारपूर्ण कृत्य करने की शक्ति।
वि० हि० 'पीरा' (पीला) का स्त्री०।

पील—पु०[फा० पील मुर्ग] एक प्रकार का मुरगा।

पिरोजा—पु० दे० =फीरोजा।

पील—पु०[स० पीलु (हाथी) इस फा०]१. हाथी। गज। हस्ति। २. शतरंज के खेल का हाथी नामक मोहरा।
पु० =पीलु (पिल्लू नामक कीडा)।
पु०—पीलु।

पीलक—पु०[देश०] पीले रंग का एक प्रकार का पक्षी जिसके डैने काले और चोंच लाल होती है।

पीलखा—पु०[देश०] एक प्रकार का वृक्ष।

पील-पाँव—पु०=फील पाँव।

पीलपाया—पु०[फा० पीलपाय]१ आधार या आश्रय के लिए किसी चीज के नीचे लगाई जानेवाली टेक या थूनी। २ किलों आदि की दीवारों के नीचे या साथ सहारे के लिए बनी हुई बहुत मोटी दीवार।

पीलपाल—पु०=फीलवान।

पीलवान—पु०=फीलवान।

पीलसोज—पु० [फा० फतीलसोज] दीयट। चिरागदान।

पीला—वि० [स० पीत] [स्त्री० पीली, भाव० पीलापन]१. (पदार्थ) जो केसर, सोने या हलदी के रंग का हो। पीत। जर्द। २. (शरीर का वर्ण) जो रक्त की कमी के कारण हलका सफेद हो गया हो और जिसमें स्वास्थ्य की सूचक चमक या लाली न रह गई हो। जैसे—बीमारी के कारण उनका सारा शरीर पीला पड गया है।
क्रि० प्र०—पडना।
३. (शरीर का वर्ण) जो भय, लज्जा आदि के कारण उक्त प्रकार का हो गया हो। जैसे—मुझे देखते ही उसका चेहरा पीला पड गया।
क्रि० प्र०—पडना।
पु०[?] एक प्रकार का रंग जो हलदी या सोने के रंग से मिलता-जुलता होता है।
पु०[स० पीलु, फा० पील] शतरंज का पील, फील या हाथी नामक मोहरा

पीला कनेर—पुं० [हिं० पीला+कनेर] एक तरह का कनेर जिसमें पीले रग के फूल लगते हैं।

पीला धतूरा—पुं० [हिं० पीला+धतूरा] ऊँटकटारा। घमोय। भँड-भाँड। सत्यानासी।

पीलापन—पुं० [हिं० पीला+पन (प्रत्य०)] १. पीले होने की अवस्था, गुण या भाव। पीतता। जर्दी। २. खून की कमी अथवा भय आदि के कारण होनेवाली शरीर की रगत।

पीला बरेला—पुं० [देश०] बनमेथी। बरियारा।

पीला बाला—पु०=लामज (तृण)।

पीला शेर—पु० [हिं० पीला+फा० शेर] अफ्रीका के जगलों मे रहनेवाले शेरो की एक जाति जिसका रग पीला होता है।

पीलित—भू० कृ० [स०] जिसमे बल डाले गये हो या पडे हो। ऐंठा या मरोडा हुआ।

पीलिमा—स्त्री० [हिं० पीला] पीलापन।। ('कालिमा' के अनुकरण पर, असिद्ध रूप)

पीलिया—पु० [हि० पीला+इया (प्रत्य०)] कमल नामक रोग जिसमे मनुष्य की आँखें और शरीर पीला पड जाता है।

पीली—स्त्री० [हिं० पीला=पीत] तडके या प्रभात के समय आकाश मे दिखाई देनेवाली लाली जो कुछ पीलापन लिये होती है।

मुहा०—**पीली फटना**=तडका या प्रभात होना। पौ फटना।

पीली चमेली—स्त्री० [हिं०] चमेली के पौधो की एक जाति।

पीली चिट्ठी—स्त्री० [हिं० पीला+चिट्ठी] विवाह आदि शुभ कृत्यो का निमन्त्रण-पत्र जो प्राय: पीले रग के कागज पर छपा या लिखा रहता है अथवा जिस पर केसर आदि छिडका रहता है।

पीली जुही—स्त्री०=सोन जुही।

पीली मिट्टी—स्त्री० [हिं० पीला+मिट्टी] १. पीले रग की मिट्टी। २ पटिया आदि पर पोतने की पीले रग की जमी हुई कडी चिकनी मिट्टी।

पीलु—प० [स०√पील् (रोकना)+ड] १. दो-तीन हाथ ऊँचा एक तरह का क्षुप जिसमे पीले रग के गुच्छाकार फूल तथा कालापन लिये लाल रग के छोटे-छोटे गोल फल लगते हैं। ३. उक्त क्षुप का फल। ४. पुष्प। फूल। ५. हाथी। ६. परमाणु। ७. ताल वृक्ष का तना। ८. हड्डी का टुकड़ा। ९. तीर। वाण। १०. कृमि। कीडा। ११. चने का साग। १२. सरकडे या सरपत का फूल। १३ लाल कटसरैया। १४ अखरोट का पेड। १५. हाथ की हथेली।

पीलुआ†—पुं० [देश०] मछली पकड़ने का बहुत बड़ा जाल।

पीलुक—पु० [स० पीलु√कै+क] च्यूँटा।

पीलुनी—स्त्री० [स०√ पील+उन+ङीष्] १. चुरनहार। मूर्वा। २. चने का साग।

पीलु-पत्र—पु० [ब०स०] मोरट नाम की लता।

पीलु-पर्णी—स्त्री० [ब०स०,+ङीप्] १. चुरनहार। मूर्वा। २. कुँदुरू।

पीलु-पाक—पु० [ष०त०] वैशेषिक का यह सिद्धान्त कि तेज के प्रभाव से पदार्थों के परमाणु पहले अलग-अलग होते और फिर मिलकर एक हो जाते हैं। जसे—कच्ची मिट्टी के घड़े का जब अग्नि या ताप से संयोग होता है तब पहले तो उसके परमाणु अलग-अलग होते हैं और फिर लाल होने पर मिलकर एक हो जाते हैं।

पीलुपाक-वाद—पु० [ष०त०] वैशेषिकों का पीलुपाक-सबधी मत या सिद्धान्त।

पीलुपाकवादी (दिन्)—वि० [पीलुपाकवाद+इनि, (बोलना)+णिनि] पीलुपाकवाद-सबधी।

पुं० १. पीलुपाक का सिद्धान्त माननेवाला व्यक्ति। २. वैशेषिक दर्शन का अनुयायी या पंडित।

पीलु-मूल—पु० [ष०त०] १. पीलु वृक्ष की जड़। २. सतावर। ३. शालपर्णी।

पीलु-मला—स्त्री० [ब०स०,+टाप्] जवान गाय।

पीलू—पु० [स० पीलु] १ एक प्रकार का कटिदार वृक्ष जो दक्षिण भारत मे अधिकता से होता है। इसकी पत्तियाँ ओषधि के काम आती हैं। २. पिल्लू नाम का कीडा। ३. सगीत मे एक प्रकार का राग जिसके गाने का समय दिन के तीसरे पहर कहा गया है।

पीव—वि० [स० पीवन] १. मोटा। स्थूल। २. हृष्ट-पुष्ट।

†पुं०=पीप (मवाद)।

†पुं० १. =पिय (प्रियतम)। २ साधको की परिभाषा मे, परमेश्वर।

पीवट—स्त्री० [?] युक्ति। उपाय। तरकीब। उदा०—न मालूम कौन सी पीवट लगाए होगा।—वृदावनलाल वर्मा।

पीवना†—स०=पीना।

पीवर—वि० [स०√प्यै (वृद्धि)+ष्वरच्, सप्रसारण, दीर्घ] [स्त्री० पीवरा] [भाव० पीवरता, पीवरत्व] पीन (दे० सभी अर्थों मे)।

पु० १ कछुआ। २. जटा। ३. तापस मन्वन्तर के सप्तर्षियो मे से एक।

पीवरा—स्त्री० [स० पीवर+टाप्] १. असगध। २. सतावर।

पीवरी—स्त्री० [सं० पीवर+ङीष्] १. सतावर। २ शालिपर्णी। ३. बर्हिषद् नामक पिता की मानसी कन्याओ मे से एक। ४. युवती स्त्री। ५. गाय। गौ।

पीवा—स्त्री० [स० √पी (पीना)+व+टाप्] जल। पानी।

वि०=पीवर।

पीविष्ठ—वि० [स० पीवन्+इष्ठन्] अतिशय स्थूल। बहुत मोटा।

पीसना—स० [स० पेषण] १. कोई पदार्थ दो कठोर या कडे तलो के बीच में डाल या रखकर बार बार इस प्रकार रगड़ते हुए दबाना कि उसके बहुत छोटे-छोटे खड या कण हो जायँ। घन पदार्थ को चूर्ण के रूप में लाना। जैसे—चक्की मे आटा पीसना, सिल पर चटनी, भाँग या मसाला पीसना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

२. बहुत ही कठोरता, निर्दयता या हृदयहीनतापूर्वक किसी को बुरी तरह से कुचलना, दबाना या पीड़ित करना। जैसे—(क) मुझसे पाजीपन करोगे तो पीसकर रख दूँगा। (ख) सन् १९५७ के उपद्रवों के बाद अंगरेजों ने सारे देश को एक तरह से पीस डाला था। ३. खूब दबाते हुए रगड़ना। जैसे—दाँत पीसना। ४ इस प्रकार कष्ट भोगते हुए कठोर परिश्रम का काम करना कि मानो चक्की मे डालकर पीसे जा रहे हों। ५. बहुत परिश्रम का काम करना। जैसे—दोनो भाइयो को दिन भर दफ्तर में पीसना पड़ता है।

पुं० १. पीसने की क्रिया या भाव। २ वह या उतनी वस्तु जो

किसी को पीसने को दी जाय। जैसे—गेहूँ पीसना। ३. एक व्यक्ति के जिम्मे या हिस्से के कठोर परिश्रम का काम।

पीसी†—स्त्री०[सं० पितृष्वसा] पिता की बहन। बूआ। (बगाल)

पीसू—वि०[हिं० पीसना] बहुत पीसनेवाला।
†पु०=पिस्सू।

पीह—स्त्री०[स० पीव=मोटा?] चरबी।

पीहर—पु०[स० पितृ+गृह, हिं० घर] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर। मैका।

पीहा—पु०[अनु०] पपीहे का शब्द। उदा०—पीहा पीहा रटत पपीहा मधुबन मे।—रत्नाकर।

पीहू†—पु० =पिस्सू (कीडा)।

पुंकेसर—पु० [स०] फूलो का वह केसर जिसमे पुसत्ववाला तत्त्व रहता है और जिसके पराग या धूलि-कणों के सयोग से स्त्री केसर मे गर्भाधान होता है। (स्टैमन)

पुंख—पु०[स० पुस√ खन् (खोदना) +ड] १. तीर या बाण का वह हिस्सा जिसमे पख लगाया जाता था। २. बाज (पक्षी)। ३. मगलाचार।

पुंखित—वि०[स० पुख+इतच्]१. जो पख या पखो से युक्त हो। २. बाण जिसके पिछले भाग मे पख लगे हो।

पुंग—पु०[स० =पूग, पृषो० सिद्धि] बहुत बडा ढेर। राशि।

पुंगफल—पु० =पूगीफल।

पुंगल—पु०[स० पुग√ ला (लेना) +क] आत्मा।

पुंगव—पु० [स० कर्म०स०, +षच्] १. बैल। बृष। सॉड। २. ओषधि के काम मे आनेवाली एक वनस्पति।
वि० उत्तम। श्रेष्ठ। जैसे—नर-पुगव = मनुष्यो मे श्रेष्ठ।

पुंगव-केतु—पु० [ब०स०] वृषभध्वज। शिव।

पुंगी—स्त्री० [हि० चोगी] पत्ते का वह पतला चोगा जिसमे तम्बाकू भरकर पीते है। उदा०—पुगी के सिरे पर आग चिलचिला उठी।—वृन्दावनलाल वर्मा।

पुंगीफल—पु० पूगीफल'।

पुंछल्ला†—पु०='पुछल्ला।

पुंछवाना†—स० [हि० पोंछना का प्रे०] पोछने का काम किसी से कराना।
†स० =पुछवाना।

पुंछार†—वि०[हिं० पूंछ+आर (प्रत्य०) बडी पूँछवाला।
पु० मोर।

पुंछाला—पु०[हि०पूँछ+ला (प्रत्य०)] १.=पुछल्ला। २ =पिछलगा।

पुंज—पु०[स०√ पिञ्ज् (सामर्थ्य) +अच्, पृषो० सिद्धि] १ ढेर। २ राशि। समूह।

पुंज-दल—पु०[ब०स०] सुसना नाम का साग।

पुंजन—पु०[स० पुज+णिच्+ल्युट्—अन] १ पुज अर्थात् राशि बनाने की क्रिया या भाव। २. दे० 'सचयन'।

पुंजशः—अव्य०[स० पुज+शस्] ढेर का ढेर। ढेरो।

पुंजा—पु०[स० पुज]१. गुच्छा। २. समूह। ३ गट्ठा। पूला।

पुंजातीय—वि० [स० पुम्स्-जाति, ष० त०, +छ—ईय] लिंग के विचार से नर या पुरुष जाति का।

पुं० जाति या वर्ग का। (मेल)

पुंजि—पु०[स०√ पिञ्ज्+इन, पृषो० सिद्धि] समूह । ढेर।

पुंजिक—पु०[स० पुज+ठन्—इक] ओला। (आकाश से गिरनेवाला)

पुंजित—भू० कृ०[स० पुज+इतच्] १ पुज अर्थात् ढेर के रूप में बनाया या लगाया हुआ। २ एकत्र किया हुआ। सचित। (एक्यूमुलेटेड)

पुंजिष्ठ—भू० कृ०[स० पुज +इष्ठन्] पुजित । (वे०)

पुंजी †—स्त्री० =पूँजी।

पुंजीभूत—वि०[स० पुज+च्वि, ईत्व √भू (होना)+क्त] पुज या ढेर के रूप मे बना या लगा हुआ। जो राशि के रूप मे हो गया हो।

पुंजोत्पादन—पु०[स० पुज-उत्पादन, ष०त०] यत्रो आदि की सहायता से चीजो का बहुत अधिक मात्रा, राशि या सख्या मे तैयार करना। (मास-प्रोडक्शन)

पुंड—पु०[स०√ पुड् (मलना) +अच्] १. चदन आदि का टीका। तिलक। २ दक्षिण भारत मे बसनेवाली एक जाति जो पहले रेशम के कीडे पालती थी।

पुंडरिया—पु०[स० पुडरीक] पुडरी का पौधा।

पुंडरी (रिन्)—पु० [स० पुड√ऋ (गति) +णिनि] एक प्रकार का पौधा जिसकी सुगधित पत्तियाँ शालपर्णी की पत्तियो की-सी होती हैं। इसका रस आँख के रोगो मे हितकर माना गया है।

पुंडरीक—पु० [स०√ पुड्+ईक, नि० सिद्धि]१ श्वेत कमल। २ कमल। ३. रेशम का कीडा। ४. बाघ। शेर। ५ एक सुगधित पौधा। पुडरिया। ६ सफेद छाता। ७. कमडल। ८. तिलक। ९. एक यज्ञ। १० सफेद आम। ११. एक तरह का धान। १२. सफेद हाथी। १३ एक तरह की ईख। पौडा। १४ चीनी। १५. सफेद रग का साँप। १६. एक प्रकार का बाज पक्षी। १७ श्वेतकुष्ठ। १८ हाथियो का ज्वर। १९ एक नाग। २० अग्निकोण का दिग्गज। २१. क्रौंच द्वीप का एक पर्वत। २२ एक तीर्थ। २३ अग्नि। आग। २४. तीर। बाण। २५. आकाश। २६ जैनो के एक गणधर। २७ दमन या दौना नाम का पौधा। २८ सफेद रग।

पुंडरीकाक्ष—पु०[पुडरीक-अक्षि, ब०स०,+षच]१. विष्णु या नारायण, जिनके नेत्र कमल के समान माने गये है। २. रेशम के कीडे पालनेवाली एक प्राचीन जाति।
वि० जिसके नेत्र कमल के समान बडे और सुन्दर हो।

पुंडरीकाख†—पु० = पुडरीकाक्ष।

पुंडरीयक—पु० [स० पुडरिन्+क्यच्+ण्वुल्—अक] १. पुडरी का पौधा। २ स्थल कमल। ३ एक औषध। ४ एक विश्वदेव।

पुंडर्य—पु०[स०√पुण्ड+अच्, पुण्ड-अर्य, ष०त०, पररूप] पुंडरी नामक पौधा।

पुंड्र—पु०[स०√पुण्ड+रक्]१. लाल रग का एक तरह का मोटा गन्ना। पौडा। २. तिनिश का वृक्ष। ३ माधवी लता। ४. पाकर वृक्ष। ५. सफेद कमल। ६ माथे पर लगाया जानेवाला टीका या तिलक। ७. तिलक का पौधा। ८. बलि के पुत्र एक दैत्य का नाम। ९. उक्त दैत्य के नाम पर बसा हुआ भारत का एक प्राचीन देश। १०. उक्त प्रदेश का प्राचीन नाम जिसमे आज-कल पुरनियाँ, मालदह, दीनाजपुर और राजशाही के कुछ क्षेत्र सम्मिलित थे। ११. उक्त देश का निवासी।

पुंडक—पुं० [स० पुड्र+कन्] १. माधवी लता। २. टीका। तिलक। ३ तिलक का वृक्ष। ४. पुंड्र या पौंढ़ा नामक ईख। ५. रेशम के कीड़े पालनेवाला व्यक्ति। ६. घोड़े के शरीर का एक चिह्न या लक्षण जो रोएँ के रंग के भेद से होता है और जो शख, चक्र, गदा, पद्म, खड्ग अकुश या धनुष के आकार का होता है।

पुंड्र-केलि—पुं० [ब०स०] हाथी।

पुंड्र-वर्द्धन—पुं० [ष०त०] प्राचीन पुड्र देश की राजधानी जो तीर्थ भी थी।

पुंध्वज—पुं० [ष०त०] नरपशु।

पुंनक्षत्र—पुं० [स० कर्म०स०] वह नक्षत्र जिसके स्थिति काल मे नर सतान उत्पन्न हो। नर नक्षत्र।

पुंनाग—पुं० [सं० उपमि०स०] १. सुलताना चपा। २. श्वेत कमल। ३ जायफल। ४ श्रेष्ठ पुरुष।

पुंनाट—पुं० [स० पुस्√नट् (नृत्य)+णिच्+अच्] १. चक्रमर्द। चकवड का पौधा। २ कर्नाटक के निकट का एक देश। ३. दिगबर जैन सप्रदाय का एक सघ।

पुंनाड—पुं० =पुनाट।

पुंनिमा†—स्त्री० =पूर्णिमा।

पुंमत्र—पुं० [ष० त०] ऐसा मत्र जिसके अत मे 'स्वाहा' या 'नम' न हो।

पुंयान—० [पुस० मध्य०स०] पालकी।

पुंरत्न—पुं० [उपमि०स०] पुरुष रत्न। श्रेष्ठ पुरुष।

पुंराशि—पुं० [कर्म०स०] कोई नर राशि। जैसे—मकर, कुभ आदि।

पुंलिंग—पुं० [ष०त०] १. पुरुष का चिह्न। २ पुरुष का शिश्न, लिंग। ३. व्याकरण मे सज्ञा शब्दों के दो वर्गों मे से एक, जिसकी सज्ञाएँ नरों की सूचक होती है अथवा ऐसी चीजो की सूचक होती हैं जो पुरुष वर्ग की समझी जाती हैं। (मैसकुलिन)

वि० नर या पुरुष वाचक (शब्द)।

पुंवृष—पुं० [स० पुस्√वृष् (बरसना)+क] छछूँदर।

पुंश्चली—वि०, स्त्री० [स० पुस्√चल् (चलना)+अच्+ङीप्] परपुरुषों से गुप्त संबध रखनेवाली (स्त्री)। व्यभिचारिणी। कुलटा।

स्त्री० कुलटा या व्यभिचारिणी स्त्री।

पुंश्चलीय—पुं० [स० पुश्चली+छ—ईय] पुंश्चली का पुत्र या सन्तान। व्यभिचारिणी से उत्पन्न व्यक्ति।

पुंश्चिह्न—पुं० [स० ष०त०] पुरुष का लिंग, शिश्न।

पुंस्—पुं० [स०√पू (पवित्र करना)+डुमसुन्] पुरुष। नर। मर्द।

पुं-संतति—स्त्री० [स०] वह सतान या वशज जो पुरुष हो (स्त्री न हो)।

पुंसत्व—पुं =पुंस्त्व।

पुंसवन—वि० [स० पुस्√सू (प्रसव करना)+ल्युट्—अन] पुत्र उत्पन्न करनेवाला।

पुं० १. द्विजातियो के सोलह सस्कारो मे से दूसरा संस्कार जो गर्भाधान से तीसरे महीने इस उद्देश्य से किया जाता है कि गर्भिणी स्त्री पुत्र प्रसव करे। २. वैष्णवो का एक प्रकार का व्रत। ३. दूध।

पुंसवान (वत्)—वि० [सं० पुंस+मतुप्, वत्व?] [स्त्री० पुंसवती] जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।

पुंसी—स्त्री० [स० पुस्+अच+ङीप्] ऐसी गाय जिसके आगे बछड़ा हो। सवत्सा गौ।

पुंस्त्व—पुं० [स० पुस्+त्व] १. नर होने की अवस्था या भाव। पुरुषत्व। २. पुरुष की काम-शक्ति। ३ शुक्र। वीर्य। ४ व्याकरण मे शब्द के पुलिंग होने की अवस्था या भाव।

पुंस्त्व-विग्रह—पुं० [स० ब० स०] भूतृण नाम की सुगधित घास।

पुआ†—पुं० =पूआ (पकवान)।

पुआई—स्त्री० [देश०] १ एक प्रकार का सदाबहार पेड जिसकी लकडी चिकनी और पीले रग की होती है। २ उक्त पेड की लकडी।

पुआल—पुं० [देश०] एक ऊँचा जगली पेड जिसकी लकडी बहुत मजबूत और पीले रग की होती है और इमारतो मे लगती है।

†पुं० =पयाल (धान का)।

पुकार—स्त्री० [हि० पुकारना] १. पुकारने अर्थात् जोर से नाम लेकर सबोधित करने की क्रिया या भाव। २. कही उपस्थित होने के लिए किसी का जोर से लिया जानेवाला नाम। जैसे—कचहरी मे पुकार होने पर कैदी न्यायाधीश के सामने लाया गया। ३ आत्मरक्षा, सहायता आदि के लिए दूसरो को बुलाने की क्रिया या भाव।

मुहा०—पुकार उठाना या मचाना=कोई काम कराने या अनौचित्य, अन्याय आदि रोकने के लिए सबसे चिल्लाकर कहना या आदोलन करना।

४ किसी चीज का अभाव होने पर उसके लिए जन-साधारण द्वारा की जानेवाली बहुत जोरो की माँग। जैसे—शहर मे चीनी की पुकार मची है। ५. अपना कष्ट जतलाते हुए किसी से न्याय करने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। फरियाद। ६. किसी काम या बात के लिए दिया जानेवाला निमत्रण। बुलावा। ७ जोर देते हुए किसी काम या बात के लिए किया जानेवाला निवेदन या प्रार्थना। ८ किसी बात का अभाव या आवश्यकता सूचित करने के लिए कही जानेवाली बात।

क्रि० प्र०—मचना—मचाना।

९ सगीत मे, कठ या वाद्य से निकाला हुआ कोई ऐसा बहुत ऊँचा स्वर जिसका क्रम अपेक्षया अधिक समय तक चलता रहे। जैसे—शहनाई की यह पुकार बहुत ही सुन्दर हुई है।

पुकारना—स० [स० प्रकुश] १. किसी को बुलाने, सबोधित करने या उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिए जोर से उसका नाम लेना। २. रक्षा, सहायता आदि के लिए किसी का आवाहन करना। जैसे—भारतमाता नवयुवको को पुकार रही है। ३. किसी के नाम का जोर से उच्चारण करना। धुन लगाना। रटना। जैसे—ईश्वर का नाम पुकारना। ४. लोगो का ध्यान आकृष्ट करने के लिए जोर से किसी पद या शब्द का उच्चारण करना। उदा०—हरी हरी पुकारती हरी हरी लतान मे। ५. कोई वस्तु पाने के लिए आकुल होकर बार बार उसका नाम लेना। चिल्लाकर माँगना। जैसे—प्यास के मारे सब 'पानी पानी' पुकार रहे हैं। ६. छुटकारे, बचाव, रक्षा आदि के लिए जोर से आवाज लगाना या चिल्लाना। ७. किसी नाम या सज्ञा से किसी को अभिहित करना। कहना। नाम धरना। (क्व०) जैसे—यहाँ तो इसे 'तीतर' पुकारते हैं।

पुक्कश—पुं० =पुक्कस।

पुक्कस—वि०[स० पुक्√कस् (गति)+अच्, पृषो० सिद्धि]अधम। नीच।
पु० एक प्राचीन जाति जिसकी उत्पत्ति निषाद पिता और शूद्रा माता से कही गई है।

पुक्कसी—स्त्री०[स० पुक्कस+ङीष्] १. कालापन। कालिमा। २. नील का पौधा।

पुक्की†—स्त्री०[हिं० पुकारना या फूंकना ?] सीटी।

पुखा†—पु० =पुष्य (नक्षत्र)।

पुखता—वि०=पुख्ता।

पुखर (रा)†—पु०=पोखरा (तालाब)।

पुखराज—पु० [स० पुष्पराग] नौ प्रकार के रत्नों मे से एक जो पीले रग का होता है तथा जो धारण किये जाने पर बृहस्पति ग्रह का दोष हरता है। अन्य आठ रत्न ये हैं—मोती, हीरा, लहसुनिया, पद्मराग, गोमेद, नीलम, पन्ना और मूंगा।

पुख्ता—वि०[फा० पुख्त.] [भाव०पुख्तगी] १. गठन, प्रकार, रचना आदि की दृष्टि से उच्च कोटि का, टिकाऊ और दृढ़। पक्का। मजबूत। २. जानकार। अनुभवी। ३. पूरी उम्र का। प्रौढ़। ४ पूरी तरह से निश्चित या स्थिर किया हुआ।

पुगना—अ० १ पूजना। २ =पूगना।

पुगाना—स०[हिं० पुगना (पूजना) का स०] १. उद्दिष्ट सीमा, स्थान आदि तक पहुँचाना। २. नियत या स्थिर अवधि या सीमा तक पहुँचाना। जैसे—गोली के खेल मे गोली पुगाना=नियत गड्ढे मे उसे प्रविष्ट करना। ३. जो उचित हो उसे पूरा करना, देना या भरना। जैसे—महाजन का रुपया पुगाना।

पुचकार—स्त्री०[हिं० पुचकारना] पुचकारने की क्रिया या भाव। प्यार जताने के लिए होठों से निकाला हुआ चूमने का-सा शब्द। चुमकार।

पुचकारना—स०[अनु० पुचपुच से] प्यार जतलाते हुए मुँह से पुच-पुच शब्द करना।

पुचकारी—स्त्री०[हिं० पुचकारना] १. पुचकारने की क्रिया या भाव। पुचकार। २. मुँह से किया जानेवाला पुचपुच शब्द।
क्रि० प्र०—देना।

पुचपुचा—स्त्री०=पुचकारी।

पुचरस—पु०[देश०] ऐसी धातु जिसमे कई और धातुओं की मिलावट हो। मिश्रधातु।

पुचारना—स०[हिं० पुचारा]१ पुचारा देना। पोतना। २ उजला या साफ करना। चमकाना। ३. सज्जित करना। सजाना। (क्व०)

पुचारा—पु०[अनु० पुचपुच=भीगे कपडे को दबाने का शब्द या हिं० पोतना से पुचारा]१ किसी चीज पर पतला लेप करने या पोतने का काम। २ भीगे हुए कपडे से जमीन रगडकर पोछने का काम।
क्रि० प्र०—देना।—फेरना।
३ वह कपडा या और कोई ऐसी चीज जिससे उक्त क्रिया की जाय। ४ वह घोल या तरल पदार्थ जो किसी दूसरी चीज पर पोता या लेपा जाय।
क्रि० प्र०—फेरना।—लगाना।
५. उक्त प्रकार के लेप से किसी चीज पर चढ़ी हुई तह या परत। ६. छोडी या दगी हुई तोप या बंदूक की गरम नली ठढी करने के लिए उस पर गीला कपडा फेरने की क्रिया। ७. किसी को पुचकारने या प्रसन्न करते हुए कही जानेवाली ऐसी बात जो उसे अपने अनुकूल करने या किसी के विरुद्ध उभारने के लिए कही जाय।
क्रि० प्र०—देना।

पुच्छ—स्त्री०[स०√ पुच्छ् (प्रसन्न होना)+अच्]१. दुम। पूँछ। २. किसी चीज का पिछला और प्राय: नुकीला या लबा भाग।

पुच्छकंटक—पु०[ब० स०] बिच्छू, जिसकी दुम मे, डक होता है।

पुच्छदा—स्त्री०[स० पुच्छ√दै (शोधन करना)+क+टाप्] लक्ष्मणा कंद।

पुच्छ-फल—पु०[स० ब० स०] बेर का पेड।

पुच्छल—वि०[हिं० पुच्छ] १. जिसमे या जिसके पीछे पूँछ या दुम हो। पूँछवाला। २. जिसमे पूँछ की तरह पीछे कोई लंबा और प्राय: व्यर्थ का अग लगा हो। जैसे—पुच्छलवाला।

पुच्छल तारा—पु०[स०] सूर्य के चारो ओर घूमनेवाला एक चमकीला पिंड जिसका मध्यवर्ती केन्द्र ठोस पदार्थ का बना होता है और साथ मे गैस की एक पूँछ सी लगी रहती है। (कॉमेट)

पुच्छिका— स्त्री० [स० पुच्छ+क+टाप्, इत्व] माषपर्णी।

पुच्छी (च्छिन्)—वि०[स० पुच्छ+इनि] पूँछवाला। दुमदार।
पु०१. आक। मदार। २ मुरगा।

पुछना—अ०[हिं० पोछना का अनु०]१. पुचारे से स्थान आदि का पोछा जाना। २. न रह जाना। मिट जाना।उदा०—पुछ गया प्रतिगेह से दो एक का सिंदूर।—दिनकर।

पुछल्ला—पु०[हिं० पूँछ+ला (प्रत्य०)]१. बडी या लबी दुम। २. पूँछ की तरह पीछे जोडी या लगी हुई कोई लबी चीज या धज्जी। जैसे—गुड्डी या पतग का पुछल्ला। ३. वह जो प्राय: अनावश्यक रूप से या व्यर्थ किसी के पीछे या साथ लगा रहता हो और जल्दी उसका सग न छोडता हो। जैसे—वह जहाँ जाता है, अपने भाई को भी पुछल्ला बनाकर अपने साथ ले जाता है। ४. करघे मे लपेटम की बाईं ओर का खूँटा। (जुलाहे)

पुछवैया—वि०[हिं० पुछवाना]किसी से कुछ पुछवानेवाला।
वि०[हिं० पूछना] १. पूछनेवाला। पुछैया। २. खोज-खबर लेनेवाला।

पुछार—पु०[हिं० पूछना]१. पूछनेवाला। २. खोज-खबर लेनेवाला। ३ आदर करनेवाला।
†पु० —पुछार (मोर)।

पुछारी—पुं०[हिं० पूँछ] मोर। मयूर।

पुछिया—पु०[हिं० पूँछ] दुबा मेढा।

पुछैया†—पु०=पुछवैया।

पुजंता—वि०[स० पूजा+हिं० अंता (प्रत्य०)] पूजा करनेवाला।

पुजना—अ०[हिं० पूजना]१. दूसरो द्वारा पूजित या सेवित होना। पूजा जाना। २. आदर, सम्मान आदि का भाजन होना। ३. पूजा, भेंट आदि का अधिकारी या पात्र बनना। जैसे—देहातो मे नीम हकीम ही पुजते हैं।

पुजवना—स०[हिं० पूजना] १. पूरा करना। २. पूर्ण करना। जैसे—किसी की आस पुजवना। २. भरना। ३. देवी, देवता आदि की पूजा दूसरे से कराना। ४. सफल या सिद्ध करना। जैसे—कामना पुजवना।

पुजवाना—स०[हिं० 'पूजना' का प्रे०]१. किसी को पूजा करने में प्रवृत्त करना। आराधन या पूजन कराना २. किसी से धन प्राप्त करने के लिए उससे किसी की पूजा कराना। जैसे—पुजारी का मंदिर में बैठकर पुजवाना। ३. अपनी या अपने किसी अंग की औरों से पूजा करवाना। जैसे—वे शिष्यों से पैर पुजवाते हैं।

पुजाई—स्त्री०[हिं० पूजना=पूजा करना]१. पूजने की क्रिया या भाव। जैसे—गंगा पुजाई। २. पुजाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

स्त्री०[हिं० पूजना=पूजा होना] १. पूरा करने या होने की क्रिया या भाव। २. पूरा करने या कराने का पारिश्रमिक

पुजाना—स०[हिं० पूजना=(पूजन करना) का प्रे०] १. दूसरे से देवी-देवता आदि का पूजन या पूजा कराना। किसी को पूजा में प्रवृत्त या नियुक्त करना। जैसे—पुजारी से ठाकुर पुजाना। २. किसी से अपनी पूजा, प्रतिष्ठा या आदर-सम्मान कराना अथवा देवतुल्य बनकर किसी से अपनी पूजा कराना और उनसे भेंट आदि प्राप्त करना। जैसे—आज कल पंडित जी यजमानों से पुजाते फिरते है। ३. किसी तरह से डरा-धमका या दबाकर अथवा उसके मन में किसी प्रकार का पूज्यभाव उत्पन्न, करके उससे कुछ धन या भेंट प्राप्त करना। दबा और फुसलाकर वसूल करना।

संयो० क्रि०—लेना।

स०[हिं० पूजना= पूरा होना]१. पूरा करना। पूर्ति करना। २. भरना। जैसे—दवा से घाव पुजाना। ३. सफल या सिद्ध करना। जैसे—किसी के मनोरथ पुजाना।

†अ०=पुजना (पूरा होना) ?

पुजापा—पुं०[सं० पूजा+पात्र] पूजन की सब सामग्री। जैसे—फल, फूल, धूप आदि।

मुहा०—पुजापा फैलाना=(क) देव-पूजा आदि की आडंबर पूर्ण व्यवस्था करना। (ख) बहुत-सी व्यर्थ की चीजें इधर-उधर फैलाना या बिखेरना। २. पूजा की सामग्री रखने का झोला। पुजाही।

पुजारी—पुं०[सं० पूजा+हिं० कारी (प्रत्य०)]१. किसी देवी-देवता की मूर्ति या प्रतिमा की पूजा पूरनेवाला व्यक्ति। विशेष रूप से ऐसा व्यक्ति जो किसी देवमूर्ति की पूजा, सेवा आदि करने के लिए नियुक्त किया गया हो। जैसे—उन्होंने अपने मंदिर में दो पुजारी भी रख लिये थे।

२. किसी को देव-तुल्य मानकर उसकी भक्ति करनेवाला व्यक्ति। जैसे—धन या लक्ष्मी के पुजारी।

पुजाही†—स्त्री० [हिं० पूजा+आही (प्रत्य०)] पूजन की सामग्री रखने की थैली या पात्र। पुजापा।

पुजेरी—पुं०=पुजारी।

पुजेला—पुं०=पुजारी।

पुजैया—वि०[हिं० पूजना=पूजा करना] पूजा पूरनेवाला। पूजनेवाला। पूजक।

स्त्री० किसी विशेष उद्देश्य और समारोहपूर्वक की जानेवाली पूजा। पुजाई। जैसे—गंगा-पुजैया।

वि०[हिं० पूजना=भरना]पूरा करनेवाला। भरनेवाला।

स्त्री० पूरा करने या करने की क्रिया या भाव।

पुजौरा—पुं०[हिं० पूजा]१ अर्चना और पूजा। पूजन। २ पूजा के समय देवता के सामने रखी जानेवाली सामग्री।

पुट—पुं०[सं०√पुट्(=मिलना)+क]१. किसी चीज को मोड़कर लगाई हुई तह या बनाई हुई परत। २. पत्तों आदि को मोड़कर बनाया हुआ पात्र। दोना। ३. खाली या खोखली जगह या स्थान। ४ किसी प्रकार का बना या बनाया हुआ आधान या पात्र। जैसे—अंजलि-पुट, श्रवण-पुट आदि। उदा०—पियत नयन पुट रूप पियूखा।—तुलसी।

५. आच्छादित करने या ढकनेवाला आवरण या चीज। जैसे—नेत्र पुट (पलक) ; रद पुट (होंठ)। ६. वैद्यक में, वह-मुँह बंद बरतन जिसके अन्दर रखकर कोई औषधि या दवा पिलाई, फूँकी या सिद्ध की जाती है। ७. वैद्यक में, औषध सिद्ध करने या भस्म, रस आदि बनाने की उक्त प्रकार की कोई प्रक्रिया। जैसे—गज-पुट, भाड पुट, महापुट आदि।

विशेष—इसमें प्रायः एक पात्र में दवा रखी जाती है और उसके मुँह पर दूसरा पात्र रखकर चारों ओर से वह मुँह इस प्रकार बंद कर दिया जाता है कि न तो उसके अंदर कोई चीज जा सके और न अन्दर की कोई चीज बाहर आ सके। इसी लिए इसे 'संपुट' भी कहते हैं।

८ घोड़े की टाप । ९ जायफल। १०. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो नगण, एक मगण और एक यगण होता है। ११. अंतःपट। अँतरौटा । १२. कली के आकार का पौधे का वह अंश जिसमें से नये कल्ले फूटकर निकलते है।

पुं० [सं० पुट=तह या परत]१. किसी चीज के ऊपर किसी दूसरी चीज की चढ़ाई, जमाई या लगाई हुई तह या परत। जैसे—इस पर गुलाबी रंग का एक पुट चढ़ा दो। २. किसी चीज में किसी दूसरी चीज का वह थोड़ा-सा अंश जो हलकी मिलावट के लिए उसमें डाला जाता है। जैसे—(क) शीरा पकाते समय उसमें दूध का पुट भी देते चलते हैं। (ख) इस शरबत में संतरे का भी पुट है।

मुहा०—पुट देना=कपड़े पर माँडी का छींटा देना। (जुलाहे)

३. लाक्षणिक रूप में, किसी बात की हलकी मिलावट या थोड़ा सा मेल। जैसे—उनके भाषण में परिहास का भी कुछ पुट रहता है।

पुं० [अनु०] किसी प्रकार उत्पन्न होनेवाला 'पुट' शब्द। जैसे—उँगलियाँ चटकाने या कलियों के चटकने के समय होनेवाला पुट शब्द।

पुट-कंद—पुं०[सं० ब०स०] कोलकंद। वाराही कंद।

पुटक—पुं०[सं० पुट√कै (भासित होना)+क] कमल।

पुटकिनी—स्त्री० [सं० पुटक+इनि—ङीप्] १. पद्मिनी। कमलिनी। २. कमलों का समूह। पद्म-जाल। ३. ऐसा स्थान जहाँ कमल अधिकता से होते हों।

पुटकी—स्त्री०[सं० पुटक=दोना] छोटी गठरी। पोटली।

स्त्री०[पुट से अनु०] १. कीड़े-मकोड़ों की तरह होनेवाली आकस्मिक तथा तुच्छतापूर्ण मृत्यु। २. आकस्मिक दैवी विपत्ति। बहुत बड़ी आफत। गजब।

मुहा०—(किसी पर) पुटकी पड़ना=(क) आकस्मिक दुर्घटना, रोग आदि के कारण चटपट मर जाना। (ख) बहुत बड़ी दैवी विपत्ति आना या पड़ना। (स्त्रियों की गाली या शाप) जैसे—पुटकी पड़े ऐसी मजदूरनी पर।

स्त्री०[हि० पुट=हलका मेल] वह बेसन या आटा जो तरकारी के रसे मे उसे गाढ़ा करने के लिए मिलाया जाता है। आलन।

पुट-ग्रीव—पु०[स० ब०स०] गगरा। कलसा।

पुट-पाक—पु०[तृ० त०] १. पत्ते के दोने या और किसी प्रकार के पुट मे रखकर औषध पकाने अथवा भस्म या रस बनाने की क्रिया या विधान। (वैद्यक)

पुट-भेद—पु०[स० पुट√भिद् (फाडना)+अण्] १ जल का भँवर। २. नगर। पत्तन। ३ पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

पुटरिया†—स्त्री०=पोटली।

पुटरी—स्त्री०=पोटली।

पुटालु—पु०[स० पुट-आलु, कर्म० स०] कालकद।

पुटास—पु०=पोटास।

पुटिका—स्त्री०[स० पुट+ठन्—इक, टाप्] १ पुडिया। २. इलायची।

पुटित—भू० कृ०[स० पुट+इतच्] १. जो किसी प्रकार के पुट के रूप मे आया या लाया गया हो। २ जो सिमटकर दोने के आकार का हो गया हो। ३ सकुचित। सिकुडा हुआ। ४ फटा हुआ या फाटा हुआ। ५. मिला हुआ। ६. चारो ओर से बन्द किया हुआ। ७ (औषध) जो पुटी के रूप मे किसी आवरण के अदर हो। (कैप्स्यूल्ड)

पुटिया—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

पुटियाना—स०[हि० पुट+देना] फुसला या समझा-बुझाकर किसी को अनुकूल या राजी करना।

पुटी—स्त्री० [स० पुट+ङीप्] १. छोटा दोना। छोटा कटोरा। २ खाली स्थान जिसमे कोई वस्तु रखी जा सके। जैसे—चचुपुटी। ३ पुडिया। ४ लगोटी। ५. खाने के लिए गोली या टिकिया के रूप मे, वह औषध जो किसी ऐसे आवरण मे बद हो जो औषध के साथ खाया जा सके। (कैप्स्यूल)

वि० (औषध) जो पुट-पाक की विधि म प्रस्तुत हो। (समस्त पदो के अन्त मे) जैसे—सहस्रपुटी अभ्रक।

पुटीन—पु०[अ० पुटी] लकडी की सधियो या छेदो आदि मे भरने का एक तरह का मसाला जो अलसी के तेल मे खडिया मिट्टी मिलाकर बनाया जाता है।

पुटोटज—पु०[स० पुट-उटज, उपमि०स०] सफेद छाता।

पुटोदक—पु०[स० पुट-उदक, ब०स०] नारियल।

पुट्टी—स्त्री०[देश०] मछलियाँ पकडने का बडा झाबा।

पुट्ठा—पु०[स० पृष्ठ] १. कमर के पास का चूतड का ऊपरी भाग। २. चौपाये, विशेषत घोडे का चूतड।

मुहा०—पुट्ठे पर हाथ न रखने देना = (क) चचलता और तेजी के कारण सवार को पास न आने देना। (घोडो के लिए) (ख) अपना दोष छिपाने के लिए चतुर व्यक्ति का कौशलपूर्वक कोई ऐसी बात न होने देना जिससे वह पकड मे आ सके।

३. उक्त अग पर का चमडा जो अपेक्षया अधिक मजबूत होता है। (मोची) ४ घोडो की सख्या का सूचक शब्द। रास। जैसे—इस साल उसने चार पुट्ठे खरीदे है। ५. किसी पुस्तक की जिल्द या मोटाई का वह पिछला भाग, जिसके अन्दर उसकी सिलाई रहती है।

पुठवार—अव्य० [हि० पुट्ठा] १. पीछे। २ बगल मे।

पुठवाल—पु०[हि० पुट्ठा+वाला (प्रत्य०)] १. चोरो के दल का वह आदमी जो सेध के मुहाने पर पहरे के लिए खडा रहता है। २. पृष्ठ-पोषक। ३. मददगार। सहायक।

पुठ्ठा—स्त्री० दे० 'पीठ'।

पुठ्ठी†—स्त्री०[हि० पुट्ठा] बैलगाडी के पहिये के घेरे का वह भाग जिसमे आरा और गज घुसे रहते है। किसी पहिये के ऐसे पूरे घेरे मे ४ और किसी मे ६ भाग होते है।

पुड†—पु०[स० पुट]तल। सतह। (डिं०) उदा०—मुयग छनी प्रथकी पुड भेदे।—प्रिथीराज।

पुड़ा—पु०[स० पुट] [स्त्री० अल्पा० पुडिया, पुडी] १ बडी पुडिया या बडल। २ गौ का गर्भाशय।

मुहा०—पुडा टूटना = गौ का गर्भवती होना।

पु० [हि० पूरी =तबले पर का चमडा] ढोल पर मढा जानेवाला चमडा।

पु० पुट्ठा।

पुड़िया—स्त्री०[स० पुटिका] १ कागज के टुकडे को कुछ विशिष्ट प्रकार से मोड तथा उसके किनारो पर विशिष्ट प्रकार से बल चढाकर ऐसा रूप देना कि उसमे रखी जानेवाली चीज बद हो जाय। जैसे—(क) सौंफ या धनिये की पुडिया। (ख) दवा की पुडिया। २. पुडिया मे लपेटी हुई दवा या ऐसी ही और कोई चीज। जैसे—एक पुडिया आज और दो पुडिया कल खानी होगी। ३ उक्त के आधार पर ऐसी चीज जो देखने मे छोटी-सी हो परन्तु प्रभाव की दृष्टि मे उग्र या प्रबल जैसे—यह लडका जहर की पुडिया है। ४ मुसलमानो मे अबीर, गुलाल आदि की वह पुडिया जो किसी कब्र या मजार पर भेंट के रूप मे चढाई जाती है।

मुहा०—पुडिया उडाना= आकाक्षा या मन्नत पूरी होने पर कब्र या मजार पर अबीर, गुलाल आदि उडाना या चढाना।

५. किसी के पास होनेवाली सारी पूँजी या सम्पत्ति। जैसे—अब तो उनके पास पचास हजार की पुडिया हो गई है।

पुडी—स्त्री०१ पुडिया। २ पूरी। ३ पुटी।

पुढ़वी†—स्त्री० पृथ्वी।

पुढ़ाई—स्त्री० प्रौढता।

पुणग—अव्य० [स० पुन] भी। (राज०)। उदा०—प्राण दिये पाणी पुणग, जावा न दिए जेह।—बाँकीदास।

पु० =पन्नग।

पुणच—स्त्री०[स० प्रत्यचा] धनुष की डोरी। प्रत्यचा। उदा०—सग्रहि धनुस पुणच सर सधि।—प्रिथीराज।

पुणिद—पु० फणीन्द्र।

पुणि—अव्य०[स० पुनर्]पुन। फिर। उदा०—परमेसर प्रणवि सरसति पुणि।—*प्रिथीराज।*

पुण्य—वि०[स०√पू(पवित्र करना) +यत्, णुक्-आगम, ह्रस्व] १. पवित्र। शुद्ध। जैसे—पुण्य-स्थान। २ मगलकारक। शुभ। जैसे—पुण्य दिन। ३ धर्म विहित और उत्तम फल देनेवाला। जैसे—पुण्य-काम। ४. प्रिय और सुन्दर या सुखद। जैसे—पुण्य-लक्ष्मी।

पु० वह धर्म विहित कर्म जिसका फल शुभ हो। सुकृत। जैसे—उन्होने अपनी सारी सपत्ति पुण्य-खाते मे दे दी थी। २. अच्छा या भला कार्य।

जैसे—दीनों को दान देना पुण्य का कार्य है। ३. कोई धार्मिक कृत्य, विशेषत: वह कृत्य जो स्त्रियाँ अपने पति और पुत्र की मंगल-कामना से करती हैं। ४. धार्मिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट अवसरों पर कुछ विशिष्ट कर्म करने से प्राप्त होनेवाला शुभ फल। जैसे—कार्तिक स्नान का पुण्य, कथा सुनने का पुण्य आदि। ५. अच्छे और शुभ कर्मों का संचित रूप जिसका आगे चलकर उत्तम फल मिलता हो। जैसे—ऐसा सुशील लड़का बड़े पुण्य से मिलता है। ६. परोपकार का काम।

पुण्यक—पुं०[सं० पुण्य√कै (भासित होना)+क] १. व्रत, अनुष्ठान आदि धार्मिक कृत्य जिनके सम्पादन से पुण्य होता है। २. वे व्रत जो स्त्रियाँ पति तथा पुत्र के कल्याण की कामना से रखती हैं। ३. विष्णु।

पुण्य-कर्ता (र्तृ)—पुं०[ष०त०] पुण्य कर्म करनेवाला।

पुण्य-कर्म (न्)—पुं०[कर्म० स०] ऐसा कर्म जिसे करने से पुण्य होता हो। भला या शुभ कर्म।

पुण्य-कर्मा (र्मन्)—पुं०[ब०स०] अच्छे और शुभ कर्म करनेवाला।

पुण्य-काल—पुं०[मध्य०स०] धार्मिक दृष्टि से वह शुभ समय जिसमें दान आदि करने से पुण्य का विशेष फल मिलता है। जैसे—पूर्णिमा, संक्रान्ति आदि।

पुण्य-कीर्तन—पुं०[ब०स०] १ विष्णु। २ [ष० त०] पुराणों या धार्मिक ग्रन्थों का पाठ या वाचन।

पुण्य-कीर्ति—वि०[ब०स०] जिसकी कीर्ति के वर्णन से पुण्य हो। स्त्री०[कर्म० स०] ऐसी कीर्ति जो पुण्यात्मक हो।

पुण्यकृत—पुं०[सं० पुण्य √ कृ (करना)+क्विप्] पुण्य करनेवाला।

पुण्य-कृत्य—पुं०[कर्म०स०]=पुण्य कर्म।

पुण्य-क्षेत्र—पुं०[ष०त०] वह स्थान, विशेषत कोई तीर्थ-स्थान जहाँ जाने और धार्मिक कृत्य करने से विशेष पुण्य होता हो।

पुण्य-गंध—पुं०[ब०स०] चंपा।

पुण्य-गंधा—स्त्री० [ब०स०, टाप्] सोनजुही का फूल।

पुण्य-जन—पुं०[कर्म०स०]१. धर्मात्मा। सज्जन। २. राक्षस। ३ यक्ष।

पुण्यजनेश्वर—पुं० [पुण्यजन-ईश्वर, ष० त०] कुबेर।

पुण्य-जित्—वि०[तृ० त०] पुण्य कर्मों के द्वारा जीता या प्राप्त किया जानेवाला।

पुण्य-तिथि—स्त्री०[कर्म०स०]१. ऐसा शुभ दिन जिसमें धर्म, लोकोपकार आदि की दृष्टि से अच्छे कर्म (जैसे—दान, स्नान आदि) करने का विधान हो। २ कोई शुभ कार्य करने के लिए उपयुक्त दिन। ३ किसी महापुरुष के निधन की वार्षिक तिथि। जैसे—महात्मा गांधी या लोकमान्य तिलक की पुण्य-तिथि।

पुण्य-तृण—पुं०[कर्म०स०] सफेद कुश।

पुण्य-दर्शन—वि० [ब०स०] १. जिसके दर्शन मात्र से पुण्य होता हो। २. ऐसा जीव जिसके दर्शन का फल शुभ या अच्छा माना जाता या अच्छा होता हो।

पुं० नीलकंठ नामक पक्षी जिसका लोग विजयादशमी के दिन दर्शन करना पुण्यात्मक और शुभ समझते हैं।

पुण्य-पुरुष—पुं०[कर्म०स०] धर्मात्मा और पुण्यात्मा मनुष्य।

पुण्य-प्रताप—पुं०[ष० त०] किये हुए पुण्य से प्राप्त हुई विशेष कीर्ति या शक्ति। जैसे—बड़ों के पुण्य-प्रताप से सब काम ठीक हो जाते हैं।

पुण्य-फल—पुं०[ष०त०]१. धार्मिक कर्मों का शुभ फल। २ [ब०स०] लक्ष्मी के निवास करने का उद्यान।

पुण्यभाक् (ज्)—वि०[सं० पुण्य√ भज् (सेवा)+ण्वि] धर्मात्मा। पुण्यात्मा।

पुण्य-भूमि—स्त्री०[कर्म०स०]१ तीर्थ-स्थान। २. आर्यावर्त देश। ३. पुत्रवती स्त्री।

पुण्य-भोग—पुं०[ष०त०] पूर्वजन्म में किये हुए शुभ कर्मों का मिलनेवाला फल।

पुण्य-लोक—पुं०[मध्य०स०] स्वर्ग जहाँ पुण्य अर्थात् शुभ कर्म करनेवाले लोग रहते हैं या मरने के बाद जाते हैं।

पुण्यवान् (वत्)—वि०[सं० पुण्य+मतुप्, वत्व] [स्त्री० पुण्यवती] पुण्य अर्थात् शुभ कर्म करनेवाला।

पुण्य-शील—वि०[ब०स०]=पुण्यात्मा।

पुण्य-श्लोक—वि०[ब०स०] [स्त्री० पुण्यश्लोका] जिसका चरित्र या यश बहुत शुभ और सुन्दर हो। शुभ-चरित्र।

पुं० १ राजा नल। २ युधिष्ठिर। ३. विष्णु।

पुण्य-श्लोका—स्त्री०[सं० पुण्य-श्लोक+टाप्]१. सीता। २ द्रौपदी।

पुण्य-स्थान—पुं०[मध्य० स०] १. अच्छे कर्म करने से मिलनेवाला स्थान या लोक। २ तीर्थ-स्थान जहाँ पुण्य-कर्म करने का विधान है। ३. जन्मकुंडली में लग्न से नवाँ स्थान जिसमें कुछ विशिष्ट ग्रहों की स्थिति से यह जाना जाता है कि अमुक व्यक्ति पुण्यवान होगा या नहीं।

पुण्या—स्त्री०[सं० पुण्य+टाप्] १. तुलसी। २ पुनपुना नदी।

पुण्याई—स्त्री०[हिं० पुण्य+आई (प्रत्य०)] पुण्य का परिणाम, प्रभाव या फल।

पुण्यात्मा (त्मन्)—वि० [पुण्य-आत्मन्, ब० स०] प्राय पुण्यकर्म करनेवाला। पुण्यशील।

पुण्यार्थ—वि०[पुण्य-अर्थ, ब० स०]१. (कार्य) जो पुण्य की प्राप्ति के विचार से किया गया हो। २. (धन) जो लोकोपकारी कार्यों के लिए दान रूप में दिया गया हो। (चैरिटेबुल)

अव्य० पुण्य अर्थात् परोपकार या शुभ फल की प्राप्ति के विचार से।

पुं०१. लोकोपकार की भावना। २ लोकोपकार की भावना से दिया जानेवाला धन।

पुण्यार्थ-निधि—स्त्री० [कर्म०स०] वह निधि या धन-संपत्ति जो पक्की-लिखा पढ़ी करके किसी धार्मिक या सामाजिक लोकोपकारी शुभ कार्य के लिए दान की गई हो। (चैरिटेबुल एन्डाउमेन्ट)

पुण्याह—पुं०[पुण्य-अहस्, कर्म स०] मंगल कारक या शुभ दिन।

पुण्याह-वाचन—पुं०[ष०त०] १. मांगलिक कार्य के अनुष्ठान के पहले मंगल की कामना से तीन बार 'पुण्याह' शब्द कहना। २. कर्म-कांड में उक्त से सम्बद्ध एक प्रकार का कृत्य जो विवाह आदि शुभ कार्यों से पहले किया जाता है।

पुण्योदय—पुं०[पुण्य-उदय, ष० त०] शुभ कर्मों के फलस्वरूप होनेवाला सौभाग्य का उदय।

पुत्—पुं०[सं०√पू (पूर्ति)+डुति, पृषो० सिद्धि] एक नरक का नाम जिससे पुत्र होने पर ही उद्धार होता हो या हो सकता है।

पुतना—अ०[हिं० पोतना का अ०] पुताई होना। जैसे—दीवार पुतना। †स्त्री०=पूतना।

पुतरा†—पुं० =पुतला।

पुतरिका—स्त्री०=पुत्रिका।

पुतरिया†—स्त्री०=पुतली।

पुतरी —स्त्री०=पुतली।

पुतला—पुं०[स० पुत्रक] [स्त्री० अल्पा० पुतली] किसी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व करने के लिए उसकी अनुपस्थिति मे, बनाई जानेवाली धातु, कागज, कपडे आदि की आकृति।

विशेष—जब कोई आदमी विदेश मे या किसी ऐसी स्थिति मे मर जाता है कि उसका शव प्राप्त न हो सकता हो तब हिन्दू लोग उसका पुतला बनाकर दाह कर्म करते हैं।

मुहा०—**किसी का पुतला बाँधना**=किसी की निंदा करते फिरना। किसी की अपकीर्ति फैलाना।

विशेष—मध्य-युगीन भारत मे, भाट आदि जिससे असतुष्ट होते थे, उसकी उक्त प्रकार की आकृति बनाकर गली-गली उसका उपहास और निन्दा करते फिरते थे। इसी से यह मुहावरा बना है।

मुहा०—**पुतला जलाना**=(क) मृत व्यक्ति का पुतला बनाकर उसका दाह-कर्म करना। (ख) किसी को अपमानित या तिरस्कृत करने अथवा उसकी मृत्यु की कामना करने के लिए उसका पुतला बनाकर जलाना।

पुतली—स्त्री० [हिं० पुतला] १. लकडी, मट्टी, धातु, कपडे आदि की बनी हुई स्त्री की आकृति विशेषत वह जो विनोद या क्रीडा (खेल) के लिए हो। गुडिया। २ उक्त प्रकार की पुरुष या स्त्री की आकृति जिसका अभिनय या नृत्य मनोविनोद के लिए होता है। इसके अगो मे डोरे, तार या बाल बधे रहते हैं, जिनके सचालन से इसके अग तरह तरह से हिलते-डुलते है।

पद—**पुतली का नाच**—उक्त प्रकार की आकृतियो का अभिनय जो एक प्रकार की कला है।

४ बहुत ही सुन्दर, सजी हुई और सुकुमार स्त्री। ५. आँख का वह काला भाग जिसके बीच मे वह छेद होता है जिससे होकर प्रकाश की किरणें अन्दर जाती हैं और मस्तिष्क मे पदार्थों का प्रतिबिंब उपस्थित करती हैं। नेत्र के ज्योतिष्केन्द्र के चारो ओर का काला मडल।

मुहा०—**पुतली फिर जाना**=(क) आँखें पथरा जाना या नेत्र स्तब्ध होना जो किसी के मर जाने या मरणासन्न होने का लक्षण होता है। (ख) अभिमान, विरक्ति आदि के कारण पहले का सा स्नेहपूर्ण सबध न रह जाना। रुख बदल जाना।

५. उक्त के आधार पर ऐसी चीज जिसे सुरक्षित रूप मे रखा जाय। जैसे—बना रखूँ पुतली दृग की निर्धन का यही प्यार सखी।—दिनकर।

६ घोडे की टाप का उभरा हुआ मांस पिंड।

पुतली घर—पुं०[हिं०]१. वह कारखाना जहाँ कलो या यत्रो से सूत बनाया और कपडा बुना जाता हो।

विशेष—पहले प्राय ऐसे कारखानो के मुख्य-द्वार पर पुतली की आकृति बनाकर खडी की जाती थी, इसी से इसका यह नाम पडा था।

२ आज-कल कोई बहुत बडा कारखाना जहाँ कलो या यत्रो से कोई चीज बनती हो।

पुताई—स्त्री०[हिं० पोतना+आई (प्रत्य०)]१. किसी चीज पर कोई दूसरी चीज का घोल पोतने की क्रिया या भाव। २ उक्त का पारिश्रमिक।

पुतारा—पुं०[हिं० पुतना] १. जमीन, चूल्हा आदि गीले कपडे से पोछकर साफ करने की क्रिया या भाव। २. पोतने का कपड़ा। पोतनी। ३ दे० 'पुचारा'।

पुत्तल—पुं०[स० पुत्त (गति)+घञ्, √ला (लेना)+क] [स्त्री० अल्पा० पुत्तली] पुतला।

पुत्तलक—पुं०[सं० पुत्तल+कन्] [स्त्री० पुत्तलिका] पुतला।

पुत्तलिका—स्त्री०[स० पुत्तल+ङाप्+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. पुतली। २ गुडिया।

पुत्तिका—स्त्री०[स० पुत्√तन्(विस्तार)+ड+क,+टाप्, ह्रस्व]१ एक प्रकार की मधुमक्खी। २ दीमक।

पुत्र—पुं०[स० पुत्√त्रै (रक्षा करना)+क] [स्त्री० पुत्री] १. विवाहिता स्त्री से उत्पन्न नर सन्तान। बेटा। २ लडका।

पुत्र-कंदा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] लक्ष्मणकद जिसके सेवन से गर्भाशय के दोष दूर होते है।

पुत्रक—पुं०[स० पुत्र+कन्]१. पुत्र। बेटा। २ पतग। ३ दौने का पौधा। ४. एक प्रकार का चूहा जिसके काटने से बहुत पीडा और सूजन होती है।

पुत्रकामेष्टि—पुं०[स० पुत्र-काम, ष० त०, पुत्र√काम-इष्टि, मध्य० स०]एक प्रकार का यज्ञ जो पुत्र की कामना से किया जाता है।

पुत्र-कृतक—पुं० [ब० स०, कप्] बनाया हुआ पुत्र। दत्तक पुत्र।

पुत्रघ्नी—स्त्री० [स० पुत्र√हन् (मारना)+टक्+ङीप्] एक प्रकार का योनि रोग जिसके कारण गर्भ नही ठहरता।

पुत्र-जात—वि०[ब० स०] जिसे पुत्र उत्पन्न हुआ हो। पुत्रवान्।

पुत्रजीव—पुं० [स० पुत्र√ जीव् (जीना)+अण्] इगुदी से मिलता-जुलता एक प्रकार का बडा और सुन्दर पेड जिसके बीज सूखने पर रुद्राक्ष की तरह हो जाते है, साधु लोग उसकी माला पहनते हैं।

पुत्रजीवक—पुं०[ष०त०] पुत्रजीव।

पुत्रद—वि०[स० पुत्र√ दा (देना)+क] [स्त्री० पुत्रदा] जिसके कारण या द्वारा पुत्र प्राप्त हो। पुत्र देनेवाला।

पुत्रदा—स्त्री०[स० पुत्र+टाप्]१ बध्या कर्कोटकी। बाझ ककोडा या खेखसा। २ लक्ष्मणकद। ३. श्वेत कटकारि। सफेद भटकटैया। ४ जीवती।

पुत्र-दात्री—स्त्री०[ष० त०]१ एक प्रकार की लता। २ श्वेत कटकारि। ३ भ्रमरी।

पुत्र-धर्म—पुं० [ष०त०] पुत्र का पिता के प्रति अपेक्षित कर्तव्य या धर्म।

पुत्र-पौत्रीण—वि०[स० पुत्रपौत्र, द्व० स०,+ख—ईन] पुत्र से पौत्र और इसी प्रकार आगे भी क्रम क्रम से प्राप्त होनेवाला। आनुवशिक।

पुत्र-प्रतिनिधि—पुं०[ष० त०] गोद लिया हुआ लडका। दत्तक पुत्र।

पुत्रप्रदा—स्त्री० [सं० पुत्र+प्र√दा (देना)+क+टाप्] १. सफेद कटकारि। २ क्षुद्रिका।

पुत्र-प्रसू—वि०[ष०त०] पुत्र उत्पन्न करनेवाली (स्त्री)।

पुत्र-प्रिय—पुं०[ब०स०] एक प्रकार का पक्षी।

वि० पुत्र का प्यार।

पुत्र-भद्रा—स्त्री०[ब० स०, टाप्] बड़ी जीवंती।

पुत्र-भांड—पुं०[ष० त०] दत्तक पुत्र।

पुत्र-भाव—पुं० [ष० त०]१ पुत्र का भाव। पुत्रत्व। २. फलित ज्योतिष मे, लग्न से पचम स्थान का विचार जिसके द्वारा यह निश्चित किया जाता है कि किसके कितने पुत्र या कन्याएँ होगी।

पुत्र-लाभ—पु०[ष०त०] घर मे पुत्र उत्पन्न होना। पुत्र की प्राप्ति।

पुत्रवती—स्त्री०[स० पुत्र+मतुप, म—व,+ङीप्] स्त्री जिसके आगे पुत्र हो। पुत्रवाली। पूती।

पुत्र-वधू—स्त्री०[ष० त०] पुत्र की पत्नी। पतोहू।

पुत्रवल—वि०[स० पुत्र+वलच्] पुत्रवाला।

पुत्र-भृंगी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्] अजभृगी।

पुत्र-श्रेणी—स्त्री० [ब० स०,+ङीप्] मूसाकानी।

पुत्र-सख—पु०[ष० त०,+टाच्] बच्चो का प्रेमी।

पुत्र-सप्तमी—स्त्री०[मध्य०स०] आश्विन शुक्ला सप्तमी।

पुत्रसहम—पु० [स० पुत्र+अ० सहम] ५० प्रकार के सहमो मे से एक जिससे पुत्र लाभ का विचार किया जाता है।

पुत्रसू—वि०[स० पुत्र√सू (प्रसव करना)+क्विप्] पुत्र उत्पन्न करने वाली (स्त्री)।

पुत्र-हीन—वि० [तृ० त०] [स्त्री० पुत्रहीना] जिसके घर पुत्र न हो या न हुआ हो।

पुत्राचार्य—वि० [पुत्र-आचार्य, ब०स०] अपने पुत्रो से विद्या पढ़नेवाला।

पुत्रादिनी—वि०, स्त्री [स० पुत्र√अद् (खाना)+णिनि+ङीप] पुत्रो को स्वय खा जानेवाली। जैसे—व्याघ्री, सर्पिणी आदि।

पुत्रादी (दिन्)—वि० [सं० पुत्र√अद्+णिनि] [स्त्री० पुत्रादिनी] पुत्रभक्षक। बेटे को खानेवाला। (गाली)

पुत्रान्नाद—पुं०[पुत्र-अन्न, ष० त०, √ अद् (खाना)+अण्]१ पुत्र की कमाई खानेवाला व्यक्ति। २. यतियो का एक भेद। कुटीचक।

पुत्रार्थी (र्थिन्)—वि०[पुत्र-अर्थिन्, ष०त०] जिसे पुत्र की कामना हो।

पुत्रिक—वि०[स० पुत्र+ठन्—इक] पुत्रवाला।

पुत्रिका—स्त्री० [सं० पुत्र+ङीष्+कन्+टाप्, ह्रस्व] १. लड़की। बेटी। २. पुत्र न होने की दशा मे वह पुत्री या लड़की जो पुत्र के समान मानकर ही रखी गई हो। ऐसी कन्या का पुत्र अपने नाना को पिंडदान देने और उसकी सपत्ति पाने का अधिकारी होता है। ३ गुड़िया। पुतली। ४ आँख की पुतली।

पुत्रिका-पुत्र—पु० [ष०त०] १ वह कन्या जो पुत्र के समान मानी गई हो और जो आगे चलकर पिता की संपत्ति की अधिकारिणी होने को हो। २. पुत्रिका का पुत्र।

पुत्रिणी—वि०, स्त्री०[सं० पुत्र+इनि+ङीप्] पुत्रवाली। पुत्रवती।

पुत्रिय—वि०[स० पुत्रीय] पुत्र-सबधी।

पुत्री (त्रिन्)—वि०[सं० पुत्र+इनि] [स्त्री० पुत्रिणी] जिसे पुत्र हो। पुत्रवाला।

पुत्री—स्त्री०[स० पुत्र+ङीष्] बेटी। लड़की।

पुत्रीय—वि०[स० पुत्र+छ—ईय] पुत्र-संबंधी। पुत्र का।

पुत्रीया—स्त्री०[सं० पुत्र+क्यच्, ईत्व,+अ+टाप्] पुत्रलाभ की इच्छा।

पुत्रेप्सु—वि०[पुत्र-ईप्सु, ष०त०] पुत्र प्राप्त करने का इच्छुक।

पुत्रेष्टि, पुत्रेष्टिका—पुं०[स० पुत्र-इष्टि, मध्य० स०, पुत्रेष्टि+कन्+टाप्] पुत्र की प्राप्ति के उद्देश्य से किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

पुत्र्य—वि०[स० पुत्र+यत्]पुत्र-सबधी।

पुदीना—पु० [फा० पोदीन] एक छोटा पौधा जो या तो जमीन पर ही फैलता है अथवा अधिक से अधिक एक बित्ता ऊपर जाता है। इसकी पत्तियो मे बहुत अच्छी गध होती है इससे लोग इसे चटनी आदि मे पीसकर मिलाते हैं। यह तीन प्रकार का होता है—साधारण, पहाड़ी और जलपुदीना।

पुद्गल—पु०[स० पुत्-गल, कर्म० स०] १. जैन शास्त्रानुसार ६ द्रव्यो मे से एक। स्पर्श, रस और वर्णवाला अर्थात् रूपवान पदार्थ। २. देह। शरीर। (बौद्ध) ३. परमाणु। ४. आत्मा। ५ गधतृण। ६ शिव।

वि० सुन्दर।

पुद्गलास्तिकाय—पुं०[पुद्गल-अस्तिकाय, ष० त०] जैनो के अनुसार पाँच प्रकार के द्रव्यो मे से एक।

पुनः—अव्य० [स०√ पन् (स्तुति)+अर, उत्व] १ फिर। दोबारा। दूसरी बार। २ अनतर। पीछे। उपरात। ३ इसके अतिरिक्त। जैसे—तुम्हें पुन ऐसा सहायक नही मिलेगा।

पद—पुनः पुनः—बार बार। कई बार।

पुनःकरण—पु०[स० मध्य० स०] १. फिर से कोई काम करना। २. दोहराना।

पुनःकल्पन—पु०[स०] [भू० कृ० पुन कल्पित] किसी पदार्थ विशेषतः पुराने यत्र आदि को जाँचकर और उसके कल-पुर्जे अलग-अलग करके फिर से उसकी मरम्मत करते हुए उसे ठीक करना। (ओवरहालिंग)

पुनः खुरी(खुरिन्)—पु० [स० पुन खुर, मध्य० स०,+इनि] घोड़ो के पैर का एक रोग जिसमे उनकी टाप फैल जाती है और वे चलने में लड़खड़ाते हैं।

पुनःपाक—पु० [मध्य०स०] पकाई हुई चीज दोबारा पकाने की क्रिया या भाव।

पुनःसंधान—पुं० [मध्य०स०] अग्निहोत्र की बुझी हुई अग्नि फिर से जलाना।

पुनःसंस्कार—पुं० [मध्य०स०] कोई ऐसा सस्कार फिर से करना जिसका पुराना महत्त्व या मान नष्ट हो गया हो। फिर से किया जानेवाला सस्कार।

पुनःस्तोम—पु०[स० मध्य०स०] एक प्रकार का योग।

पुन*—पुं०=पुण्य।

अव्य०[स० पुन] १. फिर। २. भी। ३. दे० 'पुन'।

पुनना—स०[हिं० पूरना]गालियाँ देना। दुर्वचन कहना। उदा०—माँ-बहने पुनी जा रही हो, और ये खुश हैं, बाछें खिली जा रही हैं।—मिरजा रुसवा।

†स०=छानना। (पश्चिम)

*अ०[स० पूर्ण] पूरा होना। पूजना। उदा०—पाप करता मरि गइआ, अउघ पुनि खिन माँहि।—कबीर।

स० पूरा करना।

पुनपुना—स्त्री०[स० पुन पुना] बिहार राज्य की एक छोटी नदी जो गया से होकर बहती है और पवित्र मानी जाती है। इसके किनारे लोग पिंड-दान करते हैं।

पुनरपगम—पु०[स० पुनर्-अपगम, मध्य०स०] पुन जाना।

पुनरपि—अव्य०[स० पुनर्-अपि, द्व० स०]१ फिर भी। २ फिर से। दोबारा।

पुनरबसु†—पु०=पुनर्वसु।

पुनरभिधान—पु०[स० पुनर्-अभिधान, मध्य०स०] कोई बात फिर से या पुन कहना।

पुनरवलोकन—पु० [स० पुनर्-अवलोकन, मध्य स०] फिर से या दोबारा देखना।

पुनरस्त्रीकरण—पु०[स० पुनर-अस्त्रीकरण, मध्य०स०] [वि० पुनरस्त्री-कृत] जिस देश, राष्ट्र या सेना के अस्त्र, शस्त्र आदि पहले छीन लिए गए हों, उसे फिर से अस्त्र, शस्त्रो आदि से युक्त और सज्जित करना। (री-आर्मामेन्ट)

पुनरागत—वि० [स० पुनर्-आगत, मध्य०स०] १ पुन आया हुआ। २ लौटा हुआ।

पुनरगम—पु०[स० पुनर्-आगम, मध्य०स०] फिर से या लौटकर आना। पुनरागमन।

पुनरागमन—पु०[स० पुनर्-आगमन, मध्य० स०]१ एक बार आ चुकने-के बाद दोबारा या फिर से आना। २ मृत्यु होने पर फिर शरीर धारण करके इस ससार मे आना। पुनर्जन्म।

पुनरागामी (मिन्)—वि०[स० पुनर्-आगामिन्, मध्य०स०] फिर से आने-वाला।

पुनरादि—वि०[स० पुनर्-आदि, ब०स०] फिर से आरम्भ या शुरू करने-वाला।

पुनराधान—पु०[स० पुनर्-आधान, मध्य०स०] श्रौत या स्मार्त अग्नि का एक बार छूट या बुझ जाने पर फिर से किया जानेवाला ग्रहण। अग्निस्थापन।

पुनराधेय—वि०[स० पुनर्-आधेय, मध्य० स०] फिर से स्थापित की जाने-वाली (अग्नि)।

पु० दे० 'पुनराधान'।

पुनरानयन—पु०[स० पुनर्-आनयन, मध्य०स०] लौटा लाना।

पुनरारभ—पु० [स० पुनर्-आरभ, मध्य० स०] छोडा या स्थगित किया हुआ काम पुन या फिर से आरभ करना। (रिजम्पशन)

पुनरावर्त—पु०[स० पुनर्-आवर्त, मध्य०स०]१ लौटना। २ बार-बार जन्म लेना।

पुनरावर्तक—वि०[स० पुनर-आवर्तक, मध्य०स०] पुन पुन आनेवाला ज्वर।

पुनरावर्तन—पु०[स० पुनर्-आवर्तन, मध्य० स०] १ फिर से या दोबारा होनेवाला आवर्तन। फिर से लौटकर आना। २ किसी रोग के बहुत-कुछ अच्छे हो जाने पर भी फिर से होनेवाला उसका प्रकोप। (रिलैप्स)

पुनरावर्ती (र्तिन्)—वि० [स० पुनर्-आवर्तिन्, मध्य० स०] बार-बार जन्म लेनेवाला।

पुनरावर्ती ज्वर—पु०[स०] किलनी, जूँ आदि के काटने से होनेवाला एक प्रकार का विकट ज्वर जो पहले तो एक सप्ताह तक निरन्तर रहता है, और तब उतर जाने के बाद भी फिर आने लगता है। (रिलैप्सिंग फीवर)

पुनरावलोकन—पु०[स० पुनरवलोकन] [वि० पुनरावलोकित] १ देखी हुई चीज का फिर से देखना। २ किये हुए काम, निश्चय आदि को सुधार के विचार से फिर से देखना या दोहराना। (रिवीजन)

पुनरावृत्त—वि०[स० पुनर्-आवृत्त, मध्य०स०] १. फिर से घूम या लौट कर आया हुआ। २ फिर से किया या दोहराया हुआ।

पुनरावृत्ति—स्त्री०[स० पुनर्-आवृत्ति, मध्य० स०]१. फिर से घूमना या घूमकर आना। २ किये हुए काम या बात की फिर से होनेवाली आवृत्ति। किसी काम या बात का दोहराया जाना। जैसे—पढे हुए पाठ की पुनरावृत्ति।

पुनरीक्षण—पु०[स० पुनर्-ईक्षण, मध्य० स०] [भू० कृ० पुनरीक्षित] १ किसी किये हुए काम को जाँचने के लिए फिर से देखना। (रिव्यू) २ न्यायालय का एक बार सुने हुए मुकदमे को कुछ विशेष अवस्थाओ मे फिर से सुनना। (रिवीजन)

पुनरीक्षित—भू० कृ० [सं० पुनर्-ईक्षित, मध्य० स०] जिसका पुनरीक्षण किया गया हो या हो चुका हो। (रिवाइज्ड)

पुनरुक्त—वि० [स० पुनर्-उक्त, मध्य० स०] एक बार कहने के उपरान्त दोबारा या फिर से कहा हुआ।

पु० साहित्य मे एक प्रकार का दोष जो उस दशा मे माना जाता है जब कोई बात एक बार कही जाने पर फिर से दोबारा या कई बार व्यर्थ ही कही जाती है।

पुनरुक्तवद-भास—पु० [स० पुनरुक्त+वति, पुनरुक्तवत-आ + भास ब० स०]एक प्रकार का शब्दालकार जिसमे ऐसे शब्दो का प्रयोग होता है जो सुनने मे एकार्थक और फलत पुनरुक्त से जान पड़े पर वास्तव मे प्रसगत भिन्न-भिन्न अर्थ रखते है।

पुनरुक्ति—स्त्री० [स० पुनर्-उक्ति, मध्य० स०] १ एक बार कही हुई बात शब्द आदि को फिर कहना। २ इस प्रकार दोबारा कही हुई बात। (रिपीटीशन)

पुनरुज्जीवन—पु० [स० पुनर्-उज्जीवन, मध्य० स०] [वि० पुनरुज्जी-वित] फिर से जीवित होना। (रिवाइवल)

पुनरुज्जीवित—वि० [स० पुनर्-उज्जीवित, मध्य० स०] जिसे फिर से जीवित किया गया हो अथवा जिसने फिर से जीवन प्राप्त किया हो। (रिवाइव्ड)

पुनरुत्थान—पु० [सं० पुनर्-उत्थान, मध्य० स०] [भू० कृ० पुनरु-त्थित] १ गिरे हुए का फिर से उठना। २. जिसका एक बार पतन या ह्रास हो चुका हो, उसका फिरसे उठकर उन्नति करना। (रिनैसान्स)

पुनरुत्थित—भू० कृ० [सं० पुनर्-उत्थित, मध्य० स०] जिसका पुनरु-त्थान किया गया हो। अथवा हुआ हो।

पुनरुद्धार—पुं० [स० पुनर्-उद्धार, मध्य० स०] टूटी-फूटी या नष्ट हुई चीज को, फिर से ठीक करके उसे यथावत् या उसका उद्धार करना। (रिस्टोरेशन, रिनोवेशन)

पुनरुपगम—पुं० [स० पुनर्-उपगम, मध्य० स०] वापस आना। लौटना।

पुनरुपोढा—वि० स्त्री० [स० पुनर्-उपोढ, मध्य० स०] जो दोबारा या फिर से किसी के साथ ब्याही गई हो।

पुनरूढा—स्त्री० [स० पुनर्-ऊढा, मध्य० स०] जो फिर से ब्याही गई हो।

पुनर्गमन—पु० [सं० मध्य० स०] दोबारा जाना।

पुनर्गेय—वि० [स० मध्य० स०] जो फिर से गाया जाय।
पु० पुनरुक्ति।

पुनर्ग्रहण—पु० [स० मध्य० स०] कोई कार्य, पद, भार आदि एक बार छोड़ चुकने के बाद फिर से ग्रहण करना। (रिजम्पशन)

पुनर्जन्म (न्)—पु० [स० मध्य० स०] जीवात्मा का एक शरीर त्यागने के उपरांत दूसरा शरीर धारण करते हुए जन्म लेना। पुन. होनेवाला जन्म। (ट्रान्समाइग्रेशन)

पुनर्जन्मा (न्मन)—पु० [स० ब० स०] ब्राह्मण।

पुनर्जागरण—पु० [स०] १ सोये हुए का फिर से जागना। २ युरोप के इतिहास मे १४वीं,१५वी और १६वी शताब्दियो की वह स्थिति जिसमे कला, विद्या और साहित्य का नये सिरे से अनुसधान और प्रचार होने लगा था, और जिसके कारण मध्य युग का अत तथा आधुनिक युग का आरभ हुआ था। (रिनेसन्स)

पुनर्जात—भू० कृ० [स० मध्य० स०] जिसने पुन: जन्म लिया हो।

पुनर्जीवन—पु० [स० मध्य० स०] फिर से प्राप्त होनेवाला जीवन। पुनर्जन्म।
† पु०=पुनरुज्जीवन।

पुनर्डीन—पु० [स० मध्य० स०] पक्षियो के उड़ने का एक प्रकार।

पुनर्णव—पु० [स० मध्य० स०] नख। नाखून।

पुनर्नव—वि० [स० मध्य० स०] [भाव० पुनर्नवता, स्त्री० पुनर्नवा] जो पुराना हो जाने पर फिर से नया हो गया हो या नया कर दिया गया हो।

पुनर्नवा—स्त्री० [स० मध्य० स०] गदह-पूरना नाम की वनस्पति जिसके सेवन से आँखो की ज्योति का फिर से बहुत बढ़ जाना माना जाता है।

पुनर्निर्माण—पु० [स० मध्य० स०] किसी टूटी-फूटी वस्तु का फिर से होनेवाला निर्माण। (री-कन्स्ट्रक्शन)

पुनर्परीक्षण—पु० [स० पुनःपरीक्षण] [भू० कृ० पुनर्परीरक्षित] फिर से या पुन परीक्षण करना। दूसरी बार या दोबारा जाँचना। (रीएक्ज़ामिनेशन)

पुनर्भव—पुं० [स० पुनर्√भू (होना)+अप्] १. पुन होनेवाला जन्म। २. नख। नाखून। ३. रक्त पुनर्भवा।
वि० जो फिर हुआ हो। फिर से उत्पन्न।

पुनर्भाव—पु० [स० मध्य० स०] पुनर्जन्म।

पुनर्भू—स्त्री० [सं० पुनर्√भू+क्विप्] वह स्त्री जिसने पति के मरने पर दूसरे पुरुष से विवाह कर लिया हो।

पुनर्भोग—पुं० [सं० मध्य० स०] धार्मिक दृष्टि से पूर्व कर्मों का प्राप्त होनेवाला फल-भोग।

पुनर्मुद्रण—पुं० [स० मध्य० स०] १. एक बार छपी हुई चीज का फिर से उसी रूप मे छपना। २. पुस्तकों आदि का इस प्रकार छपकर तैयार होनेवाला संस्करण। (री-प्रिन्ट)

पुनर्वचन—पु० [स० मध्य० स०] १ पुनरुक्ति। २ शास्त्र द्वारा किसी बात का बार-बार विहित होना।

पुनर्वसु—पु० [स० पुनर्√वस् (निवास, आच्छादन) । उ] १. सत्ताईस नक्षत्रों मे से सातवाँ नक्षत्र। २ विष्णु। ३ कात्यायन मुनि। ५ एक लोक।

पुनर्वाद—पु० [सं० मध्य० स०] १ कोई बात पुन ज्यों की त्यो अथवा कुछ उलट-पुलट कर कहना। २ छोटे न्यायालय के निर्णय के असतोष-जनक प्रतीत होने पर बड़े न्यायालय से उस पर फिर से विचार करने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। (अपील)

पुनर्वादी (दिन्)—पु० [स० पुनर्वाद+इनि] वह जो बडे न्यायालयों से किसी छोटे न्यायालय द्वारा किये हुए निर्णय पर फिर मे विचार करने के लिए कहे। (एपेलेन्ट)

पुनर्वास—पु० [स० मध्य० स०] १ पुन बसना। २ घर-बार न रह जाने पर अथवा छीन लिये जाने पर फिर से नया घर आदि बनाकर रहना। ३ उजडे हुए लोगों को फिर से बसाना या आबाद करना। (री-हैबिटेशन)

पुनर्वासन—पु० [स० मध्य० स०] उजडे हुए लोगो को फिर मे बसाने की क्रिया या भाव।

पुनर्विधान—पु० [स० मध्य० स०] फिर से विधान करना या बनाना।

पुनर्विधायन—पु० [स० मध्य० स०] [भू० कृ० पुनर्विहित] किसी बने हुए विधान को घटा या बढाकर नये सिरे से विधान का रूप देना। (री-एनैक्टमेन्ट)

पुनर्विधायित—भू० कृ० [सं० मध्य० स०]=पुनर्विहित।

पुनर्विभाजन—पु० [स० मध्य० स०] एक बार जिसका विभाजन हो चुका हो, उसका फिर से विभाजन करना। (री-डिस्ट्रीब्यूशन)

पुनर्विलोकन—पुं० [स० मध्य० स०] एक बार देखी हुई वस्तु, बात आदि को फिर से अच्छी तरह से देखना। (रिव्यू)

पुनर्विवाह—पु० [स० मध्य० स०] एक बार विवाह हो चुकने पर (पति या पत्नी के मर जाने पर) दोबारा होनेवाला विवाह। दूसरा ब्याह।

पुनर्विवाहित—भू० कृ० [स० मध्य० स०] जिसका एक बार विवाह हो चुकने के उपरान्त किसी कारण-वश फिर से विवाह हुआ है।

पुनर्विहित—भू० कृ० [स० मध्य० स०] १ जिसका फिर से विधान हुआ या किया गया हो। २. (पहले से बना हुआ विधान) जो फिर से घटा-बढ़ाकर ठीक किया गया और नये विधान के रूप मे लाया गया हो। (री-एनैक्टेड)

पुनर्व्यंजन—पु० [स० मध्य०स०] पहले से बनी हुई चीज जो अब अस्तित्व में न रह गयी हो, उसे फिर से ज्यो की त्यो या उसी तरह बनाकर सबके सामने रखना। (री-प्रोडक्शन)

पुनर्व्यंजित—भू० कृ० [स० मध्य० स०] जिसका पुनर्व्यंजन हुआ हो। दोबारा बनाकर अस्तित्व मे लाया हुआ।

पुनर्सारण—पु० [सं० पुन.सारण] [भू० कृ० पुनर्सारित] किसी एक

रेडियो-आस्थान से प्रसारित होनेवाला कार्य-क्रम ज्यों का त्यों उसी समय दूसरे रेडियो-आस्थानों से भी प्रसारित किया जाना। (रिले)

पुनर्सारित—भू० कृ० [सं० पुनःसारित] (कार्य-क्रम) जो अन्य रेडियो आस्थानों से भी प्रसारित किया गया हो या किया जा रहा हो। (रिलेड)

पुनर्स्थापन—पुं० [सं० पुनःस्थापन] [भू० कृ० पुनर्स्थापित] जो पहले अपने स्थान से हटाया गया हो, उसे फिर उसी स्थान पर रखना या स्थापित करना। (रिप्लेसमेन्ट)

पुनवांसी—स्त्री० =पूर्णमासी।

पुनश्च—अव्य० [सं० पुनर्-च] १ इसके बाद। फिर। २ दूसरी बार। दोबारा। ३ जो कुछ कहा जा चुका है, उसके बाद या साथ इतना और भी या यह भी।

पुं० एक पद जिसका प्रयोग पत्र आदि लिखकर समाप्त कर लेने पर बाद में याद आई हुई बात नीचे लिखने से पहले होता है। (पोस्टस्क्रिप्ट)

पुनश्चवर्ण—पुं० [सं० पुनर-चर्वण, मध्य० स०] चौपायों का पागुर करना। पगुरी।

पुनह*—अव्य० =पुन।

पुनि—अव्य० [सं० पुन] १ फिर से। दोबारा। पुन।

पद—पुनि पुनि=बार बार।

२ ऊपर से। तिस पर। और भी।

पुनिम (ा)†—स्त्री०=पूर्णिमा।

पुनी—पुं० [सं० पुण्य, हिं० पुन] पुण्य करनेवाला। पुण्यात्मा।

स्त्री० =पूर्णिमा।

अव्य० =पुनि।

पुनीत—वि० [सं० पूत] [स्त्री० पुनीता] १ जिसमें पवित्रता हो। पवित्र। २ जो उत्तम हो और इसी लिए जो पवित्र और प्रशंसनीय माना जाता हो जैसे—पुनीत-कर्तव्य।

पुन्न†—पुं०=पुण्य।

पुन्नक्षत्र—पुं०=पु-नक्षत्र।

पुन्नपुंसक—पुं० [सं०] संस्कृत व्याकरण में ऐसा शब्द जो पुंलिंग और नपुंसक लिंगी दोनों में चलता हो। जैसे—शिशिर।

पुन्नाग—पुं० [सं०] सुल्तान चंपा (देखें) नामक वृक्ष।

पुन्नार—पुं०=पुनाट।

पुन्नाड—पुं०=पुनाट।

पुन्य†—पुं०=पुण्य।

पुन्यता (ई)—स्त्री० [सं० पुण्य] १ पुण्य का कार्य या भाव। २ पवित्रता। ३ धर्मशीलता।

पुपलाना—अ० [हिं० पोपला] पोपला होना

स० पोपला करना।

पुपली—स्त्री० [हिं० पोपला=पोला] १ आम की गुठली घिसकर बनाया हुआ बाजा या सीटी। २ बाँस की पतली और पोली नली।

विशेष :—कुछ विशिष्ट प्रकार के हाथ से चलाये जानेवाले पंखियों के बने हुए पंखो की डंडियों में पुपली पहनाई जाती है। इसे पकड़कर पंखा चलाने पर वह चारों ओर घूमने लगता है।

३ बच्चों के खेलने का काठ का एक प्रकार का छोटा खिलौना जो छोटी डंडी के आकार का होता है और जिसके दोनों सिरे कुछ मोटे होते हैं। इसे प्राय छोटे बच्चे चूसते हैं, इसलिए इसे 'चुसनी' भी कहते हैं।

पुपूषा—स्त्री० [सं०√पू (पवित्र करना)+सन्+अ+टाप्] शुद्धि करने की इच्छा।

पुप्पु—पुं०=पुष्प।

पुप्फुल—पुं० [सं० पुप् फुस् पृषो० स-ल] पेट के अन्दर की हवा। उदरस्थ वायु।

पुप्फुस—पुं० [सं० पुप् फुस्+अच्] १ फेफड़ा। २ कमल का बीज-कोश। कँवलगट्टे का छत्ता।

†स्त्री० =फुसफुस।

पुब्बय—वि० [सं० पूर्वीय] १. पूर्वकाल का। २ पुराना।

पुमर्थ—पुं० [सं० ष० त०] चार प्रकार के पुरुषार्थों में से हर एक।

पुमान् (मस्)—पुं० [सं०√पू+डुमसुन्] मर्द। नर। पुरुष।

पुरंजन—पुं० [सं० पुर√जन् (उत्पन्न करना)+ख, मुम्] जीवात्मा।

पुरंजनी—स्त्री० [सं० पुरंजन+ङीष्] बुद्धि। समझ।

पुरंजय—वि० [सं० पुर√जि (जीतना)+खच्, मुम्] पुर को जीतने-वाला।

पुं० एक सूर्यवंशी राजा जिसका दूसरा नाम काकुत्स्थ था।

पुरंजर—स्त्री० [सं०] काँख। बगल।

पुरंदर—वि० [सं० पुर√दृ (तोड़ना, फाड़ना)+खच्, मुम्] पुर (नगर या घर) को तोड़नेवाला।

पुं० १ इंद्र। २. चोर। ३. चव्य। चाब। ४ मिर्च। ५ ज्येष्ठा नक्षत्र। ६ विष्णु।

पुरंदरा—स्त्री० [सं० पुरंदर+टाप्] गंगा।

पुरंध्री—स्त्री० [सं० पुर√धृ (पालन करना)+खच्+ङीष्] १ ऐसी सौभाग्यवती स्त्री जिसके आगे पति, पुत्र और कन्याएँ हो। २ स्त्री।

पुरः (रस्)—अव्य० [सं० पूर्व+असि, पुर्-आदेश] १ काल, दिशा आदि के विचार से आगे या सामने। समक्ष। २. किसी के पहले या पूर्व। ३. पूर्व दिशा का। पूर्वी। ४ पूर्व की ओर उन्मुख।

विशेष—पुरस्कार, पुराक्रिया, पुरस्कृत, पुरस्सर आदि शब्दों में उनके पहले इसका उक्त पुरस् रूप ही सम्मिलित रहता है।

पुरःदत्त—वि० [सं० पुरोदत्त] (परिव्यय या शुल्क) पहले से किया हुआ। जो पहले दिया गया हो। (प्रीपेड)

पुरःदान—पुं० [सं० पुरोदान] [भू० कृ० पुरःदत्त] (देन, परिव्यय, शुल्क आदि) नियत समय से पहले ही चुकाना या दे देना। (प्री-पेमेन्ट)

पुरःप्रत्यय—पुं० [सं० मध्य० स०] व्याकरण में ऐसा प्रत्यय जो किसी शब्द के पहले लगकर उसके अर्थ में कोई विशेषता उत्पन्न करता है। जैसे—'अनुगत' में का 'अनु' पुरःप्रत्यय है।

पुरः सगी—वि० [सं०] किसी कार्य, तथ्य या विषय में, उससे पहले सम्बद्ध या सहायक रूप में आने, होने या साथ रहनेवाला। (एक्सेसरी बिफोर दी फैक्ट)

पुरःसर—वि० [सं० पुरस्√सृ (गति)+ट] १ मिला हुआ। युक्त। २ संग या साथ रहने या होनेवाला।

पुं० १. आगे आगे चलनेवला। २ अगुआ। नेता। ३. संगी। साथी।

पुर—वि० [सं०√पुर् (आगे जाना)+क] भरा हुआ।

पु० [स्त्री० अल्पा० पुरी] १. वह बड़ी बस्ती जिसमे बड़ी बड़ी इमारतें भी हों। गाँव से बड़ी परन्तु नगर से छोटी बस्ती।

विशेष—प्राचीन काल मे पुर का क्षेत्रफल एक कोस से अधिक होता था और उसके चारों ओर खाईं होती थी।

२. घर। मकान। ३. अटारी। कोठा। ४. भुवन। लोक। ५. नक्षत्रो का पुज। राशि। ६. देह। शरीर। ७. कुएँ से पानी खीचने का मोट।—चरसा। ८. मोथा। ९. पीली कसरैया। १०. गुग्गुल। ११. किला। गढ़। दुर्ग। १२. चोगे की तरह का एक प्रकार का पुराना पहनावा।

अव्य० [सं० पुर.] आगे। सामने। उदा०—स्वान। नियाक कही पुर मेरे।—केशव।

पुं०=पुरवट। (लखनऊ)

मुहा०—पुर लेना=पानी से भरा हुआ पुरवट खींचकर उसका पानी नाली मे गिराना।

पुरइन—स्त्री० [स० पुटकिनी, प्रा० पुडइनी=कमलिनी, पु० हिं० पुरइनि] १ कमल का पत्ता। २. कमल। ३. जरायु।

पुरउना*—स०=पुरवना।

पुरउबि*—स० [सं० पूर्ण] पूरा कीजिएगा।

पुर-कायस्थ—पु० [स० ष० त०] प्राचीन भारत मे पुर (या नगर) का वह अधिकारी जिसके पास मुख्य लेखों, दस्तावेजों आदि की नकलें रहती थी। (इसका पद प्राय आज-कल के रजिस्ट्रार के पद के समान होता था।)

पुर कोट्ट—पु० [ष० त०] नगर की रक्षा के लिए बनाया हुआ दुर्ग।

पुरखा—पु० [स० पुरुष] [स्त्री० पुरखिन] १ पूर्वज।

मुहा०—पुरखे तर जाना=पूर्व पुरुषो को (पुत्र आदि के कृत्यो से) परलोक मे उत्तम गति प्राप्त होना। बहुत बड़ा पुण्य या उसका फल होना। कृत्य कृत्य होना। जैसे—उनके आने से तुम क्या, तुम्हारे पुरखे भी तर जायँगे।

२ सयाना और वृद्ध व्यक्ति।

पुरग—वि० [पुर√गम् (जाना)+ड] १. नगरगामी। २ जिसकी मनोवृत्ति अनकूल हो।

पुरगुर—पु० [देश०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकडी खिलौने, हल आदि बनाने के काम आती है।

पुरचक—स्त्री० [हिं० पुचकार] १ चुमकार। पुचकार। २ बढ़ावा। प्रेरणा।

क्रि० प्र०—देना।

३ पृष्टपेषण। ४. समर्थन। हिमायत।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—लेना।

५. बुरा अभ्यास या परिपाटी। (पश्चिम)

पुर-जन—पु० [ष० त०] पुर या नगर के रहनेवाले लोग। पुरवासी।

पुरजा—पुं० [फा० पुर्ज.] १. टुकड़ा। खड।

मुहा०—पुरजे पुरजे उड़ाना या करना=कागज, पत्र आदि को फाड़कर उसके अनेक छोटे छोटे टुकड़े कर देना।

२. काटकर निकाला हुआ टुकड़ा। कतरन। धज्जी। ३. कागज के टुकडे पर लिखी हुई बात या सूचना। ४ किसी के हस्ते भेजी जाने वाली चिट्ठी। ५ किसी बडे यत्र का कोई अग, अश या खड। जैसे—घडी के कई पुरजे खराब हो गये है।

पद—चलता पुरजा=बहुत बड़ा चालाक।

मुहा०—(किसी के दिमाग का) पुरजा ढीला होना=कुछ खब्ती, झक्की या सनकी होना।

पुरजित्—पु० [स० पुर√जि (जीतना)+क्विप्] १ शिव। २ कृष्ण का एक पुत्र जो जाबवती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

पुरट—पु० [स०√पुर्+अटन] सुवर्ण। सोना।

पुरण—पु० [स०√पृ+क्यु—अन] समुद्र।

पुरतः (तस्)—अव्य० [स० पुर+तस्] आगे। सामने। उदा०—पुरुतो मे प्रेषितम् पत्र।—प्रिथीराज।

पुर-तटी—स्त्री० [मध्य० स०] छोटा बाजार। हाट।

पुर-तोरण—पु० [ष० त०] नगर का बाहरी दरवाजा या मुख्य-द्वार।

पुर-त्राण—वि० [ब० स०] पुर की रक्षा करनेवाला।

पुं० परकोटा।

पुर-देव—पु०=नगर-देवता।

पुर-द्वार—पु० [ष० त०] पुर का मुख्य द्वार। नगर का मुख्य फाटक।

पुरद्विष्(द्)—पु० [ष० त०] शिव।

पुरना—अ० [हिं० पूरा] १ पूरा या पूर्ण होना। २ यथेष्ट मात्रा या मान मे प्राप्त होना। उदा०—पुरती न जो पै मोर-चंद्रिका किरीट-काज, जुरती कहा न काँच किरचें कुमाय की।—रत्नाकर। ३. समाप्त होना।

पुर-नारी—स्त्री० [ष० त०] नगर-नारी। रडी। वेश्या।

पुरनियाँ—वि० [हिं० पुरान] बुड्ढा (या बुड्ढी)। वृद्ध (या वृद्धा)।

पुर-निवेश—पु० [ष० त०] पुर या नगर बनाना और बसाना।

पुर-निवेशन—पु० [ष० त०] पुर या नगर बसाने का कार्य।

पुरनी—स्त्री० [हिं० पुरना=भरना] १ अँगूठे मे पहनने का छल्ला। २ तुरही। ३ बदूक की नली साफ करने का कागज।

पुर-पक्षी (क्षिन्)—पुं० [ष०त०] १ पुर या नगर मे रहनेवाला पक्षी। २ पालतू पक्षी।

पुरपाल—पुं० [स० पुर√पाल् (रक्षा)+णिच+अच्] १. पुर या नगर का प्रधान अधिकारी। २ कोतवाल। ३ आत्मा। जीव।

पुरबला—वि० [स० पूर्व+हिला (प्रत्य०)] [स्त्री० पुरबली] १. पूर्व का। पहले का। २ पूर्व जन्म का। पिछले जन्म का।

पुरबा†—वि०=पुरवा।

पुरबिया—वि० [हिं० पूरब] [स्त्री० पुरबिनी] १. पूर्व देश मे उत्पन्न या रहनेवाला। पूरब का। २ पूर्व दिशा से आनेवाला। जैसे—पुरबिया हवा।

पु० पूर्वी देश का निवासी।

पुरबिहा†—वि०, पु०=पुरबिया।

पुरबी—वि०=पूरबी।

पुरभिद्—पु० [स० पुर√भिद् (विदीर्ण करना)+क्विप्] पुर (त्रिपुर) का भेदन करनेवाले, शिव।

पुरमथन—पुं० [ष० त०] शिव।

पुर-मथिता (तृ)—पु०[सं०] शिव।

पुर-मार्ग—पु०[ष० त०] १ पुर या नगर की ओर जानेवाला रास्ता। २. शहर की सड़क।

पुर-रक्षी—पु०=पुर-रक्षक।

पुर-रक्षक—पु० [ष०त०] नगर की रक्षा करनेवाला कर्मचारी।

पुर-रक्षा (क्षिन्)—पु०[ष०त०]=पुर-रक्षक।

पुर-रोध—पु०[ष० त०] शत्रु के नगर को घेरा डालना। चारो ओर से घेरना।

पुरला—स्त्री०[स०√ पुर्+कलच्+टाप्] दुर्गा।

पुर-लोक—पु०[ष० त०]=पुरजन।

पुरवइया†—स्त्री०=पुरवाई।

पुरवट—पु०[स० पूर] चमडे का एक तरह का बडा उपकरण या डोल जिससे सिचाई के लिए कुओ से पानी निकालते हैं। चरसा। मोट।

क्रि० प्र०—खीचना।—चलना।—चलाना।

मुहा०—पुरवट नाधना=पुरवट चलाने के लिए उसमे बैल जोतना।

पुर-वधू—स्त्री०[ष० त०] वेश्या।

पुरवना—स०[हिं० पूरना का प्रेर०] १ पूर्ण या पूरा करना। जैसे—मनोरथ पुरवना।

मुहा०—साथ पुरवना=अन्त तक या पूरी तरह से साथ देना।

२ इच्छा, कामना, प्रतिज्ञा आदि पूरी करना। उदा०—जन प्रहलाद प्रतिज्ञा पुरई सखा बिप्र दरिद्र हयौ।—सूर।

अ०१ पूरा या पूर्ण होना। २ पूरा पडना। यथेष्ट होना। ३ पूर्ति होना। कमी दूर होना।

पुर-वर—पु०[स० त०]१. अच्छा और बढ़िया या श्रेष्ठ नगर। २ राजनगर। राजधानी।

पुरवा—पु०[सं० पुर] छोटा गाँव। पुरा। खेडा।

वि०[स० पूव] पूर्व दिशा का।

पु०[स० पूर्व+वात] १ पूर्व की ओर से आने या चलनेवाली हवा। पुरवाई। २ उक्त वायु के चलने पर पशुओ को होनेवाला एक रोग, जिसमे उनका गला और पेट फूल जाता है।

पु०[स० पुटक] मिट्टी का एक प्रकार का छोटा बरतन जिसमे पानी, दूध, शराब आदि पीते हैं। कुल्हड़।

पुरवाई—स्त्री०[स० पूर्व+वायु, हिं० पूरब+बाई] पूर्व की वायु। वह वायु जो पूर्व दिशा मे आती हो।

पुरवाना—स०[हिं० पुरवना का प्रे०] पूरा कराना।

पुरवासी (सिन्)—पु०[स० पुर√वस् (बसना)+णिनि] पुर या नगर का रहनेवाला। नागरिक।

पुर-वास्तु—पु०[ष० त०] वह भूमि या स्थान जहाँ नगर अच्छी तरह बसाया या बसाया जा सकता हो।

पुरवैया—स्त्री० पुरवाई।

पुर-शासन—पु०[स० पुर√शास् (शासन करना)+ल्यु—अन] १. दैत्यों के त्रिपुर का ध्वस करनेवाले, शिव। २ विष्णु।

पुरश्चरण—पु०[स० पुरस्√चर् (गति)+ल्युट्—अन] १ किसी कार्य की सिद्धि के लिए पहले से ही उपाय सोचना और उसका अनुष्ठान करना। किसी काम की पहले से की जानेवाली तैयारी। २. किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए नियम और विधान पूर्वक कुछ निश्चित समय तक किया जानेवाला तान्त्रिक पूजा-पाठ। तान्त्रिक प्रयोग।

पुरश्चर्या—स्त्री०[स० पुरस्√चर्+क्यप्+टाप्] पुरश्चरण।

पुरश्छद—पु०[स० पुरस्√छद (ढकना)+णिच्+घ, ह्रस्व] कुश या डाभ की तरह की एक घास।

पुरखा†—पु० =पुरखा (पूर्व पुरुष)।

पुरस—पु०[स० पुरीष] खाद।

पुरसाँ—वि०[फा० पुर्सां] पूछने या खोज-खबर लेनेवाला।

पुरसा—पु०[स० पुरुष] ऊँचाई या गहराई नापने की एक नाप जो उतनी ऊँची होती है, जितना ऊँचा हाथ ऊपर उठाकर खड़ा हुआ साधारण मनुष्य होता है। लगभग साढे चार या पाच हाथ की एक माप। जैसे—यह कुआँ या नदी चार पुरसा गहरी है।

पुरसी—स्त्री०[फा०] समस्त पदो के अत मे, जानने के लिए कुछ पूछने की क्रिया या भाव। जैसे—मातम-पुरसी, मिजाज-पुरसी आदि।

पुरस्कार—पु०[स० पुरस्√कृ(करना)+घञ्] [भू० कृ० पुरस्कृत] १ आगे करने की क्रिया। २ आदर। पूजा। ३ प्रधानता। ४ स्वीकार। ५ अच्छी तरह कोई बडा और कठिन काम करने पर उसके कर्ता को आदर या सत्कार के रूप मे दिया जानेवाला धन या पदार्थ। इनाम (प्राइज)।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।

पुरस्कृत—भू० कृ०[स० पुरस्√कृ+क्त] १ आगे किया हुआ। २ पूजित। ३ स्वीकृत। ४ जिसे पुरस्कार मिला हो।

पुरस्तात्—अव्य०[स० पूर्व+अस्ताति, पुर—आदेश] १ आगे। सामने। २ पूर्व दिशा मे। ३ पूर्व काल मे। ४ आरम मे।

पुरस्सर—वि०=पुर सर।

पुरहँड़†—पु०[स० पुरोघट या पूर्णघट] मगलकलश।

पुरहत—पु०[स० पुर-अक्षत] वह अन्न और द्रव्य जो विवाह आदि मगल कार्यो मे पुरोहित और नेगियो को कृत्य करने के प्रारम मे दिया जाता है। आखत।

पुरहन्—पु०[स० पुर√हन् (हिसा)+क्विप्] १ विष्णु। २ शिव।

पुरहर†—पु०[स० पूर्ण-भर] मागलिक पात्र। मगलघट। उदा०—धवल कमल फुल पुरहर भेल।—विद्यापति।

वि० पूरा।

पुरहा—पु०[स०] १ शिव। २ विष्णु।

†पु०[हिं० पुर] वह व्यक्ति जो खेतो की नालियो में पुरवट का पानी गिराता हो। (पूरब)

पुरहूं—स्त्री०[?] एक प्रकार की झाडी जिसकी पत्तियाँ और जड़ें औषध के काम आती है। हुर-जेवडी।

पुरहूत—वि०, पु० पुरूहूत।

पुरांगना—स्त्री०[स० पुर-अगना, ष०त०] नगर मे रहनेवाली स्त्री। नगर-निवासिनी।

पुरांतक—पु०[स० पुर-अतक ष०त०] शिव।

पुरा—अव्य०[स० √ पुर (अग्रगति)+का]१. पुराने समय में। पूर्व या प्राचीन काल मे। २ अब तक। ३ थोड़े समय में।

वि० समस्त पदों के आरंभ में विशेषण के रूप में लगकर यह पुराना या प्राचीन का अर्थ देता है। जैसे—पुराकल्प, पुरावृत्त।

स्त्री०१. पूर्व दिशा। पूरब। २. मुरा नामक गंध द्रव्य। ३ छोटा बस्ती। गाँव।

पुराई—स्त्री०[हिं० पूरना-भरना] १. पूरा करने की क्रिया या भाव। २. पुरवट आदि के द्वारा खेतों में पानी देने की क्रिया। सिंचाई।

क्रि० प्र०—चलना।

३. उक्त का पारिश्रमिक या मजदूरी।

पुरा-कथा—स्त्री० [कर्म० स०] १ प्राचीन काल की बातें। २. इतिहास।

पुराकल्प—पुं० [कर्म० स०] १ पूर्व कल्प। पहले का कल्प। २ प्राचीन इतिहास युग। ३ एक प्रकार का अर्थवाद जिसमें प्राचीन काल का कहकर किसी विधि के करने की ओर प्रवृत्त किया जाय। जैसे—ब्राह्मणों ने इससे हवि. पवमान सामस्तोम की स्तुति की थी। ४. आधुनिक भू० विज्ञान के अनुसार उत्तर पाँच कल्पो मे से तीसरा कल्प, जिसमें पृथ्वी तल पर जगह-जगह छिछले समुद्र बनने लगे थे; खूब बाढे आती थी, मछलियाँ, सरीसृप और कीडे-मकोड़े उत्पन्न होने लगे थे, और कुछ विशिष्ट प्रकार के बहुत बडे-बड़े वृक्ष होते थे। यह कल्प प्राय बीस से पचास करोड वर्ष पहले हुआ था। पुराजीवकाल। (पेलियो जोइक एरा)

विशेष—शेष चार कल्प ये हैं—आदि कल्प, उत्तर कल्प, मध्य कल्प और नवकल्प।

पुराकालीन—वि०[स० पुरा-काल, कर्म० स०,+ख—ईन] १ प्राचीन काल का। बहुत पुराना। २. इतना अधिक पुराना कि जिसका प्रचलन, प्रयोग या व्यवहार बहुत दिन पहले से उठ गया हो। बहुत पुराने जमाने का। (एन्टीक)

पुराकृत—भू० कृ०[स० स० त०]१ पूर्व काल मे किया हुआ। २. पूर्वजन्म में किया हुआ।

पुं० पूर्वजन्म मे किये हुए वे भले और बुरे काम जिनका फल दूसरे जन्म मे भोगना पड़ता है।

पुरा-कोश—पु०[स०कर्म० स०] ऐसा शब्दकोश जिसमें प्राचीन भाषाओं के अथवा बहुत पुराने शब्दों का विवेचन होता है। निघण्टु। (लेक्सिकन)

पुराग—वि०[सं० पुरा√गम् (जाना)+ड] पूर्वगामी।

पुराचीन—वि० १.=पुराकालीन। २.=प्राचीन।

पुराजीव—पुं०=जीवाश्म। (देखें)

पुराजीवकाल—पुं०=पुराकाल।

पुराजैविकी—स्त्री०=जीवाश्म विज्ञान। (देखें)

पुराण—वि० [सं० पुरा√ट्यु—अन] [भाव० पुराणता] १ बहुत प्राचीन काल का। बहुत पुराना। पुरातन। जैसे—पुराण पुरुष। २. बहुत अधिक अवस्था या वय वाला। वृद्ध। बुड्ढा। ३. जो पुराना होने के कारण जीर्ण-शीर्ण हो गया हो।

पु०१. बहुत पुरानी घटना या उसका वृत्तांत। २. प्रायः सभी प्राचीन जातियों, देशों और धर्मों में प्रचलित उन पुरानी और परम्परागत कथा-कहानियों का समूह जिसका थोड़ा-बहुत ऐतिहासिक आधार होता है, पर जिनके रचयिता अज्ञात कवि होते हैं। (मिथ) जैसे—चीन, यूनान या रोम के पुराण, जैन या बौद्ध पुराण।

विशेष—ऐसी कथाओं में प्राय प्राकृतिक घटनाओ, मानव जाति की उत्पत्ति, सृष्टि की रचना, प्राचीन धार्मिक कृत्यो और सामाजिक रीति-रिवाजों के कुछ अत्युक्तिपूर्ण विवरण होते है, तथा देवी-देवताओं और वीर पुरुषो के जीवन-वृत्त होते हैं।

३. भारतीय धार्मिक क्षेत्र में, उक्त प्रकार के वे विशिष्ट बहुत बडे-बड़े काव्य-ग्रंथ, जिनमे प्राचीन इतिहास की बहुत-सी घटनाओं के साथ-साथ सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और लय, देवी-देवताओं, दानवों, ऋषि-महर्षियों, महाराजाओं, महापुरुषों आदि के गुणों तथा पराक्रमों की बहुत-सी बाते, और अनेक राजवशों की वशावलियाँ आदि भी दी गई हैं, और धार्मिक दृष्टि से जिनकी गणना पाँचवे वेद के रूप मे होती है।

विशेष—हिंदू धर्म मे कुल १८ पुराण माने गये हैं। प्राय सभी पुराणो में शेष सभी पुराणों के नाम और श्लोक-सख्याएँ थोडे-बहुत अन्तर से दी हैं। पुराणों के नाम प्राय ये हैं—ब्रह्म, पद्म, विष्णु, वायु अथवा शिव, लिंग अथवा नृसिंह, गरुड़, नारद, स्कद,अग्नि, श्रीमद्भागवत अथवा देवी भागवत, मार्कण्डेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, वामन, वाराह, मत्स्य, कूर्म और ब्रह्माण्ड पुराण। साहित्यकारो के अनुसार पुराणों मे पाँच बाते होती हैं— सर्ग अर्थात् सृष्टि, प्रतिसर्ग अर्थात् प्रलय और उसके उपरांत फिर से होनेवाली सृष्टि, वशों, मन्वन्तरो और वशानुचरित की बातों का वर्णन, परन्तु कुछ पुराणो मे इस प्रकार की बातो के सिवा राजनीति राजधर्म, प्रजा-धर्म, आयुर्वेद, व्याकरण, शस्त्र-विद्या, साहित्य, अवतारों देवी-देवताओं आदि की कथाएँ तथा इसी प्रकार की और भी बहुत-सी बातें मिलती हैं। धार्मिक हिंदू प्राय विशेष भक्ति और श्रद्धा से इन पुराणों की कथाएँ सुनते हैं। साधारणत वेद-मत्रों के सग्रहकर्ता बेद-व्यास ही इन सब पुराणों के भी रचयिता माने जाते हैं। इन १८ पुराणो के सिवा १८ उप-पुराण भी माने गये हैं। और जैन तथा बौद्ध-धर्मों मे भी इस प्रकार के कुछ पुराण बने हैं। आधुनिक विद्वानों का मत है कि भिन्न-भिन्न पुराण भिन्न-भिन्न समयों मे बने हैं। कुछ प्राचीन पुराणो के नष्ट हो जाने पर उनके स्थान पर उन्ही के नाम से कुछ नये पुराण भी बने हैं। और इनमें बहुत-सी बातें समय-समय पर घटती-बढ़ती रही हैं।

४. उक्त ग्रन्थों के आधार पर १८ की सख्या का वाचक शब्द। ५ शिव।

६. कार्षापण नाम का पुराना सिक्का।

पुराण-कल्प—पु० =पुराकल्प। (दे०)

पुराणग—पु०[स० पुराण√ गम् (जाना)+ड]१. पुराणो की कथाएँ पढ़ने अथवा पढ़कर दूसरों को सुनानेवाला पडित या व्यास। २. ब्रह्मा।

पुराणता—स्त्री०[स० पुराण+तल्+टाप्]१ पुराण का भाव। २ बहुत ही प्राचीन होने की अवस्था या भाव। (एन्टिक्विटी)

पुराण-दृष्ट—भू० कृ०[तृ० त०] जो पुराने लोगों द्वारा देखा और माना गया हो।

पुराण-पुरुष—पुं०[कर्म० स०]१. विष्णु। २. वृद्ध व्यक्ति।

पुरातत्त्व—पु०[कर्म० स०] वह विद्या जिसमें मुख्यत. इतिहास पूर्व-काल की वस्तुओं के आधार पर पुराने अज्ञात इतिहास का पता लगाया जाता है। प्रत्न विज्ञान। (आर्कियॉलोजी)

पुरातत्त्वज्ञ—पु० [स० पुरातत्त्व√ ज्ञा (जानना)+क] वह जो पुरातत्त्व विद्या का ज्ञाता हो। (आर्कियालाजिस्ट)

पुरातन—वि० [स० पुरा+ट्यु—अन, तुट्] १. सब से पहले का। आद्य। २. पुराना। प्राचीन।

पु० विष्णु।

पुरा-तल—पु० [कर्म० स०] तलातल। (दे०)

पुराधिप—पु० [स० पुर-अधिप, ष० त०] पुर अर्थात् नगर का प्रधान शासनिक अधिकारी।

पुराध्यक्ष—पु० [स० पुर-अध्यक्ष, ष० त०] पुराधिप।

पुरान†—वि०=पुराना।

पु०=पुराण।

पुराना—वि० [स० पुराण] [स्त्री० पुरानी] १. जो प्रस्तुत समय से बहुत पहले का हो। बहुत पूर्व या प्राचीन काल का। जैसे—पुराना जमाना, पुरानी सभ्यता। २ जिसे अस्तित्व में आये या जीवन धारण किये हुए बहुत समय हो चुका हो। जैसे—पुराना पेड, पुराना बुखार, पुराना मकान आदि। ३ जो बहुत दिनो का हो जाने के कारण अच्छी दशा मे न रह गया हो या ठीक तरह से और पूरा काम न दे सकता हो। जीर्ण-शीर्ण। जैसे—पुराना कपडा, पुरानी चौकी। ४ जिसे किसी काम या बात का बहुत दिनो से अनुभव होता आया हो, अथवा जो बहुत दिनो से अभ्यस्त हो रहा हो। यथेष्ट रूप मे परिपक्व। जैसे—पुराना कारीगर, पुराने पडित या विद्वान्।

पद—पुराना खुर्राट=बहुत बड़ा अनुभवी। **पुराना घाघ**=बहुत बडा चालाक।

५ जो किसी निश्चित या विशिष्ट काल अथवा समय से चला आ रहा हो। जैसे—(क) पाँच सौ वर्ष का पुराना चावल, सौ वर्ष का पुराना पेड। ६ जो उक्त प्रकार का होने पर भी अब प्रचलित न हो। जिसका चलन अब उठ गया हो, या उठता जा रहा हो। जैसे—पुराना पहनावा, पुरानी परिपाटी या प्रथा।

स० [हिं० पूरना का प्रे०] १ पूरने का काम किसी और से कराना। पूरा कराना। २ आज्ञा, निर्देश वचन आदि का निर्वाह या पालन कराना। ३ अवकाश, गड्ढे आदि के प्रसग मे, समतल कराना। भरवाना।

स० [हिं० पूरना] १ पूरा करना। २. निर्वाह या पालन करना।

=†अ०=पूरना (पूरा होना)।

पुराराति—पु० [स० पुर-अराति, ष० त०] शिव।

पुरारि—पु० [स० पुर-अरि, ष० त०] शिव।

पुराल†—पु० [हिं०]=पयाल (धान के डंठल)। धान के ऐसे डंठल, जिसमे से बीज झाड लिये गये हो। पद।

पुरा-लेख—पु० [कर्म० स०] किसी प्राचीन भवन या स्मृति-चिह्न पर अंकित किया हुआ कोई ऐसा लेख, जो किसी प्राचीन लिपि में अंकित हो। (एपिग्राफ)

पुरालेखशास्त्र—पु० [ष० त०] वह शास्त्र जिसमे प्राचीन काल की लिपियाँ पढने का विवेचन होता है। (एपिग्राफी)

पुरावती—स्त्री० [स० पुर+मतु, वत्व, +ङीप्, दीर्घ] एक प्राचीन नदी। (महाभारत)

पुरावशेष—पु० [स० पुरा-अवशेष, कर्म० स०] बहुत प्राचीन काल की चीजो के टूटे-फूटे या बचे-खुचे अश या अवशेष जिनके आधार पर उस काल की सभ्यता, इतिहास आदि के सबध मे जानकारी प्राप्त की जाती है। (एन्टिक्विटीज)

पुरावसु—पु० [कर्म० स०] भीष्म।

पुराविद्—वि० [स० पुरा√विद् (जानना)+क्विप्] पुरानी अर्थात् प्राचीन काल की ऐतिहासिक, सामाजिक आदि बातो को जाननेवाला। पुरातत्त्वज्ञ। (आर्कियालोजिस्ट)

पुरा-वृत्त—पु० [कर्म० स०] प्राचीन काल का कोई वृत्तात।

पुरासाह—पु० [स० पुरा√सह् (सहन करना)+ण्वि] इन्द्र।

पुरासिनी—स्त्री० [स० पुर√अस् (फेकना)+णिनि+ङीप्] सहदेवी नाम की बूटी।

पुरि—स्त्री० [स०√पृ+इ] १ पुरी। २ शरीर। ३ नदी।

पु० १ राजा। २ दशनामी सन्यासियो मे से एक।

पुरिखा†—पु०=पुरखा।

पुरिया—स्त्री० [हिं० पूरना] १ बाना फैलाने की नरी। २. ताना।

†स्त्री० पुड़िया।

पुरिश—पु० [स० पुरि√शी सोना+ड, अलुक्स] जीव।

पुरिष—पु०=पुरीष (विष्ठा)।

पुरी—स्त्री० [स० पुरि+ङीष्] १ छोटा पुर। नगरी। २ जगन्नाथ-पुरी। ३ गढ़। दुर्ग। ४ देह। शरीर।

पुरीतत्—स्त्री० [स० पुरी√ तन् (विस्तार)+क्विप्, तुक्] १ हृदय के पास की एक नाडी। २ आँत।

पुरीमोह—पु० [स० पुरी√मुह् (मुग्ध होना)+णिच्+अण्] धतूरा।

पुरीष—पु० [स०√पृ+ईषन्, किन्] १ विष्ठा। मल। गू। २ जल। पानी।

पुरीषण—पु० [स० पुरी√ईष् (त्याग)+ल्युट्—अन] विष्ठा।

पुरीषम—पु० [स० पुरीष √मा (शब्द)+क] १ मल। विष्ठा। २ गदगी। कूडा।

पुरीष-स्थान—पु० [ष० त०] मल त्याग करने का स्थान। जैसे—खुड्डी पाखाना, सडास आदि।

पुरीषाधान—पु० [स० पुरीष-आधान, ष० त०] मलाशय।

पुरीषोत्सर्ग—पु० [स० पुरीष-उत्सर्ग, ष० त०] मल-त्याग।

पुरु—वि० [स०√पृ (पालन, पोषण)+कु, उत्व] बहुत अधिक। विपुल।

पु० १ देवलोक। स्वर्ग। २ एक दैत्य जिसे इन्द्र ने मारा था। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४ फूलों का पराग। ५ देह। शरीर। ६. पुराणानुसार एक देश का नाम। ७ छठवे चन्द्रवशी राजा, जो नहुष के पोते तथा ययाति के पुत्र थे। अपने पाँचो भाइयो मे से इन्होने अपने पिता ययाति के माँगने पर उन्हे अपना यौवन और रूप दे दिया, जिन्हें हजार वर्षों तक भोगने के बाद ययाति ने फिर इन्हे लौटा दिया था और अपने राज-सिंहासन का अधिकारी बनाया था। इन्ही के वश में दुष्यन्त और भरत हुए थे। जिनके वशज आगे चलकर कौरव लोग हुए। ८. पंजाब का एक प्रसिद्ध राजा जो ई० पू० ३२७ मे सिकन्दर से लड़ा था।

पुरुकुत्स—पु० [सं०] एक राजा जो माधाता का पुत्र और मुचुकुंद का भाई

था और जो नर्मदा नदी के आस-पास के प्रदेश पर राज्य करता था। इसने नाग कन्या नर्मदा के साथ विवाह किया था।

पुरखा|—पु०=पुरुष।

पुरुजित्—पु० [सं० पुरु√जि (जीतना)+क्विप्] १. कुंतिभोज का पुत्र जो अर्जुन का मामा था। २. विष्णु।

पुरुदंशक—पु० [सं० ब० स०, कप्] हंस।

पुरुदंशा (शस्)—पु० [सं० पुरु√दंश् (काटना)+असुन्] इंद्र।

पुरुदस्म—पु० [सं० पुरु√दस् (काटना)+मन्] विष्णु।

पुरुब—पु०=पूर्व (दिशा या देश)।

पुरुभोजा (जस्)—पु० [सं० पुरु√भुज् (खाना)+असुन्] बादल।

पुरुमित्र—पु० [सं०] १ एक प्राचीन राजा जिसका नाम ऋग्वेद मे आया है। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

पुरुमीढ़—पु० [सं०] अजमीढ का छोटा भाई।

पुरुष—पु० [सं०√पुर् (आगे जाना)+कुषण्] १. मानव जाति का नर प्राणी। आदमी। मर्द। (स्त्री से भिन्न) २ उक्त प्रकार का वह व्यक्ति जिसमे विशिष्ट शक्ति या सामर्थ्य हो और जो वीरता तथा साहस के काम कर सकता हो, जैसे—तुम्हें पुरुषों की तरह मैदान में आना चाहिए। ३ राज्य की ओर से सार्वजनिक कार्यों के लिए नियुक्त किया हुआ कोई अधिकारी। राज-पुरुष। ४ ऊँचाई की एक नाप जो किसी सामान्य वयस्क मनुष्य की ऊँचाई के बराबर होती है। पुरसा। ५ शरीर मे रहनेवाली आत्मा या जीव। ६ वह प्रधान सत्ता, जो सारे विश्व में आत्मा के रूप में वर्तमान है। विश्वात्मा।

विशेष—सांख्यकार ने इसे प्रकृति से भिन्न एक ऐसा चेतन मूल तत्त्व या पदार्थ माना है, जिसमे कभी कोई परिणाम या विकार नहीं होता, और जो स्वयं कुछ भी न करने और सबसे अलग रहने पर भी प्रकृति के सान्निध्य से ही सृष्टि की उत्पत्ति करता है।

७ किसी व्यक्ति की ऊपरवाली पीढ़ी या पीढ़ियाँ। पूर्व पुरुष। पूर्वज। उदा०—सो सठ कोटिक पुरुष समेता। बसहिं कलप सत नरक-निकेता।—तुलसी।

८ स्त्री का, पति या स्वामी। ९ व्याकरण मे, वक्ता की दृष्टि से किया जानेवाला सर्वनामों का वर्गीकरण।

विशेष—इसके उत्तम पुरुष, प्रथम पुरुष और मध्यम पुरुष, ये तीन विभाग हैं। वक्ता अपने संबंध में जिस सर्वनाम का उपयोग करता है, वह उत्तम पुरुष कहलाता है। जैसे—मैं या हम। वह जिससे कोई बात-चीत करता है, उसके संबंध में प्रयुक्त होनेवाले विशेषण मध्यम पुरुष कहलाते हैं। जैसे—तू, तुम या आप। किसी तीसरे अनुपस्थित या दूरस्थ व्यक्ति या पदार्थ के लिए प्रयुक्त होनेवाले सर्वनामो की गणना प्रथम पुरुष में होती है। जैसे—वह या वे। कुछ वैयाकरण अँगरेजी व्याकरण के अनुकरण पर इन्हें क्रमात प्रथम पुरुष, द्वितीय पुरुष और तृतीय पुरुष भी कहते हैं। हमारी भाषा में इन पुरुषों का परिणाम या प्रभाव क्रिया-पदों पर भी होता है। जैसे—मैं जाता हूँ, तुम जाते हो; वह जाता है आदि।

१०. विष्णु। ११. सूर्य। १२. शिव। १३. पारा। १४ गुग्गुल। १५. पुन्नाग। १६. घोड़े का अपने पिछले दोनों पैरो पर खड़ा होना। पुरुषक। [illegible]

वि० [सं०] १. तीखा। तेज। जैसे—पुरुष पवन। २. नर। 'स्त्री' का विपर्याय। जैसे—पुरुष मकर। ३ जोरदार। बलवान।

पुरुषक—पुं० [सं० पुरुष√कै (भासित होना)+क] घोड़े की वह स्थिति जिसमें वह अपने दोनों अगले पैर ऊपर उठाकर दोनों पिछले पैरों पर खड़ा हो जाता है। अलफ। सीख-पाँव।

विशेष—लोक में इसे 'घोड़े का जमना' कहते हैं।

पुरुष-कार—पुं० [ष० त०] १. पुरुषार्थ। पौरुष। २ उद्योग।

पुरुष-केशरी—पु० [उपमि० स०] १ सिंह के समान वीर पुरुष। बहुत बड़ा वीर। २ नृसिंह अवतार।

पुरुष-गति—स्त्री० [सं० ष० त०] एक प्रकार का साम।

पुरुष-ग्रह—पु० [सं० ष० त०] ज्योतिष के अनुसार मगल, सूर्य और बृहस्पति, ये तीन ग्रह।

पुरुषघ्नी—स्त्री० [सं० पुरुष√हन् (हिंसा)+टक्+ङीप्] पति की हत्या करनेवाली स्त्री।

पुरुषत्व—पुं० [सं० पुरुष+त्व] पुरुष होने की अवस्था, गुण या भाव।

पुरुष-दंतिका—स्त्री० [सं० ब० स०, कप्+टाप, इत्व] मेदा नामक जड़ी।

पुरुषदघ्न—पु० [सं० पुरुष+दघ्नच्]=पुरुषद्वयस्।

पुरुषद्वयस्—पु० [सं० पुरुष+द्वयसच्] ऊँचाई मे पुरुष के बराबर।

पुरुष-द्विष्—पुं० [सं० पुरुष√द्विष् (शत्रुता करना)+क्विप्] विष्णु का शत्रु।

पुरुषद्वेषिणी—स्त्री० [सं० पुरुष-द्विष्+णिनि+ङीप्] अपने पति से द्वेष करनेवाली स्त्री।

पुरुष-नक्षत्र—पु० [ष० त०] हस्त, मूल, श्रवण, पुनर्वसु, मृगशिरा और पुष्य, ये नक्षत्र। (ज्यो०)

पुरुषनाय—पु० [सं० पुरुष√नी (ले जाना)+अण्] १ सेनापति। २. राजा।

पुरुष-पशु—पु० [उपमि० स०] पशुओ जैसा आचरण करनेवाला व्यक्ति।

पुरुष-पुंगव—पु० [उपमि० स०] श्रेष्ठ पुरुष।

पुरुष-पुंडरीक—पु० [उपमि० स०] १. श्रेष्ठ पुरुष। २ जैनियो के मतानुसार नौ वासुदेवों में सातवें वासुदेव।

पुरुष-पुर—पु० [ष० त०] आधुनिक पेशावर का पुराना नाम। किसी समय यह गांधार की राजधानी थी।

पुरुष-प्रेक्षा—स्त्री० [ष० त०] वह खेल या तमाशा जो केवल पुरुषों के देखने योग्य हो, और जिसे देखना स्त्रियो के लिए वर्जित हो।

पुरुषमात्र—वि० [सं० पुरुष+मात्रच्] मनुष्य की ऊँचाई के बराबर का।

पुरुषमानी (निन्)—वि० [सं० पुरुष√मन् (समझना)+णिनि] अपने को वीर समझनेवाला।

पुरुष-मुख—वि० [ब० स०] [स्त्री० पुरुषमुखी] पुरुष के समान मुख वाला।

पुरुष-मेध—पु० [मध्य० स०] एक वैदिक यज्ञ, जिसमें पुरुष अर्थात् मनुष्य की बलि दी जाती थी। यह यज्ञ करने का अधिकार केवल ब्राह्मण और क्षत्रिय को था।

पुरुष-राशि—स्त्री० [ष० त०] मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धन और कुंभ नामक विषम राशियों में से हर एक। (ज्यो०)

पुरुष-वर—पुं० [स० त०] १. श्रेष्ठ पुरुष। २. विष्णु।

पुरुषवाद—पुं० [स०] प्राचीन भारत में एक नास्तिक दार्शनिक मत, जो ईश्वर को नहीं, बल्कि पुरुष और उसके पौरुष को ही सर्वप्रधान मानता था।

पुरुषवादी—वि० [सं०] पुरुषवाद-संबंधी।

पुं० पुरुषवाद का अनुयायी व्यक्ति।

पुरुष-वार—पुं० [ष० त०] रवि, मंगल, बृहस्पति और शनि इन चार वारों में हर एक। (ज्यो०)

पुरुषवाह—पुं० [स० पुरुष√वह् (ढोना)+अण्] गरुड़।

पुं० [ब० स०] कुबेर।

पुरुष-व्याघ्र—पुं० [उपमि० स०] सिंह के समान बलवाला व्यक्ति। शेर के समान पराक्रमवाला। पुरुष-सिंह।

पुरुष-शार्दूल—पुं० [उपमि० स०] पुरुष-व्याघ्र। (दे०)

पुरुष-शीर्ष(क)—पुं० [ष० त०] काठ का बना हुआ मनुष्य का सिर, जिसे चोर सेंध में यह देखने को डालते थे कि वह प्रवेश योग्य है या नहीं।

पुरुष-सिंह—पुं० [उपमि० स०] ऐसा व्यक्ति जो पराक्रम या वीरता के विचार से पुरुषों में सिंह के समान हो। परम वीर पुरुष।

पुरुष-सूक्त—पुं० [मध्य० स०] ऋग्वेद का एक अति पवित्र तथा प्रसिद्ध माना जानेवाला सूक्त जो 'सहस्रशीर्षा' से आरंभ होता है।

पुरुषांग—पुं० [पुरुष-अंग, ष० त०] पुरुष की लिंगेंद्रिय। शिश्न।

पुरुषांतर—पुं० [पुरुष-अंतर, मयू० स०] अन्य व्यक्ति।

पुरुषाद—पुं० [स० पुरुष√अद् (खाना)+अण्] १ मनुष्यों को खानेवाला, अर्थात् राक्षस। २ बृहत्संहिता के अनुसार एक देश जो आर्द्रा, पुनर्वसु और पुष्य के अधिकार में माना गया है।

पुरुषादक—पुं० [स० पुरुषाद+कन्] १ मनुष्यों को खानेवाला अर्थात् राक्षस। २ कल्माषपाद का एक नाम।

पुरुषाद्य—पुं० [पुरुष-आद्य, ष० त०] १ जिनों के प्रथम आदिनाथ। (जैन) २ विष्णु। ३ राक्षस।

पुरुषाधम—पुं० [पुरुष-अधम, स० त०] अधम पुरुष। हेय व्यक्ति।

पुरुषानुक्रम—पुं० [पुरुष-अनुक्रम, ष० त०] [वि० पुरुषानुक्रमिक] १ पुरखों की अनेक पीढ़ियों से चली आई हुई परंपरा। २. एक के बाद एक पीढ़ी का क्रम।

पुरुषानुक्रमिक—वि० [पुरुष-आनुक्रमिक, ष० त०] जो पुरुषानुक्रम से चला आया हो, या चला आ रहा हो। जो पूर्वजों के समय से हर पीढ़ी में होता आया हो। वंशानुक्रमिक। (हेरिडेटरी)

पुरुषायित—क्रि० वि० [स० पुरुष+क्यङ०+क्त] पुरुषों या मर्दों की तरह। वीरतापूर्वक। बहादुरी से।

पुं० १. वीर अथवा सुयोग्य पुरुषों का-सा आचरण। २ दे० 'पुरुषायित-बंध।'

पुरुषायित-बंध—पुं० [कर्म० स०] कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार की संभोग-मुद्रा, जिसमें स्त्री ऊपर और पुरुष नीचे रहता है। साहित्य में इसे विपरीत रति कहते हैं।

पुरुषायण—पुं० [पुरुष-अयन, ब० स०] प्राणादि षोडश कला। (प्रश्नोपनिषद्)

पुरुषायुष—पुं० [पुरुष-आयुस्, ष० त०, अच्] पुरुष की आयु जो सामान्यतः १०० वर्षों की मानी जाती है।

पुरुषारथ—पुं०=पुरुषार्थ।

पुरुषार्थ—पुं० [पुरुष-अर्थ, ष० त०] १. वह मुख्य अर्थ उद्देश्य या प्रयोजन, जिसकी प्राप्ति या सिद्धि के लिए प्रयत्न करना पुरुष या मनुष्य के लिए आवश्यक और कर्त्तव्य हो। पुरुष के उद्देश्य और लक्ष्य का विषय। धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति की दृष्टि से ये चार प्रकार के होते हैं।

विशेष—सांख्य-दर्शन में सब प्रकार के दुःखों से छुटकारा पाने के लिए प्रयत्न करना ही परम पुरुषार्थ है। परवर्ती पौराणिकों ने धर्म, अर्थ काम और मोक्ष की प्राप्ति या सिद्धि के लिए प्रयत्न करना ही पुरुषार्थ माना है, और इसी लिए उक्त चारों बातों की गिनती उन मुख्य पदार्थों में की जाती है जिनकी ओर सदा मनुष्य का ध्यान या लक्ष्य रहना चाहिए।

२ वे सब विशिष्ट उद्योग तथा प्रयत्न, जो अच्छा और सशक्त मनुष्य करता है अथवा करना अपना कर्त्तव्य समझता है। पुरुषकार। ३. पुरुष में होनेवाली शक्ति या सामर्थ्य। मनुष्योचित बल। पौरुष।

पुरुषार्थी (र्थिन्)—वि० [स० पुरुषार्थ+इनि] १ पुरुषार्थ करनेवाला। २. उद्योगी। ३ परिश्रमी। ४ बली।

पुं० पश्चिमी पाकिस्तान से आये हुए हिंदू और सिक्ख शरणार्थियों के लिए सम्मान-सूचक शब्द।

पुरुषावतार—पुं० [पुरुष-अवतार, ष० त०] व्यापक ब्रह्म का पुरुष या मनुष्य के रूप में होनेवाला वह अवतार, जिसमें वह शुद्ध सत्त्व को आधार बनाकर परमधाम से इस लोक में आविर्भूत होता है।

पुरुषाशी (शिन्)—पुं० [स० पुरुष√अश् (खाना)+णिनि] [स्त्री० पुरुषाशिनी] मनुष्य (खानेवाला) राक्षस।

पुरुषी—स्त्री० [स० पुरुष+ङीष्] स्त्री।

पुरुषोत्तम—[स० पुरुष-उत्तम, स० त०] जो पुरुषों में सब से उत्तम या सर्वश्रेष्ठ हो।

पुं० १ वह जो पुरुषों में सब से उत्तम या सर्व-श्रेष्ठ हो। श्रेष्ठ पुरुष। २ धर्मशास्त्र के अनुसार ऐसा निष्पाप व्यक्ति, जो शत्रु और मित्र सब से उदासीन रहे। ३ विष्णु। ४. जगन्नाथ की मूर्ति। ५ जगन्नाथ का मन्दिर। ६ जैनियों के एक वासुदेव का नाम। ७. श्रीकृष्ण। ८ ईश्वर। ९ चांद्र गणना के अनुसार होनेवाला अधिक मास। मलमास।

पुरुषोत्तम-क्षेत्र—पुं० [ष० त०] जगन्नाथपुरी।

पुरुषोत्तम-मास—पुं० [ष०त०] चांद्र गणना के अनुसार होनेवाला अधिक मास। मलमास।

पुरुहूत—वि० [स० ब० स०] १ जिसका आह्वान बहुतों ने किया हो। २. जिसकी बहुत से लोगों ने स्तुति की हो।

पुं० इंद्र।

पुरु-हूति—स्त्री० [सं० ब० स०] दाक्षायणी।

पुं० विष्णु।

पुरूरवा (वस्)—पुं० [सं० पुरु√रु (शब्द करना)+असु, दीर्घ] १. एक प्राचीन राजा, जिसे ऋग्वेद में इला का पुत्र कहा गया है। ये चंद्र-

वंश के प्रतिष्ठाता थे। राजा पुरुरवा और उर्वशी अप्सरा की प्रेम-कथा प्रसिद्ध है। २. विश्वदेव। ३. एक देवता, जिनका पूजन पार्वण श्राद्ध में होता है।

वि० अनेक प्रकार के रव या ध्वनियाँ प्रकट करनेवाला।

पुरेवा—पु० [हिं० पूरा+हथा] हल की मूठ।

पुरेन—स्त्री० [सं० पुटकिनी] १. कमल का पत्ता। २. कमल।

पुरेवा=स्त्री०=कुरेवा (ऐसी गाय जो वर्ष में दो बार बच्चा देती है)।

पुरैन—स्त्री०=पुरेन।

पुरैना*—स० [हिं० पूरा] पूरा करना। उदा०—अज पूरैंवो ठानि बिप्र दैवज्ञ बुलाए। रत्नाकर।

अ०=पूरा होना।

स्त्री०=पुरइन (कमल)।

पुरोगता (तृ)—वि०,पु० [सं०पुरस्√गम् (जाना)+तृच्]=पुरोगामी।

पुरोगत—वि० [सं० पुरस्√गम्+क्त] [भाव० पुरोगति] १. जो सामने हो। २. जो पहले गया हो। पुराना।

पुरोगति—स्त्री० [सं० पुरस्√गम्+क्तिन्] १. पुरोगत होने की अवस्था या भाव। २ अग्रगामिता।

पु० [ब० स०] कुत्ता।

वि० आगे-आगे चलनेवाला।

पुरोगमन—पु० [सं० पुरस्√गम्+ल्युट्—अन] १. आगे की ओर चलना या बढ़ना। २ उन्नति, वृद्धि आदि की ओर अग्रसर या प्रवृत्त होना। (प्रोग्रेशन)

पुरोगामी (मिन्)—वि० [सं० पुरस्√गम्+णिनि] १. आगे आगे चलनेवाला। अगुआ। अग्रगामी। (पायोनियर) २. बराबर उन्नति करता और आगे बढ़ता हुआ। ३. किसी विषय मे उदार विचार रखने और अग्रसर रहनेवाला। (प्रोग्रेसिव)

पु० १ नायक। २. अग्रदूत। ३. कुत्ता।

पुरोचन—पुं० [सं०] दुर्योधन का एक मित्र, जो पाडवो को लाक्षागृह मे जलाने के लिए नियुक्त किया गया था।

पुरोजव—वि० [सं० पुरस्-जव, ब० स०] १. जिसके सामनेवाले भाग मे वेग हो। २ आगे बढनेवाला।

पु० पुराणानुसार पुष्कर द्वीप के सात खडों मे से एक खंड।

पुरोडा—पुं० [सं० पुरस्√दाश् (दान)+घञ्, डत्व] १. जौ के आटे की बनी हुई वह टिकिया, जो कपाल मे पकाई जाती थी। यज्ञो में इसमें से टुकड़ा काटकर देवताओं के लिए मंत्र पढ़कर आहुति दी जाती थी। २ उक्त आहुति देने के समय पढ़ा जानेवाला मत्र। ३. उक्त का वह अश जो हवि देने के बाद बच रहता था। ४. यज्ञ में दी जानेवाली आहुति या हवि। ५. सोमरस।

पुरोत्सव—पु० [सं० पुर-उत्सव, मध्य० स०] पूरे पुर या नगर मे सामूहिक रूप से मनाया जानेवाला उत्सव।

पुरोदर्शन—पु० [सं० पुरस्-दर्शन, ब० स०] १. सामने की ओर से दिखाई देनेवाला रूप। २. वास्तु-रचना का वह चित्र, जो उसके सामनेवाले भाग के स्वरूप का परिचायक हो। (फ्रन्ट एलिवेशन)

पुरोद्भवा—स्त्री० [सं० पुर√उद्√भू (उत्पन्न होना) +अच्+टाप्] महामेदा।

पुरोद्यान—पु० [सं० पुर-उद्यान, ष० त०] पुर या नगर का मुख्य उद्यान या बाग।

पुरोध—पुं० =पुरोधा।

पुरोधा (धस्)—पु० [सं० पुरस्√धा (धारण)+असि] पुरोहित।

पुरोधानीय—पु० [सं० पुरस्√धा+अनीयर्] पुरोहित।

पुरोनुवाक्या—स्त्री० [सं० पुरस्-अनुवाक्या, स० त०] १ यज्ञों की तीन प्रकार की आहुतियो मे से एक। २. उक्त आहुति के समय पढ़ी जानेवाली ऋचा।

पुरोभाग—पु० [सं० पुरस्-√भज्+घञ्] १ अग्रभाग। अगला हिस्सा। २ दोष निकालने या बतलाने की क्रिया।

पुरोभागी (गिन्)—वि० [सं० पुरस्√भज्+णिनि] [स्त्री० पुरोभागिनी] १. आगे की ओर रहने या होनेवाला। अग्र भाग का। २ जो गुणो को छोडकर केवल दोष देखता हो। छिद्रान्वेषी। दोष-दर्शी।

पुरोरवस—पु० [सं०=पुरुरवस्, पृषो० सिद्धि] =पुरूरवा।

पुरोवात—पु० [सं० पुरस्-वात, मध्य० स०] पूर्व दिशा से आनेवाली हवा। पुरवा।

पुरोवाद—पु० [सं० पुरस्-वाद, कर्म० स०] पूर्व कथन।

पुरोहित—वि० [सं० पुरस्√धा+क्त, हि—आदेश] १ आगे या सामने रखा हुआ। २ किसी काम या बात के लिए नियुक्त किया हुआ।

पुं० [स्त्री० पुरोहितानी] १ प्राचीन भारत मे वह प्रधान याजक, जो अन्य याजकों का नेता बनकर यजमान से गृह-कर्म, श्रौत-कर्म तथा धार्मिक संस्कार आदि कराता था। २ आज-कल कर्मकाड आदि जाननेवाला वह ब्राह्मण, जो अपने यजमान के यहाँ मुडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार कराता तथा अन्य अवसरो पर उनसे दान, दक्षिणा आदि लेता है। ३. साधारण लोक-व्यवहार मे, किसी जाति या धर्म का वह व्यक्ति, जो दूसरों से धार्मिक कृत्य, संस्कार आदि कराता हो। (प्रीस्ट)

पुरोहित-तंत्र—पु० [ष० त०] ऐसा तत्र या शासन-प्रणाली, जिसमे पुरोहितो के मत का ही प्राधान्य हो। (हायरार्की)

पुरोहिताई—स्त्री० [सं० पुरोहित+आई (प्रत्य०)] पुरोहित का काम, पद या भाव। यजमानो को धार्मिक कृत्य आदि कराने का काम या वृत्ति।

पुरोहितानी—स्त्री० [सं० पुरोहित] पुरोहित की स्त्री।

पुरोहिती—वि० [हिं० पुरोहित] पुरोहित-सम्बन्धी। पुरोहित का।

स्त्री०=पुरोहिताई।

पुरौ*—पु०=पुरवट।

पुरौती†—स्त्री० [हिं० पुरवना=पूरा करना] कमी पूरी करना। पूर्त्ति।

पुरौनी—स्त्री० [हिं० पूरना=पूरा करना] १. पूरा करना। २. समाप्ति।

पुर्जा—पु०=पुरजा।

पुर्तगाल—पु० [अ०] योरप के दक्षिण पश्चिम कोने पर पडनेवाला एक छोटा प्रदेश, जो स्पेन से लगा हुआ है।

पुर्तगाली—वि० [हिं० पुर्तगाल] १. पुर्तगाल देश संबंधी। पुर्तगाल का।

पुं० पुर्तगाल देश का निवासी।

स्त्री० पुर्तगाल देश की भाषा।

पुर्तगीज—वि०=पुर्तगाली।

पुर्बला—वि० [हिं० पुरखला] १. पहले का। २ पूर्व जन्म का।
पुर्सा—पुं०=पुरसा।
पुर्सी—स्त्री० [फा०] पुरसी। (दे०)
पुलंदा†—पु०=पुलिंदा।
पुल—पु० [फा०] १. खाइयों नदी-नालों, रेललाइनों आदि के ऊपर आर-पार पाटकर बनाई हुई वह वास्तु रचना, जिस पर से होकर गाड़ियाँ और आदमी इधर से उधर आते जाते हैं। सेतु।
विशेष—मूलत पुल प्राय नदियाँ पार करने के लिए नावो की शृखला से बनते थे। बाद मे पीपों आदि के आधार पर अथवा बड़े-बड़े ऊँचे खभो पर भी बनने लगे।
२. लाक्षणिक रूप मे, किसी चीज या बात का कोई बहुत लबा क्रम या सिलसिला। झड़ी। तॉता। जैसे—किसी की तारीफ का पुल बाँधना; बातो का पुल बाँधना।
क्रि० प्र०—बाँधना।
मुहा०—(किसी चीज या बात का) पुल टूटना=इतनी अधिकता या भरमार होना कि मानो उसकी राशि को रोक रखनेवाला बधन टूट गया हो। जैसे—मेला देखने के लिए आदमियो का पुल टूट पड़ा था।
३ लाक्षणिक अर्थ मे, कोई ऐसी चीज, जो दो या कई पक्षो के बीच में रहकर उन्हे मिलाये रखती हो। माध्यम।
पु० [स०√पुल् (ऊँचा होना)+क] १ पुलक। रोमाच। २. शिव का एक अनुचर।
वि० १. बहुत अधिक। विपुल। २. बहुत बड़ा, विशाल या विस्तृत।
पुलक—पुं० [स० पुल+कन्] १ प्रेम, भय, हर्ष आदि मनोविकारो की प्रबलता के समय शरीर मे होनेवाला रोमाच। त्वककप।
विशेष—पुलक और रोमाच के अतर के लिए दे० 'रोमाच' का विशेष।
२. मन मे होनेवाली वह कामना या वासना, जो कोई काम करने की प्रवृत्ति उत्पन्न करती हो। (अर्ज) जैसे—समोग-पुलक। ३ एक प्रकार का मोटा अन्न। ४ एक प्रकार का नगीना या रत्न, जिसे चुन्नी, महताब और याकूत भी कहते हैं। ५ एक प्रकार का कीड़ा जो शरीर के गले हुए अंगो में उत्पन्न होता है। ६ जवाहिरात या रत्नों का एक प्रकार का दोष। ७ हाथी का रातिब। ८ हरताल। ९ प्राचीन काल का एक प्रकार का मद्यपात्र। १० एक प्रकार की राई। ११ एक प्रकार का कदा १२ एक गधर्व का नाम।
पुलकना—अ० [स० पुलक+ना (प्रत्य०)] प्रेम, हर्ष आदि से पुलकित होना।
पुलक-बध—पु० [स० ब० स०] चुनरी। चुदरी।
पुलकाग—पु० [स० पुलक-अग, ब० स०] वरुण का पाश।
पुलकाई*—स्त्री०=[स० पुलक] पुलकित होने की अवस्था या भाव। पुलक।
पुलकालय—पु० [स० पुलक-आलय, ब० स०] कुबेर का एक नाम।
पुलकालि—[स० पुलक-आलि, ष० त०]=पुलकावलि।
पुलकावलि—स्त्री० [स० पुलक-आवलि, ष० त०] हर्ष से प्रफुल्ल रोम। हर्षजन्य रोमाच।
पुलकित—भू० कृ० [सं० पुलक+इतच्] प्रेम, हर्ष आदि के कारण जिसे पुलक हुआ हो, या जिसके रोएं खड़े हो गये हों। प्रेम या हर्ष से गद्‌गद्। रोमाचित।
पुलकी (किन्)—वि० [स० पुलक+इनि] १ जिसे पुलक हुआ हो। पुलकित। २ जो प्रेम, हर्ष आदि मे गद्‌गद् और रोमांचित हुआ हो। पु० १ कदब। २ धारा कदंब।
पुलकोद्‌गम, पुलकोद्‌भेद—पु० [स० पुलक-उद्‌गम, पुलक-उद्‌भेद, ष० त०] रोम खड़े होना। लोमहर्षण।
पुलट—स्त्री०=पलट।
पुलटिस—स्त्री० [स० पोल्टिस] फोड़ों आदि को पकाने या बहाने के लिए उस पर चढाया जानेवाला अलसी, रेंडी आदि का मोटा लेप।
क्रि० प्र०—चढ़ाना।—बाँधना।
पुलना—अ० [देश०] चलना। उदा०—जेती जउ मनमाँहि, पँजर जइ तेती, पुलइ।—ढो० मा०।
पुलपुल—स्त्री० [अनु०] किसी फूली हुई चीज के बार-बार या रह-रहकर थोड़ा पिचकने और फिर उभरने या फूलने की क्रिया या भाव।
वि०=पुलपुला।
पुलपुला—वि० [अनु०] १ जो अन्दर से इतना ढीला और मुलायम हो कि जरा-सा दबाने से उसका तल सहज मे कुछ दब या धँस जाय। जैसे—ये आम पककर पुलपुले हो गये हैं। २ दे० 'पोला'।
पुलपुलाना—स० [हिं० पुलपुलाना] [भाव० पुलपुलाहट] १ किसी मुलायम चीज को मुँह मे लेकर या हाथ से दबाकर पुलपुला करना। जैसे—आम पुल-पुलाना।
अ० पुलपुला होना। जैसे—आम पुलपुला गया है। (पूरब)
पुलपुलाहट—स्त्री० [हिं० पुलपुला+हट (प्रत्य०)] पुलपुले होने की अवस्था, गुण या भाव। पुलपुलापन।
पुलस्त—पु०=पुलस्त्य।
पुलस्ति—पु० [सं० पुल√अस् (जाना)+ति, शक० पररूप] पुलस्त्य।
पुलस्त्य—पु० [स० पुलस्ति+यत्] १ ब्रह्मा के मानस पुत्रो मे से एक जिसकी गिनती सप्तर्षियो और प्रजापतियो मे होती है। २ शिव का एक नाम।
पुलह—पु० [स०] १ सप्तर्षियो मे से एक ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्रो और प्रजापतियो मे थे। २ शिव का एक नाम।
पुलहना*—अ०=पलुहना।
पुलाक—पु० [स०√पुल्+कलाक, नि० सिद्धि] १ एक प्रकार का कदन्न। अँकरा २ भात। ३ माँड। ४ पुलाव। ५. अल्पता। ६. क्षिप्रता। जल्दी।
पुलाकी (किन्)—पु० [स० पुलाक+इनि] वृक्ष।
पुलायित—पुं० [स० पुल+क्यङ्+क्त] घोड़े का सरपट दौड़ना।
पुलाव—पु० [स० पुलाक, से० फा० पलाव] एक प्रकार का व्यंजन जो मास और चावल को एक साथ पकाने से बनता है। मासोदन। २ पकाये हुए मीठे चावल।
पुलिंद—पु० [स०√पुल्+किन्दच्] १ भारतवर्ष की एक प्राचीन असभ्य जाति। २ उक्त जाति के बसने का देश। ३. उक्त जाति का व्यक्ति।
पुलिंदा—स्त्री० [स०] एक छोटी नदी, जो ताप्ती में मिलती है। महाभारत मे इसका उल्लेख है।
पु० [स० पुल=ढेर; या हिं० पूला] कागज, कपड़े आदि में बँधी बड़ी गठरी।

पुलिकेशि—पुं० [सं०] १ ईसवी छठी शताब्दी के एक राजा, जिन्होंने दक्षिण भारत मे पल्लवों की राजधानी वातापिपुरी जीतकर चालुक्य वंशीय राज्य स्थापित किया था। २. उक्त वंश के एक प्रतापी राजा, जिन्होंने ७ वी शताब्दी के आरम में पूरे दक्षिण भारत और महाराष्ट्र पर शासन किया था।

पुलिन—पुं० [सं०√पुल्+इनन्] १. ऐसी गीली भूमि, जो नदी आदि का पानी हटने से निकल आई हो। चर। २. नदी, समुद्र आदि का किनारा विशेषतः रेतीला किनारा। तट। (बीच) ३ नदी आदि के बीच में निकला हुआ रेत का दूह। चर। ४. एक यक्ष का नाम।

पुलिनमय—वि० [सं० पुलिन+मयट्] (स्थान) जो बहते हुए पानी के सम्पर्क से गीला या तर हो। (एल्यूवियल)

पुलिनवती—स्त्री० [सं० पुलिन+मतुप्, वत्व, ङीप्] तटिनी। नदी।

पुलिरिक—पुं० [सं०] साँप।

पुलिश—पुं० [सं०] ज्योतिष के एक प्राचीन आचार्य, जिनके नाम से पौलिश सिद्धान्त प्रसिद्ध है और जो वराहमिहिरो के कहे हुए पच सिद्धान्तों मे से एक है। अलबरुनी ने इसे यूनानी (यवन) और कुछ इतिहासज्ञों ने इसे मिस्र देश का निवासी बताया है।

पुलिस—स्त्री० [अं०] १ किसी नगर, राज्य आदि का वह राजकीय विभाग, जिसका मुख्य काम शांति तथा व्यवस्था बनाये रखना है और जो अपराधो को रोकने के लिए अपराधियो को पकडता तथा न्यायालय द्वारा उन्हे दण्डित कराता है। २ उक्त विभाग के लोगो का दल। ३. उक्त विभाग का कोई अधिकारी या कर्मचारी। सिपाही।

पुलिसमैन—पुं० [अं०] पुलिस (विभाग) का सिपाही।

पुलिहोंगा—पुं० [देश०] एक प्रकार का पकवान।

पुली—स्त्री० [देश०] उत्तर भारत में होनेवाली काली और भूरे रग की एक चिड़िया।

स्त्री० [अं० पूली] १ वह चक्कर या पहिया, जिस पर रस्सा रखकर भार खीचते हैं। २. उक्त प्रकार के चक्करो या पहियो का वह सामूहिक यात्रिक, रूप जिसकी सहायता से बहुत बड़े-बड़े भार उठा कर इधर-उधर किये जाते है। ३. उक्त प्रकार का वह चक्कर या पहिया, जिस पर-पट्टा रखकर इजन आदि की सचालक शक्ति यत्रो तक पहुँचाई जाती है।

पुलोम (न्)—पुं० [सं०] इद्र की पत्नी शची के पिता, जो एक राक्षस थे तथा जिन्हें इद्र ने युद्ध में मारा था।

पुलोमजा—स्त्री० [सं० पुलोमन्√जन् (उत्पत्ति)+ड+टाप्] पुलोम राक्षस की कन्या शची, जो इन्द्र की पत्नी थी।

पुलोमजित्—पुं० [सं० पुलोमन्√जि (जीतना)।क्विप्] इन्द्र।

पुलोमाही—स्त्री० [सं०] अहिफेन। अफीम।

पुलोमा†—पुं० [सं०] पुलोम नामक राक्षस।

पुल्कस—पुं० [सं०] उपनिषद्-काल की एक संकर जाति, जिसकी उत्पत्ति निषाद पुरुष और शूद्रा स्त्री से मानी गई है।

पुल्का—पुं० [?] १. नाक मे पहनने का एक गहना। २ हिलसा मछली।

पुल्लिंग—पुं०=पुल्लिंग।

पुल्ली—स्त्री० [देश०] घोड़े के सुम के ऊपर का हिस्सा।

†स्त्री० १=पुली। २.=पूली (पूला का स्त्री०)।

पुवा†—पुं०=पूआ (पकवान)।

पुवार†—पुं०=पयाल।

पुश्त—स्त्री० [फा०] १. पशुओं, मनुष्यो आदि की पीठ। जैसे—पुश्त-खम=टेढ़ी पीठवाला, अर्थात् कुबडा। २ किसी चीज का पिछला भाग। पृष्ठ-देश। पीछा। ३ वश-परम्परा मे की प्रत्येक श्रेणी या स्थान जिस पर कोई पुरुष रहा हो या आने को हो। पीढी। (जेनरेशन)

पद—पुश्त-दरपुश्त=बराबर या लगातार हर पीढी मे। पुश्तहा-पुश्त—(क) कई पीढ़ियो से। (ख) कई पीढियो तक।

पुश्तक—स्त्री० [फा०] पशुओ द्वारा पिछले दोनो पैर उठाकर किया जानेवाला आघात। दोलत्ती।

क्रि० प्र०—झाडना। मारना।

पुश्तखार—पुं० [फा०] पीठ खुजलाने का सीग, हाथी दाँत आदि का एक तरह का पजा।

पुश्तनामा—पुं० [फा० पुश्तनाम.] वह कागज जिस पर पूर्वापर क्रम से किसी कुल मे उत्पन्न हुए लोगों के नाम लिखे होते है। वशावली। कुरसीनामा।

पुश्तवानी—स्त्री० [फा० पुश्त+हिं० वान् (प्रत्य०)] वह आड़ी लकड़ी जो किवाड के पीछे पल्ले की मजबूती के लिए लगाई जाती है।

पुश्ता—पुं० [फा० पुश्त] १. ईंट, पत्थर, मिट्टी आदि की वह ढालुई वास्तु-रचना जो (क) नदियो के किनारे पानी की बाढ रोकने अथवा (ख) बडी और भारी दीवारो या ऊँची सडको को गिरने से बचाने के लिए उनके पार्श्व मे खडी की जाती है। (एम्बैंकमेन्ट) २. किताब की जिल्द के पीछे, अर्थात् पुट्ठे पर लगा हुआ चमडा या ऐसी ही और कोई चीज। ३ सगीत मे पौने चार मात्राओं का एक प्रकार का ताल जिसमे तीन आघात होते है और एक खाली रहता है।

पुश्तापुश्त—अव्य० [फा०] १ कई पीढ़ियो से। २ कई पीढियों तक।

पुश्ताबदी—स्त्री० [फा०] पुश्ता उठाने, खडा करने या बाँधने की क्रिया या भाव।

पुश्तारा—पुं० [फा० पुश्तवार] वह बोझ जो पीठ पर उठाया जाय, या उठाया जा सके।

पुश्ती—स्त्री० [फा०] १ टेक। सहारा। आश्रय। थाम। २ वह टेक या सहारा, जो किसी चीज के पीछे उसे खडी रखने या गिरने से बचाने के लिए लगाया जाय। २ पीछे की ओर से की जानेवाली मदद या दी जानेवाली सहायता। पृष्ठ-पोषण। ३ पक्षपात। तरफदारी। ४ पालन-पोषण।

क्रि० प्र०—लेना।

५. पीठ टेककर बैठने का बहुत बडा तकिया। गाव-तकिया।

पुश्तैन—स्त्री० [फा० पुश्त] वशपरपरा। पीढी-दर-पीढी।

पुश्तैनी—वि० [हिं० पुश्तैन] १. जो पुरानी पीढी के लोगो के अधिकार मे रहा हो। जैसे—हमारा पुश्तैनी मकान बिक चुका है। २ जो कई पीढियों से बराबर चला आ रहा हो। जैसे—पुश्तैनी रोग।

पुष—वि० [सं०√पुष् (पुष्ट करना)+क] १. पोषण प्रदान करनेवाला। २. दिखलाने या प्रदर्शित करनेवाला।

पुषा—स्त्री० [सं० पुष+टाप्] कलियारी का पौधा।

पुषित—भू० कृ० [सं० पुष्ट] १ पोषित। २ वर्द्धित।

पुष्कर—पु० [स०√पुष्+क, कित्व, पुष्क √रा (देना)+क] १. जल। पानी। २. जलाशय। पोखरा। ३ कमल। ४. कलछी के आगे लगी हुई कटोरी। ५ ढोल, मृदंग आदि का मुँह। ६. हाथी की सूँड का अगला भाग। ७ आकाश। आसमान। ८. तीर। बाण। ९. तलवार का फल। १० म्यान। ११ पिंजड़ा। १२. पद्मकंद। १३ नृत्यकला। १४. सर्प। १५ युद्ध। लड़ाई। १६. अंश। भाग। १७. नशा। मद। १८ भग्नपाद नक्षत्र का एक अशुभ योग जिसकी शाति का विधान किया गया है। १९ पुष्कर-मूल। २०. कुष्ठौषधि। कुट। २१ एक तरह का ढोल। २२ एक प्रकार का रोग। २३ एक दिग्गज। २४ सारस पक्षी। २५ विष्णु का एक रूप। २६ शिव। २७ भरत के एक पुत्र। २८. कृष्ण के एक पुत्र। २९ एक असुर का नाम। ३० गौतम बुद्ध का एक नाम। ३१. पुराणानुसार ब्रह्मांड के सात लोको में से एक। ३२ मेघों का एक नायक। ३३ आधुनिक अजमेर के पास का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

पुष्कर-कर्णिका—स्त्री० [स० पुष्कर√कर्ण्+ण्वुल्—अक, टाप, इत्व] १ स्थलपद्मिनी। †२ सूँड की नोक।

पुष्कर-चूड़—पु० [स०] लोलार्क पर्वत पर स्थित दिग्गज का नाम।

पुष्कर-जटा—स्त्री० [स०] १. कुट नामक औषधि। २ कमल की जड। भसीड।

पुष्कर-नाड़ी—स्त्री० [स० पुष्कर√नड् (नष्ट करना)+णिच्+अच्—ङीष्] स्थल पर होनेवाला एक तरह का कमल। स्थलपद्मिनी।

पुष्कर-नाभ—पु० [ब० स०, अच्] विष्णु।

पुष्कर-पर्ण—पु० [ष० त०] १ कमल का पत्ता। २ यज्ञ की वेदी बनाने के काम मे आनेवाली एक प्रकार की ईंट।

पुष्कर-प्रिय—पु० [ब० स०] मधुमक्षिका। मधुमक्खी।

पुष्कर-बीज—पु० [ष० त०] कमल का बीज। कमल-गट्टा।

पुष्कर-मुख—पु० [ब० स०] सूँड का विवर।

वि० सूँड जैसे मुँहवाला।

पुष्कर-मूल—पु० [ब० स०] एक प्रकार की वनस्पति की जड, जिसके सबध में कहा जाता है कि यह कश्मीर के सरोवरो में उत्पन्न होती है। यह ओषधि आजकल नही मिलती , वैद्य लोग इसके स्थान पर कुष्ठ या कुट का व्यवहार करते हैं।

पुष्कर-व्याघ्र—पु० [स० त०] घड़ियाल।

पुष्कर-शिफा—स्त्री० [ष० त०] पुष्कर-मूल।

पुष्कर-सागर—पु० [उपमि० स०] पुष्कर-मूल।

पुष्कर-सारी—स्त्री० [ष० त०,+ङीष्] एक प्राचीन लिपि।

पुष्कर-स्थपति—पु० [ष० त०] शिव।

पुष्करस्रक् (ज्)—पुं० [ब० स०] अश्विनीकुमार।

स्त्री० कमलों की गूँथी हुई माला।

पुष्कराक्ष—वि० [पुष्कर-अक्षि, ब० स०, अच्] कमल-नयन।

पु० विष्णु।

पुष्कराख्य—पु० [स० पुष्कर-आख्या, ब० स०] सारस पक्षी।

पुष्कराग्र—पु० [स० पुष्कर-अग्र, ष० त०] सूँड का अगला भाग।

पुष्करावती—स्त्री० [सं० पुष्कर+मतुप्, वत्व, दीर्घ] एक प्राचीन नदी।

पुष्करावर्तक—पु० [स० पुष्कर-आ√वृत् (बरतना)+णिच्+ण्वुल्—अक] मेघो के एक अधिपति।

पुष्कराह्व—पु० [स० पुष्कर-आह्वा, ब० स०] सूँड का अग्र भाग।

पुष्करिका—स्त्री० [स० पुष्कर+ठन्—इक,+टाप्] लिंग का एक रोग।

पुष्करिणी—स्त्री० [स० पुष्कर+इनि+ङीष्] १ हथिनी। २ छोटा जलाशय। ३ ऐसा जलाशय, जिसमे कमल खिले हों। ४ कमल का पौधा। ५ एक प्राचीन नदी। ६ चाक्षुष मनु की पत्नी। ७. भूमन्यु की पत्नी और ऋचीक की माता।

पुष्करी (रिन्)—पु० [स० पुष्कर+इनि] हाथी।

वि० जिसमे कमल हो।

पुष्कल—पु० [स०√पुष्+कलच्, किरव] १. वह भिक्षा, जो केवल चार गाँवो से लाई जाती थी। २ अनाज नापने का एक प्राचीन मान, जो ६४ मुट्ठियों के बराबर होता था। ३ शिव। ५ वरुण के एक पुत्र। ५ राम के भाई भरत का एक पुत्र। ६. एक बुद्ध का नाम। ७ एक प्रकार का ढोल। ८ एक प्रकार की बीणा।

वि० १ बहुत। अधिक। ढेर-सा। प्रचुर। २ भरा-पूरा। परिपूर्ण। ३ श्रेष्ठ। ४ उपस्थित। प्रस्तुत। ५ पवित्र।

पुष्कलक—पुं० [स० पुष्कल+कन्] १ कस्तूरी-मृग। २. अर्गला। सिटकिनी। ३ कील।

पुष्कलावती—स्त्री० [स० पुष्कल+मतुप, वत्व, दीर्घ] पुराणानुसार भरत के पुत्र पुष्कल की बसाई हुई गांधार देश की प्राचीन नगरी।

पुष्ट—वि० [स०√पुष्+क्त] [भाव० पुष्टता, पुष्टि] १ जिसका अच्छी तरह पोषण हुआ हो, फलत दृढ या मजबूत। २ मोटा-ताजा और बलवान।

पद—हृष्टपुष्ट। (देखें)

३ जिसमे कोई कचाई या कोर-कसर न हो, और इसी लिए जिसका भरोसा किया जा सके। पक्का। ४ (कथन या बात) जो प्रमाणों से सत्य सिद्ध होती हो, फलत जिसके ठीक या सत्य होने मे कोई संदेह न रह गया हो। ५ सब तरह से पूरा। परिपूर्ण। ६. प्रमुख। मुख्य। ७ दे० 'पौष्टिक'।

पु० विष्णु।

पुष्टई—स्त्री० [स० पुष्ट+ई (प्रत्य०)] १ पुष्टता। २. वह ओषधि या खाद्य-वस्तु, जो शरीर को पुष्ट करने के लिए खाई जाय।

पुष्टता—स्त्री० [स० पुष्ट+तल्+टाप] पुष्ट होने की अवस्था या भाव। पुष्टि।

पुष्टि—स्त्री० [स०√पुष+क्तिन] १. पुष्ट अर्थात् दृढ या मजबूत होने की अवस्था या भाव। दृढ़ता। मजबूती। २ पुष्ट करने की क्रिया या भाव। पोषण। ३ धन, संतान आदि की होनेवाली वृद्धि। बढ़ती। ४ वह उदाहरण, तर्क या प्रमाण, जिसमे कोई बात पुष्ट की जाय। ५. किसी कही हुई बात का ऐसा अनुमोदन या समर्थन, जिससे वह और भी अधिक या पूर्ण रूप से पुष्ट हो जाय। जैसे—आपकी इस बात से मेरे मत (या संदेह) की पुष्टि होती है। ६ सोलह मातृकाओं मे से एक। ७ मंगला, विजया आदि आठ प्रकार की चारपाइयों में से

एक। ८. धर्म की पत्नियों मे से एक। ९. एक योगिनी का नाम। १०. असगंध नामक ओषधि। अश्वगंध। ११. दे० 'पुष्टिमार्ग'।

पुष्टि-कर—वि० [ष० त०] १. पुष्ट करनेवाला। २. पुष्टि करनेवाला। ३. बल या वीर्य्यवर्द्धक।

पुष्टिकरी—स्त्री० [स० पुष्टिकर+ङीष्] गगा। (काशी-खंड)

पुष्टि-कर्म (मंन्)—पु० [ष० त०] अभ्युदय के लिए किया जानेवाला एक धार्मिक कृत्य।

पुष्टिका—स्त्री० [सं० पुष्टि+कन्—टाप्] जल की सीप। सुतही। सीपी।

पुष्टि-काम—वि० [ब० स०] अभ्युदय का इच्छुक।

पुष्टि-कारक—वि० [ष० त०] पुष्टिकर। (दे०)

पुष्टिद—वि० [सं० पुष्टि√दा (देना)+क] पुष्टिकर। (दे०)

पुष्टिदग्धयत्न—पु० [स० दग्ध-यत्न, ष० त०, पुष्टिदग्धयत्न, मध्य० स०] चिकित्सा का एक प्रकार, जिसमे आग मे जले हुए अंग को आग से सेंक कर या किसी प्रकार का गरम-गरम लेप करके अच्छा किया जाता है।

पुष्टिदा—स्त्री० [स० पुष्टिद+टाप्] १ अश्वगधा। असगध। २ वृद्धि नाम की ओषधि।

पुष्टिपति—पु० [स० ष० त०] अग्नि का एक भेद।

पुष्टि-मत—पु०=पुष्टि-मार्ग।

पुष्टि-मार्ग—पु० [ष० त०] भक्ति-क्षेत्र मे, श्री वल्लभाचार्य के शुद्धाद्वैत मत की साधना-व्यवस्था जो श्रीमद्भागवत के 'पोषण तदनुग्रह' वाले तत्त्व पर आधारित है। इसमे भक्त कर्म-निरपेक्ष होकर भगवान श्रीकृष्ण को आत्म-समर्पण करके ही सुखी रहता है; और अपने कर्मों के फल की कामना नही करता।

पुष्टीकरण—पु० [स० पुष्ट+च्वि, ईत्व√कृ+ल्युट्—अन] किसी कही हुई बात या किये हुए काम को ठीक मानते हुए उसकी पुष्टि करना। (कन्फर्मेशन)

पुष्पधय—वि० [सं० पुष्प√धे (पीना)+श, मुम्] मकरद पान करनेवाला।

पु० भौरा। भ्रमर।

पुष्प—पुं० [स०√पुष्प् (खिलना)+अच्] १. पेड़-पौधो के फूल। कुसुम। २. मधु। शहद। ३. पुष्पराग नामक मणि। पुखराज। ४. आँख का फूली नामक रोग। ५. ऋतुमती या रजस्वला स्त्री का रज। ६. घोडो के शरीर पर का एक चिह्न या लक्षण। चित्ती। ७. खिलने और फैलने की क्रिया। विकास। ८. आँख मे लगाने का एक प्रकार का अंजन या सुरमा। ९. रसौत। १० पुष्कर-मूल। ११. लौंग। १२ वाममार्गियों की परिभाषा मे खाया जानेवाला मांस। गोश्त। १३. पुष्पक विमान।

पुष्पक—पुं० [सं० पुष्प+कन् या पुष्प√कै (भासित होना)+क] १. फूल। कुसुम। पुष्प। २. कुबेर का विमान। ३. जड़ाऊ कगन। ४. रसांजन। रसौत। ५. आँख का फूली नामक रोग। ६. हीरा कसीस। ७. पीतल, लोहे आदि की मैल। ८. पीतल। ९. एक प्रकार का बिना विष का साँप। १०. एक प्राचीन पर्वत। ११. प्रासाद बनाने मे एक प्रकार का मंडप। १२. वह खंभा जिसके कोने आठ भागो में बँटे हों।

पुष्प-करंडक—पु० [स० ब० स०] १ उज्जयिनी का एक प्राचीन शिवोद्यान। २ डलिया, जिसमे तोडे हुए फूल रखे जाते हैं।

पुष्प-करंडिनी—स्त्री० [स० पुष्प-करड, ष० त०, इनि+ङीप्] उज्जयिनी।

पुष्प-काल—पु० [ष० त०] १ वसतऋतु। २ स्त्रियो का ऋतु काल।

पुष्प-कासीस—पु० [उपमि० स०] एक तरह का कसीस। हीरा कसीस।

पुष्प-कीट—पु० [मध्य० स०] १ फूल का कीडा। २ भौंरा।

पुष्प-कृच्छ्र—पु० [मध्य० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमे केवल फूलो का क्वाथ पीकर निर्वाह किया जाता है।

पुष्प-केतन—पु० [ब० स०] कामदेव।

पुष्प-केतु—पु० [ब० स०] १ पुष्पांजन। २ कामदेव। ३ बुद्ध।

पुष्प-गडिका—स्त्री० [ष० त०] लास्य के दस भेदो मे से एक।

पुष्प-गधा—स्त्री० [ब० स०+टाप्] जूही।

पुष्प-गवेधुका—स्त्री० [स० त०] नागबला।

पुष्प-घातक—पु० [ष० त०] बाँस।

पुष्प-चयन—पु० [ष० त०] पुष्प तोडना। फूल चुनना।

पुष्प-चाप—पु० [ब० स०] कामदेव।

पुष्प-चामर—पु० [ब० स०] १ दौना। २ केवडा।

पुष्पज—वि० [स० पुष्प√जन् (उत्पन्न होना)+ड] फूल मे उत्पन्न होनेवाला।

पु० फूल का मकरद या रस।

पुष्पजीवी (विन्)—पु० [स० पुष्प√जीव् (जीना)+णिनि] माली।

पुष्प-डंड—पु० [ष० त०] पेड-पौधो की वह डडी, जिसमे फूल या फल लगते हैं।

पुष्प-दंत—पु० [ब० स०] १ वायुकोण का दिग्गज। २ प्राचीन भारत मे एक प्रकार का नगरद्वार। ३. शिव का अनुचर एक गधर्व, जिसका रचा हुआ महिम्नस्तोत्र कहा जाता है। ४ एक विद्याधर। ५ कार्तिकेय का एक अनुचर।

पुष्पद—वि० [स० पुष्प√दा (देना)+क] पुष्प या फूल देनेवाला।

पु० पेड। वृक्ष।

पुष्पध—पु० [स० पुष्प√धा (धारण करना)+क] व्रात्य ब्राह्मण से उत्पन्न एक जाति।

पुष्पधनु—पु०=पुष्प-धन्वा।

पुष्प-धनुस्—पु० [ब० स०] कामदेव।

पुष्प-धन्वा (न्वन्)—पु० [ब० स०] १ कामदेव। २ वैद्यक मे एक प्रकार का रसौषध जो रससिंदूर, सीसे, अभ्रक और वग मे धतूरा भाँग, जेठी मधु आदि मिलाने से बनता है और जो कामोद्दीपक तथा शक्ति-वर्द्धक माना जाता है।

पुष्प-ध्वज—पुं० [ब० स०] कामदेव।

पुष्पनिक्ष—पुं० [स० पुष्प√निक्ष् (चूमना)+अण्] भ्रमर। भौंरा।

पुष्प-निर्यास—पु० [ष० त०] फूलों का रस। मकरद।

पुष्प-नेत्र—पु० [मध्य० स०] वस्ति की पिचकारी की सलाई।

पुष्प-पत्र—पुं० [ष० त०] १. फूल की पँखडी। २. दे० 'पत्र-पुष्प'। ३. एक प्रकार का बाण।

पुष्प-पत्री (त्रिन्)—पुं० [ब० स०] कामदेव।

पुष्प-पथ—पु० [ष० त०] स्त्रियो के रज के निकलने का मार्ग अर्थात् भग। योनि।

पुष्प-पदवी—स्त्री० [ष० त०] भग। योनि।

पुष्प-पांडु—पु० [उपमि० स०] एक प्रकार का साँप।

पुष्प-पिंड—पुं० [ब० स०] =पिंड पुष्प (अशोक वृक्ष)।

पुष्प-पुट—पु० [ष० त०] १ फूल की पखडियों का वह आधार, जो कटोरी के आकार का होता है। २ हाथ का चगुल जो उक्त आकार का होता है।

पुष्प-पुर—पु० [मध्य० स०] प्राचीन पाटलिपुत्र। आधुनिक पटना का एक नाम।

पुष्प-पेशल—वि० [उपमि० स०] फूल की तरह सुकुमार।

पुष्प-प्रचाय—पु० [स० पुष्प-प्र√चि (चुनना)+घञ्] फूलो का चुना या तोड़ा जाना।

पुष्प-प्रस्तार—पु० [ष० त०] फूलो का बिछावन। पुष्पशय्या।

पुष्प-फल—पु० [ब० स०] १ कुम्हडा। २ कैथ। ३ अर्जुन वृक्ष।

पुष्प-बाण—पु० [ब० स०] १ कामदेव। २ कुश द्वीप का एक पर्वत। ३ एक दैत्य।

पुष्प-भद्र—पु० [ब० स०] प्राचीन भारत की वास्तु-रचना मे, एक प्रकार का मंडप जिसमे ६२ खभे होते थे।

पुष्प-भद्रक—पु० [ब० स०,+कप्] देवताओ का एक उपवन।

पुष्पभद्रा—स्त्री० [स० पुष्पभद्र+टाप्] पुराणानुसार मलय पर्वत के पश्चिम की एक नदी।

पुष्प-भव—पु० [ष० त०] फूलो का रस। मकरद।

पुष्प-भाजन—पु० [ष० त०] तोडे हुए फूल रखने का पात्र।

पुष्प-भूति—पु० [ब० स०] १ सम्राट् हर्षवर्द्धन के एक पूर्व पुरुष, जो शैव थे। २ ईसवी सातवी शताब्दी के काबोज (आधुनिक काबुल) के एक हिन्दू राजा।

पुष्प-मंजरिका—स्त्री० [ष० त०] १ नील कमलिनी। २ फूल की मजरी।

पुष्प-मजरी—स्त्री० [ष० त०] १ फूल की मजरी। २ घृतकरज।

पुष्प-मास—पु० [मध्य० स०] १ चैत्रमास। चैत का महीना। २ वसत काल।

पुष्पमित्र—पु० दे० 'पुष्यमित्र' (शुग वश के राजा का नाम)।

पुष्प-मृत्यु—पु० [ब० स०] एक प्रकार का नरकट। बडा नरसल। देव नल।

पुष्प-मेघ—पु० [मध्य० स०] पुराणानुसार फूलो की वर्षा करनेवाला बादल।

पुष्प-रक्त—पु० [ब० स०] सूर्य्यमणि नामक पौधा और उसका फूल।

पुष्प-रचन—पु० [ष० त०] फूलो की माला गूँथने, गुच्छे आदि बनाने की क्रिया या भाव।

पुष्प-रज (स्)—पु० [ष० त०] पराग।

पुष्प-रथ—पु० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे एक प्रकार का रथ, जिस पर चढ़कर लोग हवा खाने निकलते थे।

पुष्प-रस—पु० [ष० त०] पराग।

पुष्परसाह्वय—पु० [पुष्परस-आह्वय, ब० स०] मधु। शहद।

पुष्प-राग—पु० [ब० स०] पुखराज नामक रत्न।

पुष्पराज—पु० [स० पुष्प√राज् (शोभित होना)+अच्] पुखराज या पुष्पराग नामक रत्न।

पुष्प-रेणु—पु० [ष० त०] फूल की धूल। पुष्परज।

पुष्प-रोचन—पु० [ब० स०] नाग-केसर।

पुष्पलक—पु० [स० पुष्कलक] १ कस्तूरी मृग। २ बौद्ध भिक्षु।

पुष्पलाव—पु० [स० पुष्प√लू (काटना)+अण्] [स्त्री० पुष्पलावी] १ वह जो फूल चुनता हो। २ माली।

पुष्पलावन—पु० [स० पुष्प√लू+णिच्+ल्यु—अन] उत्तर दिशा का एक देश। (बृहत्सहिता)

पुष्पलिक्ष—पु० [स० पुष्प√लिह् (स्वाद लेना)+क्स] भ्रमर। भौरा।

पुष्पलिट् (ह्)—पु० [स० पुष्प√लिह्+क्विप्] भौरा।

पुष्प-लिपि—स्त्री० [मध्य० स०] एक प्रकार की पुरानी लिपि। (ललित विस्तर)

पुष्पवती—स्त्री० [स० पुष्प+मतुप्, वत्व+ङीप्] १ ऋतुमती या रजस्वला। २ एक तीर्थ। (महा०)

पुष्प-वर्ग—पु० [ष० त०] वैद्यक मे अगस्त्य, कचनार, सेमल आदि वृक्षो के फूलो का एक विशिष्ट समाहार।

पुष्पवर्त्म (न्)—पु० [स०] द्रुपद।

पुष्प-वर्ष—पु० [मध्य० स०] १ पुराणानुसार एक वर्ष पर्वत का नाम। २ [ष० त०] फूलो की वर्षा। पुष्पवर्षण।

पुष्प-वर्षण—पु० [ष० त०] फूलो का बरसना। पुष्पवृष्टि।

पुष्प-वर्षा—स्त्री० [ष० त०] बहुत से फूलो की ऊपर से होनेवाली या की जानेवाली वर्षा।

पुष्प-वसत—पु० [उपमि० स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

पुष्प-वाटिका—स्त्री० [ष० त०] ऐसा छोटा उद्यान, जिसमे फूलोवाले अनेक पौधे तथा वृक्ष हो। फुलवारी।

पुष्प-वाटी—स्त्री० [ष० त०] पुष्पवाटिका। (दे०)

पुष्प-वाण—पु० [ष० त०] १ फूलो का बाण। २ कामदेव। ३ कुशद्वीप के एक राजा। ४ एक दैत्य।

पुष्प-वाहिनी—स्त्री० [ष० त०] पुराणानुसार एक प्राचीन नदी।

पुष्प-विचित्रा—स्त्री० [उपमि० स०] एक प्रकार का वृत्त।

पुष्प-विशिख—पु० [ब० स०] कामदेव। २ कुशद्वीप का एक पर्वत। ३. एक राक्षस।

पुष्प-वृष्टि—स्त्री० [ष० त०] फूलो का बरसना या बरसाया जाना। फूलो की वर्षा।

पुष्प-वेणी—स्त्री० [ष० त०] फूलो को गूँथकर बनाई हुई माला।

पुष्प-शकटिका—स्त्री० [ष० त०] आकाशवाणी।

पुष्प-शकटी—स्त्री०=पुष्प-शकटिका।

पुष्प-शकली (लिन्)—पु० [स० पुष्पशकल, ष० त०,+इनि] एक तरह का विषहीन साँप। (सुश्रुत)

पुष्प-शय्या—स्त्री० [मध्य० स०] वह शय्या, जिस पर फूल बिछे हो। फूलों का बिछौना।

पुष्प-शर—पु० [ब० स०] कामदेव।

पुष्प-शरासन—पु० [ब० स०] कामदेव।

पुष्प-शाक—पु० [मध्य० स०] ऐसे फूल जिनकी तरकारी बनाई जाती हो। जैसे—अगस्त, कचनार, खैर, नीम, रासना, सहिजन, सेमल आदि।

पुष्प-शिलीमुख—पुं० [ब० स०] कामदेव।

पुष्प-शून्य—वि० [तृ० त०] जिसमें पुष्प न हो। बिना फूल का। पु० गूलर।

पुष्प-शेखर—पु० [ष० त०] फूलो की माला।

पुष्प-श्रेणी—स्त्री० [ब० स०] मूसाकानी नामक जमीन पर फैलनेवाला क्षुप।

पुष्प-समय—पु० [ष० त०] वसंत काल।

पुष्प-साधारण—पु० [ब० स०] वसंत काल।

पुष्प-सायक—पु० [ब० स०] कामदेव।

पुष्प-सार—पु० [ष० त०] १ फूल का मधु या रस। २ फूलो का इत्र।

पुष्प-सारा—स्त्री० [ब० स०+टाप्] तुलसी।

पुष्प-सिता—स्त्री० [मध्य० स०] एक तरह की चीनी।

पुष्प-सूत्र—पु० [मध्य० स०] गोभिल के सूत्र ग्रन्थ का नाम।

पुष्प-सौरभा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] कलिहारी का पौधा। करियारी।

पुष्प-स्नान—पु० दे० 'पुष्यस्नान'।

पुष्प-स्नेह—पु० [ष० त०] १ मकरद। २ मधु शहद।

पुष्प-स्वेद—पु० [ष० त०] १ मकरद। २ मधु।

पुष्प-हास—पु० [ष० त०] १ फूलो का खिलना। २ विष्णु।

पुष्पहासा—स्त्री० [स० पुष्पहास+टाप्] रजस्वला स्त्री। ऋतुमती स्त्री।

पुष्पहीन—वि० [ब० स०] [स्त्री० पुष्पहीना] (पेड) जिसमे फूल न लगते हो।
पु० गूलर का वृक्ष।

पुष्पहीना—वि० स्त्री० [सं० पुष्पहीन+टाप्] १ (स्त्री) जिसे रजोदर्शन न हो। २ बाँझ। वध्या। ३ (स्त्री) जिसकी बच्चे पैदा करने की अवस्था बीत चुकी हो।

पुष्पाक—पु० [पुष्प-अक, ष० त०] माधवी लता।

पुष्पांजन—पु० [पुष्प-अजन, ष० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का अंजन जो पीतल के हरे कसाव मे कुछ ओषधियों को मिलाकर बनाया जाता है।

पुष्पांजलि—स्त्री० [पुष्प-अजलि, ष० त०] फूलो से भरी हुई अजलि जो किसी देवता या महापुरुष को अर्पित की जाती है।

पुष्पांबुज—पु० [स० पुष्प-अबु, ष० त०, पुष्पाबु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] मकरद।

पुष्पाभस्—पु० [ब० स०] एक प्राचीन तीर्थ।

पुष्पा—स्त्री० [स०√पुष्प्+अच्+टाप्] आधुनिक चम्पारन का प्राचीन नाम जहाँ किसी जमाने मे अगदेश की राजधानी थी।

पुष्पाकर—पु० [पुष्प-आकर, ष० त०] वसंत ऋतु।

पुष्पागम—पु० [पुष्प-आगम, ब० स०] वसन्त ऋतु।

पुष्पाजीवी (विन्)—पु० [सं० पुष्प+आ√जीव्+णिनि] माली।

पुष्पानन—पुं० [पुष्प-आनन, ब० स०] एक तरह की शराब।

पुष्पापीड—पु० [पुष्प-आपीड, ष० त०] १. सिर पर धारण की जाने वाली फूलों की माला आदि। २ फूलों का मुकुट या सेहरा।

पुष्पाभिषेक—पु० [पुष्प-अभिषेक, तृ० त०] दे० 'पुष्य-स्नान'।

पुष्पायुध—पु० [पुष्प-आयुध, ब० स०] वह जिसका फूल अस्त्र हो, कामदेव।

पुष्पाराम—पु० [पुष्प-आराम, ष० त०] फुलवारी। पुष्पवाटिका।

पुष्पावचय—पु० [पुष्प-अवचय, ष० त०] फूल चुनना।

पुष्पावचायी (यिन्)—पु० [स० पुष्प+अव√चि (चुनना)+णिनि] माली।

पुष्पासव—पु० [पुष्प-आसव, मध्य० स०] १ मधु। शहद। २ कुछ विशिष्ट प्रकार के फूलों को सडाकर बनाई जानेवाली एक तरह की शराब।

पुष्पासार—पु० [पुष्प-आसार, ष० त०] फूलो की वर्षा।

पुष्पास्तरक—पु० [पुष्प-आस्तरक, ष० त०] १ फूल बिखेरनेवाला। २ फूलों का बिछौना तैयार करनेवाला।

पुष्पास्तरण—पु० [पुष्प-आस्तरण,ष० त०] १ फूल बिखेरने की क्रिया या भाव। २. शय्या पर फूल बिछाने का काम।

पुष्पास्त्र—पु० [पुष्प-अस्त्र, ब० स०] पुष्पायुध (कामदेव)।

पुष्पाह्वा—स्त्री० [स० पुष्प+आ√ह्वे+क+टाप्, ब० स०, प्] सौफ।

पुष्पिका—स्त्री० [सं०√पुष्प्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] १ दाँत की मैल। २. लिंग की मैल। ३ अधिकतर प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थों या उनके अध्यायो के अन्त का वह वाक्य या पद्य जिससे कहे हुए प्रसग की समाप्ति सूचित होती है और जिसमें प्राय लेखक का नाम और रचना-सवत् भी रहता है।

पुष्पिणी—स्त्री० [सं० पुष्प+इनि+ङीप्] रजस्वला स्त्री। ऋतुमती स्त्री।

पुष्पित—वि० [सं० पुष्प+इतच्] [स्त्री० पुष्पिता] १ (वृक्ष या पौधा) जिसमे फूल निकले हो। पुष्पो से युक्त। फूलो से लदा हुआ। २. उन्नत और समृद्ध।
पु० १ कुशद्वीप का एक पर्वत। २ एक बुद्ध का नाम।

पुष्पिता—वि० स्त्री० [स० पुष्पित+टाप्] रजस्वला (स्त्री)।

पुष्पिताग्रा—स्त्री० [स० पुष्पित-अग्र, ब० स०,+टाप्] एक प्रकार का अर्द्धसम वृत्त जिसके पहले और तीसरे चरणों मे दो नगण, एक रगण और एक यगण होता है तथा दूसरे और चौथे चरणो मे एक नगण, दो जगण, एक रगण और गुरु होता है।

पुष्पी (ष्पिन्)—वि० [स० पुष्प+इनि] (पौधा या वृक्ष) जिसमे फूल लगे हो।

पुष्पेषु—पु० [पुष्प-इषु, ब० स०] कामदेव।

पुष्पोत्कटा—स्त्री० [पुष्प-उत्कटा, तृ० त०] रावण, कुंभकरण आदि राक्षसों की माता जो सुमाली राक्षस की कन्या थी।

पुष्पोद्गम—पुं० [पुष्प-उद्गम, ष० त०] पौधे, वृक्षों आदि मे फूल निकलना आरंभ होना।

पुष्पोद्यान—पु० [पुष्प-उद्यान, ष० त०] फुलवारी। पुष्पवाटिका। बगीचा।

पुष्पोपजीवी (विन्)—पु० [सं० पुष्प+उप√जीव् (जीना)+णिनि] माली।

पुष्य—पुं० [सं०√पुष् (पुष्टि)+क्यप्] १. पुष्टि। पोषण। २.

पौष का महीना। ३. सत्ताईस नक्षत्रों में से ८वाँ नक्षत्र जिसमें तीन तारे हैं तथा जिसकी आकृति बाण की सी कही गई है और जो अनेक कार्यों के लिए शुभ माना जाता है। इसे 'तिष्य' और 'सिध्य' भी कहते हैं।

पुष्य-नेत्रा—स्त्री० [सं० ब० स०, अच, +टाप्] ऐसी रात्रि जिसमें पुष्य नक्षत्र दिखाई पड़ता हो।

पुष्यमित्र—पु० [सं०] मगध में मौर्य शासन समाप्त करके शुंगवंशीय राज्य स्थापित करनेवाला एक प्रतापी राजा।

पुष्यरथ—पु०=पुष्प-रथ।

पुष्यलक—पु० [सं०√पुष्+कि, पुषि√अल् (पर्याप्ति)+अच्+क] १ कस्तूरी मृग। २ वह जैन साधु जो हाथ में चँवर लिये रहता हो। ३. बड़ी और मोटी कील या खूँटा।

पुष्य-स्नान—पु० [सं० त०] राजाओं या राज्य के विघ्नों की शांति के लिए एक विशिष्ट स्नान जो पूस के महीने में चन्द्रमा के पुष्य नक्षत्र में होने पर किया जाता था।

पुष्याभिषेक—पु०=पुष्य-स्नान।

पुष्यार्क—पु० [सं० पुष्य-अर्क, सं० त०] १ फलित ज्योतिष में, एक योग जो कर्क की संक्रांति में सूर्य के पुष्य नक्षत्र में होने पर होता है। यह प्रायः श्रावण में दस दिन के लगभग रहता है। २ रविवार के दिन होनेवाला पुष्य-नक्षत्र।

पुस—अव्य० [देश०] होंठों को सिकोड़कर हवा झटके से अन्दर की ओर खींचने से होनेवाला शब्द जो प्रायः प्यार से बिल्ली, कुत्ते आदि को अपने पास बुलाने के लिए किया जाता है। जैसे—आ पुस, पुस!

पुसकर†—पु०= पुष्कर।

पुसाना—अ० [हिं० पोसना का अ०] १ पोसा जाना। पोषण होना। २ कार्य आदि का शक्य या संभव होना। पूरा पड़ना। बन पड़ना। ३ अच्छा, उचित या भला लगना।

पुस्त—पु० [सं०√पुस्त् (बाँधना)+अच्] १ गीली मिट्टी, लकड़ी, कपड़े, चमड़े, लोहे या रत्नों आदि को गढ़, काट या छील-छालकर बनाई जानेवाली वस्तु। सामान। २ कारीगरी। रचना-कौशल। ३ किताब। पुस्तक। जैसे—पुस्त-पाल। (देखें)

†स्त्री०=पुश्त।

पुस्तक—स्त्री० [सं० पुस्त+क] [स्त्री० अल्पा० पुस्तिका] १ हाथ से लिखे हुए या छपे हुए पन्नों का जिल्द बँधा हुआ रूप। (पत्रिका से भिन्न) २ कोई वैज्ञानिक या साहित्यिक कृति।

पुस्तकाकार—वि० [सं० पुस्तक-आकार, ब० स०] जो पुस्तक के आकार या रूप में हो। जैसे—उनके सब लेख पुस्तकाकार छप गये हैं।

पुस्तकागार—पु० [सं० पुस्तक-आगार, ष० त०]=पुस्तकालय।

पुस्तकालय—पु० [सं० पुस्तक-आलय] १ वह भवन या घर जिसमें अध्ययन और संदर्भ के लिए पुस्तकें रखी गई हों। जैसे—उनके पुस्तकालय में ५ हजार पुस्तकें थीं। २ उक्त प्रकार का वह भवन या स्थान जहाँ से सर्वसाधारण को पढ़ने के लिए पुस्तकें मिलती हों। जैसे—इस नगर में एक बहुत बड़ा नया पुस्तकालय खुलनेवाला है।

पुस्तकालयाध्यक्ष—पु० [सं० पुस्तकालय-अध्यक्ष, ष० त०] पुस्तकालय का प्रधान अधिकारी। (लाइब्रेरियन)

पुस्तकास्तरण—पु० [सं० पुस्तक-आस्तरण, ष० त०] १ पुस्तक की बेठन। २. पुस्तक पर उसे धूल, मैल आदि से बचाने के लिए चढ़ाया जानेवाला कागज।

पुस्तकी—स्त्री० [सं० पुस्तक+ङीष्] पुस्तिका।

पुस्तकीय—वि० [सं० पुस्तक+छ—ईय] १ पुस्तक-संबंधी। २ पुस्तकों से प्राप्त होनेवाला। जैसे—पुस्तकीय ज्ञान।

पुस्त-डाक—स्त्री० [सं० पुस्तक+हिं० डाक] वह डाक या डाक से भेजने की वह विधि जिसके अनुसार समाचार-पत्र, पुस्तकें आदि विशेष रिआयती दर से भेजी जाती हैं। (बुक-पोस्ट)

पुस्तपाल—पु० [सं० पुस्त√पाल् (रक्षा)+णिच्+अच्] १ प्राचीन भारत में वह अधिकारी जो किसी राजकीय कार्यालय के कागज-पत्र सभालकर रखता था। २. आज-कल किसी पुस्तकालय का प्रधान अधिकारी। (लाइब्रेरियन)

पुस्तशिंबी—स्त्री० [सं०] एक प्रकार की सेम।

पुस्तिका—स्त्री० [सं० पुस्तक+टाप्, इत्व] छोटी पुस्तक विशेषतः ऐसी छोटी पुस्तक जिसका आवरण कागज का ही हो, दफ्ती का न हो।

पुस्ती—स्त्री० [सं० पुस्त+ङीष्] १ हाथ की लिखी हुई पोथी या किताब। २ पुस्तक।

पुहकर†—पु०=पुष्कर।

पुहकरमूल†—पु०=पुष्करमूल।

पुहचना—अ० [सं० प्रभूत, प्रा० पहुच] पहुँचना। उदा०—गहिलै इजाइ लगन ले पुहतौ।—प्रिथीराज।

पुहना—अ० [हिं० पोहना] पोहा जाना। गूँथा जाना।

स०=पोहना।

पुहप (प्प)†—पु०=पुहुप (पुष्प)।

पुहाना—स० [हिं० पोहना का प्रे०] पोहने या पिरोने का काम दूसरे से कराना। गुथवाना।

पुहुप†—पु० [सं० पुष्प] फूल।

पुहुपराग†—पु०=पुखराज।

पुहुमि†—स्त्री० [सं० भूमि, प्रा० पुहवी] १ पृथ्वी। २ भूमि।

पुहुरेनु—पु० [सं० पुष्परेणु] फूल की धूल। पराग।

पुहुव†—पु०=पुहुप (पुष्प)।

पुहुवि†—स्त्री०=पुहुमि (पृथ्वी)। उदा०—चपके कएल पुहुवि निर मान।—विद्यापति।

पूँगरण—पु० [सं० पूग=राशि या समूह] वस्त्र। कपड़ा। (डिं०)

पूँगरा†—वि० दे० 'पोंगा'।

पूँगा—पु० [देश०] सीप के अन्दर रहनेवाला कीड़ा।

†स्त्री० [अनु०] [स्त्री० अल्पा० पूँगी] १ सँपेरों की बीन। महुअर। २ एक तरह की बाँसुरी।

†वि० दे० 'पोंगा'।

पूँछ—स्त्री० [सं० पुच्छ] १ चौपायों तथा जंतुओं का वह गावदुमा तथा लचीला पिछला भाग जो गुदा-मार्ग के ऊपर रीढ़ की हड्डी की संधि में या उससे निकलकर नीचे की ओर कुछ दूर तक लम्बा चला जाता या नीचे लटकता रहता है। पुच्छ। लांगूल। दुम। जैसे—कुत्ते, लंगूर या घोड़े की पूँछ, चिड़िया, चूहे या घड़ियाल की पूँछ।

मुहा०—किसी की पूंछ पकड़कर चलना=(क) बिना सोचे-समझे किसी का अनुयायी बनकर चलना। (ख) किसी का सहारा पकड़कर चलना। (किसी के आगे) पूंछ हिलाना=किसी के आगे उसी तरह से दीन बनकर आचरण करना जिस प्रकार कुत्ते अपने स्वामी या भोजन देनेवाले के सामने पूंछ हिलाकर दीनता प्रकट करते हैं।
२. किसी काम, चीज या बात के पीछे का वह लंबा अंश जो प्राय अनावश्यक या निरर्थक हो। ३ पतंग, पुच्छल तारे, उल्का आदि के पीछे का चमकनेवाला रेखाकार अंग। जैसे—पतग की पूंछ। ४ वह जो हरदम दीन भाव से किसी के पीछे या साथ लगा रहता हो।

पूंछ-गाछ†—स्त्री०=पूछ-ताछ।

पूंछटा†—स्त्री०=पूंछ (दुम)। (उपेक्षा सूचक)

पूंछड़ी—स्त्री० [हिं० पूंछ+डी (प्रत्य०)] छोटी पूंछ।

पूंछ-ताछ†—स्त्री०=पूछ-ताछ।

पूंछना†—स०=पूछना।

पूंछ-पाछ†—स्त्री०=पूछ-ताछ।

पूंछल-तारा†—पु०=पुच्छल तारा (केतु)।

पूंजना—स० [देश०] नया बंदर पकड़ना। (कलंदर)

पूंजी—स्त्री० [स० पुज] १ जोड़ा या जमा किया हुआ धन। २ विशेषत. ऐसा धन जो और अधिक धन कमाने के उद्देश्य से व्यापार आदि मे लगाया गया हो अथवा ऋण आदि पर उधार दिया गया हो। मूलधन। (कैपिटल) ३ सम्पत्ति, विशेषत ऐसी सम्पत्ति जिससे आय होती हो। जैसे—विधवा की पूंजी यही एक मकान था। ४ उन सब वस्तुओं का समूह जो पास मे हो। ५ किसी विषय मे किसी की सारी योग्यता या ज्ञान।

पूंजीदार—पु० [हि० पूंजी+फा० दार] [भाव० पूंजीदारी] १ वह जिसके पास अधिक या अत्यधिक पूंजी या धन-सम्पत्ति हो। २. वह जो आर्थिक लाभ के लिए किसी उद्योग या व्यवसाय मे पूंजी या धन लगाता हो। पूंजीपति।

पूंजीदारी—स्त्री० [हिं० पूंजीदार] १ पूंजीदार होने की अवस्था या भाव। २ दे० 'पूंजीवाद'।

पूंजीपति—पु० [हि० पूंजी+स० पति] १ जिसके पास अधिक पूंजी हो। २ ऐसा व्यक्ति जो लाभ की दृष्टि से विभिन्न उद्योग-धंधों में पूंजी लगाता हो। पूंजीदार।

पूंजीवाद—पु० [हि० पूंजी+स० वाद] १ आधुनिक अर्थशास्त्र मे, वह आर्थिक प्रणाली या व्यवस्था जिसमे देश के प्रमुख उत्पत्ति तथा वितरण के साधनों पर धनिकों या पूंजीपतियों का व्यक्तिगत रूप से पूरा अधिकार होता है। इसमे धनवान् लोग अपनी पूंजी से वस्तुओं का उत्पादन करते-कराते और उनका सारा लाभ अपने सुख-भोग तथा पूंजी बढ़ाने मे लगाते हैं। (कैपिटलिज्म)

पूंजीवादी—पु० [हिं०+स०] वह जो पूंजीवाद के सिद्धान्त मानता हो या उनका अनुयायी हो।
वि० पूंजीवाद-सम्बन्धी। जैसे—पूंजीवादी आर्थिक व्यवस्था।

पूंठ†—स्त्री० पीठ।

पू—वि० [स० पूर्वपद के रहने पर] समस्त पदों के अन्त में, पवित्र या शुद्ध करनेवाला। जैसे—खलपू=खलों को पवित्र करनेवाला।

पूआ—पु० [स० पूप, अपूप] पूरी की तरह का एक मीठा पकवान जो आटे को गुड़ या चीनी के रस में घोलकर घी मे तलने से बनता है।

पूखन†—पु०=पूषण (सूर्य)।
पुं०=पोषण।

पूग—पु० [स०√पू+गन्] १ सुपारी का पेड़ और उसका फल। २ ढेर। ३. शहतूत का पेड़। ४ कटहल। ५. एक प्रकार की कटेरी। ६ भाव। ७ छद। ८ समूह। ढेर।

पूग-कृत—भू० कृ० [स० त०] १ स्तूप के आकार मे बनाया हुआ। जो टीले के आकार का हो। २ एकत्र किया हुआ। सगृहीत। संचित।

पूगना—अ० [हिं० पूजना] १ पूरा होना। जैसे—हुडी की मिती पूगना। २ चौसर आदि के खेलों मे गोटी, पासे आदि का नियत मार्ग से होते हुए अन्त में कोठे या घर मे पहुँचना जो जीत का सूचक माना जाता है। ३. दे० 'पूजना'।

पूगपात्र—पु० [ष० त०] पीकदान। उगालदान।

पूग-पीठ—पु० [ष० त०] पीकदान।

पूग-पुष्पिका—स्त्री० [ब० स०, कप्,+टाप्, इत्व] विवाह-सबध स्थिर हो जाने पर दिया जानेवाला पुष्प सहित पान। पानफूल।

पूग-फल—पु० [ष० त०] सुपारी।

पूगरोट—पु० [सं० पूग√रुट् (दीप्ति)+अच्] एक प्रकार का ताड़।

पूगी (गिन्)—पु० [सं० पूग+इनि] सुपारी का पेड़।
स्त्री० सुपारी।

पूगीफल—पु० [सं० पूगफल] सुपारी।

पूग्य—वि० [स० पूग+यत्] पूग-सबधी। पूग का।

पूछ—स्त्री० [हिं० पूछना] १ पूछने की क्रिया या भाव। जिज्ञासा। २ चाह। तलब। जरूरत। ३ आदर। खातिर।
†स्त्री०=पूंछ (दुम)।

पूछ-गाछ†—स्त्री०=पूछ-ताछ।

पूछ-ताछ—स्त्री० [हिं० पूछना+ताछना अनु०] १ कुछ जानने के लिए किसी से प्रश्न करने की क्रिया या भाव। किसी बात का पता लगाने के लिए बार-बार या कई लोगो से कुछ पूछना या प्रश्न करना। २ किसी विषय मे खोज, अनुसंधान या जाँच पड़ताल करने के लिए बार-बार जिज्ञासा या प्रश्न करना। जैसे—बहुत पूछ-ताछ करने पर इस मामले का कुछ पता चला।

पूछना—स० [सं० पृच्छण] १ किसी से कोई बात जानने या समझने के लिए शब्दों का प्रयोग करना। जिज्ञासा करना। जैसे—किसी से कहीं का रास्ता (या किसी का नाम) पूछना। २ जाँच, परीक्षा आदि के प्रसंग में इसलिए किसी के सामने कुछ प्रश्न रखना कि वह उसका उत्तर दे। प्रश्न करना। जैसे—परीक्षा के समय विद्यार्थियों से तरह-तरह की बातें पूछी जाती हैं। ३ किसी के प्रति सहानुभूति रखते हुए उससे यह जानने का प्रयत्न करना कि आज कल तुम कैसे हो या किस प्रकार जीवन यापन करते हो। किसी का हाल-चाल या खोज-खबर लेना। जैसे—(क) वह महीनों बीमार पड़ा रहा; पर कोई उसके पास पूछने तक न गया। (ख) अजी, गरीबों को कौन पूछता है। ४. किसी के प्रति आदर-सत्कार का भाव प्रकट करते हुए

उसकी ओर उचित ध्यान देना। जैसे—इतनी भीड़-भाड़ मे कौन किसे पूछता है।

मुहा०—(किसी से) बात तक न पूछना या बात न पूछना=(क) कुछ भी ध्यान न देना। (ख) बहुत ही उपेक्षापूर्ण व्यवहार करना। ५. उचित महत्त्व या मूल्य समझते हुए आदर या कदर करना। जैसे—आज-कल गुण या योग्यता को कौन पूछता है। ६. किसी प्रकार का ध्यान देते हुए कोई जिज्ञासा करना या कुछ कहना। जैसे—उनके घर पहुँचकर सीधे ऊपर चले जाना, कोई कुछ नही पूछेगा।

पूछ-पाछ†—स्त्री०=पूछ-ताछ।

पूछरी—स्त्री०=पूँछ (दुम)।

पूछा-ताछी, पूछा-पाछी—स्त्री० [हिं० पूछना] =पूछ-ताछ।

पूज—स्त्री० [स० पूजन] कुछ विशिष्ट जातियो मे विवाह, यज्ञोपवीत, आदि शुभ कार्यों से एकाध दिन पहले होनेवाला एक कृत्य जिसमे गणेश-पूजन किया जाता है और बिरादरी के आमंत्रित व्यक्तियो को बताशे, लड्डू आदि दिये जाते है।

स्त्री० [हिं० पूजना] पूजने की क्रिया या भाव।

†पु० [स० पूज्य] देवता। (डिं०)

†वि० =पूज्य।

पूजक—वि० [स०√पूज् (पूजना)+णिच्+ण्वुल्—अक] पूजा करनेवाला। जैसे—अग्निपूजक।

पूजन—पु० [स०√पूज्+णिच्+ल्युट—अन्] [वि० पूजक, पूजनीय पूजितव्य, पूज्य] १. देवी-देवता या किसी अन्य पूज्य वस्तु की की जानेवाली आराधना और वंदना। २ आदर। सम्मान। जैसे—अतिथि पूजन।

पूजना—स० [स० पूजन] १ देवी-देवता को प्रसन्न या संतुष्ट करने के लिए यथाविधि श्रद्धाभाव से जल, फूल, नैवेद्य आदि चढाना। पूजन करना। २ किसी को परम श्रद्धा तथा भक्ति की दृष्टि से देखना और आदरपूर्वक उसकी सेवा तथा सत्कार करना। ३ किसी को प्रसन्न या सतुष्ट करने के लिए उसे किसी रूप मे कुछ धन देना। जैसे—कचहरी के अमलो को पूजना। ४ व्यग्य और परिहास मे, खूब मारना-पीटना। जैसे—वे आज इसकी खूब पूजा करेंगे।

अ० [स० पूर्यते, प्रा० पुज्जति] १. पूरा होना। भरना। २ कमी, त्रुटि, देन आदि की पूर्ति होना। जैसे—किसी की रकम पूजना=दिया या लगाया हुआ धन पूरा पूरा वसूल होना। ३ अवधि या नियत समय पूरा होना। जैसे—हुडी की मिती पूजना=रुपया चुकाने की नियत तिथि आना। ४. गहराई का भरना या बराबर होना। आस-पास के धरातल के समान हो जाना। जैसे—गड्ढा पूजना, घाव पूजना। ५ ऋण या देन चुकता होना। ६. किसी की बराबरी तक पहुँचना। उदा०—ये सब पतित न पूजत मो सम।—सूर। ७. दे० 'पूगना'।

स० १ पूरा करना। २. नया बंदर पकड़ना। (कलदर)

पूजनी—स्त्री० [स० पूजन+ङीप्] मादा गौरैया।

पूजनीय—वि० [स०√पूज्+णिच्+अनीयर] १ जिसकी पूजा करना कर्तव्य या उचित हो। पूजन करने के योग्य। अर्चनीय। २ आदरणीय।

पूजमान—वि०=पूज्यमान।

पूजयितव्य—वि० [स०√पूज्+णिच्+तव्यत्] जिसकी पूजा की जा सकती हो अथवा जिसकी पूजा करना उचित हो। पूज्य।

पूजयिता (तृ)—वि०, पु० [स०√पूज्+णिच्+तृच्] पूजा करनेवाला। पूजक।

पूजा—स्त्री० [स०√पूज+णिच्+अ+टाप्] १ देवी-देवता के प्रति विनय, श्रद्धा और समर्पण का भाव प्रकट करनेवाले कार्य। अर्चना। पूजन। २ किसी देवी-देवता पर जल, फूल, फल, अक्षत आदि चढ़ाने का धार्मिक कृत्य। पूजन। ३ बहुत अधिक या यथेष्ट आदर-सत्कार। आव-भगत। । खातिरदारी। ४ किसी को प्रसन्न या संतुष्ट करने के लिए किया जानेवाला कोई कार्य। ५ उक्त के आधार पर, लाक्षणिक रूप मे, घूस या रिश्वत। जैसे—अब तो पहले दफ्तरवालो की पूजा करो, तब कही जाकर नौकरी मिलती है। ६ व्यग्य के रूप में, किसी को मारने-पीटने अथवा तिरस्कृत या दडित करने की क्रिया या भाव। जैसे—चलो देखो, आज घर पर तुम्हारी कैसी पूजा होती है।

पूजाधार—पु० [स० पूजा-आधार, ष० त०] देवपूजा में विषेय वस्तुऐं और बाते। जैसे—जल, विष्णुचक्र, मत्र, प्रतिमा, शालग्राम आदि।

पूजार्ह—वि० [स० पूजा√अर्ह् (पूजना)+अच्] पूजनीय।

पूजित—भू० कृ० [स०√पूज्+क्त] [स्त्री० पूजिता] जिसकी पूजा की गई हो।

पूजितव्य—वि० [स०√पूज्+तव्यत्] पूजनीय। पूज्य।

पूजिल—पु० [स०√पूज्+इलच्] देवता।

वि० पूजनीय।

पूजी—स्त्री० [फा० पूजबद] घोडे का एक प्रकार का साज जो उसके मुँह पर रहता है। उदा०—पूजी कलगी करनफूल कल हैकल सेली।—रत्ना०।

पूजोपकरण—पु० [स० पूजा-उपकरण, ष० त०] देवता की पूजा के लिए आवश्यक उपकरण या सामग्री।

पूजोपचार—पु० [स० पूजा-उपचार, ष० त०] पूजन के लिए किया जानेवाला उपचार और उसकी सामग्री।

पूजोपहार—पु० [स० पूजा-उपहार, ष० त०] पूजा के समय देवी-देवता को चढाई जानेवाली वस्तु। चढावा।

पूज्य—वि० [स०√पूज्+यत्] [स्त्री० पूज्या] १ पूजा किये जाने के योग्य। २ आदर, श्रद्धा आदि के योग्य। माननीय।

पु० श्वसुर। ससुर।

पूज्यता—स्त्री० [स० पूज्य+तल्+टाप्] पूज्य होने की अवस्था या भाव। पूजे जाने के योग्य होना। पूजनीयता।

पूज्य-पाद—वि० [ब० स०] इतना महान् कि उसके पैरो की पूजा करना उचित हो। परम पूज्य और मान्य।

पूज्यमान—वि० [स०√पूज्+यक्+शानच्] जिसकी पूजा की जा रही हो। पूजा जाता हुआ। सेव्यमान।

पु० सफेद जीरा।

पूज्यवर—वि० [स० त०] परम आदरणीय, पूज्य और बड़ा। जैसे—पूज्यवर मालवीय जी।

पूटरी—स्त्री० [देश०] ईख के रस की वह अवस्था जो उसके खाँड़ बनने से पहले होती है।

†स्त्री०=पोटली।

पूटीन—स्त्री०=पुटीन।

पूठा†—पुं०=पुट्ठा।

†स्त्री०=पीठ।

पूठा†—वि० [स० पुष्ट] [स्त्री० पूठी] १. पुष्ट। मजबूत। २ पक्का। प्रौढ।

†पु०=पुट्ठा।

पूठि†—स्त्री० १=पीठ। २.=पुष्टि।

पूड़ा†—पु०=पूआ (पकवान)।

पूड़ी—स्त्री० [हि० पूरी] १ तबले या मृदंग पर मढ़ा हुआ गोल चमड़ा। २ दे० 'पूरी'।

पूणू†—पु०=पत्थर। (डि०)

स्त्री०=पूनो (पूर्णिमा)।

पूत—वि० [सं०√पू (पवित्र करना)+क्त] १. पवित्र। शुद्ध। शुचि। २ सत्य।

पु० १ शंख। २ सफेद कुश। ३. पलास। ४. तिल का पेड। ५. भूसी निकाला हुआ अन्न। ६. जलाशय।

पु० [स० पुत्र, प्रा० पुत्त] बेटा। लडका। पुत्र। उदा०—एक पहेली मै कहूँ, तुम बूझो मेरे पूत।

पु० [देश०] चूल्हे के दोनो किनारों और बीच के वे नुकीले उभार जिनके सहारे पर कडाही, तवा, देगची आदि रखते हैं।

पूतक्रतायी—स्त्री० [स० पूतक्रतु+ङीष्, ऐ-आदेश] इंद्र की पत्नी। इन्द्राणी। शची।

पूत-क्रतु—पु० [ब० स०] इन्द्र।

पूत-गंध—पु० [ब० स०] बर्बर नामक सुगंधित तृण।

पूतड़ा†—पु०=पोतडा।

पूत-तृण—पु० [कर्म० स०] सफेद कुश।

पूत-दारु—पु० [कर्म० स०] पलास। ढाक।

पूत-द्रु—पु० [कर्म० स०] १. ढाक। पलास। २. खैर का पेड। ३ देवदार।

पूत-धान्य—पु० [कर्म० स०] तिल।

पूतन—पु० [सं० पूत+णिच्+ल्यु—अन] १. वैद्यक के अनुसार गुदा में होनेवाला एक प्रकार का रोग। २. बेताल। ३. कब्र मे रखा हुआ शव।

पूतना—स्त्री० [स० पूतन+टाप्] १ एक राक्षसी जो कंस के कहने पर बालक कृष्ण को मारने के उद्देश्य से, अपने स्तनों पर विष लगाकर, उसे स्तन-पान कराने आई थी। बालक कृष्ण ने इसका दुष्ट उद्देश्य जान लिया और इसे मार डाला। २. राक्षसी। दानवी। ३ सुश्रुत के अनुसार, एक बाल-ग्रह या बाल रोग जिसमें बच्चे को जल्दी अच्छी नींद नही आती। उसे पतले, मैले दस्त आते हैं, बहुत प्यास लगती है और बार बार कै होती है। ४. कार्तिकेय की अनुचरी एक मातृका। ५. पीली हर्रे। ६. सुगंधित जटामासी। गन्ध-मासी।

पूतनारि—पु० [स० ष० त०] पूतना के शत्रु; श्रीकृष्ण।

पूतना-सूदन—पु० [ष० त०] श्रीकृष्ण।

पूतना-हन—पु० [ष० त०] श्रीकृष्ण।

पूतनाहर्रे—स्त्री० [स० पूतना+हिं० हर्रे] छोटी हर्रे।

पूतनिका—स्त्री० [सं० पूतन+कन्+टाप्, इत्व] १ पूतना (राक्षसी)। २ पूतना नामक बाल रोग।

पूत-पत्री—स्त्री० [ब० स०, ङीष्] तुलसी।

पूत-फल—पु० [ब० स०] कटहल का पेड़ और उसका फल।

पूतभृत्—पुं० [सं० पूत√भृ (धारण करना)+क्विप्] वह पवित्र बरतन जिसमे सोम रस रखा जाता था।

पूत-मति—वि० [ब० स०] पवित्र बुद्धिवाला। पवित्र अंतःकरणवाला।

पु० शिव का एक नाम।

पूतर—पु० [स० पूत√रा (देना)+क] १ एक प्रकार का जल-जंतु। २ तुच्छ व्यक्ति।

पूतरा†—पु० [स्त्री० पूतरी]=पुतला।

†पु०=पूत (बेटा)।

पूतरी†—स्त्री०=पुतली।

पूता—स्त्री० [स० पूत+टाप्] दुर्गा।

वि० स्त्री०=शुद्ध। पवित्र।

†पु० [स० पुत्र, हिं० पुत्र, हिं० पूत] पुत्र। बेटा। (प्राय सम्बोधन कारक मे प्रयुक्त)

पूतात्मा (त्मन्)—वि० [पूत-आत्मन्, ब० स०] पवित्रात्मा। शुद्ध अंतःकरण का।

पुं० विष्णु।

पूति—स्त्री० [स०√पू+क्तिन्, क्तिच्] १ पवित्रता। शुचिता। २ दुर्गंध। ३ गंध-मार्जार। ४ रोहित तृण। ५ घावो, फोडो आदि मे विषाक्त कीटाणुओ आदि के उत्पन्न होने के कारण उनका सडने लगना जो प्राय रोगी के लिए घातक सिद्ध होता है। सडायँध। (सेप्टिक)

पूतिक—पु० [स० पूति√कै (भासित होना)+क] १. दुर्गंध करज। काँटा करज। पूति करज। २ पाखाना। विष्ठा।

वि० १. जिसमे से दुर्गंध निकल रही हो। बदबूदार। २ (घाव) जिसमे विषाक्त कीटाणुओ के कारण सडायँध आ गई हो। ३. (तत्त्व) जो उक्त प्रकार की विषाक्त सडायँध उत्पन्न कर सकता हो। (सेप्टिक, अन्तिम दोनो अर्थों के लिए)

पूति-कन्या—स्त्री० [मध्य० स०] पुदीना।

पूति-करंज—पु० [मध्य० स०] फसल के रक्षार्थ प्राय मेडो पर लगाया जानेवाला एक क्षुप जिसमे बहुत-अधिक काँटे होते है। काँटा-करज।

पूति-कर्ण, पूति-कर्णक—पु० [ब० स०] [ब० स०,+कप्] कान का एक रोग जिसमे अन्दर घाव या फुसी होने के कारण बदबूदार पीब निकलता है।

पूतिका—स्त्री० [स० पूतिक+टाप्] १ पोई का साग। २ एक प्रकार की मधुमक्खी। ३. बिल्ली।

पूतिका-मुख—पु० [ब० स०] घोघा। शबूक।

पूति-काष्ठ—पु० [कर्म० स०] देवदारु।

पूतिकाष्ठक—पु० [पूतिकाष्ठ+कन्] धूपसरल।

पूतिकाह्व—पु० [स० पूतिक-आह्वा ब० स०] पूति करज। (दे०)

पूति-कीट—पु० [कर्म० स०] एक तरह की मधुमक्खी। पूतिका।

पूति-कुंड—पु० [ष० त०] आज-कल एक प्रकार का गड्ढा या कुंड जो

गृहस्थों के घर के पास मल-मूत्र इकट्ठा करने के लिए बनाया जाता है। (सेप्टिक टैंक)

विशेष—ऐसे कुडो की आवश्यकता उन्ही नगरो या स्थानो मे होती है जहाँ मल-मूत्र वहन करनेवाले नल नही होते।

पूति-केशर—पु० [ब० स०] १ नागकेशर। २ गध-मार्जार। मुश्क-बिलाव।

पूति-गध—पु० [ब० स०] १ राँगा। २ हिंगोट। इंगुदी। ३ गधक। ४. दुर्गंध।

वि० दुर्गंधवाला। बदबूदार।

पूतिगंधा—स्त्री० [स० पूतिगध+टाप्] एक प्रसिद्ध क्षुप जिसके गुच्छो मे काले-काले फूल लगते हैं तथा जिसके बीज उग्रगध वाले होते हैं और दवा के काम आते है। बकुची।

पूति-गधि (क)—वि० [ब० स०, +कप्] दुर्गंधवाला। बदबूदार।

पूतिगंधिका—स्त्री० [स० ब० स०, कप्, +टाप्, इत्व] १ दे० 'पूत-गंधा'। २ पोय का शाक। पूतिका।

पूतिघास—पु० [स० पूति√घस् (खाना) +अण्] सुश्रुत मे वर्णित एक तरह का जतु।

पूति-दला—स्त्री० [ब० स०, +टाप्] तेजपत्ता।

पूति-नस्य—पु० [कर्म० स०] पीनस रोग।

पूति-नासिक—वि० [ब० स०] पीनस रोग से पीडित।

पूति-पत्र—पु० [ब० स०] १ सोनापाठा। २ पीला लोध।

पूति-पत्रिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, +टाप्, इत्व] प्रसारिणी लता। पसरन।

पूति-पर्ण (क)—पु० [ब० स०] [ब० स०, कप्] पूति-करज। (दे०)

पूति-पल्लवा—स्त्री० [ब० स०, +टाप्] बडा करेला।

पूति-पुष्प—पु० [ब० स०] इंगुदी वृक्ष। गोदी। हिंगोट।

पूति-पुष्पिका—स्त्री० [ब० स०, कप्, +टाप्, इत्व] चकोतरा नीबू।

पूति-फल—पु० [ब० स०] बकुची। सोमराजी।

पूतिफला, पूतिफली—स्त्री० [स० पूतिफल+टाप्] [स० पूति-फल+ डीष्] बावची।

पूति-बबर—स्त्री० [कर्म० स०] बनतुलसी। जगली तुलसी। काली बर्बरी।

पूति-भाव—पु० [ष० त०] सडने की क्रिया या भाव। सडायँध। ·

पूति-मज्जा—स्त्री० [ब० स०, +टाप्] गोदी। इंगुदी वृक्ष।

पूति-मयूरिका—स्त्री० [पूति-मयूरी, उपमि०स०,+क+टाप्, ह्रस्व] अजवायन की तरह का एक पौधा।

वि० दे० अजमोदा'।

पूतिमाष—पु० [स०] एक गोत्र प्रवर्त्तक ऋषि।

पूतिमुद्गल—स्त्री० [स०] रोहिष तृण।

पूति-मूषिका—स्त्री० [कर्म० स०] छछूँदर।

पूति-मृत्तिक—स्त्री० [ब० स०] पुराणानुसार इक्कीस नरको मे से एक नरक का नाम।

पूति-मेद—पु० [ब० स०] दुर्गंध खैर। अरिमेद।

पूति-योनि—पु० [ब० स०] एक तरह का योनि-रोग।

पूति-रक्त—पु० [ब० स०] एक रोग जिसमे नाक मे से दुर्गन्ध युक्त रक्त निकलता है।

पूति-रज्जु—स्त्री० [ब० स०] एक प्रकार की लता।

पूति-वक्त्र—वि० [ब० स०] जिसके मुँह से दुर्गन्ध निकलती हो।

पूति-वात—पु० [ब० स०] १ बेल का पेड। २ गदी वायु। ३. पाद।

पूति-वृक्ष—पु० [कर्म० स०] सोनापाठा।

पूति-व्रण—पु० [कर्म० स०] ऐसा फोडा जिसमे निकलनेवाला मवाद अत्यधिक दुर्गंधयुक्त होता है।

पूति-शाक—पु० [कर्म० स०] अगस्त। बक वृक्ष।

पूति-शारिजा—स्त्री० [कर्म० स०] बनबिलाव।

पूती—स्त्री० [स० पोत-गट्ठा] १. गाँठ के रूप मे होनेवाली पौधो की जड। २ लहसुन आदि की गाँठ

पूतीक—पु० [स०=पूतिक, पृषो० सिद्धि] १ पूतिकरज। (दे०) २ गध मार्जार।

पूतीकरज—पु० [स०=पूतिकरञ्ज, पृषो० सिद्धि] पूतिकरज। (दे०)

पूतीकरण—पु० [स० पूत+च्वि√कृ+ल्युट्-अन] पूत अर्थात् पवित्र या शुद्ध करने की क्रिया, प्रणाली या भाव। (प्योरिफिकेशन)

पूतीका—स्त्री० [स०=पूतिका, पृषो० सिद्धि] पोई। पूतिका शाक।

पूतकारी—स्त्री० [स०] १ सरस्वती। २ नाग-लोक की राजधानी।

पूत्यड—पु० [स० पूति-अड, ब० स०] १ कस्तूरी मृग। २ एक बदबूदार कीडा। गध-कीट।

पूथ—पु० =पूथा।

पूथा—पु० [देश०] बालू का ऊँचा टीला या ढूह।

पूथिका—स्त्री० [स०=पूतिका, पृषो० सिद्धि] पोई नामक पौधा और उसकी पत्ती।

पूदना—पु० [देश०] भूरे रग का एक प्रकार का पक्षी जो प्राय जमीन पर चला करता है, और घास-फूस का घोसला बना कर रहता है।

पु० पुदीना।

पून—पु० [देश०] जगली बादाम का पेड जो पाकिस्तान के पश्चिमी किनारो पर होता है। इसके फूल और पत्तियाँ दोनो दवा के काम आती हैं। इसमे से एक प्रकार का गोद भी निकलता है।

†पु० =पूर्ण

वि० [सं०] नष्ट।

पूनना—पु० [देश०] १ कलपून या पून नाम का सदा बहार पेड। २ एक तरह की ईख।

†स०=पुनना।

पूनवाँ—स्त्री०=पूर्णिमा।

पून-सलाई—स्त्री० [हि० पूनी+सलाई] लोहे की सीक अथवा बेत, नरसल आदि की वह छोटी पतली नली या पोर जिसपर रूई लपेटकर पूनी बनाई जाती है।

पूनाक—पु० [देश०] तिलो मे से तेल निकाल लिए जाने पर बच रहनेवाली सीठी। खली।

पूनिउँ†—स्त्री०=पूनो (पूर्णिमा)।

पूनी—स्त्री० [स० पिजिका] १. चरखे पर सूत कातने के उद्देश्य से बनाई हुई सलाई आदि पर लपेटकर रूई की बत्ती। २ वह बहुत लम्बी रूई की बत्ती जिससे मशीनो पर सूत काता जाता है।

पूनो†—स्त्री० [सं० पूर्णिमा] किसी महीने के शुक्ल पक्ष का अन्तिम दिन। पूर्णिमा।

पून्यो—स्त्री०=पूनो (पूर्णिमा)।

पूप—पु० [सं०√पू (पवित्र करना)+पक्] एक तरह की मीठी पूरी। वि० दे० 'पूआ'।

पूपला—स्त्री० [सं० पूप√ला (लेना)+क+टाप्] पूआ नामक पकवान।

पूपली—स्त्री० [सं० पूपल+ङीष्] छोटा पूआ।

पूपशाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ पूप आदि पकवान बनते या बनने पर रखे जाते हैं।

पूपाली—स्त्री० [सं० पूप√अल् (पर्याप्त होना)+अच्+ङीष] पूआ।

पूपाष्टका—स्त्री० [सं० पूप-अष्टका, मध्य० स०] पूस के कृष्णपक्ष की अष्टमी, इस दिन मालपूओ से श्राद्ध करने का विधान है।

पूपिक—पु० [सं० पूप+ठन्—इक] पूआ।

पूय—पु० [सं०√पूय (दुर्गंध करना)+अच्] फोड़े में से निकलनेवाला सफेद गाढ़ा तरल पदार्थ। पीप।

पूय-कुंड—पु० [ष० त०] १. पुराणानुसार एक नरक का नाम। २ दे० 'पूति-कुंड'।

पूय-दंत—पु० [ब० स०] दाँतो का एक विकट रोग जिस में मसूड़ों में से मवाद निकलता है। (पायरिया)

पूयन—पु० [सं०√पूय्+ल्युट्—अन] १ पूय। मवाद। २ प्राणी या वनस्पति के अंग का इस प्रकार गलना या सड़ना कि उसमें से दुर्गन्ध आने लगे। सड़न। (प्युट्रिफिकेशन)

पूय-प्रमेह—पु० [सं० ब० स०] वैद्यक मे एक प्रकार का प्रमेह जिसमें मूत्र पीप की तरह गाढ़ा और दुर्गन्धमय होता है।

पूयभुक् (ज्)—वि० [सं० पूय√भुज् (खाना)+क्विप्] सड़ा मुर्दा खानेवाला।

पूय-मेह—पु० [ब० स०] पूय-प्रमेह।

पूय-रक्त—पु० [ब० स०] १. रक्तपित्त की अधिकता अथवा सिर पर चोट लगने के कारण नाक मे से पीप मिला हुआ लहू निकलने का एक रोग। २ नाक मे से निकलनेवाला पीब मिला हुआ रक्त।

पूयवह—पु० [सं० पूय√वह् (बहना)+अण्] एक नरक।

पूय-शोणित—पु० पूय-रक्त। (दे०)

पूय स्राव—पु० [ब० स०] सुश्रुत के अनुसार आँखो का एक रोग जिसमें उसका संधिस्थान पक जाता है और उसमे से पीब बहने लगता है।

पूयारि—पु० [पूय-अरि, ष० त०] नीम।

पूयालस—पु० [पूय-अलस, ब० स०] आँखो का एक रोग जिसमे उसकी पुतली के संधिस्थल में से पीब निकलने लगता है।

पूयोद—पु० [पूय-उदक, ब० स०, उदादेश] एक नरक का नाम।

पूर—पु० [हिं० पूरना=भरना] १. कोई काम पूरा करने की क्रिया या भाव।

मुहा०—पूर देना=किसी बात का अन्त या समाप्ति करना। उदा०—दुइ सुत मारेउ पुर दहेउ अजहुँ पूर पिय देहु।—तुलसी। २. वे मसाले या दूसरे पदार्थ जो किसी पकवान के अन्दर भरे जाते है। जैसे—समोसे का पूर। ३. नदियों आदि में आनेवाली बाढ़।

†वि०=पूर्ण।

पु० [सं०√पूर् (प्रसन्न करना)+क] १ दाह अगर। दाहागुरु। २. बाढ़। ३. घाव का पूरा होना या भरना। ४ प्राणायाम में पूरक क्रिया। वि० दे० 'पूरक'।

पूरक—वि० [सं०√पूर्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. पूर्ति करनेवाला। कमी, त्रुटि आदि पर दूर करनेवाला। २ (अंश या मात्रा) जिसके योग से किसी दूसरे तत्त्व या बात मे पूर्णता आती हो या किसी प्रकार की पूर्ति होती हो। सपूरक। (कॉम्प्लिमेन्टरी) ३. किसी के सामने आकर उसकी बराबरी या सामना कर सकनेवाला। उदा०—पूरक है तेरा यहाँ एक युधिष्ठिर ही।—मैथिलीशरण। दे० 'सपूरक'।

पु० १. प्राणायाम विधि के तीन भागो मे से पहला भाग जिसमे श्वास को नाक से खींचते हुए अन्दर की ओर ले जाते हैं। २. वे दस पिंड जो हिंदुओ मे से किसी के मरने पर उसके मरने की तिथि से दसवे दिन तक नित्य दिये जाते हैं। कहते हैं कि जब शरीर जल जाता है तब इन्हीं पिंडो से मृत व्यक्ति का पारलौकिक शरीर फिर से बनता है। ३. गणित मे वह अंक जिसके द्वारा गुणा किया जाता है। गुणक अंक। ४ बिजौरा नीबू। ५. दे० 'समायोजक'।

पूरण—पु० [सं०√पूर्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० पूरणीय] १. पूरा करने की क्रिया। २ अवकाश, रिक्त स्थान आदि में किसी को बैठना या रखना। पूर्ति करना। ३. कान आदि मे तेल डालने की क्रिया। ४ अंको का गुणा करना। ५ मृतक के दसवे दिन दिया जानेवाला पिंड जो मृतक के पर-लोक-गत शरीर को पूरा करनेवाला माना जाता है। ६. वर्षा। वृष्टि। ७ केवटी मोथा। ८. पुल। सेतु। ९. समुद्र। १० गदह-पूरना। पुनर्नवा। ११ वैद्यक मे वात के प्रकोप से होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा या व्रण।

वि० [सं०√पूर्+णिच्+ल्यु—अन] पूरा करनेवाला। पूरक।

पूरणी—स्त्री० [सं० पूरण+ङीप्] सेमर। शाल्मली वृक्ष।

पूरणीय—वि० [सं०√पूर्+अनीयर्] १ जो पूर्ण किये जाने के योग्य हो। २ भरे जाने के योग्य।

पूरन†—वि० [सं० पूर्ण] पूर्ण। पूरा।

पु० कचौरी, समोसे आदि पकवानो के बीच में भरा जानेवाला मसाला या और कोई वस्तु। पूर।

पु० [हिं० पूर] १ जलाशय, नदी आदि की बाढ़। २ नदी की धारा या प्रवाह।

पूरन-काम†—वि०=पूर्ण-काम।

वि० [सं० पूर्णकाम] जिसकी इच्छाएँ पूर्ण हो चुकी हो।

पूरन-परब—पु० [सं० पूर्णपर्व] पूर्णमासी।

पूरन-पूरी—स्त्री० [सं० पूर्ण+हिं० पूरी] एक प्रकार की मीठी कचौरी या पूरी जिसके अन्दर पूर भरा रहता है।

पूरनमासी†—स्त्री०=पूर्णिमा।

पूरना—स० [सं० पूरण] १ कमी या त्रुटि दूर करना या पूरी करना। पूर्ति करना। २. किसी के अन्दर कोई चीज अच्छी तरह से भरना। उदा०—सतगुरु साँचा सूरमा नखसिख मारे पूर।—कबीर। ३ आच्छादित करना। ढाँकना। ४. (अभिलाषा या मनोरथ) पूर्ण और सफल करना। ५ आवश्यक और उपयुक्त स्थान पर रखना या

लगाना। उदा०—हरि रहीम ऐसी करी ज्यों कमान सर पूर।—रहीम। ६. सूत आदि की कोई चीज बटकर तैयार करना। जैसे—पूनी पूरना, सेवई पूरना। ७ कपड़ा बुनने से पहले ताने के सूत फैलाना। ८ मगल अवसरो पर आटे, अबीर आदि से देवताओं के पूजन आदि के लिए तिकोने, चौखूंटे आदि क्षेत्र बनाना। चौक बनाना। जैसे—चौक पूरना। ९ शख बनाने के लिए मुंह से फूंककर उसमे हवा भरना और फलत उसे बजाना। जैसे—शख पूरना।

†अ० १ पूरा होना। २ किसी चीज से भरा जाना या व्याप्त होना। ३ पूरा या समाप्त होना।

पूरनिमा*—स्त्री०=पूर्णिमा।

पूरब—पु० [स० पूर्व] १ वह दिशा जिसमे सूर्य का उदय होता है। पूर्व। प्राची। २ उक्त दिशा मे स्थित कोई क्षेत्र या प्रदेश। जैसे—पूरब मे रहनेवाला व्यक्ति।

वि०=पूर्व।

क्रि० वि०=पूर्व।

पूरबल—पु० [स० पूर्व+वेला] १ पुराना जमाना। २ इस जन्म से पहलेवाला जन्म। पूर्व जन्म।

पूरबला—वि० [स० पूर्व, हिं०+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० पूरबली] १ पुराने जमाने से सबधित। २ पूर्व जन्म-सम्बन्धी।

पूरबली*—स्त्री० [हिं० पूरबला] पूर्व जन्म का कर्म।

पूरबिया—पु० [हिं० पूरब] पूरब अर्थात् पूर्वी भू-भाग या पूर्वी प्रान्त मे रहनेवाला व्यक्ति।

वि०=पूरबी।

पूरबी—वि० [हिं० पूरब+ई (प्रत्य०)] १ पूरब का। पूरब-सबधी। २ पूर्व दिशा से आनेवाला। जैसे—पूरबी हवा। ३ जिसमे पूर्व देश के लक्षण, विशेषताएँ आदि हो। जैसे—पूरबी दादरा, पूरबी हिंदी, पूरबी पहनावा।

पु० १ एक प्रकार का दादरा जो बिहारी भाषा मे होता और बिहार प्रान्त मे गाया जाता है। २ एक प्रकार का तमाकू।

स्त्री०=पूर्वी (रागिनी)।

पूरयितव्य—वि० [स०√पूर+णिच्+तव्यत्] जिसे पूरा या पूर्ण करना आवश्यक या उचित हो। पूरणीय।

पूरयिता (तृ)—पु० [स०√पूर्+णिच्+तृच्] १ पूर्णकर्ता। पूरक। पूर्ण करनेवाला। २ विष्णु का एक नाम।

पूरा—वि० [स० पूर्ण] [स्त्री० पूरी] १ जिसके अन्दरवाले अवकाश मे कुछ भी स्थान खाली न बचा हो। जिसका भीतरी भाग अच्छी तरह भर चुका हो। भरा हुआ। परिपूर्ण। जैसे—पूरा भरा हुआ कमरा या घड़ा। २ जितना आवश्यक, उचित या सभव हो, उतना। भरपूर। यथेच्छ। यथेष्ट। जैसे—यहाँ सब चीजें पूरी हैं, किसी चीज की कमी नही होगी।

मुहा०—पूरा पड़ना=जितनी आवश्यकता हो, उतना होना। यथेष्ट होना। जैसे—तुम्हारा तो सौ रुपये मे भी पूरा नही पड़ेगा।

३ समग्र। समूचा। सारा। कुल। जैसे—(क) उन्होंने पूरा जगल ठेके पर ले लिया है। (ख) यह पूरा मकान किराये पर दिया जायगा। ४ जो आकार, घनता, विस्तार आदि के विचार से अच्छी तरह विस्तृत या व्याप्त हो चुका हो। जैसे—पूरा जवान, पूरा जोर, पूरी तेजी। ५ जिसमे कोई कमी या कोर-कसर न हो या न रह गई हो। पक्का। जैसे—(क) अब वह अपने काम मे पूरा होशियार हो गया है। (ख) अब तो वह हमारा पूरा दुश्मन हो गया है।

पद—किसी काम या बात का पूरा=अच्छी तरह से निर्वाह या पालन कर सकने के योग्य या कर सकनेवाला। जैसे—(क) बात या वचन का पूरा। (ख) गुण या विद्या का पूरा।

६ (काम) जो क्रिया रूप मे लाकर अन्त या समाप्ति तक पहुँचा दिया गया हो। पूर्ण रूप से कृत, सपन्न या सपादित। जैसे—(क) साल भर मे यह पुस्तक पूरी हुई है। (ख) जब तक काम पूरा न हो जायगा, तब तक वह दम (या साँस) न लेगा।

मुहा०—(कोई काम) पूरा उतरना=ठीक तरह से सपन्न या सपादित होना। जैसे—रहने दो, तुमसे यह काम पूरा नही उतरेगा।

७. (बात) जो कार्यत या व्यावहारिक रूप मे ठीक सिद्ध हो। जैसे—तुम्हारा कहना पूरा होकर ही रहेगा।

मुहा०—(कथन) पूरा करना=ठीक या सत्य सिद्ध होना। जैसे—तुम्हारी भविष्यवाणी पूरी उतरी। **पूरा पाना**=अपने उद्देश्य या प्रयत्न की सिद्धि मे सफल होना। उदा०—नाच्यौ नाचलच्छ चौरासी कबहुँन पूरौ पायौ।—सूर।

८ (समय) व्यतीत करना। बिताना। जैसे—(क) हम भी यहाँ अपने दिन पूरे कर रहे है, अर्थात् किसी प्रकार समय बिता रहे हैं। (ख) पाडवो ने अज्ञातवास की अवधि भी पूरी कर ली।

मुहा०—(किसी के) दिन पूरे होना=अवधि, आयु आदि का अन्त या समाप्ति तक पहुँचना। **(गर्भवती के) दिन पूरे होना**=गर्भ-धारण का समय समाप्ति पर होना और प्रसव का समय समीप आना।

८ (कामना या इच्छा) मनोरंजनक रूप मे सफल या सिद्ध होना। जैसे—अब हमारी सभी वासनाएँ पूरी हो चुकी हैं, हमे कुछ नही चाहिए। १० अवस्था या वय मे यथेष्ट मान तक पहुँचा हुआ। वयस्क। जैसे—कच्चा तो कचौरी माँगे, पूरी माँगे पूरा।—(कहा०)

क्रि० वि० पूर्ण रूप से। पूरी तरह से। जैसे—यह घड़ा पूरा भर दो।

पूराम्ल—पु० [स० पूर-अम्ल, ब० स०] १ इमली। २ अम्लबेत।

पूरिका—स्त्री० [स० पूरक+टाप्, इत्व] आटे आदि की बनी हुई पूरी।

पूरित—भू० कृ० [स०√पूर्+णिच्+क्त] १ पूर्ण किया या भरा हुआ। परिपूर्ण। लबालब। २ तृप्त। ३ गुणित। गुणा किया हुआ।

पूरिया—पु० [देश०] सध्या के समय गाया जानेवाला पाडव जाति का एक राग। इसमे पचम स्वर वर्जित है।

पूरिया कल्याण—पु० [हिं० पूरिया+कल्याण (राग)] रात के पहले पहर मे गाया जानेवाला सपूर्ण जाति का एक सकर राग।

पूरी—स्त्री० [स० पूलिका] १. एक प्रकार का प्रसिद्ध पकवान जिसे साधारण रोटी आदि की तरह बेलकर खौलते घी या तेल मे छानकर पकाते है। २ ढोल, तबले, मृदग आदि मे वह गोलाकार चमड़ा जो उनके मुँह पर मढा रहता है और जिस पर आघात होने से वे बजते हैं।

क्रि० प्र०—चढाना।—मढना।

वि० हिं० 'पूरा' का स्त्री०। (मुहा० के लिए दे० 'पूरा')

वि० [स० पूरिन्] पूरा करनेवाला। पूरक।

स्त्री० घास आदि का छोटा पूला।

पूरु—पु० [सं०√पृ (पूर्ति)+कु] १ मनुष्य। २. राजा ययाति के पुत्र का नाम। ३ वैराज मनु के एक पुत्र। ४. जह्नु के एक पुत्र। ५ एक राक्षस।

पूरुख—पु०=पूरुष (पुरुष)।

पूरुजित—पुं० [सं० पूरु√जि (जीतना)+क्विप्] विष्णु।

पूरुब—पु०=पूरब।

पूरुष—पु० [सं०√पूर्+उषन्] १ पुरुष। २ आत्मा।

पूर्ण—वि० [सं०√पूर्+क्त, त—न] १ (आधान या पात्र) जो पूरी तरह से भरा हुआ हो। जिसमें काम का कोई अवकाश या स्थान खाली न रह गया हो। जैसे—जल से पूर्ण घट। २ लाक्षणिक रूप मे, किसी तत्त्व या बात से भरा हुआ। पूरी तरह से युक्त। जैसे—शोक-पूर्ण समाचार, हर्ष-पूर्ण समारोह। ३ सब प्रकार की यथेष्टता के कारण जिसमे कुछ भी अपेक्षा, अभाव या आवश्यकता न रह गई हो। जितना आवश्यक या उचित हो, उतना सब। जैसे—धन-धान्य से पूर्ण गृहस्थी या परिवार। ४ (आवश्यक । या इच्छा) जिसके पूरे होने मे कोई कसर या सन्देह न रह गया हो। हर प्रकार से तृप्त और सतुष्ट। जैसे—आपने मेरी सभी कामनाएँ पूर्ण कर दीं। ५ सब का सब। पूरा। समूचा। सारा। समस्त। सपूर्ण। जैसे—पूर्ण योजना सफल हो गई। ६ जिसमे किसी आवश्यक अग या सयोजक तत्त्व का ठीक अभाव न हो। हर तरह से ठीक और पूरा। जैसे—पूर्ण उपमा अलकार। ८ (उद्देश्य या प्रयत्न) सफल। सिद्ध। जैसे—आज आपका संकल्प पूर्ण हुआ। ९. जो अपनी अवधि या सीमा के सिरे पर पहुँच गया हो। जैसे—आयु पूर्ण होना, दड की अवधि पूर्ण होना।

पु० १ प्रचुरता। बाहुल्य। २. जल। पानी। ३ विष्णु का एक नाम। ४ बौद्ध कथाओं के अनुसार मैत्रायणी का एक पुत्र।

पूर्ण-अतीत—पु० [कर्म० स०] १ सगीत मे ताल का वह स्थान जो 'सम अतीत' के एक मात्रा बाद आता है। यह स्थान भी कभी कभी सम का काम देता है।

पूर्णक—पु० [सं० पूर्ण+कन्] १ मुर्गा। कुक्कुट। २ देवताओ की एक योनि। ३. दे० 'पूर्ण'।

पूर्ण-कलानिधि—पु० [कर्म० स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

पूर्ण-काम—वि० [ब० स०] १ जिसकी कामनाएँ पूर्ण या पूरी हो चुकी हो। २ कामना-रहित। निष्काम।

पु० परमेश्वर।

पूर्ण-काश्यप—पु० [कर्म० स०] उन छ तीर्थिको में से एक जिन्हे भगवान् बुद्ध ने शास्त्रार्थ में पराजित किया था। कहते हैं कि इसी दुख में ये अपने गले में बालू भरा घड़ा बाँधकर डूब मरे थे।

पूर्णकुंभ—पु० [कर्म० स०] १ जल से भरा हुआ घड़ा जो मागलिक और शुभ माना जाता है। पूर्ण घट। २. घड़े के आकार का दीवार मे बनाया जानेवाला छेद। ३. एक तरह का युद्ध।

पूर्णकोशा—स्त्री० [सं० ब० स०,+टाप्] एक प्रकार की लता जो ओषधि के काम आती है।

पूर्णकोषा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] १. कचौरी। २ प्राचीन काल मे जौ के आटे से बननेवाला एक प्रकार का पकवान। ३ दे० 'पूर्ण-कोशा'।

पूर्णकोष्ठा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] नागरमोथा।

पूर्णगर्भा—स्त्री० [ब० स०,+टाप्] १ वह स्त्री जिसे शीघ्र प्रसव होने की संभावना हो। वह स्त्री जिसके गर्भ के दिन पूरे हो चले हों। २ कचौरी, जिसमे पीठी आदि भरी रहती है। ३ पूरन-पूरी नाम का पकवान।

पूर्णघट—पु०=पूर्ण-कुभ।

पूर्णचंद्र—पु० [कर्म० स०] पूर्णिमा का चन्द्रमा जो अपनी सब कलाओ से पूर्ण या युक्त रहता है।

पूर्ण-चंद्रिका—पु० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

पूर्णतः—अव्य० [सं० पूर्ण+तस्] पूरी तरह से। पूर्णतया।

पूर्णतया—अव्य० [स० पूर्णता की तृ० विभक्ति का रूप] पूरी तरह से। पूर्ण रूप से।

पूर्णता—स्त्री० [स० पूर्ण+तल्+टाप्] १ पूर्ण होने की अवस्था या भाव। २ ऐसी स्थिति जिसमे किसी प्रकार का अभाव, कमी या त्रुटि न हो। (परफेक्शन)

पूर्ण-परिवर्तक—पु० [कर्म० स०] वह जीव जो अपने जीवन मे अनेक बार रूप आदि बदलता हो। जैसे—कीड़े-मकोड़े, तितली, मेढक आदि।

पूर्णपर्वेंदु—पु० [पूर्ण-पर्व-इंदु, ब० स०] पूर्णिमा। पूर्णमासी।

पूर्णपात्र—पु० [कर्म० स०] १ वह घड़ा जो प्राचीन काल में चावलो से भरकर होम या यज्ञ के अन्त मे दक्षिणा के रूप मे पुरोहित को दिया जाता था। इसमे साधारणत २५६ मुट्ठी चावल हुआ करता था। २. उक्त के आधार पर २५६ मुट्ठियों की एक नाप। ३ पुत्र-जन्म आदि शुभ अवसरो पर शुभ सवाद सुनानेवाले लोगो को बाँटे जानेवाले कपड़े और गहने।

पूर्णप्रज्ञ—वि० [ब० स०] १ जिसकी बुद्धि मे कोई कमी या त्रुटि न हो। २. बहुत बड़ा बुद्धिमान्। ३ पूर्ण ज्ञानी।

पु० पूर्ण प्रज्ञदर्शन के कर्ता मध्वाचार्य जो वैष्णव मत के सस्थापक आचार्यों मे माने जाते हैं। हनुमान और भीम के बाद ये वायु के तीसरे अवतार कहे गये हैं। इनका एक नाम आनन्दतीर्थ भी है।

पूर्णप्रज्ञदर्शन—पु० [प० त०] सर्वदर्शन सग्रह के अनुसार, एक दर्शन जिसके प्रवर्तक पूर्णप्रज्ञ या मध्वाचार्य हैं। इसके अधिकतर सिद्धान्त रामानुज दर्शन के सिद्धान्तो से मिलते है।

पूर्णबीज—पु० [ब० स०] बिजौरा नीबू।

पूर्णभद्र—पु० [कर्म० स०] १. स्कंद पुराण के अनुसार हरिकेश नामक यक्ष के पिता। २ एक नाग का नाम।

पूर्णभेदी (दिन्)—पु० [स० पूर्ण√भिद् (विदारण)+णिनि] एक प्रकार का पौधा।

पूर्णमा—स्त्री० [स० पूर्ण√मा (मापना)+क+टाप्] पूर्णिमा। पूर्णमासी।

पूर्णमानस—वि० [ब० स०] जो मन से भली भाँति सतुष्ट हो।

पूर्णमास—स्त्री० [ब० स०] १. चन्द्रमा। २ [पूर्णमासी+अच्] प्राचीन काल में पूर्णिमा को किया जानेवाला एक तरह का यज्ञ।

पूर्णमासी—स्त्री० [सं० पूर्णमास+ङीष्] शुक्लपक्ष की अंतिम तिथि जिसमें चन्द्रमा अपनी सोलहों कलाओं से युक्त होता है। पूर्णिमा। पूनो।

पूर्ण मैत्रायणी पुत्र—पु० [सं० मैत्रायणी-पुत्र, ष० त०, पूर्ण-मैत्रायणी पुत्र, कर्म० स० ?] बुद्ध भगवान के अनुचरो मे से एक जो पश्चिम भारत के सुरपाक नामक स्थान में रहते थे।

पूर्णयोग—पु० [ब० स०] प्राचीन भारत में एक प्रकार का बाहुयुद्ध। भीम और जरासंध में यही बाहु-युद्ध हुआ था।

पूर्णरथ—पु० [ब० स०] बहुत कुशल और पक्का योद्धा।

पूर्णलक्ष्मीक—वि० [ब० स०, + कप्] लक्ष्मी या धन से भली भाँति सम्पन्न।

पूर्णवर्मा (र्मन्)—पु० [स०] महाराज अशोक के वंश के अंतिम मगध सम्राट्। गौडराज शशांक द्वारा बोधिगया के बोधिवृक्ष के नष्ट किए जाने पर इन्होंने उसे फिर से जीवित कराया था।

पूर्णवर्ष—वि० [ब० स०] बीस वर्ष की अवस्थावाला नौजवान।

पूर्णविराम—पु० [कर्म० स०] लिखाई, छपाई आदि मे एक प्रकार का चिह्न जो वाक्य के अन्त मे उसकी पूर्णता या समाप्ति जतलाने के लिए खडी पाई के रूप में लगाया जाता है। (फुल-स्टॉफ)

पूर्णविषम—पु० [कर्म० स०] संगीत मे ताल का एक स्थान जो कभी कभी सम का काम देता है।

पूर्णवैनाशिक—पु० [कर्म० स०] वह बौद्ध जिसकी आस्था सर्वशून्य तत्त्ववाद मे हो।

पूर्णशैल—पु० [कर्म० स०] योगिनी तंत्र के अनुसार उल्लिखित एक पर्वत का नाम।

पूर्ण-श्री—वि० [ब० स०] प्रतिष्ठित, सम्पन्न तथा सुखी (व्यक्ति)।

पूर्णहोम—पु० [कर्म० स०] पूर्णाहुति। (वै०)

पूर्णांक—पु० [पूर्ण-अंक, कर्म० स०] १ पूरी संख्या। २ गणित मे अविभक्त संख्या। ३ किसी प्रश्न-पत्र के लिए निर्धारित अंक। (फुल मार्क्स)

पूर्णांजलि—वि० [पूर्ण-अंजलि, ब० स०] जितना अँजुली, मे आ सके, उतना। अंजुलि भर।

पूर्णा—स्त्री० [स० पूर्ण+टाप्] १ चंद्रमा की पंद्रहवी कला। २. पंचमी, दशमी, अमावस और पूर्णमासी की तिथियाँ। ३. दक्षिण भारत की एक नदी।

पूर्णाघात—पु० [पूर्ण-आघात, कर्म० स०] संगीत मे, ताल का वह स्थान जो अनाघात के उपरांत एक मात्रा के बाद आता है। कभी-कभी वह स्थान भी सम का काम देता है।

पूर्णानंद—पु० [पूर्ण-आनंद, ब० स०] परमेश्वर।

पूर्णाभिलाष—वि० [पूर्ण-अभिलाष, ब० स०] १. जिसकी अभिलाषा पूरी हो चुकी है। २. तृप्त। संतुष्ट।

पूर्णाभिषिक्त—भू० कृ० [पूर्ण-अभिषिक्त, कर्म० स०] जिसका पूर्णाभिषेक संस्कार हो चुका हो।

पु० तांत्रिको और शाक्तों का एक भेद या वर्ग।

पूर्णाभिषेक—पु० [पूर्ण-अभिषेक, कर्म० स०] वाममार्गियो का एक तांत्रिक संस्कार जो किसी नये साधक के गुरु द्वारा दीक्षित होने के समय किया जाता है। अभिषेक। महाभिषेक।

पूर्णामृता—स्त्री० [पूर्ण-अमृता, कर्म० स०] चन्द्रमा की सोलहवी कला।

पूर्णायु (स्)—वि० [पूर्ण-आयुस्, ब० स०] जिसने पूरी अर्थात् सौ वर्षों की आयु पाई हो।

स्त्री० [पूर्ण-अवतार, कर्म० स०] १ पूरी आयु। सारा जीवन। २ सौ वर्षों की आयु।

पूर्णावतार—पु० [पूर्ण-अवतार, कर्म० स०] अंशावतार से भिन्न ऐसा अवतार जो किसी देवता की संपूर्ण कलाओं से युक्त हो। सोलहों कलाओ से युक्त अवतार।

पूर्णाशा—स्त्री० [पूर्ण-आशा, ब० स०, टाप्] महाभारत मे उल्लिखित एक नदी।

पूर्णाहुति—स्त्री० [पूर्ण-आहुति, कर्म० स०] १ यज्ञ की समाप्ति पर दी जानेवाली आहुति। २. लाक्षणिक अर्थ मे किसी कार्य की समाप्ति के समय होनेवाला अन्तिम कृत्य।

पूर्णि—स्त्री० [स०√पृ+णिच्] पूर्णिमा।

पूर्णिका—स्त्री० [स० पूर्णि+कन्+टाप्] एक प्रकार की चिडिया जिसकी चोंच का दोहरा होना माना जाता है। नासाच्छिनी पक्षी।

पूर्णिमांत—पु० [स०] गौण चान्द्रमास का दूसरा नाम।

पूर्णिमा—स्त्री० [सं० पूर्णि√मा (मापना)+क टाप्] चान्द्र मास के शुक्ल पक्ष की अन्तिम तिथि जिसमे चन्द्रमा अपने पूरे मंडल मे उदय होता है। पूर्णमासी।

पूर्णमासी—स्त्री० =पूर्णिमा।

पूर्णेंदु—पु० [पूर्ण-इन्दु, कर्म० स०] पूर्णिमा का चन्द्रमा जो अपनी सोलहों कलाओ से युक्त होता है। पूर्णचन्द्र।

पूर्णोत्कट—पु० [पूर्ण-उत्कट, कर्म० स०] मार्कंडेय पुराण मे उल्लिखित एक पूर्व देशीय पर्वत।

पूर्णोदरा—स्त्री० [पूर्ण-उदर, ब० स०, टाप्] एक देवी।

पूर्णोपमा—पु० [पूर्ण-उपमा, कर्म० स०] उपमा अलंकार के दो मुख्य भेदो मे से पहला जिसमे उपमेय, उपमान, वाचक और धर्म चारों अंग प्रकट रूप से वर्तमान रहते हैं। यथा—सुभग सुधाधर तुल्य मुख, मधुर सुधा से बैन—पद्माकर।

विशेष—इसके आर्थी और श्रौती दो भेद होते है।

पूर्त—वि० [स०√पृ (पालन करना)+क्त] १ पूरी तरह से भरा हुआ। २ छाया या ढका हुआ। आवृत। ३ पालित। ४ रक्षित।

पु० १ पूर्णता। २ देवगृह, वापी आदि का बनवाना जो धार्मिक दृष्टि से उत्तम कर्म माना गया है।

पूर्त-विभाग—पु० [ष० त०] आज-कल वह राजकीय विभाग जो सडकें, पुल, नहरें आदि लोकोपयोगी वास्तु-रचनाओं का निर्माण कराता है।

पूर्त-संस्था—स्त्री० [ष० त०] धर्मार्थ कार्यों के लिए स्थापित की हुई संस्था। (चैरिटेबिल इंस्टीट्यूशन)

पूर्ति—स्त्री० [स० पृ+क्तिन्] १. पूरे या पूर्ण होने की क्रिया या भाव। पूर्णता। २ जो वस्तु अपेक्षित, आवश्यक या कम हो, उसे लाकर प्रस्तुत करने की क्रिया। कमी पूरी करने का काम। जैसे—अभाव की पूर्ति, समस्या की पूर्ति। ३ अर्थशास्त्र मे, वे वस्तुएँ जो किसी विशिष्ट मूल्य पर बिकने के लिए बाजार में आई हों। (सप्लाई) ४.

वापी, कूप या तड़ाग आदि का उत्सर्ग। ५. किसी बही, आकार-पत्र आदि के कोष्ठकों में आवश्यकतानुसार कुछ लिखने या खाने भरने का काम। ६ गुणा करने की क्रिया या भाव। गुणन।

पूर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० पूर्त+इनि] १ तृप्ति देनेवाला। २ इच्छा पूर्ण करनेवाला। ३ भरा हुआ। पूरित।

पु० श्राद्ध।

पूर्ब—पु० दे० 'पूर्व'।

वि० दे० 'पूर्व'।

पूर्य—वि० [सं०√पृ+क्यप् वा√पूर्+ण्यत्] १ जिसे पूरा करना आवश्यक या उचित हो। पूरणीय। २ जो पूरा किया जाने को हो। ३. (आज्ञा) जिसका पालन करना आवश्यक और उचित हो।

पु० एक प्रकार का तृण-धान्य।

पूर्व—वि० [सं०√पूर्व्+अच्] १. जो सबसे आगे, सामने या पहले हो। २ जो किसी से पहले अस्तित्व में आया या बना हो। ३. अत्यधिक पुराना। प्राचीन। ४ किसी कृति के पहलेवाले अंश से संबद्ध। 'उत्तर' का विपर्याय।

क्रि० वि० पहले। आगे।

पु० [सं०√पूर्व् (निवास)+अच्] १ वह दिशा जिसमें से प्रातःकाल सूर्य निकलता हुआ दिखाई देता है। पश्चिम के सामने की दिशा। पूरब। २ जैनों के अनुसार सात नील, पाँच खरब, साठ अरब वर्ष का एक काल-विभाग।

पूर्वक—अव्य० [सं०] समस्त पदों के अन्त में (क) सहित या साथ। (ख) (कोई काम) अच्छी तरह से करते हुए। जैसे—ध्यानपूर्वक, विचारपूर्वक।

पूर्वकर्म (न्)—पु० [कर्म० स०] सुश्रुत के अनुसार रोगी के सम्बन्ध में किये जानेवाले तीन कर्मों में से पहला कर्म। रोगोत्पत्ति के पहले किये जानेवाले काम।

पूर्वकल्प—पु० [कर्म० स०] प्राचीन काल।

पूर्वकल्याण—पु० [सं०] संगीत में एक प्रकार का राग।

पूर्व-कल्याणी—स्त्री० [कर्म० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

पूर्वकाय—पु० [एकदेशित०] शरीर का पूर्व या ऊपरी भाग। नाभि से ऊपर का भाग।

पूर्वकाल—पुं० [कर्म० स०] १ बीता हुआ समय। २. पुराना जमाना।

पूर्वकालिक—वि० [सं० पूर्व-काल, कर्म० स०,+ठन्—इक] १. जिसकी उत्पत्ति या जन्म पूर्वकाल में हुआ हो। पूर्वकाल-जात। २ पूर्व समय या पुराने जमाने से संबद्ध। ३. जिसका अवस्थान या स्थिति पूर्वकाल में रही हो। पुराने जमाने का।

पूर्वकालिक क्रिया—स्त्री० [सं०] व्याकरण में धातु से बना हुआ वह कृदंत जो क्रिया विशेषण की तरह युक्त होता है तथा जिससे सूचित होता है कि अमुक कार्य होने के बाद ही मुख्य क्रिया द्वारा निर्दिष्ट कार्य हुआ या होगा। यह रूप धातु में 'कर' लगाने से बनता है।

विशेष—यह घटना-क्रम के विचार से होनेवाले क्रिया के दो भेदों में से एक है। दूसरा भेद समापक या समापिका क्रिया कहलाता है।

पूर्वकालीन—वि० [सं० पूर्वकाल+ख—ईन] पुराने जमाने का। प्राचीन। पुराना।

पूर्वकृत्—पु० [सं० पूर्व√कृ (करना)+क्विप्] पूर्व दिशा के कर्ता सूर्य।

भू० कृ० पहले किया हुआ।

पूर्व गंगा—स्त्री० [सं० कर्म० स०] नर्मदा नदी।

पूर्वग—वि० [सं० पूर्व√गम् (जाना)+ड] आगे या पहले चलनेवाला। पूर्वगामी।

पूर्वगत—वि० [सुप्सुपा स०] १ जो पहले चला गया हो या जा चुका हो। २ बीता हुआ।

पूर्वगामी (मिन्)—वि० [सं० पूर्व√गम् (जाना)+णिनि] आगे या पहले चल या निकल जानेवाला। जो पहले चला गया हो।

पूर्वग्रस्त—भू० कृ० [सं०] १ (बात या विषय) जिसके संबंध में मन में कोई पूर्व-ग्रह हो। २ (व्यक्ति) जिसके मन में किसी बात या विषय के संबंध में कोई पूर्व-ग्रह हो। (प्रेजुडिस्ट)

पूर्वग्रह—पुं० [कर्म० स०] १. चिकित्सा शास्त्र में, वह सिहरन या इसी प्रकार की और कोई अनुभूति जो मिरगी आदि विकट रोगों का दौरा शुरू होने से पहले होती है। २ किसी अनिश्चित अप्रमाणित या विवादास्पद बात या विषय के संबंध से वह आग्रहपूर्वक धारणा जो पहले से बिना जाने या समझे-बूझे अपने मन में स्थिर कर ली गई हो। (प्रेजुडिस)

पूर्वचित्ति—स्त्री० [सं०] एक अप्सरा का नाम।

पूर्वचेतन—पु० [सं०] आधुनिक मनोविज्ञान में वे अचेतन इच्छाएँ या वासनाएँ या प्रतिक्रियाएँ जो पहले से मन में सोई रहती हैं और सहज में चेतन अवस्था में आ सकती या आ जाती हैं। यह अहं का बौद्धिक अंश माना गया है। (प्रीकॉन्शेन्स)

विशेष—अचेतन और पूर्व-चेतन में यह अन्तर किया गया है कि अचेतन तो दमित और गतिशील होता है, पर पूर्व-चेतन का दमित होना आवश्यक नहीं है। यह अचेतन और चेतन के बीच की स्थिति है।

पूर्वज—वि० [सं० पूर्व√जन् (उत्पन्न होना)+ड] जिसकी उत्पत्ति या जन्म पूर्वकाल में अथवा किसी के पूर्व या पहले हुआ हो।

पु० १ बड़ा भाई। अग्रज। २ बाप, दादा, परदादा आदि पूर्व पुरुष। पुरखा। ३. एक प्रकार के दिव्य पितृगण जिनका निवास चन्द्रलोक में माना गया है।

पूर्व-जन—पु० [कर्म० स०] पुराने समय के लोग। पुराकालीन पुरुष।

पूर्व-जन्म (न्)—पु० [कर्म० स०] १ प्रस्तुत या वर्तमान से भिन्न पहलेवाला कोई जन्म। २ इस जन्म से पहलेवाला जन्म। पिछला जन्म।

पूर्व-जन्मा (न्मन्)—पु० [ब० स०] बड़ा भाई। अग्रज।

पूर्वजा—स्त्री० [सं० पूर्वज+टाप्] बड़ी बहन।

पूर्वजाति—स्त्री० [कर्म० स०] पूर्व जन्म। पिछला जन्म।

पूर्वजिन—पुं० [कर्म० स०] १. अतीत जिन या बुद्ध। २ मंजुश्री का एक नाम।

पूर्वज्ञान—पु० [ष० त०] १. पूर्व जन्म की बात का ज्ञान। पूर्व जन्म में अर्जित ज्ञान जो इस जन्म में भी विद्यमान हो। २. पूर्वार्जित या पहले

का ज्ञान। ३ आत्मिक शक्ति की सहायता से ऐसी घटनाओं या बातों का पहले से ही परिज्ञान हो जाना जो अभी घटित न हुई हो, बल्कि भविष्य में कभी घटित होने को हों। (फोर-नॉलेज)

पूर्वतः (तस्)—अव्य०[स० पूर्व+तस्]१ पहले। २ प्रथमतः। ३ सामने।

पूर्वतन—वि० [स० पूर्व+ट्यु—अन, तुट्] १ पहला। २ पुराना।

पूर्वतर—वि० [स० पूर्व+तरप्] [भाव० पूर्वतरता] १ पहला। २. पूर्व का।

पूर्व-तिथि—स्त्री० [कर्म० स०] पत्रों, लेखों आदि पर लिखी जानेवाली वह तिथि जो अभी कुछ दिन बाद आने को हो। आज की तिथि या दिनांक के बाद की कोई तिथि या दिनांक।

पूर्वतिथित—भू० कृ० [स० पूर्वतिथि+णिच्+क्त] (वह) जिस पर पहले से कोई पहले की तारीख या तिथि दे या लिख दी गई हो।

पूर्वत्र—अव्य० [स० पूर्व+त्रल्] १. पहले। २ पहलेवाले भाग या स्थान में।

पूर्व-दक्षिणा—स्त्री० [ब० स०] पूर्व और दक्षिण के बीच का कोना।

पूर्वदत्त—भू० कृ० [कर्म० स०] जो पहले दिया जा चुका हो। पहले का दिया हुआ। (प्री-पेड)

पूर्वदर्शन—पु० [कर्म० स०] आत्मिक शक्ति की सहायता से ऐसी घटनाएँ या बातें पहले से दिखाई देती हुई जान पड़ना जो अभी घटित न हुई हों बल्कि भविष्य में कभी घटित होने को हों। (प्रीकाग्निशन)

पूर्वदान—पु० [स०] पहले या पेशगी देना। पहले ही चुका देना है।

पूर्वदिक्-पति—पु० [ष० त०] इंद्र।

पूर्वदिग्-वदन—पु० [ब० स०]=पूर्व-दिगीश।

पूर्वदिगीश—पु० [पूर्वदिश्-ईश, ष० त०] १ इन्द्र। २ सिंह, मेष और धनु तीनों राशियाँ।

पूर्वदिन—पु० [एकदेशित०] मध्याह्न से पहले का समय।

पूर्वदिश्य—वि० [स० पूर्वदिश्+यत्] पूर्व दिशा का या उससे सम्बन्ध रखनेवाला।

पूर्वदिष्ट—पु० [कर्म० स०,+अच्] वे सुख-दुःख आदि जो पूर्व जन्म में किये हुए कर्मों के परिणामस्वरूप भोगने पड़े।

पूर्वदुष्कृत—पु० [ष० त०] पूर्व जन्म का पाप।

पूर्वदृष्टि—स्त्री० [कर्म० स०] वह दृष्टि या विचार-शक्ति जिसकी सहायता से किसी होनेवाली बात के सब अंग पहले से ही देख या सोच-समझ लिये जाते हैं। (फोर साइट)

पूर्व-देव—पु० [कर्म० स०] १ नर और नारायण। २ असुर जो पहले देव या सुर थे, पर अपने दुष्कर्मों के कारण बाद में सुरों के वर्ग से अलग हो गये थे।

पूर्वदेवता—पु० [कर्म० स०] पितर।

पूर्वदेह—स्त्री० [कर्म० स०] १. पूर्व जन्मवाला शरीर। २ शरीर का अगला भाग।

पूर्वदेहिक, पूर्वदैहिक—वि० [स० पूर्व-देह, कर्म० स०,+ठन्—इक् ?] [स० पूर्वदेह+ठक्—इक ?] पूर्व जन्म में किया हुआ।

पूर्व-निरूपण—पु० [कर्म० स०] १ किसी बात का पहले से किया जानेवाला निरूपण। २. किस्मत। तकदीर। भाग।

पूर्वन्याय—पु० [कर्म० स०] किसी अभियोग में प्रतिवादी का यह कहना कि ऐसे अभियोग में मैं वादी को पराजित कर चुका हूँ। यह उत्तर का एक प्रकार है।

पूर्वपक्ष—पु० [कर्म० स०] १. किसी शास्त्रीय विषय के संबंध में उठाया हुआ ऐसा प्रश्न, बात या शंका जिसका दूसरे पक्ष को उत्तर देना या समाधान करना पड़े। २ व्यवहार या अभियोग में वादी द्वारा उपस्थित किया हुआ अभियोग या बात। मुद्दई का दावा। ३ चांद्रमास का कृष्णपक्ष।

पूर्वपक्षी (क्षिन्)—पु० [स० पूर्वपक्ष+इनि] १. वह जो पूर्वपक्ष उपस्थित करे। २ वह जो न्यायालय में कोई अभियोग या वाद उपस्थित करे। मुद्दई।

पूर्वपक्षीय—वि० [स० पूर्वपक्ष+छ—ईय] पूर्वपक्ष संबंधी। पूर्व-पक्ष का।

पूर्वपद—पु० [कर्म० स०] १. यौगिक या समस्त पद में का पहले का पद। 'उत्तर-पद' का विपर्याय। जैसे—लोकगीत में का 'लोक' पूर्व-पद है। २ किसी सोपाधिक बात का पहला अंश जिस पर दूसरा अंश अवलंबित हो। ३ कोई ऐसी बात जिस पर तार्किक दृष्टि से कोई दूसरी बात अवलंबित हो। ४ काल-क्रम के विचार से पहले घटित होनेवाली ऐसी घटना जिसके फलस्वरूप बाद में और कोई घटना घटित होती है।

पूर्व-पर्वत—पु० [कर्म० स०] उदयाचल।

पूर्वपाली (लिन्)—पु० [स० पूर्व√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+णिनि] इन्द्र।

पूर्वपितामह—पु० [ष० त०] १ पुरखा। पूर्वज। २ प्रपितामह। परदादा।

पूर्वपीठिका—स्त्री० [कर्म० स०] वह अवस्था, रूप या स्थिति जिसके आगे या सामने कोई नई स्थिति या रूप खड़ा हो। भूमिका। (बेक-ग्राउन्ड)

पूर्वपुरुष—पु० [कर्म० स०] दादा-परदादा। पूर्वज। (फोर-फादर्स)

पूर्व-प्रत्यय—पु० [कर्म० स०] वह प्रत्यय जो शब्द के पहले लगाया जाता है।

पूर्व-प्लावनिक—वि० [स०] १ वैवस्वत मनु अथवा हजरत नूह के समय के प्लावन से पहले का। २ बहुत पुराना फलतः बिलकुल निकम्मा। (एन्टी-डिलूविअल)

पूर्व-फल्गुनी—स्त्री० [कर्म० स०] सत्ताईस नक्षत्रों में से ग्यारहवाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे हैं।

पूर्वफल्गुनी भव—पु० [स० पूर्व फल्गुनी√भू (होना)+अच्] बृह-स्पति (ग्रह)।

पूर्वबंधु—पु० [कर्म० स०] पहला या सबसे अच्छा मित्र।

पूर्वबाध—पु० [ष० त०] पहले के निश्चय को स्थगित या रद्द करना।

पूर्वबाहु—स्त्री० [एकदेशित०] कोहनी से आगे का वह भाग जिसमें कलाई और पंजा होता है। (फोर आर्म)

पूर्वभक्षिका—स्त्री० [कर्म० स०] प्रातःकाल किया जानेवाला भोजन। जलपान। नाश्ता।

पूर्वभाद्रपद—पु० [कर्म० स०] सत्ताईस नक्षत्रों में २५वाँ नक्षत्र जिसमें दो तारे हैं।

पूर्वभाव—पु० [कर्म० स०] १ पूर्व सत्ता। २ प्राथमिकता। ३. विचार की अभिव्यक्ति। ४ 'पूर्वराग' (साहित्य)।

पूर्वभावी (विन्)—पु० [स० पूर्व√भू+णिनि] कारण।
वि० पूर्ववर्ती।

पूर्वभाषी (षिन्)—वि० [सं० पूर्व-भाष् (बोलना)+णिनि] १. पहले बोलने का इच्छुक। २ नम्र। विनयी।

पूर्व-मीमांसा—पु० [कर्म० स०] जैमिनि मुनि द्वारा कृत एक प्रसिद्ध भारतीय दर्शन जिसमे कर्मकांड सम्बन्धी बातो का विवेचन है।

पूर्वयक्ष—पु० [कर्म० स०] जैनो के अनुसार एक जिनदेव जो मणिभद्र और जलेंद्र भी कहलाते हैं।

पूर्व-रग—पु० [कर्म० स०] १. अभिनय में वह संगीत या स्तुति आदि जो नाटक आरम होने से पहले विघ्नो की शाति और दर्शको को अनुरक्त करने के लिए होता है। यद्यपि इसके प्रत्याहार आदि अनेक अग है, फिर भी इसमे नान्दी का होना परम आवश्यक है। २. रग-शाला।

पूर्व-राग—पु० [कर्म० स०] साहित्य मे किसी के प्रति मन मे उत्पन्न होनेवाला वह प्रेम जो बिना प्रिय को देखे केवल उसका गुण या नाम सुनने, चित्र आदि देखने से होता है। इसकी ये दस दशाएँ कही गई हैं—अभिलाषा, चिन्ता, स्मृति, गुण-कथन, उद्वेग, सलाप, उन्माद, व्याधि, जडता और मरण।

पूर्व-रूप—पु० [कर्म० स०] १ किसी काम, चीज या बात का पहले-वाला आकार, रूप या रग-ढग। जैसे—इस पुस्तक का पूर्वरूप ऐसा ही था। २ किसी वस्तु का वह रूप जो उस वस्तु के पूर्ण रूप से प्रस्तुत होने से पहले बनता या तैयार होता है। ३ साहित्य मे एक अर्थालकार, जिसमे किसी के विनष्ट, गुण, रूप, वैभव आदि के फिर से वापस या लौट आने का उल्लेख होता है।

पूर्वलेख—पु० दे० 'मलेख'।

पूर्ववत्—अव्य० [स० पूर्व+वति] १ जिस प्रकार पहले हुआ या किया गया हो, उसी प्रकार या उसी के अनुसार। २ पहले की ही तरह। ज्यो का त्यो (अर्थात बिना किसी प्रकार के परिवर्तन के)।
पु० किसी कार्य का वह अनुमान जो उसके कारणो को देखकर उसके होने से पहले ही किया जाता है।

पूर्ववर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० पूर्व√वृत् (बरतना)+णिनि] जो पहले मे वर्तमान हो या रह चुका हो। पूर्व मे या पहले रहने या होनेवाला। जैसे—यहाँ के पूर्ववर्ती अध्यापक बहुत वृद्ध हो गये थे।

पूर्ववाद—पु० [स० कर्म० स०] व्यवहार शास्त्र के अनुसार वह पहला अभियोग जो कोई व्यक्ति न्यायालय आदि मे उपस्थित करे। पहला दावा। नालिश।

पूर्ववादी (दिन्)—पु० [स० पूर्व√वद् (बोलना)+णिनि] वादी। मुद्दई।

पूर्वविचार—पु० [कर्म० स०] किसी होनेवाली बात के सबध मे पहले से किया जानेवाला विचार। (फोर थॉट)

पूर्वविद्—वि० [सं० पूर्व√विद् (जानना)+क्विप्] पुराने समय की बाते जाननेवाला। इतिहास आदि का ज्ञाता।

पूर्व विवेचन—पु० [स०] किसी विषय से सबध रखनेवाली सब बातें पहले से अच्छी तरह सोच-समझ लेने की क्रिया या भाव। (प्राविडेन्स)

पूर्व विहित—वि० [कर्म० स०] १ जिसका पहले से विधान किया जा चुका हो या हो चुका हो। २ पहले का जमा किया हुआ या गाडा हुआ (धन)।

पूर्ववृत्त—पु० [कर्म० स०] पुराने समय की घटनाओ का विवरण। पूर्वकाल की बाते। इतिहास।

पूर्वव्यापित—वि० [स०] (आदेश, नियम या निश्चय) जिसका प्रभाव बीते हुए काल के कार्यों, व्यवस्थाओ पर भी पडता हो। (रिट्रो-स्पेक्टिव)

पूर्व-शैल—पु० [स० कर्म० स०] उदयाचल।

पूर्व-संचित—भू० कृ० [कर्म० स०] पहले से इकट्ठा या सचित किया हुआ।

पूर्व-संध्या—स्त्री० [कर्म० स०] दिन की पहली सन्ध्या, अर्थात् प्रात-काल।

पूर्व-सक्थ—पुं० [एकदेशि त०] जाँघ का ऊपरी भाग।

पूर्व-सभिक—पु० [कर्म० स०] जूए खाने का प्रधान या मालिक।

पूर्वसर—वि० [स० पूर्व√सृ (गति)+ट] आगे चलनेवाला। अग्रगामी।

पूर्व-सागर—पु० [कर्म० स०] पूर्वी समुद्र।

पूर्वसाहस—पु० [कर्म० स०] पहला या सबसे बडा दड।

पूर्वसावित्य—पु० [कर्म० स०] किसी काम मे पहले से सोच-समझकर अपनी रक्षा के विचार से किया जानेवाला सावित्य। (प्रिकाशन)

पूर्वसिंधु—पुं० [कर्म० स० ?] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

पूर्वसूचन—पु० [कर्म० स०] १ सूचना या चेतावनी पहले से देना। २ किसी भावी कार्य या बात के सम्बन्ध मे बचत, रक्षा आदि के विचार से पहले से दी जानेवाली सूचना या चेतावनी।

पूर्वा—स्त्री० [स० पूर्व+टाप्] १ पूर्व दिशा। पूरब। २ दे० 'पूर्वा-फाल्गुनी'। ३ राजाओ आदि के बडे बडे कार्यों का उल्लेख या वर्णन। प्रशस्ति।

पूर्वागम—पु० [पूर्व-आगम, कर्म० स०] भाषा-विज्ञान मे, शब्द के आदि मे रहनेवाले व्यजन के साथ उच्चारण के सुभीते के लिए स्वाभाविक रूप से इ या उ स्वर का लगना। (प्रोथेसिस) जैसे—'स्त्री' का उच्चारण 'इस्त्री' के रूप में करना।

पूर्वाग्नि—स्त्री० [पूर्व-अग्नि, कर्म० स०] आवसस्थ अग्नि।

पूर्वाचल, पूर्वाद्रि—पु० [पूर्व-अचल, पूर्व-अद्रि कर्म० स०] उदयाचल।

पूर्वादेश—पु० [पूर्व-आदेश, कर्म० स०] किसी बात के सम्बन्ध मे पहले से दिया हुआ आदेश या बतलाई हुई कार्य-प्रणाली। (प्रीवियस इन्स्ट्रक्शन)

पूर्वाधिकारी (रिन्)—पुं० [पूर्व-अधिकारिन्, कर्म० स०] वह जो किसी पद पर पहले अधिकारी के रूप मे रह चुका हो। (प्रोडिसेसर)

पूर्वानिल—पु० [पूर्व-अनिल, कर्म० स०] पूरबी वायु। पुरवा। हवा।

पूर्वानुमान—पु० [पूर्व-अनुमान, कर्म० स०] किसी भावी काम या बात के स्वरूप आदि के सम्बन्ध मे पहले से किया जानेवाला अनुमान या कल्पना। (फोर कास्ट) जैसे—सल या वर्षा का पूर्वानुमान।

पूर्वानुराग—पु०=पूर्व-राग।

पूर्वापर—अव्य० [पूर्व-अपर, द्व० स०] आगे पीछे।
वि० आगे का और पीछे का।
पु० किसी बात का आगा-पीछा, ऊँच-नीच या भला-बुरा।

पूर्वापराधी (धिन्)—पु० [पूर्व-अपराधिन्, कर्म० स०] १ वह जो पहले कोई अपराध कर चुका हो। २ विशेषत ऐसा अपराधी जो दंड भोग चुका हो। (एक्स-कन्विक्ट)

पूर्वापर्य—पु० [स० पूर्वापर+यत्] पूर्वापर की अवस्था या भाव।

पूर्वा-फाल्गुनी—स्त्री० [स० व्यस्त पद] ज्योतिष मे ग्यारहवाँ नक्षत्र जिसका आकार पलग की तरह और नीचे की ओर मुँहवाला माना जाता है। इसमे दो तारे हैं, और इसके अधिष्ठाता देवता यम कहे गए हैं।

पूर्वा-भाद्रपद—पु० [व्यस्त पद]=पूर्वाभाद्रपदा।

पूर्वाभाद्रपदा—स्त्री० [स० व्यस्त पद] ज्योतिष मे, पचीसवाँ नक्षत्र जिसका आकार घंटे के समान माना गया है और जिसमे दो नक्षत्र हैं।

पूर्वाभिनय—पु० [पूर्व-अभिनय, कर्म० स०] अभिनय या इसी प्रकार के और किसी बडे आयोजन के सम्बन्ध मे उसके नियत समय से कुछ पहले उसका किया जानेवाला यथा-तथ्य अभ्यास। (रिहर्सल)

पूर्वाभिमुख—वि० [पूर्व-अभिमुख, ब० स०] जिसका रुख पूरब की ओर हो।
अव्य० पूरब की ओर मुँह करके।

पूर्वाभिषेक—पु० [पूर्व-अभिषेक, कर्म० स०] एक प्रकार का मत्र।

पूर्वाभ्यास—पु० [पूर्व-अभ्यास, कर्म० स०] कोई कार्य दर्शको के सम्मुख करने से पहले उसे पक्का करने के लिए किया जानेवाला अभ्यास। रिहर्सल।
वि० दे० 'पूर्वाभिनय'।

पूर्वाराम—पु० [पूर्व-आराम, कर्म० स०] एक प्रकार का बौद्धसघ या मठ।

पूर्वार्चिक—पु० [पूर्व-आर्चिक, कर्म० स०] सामवेद का पूर्वार्द्ध।

पूर्वार्जित—वि० [पूर्व-अर्जित, कर्म० स०] पहले का अर्जित किया हुआ। पहले का कमाया हुआ।
पु० पतृक सपत्ति।

पूर्वार्द्ध—पु० [स० पूर्व-अर्द्ध, कर्म० स०] किसी काम चीज या बात का पहला आधा भाग। शुरू का आधा हिस्सा।

पूर्वावेदक—पु० [स० पूर्व-आवेदक, कर्म० स०]=पूर्ववादी।

पूर्वाश्रम—पु० [स० पूर्व-आश्रम, कर्म० स०] १. ब्रह्मचर्याश्रम। २ वह आश्रम जिसमे कोई व्यक्ति नये आश्रम मे प्रविष्ट होने से पहले रहा हो। जैसे—सन्यासी होने से पहले इनका पूर्वाश्रम ब्राह्मण था।

पूर्वाषाढ़—पु०=पूर्वाषाढ़ा।

पूर्वाषाढ़ा—स्त्री० [स० पूर्वा-आषाढ़ा, कर्म० स०] ज्योतिष मे, बीसवाँ नक्षत्र जिसमे दो तारे होते हैं और जिसका आकार सूप का सा और अधिष्ठाता देवता जल माना गया है।

पूर्वाह्†—पु०=पूर्वाह्न।

पूर्वाह्न—पु० [स० पूर्व-अहन्, एकदेशित०] दिन का पहला भाग। सबेरे से दोपहर तक का समय।

पूर्वाह्णिक—पु० [स० पूर्वाह्न+ठन्—इक] वह कृत्य जो दिन के पहले भाग मे किया जाता हो। जैसे—स्नान, सध्या, पूजा आदि।

पूर्विका—स्त्री० [स० पूर्व+कन्+टाप्, इत्व] पहले की कोई घटना या मामला जो बाद की वैसी ही घटनाओ के लिए उदाहरण या नजीर का काम दे। किसी न्यायालय का वह अभिनिर्णय या कार्यविधि जिसे आदर्श माना जाता हो। (प्रिसीडेन्ट)

पूर्वी—वि० [स० पूर्वीय] पूर्व दिशा मे सबध रखनेवाला। पूरब का।
पु० १. एक प्रकार का चावल जो पूर्वी प्रदेशो मे होता है। २. सन्ध्या समय गाया जानेवाला सम्पूर्ण जाति का एक राग। ३. उत्तर प्रदेश के पूर्वी भागो तथा बिहार आदि मे गाये जानेवाला कुछ विशिष्ट प्रकार के गीत। (इस अन्तिम अर्थ मे कुछ लोग स्त्री० मे भी इसका प्रयोग करते हैं।)

पूर्वी घाट—पु० [हि० पूर्वी+घाट] दक्षिण भारत के पूर्वी किनारे पर का पहाडो का सिलसिला जो बालासोर से कन्या कुमारी तक चला गया है और वही पश्चिमी घाट के अतिम अश से मिल गया है।

पूर्वीण—वि० [स० पूर्व+ख—ईन] १. पुराना। २ पैतृक।

पूर्वेद्यु—पु० [स० पूर्व+एद्युस्] १ एक प्रकार का श्राद्ध जो अगहन, पूस, माघ और फागुन के कृष्णपक्ष की सप्तमी तिथि को किया जाता है। २ प्रातःकाल। सवेरा।

पूर्वोक्त—वि० [स० पूर्व-उक्त, कर्म० स०] जिसका जिक्र पहले आ चुका हो। जो पहले कहा जा चुका हो।

पूर्वोत्तर—वि० [स० पूर्व-उत्तर, ब० स०] पूर्व और उत्तर के बीच का। जैसे—पूर्वोत्तर रेलवे।

पूर्वोत्तरा—स्त्री० [स० पूर्वोत्तर+टाप्] पूर्व और उत्तर के बीच की दिशा। ईशान कोण।

पूर्वोपाय—पु० [स० पूर्व+उपाय] बात, रक्षा, व्यवस्था आदि का ध्यान रखते हुए पहले से किया जानेवाला उपाय। (प्रिकॉशनरी मेजर)

पूलक—पु० [स०√पूल् (इकट्ठा करना)+ण्वुल्—अक] घास आदि का पूला।

पूला—पु० [स० पूलक] [स्त्री० अल्पा० पूली] घास-तृणो आदि का बधा हुआ गट्ठर।

पूलाक—पु० [स० पुलाक, पृषो० सिद्धि]=पुलाक। (दे०)

पूलिया—पु० [देश०] मालाबार प्रदेश मे रहनेवाले मुसलमानो की एक उप-जाति।

पूली—स्त्री० [हि० पूला का अल्पा०] छोटा पूला।

पूलीबी—स्त्री० [देश०] मालाबार प्रदेश की एक असभ्य जगली जाति।

पूल्य—पु० [स०√पूल+ण्यत्] अनाज का कोई खोखला दाना।

पूवा†—पु०=पुआ।

पूष—पु० [स०√पूष् (बढना)+क] १ शहतूत का पेड। २ पौष मास।

पूषक—पु० [स०√पूष्+ण्वुल्—अक] १ शहतूत का पेड और उसका फल।

पूषण—पु० [स० √पूष्+कनिन्] १ सूर्य। २ बारह आदित्यो मे से एक। (पुराण) ३. एक वैदिक देवता।

पूषदंतहर—पु० [स० पूषन्-दन्त, ष० त०, पूषदन्त√हृ (हरण)+अच्] वीर भद्र (जिसने दक्ष के यज्ञ के समय सूर्य का दाँत तोडा था)।

पूषमित्र—पु० [स०] गोभिल का एक नाम।

पूषा—स्त्री० [सं० पूष+टाप्] १ चन्द्रमा की तीसरी कन्या। २ हठ-योग के अनुसार दाहिने कान की एक नाड़ी।

पूषाकल्याणी—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटिकी पद्धति की एक रागिनी।

पूषात्मज—पु० [सं० पूषन्-आत्मज, ष० त०] १ मेघ। बादल। २ इंद्र। ३ कर्ण।

पूस—पु० [सं० पौष] विक्रमी संवत् का दसवा महीना। पौष।

पूंग—पु० [सं० पिंग से] मध्य एशिया में बननेवाला एक तरह का रेशमी कपड़ा।

पूंगा—स्त्री० [पूंग से] एक प्रकार की ढीली सलवार। पिंगा।

पृक्का—स्त्री० [सं०√पृच् (संपर्क)+कन्+टाप्] असबरग नाम का गंध-द्रव्य।

पृक्ति—स्त्री० [सं०√पृच्+क्तिन्] १ संबंध। लगाव। २ स्पर्श। ३ मिलन। ४. जोड़।

पृक्ष (स्)—पु० [सं०√पृच्+असि, सुट्] अन्न। अनाज।

पृच्छक—वि० [सं०√प्रच्छ् (पूछना)+ण्वुल्—अक] १ प्रश्न करने-वाला। पूछनेवाला। २ जिज्ञासु।

पृच्छन—पु० [सं०√प्रच्छ्+ल्युट्—अन] पूछने की क्रिया या भाव। प्रश्न करना। पूछना।

पृच्छना—स्त्री० [सं०√प्रच्छ+णिच्+युच्—अन,+टाप्] पूछना। जिज्ञासा करना।

पृच्छा—स्त्री० [सं०√प्रच्छ+अङ् टाप्] प्रश्न। सवाल।

पृच्छ्य—वि० [सं०√प्रच्छ्+क्यप्] जो पूछे जाने के योग्य हो। जिसके सम्बन्ध मे प्रश्न हो सकता हो या होने को हो।

पृतना—स्त्री० [सं०√पृ (व्यायाम)+तनन्+टाप्] १ सेना। २ सेना का एक प्राचीन विभाग जिसमे तीन वाहिनियां अर्थात् २४३ हाथी, इतने ही रथ, ७२९ घुड़सवार और १२१५ पैदल सिपाही होते थे। ३ लड़ाई। युद्ध।

पृतनानी—पु० [सं० पृतना√नी (ले जाना)+क्विप्] १ पृतना नामक सेना विभाग का अधिकारी या नायक। २ सेनापति।

पृतना-पति—पु० [ष० त०] =पृतनानी।

पृतनाषाट्, पृतनासाह्—पु० [सं० पृतना√सह् (सहना)+ण्वि] इंद्र।

पृतन्या—स्त्री० [सं० पृतना+यत्+टाप्] सेना। फौज।

पृथक्—वि० [सं०√प्रथ् (फेकना)+अजि, कित् सप्रसारण] [भाव० पृथक्ता] १ जो प्रस्तुत से संबंधित न हो और उससे अतिरिक्त हो। २ जो अगों से अलग हो चुका हो। ३ आकार-प्रकार, गुण, रूप आदि की दृष्टि से प्रस्तुत से भिन्न प्रकार का। ४ अपने कार्य या पद से हटाया हुआ।

पृथक्करण—पु० [सं० पृथक्-करण, सुप्सुपा स०] १ पृथक् या अलग करने की क्रिया या भाव। २ किसी पदार्थ को काटकर उसके अंग अलग-अलग करना। ३ एक मे मिली हुई बहुत सी वस्तुओ को छाँटकर उनके वर्ग या श्रेणियां बनाना। ४ अधिकार, पद आदि से हटाना।

पृथक्-क्षेत्र—पु० [सं० ब० स०] एक ही पिता परन्तु विभिन्न माताओ से उत्पन्न बहुत और भाई।

पृथक्ता—स्त्री० [सं० पृथक्+तल्+टाप्] पृथक होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य।

पृथक्त्व—पु० [सं० पृथक्+त्व] पृथक् होने की अवस्था या भाव। अलगाव। पार्थक्य।

पृथक्त्वचा—स्त्री० [सं० ब० स० टाप्] मूर्वा लता।

पृथक्पर्णी—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीष्] पिठवन नामक लता।

पृथगात्मता (त्मन्)—स्त्री० [सं० पृथगात्मन्, ब० स०+तल्+टाप्] १. विरक्ति। वैराग्य। २ अंतर। भेद।

वि० १ भिन्न। २. विशिष्ट।

पृथगात्मिका—स्त्री० [सं० ब० स०,+कप्+टाप्, इत्व] (दूसरे से भिन्न) व्यक्तिगत सत्ता।

पृथग्जन—पु० [सं० ष० त०] १ मूर्ख। बेवकूफ। २ नीच या कमीना आदमी। ३ पापी।

पृथग्बीज—पु० [सं० ब० स०] भिलावां।

पृथग्वासन—पु० [सं० कर्म० स०] विभिन्न जातियो के लोगो को विशेषत गोरी और काली जातियो के लोगों को अलग-अलग बसाने का काम। (एपारथीड)

पृथवी†—स्त्री०=पृथ्वी।

पृथा—स्त्री० [सं०] कुंतिभोज की कन्या कुंती जिसका विवाह पांडु से हुआ था तथा जो युधिष्ठिर भीम और अर्जुन की माता थी।

पृथाज—पु० [सं० पृथा√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ पृथा या कुंती के पुत्र युधिष्ठिर, भीम और अर्जुन। २ अर्जुन का पेड़।

पृथिका—स्त्री० [सं०√प्रथ्+क+,क+टाप्, इत्व] गोजर।

पृथिवी—स्त्री० [√प्रथ्+षिवन्, सप्रसारण, ङीष्] पृथ्वी।

पृथिवी-कंप—पु० [ष० त०] =भूकंप।

पृथिवीक्षित्—पु० [सं० पृथिवी√क्षि (निवास, हिंसा)+क्विप्] राजा।

पृथिवी-तल—पु० [ष० त०] पृथिवी की ऊपरी सतह। धरातल।

पृथिवी-नाथ—पु० [ष० त०] राजा।

पृथिवि-पति—पु० [ष० त०] १ राजा। २ यम। ३. ऋषभ नामक ओषधि।

पृथिवीपाल—पु० [सं० पृथिवी√पाल्+णिच्+अण्] राजा।

पृथिवीभुज्—पु० [सं० पृथिवी√भुज् (पालन करना)+क्विप्] राजा।

पृथिवीश—पु० [सं० पृथिवी-ईश, ष० त०] राजा।

पृथिवी-शक्र—पु० [सं० स० त०] राजा।

पृथिवी-शत्रु—पु० [सं० ष० त०] राजा।

पृथी—स्त्री०=पृथ्वी।

पु०=पृथु (राजा)।

पृथीनाथ—पु० [सं० पृथिवी-नाथ] राजा।

पृथु—वि० [सं०√प्रथ्+कु, सप्रसारण] [भाव० पृथुता] १ अधिक विस्तारवाला। विस्तीर्ण। २ बड़ा। महान। ३ अगणित। बहुत। अधिक। ४ चतुर। होशियार। ५. महत्वपूर्ण।

पु० १ एक हाथ का मान। दो बालिश्त की लंबाई। २ अग्नि। आग। ३. विष्णु। ४ शिव। ५ एक विश्वेदेवा। ६ चौथे मन्वंतर के एक सप्तर्षि। ७ तामस मन्वंतर के एक ऋषि। ८ वेणु के पुत्र एक प्रसिद्ध राजा जिनके नाम से भूमि का नाम पृथ्वी पड़ा था। कहते है कि इन्होने गो रूप धारिणी पृथ्वी से ओषधियो का दोहन किया था। (मार्कण्डेय पुराण)

स्त्री० [स०] १ काला जीरा। २ हिंगुपत्री। ३ अफीम।

पृथुक—पु० [स० पृथु+कन्, या√प्रथ्+कुकन्, सप्रसारण] [स्त्री० पृथुका] १ बच्चा। बालक। ३. चाक्षुष मन्वतर के एक देव-गण। हिंगुपत्री। ५. चिडवा।

पृथुका—स्त्री० [स० पृथुक+टाप्] १ हिंगुपत्री। २ बालिका।

पृथुकीर्ति—स्त्री० [स०] पुराणानुसार पृथा (कुती) की एक छोटी बहन का नाम।

वि० जिसकी चारो ओर कीर्ति हो। यशस्वी।

पृथुकोल—पु० [स० कर्म० स०] बडा बेर।

पृथुच्छद—पु० [ब० स०] १. एक प्रकार का दो रंगा कुश। २ हाथीकद।

पृथुता—स्त्री० [स० पृथु+तल्+टाप्] १ पृथु होने की अवस्था या भाव। २ फैलाव। विस्तार।

पृथुत्व—पु० [स० पृथु+त्व] पृथुता। (दे०)

पृथुदर्शी (र्शिन्)—वि० [स० पृथु√दृश् (देखना)+णिनि] दूरदर्शी।

पृथुपत्र—पु० [ब० स०] १ लाल लहसुन। २ हाथी कद।

पृथु-पलाशिका—पु० [स० ब० स०,+कप्+टाप्, इत्व] कचूर।

पृथुपाणि—पु० [ब० स०] जिसके हाथ घुटनो तक लबे हो। आजानुबाहु।

पृथु-प्रथ—वि० [ब० स०] अति प्रसिद्ध। विख्यात।

पृथु-बीजक—पु० [ब० स०,+कप्] मसूर।

पृथु-भैरव—पु० [कर्म० स०] बौद्धो के एक देवता।

पृथु-यशा (शस्)—वि० [ब० स०] बहुत बडा यशस्वी।

पृथु-रोमा (मन्)—स्त्री० [स० ब० स०, डाप्] १ मछली। २ मीन-राशि।

पृथुल—वि० [स० पृथु+लच्] १ अधिक विस्तारवाला। विस्तीर्ण। पृथु। २ बहुत बडा। जैसे—पृथु-लोचन। ३ भारी। जैसे—पृथु विक्रम। ४ अधिक। ढेर।

पृथुला—स्त्री० [स० पृथुल+टाप्] हीग की जाति का एक वृक्ष। हिंगुपत्री।

पृथु लोचन—वि० [ब० स०] बड़ी-बडी आँखोवाला।

पृथु-शिंब—पु० [ब० स०] सोनापाठा।

पृथुशेखर—पु० [ब० स०] पहाड। पर्वत।

पृथु-श्रवा (वस्)—पु० [ब० स०] १ कार्तिकेय का एक अनुचर। २ पुराणानुसार नवे मनु का एक पुत्र।

वि० १ बडे बडे कानोवाला। २ बहुत प्रसिद्ध।

पृथु श्रोणि—वि० [ब० स०] जिसकी कमर चौडी हो।

पृथु-सपद्—वि० [ब० स०] बहुत बडा धनवान्।

पृथु-स्कध—पु० [ब० स०] सूअर।

पृथूदक—पु० [स० पृथु-उदक, ब० स०] सरस्वती नदी के दक्षिण तट पर का एक प्रसिद्ध प्राचीन तीर्थ जिसका आधुनिक नाम पोहोआ है।

पृथूदर—वि० [स० पृथु-उदर, ब० स०] बडे या मोटे पेटवाला।

पु० मेढा। मेष।

पृथ्वी—स्त्री० [स० पृथु+ङीष्] १. सौर जगत् का पाँचवाँ सबसे बडा ग्रह जिसमे हम लोग रहते हैं। २. उक्त का आकाश तथा जल से भिन्न और अतिरिक्त अश, जिसपर मनुष्य तथा पशु विचरण करते तथा पेड़-पौधे उगते है। जमीन। ३ स्वर्ग और नरक से भिन्न हमारा यह संसार। ४ मिट्टी। ५ पचभूतो या तत्त्वो मे एक जिसका प्रधान गुण गध है, पर जिसमे गौण रूप से शब्द, स्पर्श रूप और रस चारो गुण भी माने गये है। दे० 'भूत'। ६ हिंगुपत्री। ७ काला जीरा। ८. सोठ। ९ बडी इलायची। १० सत्रह अक्षरो का एक वर्णवृत्त जिसमें ८, ९ पर यति और अत मे लघु-गुरु होते है। ११ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।

पृथ्वीका—स्त्री० [स० पृथ्वी+कन्+टाप्] १ बडी इलायची। २. छोटी इलायची। ३ काला जीरा। ४ हिंगुपत्री।

पृथ्वी कुलक—पु० [स० त०] सफेद मदार या आक।

पृथ्वीखात—पु० [ष० त०] गुफा।

पृथ्वीगर्भ—पु० [ब० स०] गणेश।

वि० बडे पेटवाला।

पृथ्वीज—वि० [स० पृथ्वी√जन् (उत्पन्न होना)+ड] जो पृथ्वी से उत्पन्न हुआ हो।

पु० १ पेड-पौधे। २ साभर नमक। ३ मगल ग्रह।

पृथ्वीतनया—स्त्री० [ष० त०] सीता।

पृथ्वीतल—पु० [ष० त०] १ जमीन का वह ऊपरी धरातल जिसपर हम लोग रहते है। २ दुनियाँ। ससार।

पृथ्वीधर—वि० [ष० त०] पृथ्वी को धारण करनेवाला।

पु० पर्वत। पहाड।

पृथ्वी-नाथ—पु० [ष० त०] राजा।

पृथ्वी-पति—पु० [ष० त०] राजा।

पृथ्वीपाल—पु० [स० पृथ्वी√पाल् (पालन करना)+णिच्+अण्] राजा।

पृथ्वी-पुत्र—पु० [ष० त०] १ वीर पुरुष। २ मगल ग्रह।

पृथ्वीभुक् (ज्)—पु० [स० पृथ्वी√भुज् (पालन)+क्विप्] राजा।

पृथ्वी-भृत्—पु० [स० पृथ्वी√भृ (पोषण)+क्विप] राजा।

पृथ्वीश—पु० [स० पृथ्वी-ईश ष० त०] राजा।

पृदाकु—पु० [स० √पर्द+काकु, सप्रसारण, अकार-लोप] १ साँप। २ बिच्छू। ३ चीता। बाघ। ४ हाथी। ५ पेड। वृक्ष।

पृश्नि—स्त्री० [स०√स्पृश् (छूना)+नि, पृषो० सिद्धि] १ चित-कबरी गौ। २ किरण। ३ पिठवन। ४ श्रीकृष्ण की माता देवकी का एक नाम।

पु० १ अनाज। २ जल। पानी। ३ अमृत। ४ वेद। ५ एक प्राचीन ऋषि। ६ बौना।

वि० १ दुबला-पतला। कृश। २ चितकबरा। ३ सफेद। ४ साधारण। मामूली।

पृश्नि-का—स्त्री० [स० पृश्नि=स्वल्प+क=जल, ब० स०, टाप्] जलकुभी।

पृश्नि-गर्भ—पु० [स० ष० त०,+अच्] श्रीकृष्ण।

पृश्नि-पर्णी—स्त्री० [स० ब० स०+ङीष्] पिठवन लता।

पृश्नि-शृग—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु। २ गणेश।

पृश्नी—स्त्री० [स० पृश्नि+ङीष्] जलकुभी।

पृषत्—वि० [सं०√पृष् (सींचना)+अति] १. सिक्त करनेवाला। २. चितकबरा।
पुं० १ चितकबरा हिरन। चीतल। २ बिंदु।

पृषत—पुं० [सं०√पृष्+अतच्] १ चितला हिरन। चीतल मृग। २. एक प्रकार का साँप। ३ रोहू मछली। ४ पानी की बूँद। ५ राजा द्रुपद के पिता का नाम।

पृषताश्व—पुं० [सं० पृषत-अश्व, ब० स०] वायु। हवा।

पृषत्क—पुं० [सं० पृषत्+कन्] बाण। तीर।

पृषदश्व—पुं० [सं०] १ वायु। २ शिव।

पृषदश्व—पुं० [सं० पृषत्-अश्व, ब० स०] १ वायु। हवा। २ एक राजर्षि। (महाभारत) ३ विरूपाक्ष के पुत्र। (भागवत)

पृषदाज्य—पुं० [सं० पृषत्-आज्य, मध्य० स०] वह घी जिसमें कुछ अंशो में दही भी मिला हो।

पृषद्वरा—स्त्री० [सं०] मेनका की कन्या का नाम।

पृषद्वल—पुं० [सं० पृषद्+वलच्] वरुण देवता का घोड़ा।

पृषभाषा—स्त्री० [सं० पृष,√पृष् (सेक)+क टाप्, पृषा (अमृतवर्षिणी)+भाषा, ब० स०] इंद्र की पुरी, अमरावती।

पृषाकरा—स्त्री० [सं०√पृष्+क्विप्, पृष्+आ√कृ+अप्, पृषो० सिद्धि] भार तौलने का पत्थर का बटखरा।

पृषातक—पुं० [सं० पृषत्+आ√तक् (हँसना)+अच्, पृषो० सिद्धि] पृषदाज्य। (दे०)

पृषोदर—वि० [सं० ब०, पृषत्-उदर, त—लोप] छोटे पेटवाला।
पुं० वायु। हवा।

पृषोद्यान—पुं० [सं० पृषत्—उद्यान, कर्म० स०, त—लोप] छोटा उपवन।

पृष्ट—वि० [सं०√प्रच्छ् (पूछना)+क्त, सम्प्रसारण] १ जो पूछा गया हो। पूछा हुआ। २ जिसमे पूछा गया हो। ३ सींचा हुआ। सिक्त।
†पुं०—पृष्ठ।

पृष्टि—स्त्री० [सं०√प्रच्छ्+क्तिन्] १ पूछने की क्रिया या भाव। प्रश्न करना। पूछना। २ पिछला भाग। पृष्ठभाग। ३ स्पर्श। ४ किरण। रश्मि।

पृष्ठ—पुं० [सं०√पृष् या√स्पृश्+थक्, नि० सिद्धि] १ किसी पदार्थ के पीछे की ओर का तल या भाग। पीठ। २ किसी पदार्थ का ऊपरी तल या भाग। सतह। ३ पुस्तक आदि के पत्रों के दोनो तलो मे से प्रत्येक। पन्ना।
मुहा०—**पृष्ठ पलटना**= (क) अकर्मक रूप मे, एक क्रम की समाप्ति के बाद दूसरे क्रम या घटना-प्रकार का आरंभ होना। (ख) सकर्मक रूप में, नया क्रम, घटना-प्रकार, प्रसंग आदि आरंभ करना। उदा०—पलटा पृष्ठ उसी ने तुमको सुर-पुर कैसा भाया ?—मैथिली शरण।

पृष्ठक—पुं० [सं० पृष्ठ+कन्] पिछला भाग। पीछे या पीठ की ओर का भाग।

पृष्ठ-करण—पुं० [सं० ष० त०] किसी पदार्थ का ऊपरी अथवा और कोई तल चौरस या बराबर करना। (सर्फेसिंग)

पृष्ठ-गत—वि० [सं० द्वि० त०] पीछे की ओर का। पीछे का। जैसे—पृष्ठगत चित्र।

पृष्ठ-गोप—पुं० [सं० पृष्ठ√गुप् (रक्षा करना)+अण्, उप० स०] सेना का वह अधिकारी जो युद्ध मे लड़ती हुई सेना के पिछले अंग पर निगरानी रखता है।

पृष्ठ-ग्रह—पुं० [सं० पृष्ठ√ग्रह् (पकड़ना)+अच्, उप० स०] घोड़े का एक रोग।

पृष्ठ-चक्षु (स्)—वि० [ब० स०] जिसकी आँखे पीठ पर हो।
पुं० १ भालू। रीछ। २ केकड़ा।

पृष्ठज—वि० [सं० पृष्ठ√जन् (उत्पत्ति)+ड] किसी के बाद मे या पीछे जन्म लेनेवाला।

पृष्ठ-दृष्टि—पुं० [ब० स०] १ रीछ। भालू। २ केकड़ा।

पृष्ठ-देश—पुं० [ष० त०] किसी चीज के पीछे की ओर का तल या भाग।

पृष्ठ-पर्णी—स्त्री० [ब० स०,+ङीष्] पिठवन लता।

पृष्ठ-पोषक—वि० [ष० त०] पृष्ठ-पोषण करनेवाला। पीठ ठोकने और मदद करनेवाला। रक्षक।

पृष्ठ-पोषण—पुं० [ष० त०] किसी के पीछे या साथ रहकर उसका हर बात मे समर्थन करना तथा उसे प्रोत्साहन और सहायता देना।

पृष्ठ-भंग—पुं० [ब० स०] युद्ध का एक ढंग जिसमे शत्रु-सेना के पिछले भाग पर आक्रमण करके उसे नष्ट किया जाता है।

पृष्ठ-भाग—पुं० [ष० त०] १ किसी चीज का पिछला अंश या भाग। पीठ की ओर का विस्तार। २ पीठ।

पृष्ठ-भूमि—स्त्री० [ष० त०] १. पिछला भाग। २ पहले की वे सब बातें और परिस्थितियाँ जिसके आगे या सामने कोई नई विशेष बात या घटना हो और जिनके साथ मिलान करने पर उस बात या घटना का रूप स्पष्ट होता है। भूमिका। जैसे—हिंदी भाषा की पृष्ठ-भूमि। ३ दे० 'पृष्ठिका'।

पृष्ठ-मर्म (न्)—पुं० [ष० त०] सुश्रुत के अनुसार पीठ पर के वे चौदह मर्मस्थान जिन पर आघात लगने से मनुष्य मर सकता है, अथवा उसका कोई अंग बेकाम हो सकता है। ये सब स्थान गरदन से चूतड़ तक मेरुदंड के दोनो ओर युग्म संख्या मे हैं और इन सबके अलग-अलग नाम हैं।

पृष्ठ-मांस—पुं० [ष० त०] पीठ का मांस।

पृष्ठ-मांसाद—पुं० [सं० पृष्ठमांस√अद् (खाना)+अण्] वह जो पीठ के पीछे किसी की बुराई करता हो। चुगलखोर व्यक्ति।

पृष्ठ-मांसादन—पुं० [सं० पृष्ठमांस-अदन, ष० त०] १ पीठ पीछे किसी की निन्दा करना। २ चुगली।

पृष्ठयान—पुं० [तृ० त०] किसी की पीठ पर की जानेवाली सवारी।

पृष्ठ-रक्ष—पुं० [सं० पृष्ठ√रक्ष् (रक्षा)+अण्] १ वह जो किसी के पीछे रहकर उसकी रक्षा करता हो। २ दे० 'पृष्ठ-गोप'।

पृष्ठ-रक्षण—पुं० [ष० त०] किसी के पीछे रहकर उसकी रक्षा करना।

पृष्ठ-लग्न—वि० [स० त०] १ किसी के पीछे लगा रहनेवाला। २. अनुयायी।

पृष्ठ-वंश—पुं० [ष० त०] पीठ के बीच की हड्डियो की माला। रीढ़। (स्पाइन)

पृष्ठ-वास्तु—पुं० [मध्य० स०] एक मकान के ऊपर बना हुआ अथवा ऐसा मकान जिसमे नीचेवाले खंड के ऊपर दूसरा खंड भी प्राय. उसी रूप मे बना हो। दो-मंजिला मकान या इमारत।

पृष्ठ-वाह्य—पु० [ब० स०] वह पशु जो पीठ पर बोझ लादकर ले चलता हो। जैसे—ऊँट, घोडा, बैल आदि।

पृष्ठ-शीर्षक—पु० दे० 'पताकाशीर्षक'।

पृष्ठ-शूल—पु० [स०] पीठ मे होनेवाला एक विशेष प्रकार का कष्टदायक तेज दर्द। (बैक-एक)

पृष्ठ-शृंग—पु० [ब० स०] जगली बकरा।

पृष्ठ-शृंगी (गिन्)—पु० [स० पृष्ठ-शृग, स० त०,+इनि] १ भेडा। २ भैसा। ३ नामर्द। हिजडा। ४ भीमसेन का एक नाम

पृष्ठांकन—पु० [पृष्ठ-अकन, स० त०] [भू० कृ० पृष्ठाकित] हुडी। लेन-देन के पुरजे आदि लेख्यो की पीठ पर यह लिखना कि इसका, भुगतान अमुक व्यक्ति, या सस्था को दे दिया जाय। (एन्डोर्समेन्ट)

पृष्ठांकित—भू० कृ० [पृष्ठ-अकित, स० त०] जिस पर या जिसकी पीठ पर पृष्ठाकन के रूप मे हस्ताक्षर कर दिया गया हो या कुछ लिख दिया गया हो। (एन्डोर्सड)

पृष्ठाधान—पु० [पृष्ठ-आधान, स०त०] वह चीज जो किसी दूसरी चीज के पीछे उसके सहारे के लिए अथवा उसमे दृढ़ता लाने के लिए उसके पीछे रखी या लगाई जाय। (बैकिंग)

पृष्ठानुग—वि० [स० पृष्ठ-अनु√गम् (जाना)+ड] =पृष्ठानुगामी।

पृष्ठानुगामी (मिन्)—वि० [स० पृष्ठ अनु√गम्+णिनि] अनुगमन करनेवाला। अनुगामी।

पृष्ठास्थि—स्त्री० [पृष्ठ-अस्थि, ष० त०] पीठ की लबी हड्डी। रीढ।

पृष्ठिका—स्त्री० [स० पृष्ठ+कन्+टाप्, इत्व ?] १ पिछला भाग। २ वह भूमि या तल जो किसी वस्तु के पिछले भाग मे हो। ३ पहले की वे सब बाते या परिस्थितियाँ जिनके आगे या सामने कोई नई विशेष बात या घटना हो और जिनके साथ मिलान करने पर उस बात या घटना का ठीक रूप स्पष्ट होता हो। ४ मूर्ति या चित्र मे वह सब से पीछे का भाग जो अकित दृश्य या घटना का आश्रय होता है। पृष्ठ-भूमि। ५ पीछे की ओर का वह स्थान या अवस्था जिसपर जल्दी ध्यान न जाता हो। (बैकग्राउण्ड, उक्त सभी अर्थो मे)

पृष्ठेमुख—पु० [अलुक् स०] कार्तिकेय का एक अनुचर।

पृष्ठोदय—पु० [पृष्ठ-उदय, ब० स०]] ज्योतिष मे मेष, वृष, कर्क, धन, मकर और मीन ये छ राशियाँ जिनके विषय मे यह माना जाता है कि ये पीठ की ओर से उदित होती है।

पृष्ठ्य—वि० [स० पृष्ठ+यत्] १. पृष्ठ-सबधी। पीठ का। २ पुस्तक आदि के पन्ने से सबंधित।

पु० [स्त्री० पृष्ठ्या] वह घोडा या और कोई पशु जिसकी पीठ पर बोझ लादा जाता हो।

पृष्णि—स्त्री० [स०=पृश्नि, पृषो० सिद्धि] १ एडी। २ पिछला भाग। ३ किरण।

पें—स्त्री० [अनु०] १ पे पें का शब्द, जो रोने, बाजा फूंकने आदि से निकलता है। २ लाक्षणिक रूप मे अभिमान या घमड।

पेंग—स्त्री० [हि० पटेग, पट=पटड़ा+वेग अथवा प्लवग ?] हिंडोले या झूले का झूलते समय एक ओर से दूसरी ओर जाना।

मुहा०—**पेंग मारना या लेना**=झूले पर झूलते समय उस पर इस प्रकार जोर पहुँचाना जिसमे उसका वेग बढ जाय और दोनो ओर वह दूर तक झूले।

पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

पेंगा†—स्त्री० पेगिया (मैना)।

पेंगिया—स्त्री० [हि० पग+मैना] एक प्रकार की मैना (पक्षी) जिसे सतभैया भी कहते हैं।

पेंघट—पु० पेघा।

पेंघा—पु० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसका शरीर मटमैले रग का, आँखे लाल और चोच सफेद होती है।

पेंच—पु० =पेच।

पेंचकश—पु० =पेचकश।

पेंजनी—स्त्री० =पैजनी।

पेंठ—स्त्री० पैठ।

पेंड—पु० [स० पड्डुक] एक प्रकार का सारस पक्षी जिसकी चोच पीली होती है।

†पु०=पेड (वृक्ष)।

पेंडना—स० बेडना।

पेंडुकी—स्त्री० [स० पड्डुक] १ पडुक पक्षी। फाखता। २ सुनारो की फुँकनी जिससे वे आग सुलगाते है।

स्त्री० पिराक (गुझिया) नाम का पकवान।

पेंडुली†—स्त्री०=पिडली।

पेंवर†—पु० [हि० पेदा या पेड्र] पेड्र।

पेंदा—पु० [स० पिंड] [स्त्री० अल्पा० पेदी] १ किसी वस्तु का वह निचला भाग जिसके सहारे वह खडी, ठहरी या रखी जाती हो। तला। जैसे—लोटे का पेंदा, जहाज का पेदा।

पद—**बे पेंदी का लोटा**=ऐसा व्यक्ति जिसे स्वय कोई बात समझने और किसी निर्णय तक पहुँचने की बुद्धि न हो, बल्कि उसे जो कोई जैसी राय देता हो उसे ठीक मान लेता हो।

मुहा०—**पेंदे के बल बैठना**=(क) चूतड टेककर या पलथी मारकर बैठना। (ख) हार मानकर चुप हो जाना।

२ सबसे नीचेवाला अश या स्तर।

पेंदी—स्त्री० [हि० पेंदा] १ किसी वस्तु का बिलकुल निचला भाग। पेंदा। २ मलत्याग की इद्रिय। गुदा। ३ तोप, बदूक आदि की कोठी, जिसमे बारूद भरते थे। ४ गाजर, मूली आदि कन्दो की जड। ५ कोई ऐसा आधार जिसके सहारे कोई चीज सीधी खडी रहती हो।

पेंधना—स०=पहनना। (पूरब)

पेंपो—स्त्री० [अनु०] १ कोमल कल्ला। कोपल। २ दे० 'पोपी'।

पेंशन—स्त्री० निवृत्ति वेतन।

पेंसिल—स्त्री० पेन्सिल।

पेंसिलिन—पु० [अ०] आधुनिक चिकित्सा शास्त्र मे, एक प्रकार का प्रबल और शक्तिशाली तत्त्व जो विषाक्त कीटाणुओ का नाशक होता है। इसका आविष्कार दूसरे युरोपीय महायुद्ध के समय हुआ था।

पेंअना*—स० १ पेरना। २ पीना।

पेई†—स्त्री० [?] छोटा सन्दूक।

पेउस†—पु० [स० पीयूष] १ ब्याई हुई गाय या भैस का पहले कई दिनों

का दूध जो बहुत गाढ़ा और कुछ पीले रंग का होता है और जो मनुष्यों के पीने के योग्य नही होता। इसे तेली भी कहते हैं। २ उक्त दूध मे सोठ आदि मसाले मिलाकर बनाया जानेवाला एक प्रकार का मीठा पकवान जो पौष्टिक और स्वादिष्ट होता है।

पेउसरी†—स्त्री०=पेउस।

पेउसी†—स्त्री० =पेउस।

पेक—पु० [फा० पेकार] १ घूम-घूमकर माल बेचनेवाला व्यापारी। फेरीवाला। २ छोटा व्यापारी। उदा०—पेक पेक तन हेरि कै गरुवे तोरत बाट।—रहीम।

पेंका—पु० [स० पितृ-गृह] ब्याही हुई स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर। मायका। पीहर।

पेखक—वि० [हिं० पेखना] देखनेवाला। दर्शक।

पेखन—पु० [स० प्रेक्षण] १ कतूहलपूर्वक और मनोविनोद के लिए देखी जानेवाली कोई चीज या दृश्य। उदा०—जगपेखन, तुम देखन हारे।—तुलसी। २ तमाशा।

पेखना—स० [स० प्रेक्षण, प्रा० पेक्खण] १ कुतूहलपूर्वक और मनोविनोद के लिए कुछ समय तक देखते रहना। २ अवलोकन करना। देखना।

†पु० १ दृश्य। २ तमाशा। उदा०—दिवस चारि कौ पेखना, अंति खेह की खेह।—कबीर।

पेखनि—स्त्री० [हिं० पेखना] १ पेखने की क्रिया या भाव। देखना। २ दे० 'पेखन'।

पेखनियाँ—वि० [हिं० पेखना] १ पेखनेवाला। २ विनोद के लिए तमाशा आदि देखनेवाला।

पेखनी—स्त्री० [स० प्रेक्षण, हिं० पेखन] देखने योग्य बढिया और विलक्षण चीज या बात। उदा०—नटवरबाजी पेखनी। कबीर।

पेग—पु० [अ०] १ शराब और सोडावाटर के मिश्रण का पान। २ पीने के लिए शराब की एक नाप। ३ उतनी शराब जितनी एक बार पीने के लिए गिलास मे उँडेली या ढाली जाय। ४ खूँटी।

पेच—पु० [फा०] १ वह स्थिति जिसमे कोई चीज किसी दिशा मे सीधी रेखा मे न गई हो, बल्कि जिसमे जगह-जगह कई तरह के घुमाव, चक्कर, मोड या लपेट हो। जैसे—तुम सीधा रास्ता छोड कर ऐसे रास्ते चलना चाहते हो जिसमे सौ तरह के पेच हैं। २ उक्त के आधार पर चालबाजी या चालाकी की कोई ऐसी बात जिसमे निकल भागने, पीछे हटने, मुकरने आदि के लिए और दूसरो को धोखे मे रखने के लिए बहुत-कुछ अवकाश हो। घुमाव-फिराव या हेर-फेर की स्थिति।

क्रि० प्र०—डालना।

३. ऐसी स्थिति जिसमे आगे बढ़ने के लिए कोई सरल या सीधा मार्ग न हो, बल्कि जगह-जगह कठिनाइयाँ, घुमाव-फिराव, चक्कर या फेर पडते हो।

क्रि० प्र०—पडना।

४. चारो ओर लपेटी जानेवाली चीज का प्रत्येक फेरा या लपेट। जैसे—पगडी का पेच, पटके या कमरबद का पेच। ५. गुड्डी या पतग लड़ाने के समय की वह स्थिति जिसमे दो या अधिक गुड्डियो या पतगो की डोरें या नखे चक्कर काटती या एक दूसरी को घेरती हुई आपस मे उलझ या फँस जाती हैं, और एक डोर या नख की रगड से दूसरी डोर या नख के कट जाने की सभावना होती है।

मुहा०—**पेच काटना**=दूसरे की गुड्डी या पतग की डोर मे अपनी डोर फँसा कर उसकी डोर काटना। गुड्डी या पतग काटना। **पेच लड़ाना**=दूसरे की पतग काटने के लिए उसकी डोर या नख मे अपनी डोर या नख फँसाना।

६ उक्त के आधार पर, गुड्डी या पतग लडाने मे हर बार की ऐसी स्थिति जिसमे एक की डोर या नख दूसरे की डोर या नख मे उलझाई या फँसाई जाती हो। जैसे—आओ, एक पेच तुमसे भी हो जाय।

क्रि० प्र०—लडाना।

७ कुश्ती मे वह विशेष शारीरिक क्रिया या युक्ति जिससे प्रतिद्वंद्वी को पछाडने मे सहायता मिलती है। दाँव।

क्रि० प्र०—लगाना।

८ कौशल या चालाकी से भरी हुई कोई ऐसी तरकीब या युक्ति जिसका प्रतिपक्षी को सहज मे पता न चले और जिससे बच निकलना उसके लिए कठिन हो।

यौ०—**दाँव-पेच**। (देखें)

९. एक प्रकार का चक्करदार आभूषण जो टोपी या पगडी मे सामने की ओर खोसा या लगाया जाता है। सिरपेच। १० कानो मे पहना जानेवाला उक्त प्रकार का एक आभूषण या गहना। गोश-पेच। ११ एक विशिष्ट प्रकार का काँटा या कील जिसके आगेवाले आधे भाग मे गडारीदार चक्कर बने होते हैं और जो ऊपर से ठोककर नहीं, बल्कि दाहिनी ओर घुमाते हुए जडी या अदर धँसाई जाती है। (स्क्रू)

क्रि० प्र०—कसना।—खोलना—जडना।—निकालना।

पद—पेच-कश।

१२ यत्र का कोई ऐसा विशिष्ट अग या पुरजा जिसे घुमाने, चलाने, दबाने या हिलाने से वह यंत्र अथवा उसका कोई अश चलता या रुकता हो।

क्रि० प्र०—घुमाना।—चलाना।—दबाना।

मुहा०—**पेच घुमाना**=ऐसी युक्ति करना जिससे किसी के कार्य या विचार की दिशा बदल जाय। तरकीब से किसी का मन फेरना या एक ओर से हटाकर दूसरी ओर लगाना। **(किसी का) पेच हाथ में होना**=किसी के विचारो को परिवर्तन करने की शक्ति होना। प्रवृत्ति आदि बदलने मे समर्थ होना। जैसे—उनकी चिंता छोड दो, उनका पेच तो हमारे हाथ मे है। (अर्थात् हम जब जिधर चाहेंगे, तब उधर उन्हें प्रवृत्त कर सकेंगे।) १३ किसी प्रकार की कल या यत्र। (मशीन) जैसे—कपास ओटने या तेल पेरने का पेच। १४ मृदग आदि के किसी परन या ताल के बोल मे से कोई एक टुकडा निकाल कर उसके स्थान पर ठीक उतना ही बडा कोई दूसरा टुकडा बैठाने या लगाने की क्रिया या भाव। क्रि० प्र०—लगाना।

१५ पेट मे होनेवाली पेचिश। मरोड।

पेचक—पु० [स०√पच् (पकाना)+वुन्—अक, एत्व] [स्त्री० पेचिका] १ उल्लू पक्षी। २ जूँ नाम का कीडा। ३ बादल। मेघ। ४ खाट। चारपाई। ५. हाथी की दुम।

स्त्री० [फा०] १ कपड़े सीने के लिए बटे हुए तागे की गोली या गुच्छी।

२ ऐसी रचना जो घूमती हुई सीधी ऊपर या नीचे चली गई हो। ३ चित्र-कला में फूल-पत्तियाँ आदि का उक्त प्रकार का अंकन। डंडा-मुर्री। (स्पिरल)

पेच-कश—पुं० [फा०] १ बढ़इयों, लोहारों आदि का एक औजार जिससे वे पेच कसते, जड़ते अथवा निकालते हैं। यह आगे से चपटा और कुछ नुकीला होता है जिसके पिछले भाग में मुठिया लगी रहती है। यही मुठिया घुमाने से पेच अन्दर धँसता और बाहर निकलता है। २ लोहे का बना वह घुमावदार पेचदार उपकरण जिसकी सहायता से बोतलों का काग बाहर निकाला जाता है।

पेचकी—स्त्री० [सं० पेचक-ङीष्] उल्लू की मादा।

पेचताब—पुं० [फा०] १ ऐसा क्रोध जो विवशता आदि के कारण प्रकट या सार्थक न किया जा सके; और जो इसी लिए अंदर ही अंदर रोक-कर चुप रह जाना पड़े।

क्रि० प्र०—खाना।

२ उक्त के फल-स्वरूप मन में होनेवाली बेचैनी या विकलता।

पेचदार—वि० [फा०] १ जिसमें किसी तरह का पेच या चक्कर बना या लगा हो। पेचवाला। २ (काम या बात) जिसमें बहुत से पेच अर्थात् घुमाव-फिराव, चक्कर या झंझटें हों। पेचीला। ३ (बात) जिसमें सभ्यता और सरलता के बदले घुमाव-फिराव या हेर-फेर बहुत हो, और इसी लिए जिसमें से निकल भागने या जिसे उलट-पुलट कर दूसरा अर्थ निकालने और लोगों को धोखे में रखने के लिए यथेष्ट अवकाश हो।

पुं० एक प्रकार का कसीदे का काम जिसमें सीधी रेखा के इधर-उधर जगह जगह फंदे भी लगाये जाते हैं।

पेचना—स० [फा० पेच] दो चीजों के बीच में उसी प्रकार की कोई तीसरी चीज इस प्रकार बैठाना या लगाना कि साधारणतः वह ऊपर से दिखाई न पड़े। इस प्रकार लगाना कि पता न लगे।

पेचनी—स्त्री० [हिं० पेच] कसीदे में, किसी सीधी रेखा के दोनों ओर किया हुआ ऐसा काम जो देखने में बेल या श्रृंखला की तरह जान पड़े।

पेचवान—पुं० [फा०] १ वह बड़ी और लंबी सटक जो फरशी या हुक्के में लगाई जाती है। २ वह बड़ा हुक्का जिसमें उक्त प्रकार की सटक लगी हो।

विशेष—ऐसा हुक्का प्रायः कुछ दूरी पर रखकर पीया जाता है।

पेचा—पुं० [सं० पेचक] [स्त्री० पेची] उल्लू पक्षी।

पुं० [फा० पेच] उड़ती हुई पतंगों की नखों या डोरों का एक दूसरी को काटने के उद्देश्य से परस्पर उलझना। पेच।

क्रि० प्र० —लड़ना।

पेचिका—स्त्री० [सं० पेचक+टाप्, इत्व] उल्लू पक्षी की मादा।

पेचिश—स्त्री० [फा०] १ एक उदर रोग जिसमें आँतों में घाव हो जाते हैं जिसमें पेट में ऐंठन होने लगती है और बार बार ऐसा पाखाना होने लगता है जिसमें सफेद रंग का लसीला गाढ़ा पदार्थ मिला रहता है। २ उक्त रोग में पेट में होनेवाली ऐंठन या मरोड़।

क्रि० प्र०—पड़ना।

पेचीदगी—स्त्री० [फा०] १. पेचीदा अर्थात् पेचीले होने की अवस्था या भाव। घुमावदार होने की अवस्था या भाव। २ बहुत ही उलझी हुई स्थिति या ऐसी स्थिति उत्पन्न करनेवाली बात। उलझन।

पेचीदा—वि० [फा० पेचीद] पचीला। (दे०)

पेचीला—वि० [हिं० पेच+ईला (प्रत्य०)] [वि० स्त्री० पचीली] १ जिसमें बहुत से पेच हों। घुमाव-फिराववाला। २ (काम या बात) जिसमें बहुत सी उलझनें, कठिनाइयाँ या झंझटें हों। ३ (बात या विषय) जो इतना अधिक कठिन और जटिल हो कि उसे सामान्यतया न समझा जा सके।

पेचीलापन—पुं० [हिं० पेचीला+पन (प्रत्य०)] पेचीले होने की अवस्था, गुण या भाव।

पेज—स्त्री० [सं० पेय] रबड़ी। बसौंधी।

पुं० [अं०] पुस्तक, बही, मासिक पत्रिका, समाचारपत्र आदि के पृष्ठ का एक ओर का भाग। पन्ना। वरक।

*स्त्री० [हिं० पैंज] १ लाज। शरम। २ प्रतिष्ठा।

पेट—पुं० [सं० पेट थैला] १ शरीर के मध्य भाग का वह सामनेवाला अंग जो छाती के नीचे और पेड़ू के ऊपर रहता है और जिसके भीतरी भाग में आमाशय, गुरदा, प्लीहा, यकृत आदि अंग होते हैं। २ उक्त अंग के भीतरी भाग की वह थैली जिसमें पहुँचकर खाया हुआ भोजन पचता है। आमाशय। ओझर। पचौनी।

विशेष—पेट में होनेवाले विकारों तथा उसकी आवश्यकताओं से संबंधित पद और मुहावरे इसी अर्थ के अन्तर्गत आये हैं।

पद—पेट का कुत्ता=जो केवल भोजन के लालच में सब कुछ करता या कर सकता हो। केवल पेट के लिए सब कुछ करनेवाला। **पेट का धंधा**=(क) रसोई बनाने का काम या व्यवस्था। जैसे—स्त्रियाँ सबेरे उठते ही पेट के धंधे में लग जाती हैं। (ख) जीविका-निर्वाह के लिए किया जानेवाला उद्योग। काम-धंधा। **पेट की आग**=भूख। क्षुधा। **पेट के लिए**=इस उद्देश्य से कि पेट भरने का साधन बना रहे। उदर पूर्ति या जीविका-निर्वाह के लिए।

मुहा०—पेट अफरना पेट में ऐसा विकार होना कि वह वायु से भर और फूल जाय। **पेट आना**=पतले दस्त आना। (व्य०) **पेट और पीठ एक हो जाना या पेट पीठ से लग जाना** (क) बहुत भूख लगना। (ख) बहुत अधिक दुबला हो जाना। **(अपना) पेट काटना**=पैसे बचाने के लिए कम खाना। इसलिए कम खाना कि पैसों की कुछ बचत हो। **(किसी का) पेट काटना** ऐसा काम करना जिसमें किसी को खाने के लिए आवश्यक या उचित से कम अन्न या धन मिले। जैसे—गरीब का पेट नहीं काटना चाहिए। **पेट का पानी तक न हिलना**=कुछ भी कष्ट या परिश्रम न पड़ना। जरा भी तकलीफ या मेहनत न होना। **पेट का पानी न पचना** किसी काम या बात के लिए इतनी उत्सुकता और विकलता होना कि उसके बिना रहा न जा सके। **पेट की आग बुझाना** पेट में भोजन पहुँचाना। खाकर भूख मिटाना। **(किसी को) पेट की मार देना (या मारना)** (क) भूखा रखना। भोजन न देना। (ख) जीविका उपार्जन में बाधक होना। **पेट को धोखा देना**=दे० ऊपर '(अपना) पेट काटना'। **पेट खलाना**=(क) अपने भूखे होने का संकेत करना। यह इशारा करना कि हमें बहुत भूख लगी है। (ख) बहुत अधिक दीनता या नम्रता प्रकट करना। **पेट को लगना**=बहुत

अधिक भूख लगना। **पेट गड़ना**- अपच के कारण पेट मे दर्द होना। **पेट गुड़गुड़ाना**=पेट मे अपच, वायु-विकार आदि के कारण गुड-गुड का-सा शब्द होना। **पेट चलना**-- (क) ऐसी व्यवस्था होना कि जीविका चलती रहे या उसका साधन बना रहे। जैसे---सौ रुपये महीने मे सारी गृहस्थी का किसी तरह पेट चलता है (ख) रह-रहकर पतले दस्त होना। **पेट छंटना**-=(क) पेट का मल या विकार निकल जाना जिससे वह हलका हो जाय। (ख) पेट की मोटाई कम होना **पेट छूटना**=पतले दस्त आना। **पेट जलना** -(क) बहुत भूख लगना। (ख) मन ही मन बहुत अधिक क्रोध होना। रोष होना। **पेट जारी होना**=पतले दस्त आना। **(अपना) पेट दिखाना** -अपने भूखे होने का संकेत करना। यह इशारा करना कि मुझे भूख लगी है। **पेट पकड़े फिरना**=बहुत अधिक कष्ट, विकलता आदि के चिह्न प्रकट करते हुए जगह-जगह घूमना या जाना। **पेट पाटना**=जो कुछ मिल जाय, उसी से पेट भर लेना। भूख के मारे खाद्य या अखाद्य का विचार छोडकर खा लेना। **पेट पानी होना**=बार-बार बहुत अधिक पतले दस्त आना। **पेट पालना** -कठिनता से खाने भर को कमा लेना। किसी तरह या जैसे-तैसे जीविका-निर्वाह करना। पेट **फूलना**- पेट अफरना। (देखें ऊपर) **(कुछ करने, कहने या जानने के लिए) पेट फूलना**=बहुत अधिक उत्सुकता या विकलता होना। जैसे---तुम्हारा सारा हाल सुनने के लिए इन लोगो का पेट फूल रहा है। **(हंसते हंसते) पेट फूलना**--बहुत अधिक हँसने के फल-स्वरूप पेट मे बहुत अधिक वायु भर जाना और अधिक हँसने के योग्य न रह जाना। **पेट भरना**- (क) जो कुछ मिले, उसे खाकर भूख मिटाना। (ख) खूब अच्छी तरह और यथेष्ट भोजन करना। (ग) इच्छा, कामना आदि पूर्ण करना या होना। जी भरना। **पेट मार कर मर जाना**=आत्म-घात कर लेना (पेट मे छूरा मारकर मर जाने के आधार पर)। **पेट मारना**- पेट काटना (दे० ऊपर)। **पेट में आँत और मुख में दांत न होना** इतना अधिक वृद्ध होना की पाचन शक्ति बिलकुल न रह गई हो और सब दांत झड या टूट गये हो। **पेट में चूहा कूदना या दौड़ना**- बहुत अधिक भूख लगना। **पेट में च्यूंटे की गाँठ होना** बहुत ही थोडा भोजनकर सकने के योग्य होना। बहुत ही अल्पाहारी होना। **पेट मे डालना**-- जो कुछ मिले, वही खाकर भूख मिटाना। किसी तरह पेट भरना। **पेट में दाढी होना** -थोडी अवस्था मे ही वयस्को की तरह बहुत अधिक चालाक या होशियार होना। **पेट में पाँव होना** अत्यन्त छली या कपटी होना। बहुत चालू होना या धोखेबाज होना। **(हँसते हँसते) पेट में बल पड़ना**- इतनी हँसी आना कि पेट मे दर्द-सा होने लगे। **पेट मोटा होना या हो जाना** --ऐसी स्थिति होना कि थोडे या सहज मे तृप्ति या सतोष न हो सके। जैसे---जिन रोजगारियो का पेट मोटा हो जाता है, वे कम मुनाफ़े पर माल नहीं बेचते। **पेट लगना या लग जाना**-- भूख से पेट अदर धँस जाना। **पेट से पाँव निकालना** (क) किसी अच्छे आदमी का बुरा काम करने लग जाना। कुमार्ग में लगना। (ख) योग्यता, सामर्थ्य आदि से बहुत बढ़कर कोई काम करने के लिए प्रवृत्त होना।

३ स्त्री का गर्भाशय, अथवा उसमे स्थित होनेवाला गर्भ। हमल।

पद---पेट ढोट्टी--वह स्त्री जिसके गर्भ तो हो, परन्तु ऊपर से उसका कोई लक्षण जल्दी दिखाई न देता हो। गर्भवती होने पर भी जिसके गर्भ के बाहरी लक्षण दिखाई न पड़ें। **पेट-पोंछना**=किसी स्त्री की वह सतान जिसके उपरात और कोई सतान न हुई हो। अन्तिम सतान। **पेट-वाली** गर्भवती स्त्री।

मुहा०---पेट गबराना=-गर्भवती होने के कारण पेट का चिकना होकर कुछ उभरना या भारी जान पडना। **पेट गिरना** गर्भाशय में ठहरा हुआ गर्भ निकल जाना। गर्भपात होना। **पेट गिरवाना** गर्भपात कराना। **पेट गिराना**=गर्भवती होने की दशा मे जान-बूझकर ऐसा उपाय, प्रयोग या युक्ति करना कि गर्भपात हो जाय। पेट छटना सतान का प्रसव होने के उपरात पेट के अदर का सारा बचा-खुचा विकार निकल जाने पर पेट का साफ और हलका हो जाना। पेट ठढा रहना -सतान का जीवित रहना और फलत माता का सुखी रहना। **(स्त्री का) पेट फुलाना या फुला देना** - किसी स्त्री को गर्भवती कर देना। **पेट फूलना**= गर्भवती होना। **पेट रखाना**=पुरुष के साथ सभोग कर के गर्भाशय में गर्भ स्थित कराना। जैसे---न जाने कहाँ से पेट रखाकर आई है। **पेट रहना** -गर्भवती होना। **पेट मे होना** =गर्भवती होना। **पेट होना**=गर्भवती होना।

४ लाक्षणिक रूप मे, अतःकरण या मन जिसमे अनेक प्रकार की प्रवृत्तियाँ वासनाएँ और विचार उठते या रहते हैं।

पद---पेट का गहरा =(व्यक्ति) जो अपने मन की बात किसी पर प्रकट न होने दे। **पेट का हलका**-- (क) जो कोई भेद की बात सुनकर उसे छिपा न रख सकता हो। ओछे या क्षुद्र स्वभाववाला। **पेट की बात**- मन मे छिपाकर रखा हुआ गूढ उद्देश्य या और कोई बात। **पेट में** -मन या हृदय मे। जैसे---तुम्हारे पेट मे जो कुछ हो, वह भी कह डालो।

मुहा०---(किसी को अपना) पेट देना=अपना गूढ भेद या विचार किसी का बतलाना। उदा०---अपनौ पेट दियौ तै उनकौ नाकबुद्धि तिय सबै कहैरी।---सूर। **पेट में खलबली पड़ना, मचना या होना** =कुछ करने, कहने या जानने-सुनने के लिए मन मे बहुत अधिक उत्सुकता और विकलता होना। छटपटी पडना। **(किसी के) पेट में घुसना** = किसी का भेद लेने के लिए उससे मेल-जोल बढाना। **पेट में चूहे कूदना या दौड़ना**=कोई काम करने या बात जानने के लिए बहुत अधिक उत्सुकता छटपटी या विकलता होना। **(कोई बात) पेट में डालना** देखी या सुनी हुई बात अपने मन मे छिपाकर रखना। किसी पर प्रकट न होने देना। **(किसी के) पेट में पैठना या बैठना** --दे० ऊपर (किसी के) पेट मे घुसना।

५ लाक्षणिक रूप मे कोई चीज अधिकार या भोग मे होने की अवस्था।

मुहा०---(कोई चीज किसी के) पेट में होना=किसी के अधिकार या भोग मे होना। जैसे---सारा माल उसी के पेट मे है। **(कोई चीज किसी के) पेट से निकालना** =जो चीज किसी ने उडा, छिपा या दबा-कर रख छोडी हो, वह किसी प्रकार उससे प्राप्त करना या उसके अधिकार से निकलवाना या निकालना। जैसे---इतने दिनो बाद भी तुमने यह कलम (या पुस्तक) उसके पेट से निकालकर ही छोडी।

६ किसी खुली या पोली चीज के बीच का भीतरी खाली या खोखला भाग। किसी पदार्थ के अदर का वह स्थान जिसमे कोई चीज भरी जा सके या भरी जाती हो। जैसे---बोतल या लोटे का पेट, बगीचे या

मकान का पेट। ७. बंदूक या तोप मे का वह स्थान जहाँ गोली या गोला भरा या रखा जाता है। ८. चक्की के दोनो पाटो के बीच का वह स्थान जिसमे पहुँचकर कोई चीज पिसती है। ९ सिल आदि का वह भाग जो कूटा हुआ और खुरदरा रहता है और जिस पर रखकर कोई चीज पीसी जाती है। १० किसी प्रकार का ऐसा अवकाश जिसमे कोई चीज आ ठहर या रह सके। गुजाइश। समाई। जैसे—जिस काम का जितना पेट होगा, उसमे उतना ही खरच पड़ेगा।

पेटक—पु० [स०√पिट् (इकट्ठा होना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० अल्पा० पेटिका] १ पिटारा। मजूषा। २ सदूक। ३ ढेर। राशि। समूह।

पेटकैयाँ—क्रि० वि० [हि० पेट+कैयाँ (प्रत्य०)] पेट के बल। जैसे—पेटकैयाँ चलना या लेटना।

पेट पूजा—स्त्री० [हि०] भोजन करना। खाना। (परिहास और व्यग्य)

पेट-पोसुआ—वि० [हि० पेट+पोसना] १ (केवल) अपने उदर की पूर्ति करने और चाहनेवाला। २ स्वार्थी। ३ पेटू।

पेटरिया†—स्त्री०=पिटारी।

पेटल—वि० [हि० पेट+ल (प्रत्य०)] बहुत बड़े पेटवाला। तोंदल।

पेटा—पु० [हि० पेट] १ किसी पदार्थ मे पेट के स्थान पर पड़नेवाला अर्थात् मध्य भाग। बीच का हिस्सा। २ किसी चीज का मध्य भाग, विशेषत ऐसा मध्य भाग जो खाली हो तथा भरा जाने को हो। ३ किसी मद या शीर्षक के अतर्गत होनेवाला अश या भाग। ४ उक्त अश मे लिखा जानेवाला या लिखा हुआ विवरण। ५ उक्त के आधार पर किसी प्रकार का विस्तृत विवरण। ब्योरेवार बाते।

मुहा०—पेटा भरना=विवरण आदि लिखा जाना।

६ घेरा। वृत्त। ७ फैलाव। विस्तार। ८ विस्तार की अतिम सीमा। हद। ९ वह गड्ढा जिसमे से होकर नदी और नाला बहता है। १० नदी या नाले के ऊपरी तल की चौड़ाई या विस्तार। पाट। ११ पशुओ की आँते जो उनके पेट के अतिम सिरे पर रहती है। १२ बड़ा टोकरा। दौरा। १३ उड़ती हुई पतग की डोर का वह भाग जिसमे झोल पड़ा रहता है।

मुहा०—पेटा छोड़ना=उड़ती हुई गुड्डी की डोर का बीच मे से लटक या झूल जाना। **पेटा तोड़ना** अपनी डोर या नख से दूसरे की गुड्डी या पतग का उक्त अश काट देना।

पेटागि—स्त्री० [हि० पेट+आग] १ खाली पेट होने पर लगनेवाली भूख। २ उदर पूर्ति की चिता।

पेटारा—पु० [स्त्री० अल्पा० पेटारी] पिटारा।

पेटार्थी, पेटार्थू—वि० दे० 'पेटू'।

पेटिका—स्त्री० [स०√पिट् (इकट्ठा होना)+ण्वुल्—अक, टाप्,+इत्व] १. पिटारी नाम का वृक्ष। २ छोटी पेटी। ३ छोटी पिटारी।

पेटिया—पु० [हि० पेट] भोजन आदि के लिए मिलनेवाला दैनिक भत्ता।

पेटिया जड़—स्त्री० [हि० पेट] वनस्पति विज्ञान मे ऐसी मूसला जड जो खूब फूली हुई और मोटी हो। गाजर, मूली, शलजम आदि कद इसी के अतर्गत है।

पेटी—स्त्री० [हि० पेट] १ मनुष्य के शरीर मे, छाती और पेडू के बीच का वह स्थान जो प्राय कुछ उभरकर आगे निकल आता है और जिसमे त्रिवली नाम के दो या तीन बल पड़ते है।

मुहा०—पेटी निकलना या पड़ना=पेट का उक्त भाग फूलकर आगे की ओर निकलना। **(किसी से) पेटी लड़ाना**=मैथुन या सभोग करना।

२ अन्न के दानो का भीतरी भाग जिसके पुष्ट होने से वे अधिक समय तक बिना घुने रह सकते है। जैसे—कच्ची (या पक्की) पेटी का गेहूँ। ३ कमर मे लपेट कर बाँधने का तस्मा। कमरबद। ४. उक्त प्रकार का वह तस्मा जिसमे चपरास भी लगी रहती है।

मुहा०—पेटी उतरना सिपाही का मुअत्तल या बरखास्त किया जाना।

५ उक्त प्रकार का वह तस्मा या पेट्टी जो बुलबुल आदि पक्षियो की कमर मे इसलिए बाँधी जाती है कि उसमे लगे हुए डोरे के आधार पर वे अड़ने या हाथ पर बैठाये जा सके। (बेल्ट, अतिम तीनो अर्थो मे)

क्रि० प्र०—बाँधना।

स्त्री० [स० पेटिका] १ छोटा सदूक। सदूकची। जैसे—रोकड़ रखने या माल बाहर भेजने की पेटी। २ छोटी डिबिया। जैसे—दियासलाई की पेटी, सिगरेट की पेटी। ३ उक्त प्रकार का वह आधान जिसमे हज्जाम अपना उस्तरा कैची, नहरनी आदि रखते है। किसवत।

पेटीकोट—पु० [अ०] छोटे घेरेवाला एक तरह का घाघरा जिसे आज-कल स्त्रियाँ धोती या साड़ी के नीचे पहनती हैं।

पेटू—वि० [हि० पेट] १ जो बहुत अधिक खाता हो। २ जो सदा उदर-पूर्ति की ताक मे लगा रहता हो। भुक्खड़।

पेटेंट—वि० [अ०] जो आविष्कृत तथा किसी विशिष्ट नाम से प्रसिद्ध हो और जिसे उक्त विशिष्ट नाम से बनाने तथा बेचने का एकाधिकार सरकार से किसी को प्राप्त हो। जैसे—पेटेंट दवाएँ।

पेट्रोल—पु० [अ०] काले रग का एक प्रसिद्ध ज्वलनशील खनिज तेल जिसके ताप से मोटरो के इजन आदि चलते हैं और जिसमे कई प्रकार की उपयोगी चीजे निकलती या बनती हैं।

पु० [अ० पैट्रोल] १ सैनिक रक्षा के लिए घूम-घूम कर पहरा देना। २ पहरा देनेवाला सैनिक।

पेठ‡—स्त्री० पैठ।

पेठा—पु० [देश०] १ कुम्हड़े के आकार-प्रकार का एक तरह का फल जिसका मुरब्बा डाला तथा मिठाई बनाई जाती है। सफेद कुम्हड़ा। २ उक्त की बनी हुई मिठाई या मुरब्बा।

पेड़—पु० [प्रा० पेण्ड पिड] १ वृक्ष। दरख्त।

पु० [स० पिंड] आदि या मूल कारण।

पेड़ना†—स०=पेरना।

पेडल—पु० [अ०] साइकिल, रिक्शे आदि का वह अग जिस पर पैर रखा जाता है और जिसके चलाये जाने पर साइकिल या रिक्शा आगे बढ़ता है।

पेड़ा—पु० [स० पिंड] १ खोए और चीनी या खाँड से बनी हुई एक प्रसिद्ध गोलाकार चिपटी टिकिया के आकार की मिठाई। २ उक्त आकार या रूप मे लाई हुई (गूँधे हुए) आटे की लोई जिसे बेल कर पूरी रोटी आदि का रूप दिया जाता है।

स्त्री० [स०] बड़ा टोकरा या पिटारा।

पेड़ार†—पु० [स० पिंड] एक प्रकार का वृक्ष।

पेड़ी—स्त्री० [हि० पेड़] १. छोटा पेड़ या पौधा। जैसे—नील की पेड़ी। २. पान का पुराना पौधा। ३ उक्त पौधे का पान। ४ मनुष्य का

धड़। ५ प्रति पेड के हिसाब से लगनेवाला कर। ६ ऐसा खेत जिसमें ऊख की फसल कट चुकी हो और जिसे जोतकर गेहूँ आदि बोने के योग्य बनाया गया हो।

पेड़ू—पुं० [हिं० पेट] १. मनुष्य के शरीर में मूत्रेंद्रिय से ऊपर तथा नाभि से कुछ नीचे का स्थान। पेट के नीचे का अगला अंश या भाग। उपस्थ। २ गर्भाशय।

पद—पेड़ू की आँच=(क) स्त्री के मन मे होनेवाली काम-वासना। (ख) केवल कामुकता के कारण किसी पुरुष के साथ होनेवाली आसक्ति।

पेढ़ी†—स्त्री०=पिढ़ी।

पेधर—पु० [देश०] आध्र, बगाल आदि प्रदेशो में होनेवाला एक प्रकार का बहुत बडा जंगली पेड जिसकी लकडी का रग सफेद होता है और जो इमारत के काम आती है।

पेन—पु० [देश०] लसोडे की जाति का एक वृक्ष जो गढवाल मे होता है। इसकी लकड़ी मजबूत होती है। इसे 'कूम' भी कहते हैं।

पु० [अ०] अगरेजी ढंग की कलम जिसमे धातु की निब लगी रहती है।

पेनी—स्त्री० [अ०] इग्लैंड में प्रचलित एक सिक्का, जिसका मूल्य शिलिंग के बारहवें भाग के बराबर होता है।

पेन्शन—स्त्री० [अ०] अनुवृत्ति। (दे०)

पेन्सिल—स्त्री० [अ०] लकडी का बना हुआ एक प्रकार का लबोतरा और पतला लिखने का प्रसिद्ध उपकरण जिसमें मसाले की बत्ती भरी होती है और जिससे कागज आदि पर लिखते हैं।

पेन्हाना—अ० [स० पय स्रवन, प्रा० पह्णवन] दुहे जाने के समय भैंस आदि के थन में दूध उतरना।

†स०=पहनाना।

पेपर—पु० [अ०] १ कागज। २ समाचार-पत्र। अखबार। ३ तमस्सुक, दस्तावेज आदि विधिक पत्र। लेख्य। ४ किसी तरह या विषय के कागज-पत्र। ५. प्रश्न-पत्र।

पेपरमिन्ट—पु० =पिपरमिंट।

पेम*पु०=प्रेम।

पेमचा—पु० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपडा।

पेमेंट—पु० [अ०] देन का चुकाया जाना। भुगतान। (दे०)

पेय—वि० [स०√पा (पीना)+यत्] जो पीया जा सके। पीये जाने के योग्य।

पु० १ कोई ऐसा स्वादिष्ट तरल पदार्थ जो पीने के काम मे आता हो। पीये जाने के योग्य तरल पदार्थ। (ड्रिंक) जैसे—दूध, शरबत, शराब आदि। २ जल। पानी। ३ दूध।

पेया—स्त्री० [स०] १. वैद्यक मे चावलो की बनी हुई एक प्रकार की लपसी जो रोगियों को पथ्य के रूप मे दी जाती थी। २. चावल की माँड़। पीच। ३ अदरक। आदी। ४. सोआ नामक साग। ५ सौंफ। ६. कोई पेय पदार्थ। जैसे—दूध, मद्य, शरबत आदि।

पेयूष—पु० [स०√पीय् (तृप्त करना)+ऊषन्] १. वह दूध जो गौ के बच्चा देने के सात दिन बाद तक निकलता है। उसका स्वाद अच्छा नहीं होता और पीने पर विकार उत्पन्न करता है। पेउस। २ ताजा घी या मक्खन। ३. अमृत। सुधा।

पेरना—स० [सं० पीडन] १. वनस्पति, बीजों आदि में से उनका तरल अंश (जैसे—तेल, रस आदि) निकालने के लिए उन्हे कोल्हू आदि में डालकर दबाना। दो भारी तथा कड़ी वस्तुओ के बीच मे डालकर किसी तीसरी वस्तु से दबाना। २ लाक्षणिक अर्थ मे, किसी को बहुत अधिक कष्ट देना। ३ किसी काम मे बहुत अधिक देर लगाना।

स० [स० प्रेरण] १ प्रेरित करना। २. भेजना।

स० [स० परिधान] पहनना। (राज०)

पेरली—स्त्री० [?] ताडव नृत्य का एक भेद जिसमे अगों का विक्षेपण विशेष रूप से होता है।

पेरवा, पेरवाह†—पु० [हिं० पेरना] वनस्पतियो, बीजों आदि को पेरकर उनमे से तरल पदार्थ निकालनेवाला व्यक्ति।

पेरा—पु० [हिं० पीला] एक प्रकार की कुछ पीली मिट्टी जिससे दीवार, घर इत्यादि पोतने का काम लिया जाता है। पोतनी मिट्टी।

†पु० =पेडा।

पेराई—स्त्री० [हिं० पेरना] पेरने की क्रिया, भाव और मजदूरी।

पेरी—स्त्री० [हिं० पीली] पीले रग मे रगी हुई धोती जो शुभ अवसरों पर पहनी तथा देवियो या नदियो को चढ़ाई जाती है। पियरी।

पेरु—पु० [स०√पुर् (आगे जाना)+ऊ, नि० एत्व] १. सागर। समुद्र। २ सूर्य। ३ अग्नि। आग।

वि० १ रक्षा करनेवाला। रक्षक। २ पूर्ण या पूरा करनेवाला।

पेरोल—पु० [अ०] कारावास में रखे गये दंडित अपराधी को कुछ नियत अवधि के लिए खुला छोडना।

पेलक—पु० [स०√पेल् (कॉपना)+अच्,+क] अडकोष।

पेलढ़—पु० [सं० पेलक] अडकोश।

पेलना—स० [सं० पीडन] १ दबा या ढकेलकर किसी को कहीं घुसाना या धँसाना। २ धक्का देना। ढकेलना। ३ आज्ञा, विधि आदि का उल्लघन करना। ४ त्यागना। हटाना। फेंकना। ५ दूर करना। हटाना। ६ बल-प्रयोग करना। गुदा-भजन करना। अप्राकृतिक सभोग करना। (बाजारू) ८ दे० 'पेरना'।

स० [स० प्रोण] किसी पर आक्रमण करने के लिए हाथी, घोडा आदि उसके आगे या सामने छोडना।

पेलव—वि० [स०√पेल्+घञ्, पेल√वा (गति)+क] १ कोमल। २ दुबला-पतला। कृश। क्षीण। ३ छितरा हुआ। विरल।

पेलवाना—स० [हिं० पेलना का प्रेरणार्थक रूप] पेलने का काम दूसरे से कराना।

पेला—पु० [हिं० पेलना] १ एक दूसरे पर पिल पडने की क्रिया या भाव। २ हाथा-बाँही या उसके साथ होनेवाली मार-पीट। ३ झगडा। तकरार। ४. आक्रमण। चढाई। ५ अपराध। कसूर।

पेलास—पु० [अं०] मगल और बृहस्पति के बीच का एक क्षुद्र ग्रह जो सूर्य से २५.७ करोड़ मील दूर है।

पेलू—वि० [हिं० पेलना+ऊ (प्रत्य०)] १ पेलनेवाला। जो पेलता हो। २ जबरदस्त। बलवान्।

पु० १ वह जो किसी लडके के साथ अप्राकृतिक मैथुन करता हो। गुदा-भजन करनेवाला। २ स्त्री का उपपति। जार।

पेल्हड़—पु०=पेलढ़।

पेवाँ†—पु०=प्रेम।

पेवकड़ा†—पुं०=पेका (मायका)। उदा०—पेवकडे दिन चारि है साहुरेड़ जाणा।—कबीर।

पेवक्कड़†—वि०=पियक्कड (बहुत अधिक पीनेवाला)।

पेवड़ी—स्त्री० [स० पीत] १ पीले रग की बुकनी। २ रामरज नाम की पीली मिट्टी।

पेवर—पु० [स० पीत] पीला रग।

पेवस—पु० [स० पेयूष] एकाध सप्ताह की ब्याई हुई गाय या भैस का दूध जो कुछ पीलापन लिये गाढ़ा होता है और पीने योग्य नही माना जाता। पेउस।

पेवसी—स्त्री०=पेवस।

पेश—अव्य० [फा०] (किसी की) उपस्थिति मे। समक्ष। सामने।

मुहा०—(किसी से) पेश आना=बरताव करना। व्यवहार करना। **पेश करना**=(क) उपस्थित करना। (ख) भेट करना। **पेश जाना या चलना**=वश चलना।

पु० दे० 'पेश कश'।

पु० [स० पेशस्] कसीदे का काम।

पेश-कब्ज—पु० [फा० पेश+कब्ज] छोटी कटार।

पेश-कश—पु० [फा०] १ आदरपूर्वक उपस्थित किया जानेवाला उपहार। नजर। भेट। २. तोहफा। सौगात। ३ प्रार्थना। ४ प्रस्ताव। तजवीज।

पेशकार—पु० [फा०] [भाव० पेशकारी] १ वह जो किसी के सम्मुख कोई चीज पेश या उपस्थित करता हो। २ न्यायालय मे वह कर्मचारी जो न्यायाधीश के सम्मुख मुकदमो के कागज-पत्र पेश करता है। पु० [स० पेशस्+कार (प्रत्य०)] वह जो कसीदा काढने का काम करता हो।

पेशकारी—स्त्री० [फा०] पेशकार का काम, पद या भाव।

पेश-खेमा—पु० [फा० पेश खेम] १ वह खेमा जो अधिकारी, सेना आदि के अगले पड़ाव पर पहुँचने से पहले इस दृष्टि से लगा दिया जाता है कि आने पर उसे किसी प्रकार का कष्ट न हो। २ किसी पडाव मे ठहरी हुई सेना का सबसे आगेवाला खेमा। ३ पहले से किया जानेवाला प्रबध या बनायी जानेवाली योजना।

पेशगी—स्त्री० [फा० पेश्गी] मूल्य, पारिश्रमिक आदि का वह अश जो किसी से कोई चीज खरीदने से पहले अथवा कोई काम करने से पहले ही उसे दे दिया जाता है (शेष मूल्य या पारिश्रमिक चीज लेते समय या काम करने के उपरात दिया जाता है)। अग्रिम धन। अगाऊ। (एडवान्स)

पेशतर—अव्य० [फा०] किसी की तुलना मे पूर्वकाल मे। पहले। जैसे—वहाँ जाने से पेशतर यहाँ का काम खत्म कर लो।

पेशताक—स्त्री० [फा० पेशताक] एक प्रकार की मेहराब जो सुन्दरता के लिए बडी इमारतो मे दरवाजे के ऊपर तथा कुछ आगे बढाकर बनाई जाती है।

पेशदस्त—वि० [फा०] [भाव० पेशदस्ती] १ पेश करनेवाला। २ छेड़खानी करनेवाला।

पेशबद—पु० [फा०] चारजामे मे लगा हुआ वह दोहरा बन्द जो घोडे की गर्दन पर से लाकर दूसरी ओर बाँध दिया जाता है। इससे वह दुम की ओर नही खिसक सकता।

पेशबंदी—स्त्री० [फा०] १ आक्रमण, रक्षा आदि के लिए पहले से किया हुआ प्रबध, युक्ति या व्यवस्था। २. षड्यंत्र। साजिश।

पेशबीन—वि० [फा० पेशबी] अग्रशोची। दूरदर्शी।

पेशबीनी—स्त्री० [फा०] आगे की बात पहले से सोचना। दूरदर्शिता।

पेशराज—पु० [फा० पेश+हिं० राज] मकान बनानेवाला वह मजदूर जो राज या मेमार के लिए पत्थर ढो ढोकर लाता हो। पत्थर ढोनेवाला मजदूर।

पेशल—वि० [स०√पिश् (अवयव बनाना)+अलच्] १ मनोमुग्धकारी। मनोहर। सुन्दर। २ कुशल। प्रवीण। ३ चालाक। धूर्त। ४ कोमल। मुलायम।

पु० विष्णु।

पेशलता—स्त्री० [स० पेशल+तल्+टाप्] पेशल होने की अवस्था या भाव।

पेशवा—पु० [फा०] १. वह जो किसी दल के आगे चलता हो, अर्थात् नेता। सरदार। २ मध्ययुग मे दक्षिण भारत के महाराष्ट्र साम्राज्य के प्रधान मत्रियो की उपाधि।

पेशवाई—स्त्री० [फा०] १ पेशवा होने की अवस्था या भाव। नेतृत्व। २ महाराष्ट्र साम्राज्य मे पेशवाओं की शासनप्रणाली या शासन-काल। ३ अतिथि का आगे बढकर किया जानेवाला स्वागत।

पेशवाज—स्त्री० [फा० पिश्वाज] बहुत बडे घेरेवाला वह घाघरा या लहँगा जो नर्तकियाँ नाचने के समय पहनती हैं।

पेशा—पु० [फा० पेश] १ वह कार्य, सेवा या व्यवसाय जो जीविका-उपार्जन का साधन हो। व्यवसाय। (प्रोफेशन) २ वेश्यावृत्ति।

मुहा०—पेशा कमाना=स्त्री का व्यभिचार के द्वारा धन कमाना।

३ समस्त पदो के अन्त मे, वह जिसका पेशा अमुक (पूर्वपद मे उल्लिखित) हो। जैसे—नौकरी-पेशा।

पेशानी—स्त्री० [फा०] १ ललाट। भाल। मस्तक। माथा। २ प्रारब्ध। भाग्य। (क्व०) ३ किसी पदार्थ का अगला और ऊपरी भाग।

पेशाब—पु० [फा०] १ मूत। मूत्र।

मुहा०—(किसी चीज पर) पेशाब करना=बहुत ही तुच्छ या हेय समझना। **(धन) पेशाब के रास्ते बहाना** लैंगिक भोग-विलास मे धन नष्ट करना। बहुत अधिक भयभीत होने के लक्षण प्रकट करना। **(किसी को देखकर) पेशाब बन्द होना**=अत्यन्त भयभीत हो जाना। **(किसी के) पेशाब से चिराग जलना**=किसी का अत्यन्त प्रभावशाली और वैभवशाली होना।

२ पुरुष की धातु। वीर्य। ३ औलाद। सतान।

पेशाब-खाना—पु० [फा०] पेशाब करने के लिए बनाया हुआ स्थान।

पेशावर—वि० [फा० पेशवर] १ जो कोई पेशा करता हो। २. (व्यक्ति) जिसने किसी परोपकार या लोक-रजन के काम को ही पेशा बना लिया हो। जैसे—पेशावर शायर। ३ (स्त्री) जो व्यभिचार के द्वारा जीविका उपार्जन करे।

पु० [सं० पुरुष पुर] अखंड भारत की उत्तर पश्चिमी सीमा का एक प्रसिद्ध नगर जो अब पाकिस्तान में चला गया है।

पेशि—स्त्री० [सं०√पिश्+इन्]=पेशी। (देखें)

पेशि-कोष—पु० [सं० ष० त०] अंडा।

पेशिका—स्त्री० [सं० पेशि+कन्,+टाप्] अडा।

पेशी—स्त्री० [सं०] १ मास का टुकड़ा। मास-खड। २ शरीर के अन्दर मास के रेशो की वह गुलथी या समूह जिससे भिन्न भिन्न अगों को मोडने, सिकोडने आदि मे सहायता मिलती है। (मसल्) ३ गर्भाशय मे स्थिति होनेवाले गर्भ का आरमिक रूप। ४. अडा। ५. तलवार की म्यान। ६ फूल की कली। ७ जटामासी। ८. जूता। ९. एक प्राचीन नदी। १० इद्र का वज्र। ११ पुरानी चाल का एक प्रकार का ढोल।

स्त्री० [फा०] १. पेश होने की अवस्था या माव। २ मुकदमे की तारीख के दिन न्यायालय मे वादी और प्रतिवादी का न्यायाधीश के सम्मुख उपस्थित होना। ३ मुख्तार, वकील आदि को उसकी पेशी के दिन की सेवाओ के बदले मे दिया जानेवाला धन।

पेशीन-गो—पु० [फा० पेशीगो] [भाव० पेशीनगोई] भविष्यद्-वक्ता।

पेशीन-गोई—स्त्री० [फा०] भविष्य कथन। भविष्यवाणी।

पेशेवर—वि० =पेशावर।

पेश्तर—अव्य०=पेशतर।

पेषक—वि० [सं०√पिष् (पीसना)+ण्वुल्—अक] पीसनेवाला।

पेषण—पु० [सं०√पिष्+ल्युट्—अन] १. पीसने की क्रिया या भाव। पीसना। २ विशेषत ठोस चीज को पीसकर चूर्ण के रूप मे लाना। (पल्वराइजेशन) ३ थूहड। तिधारा।

पद—पिष्ट-पेषण। (दे०)

पेषणी—स्त्री० [सं० पेषण+ङीप्] वह सिल जिस पर कोई चीज पीसी जाय।

पेषना†—स०=पेखना।

पु०=पेखन।

पेषि—स्त्री० [सं०√पिष्+इन्] वज्र।

पेषी—स्त्री० [सं० पेषि+ङीष्] पिशाचिनी।

पेस—अव्य०, पु०=पेश।

पेसना—स० [सं० पेषण] कोई छोटी चीज किसी बडी चीज के अन्दर धँसाना या घुमाना।

*अ० प्रवेश करना। घुसना।

पेसल—वि० [सं० पेशल] कोमल। उदा०—पिय रस पेसल प्रथम समाजे।—विद्यापति।

पेहँटा—पु० [देश०] कचरी नाम की लता का फल जो कुँदरू के आकार का होता है और जिसकी तरकारी बनती है।

पेहर—पु० [?] १. वह स्थान जहाँ हरी घास उगी हो। चरागाह। २ एक प्रकार का गीत जो किसान बैल चराते समय गाते हैं।

पैंकड़ा—पु० [हिं० पायँ=कड़ा] १ पैर का कड़ा। २. बेडी।

पु० [?] ऊँट की नकेल।

पैंग—स्त्री०=पेग।

पैंगि—पु० [सं० पैंग+इञ्] यास्क का एक नाम।

पैंच—स्त्री० [सं० प्रतंची] धनुष की डोरी।

स्त्री० [सं० पुच्छ] मोर की दुम।

†पु०=पच।

पैंचना—स० [देश०] १ अनाज फटकना। पछोरना। २ पलटना। फेरना।

पैंचा—पु० [देश०] १ अदला-बदली। हेर-फेर। २ बहुत थोडे समय के लिए उधार या मँगनी लेने की क्रिया या भाव। मगनी। ३ उक्त प्रकार से माँगकर ली हुई चीज।

वि० उधार या मँगनी लिया हुआ।

पैंजना—पु० [हिं० पाँय+अनु० झन, झन] [स्त्री० अल्पा० पैंजनी] पैर का एक प्रकार का आभूषण जो कडे के आकार का पर उससे मोटा और खोखला होता है। इसके अन्दर कंकडियाँ रहती है जिससे चलने मे यह बजता है।

पैंजनियाँ—स्त्री०=पैंजनी।

पैंजनी—स्त्री० [हिं० पाँय+अनु० झन, झन] १ छोटा पैजना। २ सग्गड़ या बैलगाड़ी के पहिए के आगे की वह टेढी लकडी जिसके छेद मे से धुरा निकला रहता है।

पैंट—पु० [अं०] पायजामे की तरह का एक अंग्रेजी पहनावा। पत-लून।

पैंठ—स्त्री० [सं० पण्यस्थान, प्रा० पणट्ठा; अप० पहँठ्ठा] १ वह खुला स्थान जहाँ किसी निश्चित दिन या समय छोटे व्यापारी माल बेचने के लिए आकर बैठते हो। २ सप्ताह का वह विशिष्ट दिन जिसमें किसी विशिष्ट स्थान पर बाजार या हाट लगता हो। ३ छोटी दुकान। ४ महाजनी बोलचाल मे, वह हुडी जो पहली हुडी खो जाने पर उसके स्थान पर फिर से लिखकर दी जाती है। ५. कृषको की रमैती (देखें) नामक प्रथा।

पैंठोर—पु०=पैंठ।

पैंड़—पु० [हिं० पाँय+ड(प्रत्य०)या पाददड, प्रा० पायडड] १ कदम। डग। पग।

मुहा०—पैंड भरना=कदम या पैर उठाते हुए किसी ओर चलना। डग भरना।

२ चलने के समय एक पैर से दूसरे पैर तक की दूरी। जैसे—जरा उठकर चार पैंड चलो तो सही। ३. पैंडा। मार्ग। ४ विधि। ढग।

पैंड़ा—पुं० [हिं० पैंड] १ वह दूरी या रास्ता जो कोई चलकर आया हो अथवा चलने को हो।

मुहा०—**पैंड़ा मारना**=बहुत दूर तक पैदल चलते हुए जाना या कही पहुँचना। जैसे—तुम्हारे लिए ही हम इतनी दूर से पैंडा मार कर आये हैं। **(किसी के) पैंड़े पड़ना**=(क) किसी के कार्य या मार्ग में बाधक होना या बाधा खडी करना। (ख) तग या परेशान करना। २. नियत या नियमित रूप से कही आने-जाने की प्रथा। उदा०—राजो घर पैंडा मेरा, जल को होत अबेर। ३ प्रणाली। प्रथा। ४ पानी का घड़ा रखने का स्थान। ५. अस्तबल। घुड़साल।

पैंडिक्य—पु० [सं० पिंड+ठन्—इक,+ष्यञ्] भिक्षावृत्ति।

पैंडिन्य—पु० [सं० पिंड+इनि, ष्यञ्] भिक्षावृत्ति।

पैंडिया—पु० [देश०] कोल्हू में पेरने के लिए गन्ने लगानेवाला मजदूर।

पैंत—स्त्री० [सं० पणकृत, प्रा० पणइत] १. दाँव। बाजी। २. जूआ खेलने का पाँसा।

मुहा०—पैंत पूरना=चौसर के खेल मे पाँसा फेकना। उदा०—प्रमुदित पुलकि पैंत पूरे जनु ।—तुलसी।

पुं० [सं० पद+अंत, प्रा० पईत] १ अंतिम पद या स्थान। २ पायँता। उदा०—सिर सौं खेलि पैंत जिनु लावौ। —जायसी।

वि० [?] जो गिनती या सख्या मे सात हो।

पु० सात की सूचक सख्या। (दलाल)

पैंतरा—पु० [सं० पदांतर, प्रा० पयांतर] १. पटा, तलवार आदि चलाने या कुश्ती लड़ने मे घूम-फिरकर ठीक ऐसी जगह पैर रखने की मुद्रा जहाँ से अच्छी तरह वार किया या रोका जा सके।

मुहा०—पैंतरा बदलना=पटा, तलवार आदि चलाने या कुश्ती लड़ने मे पहलेवाली मुद्रा छोड़कर दूसरी और अधिक उपयुक्त मुद्रा मे आना। **पैंतरा भाँजना**=बार बार इधर-उधर घूमते या हटते हुए पैर जमाकर रखना और वार करने तथा बचाने के लिए हाथ घुमाना या चलाना।

२ चालाकी से भरी हुई कोई चाल। ३ धूल पर पड़ा हुआ पैर का निशान।

पैंतरी—स्त्री० १ =पग-तरी (जूती)। २ दे० 'पैंतरी'।

पैंतरेबाज—पु० [हिं० पैंतरा+फा० बाज] [भाव० पैंतरेबाजी] १ वह जो कुश्ती लड़ने, हथियार आदि चलाने के पैंतरे या ठीक ढग जानता हो। २ वह जो समय समय पर अवसर देखता हुआ उसी के अनुसार अपने रग-ढग या आचरण-व्यवहार बदलना जानता हो।

पैंतरेबाजी—स्त्री० [हिं० पैंतरेबाज] पैंतरेबाज होने की अवस्था, कला या भाव।

पैंतलाय—वि० [?] सत्रह। (दलाल)

पैंतालीस—वि० [सं० पचचत्वारिंशत्, प्रा० पचचत्ताली-सति, अप० पच-तालीसा] जो गिनती या सख्या मे चालीस से पाँच अधिक हो। चालीस और पाँच।

पु० चालीस और पाँच के योग की सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—४५

पैंती—स्त्री० [सं० पवित्त, प्रा० पवित्र, पइत्त] १ कुश को लपेटकर बनाया हुआ छल्ला जो श्राद्धादि कर्म करते समय उँगली मे पहनते हैं। पवित्री। २ ताँबे या त्रिलोह का बना हुआ उक्त प्रकार का छल्ला।

पैंतीस—वि० [सं० पचत्रिंशत, प्रा० पचत्तिसति, अप० पचतीसो] जो गिनती या सख्या मे तीस से पाँच अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है।—३५।

पैंया—स्त्री० [हिं० पाँय] १ पैर। पाँव। २ विशेषत छोटा पैर। बालक का पैर।

पैंसठ—वि० [सं० पचषष्ठि, प्रा० पचसट्ठि] जो गिनती या सख्या मे साठ से पाँच अधिक हो। साठ और पाँच।

पु० उक्त की सूचक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६५।

पै—अव्य० [सं० पर] १. पर। परन्तु। लेकिन।

पद—जो पै=यदि। **तोपै**=तो।

२. उपरात। पीछे। बाद। ३. निश्चित रूप से। अवश्य। जरूर।

अव्य० [सं० प्रति, प्रा० पडि, प्र० हिं० पँह] १. पास। समीप। २ ओर। तरफ। प्रति।

प्रत्य० [सं० उपरि, हिं० ऊपर] १. पुरानी हिन्दी मे अधिकरण कारक की सूचक विभक्ति। पर। ऊपर। २. करण कारक की सूचक विभक्ति। द्वारा। से। उदा०—बिदा हुवै चले राम पै शत्रुहंता।—केशव।

स्त्री० [सं० आपत्ति=दोष, मूल] दोष। ऐब। नुक्स।

मुहा०—(किसी चीज या बात में) पै निकालना=व्यर्थ का और तुच्छ दोष दिखलाना। छिद्रान्वेषण करना।

पु० [देश०] कपड़े पर माँडी लगाने की क्रिया। कलफ चढ़ाना। (जुलाहे)

पु० [सं० पद] पाँव। पैर।

पु० [फा०] वह ताँत जो कमान, गुलेल आदि में लगाई जाती है।

पु० [फा० पा या पाय (पैर) का सक्षिप्त रूप] पाँव। पैर।

पद—प-बर-पै=(क) कदम कदम पर। पग पग पर। (ख) थोड़ी थोड़ी दूरी पर। (ग) एक के बाद एक। निरंतर। लगातार।

†पु०=पय

पैक—पु० [फा०] सदेशवाहक। दूत।

पैकर—पु० कपास से रूई इकट्ठा करनेवाला।

पु० [अं०] पैकिंग करनेवाला व्यक्ति।

पु० [फा०] १ देह। शरीर। २ आकृति।

पैकरमा†—स्त्री०=परिक्रमा।

पैकरा†—पु० [हिं० पैर+कड़ा] बेडी।

पैकरी—स्त्री० [हिं० पांय+कड़ा] पाँव मे पहनने का एक गहना। पैरी।

पैकार—पु० [फा०] युद्ध। लड़ाई।

पु० [?] थोड़ी पूँजीवाला छोटा व्यापारी।

पैकारी—स्त्री० [हिं० पैकार] पैकार का काम, पद या भाव।

वि० पैकार-सम्बन्धी।

पैकिंग—स्त्री० [अं०] १ किसी चीज को कही भेजने या ले जाने के समय बक्स आदि मे अदर रखने अथवा कागज, कपडे आदि मे मजबूती और हिफाजत से बाँधने की क्रिया और भाव। २ उक्त काम का पारिश्रमिक।

पैकी—पु० [फा० पैक=हरकारा] मेले-तमाशे मे घूम-घूमकर लोगो को हुक्का पिलानेवाला व्यक्ति।

पैकेट—पु० [अं०] १ किसी चीज का बँधा हुआ छोटा पुलिंदा। २ वह डिबिया जिसमे एक तरह की कई या बहुत सी चीजे भरी होती हैं। जैसे—सिगरेटो का पैकेट।

क्रि० प्र०—बाँधना।

पैखाना—पु०=पाखाना।

पैगबर—पु० [फा० पैगबर] इस्लाम, ईसाई, मूसाई आदि कुछ धर्मों मे, वह पूज्य व्यक्ति जो ईश्वर का सदेश सुनानेवाला माना जाता और किसी नये धर्म या सप्रदाय का प्रवर्त्तक होता है। (प्रॉफेट)

पैगबरी—वि० [फा०] पैगम्बर-संबधी। पैगबर का। जैसे—पैगंबरी धर्म।

स्त्री० १ पैगम्बर होने की अवस्था, पद या भाव। २. एक प्रकार का गेहूँ।

पैग—पु०=पग (कदम)।

पैगाम—पु० [फा० पैगाम] १ किसी को किसी के द्वारा भेजा जानेवाला सदेश या समाचार। २ विशेषतः ऐसा सदेश या प्रस्ताव जो लड़केवालो की तरफ से लड़कीवालो के यहाँ विवाह-सबध स्थिर करने के लिए भेजा जाय।

क्रि० प्र०—डालना।—भेजना।

पैगोड़ा—पु० [फा० बुत-कद=देवमदिर, पुर्त० पैगोड] दक्षिण पूर्वी एशिया के देशो मे बौद्ध मदिरो की सज्ञा।

पैज—स्त्री० [स० प्रतिज्ञा, प्रा० पतिञ्ञा, अप० पइज्जा] १ प्रतिज्ञा। प्रण।

मुहा०—**पैज सारना**=(क) प्रतिज्ञा पूरी करना। (ख) अपनी बात या हठ रखना। उदा०—बरबस ही लै जान कहते हैं पैज अपनी सारत।—सूर।

२ जिद। हठ।

क्रि० प्र०—करना।—गहना।—बाँधना।

३ लाग-डाँट के कारण बराबरी करने का प्रयत्न। रीस।

मुहा०—(किसी से) पैज पड़ना=प्रतिद्वंद्विता या लाग-डाँट होना।

४ दे० 'पैंतरा'।

पैजनी—स्त्री०=पैजनी।

पैजा—पु० [हिं० पाय+स० जट, हिं० जड] लोहे का कडा जो किवाड के छद मे इसलिए पहनाया रहता है जिसमे किवाड उतर न सके। पायजा।

पैजामा—पु०=पाजामा।

पैजार—स्त्री० [फा० पैजार] जूता। पनही। जोडा।

पद—जूती-पैजार। (दे०)

पैठ—स्त्री० [स० प्रविष्ट, प्रा० पइट्ठ] १ पैठने की क्रिया या भाव। प्रवेश। उदा०—जिन खोजा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ।—कबीर। २ किसी स्थान पर बैठने की क्षमता, सुभीता या स्थिति। पहुँच। जैसे—वहाँ तुम्हारी पैठ नही हो सकेगी।

†स्त्री०=पैठ (बाजार)।

पैठना—अ० [हिं० पैठ+ना (प्रत्य०)] १. किसी स्थान विशेषत किसी गहरे स्थान के अन्दर जाना या घुसना। २. बैठना।

पैठाना—स० [हिं० पैठना] बलपूर्वक अन्दर ले जाना। प्रवेश कराना।

सयो० क्रि०—देना।

पैठार—पु० [हिं० पैठ+आर (प्रत्य०)] १ पैठ। प्रवेश। २ प्रवेशद्वार। फाटक।

पैठारी—स्त्री० [हिं० पैठार] १. पैठ। प्रवेश। २. गति। पहुँच।

पैठी—स्त्री० [हिं० पैठ] बदला। एवज।

पैड—पु० [अ०] सोख्ते, पत्र लिखने आदि के काम आनेवाले कागज की गड्डी। २. कोई छोटी मुलायम गद्दी। जैसे—मोहर की स्याही का पैड।

पैड़ा—पु० [हिं० पैर] खड़ाऊँ।

पैडिक—वि० [स० पीडा+ठक्—इक] फुंसी-सबंधी।

पैड़ी—स्त्री० [हिं० पैर] १ मकानो आदि मे ऊपर चढने की सीढ़ी। जीना। जैसे—हरिद्वार में हर की पैड़ी। २ कूएँ पर चरसा खीचनेवाले बैलो के चलने के लिए बना हुआ ढालुआँ रास्ता। ३. वह गड्ढा जिसमे सिंचाई के लिए जलाशय से पानी लेकर डालते हैं। पौदर।

पैतरा—पु०=पैंतरा।

पैतरी—स्त्री० [हिं० पैतरा] रेशम फेरने की परेती।

†स्त्री०=पग-तरी (जूता)।

पैतला—वि०=पैथला। (देखे)

पैताना—पु०=पायँता।

पैतामह—वि० [स० पितामह+अण्] पितामह-सबधी। पितामह का।

पैतामहिक—वि० [स० पितामह+ठक्—इक] पितामह से प्राप्त धन, सपत्ति आदि।

पैतृक—वि० [स० पितृ+ठञ्—क] १ पितृ या पिता सबधी। २ बाप-दादा तथा अन्य पूर्वजों के समय से चला आया हुआ। पुरखो का। पुश्तैनी। जैसे—पैतृक सपत्ति।

पैतृमत्य—पु० [स० पितृमती+ष्य] १ वह शिशु या (व्यक्ति) जो अविवाहिता बालिका के गर्भ से उत्पन्न हुआ हो। २ विख्यात।

पैत्त—वि० [स० पित्त+अण्] पैत्तिक। (दे०)

पैत्तल—वि० [स० पित्तल+अण्] पीतल का बना हुआ।

पैत्तिक—वि० [स० पित्त+ठञ्—इक] १ पित्त-सबधी। पित्त का। २ (रोग) जिसमे पित्त के प्रकोप के विकार की प्रधानता हो। (बिलिअरी)

पैत्र—पु० [स० पितृ+अण्] १ अँगूठे और तर्जनी के बीच का भाग। पितृतीर्थ। २ पितरो के उद्देश्य से किया जानेवाला श्राद्ध।

पैत्रिक—वि० =पैतृक।

पैथला†—वि० [हिं० पाँय+थल] उथला। छिछला। (मुख्यत जलाशयो आदि के लिए प्रयुक्त)

पैदर—वि०, पु०=पैदल।

पैदल—वि० [स० पादतल, प्रा० पायतल] (व्यक्ति) जो अपने पैरो से ही चल रहा हो या चलता हो (किसी वाहन या सवारी पर न हो)। जैसे—राजा साहब पैदल चले आ रहे थे।

पु० १ पाँव पाँव चलना। पादचारण। जैसे—पैदल का रास्ता, पैदल का सफर। २ ऐसा सिपाही जो पैदल चलता हो और जिसे चलने के लिए सवारी न मिलती हो। (घुडसवार आदि से भिन्न) जैसे—दस सवार और सौ पैदल सिपाही। ३ शतरज मे वह गोटी जो पैदल सैनिक के प्रतीक के रूप मे होती है। यह घर सीधी आगे चलती है, और इसकी मार दाहिने या बाएँ आडे घर पर होती है।

पैदा—वि० [फा०] १. जिसने अभी जन्म लिया हो। नया जन्मा हुआ। नव-प्रसूत। उत्पन्न। जैसे—कल उनके यहाँ लडका पैदा हुआ है। २ जो पहले न रहा हो, और अभी हाल मे अस्तित्व मे आया अथवा प्रकट या व्यक्त हुआ हो। उत्पन्न। जैसे—कोई नई बात या नई बीमारी पैदा होना। ३. (गुण, तत्त्व या पदार्थ) जो प्रयत्नपूर्वक अर्जित या प्राप्त किया गया हो। जैसे—खेत मे अनाज या फसल पैदा

करना, रोजगार मे रुपया पैदा करना, किसी हुनर मे कमाल या नाम **पैदा करना**।

स्त्री० आय। आमदनी। जैसे—यहाँ उन्हे सैकड़ो रुपया रोज की पैदा है।

पैदाइश—स्त्री० [फा०] १ पैदा होने की अवस्था या भाव। उत्पत्ति। २ जन्म। ३ उपज। पैदावार। ४ आय। जैसे—दस रुपए रोज की पैदाइश। ५ वह जो किसी के द्वारा उत्पन्न हुआ अथवा जनमा हो। जैसे—वह कमीने की पैदाइश (सतान) है। ६ प्रारभ। शुरुआत।

पैदाइशी—वि० [फा०] १ जो पैदा होने के समय से ही साथ आया, रहा या लगा हो। जन्म-जात। जैसे—पैदाइशी निशान। पैदाइशी बीमारी। २ उक्त के आधार पर, जो जन्म से ही प्रकृति या स्वभाव के रूप में प्राप्त हुआ हो। जन्मसिद्ध।

पैदावार—स्त्री० [फा०] १ अन्न आदि जो खेत मे बोने से प्राप्त होता है। फसल। २ कारखाने आदि मे होनेवाला किसी चीज का उत्पादन।

पैदावारी†—स्त्री० =पैदावार।

पैन—स्त्री० [स० प्रणाली] १ नाली। २ पनाला।

पैना—वि० [स० पैण=घिसना,] [स्त्री० पैनी] जिसकी धार बहुत पतली या काटनेवाली हो। चोखा। धारदार। तीक्ष्ण। तेज। जैसे—पैनी कटार, पैनी छुरी।

पु० १ बैल हाँकने की हलवाहो की छोटी छडी। २ धातु आदि का नुकीला छड। ३ हाथी चलाने का अकुश।

पु० [?] कुछ विशिष्ट धातुएँ गलाने का मसाला।

†पु० =पैन।

पैनाक—वि० [स० पिनाक+अण्] पिनाक-सबधी। पिनाक का।

पैनाना—स० [हि० पैना] छुरे आदि की धार रगडकर तेज या पैनी करना। चोखा करना। टेना।

मुहा०—**(किसी चीज पर) दाँत पैनाना**=कोई चीज पाने के लिए उस पर निगाह रखना। दाँत गडाना।

पैन्हना†—स० पहनना।

पैन्हाना†—स० =पहनाना।

पैप्पल—वि० [स० पिप्पली+अण्] १ पीपल सबधी। पीपल का। २ पीपल की लकडी या उसके किसी और अग से तैयार किया या बना हुआ।

पैप्पलाद—पु० [स० पिप्पलाद+अण्] पिप्पलाद ऋषि के ग्रथों का अध्ययन करनेवाला।

पैमक—स्त्री० [?] कलाबत्तू की बनी हुई एक प्रकार की सुनहरी गोट जो अँगरखे, टोपी आदि के किनारो पर टाँकी जाती है।

पैमाइश—स्त्री० [फा०] १ नापने या मापने की क्रिया या भाव। २ विशेष रूप से खेतो, जमीनो आदि का क्षेत्र-फल जानने के लिए की जाने वाली नाप। (सर्वे)

पैमाना—पु० [फा० पैमान] १. वह वस्तु (छड, डडा, सूत, डोरी, बरतन आदि) जिससे कोई वस्तु नापी या मापी जाय। मापने का औजार। मानदड। २ विशेषत वह प्याला जिसमे कुछ विशिष्ट मात्रा मे भरकर शराब पीते हैं। मद्य-चषक।

पैमाल—वि० =पामाल।

पैयाँ—स्त्री० [हि० पायँ] पाँव। पैर।

अव्य० पैरो से चलते हुए। पाँव पाँव।

पैया—पु० [स० पाय्य=निकृष्ट] १ बिना सत का अनाज का दाना। खोखला या मारा हुआ दाना।

वि० १ निसार। २ दीन-हीन। ३ तुच्छ। ४ निकृष्ट। बुरा।

पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो पूरबी बगाल, चटगाँव और बरमा मे बहुत होता है। इसमे बडे-बडे फल लगते हैं जो खाए जाते हैं। इसे मूली-मतगा और तिराई का बाँस भी कहते है।

†पु० पहिया।

पैर—पु० [स० पद+दड, प्रा० पयदड, अप० पयँड] १ प्राणियो के शरीर का वह अग या अवयव जिस पर खडे होने की दशा मे शरीर का सारा भार रहता है और जिससे वे चलते-फिरते हैं। पाँव। चरण।

पद—**पैर (या पैरों) की आहट**=परोक्ष मे किसी के आने या चलने से होनेवाली हलकी पद-ध्वनि या शब्द। जैसे—बगलवाले कमरे मे किसी के चलने की आहट सुनकर मैं सचेत हो गया। **पैर की जूती**=बहुत ही तुच्छ और हीन वस्तु या व्यक्ति।

मुहा०—**पैर उखड़ना या उखड़ जाना**=प्रतियोगिता, लडाई आदि मे सामना करने की शक्ति या साहस न रह जाने पर पीछे हटना या भागना। **(किसी के) पैर उखाड़ना**=प्रतियोगिता, युद्ध, विरोध आदि मे इतनी दृढता या वीरता दिखलाना कि विरोधी या शत्रु सामने ठहर न सके और पीछे हटने लगे। **पैर उठाना**=दे० नीचे 'पैर बढाना'। **पैर काँपना या थरथराना**=आशका, दुर्बलता, भय आदि के कारण खडे रहने या चलने की शक्ति अथवा साहस न होना। **(स्त्री के) पैर छूटना**=मासिक धर्म अधिक होना। बहुत रज स्राव होना। **(किसी के) पैर छूना**=दे० 'पाँव' के अन्तर्गत 'पाँव छूना या लगाना।' **(किसी जगह) पैर जमना**=(क) दृढतापूर्वक या स्थिर भाव से खडे होने या ठहरने मे समर्थ होना। (ख) अपने स्थान पर इस प्रकार दृढतापूर्वक अडे या ठहरे रहना कि सहसा विचलित होने या हटने की नौबत न आए। **(किसी जगह) पैर जमाना**=कही पहुँचकर वहाँ अपनी स्थिति दृढ करना। **(किसी जगह) पैर टिकना**=(क) कही खडे होने के लिए आधार या आश्रय मिलना। (ख) कही कुछ समय तक स्थायी रूप या स्थिर भाव से अवस्थित रहना या होना। जैसे—बरसो से वह इधर-उधर मारा फिरता था, पर अब दिल्ली मे उसके पैर टिक गये हैं। **पैर डगमगाना या डिगना**=खडे रहने या चलने मे पैरो का ठीक स्थिति में न रहना और काँपना या विचलित होना। (ख) प्रतिज्ञा, प्रयत्न आदि मे ठीक रास्ते से कुछ इधर-उधर या विचलित होना। **पैर (पैरों) तले से जमीन खिसकना या निकलना**=होश-हवाश गायब होना। **(अपने) पैर तोडना**=(क) बहुत अधिक चल-फिरकर थकना। (ख) किसी काम के लिए बहुत अधिक दौड-धूप करना। **(किसी के) पैर तोडना**=किसी को चलने-फिरने या कुछ करने-धरने मे असमर्थ करना। **पैर दबाना**=किसी की सेवा-टहल करना या थकावट दूर करने के लिए पैर दबाना। **पैर बचाकर चलना**=इस प्रकार चलना कि आहट तक

न हो। **पैर घुनना**=खिजलाकर पैर पटकना। **पैर न उठना**=आगे चलने या बढ़ने की प्रवृत्ति या साहस न होना। जैसे—माधव के घर जाने के लिए उसके पैर ही न उठते थे। **(जमीन या धरती पर) पैर न रखना**=(क) बहुत अधिक घमड के कारण साधारण आचार-व्यवहार छोड़कर बहुत बड़े आदमी होने का ढोंग करना। (ख) बहुत अधिक प्रसन्नता के कारण सब सुध-बुध भूल जाना। फूले अगो न समाना। **(किसी के) पैर न होना**=कोई ऐसा आधार या बल न होना जिससे दृढ़तापूर्वक कहीं टिकने या ठहरने का साहस हो सके। जैसे—चोर (या झूठे) के पैर नही होते। **(किसी का) पैर निकलना**=(क) घूमने-फिरने या सैर-सपाटे की आदत पड़ना। (ख) बुरे कामो की ओर उन्मुख होना। **(किसी के) पैर पकड़ना**=दे० 'पाँव' के अन्तर्गत 'पाँव धरना या पकडना'। **(किसी के) पैर (या पैरों) पड़ना**=(क) झुक-कर नमस्कार या प्रणाम करना। (ख) दीनतापूर्वक आग्रह या विनती करना। **पैर पसार देना**=(क) बहुत ही शिथिल या हतोत्साह होकर चुपचाप पड़ या बैठ रहना। दौड-धूप या प्रयत्न छोड देना। (ख) शरीर छोडकर परलोक सिधारना। मर जाना। **पैर पसारना**=दे० नीचे 'पैर फैलाना'। **पैर फैलना**=दे० 'पाँव' के अन्तर्गत 'पाँव पूजना'। **पैर फैलाना**=(क) विश्राम करने के लिए सुखपूर्वक पैर पसार कर लेटना। (ख) कुछ अधिक पाने या लेने के लिए विशेष आग्रह या हठ करना। (ग) आडबर खडा करना। ठाठ-बाट बढ़ाना। (घ) अपनी शक्ति या सामर्थ्य देखते हुए कोई काम करना। **पैर बढ़ाना**=चलने के समय, देर हो जाने के भय से, जल्दी-जल्दी आगे पैर रखना। जल्दी जल्दी डग भरते हुए चाल तेज करना। **पैर भरना या भर आना**=बहुत अधिक चलने के कारण थकावट से पैरो मे बोझ सा बँधा हुआ जान पड़ना। अधिक चलने की शक्ति या सामर्थ्य न रह जाना। **(स्त्री का) पैर भारी होना**=गर्भवती होना। हमल रहना।

विशेष—गर्भवती होने की दशा मे स्त्रियाँ अधिक चलने-फिरने के योग्य नहीं रह जाती। इसी आधार पर यह मुहावरा बना है।

मुहा०—**(किसी को) पैर में (या से) बाँधकर रखना**=सदा अपने पास या साथ रखना। जल्दी अलग या दूर न होने देना। **(किसी रास्ते पर) पैर रखना**=किसी ओर अग्रसर या प्रवृत्त होना। जैसे—जब से तुमने इस बुरे रास्ते पर पैर रखा है, तब से तुम सबकी नजरो से गिर गये हो। **पैर सो जाना**=किसी विशिष्ट स्थिति में देर तक पड़े रहने के कारण पैरो मे का रक्त-सचार रुकना और उसके फलस्वरूप कुछ देर के लिए पैर सुन्न हो जाना। **पैरो चलना**=पैदल चलना। **पैरों तले की जमीन (धरती या मिट्टी) निकल जाना**=कोई बहुत ही भीषण या विकट बात सुनकर स्तब्ध या सन्न हो जाना? **(किसी के) पैरों पर सिर रखना**=(क) पैरो पर सिर रखकर प्रणाम करना। (ख) प्रार्थना या विनती स्वीकृत कराने के लिए बहुत ही दीन भाव से आग्रह करना। **फूँक-फूँक कर पैर रखना**=बहुत ही सचेत या सावधान रहकर किसी काम मे आगे बढ़ना। बहुत सँभलकर कोई काम करना।

विशेष—'पाँव' और 'पैर' के प्रयोगो और मुहावरों से सबध रखनेवाली कुछ विशिष्ट बातो और 'पैर' के शेष मुहा० के लिए दे० 'पाँव' और उसके विशेष तथा उसके मुहा०।

२. धूल आदि पर पड़ा हुआ पैर का चिह्न। पैर का निशान। जैसे—बालू पर पड़े हुए पैर देखते चले जाओ।

पुं० [हिं० पयाल, पयार] १ वह स्थान जहाँ खेत से कटकर फसल दाने झाडने के लिए फैलाई जाती है। खलिहान। २ खेत से काट कर लाये हुए डठल सहित अनाज का अटाला, ढेर या राशि। ३ किसी चीज का ढेर या राशि।

†पुं०=प्रदर (रोग)।

पैर-गाड़ी—स्त्री० [हिं० पैर+गाडी] वह गाडी जो पैरो से चलाई जाय। जैसे—साइकिल, रिक्शा आदि।

पैरना—अ० [स० प्लावन, प्रा० पवण, हिं० पौडना] पानी के ऊपर उतरते और हाथ-पैर चलाते हुए आगे बढ़ना। तैरना।

सयो० क्रि०—जाना।

†वि० १ जो पैरता या तैरता हो। २ किसी बात या विषय मे कुशल। दक्ष। पारगत।

स०=पहनना। (बुन्देल०) उदा०—जियना रजऊ ने पैरा गारो।—लोक-गीत।

पैरवी—स्त्री० [फा०] १ किसी के पीछे-पीछे चलने की क्रिया या भाव। २. आज्ञा-पालन। (क्व०) ३ कोई काम या बात पूरी या सिद्ध करने के लिए किया जानेवाला निरतर प्रयत्न। ४ आज-कल विशेष रूप से विधिक क्षेत्रो मे किसी अभियोग या वाद (मुकदमे) के सबध मे की जानेवाली वे सब कार्रवाइयाँ जो जीतने अथवा अपना पक्ष प्रामाणिक सिद्ध करने के लिए की जाती है। जैसे—वकीलो के यहाँ दौड-धूप करना, अच्छे गवाह इकट्ठे करके उन्हे तैयार करना, कागजी सबूत आदि पेश करना आदि।

पैरवीकार—पु० [फा०] १ वह जो किसी काम या बात की पैरवी करता हो। २. वह जो अदालत मे किसी मुकदमे की पैरवी करने के लिए नियुक्त हो।

पैरहन—पु० [फा० पैराहन का सक्षिप्त] १. पहनने का कुरता। २ पहनने के कपडे। पोशाक। वस्त्र। ३. एक प्रकार का कश्मीरी गहना।

पैरा—पु० [हिं० पहरा या पैर?] १ आया हुआ कदम। पडे हुए चरण। पौरा। जैसे—नई बहू का पैरा अच्छा है। इसके आते ही आमदनी बढ़ गई। २ पैरो मे पहनने का एक प्रकार का कडा। ३ किसी ऊँची जगह पर चढ़ने के लिए लकडियो के बल्ले आदि रखकर बनाया हुआ रास्ता।

स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत मे होनेवाली एक प्रकार की कपास जिसके पौधे बहुत दिनो तक रहते हैं।

वि० [हिं० पैर] पैरोंवाला।

पु० [स० पिटक, प्रा० पिडा] लकड़ी का वह खाना जिसमे सोनार अपना काँटा, बटखरे आदि रखते हैं।

†पुं० पयाल।

पुं० [अ० पैराग्राफ का सक्षि०] लेख का उतना अश जितने में कोई एक बात पूरी हो जाय और जो इसी प्रकार के दूसरे अश से कुछ जगह छोड कर अलग किया गया हो। अनुच्छेद

विशेष—जिस पक्ति मे एक पैरा समाप्त होता है, दूसरा पैरा उस पक्ति को छोड कर नई पक्ति से आरम्भ किया जाता है।

पैराई—स्त्री० [हिं० पैरना] पैरने अर्थात् तैरने की क्रिया या भाव।

पैराउ *—पु०=पैराव ।

पैराक—पु० [हिं० पैरना] वह जो पैरने की कला मे कुशल हो। तैराक।

पैराग्राफ—पु०=पैरा (अनुच्छेद) ।

पैराना—स० [हिं० 'पैरना' का प्रे०] किसी को पैरने या तैरने मे प्रवृत्त करना । तैरना ।

संयो० क्रि०—देना ।

पैराफिन—पु० [अं०] एक प्रकार का गाढ़ा चिकना पदार्थ जो कुछ कोमल पत्थरो, और लकड़ियो से निकाला जाता और मोमबत्तियाँ आदि बनाने के काम आता है ।

पैराव—पु० [हिं० पैरना] नदी, नाले आदि का वह स्थान जो तैर कर पार करने योग्य हो। अधिक जलवाला गहरा स्थान ।

पैराशूट—पु० [अं०] १ कपडे का एक प्रकार का थैला जो खुलने पर छाते के आकार का हो जाता है और जिसकी सहायता से हवाई जहाजो से गिरनेवाले आदमी या गिराई जानेवाली चीजें धीरे धीरे और सुरक्षित दशा मे उतरकर जमीन पर आकार टिकती हैं । २ एक तरह का बढिया रंग कपडा जिससे उक्त उपकरण बनाये जाते हैं।

पैरी—स्त्री० [हिं० पैर] १. फूल, काँसे आदि का बना हुआ पैर मे पहनने का एक प्रकार का चौड़ा गहना । २ फसल के वे कटे हुए पौधे जो दौनी करने के लिए फैलाये जाते है। ३. अनाज की दौनी। दवाई। दौरी।

स्त्री० [?] भेडो के बाल कतरने का काम। (गडेरिए)

†स्त्री०=पीढ़ी।

पैरेखना†—स०=परेखना ।

पैरोकार—पु० =पैरवीकार ।

पैलगी—स्त्री० [हिं० पायँ—पैर+लगना] पैरो पर सिर रखकर अथवा पैर छूकर किया जानेवाला अभिवादन। पालागन । प्रणाम।

पैलाँ†—अव्य० हिं० 'पहले' का स्थानिक रूप । (पजाब, राज०)

पैला—वि० [स० पर] [स्त्री० पैली] उस ओर का । उस पार का । परला । उदा०—अजामिल, गनिकादि पैरि पार गाहि पैलो ।—पूर ।

पु० [हिं० पैली] १. नाद के आकार का मिट्टी का वह बरतन जिससे दूध-दही ढकते हैं। बड़ी पैली। २ अनाज तौलने की ४ सेर की एक नाप। ३ उक्त नाप की डलिया। ४ टोकरी । दौरी।

पैली—स्त्री० [स० पातिली, प्रा० पाइली] १ मिट्टी का एक प्रकार का चौडा बरतन जिसमे अनाज या तेल रखते है। २. दे० 'पैला।'

पैबद—पु० [फा०] १ किसी बडी चीज के साथ कोई छोटी चीज जोडने की क्रिया या भाव । २ फटे हुए कपडे पर लगाई जानेवाली चकती। थिगली। ३. किसी पेड की वह टहनी जो काटकर उसी जाति के दूसरे पेड की टहनी मे बाँधी जाती है । (ऐसी टहनी मे लगनेवाले फल अधिक स्वादिष्ट होते है)

मुहा०—(किसी बात में) **पैबंद लगाना**=कोई ऐसी कल्पित या नई बात कहना जिससे पहलेवाली किसी बात की त्रुटि या दोष दूर हो जाय, अथवा वह अच्छी या ठीक जान पड़ने लगे। जैसे—तुम भी बातो मे पैवद लगाना खूब जानते हो।

पैबंदी—वि० [फा०] १. जिसमे पैवद लगा या लगाया गया हो। २ (पौधा या वृक्ष) जो पैबद या कलम लगाकर तैयार किया गया हो। ('बीजू' मे भिन्न) ३ वर्णसंकर । दोगला । (व्यंग और परिहास) पु० बडा आड़ू । शफतालू ।

पैवस्त—वि० [फा०] [भाव पैवस्तगी] १ (तरल पदार्थ) जो किसी चीज के अदर घुसकर सब भागो मे फैल गया हो। अच्छी तरह सोखा और समाया हुआ । जैसे—सिर मे तेल पैवस्त होना । २. (घन पदार्थ) जो किसी के अदर घँसकर अच्छी तरह बैठ गया हो ।

पैशल्य—पु० [स० पेशल+ष्यञ्] पेशलता । कोमलता ।

पैशाच—वि० [स० पिशाच+अण्] १ पिशाच-सबधी। पिशाच का। २ पिशाच देश का ।

पु० १ पिशाच । २. प्राचीन भारत की एक आयुधजीवी जाति ।

पैशाच-काय—पु० [स० कर्म० स०] सुश्रुत मे कही हुई कायो (शरीरो) मे से वह काया (व्यक्ति) जिसके स्वभाव मे उग्रता आदि दोष यथेष्ट हो और जिमे धार्मिकता, नैतिकता आदि का कोई ध्यान नही रहता ।

पैशाच-विवाह—पु० [स० कर्म० स०] धर्म-शास्त्रो के अनुसार आठ प्रकार के विवाहो मे से एक । ऐसा विवाह जो सोई हुई कन्या का हरण करके या मदोन्मत्त कन्या को फुसलाकर छल से किया गया हो। स्मृतियो मे इस प्रकार का विवाह बहुत निंदनीय कहा गया है ।

पैशाचिक—वि० [स० पिशाच+ठक्—इक] १ पिशाच-संबधी। पिशाचो का । राक्षसी । २ पिशाचो की तरह का घोर और वीभत्स। जैसे—पैशाचिक अत्याचार ।

पैशाचिकी—स्त्री० [स०] वह विद्या जिसमे इस बात का अध्ययन और विवेचन होता है कि भिन्न भिन्न जातियो और देशो मे असुरों, राक्षसों आदि के क्या क्या रूप माने जाते है और उनके सबध मे लोगो की किस प्रकार की धारणाएँ और विश्वास होते हैं। (डेमनालोजी)

पैशाची—स्त्री० [स० पैशाच+ङीप्] पिशाच (दे०) देश की प्राचीन प्राकृत भाषा जिससे आज-कल की दरद वर्ग की बोलियाँ निकली हैं।

वि० १ पिशाच-सबधी। पैशाचिक २ पिशाचो की तरह का ।

पैशाच्य—पु० [स० पिशाच+ष्यञ्] पिशाचो का अथवा पिशाचो का सा क्रूर और निर्दय स्वभाव ।

पैशिक—वि० [स०] शरीर की पेशियो से सबध रखनेवाला । पेशी-सबधी ।

पैशुन—पु० [स० पिशुन+अण्] पैशुन्य ।

पैशुन्य—पु० [स० पिशुन+ष्यञ्] किसी के पीठ पीछे उसे हानि पहुँचाने के लिए दूसरो से की जानेवाली उसकी निन्दा। चुगल खोरी । पिशुनता। (बैक-बाइटिंग)

पैष्ट—वि० [स० पिष्ट+अण्] आटे का बना हुआ ।

पैष्टिक—वि० [सं० पिष्ट+ठञ्—इक]=पैष्ट ।

पैष्टी—स्त्री० [स० पैष्ट+ङीप्] एक तरह की मदिरा जो अन्न से बनाई जाती है ।

पैसगी—स्त्री० [फा० पेशीनगोई] भविष्यवाणी।

पैसना—अ० [स० प्रविश, प्रा० पइस+ना (प्रत्य०)] प्रविष्ट होना । घुसना । पैठना ।

पैसरा†—पु० [स० परिश्रम] १. परिश्रम। मेहनत। २. झंझट। बखेड़ा।

पैसा—पु० [स० पाद, प्रा० पाय=चौथाई+अंश, प्रा० अस या पणांश] १. ताँबे का सबसे अधिक चलता सिक्का जो कुछ दिन पहले तक एक

आने का चौथा और रुपये का चौसठवाँ भाग होता था, पर अब जो एक रुपये का सौवाँ भाग हो गया है। २ धन-संपत्ति। दौलत। माल। जैसे—वह बहुत पैसेवाला आदमी है।

मुहा०—पैसा धोकर उठाना=किसी देवता की पूजा की मनौती करके उसके नाम पर अलग पैसा निकालकर रखना। (मनौती पूरी हो जाने पर यह पैसा उसी देवता के पूजन में लगाया जाता है।)

पैसार—पु० [हिं० पैसना] १ पैठ। प्रवेश। २ अदर जाने का मार्ग। ३. प्रवेश-द्वार।

पैसारना—स० [हिं० पैसार] पैठाना। घुसना। उदा०—पाँच भूत तेहि मह पैसारा।—जायसी।

पैसिंजर—पु० [अं०] यात्री।

पैसिजर-गाड़ी—स्त्री० [अ० पैसिजर+हिं० गाडी] मुसाफिरों को ले जानेवाली वह रेलगाडी जिसकी चाल अपेक्षया कुछ मद होती और जो प्राय' सभी स्टेशनो पर ठहरती चलती है। सवारी गाडी (डाक और एक्सप्रेस से भिन्न)।

पैसेवाला—वि० [हिं०] [स्त्री० पैसेवाली] धनवान्। मालदार। धनी।

पैहम—अव्य० [फा०] निरतर। लगातार।

पैहर†—पु० [देश०] कपास के खेत मे रुई इकट्ठी करनेवाला मजदूर। पैकर। बिनिया।

पैहारी—वि० [स० पयस्+आहारी] केवल दूध पीकर जीवित रहनेवाला। पु० एक तरह के साधु जो केवल दूध पीकर रहते है।

पों—स्त्री० [अनु०] १ लबी नाल के आकार का एक बाजा जिसमें फूंकने से पो शब्द निकलता है। भोंपा। २. उक्त बाजे से निकलनेवाला पो शब्द।

मुहा०—(किसी की) पों बजाना=किसी की बात का समर्थन बिना समझे-बूझे करना। (व्यग्य और परिहास)

२ अधोवायु। पाद।

मुहा०—पों बोलना=(क) हार मानना। (ख) थककर बैठ रहना। (ग) दिवाला निकालना। दिवालिया बनना।

पोंकना—अ० [अनु० पों से] १ बहुत डरकर पो पो शब्द करना। २ पतला पाखाना फिरना।

†पु० पशुओ को पतला पाखाना होने का रोग।

पोंका—पु० [स० पुत्तिका] पौधों आदि पर उड़नेवाला एक तरह का फतिंगा। बोंका।

पोंगरा*—वि०=पोंगा (मूर्ख)।

पु० बच्चा।

पोंगली—स्त्री० [हिं० पोंगा] १ वह नरिया जो दोबारा चाक पर से बनाकर उतारी गई हो। (कुम्हार) २. दे० 'पोंगी'।

पोंगा—पु० [स० पुटक=खोखला बरतन] [स्त्री० अल्पा० पोंगी] १ बाँस की नली। बाँस का खोखला पोर। २. धातु का बना हुआ उक्त प्रकार का नल। ३. पैर की लबी हड्डी। नली।

वि० १ पोला। २ निरा मूर्ख। ना-समझ। ३ निकम्मा। बेकाम।

पोंगापंथी—वि० [हिं० पोंगा+पंथी] वज्रमूर्ख।

स्त्री० मूर्खतापूर्ण आचरण या व्यवहार।

पोंगियाँ—स्त्री०=ससपइया।

पोंगी—स्त्री० [हिं० पोंगा] १ छोटी पोली नली। २ नरकुल की वह नली जिस पर जुलाहे तागा लपेटकर ताना या भरनी करते हैं। ३. चार या पाँच अगुल के बाँस की वह पोली नली जो बाँस के पखे की डंडी मे उन्हे घुमाने या चलाने के लिए लगी होती है। हाँकनेवाले इसे पकड़कर पखे को घुमाते हैं। ४ ऊख, गन्ने आदि का पोर।

पोंचना—अ०=पहुँचना। (बुन्दे०)

पोंछ†—स्त्री०=पूंछ (दुम)।

पोंछन—स्त्री० [हिं० पोंछना] १ पोछने की क्रिया या भाव। २ किसी पात्र मे लगी हुई वस्तु का बचा हुआ वह अश जो पोछकर निकाला जाता है।

पद—पेट की पोंछन=स्त्री की अतिम सतान।

३ पोछने के काम आनेवाला कपडा या और कोई चीज। झाड़न।

पोंछना—स० [सं० प्रोञ्छन, प्रा० पोछन] १ सूखे कपडे के टुकडे को इस प्रकार किसी अग, वस्तु या स्थान पर फेरना कि वह उस स्थान की आर्द्रता या नमी सोख ले। जैसे—रूमाल से आँसू या पसीना पोछना, नहाकर तौलिये से गीला शरीर पोंछना। २ किसी स्थान पर जमी हुई मैल, बना हुआ चिह्न आदि हटाने या दूर करने के उद्देश्य से उस पर सूखे अथवा गीले कपड़े का टुकडा रगड़ते हुए फेरना। जैसे—जमीन या फरश पोछना, तख्ता या स्लेट पोंछना।

सयो० क्रि०—डालना।—देना।—लेना।

†पु० १ वह चीज जो कुछ पोछने के काम मे आती हो। जैसे—पैर-पोछना=पाँवदान। २ वह चीज जो पोंछने पर निकलती हो। जैसे—पेट पोछना। (देखे)

पोंटा—पु० [देश०] १ नाक का मल। २ पोटा। (देखे)

पोंठी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी मछली।

पोंद—स्त्री० [स० पाणु या हिं० पेंदा] १ मल-त्याग की इद्रिय। गुदा। २ चूतड़।

पोंपी—स्त्री० [अनु०] १ छोटी गोलाकार नली। २ उक्त आकार का कोई ऐसा बाजा जिसमे 'पों पों' शब्द निकलता हो।

पोआ—पु० [स० पुत्रक] १ साँप का छोटा बच्चा। सपोला। २ कोई छोटा कीडा।

पोआना—स० [हिं० 'पोना' का प्रे०] किसी से पोने का काम कराना।

पोइणि—स्त्री०=पद्मिनी (कमलिनी)।

पोइया—स्त्री० [फा० पोय'] घोडे की वह चाल जिसमे वे दो दो पैर फेंकते हुए आगे बढ़ते हैं। सरपट चाल।

मुहा०—पोइयों जाना—घोड़े का दोनों पैर फेकते हुए दौडना।

पोइसों—स्त्री० [फा० पोय] दे० 'पोइया'।

अव्य० [फा० पोश] देखो। हटो। बचो।

विशेष—इस शब्द का प्रयोग मुख्यत पशु हाँकने और बैल-गाड़ियाँ आदि चलानेवाले लोग राह चलतो को सावधान करने के लिए करते है।

पोई—स्त्री० [स० पोत की या पोदकी] १. वर्षा तथा शिशिर ऋतुओं मे होनेवाली एक प्रसिद्ध लता जिसकी पान की तरह की मोटी हरी पत्तियाँ होती हैं, जिनका साग, पकौडे आदि बनाये जाते है। वैद्यक में इसकी पत्तियाँ वात और पित को दूर करनेवाली मानी गई हैं।

२. किसी पौधे का छोटा और नरम कल्ला। अंकुर। जैसे—ईख की पोई।

क्रि० प्र०—निकलना।—फूटना।

३. गेहूँ, जौ मटर आदि का छोटा नया पौधा। ४ दे० 'पोर'।

पौकल—वि० [देश०] १. पुलपुला २. कोमल। नाजुक। ३ दुबला। कमजोर। ४ खोखला। पोला। ५ तत्व हीन। नि सार।

पौका†—पु०=पोका।

पौकार†—स्त्री०=पुकार।

पोख—पु० [स० पोषण] १. पालने-पोसने की क्रिया या भाव। २ पालन, पोषण आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली पारस्परिक ममता। ३ दे० 'पोस'।

पोख-नरी—स्त्री० [हिं०] ढरकी के बीच का गड्ढा जिसमे नरी लगाकर कपड़ा बुना जाता है।

पोखना—स० [स० पोषण] पालना। पोसना।

†स०=पोकना।

†अ०=पोखाना।

पोखर—पु० =पोखरा।

पोखरा—पु० [स० पुष्कर] [स्त्री० पोखरी] वह गहरा तथा अधिक विस्तृत गड्ढा जिसमे बरसाती पानी जमा होता हो। छोटा ताल।

†पु० [?] वह आधान जिसमें पाखाना किया जाता है और पानी डालने से बहकर नाले मे चला जाता है।

पोखराज†—पु०=पुखराज।

पोखरी—स्त्री० हिं० 'पोखरा' का स्त्री अल्पा० रूप।

पोगड—पु० [स०√पू (पवित्र करना)+विच् पो+गड ब० स०] १ पाँच से दस वर्ष तक की अवस्था का बालक। २ वह जिसके शरीर मे कोई अग अधिक, कम या विकृत हो।

पोगर †—पु०=पोखरा।

पोच—वि० [फा०] १ निकृष्ट। खराब। बुरा। २ क्षुद्र। तुच्छ। ३ सब प्रकार के गुणो शक्तियों आदि से रहित या हीन। ४ नि सार। ५ अकुलीन। ६ आवारा।

पोचाई†—स्त्री० [?] बिहारी आदिवासियों और कोल-भीलों के पीने की एक प्रकार की देसी शराब जो भात और माड़ में कोई जगली जड़ी-बूटी डालकर बनाई जाती है।

पोचारा†—पु०=पुचारा।

पोची—स्त्री० [हिं० पोच] पोच अर्थात् व्यर्थ, निकम्मा अथवा अकुलीन होने की अवस्था या भाव। पोचपन।

पोछना—स० १ =पोछना। २. =पोतना।

†अ०=पहुँचना।

पोट—पु० [स०√पुट् (मिलना)+घञ्] १. घर की नीव। २ मेल। मिलान।

स्त्री० [स० पोट=ढेर, हिं० पोटली] १. ऐसी पोटली या गठरी जो चारो ओर से कपड़े, कागज, टाट आदि से बँधी हुई हो। २. ढेर। राशि।

स्त्री० [स० पृष्ठ] पुस्तको की सिलाई में उसका पुट्ठा।

स्त्री० [सं० पोत=वस्त्र] शव पर डाली जानेवाली चादर। कफन के ऊपर का कपड़ा।

पोटक—पु० [स०√पुट्+अच्,+कन्] सेवक। नौकर।

पोटगल—पु० [स० पोट√गल् (चुआना, खाना)+अच्] १ नरसल। नरकट। २ काँस। ३ मछली। ४. एक प्रकार का साँप।

पोटडाक—स्त्री० [हिं० पोट+डाक] १ डाक से चीजें भेजने की वह व्यवस्था जिसमे चीजें आदि चारो ओर से कपड़े, टाट आदि से सीकर या बक्सों मे बद करके भेजी जाती हैं। (पारसल पोस्ट) २ इस प्रकार भेजी हुई कोई चीज।

पोटना—स० [हि० पुट] १ इकट्ठा करना। समेटना। २ अपने अधिकार या हाथ मे करना। ३ फुसला या बहकाकर अपने पक्ष में करना।

पोटरी†—स्त्री०=पोटली।

पोटलक—पु० [स० पोट√ली (समाना)+ड,+क] [स्त्री० अल्पा० पोटलिका] पोटली।

पोटला—पु० [हिं० पोटलक] [स्त्री० अल्पा० पोटली] बड़ी पोटली।

पोटली—स्त्री० [स० पोटलिका] १ बहुत छोटी गठरी जिसमे आवश्यक वस्तुएँ रखकर लोग साथ लेकर विशेषत बगल मे रखकर चलते हैं। २ छोटी थैली।

पोटा—पु० [स० पुट थैली] [स्त्री० अल्पा० पोटी] १ पेट की थैली। उदराशय। जैसे—चिड़िया या बकरी का पोटा।

मुहा०—पोटा तर होना=पास मे धन-सपत्ति होने से प्रसन्नता और निश्चितता होना।

२ हृदय मे होनेवाला उत्साह, बल और साहस। जैसे—किसका पोटा है जो तुम्हारे सामने आकर खड़ा हो। ३ समाई। सामर्थ्य। जैसे—जितना जिसका पोटा होगा उतना ही वह खर्च करेगा। ४ आँख की पलक। ५ उँगली का अगला भाग या सिरा। ६ चिड़िया का वह छोटा बच्चा जिसके अभी पर न निकले हों। ७ नाक का मल। सीड।

क्रि० प्र०—बहना।

स्त्री० [स०√पुट्+अच्+टाप्] १ वह स्त्री जिसमे पुरुषो के से लक्षण हों। जैसे—दाढ़ी या मूँछ के स्थान पर बाल। २ दासी। सेविका।

पु० घड़ियाल।

पोटास—पु० [अ०] एक प्रकार का क्षार जो वनस्पतियो और लकड़ियो की राख, कई प्रकार के खनिज पदार्थों और कल-कारखानो की कोई तरह की फालतू चीजो मे से निकलता और खाद, साबुन आदि बनाने के काम आता है।

पोटिक—पु० [स०] फोड़ा।

पोटिया—पु० [हिं० पोट] पोट अर्थात् बोझा ढोनेवाला मजदूर। पाटिया।

पोट्टली—स्त्री० [स० पोटलिका, पृषो० सिद्धि]=पोटली।

पोठी†—स्त्री० [?] एक प्रकार की मछली।

पोढ़ (1)—वि० [स० प्रौढ़] [स्त्री० प्रोढी] १. जो यथेष्ट रूप से वयस्क हो चुका हो। २ हृष्ट-पुष्ट। ३ कठोर। ४. दृढ़। पक्का।

पोढ़ना—अ० [हिं० पाढ़] १ दृढ़ होना। मजबूत होना। २. निश्चित

या पक्का होना। ३ उपयुक्त अथवा यथेष्ट पद को प्राप्त होना। स० १. दृढ़ या पुष्ट करना। पक्का या मजबूत करना।

पोत—पुं० [सं०√पू+तन्] १. किसी पशु या पक्षी का छोटा बच्चा। २. दस वर्ष की अवस्थावाला हाथी। ३ छोटा पौधा या उसमें से निकला हुआ नया कल्ला। ४ वह गर्भस्थ पिंड जिस पर अभी झिल्ली न चढ़ी हो। ५ पहनने के वस्त्र। पोशाक। ६. सूत के प्रकार, बुनावट आदि के विचार से कपड़े के तल की चिकनाई और मोटाई। (टेक्सचर) ७ पानी पर चलने वाला यान। जैसे—जहाज, नाव आदि।

पुं० [हिं० पोतना] पोतने की क्रिया या भाव। पुताई।

पुं० [सं० प्रवृत्ति, प्रा० पउत्ति] १ प्रकृति। स्वभाव। २ ढब। ढंग। तरीका। ३ कोई काम करने का क्रमागत अवसर। दाँव। बारी।

पुं० [फा० पोत] जमीन का लगान। भू-कर।

मुहा०—**पोत पूरा करना**=उसी प्रकार जैसे-तैसे कोई काम या त्रुटि पूरी करना जिस प्रकार चुकाने के लिए भू-कर या लगान इकट्ठा करते हैं।

†पुं० १ =पुत्र। २. =पौत्र।

स्त्री० [सं० प्रोता, प्रा० पोता] १ माला की गुरिया या दाना। २ काच आदि की गुरिया जो माला के रूप में पिरोई जाती है। उदा०—मानों मनि मोतिन लाल माल आगे पांति है।—सेनापति।

पोतक—पुं० [सं० पोत√कै (शब्द करना)+क] १ छोटा बच्चा। २ छोटा पौधा या कल्ला। ३. वह स्थान जहाँ घर बनाया जाने को हो।

पोतकी—स्त्री० [सं० पोतक+ङीष्] पोई नाम की लता।

पोत-घाट—पुं० [सं० पोत+हिं० घाट] समुद्र आदि के किनारे बना हुआ वह पक्का घाट या घेरा जिसके अंदर आकर यात्रियों आदि को उतारने-चढ़ाने के लिए जहाज ठहरते हैं। (पिअर)

पोतड़ा—पुं० [हिं० पोतना+ड़ा (प्रत्य०)] वह कपडा जो नन्हे बच्चो के नीचे इसलिए बिछाया जाता है कि उसका गुह-मूत उसी पर गिरे या लगे, नीचेवाला बिस्तर खराब न करे।

पद—**पोतड़ों के अमीर**=सम्पन्न घराने मे उत्पन्न होनेवाला।

पोतदार—पुं० [हिं० पोत=भूकर+फा० दार] १ वह जो लगान या कर का रुपया जमा करके रखता हो। २ खजानची। ३. वह जो खजाने में रुपए, रेजगी आदि परखकर थैलियों मे रखने का काम करता हो।

पोत-धारी (रिन्)—पुं० [सं० पोत√धृ (धारण करना)+णिनि] जहाज का अधिकारी या मालिक।

पोत-ध्वज—पुं० [सं० ष० त०] जहाज, बड़ी नाव आदि पर का वह झंडा जो उसके राष्ट्र का सूचक होता है। (एन्साइन)

पोतन—वि० [सं०√पू+तन] १. पवित्र या शुद्ध करनेवाला। २ पवित्र। शुद्ध।

†स्त्री० [हिं० पोतना] पोतने की क्रिया, ढंग या भाव।

पोतनहर—स्त्री० [हिं० पोतना+हर (प्रत्य०)] १. वह बरतन जिसमे आँगन, चौका आदि पोतने के लिए मिट्टी घोलकर रखी जाती है। २. वह स्त्री जो आँगन, चौका आदि पोतने का काम करती है।

†स्त्री० [?] अँतड़ी। आँत।

पोतना—स० [सं० प्लुत, प्रा० पुत+ना] १ किसी विशिष्ट तरल पदार्थ मे तर किये हुए कपड़े के टुकड़े को इस प्रकार किसी चीज पर फेरना कि उस पर तरल पदार्थ की तह चढ़ जाय। लेप करना। लीपना। जैसे—किवाड़ो पर रग पोतना। २ किसी गीले या सूखे पदार्थ को किसी वस्तु पर इस प्रकार लगाना कि वह उस पर बैठ जाय या जम जाय। जैसे—किसी के मुँह पर गुलाल पोतना। ३ आँगन, चौके आदि को पवित्र करने के उद्देश्य से उस पर गोबर, मिट्टी आदि का लेप करना। ४. लाक्षणिक अर्थ मे, किसी चीज या बात के ऊपर ऐसी क्रिया करना कि वह छिप या ढक जाय।

पुं० वह कपड़ा जिससे कोई चीज पोती जाय। पोतने का कपडा।

पोत-प्लव—पुं० [सं० पोत√प्लु+अच्] मल्लाह। माँझी।

पोत-भंग—पुं० [सं० ष० त०] जहाज का चट्टानो आदि से टकराकर टूट-फूट जाना।

पोत-भार—पुं० [सं० मध्य० स०] पोत या जलयान पर लादा जानेवाला या लदा हुआ माल। (कारगो)

पोत-भारक—पुं० [सं०] वह पोत या जलयान जो माल ढोता हो। (कारगोशिप)

पोतला—पुं० [हिं० पोतना] तवे पर घी पोतकर सेकी हुई चपाती। पराँठा।

†पुं०=पुतला।

पोत-वणिक् (ज्)—पुं० [सं० सुप्सुपा स०] वह व्यापारी जो जहाजो पर लादकर माल भेजता या मँगाता हो।

पोतवाह—पुं० [सं० पोत√वह्+अण्] मल्लाह। माँझी।

पोत-संतरण—पुं० [ष० त०] कारखाने से बनकर निकले हुए जहाज को पहली बार समुद्र मे उतारना या तैराना।

पोता—पुं० [सं० पौत्र, प्रा० पोत] [स्त्री० पोती] बेटे का बेटा। पुत्र का पुत्र।

पुं० [हिं० पोतना] १. वह कपड़ा या कूँची जिससे घरो मे चूना पोता या फेरा जाता है। २ घुली हुई मिट्टी जो आँगन, चौका, दीवार आदि पोतने के काम आती है।

क्रि० प्र०—फेरना।—लगाना।

मुहा०—**पोता फेरना**=पूरी तरह से चौपट या बरबाद करना। चौका लगाना।

पुं० [फा० फोत] १ भूमिकर। लगान। पोत। २ अंड-कोश।

पुं० [सं० पोत] १५ या १६ अंगुल लंबी एक प्रकार की मछली जो भारत की प्रायः सभी नदियो मे मिलती है।

पुं० [सं०√पू+तृच्] १. यज्ञ मे सोलह प्रधान ऋत्विजो मे से एक। २. वायु। हवा। ३ विष्णु।

†पुं०=पोटा।

पोताई—स्त्री० [हिं० पोतना] पोतने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

पोताच्छादन—पुं० [सं० पोत+आ√छद्+णिच्+ल्यु—अन] तंबू। छौलदारी। डेरा।

पोताधान—पुं० [सं० पोत-आधान, ष० त०] मछलियों के बच्चो का गोल या समूह। झौंवर।

पोतारा—पुं०=पुतारा।

पोतारी—स्त्री०=पुतारा।

पोताश्रय—पु० [सं० पोत-आश्रय, ष० त०] समुद्र के किनारे का वह प्राकृतिक या कृत्रिम स्थान जहाँ पहुँचकर जहाज ठहरते तथा माल आदि उतारते-चढ़ाते हैं। बन्दरगाह। (हार्बर)

पोतास—पु० [सं०] भीमसेनी कपूर। बरास।

पोति—स्त्री० =पोत (काँच की गुरिया)।

पोतिका—स्त्री० [सं०=पूतिका; पृषो० सिद्धि] १ पोई की बेल। २ कपड़ा। वस्त्र।

पोतिया—पु० [सं० पोत] १. वह कपडा जो साधु लुगी की तरह कमर मे बाँधकर पहनते हैं। २ पान, सुपारी, सुरती आदि रखने की छोटी थैली या बटुआ। ३ एक प्रकार का खिलौना।

†वि० [?] बाद मे आने या पडनेवाला। परवर्ती।

पोती—स्त्री० [हिं० पोतना] १ पोतने की क्रिया या भाव। पोताई। २ मिट्टी का वह लेप जो हँडिया आदि की पेंदी पर इसलिए चढाया जाता है कि उसमे अधिक आँच न लगे। उदा०—जैन नीर सों पोती किया।—जायसी। २ किसी गरम चीज को ठढा रखने के लिए उस पर पानी से तर कपडा फेरने की क्रिया या भाव। ३ दे० 'पुतारा'।

स्त्री० हिं० पोता (पौत्र) का स्त्री०।

पोत्या—स्त्री० [सं० पोत।य+टाप्] पोतो अर्थात् जलयानो का समूह।

पोत्र—पु० [सं०√पू+ष्ट्रन्] १ सूअर का थूथन। २ वज्र। ३ एक प्रकार का यज्ञ-पात्र जो पोता नामक याजक के पास रहता था। ४ जहाज या नाव। पोत। ५. नाव खेने का डाँडा।

पोत्रायुध—पु० [सं० पोत्र-आयुध, ब० स०] जगली सूअर।

पोत्री (त्रिन्)—पु० [सं० पोत्र।इनि] सूअर।

पोथा—पु० [हिं० पोथी] १ बहुत बडी पोथी या पुस्तक। (व्यग्य और हास्य) २ कागजों आदि की बहुत बड़ी गड्डी या पुलिंदा।

पोथिया†—पु०=पोतिया।

पोथी—स्त्री० [सं० पुस्तिका, प्रा० पोत्थिआ] छोटी पुस्तक। विशेषत कोई धार्मिक पुस्तक।

†स्त्री० [हिं० पोट ?] प्याज, लहसुन आदि की गाँठ।

पोदना—पु० [अनु० फुदकना] १ एक छोटी चिडिया। २ बहुत ही ठिगना या नाटा आदमी। ३ प्रेत या भूत।

†पु०=पुदीना।

पोदीना†—पु०=पुदीना।

पोद्दार—पु०—पोतदार। (देखें)

पोन†—पु०=पवन।

†स्त्री०=पोद।

पोना—स० [सं० पूय, हिं० पूवा+ना (प्रत्य०)] १ गुँधे हुए आटे की लोई को उँगलियो और हथेलियो से बार बार दबाते तथा बढाते हुए रोटी के आकार मे लाना। जैसे—आटा पोना। २ (रोटी) पकाना या सेकना।

†स०=पिरोना।

पोप—पु० [अं०] रोम के कथोलिक गिरजो का सर्वप्रधान आचार्य या धर्म गुरु।

पोपटा—पु० [देश०] एक प्रकार की जगली झाडी जिसे झड़बेरी या करौदा भी कहते हैं।

पोपला—वि० [हिं० पुलपुला] [स्त्री० पोपली] १ जो अदर से बिलकुल खाली होने के कारण ऊपर से पचक या दब गया हो। पिचका और सिकुड़ा हुआ। २ (मुँह) जिसके अदर के दाँत टूट या निकल गये हो और इसी लिए जो अदर से पोला गया हो।

पोपलाना—अ०, स०=पुपलाना।

पोपली†—वि० स्त्री० 'पोपला' का स्त्रीलिंग रूप।

स्त्री०—पुपली।

पोप-लीला—स्त्री० [अं० पोप।सं० लीला] पोपो आदि धर्म-पुरोहितो के आडबरपूर्ण कार्य।

पोमचा—पु० [?] कपडो की छपाई, बुनाई, रँगाई आदि मे ऐसी आकृति जिसमे चारो कोनो पर चार कमल या बूटे हो और बीच मे एक वैसा ही कमल या बूटा हो और बाकी जमीन खाली हो।

पोमिनि†—स्त्री०=पद्मिनी।

पोय!—स्त्री०—पोई।

पोयण—पु० [सं० पद्म ?] कमल। उदा०—मेवाडो तिण माँह पोयण फूल प्रतापसी— पृथ्वीराज।

पोयणि—स्त्री० पद्मिनी।

पोया†—पु० [सं० पोत] १ वृक्ष का नरम पौधा। २ बहुत छोटा बच्चा। जैसे—चिड़िया या साँप का पोया।

पोर—स्त्री० [सं० पर्व] १ उँगली, अँगूठे आदि मे का कोई जोड। २ उक्त के दो जोडो के बीच का अश, भाग या विस्तार। ३ अनेक गाँठों या जोडो वाली किसी वस्तु के दो भागो या जोड़ो के बीच का अश, भाग या विस्तार। जैसे—ईख या बाँस के पोर। ४ शरीर का अग। ५ पृष्ठ भाग। पीठ। उदा०—निकसे सबै कुँवर असवारी उच्चश्रवा के पोर। —सूर। †६ जूए मे किसी के जिम्मे बाकी पडने वाली रकम।

पोरा†—पु० [हिं० पोर] १ लकडी का मडलाकार टुकडा। लकडी का गोल कुदा। २ दे० 'पोर'।

पोरिया—स्त्री० [हिं० पोर] उँगलियो के पोरो पर पहनने का एक तरह का पुरानी चाल का गहना।

पोरी—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की कडी मिट्टी।

†स्त्री०=पोरिया।

पोरुआ†—पु०=पोरिया।

पोर्ट—पु० [पुर्त० पोर्टो] अगूर के रस से बनी हुई एक प्रकार की शराब जो धूप मे सडाकर बनाई जाती है। इसमे नशा बहुत कम होता है, पर यह पुष्टकारक होती है।

पु० [अं०] बदरगाह।

पोल—स्त्री० [हिं० पोला] १ पोले होने की अवस्था या भाव। पोलापन। २ किसी चीज के अदर का पोला स्थान। खाली जगह। अवकाश। जैसे—ढोल के अदर पोल। ३ अदर का आवश्यक भराव न होने या न रह जाने के फल-स्वरूप होनेवाली शून्यता। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसी स्थिति जो ऊपर से देखने में तो आडबरपूर्ण हो, परंतु जिसमे सार या तत्त्व कुछ भी न हो।

मुहा०—(किसी की) पोल खुलना=भीतरी दुरवस्था, सारहीनता आदि प्रकट हो जाना। छिपा हुआ दोष या बुराई प्रकट हो जाना।

भंडा फूटना। (किसी की) पोल खोलना=ऐसा कार्य करना जिससे किसी के अंदर की दुरवस्था, दोष, सारहीनता आदि बातें सब पर प्रकट हो जायें।

पु० [सं० प्रतोली, प्रा० पओली] १. नगर का मुख्य प्रवेशद्वार। उदा०—अबिनासी की पोल पर जी, मीरां करै छै पुकार।—मीरां। २. बड़ा दरवाजा। फाटक। ३ घर का आँगन। सहन।

पु० [सं०√पुल् (उठना, महत्त्व का होना)+ण] एक प्रकार का फुलका। पोली।

पोलक—पु० [हिं० पूला] लंबे बाँस के छोर पर चरखी मे बँधा हुआ पयाल जिसे लुक की तरह जलाकर मस्त हाथी को डराते और वश में करते हैं।

पोलच(ा)—पु० [हिं० पोल] १ वह परती भूमि जो पिछले वर्ष रबी बोने के पहले जोती गई हो। औनाल। २. ऐसा ऊसर जो बहुत दिनों से जोता-बोया न गया हो।

पोला—वि० [हिं० फूलना, या सं० पोल=फुलका] [स्त्री० पोली] १. जिसके अंदर कुछ न हो, खाली जगह या हवा ही हो। अंदर से खाली। खोखला। 'ठोस' का विपर्याय। जैसे—पोला छड़, पोली नली। २ जिसके नीचे का तल कड़ा या ठोस न हो। जिसके अंदर उचित या पूरा भराव न हो। जो कड़ा या ठोस न हो। जैसे—पोली जमीन। ३. जिसमे विशेष तत्त्व या सार न हो। निस्सार और इसी लिए प्राय निरर्थक या रद्दी। थोथा।

पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसकी छाल से रस्सी बनाई जाती है। इसकी लकड़ी साफ और नरम होती है।

†पु०=पूला।

पोलाद†—पु०=फौलाद।

पोलारी—स्त्री० [हिं० पोल] छेनी के आकार का एक छोटा औजार जिससे सुनार कगन, घुँघुरु आदि के दाने बनाते हैं।

पोलाव—पु०=पुलाव।

पोलिया—स्त्री० [हिं० पोला] पैरों मे पहनने का एक प्रकार का पोला गहना।

†पु०=पौरिया।

पोली—स्त्री० [सं०√पुल्+ण+ङीप्] एक प्रकार की पूरी।

स्त्री० [देश०] जगली कुसुम या बर्रे जिसका तेल मोमजामा बनाने के काम मे आता है।

पोलीदा—पु० [हिं० पोल=फाटक] फाटक पर पहरा देनेवाला दरबान। (राज०)

पोलो—पु० [अं०] घोड़ो पर चढ़कर खेला जानेवाला गेंद का खेल। चौगान।

पोवना—स०=पोना।

पोश—वि० [फा०] (शब्दो के अंत में प्रत्यय के रूप में लगकर) १ छिपाने या ढकनेवाला। जैसे—मेजपोश, तख्तपोश आदि। २ पहननेवाला। जैसे—सफेदपोश।

पु० सामने से हटाने का सकेत जिसका अर्थ है—बचो, हट जाओ।

पोशाक—स्त्री० [फा० पोश या पोशिश से उर्दू] १. पहनने के कपड़े। परिधान। २. वे कपड़े जो किसी प्रदेश के रहनेवाले विशेष रूप से पहनते हों। पहनावा।

पोशाका—पु० [फा० पोशाक] १ एक प्रकार का कपड़ा जो गाढे से महीन और तनजेब से मोटा होता है। २ अच्छा या बढ़िया कपड़ा।

पोशाकी—वि० [हिं० पोशाक] पोशाक या पहनावे से सबध रखनेवाला।

स्त्री० वेतन के अतिरिक्त वह धन जो नौकरो को नियमित रूप से अथवा विशिष्ट अवसरों पर अपनी पोशाक या पहनने के कपडे बनवाने के लिए दिया जाता है।

पोशीदगी—स्त्री० [फा०] पोशीदा (छिपा हुआ) होने की अवस्था या भाव। गुप्ति। छिपाव।

पोशीदा—वि० [फा० पोशीद] १ ढका या ढाँका हुआ। २ छिपा या छिपाया हुआ। ३. गुप्त।

पोष—पु० [सं०√पुष् (पुष्टि)+घञ्] १ पोषण। पुष्टि। २ अभ्युदय। उन्नति। ३ बढ़ती। वृद्धि। ४ धन-संपत्ति। ५ तुष्टि। तृप्ति।

पोषक—पु० [सं०√पुष्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० पोषिका] दे० 'विटामिन'।

पोषक-तत्त्व—पु० [सं० कर्म० स०] दे० 'विटामिन'।

पोषण—पु० [सं०√पुष्+ल्युट्—अन] [वि० पोषित, पुष्ट, पोषणीय, पोष्य] १. किसी को इस उद्देश्य से खिलाते-पिलाते और देखते-भालते रहना कि वह सुखपूर्वक जीवन बिता सके, और ठीक तरह से बढ़ता चले। २ किसी वस्तु मे आवश्यक और उपयोगी तत्त्व पहुँचाकर उसे अच्छी तरह से बढ़ाना और पुष्ट करना। ३ किसी रूप मे बढ़ाने की क्रिया या भाव। वर्धन। (मेन्टेनेन्स, उक्त तीनो अर्थों मे) ४ किसी काम या बात की पुष्टि या समर्थन। जैसे—(क) किसी के मत का पोषण करना। (ख) किसी का पृष्ठ-पोषण करना।

पोषण-वृत्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] वह वृत्ति जो किसी को भरण-पोषण या जीविका-निर्वाह के लिए दी जाती हो। (मेन्टेनेन्स एलाउन्स)

पोषणीय—वि० [सं०√पुष्+अनीयर्] जिसका पोषण करना आवश्यक या उचित हो।

पोषध—पु० [सं० उपवसथ-उपोषध-पोषध] उपवास व्रत। (बौद्ध)

पोषना—स०=पोसना।

पोषयिता (तृ)—वि०, पु० [सं०√पुष्+णिच्+तृच्]=पोषक।

पोषाहार—पु० [सं० पोष-आहार, ष० त०] ऐसा आहार या खाद्य पदार्थ का ऐसा तत्त्व जिससे प्राणियो के शरीर की पोषण और वर्धन होता है। (न्यूट्रिशन)

पोषित—भू० कृ० [सं०√पुष्+णिच्+क्त] १. जिसका पोषण किया गया हो अथवा हुआ हो। २. पाला हुआ। पालित।

पोष्टा (ष्टृ)—वि० [सं०√पुष्+तृच्]=पोषक।

पोष्य—वि० [सं०√पुष्+ण्यत्] १ जिसका पालन-पोषण करना आवश्यक या उचित हो। २ जिसका पालन-पोषण किया जाने को हो। ३. पाला हुआ अर्थात् गोद लिया हुआ। जैसे—पोष्य पुत्र।

पु० नौकर। सेवक।

पोष्य-वर्ग—पु० [ष० त०] ऐसे सबधित लोग जिनका भरण-पोषण तथा रक्षण आवश्यक रूप से करना उचित हो।

पोस—पु० [सं० पोषण, हिं० पोसना] १. पालने-पोसने की क्रिया या भाव। २. पालन-पोषण के फलस्वरूप होनेवाली पारस्परिक ममता या

स्नेह। वह स्थिति जिसमे किसी का ठीक तरह से पालन-पोषण होता हो।
मुहा०—पोस मानना=उक्त प्रकार की स्थिति को अनुकूल और हित-कर समझकर उसमे शांति और सुखपूर्वक रहना। जैसे—(क) साधारणत सभी कुत्ते पोस मानते हैं। (ख) यहां की जमीन मे कपास के पौधे पोस नही मानते।
विशेष—जीव-जन्तुओं के सम्बन्ध मे इस शब्द के अन्तर्गत पालनकर्ता या पोषक के प्रति कृतज्ञ और निष्ठ रहने का भाव भी सम्मिलित रहता है।
†पु० [फा० पोश] पहनावा। पोशाक।

पोसन*—पु०=पोषण।

पोसना—स० [स० पोषण] १ पोषण अर्थात् पालन या रक्षा करना। पालना। २ पशु-पक्षी आदि मे से किसी को अपने पास रखकर उसका पालन करना। जैसे—कुत्ता या तोता पोसना। ३ लाक्षणिक रूप मे कोई दुर्व्यसन आदि जान-बूझकर अपने साथ लगाये रखना और उससे बचने या उसे दूर करने का कोई विशेष प्रयत्न न करना। (परिहास और व्यग्य)

पोस्ट—स्त्री० [अ०] १ जगह। स्थान। २ कर्मचारी या कार्य-कर्ता का पद। ३ नौकरी। ४ डाक विभाग।

पोस्ट-आफिस—पु० [अ०] डाकघर। डाकखाना।

पोस्टकार्ड—पु० [अ०] टिकट लगा हुआ मोटे कागज का वह टुकडा जिस पर पत्र लिखकर डाक के द्वारा कही भेजते है।

पोस्टमार्टम—पु० [अ०]=शव-परीक्षा।

पोस्टमास्टर—पु० [अ०] किसी डाकघर का सबसे बडा और प्रधान अधिकारी।

पोस्टमैन—पु० [अ०] डाक मे आई चिट्ठियाँ आदि घर-घर पहुँचनेवाला कर्मचारी। डाकिया। चिट्ठीरसाँ।

पोस्टर—पु० [अ०] किसी बड़े कागज पर मोटे अक्षरो मे छपी हुई वह सूचना जो जनता की जानकारी के लिए जगह-जगह दीवारो आदि पर चिपकाई जाती है। प्रज्ञापक।

पोस्टल—वि० [अ०] १. डाक-विभाग-सबधी। जैसे—पोस्टल गाइड। २ डाक विभाग के द्वारा आने या जानेवाला। जैसे—पोस्टल आर्डर।

पोस्टल आर्डर—पु० [अ०] कही कुछ रुपए भेजने की एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था (मनी आर्डर से भिन्न) जिसमे निश्चित मूल्य का कोई ऐसा कागज खरीदकर कही भेजा जाता है, जिसका प्राप्य धन किसी डाकखाने से लिया जा सकता है।

पोस्टल-गाइड—स्त्री० [अ०] वह पुस्तक जिसमे डाक द्वारा भेजे जाने-वाले पत्रों, पारसलो आदि के सबध मे आवश्यक निर्देश होते है।

पोस्टेज—पु० [अ०] डाक द्वारा चिट्ठी, पारसल आदि भेजने का मह-सूल। डाकव्यय।

पोस्टेज स्टाप—पु० [अ०] डाक का वह टिकट जो डाक द्वारा भेजी जानेवाली चीज का महसूल चुकाने के लिए उस चीज पर चिपकाया या लगाया जाता है।

पोस्त—पुं० [फा०] १ खाल। त्वचा। २ पेड की छाल। ३ पोस्ते का डोडा। ४ दे० 'पोस्ता'। ५ पिशुनता।

पोस्ता—पु० [फा० पोस्त] एक प्रकार का पौधा जिसके डोडों से अफीम तैयार की जाती है।

पोस्ती—पु० [फा०] १ अफीम खानेवाला। २. मदक पीनेवाला। ३. वह जो बहुत बड़ा अकर्मण्य तथा आलसी हो। ४. गुड़िया के आकार का कागज का एक खिलौना जिसके पेंदे में मिट्टी का ठोस गोला रहता है। यह फेंकने पर जमीन पर खड़ा होकर कुछ देर तक झूमता रहता है। इसे 'मतवाला' और 'खड़े खाँ' भी कहते हैं।

पोस्तीन—पु० [फा०] १. गरम और मुलायम रोएँवाले लोमडी, सूअर आदि कुछ जानवरो की खाल जिसे कई रूपो मे बना और सीकर पामीर, तुर्किस्तान और मध्य एशिया के लोग पहनते थे, और जिसका प्रचलन अब सरदी के दिनो मे अन्य स्थानो मे भी होने लगा है। २ उक्त खाल का बना हुआ कोई पहनावा। ३ पुस्तक की जिल्द के भीतरी भाग पर चिपकाया जानेवाला कागज।

पोहना†—स० [स० प्रोत, प्रा० पोइइ पोय+ना (प्रत्य०)] १ पिरोना। गूँथना। २ कोई चीज पिरोने के लिए उसमे आर-पार छेद करना। ३ ऊपर से लेप लगाना। पोतना। ४. घुमाना। धँसाना। ५. जमाकर बैठाना। ६ घिसना। रगडना।
वि० [स्त्री० पोहनी] पोहनेवाला।
†स०=पोना। (देखे)

पोहमी†—स्त्री०=पुहमी (पृथ्वी)।

पोहर†—पु० [हिं० पोहा] १ वह स्थान जहाँ पशु चरते हैं। २ पशुओ के खाने का चारा। चरी।

पोहा†—पु० [स० पशु] पशु। चौपाया।

पोहिया—पु० [हिं० पोह] चरवाहा।

पौंचा—पु० [हिं० पाँच] साढे पाँच का पहाडा।

पौंड—पु०=पाउन्ड (अग्रेजी सिक्का)।

पौंडना†—अ०=पौडना (तैरना)।

पौंडरीक—पु० [स० पुडरीक+अण्] १ स्थलपद्म। पुडरीक। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग जिसमे कमल के पत्ते के रंग का-सा वर्ण हो जाता है। ३ एक प्रकार का यज्ञ।

पौंडर्य—पु० [स० पुण्डर्य+अण्] स्थलपद्म।

पौंड़ा—पु०=पौंडा (गन्ना)।

पौंड़ी†—स्त्री० =पौरी।

पौंड्र—वि० [स० पुण्ड्र+अण्] पुड्र देश का।
पु० १ पुड्र देश का निवासी। २. पुड्र देश का बना रेशमी कपड़ा जो किसी समय बहुत प्रसिद्ध था। ३. भीमसेन के शख का नाम। ४ मनु के अनुसार एक प्राचीन जाति जो पहले क्षत्रिय थी पर पीछे सस्कार भ्रष्ट होकर वृषल हो गई थी। ५ दे० 'पौड्रक'।

पौंड्रक—पु० [स० पुण्ड्रक+अण्] १ एक प्रकार का मोटा गन्ना। पौंढा। २. पुड्र नामक प्राचीन जाति। ३ पुड्र देश का एक राजा जो जरा-सघ का सबधी था, और जिसे लोग मिथ्या वासुदेव भी कहते थे।

पौंड्रिक—पु० [स० पुण्ड्र+ठञ्—इक] १ मोटा गन्ना। पौंढा। २. लवा नामक पक्षी। ३. पुंड्र नामक देश। ४. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

पौंढ़ई†—वि० पु०=गन्नई (रंग)।

पौंढ़ना—स०=पौढ़ना।

पौंढ़ा†—पु० [स० पौंड्रक] एक तरह का कड़े छिलकेवाला मोटा गन्ना।

पौंद†—स्त्री०=पौद।

पौंरना—अ० [सं० प्लवन] तैरना।

पौंरि—स्त्री०=पौरि या पौरी।

पौंरिया†—पुं०=पौरिया।

पौंश्चलेय—पुं० [सं० पुंश्चली+ढक्—एय] पुंश्चली या कुलटा का पुत्र।

पौंश्चल्य—पुं० [सं० पुंश्चली+ष्यञ्] पुंश्चली होने की अवस्था या भाव। स्त्री का व्यभिचार। छिनाला।

पौ—स्त्री० [सं० पाद, प्रा० पाय, पाव=किरण] १. ज्योति या प्रकाश की रेखा। २ सूर्य निकलने से पहले दिखाई देनेवाला हलका प्रकाश।

मुहा०—**पौ फटना**=प्रभात के समय सूर्योदय के सामीप्य के कारण कुछ कुछ उजाला दिखाई पड़ना।

३. पैर। ४. जड़। मूल। ५. पासे का वह तल जिस पर एक बिंदी रहती है।

मुहा०—**पौ बारह पड़ना**=(तीन पासों के खेल में) पासों का इस प्रकार पड़ना कि एक पासे मे पौ और बाकी दोनो पासों मे छ. छ के दाँव (६+६+१) आएँ। (यह जीत का सबसे बड़ा दाँव होता है)। **(किसी की) पौ बारह होना**=(क) बहुत बड़ी जीत या लाभ होना। (ख) बहुत अधिक लाभ या सौभाग्य का सुयोग आना।

पुं० [सं० प्रपा] पौसला (प्याऊ)।

पौआ—पुं० [सं० पाद, हिं० पाव] १ एक सेर का चौथाई भाग। सेर का चतुर्थांश। पाव। २ पाव भर के मान का बटखरा। ३. नापने का वह बरतन जिसमे कोई तरल पदार्थ पाव भर आता हो। जैसे—तेल या दूध नापने का पौआ।

पौगंड—पुं० [सं० पोगण्ड+अण्] पाँचवे वर्ष से लेकर सोलहवें वर्ष तक की अवस्था।

पौटिया†—पुं० [?] हिन्दुओ मे एक जाति जो चाँदी-सोने के तार आदि बनाने का काम करती है।

पौठ—स्त्री० [सं० प्रवर्त्त, प्रा० पवट्ट] ब्रिटिश शासन में, जोत की एक रीति जिसके अनुसार प्रति वर्ष जोतने का अधिकार नियमानुसार बदलता रहता था। भेजवारी।

विशेष—इसमें गाँव के सब किसानो को जोतने के लिए जमीन मिलती रहती थी।

पौडर†—पुं०=पाउडर। (देखें)

पौड़ी—स्त्री० [हिं० पाँव+ड़ी] १. लकड़ी का वह मोढ़ा जिस पर मदारी बंदर को नचाते समय बैठाता है। २. दे० 'पाँवड़ी'।

स्त्री० [?] एक प्रकार की कड़ी मिट्टी।

पौढ़ना†—अ० [सं० प्रकोठन, ?] आराम करने या सोने के लिए लेटना।

अ० [सं० प्लवन, प्रा० पवलन] आगे पीछे हिलना। झूलना। जैसे—झूले का पौढ़ना।

†अ०=पैरना (तैरना)।

पौढ़ाना—स० [हिं० पौढ़ना] १. किसी को पौढ़ने में प्रवृत्त करना। लेटाना या सुलाना। २. इधर-उधर हिलाना, डुलाना। झुलाना। माल की तौल तथा बटखरों आदि की जाँच या देख-रेख।

पौताना—पुं० [हिं० पाँव] १. जुलाहों के करघे मे लकड़ी का एक औजार जो चार अंगुल लंबा और चौकोर होता है। २ दे० 'पैताना'।

पौतिक—वि० [सं० पूतिक+अण्] (घाव या फोड़ा) जो पूति अर्थात् विषाक्त कीटाणुओं के उत्पन्न होने से सड़ने लगा हो। पूति-दूषित। (सेप्टिक)

पौतिनासिक्य—पुं० [सं० पूति-नासिका, मध्य० स०,+ष्यञ्] पीनस रोग।

पौती†—स्त्री०=पिटारी।

पौत्तलिक—वि० [सं० पुत्तलिका+अण्] १ पुत्तलिका संबंधी। पुतलों या पुतलियों का। जैसे—पौत्तलिक अभिनय या नृत्य। २. मूर्तिपूजक।

पौत्तिक—पुं० [सं० पुत्तिका+अण] पुत्तिका नाम की मधु-मक्खी द्वारा इकट्ठा किया हुआ मधु जो घी के समान गाढ़ा होता है।

पौत्र—पुं० [सं० पुत्र+अण्] [स्त्री० पौत्री] लड़के का लड़का। पोता।

पौत्रिक—वि० [सं० पुत्र+ठक्—इक] १ पुत्र-संबंधी। २ पौत्र-संबंधी।

पौत्रिकेय—पुं० [सं० पुत्रिका+ढक्—एय] अपना उत्तराधिकारी बनाने के लिए पुत्र के स्थान पर माना हुआ कन्या का पुत्र।

पौत्री—स्त्री० [सं० पुत्र+अञ्+ङीप्] १ दुर्गा। २ 'पौत्र' का स्त्री० लड़के की लड़की। पोती।

पौद—स्त्री० [सं० पोत] १ नया निकलता हुआ छोटा पौधा। २ कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधों और वृक्षों का वह नया कल्ला जो एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाया जाता हो।

क्रि० प्र०—जमाना।—लगाना।

३. उपज। पैदावार। ४ नई पीढ़ी जिसमे अधिकतर बच्चे और नवयुवक ही होते हैं।

स्त्री० [सं० पाद+पट] पाँवड़ा।

पौदर—स्त्री० [हिं० पाँव+डालना] १ चलने के समय पैर का चिह्न। २ पैदल चलने का रास्ता। ३ पगडंडी। ४ वह रास्ता जिस पर कोल्हू, मोट आदि के बैल चक्कर लगाते या आते-जाते हैं।

पौदा†—पुं०=पौधा।

पौद्गलिक—वि० [सं० पुद्गल+ठक्—इक] १ पुद्गल-संबंधी। द्रव्य या भूत-संबंधी। २ जीव-संबंधी। ३ जो सांसारिक सुख-भोगों में लिप्त हो।

पौधा†—स्त्री०=पौद। (देखें)

पौधन—स्त्री० [सं० पयस्+आधान] मिट्टी का वह बरतन जिसमें भोजन रखकर परोसा जाता है।

पौधा—पुं० [सं० पोत] १. वृक्ष का वह आरंभिक रूप, जो दो-तीन हाथ तक ऊँचा होता है तथा एक स्थान से उखाड़कर दूसरे स्थान पर लगाया जा सकता है। जैसे—आम या जामुन का पौधा। २ वे वनस्पतियाँ (लताओं, पेड़ों और झाड़ियों से भिन्न) जो दो-तीन हाथ तक ऊपर बढ़ती हैं तथा जिनके तने और शाखाएँ बहुत कोमल होते हैं। जैसे—गुलाब या बेले का पौधा। ३. रेशम या सूत का वह फुँदना जो बुलबुल पालनेवाले लोग सुन्दरता बढ़ाने के लिए बुलबुल की पेटी में बाँध देते हैं। ४. किसी प्रकार का झब्बा या फुँदना।

पौधि†—स्त्री० १.=पौधा। २. =पौद।

पौनःपुनिक—वि० [सं० पुनः पुनः+ठञ्—इक] पुनः पुनः या फिर फिर होनेवाला। जो बार बार होता हो।

पौनःपुन्य—पुं० [सं० पुनः पुनः+ष्यञ्] कोई काम या बात बार-बार होने की अवस्था या भाव।

पौन—पुं० [सं० पवन] १ वायु। हवा। २ जीव या प्राण जिसका रूप वायु के समान सूक्ष्म माना गया है। ३ भूत-प्रेत।

मुहा०—(किसी पर) **पौन बैठाना**- किसी पर भूत-प्रेत की बाधा उपस्थित करना।

४ जादू-टोना जिसका प्रभाव लोक-विश्वास के अनुसार वायु के ससर्ग से दूर तक पहुँचता है।

मुहा०—**पौन चलाना या मारना**=जादू या टोना चलाना। मूठ चलाना।

वि० [सं० पाद+ऊन=पादोन, प्रा० पाओन] पूरे एक में से चौथाई कम। तीन चौथाई। जैसे—पौन घटे में काम हो जायगा।

पौनरुक्त—पुं० [सं० पुनरुक्त+अण्] वह अवस्था जिसमे कोई बात दो बार अर्थात् फिर से कही गई हो। पुनरुक्त होने की अवस्था या भाव।

पौनर्भव—वि० [सं० पुनर्भू+अण्] [स्त्री० पौनर्भवा] १. उस विधवा से सबध रखनेवाला जिसने दूसरा विवाह कर लिया हो। २ पुनर्भू से उत्पन्न या प्राप्त।

पुं० १ विधवा के दूसरे पति से उत्पन्न पुत्र। २ ऐसा व्यक्ति जिसने किसी विधवा अथवा किसी के द्वारा परित्यक्ता स्त्री से विवाह किया हो।

पौनर्भवा—स्त्री० [सं० पौनर्भव+टाप्] वह कन्या जिसका किसी के साथ एक बार विवाह संस्कार हो चुका हो और फिर दूसरी बार किसी दूसरे के साथ विवाह हुआ हो।

पौनर्वादिक—वि० [सं० पुनर्वाद+ठक्—इक] १ पुनर्वाद-सबधी। पुनर्वाद का। (एपेलेट) जैसे—पौनर्वादिक न्यायालय। (ऐपेलेट कोर्ट) २ पुनर्वाद के विचार के परिणाम स्वरूप होनेवाला। जैसे—पौनर्वादिक आज्ञा। (एपेलेट आर्डर)

पौन-सलाई—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का बेलन जिस पर सूत कातने के पहले रूई तैयार की जाती है।

पौना—पुं० [सं० पाद+ऊन, प्रा० पाव+ऊन पाऊन] पौने का पहाड़ा।

वि०=पौन (तीन-चौथाई)।

†पुं० [?] काठ, लोहे आदि की एक प्रकार की कलछी।

पौनार—स्त्री० [सं० पद्मनाल] कमल के फूल की नाल या डठल जो बहुत नरम और कोमल होता है।

पौनारी†—स्त्री० पौनार (पद्मनाल)। उदा०—भुजन छपानि कँवल पौनारी।—जायसी।

पौनिया†—पुं० [हिं० पौना] छोटे अरज या कम चौड़ाई का एक प्रकार का कपड़ा जिसका थान प्रायः थान के साधारण मान का तीन-चौथाई होता था।

पौनी—स्त्री० [हिं० 'पौना' का स्त्री० अल्पा०] छोटा पौना या एक प्रकार की कलछी।

पुं० [हिं० पावना] कुम्हार, धोबी, नाई आदि वे लोग जिन्हें मगल अवसरो पर नेग मिलता है।

पौने—वि० [हिं० पौन] हिं० 'पौन' या 'पौना' का वह रूप जो उसे सख्यावाचक शब्दों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—पौने चार रुपए, पौने दस बजे।

पद—**पौने सोलह आने**=बहुत अधिक अशो मे, बहुत अधिक रूप में। जैसे—आपकी बात पौने सोलह आने ठीक है, अर्थात् उसके ठीक न होने की बहुत कम सभावना है।

मुहा०—(**कोई चीज**) **औने-पौने करना**=थोड़ा-बहुत जो दाम मिले, उसी पर बेच डालना।

पौमान†—पुं० [?] जलाशय।

पुं०=पवमान।

पौरंदर—पुं० [सं० पुरन्दर+अण्] ज्येष्ठा नक्षत्र।

वि० पुरन्दर-सबधी। पुरन्दर का।

पौरध्र—वि० [सं० पुरन्ध्री+अण्] स्त्री-सबधी।

पौर—वि० [सं० पुर+अण्] १ पुर या नगर-सबधी। पुर का। २ पुर में उत्पन्न होनेवाला। ३. पूर्वकाल या पूर्व दिशा मे उत्पन्न। ४ सदा पेट भरने की चिंता मे रहनेवाला। पेटू।

पुं० [सं०] १ नगर निवासी। नागरिक। २ पुरु राजा का पुत्र। ३ रोहिष या रूसा नाम की घास। ४. नखी नामक गन्ध-द्रव्य।

†पुं०=प्रहर।

†स्त्री० [हिं० पौरि] १ ड्योढ़ी। २ दरवाजा।

पौरक—पुं० [सं० पौर√कै+क] १ पुर या नगर के समीप का बाग। २ घर के आस-पास का बगीचा।

पौर-जन—पुं० [कर्म० स०] नागरिक।

पौर-जानपद—पुं० [कर्म० स०] प्राचीन भारतीय राज्य तत्र मे पुर या नगर और जनपद या बाकी देश के प्रतिनिधियो की सभाओ का सम्मिलित रूप।

पौर-मुख्य—पुं० [स० त०] नगर का प्रमुख या प्रधान।

पौर-लेखक—पुं० [ष० त०] प्राचीन भारतीय राजतत्र मे वह अधिकारी जिसके पास पुर या नगर के लेख्यो या दस्तावेजो की नकल और विवरण रहता था।

पौरव—वि० [सं० पुरु+अण्] [स्त्री० पौरवी] १ पुरु-सबधी। पुरु का। २ पुरु के वश का। पुरु से उत्पन्न।

पुं० १ पुरु का वशज या सतान। २ महाभारत के अनुसार उत्तर-पूर्व दिशा का एक देश। ३ उक्त देश का निवासी।

पौरवी—स्त्री० [सं० पौरव+ङीप्] १ युधिष्ठिर की एक स्त्री का नाम। २ वासुदेव की एक स्त्री। ३ सगीत मे एक प्रकार की मूर्च्छना, इसका सरगम इस प्रकार है—ध, नि, स, रे, ग म, प। प, ध, नि, स, रे, ग, म, प, ध, नि, स, रे।

पौर-वृद्ध—पुं० [स० त०] प्रमुख और वयोवृद्ध तथा प्रतिष्ठित नागरिक।

पौर-सख्य—पुं० [स० त०] एक ही पुर या नगर मे रहनेवाले लोगों में उत्पन्न होनेवाली मित्रता या सुहृदता।

पौरस्त्य—वि० [सं० पुरस्+त्यक्] १ पूर्वी दिशा या पूर्वी देशों से सबध रखने या उनमे होनेवाला। २ पहले का पुराना।

पौरस्त्री—स्त्री० [सं०कर्म० स०] १ पुर या नगर में रहनेवाली स्त्री।

'ग्राम्या' का विपर्याय। २. पढ़ी-लिखी या सुशील स्त्री। ३. अंतःपुर में रहनेवाली स्त्री।

पौरा—पुं० [हिं० पहरा या पैर?] शुभाशुभ फलों के विचार से, घर में परिवार के सदस्य के रूप में किसी नये व्यक्ति का होनेवाला आगमन। जैसे—(क) बहू का पौरा अच्छा है, जब से आई है, तब से घर में बरकत दिखाई देने लगी है। (ख) इस नये शिष्य का पौरा अनर्थ-कारक सिद्ध हुआ।

पौराणिक—वि० [सं० पुराण+ठक्—इक] [स्त्री० पौराणिकी] १. पुराण-संबंधी। पुराण या पुराणों का। २ जिसका उल्लेख पुराणों में हुआ हो। जैसे—पौराणिक आख्यान या कथा। ३ प्राचीन काल का। पुराना।

पुं० १. वह ब्राह्मण जो पुराणों का पंडित हो, और पुराणों की कथाएँ लोगों को सुनाता हो। २. अठारह की संख्या का सूचक शब्द।

पौरि—स्त्री०=पौरी।

पौरिक—पुं० [सं० पुर+ठक्—इक] १. पुर में रहनेवाला व्यक्ति। २ पुर का प्रधान शासनिक अधिकारी। ३. दक्षिण भारत का एक प्राचीन देश।

वि० पुर-संबंधी। पुर का।

पौरिया—पुं० [हिं० पौरी] द्वारपाल। ड्योढ़ीदार। दरबान।

पौरी—स्त्री० [सं० प्रतोली, प्रा० पओली] घर के मुख्य द्वार के अन्दर का वह भाग जिसमें से होकर घर के कमरों, आँगन आदि में जाया जाता है। ड्योढ़ी।

पौरुकुत्स—पुं० [सं० पुरुकुत्स+अण्] पुरुकुत्स के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।

पौरुष—वि० [सं० पुरुष+अण्] १ पुरुष या मनुष्य से संबंध रखनेवाला। पुरुष का। पुरुष-संबंधी। २ पुरुष की शक्ति विशेषतः शारीरिक शक्ति से संबंध रखनेवाला।

पुं० १ पुरुष होने की अवस्था या भाव। २ पुरुषों में सामान्य रूप से होनेवाले गुण तथा विशेषताएँ। जैसे—बल, शौर्य, साहस आदि। ३. पुरुष का कर्म। पुरुषार्थ। ४ पुरुष की लिंगेंद्रिय। ५ वीर्य। शुक्र। ६ ऊँचाई या गहराई की 'पुरसा' नामक माप।

पौरुषी—स्त्री० [सं० पौरुष+ङीप्] स्त्री।

पौरुषेय—वि० [सं० पुरुष+ढञ्—एय] १ पुरुष-संबंधी। पुरुष का। २ पुरुष का किया, बनाया या रचा हुआ। ३ आध्यात्मिक।

पुं० १ पुरुष का काम। २ पुरुषों या मनुष्यों का समूह। जन-समुदाय। ३ वह मजदूर जो दैनिक वेतन पर काम करता हो।

पौरुष्य—पुं० [सं० पुरुष+ष्यञ्]=पौरुष।

पौरुहूत—वि० [सं० पुरुहूत+अण्] इंद्र-संबंधी।

पौरा†—स्त्री० [देश०] मिट्टी के विचार से भूमि का एक भेद।

पौरोगव—पुं० [सं० पुरस्-गो, ब० स०; पुरोगु+अण्] राजभवन की पाकशाला का प्रधान अधिकारी।

पौरोडाश—वि० [सं० पुरोडाश+अण्] पुरोडाश-संबंधी। पुरोडाश का।

पुं० पुरोडाश के समर्पण के समय पढ़ा जानेवाला एक मंत्र।

पौरोडाशिक—पुं० [सं० पुरोडाश+ठक्—इक] पुरोडाश नामक मंत्र का पाठ करनेवाला। ऋत्विक।

पौरोधस—पुं० [सं० पुरोधस्+अण्] १ पुरोहित। २ पुरोहित का काम या पद।

पौरोभाग्य—पुं० [सं० पुरोभागिन्+ष्यञ्] १ दूसरों के दोष दिखलाना। २ ईर्ष्या या द्वेषपूर्ण भावना। ३ ईर्ष्या या द्वेष-वश किया हुआ कार्य।

पौरोहित्य—पुं० [सं० पुरोहित+ष्यञ्] १ पुरोहित होने की अवस्था या भाव। २. पुरोहित का काम, कृत्य या वृत्ति। ३ पुरोहितों का वर्ग या समाज। (प्राइस्टहुड)

पौर्णमास—पुं० [सं० पौर्णमासी+अण्] प्राचीन भारत में पूर्णिमा के दिन किया जानेवाला एक तरह का यज्ञ।

वि० पूर्ण चन्द्र से संबंध रखनेवाला।

पौर्णमासिक—वि० [सं० पूर्णमासी+ठञ्—इक] १ पूर्णिमा-संबंधी। २ पूर्णिमा के दिन होनेवाला।

पौर्णमासी—स्त्री० [सं० पूर्णमास+अण्—ङीप्] पूर्णिमा।

पौर्णमास्य—पुं० [सं० पौर्णमासी+यत्] पूर्णिमा के दिन होनेवाले यज्ञ आदि।

पौर्वात्य—वि० [सं० पूर्व+त्यक्] 'पाश्चात्य' के अनुकरण पर बना हुआ असिद्ध शब्द। शुद्ध रूप पौरस्त्य (पूर्व दिशा का)।

पौर्वापर्य—पुं० [सं० पूर्वापर+ष्यञ्] १ पूर्व और पर अर्थात् आगे और पीछे होने की अवस्था या भाव। पूर्वापरता। २ अनुक्रम। सिलसिला।

पौर्वार्द्धिक—वि० [सं० पूर्वार्द्ध+ठञ्—इक] पूर्वार्द्ध-संबंधी।

पौर्वाह्णिक—वि० [सं० पूर्वाह्ण+ठञ्—इक] [स्त्री० पौर्वाह्णिकी] पूर्वाह्ण संबंधी। पूर्वाह्ण का।

पौर्विक—वि० [सं० पूर्व+ठञ्—इक] १ जो पूर्व में अर्थात् पहले हुआ हो। २ जो पूर्व में अर्थात् पहले किया जाने को हो।

पौल—स्त्री०=पोल (बड़ा द्वार)।

पौलना*—स० [?] काटना।

†पुं०=पौला (भद्दा जूता)।

पौलस्ती—स्त्री० [पुलस्त+अण्, ङीप्] रावण की बहन, शूर्पणखा।

पौलस्त्य—पुं० [सं० पुलस्त+यञ्] [स्त्री० पौलस्त्यी] १. पुलस्त्य का पुत्र या उनके वंश का पुरुष। २. रावण, विभीषण और कुंभकर्ण। ३ कुबेर। ४ चन्द्रमा।

पौला—पुं० [हिं० पाँव, पाउ+ला (प्रत्य०)] एक प्रकार की खड़ाऊँ जिसमें खूँटी नहीं होती, बल्कि छेद में बँधी हुई रस्सी में अँगूठा फँसा रहता है।

पुं० [हिं० पाँव+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० पौली] १ एक तरह का देहाती भद्दा जूता। (पश्चिम) २. जूता।

पौलिया†—पुं०=पौरिया।

पौलिश—वि० [यू० पालस=एक यूनानी ज्योतिषी] पुलिस या पालस नामक यूनानी ज्योतिषी का (ज्योतिषिक सिद्धान्त)।

पौली—स्त्री० [सं० प्रतोली, पा० पओली] पौरी। ड्योढ़ी।

स्त्री० [हिं० पाँव; पाउ+ली (प्रत्य०)] १ पैर का वह भाग जो खड़े होने पर जमीन से आड़ा लगा रहता है। एड़ी से लेकर उँगलियों तक का भाग। पैर का तलुआ। २ चलने से जमीन पर पड़नेवाला पैर का निशान। पद-चिह्न।

पौलुषि—पु० [स० पुलुष+इञ्] १ पुलुवश मे उत्पन्न व्यक्ति। २. सत्ययज्ञ नामक एक ऋषि जो पुलु ऋषि के वश में उत्पन्न हुए थे। (शतपथ ब्राह्मण)

पौलोम—वि० [स० पुलोमन्+अण्] [स्त्री० पौलोमी] पुलोम-सबधी। पुलोम का।

पु० १ पुलोमा ऋषि का अपत्य या वशज। २ उपनिषद काल मे, दैत्यो की एक जाति या वर्ग।

पौलोमी—स्त्री० [स० पौलोम+ङीप्] १ इद्राणी। २ महर्षि भृगु की पत्नी।

पौल्कस—वि० [स० पुल्कस+अण्] पुल्कस (एक सकर जाति) जाति सबधी। पुल्कसो का।

पु० पुल्कस जाति का व्यक्ति।

पौवा†—पु०=पौआ। (देखें)

पौष—पु० [स० पुष्य+अण्, य—लोप] विक्रम संवत् का दसवाँ महीना। उसमे पडनेवाली पूर्णमासी पुष्य नक्षत्र मे होती है।

पौष्कर—वि० [स० पुष्कर+अण्] पुष्कर-सबधी। पुष्कर का।

पु० १ पुष्करमूल। २ कमल की नाल। मृणाल। मसीड। ३ स्थल-पद्म। ४ एरड या रेड की जड।

पौष्कल—पु० [स० पुष्कल+अण्] एक तरह का अनाज।

पौष्कल्य—पु० [स० पुष्कल+ष्यञ्] १ पुष्कल होने की अवस्था या भाव। २ सपूर्णता।

पौष्टिक—वि० [स० पुष्टि+ठक्—इक] १ शरीर का बल और वीर्य बढाकर उसे पुष्ट करनेवाला (पदार्थ)। जैसे—पौष्टिक औषध, पौष्टिक भोजन।

पु० १ ऐसे कर्म जिनसे धन, जन आदि की वृद्धि होती हो। २ वह कपडा जो बच्चे का मुडन हो चुकने पर उसके सिर पर ओढाया जाता है।

पौष्ण—वि० [स० पूषन्+अण्, उपधा-लोप] पुषा देवता सबधी। पूषा देवता का।

पु० रेवती नक्षत्र।

पौष्प—वि० [स० पुष्प+अण्] पुष्प-सबधी। फूल का।

पु० १ फूलो के रस से बनाया जानेवाला मद्य। २. पुष्प-रेणु। पराग।

पौष्पक—पु० [स० पुष्पक+अण्] पीतल के कसाव से तैयार किया जाने-वाला एक तरह का अजन। कुसुमाजन। पुष्पाजन।

पौसला—पु० [स० पय शाला] वह स्थान जहाँ लोगो को परोपकार की दृष्टि से पानी पिलाया जाता है। प्याऊ।

क्रि० प्र०—चलाना।—बैठना।

पौसार—स्त्री० [हि० पाव] करघे मे लकडी का वह डडा जो ताने और राछ के नीचे लगा रहता है। इसी को दबाकर राछ ऊँची-नीची की जाती है।

पौ-सेरा—पु० [हि० पाव+सेर] पाव सेर की तौल या बटखरा।

पौहर† —पु०=प्रहर।

पौहारी—वि० [स० पयस्-दूध+आहार] जिसका आहार केवल दूध हो।

पु० वह जो केवल दूध पीकर रहता हो, अन्न न खाता हो।

प्याऊ—वि० [स० प्रपा, हि० प्याना=पिलाना+ऊ (प्रत्य०)] पिलाने-वाला।

पु० वह स्थान जहाँ गरमी के दिनो मे राह-चलते प्यासे लोगो को पानी, शरबत, लस्सी आदि पिलाई जाती है।

प्याज—पु० [फा० प्याज] १ एक प्रसिद्ध छोटा क्षुप या पौधा जिसके सफेद रग के फूल गुच्छे मे लगते हैं। २ उक्त पौधे का कद जो गोल गाँठ के रूप मे होता है तथा जिसका स्वाद बहुत चरपरा या तीखा और गंध बहुत उग्र होती है। वैद्यक मे यह बल तथा वीर्यवर्धक और वातघ्न माना जाता है।

प्याजी—वि० [फा० प्याजी] प्याज के ऊपरी छिलके के रग का। हलका गुलाबी।

पु० उक्त प्रकार का रग।

प्यादा—पु० [फा० पयाद] १ पैदल चलनेवाला व्यक्ति। पदाति। २ वह सैनिक जो पैदल चलता हो (सवार से भिन्न)। ३ दूत। ४ हरकारा। ५ शतरज का एक मोहरा जो एक घर सीधा चलता और एक घर तिरछे मार करता है। पैदल।

वि० जो सवारी पर न हो, बल्कि पैरो से चल रहा हो।

प्याना† —स०=पिलाना।

प्यायित—वि० [स० प्याय् (वृद्धि)+क्त] १ जिसकी वृद्धि हुई हो। बढा हुआ। २ जिसकी शक्ति बढ गई हो। ३ जो मोटा हो गया हो। ४ जो तृप्त किया गया हो।

प्यार—पु० [स० प्रीति] १ किसी के प्रति होनेवाली आसक्तिपूर्ण या श्रद्धापूर्ण भावना। २ पुरुष की स्त्री के प्रति अथवा स्त्री की पुरुष के प्रति होनेवाली ऐसी आसक्तिपूर्ण भावना जो पारस्परिक आकर्षण के कारण होती है। प्रेम। मुहब्बत। ३ प्रेमपूर्वक किया जानेवाला आलिंगन, चुबन आदि।

पु० [स० पियाल] अचार या पियाल नाम का वृक्ष जिसका बीज चिरौजी है।

प्यारा—वि० [हि० प्यार] [स्त्री० प्यारी] १ जो अच्छे, आकर्षण या सुदर होने के कारण प्रेम-पूर्ण भाव का अधिकारी हो। प्रीतिपात्र। प्रिय। २ उक्त गुणो के कारण जिसे प्यार करने को जी चाहे। जो देखने मे अच्छा और भला लगे। जैसे—प्यारा सा बच्चा उसकी गोद मे था। ३ जिसके प्रति बहुत अधिक प्रेम, मोह या स्नेह हो। जैसे—जीवन सबको प्यारा होता है।

†पु०=अमरूत (फल)।

प्यारा-फूली—पु० [हि० प्यार+फूलना] एक प्रकार का बढिया आम जो प्राय दक्षिणी भारत मे होता है।

प्याल†—पु०=पयाल।

प्याला—पु० [फा० पियाल] [स्त्री० अल्पा० प्याली] १ चीनी मिट्टी, धातु आदि का बना हुआ कटोरी के आकार का एक प्रसिद्ध बरतन जिसका ऊपरी भाग या मुँह नीचेवाले भाग या पेंदे की अपेक्षा कुछ अधिक चौडा होता है और जिसका व्यवहार साधारणत चाय, शराब आदि पीने मे होता है। जाम। २ उक्त पात्र मे भरा हुआ तरल पदार्थ। **मुहा०—प्याला पीना या लेना**=मद्य पीना। शराब पीना। **(किसी चीज या बात का) प्याला पीना**=किसी चीज या बात से अपना अंत करण या मन अच्छी तरह ओत-प्रोत या पूर्ण करना। जैसे—पीले पीले पीले हरी नाम का प्याला। (गीत) **(किसी व्यक्ति का) प्याला भरना**=आयु या जीवन-काल पूर्ण होना। जीवन के दिन पूरे होना।

३ जुलाहों का मिट्टी का वह बरतन जिसमें वे नरी भिगोते हैं। ४. स्त्री का गर्भाशय।

मुहा०—प्याला बहना=गर्भपात होना। गर्भ गिरना।

४ भीख माँगने का पात्र। भिक्षा-पात्र। ५ तोप या बंदूक आदि मे वह गड्ढा या स्थान जिसमे रंजक रखते हैं।

प्यालना—स०=पिलाना।

प्यास—स्त्री० [सं० पिपासा] १ वह स्थिति जिसमें जल या और कोई तरल पदार्थ पीने की उत्कट इच्छा होती है तथा जो शरीर के जलीय पदार्थ के कम हो जाने पर उत्पन्न होती है। तृष्णा। पिपासा। २ लाक्षणिक रूप में, किसी पदार्थ की प्राप्ति की प्रबल इच्छा या कामना। क्रि० प्र०—बुझना।—मिटना।—लगना।

प्यासा—वि० [हिं० प्यास] [स्त्री० प्यासी] १ जिसे प्यास लगी हो। जो पानी पीना चाहता हो। तृषित। पिपासित। २ जिसे किसी काम या बात की प्रबल कामना या वासना हो। उदा०—अँखिया हरि दरसन की प्यासी।—सूर।

प्यासी—स्त्री० [?] एक प्रकार की छोटी मछली।

प्यून—पु० [अ० पियन] १ पैदल सिपाही। २ कागज, पत्र आदि इधर-उधर ले जानेवाला छोटा कर्मचारी या चपरासी।

प्यूनी—स्त्री०=पूनी (रूई की)।

प्यूस†—पु०=पेउस।

प्यूसी†—स्त्री०=पेवसी।

प्योंदा—पु० [स्त्री० अल्पा० प्योंदी]=पैबद।

प्यो—पु० [हिं० पिय] १. स्त्री का पति। २ स्त्री का प्रियतम। ३ पिता। (पश्चिम)

प्योड़ी—स्त्री० [देश०] चित्र-कला मे, एक प्रकार का स्थायी और तेज पीला रंग जो ऐसी गौओ के मूत्र से बनाया जाता था जिन्हे कुछ दिनो तक आम की पत्तियाँ खिलाकर रखा जाता था।

प्योसर—पु० [स० पीयूष] हाल की ब्याई हुई गौ का दूध, जो विशेष गुणकारक और स्वादिष्ट होता है।

प्योसार—पु० [सं० पितृशाला] विवाहिता स्त्री की दृष्टि से उसके माता-पिता का घर। पीहर। मायका।

प्योंदा†—पु०=पैबद।

प्योर*—पुं० [स० प्रिय] १ प्रियतम। २ पति। ३ साधकों की परिभाषा में, परमेश्वर।

प्योसाल—पु० [स० पितृशाला] स्त्री का मायका। पीहर। उदा०—पिय बिछुरन को दुसह दुख हरखि जात प्योसाल।—बिहारी।

प्रकंप—पु० [स० प्र√कम्प् (काँपना)+घञ्] १. बहुत काँपना या हिलना। २ कँपकँपी। थरथराहट।

प्रकंपन—पु० [सं० प्र√कम्प्+ल्युट्—अन] १. अच्छी तरह या बहुत काँपने अथवा हिलने की क्रिया। २ कँपकँपी। थरथराहट।

वि० कँपाने या हिलानेवाला।

पुं० [स० प्र√कम्प्+णिच्+युच्—अन] १. वायु। हवा। २. पुराणानुसार एक नरक का नाम।

प्रकंपमान—वि० [सं० प्र√कम्प्+शानच्] १. जो काँपता या थरथराता हो। २. बहुत हिलता हुआ।

प्रकंपित—भू० कृ० [सं० प्र√कम्प्+क्त] १ कँपाया या हिलाया हुआ। २ काँपता या थरथराता हुआ। ३ हिलता हुआ।

प्रकच—वि० [सं० ब० स०] लबे और खड़े बालोंवाला।

प्रकट—वि० [स० प्र√कट्+अच्] १ जो इस प्रकार अस्तित्व मे आया हो या वर्तमान हो कि सहज में देखा जा सके। २ जो इस प्रकार व्यक्त तथा स्पष्ट हो कि उससे ठीक-ठीक बोध होता हो। ३ जिसका अभी अभी प्रादुर्भाव हुआ हो। उद्‌भूत। उत्पन्न। जैसे—अब तो ज्वर के लक्षण प्रकट होने लगे हैं।

प्रकटाना—स० [सं० प्रकटन] प्रकट या जाहिर करना। उदा०—आज आखिल विज्ञान, ज्ञान को रूप गध, रस में प्रगटाओ।—पन्त।

प्रकटित—भू० कृ० [स० प्र√कट्+क्त] १. जो प्रकट हुआ हो। २ प्रकट किया हुआ।

प्रकटीकरण—पु० [स० प्रकट+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] प्रकट करने की क्रिया या भाव।

प्रकथन—पु० [स० प्र√कथ् (कहना)+ल्युट्—अन] विशेष रूप से कोई बात कहना या घोषित करना।

प्रकर—पुं० [स० प्र√कृ (करना)+अच्] १ वह जो कोई काम करने मे बहुत अधिक कुशल या दक्ष हो। २ [प्र√कृ+अप्] अगर नामक गधद्रव्य। अगरु। ३ खिला हुआ फूल। ४ अधिकार। ५ मदद। सहायता। ६. आश्रय। सहारा। ७ झुंड। समूह। ८ दोस्ती। मित्रता। ९ सम्मान। १० प्रथा। रवाज। ११ गुलदस्ता।

प्रकरण—पुं० [स० प्र√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १. उत्पन्न करना। अस्तित्व मे लाना। २ बनाना। ३ कोई बात या विषय अच्छी तरह समझने-समझाने के लिए उस पर वादविवाद या विचार करना। ४. कोई ऐसी विशिष्ट बात या विषय जो उपस्थिति या प्रस्तुत हो और जिसका उल्लेख या विचार हो रहा हो। प्रसग। विषय। जैसे—अब विवादवाला प्रकरण समाप्त होना चाहिए। ५. वह कथन या वचन जिसमे आवश्यक रूप से कोई काम या बात करने का विधान हो। ६ किसी ग्रंथ के अतर्गत विभिन्न अध्यायों में मे कोई एक। ६ रूपक के दस भेदों मे से एक, ऐसा नाटक जिसकी कथा-वस्तु प्रख्यात न हो, बल्कि लौकिक और कल्पित, हो, नायक धीर या शांत हो तथा नायिका कुल-कन्या या वेश्या हो।

प्रकरण वक्रता—स्त्री० [ष० त०] साहित्य मे, काव्य-प्रबन्ध के किसी एक अंग या प्रकरण की चमत्कारपूर्ण रमणीयता।

प्रकरणसम—पु० [सं०] भारतीय नैयायिकों के अनुसार ५ प्रकार के हेत्वाभासों में से एक।

प्रकरणिका—स्त्री० [स० प्रकरणी+कन्+टाप्, ह्रस्व] साहित्य मे, एक प्रकार का छोटा प्रकरण (नाटक या रूपक) जिसमे नायक कोई व्यापारी और नायिका उसकी सजातीय स्त्री होती है। शेष बातें प्रकरण (देखें) के समान होती हैं।

प्रकरणी—स्त्री० [सं० प्रकरण+अच्+ङीष्] नाटिका।

प्रकरी—स्त्री० [सं० प्रकर+ङीष्] १. एक प्रकार का गान। २ नाटक मे किसी स्थानिक घटना की अवांतर कथा की सहायता से कथा-वस्तु का प्रयोजन सिद्ध करना जो एक अर्थ प्रकृति है। ३. नाटक मे, उन छोटी छोटी प्रासंगिक कथाओं में से कोई एक जो समय समय पर तथा बीच-बीच में आकर मुख्य कथा की सहायक बनकर समाप्त हो जाती हैं। जैसे—

'प्रसाद' के चन्द्रगुप्त नामक नाटक मे चद्रगुप्त और दंडायन का मिलन। प्रासंगिक कथाओं का एक अन्य भेद है—पताका। (दे०)

प्रकर्ष—पु० [स० प्र√कृष् (खीचना)+घञ्] १ उत्कर्ष। उत्तमता। २. अधिकता। बहुतायत।

प्रकर्षक—वि० [सं० प्र√कृष्+ण्वुल्—अक] प्रकर्ष या उत्कर्ष करनेवाला।

प्रकर्षण—पु० [स० प्र√कृष्+ल्युट्—अन] १ पीछे की ओर ढकेलना। २ प्रकर्ष। उत्कर्ष। ३ अधिकता। बहुतायत।

प्रकर्षणीय—वि० [स० √कृष्+अनीयर्] जिसका उत्कर्ष करना आवश्यक या उचित हो।

प्रकला—स्त्री० [सं० प्रा० स०] कला (समय का एक विशिष्ट मान) का साठवाँ भाग।

प्रकल्पना—स्त्री० [स० प्र√कृप् (कल्पना करना)+णिच्+युच्—अन्, +टाप्] लोक-व्यवहार और विधिक क्षेत्र मे किसी घटना या बात से निकलनेवाला ऐसा आनुमानिक निष्कर्ष जो बहुत-कुछ ठीक और ममान्य जान पडता हो। यह मान लिया जाना कि इस बात का यही अर्थ या आशय हो सकता है। (प्रिज़म्पशन)

प्रकल्पित—भू० कृ० [स० प्र√कृप्+णिच्+क्त] १ जिसकी प्रकल्पना हुई हो। २ निश्चित या स्थिर किया हुआ।

प्रकल्प्य—वि०[स० प्र√कृप्+णिच्+यत्] १ जिसके सम्बन्ध मे प्रकल्पना हो या होने को हो। २ निश्चित या स्थिर किये जाने के योग्य।

प्रकश—पु०[स० प्र√कश् (शब्द करना)+अच्] १ चाबुक। २ कष्ट पहुँचाना। पीडित करना। ३ मूत्रनलिका।

प्रकशी—स्त्री०[स० प्रकश+ङीष्] शूक नामक रोग जिसमे पुरुषो की मूत्रेंद्रिय सूज जाती है। (यह रोग प्राय इन्द्रिय को बढ़ानेवाली औषधियो के प्रयोग से होता है।)

प्रकांड—वि०[स० प्रा० स०] १ बहुत बडा। विशाल। २ बहुत अधिक विस्तृत। ३ उत्तम। सर्वश्रेष्ठ।

पु० १ वृक्ष का तना। स्कध। २ वृक्ष की टहनी या डाल। शाखा। ३ पेड़। वृक्ष।

प्रकाम—वि०[स० ब० स०] १ जितना आवश्यक हो। उतना। २ पूरा। यथेष्ठ। ३ जिसमे अत्यधिक काम वासना हो।

पु० १ इच्छा। कामना। २ तृप्ति।

प्रकार—पु०[स० प्र√कृ+घञ्] १ वस्तुओ, व्यक्तियो आदि का वह वह समुदाय या समूह जिसमे सामान्य रूप से कुछ ऐसे विशिष्ट गुण, तत्त्व या लक्षण मिलते हो जिनके आधार पर उसी जाति या श्रेणी के अन्य समुदायो या समूहो को उससे अलग किया जाता हो। (टाइप, काइंड) २ उन तत्त्वो, गुणो, विशेषताओ आदि का समूह जिनसे किसी वस्तु का स्वतंत्र स्वरूप प्रकट होता है। भेद। (डेस्क्रिप्शन) ३ कोई काम करने के लिए व्यवहार मे लाई जानेवाली क्रिया या प्रक्रिया। ढग। (मैनर) ४ वह प्राकृतिक तत्त्व जिसके कारण किसी वस्तु का कोई अलग वर्ग बनता है।

स्त्री०=प्राकार (प्राचीर)।

प्रकालन—वि०[सं० प्र√कल् (प्रेरित करना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ हिंसक। २ पीछा करनेवाला।

पु० १ हिंसा करना। २ मार डालना। ३ एक प्रकार का साँप। ४ एक नाग का नाम।

प्रकाश—पु०[स० प्र√काश् (दीप्ति)+घञ्] १. साधारणतः वह स्थिति जिसमे आँखो से सब चीजें देखने में आती हैं और जिसके अभाव मे कुछ भी दिखाई नही देता। चाँदना। रोशनी। 'अन्धकार' का विपर्याय। जैसे—दीपक या सूर्य का प्रकाश। २ पारिभाषिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों मे, गति और शक्ति का एक परिणाम या रूप जो ज्योतिष्मान् पदार्थों से निकलनेवाली तरगो के रूप मे होता है। (लाइट)

विशेष—वैज्ञानिको का मत है कि ज्योतिष्मान् पदार्थों में से निकलनेवाली तरगो के कारण आकाश (ईथर) मे जो क्षोभ उत्पन्न होता है, वही प्रकाश की तरगो के रूप मे चारों ओर फैलता है। आँखों पर उसकी जो प्रतिक्रिया होती है, उसी के फलस्वरूप सब चीजें दिखाई देती है। इसका प्रत्यक्ष तथा मौलिक सबध किसी न किसी प्रकार के ताप से होता है और इसकी गति प्रति सेकेंड १८६०००मील होती है। यह कोई द्रव्य नही है, इसी लिए इसमे कोई गुरुत्व या भार नही होता। ३ उक्त का वह रूप जो हमे आँखो से दिखाई देता है। रोशनी। जैसे—अग्नि, दीपक या सूर्य का प्रकाश। ४ वह उद्गम या स्रोत जिससे उक्त प्रकार की ज्योतिर्मय तरगे निकलकर हमारी दृष्टि-शक्ति की सहायक होती है। जैसे—यहाँ तो बिलकुल अँधेरा है, कोई प्रकाश (अर्थात् जलता हुआ दीआ, मोमबत्ती आदि) लाओ तो कुछ दिखाई भी दे। ५ लाक्षणिक रूप मे कोई ऐसा तत्त्व या बात जिससे किसी विषय का ठीक और पूरा रूप समझ मे आता या स्पष्ट दिखाई देता हो। जैसे—(क) ज्ञान का प्रकाश। (ख) किसी के उपदेश, प्रवचन या भाषण से किसी गूढ विषय पर पडनेवाला प्रकाश। ६ वह स्थिति जिसमे आने पर कोई चीज या बात प्रत्यक्ष रूप मे सबके सामने आती है। जैसे—दो हजार वर्ष बाद यह पुस्तक प्रकाश मे आई है। ७ आँखों की वह शक्ति जिसमे चीजे दिखाई देती हैं। ज्योति। जैसे—उनकी आँखो का प्रकाश दिन पर दिन कम होता जा रहा है। ८ कोई ऐसा विकास या स्फुटन जो दृश्य, प्रत्यक्ष या व्यक्त हो। ९ ख्याति। प्रसिद्धि। १० सूर्य का आतप। धूप। ११ किरण। १२ किसी ग्रथ या पुस्तक का कोई अध्याय, खड या विभाग। १३ घोड़े की पीठ पर की चमक।

वि० १ जगमगाता हुआ। दीप्त। प्रकाशित। २ खिला हुआ। विकसित। ३ जो प्रत्यक्ष या सामने हो। गोचर। ४ प्रसिद्ध। विख्यात ५ खुला हुआ। स्पष्ट।

प्रकाशक—पु०[स० प्र √काश् (दीप्ति)+ण्वुल्—अक] १ वह जो प्रकाश करे। जैसे—सूर्य। २ पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि प्रकाशित करनेवाला व्यक्ति। ३ कासा। ४ महादेव।

प्रकाश-धृष्ट—पु०[स० सुप्सुपा स०] धृष्ट नायक के दो भेदों में से एक। वह नायक जो प्रकट रूप मे धृष्टता करे, झूठी सौगध खाता हो, नायिका के साथ साथ लगा फिरता हो या इसी तरह की धृष्टता की बाते खुले आम करता हो।

प्रकाशन—वि० [स० प्र√काश्+णिच्+ल्यु—अन्] १ प्रकाश करनेवाला। २ चमकीला। ३. दीप्तिमान्।

पुं० १ प्रकाश करने की क्रिया या भाव। २. प्रकाश में या सबके सामने लाने की क्रिया या भाव। ३ आज-कल मुख्य रूप से ग्रन्थ

आदि छपवाकर बेचने तथा प्रचारित करने का व्यवसाय। ४ प्रकाशित की जानेवाली कोई पुस्तक। (पब्लिकेशन, अंतिम दोनों अर्थों के लिए) ५ विष्णु।

प्रकाश-परावर्तक—पु० [ष० त०] शीशे आदि का वह टुकड़ा या उससे युक्त वह उपकरण जो कहीं से प्रकाश-ग्रहण कर उसे अन्य दिशा में ले जाकर फेंकता हो। (रिफ्लेक्टर)

प्रकाशमान—वि० [सं० प्र√काश्+शानच्] १ चमकता हुआ। चमकीला। प्रकाशयुक्त। २ प्रसिद्ध। विख्यात। मशहूर।

प्रकाश-रसायन—पु० [ष० त०] रसायनशास्त्र का वह अंग या शाखा जिसमें प्रकाश की किरणों का विश्लेषण और विवेचन होता है। (फोटो कैमिस्ट्री)

प्रकाश-वर्ष—पु० [सं० मध्य० स० ?] बहुत अधिक दूर के आकाशस्थ पिंडों या तारों की दूरी मापने का एक मान जो प्रकाश की गति के विचार से स्थिर किया गया है और जो उतनी दूरी का सूचक है जितना प्रकाश एक वर्ष में पार करता है। (लाइट ईयार) जैसे—अमुक तारा पृथ्वी से दस प्रकाश वर्षों की दूरी पर है।

विशेष—प्रकाश की गति प्रति सेकेंड १८६००० मील होती है। अतः प्रकाश वर्ष की दूरी लगभग ६० खरब ६०००००००००००० मील होती है।

प्रकाश वियोग—पु० [सं० मध्य० स०] केशव के अनुसार वियोग के दो भेदों में से एक। प्रेमी और प्रेमिका का ऐसा वियोग जो सब पर प्रकट हो जाय।

प्रकाश-संयोग—पु० [सं० मध्य० स०] केशव के अनुसार संयोग के दो भेदों में से एक। प्रेमी और प्रेमिका का ऐसा संयोग जो सब पर प्रकट हो।

प्रकाश-संश्लेषण—पु० [ष० त०] इस बात का संश्लेषण या विवेचन कि प्रकाश पड़ने पर जल, वायु आदि किस प्रकार विकृत होकर दूसरे तत्त्वों में रासायनिक परिवर्तन उत्पन्न करते हैं। (फोटो-सिन्थेसिस)

प्रकाश-स्तंभ—पु० [ष० त० या मध्य० स०] वह ऊँची इमारत विशेषतः समुद्र में बना हुआ वह स्तंभ जहाँ से बहुत प्रबल प्रकाश निकलकर चारों ओर फैलता तथा जिससे जलयानों, वायुयानों आदि का रात के समय पथ-प्रदर्शन होता है। (लाइट हाउस)

प्रकाशात्मा (त्मन्)—पु० [सं० प्रकाश-आत्मन्, ब० स०] १ सूर्य। २ विष्णु।

प्रकाशित—भू० कृ० [सं० प्र√काश्+क्त] १. प्रकाश से युक्त किया अथवा प्रकाश में लाया हुआ। २ (ग्रन्थ या लेख) जो छापकर सबके सामने लाया गया हो। ३. जो प्रकाश निकलने या पड़ने से चमक रहा हो। चमकता हुआ।

प्रकाशी (शिन्)—वि० [सं० प्रकाश+इनि] [स्त्री० प्रकाशिनी] १ जिसमें प्रकाश हो। चमकता हुआ। २. प्रकाश करनेवाला। जैसे—आत्म-प्रकाशी।

प्रकाश्य—वि० [सं० प्र√काश्+ण्यत्] प्रकाश में आने या लाये जाने के योग्य।

अव्य० १. प्रकट या स्पष्ट रूप में। २. (नाटक में कथन) जोर से बोलते और सबको सुनाते हुए। 'स्वगत' का विपर्य्यय।

प्रकास—पु० =प्रकाश

प्रकासना—स० [सं० प्रकाश] प्रकाश से युक्त करना। चमकाना। अ० प्रकाशित होना।

प्रकिरण—पु० [सं० प्र√कृ (विक्षेप)+ल्युट्—अन] १ फैलाना। बिखेरना। २ मिश्रण। मिलाना।

प्रकीर्ण—वि० [सं० प्र√कृ+क्त] १ फैला हुआ। विस्तृत। २ इधर-उधर यों ही छितराया या बिखरा हुआ। ३ मिला हुआ। मिश्रित। ४ जिसमें अनेक प्रकार की चीजें मिली हों। (विशेषतः ऐसा आय-व्यय जो किसी एक निश्चित मद में न हो, बल्कि इधर-उधर की फुटकर मदों का हो। (मिस्लेनिअस) ५ पागल। विक्षिप्त। ६ उच्छृंखल। उद्दंड। ७. क्षुब्ध।

पु० [सं०] १ पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। २ फुटकर कविताओं का संग्रह। ३ चँवर। ४ ऐसा करंज जिसमें से दुर्गंध निकलती हो। पूति। करंज।

प्रकीर्णक—पु० [सं० प्रकीर्ण+कन्] १ चँवर। २ ग्रन्थ का अध्याय या प्रकरण। ३ फैलाव। विस्तार। ४. ऐसा वर्ग या संग्रह जिसमें अनेक प्रकार की ऐसी वस्तुओं का मेल हो जो किसी विशिष्ट वर्ग या शीर्षक में न रखी जा सकती हों। फुटकर। ५ वह छोटा-मोटा पाप जिसके प्रायश्चित का उल्लेख किसी धर्म-ग्रन्थ में न हो।

प्रकीर्णकेशी—स्त्री० [सं० ब० स०+ङीष्] दुर्गा।

प्रकीर्णन—पु० [सं०][भू० कृ० प्रकीर्णत] चीजें इधर-उधर छितराना या बिखेरना (स्कैटरिंग)

प्रकीर्तन—पु० [सं० प्र√कृत् (जोर से शब्द करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रकीर्तित] १ जोर जोर से कीर्तन करना। २ घोषणा।

प्रकीर्ति—स्त्री० [सं० प्र√कृत्+क्तिन्] १ घोषणा २ ख्याति।

प्रकीर्तित—भू० कृ० [सं० प्र√कृत्+क्त] १ जिसका यश गाया गया हो। प्रशंसित। २ जिसकी घोषणा की गई हो।

प्रकुपित—वि० [सं० प्रा० स०] जिसका प्रकोप बहुत बढ़ा हो या बढ़ाया गया हो।

प्रकृत—वि० [सं० प्र√कृ (करना)+क्त] [भाव० प्रकृतता, प्रकृति] १ जो प्रकृति अर्थात् निसर्ग से उत्पन्न या प्राप्त हुआ हो अथवा उसका बनाया हुआ हो। प्रकृतिजन्य। जैसे—प्रकृत झीलें प्रकृत वनस्पतियाँ। २. जो ठीक उसी रूप में हो, जिस रूप में प्रकृति उसे उत्पन्न करती हो। जिसमें कोई कृत्रिमता, बनावट, मेल या विकार न हो अथवा न हुआ हो। 'विकृत' इसी का विपर्याय है। ३ जो शरीर की प्रकृति अर्थात् स्वभाव के आधार पर हो या उससे संबंध रखता हो। स्वाभाविक। (नैचुरल, उक्त सभी अर्थों में) जैसे—प्रकृत क्रोध, प्रकृत बल। ४ जो अपनी ठीक वास्तविक या साधारण स्थिति में हो। जिसमें कुछ घटाया-बढ़ाया या अदला-बदला न गया हो। प्रसम। सहज। साधारण। (नार्मल) ५ जो प्रस्तुत प्रकरण या प्रसंग के विचार से उपयुक्त, यथेष्ट या वांछनीय हो। संगत। (रेलेवेन्ट) उदा०—यहाँ इतना ही प्रकृत है कि कबीरदास का 'पंडित' बहुत अपना आदमी है।—हजारीप्रसाद द्विवेदी।

पु० श्लेष अलंकार का एक प्रकार या भेद।

प्रकृतता—स्त्री० [सं० प्रकृत+तल्+टाप्] १ प्रकृत होने की अवस्था या भाव। २. असलियत। यथार्थता वास्तविकता।

प्रकृतत्व—पु० [सं० प्रकृत+त्व]=प्रकृतता।

प्रकृतवाद—पु० [सं०] आज-कल साहित्य में यथार्थवाद (देखें) का वह बहुत आगे बढ़ा हुआ रूप जिसमें समाज के प्राय नग्न चित्र उपस्थित करना ही ठीक समझा जाता है। इसमे प्राय समाज के अश्लील, कुरुचिपूर्ण और हेय अगो के ही चित्र होते है।

प्रकृतवादी—वि० [सं०] प्रकृतवाद-सबधी। प्रकृतवाद का।
पुं० प्रकृतवाद का अनुयायी।

प्रकृतार्थ—वि० [सं० प्रकृत-अर्थ, कर्म० स०] असल। वास्तविक।
पु० प्रकृत अर्थात् यथार्थ और वास्तविक अर्थ, आशय या अभिप्राय।

प्रकृति—स्त्री० [सं० प्र√कृ+क्तिन्] १ किसी पदार्थ या प्राणी का वह विशिष्ट मौतिक सारभूत तथा सहज और स्वामाविक गुण या तत्त्व जो उसके स्वरूप के मूल मे होता है और जिसमे कमी कोई परिवर्तन या विकार नही होता। 'विकृति' इसी का विपर्याय है। जैसे—(क) जन्म लेना और मरना प्राणी मात्र की प्रकृति है। (ख) ताप उत्पन्न करना और जलाना अग्नि की प्रकृति है। (ग) जानवरों का शिकार करके पेट भरना चीतो और शेरो की प्रकृति है। २ विश्व मे रचना या सृष्टि करनेवाली वह मूल नियामक तथा सचालक शक्ति जो सभी कारणो और कार्यों का उद्गम है और जिससे सभी जीव तथा पदार्थ बनते, विकसित होते तथा अत मे नष्ट या समाप्त होते रहते हैं। निसर्ग। **विशेष**—अधिकतर दार्शनिक, 'प्रकृति' को ही सारी सृष्टि का एक मात्र उपादान कारण मानते हैं। पर साख्यकार ने कहा है कि इसके साथ एक दूसरा तत्त्व 'पुरुष' नाम का भी होता है। जिसके सहयोग से प्रकृति सब प्रकार की सृष्टियाँ करती है। भौतिक जगत् मे हमे जो कुछ दिखाई देता है, वह सब इसी का परिणाम या विकार माना जाता है। इसी मे सत्त्व, रज और तम नामक तीनो गुणो का अधिष्ठान कहा गया है। आध्यात्मिक क्षेत्रो और विशेषत वेदात मे इसे परमात्मा या विश्वात्मा की मूर्तिमती इच्छा-शक्ति के रूप मे माना गया है, और इसे 'माया' का रूपान्तर कहा गया है। कभी-कभी इसका प्रयोग ईश्वर के समानक के रूप मे भी होता है।
३ वह सारा दृश्य जगत् जिसमे हमे पशु-पक्षी, वनस्पतियाँ आदि अपने मौलिक या स्वामाविक रूप मे दिखाई देती है। जैसे—वहाँ प्रकृति की छटा देखने ही योग्य थी। ४ मनुष्यो का वह चारित्रिक मूल-भूत गुण, तत्त्व या विशेषता जो बहुत-कुछ जन्म-जात तथा प्राय अविकारी होती है। जैसे—वह प्रकृति से ही उदार तथा दयालु (अथवा क्रोधी और लोभी) था।
विशेष—इसमे उन सभी आकाक्षाओ, प्रवृत्तियो, वासनाओ आदि का अतर्भाव होता है जिनके वश में रहकर मनुष्य सब प्रकार के काम करते है और जिनके फल-स्वरूप उनका चरित्र अथवा जीवन बनता-बिगडता है।
५ जीवन-यापन का वह सरल और सहज प्रकार जिस पर आधुनिक सभ्यता का प्रभाव न पडा हो और जो निरोधक प्रतिबन्धों से बहुत-कुछ मुक्त या रहित हो। जैसे—जगली जातियाँ सदा प्रकृति की गोद में ही खेलती और पलती हैं। (अर्थात् खुले मैदानो मे, झगडे-बखेडो और भीड़-भाड मे दूर रहते है)। ६ प्राणियों की जीवन-दायिनी और स्वास्थ्य प्रद प्रवृत्ति या स्थिति। जैसे—आज-कल उन्होंने अपने रोग की दवा करना बन्द कर दिया है और उसे प्रकृति पर छोड दिया है। ७ वैद्यक में, शारीरिक रचना और प्रवृत्ति के आधार पर मनुष्य की मूल स्थितियों के ये सात विभाग—वातज, पित्तज, कफज, वात-पित्तज, वात कफज, कफ-पित्तज और सम-धातु। ८. व्याकरण में, किसी शब्द का वह आधार-भूत, मूल या धातु रूप जिसमे उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगने अथवा और प्रकार के विकार होने पर उसके अनेक दूसरे रूप बनते हैं। ९ प्राचीन भारतीय राजनीति मे राजा, अमात्य या मत्री, सुहृद, कोश, राष्ट्र, दुर्ग, बल और प्रजा इन आठो का समूह। १० परवर्ती दार्शनिक क्षेत्र मे, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, मन, बुद्धि और अहंकार इन आठो का समूह। ११ कर्मकाड मे वह प्रतिमान या मानक रूप जिसे देखकर उसी तरह की और रचनाएँ प्रस्तुत की जाती हो। १२. आकृति। रूप। १३ प्रजा। रिआया। १४ नारी। स्त्री।

प्रकृतिज—वि० [सं० प्रकृति√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ जो प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। प्राकृतिक। २ जो स्वभाव से ही होता हो। प्रकृति जन्य

प्रकृति-देववाद—पु० [सं०ष०त०] एक दार्शनिक मतवाद जिसमे यह माना जाता है कि ईश्वर ने सृष्टि की रचना तो अवश्य की परतु उसके बाद उसने उस पर से अपना सारा नियत्रण हटा लिया, आगे के सब काम प्रकृति पर छोड दिये। (डीइज्म)

प्रकृति-पुरुष—पु० [ष० त०] राजमत्री।

प्रकृति-भाव—पु० [ष० त०] १ स्वभाव। २ अविकृति और मूल रूप अथवा स्थिति। ३ व्याकरण मे शब्दो की सन्धि की वह अवस्था जिसमे नियमत शब्दो के रूपो मे कोई विकार नही होता।

प्रकृति-मडल—पु० [ष० त०] १ राज्य के अधिपति, अमात्य, सुहृद्, कोष, राष्ट्र, दुर्ग और बल इन सातो अगो का समूह। २ प्रजा का वर्ग या समूह।

प्रकृति-लय—पु० [सं० त०] प्रलय। (साख्य)

प्रकृति-वाद—पु० [ष० त०] १ यह मत या सिद्धान्त कि मनुष्य के सभी आचरण, कार्य, विचार, आदि प्रकृति अर्थात् निसर्ग से उत्पन्न होनेवाली कामनाओ तथा प्रवृत्तियो पर आश्रित होते हैं। २ दार्शनिक क्षेत्र की दो मुख्य धाराएँ (क) यह मत या सिद्धान्त कि सारी सृष्टि प्रकृति से ही उत्पन्न है और इसके मूल मे कोई अलौकिक तत्त्व या दैवी शक्ति काम नही करती। (ख) यह मत या सिद्धान्त कि मनुष्यो मे धर्म तत्त्व का आविर्भाव किसी अलौकिक या दैवी शक्ति की प्रेरणा से नही हुआ है, बल्कि मनुष्यो ने धर्म-संबधी सभी भावनाएँ और विचार प्राकृतिक जगत् से ही प्राप्त किये हैं। ३ कला और साहित्य के क्षेत्र मे, यह मत या सिद्धात कि ससार मे प्राकृतिक तथा वास्तविक रूप मे जो कुछ होता हुआ दिखाई देता है, उसका अकन या चित्रण ज्यो का त्यो और ठीक उसी रूप में होना चाहिए और उसमे नैतिक आदर्शों या भावनाओ का अतिरिक्त आरोप या मिश्रण नही किया जाना चाहिए। (नैचुरलिज्म, उक्त सभी अर्थों मे)
विशेष—वस्तुत उक्त अतिम मत यथार्थवाद का वह आगे बढ़ा हुआ रूप है जिसमे अशिष्ट, अश्लील, कुरुचिपूर्ण और हेय पक्षों का भी अंकन या चित्रण होने लगा है। इसका आरम्भ युरोप में १९ वी शती में हुआ था।

प्रकृतिवादी (दिन्)—पुं० [सं० प्रकृतिवादी+इनि] वह जो प्रकृतिवाद का सिद्धान्त मानता हो या उसका अनुयायी हो। (नैचुरलिस्ट)
वि० प्रकृतिवाद-सबधी। प्रकृतिवाद का।

प्रकृति-विज्ञान—पुं० [ष० त०] १ वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें प्राकृतिक बातों अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति, विकास, लय आदि का निरूपण होता है। २ पारिभाषिक और वैज्ञानिक क्षेत्रों में, वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे प्राकृतिक या भौतिक जगत् के भिन्न-भिन्न अंगों, क्षेत्रों, रूपों स्थितियो आदि का विचार या विवेचन होता है। (नैचुरल सायन्स) विशेष—जीव विज्ञान, वनस्पति विज्ञान, भौतिक और रसायन विज्ञान, भूगर्भशास्त्र आदि इसी के अन्तर्गत या इसकी शाखाओं के रूप मे हैं। ३ उक्त के आधार पर साधारण लौकिक व्यवहार में, वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे पशु-पक्षियो, वनस्पतियो, वृक्षों, खनिज पदार्थों और भूगर्भ की बातों का अध्ययन और विवेचन अ-पारिभाषिक रूप में होता है। (नैचुरल हिस्टरी)

प्रकृतिविद्—पुं० [स० प्रकृति√विद्+क्विप्] प्रकृतिवेत्ता।

प्रकृतिवेत्ता (तृ)—पुं० [ष० त०] वह जो प्रकृति विज्ञान का ज्ञाता या पंडित हो। (नैचुरलिस्ट)

प्रकृतिशास्त्र—पुं० दे० 'प्रकृति विज्ञान'।

प्रकृतिसिद्ध—वि० [स० तृ० त०] १ जो प्रकृति के विषयों के अनुसार हुआ हो या होता हो। २ प्राकृतिक। नैसर्गिक। ३ स्वाभाविक।

प्रकृतिस्थ—वि० [सं० प्रकृति√स्था (ठहरना)+क] १ जो अपनी प्राकृतिक अवस्था में स्थित या वर्तमान हो और जिसमें किसी प्रकार का क्षोभ या विकार न हुआ हो। जो अपनी मामूली हालत में हो। २ जिसका चित्त या मन ठिकाने हो अर्थात् उद्विग्न या विचलित न हो। ठहरा हुआ और शान्त।

प्रकृतिस्थ-सूर्य—पुं० [स० कर्म० स०] उस समय का सूर्य जब वह उत्तरायण को पार करके अर्थात् दक्षिणायन होता है।

प्रकृतीश—पुं० [स० प्रकृति-ईश, ष० त०] राजा।

प्रकृत्या—अव्य० [स० तृतीया विभक्ति का रूप] प्रकृति की दृष्टि या विचार से। प्रकृतिश। स्वभावत।

प्रकृष्ट—भू० कृ० [स० प्र√कृष् (खीचना)+क्त] १ खीचा या निकाला हुआ। २ उत्तम। श्रेष्ठ। ३ मुख्य। प्रधान। ४ तीव्र। तेज।

प्रकृष्टता—स्त्री० [स० प्रकृष्ट+तल्+टाप्] प्रकृष्ट होने की अवस्था या भाव। उत्तमता। श्रेष्ठता।

प्रकोथ—पुं० [स० प्र√कुथ् (पतित होना)+घञ्] १ सड़ने की अवस्था या भाव। २ दूषित होना। ३. सूखना। क्षोभ।

प्रकोप—पुं० [स० प्रा० स०] १ बहुत अधिक या बढ़ा हुआ कोप। २ क्षोभ। ३. चचलता। ४ शरीर के वात, पित्त अथवा कफ के बढ़ने अथवा उसमे किसी प्रकार का विकार होने के फलस्वरूप उसका उग्र रूप धारण करना जिससे रोग उत्पन्न होता है। २ सार्वजनिक रूप से होनेवाली किसी रोग की अधिकता या प्रबलता। जैसे—आज-कल नगर मे हैजे का प्रकोप है।

प्रकोपन—पुं० [सं० प्र√कुप् (कोध करना)+णिच्+ल्युट्—अन] १ प्रकुपित करना या होना। २. क्षोभ।

प्रकोष्ठ—पुं० [सं० प्रा० स०] १. कोहनी के आगे का भाग। २. मुख्य द्वार या सदर दरवाजे के पास का कमरा। ३ वह बड़ा आँगन जिसके चारों ओर कमरे और बरामदे हों। ४. आज-कल संसद्, विधान-सभा आदि के बाहर का वह कमरा, बरामदा या प्रांगण जहाँ बैठकर सदस्य व्यक्तिगत रूप से बातचीत करते तथा पत्रकारों आदि से मिलते हों। (लॉबी)

प्रकोष्ठक—पुं० [स० प्रकोष्ठ+कन्] प्राचीन भारत मे प्रासाद के मुख्य द्वार के पास का कमरा।

प्रक्रम—पुं० [स० प्र√क्रम् (गति)+घञ्] १ क्रम। सिलसिला। २ अतिक्रमण। उल्लंघन। ३. वह उपाय या योजना जो कोई कार्य आरम्भ करने से पहले की जाय। उपक्रम। ४ अवसर। मौका। ५ किसी प्रकार की प्रगति के क्रम या मार्ग मे बीच-बीच मे पड़नेवाली वे स्थितियाँ जो अलग-अलग अगो या विभागो के रूप मे होती हैं, और जिनके उपरांत कोई नया क्रम आरम्भ होता है। मजिल। (स्टेज) ६ किसी कार्य की सिद्धि मे आदि से अत तक होनेवाली वे आवश्यक बाते जिनसे वह काम आगे बढता है। ७ कोई चीज बनाने या माल तैयार करने की सारी क्रियाएँ। प्रक्रिया। (प्रोसेस)

प्रक्रमण—पुं० [स० प्र√क्रम्+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह घूमना। खूब भ्रमण करना। २ आगे बढना। ३ पार करना। ४ आरम्भ करना।

प्रक्रम-भंग—पुं० [स० ष० त०] साहित्य में, पहले कुछ बाते एक क्रम से कहना और तब उनमे सबद्ध कुछ दूसरी बाते किसी दूसरे क्रम से कहना जो एक दोष माना गया है।

प्रक्रांत—वि० [सं० प्र√क्रम्+क्त] १ जिसका प्रकरण चल रहा हो। जिसका उल्लेख या वर्णन हो रहा हो। २ प्रकरण मे आया हुआ।

प्रक्रिया—स्त्री० [स० प्र√कृ+श+टाप्, इयङ] १ कोई काम करने या चीज बनाने की वह निश्चित और विशिष्ट किया, ढग या प्रकार जिसके बिना वह ठीक तरह से सम्पन्न या प्रस्तुत न हो सके। जैसे—धातु-मल से धातुएँ निकालने की प्रक्रिया। २ कोई ऐसा प्रक्रम या विकास जिसमे बीच बीच मे कुछ परिवर्तन या विकार होते चले। जैसे—पेट मे भोजन के पाचन की प्रक्रिया। ३. किसी काम या बात में क्रम-क्रम से आगे बढ़ने की क्रिया या भाव। (प्रासेस, उक्त सभी अर्थों मे) ४. किसी कृत्य विशेषत अभियोग आदि की सुनवाई मे होने वाले आदि से अन्त तक के सब काम या उनका क्रम। (प्रोसीजर) ५ वह कार्रवाई जो अब तक किसी कार्य की सिद्धि के लिए की जा चुकी हो। (प्रोसीडिंग) ६ ऊँचा स्थान या स्थिति। ७ पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। ८ प्रस्तावना। भूमिका। ९. राजाओं का चंवर, छत्र आदि राज-चिह्न धारण करना। १० व्याकरण मे, शब्द अथवा उसके प्रयोग का किया जानेवाला साधन।

प्रक्लिन्न—वि० [स० प्र√क्लिद् (गीला)+क्त] १. आर्द्र। गीला। २. दयार्द्र।

प्रक्लेद—पुं० [सं० प्र√क्लिद् (गीला होना)+घञ्] १. आर्द्रता। तरी। नमी। २. दयार्द्रता।

प्रक्लेदन—पुं० [स० प्र√क्लिद्+णिच्+ल्युट्—अन] गीला या तर करना। भिगोना।

वि० तर या गीला करनेवाला। प्रक्लेदी।

प्रक्वण—पुं० [सं० प्र√क्वण् (शब्द करना)+अप्] बाँसुरी से निकलने-वाली मधुर ध्वनि।

प्रक्वाण—पुं०=प्रक्वण।

प्रक्वाथ—पुं०[सं० प्र√क्वथ् (उबलना)+घञ्] १ उबालने की क्रिया या भाव। २. उबाल।

प्रक्ष—वि० [सं० प्रच्छक] प्रश्न करनेवाला। पूछनेवाला।

प्रक्षय—पु० [सं० प्र√क्षि (नाश)+अच्]=क्षय।

प्रक्षयण—पु० [सं० प्र√क्षि+ल्युट्—अन] नष्ट या बरबाद करना।

प्रक्षर—पु० [सं० प्र√क्षर् (झरना)+अच्] घोड़ो आदि की पक्खर या पाखर।

प्रक्षरण—पु०[सं० प्र√क्षर्+ल्युट्—अन] १ चूना। रिसना। २ बहना।

प्रक्षालन—पु०[सं० प्र√क्षल्+णिच्+ल्युट्—अन] १ कोई चीज जल से साफ करने की क्रिया। धोना। २ वैज्ञानिक क्षेत्र मे जल के सयोग से या विशिष्ट प्रक्रिया से किसी वस्तु में की मैल या अवाछित अश अलग करना। (ब्लीचिंग) ३ स्वच्छ या निर्मल करना। ४. नहाना। ५ नहाने, कपड़े धोने आदि का जल।

प्रक्षालन-गृह—पु०[ष० त०] हाथ-मुंह आदि धोने का कमरा या प्रकोष्ठ।

प्रक्षालयिता (तृ)—पु०[सं० प्र√क्षल्+णिच्+तृच्] १ धोनेवाला। २ अतिथियो के चरण धोनेवाला।

प्रक्षालित—भू० कृ०[सं० प्र√क्षल्+णिच्+क्त] १ जिसका प्रक्षालन हुआ हो। २ धोया हुआ।

प्रक्षाल्य—वि०[सं० प्र√क्षल्+णिच्+यत्] धोये जाने के योग्य।

प्रक्षिप्त—भू० कृ०[सं० प्र√क्षिप् (फेंकना)+क्त] १ फेंका हुआ। २ अलग, ऊपर या बाहर से लाकर बढ़ाया या मिलाया हुआ। जैसे—तुलसी-कृत रामायण का प्रक्षिप्त अश। ३ आगे की ओर बढ़ा या निकला हुआ। (प्रॉजेक्टेड)

प्रक्षीण—वि०[सं० प्रा० स०] जो पूरी तरह से क्षीण, नष्ट या लुप्त हो चुका हो। विनष्ट।

पु० वह स्थल या स्थिति जहाँ पहुँचकर पूर्ण विनाश होता हो।

प्रक्षीबित—वि० [सं० प्र√क्षीव् (नशे मे होना)+क्त] जो नशे मे हो।

प्रक्षुण्ण—वि०[सं० प्र√क्षुद् (पीसना) +क्त] १ कूटा या पीसा हुआ २ चूर्ण किया हुआ। ३ उत्तेजित किया हुआ।

प्रक्षेप—पु०[सं० प्र√क्षिप्+घञ्] १ आगे की ओर जोर से फेंकना। २ युद्ध मे दूरवर्ती शत्रु पर कोई अस्त्र फेंकना। ३ छितराना। बिखेरना। वह जो फेंका या छितराया गया हो। ५ बढ़ाने के लिए इधर-उधर से लाकर कुछ मिलाना। ६ वह अश जो उक्त प्रकार से मिलाया जाय। ७ वह पदार्थ जो औषध आदि मे ऊपर से डाला या मिलाया जाय। ८ किसी कारोबार या व्यापार मे लगा हुआ किसी हिस्सेदार का मूल धन।

प्रक्षेपक—वि०[सं० प्र०√क्षिप्+ण्वुल्—अक] प्रक्षेपण करनेवाला।
पु० १ वह यत्र जिसके द्वारा किसी आकृति या चित्र का प्रतिबिम्ब सामनेवाले परदे पर डाला जाता है। (प्रोजेक्टर) २ लिखाई में वह चिह्न जो इस बात का सूचक होता है कि इसके आगे का अश मूल मे नही है, बल्कि बाद मे किसी ने क्षेपक के रूप मे बढ़ाया है।

प्रक्षेपण—पु०[सं० प्र०√क्षिप्+ल्युट्—अन] १ सामने की ओर कोई चीज फेंकने की क्रिया या भाव। २ ऊपर से मिलाना। ३. जहाज आदि चलाना। ४ निश्चित करना। ५. साधारण सीमा या नियमित रेखा से आगे निकालना या बढ़ाना। ६ उक्त प्रकार से आगे निकला या बढ़ा हुआ अंश। (प्रोजेक्शन)

प्रक्षेपणीय—वि०[सं० प्र√क्षिप्+अनीयर्] प्रक्षेपण के योग्य।

प्रक्षोभण—पुं० [सं० प्र√क्षुभ् (विचलित होना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. क्षोभ उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २. घबराहट। बेचैनी।

प्रखंड—पु०[सं० प्रा० स०] किसी खंड या विभाग का कोई छोटा खंड या विभाग। (डिवीजन)

प्रखर—वि०[सं० प्रा० स०] [भाव० प्रखरता] १ जिसमें बहुत अधिक उग्रता, ताप या तेजी हो। २ चोखा। पैना।
पु० १ खच्चर। २ कुत्ता। ३ घोड़े की पाखर।

प्रखरता—स्त्री०[सं० प्रखर+तल्+टाप्] प्रखर होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रखल—वि०[सं० प्रा० स०] बहुत बड़ा खल या दुष्ट।

प्रखोलना—स०[सं० प्रक्षालन] १ धोना। पखारना। २ छिड़कना। ३ सुवासित करना।

प्रख्या—स्त्री०[सं० प्र√ख्या (कहना)+अङ्+टाप्] १ दिखलाई देना। २ प्रकट या प्रकाश रूप मे उपस्थित होना। ३ विख्याति। प्रसिद्धि। ४ बराबरी। समता। ५ उपमा। तुलना।

प्रख्यात—वि०[सं० प्र√ख्या+क्त] जिसे सब या बहुत से लोग जानते हों। प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात।
पु० नाटक की कथा-वस्तु के स्वरूप की दृष्टि से किये गये तीन भेदों मे से एक, जिसमे कथा-वस्तु का आधार मुख्य रूप से इतिहास, पुराण आदि की प्रसिद्ध कहानियाँ होती हैं और नाटककार द्वारा कल्पना से जोड़े गये प्रक्षिप्त अगो से उसमे विकृति नहीं आती। हिन्दी के चन्द्रगुप्त, स्कदगुप्त, रक्षाबन्धन, वितस्था की लहरे आदि नाटको की कथा-वस्तु इसी भेद के अन्तर्गत हैं। (शेष दो भेद उत्पाद्य और मिश्र कहलाते हैं।)

प्रख्याति—स्त्री० [सं० प्र√ख्या+क्तिन्] प्रख्यात होने की अवस्था या भाव। प्रसिद्धि। विख्याति।

प्रख्यान—पु०[सं० प्र√ख्या+ल्युट—अन] १ खबर देना। सूचित करना। २ दी हुई खबर या सूचना। ३ अनुभूति।

प्रख्यापन—पु० [सं० प्र+ख्या√णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रख्यापित] १ लोगो को जतलाने के लिए कोई बात औपचारिक, निश्चित और स्पष्ट रूप से कहना। (प्रोमलगेशन) २ इस प्रकार का कोई ऐसा कथन लेख या वक्तव्य जो किसी अधिकारी के सामने सारा उत्तरदायित्व अपने ऊपर लेते हुए उपस्थित किया जाता है। (डिक्लेरेशन)

प्रख्यापित—भू० कृ०[प्र√ख्या+णिच्, पुक्+क्त] जिसका प्रख्यापन हुआ हो। जो प्रख्यापन के रूप में उपस्थित किया गया हो।

प्रगंध—पु०[सं० ब० स०] दवन पापड़ा।

प्रगट—वि०=प्रकट।

प्रगटन—पु०=प्रकटन।

प्रगटना—अ० [सं० प्रकटन] प्रकट होना। सामने आना। जाहिर होना।
स०=प्रगटाना।

प्रगटाना—स०[सं० प्रकटन, हिं० प्रगटना का स० रूप] प्रकट या जाहिर करना। सामने लाना।

प्रगत—वि० [स० प्रा० स०] १ जिसने प्रस्थान किया हो। जो चल पड़ा हो। २. आगे गया हुआ या बढ़ा हुआ। जो अलग या अधिक दूरी पर हो। ३. छूटा हुआ। मुक्त। ४ मरा हुआ। मृत।

प्रगत-जानुक—वि०[सं० ब० स०,+कप्] (जीव या प्राणी) जिसके घुटने एक दूसरे से अधिक अलग या कुछ दूरी पर हों। ऐसे जीवो की टाँगे प्राय· धनुषाकार होती हैं।

प्रगति—स्त्री०[स० प्रा० स०] १ आगे की ओर बढ़ना। २ विशेषत किसी कार्य को पूर्णता की ओर बढ़ाते चलना। ३ सामूहिक रूप से विभिन्न कार्यों मे होनेवाली क्रमिक उन्नति। (प्रोग्रेस) जैसे—देश प्रगति के पथ पर है।

प्रगति-वाद—पु०[स० ष० त०] एक प्रकार का आधुनिक साहित्यिक वाद या सिद्धांत जिसका मुख्य उद्देश्य जनवादी शक्तियो को सघटित करके मार्क्सवाद और भौतिक यथार्थवाद के लक्षित उद्देश्यो की सिद्धि करना है। सामाजिक यथार्थवाद को प्रतिष्ठित करने के कारण ही इसे प्रगति-वाद कहा जाता है।

प्रगतिवादी (दिन्)—वि०[स० प्रगतिवाद+इनि] प्रगतिवाद-सम्बन्धी। प्रगतिवाद का।

पु० वह जो प्रगतिवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

प्रगति-शील—वि०[स० ब० स०] [भाव० प्रगतिशीलता] जो प्रगति कर रहा हो। जो आगे बढ़ रहा या उन्नति कर रहा हो। (प्रोग्रेसिव)

प्रगम—पु०[स० प्र√गम् (जाना)+अप्] १. प्रेम मे अग्रसर होना। २. ऐसे लक्षण जिनसे पहले-पहल प्रेम होना सूचित हो।

प्रगमन—पु०[स० प्र√गम्+ल्युट्—अन] [वि० प्रगमनीय] १ आगे बढ़ना। २ उन्नति। तरक्की। ३. लड़ाई-झगड़ा। ४. ऐसा भाषण या उक्ति जिसमे किसी बात का उचित, उपयुक्त और पूरा उत्तर निहित हो।

प्रगल्भ— वि०[स० प्र√गल्भ् (धृष्टता करना)+अच्] [स्त्री० प्रगल्भा] १ चतुर। होशियार। २ प्रतिभाशाली। ३ उत्साही। हिम्मती। ४ हाजिर-जवाब। ५. निडर। निर्भर। ६ बोलने मे सकोच न करने-वाला। प्राय बढ़-बढ़कर बोलनेवाला। वाचाल। ७ गभीर। ८. मुख्य। ९ निर्लज्ज। १० जिसमें नम्रता न हो। उद्धत। ११. अभिमानी। अहकारी। १२ पुष्ट। प्रौढ़।

प्रगल्भता—स्त्री०[स० प्रगल्भ+तल्+टाप्] १. प्रगल्भ होने की अवस्था या भाव। २. बुद्धिमत्ता। समझदारी। होशियारी। ३. प्रतिभा। ४ उत्साह। ५ वाक्-चातुरी। ६. वाचालता। ७ निर्भयता। निर्भीकता। ८. गभीरता। गहनता। ९ प्रधानता। मुख्यता। १० ढिठाई। धृष्टता। ११. निर्लज्जता। बेहयाई। १२ उच्छृखलता। उद्दडता। १३ अभिमान। घमड। १४. पुष्टता। मजबूती। १५. व्यर्थ की बात-चीत। बकवाद। १५. शक्ति। सामर्थ्य। १७ साहित्य मे, नायिका के सात प्रकार के अयत्नज और स्वाभाविक अलकारों में से एक। प्राय. प्रौढ़ा, सामान्या आदि नायिकाओं के वे आचरण या हाव-भाव जो वे प्राय. नि:शंक या नि सकोच होकर करती हैं। यथा—फूलत फूल गुलाबन के, चटकाहट चौकि चली चपला सी। कान्ह के कानिन आँगुरि नाइ रही लपटाइ लवग लता सी।—पद्माकर।

प्रगल्भ-वचना—स्त्री०[स० ब० स०] साहित्य मे मध्या नायिका के चार भेदों मे से एक। वह नायिका जो बातो ही बातों मे अपना दुख और क्रोध भी प्रकट करे और उलाहना भी दे।

प्रगल्भा—स्त्री०[सं० प्रगल्भ+टाप्] १ प्रौढ़ा (नायिका)। २ धृष्ट स्त्री। ३ दुर्गा।

प्रगल्भित—वि०[सं० प्र+गल्भ्√क्त] प्रगल्भता से युक्त।

प्रगसना—अ० [स० प्रकाश] १ प्रकट होना। २. प्रकाशित होना। चमकना।

स० =प्रगासना।

प्रगाढ़—वि०[स० प्र√गाह् (हलचल पैदा करना)+क्त] [भाव० प्रगाढ़ता] १ तर किया या भिगोया हुआ। २. बहुत अधिक। ३. बहुत गाढा या गहरा। ४ घना। ५ कठिन।

प्रगाता (तृ)—वि०[स० प्र√गै (गाना)+तृच्] गानेवाला।

पु० बहुत बड़ा गवैया।

प्रगामी (मिन्)—वि० [स० प्र√गम् (जाना)+णिनि] गमन करने-वाला। जानेवाला।

प्रगायी (यिन्)—पु[स० प्र√गै+णिनि] गानेवाला।

प्रगासना—स०[स० प्रकाशन] १ प्रकट करना। २ प्रकाश से युक्त करना। चमकाना।

प्रगीत—पु०[स० प्र√गै+क्त] १. गीत। गाना। २ आज-कल मुख्य रूप से ऐसा गीत जिसमे गीतकार की निजी अनुभूतियो का प्रतिबिम्ब हो और जो उसका विशिष्ट व्यक्तित्व प्रकट करता हो। (लिरिक) जैसे—श्रीमती महादेवी वर्मा के प्रगीत। ३ दे० 'प्रगीत'।

प्रगीति—पु०[स० प्रा० स०] १. एक प्रकार का छद। २ दे० 'गीति-काव्य'।

प्रगुण—वि०[स० ब० स०] १. गुणवान्। गुणी। २. चतुर। होशियार। ३ अच्छा और लाभदायक। ४ शुभ।

पु० कोई ऐसा गुण या विशिष्टता जो परिश्रम तथा प्रयत्नपूर्वक अर्जित या प्राप्त की गई हो। दक्षता। निपुणता। (एफिशिएन्सी)

प्रगुणता—स्त्री०[स० प्रगुण+तल्—टाप्] किसी प्रगुण से युक्त होने की अवस्था या भाव। दक्षता। निपुणता (एफीशिएन्सी)

प्रगुणी (णिन्)—वि० [स० प्रा० स०] १. गुणवान्। २. चालाक। होशियार।

प्रगृहीत—भू० कृ०[स० प्रा० स०] १. जो अच्छी तरह ग्रहण किया गया हो। २ (व्याकरण में शब्द या पद) जिसका उच्चारण सन्धि के नियमों का ध्यान रखे बिना किया गया हो। ३ आज-कल किसी सभा-समिति का वह सदस्य जिसे दूसरे सदस्यो ने अपनी सहायता के लिए चुनकर अपने साथ सम्मिलित किया हो। सहयोजित। (कोऑप्टेड)

प्रगृह्य—वि०[स० प्र√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्यप्] १. जो ग्रहण किए जाने के योग्य हो। ग्राह्य। २ जो पकड़ा जा सके। ३. (शब्द) जिसका उच्चारण सधि के नियमो का ध्यान रखे बिना किया जा सकता या किया जाता हो।

पु० १ स्मरण-शक्ति। २. वाक्य।

प्रग्रह—पु० [स० प्र√ग्रह्+अप्] १ अच्छी तरह पकड़ने की क्रिया, ढग या भाव। २. ग्रहण या धारण करने की क्रिया या भाव। ३ कुश्ती आदि लड़ने का एक ढग या प्रकार। ४. सूर्य या चंद्र के ग्रहण

का आरम्भ । ग्रस्त होना। ५ आदर । सत्कार। ६ अनुग्रह । कृपा। ७ उद्धतता। उद्दंडता। ८ घोड़े आदि की लगाम। बाग। ९ किरण। १०. डोरी, विशेषत: तराजू आदि में बँधी हुई डोरी। ११ पशुओं के गले में बाँधने की रस्सी। पगहा। १२ डोरी। रस्सी। १३ घोड़ों, बैलों आदि को जुताई, सवारी आदि के कामों में लाने के लिए सधाने या सिखाने की क्रिया या भाव। १४ मार्ग-दर्शक। नेता। १५ किसी बड़े ग्रह के साथ रहनेवाला छोटा ग्रह। उपग्रह। १६ कैदी। बंदी। १७ इंद्रियों का दमन या निग्रह। १८ सोना। स्वर्ण। १९ विष्णु। २०. बाँह। हाथ। २१ एक प्रकार का अमलतास। २२ कर्णिकार। कनियारी। (वृक्ष)

प्रग्रहण—पुं० [सं० प्र√ग्रह्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रगृहीत] १ ग्रहण करने की क्रिया या भाव। धारण। २ सूर्य या चन्द्रमा के ग्रहण का आरम्भ। ३ घोड़ों आदि को बोझ ढोने, सवारी के काम में लाने आदि के लिए सधाने की क्रिया या भाव। ४ वह डोरी जिसमें तराजू के पल्ले बँधे रहते हैं। ५ घोड़े की बाग। लगाम। ६ पशुओं के गले में बाँधने की रस्सी। पगहा। ७ आज-कल किसी सभा-समिति में उसके सदस्यों द्वारा किसी बाहरी आदमी को अपनी सहायता के लिए चुनकर अपना सदस्य बनाना। सहयोजन। (कोऑप्शन)

प्रग्राह—पुं० [सं० प्र०√ग्रह्+घञ्] १ तराजू आदि की डोरी। २ लगाम। ३ पगहा।

प्रग्रीव—पुं० [सं० ब० स०] १ किसी मकान के चारों तरफ का वह घेरा जो लट्ठे, बाँस आदि गाड़कर बनाया गया हो। २ छोटी खिड़की। झरोखा। ३ अस्तबल। ४ वृक्ष का ऊपरी भाग। ५ आमोद-प्रमोद का स्थान। ६ विलास-भवन। रंग-भवन।

प्रघट—वि० दे० 'प्रकट'।

पुं०=प्रघटक।

प्रघटक—पुं० [सं० प्रा० स०] सिद्धांत।

प्रघटन—पुं० [सं० प्रा० स०] १ विशिष्ट रूप से घटित होने की क्रिया या भाव। २ वह कार्य, घटना या स्थिति जो वस्तुतः घटित हुई हो और जिसके संबंध में कुछ अध्ययन, अनुसन्धान, निर्णय या विचार होने को हो। मामला। (केस) जैसे—आज-कल नगर में चोरियों के प्रघटन बहुत होने लगे हैं।

प्रघटना—अ० [सं० प्रकट] प्रकट होना।

प्रघटा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] किसी विज्ञान या शास्त्र की मोटी और साधारण बातें।

प्रघट्टक—पुं० [सं० प्र√घट्ट् (चलाना)+ण्वुल्—अक] सिद्धांत।

वि० [सं० प्रकट] प्रकट करने या सामने लानेवाला। (क्व०)

प्रघण—पुं० [सं० प्र√हन् (हिंसा)+अप्, कुत्व, णत्व] १ बरामदा। अलिंद। २ लोहे का मुद्गर। ३. ताँबे का घड़ा।

प्रघलो—वि० =प्रबल। उदा०—राणो चिमै न रास, प्रघलो साँड प्रतापसी।—पृथ्वीराज।

प्रघस—पुं० [सं० प्र√अद् (खाना)+अप्, घसादेश] १ रावण की सेना का एक सेनापति जिसे हनुमान ने प्रमदा-वन उजाड़ने के समय मारा था। २ दैत्य। राक्षस। ३. बहुत अधिक खाना।

वि० बहुत अधिक खानेवाला। पेटू।

प्रघात—पुं० [सं० प्र√हन्+घञ्] १ आघात। चोट। २. आघात करने या चोट पहुँचाने की क्रिया। ३ युद्ध। ४. मार डालना।

प्रघुण—पुं० [सं० प्र√घुण् (घूमना)+क] अतिथि। अभ्यागत।

प्रघोर—वि० [सं० प्रा० स०] १. बहुत अधिक। घोर। २. बहुत अधिक कठिन या विकट।

प्रचंड—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० प्रचंडता] १ जिसमें अत्यधिक उग्रता, तीव्रता या तेजी हो। २ बहुत अधिक गरम। ३ भयंकर। भीषण। ४ कठिन। कठोर। ५ असह्य। ६ भारी। ७ बलवान्। पुष्ट। ८ प्रतापी।

पुं० १ शिव का एक गण। २ सफेद कनेर।

प्रचंडता—स्त्री० [सं० प्रचंड+तल्+टाप्] १ प्रचंड होने की अवस्था या भाव। तेजी। तीखापन। प्रबलता। उग्रता। २ भयंकरता।

प्रचंडत्व—पुं० [सं० प्रचंड+त्व] प्रचण्डता।

प्रचंडा—स्त्री० [सं० प्रचंड+टाप्] १ एक तरह की सफेद दूब जिसमें सफेद रंग के फूल लगते हैं। २ चंडी। दुर्गा। ३. दुर्गा की एक सहेली।

प्रचई*—स्त्री०=परचई।

प्रचय—पुं० [सं० प्र√चि (चयन करना)+अच्] १ वेद-पाठ विधि में एक प्रकार का स्वर जिसके उच्चारण के विधानानुसार पाठक को अपना हाथ नाक के पास ले जाने की आवश्यकता पड़ती है। २ बीज-गणित में एक प्रकार का संयोग। ३ झुंड। दल। ४ ढेर। राशि। ५ बढ़ती। वृद्धि। ६ लकड़ी आदि की सहायता से फलों, फूलों आदि का होनेवाला चयन।

प्रचर—पुं० [सं० प्र√चर् (गति)+अप्] १ मार्ग। रास्ता। २ रीति। रिवाज।

प्रचरण—पुं० [सं० प्र√चर्+ल्युट्—अन] १ आगे बढ़ना। कदम बढ़ाना। २ घूमना-फिरना। ३ उपभोग करना। ४ प्रचलित होना।

प्रचरना—अ० [सं० प्रचार] १ चलना। २ प्रचलित होना। फैलना।

प्रचरित—वि०[सं० प्र√चर्+क्त] १ जो प्रचरण में हो। २ प्रचलित।

प्रचल—वि० [सं० प्र√चल् (चलना)+अच्] बहुत अधिक चंचल।

पुं० मोर।

प्रचलन—पुं० [सं० प्र√चल्+ल्युट्—अन] १ चलना या व्यवहार में होना। चलनसार होना। २ उपयोग, व्यवहार आदि में आना। ३ रीति, रिवाज, नियम, सिद्धांत आदि का जारी रहने का भाव। ४ प्रथा। रिवाज।

प्रचला—स्त्री० [सं० प्रचल+टाप्] १ वह निद्रा जो बैठे या खड़े हुए मनुष्य को आती है। २ वह पाप-कर्म जिसके उदित होने से उक्त प्रकार की निद्रा आती है।

प्रचलित—भू० कृ० [सं० प्र√चल्+क्त] १ जिसका प्रचलन हो। चलनसार। (करेंट) २ जो उपयोग, व्यवहार आदि में आ रहा हो। जो इस समय चल रहा हो। ३ कार्य या व्यवहार के रूप में चलाया या लाया हुआ। (इनफोर्स)

प्रचाय—पुं० [सं० प्र√चि (चयन करना)+घञ्] १ हाथ से कोई चीज एकत्र करना। २ एकत्र की हुई वस्तु का बनाया हुआ ढेर। राशि। ३. अधिकता। वृद्धि।

प्रचायक—वि० [स० प्र√चि+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रचायिका] १ चयन करने या चुननेवाला। २ संग्रह करनेवाला। ३ ढेर लगानेवाला।

प्रचार—पुं० [सं० प्र√चर्+घञ्] १. किसी वस्तु या बात का बराबर व्यवहार मे आना या चलता रहना। २. वह प्रयास जो किसी बात, सिद्धात आदि को जनता या लोक में फैलाने के लिए विशेष रूप से किया जाता है और जिसका प्रमुख उद्देश्य किसी चीज को लोकप्रिय बनाना अथवा किसी लोक-प्रिय वस्तु को हेय सिद्ध करना होता है। ३ उक्त के आधार पर प्रचारित की हुई कोई बात। ४ प्रसिद्धि। ५ आकाश। ६ गोचर-भूमि। ७ घोडो की आँख का एक रोग जिसमें आँखों के आस-पास का मांस बढकर दृष्टि रोक लेता है।

प्रचारक—वि० [स० प्र√चर्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रचारिणी] किसी बात, विषय, सिद्धात आदि का प्रचार करनेवाला। जैसे—हिन्दी प्रचारक।

प्रचारण—पु० [स० प्र√चर्+णिच्+ल्युट्—अन] प्रचार करने की क्या या भाव।

प्रचारना—स० [स० प्रचारण] १ प्रचारित करना। फैलाना। २ ललकारना।

प्रचारित—भू० कृ० [स० प्र+चर्+णिच्√क्त] १ (बात, वस्तु या सिद्धात) जिसका प्रचार हुआ या किया गया हो। २ (नियम, विधान आदि) जिसे काम मे लाने या जिसके अनुसार काम करने की आज्ञा दी जा चुकी हो। (प्रोमल्गेटेड)। ३ जिसे लडाई आदि के लिए ललकारा गया हो। जिसके प्रति प्रचारणा की गई हो।

प्रचारी (रिन)—वि० [स० प्र√चर्+णिनि] १ घूमने-फिरनेवाला। २ प्रकट होनेवाला। ३ प्रचार करनेवाला। दे० 'प्रचारक'।

प्रचालन—पु० [स०] [भू० कृ० प्रचालित] १ अच्छी तरह चलाने की क्रिया या भाव। २ प्रचलन मे लाने की क्रिया या भाव। ३ दे० 'सचालन'।

प्रचालित—भू० कृ० [स० प्र√चल्+णिच्+क्त] १ जिसे प्रचलन मे लाया गया हो। २. परिचालित या सचालित किया हुआ।

प्रचित—वि० [सं० प्र√चि+क्त] १ सग्रहीत। २. चयन किया हुआ। ३ (स्वर) जो अनुदात्त हो।

पुं० दंडकवृत्त का एक भेद। (पिंगल)

प्रचुर—वि० [सं० प्र√चुर् (चुराना)+क] [भाव० प्रचुरता] १. (किसी वस्तु का उतना मान या मात्रा) जिससे आवश्यकता, अपेक्षा, न्यूनता आदि की पूर्ति अच्छी तरह हो जाती या हो सकती हो। २. बहुत अधिक। विपुल। ३. भरा-पूरा। पूर्ण।

पु० चोर।

प्रचुरता—स्त्री० [स० प्रचुर+तल्—टाप्] प्रचुर होने की अवस्था या भाव। अधिकता।

प्रचूषण—पुं० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रचूषित] १ अच्छी तरह चूसना। २. शोषण करना। सोखना। अवशोषण। (एब्जार्पशन)

प्रचेता (तस्)—पुं० [सं० प्र√चित्+असुन्] १ वरुण का एक नाम। २. बारहवें प्रजापति का एक नाम। ३. एक प्राचीन ऋषि जो अनेक विधि-विधानों के निर्माता माने जाते हैं। ४. पृथु के परपोते और प्राचीन बर्हि के दस पुत्र जिन्होंने दस हजार वर्ष तक समुद्र के अन्दर रह कर कठिन तपस्या की थी।

वि० १. चतुर। होशियार। २ बुद्धिमान। समझदार।

प्रचेय—वि० [स० प्र√चि+यत्] १ (फूल या ऐसी ही और कोई चीज) जिसका चयन होने को हो या किया जाना उचित हो। २ चुने जाने या सग्रह करने के योग्य। ३ ग्रहण किये जाने के योग्य। ग्राह्य।

प्रचोदक—वि० [स० प्र√चुद्+ण्वुल्—अक] १ प्रचोदन या प्रेरणा करनेवाला। २ उत्तेजित करनेवाला। उत्तेजक।

प्रचोदन—पु० [स० प्र√चुद्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रचोदित] १ कोई काम करने के लिए दिया जानेवाला बढावा। उत्तेजना। २ प्रेरणा करना। उकसाना। ३ आज्ञा, नियम या सिद्धात। ४ प्रेषण। भेजना। ५ घोषणा।

प्रचोदित—भू० कृ० [स० प्र√चुद्+णिच्+क्त] १ जिसे बढावा दिया गया हो। २. उत्तेजित किया हुआ। जिसे प्रेरणा की गई हो। प्रेरित किया हुआ। ३. जिसे आज्ञा, आदेश आदि मिला हो। ४ भेजा हुआ। ५. घोषित किया हुआ।

प्रच्छक—वि० [स०√प्रच्छ् (पूछना)+ण्वुल्—अक] प्रश्न करने या पूछनेवाला।

प्रच्छद—पु० [स० प्र√छद् (ढकना)+णिच्+घ) १ वह जिसमे कोई चीज ढकी या लपेटी जाय। २. बिस्तर पर बिछाई जानेवाली चादर। ३ चाँदनी। ४ कबल। ५ चोगा।

प्रच्छना†—स० [स० पृच्छन] प्रश्न करना। पूछना।

प्रच्छन्न—वि० [स० प्र√छद्+क्त] १ किसी आच्छादन, आवरण, वस्त्र आदि से ढका हुआ। जैसे—प्रच्छन्न शरीर। २ जो जान-बूझकर दूसरो से छिपाया गया हो। (हिडिन) जैसे—प्रच्छन्न धन। ३ जो अपना वास्तविक रूप औरो से छिपाकर रखता हो। जैसे—प्रच्छन्न बौद्ध।

पु० १ चोर दरवाजा। २ खिडकी।

प्रच्छर्दक—वि० [स० प्र√छर्द् (वमने)+ण्वुल्—अक] १ बाहर निकालनेवाला। २. (ऐसी ओषधि) जिसके सेवन से कै या वमन होता हो। ३ कै या वमन करनेवाला।

प्रच्छर्दन—पु० [स० प्र√छर्द् (वमन करना)+ल्युट्—अन] १. बाहर निकालना। २. नाक के रास्ते प्राण-वायु बाहर निकालना। रेचन। ३. उल्टी, कै या वमन करना।

प्रच्छर्दिका—स्त्री० [स० प्र√छर्द्+ण्वुल्,—अक+टाप्, इत्व] १ ऐसी ओषधि जिसके सेवन से कै होती हो। २ बराबर कै या वमन करते रहने का एक रोग।

प्रच्छादक—वि० [स० प्र√छद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. अच्छी तरह से ढकने या आच्छादित करनेवाला। २ छिपानेवाला।

प्रच्छादन—पु० [स० प्र√छद्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० प्रच्छादित] १ कोई चीज ढकने की क्रिया या भाव। २. वह चीज जिससे कोई दूसरी चीज ढकी जाय। ३ उत्तरीय वस्त्र। ४ दूसरो से चुराने, छिपाने या दबाने की क्रिया या भाव। ५ आँख की पलक।

प्रच्छादित—भू० कृ० [स० प्र√छद्+णिच्+क्त] १. ढका हुआ। आवृत। २. छिपाया हुआ। (कन्सील्ड)

प्रच्छाय—पुं० [स० ब० स०] १ वह स्थान जहाँ घनी छाया हो। २ घनी छाया। ३. अन्धकार। अँधेरा।

प्रच्छाया—स्त्री० [स० प्रा० स०] १. किसी ग्रह या उपग्रह की वह छाया जो सूर्य की विपरीत दिशा में कोण के रूप में पड़ती है। २ गहरी छाया। ३ ग्रहण के समय चन्द्रमा या सूर्य पर पड़नेवाली छाया। ४ भौतिक विज्ञान में, वह गहरी छाया जिसमें प्रकाश के उद्‌गम से कुछ भी प्रकाश प्रत्यक्ष रूप से या सीधा न आता हो। (अम्ब्रा)

प्रच्छालना*—स० [स० प्रक्षालन] धोना।

प्रच्छिल—वि० [स०√प्रच्छ्+इलच्] १ शुष्क। सूखा। २ जिसमें जलीय तत्त्व न हो। जल-रहित।

प्रच्छेदन—पु० [स० प्र√छिद्+ल्युट्—अन] १ कोई चीज इस प्रकार काटना कि उसके छोटे-छोटे टुकड़े हो जायँ। टुकड़े-टुकड़े करना। २ भेद न करना। छेदना।

प्रच्युत—वि० [स० प्र√च्यु+क्त] [भाव० प्रच्युति] १ अपने स्थान से हटा या हटाया हुआ। २ विशेषत किसी उच्च पद से हट या हटाकर निम्न पद पर आया या लाया हुआ। ३ झरा या बहा हुआ।

प्रच्युति—स्त्री० [स० प्र√च्यु+क्तिन्] अपने स्थान से गिरने या हटने की अवस्था क्रिया या भाव। च्युति।

प्रछन्न†—वि०=प्रच्छन्न।
पु०=प्रश्न।

प्रजंक†—पु०=पर्यंक।

प्रजंत†—अव्य०=पर्यंत (तक)।

प्रज—पु० [स० √जन् (उत्पन्न होना)+ड] स्त्री का पति। स्वामी।
स्त्री०=प्रजा।

प्रजन—पु० [स० √जन्+घञ्] १ गर्भधारण करने के लिए (पशुओं का) मैथुन। जोड़ा खाना। २. पशुओं के गर्भधारण का समय। ३ नर या पुरुष की जननेन्द्रिय। लिंग। ४ दे० 'प्रजनन'।
वि० जन्म देनेवाला। जनक।

प्रजनक—वि० [स० प्र जन्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रजनिका] जन्म देने या उत्पन्न करनेवाला।
पु० जनक। पिता।

प्रजनन—पु० [स० प्र√जन्+णिच्+ल्युट्—अन] १. अपने ही जैसे नये जीवों को जन्म देकर अपने वश या वर्ग की वृद्धि करना। सतान उत्पन्न करना। (रिप्रोडक्शन)। २ जीवों का होनेवाला जन्म। ३ दाई या धात्री का काम। ४. पशुओं आदि को पाल-पोसकर उनकी उन्नति और वृद्धि करना। (ब्रीडिंग)

प्रजनिका—स्त्री० [स० प्र√जन्+णिच्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] माता। जननी।

प्रजनिष्णु—वि० [स० प्र√जन्+णिच्+इष्णुच्] प्रजनन करने या जन्म देनेवाला।

प्रजरत†—वि०=प्रज्वलित।

प्रजरना—अ० [स० प्र+हिं० जरना] अच्छी तरह जलना। प्रज्वलित होना। उदा०—प्रजरयो आग वियोग की बह्यो बिलोचन नीर।—बिहारी।
स०=प्रजारना।

प्रजल्प—पु० [सं० प्र√जल्प् (बोलना)+घञ्] १ इधर-उधर की या व्यर्थ की बातचीत। बकवाद। २ प्रिय को प्रसन्न करने के लिए कही जानेवाली बात या हाँकी जानेवाली गप्प।

प्रजल्पित—भू० कृ० [स० प्र√जल्प्+क्त] बकवाद के रूप में कहा हुआ।
पुं० बकवाद।

प्रजवी (विन्)—पु० [स० प्र√जु+इनि+] १ दूत। २. हरकारा।

प्रजांतक—पु० [स० प्रजा-अन्तक, ष० त०] यम।

प्रजा—स्त्री० [स० प्र√जन्+ड टाप्] १. सतान। औलाद। २ किसी विशिष्ट राज्य या शासन मे रहनेवाले वे सब लोग जो उसके द्वारा शासित होते है। रिआया। (सब्जेक्ट) ३ भारतीय देहाती समाज में छोटी जातियों के वे लोग जो बिना वेतन लिये काम करते हैं, और जिन्हें नियमित रूप से समय-समय पर अन्न, धन, वस्त्र, आदि मिलते रहते है। जैसे—नाऊ, बारी, भाट, नट, लोहार, कुम्हार, चमार, धोबी आदि। ४ सृष्टिकर्ता। ब्रह्मा।

प्रजाकाम—वि० [स० प्रजा√कम् (चाहना)+णिङ+अण्] जिसे पुत्र की कामना हो।

प्रजाकार—पु० [स०प्र√जा+कृ (करना)+अण्] सृष्टि के रचयिता। ब्रह्मा।

प्रजागर—वि० [स० प्र√जागृ (जागना)+अच्] १ जागता रहनेवाला। २ पहरा देने या चौकसी करनेवाला।
पु० १ जागरण। २ निद्रा न आने का रोग। उन्निद्र। ३ विष्णु। ४ प्राण।

प्रजागरण—पु० [स० प्र√जागृ+ल्युट्—अन] १ जागते रहने का भाव। जागरण। २ पहरा देना। चौकसी करना।

प्रजा-तंतु—पु० [स० ष० त०] १ सतान। सतति। २ कुल। वंश। ३ किसी वश की विभिन्न पीढ़ियों की शृंखला। वश-परम्परा।

प्रजातंत्र—पु०[स० ष० त०] दे० 'लोकतत्र'।

प्रजात—भू० कृ० [स० प्र√जन् (उत्पन्न होना)+क्त] जिसे जन्म दिया गया हो। उत्पन्न किया हुआ।

प्रजाता—स्त्री० [स० प्रजात+टाप्] वह स्त्री जिसने बच्चे को जन्म दिया हो। जच्चा। प्रसूतिका।

प्रजाति—स्त्री० [स० प्र√जन्+क्तिन्] १ प्रजा। २ सतान। ३ सतान उत्पन्न करना। ३ प्रजनन। जन्म देने या उत्पन्न करने की शक्ति। ५ बच्चे को जन्म देना।

प्रजाद—वि० [स० प्रजा√दा+क] १ जन्म देने या उत्पन्न करनेवाला। २ बाँझपन दूर करनेवाला।

प्रजादा—स्त्री० [स० प्रजा√दा (देना)+क+टाप्] बाँझपन दूर करनेवाली ओषधि।

प्रजा-द्वार—पु० [ष० त०] १ प्रजा या सतान उत्पन्न करने का उपाय या साधन। २ सूर्य का एक नाम।

प्रजाध्यक्ष—पु० [प्रजा-अध्यक्ष, ष० त०] १ प्रजापति। २ सूर्य।

प्रजानाथ—पु० [ष० त०] १ ब्रह्मा। २. मनु। ३. दक्ष। ४ राजा।

प्रजापति—पु० [ष० त०] १. सृष्टि का रचयिता। सृष्टि कर्ता। ब्रह्मा। २. वे दस लोककर्ता जिन्हें ब्रह्मा ने सृष्टि के आरम्भ मे प्रजा-वृद्धि

के लिए उत्पन्न किया था। ३ मनु। ४ राजा। ५. सूर्य। ६. अग्नि। ७ विश्वकर्मा। ८. पिता। ९. तितली। १० घर का मालिक या स्वामी। ११. एक नक्षत्र का नाम। १२. एक प्रकार का यंत्र। १३. जामाता। दामाद। १४ कुंभकार। कुम्हार। १५ साठ संवत्सरों में से पाँचवा संवत्सर। १६. प्राजापत्य (देखें) नामक विवाह-प्रकार।

प्रजापती—स्त्री० [सं०, प्रजापति] गौतम-बुद्ध को पालने वाली गोमती का नाम।

†पुं० = प्रजापति।

प्रजा-पालक—पु० [सं० ष० त०, णिच् + अच्] प्रजा का पालन-पोषण करनेवाला अर्थात् राजा।

प्रजा-पालन—पु० [ष० त०] प्रजा का पालन और भरण-पोषण तथा रक्षा।

प्रजायी (यिन्)—वि० [सं० प्र√जन्+णिनि] [स्त्री० प्रजायिनी] उत्पन्न करने या जन्म देनेवाला। जैसे—वीरप्रजायी।

प्रजारना—स० [सं० प्र (उप०) + हि० जारना] अच्छी तरह जलाना। प्रज्वलित करना।

प्रजालना*—स० प्रजारना।

प्रजावती—स्त्री० [सं० प्रजा + मतुप्, वत्व, + ङीष्] १ ऐसी स्त्री जिसके बहुत से बच्चे या संतानें हों। २ गर्भवती स्त्री। ३. भाई की स्त्री। ४ बडे भाई की स्त्री। भाभी। भौजाई। ५. राजा प्रियव्रत की पत्नी का नाम।

प्रजा-वृद्धि—स्त्री०[ष० त०] १ संतान की बढती। २. जनता या जन-संख्या की वृद्धि।

प्रजा-सत्ता—स्त्री० [ष० त०]=प्रजातंत्र।

प्रजा-सत्ताक—वि० [ब० स०, + कप्] १. (शासन प्रणाली) जिसमे शासन सूत्र प्रजा अथवा उसके चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में होता है। २ (राज्य) जिसका शासन सूत्र प्रजा या उसके चुने हुए प्रतिनिधियो के हाथ मे होता है।

प्रजित्—वि० [सं० प्र√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] जीतनेवाला। विजेता। विजयी।

प्रजिन—पु० [सं० प्र√ज्या (जीर्ण होना)+नक्, सम्प्रसारण] वायु। हवा।

*प्रजीवन—पु० [सं० प्रा० स०] जीविका। रोजी।

प्रजुरित, प्रजुलित†—वि०=प्रज्वलित।

प्रजेप्सु—वि० [सं० प्रजा-ईप्सु, ष० त०] प्रजा या संतान की कामना करनेवाला।

प्रजेश—पु० [सं० प्रजा + ईश, ष० त०]=प्रजापति।

प्रजोग†—पु०=प्रयोग।

प्रज्ञ—वि० [सं० प्र√ज्ञा (जानना)+क] [स्त्री० प्रज्ञा, भाव० प्रज्ञता] १ जाननेवाला। जानकार। २. जिसमे प्रज्ञा-शक्ति यथेष्ट हो। बहुत चतुर और बुद्धिमान।

पुं० १. किसी विषय का बहुत अच्छा ज्ञाता, पंडित या विद्वान। २ बुद्धिमान्।

प्रज्ञता—स्त्री० [सं० प्रज्ञ√तल् + टाप्] १. प्रज्ञ होने की अवस्था या भाव। २. पांडित्य। विद्वता। ३. अच्छी जानकारी।

प्रज्ञप्त—भू० कृ० [सं० प्र√ज्ञप्+क्त] १ जतलाया, बतलाया या सूचित किया हुआ। २ जिसके सम्बन्ध मे कोई प्रज्ञप्ति निकली या हुई हो।

प्रज्ञप्ति—स्त्री० [सं० प्र√ज्ञप् (जताना)+क्तिन्] १ जतलाने या सूचित करने की क्रिया या भाव। २ सूचना।

प्रज्ञा—स्त्री० [सं० प्र√ज्ञा+अङ+टाप्] १ बुद्धि। समझ। २ बुद्धि का वह परिष्कृत, विकसित तथा संस्कृत रूप जो उसे अध्ययन, अभ्यास, निरीक्षण आदि के द्वारा प्राप्त होता है और जिससे मनुष्य सब बातों का आगा-पीछा या वास्तविक रूप जल्दी और सहज मे समझ लेता है। न्याय-बुद्धि। (इन्टलेक्ट)

विशेष—यह मुख्यत अनुभव, पांडित्य और विचारशीलता का प्रकाश-मान् सम्मिश्रण और साधारण बुद्धि का खरादा, गढा और तराशा हुआ रूप है।

३ सरस्वती का एक नाम। ४ विदुषी और सभ्य स्त्री।

प्रज्ञा-चक्षु (स्)—वि० [ब० स०] जिसके लिए उसकी बुद्धि ही आँखो का काम देती हो।

पु० १ ऐसा अन्धा व्यक्ति जो अपनी बुद्धि से ही सब बाते जान या समझ लेता हो। २ अन्धा व्यक्ति। (परिहास और व्यग्य) ३ धृतराष्ट्र। ४ ज्ञानी पुरुष।

प्रज्ञात—भू० कृ० [सं० प्र√ज्ञा+क्त] १ जिसका प्रज्ञान हुआ हो या किया गया हो। २. अच्छी तरह से जाना और समझा हुआ। ३. स्पष्ट। ४ विवेचित। ५ प्रसिद्ध। विख्यात।

प्रज्ञाता—वि० [सं०] प्रज्ञान करनेवाला (कॉग्निजेन्ट)

प्रज्ञा-दृष्टि—पु०=प्रज्ञा-चक्षु।

प्रज्ञान—पु० [सं० प्र√ज्ञा+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रज्ञात, वि० प्रज्ञेय] १ किसी बात या विषय का विशेष रूप से प्राप्त किया हुआ ज्ञान। २. विधिक क्षेत्र मे किसी कार्य विशेषत आपराधिक कार्य की ओर आधिकारिक रूप से किया जानेवाला ध्यान। (काग्निजेन्स) ३ विवेक। बुद्धि। ४ चिह्न। निशान। ५ चैतन्य। विद्वान्।

प्रज्ञापक—वि० [सं० प्र√ज्ञा+णिच्+ण्वुल्—अक, पुक् आगम] प्रज्ञा-पन करने या जतानेवाला। सूचित करनेवाला।

पु० बडे बडे या मोटे मोटे अक्षरो मे लिखा या छपा हुआ विज्ञापन। (पोस्टर)

प्रज्ञापन—पु० [सं० प्र√ज्ञा+णिच्, पुक्, +ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रज्ञापित] किसी को विशेष रूप से किसी घटना, बात या विषय का ज्ञान कराना।

प्रज्ञा-पारमिता—स्त्री० [सं० ष० त०] पूर्ण ज्ञान प्राप्त होने की स्थिति जो बौद्धों के अनुसार दस (या छ.) गुणो (पारमिताओ) मे से एक है।

प्रज्ञापित—भू० कृ० [सं० प्र√ज्ञा+णिच्, पुक्+क्त] १. (विषय) जिसका प्रज्ञापन हुआ हो। २ (व्यक्ति) जिसे सूचना दी गई हो।

प्रज्ञामय—पुं० [सं० प्रज्ञा+मयट्] प्रज्ञाशील। पडित। विद्वान्।

प्रज्ञाल—वि० [सं० प्रज्ञा+लच्] बुद्धिमान्।

प्रज्ञावाद—पु० [सं० ष०त०] [वि० प्रज्ञावादी] यह मत या सिद्धात कि मनुष्य को सदा सब काम अपनी प्रज्ञा के अनुसार खब समझ-बूझकर करने चाहिए। (इन्टलेक्चुअलिज्म)

प्रज्ञावान् (वत्)—वि० [स० प्रज्ञा+मतुप्, वत्व] जो खूब सोच-समझकर काम करता हो।

प्रज्ञा-शील—वि० [सं० ब० स०] जो हर काम सोच-समझकर करता हो। जिसमें न्याय-बुद्धि हो।

प्रज्ञेय—वि० [स०] जिसका प्रज्ञान हो सकता हो या होने को हो। (कान्जिज़ेबुल)

प्रज्वलन—पु० [स० प्र√ज्वल् (दीप्ति)+ल्युट्—अन] [वि० प्रज्वलनीय, भू० कृ० प्रज्वलित] ताप, प्रकाश आदि उत्पन्न करने के लिए कोई चीज जलाना।

प्रज्वलित—भू० कृ०[स० प्र√ज्वल्+क्त] १. ताप, प्रकाश आदि उत्पन्न करने के उद्देश्य से जलाया हुआ। २ चमकता हुआ। ३ व्यक्त और सुस्पष्ट।

प्रज्वलिया—पु० [?] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण में १६ मात्राएँ होती हैं।

प्रज्वार—पु० [स० प्र√ज्वर् (दाह)+घञ्] ज्वर से पीडित होने पर शरीर मे से निकलनेवाला ताप।

प्रज्वालन—स० [स० प्र√ज्वल्+णिच्+ल्युट्—अन] प्रज्वलित करना।

प्रडीन—पु० [स० प्र√डी (उडना)+क्त] पक्षियों की १०१ तरह की उडानो मे से एक उडान।

वि० जो डैनो या परो की सहायता से उड गया हो या उड रहा हो।

प्रण—वि० [स० पुराण+न, प्र आदेश] पुराना। प्राचीन।

पु० [स० पण] कोई काम विशेषत कोई कठिन और वीरतापूर्ण काम करने का अटल या दृढ निश्चय। दृढ प्रतिज्ञा।

प्रणख—पु० [स० प्र-नख, प्रा० स०, णत्व] नाखून का अगला नुकीला भाग।

प्रणत—वि० [स० प्र√नम् (झुकना)+क्त] १ बहुत झुका हुआ। २ जो झुककर किसी को प्रणाम कर रहा हो। ३ नम्र। विनीत। दीन।

पु० १ दास। २ नौकर। सेवक। ३ उपासक या भक्त।

प्रणतपाल—वि० [ष० त०]=प्रणतपालक।

प्रणतपालक—वि० [स० प्रणत√पाल् (पालना)+णिच्+अच्] [स्त्री० प्रणतिपालिका] शरण मे आये हुए दीन-दुखियो की रक्षा करनेवाला।

प्रणति—स्त्री० [स० प्र√नम् (झुकना)+क्तिन्] १ झुकने की क्रिया या भाव। २ प्रणाम। प्रणिपात। दडवत्। ३. नम्रता। ४. विनती।

प्रणदन—पु० [स० प्र√नद् (शब्द करना)+ल्युट्—अन] जोर से नाद या आवाज करना। गरजना या चिल्लाना।

प्रणपति—स्त्री० [स० प्रणिपत्] १. प्रणति। २. प्रणाम। उदा०—करि प्रणपति लागी कहण।—प्रिथीराज।

प्रणमन—पु० [स० प्र√नम्+ल्युट्—अन] १ झुकना। २ प्रणाम करना।

प्रणम्य—वि० [स० प्र√नम्+यत्] १. जिसके आगे झुकना उचित हो। २ जिसके सामने झुककर प्रणाम करना उचित हो। पूज्य और वन्दनीय।

प्रणय—पु० [स० प्र√नी (पहुँचना)+अच्] १. प्रेमपूर्वक की जानेवाली प्रार्थना। २ प्रेम विशेषत. ऐसा शृगारिक प्रेम जो साधारण अनुराग या स्नेह से बहुत आगे बढा हुआ होता है। ३. भरोसा। विश्वास। ४. मोक्ष। निर्वाण। ५. श्रद्धा। ६. प्रसव।

प्रणय-कोप—पु० [स० सुप्सुपा स०] प्रेमियो का एक दूसरे पर बिगडना या रोष प्रकट करना।

प्रणयन—पु० [स० प्र√नी+ल्युट्—अन] १. कोई चीज कही से ले आना या ले जाकर कही पहुँचाना। २ कोई काम पूरा करना। ३. कोई नई चीज बनाकर तैयार करना। रचना। ४ साहित्यिक काव्य, ग्रन्थ, लेख आदि प्रस्तुत करना या लिखना। ५ उपस्थित करना। सामने लाना। ६ होम आदि के समय किया जानेवाला अग्नि का एक सस्कार।

प्रणयमान—पु० [स० सुप्सुपा स०] प्रेम मे किया जानेवाला मान। रूठना।

प्रणयिता—स्त्री० [स० प्रणयिता+तल्,+टाप्] प्रणय-युक्त होने की अवस्था या भाव। अनुरक्ति।

प्रणयिनी—स्त्री० [स० प्रणयिन्+ङीप्] पुरुष की दृष्टि से वह स्त्री जिससे वह प्रणय या बहुत अधिक प्रेम करता हो।

प्रणयी (यिन्)—पु० [स० प्रणय+इनि] [स्त्री० प्रणयिनी] वह पुरुष जो किसी स्त्री से प्रेम करता हो। स्त्री का प्रेमी।

प्रणव—पु० [स० प्र√नु (स्तुति)+अप्] १ ॐकार। ब्रह्म बीज। ओंकार मत्र। २ (ब्रह्मा, विष्णु, महेश) त्रिदेव। ३ परमेश्वर।

प्रणवना—स० [स० प्रणमन] १ प्रणाम करना। नमस्कार करना। २ प्रणाम करने के उद्देश्य से किसी के आगे झुकना। ३. किसी के आगे झुकना। हार मानना।

प्रणष्ट—वि० [स० प्र√नश् (नष्ट होना+क्त] १ जो लुप्त हो गया हो। विनष्ट। २ मृत। मरा हुआ।

प्रणस—पु० [स० प्र-नासिका, ब० स०, नस—आदेश] वह व्यक्ति जिसकी नाक बडी और मोटी हो। (ऐसा व्यक्ति भाग्यवान् समझा जाता है।)

प्रणाद—पु० [स० प्र√नद् (शब्द करना)+घञ्] १ बहुत जोर से होनेवाला शब्द। २ आनन्द या प्रसन्नता के समय मुँह से निकलनेवाला शब्द। ३ झकार। जैसे—आभूषणो या नूपुरों का प्रणाद। ४ घोडों के हिनहिनाने का शब्द। ५ कर्ण-नाद नाम का रोग जिसमें कानो में गूँज या साँय साँय सुनाई पडती है।

प्रणाम—पु० [स० प्र√नम् (झुकना)+घञ्] बडों के आगे नत मस्तक होकर उनका अभिवादन करने का एक ढंग या प्रकार।

प्रणामांजलि—स्त्री० [स० प्रणाम-अजलि, च० त०] हाथ जोडकर किया जानेवाला प्रणाम। करबद्ध प्रणाम।

प्रणामी (मिन्)—पु० [स० प्रणाम+इनि] प्रणाम करनेवाला।

स्त्री० [स० प्रणाम] वह दक्षिणा या धन जो बडो को प्रणाम करते समय उनके चरणों पर आदरपूर्वक रखा जाता है।

प्रणायक—पु० [सं० प्र√नी+ण्वुल्—अक] १ वह जो मार्ग दिखलाता हो। पथप्रदर्शक। २ नेता। ३ सेनापति।

प्रणाल—पु० [स० प्र√नल् (बाँधना)+घञ्] १ बडा जल-मार्ग। २. पनाला।

प्रणालिका—पु० [स० प्रणाली+कन्,+टाप्, ह्रस्व] १ परनाली। नाली। २. बंदूक की नली।

प्रणाली—स्त्री० [सं० प्रणाल+ङीष्] १. वह मार्ग जिसमें से होकर जल बहता हो। २. विशेषतः ऐसा जल-मार्ग जो दो जल-राशियों को मिलाता हो। ३. कोई काम करने का उचित, उपयुक्त, नियत या विधि विहित ढंग, प्रकार या साधन। (चैनल, उक्त सभी अर्थों में) ४. वह सारी व्यवस्था और उसके सब अंग जिनसे कोई निश्चित या विशिष्ट कार्य होता हो। तरीका। ५ द्वार। ६ परम्परा।

प्रणाश—पुं० [सं० प्र√नश्+घञ्] १. पूर्णरूप से होनेवाला विनाश। २ मृत्यु। ३ पलायन। भागना।

प्रणाशी (शिन्)—वि० [सं० प्र√नश्+णिच्+णिनि] [स्त्री० प्रणाशिनी] नाश करनेवाला।

प्रणिधान—पु० [सं० प्र-नि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन्] १ देखा जाना। २ प्रयत्न। ३ योग-साधन में, समाधि। ३ पूरी भक्ति और श्रद्धा से की जानेवाली उपासना। ४. मन को एकाग्र करके लगाया जानेवाला ध्यान। ५. किये जानेवाले कर्म के फल का त्याग। ६ अर्पण। ७ भक्ति। ८ किसी बात या विषय में होनेवाली गति, पहुँच या प्रवेश। ९ भावी-जन्म के संबंध में की जानेवाली कोई प्रार्थना।

प्रणिधि—पु० [सं० प्र-नि√धा+कि] दूत या भेदिया जो किसी विशेष कार्य के लिए कहीं भेजा गया हो।

स्त्री० १. प्रार्थना। २ मन की एकाग्रता। ३. तत्परता।

प्रणिधेय—पु० [सं० प्र-नि√धा+यत्] १. गुप्तचर भेजना। २ नियुक्ति। ३ प्रयोग।

प्रणिनाद—पु०=प्रणाद।

प्रणिपात—पु० [सं० प्र-नि√पत्+घञ्] प्रणाम।

प्रणिहित—भू० कृ० [सं० प्र-नि√धा (रखना)+क्त, हि-आदेश] १. जिसकी स्थापना की गई हो। स्थापित। २. मिला या मिलाया हुआ। मिश्रित। ३ पाया हुआ। प्राप्त। ४ किसी के पास रखा या किसी को सौंपा हुआ। ५ जिसका ध्यान किसी चीज या बात पर एकाग्रतापूर्वक लगा हो।

प्रणी—पु० [सं० प्र√नी+क्विप्] ईश्वर।

वि० [सं० प्रण] प्रण या दृढ़ प्रतिज्ञा करनेवाला।

प्रणीत—भू० कृ० [सं० प्र√नी+क्त] १. जिसका प्रणयन किया गया हो या हुआ हो। बना या तैयार किया हुआ। निर्मित। रचित। २ जिसका संशोधन या संस्कार हुआ हो। संस्कृत। ३ भेजा हुआ। ४ लाया हुआ।

पु० १ वह जल जिसका मंत्र से संस्कार किया गया हो। २. यज्ञ के लिए मंत्रों द्वारा संस्कृत की हुई अग्नि। ३. अच्छी तरह पकाया हुआ भोजन।

प्रणीता—स्त्री० [सं० प्रणीत+टाप्] १. वह जल जो यज्ञ के कार्य के लिए वेद मंत्र पढ़ते हुए कुएँ से निकाला और छानकर रखा जाता है। २ वह पात्र जिसमें उक्त जल रखा जाता है।

प्रणीय—वि० [सं० प्र√नी+क्यप्] १. ले जाने योग्य। २. जिसका संस्कार होने को हो।

प्रणेता (तृ)—वि० [सं० प्र√नी+तृच्] १. ले जानेवाला। २. प्रणयन करने अर्थात् निर्मित करने या बनानेवाला। जैसे—ग्रन्थ का प्रणेता।

प्रणेय—वि० [सं० प्र√नी+यत्] १ ले जाने योग्य। २. अधीन। वशवर्ती। ३ जिसका संस्कार किया जाने को हो या होने को हो।

प्रणोदन—पु० [सं० प्र√नुद्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रणोदित] १ किसी को कहीं भेजना। प्रेषण। २. प्रेरित करना।

प्रतंचा†—स्त्री०=प्रत्यंचा।

प्रतच्छ†—वि०=प्रत्यक्ष।

प्रतत—भू० कृ० [सं० प्र√तन् (फैलना)+क्त] १ फैलाया हुआ। २. कोई चीज ढकने के लिए उस पर फैलाया हुआ।

प्रतति—स्त्री० [सं० प्र√तन्+क्तिन्] १ फैले हुए होने की अवस्था या भाव। २. फैलाव। विस्तार।

प्रतन—वि० [सं० प्र√तन्+ट्यु—अन, तुट्-आगम] [वि० स्त्री० प्रतनी] प्राचीन। पुराना।

प्रतना—स्त्री०=पृतना (सेना का एक विभाग)।

प्रतनु—वि० [सं० प्र-तनु, प्रा० स०] १ क्षीण-काय। दुबला-पतला। २ बहुत ही कोमल या सुकुमार। ३ सूक्ष्म। बहुत छोटा। ४ तुच्छ। हीन।

प्रतपन—पुं० [सं० प्र√तप् (तपना)+ल्युट्—अन] १ गरम करना। गरमाहट पहुँचाना। २ तप्त करना। तपाना।

वि० १ गरम करने या गरमाहट पहुँचानेवाला। २ तपानेवाला।

प्रतप्त—भू० कृ० [सं० प्र√तप्+क्त] १ तपाया या बहुत गरम किया हुआ।

पु० ऐसा साधु जिसने तपस्या के द्वारा अपना शरीर सुखा डाला हो।

प्रतमाली—स्त्री० [?] कटारी। (डि०)

प्रतरण—पु० [सं० प्र√तॄ (तैरना)+ल्युट्—अन] १ तैरना। २ तैरकर पार करना।

प्रतर्क—पु० [सं० प्र√तर्क् (बहस या ऊह करना)+घञ्] १ वाद-विवाद। तर्क-वितर्क। २ अनुमान। ३ कल्पना।

प्रतर्कण—पु० [सं० प्र√तर्क्+ल्युट्—अन] १ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद करना। २ अनुमान या कल्पना करना। ३ संशय।

प्रतर्क्य—वि० [सं० प्र√तर्क्+ण्यत्] १ जिसके संबंध में तर्क किया जा सके या किया जाने को हो। २ जिसके संबंध में अनुमान या कल्पना की जा सके या की जाने को हो।

प्रतर्दन—पु० [सं० प्र√तर्द् (अनादर करना)+ल्युट्—अन] १. वेदों में उल्लिखित काशी के प्रथम राजा दिवोदास के एक पुत्र का नाम जिसका विवाह मंदालसा के साथ हुआ था। २. एक प्राचीन ऋषि जो इन्द्र के शिष्य थे। ३. विष्णु। ४. ताड़ना।

वि० ताड़ना करनेवाला।

प्रतल—पु० [सं० प्र-तल, ब० स०] १. हाथ की हथेली। २. [प्रा० स०] पृथ्वी के नीचेवाले सात लोकों में से अंतिम जिसमें नाग जाति के लोग बसते हैं। पाताल।

प्रता—स्त्री० [सं० प्रतति] छोटी लता। उदा०—लता प्रता से मंडित-कुसुमित पर्ण-कुटी में।—पन्त।

प्रतान—पुं० [सं० प्र√तन् (फैलना)+घञ्] १. पेड़-पौधे का नया कल्ला। २. झाड़ या लता विशेषतः ऐसा झाड़ या लता जो जमीन

पर फैलती हो। ३. लता तनु। रेशा। ४ विस्तार। फैलाव। ५ एक रोग जिसमे प्राय. मूर्च्छा आती है।

वि० १ फैला हुआ। विस्तृत। २ रेशेदार।

प्रतानिनी—स्त्री० [स० प्रतानिन्+ङीप्] शाखाओं-प्रशाखाओ की सहायता से दूर तक फैलनेवाली लता।

प्रतानी (निन्)—वि० [स० प्रतान+इनि] १ झाड, लता आदि जो दूर तक फैली हुई हो। २ फैलनेवाला। ३. रेशेदार।

प्रताप—पु० [स० प्र√तप्+घञ्] १. बहुत अधिक गरमी या ताप। २ ऐसा ताप जिसमे खूब चमक हो। तेज। ३ किसी बहुत बडे आदमी की कर्मठता, योग्यता, नाम, यश आदि पर आश्रित ऐसा तेज, बल या महत्त्व जिसके प्रभाव से अनेक बडे-बडे काम अनायास या सहज मे हो जाते हो। इकबाल। जैसे—आप वहाँ नही गये तो क्या हुआ, आपके प्रताप से ही वहाँ का सारा काम हो गया।

पद—**पुण्य प्रताप**=सत्कर्मों और तेज का प्रभाव। जैसे—बडो के पुण्य-प्रताप से सब काम बहुत अच्छी तरह हो गये।

४ पौरुष। मरदानगी। ५ बहादुरी। वीरता। ६ साहस। हिम्मत। ७. प्राचीन भारत मे वह छत्र जो युवराज के सिर पर लगाया जाता था। ८ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग। ९. आक या मदार का पौधा।

प्रतापन—पु० [स० प्र√तप्+णिच्+ल्युट्—अन] १ खूब गरम करना। तपाना। २ ताप अर्थात् कष्ट या पीडा पहुँचाना। ३. एक नरक का नाम। ४ कुभी-पाक नरक। ५ विष्णु।

वि० १ ताप पहुँचानेवाला। २ कष्ट या पीडा देनेवाला।

प्रतापवान् (वत्)—वि० [स० प्रताप+मतुप्] [स्त्री० प्रतापवती] (व्यक्ति) जिसका यथेष्ट प्रताप हो। प्रतापशाली। इकबालमद।

प्रताप-सारग—पु० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

प्रताप-हसी—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

प्रतापी (पिन्)—वि० [स० प्रताप+इनि] १ प्रताप-सबधी। २ जिसका चारो ओर प्रताप फैला हो। ३ जिसके प्रताप से सब काम होते हो। प्रतापशाली। ४ दु:ख देने या सतानेवाला।

प्रतारक—वि० [स० प्र√तृ (तैरना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रतारण करने अर्थात् ठगनेवाला। २ चालाक। धूर्त। ३. धोखेबाज।

प्रतारण—पु० [स० प्र√तृ+णिच्+ल्युट्—अन] १. धोखा देना या ठगना। २ धूर्तता। धोखेबाजी।

प्रतारणा—स्त्री० [स० प्र√तृ+णिच्+युच्—अन,+टाप्] धोखा देने या ठगने का कोई क्रिया, ढग या युक्ति।

प्रतारित—भू० कृ० [स० प्र०√तृ+णिच्+क्त] (व्यक्ति) जिसे धोखा दिया या ठगा गया हो। छला हुआ।

प्रतिचा—स्त्री० प्रत्यचा (धनुष का डोरा)।

प्रति—अव्य० [स०] १. एक सस्कृत अव्यय जो क्रियाओं और सज्ञाओ से पहले उपसर्ग के रूप मे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) किसी काम या बात के आधार, परिणाम या फल-स्वरूप होनेवाला। जैसे—प्रतिक्रिया, प्रतिध्वनि, प्रतिफल। (ख) विपरीत, विरोधी या समानान्तर पक्ष या स्थिति में होनेवाला। जैसे—प्रतिकूल, प्रतिद्वद्वी, प्रतिवाद, प्रतिक्रिया। (ग) किसी के अनुकरण पर अथवा अनुरूप बनने या होनेवाला। जैसे—प्रतिकृति, प्रतिच्छाया, प्रतिमान, प्रतिमूर्ति, प्रतिलिपि। (घ) आगे या सामने। जैसे—प्रत्यक्ष। (च) अच्छी तरह। भली भाँति। जैसे—प्रतिपादन, प्रतिबोध। (छ) चारो ओर अथवा चारों ओर से। जैसे—प्रतिमडल, प्रतिरक्षा। (ज) पहले या पूर्व से। जैसे—प्रति-नियत। (झ) साधारण या सामान्य। जैसे—प्रति-नियम। (ट) पुन या फिर। जैसे—प्रतिनिर्देश। (ठ) किसी के अधीन, सहायक अथवा स्थानापन्न रूप मे काम करनेवाला। जैसे—प्रति-अधीक्षक, प्रति निर्देशक, प्रति-निधि। (ड) समान। जैसे—प्रतिबल। २. विशुद्ध अव्यय की तरह और स्वतत्र रूप मे प्रयुक्त होने पर यह नीचे लिखे अर्थ देता है—(क) किसी की ओर या दिशा मे। (ख) किसी को उद्दिष्ट या लक्षित करते हुए। जैसे—देवता (या पति) के प्रति उसमे यथेष्ट श्रद्धा थी। (ग) कइयो या बहुतो मे से हर एक और अलग-अलग। जैसे—प्रति-व्यक्ति एक रुपया कर लगा था।

स्त्री० १. चित्र, पुस्तक, लेख, सामयिक-पत्र आदि की बहुत सी छपी अथवा लिखी हुई नकलो या प्रतिकृतियो मे से हर एक। नकल। (कापी) जैसे—(क) इस पुस्तक के पहले सस्करण की दो हजार प्रतियाँ छपी थी। (ख) इस चित्र (अथवा लेख) की एक प्रति हमारे लिए भी तैयार करा लेना। २ किसी चीज की कोई अनुकृति या नकल। ३ प्रतिबिंब। परछाईं। ४ कोटि। वर्ग। जैसे—उच्च प्रति के लोग।

प्रतिक—वि० [स० कार्षापण+टिठन्—इक, प्रति आदेश] १. जो एक कार्षापण मे खरीदा गया हो। २. पुस्तको आदि की प्रति से सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—पुस्तक का प्रतिक स्वत्व।

प्रतिकर—पु० [स० प्रति√कृ (फेंकना)+अप्] अपकार, क्षति, हानि आदि के बदले मे दिया जानेवाला धन। मुआवजा। (कम्पेन्सेशन)

प्रतिकरण—पु० [स० प्रति√कृ+ल्युट्—अन] किसी कार्य, उत्तर, प्रतिकार या विरोध मे किया जानेवाला कार्य। (काउन्टर एक्शन)

प्रतिकर्त्ता (तृ)—वि० [स० प्रति√कृ+तृच्] प्रतिकरण या प्रतिकार करनेवाला।

प्रतिकर्म (न्)—पु० [स० मध्य० स०] १. वेश। भेस। २. किसी के कर्म के उत्तर मे या उसका बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला कर्म। प्रतिकार। बदला। ३. शरीर को सजाने-सँवारने के लिए किये जानेवाले अग-कर्म। शृंगार।

प्रतिकर्मक—वि० [स०] प्रतिकर्म करनेवाला।

प्रतिकर्मक—पु० [स०] रसायन शास्त्र में किसी द्रव्य के अस्तित्व या विद्यमानता की जाँच करने के लिए उसमें मिलाया जानेवाला वह द्रव्य जो पहलेवाले परीक्ष्य द्रव्य में प्रतिक्रिया उत्पन्न करता हो। (रि-एजेन्ट)

प्रतिकर्ष—पु० [स० प्रति√कृष् (खीचना)+घञ्] १. एकत्र करना। २. सयोग।

प्रतिकश—वि० [स० प्रति√कश् (गति और शासन)+अच्] चाबुक की परवाह न करनेवाला (घोड़ा)।

प्रतिकथ—पु० [स० प्रति√कथ् (गति)+अच्] १ नेता। २. सहायक। ३. दूत।

प्रतिक स्वत्व—पु० [स०] किसी कवि, लेखक, कलाकार आदि की कृति की प्रतियाँ छापने अथवा और किसी प्रकार प्रस्तुत करने का वह स्वत्व जो उसके कर्ता की अनुमति के बिना और किसी को प्राप्त नहीं होता। (कॉपी राइट)

प्रति-कामिनी—स्त्री० [स० प्रा० स०] सौत। सपत्नी।

प्रतिकाय—पु० [स० प्रति√चि (चयन करना)+घञ्, कुत्व] १ किसी की काया के अनुरूप बनाई हुई काया। प्रतिमूर्ति। पुतला। २ दुश्मन। शत्रु। ३ लक्ष्य।

प्रतिकार—पु० [स० प्रति√कृ (करना)+घञ्] १. किसी काम, चीज या बात के बदले मे या क्षतिपूर्ति के निमित्त दिया जानेवाला धन। २ किसी काम या बात का बदला चुकाने के लिए किया जानेवाला कार्य। बदला। ३ किसी काम या बात को दबाने, रोकने आदि के लिए किया जानेवाला उपाय या प्रयत्न। (काउन्टर-एक्शन) जैसे—उन्होने जो यह व्यर्थ का उपद्रव खड़ा कर रखा है, इसका कुछ प्रतिकार होना चाहिए। ४ रोग की चिकित्सा। इलाज।

प्रतिकारक—वि० [स० प्रति√कृ+ण्वुल्—अक] १ किसी प्रकार की क्रिया का प्रतिकार या विरोध करनेवाला। २ किसी क्रिया के गुण या प्रभाव को नष्ट करनेवाला। मारक। (एन्टीडोट)

प्रतिकारिक—वि० [स० प्रतिकार से] १ प्रतिकार के रूप में होने या उससे सम्बन्ध रखनेवाला। २ किसी गुण, परिणाम, प्रभाव आदि के विपरीत होकर उसे निष्फल या व्यर्थ करनेवाला। (काउन्टर-एक्टिव)

प्रतिकार्य—वि० [स० प्रति√कृ+ण्यत्] जिसका प्रतिकार किया जा सके या किया जाना चाहिए।

प्रति-कितव—पु० [स० प्रा० स०] १ वह जुआरी जो किसी दूसरे जुआरी के मुकाबले मे जुआ खेलता हो। २. जोड़ीदार।

प्रतिकुंचित—वि० [स० प्रति√कुच् (टेढ़ा होना)+क्त] झुका हुआ। टेढ़ा।

प्रतिकूप—पु० [स० प्रा० स०] परिखा। खाईं।

प्रतिकूल—पु० [स० ब० स०] नदी का सामनेवाला अर्थात् उस ओर का कूल अर्थात् किनारा या तट।

वि० [भाव० प्रतिकूलता] १ जो इस ओर या हमारे पक्ष मे नहीं, बल्कि उस, दूरवर्ती या सामनेवाले पक्ष में हो। 'अनुकूल' का विपर्याय। २ (व्यक्ति) जो हमसे अलग या दूर रहकर हमारे कामों मे बाधक होता हो। ३. (कार्य, वस्तु या स्थिति) जो किसी अन्य कार्य, वस्तु या स्थिति के मार्ग में बाधक होती हो। (एडवर्स) ४. रुचि, वृत्ति, स्वभाव आदि के विरुद्ध पड़ने या होनेवाला। जैसे—यहाँ का जलवायु हमारे लिए प्रतिकूल है। 'अनुकूल' का विपर्याय, उक्त सभी अर्थों मे।

प्रतिकूलता—स्त्री० [स० प्रतिकूल+तल्+टाप्] १ प्रतिकूल होने की अवस्था, गुण या भाव। विपरीतता। २ विरोध।

प्रतिकूलत्व—पु० [सं० प्रतिकूल+त्व] प्रतिकूलता।

प्रतिकूला—स्त्री० [सं० प्रतिकूल+टाप्] सौत। सपत्नी।

प्रतिकूलाक्षर—पु० [सं० प्रतिकूल-अक्षर, ब० स०] साहित्य मे किसी प्रसंग के वर्णन में ऐसे खटकनेवाले अक्षरों या वर्णों का प्रयोग जो वस्तुत उसके प्रतिकूल प्रसगों मे प्रयुक्त होना चाहिए। जैसे—श्रृंगार रस के प्रसंग मे ट वर्ग के वर्णों का प्रयोग, या रौद्र रस के वर्णन मे कोमलावृत्ति का प्रयोग। (साहित्य मे यह एक दोष माना गया है।)

प्रतिकृत—वि० [स० प्रति√कृ (करना)+क्त] १. जिसका प्रतिकार हो चुका हो। २. जिसका उत्तर दिया अथवा बदला चुकाया जा चुका हो। ३ जिसके अन्त या विनाश का उपाय किया जा चुका हो।

प्रतिकृति—स्त्री० [स० प्रति√कृ+क्तिन्] १ किसी चीज के आकार-प्रकार आदि के अनुरूप बनी या बनाई हुई वैसी ही दूसरी चीज। जैसे—यह लड़का अपने पिता की प्रतिकृति है। २ प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। ३. चित्र। तसवीर। ४ छाया। प्रतिबिंब। ५ प्रतिकार। बदला। ६ पूजा। ७ प्रतिनिधि।

प्रतिकृत्य—वि० [सं० प्रति√कृ+क्यप्] १. जिसका प्रतिकार किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २ जिसका प्रतिकार करना उचित हो।

पु० ऐसा कार्य जो किसी के विरोध मे किया गया हो। प्रतिकार।

प्रतिकृष्ट—वि० [स० प्रति√कृष्+क्त] १ दोबारा जोता हुआ (खेत)। २ जिसका निवारण किया गया हो। ३ छिपा हुआ। ४ तुच्छ। हेय।

प्रतिक्रम—पु० [स० प्रा० स०] १ उलटा या विपरीत क्रम। २ प्रतिकूल अथवा विपरीत आचरण या कार्य।

वि० जो किसी नियत या मानक क्रम के अनुसार न होकर विपरीत क्रम से बना या लगा हुआ हो।

प्रतिक्रमात्—अव्य० [स० प्रतिक्रम का पञ्चम्यन्त] उल्लिखित, निर्दिष्ट या बताये हुए क्रम के उलटे या विपरीत क्रम मे। (वाइस-वर्सा)

प्रतिक्रांति—स्त्री० [स०] किसी क्रांति के बल या वेग के बहुत बढ़ने पर उसे दबाने या रोकने के लिए होनेवाली क्रांति। (काउन्टर रिवोल्यूशन)

प्रतिक्रिय—वि० [स० प्रतिक्रिया से] १ (पदार्थ) जिससे कोई रसायनिक क्रिया हो चुकने पर उसके विपरीत कोई क्रिया उत्पन्न हो। २ कोई क्रिया होने पर उसके फलस्वरूप या विपरीत क्रिया उत्पन्न या सम्पन्न करनेवाला। (रि-एक्टिव)

प्रतिक्रियक—वि० दे० 'प्रतिक्रियावादी'।

प्रतिक्रिया—स्त्री० [स० प्रति√कृ+श, इयङ्-आदेश, +टाप्] १ किसी के किये हुए काम या बात का होनेवाला प्रतिकार। बदला। (रिएक्शन) २ कोई क्रिया या घटना होने पर उसके विपक्ष या विरोध मे अथवा उसकी पुनरावृत्ति रोकने के लिए होनेवाली क्रिया या घटना। जैसे—वह दमन की प्रतिक्रिया ही थी, जिसने आंदोलन का रूप और भी उग्र कर दिया था। ३ कोई क्रिया होने पर उसकी विपरीत दिशा मे आप से आप प्राकृतिक नियमो के अनुसार या स्वाभाविक रूप मे होनेवाली क्रिया। जैसे—फेंका हुआ पत्थर जहाँ गिरता है, वहा से इसी लिए उछल कर दूर जा पड़ता है कि उस पर आघात की प्रतिक्रिया होती है। ४ किसी काम, चीज या बात के बहुत आगे बढ़ चुकने पर पीछे की ओर अथवा किसी अन्य विपरीत दिशा मे होनेवाली उसकी गति या प्रवृत्ति। जैसे—इस थकावट (या शिथिलता) को परिश्रम की प्रतिक्रिया

समझना चाहिए ५ रसायन शास्त्र में, दो या अधिक द्रव्यो का मिश्रण या संयोग होने पर उनमे से किसी पर दूसरे द्रव्य का पडनेवाला प्रभाव या होनेवाला परिणाम। ६ भौतिक शास्त्र मे, एक अवस्था का अन्त होने पर स्वाभाविक रूप से दूसरी विपरीत अवस्था का आविर्भाव या संचार। जैसे—बहुत अधिक गरमी के बाद होनेवाली ठढक, या ज्वर उतर जाने पर शरीर का बिलकुल ठढा हो जाना। ६. प्राचीन सस्कृत साहित्य मे (क) परिष्करण या सस्कार। (ख) शृगार या सजावट।

प्रतिक्रियात्मक—वि० [स० प्रतिक्रिया-आत्मन्, ब० स०, +कप्] १ जिसके साथ कोई प्रतिक्रिया लगी हो या लगी रहती हो। प्रतिक्रिया से युक्त। २ दे० 'प्रतिक्रियक'।

प्रतिक्रियावाद—पु० [स० ष० त०] [वि० प्रतिक्रियावादी] यह मत या सिद्धात कि जो बातें पहले से चली आ रही हैं, उनमे परिवर्तन या सुधार करनेवालो का विरोध करना चाहिए। (रिएक्शनिज्म)

प्रतिक्रियावादी (दिन्)—वि० [स० प्रतिक्रियावाद+इनि] प्रतिक्रिया-वाद-सबधी।

पु० वह जो प्राचीन मान्यताओ, सिद्धान्तों आदि को माननेवाला तथा नवीन मान्यताओ, सिद्धान्तों आदि का विरोधी हो।

प्रतिक्रोश—पु० [स० प्रति√कुश् (आह्वाण)+घञ्] बिक्री का वह प्रकार जिसमे प्रतिस्पर्धी ग्राहको मे से किसी चीज का बढ-बढकर और सबसे अधिक मूल्य लगानेवाले ग्राहक के हाथ चीज बेची जाती है। नीलामी। (ऑक्शन)

प्रतिक्षय—पु० [स० प्रति√क्षि (ऐश्वर्य)+अच्] अगरक्षक।

प्रतिक्षिप्त—भू० कृ० [सं० प्रति√क्षिप् (प्रेरणा करना)+क्त] १ किसी के प्रति फेका हुआ। २ जो अमान्य किया गया हो। ४ बल-पूर्वक पीछे की ओर ढकेला या हटाया हुआ। (रिपल्सड)

प्रतिक्षेप—पु० [सं० प्रति√क्षिप् (प्रेरित करना)+घञ्] १ बलपूर्वक पीछे की ओर फेंकना या हटाना। जैसे—आक्रमण करनेवाले शत्रु का प्रतिक्षेप। २ गृहीत, मान्य या स्वीकृत न करना। अग्राह्य, अमान्य या अस्वीकृत करना। ३ अपने अनुकूल न समझकर या अरुचिकर होने पर अलग या दूर करना अथवा हटाना। ४ किसी प्रकार के गुण, प्रकृति आदि का उत्कट विरोध होने के कारण एक तत्त्व या पदार्थ का दूसरे तत्त्व या पदार्थ को दूर हटाना। (रिपल्सन. उक्त सभी अर्थों मे)। ५ रोकना। ६ तिरस्कार।

प्रतिक्षेपण—पु० [स० प्रति√क्षिप+ल्युट्—अन] प्रतिक्षेप करने की क्रिया या भाव।

प्रतिखुर—पु० [स० प्रा० स०] गर्भ मे मरा हुआ बच्चा, जिसके कारण योनिमार्ग अवरुद्ध हो जाता है।

प्रतिख्यात—वि० [स० प्रति√ख्या (कहना)+क्त] [भाव० प्रति-ख्याति] जिसकी चारो ओर प्रसिद्धि हो।

प्रतिगत—भू० कृ० [सं० प्रति√गम् (जाना)+क्त] १ जो कही जाकर लौट या वापस आ गया हो। २ जो पुन प्राप्त हुआ हो। ३ भूला हुआ। विस्मृत।

पु० पक्षियो की एक प्रकार की उडान।

प्रतिगमन—पु० [स० प्रति√गम्+ल्युट्—अन] वापस आना। लौटना।

प्रतिगामी (मिन्)—पु० [स० प्रति√गम् (जाना)+णिनि] [भाव० प्रतिगामिता] दे० 'प्रतिक्रियावादी'।

प्रतिगिरि—पु० [स० प्रा० स०] १ एक पहाड के सामनेवाला दूसरा पहाड। २ वह जो देखने मे पहाड के समान हो।

प्रतिगृहीत—भू० कृ० [स० प्रति√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्त] १. जिसका प्रतिग्रहण हुआ हो। गृहीत या स्वीकृत किया हुआ। २. ब्याहा हुआ। विवाहित।

प्रतिगृहीता—स्त्री० [प्रतिगृहीत+टाप्] १ वह स्त्री जिसका पाणिग्रहण किया गया हो। विवाहिता स्त्री। २ धर्मपत्नी।

प्रतिगृह्य—वि० [स० प्रति√ग्रह्+क्यप्] प्रतिग्राह्य।

प्रतिग्या†—स्त्री० प्रतिज्ञा।

प्रतिग्रह—पु० [स० प्रति√ग्रह्+अप्] १ किसी की दी हुई चीज ग्रहण करना। लेना। २ अधिकार या वश मे करना। ३ मजूरी। स्वीकृति। ४ ब्राह्मण का ऐसा दान लेना जो उसे विधि-पूर्वक दिया जाय। ५ दान आदि ग्रहण करने का अधिकार। ६ ग्रहण किया हुआ उपहार या भेट। ७ अभ्यर्थना। ८ सूर्य, चन्द्रमा आदि को लगनेवाला ग्रहण। उपराग। ९ किसी बात का किया जानेवाला प्रतिकार या विरोध। १० किसी बात का दिया जानेवाला उत्तर। जवाब। ११ सेना का पिछला भाग। १२ रक्षा-पूर्वक रखने के लिए मिली हुई सपत्ति। धरोहर। १३. अभि-युक्त या सदिग्ध व्यक्ति का अधिकारियो के हाथ मे जाँच या विचार के लिए लिया जाना। (कस्टडी) १४ सिलाई के समय उँगली मे पहनने का अगुश्ताना। १५ उगालदान। पीकदान।

प्रतिग्रहण—पु० [स० प्रति√ग्रह्+ल्युट्—अन] १ विधिपूर्वक दी हुई चीज ग्रहण करना या लेना। प्रतिग्रह। २ दे० 'प्रतिग्रह'।

प्रतिग्रही (हिन्)—वि० [स० प्रतिग्रह+इनि] प्रतिग्रहण करने या प्रतिग्रह लेनेवाला।

प्रतिग्रहीता (तृ)—पु० [स० प्रति√ग्रह्+तृच्] प्रतिग्रही।

प्रतिग्राह—पु० [स० प्रति√ग्रह्+ण] १ प्रतिग्रहण। २ दे० 'प्रति-ग्रह'। ३ उगालदान। पीकदान।

प्रतिग्राहक—वि० [स० प्रति√ग्रह+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रतिग्राहिका] प्रतिग्रह या दान लेनेवाला। दी हुई चीज लेनेवाला।

पु० १ दे० 'आदाता'। २ आज-कल न्यायालय द्वारा नियुक्त वह अधिकारी जो किसी विवादास्पद या ऋण-ग्रस्त सपत्ति आदि की व्यवस्था के लिए नियुक्त किया जाता है। ३ बिजली की सहायता से आई हुई ध्वनियो आदि ग्रहण करनेवाले यत्रो का वह अग जो उन ध्वनियो का ग्रहण कर उपयोग के लिए सुरक्षित रखता है। (रिसीवर, उक्त दोनों अर्थों के लिए)

प्रतिग्राह्य—वि० [सं० प्रति√ग्रह्+ण्यत्] १ जो प्रतिग्रह या दान के रूप मे लिया जा सके। २. जो ठीक मानकर गृहीत किया जा सके। स्वीकार्य।

प्रतिघ—पु० [स० प्रति√हन् (हिसा)+ड, कुत्व] १ विरोध। २ द्वन्द्व। लडाई। ३ शत्रु। ४ क्रोध। गुस्सा। ५ मूर्च्छा।

प्रतिघात—स्त्री० [स० प्रति√हन्+णिच्+अप्] १ वह आघात जो किसी के आघात करने पर किया जाय। २. आघात लगने पर

उसके फलस्वरूप आप से आप होनेवाला दूसरा आघात। टक्कर। ३. बाधा। रुकावट।

प्रतिघातक—वि० [सं० प्रति√हन्+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रतिघात करनेवाला।

प्रतिघातन—पु० [सं० प्रति√हन्+णिच्√ल्युट्—अन] १ प्रतिघात करने की क्रिया या भाव। २ जान से मार डालना। प्राणघात। हत्या। ३ रुकावट। बाधा।

प्रतिघाती (तिन्)—वि० [सं० प्रति√हन्+णिच्+णिनि] १. प्रतिघात करनेवाला। २ टक्कर मारने या लेनेवाला। ३. सामने आकर मुकाबला या विरोध करनेवाला। प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिघ्न—पु० [सं० प्रति√हन्+क] काया। शरीर।

प्रतिचार—पु० [सं० प्रति√चर् (गति)+घञ्] सजावट करना। अपने आपको सजाना।

प्रतिचिंतन—पु० [सं० प्रति √चित् (स्मरण करना)+ल्युट्-अन] पुन. या फिर से चिंतन या विचार करना।

प्रतिचिकीर्षा—स्त्री० [सं० प्रति√कृ+सन्+अ,+टाप्] बदला लेने की भावना।

प्रतिच्छन्न—भू० कृ० [सं० प्रति√छद् (ढकना)+क्त] १ छाया या ढका हुआ। २ छिपा हुआ।

प्रतिच्छवि—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ प्रतिबिंब। परछाईं। २ चित्र। तसवीर।

प्रतिच्छा†—स्त्री०=प्रतीक्षा।

प्रतिच्छाया—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ परछाईं। प्रतिबिंब। २ पत्थर, मिट्टी आदि की बनी हुई मूर्ति। प्रतिकृति। ३ चित्र। तसवीर।

प्रतिछाँई†—स्त्री०=परछाईं।

प्रतिछाँहरी—स्त्री०=परछाईं।

प्रतिछाया—स्त्री० =प्रतिच्छाया (परछाईं)।

प्रतिजन्म—पु० [सं० प्रा० स०] दुबारा होनेवाला जन्म। पुनर्जन्म।

प्रतिजल्प—पु० [सं० प्रति√जल्प् (बोलना)+घञ्] १ किसी के उत्तर मे कही हुई बात। २. विपरीत या विरुद्ध बात।

प्रतिजल्पक—पु० [सं० प्रति√जल्प्+ण्वुल्—अक] टाल-मटोल करने के लिए दिया जानेवाला उत्तर।

वि० किसी के विरुद्ध बोलनेवाला।

प्रतिजागर—पु० [सं० प्रति√जागृ+घञ्] किसी चीज की खूब सचेत होकर देख-रेख करना।

प्रति-जिह्वा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] गले के अन्दर की घंटी। छोटी जीभ। कौआ।

प्रति-जिह्विका—स्त्री० [सं०]=प्रतिजिह्वा।

प्रतिजीवन—पु० [सं० प्रति√जीव् (जीना)+ल्युट्—अन] पुनः या फिर से मिलने या प्राप्त होनेवाला जीवन। पुनर्जन्म।

प्रतिज्ञांतर—पुं० [सं० प्रतिज्ञा-अंतर, मयू० स०] तर्क मे एक प्रकार का निग्रह-स्थान, जिसमें अपनी की हुई प्रतिज्ञा का खंडन होने पर वादी अपने मन से कोई और दृष्टान्त देता हुआ अपनी प्रतिज्ञा मे किसी नये धर्म का आरोप करता है। जैसे—यदि कहा जाय, 'शब्द अनित्य है, क्योंकि वह घट के समान इंद्रियों का विषय है।' तो उसके उत्तर में यह कहना प्रतिज्ञांतर होगा—शब्द नित्य है, क्योंकि वह जाति के समान इन्द्रियों का विषय है।

प्रतिज्ञा—स्त्री० [सं० प्रति√ज्ञा (जानना)+अङ्,+टाप्] १. किसी बात की जानकारी की दी जानेवाली स्वीकृति। २ कोई बात कह चुकने के बाद अथवा कोई काम कर चुकने के बाद इस बात का किया जानेवाला दृढ निश्चय कि भविष्य मे पुन ऐसा काम नही करेंगे। ३. कुछ करने या न करने के संबध मे किया जानेवाला दृढ निश्चय।

मुहा०—**प्रतिज्ञा पारना**=प्रतिज्ञा पूरी करना। उदा०—जन प्रह्लाद प्रतिज्ञा पारी।—सूर।

४ किसी प्रकार का कथन या वक्तव्य। ५ किसी के विरुद्ध उपस्थित किया जानेवाला अभियोग। ६. शपथ। सौगंध। ७. न्याय मे किसी पक्ष से कही जानेवाली वह बात या उपस्थित किया जानेवाला वह मत जिसे आगे चलकर उसे प्रमाण, युक्ति आदि की सहायता से ठीक सिद्ध करना पड़ता हो। (प्रॉपोजीशन)

विशेष—यह अनुमान के पाँच अवयवों मे से एक माना गया है।

प्रतिज्ञात—वि० [सं० प्रति√ज्ञा+क्त] १ घोषित किया हुआ। कहा हुआ। २ जिसके संबंध मे प्रतिज्ञा की गई हो। जो प्रतिज्ञा का विषय बन चुका हो। ३ जो किया जा सकता या हो सकता हो। संभव। साध्य।

प्रतिज्ञान—पु० [सं० प्रति√ज्ञा+ल्युट्—अन] १. प्रतिज्ञा। २ किसी बात के संबध मे शपथ या सौगन्ध न खाकर सत्य-निष्ठापूर्वक कोई बात कहना।

प्रतिज्ञा-पत्र—पु० [ष० त०] १. ऐसा पत्र जिस पर कोई की हुई प्रतिज्ञा लिखी हो। २ इकरारनामा।

प्रतिज्ञापन—पु० [सं०] विशेष रूप से जोर देकर कोई बात कहना। (एफरमेशन)

प्रतिज्ञा-पालन—पु० [ष० त०] की हुई प्रतिज्ञा के अनुसार काम करना या चलना।

प्रतिज्ञा-भंग—पु० [ष० त०] प्रतिज्ञा का भग होना। प्रतिज्ञा के विरुद्ध कार्य कर बैठना, जिससे उस प्रतिज्ञा का महत्त्व समाप्त हो जाता है।

प्रतिज्ञेय—वि० [सं० प्रति√ज्ञा+यत्] १ (कार्य या बात) जिसके करने या न करने की प्रतिज्ञा की गई हो या की जाने को हो। २ प्रशंसा या स्तुति करनेवाला। प्रशंसक।

प्रतितंत्र—पु० [सं० प्रा० स०] १ वह शासन या शासन-प्रणाली जो किसी दूसरे प्रकार के शासन या शासन-प्रणाली के बिलकुल विपरीत हो। २. प्रतिकूल शास्त्र।

प्रतितंत्र-सिद्धान्त—पु० [सं० ष० त०] ऐसा सिद्धान्त जो कुछ शास्त्रों मे तो हो और कुछ मे न हो। जैसे—मीमासा मे 'शब्द' को नित्य माना जाता है परन्तु न्याय में वह अनित्य माना जाता है, इसलिए यह प्रति-तंत्र सिद्धान्त है।

प्रतितर—पु० [सं० प्रति√तृ (तैरना)+अप्] वह जो उस पार ले जाता हो। मल्लाह। माँझी।

प्रतिताल—पु० [सं० प्रा० स०] संगीत में ताल का एक भेद जिसके अन्तर्गत कांतार, समराव्य, वैकुंठ और वांछित ये चारो ताल हैं।

प्रतितुलन—पु० [सं० प्रति√तुल्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतितुलित]

१ किसी ओर पड़े या बढ़े हुए भार की तुलना मे दूसरी ओर का भार बढ़ाकर दोनों को समान करना। (काउन्टर-बैलेन्स) २. लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसी स्थिति जिसमे दोनो पक्षो की शक्ति बराबर-बराबर हो। सतुलन।

प्रतिदत्त—भू० कृ० [स० प्रति√दा (देना)+क्त] १ प्रतिदान के रूप मे अर्थात् किसी चीज के बदले मे दिया हुआ। २ लौटाया या वापस किया हुआ।

प्रतिदान—पु० [स० प्रति√दा+ल्युट्—अन] १ किसी से पाई या ली हुई चीज उसे वापस करना या लौटाना। वापस करना। २ एक चीज लेकर उसके बदले मे दूसरी चीज देना। विनिमय। ३ वह चीज जो किसी को किसी दूसरी चीज के बदले मे दी गई हो। (रिटर्न)

प्रतिदूत—पु० [स० प्रा० स०] किसी के यहाँ से दूत आने पर उसके बदले मे भेजा जानेवाला दूत।

प्रतिदेय—वि० [स० प्रति√दा+यत्] १ जो लौटाया या वापस किया जाने को हो। २ जिसके बदले मे कुछ दिया जाने को हो।

प्रति-दृष्टात सम—पु० [स० प्रति-दृष्टात, प्रा० स०, प्रतिदृष्टात-सम तृ० त०] न्याय मे एक प्रकार की जाति।

प्रतिद्वद्व—पु० [स० प्रा० स०] दो समान व्यक्तियो या शक्तियों का पारस्परिक विरोध। बराबरवालो का झगडा या मुकाबला।

प्रतिद्वद्विता—स्त्री० [स० प्रतिद्वद्विन्+तल्+टाप्] प्रतिद्वद्वी होने की अवस्था या भाव।

प्रतिद्वद्वी (द्विन्)—पु० [स० प्रतिद्वद्व+इनि] [भाव० प्रतिद्वद्विता] १ वह व्यक्ति या वस्तु जो किसी दूसरे व्यक्ति या वस्तु के मुकाबले की हो अथवा जिससे उसका मुकाबला हो। २ एक व्यक्ति की दृष्टि से वह दूसरा व्यक्ति जो उसी की तरह किसी एक ही पद का उम्मीदवार हो अथवा किसी एक ही वस्तु को प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो।

प्रतिधान—पु० [स० प्रति√धा (धारण)+ल्युट्—अन] १ कही धरना या रखना। २ लौटाना। ३ निराकरण।

प्रतिध्रुव—पु० [स०] भूगोल मे किसी देश या स्थान के विचार से वह देश या स्थान जो उससे १८०° देशान्तर पर स्थित हो।

प्रतिध्वनि—स्त्री० [स० प्रा० स०] १. किसी तल या रचना से परावर्तित होकर सुनाई पडनेवाली ध्वनि-तरगे। गूँज। प्रति-शब्द। २ उक्त के आधार पर लाक्षणिक रूप मे दूसरे के विचारो आदि का कुछ परिवर्तित रूप मे इस प्रकार दोहराया जाना कि उनमे से मूल विचारो की ध्वनि या छाया निकलती हो। (ईको, उक्त दोनो अर्थों मे)

प्रतिध्वनिक—वि० [स० प्रतिध्वनि से] प्रतिध्वनि-सम्बन्धी। प्रतिध्वनि का।

प्रतिध्वनिक शब्द—पु० [स० प्रतिध्वनि से] भाषा विज्ञान मे, कोई ऐसा निरर्थक शब्द जो प्राय. बोल-चाल मे किसी शब्द के अनुकरण पर ठीक उसके अनुरूप बना लिया जाता है। (ईको वर्ड) जैसे—कुछ काम करो तो पैसा-वैसा मिले। मे 'वैसा' निरर्थक शब्द 'पैसा' का प्रतिध्वनिक शब्द है।

प्रतिध्वनित—भू० कृ० [स० प्रति√ध्वन् (शब्द)+क्त] जो प्रतिध्वनि के रूप मे शब्द करता हो। गूँजा हुआ।

प्रतिध्वान—पु० [स० प्रति√ध्वन्+घञ्]=प्रतिध्वनि।

प्रतिनंदन—पु० [सं० प्रति√नन्द् (प्रशंसा करना)+ल्युट्—अन] वह अभिनन्दन जो आशीर्वाद देते हुए किया जाय। बधाई देनेवाले के प्रति प्रकट की जानेवाली शुभ कामना।

प्रतिनप्ता (प्तृ)—पु० [स० प्रा० स०] प्रपौत्र। परपोता।

प्रतिना—स्त्री० =पृतना।

प्रतिनाद—पु० [स० प्रति√नद्+घञ्] =प्रतिध्वनि।

प्रतिनायक—पु० [स० प्रा० स०] नाटको, काव्यों आदि मे वह पात्र जो नायक का प्रतिद्वन्द्वी हो या जिसकी नायक से प्रतिद्वद्विता होती हो।

प्रतिनाह—पु० [स० प्रति√नह् (बाँधना)+घञ्] एक प्रकार का रोग जिसमे नाक के नथनो मे कफ रुकने से श्वास चलना बन्द हो जाता है।

प्रति-निचयन—पु० [स० प्रति-नि√चि+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिनिचित] कही से आया या किसी का दिया हुआ देय। शुल्क आदि उचित से अधिक या अनियमित होने पर उसे दाता को लौटाना या उसके खाते मे जमा करना। (रिफन्ड)

प्रतिनिधान—पु० [स० प्रति-नि√धा+ल्युट्—अन] १ दे० 'शिष्ट-मण्डल'। २ वह व्यक्ति या व्यक्तियो का दल जो इस प्रकार प्रतिनिधि बनकर कही भेजा जाय। प्रतिनिधि मण्डल। (डेपुटेशन)

प्रतिनिधि—पु० [स० प्रति-नि√धा (धारण)+कि] १ प्रतिमा। प्रतिमूर्ति। २ वह व्यक्ति जो दूसरो की ओर से कही भेजा जाय अथवा उनकी तरफ से कार्य करता हो। अभिकर्ता। ३. ससद, विधान-सभा आदि का वह सदस्य जो किसी निर्वाचन-क्षेत्र से चुना गया हो, और जिसे उस क्षेत्र के लोगो की ओर से बोलने तथा काम करने का अधिकार होता है। ४ वह जिसे देखकर उसी के वर्ग, जाति आदि के औरो के स्वरूप रग-ढग, आचार-विचार आदि का अनुमान या कल्पना की जा सके। ५ वह जो अपने वर्ग के औरो की जगह काम आ सके। (रिप्रेजेंटेटिव; उक्त चारो अर्थों के लिए) ६ दे० 'प्रतिनिधि द्रव्य'

प्रतिनिधित्व—पु० [स० प्रतिनिधि+त्व] प्रतिनिधि होने की अवस्था या भाव। प्रतिनिधि होने का काम। (रिप्रेजेंटेशन)

प्रतिनिधि-द्रव्य—पु० [स० मध्य० स०] वैद्यक मे, वह औषध जो किसी अन्य औषध के अभाव मे दी जाती हो। जैसे—चित्रक के अभाव मे दती, तगर के अभाव मे कुठ, लवंग के अभाव मे लौंग दिया जाना।

प्रतिनिधि-शासन—पु० [स० ष० त०] वह शासन जिसमे विधान आदि बनाने और शासन की नीति आदि स्थिर करने के प्राय सभी अधिकार जनता के चुने हुए प्रतिनिधियो के हाथ मे रहते हैं। (रिप्रेजेंटेटिव गवर्नमेंट)

प्रतिनियम—पु० [स० प्रति-नि√यम्+अप्] सामान्य नियम या व्यवस्था।

प्रतिनियुक्त—वि० [स० प्रति-नि√युज् (जोडना)+क्त] प्रतिनिधि या अधीनस्थ अधिकारी के रूप मे बनकर कही भेजा हुआ। (डेप्यूटेड)

प्रतिनियोजन—पु० [स० प्रति-नि√युज्+ल्युट्—अन] किसी को कही भेजने के लिए अधीनस्थ कर्मचारी के रूप मे नियुक्त करना। (डिप्यूटेशन)

प्रतिनिर्देश—पु० [स० प्रति-निर्√दिश् (बताना)+घञ्] पुन: उल्लेख या कथन करना।

प्रतिनिर्देश्य—वि० [सं० प्रति-निर्√दिश्+ण्यत्] जिसका पुन कथन या निर्देशन करना आवश्यक या उचित हो अथवा किया जाने को हो।

प्रति-निर्वर्तन—पु० [स० प्रति-निर् √वृत् (प्रयत्न)+णिच्+ल्युट्–अन्] [भू० कृ० प्रतिनिर्वर्तित] १ लौटाना। २. बदला लेना।

प्रतिनिविष्ट—वि० [स० प्रति-नि√विश् (घुसना)+क्त] जो दृढ हो गया हो।

प्रतिपक्ष—पु० [प्रा० स०] १ मुकाबले का या विरोधी पक्ष। अन्य या दूसरा पक्ष। २ दूसरे या विरोधी पक्ष की कही हुई बात या उसके द्वारा उपस्थित किया हुआ मत या विचार। ३ [ब० स०] प्रतिवादी। ४ शत्रु। वैरी। ५ [प्रा० स०] बराबरी। समानता।

प्रतिपक्षता—स्त्री० [सं० प्रतिपक्ष+तल्–टाप्] १ प्रतिपक्षी होने की अवस्था या भाव। २ विरोध।

प्रतिपक्षी (क्षिन्)—वि० [स० प्रतिपक्ष+इनि] १ दूसरे या विरोधी पक्ष मे रहनेवाला। २ वह जो विरोधी पक्ष मे रहकर सदा हानि पहुँचाने का प्रयत्न करता हो। (हॉस्टाइल)

प्रतिपक्षीय—वि०= प्रतिपक्षी।

प्रतिपच्छ†—पु० प्रतिपक्ष।

प्रतिपच्छी†—पु० प्रतिपक्षी।

प्रतिपत्—स्त्री०= प्रतिपद्।

प्रतिपत्ति—स्त्री० [स० प्रति√पद् (गति)+क्तिन्] १ प्राप्ति। पाना। २ ज्ञान। ३ अनुमान। ४ दान देना। ५ कार्य के रूप मे लाना। कार्यान्वित करना। ६. किसी बात या विषय का होनेवाला निरूपण, निर्धारण या प्रतिपादन। ७ कोई बात अच्छी तरह और प्रमाणपूर्वक कहते हुए किसी के मन मे बैठाना। ८ उक्त प्रकार मे कही हुई बात मान लेना। ग्रहण। स्वीकार। ९ मान-मर्यादा। गौरव। प्रतिष्ठा। १० शक्तिमत्ता आदि की धाक या साख। ११ आदर-सत्कार। १२ प्रवृत्ति। १३. दृढ निश्चय या विचार। १५ परिणाम। नतीजा।

प्रतिपत्ति-कर्म (न्)—पु० [प० त०] १. श्राद्ध आदि मे, वह कर्म जो सब के अन्त मे किया जाय। २ अन्त या समाप्ति के समय किया जानेवाला काम।

प्रतिपत्तिमान् (मत्)—वि० [स० प्रतिपत्ति+मतुप्] १ [स्त्री० प्रतिपत्तिमती] २ बुद्धिमान। ३. प्रसिद्ध। ४ कार्यकुशल।

प्रतिपत्ति-मूढ़—वि०=किंकर्तव्य-विमूढ।

प्रतिपत्र-फला—स्त्री० [स० ब०स०] करेली।

प्रतिपद्—स्त्री० [सं० प्रति√पद् (गति)+क्विप्] १. मार्ग। रास्ता। २ आरम्भ। ३. बुद्धि। समझ। ४. पक्ति। श्रेणी। ५. पुरानी चाल का एक प्रकार का ढोल। ६ चांद्र मास के प्रत्येक पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा।

प्रतिपदा†—स्त्री० [स०] एकम।

प्रतिपन्न—वि० [स० प्रति√पद्+क्त] १. अवगत। जाना हुआ। २. अंगीकृत। स्वीकृत। ३. प्रचड। ४. प्रमाणित। निरूपित। ५ भरा-पूरा। ६. शरणागत। ७. सम्मानित। ८. प्राप्त।

प्रतिपन्नक—पुं० [सं० प्रतिपन्न+कन्] बौद्ध शास्त्रों के अनुसार श्रोतापन्न, सकृदागामी, अनागामी, और अर्हत् ये चार पद।

प्रतिपन्नत्व—पु० [सं० प्रतिपन्न+त्व] प्रतिपन्न होने की अवस्था या भाव।

प्रति-परीक्षण—पु० [स० प्रा० स०] न्यायालय आदि मे, किसी के कुछ कह चुकने पर उससे दबी-दबाई बातो का पता लगाने के लिए उससे कुछ और प्रश्न करना। (क्रास-इग्जामिनेशन)

प्रतिपर्ण—पु० [स० प्रा० स०] दो टुकडोवाली पावती या रसीद, प्रमाण-पत्र आदि मे का वह टुकडा जो देनेवाले के पास रह जाता है और जिस पर किसी को दिये हुए दूसरे टुकडे की प्रतिलिपि रहती है। (काउन्टर फॉयल)

प्रतिपाण—पु० [स० प्रति√पण् (शर्त रखना)+घञ्] वह धन जो दाँव पर प्रतिपक्षी ने लगाया हो।

प्रतिपादक—वि० [स० प्रति√पद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रतिपादन करनेवाला। २ प्रतिपन्न करनेवाला। ३ उत्पादन करनेवाला। ४. निर्वाह करनेवाला।

प्रतिपादन—पु० [स० प्रति√पद्+णिच्+ल्युट्—अन] १ भली भाँति ज्ञान कराना। अच्छी तरह समझाना। प्रतिपत्ति। २ प्रमाण देते हुए कोई बात कहना या सिद्ध करना। निरूपण। निष्पादन। ३. प्रमाण। सबूत। ४ उत्पत्ति। जन्म। ५ दान। ६ इनाम। पुरस्कार।

प्रतिपादयिता (तृ)—वि० [स० प्रति√पद्+णिच्+तृच्] प्रतिपादन करने अर्थात् अच्छी तरह बतलाने-समझानेवाला।

पु० १ शिक्षक। २ व्याख्याकार।

प्रतिपादित—भू० कृ० [स० प्रति√पद्+णिच्+क्त] १ जिसका प्रतिपादन हो चुका हो। २ निर्धारित। निश्चित। ३ जो दिया जा चुका हो। दत्त।

प्रतिपाद्य—वि० [स० प्रति√पद्+णिच्+यत्] १ जिसका प्रतिपादन किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २ जो दिया जा सकता हो या दिया जाने को हो।

प्रति-पाप—पु० [स० प्रा० स०] वह कठोर और पाप-रूप व्यवहार जो किसी पापी के साथ किया जाय।

प्रतिपार—वि०, पु०=प्रतिपाल।

प्रतिपारना—स० =प्रतिपालना।

प्रतिपाल—वि० [सं० प्रति√पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] १ प्रतिपालन करनेवाला। प्रतिपालक। २. रक्षा करनेवाला। रक्षक। पु० १ रक्षा। २ सहायता।

प्रतिपालक—वि० [स० प्रति√पाल्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रतिपालिका] १ पालन-पोषण करनेवाला। पोषक। २ रक्षक। पु० राजा।

प्रतिपालक-अभिकरण—पु० [स० कर्म० स०] वह राजकीय अभिकरण या विभाग जो ऐसे लोगो की सपत्ति की व्यवस्था करता है जो अल्प-वयस्क, बौद्धिक दृष्टि से अयोग्य अथवा शारीरिक दृष्टि से असमर्थ हो। (कोर्ट ऑफ वार्ड्स)

प्रतिपालन—पु० [स० प्रति√पाल्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिपालित] १. दूसरों से रक्षित रखते हुए किसी का किया जानेवाला

पालन। २. आज्ञा, आदेश आदि का कर्त्तव्यपूर्वक किया जानेवाला पालन। ३ देख-रेख। निगरानी। रक्षण।

प्रतिपालना—स० [स० प्रतिपालन] १. प्रतिपालन करना। २. भरण-पोषण और रक्षा करना। ३ आज्ञा, आदेश आदि का निर्वाह करना।

प्रतिपालनीय—वि० [स० प्रति√पाल्+णिच्+अनीयर्] जिसका प्रतिपालन करना आवश्यक या उचित हो।

प्रतिपालित—भू० कृ० [स० प्रति√पाल्+णिच्+क्त] [स्त्री० प्रतिपालिता] १ जिसका प्रतिपालन किया गया हो या हुआ हो। २ अपनी देख-रेख मे पाला-पोसा हुआ। ३ (आज्ञा, आदेश आदि) जिसके अनुसार आचरण किया गया हो।

प्रतिपाल्य—वि० [स० प्रति√पाल्+णिच्+यत्] १. प्रतिपालन किये जाने के योग्य। २ जिसका प्रतिपालन किया जा सकता हो। ३ जिसका पालन और रक्षा करना उचित हो। रक्षणीय।

प्रतिपीडन—पु० [स० प्रति√पीड् (कष्ट पहुँचाना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिपीडित] पीडित करनेवाले को पीडा पहुँचाना। (रिप्राइजल)

प्रतिपुरुष—पु० [स० प्रा० स०] १ वह पुरुष जो किसी दूसरे पुरुष के स्थान पर उसका प्रतिनिधि या स्थानापन्न होकर काम करता हो। प्रतिनिधि। २ बराबर या जोड का व्यक्ति। ३ वह पुतला जिसे चोर किसी घर मे घुसने से पहले यह जानने के लिए अदर फेकते थे कि लोग सोये है या जागते।

प्रतिपुरुष-पत्र—पु० [प० त०] वह पत्र जिसके द्वारा किसी व्यक्ति को किसी के बदले कुछ काम करने, मत देने आदि का अधिकार दिया जाता है। (प्राक्सी)

प्रतिपूजक—वि० [स० प्रति√पूज् (पूजा करना)णिच्+ण्वुल्—अक] प्रतिपूजन अर्थात् अभिवादन करनेवाला। अभिवादक।

प्रतिपूजन—पु० [स० प्रति√पूज्+णिच्+ल्युट्—अन] १ अभिवादन। साहब-सलामत। २ पारस्परिक किया जानेवाला अभिवादन। अभिवादन का आदान-प्रदान।

प्रतिपूजा—स्त्री० [स० प्रति√पूज्+अ+टाप्] प्रतिपूजन। (दे०)

प्रतिपूजित—भू० कृ० [स० प्रति√पूज् णिच्+क्त] १ जिसका प्रतिपूजन या अभिवादन किया गया हो। अभिवादित। २ (व्यक्ति) जिसके साथ आदरपूर्वक व्यवहार किया गया हो। सम्मानित।

प्रतिपूज्य—वि० [स० प्रति√पूज्+ण्यत्] जिसका प्रतिपूजन या अभिवादन करना आवश्यक या उचित हो। अभिवाद्य।

प्रतिपूर्ति—स्त्री० [स० प्रति√पृ+क्तिन्] किसी व्यक्ति या मद से लिया हुआ या लेकर व्यय किया हुआ धन उसे देकर या उसमे जमाकर उस की पूर्ति करना। (रि-इम्बर्समेन्ट)

प्रतिपोषक—वि० [स० प्रति√पुष् (पुष्ट करना)+ण्वुल्+अक] प्रतिपोषण या सहायता करनेवाला। मदद करनेवाला। सहायक।

प्रतिपोषण—पु० [स० प्रति√पुष+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिपोषित] सहायता। मदद।

प्रति-पौतिक—वि० [स० प० त०] जो पूति (सडायँध आदि) का नाश करनेवाला हो। पूतिका-भारक। (एन्टिसेप्टिक)

प्रतिप्रभा—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ प्रतिबिंब। २ परछाईं। छाया।

प्रतिप्रसव—पु० [स० प्रति-प्र√सू (उत्पन्न करना)+अप्] ऐसा तथ्य या बात जो किसी सामान्य नियम के अपवाद का भी अपवाद हो। (काउन्टर-एक्सेप्शन)

प्रति-प्रसूत—वि० [स० प्रति-प्र√सू+क्त] १ प्रतिप्रसव-संबधी। २ प्रतिप्रसव के रूप मे होनेवाला।

प्रति-प्राकार—पु० [स० प्रा० स०] दुर्ग के बाहर की ओर का प्राकार। बाहरी परकोटा।

प्रति-प्राप्ति—स्त्री० [स०] [भू० कृ० प्रतिप्राप्त] १ पुन प्राप्त करने या होने की अवस्था या भाव। २ किसी के हाथ मे गई हुई अथवा अधिकार से निकली हुई चीज फिर से प्राप्त करना। (रिकवरी)

प्रतिफल—पु० [स० प्रति√फल् (फलना)+अच्] १ चीज या फल के रूप मे होनेवाली वह प्राप्ति जो किसी को कोई काम करने के बदले मे, अथवा कोई काम करने के परिणामस्वरूप होती है। किसी काम या बात के बदले मे या परिणाम के रूप मे प्राप्त होनेवाला फल। २. परिणाम। नतीजा। ३ प्रतिबिंब।

प्रतिफलक—पु० [स० प्रतिफल+णिच्+ण्वुल्—अक] १ वह फलक जिसकी सहायता से किसी चीज की पडनेवाली परछाईं दूसरी ओर या दूसरी चीज पर परावर्तित की जाती है।

प्रतिफलित—भू० कृ० [स० प्रति√फल्+क्त] १ जो प्रतिफल के रूप मे हो। २ जो प्रतिफल दे रहा हो। ३ जिसका प्रतिफल मिल रहा हो। ४ प्रतिबिंबित।

प्रतिबंध—पु० [स० प्रति√बन्ध् (बाँधना)+घञ्] १ वह बधन या रोक जो किसी काम बात या व्यक्ति पर लगाई गई हो। २ विशेषत ऐसी आज्ञा, आदेश या सूचना जो किसी बात को कोई प्रायिक, स्वाभाविक या अधिकृत आचरण, व्यवहार आदि करने से पहले ही रोकने के लिए दी गई हो। मनाही। (रेस्ट्रिक्शन) ३ किसी काम या बात मे लगाई हुई शर्त। पण। (कन्डिशन) ४ निश्चय, विधि आदि मे पडनेवाली कठिनता से बचने के लिए निकाला हुआ ऐसा मार्ग या निश्चित किया हुआ विधान जिसके साथ कोई शर्त भी लगी हो। उपबंध। (प्राविजो) जैसे—परन्तु प्रतिबंध यह है कि ।

प्रतिबंधक—वि० [स० प्रति√बन्ध्+ण्वुल्—अक] १ प्रतिबंध लगानेवाला। मनाही करनेवाला। २ रुकावट डालनेवाला। बाधक। पु० पेड। वृक्ष।

प्रतिबंधकता—स्त्री० [स० प्रतिबंधक+तल्+टाप्] १ प्रतिबंधक होने की अवस्था या भाव। २ प्रतिबंध। रुकावट। बाधा। विघ्न।

प्रतिबंधि—स्त्री० [स० प्रति√बन्ध्+इन्] १ ऐसा तर्क या दलील जो दोनों पक्षों पर समान रूप से घटती या लागू होती हो। २. आपत्ति।

प्रतिबंधु—पु० [स० प्रा० स०] वह जो समान पद या पदवीवाला हो।

प्रतिबद्ध—भू० कृ० [स० प्रति√बन्ध्+क्त] १ बँधा हुआ। २. जिसके सम्बन्ध मे कोई प्रतिबंध या रुकावट लगी हो। ३. जिसके मार्ग में बाधा खडी की गई हो। ४ नियंत्रित। ५ जो इस प्रकार किसी से सबद्ध हो कि उससे अलग न किया जा सके।

प्रति-बल—वि० [स० ब० स०] १. समर्थ। सशक्त। २ बल या शक्ति मे बराबरी का। सम-बल।

प्रतिबाधक—वि० [सं० प्रति√बाध् (रोकना)+ण्वुल्—अक] १ बाधा खड़ी करनेवाला। बाधक। २. रोकने या रुकावट खड़ी करनेवाला। ३ कष्ट पहुँचाने या पीड़ा देनेवाला।

प्रतिबाधन—पु० [स० प्रति√बाध्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिबाधित] १ विघ्न। बाधा। २ कष्ट। पीड़ा।

प्रतिबाधित—भू० कृ० [स० प्रति√बाध्+क्त] १ जिसके लिए किसी प्रकार की बाधा या रुकावट खड़ी की गई हो। २ हटाया हुआ। निवारित। ३ पीड़ित।

प्रतिबाधी (धिन्)—वि० [सं० प्रति√बाध्+णिनि] १ रोकनेवाला २ बाधा डालनेवाला। ३. कष्ट पहुँचानेवाला। ४ विरोध करनेवाला।
पु० वैरी। शत्रु।

प्रतिबाहु—पु० [स० अव्या० स०] १ बाँह का अगला भाग। २. ज्यामिति में; वर्गिक क्षेत्र मे किसी एक बाहु की दृष्टि से उसकी सामनेवाली बाहु। ३ पुराणानुसार श्वफल्क के एक पुत्र और अक्रूर के भाई का नाम।

प्रतिबिंब—पु० [स० प्रा० स०] १ किसी पारदर्शक तल मे किसी वस्तु की दिखलाई पड़नेवाली आकृति। परछाईं। प्रतिच्छाया। जैसे—जल मे दिखाई देनेवाला चद्रमा का प्रतिबिंब, शीशे में दिखाई पड़नेवाला मुख का प्रतिबिम्ब। २ छाया। ३ मूर्ति। ४ चित्र। ५. शीशा। ६ झलक।

प्रतिबिंबक—वि० [स० प्रतिबिंब+कन्] परछाईं के समान पीछे-पीछे चलनेवाला।
पु० अनुगामी। अनुचर।

प्रतिबिंबन—पु० [स० प्रतिबिंब+क्विप्+ल्युट्—अन] १ छाया या परछाईं डालना या पड़ना। २ अनुकरण। ३ तुलना।

प्रतिबिंबना—अ० [स० प्रतिबिंबन] प्रतिबिंबित होना।
स० प्रतिबिंबित करना।

प्रतिबिंबवाद—पु० [स० ष० त०] वेदात का एक सिद्धान्त जिसमे यह माना जाता है कि जीव वास्तव मे ईश्वर का प्रतिबिंब मात्र है।

प्रतिबिंबवादी (दिन्)—पु० [स० प्रतिबिंबवाद+इनि] प्रतिबिंबवाद का अनुयायी या समर्थक।

प्रतिबिंबित—भू० कृ० [सं० प्रतिबिंब+इतच्] १ जिसका प्रतिबिंब पड़ता हो। जिसकी परछाईं पड़ती हो। २ जो परछाईं के कारण दिखाई देता या होता हो। कुछ-कुछ या अस्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाला। झलकता हुआ।

प्रतिबीज—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका बीज नष्ट हो गया हो। २ जिसकी उत्पन्न करने की शक्ति नष्ट हो गई हो। निर्बीज।
पु० मरा या सड़ा हुआ बीज।

प्रतिबुद्ध—वि० [सं० प्रति√बुध् (जानना)+क्त] १ जिसे प्रतिबोध मिला हो या हुआ हो। २ जागा हुआ। ३. चतुर। होशियार। ४. प्रसिद्ध। मशहूर। ५ उन्नत।

प्रतिबुद्धि—स्त्री० [स० प्रा० स०] १. प्रतिबुद्ध होने की अवस्था या भाव। २. विपरीत बुद्धि।

प्रतिबोध—पु० [स० प्रति√बुध्+घञ्] १ जागरण। जागना। २ ज्ञान। ३ चातुर्य। होशियारी।

प्रतिबोधक—वि० [सं० प्रति√बुध्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. प्रतिबोध करानेवाला। २. जगानेवाला। ३. ज्ञान उत्पन्न करनेवाला। ४. शिक्षा देनेवाला। ५ तिरस्कार करनेवाला।
पु० अध्यापक। शिक्षक।

प्रतिबोधन—पु० [स० प्रति√बुध्+णिच्+ल्युट्—अन] १ जगाना। २. ज्ञान उत्पन्न करना।

प्रतिबोधित—भू० कृ० [स० प्रति√बुध्+णिच्+क्त] १ जगाया हुआ। २. जिसे किसी बात का ज्ञान या प्रतिबोध कराया गया हो।

प्रतिबोधी (धिन्)—वि० [स० प्रति√बुध्+णिनि] १ जागता हुआ। २ जो शीघ्र ही ज्ञान प्राप्त करने को हो।

प्रतिभट—पु० [स० प्रा० स०] [भाव० प्रतिभटता] १ बराबर का योद्धा। समान शक्तिवाला योद्धा। २ वह जिससे मुकाबला या लड़ाई होती हो। प्रतिद्वन्द्वी। ३ वैरी। शत्रु। ४. विपक्षी दल का सैनिक।

प्रतिभय—वि० [ब० स०] भयकर।
पु० [प्रा० स०] भय। डर।

प्रतिभा—स्त्री० [स० प्रति√भा (दीप्ति)+अङ्+टाप्] १ ऊपर या सामने दिखाई देनेवाली आकृति या रूप। २ प्रकाश। ३ चमक। ४ ऐसी प्राकृतिक बुद्धि या मानसिक शक्ति जिसमें असाधारण तीव्रता या प्रखरता हो, और जिसके फल-स्वरूप मनुष्य अपनी कल्पना के द्वारा कला, विज्ञान, साहित्य, आदि के क्षेत्रो मे उच्च कोटि की बिलकुल नई या मौलिक तथा रचनात्मक कृतियो को प्रस्तुत करने मे समर्थ होता है। असाधारण बुद्धि-बल। (जीनियस)

प्रतिभाग—पु० [स० प्रा० स०] [वि० प्रातिभागिक] १ प्राचीन काल का एक प्रकार का राजकर। २ आज-कल वह शुल्क जो राज्य मे बनानेवाले कुछ विशिष्ट पदार्थों (यथा—नमक, मादक, द्रव्य, दीया-सलाई कपड़े आदि) पर उनके बनते ही और बाजार मे बिक्री के लिए जाने से पहले ही ले लिया जाता है। उत्पादनकर। (एक्साइज ड्यूटी)

प्रतिभागिक—वि०=प्रातिभागिक।

प्रतिभात—वि० [स० प्रति√भा+क्त] १ प्रभायुक्त। चमकदार। २ जाना हुआ। ज्ञात। ३ सामने आया हुआ। ४ प्रतीत।

प्रतिभान—पु० [स० प्रति√भा+ल्युट्—अन] १ प्रभा। चमक। २. बुद्धि। समझ। ३. उपस्थित बुद्धि। ४ विश्वास। ५ प्रगल्भता।

प्रतिभान्वित—वि० [स० प्रतिभा-अन्वित, तृ० त०] जिसमे प्रतिभा हो। असाधारण बुद्धिवाला। प्रतिभाशाली।

प्रतिभाव—पु० [स०] १. किसी भाव के प्रतिकूल या विरुद्ध पड़नेवाला भाव। २ प्रतिच्छाया। परछाईं।

प्रतिभावान् (वत्)—वि० [स० प्रतिभा+मतुप्] १ प्रतिभाशाली। २ दीप्तिमान्। चमकीला।

प्रतिभाव्य—वि० [स० प्रति√भू (होना)+णिच्+यत्] (अपराधी या अभियुक्त) जो निर्णय काल तक के लिए छुड़ाया जा सकता हो। जिसकी जमानत हो सकती हो। (बेलेबुल)

प्रतिभाशाली (लिन्)—वि० [स० प्रतिभा√शाल्+णिनि] [स्त्री० प्रतिभाशालिनी] १ जिसमे प्रतिभा हो। २ प्रभावशाली।

प्रतिभाषा—स्त्री० [स० प्रा० स०] १ उत्तर। जवाब। २ उत्तर मिलने पर दिया जानेवाला उसका दूसरा उत्तर। प्रत्युत्तर।

प्रतिभास—पु० [स० प्रति√भास् (चमकना)+घञ्] १ आकस्मिक रूप से या एकाएक होनेवाला ज्ञान या बोध। २ यो ही या ऊपर से देखने पर होनेवाला भ्रम। ३ भ्रम। ४ आकृति।

प्रतिभासन—पु० [स० प्रति√भास्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिभासित] १ चमकना। २ दिखाई देना। ३ भासित होना। जान पडना।

प्रतिभिन्न—भू० कृ० [स० प्रति√भिद् (फाडना)+क्त] १ जिसका भेदन किया गया हो। २ जो अलग हो गया हो। विभक्त।

प्रतिभू—पु० [स० प्रति√भू+क्विप्] १ वह व्यक्ति जो ऋण देनेवाले (उत्तमर्ण) के सामने ऋण लेनेवाले (अधमर्ण) की जमानत करता हो। जामिन। २ वह जो किसी की किसी तरह की जमानत दे। जमानतदार। जामिन। ३ प्रतिभूति। (दे०)

प्रतिभूत—भू० कृ० [स० प्रति√भू+क्त] १ (व्यक्ति) जिसकी जमानत की गई हो। २ (धन) जो जमानत के रूप मे जमा किया गया हो। ३ (सपत्ति) जो जमानत या रेहन के रूप मे किसी को दी या सौपी गई हो। (प्लेज्ड)

प्रतिभूति—स्त्री० [स० प्रति√भू+क्तिन्] १ कोई काम या वचन पूरा करने आदि के लिए दिया गया निश्चित आश्वासन या उसके बदले जमा की गई वस्तु या धन। मुचलका। (सिक्योरिटी) २ ऋण आदि के प्रमाण-स्वरूप जारी किया गया सरकारी कागज। साख-पत्र। ३ प्रतिभू के द्वारा दी हुई जमानत। (बेल)

प्रतिभू-पत्र—पु० [स० ष० त०] वह पत्र जिसमे कोई प्रतिभू या जमानतदार अपने उत्तरदायित्व की स्वीकृति लिखकर देता है। (बाड आफ श्योरिटी)

प्रतिभेद—पु० [स० प्रति√भिद्+घञ्] १ प्रभेद। अन्तर। फरक। २ विभाग। ३ भेद या रहस्य प्रकट करना या खोलना।

प्रतिभेदन—पु० [स० प्रति√भिद्+ल्युट्—अन] १ प्रतिभेद या अन्तर उत्पन्न करना। २ विभाग करना। विभाजन। ३. बद करना।

प्रतिभोग—पु० [स० प्रति√भुज् (भोगना)+घञ्] उपभोग।

प्रतिभोजन—पु० [स० प्रा० स०] चिकित्साशास्त्र मे, किसी के लिए या कुछ विशिष्ट स्थितियो के विचार से नियत या निर्दिष्ट किया हुआ भोजन। (प्रेस्क्राइब्ड डायट)

प्रतिभौ*—पु० [स० देश्रति+भाव] शरीर का तेज और बल। उदा०—हा जदुनाथ, जरा तनु ग्रास्यौ। प्रतिभौ उतरि गयो।—सूर।

प्रतिमडल—पु० [स० प्रा० स०] ग्रह, नक्षत्र आदि के चारो ओर का घेरा। परिवेश। भा-मडल।

प्रतिमडित—भू० कृ० [स० प्रति√मड् (अलकृत करना)+क्त] सजाया हुआ। अलकृत।

प्रतिमत्रण—पु० [स० प्रति√मत्र् (गुप्त भाषण करना)+ल्युट्—अन] १ अभिमन्त्रण। २ उत्तर। जवाब।

प्रतिमत्रित—भू० कृ० [स० प्रति√मत्र्+क्त] १ मन्त्र द्वारा पवित्र किया हुआ। अभिमन्त्रित। २ जिसका जवाब दिया जा चुका हो। उत्तरित।

प्रतिमर्श—पु० [स० प्रति√मृश् (छूना)+घञ्] एक तरह का चूर्ण।

प्रतिमा—स्त्री० [स० प्रति√मा (मापना)+अङ+टाप्] १ किसी की वास्तविक अथवा कल्पित आकृति के अनुसार बनाई हुई मूर्ति या चित्र। अनुकृति। २ आराधन, पूजन आदि के लिए धातु, पत्थर मिट्टी आदि की बनाई हुई देवता या देवी की मूर्ति। देव-मूर्ति। ३. प्रतिबिंब। परछाई। ४ साहित्य मे एक अलकार जिसमे किसी मुख्य पदार्थ या व्यक्ति के न होने की दशा मे उसी के समान किसी दूसरे पदार्थ या व्यक्ति की स्थापना का उल्लेख होता है। ५ हाथियो के दातो पर जडा-जानेवाला पीतल, ताँबे आदि का छल्ला या मडल। ६ तौलने का बट-खरा। बाट।

प्रतिमान—पु० [स० प्रति√मा+ल्युट्—अन] १ समान मानवाली मुकाबले की दूसरी वस्तु। २ वह वस्तु या रचना जिसे आदर्श मानकर उसके अनुरूप और वस्तुएँ बनाई जाती हो। (माडल) ३ वह अच्छी और बढिया चीज जो पहले एक बार नमूने के तौर पर बनाकर रख ली जाती है और तब उसी के अनुरूप या वैसी ही चीजे बनाकर तैयार की जाती है। (पैटर्न) ४ उदाहरण। दृष्टान्त।

प्रतिमानीकरण—पु० [स०] १ प्रतिमान के रूप मे लाने की प्रक्रिया या भाव। २ दे० 'मानकीकरण'।

प्रतिमाला—स्त्री० [स० प्रा० स०] स्मरणशक्ति का परिचय देने के लिए दो आदमियो का एक दूसरे के बाद लगातार एक ही तरह के अथवा एक दूसरे के जोड के श्लोक या पद पढना।

प्रतिमावली—स्त्री० [स०] दे० 'मूर्ति-विधान'।

प्रतिमित—भू० कृ० [स० प्रति√मा+क्त] १ जिसका प्रतिबिम्ब पडा हो। प्रतिबिंबित। २ अनुकृत। ३ जिसकी तुलना की गई हो।

प्रतिमुक्त—वि० [स० प्रति√मुच् (छोडना)+क्त] १ पहना हुआ (कपडा या गहना)। २ छोडा या त्यागा हुआ। परित्यक्त। ३ खुला हुआ। मुक्त।

प्रतिमुख—वि० [स० प्रा० स०] मुकाबले या सामने का। जैसे—प्रतिमुख वायु।

पु० १ मुख के पीछेवाला भाग। पीठ। २ दे० '**प्रतिमुख सन्धि**'।

प्रतिमुख सन्धि—स्त्री० [स० मध्य० स०] साहित्य मे, रूपक (नाटक) की पाँच प्रकार की सन्धियो मे से दूसरी सन्धि जिसमे 'बिन्दु' नामक अर्थ-प्रकृति और 'प्रयत्न' नामक अवस्था का मिश्रण होता है। मुख-सन्धि मे जो बीज बोया जाता है, उसके विकास का आरभ इसी मे दिखाई देता है। विलास, परिसर्प, विधूत, तपन, नर्म नर्मद्युति, प्रगमन, विरोध, पर्युपासन, पुष्प, वज्र, उपन्यास और वर्ण-सहार इसके १३ अग कहे गये है जो प्राय प्रयोग मे नहीं लाये जाते।

प्रतिमुद्रण—पु० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रति-मुद्रित] १. खुदी या लिखी हुई आकृति, लेख आदि पर से उसकी यथा-तथ्य प्रतिलिपि उतारने या छापने की क्रिया या भाव। २ उक्त प्रकार से ज्यो की त्यो उतारी या छापी हुई प्रति। जैसे—शिलालेख या हस्तरेखा का प्रति-मुद्रण।

प्रतिमुद्रांकन—पु० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रतिमुद्रांकित] १. जिस पर पहले किसी अधीनस्थ अधिकारी का मुद्रांकन हो चुका हो या मुहर लग चुकी हो उस पर किसी बड़े अधिकारी का अपनी स्वीकृति या सहमति सूचित करने के लिए अपनी मोहर भी लगाना। २ उक्त प्रकार से किया हुआ मुद्रांकन या लगाई हुई मोहर। (काउन्टर-सील)

प्रतिमुद्रा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १. मुद्रण से ली जानेवाली छाप। २ मुद्रा (अँगूठी या मोहर) से ली जानेवाली छाप।

प्रतिमूर्ति—स्त्री० [सं० प्रा० स०] किसी की आकृति को देखकर उसके अनुरूप बनाई हुई मूर्ति या चित्र आदि। प्रतिमा।

प्रतिमूल्य—पु० [सं०] किसी काम, चीज या बात के बदले में दिया जानेवाला धन। मुआवजा। (कम्पेन्सेशन)

प्रतिमोक्ष—पु० [सं० प्रा० स०] मोक्ष की प्राप्ति।

प्रतिमोचन—पु० [सं० प्रति√मुच् (खोलना)+ल्युट्—अन] बंधन से मुक्त करना। छुड़ाना। मोचन।

प्रतियत्न—पु० [सं० प्रा० स०] १ लालच। प्राप्ति या लाभ की इच्छा। २ उपग्रह। ३ कैदी। ४ संस्कार।

प्रतियाग—पु० [सं० प्रा० स०] विशेष उद्देश्य से किया जानेवाला यज्ञ।

प्रतियातन—पु० [सं० प्रति√यत्+णिच्+ल्युट्—अन] १ प्रतिकार। २ प्रतिशोध। बदला।

प्रतियातना—स्त्री० [सं० प्रति√यत्+णिच्+युच्—अन, टाप्] प्रतिमा। मूर्ति।

प्रतियान—पु० [सं० प्रति√या (जाना)+ल्युट्—अन] वापस आना। लौटना।

प्रतियुत—भू० कृ० [सं० प्रति√यु (मिश्रित होना)+क्त] बँधा हुआ।

प्रतियुद्ध—पु० [सं० प्रा० स०] बराबरवालों का या बराबरी का युद्ध।

प्रतियोग—पु० [सं० प्रति√युज् (जोड़ना)+घञ्] [वि० प्रतियोगिक] १ किसी चीज का विरोध पक्ष बनाना या तैयार करना। २ दो विरोधी तत्त्वों, पदार्थों आदि का होनेवाला मिश्रण या संयोग। ३. विरोधी तत्त्व या भाव। ४ किसी बात या मत का खण्डन। ५ किसी व्यक्ति का विरोधी। ६ वैर। शत्रुता। ७ किसी चीज, बात का परिणाम या प्रभाव नष्ट करनेवाला कार्य या तत्त्व। मारक। ८ एक बार विफल होने पर फिर से किया जानेवाला उद्योग या प्रयत्न।

प्रतियोगिता—स्त्री० [सं० प्रतियोगिन्+तल्-टाप्] १. वह स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति किसी चीज को ठीक समय से प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हो। जिसकी प्राप्ति के लिए अन्य लोग भी उसी समय प्रयत्नशील हों। २. दुश्मनी। शत्रुता। ३. किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि या फल की प्राप्ति के लिए कुछ लोगों में आपस में होनेवाली चढ़ा-ऊपरी या होड़। मुकाबला। (कम्पीटीशन)

प्रतियोगी (गिन्)—पु० [सं० प्रति√युज्+घिनुण्] १ उन कई व्यक्तियों में से हर एक जो किसी एक ही चीज को पाने के लिए किसी एक समय में समान रूप से प्रयत्नशील हों। प्रतियोगिता करनेवाला व्यक्ति। २. साझेदार। हिस्सेदार। ३. वह जो मुकाबला या सामना कर रहा हो। वैरी शत्रु। ४. विरोधी। ५. मददगार। सहायक। ६ संगी। साथी। ७ वह जो तुलना आदि के विचार से बराबरी का हो। जोड़ीदार।

प्रतियोद्धा (द्धृ)—पु० [सं० प्रति√युध् (लड़ाई करना)+तृच्] १ बराबरी का या मुकाबले में रहकर युद्ध करनेवाला। २ विरोधी। ३ शत्रु। दुश्मन।

परिरक्षण—पु० =प्रतिरक्षा।

प्रतिरक्षा—स्त्री० [सं० प्रति√रक्ष्+अ—टाप्] १ रक्षण। हिफाजत। २ आज-कल, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में किसी के आक्रमण से अपनी रक्षा करने का कार्य या व्यवस्था। ३ विधिक क्षेत्र में, अपने ऊपर लगे हुए अभियोग से अपना बचाव करने या अपनी निर्दोषिता दिखाने का प्रयत्न। सफाई। (डिफेन्स)

प्रतिरथ—पु० [सं० ब० स०] १ बराबरी का लड़नेवाला योद्धा या रथी। २ वह जो मुकाबला करे। प्रतिद्वंद्वी।

प्रतिरव—पु० [सं० प्रति√रु (शब्द) अप्] १ विवाद। झगड़ा। २ प्रतिध्वनि। गूँज।

प्रतिरुद्ध—वि० [सं० प्रति√रुध् (रुकना)+क्त] १ जिसका प्रतिरोध हुआ हो। २ रुका हुआ। अवरुद्ध। ३ अटका या फँसा हुआ।

प्रतिरूप—पु० [सं० प्रा० स०] १ प्रतिमा। मूर्ति। २ चित्र। तस्वीर। ३ प्रतिनिधि। ४. एकदानव (महाभारत)।

वि० नकली। जाली। (काउन्टरफीट)

प्रतिरूपक—पु० [सं० प्रतिरूप+कन्] वह जो नकली या बनावटी चीजें विशेषत सिक्के, नोट आदि बनाता हो। (काउन्टरफीटर)

प्रतिरोद्धा (द्धृ)—वि० [सं० प्रति√रुध्+तृच्] १. प्रतिरोध करनेवाला। विरोधी। २ बाधा डालनेवाला। बाधक। ३ शत्रुता करनेवाला।

प्रतिरोध—पु० [सं० प्रति√रुध्+घञ्] १ अड़चन। बाधा। रुकावट। २ शत्रु के गढ़, सेना आदि के चारों ओर डाला जानेवाला घेरा। ३ आवेग, आक्रमण आदि को रोकने के लिए किया जानेवाला कार्य। ४. छिपाव। दुराव। ५ विरोध। ६ चोरी, डाका आदि दुष्कृत्य। ७ तिरस्कार। ८ प्रतिबिंब। परछाईं।

प्रतिरोधक—वि० [सं० प्रति√रुध्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रतिरोधिका] प्रतिरोध करनेवाला। रोकने या बाधा डालनेवाला।

पु० चोर, ठग, डाकू आदि जो शान्तिपूर्वक जीवन बिताने में बाधक होते हैं।

प्रतिरोधन—पु० [सं० प्रति√रुध्+ल्युट्—अन] प्रतिरोध करने की क्रिया या भाव।

प्रतिरोधित—भू० कृ० [सं० प्रति√रुध्+णिच्+क्त] १ जो रोका गया हो। २ जिसमें बाधा डाली गई हो।

प्रतिलभ—पु० [सं० प्रति√लभ् (प्राप्ति)+अप्, मुम्] १ बुरी चाल। कुरीति। २. किसी पर लगाया जानेवाला अभियोग, कलंक या दोष। ३ निंदा। बुराई। ४ प्राप्ति। लाभ।

प्रतिलब्धि—स्त्री० [सं० प्रति√लभ्+क्तिन्] प्रतिप्राप्ति। (दे०)

प्रतिलाभ—पु० [सं० प्रति√लभ्+घञ्] १ प्रति-प्राप्ति। (दे०) २. शालक राग का एक भेद।

प्रतिलिपि—स्त्री० [सं० प्रा० स०] मूल लेख, पत्र आदि की ज्यों का त्यों और अक्षरशः तैयार की हुई नकल। (कॉपी)

प्रतिलिपिक—पु० [सं० प्रा० स०] वह जो मूल लेखों, पत्रों आदि की प्रतिलिपियाँ तैयार करने का काम करता हो। (कापीइस्ट)

प्रतिलिपित—भू० कृ० [सं० प्रतिलिपि + णिच् + क्त] (पत्र-लेख आदि) जिसकी प्रतिलिपि तैयार हो चुकी हो।

प्रतिलिप्त—वि० = प्रतिलिपित।

प्रतिलेखक—पु० [सं० प्रति√लिख्+ण्वुल्—अक] प्रतिलेखन का काम करनेवाला लेखक।

प्रतिलेखन—पु० [सं० प्रति√लिख्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिलिखित] १ किसी लिखी हुई चीज की ज्यों की त्यों नकल उतारने या उसी तरह लिखने की क्रिया या भाव। २ भाषण, संकेत-लिपि आदि की टिप्पणियों के आधार पर पढ़ने योग्य लिखित प्रति तैयार करना। (ट्रान्सक्रिप्शन)

प्रतिलोम—वि० [सं० प्रा० स०] १ जो प्राकृतिक या प्रसम क्रम के ठीक विपरीत हो। उलटा। विपरीत। 'अनुलोम' का विपर्याय। जैसे—१, २, ३, ४ आदि का क्रम अनुलोम और ४, ३, २ १ का क्रम प्रतिलोम कहलायेगा। (कानवर्स) २ तुच्छ और नीच।

प्रतिलोमक—पु० [सं० प्रतिलोम + कन्] उलटा या विपरीत क्रम। वि० = प्रतिलोम।

प्रतिलोमज—पु० [सं० प्रतिलोम√जन् (उत्पन्न होना) + ड] १ वह जिसकी उत्पत्ति प्रतिलोम-विवाह (देखें) के फलस्वरूप हुई हो। २ वर्ण-संकर।

प्रतिलोमतः—अव्य० [सं० प्रतिलोम + तस्] प्रतिलोम अर्थात् उलटे क्रम से।

प्रतिलोम विवाह—पु० [सं० कर्म० स०] वह विवाह जिसमें पुरुष छोटे वर्ण का और स्त्री उच्च वर्ण की हो।

विशेष—शास्त्रों में उच्च वर्ण के पुरुष का तो छोटे या नीचे वर्ण की स्त्री के साथ विवाह करना विहित माना गया है, पर इसके विपरीत रूप का विवाह वर्जित है।

प्रतिवक्ता (क्तृ)—पु० [सं० प्रा० स०] १ वह जो किसी की बात का उत्तर दे। २ कानून या विधान की व्याख्या करनेवाला व्यक्ति।

प्रतिवचन—पु० [सं० प्रा० स०] १ उत्तर। जवाब। २ प्रतिध्वनि। गूँज।

प्रतिवर्णिक—वि० [सं० प्रति-वर्ण, प्रा० स०, + ठन्—इक] १ एक ही जैसे रंगवाला। २ समान। सदृश।

प्रतिवर्तन—पु० [सं० प्रति√वृत् (बरतना) + ल्युट्—अन] १ वापस आना या होना। लौटना। २ वापस करना। लौटाना। ३ किसी प्रकार के आचरण या व्यवहार के बदले में किया जानेवाला वैसा ही दूसरा आचरण या व्यवहार। उदा०—दोनों का समुचित प्रतिवर्तन जीवन में शुद्ध विकास हुआ।—प्रसाद। ४ पिछली या पुरानी घटनाओं, तथ्यों आदि को फिर से देखना या विचार करना। अनुदर्शन। सिंहावलोकन। (रिट्रास्पेक्शन)

प्रतिवर्ती (र्तिन्)—वि० [सं० प्रति√वृत् + णिनि] [स्त्री० प्रतिवर्तिनी] १ पीछे की ओर घूमने, मुड़ने या लौटनेवाला। २ वापस होने या लौटनेवाला। ३ जो किसी के प्रति उसके द्वारा किये हुए आचरण के अनुसार व्यवहार करता हो। ४ जिसका संबंध पिछली या बीती हुई घटनाओं या भूत काल से भी हो। (रिट्रास्पेक्टिव) जैसे—वेतन-वृद्धि के इस निश्चय का प्रभाव इस वर्ष के लिए प्रतिवर्ती भी होगा (अर्थात् इस वर्ष के जो महीने बीत चुके हैं, उनके वेतन में भी इसी प्रकार की वृद्धि होगी।)

प्रतिवस्तु—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ वह जो रूप आदि में किसी वस्तु के तुल्य हो। दूसरी सदृश्य वस्तु। २ किसी वस्तु के बदले में दी जानेवाली वस्तु। ३ उपमान।

प्रतिवस्तूपमा—स्त्री० [सं० प्रतिवस्तु-उपमा, ष० त०] साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसे कुछ लोग 'उपमा' अलंकार के अंतर्गत और कुछ लोग उसमें पृथक् तथा स्वतंत्र अलंकार मानते हैं। इस काव्यालंकार के प्रत्येक वाक्यार्थ में उपमा अर्थात् साधर्म्य का उल्लेख होता है अथवा एक ही साधारण धर्म का उपमान-वाक्य में भी और उपमेय-वाक्य में भी समान रूप से कथन होता है। जैसे—मैं तुम्हारे मुख पर अनुरक्त हूँ, चकोर चंद्रमा पर ही अनुरक्त होता है।

विशेष—दृष्टांत और प्रतिवस्तूपमा अलंकारों का अन्तर जानने के लिए। दे० 'दृष्टांत (अलंकार) का विशेष।

प्रतिवहन—पु० [सं० प्रति√वह् (ढोना) + ल्युट्—अन] पीछे की ओर या विपरीत दिशा में ले जाने की क्रिया या भाव।

प्रतिवाक्य—पु० [सं० प्रा० स०] प्रतिवचन। (दे०)

प्रतिवाणी—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ कोई शब्द सुनकर उसके उत्तर में कही जानेवाली उसी तरह की दूसरी बात। २ जवाब का जवाब। प्रत्युत्तर।

प्रतिवाद—पु० [सं० प्रति√वद् (बोलना) + घञ्] १ किसी बात के विरुद्ध कही जानेवाली बात। २ विशेषतः ऐसा कथन या वक्तव्य जो किसी के द्वारा उपस्थित किये हुए तर्क, लगाये गये अभियोग आदि का खण्डन करने तथा उसे मिथ्या सिद्ध करने के लिए दिया जाता है। ३ विवाद। बहस। ४ उत्तर। जवाब।

प्रतिवादक—वि० [सं० प्रति√वद् + णिच् + ण्वुल्—अक] प्रतिवाद करनेवाला। जो प्रतिवाद करे।

प्रतिवादिता—स्त्री० [सं० प्रतिवादिन् + तल्—टाप्] १ प्रतिवाद करने की क्रिया या भाव। २ प्रतिवादी होने की अवस्था, धर्म या भाव।

प्रतिवादी (दिन्)—वि० [सं० प्रति√वद् + णिनि] १ प्रतिवाद-संबंधी। प्रतिवादक। २ (व्यक्ति या वस्तु) जो किसी का प्रतिवाद करता हो अथवा जिससे प्रतिवाद होता हो। ३ तर्क-वितर्क या वाद-विवाद करनेवाला। ४ प्रतिपक्षी।

पु० १ वह जो दूसरों द्वारा लगाये गये अभियोगों आदि का उत्तर दे। २ विधिक क्षेत्र में, वह जिसके संबंध में वादी ने न्यायालय में कोई अभियोग या वाद उपस्थित किया हो और जिसका उत्तर देने के लिए वह न्यायतः बाध्य हो। मुद्दालेह।

प्रतिवाप—पु० [सं० प्रति√वप् (काटना) + घञ्] १ ओषधियों का वह चूर्ण जो किसी काढ़े आदि में डाला जाय। २. चूर्ण। बुकनी। ३ वैद्यक में धातुओं को भस्म करने की क्रिया या भाव।

प्रतिवारण—पु० [सं० प्रति√वृ (रोकना) + णिच् + ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिवारित] १ मना करना। रोकना। २. चेतावनी।

प्रतिवारित—भू० कृ० [सं० प्रति√वृ+णिच्+क्त] १ रोका हुआ। २. जिसे चेतावनी दी गई हो।

प्रतिवार्ता—स्त्री० [सं० प्रा० स०] किसी की बात का दिया जानेवाला उत्तर।

प्रतिवास—पु० [सं० प्रति√वास् (सुगंधित करना)+घञ्] १. सुगंधि। सुवास। खुशबू। २. समीप रहना। पास या बगल में रहना। ३ प्रतिवेश। पड़ोस।

प्रतिवासिता—स्त्री० [सं० प्रतिवासिन्+तल्-टाप्] प्रतिवासी अर्थात् पड़ोसी होने की अवस्था, धर्म या भाव।

प्रतिवासी (सिन्)—पु० [सं० प्रति√वस्+णिनि] प्रतिवास अर्थात् पड़ोस में रहनेवाला व्यक्ति। पड़ोसी।

प्रति-वासुदेव—पु० [सं० प्रा० स०] जैनो के अनुसार विष्णु या वासुदेव के ये नौ विरोधी या शत्रु जो नरक में गये थे—अश्वग्रीव, तारक, मोदक, मधु, निशुंभ, बलि, प्रह्लाद, रावण और जरासंध।

प्रतिविधान—पुं० [सं० प्रति-वि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १ प्रतिकार। २ धर्म-शास्त्र में वह कृत्य जो किसी अन्य कृत्य के बदले में किया जाता है।

प्रतिविधि—स्त्री० [सं० प्रति-वि√धा+कि] १ प्रतिकार। २ ऐसा काम या बात जिससे किसी प्रकार की क्षति, दोष आदि का प्रतिमार्जन हो। (रेमेडी)

प्रतिविधिक—वि० [सं० प्रतिविधि] प्रतिविधि (उपचार या प्रतिकार) के रूप में किया हुआ अथवा होनेवाला। (रेमीडिएल)

प्रतिविष—पु० [सं० ब० स०] विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला पदार्थ। वि०विष का मारक।

प्रतिवीर्य—पु० [सं० ब० स०] वह जिसमें प्रतिरोध करने का यथेष्ट बल या शक्ति हो।

प्रतिवेदन—पु० [सं० प्रति√विद् (जानना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिवेदित] १ प्रार्थना। २ किसी कार्य, घटना, तथ्य, योजना आदि के संबंध में छान-बीन, पूछ-ताछ आदि करने के उपरांत तैयार किया हुआ विवरण जो किसी बड़े अधिकारी के पास भेजा जाता है। (रिपोर्ट)

प्रतिवेदित—भू० कृ० [सं० प्रति√विद्+णिच्+क्त] १ प्रार्थित। २ जिसके संबंध में प्रतिवेदन तैयार करके बड़े अधिकारी के पास भेजा जा चुका हो। (रिपोर्टेड)

प्रतिवेदी (दिन्)—पु० [सं० प्रति√विद्+णिच्+णिनि] १. वह जो प्रतिवेदन तैयार करता हो। २. वह जो समाचार-पत्रों में छपने के लिए समाचार लिखकर भेजता हो। (रिपोर्टर)

वि० प्रतिवेदन-संबंधी।

प्रतिवेश—पुं० [सं० प्रति√विश्+घञ्] १. अपने घर के अगल-बगल या आस-पास का स्थान। पड़ोस। २. घर के आस-पास या सामने के मकान। पड़ोस। ३. किसी के अगल-बगल या आस-पास में रहने की अवस्था या भाव।

प्रतिवेशी (शिन्)—पुं० [सं० प्रतिवेश+इनि] प्रतिवेश अर्थात् पड़ोस में रहनेवाला व्यक्ति। पड़ोसी।

प्रतिवेश्म—पु० [सं० प्रा० स०] पड़ोस या पड़ोसी का घर।

प्रतिवेश्य—पु० [सं० प्रतिवेश+यत्] पड़ोसी।

प्रतिवैर—पु० [सं० प्रा० स०] १ वैर के बदले में किया जानेवाला वैर। २ वैर का प्रतिकार।

प्रतिव्यूह—पु० [सं० प्रा० स०] शत्रु के विरुद्ध की जानेवाली व्यूह-रचना या मोर्चेबंदी।

प्रतिशंका—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ किसी शंका के उत्तर में की जाने-वाली दूसरी शंका। २ ऐसी शंका जो बराबर बनी रहे।

प्रतिशत—अव्य० [सं० अव्य० स०] हर सैकड़े के हिसाब में। हर सौ पर। फी सदी। (पर सेन्ट)

प्रतिशतक—पु० [सं०] वह अनुपात जो प्रति सैकड़े के हिसाब से ठीक किया गया हो। सौ के हिसाब से लगाया जानेवाला लेखा या बैठाया जानेवाला पड़ता। (परसेन्टेज)

प्रतिशब्द—पु० [सं० प्रा० स०] १ पर्याय। २. प्रतिध्वनि। गूँज।

प्रतिशयन—पु० [सं० प्रति√शी (सोना)+ल्युट्—अन्] किसी मनोरथ की सिद्धि के लिए किसी देवता के समक्ष निराहार पड़े रहने की अवस्था या भाव। धरना।

प्रतिशयित—भू० कृ० [सं० प्रति√शी (सोना)+क्त] जो प्रतिशयन कर रहा हो या धरना दे रहा हो।

प्रतिशासन—पु० [सं० प्रति√शास् (शासन करना)+ल्युट्—अन] १ किसी को बुलाकर किसी काम के लिए कही भेजना। २. ऐसा शासन जिसमे शासक कोई वैरी या शत्रु हो।

प्रतिशिष्य—पु० [सं० अव्या० स०] शिष्य का शिष्य।

प्रतिशीत—वि० [सं० प्रति√श्या (गति)+क्त] १. पिघला हुआ। २ तरल। चूता हुआ।

प्रतिशोध—पु० [सं० प्रा० स०] किसी के द्वारा कोई अनिष्ट होने पर उसके बदले में उसके साथ किया जानेवाला वैसा ही अनिष्ट व्यवहार। बदला। प्रतिकार। (रिवेंज)

प्रतिश्या—स्त्री० [सं० प्रति√श्यै+अङ्—टाप्] प्रतिश्याय।

प्रतिश्यान—पु० [सं० प्रति√श्यै+अन]=प्रतिश्याय।

प्रतिश्याय—पु० [सं० प्रति√श्यै+घञ्] १. जुकाम या सर्दी नामक रोग। २. पीनस नामक रोग।

प्रतिश्रम—पु० [सं० प्रति√श्रम् (आयास करना)+घञ्) परिश्रम। मेहनत।

प्रतिश्रय—पु० [सं० प्रति√श्रि+अच्] १ आश्रम। २ सभा। ३ जगह। स्थान। ४ निवास-स्थान। ५ यज्ञशाला।

प्रतिश्रव—पु० [सं० प्रति√श्रु (सुनना)+अप्] १ प्रतिज्ञा। २ प्रतिध्वनि। गूँज।

प्रतिश्रवण—पुं० [सं० प्रति√श्रु+ल्युट्—अन] १. अच्छी तरह से सुनना। २. प्रतिज्ञा करना।

प्रतिश्रित—पु० [सं० प्रति√श्रि+क्त] आश्रय-स्थान।

प्रतिश्रुत्—स्त्री० [सं० प्रति√श्रु+क्विप्, तुक्] प्रतिशब्द। प्रतिध्वनि।

प्रतिश्रुत—भू० कृ० [सं० प्रति√श्रु+क्त] १. अच्छी तरह सुना हुआ। २. माना या स्वीकृत किया हुआ। ३. (विषय) जिसके सम्बन्ध में कोई प्रतिज्ञा की गई हो या वचन दिया गया हो। ४ (व्यक्ति) जिसने किसी बात की कोई प्रतिज्ञा की हो अथवा किसी बात की जिम्मेदारी ली हो।

प्रतिश्रुति—स्त्री० [सं० प्रति√श्रु+क्तिन्] १ प्रतिध्वनि। २ किसी बात के लिए दिया जानेवाला वचन। (प्रामिस) ३ इस बात की जिम्मेदारी कि कोई चीज या बात ऐसी ही है इससे भिन्न, विपरीत या अन्यथा नही है। (गारन्टी)

प्रतिश्रोता (तृ)—वि० पु० [सं० प्रति√श्रु+तृच्] १ अनुमति देने-वाला। २ मजूर करनेवाला। ३ किसी बात या विषय की प्रतिश्रुति करनेवाला।

प्रतिषिद्ध—भू० कृ० [सं० प्रति√सिध् (गति)+क्त] (कार्य या बात) जिसे करने से किसी को रोका गया हो।

प्रतिषेद्धा (द्धृ)—पु० [प्रति√सिध्+तृच्] -प्रतिषेधक।

प्रतिषेध—पु० [सं० प्रति√सिध्+घञ्] १ निषेध। मनाही। २ खडन। ३ साहित्य मे एक अर्थालंकार जिसमे चमत्कार-पूर्ण ढग से प्रसिद्ध अर्थ का निषेध किया जाता है। उदा०—मोहन कर मुरली नही है कछू बडी बलाय। यहाँ मुरली का निषेध किया गया है।

प्रतिषेधक—वि० [सं० प्रति√सिध्+णिच्+ण्वुल्—अक] (आज्ञा, कथन आदि) जिसमे या जिसके द्वारा किसी प्रकार का प्रतिषेध हो। (प्राहिबिटरी)

पु० वह जो प्रतिषेध करे। (प्राहिबिटर)

प्रतिषेधन—पु० [सं० प्रति√सिध्+णिच्+ल्युट्—अन] प्रतिषेध करने की क्रिया या भाव।

प्रतिषेध-लेख—पु० [ष० त०] आज-कल विधिक क्षेत्र मे किसी उच्च न्यायालय की वह लिखित आज्ञा जो किसी को अन्तरिम काल मे या अन्तिम निर्णय होने तक कोई काम करने से रोकने के लिए दी जाती है। (रिट आफ प्रोहिबिशन)

प्रतिषेधाधिकार—पु० [प्रतिषेध-अधिकार, ष० त०] किसी शासक, ससद आदि को प्राप्त वह सवैधानिक अधिकार जिससे वह शासन के किसी अन्य अग की आज्ञा, निर्णय, प्रस्ताव आदि अमान्य या रद्द कर सकता है। निषेधाधिकार। (वीटो)

प्रतिषेधोपमा—स्त्री० [सं० प्रतिषेध-उपमा, ष० त०] उपमालकार का एक भेद जिसमे कुछ प्रतिषेधक तत्त्व होता है।

प्रतिष्टम्भ—पु० [सं० प्रति√स्तम्भ् (रोकना)+घञ्] [भू० कृ० प्रति-ष्टब्ध] १ स्तब्ध या निश्चेष्ट होने या करने की क्रिया या भाव। २ बाधा।

प्रतिष्ठ—वि० [सं० प्रति√स्था (ठहरना)+क] प्रसिद्ध। प्रख्यात। मशहूर।

प्रतिष्ठा—स्त्री० [सं० प्रति√स्था+अङ्+टाप्] १ किसी चीज का कही अच्छी तरह रखा या स्थापित किया जाना। स्थापन। जैसे—मन्दिर मे मूर्ति की प्रतिष्ठा, देव-मूर्ति मे की जानेवाली प्राण-प्रतिष्ठा। २. ठहराव। स्थिति। ३ जगह। स्थान। ४ मान-मर्यादा। इज्जत। ५ आदर। सत्कार। ६ प्रख्याति। प्रसिद्धि। ७ कीर्ति। यश। ८ यश की प्राप्ति। ९ देह। शरीर। १० पृथ्वी। ११ व्रत का उद्यापन। १२ चार वर्णों के वृत्तो की सज्ञा। १३. एक प्रकार का छन्द।

प्रतिष्ठान—पु० [सं० प्रति√स्था+ल्युट्—अन] १ प्रतिष्ठित या स्थापित करने की क्रिया या भाव। बैठाना। स्थापन। २. मन्दिर आदि मे देव-मूर्ति की स्थापना। ३. उपाधि। पदवी। ४. जड़। मूल। ५ जगह। स्थान। ६ व्रत आदि की समाप्ति पर किया जाने-वाला कृत्य। ७. दे० 'प्रतिष्ठानपुर'। ८. दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जिसका आधुनिक नाम पैठण है।

प्रतिष्ठानपुर—पु० [सं० ष० त०] १ गगा और यमुना के सगम पर बसी हुई झूसी नामक बस्ती का पुराना नाम। २ गोदावरी के तट पर महाराष्ट्र देश का एक प्राचीन नगर जहाँ राजा शालिवाहन की राज-धानी थी।

प्रतिष्ठापन—पु० [सं० प्रति+स्था√णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] प्रति-ष्ठित अर्थात् स्थापित करने की क्रिया या भाव।

प्रतिष्ठापयिता (तृ)—पु० [सं०, प्रति√स्था+णिच्, पुक्,+तृच्] प्रति-ष्ठापन करनेवाला।

प्रतिष्ठापित—भू० कृ० [सं० प्रति+स्था√णिच्, पुक्+क्त] जिसका प्रतिष्ठापन किया गया हो या हुआ हो।

प्रतिष्ठित—भू० कृ० [सं० प्रति√स्था+क्त] १ जिसकी प्रतिष्ठा या इज्जत की गई हो या हुई हो। आदर-प्राप्त। २ जिसकी स्थापना की गई हो। स्थापित। जैसे—मन्दिर मे मूर्ति प्रतिष्ठित करना। ३. जो किसी स्थान पर बैठा या बैठाया गया हो। जैसे—आसन पर प्रतिष्ठित।

पु० विष्णु।

प्रतिष्ठिति—स्त्री० [सं० प्रति√स्था+क्तिन्] स्थापित करने या होने की क्रिया या भाव। प्रतिष्ठान।

प्रतिसख्या—स्त्री० [सं० प्रति-सम्√ख्या (कहना)+अङ्—टाप्] १ चेतना। २ साख्य के अनुसार ज्ञान की एक अवस्था या रूप।

प्रतिसचर—पु० [सं० प्रति-सम्√चर् (गति)+अप्] पुराणानुसार प्रलय का एक भेद।

प्रतिसदेश—पु० [सं० प्रा० स०] सदेश के जवाब मे भेजा हुआ सदेश।

प्रतिसंधान—पु० -अनुसधान।

प्रतिसधि—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ वियोग। विछोह। २ अनु-सधान। खोज। तलाश। ३ अन्त। समाप्ति। ४ दो युगो का सधि-काल। ५ भाग्य की प्रतिकूलता। ६ पुनर्जन्म।

प्रतिसविद्—स्त्री० [सं० प्रा० स०] किसी विषय का सागोपाग ज्ञान।

प्रतिसवेदक—वि० [सं० प्रति-सम्√विद् (जानना)+णिच्+ण्वुल्—अक] जिससे किसी के सबध मे विस्तृत जानकारी प्राप्त होती हो।

प्रतिसस्कार—पु० [सं०] [भू० कृ० प्रतिसस्कृत] १ फिर से किया जानेवाला सस्कार। २. मरम्मत।

प्रतिसहरण—पु० [सं०] किसी की दी हुई आज्ञा या किये हुए कार्य या निश्चय को नई आज्ञा या निर्णय से रद्द अथवा नही के समान करना। रद्द करना। (रिवोकेशन)

प्रतिसहार—पु० [सं० प्रति-सम्√हृ+घञ्] १. समेट लेना। २. त्यागना। ३ किसी वस्तु से दूर रहना। ४ निरर्थक या रद्द करना। मिटाना।

प्रतिसम—वि० [सं० प्रा० स०] १. जो समान हो। २. जो बराबरी या मुकाबले का हो।

प्रतिसमाधान—पु० [सं० प्रति-सम्-आ√धा+ल्युट्-अन] १. प्रतिकार। बदला। २ इलाज।

प्रतिसर—पुं० [सं० प्रति√सृ (गति)+अच्] १ सेवक। नौकर। २. सेना का पिछला भाग। ३. विवाह के समय पहना जानेवाला कंगन। ४. कंगन नाम का गहना। ५ जादू-टोना करने का मंत्र। ६. घाव का भराव। ७ प्रातःकाल। सवेरा। ८ माला। हार।

प्रतिसरण—पु० [सं० प्रति√सृ+ल्युट्—अन] किसी के सहारे उठंगने की क्रिया।

प्रतिसर्ग—पु० [सं० प्रा० स०] १ पुराणानुसार वे सब सृष्टियाँ जो ब्रह्मा के मानस-पुत्रो रुद्र, विराट पुरुष, मनु, यक्ष, मारीचि आदि ने उत्पन्न की थी। २ प्रलय। ३ पुराणो का वह अंश जिसमें सृष्टि के प्रलय का वर्णन है।

प्रतिसव्य—वि०[सं०प्रा०स०] १ विरुद्ध आचरण करनेवाला। विरुद्धाचारी। २ प्रतिकूल। विपरीत।

प्रतिसारक—वि० [सं० प्रति√सृ+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रतिसरण करनेवाला।

प्रतिसारण—पु० [सं०प्रति√सृ+णिच्+ल्युट्—अन] १ अलग या दूर करना। हटाना। २ मसूड़े साफ करने के लिए किया जानेवाला मंजन। ३ किसी अंग पर कोई दवा या मरहम लगाकर मलना। ४ वैद्यक मे एक प्राचीन प्रक्रिया जिसमे किसी रुग्ण अंग की चिकित्सा के लिए उसे जलाने के लिए घी या तेल से दागा जाता था। ५ आजकल, घावो और फोड़े-फुन्सियो को धोकर और उन पर दवा लगाकर पट्टी आदि बाँधने की क्रिया। मरहम-पट्टी। (ड्रेसिंग)

प्रतिसारण-शाला—स्त्री० [सं० ष० त०] वह स्थान या कमरा जहाँ रोगियो के घावो आदि का प्रतिसारण या मरहम-पट्टी होती है। (ड्रेसिंग रूम)

प्रतिसारणीय—वि० [सं० प्रति√सृ+णिच+अनीयर्] १ हटाकर दूसरे स्थान पर ले जाने के योग्य। प्रतिसारण के योग्य। २ (घाव) जिस पर मरहम-पट्टी की जाने को हो या की जानी चाहिए।
पु० सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की क्षार-पाक-विधि जो कुष्ठ, भकदर, दाह, कुष्ठ-व्रण, झाँई, मुंहासे और बवासीर आदि मे अधिक उपयोगी होती है।

प्रतिसारी (रिन्)—वि० [सं० प्रति√सृ (गति)+णिनि] उलटी दिशा में जानेवाला।

प्रतिसूर्य—पु० [सं० प्रा० स०] १ सूर्य का मंडल या घेरा। २. गिरगिट। ३. आकाश मे होनेवाला एक प्रकार का उत्पात जिसमे सूर्य के सामने एक और सूर्य निकलता हुआ दिखाई देता है।

प्रतिसृष्ट—भू० कृ० [सं० प्रति√सृज् (भेजना, त्यागना)+क्त] १ भेजा हुआ। प्रेषित। २. जिसका अस्वीकरण या निराकरण हुआ या किया गया हो। ३. मस्त। मतवाला।

प्रतिसेना—स्त्री० [सं० प्रा० स०] विपक्षी की सेना।

प्रतिस्त्री—स्त्री० [सं० प्रा० स०] पराई स्त्री।

प्रतिस्थापन—पु० [सं० प्रति√स्था+णिच्, पुक्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिस्थापित] १ किसी चीज के न रह जाने, नष्ट हो जाने अथवा हट जाने पर उसके स्थान पर वैसी ही दूसरी चीज रखना। २. किसी व्यक्ति के हट जाने पर उसका काम चलाने के लिए उसके स्थान पर दूसरा व्यक्ति रखना। (सब्स्टिट्यूशन)

प्रतिस्थापित—भू० कृ० [सं० प्रति√स्था+णिच्, पुक्+क्त] काम चलाने के लिए किसी के स्थान पर बैठाया या रखा हुआ। (सब्स्टिटयूट)

प्रतिस्पर्धा—स्त्री० [सं० प्रति√स्पर्ध् (होड लगाना)+अ—टाप्] वह स्थिति जिसमे दो या अधिक व्यक्ति एक दूसरे से किसी काम मे आगे निकलने के लिए प्रयत्नशील तथा कटिबद्ध होते हैं। (राइवल्री)

प्रतिस्पर्धी (र्धिन्)—पु० [प्रति+स्पर्ध√णिनि] वह जो किसी से प्रतिस्पर्धा करता हो। प्रतिद्वंद्वी। (राइवल)

प्रतिस्राव—पु० [सं० प्रति√स्रु (बहना)+घञ्] १ एक रोग जिसमे नाक में से पीला या सफेद रंग का बहुत गाढ़ा कफ निकलता है। २ पीले या सफेद रंग का उक्त कफ।

प्रतिस्वन—पु० [सं० प्रा० स०] प्रतिशब्द। ध्वनि।

प्रतिस्वर—पु० [सं० प्रा० स०] प्रतिशब्द।

प्रतिहंता (तृ)—वि० [सं० प्रति√हन् (हिंसा)+तृच्] १ रोकनेवाला। बाधक। २ मुकाबले मे खड़ा होनेवाला।

प्रतिहत—भू० कृ० [सं० प्रति√हन्+क्त] १ जिसे कोई ठोकर या आघात लगा हो। २ जिसके सामने कोई बाधा या विघ्न हो। ३ हटाया हुआ। ४ फेका हुआ। ५ गिरा हुआ। ६ निराश।

प्रतिहति—स्त्री० [सं० प्रति√हन्+क्तिन्]=प्रतिहनन।

प्रतिहनन—पु० [सं० प्रति√हन्+ल्युट्—अन] १ किसी हनन करनेवाले को मार डालना। २ आघात के बदले मे आघात करना। प्रतिघात।

प्रतिहरण—पु० [प्रति√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १ विनाश। बरबादी। २ निवारण।

प्रतिहर्ता (र्तृ)—वि० [सं० प्रति√हृ+तृच्] प्रतिहरण या विनाश करनेवाला।
पु० यज्ञ के १६ ऋत्विजो मे से बारहवाँ ऋत्विज।

प्रतिहस्त—पु० [सं० ब० स०] १ वह जो किसी के न होने की दशा मे उसके स्थान पर हो या रखा गया हो। २ प्रतिनिधि।

प्रतिहस्ताक्षरण—पु० [सं० प्रतिहस्ताक्षर+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिहस्ताक्षरित] किसी के हस्ताक्षर का अनुमोदन या समर्थन करने के लिए किसी बड़े अधिकारी का भी उसके साथ हस्ताक्षर करना। (काउन्टर-साइनिंग)

प्रतिहस्ताक्षरित—भू० कृ० [सं० प्रतिहस्ताक्षर, प्रा० स०,+इतच्] जिस पर किसी के हस्ताक्षर को साक्षीकृत करने के लिए किसी बड़े अधिकारी ने हस्ताक्षर किये हो। (काउन्टरसाइन्ड)

प्रतिहार—पु०[सं० प्रति√हृ+अण्] [भाव० प्रतिहारत्व, स्त्री० प्रतिहारी] १. प्राचीन काल का एक राजकर्मचारी जो सदा राजाओ के पास रहा करता था और राजाओ के संदेश लोगो तक पहुँचाता था। २ द्वारपाल। दरबान। ३ चोबदार। ४. ऐंद्रजालिक। जादूगर। ५ सामवेद गान का एक अंग। ६ दो दलो या व्यक्तियों मे होनेवाली वह सन्धि या समझौता जिसमे यह निश्चय होता है कि पहले हम तुम्हारा अमुक काम कर देते हैं; पर इसके उपरान्त तुम्हे भी हमारा अमुक काम करना पड़ेगा।

प्रतिहारक—पु०[सं० प्रति√हृ + ण्वुल्—अक] १ इंद्रजाल दिखानेवाला। बाजीगर। २. वह जो प्रतिहार नामक सामक गान करता हो।

प्रतिहारण—पु०[प्रति√हृ + णिच् + ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रतिहारित] १. द्वार। दरवाजा। २ द्वार मे प्रवेश करने की अनुमति। ३ द्वार पर पहुँचकर किया जानेवाला स्वागत।

प्रतिहारत्व—पु०[सं० प्रतिहार + त्व] ड्योढीदारी। प्रतिहार या द्वारपाल का काम या पद।

प्रतिहारित—भू० कृ० [सं० प्रति√हृ + णिच् + क्त] जिसका स्वागत किया गया हो।

प्रतिहारी (रिन्)—पु० [सं० प्रति√हृ + णिनि] [स्त्री० प्रतिहारिणी] द्वारपाल। दरबान।

†स्त्री० वह स्त्री जो प्राचीनकाल मे राजाओ के यहाँ प्रतिहार का काम करती थी।

प्रतिहार्य—पु०[सं० प्रति√हृ+ण्यत्] इंद्रजाल। बाजीगरी।

प्रतिहिंसा—स्त्री०[सं० प्रा० स०] हिंसा के बदले मे की जानेवाली हिंसा।

प्रतिहित—भू० कृ०[सं० प्रति√धा (रहना) + क्त, हि-आदेश] १ रखा हुआ। २ जमाया या स्थापित किया हुआ।

प्रतीक—वि०[सं० प्रति + कन्, नि० दीर्घ] १ जो किसी ओर अग्रसर या प्रवृत्त किया गया हो। किसी तरफ बढाया हुआ। २ उलटा या विपरीत रूप मे लाया हुआ। ३ जो अनुकूल न हो। प्रतिकूल। विरुद्ध। ४ जो उलटे क्रम से चल रहा हो। प्रतिलोम। विलोम।

पु० १ अग। अवयव। २ अश। भाग। ३ मुख। मुँह। ४ आगे या सामने का भाग। सामना। ५ आकृति। रूप। सूरत। ६ किसी वस्तु के अनुरूप बनाई हुई वैसी ही दूसरी वस्तु। प्रतिरूप। ७ प्रतिमा। मूर्ति। ८ वह गोचर या दृश्य तथ्य या वस्तु जो किसी अगोचर, अदृश्य या अप्रस्तुत तथ्य या वस्तु के ठीक या बहुत-कुछ अनुरूप होने के कारण उसके गुण-रूप का परिचय कराने के लिए उसका प्रतिनिधित्व करती हो। (सिम्बल) जैसे—देव-मूर्ति ईश्वर का प्रतीक है। ९ साहित्य में वह बात या वस्तु जो अपने आकस्मिक सादृश्य, अभिसमय अथवा तर्क-सगत सबध के आधार पर किसी दूसरी बात या वस्तु या स्थान ग्रहण करती हो। (सिम्बल) १० कविता या उसके किसी चरण अथवा किसी वाक्य का वह पहला शब्द जिसका उपयोग किसी को उस कविता, चरण या वाक्य का स्मरण कराने के लिए किया जाता है। ११ वसु के पुत्र और ओघवान् के पिता का नाम। १२ मरु के पुत्र का नाम। १३. परवल।

प्रतीक-कथा—स्त्री०[सं०] कथा का वह प्रकार या भेद जिसमे गुण प्रवृत्ति, भाव आदि अमूर्त तत्त्वो को पात्र मानकर और उन्हे शरीरधारी मानव का रूप देकर उनसे आचरण या व्यवहार कराये जाते हैं। (एलिगोरी) जैसे 'प्रसाद' कृत 'कामना' और 'एक घूँट'।

प्रतीक-भाषा—स्त्री०[सं० ष० त०] ऐसी भाषा जिसमे कुछ शब्द दूसरी सज्ञाओ के प्रतीक रूप मे (उनके स्थान पर) प्रयुक्त होते हैं। जैसे—हठ-योग की प्रतीक भाषा मे 'सखी' का अर्थ 'सुरति' होता है।

प्रतीक-वाद—पु०[सं० ष० त०] आज-कल कला और साहित्य के क्षेत्र में अभिव्यजना की वह विशिष्ट प्रणाली अथवा उस प्रणाली मे सबध रखनेवाला मूल तथा स्थूल सिद्धान्त जिसके अनुसार प्रतीको के आधार पर भावो, वस्तुओ, विषयो आदि का बोध कराया जाता है। (सिम्बलिज्म)

प्रतीक-वादी (दिन्)—वि० [सं० प्रतीक-वाद + इनि] प्रतीक-वाद सम्बन्धी। प्रतीक-वाद का।

पु० प्रतीकवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक।

प्रतीकात्मक—वि० [सं० प्रतीक-आत्मन्, ब० स०, कप्] १ जो प्रतीक या प्रतीको मे सबद्ध हो। २ (साहित्यिक रचना) जिसमे प्रतीको की सहायता से भावो, वस्तुओ, विषयो आदि का बोध कराया गया हो।

प्रतीकानुक्रमणिका—स्त्री० [सं० प्रतीक-अनुक्रमणिका, ष० त०] किसी व्यक्ति, ग्रन्थ या काव्य-सग्रह मे आये हुए छन्दो या पद्यो के प्रतीकों की अक्षर-क्रम से लगी हुई सूची।

प्रतीकार—पु०[सं० प्रति√कृ + घञ्, दीर्घ] बदला। प्रतिकार।

प्रतीकार्य—वि० [सं० प्रति√कृ + ण्यत्, दीर्घ] जिसका प्रतिकार हो सकता हो या किया जाने को हो।

प्रतीकोपासना—स्त्री०[सं० प्रतीक-उपासना, ष० त०] प्रतीको के आधार पर ईश्वर या ब्रह्म की की जानेवाली उपासना।

प्रतीक्षक—वि०[सं० प्रति√ईक्ष् (देखना) + ण्वुल्—अक] १ प्रतीक्षा करने या आसरा देखने वाला। किसी का रास्ता देखने या बाट जोहनेवाला। २ पूजा करनेवाला। पूजक।

प्रतीक्षण—पु०[सं०] [भू० कृ० प्रतीक्षित] प्रतीक्षा करने की क्रिया या भाव। बाट जोहना। आसरा देखना।

प्रतीक्षा—स्त्री०[सं० प्रति√ईक्ष् + अ + टाप्] १. वह स्थिति जिसमे कोई उत्सुकतापूर्वक किसी आनेवाले व्यक्ति या वस्तु की बाट जोहता या रास्ता देख रहा होता है। इतजार। इतजारी। जैसे—वे डाकिये की प्रतीक्षा मे हैं। २ किसी का भरण-पोषण करना। ३ पूजा।

प्रतीक्षागृह—पु०- प्रतीक्षालय।

प्रतीक्षालय—पु० [सं० प्रतीक्षा-आलय, ष० त०] १ वह स्थान जहाँ पर यात्री लोग देर से आनेवाले यानो की प्रतीक्षा मे ठहरते या रुकते हैं। २ किसी अधिकारी, बड़े आदमी आदि मे मिलनेवालो के लिए बैठकर, प्रतीक्षा करने का कमरा या घर। (वेटिंग रूम)

प्रतीक्षित—भू० कृ०[सं० प्रति√ईक्ष् + क्त] १ जिसकी प्रतीक्षा की गई हो अथवा की जा रही हो। २ जिसका यथेष्ट ध्यान रखा गया हो। ३ पूजित।

प्रतीक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० प्रति √ईक्ष् + णिनि] =प्रतीक्षक।

प्रतीक्ष्य—वि०[सं० प्रति√ईक्ष् + ण्यत्] जिसकी प्रतीक्षा की जाय या की जा सके।

प्रतीची—स्त्री०[सं० प्रत्यच् + ङीप्] पश्चिम (दिशा)।

प्रतीचीन—वि०[सं० प्रत्यच् + ख—ईन] १ पश्चिम सबधी। पश्चिम का। २ जो अभी या भविष्य मे होने को हो। ३ जिसने मुँह फेरकर दूसरी ओर कर लिया हो। पराङ्मुख। ४ पीछे से आनेवाला।

प्रतीचीश—पु०[सं० प्रतीची-ईश, ष० त०] १ पश्चिम दिशा के स्वामी, वरुण। २ समुद्र। सागर।

प्रतीच्छक—पु०[सं० प्रति-इच्छा, ब० स०, कप्] ग्राहक। (मनु०)

†वि०=प्रतीक्षक।

प्रतीच्य—वि०[सं० प्रतीची + यत्] १. पश्चिम-सबंधी। २. पश्चिम मे होने या रहनेवाला।

प्रतीच्या—स्त्री०[सं० प्रतीच्य+टाप्] पुलस्त्य की माता।

प्रतीत—वि०[सं० प्रति√इ (गति)+क्त] [भाव० प्रतीति] अटकल, अनुमान, विश्वास आदि के आधार पर जान पड़नेवाला या जान पड़ा हुआ। जैसे—ऐसा प्रतीत होता था कि वह अभी तक हमारे अनुकूल ही होगा। २. प्रसिद्ध। विख्यात। ३ प्रसन्न और सन्तुष्ट।

प्रतीति—स्त्री०[सं० प्रति√इ+क्तिन्] १. प्रतीत होने की क्रिया या भाव। २. जानकारी। ज्ञान। ३ किसी बात या विषय के सम्बन्ध मे होनेवाला दृढ़ निश्चय या विश्वास। यकीन। ४ प्रसन्नता। हर्ष। ५ आदर। सम्मान।

प्रतीत्य—पु०[सं० प्रति√इ+क्यप्] सात्वना।

प्रतीत्य-समुत्पाद—पु०[सं० ष० त०] बौद्धो के अनुसार अविद्या, संस्कार विज्ञान, नामरूप, षडायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भय, जाति और दु.ख ये बारहों पदार्थ जो उत्तरोत्तर सबद्ध है और क्रमात् एक दूसरे से उत्पन्न होते हैं।

प्रतीनाह—पु०[सं० प्रति√नह् (बाँधना)+घञ्] झंडा।

प्रतीप—वि०[सं० प्रति-आप्, ब० स०,+अ, ईत्व] १ क्रम के विचार से उलटा। विलोम। २ प्रतिकूल। विरुद्ध। ३ पिछड़ा हुआ। ४ पीछे की ओर चलने या होने वाला। जैसे—प्रतीप गति। ५ रुचि के विरुद्ध। अप्रिय। ६. हठी। ७ बाधक। ८. विरोधी। ९ उद्दड। उद्धत।

क्रि० वि० विपरीत अवस्था मे। उलटे। उदा०—फाड सुनहली साड़ी उसकी तू हँसती क्यो अरी प्रतीप।—प्रसाद।

पु० १ एक प्रसिद्ध राजा जो शान्तनु के पिता और भीष्म के प्रपिता थे। २ साहित्य मे एक प्रसिद्ध अलंकार जिसमे प्रसिद्ध उपमान का अपकर्ष दिखलाने के लिए उसे उपमेय रूप मे वर्णित किया जाता और इस प्रकार वर्णनीय उपमेय का निरादर किया जाता है। इसके पाँच भेद माने गये है जो प्रथम, द्वितीय आदि विशेषणो से युक्त होते है।

प्रतीपक—वि०[सं० प्रतीप√कन्] विरुद्ध। प्रतिकूल।

प्रतीप-गमन—पु०[सं० कर्म० स०] पीछे की ओर जाना।

प्रतीप-गामी (मिन्)—वि० [सं० प्रतीप√गम्+णिनि] पीछे की ओर जानेवाला।

प्रतीप-दर्शनी—स्त्री० [सं० प्रतीप√दृश् (देखना)+णिनि] औरत। स्त्री।

प्रतीपायन—पु०[सं०] १ लौटकर फिर पहले स्थान पर आना। प्रतिगमन। २ मनोविज्ञान मे, वह स्थिति जिसमें किसी अप्रिय या कष्टदायक मनोदशा से छूटकर मन फिर अपनी पहलेवाली स्वाभाविक स्थिति मे आता है। (रिग्रेशन)

प्रतीपी (पिन्)—वि० [सं० प्रतीप+इनि] प्रतिकूल। विरुद्ध।

प्रतीपोक्ति—स्त्री०[सं० प्रतीप-उक्ति, कर्म० स०] किसी के कथन के विरुद्ध कही जानेवाली बात। खंडन।

प्रतीयमान—वि० [सं० प्रति√इ (गति)+शानच्] १. जिसकी प्रतीति हो रही हो। २. जो ध्यान या समझ मे आ रहा हो। ३. (रूप) जो ऊपर से दिखाई देता या प्रतीत होता हो। ४. (रूप) जो वास्तविक से भिन्न होने पर भी देखने में बहुत-कुछ वास्तविक-सा जान पड़ता हो। (एपेरेण्ट) ५. (अर्थ) जो ध्वनि, व्यंग्य आदि के रूप मे निकलता हो। ६. अभिप्राय या आशय के रूप मे जान पडनेवाला। उद्देश्य के रूप मे जान पडनेवाला। (पर्पटेड)

प्रतीयमानतः—अव्य० [सं० प्रतीयमान+तस्] (ज्ञान या प्रतीति के सबंध मे) प्रतीयमान के रूप मे। ऊपर या बाहर से देखने पर। (एपेरेन्टली)

प्रतीर—पु० [सं० प्र√तीर् (पार जाना)+क] किनारा। तट। तीर।

प्रतीवाप—पु०[सं० प्रति√वप् (बोना)+घञ्, दीर्घ] १ वह दवा जो पीने के लिए काढ़े आदि मे मिलाई जाय। २ दैवी उत्पात या उपद्रव। ३ फेंकना। क्षेपण। ४ किसी चीज का रूप बदलने के लिए उसे किसी दूसरी चीज मे मिलाना।

प्रतीवेश—पु०[सं० प्रति√विश् (घुसना)+घञ्, दीर्घ]=प्रतिवेश।

प्रतीवेशी (शिन्)—पु०[सं० प्रति√विश्+णिनि, दीर्घ] =प्रतिवेशी।

प्रतीहार—पु०[सं० प्रति√हृ (हरण करना)+अण्, दीर्घ]=प्रतिहार।

प्रतीहारी (रिन्)—पु०[सं० प्रति√हृ+णिनि, दीर्घ] =प्रतिहारी।

प्रतुद—पु०[सं० प्र√तुद् (व्यथित होना)+क] चोंच से तोडकर अपना भक्ष्य खानेवाले पक्षियो की सज्ञा।

प्रतूर्ण—वि०[सं० प्र√त्वर् (वेग)+क्त] वेगवान।

प्रतूलिका—स्त्री०[सं० प्र-तूल, ब० स०, कप्] तोशक। गद्दा।

प्रतोद—पु०[सं० प्र√तुद्+घञ्] १ पशु हाँकने की छडी। औगी। पैना। २ कोडा। चाबुक। ३ एक प्रकार का साम गान।

प्रतोली—स्त्री०[सं० प्र√तुल् (तोलना)+अच्+ङीष्] १ वह चौडा रास्ता जो नगर के मध्य से होकर निकला हो। चौडी सडक। राजमार्ग। २ गली। बीथी। ३ वह दुर्ग या द्वार जो नगर की ओर हो। ४ नगर के प्राकार मे बना हुआ फाटक। ५ फोडो पर बाँधी जानेवाली एक विशिष्ट प्रकार की पट्टी।

प्रतोष—पु०[सं० प्र√तुष् (प्रीति)+घञ्] १ स्वायभू—मनु के एक पुत्र। २ परितोष।

प्रतोषना*—स०[सं० परितोषण] १ सतुष्ट करना। २ समझाना-बुझाना।

प्रत्त—वि०[सं० प्र√दा (देना)+क्त,दा=त]=प्रदत्त।

प्रत्न—वि०[सं० प्र+त्नप्] १ प्राचीन। पुराना। २ पहले का। ३ परम्परा से चला आया हुआ।

प्रत्न-जीव-विज्ञान—पु०[सं० प्रत्न-जीव, कर्म० स०, प्रत्न-जीव-विज्ञान, ष० त०] वह विज्ञान जिसमे बहुत प्राचीन काल के ऐसे जीव-जन्तुओ की जातियो, आकृतियो आदि का विवेचन होता है, जो अब कही नही मिलते। (पेलियन्टॉलोजी)

प्रत्नतत्त्व—पु०=पुरातत्व।

प्रत्यंकन—पु०[सं० प्रति√अक् (चिह्नित करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यकित] दे० 'अनुरेखन'।

प्रत्यंग—पु०[सं० प्रति-अग, प्रा० स०] १. शरीर का कोई गौण या छोटा अग। जैसे—अग-प्रत्यंग मे पीड़ा होना। २ किसी चीज के गौण या छोटे अग या अश। जैसे—इस विषय के सभी अग-प्रत्यग उन्होने देख डाले है। ३ ग्रन्थ का अध्याय या परिच्छेद। ४. अस्त्र। ५ एक प्रकार की पुरानी तौल।

प्रत्यंगिरा (रस्)—पु० [सं०] १. पुराणानुसार चाक्षुष मन्वंतर के अगि-

रस के पुत्र एक ऋषि का नाम। २ सिरस का पेड़। ३ बिसखोपड़ा नामक जन्तु।
स्त्री० तांत्रिकों की एक देवी।

प्रत्यंचा—स्त्री०[प्रति√अच् (गति)। क्विप् या विच्,—टाप्] धनुष की डोरी जिसकी सहायता से बाण छोड़ा जाता है। चिल्ला।

प्रत्यंचित—भू० कृ०[स० प्रति√अच्+क्त] पूजित। सम्मानित।

प्रत्यंत—पु०[स० प्रति-अंत, अव्या० स०] म्लेच्छों के रहने का देश।

प्रत्यंत-पर्वत—पु०[स० कर्म० स०] वह छोटा पहाड़ जो किसी बड़े पहाड़ के पास हो।

प्रत्यंतर—पु०[स० प्रति+अन्तर] १ किसी अंतर के अंदर होनेवाले कोई दूसरा छोटा या विभागीय अंतर। २ उक्त प्रकार के अंतर की अवधि या काल। जैसे—आज-कल बुध की दशा में राहु का प्रत्यंतर चल रहा है। (फलित ज्योतिष)

प्रत्यक्—क्रि० वि०[स० प्रति√अच् (गति)। क्विन्] पीछे।

प्रत्यक्-चेतन—पु०[स० कर्म० स०] १ योग के अनुसार वह निर्मल चित्त-वृत्तिवाला व्यक्ति जिसने आत्म-ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। २ अंतरात्मा। ३ परमेश्वर।

प्रत्यक्-पर्णी, प्रत्यक्-पुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०, +ङीप्] दंती वृक्ष। मूसाकानी। २ अपामार्ग। चिचड़ा।

प्रत्यक्ष—वि० [स० प्रति-अक्षि, अव्य० स०,+अच्] १ जो आँखों के सामने उपस्थित हो तथा स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा हो। २ जिसका ज्ञान इंद्रिय या इन्द्रियों से स्पष्ट रूप में हो रहा हो। जैसे—प्रत्यक्ष झूठा। ३ जिसमें कोई घुमाव-फिराव या पेचीलापन न हो। नियम, परिपाटी आदि के विचार से सीधा। जैसे—प्रत्यक्ष कर। ४ जिसमें किसी बाहरी आधार या साधन का उपयोग न हुआ हो। जैसे—प्रत्यक्ष प्रमाण। ५ सीधे जनता के मतों के आधार पर या अनुसार होनेवाला। जैसे—प्रत्यक्ष निर्वाचन। (डाइरेक्ट, उक्त तीनों अर्थों में)
पु० चार प्रकार के प्रमाणों में से एक जिसके स्पष्ट होने के कारण किसी प्रकार का आपत्ति या संदेह न किया जा सके। यह सबसे श्रेष्ठ माना जाता है। जैसे—नित्य ज्वर आना ही उसके रोगी होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है।
क्रि० वि० आँखों के आगे। सामने।

प्रत्यक्ष कर—पु०[स० कर्म० स०] वह कर जो उपभोक्ताओं तथा कर-दाताओं से प्रत्यक्ष रूप से लिया जाता हो, किसी माध्यम से नहीं। (डाइरेक्ट टैक्स)

प्रत्यक्ष ज्ञान—पु०[स०] इंद्रियों के द्वारा होनेवाला किसी वस्तु या विषय का ज्ञान या जानकारी। (पर्सेप्शन)

प्रत्यक्षता—स्त्री०[स० प्रत्यक्ष+तल्+टाप्] प्रत्यक्ष होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रत्यक्षदर्शी (र्शिन्)—वि०[स० प्रत्यक्ष√दृश्+णिनि] [स्त्री० प्रत्यक्ष-दर्शिनी] जिसने प्रत्यक्ष रूप से कोई घटना या बात होती हुई देखी हो। साक्षी। (आई-विटनेस)

प्रत्यक्षर—अव्य०[स० प्रति-अक्षर, अव्य० स०] प्रत्येक अक्षर के विचार से।

प्रत्यक्षरी—स्त्री० [स०प्रत्यक्षर+अच्+ङीप्] लेखों आदि की अक्षरशः की हुई नकल। प्रतिलिपि।

प्रत्यक्ष-लवण—पु०[स० कर्म० स०] वह नमक जो भोजन परोसने के समय किसी चीज में डालने के लिए अतिरिक्त रूप में और अलग दिया जाता है।

प्रत्यक्ष-वाद—पु०[स० ष० त०] दार्शनिक क्षेत्र में, यह मत या सिद्धान्त कि जो कुछ इन्द्रियों से प्रत्यक्ष दिखाई देता हो, या जो अनुभूत होता हो, वही ठीक है, उसके सिवा और सब बातें अथवा अज्ञात और अदृश्य कारण आदि मिथ्या या व्यर्थ है। (एम्परिसिज़्म)

प्रत्यक्ष-वादी (दिन्)—वि०[स० प्रत्यक्ष-वाद+इनि] प्रत्यक्ष-वाद सम्बन्धी। प्रत्यक्ष-वाद का।
पु० वह जो प्रत्यक्ष-वाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो। वह जो केवल प्रत्यक्ष को प्रमाण मानता हो।

प्रत्यक्षी (क्षिन्)—वि० [स० प्रत्यक्ष+इनि] प्रत्यक्षदर्शी।

प्रत्यक्षीकरण—पु०[स० प्रत्यक्ष+च्वि, ईत्व,√कृ (करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यक्षीकृत] १ किसी वस्तु या विषय को ऐसा रूप देना कि वह प्रत्यक्ष हो जाय। २ कोई बात या विषय प्रत्यक्ष रूप से सामने लाना।

प्रत्यगात्मा (त्मन्)—पु० [स० प्रत्यक्-आत्मन्, कर्म० स०] व्यापक ब्रह्म। परमेश्वर।

प्रत्यग्र—वि०[स० प्रति-अग्र, ब० स०] १ हाल का। ताजा। नया। २ शुद्ध किया हुआ। शोधित।
पु० पुराणानुसार उपरिचर वसु का एक पुत्र।

प्रत्यग्रथ—पु०[स०] गंगा और रामगंगा के बीच का प्राचीन जनपद जो 'पंचाल' भी कहलाता था।

प्रत्यनंतर—वि०[स० प्रति-अनंतर, अव्या० स०] किसी के उपरान्त या उसके स्थान अथवा पद पर बैठनेवाला।
पु० उत्तराधिकारी।

प्रत्यनीक—पु०[स० प्रति-अनीक, अव्य० स०] १ प्रतिपक्षी। विरोधी। २ प्रतिवादी। ३ बाधा। विघ्न। ४ वैरी। दुश्मन। ५ साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसमें शत्रु का प्रतिकार या नाश न कर सकने पर उसके पक्षवालों के किये जानेवाले तिरस्कार का उल्लेख होता है। ६ साहित्य में रस संबंधी एक दोष जो उस समय माना जाता है जब एक ही छंद या प्रसंग में शृंगार और वीभत्स अथवा रौद्र और करुण सरीखे परस्पर विरोधी रस एक साथ लाये जाते हैं।

प्रत्यनुमान—पु०[स० प्रति-अनुमान, प्रा० स०] तर्क में किया जानेवाला वह अनुमान जिसका उद्देश्य दूसरे के अनुमान को खंडित करना होता है।

प्रत्यपकार—पु०[स० प्रति-अपकार, प्रा० स०] अपकार करनेवाले के साथ किया जानेवाला अपकार।

प्रत्यब्द—अव्य०[स० प्रति-अब्द, अव्य० स०] प्रति वर्ष। हर साल।

प्रत्यभिज्ञा—स्त्री०[स० प्रति-अभिज्ञा, अव्य० स०] १ ज्ञान प्राप्त करना। जानना। २ पहले से देखे हुए को पहचानना। ३ पहले से देखी हुई चीज की तरह की कोई दूसरी चीज देखकर उसका ज्ञान प्राप्त करना। ४ वह अभेद ज्ञान जिसमें ईश्वर और जीवात्मा दोनों एक माने जाते हैं। ५ दे० 'प्रत्यभिज्ञादर्शन'।

प्रत्यभिज्ञात—भू० कृ०[स० प्रति-अभि√ज्ञा (जानना)+क्त] जाना या पहचाना हुआ।

प्रत्यभिज्ञा-दर्शन—पु०[स० ष० त०] माहेश्वर या शैव संप्रदाय का एक दर्शन जिसमे उसके सब सिद्धान्तो का तर्क-बद्ध निरूपण है और जिसके अनुसार भक्त-वत्सल महेश्वर ही परमेश्वर माने गये हैं।

प्रत्यभिज्ञान—पु०[स० प्रति-अभि√ज्ञा+ल्युट्-अन] १ प्रत्यभिज्ञा। २ स्मृति की सहायता से होनेवाला ज्ञान।

प्रत्यभिदेश—पु०[स० प्रति-अभिदेश, प्रा० स०] [भू० कृ० प्रत्यभिदिष्ट] जिससे अभिदेश लेना या कुछ जानना चाहें उसका किसी और को अभिदिष्ट करना या किसी दूसरे की ओर सकेत करना। अन्योन्य सदर्भ। (कास रेफरेंस) जैसे—कोश मे किसी शब्द का अर्थ जानने के लिए उसके आगे किया हुआ किसी दूसरे शब्द का अभिदेश।

प्रत्यभिभूत—वि०[स० प्रति-अभि√भू (होना)+क्त]=पराभूत।

प्रत्यभियुक्त—भू० कृ०[स० प्रति-अभि√युज् (जोडना)+क्त] जिस पर प्रत्यभियोग लगाया गया हो।

प्रत्यभियोग—पु०[स० प्रति-अभि√युज्+घञ्] वह दूसरा अभियोग जो अभियुक्त अपने वादी अथवा अभियोग लगानेवाले पर लगावे।

प्रत्यभिवाद—पु०=प्रत्यभिवादन।

प्रत्यभिवादन—पु०[स० प्रति-अभि√वद्+णिच्+ल्युट्—अन] अभिवादन करनेवाले को उत्तर के रूप मे किया जानेवाला अभिवादन।

प्रत्यय—पु०[स० प्रति√इ (गति)+अच्] १ किसी के सबध मे होनेवाली विश्वासमय दृढ धारणा। (आइडिया) २ प्रमाण। ३ विचार। ख्याल। ४ ज्ञान। ५ आवश्यकता। ६ व्याख्यान। ७ कारण। हेतु। ८ प्रसिद्धि। ९ लक्षण। चिह्न। १० निर्णय। फैसला। ११ सम्मति। राय। १२ स्वाद। १३ सहायक। मददगार। १४ विष्णु का एक नाम। १५ छदशास्त्र या पिंगल का वह अग जिसके द्वारा छदो के भेद या विस्तार और उनकी सख्याऍ जानी जाती है। इसके प्रस्तार, सूची, उद्दिष्ट, नष्ट, पाताल, मेरु, खडमेरु, पताका और मर्कटी ये नौ भेद माने गये है। १६ व्याकरण मे वह अक्षर या अक्षर-समूह जो धातुओ अथवा विकारी शब्दो के अत मे लगाकर उनके अर्थों का विकास करता अथवा उनमे कोई विशेषता उत्पन्न करता है। जैसे—ना, ता, पन आदि।

प्रत्यय-पत्र—पु०[स० ष० त०] किसी राज्य अथवा उसके सर्व-प्रधान अधिकारी के हस्ताक्षर और मुद्रा से युक्त वह प्रमाण-पत्र जो इस बात का परिचायक होता है कि अमुक व्यक्ति को आधिकारिक रूप से अमुक पद पर नियुक्त किया गया है। (क्रिडेन्शल्स) जैसे—अमेरिका के राजदूत ने आज राष्ट्रपति महोदय की सेवा मे अपना प्रत्यय-पत्र उपस्थित किया। किसी व्यक्ति को दिया हुआ वह पत्र या प्रमाण पत्र जो इस बात का परिचायक होता है कि उसे अमुक पद पर काम करने का अधिकार दिया गया है।

प्रत्ययवाद—पु०[स० ष० त०]दार्शनिक क्षेत्र मे, यह मान्यता या सिद्धान्त कि यह दृश्य जगत् किसी चेतन सत्ता की सृष्टि है, इसलिए मनुष्य को बौद्धिक विचारो का आधार छोड़कर चिरन्तन तथा शाश्वत विचारो का आश्रय लेना चाहिए। आदर्शवाद (आइडियलिज्म)

विशेष—यह मत बौद्धो के विज्ञानवाद से बहुत-कुछ मिलता-जुलता और भौतिकवाद का प्रायः विपर्याय-सा है।

प्रत्ययवादी (दिन्)—वि०[स० प्रत्ययवाद+इनि] प्रत्ययवाद-सम्बन्धी। प्रत्ययवाद का।

पु० वह जो प्रत्ययवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

प्रत्यय-वृत्ति—स्त्री०[स० ष० त०] भाषा विज्ञान मे, वह वृत्ति या विधि जिससे शब्दो के अन्त मे प्रत्यय लगाकर नये शब्द बनाये जाते हैं। निष्पत्ति विधि। जैसे—परिवार से पारिवारिक, राज्य से राजकीय आदि शब्द इसी वृत्ति से बने है।

प्रत्ययांत—वि०[स० प्रत्यय-अत, ब० स०] (शब्द) जिसके अन्त मे कोई प्रत्यय लगा हो। प्रत्यय से युक्त शब्द। जैसे—दूकानदार, मिलनसार, लिखावट आदि शब्द प्रत्ययात है।

प्रत्ययिक—वि०[स० प्रात्ययिक] १ प्रत्यय-सम्बन्धी। प्रत्यय का। २ (बात या विषय) जो किसी को इस प्रत्यय या विश्वास पर बतलाया जाय कि वह इसे किसी और पर प्रकट न करेगा। विश्रंभी। विश्वस्त। (कान्फिडेन्शल)

प्रत्ययित—वि० [स० प्रत्यय+इतच्] १ (व्यक्ति) जिसका प्रत्यय या विश्वास किया गया हो याकिया जा सकता हो। २ (विषय) जिस पर प्रत्यय या विश्वास किया गया हो। ३ (शब्द) जिसमे प्रत्यय लगा या लगाया गया हो। ४ दे० 'प्रत्ययिक'।

प्रत्ययी (यिन्)—वि०[स० प्रत्यय+इनि] १ प्रत्यय या विश्वास करनेवाला। २ 'प्रत्ययिक'।

प्रत्यर्क—पु०[स० प्रति-अर्क, प्रा० स०] सूर्य के पास कभी-कभी दिखाई पडनेवाला सूर्य-मंडल की तरह का एक प्रकाश। प्रतिसूर्य।

प्रत्यर्थ—वि०[स० प्रति-अर्थ, प्रा० स०] उपयोगी।

पु० १ उत्तर। जवाब। २ विरोध।

प्रत्यर्थक—पु०[स० प्रत्यर्थ+कन्] १ उत्तर। जवाब। ३ विरोध।

प्रत्यर्थिक—पु०[स० प्रत्यर्थिन्+कन्]=प्रत्यर्थक।

प्रत्यर्थी (र्थिन्)—पु०[स० प्रति√अर्थ् (पीडित करना)+णिनि] [स्त्री० प्रत्यर्थिनी] १ प्रतिवादी। मुद्दालेह। २ प्रतिस्पर्धा करनेवाला व्यक्ति। प्रतिद्वंद्वी। ३ शत्रु।

प्रत्यर्पण—पु०[स० प्रति√ऋ (गति)+णिच्, पुक्,+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यर्पित] १ वापस करना। लौटाना। २ लिया हुआ अधिक धन उसके मालिक को लौटाना। ३ जिसकी कोई चीज किसी तरह अपने पास आ गई हो उसे वापस करना या उसके स्थान पर वैसी ही दूसरी चीज देना। लौटाना। ४ किसी देश या राज्य के द्वारा दूसरे देश के अपराधी, कैदी या भगाडे को अपने यहाँ से पकडकर उस देश या राज्य को लौटाने की क्रिया। (एक्स्ट्राडिशन)

प्रत्यर्पित—भू० कृ०[स० प्रति√ऋ+णिच्, पुक्,+क्त] लौटाया या वापस किया हुआ।

प्रत्यवरोध—पु०[स० प्रति-अव√रुध्+घञ्] बाधा। रुकावट।

प्रत्यवरोधन—पु०[स० प्रति-अव√रुध् (रोकना)+ल्युट्—अन] प्रत्यवरोध उत्पन्न करना। बाधा डालना।

प्रत्यवरोह—पु०[स० प्रति-अव√रुह्+घञ्] १ अवरोह। उतार। २. सीढ़ी।

प्रत्यवरोहण—पु० [स० प्रति—अव√रुह+ल्युट्—अन] नीचे की ओर आना। उतरना।

प्रत्यवलोकन—पु०[स० प्रति-अव√लोक् (देखना)+ल्युट्—अन] पीछे की ओर देखना।

प्रत्यवसान—पु०[स० प्रति-अव√सो (समाप्त करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यवसित] १ भोजन करना। खाना। २ भोजन।

प्रत्यवस्कंद—पु०[स० प्रति-अव√स्कन्द् (गति)+घञ्] किसी के द्वारा लगाया हुआ अभियोग इस ढग से स्वीकार करना कि उसकी गिनती अभियोग में न होने पावे।

प्रत्यवस्थाता (तृ)—पु०[स० प्रति-अव√स्था+तृच्] १ प्रतिवादी। २ शत्रु।

प्रत्यवस्थान—पु०[स० प्रति-अव√स्था+ल्युट्—अन]१ किसी स्थान से हटाना। २ विरोध। ३ शत्रुता। ४ दे० 'यथापूर्व स्थिति'।

प्रत्यवहार—पु० [स० प्रति-अव√हृ (हरण करना)+घञ्] १ वापस लेना। ३ सहार। ४ लडते हुए सैनिको को लडने से रोकना। युद्ध स्थगित करना।

प्रत्यवाय—पु०[स० प्रति-अव√इ+अच्] १ कम होना। घटना। ह्रास। २ दैनिक विहित कर्मों के न करने से लगनेवाला पाप। ३ बहुत बडा उलट-फेर या परिवर्तन। ४ बुरा काम। दुष्कर्म। ५ जो न हो, उसका आविर्भाव न होना। ६ जो हो, उसका न रह जाना। विनाश। नाश।

प्रत्यवेक्षण—पु०[स० प्रति-अव√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्—अन] १ देख-रेख करना। चौकसी करना। २ ध्यान रखना। ३. किसी काम, चीज या बात का किसी की देख-रेख मे रहना या होना। अवधान।

प्रत्यवेक्षा—स्त्री०[स० प्रति-अव√ईक्ष्+अ+टाप्] = प्रत्यवेक्षण।

प्रत्यष्ठीला—पु०[स० प्रति-अष्ठीला, प्रा० स०] सुश्रुत के अनुसार, एक प्रकार का वात रोग जिसमे नाभि के नीचे पेडू मे एक गुठली-सी हो जाती है, और जिसके फलस्वरूप मल-मूत्र बद हो जाते है।

प्रत्यस्थ—वि०[स०] जो खीचने या तानने पर बढ जाय या लबा हो जाय परन्तु खिचाव या तनाव हटने पर फिर ज्यो का त्यो हो जाय। तन्यक। (इलैस्टिक)

प्रत्यस्थता—स्त्री०[स०] प्रत्यस्थ होने की अवस्था या भाव। तन्यता। (इलैस्टिसिटी)

प्रत्याक्रमण—पु० [स० प्रति-आक्रमण, प्रा० स०] आक्रमण होने पर उसके उत्तर या बदले में किया जानेवाला आक्रमण। जवाबी हमला। (काउन्टर अटैक)

प्रत्याख्यात—भू० कृ० [स० प्रति-आ√ख्या (कहना)+क्त] जिसका प्रत्याख्यान हुआ हो या किया गया हो।

प्रत्याख्यान—पु०[स० प्रति-आ√ख्या+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्याख्यात] १ किसी कही हुई बात के विरोध मे कुछ कहना। २ अस्वीकृत करना। न मानना। ३ किसी कार्य, निश्चय आदि के सम्बन्ध मे की जानेवाली आपत्ति या विरोध। (प्रोटेस्ट) ४. निर्णय आदि को सर्वत या आशिक रूप में अग्राह्य या अमान्य करना। ५ अनादर या अवज्ञापूर्वक कोई चीज लेने से इन्कार करना या लौटाना। ५ दे० 'अपासन'।

प्रत्यागत—वि०[स० प्रति-आ√गम् (जाना)+क्त] १. जो कही जाकर लौट आया हो। वापस आया हुआ। २ जो पुन प्राप्त या हस्तगत हुआ हो।

पु० १ कुश्ती मे, एक प्रकार का दाँव या पेच। २ तलवार, लाठी आदि की लडाई में एक प्रकार का पैतरा।

प्रत्यागति—स्त्री०[स० प्रति-आ√गम्+क्तिन्] वापस आने या होने का भाव। वापसी।

प्रत्यागम—पु०[स० प्रति-आ√गम्+अप्] १ वापस आना या लौटना। २ दोबारा या फिर से आना। ३ किसी काम या व्यापार मे लगी हुई पूंजी के बदले मे मिलनेवाला धन। मुनाफा। लाभ।

प्रत्यागमन—पु०[स० प्रति-आ√गम्+ल्युट्—अन] प्रतिगमन।

प्रत्याघात—पु० [स० प्रति-आघात, प्रा० स०] १. आघात के बदले मे किया जानेवाला आघात। २. टक्कर। ३. आधुनिक राजनीति मे (युद्ध से भिन्न) वह कडी आर्थिक या राजनीतिक कार्रवाई जो किसी राज्य के साथ अपनी शिकायतें दूर कराने अथवा अपनी किसी क्षति का बदला चुकाने के उद्देश्य से की जाती है। (रेप्रिजल)

प्रत्याचार—पु० [स० प्रति-आचार, प्रा० स०] १ किसी प्रकार के आचरण के बदले मे किया जानेवाला वैसा ही आचरण या व्यवहार। २ अनुकूल व्यवहार।

प्रत्यातप—पु० [स० प्रति-आतप, प्रा० स०] छाया। परछाई।

प्रत्यादान—पु० [स० प्रति-आदान, प्रा० स०] पुन या दोबारा किसी से कोई चीज लेना।

प्रत्यादित्य—पु० [प्रति-आदित्य, प्रा० स०] दे० 'प्रतिसूर्य'।

प्रत्यादेश—पु० [स० प्रति-आ√दिश्+घञ्] [भू० कृ० प्रत्यादिष्ट] १ आदेश। आज्ञा। २ घोषणा। ३. अस्वीकरण। इनकार। ४ खण्डन। ५ ऐसी आकाशवाणी जो चेतावनी के रूप मे हो। ६ किसी को मात करने या हराने की क्रिया या भाव।

प्रत्याधान—पु० [स० प्रति-आ√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] १ मस्तक। (वेद) २ ऐसा स्थान जहाँ चीजे जमा की जाती हो।

प्रत्यानयन—पु० [स० प्रति-आनयन, प्रा० स०] [भू० कृ० प्रत्यानीत] १ किसी को वापस लाना। २ दे० 'प्रत्यर्पण'।

प्रत्यानीत—भू० कृ० [स० प्रति-आनीत, प्रा० स०] वापस लाया या लौटाया हुआ।

प्रत्यापत्ति—स्त्री० [स० प्रति-आपत्ति, प्रा० स०] १ पुनरागमन। २. वैराग्य। ३. उत्तराधिकारी के न रहने पर किसी सपत्ति का राज्य के अधिकार मे आना। ४ उक्त प्रकार से राज्य को प्राप्त होनेवाली अचल सम्पत्ति। नजूल।

प्रत्यापन्न—वि० [स० प्रति-आ√पद्+क्त] लौटा या लौटकर आया हुआ।

प्रत्याभास—पु० [स० प्रति+आभास] किसी प्रकार के तेज या शक्ति की प्रतिक्रिया के रूप मे अथवा फलस्वरूप होनेवाला आभास। जैसे—(क) मन मे आत्मा का प्रत्याभास निहित रहता (अथवा लक्षित होता) है। (ख) सूर्य के प्रत्याभास से ही चद्रमा प्रकाशमान् होता है।

प्रत्याभूति—स्त्री० [स० प्रति-आ√भू (होना)+क्तिन्] किसी चीज या बात के सबध मे दृढता और निश्चयपूर्वक यह कहना या विश्वास दिलाना कि यह ऐसी ही है या ऐसी ही होगी। (गारटी)

विशेष—यह कई प्रकार की होती और कई रूपों मे की जाती है। यथा—(क) यदि अमुक वस्तु वैसी न होगी जैसी कही या दिखाई गई है तो बदल दी जायगी या ठीक कर दी जायगी। (ख) अमुक काम अमुक प्रकार से ही किया जायगा अथवा होगा, और किसी प्रकार से नहीं। आदि आदि।

प्रत्याभोग—पु० [सं० प्रति-आभोग, प्रा० स०] १ धन या सम्पत्ति का ऐसा भोग जो उस पर अधिकार प्राप्त होने से पहले ही, केवल उसकी प्राप्ति की आशा या निश्चय होने पर ही आरंभ कर दिया जाय।

प्रत्याम्नाय—पु० [सं० प्रति-आ√म्ना (अभ्यास)+घञ्] १ तर्क मे, वाक्य का पाँचवाँ अवयव। २ प्रतिनिधि या स्थानापन्न।

प्रत्याय—स्त्री० [सं० प्रति-आय, प्रा० स०] १. राजस्व। कर। २ आय, विशेषत ऐसी आय या लाभ जो किसी काम मे कुछ धन लगाने या व्यवस्था आदि करने के बदले मे मिलता या प्राप्त होता हो। प्रत्यागम (रिटर्न)

प्रत्यायक—वि० [सं० प्रति√इ+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रत्यय कराने या विश्वास दिलानेवाला। २ जिससे विश्वास उत्पन्न होता है। ३ व्याख्यापित या सिद्ध करनेवाला।

पु० १ वह पत्र जो इस बात का सूचक होता है कि दूसरा धारक या वाहक अमुक बात के लिए विश्वसनीय है। २ वह परिचायक-पत्र या प्रमाण-पत्र जिसे दिखलाकर राज-प्रतिनिधि विदेशों मे अपना अधिकार और पद प्राप्त करते है। (क्रिडेन्शल)

प्रत्यायन—पु० [सं० प्रति√इ+णिच्+ल्युट्—अन] १ विश्वास दिलाने की क्रिया या भाव। २ (वधू को) लिवा ले जाना। ३ विवाह करना। ४ सूर्य का अस्त होना।

प्रत्यायोजन—पु० [सं० प्रति-आ√युज् (जुटना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यायोजित] १ पुन आयोजन करना। २ दे० 'प्रति-निधायन'।

प्रत्यारंभ—पु० [सं० प्रति-आरम्भ, प्रा० स०] १ फिर से या दोबारा आरम्भ होना। २ पुनरारम्भ।

प्रत्यारोप—पु० [सं० प्रति-आरोप, प्रा० स०] वह आरोप जो किसी आरोप के उत्तर या बदले मे किया या लगाया जाय। (काउटर-चार्ज)

प्रत्यालीढ़—पु० [सं० प्रति-आलीढ, प्रा० स०] धनुष चलाने के समय बायाँ पैर आगे की ओर और दाहिना पैर पीछे की ओर ले जाकर बैठने की एक मुद्रा।

वि० खाया हुआ।

प्रत्यालोचन—पुं० [सं० प्रति-आलोचन, प्रा० स०] [भू० कृ० प्रत्या-लोचित] १ किसी के किए हुए निर्णय या निर्णीत व्यवहार को फिर से देखना कि वह ठीक है या नही। (रिव्यू) २ प्रत्यालोचना। (दे०)

प्रत्यालोचना—स्त्री० [सं० प्रति-आलोचना, प्रा० स०] किसी बात या विषय की आलोचना की भी की जानेवाली आलोचना। आलोचना की समीक्षा।

प्रत्यावर्तन—पुं० [सं० प्रति-आ√वृत् (बरतना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्यावर्तित] १. वापस आना। लौटाना।

प्रत्यावर्तित—भू० कृ० [सं० प्रति-आ√वृत्+णिच्+क्त] जिसका प्रत्यावर्तन हुआ हो या किया गया हो।

प्रत्याशा—स्त्री० [सं० प्रति-आ√अश् (व्याप्ति)+अच्,+टाप्] १ आशा। उम्मीद। भरोसा। २. आज-कल किसी बात के सम्बन्ध मे पहले से की जानेवाली ऐसी आशा या उसके सम्बन्ध की कल्पना जिसके घटित होने की बहुत कुछ सभावना हो। प्रवेक्षा। (एन्टिसिपेशन)

विशेष—आशा तो साधारणत इसी बात की सूचक होती है कि हमारे मन में किसी बात की इच्छा या कामना है, परन्तु प्रत्याशा से यह सूचित होता है कि हमे इस बात का बहुत-कुछ विश्वास है कि हमारी इच्छा या कामना पूरी हो जायगी।

प्रत्याशित—वि० [सं० प्रति-आ√अश्+क्त] जिसकी आशा या अपेक्षा पहले की गई हो। जिसका पहले से अनुमान किया गया हो। (एन्टि-सिपेटेड)

प्रत्याशी (शिन्)—वि० [सं० प्रति-आ√अश्+णिनि] प्रत्याशा अर्थात् आशा करनेवाला।

पु० १ वह जो किसी पद की प्राप्ति के लिए इच्छुक हो। २ उम्मीद-वार। (कैन्डिडेट)

प्रत्याश्रय—पु० [सं० प्रति-आश्रय, प्रा० स०] वह स्थान जहाँ आश्रय लिया जाय। पनाह लेने की जगह। आश्रय-स्थल।

प्रत्याश्वासन—पु० [सं० प्रति-आ√श्वस्+णिच्+ल्युट्—अन] आश्वा-सन के बदले मे दिया जानेवाला आश्वासन।

प्रत्यासत्ति—स्त्री० [सं० प्रति आ√सद् (गति)+क्तिन्] १ निकटता। सामीप्य। नजदीकी। २. दे० 'आसक्ति'।

प्रत्यासन्न—वि० [सं० प्रति-आ√सद्+क्त] [भाव० प्रत्यासन्नता] निकट या पास आया हुआ।

प्रत्यासर—पु० [सं० प्रति-आ√सृ (गति)+अप्] १. सेना का पिछला भाग। सैनिक व्यूह।

प्रत्याहत—भू० कृ० [सं० प्रति-आ√हन् (हिंसा)+क्त] १. हटाया हुआ। २ अस्वीकृत किया हुआ।

प्रत्याहरण—पु० [सं० प्रति-आ√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १. पुन या वापस लेना। २ हटाना। ३ निग्रह करना। ४ इंद्रियो को विषयो से निवृत्त करना।

प्रत्याहार—पु० [सं० प्रति-आ√हृ+घञ्] [भू० कृ० प्रत्याहृत] १. पीछे की ओर खीचना या ले जाना। २ आज्ञा, निश्चय वचन आदि का वापस लिया जाना। ३ पाणिनि व्याकरण के अनुसार, वह सक्षिप्त रूप जो किसी सूत्र के प्रथम और अतिम वर्णों को जोड़कर बनाया जाता है। जैसे—अइउण् सूत्र का प्रत्याहार अण्। ४. योग के आठ अगो मे से एक जिसमें इंद्रियों को सब विषयो से हटाकर एकाग्र किया जाता है।

प्रत्याहूत—वि० [सं० प्रति-आ√ह्वे (बुलाना)+क्त] (व्यक्ति) जिसे वापस बुलाया गया हो।

प्रत्याहृत—भू० कृ० [सं० प्रति-आ√हृ+क्त] १ पीछे खीचा या हटाया हुआ। २. (इंद्रिय) जिसे सयम मे रखा गया हो।

प्रत्याह्वान—पु० [सं० प्रति-आ√ह्वे+ल्युट्—अन] १ किसी दूसरे स्थान पर भेजे हुए व्यक्ति को वापस बुलाना। २. वापस बुलाने के लिए दी जानेवाली आज्ञा। (रिकाल)

प्रत्युक्त—भू० कृ० [स० प्रति√वच् (बोलना)+क्त] १ जिसका उत्तर दिया गया हो। उत्तरित। २ जिसका उत्तर देकर खडन किया गया हो।

प्रत्युक्ति—स्त्री० [स० प्रति√वच्+क्तिन्] उत्तर। जवाब।

प्रत्युच्चार—पु० [स० प्रति-उद्√चर् (गति)+णिच्+घञ्] पुन या दोबारा उच्चारण करना।

प्रत्युज्जीवन—पु० [स० प्रति-उद्√जीव् (जीना)+ल्युट्—अन] पुनरुज्जीवन।

प्रत्युत—अव्य० [स० प्रति-उत, सुप्सुपा स०] १ बल्कि। वरन्। २ इसके विपरीत।

प्रत्युत्क्रम—पु० [स० प्रति-उद्√क्रम् (गति)+घञ्] १ युद्ध के समय पहले-पहल किया जानेवाला आक्रमण। २ आक्रमण के बदले मे किया जानेवाला आक्रमण। ३ ऐसा गौण कार्य जो किसी मुख्य कार्य की सिद्धि मे सहायक हो।

प्रत्युत्तर—पु० [स० प्रति-उत्तर, प्रा० स०] किसी से प्राप्त होनेवाले उत्तर के जवाब मे उसे दिया जानेवाला उत्तर। (रिज्वाइडर)

प्रत्युत्थान—पु० [स० प्रति-उद्√स्था (ठहरना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रत्युत्थित] १ किसी के स्वागत और सत्कार के लिए खडे होना। २ विरोध का सामना करने के लिए खडे होना।

प्रत्युत्पन्न—वि० [स० प्रति-उद्√पद् (गति)+क्त] १ जो फिर से उत्पन्न हुआ हो। जो पुन या दोबारा उत्पन्न हुआ हो। २ जो ठीक समय पर उत्पन्न हुआ या सामने आया हो। उपस्थित और वर्तमान। जैसे—प्रत्युत्पन्नमति (जो तुरत उपयुक्त बात या युक्ति सोच ले)।

प्रत्युदाहरण—पु० [स० प्रति-उद्-आ√हृ+ल्युट्—अन] किसी उदाहरण के विरोध मे विशेषत उसका खडन करने के लिए दिया जानेवाला प्रतिकूल उदाहरण।

प्रत्युद्गमन—पु० [प्रति-उद्√गम्+ल्युट्—अन] प्रत्युत्थान।

प्रत्युद्गमनीय—वि० [स० प्रति-उद्√गम्+अनीयर्] १. सामने या पास रखने योग्य। २ सम्मानित किये जाने के योग्य। आदरणीय। पूज्य।

पु० यज्ञ के समय पहना जानेवाला अधोवस्त्र और उत्तरीय।

प्रत्युद्धरण—पु० [स० प्रति-उद्√धृ (रखना)+ल्युट्—अन] गई हुई चीज फिर से प्राप्त करना। कोई चीज पुन या दोबारा प्राप्त करना।

प्रत्युद्यम—पु० [स० प्रति-उद्यम, प्रा० स०] १ वह कार्य जो किसी के विरोध मे किया जाय। २ प्रतिकार।

प्रत्युपकार—पु० [स० प्रति-उपकार, प्रा० स०] वह उपकार जो किसी के किए हुए उपकार के बदले मे किया जाय।

प्रत्युपकारी(रिन्)—पु० [स० प्रत्युपकार+इनि] प्रत्युपकार करने अर्थात् उपकार का बदला उपकार द्वारा चुकानेवाला।

प्रत्युपदेश—पु० [स० प्रति-उपदेश, प्रा० स०] १ उपदेश के बदले मे दिया जानेवाला उपदेश। २ राय के बदले मे दी जानेवाली राय।

प्रत्युपपन्न—वि० [स० प्रति-उपपन्न, प्रा० स०] प्रत्युत्पन्न।

प्रत्युपमान—पु० [स० प्रति-उपमान, प्रा० स०] उपमान को उपमित करनेवाला उपमान। उपमान का उपमान।

प्रत्युष(स्)—पु० [स० प्रति√उष्+अस्] प्रभात। प्रात काल।

प्रत्यूष—पु० [स० प्रति√ऊष्+क] १. प्रभात। तडका। प्रात काल। २ सूर्य। ३ आठ वसुओं मे से एक।

प्रत्यूह—पु० [स० प्रति√ऊह् (वितर्क करना)+घञ्] बाधा। रुकावट।

प्रत्येक—वि० [स० प्रति-एक, अव्य० स०] [भाव० प्रत्येकत्व] संख्या के विचार मे दो या अधिक इकाइयो, समूहो आदि मे से हर एक। जैसे—प्रत्येक कण मे ईश्वर व्याप्त है।

प्रत्येकत्व—पु० [स० प्रत्येक+त्व] प्रत्येक होने की अवस्था, धर्म या भाव।

प्रत्येक बुद्ध—पु० [स०] वह बुद्ध जो एकात मे रहकर केवल अपने कल्याण का उपाय करता हो, लोक-कल्याण की चिंता न करता हो।

प्रथन—पु० [स०√प्रथ् (फैलना)+ल्युट्—अन] १ विस्तार करना। २ प्रक्षेपण करना। ३ ऐसा स्थान जहाँ कोई चीज फैलाई जाय। प्रकाश मे लाना। ५ घोषणा करना। ६ एक प्रकार का गुल्म।

प्रथम—वि० [स०√प्रथ्+अमच्] [भाव० प्रथमता] १ क्रम, सख्या, श्रृखला आदि मे जो सबसे आगे या पहले हो। २ जो गुण, महत्त्व, योग्यता आदि मे सबसे उत्तम या बढकर हो। सर्वश्रेष्ठ। ३ परीक्षा, प्रतियोगिता आदि मे जिसने सबसे अधिक अक प्राप्त किये हो अथवा सबको पराजित किया हो।

क्रि० वि० आगे। पहले।

प्रथमकारक—पु० [स० कर्म० स०] व्याकरण मे कर्ता कारक।

प्रथमत—अव्य० [स० प्रथम√तस्] महत्त्व आदि के विचार से, आगे या पहले। सबसे पहले। (फर्स्टली)

प्रथमता—स्त्री० [स० प्रथम+तल्+टाप्] १ 'प्रथम' होने की अवस्था या भाव। २ औरो की तुलना मे पहला अवसर या स्थान मिलने की अवस्था या भाव। प्राथमिकता (प्रायॉरिटी)

अव्य० साधारण रूप मे देखने पर। (प्राइमा-फेसी)

प्रथम-पुरुष—पु० [स० कर्म० स०] व्याकरण मे वे सर्वनाम जिन्हे वक्ता अपने लिए प्रयुक्त करता है (मध्यम पुरुष तथा अन्य पुरुष से भिन्न)। जैसे—मैं, हम।

प्रथम साहस—पु० [स० कर्म० स०] प्राचीन व्यवहारशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का दड जिसमे २५० पण तक जुरमाना होता था।

प्रथमा—स्त्री० [स० प्रथम+टाप्] १ मदिरा। शराब। (तान्त्रिक) २ व्याकरण मे कर्ता कारक।

प्रथमाक्रमण—पु० [स० प्रथम-आक्रमण, कर्म० स०] दूसरे पर आक्रमण करने की क्रिया या भाव। अग्रधर्षण। (एग्रेशन)

प्रथमाक्रमणकारी (रिन्)—पु० [स० प्रथमाक्रमण√कृ (करना)+णिनि] प्रथम आक्रमण करनेवाला व्यक्ति, दल, पक्ष या राष्ट्र। (एग्रेसर)

प्रथमार्द्ध—पु० [स० प्रथम-अर्घ, कर्म० स०] किसी चीज के दो समान खडो या भागो मे से पहलेवाला खड या भाग। जैसे—यह पुस्तक का प्रथमार्द्ध है।

प्रथमाश्रम—पु० [स० प्रथम-आश्रम, कर्म० स०] ब्रह्मचर्याश्रम।

प्रथमी†—स्त्री० [स० प्रथम+ङीष्] पृथ्वी।

प्रथमे, प्रथमै—क्रि० वि० [स० प्रथम] आरभ मे। पहले। उदा०—प्रथमै गगन कि पुहुमइ प्रथमै—कबीर।

प्रथमेतर—वि० [सं० प्रथम-इतर, प० त०] पहले के बाद का या उससे भिन्न।

प्रथमोक्त—वि० [स० प्रथम + उक्त] जो पहले कहा गया हो। पूर्वोक्त।

प्रथमोपचार—पु० [स० प्रथम-उपचार, कर्म० स०] दे० 'प्राथमिक उपचार'।

प्रथा—स्त्री० [स०√प्रथ्+अ+टाप्] १ किसी जाति, समाज आदि मे किसी विशिष्ट अवसर पर किसी विशिष्ट ढग से किया जानेवाला कोई काम। रीति। जैसे—प्रथा के अनुसार विवाह के अवसर पर कन्या पक्षवाले दहेज देते हैं। २ नियम। ३ प्रसिद्धि। ख्याति।

विशेष—पद्धति तो कोई काम करने का ऐसा ढग या प्रकार है जिसके मूल मे किसी कला, विधान या शास्त्र का कोई सर्व-मान्य सिद्धान्त होता है। परिपाटी उक्त प्रकार के तत्त्व से प्राय रहित या हीन होती है, और किसी चली आई हुई पुरानी रीति मात्र की सूचक होती है। प्रथा इसी परिपाटी का वह उत्कृष्ट और बढ़ा हुआ रूप है जो किसी देश या समाज मे सार्विक रूप से मान्य हो चुका हो और जिसका उल्लघन अनुचित या दूषित माना जाता हो। उदाहरणार्थ—विवाह की प्रथा तो सभी देशो और समाजो मे समान रूप से प्रचलित है, परन्तु उसकी पद्धतियाँ सभी देशो और समाजो मे एक दूसरे से भिन्न हैं। हाँ, प्रत्येक पद्धति मे कुछ अलग अलग प्रकार की परिपाटियाँ भी हो सकती हैं और होती ही है।

प्रथित—भू० कृ० [स०√प्रथ्+क्त] [स्त्री० प्रथिता] १ लबा-चौडा। विस्तृत। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

प्रथिति—स्त्री० [स०√प्रथ्+क्तिन्] १ विस्तार। २ ख्याति। प्रसिद्धि।

प्रथिमा (मन्)—स्त्री० [स० पृथु+इमनिच्, प्रथ्-आदेश] स्थूलता। पृथुत्व।

प्रथिमी†—स्त्री० पृथ्वी।

प्रथिवी—स्त्री० [स० पृथिवी, पृषो० सिद्धि] पृथ्वी।

प्रथी—स्त्री० पृथ्वी।

प्रद—वि० [स० प्र√दा+क] समस्त पदो के अन्त मे, (क) देनेवाला। दाता। जैसे—सुखप्रद, फलप्रद। (ख) उत्पन्न करनेवाला। जैसे—तापप्रद।

प्रदक्षिण—वि० [स० प्रा० स०] १ योग्य। समर्थ। २ चतुर। होशियार। पु०=प्रदक्षिणा।

प्रदक्षिणा—स्त्री० [प्रा० स०] धार्मिक क्षेत्र मे, देवमूर्ति या पवित्र स्थान के प्रति भक्ति और श्रद्धा प्रकट करने के लिए उसके चारो ओर इस प्रकार घूमना या चक्कर लगाना कि वह देवमूर्ति या पवित्र स्थान बराबर दाहिनी ओर रहे। परिक्रमा।

प्रदग्ध—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] बहुत जला हुआ।

प्रदच्छिन*—पु०=प्रदक्षिण।

प्रदच्छिना†—स्त्री०=प्रदक्षिणा।

प्रदत्त—भू० कृ० [स० प्र√दा (देना)+क्त] दिया या प्रदान किया हुआ।

प्रदर—पु० [सं० प्र√दृ (फाडना)+अप्] १ तोड़ने-फोड़ने की क्रिया या भाव। २ तितर-बितर होना। ३. स्त्रियो का एक रोग जिसमे उनके गर्भाशय से सफेद या लाल रग का लसदार गंदा तरल पदार्थ बहता रहता है। (ल्यूकोरिया) ४ तीर। बाण। ५. दरार।

प्रदर्प—पु० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक या बढ़ा हुआ दर्प।

प्रदर्श—पु० [स० प्र√दृश् (देखना)+घञ्] १ आकृति। रूप। शकल। २ आदेश। आज्ञा।

प्रदर्शक—वि० [स० प्र√दृश्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रदर्शिका] १ प्रदर्शन करनेवाला। २. दिखलानेवाला। ३ पथप्रदर्शक। ४ दे० 'प्रादर्शनिक'।

पु० १ गुरु। २ दर्शक। ३ सिद्धान्त।

प्रदर्शन—पु० [स० प्र√दृश्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० प्रादर्शनिक, भू० कृ० प्रदर्शित] १ लोगो की जानकारी के लिए कोई काम उन्हे दिखलाना। जैसे—बालको द्वारा व्यायाम प्रदर्शन। २ जनता को अपना असतोष, दुख आदि बतलाने तथा उसकी सहानुभूति प्राप्त करने के लिए कर्मचारियो या किसी विशिष्ट वर्ग के व्यक्तियो का सामूहिक रूप से सबद्ध अधिकारियो के अन्याय के विरोध मे नारे आदि लगाते हुए निकाला जानेवाला जुलूस। (डिमास्ट्रेशन) ३ दे० 'प्रदर्शनी'।

प्रदर्शनी—स्त्री० [स० प्रदर्शन+ङीप्] ऐसा स्थान जहाँ विशेष रूप से नई तथा चामत्कारिक चीजो का प्रदर्शन किया जाता है। (एक्सहिबिशन)

प्रदर्शित—भू० कृ० [स० प्र√दृश्+णिच्+क्त] १ जिसका सार्वजनिक रूप से प्रदर्शन हुआ हो। दिखलाया हुआ। २ प्रदर्शनी मे रखा हुआ।

प्रदर्शी (शिन्)—वि० [स० प्र√दृश्+णिनि] [स्त्री० प्रदर्शिनी] १. जो देखता हो। दर्शक। २ दे० 'प्रदर्शक'।

प्रदल—पु० [स० प्र√दल् (रौंदना)+अच्] बाण। तीर।

प्रदाता (तृ)—वि० [स० प्र√दा (देना)+तृच्] प्रदान करने या देनेवाला। दाता।

पु० १ बहुत बड़ा दानी। २ इन्द्र। ३ एक विश्वेदेवा।

प्रदान—पु० [स० प्र√दा+ल्युट्—अन्] [भू० कृ० प्रदत्त, वि० प्रदेय] १ देने की क्रिया या भाव विशेषत बडो के द्वारा छोटों को दिया जानेवाला दान। २ इस प्रकार दी जानेवाली वस्तु। ३ इनाम। पुरस्कार। ४ कन्या-दान। ५ अकुश।

प्रदानक—पु० [स० प्रदान+कन्] १ दान। २ उपहार। भेंट। वि०, पु० दे० 'प्रदाता'।

प्रदानी†—वि०=प्रदायक।

प्रदाय—पु० [स० प्र√दा+घञ्] १ प्रदान की हुई वस्तु। २ उपहार। भेंट।

प्रदायक—वि० [स० प्र√दा+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रदायिका] १ प्रदान करनेवाला। २ समस्त पदो के अन्त मे, देनेवाला। जैसे—सुखप्रदायक।

प्रदायी (यिन्)—वि० [स० प्र√दा+णिनि] [स्त्री० प्रदायिनी] प्रदायक।

प्रदाह—पु० [स० प्रा० स०] १ ज्वर आदि के कारण अथवा और किसी कारण शरीर मे होनेवाली जलन। दाह। २ किसी प्रकार का मानसिक कष्ट या ताप। ३ विनाश। बरबादी।

प्रदिक्—स्त्री०=प्रदिशा।

प्रदिशा—स्त्री० [सं० प्रा० स०] दो मुख्य दिशाओ के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

प्रदिष्ट—भू० कृ० [स० प्र√दिश् (बताना)+क्त] १ दिखाया

हुआ। २. बताया हुआ। ३ नियत किया हुआ। ठहराया हुआ। ४ जिसके विषय मे प्रदेशन हुआ हो। आदिष्ट। (प्रेसक्राइब्ड) ५ सुभीते के लिए खड या भाग के रूप मे लोगो में बाँटा या उन्हे दिया हुआ। नियत। (एलॉटेड)

प्रदीप—वि०[स०प्र√दीप् (चमकना)+अच्] प्रकाश करने या देनेवाला। पु० १ दीपक। दीया। २ प्रकाश। रोशनी। ३ सपूर्ण जाति का एक राग जिसके गाने का समय तीसरा प्रहर है। किसी किसी ने इसे दीपक राग का पुत्र माना।

प्रदीपक—वि० [स० प्र√दीप्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रदीपिका] १ प्रदीपन करनेवाला। २ प्रकाश या रोशनी करनेवाला। पु० वैद्यक के अनुसार नौ प्रकार के विषो मे से एक प्रकार का भयकर स्थावर विष। कहते है कि इसके सूँघने मात्र से मनुष्य मर जाता है।

प्रदीपकी—स्त्री० [स० प्रदीपक+ङीप्] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

प्रदीपति†—स्त्री० =प्रदीप्ति।

प्रदीपन—पु० [स० प्र√दीप्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रदीप्त] १ प्रकाश करने का काम। उजाला करना। २ उज्ज्वल करना। चमकाना। ३ उत्तेजित करना। भडकाना। ४ तीव्र या तेज करना। ५ [प्र√दीप्+णिच्+ल्यु—अन] वह जिससे पेट की अग्नि तीव्र हो, भूख लगे तथा भोजन पचे। ६ प्रदीपक नाम का स्थावर विष।

प्रदीप-न्याय—पु० [ष० त०] साख्य का यह मत या सिद्धान्त कि जिस प्रकार आग, तेल और बत्ती के सयोग से प्रदीप या दीया जलता है, उसी प्रकार सत्त्व, रज और तम के सहयोग से शरीर से सब काम होते है।

प्रदीपिका—स्त्री० [स० प्रदीपक+टाप्, इत्व] १ छोटी लालटेन। २ सगीत मे एक रागिनी जो किसी किसी के मत मे दीपक राग की स्त्री है। ३ आज-कल टीका, व्याख्या आदि के रूप मे कोई ऐसी पुस्तक जिसमे कोई दूसरी कठिन पुस्तक पढने या समझने मे सहायता मिलती हो।

प्रदीप्त—वि० [स० प्र√दीप्+क्त] [भाव० प्रदीप्ति] १ जलता हुआ। २ चमकता या जगमगाता हुआ। प्रकाशित। ३ उज्ज्वल। चमकीला।

प्रदीप्ति—स्त्री०[स० प्र√दीप्+क्तिन्] १ रोशनी। प्रकाश। २ चमक।

प्रदुमन†—पु० =प्रद्युम्न।

प्रदुष्ट—वि० [स० प्र√दुष् (बिगडना)+क्त] १ बिगडा हुआ। दोषयुक्त। २ बुरे स्वभाववाला। दुष्ट। ३ लपट। व्यभिचारी। ४ लोभ, स्वार्थ आदि के कारण नैतिक दृष्टि से गिरा हुआ। (कोरप्ट)

प्रदूषक—वि० [स० प्र√दूष् (नष्ट करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ नष्ट करनेवाला। २ अपवित्र करनेवाला।

प्रदूषण—पु० [स० प्र√दूष्+णिच्+ल्युट्—अन] १ नष्ट करना। चौपट या बरबाद करना। २ अपवित्र करना।

प्रदूषित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १ नष्ट किया हुआ। २ अपवित्र किया हुआ। दूषित। ३ प्रदुष्ट (व्यक्ति)।

प्रदेय—वि० [स० प्र√दा (देना)+यत्] १ जो प्रदान किये जाने के योग्य हो। जो दिया जा सके। २ (कन्या) जो विवाह करके किसी को देने के योग्य हो।

पु० ऐसी अच्छी चीज जो उपहार या भेंट के रूप मे दी जा सके।

प्रदेयक—पु० [स० प्रदेय+कन्] इनाम। पुरस्कार।

प्रदेश—पु० [स० प्रा० स०] [वि० प्रादेशिक] १. भू-भाग का कोई खड, विशेषत कोई बडा खड। २ किसी सघ राज्य की कोई इकाई। जैसे—उत्तर या मध्यप्रदेश। ३ प्रात। (दे०) ४ अंग। अवयव। ५ दीवार। ६ नाम। सज्ञा। ७ सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार की तत्र युक्ति। ८ अँगूठे के अगले सिर से होकर तर्जनी के अगले सिरे तक की दूरी। छोटा बित्ता या बालिश्त।

प्रदेशकारी (रिन्)—पु० [स० प्रदेश√कृ (करना)+णिनि] योगियो का एक सम्प्रदाय।

प्रदेशन—पु० [स० प्र√दिश्+ल्युट्—अन] १ उपहार। भेट। २ आज्ञा, आदेश, नियम आदि के रूप में यह बतलाना कि यह काम इस प्रकार होना चाहिए। (प्रेसक्रिप्शन) ३ कार्य, वस्तु आदि के छोटे-छोटे भाग करके सुभीते के लिए उन्हे अलग-अलग लोगो को देना या उनमें बॉटना। नियतन। (एलॉटमेन्ट)

प्रदेशनी—स्त्री० [स० प्र√दिश्+ल्युट्—अन,+ङीप्] अँगूठे के पास की उँगली। तर्जनी।

प्रदेशित—भू० कृ० [स० प्र√दिश्+णिच्+क्त] १ दिखलाया या बतलाया हुआ। २ जिसका प्रदेशन हुआ हो। प्रदिष्ट।

प्रदेशी (शिन्)—वि० [स० प्रदेश+इनि] प्रदेश-सबधी। प्रदेश का।

प्रदेशीय—वि० [स० प्रदेश+छ—ईय] किसी प्रदेश मे होनेवाला अथवा उससे सम्बन्ध रखनेवाला।

प्रदेष्टा (ष्टृ)—पु० [स० प्र√दिश्+तृच्] १ प्रधान विचारपति। २ वह जो प्रदेशन करता हो। (प्रेसक्राइबर)

प्रदेह—पु० [स० प्र√दिह्+घञ्] १ वह औषध या लेप जो फोडे पर, उसे दबाने या बैठाने के लिए लगाया जाय। २ एक तरह का व्यजन।

प्रदोष—पु० [स० प्रा० स०] १ सूर्य के अस्त होने का समय। सध्या। २ एक प्रकार का उपवास या व्रत जो प्रत्येक पक्ष की त्रयोदशी को होता है और जिसमे सूर्यास्त से कुछ पहले ही शिव का पूजन करके भोजन किया जाता है। ३ बहुत बडा दोष। ४. पक्षपात, आर्थिक लाभ, स्वार्थ आदि से अभिभूत होने के फलस्वरूप होनेवाला नैतिक पतन। (करप्शन)

प्रदोषक—वि० [स० प्रदोष+वुन्—अक] १ प्रदोषकाल सम्बन्धी। २ जो प्रदोषकाल मे उत्पन्न हुआ हो। ३ दे० 'प्रदुष्ट'।

प्रद्धटिका—स्त्री० पज्झटिका।

प्रद्युम्न—पु० [स० ब० स०] १. कामदेव। कदर्प। २ श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। ३ मनु के एक पुत्र का नाम। ४ वैष्णवो में, चतुर्व्यूहात्मक विष्णु के एक अश का नाम। ५ बहुत बडा बहादुर या वीर पुरुष।

प्रद्योत—पु० [स० प्र√द्युत्+घञ्] १ किरण। रश्मि। २ दीप्ति। आभा। चमक। ३ एक यक्ष।

प्रद्योतन—पु० [स० प्र√द्युत्+युच्—अन] १ दीप्ति से युक्त करना। चमकाना। २ चमक। दीप्ति। ३. सूर्य।

प्रद्वार—पु० [स० प्रा० स०] १. मुख्य द्वार के अगल-बगल या आस-पास का भाग। २. बड़ा या मुख्य द्वार।

प्रद्वेषी (षिन्)—स्त्री० [स० प्र√द्विष्+णिनि] दीर्घतमा ऋषि की पत्नी। (महा०)
वि० मन मे द्वेष रखनेवाला। द्वेषी।

प्रधन—पु० [सं० ब० स०] १ धनवान्। २. [प्र√धा+क्यु—अन] युद्ध।

प्रधमन—पु० [स० प्र√धम् (शब्द)+ल्युट्—अन] १ नाक के रास्ते सूँघकर ओषधि ग्रहण करने की क्रिया या भाव। २ इस प्रकार सूँघी जानेवाली ओषधि। ३. वैद्यक मे एक प्रकार की सुँघनी।

प्रधर्ष—पु० [स० प्र√धृष् (डाँटना, बलात्कार करना)+घञ्] १ अपमान। २. पराभव। ३ स्त्री का सतीत्व नष्ट करना। बलात्कार। ४ आक्रमण।

प्रधर्षक—वि० [स० प्र√धृष्+ण्वुल्—अक] प्रधर्ष करनेवाला।

प्रधर्षण—पु० [स० प्र√धृष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रधर्षित] १ अपमान। बेइज्जती। २ आक्रमण। चढाई। ३ स्त्री का बल-पूर्वक किया जानेवाला सतीत्व हरण।

प्रधर्षित—भू० कृ० [स० प्र√धृष्+क्त] १ जिस पर आक्रमण किया गया हो। २ अपमानित। ३ (स्त्री) जिसका बलपूर्वक सतीत्व हरण किया गया हो। जिसके साथ बलात्कार हुआ हो।

प्रधा—स्त्री० [स० प्र√धा+अङ्+टाप्] दक्ष प्रजापति की एक कन्या जिसका विवाह कश्यप ऋषि से हुआ था।

प्रधान—वि० [स० प्र√धा+ल्युट्—अन] [भाव० प्रधानता] अधिकार, पद, महत्त्व आदि की दृष्टि से जो सबसे बडा या बढकर हो।
पु० १ नेता। मुखिया। सरदार। २. मत्री। सचिव। ३ आज-कल किसी सस्था या सभा का वह सबसे बडा अधिकारी जो कुछ नियत काल के लिए चुना जाता और सभापति के रूप मे उसके सब कामो का निरीक्षण तथा सचालन करता है। ४ ससार का उपादान कारण। ५ बुद्धि। समझ। ६ ईश्वर। ७ सेनापति।

प्रधानक—पु० [स० प्रधान+कन्] साख्य के अनुसार बुद्धि-तत्त्व।

प्रधान-कर्म (न्)—पु० [कर्म० स०] सुश्रुत के अनुसार तीन प्रकार के कर्मो मे से एक कर्म जो रोग की उत्पत्ति हो जाने पर किया जाता है।

प्रधान-कार्यालय—पु० [कर्म० स०] व्यापारिक अथवा अन्य संस्थाओ का मुख्य और सबसे बडा कार्यालय जिसके अधीन कई छोटे छोटे कार्यालय हों और जहाँ से सब कार्यों तथा शाखाओ का सचालन होता हो। (हेड आफिस)

प्रधानता—स्त्री० [स० प्रधान+तल्+टाप्] प्रधान होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रधान-धातु—पु० [स० कर्म० स०] शरीर की सब धातुओ मे से प्रधान शुक्र या वीर्य।

प्रधान-मंत्री (त्रिन्)—पु० [कर्म० स०] १. संस्था आदि का वह सबसे बड़ा मत्री जिसके अधीन और भी कई विभागीय मंत्री हों। (जनरल सेक्रेटरी) २. किसी देश या राज्य का सबसे बड़ा मत्री। (प्राइम मिनिस्टर)

प्रधानाचार्य—पु० [स०] आज-कल किसी महाविद्यालय (कालेज) का प्रधान अधिकारी और सर्वप्रमुख अध्यापक। (प्रिंसिपल)

प्रधानाध्यापक—पु० [प्रधान अध्यापक, कर्म० स०] किसी विद्यालय का सबसे बडा अध्यापक। (हेड मास्टर)

प्रधानामात्य—पु० [प्रधान-अमात्य, कर्म० स०] प्रधान मत्री।

प्रधानिक—वि०=प्राधानिक।

प्रधानी—स्त्री० [स० प्रधान+हि० ई (प्रत्य०)]=प्रधानता।

प्रधारणा—स्त्री० [स० प्रा० स०] किसी विषय पर एकाग्र होकर ध्यान जमाये रखना।

प्रधि—पु० [स० प्र√धा+कि] गाडी का धुरा। अक्ष।

प्रधी—वि० [स० ब० स०] बहुत अधिक चतुर या बुद्धिमान।
स्त्री० उत्तम और प्रखर बुद्धि।

प्रधूपित—भू० कृ० [स० प्र√धूप् (तपाना)+क्त] १ तप्त। तपाया हुआ। २. चमकता हुआ। ३. सतप्त।

प्रधूपिता—स्त्री० [स० प्रधूपित+टाप्] वह दिशा जिधर सूर्य बढ रहा हो।

प्रधूमित—भू० कृ० [स० प्र-धूम, प्रा० स०,+इतच्] १ जो धुआँ उत्पन्न करने के लिए जलाया गया हो। २ जिसमे से धुआँ निकल रहा हो। ३ जो अन्दर ही अन्दर धधक या सुलग रहा हो।

प्रधृष्ट—वि० [स० प्र√धृष्+क्त] १ जिसके साथ दुर्व्यवहार किया गया हो। अपमानित। २ घमडी। ३ उद्धत। उद्दड।

प्रध्मापन—पु० [स० प्र√ध्मा (शब्द)+णिच्, युक्+ल्युट्—अन] वैद्यक मे, वह उपचार या क्रिया जो स्वर-नलिका मे का अवरोध दूर करने और श्वास-प्रश्वास की क्रिया ठीक करने के लिए की जाती है।

प्रध्वस—पु० [स० प्र√ध्वम् (नाश करना)+घञ्] [भू० कृ० प्रध्व-सित] १ नष्ट हो जाना। ध्वस। नाश। विनाश। २ साख्य के मत मे, किसी वस्तु की अतीत अवस्था।

प्रध्वसक—वि० [स० प्र√ध्वस्+णिच्+ण्वुल्—अक] ध्वस या नाश करनेवाला।

प्रध्वंसाभाव—पु० [स० प्रध्वस-अभाव, स० त० या मध्य० स०] ऐसा अभाव जो किसी वस्तु के नष्ट होने से हुआ हो। (न्याय)

प्रध्वंसी (सिन्)—वि० [स० प्र√ध्वस्+णिच्+णिनि] विनाश करने-वाला।

प्रध्वस्त—भू० कृ० [स० प्र√ध्वस्+क्त] जिसका विनाश हो चुका हो।
पु० एक प्रकार का तान्त्रिक मत्र।

प्रन†—पु०=प्रण।

प्रनत†—वि०=प्रणत।

प्रनति†—स्त्री०=प्रणति।

प्रनना*—अ० [सं० प्रणन] १ प्रणाम करना। २ झुकना। ३ शरण मे जाना। उदा०—प्रनत जन कुमुद बन इदु कर जालिका।—तुलसी।

प्रनप्ता (प्तृ)—पु० [स० प्रा० स०] परनाती। नाती का लडका।

प्रनमन†—पु०=प्रणमन।

प्रनमना—अ०=प्रनना (प्रणाम करना)।

प्रनय†—पु०=प्रणय।

प्रनर्तित—भू० कृ० [स० प्र√नृत् (नाचना)+णिच्+क्त] १ जो नचाया गया हो या नाच रहा हो। २. काँपता या हिलता हुआ।

प्रनव†—पु०=प्रणव।

प्रनवना—अ०=प्रनना (प्रणाम करना)।

प्रनष्ट—वि० [सं० प्रा० स०] १ विनष्ट। २. लुप्त। ३ भागा हुआ।

प्रनाम†—पु०=प्रणाम।

प्रनामी—स्त्री०=प्रणामी। (दे०)
वि० प्रणाम करनेवाला।

प्रनायक—वि० [सं० ब० स०] जिसका नायक साथ न हो। नायक-हीन।
पु० बड़ा या श्रेष्ठ नायक।

प्रनासना*—स० [सं० प्रनाश] पूरी तरह से नष्ट करना।

प्रनिपात—पु० =प्रणिपात (प्रणाम)।

प्रनियम—पु० [सं० प्रा० स०] किसी बड़े नियम के अन्तर्गत उसके अंगों के रूप में बने हुए छोटे नियम या विभाग।

प्रन्यास—पु० [सं० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रन्यस्त] किसी विशेष कार्य के लिए किसी को या कुछ विशिष्ट लोगों को सौंपा हुआ धन या संपत्ति। (ट्रस्ट)

प्रपंच—पु० [सं० प्र√पञ्च् (विस्तार)+घञ्] १ फैलाव। विस्तार। २ फैला हुआ यह दृश्य जगत् जो मायावी और मिथ्या कहा गया है, तथा जिसमें परस्पर विरोधी तथा विभिन्न कार्य होते रहते हैं। ३ कोई ऐसा कार्य जिसमें कई तरह की परस्पर विरोधी बातें होती हैं, और सार कुछ भी नहीं होता या बहुत कम होता है। ४ विशेषत कोई ऐसा कार्य जो छल-कपट या झगड़े-झंझट से भरा हो और जो तुच्छ अथवा हीन उद्देश्य से किया जा रहा हो। ५ झंझट। बखेड़ा।

प्रपंचन—पु० [सं० प्र√पञ्च्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रपंचित] १ विस्तार बढ़ाना। २ प्रपंच खड़ा करना।

प्रपंची (चिन्)—वि० [सं० प्रपंच+इनि] १ प्रपंच रचनेवाला। २. कपटी। छली।

प्रपंजी—स्त्री० [सं० प्रा० स०] किसी बैंक, व्यापारिक संस्था आदि की वह मुख्य पंजी या रजिस्टर जिसमें रुपयों का लेन-देन करनेवालों आदि का पूरा विवरण लिखा रहता है। खाता। बही। (लेजर)

प्रपक्ष—पु० [सं० अत्या० स०] सेना के किसी पक्ष का अग्र भाग।

प्रपठन—पु० [सं० प्र√पठ् (पढ़ना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रपठित] १ लेख आदि का ज्यों का त्यों पढ़ा जाना। पाठ। (रिसाइटेशन) जैसे—कवि-सम्मेलन में दूसरे कवियों की कविताओं का प्रपठन भी होगा। २ उद्धरणी।

प्रपत्ति—स्त्री० [सं० प्र√पद्+क्तिन्] १ किसी के प्रति होनेवाली अनन्य भक्ति। २ भक्ति का वह प्रकार या भेद जिसमें भक्त अपने आप को भगवान की शरण में सौंपकर यह विश्वास रखता है कि वह मुझ पर अवश्य दया करेगा। शरणागति।

प्रपत्र—पु० [सं० प्रा० स०] वह छपा हुआ पत्र जिसमें के रिक्त स्थलों में पूछी गई बातों के विवरण लिखे जाते हैं। जैसे—विद्यालय में भरती होने के लिए भरा जानेवाला प्रपत्र। (फॉर्म)

प्रपथ—वि० [सं० ब० स०] शिथिल। थका-माँदा।
पु० बहुत दूर जानेवाला कोई बड़ा तथा चौड़ा मार्ग।

प्रपद—पु० [सं० प्रा० स०] १ पैर का अगला भाग। पंजा। २. पैर के अँगूठे का सिरा।

प्रपन्न—भू० कृ० [सं० प्र√पद्+क्त] १ प्राप्त। आया हुआ। पहुँचा हुआ। २ शरणागत।

प्रपर्ण—पु० [सं० प्रा० स०] गिरा हुआ पत्ता।

प्रपलायन—पु० [सं०] कोई अनुचित काम कर चुकने पर उसके दंड से बचने के लिए भाग जाना। फरार होना। (एब्स्काड)

प्रपलायी—पु० [सं० प्रपलायिन्] वह जो कोई अनुचित काम करके उसके दंड-भोग से बचने के लिए भाग गया हो। फरार। भगोड़ा। (एब्स्कांडर)

प्रपा—पु० [सं० प्र√पा (पीना)+क+टाप्] १ प्यासों, विशेषत प्यासे यात्रियों आदि को जल अथवा कोई पेय पिलाने का सार्वजनिक स्थान। प्याऊ। २ यज्ञशाला।

प्रपाक—पु० [सं० प्रा० स०] १ घाव, फोड़े आदि का पकना। २ उक्त के पकने से होनेवाली सूजन।

प्रपाठ—पु० [सं० प्रा० स०] १ पुस्तक में का पाठ। २ पुस्तक का अध्याय। ३ दे० 'प्रपठन'।

प्रपाणि—पु० [सं० प्रा० स०] १ हाथ का अगला भाग। २ हथेली।

प्रपात—पु० [सं० प्र√पत् (गिरना)+घञ्] १ एकबारगी और बहुत तेजी से ऊपर से नीचे आना या गिरना। २ वह बहुत ऊँचा स्थान जहाँ से कोई चीज नीचे गिरती हो। ३ जल की वह धारा जो किसी पहाड़ी प्रदेश में बहुत ऊँचे स्थान से नीचे गिरती हो। (वाटर फाल)

प्रपातन—पु० [सं० प्र√पत्+णिच्+ल्युट्—अन] जोर से नीचे गिराना या फेंकना।

प्रपाती (तिन्)—पु० [सं० प्रपात+इनि] वह चट्टान या पहाड़ जिसका किनारा खड़ा हो।
स्त्री० [सं० प्रपात] नदियों के प्रवाह में कुछ ऊँची-नीची चट्टानें पड़ने के कारण बननेवाला प्रपात। (कैस्केड)

प्रपादिक—पु० [सं० प्रपद+ठक्—इक] मयूर। मोर।

प्रपान—पु० [सं० प्र√पा+ल्युट्—अन] १ पीने की क्रिया या भाव। २ प्रपा। पौसला।

प्रपानक—पु० [सं० प्रपान, ब० स०, +कप्] आम अथवा किसी अन्य फल के गूदे का बना हुआ एक तरह का खट-मीठा शरबत। पना। पन्ना।

प्रपाली (लिन्)—पु० [सं० प्र√पाल् (पालन करना)+णिच्+णिनि] कृष्ण के भाई, बलराम।

प्रपितामह—पु० [सं० अत्या० स०] [स्त्री० प्रपितामही] १. पितामह का पिता। बाप का दादा। परदादा। २ परब्रह्म।

प्रपितृव्य—पु० [सं० अत्या० स०] परदादा का भाई।

प्रपीडक—वि० [सं० प्र√पीड् (कष्ट देना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. दबाने या पेरनेवाला। २ बहुत अधिक कष्ट देने या सतानेवाला।

प्रपीडन—पु० [सं० प्र√पीड्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रपीडित] १ इस प्रकार किसी चीज को दबाना कि उसका रस निकल आये। पेरना। २ बहुत अधिक सताना या कष्ट देना।

प्रपील†—स्त्री०=पिपीलिका (चींटी)।

प्रपुंज—पु० [सं० प्रा० स०] बहुत बड़ा ढेर या राशि।

प्रपुत्र—पु० [सं० अत्या० स०] [स्त्री० प्रपुत्री] पुत्र का पुत्र। पोता।

प्रपूरक—वि० [सं० प्र√पूर् (पूर्ण करना) +णिच् + ण्वुल्—अक] १ अच्छी तरह पूरा करने या भरनेवाला। २. तृप्त करनेवाला।

प्रपूरण—पु० [सं० प्र√पूर् + णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रपूरित] १ अच्छी तरह पूरा करना या भरना। २ तृप्त करना। ३. मिलाना।

प्रपूरित—भू० कृ० [सं० प्र√पूर् + णिच् + क्त] १. अच्छी तरह पूरा किया या भरा हुआ। २ अच्छी तरह तृप्त किया हुआ।

प्रपौत्र—पु० [सं० अत्या० स०] [स्त्री० प्रपौत्री] पुत्र का पोता। पोते का पुत्र। परपोता।

प्रफुलना†—अ० [सं० प्रफुल्ल] फूलो से युक्त होना। फूलना।

प्रफुल्ल—वि० [सं० प्र√फुल्ल् (विकसित होना)+अच्] १ (फूल) जो खिला हुआ हो। २ (पौधा या वृक्ष) जिसमे फूल खिले हुए हों। ३ (व्यक्ति) जो अत्यधिक प्रसन्न हो। ४. (पदार्थ) जो खुला हुआ हो।

प्रफुल्ल-वदन—वि० [ब० स०] जिसका मुख प्रसन्न दीखता हो।

प्रफुल्ला—स्त्री० [सं० प्रफुल्ल--खिला हुआ] १ कुमुदिनी। कोईं। २. कमलिनी।

प्रफुल्लित—भू० कृ० [सं० प्रफुल्ल] १ खिला हुआ। कुसुमित। २ फूल की तरह खिला हुआ अर्थात् प्रसन्न तथा हँसता हुआ।

प्रबंध—पु० [सं० प्र√बंध (बाँधना) +घञ्] १ वह चीज जिससे कोई दूसरी चीज बाँधी जाय। बंधन। जैसे—डोरी, रस्सी आदि। २. अच्छा, पक्का और श्रेष्ठ बंधन। ३ ठीक तरह से निरंतर चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—प्रबन्ध वर्षा अर्थात् लगातार होती रहनेवाली वर्षा। ४. ऐसी रचना जिसमे सभी अंग, बातें या विषय उपयुक्त स्थानों पर रखकर और ठीक तरह से बाँध या सजाकर रखे गये हों। अच्छी और ठीक तरह से तैयार की हुई चीज। ५ प्राचीन भारतीय साहित्य मे काव्य के दो भेदो मे से एक (दूसरा भेद निर्बंध कहलाता था) जिसमे कोई कथा या घटना क्रमबद्ध रूप मे कही गई हो। खंडकाव्य और महाकाव्य इसी के उपभेद है। ६ भारतीय संगीत मे, शास्त्रीय नियमों के अनुसार राग-रागिनियाँ गाने की वह प्रथा (खयाल, ध्रुपद आदि के गाने की प्रथा से भिन्न) जो मध्य युग के साधु-संतो मे प्रचलित थी। ७ आज-कल उच्च श्रेणी के विचारशील विद्यार्थियों की वह कृति या रचना जो किसी विशिष्ट विषय या उसके किसी अंग-उपांग के संबंध मे यथेष्ट अनुसंधान और छानबीन करके और उसके संबंध में अपना नया तथा स्वतंत्र मत प्रतिपादित करते हुए प्रस्तुत की गई हो। (थीसिस) ८. आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक क्षेत्रो मे घर-गृहस्थी, निर्माणशालाओं या संस्थाओ के विभिन्न कार्यों तथा आयोजनों का अच्छी तरह से तथा कुशलतापूर्वक किया जानेवाला संचालन। (मैनेजमेंट)। ९ किसी तरह के काम के लिए की जानेवाली कोई योजना। जैसे—कपट-प्रबंध अर्थात् किसी को फँसाने के लिए बिछाया जानेवाला जाल।

प्रबंध-अभिकर्ता—पु० [ष० त०] किसी व्यावसायिक संस्था के किसी अभिकरण का मुख्य प्रबंधकर्ता। (मैनेजिंग एजेंट)

प्रबंधक—वि० [सं० प्र√बन्ध्+णिच् + ण्वुल्—अक] प्रबन्ध या व्यवस्था करनेवाला।

पुं० वह जो किसी कार्य, कार्यालय या विभाग के कार्यों का संचालन करता हो। व्यवस्थापक। (मैनेजर)

प्रबंधकल्पना—स्त्री० [सं० ष० त०] १. साहित्यिक प्रबन्ध की रचना। २ वह साहित्यिक रचना जो मूलत किसी घटना या तथ्य पर आश्रित हो और जिसमें कवि या लेखक ने अपनी कल्पना-शक्ति से भी बहुत सी बातें बढाई हों।

प्रबंधन—पु० [सं० प्र√बन्ध्+णिच् + ल्युट्—अन] १ किसी काम या बात का प्रबन्ध अर्थात् व्यवस्था करने की क्रिया या भाव। २ साहित्यिक रचना का ढंग, प्रकार या शैली। जैसे—कबीर या तुलसी की रचनाओ का प्रबन्धन।

प्रबंध-परिव्यय—पु० [ष० त०] वह परिव्यय या खर्च जो किसी काम का प्रबन्ध करने के बदले मे किसी को दिया जाय। (मैनेजमेन्ट चार्जेज)

प्रबंध-परिषद्—स्त्री० [ष० त०] वह परिषद या सभा-समिति जो किसी बडे कार्य या संस्था का परिचालन और व्यवस्था करती हो। (गवर्निंग बॉडी)

प्रबंध-व्यय—पु० [ष० त०] वह व्यय या खर्च जो किसी काम या बात का प्रबन्ध करने मे लगे। (कॉस्ट ऑफ मैनेजमेन्ट)

प्रबंध-संपादक—पु० [ष० त०] पत्र, पत्रिकाओ के संपादकीय विभाग का प्रबंध करनेवाला संपादक। (मैनेजिंग एडिटर)

प्रबंध-समिति—स्त्री० [ष० त०] किसी बडी संस्था, सभा आदि के चुने हुए लोगो की वह समिति जो उसकी सब बातो का प्रबन्ध या व्यवस्था करती हो। (मैनेजिंग कमिटी)

प्रबंधार्थ—पु० [प्रबंध-अर्थ, ष० त०] वह विषय जिसका उल्लेख या विचार किसी साहित्यिक रचना मे हुआ हो।

प्रबंधी (धिन्)—वि० [सं० प्रबंध + इनि]=प्रबंधक। जैसे—प्रबंधी संचालक।

प्रबंधी संचालक—पु० [सं० व्यस्त पद] किसी बहुत बडी संस्था के विभिन्न संचालकों मे से वह व्यक्ति जिस पर उसके प्रबंध आदि का भी सब भार हो। (मैनेजिंग डाइरेक्टर)

प्रबं†—पु०=पर्व।

प्रबरष (स) न*—पु०=प्रवर्षण।

प्रबल—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० प्रबला] १ जिसमें बहुत अधिक बल या शक्ति हो। बलवान। २ जो बल मे किसी से बीस पडता हो। अपेक्षाकृत अधिक बलवाला। ३ उग्र। तेज। प्रचंड। ४ बहुत जोरो का। घोर या भारी।

प्रबल झंझा—स्त्री० =चंडवात।

प्रबलन—पु० [सं० प्र√बल्+ल्युट्—अन] १. बल या शक्ति बढाने की क्रिया या भाव। प्रबल करना। २ किसी दुर्बल को अधिक बलवान बनाने के लिए किया जानेवाला उपाय या दी जानेवाली सहायता।

प्रबला—स्त्री० [सं० प्रबल + टाप्] प्रसारिणी नाम की ओषधि।

वि० स० 'प्रबल' का स्त्री०।

प्रबाधित—भू० कृ० [सं० प्र√बाध् (बाधा देना) +क्त] १ सताया हुआ। २ दबाया या धकेला हुआ।

प्रबाल—पु०=प्रवाल।

प्रबास—पु०=प्रवास।

प्रबाह—पु०=प्रवाह।

प्रबाहु—पु० [सं० अत्या० स०] हाथ का आगेवाला अंश। पहुँचा।

प्रबिसना†—अ०=प्रविसना (प्रवेश करना)।

प्रवीन†—वि०=प्रवीण।

प्रबुद्ध—वि० [सं० प्र√बुध् (जानना)+क्त] १ जागा हुआ। जाग्रत। २. जिसकी बुद्धि ठिकाने हो और अच्छी तरह काम कर रही हो। ३ जो होश मे हो। चैतन्य। सचेत। ४ जिसे प्रबोध हो या हुआ हो। यथार्थ ज्ञान से परिचित। ५ खिला हुआ। विकसित।

पु० १. नौ योगेश्वरो मे से एक योगेश्वर। २ ज्ञानी। ३ पडित। विद्वान्।

प्रबोध—पु० [सं० प्र√बुध्+घञ्] [वि० प्रबुद्ध] १. सोकर उठना। जागना। २ किसी बात या विषय का ठीक और पूरा ज्ञान। यथार्थ ज्ञान। ३ किसी को समझा-बुझाकर शात या स्थिर करना। ढारस। दिलासा। सान्त्वना। ४ साहित्य मे, दूत या दूती का नायिका या नायक को कोई बात अच्छी तरह और युक्तिपूर्वक समझाकर उत्साहित या शात करना या सात्वना देना। ५ चेतावनी। ६ विकास। ७ महाबुद्ध की एक अवस्था। (बौद्ध)

प्रबोधक—वि० [सं० प्र√बुध्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ जगानेवाला। २ चेताने या सचेत करनेवाला। ३ समझाने-बुझानेवाला। ४ यथार्थ ज्ञान कराने या बतलानेवाला। ५ ढारस या सात्वना देनेवाला।

प्रबोधन—पु० [सं० प्र√बुध्+ल्युट्—अन, या णिच्+ल्युट्] १ जागरण। जागना। २ नीद से उठाना। जगाना। ३ यथार्थ ज्ञान। बोध। ४. बोध कराना। जताना। ५ सचेत या सावधान करना। ६ ढारस, तसल्ली या सान्त्वना देना। ७ विकसित करना।

प्रबोधना—स० [सं० प्रबोधन] १ सोये हुए को उठाना। जगाना। २ सचेत या सजग करना। ३ अच्छी तरह समझाना-बुझाना। ४ ढारस या सान्त्वना देना। उदा०—मंत्रिहि राम उठाइ प्रबोधा।—तुलसी। ५ अपने अनुकूल करने के लिए सिखाना-पढाना। ६ आध्यात्मिक ज्ञान से युक्त करना।

प्रबोधनी—स्त्री० [सं० प्र√बुध्+णिच्+ल्युट्—अन, ङीप्] प्रबोधिनी।

प्रबोधित—भू० कृ० [सं० प्र√बुध्+णिच्+क्त] १ जो जगाया गया हो। २ जिसे उपयुक्त ज्ञान दिया गया हो। ३ जिसे समझाया-बुझाया गया हो। ४. जिसे ढारस या सान्त्वना दी गई हो।

प्रबोधिता—स्त्री० [सं० प्रबोधित+टाप्] एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे सगण, जगण, सगण, जगण और अत मे गुरु (सजसजग) होता है। दे० 'मजुभाषिणी'।

प्रबोधिनी—स्त्री० [सं० प्र√बुध्+णिच्+णिनि+ङीप्] १ कार्तिक शुक्ला एकादशी। २. जवासा। धमासा।

प्रबोधी (धिन्)—वि० [सं० प्र√बुध्+णिच्+णिनि] [स्त्री० प्रबोधिनी] १ जगानेवाला। २ प्रबोधन करनेवाला। प्रबोधक।

प्रब्ब†—पु०=पर्व।

प्रभंजन—पु० [सं० प्र√भज् (भग करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रभग्न] १ अच्छी या पूरी तरह से तोड़-फोडने और नष्ट करने की क्रिया या भाव। २ रोकना या निवारण करना। ३ हराना। पराजित करना। ४ वैज्ञानिक क्षेत्र मे, मुख्यत वह बहुत तेज हवा जो ७५ से १०० मील प्रति घंटे के हिसाब से चलती हो। (हरिकेन) ५ वायु। हवा। ६. वायु का वह देव रूप जिससे हनुमान उत्पन्न हुए थे।

प्रभंजन-जाया*—पु०=हनुमान (प्रभजन के पुत्र)।

प्रभग्न—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] १ तोड़-फोडकर नष्ट-भ्रष्ट किया हुआ। २. हराया हुआ।

प्रभणना—स० [सं० प्रभणन] कहना। उदा०—प्रभणति पुत्र इम मात पिता प्रति।—प्रिथीराज।

प्रभणाना—स० [हि० प्रभणना का प्रे०] कहलाना। उदा०—पखरावि त्रिया बामै प्रभणावै।—प्रिथीराज।

प्रभत*—स्त्री० [सं० प्रभुता] बड़प्पन। बडाई।

प्रभद्र—पु० [सं० प्र-भद्र, ब० स०] नीम।

प्रभद्रक—पु० [सं० प्रभद्र+कन्] प्रभद्रिका (वर्ण वृत्ति)।

प्रभद्रिका—स्त्री० [सं० प्रभद्र+कन्+टाप्, इत्व] पद्रह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे नगण, सगण फिर जगण और अत मे एक रगण होता है। जैसे—निजभुज राघवेन्द्र दस-सीस ढाहहै।

प्रभव—पु० [सं० प्र√भू (होना)+अप्] १ उत्पत्ति या सृष्टि का मूल कारण। २ उत्पत्ति। जन्म। ३ उत्पत्ति का स्थान। ४ सृष्टि। ५ जगत्। ससार। ६ नदी का उद्गम या मूल स्थान। ७ पराक्रम।

प्रभवन—पु० [सं० प्र√भू+ल्युट्—अन] १ उत्पत्ति। २ आकार। ३ मूल। ४. अधिष्ठान।

प्रभविता (तृ)—पु० [सं० प्र√भू+तृच्] १ शासक। २ प्रभु। स्वामी।

प्रभविष्णु—वि० [सं० प्र√भू+इष्णुच्] [भाव० प्रभविष्णुता] १ दूसरो पर प्रभाव डालनेवाला। प्रभावशील। २ बलवान।

पु० १ प्रभु। २ विष्णु।

प्रभविष्णुता—स्त्री० [सं० प्रभविष्णु+तल्+टाप्] १ औरो की तुलना मे होनेवाली प्रधानता या श्रेष्ठता। २ किसी वस्तु मे निहित वह स्थायी गुण या तत्त्व जिसका दूसरी वस्तुओ पर कुछ परिणाम होता या प्रभाव पडता हो। (पोटेन्सी)। जैसे—बरसात आने पर इस ओषधि की प्रभविष्णुता कुछ कम हो जाती है।

प्रभा—स्त्री० [सं० प्र√भा (दीप्ति)+अड्+टाप्] १ प्रकाश। दीप्ति। २ सूर्य का बिंब या मडल। ३ सूर्य की एक पत्नी। ४ दुर्गा की एक मूर्ति या रूप। ५ कुबेर की नगरी। ६ बारह अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति जिसे मन्दाकिनी भी कहते है।

प्रभाउ†—पु०=प्रभाव।

प्रभाकर—पु० [सं० प्रभा√कृ (करना)+ट] १. सूर्य। २ चंद्रमा। ३ अग्नि। ४ आक। मदार। ५ समुद्र। ६ शिव। ७. मार्कंडेय पुराण के अनुसार आठवे मन्वतर के देवगण के एक देवता। ८ एक प्रसिद्ध मीमासक जो मीमांसा-दर्शन की एक शाखा के प्रवर्तक थे। ९ कुश द्वीप के एक वर्ष का नाम।

प्रभाकरी—स्त्री० [सं० प्रभाकर+ङीप्] बोधि सत्त्वो की तृतीय अवस्था जो प्रमुदिता और विमला के उपरात प्राप्त होती है।

प्रभाकीट—पु० [सं० मध्य० स०] खद्योत। जुगनू।

प्रभाग—पु० [सं० अन्या० स०] १ किसी बड़े विभाग के अंतर्गत कोई छोटा भाग या विभाग। (सेक्शन) २ गणित में भिन्न का भिन्न। जैसे—$\frac{1}{2}$ का $\frac{1}{3}$।

प्रभात—पु० [सं० प्र√भा (दीप्ति)+क्त] १ सूर्य निकलने से कुछ

पहले का समय। तड़का। २ प्रभा (सूर्य की पत्नी) के एक पुत्र। ३. संगीत मे, एक राग।

वि० जो कुछ-कुछ स्पष्ट रूप में सामने आने लगा हो।

प्रभात-फेरी—स्त्री० [स० + हिं०] प्रचार आदि के लिए बहुत तड़के दल बाँधकर गाते-बजाते और नारे लगाते हुए बस्तियो मे चक्कर लगाना।

प्रभाती—स्त्री० [स० प्रभात + ङीष्] १ प्रत्यूष और प्रभास नामक वसुओं की माता। (महाभारत) २ प्रभात के समय गाये जानेवाले गीत। ३ दातुन।

वि० प्रभात-संबंधी।

प्रभान—पु० [स० प्र√भा+ल्युट्—अन] १ ज्योति। प्रकाश। २ चमक। दीप्ति।

प्रभापन—पु० [स० प्र√भा+णिच्, पुक्, + ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रभापित] दीप्तिमान् करना।

प्रभापूर्य—वि० [स० प्रभा-आपूर्य, तृ० त०] १. प्रकाश से युक्त। २ प्रकाश करनेवाला। ३ प्रकाशित करनेवाला। उदा०—भारत के नभ का प्रभापूर्य।—निराला।

प्रभा-मंडल—पु० [स० ष० त०] दिव्य पुरुषो, देवताओ आदि के मुख के चारो ओर का वह आभायुक्त मंडल जो चित्रो, मूर्तियों आदि मे दिखाया जाता है। परिवेश। भा-मंडल। (हैलो)

प्रभाव—पु० [स० प्र√भू (होना) + घञ्] १. अस्तित्व मे आना। उद्भव। २ वह दबाव जो किसी के बुद्धि-बल, चारित्रिक विशेषता, उच्च पद आदि के फल-स्वरूप दूसरों पर पड़ता है। (इन्फ्लुएन्स) ३. वह अच्छा या बुरा परिणाम जो किसी चीज के गुणो के फलस्वरूप लक्षित होता है। (एफेक्ट) जैसे—शिक्षा या सिनेमा का प्रभाव, औषध या पुस्तक का प्रभाव। ४ ज्योतिष मे, ग्रह या ग्रहो की विशिष्ट स्थिति के फल-स्वरूप किसी मे सामान्य से भिन्न दिखलाई पड़नेवाले विकार। ५ दूसरो को किसी विशिष्ट विचारधारा का अनुयायी, समर्थक आदि बनाने अथवा किसी ओर ले चलने का सामर्थ्य। जैसे—वे अपने प्रभाव से ही बहुत से काम करा लेते हैं। ६ उक्त सामर्थ्य के फलस्वरूप चारो ओर छाया हुआ आतंक। जैसे—यहाँ भी उनका प्रभाव काम कर रहा है। ७ स्वारोचिष् मनु के एक पुत्र जो कलावती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे। (मार्कंडेय पुराण)। ८. सूर्य के एक पुत्र। ९ सुग्रीव के एक मंत्री।

प्रभावक—वि० [सं० प्र√भू+णिच् + ण्वुल्—अक] प्रभाव उत्पन्न करने या डालनेवाला। प्रभावशाली। उदा०—नवयुग का वाहक हो, नेता, लोक प्रभावक।—पंत।

प्रभाव-क्षेत्र—पु० [स० ष० त०] आधुनिक राज-तंत्र मे, वह क्षेत्र या प्रदेश जो किसी प्रबल और बड़े राज्य के प्रभाव या दबाव मे रहता हो और जिस पर किसी दूसरे राज्य या राष्ट्र का प्रभाव अथवा हस्तक्षेप सहन न किया जाता हो। (स्फीयर ऑफ इन्फ्लुएन्स)

प्रभावज—वि० [सं० प्रभाव√जन् (उत्पन्न होना) + ड] १. प्रभाव से उत्पन्न। प्रभावजात।

पु० १ राज्य की वह शक्ति जो उसके कोष, सेना आदि के बल पर आश्रित होती है। २. एक प्रकार का रोग जिसके सम्बन्ध मे यह माना जाता है कि यह देवताओ, महात्माओ आदि के शाप अथवा ग्रहो के प्रकोप से उत्पन्न होता है।

प्रभावती—स्त्री० [सं० प्रभा + मतुप्, वत्व, + ङीप्] १ महाभारत के अनुसार सूर्य की पत्नी का नाम। २. कार्तिकेय की एक मातृका। ३ शिव के एक गण की वीणा। ४ प्रभाती नामक गीत। ५ रुचि नामक छन्द का एक नाम।

प्रभावना—स्त्री० [स० प्र√भू+णिच् + युच्—अन, + टाप्] १ उद्भावना। २. प्रकाश।

प्रभाववान् (वत्)—वि० [स० प्रभाव + मतुप्, वत्व] = प्रभावशाली।

प्रभावशाली (लिन्)—वि० [स० प्रभाव√शाल् + णिनि] जिसमे यथेष्ट प्रभाव उत्पन्न करने की शक्ति हो। जो अच्छा या बहुत प्रभाव डाल सकता हो।

प्रभावान्वित—भू० कृ० [स० प्रभाव-अन्वित, तृ० त०] किसी से प्रभावित।

प्रभावित—भू० कृ० [स० प्र√भू + णिच् + क्त] जिस पर किसी का प्रभाव पड़ा हो। किसी के प्रभाव से दबा हुआ।

प्रभाषण—पु० [स० प्र√भाष् + ल्युट्—अन] कठिन पदो, वाक्यों, शब्दो आदि की व्याख्या।

प्रभास—वि० [स० प्र√भास् + अच्, प्र√भास् + घञ्] १ जिसमें बहुत अधिक या यथेष्ट प्रभा हो। प्रभापूर्ण। २ बहुत चमकीला।

पु० १ ज्योति। २ दीप्ति। चमक। ३ एक वसु का नाम। ४. कार्तिकेय का एक अनुचर। ५ आठवे मन्वतर के एक देव-गण। ६ एक प्राचीन तीर्थ जिसे सोमतीर्थ भी कहते थे। ७ एक जैन गणाधिप।

प्रभासन—पु० [स० प्र√भास् + ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रभासित] १ प्रभास या दीप्ति उत्पन्न करना। २ दीप्ति। ज्योति।

प्रभासना—अ० [स० प्रभासन] १ प्रकाशित होना। चमकना। २ भासित होना। कुछ कुछ दिखाई पड़ना। आभास होना।

स० १ प्रकाशित करना। २ चमकाना।

प्रभीत—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक डरा हुआ। भयभीत।

प्रभु—वि० [स० प्र√भू + डु] [भाव० प्रभुता, प्रभुत्व] जो बहुत अधिक बलवान हो।

पु० १ स्वामी। मालिक। २ ईश्वर। ३. बड़ो के लिए प्रयुक्त होनेवाला संबोधन।

प्रभुता—स्त्री० [स० प्रभु + तल् + टाप्] १. प्रभु होने की अवस्था या भाव। प्रभुत्व। २. अधिकार, शक्ति आदि से युक्त बड़प्पन। महत्त्व। ३ शासन आदि का अधिकार। हुकूमत। ४. वैभव। ५. दे० 'प्रभु-सत्ता'।

प्रभुताई*—स्त्री० = प्रभुता।

प्रभुत्व—पु० [स० प्रभु + त्व] प्रभुता।

प्रभु-राज्य—पु० [स० कर्म० स०] ऐसा राज्य जिसकी प्रभु-सत्ता उसकी वैधानिक सरकार या जन-साधारण मे निहित हो। (सावरेन स्टेट)

प्रभु-सत्ता—स्त्री० [सं० कर्म० स०] [वि० प्रभु-सत्ताक] दे० 'सप्रभुता'।

प्रभु-सत्ताक—वि० [स० ब० स०, + कप्] १. प्रभु-सत्ता से युक्त। जिसे

प्रभुसत्ता प्राप्त हो। २ (देश या राज्य) जिस पर दूसरो का कोई नियंत्रण, प्रभाव या शासन न हो। परम स्वतंत्र। (सॉवरेन)

प्रभू†—पु०=प्रभु।

प्रभूत—वि०[स० प्र√भू+क्त] १ जो अच्छी तरह हुआ हो। २ जो उत्पन्न हुआ या निकला हो। उद्भूत। ३ बहुत अधिक। प्रचुर। ४ उन्नत। ५ पूर्ण। पूरा। ६. पका हुआ। पक्व।
पु०=पंच-भूत।

प्रभूति—स्त्री०[स० प्र√भू+क्तिन्] १ प्रभूत होने की अवस्था या भाव। २ उत्पत्ति। ३ अधिकता। प्रचुरता।

प्रभृति—अव्य०[स० प्र√भृ (धारण-पोषण)+क्तिन्] इत्यादि। आदि। वगैरह।

प्रभेद—पु०[सं० प्र√भिद् (विदारण)+घञ्] १ किसी बडे भेद, वर्ग या विभाग के अन्तर्गत कोई छोटा भेद, वर्ग या विभाग। २ अन्तर। भेद।

प्रभेदक—वि०[स० प्र√भिद्+ण्वुल्-अक] १ अच्छी तरह भेदन करने या तोडने-फोडनेवाला। २ भेद या प्रभेद उत्पन्न करनेवाला।

प्रभेदन—पु० [स० प्र√भिद्+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह भेदन अर्थात् तोडने-फोडने की क्रिया या भाव। २ भेद या प्रभेद उत्पन्न करना।
वि०=प्रभेदक।

प्रभेव*—पु०=प्रभेद।

प्रभ्रष्ट—भू० कृ०[स० प्र√भ्रश्+क्त] १ गिरा हुआ। २ टूटा हुआ। ३ भ्रष्टा।

प्रभ्रष्टक—पु०[स० प्रभ्रष्ट+कन्] सिर से लटकती हुई माला।

प्रमडल—पु०[स० अत्या० स०]१ पहिये के बाहरी हिस्से का खड। चक्के का खड। २ प्रदेश का वह विभाग जिसमे अनेक मडल या जिले हो। (कमिश्नरी)

प्रमग्न—वि०[स० प्र√मस्ज् (स्नान)+क्त]—निमग्न।

प्रमत्त—वि०[स० प्रा० स०] [भाव० प्रमत्तता] १ जो बहुत अधिक मत्त हो। नशे मे चूर। मतवाला। २ पागल। बावला। ३ अधिकार, पद आदि का जिसे बहुत अधिक अभिमान हो। ४ लापरवाही के कारण धार्मिक कृत्य न करनेवाला।

प्रमत्तता—स्त्री० [स० प्रमत्त+तल्+टाप्] प्रमत्त होने की अवस्था या भाव।

प्रमथ—वि०[स० प्र √मथ् (मथना)+अच्] १ मथन करनेवाला। २. कष्ट देने या पीडित करनेवाला।
पुं० १ शिव के एक प्रकार के गण या परिषद् जिनकी सख्या ३६ करोड कही गई है। २ घोडा। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

प्रमथन—पु०[स० प्र√मथ्+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह मथना। २ कष्ट देना। पीडित करना। ३ वध करना। मार डालना। ४. चौपट, नष्ट या बरबाद करना।

प्रमथ-नाथ—पु०[ष०त०] महादेव। शिव।

प्रमथ-पति—पु०[ष० त०] महादेव। शिव।

प्रमथा—स्त्री०[स० प्रमथ+टाप्] १. हरीतकी। हर्रे। २ पीडा।

प्रमथाधिप—पु० [स० प्रमथ-अधिप, ष० त०] शिव।

प्रमथालय—पुं०[स० प्रमथ-आलय, ष० त०] दुख या यत्रणा का स्थान, नरक।

प्रमथित—भू० कृ० [स० प्रा० स०] १ अच्छी तरह मथा हुआ। २. सताया हुआ।
पु० दही मथने पर निकला हुआ शुद्ध मठा जिसमे पानी न मिलाया गया हो।

प्रमद—पु० [स० प्र√मद् (हर्ष)+अप्] १ मतवालापन। २ धतूरे का फल। ३ आनद। हर्ष। ४ एक प्रकार का दान। ५ वशिष्ठ के एक पुत्र।
वि० १ नशे मे चूर। २ असावधान।

प्रमदक—वि० [स० प्र√मद्+अच्,+कन्] १ परलोक को न माननेवाला, अर्थात् नास्तिक। २ मन-माना आचरण करनेवाला। ३. कामुक।

प्रमदवन—पु०[स० ष० त०] राजमहल के पास का वह उद्यान जिसमे रानियाँ सैर करती थी।

प्रमदा—स्त्री०[स० प्रमद+टाप्] १ सुदर तथा युवती स्त्री। २. स्त्री। ३ पत्नी। ४ प्रियगु। मालकँगनी। ५ एक प्रकार का छद।

प्रमद्वर—वि० [स० प्र√मद्+वरच्] १ ध्यान देनेवाला। २ असावधान। लापरवाह।

प्रमन (स्)—वि०[सं० ब० स०] प्रसन्न। सुखी। उदा०—भूले थे अब तक बधु प्रमन।—निराला।

प्रमना—वि०=प्रमन।

प्रमन्यु—वि०[स० ब० स०] १ क्रुद्ध। २ दुखी। सतप्त।
पु० १ बहुत अधिक क्रोध। २ दुख। सताप।

प्रमर्दन—पु०[स० प्रा० स०] १ अच्छी तरह मर्दन करना। अच्छी तरह मलना-दलना। मसल, रगड या रौदकर नष्ट-भ्रष्ट करना। २ दमन करना। ३ विष्णु।
वि० नष्ट करने या रौदनेवाला।

प्रमस्तिष्क—पु० [स०] [वि० प्रमास्तिष्क] रीढवाले पशुओ और मनुष्यो की खोपडी के अदर का वह ऊपरी भाग जहाँ से शारीरिक क्रियाओ, व्यापारो आदि का प्रवर्तन और सचालन होता है। (सेरिब्रम)

प्रमा—स्त्री० [स० प्र√मा (मापना)+अड+टाप्] १ तर्क और प्रमाणों आदि के आधार पर प्राप्त होनेवाला यथार्थ ज्ञान। २ वह ज्ञान जो बिना बुद्धि की सहायता के या बिना सोचे-विचारे आप से आप तत्काल उत्पन्न हो। (इन्ट्यूशन) ।३ नीव। ४ नाप। माप।

प्रमाण—पु० [स० प्र√मा+ल्युट्—अन] १ लबाई, चौडाई आदि नापने या भार आदि तौलने का मान। नाप या तौल। जैसे—गज, बटखरे आदि। २ नाप, तौल आदि की नियत इकाई या इयत्ता। जैसे—इस धोती का प्रमाण दस हाथ है, अर्थात् यह इससे न कम होती है और न अधिक। ३. लबाई-चौडाई। विस्तार। ४ सीमा। हद। ५ ऐसा कथन, तथ्य या बात जिससे किसी अन्य कथन, तथ्य या बात के सत्यपूर्ण होने की प्रतीति होती है। सबूत। (प्रूफ) जैसे—धुआँ इस बात का प्रमाण है कि कहीं आग जल रही है। ६ वह चीज या बात जिससे विवादास्पद दूसरी बात के किसी एक पक्ष या मत का ठीक होने का निश्चय होता हो।
पद—प्रमाणपत्र। (देखें)

७. वह चीज या बात जो किसी कथन को ठीक सिद्ध करने के लिए औरों के सामने रखी जाती हो। साखी। (एविडेन्स) ८. ऐसा कथन, तथ्य या बात जिसे सब लोग ठीक, प्रामाणिक या यथार्थ मानते हों। ९ किसी चीज या बात के ठीक या यथार्थ होने की अवस्था या भाव। सचाई। सत्यता। उदा०—कान्ह जू कैसे दया के निधान हौ, जानी न काहू के प्रेम प्रमानहि।—दास। १० किसी की सत्यता आदि पर किया जानेवाला विश्वास। प्रतीति। ११ ऐसी चीज या बात जो बिलकुल ठीक होने के कारण सबके लिए आदरणीय या मान्य हो। उदा०—अति ब्रह्म-शास्त्र प्रमाण मानि सो वश्य मो मन युद्ध कै। —केशव। १२ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे किसी बात का कोई प्रमाण मिलने पर उस बात के प्रत्यक्ष या सिद्ध होने का उल्लेख होता है।

विशेष—न्यायशास्त्र मे प्रमाण के जो आठ भेद कहे गये हैं, उन्हीं के अनुसार इस अलकार के भी आठ भेद माने गये हैं।

१३ किसी बात का ठीक, पूरा और सच्चा ज्ञान। १४ चित्रकला मे, अकित पदार्थों, व्यक्तियो आदि के सब अंगो का पारस्परिक ठीक अनुपात। (प्रोपोर्शन) १५ शास्त्र, जो प्रमाण के रूप मे माने जाते हैं। १६ मूल-धन। पूँजी। १७ एकता। १८ कारण। सबब। १९ गणित मे त्रैराशिक की पहली राशि या सख्या। २० विष्णु का एक रूप। २१ शिव।

वि० १. जो ठीक या सत्य सिद्ध हो चुका हो अथवा माना जाता हो। २ जो सबके लिए मान्य हो। ३. जो यह जानता हो कि क्या ठीक है, और क्या ठीक नही है।

अव्य० १ अवधि या सीमासूचक शब्द। पर्यन्त। तक। उदा०—सत जोजन प्रमान लै धावै।—तुलसी। २ किसी के तुल्य, सदृश या समान।

प्रमाणक—वि० [स० प्रमाण + कन् या प्रमाण + णिच् + ण्वुल्—अक] १ समस्त पदो के अत मे, परिमाण या विस्तार-सबधी। २ प्रमाणित करनेवाला।

पु० १ वह पत्र जिस पर लिखी हुई बाते प्रामाणिक और सही मानी जाती है। (सर्टिफिकेट) २ किसी रकम के आय-व्यय के खाते मे चढाये जाने की सपुष्टि या प्रमाण के रूप मे साथ में नत्थी किये जानेवाले हिसाब के ब्यौरे का पुरजा। (वाउचर)

प्रमाणकर्ता (तृ)—पु० [ष० त०] वह व्यक्ति जो कोई बात प्रमाणित करता हो। (सर्टिफायर)

प्रमाण-कुशल—वि० [स० त०] अच्छा तर्क करने और उपयुक्त प्रमाण देनेवाला।

प्रमाणकोटि—स्त्री० [ष० त०] प्रमाण मानी जानेवाली बातो या वस्तुओ का वर्ग।

प्रमाणतः (तस्)—अव्य० [स० प्रमाण + तस्] प्रमाण के अनुसार या आधार पर।

प्रमाणन—पुं० [स० प्रमाण + णिच् + ल्युट्—अन] १. कथन, लेख आदि के सम्बन्ध में यह कहना या सिद्ध करना कि यह ठीक और प्रामाणिक है। (सर्टिफ़िकेशन) २. प्रमाण उपस्थित करके किसी तथ्य या बात को सही सिद्ध करना।

प्रमाणना—स०=प्रमानना।

प्रमाण-पत्र—पुं० [ष० त०] वह पत्र जिसमें कोई संबंधित अधिकारी यह कहता है कि किसी के संबध की अमुक-अमुक बातें सत्य हैं। प्रमाणक। (सर्टिफिकेट)

प्रमाण-पुरुष—पु० [मध्य० स०] वह जिसके निर्णय मानने के लिए दोनो पक्षों के लोग तैयार हो। पच।

प्रमाण-शास्त्र—पु०=तर्क-शास्त्र। (न्याय)

प्रमाणिक—वि० [स० प्रमाण + ठन्—इक] प्रामाणिक।

प्रमाणिका—स्त्री० [सं० प्रमाणिक + टाप्] प्रमाणी। (दे०)

प्रमाणित—भू० कृ० [स० प्रमाण + णिच् + इतच्] १ जो प्रमाण द्वारा ठीक सिद्ध किया जा चुका हो। २ जिसके सबध मे किसी आधिकारिक व्यक्ति ने यह लिखा हो कि यह प्रामाणिक, सत्यपूर्ण या सही है।

प्रमाणी—स्त्री० [स० प्रमाण + ङीष्] चार चरणों का एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से जगण, रगण, लघु और गुरु (ज, र, ल, ग) होते हैं। नाग स्वरूपिणी।

प्रमाणीकरण—पु० [सं० प्रमाण + च्वि √कृ (करना) + ल्युट्—अन] प्रमाणन।

प्रमाणीकृत—भू० कृ० [स० प्रमाण + च्वि √कृ + क्त] जो प्रमाण के रूप मे मान लिया गया हो। या प्रमाण के द्वारा सत्य या सिद्ध हो चुका हो।

प्रमातव्य—वि० [स० प्र √मा + तव्यत्] मारे जाने के योग्य।

प्रमाता (तृ)—पु० [स० प्र √मा + तृच्] १ प्रमाणो को मानने अर्थात् उनके आधार पर न्याय करनेवाला अधिकारी। २ न्यायाधीश। ३ आत्मा या चेतन पुरुष जिसे या जिससे ज्ञान होता है। ४. वह जो विषय से भिन्न और द्रष्टा या साक्षी हो।

प्रमातामह—पु० [स० अत्या० स०] [स्त्री० प्रमातामही] परनाना।

प्रमात्रा—स्त्री० [स० प्रा० स०] उतनी मात्रा जितनी आवश्यक, इष्ट या निर्दिष्ट हो। (क्वैन्टम)

प्रमाथ—पु० [स० प्र √मथ् + घञ्] १ मथन। २ कष्ट देना। पीडन। ३ नष्ट करना। न रहने देना। ४ मार डालना। ५ बलात् किया जानेवाला संभोग। बलात्कार। ६ बलपूर्वक किसी से कुछ छीन लेना। ७ प्रतिद्वंद्वी को जमीन पर पटककर उस पर चढ बैठना और उसे घस्सा देना। ८ शिव का एक गण। ९ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। १० कार्तिकेय का एक अनुचर।

प्रमाथी (थिन्)—वि० [स० प्र √मथ् + णिनि] [स्त्री० प्रमाथिनी] १. प्रमथन करने या मथनेवाला। २ कष्ट देने या पीडित करनेवाला। ३ नष्ट करनेवाला। नाशक। ४ मार डालनेवाला। ५ घातक। ६ काटनेवाला।

पु० १. बृहत्सहिता के अनुसार बृहस्पति के ऐंद्र नामक तीसरे युग का दूसरा सवत्सर जो निकृष्ट माना गया है। २ वह ओषध जो मुँह, आँख, कान आदि में जमा हुआ कफ बाहर निकाल दे। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

प्रमाद—पु० [स० प्र √मद् + घञ्] १ किसी प्रकार के मद या नशे मे होने की अवस्था या भाव। २ वह मानसिक स्थिति जिसमे मनुष्य अभिमान, असावधानता, उपेक्षा, प्रभुत्व, भ्रम आदि के कारण बिना कुपरिणाम का विचार किये कोई अनुचित काम, बात या भूल कर बैठता है। ३. उक्त प्रकार की मानसिक अवस्था मे की जानेवाली कोई बहुत बडी भूल। ४.

दुर्घटना। ५. बेहोशी। मूर्च्छा। ६. अंत:करण की दुर्बलता। ७ उन्माद। पागलपन। ८. योग-शास्त्र में समाधि के साधनों की ठीक तरह से भावना न करना या उन्हें ठीक न समझना।

प्रमादतः—अव्य०[सं० प्रमाद+तस्] प्रमाद के कारण।

प्रमादवान् (वत्)—वि० [सं० प्रमाद+मतुप्, वत्व] (व्यक्ति) जो प्रमाद करता हो अर्थात् बिना कुपरिणाम का विचार किये अनुचित या गलत काम करता हो।

प्रमादिक—वि०[सं० प्रमाद+ठन्—इक] १ प्रमाद-सम्बन्धी। प्रमाद का। २ प्रमाद करनेवाला। प्रमादशील।

प्रमादिका—स्त्री० [सं० प्रमादिक+टाप्] ऐसी कन्या जिसके साथ किसी ने बलात्कार किया हो।

प्रमादिनी—स्त्री० [सं० प्रमादिन्+ङीप्] संगीत में एक रागिनी जो हिंडोल राग की सहचरी कही गई है।

प्रमादी (दिन्)—वि० [सं० प्रमाद+इनि] [स्त्री० प्रमादिनी] १ (व्यक्ति) जो प्रमाद करता हो। प्रमादवान्। २ पागल।

प्रमान—वि०[सं० प्रमाण या प्रामाणिक] १. प्रामाणिक। २ निश्चित। पक्का। उदा०—यह प्रमान मन मोरे।—तुलसी।

अव्य० की तरह। की भाँति। के समान।

प्रमानना—स०[सं० प्रमाण+ना (प्रत्य०)] १ प्रमाण के रूप में या बिलकुल सत्य मानना। ठीक समझना। २ प्रमाणित या सिद्ध करना। साबित करना। ३ निश्चित या स्थिर करना। ठहराना।

प्रमानी†—वि०=प्रामाणिक।

प्रमापक—वि०[सं० प्र√मा+णिच्, पुक्, +ण्वुल्—अक] प्रमाणित करनेवाला।

पु० प्रमाण।

प्रमापन—पु०[सं० प्र√मा+णिच्, पुक्, +ल्युट्—अन] १. मार डालना। मारण। २ नाश। ३. आकृति। रूप।

प्रमापयिता (तृ)—वि० [सं० प्र√मा+णिच्, पुक्, +तृच्] [स्त्री० प्रमापयित्री] १ घातक। २ नाशक। ३ अनिष्टकारक। हानिकारक।

प्रमापित—भू० कृ०[सं० प्र√मा+णिच्, पुक्, +तृच्] १ जो मार डाला गया हो। हत। २ ध्वस्त। विनष्ट।

प्रमापी (पिन्)—वि० [सं० प्र√मा+णिच्, पुक्, +णिनि] १ वध करने-वाला। २ नष्ट करनेवाला।

प्रमायुक—वि०[सं० प्र√मी (हिंसा)+उकञ्] जो ध्वस्त या नष्ट हो सकता है।

प्रमार्जक—वि० [सं० प्र√मृज् (शुद्ध करना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १ पोंछने या साफ करनेवाला। २ दूर करने या हटानेवाला।

प्रमार्जन—पु०[सं० प्र√मृज+णिच्+ल्युट्—अन] १ झाड़-पोंछ या धोकर साफ करना। २ मरम्मत या सुधार करना। ३. दूर करना। हटाना।

प्रमावाद—पु० [सं० ष० त०] [वि० प्रमावादी] १ मनोविज्ञान का यह मत या सिद्धान्त कि कोई सार्विक शब्द या संज्ञा सुनकर उसके अनुरूप आकृति प्रस्तुत करने की शक्ति मन में होती है। (कन्सेप्चुअलिज्म)

प्रमास्तिष्क—वि०[सं०] प्रमस्तिष्क से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। (सेरिब्रल)

प्रमित—भू० कृ०[सं० प्र√मन्+क्त] १. नापा या मापा हुआ। २. परिमित (अल्प या सीमित)। ३ जाना हुआ। ज्ञात। ४ निश्चित। ५. जिसके सम्बन्ध में प्रमा (अर्थात् प्रमाणों के द्वारा यथार्थ ज्ञान) की प्राप्ति हुई हो। ६ प्रमाणित।

प्रमिताक्षरा—स्त्री०[सं० प्रमित-अक्षर, ब०स०, टाप्] बारह अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में सगण, जगण, सगण और सगण (स, ज, स, स) होते हैं।

प्रमिति—स्त्री०[सं० प्र√मि+क्तिन्]। १ नापने की क्रिया या भाव। २ नाप। ३ प्रमाणों के आधार पर प्राप्त किया जाने या होनेवाला यथार्थ ज्ञान।

प्रमीढ़—वि०[सं० प्र√मिह् (सींचना)+क्त] १ गाढ़ा। २ घना। ३ जो मूत्र बनकर या मूत्र के रूप में शरीर के बाहर निकला हो।

प्रमीत—भू० कृ०[सं० प्र√मी+क्त] १ प्रकृत या स्वाभाविक रूप से मरा हुआ। मृत (डिसीज्ड) ३ वैदिक युग में, (पशु) जो यज्ञ में बलि चढ़ाने के लिए मारा गया हो। ३ नष्ट। बरबाद।

पु० बलि चढ़ाया हुआ पशु।

प्रमीति—स्त्री०[सं० प्र√मी+क्तिन्] १ हनन। वध। २ मनुष्य का प्रकृत या स्वाभाविक रूप से मरना। साधारण रूप से होनेवाली मृत्यु। (डीसीज) ३ नाश। बरबादी।

प्रमीलन—पु०[सं० प्र√मील् (मूँदना)+ल्युट्—अन] निमीलन। मूँदना।

प्रमीला—स्त्री०[सं० प्र√मील्+अ+टाप्] १ तंद्रा। २ थकावट। शिथिलता। ३ मूँदना। ४ एक स्त्री जिसने अर्जुन से युद्ध किया था और पराजित होने पर उससे विवाह करना स्वीकार किया था।

प्रमीलित—भू० कृ०[सं० प्र√मील्+क्त] मुँदा या मूँदा हुआ।

प्रमीली (लिन्)—वि०[सं० प्र√मील्+णिनि] [स्त्री० प्रमीलिनी] निमीलित करनेवाला। आँखें मूँदनेवाला।

प्रमुख—वि०[सं० प्रा० स०] [भाव० प्रमुखता] १ जो दूसरों के प्रति मुँह करके खड़ा हो। २ सबसे आगे या पहलेवाला। प्रथम। ३ जो सब बातों में औरों से बढ़कर या श्रेष्ठ हो। प्रधान। मुख्य। ४ समस्त पदों के अंत में, जो प्रधान के पद पर हो। जैसे—राज-प्रमुख।

पु० १ प्रधान। २ प्रधान शासक। ३. विधान-सभा या संसद् का अध्यक्ष। (स्पीकर)

अव्य० १. आगे। सामने। २ उसी समय। तत्काल। ३ इससे आरंभ करके और भी अनेक। आदि। प्रभृति।

प्रमुखता—स्त्री०[सं० प्रमुख+तल्+टाप्] प्रमुख होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रमुग्ध—वि०[सं० प्रा० स०] १ मूर्च्छित। अचेत। २ हत बुद्धि। ३. बहुत सुंदर।

प्रमुद—वि०[सं० प्र√मुद्+क] =प्रमुदित।

*पु०=प्रमोद।

प्रमुदित—भू० कृ०[सं० प्र√मुद्+क्त] जिसे प्रमोद हुआ हो। प्रसन्न तथा हर्षित।

प्रमुदित-वदना—स्त्री०[सं० ब० स०,+टाप्] बारह अक्षरों की मंदाकिनी नामक एक प्रकार की वर्णवृत्ति।

प्रमुषित—भू० कृ० [सं० प्र√मुष् (चुराना)+क्त] १ चुराया या छीना हुआ। २. हतबुद्धि।

प्रमुषिता—स्त्री०[सं० प्रमुषित + टाप्] एक प्रकार की पहेली।

प्रमूढ़—वि०[सं० प्र√मुह् (अविवेक)+क्त] १ घबराया हुआ। २ मोहित ३ मूर्ख। मूढ़।

प्रमृत—भू० कृ०[सं० प्र√मृ (मरना)+क्त] १. मरा हुआ। २. ढका हुआ। ३ दृष्टि से दूर गया हुआ।
पुं० १ मृत्यु। २ कृषि। खेती।

प्रमृष्ट—भू० कृ० [सं० प्र√मृष (सहना)+क्त] १ साफ या स्वच्छ किया हुआ। २ ओप, मसाले आदि से चमकाया हुआ।

प्रमेय—वि० [सं० प्र√मा (मापना)+यत्] १. नापने योग्य। २ जिसका मान अर्थात तौल या नाप जान सकें। ३ जिसका अवधारण हो सके। जो समझ मे आ सके। ४ जो प्रमाणों से सिद्ध किया जा सके।
पु० १ कोई ऐसी बात, मत या विचार जो स्वयं सिद्ध न हो, बल्कि जिसे तर्क, प्रमाण आदि के द्वारा प्रमाणित या सिद्ध करना अपेक्षित अथवा आवश्यक हो। (थियोरम) २ गणित और ज्यामिति मे कोई ऐसी बात जो प्रमाणित या सिद्ध की जानेवाली हो। (थियोरम) ३ ग्रन्थ का अध्ययन या परिच्छेद।

प्रमेह—पु०[सं० प्र√मिह् (सींचना)+घञ्] एक रोग जिसमे थोड़ी-थोड़ी देर पर पेशाब होने लगता है और उसके साथ शरीर की शुक्र आदि धातुएँ निकलने लगती हैं।

प्रमेही (हिन्)—वि० [सं० प्रमेह + इनि] प्रमेह रोग से ग्रस्त या पीड़ित।

प्रमोक्ष—पु०[सं० प्रा० स०] मोक्ष।

प्रमोद—पु०[सं० प्र√मुद् (हर्ष)+घञ्] १ बहुत अधिक बढ़ा हुआ मोद, प्रसन्नता या हर्ष। आमोद या मोद का बहुत बढ़ा हुआ रूप। (मेरिमेन्ट) २ आराम। सुख। ३ बृहस्पति के पहले युग के चौथे वर्ष का नाम। ४ कार्तिकेय का एक अनुचर। ५ प्रमोदा (देखें) नामक सिद्धि। ६ कड़ी सुगंधि।

प्रमोदक—पु० [सं० प्र√मुद्+णिच्+ण्वुल्—अक] एक प्रकार का जड़हन।
वि० प्रमोद अर्थात् आनन्द उत्पन्न करनेवाला।

प्रमोदकर—पु०[ष० त०] दे० 'मनोरंजन-कर'।

प्रमोदन—पु० [सं० प्र√मुद्+णिच्+ल्युट्—अन] १ प्रमुदित करना। आनंदित करना। २. [प्र√मुद्+णिच्+ल्यु—अन] विष्णु।

प्रमोदा—स्त्री०[सं० प्रमोद + टाप्] सांख्य के अनुसार आठ प्रकार की सिद्धियों में से एक जिसकी प्राप्ति से आध्यात्मिक दुःखों का नाश हो जाता है और साधक परम प्रसन्न होता है।

प्रमोदित—भू०कृ० [सं० प्रमोद + इतच्] जो प्रमोद या आनन्द से युक्त किया गया हो।
पुं० कुबेर।

प्रमोदिनी—स्त्री०[सं० प्रमोदिन्+ङीप्] जिंगिनी।

प्रमोदी (दिन्)—वि० [सं० प्र√मुद्+णिच्+णिनि] १ प्रमोद-संबंधी। २ प्रमुदित रहनेवाला।

प्रमोधना*—स०=प्रबोधना।

प्रमोह—पुं०[सं० प्र√मुह+घञ्] १. मोह। २. मूर्च्छा। ३. मूर्खता।

प्रमोहन—पु० [सं० प्र√मुह्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रमोहित] १ मोहित करने की क्रिया या भाव। २. एक प्रकार का अस्त्र जिसके विषय मे कहा जाता है कि इसे चलाने से शत्रु के सैनिक मोह के वश मे हो जाते थे।

प्रमोहित—भू० कृ० [सं० प्र√मुह+णिच्+क्त] १ मोहित। २ प्रमोह अस्त्र के चलाने के फलस्वरूप जो मोह मे पड गया हो।

प्रमोही (हिन्)—वि० [सं० प्र√मुह+णिच्+णिनि] १ प्रमोह या मोह-संबंधी। २. मोहित करनेवाला।

प्रयंक†—पु०=पर्यक।

प्रयंत†—अव्य०=पर्यन्त।

प्रयत—वि०[सं० प्र√यम्(नियत्रण)+क्त] १ पवित्र। २ सयत। ३. दीन। नम्र। ४ प्रयत्नशील।

प्रयतात्मा (त्मन्)—वि०[सं० प्रयत-आत्मन्, ब० स०] जितेन्द्रिय। सयमी।

प्रयति—स्त्री०[सं०√स प्र√यम्+क्तिन्] सयम।

प्रयत्न—पु०[सं० प्र√यत्+नङ्] १ वह शारीरिक या मानसिक चेष्टा जो कोई उद्देश्य या कार्य पूरा करने के लिए की जाती है। २ किसी कठिन कार्य की सिद्धि अथवा किसी चीज की प्राप्ति के लिए आदि से अंत तक अध्यवसायपूर्वक किये जानेवाले सभी उद्योग, कृत्य या चेष्टाएँ। कोशिश। चेष्टा। प्रयास। (एफर्ट) ३ न्याय दर्शन के अनुसार जीव या प्राणी के छ गुणो मे से एक जो उसकी सक्रिय चेष्टा का सूचक होता है। यह प्रकृति, निवृत्ति और जीवन-कारण या जीवन योनि के भेद से तीन प्रकार का माना गया है। ४ क्रियाशीलता। सक्रियता। ५ सतर्कता। सावधानी। ६ भाषाविज्ञान और व्याकरण मे, गले और मुख के अन्दर की वह क्रिया या चेष्टा जो ध्वनियो के उच्चारण के लिए होती है और जिसमे जीभ आस-पास के किसी भीतरी अवयव को छूकर तथा श्वास को रोक या विकृत करके ध्वनियो का उच्चारण कराती है। इसके आभ्यतर और बाह्य ये दो भेद कहे गये हैं।

प्रयत्नवान् (वत्)—वि०[सं० प्रयत्न+मतुप्, वत्व] [स्त्री० प्रयत्नवती] किसी प्रकार के प्रयत्न या उद्योग मे लगा हुआ।

प्रयत्न-शील—वि०[सं० ब० स०]=प्रयत्नवान्।

प्रयस्त—भू० कृ०[सं० प्र√यस् (प्रयत्न)+क्त] १ प्रयत्न मे लगा हुआ। २ छौंका, तड़का या बघारा हुआ।

प्रयाग—पु०[सं० ब० स०] १ वह स्थान जहाँ बहुत से यज्ञ हुए हों। २ यज्ञ। याग। ३. गगा और यमुना के सगम पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ जो आज-कल इलाहाबाद के नाम से प्रसिद्ध है। ४ इन्द्र। ५ घोड़ा।

प्रयागवाल—पु० [हिं० प्रयाग + वाला (प्रत्य०)] प्रयागतीर्थ का पडा।

प्रयाचन—पु०[सं० प्र√याच् (मांगना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रयाचित] गिड़गिड़ाकर माँगना।

प्रयाज—पु०[सं० प्र√यज् (देवपूजन)+घञ्] दर्शपौर्ण मास यज्ञ के अतर्गत एक अग-यज्ञ।

प्रयाण—पु०[सं० प्र√या (गति)+ल्युट्—अन] १ कहीं जाने के लिए यात्रा आरम्भ करना। कूच। प्रस्थान। २ यात्रा। सफर। ३. विशेषत. सैनिक यात्रा। अभियान। चढ़ाई। ४ उक्त अवसर पर बजाया जानेवाला नगाड़ा। ५ मर कर किसी अन्य लोक मे जाना। ६. कार्य का अनुष्ठान या आरम्भ।

प्रयाणक—पु०[सं० प्रयाण+कन्] १. यात्रा। २ प्रस्थान। ३. गति।

प्रयाण-काल—पु०[सं० ष० त०] १. प्रयाण करने अर्थात् चलने या जाने

का समय। यात्रा का समय। २ इस लोक से पर-लोक जाने अर्थात् मरने का समय।

प्रयाण-गीत—पु०[स० ष० त०] १ सैनिक अभियान के समय गाये जानेवाले गीत। २ आधुनिक हिंदी साहित्य मे वीर-गाथावाले गीतों का वह अश जिसमे योद्धाओ के वे उल्लासपूर्ण गीत होते हैं, जो वे युद्ध-भूमि की ओर प्रस्थान के समय या किसी प्रकार के सघर्ष के लिए आगे बढ़ने के समय मिलकर गाते चलते है। (मार्चिंग साँग) जैसे—'प्रसाद' का 'हिमाद्रि तुग शृग से ' वाला गीत।

प्रयात—भू० कृ०[स० प्र√या (जाना)+क्त] १ गया हुआ। गत। २ मरा हुआ। मृत। ३ सोया हुआ। ४ बहुत चलनेवाला।

पु० बहुत ऊँचा किनारा जिस पर से गिरने से कोई चीज एकदम नीचे चली जाय। कगार। भृगु।

प्रयान†—पु० = प्रयाण।

प्रयापण—पु०[स० प्र√या+णिच्, पुक्, + ल्युट्—अन] [वि० प्रयापणीय, प्रयाप्य, भू कृ० प्रयापित] १ प्रस्थान कराना। २ चलता करना। भगाना या हटाना। ३ किसी से आगे निकलना या बढ़ना।

प्रयास—पु०[स० प्र√यस् (प्रयत्न)+घञ्] १ किसी नये अथवा कठिन काम को आरम करने के लिए किया जानेवाला उद्योग या प्रयत्न। परिश्रम। मेहनत। २ वह कार्य या पदार्थ जो इस प्रकार किया या बनाया गया हो। जैसे—यह पुस्तक प्रशसनीय प्रयास है। ३ इच्छा।

प्रयुक्त—भू० कृ० [स० प्र√युज् (जोडना)+क्त] [भाव० प्रयुक्ति] १ जोड़ा या मिलाया हुआ। सम्मिलित। २ जिसे प्रयोग या व्यवहार मे लाया गया हो अथवा लाया जा रहा हो। ३ जो किसी काम मे लगाया गया हो। ४ दे० 'व्यावहारिक'।

प्रयुक्ति—स्त्री० [स० प्र√युज्+क्तिन्] १ प्रयुक्त होने की अवस्था या भाव। २ प्रयोग। ३ प्रयोजन।

प्रयोक्ता (क्तृ)—वि० [स० प्र√युज्+तृच्] १ प्रयुक्त करने अर्थात् किसी चीज को प्रयोग मे लानेवाला। २ काम मे लगाने या नियुक्त करनेवाला।

पु० १ ऋण देनेवाला। उत्तमर्ण। महाजन। २ नाटक का सूत्रधार।

प्रयुत—भू० कृ० [स० प्र√यु (मिलना)+क्त] १ खूब मिला हुआ। २ अस्पष्ट। गडबड। ३ समेत। सहित। ४ दस लाख।

पु० दस लाख की सख्या।

प्रयोग—पु० [स० प्र√युज्+घञ्] १ किसी चीज या बात को आवश्यकता अथवा अभ्यासवश काम मे लाना। इस्तेमाल। व्यवहार। (यूज) जैसे—(क) वाक्य मे शब्दो का किया जानेवाला प्रयोग। (ख) जाडे मे गरम कपडों का किया जानेवाला प्रयोग। (ग) किसी काम या बात के लिए अधिकार या बल का किया जानेवाला प्रयोग। २ आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्रो मे, किसी प्रकार का अनुसधान करने या कोई नई बात ढूँढ निकालने के लिए की जानेवाली कोई परीक्षणात्मक क्रिया अथवा उसका साधन। ३ जो तथ्य उक्त प्रकार के अनुसधान से सिद्ध हो चुका हो, उसे दूसरो को समझाने के लिए की जानेवाली वह क्रिया जिससे वह तथ्य ठीक और मान्य सिद्ध होता है। प्रत्यक्ष रूप से कोई काम या बात प्रमाणित या सिद्ध करने की क्रिया। ४. वह क्रिया जो यह जानने के लिए की जाती है कि कोई काम, चीज या बात ठीक तरह से पूरी उतर सकेगी या नही। जाँच। परीक्षण। (एक्सपेरिमेन्ट, उक्त तीनो अर्थों के लिए) ५ किसी प्रकार की क्रिया का प्रत्यक्ष रूप से होनेवाला साधन। ६ ठीक तरह से काम करने का ढग या विधि। ७ प्राचीन भारतीय राजनीति में साम, दाम, दंड और भेद की नीति का किया जानेवाला उपयोग या व्यवहार। ८ तंत्रशास्त्र मे, वह पूजा-पाठ जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए नियमित रूप से कुछ समय तक विधिपूर्वक किया जाता है। उच्चाटन, मारण, मोहन आदि के लिए किये जानेवाले तात्रिक उपचार। ९ वैद्यक में, रोगी का ऐसा उपचार या चिकित्सा जो उसके देश, काल, शारीरिक स्थिति आदि का ध्यान रखते हुए की जाती है। १० व्याकरण मे, कर्ता, कर्म अथवा क्रियार्थक सज्ञा के लिंग, वचन आदि के अनुसार प्रयुक्त होनेवाला क्रिया-पद की सज्ञा जो कर्ता के अनुसार होने पर कर्तृ प्रयोग, कर्म के अनुसार होने पर कर्माणि प्रयोग और भाव के अनुसार होने पर भावे प्रयोग कहलाता है। ११ साहित्य मे, रूपको आदि का अभिनय। १२ तर्क-शास्त्र मे अनुमान के पाँचों अवयवो का कथन या प्रतिपादन। १५ वह उपकरण जिससे कोई काम होना हो। १६ वैदिक युग मे यज्ञ आदि कर्मों के अनुष्ठान का बोध करानेवाली विधि। पद्धति। १७ धार्मिक ग्रन्थ या शास्त्र। १८ प्राचीन भारतीय लोक-व्यवहार मे अपनी आय बढाने के लिए लोगो को सूद पर ऋण देने का व्यवसाय। १९ कार्य का अनुष्ठान या आरम्भ। २०. तरकीब। युक्ति। २१ उदाहरण। दृष्टात। २२ परिणाम। फल। २३ उपहार। भेट। २४ इद्रजाल। २५ घोडा।

प्रयोगतः (तस्)—अव्य० [स० प्रयोग+तस्] प्रयोग द्वारा। परिणाम-रूप मे। अनुसार। कार्यत।

प्रयोग-वाद—पु० [स० ष० त०] यह आधुनिक साहित्यिक मत या सिद्धात कि अब तक जो साहित्यिक परम्पराएँ चली आ रही है, उन्हे प्रयोगात्मक परीक्षण के द्वारा जाँच लेना चाहिए, और उनमे से जो अनावश्यक या निरर्थक हो, उनके स्थान पर नई परम्पराएँ चलाने के लिए नये प्रयोग करके देखना चाहिए। (एक्सपेरिमेन्टलिज्म)

विशेष—इस वाद के अनुयायी कवि या लेखक समार मे छाये हुए अन्धकार, अनाचार और विषाद मे अपने आपको नये उचित मार्ग का अन्वेषक तथा अपनी कृतियो या रचनाओ को प्रयोग मात्र मानते हैं।

प्रयोगवादी (दिन्)—वि० [स० प्रयोगवाद+इनि] प्रयोगवाद-सम्बन्धी। प्रयोगवाद का।

पु० वह जो प्रयोगवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

प्रयोग-शाला—स्त्री० [ष० त०] वह स्थान जहाँ पदार्थ-विज्ञान, रसायन शास्त्र आदि-विषयक तथ्यो को समझने, जानने या नई बातों का पता लगाने की दृष्टि से विविध प्रयोग किये जाते हों। (लेबोरेटरी)

प्रयोगातिशय—पु० [स० प्रयोग-अतिशय, ष० त०] साहित्य मे, रूपक की पाँच प्रकार की प्रस्तावनाओ मे से एक जिसमे सूत्रधार प्रस्तावना की समाप्ति होते होते किसी नट या पात्र को मच की ओर आते हुए देखकर यह कहता हुआ प्रस्थान करता हूँ—अरे ... वह तो आ रहा है या आ पहुँचा।

प्रयोगार्थ—पु० [सं० प्रयोग-अर्थ, ष० त०] मुख्य कार्य की सिद्धि के लिए किया जानेवाला गौण कार्य।

प्रयोगार्ह—वि० [सं० प्रयोग√अर्ह (योग्य होना)+अच] जिसका प्रयोग किया जा सके। प्रयोग के योग्य।

प्रयोगी (गिन्)—वि० [सं० प्रयोग+इनि] १ प्रयोग करनेवाला। प्रयोगकर्ता। २ प्रेरक। ३ जिसके सामने कोई उद्देश्य हो।

प्रयोग्य—पुं० [सं० प्र√युज्+ण्यत्] (गाड़ी में जोता जानेवाला) घोड़ा।

वि० प्रयोग में आने या लाये जाने के योग्य।

प्रयोजन—पु० [सं० प्र√युज्+ल्युट्—अन] [वि० प्रयोजनीय, प्रयोज्य, भू० कृ० प्रयुक्त] १ किसी काम, चीज या बात का प्रयोग करने अर्थात् उसे व्यवहार मे लाने की क्रिया या भाव। उपयोग। प्रयोग। व्यवहार। २ वह उद्देश्य जिससे प्रेरित होकर मनुष्य कोई काम करने मे प्रवृत्त होता और उसे पूरा करता है। अभिप्राय। मतलब। (पर्पज) जैसे—इन बातों से हमारा प्रयोजन सिद्ध नहीं होगा। ३. हिन्दुओं मे, कोई अच्छा, धार्मिक, बड़ा या शुभ काम या उत्सव। जैसे—जब उनके यहाँ कोई प्रयोजन होता है, तब वे हमें अवश्य बुलाते हैं।

प्रयोजनवती लक्षणा—स्त्री० [सं० प्रयोजन+मतुप्, वत्व, +ङीप्, प्रयोजनवती लक्षणा, व्यस्तपद] साहित्य मे, लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिसमे मुख्य अर्थ का बाध होने पर किसी विशेष प्रयोजन के लिए मुख्य अर्थ से सबद्ध किसी दूसरे अर्थ का ज्ञान कराया जाता है। जैसे—'वह गाँव पानी मे बसा है।' इसलिए कहा जाता है कि वह गाँव किसी जलाशय के किनारे पर या कई ओर पानी से घिरा हुआ होता है। यह लक्षणा दो प्रकार की होती है—गौणी और शुद्धा।

प्रयोजनीय—वि० [सं० प्र√युज्+अनीयर्] १ प्रयोग मे लाने योग्य। उपयोगी। २ काम या मतलब का।

प्रयोज्य—वि० [सं० प्र√युज्+ण्यत्] १ जो प्रयोग मे लाया जाने को हो अथवा लाया जा सके। (एप्लिकेबुल) २ जो अधिकार के रूप मे काम मे लाये जाने के योग्य हो अथवा लाया जा सके। ३ आचरित होने के योग्य। जिसका आचरण हो सके।

पु० १ नौकर। भृत्य। २ वह धन जो किसी काम मे लगाया जाने को हो।

प्ररक्षण—पु० [सं० प्र√रक्ष् (रक्षा करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्ररक्षित]=रक्षण।

प्ररुह—वि० [सं० प्र√रुह्+क] ऊपर की ओर जाने या बढ़नेवाला।

प्ररूढ़—भू० कृ० [सं० प्र√रुह्+क्त] [भाव० प्ररूढ़ि] १. उगा हुआ। २ आगे या ऊपर बढ़ा हुआ।

प्ररूप—पु० [सं० प्रा० स०] [वि० प्रारूपिक] किसी वर्ग की वस्तुओं, व्यक्तियो आदि मे से कोई एक ऐसी वस्तु या व्यक्ति जिससे उस वर्ग के सामान्य गुणों, विशेषताओं आदि का बोध हो जाता हो। (टाइप)

प्ररूपण—पु० [सं० प्र√रूप्+णिच्+ल्युट्—अन] १ व्याख्या करना। २ समझाना।

प्ररूपी (पिन्)—वि० [सं० प्ररूप+इनि] प्ररूप के रूप में माना या स्वीकार किया जानेवाला। प्रारूपिक। (टिपिकल)

प्ररोचन—पु० [सं० प्र√रुच् (दीप्ति)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्ररोचित] १ किसी काम या बात के प्रति रुचि उत्पन्न करना। शौक पैदा करना। २ अनुरक्त या मोहित करना। ३. उत्तेजित करना। उत्तेजन।

प्ररोचना—स्त्री० [सं० प्र√रुच्+णिच्+युच्—अन, +टाप्] १ नाटक के अभिनय मे प्रस्तावना के समय सूत्रधार नट, नटी आदि का नाटक और नाटककार की प्रशंसा मे कुछ ऐसी बातें कहना जिससे दर्शकों मे अभिनय के प्रति रुचि उत्पन्न हो। २ अभिनय के अन्तर्गत कही जानेवाली ऐसी बात जिससे किसी भाव, घटना या दृश्य के प्रति लोगों मे रुचि उत्पन्न हो। ३ दे० 'प्ररोचन'।

प्ररोधन—पु० [सं० प्र√रुध् (रोकना)+णिच्+ल्युट्—अन] ऊपर उठाना या चढ़ाना।

प्ररोह—पु० [सं० प्र√रुह्+अच्] १ आरोह। चढ़ाव। २. पौधों आदि का उगकर ऊपर की ओर बढ़ना। ३ अकुर। ४ कल्ला। कोपल। ५ सतान। ६ किस्सा। ७ तुन का पेड़। नदी वृक्ष। ८ अर्बुद।

प्ररोहण—पु० [सं० प्र√रुह्+ल्युट्—अन] १ ऊपर की ओर जाने या बढ़ने की क्रिया या भाव। २ अकुर, कल्ले आदि का निकलना। उत्पन्न होना।

प्ररोह-भूमि—स्त्री० [सं० ष० त०] उर्वरा भूमि। उपजाऊ जमीन।

प्ररोहशाखी (खिन्)—पु० [सं० प्ररोह-शाखा, मध्य० स०, प्ररोहशाखा-इनि] ऐसा वृक्ष जिसकी कलम लगाने से लग जाती हो और नये वृक्ष का रूप धारण कर लेती हो।

प्ररोही (हिन्)—वि० [सं० प्ररोह+इनि] [स्त्री० प्ररोहिणी] १ ऊपर की ओर जाने या बढ़नेवाला। २ उगनेवाला। ३. उत्पन्न होनेवाला।

प्रलंब—वि० [सं० प्र√लब्+अच्] १ जो ऊपर से नीचे की ओर लटक रहा हो। २ टँगा या लटकाया हुआ। ३ लम्बा। ४ किसी ओर निकला या बढ़ा हुआ। ५ काम करने मे ढीला। सुस्त।

पु० १ लटकने की क्रिया या भाव। २ काम मे होनेवाला व्यर्थ का विलब। ३ पेड़ की टहनी। डाल। शाखा। ४. बीज आदि का अकुर। ५ खीरा। ६ राँगा। ७ स्त्री या मादा की छाती। स्तन। ८ गले मे पहनने का एक प्रकार का हार। ९ एक दानव जिसे बलराम ने मारा था।

प्रलंबक—पु० [सं० प्रलब+कन्] एक सुगध-तृण। रोहिष।

प्रलबन—पु० [सं० प्र√लब्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रलबित] १. प्रलब की स्थिति मे किसी को लाना। २ लबा करना। ३ देर लगाना। ४ अवलबन। सहारा लेना।

प्रलंबित—भू० कृ० [सं० प्र√लब्+क्त] १ प्रलब के रूप मे लाया हुआ। २ (कर्मचारी) जिसका प्रलबन हुआ हो।

प्रलंबी (बिन्)—वि० [सं० प्र√लब्+णिनि] [स्त्री० प्रलबिनी] १ नीचे की ओर दूर तक लटकनेवाला। २ लबा। ३ अवलब। या सहारा लेनेवाला। ४ काम मे व्यर्थ देर लगानेवाला। ५ दे० 'प्रलब'।

प्रलंभन—पु० [सं० प्र√लभ्+ल्युट्—अन, मुम्] [वि० प्रलब्ध] १ लाभ होना। प्राप्ति होना। २ धोखा देना।

प्रलपन—पु० [सं० प्र√लप् (कहना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रलपित] १. बात-चीत या वार्तालाप करना। २ प्रलाप या बकवाद करना।

प्रलब्ध—भू० कृ० [सं० प्र√लभ्+क्त] १ जो छला गया हो। २. धोखा खाया हुआ। ३ ग्रहण किया गया हो। ग्रहीत।

प्रलब्धा (ब्धृ)—वि० [सं० प्र√लभ्+तृच्] धोखा देने या छलनेवाला।

प्रलयंकर—वि० [सं० प्रलय√कृ (करना)+खच्, मुम्] [स्त्री० प्रलयंकरी] प्रलयकारी। सर्वनाशकारी।

प्रलय—पु० [सं० प्र√ली (विलीन होना)+अच्] १ पूरी तरह से होनेवाला लय अर्थात् नाश या विलीनता। २ अधिकतर प्राचीन जातियो और देशो मे प्रचलित प्रवादो के अनुसार सारी सृष्टि का वह विनाश जो बहुत प्राचीन काल मे किसी बहुत बडी और जगत्व्यापी बाढ़ के फल-स्वरूप हुआ था। (डिल्यूज़)

विशेष—भारतीय पुराणो के अनुसार प्रत्येक कल्प का अन्त होने पर अर्थात् ४३,२०,००,००० वर्ष बीतने पर सारी सृष्टि का प्रलय होता है, और सृष्टि अपने मूल कारण अर्थात् प्रकृति मे लीन हो जाती है, और इसके उपरात नये सिरे से सृष्टि की रचना होती है। पिछली बार वैवस्वत मनु के समय ऐसा प्रलय हुआ था। ईसाइयों, मुसलमानो आदि मे प्रचलित प्रवादो के अनुसार पिछली बार हजरत नूह के समय ऐसा प्रलय हुआ था। वेदात मे प्रलय के ये चार प्रकार या भेद कहे गये हैं—नित्य, नैमित्तिक, प्राकृत और आत्यतिक।

३ बहुत ही उत्कट या तीव्र रूप मे और विस्तृत भू-भाग मे होनेवाला भयकर नाश या बरबादी। जैसे—दोनो महायुद्धो के समय सारे युरोप मे प्रलय का दृश्य उपस्थित हो गया था। ४ मृत्यु। ५ बेहोशी। मूर्च्छा। ६ साहित्य मे नौ सात्विक अनुभावो मे से एक जिसमे प्रिय के वियोग के कारण मूर्च्छा, निद्रा, चेतनहीनता, निश्चेष्टता, श्वासावरोध, स्तब्धता आदि बातें होती हैं और फलत प्रिया की प्राण-हीनता दीख पडने लगती है। ७ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

प्रलव—पु० [सं० प्र√लू+अप्] किसी चीज का छोटा टुकडा।

प्रलाप—पु० [सं० प्र√लप् (कहना)+घञ्] [कर्ता प्रलापी] १ बात-चीत करना। वार्तालाप। २ मानसिक विकार या शारीरिक कष्ट के कारण पागलो की तरह या बे-सिर-पैर की बातें करना। ३ रो-रोकर किसी को अपना कष्ट या व्यथा सुनाना। ४ साहित्य मे, शृगार रस के प्रसग मे विरह से व्याकुल होकर इस रूप मे बातें करना कि मानो वे सामने बैठे हुए प्रेमी या प्रेमिका से ही कही जा रही हो। ५. कुछ विकट रोगो मे वह अवस्था जिसमे रोगी बहुत ही विकल होकर पागलो की तरह अडबड बातें बकता है। (डिलीरियम)

प्रलापक—पु० [सं० प्र√लप्+णिच्+ण्वुल्—अक] एक प्रकार का सन्निपात जिसमे रोगी प्रलाप करता अर्थात् अनाप-शनाप बकता है, और उसका चित्त ठिकाने नही रहता।

वि० १ प्रलाप करनेवाला। २. व्यर्थ या अंड-बड बकनेवाला।

प्रलापी (पिन्)—वि० [सं० प्र√लप्+घिनुण्] [स्त्री० प्रलापिनी] १. प्रलाप करनेवाला। २ व्यर्थ बकवाद करने या अड-बड बकनेवाला।

प्रलाभ—पु० [सं० प्रा० स०] यथेष्ठ या विशिष्ट रूप मे होनेवाला लाभ।

प्रलाभी (भिन्)—वि० [प्रलाभ+इनि] १ (काम, पद या व्यवस्था) जिससे या जिसमे यथेष्ठ आर्थिक लाभ होता हो। २. (व्यक्ति) जो प्राय या सदा बहुत अधिक आर्थिक लाभ के लिए उत्सुक तथा प्रयत्नशील रहता हो। (ल्यूक्रेटिव, उक्त दोनो अर्थों मे)

प्रलीन—भू० कृ० [सं० प्र√ली+क्त] [भाव० प्रलीनता] १. गला या घुला हुआ। २ (स्थान) जहाँ प्रलय हुई हो फलत ध्वस्त और नष्ट भ्रष्ट। ३. जड के समान निश्चेष्ट। ४. मरा हुआ। ५. छिपा हुआ। तिरोहित।

प्रलीनता—स्त्री० [सं० प्रलीन+तल्+टाप्] १ प्रलीन होने की अवस्था या भाव। २ जडत्व। जड़ता। ३. विनाश।

प्रलीनेंद्रिय—वि० [सं० प्रलीन-इन्द्रिय, ब० स०] जिसकी इन्द्रियाँ शिथिल या नष्ट हो गई हो।

प्रलुब्ध—वि० [सं० प्र√लुभ् (चाहना)+क्त] [स्त्री० प्रलुब्धा] १ लोभ मे पडा हुआ। २ किसी पर अनुरक्त या लुभाया हुआ। मोहित। ३ दूसरो को धोखा देनेवाला। वचक।

प्रलेख—पु० [सं० प्र√लिख् (लिखना)+घञ्] १ विधिक क्षेत्र मे काम आ सकने योग्य कोई लिखा हुआ कागज या लेख। लेख्य। दस्तावेज। (डॉक्यूमेन्ट) २ ऐसा अनुबध-पत्र जो निष्पादक या लिखनेवाला अपने हस्ताक्षर करके दूसरे पक्ष को देता है। (डीड)

प्रलेखक—पु० [सं० प्र√लिख्+ण्वुल—अक] लेख्य लिखनेवाला कर्मचारी। अर्जीनवीस। कातिब।

प्रलेखन—पु० [सं०] लेख्य आदि लिखने का काम।

प्रलेख-पोषण—पु० [सं०] आवश्यकता के अनुसार प्रलेखो या उद्दिष्ट निर्देशो का यथास्थान अकन या उल्लेख करना। (डाक्यूमेन्टेशन)

प्रलेप—पु० [सं० प्र √लिप्+घञ्] १ किसी अग विशेषत त्वचा पर किसी ओषधि का किया जानेवाला लेप। २ किसी गाढी चीज का किसी दूसरी चीज पर किया जानेवाला लेप। ३ वह चीज जो उक्त रूप में लगाई जाय।

प्रलेपक—वि० [सं० प्र √लिप्+ण्वुल्—अक] प्रलेप या लेप करनेवाला। पु० वह ज्वर जो क्षय आदि रोगो के साथ होता है और जिसमे शरीर का चमडा रूखा या शुष्क होने लगता है। (हेक्टिक फीवर)

प्रलेपन—पु० [सं० प्र √लिप्+ल्युट्—अन] १ लेप करने या लगाने की क्रिया या भाव। २ पोताई।

प्रलेप्य—वि० [सं० प्र √लिप्+ण्यत्] १ जो लेप के रूप मे लगाया जा सके। २ जिस पर लेप लगाया जा सके या लगाया जाने को हो। पु० घुँघराले बाल।

प्रलेह—पु० [सं० प्र √लिह् (आस्वादन करना)+घञ्] मांस के कूटे या पीसे हुए अशो को तलकर बनाया जानेवाला एक व्यजन। कोरमा।

प्रलेहन—पु० [सं० प्र √लिह्+ल्युट्—अन] चाटना।

प्रलोप—पु० [सं० प्र √लुप् (काटना)+घञ्] लोप।

प्रलोभ—पु० [सं० प्र √लुभ् (लालच करना)+घञ्] १ बहुत अधिक लालच या लोभ। २ प्रलोभन।

प्रलोभक—वि० [सं० प्र√लुभ्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. प्रलोभन देनेवाला। लालच देनेवाला। २ लुभानेवाला।

प्रलोभन—पु० [सं० प्र√लुभ्+णिच्+ल्युट्—अन] १. किसी के मन

में लोभ उत्पन्न करना। किसी को लोभी बनाना। २. वह चीज या बात जो किसी के मन मे लोभ या लालच उत्पन्न करती हो। (टेम्प-टेशन) ३. कोई कार्य विशेषत बुरा कार्य करने के लिए होनेवाली वृत्ति। लोभ। ४ किसी के मन में अपने प्रति अनुराग या प्रेम उत्पन्न करना। लुभाना।

प्रलोभित—भू० कृ० [स० प्र√लुभ्+णिच्√क्त] १. जिसके मन में लोभ उत्पन्न किया गया हो या हुआ हो। ललचाया हुआ। २. लुभाया हुआ।

प्रलोभी (भिन्)—वि० [स० प्र√लुभ्+णिनि] प्रलोभ मे फँसनेवाला। लोभ या लालच करनेवाला।

प्रलोल—वि० [स० प्रा० स०] १. लटकता और हिलता हुआ। २ क्षुब्ध।

प्रवंचक—पु० [स० प्र√वञ्च्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ वचन करने-वाला। ठग। २ धोखेबाज। धूर्त।

प्रवंचन—पु० [सं० प्र√वञ्च्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रव-चित] धोखा देने, छलने या ठगने का काम। धोखेबाजी। ठगी।

प्रवंचना—स्त्री० [स० प्र√वञ्च्+णिच्+युच्—अन, टाप्] छलने, धोखा देने अथवा ठगने का कोई कार्य। छलपूर्ण कार्य।

प्रवंचित—भू० कृ० [सं० प्र√वञ्च्+णिच्+क्त] जो अथवा जिसे छला, या ठगा गया हो। धोखा दिया या खाया हुआ।

प्रवक्ता (क्तृ)—वि० [स० प्रा० स०] १ प्रवचन करनेवाला। २. अच्छी तरह समझानेवाला।

पु० १ प्राचीन भारत मे वह विद्वान् जो प्रोक्त साहित्य का प्रवचन करता या शिक्षा देता था। २ आज-कल वह जो किसी शासक-मडल, सस्था आदि की ओर से आधिकारिक रूप से कोई बात कहता या मत प्रकट करता हो। (स्पोक्समैन)

प्रवचन—पु० [स० प्र√वच् (बोलना)+ल्युट्—अन] [वि० प्रवच-नीय] १ कोई बात या विषय अच्छी तरह और पाडित्यपूर्वक बत-लाना या समझाना। २ धार्मिक, नैतिक आदि गभीर विषयो मे परोपकार की दृष्टि से कही जानेवाली अच्छी तथा विचारपूर्ण बातें। ३ उक्त प्रकार से होनेवाला उपदेशपूर्ण भाषण।

प्रवट—पु० [स०√प्रु (सरकना)+अट] गेहूँ।

प्रवण—वि० [स०√प्रु+ल्युट् (अधिकरण)—अन] [भाव० प्रव-णता] १. जो नीचे की ओर झुका चला गया हो। ढालुआँ। २ झुका हुआ। नत। ३. किसी काम या बात की ओर ढला हुआ। प्रवृत्त। ४. नम्र। विनीत। ५ सच्चा और साफ व्यवहार करने-वाला। खरा। ६ उदार और सहृदय। ७. अनुकूल। मुआफिक। ८ चिकना। स्निग्ध। ९ लंबा। १०. कुशल। दक्ष। निपुण।
पु० १. ढलान। २ चौराहा। ३ उदर। ४. क्षण। ५. आहुति।

प्रवणता—स्त्री० [सं० प्रवण+तल्+टाप्] १. प्रवण होने की अवस्था, गुण या भाव। २. ढलान। ३. प्रवृत्ति।

प्रवत्स्य—वि० [सं०] जो विदेश यात्रा को उद्यत हो।

प्रवत्स्यत्पतिका—स्त्री० [सं० ब० स०,+कप्+टाप्] साहित्य में वह नायिका जिसका पति विदेश जानेवाला हो।

प्रवत्स्यद्भर्तृका—स्त्री० [स० प्रवत्स्यत्-भर्तृ, ब० स०,+कप्+टाप्]= प्रवत्स्यत्पतिका।

प्रवदन—पु० [स० प्र√वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवदत] घोषणा।

प्रवर—वि० [स० प्रा० स०] १ सबसे अच्छा, बढकर या श्रेष्ठ। २ अवस्था या वय मे सबसे बडा। (सीनियर) ३. अधिकार, योग्यता आदि मे सबसे बडा माना जानेवाला। (सुपीरियर)
पु० १ अग्नि का एक विशिष्ट प्रकार का आवाहन या आहुति। २. पूर्व पुरुषो का क्रम या शृखला। ३ कुल। वश। ४ ऐसे ऋषि या मुनि की वंश-परम्परा या शिष्य-परम्परा जो किसी गोत्र का प्रवर्तक या सस्थापक रहा हो।

विशेष—हमारे यहाँ प्रवरो के एक-प्रवर द्विप्रवर, त्रिप्रवर और पच-प्रवर भेद या प्रकार कहे गये हैं।

५ वशज। सतान। ६ हिन्दुओं के ४२ गोत्रो मे से एक। ६ उत्तरीय वस्त्र। चादर। ८ अगर की लकडी।

प्रवर-गिरि—पु० [स० कर्म० स०] मगध देश के एक पर्वत का प्राचीन नाम।

प्रवरण—पु० [स० प्र√वृ+ल्युट्—अन] १ देवताओं का आवाहन। २ बौद्धों का एक उत्सव जो वर्षा ऋतु के अन्त मे होता था।

प्रवर समिति—स्त्री० [कर्म० स०] किसी विषय की छानबीन करने और विचार-विमर्श के बाद निश्चित मत प्रकट करने के लिए बनाई जानेवाली वह समिति जिसमे उस विषय के चुने हुए विशेषज्ञ रखे जाते है। (सिलेक्ट कमेटी)

प्रवरा—स्त्री० [स० प्रवर+टाप्] १. अगुरु या अगर की लकड़ी। २ दक्षिण भारत की एक छोटी नदी जो गोदावरी मे मिलती है।

प्रवर्ग—पु० [सं० प्र√वृज् (छोडना)+घञ्] १ हवन करने की अग्नि। होमाग्नि। २ किसी वर्ग के अन्तर्गत किया हुआ कोई छोटा विभाग। ३ विष्णु।

प्रवर्त—पु० [स० प्र√वृत् (बरतना)+घञ्] १. कोई कार्य आरम्भ करना। अनुष्ठान। प्रवर्तन। ठानना। २ एक प्रकार के मेघ या बादल। ३ वैदिक काल का एक प्रकार का गोलाकार आभूषण या गहना।

प्रवर्तक—वि० [स० प्र√वृत्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ प्रवर्तन (देखें) करनेवाला। २ किसी काम या बात का आरभ अथवा प्रचलन करने-वाला। प्रतिष्ठाता। ३ काम मे लगाने या प्रवृत्त करनेवाला। प्रेरित करनेवाला। ४ उभारने या उसकानेवाला। ५ गति देने या चलाने-वाला। ६. नया आविष्कार करनेवाला। ७ न्याय या विचार करनेवाला।

पु० साहित्य में, रूपको की प्रस्तावना का वह प्रकार या भेद जिसमें प्रस्तुत कार्य से सबद्ध कृत्य का परित्याग करके कोई और काम कर बैठने का दृश्य उपस्थित किया जाता है। जैसे—संस्कृत के 'महावीर चरित' मे राम की वीरता से प्रसन्न होकर परशुराम उनसे लड़ने का विचार छोड़कर प्रेमपूर्वक उनका आलिंगन करने लगते हैं।

प्रवर्तन—पु० [सं० प्र√वृत्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रव-र्तित, वि० प्रवर्तनीय, प्रवर्त्य] १ नया काम या नई बात का आरंभ

करना। श्रीगणेश करना। ठानना। २ नये सिरे से प्रचलित करना। ३ जारी करना। जैसे—अध्यादेश का प्रवर्तन। ४. प्रवृत्त करना। ५ उत्तेजित करना। ६ दुरुत्साहन।

प्रवर्तना—स० [सं० प्रवर्त्तन] प्रवर्तित या प्रवृत्त करना। स्त्री० [सं०प्र√वृत्+णिच्+युच्—अन,+टाप्] प्रवर्तन।

प्रवर्तित—भू० कृ० [सं० प्र√वृत्+णिच्+क्त] १ ठाना हुआ। आरब्ध। २ चलाया हुआ। ३ निकाला हुआ। ४ उत्पन्न। ५ उभरा हुआ। ६ उत्तेजित।

प्रवर्द्धन—पु० [सं० प्र√वृध्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवर्द्धित] १ अच्छी तरह बढाना। २ बढ़ती। वृद्धि।

प्रवर्षण—पु० [सं० प्र√वृष् (बरसना)+ल्युट्—अन] १ वर्षा ऋतु की पहली वर्षा। २ वर्षा। ३ किष्किंधा का एक पर्वत जहाँ राम-लक्ष्मण ने कुछ समय तक निवास किया था।

प्रवर्ह—वि० [सं० प्र√वृह् (बढना)+अच्] प्रधान। श्रेष्ठ।

प्रवलाकी (किन्)—पु० [सं०] १ मोर। मयूर। २ साँप।

प्रवल्हिका—स्त्री० [सं०] प्रहेलिका। (पहेली)।

प्रवसथ—पु० [सं० प्र√वस् (बसना)+अथच्] १ प्रस्थान। २ प्रवास।

प्रवसन—पु० [सं० प्र√वस्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवसित] अपना मूल निवास स्थान छोडकर किसी दूसरी जगह जा रहना या जा बसना।

प्रवस्तु—स्त्री० [सं० प्रा० स०] वह वस्तु जो वस्तुओ के किसी बडे वर्ग या विभाग के अन्तर्गत या उसके अग के रूप मे हो। (आर्टिकिल) जैसे—कपडे बनाने के उपकरण या सामग्री मे कपास के सिवा ऊन भी एक प्रमुख प्रवस्तु है।

प्रवह—पु० [सं० प्र√वह् (बहना)+अच्] १ बहुत अधिक या तेज बहाव। २ ऐसा कुड या तालाब जिसमे नाली मे पानी पहुँचता हो। ३ सात वायुओं मे से एक वायु। ४ अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक जिह्वा। ५ घर या बस्ती से बाहर निकलना।

प्रवहण—पु० [सं० प्र√वह्+ल्युट्—अन] १ ले जाना। २ छकडा, डोली, नाव, पालकी, रथ आदि सवारियाँ विशेषत छाई हुई सवारियाँ। ३ एक प्रकार का छोटा परदेदार रथ। बहली। ४ कन्या का विवाह करके उसे वर के हाथ सौपना।

प्रवहमान—वि० [सं० प्र√वह्+शानच्, मुक्] जो बह रहा हो।

प्रवाक् (च्)—वि० [सं० ब० स०] १ घोषणा करनेवाला। २ बकवादी। ३ शेखी बघारनेवाला।

प्रवाचक—पु० [सं० प्रा० स०] अच्छा प्रवचन करनेवाला व्यक्ति या महापुरुष।

प्रवाण—पु० [सं० प्र√वे (बुनना)+ल्युट्—अन] कपडे का छोर या अचल बनाना।

प्रवात—पु० [सं० प्रा० स०; ब० स०] १. स्वच्छ वायु। साफ हवा। २. जोर की या तेज हवा। ३ ऐसा स्थान जहाँ प्राय तेज हवा चलती हो। ४ ढालुईं जमीन या स्तर। उतार। प्रवण। ५ दे० 'प्रभजन'। वि० जो तेज हवा के कारण झोके खा रहा या इधर-उधर हिल रहा हो। हिलता हुआ।

प्रवाद—पुं० [सं० प्र√वद् (बोलना)+घञ्] १. परस्पर होनेवाली बातचीत। वार्तालाप। २ जनरव। जन-श्रुति। ३ झूठी बदनामी।

प्रवादक—वि० [सं० प्र√वद्+णिच्+ण्वुल्—अक] बाजा बजानेवाला।

प्रवादी (दिन्)—वि० [सं० प्रवाद+इनि] १ प्रवाद-संबंधी। २. प्रवाद करनेवाला।

प्रवान*—वि० [सं० प्रमाण] १ प्रामाणिक। २ समान। पु० प्रमाण।

प्रवार—पु० [सं० प्र√वृ (ढकना)+घञ्] १ प्रवर। २ वस्त्र। ३. चादर या दुपट्टा।

प्रवारण—पुं० [सं० प्र√वृ+णिच्+ल्युट्—अन] १ वारण करना। मनाही। २ किसी कामना से किया जानेवाला दान। ३. बौद्धो का एक उत्सव जो वर्षा ऋतु बीत जाने पर होता था।

प्रवाल—पु० [सं० प्र√वल् (कांपना)+ण] १ मूँगा। विद्रुम। २ नया और मुलायम पत्ता। कल्ला। कोपल। ३ बीन, सितार आदि का बीचवाला लबा दड।

प्रवाल-द्वीप—पु० [सं० ष० त०] प्रवाल या मूँगे के वे बडे और लबे-चौडे ढूह जो समुद्रो मे अनेक स्थानो मे पाये जाते है और जिनमें मूँगे के जन्तुओ के उपनिवेश होते हैं। दे० 'मूँगा'। (कॉरल आइलैंड)

प्रवाल श्रेणी—पु० [सं०] समुद्र की सतह पर प्रकट होनेवाली मूँगे के कीडों से बनी हुई चट्टानो की शृखला।

प्रवाली (लिन्)—वि० [सं० प्रवाल+इनि] १ मूँगे के रग का। मूँगिया। २ मूँगे का। स्त्री० समुद्र में मूँगे की चट्टानो का वृत्ताकार घेरा। (एटोल)

प्रवास—पु० [सं० प्र√वस् (बसना)+घञ्] १ अपनी जन्म-भूमि छोडकर विदेश मे जाकर किया जानेवाला वास। २ यात्रा। सफर। ३ विदेश। परदेश।

प्रवासन—पु० [सं० प्र√वस्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० प्रवासित, प्रवास्य] १ विदेश मे रहना। २ देश-निकाला। ३ वध।

प्रवास-पत्र—पु० [सं०] राजकीय अधिकारियो से मिलनेवाला वह अधिकारपत्र, जिससे किसी को अपना देश छोडकर दूसरे देश मे बसने या रहने की अनुमति मिलती है।

प्रवासित—भू० कृ० [सं० प्र√वस्+णिच्+क्त] १ देश से निकाला हुआ। जिसे देश-निकाले का दड मिला हो। २. मारा हुआ।

प्रवासी (सिन्)—वि० [सं० प्रवास+इनि] [स्त्री० प्रवासिनी] जो प्रवास में हो।

प्रवास्य—वि० [सं० प्र√वस्+णिच्+यत्] १ विदेश भेजने के योग्य। २ जिसे देशनिकाला देना उचित हो।

प्रवाह—पु० [सं० प्र√वह् (बहना)+घञ्] १ किसी तरल पदार्थ के किसी ओर वेगपूर्वक निरन्तर चलते या बहते रहने की क्रिया या भाव। २ जल की वह धारा या राशि जो किसी दिशा मे वेगपूर्वक बढ़ रही हो। बहाव। ३. किसी काम या बात का ऐसा क्रम जो बराबर चलता हो और बीच मे कही से टूटता न हो। जैसे—आज-कल सारे ससार मे जन-मत का प्रवाह स्वतत्रता की ओर है। ४. विद्युत्

की गति जो जल की धारा के सदृश प्रवाहमान होती है। ५. कोई अच्छा वाहन या सवारी।

प्रवाहक—वि० [स० प्र√वह्+णिच्+ण्वुल्—अक] १. अच्छी तरह वहन करनेवाला। २. अच्छी तरह प्रवाहित करने या बहानेवाला। पु० राक्षस।

प्रवाहण—पु० [स० प्र√वह्+णिच्+ल्युट्—अन] [वि० प्रवाहित] १ अच्छी तरह से वहन करना। २ बहाना।

प्रवाहणी—स्त्री० [स० प्रवाहण+ङीप्] मलद्वार मे सबसे ऊपर की कुंडली जो आँतो मे का मल बाहर निकालती है।

प्रवाह-मार्ग—पु० [स० ष० त०] दार्शनिक क्षेत्र मे, सब प्रकार के साधना-मार्गों (अर्थात् पुष्टि-मार्ग और मर्यादा-मार्ग) से भिन्न सांसारिक सुख-प्राप्ति के लिए प्रयत्न करने की प्रथा या मार्ग जिस पर चलनेवाला जीव सदा जन्म-मरण के बन्धन मे पड़ा रहता है।

प्रवाहिका—स्त्री० [स० प्र√वह्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] आँतो के विकार के कारण होनेवाला एक रोग जिसमे पेट मे दर्द या मरोड़ होता और पतले दस्त आते हैं। पेचिश। (डिसेन्ट्री)

प्रवाहित—भू० कृ० [स० प्र√वह्+णिच्+क्त] १ वहन किया या ढोया हुआ। २ जो नदी की धारा में बह जाने के लिए छोड़ा गया हो। ३ बहता हुआ या बहाया हुआ।

प्रवाहिनी—स्त्री० [स० प्र√वह्+णिनि+ङीप्] नदी।

प्रवाही (हिन्)—वि० [स० प्र√वह्+णिनि] [स्त्री० प्रवाहिनी] १ वहन करनेवाला। २ बहानेवाला। ३ जो बह रहा हो। ४ प्रवाह से युक्त। ५ तरल। द्रव।

स्त्री० [स० प्र√वह्+णिच्+अच्+ङीष्] बालू। रेत।

प्रविग्रह—पु० [स० प्रा० स०] राजाओ, राज्यो आदि में, पुरानी सन्धि की बातों का पालन न होना या उनके विरुद्ध व्यवहार होना। सन्धि-भग। (कौटिल्य)

प्रविचय—पु० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० प्रविचित] १ अनुसधान। खोज। २. परीक्षा। जाँच।

प्रवितत—भू० कृ० [स० प्र-वि√तन्+क्त] १ फैला हुआ। २. बिखरा हुआ।

प्रविद्ध—भू० कृ० [स० प्र√व्यध् (बेधना)+क्त] १ फेंका हुआ। २ विद्ध।

प्रविधान—पु० [स० प्र-वि√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] [वि० प्राविधानिक] १ किसी विषय पर विचार करना। २. कार्य रूप देना। ३ वे उपाय जिनके अनुसार काम किया जाता हो। ४ दे० संविधि।

प्रविधि—स्त्री० [स० प्रा० स०] [वि० प्राविधिक] १. कला, विज्ञान, यंत्र-निर्माण आदि के क्षेत्रों मे, कोई काम करने या कोई चीज तैयार करने की वह विशिष्ट क्रियात्मक पारिभाषिक विधि जो अनुभव, प्रयोग आदि के आधार पर स्थिर होती है। २. उक्त विधि के आधार पर अर्जित कौशलपूर्ण दक्षता या प्रवीणता। (टेकनीक) ३. किसी विशिष्ट विषय का विधान या कानून। प्रविधान।

प्रविधिज्ञ—पु० [स०] वह जो कला, विज्ञान, यत्रो आदि की विधियो का अच्छा ज्ञाता हो। (टेक्नीशियन)

प्रविपल—पु० [स० अत्या० स०] विपल (पल का साठवा भाग) का एक अंश-मान।

प्रविरत—भू० कृ० [स० प्रा० स०] जिसने अपने को किसी के साथ से अथवा कही से अलग कर लिया हो। विरत।

प्रविवा—स्त्री० [स० ब० स०, टाप्] अतीस।

प्रविष्ट—भू० कृ० [स० प्र√विश् (घुसना)+क्त] १ जिसका कही या किसी के अन्दर प्रवेश हो चुका हो। २ अन्दर पहुँचा, घुसा या पैठा हुआ। ३ जिसकी प्रविष्टि हुई हो।

प्रविष्टि—स्त्री० [प्र√विश्+क्तिन्] १ प्रवेश। २ रोकड, बही खाते आदि मे लेखे, विवरण आदि लिखना। ३ इस प्रकार लिखी जानेवाली कोई बात, रकम या विवरण। (एंट्री, उक्त दोनो अर्थों मे)

प्रविसना*—अ० [स० प्रविश] प्रविष्ट होना। घुसना। पैठना।

प्रवीण—वि०[स० प्र-वीणा प्रा० स०, प्र√वीण+णिच्+अच्] [भाव० प्रवीणता] १ अच्छा गाने-बजाने या बोलनेवाला। २ किसी काम के सभी अंगों-उपागो का पूरा ज्ञाता। (एक्सपर्ट) ३ कुशल। दक्ष। पु० वह जो वीणा बजाने मे दक्ष हो।

प्रवीणता—स्त्री० [स० प्रवीण+तल्+टाप्] प्रवीण होने की अवस्था, गुण या भाव।

प्रवीन*—पु०=प्रवीण।

प्रवीर—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० प्रवीरता] बहुत बडा वीर या योद्धा। २ उत्तम।

प्रवृत—भू० कृ० [स० प्र√वृ (चुनना)+क्त] १ चुना हुआ। २ (दत्तक के रूप मे) ग्रहण किया हुआ।

प्रवृत्त—भू० कृ० [स० प्र√वृत् (बरतना)+क्त] १ जिसकी प्रवृत्ति या मन का झुकाव किसी काम या बात की ओर हो और इसी लिए जो उसके संपादन मे लगा हो या लगना चाहता हो। २ किसी की ओर घुमा या मुड़ा हुआ। ३ उद्यत। प्रस्तुत। ४ उत्पन्न। जात।

प्रवृत्ति—स्त्री० [स० प्र√वृत्+क्तिन्] १ निरन्तर बढ़ते रहने की क्रिया या भाव। २ किसी काम, विषय या बात की ओर अथवा किसी विशिष्ट दिशा मे प्रवृत्त होने या बढ़ने की क्रिया या भाव। ३. मनुष्य के व्यक्तित्व का वह अग जो इस बात का सूचक होता है कि वह अपने उद्देश्यों या कार्यों की सिद्धि के लिए किस प्रकार या किस रूप मे सचेष्ट रहता है। ४ मन की वह स्थिति जिसमें वह किसी ऐसे काम या बात की ओर अग्रसर होता है जो उसे प्रिय तथा रुचिकर होती है। (टेन्डेन्सी) ५ दार्शनिक और धार्मिक क्षेत्रो मे जीवन-यापन का वह प्रकार जिसमे मनुष्य घर-गृहस्थी सांसारिक कार्यों, सुख-भोगो आदि मे प्रवृत्त रहता है। 'निवृत्ति' का विपर्याय। ६ मनुष्यो का साधारण आचरण व्यवहार या रहन-सहन। ७ साहित्य मे, नाटकों आदि का वह तत्त्व या पद्धति जो भिन्न-भिन्न देशो के आचार-व्यवहार, रहन-सहन, वेश-भूषा आदि प्रकट या सूचित करती है। देश-भेद के विचार से ये चार प्रवृत्तियाँ मानी गई हैं—आवन्ती, दक्षिणात्य, पाचाली और मागधी।

विशेष—वृत्ति और प्रवृत्ति मे यह अन्तर है कि वृत्ति का मुख्य संबंध आन्तर व्यापारो से और प्रवृत्ति का बाह्य व्यापारो से होता है। वृत्ति तो केवल शब्दो के द्वारा काम करती है, पर प्रवृत्ति आचार-व्यवहार के माध्यम से व्यक्त होती है। इसलिए वृत्ति तो काव्य, नाटक आदि सभी

प्रकार की साहित्यिक कृतियों मे होती है, परन्तु प्रवृत्ति केवल अभिनय या नाटक मे होती है।
८ वर्णन। वृत्तात। ९. उत्पत्ति। जन्म। १०. कार्य का अनुष्ठान या आरंभ। ११ यज्ञ आदि धार्मिक कृत्य। १२. हाथी का मद।

प्रवृत्ति-मार्ग—पु० [स० ष० त०] जीवन-यापन का वह प्रकार जिसमें मनुष्य सांसारिक कार्यों और बधनो मे पडा रहकर दिन बिताता है। 'निवृत्ति-मार्ग' का विपर्याय।

प्रवृत्ति-विज्ञान—पु० [स० ष० त०] बाह्य पदार्थों से प्राप्त होनेवाला ज्ञान।

प्रवृद्ध—वि० [स० प्र√वृध् (बढना)+क्त] १ बहुत अधिक बढा हुआ। २ खूब पक्का। प्रौढ़। ३ फैला हुआ। विस्तृत।
पु० १ अयोध्या के राजा रघु का एक पुत्र जो गुरु के शाप से १२ वर्षों के लिए राक्षस हो गया था। २ तलवार चलाने के ३२ ढगों या हाथो में से एक जिसे प्रसृत भी कहते हैं।

प्रवेक्षण—पु०=प्रवेक्षा।

प्रवेक्षा—स्त्री० [स० प्रवीक्षा] [भू० कृ० प्रवेक्षित] ऐसा अनुमान या आशा कि आगे चलकर अमुक बात होगी। प्रत्याशा। (एन्टिसिपेशन)

प्रवेक्षित—वि० [स० प्रवीक्षित] जिसकी प्रवेक्षा की गई हो या की जा रही हो। प्रत्याशित। (एन्टिसिपेटेड)

प्रवेग—पु० [स० प्रा० स०] [वि० प्रावेगिक] १. तीव्र या प्रबल वेग। २. वैज्ञानिक क्षेत्र मे गति या वेग का वह मान जिससे कोई चीज आगे बढ़ रही हो अथवा कोई क्रिया हो रही हो। ३ दे० 'सवेग'।

प्रवेणी—स्त्री० [स० प्र√वेण्+इन्+ङीप्] १. सिर के बालो की चोटी कबरी। वेणी। २ हाथी की पीठ पर डाली जानेवाली रग-बिरंगी झूल। ३ महाभारत-काल की एक नदी।

प्रवेता (तृ)—पु० [सं० प्र√वी (गति)+तृच्] सारथी। रथवान।

प्रवेदन—पु० [स० प्र√विद् (जानना) णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रवेदित] प्रकट करना। जाहिर करना।

प्रवेपन—पु० [प्र√वेप्+ल्युट्—अन] १ हिलना-डुलना। २ काँपना।

प्रवेश—पु० [स० प्र√विश् (पैठना)+घञ्] १ किसी निश्चित या विशिष्ट सीमा को लाँघकर उसके अन्दर जाने की क्रिया या भाव। अन्दर जाना। जैसे—गृह-प्रवेश, जल-प्रवेश। २ किसी विशिष्ट सस्था आदि मे भरती होना। (एडमिशन) ३ गति। पहुँच। रसाई। ४ किसी विषय की होनेवाली साधारण जानकारी। (एडमिशन)

प्रवेशक—वि० [स० प्र√विश्+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रवेश करनेवाला।
पु० नाटक मे एक प्रकार का अर्थोपक्षेपक जो दो अको के बीच मे होता है, और जिसमें नीच पात्रो के द्वारा किसी भावी या भूत कथाश की सूचना मात्र होती है।

प्रवेश-द्वार—पु० [स० ष० त०] वह द्वार या दरवाजा जिसमें से होकर अन्दर जाना पडता है।

प्रवेशन—पु० [स० प्र√विश्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रविष्ट, प्रवेशनीय, प्रवेश्य] १ प्रवेश करना या अन्दर जाना। घुसना। पैठना। २ सिहद्वार।

प्रवेशना*—अ० [स० प्रवेश] प्रवेश करना।
स० प्रविष्ट करना। प्रवेश कराना।

प्रवेश-पत्र—पु० [ष० त०] १ वह पत्र जिसमें किसी को कहीं प्रवेश करने के लिए अनुमति दी गई हो। पास। २. टिकट।

प्रवेश-शुल्क—पु० [ष० त०] वह शुल्क जो किसी सस्था को उसमें प्रवेश करते समय दिया जाता है।

प्रवेशार्थी—पु० [स० प्रवेश+अर्थी] वह जो कही प्रवेश करना या पाना चाहता हो। प्रविष्ट होने के लिए उत्सुक या उद्यत व्यक्ति।

प्रवेशिका—स्त्री० [स० प्र√विश्+णिच्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] १. प्रवेश-पत्र। २ उक्त के बदले मे दिया जानेवाला धन या शुल्क। ३. आज-कल कुछ सस्थाओ मे एक प्रकार की परीक्षा जो आरम्भिक शिक्षा के उपरान्त ली जाती है और जिसमें उत्तीर्ण होने पर विद्यार्थी उच्च कोटि की शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी होता है।

प्रवेशित—भू० कृ० [स० प्र√विश्+णिच्+क्त] १ जिसे प्रविष्ट किया या कराया गया हो। २. अन्दर पहुँचाया हुआ।

प्रवेश्य—वि० [स० प्र√विश्+ण्यत्] १. (स्थान) जिसमे प्रवेश हो सके। २ (व्यक्ति) जिसका कही प्रवेश हो सके। ३ (बाजा) जो बजाया जाता हो।
पु० प्राचीन भारत मे वह माल जो विदेशो से आता था। आयात।

प्रवेष—पु० [प्र√विष् +घञ्] परिवेश।

प्रवेष्ट—पु० [स० प्र√वेष्ट् (लपेटना)+अच्] १ बाहु। बाँह। २ कलाई पर का भाग। पहुँचा। ३ हाथी का मसूडा। ४ हाथी की पीठ, जिस पर बैठकर सवारी की जाती है।

प्रवेष्टक—पु० [स० प्र√वेष्ट्+णिच्+ण्वुल्—अक] दाहिना हाथ।

प्रवेष्टा (ष्टृ)—वि० [स० प्र√विश्+तृच्] प्रवेश करनेवाला। प्रवेशक।

प्रवेसना—अ० [स० प्रवेश] प्रवेश करना।

प्रव्याहार—पु० [स० प्रा० स०] वार्तालाप। वाद-विवाद आदि का चलता रहना।

प्रव्रजन—पु० [स० प्र√व्रज् (गति)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रव्रजित] १ एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर जाना। २ आज-कल मुख्य रूप से (क) लोगो का अपना निवास-स्थान छोडकर दूसरे देश या स्थान मे बसने के लिए जाना। (ख) पक्षियों आदि का कुछ विशिष्ट ऋतुओ मे एक स्थान से उड़कर दूसरे स्थान पर कुछ समय तक रहने के लिए जाना। (माइग्रेशन)

प्रव्रजित—भू० कृ० [स० प्र√व्रज्+क्त] [स्त्री० प्रव्रजिता] १ (व्यक्ति) जिसने सन्यास ग्रहण किया हो। २ जीविका के लिए विदेश जाकर बसा हुआ।

प्रव्रज्या—स्त्री० [स० प्र√व्रज्+क्यप्+टाप्] १. चलकर कहीं दूर जाना। २. घर-बार छोड़कर दूर के किसी एकान्त स्थान मे जा रहना। ३. सांसारिक बंधनों को छोड़कर सन्यास ग्रहण करना। ४. आज-कल, जीविका, निवास आदि के सुभीते के विचार से अपना देश या स्थान छोड़कर किसी दूसरे देश या स्थान मे जा बसना। (माइग्रेशन) ५ देश-निकाला।

प्रव्रज्या-व्रत—पु० [सं० ष० त०] नेपाली बौद्धों का एक सस्कार जो हिन्दुओं के यज्ञोपवीत की तरह का होता है।

प्रव्राज—पु० [सं० प्र√व्रज्+घञ्] १. बहुत नीची जमीन। २. संन्यास।

प्रव्राजक—पु० [सं० प्र√व्रज्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रव्राजिका] १. परिव्राजक। २. संन्यासी।

प्रशंस*—स्त्री०=प्रशंसा।
वि०=प्रशंस्य (प्रशंसनीय)।

प्रशंसक—वि० [सं० प्र√शंस् (स्तुति करना)+ण्वुल्—अक] १. प्रशंसा करनेवाला। २. किसी के अच्छे गुणों या बातो को आदर की दृष्टि से देखनेवाला। (एडमायरर)

प्रशंसन—पु० [सं० प्र√शंस्+ल्युट्—अन] [वि० प्रशंसनीय, प्रशस्य, भू० कृ० प्रशंसित] प्रशंसा या तारीफ करना। सराहना।

प्रशंसना*—स० [सं० प्रशंसन] किसी की प्रशंसा या तारीफ करना। गुणानुवाद करना। सराहना।

प्रशंसनीय—वि० [सं० प्र√शंस्+अनीयर्] जिसकी प्रशंसा की जा सकती हो। प्रशंसा का अधिकारी या पात्र।

प्रशंसा—स्त्री० [सं० प्र√शंस्+अ+टाप्] [भू० कृ० प्रशंसित] १. प्रसन्नतापूर्वक किसी के अच्छे गुणों या कार्यों का किया जानेवाला ऐसा उल्लेख जिससे समाज मे उसका आदर तथा प्रतिष्ठा बढ़ती हो। २. प्रसन्न होकर यह कहना कि कोई चीज बहुत अच्छी है, तथा गुण-संपन्न है। (प्रेज)

प्रशंसित—भू० कृ० [सं० प्रशंसा+इतच्] जिसकी प्रशंसा की गई हो या हुई हो। सराहा हुआ।

प्रशंसोपमा—स्त्री० [सं० प्रशंसा-उपमा, मध्य० स०] उपमालंकार का एक भेद जिसमे उपमेय की प्रशंसा करके उपमान को प्रशंसनीय सिद्ध किया जाता है।

प्रशंस्य—वि० =प्रशंसनीय।

प्रशक्य—वि० [सं० प्र√शक् (सकना)+यत्] अपनी शक्ति के अनुसार ठीक और पूरा काम करनेवाला।

प्रशत्वरी—स्त्री० [सं० प्रशत्वन्+ङीप्, र-आदेश] नदी।

प्रशत्वा (त्वन्)—पु० [सं० प्र√शद्क्व+निप्, तुट्] समुद्र।

प्रशम—पु० [सं० प्र√शम् (शांत होना)+घञ्] १. शमन। उपशम। शांति। २ निवृत्ति। ३. ध्वंस। नाश।

प्रशमन—पु० [सं० प्र√शम्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रशमित] १. शांत करना। २. कोप, रोग आदि को दबाना। ३. नाशन। ध्वंस। ४. मारण। वध।
वि० शमन या शांत करनेवाला।

प्रशमित—भू० कृ० [सं० प्र√शम्+णिच्+क्त] १. शांत किया हुआ। २ दबाया हुआ।

प्रशम्य—वि० [सं० प्र√शम्+यत्] जिसका शमन हो सकता हो या होने को हो।

प्रशस्त—भू० कृ० [सं० प्र√शंस्+क्त] १. जिसकी प्रशंसा हुई हो या की गई हो। २. जो उत्तम प्रकार का हो तथा जिसमें दोष, विकार विघ्न आदि न हों।

प्रशस्त-पाद—पु० [सं० ब० स०] एक प्राचीन आचार्य जिनका वैशेषिक दर्शन पर 'पदार्थ-धर्म-संग्रह' नामक ग्रन्थ है।

प्रशस्त-वचन—पु० [कर्म० स०] स्तुति।

प्रशस्ति—स्त्री० [सं० प्र√शंस्+क्तिन्] १. प्रशंसा। स्तुति। २. विवरण। ३ किसी के विशेषत अपने पालक या संरक्षक के गुणों, विशेषताओं आदि की कुछ बढ़ा-चढ़ाकर की जानेवाली विशद और विस्तृत प्रशंसा। (ग्लोरिफिकेशन)। ४ प्राचीन भारत में, वह ईश्वर-प्रार्थना जो किसी नये राजा के सिंहासन पर बैठने के समय राज्य और लोक की मंगल-कामना से की जाती थी। ५ परवर्ती भारत में (क) राजाओं के एक प्रकार के प्रख्यापन जो चट्टानों, ताम्रपत्रों आदि पर अंकित किये जाते थे। (ख) ग्रंथों के आदि या अंत का वह अंश जिसमें उनके कर्ता, रचना-काल, विषय आदि का उल्लेख रहता था। पुष्पिका। और (ग) वे प्रशंसा-सूचक पद या वाक्य जो पत्रों आदि के आरंभ में संबोधन के रूप मे लिखे जाते थे।

प्रशस्य—वि० [सं० प्र√शंस्+क्यप्] प्रशंसनीय।

प्रशांत—वि० [सं० प्र√शम्+क्त] [भाव० प्रशांति] १. बहुत अधिक शान्त या स्थिर। २ (व्यक्ति) जिसकी वृत्ति निश्चल और शान्त हो।

प्रशांत-महासागर—पु० [सं० कर्म० स०] विश्व का सबसे बड़ा महासागर जो अमेरिका के पश्चिमी तट से एशिया के पूर्वी तटों तक फैला हुआ है और जिसका क्षेत्रफल ६ करोड ८० लाख वर्ग मील है। (पैसिफिक ओशन)

प्रशांति—स्त्री० [प्र√शम्+क्तिन्] १ प्रशांत होने की अवस्था या भाव। २. देश, राज्य आदि मे होनेवाली वह स्थिति जिसमे किसी प्रकार का असंतोष या क्षोभ न हो और सब लोग शांतिपूर्वक जीवन-यापन कर रहे हो। (ट्रैंक्विलटी)

प्रशाख—वि० [सं० प्रशाखा, ब० स०] जिसमें या जिसकी अनेक शाखाएँ हों।
पु० गर्भ मे भ्रूण की पाँचवीं अवस्था जिसमे उसकी शाखाएँ निकलने लगती है अर्थात् हाथ-पैर बनने लगते है।

प्रशाखा—स्त्री० [सं० अत्या० स०] किसी बड़ी शाखा या डाली से निकली हुई छोटी शाखा या डाल।

प्रशाखिका—स्त्री० [सं०] खेल के मैदान मे बनी हुई वह इमारत जिसमें लोग बैठकर खेल देखते हैं। २ छाया हुआ मंडप। (पैविलियन)

प्रशासक—पु० [सं० प्र√शास्+ण्वुल्—अक] १ शासन करनेवाला अधिकारी। २ किसी नगर, संस्था आदि का वह प्रधान अधिकारी जिस पर वहाँ के शासन का पूरा उत्तरदायित्व तथा भार रहता है। (एडमिनिस्ट्रेटर)

प्रशासन—पुं० [सं० प्र√शास्+ल्युट्—अन] १ किसी नगर, संस्था आदि के अधिकारों, कर्तव्यों आदि को कार्य का रूप देना। जैसे—विद्यालय का प्रशासन। २ अधिक विस्तृत क्षेत्र मे, राज्य के सार्वजनिक अधिकारों विशेषत. कार्यकारी अधिकारो की सुव्यवस्था की दृष्टि से किया जानेवाला निष्पादन। (एडमिनिस्ट्रेशन)

प्रशासनिक—वि० [सं० प्राशासनिक] प्रशासन-सम्बन्धी। प्रशासन का। (एडमिनिस्ट्रेटिव्)

प्रशासनीय—वि० [सं० प्रशासन+छ—ईय]=प्रशासनिक।

प्रशासित—भू० कृ० [सं० प्र√शास्+णिच्+क्त] १ जिसका प्रशासन हो रहा हो। २ अच्छी तरह से शासित किया हुआ।

प्रशास्ता (स्तृ)—पु० [सं० प्र√शास्+तृच्] १. एक ऋत्विक जो होता का सहकारी होता था और जिसे मैत्रावरुण भी कहते थे।

ऋत्विक्। ३ मित्र। ४ शासक। ५ प्रासक।

प्रशास्त्र—पु० [सं० प्रशास्तृ+अण्] १ एक प्रकार का याग। २. प्रशास्ता नामक ऋत्विक् का कर्म। ३. वह पात्र जिसमे प्रशास्ता सोमपान करता था।

प्रशिक्षण—पु० [सं० प्र√शिक्ष् (सीखना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रशिक्षित] १ किसी व्यावहारिक या प्रायौगिक शिक्षा पद्धति से या नियमित रूप से दी जाने या प्राप्त की जानेवाली शिक्षा। २ उक्त पद्धति से शिक्षा प्राप्त करने या देने की अवस्था, क्रिया या भाव। (ट्रेनिंग)

प्रशिक्षण-महाविद्यालय—पु० [सं० ष० त०] वह महाविद्यालय जिसमे ऊँची कक्षाओ के शिक्षक तैयार करने के उद्देश्य से लोगो को शिक्षण के सिद्धान्त बतलाये और शिक्षा देने की पद्धति सिखाई जाती है। (ट्रेनिंग कालेज)

प्रशिक्षण-विद्यालय—पु० [सं० ष० त०] वह विद्यालय जिसमे भारतीय भाषाओ के शिक्षको को शिक्षण विज्ञान की शिक्षा दी जाती और शिक्षा-पद्धति सिखाई जाती है। (ट्रेनिंग स्कूल)

प्रशिक्षा—स्त्री० =प्रशिक्षण।

प्रशिक्षित—भू० कृ० [सं० प्र√शिक्ष्+क्त] (व्यक्ति) जिसे किसी प्रकार का प्रशिक्षण मिला हो। विशेष रूप से सिखाकर तैयार किया हुआ। (ट्रेन्ड)

प्रशिष्टि—स्त्री० [सं० प्र√शास्+क्तिन्] १ अनुशासन। २ शिक्षा। ३ आदेश।

प्रशिष्य—पु० [सं० अत्या० स०] १. शिष्य का शिष्य। २ परपरागत शिष्य।

प्रशीत—वि० [सं० प्रा० स०] १ बहुत अधिक ठढा। २ ठढ से जमा हुआ।

प्रशीतक—वि० [सं० प्रशीत+णिच्+ण्वुल्—अक] बहुत ठढा करने या रखनेवाला।

पु० आज-कल, लोहे की एक विशिष्ट प्रकार की अलमारी जिसमें औषध, खाद्य पदार्थ आदि ठढे रखने और सड़ने-गलने या विकृत होने से बचाने के लिए रखे जाते है। हिमीकर। (रेफ्रिजरेटर)

प्रशीतन—पु० [सं० प्रशीत+णिच्+ल्युट्—अन] १ बहुत अधिक ठढा करना या रखना। २ प्राकृतिक कारणो से पृथ्वी का भीतरी ताप कुछ कम होना। ३ शरीर का तापमान कम होना। शरीर ठढा होना। ४ खाद्य पदार्थों, औषधो आदि को इस प्रकार ठढा रखना कि वे सडने-गलने या विकृत होने से बची रहें। (रेफ्रिजरेशन)

प्रशीताद—पु० [सं०] एक प्रकार का रोग जिसमे मसूड़े गलने लगते है, मुँह से दुर्गंध आती है, हाथ-पैरो मे पीडा होती है और रोगी दिन-पर-दिन दुबला होता जाता है। (स्कर्वी)

प्रशोभन—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक शोभा देने या भला लगनेवाला। फबनेवाला।

पु० [भू० कृ० प्रशोभित] बहुत अधिक शोभा से युक्त करना।

प्रशोभित—भू० कृ० [सं० प्रा० स०] जो बहुत अधिक शोभा से युक्त हो या किया गया हो।

प्रशोभी†—वि० =प्रशोभन।

प्रशोषण—पु० [सं० प्र√शुष्+णिच्+ल्युट्—अन] १ अच्छी तरह सोखना। २. एक कल्पित राक्षस जिसके सम्बन्ध में यह माना जाता है कि वह बच्चों को सुखडी रोग से पीड़ित करता है।

प्रश्न—पु० [सं०√प्रच्छ् (पूछना)+नङ्] १. वह बात जिसका उत्तर अभीष्ट हो या दिया जाता हो। जैसे—गणित का प्रश्न। २. वह बात जिसका उत्तर किसी से माँगा गया हो। ३ किसी से पूछी जानेवाली ऐसी गभीर या गूढ़ बात जिसका स्पष्टीकरण सब लोग सहज मे न कर सकते हो। सवाल। ४ कोई ऐसा विषय जिस पर अच्छी तरह अनुसधान, मनन, विचार अथवा निर्णय करने की आवश्यकता हो। समस्या। सवाल। (क्वेश्चन, उक्त सभी अर्थों मे) ५ न्यायालय में, उपस्थित वाद के सबध की विचारणीय बात या बाते। ६. न्यायालय आदि के द्वारा होनेवाला अनुसधान या जाँच-पड़ताल। ७ एक उपनिषद् का नाम।

प्रश्नचिह्न—पु० [सं० ष० त०] १ छपाई, लेखन आदि मे, प्रश्नात्मक वाक्यो के अन्त मे लगाया जानेवाला विराम चिह्न। इसका रूप यह है—(नोट ऑफ इन्टेरोगेशन) जैसे—'क्या वह चला गया?' २ लाक्षणिक अर्थ मे ऐसी विकट समस्या जिसके निदान के सबध मे कुछ सूझ न रहा हो।

प्रश्न-विवाक—पु० [सं० ष० त०] १ वैदिक काल के विद्वानो का एक भेद जो भावी घटनाओ के विषय मे प्रश्नो का उत्तर दिया करते थे। २ सरपच। पच।

प्रश्नावली—स्त्री० [सं० प्रश्न-आवली, ष० त०] १ प्रश्नो की सूची। २. किसी विषय से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नो की वह सूची जो आधिकारिक रूप से किसी बात की जाँच करने, आँकडे प्राप्त करने अथवा कुछ अभिमत प्राप्त करने के लिए सबद्ध लोगो के पास भेजी जाती है। (क्वेश्चनेयर)

प्रश्नी (श्निन्)—वि० [सं० प्रश्न+इनि] प्रश्न-कर्ता।

प्रश्नोत्तर—पु० [सं० प्रश्न-उत्तर, द्व० स०] १ प्रश्न और उसका उत्तर। सवाल और जवाब। २ पूछ-ताछ। ३ साहित्य मे उत्तर नामक अर्थालकार का एक भेद जिसमे कुछ प्रश्न और उनके उत्तर रहते है।

प्रश्नोत्तरी—स्त्री० [सं० प्रश्नोत्तर+अच्+ङीष्] किसी विषय से सम्बन्ध रखनेवाले प्रश्नों और उनके उत्तरो का सग्रह। विशेषत ऐसा सग्रह जिसमे कुछ प्रश्न और उनके उत्तर देकर उस विषय का स्वरूप स्पष्ट किया जाता है। (कैटेकिज्म)

प्रश्नोपनिषद्—स्त्री० [सं० प्रश्न-उपनिषद्, मध्य० स०] अथर्ववेद की एक उपनिषद्।

प्रश्रब्धि—स्त्री० [सं० प्र√श्रम्भ् (विश्वास)+क्तिन्] =विश्राब्धि।

प्रश्रय—पु० [सं० प्र√श्रि+अच्] १ आश्रयस्थान। २ आधार। टेक। सहारा। ३. नम्रता। विनय।

प्रश्रयण—पु० [सं० प्र√श्रि+ल्युट्—अन] १ विनय। नम्रता। २. शिष्टाचार। ३. सौजन्य।

प्रश्रयी (यिन्)—वि० [सं० प्रश्रय+इनि] १ शिष्ट। सुजन। भला-मानुस। २. नम्र। विनयी। ३. धीर। शान्त। ४. शिष्ट। सज्जन।

प्रश्रित—भू० कृ० [सं० प्र√श्रि+क्त] विनीत।

प्रश्लिष्ट—भू० कृ० [सं० प्र√श्लिष् (चिपटना)+क्त] १ जुड़ा हुआ। युक्त। २ युक्तियुक्त।

प्रश्लेष—पु० [सं० प्र√श्लिष्+घञ्] १ घनिष्ठ संबंध। २ व्याकरण में, स्वरो की सधि होने पर उनका परस्पर मिलकर एक होना।

प्रश्वास—पु० [सं० प्र√श्वस् (सांस लेना)] १ वह वायु जो साँस लेने के समय नथने से बाहर निकलती है। बाहर आता हुआ साँस। २ उक्त प्रकार से वायु बाहर निकलने की क्रिया या भाव।

प्रष्टव्य—वि० [सं०√प्रच्छ्+तव्यत्] प्रश्न के रूप मे पूछे जाने के योग्य।

प्रष्टा (ष्टृ)—वि० [सं०√प्रच्छ्+तृच्] पूछनेवाला। प्रश्नकर्ता।

प्रष्टि—पु० [सं०√प्रच्छ्+ति (बा०)] १ वह घोड़ा या बैल जो तीन घोडो के रथ या तीन बैलो की गाडी मे सब से आगे जुता रहता है। २ जोड़ी में दाहिनी ओर जोता जानेवाला घोड़ा या बैल। ३ तिपाई।

प्रष्ठ—वि० [सं० प्र√स्था (ठहरना)+क, षत्व] १ आगे-आगे चलनेवाला। अग्रगामी। अगुआ। २ प्रधान। मुख्य। ३ श्रेष्ठ।

प्रसंख्या—स्त्री० [सं० प्रा० स०] १ दो या अनेक सख्याओ को जोडने से प्राप्त होनेवाला फल। जोड। योग।

प्रसख्यान—पु० [सं० प्र-सम्√ख्या+ल्युट्-अन] १ जोड करना या लगाना। २ सम्यक् ज्ञान। सत्य ज्ञान। ३ आत्मानुसधान। ध्यान।

प्रसग—पु० [सं० प्र√सञ्ज् (मिलना)+घञ्] १. सबध। लगाव। २ अनुराग। आसक्ति। ३ मैथुन। सभोग। ४ विवेचित विषय अथवा बातचीत का वह पहलेवाला अश जिसके सबध मे अब कुछ और कहा जा रहा हो। (कानटेक्स्ट) ५ प्रकरण। ६ हेतु। ७. फैलाव।

प्रसग-विध्वंस—पु० [सं० ष० त०] साहित्य मे, मान-मोचन के छ प्रकारो मे से एक जिसमे मानिनी का मान उसे भय दिखलाकर दूर किया जाता है।

प्रसंगविभ्रंश—पु० =प्रसग-विध्वस।

प्रसंग-सम—पु० [सं० तृ० त०] न्याय मे, यह कथन कि प्रमाण को भी प्रमाणित सिद्ध करके दिखलाओ। (एक प्रकार का दोष)

प्रसंगी (गिन्)—वि० [सं० प्रसग+इनि] १ प्रसगयुक्त। २ प्रसग या मैथुन करनेवाला। ३ अनुरक्त।

प्रसंधान—पु० [सं० प्र-सम्√धा (धारण)+ल्युट्—अन] सधि। योग।

प्रसंविदा—स्त्री० [सं०] वह पत्र जिसमे कोई बात करने या न करने के सबंध में लिखित रूप मे वचन दिया गया हो। (कावनेन्ट)

प्रसंसना*—स०=प्रशसना (प्रशसा करना)।

प्रसक्त—भू० कृ० [सं० प्र√सज्ज् (मिलना)+क्त] १ किसी के साथ लगा हुआ। सश्लिष्ट। २ बराबर या सदा साथ लगा रहनेवाला। ३. संबद्ध। ४ आसक्त। ५ प्रस्तावित।

प्रसक्ति—स्त्री० [सं० प्र√सञ्ज्+क्तिन्] १ प्रसग। सपर्क। २ अनुमिति। ३ आपत्ति। ४ व्याप्ति।

प्रसज्य—वि० [सं० प्र√सञ्ज्+ण्यत्] १. जो सबद्ध किया जाय। २ जो प्रयोग मे लाया जाय। ३ संभव।

प्रसज्य प्रतिषेध—पु० [सं० सुप्सुपा स०] ऐसा निषेध जिसमें वर्जन का भाव ही प्रधान होता है और अनुमति, आज्ञा या विधि अल्प तथा गौण रहती है। 'पर्युदास' का विपर्याय।

प्रसणां†—पु० [?] शत्रु। उदा०—प्रसणां सोण अहोनसपातल यग सावरत रहै धूमाण।—प्रिथीराज।

प्रसत्ति—स्त्री० [सं० प्र√सद्+क्तिन्] १ प्रसन्नता। २ शुद्धि।

प्रसत्वा (त्वन्)—पु० [सं० प्र√सद्+क्वनिप्] १ धर्म। २ प्रजापति।

प्रसद्*—पु० [सं० प्र-शब्द] जोर का शब्द।

प्रसन—पु० [सं० प्रस्रवण] गिरना, झरना या बहना। उदा०—पेखि रुखमणी जल प्रसन।—प्रिथीराज।

†पु०=प्रश्न।

†वि० =प्रसन्न।

प्रसन्न—वि० [सं० प्र√सद्+क्त] [भाव० प्रसन्नता] १ जो अनुकूल परिस्थितियो से सतुष्ट और प्रफुल्लित रहता हो। २ जो किसी कार्य या बात के गुणो या फलो को देखकर सतुष्ट तथा प्रफुल्लित हुआ हो। पु० महादेव। शिव।

†स्त्री०=पसद।

प्रसन्नता—स्त्री० [सं० प्रसन्न+तल्+टाप्] १ प्रसन्न होने या रहने की अवस्था या भाव। खुशी। हर्ष। २ अनुग्रह। ३ निर्मलता। स्वच्छता।

प्रसन्न-मुख—वि० [सं० ब० स०] जिसके चेहरे से ही उसका प्रसन्न होना प्रकट हो रहा हो।

प्रसन्ना—स्त्री० [सं० प्रसन्न+टाप्] १ प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। २ चावल से बनाई हुई एक तरह की शराब।

प्रसन्नात्मा (त्मन्)—वि० [सं० प्रसन्न-आत्मन्, ब० स०] सदा प्रसन्न रहनेवाला।

पु० विष्णु।

प्रसन्नित*—वि० =प्रसन्न।

प्रसभ—पु० [सं० प्रा० स०] १ बल। शक्ति। २ बल-प्रयोग। दमन। ४ बलात्कार।

क्रि० वि० १ बलपूर्वक। २ दमन करते हुए। ३. बहुत अधिक।

प्रसम—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० प्रसमता] जो किसी अपनाये हुए, प्रचलित, मानक अथवा मान्य आदर्श, मान, सिद्धात आदि के अनुरूप या अनुसार हो। प्रसामान्य। (नार्मल)

प्रसमतः—क्रि० वि० [सं० प्रश+तस्] दे० 'सामान्यत'।

प्रसमता—स्त्री० [सं० प्रश+तल्+टाप्] प्रसम होने की अवस्था या भाव। (नार्मेल्टी)

प्रसमा—स्त्री० [हि० प्रसम से] उन्नति, सफलता आदि की दृष्टि से माना हुआ वह मानक जो प्राय किसी समूह की औसत उन्नति, सफलता आदि का सूचक होता है। प्रसामान्यक। (नार्म) जैसे—यदि कुछ स्थानो पर जाँच करके यह स्थिर कर लिया जाय कि १० या १२ वर्ष की अवस्था के लडके इतनी बाते जान या सीख सकते है तो यही मानक साधारणत उक्त अवस्था के सभी लडको की योग्यता की प्रसमा के रूप मे मान लिया जायगा।

प्रसर—पु० [सं० प्र√सृ+अप्] १ आगे बढना। २ ऐसी गति जिसमे कोई बाधा न हो। ३. फैलाव। विस्तार। व्याप्ति। ४ वेग। तेजी। ५ वात, पित्त आदि प्रकृतियो का सचार या घटाव-बढाव। (वैद्यक) ६ राशि। समूह। ७ प्रधानता। प्रकर्ष। ८ युद्ध। ९ न्यायालय का वह आज्ञापत्र जिसमे किसी व्यक्ति को न्यायालय मे उपस्थित होने

अथवा कोई चीज उपस्थित करने का आदेश होता है। आदेशिका। (प्रोसेस)

प्रसरण—पु० [सं० प्र√सृ+ल्युट्—अन] [वि० प्रसरणीय, प्रसरित] १ आगे की ओर खिसकना, फैलना या बढ़ना। २ व्याप्ति। ३ विस्तार। ४ उत्पत्ति। ५ अपने काम में लगना। ६ सेना का लूट-पाट के लिए इधर-उधर घूमना।

प्रसरणी—स्त्री० [सं० प्र√सृ+अनि+ङीप्] १ प्रसरण। २ सेना का वह घेरा जो विपक्षी सेना के चारो ओर बनाया जाता है।

प्रसर-शुल्क—पु० [सं० ष० त०] वह शुल्क जो न्यायालय से कोई प्रसर (देखें) निकलवाने के लिए देना पड़ता है। (प्रोसेस फी)

प्रसरा—स्त्री० [सं० प्रसर+टाप्] प्रसारणीय (लता)।

प्रसरित—भू० कृ० [सं० प्रसृत] १ पसरा या फैला हुआ। २ आगे की ओर निकला या बढ़ा हुआ। ३ विस्तृत।

प्रसर्ग—पु० [सं० प्र√सृज (त्यागना)+घञ्] १ गिराना। २ फेंकना। ३ अलग करना। ४ बरसाना।

प्रसर्जन—पु० [सं० प्र√सृज्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रसर्जित] १ गिराना। २ फेंकना।

प्रसर्प—पु० [सं० प्र√सृप् (गति)+घञ्] १ आगे की ओर चलना। गमन। २ एक प्रकार का सामगान।

प्रसर्पक—वि० [सं० प्र√सृप्+ण्वुल्—अक]=प्रसर्पी।

प्रसर्पण—पु० [सं० प्र√सृप्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रसर्पित] १ आगे की ओर चलना या बढ़ना। २ घुसना। पैठना। ३ चारों ओर से घेरना या छाना। ४ शत्रु-सेना को घेरने के उद्देश्य से सेना का चारो ओर फैलना। ५ शरण या रक्षा का स्थान। ६ गति। चाल।

प्रसर्पी (पिन्)—वि० [सं० प्र√सृप्+णिनि] १ रेंगनेवाला। २ आगे की ओर बढ़नेवाला। गतिशील। ३ बिना बुलाये कहीं जा पहुँचने या घुस आनेवाला।

प्रसव—पु० [सं० प्र√सू (बच्चा)+अप्] १ स्त्री का अपने गर्भ से बच्चा जनने की क्रिया या भाव। जनना। प्रसूति। (डेलिवरी) २ इस प्रकार बच्चे का होनेवाला जन्म। उत्पत्ति। ३ जन्मा हुआ बच्चा। अपत्य। संतान। ४ फल। ५ फूल। ६ बढ़ती। वृद्धि। ७ विकास।

प्रसवक—पु० [सं० प्रसव√कै (प्रतीत होना)+क] चिरौंजी का पेड़।

प्रसवन—पु० [सं० प्र√सू+ल्युट्—अन] [वि० प्रसवनीय] स्त्री का अपने गर्भ से बच्चा जनना। प्रसव करना।

प्रसवना*—स० [सं० प्रसवन] प्रसव करना।
अ० प्रसव होना।

प्रसव-बंधन—पु० [सं० ब० स०] वनस्पतियों में वह पतला सींका जिसके सिरे पर पत्ता या फूल लगता है। नाल।

प्रसवावकाश—पु० [सं० प्रसव-अवकाश, च० त०] वह अवकाश या रियायती छुट्टी जो कहीं नौकरी करनेवाली गर्भवती स्त्रियों को प्रसव के दिनों में दी जाती है। (मैटर्निटी लीव)

प्रसविता (तृ)—वि० [सं० प्र√सू+तृच्] [स्त्री० प्रसवित्री] १ जन्म देनेवाला। २ उत्पन्न करनेवाला।
पु० जनक। पिता। बाप।

प्रसवित्री—वि० [सं० प्रसवितृ+ङीप्] १. जन्म देनेवाली। स्त्री० माता। माँ।

प्रसविनी—वि० स्त्री० [सं० प्र√सू+इनि+ङीप्] अपने गर्भ से संतान उत्पन्न करनेवाली। जननेवाली।

प्रसवी (विन्)—वि० [सं० प्र√सू+इनि] [स्त्री० प्रसविनी] प्रसव करने या जन्म देनेवाला।

प्रसह—पु० [सं० प्र√सह् (सहना)+अच्] १ शिकारी चिड़िया। २ अमलतास।

प्रसहन—पु० [सं० प्र√सह्+ल्युट्—अन] १ हिंसक पशु। २ आलिंगन। ३ सहनशीलता। क्षमा।
वि० हिंसक। २ सहनशील।

प्रसह्य-हरण—पु० [सं० सुप्सुपा स०] किसी से जबरदस्ती कोई चीज छीनना।

प्रसाद—पु० [सं० प्र√सद्+घञ्] १ प्रसन्नता। २ किसी पर की जानेवाली ऐसी कृपा जिससे उसका बहुत बड़ा उपकार होता हो। ३ ईश्वरीय कृपा। ४ देवी-देवता को भोग लगाई हुई वह वस्तु जो भक्त जनों में बाँटी जाती है।
क्रि० प्र०—बँटना।—बाँटना।
५ उक्त का वह अंश जो किसी भक्त जन को प्राप्त होता है। ६ साधु-संतों की परिभाषा में, भोजन जिसका पहले देवता को भोग लगाया जाता है और जो बाद में उसके प्रसाद के रूप में ग्रहण किया जाता है।
मुहा०—प्रसाद पाना—यह समझकर भोजन करना कि यह देवता के अनुग्रह का फल और उसकी प्रसन्नता का सूचक है।
७. भोजन। (पश्चिम)
क्रि० प्र०—छकना।—पाना।
८ देवता, गुरुजन आदि को देने पर बची हुई वस्तु जो काम में लाई जाय। ९ ऐसी चीज जो किसी गुरुजन से उसके अनुग्रह के फल-स्वरूप मिली हो। १० साहित्य में, काव्य का एक गुण जो उस अवस्था में माना जाता है जब काव्य-रचना बहुत ही सरल, सहज और स्वच्छ होती है और जिसमें पाठक या श्रोता को उसका आशय समझने में कुछ भी कठिनता नहीं होती, तथा उसके हृदय में उद्दिष्ट भावों का संचार या परिपाक अनायास हो जाता है। ११ शब्दालंकार के अंतर्गत कोमला वृत्ति जो काव्य में उक्त गुण उत्पन्न करनेवाली होती है। १२ धर्म की पत्नी मूर्ति से उत्पन्न एक पुत्र। १३ निर्मलता। स्वच्छता। १४ स्वास्थ्य।
†पु० दे० 'प्रासाद'।

प्रसादक—वि० [सं० प्र√सद्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ बहुत बड़ी कृपा करनेवाला। २ आनन्द बढ़ाने या प्रसन्न करनेवाला। ३ प्रीतिकर। ४ निर्मल। स्वच्छ।
पु० १ प्रसाद। २ देवधन। ३ बथुए का साग।

प्रसाद-दान—पु० [सं० ष० त०] वह चीज जो प्रसन्न होकर या प्रेम-भाव से किसी को दी जाय। (एफेक्शनेट गिफ्ट)

प्रसादन—पु० [सं० प्र√सद्+णिच्+ल्युट्—अन] १ किसी को अपने अनुकूल रखने के लिए प्रसन्न करना। २ अन्न।
वि० १ प्रसन्न करनेवाला। २ आनन्द या सुख देनेवाला।

प्रसावना—स्त्री०[स० प्र√सद्+णिच्+युच्—अन+टाप्] सेवा। परिचर्या।
†स०[सं० प्रसादन] प्रसन्न करना।
†अ० प्रसन्न होना।

प्रसावनीय—वि०[स० प्र√सद्+णिच्+अनीयर्] जिसे प्रसन्न किया जा सके या प्रसन्न करना उचित हो।

प्रसावित—भू० कृ०[स० प्र√सद्+णिच्+क्त] १ जो प्रसन्न किया गया हो। २ आराधित। ३ साफ या स्वच्छ किया हुआ।

प्रसावी (विन्)—वि०[स० प्र√सद्+णिच्+णिनि] १ प्रसन्न करनेवाला। २. प्रीति या प्रेम उत्पन्न करनेवाला। प्रीतिकर। ३ शात। ४ अनुग्रह या कृपा करनेवाला। ५ निर्मल। स्वच्छ।
स्त्री०[स० प्रसाद] १ देवताओ को चढाया हुआ पदार्थ। नैवेद्य। प्रसाद। २ उक्त का वह अश जो प्रसाद के रूप मे लोगो को दिया जाता है। ३ वह चीज जो बड़े लोग प्रसन्न होकर छोटो को देते हैं।

प्रसाद्य—वि०[स० प्र√सद+णिच्+यत्] [स्त्री० प्रसाद्या] १ जिसे प्रसन्न करना या रखना उचित हो। २ जिसे प्रसन्न किया या रखा जा सके।

प्रसाधक—वि० [स० प्र√साध्+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रसाधिका] १ प्रसाधन करनेवाला। २ कार्य का निर्वाह या सम्पादन करनेवाला। ३ अलकृत करने या सजानेवाला। सजावट करनेवाला। ४ किसी के शरीर या अगो का शृगार करनेवाला।
पु० प्राचीन भारत मे, वह भृत्य जो राजाओ को वस्त्र, आभूषण आदि पहनाता था।

प्रसाधन—पु० [स० प्र√साध्+णिच्+युच्-अन] १. किसी (व्यक्ति) को सजाने के लिए वस्त्र, अलकार आदि पहनाना। शृंगार करना। सजाना। २ कधी से सिर के बाल झाडना। ३ वे कार्य जो शरीर सजाने अथवा उसका रूप या सौदर्य बढाने के लिए किये जाते है। ४ उक्त प्रकार के कार्यों के लिए उपयोगी आवश्यक सामग्री। (टॉयलेट) ५. वेष-भूषा। ६ ठीक तरह से कोई काम पूरा करना। कार्य का सम्पादन। ७ किसी चीज को अच्छी तरह काट-छाँटकर अथवा परिष्कृत करके काम मे आने के योग्य बनाना। (ड्रेसिग) ८ वे पदार्थ या सामग्री जो किसी काम के लिए आवश्यक और उपयोगी होते है। उपस्कर। सज्जा। (इक्विपमेन्ट)

प्रसाधनी—स्त्री०[स० प्रसाधन+ङीप्] कघी।

प्रसाधिका—स्त्री० [स० प्रसाधक+टाप्, इत्व] १. प्राचीन भारत में वह दासी जो रानी-महारानियो की कघी-चोटी करती और उनको गहने-कपडे आदि पहनाती थी। २ निवार नामक धान।

प्रसाधित—भू० कृ० [स० प्र√साध्+णिच्+क्त] १. जिसे आभूषण, वस्त्र आदि पहनाकर सजाया गया हो। सजाया हुआ। २. सुसपादित।

प्रसामान्य—वि० [सं०] =प्रसम।

प्रसार—पु०[स० प्र√सृ (गति)+णिच्+घञ्] १ दीर्घ अवकाश मे अथवा दीर्घ समय तक फैले रहने या होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सचार। ३. गमन। ४. निकास। ५ इधर-उधर जाना। ६. वह सीमा जहाँ तक कोई चीज फैली हो या पहुँचती हो। (एक्सटेंट)

प्रसारण—पु०[स० प्र√सृ+णिच्+ल्युट्—अन] [भू०कृ० प्रसारित, वि० प्रसारणीय, प्रसार्य] १ दीर्घ अवकाश या काल मे किसी चीज को फैलाना। २ सस्था आदि का कारोबार अथवा अधिक्षेत्र विस्तृत प्रदेश मे विशेषत नये प्रदेशो तक बढाना। ३ रेडियो के द्वारा अथवा ऐसे ही किसी और साधन द्वारा कविता, गीत, समाचार आदि दूर-दूर के लोगो को सुनाने के लिए आकाशवाणी द्वारा चारो ओर फैलाना। (ब्राडकास्टिंग)

प्रसारणीय—वि०[स० प्र√सृ+णिच्+अनीयर्] १ जो फैलाया जा सके। २ जो प्रसारित किये जाने को हो अथवा उसके योग्य हो।

प्रसारना*—स० [स० प्रसारण] १ प्रसारण करना। रेडियो आदि के द्वारा गीत, समाचार आदि प्रसारित करना। २ पसारना। फैलाना।

प्रसारिणी—स्त्री०[स० प्रसारिन्+ङीप्] १ गधप्रसारिणी नामक लता। गध प्रसारी। २ लज्जावती या लजालू नाम की लता। ३ देव-धान्य। ४ वह सेना जो चारो ओर लूट पाट करने के लिए निकली हो। ५ सगीत मे, मध्यम स्वर की चार श्रुतियो मे से दूसरी श्रुति।

प्रसारित—भू० कृ०[स० प्र√सृ+णिच्+क्त] १ पसारा या फैलाया हुआ। २ रेडियो आदि के द्वारा जिसका प्रसारण किया गया हो।

प्रसारी (रिन्)—वि०[स० प्र√सृ+णिनि] [स्त्री० प्रसारिणी] १ प्रसारण करनेवाला। २ फैलाने या फैलनेवाला।

प्रसार्य—वि०[स० प्र√सृ+णिच्+यत्]=प्रसारणीय।

प्रसाव*—पु०[स० प्रसाद] १. अनुग्रह। प्रसाद। उदा० सपने भी मुझ पर सही, यदि हरि-गौरि प्रसाव।—निराला।
†पु०=प्रस्ताव।

प्रसावक—वि०[स० प्र√सू+णिच्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० प्रसाविका] प्रसव करानेवाला।

प्रसाविका—स्त्री० [स० प्रसावक+टाप्, इत्व] वह स्त्री जो गर्भवती स्त्रियों के सन्तान प्रसव करने के समय उनकी देख-भाल और सेवा-शुश्रूषा करने का पेशा करती हो। प्रसव करानेवाली दाई। धात्री। (मिड-वाइफ)

प्रसाह—पु०[स० प्र+सह्√घञ्] १ आत्मशासन। सयम। २ किसी पर विजय प्राप्त करना। किसी को हराना।

प्रसित—भू०कृ०[स० प्र√सि (बधन)+क्त] [भाव० प्रसिति] १ कसा या बँधा हुआ। २ लक्षित और स्पष्ट।
पु० पीब। मवाद।

प्रसिति—स्त्री०[स० प्र√सि+क्तिन्] १ कसे या बँधे होने की अवस्था या भाव। २ वह चीज जिससे किसी को कसा या बाँधा गया हो। जैसे—रस्सी। ३ जाल। ४ रश्मि। ५ ज्वाला। लपट।

प्रसिद्ध—वि० [सं० प्र√सिध्+क्त] [भाव० प्रसिद्धि] १. (व्यक्ति) जो अपने कार्यों, गुणो आदि के फलस्वरूप ऐसी स्थिति मे हो कि उसे किसी विशिष्ट क्षेत्र के लोग अच्छी तरह जानते हो। ख्यात। मशहूर। २ (वस्तु या व्यवहार) जो विशेष रूप से प्रचलन मे हो और इसी लिए जिसे बहुत से लोग जानते हों। ३ अलकृत। भूषित।
क्रि० वि० स्पष्ट शब्दों मे। साफ-साफ। उदा०—दै बरदान प्रसिद्ध सिद्ध कीन्हौ रण रुद्रहि।—केशव।

प्रसिद्धता—स्त्री०[सं० प्रसिद्ध+तल्+टाप्]=प्रसिद्धि।

प्रसिद्धि—स्त्री०[सं० प्र√सिध्+क्तिन्] १ प्रसिद्ध होने की अवस्था, गुण या भाव। ख्याति। मशहूरी। २. बनाव-सिंगार। भूषा।

प्रसीदिका—स्त्री० [सं० अत्या० स०] छोटा उद्यान। वाटिका।

प्रसुत—भू० कृ० [स० प्र√सु (निचोड़ना)+क्त] दबा या निचोड़कर निकाला हुआ।

पु० एक सख्या का नाम।

प्रसुप्त—भू० कृ० [स० प्र√स्वप् (सोना)+क्त] [भाव० प्रसुप्ति] १ अच्छी तरह या गहरी नीद मे सोया हुआ। २ इस प्रकार अन्दर छिपा या दबा हुआ कि बाहर से अस्तित्व का कोई लक्षण दिखाई न दे या अपना कार्य न कर रहा हो। सुषुप्त। जैसे—शरीर के अन्दर रोग के प्रसुप्त कीटाणु या विष।

प्रसुप्ति—स्त्री० [स० प्र√स्वप्+क्तिन्] गहरी या गाढ़ी नीद। सुषुप्ति।

प्रसू—वि० [स० प्र√सू (जनना)+क्विप्] १. जननेवाली। जन्म-दात्री। २ उत्पन्न करनेवाली। जैसे—रत्न-प्रसू भूमि।

स्त्री० १ माता। जननी। २ घोडी। ३ मुलायम घास। ४ कुशा। ५ केला।

प्रसूत—भू० कृ० [स० प्र√सू+क्त] [स्त्री० प्रसूता] १ (वह) जो प्रसव के रूप मे हुआ हो। उत्पन्न। पैदा।

पु० १ प्रसव-काल के समय होनेवाला एक रोग। २ फूल। ३ चाक्षुष मन्वतर के एक देवगण।

प्रसूता—स्त्री० [स० प्रसूत+टाप्] १ वह स्त्री जिसने प्रसव किया अर्थात् बच्चा जना हो। नवजात शिशु की माता। २ घोडी।

प्रसूतालय—पु० [स० प्रसूता-आलय, ष० त०]—प्रसूति-भवन।

प्रसूति—स्त्री० [स० प्र√सू+क्तिन्] १ स्त्री का प्रसव करना। बच्चे को जन्म देना। २ जीवो का बच्चे या अडे देना। ४ उद्भव। उत्पत्ति स्थान। ५ सतति। ६ प्रसूता। जिसने प्रसव किया हो। ७. दक्ष प्रजापति की स्त्री सती की माता। ८ कारण।

प्रसूतिका—स्त्री० [स० प्रसूत+ठन्—इक,+टाप्] प्रसूता स्त्री।

प्रसूतिज—पु० [स० प्रसूति√जन् (उत्पन्न होना)+ड] गर्भवती को प्रसव के समय होनेवाली पीड़ा।

प्रसूतिज्वर—पु० [ष० त०] प्रसव के कुछ दिन बाद होनेवाला ज्वर।

प्रसूति-भवन—पु० [ष० त०] १ अस्पतालो आदि का वह कमरा जिसमे रह कर स्त्रियाँ प्रसव करती अर्थात् बच्चा जन्मती हैं। (लेबर-रूम) २ वह घर या स्थान जहाँ स्त्रियो को बच्चे जनाने का काम होता हो।

प्रसूति-विज्ञान—पु० [स०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे गर्भवती स्त्रियो को सतान प्रसव कराने की कला या विद्या का विवेचन होता है। (अब्स्ट्रेट्रिक्स)

प्रसूत्यवकाश—पु० [प्रसूति-अवकाश, च० त०] दे० 'प्रसवावकाश'।

प्रसून—वि० [स० प्र√सू+क्त] १ जन्मा हुआ। प्रसूत। २. उत्पन्न पैदा।

पु० १. पुष्प। फूल। २. कली।

प्रसूनक—पु० [स० प्रसून+कन्] १ फूल। २ कली। ३ एक तरह का कदब।

प्रसून-शर—पु० [ब० स०] कामदेव।

प्रसृत—भू० कृ० [स० प्र√सृ (गति)+क्त) १ फैला हुआ। २. बढ़ा हुआ। ३ विनीत। ४. भेजा हुआ। ५. तत्पर। लगा हुआ। ६ प्रचलित। ७ इन्द्रियलोलुप।

पु० १ हथेली भर का मान। २ अञ्जलि। ३ दो पलो का मान।

प्रसृतज—पु० [स० प्रसृत√जन्+ड] महाभारत के अनुसार वह पुत्र जो व्यभिचार मे उत्पन्न हुआ हो। जारज पुत्र।

प्रसृति—स्त्री० [स० प्र√सृ+क्तिन्] १. फैले हुए होने की अवस्था या भाव। प्रसार। फैलाव। २ सतति। सतान। ३ गहरी की हुई अजलि या हथेली। ४ सोलह तोले की एक पुरानी तौल। पसर। ५ जल्दी। शीघ्रता।

प्रसृष्ट—भू० कृ० [स० प्र√सृज (सर्जन करना)+क्त] त्यागा हुआ। परित्यक्त।

प्रसेक—पु० [स० प्र√सिच् (सीचना)+घञ्] १ सेचन। सीचना। २. निचुडने या निचोडने की क्रिया या भाव। ३ निचुड़ने या निचोड़ने पर निकलनेवाला जल या और कोई तरल पदार्थ। ४ छिड़काव। ५. ५ थोडा-थोडा बहना। रसना। ६ बाहर निकलना। ७ जुकाम या सरदी मे नाक से पतला पानी निकलने का रोग। ८ वीर्य के पतले होकर, धीरे-धीरे निकलते रहने का रोग। जिरियान।

प्रसेकी (किन्)—वि० [सं० प्र√सिच्+घिणुन्] १ बहनेवाला। २ जिससे मवाद निकलता रहे। ३ ऐसे व्रणवाला। ४ कै करता हुआ।

पु० एक प्रकार का असाध्य व्रण या घाव।

प्रसेद†—पु०=प्रस्वेद (पसीना)।

प्रसेदिका—स्त्री०=प्रसीदिका (वाटिका)।

प्रसेन—पु०=प्रसेनजित्।

प्रसेनजित्—पु० [स०] भागवत के अनुसार, इसी के पास वह स्यमतक मणि थी जिसे चुराने का कलक श्रीकृष्ण पर लगा था।

प्रसेव—पु० [स० प्र√सिव् (सीना)+घञ्] १ बीन की तूँबी। २ थैली।

प्रसेवक—पु० [स० प्र√सिव्+ण्वुल्—अक] १ वह जो थैलियाँ बनाता हो। २ दे० 'प्रसेव'।

प्रसोपा—स्त्री० [अ० प्रजा सोशलिस्ट पार्टी के आरभिक अक्षर प्र+सो+पा] भारत का एक राजनीतिक दल और जिसका पूरा नाम प्रजा सोशलिस्ट पार्टी था और अब जिसका सयुक्त समाजवादी दल मे विलयन हो गया है।

प्रस्कंदन—पु० [स० प्र√स्कन्द् (गति)+ल्युट्—अन] १. कूदकर कोई चीज लाँघना। २ इस प्रकार भरी जानेवाली छलाँग। ३. महादेव। शिव। ४ जुलाब। विरेचन। ५ अतिसार।

प्रस्कन्न—वि० [स० प्र√स्कद्+क्त] १ गिरा हुआ। २ समाज का नियम भग करनेवाला। ३ जो समाज का नियम तोड़ने के कारण पतित समझा जाता हो। ४ जिस पर आक्रमण किया गया हो।

पु० घोड़ो का एक प्रकार का रोग।

प्रस्खलन—पु० [स० प्र√स्खल् (पतन)+ल्युट्-अन]=स्खलन।

प्रस्तर—पु० [स० प्र√स्तृ (फैलाना)+अच्] १ पत्थर। २ सम-तल स्थान। ३ कुश या डाभ का पूला। ४ पत्तों आदि का आसन या बिछावन। ५ बिछौना। बिस्तर। ६. चमड़े की थैली। ८. सगीत मे, एक प्रकार का ताल। ८ दे० 'प्रस्तर'।

प्रस्तर कला—स्त्री० [ष० त०] पत्थरों को काट-छाँट या गढ़कर उनकी

विशिष्ट आकृतियों आदि बनाने और उन पर ओप आदि लाने की कला या विद्या।

प्रस्तरण—पु०[सं० प्र√स्तृ+ल्युट्—अन] १ बिछाना। फैलाना। २ बिछावन।

प्रस्तरणी—स्त्री०[सं० प्रस्तरण +ङीप्] १. श्वेत दूर्वा। २. गोजिह्वा।

प्रस्तरभेद—पु०[ष० त०] पाषाण भेद।

प्रस्तर मुद्रण—पु०[तृ० त०] छापे या मुद्रण का वह प्रकार जिसमें छापे जानेवाले लेख आदि पहले एक विशेष प्रकार से तैयार किये हुए कागज पर लिखकर तब एक विशेष प्रकार के पत्थर पर उतारे और तब छापे जाते है। (लीथोग्राफ)

प्रस्तरोपल—पु०[सं० प्रस्तर-उपल, मयू० स०] चद्रकात मणि।

प्रस्तार—पु०[सं० प्र√स्तृ+घञ्] १ फैलाव। विस्तार। २. अधिकता। ३. तह। परत। ४ सीढी। ५ समतल स्थान। ६. ऐसा मैदान जिसमे दूर तक घास ही घास हो। (लॉन) ७ घास-फूस, पत्तियो आदि का बिछौना। ८ छद शास्त्र मे नौ प्रत्ययों मे से पहला प्रत्यय जिसकी सहायता से यह जाना जाता है कि किसी मात्रिक या वर्णिक छद के कितने भेद या रूप हो सकते है। इसी आधार पर इसके ये दो भेद होते हैं—मात्रिक प्रस्तार और वर्णिक प्रस्तार। ९ अको, वस्तुओ आदि के पक्ति-बद्ध समूहो या वर्गो के क्रम या विन्यास मे संगत और संभव परिवर्तन करना। (परम्युटेशन)

प्रस्तार-पंक्ति—स्त्री०[मयू० स०] एक प्रकार का वैदिक छंद जो पंक्ति छंद का एक भेद है।

प्रस्तारी (रिन्)—वि० [सं० प्र√स्तृ+णिनि] फैलने या फैलानेवाला (समास मे)।

पु० एक नेत्र रोग।

प्रस्ताव—पु०[सं० प्र√स्तु (स्तुति)+घञ्] १ आरभ। शुरू । २ विषय के आरभ मे परिचय देने के लिए कही जानेवाली बात। प्रस्तावना। प्राक्कथन। ३ किसी प्रसग या विषय की छिडी हुई बात। चर्चा। ४ प्रकरण। विषय। ५ उपयुक्त समय। अवसर। मौका। ६ सामवेद का एक अश जो प्रस्तोता नामक ऋत्विक् द्वारा गाया जाता था। ७. पहली भेट या मुलाकात। ८ आज-कल मुख्य रूप से (क) वह नई बात जो किसी के सामने इस उद्देश्य से विचारार्थ रखी जाय कि यदि वह उसे उपयुक्त समझे तो मान ले और उसके अनुसार कार्य करे। (ऑफर, प्रोपोजल) जैसे—मेरा तो यही प्रस्ताव है कि आप लोग न्यायालय में न जाकर पचायत से ही इसका निर्णय करा ले। (ख) उक्त का वह रूप जो किसी सस्था या सभा के सदस्यो के सामने इसलिए विचारार्थ रखा जाता है कि यदि अधिकतर सदस्य उसे मान लें तो उसी के अनुसार भविष्य मे काम हुआ करे। (मोशन) जैसे—कर घटाने या बढाने का प्रस्ताव।

प्रस्तावक—वि० [सं० प्र√स्तु+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रस्ताव करनेवाला।

प्रस्तावन—पु० [सं० प्र√स्तु+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्तावित] प्रस्ताव करने की क्रिया या भाव।

प्रस्तावना—स्त्री०[सं० प्र०√स्तु+णिच्+युच्-अन, +टाप्] १ आरभ। २ प्रस्ताव। ३ वह आरभिक कथन या वक्तव्य जो किसी विषय का विस्तारपूर्वक वर्णन करने से पहले उसके सम्बन्ध की कुछ मुख्य बातें बतलाने के लिए हो। उपोद्घात। प्राक्कथन। भूमिका। (इन्ट्रोडक्शन)

प्रस्तावित—भू० कृ०[सं० प्र√स्तु+णिच्+क्त] जिसके लिए या जिसके विषय मे प्रस्ताव हुआ हो या किया गया हो।

प्रस्तावितो—पु०[सं० प्रस्तावित से] वह जिसके सामने कोई झगडा निपटाने या समझौता करने के लिए कोई नया प्रस्ताव रखा जाय। (ऑफरी)

प्रस्ताव्य—वि० [सं० प्र√स्तु+णिच्+यत्] १ जो प्रस्ताव के रूप मे उपस्थित किया जाने को हो अथवा किये जाने के योग्य हो। २ जिसके सबंध मे प्रस्ताव किया जा सके या करना उचित हो।

प्रस्तुत—वि०[सं० प्र√स्तु+क्त] १. जिसकी स्तुति या प्रशसा की गई हो। २. जिसका आरंभ हुआ हो या किया गया हो। आरब्ध। ३ जो कार्य रूप में किया गया अथवा घटित हुआ हो। ४ जिसकी अभिलाषा और आशा की गई हो। ५ जो कहा गया हो। उक्त। कथित। ६ जो किसी उपयोग या काम मे आने के लिए ठीक और पूरा हो चुका हो। तैयार। जैसे—(क) भोजन प्रस्तुत है। (ख) मैं चलने को प्रस्तुत हूँ। ७. (बात या विषय) जो प्रस्ताव के रूप मे किसी के सामने निर्णय, विचार आदि के लिए रखा गया हो। (प्रेजेन्टेड) ८ जो इस समय उपस्थित या वर्तमान हो। मौजूद। (प्रेजेन्ट) ९ बनाकर या और किसी प्रकार तैयार किया हुआ। तैयार। (प्रोड्यूस्ड)

पु० १ साहित्य मे, वह बात, वस्तु या विषय जिसकी चर्चा या वर्णन प्रत्यक्ष रूप से हो रहा हो, और प्रसंगवश जिसके साथ दूसरी बात, वस्तु या विषय का भी (उपमा, तुलना आदि के विचार से) उल्लेख या चर्चा हो जाती हो। (इसका विपर्याय 'अ-प्रस्तुत' है।)

विशेष—अलकार शास्त्र मे, इस प्रकार के वर्णनीय विषय को उपमा के चार मुख्य उपादानो में से एक उपादान माना है और 'उपमेय' को ही 'प्रस्तुत' कहा है। जैसे—'उसका मुख चद्रमा के समान है।' मे 'मुख' ही वर्ण्य विषय होने के कारण 'प्रस्तुत' है जिसकी उपमा चद्रमा मे दी गई है।

प्रस्तुतांकुर—पु०[सं० प्रस्तुत-अकुर, ष० त०] साहित्य मे, अप्रस्तुत प्रशसा की तरह का एक अलकार जिसमे एक प्रस्तुत अर्थ मे से एक दूसरा अर्थ भी अकुर के रूप मे निकलता है। जैसे—यदि नायिका भ्रमर से कहे कि तुम मालती को छोडकर कँटीली केतकी के पास क्यों जाते हो। तो इसमे से एक दूसरा अर्थ यह निकलेगा कि तुम कुलीन वधू के रहते हुए पर-स्त्री या वेश्या के पास क्यो जाते हो? अथवा यदि कहा जाय—'तुम उनकी क्या निंदा करते हो। उनके सामने तो बडे बडे लोग सिर झुकाते हैं।' तो यहाँ एक की निंदा के साथ दूसरे की प्रशसा भी अकुर के रूप मे लगी रहेगी।

प्रस्तुतार्थ—पु०[सं० प्रस्तुत-अर्थ, ष० त०] पद, वाक्य या शब्द का वह अर्थ जो प्रस्तुत प्रसग या विषय के विचार से ठीक निकलता या बैठता हो (सकेतार्थ से भिन्न)।

प्रस्तुति—स्त्री०[सं० प्र√स्तु+क्तिन्] १ प्रस्तुत होने की अवस्था या भाव। २. प्रशसा। स्तुति। ३ प्रस्तावना। भूमिका। ४ उपस्थिति। ५. तैयारी।

प्रस्तुतीकरण—पु० [सं०प्रस्तुत+च्वि, इत्व, दीर्घ,√कृ(करना)+ल्युट्-अन] प्रस्तुत करने की क्रिया या भाव।

प्रस्तोक—पु०[सं० प्र√स्तुच् (प्रसन्न होना)+घञ्] १ एक प्रकार का सामगान। २ संजय का एक पुत्र।

प्रस्तोता (तृ)—पु०[सं० प्र√स्तु+तृच्] एक सामवेदी ऋत्विक् जो यज्ञ मे पहले सामगान का प्रारभ करता है।

पु० प्रस्ताव करनेवाला व्यक्ति। प्रस्तावक।

प्रस्तोभ—पु० [सं० प्र√स्तुभ् (स्तम्भन)+घञ्] एक प्रकार का साम।

प्रस्थ—वि० [सं० प्र√स्था (ठहरना)+क] १ प्रस्थान करनेवाला। २ कही पहुँचकर वहाँ रहनेवाला। जैसे—वानप्रस्थ।

पु० १ पहाड के ऊपर की चौरस भूमि। (टेबुल लैंड) २ सम-तल भूमि। चौरस मैदान। ३ पहाड का ऊँचा किनारा। ४ किसी चीज का बहुत ऊपर उठा हुआ भाग। ५ फैलाव। विस्तार। ६ प्राचीन काल का एक मान जो दो प्रकार का होता था—एक तौलने का और दूसरा मापने का।

प्रस्थ-पुष्प—पु० [ब० स०] १ छोटे पत्तोवाली तुलसी। २ मरुआ। ३ जँबीरी। नीबू।

प्रस्थल—पु०[सं० प्रस्थ√ला(लेना)+क] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

प्रस्थान—पु०[सं० प्र√स्था+ल्युट्—अन] १ एक स्थान से दूरवाले किसी दूसरे स्थान की ओर चलना। यात्रा आरभ करना। रवानगी। (डिपार्चर) २ सेना का युद्ध-क्षेत्र की ओर जाना। कूच। ३ आस्तिक हिंदुओ की एक प्रथा जिसमे वे शुभ मुहूर्त मे यात्रा आरम्भ न कर सकने पर उसके प्रतीक के रूप मे अपने ओढने-पहनने का कोई कपडा उस दिशा के किसी समीपस्थ गृहस्थ के घर रख देते है जिस दिशा मे उन्हे जाना होता है।

क्रि० प्र०—रखना।

४ मरण। मरना। ५ मार्ग। रास्ता। ६ ढग। तरीका। ७ वैखरी वाणी के ये अठारह अग-चारो वेद, चारो उपवेद, ६ वेदाग, धर्मशास्त्र न्याय, मीमासा और पुराण।

प्रस्थान-त्रयी—स्त्री०[सं० ष० त०] उपनिषदो, वेदात सूत्रो और भगवद्गीता का सामूहिक नाम जिनमे प्रवृत्ति और निवृत्ति दोनो मार्गों का तात्त्विक विवेचन है।

प्रस्थानी (निन्)—वि० [सं० प्रस्थान+इनि] प्रस्थान अर्थात् यात्रा आरभ करनेवाला। प्रस्थानकर्ता।

पु० दे० प्रस्थान '३'।

प्रस्थानीय—वि०[सं० प्र√स्था+अनीयर्] जहाँ या जिसके लिए प्रस्थान किया जा सके।

प्रस्थापक—वि०[सं० प्र√स्था+णिच्, पुक् √ण्वुल्—अक] १ प्रस्थापन करनेवाला। २ प्रस्ताव करनेवाला। प्रस्तावक। प्रस्तोता।

प्रस्थापन—पु० [सं० प्र√स्था+णिच्, पुक्,√ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्थापित, वि० प्रस्थानी, प्रस्थाप्य] १ प्रस्थान करना। भेजना। २ प्रेरणा। ३ कोई बात या विषय प्रमाणो आदि से सिद्ध करते हुए किसी के सामने उपस्थित करना या रखना। स्थापना। ४ उपयोग या व्यवहार करना। ५ मशीनो, यत्रो आदि को किसी स्थान पर लगाना। प्रतिष्ठित करना। ६ उक्त रूप मे बैठाये या लगाये हुए यत्रो की सामूहिक सज्ञा। सस्थापन। (इन्स्टालेशन, अतिम दोनो अर्थों मे)

प्रस्थापना—स्त्री०—प्रस्थापन।

प्रस्थापित—भू० कृ०[सं० प्र√स्था+णिच, पुक्,+क्त] १ जिसका प्रस्थापन हुआ हो या किया गया हो। २ भेजा हुआ। प्रेषित।

प्रस्थायी (यिन्)—वि०[सं० प्र√स्था+णिनि] १ प्रस्थान करनेवाला। २ जो कही भेजा जाने को हो। ३ स्थायी। चिरस्थायी।

प्रस्थिका—स्त्री०[सं० प्रस्थ+ठन्—इक,+टाप्] १ आमडा। २. पुदीना।

प्रस्थित—भू०कृ०[सं० प्र√स्था+क्त] [भाव० प्रस्थिति] १ जिसने प्रस्थान किया हो। २ जिसे कही भेजा गया हो। ३ जो अच्छी तरह या दृढतापूर्वक स्थित हो।

प्रस्थिति—स्त्री०[सं० प्र√स्था+क्तिन्] १ प्रस्थित होने की अवस्था या भाव। २ प्रस्थान। गमन।

प्रस्न—पु०[सं० प्र√स्ना (नहाना)+क] नहाते समय शरीर पर जल उलीचने का पात्र।

†पु०=प्रश्न।

प्रस्नव—पु० [सं० प्र√स्नु (बहना)+अप] १ धारा के रूप मे बहने का भाव। २. धारा। ३ मूत की धार।

प्रस्नुत—वि०[सं० प्र√स्नु+क्त] टपकाने या बहानेवाला।

प्रस्नुत-स्तनी—स्त्री०[ब० स०,+ङीष्] वह स्त्री जिसके स्तनो से वात्सल्य के कारण दूध की धारे, बह रही हो।

प्रस्नुषा—स्त्री०[सं० प्रा० स०, पृषो० सिद्धि] पोते की स्त्री। पौत्र-वधू।

प्रस्नेय—वि०[सं० प्र√स्ना+यत्] (जल) जिससे स्नान किया जा सके। स्नान के काम आने योग्य।

प्रस्फुट—वि०[सं० प्र√स्फुट् (विकसित होना)+क] १ खिला हुआ विकसित।

भू० कृ० १ (फूल) जो खिला हुआ हो। २ (बात या विषय) जो बिलकुल स्पष्ट हो। ३ प्रकट। व्यक्त।

प्रस्फुटन—पु०[सं० प्र√स्फुट् (फुरना, गति आदि)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्फुटित] १ (फूलो का) खिलना। फूटना। निकलना। २ व्यक्त होना। ३ प्रकाशित होना। ४ स्फूर्ति होना।

प्रस्फुरण—पु० [सं० प्र√स्फुर्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्फुरित] १ काँपना। २ फैलना। ३ चमकना। ४ स्पष्ट होना।

प्रस्फोट—पु० [सं०] अन्दर से फूटकर बाहर निकलने की क्रिया या भाव। (दे० 'प्रस्फोटन')

प्रस्फोटक—वि० [सं०] प्रस्फोट करने या फोडनेवाला।

पु० किसी यत्र का वह अग या कोई ऐसा उपकरण जो स्फोटन करता हो। (डिटोनेटर)

प्रस्फोटन—पु० [सं० प्र√स्फुट् (फूटना)+ल्युट्—अन] १. प्रस्फोट उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २ किसी वस्तु का इस प्रकार एक बारगी खुलना या फूटना कि उसके अन्दर के पदार्थ वेग से ऊपर या बाहर निकल पड़े। ३ तोड-फोडकर अन्दर की चीज निकालना। ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज (जैसे—गैस या बारूद) जोर का शब्द करती हुई जलकर उडे। (डिटोनेशन) ४ खिलना या खिलाना ५ विकसित करना। ६ अन्न आदि फटकना। ७ अन्न फटकने का सूप।

प्रस्मृत—भू० कृ०=विस्मृत।

प्रस्मृति—स्त्री० [सं० प्र√स्मृ+क्तिन्]=विस्मृति (भूलना)।

प्रस्यंद—पु० [सं० प्र√स्यद् (बहना)+घञ्] १ बहना। २. चूना। टपकना।

प्रस्रंसन—पु० [सं० प्र√स्रंस्+ल्युट्—अन] १ गिरना। २ गर्भ-पात होना। ३ बहनेवाला पदार्थ।

प्रस्रंसी (सिन्)—वि० [सं० प्र√स्रंस्+णिनि] [स्त्री० प्रस्रंसिनी] १ पतनशील। गिरनेवाला। २ असमय ही गिर जानेवाला (गर्भ)।

प्रस्रव—पु० [सं० प्र√स्रु (गति)+अप्] १ धारा के रूप मे बहना या चूना। २ इस प्रकार बहने या चूनेवाली धारा। ३ स्तन या थन में से वात्सल्य या दूध की अधिकता के कारण बहनेवाली दूध की धारा। ४ मूत्र। पेशाब। ५ चावल की माँड़। ५ आँसू।

प्रस्रवण—पु० [सं० प्र√स्रु+ल्युट्—अन] १. तरल पदार्थ के चूने या बहने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ पानी का झरना। सोता। ३ दूध। ४ पसीना। प्रस्वेद। ५ माल्यवान पर्वत।

प्रस्रवणी—स्त्री० [सं० प्रस्रवण+ङीप्] वैद्यक के अनुसार बीस प्रकार की योनियो मे से एक।

प्रस्राव—पु० प्रस्रव।

प्रस्रुत—भू० कृ० [सं० प्र√स्रु+क्त] १ प्रस्रव के रूप मे होनेवाला। २ गिरा, झड़ा या बहा हुआ।

प्रस्वन—पु० [सं० प्रा० स०] जोरों का शब्द। ऊँचा स्वर।

प्रस्वाप—पु० [सं० प्र√स्वप् (सोना)+णिच्+घञ्] १ वह वस्तु जिसके प्रयोग से निद्रा आए। नीद लानेवाली चीज या दवा। २ नीद। ३ एक प्रकार का अस्त्र जिसके सबध मे यह प्रसिद्ध है कि इसे चलाने पर शत्रु-पक्षवालो को नीद आ जाती थी। ४ स्वप्न।

प्रस्वापक—वि० [सं० प्र√स्वप्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ नींद लाने या सुलानेवाला। २ मारक।

प्रस्वापन—पु० [सं० प्र+स्वप्√णिच्√ल्युट्—अन] ऐसा काम करना जिससे कोई सो जाय। सुलाना।

प्रस्विन्न—वि० [सं० प्र√स्विद्+क्त] पसीने से लथ-पथ।

प्रस्वेद—पु० [सं० प्र√स्विद्+घञ्] त्वचा में से निकलनेवाले जलकण।

प्रस्वेदक—वि० [सं० प्र√स्विद्+णिच्+ण्वुल्—अक] प्रस्वेद या पसीना लानेवाला।

पु० ऐसी दवा जो पसीना लाकर शरीर के अन्दर का विष पसीने के रूप मे बाहर निकाल दे। (डायोफोरेटिक)

प्रस्वेदन—पु० [सं० प्र√स्विद्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रस्वेदित] १. पसीना निकालने या लाने की क्रिया या भाव। २ रसायन-शास्त्र मे, किसी चीज पर की जानेवाली वह प्रक्रिया जिससे वह चीज हवा की नमी के कारण पसीजने या गलने लगती है। (डिलीक्विसेन्स)

प्रस्वेदित—वि० [सं० प्रस्वेद+इतच्] १ पसीने से भीगा हुआ। २. पसीना लानेवाला। ३ गरम।

प्रस्वेदी (दिन्)—वि० [सं० प्रस्वेद+इनि] पसीने से भीगा हुआ।

प्रस्वेद्य—वि० [सं० प्र√स्विद्+णिच्+यत्] जिस पर या जिसमें प्रस्वेद या प्रस्वेदन की क्रिया होती या हो सकती हो अथवा की जा सकती हो या की जाने को हो। (डिलीक्वेसेन्ट)

प्रह—पुं० [सं० प्रभा] १. चमक। २. प्रकाश।

प्रहणन—पु०=हनन।

प्रहत—भू० कृ० [सं० प्र√हन्+क्त] [भाव० प्रहति] १. मारा हुआ। हत। २ जिस पर आघात हुआ हो। ३ पराजित। ४ प्रसारित।

पु० १ आघात। प्रहार। २ पासा आदि फेंकने की क्रिया।

प्रहति—स्त्री० [सं० प्र√हन्+क्तिन] १ प्रहत होने की अवस्था या भाव। २. आघात। प्रहार।

प्रहर—पु० [सं० प्र√हृ (हरण करना)+अप्] काल-मापन की दृष्टि से दिन के किये हुए आठ भागो मे से प्रत्येक जिनकी अवधि ३-३ घटे की होती है।

प्रहरक—पु०=प्रहरी।

प्रहरखना*—अ० [सं० प्रहर्षण] हर्षित या प्रसन्न होना। आनंदित होना।

प्रहरण—पु० [सं० प्र√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १ बलपूर्वक किसी से कुछ ले लेना। छीनना। २ अस्त्र। ३ युद्ध। ४ आघात। प्रहार। वार। ५ फेंकना। ६ परित्याग। ७ चित्त की एकाग्रता। ८ एक तरह की पालकी। ९ पालकी मे बैठने का स्थान। १० मृदग का एक प्रबध।

प्रहरणीय—वि० [सं० प्र√हृ+ल्युट्—अन] १ जिसे छीना जा सके। २ जिसपर आक्रमण किया जा सके। ३ जिसमे युद्ध किया जा सके। ४ नष्ट किये जाने के योग्य।

पु० प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र।

प्रहरी (रिन्)—पु० [सं० प्रहार+इनि] १ पहर-पहर पर घटा बजाने-वाला कर्मचारी। घड़ियाली। २ पहरेदार।

प्रहर्ता (र्तृ)—पु० [सं० प्र√हृ+तृच्] [स्त्री० प्रहर्त्री] १ वह जो किसी पर प्रहार करे। २ योद्धा।

प्रहर्ष—पु० [सं० प्रा० स०] हर्ष का वह तीव्र रूप जिसमे हृदय उमड़ने लगता है।

प्रहर्षण—पु० [सं० प्र√हृष्+णिच्+ल्युट्—अन] १ हर्षित या प्रसन्न करने की क्रिया या भाव। २ आनन्द। प्रसन्नता। ३ [प्र√हृष्+णिच्+ल्युट्—अन] बुध नामक ग्रह। ४ परवर्ती साहित्य मे एक प्रकार का गौण अर्थालकार जिसमे अनायास या सहज मे किसी उद्देश्य की आशा से अधिक सिद्धि या आशातीत फलप्राप्ति की स्थिति का उल्लेख होता है। (यह 'विषादन' अलकार के विपरीत भाव का सूचक है।)

प्रहर्षणी—स्त्री० [सं० प्रहर्षण+ङीप्] १ हरिद्रा। हलदी। २ तेरह अक्षरो की एक वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमशः म, न, ज, र, ग होता है।

प्रहर्षित—भू० कृ० [सं० प्रहर्ष+इतच्] १ जिसे प्रहर्ष हुआ हो। २ जिसके मन मे प्रहर्ष हुआ हो। ३ जिसके मन मे प्रहर्ष उत्पन्न किया गया हो।

प्रहसन—पु० [सं० प्र√हस्+ल्युट्+अन] १ प्रसन्नतापूर्वक हँसना। विशेषत जोरो से हँसना। २ किसी को उपहासास्पद ठहराना या बनाना। ३ एक प्रकार का रूपक जो भाण की तरह हास्य-रस-प्रधान होता है। इसमे एक या दो अंग तथा अनेक पात्र होते हैं, इसका विषय प्राय कवि-कल्पित होता है, और इसमे दूषित तथा हेय आचार-विचार की दिल्लगी उड़ाई जाती है।

प्रहसित—पु० [स० प्र√हस्+क्त] १ खूब जोर से होनेवाली हँसी। ठहाका। २ एक बुद्ध का नाम।
भू० कृ० हँसता हुआ।

प्रहस्त—पु० [स० ब० स०] १ हथेली की वह स्थिति जिसमे उँगलियाँ खुली तथा अकड़ी हुई हों। पंजा। २ चपत। थप्पड। ३. रावण का एक सेनापति। (रामायण)

प्रहाण—पु० [स० प्र√हा (त्याग)+ल्युट्—अन] १ छोडना। त्यागना। २ अनुमान करना। ३ उद्योग। चेष्टा।

प्रहान*—पु० प्रहाण।

प्रहानि—स्त्री० [स०] १ बहुत बडी हानि। २ कमी। ३ त्रुटि।

प्रहार—पु० [स० प्र√हृ+घञ्] १ आहत या हत करने के लिए किसी पर किया जानेवाला आघात। वार। जैसे—लाठी या तलवार से किया जानेवाला प्रहार। २ आघात। चोट।

प्रहारक—वि० [स० प्र√हृ+ण्वुल्—अक] प्रहार करनेवाला।

प्रहारण—पु० [स० प्र√हृ+णिच्+ल्युट्—अन] १ प्रहार करना। २ काम्यदान। मनचाहा दान।

प्रहारना*—स० [स० प्रहार] आघात या प्रहार करना। मारना।

प्रहारार्त—वि० [स० प्रहार-आर्त, तृ० त०] जिस पर प्रहार किया गया हो, फलत आहत या हत।
पु० १ प्रहार लगने से होनेवाला घाव। २ उक्त घाव से होनेवाली पीडा।

प्रहारित*— भू० कृ० [स० प्रहृत] जिस पर आघात या प्रहार हुआ हो जिसे चोट लगी या मार पडी हो।

प्रहारी (रिन्)—वि० [स० प्र√हृ+णिनि] [स्त्री० प्रहारिणी] १ प्रहार करने या मारनेवाला। २ दूर करने या हटानेवाला। ३ नष्ट करनेवाला। नाशक। ४ (अस्त्र, शस्त्र आदि) चलाने या छोडनेवाला।

प्रहारुक—वि० [स० प्र√हृ+उकञ्] १. छीननेवाला। २ प्रहार करनेवाला।

प्रहार्य—वि० [स० प्र√हृ+ण्यत्] १ जो हरण किया या छीना जा सके। २ जिस पर प्रहार या आघात किया जा सके।

प्रहास—पु० [स० प्र√हस् (हँसना)+घञ्] १ प्रहसन। हँसी। २ अट्टहास। ३ नट। ४ शिव। ५ कार्तिकेय का एक अनुचर। ६ सोमतीर्थ का एक नाम।

प्रहासी (सिन्)—वि० [स० प्र√हस्+णिनि] जोर से हँसने या हँसानेवाला।

प्रहित—भू० कृ० [स० प्र√धा (धारण)+क्त, धा=हि] १ भेजा हुआ। प्रेरित। २ फेंका हुआ। ३ फटका हुआ। ४ निष्कासित।
पु० १ सूप। २ दाल। ३ सालन।

प्रहुत—पु० [स० प्र√हु (होम करना)+क्त] बलिवैश्वदेव। भूतयज्ञ।

प्रहुति—स्त्री० [स० प्र√हु+क्तिन्] आहुति।

प्रहृत—भू० कृ० [स० प्र√हृ (हरण)+क्त] १ फेंका हुआ। २ चलाया हुआ। ३ मारा हुआ। ४. फैलाया हुआ। ५. ठोका या पीटा हुआ।
पु० १ प्रहार। मार। २ एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

प्रहृष्ट—भू० कृ० [स० प्र√हृष् (प्रसन्न होना)+क्त] अत्यन्त प्रसन्न। आह्लादित।

प्रहेलक—पु० [स० प्र√हिल् (हाव-भाव करना)+अच्√कन] लपसी।

प्रहेला—स्त्री० [स० प्रा० स०] स्वच्छन्द रूप से की जानेवाली क्रीड़ा।

प्रहेलि—स्त्री० प्रहेलिका।

प्रहेलिका—स्त्री० [स० प्र√हिल्+क्वुन्—अक,+टाप्, ह्रस्व] पहेली। (दे०)

प्रह्लाद—पु० =प्रह्लाद।

प्रह्लाद—पु० [स० प्र√ह्लाद+णिच्+अच्] १ आहलाद। आनन्द। २ एक प्राचीन देश। ३ दैत्यराज हिरण्यकशिपु का एक पुत्र जो बहुत बडा ईश्वर-भक्त था। कहा जाता है कि इसी की रक्षा करने के लिए भगवान ने नृसिंह अवतार धारण करके हिरण्यकशिपु को मारा था।

प्रहलादक—वि० [स० प्र√हलाद+णिच्+ण्वुल्—अक] [स्त्री० प्रह्लादिका] प्रसन्न करनेवाला। हर्षकारक।

प्रहलादन—पु० [स० प्र√हलाद+णिच+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रहलादित] आहलादित या प्रसन्न करना।

प्रहलादी (दिन्)— वि० [स० प्रहलाद+इनि] प्रसन्न होनेवाला।

प्रांकुर—पु० [स०] वनस्पतियो मे बीज का वह अगला भाग जिससे पत्तियो, शाखाओ आदि का अकुरण आरम्भ होता है। (प्लम्यूल)

प्रांग—वि० [स० प्र-अग, ब० स०] लबे डीलडौल का।
पु० एक तरह का छोटा ढोल। पणव।

प्रांगण—पु० [स० प्र-अगन, ब० स०] १ मकान के आगे का खुला छोडा हुआ स्थान। २ मकान के अन्दर का वह स्थान जो चारो ओर से घिरा परन्तु ऊपर से खुला होता है। ३ एक तरह का ढोल।

प्रांगन†—पु० प्रागण।

प्रांजन—पु० [स० प्र—अजन, प्रा० स०] आँखो मे अजन लगाना। २ आँख मे लगाने का अजन। ३ रग। ४ प्राचीन भारत मे तीर या बाण पर लगाया जानेवाला एक प्रकार का रग या लेप।

प्रांजल—वि० [स० प्र√अञ्ज् (चिकना करना)+अलच्] [भाव० प्राजलता] १ (भाव या भाषा) जो सरल तथा स्पष्ट हो और जिसमें जटिलता न हो। निर्मल। २ सच्चा। ३ समान। बराबर। ४. साफ। स्वच्छ।

प्रांजलि—वि० [स० प्र-अजलि, ब० स०] जो अजलि बाँधे हो। अजलिबद्ध।
स्त्री० १ वह मुद्रा जिसमे दोनो हाथ जुडे हुए हो। २. अजलि।

प्रांत—पु० [सं० प्र-अत, प्रा० स०] [वि० प्रातिक] १ अत। शेष। सीमा। २ किनारा। छोर। सिरा। ३ ओर। तरफ। दिशा। ४. भारत मे, अगरेजी शासन मे वह शासनिक इकाई जिसमे कई प्रमंडल होते थे, तथा जिसका प्रधान शासक राज्यपाल होता था। प्रदेश। (प्राविन्स) ५ एक प्राचीन ऋषि। ६ उक्त ऋषि के गोत्र के लोग।

प्रांतग—वि० [स० प्रात√गम् (जाना)+ड] सीमा पर का निवासी।

प्रांतदुर्ग—पु० [मध्य० स०] प्राचीन भारत मे, वह दुर्ग जो नगर के

किनारे प्राचीर के बाहर होता था। २. दुर्ग के आस-पास की बाहर की बस्ती।

प्रांत पुष्पा—स्त्री० [ब० स०] १ एक प्रकार का पौधा। २. उक्त पौधे का फूल।

प्रांतभूमि—स्त्री० [ष० त०] १. किसी पदार्थ का अतिम भाग। किनारा। सिरा। २. योग मे सिद्धि की अतिम सीमा, समाधि। ३ सीढ़ी।

प्रांतर—पु० [स० प्र-अन्तर, ब० स०] १. छाया आदि से रहित विस्तृत निर्जन पथ। २. दो गाँवो के बीच की जमीन। ३ दो प्रदेशो के बीच का स्थान। ४ जगल। बन। ५ पेड़ के तने का खोखला अश। खोडर।

प्रांतायन—पु० [स० प्रात+फक्—आयन्] प्रांत नामक ऋषि के गोत्रज।

प्रांतिक—वि० [स० प्रांत+ठक्—इक]=प्रातीय।

प्रांतीय—वि० [स० प्रात+छ—ईय] [भाव० प्रातीयता] १ प्रांत से सबध रखनेवाला। प्रात में होनेवाला। २. प्रात की सरकार के अधि-क्षेत्र का (अर्थात जिस पर केन्द्रिय सरकार का अधिकार न हो)।

प्रांतीयता—स्त्री० [स० प्रातीय+तल—टाप्] १ प्रातीय होने की अवस्था या भाव। २. अपने प्रातवासियो के प्रति होनेवाली ऐसी मोहजन्य तथा पक्षपातपूर्ण भावना जिसके कारण अन्य प्रातो के वासियों के प्रति उदासीनता या उपेक्षा दिखाई जाती है। (प्राविन्शलिज्म)

प्रांशु—वि० [स० प्र-अशु, ब० स०] [भाव० प्राशुता] १ ऊँचा। उच्च। २. लबा।

प्राइमर—स्त्री० [अ०] १ किसी भाषा की वर्ण-माला आदि सिखाने-वाली प्रारभिक पुस्तक जिसके द्वारा बच्चों को लिखना-पढ़ना सिख-लाया जाता है। २ किसी विषय की आरभिक मोटी-मोटी बातें बतलानेवाली पुस्तक। पहली पुस्तक।

प्राइमरी—वि० [अं०] १ प्राइमर-सबधी। २ आरभिक। ३ प्राथ-मिक।

प्राइवेट—वि० [अ०] १. जिसका सबध केवल किसी व्यक्ति से हो। निज का। जैसे—प्राइवेट सेक्रेटरी=वह सहायक जो किसी के साथ रहकर उसके पत्र-व्यवहार आदि का काम करता हो। निजी सचिव। २ (बात या रहस्य) जिसका संबंध अपने से अथवा किसी विशिष्ट व्यक्ति से हो और इसी लिए जिसे लोगो पर प्रकट न किया जा सकता हो।

प्राक्—अव्य० [सं० प्र√अञ्च् (गति)+क्विप्] १ सम्मुख। सामने। २. आगे। पहले। ३. पिछले प्रकरण या भाग में।

वि० पुराना।

पु० पूर्व दिशा। पूरब।

प्राकट्य—पु० [स० प्रकट+ष्यञ्] प्रकट होने की अवस्था या भाव। प्रकटता।

प्राकर्ष—पु० [सं० प्रकर्ष+अण्] एक प्रकार का साम।

प्राकर्षिक—वि० [सं० प्रकर्ष+ठञ्—इक] जो औरों से अच्छा समझा जा सके और इसी लिए ग्राह्य हो। वरेण्य।

पु० [स० प्र+आ√कर्ष (हिंसा)+किकन्] १. स्त्रियो के साथ नाचने-वाला पुरुष। २. स्त्रियो का दलाल। कुटना।

प्राकाम्य—पु० [स० प्रकाम+ष्यञ्] आठ प्रकार के ऐश्वर्यों या सिद्धियो मे से एक जिसकी प्राप्ति से सब प्रकार की कामनाएँ बहुत सहज मे और तुरन्त पूरी की जा सकती हैं।

प्राकार—पु० [स० प्र√कृ (विक्षेप)+घञ्] १ किसी स्थान या इमा-रत के चारो ओर की दीवार। चहारदीवारी। २ घेरा।

प्राकारीय—वि० [स० प्राकार+छ—ईय] १ प्राकार-सबधी। २ प्राकार या परकोटे से घिरा हुआ।

प्राकाश—पु०=प्रकाश।

प्राकाशिकी—स्त्री० [स० प्रकाश से] दे० 'प्रकाशिकी'।

प्राकाश्य—पु० [स० प्रकाश+ष्यञ्] १ प्रकाशित होने की अवस्था या भाव। २ प्रकटता। प्राकट्य। ३ कीर्ति। यश।

प्राकृत—वि० [सं० प्रकृति+अण्] [भाव० प्राकृतत्व] १ प्रकृति सबधी। प्रकृति का। २ प्रकृति से उत्पन्न। नैसर्गिक। ३ जो अपने उसी मूल रूप मे हो, जिसमे प्रकृति ने उसे उत्पन्न किया हो। ४. भौतिक। ५ लौकिक। सासारिक। ६ स्वाभाविक। ७ साधारण। मामूली। ८. प्रातीय। ९ अशिक्षित। १० क्षुद्र, तुच्छ या नीच।

स्त्री० १ किसी विशिष्ट क्षेत्र या प्रांत के लोगो की बोल-चाल की भाषा जो छोटे-बडे, शिक्षित-अशिक्षित सभी प्रकार के लोग सामान्य रूप से आपस के नित्य के व्यवहारो मे बोलते हो। यह उच्च और शिक्षित समाज की परिष्कृत या सस्कृत भाषा से भिन्न होती है। २ उक्त प्रकार की वह विशिष्ट भाषा जो भारत के प्राचीन आर्य लोग बोलते थे और जिसका सस्कार करके शिक्षित समाज तथा साहित्यिक रचनाओ के लिए बाद मे सस्कृत भाषा बनाई गई थी।

विशेष—(क) यो तो वैदिक युग मे भी अपने समय की प्राकृत भाषा ही बोलते थे, परन्तु स्वतत्र भाषा के रूप मे 'प्राकृत' का नामकरण सस्कृत भाषा बन जाने पर ही और उससे पार्थक्य दिखलाने के लिए हुआ था। (ख) आज-कल सकुचित अर्थ मे पालि, प्राकृति और अपभ्रंश को क्रमश प्राकृत के आरभिक, मध्यकालीन और उत्तरकालीन रूप माना जाने लगा है। मागधी, अर्धमागधी, पैशाची, शौरसेनी, महाराष्ट्री आदि इसी के बाद के साहित्यिक रूप हैं। इन भाषाओ मे भी किसी समय प्रचुर साहित्य प्रस्तुत होता था, जिसका बहुत-सा अश अब भी अनेक स्थानो मे मिलता है।

४ पराशर मुनि के मत से बुधग्रह की सात प्रकार की गतियो मे पहली और उस समय की गति जब वह स्वाती, भरणी और कृत्तिका नक्षत्रो मे रहता है। यह गति चालीस दिनों तक रहती है।

प्राकृत ज्वर—पु० [कर्म० स०] वैद्यक के अनुसार वह ज्वर जो ऋतु के प्रभाव से वर्षा, शरद और बसन्त ऋतुओ मे होता है, और जिसमे क्रमात वात, पित्त और कफ का प्रकोप होता है।

प्राकृतत्व—पु० [सं० प्राकृत+त्व] प्राकृत होने की अवस्था, धर्म या भाव।

प्राकृत-प्रलय—पु० [कर्म० स०] वेदात के अनुसार प्रलय का वह उग्र रूप जिसमे तीनो लोकों के सिवा महतत्त्व अर्थात प्रकृति के पहले और मूल विकार तक का क्षय या विनाश हो जाता है; और प्रकृति भी ब्रह्म मे लीन हो जाती है।

प्राकृतिक—वि० [सं० प्रकृति+ठञ्—इक] १ प्रकृति से उद्‌भूत। नैसर्गिक। २. प्रकृति मे होनेवाले किसी विकार के फलस्वरूप होनेवाला। ३. मनुष्य की प्रकृति या स्वभाव से सबध रखनेवाला। ४. मानुषिक भावों, गुणों, स्वभावो आदि के अनुसार होनेवाला; फलत' जो कृत्रिम अथवा क्रूर न हो। जैसे—(क) स्त्री पुरुष मे होनेवाला प्रेम का प्राकृतिक बन्धन। (ख) प्राकृतिक, ह्रास। ५. प्रकृति। आवश्यकता आदि के फलस्वरूप स्वाभाविक रूप से जो आदिकाल से उपयोग मे चला आ रहा हो। जैसे—हिंसक जीवो के लिए आमिष प्राकृतिक भोजन है। ६. साधारण। मामूली। ७ भौतिक। ८ सासारिक। ९ नीच।

प्राकृतिक चिकित्सा—स्त्री० [स० कर्म० स०] चिकित्सा का एक प्रकार जिसमे रोगो का निदान प्राकृतिक उपायो से किया जाता है। (नेचर क्योर)

प्राकृतिक भूगोल—पु० [स० कर्म० स०] भूगोल विद्या का वह अग जिसमे प्राकृतिक तत्त्वो का तुलनात्मक दृष्टि से विचार होता है। इसमे पृथ्वी-तल की वर्तमान तथा भिन्न-भिन्न प्राकृतिक अवस्थाओ का विचार होता है।

प्राक्कथन—पु० [स० कर्म० स०] १ पहले कही हुई बात। २ पुस्तक के विषय आदि के सबध मे पहले कही जानेवाली बात। प्रस्तावना।

प्राक्कर्म (र्मन्)—पु० [स० कर्म० स०] १ आरभ मे या पहले किया जानेवाला काम। २ पूर्व जन्म के किये हुए कर्म। ३. अदृष्ट। भाग्य।

प्राक्कलन—पु० [स० कर्म० स०] अनुमान, कल्पना या सभावना के आधार पर पहले से किया जानेवाला आकलन या गणना। कूत। तखमीना। (एस्टिमेशन)

प्राक्कल्प—पु० =पुराकल्प।

प्राक्चरण—पु० [स० ब० स०] योनि। भग।

प्राक्छाय—पु० [स० ब० स०] वह समय जब छाया पूर्व ओर पडती हो। अर्थात् अपराह्णकाल या तीसरा प्रहर।

प्राक्तन—वि० [स० प्राच्+ट्यु—अन, तुट्] १ पहले का। २ पूर्व जन्म का। ३ पुराना। प्राचीन।

पु० भाग्य। प्रारब्ध।

प्राक्फाल्गुन—पु० [स० प्राक्फाल्गुनी+अण्] बृहस्पति ग्रह।

प्राक्फाल्गुनी—स्त्री०- पूर्वा फाल्गुनी।

प्राक्संध्या—स्त्री० [स० कर्म० स०] सूर्योदय के समय की सध्या अर्थात् सवेरा।

प्रॉक्सी—स्त्री० दे० 'प्रतिपुरुषपत्र'।

प्राखर्य—पु० [स० प्रखर+ष्यञ्]=प्रखरता।

प्राग*—वि० [स० प्राक्] १ पहले का। पहलेवाला। २ पहला माना या समझा जानेवाला, अर्थात् मुख्य।

प्रागल्भ—पु० [स० प्रगल्भ+ष्यञ्] =प्रगल्भता।

प्रागभाव—पु० [स० प्राग्—अभाव, मध्य० स०] १ पहले से अथवा पूर्वकाल से वर्तमान रहने या होने की अवस्था। (प्रि-एग्जिस्टेन्स) २ वैशेषिक दर्शन के अनुसार, पाँच प्रकार के अभावो मे से पहला। ऐसा अभाव जिसकी पूर्ति पीछे या बाद में हो गई हो। जैसे—बनकर तैयार होने से पहले घर या वस्त्र का प्रागभाव होता है। ३. ऐसा पदार्थ जिसका आदि तो न हो, परन्तु अत होता हो। अनादि परन्तु सांत।

प्रागार—पु० [स० प्र-आगार, प्रा० स०] १. घर। मकान। २. प्रासाद। महल।

प्रागुक्ति—स्त्री० [स० प्राची-उक्ति, कर्म० स०] पहले कही हुई बात। पूर्व-कथन।

प्रागुत्तर—वि० [स० प्राच्-उत्तर, कर्म० स०] पूर्वोत्तर।

प्रागुत्तर—स्त्री० [स० प्राची-उत्तरा, कर्म० स०] ईशान कोण।

प्रागुदीची—स्त्री० [स० प्राची-उदीची, कर्म० स०] ईशान कोण।

प्रागैतिहासिक—वि० [स० प्राक्-ऐतिहासिक, कर्म० स०] क्रम-बद्ध रूप मे प्राप्त होनेवाला लिखित इतिहास से पूर्व काल का। इतिहास में वर्णित और निश्चित काल से पहले का। (प्री-हिस्टारिक)

प्राग्ज्योतिष—पु० [स० ब० स०] महाभारत आदि के अनुसार असम राज्य। कामरूप देश।

प्राग्ज्योतिषपुर—पु० [स०] प्राग्ज्योतिष की राजधानी जिसे अब गोहाटी कहते है। कहते है कि यह नगर कुश के पुत्र अमूर्तरज ने बसाया था और परवर्ती काल मे नरकासुर की राजधानी यही थी।

प्राग्दक्षिणा—स्त्री० [स० प्राची-दक्षिण, कर्म० स०] अग्निकोण।

प्राग्द्वार—पु० [स० कर्म० स०] पूर्वीद्वार।

प्राग्भक्त—पु० [स० कर्म०स०] १ वैद्यक मे, भोजन करने से कुछ पहले का समय जिसमे ओषधि खाई जाती है। २ उक्त समय में ओषधि खाना।

प्राग्भव—पु० [स० कर्म० स०] पूर्व-जन्म।

प्राग्भाग—पु० [स० कर्म० स०] अगला या आगे का भाग।

प्राग्र—पु० [स० प्र-अग्र, प्रा० स०] चरम या शीर्षबिंदु।

प्राग्वंश—पु० [स० कर्म० स०] १ पहले का वश। २ [ब० स०] यज्ञशाला मे हविर्गृह के पूर्व स्थित स्थान। ३ विष्णु।

प्राग्वचन—पु० [स० कर्म० स०] १ प्राक्कथन। २ मन्वादि महर्षियो के वचन। (महा०) ३ पहले से किसी को दिया हुआ वचन।

प्राग्वर्ण—पु० [स० कर्म० स०] वर्णमाला का प्रारम्भिक अक्षर या वर्ण। उदा०—ये नयन डूबे अनेकों बार है, काव्य के प्राग्वर्ण पर भी हैं रुके।—पन्त।

प्राघात—पु० [स० प्र+आ√हन् (हिंसा)+घञ्] १ भारी आघात। कडी चोट। २ युद्ध।

प्राघार—पु० [स० प्र+आ√घृ (चूना)+घञ्] चूना। रसना।

प्राघुण—पु० [स० प्र+आ√घूर्ण् (भ्रमण)+क] अतिथि।

प्राघुणिक—पु० [स० प्र+आ√घूर्ण्+घञ्, प्राघूर्ण+ठञ्—इक] अतिथि। मेहमान।

प्राङ्न्याय—वि० [स० ब० स०] जिसका न्याय पहले हो चुका हो। पु० न्याय मे, किसी दोबारा चलाये हुए अभियोग के सबध मे प्रतिवादी का यह कहना कि इसका न्याय पहले ही (वादी के विरुद्ध) हो चुका है।

प्राङ्मुख—वि० [स० ब० स०] जो पूर्व दिशा की ओर मुख किये हुए हो। पूर्व दिशा की ओर देखता हुआ।

क्रि० वि० पूर्व की ओर मुख किये हुए।

प्राचंड्य—पु० [स० प्रचड+ष्यञ्]=प्रचडता।

प्राचार्य—पु० [स० प्र+आचार्य प्रा० स०] दे० 'प्रधानाचार्य'।

प्राची—स्त्री० [सं० प्राच्+ङीप्] १ पूर्व दिशा। पूरब। २. अपने अथवा देवता के सामने की दिशा। ३. जल-आँवला।

प्राचीन—वि० [सं० प्राच्+ख—ईन] [भाव० प्राचीनता] १. पूर्व दिशा में होनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला। २ जो पूर्व अर्थात् पहलेवाले समय में बना, रहा या हुआ हो। बहुत दिनो का। (एन्शेन्ट) ३. पुराना।

पुं०=प्राचीर।

प्राचीनता—स्त्री० [स० प्राचीन+तल्+टाप्] प्राचीन होने की अवस्था, गुण या भाव। पुरानापन।

प्राचीनत्व—पु०=प्राचीनता।

प्राचीन-पनस—पु० [स० कर्म० स०] बेल (पेड़)।

प्राचीनबर्हि (स्)—पु० [स०] इन्द्र।

प्राचीन-योग—पु० [स० ब० स०] एक गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि।

प्राचीना—स्त्री० [स० प्राचीन+टाप्] १. पाठा। २ रास्ना। ३ दे० 'नित्यप्रिया' (गोपियाँ)।

वि० स्त्री० प्राचीन का स्त्री० रूप।

प्राची-पति—पु० [स० ष० त०] इन्द्र।

प्राचीर—पु० [स० प्र+आ√चि+क्रन्, दीर्घ] ऐसी ऊँची तथा पक्की दीवार जो किले, नगर आदि के रक्षार्थ उसके चारो ओर बनाई गई हो। चहारदीवारी। परकोटा।

प्राचुर्य—पु० [सं० प्रचुर+ष्यञ्]=प्रचुरता।

प्राचेतस—पु० [स० प्रचेतस्+अण्] १ प्रचेता के अपत्य या वशज। २. प्रचेतागण जो प्राचीनवर्हि के पुत्र थे और जिनकी संख्या दस थी। ३. विष्णु। ४. दक्ष प्रजापति। ५ वरुण के एक पुत्र। ६ वाल्मीकि मुनि का एक नाम।

प्राच्छित†—पु०=प्रायश्चित्त।

प्राच्य—वि० [स० प्राच्+यत्] १ जो पूरब अर्थात् पूर्वी भू-भाग मे बना, रहता या होता हो। पूरबी। २. पूर्वीय देशों अर्थात् एशिया महाद्वीप के देश और उनके निवासियो से सबध रखनेवाला। पूर्वीय। जैसे—प्राच्य सभ्यता। ३ पुराना। प्राचीन।

पु० १ पूर्वी भूभाग। २ पूर्वी देश। ३ कोशल, काशी, विदेह और अंग देश की प्राचीन सामूहिक सज्ञा।

प्राच्यक—वि० [स० प्राच्य+कन्]=प्राच्य।

प्राच्यविद्—पु० [स०]=प्राच्यवेत्ता।

प्राच्य-विद्या—स्त्री० [स०] पुरातत्व की वह शाखा जिसमे प्राच्य देशो अर्थात्, तुर्की, ईरान, भारत, बरमा, चीन, स्याम, मलाया आदि पूर्वीय देशों के इतिहास, धर्म, भाषा, सस्कृत, साहित्य आदि का अनुसधानात्मक विचार और विवेचन होता है। (ओरियन्टलिज्म)

प्राच्य-वृत्ति—स्त्री० [स०कर्म०स०] साहित्य मे वैताली वृत्ति का एक भेद जिनके समपादों में चौथी और पाँचवी मात्राएँ मिलकर गुरु हो जाती हैं।

प्राच्यवेत्ता—पु० [सं०] वह जो प्राच्य-विद्या का अच्छा ज्ञाता हो। (ओरिएण्टलिस्ट)

प्राच्य-व्रण—पु० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार का व्रण या घाव जो उष्ण कटिबन्ध के देशों मे चेहरे या हाथ-पैर पर होता है। (ओरिएन्टल सोर)

प्राच्या—स्त्री० [सं० प्राच्य+टाप्] प्राच्य (कोशल, काशी, विदेह और अंग) के निवासियों की भाषा। अर्द्ध-मागधी और मागधी इसी के विकसित रूप हैं।

प्राजक—पु० [स० प्र√अज् (गति)+णिच्+ण्वुल्—अक] रथ चलानेवाला। सारथी।

प्राजन—पु० [सं० प्र√अज्+ल्युट्—अन] कोड़ा। चाबुक।

प्राजापत—पु० [सं० प्रजापति+अण्] प्रजापति का कार्य, पद या भाव।

प्राजापत्य—वि० [स० प्रजापति+ष्य] १. प्रजापति-सबधी। प्रजापति का। २ प्रजापति से उत्पन्न।

पु० १ हिंदू धर्म-शास्त्रो के अनुसार आठ प्रकार के विवाहो मे से वह विवाह जिसमें कन्या का पिता वर से बिना कुछ लिए उसे अपनी कन्या दे देता है।

विशेष—ऐसे विवाह मे वर और कन्या को प्रतिज्ञा करनी पड़ती है कि हम दोनो मिलकर गार्हस्थ्य धर्म का पालन करेंगे, और एक दूसरे के प्रति निष्ठ रहेंगे।

२ एक प्रकार का व्रत जो बारह दिनो का होता है। इसमें पहले तीन दिन तक सायकाल २२ ग्रास, फिर तीन दिन तक प्रात काल २६ ग्रास, फिर तीन दिन तक अयाचित अन्न २४ ग्रास खाकर अन्त मे तीन दिन उपवास करना पड़ता है। ३ रोहिणी नक्षत्र। ४ यज्ञ। ५. प्रयाग तीर्थ का एक भाग।

प्राजापत्या—स्त्री० [सं० प्राजापत्य+टाप्] १. सन्यास ग्रहण करने से पूर्व अपनी संपत्ति दान करने की क्रिया या भाव। २. वैदिक छंदो के आठ भेदों में से एक।

प्राजिता (तृ)—पु० [सं० प्र√अज्+तृच्]=प्राजक (सारथी)।

प्राजी (जिन्)—पु० [स० प्र√अज्+णिनि] बाज (पक्षी)।

प्राजेश—पु० [सं० प्रजेश+अण्] १. रोहिणी नक्षत्र। २ यज्ञ मे प्रजापति देवता के उद्देश्य से रखा जानेवाला पदार्थ।

प्राज्ञ—वि० [सं० प्र√ज्ञा (जानना)+क+अण्] [स्त्री० प्राज्ञा, प्राज्ञी, भाव० प्राज्ञता, प्राज्ञत्व] १. बुद्धिमान। समझदार। २ चतुर। होशियार। ३. (ऐसा व्यक्ति) जिसने अध्ययन द्वारा बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त किया हो।

पु० १ चतुर व्यक्ति। २ विद्वान् व्यक्ति। ३. जीवात्मा।

प्राज्ञत्व—पु० [सं० प्राज्ञ+त्व] १ प्राज्ञ होने की अवस्था या भाव। पांडित्य। विद्वत्ता। २ कौशल। चातुर्य। ३. बुद्धिमत्ता। ४ मूर्खता। बेवकूफी। (व्यग्य)

प्राज्ञमानी (निन्)—पु० [सं० प्राज्ञ+मन्+णिनि] वह जिसे अपने पांडित्य का विशेष अभिमान हो।

प्राज्ञी—स्त्री० [स० प्राज्ञ+ङीप्] १ ऐसी स्त्री जिसने अध्ययन द्वारा बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त किया हो। २. सूर्य की भार्या का नाम।

प्राज्य—वि० [सं० प्र√अज्+ण्यत्] १ प्रचुर। अधिक। २ ऊँचा। विशाल। ३. जिसमें बहुत घी पड़ा हो।

प्राड्विवाक—पु० [सं०√प्रच्छ् (पूछना)+क्विप्=प्राट्-विवाक, कर्म० स०] १. वह जो व्यवहार-शास्त्र का ज्ञाता हो और विवाद आदि का निर्णय करता हो। न्यायाधीश २. प्राचीन काल में वह अधिकारी जिसे राजा न्याय करने के लिए नियुक्त करता था। ३. वकील।

प्राण—पु० [स० प्र√अन्+घञ्] १ श्वास। साँस। २ वह वायु या हवा जो साँस के साथ अन्दर जाती और बाहर निकलती है। ३ वह शक्ति जो जीव-जंतुओ, पेड-पौधो आदि मे रहकर उन्हे जीवित रखती और उन्हें अपने सब व्यापार चलाने मे समर्थ करती है। जीवनी-शक्ति। जान। (लाइफ)

विशेष—हमारे यहाँ शरीर के भिन्न-भिन्न अगों मे रहनेवाले ये पाँच प्रकार के प्राण माने गये हैं—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। इसी आधार पर 'प्राण' का प्रयोग प्राय बहुवचन मे होता है। इसके सिवा शरीर की कुछ विशिष्ट क्रियाएँ करानेवाले और भी पाँच प्राण कहे गये हैं जो वायु रूप मे हैं और जिन्हे नाग, कूर्म, कृकिल, देवदत्त तथा धनंजय कहते हैं। छांदोग्य ब्राह्मण मे जीवनी शक्ति, वाक्, चक्षु, श्रोत्र और मन को 'प्राण' कहा गया है। कुछ ग्रंथो मे मूलाधार मे रहनेवाली वायु को ही मुख्य रूप से 'प्राण' कहा गया है। जैन शास्त्रो में पाँचो इंद्रियाँ, त्रिविध बलो (मनोबल, वाक्बल और काय-बल) तथा उच्छ्वास और आयु के समूह को प्राण कहा गया है। कुछ अवसरो पर और विशेषत कुछ मुहावरों मे यह शारीरिक बल या शक्ति का भी वाचक होता है।

मुहा०—**प्राण उड़ जाना**=दुख, भय आदि के कारण होश-हवाश जाता रहना। बहुत घबराहट या विकलता होना। **(किसी के) प्राण खाना**=बहुत तग या परेशान करना। **प्राण गले (या मुँह) तक आना**=रोग, सकट आदि के कारण मृत्यु के समीप तक पहुँचना। मरणासन्न होना। **प्राण घुटना**=मृत्यु होना। मरना। **प्राण छोड़ना, तजना या त्यागना**=यह शरीर छोडकर परलोक जाना। मरना। **प्राण जाना या निकलना**=मृत्यु होना। **(किसी में) प्राण डालना**=(क) किसी मे जीवन का सचार करना। (ख) किसी मरते हुए को जीवन प्रदान करना। **(अपने) प्राण देना**=मर जाना। मरना। **(किसी के लिए) प्राण देना**=किसी के किसी काम से बहुत दुखी या रुष्ट होकर मरना। **(किसी पर) प्राण देना**=किसी से इतना अधिक प्रेम करना कि उसके बिना रहा न जा सके। प्राणो के समान प्रिय समझना। **(किसी काम या बात से) प्राण निकलने लगना**=कोई काम या बात करते हुए इतनी आशका या भय होना कि मानो प्राण निकल जायँगे। भय, शका आदि के कारण अथवा और किसी प्रकार अपने आप को बचाने के लिए बिलकुल अलग या बहुत दूर रहना। **प्राण (या प्राणों) पर खेलना**=ऐसा काम करना जिसमे जान जाने का भय हो। प्राणो को सकट मे डालना। **प्राण या (प्राणों) पर बीतना**=(क) जीवन सकट मे पड़ना। जान जोखिम होना। (ख) मृत्यु होना। मर जाना। **(किसी के) प्राण बचाना**=जीवन की रक्षा करना। जान बचाना। **(अपने) प्राण बचाना**=(क) किसी प्रकार अपने जीवन की रक्षा करना। (ख) कोई काम करने से बचना या भागना। जान या पीछा छुड़ाना। **प्राण मुट्ठी या हथेली में लिये फिरना**=जीवन को कुछ न समझना। प्राण देने पर हर समय तैयार रहना। **किसी के प्राण रखना**=जान बचाना। जीवन की रक्षा करना। **(किसी के) प्राण लेना या हरना**=जीवन का अन्त कर देना। मार डालना। **प्राण हारना**=(क) मर-जाना। (ख) साहस या हिम्मत छोड देना। हतोत्साह होना। **प्राणों पर आ पड़ना या आ बनना**=जीवन संकट मे पड़ना। जान जोखिम मे होना। **प्राणो में प्राण आना**=घबराहट या भय कम होना। चित्त कुछ ठिकाने या शात होना।

३ वह जो प्राणो के समान परम प्रिय हो। ४. ब्रह्म। ५ ब्रह्मा। ६. विष्णु। ७ अग्नि। आग। ८. वैवस्वत मन्वतर के सप्तर्षियों मे से एक। ९. धाता के एक पुत्र का नाम। १० एक साम का नाम। ११ यवर्ण। यकार। १२ वाराहमिहिर आर्यभट्ट के अनुसार उतना काल जितने में दस दीर्घ मात्राओ का उच्चारण होता है। यह विनाडिका का छठा भाग है। १३ पुराणानुसार एक कल्प जो ब्रह्मा के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को होता है।

प्राण-अधार*—पु०=प्राणाधार।

प्राणक—पु० [स० प्राण√कै (प्रकाशित होना)+क] १ जीवक वृक्ष। २. जीव। प्राणी। ३ गोद।

प्राण-कर—वि० [सं० प्राण√कृ (करना)+ट] जिससे शरीर का बल बढता हो। शक्ति-वर्द्धक। पौष्टिक।

प्राण-कष्ट—पु० [ष० त० या मध्य० स०] वह कष्ट जो प्राण निकलने या मरने के समय होता है। मरण-काल की यातना या वेदना।

प्राण-कृच्छ्र—पु०=प्राण-कष्ट।

प्राण-ग्रह—पु० [ष० त०] नासिका। नाक।

प्राण-घातक—वि० [स० ष० त०] १. प्राण लेने या मार डालनेवाला। २ (विष या और कोई पदार्थ) जिसके व्यवहार से प्राण निकल जायँ।

प्राणघ्न—वि० [स० प्राण√हन्+टक्]=प्राण-घातक।

प्राणच्छेद—पु० [ष० त०] हत्या। वध।

प्राण-जीवन—पु० [ष० त०] १ वह जो प्राणो का आधार हो। प्राणाधार। २ परम प्रिय व्यक्ति। ३ विष्णु।

प्राण-त्याग—पु० [ष० त०] प्राण का शरीर से निकल जाना। मर जाना।

प्राणथ—पु० [सं० प्र√अन् (जीना)+अथ] १ वायु। हवा। २ प्रजापति। ३ पवित्र स्थान। तीर्थ। ४. जैन शास्त्रानुसार एक देवता जो कल्पभव नामक वैमानिक देवताओ के अतर्गत हैं।

वि० बलवान। सशक्त।

प्राण-दंड—पु० [ष० त०] हत्या या ऐसे ही किसी दूसरे गभीर अपराध के लिए किसी को दी जानेवाली मौत की सजा। मृत्यु-दड। (कैपिटल पनिशमेन्ट)

प्राणद—वि० [स० प्राण√दा+क] १ प्राणो की प्रतिष्ठा या संचार करनेवाला। प्राण-दाता। २ प्राणो की रक्षा करनेवाला। प्राण-रक्षक। ३. शरीर की प्राण-शक्ति बढ़ानेवाला।

पु० १ जल। २ खून। ३ जीवक वृक्ष। ४. विष्णु।

प्राणदा—स्त्री० [स० प्राणद+टाप्] १ हरीतकी। हर्रे। २. ऋद्धि नामक ओषधि।

प्राण-दाता (तृ)—वि० [ष० त०] प्राणो की प्रतिष्ठा या सचार करनेवाला। प्राणद।

प्राण-दान—पु० [ष० त०] १ किसी मे प्राण डालना या उसे प्राणों से युक्त करना। २ जिसे मार डालना चाहते हो, उसे दया करके यों ही छोड देना। किसी के प्राणो की रक्षा करना। ३. अपने प्राणों का किसी शुभ काम के निमित्त किया जानेवाला बलिदान। जीवन-दान।

प्राणद्यूत—पु० [ष० त०] अपने को ऐसी स्थिति में डालना जिसमें प्राण तक जाने का भय हो। जान जोखिम में डालना। जान की बाजी लगाना।

प्राण-द्रोह—पु० [ष० त०] किसी के प्राण लेने के लिए किया जानेवाला दुस्साहस जो विधिक दृष्टि से अपराध होता है।

प्राण-धन—पुं० [ष० त०] १ वह जो किसी को प्राणों के समान प्रिय हो। २. पति या प्रियतम।

प्राणधार—वि० [सं० प्राण√धृ (धारण करना)+अण्] जो प्राण धारण किये हुए हो। जीता हुआ।

पु० प्राणी। जीव।

प्राण-धारण—पु० [ष० त०] १ प्राणो की रक्षा तथा उन्हें पोषित करते रहने का भाव। २. उक्त का कोई साधन। ३. शिव।

प्राणधारी (रिन्)—वि० [सं० प्राण√धृ+णिनि] जो साँस लेता हो। साँस लेकर जीवित रहने वाला।

पु० जीव। प्राणी।

प्राण-ध्वनि—स्त्री० [सं०] १ भाषा विज्ञान और व्याकरण मे, शब्दों के उच्चारण के समय मुँह से निकलनेवाली ऐसी ध्वनि जिसमे किसी स्वर के उच्चारण से पहले उस पर श्वास का कुछ अधिक जोर पड़ता या झटका लगता है। जैसे—'ए' (संबोधन) के उच्चारण मे प्राण-ध्वनि लगने पर 'हे' और होठ में के 'ओं' के उच्चारण में लगने पर 'हों' (होंठ) का उच्चारण होता है। २ वर्ण-माला मे का 'ह' वर्ण।

प्राणन—पुं० [सं० प्र√अन्+ल्युट्—अन] १. किसी मे प्राण डालने की क्रिया या भाव। प्राण-प्रतिष्ठा करना। २ जीवन। ३ इस प्रकार हिलना-डुलना कि जीवित होने का प्रमाण मिले। ४ जल। पानी।

प्राण-नाथ—पु० [ष० त०] [स्त्री० प्राणनाथा] १ वह जो प्राणो फलत शरीर का स्वामी हो। २. स्त्री की दृष्टि से उसका पति। ३. प्रियतम। प्रेमी। ४. यम। ५ औरंगजेब के शासन-काल में एक क्षत्रिय आचार्य जो प्राण-नाथी धार्मिक संप्रदाय के प्रवर्तक थे।

प्राण-नाथी (थिन्)—पु० [सं० प्राण-नाथ+इनि] १ प्राण-नाथ का चलाया हुआ एक धार्मिक सप्रदाय। २ उक्त संप्रदाय का अनुयायी।

प्राण-नाश—पु० [ष० त०] १ प्राणो का नष्ट हो जाना। मृत्यु। २ जान से मार डालना। हत्या।

प्राण-नाशक—वि० [ष० त०] प्राण नष्ट करने या मार डालनेवाला।

प्राण-निग्रह—पु० [ष० त०] प्राणायाम।

प्राण-पति—पु० [ष० त०] १ प्राण-नाथ। २. आत्मा। ३. वैद्य।

प्राण-परिक्रय—पु० [ष० त०] प्राणों की बाजी लगाना।

प्राण-परिग्रह—पु० [ष० त०] प्राण धारण करना। जन्म लेना।

प्राण-प्यारा—वि०, पु०=प्राण-प्रिय।

प्राण-प्रतिष्ठा—स्त्री० [ष० त०] १. किसी में प्राण डालकर उसे प्राण-युक्त अर्थात् सजीव बनाना। २. देवालय स्थापित करते समय किसी विशिष्ट मूर्ति मे वास करने के लिए उसके देवता का किया जानेवाला आवाहन तथा स्थापन जो कर्म-कांड का धार्मिक कृत्य है।

प्राणप्रद—वि० [सं० प्राण+प्र√दा (देना)+क] १. प्राणद। (दे०) २. शरीर का स्वास्थ्य ठीक करने और बढ़ानेवाला।

प्राण-प्रदायक—वि० [ष० त०] प्राणद। प्राणदाता।

प्राण-प्रिय—वि० [स्त्री० प्राण-प्रिया] प्राणों के समान प्रिय।

पु० १. परम प्रिय व्यक्ति। २. प्रियतम।

प्राणभृत्—वि० [सं० प्राण√भृ (धारण करना)+क्विप्] १. प्राण धारण करनेवाला। २. प्राण-पोषक।

पु० १. जीव। २ विष्णु।

प्राणमय—वि० [सं० प्राण+मयट्] [स्त्री० प्राणमयी] जिसमे प्राण या जीवनी-शक्ति हो। जानदार। सजीव।

प्राणमय-कोश—पु० [सं० कर्म० स०] आत्मा को आवृत करनेवाले पाँच कोशो मे से दूसरा जो पाँचो प्राणो (प्राण, अपान, व्यान, उदान और समान) तथा पाँचो कर्मेन्द्रियों का समूह कहा गया है। (वेदान्त)

प्राण-यात्रा—स्त्री० [सं० ष० त०] १ श्वास-प्रश्वास के आने-जाने की क्रिया। साँस का आना-जाना। २ भोजन, स्नान आदि के दैनिक कृत्य जिनसे मनुष्य या प्राणियों का जीवन चलता है। ३ जीविका।

प्राण-योनि—पु० [सं० ष० त०] १ परमेश्वर। २ वायु।

स्त्री० प्राणो का स्रोत।

प्राणरंध्र—पु० [सं० ष० त०] शरीर के छिद्र या रन्ध्र। मुख्यत नाक और मुँह जिनसे मनुष्य साँस लेता है।

प्राणरोध (न)—पु० [सं० ष० त०] १ साँस रोकना। २. प्राणायाम।

प्राण-वध—पु० [सं० ष० त०] जान से मार डालना। वध। हत्या।

प्राण-वल्लभ—पु० [सं० उपमित स०] [स्त्री० प्राणवल्लभा] १. वह जो बहुत प्यारा हो। अत्यत प्रिय। २. पति। स्वामी। ३ प्रियतम।

प्राणवान् (वत्)—वि० [सं० प्राण+मतुप्, वत्व] जिसमे प्राण हो। प्राणों से युक्त।

प्राण-वायु—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १. प्राण। २ जीव। ३. आज-कल वातावरण मे रहनेवाला एक प्रसिद्ध गैस जिसमें कोई गन्ध, वर्ण या स्वाद नही होता और जो प्राणियों, वनस्पतियों आदि को जीवित रखने के लिए परम आवश्यक तत्त्व है। (ऑक्सिजन)

प्राण-विद्या—स्त्री० [सं० ष० त०] उपनिषदों का वह प्रकरण जिसमे प्राणों का वर्णन है।

प्राण-वृत्ति—स्त्री० [सं० ष० त०] प्राण, अपान, उदान आदि पच प्राणों के कार्य।

प्राण-व्यय—पु० [सं० ष० त०] प्राणनाश। मृत्यु।

प्राण-शरीर—पु० [सं० ब० स०] १ उपनिषदों के अनुसार वह सूक्ष्म शरीर जो मनोमय विज्ञान और क्रिया का हेतु माना गया है। २ परमेश्वर।

प्राण-शोषण—पु० [सं० ष० त०] बाण। तीर।

प्राण-संकट—पु० [सं० ष० त०] १ ऐसी स्थिति जिसमे प्राण जाने का भय हो। २. ऐसी बात जिसके कारण जान जोखिम मे पड़ी हो।

प्राण-संदेह—पु० [ष० त०] वह अवस्था जिसमे जान जाने का डर हो। प्राणान्त होने की आशका।

प्राण-संन्यास—पु० [ष० त०] मृत्यु। मौत।

प्राण-संयम—पु० [सं० ब० स०] प्राणायाम।

प्राण-शंका—पु० [ष० त०] १ जीवन के नष्ट होने की आशंका। २. मरणासन्नता। ३. प्राण-सकट।

प्राण-हर—वि० [सं० प्राण√हृ (हरण करना)+अच्] १. जान से मार डालनेवाला। प्राण लेनेवाला। २ बलनाशक।
पु० विष आदि ऐसे पदार्थ जिनके सेवन से प्राण निकल जाते हैं।

प्राण-हानि—स्त्री० [स० ष० त०] प्राणों का नाश। मृत्यु।

प्राण-हारक—वि० [स० ष० त०]=प्राण-हर।
पुं० वत्सनाभ। बछनाग।

प्राणहारी (रिन्)—वि० [स० प्राण√हृ+णिनि] प्राण लेनेवाला। प्राण-नाशक।

प्राणांत—पु० [स० प्राण-अंत, ष० त०] प्राणो का होनेवाला अंत या नाश। मृत्यु।

प्राणांतक—वि० [स० प्राण-अंतक, ष० त०] १ प्राण या जान लेनेवाला। घातक। २ मरने का-सा कष्ट देनेवाला। जैसे—प्राणांतक परिश्रम।

प्राणांतिक—पु० [स० प्राणांत+ठक्—इक] १ वध। हत्या। २ वधिक।
वि० =प्राणांतक।

प्राणाग्नि-होत्र—पु० [स०प्राण-अग्नि, कर्म० स०, प्राणाग्नि-होत्र, स० त०] भोजन के समय पहले किया जानेवाला वह कृत्य जिसमे 'प्राणाय स्वाहा', 'अपानाय स्वाहा', 'व्यानाय, स्वाहा' 'उदानाय स्वाहा' और 'समानाय स्वाहा' कहते हुए पाँच ग्रास निकालकर अलग रखते है।

प्राणाघात—पु० [स० प्राण-आघात, स०त०] १ वह आघात जो किसी के प्राण लेने के उद्देश्य से किया गया हो। २ मार डालना। वध। हत्या।

प्राणाचार्य—पु० [स० प्राण-आचार्य, ष० त०] वैद्य विशेषत राजवैद्य।

प्राणातिपात—पु० [स० प्राण-अतिपात, ष० त०] जान से मार डालना। हत्या।

प्राणातिपात-विरमण—पु० [स० प० त०] जैन मतानुसार अहिंसा व्रत। यह दो प्रकार का कहा गया है—द्रव्य-प्राणातिपात-विरमण और भाव-प्राणातिपात-विरमण।

प्राणात्मा (त्मन्)—पु०=जीवात्मा।

प्राणात्यय—पु० [स० प्राण-अत्यय, ष० त०] १ प्राण-नाश। २. मरने का समय। मृत्यु-काल। ३. वह बात जिसके कारण मारे जाने का भय हो।

प्राणाद—वि० [स० प्राण√अद् (खाना)+अण्] प्राणनाशक।

प्राणाधार—वि० [स० प्राण-आधार, ष० त०] जिसके कारण प्राण टिके या बने हुए हो। अत्यंत प्रिय। प्यारा।
पु० १ प्रेम-पात्र। २ स्त्री का पति। स्वामी।

प्राणाधिक—वि० [स० प्राण-अधिक, पं०त०] [स्त्री० प्राणाधिका] प्राणो से भी अधिक प्रिय। बहुत प्यारा।
पु० स्त्री का पति। स्वामी।

प्राणाधिप—पु० [स० प्राण-अधिप, ष० त०] आत्मा।

प्राणाबाध—पु० [स० प्राण-आबाध, ष० त०] प्राण जाने की आशंका या संभावना।

प्राणायतन—पु० [स० प्राण-आयतन, ष० त०] शरीर से प्राणो के निकलने के नौ मार्ग—दो कान, नाक के दोनों छेद, दोनों आँखें, मुख, गुदा और उपस्थ।

प्राणायाम—पु० [स० प्राण-आयाम, ष०त०] १ प्राणो को अपने वश मे रखने की क्रिया या भाव। २ योग शास्त्रानुसार योग के आठ अंगों मे चौथा जिसमे मन को शांत और स्थिर करने के लिए श्वास और प्रश्वास की वायुओं को नियन्त्रित और नियमित रूप से अंदर खींचा और बाहर निकाला जाता है। प्राण-निरोध।

प्राणायामी (मिन्)—वि० [सं० प्राणायाम+इनि] १ प्राणायाम संबंधी। २. प्राणायाम करनेवाला।

प्राणावरोध—पु० [स० प्राण-अवरोध, ष० त०] श्वास को अंदर खींचकर रोक रखना।

प्राणाशय—पु० [स० प्राण-आशय, ष० त०] प्राण-शक्ति। उदा०—अपनी असीमता मे अवसित प्राणाशय।—निराला।

प्राणासन—पु० [स० प्राण-आसन, मध्य० स०] तान्त्रिक साधना में एक प्रकार का आसन।

प्राणाहुति—स्त्री० [स० प्राण-आहुति, ष० त०] पाँचो प्राणों को पाँच ग्रासो के रूप मे दी जानेवाली आहुति।

प्राणि—पु०=प्राणी।

प्राणिक—वि० [स० प्राण+ठन्—इक] १ प्राण-संबंधी। प्राणों का। २ बिना शोर मचाये बोलनेवाला।
वि० [स० प्राणी से] प्राणियों या जीव-धारियो से सम्बन्ध रखनेवाला। प्राणियों का।

प्राणित—भू० कृ० [स० प्र√अन्+णिच्+क्त] १ प्राणों या जीवनी-शक्ति से युक्त किया हुआ। उदा०—शशि मुख प्राणित नील गगन था, भीतर से आलोकित मन था।—पंत। २ जीता हुआ।

प्राणि-द्यूत—पु० [स० ष० त०] वह बाजी जो मेढ़े, तीतर, घोड़े आदि जीवों की लड़ाई, दौड़ आदि मे लगाई जाय। (धर्म-शास्त्र)

प्राणि-भूगोल—पु० [स० ष० त०] भूगोल की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि पृथ्वी पर कहाँ की जल-वायु के प्रभाव के कारण कैसे-कैसे प्राणी और वनस्पतियाँ होती हैं। (बायोजियाग्रैफी)

प्राणि-मंडल—पु० [स० ष० त०] वैज्ञानिक क्षेत्रों मे जल, स्थल और आकाश का उतना अंश जिसमें कीड़े, मकोड़े, जीव-जन्तु, वनस्पतियाँ आदि रहती तथा होती हैं। जीव-मंडल। (बायोस्फीयर)

प्राणि-विज्ञ—पु० [स० ष० त०] वह जो प्राणि-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो। (जूलाजिस्ट)

प्राणि-विज्ञान—पु० [स०ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे प्राणियों की जातियो, वर्गों, विभेदों आदि का अध्ययन होता है। (जूलॉजी)

प्राणिशास्त्र—पु०=प्राणि-विज्ञान।

प्राणी (णिन्)—वि० [स० प्राण+इनि] जिसमें पाँचों प्राणो का निवास हो। जीव-धारी। प्राण-धारी।
पु० १. प्राणों से युक्त शरीर। २ मनुष्य। ३ व्यक्ति। ४ स्त्री की दृष्टि से उसका पति। ५ पति की दृष्टि से उसकी पत्नी।
पद—दोनों प्राणी=पति और पत्नी। पुरुष और स्त्री। दंपति।

प्राणेश—पु० [स० प्राण-ईश, ष० त०] [स्त्री० प्राणेशा] १ प्राणों का स्वामी। २ स्त्री की दृष्टि से उसका पति। ३ परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणेश्वर—पु० [स० प्राण-ईश्वर ष० त०] [स्त्री० प्राणेश्वरी] १. पति। स्वामी। २ परम प्रिय व्यक्ति।

प्राणोत्सर्ग—पु० [सं० प्राण-उत्सर्ग, ष० त०] मृत्यु।

प्राणोपेत—वि० [स० प्राण-उपेता पु० त०] प्राणो से युक्त। जीवित।

प्रातःकर्म—पु० [स० ष० त० वा स० त०] कर्म जो नित्य प्रातःकाल किये जाते है।

प्रातःकार्य—पु०=प्रातःकर्म।

प्रातःकाल—पु० [सं० कर्म० स० या ष० त०] १. पौ फटने का समय। तड़का। रात का अंतिम एक दंड और दिन का पहला एक दंड। २ सूर्य निकलने से कुछ पहले और बाद का समय। ३. कार्यालयों, निर्माण-शालाओ तथा विद्यालयो मे जाने तथा काम करने का सवेरे ६-७ बजे से लेकर ११-१२ बजे दोपहर तक का समय। 'दिन' से भिन्न। जैसे—कल से कार्यालय प्रात काल हो गया है।

प्रातःकालिक—वि० [स० प्रात.काल+ठञ्—इक] प्रात काल-संबंधी। प्रात.काल का।

प्रातःकालीन—वि० [स० प्रात काल+ख—ईन]=प्रात कालिक।

प्रातःसंध्या—स्त्री० [स० स०त० स०] प्रातःकाल की जानेवाली संध्या (ईश्वरोपासना)।

प्रातःसवन—पु० [स० मध्य० स०] तीन प्रधान सवनो (सोम-यागों) मे से पहला सवन जो प्रात.काल किया जाता है।

प्रातःस्नान—पु० [स० ष० त० वा स० त०] प्रात.काल या सबेरे का स्नान।

प्रातःस्नायी (यिन्)—वि० [स० प्रात √स्ना+णिनि] प्रात काल स्नान करनेवाला। सबेरे नहानेवाला।

प्रातःस्मरण—पु० [स० स० त०] सबेरे के समय ईश्वर, देवतादि का किया जानेवाला जप, पाठ या भजन।

प्रातःस्मरणीय—वि० [स० स० त०] जिसे प्रात.काल स्मरण करना उचित हो, अर्थात् परम पूज्य और श्रेष्ठ।

प्रात—अव्य० [स० प्रात] प्रभात के समय। बहुत सबेरे। तडके।
पु० प्रातःकाल। सबेरा।

प्रातकाली—स्त्री० दे० 'पाराती' (गीत)।

प्रात-कृत—पु०- प्रात कृत्य।

प्रातनाथ—पु० [स० प्रातनथि] सूर्य।

प्रातर्—अव्य० [स० प्र√अत्+अरन्] प्रभात के समय। सबेरे।
पु० पुष्पार्ण के पुत्र एक देवता जो प्रभा के गर्भ से उत्पन्न हुए।

प्रातरनुवाक—पु० [स० मध्य० स०] ऋग्वेद के अतर्गत वह अनुवाक जो प्रातःसवन नामक कर्म के समय पढा जाता है।

प्रातरभिवादन—पु० [स० ष० त०] बड़ो का वह अभिवादन जो प्रात काल सोकर उठने के समय किया जाय।

प्रातराश—पु० [स० ष० त०] प्रातःकाल किया जानेवाला हलका भोजन। जलपान। कलेवा।

प्रातर्दन—पु० [स० प्रतर्दन+अण्] प्रतर्दन के गोत्र मे उत्पन्न पुरुष। प्रतर्दन का अपत्य।
वि० प्रतर्दन-सबधी। प्रतर्दन का।

प्राति—स्त्री० [सं०√प्रा (पूर्ति)+क्तिन्] १. अँगूठे और तर्जनी के बीच का स्थान। पितृ-तीर्थ। २. लाभ। ३. पूर्ति।

प्रातिकूलिक—वि० [सं० प्रतिकूल+ठक्—इक] विरुद्ध।

प्रातिकूल्य—पु० [स० प्रतिकूल+ष्यञ्] १ प्रतिकूल या विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। २ हिन्दू धर्म-शास्त्रों के अनुसार इस बात का विचार कि परस्पर प्रतिकूल अवस्थाओ मे कोई काम कब और कैसे करना चाहिए। जैसे—घर मे अशौच होने पर मागलिक और शुभ कार्य करने के समय आदि का विचार।

प्रातिज्ञ—पु० [स० प्रतिज्ञा+अण्] तर्क या विवाद का विषय।

प्रातिदैवसिक—वि० [स० प्रतिदिवस+ठञ्—इक] प्रति दिवस अर्थात् नित्य होनेवाला। दैनिक।

प्रातिनिधिक—वि० [स० प्रतिनिधि√ठक्—इक] १. प्रतिनिधि सम्बन्धी। प्रतिनिधि का। २ प्रतिनिधि के रूप मे होनेवाला।
पु० १ प्रतिनिधि। २. स्थानापन्न।

प्रातिपक्ष—वि० [स० प्रतिपक्ष+अण्] १ विरुद्ध। प्रतिकूल। २. प्रतिपक्षवाला।

प्रातिपथिक—वि० [स० प्रतिपथ+ठक्—इक] यात्रा करनेवाला।
पु० यात्री।

प्रातिपद—वि० [स० प्रतिपद्+अण्] १ प्रतिपदा-सबधी। २ प्रतिपदा के दिन होनेवाला। ३. आरभिक।

प्रातिपदिक—पु० [स० प्रतिपद्+ठञ्—इक] १ अग्नि। २. धातु। ३ सस्कृत व्याकरण मे धातु और प्रत्यय से भिन्न कोई सार्थक शब्द। ४. कोई कृदन्त, तद्धित और समस्त पद।
वि०=प्रातिपद।

प्रातिभ—वि० [स० प्रतिभा√अण्] १ प्रतिभा-सबधी। प्रतिभा का। २ प्रतिभा से उद्भूत। प्रतिभाजन्य। ३ मानसिक।
पु० १ प्रतिभा से युक्त या सपन्न व्यक्ति। प्रतिभाशाली मनुष्य। २. योग साधन मे होनेवाले पाँच प्रकार के उपसर्गों या विघ्नो मे से एक जो साधक की प्रतिभा के कारण उत्पन्न होता है, और जिसमे वेद-शास्त्रों, कलाओ, विद्याओं आदि से सबध रखनेवाले विचार मन मे उत्पन्न होकर उसे एकाग्र नही होने देते।

प्रातिभाज्य—वि० [स० प्रति√भज्+णिच्+यत्] (पदार्थ) जिस पर प्रति-भाग नामक शुल्क लगता या लग सकता हो।

प्रातिभाव्य—पु० [स० प्रतिभू+ष्यञ्] १. प्रतिभू होने की अवस्था या भाव। २ जमानत।

प्रातिभासिक—वि० [स० प्रतिभास+ठक्—इक] १. प्रतिभास-सबधी। अनुरूपक। २. जो अस्तित्व मे न हो, या जिसका अस्तित्व भ्रममूलक हो। ३. जो व्यवहारिक न हो।

प्रातिलोमिक—वि० [स० प्रतिलोम+ठक्—इक] प्रतिलोम-सबधी, या प्रतिलोम के रूप मे होनेवाला। 'अनुलोमिक' का विपर्याय। २. प्रतिकूल। विरुद्ध। ३. अप्रिय। अरुचिकर।

प्रातिलोम्य—पु० [स० प्रतिलोम+ष्यञ्] प्रतिलोम होने की अवस्था या भाव।

प्रातिवेशिक—पु० [स० प्रतिवेश+ठक्—इक]=प्रतिवेशी (पडोसी)।

प्रातिवेश्य—पु० [स० प्रतिवेश+ष्यञ्] प्रतिवेश मे रहने की अवस्था या भाव। पड़ोस।

प्रातिवेश्यक—पु० [स० प्रातिवेश्य+कन्] पडोसी।

प्रातिशाख्य—पु० [स० प्रतिशाखा+ञ्य] ऐसा ग्रथ जिसमे वेदो के किसी शाखा के स्वर, पद, संहिता, सयुक्त वर्णों के उच्चारण आदि का निर्णय या विचार किया गया हो।

प्रातिहत—पुं० [सं० प्रतिहत+अण्] स्वरित।

प्रातिहर्त्र—पुं० [सं० प्रतिहर्तृ+अण्] प्रतिहर्ता का काम, पद या भाव।

प्रातिहार—पुं० [सं० प्रतिहार+अण्] १ जादूगर। बाजीगर। २ दरबान। द्वार-पाल।

प्रातिहारक—पुं०=प्रातिहार।

प्रातिहारिक—वि० [सं० प्रतिहार+ठञ्—इक] प्रतिहार-संबंधी।
पुं० प्रातिहार।

प्रातिहार्य—पुं० [सं० प्रतिहार+ष्यञ्] १ इंद्रजाल। बाजीगरी। २ कोई चमत्कारी खेल। करामात। ३. द्वारपाल का काम, पद या भाव।

प्रातीतिक—वि० [सं० प्रतीति+ठञ्—इक] १. जिससे प्रतीति होती हो या जो प्रतीति कराता हो। २ मन या कल्पना मे होनेवाला। काल्पनिक या मानसिक।

प्रातीप—पुं० [सं० प्रतीप+अण्] १ प्रतीप का अपत्य या वंशज। २ प्रतीप के पुत्र शांतनु।

प्रातीपिक—वि० [सं० प्रतीप+ठञ्—इक] १ प्रतीप-संबंधी। प्रतीप का। २ प्रतिकूल आचरण करनेवाला। विरुद्धाचारी। ३ उलटा। विपरीत।

प्रात्यंतिक—पुं० [सं० प्रत्यंत+ठञ्—इक] १. सीमा पर स्थित राज्य। २ सीमा की रक्षा करनेवाला अधिकारी।

प्रात्यक्ष—वि० [सं० प्रत्यक्ष+अण्] १ प्रत्यक्ष नामक प्रमाण के रूप मे होनेवाला। २ उक्त प्रमाण-संबंधी।

प्रात्यक्षिक—वि० [प्रत्यक्ष+ठक्—इक]=प्रात्यक्ष।

प्रात्ययिक—पुं० [सं० प्रत्यय+ठक्—इक] मिताक्षरा के अनुसार तीन प्रकार के प्रतिभुओं मे से दूसरा। वह जो किसी को पहचान कर के उसका प्रतिभू बने।
वि० १ प्रत्यय के रूप मे होनेवाला। २ प्रत्यय-संबंधी।

प्रात्यहिक—वि० [सं० प्रत्यह+ठक्—इक] प्रतिदिन का। दैनिक।

प्राथमकल्पिक—पुं० [सं० प्रथमकल्प+ठक्—इक] वह विद्यार्थी जिसने वेद का अध्ययन अथवा योग साधन का आरंभ कर दिया हो।
वि० प्रथम कल्प का।

प्राथमिक—वि० [सं० प्रथम+ठक्—इक] [भाव० प्राथमिकता] १ क्रम, गिनती आदि के विचार से आरंभ मे आने या पड़नेवाला। २. जो उक्त विचार के आधार पर आरम्भ मे या पहले होता हो। (प्राइमरी)। जैसे—प्राथमिक विद्यालय ३. जिससे किसी चीज या बात का आरम्भ सूचित होता है। जैसे—कमल रोग के यह प्राथमिक लक्षण हैं।

प्राथमिक उपचार—पुं० [सं० (कर्म० स०)] अचानक किसी के बीमार पड़ने, घायल होने, जल जाने आदि की अवस्था मे, योग्य चिकित्सक के पहुँचने से पहले किया जानेवाला वह उपचार जो पीड़ित या रोगी की पीड़ा या रोग अधिक बढ़ने न दे। प्राथमिक चिकित्सा। (फर्स्ट एड)

प्राथमिक चिकित्सा—स्त्री० [सं० कर्म० स०]=प्रथमोपचार। (देखें)

प्राथमिकता—स्त्री० [सं० प्राथमिक+तल्—टाप्] १ प्रथम स्थान में होने अथवा रखे जाने की अवस्था या भाव। २ किसी काम, बात या व्यक्ति को औरों से पहले दिया जाने अथवा मिलनेवाला अवसर या स्थान। प्रथमता। (प्रायोरिटी)

प्राथमिक शिक्षा—स्त्री० [सं० कर्म० स०] वह शिक्षा जो नये विद्यार्थियों को आरंभ मे दी जाती है। विशेषत छोटे बालकों को बिलकुल आरंभिक कक्षाओं मे दी जानेवाली शिक्षा जिसमे उन्हें लिखना-पढ़ना सिखलाया जाता है। (प्राइमरी एजुकेशन)
विशेष—आज-कल विद्यालयो की आरंभिक ४ या ५ कक्षाओं तक की शिक्षा इसी के अंतर्गत मानी जाती है।

प्राथम्य—पुं० [सं० प्रथम+ष्यञ्] १ 'प्रथम' होने की अवस्था या भाव। प्रथमता। पहलापन। २ दे० 'प्राथमिकता'।

प्रादक्षिण्य—वि० [सं० प्रदक्षिण+ष्यञ्] प्रदक्षिण-संबंधी।

प्रादर्शनिक—वि० [सं० प्रदर्शन+ठक्—इक] १ प्रदर्शन-संबंधी। २. (काम या बात) जो प्रदर्शन के रूप मे अथवा प्रदर्शन के लिए हो। प्रदर्शनात्मक। (डिमान्स्ट्रेटिव)

प्रादानिक—वि० [सं० प्रदान+ठक्—इक] १ प्रदान-संबंधी। २ जो दान या प्रदान करने के योग्य हो।

प्रादीपिक—पुं० [सं० प्रदीप+ठक्—इक] घर-खेत आदि मे आग लगानेवाला व्यक्ति।
वि० प्रदीप संबंधी। प्रदीप का।

प्रादुर्भवन—पुं० [सं०] दे० 'प्रोद्भवन'।

प्रादुर्भाव—पुं० [सं० प्रादुर्√भू (होना)+घञ्] [भू० कृ० प्रादुर्भूत] १ जन्म धारण कर अस्तित्व मे आने का भाव। २ पुन, दोबारा या नये सिरे से अस्तित्व मे आना या पनपना। ३ विकास।

प्रादुर्भूत—भू० कृ० [सं० प्रादुर्√भू+क्त] १ जिसका प्रादुर्भाव हुआ हो। २ विकसित। ३. उत्पन्न। ४ दे० प्रोद्भूत।

प्रादुर्भूत-मनोभवा—स्त्री० [ब० स०] केशव के अनुसार मध्या नायिका के चार भेदों मे से एक। ऐसी नायिका जिसके मन मे काम का पूरा प्रादुर्भाव होता हो और कामकला के समस्त चिह्न प्रकट होते हों। साहित्य दर्पण मे इसे प्ररूढ-स्मर-यौवना लिखा है।

प्रादेश—पुं० [सं० प्र+दिश (बताना)+घञ्, दीर्घ] १. अधिकारिक रूप से दिया हुआ कोई आदेश, विशेषत लिखित आदेश। २ वह आदेशात्मक अधिकार जो प्रथम महायुद्ध के बाद राष्ट्र-संघ (लीग आफ नेशन्स) की ओर से कुछ बड़े-बड़े राष्ट्रों को विजित उपनिवेशों, प्रदेशो आदि की शासनिक व्यवस्था के लिए दिया गया था। (मैनडेट) ३ तर्जनी और अँगूठे के सिरो के बीच की अधिकतम दूरी जो नाप मे १२ उँगलियो के बराबर होती है। ४ तर्जनी और अँगूठे का बीच का भाग। ५. प्रदेश। ६ जगह। स्थान।

प्रादेशात्मक—वि० [सं० प्रदेशात्मक+अण्] (व्यवस्था) जो किसी प्रादेश के अनुसार हो। (मैनडेटरी)

प्रादेशिक—वि० [सं० प्रदेश+ठक्—इक] [भाव० प्रादेशिकता] १. प्रदेश-संबंधी। किसी एक प्रदेश का। जैसे—प्रादेशिक परिषद्, प्रादेशिक भाषा। २ प्रदेश के भीतरी कामो या भागों से संबंध रखनेवाला अथवा उनमे रहने या होनेवाला। (टेरिटोरियल) जैसे—प्रादेशिक सेना। ३. किसी प्रसंग या प्रस्तुत विषय के अनुसार या उससे संबद्ध। प्रसंग-गत।
पुं० १. सरदार। सामंत। २ किसी प्रदेश का प्रधान अधिकारी। सूबेदार।

प्रादेशिकता—स्त्री० [सं० प्रादेशिक+तल्—टाप्] प्रांतीयता।

प्रादेशिक समुद्र—पु० [स०] किसी देश या प्रदेश के समुद्री तट के सामने के समुद्र का कुछ विशिष्ट भाग जिसमें दूसरे देशों के जहाजों को बिना अनुमति प्राप्त किये आने का अधिकार नहीं होता।

विशेष—पहले इसका विस्तार समुद्री तट से तीन मील की दूरी तक माना जाता था, परन्तु अब बड़ी-बड़ी दूरमार तोपों के बन जाने के कारण यह विस्तार बढ़ाकर बारह मील कर दिया गया है।

प्रादेशिक सेना—स्त्री० [स० कर्म० स०] किसी देश या प्रदेश के भीतरी भागों या सीमाओं के अन्दर रहकर स्थानिक सुरक्षा, शांति आदि की व्यवस्था करनेवाली सेना। (टेरिटोरियल आर्मी)

प्रादेशी (शिन्)—वि० [स० प्रादेश+इनि] जो लंबाई में एक प्रादेश हो।

प्रादोष—वि० [सं० प्रदोष+अण्]=प्रादोषिक।

प्रादोषिक—वि० [स० प्रदोष+ठक्—इक्] १ प्रदोष-सबंधी। प्रदोष का।

प्राधनिक—वि० [स० प्रधन+ठक्—इक] १ विध्वसक या विनाशकारी अस्त्र। २ लडाई मे काम आनेवाला अस्त्र-शस्त्र।

प्राधा—स्त्री० [स० प्रधा+ण—टाप्] दक्ष की एक कन्या जो कश्यप ऋषि को ब्याही थी। पुराणो मे इसे गन्धर्वों और अप्सराओ की माता बतलाया है।

प्राधानिक—वि० [स० प्रधान+ठक्—इक] १. प्रधान (अध्यक्ष या मुखिया) से सबध रखनेवाला। जैसे—प्राधानिक शासन। २. उच्च कोटि का। उत्तम।

प्राधानिक शासन—पु० [स० कर्म० स०] वह शासन प्रणाली जिसमे प्रधान अर्थात् अध्यक्ष राज्य का मुख्य तथा सर्वोपरि शासक होता है। मन्त्रि-मडलीय शासन-प्रणाली से भिन्न। (प्रेजीडेंशियल गवर्नमेंट)

प्राधान्य—पु० [स० प्रधान+ष्यञ्] १ प्रधान होने की अवस्था या भाव। २ वह स्थान या स्थिति जिसमें किसी चीज की अधिकता होती है। श्रेष्ठता।

प्राधिकरण—पु० [स० प्र-अधिकरण, प्रा० स०] १ प्राधिकार देना। (अथारिजेशन) २. प्राधिकारी का विशिष्ट अधिकार, कार्यालय या पद।

प्राधिकार—पु० [स० प्र+अधिकार] १ वह विशिष्ट अधिकार या शक्ति जिसके अनुसार औरों को कुछ करने की आज्ञा या आदेश दिया जा सकता हो, उसका पालन कराया जा सकता हो और महत्त्व की बातों का अतिम निर्णय किया जा सकता हो (ऑथारिटी) २. वह अधिकार जिससे अनेक प्रकार की ऐसी सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, जिनसे कठिनाइयो, बाधाओं आदि से सहज मे बचा जा सकता हो। (प्रिविलेज)

प्राधिकारिक—वि० [सं० प्राधिकार+ठक्—इक] १. प्राधिकार से सबध रखने या प्राधिकार के रूप में होनेवाला। २ प्राधिकारी से सबध रखनेवाला।

प्राधिकारी (रिन्)—पु० [सं० प्र-अधिकारिन्, प्रा० स०] १ राज्य, शासन आदि का वह अधिकारी जिसे किसी क्षेत्र या विभाग मे अधिकार प्राप्त हों। २. कोई ऐसा व्यक्ति जिसे किसी कार्य या विषय का बहुत अच्छा अनुभव या ज्ञान हो; और इसी लिए जिसका मत साधारणत सबके लिए मान्य होता हो। (अथॉरिटी, उक्त दोनों अर्थों के लिए)

प्राधिकृत—भू० कृ० [सं० प्र०-अधिकृत, प्रा० स०] १. जिसे कोई प्राधिकार या सुभीता दिया गया हो या मिला हो। जैसे—प्राधिकृत अभिकर्ता। २ जिसके लिए या जिसके सबध में प्राधिकार मिला हो। (आथोराइज्ड) जैसे—प्राधिकृत पूँजी।

प्राध्यापक—पु० [स० प्र-अध्यापक, प्रा० स०] १. उच्च अथवा महाविद्यालय मे किसी विषय की शिक्षा देनेवाला सबसे बडा अध्यापक। (प्रोफेसर) २ दे० 'प्रधानाध्यापक'।

प्राध्यापन—पु० [स० प्र-अध्यापन प्रा० स०] उच्च श्रेणियो के विद्यार्थियो का पढ़ाना।

प्राध्व—पु० [स० प्र अध्वन् प्रा० स०] १ बहुत बडा या लम्बा रास्ता। २. यात्रा के काम मे आनेवाली सवारी। ३ रथ।

वि० अधिक अतर पर स्थित। दूर।

प्रान†—पु०=प्राण।

प्रानी†—पु०=प्राणी।

प्रानेस†—पु०=प्राणेश।

प्राप—पु० [सं० प्र√ आप् (पाना)+घञ्] १ प्राप्ति। २ पहुँचना। जैसे—दुष्प्राप। ३ जल का प्रचुर होना।

वि० १.=प्राप्त। २=प्राप्य।

प्रापक—वि० [स० प्र√ आप्+ण्वुल्—अक] १ प्राप्ति-सबधी। २ प्राप्त करने या कराने वाला। (रिसीवर) ३ प्राप्त होने या मिलनेवाला।

पु० दे० 'आदायक'।

प्रापण—पु० [स० प्र√आप्+ल्युट्—अन] [वि० प्रापणीय, प्राप्य] १. प्राप्त करना या कराना। २ पहुँचाना।

प्रापणिक—पु० [स० प्रापण√ठक्—इक] व्यापारी।

प्रापणीय—वि० [स० प्र√आप+अनीयर] १ जो प्राप्त किया जा सके। प्राप्य। २ पहुँचाने योग्य।

प्रापत†—वि०=प्राप्त।

प्रापति†—स्त्री०=प्राप्ति।

प्रापना—अ० [स० प्रापण] प्राप्त होना। मिलना।

स० प्राप्त करना। पाना।

प्रापयिता (तृ)—वि० [स० प्र√आप्+णिच्+तृच्] प्राप्त करनेवाला।

प्रापी (पिन्)—वि० [स० प्र√आप्+णिनि] १. प्राप्त करनेवाला। २ पहुँचनेवाला। (समासात मे)

प्राप्त—भू० कृ० [प्र√आप्+क्त] [भाव० प्राप्ति] १ (अधिकार) गुण, धन, वस्तु आदि जिसे प्रयत्न करके अधिकार मे लाया गया हो अथवा जो यो ही या किसी अभिकरण के द्वारा हस्तगत हुआ हो। २ सामने आया हुआ। उपस्थित। जैसे—मृत्यु प्राप्त करना। ३. जो अनुभूत हुआ हो। जैसे—सुख प्राप्त होना।

प्राप्तकाल—पु० [ब० स०] १ कोई काम करने का उपयुक्त समय। २ मरने का समय। अतिम समय।

वि० (काम या बात) जिसका काल या समय आ गया हो।

प्राप्त-जीवन†—वि० [ब० स०] जिसे जीवन मिला हो।

प्राप्त-दोष—वि० [ब०स०] १ जिसमे कोई दोष आ गया हो। २ जिसने कोई दोष किया हो।

प्राप्त-पंचत्व—वि० [ब०स०] जो पचतत्त्वो को प्राप्त हुआ हो, अर्थात् मरा हुआ।

प्राप्त-प्रसवा—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] जो बच्चे को देनेवाली हो। जो प्रसव करने को हो।

प्राप्त बुद्धि—वि० [सं० ब० स०] १ जिसने फिर से चेतना या सज्ञा प्राप्त की हो। २ चतुर। ३. बुद्धिमान।

प्राप्त-यौवन—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० प्राप्त-यौवना] जिसमे जवानी आ गई हो।

प्राप्त रूप—वि० [स० ब० स०] १. जिसे रूप की प्राप्ति हुई हो, अर्थात् सुन्दर। २ आकर्षक। मनोहर। ३ बुद्धिमान। ४ विद्वान।

प्राप्तव्य—वि० [स० प्र० √आप्+तव्यत्] जो प्राप्त किया जा सके अथवा हो सके।

प्राप्तार्थ—वि० [स० प्राप्त-अर्थ, ब० स०] १ जिसे अर्थ की प्राप्ति हुई हो। २ सफल।

पु० मिला हुआ धन या वस्तु।

प्राप्ति—स्त्री० [स० प्र√ आप्+क्तिन्] १ प्राप्त होने अर्थात अपने अधिकार या हाथ मे आन या मिलने की क्रिया, अवस्था या भाव। हासिल होना। पाया जाना। मिलना। उपलब्धि। जैसे—धन या प्रत्र की प्राप्ति। २. कोई अवस्था या स्थिति आकर पहुँचना या प्रत्यक्ष होना। जैसे—दुःख या सुख की प्राप्ति। ३. इस रूप मे कोई चीज मिलना या हाथ मे आना कि उससे अपना आर्थिक या और किसी प्रकार का लाभ या हित हो। फायदा। लाभ। (गेन, उक्त सभी अर्थों में) जैसे—(क) आज-कल उन्हे व्यापार मे अच्छी प्राप्ति हो रही है। (ख) जहाँ उन्हे कुछ प्राप्ति की आशा होती है, वहीं वे जाते हैं। ४ किसी चीज या बात के आकर उपस्थित होने या पास पहुँचने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) पत्र या उसके उत्तर की प्राप्ति। (ख) यौवनावस्था की प्राप्ति। ५ कही से आनेवाली किसी चीज या बात को ग्रहण करना। (रिसेप्शन) जैसे—ध्वनियो की प्राप्ति हमारे कानो को होती है। ६ योगशास्त्र मे, आठ प्रकार की सिद्धियो मे से एक जो सभी अभीष्ट उद्देश्य या कामनाएँ पूरी करनेवाली कही गई है। ७ नाट्यशास्त्र मे, अभिनय का शुभ और सुखद अत या उपसहार। ८ किसी गुण, तत्त्व या बात का अधिगम या अर्जन। ९ फलित ज्योतिष मे, चद्रमा का ग्यारहवाँ स्थान जो किसी चीज या बात की प्राप्ति या लाभ के लिए शुभ माना गया है। १० भाग्य। ११ उदय। १२ मेल। सगति। १३ समिति या सघ। १४ प्रवृत्ति। १५. व्याप्ति। १६. कामदेव की एक पत्नी। १७. जरासध की एक पुत्री जो कस को ब्याही थी।

प्राप्तिका—स्त्री० [स० प्राप्ति+कन्—टाप्] वह पत्र जिसमे किसी वस्तु की प्राप्ति या पहुँच का नियमित रूप से उल्लेख हो। पावती। रसीद। (रिसीट)

प्राप्तिसम—पु० [स० तृ० त०] तर्क या न्याय मे एक प्रकार की जाति। ऐसी आपत्ति जो प्रस्तुत हेतु और साध्य अवशिष्ट बतलाकर की जाय।

प्राप्त्याशा—स्त्री० [स० प्राप्ति-आशा ष० त०] १ प्राप्ति की आशा। मिलने की आशा। २ नाट्यशास्त्र मे आरब्ध कार्य की वह अवस्था या स्थिति जिसमे उद्देश्य के सिद्ध होने की आशा होने लगती है।

प्राप्य—वि० [स० प्र√आप+ण्यत्] १ जो कही से या किसी से प्राप्त हो सकता हो या प्राप्त होने को हो। मिल सकने के योग्य। (एवेलेबुल) २ (बाकी धन या वस्तु) जो किसी की ओर निकलता हो और इसी लिए उससे आधिकारिक और आवश्यक रूप से प्राप्त किया जाने को हो या किया जा सकता हो। (ड्यू) ३. जिस तक पहुँच हो सके। गम्य।

प्राप्यक—पु० [स०] वह पत्र जिसमें किसी प्राप्य धन का ब्योरा होता है। विपत्र। (बिल)

प्राप्यक-समाहर्ता (र्तृ)—पु० [ष० त०] वह अधिकारी जो प्राप्यक का बाकी धन उगाहने का काम करता है। (बिल कलक्टर)

प्राबल्य—पु० [स० प्रबल+ष्यञ्] १ प्रबलता। २. प्रधानता।

प्राबोधक—पु० [स० प्रबोधक + अण्] प्रात काल राजाओ को उनकी स्तुति सुनाकर जगाने के लिए नियुक्त किया हुआ कर्मचारी। बंदी।

प्राबोधिक—पु० [स० प्रबोध√ठक्—इक] = प्रबोधक।

प्राभजन—वि० [स० प्रभजन√अण्] १ प्रभजन या वायुदेवता-सबंधी। २ वायु देवता द्वारा आधिष्ठित।

पु० स्वाति (नक्षत्र)।

प्राभव—पु० [स० प्रभु+अण्] प्रभुता। प्रभुत्व।

प्राभवत्य—पु० [स० प्रभवत्+ष्यञ्] प्रभुता। प्रभुत्व।

प्राभातिक—वि० [स० प्रभात√ठक्—इक] १ प्रभात मे होनेवाला। २ प्रभात-सबधी।

पु० प्रभात मे गाये जानेवाले एक तरह के गीत।

प्राभाविक—वि० [स० प्रभाव√ठक्—इक] प्रभाव उत्पन्न करने या दिखलानेवाला। (एफेक्टिव)

प्राभासिक—वि० [स० प्रभास+ठक्—इक] १ प्रभास देश-सबधी। २ प्रभास देश मे बनने, रहने या होनेवाला।

प्राभियोजक—वि०· अभियोजक।

प्राभियोजन—पु० अभियोजन।

प्राभृत—पु० [स० प्र-आ+भृ (धारण) √क्त] १ उपहार। भेंट। २ राजाओ, सम्राटो आदि को दिया जानेवाला नजराना।

प्रामडलिक—वि० [स० प्रमडल+ठक्—इक] १ प्रमडल-सबधी। २. दे० 'प्राखडिक'।

प्रामाणिक—वि० [स० प्रमाण+ठक्—इक्] [भाव० प्रामाणिकता] १. जो प्रत्यक्ष आदि प्रमाणो के द्वारा सिद्ध हो। २ जो प्रमाण के रूप मे माना जाता हो या माना जा सकता हो। (ऑथारिटेटिव) ३ ठीक या सत्य। ४ जिसके अच्छे या सच्चे होने मे किसी को सदेह न हो। जिसकी साख जमी या बनी हो। सब जगह ठीक माना जानेवाला। ५ जो शास्त्रो आदि से प्रमाणित या सिद्ध हो। ६. (व्यक्ति) जो अच्छे प्रमाण मानता हो।

पु० १ शास्त्रज्ञ। २ व्यापारियो का चौधरी या मुखिया।

प्रामाण्य—पु० [स० प्रमाण+ष्यञ्] १ प्रमाण। २ प्रमाणो के ज्ञाता होने की अवस्था या भाव। ३ मर्यादा। ४ विश्वसनीयता।

प्रामादिक—वि० [स० प्रमाद+ठक्-इक] १. प्रमाद-सबधी। प्रमाद का। २. प्रमाद के कारण होनेवाला। ३ जिसमें कोई दोष या भूल हो।

प्रामिसरी—वि० [अ०] १ जो प्रतिज्ञा, वचन आदि के रूप में हो। २ जिसमे किसी बात की प्रतिज्ञा की गई हो। जैसे—प्रामिसरी नोट। (दे०)

प्रामिसरी नोट—पु० [अ०] १. वह पत्र जिसमें आधिकारिक रूप से वह

लिखा होता है कि अमुक मिति को माँगने पर मैं इतना धन इसके बदले में दूँगा। २. वह राजकीय ऋणपत्र जिसमें शासन द्वारा अपनी प्रजा से लिये हुए ऋण का उल्लेख तथा यह प्रतिज्ञा लिखी रहती है; कि मूल तथा सूद अमुक समय पर चुका दिया जायगा।

प्रामोदिक—वि० [सं० प्रमोद+ठक्—इक] १ प्रमोदजनक। आनंद-दायक। २. सुंदर।

प्रायः—अव्य० [सं० प्र√अय् (गति)+असुन्] १. अधिकतर अवसरों, अवस्थाओं आदि मे। अक्सर। २ करीब-करीब। लगभग। ३ बीच बीच में। जल्दी जल्दी। जैसे—मुझे प्राय उनके यहाँ जाना पड़ता है।

प्राय—वि० [सं० प्र√अय् (गति)+घञ्] १. रूप,स्थिति आदि के विचार से किसी के बहुत-कुछ अनुरूप या समान। कुछ बातों में किसी से मिलता-जुलता या उस तक पहुँचता हुआ। (प्राय यौ० के अंत में) जैसे—भ्रष्ट प्राय, मृतप्राय आदि। (और कभी कभी यौ० के आरंभ मे भी) जैसे—प्राय-द्वीप। २. किसी तत्त्व या बात से बहुत अधिक युक्त या भरा हुआ। जैसे—कष्ट-प्राय शरीर, जल-प्राय देश।

पु० १ अनशनादि जिनसे मनुष्य शक्तिहीन होकर मृतक के तुल्य हो जाता या मर जाता है। २. मृत्यु। मौत। ३ अवस्था। उमर। वय।

प्रायगत—वि० [सं० द्वि० त०] जिसके मरने में अधिक विलंब न हो। मरणासन्न।

प्रायण—पु० [सं० प्र√अय्+ल्युट्—अन+] १ एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाना। प्रयाण। २ एक शरीर छोड़कर दूसरा शरीर धारण करना। ३ दूसरा जन्म। जन्मान्तर। ४. अनशन करते हुए अर्थात् खाना-पीना छोड़कर प्राणदेना या मरना। ५ अनशन, व्रत आदि की समाप्ति पर किया जानेवाला जलपान या भोजन। ६ एक तरह का दूध से बनाया हुआ व्यंजन। ७ प्रवेश। ८ आरंभ। ९ शरण।

प्रायणीय—पु० [सं० प्रयण+छ—ईय] १. सोमयाग मे पहली सुत्या के दिन का कर्म। २. आरंभिक कृत्य।

वि० आरंभ या शुरू में होनेवाला। आरंभिक। जैसे—प्रायणीय कर्म, प्रायणीय याग।

प्रायद्वीप—पु० [सं० प्रायोद्वीप] स्थल का वह भाग जो, तीन ओर से समुद्र से घिरा हो और जिसके केवल एक ओर स्थल मिला हो। (पेनिन्सुला)

प्रायद्वीप खंड—पु० [सं०] भूगोल मे स्थल खंड का वह छोटा संकरा भाग जिसके तीन ओर जल रहता हो और जो जल में नुकीली चोंच के रूप में बढ़ा हुआ होता है।

प्रायशः—अव्य० [सं० प्राय०+शस्] प्रायः। अक्सर।

प्रायश्चित्त—पुं० [सं० प्राय-चित् ष० त०, सुट् आगम] १ किये हुए दुष्कर्म या पाप के फल-भोग से बचने के लिए किये जानेवाला शास्त्र विहित कर्म जो बहुधा दंड के रूप में होते हैं। जैसे—दान, व्रत आदि। जैनों के अनुसार आलोचना, प्रतिक्रम्य, आलोचना प्रतिक्रमण, विवेक, व्युत्सर्ग, तप, छेद, परिहार और उपस्थान ये नौ प्रकार के प्रायश्चित माने गये हैं। २. अपने प्रति किया जानेवाला वह कठोर आचरण जो अपने किसी कार्य अथवा उसके परिणाम से क्षुब्ध होकर या ग्लानिवश किया जाता है। ३ साधारण बोल-चाल मे, अपने किसी दोष, प्रमाद, भूल आदि के फलस्वरूप होनेवाला किसी प्रकार का कष्ट या हानि।

प्रायश्चित्तिक—वि० [सं० प्रायश्चित्त+ठक्—इक] १ प्रायश्चित-संबधी। प्रायश्चित्त का। २ (दूषित कार्य) जिसके लिए प्रायश्चित्त करना आवश्यक या उचित हो।

प्रायश्चित्ती (त्तिन्)—वि० [सं० प्रायश्चित्त+इनि] १ (व्यक्ति) जिसे प्रायश्चित्त करना आवश्यक या उचित हो। २ प्रायश्चित्त करनेवाला।

प्रायश्चित्तीय—वि० -[सं० प्रायश्चित्त+छ—ईय] प्रायश्चित-संबधी। प्रायश्चित्त का।

प्रायाणिक—वि० [सं० प्रयाण+ठक्—इक] प्रयाण-संबधी। प्रयाण या यात्रा का।

पु० यात्रा के समय शुभ माने जानेवाले शंख, चवँर, दही आदि मांगलिक द्रव्य।

प्रायिक—वि० [सं० प्राय+ठक्—इक] [भाव० प्रायिकता] १ जो नियमित रूप से या सदा तो नहीं फिर भी बीच-बीच मे प्राय होता रहता हो। (यूजुअल) जैसे—सावन-भादो मे वर्षा प्रायिक होती है। २. अनुमान, संभावना आदि के विचार से बहुत-कुछ ठीक तथा संभव।

प्रायोगिक—वि० [सं० प्रयोग+ठक्—इक] १ प्रयोग-संबंधी। प्रयोग का। २ उपयोगी, ठीक या मान्य सिद्ध करने के लिए अभी जिसका प्रयोग या परीक्षा मात्र हो रही हो। (एक्सपेरिमेन्टल) ३. प्रयोग के रूप मे किया या काम मे लाया जानेवाला। (एप्लाएड) ४ क्रिया-त्मक। व्यावहारिक।

प्रायोगिक-कला—स्त्री० [सं० कर्म० स०] व्यवहारिक कला।

प्रायोगिक-विज्ञान—पु० [सं० कर्म स०] व्यावहारिक विज्ञान।

प्रायोज्य—वि० [सं० प्र-आ√युज् (जोड़ना)+णिच् ण्यत्] जिससे कोई प्रयोजन सिद्ध होता हो। उपयोग या प्रयोग मे आनेवाला।

पु० ऐसी वस्तु या वस्तुएँ जिनका काम किसी को नित्य पड़ता हो।

प्रायोपगमन—पु० [सं० प्राय-उपगमन, ष० त०] आमरण अनशन।

प्रायोपविष्ट—वि० [सं० प्राय-उपविष्ट, सुप्सुपा स०] जो आमरण अनशन कर रहा हो।

प्रायोपवेश—पु० [सं० प्राय-उपवेश, सुप्सुपा स०] प्रायोपगमन। आमरण अनशन।

प्रायोपवेशन—पु०=प्रायोपमन।

प्रायोपवेशी (शिन्)—वि० [सं० प्रायोपवेश+इनि] [स्त्री० प्रायोप-वेशिनी] आमरण अनशन करनेवाला।

प्रायोभावी (विन्)—वि० [सं० प्रायस्√भू (होना)+णिनि] जो प्राय या सब जगह हो अर्थात् साधारण या सामान्य।

प्रायौगिक—वि०=प्रायोगिक।

प्रारंभ—पु० [सं० प्र-आ√रम्+घञ्, मुम्] १. किसी काम या बात का चलने लगना या जारी होना। २. किसी कार्य या बात का पहले या शुरूवाला अंश। जैसे—प्रारंभ में तो आपने कुछ और ही कहा था।

प्रारंभण—पु० [सं० प्र-आ√रम्+ल्युट्—अन, मुम्] [भू० कृ० प्रारब्ध] प्रारंभ या शुरू करना।
प्रारंभिक—वि० [सं० प्रारंभ]+ठक्—इक] १. प्रारंभ मे होनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला। २ दे० 'प्राथमिक'।
प्रारक्षण—पु० [सं० प्र०√रक्ष्+ल्युट्—अन अण्] [भू० कृ० प्रारक्षित] कोई ऐसी क्रिया करना जिसके द्वारा कोई पद, वस्तु, व्यक्ति या स्थान मुख्य रूप से या किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए अलग करके रक्षित रखा जाता हो। किसी काम या बात के लिए निश्चित रूप से पृथक् करने अथवा रखने की क्रिया या भाव। (रिज़र्वेशन) जैसे—रंग-मंच पर संसद् के सदस्यो (अथवा स्त्रियो) के लिए होनेवाला आसनो या स्थानो का प्रारक्षण।
प्रारक्षित—भू० कृ० [सं० प्र-अ√रक्ष+क्त] जिसका या जिसके संबंध मे प्रारक्षण हुआ हो। किसी विशिष्ट उद्देश्य से या विशिष्ट व्यक्ति के लिए अलग किया या रखा हुआ। (रिज़र्व्ड) जैसे—इस विभाग मे प्रारक्षित १० पद हरिजनो (या पिछडी हुई जातियो के लोगो) के लिए है।
प्रारब्ध—वि० [सं० प्र-आ√रम्+क्त] (काम) आरंभ किया हुआ। जो शुरू किया गया हो।
पु० १ पूर्व जन्म अथवा पूर्वकाल मे किये हुए अच्छे और बुरे वे कर्म जिनका वर्तमान मे फल भोगा जा रहा हो।२ उक्त कर्मों का फलभोग।
विशेष—इसके दो मुख्य भेद हैं—(क) संचित प्रारब्ध जो पूर्व जन्मो के कर्मों के फल-स्वरूप होता है, और (ख) क्रियमान प्रारब्ध जो इस जन्म मे किये हुए कर्मो के फलस्वरूप होता है। इसके सिवा अनिच्छा प्रारब्ध, परेच्छा प्रारब्ध और स्वेच्छा प्रारब्ध नाम के तीन गौण भेद भी है।
३ किस्मत। तकदीर। भाग्य।
प्रारब्धि—स्त्री० [सं० प्र-आ√रम्+क्तिन्] १ आरंभ। २ हाथी बाँधने का रस्सा।
प्रारब्धी (ब्धिन्)—वि० [सं० प्रारब्ध+इनि] भाग्यवाला। भाग्यवान्।
प्रारूप—पु०=प्रालेख। 'प्रारूप' व्याकरण से असिद्ध है।
प्रारूपिक—वि० [सं० प्रारूप+ठक् इक।] गुण, रूप आदि के विचार से जो अपने वर्ग की सब विशेषताओ से युक्त हो और अपने वर्ग के प्रतिनिधि या प्रतीक का काम देता हो। प्ररूपी। (टिपिकल)
प्रार्जुन—पु० [सं०] एक प्राचीन देश।
प्रार्थक—वि० =प्रार्थी।
प्रार्थन—पु० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+ल्युट्—अन] प्रार्थना करने की क्रिया या भाव।
प्रार्थना—स्त्री० [सं० प्र√अर्थ+णिच् युच्-अन, टाप्] १. नम्रतापूर्वक निवेदित की जानेवाली बात। निवेदन। (रिक्वेस्ट) २ भक्ति और श्रद्धापूर्वक ईश्वर, देवता आदि से अपने किसी के अथवा सबके कल्याण के लिए कही जानेवाली बात। ३. विशिष्ट संप्रदायो आदि के वे गेय पद जिनमें मंगल-कामना के भाव होते हैं। ४. तंत्र मे, प्रार्थना के समय की एक विशिष्ट मुद्रा। ५. मुकदमे के आरंभ के लिए न्यायालय से किया जानेवाला लिखित निवेदन। अरजी-दावा। ६ इच्छा। †स० प्रार्थना करना।
प्रार्थना-पत्र—पु० [ष० त०] वह पत्र जिसमे किसी प्रकार की प्रार्थना लिखी हो। निवेदनपत्र। अर्जी। जैसे—अमुक बालक का छुट्टी के लिए प्रार्थना-पत्र आया था।
प्रार्थना-भंग—पु० [ष० त०] प्रार्थना अस्वीकृत करना।
प्रार्थना-समाज—पु० [सं० ष० त०] एक आधुनिक संप्रदाय जिसके अनुयायी महाराष्ट्र की ओर अधिक हैं।
प्रार्थनीय—वि० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+अनीयर] जिसके संबंध में प्रार्थना की गई हो या की जाने को हो।
पु० द्वापर युग।
प्रार्थयितव्य—वि० [सं० प्र√अर्थ्+णिच्√तव्यत्] जिसके लिए या जिससे प्रार्थना की जा सके या की जाने को हो।
प्रार्थयिता (तृ)—वि० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+तृच्]=प्रार्थी।
प्रार्थित—भू० कृ० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+क्त] जिसके लिए प्रार्थना की गई हो। माँगा हुआ। याचित।
प्रार्थी (र्थिन्)—वि० [सं० प्र√अर्थ+णिच्+णिनि] [स्त्री प्रार्थिनी] १ प्रार्थना करनेवाला। याचक। २ प्रार्थना-पत्र देनेवाला। ३ इच्छुक। ४ उम्मीदवार।
प्रार्थ्य—वि०=प्रार्थनीय।
प्रालंब—पु० [सं० प्र-आ लम्ब् (लटकना)+अच्] १ रस्सी या ऐसी ही कोई चीज जो किसी ऊँची वस्तु मे टँगी और लटकती हो। २ ऐसी माला या हार जो पहना जाने पर छाती तक लटकता हो।
प्रालंबक—पु० [सं० प्रालंब+कन्] [स्त्री० प्रालंबिका] छाती तक लटकने-वाली माला या हार।
प्राल†—पु०=पराल।
प्रालब्ध—पु०=प्रारब्ध।
प्रालेख—पु० [सं० प्र-अ√लिख् (लिखना)+घञ्] लेख, लेख्य, विधान आदि का वह टंकित-मुद्रित या हस्तलिखित आरंभिक रूप जो काट-छाँट, संशोधन आदि के लिए तैयार किया जाता है। खाका। मसौदा। (ड्राफ्ट)
प्रालेय—वि० [सं० प्रलय+अण् नि० एत्व, अथवा प्र-आ√ली (मिल जाना)+यत्] प्रलय-संबंधी। उदा०—व्यस्त बरसने लगा अश्रुमय यह प्रालेय हलाहल नीर। —प्रसाद।
पु० १. तुषार। २ बरफ। हिम। ३. भूगर्भशास्त्रानुसार वह समय जब बहुत अधिक हिम पडने के कारण उत्तरीय ध्रुव पर सब पदार्थ नष्ट हो जाते हैं और शीत की अधिकता के कारण कोई जतु या वनस्पति वहाँ नही रह सकती।
प्रालेय-रश्मि—पु० [ब० स०] चद्रमा।
प्रालेयांशु—पु० [सं० प्रालेय-अंशु, ब० स०] १ चद्रमा। २. कपूर।
प्रालेयाद्रि—पु० [सं० प्रालेय-अद्रि, ष० त०] हिमालय।
प्रावट—पु० [सं० प्र√अव् (रक्षण, गति आदि)+अट] जौ। यव।
प्रावर—पु० [सं० प्रआ√वृ (घेरना)+अप्] प्राचीर। चहार-दीवारी।
प्रावरण—पु० [सं० प्र—आ√वृ+ल्युट्—अन] १. ढाँकने का कपड़ा। आवरण। २ ढकना। ढक्कन। ३. उत्तरीय या ओढ़ने का कपड़ा। चादर।

प्रावरणीय—पुं० [सं० प्र—आ√वृ+अनीयर] ओढ़ने का वस्त्र। उपरना या दुपट्टा।
वि० जिससे कुछ ढका जाय या ढाका जा सके।

प्रावर्तन—पुं० [सं० प्र—आ√वृत् (बरतना)+ल्युट्—अन] दे० 'परावर्तन'।

प्रावसादन—पुं० [सं० प्र+अवसादन] १. वह स्थिति जिसमें मनुष्य थक या हारकर अकर्मण्य अक्रिय या उत्साहहीन हो। २ किसी तत्त्व या पदार्थ की वह स्थिति जिसमें वह अपनी क्रियाशीलता, शक्ति आदि से रहित होकर कुंठित हो रहा हो। ३ बाजार, रोजगार आदि में बेकारी या मंदी की स्थिति। ४. आकाश में वातावरण के दबाव का कम होना जिससे तापमापक आदि का पारा गिर जाता है। (डिप्रेशन, उक्त सभी अर्थों में)

प्रावार—पुं० [सं० प्र-आ√वृ+घञ्] [वि० प्रावारिक] १ एक प्रकार का प्राचीनकाल का बहुमूल्य कपड़ा। २ उत्तरीय वस्त्र।

प्रावारक—पुं० [सं० प्रावार+कन्] ओढ़ने का वस्त्र। उत्तरीय।

प्रावारिक—वि० [सं० प्रावार+ठक्—इक] प्रावार-संबंधी।
पुं० प्रवार बनानेवाला कारीगर।

प्रावालिक—पुं० [सं० प्रवाल+ठक्-इक] प्रवाल या मूँगे का व्यापार करनेवाला व्यापारी।

प्रावास—वि०=प्रावासिक।

प्रावासिक—वि० [सं० प्रवास+ठक्—इक] १. प्रवास-संबंधी। प्रवास का। २ जो प्रवास या यात्रा के लिए उपयुक्त हो।

प्राविट—स्त्री० [सं० प्रावृट्] पावस। वर्षा ऋतु।

प्राविधानिक—वि० [सं० प्रविधान+ठक्—इक] १ प्रविधान-संबंधी। २ प्रविधान के रूप में होनेवाला।

प्राविधिक—वि० [सं० प्रविधि+ठक्—इक] १ प्रविधि-संबंधी। प्रविधि का। कला, शिल्प, यंत्र आदि से संबंधित। (टेकनिकल) २ किसी कार्य की विशिष्ट प्रायौगिक तथा व्यावहारिक प्रक्रियाओं से संबंध रखनेवाला। तकनीकी। (टेकनिकल)

प्राविधिकता—स्त्री० [सं० प्राविधिक+तल्—टाप्] १ प्राविधिक होने की अवस्था या भाव। २. प्राविधिज्ञ की होनेवाली जानकारी। ३. ऐसी बात जिसका संबंध किसी प्राविधिज्ञ से हो और जिसका वही जानकार हो। (टेक्नीकेलिटी)

प्राविधिज्ञ—पुं० [सं० प्रविधिज्ञ] दे० 'प्रविधिज्ञ'।

प्राविन्ध्य—पुं० [सं०] क्रौंचद्वीप के एक खंड का नाम। (केशव)

प्रावीण्य—पुं० [सं० प्रवीण+ष्यञ्] प्रवीणता।

प्रावृट्—पुं० [सं० प्र√वृष् (बरसना)+क्विप्, दीर्घ] वर्षा ऋतु।

प्रावृत—पुं० [सं० प्र—आ√वृ (आच्छादित करना)+क्त] १. ओढ़ने का कपड़ा। चादर। २. ढकने का कपड़ा। आच्छादन।
वि० १ घिरा हुआ। २. ढका हुआ। आवृत।

प्रावृति—स्त्री० [सं० प्र-आ√वृ+क्तिन्] १. प्राचीर। चहारदीवारी। २. जैनों के अनुसार आत्मा की शक्ति को आच्छादित करनेवाला मल। ३. आध्यात्मिक अज्ञान।

प्रावृत्तिक—पुं० [सं० प्रवृत्ति+ठक्—इक] [स्त्री० प्रावृत्तिका] संदेशवाहक दूत।
वि० १ प्रवृत्ति-संबंधी। २. गौण। ३ विशेष जानकारी रखनेवाला।

प्रावृष—स्त्री० [सं० प्र√वृष्+क्विप्, दीर्घ] वर्षा ऋतु।

प्रावृषा—स्त्री० [सं० प्रावृष्+टाप्] वर्षा ऋतु।

प्रावृषिक—वि० [सं० प्रावृषि√कै+क, अलुक् स०] १ वर्षा ऋतु-संबंधी। २ वर्षा ऋतु में होनेवाला।
पुं० मयूर। मोर।

प्रावृषिज—पुं० [सं० प्रावृषि√जन् (उत्पन्न होना)+ड] बरसाती तेज हवा।
वि० वर्षा ऋतु में होनेवाला।

प्रावृषीण—वि० [सं० प्रावृष्+ख—ईन] =प्रावृषिज।

प्रावृषेय—वि० [सं० प्रावृष्+ढक्—एय] वर्षा ऋतु में होनेवाला।
पुं० एक प्राचीन देश का नाम।

प्रावृष्य—वि० [सं० प्रावृष्+यत्] जो वर्षा काल में हो।
पुं० १ वैदूर्य मणि। २ कुटज। कुरैया। ३ धारा कदंब। ४ विकंटक।

प्रावेण्य—पुं० [सं०] प्राचीन काल की एक तरह की बढ़िया ऊनी चादर।

प्रावेशन—वि० [सं० प्रवेशन+अण्] १ प्रवेश-संबंधी। २ कहीं प्रवेश करने के समय किया या दिया जाने वाला।
पुं० निर्माणशाला।

प्रावेशिक—वि० [सं० प्रवेश+ठञ्—इक] [स्त्री० प्रावेशिकी] १ प्रवेश-संबंधी। २ जिसके कारण या द्वारा प्रवेश हो। ३ प्रवेश करने के लिए शुभ।

प्राव्राज्य—वि० [सं० प्रव्रज्या+अण्] प्रव्रज्या अर्थात् संन्यास संबंधी।
पुं० १ संन्यासियों का जीवन। २. घूमते रहने की प्रवृत्ति। घुमक्कड़पन।

प्राश—पुं० [सं० प्र√अश् (खाना)√घञ्] १. भोजन करना। २. स्वाद लेना। चखना। आहार। भोजन।

प्राशक—वि० [सं० प्र√अश्+ण्वुल्—अक] १ खाने या भोजन करनेवाला। २ चखने या चाटने वाला।

प्राशन—पुं० [सं० प्र√अश्+ल्युट्—अन] १. भोजन करना। खाना। २ चखना या चाटना। ३ अन्न-प्राशन।

प्राशनीय—वि० [सं० प्र√अश्+अनीयर्] १ प्राशन अर्थात् खाने या चखने के योग्य। २ जो खाया या चखा जाने को हो।

प्राशस्त्य—पुं० [सं० प्रशस्त+ष्यञ्] प्रशस्तता।

प्राशास्त्र—पुं० [सं० प्रशास्तृ+अण्] १. प्रशास्ता नामक ऋत्विक का कर्म या पद। २ शासन। ३ राज्य।

प्राशित—भू० कृ० [सं० प्र√अश्+क्त] १ खाया या चखा हुआ। २ जिसका उपभोग किया गया हो।
पुं० [प्र-अशित, ब० स०] १ पितृ-यज्ञ। तर्पण। २. भक्षण। खाना।

प्राशित्र—पुं० [सं०] यज्ञों में पुरोडाश आदि में से काटकर निकाला हुआ वह छोटा टुकड़ा जो ब्राह्मण के लिए एक पात्र में अलग रखा जाता था। २. गाय के कान की तरह का एक पात्र जिसमें उक्त पदार्थ रखा जाता था। ३. कोई खाद्य पदार्थ।

प्राशी (शिन्)—वि० [सं० प्र√अश्+णिनि] [स्त्री० प्राशिनी] प्राशन करने अर्थात् खाने या चखनेवाला। प्राशक।

प्राश्निक—वि० [सं० प्रश्न+ठक्—इक] १. प्रश्न करने या पूछनेवाला। २. प्रश्न से संबंध रखने या प्रश्न के रूप में होनेवाला। ३. (पत्र आदि) जिसमें बहुत से प्रश्न लिखे हुए हों। ४ (व्यक्ति) जो अनेक प्रश्न करता हो। (क्वेश्चनर)
पुं० १ प्रश्न-कर्ता। २. वह जो प्रश्न-पत्र (परीक्षार्थियों के लिए) तैयार करता या बनाता हो। (एग्जामिनर) ३ समासद। ४. पच। मध्यस्थ।

प्राश्य—वि० [स० प्र√अश्+ण्यत्] प्राशन के योग्य। जो खाया जा सके।

प्रासंग—पु० [स०√सञ्ज् (सटना)+घञ्] १. हल का जूआ या जुआठा जिसमे नये बैल निकाले जाते हैं। २ तराजू की डडी। ३ तराजू। तुला।

प्रासंगिक—वि० [स० प्रसग+ठञ्—इक] १ प्रसग-सबंधी। प्रसग का। २ प्रस्तुत प्रसग से सबध रखनेवाला। ३ किसी अवसर, विषय आदि के अनुकूल और प्रसग-प्राप्त। (रेलेवेन्ट, उक्त दोनो अर्थों मे)
पु० दृश्य काव्य मे कथा-वस्तु के दो अशो मे से वह दूसरा अश जो मूल या आधिकारिक अश मे प्रसंगात सहायक होता है। दे० 'आधिकारिक' (दृश्य काव्य का)।

प्रास—पु० [स० प्र√अस् (फेंकना)+घञ्] १ फेकना। २. पुरानी चाल का एक तरह का भाला जो फेककर चलाया जाता था। ३. आजकल, उतनी क्षैतिज दूरी जितनी कोई चलाई या फेंकी जानेवाली चीज पार करती है। मार। ४ वह पूरी दूरी या विस्तार जिसमे कोई चीज होती, रहती, सुनी जाती या कार्यकारी होती हो। (रेंज, अतिम दोनों अर्थों में)

प्रासक—पु० [स० प्रास+कन्] १ प्रास नामक अस्त्र। २. जूआ खेलने का पासा। पाशक।

प्रासन—पु० [स० प्र√अस्+ल्युट्—अन] फेंकना।
पु० दे० 'प्रासायन'।
†पु० -प्राशन।

प्रासना—स० [स० प्राशन] खाना या चाटना। उदा०—प्रासै जो बीजौ परण।—प्रिथीराज।

प्रासमिक—वि० [स० प्रसम+ठक्—इक] १ प्रसम-सबधी। प्रसम का। २ प्रसम।

प्रासविक—वि० [स० प्रसव+ठक्-इक] १ प्रसव-संबंधी। २ प्रासविक-विज्ञान-सबधी। (ऑब्स्टेट्रिकल)

प्रासविक-विज्ञान—पु० [स० कर्म० स०] दे० 'प्रसूति-विज्ञान'।

प्रासविकी—स्त्री०-प्रासविक विज्ञान।

प्रासाद—पु० [स० प्र√सद्+घञ्—दीर्घ] १ वह विशाल इमारत जिसमें अनेक शृग, शृखलाएँ, अडकादि हों। २ राज-भवन। राज-महल। ३ बौद्धों के सघाराम मे वह बडी शाला जिसमे साधु लोग एकत्र होते थे। ४ देवमदिर। देवालय।

प्रासादिक—वि० [स० प्रसाद+ठक्—इक] १ सहज मे प्रसन्न होकर कृपा करने या दया दिखानेवाला। २ प्रसाद के रूप मे दिया जाने या मिलनेवाला। ३ सुदर। ४ प्रासाद-सबधी।

प्रासादीय—वि० [स० प्रासाद+छ—ईय] १ प्रासाद अर्थात् राजमहल सबधी। २ विशाल। ३ भव्य तथा सुसज्जित।

प्रासायन—पु० [स० प्रास-अयन उपमित स०] १. आयुध शास्त्र में, वह अर्ध चक्राकार मार्ग जिससे होकर तोप या बदूक का गोला या गोली नाल मे से निकलकर निशाने तक पहुँचती है। (ट्रेजेक्टरी) २. दे० 'प्रक्षेप-वक्र'।

प्रासिक—वि० [स० प्रास+ठक्—इक] १ जिसके पास प्रास अर्थात् भाला हो। २ प्रास-सबधी। प्रास का। प्रासीय।

प्रासूतिक—वि० [स० प्रसूति+ठक्—इक] प्रसूति-सबंधी।

प्रास्तारिक—वि० [स० प्रस्तार+ठक्—इक] १ प्रस्तार-संबंधी। २ जिसका व्यवहार प्रस्तार मे हो। प्रस्तार में काम आनेवाला।

प्रास्ताविक—वि० [स० प्रस्ताव+ठक्—इक] १ प्रस्ताव के रूप में होनेवाला। २. प्रस्तावना के रूप मे होनेवाला। ३ प्रासंगिक। प्रसग-प्राप्त।

प्रास्थानिक—पु० [स० प्रस्थान+ठञ्—इक्] वह पदार्थ जो प्रस्थान के समय मगलकारक माना जाता हो। जैसे शख की ध्वनि, दही, मछली आदि।
वि० १ प्रस्थान-सबंधी। २ (समय आदि) जो प्रस्थान करने के लिए शुभ हो।

प्रास्थिक—वि० [स० प्रस्थ+ठञ्—इक्] १ प्रस्थ-सबधी। २ प्रस्थ (तौल या मान) के हिसाब से दिया या लिया जानेवाला। ३ पाचन करानेवाला। पाचक।

प्राहारिक—पु० [स० प्रहर+ठक्—इक] १ चौकीदार। पहरुआ। २. प्रहरियो का प्रधान अधिकारी।

प्राहुण—पु० [स० प्रहुण+अण्] अतिथि। पाहुन।

प्राहुणक—पु० [स० प्राहुण+कन्] प्राहुण।

प्राह्ण—पु० [स० प्र-अहन् प्रा० स०, टच्] -पूर्वाह्ण।

प्राह्लाद—पु० [स० प्रह्लाद+अण्] प्रहलाद का वंशज।

प्रिथिवी†—स्त्री०-पृथ्वी।

प्रियंकर—वि० [स० प्रिय√कृ+खच्, मुम्] प्रसन्न करनेवाला।

प्रियंकरी—स्त्री० [स० प्रियंकर+ङीष्] १ सफेद कटेरी। २ बडी जीवती। ३ असगंध।

प्रियंगु—स्त्री० [स० प्रिय√गम् (जाना)+डु, मुम्] १ कँगनी नाम का अन्न। २ राजिका। राई। ३. पिप्पली। ४ कुटकी।

प्रियंवद—वि० [स० प्रिय√वद् (बोलना)+खच्, मुम्] [स्त्री० प्रियंवदा] प्रिय या मधुर बोलनेवाला। प्रिय-भाषी।
पु० चिड़िया। पक्षी।

प्रियंवदा—स्त्री० [स० प्रियंवद+टाप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे क्रमश एक एक नगण, भगण, जगण और रगण होता है और ४-४ पर यति होती है।

प्रिय—वि० [स०√प्री (तृप्त करना)+क] [भाव० प्रियता, प्रियत्व,] [स्त्री० प्रिया] १ जिसके प्रति बहुत अधिक प्रेम हो। बहुत प्यारा। २ पत्र लेखन मे, सौजन्यपूर्वक किसी का आदर, महत्त्व आदि सूचित करने के लिए प्रयुक्त होनेवाला सबोधक विशेषण। जैसे—प्रिय महोदय। ३. मनोहर या शुभ।
पु० १. पति या प्रेमी। २ जामाता। दामाद। ३. ईश्वर। ४. कार्तिकेय। ५. भलाई। हित। ६. ऋद्धि नामक ओषधि। ६. जीवक नामक ओषधि। ७. कगनी नामक कदन्न। ८. हरताल। ९. बैंत। १०. धारा कदब। ११. एक प्रकार का हिरन।

प्रियक—पु०[सं० प्रिय+ककन् वा] १ पीत शालक। पीत साल। २. कदम का पेड़। ३. कँगनी नाम का अन्न। ४ केसर। ५. धारा कदब। ६. चितकबरा हिरन। ७. शहद की मक्खी। ८. एक प्रकार का पक्षी।

प्रियकांक्षी (क्षिन्)—वि०[सं० प्रिय√काङ्क्ष्, (चाहना)+णिनि] शुभाभिलाषी। हितैषी।

प्रिय-काम— वि० [स० ब० स०] =प्रियकांक्षी।

प्रियकृत्—पु०[स० प्रिय√कृ+क्विप् तुक्] विष्णु।

प्रिय-जन—पु०[स० कर्म० स०] १ स्नेहपात्र व्यक्ति। २. सगा-संबंधी। ३ सौजन्यपूर्वक श्रोताओ को सबोधित करने के लिए प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

प्रियतम—वि०[स० प्रिय√तमप्] [स्त्री० प्रियतमा] जो सबसे अधिक प्रिय हो। परम प्रिय। उदा०—प्रियतम सुअन सँदेश सुनाओ।—तुलसी।

पु० १. स्त्री का पति। स्वामी। २. प्रेमी। ३. मोर-शिखा नामक वृक्ष।

प्रियतमा—स्त्री०[स० प्रियतम+टाप्] १ पत्नी। २ प्रेमिका। माशूका।
वि० प्रियतम का स्त्री० रूप।

प्रियता—स्त्री० [स० प्रिय+तल्-टाप्] प्रिय होने की अवस्था, गुण या भाव। (प्राय समस्त पदो के अन मे प्रयुक्त) जैसे—जन-प्रियता, लोक-प्रियता।

प्रिय-तोषण—पु० [स० प्रिय√तुष् (प्रीति)+णिच्+ल्युट्-अन] एक प्रकार का रतिबंध। (काम-शास्त्र)

प्रियत्व—पु०[स० प्रिय+त्व]=प्रियता।

प्रियद—वि०[स० प्रिय√दा (देना)+क] प्रिय वस्तु देनेवाला।

प्रिय-दत्ता—स्त्री० [सं० तृ० त० वा ष० त० ?] भूमि, विशेषत. दान की जानेवाली भूमि।

प्रिय-दर्शन—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० प्रियदर्शना] १ जो देखने मे भला और सुखद प्रतीत होता हो। २ मनोहर। सुदर।
पु० १ तोता। शुक। २ खिरनी का पेड। ३ एक गधर्व राजा।

प्रिय-दर्शी (र्शिन्)—वि० [सं० प्रिय√दृश् (देखना)+णिनि] [स्त्री० प्रियदर्शिनी] प्रेमपूर्वक किसी को या दूसरो को देखनेवाला।
पु० अशोक वृक्ष।

प्रिय-पात्र—वि०[सं० कर्म० स०] प्रेम-पात्र। प्यारा।

प्रियभाषी (षिन्)—वि०[स० प्रिय√भाष् (बोलना)+णिनि] [स्त्री० प्रियभाषिणी] मधुर वचन बोलनेवाला। मीठी बात कहनेवाला।

प्रिय-रूप—वि०[स० ब० स०] मनोहर। सुदर।

प्रिय-वक्ता (क्तृ)—वि०[सं० ष० त० सं०]=प्रियभाषी।

प्रिय-वर—वि०[सं० स० त०] प्रिय या प्यारों में श्रेष्ठ। बहुत प्रिय। (इसका व्यवहार प्रायः पत्रो आदि में संबोधन के रूप मे होता है।)

प्रियवादी (दिन्)—पु०[स० प्रिय√वद् (बोलना)+णिनि) [स्त्री० प्रियवादिनी] प्रिय वचन कहनेवाला। मधुर-भाषी।

प्रिय-व्रत—पु०[स० ब० स०] १. स्वायभुव मनु के एक पुत्र का नाम जो उत्तानपाद का भाई था।
वि० जिसे व्रत प्रिय हो।

प्रिय-सखा (खि)—पु०[सं० ब० स०] १. भगवान कृष्ण। २. विष्णु।

प्रिय-संगमन—पु० [स० ब० स०] वह स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका अभिसार करते हो। सकेत-स्थल।

प्रिय-संदेश—पु० [स० प्रिय-सम्√दिश् (बताना)+अण, उप० स० भावे घञ्, ष० त०] चपा का पेड।

प्रिय-सार—पु०[स० कर्म० स०ष० त० वा] खैर का पेड।

प्रियांबु—पु०[स० प्रिय-अम्बु ब० स०] १ आम का पेड या उसका फल।
वि० जिसे जल बहुत प्रिय हो।

प्रिया—स्त्री०[सं० प्रिय+टाप्] १. नारी। स्त्री। २ पत्नी। भार्या। ३ प्रेमिका। ४. इलायची। ५ चमेली। मल्लिका। ६ मद्य। शराब। ७. कँगनी नामक अन्न। ७ एक प्रकार का वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में रगण (SIS) होता है; इसका दूसरा नाम मृगी है। ८. चौदह मात्राओ का एक छद।

प्रियाख्य—वि०[स० प्रिय-आख्या ब० स०] प्रिय। प्यारा।

प्रियात्मा (त्मन्)—पु०[स० प्रिय-आत्मन् ब० स०] जिसका चित्त उदार और सरल हो।

प्रियाल—पु०[स० प्रिय√अल् (पर्याप्त होना)+अच्] चिरौंजी का पेड़।

प्रियाला—स्त्री०[स० प्रियाल+टाप्] दाख।

प्रियोक्ति—स्त्री०[स० प्रिया-उक्ति, कर्म० स०] १ मधुर कथन। २. चापलूसी। खुशामद।

प्री—स्त्री०[स०√प्री (तृप्त करना)+क्विप्] १ प्रेम। प्रीति। २. काति। चमक। ३ इच्छा। ४ तृप्ति। ५. तर्पण।
वि० =प्रिय।

प्रीअंक—पु०=प्रियक (कदब)।

प्रीणन—पु०[सं०√प्री+णिच्, नुक् ल्युट्-अन] किसी को प्रसन्न तथा सतुष्ट करना।
वि० प्रसन्न तथा सतुष्ट करनेवाला।

प्रीणित—भू० कृ०[स०√प्री+णिच्, नुक्+क्त] प्रसन्न तथा सतुष्ट किया हुआ।

प्रीत—वि०[स०√प्री+क्त] १ जिसके मन मे प्रीति उत्पन्न हुई हो। २ जो किसी पर प्रसन्न हुआ हो। ३. प्यारा। प्रिय।
† स्त्री०=प्रीति।
मुहा०—प्रीत मानना*—प्रीति करनेवाले की प्रीति से प्रसन्न होकर उससे प्रीति करना।

प्रीतम—वि०, पु=प्रियतम।

प्रीतात्मा (त्मन्)—पु०[स० प्रीत-आत्मन् ब० स०] शिव।

प्रीति—स्त्री०[स०√प्री+क्तिन्] १ किसी के हृदय मे होनेवाला वह सद्भाव जो बरबस किसी दूसरे के प्रति ध्यान ले जाता है और उसके प्रति ममत्व की भावना उत्पन्न करता है। २ प्रेम। प्यार। ३ आनद। हर्ष। ४. कामदेव की एक पत्नी। ५ सगीत में, मध्यम स्वर की चार श्रुतियो मे से अतिम श्रुति। ६ फलित ज्योतिष के २७ योगो मे से दूसरा योग जिसमे शुभ कर्म करने का विधान है।

प्रीति-कर—वि०[स० ष० त०] प्रसन्नता उत्पन्न करनेवाला। प्रेमजनक।

प्रीतिकारक, प्रीतिकारी—वि०=प्रीति-कर।

प्रीतिद—वि०[स० प्रीति√दा+क] सुख या प्रेम उत्पन्न करनेवाला।
पुं० १. विदूषक। २ भाँड़।

प्रीति-दान—पु० [स० तृ० त०] १ प्रेमपूर्वक दी जानेवाली कोई वस्तु। २. विशेषत वह वस्तु जो सास अथवा ससुर अपने जामाता या पुत्र-वधू को, या पति अपनी पत्नी को प्रेम-पूर्वक भोग के लिए दे।

प्रीति पात्र—पु० [सं० ष० त०] वह जिससे प्रीति या प्रेम किया जाय। प्रेम-भोजन।

प्रीति-भोज—पु० [स० तृ० त० स०] किसी मांगलिक या सुखद अवसर पर इष्ट-मित्रो तथा बधु-बाधवो को अपने यहाँ बुलाकर कराया जानेवाला भोजन। दावत।

प्रीतिमान् (मत्)—वि० [स० प्रीति+मतुप्] प्रेम रखनेवाला। जिसमे प्रेम-भाव हो।

प्रीति-रीति—स्त्री० [स० ष० त०] वे कार्य जो प्रीति निभाने के लिए आवश्यक माने जाते हो।

प्रीति-विवाह—पु० [स० तृ० त०] पारस्परिक प्रेम सबध के फलस्वरूप होनेवाला विवाह। (माता-पिता की इच्छा से किये जानेवाले विवाह से भिन्न।)

प्रीत्यर्थ—अव्य० [स० ष० त०] १ प्रीति के कारण। २ किसी को प्रसन्न करने के लिए। जैसे—विष्णु के प्रीत्यर्थ दान करना।

प्रूफ—पु० [अ०] १. दे० 'प्रमाण'। २. छपाई मे किसी छपनेवाली चीज का वह आरभिक नमूना जो छपाई सबधी भूलें ठीक करने के उद्देश्य से छापा जाता है।

प्रूफ-रीडर—पु० [अ०] वह जो छपनेवाली चीज का प्रूफ देखकर छापेवाली भूलें ठीक करता हो।

प्रूम—पु० [?] नदी, समुद्र आदि की गहराई जानने का एक छोटा यत्र जो सीसे का बना हुआ और लट्टू के आकार का होता है और जो डोरी के सहारे नीचे तल तक लटकाया जाता है।

प्रेंख—पु० [स० प्र√इङ्ख्+घञ्] १ झूलना। पेग लेना। २ एक प्रकार का साम-गान।

वि० जो काँप, झूल या हिल रहा हो।

प्रेंखण—पु० [स० प्र√इङ्ख्+ल्युट्—अन] अच्छी तरह हिलना या झूलना। २ अठारह प्रकार के रूपको मे से एक प्रकार का रूपक जिसमे वीर रस की प्रधानता रहती है।

प्रेंखा—स्त्री० [स० प्र√इङ्ख्√अ—टाप्] १ हिलना। २ झूलना। ३ यात्रा। ४ नाच। नृत्य। ५ घोडे की चाल।

प्रेंखोलन—पु० [स०+प्रेङ्खोल् (चलना) ल्युट्—अन] १ झूलना। २ काँपना।

प्रेक्षक—पु० [स० प्र√ ईक्ष्+ण्वुल्—अक] १. वह जो खेल-तमाशा या ऐसा ही और काम या बात चाव से या ध्यानपूर्वक देखता हो। दर्शक। २ वह जो किसी काम ,चीज या बात को किसी विशिष्ट उद्देश्य से बहुत ध्यानपूर्वक देखता रहता हो। (अबसर्वर)

प्रेक्षण—पु० [स० प्र√ईक्ष्+ल्युट्—अन] १. किसी काम, चीज या बात को किसी विशेष उद्देश्य से ध्यानपूर्वक देखते रहने का भाव (अब्सर्वेन्स) २ आँख।

प्रेक्षण-कूट—पु० [स० ष० त०] आँख का डेला।

प्रेक्षणीय—वि० [स० प्र√ईक्ष्+अनीयर्] जो देखे जाने के योग्य हो। दर्शनीय।

प्रेक्षा—स्त्री० [स० प्र√ईक्ष्+अ—टाप्] १ देखना। २ दृष्टि। निगाह। ३ नाच-तमाशा, नाटक आदि देखना। ४. प्रज्ञा। बुद्धि। ५. नाच, तमाशा, अभिनय आदि। ६ किसी विषय की अच्छी और बुरी बातों का विचार करना। ७ वृक्ष की शाखा। डाल। ८. शोभा।

प्रेक्षाकारी (रिन्)—वि० [स० प्रेक्षा√कृ+णिनि] सोचसमझ कर काम करनेवाला।

प्रेक्षागार—पु०=प्रेक्षा-गृह।

प्रेक्षा-गृह—पु० [स० ष० त०] १ प्राचीन काल मे राज-महल का वह कमरा जहाँ राजा मत्रियो से मत्रणा करते थे। २. नाटकों के अभिनय आदि के लिए बनी हुई रग-शाला।

प्रेक्षावान् (वत्)—वि० [स० प्रेक्षा+मतुप्] सोच-समझ कर काम करनेवाला।

प्रेक्षा-समाज—पु० [स०] दर्शको का समूह। दर्शक-वृद।

प्रेक्षित—भू० कृ० [स० प्र√ईक्ष्+क्त] अच्छी तरह और ध्यानपूर्वक देखा हुआ।

प्रेक्षिता (तृ)—पु० [स० प्र√ईक्ष्+तृच्]=प्रेक्षक।

प्रेक्षी (क्षिन्)—पु० [स० प्रेक्षा+इनि] १ प्रेक्षक। २ बुद्धिमान। समझदार।

प्रेक्ष्य—वि० [स० प्र√ईक्ष्+ण्यत्] १ अच्छी तरह देखे जाने के योग्य। २ जो देखा जाने को हो।

प्रेत—वि० [स० प्र√इ (गति)+क्त] जो यह ससार छोडकर चला गया हो, अर्थात् मरा हुआ या मृत।

पु० [स्त्री० प्रेता, प्रेतनी] १ आत्मा जो शरीर से निकलकर और यह ससार छोडकर चली जाती है। २ पुराणो के अनुसार वह सूक्ष्म शरीर जो आत्मा भौतिक शरीर छोडने पर धारण करती है।

विशेष—कहते हैं कि आत्मा को दुष्कर्मों के फल-भोग के लिए यह रूप धारण करना पडता है और गदे स्थानो मे रहकर बहुत ही घृणित कर्म करने पडते हैं। लोगो का विश्वास है कि यह कभी-कभी छाया रूप धारण करके अनेक प्रकार के अलौकिक, भयावने तथा विकट कार्य करता हुआ दिखाई देता है। पुराणो मे भूतो को देवयोनियो के वर्ग मे रखा गया है, और इनका रग काला तथा आकार-प्रकार विकराल बतलाया गया है।

३ मृत व्यक्ति का शरीर। लाश। शव। ४ प्रेत-शरीर। (देखें) ५ पितर। ६ नरक मे रहनेवाले प्राणी। ७ लाक्षणिक रूप मे, बहुत बड़ा कजूस या धूर्त व्यक्ति।

प्रेत-कर्म (र्मन्)—पु० [स० ष० त०] हिंदुओ में दाह आदि से लेकर सपिंडी तक के वे कृत्य जो मृतक को प्रेत शरीर से मुक्त कराने के उद्देश्य से किये जाते हो। प्रेत-कार्य।

प्रेत-कार्य, प्रेत-कृत्य—पु०=प्रेतकर्म।

प्रेत-गृह—पु० [स० ष० त०] ऐसा स्थान जहाँ मृत शरीर गाड़े, जलाये या रखे जाते हो।

प्रेत-तर्पण—पु० [स० ष० त०] १ किसी मृतक के निमित्त उसके मरने के दिन से लेकर सपिंडी के दिन तक किया जानेवाला तर्पण। २ किसी प्रेत के निमित्त वर्ष भर किया जानेवाला तर्पण।

प्रेतता—स्त्री० [स० प्रेत+तल्—टाप्]=प्रेतत्व।

प्रेतत्व—पु०[सं० प्रेत+त्व] प्रेत होने की अवस्था, धर्म या भाव। प्रेतता।

प्रेत-दाह—पु०[सं० ष० त०] मृत व्यक्ति के शरीर को जलाना।

प्रेत-देह—पु०=प्रेत-शरीर। (देखें)

प्रेत-नदी—स्त्री०[सं० मध्य० स०] वैतरणी नामक पैशाचिक नदी।

प्रेतनी—स्त्री०[सं० प्रेत+हिं० नी (प्रत्य०)] १ स्त्री प्रेत। भूतनी। २ लाक्षणिक अर्थ मे, बहुत बडी धूर्त या अर्ध-पिशाच स्त्री।

प्रेत-पक्ष—पु०[सं० मध्य० स०] पितृ-पक्ष।

प्रेत-पटह—पु०[सं० मध्य० से०] पुरानी चाल का एक बाजा जिसके बजने पर यह जाना जाता था कि कोई मर गया है।

प्रेत-पति—पु०[सं० ष० त०] प्रेतो के स्वामी, यम।

प्रेत-पर्वत—पु०[सं० मध्य० स०] गया तीर्थ के अन्तर्गत एक पर्वत।

प्रेत-पावक—पु०[सं० ष० त०] वह प्रकाश जो प्राय दलदलों, जगलो, कब्रिस्तानो आदि मे रात के समय जलता हुआ दिखाई पडता है। और जिसे लोग प्रेतो की लीला समझते है। लुक।

प्रेत-पिंड—पु०[सं० च० त०] कर्मकाड मे अन्न आदि का बना वह पिंड जो किसी के मरने के दिन से लेकर सपिंडी के दिन तक उसके नाम पर नित्य पारा जाता ह।

प्रेत-पुर—पु०[सं० ष० त०] यमपुर।

प्रेत-भाव—पु०[सं० ष० त०] मृत्यु।

प्रेत-भूमि—स्त्री०[सं० ष० त०] श्मशान।

प्रेत-मेध—पु०[सं० ष० त०] मृतक के उद्देश्य से किया जानेवाला श्राद्ध।

प्रेत-यज्ञ—पु०[सं० मध्य० स०]एक प्रकार का यज्ञ जो कुछ लोग प्रेत-योनि प्राप्त करने के लिए करते थे।

प्रेत-राक्षसी—स्त्री०[सं० ष० त०] तुलसी (पौधा)। (ऐसा माना जाता है कि जहाँ तुलसी रहती है, वहाँ भूत-प्रेत नही आते)

प्रेतराज—पु०[सं० ष० त०] १ यमराज। २ शिव।

प्रेत-लोक—पु०[सं० ष० त०] यमपुर। यम-लोक।

प्रेत-वन—पु०[सं० ष० त०] श्मशान। मरघट।

प्रेत-वाहित—भू० कृ०[सं० तृ० त०] जिस पर प्रेत या भूत का आवेश हो।

प्रेत-विधि—स्त्री०[सं० ष० त०] मृतक-सस्कार।

प्रेत-विमाना—स्त्री० [सं० ब० स०, टाप्] भगवती का एक रूप। (कहते है कि यह पाँच-प्रेतशरीरो पर सवार होकर आकाश मे विचरण करती है।)

प्रेत-शरीर—पु० [सं० ष० त०] पुराणो के अनुसार मृत व्यक्ति की जीवात्मा की वह अवस्था जिसमें वह तब तक लिंग रूप मे, या सूक्ष्म शरीर धारण करके रहती है, जब तक उसका सपिंडी नामक श्राद्ध नहीं हो जाता। भोग-शरीर।

विशेष—कहते हैं कि सपिंडी हो जाने पर उसका प्रेतत्व नष्ट हो जाता है और वह अपने कर्मों का फल भोगने के लिए नरक या स्वर्ग में चला जाता है।

प्रेत-शिला—स्त्री०[सं० ष० त०] गया तीर्थ की एक पहाड़ी। (कहते हैं कि जब तक यहाँ मृतक के उद्देश्य से पिंड दान न किया जाय, तब तक प्रेतत्व से उसकी मुक्ति नहीं होती।)

प्रेत-श्राद्ध—पुं०[सं० मध्य० स०] किसी के मरने की तिथि से एक वर्ष के अंदर होनेवाले सोलह श्राद्धों में से हर एक।

प्रेतहार—पु०[सं० प्रेत√हृ+अण्] वह जो मृत शरीर उठाकर श्मशान तक ले जाने का व्यवसाय करता हो। मुरदा-फरोश।

प्रेता—स्त्री०[सं० प्रेत+टाप्] १ स्त्री प्रेत। प्रेतनी। २ कात्यायनी देवी।

प्रेतात्मक—वि०[सं० प्रेतात्मन् से] प्रेतात्मा-सबधी। प्रेतात्मा का। (स्पिरिचुअल)

प्रेतात्म-वाद—पु० [सं० ष० त०] यह विश्वास कि प्रेतात्माएँ जीवित व्यक्तियो से कुछ विशिष्ट परिस्थितियो मे अथवा कुछ विशिष्ट माध्यमो के द्वारा सबध स्थापित करती और वार्तालाप करती हैं। (स्पिरिचु-अलिज्म)

प्रेतात्मवादिक—वि०[सं० प्रेतात्मवाद+ठक—इक] प्रेतात्म-वाद से सबध रखनेवाला। (स्पिरिचुअलिस्टिक)

प्रेतात्मवादी (दिन्)—पु० [सं० प्रेतात्मवद्+णिनि] वह व्यक्ति, जिसका इस बात मे विश्वास हो कि प्रेतात्माएँ जीवित व्यक्तियो से संबंध स्थापित करती और वार्तालाप करती हैं।

वि०=प्रेतात्मवादिक।

प्रेतात्मविद्या—स्त्री०[सं० ष० त०] वह विद्या जिसके द्वारा प्रेतात्माओ से सपर्क स्थापित करके वार्तालाप किया जाता है। (साइकिक्स)

प्रेतात्मा (त्मन्)—स्त्री० [सं० प्रेत-आत्मन्, मयू० स०] प्राणी, विशेषत. मनुष्य की आत्मा की वह अवस्था या रूप जो उसे मृत्यु के उपरान्त प्राप्त होता है और जो हिंदू शास्त्रकारो के अनुसार लिंग-शरीर (देखें) से युक्त होता है। (स्पिरिट)

प्रेतात्मिक—वि० [सं० प्रेतात्मन्+ठक्—इक] १ प्रेतात्मा-सबधी। २ प्रेतात्माओ द्वारा किया जाने या होनेवाला।

प्रेताधिप—पु०[सं० प्रेत-अधिप, ष० त०] यमराज।

प्रेतान्न—पु०[सं० प्रेत-अन्न मध्य० स०] १ पिंडा जो प्रेतो के उद्देश्य से दिया जाता है। २ बिना घी के योग से पकाया जानेवाला भोजन।

प्रेतावास—पु०[सं० प्रेत-आवास, ष०त०] प्रेतो के रहने का स्थान। श्मशान।

प्रेताशी (शिन्)—वि० [सं० प्रेत√अश् (खाना)+णिनि] [स्त्री० प्रेताशिनी] प्रेत अर्थात् मृत शरीर खानेवाला।

प्रेताशौच—पु०[सं० प्रेत-अशौच, मध्य० स०] किसी सबधी के मरने पर होनेवाला अशौच। सूतक।

प्रेति—पु०[सं० प्र√इ+क्तिन्] १ मरण। मृत्यु। २ अन्न। अनाज।

प्रेतिनी—स्त्री०=प्रेतनी।

प्रेती—पु०[सं० प्रेत+हिं० ई (प्रत्य०)] प्रेतात्माओ की पूजा करनेवाला तथा उन्हे प्रसन्न करके उनके द्वारा कुछ विशिष्ट काम करानेवाला व्यक्ति।

प्रेतेश—पु०[सं० प्रेत-ईश, ष० त०] यमराज।

प्रेतोन्माद—पु०[सं० प्रेत-उन्माद, मध्य० स०] प्रेत-बाधा अर्थात् प्रेतात्मा के प्रकोप से होनेवाला उन्माद।

प्रेम—पु०[सं० प्रिय+इमनिच, प्र आदेश] [वि० प्रेमी] १ किसी के मन मे होनेवाला कोमल भाव जो किसी ऐसे काम, चीज, बात या व्यक्ति के प्रति होता है जिसे वह बहुत अच्छा, प्रशसनीय तथा सुखद समझता है अथवा जिसके साथ वह अपना घनिष्ठ सबध बनाये रखना चाहता है। प्रीति। मुहब्बत। जैसे—(क) काव्य, चित्रकला, जाति, देश आदि के प्रति होनेवाला प्रेम। (ख) भाई-बहन अथवा माता-पुत्र में होनेवाला प्रेम।

विशेष—अपने विशुद्ध और विस्तृत रूप मे यह ईश्वरीय तत्त्व या ईश्वरता का व्यक्त रूप माना जाता है और सदा स्वार्थ-रहित तथा दूसरो के सर्वतोमुखी कल्याण के भावो से ओतप्रोत होता है। इसमे दया, सहानुभूति आदि प्रचुर मात्रा मे होती है।

२ शृगारिक तथा साहित्यिक क्षेत्रो मे, वह मनोभाव जिसमे स्त्री और पुरुष दोनो एक दूसरे के गुण, रूप, व्यवहार स्वभाव आदि पर रीझकर सदा पास या साथ रहना और एक दूसरे को अपना बनाकर प्रसन्न तथा सतुष्ट रखना चाहते है। प्रीति। मुहब्बत।

विशेष—यह अनुराग तथा स्नेह का बहुत आगे बढा हुआ रूप है, और प्राय इसके मूल मे या तो काम-वासना या तृप्ति से प्राप्त होनेवाला सुख होता है, या काम-वासना की तृप्ति करना इसका उद्देश्य होता है। अनुराग या स्नेह तो मुख्यत लैंगिक सम्बन्ध होने से पहले होते हैं, परन्तु प्रेम प्राय किसी न किसी प्रकार के शारीरिक सबध का परिचायक होता है। स्त्री-और पुरुष जाति के जीव-जतुओ मे यह मुख्यत कामज ही होता है।

३ केशव के अनुसार एक प्रकार का अलकार। ४ सासारिक बातो के प्रति होनेवाली माया या लोभ। ५. आनन्द। प्रसन्नता।

प्रेम-कलह—पु० [स० सुप्सुपा स०] प्रेम के प्रसग मे किया जानेवाला या होनेवाला झगडा।

प्रेम-गर्विता—स्त्री० [स० तृ० त०] साहित्य मे वह नायिका जो इस बात का गर्व या अभिमान करती है कि मेरा पति या प्रेमी मुझसे अधिक प्रेम करता है।

प्रेम-जल—पु० [स० ष० त० या मध्य० स०] प्रेमाश्रु।

प्रेमजा—स्त्री० [स०] मरीचि (ऋषि) की पत्नी का नाम।

प्रेम-नीर—पु० प्रेमाश्रु।

प्रेमपात्र—पु० [स० ष० त०] [स्त्री० प्रेम-पात्री] १ वह व्यक्ति जिससे प्रेम किया जाय। २ वह जिस पर किसी की विशेष कृपा-दृष्टि हो।

प्रेम-पाश—स्त्री० [स०ष०त०] १ प्रेम का फदा या जाल। २ आलिंगन।

प्रेम-पुलक—स्त्री० [स० तृ० स०] आवेग के कारण होनेवाला रोमाच।

प्रेम-भक्ति—स्त्री० [स० मध्य० स०]=प्रेम-लक्षणा।

प्रेम-मार्ग—पु० [स० ष० त०] वह मार्ग जो मनुष्य को सासारिक विषयो मे फसाता है। अविद्या-मार्ग।

प्रेम-लक्षणा—स्त्री० [स०ब०स०] भक्ति का वह प्रकार जिसकी साधना पुष्टमार्ग (देखे) मे होती है। उदा०—श्रवण, कीर्तन, पाद-रत, अरचन, वदन, दास, सख्य अरु आत्मनिवेदन प्रेम-लक्षणा जास।—सूर।

प्रेम-लेश्या—स्त्री० [स०] जैनो के अनुसार वह वृत्ति जिसके अनुसार मनुष्य विद्वान्, दयालु, विवेकी होता तथा निस्वार्थ भाव से सबसे प्रेम करता है।

प्रेमवती—स्त्री० [स० प्रेमन्+मतुप्] १ पत्नी। २ प्रेमिका।

प्रेम-वारि—पु०=प्रेमाश्रु।

प्रेमा—पु० [स० प्रेमन्] १ प्रेम। २ प्रेमी। ३. इद्र। ४ वायु। ५ उपजाति वृत्त का ग्यारहवाँ भेद जिसके पहले, दूसरे और चौथे चरणो मे क्रमश जतजगण और दो गुरु और तीसरे चरण मे क्रमश ततज और दो गुरु होते है।

प्रेमाक्षेप—पु० [स० प्रेमन्-आक्षेप, ब०स०] केशव के अनुसार आक्षेप अलकार का एक भेद जिसमे प्रेम का निवेदन करते समय किसी प्रेम-जन्य कार्य से ही उसमे बाधा होने का वर्णन होता है।

प्रेमालाप—पु० [स० प्रेमन्-आलाप मध्य०स०] १. आपस में प्रेमपूर्वक होनेवाली बातचीत। २ दो प्रेमियो मे होनेवाली बातचीत।

प्रेमालिंगन—पु० [स० मध्य० स०] १ किसी को प्रेमपूर्वक गले लगाना। २. कामशास्त्र के अनुसार नायक और नायिका का एक विशेष प्रकार का आलिंगन।

प्रेमाश्रु—पु० [प्रेमन्-अश्रु, मध्य० स०] वे आँसू जो प्रेम के आधिक्य के समय आप से आप आँखो से निकलने लगते है।

प्रेमिक—वि० [स०] [स्त्री० प्रेमिका] =प्रेमी।

प्रेमी (मिन्)—वि० [स० प्रेमन्+इनि] किसी से प्रेम करनेवाला। जैसे—देश-प्रेमी, साहित्य-प्रेमी।

पु० १. वह व्यक्ति जो किसी स्त्री विशेषत प्रेमिका से प्यार करता हो। २ किसी स्त्री के साथ अनुचित रूप से सम्बन्ध रखनेवाला व्यक्ति। यार।

प्रेय(स्)—वि० [स० प्रिय+इयसुन् प्रादेश] [स्त्री० प्रेयसी] बहुत प्यारा। विशेष प्रिय।

पु०१ परम प्रिय व्यक्ति। २ स्त्री का पति या स्वामी। ३ स्त्री का प्रेमी। ४ धार्मिक क्षेत्र मे यह कामना कि हम स्वर्ग प्राप्त करके अनेक प्रकार के सुख भोगे (मोक्ष-प्राप्ति की कामना से भिन्न)। ५ कल्याण। मगल। ६ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे एक भाव किसी दूसरे भाव अथवा स्थायी का अग होता है। जैसे—प्रभु-पद सौंह करें कहत, बाहि तुच्छ एक तीर। लखत इद्रजित् कौं हनहु तौ तुम लछमन वीर। इस प्रसग मे व्यभिचारी भाव 'गर्व' कुछ गौण होकर स्थायी भाव 'क्रोध' का अग हो गया है।

प्रेयसी—स्त्री० [स० प्रेयस्+ङीप्] १ वह स्त्री जिसके साथ कोई पुरुष बहुत अधिक प्रेम करता हो। प्रेमिका। २ पत्नी। भार्या।

प्रेरक—वि० [स० प्र√ईर्+णिच्+ण्वुल्—अक] १ किसी को प्रेरित करनेवाला। जो प्रेरणा करता हो। २ भेजनेवाला।

प्रेरण—पु० [स० प्र√ईर्+णिच्+ल्युट्—अन] १ किसी को कोई काम करने के लिए बहुत अधिक उत्साहित करना। २ कोई काम करने के लिए प्रवृत्त करना।

प्रेरणा—स्त्री० [स० प्र√ईर्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. किसी को किसी कार्य मे लगाने अथवा प्रवृत्त करने की क्रिया या भाव। २. मन मे उत्पन्न होनेवाला वह भाव या विचार जिसके सबध मे यह कहा जा सकता हो कि वह दैवी साधन या कृपा से उत्पन्न हुआ है। ३. किसी प्रभावशाली व्यक्ति या क्षेत्र की ओर से कुछ करने या कहने के लिए होनेवाला सकेत। (इन्स्पिरेशन, उक्त दो अर्थो मे) ४ दबाव। ५ झटका। धक्का।

प्रेरणार्थक—वि० [स० प्रेरणा-अर्थ, ब० स०, कप्] १ प्रेरणा-सबधी। २ प्रेरणा के रूप मे होनेवाला।

प्रेरणार्थक क्रिया—स्त्री० [स० कर्म० स०] व्याकरण मे, क्रिया का वह रूप जिसमे क्रिया के व्यापार के सबध मे यह सूचित होता है कि यह क्रिया स्वय नही की जा रही है बल्कि किसी दूसरे को प्रेरित करके या किसी दूसरे से कराई जा रही है। जैसे—खाना से खिलाना, चलना से चलाना, भागना से भगाना आदि बननेवाले रूप प्रेरणार्थक क्रिया कहलाते हैं।

प्रेरणीय—वि०[सं० प्र√ईर्+अनीयर्] प्रेरणा किये जाने के योग्य। किसी के लिए प्रवृत्त या नियुक्त किये जाने या होने के योग्य।

प्रेरना*—स०[सं० प्रेरणा]१ प्रेरणा करना। २ फेंकना। चलाना। ३ भेजना।

प्रेरयिता (तृ)—वि० [सं० प्र√ईर्+णिच्+तृच्] [स्त्री० प्रेरयित्री] १ प्रेरक। २ आज्ञा देनेवाला।

प्रेरित—भू० कृ०[सं० प्र√ईर्+क्त]१ (व्यक्ति) जिसे दूसरे व्यक्ति से किसी बात की प्रेरणा मिली हो। २ किसी प्रकार की प्रेरणा से होनेवाला (कार्य)। ३ भेजा हुआ। प्रेषित। ४ ढकेला हुआ।

प्रेषक—वि०[सं० प्र√ईष् (गति)+णिच्+ण्वुल्—अक][स्त्री० प्रेषिका] भेजनेवाला।

प्रेषण—पु०[सं० प्र √ईष्+णिच्+ल्युट्—अन]१ प्रेरणा करना। २. रवाना करना। भेजना।

प्रेषण-पुस्तक—स्त्री०[सं० ष०त०] वह पुस्तक या बही जिसमे बाहर भेजी जानेवाली चिट्ठियो, पारसलो आदि की तिथि, विवरण, डाक-व्यय आदि लिखा जाता है। (डिस्पैच बुक)

प्रेषणीय—वि०[सं० प्र√ईष्+णिच्+अनीयर्]१ प्रेरणा पाने योग्य। २ भेजे जाने के योग्य।

प्रेषणीयता—स्त्री०[सं० प्रेषणीय+तल्—टाप्] १ प्रेषणीय होने की अवस्था या भाव। २ किसी पदार्थ या बात का वह गुण या तत्त्व जिसके द्वारा कुछ कही से कही पहुँचता हो। (कम्यूनिकेशन) जैसे—साहित्यिक कृतियों मे जब तक भावो की प्रेषणीयता तत्त्व न हो, तब तक उनका कोई महत्त्व नही होता। (अर्थात् उनमे यह गुण होना चाहिए कि वे कवि या लेखक के भाव पाठको तक पहुँचा सके।)

प्रेषित—भू० कृ०[सं० प्र√ईष्+णिच्+क्त] रवाना किया हुआ। भेजा हुआ।

पु० संगीत मे स्वर-साधना की एक प्रणाली जिसका रूप है—सारे, रेग, गम, मप, पध, धनि, निसा। सानि, निध, धप, पम, मग, गरे, रेसा। (संगीत)

प्रेषितव्य—वि०[सं० प्र√ईष्+णिच्+तव्यत्] जो भेजा जाने को हो या भेजा जा सके।

प्रेष्ठ—भू० कृ० [सं० प्रिय+इष्ठन्, प्रआदेश] [स्त्री० प्रेष्ठा] सबसे अधिक प्रिय। परम प्रिय। प्रियतम।

प्रेष्य—वि०[सं० प्र√ ईष्+णिच्+यत्] जो भेजा जाने को हो या भेजा जा सकता हो।

पुं०[स्त्री० प्रेष्या] १ नौकर। सेवक। २ दूत। हरकारा।

प्रेष्यता—स्त्री० [सं० प्रेष्य+तल्—टाप्] प्रेष्य होने की अवस्था या भाव।

प्रेस—पु०[अं०]१ रूई आदि चीजे दबाने की कल। २ पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि छापने की कल या यंत्र। ३. छापाखाना। मुद्रणालय।

मुहा०—(किसी चीज का) प्रेस में होना=(किसी चीज की) छपाई का काम जारी रहना। जैसे—अभी वह पुस्तक प्रेस में है। (अर्थात् छप रही है।)

४. समाचार पत्रों का सामूहिक वर्ग। सभी अखबार।

पद—प्रेस ऐक्ट।

प्रेस ऐक्ट—पु०[अं०] वह कानून जिसमे छापेखानेवालों तथा समाचार-पत्रों के अधिकारो की सीमाओ का उल्लेख होता है।

प्रेसमैन—पु०[अं०] छापे खाने या मुद्रणालय का कर्मचारी।

प्रेसिडेंट—पु०[अं०]१ सभापति। २ अध्यक्ष। ३ राष्ट्रपति।

प्रेसिडेंसी—स्त्री०[अं०] १. प्रेसीडेट का पद या कार्य। २ ब्रिटिश भारत मे शासन के सुभीते के लिए कुछ निश्चित प्रदेशो या प्रातो का किया हुआ विभाग जो एक गवर्नर या लाट की आधीनता मे होता था।

प्रोंचिया†—स्त्री० पहुँची (कलाई पर पहनने की)। उदा०—गजरा नवग्रही प्रोंचिया प्रोचे।—प्रिथीराज।

प्रोंछन—पु०[सं० प्र√उञ्छ्+ल्युट्—अन] १ पोंछने की क्रिया। २ पोंछने का कपड़ा। ३. बचे हुए खडो को चुनना।

प्रोक्त—भू० कृ०[सं० प्र√वच्(कहना)+क्त] कथित या कहा हुआ। उक्त।

पु० कही हुई बात या वचन। उक्ति।

प्रोक्षण—पु०[सं० प्र√उक्ष् (सीचना)+ल्युट्—अन]१ जल छिड़कना। छिड़काव करना। २ यज्ञ मे, बलि देने से पहले पशु पर पानी छिड़कना। ३ पानी का छीटा। ४ वध। हत्या। ५ विवाह का परिछन नामक कृत्य। ६ श्राद्ध आदि मे होनेवाला एक कृत्य।

प्रोक्षणी—स्त्री० [सं० प्रोक्षण+ङीप्] १. यज्ञ आदि मे छिड़का जाने-वाला जल। २ वह पात्र जिसमें उक्त जल रखा जाता था। ३. कुश की मुद्रिका जो हो ादि के समय अनामिका मे पहनी जाती है।

प्रोक्षित—भू० कृ० [सं० प्र√उक्ष्+क्त]१. सीचा हुआ। २ जिस पर जल छिड़का गया हो। ३. जिसका वध या हत्या की गई हो। ४ (पशु) जो बलि चढाया गया हो।

पु० वह मास जो यज्ञ के लिए संस्कृत किया गया हो। (ऐसा मास खाने मे कोई दोष नही माना जाता।)

प्रोक्षितव्य—वि०[सं० प्र+उक्ष्√तव्यत्] जिसका प्रोक्षण होने को हो या हो सकता हो।

प्रोग्राम—पु०[अं०]१ दे० 'कार्यक्रम'। २. वह पत्र जिसमें कार्यक्रम छपा या लिखा हो।

प्रोज्ज्वल—वि०[सं० प्र-उज्ज्वल, प्रा० स०]विशेष रूप से या बहुत उज्ज्वल।

प्रोज्झन—पु०[सं० प्र√उज्झ् (त्याग)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रोज्झित] परित्याग।

प्रोटीन—पु०[अं०]खाद्य पदार्थों मे पाया जानेवाला वह तत्त्व जिसमे कारबन, नाइट्रोजन, आक्सीजन, गधक आदि मिले होते है, और जो प्राणियो और वनस्पतियों के जीवन-धारण के लिए आवश्यक और उपयोगी होता है।

प्रोटेस्टेंट—पु०[अं०]१ ईसाइयो का एक सप्रदाय। २ उक्त संप्रदाय का अनुयायी।

प्रोढ़*—वि०=प्रौढ़।

प्रोढ़ा*—स्त्री०=प्रौढ़ा।

प्रोत—भू० कृ०[सं० प्र√वे—(बुनना)+क्त, सम्प्रसारण] १ किसी के साथ या किसी में अच्छी तरह मिला हुआ।

पद—ओतप्रोत।

२. गाँठ लगाकर बाँधा हुआ। ३. सीया हुआ। ४ छिपा हुआ। गुप्त।

पुं० कपड़ा। वस्त्र।

प्रोत्कंठ—वि०[सं०प्र-उत्कंठा, ब० स०] =उत्कंठित।

प्रोत्कट—वि०[सं० प्र-उत्कट, प्रा० स०] [भाव० प्रोत्कटता]१. उत्कट। २ विशेष रूप मे बहुत बडा।

प्रोत्तुंग—वि०[सं० प्र-उत्तुंग, प्रा० स०] बहुत ऊँचा।

प्रोत्तेजन—पुं० [सं० प्र-उत्तेजन, प्रा० स०] [भू० कृ० प्रोत्तेजित] बहुत बढे हुए रूप मे उत्तेजना उत्पन्न करना। ३ बहुत उत्कट या तीव्र उत्तेजन।

प्रोत्थित—भू० कृ०[सं० प्र-उत्थित, प्रा० स०]१ आधार पर रखा हुआ। किसी पर टिका या ठहरा हुआ। २. ऊपर उठाया हुआ। ३ बहुत ऊपर निकला या बढा हुआ।

प्रोत्फुल्ल—वि०[सं० प्र-उत्√फुल्ल्+अच्]१ अच्छी तरह खिला हुआ। २ विशेष रूप से प्रसन्न या हर्षित।

प्रोत्सारण—पुं०[सं० प्र-उत्√सृ (गति)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रोत्सारित] १ हटाना। २ निकालना। ३ पिंड या पीछा छुडाना।

प्रोत्साह—पुं०[सं० प्र-उत√सह्+णिच्+घञ्] बहुत अधिक बढा हुआ उत्साह या उमग।

प्रोत्साहक—वि० [सं० प्र-उत्√सह्+णिच्+ण्वुल्—अक] उत्साह बढानेवाला। हिम्मत बँधानेवाला।

प्रोत्साहन—पुं० [सं० प्र-उत्√सह्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० प्रोत्साहित] १ बहुत अधिक उत्साह बढाना। हिम्मत बँधाना। २ प्रोत्साहित करने के लिए कही जानेवाली बात। ३ उत्तेजित करना।

प्रोत्साहित—भू० कृ०[सं० प्र-उत्√सह+णिच्+क्त] जिसे विशेष रूप मे प्रोत्साहन दिया गया हो। अच्छी तरह उत्साहित किया हुआ।

प्रोथ—पुं०[सं० प्रु+थक]१ घोडे के नाक के आगे का भाग। २ सूअर का थूथन। ३ कमर। ४ पेडू। ५ स्त्री का गर्भाशय।

प्रोद्भवन—पुं० [सं० प्र+उद्भवन] १ प्रादुर्भाव होने की क्रिया या भाव। २ आय, फल, लाभ आदि के रूप मे होनेवाली प्राप्ति। (एक्रूअल)

प्रोद्भूत—भू० कृ०[सं०] १ जिसका प्रोद्भवन हुआ हो। जो आय, फल, लाभ आदि के रूप मे प्राप्त हुआ हो। (एक्रूड)

प्रोनोट—पुं०[अं०] =हैंडनोट।

प्रोपगेंडा—पुं०[अं०]=प्रचार। (दे०)

प्रोफेसर—पुं०[अं०]१ किसी विषय का पूर्ण ज्ञाता। भारी पडित या विद्वान। २ प्राध्यापक। (देखें)

प्रोल—पुं०=पोल (दरवाजा)।

प्रोलि—स्त्री०[सं० प्रतोली] द्वार। फाटक। (राज०) उदा०—प्रोलि प्रोलि मैं मारग।—प्रिथीराज।

प्रोष—पुं० [सं०√प्रुष् (दाह)+घञ्]१ जलना। २ बहुत अधिक दुःख या कष्ट। सताप।

वि० १ जलता हुआ। ३ दुखी। सतप्त।

प्रोषित—पुं०[सं० प्र-उषित, प्रा० स०]साहित्य मे शृगार-रस का आलबन वह नायक जो प्रिया को छोडकर विदेश चला गया हो।

भू० कृ०१ प्रवासी। २ बीता हुआ। जैसे—प्रोषित यौवन।

प्रोषित-नायक—पुं०[सं० कर्म० स०]=प्रोषित।

प्रोषित-नायिका—स्त्री०[सं० ब० स०, कप्-टाप्, इत्व] वह स्त्री जो अपने पति (या नायक) के विदेश चले जाने के कारण उसके विरह में दुःखी या विकल हो। प्रवत्स्यपतिका।

प्रोषित-प्रेयसी—स्त्री०=प्रोषितपतिका।

प्रोषित-भर्तृका—स्त्री०=प्रोषितपतिका।

प्रोषित-भार्य—पुं०[सं० ब० स०] वह पुरुष जो अपनी पत्नी के विदेश चले जाने के कारण उसके विरह मे दुःखी या विकल हो।

प्रोषित-यौवन—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० प्रोषित-यौवना] जिसका यौवन समाप्त हो चुका हो। जिसकी जवानी बीत चुकी हो।

प्रोष्ठ—पुं०[सं० प्र-ओष्ठ, ब० स०]१ सौरी मछली। २ गाय। ३ एक प्राचीन देश।

प्रोष्ठ-पद—पुं०[सं०ब०स०, अच्, पदादेश] भाद्रपद। भादो (महीना)।

प्रोष्ठ-पदा—स्त्री० [सं० प्रोष्ठपद+टाप्] पूर्व भाद्रपद और उत्तर भाद्रपद नक्षत्र।

प्रोष्ठपदी—स्त्री० [सं० प्रोष्ठपदा+अण्—ङीप्] भादो की पूर्णिमा।

प्रोष्ण—वि०[सं० प्र-उष्ण, प्रा० स०] अत्यन्त उष्ण। बहुत गरम।

प्रोह—पुं०[सं० प्र√ऊह् (वितर्क)+घञ्]१ हाथी का पैर। २ तर्क। ३ पर्व।

वि०१ चतुर। २ बुद्धिमान।

प्रोहित—पुं०=पुरोहित।

प्रौढ़—वि०[सं० प्र√वह्+क्त, सम्प्रसारण, वृद्धि][स्त्री० प्रौढा] [भाव० प्रौढता]१ जो अच्छी तरह बढकर या विकसित होकर अपनी पूरी बाढ तक पहुँच चुका हो। अच्छी या पूरी तरह से बढा हुआ। जैसे—प्रौढ बुद्धि, प्रौढ वृक्ष। २ (व्यक्ति) जो अपनी आरंभिक अवस्था पार करके मध्य अवस्था तक पहुँच चुका हो। ३ बलवान। शक्तिशाली। ४ दृढ। पक्का। मजबूत। ५ अच्छी तरह भरा हुआ। ६ गभीर। गूढ। ७ चतुर। चालाक। निपुण। ८ जिसका विवाह हो चुका हो। विवाहित। ९ पुराना। १० घना। जैसे—प्रौढ घन (बादल)।

पुं० तान्त्रिकों का चौबीस अक्षरों का एक मत्र।

प्रौढ़ता—स्त्री०[सं० प्रौढ+तल्—टाप्]१ प्रौढ होने की अवस्था, गुण या भाव। २ प्रौढ अवस्था या वयस। ३ विश्वास। ४ क्रोध। गुस्सा।

प्रौढ़त्व—पुं०[सं० प्रौढ+त्व] प्रौढता।

प्रौढ़-पाद—पुं०[सं०ब० स०] पैर के दोनो तलुए जमीन पर रखकर बैठना। उकडूँ बैठना। (शास्त्रों मे इस प्रकार बैठकर भोजन, स्नान, तर्पण आदि करने का निषेध है)।

प्रौढ़ा—स्त्री०[सं० प्रौढ+टाप्] १ अधिक या प्रौढ वयसवाली स्त्री। २ साहित्य मे प्रौढ वयसवाली नायिका जिसमे लज्जा कम और काम-वासना अधिक होती है और जो बातचीत मे चतुर तथा काम-केलि में प्रवीण होती है। उसके रति-प्रीता, आनन्द-सम्मोहिता, विचित्र-विभ्रमा, आक्रान्ता आदि अनेक भेद कहे गये है।

प्रौढ़ा-अधीरा—स्त्री०[सं० व्यस्तपद] साहित्य मे वह प्रौढा नायिका जो अपने नायक मे विलास-सूचक चिह्न देखने पर प्रत्यक्ष प्रकोप करे।

प्रौढ़ाधीरा—स्त्री०[सं० व्यस्तपद] व्यंग्यपूर्ण बातें कहकर अपना कोप प्रकट करनेवाली प्रौढ़ा नायिका।

प्रौढ़ाधीराधीरा—स्त्री० [स० व्यस्तपद] साहित्य मे वह नायिका जो अपने नायक में पर-स्त्री-गमन के चिह्न देखकर कुछ तो प्रत्यक्ष और कुछ व्यंग्य-पूर्वक कोप प्रकट करे।

प्रौढ़ि—स्त्री०[स०प्र√वह्+क्तिन्] १ प्रौढ़ता। २ सामर्थ्य। शक्ति। ३. धृष्टता। ढिठाई। ४ तर्क-वितर्क। वाद-विवाद।

प्रौढ़ोक्ति—स्त्री०[स० प्रौढा-उक्ति, कर्म० स०] १ ऐसी उक्ति या कथन जिसमे कोई गूढ रहस्य हो। २ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार जिसमे किसी कल्पित अथवा वास्तविक उत्कर्ष का आविर्भाव ऐसी चीज या बात से बतलाया जाता है जो वस्तुत उस उत्कर्ष का हेतु नही होता अथवा नही हो सकता। जैसे—यदि कहा जाय कि यमुना के किनारे पर उगने के कारण ही सरल वृक्ष नीले रग का हो गया है तो यहाँ प्रौढोक्ति अलकार होगा, क्योकि वास्तव मे यमुना के जल मे आसपास के वृक्षो को नीला करने का गुण या शक्ति नही है।

प्रौष्ठ-पदी—स्त्री० [स० ब० स०,+अण्—ङीप्] भाद्र मास की पूर्णिमा।

प्लक्ष—पु०[स० √प्लक्ष् (खाना)+घञ्] १ पुराणानुसार सात द्वीपो मे एक द्वीप। २ अश्वत्थ। पीपल। ३ पाकर या पिलखन नाम का वृक्ष। ४ बडी खिडकी या छोटा दरवाजा। ५ दरवाजे के पास की जमीन। ६ एक प्राचीन तीर्थ।

प्लक्षजाता—स्त्री०[स० प० त०] सरस्वती (नदी)।

प्लक्षराज—पु०[स० प० त०] सरस्वती नदी का उद्गम।

प्लक्षा—स्त्री०[स०√प्लक्ष+अ—टाप्] सरस्वती (नदी)।

प्लक्षावतरण—पु०[स० प्लक्षा-अवतरण, ष० त०]=प्लक्षराज।

प्लवग—पु०[स० प्लव√गम्+खच्, टिलोप, मुम्] १ बदर। २ साठ सवत्सरो मे से इकतालीसवाँ सवत्सर। ३ हिरण। ४ वानर। बन्दर। ५ प्लक्ष या पाकर का वृक्ष।

प्लवगम—पु०[स० प्लव्√गम्+खच्, मुम्] १ २१-२१ मात्राओ के चरणो वाला एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण का पहला वर्ण गुरु और अत मे १ जगण और १ गुरु होता है। २ बन्दर। ३ मेढक।

प्लव—पु०[स०√प्लु+अच्] १ साठ संवत्सरो मे से पैंतीसवाँ सवत्सर। २ कुक्कुट। मुरगा। ३ उछल-कूद कर,चलनेवाला पक्षी। ४. कारडव पक्षी। ५. मेढक। ६ बदर। ७. भेड़। ८ चाडाल। ९ वैरी। शत्रु। १०. नागरमोथा। ११ मछलियाँ फसाने का टापा या दौरा। १२. नदी की बाढ। १३ नहाना। १४ तैरना। १५ जल-पक्षी। १६ एक प्रकार का बगला। १७ आवाज। शब्द। १८ अनाज। अन्न। वि०१ तैरता हुआ। २. झुकता हुआ। ३ क्षण-भगुर।

प्लवक—वि० [सं० प्लावक] तैरनेवाला। तैराक।

पु० १ [स० प्लव+कन्] १. तलवार, रस्सी आदि पर नाचनेवाला पुरुष। २ मेढक। ३. प्लक्ष या पाकर का वृक्ष।

प्लवग—वि० [सं० प्लव√गम्+ड] १ कूदने या उछलनेवाला। २ तैरनेवाला।

पु० १. बदर। २. हिरन। ३ मेढक। ४ जल-पक्षी। ५ सिरस का पेड। ६ सूर्य के सारथी का नाम।

प्लवन—पु० [स० √प्लु (गति)+ल्युट्—अन] १ उछलना। कूदना। २ तैरना। ३ =प्लावन।

वि० ढालुआँ।

प्लविक—पु०[स०प्लव+ठन्—इक] माँझी। मल्लाह।

प्लांचट—पु०[अ०] तीन पायोवाली एक तरह की छोटी चौकी जिसकी सहायता से प्रेतात्माओ से सबध स्थापित करके वार्तालाप किया जाता है।

प्लाक्ष—वि०[स० प्लक्ष्+अण्] प्लक्ष सबधी। प्लक्ष का।

पु० १ प्लक्ष होने की अवस्था या भाव। २ प्लक्ष या पाकर वृक्ष का फल।

प्लाक्षायण—पु०[स० प्लाक्षि+फक्—आयन] प्लाक्षि के गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति।

प्लाट—पु० [अ०] १ इमारत बनाने या खेती आदि करने के लिए जमीन का टुकडा। २ उपन्यास, नाटक आदि की कथा-वस्तु। ३ षड्यत्र।

प्लान—पु०[अ०] दे० 'आयोजना'।

प्लाव—पु०[स० √प्लु+घञ्] १ पीपे की तरह की कोई खोखली चीज जो किसी जलाशय मे लगर आदि के सहारे ठहरी और तैरती रहती है, और जो प्राय इस बात की सूचक होती है कि यहाँ नीचे चट्टान है अत जहाजो, नावो आदि के टकराने का डर है। २ रबर आदि का वह गोलाकार खोखला पट्टा जिसके अन्दर हवा भरी रहती है और जिसका सहारा लेकर आदमी डूबने से बचकर तैरता रहता है। (बोई) ३. गोता। डुबकी। ४ परिपूर्णता।

प्लावन—पु०[स०√प्लु+णिच्+ल्युट्—अन] १ चारो ओर जल का उमडकर बहना। २ जल की बहुत बडी बाढ जिसमे सारी पृथ्वी या उसका बहुत बडा अश डूब जाता है। ३ अच्छी तरह डुबाने या धोने की क्रिया। ४ ऊपर फेकना। उछालना। ५ तैरना।

प्लावित—भू० कृ०[स०√प्लु+णिच्+क्त] १ बाढ के पानी मे भरा हुआ। २ जो जल मे डूब अथवा बह गया हो।

प्लाव्य—वि०[स०√प्लु+णिच्+यत्] जल मे डुबाये जाने के योग्य।

प्लास्टर—पु०=पलस्तर।

प्लीहा (हन्)—स्त्री०[स०√प्लिह्+कनिन्, नि-दीर्घ] १ पेट के अदर का तिल्ली नामक अग जो पेट के ऊपरी बाएँ भाग मे होता है और जो शरीर का रक्त बनाने मे सहायक होता है। (स्प्लीन) २ उक्त अग के सूजकर बढने का रोग।

प्लीहाविद्रधि—पु० [स०ब०स०] तिल्ली का एक रोग जिसमे साँस रुक-रुक कर आने लगता है।

प्लीहोदर—पु० [स० प्लीहा-उदर, ब० स०] प्लीहा के बढने का रोग। तिल्ली।

प्लीहोदरी (रिन्)—वि०[स० प्लीहोदर+इनि] [स्त्री० प्लीहोदरिणी] जिसे प्लीहा रोग हुआ हो।

प्लुत—वि०[स० √प्लु+क्त] जो काँपता हुआ चलता हो। २ डूबा हुआ। प्लावित। ३. बहुत गीला या तर। ४ (ताल, स्वर आदि मात्राओ से युक्त। तीन मात्राओवाला।

पु० १ टेढी और उछालवाली चाल। २ घोडे की एक प्रकार की चाल जिसे पोइया या पोई कहते है। ३ (व्याकरण मे किसी स्वर-वर्ण के

उच्चरित होने की वह अवस्था) जिसमे साधारण की अपेक्षा तिगुना समय लगा हो। इसका चिह्न ऽ है। जैसे—ओऽम्।

प्लुति—स्त्री० [सं० √प्लु+क्तिन्] १ उछल-कूद की चाल। २ पोई नामक साग। ३. तीन मात्राओ मे युक्त वर्ण।

प्लेग—पु० [अ०] १ कोई ऐसा भयकर सक्रामक रोग जिसके फैलने पर बहुत अधिक लोग मरते है। महामारी। २ एक विशिष्ट प्रकार का घातक सक्रामक रोग जिसमे रोगी को ज्वर होता है और जाँघ या बगल मे गिलटी निकलती है।

प्लेट—पु० [अ०] १ धातु के पत्तर, मिट्टी आदि की एक तरह की छोटी थाली। तश्तरी। २ उक्त प्रकार का ऐसा पत्तर जिसपर कोई लेख अकित या उत्कीर्ण हो। ३ तश्तरी। रिकाबी। ४ कपड़ो की वह पट्टी जो पहने जानेवाले वस्त्रों मे कही तो मजबूती के लिए और कही शोभा के लिए लगाई जाती है।

क्रि० प्र०—डालना।—देना।

५ फोटो लेने का वह शीशा जो प्रकाश मे पहुँचते ही अपने ऊपर पड़ने वाली छाया को स्थायी रूप से ग्रहण कर लेता है।

प्लेटफार्म—पु० [अ०] जमीन से कुछ ऊँचा, चौकोर तथा समतल चबूतरा। जैसे—रेलवे स्टेशन का प्लेटफार्म।

प्लैकेट—पु०=प्लाकट।

प्लैटिनम—पु० [अ०] स्वर्ण से भी अधिक बहुमूल्य, अधिक भारी तथा अधिक कड़ी सफेद रग की एक धातु।